सप्तम संस्करण का वक्तव्य

संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का प्रथम सस्करण संवत् १९८९ वि० (सन् १९३३ ई०) मे प्रकाशित हुआ था। तबसे बढती हुई इसकी लोकप्रियता को देखते हुए इसके कई सस्करण प्रकाशित हुए और उनमे निरतर परिवर्धन संशोधन होता रहा। इस प्रकार के सशोधन सवर्धन उपयोगिता और प्रामाणिकता को ध्यान मे रखते हुए ही किए गए रहे है, आकारवर्धन के लक्ष्य से नही। शब्दसग्रह विविध साहित्यप्रयुक्त ग्रथो से ही हुए है और शब्दभेदनिर्देश, व्युत्पत्तिनिर्वचन, अर्थनिरूपण आदि यथासाध्य प्रामाणिकता और विशदता की दृष्टि रखने का प्रयास किया गया है। फलत इसकी उपयोगिता और भी बढी है।

संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का यह सातवॉ सस्करण है। हम चाहते थे कि सक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का यह संस्करण परिवर्धित एव सशोधित (बृहत्) हिन्दी शब्दसागर के सक्षिप्त सस्करण के नए रूप मे संपादित एव प्रकाशित होता परतु हिंदी शब्दसागर (वृहत) अभी पूर्ण प्रकाशित नही हो सका है– नवम खड अभी प्रकाशनक्रम मे है, उसके पूरा होने मे विलम्ब है। पष्ठ सस्करण समाप्त हो गया है। अनेक मास से इसकी बहुत मॉग है अत इस अष्टम सस्करण का प्रकाशन अनिवार्य हो गया। हिंदी शब्दसागर का प्रकाशन पूर्ण हो जाने पर उसके नवीन सक्षिप्त सस्करण के रूप मे आगामी वर्षो मे इसके प्रकाशन की योजना बनाई गई है। तव तक यह सप्तम सस्करण पूर्ववर्ती सस्करण के सामान्य सशोधन के साथ पुनर्मुद्रण के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुनर्मुद्रण मे भी यथासाध्य अर्थो उदाहरणो का सचयन एव उनका यथास्थान सनिवेश किया गया है। आशा है, इस प्रकाशन से हमारे उत्सुक कोशप्रेमी और ग्राहक तवतक के लिये संतोष करेगे जवतक पूर्वोक्त पुन संस्कृत, सवर्धित एव सशोधित सस्करण का प्रकाशन नही हो रहा है। फिर भी विश्वास है कि अपनी उपयोगिता, प्रामाणिकता और विशिष्टताओ के कारण सप्तम सस्करण भी पूर्व सस्करणो की भॉति आदृत होता रहेगा। हमे विश्वास है कि अपने पूर्वोक्त सकल्प के अनुसार इस कोशसस्थान और कोशविभाग द्वारा इसके परिष्कृत, परिवर्धित सशोधित और अधिक शब्दार्थसपन्न सस्करण को (बृहत्) हिंदी शब्दसागर के सक्षिप्त रूप मे हम शीघ्रातिशीघ्र प्रस्तुत कर सकेगे।

इसे इस परिष्कृत रूप मे प्रस्तुत करने और प्रूफ आदि देखने का दायित्व लेकर सभा के कोशविभाग के सहायक सपादक श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने जिस तत्परता से इसे सपन्न कराया है, उसके लिये वे मेरे धन्यवादार्ह है।

पौष कृ० १४ (बॉगला देश
मुक्ति दिवस) सवत् २०२८
(१६-१२-१९७१)

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशनमत्री एव सयोजक
सपादक मडल, हिंदी शब्दसागर
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

प्रस्तावना

(नवसंपादित षष्ठ संस्करण की)

इस सभा का 'हिंदी शब्दसागर' १९६६ से १९८५ वि० (१९१० से १९२९ ई०) तक आठ बडे ग्रथो मे प्रकाशित हुआ, जो हिंदी का मौलिक, वृहत् तथा आकर शब्दकोश एवं भारतीय भाषाओ मे विशिष्ट कोश है। विद्यार्थियो के तथा जनसाधारण के सुलभ एव व्यावहारिक उपयोग के लिये उस बृहत् कोश का एकग्रथी 'सक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' १९८९ वि० (१९३३ ई०) मे प्रकाशित हुआ, जो हिंदी का सर्वप्रिय कोश हुआ। श्री रामचद्र वर्मा के शब्दो मे, यदि नागरीप्रचारिणी सभा, काशी की कृपा से हिंदी शव्दसागर और उसका सक्षिप्त सस्करण न निकल गया होता तो संभवत. आज हिंदी का कोशक्षेत्र बहुत कुछ सूना ही दिखाई देता'।[1]

सक्षिप्त हिंदी शव्दसागर के द्वितीय और तृतीय संस्करण क्रमश. १९९३ और १९९६ वि० मे प्रकाशित हुए, जो उत्तरोत्तर यथाशीघ्र मॉगपूर्ति की आवश्यकता से पुनर्मुद्रित मात्र हुए। इसका चतुर्थ सस्करण, परिशिष्ट रूप मे अतिरिक्त उपयोगी शब्दो के परिवर्धन के साथ, २००२ वि० मे प्रकाशित हुआ। किंतु तब तक इस कोश मे अपेक्षित सशोधन सुधार के साथ यथेष्ट अधिक शब्दो का समावेश नही हो सका था। आगे, यथाशक्य सशोधन, परिवर्धन तथा अतिरिक्त उपयोगी शब्दावली एव भारतीय सविधान शब्दावली के परिशिष्टो से युक्त, सवर्धित आकार मे, इसका पचम सस्करण तत्कालीन शिक्षामत्री डा० सपूर्णानदजी की कृपा एव प्रादेशिक सरकार की अनुकूल सहायता से, २००८ वि० मे प्रकाशित हुआ।

वृहत् कोश (हिंदी शव्दसागर) का, १९८५ वि० तक के प्रथम सस्करण के बाद, संशोधन-परिवर्धन-युक्त नया सस्करण उत्तरोत्तर अधिकाधिक अपेक्षित हुआ। उस निमित्त तथा सक्षिप्त कोश के आवश्यक संस्करण के निमित्त सभा ने २००४ वि० मे कोश विभाग की स्थापना की। किंतु, सकल्पो तथा प्रयत्नो के होते भी यथेष्ट साधनो के अभाव से वृहत् कोश का नया सस्करण हो नही पाया। आवश्यकतानुसार उसका पुनर्मुद्रण ही होता रहा। अत. वढे काल मे सशोधनो तथा नए शब्दो एव अर्थो की अपेक्षाओ की यथाशक्य पूर्ति इस सक्षिप्त कोश मे ही, इसके उक्त पंचम् सस्करण (२००२ वि०) मे, की गई, जिससे यह उस बृहत् कोश के सक्षिप्त सस्करण से आगे विशेष कोश सा वना।

इस सक्षिप्त कोश का प्रथम सपादन उस बृहत् कोश के अन्यतम सपादक प० रामचद्र शुक्ल के हाथो समारब्ध हुआ। परतु वह पूरा सपन्न, बृहत् कोश के सहायक सपादक, श्री रामचद्र वर्मा द्वारा हुआ। और पचम सस्करण तक, यथावश्यक सकलित तथा वर्धित उसके परिशिष्ट भाग के पूर्व तक, यह कोश श्री रामचद्र वर्मा द्वारा ही सपादित रहा। तदर्थ श्री वर्माजी सादर स्मरणीय हैं।

पूर्वोक्त कोश विभाग साधनहीनता से यथातथा ही कार्यलग्न रहा। २०१० वि० मे सभा की हीरक जयती

---

[1] दे० 'कोशकला', 'नम्र निवेदन', पृ० २।

के अवसर पर राष्ट्रपति डा० राजेद्र प्रसादजी के अनुग्रह एव केन्द्रीय सरकार की कृपा से बृहत् कोश के नवसस्करण के लिये विशेष अनुदान की उपलब्धि हुई, जिससे इस विभाग को नया, बडा सबल मिला। तव से यथेष्ट व्यवस्था से बृहत् कोश के नवसस्करण का कार्य सचालित हुआ। आगे, स० २०१३ मे सभा ने यथापेक्षा बृहत्, सक्षिप्त तथा अन्य उपयोगी कोशो के प्रकाशन के निमित्त कोश-ग्रथमाला का तथा उनके नियमित निर्माण के निमित्त कोश संस्थान का इस कोश विभाग के साथ स्थायी नियोजन किया।

बृहत् कोश का नवसस्करण कार्य सचालित होने के साथ यह सकल्पित हुआ कि यथाशीघ्र यह सक्षिप्त कोश नए बृहत् कोश के सक्षिप्त सस्करण के नए रूप मे सपादित, प्रकाशित हो। किंतु, उस बीच इस कोश के चलते (पचम) सस्करण के समाप्त हो जाने तथा इसकी अत्यत माँग होने पर यह आवश्यक हुआ कि इसका अपना नया सस्करण ही यथाशीघ्र प्रस्तुत हो और उतने बढ़े काल के अनुसार एव पूर्ववचनानुसार यथासाध्य सशोधित, सवर्धित एव नवसपादित हो। तदनुसार इसका यह षष्ठ, अभिनव सस्करण इस विभाग के उक्त सस्थान द्वारा, कोश-ग्रथमाला-२ के रूप मे, २०१४ वि० मे प्रस्तुत हुआ।

प्रस्तुत नवसस्करण मे जो यथासाध्य सशोधन, सवर्धन एव नवसपादन हुआ है उसमे आकारवर्धन से विशेष गुणवर्धन का, प्रामाणिकता तथा उपयोगिता का, ध्यान रखा गया है। उसमे कुछ उल्लेख्य इस प्रकार है—

शब्दसंग्रह : साहित्यप्रयुक्त शब्दो के विशेष सग्रह के अतिरिक्त लोकप्रयुक्त देशी तथा विदेशी शब्दो का भी यथाशक्य सकलन किया गया है।

शब्द भेद- 'छतियाना', 'डोरियाना', 'हथियाना' जैसी क्रियाओ के सबध मे हिंदी नामधातुओ से उनकी निष्पन्नता का निर्देश किया गया एव उनका स्वरूप स्पष्ट किया गया है, जो यहाँ ही हुआ है।

व्युत्पत्ति : पूर्वनिरुक्त व्युत्पत्तियो का परीक्षण कर उनमे यथासाध्य सुधार किए गए है, जैसे— 'अलकलडेता' [अ० अलक + हि० लाड + ऐता (प्रत्य०)] 'उलटवाँसी' [हि० √उलट + वै० वाशी = बोली], 'कुरलना' [स० √कुर् = आवाज करना, प्रा० √कुरुल, मि० नेपाली कुर्लनु = चिल्लाना, कूकना], चिल्लपो [प्रा० चिल्ल = बच्चा + प्रा० √पोक्क = पुकारना] 'डूबना' [प्रा० बुड्डुण] तथा 'निकर' [अँ० (या डच?) 'निकरबॉकर्स' के सक्षिप्त रूप 'निकर्स' से आदि] और नए शब्दो की व्युत्पत्तियाँ यथासाध्य प्रामाणिक दी गई है, जैसे— 'कौसीस' §[स० कपिशीर्षक], मतरुक' §[अ० मुतरिव] आदि।

व्युत्पत्ति-निर्वचन मे, अपेक्षितस्थलो मे, हिंदी धातुओ का प्रयोग किया गया है, जैसे 'कहावत' [हि० √कह + आवत (प्रत्य०)], 'चुनाव' [हि० √चुन + आव (प्रत्य०)] । आदि मे 'कहना', 'चुनना', आदि क्रियार्थक सज्ञाएँ नही, 'कह', 'चुन' आदि धातु निर्दिष्ट किए गए हैं। और जहाँ सस्कृत और प्राकृत धातुओ का निर्देश अपेक्षित हुआ वहाँ वैसा ही किया गया है। यह धातुनिर्देश यहाँ ही हुआ है।

अर्थनिरूपण : शब्दार्थो के पूर्व निरूपण यथासाध्य सशोधित, सवर्धित, एव प्रामाणिक किए गए है; जैसे आरती, इंद्रधनुप, डकिनी वदोवस्त, तत्व, बोल्शेविक, हृदय आदि के अर्थ।

साहित्यशास्त्रीय तथा अन्य शास्त्रीय शब्दो के अर्थ यथासाध्य प्रामाणिक किए गए है।

अर्थ निरूपण मे प्रामाणिकता तथा विशदता के लिये उपयुक्त उदाहरणो का तात्विक महत्व होता है। सिद्ध कोशकार एच० डब्ल्यू० फाउलर ने कहा है कि 'परिभाषा दीजिए तो आपका पाठक रूपरेखा पाता है और उदाहरण दीजिए

तो स्वरूप ही उसके हाथ लगता है।'[१] । अत इस सस्करण मे यथावसर उदाहरण दिए गए है एवं वहाँ रचनाविशेषो के निर्देश किए गए हैं। उदाहरणो का इतना तथा ऐसा उपयोग यहॉ ही हुआ है।

इस प्रकार इस सस्करण मे, अल्प समय मे यथासाध्य, सशोधन किया गया है। इससे यह कोश यथासभव अभिनव कोश सा प्रस्तुत है। आशा है कि इससे कोश की ऊँची मॉग को बहुत कुछ सतोषकर पूर्ति होगी और आगे यथाशीघ्र इस संस्थान द्वारा इसका और संपन्न रूप प्रस्तुत होगा।

इस षष्ट संस्करण के समारंभ से लगभग अधिकाश कार्य श्री करुणापति त्रिपाठीजी (तत्कालीन संयोजक, सपादक मडल, कोश सस्थान तथा कोश विभाग) के सयोजकत्व तथा श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र जी के सर्वनिरीक्षकत्व में प्रस्तुत हुआ है। तदर्थ श्री मिश्रजी को विभाग तथा सभा की ओर से सादर धन्यवाद उपहृत है।

इस नवसस्करण को प्रस्तुत करने मे कोशसस्थान के उपनिरीक्षक श्री पूरनगिरि गोस्वामी ने तथा उनके साथ कुछ काल तक सहायक संपादक श्री त्रिलोचन शास्त्री ने एव आगे सहायक संपादक श्री चद्रशेखर शुक्ल ने विशेष कार्य किया है और इसके प्रूफशोधन का विशेष कार्य सभा के सहायक मत्री श्री शभुनाथ वाजपेयी ने किया है। एतदर्श उन्हे इस सस्थान तथा विभाग एव सभा की ओर से यथायोग्य धन्यवाद है।

इस सस्करण के प्रकाशन का दुर्वह सकल्प सभा के अनेक सकल्पो के समान, केद्रीय सरकार की प्रकाशनादि के निमित्त विशेष अनुदान रूप कृपा से ही सभव हुआ है। तदर्थ केद्रीय शिक्षाविभाग के अधिकारियो एव उस सरकार के प्रति सवहुमान कृतज्ञता अर्पित है।

अव इसे प्रस्तुत, समर्पित करते निवेदित है कि—

'आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'

कृष्णानंद
सयोजक—संपादकमडल, कोशसस्थान
तथा कोशविभाग
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

शिवरात्रि, २०१४ वि०

---

१ – 'Define and your reader gets a silhouette, illustrate, and he has it in the round '— H W Fowler Preface to the second edition, The Concise Oxford Dictionary, 1929

संकेत सूची

अ० = अंग्रेजी
अ० = अरबी
अनु० = अनुकरणबोधक
अप० = अपभ्रंश
अ० मा० = अर्धमागधी
अल्पा० = अल्पार्थक
अव० = अवधी
अव्य० = अव्यय
इब्रा० = इब्रानी
उ० = उदाहरण
उच्चा० = उच्चारण सुविधा के लिये
उड़ि० = उडिया
उप० = उपसर्ग
एक व० = एकवचन
कविता० = कवितावली
कबीर० = कबीर ग्रथावली
कर्ता = कर्ता कारक
केशव० = केशव ग्रथावली
कोक० = कोकणी
क्रि० = क्रिया
क्रि० अ० = क्रिया अकर्मक
क्रि० वि० = क्रियाविशेषण
क्रि० स० = क्रिया सकर्मक
क्व० = क्वचित् प्रयोग
गीता० = गीतावली
गुज० = गुजराती भाषा
घनानद० = घनानदकवित्त
चीनी = चीनी भाषा
जा० म० = जानकीमगल
जापानी = जापानी भाषा
ज्या० = ज्यामिति
ज्यो० = ज्योतिष

डि० = डिगल
तर्क० = तर्कशास्त्र
ता० = तामिल
तु० = तुर्की
दे० = देखो
दोहा० = दोहावली
नददास० = नददास ग्रथावली
ना० धा० = नामधातुज क्रिया
प० = पजाबी भाषा
पा० = पाली भाषा
पा० म० = पार्वतीमगल
पु० = पुल्लिग
पुर्त० = पुर्तगाली भाषा
पृ० रासो = पृथ्वीराज रासो
प्र० = प्रयोग
प्रत्य० = प्रत्यय
प्रा० = प्राकृत भाषा
प्रिय० = प्रियप्रवास
प्रे० रूप = प्रेरणार्थक रूप
फा० = फारसी
बँग० = बँगला भाषा
बहु० व० = बहुवचन
बरबै० = बरवै रामायण
बिहारी० = बिहारी रत्नाकर
भाव० = भाववाचक सज्ञा
भूषण० = भूषण ग्रथावली
मानस = रामचरितमानस
मि० = मिलाओ
मुसल० = मुसलमान
मुहा० = मुहावरा
मो० वि० = मोनियर विलियम्स (सस्कृत इग्लिश डिक्शनरी)

यू० = यूनानी भाषा
यौ० = यौगिक
रानी केतकी० = रानी केतकी की कहानी
रामलला० = रामलला नहछू
लश० = लशकरी भाषा
लै० = लैटिन
वा० = वाचस्पत्य कोश
वि० = विशेषण
विन० = विनयपत्रिका
वै० = वैदिक
वैराग्य = वैराग्यसदीपनी
श० कल्प० = शब्दकल्पद्रुम
शृगार० = शृगारनिर्णय
शृगार० = शृगार सतसई
श्रीकृष्ण गीता० = श्रीकृष्ण गीतावली
स० = सस्कृत
स० पु० = सज्ञा पुल्लिग
स० स्त्री० = सज्ञा स्त्रीलिंग
सयो० = सयोजक क्रिया
सर्व० = सर्वनाम
सा० लहरी = साहित्यलहरी
सुदामा = सुदामाचरित
सूर० = सूरसागर
सौ अजान = सौ अजान और एक सुजान
स्कदगुप्त = स्कदगुप्त विक्रमादित्य
स्पे० = स्पेनी भाषा
हनु० = हनुमान बाहुक
हि० = हिदी भाषा
§ = कीर्तिलता का प्रयोग
(पु)·= पुरानी हिदी या केवल पद्य मे प्रयुक्त
† = प्रातीय प्रयोग
‡ = ग्राम्य प्रयोग
√ = धातुचिन्ह

संक्षिप्त

हिंदी शब्दसागर

अ

अ—संस्कृत और देवनागरी वर्णमाला का पहला अक्षर। उच्चारण-स्थान कंठ होने से यह कंठ्य वर्ण कहलाता है। इस स्वर की सहायता से क, ख, ग आदि व्यंजन लिखे और बोले जाते हैं।

अंक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्न। निशान। छाप। आँक। २ लेख। अक्षर। लिखावट। ३ संख्या के सूचक चिह्न, जैसे १, २, ३। आँकड़ा। अदद। ४ लिखन। भाग्य। किस्मत। ५. नजर से बचाने के लिये बच्चों के माथे पर लगाई जानेवाली काजल की बिंदी। डिठौना। ६ दाग। धब्बा। ७ गोद। अँकवार। क्रोड़। ८ शरीर। अंग। देह।

मुहा०—अंक देना या लगना = गले लगना। आलिंगन देना। अंक भरना या लगाना = हृदय से लगाना। लिपटाना। गले लगाना।

९ नौ की संख्या (क्योंकि अंक नौ ही तक होते हैं)। १० नाटक का एक अंश जिसके अंत में जवनिका गिरा दी जाती है। ११. दस प्रकार के रूपकों में से एक। १२ पाप। दुःख। १३ बार। दफा। मर्तबा।

अंकक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गणक। २ चिह्न लगानेवाला। ३ रबर की मुहर।

अंककार—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध या किसी प्रतियोगिता में हार और जीत का निर्णय करनेवाला।

अंकगणित—संज्ञा पुं० [सं०] हिसाब। संख्याओं का जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि करने की विद्या।

अँकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकुर = अँखुआ, टेढ़ी नोक] १ कँटिया। हुक। २. तीर का मुड़ा हुआ फल। टेढ़ी गाँसी। ३ पेड़ से फल तोड़ने का बाँस का डंडा। लग्गी।

अंकधारण—संज्ञा पुं० [सं०] शंख, चक्र, त्रिशूल आदि विभिन्न सांप्रदायिक चिह्नों को गरम धातु से शरीर पर दगवाना। छापा लगवाना।

अंकन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य] १ चिह्न करना। निशान लगाना। २. लेखन। लिखना। ३. शंख, चक्र आदि के सांप्रदायिक चिह्न दगवाना (वैष्णव, शैव)। ४ गिनती करना। गिनना।

अँकना—क्रि० अ० [सं० अंकन] १ आँका या कूता जाना। २ लिखा जाना।

अंकपलई—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकपल्लव] वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखते हैं और उनके समूह से वाक्य की तरह तात्पर्य निकालते हैं।

अंकपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] धाय। दाई।

अंकमाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आलिंगन। परिरंभण। गले लगना। २ भेंट।

अंकमालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा हार। छोटी माला। २ आलिंगन। भेंट।

अँकरवरी— संज्ञा स्त्री० दे० "अँकरोरी"।

अँकरा—संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] [स्त्री० अल्पा० अँकरी] एक खर जो गेहूँ के पौधों के बीच जमता है।

अँकरोरी, अँकरौरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर = कंकड़] कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर] कंकड़ी।

अँकवाना—क्रि० स० [हिं० आँकना का प्रे० रूप] १ कुतवाना। मूल्य निर्धारित कराना। २. अंदाज कराना। ३ परखवाना।

अँकवार—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकपालि, अंकपाली, प्रा. अंकवाली] १. दोनों भुजाओं को फैलाकर मिलाने से उनके बीच बना हुआ स्थान। २. आलिंगन। ३. गोद। ४. छाती।

मुहा०—अँकवार देना = गले लगाना। छाती से लगाना। आलिंगन करना। भेंटना। अँकवार भरना = (१) आलिंगन करना। गले मिलना। हृदय से लगाना। (२) गोद में बच्चा रहना। संतानयुक्त होना। जैसे—बहू, तुम्हारी अँकवार भरी रहे। (आशीर्वाद)

यौ०—भेंट-अँकवार = आलिंगन। मिलना।

अँकवारना—क्रि० स० [हिं० अँकवार] आलिंगन करना। गले लगाना।

अँकवारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अँकवार"।

अंकविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "अंकगणित"।

अँकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ आँक + आई (प्रत्य०)] १ आँकने की क्रिया या भाव। कूत। अनुमान। अटकल। २ आँकने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ फसल में से जमींदार और काश्तकार के हिस्सों का ठहराव।

अँकाना—क्रि० स० [आँकना का प्रे० रूप] दे० "अँकवाना।"

अँकाव—संज्ञा पुं० [हिं० √ आँक+आव (प्रत्य०)] कूतने या आँकने का काम या भाव। कुताई। अनुमान।

अंकावतार—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक का वह दृश्य जिसमें प्रथम अंक की वस्तु का विच्छेद किए बिना दूसरे अंक की वस्तु चले।

अंकास्य—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक का दृश्य जिस में एक अंक की समाप्ति पर अगले अंक के आरंभ की सूचना पात्रों द्वारा दी जाय।

अंकित—वि० [सं०] १ निशान किया हुआ। चिह्नित। जिस पर छाप या मुहर लगी हो। दागदार। २ लिखित। खचित। ३ वर्णित।

अँकुड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] [स्त्री० अल्पा० अँकुड़ी] १ लोहे का झुका हुआ टेढ़ा काँटा या छड़। २ कुलावा। पायजा। ३ लोहे का एक गोल पच्चड़ जो किवाड़ की चूल में ठोका रहता है। ४ गाय बैल के पेट का दर्द या मरोड़। ऐंचा।

अँकुड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकुड़ा] १ टेढ़ी कँटिया। हुक। २ लोहे का झुका हुआ छड़।

अँकुड़ीदार-वि० [हिं० अँकुड़ी+फा० दार] जिसमें अँकुड़ी या कँटिया लगी हो। जिसमें अटकाने के लिये हुक लगा हो। हुकदार।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कसीदा। गड़ारी।

अंकुर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकुरित] १. अँखुआ। नवोद्भिद। गाभ। अँगुसा। २ डाभ। कल्ला। कनखा। कोपल। आँख। ३ कली। ४ नोक। ५ रुधिर। रक्त। खून। ६ रोयाँ। लोम। ७ जल। पानी। ८ मांस के बहुत छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं। अंगूर। भराव। ९ किसी वस्तु का आरंभिक विकास।

अंकुरण—संज्ञा पुं० [सं०] अंकुरित होना।

अंकुरना, अंकुराना(पु)—क्रि० अ० [सं० अंकुर] अंकुर फूटना। जमना। अँखुवाना।

अंकुरक—संज्ञा पुं० [सं०] चिड़ियों का घोंसला।

अंकुरित—वि० [सं०] जिसमें अंकुर हो गया हो। अँखुवाया हुआ। उगा हुआ।

अंकुरितयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके यौवनावस्था के चिह्न निकल रहे हों। उमड़ते हुए यौवन वाली बालिका।

अँकुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकुर] १ अंकुरित चने की घुघुनी। २ छोटा अंकुर।

अंकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी को हाँकने तथा वश में रखने का दोमुँहा भाला। आँकुस। गजबाग। २ प्रतिबंध। शासन। ३ दबाव। रोक।

अंकुशग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] महावत। हाथीवान। निषादी। फीलवान।

अंकुशदंता—वि० [सं० अंकुशदंत] वह (हाथी) जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है।

अँकुसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंकुश] १ टेढ़ी या झुकी कील जिसमें कोई चीज लटकाई या फँसाई जाय। हुक। कँटिया। २ टेढ़ा छड़ जिसको किवाड़ के छेद में डालकर सिटकिनी खोलते हैं। ३ फल तोड़ने के लिये लग्गी के सिरे पर बँधी छोटी लकड़ी। ४ भट्ठी से राख निकालने का एक औजार। ५ नारियल की गिरी निकालने का एक छोटा औजार।

अँकूरू—संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] अंकुर। अँखुआ। कल्ला।

अंकोट—संज्ञा पुं० दे० "अंकोल"।

अँकोर—संज्ञा पुं० [सं० अंकपालि, अंकपाली, प्रा० अंकवाली, हिं० अँकवार] १. अंक। गोद। २ छाती। दे० "अँकवार"। ३ भेंट। नजर। ४ घूस। रिश्वत। ५ खुराक या कलेवा जो खेत में काम करनेवालों के पास भेजा जाता है। छाक। कोर। दुपहरिया।

अँकोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकोर] १ गोद। अंक। २ आलिंगन। ३. भेंट।

अंकोल—संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी छाल दवा के काम आती है।

अंक्य—वि० [सं०] चिह्न करने योग्य। निशान लगाने लायक।

संज्ञा पुं० १ दागने के योग्य। अपराधी। २ मृदंग, तबला, पखावज आदि बाजे जो गोद में रखकर बजाए जायँ।

अँखड़ी †—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

अँखमीचनी—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौनी"।

अँखिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँख + इया (प्रत्य०)] १ हथौड़ी से ठोक ठोककर नक्काशी करने की कलम या ठप्पा। †२ दे० "आँख"।

अँखुआ—संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] १ बीज से फूटकर निकला हुआ कोमल नोकदार अंश जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अंकुर। २ बीज से पहले-पहल निकली हुई मुलायम बँधी पत्ती। डाभ। कल्ला। कनखा। कोंपल। ३ उभाड़। उठान।

अँखुआना—क्रि० अ० [हिं० अँखुआ] अंकुर फूटना। उगना या जमना। २ उभड़ना। उठना।

अंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। बदन। देह। तन। गात्र।

मुहा०—अंग करना=अपनाना। अंग छूना=शरीर छूकर कसम खाना। अंग टूटना=अँगड़ाई आना। जम्हाई के साथ आलस्य से अंगों का फैलाया जाना। अंग तोड़ना=अँगड़ाई लेना। अंग लगना=(१) लिपटना। आलिंगन करना। छाती से लगना। (२) (भोजन का) शरीर को पुष्ट करना। शरीर को बलवान् करना। (३) काम में आना। (४) हिलना। परचना। अंग लगाना=(१) आलिंगन करना। छाती से लगाना। (२) हिलाना। परचाना।

२. अवयव। ३. भाग। अंश। खंड। टुकड़ा। ४. भेद। प्रकार। ५. उपाय। ६. पक्ष। तरफ। अनुकूल पक्ष। सहायक। सुहृद्। ७. प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्ययरहित भाग। प्रकृति। (व्या०) ८ जन्मलग्न। ९. साधन जिसके द्वारा कार्य हो। १०. आधुनिक भागलपुर के आसपास का प्रदेश जिसकी राजधानी चंपापुरी थी। ११ एक संबोधन। प्रिय। प्रियवर। १२ छः की संख्या। १३. पार्श्व। ओर। तरफ। १४. नाटक में अप्रधान रस। १५. नाटक में नायक या अंगी का कार्यसाधक पात्र। १६ सेना के चार विभाग, यथा—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। १७. योग के आठ विधान। १८ राजनीति के सात अवयव, यथा—स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना। १९ वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, न्याय, ज्योतिष, मीमांसा, निरुक्त। २०. जैनों के मुख्य धार्मिक ग्रंथ।

अंगचारी—संज्ञा पुं० [सं०] सहचर। साथी।

अंगज—वि० [सं०] शरीर से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [स्त्री० अंगजा] १.पुत्र। बेटा। लड़का। २. पसीना। ३ बाल। केश। रोम। ४ काम, क्रोध आदि विकार। ५. साहित्य में स्त्रियों के यौवन-संबंधी तीन सात्विक विकार—हाव, भाव और हेला। ६. कामदेव। ७ मद। ८ रोग।

अंगजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री।

अंगजाई—संज्ञा स्त्री० दे० "अंगजा"।

अंगजात—वि०, सज्ञा पुं० दे० "अगज"।
अंगड़-खंगड़—वि० [अनु०] १. बचा-खुचा। गिरा-पड़ा। २. टूटा-फूटा।
संज्ञा पुं० लकड़ी, लोहे आदि का टूटा-फूटा सामान।
अँगड़ाई—सज्ञा स्त्री० [स० अंग+√अट्, प्रा०√अड=घूमना, फिरना+हिं० आई (प्रत्य०)] आलस्य से देह का तनना या फैलना। जम्हाई के साथ अगों का तनाव। बदन टूटना।
मुहा०—अँगड़ाई तोड़ना=आलस्य में बैठे रहना। कुछ काम न करना।
अँगड़ाना—क्रि० अ० [सं० अग+√अट्, प्रा० √अड=घूमना, फिरना] देह तोड़ना। सुस्ती से ऐंड़ाना। वदों या जोड़ों के भारीपन को हटाने के लिये अंगों को पसारना या तानना।
अंगण—सज्ञा पुं० [स०] आँगन। सहन।
अगत्राण—सज्ञा पुं० [सं०] १. वत्र। २. कवच। बख्तर।
अंगद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाहु पर पहनने का एक गहना। बिजायठ। बाजूबद। २. बालि नामक बंदर का पुत्र जो रामचद्र जी की सेना में था। ३. लक्ष्मण के दो पुत्रों में से एक।
अंगदान—सज्ञा पुं० [स०] १. पीठ दिखलाकर युद्ध से भागना। लड़ाई से पीछे हटना। २ तन-समर्पण। ३. (स्त्री द्वारा) देह-समर्पण या रति-दान।
अंगधारी—सज्ञा पुं० [स० अगधारिन्] शरीरधारी प्राणी।
अंगन—सज्ञा पुं० [सं०] १. चौतरा। २. आँगन, अजिर। ३ यान। सवारी।
अँगना—संज्ञा पुं० दे० "आँगन।"
अंगना—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छे अगवाली स्त्री। कामिनी। २ सार्वभौम नामक उत्तर दिग्गज की हथिनी।
अँगनाई—सज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अँगनैया—सज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अगन्यास—सज्ञा पु० [स०] शास्त्र के मत्रों को पढ़ते हुए एक एक अग को छूना। (तत्र)
अंगपाक—संज्ञा पु० [स०] वह रोग जिसमें शरीर के अग पकने या सड़ने लगें।
अंगपाली—सं० स्त्री० [सं० अगपालि] आलिंगन। अँकवार।
अंगभंग—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी अवयव का खटन या नाश। अग का खंडित होना। शरीर के किसी भाग को हानि।
वि० जिसका कोई अवयव कटा या टूटा हो। अपाहिज। लँगड़ा लूला। लुज।
अंगभंगी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अगों की मोहक चेष्टा या मुद्रा। हाव-भाव। अदा।
अंगभाव—सज्ञा पुं० [स०] संगीत में नेत्र, भृकुटी और हाथ-पैर आदि अंगों से मनोविकारों का प्रकाश।
अंगभूत—वि० [स०] १ अंग से उत्पन्न। २ अतर्गत। भीतर। अंतर्भूत।
सज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।
अंगमर्द—सज्ञा पुं० [स०] १ हाथ-पैर दबानेवाला नौकर। संवाहक। २ अँगड़ाई। ३. हड्डियों का फूटना। हड्डियों में दर्द। हड़फूटन रोग।
अगरक्षक—सज्ञा पुं० [सं०] राजा या प्रधान शासक आदि की शरीर-रक्षा के निमित्त नियुक्त सैनिक।
अंगरक्षा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की रक्षा। देह का बचाव। बदन की हिफाजत।
अँगरखा—सज्ञा पुं० [सं० अंग=देह+रक्षक=बचानेवाला] एक मरदाना पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लबा होता है और जिस में बाँधने के लिये बंद टँके रहते हैं। बंददार अगा। चपकन।
अँगरा—सज्ञा पुं० [स० अगार] १. दहकता हुआ कढा, कोयला, लकड़ी इत्यादि। २ बैलों के पैर का एक रोग।
अंगराग—सज्ञा पु० [स०] १ चदन आदि का लेप। सुगधित पदार्थों से बना हुआ उबटन। वटना। २ केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगधित द्रव्यों से मिला हुआ चंदन जो अग में लगाया जाता है। ३ शरीर की शोभा के लिये महावर आदि रँगने की सामग्री। ४ स्त्रियों के शरीर के पाँच अगों की सजावट—माँग में सिंदूर, माथे में रोली, गाल पर तिल की रचना, केसर का लेप, हाथ-पैर में मेंहदी या महावर। ५ एक प्रकार की सुगधित देशी बुकनी जिसे मुँह पर लगाते हैं।
अँगराना—क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।
अँगरी—सज्ञा स्त्री० [स० अग+रक्षिका] कवच। झिलम। बख्तर।
सज्ञा स्त्री० [सं० अंगुलीय] अगुलित्राण।
अँगरेज—सज्ञा पुं० [पुर्त० इंगलेज] [वि० अँगरेजी] इंगलैंड देश का निवासी।
अँगरेजियत—सज्ञा स्त्री० [हिं० अँगरेज इयत (प्रत्य०)] अँगरेजीपन। अँगरेजी रग-ढग।
अँगरेजी—वि० [हिं० अँगरेज] अँगरेजों का। इंगलैंड देश का। विलायती।
सज्ञा स्त्री० अँगरेज लोगों की बोली। इँगलैंडनिवासियों की भाषा।
अँगलेट—सज्ञा पु० [स० अगलता ?] शरीर की गठन। देह का ढाँचा। काठी। उठान।
अँगवना—क्रि० स० [सं० अंगीकरण] १ अगीकार करना। स्वीकार करना। २. ओढ़ना। अपने सिर पर लेना। ३ बरदाश्त करना। सहना। उठाना।
अँगवनिहारा—वि० [स०√अगीकरण+हिं० हारा (प्रत्य०)] सहनेवाला। सहन करनेवाला। बरदाश्त करनेवाला।
अँगवारा—सज्ञा पुं० [सं० अंग=भाग, सहायता+कार ?] १ गाँव के एक छोटे भाग का मालिक। २ खेत की जुताई में एक दूसरे की सहायता।
अंगविकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] देह का विकार युक्त होना। मूर्छा रोग।
अंगविक्षेप—सज्ञा पुं० [सं०] १. चमकना। मटकना। २ नृत्य। ३. कलाबाजी।
अंगविद्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] सामुद्रिक विद्या।
अंगशोष—सज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें शरीर सूखता है। सुखडी रोग।
अंग-संग—सज्ञा पुं० [स०] मैथुन। सभोग।
अग-संस्कार—सज्ञा पु० [स०] शरीर का शृगार या सजावट।
अंगसिहरी—सज्ञा स्त्री० [सं० अग+हिं० सिहरी] ज्वर आने के पहले देह की कँपकँपी। कप। कँपकँपी।
अंगहार—सज्ञा पुं० [सं०] १. अग-विक्षेप। चमकना। मटकना। २ नृत्य। नाच।
अगहीन—वि० [स०] जिसका कोई एक अग न हो।
सज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।
अंगांगीभाव—सज्ञा पुं० [स० अगांगिभाव] १ अवयव और अवयवी का परस्पर सबंध। अंश का सपूर्ण के साथ सवध। २ गौण और मुख्य का परस्पर सवध। ३ अलकार में सकर का एक भेद।
अंगा—सज्ञा पुं० [स० अंग] अँगरखा।
अंगाकड़ी—संज्ञा स्त्री० [स० अगार+हिं०

करी] अंगारों पर सेकी हुई मोटी रोटी। लिट्टी। बाटी।
अँगाना(पु)—क्रि० स० [स०, अग] अपने अग में अथवा ऊपर ले लेना या सहना।
अंगार—सज्ञा पुं० [स०] १ दहकता हुआ कोयला, कडा या अच्छी तरह जलती हुई लकड़ी आदि का टुकड़ा। बिना धुएँ की आग। निर्धूम अग्नि। २ कोयला।
अंगारक—सज्ञा पुं० [स०] १ अगारा। २ मंगल ग्रह। ३ भृगराज। भँगरैया। भँगरा। ४. कटसरैया का पौधा।
अंगारधानिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] अँगीठी। बोरसी। आतिशदान।
अंगारपाचित—सज्ञा पुं० [सं०] अंगार या दहकती हुई आग पर पकाया हुआ खाना, जैसे, कबाब, नानखताई इत्यादि।
अंगारपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] इगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड।
अगारमणि—सज्ञा पुं० [स०] मूँगा।
अंगारवल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] गुजा। घुँघची या चिरमटी।
अंगारा—संज्ञा पुं० [सं० अंगार] दहकता हुआ कोयला। जलती हुई लकड़ी, कडे आदि का टुकड़ा।
मुहा०—अंगारे उगलना=कड़ी कड़ी बातें मुँह से निकालना। अगारों पर पैर रखना=(१) जान-बूझकर हानिकारक कार्य करना। अपने को खतरे में डालना। (२) जमीन पर पैर न रखना। इतराकर चलना। अंगारों पर लोटना=(१) अत्यत रोष प्रकट करना। आग-बबूला होना। (२) दाह से जलना। ईर्ष्या से व्याकुल होना। लाल अंगारा=(१) बहुत लाल। (२) अत्यत क्रुद्ध।
अगारिणी—संज्ञा स्त्री० [स०] १. अँगीठी बोरसी। २. आतिशदान। ३. ऐसी दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य की लाली छाई हो।
अंगारी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा अंगारा। २ चिनगारी। ३ लिट्टी। बाटी। अंगाकड़ी। ४ बोरसी।
अँगारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अगारिका] १. ईख के सिर पर की पत्तियाँ। गेंडी। २ गन्ने के छोटे छोटे कटे टुकडे। गँडेरी।
अंगिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों की कुर्ती। अँगिया। चोली। कचुकी।
अँगिया—सज्ञा स्त्री० [सं० अंगिका], १. स्त्रियों की चोली। कुरती। कचुकी २.

मैदा या आटा छानने की छलनी।
अंगिरस—संज्ञा पुं० [सं० अङ्गिरस्] १. एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २. बृहस्पति। ३. साठ संवत्सरों में से छठा। ४. कटीला गोंद। कतीरा।
अंगिरा—सज्ञा पुं० दे० "अगिरस"।
अँगिराना(पु)—क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।
अंगी—संज्ञा पुं० [स० अङ्गिन्] १. शरीरी। देहधारी। शरीरवाला। २. अवयवी। अशी। समष्टि। ३. प्रधान। मुख्य। ४. चौदह विद्याएँ। ५. नाटक का प्रधान नायक। ६ नाटक में प्रधान रस।
अंगी—सज्ञा स्त्री०। दे० "अँगिया"।
अंगीकरण—सज्ञा पुं० दे० "अंगीकार"।
अंगीकार—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंगीकृत] स्वीकार। मजूर। ग्रहण।
अंगीकृत—वि० [सं०] स्वीकृत। मजूर। स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया हुआ।
अँगीठा—संज्ञा पुं० [सं० अग्नि=आग+स्थ=ठहरना] आग रखने का बरतन। बड़ी अँगीठी। बड़ी बोरसी।
अँगीठी—सज्ञा स्त्री० [अँगीठा का अल्पा०] आग रखने का बरतन। बोरसी।
अंगुर—सज्ञा पुं० दे० "अगुल"।
अँगुरी—सज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।
अंगुल—सज्ञा पुं० [स०] १. आठ जौ की लबाई। उँगली की चौडाई के बराबर नाप। २. ग्रास या बारहवाँ भाग (ज्यो०)। ३. हाथ की उँगली।
अंगुलित्राण—सज्ञा पुं० [स०] गोह के चमडे का बना हुआ दस्ताना जिसे बाण चलाते समय उँगलियों में पहनते हैं।
अंगुलिपर्व—संज्ञा पुं० [सं०] उँगलियों की पोर। उँगली की गाँठों के बीच का भाग।
अगुलित्राण—संज्ञा पुं० दे० "अंगुलित्राण"।
अँगुली—सज्ञा स्त्री० [स० अंगुली] †१. हाथ या पैर की उँगली। २. हाथी की सूँड़ का अगला भाग।
अगुल्यादेश—सज्ञा पुं० [स०] उगली से अभिप्राय प्रकट करना। इशारा। संकेत।
अंगुल्यानिर्देश—सज्ञा पुं० [सं० अगुलि+निर्देश] बदनामी। कलक। लांछन। अगुश्तनुमाई।
अगुश्तनुमाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] बदनामी। कलक। लाछन। दोषारोपण।
अगुश्तरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] अँगूठी। मुँदरी। मुद्रिका।
अगुश्ताना—सज्ञा पुं० [फा०] १ उँगली पर

पहनने की लोहे या पीतल की एक टोपी जिसे दरजी सीते समय एक उँगली में पहन लेते हैं। २ हाथ के अँगूठे की एक प्रकार की मुँदरी।
अंगुष्ठ—सज्ञा पुं० [सं०] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली। अँगूठा।
अँगुसा—सज्ञा पुं० [सं० अकुर] अकुर। अँखुआ।
अँगुसाना—क्रि० अ० [हिं०] अकुर फूटना। अखुआ निकलना।
अँगुसी—सज्ञा स्त्री० [स० अकुश] १ हल का फाल। २. सुनारों का बकनाल या टेढी नली जिससे दीये की लौ को फूँककर टाँका जोड़ते हैं।
अँगूठा—सज्ञा पुं० [स० अंगुष्ठ, प्रा० अगुट्ठ] मनुष्य के हाथ की सबसे छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।
मुहा०—अँगूठा चूमना=(१) खुशामद करना। शुश्रूषा करना। (२) अधीन होना। अँगूठा दिखाना=(१) किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाहीं करना। (२) किसी कार्य को करने से हट जाना। किसी कार्य का करना अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना=तुच्छ समझना। परवा न करना।
अँगूठी—सज्ञा स्त्री० [हिं० अँगूठा] १. उँगली में पहनने का एक गहना। छल्ला। मुँदरी। मुद्रिका। २ उँगली में लिपटाया हुआ तागा। (जुलाहे)
अंगूर—सज्ञा पुं० [फा०] एक लता और उस फल का नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है। दाख। द्राक्षा।
य०—अगूर का मड़वा या अगूर की टट्टी=(१) अंगूर की बेल के चढने और फैलने के लिए बाँस की फट्टियों का बना हुआ मडप। (२) एक प्रकार की आतिशबाजी।
मुहा० अगूर खट्टा होना=किसी वस्तु को पा सकने की असमर्थता छिपाने के लिये उसे अवाँछनीय ठहराना।
सज्ञा पुं० [सं० अकुर] १ मास के छोटे-छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं। घाव का भराव।
मुहा०—अगूर तडकना या फटना=भरते हुए घाव पर बँधी हुई मास की झिल्ली फटना।
२ अकुर। अँखुवा।
अंगूरशेफा—सज्ञा पुं० [फा०] हिमालय में होनेवाली एक जडी।

अँगूरी—वि० [फा० अंगूर] १. अंगूर से बना हुआ। २ अंगूर के रंग का। संज्ञा पुं० हलका हरा रंग।
अँगेजना(पु)—क्रि० स० [सं० अंग+हिं० एज?] १. सहना। बरदाश्त करना। उठाना। २ अंगीकार करना। स्वीकार करना।
अँगेट—संज्ञा स्त्री० [सं० अंग+यष्ट?] अंग की दीप्ति या कांति।
अँगेठी—संज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।
अँगेरना(पु)—क्रि० स० [सं० अंगीकार] १ स्वीकार करना। मंजूर करना। २ बरदाश्त करना। सहना।
अँगोछना—क्रि० स० [सं० अंगोञ्छन] गीले कपड़े से देह पोंछना। गीला कपड़ा फेरकर बदन साफ करना।
अँगोछा—संज्ञा पुं० [सं० अंगोञ्छ] १. देह पोंछने का कपड़ा। गमछा। २ उपरना। उपवस्त्र। उत्तरीय।
अँगोछी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगोछा का अल्पार्थक] १ देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा। २ छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय।
अँगोजना(पु)—क्रि० स० दे० "अँगेजना"।
अँगोट—संज्ञा स्त्री० [सं० अंग+आकृति] शरीर की बनावट।
अँगोरा—संज्ञा पुं० [देश०] मच्छर।
अँगौंगा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र+अंग] धर्मार्थ बाँटने या चढ़ाने के लिये अलग निकाला हुआ अन्न आदि। अगऊ। (पुजारी)।
अँगौछा—संज्ञा पुं० दे० "अँगोछा"।
अँगौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंग+आकृति] आकृति। बनावट।
अँगौड़ा—संज्ञा पुं० [?] किसी देवता को अर्पण करने के लिये निकाला गया पदार्थ। देवांश।
अँगौरिया—संज्ञा पुं० [सं० अंग+?] वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर हल-बैल उधार देते हैं।
अँघड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अंघ्रि] काँसे का छल्ला जिसे छोटी जाति की स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहनती हैं।
अँघराई—संज्ञा स्त्री० [?] पशुधन पर लगनेवाला कर।
अघस—संज्ञा पुं० [सं० अघस्] पाप। पातक।
अँघिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगिया] आटा या मैदा चालने की छलनी। अँगिया। आखा।
अंघ्रि—संज्ञा पुं० [सं०] पैर। चरण। पाँव।
अंघ्रिप—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।
अँचरा—संज्ञा पुं० दे० "आँचल।"
अचल—संज्ञा पुं० [सं०] १ साड़ी का छोर। आँचल। पल्ला। छोर। दे० "आँचल"। २ देश का वह भाग या प्रांत जो सीमा के समीप हो। ३ किनारा। तट।
अँचला—संज्ञा पुं० [सं० अंचल] १ दे० "आँचल"। २ कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधू धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं।
अँचवन—संज्ञा पुं० [सं० आचमन] १ भोजनोपरांत अथवा पहले जल पीने तथा मुँह-हाथ धोने का कार्य। आचमन।
अँचवना—क्रि० अ० [सं० आचमन] १. भोजन के उपरांत हाथ और मुँह धोना। २ आचमन करना।
अँचवाना—क्रि० स० [हिं० अँचवना का प्रे० रूप] भोजन के उपरांत हाथ-मुँह धुलाना।
अंचित—वि० [सं०] पूजित। आराधित।
अंछर—संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] † १ अक्षर। २ टोना। जादू।
मुहा०—अंछर मारना=जादू करना। टोना करना। मंत्र का प्रयोग करना।
३ मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें मे उभर आते हैं।
अंज—संज्ञा पुं० दे० "कंज"।
अंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुरमा। काजल। २ स्याही। रोशनाई। ३ रात। रात्रि। ४ पश्चिम का दिग्गज। ५ छिपकली। ६. एक प्रकार का बगला जिसे नटी भी कहते हैं। ७ एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। ८. सिद्धांजन जिसके लगाने से कहा जाता है कि जमीन में गड़े खजाने दिखाई पड़ते हैं। ९ एक पर्वत। १० कद्रु से उत्पन्न एक सर्प का नाम। ११ लेप। १२ माया। १३ शब्द की वह वृत्ति जिसमें कई अर्थोंवाले किसी शब्द का अभिप्रेत अर्थ दूसरे शब्दों के योग या प्रसंग से खुले।
वि० काला। सुरमई रंग का।
§संज्ञा पुं० [सं० अर्जन, प्रा० अज्जण] उपार्जन। कमाना।
अंजनकेश—संज्ञा पुं० [सं०] दीपक। दीया।
अंजनकेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नख नामक सुगंध-द्रव्य।
अंजन-शलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ...नी या सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।
अंजनसार—वि० [सं० अंजन+सारित] सुरमा लगा हुआ। अंजनयुक्त।
अंजनहारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंजन+कारी मि० सं० अंजनामिका] १. आँख की पलक के किनारे की फुनसी। बिलनी। गुहांजनी। अंजना। २. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा। कुम्हारी। भृङ्गी।
अंजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केशरी नामक एक बंदर की स्त्री जिसके गर्भ से हनुमान् उत्पन्न हुए थे। २. बिलनी। गुहांजनी। दो रंग की छिपकली।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान।
(पु)क्रि० स० दे० "आँजना"।
अंजनानंदन—संज्ञा पुं० [सं०] अंजना के पुत्र हनुमान्।
अंजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंदन लगाए हुई स्त्री। २ कुटकी। ३ हनुमान् की माता।
संज्ञा स्त्री० [सं० अंजनामिका] पलक की फुड़िया। बिलनी।
अंजबार—संज्ञा पुं० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ का काढ़ा और शरबत हकीम लोग सरदी और कफ के रोग में देते हैं।
अंजर-पंजर—संज्ञा पुं० [अनु+सं० पंजर] १ शरीर का ढाँचा। ठठरी। हड्डी-पसली। २ किसी वस्तु का ढाँचा।
मुहा०—अंजर-पंजर ढीला होना=शरीर के अंग-प्रत्यंग का शिथिल होना। देह का बंद बंद टूटना। शिथिल होना। लस्त होना।
क्रि० वि० अगल-बगल। पार्श्व में।
अंजल—संज्ञा स्त्री० "अंजली"।
संज्ञा पुं० दे० "अन्नजल"।
अंजलि, अंजली—संज्ञा स्त्री० [सं० अंजलि] १. दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट या गड्ढा। २ उतनी वस्तु जितनी एक अंजली में आए। प्रस्थ। कुड़व। हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न। ३ दो पसर। ४ एक नाप जो सोलह तोले के बराबर होती है।
अंजलिगत—वि० [सं०] १ अँजली में आया हुआ। हथेलियों पर रखा हुआ। २ हाथ में आया हुआ। प्राप्त।
अंजलिपुट—संज्ञा पुं० [सं०] अंजली।
अंजलिबद्ध—वि० [सं०] हाथ जोड़े हुए।

अँजवाना—क्रि० स० [हिं० आँजना का प्रे० रूप] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

अंजसा—क्रि० वि० [सं०] शीघ्रता से। जल्दी से।

अंजहा—वि० [हिं० अनाज+हा] [स्त्री० अंजही] अनाज के मेल से बना हुआ।

अंजही—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंजहा] १ वह बाजार जहाँ अन्न बिकता है। अनाज की मंडी। २ अन्न से बनी हुई मिठाई।

अँजाना—क्रि० स० दे० 'अँजवाना'।

अंजाम—संज्ञा पुं० [फा०] १ समाप्ति। पूर्ति। अंत। २ परिणाम। फल।

मुहा०—अंजाम देना=पूर्ण करना।

अंजारना—क्रि० स० [सं० अर्जन] कमाना। संचित करना।

अंजित—वि० [सं०] जिसमें अंजन लगा हो। अंजनसार। आँजा हुआ।

अंजीर—संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।

अंजीरी—संज्ञा स्त्री० दे० "अंजीर"।

अंजुमन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सभा। मजलिस।

अँजुरी, अँजुली(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।

अँजोर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

अँजोरना(पु)†—क्रि० स० [हिं० अँजुरी] १ बटोरना। २ छीनना। हरण करना।

क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] जलाना। प्रकाशित करना। बालना। जैसे, दीपक अँजोरना।

अँजोरा—सं० पुं० [सं० उज्ज्वल] उजाला। प्रकाश।

वि० [सं०उज्ज्वल] उजाला। प्रकाशमान।

यौ०—अँजोरा पाख=शुक्ल पक्ष।

अँजोरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँजोर] १ प्रकाश। रोशनी। चमक। उजाला। २ चाँदनी। चंद्रिका।

वि० स्त्री० उजली। प्रकाशमयी।

अंझा—संज्ञा पुं० [सं० अनध्याय, प्रा० अनज्झा] नागा। तातील। छुट्टी।

अँटना—क्रि० अ० [सं० अन्तर्यम्] १ समाना। किसी वस्तु के भीतर आना। २ किसी वस्तु के ऊपर सटीक बैठना। ठीक चिपकना। ३ भर जाना। ढँक जाना। ४. पूरा पड़ना। काफी होना। बस होना। काम चलना। ५ पूरा होना। खपना।

अंटा—संज्ञा पुं० [सं० अण्ड] १. बड़ी गोली। गोला। २ सूत या रेशम का लच्छा। ३ बड़ी कौड़ी। ४ एक खेल जिसे अंग्रेज हाथीदाँत की गोलियों से मेज पर खेला करते हैं। (अं० बिलियर्ड)।

अंटागुड़गुड़—वि० [हिं० अंटा+गुड़गुड़] नशे में चूर। बेहोश। बेसुध। अचेत।

अंटाघर—संज्ञा पुं० [हिं० अंटा+घर] वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाय।

अंटाचित—वि० [हिं० अंटा+चित] पीठ के बल। सीधा। पीठ जमीन पर किए हुए। पट और औंधा का उलटा।

मुहा०—अंटाचित होना=(१) स्तंभित होना। अवाक् होना। सन्न होना। (२) बेकाम होना। बरबाद होना। किसी काम का न रह जाना। (३) नशे में बेसुध होना। बेखबर होना। अचेत होना। चूर होना।

अंटाबंधू—संज्ञा पुं० [हिं० अंटा+सं० बंधक] जुए में फेंकी जानेवाली कौड़ी।

अँटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी+इया (प्रत्य०)] घास, खर या पतली लकड़ियों आदि का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। गठिया। पूला। मुट्ठा।

अँटियाना—क्रि० स० [हिं० अंटी] १. उँगलियों के बीच में छिपाना। हथेली में छिपाना। २ चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। ३ घास, खर या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बाँधना। ४ टेंट में रखना। ५ गायब करना। हजम करना।

अंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टि या अष्ठि]। १ धोती की लपेट या गाँठ जो कमर पर रहती है और जिसमें कुछ लोग पैसा रखते हैं। मुर्री। २ उँगलियों के बीच का स्थान या अंतर। घाई।

मुहा०—अंटी करना=किसी का माल उड़ा लेना। धोखा देकर कोई वस्तु ले लेना। अंटी मारना=(१) जुआ खेलते समय कौड़ी को उँगलियों के बीच में छिपा लेना। (२) आँख बचाकर धीरे से दूसरे की वस्तु को खिसका लेना। धोखा देकर कोई वस्तु उड़ा लेना। (३) तराजू की डाँड़ी को इस ढंग से पकड़ना कि तौल में चीज कम चढ़े। कम तौलना। डाँड़ी मारना।

३ तर्जनी के ऊपर मध्यमा को चढ़ाकर बनाई हुई मुद्रा। डोड़ैया। ढढ़ोइया। (जब कोई लड़का अस्पृश्य वस्तु या पदार्थ छू लेता है तब और लड़के छूत का दोष मिटाने के लिये ऐसी मुद्रा बनाते हैं।) ४ सूत या रेशम का लच्छा। अट्टी। ५ अँटेरन। सूत लपेटने की लकड़ी। ६. कान में पहनने की छोटी बाली। मुरकी। ७. विरोध। बिगाड़। लड़ाई। शरारत।

अँटौतल—संज्ञा पुं० [हिं० अँटना ?] कोल्हू के बैल की आँख का ढकना।

अँठई—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टपदी] किलनी।

अंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्ठि=गुठली, गाँठ] १ चीयाँ। गुठली। बीज। २ गाँठ। गिरह। ३ गिलटी। कड़ापन।

अँठुली—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्ठि=बीज या गाँठ] १ अंकुरित होता हुआ स्तन। २ मांस की कड़ी गिलटी। गुठली।

अंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंडा। २ अंडकोश। फोता। ३. ब्रह्मांड। लोकमंडल। विश्व। ४ वीर्य। शुक्र। ५ कस्तूरी का नाफा। मृगनाभि। ६. पंच आवरण। दे० "कोश"। ७ कामदेव। ८ पिंड। शरीर। ९ मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

अंडकटाह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मांड। विश्व।

अंडकोश—संज्ञा पुं० [सं०] १ फोता। खुसिया। आँड। बैजा। वृषण। २ ब्रह्मांड लोकमंडल। संपूर्ण विश्व। ३ सीमा। हद। ४. फल का छिलका।

अंडज—संज्ञा पुं० [सं०] अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव, जैसे, सर्प, पक्षी, मछली।

अंडबंड—संज्ञा पुं० [प्रा० अट्टमट्ट=पाप संबंधी अव्यवस्थित विचार] १. असंबद्ध प्रलाप। बे सिर-पैर की बात। ऊटपटाँग। अनाप-शनाप व्यर्थ की बात। २ गाली।

वि० असंबद्ध। बे सिर-पैर का। इधर उधर का। अस्त-व्यस्त। व्यर्थ का।

अँडरना†—क्रि० अ० [सं० आदलन] धान के पौधे का उस अवस्था में पहुँचना जब बाल निकलने पर हों। रेड़ना। गर्भना।

अंडवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फोते का बढ़ना।

अंडस—संज्ञा स्त्री० [?] कठिनाई। संकट। असुविधा।

अंडा—संज्ञा पुं० [सं० अंड+क, प्रा० अंडअ] [वि० अंडैल] १. वह गोल वस्तु जिस में से

पक्षी, जलचर और सरीसृप आदि अंडज जीवों के बच्चे फूटकर निकलते हैं। बैजा।
मुहा०—अंडा ढीला होना=(१) नस ढीली होना। थकावट आना। शिथिल होना। (२) खुक्ख होना। निर्द्रव्य होना। दिवालिया होना। अंडा सरकना=हाथ-पैर हिलना। उठना। चेष्टा या प्रयत्न होना। अंडा सरकाना=हाथ-पैर हिलाना। अंग डुलाना। उठना। उठकर जाना। अंडा सेना=(१) पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुँचाने के लिये बैठना। (२) घर में बैठे रहना। बाहर न निकलना।
२ शरीर। देह। पिंड।

अंडाकार—वि० [सं०] अंडे के आकार का। लंबाई लिए हुए गोल।

अंडाकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडे का आकार। अंडे की शकल।
वि० अंडाकार। लंबाई लिए गोल।

अंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० एरंड] १ रेंडी। रेंड के फल का बीज। २ रेंड या एरंड का पेड़। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अँडुआ—संज्ञा पुं० दे० "आँड"

अँडुआना—क्रि० अ० [सं० अंड] बछड़े का जवान होना। मिलहर होना।

अँडुआ बैल—संज्ञा पुं० [हिं० अँडुआ+बैल] १. बिना बधियाया हुआ बैल। साँड़। २. बड़े अंडकोशवाला आदमी जो उसके बोझ से चल न सके। ३. सुस्त आदमी।

अंडैल—वि० [हिं० अंटा+ऐल (प्रत्य०) जिसके पेट में अंडे हों। अंडेवाली।

अंत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंतिम, अंत्य] १ समाप्ति। आखीर। अवसान। इति। २. शेष या अंतिम भाग। पिछला अंश।
मुहा०—अंत बनना=परिणाम अच्छा होना। अंत बिगड़ना=परिणाम बुरा होना।
३ सीमा। हद। अवधि। पराकाष्ठा। ४. अंतकाल। मरण। मृत्यु। ५. परिणाम। फल। नतीजा। ६. समीप। निकट। ७. बाहर। दूर। ८. प्रलय।
संज्ञा पुं० [सं० अन्तस्] १. अंत करण। हृदय। जी। मन। जैसे, अंत की बात। २ भेद। रहस्य। गुप्त भाव। मन की बात।
Ⓟ संज्ञा पुं० [सं० अन्त्र] आँत। अँतड़ी।
क्रि० वि० अंत में। आखिरकार। निदान।
क्रि० वि० [सं० अन्यत्र, हिं० अनत] और जगह। दूर। अलग।

अंतक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंत करनेवाला। नाश करनेवाला। २. मृत्यु जो प्राणियों के जीवन का अंत करती है। मौत। ३. यमराज। काल। ४. सन्निपातज्वर का एक भेद। ५. ईश्वर, जो प्रलय में सबका संहार करता है। ६. शिव।

अंतकर—वि० दे० "अंतकारी"।

अंतकारी—वि० [सं०] अंत करनेवाला। संहारक। मार डालनेवाला।

अंतकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतिम समय। मरने का समय। २. मृत्यु। मौत। मरण।

अंतक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंत्येष्टि कर्म। मरने के पीछे का क्रिया-कर्म।

अंतग—वि० [सं०] पारगामी। पारगत। जानकारी में पूरा। निपुण।

अंतगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतिम दशा। मृत्यु। मरण। मौत।

अंतघाई—वि० [सं० अन्तघाती] विश्वासघाती। धोखा देनेवाला। कपटी।

अंतच्छद—संज्ञा पुं० [सं० अन्तश्छद] अंदर से ढकनेवाला। आच्छादन।

अंतड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] आँत।
मुहा०—अँतड़ी जलना=पेट जलना। बहुत भूख लगना। अँतड़ी गले में पड़ना=किसी आपत्ति में फँसना। अँतड़ियों का बल खोलना=बहुत दिन के बाद भोजन मिलने पर खूब पेट भर खाना। अँतड़ियों में बल पड़ना (आना)=अँतड़ियों का ऐंठना या दुखना। पेट में दर्द होना।

अंततः—क्रि० वि० [सं०] १. अंत में। २ कम से कम।

अंतपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। पहरू। दरबान। २ राज्य की सीमा पर का पहरेदार।

अंतरंग—वि० [सं०] १. भीतरी। बहिरंग का उलटा। २ अत्यंत समीपी। घनिष्ठ। ३ गुप्त बातों को जाननेवाला। आत्मीय। ४ मानसिक। अंत करण का।
संज्ञा पुं० मित्र। अभिन्न मित्र। दिली दोस्त।

अंतरंग सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी संस्था की वह चुनी हुई छोटी सभा या समिति जो उसकी व्यवस्था करती है। प्रबंध-कारिणी।

अंतरंगी—वि० दे० "अंतरंग"।

अंतर—संज्ञा पुं० [सं०] १. फर्क। भेद। विभिन्नता। अलगाव। २ बीच। मध्य। फासला। दूरी। अवकाश। दो वस्तुओं के बीच का स्थान। ३ मध्यवर्ती काल। दो घटनाओं के बीच का समय। बीच। ४. ओट। आड़। व्यवधान। परदा। दो वस्तुओं के बीच में पड़ी हुई चीज। ५. छिद्र।
वि०—अंतर्द्धान। लुप्त।
क्रि० वि० दूर। अलग। पृथक्।
संज्ञा पुं० [सं० अंतस्] अंत करण। हृदय।
क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अंतरअयन—संज्ञा पुं० [सं० अन्तर्+अयन] अंतर्गृही। तीर्थों की एक परिक्रमा विशेष।

अंतरगत—वि० दे० "अंतर्गत"।

अंतरगति—संज्ञा स्त्री० अर्थ के लिए दे० "अंतर्गति"। उ०—यह विचार अंतरगति हारति–गीता०।

अंतरचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिशाओं और विदिशाओं के बीच के अंतर को चार चार भागों में बाँटने से बने हुए ३२ भाग। २ दिग्विभागों में चिड़ियों की बोली सुनकर शुभाशुभ फल बताने की विद्या। ३. तंत्र के अनुसार शरीर के भीतर माने हुए मूलाधार आदि कमल के आकार के छ चक्र। षट्चक्र। ४ आत्मीय वर्ग। भाई-बंधु।

अंतरजामी—संज्ञा पुं० दे० "अंतर्यामी"।

अंतरतम—संज्ञा पुं० [सं० अन्तर+तम (प्रत्य०)] १ हृदय का सबसे भीतरी भाग। २ विशुद्ध अंत करण। ३ किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग।

अंतरदशा—संज्ञा स्त्री० [सं० अंतर्दशा] १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का भोग काल। २ रहस्य।

अंतरदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

अंतरपट, अँतरपटⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] १ परदा। आड़ करने का कपड़ा। २. आड़। ओट। ३ विवाह-मंडप में अग्नि और वर-कन्या के बीच में डाला हुआ परदा। ४ अंतरौटा। अँगिया। भीतर का कपड़ा। ५ परदा। छिपाव। दुराव। ६ धातु या औषधि को फूँकने के पहले उसकी लुगदी वा संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़मिट्टी। कपड़ौरी। ७. गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

अंतरराष्ट्रीय—वि० दे० "अंतर्राष्ट्रीय"।

अँतरा—संज्ञा पुं० [सं० अंतर] १. अभा। नागा। अंतर। बीच। २ वह ज्वर जो एक दिन के अंतर से आता है। ३ कोना।
वि० एक बीच में छोड़कर दूसरा।

अंतरा—क्रि० वि० [सं०] १. मध्य। २ निकट। ३ अतिरिक्त। सिवाय। ४ पृथक्। ५ विना।
संज्ञा पुं० १ किसी गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त वाकी और पद या चरण। २. प्रातःकाल और संध्या के बीच का समय। दिन।

अंतरात्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवात्मा। २ अंतःकरण।

अंतराना—क्रि० स० [सं० अंतर] १ अलग करना। पृथक् करना। २ अंदर करना। ३ भेद या फूट डालना।

अंतराय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २ ज्ञान का वाधक। ३ योग की सिद्धि के विघ्न जो नौ हैं।

अंतराल—संज्ञा पुं० [सं०] १ घेरा। मडल। आवृत स्थान। २ मध्य। बीच।

अंतरिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के बीच का शून्य स्थान। आकाश। अधर। शून्य। २ स्वर्गलोक। ३ तीन प्रकार के केतुओं में से एक।
वि० अंतर्द्धान। गुप्त। अप्रकट। गायव।

अंतरिक्ष विज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें वायु-मडल की गतियों और विक्षोभों आदि का विवेचन होता है।

अंतरिख, अंतरिच्छ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।

अंतरित—वि० [सं०] १ भीतर किया हुआ। भीतर रखखा हुआ। छिपा हुआ। २ अंतर्द्धान। गुप्त। गायव। तिरोहित ३. आच्छादित। ढका हुआ। ४ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर किया हुआ।

अंतरिम—वि० [अं० इंटेरिम के अनुकरण पर सं० अंतर से बना शब्द] दो कालों या कार्यों आदि के बीच का। मध्यवर्ती। अंतर्वर्ती।

अँतरिया—संज्ञा पुं० [हिं० अंतर] एक दिन का अंतर देकर आनेवाला ज्वर। पारी का बुखार। इकनरा।

अँतरीख—दे० "अंतरिक्ष"।

अंतरीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वीप। टापू। २ पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो। रास।

अंतरीय—संज्ञा पुं० [सं०] अधोवस्त्र। कमर में पहनने का वस्त्र। धोती।
वि० भीतर का, भीतरी।

अंतरु—संज्ञा पुं० [सं० अंतर] १ भेद। २. ओट। ३. मनमुटाव। ४ हृदय।

अँतरे—क्रि० वि० [सं० अंतर] बीच में। मध्य में।

अँतरौटा—संज्ञा पुं० [सं० अंतर+पट] वारीक साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा। कपड़े का वह टुकड़ा जिसे स्त्रियाँ इसलिये कमर में लपेट लेती हैं जिसमें महीन साड़ी के ऊपर से शरीर न दिखाई दे। साया। अस्तर।

अंतर्गत—वि० [सं०] १ भीतर आया हुआ। समाया हुआ। शामिल। अंतर्भूत। सम्मिलित। २ भीतरी। छिपा हुआ। गुप्त। ३ हृदय के भीतर का। अंतःकरण-स्थित।
(पु)संज्ञा पुं० मन। जी। हृदय। चित्त।

अंतर्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मन का भाव। चित्तवृत्ति। भावना। २ चित्त की अभिलाषा। हार्दिक इच्छा। कामना।

अंतर्गृह—संज्ञा पुं० [सं०] भीतर का घर। भीतरी गृह।

अंतर्गृही—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीर्थस्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा।

अंतर्घट—संज्ञा पुं० [सं०] अंतःकरण। हृदय।

अंतर्जानु—वि० [सं०] हाथों को घुटनों के बीच किए हुए।

अंतर्ज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] मन के अंदर होनेवाला ज्ञान। अंतर्बोध। प्रज्ञा। परिज्ञान।

अंतर्दशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में किसी ग्रह के भोगकाल (दशा) में होनेवाला अन्य ग्रहों का भोगकाल।

अंतर्दशाह—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं में मरने के पीछे दस दिनों के भीतर होनेवाले कर्मकांड।

अंतर्दाह—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का दाह या जलन। मन का घोर कष्ट।

अंतर्दृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञानचक्षु। प्रज्ञा।

अंतर्द्धान—संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन। छिपाव। तिरोधान।
वि० गुप्त। अलक्ष। गायव। अदृश्य। अंतर्हित। अप्रकट। लुप्त। छिपा हुआ।

अंतर्नयन—संज्ञा पुं० [सं०] भीतरी या ज्ञान के नेत्र।

अंतर्निविष्ट—वि० [सं०] १. भीतर वैठा हुआ। अंदर रखा हुआ। २ अंतःकरण में स्थित। मन में जमा हुआ। हृदय में बैठा हुआ।

अंतर्निहित—वि० [सं०] अंदर छिपा हुआ। समाविष्ट।

अंतर्पट—संज्ञा पुं० [सं०] १ आड़। ओट। २ परदा। ३ अंतश्छद।

अंतर्बोध—संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्मज्ञान। २ आंतरिक अनुभव।

अंतर्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंतर्भावित, अंतर्भूत] १. भीतर समावेश। अंतर्गत होना। शामिल होना। २ भीतरी मतलव। आंतरिक अभिप्राय। आशय। मंशा। ३ तिरोभाव। विलीनता। छिपाव। ४ नाश। अभाव।

अंतर्भावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मानसिक चिंतन। ध्यान। सोच-विचार। चिंता। २ गुणन-फल के अंतर से संख्याओं को ठीक करना।

अंतर्भावित—वि० [सं०] १. अंतर्गत। शामिल हुआ। भीतरी। २ भीतर किया हुआ। छिपाया हुआ। लुप्त।

अंतर्भुक्त—वि० [सं०] भीतर आया हुआ। शामिल। अंतर्भूत।

अंतर्भूत—वि० [सं०] अंतर्गत। शामिल।
संज्ञा पुं० जीवात्मा। प्राण। जीव।

अंतर्मना—वि० [सं० अन्त+मन] अनमना। उदास।

अंतर्मल—संज्ञा पुं० [सं०] मन का कलुष या बुराई।

अंतर्मुख—वि० [सं०] जिसका मुँह भीतर की ओर हो। भीतर मुँह वाला। जिसका छिद्र भीतर की ओर हो। जैसे, अंतर्मुख फोड़ा।
वि० भीतर की ओर प्रवृत्त। जो वाहर से हट कर भीतर ही लीन हो।

अंतर्यामी—वि० [सं० अन्तर्यामिन्] १. जिसकी गति मन के भीतर तक हो। भीतर की वता जाननेवाला। मन की वात का पता रखनेवाला। २ अंतःकरण में स्थिर होकर प्रेरणा करनेवाला। चित्त पर दवाव या अधिकार

रखनेवाला।

सज्ञा पु० ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर।

अंतर्राष्ट्रीय—वि० [सं० अतस्+राष्ट्रीय] (अ० इटरनैशनल) ससार के सब या अनेक राष्ट्रों से सबध रखनेवाला। सार्वराष्ट्रीय।

अतर्लंव—सज्ञा पुं० [स०] वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लव गिरा हो।

अंतर्लापिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।

अंतर्लीन—वि० [स०] मग्न। भीतर छिपा हुआ या डूबा हुआ। गर्क। विलीन।

अतर्वत्नी—वि० स्त्री० [स०] १ गर्भवती। गर्भिणी। २ भीतरी। अदर की।

अंतर्वर्ती—वि० [स० अन्तर्वर्तिन्] १. भीतर रहनेवाला। २ अतर्गत। अतर्मुक्त।

अतर्विकार—सज्ञा पुं० [स०] शरीर का धर्म। जैसे, भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि।

अंतर्वेगी ज्वर—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को पसीना नहीं आता।

अतर्वेद—संज्ञा पु० [स०] [वि० अनर्वेदी] १ गगा और यमुना के बीच का देश। ब्रह्मावर्त। २ दो नदियों के बीच का देश। दोआब।

अंतर्वेदना—सज्ञा स्त्री० [स०] अत करण की वेदना। भीतरी या मानसिक कष्ट।

अतर्वेदी—वि० [स० अतर्वेदीय] अनवद का निवासी। गगा-यमुना के दोआब में बसनेवाला।

अतर्हित—वि० [सं०] १ तिरोहित। गुप्त। गायब। २ छिपा हुआ। अतर्द्धान। अदृश्य।

अतशय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मृत्यु-शय्या। मरनखाट। भूमिशय्या। २ श्मशान। मसान। मरघट। ३ मरण। मृत्यु।

अतस्—सज्ञा पुं० [सं०] अत करण। हृदय।

अतसमय—सज्ञा पु० [स०] मृत्युकाल।

अतस्तल—सज्ञा पुं० [सं० अतस्+तल] हृदय। मन।

अतस्ताप—सज्ञा पु० [स०] मानसिक कष्ट।

अतस्थ—वि० [स०] १ भीतर का। भीतरी। २ बीच में स्थित। मध्य का। मध्यवर्ती। बीचवाला। ३ य, र ल, व, ये चारों वर्ण।

अतस्थित—वि० दे० "अतस्थ"।

अंतस्नान—सज्ञा पु० [स०] अवभृथ स्नान। वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर हो।

अतस्सलिल—वि० [स०] [स्त्री० अतस्सलिला] (नदी) जिसके जल का प्रवाह भीतर हो, वाहर दिखाई न दे। जैसे, अतस्सलिला सरस्वती।

अतस्सलिला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती नदी। २ फलगू नदी।

अताराष्ट्रीय—वि० दे० "अतर्राष्ट्रीय"।

अँतावरि, अतावरी(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० अत्रावलि] अँतडी। आँतों का समूह। उ०—धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।—मानस।

अंतावसायी—सज्ञा पु० [सं०] १ नाई। हज्जाम। २ हिंसक। ३ चाडाल।

अंतिम—वि० [स०] १ जो अत में हो। अत का। आखिरी। सबके पीछे का। २ चरम। सबसे बढकर। हद दरजे का।

अतेउर, अतेवर(पु)—सज्ञा पु० [स० अन्त-पुर] अत पुर। जनानखाना।

अतेवासी—सज्ञा पु० [सं०] १ गुरु के समीप रहनेवाला। शिष्य। चेला। २ ग्राम के बाहर रहनेवाला। ३ चाडाल। अत्यज।

अंत.करण—सज्ञा पुं० [स०] १ वह भीतरी इंद्रिय जो सकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा दु खादि का अनुभव करती है। मन। २ विवेक। नैतिक बुद्धि।

अत कोण—सज्ञा पुं० [सं०] १ भीतरी कोना। २ जब एक सीधी रेखा दो सीधी रेखाओं को काटे तो उसके एक ओर के दोनों भीतरी कोण। (ज्या०)

अंत.क्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] भीतरी व्यापार। मानसिक कर्म।

अत पटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी चित्रपट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य। २ नाटक का परदा।

सज्ञा स्त्री० सोमरस जब वह छानने के लिये छनने में रखा हो।

अंत.पुर—सज्ञा पु० [सं०] जनानखाना। भीतरी महल। रनिवास।

अत पुरिक—सज्ञा पुं० [सं०] अत पुर का रक्षक। कचुकी।

अत शरीर—सज्ञा पुं० [स०] लिंग शरीर। सूक्ष्म शरीर।

अत सज्ञा—सज्ञा पुं० [स०] जो जीव अपने सुख-दु ख के अनुभव को प्रकट न कर सके। जैसे, वृक्ष।

अंत्य—वि० [स०] अत का। अतिम। आखिरी। सबसे पिछला।

सज्ञा पुं० वह जिसकी गणना अत में हो। जैसे, लग्नों में मीन, नक्षत्रों में रेवती, वर्णों में शूद्र, अक्षरों में 'ह'।

अत्यकर्म—सज्ञा पु० [सं०] अत्येष्टि क्रिया।

अत्यज—सज्ञा पु० [स०] वह जो अतिम वर्ण में उत्पन्न हो। वह शूद्र जो छूने योग्य न हो या जिसका छुआ जल द्विज ग्रहण न कर सकें, जैसे, धोबी, चमार।

अत्यवर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ अतिम वर्ण। शूद्र। २ अंत का अक्षर 'ह'। ३ पद के अत में आनेवाला अक्षर।

अत्यविपुला—सज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छद का एक भेद।

अत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] चाडाली। चाडाल की स्त्री। चाडालिनी।

अत्याक्षर—सज्ञा पु० [स०] १ किसी शब्द या पद के अत का अक्षर। २ वर्णमाला का अतिम अक्षर 'ह'।

अत्याक्षरी—सज्ञा स्त्री० [स०] पद्य-पाठ की वह प्रतियोगिता जिसमें किसी कहे हुए पद्य के अतिम अक्षर से आरभ होनेवाला दूसरा पद्य पढा जाता है। (विद्यार्थियों में प्रचलित)।

अत्यानुप्रास—सज्ञा पुं० [स०] पद्य के चरणों के अतिम अक्षरों का मेल। तुक।

अत्येष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] मृतक का शवदाह से सपिंडन तक का कर्म। क्रिया-कर्म।

अत्र—सज्ञा पु० [स०] आँत। अँतड़ी।

अत्रकूजन—सज्ञा पुं० [सं०] आँतों का शब्द। आँतों की गुड़गुड़ाहट।

अत्रवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] आँत उतरने का रोग।

अंत्रांडवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रोग जिसमें आँतें उतरकर फोते में चली आती हैं और फोता फूल जाता है।

अत्री(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] अँतडी।

अँथऊ(पु)—सज्ञा पुं० [स० अस्त,प्रा० अत्थ] सूर्यास्त से पहले का भोजन। (जैन)

अँथवना—क्रि० अ० दे० "अथवना"।

अदर—क्रि० वि० [फा०] किसी प्रकार की सीमा के अतर्गत। भीतर।

अँदरसा—सज्ञा पुं० [स० अन्न+रस] एक प्रकार की मिठाई।

अदरूनी—वि० [फा०] भीतरी। भीतर का।

अंदाज—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा अंदाजी, क्रि० वि० अंदाजन] १ अटकल। अनुमान। मान। नाप-जोख। कूत। तखमीना। दे० "अंदाजा"। २ ढव। ढंग। तौर। तर्ज। ३ मटक। भाव। चेष्टा।

अंदाजन—क्रि० वि० [फा०] १ अंदाज से। अटकल से। २ लगभग। करीब।

अंदाजपट्टी—संज्ञा स्त्री० [फा० अंदाज+हिं० पट्टी (भूभाग)] खेत में लगी हुई फसल के मूल्य को कूतना। कनकूत।

अंदाजा—संज्ञा पुं० [फा०] अटकल। अनुमान। कूत। तखमीना।

अंदाना—क्रि० स० [सं० अन्तर ?] बचाना। बरकाना। उ०—परिवा नवमी पुरव न भाये। दूइज दसमी उतर अँदाये।—पद्मावत।

अंदु, अंदुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी को बाँधने का साँकड़ा या रस्सी। २ पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पाजेब। पैरी। पैंजनी।

अंदुआ—संज्ञा पुं० [सं० अंदुक] हाथियों के पिछले पैर में डालने के लिये लकड़ी का बना काँटेदार यंत्र।

अंदेशा—संज्ञा पुं० [फा०] १ संशय। संदेह। शक। २ खटका। आशंका। भय। डर। ३ हर्ज। हानि। ४ दुविधा। असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश। ५ सोच। चिंता।

अँदेस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंदेशा"।

अंदेसवा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंदेशा"।

अंदोर†—संज्ञा पुं० [सं० आंदोल=झूलना, हलचल] शोर। हल्ला। हुल्लड़। उ०—घेरि चहुँओर, करिसोर अंदोरवन, धरनि आकास-चहुँ पास छायौ।—सूर०।

अंदोरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंदोर"।

अंदोह—संज्ञा पुं० [फा०] १ शोक। दुःख। रंज। खेद। २ तरद्दुद। खटका।

अंध—वि० [सं०] [संज्ञा अंधता, अंधत्व] १ नेत्रहीन। बिना आँख का। अंधा। जिसकी आँखों में ज्योति न हो। जिसमें देखने की शक्ति न हो। २ अज्ञानी। जो जानकार न हो। अनजान। मूर्ख। बुद्धिहीन। अविवेकी। ३ असावधान। अचेत। गाफिल। ४ उन्मत्त। मतवाला। मस्त।

संज्ञा पुं० १ वह व्यक्ति जिसके आँखें न हों। नेत्रहीन प्राणी। अंधा। २ जल। पानी। ३ उल्लू। ४. चमगादड़। ५ अंधेरा। अंधकार। ६ कवियों के बाँधे हुए पथ के विरुद्ध चलने का काव्य-संबंधी दोष।

अंधक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेत्रहीन मनुष्य। दृष्टिरहित व्यक्ति। अंधा। २. कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य।

अंधकार—संज्ञा पुं० [सं०] अँधेरा।

अंधकाल—संज्ञा पुं० दे० "अंधकार"।

अंधकूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंधा कुआँ। सूखा कुआँ। वह कुआँ जिसका जल सूख गया हो और जो घास-पात से ढका हो। २ एक नरक का नाम। ३ अँधेरा।

अंधखोपड़ी—वि० [सं० अंध+हिं० खोपड़ी] जिसके मस्तिष्क में बुद्धि न हो। मूर्ख। भोंदू। नासमझ।

अंधड़—संज्ञा पुं० [सं० अंध, प्रा० अंधल] गर्द लिए हुए झोंके की वायु। आँधी। तूफान।

अंधतमस—संज्ञा पुं० [सं०] महा अंधकार। गहरा अँधेरा। गाढ़ा अँधेरा।

अंधता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधापन। दृष्टिहीनता।

अंधतामिस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोर अंधकारयुक्त नरक। बड़ा अँधेरा नरक। २१ बड़े नरकों में दूसरा। २ सांख्य में इच्छा के विघात या विपर्यय के पाँच भेदों में से एक। जीने की इच्छा रहते हुए मरने का भय। ३ पाँच क्लेशों में से एक। मृत्यु का भय। (योग)

अंधत्व—संज्ञा पुं० दे० "अंधता"।

अंधधुंध(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंध"।

अंधपरंपरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना समझे बूझे पुरानी चाल का अनुकरण। एक को कोई काम करते देखकर दूसरे का बिना किसी विचार के उसे करना। भेड़िया-धसान।

अंधपूतनाग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों का एक रोग।

अंधबाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अंधवायु] आँधी। तूफान।

अंधर—संज्ञा पुं० [हिं० अंधड़] १ हवा का धूल से भरा हुआ झोंका। आँधी। २ अँधेरा।

अँधरा(पु)†—वि० दे० "अंधा"।

अंधरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंधड़] १ आँधी। अंधी स्त्री। २ पहिए की पुट्ठियों अर्थात् गोलाई को पूरा करनेवाली धनुपाकार लकड़ियों की चूल।

अंधल—वि० [सं० अन्ध, प्रा० अन्धल] अंधा।

संज्ञा पुं० अंधड़। आँधी।

अंधविश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] बिना विचार किए किसी बात का विश्वास। विवेकशून्य धारणा।

अंधस—संज्ञा पुं० [देश०] भात।

अंधसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंधे की संतान। २ कौरव।

अंधसैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] अशिक्षित सेना।

अंधा—संज्ञा पुं० [सं० अंधक] [स्त्री० अंधी] बिना आँख का जीव। वह जिसको कुछ सूझता न हो। दृष्टिरहित जीव।

वि० १ बिना आँख का। दृष्टिरहित। जो देख न सके। २ विचाररहित। अविवेकी। भले-बुरे का विचार न रखनेवाला।

मुहा०—अंधा बनना=जान-बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना। अंधे की लकड़ी या लाठी=(१) एकमात्र आधार। सहारा। आसरा। (२) एक लड़का जो कई लड़कों में बचा हो। इकलौता लड़का। अंधा दिया=वह दीपक जो धुँधला या मंद जलता हो। अंधा भैंसा=लड़कों का एक खेल।

३ जिसमें कुछ दिखाई न दे। अँधेरा।

यौ०—अंधा शीशा या आईना=धुँधला शीशा। वह दर्पण जिसमें चेहरा साफ न दिखाई देता हो। अंधा कुआँ=(१) सूखा कुआँ। वह कुआँ जिसमें पानी न हो और जिसका मुँह घास-पात से ढका हो। (२) लड़कों का एक खेल।

अंधाधुंध—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंधा+धुंध] १ बड़ा अँधेरा। घोर अंधकार। २ अंधेर। अविचार। अन्याय। गड़बड़। धींगाधींगी।

वि० १ बिना सोच-विचार का। विचार-रहित। २ अधिकता से। बहुतायत से।

अंधाधुंधी—संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंध"।

अंधार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा"।

संज्ञा पुं० [सं० आधार] रस्सी का जाल जिसमें घास, भूसा आदि भरकर बैल पर लादते हैं।

अंधाहुली—संज्ञा स्त्री० दे० "चोरपुष्पी"।

अँधियार†—संज्ञा पुं०, वि० दे० "अँधेरा"।

अँधियारक टोला—संज्ञा पुं० [सं० अंधक ? +हिं० टोला] अंधकों का स्थान (अंधक यदुवंशियों की एक शाखा है)।

अंधियारा(पु)†—संज्ञा पुं०, वि० दे० "अँधेरा"।

अँधियारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरी] १ अधकार। अँधेरा। २ उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों और चीतों की आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी।
अँधियाली—संज्ञा स्त्री० दे० "अँधियारी"।
अँधेर—संज्ञा पुं० [सं० अधकार] १ अन्याय। अत्याचार। जुल्म। २ उपद्रव। गड़बड़। कुप्रबंध। अधाधुध। धींगाधींगी।
अँधेरखाता—संज्ञा पुं० [हिं० अँधेर+खाता] १ हिसाब-किताब अथवा व्यवहार में अत्यधिक गड़बड़ी। व्यतिक्रम। २. अन्यथाचार। ३ अन्याय। अविचार। ४ कुप्रबंध।
अँधेरना(पु)—क्रि० स० [हिं० अँधेर] अधकारमय करना।
अँधेरा—संज्ञा पुं० [सं० अंधकार, प्रा० अधयार] [स्त्री० अँधेरी] १. अधकार। तम। प्रकाश का अभाव। उजाले का उलटा। २ धुँधलापन। धुंध।
यौ०—अँधेरा गुप=ऐसा अँधेरा जिसमें कुछ दिखाई न दे। घोर अधकार।
३ छाया। परछाईं। ४. उदासी। उत्साह-हीनता।
वि० अधकारमय। प्रकाशरहित।
मुहा०—अँधेरे घर का उजाला=(१) इकलौता बेटा। (२) अत्यंत प्रिय। (३) सुलक्षण। शुभ लक्षणवाला। कुलदीपक। वंश की मर्यादा बढ़ानेवाला। (४) घर की शोभा। अँधेरा पाख या पक्ष=कृष्ण पक्ष। बदी। मुँह अँधेरे या अँधेरे मुँह=बड़े तड़के। बड़े सबेरे।
अँधेरा-उजाला—संज्ञा पुं० [हिं० अँधेरा+उजाला] कागज मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना।
अँधेरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरी+इया (प्रत्य०)] १ अधकार। अँधेरा। २ अँधेरी रात। काली रात। ३ अँधेरा पक्ष। अँधेरा पाख।
संज्ञा स्त्री० [देश०] ऊख की पहली गोड़ाई।
अँधेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरा] १ अधकार। तम। प्रकाश का अभाव। २ अँधेरी रात। काली रात। ३ आँधी। अंधड़। ४ घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा।
मुहा०—अँधेरी डालना या देना=(१) आँखें मूँदकर दुर्गति करना। (२) आँख में धूल डालना। धोखा देना।
वि० प्रकाशरहित। बिना उजेले की। जैसे—अँधेरी रात।
मुहा०—अँधेरी कोठरी=(१) पेट। गर्भ। कोख। (२) गुप्त भेद। रहस्य।
अँधौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अध+पट, प्रा० अधवटी, अधौटी] बैल या घोड़े की आँख बद करने का ढक्कन या परदा।
अँध्यार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा।"
अँध्यारी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अँधेरी"।
अंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहेलिया। व्याध। शिकारी। २ वैदेह पिता और कारावर माता से उत्पन्न नीच जाति।
अंध्रभृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्राचीन राजवंश।
अंब—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबा"।
संज्ञा पुं० [सं० आम्र] आम का पेड़।
अंबक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँख। नेत्र। २ ताँबा। ३ पिता।
अंबर—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। आसमान। २ वस्त्र। कपड़ा। पट। ३ स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की एकरंगी किनारेदार धोती। ४ कपास। ५ एक सुगंधित वस्तु जो ह्वेल मछली की अँतड़ियों में जमी हुई मिलती है। ६. एक इत्र। ७ अभ्रक धातु। अबरक। ८ राजपूताने का एक पुराना नगर। ९. अमृत। १० प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उत्तर-भारत का एक देश।
संज्ञा पुं० [सं० अभ्र] बादल। मेघ।
अंबरडंबर—संज्ञा पुं० [सं० अंबर+आडम्बर] सूर्यास्त के समय की लाली।
अंबरबारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक झाड़ी जिसकी जड़ और लकड़ी से रसवत या रसौत निकलता है। चित्रा। दारुहल्दी।
अंबरबेलि—संज्ञा स्त्री० [सं० अंबर+वेल्लि] आकाशबेल।
अँबराई—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र=आम+राजी=पंक्ति] आम का बगीचा। आम की बारी।
अँबराउँ, अँबराऊँ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आम्र-राजि या आम्राराम] आमों की बगिया।
अँबराव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अँबराई"।
अंबरांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दिखाई देता है। २ कपड़े का छोर।
अंबरी—संज्ञा, वि० [सं० अम्बर] जिसमें अंबर (सुगंधित द्रव्य) पड़ा या मिला हो।
अंबरीष—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या का एक सूर्यवंशी परम वैष्णव राजा।
अंबरौक—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।
अंबल—संज्ञा पुं० १ दे० "अम्ल"। २. दे० "अमल"।
अंबष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अंबष्ठा] १ पंजाब के मध्य भाग का पुराना नाम। २ अंबष्ठ देश में बसनेवाला मनुष्य। ३. ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति। (स्मृति)। ४ महावत। हाथीवान। फीलवान।
अंबष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अंबष्ठ की स्त्री। २ एक लता। पाढ़ा। ब्राह्मणी लता।
अंबा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। जननी। माँ। अम्मा। २. पार्वती। गौरी। दुर्गा। ३ अंबष्ठा। पाढ़ा। ४ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हरण कर लाए थे।
संज्ञा पुं० दे० "आम"।
अँबाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "आमड़ा"
अंबापोली—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र+पोली=रोटी] अमावट। अमरस।
अंबार—संज्ञा पुं० [फा०] ढेर। समूह।
अंबारी—संज्ञा स्त्री० [अ० अमारी] १ हाथी की पीठ पर रखने का हौदा जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। २ छज्जा।
अंबालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। मा। २ अंबष्ठा लता। पाढ़ा। ३ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में से सबसे छोटी जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हर लाए थे।
अंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। पार्वती। भगवती। देवी। २ माता। माँ। ३ जैनों की एक देवी। ४. कुटकी का पेड़। ५ अंबष्ठा लता। पाढ़ा। ६ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मँझली जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हर लाए थे।
अंबिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंबिका के पुत्र। २ गणेश। ३ कार्तिकेय। ४. धृतराष्ट्र।
अँबिया—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का छोटा कच्चा फल जिसमें जाली न पड़ी हो। टिकोरा। कैरी।
अँबिरती—संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत ?] तार का एक पुराना बाजा। अमृत। अमृत कुंडली। उ०—बाज अँबिरती अति गहगही। —पद्मावत।

अंबिरथाⓅ—वि० [सं० वृथा] वृथा। व्यर्थ।

अंबु—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। पानी। २ सुगंधवाला। ३. जन्मकुंडली के बारह स्थानों वा घरों में चौथा। ४ चार की संख्या।

अंबुज, अंबुजात—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अंबुजा] १ जल में उत्पन्न वस्तु। २ कमल। ३ बेंत। ४ वज्र। ५ ब्रह्मा। ६ शंख।

अंबुद—वि० [सं०] जो जल दे।

संज्ञा पुं० १ बादल। २ मोथा।

अंबुधर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

अंबुधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंबुनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंबुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। सागर। २ वरुण। ३ शतभिषा नक्षत्र।

अंबुपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ वरुण।

अंबुभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल। २ मोथा ३ समुद्र।

अंबुरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

अंबुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

अंबुवेतस्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बेंत जो पानी में होता है।

अंबुशायी—संज्ञा पुं० [सं० अंबुशायिन्] विष्णु।

अंबोधिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "अंबुधि"।

अंबोह—संज्ञा पुं० [फा०] भीड़भाड़। जमघट। झुंड। समाज। समूह।

अंब्रितबानीⓅ—वि० [सं० अमृत+वर्णी] अमृत के वर्ण या रंग का।

अंभ—संज्ञा पुं० [संज्ञा अम्भस्] १ जल। पानी। २ पितृलोक। ३ लग्न से चौथी राशि। ४ चार की संख्या। ५ देव। ६ असुर। ७ पितर।

अंभस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं० अम्भस्+स्तम्भन] एक प्रकार का मंत्र-प्रयोग जिसके द्वारा जल का प्रभाव या वर्षा रोक दी जाती है।

अंभनिधि—संज्ञा पुं० दे० "अंभोनिधि"।

अंभसार—संज्ञा पुं० [सं० अंभ+सार] मोती।

अंभस्तुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक।

अंभोज—वि० [सं०] जल में उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १ कमल। २ सारस पक्षी। ३ चंद्रमा। ४ कपूर। ५ शंख।

अंभोद, अंभोधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल। मेघ। २ मोथा।

अंभोनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

अंभोराशि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंभोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

अँवरा, अँवला†—संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।

अँवराई—संज्ञा स्त्री० दे० "अमराई"।

अँवासना†—क्रि० स० दे० "अनवासना"।

अँविरित—संज्ञा पुं० [सं० अमृत] अमृत।

अंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाग। विभाग। २ हिस्सा। बखरा। बाँट। ३ भाज्य अंक। ४ भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ५ चौथा भाग। ६ कला। सोलहवाँ भाग। ७ वृत्त या परिधि का ३६० वाँ भाग। ८ कारबार या लाभ का हिस्सा। ९ कंधा। १० बारह आदित्यों में से एक।

अंशक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अंशिका] १ भाग। टुकड़ा। २ दिन। दिवस। ३ हिस्सेदार। साझीदार। पट्टीदार।

वि० १ अंश धारण करनेवाला। अंशधारी। २ बाँटनेवाला। विभाजक।

अंशतः—क्रि० वि० [सं०] किसी अंश में।

अंशपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज जिसमें पट्टीदारों का अंश या हिस्सा लिखा हो।

अंशल—संज्ञा पुं० [सं०] चाणक्य।

अंशसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

अंशावतार—संज्ञा पुं० [सं०] वह अवतार जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ भाग ही आया हो। वह जो पूर्णावतार न हो।

अंशी—वि० [सं० अंशिन्] [स्त्री० अंशिनी] १ अंशधारी। अंश रखनेवाला। २ देवता की शक्ति या सामर्थ्य रखनेवाला। अवतारी।

संज्ञा पुं० हिस्सेदार। अवयवी।

अंशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। प्रभा। २ लता का कोई भाग। ३ सूत। तागा। ४ बहुत सूक्ष्म भाग। ५ सूर्य।

अंशुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पतला या महीन कपड़ा। २. रेशमी कपड़ा। ३ उपरना। दुपट्टा। ४ ओढ़नी। ५ तेजपात।

अंशुजाल—संज्ञा पुं० [सं० अंशु+जाल] १ किरण-समूह। २ प्रकाश।

अंशुधर—संज्ञा पुं० [सं० अंशु+धर] १ किरणधारी। २ रवि। ३ चंद्रमा। ४ आग। ५ दीप। ६ देव। ७ ब्रह्मा। ८ प्रतापशाली।

अंशुनाभि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बिंदु जिसपर समानांतर प्रकाश की किरणें तिरछी और इकट्ठी होकर मिलें।

अंशुमान्—संज्ञा पुं० [सं० अंशुमत्] १ सूर्य। २ अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा।

वि० १ किरणोंवाला। २ चमकीला।

अंशुमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की किरणें या उनका जाल।

अंशुमाली—संज्ञा पुं० [सं० अंशुमालिन्] सूर्य।

अंस—संज्ञा पुं० दे० "अंश"।

अंसल—वि० [सं०] पराक्रमशील। प्रतापी। बलवान्।

अंसु—संज्ञा स्त्री० [सं० अंशु] किरण। रश्मि।

संज्ञा पुं० [सं० अश्रु] आँसू।

अँसुआ, अँसुवाⓅ‡—संज्ञा पुं० दे० "आँसू"।

अँसुवानाⓅ—क्रि० अ० [हिं० आँसू] अश्रुपूर्ण होना। आँसू से भर जाना।

अंह—संज्ञा पुं० [सं० अंहस्] १ पाप। दुष्कर्म। अपराध। २ दुःख। व्याकुलता। ३ विघ्न। बाधा।

अँहड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] तौलने का बाट। बटखरा।

अँहस—संज्ञा पुं० दे० "अंह"।

अंहस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] क्षय मास।

अँहुड़ी—संज्ञा स्त्री० [?] एक लता। बाकला।

अ—उप० संज्ञा और विशेषण शब्दों के पहले लगकर यह उनके अर्थों में फेरफार करता है। जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है। जैसे—अधर्म, अन्याय। कहीं कहीं यह अक्षर शब्द के अर्थ को दूषित भी करता है। जैसे—अभागा, अकाल। स्वर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब यह उपसर्ग लगाना होता है, तब उसे 'अन्' कर देते हैं। जैसे—अनंत, अनेक, अनीश्वर।

संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ विराट्। ३ अग्नि। ४ विश्व। ५ ब्रह्मा। ६ इंद्र। ७ ललाट। ८ वायु। ९ कुबेर। १० अमृत। ११ कीर्ति। १२ सरस्वती।

वि० १ रक्षक। २ उत्पन्न करनेवाला।

अइसⓅ†—वि० [सं० ईदृश] ऐसा। इस प्रकार का।

अइसइ(पु)†—क्रि० वि० [ईदृशो हि] ऐसे ही। इसी प्रकार ही।
अउ(पु)—प्रयो० [स० अवर] और।
अउगाह(पु)†—वि० [स० अवगाध] १ अथाह। बहुत गहरा। २ कठिन।
अउधानू†—सज्ञा पु० [स० अवधान] गर्भाधान। गर्भस्थिति।
अउपन(पु)†—सज्ञा पुं० [प्रा० ओप्पा] मान पर घिसना। सान देना।
अउर(पु)†—प्रयो० दे० "और"।
अउहेरी—सज्ञा स्त्री० [स० अवहेला] अवहेलना। अपमान।
अऊत(पु)—वि० [स० अपुत्र, प्रा० अउत्त] [स्त्री० अऊती] बिना पुत्र का। निपूता।
अऊलना(पु)†—क्रि० अ० दे० "औलना"।
क्रि० अ० [स० शूल, हिं० हूलना] छिदना। चुभना।
अएरना(पु)—क्रि० स० [स० अगीकरण, हिं० अँगेरना] अंगीकार करना। अँगेजना। स्वीकार करना। धारण करना। उ०–दियौ सु सीस चढाइ लै आछी भाँति अएरि।—विहारी०।
अकंटक—वि० [स०] १ बिना काँटे का। कटकरहित। २ निर्विघ्न। बाधारहित। बिना रोक-टोक का। ३ शत्रु-रहित।
अकपन—सज्ञा पु० [स०] [वि० अकपित, अकप्य] न काँपने का भाव। स्थिरता।
अक—सज्ञा पुं० [स०] १ पाप। २ दु ख।
अकच—सज्ञा पु० [स० अ+कच] केतु।
वि० बिना बालों का।
अकच्छ—वि० [स० अ+कच्छ=धोती] १ नग्न। नगा। २ व्यभिचारी। परस्त्रीगामी।
अकड़—सज्ञा स्त्री० [अ (उच्चा०) +म०√ कड्ड्=कठोर होना] १ ऐंठ। तनाव। मरोड़। बल। २ कड़ाई के साथ ऐंठ। ३ घमड। अहकार। शेखी। ४ धृष्टता। ढिठाई। ५ हठ। अड। जिद।
अकड़ना—क्रि० अ० [हिं० अकड़] [सज्ञा अकड, अकड़ाव] १ सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना। ऐंठना। २- ठिठुरना। सुन्न होना। ३ छाती को उभाड़कर डील को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना। तनना। ४ शेखी करना। घमड दिखाना। ५ ढिठाई करना। ६ हठ करना। जिद करना। ७ मिजाज बदलना। चिटकना।
अकड़बाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़+बाई] ऐंठन। कुड़ल। शरीर की नसों का पीड़ा के सहित खिंचना।
अकड़बाज—वि० [हिं० अकड़+फा० बाज] ऐंठदार। शेखीबाज। अभिमानी।
अकड़बाजी—सज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़+फा० बाजी] ऐंठ। शेखी। अभिमान।
अकड़ा—सज्ञा पुं० [देश०] १ ऐंठन। तनाव। २ एक प्रकार का रोग।
अकड़ाव—सज्ञा पु० [हिं० अकड़+आव (प्रत्य०)] ऐंठन। खिंचाव।
अकडू†—सज्ञा पु० दे० "अकड़बाज"।
अकड़ैत†—वि० दे० "अकड़बाज"।
अकत(पु)—वि० [स० अक्षत] सारा। समूचा।
क्रि० वि० बिलकुल। सरासर।
अकरथ—वि० दे० "अकथ"।
अकथ—वि० [स०] १ जो कहा न जा सके। अनिर्वचनीय। २ न कहने योग्य।
अकथनीय—वि० [सं०] न कहे जाने योग्य। अनिर्वचनीय। अवर्णनीय।
अकथ्य—वि० दे० "अकथनीय"।
अकधक(पु)†—सज्ञा पु० [अनु०+धक ?] १ आगा-पीछा। सोच-विचार। २ आशका। भय। डर।
अकनना†—क्रि० स० [स० आकर्णन] १ कान लगाकर सुनना। आहट लेना। २ सुनना। कर्णगोचर करना।
अकना—क्रि० अ० [स० आकुल ?] ऊबना। घबराना।
अकपट—वि० [स० अ+कपट] निश्छल। बिना कपट का।
अकबक—सज्ञा स्त्री० [हिं० अनु० अक+बक] १ घबराहट। धड़का। खटका। २ निरर्थक वाक्य। अनाप-शनाप। असबद्ध प्रलाप। ३ छक्का-पजा। चतुराई।
वि० [स० अवाक्] १ भौचक्का। निस्तब्ध। २ अट बट। ऊटपटाँग।
अकबकाना†—क्रि० अ० [हिं० अकबक] चकित होना। भौचक्का होना। घबराना।
अकबरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की मिठाई। २ लकड़ी पर की एक नक्काशी।
वि० [अ० अकबर] अकबर बादशाह का। अकबर सबधी।
अकबाल—सज्ञा पुं० दे० "इकबाल"।
अकर—वि० [स०] १ बिना हाथ का। हस्तरहित। २ बिना कर या महसूल का।
वि० [स० अकरणीय] १ न करने योग्य। २ दुष्कर। कठिन।
अकरकरा—सज्ञा पु० [सं० आकारकरभ] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।
अकरखना(पु)—क्रि० स० [स०-आकर्षण] १ खींचना। तानना। २ चढाना।
अकरण—सज्ञा पुं० [स०] [वि० अकरणीय] १ कर्म का अभाव। २ कर्म का न किए हुए के समान या फलरहित होना। ३ इद्रियों से रहित, ईश्वर। परमात्मा।
वि० न करने योग्य। कठिन।
(पु)वि० [स० अकारण] बिना कारण का।
अकरणीय—वि० [स०] न करने योग्य। न करने लायक। करने के अयोग्य।
अकरा†—वि० [स० अक्रय्य] [स्त्री० अकरी] १ न मोल लेने योग्य। महँगा। अधिक दाम का। २ खरा। श्रेष्ठ। उत्तम।
अकराथ(पु)—वि० [स० अकार्यार्थ, प्रा० अकारियत्थ] अकारथ। व्यर्थ। निष्फल। उ०–आपा राखि प्रबोधिए, ज्ञान सुनै अकराथ।—कबीर०।
अकराल—वि० [सं० अ+कराल] १ जो कराल या भीषण न हो। २ सुदर।
अकरास—सज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़+आस (प्रत्य०)] अँगड़ाई। देह टूटना।
सज्ञा स्त्री० [स० अकर] आलस्य। सुस्ती।
अकरासू—वि० स्त्री० [हिं० अकरास] गर्भवती।
अकरी—सज्ञा स्त्री० [अ (उच्चा०)+सं०√ कृ=बिखेरना भरना] हल में लगा लकड़ी का चोंगा जिसमें बीज डाले जाते हैं।
अकरुण—वि० [सं०] जिसमें करुणा न हो। कठोर-हृदय।
अकरूर—सज्ञा पु० दे० "अक्रूर"।
अकर्तव्य—वि० [स०] न करने योग्य। जिसका करना उचित न हो।
अकर्ता—वि० [स०] कर्म का न करनेवाला। कर्म से अलग।
सज्ञा पुं० साख्य के अनुसार पुरुष जो कर्मों से निर्लिप्त है।
अकर्तृक—सज्ञा पुं० [स०] बिना कर्ता का। जिसका कोई कर्ता या रचयिता न हो।

अकर्तृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्तृत्व का न होना। २ कर्तृत्व का अभिमान न होना।
अकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ न करने योग्य कार्य। बुरा काम। २ कर्म का अभाव।
अकर्मक—वि० [सं०] (क्रिया) जिसका कोई कर्म न हो।
अकर्मण्य—वि० [सं०] कुछ काम न करनेवाला। आलसी।
अकर्मण्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अकर्मण्य होने का भाव। निकम्मापन। आलस्य।
अकर्मा—वि० दे० "अकर्मण्य"।
अकर्मी—संज्ञा पुं० [सं० अकर्मिन्] [स्त्री० अकर्मिणी] बुरा कर्म करनेवाला। पापी। दुष्कर्मी। अपराधी।
अकर्षण—संज्ञा पुं० दे० "आकर्षण"।
अकलंक—वि० [सं०] निष्कलंक। दोषरहित। निर्दोष। बेऐब। बेदाग।
†संज्ञा पुं० [सं० कलंक] दोष। लाञ्छन।
अकलंकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दोषिता। कलंकहीनता।
अकलंकित—वि० [सं०] निष्कलंक। निर्दोष। बेऐब।
अकलंकी—वि० [सं० अकलंकित] जिसपर कोई कलंक न हो। निर्दोष।
अकल—वि० [सं०] १ अवयवरहित। जिसके अवयव न हों। २ जिसके खंड न हों। सर्वांगपूर्ण। समूचा। ३ परमात्मा का एक विशेषण। (पु)४ बिना कला या चतुराई का।
(पु)वि० [सं० अ = नहीं + हिं० कल = चैन] विकल। व्याकुल। बेचैन।
संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।
अकलखुरा—वि० [हिं० अकेला + फा० खोर] १ जो दूसरेको साझी के रूप में न देख सके। २ अपना ही भला चाहनेवाला। ३ जो मिलनसार न हो। ४ रूखा।
अकलप(पु)—वि० दे० "अकल्प्य"।
अकलबीर—संज्ञा पुं० [अ (उच्चा०) + सं० करवीर ?] भाँग की तरह का एक पौधा। कलबीर। यत्र।
अकलुष—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का कलुष न हो। २ पवित्र। शुद्ध। ३ निर्मल। साफ।
अकल्प्य—वि० [सं०] जिसकी कल्पना न की जा सके। कल्पनातीत।
अकवन†—संज्ञा पुं० [हिं० आक] मदार।
अकवार†—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकमाल] १. आलिंगन। गले मिलना। २ अंक। गोद।
अकस—संज्ञा स्त्री० [सं० आकर्ष] १ बैर। शत्रुता। अदावत। २ बुरी उत्तेजना।
संज्ञा पुं० दे० "अक्स"।
अकसना—क्रि० अ० [हिं० अकस] १ अकस रखना। बैर करना। २. बराबरी करना। आँट करना।
अकसर—क्रि० वि० दे० "अक्सर"।
(पु)क्रि० वि०, वि० [सं० एक + हिं० सर (प्रत्य०)] अकेले। बिना किसीके साथ।
उ०—कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात।—मानस।
अकसीर—संज्ञा स्त्री० [अ० अक्सीर] वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन। कीमिया।
वि० अव्यर्थ। अत्यंत गुणकारी। गुण या प्रभाव अवश्य दिखानेवाला।
अकस्मात्—क्रि० वि० [सं०] १. अचानक। अनायास। एकबारगी। सहसा। २ दैवयोग से। संयोगवश। आपसे आप।
अकह(पु)—वि० दे० "अकथ"।
अकहुवा(पु)—वि० दे० "अकथ्य"।
अकांड—वि० [सं०] १ बिना शाखा का। २ बिना कारण का। ३ अचानक या असमय में होनेवाला।
क्रि० वि० अकस्मात्। सहसा।
अकांडतांडव—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यर्थ की उछल-कूद। २ व्यर्थ की बकवाद। वितंडावाद।
अकाज—संज्ञा पुं० [सं० अ + हिं० काज] [क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १ कार्य की हानि। नुकसान। हर्ज। विघ्न। बिगाड़। २ बुरा कार्य। दुष्कर्म। खोटा काम।
(पु)क्रि० वि० व्यर्थ। बिना काम। निष्प्रयोजन।
अकाजना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० अकाज] १ हानि होना। २ गत होना। मरना।
क्रि० स० हानि करना। हर्ज करना।
अकाजी(पु)—वि० [हिं० अकाज] [स्त्री० अकाजिन] अकाज करनेवाला। हर्ज करनेवाला। कार्य की हानि करनेवाला।
अकाट्य—वि० [सं० अ + हिं० √काट] जिसका खंडन न हो सके। दृढ़। मजबूत।
अकाथ(पु)—क्रि० वि० दे० "अकारथ"।
अकाम—वि० [सं०] बिना कामना का। कामनारहित। इच्छाविहीन। निःस्पृह।
क्रि० वि० [सं० अकर्म] बिना काम के। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।
अकामी—वि० दे० "अकाम"।
अकाय—वि० [सं०] १ बिना शरीरवाला। देहरहित। २ शरीर न धारण करनेवाला। जन्म न लेनेवाला। ३ निराकार।
अकार—संज्ञा पुं० "अ" अक्षर।
संज्ञा पुं० दे० "आकार"
अकारज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अकार्य] कार्य की हानि। हानि। नुकसान। हर्ज।
अकारण—वि० [सं०] १. बिना कारण का। बिना वजह का। २ जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो। स्वयंभू।
क्रि० वि० बिना कारण के। बेसबब।
अकारथ(पु)†—क्रि० वि० [सं० अकार्यार्थ] बेकाम। निष्फल। निष्प्रयोजन। वृथा। फजूल। लाभरहित।
अकारा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आकार] आकार। आकृति।
अकाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अकालिक] १ अनुपयुक्त समय। अनवसर। कुसमय। २ दुष्काल। दुर्भिक्ष। महँगी। ३ घाटा। कमी।
वि० अविनाशी। नित्य।
अकालकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिना समय या ऋतु में फूला हुआ फूल। (अशुभ)। २ बेसमय की चीज।
अकालपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] सिख धर्मानुसार ईश्वर का एक नाम।
अकालमूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य या अविनाशी पुरुष।
अकालमृत्यु—संज्ञा स्त्री० [सं०] असामयिक मृत्यु। थोड़ी अवस्था में मरना।
अकालिक—वि० [सं०] असमय में होनेवाला। बेमौका।
अकाली—संज्ञा पुं० [सं० अकाल + हिं० ई (प्रत्य०)] वे सिक्ख जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं।
अकाव(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "आक"
अकास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आकाश"।
अकासदीया(पु)—संज्ञा पुं० [आकाशदीप] दे० "आकासदीया"।
अकासबानी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।
अकासबेल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाशवेल्लि] अमरबेल।

अकासी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश] १ चील। २ ताड़ी।

अकासी धोबिनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अकासी+धोबिनि] खेमकरी चील जिसका दर्शन शुभ माना जाता है।

अकिंचन—वि० [सं०] निर्धन। कंगाल।

अकिंचनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दरिद्रता। गरीबी। निर्धनता।

अकिंचित्कर—वि० [सं०] जिससे कुछ न हो सके। अशक्य। असमर्थ।

अकि(पु)†—अव्य० [हिं० कि] कि। या। अथवा।

अकिल†—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

अकिलदाढ़—संज्ञा स्त्री० [अ० अक्ल+हिं० दाढ़] पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत।

अकिल्बिष—वि० [सं० अ+किल्बिष] पापरहित। निर्दोष। पुण्यशील।

अकीक—संज्ञा पुं० [अ० अक़ीक़] एक प्रकार का लाल पत्थर जिसपर मुहर खोदी जाती है।

अकीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कीर्ति का अभाव। २ अयश। अपयश। बदनामी।

अकुंठ—वि० [सं०] १ जो कुंठित न हो। तेज। २ तीव्र। तीक्ष्ण। ३ खरा। उत्तम।

अकुताना(पु)—क्रि० अ० दे० "उकताना"।

अकुल—वि० [सं०] १ जिसके कुल में कोई न हो। २ बुरे या नीच कुल का।
संज्ञा पुं० बुरा कुल। नीच कुल।

अकुलाना—क्रि० अ० [सं० आकुलन] १ घबराना। विह्वल होना। २. उतावला होना। जल्दी करना।

अकुलीन—वि० [सं०] [स्त्री० अकुलीना] तुच्छ वंश में उत्पन्न। कमीना। क्षुद्र।

अकुशल—वि० [सं० अ+कुशल] १. अपटु। जो चतुर न हो। २ अमंगल।

अकूट—वि० [सं०] अकृत्रिम। सच्चा।

अकूत—वि० [सं० अ०+हिं० कूत] जो कूता न जा सके। बेअंदाज। अपरिमित।

अकूता(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अकूट ?] अव्यक्त ध्वनि या बाजों का शब्द। उ०—बाजन बाजहिं होइ अकूता। —पदमावत।

अकूपार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्छप। कछुवा। २ समुद्र। ३ पर्वत।

अकूर्च—संज्ञा पुं० [सं० अकूर्च] बुद्ध।
वि० १ बिना दाढ़ी का। २ निश्छल।

अकूल—वि० [सं०] जिसका किनारा या अंत न हो।

अकूहल(पु)—वि० [देश०] बहुत। अधिक।

अकृत—वि० [सं०] १. बिना किया हुआ। जो किसीका बनाया न हो। २ ठीक न किया हुआ। ३ अपूर्ण।

अकृतकार्य—वि० [सं०] [संज्ञा अकृतकार्यता] जो किसी कार्य को करने में सफल न हुआ हो।

अकृतज्ञ—वि० [सं०] जो कृतज्ञ न हो। कृतघ्न।

अकृती—वि० [सं० अ+कृती] जिससे कुछ न हो सके। अकर्मण्य।

अकेल—वि० अर्थ के लिये दे० "अकेला"। उ०—भारत युद्ध वितत जब भयौ। दुरजोधन अकेल रहि गयौ।—सा० लहरी।

अकेला—वि० [सं० एकल, अप० एक्कल्लय] [स्त्री० अकेली] १ जिसके साथ कोई न हो। तनहा। २ अद्वितीय। निराला।
यौ०—अकेला दम=एक ही प्राणी। अकेला-दुकेला=एक या दो। अधिक नहीं।
संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

अकेले—क्रि० वि० [हिं० अकेला] १ किसी साथी के बिना। एकाकी। तनहा। २. सिर्फ। केवल।

अकैया—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बोरा। गोन।

अकोट(पु)—वि० [सं० अ+कोटि] १ करोड़ों। २ बहुत अधिक।

अकोतर सौ(पु)—वि० [सं० एकोत्तरशत] सौ के ऊपर एक। एक सौ एक।

अकोबिद—वि० [सं० अकोविद] अज्ञ। मूर्ख।

अकोर—संज्ञा पुं० दे० "अँकोर"।

अकोसना(पु)—क्रि० स० दे० "कोसना"।

अकौआ—संज्ञा पुं० [सं० अर्क] १ आक। मदार। २ गले में का कौआ। घंटी।

अक्खड़—वि० [हिं० अकड़ ?] १ किसी-का कहना न माननेवाला। उद्धत। उच्छृंखल। २ विगड़ैल। झगड़ालू। ३ निर्भय। बेडर। ४. असभ्य। अशिष्ट। ५. उजड्ड। जड़। ६ खरा। स्पष्टवक्ता।

अक्खड़पन—संज्ञा पुं० [हिं० अक्खड़+पन (प्रत्य०)] १ अशिष्टता। उजड्डपन। २ कलहप्रियता। ३ निःशंकता। ४ स्पष्टवादिता।

अक्खर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

अक्खा†—संज्ञा पुं० [सं० √अक्ष्=संग्रह करना] थैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला। खुरजी। गोन।

अक्खो-मक्खो—संज्ञा पुं० [सं० अक्षि, प्रा० अक्खण=दुर्भाग्य+सं० √म्रक्ष्=पोंछना] दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह तक 'अक्खो मक्खो' कहते हुए फेरना। (नजर से बचाने के लिये)।

अक्त—वि० [सं०] व्याप्त। संयुक्त। युक्त। (प्रत्यय के रूप में, जैसे, विषाक्त।)

अक्क—वि० [सं० अक्रिय] स्तंभित। हक्का-बक्का।

अक्रम—वि० [सं०] बिना क्रम का। अंड-बंड। बेसिलसिला।
संज्ञा पुं० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।

अक्रम संन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ के पीछे) न लिया गया हो, बीच ही में धारण किया गया हो।

अक्रमातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य कहा जाता है।

अक्रिय—वि० [सं०] १ जो कर्म न करे। क्रियारहित। २ निश्चेष्ट। जड़। स्तब्ध।

अक्रूर—वि० [सं०] जो क्रूर न हो। सरल।
संज्ञा पुं० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।

अक्ल—संज्ञा स्त्री० [अ०] बुद्धि। समझ।
मुहा०—अक्ल का दुश्मन=अति मूर्ख। बेवकूफ। अक्ल का पूरा=(व्यंग्य) मूर्ख। जड़। अक्ल खर्च करना=समझ को काम में लाना। सोचना। अक्ल का चरने जाना=अक्ल का काम न देना। बुद्धि नष्ट होना।

अक्लमंद—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा अक्लमंदी] बुद्धिमान्। चतुर। समझदार।

अक्लमंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] समझदारी। चतुराई। विज्ञता।

अक्लांत—वि० [सं०] जो थ्रांत न हो। जो थका न हो।

अक्लिष्ट—वि० [सं०] १ कष्टरहित। २ सुगम। सहज। आसान।

अक्ली—वि० [अ०] १ अक्ल या बुद्धि संबंधी। २ तर्क-सिद्ध। वाजिब।

अक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अक्षा] १ वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिसपर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। २. धुरी।

३ छकड़ा। गाड़ी। ४ पासों का खेल। चौसर। ५ खेलने का पासा। ६ तराजू की डाँडी। ७ मामला। मुकदमा। ८ इंद्रिय। ९ आँख। १० रुद्राक्ष। ११ साँप। १२ गरुड़। १३ आत्मा।

अक्षकूट—संज्ञा पुं० [सं०] आँखों का तारा।

अक्षक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पासे का खेल। चौसर। चौपड़।

अक्षत—वि० [सं०] न टूटा हुआ। अखंडित। समूचा।

संज्ञा पुं० १ अखंडित चावल जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है। २ धान का लावा। ३ जौ।

अक्षतयोनि—वि० स्त्री० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता—वि० स्त्री० [सं०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो। क्वारी।

संज्ञा स्त्री० वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष-संयोग न किया हो। (धर्मशास्त्र)

अक्षपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि। २. नैयायिक।

अक्षम—वि० [सं०] १ क्षमारहित। असहिष्णु। २ असमर्थ।

अक्षमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। २ ईर्ष्या। डाह। ३ असामर्थ्य।

अक्षय—वि० [सं०] १ जिसका क्षय न हो। अविनाशी। अनश्वर। २ कल्प के अंत तक रहनेवाला।

अक्षयतृतीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल-तृतीया। आखा तीज। स्नान-दान आदि करने की एक तिथि।

अक्षयनवमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला नवमी (स्नान-दान आदि की तिथि)।

अक्षयवट—संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और गया में एक बरगद का पेड़, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।

अक्षय्य—वि० [सं०] अक्षय। अविनाशी।

अक्षर—वि० [सं०] अविनाशी। नित्य।

संज्ञा पुं० १ अकारादि वर्ण। हरफ। २ आत्मा। ३ ब्रह्म। ४ आकाश। ५ धर्म। ६ तपस्या। ७ मोक्ष। ८ जल।

अक्षरन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेख। लिखावट। २ मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर नाक, कान आदि छूना। (तंत्र)

अक्षरशः—क्रि० वि० [सं०] एक एक अक्षर। बिलकुल। सब। (कथन या लेख)

अक्षरी—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर+ई] शब्द में आए हुए अक्षर। वर्तनी। हिज्जे।

अक्षरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

अक्षरौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षरावर्त्तन] १ वर्णमाला। २ लेख। लिपि का ढंग। ३ वे पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।

अक्षांश—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व-पश्चिम मानी गई हैं। २ वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३ भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर। ४ किसी नक्षत्र के क्रांति-वृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।

अक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख। नेत्र।

अक्षिगोलक—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का ढेला।

अक्षितारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।

अक्षिपटल—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का परदा।

अक्षीव—वि० [सं०] सहनशील। शांत।

अक्षुण्ण—वि० [सं०] १ न टूटा हुआ। समूचा। २ अनाड़ी।

अक्षोट—संज्ञा पुं० [सं०] अखरोट।

अक्षोनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

अक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] क्षोभ का अभाव। शांति।

वि० १ क्षोभरहित। गंभीर। शांत। २ मोहरहित। ३ निडर। निर्भय। ४ जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।

अक्षौहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े और २१,८७० हाथी होते थे।

अक्स—संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रतिबिंब। छाया। परछाईं। २ तसवीर। चित्र।

अक्सर—क्रि० वि० [अ०] बहुत करके। प्रायः।

वि० बहुत। अधिक।

अक्सीर—संज्ञा स्त्री० दे० "अकसीर"।

अखंग(पु)—वि० [सं० अ+हिं० √खँग] न खँगनेवाला। न चुकनेवाला। अविनाशी।

अखंड—वि० [सं०] १ जिसके टुकड़े न हों। संपूर्ण। समग्र। पूरा। २. जो बीच में न रुके। लगातार। ३ बेरोक। निर्विघ्न।

अखंडनीय—वि० [सं०] १ जिसके टुकड़े न हो सकें। २ जिसका विरोध या खंडन न किया जा सके। पुष्ट। युक्तियुक्त।

अखंडल(पु)—वि० [सं० अखंड] १ अखंड। २ समूचा। संपूर्ण।

संज्ञा पुं० दे० "आखंडल"।

अखंडित—वि० [सं०] १ जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। २ संपूर्ण। समूचा। ३ निर्विघ्न। बाधारहित। ४ जिसका क्रम टूटा न हो। लगातार।

अखज—वि० [सं० अखाद्य, प्रा० अखज्ज] १ अखाद्य। न खाने योग्य। २ बुरा। खराब।

अखड़ैत—संज्ञा पुं० [हिं० अखाड़ा+ऐत (प्रत्य०)] मल्ल। बलवान् पुरुष।

अखती, अखतीज—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षय-तृतीया"।

अखनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० यखनी] मांस का रसा या शोरवा।

अखबार—संज्ञा पुं० [अ० खबर का बहुव०] समाचारपत्र। संवादपत्र। खबर का कागज।

अखय(पु)—वि० दे० "अक्षय"।

अखर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

अखरना—क्रि० अ० [अ (उच्चा०)+हिं० खलना] खलना। बुरा लगना। कष्टकर होना।

अखरा(पु)—वि० [सं० अ+हिं० खरा=सच्चा] झूठा। बनावटी। कृत्रिम।

संज्ञा पुं० [सं० अक्षर=समूचा] भूसी मिला हुआ जौ का आटा।

अखरावट, अखरावटी—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षरौटी"।

अखरोट—संज्ञा पुं० [सं० अक्षोट, प्रा० अक्खोड] एक मेवा और उसका ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफगानिस्तान तक होता है।

अखर्व—वि० [सं०] जो खर्व या छोटा न हो। बहुत बड़ा।

अखा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आखा"।

अखाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अक्षवाट, प्रा० अक्खाडय] १ कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिये बनाया हुआ स्थान। २ साधुओं की सांप्रदायिक मंडली अथवा उनका निवास-स्थान। जमायत। ३ तमाशा दिखाने-

वालों और गाने-बजानेवालों की मंडली। दल। ४ सभा। दरबार। रंगभूमि।

अखाड़िया—वि० [हिं० अखाड़+इया (प्रत्य०)] बड़े बड़े अखाड़ों में अपना कौशल दिखलानेवाला।

अखात—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राकृतिक जलाशय। झील। खाड़ी। २. तालाब।

अखाद(पु)—वि० [सं० अखाद्य] न खाने योग्य।

अखाद्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] न खाई जाने योग्य वस्तु।

अखानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी जिससे फसलों की मड़ाई करते समय भूसे को उलटते हैं।

अखिल—वि० [सं०] १. संपूर्ण। समग्र। पूरा। २. सर्वांगपूर्ण। अखंड।

अखिलेश—संज्ञा पुं० [सं०] अखिल जगत् का स्वामी। ईश्वर।

अखिलेश्वर—संज्ञा पुं० दे० "अखिलेश्वर"।

अखीन(पु)—वि० [सं० अक्षीण] क्षीण न होने वाला। अविनाशी।

अखीर—संज्ञा पुं० [अ०] १. अंत। छोर। २. समाप्ति।

अखूट—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √खूँट कम होना] जो न घटे या न चुके। अक्षय। बहुत।

अखेट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आखेट"।

अखेटक, अखेटकी—संज्ञा पुं० [सं० आखेटक] शिकारी।

अखै(पु)—वि० दे० "अक्षय"।

अखैपद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अक्षयपद] मुक्ति। निर्वाण। ब्रह्मपद।

अखैपुरुष(पु)—संज्ञा पुं० [अक्षयपुरुष] ब्रह्म। संत संप्रदाय के अनुसार ईश्वर की एक संज्ञा।

अखैवट(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० अक्षयवट] अक्षयवट।

अखोर(पु)—वि० [हिं० अ+खोटा=बुरा] १ भद्र। सज्जन। २ सुंदर। ३ निर्दोष।

वि० [फा० आख़ोर] निकम्मा। बुरा।

संज्ञा पुं० १ कूड़ा-करकट। निकम्मी चीज। २ खराब घास। बुरा चारा। बिचाली।

अखोह†—संज्ञा पुं० [अ (उच्चा०)+हिं० खोह ?] ऊँची-नीची या ऊबड़-खाबड़ भूमि।

अखौट, अखौटा†—संज्ञा पुं० [सं० अक्ष+कूट] १ जाँते या चक्की के बीच की खूँटी। जाँते की किल्ली। २ लकड़ी या लोहे का डंडा जिसपर गड़ारी घूमती है।

अख्खाह—अव्य [अनु०] उद्वेग या आश्चर्य-सूचक शब्द।

अख्तावर—संज्ञा पुं० [फा० अख्ता] वह घोड़ा जिसके अंडकोश में जन्म से ही कौड़ी न हो। (ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।)

अख्तियार—संज्ञा पुं० दे० "इख्तियार"।

अख्यान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आख्यान"।

अख्यायिका—संज्ञा स्त्री० [सं० आख्यायिका] दे० "आख्यायिका"।

अगंड—संज्ञा पुं० [सं०] वह धड़ जिसका हाथ-पैर कट गया हो। कबंध।

अग—वि० [सं०] १ न चलनेवाला। स्थावर। अचल। २ टेढ़ा चलनेवाला।

संज्ञा पुं० १ पेड़। वृक्ष। २ पर्वत। ३ सूर्य। ४. साँप।

अगज—वि० [सं०] पर्वत से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १ शिलाजीत। २ हाथी।

संज्ञा पुं० [अ० अगश] घोड़ा जिसका सिर सफेद रंग का हो।

अगटना†—क्रि० अ० [सं० एकत्र, एकस्थ, प्रा० एकट्ठ] इकट्ठा होना। जमा होना।

अगड़(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अकड़, मि० हिं० अक्खड़] अकड़। ऐंठ। दर्प।

अगड़धत्ता—वि० [हिं० अगड़+सं० उद्धत] १ लंबा-तड़ंगा। ऊँचा। २. श्रेष्ठ। बड़ा।

अगड़बगड़—वि० [सं० अकृत, प्रा० अगड +सं० विकृत] अंडबंड। बे सिर-पैर का। क्रमविहीन।

संज्ञा पुं० १ बे सिर-पैर की बात। प्रलाप। २ अंडबंड काम। अनुपयोगी कार्य।

अगड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० अकण] अनाज की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो। खुखड़ी। अखरा।

वि० [सं० अग्र] दे० "अगरा"।

अगण—संज्ञा पुं० [सं०] छंद-शास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणनीय—वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। सामान्य। २ अनगिनत। असंख्य।

अगणित—वि० [सं०] जिसकी गणना न हो। अनगिनत। असंख्य। बहुत।

अगण्य—वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। २ सामान्य। तुच्छ। ३ असंख्य। बेशुमार।

अगत(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "अगति"।

अगता†—वि० [सं० अग्रत] अग्रिम। पेशगी।

अगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी गति। दुर्गति। दुर्दशा। खराबी। २ गति या मोक्ष की अप्राप्ति। ३. नरक। ४ मरने के पीछे शव-दाह आदि क्रिया का यथाविधि न होना। ५ गति का अभाव। स्थिरता।

वि० १ अचल। अटल। २ दे० "अगतिक"।

अगतिक—वि० [सं०] १. जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। अशरण। निराश्रय। २ मरने पर जिसकी अंत्येष्टि क्रिया आदि न हुई हो।

अगती—वि० [सं० अगति] १ बुरी गतिवाला। २ पापी। दुराचारी। ३ दे० "अगति"।

†वि० स्त्री० [सं० अग्रत] अगाऊ। पेशगी।

क्रि० वि० आगे से। पहले से।

अगत्या—क्रि० वि० [सं०] १. जब कोई और गति न हो। लाचार हालत में। २ सहसा। अचानक।

अगद—संज्ञा पुं० [सं०] ओषधि। दवा।

वि० स्वस्थ। जिसे कोई रोग न हो। नीरोग।

अगन—संज्ञा पुं० दे० "अगण"।

संज्ञा स्त्री० दे० "अगिन"

अगनिउ†—संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनित(पु)—वि० दे० "अगणित"।

अगनी(पु)—वि० दे० "अगणित"।

अगनेउ, अगनू(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

अगनेत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

अगम—वि० [सं०] १ जहाँ कोई जा न सके। दुर्गम। अवघट। २ विकट। कठिन। मुश्किल। ३ दुर्लभ। अलभ्य। ४ बहुत। अत्यंत। ५ बुद्धि के परे। दुर्बोध। ६ अथाह। बहुत गहरा।

संज्ञा पुं० दे० "आगम"।

अगमन, अगमना, अगमने(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्र] १ आगे। पहले। प्रथम। २ आगे से। पहले से। ३ उ०—उठि अकुलाइ अगमने लीने, मिलत नैन भरि आये नीर।—सूर०।

अगमनीया—वि० स्त्री० [सं०] जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।
अगमानी(पु)—संज्ञा पुं०[सं० अग्र+मानित, प्रा० माणिअ] अगुआ। नायक। सरदार।
† संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।
अगमासी—संज्ञा स्त्री० दे० "अगवाँसी"।
अगम्य—वि० [सं०] १ जहाँ पहुँच न हो सके। अवघट। गहन। २ कठिन। मुश्किल। ३ बहुत। अत्यंत। ४. जिसमें बुद्धि न पहुँचे। अज्ञेय। दुर्बोध। ५ अथाह। बहुत गहरा।
अगम्या—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो, जैसे—गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ आदि।
अगर—संज्ञा पुं० [सं० अगुरु] एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है।
अव्य० [फा०] यदि। जो।
मुहा०—अगर, मगर करना=(१) हुज्जत करना। तर्क करना। (२) आगा-पीछा करना।
अगरई—वि० [हिं० अगर] श्यामता लिए हुए सुनहले सदली रंग का।
अगरचे—अव्य० [फा०] गो कि। यद्यपि।
अगरज—संज्ञा पुं० [सं० अग्रज] पहले उत्पन्न होनेवाला। बड़ा भाई।
अगरना(पु)—क्रि० अ० [सं० अग्र] आगे होना। बढ़ाना।
अगरपार—संज्ञा पुं० [सं० अग्र] क्षत्रियों की एक जाति या वर्ग।
अगर-बगर—क्रि० वि दे० "अगल-बगल"।
अगरबत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० अगुरुवर्ती] सुगंध के निमित्त जलाने की पतली बत्ती।
अगरवार†—संज्ञा पुं० दे० "अग्रवाल"।
अगरसार—संज्ञा पुं० दे० "अगर"।
अगरा(पु)—वि० [सं० अग्र] १ अगला। प्रथम। २ बढ़कर। श्रेष्ठ। उत्तम। ३. अधिक। ज्यादा। बड़ा या भारी।
अगरान†—संज्ञा पुं० [?] चौंधर (पीला लिए हुए लाल) रंग का घोड़ा जिसमें सफेदी विशेष न झलकती हो।
अगराना(पु)—क्रि० स० [सं० अग्र+राग] दुलार दिखाना।
अगरासन—संज्ञा पुं० [सं० अग्र+अशन] भोजन करने के पूर्व किसी देवता का नाम लेकर निकाली गई बलि।
अगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की घास। २ दे० "आगल"।
संज्ञा स्त्री० [सं० अर्गल] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोंढा लगाकर डाला रहता है। ब्योंड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] फूस की छाजन का एक ढंग।
(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० अगिर् = अवाच्य] अंडबंड। बुरी बात। अनुचित बात।
अगरु—संज्ञा पुं० [सं०] अगर लकड़ी। ऊद।
अगरो(पु)—वि० [सं० अग्र] १ अगला। आगे का। २ बढ़कर। ३ श्रेष्ठ। उत्तम।
अगल-बगल—क्रि० वि० [फा०] इधर-उधर। दोनों ओर। आसपास।
अगला—वि० [सं० अग्र, प्रा० अग्ग] [स्त्री० अगली] १ आगे का। सामने का। "पिछला" का उलटा। २ पहले का। पूर्ववर्ती। ३ प्राचीन। पुराना। ४ आगामी। आनेवाला। ५ अपर। दूसरा।
संज्ञा पुं० १ अगुआ। प्रधान। २ चतुर आदमी। ३ पूर्वज। पुरखा। (बहु० में ही प्रयुक्त)
अगवना—क्रि०अ० [सं० अग्र+हिं० √आव] आगे बढ़ना। उद्यत होना।
अगवाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्रअंश] १ हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २ पैदावार में हलवाहे का भाग।
अगवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० अगुआ+ई (प्रत्य०)] अगवानी। अभ्यर्थना।
संज्ञा पुं० नेतृत्व करने या आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रसर।
अगवाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग। "पिछवाड़ा" का उलटा।
अगवान—संज्ञा पुं० [सं० अग्र+वान्] १ अगवानी या अभ्यर्थना करनेवाला। २ विवाह में कन्यापक्ष के लोग जो आगे बढ़कर बरात का स्वागत करते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।
अगवानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अगवान] १ अतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अभ्यर्थना। पेशवाई। २ बरात को आगे बढ़कर लेने की रीति।
(पु)संज्ञापुं० नेतृत्व करनेवाला। अगुआ। नेता।
अगवार—संज्ञा पुं० [सं० अन्न+वार=अन्न विशेष] १ अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि के लिये अलग कर दिया जाता है। २. वह अन्न जो ओसाने में भूसे के साथ चला जाता है। ३ दे० "अगवाड़ा"।
अगसरना—क्रि० अ० [सं० अग्रसर] दे० "अगुसरना"।
अगसार, अगसारी(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्रसारि] आगे। उ०—हस्ति क जूह आय अगसारी।—पदमावत।
अगस्त—संज्ञा पुं० दे० "अगस्त्य"।
अगस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २. एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३ एक पेड़ जिसके फूल अर्ध-चंद्राकार लाल या सफेद होते हैं।
अगह(पु)—वि० [सं० अ+हिं० √गह] १ हाथ में न आने लायक। चंचल। २. जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३. कठिन। मुश्किल।
अगहन—संज्ञा पुं० [सं० अग्रहायण] [वि० अगहनिया, अगहनी] हेमंत ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। मगसिर।
अगहनिया—संज्ञा, वि० [सं० आग्रहायणिक] अगहन में होनेवाला (धान)।
अगहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अगहन] वह फसल जो अगहन में काटी जाती है।
वि० जो अगहन में तैयार हो।
अगहर(पु)†—क्रि० वि० [सं० अग्रसर] १ आगे। २ पहले। प्रथम।
अगहाट—संज्ञा पुं० [सं० अग्राह्य?] वह भूमि जिसे बेचने का अधिकार न हो।
अगहुँड़—क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० हुँत?] आगे। आगे की ओर। उ०—भयवस अगहुँड़ परै न पाऊ।—मानस।
अगाउनी(पु)—क्रि० वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "अगौनी"।
अगाऊ—क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० आऊ (प्रत्य०)] अग्रिम। पेशगी। समय के पहले।
(पु)वि० अगला। आगे का।
(पु)क्रि० वि० आगे। पहले। प्रथम।
अगाड़(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्र?] १ आगे। सामने। २ पहले। पूर्व।
अगाड़ा†—संज्ञा पुं० [हिं० अगाड़] कगार।
संज्ञा पुं० [सं० अग्र] यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।
अगाड़ी—क्रि० वि० [हिं० अगाड़]

१. आगे । २ भविष्य में । ३ सामने समक्ष । ४ पूर्व । पहले ।

संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग । २ घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर-उधर दो खूँटों से बँधी रहती हैं । ३ सेना का पहला धावा । हल्ला ।

अगाड़—क्रि० वि० दे० "अगाड़ी" ।

अगाध—वि० [सं०] १. अथाह । बहुत गहरा । २ अपार । असीम । अतहीन । ३. समझ में न आने योग्य । दुर्बोध ।

संज्ञा पुं० छेद । गड्ढा ।

अगान(पु)—वि० दे० "अज्ञान" ।

अगामै(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्रिम] आगे होनेवाला ।

अगार—संज्ञा पु० दे० "आगार" ।

क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे । पहले ।

अगारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अगाड़ी" ।

अगाव—संज्ञा पुं० दे० "अगौरा" ।

अगास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अग्र+अंश] द्वार के आगे का चबूतरा ।

अगाह(पु)—वि० [सं० अगाध] १ अथाह । बहुत गहरा । २ अत्यंत । बहुत ।

क्रि० वि० आगे से । पहले से ।

(पु) वि० [फा० आगाह] विदित । प्रकट ।

अगाही†—संज्ञा स्त्री० [फा० आगाह] किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना ।

अगिआँ—संज्ञा स्त्री० [सं० आज्ञा] आदेश । हुक्म ।

अगिदाह—संज्ञा पुं० दे० "अग्निदाह" ।

अगिन(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] [क्रि० अगियाना] १. आग । २ गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया । ३ अगिया घास ।

वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √गिन] अगणित ।

अगिन गोला—संज्ञा पुं० [हिं० अगिन+गोला] वह बम जो फटने पर आग लगा दे ।

अगिनबोट—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि+अं० बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के इंजन के जोर से चलती है । स्टीमर । धुआँकश ।

अगिनित(पु)—वि० दे० "अगणित" ।

अगिनिबान—संज्ञा पुं० दे० "अग्निबाण" ।

अगिया—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि] १ एक खर या घास । २ नीली चाय । ३ यज्ञकुश । अगिन घास । ४ एक पहाड़ी पौधा, जिसके पत्तों और डंठलों में जहरीले रोएँ होते हैं । ५ घोड़ों और बैलों का एक रोग । ६ एक जहरीला कीड़ा ।

अगिया-कोइलिया—संज्ञा पुं० [हिं० अगिया+कोयला] दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था ।

अगियाना—क्रि० अ० [सं० अग्नि] जल उठना । गरमाना । जलन या दाह-युक्त होना ।

अगिया बैताल—संज्ञा पु० [हिं० अगिया+बैताल] १ विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक । २ मुँह से लूक या लपट निकालनेवाला भूत । ३ क्रोधी आदमी ।

अगियार, अगियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्निकार्य] आग में सुगंध-द्रव्य डालने की पूजन-विधि । धूप देने की क्रिया ।

अगिया सन—संज्ञा पु० [हिं० अगिया+सन] १ सन की जाति का एक पौधा । २ एक कीड़ा जिसके छूने से जलन होती है । ३ एक चर्मरोग जिसमें झलकते हुए फफोले निकलते हैं ।

अगिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] घर का अगला भाग ।

अगिला†—वि० दे० "अगला" ।

अगिलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० हिं० आग+√ला] १. आग लगने या लगाने की क्रिया या भाव । अग्निदाह । २. ज्वाला या लपट ।

अगीठा(पु)—संज्ञा पु० [सं० अग्रस्थित] आगे का भाग ।

अगीत पछीत(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्रत पश्चात] आगे और पीछे की ओर ।

संज्ञा पुं० आगे का भाग और पीछे का भाग ।

अगुआ—संज्ञा पु० [सं० अग्र+हिं० उआ (प्रत्य०)] [क्रि० अगुआना, भाव० अगुआई] १ आगे चलनेवाला । अग्रणी । नेता । २ मुखिया । प्रधान । नायक । ३ पथ-प्रदर्शक । ४ विवाह की बातचीत ठीक करानेवाला ।

अगुआई—संज्ञा स्त्री० [हिं० अगुआ+ई (प्रत्य०)] १ अग्रणी होने की क्रिया । नेतृत्व । २ प्रधानता । सरदारी । ३ मार्ग-प्रदर्शन ।

अगुआना—क्रि० स० [हिं० अगुआ] अगुआ बनाना । सरदार नियत करना ।

क्रि० अ० आगे होना । बढ़ना ।

अगुण—वि० [सं०] १ सत्व, रज, तम गुण रहित । निर्गुण । २ निर्गुणी । मूर्ख ।

संज्ञा पुं० अवगुण । दोष ।

अगुणी—वि० [सं० अ+गुणिन्] १. गुण-रहित । सत्व, रज, तम गुणों से रहित । २. अनाड़ी । मूर्ख । ३ जिसको गुना न जा सके । अथाह । गभीर ।

अगुताना(पु)†—क्रि० अ० दे० "उकताना" ।

अगुरु—वि० [सं०] १ जो भारी न हो । हलका । २ जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो ।

संज्ञा पुं० १ अगर वृक्ष । ऊद । २ शीशम ।

अगुवा—संज्ञा पुं० दे० "अगुआ" ।

अगुवानी—संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी" ।

अगुसरना—क्रि० अ० [सं० अग्रसर] आगे बढ़ना । अग्रसर होना ।

अगुसारना(पु)—क्रि० स० [अगुसरना का स० रूप] आगे बढ़ाना । आगे करना ।

अगूठना†—क्रि० स० [सं० अवगुंठन] १. ढाँकना । २. घेरना । छेंकना ।

अगूठा—संज्ञा पुं० [सं० अवगुंठन] घेरा ।

अगूठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अगूठा] कारागार । बंधन ।

अगूढ़—वि० [सं०] १ जो छिपा न हो । २ स्पष्ट । प्रकट । ३ सहज । आसान ।

संज्ञा पु० साहित्य में गुणीभूत व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है ।

अगूता—क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० ऊता (प्रत्य०)] आगे । सामने ।

अगेंद्र—संज्ञा पु० [सं० अग+इंद्र] पहाड़ों का राजा । हिमालय ।

अगेज—वि० [फा० अंगेज] मिला हुआ ।

संज्ञा स्त्री० सहन । अँगेज ।

अगेह—वि० [सं० अ+हिं० गेह] जिसका घर-बार न हो ।

अगोई—वि० स्त्री० [सं० अ+गोप्य] प्रकट ।

अगोचर—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो । अव्यक्त ।

अगोट—संज्ञा पुं० [सं० आगुठ] १ ओट । आड़ । २ आश्रय । आधार ।

अगोटना—क्रि० स० [हिं० अगोट] १ रोकना । छेंकना । २ पहरे में रखना । कैद करना । ३ छिपाना । ४. चारों ओर से घेरना ।

क्रि० अ० १. रुकना। ठहरना। २ फँसना।

क्रि० स० [सं० अंगीकृत ?] १ अंगीकार करना। स्वीकार करना। २ पसंद करना। चुनना।

अगोता(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्रत] आगे। सामने।

अगोरदार—संज्ञा पुं० [हिं० √ अगोर + फा० दार] [भाव० अगोरदारी] अगोरने या रखवाली करनेवाला। रखवाला।

अगोरना—क्रि० स० [सं० आगूरण] १ राह देखना। प्रतीक्षा करना। २ रखवाली या चौकसी करना।

क्रि० स० [हिं०] रोकना। छेंकना।

अगोरा—संज्ञा पुं० दे० "अगोरदार"।

अगोरिया—संज्ञा पुं० दे० "अगोरदार"।

अगौड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र] पेशगी। अगाऊ।

अगौनी(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे।

संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगौरा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र + हिं० पोर ?] ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग।

अगौहैं(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।

अग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग। ताप और प्रकाश। (आकाश आदि पंच-भूतों में से एक)। २ वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३ जठराग्नि। पाचनशक्ति। ४ पित्त। ५ तीन की संख्या। ६ सोना।

अग्निकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्निहोत्र। हवन। २ शवदाह।

अग्निकीट—संज्ञा पुं० [सं०] समंदर कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

अग्निकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

अग्निकुल—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का एक कुल या वंश।

अग्निकोण—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व और दक्षिण का कोना।

अग्निक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।

अग्निक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आतिश-बाजी।

अग्निगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा।

वि० जिसके भीतर अग्नि हो।

अग्निज—वि० [सं०] अग्नि से उत्पन्न।

अग्निजिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

अग्निजिह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग की लपट। २ अग्नि देवता की सात जिह्वाएँ। (उनके नाम—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपी।)

अग्निज्वाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट।

अग्निदाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ आग में जलाना। २ शवदाह। मुर्दा जलाना।

अग्निदीपक—वि० [सं०] जठराग्नि को बढ़ानेवाला।

अग्निदीपन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाचन-शक्ति की बढ़ती। २ पाचनशक्ति को बढ़ाने-वाली दवा।

अग्निपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा छुआकर किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने की जाँच (प्राचीन)। २ सोने, चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।

अग्निपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में एक।

अग्निपूजक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि को देवता मानकर उसकी पूजा करनेवाला। २ पारसी।

अग्निबाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसमें से आग की ज्वाला प्रकट हो। भस्म करनेवाला बाण।

अग्निबाव—संज्ञा पुं० [सं० अग्नि + वायु] पित्ती या छुद्र पित्ती नामक रोग।

अग्निबीज—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण। सोना।

अग्निमंथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अरणी वृक्ष। २ दो लकड़ियाँ जिन्हें रगड़कर यज्ञ के लिये आग निकाली जाती है। अरणी।

अग्निमणि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा।

अग्निमांद्य—संज्ञा पुं० [सं०] भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।

अग्निमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ प्रेत। ३ ब्राह्मण। ४ चीते का पेड़।

अग्निलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] आग की लपट की रंगत और उसके झुकाव को देखकर शुभाशुभ फल बतलाने की विद्या।

अग्निवंश—संज्ञा पुं० [सं०] अग्निकुल।

अग्निवर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का मेघ।

अग्निशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।

अग्निशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। २ कलियारी।

अग्निशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग छुआकर किसी वस्तु को शुद्ध करना। २ अग्निपरीक्षा।

अग्निष्टोम—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ का रूपांतर है।

अग्निसंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ तपाना। जलाना। २ शुद्धि के लिये अग्निस्पर्श का विधान। ३. मृतक का दाह-कर्म।

अग्निहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया। यह दो प्रकार की होती है—नित्य और काम्य। पहली नित्य की जाती है किंतु दूसरी विशेष इच्छा होने पर।

अग्निहोत्री—संज्ञा पुं० [सं०] अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्न्यस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अस्त्र जिससे आग निकले। आग्नेयास्त्र। २ वह अस्त्र जो आग से चलाया जाय, जैसे, बंदूक।

अग्न्याधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि की विधानपूर्वक स्थापना। २. अग्निहोत्र।

अग्य—वि० दे० "अज्ञ"।

अग्या(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

अग्यारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि + कारिका, प्रा० अग्गिआरिआ] १ अग्नि में धूप आदि सुगंध द्रव्य देना। धूपदान। २. अग्निकुंड।

अग्र—वि० [सं०] १ अगला। सामने का। २ श्रेष्ठ। ३ प्रधान।

क्रि० वि० आगे।

अग्रगण्य—वि० [सं०] जिसकी गिनती सबसे पहले हो। प्रधान। श्रेष्ठ।

अग्रगामी—संज्ञा पुं० [सं० अग्रगामिन्] [स्त्री० अग्रगामिनी] आगे चलनेवाला। अगुआ। नेता।

अग्रज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अग्रजा] १ बड़ा भाई। २. नायक। नेता। अगुआ। ३ ब्राह्मण।

(पु) वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

अग्रजन्मा—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा भाई। २ ब्राह्मण। ३ ब्रह्मा।

अग्रणी—वि० [सं०] १. अगुआ। श्रेष्ठ। २ नेता। ३ प्रमुख।

अग्रदूत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आगे बढ़कर किसी के आने की सूचना दे।
अग्रभव—संज्ञा पुं०, वि० दे० "अग्रज"।
अग्रलिखित—वि० [सं०] आगे लिखा हुआ।
अग्रलेख—संज्ञा पुं० [सं०] दैनिक और साप्ताहिक समाचारपत्रों में संपादक द्वारा लिखित मुख्य लेख।
अग्रशोची—संज्ञा पुं० [सं० अग्रशोचिन्] पहले विचार करनेवाला। दूरदर्शी।
अग्रसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ आगे जानेवाला। अगुआ। २ आरंभ करनेवाला। ३. मुखिया। प्रधान व्यक्ति।
क्रि० वि० आगे
अग्रसोची(पु)—दे० "अग्रशोची"।
अग्रहायण—संज्ञा पुं० [सं०] अगहन। मार्गशीर्ष मास।
अग्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि का दान। २ ब्राह्मण को माफी दी हुई भूमि या गाँव।
अग्राशन—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है।
अग्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] सबसे आगे का या मानपूर्ण आसन।
अग्राह्य—वि० [सं०] १ न ग्रहण करने योग्य। न लेने लायक। २ त्याज्य। ३ न मानने लायक।
अग्रिम—वि० [सं०] १ अगाऊ। पेशगी। २ आगे आनेवाला। आगामी। ३ प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रिम धन—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेशगी। किसी कार्य या वस्तु के लिये पहले से दिया जानेवाला धन।
अग्र्य—वि० [सं०] १ अगला। २ श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० अग्रज। बड़ा भाई।
अघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। पातक। २ दुःख। ३ व्यसन। ४ अघासुर।
अघट—वि० [सं० अ=नहीं+√घट्] १ जो घटित न हो। न होने योग्य। २ दुर्घट। कठिन। (पु)३. जो ठीक न घटे। अनुपयुक्त। बेमेल।
वि० [सं० अ+हिं० √घट] १ जो कम न हो। अक्षय। २ एकरस। स्थिर।
अघटित—वि० [सं०] जो घटित न हुआ हो। २ असंभव। न होने योग्य। (पु)३ अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य। उ०—जनि मानहु हिय हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानी। —मानस। ४ अनुचित।
(पु)वि० [सं० अ+हिं० घट] बहुत अधिक। जो घटकर न हो।
अघमर्षण—वि० [सं०] पापनाशक। (मंत्र)
अघवाना—क्रि० स० [हिं० अघाना का प्रे० रूप] १ पेट भर खिलाना। २ संतुष्ट करना।
अघाउ(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० अग्घाण=तृप्त, संतुष्ट] अघाने की क्रिया या भाव। तृप्ति।
अघाट—संज्ञा पुं० दे० "अगहाट"।
अघात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आघात"।
वि० [हिं० √अघा] १ खूब। अधिक। २ भरपेट।
अघाती—वि० [हिं० अ+घाती] घात न करनेवाला।
अघाना—क्रि० अ० [प्रा० अग्घाण=तृप्त, संतुष्ट] १ भोजन से तृप्त होना। पेट भर खाना या पीना। २ संतुष्ट होना। तृप्त होना। ३ प्रसन्न होना। ४ थकना।
मुहा०—अघाकर=मन भर। यथेष्ट।
अघारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप का शत्रु। पापनाशक। २. श्रीकृष्ण।
अघासुर—संज्ञा पुं० [सं०] कंस का सेनापति अघ दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
अघी—वि० [सं०] पापी। पातकी।
अघोर—वि० [सं०] १ जो भयानक न हो। सुहावना। २ अत्यंत घोर। बहुत भयंकर।
संज्ञा पुं० १ शिव का एक रूप। २ एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मद्य-मांस का व्यवहार करते हैं और मल-मूत्र आदि से घृणा नहीं करते।
अघोरनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
अघोरपथ—संज्ञा पुं० [सं०] अघोरियों का मत या संप्रदाय।
अघोरपथी—संज्ञा पुं० [सं०] अघोर मत का अनुयायी। अघोरी। औघड़।
अघोरी—संज्ञा पुं० [सं० अघोर] [स्त्री० अघोरिन] १. अघोर मत का अनुयायी। औघड़। २ भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला।
वि० घृणित। घिनौना।
अघोष—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का एक वर्ण-समूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं।
अघौघ—संज्ञा पुं० [सं०] पापों का समूह।
अघ्रान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आघ्राण"।
अघ्रानना(पु)—क्रि० स० [सं० आघ्राण] आघ्राण करना। सूँघना।
अचंचल—वि० [सं०] १. जो चंचल न हो। स्थिर। २ धीर। गंभीर।
अचंभव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।
अचंभा—संज्ञा पुं० [सं० अत्यद्भुत, प्रा० अचब्भुय] १ आश्चर्य। अचरज। विस्मय। २ अचरज की बात।
अचंभित(पु)—वि० [हिं० अचंभा] आश्चर्यित। चकित। विस्मित।
अचंभो(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।
अचक—वि० [अ (उच्चा०)+सं० चक्र, प्रा० चक्क=समूह] भरपूर। पूर्ण। खूब। बहुत।
संज्ञा पुं० [सं० √ चक्=भ्रांत होना] १. घबराहट। भौचक्कापन। २ विस्मय।
अचकन—संज्ञा स्त्री० [सं० कंचुक ?] एक प्रकार का लंबा कलीदार पहनावा।
अचकाँ(पु)—क्रि० वि० दे० "अचानक"।
अचक्का—संज्ञा पुं० [सं० आ=भले प्रकार+चक्र=भ्रांति] अनजान।
प्र० अचक्के में=अचानक। एकाएक।
अचगरा(पु)—वि० [अ० (उच्चा०)+प्रा० जगड=झगड़ा, मि० अव० चगड] छेड़छाड़ करनेवाला। शरारती। नटखट।
अचगरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अचगर] नटखटी। शरारत। छेड़छाड़।
अचना(पु)—क्रि० स० [हिं० अचवना] आचमन करना। पीना।
अचपल—वि० [सं०] १. अचंचल। धीर। गंभीर। २ बहुत चंचल। शोख।
अचपली—संज्ञा स्त्री० [हिं० अचपल] अठखेली। किलोल। क्रीड़ा।
अचभौन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।
अचमन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आचमन"।
अचर—वि० [सं०] न चलनेवाला। स्थावर। जड़।
अचरज—संज्ञा पुं० [सं० आश्चर्य] अचंभा। तअज्जुब।
अचरिजु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अचरज"।
अचल—वि० [सं०] १ जो न चले। स्थिर। ठहरा हुआ। २ चिरस्थायी। सब दिन रहनेवाला। ३ ध्रुव। दृढ़। पक्का। मजबूत। ४ जो नष्ट न हो।
संज्ञा पुं० पर्वत। पहाड़।

अचलधृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

अचला—वि० स्त्री० [सं०] जो न चले। स्थिर। ठहरी हुई।
संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

अचला सप्तमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी।

अचवन—संज्ञा पु० [सं० आचमन] [क्रि० अचवना] १ आचमन। पीना। २ भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना।

अचवना—क्रि० स० [सं० आचमन] १ आचमन करना। पीना। २ भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना। ३. छोड़ देना। खो बैठना।

अचवाना—क्रि० स० [हिं० अचवना का प्रे० रूप] १. आचमन कराना। पिलाना। २ भोजन के बाद हाथ-मुँह धुलाना।

अचाचक—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

अचाक, अचाका(पु)—क्रि० वि० [अ (उपा०)+सं० चक्र=भ्रांति] अचानक। सहसा।

अचान(पु)—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

अचानक—क्रि० वि० [सं० अज्ञानात्] एकबारगी। सहसा। अकस्मात्।

अचार—संज्ञा पुं० [फा०] मसालों के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टा या चटपटा किया हुआ फल या तरकारी। कचूमर। अथाना।
(पु)संज्ञा पु० दे० "आचार"।
संज्ञा पुं० [सं० चार] चिरौंजी का पेड़।

अचारज(पु)—संज्ञा पु० दे० "आचार्य"।

अचारी(पु)—संज्ञा पु० [सं० आचारिन्] १ आचार-विचार से रहनेवाला आदमी। नित्यकर्म विधि से करनेवाला। २ रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।
संज्ञा स्त्री० [फा० अचार] छिले हुए कच्चे आम की धूप में सिझाई फाँक।

अचाह—संज्ञा स्त्री० [सं० अ+हिं० चाह] चाह या इच्छा का अभाव। अरुचि।
वि० जिसे चाह या इच्छा न हो।

अचाहा(पु)—वि० [सं० अ+हिं० चाहा] जिस पर रुचि या प्रीति न हो।
संज्ञा पुं० १ वह व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो। २ (पु) प्रीति न करनेवाला। निर्मोही।

अचाही(पु)—वि० [सं० अ+हिं० चाह] कुछ इच्छा न रखनेवाला। निष्काम।

अचिंत(पु)—वि० [सं० अ+चिंता] चिंता-रहित। निश्चिंत। बेफिक्र।

अचिंतनीय—वि० [सं०] जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय। दुर्बोध।

अचिंतित—वि० [सं०] १ जिसका चिंतन न किया गया हो। बिना सोचा-विचारा। २ आकस्मिक। ३ निश्चिंत। बेफिक्र।

अचिंत्य—वि० [सं०] १ जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २. जिसका अंदाजा न हो सके। अतुल। ३ आशा से अधिक। ४ आकस्मिक।

अचितवन—वि०, क्रि०वि० दे० "अनिमेष"।

अचित्—संज्ञा पु० [सं०] अचेतन। जड़ प्रकृति।

अचिर—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।
वि० १ थोड़ी अवधि का। हाल का। २. थोड़े समय तक रहनेवाला।

अचिरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] "अचिर" का भाव।

अचिरत्व—संज्ञा पुं० दे० "अचिरता"।

अचिरात्—क्रि० वि० [सं०] जल्दी।

अचीता—वि० [सं० अ+हिं० चिंता] [स्त्री० अचीती] १ जिसका पहले से अनुमान न हो। आकस्मिक। २ बहुत।
वि० [सं० अचिंत] निश्चित। बेफिक्र।

अचूक—वि० [सं० अ+हिं० √चूक] १ जो न चूके। जो अवश्य फल दिखाए। २ ठीक। भ्रमरहित। पक्का।
क्रि० वि० १. सफाई से। कौशल से। २ निश्चय। अवश्य। जरूर।

अचेत—वि० [सं०] १ चेतनारहित। बेसुध। बेहोश। मूर्छित। २ व्याकुल। विकल। ३ अनजान। बेखबर। ४ नासमझ। मूढ़। (पु)५ जड़।
(पु)संज्ञा पु० [सं० अचित्] जड़ प्रकृति। जडत्व। माया। अज्ञान।

अचेतन—वि० [सं०] १. जिसमें सुख दुःख आदि के अनुभव की शक्ति न हो। चेतनारहित। जड़। २ संज्ञाशून्य। बेहोश।

अचैतन्य—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो ज्ञानस्वरूप न हो। अनात्मा। जड़। २ चेतना का अभाव। अज्ञान।

अचैन—संज्ञा पु० [सं० अ+हिं० चैन] बेचैनी। व्याकुलता। विकलता।
वि० बेचैन। व्याकुल। विकल।

अचोख—वि० [सं० अ+हिं० चोखा] १ जो चोखा न हो। २ बुरा। ३ नरमैला।

अचोना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अचवना] आचमन करने या पीने का बरतन। कटोरा।
क्रि० स० आचमन करना। पीना। पान करना।

अचौन(पु)—संज्ञा पु० दे० "आचमन"।

अच्छ—वि० [सं०] स्वच्छ। निर्मल।
संज्ञा पु० दे० "अक्ष"।

अच्छत—संज्ञा पु० दे० "अक्षत"।

अच्छर—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

अच्छरा, अच्छरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।

अच्छा—वि० [सं० अच्छ] १. उत्तम। बढ़िया।
मुहा०—अच्छे आना=ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना। अच्छा दिन=सुख-संपत्ति का दिन। अच्छा लगना=(१) भला जान पड़ना। सजना। सोहना। (२) रुचिकर होना। पसंद आना।
२ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग।
संज्ञा पु० १ बड़ा आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २ गुरुजन। बड़े बूढ़े। (बहुवचन)
क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।
अव्य० प्रार्थना या आदेश के उत्तर में स्वीकृति सूचक शब्द। हाँ। २ खैर (कोई बात नहीं)। विस्मयद्योतक शब्द। उ०—अच्छा, आप भी यहीं हैं।

अच्छाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० अच्छा] दे० "अच्छापन"।

अच्छापन—संज्ञा पु० [हिं० अच्छा+पन (प्रत्य०)] अच्छे होने का भाव। उत्तमता।

अच्छा-विच्छा—वि० [हिं० अच्छा+विच्छा (अनु०)] १ चुना हुआ। २ भला-चंगा। नीरोग।

अच्छि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षि] आँख। नेत्र।

अच्छे—क्रि० वि० [हिं० अच्छा] ठीक तौर से। अच्छी तरह।

अच्छोत(पु)—वि० [सं० अक्षत प्रा० अच्छत] अधिक। बहुत।

अच्छोहिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

अच्युत—वि० [सं०] १ जो गिरा न हो। २ अचल। स्थिर। ३ नित्य। अविनाशी। ४ जो विचलित न हो।
संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

अच्युताग्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम।

अच्युतानंद—वि० [सं०] जिसका आनंद नित्य हो।

संज्ञा पुं० परमात्मा। ईश्वर।

अछक(पु)—वि० [सं० अ+हिं० छका] बिना छका हुआ। अतृप्त। भूखा।

अछकना(पु)—क्रि० वि० [हिं० अ+छकना] तृप्त न होना। न अघाना।

अछत(पु)—क्रि० वि० [सं० √अस् (हिं० क्रि० अछना)] १ रहते हुए। उपस्थिति में। सम्मुख। सामने। २ सिवाय। अतिरिक्त।

(पु)वि० [सं० अ=नहीं+हिं० अछत] न रहता हुआ। अनुपस्थित। अविद्यमान।

अछताना-पछताना—क्रि० अ० [अनु०+हिं० पछताना] पछताना। पश्चात्ताप करना।

अछन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अ+क्षण ?] बहुत दिन। दीर्घकाल। चिरकाल।

क्रि० वि० धीरे धीरे। ठहर ठहरकर।

अछना(पु)—क्रि० अ० [सं० अस्, प्रा० अच्छ?] विद्यमान रहना। मौजूद रहना। रहना।

अछप(पु)—वि० [सं० अ+√हिं० छिप] न छिपने योग्य प्रकट। जाहिर।

अछय(पु)—वि० दे० "अक्षय"।

अछरा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।

अछरी—संज्ञा स्त्री० दे० "अछरा"।

अछरौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर+हिं० औटी (प्रत्य०)] वर्णमाला।

अछवाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अच्छ+हिं० वाई (प्रत्य०)] १ सफाई। स्वच्छता। २ अच्छाई। अच्छापन।

अछवाना(पु)—क्रि० स० [सं० अच्छ=साफ] साफ करना। सँवारना।

अछवानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अजवाइन] अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीसकर घी में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।

अछाम(पु)—वि० [सं० अक्षाम] १ मोटा। २ बड़ा भारी। ३ हृष्ट पुष्ट। बलवान्।

अछूत—वि० [सं० अ=नहीं+छुप्त] १ जो छुआ न गया हो। २ जो काम में न लाया गया हो। अयुक्त। उ०—अरगहि अछूत छुआ नहिं काहू।—पदमावत। ३ जिसे अपवित्र मानकर लोग न छुएँ। अस्पृश्य। अंत्यज जाति का, जैसे, डोम, चमार आदि।

संज्ञा पुं० उस जाति का मनुष्य जिसे लोग छूना ठीक न समझें। अस्पृश्य। अंत्यज।

अछूता—वि० [सं० अ=नहीं+छुप्त, प्रा० छुत्त=छुआ हुआ] [स्त्री० अछूती] १ जो छुआ न गया हो। अस्पृष्ट। २ जो काम में न लाया गया हो। नया। कोरा। ताजा।

अछूतोद्धार—संज्ञा पुं० [हिं० अछूत+सं० उद्धार] अछूतों या अस्पृश्य जातियों का उद्धार और सुधार।

अछेद(पु)—वि० [सं० अछेद्य] जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। अखंड्य।

संज्ञा पुं० अभेद। अभिन्नता।

अछेद्य—वि० [सं०] १ जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। २ अविनाशी।

अछेव(पु)—वि० [सं० अछिद्र] छिद्र या दूषण रहित। निर्दोष। बेदाग।

अछेह(पु)—वि० [सं० अछेद्य ?] १ निरंतर। लगातार। २ बहुत अधिक। ज्यादा।

अछोप(पु)—वि० [सं० अ+हिं० √छोप] १ आच्छादन-रहित। नंगा। २ तुच्छ। दीन। ३. पुराना और अप्रचलित (राग)।

अछोभ—वि० दे० "अक्षोभ"।

अछोर—वि० [सं० अ+हिं० छोर] १ जिसका ओर-छोर न हो। २ बेहद। बहुत। अधिक।

अछोह—संज्ञा पुं० [सं० अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव। शांति। स्थिरता। २ दया-शून्यता। निर्दयता।

अछोही—वि० [हिं० अछोह] निर्दय। निष्ठुर।

अजगम—संज्ञा पुं० [सं०] छप्पय का एक भेद।

अज—वि० [सं०] जिसका जन्म न हो। अजन्मा। स्वयंभू।

संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ कामदेव। ५ सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे। ६ बकरा। ७ मेंढ़ा। ८ माया। शक्ति।

(पु)क्रि० वि० [सं० अद्य] अब। अभी तक। (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है।)

अजगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा।

अजगर—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के भारीपन के लिये प्रसिद्ध है।

अजगरी—संज्ञा स्त्री० [सं० अजगरीय] अजगर की-सी बिना परिश्रम की जीविका।

(पु)वि० १ अजगर का-सा। २ बिना परिश्रम का।

अजगव—संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी का धनुष। पिनाक।

अजगुत—संज्ञा पुं० [सं० अयुक्त, हिं० स्त्री० अजुगुति] १ युक्ति-विरुद्ध बात। २ अनुचित बात। असंगत बात।

वि० आश्चर्यजनक। असंगत।

अजगैब(पु)—संज्ञा पुं० [फा० अज़+गैब] अलक्षित स्थान। अदृष्ट स्थान। परोक्ष।

अजड़—वि० [सं०] जो जड़ न हो। चेतन।

संज्ञा पुं० चेतन पदार्थ।

अजदहा—संज्ञा पुं० दे० "अजगर"।

अजन—वि० [सं०] जन्म के बंधन से मुक्त। अनादि। स्वयंभू।

वि० [सं०] निर्जन। सुनसान।

अजनबी—वि० [अ०] १. अज्ञात। अपरिचित। २ नया आया हुआ। परदेशी। ३ अनजान।

अजन्म—वि० दे० "अजन्मा"।

अजन्मा—वि० [सं०] जिसका अस्तित्व बिना जन्म के हो। अनादि। नित्य।

अजपा—वि० [सं०] १ जिसका उच्चारण न किया जाय। २ जो जपा न जाय।

संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का एक मंत्र। वह जप जिसके मूल मंत्र "हंस" का उच्चारण श्वास-प्रश्वास के आने-जाने मात्र से हो जाय।

अजब—वि० [अ०] विलक्षण। अद्भुत। विचित्र। अनोखा।

अजमाना—क्रि० स० दे० "आजमाना"।

अजमोद—संज्ञा पुं० [फा० अजमूद] अजवायन की तरह का एक पेड़।

अजय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पराजय। हार। २ छप्पय छंद का एक भेद।

वि० जो जीता न जा सके। अजेय।

अजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजया। भाँग।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० अजा] बकरी।

अजय्य—वि० [सं०] जो जीता न जा सके। अजेय।

अजर—वि० [सं०] १ जरारहित। जो बूढ़ा न हो। २ जो सदा एकरस रहे।

(पु)वि० [सं० अ=नहीं+√जृ= पचना] जो न पचे। जो हजम न हो।

अजरायल(पु)—वि० [सं० अजर] जो जीर्ण न हो। पक्का। चिरस्थायी।

अजराल—वि० [स० अ+ जरा] बलवान्।

अजवायन—सज्ञा स्त्री० [सं० यवानिका] एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम आते है। यवानी।

अजस(पु)—सज्ञा पुं० [अयश] अपयश। अपकीर्ति। बदनामी।

अजसी—वि० [हिं० अजस] १. अपयशी। बदनाम। निंद्य। २ जिसे यश न मिले।

अजस्त्र—क्रि० वि० [सं०] सदा। हमेशा।
वि० [स्त्री० अजस्रा] सदा रहनेवाला।

अजहत्स्वार्था—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे। उपादान लक्षणा।

अजहद—क्रि० वि० [फा०] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

अजहूँ, अजहूँ(पु)—क्रि० वि० [हिं० आज +हूँ (प्रत्य०)] १ आज तक। २ अभी तक।

अजांई—संज्ञा स्त्री० [अ० अज़ाब] १ सकट। २. पाप।
वि० व्यर्थ।

अजा—वि० स्त्री० [सं०] जिसका जन्म न हुआ हो। जन्मरहित।
सज्ञा स्त्री० १. बकरी। २ साख्य मतानुसार प्रकृति या माया। ३ शक्ति। दुर्गा।

अजाचक—सज्ञा पु० दे० "अयाचक"।

अजाची—सज्ञा पुं० दे० "अयाची"।

अजात—वि० [सं०] जो पैदा न हुआ हो। जन्मरहित। अजन्मा।
वि० दे० "अजाती"।

अजातशत्रु—वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो। शत्रुविहीन।
सज्ञा पुं० १. राजा युधिष्ठिर। २ शिव। ३. उपनिषद् में वर्णित काशी का एक ज्ञानी राजा। ४. राजगृह (मगध) के राजा बिंबसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध का समकालीन था।

अजाति—संज्ञा स्त्री० [सं० अ+जाति] १. जातिरहित। उ०—अगुन अमान अजाति मातु-पितु हीनहि।—पा० म०।

अजाती—वि० [सं० अ+जाति] जाति से निकाला हुआ। पंक्तिच्युत।

अजान—वि० [स० अ+हि० √जान] १ जो न जाने। अनजान। अबोध। नासमझ। २. अपरिचित। अज्ञात।
सज्ञा पुं० १ अज्ञान। अनभिज्ञता। जानकारी का अभाव। ('में' के साथ) २ एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
सज्ञा पुं० [अ० अज़ान] नमाज की पुकार जो मसजिदों में होती है। बाँग।

अजानता(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "हिं० अजान +ता (प्रत्य०)] अज्ञानपन"।

अजानपन—सज्ञा पुं० [स० अज्ञान+हिं० पन (प्रत्य०)] अनजानपन। नासमझी।

अजानवीरी—सज्ञा पुं० [सं० अज्ञात+वीरुध्] एक बड़ा पेड़ जिसके सबध में कहा जाता है कि उसके नीचे जाने से आदमी सुध-बुध भूल जाता है। उ०—कोइ अजानवीरी तर भूली।—पद्मावत।

अजानी—वि० [हिं० अजान] मूर्ख। उ०—रानी मैं जानी अजानी महा।—कविता०।

अजाब—संज्ञा पु० [अ०] १ दु ख। कष्ट। २ विपत्ति। आफत। ३ पाप के कारण होनेवाली पीड़ा।

अजामिल—सज्ञा पुं० [स०] पुराणों के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था।

अजाय(पु)—वि० [अ=नहीं+फा० जा] बेजा। अनुचित।

अजायब—संज्ञा पु० [अ०] "अजब" का बहुवचन। १ विलक्षण पदार्थ या व्यापार। २. अनोखे पदार्थों का सग्रह।

अजायबखाना—सज्ञा पुं० [अ०] वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखे जाते हैं। संग्रहालय।

अजायबघर—सज्ञा पुं० [अ० अजायब+हिं० घर] दे० "अजायबखाना"।

अजार(पु)—सज्ञा पुं० दे० "आजार"।

अजारा—सज्ञा पु० दे० "इजारा"।

अजिऔरा(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० आजी+स० पुर] आजी वा दादी के पिता का घर।

अजित—वि० [स०] जो जीता न गया हो।
सज्ञा पुं० १ विष्णु। २ शिव। ३. बुद्ध।

अजितेंद्रिय—वि० [स०] जो इंद्रियों के वश में हो। इंद्रियलोलुप। विषयासक्त।

अजिन—संज्ञा पु० [सं०] १ काले मृग की खाल। २ चमड़ा।

अजिर—सज्ञा पुं० [सं०] १ आँगन। सहन। २ वायु। हवा। ३. शरीर। ४ इंद्रियों का विषय।

अजी—अव्य० [स० अयि !] सबोधन शब्द। हे जी।

अजीज—वि० [अ०] प्यारा। प्रिय।
सज्ञा पु० संबधी। सुहृद्।

अजीत—वि० दे० "अजित"।

अजीब—वि० [अ०] विलक्षण। विचित्र। अनोखा।

अजीरन—सज्ञा पु० दे० "अजीर्ण"।

अजीर्ण—सज्ञा पुं० [स०] १. अपच। अध्यशन। बदहज्मी। अन्न न पचने का दोष। २ आधिक्य। बहुतायत। जैसे, बुद्धि का अजीर्ण। (व्यग्य)
वि० जो पुराना न हो। नया।

अजीव—सज्ञा पुं० [स०] अचेतन। जीवतत्त्व से भिन्न जड़ पदार्थ।
वि० बिना प्राण का। मृत।

अजुगुत—सज्ञा पुं० दे० "अजगुत"।

अजू(पु)—अव्य० दे० "अजी"।

अजूजा(पु)—सज्ञा पु० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दा खाता है।

अजूबा—वि० [अ०] अद्भुत। अनोखा।

अजूरा(पु)—सज्ञा पुं० [स० अ+हिं० जुड़ा] जो जुड़ा न हो। पृथक्। अलग।
सज्ञा पुं० [अ०] १ मजदूरी। २ भाड़ा।

अजूह(पु)—संज्ञा पु० [सं० युद्ध] लड़ाई।

अजेय—वि० [स०] जिसे कोई जीत न सके।

अजै—वि० दे० "अजय"।
वि० दे० "अजेय"।

अजोग—वि० दे० "अयोग्य"।

अजोता—सज्ञा पुं० [स० अयुक्त] चैत्र की पूर्णिमा। (इस दिन बैल नहीं नाधे जाते।)

अजोरना(पु)—क्रि० स० [हिं० जोड़ना] इकट्ठा करना। जमा करना।
क्रि० वि० दे० "अँजोरना"।

अजौं(पु)—क्रि० वि० [हिं० अजहुं] अब भी। अब तक।

अज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] मूर्ख। नासमझ।

अज्ञता—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्ञान का अभाव। मूर्खता। जड़ता। नादानी। नासमझी।

अज्ञा—सज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

अज्ञाकारी(पु)—वि० दे० "आज्ञाकारी"।

अज्ञात—वि० [सं०] १. बिना जाना हुआ। अविदित। अप्रकट। अपरिचित। २ जिसे ज्ञात न हो। जैसे-अज्ञातयौवना।
क्रि० वि० बिना जाने। अनजान में।

अज्ञातनामा—वि० [सं०] १. जिसका नाम विदित न हो। २. अविख्यात। तुच्छ।

अज्ञातयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन-आगमन का ज्ञान न हो।

अज्ञातवास—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके। छिपकर रहना।

अज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. बोध का अभाव। जड़ता। मूर्खता। २ जीवात्मा को त्रिगुण और उनके कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक। ३ न्याय में एक निग्रह स्थान।
वि० जिसे कुछ भी ज्ञान न हो। मूर्ख। जड़। नासमझ।

अज्ञानी—वि० [सं० अ+ज्ञानिन्] मूर्ख। नासमझ।

अज्ञेय—वि० [सं०] जो समझ में न आ सके। ज्ञानातीत।

अज्यों(पु)—क्रि० वि० दे० "अजौं"।

अझर(पु)—वि० [सं० अ = नहीं + हिं√झर] जो न झरे। जो न गिरे। जो न बरसे।

अझूना(पु)—वि० [हिं० अ+सं० झूना =जीर्ण] जो कभी जीर्ण न हो। स्थायी।

अझोरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झोली"।

अटंबर—संज्ञा पुं० [सं० अट्ट = ऊँचा+फा० अंबार] अटाला। ढेर। राशि।

अट—संज्ञा स्त्री० [हिं० अटक] १. शर्त। कैद। २ रुकावट। प्रतिबंध।

अटक—संज्ञा स्त्री० [हिं० अटकना] [क्रि० अटकना, वि० अटकाऊ] १ रोक। रुकावट। अड़चन। बाधा। २. संकोच। हिचक। ३ सिंध नदी। ४ अकाज। हर्ज।

अटकन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अटक"।

अटकन-बटकन—संज्ञा पुं० [देश०] छोटे लड़कों का एक खेल।

अटकना—क्रि० अ० [सं० आटक्न?] १. रुकना। फँसना। लगा रहना। २ प्रेम में फँसना। ३. विवाद करना। झगड़ना।

अटकर(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अटकल"।

अटकरना(पु)—क्रि० स० [हिं० अटकर] अंदाज करना। अटकल लगाना।

अटकल—संज्ञा स्त्री० [सं०√अट् =घूमना+√कल् =गिनना] १ अनुमान। कल्पना। २ अंदाज। कूत।

अटकलना—क्रि० स० [हिं० अटकल] अटकल लगाना। अनुमान करना।

अटकलपच्चू—संज्ञा पुं० [हिं० अटकल+पच्चा] केवल अंदाज। कल्पना। केवल अनुमान।
वि(पु) खयाली ऊटपटाँग।
क्रि० वि० अंदाज से। अनुमान से।

अटका—संज्ञा पुं० [उड़ि० आटिका] जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात और धन।

अटकाना—क्रि० स० [हिं० 'अटकना' का स० रूप] १. रोकना। ठहराना। अड़ाना। २. उलझाना। ३ पूरा करने में विलंब करना।

अटकाव—संज्ञा पुं० [हिं०√अटक+आव (प्रत्य०)] १ रोक। रुकावट। प्रतिबंध। २ बाधा। विघ्न।

अटखट(पु)—वि० [अनु०] अट्टसट्ट। अंडबंड।

अटखेली—संज्ञा स्त्री० दे० "अठखेली"।

अटन—संज्ञा पुं० [सं०] घूमना। फिरना।

अटना—क्रि० अ० [सं० अटन] १. घूमना। फिरना। २ यात्रा करना। सफर करना।
क्रि० अ० [हिं० ओट?] आड़ करना। ओट करना। छेकना।
क्रि० अ० दे० "अँटना"।

अटपट—वि० [प्रा० अट्टमट्ट] [स्त्री० अटपटी] १ विकट। कठिन। २ दुर्गम। दुस्तर। ३ गूढ़। जटिल। ४. ऊटपटाँग। बेठिकाने।

अटपटाना—क्रि० अ० [हिं० अटपट] १. अटकना। लड़खड़ाना। २. गड़बड़ाना। चूकना। ३ हिचकना। संकोच करना।

अटपटी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अटपट] नटखटी। शरारत। अनरीति।

अटम्बर—संज्ञा पुं० [सं० आडंबर] १ आडंबर। २ दर्प।
संज्ञा पुं० [प० टब्बर=परिवार] खानदान। परिवार। कुटुंब। कुनबा।

अटरनी—संज्ञा पुं० [अं० एटारनी] १. एक प्रकार का मुख्तार जो कलकत्ता और बंबई हाईकोर्टों में मुअक्किलों के मुकदमे लेकर पैरवी के लिये बैरिस्टर नियुक्त करता था (स्वतंत्रता-पूर्व)। २. सरकारी मुकदमों की पैरवी करनेवाला वकील।

अटल—वि० [सं०] १. जो न टले। स्थिर। २. जो सदा बना रहे। नित्य। चिरस्थायी। ३ जिसका होना निश्चित हो। अवश्यंभावी। ४ ध्रुव। पक्का।

अटवाटी-खटवाटी—संज्ञा स्त्री० [अनु०+ह० खाट+पाटी] खाट-खटोला। साज-समाज।
मुहा०—अटवाटी-खटवाटी लेकर पड़ना =कामकाज छोड़ रूठकर अलग पड़ रहना।

अटवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन। जंगल।

अटहर—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट=अटाला] १ अटाला। ढेर। २ फेंटा। पगड़ी।
संज्ञा पुं० [हिं० अटक] कठिनाई।

अटा—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट=अटारी] घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।
संज्ञा पुं० [सं० अट्ट=अतिशय] अटाला। ढेर। राशि। समूह।

अटाउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अट्ट=अतिक्रमण +हिं० आउ (प्रत्य०)?] १. बिगाड़। बुराई। २. नटखटी। शरारत।

अटाटूट—वि० [सं० अट्टट्ट] नितांत। बिल्कुल।

अटारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टालिका] घर के ऊपर की कोठरी या छत। चौबारा। कोठा।

अटाल—संज्ञा पुं० [सं० अट्टाल] बुर्ज। धरहरा।

अटाला—संज्ञा पुं० [सं० अट्टाल] १ ढेर। राशि। २ सामान। असबाब। ३ कसाइयों की बस्ती।

अटित—वि० [सं० अट्ट] जिसमें अटा या अटारी हो। अटारीवाला।
वि० [सं० अटन] घुमावदार।

अटूट—वि० [सं० अ=नहीं+हिं०√टूट] १ न टूटने योग्य। दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २ जिसका पतन न हो। अजेय। ३. अखंड। लगातार। ४ बहुत अधिक।

अटेक—संज्ञा पुं० [हिं० अ+टेक] बिना टेक का। अप्रतिष्ठ।

अटेरन—संज्ञा पुं० [सं०√अट्=घूमना+ईरण=गमन] [क्रि० अटेरना] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का यंत्र।

श्रोयना। २ घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।

अटेरना—क्रि० स० [हिं० अटेरन] १ अटेरन से सूत की आँटी बनाना। २ मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।

अटोक(पु)—वि० [सं० अ+हिं०√टोक] विना रोक-टोक का।

अट्ट—सज्ञा पुं० [सं०] १ अट्टालिका। अटारी। २ मकान में सबसे ऊपर का कोठा। ३ हाट। बाजार।

वि० १ ऊँचा। २ जिसमें जोर का शब्द हो, जैसे, अट्टहास।

अट्ट-सट्ट—सज्ञा पुं० [अनु०] अनाप-शनाप। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

अट्टहास—सज्ञा पुं० [सं०] जोर की हँसी। ठठाकर हँसना।

अट्टा—संज्ञा पुं० [सं० अट्टालिका] कोठा। अटारी। महल। अटा।

अट्टालिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] अटारी। कोठा।

अट्टी—सज्ञा स्त्री० [हिं० अंठी] अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।

अट्ठा—सज्ञा पुं० [सं० अष्टक] ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस, अट्ठाईस—वि० [सं० अष्टाविंशति] बीस और आठ। २८।

अट्ठानवे—वि० [सं० अष्टानवति] नब्बे और आठ। ९८।

अट्ठावन—वि० [सं० अष्टपंचाशत] पचास और आठ। ५८।

अट्ठासी—वि० दे० "अठासी"।

अठंग(पु)—सज्ञा पुं० [सं० अष्टांग] अष्टांग योग।

अठ(पु)—वि० दे० "आठ"। (समास में)

अठइसी—सज्ञा स्त्री० [हिं० अट्ठाइस] २८ गाही अर्थात् १४० फलों की संख्या जिसे फलों के लेन-देन में सैकड़ा मानते हैं।

अठई—सज्ञा स्त्री० [सं० अष्टमी] अष्टमी तिथि।

अठकौशल—सज्ञा पुं० [सं० अष्टकौशल] १ गोष्ठी। पचायत। २ सलाह। मन्त्रणा।

अठखंभी—सज्ञा पुं० [सं० अष्ट+स्कंभ] आठ खंभों पर बना हुआ विशेष मंडप जहाँ राजा का आसन रखा जाता था।

अठखेली—सज्ञा स्त्री० [सं० अष्टकेलि] १ विनोद। क्रीडा। २ चपलता। चुलबुलापन। ३ मतवाली या मस्तानी चाल।

अठत्तर—वि० दे० "अठहत्तर"।

अठन्नी—सज्ञा स्त्री० [हिं० आठ+अन्नी (आना)] आठ आने मूल्य का एक सिक्का।

अठपहला—वि० [सं० अष्टपटल] आठ कोनेवाला। जिसमें आठ पार्श्व हों।

अठपाव(पु)—सज्ञा पुं० [सं० अष्टपाद] उपद्रव। ऊधम। शरारत।

अठमासा—सज्ञा पुं० दे० "अठवाँसा"।

अठमासी—सज्ञा स्त्री० [हिं० आठ+मासा] आठ माशे के सोने का सिक्का। सावरेन। गिनी।

अठलाना(पु)—क्रि० अ० [सं० अस्थिर ?] १ ऐंठ दिखलाना। इतराना। ठसक दिखाना। २ चोचला करना। नखरा करना। ३ मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना। ४ छेड़ने के लिये जान-बूझकर अनजान बनना।

अठवना—क्रि० अ० [सं० आस्थान] जमना। ठनना।

अठवाँस—वि० [सं० अष्टपार्श्व] अठपहला।

अठवाँसा—वि० [सं० अष्टमास] वह बच्चा जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय।

सज्ञा पुं० १ सीमंत संस्कार। २ वह खेत जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय।

अठवारा—सज्ञा पुं० [हिं० आठ+सं० वार] आठ दिन का समय। आधा पक्ष।

अठसिल्या(पु)—सज्ञा पुं० [सं० अष्टशल्य] सिंहासन।

अठहत्तर—वि० [सं० अष्टसप्तति, प्रा० अट्ठहत्तरि] सत्तर और आठ। ७८।

अठाई(पु)†—वि० [सं० अत्यायी]। उत्पाती। नटखट। शरारती। उपद्रवी।

अठान(पु)—सज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+हिं०√ठान] १ न ठानने योग्य कार्य। न करने योग्य काम। २ दुष्कर कर्म। ३ वैर। शत्रुता। ४ झगड़ा।

अठाना(पु)†—क्रि० स० [अट्ट=वध करना] सताना। पीड़ित करना।

क्रि० स० [हिं० ठानना] मचाना। ठानना।

अठारह—वि० [सं० अष्टादश] दस और आठ। १८।

सज्ञा पुं० १ काव्य में पुराणसूचक संकेत या शब्द। २ चौसर का एक दावँ।

अठासी—वि० [सं० अष्टाशीति] अस्सी और आठ। ८८।

अठिलाना(पु)—क्रि० अ० दे० "अठलाना"।

अठेल(पु)—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √ठेल] बलवान्। मजबूत। जोरावर।

अठोठ(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० ठाट]। ठाट आडंबर। पाखंड।

अठोतर सौ—वि० [सं० अष्टोत्तरशत] एक सौ आठ। सौ और आठ। १०८।

अठोतरी—सज्ञा स्त्री० [सं० अष्टोत्तरी] एक सौ आठ दानों की जपमाला।

अड़गा—सज्ञा पुं० [प्रा० अड्ड=आड़े आनेवाला+हिं० अगा (प्रत्य०)] १. रुकावट। २ बाधा। विघ्न।

अडड(पु)—वि० दे० "अदृढ़"।

अडंबर—सज्ञा पुं० दे० "आडंबर"।

अड़—संज्ञा स्त्री० [सं०√अल्] १. अड़ने की क्रिया या भाव। २ टेक। ३. हठ। जिद।

अड़काना†—क्रि० स० दे० "अटकाना"।

अडग—वि० [हिं० अडिग] न डिगनेवाला। अटल। अचल।

अड़गड़ा—संज्ञा पुं० [अनु०] १. बैल-गाड़ियों के ठहरने का स्थान। २ बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।

अड़गोड़ा—सज्ञा पुं० [हिं० अड़+गोड़ा] लकड़ी का वह टुकड़ा जो नटखट चौपायों के गले में बाँधते हैं।

अड़चन—सज्ञा स्त्री० [हिं० अड़+√चल ?] अंटस। आपत्ति। कठिनाई।

अड़चल—सज्ञा स्त्री० दे० "अड़चन"।

अड़तल—सज्ञा पुं० [हिं० आड़+सं० तल] १ आड़। २ शरण। ३ बहाना। हीला।

अड़तालीस—वि० [सं० अष्टचत्वारिंशत] चालीस और आठ। ४८।

अड़तीस—वि० [सं० अष्टत्रिंशत] तीस और आठ। ३८।

अड़दार—वि० [हिं० √अड़+फा० दार (प्रत्य०)] १ अड़ियल। रुकनेवाला। २. ऐंड़दार। ३ मस्त। मतवाला।

अड़ना—क्रि० अ० [सं०√अल्=वारण करना] १. रुकना। ठहरना। २. हठ करना।

अड़बंग(पु)†—वि० पुं० [हिं०√अड़+सं० वक्र] १ टेढ़ा-मेढ़ा। अड़बड़। अटपट। २ विकट। कठिन। दुर्गम। ३ विलक्षण।

अड़बंध—संज्ञा पुं० [हिं० √अड़+सं० बंध] मृतक को पहनाया जानेवाला कौपीन। लँगोट।

अड़बल्ला—वि० [हिं०] अड़नेवाला। अड़ियल। हठी।

अडर(पु)—वि० [सं० अ+हिं० डर] निडर। निर्भय। बेडर।

अड़सठ—वि० [सं० अष्टषष्टि] साठ और आठ। ६८।

अड़हुल—संज्ञा पुं० [सं० ओण्ड्र+पुल्ल] देवीफूल। जपा या जवा पुष्प।

अड़ाड़—संज्ञा पुं० [हिं० √अड़्+आड़] १. चौपायों के रहने का हाता। खरिक। २ दे० "अड़ार"।

अड़ान—संज्ञा स्त्री० [हिं० √अड़+आन (प्रत्य०)] अड़ने या रुकने की जगह। २ अड़ने या रुकने की क्रिया या भाव। ३ पड़ाव।

अड़ाना—क्रि० स० [हिं० अड़ना का प्रे० रूप] १ अटकाना। फँसाना। २. टेकना। डाट लगाना। ३ कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना। ४ ठूँसना। भरना। ५ गिराना। ढरकाना।

संज्ञा पुं० १ एक राग। २ वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिये लगाई जाती है। डाट। चाँड़। थूनी।

अड़ाती—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का बड़ा पंखा। २ अड़ंगा।

अड़ायता—वि० [हिं० √अड़+आयता (प्रत्य०)] [स्त्री० अड़ायती] जो आड़ करे। ओट करनेवाला।

अड़ार—संज्ञा पुं० [सं० अट्टाल=बुर्ज] १ समूह। राशि। ढेर। २ ईंधन का ढेर जो बेचने के लिये रखा हो। टाल। ३. लकड़ी या ईंधन की दुकान। ४. नदी के किनारे की ऊँची भूमि।

(पु)वि० [सं० अराल] टेढ़ा। तिरछा। अड़ा।

अड़ारना(पु)—क्रि० स० [हिं० डालना] टालना। देना।

अडिग—वि० [हिं० अ+√डिग] न डिगनेवाला। दृढ़। स्थिर।

अड़ियल—वि० [हिं० √अड़+इयल (प्रत्य०)] १ अड़कर चलनेवाला। चलते चलते रुक जानेवाला। २ सुस्त। मट्ठर। ३ हठी। जिद्दी।

अड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. काठ की, एक विशेष आकृति की बनी हुई टेकनी जिसपर साधु लोग टेक लगाकर बैठते हैं। २. सूत की लंबी पिंडी। अँटिया। आँटी।

अड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √अड़]। १ जिद। हठ। आग्रह। २ रोक। ३. जरूरत का वक्त या मौका।

अडीठ—वि० [हिं० अ+डीठ] १ जो दिखाई न दे। २. छिपा हुआ। गुप्त।

अडूलना(पु)—क्रि० स० [अ (उच्चा०)+हिं० डुलना।] जल आदि ढालना। उड़ेलना। डालना। गिराना।

अडूसा—संज्ञा पुं० [सं० अटरूष] एक पौधा जिसके फूल और पत्ते, कास, श्वास आदि की औषध हैं।

अड़ेंच—संज्ञा स्त्री० [देश०] शत्रुता। द्वेष। मनमुटाव।

अड़ैता(पु)—वि० दे० "अड़ायता"।

अडोर—वि० १ दे० "अडोल"। २. दे० "अँदोर"।

अडोल—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √डोल] १ जो हिले नहीं। अटल। स्थिर। २. स्तब्ध।

अड़ोस-पड़ोस—संज्ञा पुं० [अनु०+हिं० पड़ोस] आसपास। करीब।

अड़ोसी-पड़ोसी—संज्ञा पुं० [अनु०+हिं० पड़ोस] आसपास का रहनेवाला।

अड्डा—संज्ञा पुं० [सं० अट्टा=ऊँची जगह] १ टिकने की जगह। ठहरने का स्थान। २ मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ३ केंद्र स्थान। प्रधान स्थान। ४. चिड़ियों के बैठने के लिये लकड़ी या लोहे की छड़। ५ कबूतरों की छतरी। ६ करघा।

अढ़तिया—संज्ञा पुं० [हिं० आढ़त+इया (प्रत्य०)] दे० "आढ़तिया"।

अढ़न—संज्ञा पुं० [?] १ अनुशासन। आज्ञा। २. मर्यादा।

अढ़वना(पु)—क्रि० स० [सं० आज्ञापन ?] आज्ञा देना। काम में लगाना।

अढ़वायक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आज्ञापक ?] दूसरों से काम लेनेवाला।

अढ़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० आढक का अल्पा०] काठ, पत्थर या लोहे का छोटा बर्तन।

अढ़ुक—संज्ञा पुं० [हिं० √अड़] ठोकर।

अढ़ुकना—क्रि० अ० [हिं० अ (उच्चा०)+ढुकना] १ ठोकर खाना। २. सहारा लेना।

अढ़ैया—संज्ञा पुं० [हिं० अढ़ाई] १. अढ़ाई सेर की तौल या बाट। २ ढाई गुने का पहाड़ा।

अणरता—वि० [प्रा० अण=नहीं+रत्त=रागयुक्त] अनासक्त। उ०—अणरता सुख सोवणा रातै नींद न आइ।—कबीर।

अणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नोक। २ धार। ३. सीमा। हद। ४. किनारा।

वि० बहुत छोटा।

अणिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियों में पहिली सिद्धि जिससे योगी इतना सूक्ष्म बन जाता है कि किसी को दिखाई नहीं देता।

अणी(पु)—सर्व० [सं० अयि] अरी। एरी।

अणु—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूक्ष्मतम अविभाज्य कण। २. छोटे से छोटा टुकड़ा या कण। ३. रजकण। ४. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा।

वि० १ अति सूक्ष्म। अत्यंत छोटा। २ जो दिखाई न दे।

अणु बम—संज्ञा पुं० [सं० अणु+अं० बाम्ब] एक प्रकार का अति भीषण और संहारकारी बम जो अपना कार्य अणु के विस्फोट के द्वारा करता है।

अणुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दर्शन या सिद्धांत जिसमें सृष्टि का आदिकारण अणु और परमाणु हैं। २ वैशेषिक दर्शन।

अणुवादी—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैशेषिक दर्शन का माननेवाला। २ कणाद और उनके अनुयायी।

अणुवीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूक्ष्मदर्शक यंत्र। खुर्दबीन। २ बाल की खाल निकालना। ३ छिद्रान्वेषण।

अतंक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आतंक"।

अतंद्रिक—वि० [सं०] १ आलस्यरहित। चुस्त। चंचल। २ व्याकुल। बेचैन।

अतः—क्रि० वि० [सं०] इस वजह से। इसलिये। इस वास्ते।

अतएव—क्रि० वि० [सं०] इसलिये। इस वजह से।

अतत्थ्य—संज्ञा पुं० [सं० अतथ्य] दे "अतथ्य"।

अतथ्य—वि० [सं०] १ अयथार्थ। झूठ २ असमान।

अतद्गुण—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक वस्तु का किसी ऐसी दूसरी वस्तु के गुणों को न ग्रहण करना दिखलाया जाय जिसके वह अत्यंत निकट हो।
अतन(पु)—वि० दे० "अतनु"।
अतनु—वि० [सं०] १ शरीररहित। विना देह का। २ मोटा। स्थूल।
संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।
अतर—संज्ञा पुं० [अ० इत्र] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।
अतरक(पु)—वि० दे० "अतर्क्य"।
अतरदान—संज्ञा पुं० [फा० इत्रदान] इत्र रखने का चाँदी सोने या धातु का बर्तन।
अतरसों—क्रि० वि० [सं० इतर+श्व] परसों के आगे का दिन। आनेवाला चौथा दिन।
अतरिख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।
अतर्कित—वि० [सं०] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। २ आकस्मिक। बेसोचा-समझा। जो विचार में न आया हो।
अतर्क्य—वि० [सं०] जिस पर तर्क-वितर्क न हो सके। अनिर्वचनीय। अचिंत्य।
अतल—संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में दूसरा पाताल।
अतलस—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
अतलस्पर्शी—वि० [सं०] अतल को छूनेवाला। अत्यंत गहरा। अथाह।
अतलांतक—संज्ञा पुं० [अं० एटलांटिक] यूरोप और अफ्रिका के पश्चिमी तटों से अमेरिका के पूर्वी तटों तक फैला हुआ महासागर। एटलांटिक।
अतवान—वि० [सं० अति + ?] बहुत। ज्यादा।
अतवार—संज्ञा पुं० दे० "रविवार"।
अतसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अलसी (पौधा)।
अताई—वि० [अ०] १. दक्ष। कुशल। प्रवीण। २ धूर्त। चालाक। ३ अतिमावान्। जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे।
अत्तार—संज्ञा पुं० [अ० अत्तार] गंधी। इत्र बेचने या निकालनेवाला।
अति—वि० [सं०] बहुत। अधिक।
अतिकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] महाकल्प। एक ब्रह्मा की पूरी आयु। ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष।
संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती।
अतिकाय—वि० [सं०] स्थूल। मोटा।
अतिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. विलंब। देर। २ कुसमय।
अतिकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत कष्ट। २. छ दिनों का एक व्रत।
अतिकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पच्चीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ नियम सीमा या मर्यादा का उल्लंघन। २ विपरीत व्यवहार।
अतिक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] हद के बाहर जाना। मर्यादा का भंग। उल्लंघन।
अतिक्रांत—वि० [सं०] १ हद के बाहर गया हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत।
अतिगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।
अतिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोगकाल समाप्त किए बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना। २ विघात। व्यतिक्रम।
अतिजगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिथि—संज्ञा पुं० [सं०] १. अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। २ वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य। ३ अग्नि। ४ यज्ञ में सोमलता लानेवाला।
अतिथिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिथि का आदर-सत्कार। मेहमानदारी। पंचमहायज्ञों में से एक।
अतिथियज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का आदर-सत्कार। अतिथिपूजा।
अतिदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोप। २ वह नियम जो और विषयों में भी काम आवे।
अतिधृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिपतन—संज्ञा पुं० दे० "अतिपात"।
अतिपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ अतिक्रम। अव्यवस्था। गड़बड़ी। २ बाधा। विघ्न।
अतिपातक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पुरुष का माता, बेटी और पतोहू के साथ अथवा स्त्री का पुत्र, पिता और दामाद के साथ सहगमन।
अतिबरवै—संज्ञा पुं० [सं० अति+हिं० बरवै] एक छंद।
अतिबल—वि० [सं०] प्रबल। प्रचंड।
अतिबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन युद्ध-विद्या जिसके सीखने से श्रम और ज्वर आदि की बाधा का भय नहीं रहता था। २ कँगही नाम का पौधा।
अतिमुक्त—वि० [सं०] १ जिसकी मुक्ति हो गई हो। २ विषयवासनारहित। ३. एक लता।
अतिरंजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अतिरंजित] बढ़ा-चढ़ाकर कहने की रीति। अत्युक्ति।
अतिरंजना—संज्ञा स्त्री० दे० "अतिरंजन"।
अतिरथी—संज्ञा पुं० [सं०] अनेक योद्धाओं से लड़नेवाला अकेला रथारोही योद्धा।
अतिरिक्त—वि० [सं०] १. सिवाय। अलावा। छोड़कर। २ नियत परिमाण अथवा संख्या से अधिक। ३. बचा हुआ। ४ अलग।
अतिरेक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अधिकता। ज्यादती। २ व्यर्थ की वृद्धि। बाहुल्य।
अतिरोग—संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष्मा। क्षय रोग।
अतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कठोर वचन। २ कड़वी बात। ३ डींग। शेखी।
अतिवादी—वि० [सं०] १ स्पष्ट वक्ता। २ कटुवादी। ३ जो डींग मारे।
अतिविषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।
अतिवृष्टि—संज्ञा [सं०] ६ ईतियों में से एक। अत्यधिक वर्षा।
अतिवेल—वि० [सं०] बहुत अधिक।
अतिव्याप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।
अतिशय—वि० [सं०] [भाव० अतिशयता] बहुत। ज्यादा।
अतिशयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता। ज्यादती।
अतिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी बात का बढ़ा-चढ़ाकर कथन। २. वह अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध, कार्यकारण-विपर्यय और असंभव को संभव दिखाकर किसी वस्तु का बढ़ाकर वर्णन करते हैं।
अतिशयोपमा—संज्ञा स्त्री० दे० "अनन्वय"।
अतिसंध—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।

अतिसंधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. अतिक्रमण। २. विश्वासघात। धोखा।

अतिसय†—वि० [सं० अतिशय] बहुत। अधिक।

अतिसामान्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह बात जो इतने सामान्य रूप में कही जाय कि सब पर पूरी न घटे। (न्याय)

अतिसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।

अतिसैⓅ—वि० [सं० अतिशय] दे० "अतिशय"।

अतिहसित—संज्ञा पुं० [सं०] हास के छह भेदों में से एक जिसमें हँसनेवाला ताली पीटे और उसकी आँखों से आँसू निकलें।

अतींद्रिय—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अव्यक्त।

अतीत—वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १. गत। व्यतीत। बीता हुआ। २. पृथक्। जुदा। अलग। ३. मृत। मरा हुआ।

क्रि० वि० परे। बाहर।

संज्ञा पुं० संन्यासी। यति। साधु।

अतीतनाⓅ—क्रि० अ० [सं० अतीत] बीतना। गुजरना।

क्रि० स० [सं०] १. बिताना। व्यतीत करना। २. छोड़ना। त्यागना।

अतीथⓅ—संज्ञा पुं० दे० "अतिथि"।

अतीव—वि० [सं०] बहुत। अत्यंत।

अतीस—संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा।

अतीसार—संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।

अतुराईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर+हिं० आई (प्रत्य०)] १. आतुरता। २. चंचलता। चपलता।

अतुरानाⓅ—क्रि० अ० [सं० आतुर] १. आतुर होना। घबराना। २. जल्दी मचाना।

अतुल—वि० [सं०] [भाव० अतुलता] १. जिसकी तुलना, तौल या अंदाज न हो सके। २. अमित। असीम। बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।

संज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार अनुकूल नायक। २. तिल का पेड़।

अतुलनीय—वि० [सं०] १. अनुपम। अद्वितीय। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक।

अतुलित—वि० [सं०] १. बिना तौला हुआ। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनुपम।

अतुल्य—वि० [सं०] १. अनुपम। बेजोड़। २. असमान। असदृश।

अतूथⓅ—वि० [सं० अति+उत्थ] अपूर्व।

अतूलⓅ—वि० दे० "अतुल"।

अतृप्त—वि० [सं०] [संज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २. भूखा।

अतृप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मन न भरने की दशा। तृप्ति का न होना।

अते†—वि० [सं० इतीयत्] इतनी।

अतोरⓅ—वि० [सं० अ+हिं० तोड़] जो न टूटे। अभंग। दृढ़।

अतोल—वि० [सं० अ+हिं० तोल] १. बिना अंदाज किया हुआ। २. बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।

अतौल—वि० दे० "अतोल"।

अत्तⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० अति] अति। अधिकता। ज्यादती।

अत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जननी। २. मौसी। ३. बड़ी बहन। ४. सास।

अत्तार—संज्ञा पुं० [अ०] १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।

अत्तारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] अत्तार का काम या पेशा।

अत्तिⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "अत्त"।

अत्यंत—वि० [सं०] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। अतिशय।

अत्यंतातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण से पहले कार्य होने की बात कही जाती है।

अत्यंताभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का बिलकुल न होना। एकांत अभाव। सत्ता की नितांत शून्यता। २. पाँच प्रकार के अभावों में से एक। असंभव बात जैसे, आकाशकुसुम, वंध्यापुत्र। (वैशेषिक)

अत्यंतिक—वि० [सं०] १. समीपी। नजदीकी। २. बहुत घूमनेवाला।

अत्यम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] इमली।

वि० बहुत खट्टा।

अत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीतना। २. मृत्यु। नाश। ३. हद से बाहर जाना। ४. दंड। सजा। ५. कष्ट। ६. दोष।

अत्यष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १७ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अत्याचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. आचार का अतिक्रमण। अन्याय। जुल्म। २. दुराचार। पाप। ३. पाखंड। ढोंग।

अत्याचारी—वि० [सं०] १. अन्यायी। निठुर। जालिम। २. पाखंडी। ढोंगी।

अत्याज्य—वि० [सं०] १. न छोड़ने योग्य। २. जो न छोड़ा जा सके।

अत्युक्त—वि० [सं०] जो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करने की शैली। बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात। बढ़ावा। २. वह अलंकार जिसमें शूरता, उदारता आदि गुणों का अद्भुत और अतथ्य वर्णन होता है।

अत्र—क्रि० वि० [सं०] यहाँ। इस जगह।

Ⓟसंज्ञा पुं० 'अस्त्र' का अपभ्रंश।

अत्रक—वि० [सं०] १. यहाँ का। २. इस लोक का। ऐहिक।

अत्रभवान्—वि० [सं०] [स्त्री० अत्रभवती] माननीय। पूज्य। श्रेष्ठ।

अत्रि—संज्ञा पुं० [सं०] अनेक वेद-मंत्रों के द्रष्टा ब्रह्मा के मानस-पुत्र और एक प्रजापति। २. सप्तर्षिमंडल का एक तारा।

अत्रैगुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] सत, रज, तम, इन तीनों गुणों का अभाव।

अथ—अव्य० [सं०] १. एक मांगलिक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रंथ या लेख का आरंभ करते थे। २. अब। ३. अनंतर।

अथऊं†—संज्ञा पुं० [सं० अस्तमन, अप० अत्थवण] जैनों का सूर्यास्त के पहले का भोजन।

अथक—वि० [सं० अ=नहीं+हिं०√थक] जो न थके। अश्रांत।

क्रि० वि० बिना थके।

अथच—अव्य० [सं०] और। और भी।

अथनाⓅ—क्रि० अ० [सं० अस्त] अस्त होना। डूबना।

अथमना†—संज्ञा पुं० [सं० अस्तमन, अप० अत्थवण] पश्चिम दिशा। 'उगमना' का उलटा।

अथयनाⓅ—क्रि० अ० [सं० अस्तमन, अप० अत्थवण] अस्त होना।

अथरा—संज्ञा पुं० [सं० स्थाल] [स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बर्तन। नाँद।

अथर्व—संज्ञा पुं० [सं० अथर्वन्] चौथा

वेद और उसके मंत्रद्रष्टा महर्षि अथर्वन् या अंगिरा।

अर्थवन्—सज्ञा पु० दे० "अथर्व"।

अथर्वनी—सज्ञा पुं० [स० अथर्वणि] कर्मकाडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।

अथवना(पु)—क्रि० अ० [स० अस्तमन, अप० अत्थवण] १ (सूर्य, चद्र आदि का) अस्त होना। डूबना। २. लुप्त होना। गायब होना।

अथवा—अव्य० [स०] एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ दो शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।

अथाई—संज्ञा स्त्री० [स० आस्थानी] १ बैठने की जगह। बैठक। चौबारा। २. वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते हैं। ३ घर के सामने का चबूतरा। ४ मडली। सभा। जमावड़ा।

अथाग(पु)—वि० दे० "अथाह"।

अथाना(पु)—क्रि० अ० दे० "अथवना"।

क्रि० स० [स्ताघ, मि० हिं० थाह] १. थाह लेना। गहराई नापना। २ ढूँढना।

अथावत(पु)—वि० [स० अरितमत] डूबा हुआ। अस्त।

अथाह—वि० [सं० अस्ताघ, प्रा० अत्थाह] १ जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २ जिसका अदाज न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३ गंभीर। गूढ़।

सज्ञा पु० १ गहराई। २ जलाशय। ३ समुद्र।

अथिर(पु)—वि० दे० "अस्थिर"।

अथोर(पु)—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० थोर] अधिक। ज्यादा। बहुत।

अदंक(पु)—सज्ञा पु० [स० आतंक] डर। भय।

अदंड—वि० [स०] १ जो दड के योग्य न हो। सजा से बरी। २ निर्भय। स्वेच्छाचारी। ४ उद्दड। बली।

सज्ञा पुं० वह भूमि जिसकी माल-गुजारी न लगे। माफी।

अदडनीय—वि० [सं०] जो दड पाने के योग्य न हो। अदड्य।

अदडमान—वि० [सं० अदड्यमान] दड के अयोग्य। दड से मुक्त।

अदड्य—वि० [सं०] जिसे दड न दिया जा सके। सजा से बरी।

अदत—वि० [स०] १ जिसे दाँत न हो। २ बहुत थोडी अवस्था का। दुधमुहाँ।

अदंद—वि० [स० अद्वन्द्व] १ शात। द्वद्वहीन। २. अकेला।

अदंभ—वि० [स०] १ दंभरहित। पाखड-विहीन। २ सच्चा। निश्छल। निष्कपट। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४ स्वच्छ। शुद्ध।

सज्ञा पुं० शिव।

अदग, अदग्ग—वि० [सं० अदग्ध] १ बेदाग। शुद्ध। २ निरपराध। निर्दोष। ३ अछूता। अस्पृष्ट। साफ।

अदत—दे० "अदद"।

अदत्त—वि० [सं०] न दिया हुआ।

सज्ञा पु० वह वस्तु जिसके दिए जाने पर भी लेनेवाले को उसे रखने का अधिकार न हो। (स्मृति)

अदत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] अविवाहिता कन्या।

अदद—सज्ञा पुं० [अ०] १. सख्या। गिनती। २ सख्या का चिह्न या सकेत।

अदन—सज्ञा पु० [अ०] १ पैगबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था। २ अरब के दक्षिण का एक बंदरगाह।

अदना—वि० [अ०] १ तुच्छ। क्षुद्र। २ सामान्य। मामूली।

अदब—संज्ञा पु० [अ०] शिष्टाचार। कायदा। बड़ो का आदर समान।

अदबदाकर—क्रि० वि० [स० अधि+वद] टेक बाँधकर। अवश्य। जरूर।

अदभ्र—वि० [स०] १ बहुत। अधिक। ज्यादा। २ अपार। अनत।

अदम—सज्ञा पु० [अ०] १ अभाव। न होना। २ परलोक।

अदमपैरवी—सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी मुकदमे में जरूरी पैरवी न करना।

अदम्य—वि० [स०] जिसका दमन न हो सके। प्रचड। प्रबल।

अदय—वि० [स०] १ दयारहित। (व्यापार) २ निष्ठुर। (व्यक्ति)

अदया—सज्ञा स्त्री० [स० अ+दया] कोप। नाराजगी।

अदरक—सज्ञा पुं० [स० आर्द्रक, फा० अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

अदरकी—सज्ञा [हिं० अदरक] सोंठ और गुड मिलाकर बनाई हुई टिकिया।

अदरा—सज्ञा पु० दे० "आर्द्रा"।

अदराना—क्रि० अ० [स० आदर] बहुत आदर पाने से शेखी करना। इतराना।

क्रि० स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन—सज्ञा पु० [स०] १ दिखाई न देना। दर्शन का अभाव। २ अविद्यमानता। असाक्षात्‌। ३ लोप। विनाश।

अदर्शनीय—वि० [सं०] १ जो देखने लायक न हो। २ बुरा। कुरूप। भद्दा।

अदल—सज्ञा पुं० [अ०] न्याय। इंसाफ।

अदल-बदल—सज्ञा पुं० [अनु०+हिं० √बदल] उलट-पुलट। हेर-फेर। परिवर्तन।

अदली(पु)—सज्ञा पु० [अ० अदल] न्यायी।

अदवान—सज्ञा स्त्री० [स० अध =नीचे+हिं० बान=रस्सी] चारपाई के पैताने बिनावट को खींचकर कडी रखने के लिये उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। ओनचन।

अदहन—सज्ञा पु० [स० आदहन] आग पर चढा हुआ गरम पानी जिसमें दाल, चावल आदि पकाते हैं।

अदाँत—वि० [सं० अदंत] जिसे दाँत न आए हों। (पशुओं के सबध में)

अदांत—वि० [स०] १ जो इंद्रियों का दमन न कर सके। विषयासक्त। २ उद्दंड। अक्खड़।

अदा—वि० [अ०] चुकता। बेबाक।

मुहा०—अदा करना=पालन या पूरा करना। जैसे—फर्ज अदा करना।

सज्ञा स्त्री० [अ०] १ हाव-भाव। नखरा। २ ढग। तर्ज।

अदाई(पु)—वि० [अ० अदा] १ ढगी। २ चालबाज।

अदाग(पु)—वि० [सं० अदग्ध] १. बेदाग। साफ। २ निर्दोष। पवित्र।

अदागी(पु)†—वि० दे० "अदाग"।

अदाता—सज्ञा पुं० [स०] कृपण। कजूस।

अदान(पु)—वि० [स० अ+फा० दाना] अनजान। नादान। नासमझ।

अदानी—वि० [सं०] कजूस। कृपण। (साहित्य)

अदायगी—सज्ञा स्त्री० [अ० अदा] ऋण आदि का चुकाया जाना।

अदायाँ—वि० [हिं० अ+दायाँ] जो दायाँ या अनुकूल न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। वाम।

अदाया—संज्ञा स्त्री० [सं० अ+दया] निर्दयता। क्रूरता।
अदालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदालती] १ न्यायालय। कचहरी।
यौ०—अदालत खफीफा=वह अदालत जिसमें छोटे छोटे मुकदमों का निर्णय होता है। अदालत दीवानी=वह अदालत जिसमें संपत्ति, अधिकार या गुरुतर अपराधों का निर्णय होता है। अदालत माल=वह अदालत जिसमें लगान और कर संबंधी मुकदमों का फैसला होता है। अदालत फौजदारी=वह अदालत जिसमें सामान्य अपराधों या जुर्मों का फैसला होता है]
अदालती—वि० [अ० अदालत] १ अदालत का। २ जो अदालत करे। मुकदमा लड़नेवाला। ३ अदालत संबंधी।
अदावँ—संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० दाँव] १. बुरा दाव-पेंच। २ असमंजस। कठिनाई।
अदावत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शत्रुता। दुश्मनी। वैर। विरोध।
अदावती—वि० [अ० अदावत] १ जो अदावत रखे। २ विरोधजन्य। द्वेषमूलक।
अदाह(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० अदा] हाव-भाव। नखरा।
अदित(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आदित्य"।
अदिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकृति। २ पृथ्वी। ३ दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जो देवताओं की माता हैं। ४ द्युलोक। ५ अंतरिक्ष।
अदितिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ सूर्य।
अदिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २ अभाग्य।
अदिव्य—वि० [सं०] १ लौकिक। साधारण। २ बुरा।
अदिव्य नायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अदिव्या] वह नायक जो देवता न हो, मनुष्य हो। (साहित्य)
अदिष्ट(पु)—वि०, संज्ञा पुं० दे० "अदृष्ट"।
अदिष्टी(पु)—वि० [सं० अ+दृष्टि] १ अदूरदर्शी। २ मूर्ख। ३ अभागा। बदकिस्मत।
अदीठ(पु)—वि० [सं० अदृष्ट] बिना देखा हुआ। गुप्त। छिपा हुआ।
अदीठि—संज्ञा स्त्री० [सं० अदृष्टि] कुदृष्टि। बुरी नजर।
अदीन—वि० [सं०] १ दीनतारहित। २. उग्र। प्रचंड। ३ निडर। ४ ऊँची तबीअत का। उदार।
अदीयमान—वि० [सं०] १ जो न दिया जाय। २ न दिया जाता हुआ।
अदीह(पु)—वि० [हिं० अ+दीर्घ] छोटा। सूक्ष्म।
अदुंद(पु)—वि० [सं० अद्वन्द्व, प्रा० अदुंद] १ द्वंद्वरहित। निर्द्वंद्व। बिना झंझट का। बाधा-रहित। २ शांत। निश्चित। ३ बेजोड़। अद्वितीय।
अदुतिय—वि० दे० "अद्वितीय"।
अदूजा—वि० दे० "अद्वितीय"।
अदूरदर्शी—वि० [सं०] १ जो दूर तक न सोचे। दूर का परिणाम न सोचनेवाला। २ नासमझ। स्थूलबुद्धि।
अदूषण—वि० [सं०] निर्दोष। शुद्ध।
अदूषित—वि० [सं०] निर्दोष। शुद्ध।
अदृश्य—वि० [सं०] १ जो दिखाई न दे। अलक्ष्य। २ इंद्रियों को जिसका ज्ञान न हो। अगोचर। ३ लुप्त। गायब।
अदृष्ट—वि० [सं०] १ न देखा हुआ। २ लुप्त। अंतर्धान। गायब।
संज्ञा पुं० १ भाग्य। किस्मत। २ वायु, अग्नि और जल आदि से उत्पन्न विपत्ति। जैसे, आग लगना, बाढ़ आना।
अदृष्टपूर्व—वि० [सं०] १ जो पहले न देखा गया हो। २ अद्भुत। विलक्षण।
अदृष्टवाद—संज्ञा पुं० [सं०] परलोक आदि परोक्ष बातों का सिद्धांत।
अदृष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन का वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस संसार में न हो, जैसे, स्वर्ग या परमात्मा।
अदेख(पु)—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √देख] छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। न देखा हुआ। अदृष्ट।
अदेखी—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० √देख] जो न देख सके। डाही। द्वेषी। ईर्ष्यालु।
अदेय—वि० [सं०] न देने योग्य। जिसे दे न सकें।
अदेव—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस। दैत्य। रजनीचर।
अदेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आदेश] १ आज्ञा। आदेश। २ प्रणाम। दंडवत। (साधु)
अदेह—वि० [सं०] बिना शरीर का।
संज्ञा पुं० कामदेव।
अदोख(पु)—वि० दे० "अदोष"।
अदोखिल(पु)—वि० [सं० अदोष] निर्दोष।
अदोष—वि० [सं०] १ निर्दोष। निष्कलंक। बेऐब। २. निरपराध।
अदौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़द+बटी] उर्द की सुखाई हुई बरी।
अद्ध(पु)—वि० दे० "अर्द्ध"।
अद्धरज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अध्वर्यु"।
अद्धा—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्धक] १ किसी वस्तु का आधा भाग। २ वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।
अद्धी—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध] १ दमड़ी का आधा। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २ एक बारीक और चिकना कपड़ा।
अद्भुत—वि० [सं०] आश्चर्यजनक। विलक्षण। विचित्र। अनोखा।
संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में एक जिसमें विस्मय की परिपुष्टता दिखलाई जाती है।
अद्भुतोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद, जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख किया जाय जिनका होना उपमान में कभी संभव न हो।
अद्य—क्रि० वि० [सं०] १ आज। पिछली आधी रात से आगामी आधी रात तक का समय। २ अभी। अब।
अद्यतन—वि० [सं०] १ आज का। वर्तमान। २ इस समय तक का।
अद्यापि—क्रि० वि० [सं०] आज भी। अभी तक। आज तक।
अद्यावधि—क्रि० वि० [सं०] इस अवधि तक। अब तक।
अद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] सत्त्वहीन पदार्थ। अवस्तु। असत्। शून्य। अभाव।
वि० द्रव्य या धन रहित। दरिद्र।
अद्रा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।
अद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।
अद्रितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ गंगा। ३ २३ वर्णों का एक वृत्त।
अद्रिपति—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वतों का राजा। हिमालय।
अद्वितीय—वि० [सं०] १ अकेला। एकाकी। २ जिसके समान दूसरा न हो। बेजोड़। अनुपम। ३ प्रधान। मुख्य। ४ विलक्षण।

अद्वैत—वि० [सं०] १. एकाकी । अकेला । २. अनुपम । बेजोड़ ।
संज्ञा पुं० ब्रह्म । ईश्वर ।

अद्वैतवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत का वह सिद्धांत जिसमें चैतन्य या ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु या तत्त्व की वास्तविक सत्ता नहीं मानी जाती ।

अद्वैतवादी—संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत को माननेवाला । वेदांती ।

अध—अव्य० [सं०] नीचे । तले ।
संज्ञा स्त्री० पैर के नीचे की दिशा ।

अधःपतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे गिरना । २. अवनति । अधःपात । ३. दुर्दशा । दुर्गति । ४. विनाश ।

अधःपात—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "अधःपतन ।"

अधः स्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] शीर्षबिंदु के ठीक विपरीत दिशा का या नीचे का बिंदु जो चितिज का दक्षिणी ध्रुव है ।

अध(पु)—अव्य० दे० "अध" ।
वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध] 'आधा' शब्द का संकुचित रूप । आधा । (यौगिक में) जैसे, अधकचरा, अधखुला ।

अधऊरध—क्रि० वि० [सं० अधोर्ध्व] १ नीचे-ऊपर । २ तमाम । सर्वत्र ।

अधकचरा—वि० [सं० अर्द्ध + हिं० कच्चा] १ अपरिपक्व । २. अधूरा । अपूर्ण । ३ अकुशल । अदक्ष ।
वि० [सं० अर्द्ध + हिं० कचरना] आधा कूटा या पीसा हुआ । दरदरा ।

अधकपारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध = आधा + कपाल = सिर] आधे सिर का दर्द । आधा सीसी । सूर्यावर्त ।

अधकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + कर] मालगुजारी, महसूल या किराए की आधी रकम जो किसी नियत समय पर दी जाय । अठनिया किस्त ।

अधकहा—वि० पुं० [हिं० आधा + कहा] अस्पष्ट रूप में कहा हुआ । आधा कहा हुआ ।

अधखिला—वि० पुं० [हिं० आधा + खिला (क्रि०)] आधा खिला हुआ । अर्द्धविकसित ।

अधखुला—वि० [हिं० आधा + खुला] आधा खुला हुआ ।

अधगति—संज्ञा स्त्री० दे० "अधोगति" ।

अधघट(पु)—वि० [हिं० आधा + √घट] आधा घटित होने वाला । जिससे ठीक अर्थ न निकले । अटपट ।

अधचरा—वि० [हिं० आधा + चरा] आधा चरा या खाया हुआ ।

अधजर—वि० दे० "अधजला" ।

अधजला—वि० [हिं० आधा + जला] आधा जला हुआ

अधड़ा(पु)—वि० [सं० अधर] [स्त्री० अधड़ी] १. न ऊपर न नीचे का । निराधार । २ ऊटपटाँग । बे सिर-पैर का । असंबद्ध ।

अधड़ी—वि० स्त्री० [सं० अधर] १ अधर में पड़ा हुआ । २ ऊटपटाँग । असंबद्ध ।

अधन(पु)—वि० पुं० [सं० अ + धन] निर्धन । कंगाल । गरीब ।

अधनिया—वि० [हिं० आध + आना + इया प्रत्य०)] आध आने या दो पैसे का ।

अधन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + आना] आध आने का सिक्का ।

अधपई—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + पाव] एक सेर के आठवें हिस्से की तौल या बाट ।

अधफर—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध + फलक] १. बीच का भाग । अधर । २ अंतरिक्ष ।

अधबना—वि० [हिं० आधा + बना] आधा बना हुआ ।

अधबर—संज्ञा पुं० [हिं० आधा + बाट] १. आधा मार्ग । आधा रास्ता । २ बीच ।

अधबुध—वि० [सं० अर्द्ध + बुध] जिसका ज्ञान अधूरा हो ।

अधबैसी(पु)—वि० स्त्री० [सं० अर्द्ध + वयस्] अधेड़ (स्त्री) । मध्यम अवस्था की (स्त्री) ।

अधबैसू(पु)—वि० पुं० [सं० अर्द्ध + वयस्] अधेड़ (पुरुष) । जिसकी आधी अवस्था बीत चुकी हो (पुरुष) ।

अधम—वि० [सं०] १ नीच । निकृष्ट । बुरा । २ पापी । दुष्ट ।

अधमई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अधम] नीचता । अधमता ।

अधमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "अधमई ।"

अधमरा—वि० [हिं० आधा + मरा] आधा मरा हुआ । मृतप्राय । अधमुआ ।

अधमर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] ऋण लेनेवाला । कर्जदार । ऋणी ।

अधमाई—संज्ञा स्त्री० [सं० अधम] दे० "अधमई" ।

अधमा दूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कड़वी बातें कहकर नायक या नायिका का संदेशा एक दूसरे तक पहुँचानेवाली दूती ।

अधमा नायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुकूल पति या नायक से भी दुर्व्यवहार करने वाली नायिका ।

अधमुआ—वि० दे० "अधमरा" ।

अधमुख—संज्ञा पुं० दे० "अधोमुख" ।

अधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे का ओठ । २ ओठ ।
संज्ञा पुं० [सं० अ = नहीं + हिं० √धर] १ बिना आधार का स्थान । अंतरिक्ष । आकाश ।

मुहा०—अधर में झूलना, पड़ना या लटकना = (१) अधूरा रहना । पूरा न होना । (२) पसोपेश में पड़ना । दुविधा में पड़ना ।
२ पाताल ।
वि० १ जो पकड़ में न आवे । चंचल । २ नीच । बुरा ।

अधरज—संज्ञा पुं० [सं० अधर + रज] ओठों की ललाई । ओठों की सुर्खी । २ ओठ पर की पान या मिस्सी की धड़ी ।

अधरपान—संज्ञा पुं० [सं०] ओठों का चुंबन ।

अधरबुधि—संज्ञा स्त्री० [सं० अधर + बुद्धि] १ नीच बुद्धि । तुच्छ बुद्धि । २ अनिश्चित गति । अस्थिर मति । उ०—गूढ़ कपट प्रिय वचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि । —मानस ।

अधरम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अधर्म" ।

अधरा—संज्ञा पुं० [सं० अधर] ओष्ठ । ओठ ।

अधरात—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधी + रात] आधी रात ।

अधराधर—संज्ञा पुं० [सं० अध + अधर] नीचे का होंठ ।

अधरोत्तर—वि० [सं०] १ ऊँचा नीचा । २ बीहड़ । ३ कमोबेश ।

अधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य । कुकर्म । दुराचार । बुरा काम ।

अधर्मात्मा—वि० पुं० [सं०] अधर्मी ।

अधर्मी—संज्ञा पुं० [सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी । दुराचारी ।

अधवा—संज्ञा स्त्री० [सं० अ + धव = पति] बिना पति की स्त्री । विधवा । राँड ।

अधवार—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध + वार ?] आधे का भागी ।

अधसेरा—संज्ञा पुं० [हिं० आध+सेर+आ (प्रत्य०)] दो पाव का मान।

अधस्तल—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे की कोठरी। २ नीचे की तह। ३. तहखाना।

अधस्तात्—क्रि० वि० [सं०] नीचे की ओर।

अधाधुंध—क्रि० वि० दे० "अधाधुंध"।

अधावट—वि० पुं० [हिं० अध+√औट] मधुर आँच पर जलकर आधा बचा हुआ। आधा औटा हुआ। (दूध)

अधार—संज्ञा पु० दे० "आधार"।

अधारी—संज्ञा स्त्री० [सं० आधार] १ आश्रय। सहारा। आधार। २. लकड़ी का बना हुआ एक ढाँचा जिसे बैठते समय सहारे के लिये बाँहों के नीचे रखा जाता है। इसका व्यवहार प्रायः साधु-सन्यासी ही करते हैं। ३. यात्रा का सामान रखने का झोला या थैला।

वि० स्त्री० जी को सहारा देनेवाली। ढारस बँधानेवाली। प्रिय।

अधार्मिक—वि० [सं०] १ जो धार्मिक न हो। २. अधर्मी। दुराचारी।

अधि—एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—१ ऊपर। ऊँचा। जैसे—अधिराज। अधीश्वर। २ प्रधान। मुख्य। जैसे—अधिपति। ३ अधिक। ज्यादा। जैसे—अधिमास। ४. संबंध में। जैसे—अधिभौतिक। आध्यात्मिक। ५ आधार। स्थान। जैसे—अधिकरण। अधिष्ठान ६ कब्जा। वश। जैसे—अधिकार। ७ स्थिति। हालत। जैसे—अध्यासन। ८ प्राप्ति। जैसे—अधिकृति। ९ चढ़ाव। जैसे—अधिरोहण। अधिक्रम। १० ज्ञान। गति। जैसे—अधिगम। ११ स्थायी निवास। जैसे—अधिवास। आदि।

अधिक—वि० [सं०] १ बहुत। ज्यादा। विशेष। २ बचा हुआ। फालतू।

संज्ञा पु० १ वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक बताते हैं। २ न्याय में एक निग्रहस्थान।

अधिकई—संज्ञा स्त्री० दे० "अधिकाई"

अधिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतायत। ज्यादती। विशेषता। बढ़ती। वृद्धि।

अधिकमास—संज्ञा पुं० [सं०] मलमास। लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यंत ऐसा काल जिसमें संक्रांति न पड़े (प्रति तीसरे वर्ष)।

अधिकरण—संज्ञा पु० [सं०] १. आधार। आसरा। सहारा। २. व्याकरण में क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। ३. प्रकरण। शीर्षक। ४ दर्शन में आधार विषय। अधिष्ठान। ५ अधिकार में करना।

अधिकांग—वि० [सं०] जिसका कोई अवयव अधिक हो। जैसे—छँगुर।

अधिकांश—संज्ञा पुं० [सं०] अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।

वि० बहुत।

क्रि० वि० १ ज्यादातर। विशेषकर। २. अक्सर। प्राय।

अधिकाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अधिक+हिं० आई (प्रत्य०)] १ ज्यादती। अधिकता। बहुतायत। २ बड़ाई। महिमा।

अधिकाना(पु)—क्रि० अ० [सं० अधिक की ना० धा०] अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना।

अधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामित्व। प्रभुत्व। आधिपत्य। २ प्रधानता। ३. वश। ४ स्वत्व। हक। अख्तियार। ५ कब्जा। प्राप्ति। ६ सामर्थ्य। शक्ति। ७ योग्यता। जानकारी। लियाकत। ८ प्रकरण। शीर्षक। ९ रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता। (नाट्यशास्त्र)

(पु)† वि० पु० [सं० अधिक] अधिक।

अधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० अधिकारिन्] [स्त्री० अधिकारिणी] १ प्रभु। स्वामी। मालिक। २ स्वत्वधारी। हकदार। ३ योग्यता या क्षमता रखनेवाला। उपयुक्त पात्र। ४ अफसर। ५ किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता। पंडित। ६ नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त होता है।

अधिकृत—वि० [सं०] अधिकार में आया या किया हुआ। उपलब्ध।

संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष। अफसर।

अधिकौहाँ(पु)—वि० [हिं० अधिक+औहाँ (प्रत्य०)] बराबर बढ़ता रहनेवाला।

अधिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] आरोहण। चढ़ाव।

अधिगत—वि० [सं०] १ प्राप्त। पाया हुआ। २ जाना हुआ। ज्ञात।

अधिगम—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहुँच। ज्ञान। गति। २ परोपदेश द्वारा प्राप्त ज्ञान। ३ ऐश्वर्य। बड़प्पन।

अधित्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिदेवी] इष्टदेव। कुलदेव।

अधिदैव—वि० [सं०] दैविक। आकस्मिक।

अधिदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] अधिष्ठाता देवता।

वि० देवता संबंधी।

अधिनायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिनायिका] [भाव० अधिनायकता, अधिनायकत्व] १ सरदार। मुखिया। २ किसी आधुनिक राज्य का वह सर्वप्रधान अधिकारी जो उसके सब कार्यों का संचालन अपनी ही इच्छा से करता हो। परम स्वतंत्र नियामक या शासक। डिक्टेटर।

अधिनायकतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्यप्रणाली जिसमें राज्य के सब कार्य उसके अधिनायक की ही इच्छा और आज्ञा से होते हों। एकतंत्र।

अधिनायकी—संज्ञा स्त्री० [सं० अधिनायक] अधिनायक का कार्य, पद या भाव।

अधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी। मालिक। २ सरदार। मुखिया। ३. राजा।

अधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिपत्नी] १. मालिक। स्वामी। २. नायक। अफसर। मुखिया। ३. राजा।

अधिभौतिक—वि० दे० "आधिभौतिक"।

अधिमास—संज्ञा पुं० दे० "अधिकमास"।

अधिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+इया (प्रत्य०)] १. आधा हिस्सा। २. गाँव में किसी की आधी पट्टी की हिस्सेदारी। ३ एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है।

संज्ञा पुं० गाँव में किसी की आधी पट्टी का मालिक।

अधियान(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० आधा+?] जप करने की गोमुखी। जपनी।

अधियाना—क्रि० स० [हिं० आधा] आधा करना। दो बराबर हिस्सों में बाँटना।

क्रि० अ० आधा होना।

अधियार—संज्ञा पुं० [हिं० आधा] [स्त्री० अधियारिन] १ किसी जायदाद में आधा हिस्सा। २ आधे का मालिक। ३ वह

जमींदार या असामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो।

अधियारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अधियार] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।

अधिरथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. रथ हाँकने वाला। गाड़ीवान। २ बड़ा रथ।

अधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] राजा। बादशाह। महाराज।

अधिराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य।

अधिरात(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधी रात] आधी रात। मध्य रात्रि।

अधिरोहण—संज्ञा पुं० [सं०]चढ़ना। सवार होना। ऊपर उठना।

अधिवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] लौंद का वर्ष। अधिक मासवाला साल।

अधिवास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिवासित] १ रहने की जगह। २ खुशबू। ३ विवाह से पहले तेल हलदी चढ़ाने की रीति। ४ उबटन। ५ धोती की तरह पहनने का वस्त्र। ६ स्थायी निवास।

अधिवासी—संज्ञा पुं० [सं० अधिवासिन्] १ निवासी। रहनेवाला। २ स्थायी निवासी।

अधिवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] सभा आदि की बैठक। संघ। जलसा।

अधिष्ठाता—संज्ञा पुं० [सं० अधिष्ठातृ] [स्त्री० अधिष्ठात्री] १. अध्यक्ष। मुखिया। प्रधान। २ वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो। ३ ईश्वर।

अधिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिष्ठित] १ वासस्थान। रहने का स्थान। २ नगर। शहर। ३ स्थिति। रहाइश। पड़ाव। ४ आधार। सहारा। ५ वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे, रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का। ६ सांख्य में भोक्ता और भोग का संयोग। ७. अधिकार। शासन। राजसत्ता।

अधिष्ठान शरीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मृत्यु के बाद पितृलोक में आत्मा रहती है।

अधिष्ठित—वि० [सं०] १ ठहरा हुआ। स्थापित। २ आसीन। बैठा हुआ। ३ निर्वाचित। नियुक्त।

अधीत—वि० [सं०] पढ़ा हुआ।

अधीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पठन। पढ़ना।

अधीन—वि० [सं०] [संज्ञा अधीनता] [स्त्री० अधीना] १ आश्रित। मातहत। २ वशीभूत। आज्ञाकारी। ३ विवश। लाचार। ४ मयनंदित।

संज्ञा पुं० दास। सेवक।

अधीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परवशता। परतंत्रता। मातहती। २ लाचारी। बेबसी। ३. दीनता। गरीबी।

अधीनत्व—संज्ञा पुं० [सं० अधीन+त्व (प्रत्य०)] दे० "अधीनता"।

अधीनना(पु)—क्रि० अ० [सं० अधीन से बनी ना० धा०] अधीन होना।

क्रि० स० किसी को अपने अधीन करना।

अधीर—वि० पुं० [सं०] [संज्ञा अधीरता] १ धैर्यरहित। घबराया हुआ। उद्विग्न। २. बेचैन। व्याकुल। विह्वल। ३ चंचल। उतावला। आतुर। ४ असंतोषी।

अधीरज—संज्ञा पुं० [सं० अधैर्य] धैर्यहीनता। व्याकुलता। उतावली।

अधीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकुलता। आतुरता। उतावलापन। बेचैनी।

अधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक में अन्य स्त्री के साथ विलास के सूचक चिह्न देखने से अधीरता के कारण कुपित हो।

अधीश, अधीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधीश्वरी] १ मालिक। स्वामी। अध्यक्ष। २ भूपति। राजा।

अधुना—क्रि० वि० [सं०] [वि० आधुनिक] अब। संप्रति। आजकल। इन दिनों।

अधुनातन—वि० [सं०] वर्तमान समय का। हाल का। 'पुरातन' का उलटा।

अधूत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अकंपित। २. निर्भय। निडर। ३ ढीठ। ४ उचक्का।

अधूरा—वि० [हिं० अध+पूरा ?] [स्त्री० अधूरी] अपूर्ण। जो पूरा न हो। असमाप्त।

अधेड़—वि० [हिं० आधा+एड़ (प्रत्य०)] ढलती जवानी का। बुढ़ापे और जवानी के बीच का।

अधेला—संज्ञा पुं० [हिं० आधा+एला (प्रत्य०)] आधा पैसा।

अधेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+एली (प्रत्य०)] रुपये का आधा सिक्का। अठन्नी।

अधैर्य—संज्ञा पुं० [सं०] धैर्य का न होना। अधीरता।

अधो—अव्य० [सं० अधस्] दे० "अध"।

अधोगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतन। गिराव। २. अवनति। दुर्दशा।

अधोगमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधोगामी] १. नीचे जाना। २ अवनति। पतन।

अधोगामी—वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. अवनति की ओर जानेवाला।

अधोतर—संज्ञा पुं० [सं० अध+उत्तर] दोहरी बुनावट का एक देशी कपड़ा।

अधोमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का रास्ता। २ सुरंग का रास्ता। ३. गुदा।

अधोमुख—वि० [सं०] १ नीचे मुँह किए हुए। २. औंधा। उलटा।

क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।

अधोर्ध्व—क्रि० वि० [सं०] ऊपर नीचे।

अधोलंब—संज्ञा पुं० [सं०] वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा पर आकर इस प्रकार गिरे कि पार्श्व के दोनों कोण समकोण हों। लंब।

अधोवस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा। धोती आदि।

अधोवायु—संज्ञा पुं० [सं०] अपानवायु। गुदा की वायु। पाद।

अध्मान—संज्ञा पुं० [सं०] पेट अफरने का रोग। अफरा।

अध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० अध्यक्षता] १ स्वामी। मालिक। २. नायक। सरदार। मुखिया। ३ अधिकारी। अधिष्ठाता।

अध्यच्छ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अध्यक्ष"।

अध्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] पठन-पाठन। पढ़ाई।

अध्यवसाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ लगातार उद्योग। दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना। २ उत्साह। ३. निश्चय।

अध्यवसायी—वि० [सं० अध्यवसायिन्] [स्त्री० अध्यवसायिनी] १. लगातार उद्योग करनेवाला। उद्यमी। २ उत्साही।

अध्यस्त—वि० [सं०] वह जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो, जैसे, रज्जु में सर्प का। (वेदांत)

अध्यात्म—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा या परमात्मा से संबंधित ज्ञान या विवेचन।

वि० आत्मा से संबंधित। आत्मा-परमात्मा विषयक।

अध्यात्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अध्यात्मवादी] वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म

और आत्मा का ज्ञान ही मुख्य माना जाता हो।

अध्यापक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु। पढ़ानेवाला। उस्ताद।

अध्यापकी—संज्ञा स्त्री० [सं० अध्यापक+हिं० ई (प्रत्य०)] पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।

अध्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।

अध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रंथ-विभाग। २. पाठ। सर्ग। परिच्छेद।

अध्यारोप—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक व्यापार को दूसरे में लगाना। दोष। अध्यास। २ झूठी कल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।

अध्यारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ना। आरोहण करना।

अध्यास—संज्ञा पुं० [सं०] अध्यारोप। मिथ्याज्ञान।

अध्यासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उपवेशन। बैठना। २. आरोपण।

अध्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्क-वितर्क। विचार। बहस। २. वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना। ३. अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।

अध्यूढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी।

अध्येता—संज्ञा पुं० [सं०] अध्ययन करनेवाला। छात्र। पाठक।

अध्येय—वि० [सं०] पढ़ने योग्य।

अध्रुव—वि० [सं०] १ डाँवाडोल। अस्थिर। २. अनिश्चित। बे ठौर-ठिकाने का।

अध्व—संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग। पथ। राह।

अध्वग—संज्ञा पुं० [सं०] यात्री। मुसाफिर।

अध्वगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा। भागीरथी।

अध्वर—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

अध्वर्यु—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।

अन्—अव्य० [सं०] अभाव या निषेध-सूचक अव्यय। जैसे अनंत, अनधिकार।

अनंग—वि० [सं०] [क्रि० अनगना] विना शरीर का। देहरहित।

सज्ञा पुं० कामदेव।

अनंगवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामवती। कामिनी।

अनंगक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रति। संभोग। २. छंदशास्त्र में मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद।

अनंगना(पु)—क्रि० अ० [सं० अनग] शरीर की सुध छोड़ना। सुधबुध भुलाना।

अनंगशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] दंडक नामक वर्णवृत्त का एक भेद।

अनंगारि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

अनंगी—वि० [सं० अनंगिन्] [स्त्री० अनंगिनी] कामी। कामुक।

वि० [सं० अनग+हिं० ई (प्रत्य०)] अंगरहित। विना देह का।

संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ कामदेव।

अनंत—वि० [सं०] १. जिसका अंत या पार न हो। असीम। बेहद। बहुत बड़ा। २. बहुत अधिक। ३ अविनाशी।

संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ शेषनाग। ३ लक्ष्मण। ४. बलराम। ५ आकाश। ६ बाहु का एक गहना। ७ सूत का गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी या अनंत के व्रत के दिन बाहु में पहनते हैं।

अनंतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] असीमत्व। अमितत्व। अत्यंत। अधिकता।

अनंतचतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाद्र-शुक्ल चतुर्दशी।

अनंतमूल—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा या बेल जो रक्त शुद्ध करने की औषध है।

अनंतर—क्रि० वि० [सं०] १. पीछे। उपरांत। बाद। २ निरंतर। लगातार।

अनंतरित—वि० [सं०] १ निकटस्थ। २ अखंडित। अटूट।

अनंतवीर्य—वि० [सं०] अपार पौरुष-वाला।

अनंता—वि० स्त्री० [सं०] जिसका अंत या सीमा न हो।

संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २ पार्वती। ३ कलियारी। ४ अनंतमूल। ५. दूब। ६ पीपर। ७ अनंतसूत्र।

अनंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौदह वर्णों का एक वृत्त। (पु)२ दे० "आनंद"।

अनंदना(पु)—क्रि० अ० [सं० आनंद की ना० धा०] आनंदित होना। खुश होना। प्रसन्न होना।

अनंदी—संज्ञा पुं० [सं० आनंद] १ एक प्रकार का धान। २ दे० "आनंदी"।

अनंभ—वि० [सं०] विना पानी का।

(पु) वि० [सं० अन्=नहीं+अहस्=विघ्न] निर्विघ्न। बाधारहित।

अनंश—वि० [सं०] जो पैतृक संपत्ति पाने का अधिकारी न हो।

अन(पु)—क्रि० वि० [सं० अन्] विना। वगैर।

वि० [सं० अन्य] अन्य। दूसरा।

अनअहिवात—संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं+हिं० अहिवात=सौभाग्य] वैधव्य। विधवापन। रँड़ापा।

अनइस—संज्ञा पुं० दे० "अनैस"।

अनऋतु—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्+ऋतु] १ विरुद्ध ऋतु। बेमौसम। अकाल। २ ऋतु-विपर्यय। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अनक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आनक"।

अनकना(पु)—क्रि० स० [सं० आकर्णन] १ सुनना। २ चुपचाप या छिपकर सुनना।

अनकहा—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० कहा] [स्त्री० अनकही] १. विना कहा हुआ। अकथित। अनुक्त।

मुहा०—अनकहा होना=चुपचाप होना।

२ जो किसी का कहना न माने।

अनख—संज्ञा पुं० [सं० अन्=बुरा+अक्ष=आँख] १ क्रोध। कोप। नाराजी। २. दुःख। ग्लानि। खिन्नता। ३. ईर्ष्या। द्वेष। डाह। ४ झंझट। अनरीति। ५ डिठौना। काजल की विंदी जिसे डीठ (नजर) से बचाने के लिये माथे में लगाते हैं।

वि० [सं० अ+नख] विना नख का।

अनखना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अनख की ना० धा०] क्रोध करना। रुष्ट होना। रिसाना।

अनखा—संज्ञा पुं० [हिं० अनख] काजल की वह विंदी जो बच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाई जाती है।

अनखाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अनख] क्रोध करना। रिसाना। रुष्ट होना।

क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज करना।

अनखानि—संज्ञा स्त्री० [हिं० अनख] रोष। नाराजी।

अनखाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० अनख+आहट (प्रत्य०)] अनख दिखाने की क्रिया या भाव। नाराजगी। क्रोध।

अनखी(पु)†—वि० [हिं० अनख] क्रोधी। गुस्सावर। जो जल्दी नाराज हो।

अनखुला—वि० [सं० अन्+हिं० खुला] जो खुला न हो। बंद।

अनखौंहा(पु)†—वि० [हिं० अनख+औंहा (प्रत्य०) [स्त्री० अनखौंही] १ क्रोध से भरा। कुपित। रुष्ट। २ चिड़चिड़ा। जल्दी क्रोध करनेवाला। ३ क्रोध दिलानेवाला। ४. अनुचित। बुरा।

अनगढ़—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं०√गढ़] १ विना गढ़ा हुआ। २ जिसे किसी ने बनाया न हो। स्वयभू। ३ बेडौल। भद्दा। बेढगा। ४ उजड्ड। अक्खड़। ५ बेतुका। अडवड।

अनगढ़ा—वि० दे० "अनगढ़"।

अनगन(पु)—वि० [सं० अन्+गणन] [स्त्री० अनगनी] अगणित। बहुत।

अनगना, अनगनियाँ—वि० [स० अन्=नहीं+हिं० गिना] न गिना हुआ। अगणित। बहुत।

सज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।

अनगवना—क्रि० अ० [स० अन्=नहीं +हिं० गवन] रुककर देर करना। जान बूझकर विलंब करना।

अनगाना—क्रि० अ० दे० "अनगवना"।

अनगिन—वि० दे० "अनगिनत"।

अनगिनत—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० गिनती] जिसकी गिनती न हो। असख्य। बेशुमार। बहुत।

अनगिना—वि० पुं० [सं० अन् + हिं० गिना] १ जो गिना न गया हो। २ असंख्य।

अनगैर, अनगैरी(पु)—वि० [अ० गैर] गैर। पराया।

अनघ—वि० [सं०] १ पापरहित। निर्दोष। २. शुद्ध। पवित्र।

सज्ञा पुं० वह जो पाप न हो। पुण्य।

अनघरी—सज्ञा स्त्री० [सं० अन्=विरुद्ध+हिं० घरी=घड़ी] असमय। कुसमय।

अनघेरी(पु)—वि० [सं० अन्+हिं० घेरी ?] बिना बुलाया हुआ। अनिमत्रित।

अनघोर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० घोर] अंधेर। अन्यायाचार। ज्यादती।

अनघोरी—क्रि० वि० [?] १ चुपचाप। २. अचानक। एकदम से।

अनचाहत(पु)—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० चाहत] न चाहनेवाला। जो प्रेम न करे।

अनचाहा—वि० [स० अन् हिं०+चाहा] जिसकी इच्छा न की जाय।

अनचीतौ—क्रि० वि० [सं०अन्+हिं०चीतौ] १ विना विचार किए हुए। २ अचिंतित। अचानक।

अनचीन्हा(पु)†—वि० [स० अन्+हिं० चीन्हा] अपरिचित। अज्ञात।

अनचैन—सज्ञा पु० [हिं० अन+चैन] बेचैनी।

अनजनमा—त्रि० [हिं० अन+जनमा] १. जिसका जन्म न हुआ हो। २ ईश्वर का एक विशेषण।

अनजान—वि० [सं० अन्+हिं०√जान] १ अज्ञानी। नादान। नासमझ। २. अपरिचित। अज्ञात।

अनट(पु)—सज्ञा पुं० [सं० अनृत] उपद्रव। अनीति। अन्याय। अत्याचार।

अनडीठ(पु)—वि० [सं० अन्+दृष्ट] विना देखा।

अनत—वि० [स०] विना झुका। सीधा।

क्रि० वि० [स० अन्यत्र] और कहीं। दूसरी जगह।

अनति—वि० [स०] कम। थोड़ा।

सज्ञा स्त्री० नम्रता का अभाव। अहंकार।

अनतै†—क्रि० वि० [स० अन्यत्र] १ दूसरी जगह। अन्यत्र। २ अलग। ३ दूर।

अनदविनोदी—वि० [स० आनद+विनोदिन्] आनदविनोद से युक्त। सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला।

अनदेखा—वि० पु० [स० अन्+हिं० देखा] [स्त्री० अनदेखी]-विना देखा हुआ।

अनद्यतन भविष्य—सज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भविष्यकाल का एक भेद।

अनद्यतन भूत—सज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भूतकाल का एक भेद।

अनधिकार—सज्ञा पुं० [स०] १ अधिकार का अभाव। प्रभुत्व न होना। २ बेवसी। लाचारी। ३ अयोग्यता।

वि० १ अधिकाररहित। २ अयोग्य।

यौ०—अनधिकार-चर्चा=वह बात कहना जिसे कहने का अधिकार या योग्यता न हो।

अनधिकार-चेष्टा—ऐसा प्रयत्न जिसे करने का अधिकार न हो।

अनधिकारी—वि० [स० अनधिकारिन्] [स्त्री० अनधिकारिणी] १. जिसे अधिकार न हो। २. अयोग्य। अपात्र।

अनधिकृत—वि० [स०] जिस पर अधिकार न किया गया हो।

अनधिगत—वि० [स०] विना जाना या समझा हुआ। अज्ञात।

अनधिगम्य—वि० [स०] १ जो पहुच के बाहर हो। अप्राप्य। २. जो समझ के बाहर हो।

अनध्यवसाय—सज्ञा पुं० [सं०] १. अध्यवसाय का अभाव। अतत्परता। ढिलाई। २ किसी एक वस्तु के सबंध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना। (अलकार)

अनध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का निषेध हो (अमावास्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा)। २. छुट्टी का दिन।

अनन्नास—सज्ञा पुं० [पुर्त० अनानास] घीकुआँर के समान छोटा पौधा जिसका फल रस से भरा होता है और जिसका स्वाद खटमीठा होता है। फल के छिलके का रग केसरिया और गूदे का उजला होता है। छिलका कड़ा होता है।

अनन्य—वि० [सं०] [स्त्री० अनन्या] अन्य से सबध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। जैसे—अनन्य भक्त।

सज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

अनन्यता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अन्य के सबंध का अभाव। २ एकनिष्ठा।

अनन्वय—सज्ञा पुं० [स०] काव्य में वह अलकार जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय रूप से कही जाय।

अनन्वित—वि० [स०] १. असबद्ध। पृथक्। २ अडबंड। अयुक्त।

अनपच—सज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं +हिं०√पच] अजीर्ण। बदहजमी।

अनपढ़—वि० [स० अन्=नहीं+हिं० √पढ़] वेपढ़ा। अपठित। मूर्ख। निरक्षर।

अनपत्त(पु)—वि० [सं० अन्+पत्र] पत्ररहित। निष्पत्र।

अनपत्य—वि० [सं०] [स्त्री० अनपत्या] निःसतान।

अनपराध—वि० [सं० अन्+अपराध] जिसका कोई अपराध न हो। निर्दोष।

अनपराधी—वि० दे० "अनपराध।"

अनपाय—वि० [सं०] १. जिसका कभी नाश न हो। २. दृढ। स्थिर।
अनपायिनी—वि० स्त्री० [सं०] १ निश्चल। स्थिर। अचल। दृढ। २. अनश्वर।
अनपेक्ष—वि० [सं०] बेपरवा। अपेक्षारहित। जिसकी चाह या आवश्यकता न हो।
अनपेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपेक्षा का न होना। २ लापरवाही।
अनपेक्षित—वि० [सं०] जिसकी परवा न हो। जिसकी चाह या आवश्यकता न हो।
अनपेक्ष्य—वि० [सं०] जो अन्य की अपेक्षा न रखे। जिसे किसी की परवा न हो।
अनफाँस(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अन+फाँस] मोक्ष। मुक्ति।
अनबन—संज्ञा स्त्री० [अन्=नहीं+हिं० √बन] बिगाड़। झगड़ा। विरोध। खटपट।
(पु)वि० अनेक। भिन्न भिन्न। नाना। विविध।
अनबिधा—वि० [सं० अन्+विद्ध] बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे, अनबिधा मोती।
अनबूझ—वि० [हिं० अन+√बूझ] १ नासमझ। अज्ञान। २ जो बूझा या समझा न जा सके।
अनबेधा—वि० दे० "अनबिधा"।
अनबोल—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० √बोल] १. न बोलनेवाला। २. चुप्पा। मौन। ३ गूँगा। ४ जो अपने सुख-दु:ख को न कह सके। (पशुओं के लिये)
अनबोलता—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० बोलता] १ न बोलनेवाला। गूँगा। २. बेजबान। (पशु)
अनबोला—संज्ञा पु० [हिं० अन+बोला] बोलचाल या बातचीत न होना।
वि० दे० "अनबोलता"।
अनब्याहा—वि० [सं० अन्=नहीं+ हिं० ब्याहा] [स्त्री० अनब्याही] अविवाहित। क्वाँरा।
अनभल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं +हिं० भल] बुराई। हानि। अहित।
अनभला—वि० [हिं० अनभल] बुरा। खराब।
संज्ञा पुं० दे० "अनभल"।
अनभाय—वि० दे० "अनभावता"।
अनभाया—वि० [सं० अन्+हिं० भाया] जो न भावे। जिसकी चाह न हो। अप्रिय। अरुचिकर।
अनभावता—वि० [हिं० अन+भावता] जो अच्छा न लगे। अप्रिय।
अनभिज्ञ—वि० [सं०] [स्त्री० अनभिज्ञा, संज्ञा अनभिज्ञता] १ अज्ञ। अनजान। मूढ़। २ अपरिचित। नावाकिफ।
अनभिज्ञता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अज्ञता। अनजानपन। अनाड़ीपन। मूर्खता।
अनभिप्रेत—वि० [सं०] अनचाहा। इच्छा के विरुद्ध।
अनभिमत—संज्ञा पु० [सं० अन्+अभिमत] अभिमत का न होना। असंमति।
अनभीष्ट—वि० [सं० अन्+अभीष्ट] जो अभीष्ट न हो।
अनभेदी—वि० [हिं० अन+भेदी] भेद या रहस्य न जाननेवाला।
अनभो(पु)—संज्ञा पु० [सं० अन्=नहीं +√भू=होना] १ अचंभा। अचरज। २ अनहोनी बात।
वि० अपूर्व। अलौकिक। अद्भुत।
अनभोरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० भोर=भुलावा] भुलावा। बहालो। चकमा।
अनभ्यस्त—वि० [सं०] १ जिसका अभ्यास न किया गया हो। २ जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।
अनभ्यास—संज्ञा पु० [सं०] अभ्यास का अभाव। मश्क न होना।
अनभ्र—वि० [सं०] मेघमुक्त। निर्मेघ। बिना बादल का। निर्मल। स्वच्छ (आकाश)
अनमद—संज्ञा पुं० [हिं० अन+सं० मद] मद या अभिमान का अभाव।
वि० जिसे मद या गर्व न हो।
अनमन, अनमना—वि० [सं० अन्य-मनस्क] १ जिसका जी न लगता हो। उदास। खिन्न। सुस्त। २ बीमार। अस्वस्थ।
अनमापा(पु)—वि० [सं० अन्+हिं० मापा] १. जो मापा न गया हो। २ न नापा जाने योग्य।
अनमाया(पु)—वि० दे० "अनमापा"।
अनमारग(पु)—संज्ञा पु० [सं० अन्=बुरा+मार्ग] कुमार्ग।
अनमिख(पु)—वि० संज्ञा पुं० दे० "अनिमिष"।
अनमिल(पु)—वि० [सं० अन्=नहीं+ हिं० √मिल] बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।
अनमिलता—वि० [सं० अन्=नहीं+ हिं० मिलता] अप्राप्य। अलभ्य। अदृश्य
अनमीलना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मीलन] आँख खोलना।
अनमेल—वि० [सं० अन्+हिं० मेल] १. बेजोड़। असंबद्ध। २ बिना मिलाव का। विशुद्ध।
अनमोल, अनमोला—वि० [सं० अन्+ हिं० मोल] १ अमूल्य। २ मूल्यवान्। बहुमूल्य। कीमती। ३ सुंदर। उत्तम।
अनम्र—वि० [सं०] विनयरहित। उद्दंड।
अनय—संज्ञा पु० [सं०] १. अमंगल। विपद्। २ अनीति। अन्याय।
अनयन—वि० [सं०] नेत्रहीन। अंधा।
अनयस—संज्ञा पु० दे० "अनैस"।
अनयास(पु)—क्रि० वि० दे० "अनायास"।
अनरंग(पु)—वि० [हिं० अन+रंग] दूसरे रंग का।
अनरथ(पु)—संज्ञा पु० दे० "अनर्थ"।
अनरना(पु)—क्रि० स० [सं० अनादर] अनादर करना। अपमान करना।
अनरस(पु)—संज्ञा पु० [सं० अन्=नहीं+ रस] १ रसहीनता। शुष्कता। २ रुखाई। कोप। मान। ३ मनोमालिन्य। मनमोटाव। अनबन। ४ दु:ख। खेद। रंज। ५ रसविहीन काव्य।
अनरसना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अनरस] १. उदास होना। २ नाराज होना। ३. दु:खी होना।
अनरसनि—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्+ रस] १ उदासी। २ रोष। ३ दु:ख।
अनरसा(पु)—वि० [सं० अन्+रस+ हिं० आ (प्रत्य०)] अनमना। माँदा। बीमार।
संज्ञा पुं० दे० "अँदरसा"।
अनराता(पु)—वि० [सं० अन्=नहीं+ हिं० राता] १ बिना रँगा हुआ। सादा। २ प्रेम में न पड़ा हुआ।
अनरीति—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्+रीति] १ कुरीति। कुचाल। बुरी रस्म। २ अनुचित व्यवहार।
अनरुचि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अरुचि"।
अनरूप(पु)—वि० [सं० अन्=बुरा+ रूप] १ कुरूप। बदसूरत। २ असमान असदृश।
अनर्गल—वि० [सं०] १ बेरोक। बेधड़क। २ व्यर्थ। अंडबंड। ३ लगातार।

अनर्घ—वि० [सं०] १ बहुमूल्य । कीमती । २. सस्ता ।
अनर्घ्य—वि० [स०] १. अमूल्य । २. बहुमूल्य । अमूल्य ।
अनर्जित—वि० [स०] जिसका अर्जन न किया गया हो । जो अर्जित न हो । जैसे—अनर्जित आय ।
अनर्थ—संज्ञा पु० [सं०] १ विरुद्ध अर्थ । उलटा मतलब । २ कार्य की हानि । नुकसान । ३. विपद । अनिष्ट । ४. वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाय ।
अनर्थक—वि० [स०] १ निरर्थक । अर्थरहित । २. व्यर्थ । बेमतलब । बेफायदा ।
अनर्थकारी—वि० [सं० अनर्थकारिन्] [स्त्री० अनर्थकारिणी] १. उलटा मतलब निकालनेवाला । २ अनिष्टकारी । हानिकारी । ३. उपद्रवी । उत्पाती ।
अनर्ह—वि० [स०] अयोग्य । अपात्र ।
अनल—संज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि । आग । २. तीन की संख्या ।
अनलपक्ष—संज्ञा पुं० [स०] एक चिड़िया । कहते हैं कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है ।
अनल्प—वि० [स०] जो अल्प या थोड़ा न हो । बहुत । अधिक ।
अनलमुख—वि० [सं०] जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करे ।
संज्ञा पुं० १ देवता । २ ब्राह्मण ।
अनलस—वि० [स०] आलस्यरहित । फुर्तीला । चैतन्य ।
अनलायक(पु)—वि० [स० अन्=नहीं+अ० लायक] नालायक । अयोग्य ।
अनलेख—वि० [सं० अन्+लक्ष्य] जो दिखाई न दे । अगोचर । अलख ।
अनल्प—वि० [सं०] जो अल्प या थोड़ा न हो । बहुत ।
अनवकाश—संज्ञा पु० [सं०] अवकाश या फ़ुरसत न होना ।
अनवग्रह—संज्ञा पु० [स०] प्रतिबंधशून्य । स्वच्छंद । जो पकड़ में न आवे । जिसे कोई रोक न सके ।
अनवच्छिन्न—वि० [स०] १. अखंडित । अटूट । २ जुड़ा हुआ । संयुक्त ।
अनवट—संज्ञा पुं० [?] पैर के अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला ।
संज्ञा पुं० [सं० अन्धपट] कोल्हू के बैल की आँखों के ढक्कन । ढोका ।
अनवद्य—वि० [स०] निर्दोष । बेऐब ।
अनवधान—संज्ञा पुं० [स०] असावधानी । गफ़लत । बेपरवाही ।
अनवधि—वि० [सं०] असीम । बेहद । क्रि० वि० सदैव । हमेशा ।
अनवय—संज्ञा पु० [स० अन्वय] १ वंश । कुल । २ दे० "अन्वय" ।
अनवरत—क्रि० वि० [सं०] निरंतर । सतत । लगातार । हमेशा ।
अनवसर—संज्ञा पु० [सं०] १ फुरसत का न होना । २ कुसमय । बेमौका ।
अनवस्था—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्थितिहीनता । अव्यवस्था । २ आतुरता । अधीरता । ३ न्याय में एक प्रकार का दोष ।
अनवस्थित—वि० [स०] १ अधीर । चंचल । अशांत । २ निराधार । निरवलंब ।
अनवस्थिति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चंचलता । अधीरता । २ आधारहीनता । ३. समाधि प्राप्त हो जाने पर भी चित्त का स्थिर न होना । (योग)
अनवाँसना—क्रि० वि० [सं० अनुवासन] नए बर्तन को पहलेपहल काम में लाना ।
अनवाँसा—संज्ञा पु० [स० अणुवंश] कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला । अँवासा ।
अनवाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० अणुवंश] एक बिस्वे का १/४०० भाग । बिस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा ।
अनवाद(पु)—संज्ञा पुं० [स० अन्=बुरा+वाद=वचन] १ बुरा वचन । कटुभाषण । २ व्यर्थ की या फालतू बात ।
अनवाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्राप्ति । अनुपलब्धि ।
अनशन—संज्ञा पु० १ [स०] १ उपवास । अन्नत्याग । २ निराहार व्रत ।
अनश्वर—वि० [स०] नष्ट न होनेवाला । अटल । २ स्थिर ।
अनसखरी—संज्ञा स्त्री० [स० अन्=नहीं+हिं० सखरी] पक्की रसोई । घी में पका हुआ भोजन । निखरी ।
अनसत्त—वि० दे० "असत्य" ।
अनसमझा(पु)—वि० [सं० अन्+हिं० समझा] १ जिसने न समझा हो । नासमझ । २ अज्ञात । बिना समझा हुआ ।
अनसहत(पु)—वि० [सं० अन्+हिं० सहता] जो सहा न जाय । असह्य ।
अनसहन—वि० [स० अन्+सहन] जो सह न सके ।
अनसाना—क्रि० अ० दे० "अनखाना" ।
अनसुना—वि० [स० अन्+हिं० √सुना] अश्रुत । न सुना हुआ ।
मुहा०—अनसुनी करना=आनाकानी करना । सुनकर भी न सुनना ।
अनसूया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पराये गुण में दोष न देखना । नुक्ताचीनी न करना । २ ईर्ष्या का अभाव । ३. अत्रि मुनि की स्त्री ।
अनस्तित्व—संज्ञा पु० [सं० अन्+अस्तित्व] अस्तित्व का न होना । अभाव ।
अनहद नाद—संज्ञा पु० दे० "अनाहत" ।
अनहित(पु)—संज्ञा पु० [स० अन्=नहीं+हित] १. अहित । अपकार । बुराई । २ अहितचिंतक । शत्रु ।
अनहितू—वि० [हिं० अनहित] अहित चाहनेवाला । अशुभचिंतक ।
अनहोता—वि० [स० अन्=नहीं+हिं० होता] १ दरिद्र । निर्धन । गरीब । २ अलौकिक । अचंभे का ।
अनहोनी—वि० स्त्री० [स० अन्=नहीं+हिं० होनी] न होनेवाली । अलौकिक ।
संज्ञा स्त्री० १ अलौकिक बात । २ न होने का भाव । अनस्तित्व ।
अनाकनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] सुनी अनसुनी करना । जानबूझकर बहलाना । टालमटोल ।
अनाकार—वि० [सं०] निराकार ।
अनाक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] आपस में एक दूसरे पर आक्रमण न करना । जैसे—अनाक्रमण संधि ।
अनाखर—वि० [स० अनक्षर] बेडौल । बेढंगा ।
अनागत—वि० [स०] १ न आया हुआ । अनुपस्थित । २ भावी । होनहार । ३ अपरिचित । अज्ञात । ४ अनादि । अजन्मा । ५ अपूर्व । अद्भुत । विलक्षण ।
क्रि० वि० अचानक । सहसा ।
अनागम—संज्ञा पु० [स०] आगमन का अभाव । न आना ।
अनाघात—संज्ञा पुं० [स०] १ संगीत में एक ताल । २ संगीत में वह स्थान जहाँ हिसाब ठीक रखने के लिये ताल छोड़ दिया जाता है ।

अनाचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनाचारी] १. कदाचार। दुराचार। निंदित आचरण। २ कुरीति। कुप्रथा।

अनाचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुराचारिता। निंदित आचरण। २. कुरीति।

अनाज—संज्ञा पुं० [सं० अन्नाद्य] अन्न। धान्य। दाना। गल्ला।

अनाड़ी—वि० [सं० अज्ञानी] १. नासमझ। नादान। अनजान। २ जो निपुण न हो। अकुशल। अदक्ष।

अनातप—संज्ञा पुं० [सं०] छाया। छाँह।
वि० ठंढा। शीतल।

अनात्म—वि० [सं० अनात्मन्] आत्मारहित। जड़।
संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ। अचित्। जड़।

अनाथ—वि० [सं०] १ नाथहीन। बिना मालिक का। २. जिसका कोई पालन-पोषण करनेवाला न हो। ३ असहाय। अशरण। ४ दीन। दुखी।

अनाथालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ दीन दुखियों और असहायों का पालन हो। लंगरखाना। २ लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान। यतीमखाना। अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम—संज्ञा पुं० दे० "अनाथालय"।

अनादर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनादरणीय, अनादरित, अनादृत] १ आदर का अभाव। निरादर। अवज्ञा। २ अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३ एक काव्यालंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाता है।

अनादि—वि० [सं०] जिसका आदि न न हो। जो सब दिन से हो।

अनादृत—वि० [सं०] जिसका अनादर हुआ हो। अपमानित।

अनाधार—वि० दे० "निराधार"।

अनाना(पु)—क्रि० स० [सं० आनयन] मँगाना।

अनाप-शनाप—संज्ञा पुं० [सं० अनाप्त+अनु०] १ ऊटपटाँग। आयँ-बायँ। अंडबंड। २ असंबद्ध प्रलाप। निरर्थक बकवाद।

अनापा—वि० [हिं० अ+नापा] १ जो नापा न गया हो। २ बहुत। अधिक।

अनाप्त—वि० [सं०] १. अप्राप्त। अलब्ध। २ अविश्वस्त। ३ असत्य। ४ अकुशल। अनाड़ी। ५ अनात्मीय। अबंधु।

अनाम—वि० [सं० अनामन्] [स्त्री० अनामा] १ बिना नाम का। २. अप्रसिद्ध।

अनामय—वि० [सं०] १ रोगरहित। नीरोग। तंदुरुस्त। २ निर्दोष। बेऐब।
संज्ञा पुं० १ नीरोगता। तंदुरुस्ती। २ कुशल-क्षेम।

अनामा—संज्ञा स्त्री० दे० "अनामिका"।

अनामिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली। अनामा।

अनायत—संज्ञा स्त्री० दे० "इनायत"।

अनायत्त—वि० [सं०] १. जो वश में न आया हो। २ स्वतंत्र। स्वाधीन।

अनायास—क्रि० वि० [सं०] १ बिना प्रयास। बिना परिश्रम। २ अकस्मात्। अचानक।

अनार—संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।
संज्ञा पुं० [सं० अन्याय] अन्याय। अनीति।

अनारदाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। २ रामदाना।

अनारी(पु)—वि० [हिं० अनार] अनार के रंग का। लाल।
वि० दे० "अनाड़ी"।

अनार्जव—सं० पुं० [सं०] १. टेढ़ापन। वक्रता। २ कुटिलता।

अनार्त्तव—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का मासिक धर्म रुक जाना।

अनार्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अनार्या] १ वह जो आर्य न हो। अश्रेष्ठ। २ म्लेच्छ।

अनार्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनार्य होने का भाव या धर्म। २. नीचता। क्षुद्रता।

अनावर्षण—संज्ञा पुं० दे० "अनावृष्टि"।

अनावासिक—वि० [सं०] स्थायी रूप से कहीं पर न बसनेवाला। कुछ दिनों के लिये ही कहीं पर आकर रहनेवाला।

अनावश्यक—वि० [सं०] [संज्ञा अनावश्यकता] जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। गैरजरूरी।

अनावृत—वि० [सं०] १ जो ढका न हो। खुला। २ जो घिरा न हो।

अनावृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अवर्षा। सूखा।

अनाश्रमी—वि० [सं० अनाश्रमिन्] १. गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित। आश्रमभ्रष्ट। २ पतित। भ्रष्ट।

अनाश्रय—वि० [सं०] निराश्रय। निरवलंब। अनाथ। दीन।

अनाश्रित—वि० [सं०] आश्रयरहित। निरवलंब। बेसहारा।

अनासक्त—वि० [सं०] [संज्ञा अनासक्ति] १ जो किसी विषय में आसक्त न हो। २ निर्लेप।

अनासी(पु)—वि० दे० "अविनाशी"।

अनास्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आस्था का अभाव। अश्रद्धा। २ अनादर। अप्रतिष्ठा।

अनाह—संज्ञा पुं० [सं०] अफरा। पेट फूलना।

अनाहक—क्रि० वि० दे० "नाहक"।

अनाहत—वि० [सं०] जिस पर आघात न हुआ हो।
संज्ञा पुं० १ शब्दयोग में वह शब्द जो अँगूठों से दोनों कानों को बंद करने से सुनाई देता है। २. हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक।

अनाहार—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का अभाव या त्याग।
वि० १ निराहार। जिसने कुछ खाया न हो। २ जिसमें कुछ खाया न जाय।

अनाहूत—वि० [सं०] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।

अनिंद(पु)—वि० दे० "अनिंद्य"।

अनिंद्य—वि० पुं० [सं०] १ जो निंदा के योग्य न हो। निर्दोष। २. उत्तम। अच्छा।

अनि(पु)—वि० दे० "अन्य"

अनिकेत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसका घर-बार न हो। २ संन्यासी। ३. खानाबदोश।

अनिच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] इच्छा का अभाव। इच्छा न होना।

अनिच्छित—वि० [सं०] १ जिसकी इच्छा न हो। अनचाहा। २ अरुचिकर।

अनिच्छुक—वि० [सं०] इच्छा न रखनेवाला। अनभिलाषी। निराकांक्षी।

अनित्य—वि० [सं०] [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता] १ जो

सर्वदा न रहे। अस्थायी। क्षणभंगुर। २ नश्वर। ३ जो स्वयं कार्यरूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४ असत्य। झूठा।

अनित्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनित्य अवस्था। अस्थिरता। २ नश्वरता।

अनिद्र—वि० [सं०] निद्रारहित। जिसे नींद न आवे।
संज्ञा पुं० नींद न आने का रोग।

अनिप(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अनी=सेना+प=स्वामी] सेनापति। सेनाध्यक्ष।

अनिमा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अणिमा"।

अनिमिष, अनिमेष—वि० [सं०] स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ।
क्रि० वि० १. बिना पलक गिराए। एकटक। २ निरंतर।

अनियंत्रित—वि० [सं०] १ प्रतिबंध-रहित। बिना रोक-टोक का। २ मनमाना।

अनियत—वि० [सं०] १ जो नियत न हो। अनिश्चित। २ अस्थिर। अदृढ़। ३ अपरिमित। असीम।

अनियम—संज्ञा पुं० [सं०] नियम का अभाव। व्यतिक्रम। अव्यवस्था।

अनियमित—वि० [सं०] १ नियमरहित। बेकायदा। २ अनिश्चित।

अनियाउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अन्याय"।

अनियारा(पु)—वि० [सं० अणि=नोक+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] नुकीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण।

अनिरुध, अनुरुध(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अनिरुद्ध"।

अनिरुद्ध—वि० [सं०] जो रोका हुआ न हो। अबाध। बेरोक।
संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनसे ऊषा ब्याही थी।

अनिर्दिष्ट—वि० [सं०] १ जो बताया न गया हो। अनिर्धारित। २ अनिश्चित। ३ असीम।

अनिर्देश्य—वि० [सं०] जिसके विषय में ठीक बतलाया न जा सके। अनिर्वचनीय।

अनिर्बंध—वि० [सं०] १. जिसके लिये कोई बंधन न हो। २ स्वतंत्र।

अनिर्वच—वि० [सं०] दे० "अनिर्वचनीय"।

अनिर्वचनीय—वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।

अनिर्वाच्य—वि० [सं०] १ जो बतलाया न जा सके। २ जो चुनाव के अयोग्य हो।

अनिर्वाप्य—वि० [सं०] १ जिसका निर्वापन न हो सके। जो बुझाई न जा सके। (आग)

अनिल—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

अनिलकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान।

अनिवार—वि० दे० "अनिवार्य"।

अनिवार्य—वि० [सं०] [भाव० अनिवार्यता] १ जिसका निवारण न हो सके। जो हटे नहीं। २ जो अवश्य हो। ३ जिसके बिना काम न चल सके।

अनिश—क्रि० वि० [सं०] निरंतर। लगातार।

अनिश्चित—वि० [सं०] जिसका निश्चय न हुआ हो। अनियत। अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट—वि० [सं०] जो इष्ट न हो। अनभिलषित। अवांछित।
संज्ञा पुं० अमंगल। अहित। बुराई। खराबी।

अनिष्टकर—वि० [सं०] अनिष्ट या खराबी करनेवाला।

अनी—संज्ञा स्त्री० [सं० अणि=अग्रभाग, नोक] १ नोक। सिरा। कोर। २ किसी चीज का पतला सिरा।
संज्ञा स्त्री० [सं० अनीक] १ समूह। झुंड। दल। २ सेना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० आन=मर्यादा] ग्लानि।

अनीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना। २ समूह। झुंड। ३ युद्ध। लड़ाई।
(पु)वि० [सं० अ+हिं० नीक=अच्छा] जो अच्छा न हो। बुरा। खराब।

अनीठ(पु)—वि० [सं० अनिष्ट] १ जो इष्ट न हो। अप्रिय। २ बुरा। खराब।

अनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अन्याय। बेइंसाफी। २ शरारत। ३ अंधेर।

अनीप्सित—वि० [सं०] [स्त्री० अनीप्सिता] जिसकी चाह न हो। अनचाहा।

अनीश—वि० [सं०] [स्त्री० अनीशा] १ बिना मालिक का। २ अनाथ। असमर्थ। ३ सबसे श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० १ विष्णु। २. जीव। माया।

अनीश्वरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास का सिद्धांत। नास्तिकता। २ मीमांसा।

अनीश्वरवादी—वि० [सं०] १ ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक। २ मीमांसक।

अनीस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अनीश] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ।

अनीह—वि० [सं०] [संज्ञा अनीहा] १ इच्छा-रहित। निस्पृह। २ निश्चेष्ट। ३ बेपरवाह।

अनु—उप० [सं०] एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का योग होता है—१ पीछे। जैसे—अनुगामी। २ सदृश। जैसे—अनुकूल, अनुरूप। ३ साथ। जैसे—अनुपान। ४ प्रत्येक। जैसे—अनुक्षण। ५ बारंबार। जैसे—अनुशीलन। आदि।

अनुकंपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुकंपित] १ कृपा। अनुग्रह। दया। २ सहानुभूति। हमदर्दी।

अनुकंपा—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुकंपन"।

अनुकंपित—वि० [सं०] जिसपर कृपा की गई हो। अनुगृहीत।

अनुकरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १ देखादेखी कार्य। २ नकल। ३. वह जो पीछे उत्पन्न हो या पीछे आए।

अनुकर्ता—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अनुकर्त्री] १ अनुकरण या नकल करनेवाला। २ आज्ञाकारी।

अनुकार—संज्ञा पुं० दे० "अनुकरण"।

अनुकारी—वि० [सं० अनुकारिन्] [स्त्री० अनुकारिणी] १ अनुकरणकारी। २ नकल करनेवाला। ३ आज्ञाकारी।

अनुकूल—वि० [सं०] १. मुआफिक। २ पक्ष में रहनेवाला। सहायक। ३. प्रसन्न।
संज्ञा पुं० १ वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो। २ एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुकूलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्रतिकूलता। अविरुद्धता। २ पक्षपात। सहायता। ३ प्रसन्नता।

अनुकूलना(पु)—क्रि० अ० [सं० अनुकूलन] १ मुआफिक होना। २ हितकर होना। ३ प्रसन्न होना।
क्रि० स० अनुकूल करना। प्रसन्न करना।

अनुकृत—वि० [सं०] अनुकरण या नकल किया हुआ।

अनुकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखादेखी कार्य। नकल। २ वह काव्यालंकार जिसमें

एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जाना वर्णन किया जाय।

अनुक्त—वि० [सं०] [स्त्री० अनुक्ता] अकथित। बिना कहा हुआ।

अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उपभेद। वस्तूत्प्रेक्षा का एक भेद जिसमें वर्ण्य वस्तु के संबंध में उत्प्रेक्षा तो की जाती है, किंतु उपमेय का कथन नहीं होता।

अनुक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] क्रम। सिलसिला। तरतीब।

अनुक्रमणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्रम। सिलसिला। २ नामों, विषयों आदि की वर्णक्रम से दी हुई सूची।

अनुक्रिया—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुक्रम"।

अनुक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] दया। अनुकंपा।

अनुक्षण—क्रि० वि० [सं०] १ प्रतिक्षण। २ लगातार। निरंतर।

अनुगंता—वि० [सं० अनु+गतृ] अनुगामी।

अनुग, अनुगत—वि० [सं०] [संज्ञा अनुगति। स्त्री० अनुगता] १ अनुगामी। अनुयायी। २ अनुकूल। मुआफिक।
संज्ञा पुं० सेवक। नौकर।

अनुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुसरण। २ अनुकरण। नकल। ३. मरण।

अनुगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीछे चलना। अनुसरण। २ समान आचरण। ३ विधवा का मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामिता—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुगमन"।

अनुगामी—वि० [सं० अनुगामिन्] [स्त्री० अनुगामिनी] १ पीछे चलनेवाला। २ समान आचरण करनेवाला। ३ आज्ञाकारी।

अनुगुण—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय।

अनुगृहीत—वि० [सं०] [स्त्री० अनुगृहीता] १ जिसपर अनुग्रह किया गया हो। उपकृत। २ कृतज्ञ।

अनुग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुगृहीत, अनुग्राही, अनुग्राहक] १ कृपा। दया। २ अनिष्ट-निवारण।

अनुग्राहक—वि० [सं०] [स्त्री० अनुग्राहिका] अनुग्रह करनेवाला। कृपालु। उपकारी।

अनुग्राही—वि० दे० "अनुग्राहक"।

अनुच्च—वि० [सं० अनुच्च] १. जो ऊँचा न हो। नीचा। २ जो श्रेष्ठ न हो। नीच।

अनुचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अनुचरी] १ दास। नौकर। २ सहचारी। साथी।

अनुचिंतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विचार करना। २ भूली हुई बात को स्मरण करना।

अनुचित—वि० [सं०] अयुक्त। नामुनासिब। बुरा। खराब।

अनुज—वि० [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो।
संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।

अनुजीवी—संज्ञा पुं० [सं० अनुजीविन्] [स्त्री० अनुजीविनी] १ आश्रित। २ सेवक। नौकर।

अनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आज्ञा। हुक्म। इजाजत। २ एक काव्यालंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा का वर्णन किया जाता है।

अनुताप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] १ तपन। दाह। जलन। २ दुःख। रंज। ३ पछतावा। अफसोस।

अनुत्तर—वि० [सं०] १ निरुत्तर। कायल। २ चुपचाप। मौन।

अनुत्तरित—वि० [सं०] जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तीर्ण—वि० [सं०] १ जो उत्तीर्ण न हुआ हो। जो पार न उतरा हो। २. जो परीक्षा में पूरा न उतरा हो।

अनुदात्त—वि० [सं०] १ नीचा (स्वर)। लघु (उच्चारण)। २ स्वर के तीन भेदों में से एक।

अनुदान—संज्ञा पुं० [सं० अनु+दान] १ सरकार से मिलनेवाली आर्थिक सहायता। २. आर्थिक सहायता।

अनुदार—वि० [सं०] [भाव० अनुदारता] १ जो उदार न हो। संकीर्ण। २ नीच। तुच्छ। ३ कृपण। कंजूस।

अनुदिन—क्रि० वि० [सं०] नित्यप्रति। प्रतिदिन। रोजमर्रा।

अनुद्यत—वि० [सं०] जो उद्यत या तैयार न हो।

अनुद्योग—संज्ञा पुं० [सं०] अकर्मण्यता। आलस्य। सुस्ती।

अनुद्विग्न—वि० [सं०] शांत चित्त का। निर्भय। निश्शंक।

अनुद्वेग—संज्ञा पुं० [सं०] उद्वेग का अभाव। भय से मुक्त होने का भाव।

अनुधावन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुधावक, अनुधावित] १ पीछे दौड़ना। २ पीछा करना। ३ छानबीन।

अनुनय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनय। विनती। प्रार्थना। २ मनाना। खुशामद।

अनुनाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुनादित] १ प्रतिध्वनि। २ जोर का शब्द।

अनुनासिक—संज्ञा पुं० [सं०] जो (अक्षर) मुँह और नाक से बोला जाय। जैसे ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार।

अनुपकारी—वि० [सं० अनुपकारिन्] १. उपकार न करनेवाला। २ फजूल। निकम्मा।

अनुपद—वि० [सं०] पीछे पीछे चलनेवाला। अनुगामी।
क्रि० वि० १ पीछे पीछे। २. कदम-ब-कदम। ३ जल्दी। शीघ्र। ४. पीछे। बाद।

अनुपनीत—वि० [सं०] जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो।

अनुपम—वि० [सं०] [संज्ञा अनुपमता] उपमा-रहित। बेजोड़।

अनुपमेय—वि० दे० "अनुपम"।

अनुपयुक्त—वि० [सं०] [भाव० अनुपयुक्तता] जो ठीक, उपयुक्त या योग्य न हो।

अनुपयोगिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपयोगिता का अभाव। निरर्थकता।

अनुपयोगी—वि० [सं०] बेकाम। व्यर्थ का।

अनुपस्थित—वि० [सं०] जो मौजूद न हो। अविद्यमान। गैरहाजिर।

अनुपस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अविद्यमानता। गैरमौजूदगी। गैरहाजिरी।

अनुपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ तुलनात्मक संबंध का आँकड़ा। संख्या, मूल्य, माप, उपयोगिता आदि के विचार से दो या अधिक वस्तुओं का पारस्परिक संबंध। २ गणित की त्रैराशिक क्रिया।

अनुपातक—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्महत्या के समान पाप, जैसे—चोरी, झूठ, आदि।

अनुपादेय—वि० [सं०] जो उपादेय या ठीक न हो।

अनुपान—संज्ञा पुं० [सं०] औषध के साथ या ऊपर से खाई जानेवाली वस्तु।

अनुप्राणित—वि० [सं०] १ जिसमें प्राण या जीवनी-शक्ति भरी गई हो। पुष्ट। २ प्रेरित।

अनुप्राशन—संज्ञा पुं० [सं० अनु+प्राशन] भक्षण। खाना। उ० कछु दिन पवन कियो अनुप्राशन रोक्यो श्वास यह जानी। —सूर।

अनुप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार आता है। वर्णवृत्ति। वर्णमैत्री।

अनुबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंधन। लगाव। २ आगापीछा। ३ परिणाम। ४ कोई विषय या प्रसंग छिड़ने पर उससे संबंध रखनेवाली सब बातों का विवेचन। ५. अनुसरण। ६ शर्त। ठहराव। शर्तनामे की कोई धारा।

अनुबोध—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्मरण या बोध जो बाद में हो।

अनुभव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुभवी] १ किसी कार्य को करने से प्राप्त हुआ प्रत्यक्ष ज्ञान। २ परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। तजरबा। ३ संवेदन। महसूस करना।

अनुभवना(पु)—क्रि० स० [सं० अनुभवन] अनुभव करना। तजरबा करना।

अनुभवी—वि० [सं० अनुभविन्] अनुभव रखनेवाला। तजरबेकार। जानकार।

अनुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ काव्य में रस के योजकों में से एक। चित्त के भाव को प्रकाशित करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ। २ महिमा। बड़ाई।

अनुभावी—वि० [सं० अनुभाविन्] [स्त्री० अनुभाविनी] १ जिसे अनुभव या संवेदना हो। २ वह साक्षी जिसने सब बातें खुद देखी सुनी हों। चश्मदीद गवाह।

अनुभूत—वि० [सं०] १ जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २ परीक्षित। तजरबा किया हुआ।

अनुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुभव। २ परिज्ञान। बोध।

अनुमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आज्ञा। हुक्म। २ संमति। इजाजत।

अनुमान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुमित] १ अटकल। अंदाजा। २ न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से एक जिसमें प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो।

अनुमानना(पु)—क्रि० स० [सं० अनुमान] अनुमान करना। अंदाजा करना। उ० समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी। —मानस।

अनुमित—वि० [सं०] अनुमान किया हुआ।

अनुमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुमान।

अनुमेय—वि० [सं०] अनुमान के योग्य।

अनुमोदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुमोदनीय, अनुमोदित] १ समर्थन। २ प्रसन्नता का प्रकाशन। खुश होना।

अनुयायी—वि० [सं० अनुयायिन्] [स्त्री० अनुयायिनी] १ अनुगामी। पीछे चलनेवाला। २ अनुकरण करनेवाला। ३ किसी मत या सिद्धांत को माननेवाला।
संज्ञा पुं० अनुचर। सेवक। दास।

अनुरंजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुरंजित। भाव० अनुरंजकता] १ अनुराग। प्रीति। २ दिलबहलाव।

अनुरक्त—वि० [सं०] १ अनुरागयुक्त। २ आसक्त। ३ लीन।

अनुरक्ति—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुराग"।

अनुरणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुरणित] १ बजना। २ प्रतिध्वनित होना। ३ शब्द करना।

अनुरत—वि० दे० "अनुरक्त"।

अनुराग—संज्ञा पुं० [सं०] प्रीति। प्रेम।

अनुरागना(पु)—क्रि० अ० [सं० अनुराग] प्रीति करना। प्रेम करना। उ० अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे। —मानस।

अनुरागी—वि० [सं० अनुरागिन्] [स्त्री० अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला। प्रेमी।

अनुराध—संज्ञा पुं० [वै० अनुराध = कल्याण करना, सिद्ध करना] विनती। विनय। उ० सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध। —सूर।

अनुराधना(पु)—क्रि० स० [वै० अनुराध] विनय करना। मनाना। उ० मैं आजु तुम्हें गहि बाँधौं। हाहा करि करि अनुराधौं। —सूर।

अनुराधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में १७ वाँ नक्षत्र।

अनुरूप—वि० [सं०] १ तुल्य रूप का। सदृश। समान। २ योग्य। उपयुक्त। अनुकूल।

अनुरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिमा। प्रतिमूर्ति।

अनुरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समानता। सादृश्य। २. अनुकूलता। उपयुक्तता।

अनुरूपना(पु)—क्रि० अ० [सं० अनुरूप] किसी के अनुरूप होना।
क्रि० स० किसी के अनुरूप बनाना।

अनुरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनयपूर्वक किसी बात के लिये हठ। आग्रह। दबाव। २ प्रेरणा। उत्तेजना। ३ रुकावट। बाधा।

अनुलेखन—संज्ञा पुं० [सं०] लेख की ज्यों की त्यों प्रतिलिपि करना।

अनुलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाना। लेपन। २ उबटन करना। बटना लगाना। ३ लीपना।

अनुलोम—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार। २ संगीत में सुरों का उतार। अवरोह।

अनुलोम विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

अनुवक्ता—वि० [सं०] किसी की कही हुई बात ज्यों की त्यों दोहरानेवाला।

अनुवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनुगमन। २ अनुकरण। समान आचरण। ३ किसी नियम का कई स्थानों पर बार बार लगाना।

अनुवर्ती—वि० [सं० अनुवर्तिन्] [स्त्री० अनुवर्तिनी] अनुसरण करनेवाला। अनुयायी।

अनुवाक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रंथविभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २ वेद के अध्याय का एक अंश।

अनुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाषांतर। उल्था। तर्जुमा। २ पुनरुक्ति। फिर कहना। दोहराना। ३ वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन हो (न्याय)।

अनुवादक—संज्ञा पुं० [सं०] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। उल्था करनेवाला।

अनुवादित—वि० [सं० अनुवाद] अनुवाद किया हुआ।

अनुवाद्य—वि० [सं०] १ अनुवाद करने के योग्य। २ जिसका अनुवाद हो।

अनुवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद के पहले अंश से कुछ वाक्य उसके पिछले अंश में अर्थ को स्पष्ट करने के लिये लाना।

अनुशय—संज्ञा पुं० [सं०] १ घनिष्ठ संबंध। २ परिणाम। ३ पश्चात्ताप।

पछतावा। ४. घृणा। ५ पुराना वैर। ६ वाद-विवाद। झगड़ा।

अनुशयाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो प्रिय के मिलने का स्थान नष्ट हो जाने से दुखी हो।

अनुशासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आज्ञा या आदेश देनेवाला। हुक्म देनेवाला। २ उपदेष्टा। शिक्षक। ३ देश या राज्य का प्रबंध करनेवाला।

अनुशासन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुशासित] १ आदेश। आज्ञा। हुक्म। २ उपदेश। शिक्षा। ३ व्याख्यान। विवरण। ४ 'महाभारत' का एक पर्व। ५ नियम-पालन।

यौ०—अनुशासन की कार्रवाई=नियम या विधान का ठीक ठीक पालन न करने पर दंडित करने की क्रिया।

अनुशीलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुशीलित] १ चिंतन। मनन। २ पुनः पुनः अभ्यास। ३ अनवरत अध्ययन।

अनुशोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुताप। पछतावा। अफसोस।

अनुश्रुत—वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ।

अनुश्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जो लोग परंपरा से सुनते चले आए हों। परंपरागत कथा या उक्ति। जनश्रुति।

अनुषंग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनुषंगिक] १ संबंध। लगाव। २ प्रसंग में एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना। ३ करुणा। दया।

अनुष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] चार चरणों का वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।

अनुष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्य का आरंभ। २ नियमपूर्वक कोई काम करना। ३ शास्त्रविहित कर्म करना। ४ फल के निमित्त किसी देवता का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुष्ठित—वि० [सं०] [स्त्री० अनुष्ठिता] जिसका अनुष्ठान, प्रयोग या कार्य किया गया हो।

अनुसंधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ खोज। ढूँढ़। जाँच पड़ताल। तहकीकात। २ पीछे लगना। कोशिश।

अनुसंधानना—क्रि० स० [सं० अनुसंधान] १ खोजना। ढूँढ़ना। २ सोचना।

अनुसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुप्त परामर्श या संधि। २ षड्यंत्र। कुचक्र।

अनुसर—वि० दे० "अनुसार"।

अनुसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीछे या साथ चलना। २. अनुकरण। नकल। ३ अनुकूल आचरण।

अनुसरना—क्रि० स० [सं० अनुसरण] १ पीछे या साथ साथ चलना। अनुसरण करना। २ नकल करना।

अनुसार—वि० [सं०] अनुकूल। सदृश। समान। मुआफिक।

अनुसारना(पु)—क्रि० स० [सं० अनुसरण] अनुसरण करना। २ आचरण करना। उ० ऐसे जनम करम के ओछे ओछे हो अनुसारत।—सूर। ३ कोई कार्य करना।

अनुसारी—वि० [सं० अनुसारिन्] अनुसरण या अनुकरण करनेवाला।

अनुसाल—संज्ञा पुं० [सं० अनु+हिं० सालना] वेदना। पीड़ा।

अनुस्वार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर के पीछे उच्चरित होनेवाली एक अनुनासिक ध्वनि जिसका चिह्न पंक्ति के ऊपर की बिंदी ( ) है।

अनुहरत—वि० [हिं० अनुहरना का कृदंत रूप] १ अनुसार। अनुरूप। समान। २ उपयुक्त। योग्य। अनुकूल। उ० अब तुम विनय मोरि सुनि लेहू। मोहिं अनुहरत सिखावन देहू।—मानस।

अनुहरना—क्रि० स० [सं० अनुहरण] १ अनुकरण या नकल करना। २ समान होना।

अनुहरिया—(पु)†—दे० "अनुहार"।
संज्ञा स्त्री० आकृति। मुखानी।

अनुहार—वि० [सं०] १ सदृश। तुल्य। समान। २ अनुसार। अनुकूल।
संज्ञा स्त्री० १ भेद। प्रकार। २ मुखानी। आकृति। ३ सादृश्य। ४ किसी चीज की हूबहू नकल। प्रतिकृति।

अनुहारना(पु)—क्रि० स० [सं० अनुहरण] तुल्य करना। सदृश करना। समान करना।

अनुहारी—वि० [सं० अनुहारिन्] [स्त्री० अनुहारिणी] १ अनुकरण या नकल करनेवाला। २ अनुरूप बना हुआ।

अनूअर(पु)—क्रि० वि० [सं० अनवरत ?] निरंतर। लगातार।

अनूजरा(पु)—वि० [हिं० अन+उजरा] १ जो उज्जल न हो। २ मैला।

अनूठा—वि० [सं० अनुत्कृष्ट] [स्त्री० अनूठी] १. अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २ अच्छा। बढ़िया।

अनूठापन—संज्ञा पुं० [हिं० अनूठा+पन (प्रत्य०)] १ विचित्रता। विलक्षणता। २. सुंदरता। अच्छापन।

अनूढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूतर(पु)—वि० दे० "अनुत्तर"।

अनूदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी की कही हुई बात ज्यों की त्यों कहना। २ अनुवाद या उल्था करना।

अनूदित—वि० [सं०] १ दोहराया हुआ। २ तर्जुमा किया हुआ। भाषांतरित। उल्था किया हुआ।

अनूप—संज्ञा पुं० [सं०] जलप्राय देश। वह स्थान जहाँ जल अधिक हो।
वि० [सं० अनुपम] १ जिसकी उपमा न हो। बेजोड़। २ सुंदर। अच्छा।

अनृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिथ्या। असत्य। झूठ। अन्यथा। विपरीत।

अनेक—वि० [सं०] [संज्ञा अनेकता] एक से अधिक। बहुत।

अनेकशः—क्रि० वि० [सं०] १ बहुत बार। बहुधा। २ भिन्न भिन्न प्रकार से। ३. अधिक संख्या या परिमाण में।

अनेकार्थ—वि० [सं०] जिसके बहुत से अर्थ हों।

अनेग(पु)—वि० दे० "अनेक"।

अनेड़(पु)—वि० [सं० अनृत] १ बुरा। खराब। २ टेढ़ामेढ़ा। कुटिल।

अनेरा†—वि० [सं० अनृत] [स्त्री० अनेरी] १ झूठ। व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २ झूठा। ३ अन्यायी। दुष्ट। ४ निकम्मा। ५ विलक्षण। बेढब। ६ बहका हुआ। आवारा।
क्रि० वि० व्यर्थ। फजूल।

अनेसो—संज्ञा पुं० [फा० अंदेशा] संदेह। अंदेशा। शंका।

अनेह—संज्ञा पुं० [सं० अस्नेह] अप्रेम। अप्रीति। विरक्ति।

अनेहा—संज्ञा पुं० [सं० अनेहम्] समय। काल।

अनै—संज्ञा पुं० [सं० अनय] १. नीतिविरुद्ध या बुरा आचरण। २. उपद्रव। उत्पात।

अनैक्य—संज्ञा पुं० [सं०] एका न होना। मतभेद। फूट।

अनैठ†—संज्ञा पुं० [सं० अन्+पण्यस्थ] वह दिन जिसमें बाजार बंद रहे। 'पैंठ' का उलटा।

अनैतिक—वि० [सं०] जो नैतिक न हो। नीति विरुद्ध।

अनैतिहासिक—वि० [सं०] जो ऐतिहासिक न हो।

अनैस(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० अनिष्ट] बुराई।

वि० बुरा। खराब।

अनैसना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अनैस] बुरा मानना। रूठना।

अनैसर्गिक—वि० [सं०] जो नैसर्गिक न हो। अस्वाभाविक। अप्राकृतिक।

अनैसा(पु)—वि० [हिं० अनैस] [स्त्री० अनैसी] अप्रिय। बुरा। खराब।

अनैसे(पु)—क्रि० वि० [हिं० अनैस] बुरे भाव से।

अनैहा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अनैसा] उत्पात।

अनोखा—वि० [सं० अ (उच्चा०)+सं० नवक, अप० णवख] [स्त्री० अनोखी] १ अनूठा। निराला। विलक्षण। विचित्र। २ नया। ३ सुंदर।

अनोखापन—संज्ञा पुं० [हिं० अनोखा+पन] १ अनूठापन। निरालापन। विलक्षणता। विचित्रता। २. नयापन। ३ सुंदरता।

अनौचित्य—संज्ञा पुं० [सं०] उचित बात का अभाव। अनुपयुक्तता।

अनौट(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अनवट"।

अन्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनाज। धान्य। दाना। गल्ला। २ खाद्य पदार्थ। ३. पकाया हुआ अन्न। भात। ४ सूर्य। ५ पृथ्वी। ६ प्राण। जल।

(पु) वि० [सं० अन्य] दूसरा। विरुद्ध।

अन्नकूट—संज्ञा पुं० [सं०] एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यंत किसी दिन होता है। इसमें भगवान् को अनेक प्रकार के भोजनों का भोग लगाते हैं।

अन्नक्षेत्र—संज्ञा पुं० दे० "अन्नसत्र"।

अन्नजल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दाना-पानी। खाना-पीना। खान-पान। २ आबदाना। जीविका।

मुहा०—अन्न-जल त्यागना या छोड़ना =कुछ न खाना-पीना।

अन्नद—वि० [स्त्री० अन्नदा] दे० "अन्नदाता"।

अन्नदाता—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अन्नदात्री] १ अन्नदान करनेवाला। २. पोषक। प्रतिपालक। ३ मालिक। स्वामी।

अन्नपूर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्न की अधिष्ठात्री देवी। दुर्गा का एक रूप।

अन्नप्राशन—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाने का संस्कार।

अन्नमय कोश—संज्ञा पुं० [सं०] पंच कोशों में से प्रथम। अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य तक का समुदाय। स्थूल शरीर (वेदांत)।

अन्नसत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

अन्ना—संज्ञा स्त्री० [तु०] दाई। धाय।

अन्य—वि० [सं०] दूसरा। और कोई। भिन्न। गैर।

अन्यतम—वि० [सं०] १ बहुतों में से एक। २ सबसे बढ़कर। प्रधान। मुख्य।

अन्यत—क्रि० वि० [सं०] १ किसी और से। २ किसी और स्थान से।

अन्यत्र—क्रि० वि० [सं०] और जगह। दूसरी जगह।

अन्यथा—वि० [सं०] १ विपरीत। उलटा। विरुद्ध। २ असत्य। झूठ।

अव्य० नहीं तो। दूसरी अवस्था में।

अन्यथासिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में एक दोष जिसमें यथार्थ कारण दिखाकर किसी बात की सिद्धि की जाय।

अन्यपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूसरा आदमी। गैर। २ व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय, जैसे, 'यह', 'वह'।

अन्यमनस्क—वि० [सं०] जिसका जी न लगता हो। उदास। चिंतित। अनमना।

अन्यसंभोगदुःखिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अन्य स्त्री में अपने प्रिय के संभोग-चिह्न देखकर दुःखित हो।

अन्यसुरतिदुःखिता—संज्ञा स्त्री० दे० "अन्यसंभोगदुःखिता"।

अन्याई(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अन्यायी"।

अन्यापदेश—संज्ञा पुं० दे० "अन्योक्ति"।

अन्याय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्यायी] १ न्याय-विरुद्ध आचरण। अनीति। बेइंसाफी। २ अंधेर। ३ जुल्म। अत्याचार।

अन्यायी—वि० [सं० अन्यायिन्] अन्याय करनेवाला। जालिम।

अन्यारा(पु)—वि० [सं० अ+हिं० न्यारा] १ जो पृथक् न हो। जो जुदा न हो। २. अनोखा। निराला। ३ खूब। बहुत।

अन्यास†—क्रि० वि० [सं० अनायास] १. अचानक। २ अनायास। बिना परिश्रम के। ३ बलपूर्वक। जबरदस्ती।

अन्यून—वि० [सं०] [संज्ञा अन्यूनता] १ जो न्यून या कम न हो। २ बहुत। अधिक।

अन्योक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय। अन्यापदेश।

अन्योदर्य—वि० [सं०] दूसरे के पेट से पैदा। 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य—सर्व० [सं०] परस्पर। आपस में।

संज्ञा पुं० वह काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय।

अन्योन्याभाव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना।

अन्योन्याश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्योन्याश्रित] १ परस्पर का सहारा। एक दूसरे की अपेक्षा। २ न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा। सापेक्ष ज्ञान।

अन्वय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्वयी] १ परस्पर संबंध। मेल। २ व्याकरण के अनुसार वाक्य की शब्द-योजना। ३ वाक्य में पदों का परस्पर संबंध। ४ न्याय में कार्य-कारण का संबंध। ५ वंश। कुल। ६ खानदान। ७ एक बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबंध।

अन्वित—वि० [सं०] १ जिसका अन्वय हुआ हो। २ युक्त। शामिल।

अन्वितार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्वय के द्वारा निकलनेवाला अर्थ। २ अंदर छिपा या मिला हुआ अर्थ।

अन्विति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संबद्धता। तारतम्य। २ औचित्य। ३ एकतानता (अँ० यूनिटी)।

अन्वीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौर। विचार। २ खोज। तलाश।

अन्वीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ध्यानपूर्वक देखना। २ खोज। तलाश।

अन्वेषक—वि० [सं०] [स्त्री० अन्वेषिका] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।

अन्वेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अन्वेषणा] अनुसंधान। खोज। ढूँढ़। तलाश।

अन्वेषी—वि० [सं० अन्वेषिन्] [स्त्री० अन्वेषिणी] खोजनेवाला । तलाश करनेवाला ।

अन्हवाना(पु)—क्रि० स० [हिं० नहाना] स्नान कराना । नहलाना ।

अन्हाना(पु)†—क्रि० अ० दे० "नहाना" ।

अप्—संज्ञा पुं० [सं०] जल । पानी ।

अपंग—वि० [सं० अपांग] १ अंगहीन । २ लँगड़ा । लूला । ३ अशक्त । बेबस ।

अपंडी—वि० [सं० अ+पिंडिन्] पिंड या शरीर से रहित (ईश्वर) । उ० वसै अपंडी पंड मैं ता गति लखै न कोइ ।—कबीर० ।

अप—उप० [सं०] उलटा । विरुद्ध । बुरा । अधिक । यह उपसर्ग जिस शब्द के पहले आता है उसके अर्थ में प्रायः निम्नलिखित विशेषता उत्पन्न करता है—१ निषेध, जैसे, अपमान । २ बुराई, दूषण, जैसे, अपकर्म । ३ विकृति, जैसे, अपांग ।

सर्व० "आप" का संक्षिप्त रूप (यौगिक में), जैसे—अपस्वार्थी । अपकाजी ।

अपकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० अपकर्तृ] [स्त्री० अपकर्त्री] १ हानि पहुँचानेवाला । २ पापी ।

अपकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा काम । कुकर्म । पाप ।

अपकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे की ओर खिंचाव । गिराव । २ घटाव । उतार । ३ बेकदरी । निरादर । अपमान ।

अपकाजी—वि० [हिं० आप+काजी] स्वार्थी । मतलबी ।

अपकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. "उपकार" का उलटा । बुराई । अनुपकार । हानि । नुकसान । अहित । २ अनादर । अपमान ।

अपकारक—वि० [सं०] १ अपकार करनेवाला । हानिकारी । २ विरोधी । द्वेषी ।

अपकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपकार करने की क्रिया या भाव ।

अपकारी—वि० [सं० अपकारिन्] [स्त्री० अपकारिणी] १ हानिकारक । बुराई करनेवाला । २ विरोधी । द्वेषी ।

अपकीरति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्ति" ।

अपकीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपयश । अयश । बदनामी । निंदा ।

अपकृत—वि० [सं०] १ जिसका अपकार किया गया हो । २ अपमानित । ३ जिसका निरोध किया गया हो । "उपकृत" का उलटा ।

अपकृति—संज्ञा स्त्री० दे० "अपकार" ।

अपकृष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा अपकृष्टता] १ जिसका अपकर्ष हुआ हो या किया गया हो । २. अधम । नीच । बुरा । खराब ।

अपक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] व्यतिक्रम । क्रमभंग । गड़बड़ । उलट-पलट ।

अपक्व—वि० [सं०] [संज्ञा अपक्वता] १ बिना पका हुआ । कच्चा । २. अनुभवहीन, जैसे, अपक्व बुद्धि ।

अपगत—वि० [सं०] [संज्ञा अपगति] १ भागा हुआ । २ हटा हुआ । ३ मरा हुआ । ४ नष्ट ।

अपगा—संज्ञा स्त्री० [सं० आपगा] नदी । दरिया ।

अपघन—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर ।

वि० बिना बादल का । मेघरहित ।

अपघात—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपघातक, अपघाती] १ हत्या । हिंसा । २. विश्वासघात । धोखा ।

संज्ञा पुं० [हिं० अप=अपना+सं० घात =हत्या] आत्महत्या ।

अपच—संज्ञा पुं० [सं०] अजीर्ण ।

अपचय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाश । बरबादी । २ गँवाना । खोना । ३ कमी ।

अपचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपचारी] १ अनुचित बर्ताव । बुरा आचरण । २ अनिष्ट । बुराई । ३. निंदा, अपयश । ४ अपथ्य ।

अपचाल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अप+हिं० चाल] कुचाल । खोटाई । नटखटी ।

अपचित—वि० [सं०] १ पूज्य । २ क्षीण ।

अपचिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूजा । २ क्षय । हानि ।

अपची—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंडमाला रोग । कंठमाला ।

अपछरा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा" ।

अपजय—संज्ञा स्त्री० [सं०] पराजय । हार ।

अपजस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अपयश" ।

अपजात—वि० [सं०] १ बिगड़ा हुआ लड़का ।

संज्ञा स्त्री० [सं० अप+जाति] नीची जाति ।

अपटु—वि० [सं०] [संज्ञा अपटुता] १ जो पटु न हो । २ सुस्त । आलसी ।

अपटन—संज्ञा पुं० दे० "उबटन" ।

अपटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परदा । २ कपड़े की दीवार । कनात । ३ आवरण । आच्छादन ।

अपठमान(पु)—वि० [सं० अपठ्यमान] १ जो न पढ़ा जाय । २. न पढ़ने योग्य ।

अपठ—वि० [सं०] १ अपढ़ । जो पढ़ा न हो । २ मूर्ख ।

अपडर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अप+हिं० डर] भय । शंका । उ० सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता । —मानस ।

अपडरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अपडर] भयभीत होना । डरना ।

अपड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० अपर] खींचतान । असमंजस ।

अपड़ाना(पु)—क्रि० अ० [सं० अपर] [संज्ञा अपड़ाव] १ खींचा तानी करना । २ रार या झगड़ा करना ।

अपड़ाव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अपर] [क्रि० अपड़ाना] झगड़ा । रार । तकरार । उ० यह कहती और जो कोऊ तासों मैं करती अपड़ाव ।—सूर० ।

अपढ़—वि० [सं० अपठ] बिना पढ़ा । अनपढ़ ।

अपढार†—वि० [सं० अप+हिं० √ढार= ढलना] बेढंगे तौर से ढलने या अनुरक्त होनेवाला ।

अपत(पु)—वि० [सं० अपत्र] १ पत्रहीन । बिना पत्तों का । उ० अब अलि रही गुलाब की, अपत कँटीली डार । —बिहारी० । २ आच्छादनरहित । नग्न ।

वि० [सं० अपात्र] अधम । नीच ।

वि० [सं० अ+हिं० पत=लज्जा, प्रतिष्ठा] निर्लज्ज ।

संज्ञा स्त्री०[सं० अ+हिं० पत=प्रतिष्ठा] अपमान । बेइज्जती ।

अपतई(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अपत] १ निर्लज्जता । बेहयाई । २ ढिठाई । धृष्टता । ३ चंचलता । ४ उत्पात ।

अपताना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अप= अपना+ताना] जंजाल । प्रपंच ।

अपति(पु)—वि० स्त्री० [सं० अ+पति] बिना पति की । विधवा ।

वि० [सं० अ+पति=गति] पापी । दुष्ट ।

संज्ञा स्त्री० १ दुर्गति । दुर्दशा । २ अनादर । अपमान ।

अपतोस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अप+तोष] दुःख । रंज ।

अपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संतान। औलाद।

अपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीहड़ राह। विकट मार्ग। २. कुपथ। कुमार्ग।

अपथ्य—वि० [सं०] १ जो पथ्य न हो। स्वास्थ्य-नाशक। २ अहितकर।

संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।

अपद—वि० [सं०] १. बिना पैर का। २ बिना समान का।

संज्ञा पुं० [सं०] बिना पैर के रेंगनेवाला जंतु, जैसे, साँप, केंचुआ आदि।

अपदेखा—वि० [हिं० आप+देखा] १ अपने को बड़ा माननेवाला। आत्मश्लाघी। घमंडी। २ स्वार्थी।

अपद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज। २. बुरा धन।

अपध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपध्वंसी, अपध्वस्त] १ विनाश। क्षय। २. अधःपतन। ३. अपमान। ४. पराजय। हार।

अपन(पु)—सर्व० दे० "अपना", "हम"।

अपनपौ—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ"।

अपनपा—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ"।

अपनपौ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अपना+पौ (प्रत्य०)] १ अपनापन। आत्मीयता। संबंध। २ आत्मभाव। आत्मस्वरूप। ३ संज्ञा। सुध। होश। ज्ञान। ४. अहंकार। गर्व। ५ मर्यादा।

अपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपनीत] १. दूर करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३ गणित के समीकरण में किसी परिमाण को एक पक्ष से दूसरे पक्ष में ले जाना। ४ खंडन।

अपना—सर्व० [सं० आत्मन, प्रा० अप्पण, अप्पणय] [क्रि० अपनाना] १ निज का (तीनों पुरुषों में)।

मुहा०—अपना सा करना = अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना। भरसक करना। अपना सा मुँह लेकर रह जाना = किसी बात में अकृतकार्य होने पर लज्जित होना। अपनी अपनी पड़ना = अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना। अपने तक रखना = किसी से न कहना।

यौ०—अपने आप = स्वयं। स्वतः। खुद।

२. आप। निज ('को' के साथ)। जैसे—अपने को।

संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन।

अपनाना—क्रि० स० [हिं० अपना] १ अपने अनुकूल करना। अपनी ओर करना। २. अपना बनाना। अपनी शरण में लेना। ३. अपने अधिकार में करना।

अपनापन—संज्ञा पुं० [हिं० अपना+पन (प्रत्य०)] १. अपनायत। आत्मीयता। २ आत्माभिमान।

अपनापा—संज्ञा पुं० दे० "अपनापन"।

अपनाम—संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी। निंदा।

अपनायत—संज्ञा स्त्री० [हिं० अपना+यत (प्रत्य०)] १. अपनापन। आत्मीयता। २ आपसदारी का संबंध।

अपनास—संज्ञा पुं० [हिं० अप=अपना+सं० नाश] अपना नाश। उ० हाथ चढ़ौं मैं तेहिके प्रथम करौं अपनास।—पदमावत।

अपनीत—वि० [सं०] १ हटाया हुआ। दूर किया हुआ। २ भगाया हुआ।

अपनेता—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूर करनेवाला। हटानेवाला। २ भगानेवाला।

अपनोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हटाना। २ खंडन। प्रतिवाद।

अपवस(पु)—वि० [हिं० अपना+वश] अपने वश या काबू का।

अपभय—संज्ञा पुं० [सं०] १ निर्भयता। २ व्यर्थ भय। ३ डर। भय।

वि० [सं०] निर्भय। जो न डरे।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० आत्म+भय] अपना भय। अपने लिये भय। अपडर। उ० अपभय सकल महीप डराने।—मानस।

अपभ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपभ्रष्ट। अपभ्रंशित] १ पतन। गिराव। २ बिगाड़। विकृति। ३. बिगड़ा हुआ शब्द। ४ प्राकृत भाषाओं का वह परवर्ती स्वरूप जिससे भारत की आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास माना जाता है।

वि० विकृत। बिगड़ा हुआ।

अपभ्रष्ट—वि० [सं०] १ गिरा हुआ। पतित। २ बिगड़ा हुआ। विकृत।

अपमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनादर। बेइज्जती। २ अवज्ञा। तिरस्कार।

अपमानना(पु)—क्रि० स० [सं० अपमान] अपमान करना। तिरस्कार करना।

अपमानित—वि० [सं०] १ निंदित। २ बेइज्जत।

अपमानी—वि० [सं० अपमानिन्] [स्त्री० अपमानिनी] निरादर करनेवाला। तिरस्कार करनेवाला।

अपमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा रास्ता। कुपथ।

अपमृत्यु—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमृत्यु। अकाल मृत्यु। किसी दुर्घटना के कारण आकस्मिक मृत्यु, जैसे—साँप आदि के काटने से मरना।

अपयश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपकीर्ति। बदनामी। बुराई। २ कलंक। लांछन।

अपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा योग। २ कुसमय। ३ अपशकुन।

अपरंच—अव्य० [सं०] १ और भी। २. फिर भी। पुनः।

अपरपार(पु)—वि० [सं० अपरंपर] जिसका पारावार न हो। असीम। बेहद।

अपर—वि० [सं०] [स्त्री० अपरा] १ पहला। पूर्व का। २ पिछला। ३ अन्य। दूसरा।

अपरछन(पु)—वि० [सं० अप्रच्छन्न या अपरिच्छन्न] आवरण-रहित। जो ढका न हो।

[सं० प्रच्छन्न] आवृत। छिपा। गुप्त।

अपरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] परायापन।

संज्ञा स्त्री० [सं० अ=नहीं+परता=परायापन] भेद-भाव शून्यता। अपनापन।

(पु)वि० [हिं० अप+रत] स्वार्थी।

अपरती(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अप+सं० रति] १ स्वार्थ। बेईमानी।

अपरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिछलापन। अर्वाचीनता। २ परायापन। बेगानगी।

अपर दिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिम।

अपरना(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अपर्णा"।

अपरबल(पु)—वि० [सं० प्रबल] बलवान।

अपरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] परलोक। स्वर्ग।

अपरस—वि० [सं० अ+स्पर्श] १ जिसे किसी ने छूआ न हो। २ न छूने योग्य।

संज्ञा पुं० एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है।

अपरांत—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमी सीमांत

अपरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अध्यात्म या ब्रह्मविद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थ विद्या। २ पश्चिम दिशा।

अपराग—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वेष। वैर। २. अरुचि।

अपराजिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णुक्रांता लता। कौआठोंठी। २ कोयल। ३ दुर्गा

४ अयोध्या का एक नाम। ५ चौदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम।

अपराध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपराधी] १. दोष। पाप। २ कसूर। जुर्म। ३ भूल। चूक।

अपराधी—वि० पुं० [सं० अपराधिन्] [स्त्री० अपराधिन, अपराधिनी] दोषी। पापी। मुलजिम।

अपराह्न—संज्ञा पुं० [सं०] दोपहर के बाद का काल। तीसरा पहर।

अपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान का न लेना। दानत्याग। २ आवश्यक धन से अधिक का त्याग। विराग। ३ योग-शास्त्र में पाँचवाँ यम। संग त्याग।

अपरिचय—संज्ञा पुं० [सं०] परिचय का अभाव।

अपरिचित—वि० [सं०] १ जिसे परिचय न हो। जो जानता न हो। अनजान। २ जो जाना-बूझा न हो। अज्ञात।

अपरिच्छिन्न—वि० [सं०] [भाव० अपरिच्छिन्नता] १ जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। २ मिला हुआ। ३ असीम। सीमारहित।

अपरिणामी—वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] १ परिणाम-रहित। विकारशून्य। जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो। २. निष्फल। व्यर्थ।

अपरिपक्व—वि० [सं०] [भाव० अपरिपक्वता। अपरिपाक] १ जो पक्का न हो। कच्चा। २ अधकच्चा। अधकचरा।

अपरिमित—वि० [सं०] १ असीम। बेहद। २ असंख्य। अगणित।

अपरिमेय—वि० [सं०] १ बेअंदाज। अकूत। २ असंख्य। अनगिनत।

अपरिवर्तनीय—वि० [सं०] जिसमें कोई परिवर्तन या फेर बदल न हो सके।

अपरिहार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपरिहारित। अपरिहार्य।] १ अवर्जन। अनिवारण। २ दूर करने के उपाय का अभाव।

अपरिहार्य—वि० [सं०] १ जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। अनिवार्य। २ अत्याज्य। न छोड़ने योग्य। ३. आदरणीय। ४ न छीनने योग्य। ५ जिसके बिना काम न चले।

अपरूप—वि० [सं०] [भाव० अपरूपता] १ बदशकल। भद्दा। बेडौल। २ अद्भुत। अपूर्व।

अपर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. दुर्गा।

अपलक—वि० [सं० अ+हिं० पलक] जिसकी पलकें न गिरें।

क्रि० वि० विना पलक झपकाए। टक लगाए। एकटक।

अपलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] कुलक्षण। बुरा चिह्न।

अपलाप—संज्ञा पुं० [सं०] व्यर्थ की बकवाद।

अपश्लोक—संज्ञा पुं० [सं० अप+श्लोक=कीर्ति या प्रशंसा] १ बदनामी। २ मिथ्या दोषारोपण। अपवाद।

अपवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोक्ष। निर्वाण। मुक्ति। २ त्याग। ३ दान।

अपवर्गद—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। राम।

वि० मोक्षदाता।

अपवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवर्जित] १ त्यागना। २ मुक्त करना। छोड़ना।

अपवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिवर्तन। पलटाव। उलटफेर। २ पीछे की ओर अथवा अपने मूल स्थान की ओर लौटना।

अपवश(पु)—वि० [हिं० अप+सं० वश] अपने अधीन। अपने वश का। 'परवश' का उलटा।

अपवाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवादित] १ वह नियम जो व्यापक नियम के विरुद्ध हो। उत्सर्ग का विरोधी। २ निंदा। अपकीर्ति। ३ दोष। पाप। ४ विरोध। प्रतिवाद।

अपवादक, अपवादी—वि० [सं०] १ निंदक। २ विरोधी। बाधक।

अपवारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवारित] १ हटाने या दूर करने का कार्य। २ व्यवधान। रोक। ३ अंतर्द्धान।

अपवित्र—वि० [सं०] जो पवित्र न हो। अशुद्ध। मलिन।

अपवित्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अशुद्धि। अशौच। मैलापन।

अपविद्ध—वि० [सं०] १ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ वेधा हुआ। विद्ध।

संज्ञा पुं० वह पुत्र जिसको उसके माता पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो (स्मृति)।

अपव्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ निरर्थक व्यय। फजूलखर्ची। २. बुरे कामों में खर्च।

अपव्ययी—वि० [सं० अपव्ययिन्] अधिक खर्च करनेवाला। फजूलखर्च।

अपशकुन—संज्ञा पुं० [सं०] कुसगुन। असगुन। बुरा शकुन।

अपशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. अशुद्ध शब्द। २ बिना अर्थ का शब्द। ३ गाली। कुवाच्य। ४ पाद।

अपसगुन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अपशकुन"।

अपसना(पु)—क्रि० अ० दे० "अपसवना"।

अपसर—वि० [हिं० अप=अपना+सर?] आपही आप। मनमाना। अपने मन का।

अपसरण—संज्ञा पुं० [सं०] दूर हटाना। निष्कासन।

अपसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विसर्जन। त्याग। २. दान। ३ मोक्ष।

अपसवना(पु)—क्रि० अ० [सं० अपसरण] खिसकना। भागना। चल देना।

अपसव्य—वि० [सं०] १. 'सव्य' का उलटा। दाहिना। दक्षिण। २. उलटा। विरुद्ध। ३. जनेऊ दाहिने कंधे पर रखे हुए।

अपसोस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अफसोस"।

अपसोसना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अपसोस] सोच करना। अफसोस करना।

अपसौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अपशकुन] असगुन। बुरा सगुन।

अपसौना—क्रि० अ० [सं० उपसन्न=निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ] आना। पहुँचना।

अपस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपस्नात] वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं। मृतक स्नान।

अपस्मार—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। मिरगी।

अपस्वार्थी—वि० [हिं० अप+सं० स्वार्थी] अपना हित साधनेवाला। मतलबी।

अपस्वर—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा, बेसुरा या कर्कश स्वर।

अपह—वि० [सं०] नाश करनेवाला। विनाशक (केवल समस्त पदों में), जैसे क्लेशापह।

अपहत—वि० [सं०] १ नष्ट किया हुआ। मारा हुआ। २ दूर किया हुआ।

अपहरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपहरणीय, अपहरित, अपहृत] १. छीनना। ले लेना। हर लेना। लूटना। २ चोरी। ३ छिपाव। संगोपन।

अपहरना(पु)—क्रि० स० [सं० अपहरण] १. छीनना। ले लेना। लूटना। २

चुराना । ३ कम करना । घटाना । क्षय करना ।

अपहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० अपहर्तृ] १ छीननेवाला । हर लेनेवाला । ले लेनेवाला । १ चोर । लूटनेवाला । ३. छिपानेवाला ।

अपहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपहरण करने की क्रिया या भाव । २ छीनना । ३ भगा ले जाना ।

अपहारी—संज्ञा पुं० [सं० अपहारिन्] [स्त्री० अपहारिणी] दे० "अपहर्ता" ।

अपहास—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपहास । २ अकारण हँसी ।

अपहृत—वि० [सं०] छीना हुआ । चुराया हुआ । लूटा हुआ ।

अपह्नव—संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपाव । दुराव । २ मिस । बहाना । टालमटोल ।

अपह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुराव । छिपाव । २ बहाना । टालमटूल । ३ वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय ।

अपांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँख का कोना । आँख की कोर । २ कटाक्ष । तिरछी नजर ।

वि० अंगहीन । अंगभंग ।

अपा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० आपा] घमंड । गर्व ।

अपाउ, अपाव—संज्ञा पुं० [सं० अपाय= नाश] अन्याय । अन्यथाचार ।

अपात्र—वि० [सं०] १ अयोग्य । कुपात्र । २ मूर्ख । ३ श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण) ।

अपादान—संज्ञा पुं० [सं०] १ हटाना । अलगाव । विभाग । २ व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलगाव सूचित होता है । इसका चिह्न 'से' है, जैसे पेड़ से फल गिरा ।

अपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस या पाँच प्राणों में से एक । २ गुदास्थ वायु जो मल-मूत्र को बाहर निकालती है । ३ वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है । ४ वह वायु जो गुदा से निकले । ५ गुदा ।

(पु)संज्ञा पुं० [हिं० अपना] १ आत्मभाव । आत्मतत्व । आत्मज्ञान । २ आपा । आत्मगौरव । ३ सुध । होशहवास । ४ अहम् । अभिमान । घमंड ।

(पु) सर्व० दे० "अपना" ।

अपान वायु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच प्रकार की वायु में से एक । २. गुदास्थ वायु । पाद ।

अपानों—सर्व० दे० "अपना" ।

अपाप—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो पाप न हो । पुण्य ।

वि० पापरहित ।

अपामार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] चिचड़ा ।

अपाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्लेष । अलगाव । २ अपगमन । पीछे हटाना । ३ नाश । (पु)४ अन्यथाचार । अनरीति ।

वि० [सं० अ=नहीं+हिं० पाय= पैर] १ विना पैर का । लँगड़ा । अपाहिज । २ निरुपाय । असमर्थ ।

अपार—वि० [सं०] १ जिसका पार न हो । असीम । २ असंख्य । अतिशय ।

अपारग—वि० [सं०] १ जो पारगामी न हो । २ अयोग्य । ३, असमर्थ ।

अपार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] कविता में वाक्यार्थ स्पष्ट न होने का दोष ।

अपार्थिव—वि० [सं०] १ जो पार्थिव या लौकिक न हो । २ अलौकिक । लोकोत्तर ।

अपाव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अपाय=नाश] अन्यथाचार । अन्याय । उपद्रव ।

अपावन—वि० [सं०] [स्त्री० अपावनी] अपवित्र । अशुद्ध । मलिन ।

अपाहिज—वि० [?] १ जिसका अंग भंग हो गया हो । खंज । लूला-लँगड़ा । २ काम करने के अयोग्य । ३ आलसी ।

अपिंडी—वि० [सं० अपिंड] पिंड या शरीर रहित । अशरीरी ।

अपि—अव्य० [सं०] १ भी । ही । २ निश्चय । ठीक ।

अपितु—अव्य० [सं०] १. किंतु । २ बल्कि ।

अपिधान—संज्ञा पुं० [सं०] आच्छादन । आवरण । ढक्कन ।

अपीच(पु)—वि० [सं० अपीच्य] सुंदर ।

अपील—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ निवेदन । विचारार्थ प्रार्थना । २ छोटी अदालत के फैसले से छुटकारे के लिये बड़ी अदालत में प्रार्थना । उच्चतर न्यायालय से अधीन न्यायालय के निर्णय से उन्मुक्ति की याचना । पुनरावेदन ।

अपुत्र—वि० [सं०] निःसंतान । पुत्रहीन ।

अपुत्रक—वि० दे० "अपुत्र" ।

अपुनपौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ" ।

अपुनीत—वि० [सं०] १ अपवित्र । अशुद्ध । २ दूषित । दोषयुक्त ।

अपूठना(पु)—क्रि० स० [सं० अपुष्ट] १. विध्वंस या नाश करना । २. उलटना ।

अपूठा(पु)—वि० [सं० अपुष्ट] १ अपरिपक्व । अजानकार । अनभिज्ञ । उ० निकट रहत पुनि दूरि बतावत ही रस माँहि अपूठे । —सूर० । २ निस्सार ।

वि० [अस्फुट] अविकसित । बेखिला ।

अपूत—वि० [सं०] अपवित्र । अशुद्ध ।

(पु)वि० [हिं० अ+पूत] पुत्रहीन । निपूता ।

(पु)संज्ञा पुं० कपूत । बुरा लड़का ।

अपूर(पु)—वि० [सं० आपूर्ण] पूरा । भरपूर ।

अपूरना(पु)—क्रि० स० [सं० आपूरण] १. भरना । २ फूँकना । बजाना (शंख) ।

अपूरब—वि० दे० "अपूर्व" ।

अपूरा(पु)—वि० [सं० आ+पूर्ण] [स्त्री० अपूरी] भरा हुआ । फैला हुआ । व्याप्त ।

अपूर्ण—वि० [सं०] [भाव० अपूर्णता, अपूर्णत्व] १ जो पूर्ण या भरा न हो । २ अधूरा । असमाप्त । ३ कम ।

अपूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधूरापन । २ न्यूनता । कमी ।

अपूर्णत्व—संज्ञा पुं० दे० "अपूर्णता" ।

अपूर्णभूत—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में क्रिया का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय, जैसे—वह खाता था ।

अपूर्व—वि० [सं०] [संज्ञा अपूर्वता] १ जो पहले न रहा हो । २ अद्भुत । अनोखा । विचित्र । ३ उत्तम । श्रेष्ठ ।

अपूर्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विलक्षणता । अनोखापन । २ श्रेष्ठता ।

अपूर्वरूप—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो ।

अपेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षित] १ आकांक्षा । इच्छा । अभिलाषा । चाह । २ आवश्यकता । जरूरत । ३ आश्रय । भरोसा । आशा । ४ कार्य-कारण का अन्योन्य संबंध ।

अपेक्षाकृत—अव्य० [सं०] मुकाबिले में । तुलना में ।

अपेक्षित—वि० [सं०] १ जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो । आवश्यक । जरूरी । २ इच्छित । वांछित । चाहा हुआ ।

अपेक्ष्य—वि० [सं०] १ अपेक्षा करने के योग्य ।

२. दे० "अपेक्षित"।

अपेय—वि० [सं०] न पीने योग्य।

अपेल(पु)—वि० [सं० अ=नहीं+√पेल=दबाना] जो हटे या टले नहीं। अटल। उ०—बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धात अपेल। —मानस।

अपैठ(पु)—वि० [हिं० अ+पैठ] जहाँ पैठ न हो सके। दुर्गम। अगम।

अपोगंड—वि० [सं०] १. सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्थावाला। २ बालिग।

अप्रकट—वि० [सं०] जो प्रकट न हो। छिपा हुआ। लुप्त।

अप्रकाशित—वि० [सं०] १ जो छपकर प्रचारित न किया गया हो। २ जो प्रकट न हुआ हो। छिपा हुआ। गुप्त। ३ जो सर्वसाधारण के सामने न रखा गया हो। ४ जिसमें उजाला न हो। अँधेरा।

अप्रकृत—वि० [सं०] १. अस्वाभाविक। २ बनावटी। कृत्रिम। ३ झूठा।

अप्रचलित—वि० [सं०] जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त।

अप्रतिभ—वि० [सं०] १ प्रतिभाशून्य। चेष्टाहीन। उदास। २ जिसे उत्तर या कर्तव्य न सूझे। ३ स्फूर्तिशून्य। सुस्त। मंद। ४ मतिहीन। निर्बुद्धि। ५. लजीला।

अप्रतिभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिभा का अभाव। २ न्याय में एक निग्रह-स्थान।

अप्रतिम—वि० [सं०] अद्वितीय। अनुपम।

अप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अप्रतिष्ठित] १ अनादर। अपमान। २ अपयश। अपकीर्ति।

अप्रतिहत—वि० [सं०] जो किसी प्रकार रोका न जा सके। अबाध।

अप्रत्यक्ष—वि० [सं०] १ जो प्रत्यक्ष न हो। परोक्ष। २ छिपा। गुप्त।

अप्रत्याशित—वि० [सं०] जिसकी आशा न की गई हो। अचानक होनेवाला।

अप्रमाद—सज्ञा पु० [सं०] प्रमाद का अभाव। बुद्धि का ठीक ठिकाने होना।
  वि० प्रमाद-रहित।

अप्रमेय—वि० [सं०] १ जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनंत। २ जो तर्क या प्रमाण से न सिद्ध हो सके।

अप्रयुक्त—वि० [सं०] जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अप्रसक्त—वि० [सं०] १. आसक्ति रहित। लगाव से हीन। २. जो आदी न हुआ हो।

अप्रसन्न—वि० [सं०] १ जो प्रसन्न न हो। नाराज। २. खिन्न। दुखी। उदास।

अप्रसन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसन्नता का अभाव। २ नाराजगी। खिन्नता।

अप्रसिद्ध—वि० [सं०] १ जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात। २ गुप्त। छिपा हुआ।

अप्रस्तुत—वि० [सं०] १ जो प्रस्तुत या मौजूद न हो। अनुपस्थित। २ जिसकी चर्चा न हुई हो।
  सज्ञा पुं० उपमान।

अप्रस्तुतप्रशंसा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह अलंकार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।

अप्राकृत—वि० [सं०] जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। असाधारण।

अप्राप्त—वि० [सं०] १ जो प्राप्त न हो। दुर्लभ। अलभ्य। २ जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३ अप्रत्यक्ष। परोक्ष। अप्रस्तुत।

अप्राप्तव्यवहार—वि० [सं०] सोलह वर्ष से कम का (बालक)। नाबालिग।

अप्राप्य—वि० [सं०] जो प्राप्त न हो सके। अलभ्य।

अप्रामाणिक—वि० [सं०] [स्त्री० अप्रामाणिकी] १ जो प्रमाण से सिद्ध न हो। २. जो मानने योग्य न हो।

अप्रासंगिक—वि० [सं०] प्रसंगविरुद्ध। जिसकी कोई चर्चा न हो।

अप्रिय—वि० [सं०] १ अरुचिकर। जो न रुचे। २ जिसकी चाह न हो।

अप्सरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। परी। २ स्वर्ग की वेश्या। ३ स्वर्ग की वेश्याओं की एक जाति।

अप्सरी(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।

अफगान—सज्ञा पुं० [अ०] अफगानिस्तान का रहनेवाला। काबुली।

अफयून—सज्ञा स्त्री० दे० "अफीम"।

अफरना—क्रि० अ० [सं० स्फार] १ पेट भर खाना। भोजन से तृप्त होना। २ पेट का फूलना। ३ ऊबना। और अधिक की इच्छा न रखना।

अफरा—सज्ञा पु० [सं० स्फार] अजीर्ण या वायु से पेट फूलना।

अफराना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अफरना] भोजन से तृप्त करना।

अफराव—सज्ञा पुं० दे० "अफरा"।

अफल—वि० [सं०] १ फलहीन। निष्फल। २ व्यर्थ। निष्प्रयोजन। ३. बाँझ।

अफलातून—सज्ञा पुं० [अ०] १. यूनानी दार्शनिक प्लैटो का अरबी नाम। २. बहुत बड़ा अभिमानी या धूर्त (व्यंग्य)।

अफवाह—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. उड़ती खबर। गप्प। बाजारू खबर। २. किंवदंती।

अफसर—सज्ञा पुं० [अं० आफिसर] १. हाकिम। अधिकारी। २. मुखिया। प्रधान।

अफसरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अफसर] १. अधिकार। प्रधानता। २. हुकूमत। शासन।

अफसाना—सज्ञा पुं० [फा०] किस्सा। कहानी। कथा।

अफसोस—सज्ञा पु० [फा०] १ पश्चात्ताप। खेद। पछतावा। दुःख। २ शोक। रंज।

अफीम—सज्ञा स्त्री० [अं० ओपियम, अ० अफयून] पोस्त की ढोंढी का गोंद जो कड़ुआ, मादक और विष होता है।

अफीमची—सज्ञा पुं० [हिं० अफीम+ची (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।

अफीमी—वि० [हिं० अफीम] १. अफीम संबंधी। २ अफीमची।

अब—क्रि० वि० [सं० एवमेव, अप० एव्वहि] इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।
  मुहा०—†अबकी, अबके=इस बार। अब जाकर=इतनी देर पीछे। अब तब लगना या होना=मरने का समय निकट पहुँचना।

अबखरा—सज्ञा पुं० [अ०] भाप। वाष्प।

अबटन†—सज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

अबतर—वि० [फा०] [सज्ञा अबतरी] १. बुरा। खराब। २ बिगड़ा हुआ।

अबद्ध—वि० [सं०] १ जो बँधा न हो। मुक्त। २ स्वच्छंद। निरंकुश।

अबध—पु०—वि० [सं० अबाध] १. अचूक। जो खाली न जाय। २ जो रोका न जा सके।

अबधू(पु)—वि० [सं० अबोध] अज्ञानी। अबोध।
  सज्ञा पु० [सं० अवधूत] त्यागी। विरागी।

अबध्य—वि० [सं०] [स्त्री० अबध्या, सज्ञा अबध्यता] १ जिसे मारना उचित न हो। २ जिसे शास्त्रानुसार प्राणदंड न दिया जा

सके, जैसे—स्त्री, ब्राह्मण। ३ जिसे कोई मार न सके।

अबर(पु)—वि० [सं० अबल] निर्बल। कमजोर।

सज्ञा पुं० [फा० अब्र] बादल। मेघ।

अबरक—सज्ञा पुं० [सं० अभ्रक] १ एक खनिज द्रव्य जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं। भोडल। भोड़र। २ एक प्रकार का पत्थर।

अबरन(पु)—वि० [सं० अवर्ण्य] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय। उ० सनक शकर ध्यान ध्यावत निगम अबरन बरन।—सूर०।

वि० [सं० अवर्ण] १. बिना रूप-रग का। वर्णशून्य। २ एक रग का नहीं। भिन्न।

(पु) सज्ञा पुं० दे० "आवरण"।

अबरस—सज्ञा पुं० [अ० अबरश] १ घोड़े का एक रग जो सब्जे से कुछ खुलता हुआ सफेद होता है। २ वह कुमैत रग का घोड़ा जिसपर खरबूजे की फाँकों जैसी धारियाँ हों।

अबरा—सज्ञा पुं० [फा०] १ 'अन्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। उपल्ला, । २ न खुलनेवाली गाँठ। उलझन। ३ निर्बल।

अबरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज। २ एक पीला पत्थर जो पच्चीकारी के काम आता है। एक प्रकार की लाह की रँगाई।

अबरू—सज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह। भ्रू।

अबल—वि० [सं०] [स्त्री० अबला] निर्बल। कमजोर।

अबलक—सज्ञा पुं० दे० "अबलख"।

अबलख—वि० [अ० अबलक] सफेद और काले अथवा सफेद और लाल रग का। कबरा। दुरगा।

सज्ञा पुं० वह घोड़ा या बैल जिसका रग सफेद और काला अथवा सफेद और लाल हो।

अबलखा—सज्ञा पुं० [अ० अबलका] मैना की जाति का एक काला पक्षी जिसके पर स्याह और पेट सफेद होता है।

अबला—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

अबवाब—सज्ञा पुं० [अ०] वह अधिक कर जो सरकार मालगुजारी पर लगाती है।

अबस—क्रि० वि० [अ०] व्यर्थ।

वि०[सं०अवश] जो अपने वश में न हो।

अबाँह—वि० [हिं० अ+बाँह] १. जिसकी बाँह न हो। २ जिसकी बाँह पकड़नेवाला कोई न हो। अनाथ।

अबा—सज्ञा पुं० [अ०] अगे के ढग का ढीला ढाला किंतु उससे अधिक लबा पहनावा।

अबाती(पु)—वि० [सं० अ+वात+ई (प्रत्य०)] १ बिना वायु का। २. जिसे वायु न हिलाती हो। ३. भीतर भीतर सुलगनेवाला।

अबादान—वि० [अ० आबाद] बसा हुआ। पूर्ण। भरा पूरा।

अबादानी—सज्ञा स्त्री० [फा० आबादानी ?] १ पूर्णता। बस्ती। २ शुभचितकता। ३ चहल पहल। रौनक।

अबाध—वि० [सं०] १ बाधारहित। बेरोक। २ निर्विघ्न। ३ अपार। अपरिमित। बेहद। ४ जो असगत न होता हो।

अबाधित—वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २. स्वच्छंद। स्वतत्र।

अबाध्य—वि० [सं०] [संज्ञा अबाध्यता] १ बेरोक। जो रोका न जा सके। २ अनिवार्य।

अबान(पु)—वि० [सं० अबाण] शस्त्ररहित। हथियार छोड़े हुए। निहत्था।

अबाबील—सज्ञा स्त्री० [फा०] काले रंग की एक चिड़िया। कृष्णा। कन्हैया।

अबार(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० अबेर] देर। बेर। विलंब।

अबास(पु)—सज्ञा पुं० [सं० आवास] रहने का स्थान। घर। मकान।

अबिगत(पु)—वि० [सं० अ+वि+गत = जाना हुआ] जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

अबिहड़—वि० दे० "अविहड़"। उ० आदि मधि अरू अत लौं, अबिहड़ सदा अभंग।—पदमावत।

अबीर—सज्ञा पुं० [अ०] [वि० अबीरी] रगीन बुकनी जिसे लोग होली में इष्ट मित्रों पर लगाते और डालते हैं।

अबीरी—वि० [अ०] अबीर के रग का। कुछ कुछ स्याही लिए लाल रँग का।

सज्ञा पुं० अबीरी रग।

अबुहाना—क्रि० अ० दे० "अभुआना"।

अबूझ—वि० [सं० अबुद्ध] अबोध। नासमझ। नादान।

अबूत(पु)—वि० [हिं० अ+बूता] १. निकम्मा। व्यर्थ का। बिना बूते का। अशक्त। २ नि संतान।

अबे—अव्य [सं० अयि] अरे। हे। अपमानजनक संबोधन। बराबरीवालों से घनिष्ठतासूचक संबोधन।

मुहा०—अबे तबे करना = निरादरसूचक वाक्य बोलना।

अबेध—वि० [सं० अवेध्य] जो बेधा या छेदा न गया हो।

अबेर(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० अबेला] विलब।

अबेश(पु)—वि० [अ (उप०)+फा० बेश] अधिक। बहुत।

अबैन(पु)—वि० [हिं० अ+बैन] चुप। मौन।

अबोध—सज्ञा पुं० [सं०] अज्ञान। मूर्खता।

वि० [सं०] अनजान। नादान। मूर्ख।

अबोल(पु)—वि० [सं० अ = नहीं+हिं० बोल] १ मौन। अवाक्। २ जिसके विषय में हम बोल या कह न सकें। अनिर्वचनीय।

संज्ञा पु० कुबोल। बुरा बोल।

अबोला—सज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० बोला] रज से न बोलना। रूठने के कारण मौन।

अब्ज—सज्ञा पुं० [सं०] १ जल से उत्पन्न वस्तु। २ कमल। ३. शख। ४ निचुल। ५ चद्रमा। ६ धन्वतरि। ७ कपूर। ८ सौ करोड़। अरब।

अब्जद—सज्ञा पुं० [अ०] १ अरबी वर्णमाला। २ अरबी में अक्षरों द्वारा अक सूचित करने की प्रणाली।

अब्जा—सज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

अब्द—सज्ञा पु० [सं०] १ वर्ष। साल। २ मेघ। बादल। ३ आकाश।

अब्दकोश—संज्ञा पु० [सं०] प्रति वर्ष प्रकाशित होनेवाला वह कोश जिसमें किसी देश, समाज या वर्ग आदि से संबध रखनेवाली सभी जानने योग्य बातों का सग्रह हो। (अँ० ईयर बुक)

अब्धि—सज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। सागर। २ सरोवर। ताल। ३ सात की सख्या।

अब्धिज—सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अब्धिजा] १ समुद्र से पैदा हुई वस्तु। २. शंख। ३. चद्रमा। ४. अश्विनीकुमार।

अब्बा—संज्ञा पुं० [फा० बाबा] पिता।
अब्बास—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अब्बासी] एक पौधा जो फूल के लिये लगाया जाता है। गुले अब्बास। गुलार्बास।
अब्बासी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मिस्र देश की एक प्रकार की कपास। २ एक प्रकार का लाल रंग।
अभ्र—संज्ञा पुं० [स० अभ्र] बादल। मेघ।
अब्रह्मण्य—संज्ञा पु० [सं०] १. वह कर्म जो ब्रह्मणोचित न हो। २ हिंसादि कर्म। ३ जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो।
अब्रू—संज्ञा स्त्री० [फा० अब्रू] भौंह।
अभंग—वि० [स०] १. अखंड। अटूट। पूर्ण। २ अनाशवान्। न मिटनेवाला। ३ लगातार।
संज्ञा पुं० मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध पद या छंद।
अभंगपद—संज्ञा पु० [स०] श्लेष अलकार का एक भेद। वह श्लेष जिसमें अक्षरों को इधर उधर न करना पड़े।
अभंगीⓅ—वि० [स० अभगिन्] १ अभग। पूर्ण। २ जिसका कोई कुछ ले न सके।
अभंजन—वि० [स०] अटूट अखंड।
अभक्त—वि० [स०] १ भक्तिशून्य। श्रद्धाहीन। २. भगवद्विमुख। ३. जो बाँटा या अलग न किया गया हो। समूचा।
अभक्ष—वि० दे० "अभक्ष्य"।
अभक्ष्य—वि० [स०] १. अखाद्य। अभोज्य। जो खाने के योग्य न हो। २ जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।
अभगतⓅ—वि० दे० "अभक्त"।
अभग्न—वि० [स०] अखंड। समूचा।
अभद्र—वि० [स०] [संज्ञा अभद्रता] १. अशिष्ट। बेहूदा। २ अमांगलिक। अशुभ।
अभद्रता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ अशिष्टता बेहूदगी। २ अमांगलिकता। अशुभ।
अभयंकर—वि० [स०] जो भयंकर न हो।
वि० दे० "अभयकर"।
अभय—वि० [स०] [स्त्री०अभया] निर्भय। बेडर।
मुहा०—अभय देना या अभय बाँह देना = भय से बचाने का वचन देना। शरण देना।
अभयकर—वि० [स० अभय+कर] अभयदान देनेवाला।
अभयदान—संज्ञा पु० [सं०] भय से बचाने का वचन देना। शरण देना। रक्षा करना।
अभयपद—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति।
अभयवचन—संज्ञा पु० [सं०] भय से बचाने की प्रतिज्ञा। रक्षा का वचन।
अभरⓅ—वि० [सं० अ+भार] दुर्वह। न ढोने योग्य।
अभरनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "आभरण"।
वि० [सं० अवर्ण] अपमानित। दुर्दशाग्रस्त। जलील।
अभरमⓅ—वि० [सं० अ+भ्रम] १ भ्रमरहित। अभ्रांत। २. नि शंक। निडर।
क्रि० वि० निःसंदेह। निश्चय।
अभलⓅ—वि० [सं० अ = नहीं + हिं० भला] अश्रेष्ठ। बुरा। खराब।
अभव्य—वि० [सं०] १. न होने योग्य। २. अशुभ। अमांगलिक। ३ अशिष्ट। बेहूदा। ४. भद्दा। भोंडा।
अभाउⓅ—वि० [सं० अ = नहीं + हिं० √भाव] १ जो न भावे। जो अच्छा न लगे। २. जो न सोहे। अशोभित। उ० काढहु मुद्रा फटिक अभाउ। पहिरहु कुंडल कनक जड़ाऊ। —पदमावत।
अभागⓅ—संज्ञा पु० दे० "अभाग्य"।
अभागा—वि० [स० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्यहीन। प्रारब्धहीन। बदकिस्मत।
अभागी—वि० [सं० अभागिन्] [स्त्री० अभागिनी] १ भाग्यहीन। बदकिस्मत। २ जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।
अभाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रारब्धहीनता। दुर्दैव। बदकिस्मती। २ बुरादिन।
अभाव—संज्ञा पु० [सं०] १ अविद्यमानता। न होना। २ त्रुटि। ३ टोटा। कमी। घाटा। Ⓟ४ कुभाव। दुर्भाव। विरोध।
अभावना—वि० [हिं० अ + √भाव] जो अच्छा न लगे। अप्रिय।
अभावनीय—वि० [सं०] जो भावना में न आ सके। अचिंतनीय।
अभाषण—संज्ञा पु० [स०] भाषण या बातचीत न करना।
अभासⓅ—संज्ञा पु० दे० "आभास"।
अभासना—क्रि०स० [स० आभास] प्रकाशित करना। प्रकट करना। उ०—तहाँ जाइ यह कँवल अभासी जहाँ अलाउद्दीन। —पदमावत।
अभि—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—१ सामने। २ बुरा। ३ इच्छा। ४ समीप। ५ बारंबार। अच्छी तरह। ६ दूर। ७ ऊपर। आदि।
अभिक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ाई। धावा।
अभिगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पास जाना। २. सहवास। संभोग।
अभिगामी—वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] १. पास जानेवाला। २. सहवास या संभोग करनेवाला।
अभिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. चढ़ाई। धावा। २ लूट-खसोट। ३ ललकार।
अभिघात—संज्ञा पुं० [स०] [वि० अभिघातक, अभिघाती] १ चोट पहुँचाना। २. प्रहार। मार।
अभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कामों के लिये किया जानेवाला तांत्रिक अनुष्ठान। पुरश्चरण।
अभिचारी—वि० [सं० अभिचारिन्] [स्त्री० अभिचारिणी] अभिचार करनेवाला। तांत्रिक।
अभिजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुल। वंश। २ परिवार। ३ जन्मभूमि। ४. वह जो घर में सबसे बड़ा हो। ५ ख्याति।
अभिजात—वि० [स०] १ अच्छे कुल में उत्पन्न। कुलीन। २ बुद्धिमान्। पंडित। ३ योग्य। उपयुक्त। ४ मान्य। पूज्य। ५. सुंदर। मनोहर।
अभिजित—वि० [सं०] विजयी।
संज्ञा पुं० [स०] सिंघाड़े के आकार का एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं।
अभिज्ञ—वि० [सं०] १. जानकार। विज्ञ। २ निपुण। कुशल।
अभिज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मृति। याद। २ बुद्ध का अलौकिक ज्ञानबल जो ध्यान की चारों अवस्थाओं के बाद होता है।
अभिज्ञान—संज्ञा पुं० [स०] [वि० अभिज्ञात] १ स्मृति। खयाल। २ लक्षण। पहचान। ३ निशानी। सहिदानी। परिचायक चिह्न।
अभिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शब्द की तीन शक्तियों में से एक। शब्दों के उस अर्थ को प्रकट करने की शक्ति जो उनके नियत अर्थों ही से निकलता है। वाच्यार्थ-प्रकाशित करनेवाली शब्दशक्ति। २ वाच्यार्थ। ३ नाम। पदवी।
अभिधान—संज्ञा पुं० [स०] १ नाम। उपाधि। २ कथन। ३ शब्दकोश।

अभिधायक—वि० [सं०] १ नाम रखनेवाला। २ कहनेवाला। ३ सूचक।

अभिधेय—वि० [सं०] १ कथनीय। वाच्य। प्रतिपाद्य। २ अर्थ। अभिप्राय।
संज्ञा पुं० नाम।

अभिनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वागत। २ वंदना। प्रशंसा ३. आनंद। ४ प्रोत्साहन। उ०—गुरु के वचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हियँ हित जनु चंदनु।—मानस।
यौ०—अभिनंदनपत्र=वह आदर या प्रतिष्ठासूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पण किया जाता है।

अभिनंदनीय—वि० [सं०] वंदनीय। प्रशंसा के योग्य।

अभिनंदित—वि० [सं०] [स्त्री० अभिनंदिता] वंदित। प्रशंसित।

अभिनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल के लिये धारण करना। नाट्य। २ स्वाँग। नकल। ३ नाटक का खेल।

अभिनव—वि० [सं०] १ नया। २ ताजा।

अभिनिविष्ट—वि० [सं०] १ धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २ बैठा हुआ। ३ अनन्य मन से अनुरक्त। लिप्त। मग्न।

अभिनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवेश। पैठ। गति। २ मनोयोग। लीनता। एकाग्रचिंतन। ३ दृढ़ संकल्प। तत्परता। ४. योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश। मृत्युशंका।

अभिनीत—वि० [सं०] १ अभिनय किया हुआ। खेला हुआ (नाटक)। २ निकट लाया हुआ। ३ सुसज्जित। अलंकृत। ४. उचित।

अभिनेता—संज्ञा पुं० [सं० अभिनेतृ] स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करनेवाला व्यक्ति। स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। (अँ० ऐक्टर)।

अभिनेय—वि० [सं०] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य (नाटक)।

अभिनै(पु)—वि० दे० "अभिनव"।
संज्ञा पुं० दे० "अभिनय"।

अभिन्न—वि० [सं०] [संज्ञा अभिन्नता] १ जो भिन्न न हो। अपृथक्। २ सटा हुआ। संबद्ध। ३ मिला हुआ।

अभिन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भिन्नता का अभाव। २ लगाव। संबंध। ३ मेल।

अभिन्नपद—संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद।

अभिप्राय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिप्रेत] आशय। मतलब। अर्थ। तात्पर्य।

अभिप्रेत—वि० [सं०] इष्ट। अभिलषित।

अभिभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ हार। पराजय। २ तिरस्कार। अनादर। ३ दमन। दबाव। ४ आतंक।

अभिभावक—वि० [सं०] १. (अवयस्क, अनाथ आदि की) देखरेख करनेवाला। सरपरस्त। संरक्षक (अँ० गार्जियन)। २ वशीभूत करनेवाला। ३ पराजित करनेवाला।

अभिभाषक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाषण करनेवाला। २ वकील।

अभिभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाषण। व्याख्यान। वक्तृता। २ सभापति का भाषण।

अभिभूत—वि० [सं०] १ पराजित। हराया हुआ। २ पीड़ित। ३ जो वश में किया गया हो। वशीभूत। ४ विचलित। ५ चकित या स्तब्ध।

अभिमंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिमंत्रित] १ मंत्र द्वारा संस्कार। २ आवाहन।

अभिमत—वि० [सं०] १ मनोनीत। वांछित। २ सम्मत। राय के मुताबिक।
संज्ञा पुं० १ मत। सम्मति। राय। २ विचार। ३ मनचाही बात। उ०—राम नाम कलि अभिमत दाता।—मानस।

अभिमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभिमान। गर्व। अहंकार। २ वेदांत के अनुसार यह भावना कि "अमुक वस्तु मेरी है"। ३ अभिलाषा। इच्छा। ४ राय। विचार।

अभिमन्यु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन का पुत्र।

अभिमान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिमानी] अहंकार। गर्व। घमंड।

अभिमानी—वि० [सं० अभिमानिन्] स्त्री० अभिमानिनी] अहंकारी। घमंडी।
संज्ञा पुं० वह नायक जो नायिका से मान करे। मानी नायक।

अभिमुख—क्रि० वि० [सं०] सामने। सम्मुख।

अभियान—संज्ञा पुं० [सं०] १. चढ़कर या चलकर जाना। २ चढ़ाई। धावा।

अभियुक्त—वि० [सं०] [स्त्री० अभियुक्ता] जिसपर अभियोग चलाया गया हो। मुलजिम।

अभियोक्ता—वि० [सं०] [स्त्री० अभियोक्त्री] अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। मुद्दई। फरियादी।

अभियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। नालिश। मुकदमा। २. चढ़ाई। आक्रमण। ३ उद्योग।

अभियोगी—वि० [सं०] अभियोग चलानेवाला। नालिश करनेवाला। फरियादी। अभियोक्ता।

अभिरत—वि० [सं०] १ लीन। अनुरक्त। २ युक्त। सहित।

अभिरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुराग। प्रीति। लगन २ संतोष। हर्ष।

अभिरना(पु)—क्रि० अ० [प्रा० भिडण, अभिड] १ भिड़ना। लड़ना। २ टेकना।
क्रि० स० मिलाना।

अभिराम—वि० [सं०] [स्त्री० अभिरामा। भाव० अभिरामता] मनोहर। सुंदर। रम्य। प्रिय।

अभिरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत रुचि। चाह। पसंद। प्रवृत्ति।

अभिरूप—वि० [सं०] रमणीय। मनोहर। सुंदर।

अभिलषित—वि० [सं०] वांछित। इष्ट। चाहा हुआ।

अभिलाख(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा"।

अभिलाखना(पु)—क्रि० स० [सं० अभिलाष] इच्छा करना। चाहना।

अभिलाखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा"।

अभिलाखी—वि० दे० "अभिलाषी"।

अभिलाष—संज्ञा पुं० [सं०] १. इच्छा। २ शृंगार के अंतर्गत दस दशाओं में से एक। प्रिय से मिलने की इच्छा।

अभिलाषा—संज्ञा स्त्री० [सं० अभिलाष] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।

अभिलाषी—वि० [सं० अभिलाषिन्] [स्त्री० अभिलाषिणी] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।

अभिवंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रणाम। नमस्कार। २ स्तुति।

अभिवंदना—संज्ञा स्त्री० दे० "अभिवंदन"।

अभिवादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रणाम। नमस्कार। वंदना। २ स्तुति।

अभिव्यंजक—वि० [सं०] प्रकट करनेवाला। प्रकाशक। सूचक। बोधक।

अभिव्यंजन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अभिव्यंजना] प्रकट करना। सूचित करना।

अभिव्यक्त—वि० [सं०] प्रकट या जाहिर किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।

अभिव्यक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यक्त करना। प्रकाशन। स्पष्टीकरण। २ सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव, जैसे, बीज से अंकुर निकलना।

अभिशप्त—वि० [सं०] १ शापित। जिसे शाप दिया गया हो। २ जिसपर मिथ्या दोष लगा हो।

अभिशाप—संज्ञा पुं० [संज्ञा] १ शाप। बददुआ २ मिथ्या दोषारोपण। ३. दुःख का कारण।

अभिशापित—वि० दे० "अभिशप्त"।

अभिषंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ दृढ मिलाप। आलिंगन। २ मिथ्या अपवाद। झूठा दोषारोपण। ३ निंदा। ४. आक्रोश। ५ कोसना। ६ भूत-प्रेत का आवेश। ७ शपथ। कसम। ८ पराजय।

अभिषिक्त—वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] १. जिसका अभिषेक हुआ हो। २ बाधा-शांति के लिये जिसपर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। ३ राजपद पर निर्वाचित।

अभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राजपद पर निर्वाचन। २ ऊपर से जल डालकर स्नान। ३ बाधा-शांति या मंगल के लिये मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना। मार्जन। ४ यज्ञादि के पीछे शांति के लिये स्नान। ५ शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रखकर धीरे धीरे पानी टपकाना।

अभिष्यंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहाव। स्राव। २ आँख आना।

अभिसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चुपचाप कोई दुष्कर्म करने की कई आदमियों की सलाह। कुचक्र। षड्यंत्र। २ वंचना। धोखा।

अभिसंधिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलहांतरिता नायिका। स्वयं प्रिय का अपमान कर पश्चात्ताप करनेवाली स्त्री।

अभिसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आगे या पास जाना। २ प्रिय से मिलने जाना।

अभिसरना(पु)—क्रि० अ० [सं० अभिसरण] १ संचरण करना। जाना। २. किसी वांछित स्थान को जाना। ३ प्रिय से मिलने के लिये संकेत स्थल को जाना।

अभिसार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिसारिका, अभिसारी] १ प्रिय से मिलने के लिये नायिका या नायक का संकेतस्थल पर जाना। २ युद्ध। ३ सहाय। सहारा।

अभिसारना(पु)—क्रि० अ० दे० "अभिसरना"।

अभिसारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिये स्वयं जाय या प्रिय को बुलावे।

अभिसारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिसारिका।

अभिसारी—वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिका] १ प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल पर जानेवाला। उ०—धनि यह पावन भूमि जहाँ गोविंद अभिसारी। —सूर। २ साधक। सहायक।

अभिहित—वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

अभी—क्रि० वि० [हिं० अब+ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त। तुरंत।

अभीक—वि० [सं०] १. निर्भय। निडर। २ निष्ठुर। कठोरहृदय। ३ उत्सुक।

अभीत—वि० [सं०] निर्भय। निडर।

अभीप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभीप्सित, अभीप्सु] किसी वस्तु के पाने की नितांत इच्छा। उत्कट अभिलाषा।

अभीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोप। अहीर। २ एक छंद।

अभीष्ट—वि० [सं०] १ वांछित। चाहा हुआ। २ मनोनीत। पसंद का। ३ अभिप्रेत। आशय के अनुकूल।

संज्ञा पुं० मनोरथ। मनचाही बात।

अभुआना†—क्रि० अ० [सं० आह्वान ?] हाथ पैर पटकना और सिर हिलाना जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।

अभुक्त—वि० [सं०] १ न खाया हुआ। २ बिना बरता हुआ। अव्यवहृत।

अभुक्तमूल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। गंडांत।

अभू†(पु)—क्रि० वि० दे० "अभी"।

अभूखन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

अभूत—वि० [सं०] १ जो हुआ न हो। २ वर्तमान। ३ अपूर्व। विलक्षण। उ० 'उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत उढ़ाए। —सूर०।

अभूतपूर्व—वि० [सं०] १ जो पहले न हुआ हो। २ अपूर्व। अनोखा।

अभेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १ भेद का अभाव। अभिन्नता। एकत्व। २ एकरूपता। समानता। ३ रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक।

वि० भेदशून्य। एकरूप। समान।

(पु)वि० दे० "अभेद्य"।

अभेदनीय—वि० [सं०] जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

अभेदवादी—वि० [सं०] जीवात्मा और परमात्मा में भेद न माननेवाला। अद्वैतवादी।

अभेद्य—वि० [सं०] १ जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके। २ जो टूट न सके।

अभेय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

अभेरना—क्रि० स० [प्रा० भिडण, मि० हिं० भेडना] १ भिड़ाना। मिलाकर रखना। सटाना। २ मिलाना। मिश्रित करना।

अभेरा—संज्ञा पुं० [हिं० √अभेर] १ रगड़ा। मुठभेड़। २ रगड़। टक्कर।

अभेव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

अभोग—वि० [सं०] १ जिसका भोग न किया गया हो। अछूता। २ दे० "अभोग्य"।

अभोगी—वि० [सं०] जो भोग न करे। विरक्त। उ० हमरे जान सदा शिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी। —मानस।

अभोग्य—वि० [सं०] [स्त्री० अभोग्या] जो भोग करने के योग्य न हो।

अभोज(पु)—वि० [सं० अभोज्य] न खाने योग्य। अभक्ष्य।

अभौतिक—वि० [सं०] १ जो पंचभूत का न बना हो। २ अगोचर।

अभ्यंग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १ लेपन। चारों ओर पोतना। २ शरीर में तेल लगाना।

अभ्यंतर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मध्य। बीच। २ हृदय।

क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अभ्यर्थना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित ।] १ समुख प्रार्थना । विनय । दरखास्त । २ समान के लिये आगे बढ़कर लेना । अगवानी

अभ्यसित—वि० दे० "अभ्यस्त" ।

अभ्यस्त—वि० [सं०] १ जिसका अभ्यास किया गया हो । बार बार किया हुआ । २ जिसने अभ्यास किया हो । दक्ष । निपुण ।

अभ्यागत—वि० [सं०] १ अतिथि । पाहुन । मेहमान । २ सामने आया हुआ ।

अभ्यागारिक—वि० [सं०] कुटुंब के पालन में तत्पर । घरबारी ।

अभ्यास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १ (सीखने या कुशलता पाने के लिये) किसी कार्य को बार बार करना । आवृत्ति । मश्क । २ आदत । बान । ३ अनुशीलन । अध्ययन । ४ पाठ । ५ कसरत । ६ कवायद ।

अभ्यासी—वि० [सं० अभ्यासिन्] [स्त्री० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला । साधक ।

अभ्युत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठना । उठान । २ बढ़ती । समृद्धि । उन्नति । ३ आरंभ । उदय । उत्पत्ति । ४ किसी बड़े के आने पर उसके आदर के लिये उठकर खड़ा हो जाना । प्रत्युद्गम ।

अभ्युदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्धि । बढ़ती । उन्नति । २ प्रादुर्भाव । उत्पत्ति । ३ सूर्य आदि ग्रहों का उदय । ४ मनोरथ की सिद्धि ।

अभ्युपगत—वि० [सं०] १ पास आया हुआ । सामने आया हुआ । प्राप्त । २. स्वीकृत । अंगीकृत ।

अभ्युपगम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्युपगत] १. सामने आना या जाना । प्राप्ति । २ स्वीकार । अंगीकार । मंजूरी । ३ पहले किसी बात को स्वीकार करना, फिर, विशेष परीक्षा द्वारा उसका खंडन करना (न्याय) ।

अभ्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २ आकाश । ३ अभ्रक । ४ स्वर्ण । सोना । ५ नागरमोथा ।

अभ्रक—संज्ञा पुं० [सं०] अबरक । भोडर ।

अभ्रांत—वि० [सं०] १ भ्रांति-शून्य । भ्रम-रहित । २ स्थिर ।

अमंगल—वि० [सं०] मंगलशून्य । अशुभ । संज्ञा पुं० अकल्याण । दु ख । अशुभ ।

अमंद—वि० [सं०] १ जो मंद न हो । तेज । २ उद्योगी । कार्यकुशल । ३ उत्तम । श्रेष्ठ ।

अमका—वि० [सं० अमुक] ऐसा । अमुक । फलाना ।

अमचुर, अमचूर—संज्ञा पुं० [हिं० आम+चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण ।

अमड़ा—संज्ञा पुं० [सं० आम्रात] एक पेड़ जिसमें आम की तरह के छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं । अम्बारी ।

अमत—संज्ञा पुं० [सं०] १ मत का अभाव । असंमति । २ रोग । ३ मृत्यु ।

अमत्त—वि० [सं०] १ मदरहित २ बिना घमंड का । ३ शांत ।

अमन—संज्ञा पुं० [अ०] १ शांति । चैन । आराम । २ रक्षा । बचाव ।

अमनस्क—वि० [सं०] अनमना । उदास ।

अमनिया (पु)—वि० [सं० अमल ?] शुद्ध । पवित्र ।

संज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया (साधु वर्ग) ।

अमनैक—संज्ञा पुं० [सं० अम्नायिक] १ अवध के वे पुराने काश्तकार जिन्हें लगान के विषय में विशेष अधिकार प्राप्त थे । २ सरदार । ३ हकदार । ४ ढीठ ।

अमर—वि० [सं०] जो मरे नहीं । चिरजीवी ।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरा, अमरी] १ देवता । २. पारा । ३ हड़जोड़ का पेड़ । ४ उनचास पवनों में से एक । ५ अमरकोश । ६ लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्ता अमरसिंह ।

संज्ञा पुं० [अ० अम्र] १ काम । २. घटना । ३ विषय । ४ समस्या ।

अमरख (पु)—संज्ञा पुं० [सं० अमर्ष=क्रोध] [स्त्री० अमरखी] १ क्रोध । कोप । गुस्सा । रिस । २ रस के अंतर्गत ३३ संचारी भावों में से एक । दे० "अमर्ष" । ३ क्षोभ । दुःख । रंज ।

अमरखी (पु)—वि० [हिं० अमरख] क्रोधी । बुरा माननेवाला । दुखी होनेवाला ।

अमरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु का अभाव । चिरजीवन । २ देवत्व ।

अमरत्व—संज्ञा पुं० दे० "अमरता" ।

अमरपख (पु)—संज्ञा पुं० [सं० अमरपक्ष] पितृपक्ष ।

अमरपति—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र ।

अमरपद—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति ।

अमरपुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरपुरी] अमरावती । देवताओं का नगर ।

अमरबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० अमरवेलि] एक पीली लता या बौर जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं । आकाश बौर ।

अमरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग ।

अमरवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० अंबरवल्ली] अमरबेल । आकाश बौर । [illegible]-बौरिया ।

अमरस—संज्ञा पुं० दे० "अमावट" ।

अमरसी—वि० [हिं० अमरस] आम के रस की तरह पीला । सुनहला ।

अमराई—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रराजि] आम का बाग । आम की बारी ।

अमराउ—संज्ञा पुं० दे० "अमराई" ।

अमरालय—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग ।

अमराव (पु)—संज्ञा पुं० दे० "अमराई" ।

अमरावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की पुरी ।

अमरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवता की स्त्री । २ देवकन्या । देवपत्नी । ३ एक पेड़ । ४. आसन ।

अमरू—संज्ञा पुं० [अ० अहमर=लाल ?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

अमरूत, अमरूद—संज्ञा पुं० [सं० अमृत] १ एक गोल मीठा फल जिसके अंदर सरसों के बराबर बहुत से बीज होते हैं । २ उक्त फल का पेड़ ।

अमरेश—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र ।

अमर्याद—वि० [सं०] १ मर्यादा-विरुद्ध । बेकायदा । २ अप्रतिष्ठित ।

अमर्यादा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा । बेइज्जती ।

अमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १ क्रोध । रिस । वह द्वेष या दुःख जो तिरस्कार करनेवाले का कोई अपकार न कर सकने के कारण उत्पन्न होता है । ३ असहिष्णुता । अक्षमा ।

अमर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध । रिस ।

अमर्षी—वि० [सं० अमर्षिन्] स्त्री० अमर्षिणी] असहनशील । जल्दी बुरा माननेवाला ।

अमल—वि० [सं०] [स्त्री० अमला] १ निर्मल । स्वच्छ । २ निर्दोष । पापशून्य ।

संज्ञा पुं० [अ०] १ व्यवहार । कार्य । आचरण । साधन । २ अधिकार । शासन । हुकूमत । ३ नशा । ४ आदत । बान ।

टेव। लत। ५ प्रभाव। असर। ६ भोग-काल। समय।

अमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निर्मलता। स्वच्छता। २. निर्दोषता।

अमलतास—संज्ञा पुं० [सं० अम्ल ?] एक पेड़ जिसमें लंबी गोल फलियाँ लगती हैं और जिसका फूल पीला होता है।

अमलदारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ शासन। अधिकार। दखल। २ राज्य। ३. लगान का एक पुराना ढंग जिसमें असामी को पैदावार के अनुसार लगान देना पड़ता था। कनकूत।

अमलपट्टा—संज्ञा पुं० [अ० अमल+हिं० पट्टा] वह दस्तावेज या अधिकारपत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाय।

अमलबेत—संज्ञा पुं० [सं० अम्लवेतस्] १. एक प्रकार की लता जिसकी सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और दवा में पड़ती हैं। २ एक पेड़ जिसके फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।

अमला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ सातला वृक्ष।

संज्ञा पुं० [अ०] १ कर्मचारी-वर्ग। २ कचहरी में काम करनेवाले।

अमलिन—वि० [सं०] जो मलिन न हो। स्वच्छ। साफ।

अमली—वि० [अ०] १ अमल में आनेवाला। व्यावहारिक। २ अमल करनेवाला। कर्मण्य। ३ नशेबाज।

अमलोनी—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ललोणी] नोनियाँ घास। नोनी।

अमहर—संज्ञा पुं० [हिं० आम + हर (प्रत्य०)] छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।

अमाँ—अव्य० [हिं० ए+फा० मियाँ] एक संबोधन। ऐ मियाँ। अरे यार।

अमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमावस्या। वह तिथि जिसमें चंद्रमा नहीं निकलता।

अमातना(पु)—क्रि० [सं० आमंत्रण] आमंत्रित करना। निमंत्रण या न्योता देना। उ०—तुमहू करौ भोग सामग्री कुल देवता अमाति।—सूर०।

अमात्य—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्री। वजीर।

अमान—वि० [सं०] १ जिसका मान या अंदाज न हो। अपरिमित। बेहद। २ गर्वरहित। निरभिमान। सीधा-सादा। ३ अप्रतिष्ठित। अनादृत। तुच्छ।

संज्ञा पुं० [अ०] १ रक्षा। बचाव। २ शरण। पनाह।

अमानत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिये रखना। २. वह वस्तु जो इस प्रकार रखी जाय। थाती। धरोहर।

अमानतदार—संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके पास अमानत रखी जाय।

अमानतनामा—संज्ञा पुं० [अ०, फा०] वह पत्र जिसपर अमानत में रखी हुई चीजों का विवरण हो।

अमाना—क्रि० अ० [सं० आ=पूरा+हिं० माना] [वि० स्त्री० अमानी] १. पूरा पूरा भरना। समाना। अँटना। २ इतराना। गर्व करना। उ०—तन धन जानि जाम जुग छाया भूलति कहा अमानी।—सूर०।

अमानी—वि० [सं० अमानिन्] निरभिमान। घमंडरहित। अहंकार-शून्य। उ० सबहि मानप्रद आपु अमानी।—मानस।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो। खास। २ वह जमीन या कोई कार्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। ३ लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो।

संज्ञा स्त्री० [सं० अ०+हिं० √ मान] अपने मन की कार्रवाई। अंधेर। मनमानी।

अमानुष—वि० [सं०] १ मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर। अलौकिक। उ०—सकल अमानुष करमु तुम्हारे। केवल कौसिक कृपा सुधारे।—मानस। २ मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक।

संज्ञा पुं० १ मनुष्य से भिन्न प्राणी। २ देवता। ३ राक्षस।

अमानुषिक—वि० दे० "अमानुषी"।

अमानुषी—वि० [सं० अमानुषीय] १ मानवी शक्ति के बाहर। अलौकिक। २ मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक।

अमाय(पु)—वि० दे० "अमाया"।

अमाया—वि० [सं०] १ मायारहित। निर्लिप्त। २ निष्कपट। निश्छल। उ०—जो मोरे मन बच अरु काया। प्रीति राम पद-कमल अमाया।—मानस।

अमारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।

अमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुमार्ग। कुराह। २ बुरी चाल। दुराचरण।

अमाल—संज्ञा पुं० [अ० अमल] अमल रखनेवाला। शासक।

अमावट—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रावर्त, प्रा० अम्मावट्ट] १ आम के सुखाए हुए रस की पर्त या तह। २ पहिना जाति की एक मछली।

अमावना(पु)—क्रि० अ० दे० "अमाना"।

अमावस—संज्ञा स्त्री० दे० "अमावास्या।"

अमावास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि जिसमें सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी के आ जाने से चंद्रोदय नहीं होता।

अमाह—संज्ञा पुं० [अ (उच्चा०)+सं० मास ?] आँख के डेले से निकला हुआ लाल मांस। नाखूना।

अमिख—संज्ञा पुं० [सं० आमिष] मांस। गोश्त।

अमिट—वि० [सं० अ+हिं० मिट] १ जो न मिटे। जो नष्ट न हो। स्थायी। २ जिसका होना निश्चित हो। अटल। अवश्यभावी।

अमित—वि० [सं०] १ अपरिमित। बेहद असीम। २ बहुत अधिक।

अमिताभ—वि० [सं०] अमित तेजयुक्त। देदीप्यमान्।

संज्ञा पुं० बुद्धदेव।

अमित्र—वि० [सं०] १ शत्रु। वैरी। २ जिसका कोई दोस्त न हो। अमित्रक।

अमिय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अमृत] अमृत।

अमिय-मूरि—संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत+मूल, वै० मूर] अमृतबूटी। संजीवनी जड़ी। उ०—अमिय-मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू।—मानस।

अमिरती—संज्ञा स्त्री० दे० "इमरती"।

अमिल(पु)—वि० [सं० अ=नहीं+हिं० मिल] १ न मिलने योग्य। अप्राप्य। २ बेमेल। बेजोड़। ३ जिससे मेलजोल न हो। ४ ऊबड़-खाबड़। ऊँचा नीचा।

अमिली—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ली] दे० "इमली"।

संज्ञा स्त्री० [सं० अ+हिं० मिल] मेल या अनुकूलता न होना। विरोध। मनमुटाव।

अमिश्रराशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] गणित में वह राशि जो एक ही इकाई द्वारा प्रकट की जाती है, जैसे १ से ६ तक की संख्या। इकाई।

अमिश्रित—वि० [सं०] १ जो मिलाया न गया हो। २ बेमिलावट। खालिस। विशुद्ध।

अमिष—संज्ञा पुं० [सं०] छल का अभाव। बहाने का न होना।

वि० १ निश्छल। जो हीलेबाज न हो। २. दे० "आमिष"।

अमी—संज्ञा पुं० दे० "अमिय"।

अमीकर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अमृतकर] चंद्रमा।

अमीकला—संज्ञा पुं० [हिं० अमी (अमृत) +कला] चंद्रमा।

अमीत—संज्ञा पुं० [सं० अमित्र] शत्रु।

अमीन—संज्ञा पुं० [अ०] [भाव० अमीनी] वह अदालती कर्मचारी जिसके सुपुर्द बाहर का काम हो, जैसे—मौके की तहकीकात, जमीन की पैमायश, बँटवारा, कुर्की। आदि।

अमीर—वि० [अ०] धनाढ्य। दौलतमंद। २ उदार। ३ कार्याधिकार रखनेवाला। सरदार। ४ शासक।

अमीराना—वि० [अ०] अमीरों का सा। जिससे अमीरी प्रकट हो।

अमीरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ धनाढ्यता। दौलतमंदी। २ उदारता।

वि० अमीर का सा। अमीर के योग्य, जैसे, अमीरी ठाट।

अमुक—सर्व०, वि० [सं०] कोई व्यक्ति। वह व्यक्ति, वस्तु या विषय जिसका कथन या उल्लेख बिना नाम लिए किया जा रहा हो। ऐसा। फलाँ।

अमूर्त—वि० [सं०] १ निराकार।

संज्ञा पुं० १ परमेश्वर। २ आत्मा। ३ जीव। ४ काल। ५. दिशा। ६ प्रकाश। ७ वायु।

अमूर्ति—वि० [सं०] मूर्तिरहित। निराकार।

अमूर्तिमान्—वि० [सं० अमूर्तिमत्] [स्त्री० अमूर्तिमती] १ निराकार। २ अप्रत्यक्ष। अगोचर।

अमूल—वि० [सं०] १ बिना जड़ का। २ प्रमाणहीन। ३ कपोल कल्पित। मिथ्या।

संज्ञा पुं० प्रकृति (सांख्य)।

अमूलक—वि० [सं०] १ जिसकी कोई जड़ न हो। निर्मूल। २ असत्य। मिथ्या।

अमूल्य—वि० [सं०] १ जिसका मूल्य निर्धारित न हो सके। अनमोल। २. बहुमूल्य। बेशकीमत। ३ जिसका कुछ भी मूल्य न हो। तुच्छ।

अमृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है। सुधा। पीयूष। २ जल। ३. घी। ४. यज्ञ की बची हुई सामग्री। ५ अन्न। ६ मुक्ति। ७ दूध। ८ औषध। ९ विष। १० बछनाग। ११. पारा। १२. धन। १३ सोना। १४ बहुत स्वादिष्ट वस्तु। सुस्वादु वस्तु। १५ स्वास्थ्यप्रद वस्तु।

अमृतकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

अमृतकुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक छंद। २ एक बाजा। उ०—बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृतकुंडली यंत्र।—सूर०।

अमृतगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

अमृतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. मरण का अभाव। न मरना। २ मोक्ष। मुक्ति।

अमृतदान—संज्ञा पुं० [सं० अमृत+आधान] भोजन की चीजें रखने का एक प्रकार का ढकनेदार बर्तन।

अमृतधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

अमृतध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] २४ मात्राओं का एक यौगिक छंद।

अमृतबान—संज्ञा पुं० [सं० मृद्भांड] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।

अमृतमूरि—संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत+मूल] संजीवनी जड़ी। अमरमूर।

अमृतयोग—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक शुभ फलदायक योग।

अमृतसंजीवनी—वि० स्त्री० [सं०] दे० "मृतसंजीवनी"।

अमृतांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

अमेजना(पु)—क्रि० स० [फा० आमेजन] मिलावट करना। मिलाना।

अमेट—वि० दे० "अमिट"।

अमेठना(पु)—क्रि० स० दे० "उमेठना"।

अमेध्य—संज्ञा पुं० [सं०] अपवित्र वस्तु। विष्ठा। मल-मूत्र आदि।

वि० १ जो यज्ञ के काम न आ सके, जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्नों में मसूर, उर्द आदि। २ जो यज्ञ कराने योग्य न हो। ३ अपवित्र।

अमेय—वि० [सं०] १ अपरिमाण। असीम। बेहद। २ जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

अमेल, अमेली—वि० [सं० अ+हिं० मेल] १ असंबद्ध। २ जिसमें मेल मिलाप न हो।

अमेव(पु)—वि० दे० "अमेय"।

अमोघ—वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला। अव्यर्थ। अचूक।

अमोद—वि० [सं०] मोद रहित।

संज्ञा पुं० दे० "आमोद"।

अमोल, अमोलक(पु)—वि० [सं० अमूल्य] अमूल्य। कीमती। उ०—पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल।—बिहारी०।

अमोला—संज्ञा पुं० [हिं० आम+ओला ?] आम का नया निकलता हुआ पौधा।

अमोही—वि० [सं० अमोह] १ विरक्त। २ निर्मोही। निष्ठुर।

अमौआ—संज्ञा पुं० [हिं० आम+औआ (प्रत्य०)] १ आम के रस का रंग जो कई प्रकार का होता है, जैसे पीला, सुनहरा, मूँगिया, इत्यादि। २ इस रंग का कपड़ा।

अम्मा—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्बा] माता। माँ।

अम्मामा—संज्ञा पुं० [अ० अमामा] एक प्रकार का बड़ा साफा।

अम्मारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।

अम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ खटाई। २. तेजाब।

वि० खट्टा।

अम्लपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] यकृत का एक रोग जिसमें अन्न न पचने से खट्टे डकार, वमन, दाह आदि की शिकायत होती है।

अम्लसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँजी। २ चूक। ३ अमलबेत। ४ हिंताल। ५ आमलासार गंधक।

अम्लान—वि० [सं०] १ जो मुरझाया न हो। २ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ३ निर्मल। स्वच्छ।

अम्हौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घमौरी ?] छोटे छोटे चुनचुनानेवाले दाने जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण शरीर में निकलते हैं। अँधौरी। अँभौरी। पित्ती। घमौरी।

अय—सर्व० [सं०] यह। उ०—दुइ दंड भर ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अय।—मानस।

अय—संज्ञा पुं० [सं० अयस्] १ लोहा। उ०—अय इव जरत धरत पग धरनी।—मानस। २ अस्त्र-शस्त्र। हथियार। ३ अग्नि।

अव्य० [सं० अयि] संबोधन का शब्द। हे।

अयथा—वि० [सं०] १ मिथ्या। झूठ। असत्य। २ अयोग्य।

अयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गति। चाल। २ मार्ग। ३ सूर्य की भूमध्य रेखा के

उत्तर या दक्षिण की गति। सूर्य की इस गति के मार्ग जो उत्तरायण और दक्षिणायन कहलाते हैं। ४. राशिचक्र का आधा। मकर से मिथुन तक का सूर्य उत्तरायण और कर्क से धन तक का दक्षिणायन कहलाता है। आधा वर्ष। ५. काल। समय। ६ गाय-भैंस का थन। ७ घर। स्थान।

अयनकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक अयन का समय। २. छः महीने।

अयनसंक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] मकर और कर्क की संक्रांति।

अयनसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अयनसंक्रम।

अयनसंपात—संज्ञा पुं० [सं०] अयनांशों का योग।

अयश—संज्ञा पुं० [सं० अयशस्] १. अपयश। अपकीर्ति। २. निंदा।

अयशस्कर—वि० [सं०] १. अपकीर्ति या बदनामी करनेवाला। २. जिसके कारण बदनामी हो।

अयस्कांत—संज्ञा पुं० [सं०] चुंबक।

अयाँ—वि० [अ०] १ स्पष्ट। साफ़। २ प्रकट।

अयाचक—वि० [सं०] १ न माँगनेवाला। २ संतुष्ट। पूर्णकाम। उ०—याचक सकल अयाचक कीन्हें।—मानस।

अयाचित—वि० [सं०] बिना माँगा हुआ। अप्रार्थित।

अयाची—वि० [सं० अयाचिन्] १ अयाचक। न माँगनेवाला। २ संपन्न। धनी।

अयाच्य—वि० [सं० अ+याच्य] १ न माँगे जाने योग्य। जो माँगा न जा सके। २ जिसमें माँगा न जा सके।

अयान—वि० [सं०] बिना यान या सवारी का। पैदल।

वि० दे० "अजान"।

अयानता—संज्ञा स्त्री० दे० "अयानप"।

अयानप, अयानपन(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० अयान+पन] १ अज्ञान। अनजानपन। २ भोलापन। सीधापन।

अयाना—वि० पुं० [सं० अज्ञान, प्रा० अयाण] अजान। नासमझ।

अयानी(पु)—वि० स्त्री० [हिं० अयाना] अजान। बुद्धिहीन। उ०—अबहूँ जागि अयानी, होत आव निसि भोर।—पदमावत।

अयाल—संज्ञा पुं० [तु० याल] घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल। केसर।

संज्ञा पुं० [अ०] परिवार के लोग। बाल-बच्चे आदि।

यौ०—अयालदार=बाल-बच्चोंवाला।

अयि—अव्य० [सं०] संबोधन का शब्द। हे। अय। अरे। अरी।

अयुक्त—वि० [सं०] १ अयोग्य। अनुचित जो ठीक न हो। २ अप्रयुक्त। अलग। ३ आपद्ग्रस्त। ४ अनमना। ५ असंबद्ध। युक्तिशून्य। ६ जो जुता न हो (पशु)। ७ काम में न लाया हुआ।

अयुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युक्ति का अभाव। असंबद्धता। गड़बड़ी। २ योग न देना। अप्रवृत्ति।

अयुग, अयुग्म—वि० [सं०] १ विषम। ताक़। २ अकेला। एकाकी।

अयुत—संज्ञा पुं० वि० [सं०] दस हजार।

अयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ योग का अभाव। २ बुरा योग। फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह नक्षत्रादि का पड़ना। ३ कुसमय। कुकाल। ४ कठिनाई। संकट। ५ वह वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६ अप्राप्ति।

वि० [सं०] १ अप्रशस्त। बुरा। २ बेमेल। बेजोड़। ३ असंभव।

वि० [सं० अयोग्य] अयोज्य। अनुचित।

अयोग्य—वि० [सं०] [स्त्री० अयोग्या] १ जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २ नालायक। निकम्मा। अपात्र। ३ अनुचित। ना-मुनासिब।

अयोनि—वि० [सं०] १ जो उत्पन्न न हुआ हो। अजन्मा। २ नित्य।

अरग—संज्ञा पुं० [देश०] सुगंध का झोंका।

अरंड—संज्ञा पुं० दे० "एरंड", "रेंड़"।

अरंभ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आरंभ"।

संज्ञा पुं० [सं० आ+√रंभ=शब्द करना] १ नाद। शब्द। २ भीषण शब्द। गर्जन।

अरंभना—क्रि० अ० [हिं० अरंभ] १ बोलना। नाद करना। २ शोर करना।

वि० [सं० आरंभ] आरंभ करना।

क्रि० अ० आरंभ होना। शुरू होना।

अर(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़] जिद। अड़।

अरइल(पु)—वि० दे० "अड़ियल"।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

अरई—संज्ञा स्त्री० [?] बैल हाँकने की छड़ी जिसके मुँह पर लोहे की नुकीली कीलें जड़ी रहती हैं।

अरक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अर्क] सूर्य।

[अ० अर्क] १ किसी पदार्थ का रस जो भबके से उतारा जाय। २ आसव। ३ रस। ४ पसीना। स्वेद।

अरकना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] १. अरराकर गिरना। २ टकराना। ३ फटना दरकना।

अरकनाना—संज्ञा पुं० [अ०] एक अरक जो पुदीना और सिरका मिलाकर भबके से उतारा जाता है।

अरकना-बरकना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] इधर-उधर होना। बच जाना।

क्रि० स० १ बचा जाना। २ खींचना तानना।

अरकला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्गला] १ रोकथाम। रुकावट। २ मर्यादा। सीमा। उ०—भाँट अहै ईश्वर की कला। राजा सब राखहिं अरकला।—पदमावत।

अरकाटी—संज्ञा पुं० [अरकाट प्रदेश] वह जो कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजता है।

अरकान—संज्ञा पुं० [अ० रुक्न का बहु०] राज्य के प्रमुख कर्मचारी। मंत्री लोग। उ०—जावत अहहिं सकल अरकाना। संभरि लेहु दूरि है जाना।—पदमावत।

अरगज—संज्ञा पुं० दे० "अरगजा"।

अरगजा—संज्ञा पुं० [?] एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है।

अरगजी—संज्ञा पुं० [हिं० अरगजा] एक रंग जो अरगजे का सा होता है।

वि० १ अरगजी रंग का। २ अरगजा की सुगंध का।

अरगट(पु)—वि० [सं० अ+रक्त=आसक्त] पृथक्। अलग। निराला। भिन्न। उ०—बाल छबीली तियनु मैं बैठी आपु छिपाय। अरगट ही फानूस सी परगट होति लखाय।—बिहारी०।

अरगनी—संज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"।

अरगल—संज्ञा पुं० दे० "अर्गल"।

अरगला—संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] १. अर्गल। २ रोक। संयम।

अरगाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अलगाना] १ अलग या पृथक् होना। २ सन्नाटा खींचना। चुप्पी साधना। मौन होना।

क्रि० स० अलग करना। छाँटना।

अरघ—संज्ञा पुं० दे० "अर्घ"।

अरघा—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १ देवताओं को अरघ देने का एक विशेष प्रकार का जलपात्र। २. वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। जलधरी। जलहरी।

[सं० अरघट्ट] कुएँ की जगत पर पानी निकलने के लिये बना हुआ रास्ता। चँवना।

अरघान, अरघानि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण] गंध। महक। आघ्राण।

अरचन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्चन"।

अरचना(पु)—क्रि० स० [सं० अर्चन] पूजना।

अरचल—संज्ञा स्त्री० दे० "अड़चन"।

अरचा—संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चा"।

अरचि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चि"।

अरज—संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज] १ विनय। निवेदन। विनती। २ चौड़ाई।

अरजना(पु)—क्रि० अ० [अ० अर्ज] निवेदन करना।

अरजल—संज्ञा पुं० [अ० अर्जल] १ वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफेद या एक रंग के हों। (घोड़ों का एक दोष या बुरा लक्षण) २ नीच जाति का पुरुष। ३ वर्णसंकर।

अरजी—संज्ञा स्त्री० [अ० अर्जी] आवेदन-पत्र। निवेदनपत्र। प्रार्थनापत्र।

(पु)वि० [अ० अर्ज] प्रार्थी। अर्ज करनेवाला।

अरणि, अरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृक्ष। गनियार। अगेथू। २ सूर्य। ३ काठ का बना वह यंत्र जिससे यज्ञों में आग उत्पन्न की जाती थी। अग्निमंथ।

अरण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन। जंगल। २ कायफल। ३ संन्यासियों के दस भेदों में से एक।

अरण्यरोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ निष्फल रोना। ऐसी पुकार जिसका सुननेवाला न हो। २ हृदयहीन या अपात्र के सामने रोना। ३ ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।

अरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विराग। चित्त का न लगना।

अरथ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।

अरथाना(पु)—क्रि० स० [सं० अर्थ] समझाना। विवरण करना। व्याख्या करना।

अरथी—संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिसपर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं। टिकठी।

संज्ञा पुं० [सं० अ+रथी] बिना रथ के लड़नेवाला योद्धा। पैदल।

वि० दे० "अर्थी"।

अरदन—वि० [सं० अ+रदन] बिना दाँत का।

(पु)वि० दे० "अर्दन"।

अरदना—क्रि० स० [सं० अर्दन] १ रौंदना। कुचलना। २ वध या नाश करना।

अरदली—संज्ञा पुं० [अं० आर्डर्ली] वह चपरासी जो साथ में या दरवाजे पर रहता है।

अरदावा—संज्ञा पुं० [सं० अर्द] १ दला या कुचला हुआ खाद्य पदार्थ। २ भरता। चोखा।

अरदास—संज्ञा स्त्री० [फा० अर्जदाश्त] १ निवेदन के साथ भेंट। नजर। २ देवता के निमित्त भेंट निकालना।

अरधंग—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।

अरधंगी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।

अरध(पु)—वि० दे० "अर्ध"।

क्रि० वि० [सं० अध] अंदर। भीतर नीचे।

अरन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अरण्य"।

अरना—संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।

(पु)क्रि० अ० दे० "अड़ना"।

अरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अड़नि"।

अरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० अरणी] १ एक छोटा वृक्ष जो हिमालय पर होता है। २ यज्ञ का अग्निमंथन काष्ठ।

संज्ञा स्त्री० दे० "अरणि"।

अरपन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्पण"।

अरपना(पु)—क्रि० स० [सं० अर्पण] अर्पण करना। आदर से देना। देवता को चढ़ाना।

अरब—संज्ञा पुं० [सं० अर्बुद] १ सौ करोड़। २ गणित में अंकों के दसवें स्थान की न्यूनतम संख्या।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० अर्वन्] १ घोड़ा। २ इंद्र।

संज्ञा पुं० [अ०] १ पश्चिमी एशिया का एक मरुदेश। २ इस देश का उत्पन्न घोड़ा। ३ अरब का निवासी।

अरबर(पु)—वि० दे० "अड़बड़"।

अरबराना—क्रि० अ० [हिं० अरबर] १. घबराना। व्याकुल होना। उतावला होना। विचलित होना। २. चलने में लड़खड़ाना। बोलने में गड़बड़ाना।

अरबरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अरबर] घबराहट। हड़बड़ी। आकुलता।

अरबिस्तान—संज्ञा पुं० [अ०] अरब देश।

अरबी—वि० [फा०] अरब देश का।

संज्ञा पुं० १ अरबी घोड़ा। ताजी। २ अरबी ऊँट। ३ अरबी बाजा। ताशा।

संज्ञा स्त्री० अरब देश की भाषा।

अरबीला(पु)—वि० [फा० [illegible]] अभिमानी। हठी। हठीला।

अरभक(पु)—दे० "अर्भक"।

अरमान—संज्ञा पुं० [फा०] इच्छा। लालसा। चाह। हौसला।

अरर—अव्य० [अनु०] अत्यंत व्यग्रता तथा अचंभे का सूचक शब्द।

अरराना—क्रि० अ० [अनु०] १ अरर शब्द करना। टूटने या गिरने का शब्द करना। २. भहरा पड़ना। भहरा गिरना।

अरवा—वि० [सं० अ+हिं० रवा] वह (चावल) जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।

अरवाती—संज्ञा स्त्री० दे० "ओलती"।

अरविंद—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

अरवी—संज्ञा स्त्री० [सं० आलुक] एक प्रकार का कंद जो तरकारी के रूप में खाया जाता है। घुइयाँ।

अरस—वि० [सं० अ+रस] १ नीरस फीका। २ गँवार। अनाड़ी।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० अलस] आलस्य।

(पु)संज्ञा पुं० [अ० अर्श] १ छत। पाटन। २ धरहरा। ३ महल।

अरसना(पु)—क्रि० अ० [सं० अलसन] शिथिल पड़ना। मंद होना।

अरसना-परसना—क्रि० स० [अनु० सं० स्पर्शन] आलिंगन करना। मिलना। भेंटना।

अरस परस—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] १ लड़कों का खेल। छुआछुई। आँखमिचौनी। २ स्पर्श करना और देखना।

अरसा—संज्ञा पुं० [अ०] १ समय। काल। २ देर। अतिकाल। विलंब।

अरसात—संज्ञा पुं० [सं० अलस] २४ अक्षरों का एक वृत्त।

अरसाना(पु)—क्रि० अ० [सं० अलस] १. अलसाना। २ निद्राग्रस्त होना।

अरसी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।

अरसीला(पु)—वि० [सं० अलस] आलस्य-पूर्ण। आलस्य से भरा।

अरसौहाँ(पु)—वि० दे० "अलसौहाँ"।

अरहट—संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट] जलपात्रों की वह माला जिसमे कुएँ से पानी निकाला जाता है। रहट।

अरहन—संज्ञा पुं० [सं० रधन] वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है। रेहन।

अरहना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्हणा] पूजा।

अरहर—संज्ञा स्त्री० [सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी] दो दल के दानों का एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है। वरी। तुअर।

अरा—संज्ञा पुं० दे० "आरा"।

अराक—संज्ञा पुं० [अ० इराक] १. अरब के उत्तर का एक देश। इराक। २. इस देश का घोड़ा।

अराज—वि० [सं० अ+राजन्] १ बिना राजा का। २. बिना रक्षक वर्ग का।

सज्ञा पुं० [सं० अ+राजन्] अराजकता। शासन-विप्लव। हलचल।

अराजक—वि० [सं०] [संज्ञा अराजकता] जहाँ राजा न हो। राजहीन। बिना राजा का।

अराजकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा का न होना। २ शासन का अभाव। ३ अशांति। हलचल।

अराजी—संज्ञा स्त्री० दे० "आराजी"।

अरात—संज्ञा पुं० दे० "अराति"।

अराति—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। २ काम, क्रोध, मद, मोह आदि मनोविकार। ३ छ की संख्या।

अराधन—संज्ञा पुं० दे० "आराधन"।

अराधना—क्रि० स० [सं० आराधन]

अराधी—वि० [सं० आराधन] आराधना या पूजा करनेवाला। पूजक।

अराना—क्रि० स० दे० "अड़ना"।

अराबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ गाड़ी। रथ। २ वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाय।

अराम†—संज्ञा पुं० दे० "आराम"।

अरारूट—संज्ञा पुं० [अं० ऐरोरूट] एक पौधा जिसके कद का आटा तीखुर की तरह खाने के काम में आता है।

अरारोट—संज्ञा पुं० दे० "अरारूट"।

अराल—वि० [सं०] कुटिल। टेढ़ा।

सज्ञा पुं० १ राल। २ मत्त हाथी।

अरावल—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

अरिंद—संज्ञा पुं० [सं० अरि] शत्रु।

अरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रु। वैरी। २ चक्र। ३. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर। मनुष्यों के छ सहज वैरी। षड्रिपु। ४ छ की संख्या। ५ लग्न से छठा स्थान (ज्यो०)। ६ विट् खादिर।

अरियाना(पु)—क्रि० स० [सं० अरे] "अरे" कहकर बुलाना। तिरस्कार करना।

अरिल्ल—संज्ञा पुं० सोलह मात्राओं का एक छद।

अरिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुख। पीड़ा। २ आपत्ति। विपत्ति। ३ दुर्भाग्य। अमगल। ४ अपशकुन। ५ दुष्ट ग्रहों का योग। मरणकारक योग। ६ एक प्रकार का मद्य जो धूप में ओषधियों का खमीर उठाकर बनता है। ७ काढा। ८ वृषभासुर। ९. अनिष्टसूचक उत्पात, जैसे भूकंप। १०. सौरी। सूतिकागृह।

वि० [सं०] १. दृढ। अविनाशी। २ शुभ। ३ बुरा। अशुभ।

अरिष्टनेमि—संज्ञा पुं० [सं०] कश्यप प्रजापति का एक नाम। २ कश्यप जी का एक पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था।

अरिहन—संज्ञा पुं० [सं० अरिघ्न] शत्रुघ्न।

संज्ञा पुं० दे० "अरहर"।

अरिहा—वि० [सं०] शत्रु का नाश करनेवाला।

सज्ञा पुं० [सं०] सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न महाराज दशरथ के चौथे बेटे शत्रुघ्न जो लक्ष्मण के अनुज और श्रीरामचंद्र जी के सबसे छोटे सौतेले भाई थे।

अरी—अव्य० [सं० अयि] स्त्रियों के लिये संबोधन।

अरुंतुद—वि० [सं०] १ मर्मभेदी। २ कठोर। कर्कश।

अरुंधती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २ दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी। ३ एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडल में वशिष्ठ नक्षत्र के पास है।

अरु—संयो० दे० "और"।

अरुई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "अरवी"।

अरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रुचि का अभाव। अनिच्छा। २. अग्निमांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३ घृणा। नफरत।

अरुचिकर—वि० [सं०] जो रुचिकर न हो। जो भला न लगे। नापसद।

अरुज—वि० [सं०] नीरोग। रोगरहित।

अरुझना—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

अरुझाना—क्रि० स० दे० "उलझाना"।

अरुण—वि० [सं०] [स्त्री० अरुणा] लाल। रक्त।

सज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी। ३. गुड़। ४ ललाई जो सूर्योदय के पूर्व दिखलाई पड़ती है। ५ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ६ गहरा लाल रंग। ७ कुमकुम। ८ सिंदूर। ९ एक देश। १० माघ के महीने का सूर्य।

अरुणचूड़—संज्ञा पुं० [सं०] कुक्कुट। मुर्गा।

अरुणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "अरुणिमा"

अरुणप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्सरा। २ छाया और सज्ञा नाम की सूर्य की स्त्रियाँ।

अरुणशिखा—संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।

अरुणाई—संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण+हिं० आई] (प्रत्य०) ललाई। रक्तता। लाली।

अरुणाभ—वि० [सं०] लाल आभा से युक्त। लाली लिए हुए।

अरुणिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललाई। लालिमा। सुर्खी।

अरुणोदय—संज्ञा पुं० [सं०] उषाकाल। १ सूर्योदय के पहले की लाली। २ तड़का। भोर।

अरुणोपल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्मराग मणि। लाल। लाल रंग का रत्न।

अरुन(पु)—वि० दे० "अरुण"।

अरुनाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अरुन] लाल होना।

क्रि० स० लाल करना।

अरुनारा—वि० [हिं० अरुन + आरा (प्रत्य०)] लाल। लाल रंग का।

अरुलना—क्रि० अ० [सं० अरुस् = घाव] दुखी या पीड़ित होना।

अरुवा—संज्ञा पुं० [सं० अरु] एक लता जिसका कद खाया जाता है।

सज्ञा पुं० [हिं० रुरुआ] उल्लू पक्षी।

अरूझना(पु)—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

अरूढ़(पु)—वि० दे० "आरूढ़"।

अरूप—वि० [सं०] रूपरहित। निराकार। जिसकी कोई सूरत या शक्ल न हो।

अरूलना—क्रि० अ० [सं० अरुस् = घाव] १ छिदना। घाव होना। २ पीड़ित होना।

अरे—अव्य० [सं०] १ संबोधन का शब्द। ए। ओ। २ एक आश्चर्यसूचक अव्यय।
अरेरना(पु)—क्रि० स० [अनु०] रगड़ना। घिसना।
अरोगना(पु)—क्रि० अ० दे० "आरोगना"।
अरोच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अरुचि"।
अरोचक—वि० [सं०] जो रुचे नहीं। अरुचिकर। मन के प्रतिकूल।
संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिस में अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता।
अरोहन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आरोहण"।
अरोहना—क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
अरोही—वि० दे० "आरोही"।
अर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ ताँबा। ४ इंद्र। ५ स्फटिक। ६ विष्णु। ७ पंडित। ८ बारह की संख्या।
संज्ञा पुं० [अ०] उतारा या निचोड़ा रस। दे० "अरक"।
अर्कज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य के पुत्र। यम। २ शनि। ३ अश्विनीकुमार। ४ सुग्रीव। ५ कर्ण।
अर्कजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या, यमुना। २ तापती।
अर्कनाना—संज्ञा पुं० दे० "अरकनाना"।
अर्कव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का प्रजा की वृद्धि के लिये कर लेना।
अर्कोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्यकांत मणि। २ लाल। पद्मराग।
अर्गजा—संज्ञा पुं० दे० "अरगजा"।
अर्गल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लकड़ी जिसे किवाड़ बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं। अरगल। अगरी। जंजीर। साँकल। ब्योंड़ा। २ किवाड़। ३ अवरोध। रोक। ४ कल्लोल। ५ वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में दिखाई पड़ते हैं। ६ मास।
अर्गला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अरगल। अगरी। २ ब्योंड़ा। ३. बिल्ली। किल्ली। सिटकिनी। ४ शृंखला। जंजीर जिसमें हाथी बाँधा जाता है। ५ एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ करते हैं। मत्स्यसूक्त। ६ अवरोध। ७ बाधक। रोक।
अर्घ—संज्ञा पुं० [सं०] १ षोडशोपचार में से एक। स्वागत या मानप्रदर्शन की एक विशेष क्रिया। जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंडुल और जौ का मिश्रण जो देवता को अर्पण किया जाता है। २ अर्घ देने का पदार्थ। ३ आदर के लिये जल-प्रदान। ४ हाथ धोने के लिये जल देना। ५ भेंट। ६ मधु। शहद। ७ मूल्य। भाव। ८ घोड़ा।
अर्घपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] शंख के आकार का ताँबे का बरतन जिससे सूर्य आदि देवताओं को अर्घ दिया जाता है। अर्घा।
अर्घा—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १ अर्घपात्र। पूजा आदि का जलपात्र।
अर्घ्य—वि० [सं०] १ पूजनीय। पूज्य। २ बहुमूल्य। ३ पूजा में देने योग्य (जल, फूल, फल आदि)। ४ भेंट देने योग्य। उपहार के योग्य।
अर्चक—वि० [सं०] पूजा करनेवाला। पूजक।
अर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्चनीय, अर्च्य, अर्चित] १. पूजा। पूजन। २ आदर। सत्कार। वंदना।
अर्चमान—वि० [सं०] १ पूजा करता हुआ। २ पूजा जाता हुआ। ३ अर्चनीय।
अर्चा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूजा। वंदना। २ प्रतिमा।
अर्चि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य की किरण २ धूप। ३ आग की लपट।
अर्चित—वि० [सं०] [स्त्री० अर्चिता] १ पूजित। २ आदृत। वंदित।
अर्ज—संज्ञा स्त्री० [अ०] विनती। निवेदन। प्रार्थना। विनय।
संज्ञा पुं० चौड़ाई। आयति। विस्तार।
अर्जदास्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] निवेदन-पत्र। प्रार्थनापत्र।
अर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्जनीय, अर्जित] १ उपार्जन। प्राप्ति। कमाई। २ संग्रह करना। संग्रह।
अर्जमा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्यमा"।
अर्जित—वि० [सं०] १ संग्रह किया हुआ। संगृहीत। २ कमाया हुआ। प्राप्त।
अर्जी—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र। आवेदनपत्र।
अर्जीदावा—संज्ञा पुं० [फा०] न्यायालय के लिये प्रार्थनापत्र।
अर्जीनवीस—संज्ञा पुं० [अ०, फा०] [भाव० अर्जीनवीसी] दूसरों के निवेदन-पत्र लिखने का पेशा करनेवाला।
अर्जुन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँडवों में से मँझले का नाम। २ एक बड़ा वृक्ष। काहू। कुंती का तीसरा और अंतिम पुत्र। ३. हैहय-वंशी एक राजा। सहस्रबाहु। सहस्रार्जुन। ४. सफेद कनेर। ५ मोर। ६ आँख की फूली। ७. एकलौता बेटा। श्वेत। ८ वर्ण।
अर्जुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद रंग की गाय। २ कुट्टनी। ३ उषा।
अर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्ण। अक्षर। जैसे, पचार्ण = पचाक्षर। २ जल। पानी। ३ एक दंडक वृत्त या छंद। ४ शाल वृक्ष।
अर्णव—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. सूर्य। ३ इंद्र। ४ अंतरिक्ष। आकाश। ५ दंडक वृत्त का एक भेद। ६ चार की संख्या।
अर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्थी] १. शब्द का अभिप्राय। शब्द की शक्ति। मानी। २ अभिप्राय। प्रयोजन। मतलब। ३. काम। इष्ट। ४ हेतु। निमित्त। ६ इंद्रियों के विषय। ५ धन। संपत्ति।
अर्थकर—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन उपार्जन किया जाय। धनप्रद। लाभकारी, जैसे, अर्थकरी विद्या।
अर्थदंड—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो किसी अपराध के दंड में अपराधी से लिया जाय। जुर्माना।
अर्थना—क्रि० स० [सं० अर्थ] माँगना।
अर्थपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुबेर। २ राजा।
अर्थपिशाच—वि० [सं०] भारी कंजूस। धनलोलुप। मक्खीचूस। सूम। कृपण। धन न खर्चनेवाला।
अर्थमंत्री—संज्ञा पुं० दे० "अर्थसचिव"।
अर्थवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वाक्य जिससे कुछ करने की उत्तेजना हो। २. केवल किसी ओर चित्त प्रवृत्त करने के लिये कहा जानेवाला वाक्य।
अर्थवेद—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्पशास्त्र।
अर्थशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, व्यय, वितरण तथा विनिमय के सिद्धांतों का विवेचन हो। २ राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि का ज्ञान। ३ विष्णुगुप्त चाणक्य-प्रणीत राजनीति का एक प्रसिद्ध ग्रंथ।
अर्थसचिव—संज्ञा पुं० [सं०] वह मंत्री जो किसी राज्य या संस्था के आर्थिक विषयों की देखरेख करे।

अर्थांतरन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाय।
अर्थात्—अव्य० [सं०] यानी। मतलब यह कि। अर्थ यह है कि।
अर्थाना(पु)—क्रि० स० [सं० अर्थ] १ अर्थ लगाना। २ मतलव समझाना या समझना।
अर्थापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मीमांसा के अनुसार वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात सिद्ध हो जाय। २ एक अर्थालंकार जिसमें एक बात से दूसरी बात सिद्ध की जाय।
अर्थालंकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार हो।
अर्थावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें अर्थ की आवृत्ति होती है।
अर्थी—वि० [सं० अर्थिन्] [स्त्री० अर्थिनी] १ इच्छा रखनेवाला। चाह रखनेवाला। २ कार्यार्थी। प्रयोजनवाला। प्रार्थी। मतलबी।
संज्ञा पुं० १ मुद्दई। २ सेवक। ३ धनी।
संज्ञा स्त्री० दे० "अरथी"।
अर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीड़न। हिंसा। २ जाना। ३ माँगना।
अर्दना(पु)—क्रि० स० [सं० अर्दन] पीड़ित करना।
अर्दली—संज्ञा पुं० दे० "अरदली"।
अर्द्ध—वि० [सं०] आधा।
अर्द्धचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधा चाँद। अष्टमी का चंद्रमा। २ चंद्रिका। मोरपख में बनी आँख। ३ नखक्षत। ४ एक प्रकार का बाण। ५ सानुनासिक चिह्न। चंद्रविंदु। ६ एक प्रकार का त्रिपुंड। ७ निकाल बाहर करने के लिये गले में हाथ लगाने की मुद्रा। गरदनिया।
अर्द्धजल—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान में शव को स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।
अर्द्धनारीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र में शिव का आधा पुरुष और आधा स्त्रीवाला शरीर।
अर्द्धमागधी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राकृत का एक भेद। काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।
अर्द्धवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] केंद्रविंदु से समान अंतर पर खींची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त। गोलार्ध।
अर्द्धसम वृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो, जैसे दोहा और सोरठा।
अर्द्धांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधा अंग। २ लकवा रोग जिसमें आधा अंग बेकाम हो जाता है। फालिज। पक्षाघात।
अर्द्धांगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
अर्द्धांगी—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्धांगिन्] शिव।
वि० [सं०] अर्द्धांग-रोगग्रस्त।
अर्द्धाली—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्धालि] आधी चौपाई।
अर्द्धोदय—संज्ञा पुं० [सं०] श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग—युक्त रविवार को होनेवाली माघ मास की अमावस्या का पर्व।
अर्धंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।
अर्धंगी—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।
अर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्पित] १ दान। २ नजर। भेंट। ३ स्थापन। प्रदान। समर्पण।
अर्पना(पु)—क्रि० स० दे० "अरपना"।
अर्ब-दर्ब(पु)—संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] धन दौलत।
अर्बुद—संज्ञा पुं० [सं०] १ गणित में अंकों के दसवें स्थान की संख्या। दश कोटि। २ अरावली पहाड़। ३ एक असुर। ४ कद्रु का पुत्र। एक सर्प। ५ मेघ। बादल। ६ दो मास का गर्भ। ७ एक रोग जिसमें शरीर में एक प्रकार की गाँठ पड़ जाती है। बतौरी।
अर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालक। २ शिशिर ऋतु। ३ शिष्य। ४ साग-पात।
अर्भक—वि० [सं०] १ छोटा। अल्प। २ मूर्ख। ३ दुबला। पतला।
संज्ञा पुं० [सं०] बालक। लड़का। उ०—गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।—मानस।
अर्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अर्या। अर्याणी। अर्या] १. स्वामी। ईश्वर। २ वैश्य।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
अर्यमा—संज्ञा पुं० [सं० अर्यमन्] १ सूर्य। २ बारह आदित्यों में से एक। ३ पितरों के गणों में से एक। ४ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। ५ मदार।
अर्वाक्—अव्य० [सं०] १. पहले। इधर। २ सामने। नीचे। ३. निकट। समीप।
अर्वाचीन—वि० [सं०] १. हाल का। कहनेवाले के समय का। आधुनिक। २. नवीन। नया। प्राचीन का विपरीत।
अर्श—संज्ञा पुं० [सं० अर्शस्] बवासीर। रोग।
संज्ञा पुं० [अ०] १ आकाश। २. स्वर्ग।
अर्ह—वि० [सं०] १. पूज्य। २ योग्य। उपयुक्त। जैसे पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह।
संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २. इंद्र।
अर्हणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अर्हणीय] पूजा। अर्चना।
अर्हत, अर्हन्—वि० [सं०] २ पूज्य।
संज्ञा पुं० १. जिनदेव। २. बुद्ध।
अर्ह्य—वि० [सं०] पूज्य। मान्य।
अल—अव्य० दे० "अलम्"।
अलकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी चीज को अलंकारों या बेलबूटों से सजाना। सजावट।
अलकार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अलकृत] १ आभूषण। गहना। जेवर। २ वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आ जाय जैसे; उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि। ३ नायिका के हावभाव या चेष्टाएँ।
अलंकृत—वि० [सं०] [स्त्री० अलंकृता] १ विभूषित। सँवारा हुआ। २ काव्यालंकार-युक्त।
अलँग—संज्ञा पुं० [सं० आर=कोना+अंग] ओर। तरफ। दिशा।
मुहा०—अलँग पर आना वा होना=घोड़ी का मस्ताना।
अलंघनीय—वि० [सं०] जो लाँघने योग्य न हो। अलंघ्य। जो काटा या टाला न जा सके। जिसका विरोध न हो सके। जो पार न किया जा सके।
अलंघ्य—वि० [सं०] दे० "अलंघनीय।"
अलंब(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आलंब"।
अलंबुषा—संज्ञा स्त्री० [सं० अलम्बुषा] १ एक अप्सरा का नाम। २ लज्जावती या छुईमुई का पौधा।
अल—संज्ञा पुं० [सं०] विष। जहर। गरल। उ०—लपटि गयो सब अंग अंग प्रति निर्विष कियो सकल अल झारयो।—सूर०।
अलक—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मस्तक के इधर उधर लटकते हुए बाल। केश। लट।

२ छल्लेदार बाल। ३ हरताल। ४ मदार।

अलकतरा—संज्ञा पुं० [अ०] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ जो सड़क, दीवाल आदि पर लेप के काम आता है।

अलक लड़ैता(पु)—वि० [अ० अलक=प्यार+हिं० लाड+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० अलकलड़ैती] दुलारा। लाडला। उ०—मेरो अलकलड़ैतो मोहन ह्वै करत संकोच।—सूर०।

अलकसलोरी(पु)—वि० स्त्री० [अ० अलक+हिं० सलोनी] [पु० अलकसलोरा] लाडली। दुलारी। उ०—ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलकसलोरी हो।—सूर०।

अलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुबेर की पुरी। २ आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।

अलकाउर—संज्ञा पुं० दे० "अलकावली" उ०—अलकाउर मुरि मुरि गा नौरा।—पद्मावत।

अलकापति—संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।

अलकावलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केशों का समूह। बालों की लटें। २ घूँघरवाले बाल। छल्लेदार बाल।

अलक्त, अलक्तक—संज्ञा पु० [सं०] १ लाख। चपड़ा। २ लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। जावक। महावर।

अलक्षण—सं० पुं० [सं०] [स्त्री० अलक्षणा] १. लक्षण का अभाव २ बुरा या अशुभ लक्षणवाला प्राणी या पदार्थ।

अलक्षित—वि० [सं०] १ अप्रकट। छिपा हुआ। लुप्त। अज्ञात। २ अदृश्य। गायब। गुप्त।

अलक्ष्य—वि० [सं०] १ अदृश्य। जो न देख पड़े। गायब। २ जिसका लक्षण न कहा जा सके।

अलख—वि० [सं० अलक्ष्य] १ जो दिखाई न पड़े। अदृश्य। अप्रत्यक्ष। २ अगोचर। इंद्रियातीत। ईश्वर का एक विशेषण।

मुहा०—(१) अलख जगाना=पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। (२) परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना। (३) किसी के नाम की रट लगाना या किसी में विशेष रूप से अनुरक्त होना।

अलखधारी—संज्ञा पुं० दे० "अलखनामी"।

अलखनामी—संज्ञा पुं० [सं० अलक्ष्य+नाम] गोरखनाथ के अनुयायी साधुओं का एक संप्रदाय जो 'अलख' 'अलख' कहते हुए भिक्षा माँगते हैं। गोरखपंथी साधु।

अलखित(पु)—वि० दे० "अलक्षित"।

अलग—वि० [सं० अलग्न] १ जुदा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।

मुहा०—अलग करना=१ दूर करना। हटाना। २ छुड़ाना। बरखास्त करना। ३ बेलाग। बचा हुआ। रक्षित।

अलगनी—संज्ञा स्त्री० [सं० आलग्न+हिं० ई] आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिये घर में बाँधा जाता है। टारा।

अलगरज(पु)—वि० दे० "अलगरजी"।

अलगरजी†—वि० [अ०] बेगरज। बेपरवाह।

संज्ञा स्त्री० बेपरवाही।

अलगाना—क्रि० स० [हिं० अलग] १ अलग करना। छाँटना। जुदा करना। २. दूर करना। हटाना।

अलगोजा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की बाँसुरी।

अलच्छ(पु)—वि० दे० "अलक्ष्य"।

अलजबरा—संज्ञा पुं० [अँ० ऐलजबरा] बीजगणित।

अलज्ज—वि० [सं०] निर्लज्ज। बेहया। लज्जाहीन।

अलता—संज्ञा पुं० [सं० अलक्तक, प्रा० अलत्तअ] १ लाल रंग जो स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। जावक। महावर। २ खसी की मूत्रेंद्रिय।

अलप(पु)—वि० दे० "अल्प"।

अलपाका—संज्ञा पु० [स्पे० एलपका] १ कोमल लंबे बालोंवाला ऊँट जाति का, किंतु कुछ छोटा और बिना कूबड़ का, एक जानवर जो दक्षिणी अमेरिका के पेरू नामक प्रांत में पाया जाता है। २ एक प्रकार का पतला, मुलायम और रोएँदार कपड़ा। ३ उक्त जानवर का ऊन और उससे बना वस्त्र।

अलफा—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अलफी] एक प्रकार का बिना बाँह का लंबा कुरता।

अलबत्ता—अव्य० [अ० अलबत्त] १ लेकिन। परंतु। २ निस्संदेह। निःसंशय। बेशक। ३ हाँ। बहुत ठीक। दुरुस्त।

अलबम—संज्ञा पुं० [अ० ऐलबम]। दे० "चित्राधार"।

अलबी-तलबी—संज्ञा स्त्री० [अरबी+अनु०] अरबी फारसी या कठिन उर्दू (उपेक्षार्थक)।

अलबेला—वि० [सं० अलभ्य+हिं० एला ?] [स्त्री० अलबेली] १ अलहड़। बेपरवाह। मनमौजी। २ बाँका। बनाठना। छैला। ३. अनोखा। अनूठा। सुंदर। ४. सीधा-सादा। भोलाभाला।

संज्ञा पुं० नारियल का हुक्का।

अलबेलापन—संज्ञा पुं० [हिं० अलबेला+पन] १ अल्हड़पन। बेपरवाही। २ बाँका-पन। सजधज। छैलापन। ३ अनोखापन। अनूठापन। सुंदरता।

अलभ्य—वि० [सं०] [भाव० अलभ्यता] १ न मिलने योग्य। अप्राप्य। २ जो कठिनता से मिल सके। दुर्लभ। ३ अमूल्य। अनमोल।

अलम्—अव्य० [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण। काफी।

अलम—संज्ञा पु० [अ०] १. रंज। दुःख। २ सेना के आगे रहनेवाला सबसे बड़ा झंडा।

अलमस्त—वि० [अ० अल्+फा० मस्त] १. लापरवाह। मस्त। २ बेगम। बेफिक्र। ३ मतवाला। बदहोश। बेहोश।

अलमस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मत्तता। मस्ती। २. बेफिकरी। ३ लापरवाही।

वि० दे० "अलमस्त"।

अलमारी—संज्ञा स्त्री० [पुर्त० अलमारियो] वह खड़ा संदूक जिसमें चीजें रखने के लिये खाने या दर बने रहते हैं। बड़ी भटरिया।

अलमुनियम—संज्ञा पु० [अँ० ऐल्यूमिनम] एक हलकी धातु जो कुछ कुछ नीलापन लिए सफेद होती है।

अललटप्पू—वि० [देश०] अटकलपच्चू। काल्पनिक। बेठिकाने का। अट-सट।

अलल-बछेड़ा—संज्ञा पु० [हिं० अल्हड+बछेड़ा] १ घोड़े का जवान बच्चा। २ अल्हड़ आदमी।

अलल-हिसाब—क्रि० वि० [अ०] बिना हिसाब किए।

अललाना†—क्रि० अ० [सं० अर=बोलना] चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।

अलबाँती—वि० स्त्री० [?] (स्त्री०) जिसके हाल में बच्चा हुआ हो। सद्यःप्रसूता। जच्चा।

अलवाई—वि० स्त्री० [?] (गाय या भैंस) जिसको बच्चा जने एक या दो महीने हुए हों। "बाखरी" का उल्टा।

अलवान—संज्ञा पुं० [अ०] ऊनी चादर।
अलस—वि० [सं०] [भाव० अलसता] आलसी। सुस्त।
अलसान, अलसानि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० आलस] १ आलस्य। सुस्ती। २ शैथिल्य।
अलसाना—क्रि० अ० [सं० अलस] आलस्य या शिथिलता अनुभव करना। २ कार्यारंभ को टालना।
अलसी—संज्ञा स्त्री० [सं० अतसी] १ एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है। २ उस पौधे के बीज। तीसी।
अलसेट—संज्ञा स्त्री० [सं० अलस+हिं० एट (प्रत्य०)] [वि० अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ की देर। २ टालमटूल। दीर्घसूत्रता। भुलावा। चकमा। ३ बाधा। अड़चन। ४ झगड़ा। तकरार।
अलसेटिया(पु)—वि० [हिं० अलसेट+इया (प्रत्य०)] १ ढिलाई करनेवाला। व्यर्थ देर करनेवाला। २ टालमटूल करनेवाला। दीर्घसूत्री। ३ अड़चन डालनेवाला। बाधा उपस्थित करनेवाला। ४ झगड़ालू।
अलसौंहाँ—वि० [सं० अलस] [स्त्री० अलसौंही] १ आलस्ययुक्त। क्लांत। शिथिल। २ नींद से भरा। उनींदा। उ०—सही रँगीले रति जगे, जगी पगी सुख चैन। अलसौंहैं सौंहैं किए, कहै हँसौंहै नैन। —बिहारी०।
अलहदगी—संज्ञा स्त्री० [अ०] अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।
अलहदा—वि० [अ०] अलग। पृथक्।
अलहदी—वि० दे० "अहदी"।
अलहन—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० अलभन] विपत्ति या अभाग्य का उदय। कमबख्ती।
अलहना(पु)—वि० [सं० अ+लभन] न पाने वाला। अलहन। उ०—नै गुणमना अलहना गौरव लहइ भुजंग।
अलाई—वि० [सं० अलस] [स्त्री० अलाइन] आलसी। काहिल।
वि० [अलाउद्दीन] अलाउद्दीन का, जैसे, अलाई दरवाजा। अलाई मोहर।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
अलात—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलती हुई लकड़ी। २ अंगारा।
अलात-चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलती हुई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ मंडल। २ बनैठी।
अलान—संज्ञा पुं० [सं० आलान] १ बैल चराने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी। २ हाथी बाँधने का खूँटा या सिक्कड़। ३ बंधन। बेड़ी।
अलानिया—क्रि० वि० [अ० एलानिया] खुले आम। सबके सामने।
अलाप—संज्ञा पुं० दे० "आलाप"।
अलापना—क्रि० अ० [सं० आलापन] १. बोलना। बातचीत करना। २ गाने में तान लगाना। स्वर साधना। ३ गाना।
अलापी(पु)—वि० [सं० आलापी] बोलनेवाला। शब्द निकालनेवाला। तान छेड़नेवाला।
अलाबू—संज्ञा स्त्री० [सं०] लौवा। कद्दू।
अलाम(पु)—वि० [अ० अल्लाम] बातें बनानेवाला। मिथ्यावादी। धूर्त।
अलामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ निशान। चिह्न। २ पहचान।
अलायक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अयोग्य"।
अलार—संज्ञा पुं० [सं०] कपाट। किवाड़।
(पु)[सं० अलात] अलाव। आँवाँ। भट्ठी।
अलाल—वि० [सं० अलस ?] १ आलसी। सुस्त। २ अकर्मण्य। निकम्मा। काहिल।
अलाव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अलात] तापने के लिये जलाई हुई आग। कौड़ा।
अलावल साही—वि० [अलाउद्दीन के सोने के सिक्के के 'अलाउल दुनिया व अल्दीन' से] अलाउद्दीन शाह का।
अलावा—क्रि० वि० [अ०] सिवाय। अतिरिक्त।
अलिंग—वि० [सं०] १ लिंगरहित। बिना चिह्न का। २ जिसकी कोई पहचान न हो।
संज्ञा पुं० १ व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र। २ ब्रह्म।
अलिंजर—संज्ञा पुं० [सं०] पानी रखने का मिट्टी का बरतन। झंझर। घड़ा।
अलिंद—संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या मंडप।
संज्ञा पुं० [सं० अलींद्र] भौंरा।
अलि—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अलिनी] १ भौंरा। २ कोयल। ३ कौआ। ४ बिच्छू। ५ वृश्चिक राशि। ६ कुत्ता। ७ मदिरा।
संज्ञा स्त्री० दे० "अली"।
अलिक—संज्ञा पुं० [सं०] ललाट। माथा।
संज्ञा पुं० दे० "अलि"।
अलिप्त—वि० [सं०] जो लिप्त न हो। अननुरक्त। अलीन।
अली—संज्ञा स्त्री० [सं० आली] १. सखी। सहेली। २ पंक्ति। कतार।
संज्ञा पुं० [सं० अलि] भौंरा। उ०—अली कली ही सों बँध्यो आगे कौन हवाल। —बिहारी०।
अलीक—वि० [सं०] १ मिथ्या। झूठा। २ मर्यादा रहित। अप्रतिष्ठित। ३. असार।
संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० लीक] अप्रतिष्ठा। अमर्यादा।
अलीजा(पु)—वि० [अ० आलीजाह] १. बहुत। अधिक। २. श्रेष्ठ।
अलीन—संज्ञा पुं० [सं० अलीन] १ द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी। साह। बाजू। २ दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होता है।
वि० [सं० अ=नहीं+लीन=रत] १ अग्राह्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेजा। २ जो लीन न हो। अननुरक्त।
अलीपित—वि० दे० "अलिप्त"।
अलील—वि० [अ०] बीमार। रुग्ण।
अलीह(पु)—वि० [सं० अलीक] १ मिथ्या। असत्य। झूठा। २ अनुचित। उ०—कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यह बात अलीहा। —मानस।
अलुक्—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—सरसिज। कुशेशय। स्तनधयी। अरुंतुद।
अलुझना(पु)—क्रि० अ० दे० "उलझना"।
अलुटना(पु)—क्रि० अ० [अ० (उच्चा०) +सं० लुठन] लड़खड़ाना। गिरना-पड़ना।
अलूप—वि० दे० "लुप्त"।
संज्ञा पुं० दे० "लोप"।
अलूला(पु)—संज्ञा पुं० [?] १ भभूका। बबूला। लपट। २ बुलबुला।
अलेख—वि० [सं० अ+लेख्य] १ जिसका उल्लेख या वर्णन न किया जा सके। उ०—अगुन अलेख अमान एक रस। राम सगुन भए भक्त प्रेम बस। —मानस। २ बेहिसाब। बेअंदाज। अनगिनत।
अलेखा(पु)—वि० [हिं० अलेख] १ बेहिसाब। २ व्यर्थ। निष्फल। उ०—सूरदास यह मति आए बिनु सब दिन गए अलेखे। —सूर०।
अलेखी(पु)—वि० [हिं० अलेख] १ बेहिसाब या अंडबंड काम करनेवाला। २. गड़बड़ मचानेवाला। अंधेर करनेवाला। अन्यायी।

उ०—बड़े अलेखी लरि परें, परिहरे न जाहीं।—विनय०।

अलेल—संज्ञा पुं० [?] क्रीड़ा। किलोल।

अलोक—वि० [सं०] १ जो देखने में न आवे। अदृश्य। २ निर्जन। एकांत। ३ पुण्यहीन।

संज्ञा पुं० १. पातालादि लोक। परलोक। २ मिथ्या दोष। कलंक। निंदा।

अलोकना(पु)—क्रि० स० [सं० आलोकन] देखना। ताकना।

अलोना—वि० [सं० अलवण] [स्त्री० अलोनी] १ जिसमें नमक न पड़ा हो। २ जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे, अलोना व्रत। ३ फीका। स्वादरहित।

अलोप(पु)—वि० दे० "लोप"।

अलोपना—क्रि० अ० [अ (उच्चा०) + सं० लोप] लुप्त हो जाना। उ०—छत्रहि सरग छाइगा सूरुज गयउ अलोपि। —पदमावत।

क्रि० स० लुप्त करना। उ०—लेइगा कृस्नहिं गरुड़ अलोपी।—पदमावत।

अलोल(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] अचंचलता। धीरता। स्थिरता।

अलौकिक—वि० [सं०] [भाव० अलौकिकता] १ जो इस लोक में न दिखाई दे। लोकोत्तर। २ अद्भुत। अपूर्व। ३ अमानुषी। ४ अस्वाभाविक। अप्राकृतिक।

अल्कत—वि० [अ०] काटा या रद्द किया हुआ। निकाला हुआ।

अल्प—वि० [सं०] [भाव० अल्पता, अल्पत्व] १ थोड़ा। कम। २ छोटा।

संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई वर्णन की जाती है।

अल्पका—संज्ञा पुं० दे० "अलपाका"।

अल्पजीवी—वि० [सं०] जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।

अल्पज्ञ—वि० [सं०] [भाव० अल्पज्ञता] १ थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। छोटी बुद्धि का। २ नासमझ।

अल्पता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमी। न्यूनता। २ छोटाई।

अल्पत्व—संज्ञा पुं० [सं०] "अल्पता"।

अल्पप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल, और व।

अल्पमत—संज्ञा पुं० [सं०] १ थोड़े से लोगों का मत। बहुमत का उलटा। २ वे लोग जिनकी संख्या या मत औरों के मुकाबिले में कम हो। अल्पसंख्यक।

अल्पवयस्क—वि० [सं०] छोटी अवस्था का।

अल्पशः—क्रि० वि० [सं०] थोड़ा थोड़ा करके। धीरे धीरे। क्रमशः।

अल्पसंख्यक—वि० [सं०] गिनती के। थोड़े या कम।

संज्ञा पुं० वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो। "बहुसंख्यक" का उलटा।

अल्पायु—वि० [सं० अल्पायुस्] १ थोड़ी आयुवाला। २ जो छोटी अवस्था में मरे।

अल्ल—संज्ञा पुं० [अ० आल] वंश का नाम। उपगोत्र का नाम, जैसे—पाँडे, त्रिपाठी, मिश्र।

अल्लम-गल्लम—संज्ञा पुं० [अनु०] अनापशनाप। व्यर्थ बात। बकवाद। प्रलाप।

अल्ला—संज्ञा पुं० दे० "अल्लाह"।

अल्लाना(पु)—क्रि० अ० दे० "अललाना"।

अल्लामा—वि० स्त्री० [अ० अल्लाम] कर्कशा। लड़ाकी।

संज्ञा पुं० [अ० अल्लाम] बहुत बड़ा विद्वान्।

अल्लाह—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर।

यौ०—अल्लाहो अकबर = ईश्वर महान् है।

अल्हजा(पु)—संज्ञा पुं० [अ० अलहजल] इधर उधर की बात। गप्प।

अल्हड़—वि० [प्रा० ओल्हेड = अन्यासक्त ?] १ मनमौजी। बेपरवाह। २ बिना अनुभव का। जिसे व्यवहार ज्ञान न हो। ३ उद्धत। उजड्ड। ४. अनाड़ी। गवाँर।

संज्ञा पुं० नया बैल या बछड़ा जो काम में न लाया गया हो।

अल्हड़पन—संज्ञा पुं० [हिं० अल्हड़ + पन (प्रत्य०)] १ मनमौजीपन। बेपरवाही। २ व्यवहार-ज्ञान का अभाव। भोलापन। ३ उजड्डपन। अक्खड़पन। ४ अनाड़ीपन।

अल्हर—वि० दे० "अल्हड़"।

अवंतिका, अवंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] उज्जैन। उज्जयिनी (मोक्ष देनेवाली सप्तपुरियों में से एक)।

अव—उप० [सं०] एक उपसर्ग। यह जिस शब्द के आदि में लगता है उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है—१ निश्चय, जैसे, अवधारण। २ अनादर; जैसे, अवज्ञा। ३ सहारा, जैसे, अवलंब। ४ पवित्रता, जैसे, अवदात। ५ व्याप्ति, जैसे, अवकीर्ण।

(पु)अव्य० [सं० अपि, प्रा० अवि] दे० "और"।

अवकलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकलित] १. इकट्ठा करके मिला देना। २ देखना। ३ जानना। ज्ञान। ४ ग्रहण।

अवकलना(पु)—क्रि० स० [सं० अवकलन] ज्ञात होना। विचार में आना।

अवकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाली वक्त। फुर्सत। छुट्टी। २ रिक्त स्थान। खाली जगह। उ०—कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै।—मानस। ३ दूरी। अंतर। फासला। ४ अवसर। समय। मौका। ५ आकाश। अंतरिक्ष। शून्य स्थान।

अवकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] बिखेरना। फैलाना। छितराना।

अवकीर्ण—वि० [सं०] १ फैलाया, छितराया या बिखेरा हुआ। २ नाश किया हुआ। नष्ट। ३ चूर चूर किया हुआ।

अवकृपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कृपा का न होना। उदासीनता। नाखुशी।

अवक्खन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अवेक्षण] देखना।

अवगत—वि० [सं०] १ विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २ नीचे गया हुआ। गिरा हुआ।

अवगतना(पु)—क्रि० स० [सं० अवगत] समझना। विचारना।

अवगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। धारणा। समझ। २ बुरी गति।

अवगाधना(पु)—क्रि० स० दे० "अवगाहना"।

अवगारना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्गार ?] समझाना-बुझाना। जताना। उ०—सूर कहा याके मुख लागत कौन याहि अवगारे।—सूर०।

क्रि० स० [सं० अपकार] बुरा-भला कहना। निंदा करना। फटकारना।

अवगास—संज्ञा पुं० [सं० अवकाश, प्रा० ओगास] जगह। स्थान। मैदान। उ० भए अवगास कास बन फूले।—पदमावत।

अवगाह(पु)—वि० [सं० अगाध] १ अथाह। बहुत गहरा। उ०—खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा।—मानस। (पु) २ अनहोना। कठिन।

(पु) संज्ञा पुं० १. गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। ३ कठिनाई।

संज्ञा पुं० [सं०] १. भीतर प्रवेश करना। हलना। २ जल में घुसकर स्नान करना।

अवगाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगाहित] १. पानी में पैठकर स्नान। निमज्जन। २ प्रवेश। पैठ। ३. मथन। विलोडन। ४ खोज। छान बीन। ५. चित्त लगाना। लीन होकर विचार करना।

अवगाहना(पु)—क्रि० अ० [सं० अवगाहन] १ पानी में पैठकर नहाना। निमज्जन करना। २. पैठना। घुसना। धँसना। ३ मग्न होना। डूबना। उ०—भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही। —मानस।

क्रि० स० १ छानबीन करना। २ विचलित करना। हलचल मचाना। ३ चलाना। हिलाना। ४ सोचना। विचारना। ५ धारण करना। ग्रहण करना।

अवगुंठन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगुंठित] १. ढँकना। छिपाना। २. घूँघट। पर्दा। बुर्का। ३ रेखा से घेरना।

अवगुंफन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगुंफित] गूँथना। गुहना।

अवगुण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दोष। ऐब। २ बुराई। खोटाई।

अवग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकावट। अड़चन। बाधा। २ वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। ३ बाँध। बंद। ४ संधिविच्छेद (व्या०)। ५ "अनुग्रह" का उलटा। ६ स्वभाव। प्रकृति। ७ शाप। कोसना।

अवघट—वि० [सं० अव+घट या घट्ट] विकट। दुर्गम। खतरनाक। कठिन। उ०—सरिता वन गिरि अवघट घाटा। पति पहिचानि देहिं बर बाटा। —मानस।

अवचट—संज्ञा पुं० [सं० अव+चित्त या चिन्ता] १. कठिनाई। अंटस। २ गड़बड़।

क्रि० वि० अकस्मात्। अनजान में। अचानक।

अवचय—संज्ञा पुं० [सं०] फूल फल आदि तोड़ या चुनकर इकट्ठा करना।

अवचेतन—वि० [सं०] १ अवचेतना का। २ आंशिक चेतनावाला (अं० सब-कांशस)।

अवचेतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] मन की वह अवस्था जिसमें उसकी क्रियाओं का प्रत्यक्ष बोध न हो। अंत संज्ञा। (अं० सब-कांशसनेस)।

अवच्छिन्न—वि० [सं०] १ अलग किया हुआ। पृथक्। २ विशेषणयुक्त।

अवच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १ अलगाव। भेद। २. हद। सीमा। ३ अवधारण। छानबीन। ४ परिच्छेद। विभाग।

अवच्छेदक—वि० [सं०] १. भेदकारी। अलग करनेवाला। २ हद बाँधनेवाला। ३ अवधारक। निश्चय करानेवाला।

संज्ञा पुं० विशेषण।

अवछंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।

अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १ किसी के प्रति आवश्यक सम्मान का अभाव। अनादर। २ आज्ञा या बात न मानना या उसके प्रति उपेक्षा दिखाना। अवहेला। तिरस्कार। ३. पराजय। हार। ४ वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना दिखलाया जाय।

अवज्ञात—वि० [सं०] अपमानित। तिरस्कृत।

अवज्ञेय—वि० [सं०] अवज्ञा के योग्य। तिरस्करणीय।

अवझेरा—संज्ञा पुं० [देश०] १. उलझन। झंझट। २ भेद। छिपाव। रहस्य। ३ कठिनाई।

अवट—संज्ञा पुं० [सं०] अमार्ग। खराब रास्ता। गड्ढा।

अवटना—क्रि० स० [सं० आवर्त्तन] १ मथना। आलोड़न करना। २ किसी द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना। उ०—परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई। —मानस।

क्रि० अ० घूमना। फिरना।

अवडेर—संज्ञा पुं० [सं० अवधीरण] १ फेर। चक्कर। भ्रम। २ झंझट। बखेड़ा। ३ रंग में भंग।

अवडेरना—क्रि० स० [हिं० अवडेर] १ फेर या झंझट में फँसाना। भ्रम में डालना। उ०—पच करि गिय सती बिआही। पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही। —मानस। २, तंग करना।

अवडेरा—वि० [हिं० अवडेर] १ भ्रामक। चक्करदार। फेर का। २ झंझटवाला। ३ बेढब। कुढंगा। उ०—जननी जनक तज्यो जनमि, करम बिनु बिधिहु सृज्यो अवडेरे। —मानस।

अवतंस—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवतंसित] १ भूषण। अलंकार। २ शिरोभूषण। टीका। ३ मुकुट। ४ श्रेष्ठ। सर्वोत्तम। ५ माला। हार। ६ बाली। मुरकी। ७. कर्णफूल।

अवतरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवतीर्ण] १. उतरना। नीचे आना। २ उतार। ३. प्रादुर्भाव। जन्म। ४ अवतार। ५ कथन या लेख आदि का ज्यों का त्यों लिखित या उद्धृत अंश। उद्धरण। ६ पार होना। ७, घाट।

अवतरण-चिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] उलटे हुए विराम-चिह्न जिनके बीच किसी का कथन उद्धृत रहता है, जैसे—" "।

अवतरणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रस्तावना। भूमिका। उपोद्घात। २. परिपाटी।

अवतरना(पु)—क्रि० अ० [सं० अवतरण] अवतार लेना। प्रकट होना।

अवतरित—वि० [सं० 'अवतीर्ण' के अर्थों में] १ नीचे उतरा हुआ। २ अवतार लेकर आया हुआ। ३ किसी दूसरे स्थल से लिया हुआ। उद्धृत। ४ जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतार—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता का लौकिक शरीर धारण करना। २. विष्णु या ईश्वर का संसार में शरीर धारण करना। ३. जन्म। शरीर ग्रहण। ४ उतरना। नीचे आना। (पु)५ सृष्टि।

अवतारण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अवतारणा] १ उतारना। नीचे लाना। २ नकल करना। ३ उदाहृत करना।

अवतारना—क्रि० स० [सं० अवतारण] १ उत्पन्न करना। जन्म देना। २ रचना। बनाना। ३ उतारना। नकल करना।

अवतारी—वि० [सं० अवतारिन्] १. अवतार लेनेवाला। २ उतरनेवाला। ३. देवांशधारी। ४ अलौकिक शक्तिवाला। ५ अवतार संबंधी।

अवतीर्ण—वि० [सं०] १ नीचे आया हुआ। उतरा या उतारा हुआ। २ जिसने अवतार धारण किया हो। ३ उदाहृत। उद्धृत।

अवदशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्दशा । बुरी हालत ।
अवदात—वि० [सं०] १ उज्वल । श्वेत । सफेद । २ शुद्ध । स्वच्छ । निर्मल । साफ । ३ गौर । शुक्ल वर्ण का । ४ पीला ।
अवदान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शुद्ध आचरण । अच्छा काम । २. खंडन । तोड़ना । ३ शक्ति । बल । ४ अतिक्रम । उल्लंघन । ५ पवित्र करना । साफ करना ।
अवदान्य—वि० [सं०] १ पराक्रमी । बली । २ अतिक्रमणकारी । हद से बाहर जानेवाला । ३ कंजूस ।
अवदारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवदारित] १ विदारण । चीरफाड़ । तोड़-फोड़ । २ मिट्टी खोदने का रंभा । खंता ।
अवद्य—वि० [सं०] १ अधम । खराब । बुरा । पापी । २ त्याज्य । कुत्सित । निकृष्ट । ३ दोषयुक्त ।
अवध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० अयोध्या] १ प्राचीन कोशल देश । २ वर्तमान उत्तर प्रदेश का एक खंड । ३ अयोध्या नगरी ।
(पु)सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।
अवधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ध्यान । मनोयोग । चित्त का लगाव । २ चित्त की वृत्ति का एक ओर लगाना । समाधि । ३ सावधानी । चौकसी ।
(पु)सञ्ज्ञा पुं० [सं० आधान] गर्भ । पेट ।
अवधारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवधारित, अवधारणीय, अवधार्य] विनिश्चय । विचारपूर्वक निर्धारण । निर्णय ।
अवधारना(पु)—क्रि० स० [सं० अवधारण] धारण करना । ग्रहण करना । निर्णय करना ।
अवधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीमा । हद । २ निर्धारित समय । मियाद । ३ अंत । ४ अंत समय । अंतिम काल ।
अव्य० [सं०] तक । पर्यंत ।
अवधिमान(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।
अवधी—वि० [हिं० अवध] अवध संबंधी । अवध का ।
सञ्ज्ञा स्त्री० अवध की बोली (हिंदी भाषा का एक रूप) ।
अवधू—सञ्ज्ञा पुं० दे० "अवधूत" ।
अवधूत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अवधूतिन] सन्यासी । साधु । योगी । २. पाखंडी । उ०—धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ । विनय० ।
अवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसन्न करना । २ रक्षा । बचाव । ३ चंचल । नटखट । शरारती ।
(पु) सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "अवनि" ।
अवनत—वि० [सं०] १ नीचा । झुका हुआ । २ गिरा हुआ । पतित । अनुन्नत ।
अवनति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ घटती । कमी । न्यूनता । २ अधोगति । हीन दशा । अनुन्नति । ३ झुकाव । ४ नम्रता ।
अवना(पु)—क्रि० अ० दे० "आवना" ।
अवनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी । जमीन ।
अवपात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गिराव । पतन । २ गड्ढा । कुंट । ३ हाथियों के फँसाने का गड्ढा । खाँड़ा । माला । ४ नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति ।
अवबोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जागना । २ ज्ञान । बोध । ३ होश । चैतन्य ।
अवभृथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी यज्ञ की समापिका क्रिया । २ यज्ञांत स्नान ।
अवम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पितरों का एक गण । २ मलमास । अधिमास ।
अवमति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अवज्ञा अपमान । तिरस्कार निंदा ।
अवमतिथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो ।
अवमर्दन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमर्दित] १ कष्ट पहुँचाना । पीड़ा देना । २ दलन । कुचलना । रौंदना या मलना । ३ पीसना ।
अवमर्श संधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार की संधियों में से एक (नाट्यशास्त्र) ।
अवमान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमानित] तिरस्कार । अपमान ।
अवमानना—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "अवमान" ।
क्रि० स० किसी का अपमान करना ।
अवमूल्यन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु के मूल्य या मान का अपकर्ष या न्यूनीकरण । २ किसी सरकार द्वारा अन्य देशों की तुलना में अपनी मुद्रा की विनिमयदर घटा देना । (अं० डीवैल्यूएशन)
अवयव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अंश । भाग । हिस्सा । २ शरीर का अंग । ३ तर्कपूर्ण वाक्य का एक अंश या भेद (न्याय) ।
अवयवी—वि० [सं० अवयविन्] १ जिसके बहुत से अवयव हों । अंगी । २ कुल । संपूर्ण ।
सञ्ज्ञा पुं० १ वह वस्तु जिसके बहुत से अवयव हों । २ देह । शरीर ।
अवर(पु)—वि० [सं० अपर] अन्य । दूसरा । और ।
वि० [सं० अ + वर] नीच । बुरा ।
अवरत—वि० [सं०] १ जो रत न हो । विरत । निवृत्त । २ ठहरा हुआ । स्थिर । ३ अलग । पृथक् ।
(पु)सञ्ज्ञा पुं० दे० "आवर्त्त" ।
अवरति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विराम । विश्राम । २ निवृत्ति । छुटकारा । मुक्ति ।
अवराधक—वि० [सं० आराधक] आराधना करनेवाला । पूजनेवाला ।
अवराधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० आराधन] आराधन । उपासना । पूजा । सेवा ।
अवराधना(पु)—क्रि० स० [हिं० अवराधन] उपासना करना । पूजना । सेवा करना ।
अवराधी(पु)—वि० [हिं० अवराधन] आराधना करनेवाला । उपासक । पूजक ।
अवरुद्ध—वि० [सं०] १ रुधा या रुका हुआ । २ गुप्त । छिपा हुआ । ३ घिरा हुआ ।
अवरूढ़—वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ । उतरा हुआ । "आरूढ़" का उलटा ।
अवरेखना(पु)—क्रि० स० [सं० आलेखन] १ उरेहना । लिखना । अंकित करना । टाँकना । चित्रित करना । २ देखना । ३ अनुमान करना । कल्पना करना । सोचना । ४ मानना । जानना ।
अवरेब—सञ्ज्ञा पुं० [फा० उरेब] १ वक्र गति । तिरछी चाल । २ कपड़े की तिरछी काट । ३ मोड़ ।
यौ०—अवरेबदार = तिरछी काट का ।
४ पेच । उलझन । ५ खराबी । कठिनाई । ६ झगड़ा । विवाद । खींचातानी ।
अवरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधक] १ रुकावट । अड़चन । बाधा । रोक । २ घेर लेना । मुहासिरा । ३ निरोध । बंदिश । ४ अनुरोध । दबाव । ५ अंतःपुर ।
अवरोधक—वि० [सं०] [स्त्री० अवरोधिका] रोकनेवाला । बाधक ।
अवरोधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधित, अवरोधी, अवरुद्ध] १ रोक । छेंक । २ अंतःपुर ।
अवरोधना(पु)—क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना । निषेध करना ।
अवरोधित—वि० [सं०] रोका हुआ ।

अवरोधी—वि० [सं० अवरोधिन्] [स्त्री० अवरोधिनी] रोकनेवाला। २ घेरनेवाला।
अवरोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतार। २ गिराव। अधःपतन। ३ अवनति।
अवरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] उतार। गिराव। पतन।
अवरोहना(पु)—क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।
क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
(पु)क्रि० स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।
क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना।
अवरोही (स्वर)—संज्ञा पुं० [सं० अवरोहिन्] वह स्वर-साधन जिसमें पहले षड्ज का उच्चारण हो, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें। विलोम। "आरोही" का उलटा।
अवर्ण—वि० [सं०] १. वर्णरहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३ वर्ण-धर्म रहित।
अवर्ण्य—वि० [सं०] जो वर्णन के योग्य न हो।
संज्ञा पुं० [सं० अ+वर्ण्य] जो वर्ण्य या उपमेय न हो। उपमान।
अवर्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आवर्त] १ पानी का भँवर या चक्कर। २ घुमाव। चक्कर।
अवर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का न होना।
अवलंघना—क्रि० स० [सं० अव+लंघन] लाँघना। डाकना।
अवलंब—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। सहारा।
अवलंबन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलंबनीय, अवलंबित, अवलंबी] १ आश्रय। आधार। सहारा। २ धारण। ग्रहण।
अवलंबना(पु)—क्रि० स० [सं० अवलंबन]। १ अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २ सहारा लेना। टेकना। धारण करना।
अवलंबित—वि० [सं०] १ आश्रित। सहारे पर स्थिर। टिका हुआ। टेका हुआ। २ निर्भर। किसी बात के होने पर होना स्थिर किया हुआ।
अवलंबी—वि० पुं० [सं० अवलंबिन्] [स्त्री० अवलंबिनी] १ अवलंबन करने-वाला। सहारा लेनेवाला। २ सहारा देनेवाला।
अवलिप्त—वि० [सं०] १ लगा या पोता हुआ। संसक्त २ आसक्त। अनुरक्त। रत। ३ घमंडी।
अवली(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] १ पंक्ति। पाँती। कतार। २ समूह। झुंड। ३ वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिये खेत से पहले पहल काटी जाती है।
अवलीक—वि० [सं० अव्यलीक] पापशून्य। निष्कलंक। शुद्ध।
अवलेखना—क्रि० स० [सं० अवलेखन] १ खोदना। खुरचना। २ चिह्न डालना।
अवलेप—संज्ञा पुं० [सं० अवलेपन] १ उबटन। लेप। २ घमंड। गर्व।
अवलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लगाना। पोतना। २ वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. घमंड। अभिमान। ४ ऐब।
अवलेह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलेह्य] १ लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २. चटनी। ३ वह औषध जो चाटी जाय।
अवलेहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाटना। २ चटनी।
अवलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] १ देखना। २ देखभाल। जाँच पड़ताल।
अवलोकना(पु)—क्रि० स० [सं० अवलोकन] १ देखना। २ जाँचना। अनुसंधान करना।
अवलोकनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अवलोकन] १ आँख। दृष्टि। २ चितवन।
अवलोकनीय—वि० [सं०] [स्त्री० अवलोकनीया] देखने योग्य। सुंदर।
अवलोचना(पु)—क्रि० स० [सं० अवलुंचन] दूर करना।
अवश—वि० [सं०] [भाव० अवशता] विवश। लाचार।
अवशिष्ट—वि० [सं०] शेष। बचा हुआ।
अवशेष—वि० [सं०] १ बचा हुआ। शेष। बाकी। २ समाप्त।
संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १ बची हुई वस्तु। २ अंत। समाप्ति।
अवश्यभावी—वि० [सं० अवश्यभाविन्] अवश्य होनेवाला। न टलनेवाला। अटल। ध्रुव।
अवश्य—क्रि० वि० [सं०] निश्चयपूर्वक। निःसंदेह। जरूर।
वि० [स्त्री० अवश्या] १ जो वश में न आ सके। २ जो वश में न हो। कट।
अवश्यमेव—क्रि० वि० [सं०] अवश्य ही। निःसंदेह। जरूर।
अवसन्न—वि० [सं०] [भाव० अवसन्नता] १ विषादप्राप्त। दुखी। २ नष्ट होनेवाला। ३ सुस्त। आलसी। निकम्मा।
अवसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। दैवयोग। मौका। इत्तफाक। २ समय। काल। ३. अवकाश। फुरसत।
मुहा०—अवसर चूकना = मौका हाथ से जाने देना।
४ एक काव्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक समय पर होना वर्णन किया जाय।
अवसर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] अधोगमन। अधःपतन। अवरोहण।
अवसर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।
अवसवो—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।
अवसाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवसादित, अवसन्न] १ नाश। क्षय। २ विषाद। खेद। रंज। ३ दीनता। ४ आशा या उत्साह का अभाव। ५ थकावट। ६ कमजोरी। ७ सुस्ती। आलस्य।
अवसान—संज्ञा पुं० [सं०] १ विराम। ठहराव। २ समाप्ति। अंत। ३ सीमा। ४ सायंकाल। ५ मरण।
अवसि—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।
अवसित—वि० [सं०] १. जिसका अवसान या अंत हुआ हो। समाप्त। २ गत। बीता हुआ। ३ बदला हुआ। परिणत।
अवसेख(पु)—वि० दे० "अवशेष"।
अवसेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सींचना। पानी देना। २ पसीजना। पसीना निकलना। ३ वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाय। ४ शरीर का रक्त निकालना।
अवसेर(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर ?] १ अटकाव। उलझन। २ देर। विलंब। ३ चिंता। व्यग्रता। उचाट। ४ हैरानी।
अवसेरना—क्रि० स० [हिं० अवसेर] १ तंग करना। दुःख देना। २ फँसाना। ३ देर करना।
अवसेषित(पु)—वि० दे० "अवशिष्ट"।
अवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दशा। हालत। २ समय। काल। ३ आयु। उम्र। ४ स्थिति। परिस्थिति। ५ मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६ मनुष्य-जीवन की आठ

अवस्थाएँ—कौमार, पौगंड, कैशोर, बाल तरुण, यौवन, वृद्ध और वर्षीयान्।

अवस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थान। जगह। २ ठहराव। टिकना। स्थिति।

अवस्थित—वि० [सं०] १. उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २ ठहरा हुआ। बैठा हुआ। रखा हुआ।

अवस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्तमानता। मौजूदगी। स्थिति। २ सत्ता। अस्तित्व।

अवहित्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] छिपाव। गोपन (साहित्य)।

अवहेलना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २ उपेक्षा। बेपरवाही।

(पु)क्रि० स० [सं० अवहेलना] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

अवहेला—संज्ञा स्त्री० दे० "अवहेलना"।

अवहेलित—वि० [सं०] जिसकी अवहेलना हुई हो। तिरस्कृत।

अवाँ—संज्ञा पुं० दे० "आँवाँ"।

अवांछनीय—वि० [सं०] जिसका होना अच्छा न समझा जाय। जिसकी इच्छा न की जाय। न चाहने लायक।

अवांछित—वि० दे० "अवांछनीय"।

अवांतर—वि० [सं०] अंतर्गत। मध्यवर्ती। बीच का।

संज्ञा पुं० [सं०] मध्य। बीच।

यौ०—अवांतर दिशा=बीच की दिशा। विदिशा। अवांतर भेद=अंतर्गत भेद। भाग का भाग। अवांतर दशा=बीच की अवस्था।

अवाँसना—क्रि० स० [सं० अनु+√वस्] १ नए बर्तन का व्यवहार आरंभ करना। काम में लाना। २ किसी स्त्री को रखना या उससे संबंध स्थापित करना। ३ काम में लाना।

अवाँसा—वि० [हिं० √अवाँस] काम में लाया हुआ। पुराना (बरतन)।

अवाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंश ?] वह बोझ जो नवान्न के लिये फसल में से पहले पहल काटा जाय। कवल। अवली।

वि० स्त्री० [सं० अनु+√वस्] काम में लाई गई।

अवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √आव+आई (प्रत्य०)] १ आगमन। आना। २ गहरी जोताई। 'सेव' का उलटा।

अवाक्—वि० [सं०] १ वाणी के बिना। चुप। मौन। २ स्तंभित। चकित। विस्मित।

अवाङ्मुख—वि० [सं०] १ अधोमुख। उलटा। नीचे मुँह का। २ लज्जित।

अवाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा।

अवाच्य—वि० [सं०] १ जो कुछ कहने या वर्णन करने योग्य न हो। अनिंदित। २ जिससे बात करना उचित न हो। नीच। ३ जिसका वर्णन न किया जा सके। अवर्णनीय।

संज्ञा पुं० [सं०] कुवाच्य। गाली। अपशब्द।

अवाज(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आवाज"।

अवार—संज्ञा पुं० [सं०] नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।

अवारजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० अवारिजः] १ वह बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है। २ जमाखर्च की बही।

अवारना(पु)—क्रि० स० [सं० अवारण] १ रोकना। मना करना। २ दे० "वारना"।

संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १ किनारा। मोड। २ मुख। विवर। मुँह का छेद।

अवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारण] १. बाग। लगाम।

संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] किनारा। मोड़।

अवास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आवास"।

अवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ मदार। आक। ३ भेड़ा। ४ बकरा। ५ पर्वत।

अव्य० [सं० अपि] और। और भी।

अविकच—वि० [सं० अ+विकच] १. जो विकसित न हुआ हो। बिना खिला हुआ। २. जो सफल या पूर्णकाम न हुआ हो।

अविकल—वि० [सं०] १ ज्यों का त्यों। बिना उलट फेर का। २ पूर्ण। पूरा। ३ निश्चल। शांत।

अविकल्प—वि० [सं०] १ निश्चित। २ निःसंदेह। असंदिग्ध।

अविकार—वि० [सं०] १ विकार-रहित। निर्दोष। २ जिसका रूपरंग न बदले।

संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी—वि० [सं० अविकारिन्] [स्त्री० अविकारिणी] १. जिसमें विकार न हो। जो एक सा रहे। निर्विकार। २ जो किसी का विकार न हो।

अविकृत—वि० पुं० [सं०] जो विकृत न हो। जो बिगड़ा या बदला न हो।

अविगत—वि० [सं०] १ जो जाना न जाय। २ अज्ञात। ३ अनिर्वचनीय। ४ जिसका नाश न हो। नित्य।

अविचल—वि० [सं०] जो विचलित न हो। अचल। स्थिर। अटल।

अविचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. विचार का अभाव। २ अज्ञान। अविवेक। ३ अन्याय। अत्याचार।

अविचारी—वि० [सं० अविचारिन्] [स्त्री० अविचारिणी] १. विचारहीन। अविवेकी। २ बेसमझ। ३ अत्याचारी। अन्यायी।

अविच्छिन्न—वि० [सं०] अटूट। लगातार। व्यवधानरहित।

अविच्छेद—वि० [सं०] जिसका विच्छेद न हो। अटूट। लगातार।

अविजित—वि० [सं०] जो जीता न गया हो।

अविज्ञ—वि० [सं०] [भाव० अविज्ञता] अनजान। अज्ञानी। नासमझ।

अविज्ञात—वि० [सं०] १. अनजाना। अज्ञात। २ बेसमझा। अर्थनिश्चय-शून्य।

अविज्ञेय—वि० पुं० [सं०] जो जाना न जा सके। न जानने योग्य।

अवितथ—वि० [सं०] जो मिथ्या न हो। सत्य।

अविदित—वि० [सं०] जो विदित न हो। अज्ञात। बिना जाना हुआ।

अविद्यमान—वि० [सं०] १. जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। २ असत। ३. मिथ्या। असत्य।

अविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। २ मोह। माया का एक भेद। ३. कर्मकांड। ४ सांख्य-शास्त्रानुसार प्रकृति। जड़।

अविधि—वि० [सं०] विधि-विरुद्ध। नियम के विपरीत।

अविनय—संज्ञा पुं० [सं०] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।

अविनश्वर—वि० [सं०] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। चिरस्थायी। अनत।

अविनाभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ नित्य संबंध। २ व्याप्य-व्यापक संबंध, जैसे, अग्नि और धूम का। ३ जिसके बिना किसी दूसरे का होना संभव न हो।

अविनाश—संज्ञा पुं० [सं०] विनाश का अभाव। अक्षय।

अविनाशी—वि० पुं० [सं० अविनाशिन्] [स्त्री० अविनाशिनी] १. जिसका विनाश न हो। अक्षय। २ नित्य। शाश्वत। सनातन।

अविनीत—वि० [सं०] [स्त्री० अविनीता] १ जो विनीत न हो। उद्धत। २. दुर्दांत। सरकश। ३ दुष्ट। ४ ढीठ।

अविभक्त—वि० [सं०] १ जो बाँटा न गया हो। २ मिला हुआ। सम्मिलित। शामिलाती। ३ अभिन्न। एक।

अविभिन्न—वि० [सं०] १ जो विभिन्न या अलग न हो। एक में मिला हुआ। अभिन्न। २ एक ही तरह का।

अविमुक्त—वि० पुं० [सं०] जो विमुक्त न हो। बद्ध।

संज्ञा पुं० [सं०] कनपटी।

अविरत—वि० [सं०] १ विरामशून्य। निरंतर। २ लगा हुआ।

क्रि० वि० [सं०] १ निरंतर। लगातार। २. नित्य। हमेशा।

अविरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निवृत्ति का अभाव। लीनता। २ विषयासक्ति। ३. अशांति।

अविरथा(पु)—क्रि० वि० दे० "वृथा"।

अविरल—वि० [सं०] १. मिला हुआ। २ घना। सघन। ३ निरंतर।

अविराम—वि० [सं०] १ बिना विश्राम लिए हुए। २ लगातार। निरंतर। बिना रुके हुए।

अविरुद्ध—वि० [सं०] जो विरुद्ध न हो। अनुकूल।

अविरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विरोध का अभाव। २ समानता। अनुकूलता। ३ मेल। संगति।

अविरोधी—वि० [सं० अविरोधिन्] १ जो विरोधी न हो। अनुकूल। २ मित्र।

अविलंब—क्रि० वि० [सं०] बिना देर किए। तुरत। फौरन।

अविवाद—संज्ञा पुं० [सं० अ+विवाद] विवाद का अभाव।

वि० जिसके संबंध में किसी प्रकार का मतभेद न हो। निर्विवाद।

अविवाहित—वि० [सं०] [स्त्री० अविवाहिता] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।

अविवेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवेक का अभाव। अविचार। २ अज्ञान। नादानी। ३ अन्याय।

अविवेकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "अविवेक।"

अविवेकी—वि० [सं० अविवेकिन्] १. अज्ञानी। विवेक-रहित। २ अविचारी। ३ मूढ़। मूर्ख। ४ अन्यायी।

अविशेष—वि० [सं०] साधारण। भेदक धर्मरहित। तुल्य। समान। बिना अंतर का।

संज्ञा पुं० १ भेदक धर्म का अभाव। २ सांख्य में शांतत्व, घोरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।

अविश्रांत—वि० [सं०] जो थका न हो। अनवरत।

क्रि० वि० १ बिना रुके हुए। २ निरंतर।

अविश्रम्भणीय—वि० [सं०] जिसपर विश्राम न किया जा सके। जो माना न जा सके। जिसका भरोसा न किया जा सके।

अविश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्वास का अभाव। बेएतबारी। २ अनिश्चय।

अविश्वासी—वि० [सं० अविश्वासिन्] १ जो किसी पर विश्वास न करे। २ जिसपर विश्वास न किया जाय।

अविषय—वि० [सं०] १ जो मन या इंद्रिय का विषय न हो। अगोचर। २ अनिर्वचनीय। ३ प्रकरण विरुद्ध।

अविहड़(पु)—वि० [सं० अ+विघट] जो खंडित न हो। अघट। अनश्वर।

अविहित—वि० [सं०] जो शास्त्रोक्त न हो। वेदविरुद्ध। अनुचित।

अवीरा—वि० [सं०] १. पुत्र और पति रहित (स्त्री)। २ स्वतंत्र (स्त्री)।

अवेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] १ अवलोकन। देखना। २ जाँच-पड़ताल। देखभाल।

अवेज(पु)—संज्ञा पुं० [अ० एवज] बदला। प्रतीकार।

अवेस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आवेश"।

अवैतनिक—वि० [सं०] बिना वेतन या तनख्वाह का।

अवैदिक—वि० [सं०] १ वेदविरुद्ध। २ वेदों के बाहर का।

अवैध—वि० [सं०] विधि, कानून, नियम या रीति के विरुद्ध। गैरकानूनी। गैर-वाजिब। नाजायज।

अव्यक्त—वि० [सं०] १ अप्रत्यक्ष। अप्रकट। अगोचर। जो जाहिर न हो। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. जिसमें रूप-गुण न हो।

संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ कामदेव। ३. शिव। ४ प्रधान। प्रकृति (सांख्य)। ५ सूक्ष्मशरीर ६ सुषुप्ति अवस्था। ७ ब्रह्म। ८ बीजगणित में वह राशि जिसका मान अनिश्चित हो। अनवगत राशि। ९ जीव।

अव्यक्त गणित—संज्ञा पुं० [सं०] बीजगणित।

अव्यक्तलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसका कोई चिह्न प्रकट न हो। व्यंजक चिह्नों से रहित। २ वह रोग जो पहचाना न जाय। ३ महत्तत्व आदि। ४ संन्यासी।

अव्यय—वि० [सं०] १ जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। अक्षय। २ नित्य। आदि-अंत-रहित।

संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप दोनों लिंगों, दोनों वचनों और सब कारकों में एक ही हो। परिवर्तन रहित। २ परब्रह्म। ३ शिव। ४ विष्णु।

अव्ययीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह समास जिसमें पहला पद प्रधान होता है और समस्त शब्द क्रिया-विशेषण अव्यय होता है।

अव्यर्थ—वि० [सं०] १ जो व्यर्थ न हो। सफल। २ सार्थक। ३ अमोघ। न चूकनेवाला। ४ अवश्य असर करनेवाला।

अव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्यवस्थित] १ नियम का न होना। बेकायदगी। अनियंत्रण। २ प्रतिष्ठा या मर्यादा का न होना। ३ शास्त्रादिविरुद्ध व्यवस्था। अविधि। ४ बदइंतजामी। गड़बड़।

अव्यवस्थित—वि० [सं०] १ शास्त्रादि-मर्यादा-रहित। अनियमित। २ बेठिकाने का। बेढंगा। ३ चंचल। अस्थिर।

अव्यवहार्य—वि० [सं०] १ जो व्यवहार में न लाया जा सके। २ पतित।

अव्याकृत—वि० [सं०] १ जिसमें विकार न हो। २ अप्रकट। गुप्त। ३ कारणरूप। ४ सांख्य शास्त्रानुसार प्रकृति।

अव्याप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्याप्त] १ व्याप्ति का अभाव। विस्तार की कमी। २ न्याय में संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।

अव्यावृत—वि० [सं०] १ निरंतर। लगातार। अटूट। २ ज्यों का त्यों।

अव्याहत—वि० [सं०] १. बेरोक । बाधा-रहित । २ सत्य । ठीक । युक्तियुक्त ।

अव्युत्पन्न—वि० [सं०] १ अकुशल । अनभिज्ञ । मंद । कुंद । २. व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके ।

अव्वल—वि० [अ०] १ पहला । आदि का । प्रथम । २ उत्तम । श्रेष्ठ ।
संज्ञा पुं० आदि । प्रारंभ ।

अशंक—वि० [सं०] बेडर । निर्भय ।

अशंभु—संज्ञा पुं० [सं० अ+शंभु] अनिष्ट । अमंगल । अहित । खराबी ।

अशकुन—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा शकुन । असगुन । बुरा लक्षण ।

अशक्त—वि० [सं०] १ निर्बल । कमजोर । २ असमर्थ ।

अशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अशक्त] १. निर्बलता । कमजोरी । २. इंद्रियों और बुद्धि का बेकाम होना । (सांख्य)

अशक्य—वि० [सं०] असाध्य । न होने योग्य । सामर्थ्य के बाहर का ।

अशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन । आहार । २ खाने की क्रिया ।
वि० [स्त्री० अशना] खानेवाला । (यौ० के अंत में जैसे—पर्णाशन, फलाशन आदि) ।

अशनि—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र । बिजली ।

अशरण—वि० [सं०] जिसे कहीं शरण न हो । अनाथ । निराश्रय ।

अशरफी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सोने का एक सिक्का । मोहर । २ पीले रंग का एक फूल ।

अशराफ—वि० बहु० [अ० शरीफ का बहु०] शरीफ । भद्र ।

अशरीरी—वि० [सं० अ+शरीरिन्] जिसका शरीर न हो । बिना शरीर का ।

अशांत—वि० [सं०] जो शांत न हो । अस्थिर । चंचल ।

अशांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अशांत] १. अस्थिरता । चंचलता । २ क्षोभ । असंतोष ।

अशिक्षित—वि० [सं०] जिसने शिक्षा न पाई हो । बेपढ़ा-लिखा । अनपढ़ ।

अशिव—संज्ञा पुं० [सं०] अमंगल । अहित ।
वि० अमंगल या अहित करनेवाला ।

अशिष्ट—वि० [सं०] उजड्ड । बेहूदा । गँवार ।

अशिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ असाधुता । बेहूदगी । उजड्डपन । २. ढिठाई ।

अशुचि—वि० [सं०] [संज्ञा अशौच, अशुचिता] १ अपवित्र । २ गंदा । मैला ।

अशुद्ध—वि० [सं०] १. अपवित्र । नापाक । २. बिना शोधा हुआ । असंस्कृत । ३ गलत ।

अशुद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपवित्रता । गंदगी । २. गलती ।

अशुद्धि—संज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता" ।

अशुन(ु)—संज्ञा पुं० [सं० अश्विनी] अश्विनी नक्षत्र ।

अशुभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अमंगल । अहित । २ पाप । अपराध ।
वि० [सं०] जो शुभ न हो । बुरा ।

अशेष—वि० [सं०] १. पूरा । समूचा । २. समाप्त । खतम । ३ अनंत । बहुत ।

अशोक—वि० [सं०] शोकरहित । दुःखशून्य ।
संज्ञा पुं० १ एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं । २ पारा ।

अशोकपुष्प-मंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दंडक वृत्त का एक भेद । २ अशोक के फूल की वल्लरी ।

अशोक-वाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अशोक वृक्षों की बगीची । २ रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमें उसने सीता जी को रखा था ।

अशोच्य—वि० [सं०] जिसके संबंध में किसी प्रकार का शोक या चिंता करने की आवश्यकता न हो ।

अशौच—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अशुचि] १ अपवित्रता । अशुद्धता । २ हिंदू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो लोगों को किसी निकट संबंधी के मरने या संतान के होने पर कुछ दिनों तक लगती है ।

अश्मंतक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूँज की तरह की एक घास जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे । २ आच्छादन । ढकना ।

अश्म—संज्ञा पुं० [सं० अश्मन्] १ पत्थर । २. पहाड़ । पर्वत । ३ बादल । मेघ ।

अश्मक—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम । त्रावंकोर ।

अश्मकुट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के वानप्रस्थ या यती जो केवल पत्थर से कूटा हुआ अन्न खाते थे ।

अश्मरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के समान कड़े कण बन जाते हैं और मूत्रावरोध से असह्य वेदना होती है । पथरी रोग ।

अश्रद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अश्रद्धेय] १ श्रद्धा का अभाव । २. घृणा । नफरत ।

अश्रांत—वि० [सं०] जो थका माँदा न हो ।
क्रि० वि० लगातार । निरंतर ।

अश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँसू । २ सात्विक भावों में से एक । हर्ष, दुःख, भय आदि के कारण आँसू के रूप में प्रकट होनेवाला एक भाव ।

अश्रु गैस—संज्ञा स्त्री० दे० "आँसू-गैस ।"

अश्रुत—वि० [सं०] १ जो सुना न गया हो । २ जिसने कुछ देखा सुना न हो ।

अश्रुतपूर्व—वि० [सं०] १. जो पहले न सुना गया हो । २. अद्भुत । विलक्षण ।

अश्रुपात—संज्ञा पुं० [सं०] आँसू का गिरना या गिराना । रोना ।

अश्लिष्ट—वि० [सं०] श्लेषशून्य । जो जुड़ा या मिला न हो । असंबद्ध ।

अश्लील—वि० [सं०] फूहड़ । भद्दा । गंदा । लज्जाजनक ।

अश्लीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्लज्जता फूहड़पन । भद्दापन (काव्य में एक दोष) ।

अश्लेषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में से नवाँ ।

अश्व—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा । तुरंग ।

अश्वकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का शाल वृक्ष । २ लताशाल ।

अश्वगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "असगंध ।"

अश्वगति—संज्ञा पुं० [सं०] १ १६ वर्णों का एक वृत्त जिसमें ५ भगण और अंत्य गुरु होता है अथवा ५ भगण और अंत्य नगण कुल १८ अक्षर होते हैं । २ एक चित्रकाव्य ।

अश्वतर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अश्वतरी] १ खच्चर । २ बछड़ा । ३ नागराज । ४ गंधर्व विशेष ।

अश्वत्थ—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल ।

अश्वत्थामा—संज्ञा पुं० [सं० अश्वत्थामन्] १ द्रोणाचार्य के पुत्र । २ महाभारत-कालीन एक हाथी ।

अश्वपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ घुड़सवार । २ रिसालदार । ३ घोड़ों का मालिक । ४ भरत जी के नाना । ५ केकय देश के राजकुमारों की उपाधि ।

अश्वपाल—संज्ञा पुं० [सं०] साईस।

अश्वमेध—संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ जिसमें राजा द्वारा मस्तक पर जयपत्र बाँधकर छोड़ा हुआ एक घोड़ा मार्गावरोध करनेवालों को जीतते हुए दुनिया भर में घुमाया जाता था। घोड़े के सुरक्षित लौट आने पर उसका स्वामी अपने को सम्राट् घोषित कर उस घोड़े की चर्बी से यज्ञ करता था।

अश्वशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। घुड़साल। अस्तबल। तबेला।

अश्वारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी। जीन सवारी।

अश्वारोही—वि० [सं० अश्वारोहिन्] [स्त्री० अश्वारोहिणी] घोड़े का सवार।

अश्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २ २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।

अश्विनीकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री "प्रभा" से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

असाढ़(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।

अष्ट—वि० [सं०] आठ।

अष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आठ वस्तुओं का संग्रह। २. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक हों।

अष्टकमल—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग में मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल।

अष्टका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अष्टमी के दिन का कृत्य। २ अष्टकायोग।

अष्टकुल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।

अष्टकृष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ संप्रदाय के अनुसार भगवान् कृष्ण की आठ मूर्तियाँ, यथा—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारिकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्र और मदनमोहन।

अष्टद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सफेद सरसों, पायस और घी।

अष्टधात—संज्ञा स्त्री० दे० "अष्टधातु"।

अष्टधाती—वि० [हिं० अष्टधात+ई] १ अष्टधातुओं से बना हुआ। २ दृढ़। मजबूत। ३ उत्पाती। उपद्रवी। ४. वर्णसंकर (व्यंग्य)।

अष्टधातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

अष्टपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का गीत जिसमें आठ पद होते हैं। २. बेले का फूल या पौधा।

अष्टपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरभ। शार्दूल। २ लूता। मकड़ी। ३ एक भीषण समुद्री जंतु जिसके आठ पैर या बाँहें होती हैं (अं० आक्टोपस)।

अष्टप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी, यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक् और प्रतिनिधि।

अष्टभुजा—स्त्री० स्त्री० [सं०] दुर्गा। शक्ति का आठ भुजाओंवाला रूप।

अष्टभुजी—संज्ञा स्त्री० दे० "अष्टभुजा"।

अष्टमंगल—संज्ञा पुं० [सं०] आठ मंगल-द्रव्य—सिंह, वृष, हाथी, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक।

अष्टम—वि० पुं० [सं०] आठवाँ।

अष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण-पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. शिव की आठ मूर्तियाँ—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव।

अष्टवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ आठ ओषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २ ज्योतिष का एक गोचर। ३ राज्य के ऋषि, वणिक्, दुर्ग, सेना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य-संस्थापन का समूह।

अष्टांग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अष्टांगी] १ योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २ आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण। ३ शरीर के आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

वि० [सं०] १ आठ अवयवोंवाला। २ अठपहल।

अष्टांगी—वि० [सं० अष्टांगिन्] आठ अंगोंवाला।

अष्टाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] आठ अक्षरों का मंत्र।

वि० [सं०] आठ अक्षरों का।

अष्टाध्यायी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाणिनि का संस्कृत व्याकरण-संबंधी आठ अध्यायों का सूत्र-पाठ।

अष्टापद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ मकड़ी। ३ कैलाश। ४ सिंह। शेर।

अष्टावक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि। २ टेढ़े मेढ़े अंगों का मनुष्य।

अष्ठीला—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और मूत्रेंद्रिय में गाँठ पड़ जाती है।

अषिर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] उपदेश। मंत्र। उ०—जे वेधे गुर अषिरा तिनि ममा चुणि चुणि खद्ध।—कबीर०।

असक(पु)—वि० दे० "अशक"।

असंक्रांति मास—संज्ञा पुं० [सं०] अधिक-मास। मलमास। चांद्र गणना का वह महीना जो सौर वर्ष से मिलाने के लिये हर तीसरे वर्ष में बढ़ा दिया जाता है।

असंख्य—वि० [सं०] अनगिनत। जो गिना न जा सके।

असंग(पु)—वि० [सं०] १ अकेला। एकाकी। २ किसी से वासना न रखने-वाला। निर्लिप्त। ३ अलग। ४ विरक्त।

असंगत—वि० [सं०] १ अयुक्त। प्रसंग रहित। बेलगाव। बेमेल। २ अनुचित।

असंगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेसिल-सिलापन। बेमेल होने का भाव। २ अनुपयुक्तता। ३ एक काव्यालंकार जिसमें कारण और कार्य अलग अलग बताए जायँ।

असंत—वि० [सं०] खल। दुष्ट। दुराचारी। दुश्चरित्र।

असंतुष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा असंतुष्टि] १ जो संतुष्ट न हो। २ अतृप्त। जिसका मन न भरा हो। ३ अप्रसन्न।

असंतुष्टि—संज्ञा स्त्री० दे० "असंतोष"।

असंतोष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० असंतोषी] १ संतोष का अभाव। अधैर्य। २ अतृप्ति। ३ अप्रसन्नता।

असंबद्ध—वि० [सं०] १. जो मेल में न हो। २ पृथक्। अलग। ३ अनमिल। बेमेल। अटपट, जैसे, असंबद्ध प्रलाप।

असंबाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

असंभव—वि० [सं०] जो संभव न हो। जो हो न सके। नामुमकिन।

संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।

असंभवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] असंभव होने का भाव। न होनेवाला गुण।

असंभार—वि० [हिं० अ+संभार] १. जो सँभालने योग्य न हो। २. अपार। बहुत बड़ा।

असंभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संभावना का अभाव। अनहोनापन। २. अप्रतिष्ठा। अनादर। ३. मोह। विमोह। उ०—हारन असंभावना बीती।—मानस।

असंभावित—वि० [सं०] जिसके होने का अनुमान न किया गया हो। अनुमानविरुद्ध।

असंभाव्य—वि० [सं०] न होने योग्य। अनहोना।

असंभाष्य—वि० [सं०] १. न कहने योग्य। २. जिससे बातचीत करना उचित न हो। बुरा।

असंमत—वि० [सं०] १. जो राजी न हो। विरुद्ध। २. जिसपर किसी की राय न हो।

असंमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० असंमत] संमति का अभाव। विरुद्ध मत या राय।

असंयत—वि० [सं०] संयमरहित। जो संयत या नियमबद्ध न हो।

असंस्कृत—वि० [सं०] १. बिना सुधारा हुआ। अपरिमार्जित। २. जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो।

अस(पु)†—वि० [सं० ईदृश] १. इस प्रकार का। ऐसा। २. समान।

क्रि० वि० [सं० ईदृश] ऐसे। इस प्रकार।

असकताना—क्रि० अ० [हिं० आलस] आलस्य करना। आलसी होना। कुछ करने में सुस्ती रखना।

असकरा—संज्ञा पुं० [सं० असि+करण] लोहे का एक औजार जिससे म्यान के भीतर की लकड़ी साफ की जाती है।

असक्त(पु)—वि० दे० "अशक्त"।

असगंध—संज्ञा स्त्री० [सं० अश्वगंधा] छोटे गोल फलवाली एक झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम आती है। असगंधा।

असगुन—संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।

असज्जन—वि० [सं०] खल। दुष्ट। बुरा आदमी।

असत्—वि० [सं०] १. अस्तित्वविहीन। सत्तारहित। २. बुरा। खराब। ३. असाधु। ४. मिथ्या। अतात्विक। असत्य।

असत—वि० दे० "असत्"।

असती—वि० [सं०] जो सती न हो। कुलटा। पुंश्चली।

असत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ता का अभाव। अनस्तित्व। २. असज्जनता।

असत्य—वि० [सं०] मिथ्या। झूठ।

असत्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथ्यात्व। झुठाई।

असत्यवादी—वि० [सं०] झूठा। झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी।

असथान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] देवस्थान। उ०—दहुँ का होइ देव असथान।—पदमावत।

असन—संज्ञा पुं० [सं० अशन] भोजन।

असफल—वि० दे० "विफल"।

असफलता—संज्ञा स्त्री० दे० "विफलता"।

असबर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] तुर्किस्तान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रँगने के काम आते हैं।

असबाब—संज्ञा पुं० [अ०] चीज। वस्तु। सामान।

यौ०—माल-असबाब।

असभ्यई—संज्ञा स्त्री० [सं० असभ्यता] अशिष्टता। असभ्यता। गँवारपन।

असभ्य—वि० [सं०] अशिष्ट। गँवार। उजड्ड।

असभ्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अशिष्टता। गँवारपन।

असमंजस—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुविधा। आगापीछा। २. अनिश्चय। अड़स। ३. अड़चन। कठिनाई।

असमंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अश्मन्त] चूल्हा।

असम—वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। असदृश। २. विषम। ३. ऊँचा नीचा। ४. एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव बतलाया जाय। ५. आसाम प्रदेश।

असमबाण—संज्ञा पुं० दे० "असमशर"।

असमय—संज्ञा पुं० [सं०] विपत्ति का समय। बुरा समय।

क्रि० वि० १. कुअवसर। बेमौका। उचित समय से पहले।

असमर्थ—वि० [सं०] १. सामर्थ्यहीन। दुर्बल। अशक्त। २. अयोग्य।

असमवायि कारण—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो।

असमशर—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

असमान—वि० [सं०] जो समान या बराबर न हो। असम।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "आसमान"।

असमाप्त—वि० [सं०] [संज्ञा असमाप्ति] अपूर्ण। अधूरा।

असमेघ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध"।

असयाना(पु)—वि० [हिं० अ+सयाना] १. सीधा-सादा। जो चालाक न हो। २. अनाड़ी। मूर्ख।

असर—संज्ञा पुं० [अ०] प्रभाव।

असरार(पु)—क्रि० वि० [अ० इसरार] हठपूर्वक। उ०—कैसो कहि कहि कूकिए, ना सोइये असरार।—कबीर।

असराल—वि० [सं० अ+सरल] कठिन। भयंकर।

असल—वि० [अ०] १. सच्चा। खरा। २. उच्च। श्रेष्ठ। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध। ४. जो झूठा या बनावटी न हो।

संज्ञा पुं० १. जड़। बुनियाद। २. मूलधन।

असलियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तथ्य। वास्तविकता। २. मूल। ३. मूलतत्व। सार।

असली—वि० [अ० असल] १. सच्चा। खरा। २. मूल। प्रधान। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध।

असवार†—संज्ञा पुं० दे० "सवार"।

असह(पु)—वि० दे० "असह्य"।

असहन—वि० १. दे० "असह्य"। २. दे० "असहनशील"।

असहनशील—वि० [सं०] [संज्ञा असहनशीलता] १. जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। असहिष्णु। २. चिड़चिड़ा।

असहनीय—वि० [सं०] न सहने योग्य। जो बर्दाश्त न हो सके। असह्य।

असहयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलकर काम न करना। २. गाँधी जी द्वारा १९२० में प्रवर्तित आधुनिक भारतीय राजनीति का वह सिद्धांत जिसके अनुसार शासन में असंतोष प्रकट करने के लिये प्रजा या उसका कोई वर्ग प्रत्येक प्रशासनिक कार्य में योग देना बंद रखे।

असहाय—वि० [सं०] जिसे कोई सहारा न हो। निःसहाय। निराश्रय। २. अनाथ।

असहिष्णु—वि० [सं०] [संज्ञा असहिष्णुता] दे० "असहनशील।"

असही—वि० [सं० असह+हिं० ई प्रत्य०] दूसरे को देखकर जलनेवाला। ईर्ष्यालु।

असह्य—वि० [सं०] जो बर्दाश्त न हो सके। असहनीय।

असाँच(पु)—वि० [सं० असत्य] असत्य। झूठ। मृषा।

असा—संज्ञा पुं० [अ०] १ सोंटा। डंडा। २ चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा।

असाई(पु)—वि० [सं० अशालीन] अशिष्ट। असौम्य। बेहूदा। बदतमीज।

असाढ़—संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।

असाढ़ी—वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का।
संज्ञा स्त्री० १. वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय। २. आषाढ़ी पूर्णिमा।

असाध(पु)—वि० १. दे० "असाध्य"। २ दे० "असाधु"।

असाधारण—वि० [सं०] १ जो साधारण न हो। असामान्य। २ आकस्मिक। ३. विशिष्ट।

असाधु—वि० [सं०] [स्त्री० असाध्वी] १. दुष्ट। दुर्जन। २ अविनीत। अशिष्ट।

असाध्य—वि० [सं०] १. न होने योग्य। दुष्कर। कठिन। २ आरोग्य न होने के योग्य, जैसे असाध्य रोग।

असामयिक—वि० [सं०] जो नियत समय से पहले या पीछे हो। बिना समय का।

असामर्थ्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्ति का अभाव। अक्षमता। २. कमजोरी। सामर्थ्यहीनता।

असामान्य—वि० [सं०] दे० "असाधारण"।

असामी—संज्ञा पुं० [अ० इस्म (नाम) का बहु०। हिंदी में एक०] १ व्यक्ति। प्राणी। २. जिससे किसी प्रकार का लेनदेन हो। ३ वह जिसने लगान पर जोतने के लिये खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। जोता। ४. मुद्दालेह। ५ देनदार। ६. ग्राहक। ७ अपराधी। मुलजिम। ८ वह जिससे किसी प्रकार का आर्थिक लाभ होना हो या मतलब सिद्ध हो (व्यंग्य)।
संज्ञा स्त्री० नौकरी। जगह।

असार—वि० [सं०] [संज्ञा असारता] १ सार रहित। निस्सार। २. शून्य। खाली। ३ तुच्छ।

असालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कुलीनता। २ सचाई। तत्त्व। ३ असलियत।

असालतन—क्रि० वि० [अ०] स्वयं। खुद।

असावधान—वि० [सं०] जो सावधान या सतर्क न हो। जो सचेत न हो। जो होशियार न हो। जो चौकन्ना न हो।

असावधानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रमाद। गफलत। बेखबरी। लापरवाही।

असावधानी—संज्ञा स्त्री० दे० "असावधानता"।

असावरी—संज्ञा स्त्री० [सं० आसावरी] छत्तीस रागिनियों में से एक।

असासा—संज्ञा पुं० [अ०] माल-असबाब। संपत्ति।

असि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तलवार। खड्ग।
वि० स्त्री० दे० "ऐसी"।

असित—वि० [सं०] [स्त्री० असिता] १ काला। २. दुष्ट। बुरा। ३ टेढ़ा। कुटिल।

असिद्ध—वि० [सं०] १ जो सिद्ध न हो। २ बे-पका। कच्चा। ३ अपूर्ण। अधूरा। ४ निष्फल। व्यर्थ। ५ अप्रमाणित।

असिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्राप्ति। असफलता। २ कच्चापन। कचाई। ३ अपूर्णता। प्रमाणहीनता।

असिपत्र वन—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणों में वर्णित एक नरक जहाँ पेड़ों के पत्ते तलवार के समान तेज होते हैं।

असिस्टेंट—संज्ञा पुं० [अँ०] सहायक। मददगार (कर्मचारी)। मातहत।

असी—संज्ञा स्त्री० [सं० असि] एक नाला जो काशी में गंगा से मिला है। प्राचीन-काल में यह नदी के रूप में था और "वाराणसी" की दक्षिणी सीमा माना जाता था।

असीम—वि० [सं०] १ सीमारहित। बेहद। २ अपरिमित। अनंत। ३ अपार।

असीमित—वि० दे० "असीम"।

असील(पु)—वि० दे० "असल"।

असीस(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

असीसना—क्रि० स० [सं० आशिष] आशीर्वाद देना। दुआ देना।

असुंदर—वि० [सं० अ+सुंदर] जो सुंदर न हो। कुरूप। भद्दा।

असु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अश्व"।

असुग(पु)—वि० [सं० आशुग] जल्दी चलनेवाला। तेज। शीघ्रगामी।
संज्ञा पुं० १. वायु। २ तीर। बाण।

असुदल—संज्ञा पुं० [सं० अश्व+दल] अश्वसेना।

असुपति—संज्ञा पुं० [सं० अश्वपति] एक प्राचीन पदाधिकारी।

असुभ(पु)—वि० दे० "अशुभ"।

असुमेध—संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध"।

असुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दैत्य। राक्षस। २ रात्रि। ३ नीच वृत्ति का पुरुष। ४. सूर्य। ५. बादल। ६ राहु। ७ एक प्रकार का उन्माद।

असुरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस। (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है।)

असुराई—संज्ञा स्त्री० [सं० असुर] १. असुरों का सा काम या व्यवहार। दानवता। २ नीचता। खोटाई।

असुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ दानवों का शत्रु। देवता। २ विष्णु।

असुविधा—संज्ञा स्त्री० [सं० अ=नहीं+सुविधा=आसानी] १ कठिनाई। अड़चन। २ तकलीफ। दिक्कत।

असुहाता—वि० [सं० अ+हिं० सुहाता] [स्त्री० असुहाती] १ जो अच्छा न लगे। २ बुरा। खराब। भद्दा।

असूझ—वि० [सं० अ+हिं० सूझ] १ अँधेरा। अंधकारमय। २ जिसका ओरछोर न दिखाई पड़े। अपार। बहुत विस्तृत। ३ जिसके करने का उपाय न सूझे। विकट। कठिन।

असूत(पु)—वि० [सं० असूत] विरुद्ध। असंबद्ध।

असूया—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० असूयक] पराए गुणों में भी दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह। (रस के अंतर्गत एक संचारी भाव।)

असूर्यपश्या—वि० [सं०] १ सूर्य को न देखनेवाली। २ घोर पर्दे में रहनेवाली।

असूल—संज्ञा पुं० दे० १ "उसूल" और २ "वसूल"।

असेग(पु)—वि० [सं० असह्य] न सहने योग्य। असह्य। कठिन।

असेसर—संज्ञा पुं० [अँ०] जज या मजिस्ट्रेट को सलाह देनेवाला व्यक्ति।

असैला(पु)—वि० [सं० अ+शैली=रीति] [स्त्री० असैली] १ रीतिनीति के विरुद्ध काम करनेवाला। कुमार्गी। २. शैली के विरुद्ध। अनुचित।

असोग—संज्ञा पुं० दे० "अशोक"।

असोच—संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० सोच] चिंतारहित। निश्चिंत।
वि० [सं० अशुचि] अपवित्र। अशुद्ध।

असोज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज] आश्विन। क्वार मास।

असोस(पु)—वि० [सं० अ+शोष] जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।

असौंध(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अ+हिं० सौंध=सुगंध] दुर्गंध। बदबू।

अस्टधातु—संज्ञा स्त्री० दे० "अष्टधातु"।

अस्टौकुरी—वि० [सं० अष्ट+कुल] अष्टकुल का। अष्टकुल संबंधी।

अस्तंगत—वि० [सं०] १ जो अस्त हो चुका हो। डूबा हुआ (ग्रह)। २ नष्ट। ३. अवनत। हीन। ४ समाप्त।

अस्त—वि० [सं०] १. छिपा हुआ। तिरोहित। २ जो न दिखाई पड़े। अदृश्य। ३ डूबा हुआ (सूर्य, चंद्र आदि ग्रह)। ४. नष्ट। ध्वस्त।

संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन।

अस्तन—संज्ञा पुं० दे० "स्तन"।

अस्तबल—संज्ञा पुं० [अ०] घुड़साल। तबेला।

अस्तमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अस्तमित] १. अस्त होना। २ ग्रहों का अस्त होना।

अस्तमित—वि० [सं०] १. तिरोहित। छिपा हुआ। २ डूबा हुआ। ३. नष्ट। ४. मृत।

अस्तर—संज्ञा पुं० [फा०] १. नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। एक कपड़े के नीचे लगा हुआ दूसरा कपड़ा। २ दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३ चंदन, तिल आदि का वह तेल जिसे आधार बनाकर इत्र या अन्य तेल बनाए जाते हैं। जमीन। ४. वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट। ५. वह मसाला जिससे किसी चित्र की जमीन या सतह तैयार की जाय। ६ वारनिश करने के पहले लकड़ी पर चढ़ाया जानेवाला रंग।

अस्तरकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चूने की लिपाई। सफेदी। कलई। २ गचकारी। पलस्तर।

अस्तव्यस्त—वि० [सं०] १. उलटा-पलटा। छिन्न-भिन्न। तितर-बितर। २ अस्थिर। डावाँडोल। घबराया।

अस्ताचल—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य और चंद्रमा का छिप जाना कहा जाता है। पश्चिमाचल।

अस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भाव। सत्ता। २. विद्यमानता। वर्त्तमानता। हस्ती।

मुहा०—अस्ति अस्ति कहना=वाह वाह करना। साधुवाद करना।

अस्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। हस्ती। मौजूदगी। २ सत्ता। भाव। अवस्थिति।

अस्तु—अव्य० [सं०] १. जो हो। चाहे जो हो। २ खैर। भला। अच्छा।

अस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा। बुराई।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।

अस्तुरा—संज्ञा पुं० दे० "उस्तरा"।

अस्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] चोरी का त्याग। चोरी न करना। (मनु के गिनाए हुए धर्म के दस लक्षणों में से एक।)

अस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह हथियार जो फेंककर चलाया जाय, जैसे, बाण, शक्ति बम, गोली, गोला इत्यादि। २. हथियार जिससे शत्रु के चलाए हथियारों की रोक हो, जैसे, ढाल। ३ वह हथियार जो मंत्र-द्वारा चलाया जाय। ४ वह हथियार जिससे चिकित्सक चीरफाड़ करते हैं। ५. शस्त्र। हथियार।

अस्त्रचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक शास्त्र का वह अंश जिसमें चीरफाड़ का विधान है। शल्य चिकित्सा। चीरफाड़ से इलाज।

अस्त्रवेद—संज्ञा पुं० [सं०] धनुर्वेद।

अस्त्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रखे जायँ। अस्त्रागार।

अस्त्रागार—संज्ञा पुं० दे० "अस्त्रशाला"।

अस्त्री—संज्ञा पुं० [सं० अस्त्रिन्] अस्त्रधारी मनुष्य। हथियारबंद।

अस्थायी—वि० [सं० अस्थायिन्] १. जो स्थायी या दृढ़ न हो। थोड़े दिनों के लिये।

अस्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हड्डी।

अस्थिर—वि० [सं०] १ चंचल। चलायमान। डावाँडोल। २ जिसका कुछ ठीक न हो। अनिश्चित। अधिक दिनों तक न चलनेवाला।

(पु)वि० दे० "स्थिर"।

अस्थिरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अस्थिर होने का भाव। २ चंचलता। डावाँडोलपन।

अस्थिसंचय—संज्ञा पुं० [सं०] अंत्येष्टि संस्कार के अनंतर जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का कर्म। हड्डियों का संग्रह।

अस्थूल—वि० [सं०] जो स्थूल न हो। सूक्ष्म।

(पु)वि० दे० "स्थूल"।

अस्थैर्य—संज्ञा पुं० दे० "अस्थिरता"।

अस्नान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्नान"।

अस्पताल—संज्ञा पुं० [अँ० हास्पिटल] औषधालय। दवाखाना। चिकित्सालय।

अस्पृश्य—वि० [सं०] १ जो छूने योग्य न हो। २ नीच या अंत्यज जाति का।

अस्फुट—वि० [सं०] १ जो स्पष्ट न हो। २ गूढ़। जटिल।

(पु) वि० दे० "स्फुट"।

अस्म(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अश्म] पत्थर।

अस्मिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग)। २. अहंकार। मोह। भ्रम।

अस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोना। २ रुधिर। ३ जल। ४ आँसू। ५ केसर।

अस्रप—संज्ञा पुं० [सं०] १ राक्षस। २ मूल नक्षत्र। ३ जोंक।

वि० रक्त पीनेवाला।

अस्वस्थ—वि० [सं०] १ रोगी। बीमार। २ अनमना।

अस्वाभाविक—वि० [सं०] १. जो स्वाभाविक न हो। अप्राकृतिक। प्रकृति-विरुद्ध। २ कृत्रिम। बनावटी।

अस्वीकरण, अस्वीकार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अस्वीकृत] स्वीकार का अभाव। इनकार। नामंजूरी। न मानना।

अस्वीकृत—वि० [सं०] अस्वीकार या नामंजूर किया हुआ।

अस्सी—वि० [सं० अशीति] सत्तर और दस की संख्या। दस का अठगुना।

अहं—सर्व० [सं०] मैं।

संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार। अभिमान।

अहंकार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अहंकारी] १ अभिमान। गर्व। घमंड। २ "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" की भावना। अपने आपको सब कुछ समझने की मनोवृत्ति।

अहंकारी—वि० [सं० अहंकारिन्] [स्त्री० अहंकारिणी] अहंकार करनेवाला। घमंडी। अभिमानी।

अहंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अहंकार। गर्व। घमंड।

अहंपद—संज्ञा पुं० दे० "अहंता"।

अहंमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अहंकार। २ अविद्या।

अहंवाद—संज्ञा पुं० [सं०] डींग। शेखी।

अह—संज्ञा पुं० [सं० अहन्] १ दिन। २ विष्णु। ३ सूर्य। ४ दिन का देवता।

अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।

अहक(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अहकम] लालसा। कामना। प्रबल अभिलाषा।

अहकना—क्रि० अ० [हिं० अहक] लालसा करना। प्रबल इच्छा करना।

अहटाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० आहट] आहट लगना। पता चलना।

क्रि० स० आहट लगाना। टोह लेना।

क्रि० अ० [सं० आहत] दुखना।

अहथिर(पु)—वि० दे० "स्थिर"।

अहद—संज्ञा पुं० [अ०] प्रतिज्ञा। वादा।

अहदनामा—संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रतिज्ञा-पत्र। २ सुलहनामा। ३. इकरारनामा।

अहदी—वि० पुं० [अ०] १ आलसी। आसकती। २ अकर्मण्य। निठल्लू।

संज्ञा पुं० [अ०] मुगल काल के एक प्रकार के सिपाही जिनसे किसी बड़ी आवश्यकता के समय ही काम लिया जाता था।

अहन्—संज्ञा पुं० [सं०] दिन।

अहना(पु)—क्रि० अ० [सं० √अस्=होना] होना। (इस क्रिया का केवल वर्तमान रूप "अहै" प्रचलित रह गया है, शेष अप्रयुक्त हैं।)

अहनिसि(पु)—अव्य० दे० "अहर्निश"।

अहमक—वि० [अ०] बेवकूफ। मूर्ख।

अहमिति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अहमति"।

अहमेव—संज्ञा पुं० [सं०] गर्व। घमंड। सबके ऊपर अपने आपको मानने की मनोवृत्ति।

अहरन—संज्ञा स्त्री० [सं० आ+धरण] निहाई। जिसपर रखकर कुछ पीटा, छीला या सुडौल किया जाय।

अहरना(पु)—क्रि० स० [हिं० अहरन] १ लकड़ी को छीलकर सुडौल करना। २ टोलना। टटोलना।

अहरह—क्रि० वि० [सं०] १ प्रतिदिन। २ नित्य। नित्यप्रति। रोज व रोज। ३ लगातार। निरंतर।

अहरा—संज्ञा पुं० [सं० आहरण] १ कंडे का ढेर। २ जलते हुए कंडों की आग। ३ वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।

अहरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आ+भरित] १ प्याऊ। पौसरा। २ पानी भरने का हौज।

अहर्निश—क्रि० वि० [सं०] १ रातदिन। २ सदा। नित्य। ३. निरंतर। बराबर।

अहलकार—संज्ञा पुं० [फा०] १. कर्मचारी। २ कारिंदा।

अहलना—क्रि० अ० [सं० आहलन] हिलना। काँपना।

अहलमद—संज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमों की मिसिलें रखता है और हुक्मनामे जारी करता है।

अहलाद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आह्लाद"।

अहल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गौतम ऋषि की पत्नी। २ रात्रि।

अहवान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आह्वान] आवाहन। बुलावा। पुकार।

अहसान—संज्ञा पुं० [अ०] १ नेकी। सलूक। उपकार। भलाई। २ कृपा। अनुग्रह।

अहह—अव्य० [सं०] आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोकसूचक एक शब्द।

अहा—अव्य० [सं० अहह] आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।

अहाता—संज्ञा पुं० [अ०] १ घेरा। हाता। बाड़ा। २ प्राकार। चहारदीवारी। ३. घिरी हुई भूमि।

अहान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आह्वान"।

संज्ञा स्त्री० [सं० आख्यान, प्रा० आहान (=कहावत)] यश। नाम। कीर्ति। उ०—भइ अहान सारी दुनियाई।—पद्मावत।

अहार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आहार"।

अहारना(पु)—क्रि० स० [सं० आहरण] १ खाना। भक्षण करना। २ चपकाना। ३ कपड़े में माड़ी देना। ४ दे० "अहरना"।

अहारी—वि० दे० "आहारी"।

अहाहा—अव्य० [सं० अहह] हर्षसूचक अव्यय।

अहिंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसा न करनेवाला व्यक्ति। २ दे० "अहिंस्र"।

अहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंसा का अभाव। किसी जीव को दुःख देने, सताने या मारने से बचाव।

अहिंस्र—वि० [सं०] १ जो किसी को न मारे या कष्ट न दे। २. हिंसा न करनेवाला (पशु)।

अहि—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। २ राहु। ३ वृत्रासुर। ४ खल। वंचक। ५ पृथिवी। ६ सूर्य। ७. मात्रिक गणों में ठगण। ८ छब्बीस अक्षरों के वृत्त का एक भेद।

अहिगण—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच मात्राओं के गण (ठगण) का सातवाँ भेद।

अहिच्छत्र—संज्ञा पुं० [सं० अहिच्छत्र] पंचाल के राजा द्रुपद की पुरानी राजधानी।

अहित—वि० [सं०] १ शत्रु। वैरी। २. हानिकारक।

संज्ञा पुं० बुराई। अकल्याण।

अहिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पों के स्वामी शेषनाग।

अहिपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का शत्रु वृत्र जो दैत्यों का सरदार था।

अहिफेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प के मुँह की लार या फेन। २. अफीम।

अहिबेल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अहिवल्ली] नागबेल। पान।

अहिलाद—संज्ञा पुं० दे० "आह्लाद"।

अहिवर—संज्ञा पुं० [सं०] दोहे का एक भेद जिसमें ५ गुरु और ३८ लघु होते हैं।

अहिवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागबेल। पान।

अहिवात—संज्ञा पुं० [सं० अविधवात्व] [वि० अहिवातिन, अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग। जीवत्पतिकात्व।

अहिवाती—वि० स्त्री० [हिं० अहिवात] सौभाग्यवती। सोहागिन। सधवा। जीवत्पतिका।

अहिसाव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अहि+शावक] साँप का बच्चा। सँपोला।

अहीर—संज्ञा पुं० [सं० आभीर] [स्त्री० अहीरिन] एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है। ग्वाला।

अहीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शेषनाग। २ शेष के अवतार, लक्ष्मण और बलराम आदि।

अहुटना(पु)—क्रि० अ० [हिं० अ (उच्चा०)+हटना] हटना। दूर होना। अलग होना।

अहुटाना(पु)—क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाना। दूर करना। भगाना।

अहुठ—वि० [सं० अध्युष्ट, प्रा० अध्युट्ठ] तीन और आधा। साढ़े तीन। उ०—अहुठ हाथ तन सरवर कीन्हा।—पद्मावत।

अहुठौवज्र—संज्ञा पुं० [सं० अध्युष्ट+वज्र] साढ़े तीन वज्र।

अहेड़ी—संज्ञा पुं० दे० "अहेरी"।

अहेतु—वि० [सं०] १ बिना कारण का। निमित्त-रहित। २ व्यर्थ। फजूल।

संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार।

अहेतुक—वि० दे० "अहेतु"।

अहेर—संज्ञा पुं० [सं० आखेट] १ शिकार। मृगया। २ वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।

अहेरी—संज्ञा पुं० [हिं० अहेर + ई प्रत्य०] १. शिकारी। शिकार खेलनेवाला। आखेटक। २ व्याध।

अहो—अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन की तरह और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष या विस्मय सूचित करने के लिये होता है।

अहोई—क्रि० वि० [सं० अहोरात्र] दिन-रात। सदैव। सर्वदा।

स्त्री० संज्ञा [?] एक पर्व जो कार्तिक कृष्ण ८ को पड़ता है।

अहोर-बहोर—क्रि० वि० [हिं० बहुरना] फिर फिर। बार बार।

अहोरात्र—संज्ञा पुं० [सं०] दिन रात। लगातार। बराबर। निरंतर।

अहोरा-बहोरा—संज्ञा पुं० [सं० अह = दिन + हिं० बहुरा] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने पिता के घर लौट जाती है। हेरा-फेरी।

आ

आ—हिंदी वर्णमाला का दूसरा स्वर-वर्ण जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

आँक—संज्ञा पुं० [सं० अंक] १ अंक। चिह्न। निशान। २ संख्या का चिह्न। ३ अक्षर। ४ गढ़ी हुई बात। ५ अंश। हिस्सा। ६ लकीर। ७ किसी चीज का संकेत रूप में आँका हुआ दाम।

मुहा०—एक ही आँक = दृढ़ बात। पक्की बात। निश्चय।

आँकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० आँक] १. अंक। अंकों की सूची या तालिका। २ संख्या का चिह्न। ३ पेंच।

आँकन—संज्ञा पुं० [सं० अकण] ज्वार की वह बाल, जिसके दाने निकाल लिए गए हों।

आँकना—क्रि० स० [सं० अंकन] १ चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २ कूतना। अंदाज करना। मूल्य लगाना। ३ अनुमान करना। ठहराना। ४ चित्र बनाना।

आँकर—वि० [सं० आकर] १ गहरा। २. बहुत अधिक। ३ खान। खजाना।

वि० [सं० अक्रय्य] महँगा।

आँकुस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अंकुश"।

आँकू—संज्ञा पुं० [हिं० आँक+ऊ (प्रत्य०)] आँकने या कूतनेवाला।

आँख—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षि] १ वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २ दृष्टि। नजर। ३ ध्यान।

मुहा०—आँख आना या उठना = आँख में लाली, पीड़ा और सूजन के साथ कीचड़ और पानी आना। आँख उठाना = (१) ताकना। देखना। (२) हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख उलट जाना = (१) पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय)। (२) घमंड से भर जाना। (३) विचार में परिवर्तन हो जाना। आँख का तारा = (१) आँख का तिल। (२) बहुत प्यारा व्यक्ति। आँख की पुतली = (१) आँख के भीतर का काला भाग। (२) प्रिय व्यक्ति। प्यारा मनुष्य। आँखों के डोरे = आँखों के सफेद ढेलों पर लाल रंग की बहुत बारीक नसें। आँख खुलना = (१) पलक खुलना। (२) नींद टूटना। (३) ज्ञान होना। भ्रम का दूर होना। (४) चित्त स्वस्थ होना। तबीयत ठिकाने आना। आँख खोलना = (१) पलक उठाना। ताकना। (२) चेताना। सावधान करना। (३) सुध में होना। स्वस्थ होना। आँख गड़ना = (१) आँख किरकिराना। आँख दुखना। (२) दृष्टि जमना। टकटकी बँधना। (३) प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। आँख चढ़ना = नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना। आँखें चार करना, चार आँखें करना = देखादेखी करना। सामने आना। आँख चुराना या छिपाना = (१) कतराना। सामने न होना। (२) लज्जा से बराबर न ताकना। आँख झपकना = (१) आँख बंद होना। (२) नींद आना। आँखें डबडबाना = (१) क्रि० अ० आँखों में आँसू भर आना। (२) क्रि० स० आँखों में आँसू भर लाना। आँखें तरेरना = क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख दिखाना = क्रोध की दृष्टि से देखना। कोप जताना। आँख न ठहरना = चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। आँख निकालना = (१) क्रोध की दृष्टि से देखना। (२) आँख के ढेले को काटकर अलग कर देना। आँख नीची होना = सिर का नीचा होना। लज्जा उत्पन्न होना। आँख पथराना = पलक का नियमित रूप से न गिरना और पुतली का गतिहीन होना (मरने का पूर्व लक्षण)। आँखों पर परदा पड़ना = अज्ञान का अंधकार छाना। भ्रम होना। वस्तुस्थिति को न समझना। आँख फड़कना = आँख की पलक का बार बार हिलना (शुभ-अशुभ-सूचक)। आँख फाड़कर देखना = खूब आँखें खोलकर देखना। उत्सुकता अथवा आश्चर्य से देखना। आँखें फिर जाना = (१) पहले की सी कृपा न रहना। बेमुरौवत होना। (२) मन में बुराई आना। आँख फूटना = (१) आँख की ज्योति का नष्ट होना। (२) बुरा लगना। कुढ़न होना। आँख फेरना = (१) पहिले की सी कृपा या स्नेहदृष्टि न रखना। (२) मित्रता तोड़ना। (३) विरुद्ध होना। प्रतिकूल होना। आँख फोड़ना = (१) आँखों की ज्योति का नाश

करना (२) कोई ऐसा काम करना जिसमें आँख पर जोर पड़े। आँख बंद होना=(१) आँख झपकना। पलक गिरना। (२) ज्ञान न होना। (३) मृत्यु होना। मरना। आँख बंद करके या मूँदकर=बिना सब बात देखे सुने या बिचार किए। पूर्वापर का विचार किए बिना। आँख बचाना=सामना न करना। कतराना। आँखें बिछाना=(१) प्रेम से स्वागत करना। (२) प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना। (३) तन्मयता से रास्ता देखना। आँख भर आना=आँख में आँसू आना। आँख भर देखना=खूब अच्छी तरह देखना। बड़े स्नेह से देखना। इच्छा भर देखना। आँख मारना=(१) इशारा करना। मना करना। (२) आँख के इशारे से मना करना। आँख मिलाना=(१) आँख सामने करना। बराबर ताकना (२) सामने आना। मुँह दिखाना। आँखों में खून उतरना=क्रोध से आँखें लाल होना। आँख में गड़ना या चुभना=(१) बुरा लगना। (२) जँचना। पसंद आना। आँखों में चरबी छाना=मदांध होना। गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। आँखों में धूल झोंकना या डालना=सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। आँखों में फिरना=ध्यान पर चढ़ना। स्मृति में बना रहना। आँखों में रात काटना=किसी कष्ट, चिंता या व्यग्रता से सारी रात जागते बिताना। आँखों में समाना=हृदय में बसना। चित्त में स्मरण बना रहना। किसी पर आँख रखना=(१) नजर रखना। चौकसी करना (२) चाह रखना। इच्छा रखना। आँख लगना=(१) नींद लगना। झपकी आना। सोना। (२) टकटकी लगाना। दृष्टि जमना। (३) किसी से प्रीति होना। प्रेम होना। आँख लड़ना=(१) देखादेखी होना। आँख मिलना। (२) प्रेम होना। प्रीति होना। आँख लाल करना=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख सेंकना=दर्शन का सुख उठाना। नेत्रानंद लेना। आँखों से लगाकर रखना=बड़े प्रेम से रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना। आँख होना=(१) परख होना। पहचान होना। (२) ज्ञान होना। विवेक होना। ३ विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४ कृपादृष्टि। दयाभाव। ५ संतति। संतान। लड़काबाला। ६ आँख के आकार का छेद या चिह्न जैसे—सुई का छेद।

आँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

आँखफोड़ टिड्डा—संज्ञा पुं० हरे रंग का एक कीड़ा या फतिंगा।

[वि०] कृतघ्न। बे-मुरौवत।

आँखमिचौनी, आँखमिचोली, आँख-मीचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँख+√मीच] लड़कों का एक खेल जिसके कई प्रकार हैं, जैसे—लड़कों द्वारा आँख मूँदकर छिपने और खोजने का एक खेल।

आँखमुचाई—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौली"।

आँखा—संज्ञा पुं० दे० "आखा"।

आँगपु†—संज्ञा पुं० [सं० अंग] अंग। भाग। हिस्सा।

आँगन—संज्ञा पुं० [सं० अंगण] घर के भीतर का सहन। चौक। अजिर।

आंगिक—वि० [सं०] अंग-संबंधी। अंग का।

संज्ञा पुं० १. चित्त के भाव को प्रकट करनेवाली चेष्टा, जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २. रस में कायिक अनुभाव। ३ नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आंगिरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंगिरा के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त। २ अंगिरा के गोत्र का पुरुष।

वि० अंगिरा संबंधी। अंगिरा का।

आँगीपु†—संज्ञा स्त्री० दे० "अंगिया"।

आँगुर, आँगुरीपु†—संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

आँघी—संज्ञा स्त्री० [सं० अ+घृ=क्षरण?] महीन कपड़े या तारों से मढ़ी हुई चलनी।

आँच—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्चि] १ गरमी। ताप। २ आग की लपट। लौ। ३ आग।

मुहा०—आँच खाना=गरमी पाना। आग पर चढ़ना। तपना। आँच दिखाना=आग के सामने रखकर गरम करना।

४ एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५ तेज। प्रताप। ६ आघात। चोट। ७ हानि। अहित। अनिष्ट। ८ विपत्ति। संकट। आफत। ९ प्रेम। मुहब्बत। १० काम-ताप।

आँचनापु†—क्रि० स० [हिं० आँच] १. जलाना। २ तपाना।

आँचरपु†—संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

आँचल—संज्ञा पुं० [सं० अंचल] १ धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों के पास का भाग। पल्ला। छोर। २ साधुओं का अँचला। ३ साड़ी या ओढ़नी का सामने छाती पर रहनेवाला भाग।

मुहा०—आँचल देना=(१) बच्चे को दूध पिलाना। (२) विवाह की एक रीति। आँचल फाड़ना=बच्चे के जीने के लिये टोटका करना। आँचल में बाँधना=(१) हर समय साथ रखना। प्रतिक्षण पास रखना। (२) किसी कही हुई बात को अच्छी तरह स्मरण रखना। कभी न भूलना। आँचल लेना=आँचल छूकर सत्कार या अभिवादन करना।

आँजन—संज्ञा पुं० दे० "अंजन"।

आँजना—क्रि० स० [सं० अंजन] अंजन लगाना।

आंजनेय—संज्ञा पुं० [सं०] अंजना (अंजनी) नाम की वानरी के पुत्र। हनुमान।

आँजू—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की घास।

आँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० अटी] १ हथेली में तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान। तर्जनी और अँगूठे से बना घेरा। २ दाँव। वश। ३ बैर। लाग-डाँट। ४. गिरह। गाँठ। ऐंठन। ५ पूला। गट्ठा।

आँटनापु†—क्रि० अ० दे० "अँटना"।

आँट-साँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँट+√साट] १ गुप्त अभिसंधि। साजिश। २ मेलजोल।

आँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अटी] १ लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २ लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३ सूत का लच्छा। ४ धोती की गिरह। टेंट-मुर्री। ऐंठन।

आँठी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि] १ दही, मलाई आदि का लच्छा। २ गिरह। गाँठ। ३ गुठली। बीज।

आँड़—संज्ञा पुं० [सं० अण्ड] अंडकोश।

आँडी—संज्ञा स्त्री० [सं० अण्ड] गाँठ। कंद।

आँड़ू—वि० [सं० अण्ड] अंडकोशयुक्त। जो बधिया न हो (बैल)।

आँत—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदामार्ग तक रहती है और जिसमें होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अँतड़ी। लाद।

मुहा०—(१) आँत उतरना=एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर अंडकोश में उतर आती है और असह्य पीड़ा उत्पन्न होती है। आँतों का बल खुलना=पेट भरना। भोजन

से तृप्ति होना। आँतें कुलकुलाना या सूखना =भूख के मारे बुरी दशा होना।

आँतर, आँतरु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अतर"। § संज्ञा पुं० [सं० अंतर] अंतर। बीच।

आंतरिक—वि० [सं०] १ भीतरी। अंदर का। २ हृदय का। मन का। ३ अभिन्न। आत्मीय।

आँदू—संज्ञा पुं० [सं० अंदू=बेड़ी] १ लोहे का कड़ा। बेड़ी। २ बाँधने का सीकड़।

आंदोलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। हलचल। धूम। २ राजनीतिक कार्यवाही या चाल। ३ बार बार हिलना। डोलना।

आँध(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्ध] १ अँधेरा। धुध। २ रतौंधी। अधापन। ३ आफत। कष्ट।

(पु) वि० [सं० अन्ध] अधा। जिसे सूझता न हो। जिसे दिखाई न दे।

आँधना(पु)—क्रि० अ० [हि० आँधी] वेग से धावा करना। टूटना।

आँधरा(पु)—वि० दे० "अधा"।

आँधारंभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अन्ध+आरंभ] अधेरखाता। बिना समझा-बूझा आचरण।

आँधी—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्ध=अँधेरा] बड़े वेग की हवा जिसमें इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधड़।

वि० आँधी की तरह तेज। चुस्त। चालाक।

आध्र—संज्ञा पुं० [सं०] तापी नदी के किनारे का प्रदेश।

आँव—सं० पुं० दे० "आम"।

आँबा हलदी—संज्ञा स्त्री० दे० "आमा हलदी"।

आँय बाँय—संज्ञा पुं० [अनु०] अनाप शनाप। अटबट। व्यर्थ की बात। बिना मतलब की बात।

आँव—संज्ञा पुं० [सं० आम=कच्चा] एक प्रकार का चिकना सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ—संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ] किनारा।

आँवड़ना—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

आँवड़ा(पु)—वि० [सं० आकुण्ड] गहरा।

आँवल—संज्ञा पुं० [सं० उल्वम्] झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। खेड़ी। जेरी। साम।

आँवला—संज्ञा पुं० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल कषाय होते हैं तथा चटनी, अचार, मुरब्बा और दवा के काम आते हैं। इस पेड़ का फल।

आँवलासार गंधक—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँवला+सं० सार+गंधक] खूब साफ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।

आँवा—संज्ञा पुं० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

मुहा०—आँवा का आँवा बिगड़ना=किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

आंशिक—वि० [सं०] १ अंश संबंधी। अंश विषयक। २ थोड़ा। एक भाग का।

आंशुकजल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय (वैद्यक)।

आँस—संज्ञा स्त्री० [?] संवेदना। दर्द।

संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १ डोरी। २ रेशा।

संज्ञा पुं० दे० "आँसू"।

आँसी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अंश] भाजी। बैना। मिठाई जो इष्ट मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।

आँसु—संज्ञा पुं० [सं० अश्रु] आँसू। उ०—रकत कै आँसु माँसु सब रोवा।—पदमावत।

आँसू—संज्ञा पुं० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक, पीड़ा या हर्षातिरेक के कारण निकलता है।

मुहा०—आँसू गिराना या ढालना=रोना। आँसू पीकर रह जाना=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पुँछना=आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। आँसू पोंछना=ढारस बँधाना। दिलासा देना।

आँसू-गैस—सं० स्त्री० [हिं० आँसू+अं० गैस] एक प्रकार की गैस (वाष्प) जिसके स्पर्श से मुँह सूज जाता है और आँखों से आँसू बहने लगते हैं।

आँहड़—संज्ञा पुं० [सं० भाण्ड] बरतन।

आँहाँ—अव्य० [हिं० अन+हाँ] अस्वीकार या निषेधसूचक एक शब्द। नहीं। नकार-वाचक शब्द।

आ—अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अति-क्रमण के अर्थों में होता है, जैसे—(क) सीमा—आसमुद्र=समुद्र तक। आजन्म=जन्म भर। (ख) अभिव्याप्ति—आपाताल=पाताल के अन्तर्भाग तक। (ग) ईषत् (थोड़ा, कुछ)—आपिंगल=कुछ कुछ पीला। (घ) अतिक्रमण—आकालिक=बेमौसिम का।

उप—[सं०] एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में थोड़ी सी विशेषता कर देता है, जैसे, आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना), 'दा' (देना) तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है तब उनके अर्थों को उलट देता है, जैसे 'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

आइ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] जीवन।

आइना—संज्ञा पुं० दे० "आईना"।

आई—संज्ञा स्त्री० [हिं० आया का स्त्री०] मृत्यु। मौत।

(पु) संज्ञा स्त्री० दे० "आइ"।

आईन—संज्ञा पुं० [फा०] १ नियम। कायदा। जाब्ता। २ कानून। राज-नियम।

आईना—संज्ञा पुं० [फा०] १ आरसी। दर्पण। शीशा। २ किवाड़ का झिलहा।

मुहा०—आईना होना=स्पष्ट होना। आईने में मुँह देखना=अपनी योग्यता को जाँचना।

आईनाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ झाड़-फानूस आदि की सजावट। २ फर्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

आईनासाज—संज्ञा पुं० [फा०] आईना बनानेवाला।

आईनासाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] काँच की चद्दर के टुकड़े पर कलई करने का काम।

आईनी—वि० [फा० आईन+हिं० ई (प्रत्य०)] कानूनी। वैधानिक। विधान संबंधी।

आउ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] जीवन। उम्र। किसी के जीवन या अस्तित्व के दिन।

आउज, आउझ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

आउबाउ(पु)—संज्ञा पुं० ['आउ' (अनु०)+सं० वायु] अटबंड बात। असंबद्ध प्रलाप।

आउस—संज्ञा पुं० [सं० आशु] धान का एक भेद। भदई। ओसहन।

आकंपन—संज्ञा पुं० [सं०] कंप। काँपना।

आक—संज्ञा पुं० [सं० अर्क] मदार। अकौआ। अकवन।

आकड़ा—संज्ञा पुं० दे० आक।

आकढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "आक"।

आकन—संज्ञा पुं० [सं० आखनन] १ खेत खोदकर निकाला हुआ घासफूस। २ जुते हुए खेत से घासफूस निकालने की क्रिया।

आकबाक(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ०] मरने के बाद की अवस्था। परलोक।

आकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ खान। उत्पत्तिस्थान। २ खजाना। भंडार। ३ भेद। किस्म। जाति। ४. तलवार चलाने का एक भेद।

आकरकरहा—संज्ञा पुं० [सं० आकारकरभ] दे० "अकरकरा"।

आकरखना(पु)—क्रि स० [सं० आकर्षण] दे० "आकर्षना"।

आकर ग्रंथ—संज्ञा पुं०[सं०] १ आधार ग्रंथ। प्राचीन ग्रंथ। २ प्रामाणिक ग्रंथ। ३ किसी विषय की पूरी जानकारी का ग्रंथ। ४ विविध विषयों के निर्देश का ग्रंथ। (अँ० रेफरेंस बुक)।

आकर भाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मूल (प्राचीन) भाषा जिससे कोई नई भाषा अपने लिये शब्द ले, जैसे हिंदी के लिये संस्कृत तथा उर्दू के लिये अरबी-फारसी।

आकरिक—संज्ञा पुं० [सं०] खान खोदने वाला। खनक।

आकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० आकर] खान खोदने का काम।

आकर्ण—वि० [सं०] कान तक (फैला हुआ)।

आकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकर्षण। खिंचाव। २ खींचने की शक्ति। एक वस्तु की दूसरी को अपने पास खींचने की शक्ति। ३ पासे का खेल। बिसात। चौपड़। ४ इंद्रिय। ५ धनुष चलाने का अभ्यास। ६ कसौटी। ७ चुंबक।

आकर्षक—वि० [सं०] आकर्षण करनेवाला खींचनेवाला।

आकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकृष्ट] १ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु को अपने पास खींचने की शक्ति या क्रिया। २ खिंचाव। ३ एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आ जाता है (तंत्र)।

आकर्षण शक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिंड (ग्रह, नक्षत्र आदि) की या पृथ्वी की पदार्थों को अपनी ओर खींचने की शक्ति।

आकर्षना—क्रि० स० [सं० आकर्षण] खींचना।

आकलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकलनीय आकलित] १ संग्रह। संचय। २ ग्रहण। लेना। ३ गिनती करना। ४ अनुमान। ५ अनुष्ठान। संपादन। ६ अनुसंधान।

आकली—संज्ञा स्त्री० [सं० आकुल] आकुलता। बेचैनी।

आकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] वेश रचना। शृंगार करना।

क्रि० वि० कल्प पर्यंत।

आकबाक(पु)—संज्ञा पुं० [(अनु०) आक+सं० वाक्=बोली] अकबक। अंडबंड बात। उटपटाँग बात।

आकस्मिक—वि० [सं०] १ बिना किसी कारण के होनेवाला। २ अचानक होनेवाला। सहसा होनेवाला। बिना सोचा हुआ। अननुमानित।

आकांक्षक—वि० [सं०] दे० "आकांक्षी"।

आकांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २. अपेक्षा। ३ अनुसंधान। ४ वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिये एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना (न्याय)।

आकांक्षित—वि० [सं०] १. इष्ट। अभिलषित। वांछित। २ अपेक्षित।

आकांक्षी—वि० [सं० आकांक्षिन्] [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

आका—संज्ञा पुं० [सं० आकाय] १ अलाव। कौंडा। २ भट्ठी। ३ पजावा। आँवाँ।

संज्ञा पुं० [अ०] १ मालिक। स्वामी। २ ईश्वर।

आकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वरूप। आकृति। सूरत। २. डीलडौल। कद। ३ बनावट। सघटन। ४ निशान। चिह्न। ५ चेष्टा। ६ 'आ' वर्ण। ७ बुलावा।

आकारी(पु)—वि० [सं०] [स्त्री० आकारिणी] १. आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला। २ आकार संबंधी।

आकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतरिक्ष। गगन। पृथ्वी के ऊपर दिखाई देनेवाला वह नीला विस्तार जिसमें सूर्य, चंद्रमा और तारे चमकते हैं। आसमान। २ शून्य। वह स्थान जहाँ कुछ न हो। खाली जगह। ३ पाँच तत्वों में से एक। ४ अभ्रक। अबरक।

मुहा०—आकाश छूना या चूमना=बहुत ऊँचा होना। आकाश पाताल एक करना=(१) बड़ा उद्योग करना। कठिन परिश्रम करना। (२) आंदोलन करना। हलचल करना। आकाश पाताल का अंतर=बड़ा अंतर। बहुत फर्क। आकाश से बातें करना=बहुत ऊँचा होना। बहकना। बढ़-बढ़कर बातें करना।

आकाशकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश का फूल। खपुष्प। २ अनहोनी बात। असंभव बात। काल्पनिक बात।

आकाशगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत से छोटे छोटे टिमटिमाते तारों की आकाश में उत्तर-दक्षिण फैली चौड़ी धुँधली पंक्ति जो उसे घेरे हुए है और देवताओं का मार्ग कहलाती है। मंदाकिनी। स्वर्गगंगा।

आकाशचारी—वि० [सं० आकाशचारिन्] [स्त्री० आकाशचारिणी] आकाश में घूमनेवाला। आकाशगामी।

संज्ञा पुं० १ नक्षत्र। २ वायु। ३. पक्षी। ४. देवता।

आकाश-जल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्षा का जल। २ ओस।

आकाशदीप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "आकाशदीया"।

आकाशदीया—संज्ञा पुं० [सं० आकाश+हिं० दीया] वह दीपक जो कार्तिक के महीने में हिंदू लोग किसी ऊँचे बाँस में लटकती कंडील में रखकर जलाते हैं।

आकाशधुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+धुरी] खगोल का ध्रुव।

आकाशनीम—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+हिं० नीम] नीम का बाँदा।

आकाशपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "आकाशकुसुम"।

आकाशबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+हिं० बेल] दे० "अमरबेल"।

आकाशभाषित—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के अभिनय में वक्ता का आसमान की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह उससे किया जा रहा हो और फिर स्वयं उसका उत्तर भी देना।

आकाशमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] खगोल। गगन मंडल।

आकाशमुखी—संज्ञा। पुं० [सं० आकाश+हिं० मुखी] एक प्रकार के साधु जो आकाश की ओर मुँह करके तप करते हैं।

आकाशलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है। वेधशाला। (अँ० आबजरवेटरी)।

आकाशवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह शब्द जो आकाश में देवता लोग बोलें। देववाणी। २ दे० "रेडियो"।

आकाशवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनिश्चित जीविका। ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।

आकाशी—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश + हिं ई (प्रत्य०)] वह चाँदनी जो धूप, ओस आदि से बचने के लिये तानी जाती है।

आकाशीय—वि० [सं०] १ आकाश संबंधी। आकाश का। २ आकाश में रहने या होनेवाला। ३ दैवागत। आकस्मिक।

आकिल—वि० [अ०] बुद्धिमान्।

आकिलखानी—संज्ञा पुं० [अ० आकिल + फा० खानी] कालापन लिए लाल-रंग।

आकीर्ण—वि० [सं०] १ बिखेरा या फैलाया हुआ। २ व्याप्त। पूर्ण।

आकुंचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकुंचित, आकुंचनीय] १. सिकुड़ना। सिमटना। संकोचन। २ टेढ़ापन।

आकुंचित—वि० [सं०] १ सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। २ टेढ़ा। कुटिल।

आकुंठन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकुंठित] १. गुठला या कुंद होना। २ लज्जा। शर्म।

आकुल—वि० [सं०] [संज्ञा आकुलता] १. व्यग्र। घबराया हुआ। उद्विग्न। व्याकुल। २ विह्वल। कातर। ३ व्याप्त। संकुल।

आकुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याकुलता। घबराहट। २ व्याप्ति।

आकुलि—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों के एक पुरोहित का नाम।

आकुलित—वि० [सं०] दे० "आकुल"।

आकूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्साह। २ आशय। ३ सदाचार।

आकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बनावट। गढ़न। ढाँचा। २ मूर्ति। रूप। ३ मुख। चेहरा। ४ मुख का भाव। चेष्टा। ५ २२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

आकृष्ट—वि० [सं०] खींचा हुआ।

आक्रंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोना। २ चिल्लाना। ३ पुकार।

आक्रम (पु)—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पराक्रम"।

आक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करना। चढ़ाई। २ आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना। ३ धावा। हमला ४ घेरना। छेंकना। ५ आक्षेप। निंदा।

आक्रमित—वि० [सं० आक्रांत] जिसपर आक्रमण किया गया हो।

आक्रमिता (नायिका)—संज्ञा स्त्री० [सं० आक्रांत] वह प्रौढ़ा नायिका जो मनसा, वाचा, कर्मणा अपने प्रिय को वश में रखे।

आक्रांत—वि० [सं०] १ जिसपर आक्रमण हुआ हो। जिसपर हमला हुआ हो। २ घिरा हुआ। आवृत्त। ३ वशीभूत। पराजित। विवश। ४ व्याप्त। आकीर्ण।

आक्रीड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रीड़ा करने का स्थान। २ केलि-कानन। ३ उपवन। बाग। उद्यान। ४ विहार। ५ दे० "क्रीड़ा"।

आक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] कोसना। शाप देना। गाली देना। बुरा भला कहना।

आक्लांत—वि० [सं०] थका हुआ।

आक्लिन्न—वि० [सं०] भीगा हुआ। आर्द्र।

आक्षिप्त—वि० [सं०] १ फेंका हुआ। गिराया हुआ। २ दूषित। ३ निंदित।

आक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ फेंकना। गिराना। २ दोष लगाना। अपवाद। इलजाम लगाना। ३ कटूक्ति। ताना। ४ एक वातरोग जिसमें अंगों में कँपकँपी होती है। ५ ध्वनि। व्यंग्य।

आक्षेपक—वि० [सं०] [स्त्री० आक्षेपिका] १ फेंकनेवाला। २ खींचनेवाला। ३ आक्षेप करनेवाला। निंदक।

आखंडल—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

आख—संज्ञा पुं० [सं०] भूमि खोदने का लोहे का एक यंत्र जो सिरे पर चपटा और धारदार होता है। खना। खंती। रंभा।

आखत (पु)—संज्ञा पुं० [सं० अक्षत] १ अक्षत। बिना टूटा चावल। २ हल्दी, चंदन या केसर में रँगा चावल जो देवमूर्ति या दूल्हा दुलहिन के माथे पर लगाया जाता है।

आखता—वि० [फा०] (घोड़ा) जिसके अंडकोश चीरकर निकाल लिए गए हों। बधिया।

आखन (पु)—क्रि० वि० [सं० आ + क्षण] प्रति क्षण। हर घड़ी। सर्वदा।

आखना (पु)—क्रि० स० [सं० आख्यान] कहना।

क्रि० स० [सं० आकांक्षा] चाहना।

क्रि० स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।

आखर (पु)—संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] अक्षर। वर्ण।

आखा—संज्ञा पुं० [सं० आवरण] झीने कपड़े में मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी।

वि० [सं० अक्षय] कुल। पूरा। समूचा।

आखा तीज—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षय-तृतीया] वैशाख सुदी तीज।

आखिर—वि० [फा०] अंतिम। पीछे का।

संज्ञा पुं० १ अंत। २ परिणाम। फल।

क्रि० वि० अंत में। अंत को।

आखिरकार—क्रि० वि० [फा०] अंत में। अंततोगत्वा। फलस्वरूप।

आखिरी—वि० [फा०] अंतिम। पिछला।

आखी—संज्ञा स्त्री० [सं० आखनन] खोदकर निकाली हुई मिट्टी।

आखु—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूसा। चूहा। २ देवताल। देवताड़। ३. सूअर।

आखुपाषाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मगमूसा। काला चिकना पत्थर। २ चुंबक पत्थर। ३ संखिया।

आखेट—संज्ञा पुं० [सं०] अहेर। शिकार।

आखेटक—संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। अहेर।

वि० [सं०] शिकारी। अहेरी।

आखेटी—संज्ञा पुं० [सं० आखेटिन्] [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी। अहेरी।

आखोट—संज्ञा पुं० [सं० अक्षोट] दे० "अखरोट"

आखोर—संज्ञा पुं० [फा०] १ जानवरों के खाने से बची हुई घास या चारा। २. कूड़ा-करकट। ३ निकम्मी वस्तु।

वि० [फा०] १ निकम्मा। बेकाम। २ सड़ा गला। रद्दी। ३ मैला-कुचैला।

आख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाम। २ कीर्ति। यश। ३ व्याख्या।

आख्यात—वि० [सं०] १ प्रसिद्ध। विख्यात। २ कहा हुआ। ३ राजवंश के लोगों का वृत्तांत।

आख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नामवरी ख्याति। शोहरत। २ कथन।

आख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्णन। वृत्तांत। बयान। २ कथा। कहानी। किस्सा। ३ उपन्यास के नौ भेदों में से एक। वह कथा जिसे कथाकार स्वयं कहे।

आख्यानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्णन। वृत्तांत। बयान। २ कथा। किस्सा। कहानी। ३ पूर्व वृत्तांत। ४ कथानक।

आख्यानिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक वृत्त के भेदों में से एक जिसके विषम चरणों में क्रम से दो तगण एक जगण और अंत में दो गुरु हों और सम में एक जगण, एक तगण, एक जगण और अंत में दो गुरु हों। उ०—गोविंद गोविंद सदा रटौ जू। असार संसार सबै तरौ जू॥ श्रीकृष्ण राधा मंजु नित्य भाई। जु सत्य चाहो अपनी भलाई।

आख्यायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कथा। कहानी। किस्सा। २. वह कल्पित कथा जिसमें कुछ शिक्षा निकले। ३ एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र अपना अपना चरित अपने मुँह से कहें।

आगंतुक—वि० [सं०] १ आनेवाला। आगमनशील। २ जो इधर उधर से घूमता फिरता आ जाय। ३ आया हुआ।

आग—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] ज्वाला। प्रकाश, उष्णता और लपट में प्रकट होनेवाला तत्व। अग्नि।

मुहा०—आगबबूला (बगूला) होना या बनना=क्रोध के आवेश में होना। क्रोध से लाल होना। अत्यंत कुपित होना। आग बरसना=बहुत गरमी पड़ना। बड़े कठोर वचन कहना। आग बरसाना=शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना। आग लगना=(१) आग से किसी वस्तु का जलना। (२) क्रोध उत्पन्न होना। कुढ़न होना। (३) महँगी फैलना। दुष्काल होना। आग लगे=बुरा हो। नाश हो (विशेषत स्त्रियों में)। आग लगाना=(१) आग से किसी वस्तु को जलाना। (२) गरमी करना। जलन पैदा करना। (३) उद्वेग बढ़ाना। जोश बढ़ाना। भड़काना। झगड़ा लगाना। (४) क्रोध उत्पन्न करना। (५) चुगली खाना। (६) बिगाड़ना। नष्ट करना। आग होना=(१) बहुत गरम होना। (२) क्रुद्ध होना। रोष में भरना। पानी में आग लगाना=(१) अनहोनी बातें कहना। (२) असंभव कार्य करना। (३) जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो वहाँ भी लड़ाई लगा देना। पेट की आग=(१) भूख। पाचन शक्ति। (२) जलन। ताप। गरमी। (३) कामाग्नि। काम का वेग। (४) वात्सल्य। प्रेम। (५) डाह। ईर्ष्या।

वि० १ जलता हुआ। बहुत गरम। २ जिसका गुण, प्रभाव या तासीर गरम हो।

आगत—वि० [सं०] [स्त्री० आगता] १. आया हुआ। २ प्राप्त। ३ उपस्थित।

आगतपतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति परदेश से लौट आया हो।

आगत स्वागत—संज्ञा पुं० [सं० आगत+स्वागत] आए हुए व्यक्ति का आदर। आवभगत। आदर सत्कार।

आगम—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवाई। आगमन। आमद। २. भविष्य काल। आनेवाला समय। ३ होनहार।

मुहा०—आगम करना=ठिकाना करना। उपक्रम बाँधना। लाभ का डौल करना। उपाय रचना। आगम जनाना=होनहार की सूचना देना। आगम बाँधना=आनेवाली बात का निश्चय करना।

४ समागम। संगम। ५ आमदनी। आय। ६ व्याकरण में किसी शब्दसाधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७ उत्पत्ति। ८ शब्द-प्रमाण। ९ वेद। १०. शास्त्र। ११ तंत्रशास्त्र। १२ नीतिशास्त्र। नीति।

वि० [सं०] आनेवाला। आगामी।

आगमजानी—वि० [सं० आगमज्ञानी] आगमज्ञानी। होनहार जाननेवाला।

आगमज्ञानी—वि० [सं०] भविष्य जाननेवाला। आगमजानी।

आगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवाई। आना। २ प्राप्ति। आय। लाभ।

आगमवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भविष्यवाणी।

आगमविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेदविद्या। २ भविष्य जानने की विद्या। सामुद्रिक शास्त्र।

आगमसोची—वि० [सं० आगम+हिं० सोची=सोचनेवाला] दूरदर्शी। अग्रसोची।

आगमी—संज्ञा पुं० [सं० आगम=भविष्य] आगम विचारनेवाला। ज्योतिषी।

आगर—संज्ञा पुं० [सं० आकर] [स्त्री० आगरी] १ खान। आकर। २ समूह। ढेर। ३ कोष। निधि। खजाना। ४ वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।

संज्ञा पुं० [सं० आगार] १ घर। गृह। २ छाजन। छप्पर।

वि० [सं० अग्र] १ श्रेष्ठ। उत्तम। २ चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।

आगरी—संज्ञा पुं० [हिं० आगर] नमक बनानेवाला पुरुष। लोनिया।

आगल—संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] अगरी। ब्योंड़ा। बेंवड़ा।

क्रि० वि० [हिं० अगला] सामने। आगे।

वि० अगला।

आगला(पु)—क्रि० वि० [हिं० अगल] दे० "अगल"।

आगवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आगमन]

आगा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र] १ किसी चीज के आगे का भाग। अगाड़ी। २ शरीर का अगला भाग। ३ छाती। वक्षस्थल। ४ मुख। ५ ललाट। माथा। ६ लिंगेंद्रिय। ७. अँगरखे या कुर्ते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ८ सेना या फौज का अगला भाग। ९ घर के सामने का मैदान। १० पेशखीमा। अगाड़ा। ११ आगे आनेवाला समय। भविष्य।

संज्ञा पुं० [तु० आगा] १ मालिक। सरदार। २. काबुली। अफगान।

आगान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आ+गान] बात। प्रसंग। आख्यान। वृत्तांत।

आगापीछा—संज्ञा पुं० [हिं० आगा+पीछा] १. हिचक। सोच विचार। दुविधा। २. परिणाम। नतीजा। ३. शरीर का अगला और पिछला भाग।

आगामि, आगामी—वि० [सं० आगामिन्] [स्त्री० आगामिनी] १ भावी। होनहार। २ आनेवाला।

आगार—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २ स्थान। जगह। ३. खजाना।

आगाह—वि० [फा०] १ जानकार। वाकिफ। २ सचेत। सावधान।

संज्ञा पुं० [हिं० आगा+आह (प्रत्य०)] आगम। होनहार।

आगाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जानकारी। २ सावधानी।

आगि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] दे० "आग"।

आगिल(पु)—वि० [हिं० अगल] दे० "अगल"।

आगिवर्त्त(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अग्निवर्त"।

आगी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] दे० "आग"।

आगू—क्रि० वि० [हिं० आगे] दे० "आगे"।

आगे—क्रि० वि० [सं० अग्र] १ और दूर पर। और बढ़कर। २ 'पीछे' का उलटा। ३ समक्ष। सम्मुख। सामने।

मुहा०—आगे आना=(१) प्रकट होना। सामने आना। (२) सामने पड़ना। मिलना। (३) सामना करना। भिड़ना। (४) घटित होना। घटना। आगे करना=(१) उपस्थित करना। प्रस्तुत करना। (२) अगुआ बनाना। मुखिया बनाना। आगे को=आगे। भविष्य में। आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य में। बाद में। अनंतर। आगे निकलना=बढ़ जाना। आगे पीछे=(१) एक के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम से। (२) आसपास। किसी के आगे पीछे होना=किसी के वश में होना। आगे से=(१) सामने से। (२) आइंदा। भविष्य में। (३) पहले से। पूर्व से। बहुत दिनों से। आगे से लेना=अभ्यर्थना करना। आगे बढ़कर स्वागत करना। आगे होना=(१) आगे बढ़ना। अग्रसर होना। (२) बढ़ जाना। (३) सामने आना। (४) मुकाबिला करना। भिड़ना। (५) मुखिया बनना।

४ जीवनकाल में। जीते जी। ५ इसके पीछे। इसके बाद। ६ भविष्य में। आगे को। ७ अनंतर। बाद। ८ पूर्व। पहले। ९ अतिरिक्त। अधिक। १० गोद में। लालन पालन में, जैसे, उसके आगे एक लड़का है।

आगैं(पु)—क्रि० वि० [सं० अग्र] दे० "आगे"।

आगौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आगमन] दे० "आगमन"।

आग्नीध्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २ वह यजमान जो साग्निक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३ यज्ञमंडप।

आग्नेय—वि० [सं०] [स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि संबंधी। अग्नि का। २ जिनका देवता अग्नि हो। ३ अग्नि से उत्पन्न। ४ जिसमें आग निकले। जलानेवाला।

संज्ञा पुं० १ सुवर्ण। सोना। २. रक्त। रुधिर। ३ कृत्तिका नक्षत्र। ४ अग्नि के पुत्र कार्तिकेय। ५ दीपन औषध। ६ ज्वालामुखी पर्वत। ७ प्रतिपदा तिथि। ८. दक्षिण का एक देश जिसकी राजधानी माहिष्मती थी। ९ वह पदार्थ जिसमें आग भड़क उठे; जैसे बारूद। १०. ब्राह्मण। ११. अग्निकोण।

यौ०—आग्नेयस्नान=भस्म पोतना। आग्नेयास्त्र=अग्नि से चलाए जानेवाले अस्त्र।

आग्नेयास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिससे आग निकलती या बरसती है। २ वह अस्त्र जो अग्नि उत्पन्न होने या विस्फोट से चले, जैसे बंदूक, पिस्तौल आदि।

आग्नेयी—वि० स्त्री० [सं०] १ अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २ पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।

आग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुरोध। हठ। जिद। २ तत्परता। परायणता। ३ बल। जोर। आवेश।

आग्रहायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन। मार्गशीर्ष मास। २ मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रही—वि० [सं० आग्रहिन्] १. आग्रह करनेवाला। २ हठी। जिद्दी।

आघ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। कीमत।

आघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ धक्का। ठोकर। २ मार। प्रहार। चोट। ३. वध-स्थान। बूचड़खाना।

आघार—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंत्रों द्वारा देवता को घृत अर्पण करने की क्रिया। २ हवि। आहुति।

आघूर्ण—वि० [सं०] १ घूमता हुआ। चक्कर लगाता हुआ। फिरता हुआ। २ हिलता हुआ।

आघूर्णित—वि० [सं०] १ चारों ओर घूमता हुआ या घुमाया जाता हुआ। २ इधर उधर फिरता हुआ या फिराया जाता हुआ। ३ चकराया हुआ।

आघ्राण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आघ्रात, आघ्रेय] सूँघना। बास लेना। २ अघाना। तृप्ति।

आचक—अव्य० [हिं० अचानक ?] अचानक।

आचमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आचमनीय, आचमित] १ पूजा या धर्म संबंधी कर्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना। २ जल पीना।

आचमनी—संज्ञा स्त्री० [सं० आचमनीय] छोटे चम्मच के आकार का आचमन करने का पात्र।

आचर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अंचल] दे० "आँचल"। उ०—कहँसे लागत आचर बतास।

आचरज(पु)—[सं० आश्चर्य] संज्ञा पुं० दे० "अचरज"।

आचरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आचरणीय। आचरित] १. अनुष्ठान कार्य। २ व्यवहार। बर्ताव। ३. चालचलन। वृत्त। चरित्र। ४ आचार।

आचरणीय—वि० [सं०] व्यवहार करने योग्य। करने योग्य।

आचरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आचरण] दे० "आचरण"।

आचरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० आचरन] आचरण करना। व्यवहार करना।

आचरित—वि० [सं०] किया हुआ।

आचान(पु)—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

आचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार। चलन। रीति। रस्म। रहन-सहन। २ चरित्र। अच्छा काम। ३ शील। ४ शुद्धि। पवित्रता। सफाई।

आचारज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आचार्य।"

आचारजी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आचार्य्य] १ पुरोहिताई। २ आचार्य होने का भाव या काम। अध्यापन।

आचारवान्—वि० [सं०] [स्त्री० आचारवती] १ पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचार का। २. नियम से रहनेवाला। नेमी।

आचार-विचार—संज्ञा पुं० [सं०] आचार और विचार। रहन-सहन की सफाई। शौच। पवित्र आचरण।

आचारी—वि० [सं० आचारिन्] [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्। आचार से रहनेवाला।

संज्ञा पुं० रामानुज या वल्लभ संप्रदाय का वैष्णव।

आचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आचार्याणी, आचार्या] १ उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला। गुरु। २ वेद पढ़ानेवाला। ३ यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ४ पुरोहित ५. अध्यापक। शिक्षक। ६ ब्रह्मसूत्र के चार प्रधान भाष्यकार—शंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभ। ७. वेद का भाष्यकार।

विशेष—स्वयं आचार्य का काम करनेवाली स्त्री आचार्या कहलाती है। आचार्य की पत्नी को आचार्याणी कहते हैं।

आचिंत्य—वि० [सं०] सब प्रकार से चिंतन करने योग्य।

आच्छन्न—वि० [सं०] १. ढका हुआ। आवृत। छिपा हुआ।

आच्छादक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढक्कन। २. ढकनेवाला।

आच्छादन—संज्ञा पुं० [सं०] वि० आच्छादित, आच्छन्न] १. ढकना। २ वस्त्र। कपड़ा। ३. छाजन। छवाई।

आच्छादित—वि० [सं०] १ ढका हुआ। आवृत। २ छिपा हुआ। तिरोहित।

आछतⓅ—क्रि० वि० [हिं० √आछ] १. होते हुए। रहते हुए। विद्यमानता में। मौजूदगी में। सामने। २. अतिरिक्त। सिवाय। छोड़कर।

आछनाⓅ—क्रि० अ० [सं० √अस् = होना] १ होना। २ रहना। विद्यमान होना।

आछरी—संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] दे० "अप्सरा"।

आछाⓅ—वि० [हिं० अच्छा] दे० "अच्छा"।

आछी—वि० [सं० अच्छ] अच्छी। भली।
 वि० [सं० आशिन्] भोजन करनेवाला। भोक्ता।
 संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का सुगंधित फूलोंवाला वृक्ष।

आछेⓅ—क्रि० वि० [हिं० अच्छा] अच्छी तरह।

आछेपⓅ—संज्ञा पुं० [सं० आक्षेप] दे० "आक्षेप"।

आज—क्रि० वि० [सं० अद्य] १ वर्तमान दिन। जो दिन बीत रहा है, उसमें। २ इन दिनों। वर्तमान समय में। जो समय बीत रहा है, उसमें। ३ इस वक्त। अब।

आजकल—क्रि० वि० [हिं० आज+कल] इन दिनों। इस समय। वर्तमान दिनों में।
 मुहा०—आजकल करना = टालमटोल करना। हीला हवाली करना। आजकल लगना = अब तब लगना। मरणकाल निकट आना।

आजगव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का धनुष। पिनाक।

आजन्म—क्रि० वि० [सं०] जीवन भर। जन्म भर। जिंदगी भर।

आज़माइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] परीक्षा। परीक्षण।

आज़माना—क्रि० स० [फा० आजमाइश] परीक्षा करना। परखना।

आज़मूदा—वि० [फा० आजमूद] आजमाया हुआ। परीक्षित।

आजा—संज्ञा पुं० [सं० आर्य] [स्त्री० आजी] पितामह। दादा। बाप का बाप।

आजागुरु—संज्ञा पुं० [हिं० आजा+गुरु] गुरु का गुरु।

आज़ाद—वि० [फा०] [संज्ञा आजादी, आजादगी] १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। उन्मुक्त। २ बेफिक्र। बेपरवाह। ३ स्वतंत्र। स्वाधीन। ४ निडर। निर्भय। ५ स्पष्टवक्ता। हाजिरजवाब। ६ उद्धत। ७ सूफी सप्रदाय के फकीर जो स्वतंत्र विचार के होते हैं।

आज़ादी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्वतंत्रता। स्वाधीनता। २ रिहाई। छुटकारा। मुक्ति।

आजानु—वि० [सं०] घुटने तक (लंबा)।

आजानुबाहु—वि० [सं०] जिसके हाथ घुटनों तक लंबे हों। जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें। (महापुरुषों का एक लक्षण)।

आज़ार—संज्ञा पुं० [फा०] १. रोग। बीमारी। २ दुःख। तकलीफ।

आजिज़—वि० [अ०] १ दीन। विनीत। २ हैरान। तंग। परेशान। खिन्न।

आजिज़ी—संज्ञा स्त्री० [अ०] दीनता। हैरानी। परेशानी।

आजीवन—क्रि० वि० [सं०] जीवनपर्यंत। जिंदगी भर।

आजीविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्ति। रोजी।

आज्ञप्त—वि० [सं०] दे० "आज्ञापित"।

आज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधिकारपूर्ण हिदायत या निदेश। बड़ों का कहना। आदेश। हुक्म।

आज्ञाकारी—वि० [सं० आज्ञाकारिन्] [स्त्री० आज्ञाकारिणी] आज्ञा माननेवाला। हुक्म माननेवाला। बड़ों का कहना माननेवाला।

आज्ञापक—वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापिका] १ आज्ञा देनेवाला। हुक्म देनेवाला।

आज्ञापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख जिसमें कोई आज्ञा हो। हुक्मनामा।

आज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आज्ञापित] १ सूचित करना। जताना। २ आज्ञा देना।

आज्ञापालक—वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापालिका] १ आज्ञा पालन करनेवाला। आज्ञाकारी। फरमाबरदार।

आज्ञापालन—संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा के अनुसार काम करना। फरमाबरदारी।

आज्ञापित—वि० [सं०] १ सूचित किया हुआ। जताया हुआ। २ आज्ञप्त।

आज्ञाभंग—संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा न मानना। हुक्म तोड़ना।

आज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ घी। २ वे वस्तुएँ जिनकी आहुति दी जाय। हवि।

आटना—क्रि० स० [सं० √ अट्ट] तोपना ढाँकना। दबाना।

आटा—संज्ञा पुं० [सं० अन्न, प्र० अट्ट] गेहूँ, जौ आदि कुछ अन्नों का पिसा हुआ रूप। पिसान। चून।
 मुहा०—आटे दाल का भाव मालूम होना = संसार के कठोर या दुःखमय पक्ष का अनुमान होना। जीवन की कटुता का पता चलना। आटे दाल की फिक्र = जीविका की चिंता।

आटोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ आच्छादन। फैलाव। २ आडंबर। विभव।

आठ—वि० [सं० अष्ट] चार का दूना। सात और एक।
 मुहा०—आठ आठ आँसू रोना = बहुत अधिक विलाप करना। फूट-फूटकर रोना। आठों गाँठ कुमैत = (१) सर्वगुण-संपन्न। (२) चतुर। (३) छँटा हुआ। धूर्त। आठों पहर = दिनरात। चौबीस घंटे।

आठें—संज्ञा स्त्री० [हिं० आठ] अष्टमी।

आडंबर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आडंबरी] १ ऊपरी बनावट। तड़क भड़क। टीम टाम। ढोंग। २ आच्छादन। ३ तंबू। ४ बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है। पटह। ५ गंभीर शब्द। ६ तुरही का शब्द। ७ हाथी की चिघाड़।

आडंबरी—वि० [सं०] आडंबर करनेवाला। ऊपरी बनावट रखनेवाला। ढोंगी।

आड़—संज्ञा स्त्री० [सं० अल = रोक] १ ओट। परदा। घेरा। २ शरण। पनाह। सहारा। आश्रय। ३ रोक। अड़ान। ४ थूनी। टेक।
 संज्ञा पुं० [सं० अल = डंक] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक।
 संज्ञा स्त्री० [सं० आलि = रेखा] १ लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २ स्त्रियों के मस्तक पर का आड़ा तिलक। माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका।

आड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ना] ढाल। रोक।

आड़ना—क्रि० स० [सं० √अल् = वारण करना, हिं० आड़] १ रोकना। छेंकना २ बाँधना। ३. मना करना। न करने देना। ४ गिरवी या रेहन रखना। बधक रखना।

आड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अलि] १ एक धारीदार कपड़ा। २ लट्ठा। शहतीर।

वि० १ तिरछा। टेढ़ा। २ आरपार रखा हुआ।

मुहा०—आड़े आना = (१) रुकावट डालना। बाधक होना। (२) कठिन समय में सहायक होना। आड़े हाथों लेना = किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना। अनायास विफल करना। आड़े समय = कठिनाई के समय। कष्ट के दिनों में।

आड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ा] १ तबला, मृदंग आदि बजाने का एक ढंग। २ ओर। तरफ़। ३ सहायक। अपने पक्ष का। ४ दे० 'आरी'।

§ वि० स्त्री० तिरछी। उ०—आड़ी दीठि निहारि दवलि दादी भुकवाइह।

आड़ू—संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का फल जिसका स्वाद खटमीठा होता है।

आढ़—संज्ञा पुं० [सं० आढक] चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की एक तौल।

(पु)संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़] १ ओट। पनाह। २ अंतर। बीच। ३ नागा।

वि० [सं० आढ्य = संपन्न] कुशल। दक्ष।

आढक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार सेर की एक तौल। २ इतना अन्न नापने का काठ का एक बरतन। ३ अरहर।

आढ़त—संज्ञा स्त्री० [?] १ दूसरे का माल बेचने का व्यवसाय। २ बिक्री के लिये माल जमा रखने का स्थान। ३ गल्ले, किराने आदि की बहुत बड़ी दूकान जहाँ थोक बिक्री होती है। ४ दूसरे का माल बिकवाने के लिये मिलनेवाला धन। ५ वेश्यालय।

आढ़तिया—संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया"।

आढ्य, आढ्व—वि० [सं०] १ संपन्न। पूर्ण। भरा पूरा। २ युक्त। विशिष्ट। ३ उत्तम। बढ़िया। अच्छा। (पु)४ धनवान्। रुपए-पैसेवाला।

आणक—संज्ञा पुं० [सं०] एक रुपए का सोलहवाँ भाग। आना। चार पैसे।

आणविक—वि० [सं०] १ अणुसंबंधी। २ अणु से बना हुआ।

आतंक—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोब। दब-दबा। प्रताप। २. भय। आशंका। ३ रोग।

आततायी—संज्ञा पुं० [सं० आततायिन्] [स्त्री० आततायिनी] १ शास्त्रों के अनुसार किसी के घर, संपत्ति या खलिहान में आग लगानेवाला, प्राण लेने के लिये विष देनेवाला, शस्त्र से हत्या करनेवाला, भूमि छीननेवाला, धन हड़पनेवाला और स्त्री का अपहरण करनेवाला ये ६ प्रकार के काम करनेवाले आततायी माने जाते हैं। २ अत्याचारी मनुष्य। ३. घोर पाप करनेवाला आदमी।

आतप—संज्ञा पुं० [सं०] १ धूप। घाम। २ गरमी। उष्णता। ३. सूर्य का प्रकाश।

आतपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छाता। धूप से बचानेवाली वस्तु।

आतपपति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

आतपी—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

वि० धूप का। धूप संबंधी।

आतम—वि० [सं० आत्मन्] दे० "आत्म"

आतमा—संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा"

आतर(पु)—संज्ञा [सं०] खेवा। उतराई।

संज्ञा पुं० दे० "अंतर"।

आतश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आग। अग्नि।

आतशक—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० आतशकी] फिरंग रोग। उपदंश। गरमी।

आतशख़ाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ वह स्थान जहाँ कमरा गरम करने के लिये आग रखते हैं। २ वह स्थान जहाँ पारसियों की अग्नि स्थापित हो।

आतशदान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अँगीठी।

आतशपरस्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अग्नि की पूजा करनेवाला। अग्निपूजक। पारसी।

आतशबाज—संज्ञा पुं० [फ़ा०] विभिन्न रूपरंग की अग्नि और ध्वनि उत्पन्न करनेवाले खिलौने बनानेवाला।

आतशबाजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ बारूद के बने खिलौनों के जलने का दृश्य। २ बारूद के अनेक आकार और रंग-बिरंग की चिनगारियाँ फेंकनेवाले खिलौने।

आतशी—वि० [फ़ा०] १ अग्निसंबंधी। आग्नेय। २ अग्नि-उत्पादक। ३ जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के, जैसे, आतशी शीशी।

आतशी शीशा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह शीशा जिसपर एक ओर सूर्य की किरणें पड़ने पर दूसरी ओर केंद्रित होकर आग उत्पन्न करती हैं।

आतापी—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था। २ चील पक्षी।

आतिथेय—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० आतिथेयत्व] १ अतिथि की सेवा करनेवाला। २ अतिथि-सेवा की सामग्री। ३ अतिथि-सेवा संबंधी।

आतिथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

आतिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० "आतश"।

आतिशय्य—संज्ञा पुं० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज्यादती।

आती-पाती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाती] लड़कों का एक खेल। पहड़वा।

आतुर—वि० [सं०] [संज्ञा आतुरता] १ व्याकुल। व्यग्र। घबराया हुआ। उतावला। २ अधीर। उद्विग्न। बेचैन। ३ उत्सुक। ४. दुःखी। ५ रोगी।

क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २ जल्दी। शीघ्रता।

आतुरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुरता] दे० "आतुरता"।

आतुरसंन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो मरने के कुछ ही पहले लिया जाय।

आतुराना(पु)—क्रि० अ० [सं० आतुर] दे० "अतुराना"।

आतुरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर + हिं० ई (प्रत्य०)] १ घबराहट। व्याकुलता। २ शीघ्रता।

आत्म—वि० [सं० आत्मन्] १ अपना। २ आत्मा का। आत्मा संबंधी।

आत्मक—वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त (यौगिक शब्दों के अंत में)।

आत्मगत—वि० [सं०] १ अपने में लीन, आया या लगा हुआ। २ स्वगत।

आत्मगौरव—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान। आत्म-सम्मान।

आत्मघात—संज्ञा पुं० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालने का काम। आत्म-हत्या।

आत्मघातक, आत्मघाती—वि० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालनेवाला।

आत्मज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १. पुत्र। लड़का। २. कामदेव।

आत्मज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] तत्वज्ञानी। आत्मा का स्वरूप जाननेवाला व्यक्ति। तत्वदर्शी।

आत्मज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी। २ ब्रह्म का साक्षात्कार। ३ ब्रह्मज्ञान। तत्वज्ञान।

आत्मज्ञानी—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा और परमात्मा के संबंध की जानकारी रखनेवाला। आत्म और अनात्म तत्व को जाननेवाला व्यक्ति। द्रष्टा।

आत्मतुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आत्मज्ञान से उत्पन्न संतोष या आनंद। २. तृप्ति। संतोष।

आत्मत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरों के हित के लिये अपना स्वार्थ छोड़ना। स्वार्थत्याग।

आत्मनिवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। आत्मसमर्पण। (नवधा भक्ति में)।

आत्मनीय—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। २ साला। ३ विदूषक।

आत्मप्रशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने मुँह से अपनी बड़ाई। आत्मश्लाघा।

आत्मबल—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनी शक्ति। २ आत्मा का बल।

आत्मबोध—संज्ञा पुं० दे० "आत्मज्ञान"।

आत्मभू—वि० [सं०] १ अपने शरीर से उत्पन्न। २ आप ही आप उत्पन्न। स्वयंभू।
संज्ञा पुं० १ पुत्र। २ कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५. शिव।

आत्मरक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी रक्षा या बचाव। अपनी हिफाजत।

आत्मरत—वि० [सं०] [संज्ञा आत्मरति] आत्मज्ञान में लगा हुआ। ब्रह्मज्ञान में मग्न। आत्मा के आनंद में अनुरक्त।

आत्मरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आत्मानुरक्ति। २ ब्रह्मज्ञान।

आत्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही सबसे बढ़कर माना जाता हो। अध्यात्मवाद।

आत्मवादी—संज्ञा पुं० [सं० आत्मवादिन्] वह जो आत्मवाद को मुख्य मानता हो। आध्यात्मिकता को प्रधानता देनेवाला व्यक्ति।

आत्मविक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आत्मविक्रयी] १. अपने आपको बेच डालना। २. लौकिक सुख के लिये आध्यात्मिक गुणों की अवहेलना।

आत्मविक्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] जो अपने आपको बेचकर दास बना हो। अपनी आत्मा को दबाकर दूसरों की गुलामी करनेवाला व्यक्ति।

आत्मविद्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आत्मा और परमात्मा का स्वरूप पहचानता हो। ब्रह्मविद्। तत्वज्ञ।

आत्मविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह विद्या जिसमें जीवात्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। आत्म और अनात्म का तात्विक ज्ञान। ब्रह्मविद्या। अध्यात्म विद्या।

आत्मविस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने को भूल जाना। अपना ध्यान न रखना।

आत्मश्लाघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्मश्लाघी] अपनी तारीफ। आत्मप्रशंसा।

आत्मश्लाघी—वि० [सं०] अपने मुँह अपनी प्रशंसा करनेवाला।

आत्मसमान—संज्ञा पुं० दे० "आत्मगौरव"।

आत्मसंयम—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना। आत्मनिग्रह। दम।

आत्मसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

आत्महंता—वि० [सं० आत्महन्] अपना ही हनन करनेवाला। आत्मघाती।

आत्महत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने आपको मार डालना। खुदकुशी।

आत्महन्—वि० दे० "आत्महंता"।

आत्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्मिक, आत्मीय] १ मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली सत्ता। द्रष्टा। रूह। जीवात्मा। चैतन्य। २ मन। हृदय।
मुहा०—आत्मा ठंढी होना=(१) तुष्टि होना। तृप्ति होना। संतोष होना। प्रसन्नता होना। (२) पेट भरना। (३) भूख मिटना।
३ शरीर के भीतर की ज्योति। ४ सूर्य। ५ अग्नि। ६ वायु। ७ स्वभाव। धर्म।

आत्मानंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्मा का आनंद। २. आत्मा में लीन होने का सुख।

आत्माभिमान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आत्माभिमानी] अपनी इज्जत या प्रतिष्ठा का उचित गर्व। मान अपमान का ध्यान। आत्मगौरव। स्वात्माभिमान।

आत्माराम—संज्ञा पुं० [सं०] १ आत्मज्ञान में रमनेवाला। वीतराग। २. जीव। ३ ब्रह्म। ४ तोता। सुग्गा (प्यार का शब्द)।

आत्मावलंबी—संज्ञा पुं० [सं०] जो सब काम अपने बल पर करे। अपना ही भरोसा करनेवाला। स्वावलंबी।

आत्मिक—वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] १ आत्मा संबंधी। आत्मा का। २ अपना। ३ मानसिक।

आत्मीय—वि० [सं०] [स्त्री० आत्मीया] निज का। अपना।
संज्ञा पुं० १. अपना संबंधी। रिश्तेदार। नातेदार।

आत्मीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनायत। स्नेह। मैत्री।

आत्मोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना। आत्मत्याग। स्वार्थ का परित्याग।

आत्मोद्धार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में मिलाना। मोक्ष। २ अपना उद्धार या छुटकारा।

आत्मोन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आत्मा की उन्नति। २ अपनी उन्नति।

आत्यंतिक—वि० [सं०] [स्त्री० आत्यंतिकी] जो बहुतायत से हो। पराकाष्ठा का। हद से ज्यादा।

आत्रेय—वि० [सं० अत्रि] १. अत्रि संबंधी। २ अत्रि गोत्रवाला। अत्रि के वंश का।
संज्ञा पुं० १ अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा, चंद्रमा। २ आत्रेयी नदी के तट का देश जो दीनाजपुर जिले के अंतर्गत है।

आत्रेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक तपस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी। २ एक नदी जो दीनाजपुर जिले में है।

आथ(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "अर्थ"।

आथन(पु)—क्रि० अ० [सं० अस्त] अस्त होना। छिपना।

आथना(पु)—क्रि० अ० [सं० √अस्] होना।

आथर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अथर्ववेद का जाननेवाला ब्राह्मण। २ अथर्ववेद-विहित कर्म। ३. मंत्रतंत्र का पंडित। ४. वशिष्ठ मुनि।

आथि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थातृ, हिं० थाती] पूँजी। धन।

आदत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। २ अभ्यास। टेव। बान।

आदम—संज्ञा पुं० [अ०] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।

आदमकद—वि० [अ० आदम+फा० कद] आदमी की ऊँचाई के बराबर। मानवाकार (चित्र, मूर्ति या और कोई चीज)।

आदमजाद—संज्ञा पुं० [अ० आदम+फा० जाद] १ आदम की संतान। २. मनुष्य।

आदमी—संज्ञा पुं० [अ०] १ आदम की संतान। मनुष्य। मानव जाति।

मुहा०—आदमी बनना=सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना। शिष्ट होना।

२ नौकर। सेवक। ३ पति। स्वामी।

आदमीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनुष्यता। इंसानियत। २ सभ्यता। शिष्टता।

आदर—संज्ञा पुं० [सं०] समान। मान। सत्कार। प्रतिष्ठा। इज्जत।

आदरणीय—वि० [सं०] [स्त्री० आदरणीया] आदर के योग्य।

आदरना(पु)—क्रि० स० [सं० आदर] आदर करना। संमान करना। मानना।

आदरभाव—संज्ञा पुं० [सं० आदर+भाव] सत्कार। संमान। कदर। प्रतिष्ठा।

आदर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्पण। शीशा। आईना। २ टीका। व्याख्या। ३. जिसकी क्रियाएँ और गुण अनुकरण करने योग्य हों। ४. नमूना।

आदान प्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] लेना देना।

आदाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ नियम। कायदा। २ लिहाज। मान। ३. नमस्कार। सलाम।

आदि—वि० [सं०] १ प्रथम। पहला। शुरू का। आरंभ का। २ बिलकुल। नितांत।

संज्ञा पुं० [सं०] १ आरंभ। बुनियाद। मूल कारण। २. परमेश्वर।

अव्य० इसी प्रकार अन्य। वगैरह। आदिक।

आदिक—अव्य० [सं०] आदि। वगैरह। इसी तरह के और।

आदिकवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ संस्कृत का पहला काव्य "रामायण" रचनेवाले महर्षि वाल्मीकि।

आदि कारण—संज्ञा पुं० [सं०] पहला कारण जिससे सृष्टि के सब व्यापार उत्पन्न हुए, जैसे, ईश्वर या प्रकृति। २. मूल कारण।

आदित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आदित्य] दे० "आदित्य"।

आदित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. अदिति के पुत्र। २ देवता। ३. सूर्य। ४ इंद्र। ५. वामन। ६ विष्णु। ७ वसु। ८. विश्वेदेवा। ९ बारह मात्राओं का एक छंद। १०. मदार का पौधा।

आदित्यवार—संज्ञा पुं० [सं०] एतवार। रविवार।

आदिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

आदिपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।

आदिविपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

आदिम—वि० [सं०] पहले का। पहला।

आदिल—वि० [फा०] न्यायी। न्याय करनेवाला। इंसाफपसंद।

आदिष्ट—वि० [सं०] १. जिसे आदेश मिला हो। २ आदेश या हुक्म दिया हुआ।

आदी—वि० [अ०] अभ्यस्त।

†संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] अदरक।

आदृत—वि० [सं०] जिसका आदर किया गया हो। संमानित।

आदेय—वि० [सं०] लेने योग्य।

आदेश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १ आज्ञा। २. उपदेश। ३ प्रणाम। नमस्कार (साधु)। ४ ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ५ व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर परिवर्तन।

आदेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आदेश] दे० "आदेश"।

आद्यंत—क्रि० वि० [सं०] आदि से अंत तक। शुरू से आखीर तक।

आद्य—वि० [सं०] आदि का। पहला।

आद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। महामाया। आदि शक्ति। २ प्रकृति। ३ दस महाविद्याओं में से एक।

आद्योपांत—क्रि० वि० [सं०] आरंभ से अंत तक। आदि से अंत तक।

आर्द्रा—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।

आद्रित—वि० [सं० आदृत] दे० "आदृत।

आध—वि० [हिं० आधा] दो बराबर भागों में से एक। आधा। अर्ध।

यौ०—एक आध=थोड़े से।

आधा—वि० [सं० अर्द्ध] [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक।

मुहा०—आधे आध=दो बराबर भागों में। आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। बेजोड़। बेमेल। अंडबंड। आधा होना=दुबला होना। आधो आध=दो बराबर हिस्सों में बँटा हुआ। आधी बात=जरा सी भी अपमानसूचक बात।

आधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थापन। रखना। २ गिरवी या बंधक रखना। ३. धारण करना, जैसे, गर्भाधान।

आधार—संज्ञा पुं० [सं०] १ आश्रय। सहारा। अवलंब। २ व्याकरण में एक कारक। क्रिया के आधार का सूचक। अधिकरण कारक। ३ थाला। आलबाल। ४ पात्र। ५ नींव। बुनियाद। मूल। ६ योगशास्त्र में एक चक्र। मूलाधार। ७ आश्रय देनेवाला। पालन करनेवाला।

यौ०—प्राणाधार=जिसके आधार पर प्राण हो। परम प्रिय।

आधारित—वि० [सं० आधार] किसी के आधार पर ठहरा या ठहराया हुआ। अवलंबित।

आधारी—वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० आधारिणी] १ सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला। २ दे० "अधारी"।

आधासीसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्द्ध+शीर्ष] आधे सिर की पीड़ा। अधकपाली।

आधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मानसिक व्यथा। चिंता। २ रेहन। बंधक।

आधिक(पु)—वि० [हिं० आधा+एक] आधा।

क्रि० वि० आधे के लगभग। थोड़ा।

आधिकारिक—संज्ञा पुं० [सं०] दृश्य काव्य में मूल कथावस्तु (अं० प्लाट)।

वि० [सं०] १ अधिकारी का (अं० आफिशल)। २ प्रामाणिक।

आधिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

आधिदैविक—वि० [सं०] १ भौतिक कारण के बिना होनेवाला। २ अकस्मात् या अचानक होनेवाला। ३ देवता संबंधी। दैवकृत (प्राय दुःख के लिये)।

आधिपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभुत्व। स्वामित्व। कब्जा।

आधिभौतिक—वि० [सं०] १ व्याघ्र, सर्पादि जीवों द्वारा कृत। जीवों या शरीर-धारियों द्वारा प्राप्त (दुःख)। पंच महाभूतों से उत्पन्न या संबद्ध।

आधीनⓅ—वि० दे० "अधीन"।

आधुनिक—वि० [सं०] वर्तमान समय का। हाल का। आजकल का।

आधेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी सहारे पर टिकी हुई चीज। टिकी या टिकाई जाने वाली वस्तु। २ ठहराने योग्य। रखने योग्य। ३. गिरवी रखने योग्य।

आध्यात्मिक—वि० [सं०] १ आत्म-संबंधी। २ ब्रह्म और जीव संबंधी।

आनंद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। सुख।

यौ०—आनंदमंगल=अच्छा हालचाल। कुशल।

आनंदनाⓅ—क्रि० अ० [सं० आनंद] आनंदित या प्रसन्न होना।

आनंद-बधाई—संज्ञा स्त्री० [सं० आनंद+हिं० बधाई] १ मंगल-उत्सव। २ मंगल-अवसर।

आनंदमत्ता—संज्ञा स्त्री० दे० "आनंद-संमोहिता"।

आनंदवन—संज्ञा पुं० [सं०] काशी नगरी का एक पुराना नाम।

आनंदवर्धक—वि० [सं०] आनंद बढ़ानेवाला।

संज्ञा पुं० उन्नीस मात्राओं का एक छंद, जैसे—पायके नर जन्म क्यों लेते नहीं, ध्यान हरि-पद पद्म में देते नहीं। घोर कलियुग में नहीं कुछ सार है, राम ही का नाम इक आधार है॥

आनंदसंमोहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो। संभोग के सुख में मस्त प्रौढ़ा नायिका।

आनंदित—वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

आनंदी—वि० [सं०] १ हर्षित। प्रसन्न। मग्न। २ खुशमिजाज। प्रसन्न रहनेवाला।

आन—संज्ञा स्त्री० [सं० आणि=मर्यादा, सीमा] १ मर्यादा। २ शपथ। सौगंध। कसम। ३ विजय-घोषणा। दुहाई। ४ ढंग। तर्ज। ५ क्षण। लहमा।

मुहा०—आन की आन में=शीघ्र ही। चटपट। तुरंत।

६ अकड़। शान। ऐंठ। ठसक। ७ अदब। लिहाज। ८ प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। स्वाभिमान।

Ⓟवि० [सं० अन्य] दूसरा। और।

§ संज्ञा पुं० [सं० अन्न] अन्न। भोजन। उ०—जो आनिअ आन कपूर सम तबहु पियाजु पियाजु पै।

आनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ डंका। भेरी। दुंदुभी। २ गरजता हुआ बादल।

आनकदुंदुभी—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा नगाड़ा। २ कृष्ण के पिता वसुदेव।

आनत—वि० [सं०] १ कुछ झुका हुआ। २ नम्र।

आनतान—संज्ञा स्त्री० [हिं० आन+तान] १ ठसक। शेखी। २. जिद। अड़। ३ बे सिर पैर की बात। ऊटपटाँग।

आनद्ध—वि० [सं०] १ कसा हुआ। २ मढ़ा हुआ। ३ तत्पर।

संज्ञा पुं० वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो; जैसे—ढोल, मृदंग, तबला, नगाड़ा आदि।

आनन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुँह। २ चेहरा। मुखड़ा।

आनन फानन—क्रि० वि० [अ०] अति शीघ्र। फौरन। झटपट।

आननाⓅ—क्रि० स० [सं० आनयन] लाना।

आनबान—संज्ञा स्त्री० [हिं० आन+बान] १ सज-धज। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। शान-शौकत। २ ठसक। टेक। ३ अदा। नफासत।

आनयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाना। २ उपनयन संस्कार।

आनरेबुल—वि० [अं०] प्रतिष्ठित। मान्य। आदरणीय। (हाईकोर्ट के जजों, मंत्रियों, विधान मंडलों के सदस्यों आदि के नामों के पहले लगनेवाला सम्मानार्थक विशेषण।)

आनरेरी—वि० [अं०] अवैतनिक। कुछ वेतन न लेकर केवल प्रतिष्ठा के हेतु काम करनेवाला, जैसे—आनरेरी मजिस्ट्रेट, आनरेरी सेक्रेटरी।

आनर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनर्त्तक] १ द्वारका। २ आनर्त्त देश का निवासी। ३ नृत्यशाला। नाचघर। ४ युद्ध।

आना—संज्ञा पुं० [सं० आणक] १ एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा। २ किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।

क्रि० अ० [सं० आगमन] १. आगमन करना। किसी जगह पहुँचना। २. "जाना" का उलटा। ३ काल प्रारंभ होना। ४. फलना। फूलना। फल फूल लगना। ५. किसी भाव का उत्पन्न होना, जैसे—आनंद आना। ६ ज्ञान होना। जानना। समझ में आना।

मुहा०—आए दिन=प्रतिदिन। नित्य प्रति। रोज-रोज। आजकल। आता जाता=(१) आने जानेवाला। पथिक। बटोही। (२) ज्ञान। जानना; जैसे—उसे कुछ नहीं आता जाता। आ धमकना=एकबारगी आ पहुँचना। अचानक भारस्वरूप उपस्थित हो जाना। आ पड़ना=(१) सहसा गिरना। एकबारगी गिरना। (२) आक्रमण करना। (अनिष्ट घटना का) घटित होना। आया गया=(१) अतिथि। अभ्यागत। (२) बीता हुआ। समाप्त। आ रहना=गिर पड़ना। आ लेना=(१) पास पहुँच जाना। पकड़ लेना। (२) आक्रमण करना। टूट पड़ना। (किसी की) आ बनना=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। किसी को कुछ आना=किसी को कुछ ज्ञान होना। (किसी वस्तु) में आना=(१) ऊपर से ठीक या जमकर बैठना। (२) भीतर अँटना। समाना।

आनाकानी—संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] १ सुनी अनसुनी करने का कार्य। न ध्यान देने का कार्य। २ टालमटूल। हीला हवाला। ३ कानाफूसी।

आनाह—संज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र रुकने से पेट फूलना।

आनिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० आणि] दे० "आन"।

आनुगत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनुगत होने की क्रिया या भाव। २ अनुकरण।

आनुपूर्वी—वि० [सं० आनुपूर्वीय] क्रमानुसार। एक के बाद दूसरा।

आनुमानिक—वि० [सं०] अनुमानसंबंधी। खयाली। काल्पनिक।

आनुवंशिक—वि० [सं०] जो किसी वंश में बराबर होता आया हो। वंशानुक्रमिक। वंशक्रमागत।

आनुश्राविक—वि० [सं०] जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों।

आनुषंगिक—वि० [सं०] किसी बड़े कार्य के साथ थोड़े प्रयास में सधनेवाला। प्रासंगिक।

आन्वीक्षिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आत्मविद्या। २ तर्कविद्या। न्याय।

आप—सर्व० [सं० आत्मन्] १ स्वय। खुद (तीनों पुरुषों में)।

यौ०—आपकाज=अपना काम। स्वार्थ, जैसे—आपकाज महाकाज। आपकाजी=स्वार्थी। मतलबी। अपना ही स्वार्थ साधनेवाला। आपबीती=वह घटना जो अपने ऊपर घट चुकी हो। अनुभूत बात। आपरूप=स्वय। आप। साक्षात्।

मुहा०—आप आपकी पड़ना=अपने अपने काम में फँसना। अपनी ही चिंता होना। अपनी अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना। आप आपकी=अलग अलग। न्यारे न्यारे। अपने अपने को। आपको भूलना=(१) किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। (२) मदांध होना। घमंड में चूर होना। (३) अपनी प्रतिष्ठा और मर्यादा का ख्याल न करना। आप से=स्वय। खुद। अपने आप। स्वत। आप से आप=स्वय। खुद-ब-खुद। स्वत। अपने आप। आप ही=स्वय। अपने आप। स्वत। आप से आप। आप ही आप=(१) बिना किसी और की प्रेरणा के। आपसे आप। स्वत (२) मन ही मन में। किसी को संबोधन करके नहीं। स्वगत।

२. एकवचन में बहुवचन क्रिया के साथ "तुम", "तू" दोनों के स्थान में आदरार्थ प्रयोग किया जानेवाला शब्द। ३. ईश्वर। भगवान्।

संज्ञा पुं० [सं० अप्म्] जल। पानी।

आपगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

आपजात्य—संज्ञा पुं० [सं०] पिता, वंश या मूल से गुण आदि में कम या हीन होना।

आपण—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओं के बिकने का स्थान। दूकान। हाट। बाजार।

आपणिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ विक्रेता। दूकानदार। २ वणिक। व्यापारी।

आपताब(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आफताब"।

आपत्काल—संज्ञा पुं० [सं०] १. संकट। विपत्ति। दुर्दिन। २. दुष्काल। कुसमय।

आपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दु ख। क्लेश। विघ्न। २ विपत्ति। संकट। आफत। ३ कष्ट का समय। ४. जीविका-कष्ट। ५ दोषारोपण। ६. उज्र। एतराज।

आपत्य—वि० [सं०] अपत्य या संतान संबंधी। औलाद का।

आपद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विपत्ति। आपत्ति २ दु ख। कष्ट। विघ्न।

आपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दु ख। क्लेश। २ विपत्ति। आफत। ३ कष्ट का समय।

आपद्धर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कर्तव्य या धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिये हो। २ किसी के लिये अपने वर्ण विहित कर्मों के अभाव में जीवन रक्षार्थ कोई दूसरा काम या धंधा, जैसे ब्राह्मण के लिये वाणिज्य।

आपन(पु)—सर्व० दे० "अपना"।

आपनपौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ"

आपना(पु)—सर्व० दे० "अपना"।

आपन्न—वि० [सं०] १ आपद्ग्रस्त। दु खी। २ प्राप्त।

यौ०—शरणापन्न।

आपया—संज्ञा स्त्री० [सं० आपगा] नदी।

आपरूप—वि० [हिं० आप+सं० रूप] अपने स्वाभाविक स्वरूपवाला। मूर्तिमान्। साक्षात्। (महापुरुषों के लिये)।

आपरेशन—संज्ञा पुं० [अं०] फोड़ों आदि की चीरफाड़। शस्त्र-चिकित्सा।

आपस—अव्य० [हिं० आप+से] १ संबंध। नाता। भाईचारा, जैसे—आपसवालों में, आपस के लोग। २ एक दूसरे का साथ। एक दूसरे का संबंध। परस्पर। (केवल संबंध और अधिकरण कारक में)।

मुहा०—आपस का=(१) इष्टमित्र या भाईबंधु के बीच का। (२) पारस्परिक। एक दूसरे का। परस्पर का। आपस में=परस्पर। एक दूसरे से।

यौ०—आपसदारी=परस्पर का व्यवहार। भाईचारा।

आपसी—वि० [हिं० आपस] आपस का। पारस्परिक।

आपस्तंब—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आपस्तंबीय] वैदिक कर्मकांड (कृष्णयजुर्वेद) की एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि। २ कल्प सूत्रों की आपस्तंब शाखा के सूत्रकार। ३ एक स्मृतिकार।

आपा—संज्ञा पुं० [हिं० आप] १ अपनी सत्ता। अपना अस्तित्व। उ०—लेख समाना अलेख में यू आपा माहँ आप।—कबीर०। २ अपनी असलियत। वास्तविकता। ३ अहकार। घमंड। गर्व, उ०—मीठी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपौ सीतल होय।—कबीर०। होश-हवास। सुधबुध।

मुहा०—आपा खोना=(१) अहंकार त्यागना। नम्र होना। (२). मर्यादा नष्ट करना। अपना गौरव छोड़ना। आपा तजना=(१) अपनी सत्ता को भूलना। आत्मभाव का परित्याग करना। अपनापन छोड़ना। अपनत्व से दूर रहना। (२) अहंकार छोड़ना। निरभिमान होना। (३) प्राण छोड़ना। मरना। आपे में आना=होश हवास में होना। चेत में होना। आपे में न रहना=(१) आपे से बाहर होना। बेकाबू होना। अपने ऊपर वश न रखना। (२) घबराना। बदहवास होना। (३) अत्यंत क्रोध में होना। आपे से बाहर होना=(१) क्रोध या हर्ष के आवेश में सुधबुध खोना। आत्मविभोर होना। अपने गौरव को भुला देना। क्षुब्ध होना। (२) घबड़ाना। उद्विग्न होना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० आप] बड़ी बहिन।

आपाक—संज्ञा पुं० [सं०] मिट्टी के बर्तनों को पकाने का स्थान। आँवाँ।

आपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिराव। पतन। २ आकस्मिक घटना ३ आरंभ। ४ अंत।

आपातत—क्रि० वि० [सं०] १ अकस्मात्। अचानक। २ अंत को। आखिरकार। ३ पहली दृष्टि में। दृष्टि पड़ते ही।

आपातलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चार चरणों का वह मात्रिक छंद जिसके विषम चरणों में छ मात्राओं के बाद एक भगण और दो गुरुवर्ण तथा सम में आठ मात्राओं के बाद एक भगण और दो गुरुवर्ण होते हैं।

आपाधापी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आप+धाप] १ अपनी अपनी चिंता। अपनी अपनी धुन। २ खींचतान। ३ लड़ाभिड़ी।

आपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्यपान का स्थान। मद्यशाला। मदिरालय। २ शराबियों की मंडली।

आपापंथी—वि० [हिं० आप+सं० पथिन्] १ मनमाने मार्ग पर चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। २ कुमार्गी। कुपथी।

आपी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आप्य] १ पूर्वाषाढ नक्षत्र। २ पीनेवाला।

क्रि० वि० [हिं०] आपही। स्वय।

आपीड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ कलगी। सिरपेंच। २ पिंगल में एक विषम वृत्त जिसके पहले चरण में आठ, दूसरे में बारह

तीसरे में सोलह और चौथे में बीस मात्राएँ होती हैं। हर चरण के अंतिम दोनों वर्ण गुरु होते हैं, शेष सब लघु होते हैं। उ०—प्रभु असुर सुहर्ता, जग विदित पुनि जगत भर्ता॥ दनुज कुल अरि जग हित धरम धर्ता। सरवस तज मन भज नित प्रभु भव दुख हर्ता॥

आपु(पु)†—सर्व० दे० "आप"।

आपुन(पु)—सर्व० दे० "अपना", "आप"।

आपुस(पु)†—अव्य० दे० "आपस"।

आपूरना(पु)—क्रि० स० [सं० आपूरण] भरना। परिपूर्ण करना। पूरा करना।

आपेक्षिक—वि० [सं०] १ सापेक्ष। अपेक्षा रखनेवाला। २ दूसरी वस्तु के अवलंबन पर रहनेवाला। दूसरी वस्तु पर निर्भर रहनेवाला।

आप्त—वि० [सं०] १ प्राप्त। लब्ध (यौगिक में)। २ कुशल। दक्ष। ३ विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। साक्षात्कृतधर्मा। ४ प्रामाणिक। पूर्ण तत्त्वज्ञ का कहा हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋषि। २ शब्द प्रमाण। ३ भाग की लब्धि।

आप्तकाम—वि० [सं०] जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो गई हों। पूर्णकाम। पूर्णमनोरथ।

आप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।

आप्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आप्यायित] १ वृद्धि। वर्धन। २ तृप्ति। संतोष। ३ एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना। ४ मृत धातु को जगाना या जीवित करना।

आप्लावन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आप्लावित] डुबाना। बोरना। जलमग्न करना।

आफत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति। विपत्ति। २ कष्ट। दुख। ३ मुसीबत के दिन।

मुहा०—आफत उठाना=(१) दुःख सहना। विपत्ति भोगना। (२) ऊधम मचाना। हलचल मचाना। आफत का परकाला=(१) किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला। पटु। कुशल। (२) घोर उद्योगी। आकाश-पाताल एक करनेवाला। (३) हलचल मचानेवाला। उपद्रवी। चंचल। नटखट। आफत खड़ी करना=विपद् उपस्थित करना। विघ्न डालना। आफत ढाना=(१) ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना। (२) तकलीफ देना। दुख पहुँचाना। (३) अनहोनी बात कहना। आफत मचाना=(१) हलचल करना। ऊधम मचाना। दंगा करना। (२) गुलगपाड़ा करना। (३) जल्दी मचाना। उतावली करना। आफत लाना=(१) विपद् उपस्थित करना। (२) बखेड़ा खड़ा करना। झंझट पैदा करना। संकट में डालना।

आफताब—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आफताबी] सूर्य।

आफताबा—संज्ञा पुं० [फा०] हाथ मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।

आफताबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पान के आकार का पंखा जिसपर सूर्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है। २ एक प्रकार की आतशबाजी। ३ दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान या ओसारी।

वि० [फा०] १ गोल। २ सूर्यसंबंधी।

यौ०—आफताबी गुलकंद=वह गुलकंद जो धूप में तैयार किया जाय।

आफू—संज्ञा स्त्री० [हिं० अफीम, मि० अ० अफ़यून] अफीम।

आब—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चमक। आभा। ज्योति। २ छवि। कांति। रौनक। ३ समान। ४ तड़क-भड़क। ठाट-बाट। रोब-दाब। ५ धार (चाकू, तलवार आदि की)।

संज्ञा पुं० पानी। जल।

आबकार—संज्ञा पुं० [फा०] शराब बनानेवाला। कलवार।

आबकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो। शराबखाना। भट्ठी। २ मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी महकमा।

आबखोरा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पानी पीने का बरतन। गिलास। २ कटोरा।

आबजोश—संज्ञा पुं० [फा०] उबाला हुआ मुनक्का या सूखा अंगूर।

आबताब—संज्ञा स्त्री० [फा०] तड़क-भड़क। चमक-दमक। द्युति।

आबदस्त—संज्ञा पुं० [फा०] मलत्याग के बाद गुदेंद्रिय धोना। पानी छूना। मलप्रक्षालन।

आबदाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ दाना-पानी। अन्नजल। २ जीविका। ३ रहने का संयोग।

मुहा०—आबदाना उठना=जीविका न रहना। संयोग टलना। किसी जगह से हटने के लिये विवश होना।

आबदार—वि० [फा०] १ चमकीला। कांतिमान्। द्युतिमान्। २ शानवाला। स्वाभिमानी। पानीदार।

संज्ञा पुं० वह आदमी जो पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देता है।

आबदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] चमक। कांति।

आबदोज—वि० [फा०] १ पानी में डूबा हुआ। २ पानी के अंदर डूबकर चलनेवाला (जहाज या नाव)।

संज्ञा पुं० दे० "पनडुब्बी"।

आबद्ध—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। २ कैद। ३ फँसा हुआ।

आबनूस—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आबनूसी] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी काली होती है।

मुहा०—आबनूस का कुंदा=अत्यंत काले रंग का मनुष्य।

आबनूसी—वि० [फा०] १ आबनूस का सा काला। गहरा काला। २ आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिंचाई।

आबरवाँ—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

आबरू—संज्ञा स्त्री० [फा०] इज्जत। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान। मर्यादा।

आबला—संज्ञा पुं० [फा०] छाला। फफोला। झलका।

आबहवा—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी स्थान के मौसम के स्वाभाविक गुण और विशेषताएँ। जलवायु।

आबाद—वि० [फा०] १ बसा हुआ। २ प्रसन्न। कुशलपूर्वक। ३ उपजाऊ। जोतने बोने योग्य (जमीन)।

आबादकार—संज्ञा पुं० [फा०] वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।

आबादानी—संज्ञा स्त्री० दे० "अबादानी"।

आबादी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बस्ती। २ जनसंख्या। मर्दुमशुमारी। ३ वह भूमि जिसपर खेती हो।

आबी—वि० [फा०] १ पानी संबंधी। पानी का। २ पानी में रहनेवाला। ३ रंग

में हलका। फीका। ४ पानी के रंग का। हलका नीला या आसमानी। ५ जलतट-निवासी।

संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी होती हो। (खाकी का उलटा)।

आब्दिक—वि० [सं०] वार्षिक। सालाना।

आभ—संज्ञा स्त्री० दे० "आभा"।

आभरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभरित] १. सौंदर्य या शोभा बढ़ानेवाली चीज। २ मान, मर्यादा, गौरव या महत्व बढ़ानेवाली विशेषता। ३ भूषण। आभूषण। अलंकार। गहना। जेवर, जैसे—कंकण, नूपुर, चूड़ी, केयूर, हार, चूड़ामणि, आदि।

आभरनⓟ—संज्ञा पुं० [सं० आभरण] दे० "आभरण"।

आभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमक। दमक। कांति। दीप्ति। २ झलक। प्रतिबिंब। छाया।

आभार—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोझ। २ एहसान। उपकार। ३ गृहस्थी का बोझ। गृहप्रबंध की देखभाल की जिम्मेदारी। ४ एक वर्णवृत्त जो आठ तगण का होता है।

आभारी—वि० [सं० आभारिन्] जिसका उपकार किया गया हो। उपकृत।

आभाष—संज्ञा पुं० [सं०] प्राक्कथन। भूमिका। उपक्रमणिका।

आभास—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतिबिंब। छाया। झलक। २ पता। संकेत। ३ मिथ्या ज्ञान, जैसे—रस्सी में सर्प का। ४ जो ठीक या असल न हो। जिसमें असल की कुछ झलक भर हो। जैसे, रसाभास, हेत्वाभास।

आभासीन—वि० [सं० आभास] आभास रूप में दिखाई देनेवाला।

आभिजात्य—संज्ञा पुं० [सं०] कुलीनों के लक्षण और गुण। कुल-संस्कार। कुलीनता।

आभीर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] १ एक जाति। अहीर। ग्वाल। गोप। २ ११ मात्राओं का एक छंद।

आभीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अहीरिन। २ अहीर जाति की कन्या या स्त्री ३ एक संकर रागिनी। अबीरी। ४ प्राकृत का एक भेद।

आभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभूषित] गहना। जेवर। आभरण। अलंकार।

आभूखनⓟ—संज्ञा पुं० [सं० आभूषण] दे० "आभूषण"।

आभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ आनंद। तृप्ति। २ पूर्णता। ३ किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। पूर्णलक्षण। विस्तार। ४ किसी पद्य के बीच कवि के नाम का उल्लेख।

आभ्यंतर—वि० [सं०] भीतरी।

आभ्यंतरिक—वि० [सं०] भीतरी।

आभ्युदयिक—वि० [सं०] अभ्युदय, मंगल या कल्याण संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] नांदीमुख श्राद्ध।

आमंडक—संज्ञा पुं० [सं०] फर्श पर झाड़ू देनेवाला। फर्श बिछानेवाला। फर्राश।

आमंडन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सजावट। परिष्करण। २ फर्श झाड़ने-बुहारने का कार्य। फर्राशी।

आमंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलावा। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।

आमंत्रित—वि० [सं०] १ बुलाया हुआ। २ निमंत्रित। न्योता।

आम—संज्ञा पुं० [सं० आम्र] १. एक बड़ा पेड़ जिसकी पत्तियाँ अशोक की पत्तियों के बराबर किंतु उनसे कुछ मोटी और अखंडित किनारे की होती हैं। यह भारत का प्रधान फल है और स्वाद तथा मिठास के लिये प्रसिद्ध है। रसाल। सहकार। २ इस पेड़ का फल।

यौ०—अमचुर। अमचूर। अमहर।

वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध।

संज्ञा पुं० १ खाए हुए अन्न का कच्चा, न पचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है। आँव। २ वह रोग जिसमें आँव गिरती है। पेचिश।

वि० [अ०] १ साधारण। मामूली। २ लोक मात्र का। सबका। सार्वजनिक।

यौ०—आमखास = महलों के भीतर का वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं। दरबार आम = वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें। आमफहम = सर्व-विदित। आमवात = एक रोग।

३ प्रसिद्ध। विख्यात। सर्वविदित। खुली वस्तु या बात।

आमड़ा—संज्ञा पुं० [सं० आम्रातक] एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।

आमद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अवाई। आगमन। आना। २ आय। आमदनी।

यौ०—आमद-रफ्त = आना-जाना। आवागमन।

आमदनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आय। प्राप्ति। आनेवाला धन। २ व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। रफ्तनी का उलटा। आयात।

आमन—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। २ जाड़े में होनेवाला धान।

आमनाय—संज्ञा पुं० [सं० आम्नाय] दे० "आम्नाय"।

आमना-सामना—संज्ञा पुं०[अनु० आमना + हिं० सामना] मुकाबिला। भेंट।

आमने-सामने—क्रि० वि० [अनु० आमने + हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबिले में।

आमय—संज्ञा पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

आमरक्तातिसार—संज्ञा पुं० [सं०] आँव और लहू के साथ दस्त होने का रोग।

आमरखⓟ—संज्ञा पुं० [सं० आमर्ष] दे० "आमर्ष"।

आमरखनाⓟ—क्रि० अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आमरण—क्रि० वि० [सं०] मरणकाल तक। जिंदगी भर।

आमरस—संज्ञा पुं० दे० "अमरस"।

आमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमर्दित] १ जोर से मलना, पीसना या रगड़ना। मसलना। २ मालिश।

आमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रोध। गुस्सा। २ असहनशीलता। तैंतीस संचारी भावों में से एक।

आमलक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्प० आमलकी] आँवला। धात्रीफल। अखरोट के बराबर बिना छिल्के का एक गोल और कसैला फल जो चटनी, अचार, मुरब्बे और दवा के काम आता है।

आमलकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति का आँवला। आँवली।

आमला—संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।

आमवात—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें आँव गिरती है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।

आमशूल—संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण पेट में ऐंठन और दर्द होने का रोग।

आमातिसार—संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।

आमात्य—संज्ञा पुं० [सं० अमात्य] दे० "अमात्य"।

आमादगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तैयारी। मुस्तैदी। तत्परता।

आमादा—वि० [फा०] उद्यत। तत्पर। उतारू। तैयार। सनद्ध।

आमान्न—संज्ञा पुं० [सं०] कच्चा और बिना पकाया हुआ अन्न। सीधा। रसद।

आमाल—संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। करनी। काम।

आमालनामा—संज्ञा पुं० [अ० ऐमालनामा] वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चालचलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय—संज्ञा पुं० [सं०] पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमाहल्दी—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रहरिद्रा] एक औषधीय पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह और गंध में कचूर की तरह होती है।

आमिख—संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।

आमिर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आमिल"

आमिल—संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करनेवाला। २ कर्तव्यपरायण। ३ अमला। कर्मचारी। ४ हाकिम। अधिकारी। ५ ओझा। सयाना। ६ पहुँचा हुआ फकीर। सिद्ध।

वि० [सं० अम्ल] खट्टा। अम्ल।

आमिष—संज्ञा पुं० [सं०] १ मांस। गोश्त। २ भोग्य वस्तु। ३ लोभ। लालच।

आमिषप्रिय—वि० [सं०] जिसे मांस प्यारा हो। मांसाहारी।

आमिषाशी—वि० [सं० आमिषाशिन्] [स्त्री० आमिषाशिनी] मांसभक्षक। मांस खानेवाला।

आमी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] १ छोटा कच्चा आम। अँबिया। २ एक पहाड़ी पेड़।

संज्ञा स्त्री० [सं० आम=कच्चा] जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी बाल।

आमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक की प्रस्तावना। २ भूमिका।

आमेजना(पु)—क्रि० सं० [फा० आमेज] मिलाना। सानना।

आमोख्ता—संज्ञा पुं० [फा० आमोख्त] पढ़े हुए पाठ की आवृत्ति। उद्धरणी। पाठ।

आमोद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमोदित, आमोदी] १ आनंद। हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २ दिलबहलाव। तफरीह।

आमोद प्रमोद—संज्ञा पुं० [सं०] भोगविलास। हँसी-खुशी।

आमोदित—वि० [सं०] १. प्रसन्न। खुश। २ दिल लगा हुआ। जी बहला हुआ।

आमोदी—वि० [सं०] [स्त्री० आमोदिनी] प्रसन्न रहनेवाला। खुश रहनेवाला।

आम्नाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभ्यास। २ परंपरा। ३ वेद आदि का पाठ और अभ्यास। ४ वेद।

यौ०—अक्षराम्नाय=वर्णमाला। कुलाम्नाय=कुलपरंपरा। कुल की रीति।

आम्र—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ या फल।

आम्रकूट—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वतमाला का दक्षिणपूर्वी भाग जहाँ से सोन और नर्मदा नदियाँ निकली हैं। अमरकंटक।

आयँती-पायँती—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्रस्थ + फा० पायताना] सिरहाना-पायताना। मुड़तारी गोड़तारी।

आय—संज्ञा स्त्री० [सं०] आमदनी। आमद। लाभ। प्राप्ति। धनागम।

यौ०—आयव्यय = आमदनी और खर्च।

आयत—वि० [सं०] विस्तृत। फैला हुआ। लंबाचौड़ा। दीर्घ। विशाल।

संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।

आयतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान। घर। मंदिर। २ ठहरने की जगह। ३ देवताओं की वंदना की जगह। ४ आकार। विस्तार। ५ किसी वस्तु का अविच्छिन्न विस्तार या परिमाण। घनत्व (विज्ञान)। ६ किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (या ऊँचाई) का गुणनफल। घनफल (गणित)।

आयत्त—वि० [सं०] अधीन।

आयत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।

आयद—वि० [अ०] १ आरोपित। लगाया हुआ। २ घटित। घटता हुआ।

आयस—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयसी] १ लोहा। २ लोहे का कवच।

आयसी—वि० [सं० आयसीय] लोहे का।

संज्ञा पुं० [सं०] कवच। जिरहबख्तर।

आयसु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा। हुक्म।

(पु) संज्ञा स्त्री० दे० "आयुष्य"।

आया—संज्ञा स्त्री० [पुर्त्त०] बच्चों को दूध पिलाने और उनकी निगरानी करनेवाली सेविका। धाय। धात्री।

अव्य० [फा०] क्या। कि (ब्रज० 'कैधों' के समान), जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।

आयात—संज्ञा पुं० [सं०] देश में बाहर से आया हुआ माल। "निर्यात" का उलटा।

आयाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. लंबाई। विस्तार। फैलाव। २ नियमित करने की क्रिया। नियमन, जैसे, प्राणायाम।

आयास—संज्ञा पुं० [सं०] परिश्रम। मेहनत।

आयु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवन का व्यतीत काल। वय। उम्र। २ संपूर्ण जीवन-काल। जन्म से मृत्यु तक का कुल समय। जिंदगी।

मुहा०—आयु खुटाना=आयु कम होना।

आयुध—संज्ञा पुं० [सं०] हथियार। शस्त्र।

आयुर्बल—संज्ञा पुं० [सं०] आयुष्य। उम्र।

आयुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयुर्वेदीय] आयु-संबंधी शास्त्र। चिकित्सा-शास्त्र। वैद्यक।

आयुष्मान्—वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरजीवी।

आयुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "आयुर्बल"। २ आयु।

आयोगव—संज्ञा पुं० [सं०] वैश्य वर्ण की स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति। (मनु स्मृति)

आयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य में लगाना। नियुक्ति। २ प्रबंध। इंतजाम। तैयारी। धूमधाम। ३ उद्योग। ४ सामग्री। सामान।

आयोजना—संज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"।

आयोजित—वि० [सं०] १ जिसका आयोजन हो चुका हो। जिसकी तैयारी कर ली गई हो। २ सोचा हुआ।

आरंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी क्रिया का आदि रूप या प्रथम अवस्था। श्रीगणेश। सूत्रपात। उठान। शुरू। २ उत्पत्ति। उद्भव। आदि। ३ शुरू का हिस्सा। प्रारंभिक अंश।

आरंभना—क्रि० अ० [सं० आरंभण] शुरू होना।

क्रि० स० आरंभ करना।

आर—संज्ञा पुं० [सं०] १ विना साफ किया निकृष्ट लोहा। २ पीतल। ३ किनारा। ४ कोना। ५ पहिए का आरा। ६ हरताल।

संज्ञा स्त्री० [सं० अल=डंक] १ लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है। अनी। पैनी। २ नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३ बिच्छू, भिड़ या मधुमक्खी आदि का डंक।

संज्ञा स्त्री० [सं० आरा] चमड़ा सीने का सूआ या टेकुआ। सुतारी।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़] जिद। हठ।

†संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तिरस्कार। घृणा। २ अदावत। वैर। ३ शर्म। लज्जा।

आरक्त—वि० [सं०] १ ललाई लिए हुए। कुछ कुछ लाल। २ लाल। रक्त। सुर्ख।

आरग्वध—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृक्ष जिसके फल बड़ी मेम के समान किंतु उससे लंबे और बड़े छिलकोंवाले होते हैं। ये कषाय-मधुर और विरेचक होते हैं। अमलतास।

आरज(पु)—वि० दे० "आर्य"।

आरजा—संज्ञा पुं० [अ० आरिज़] रोग। बीमारी।

आरजू—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ इच्छा। वाञ्छा। २ अनुनय। विनय। विनती।

आरण्य—वि० [सं०] जंगली। वन का।

आरण्यक—वि० [सं०] [स्त्री० आरण्यकी] वन का। जंगल का। वन्य। जंगल में रहनेवाला। वनवासी।

संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के चतुर्विध विभाजन का वह खंड जिसमें पूर्ववर्ती मंत्र (संहिता) और ब्राह्मण खंडों के आधार पर वह तत्वचिंतन है जो उपनिषद् नामक परवर्ता चतुर्थ खंड में वेदांत के रूप में पूर्ण विकसित हुआ।

आरत(पु)—वि० दे० "आर्त्त"।

आरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरक्ति। २ दे० "आर्ति"।

आरती—संज्ञा स्त्री० [सं० आरात्रिक] १ नीराजन। पूजा में किसी देवमूर्ति के समक्ष कपूर या घी का दीपक मंडलाकार घुमाना। २ आदर या मंगल के निमित्त किसी के सम्मुख इसी प्रकार दीपक घुमाना। ३ षोडशोपचार पूजन का एक अंग। ४ आरती करने का पात्र। ५ अत्यधिक आदर, प्रेम या सेवा करना। ६ आरती में पढ़ा जानेवाला स्तोत्र या विनय के पद या प्रार्थना।

मुहा०—आरती करना या उतारना= सिर चढ़ाना।

आरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगल। वन।

आरपार—संज्ञा पुं० [सं० आर=किनारा +पार=दूसरा किनारा] यह किनारा और वह किनारा। यह छोर और वह छोर। दोनों पार्श्व। वार पार।

क्रि० वि० [सं०] एक किनारे से दूसरे किनारे तक। एक तल से दूसरे तल तक, जैसे, आरपार जाना या छेद होना।

आरबल(पु), **आरबला**—संज्ञा पुं० दे० "आयुर्बल"।

आरब्ध—वि० [सं०] आरंभ किया हुआ। शुरू किया हुआ।

आरभटी—संज्ञा [स्त्री०] १ रंगमंच पर अलौकिक और वीभत्स घटनाएँ दिखाने की वृत्ति। २ रूपक की वह शैली जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात-प्रतिघात, और वधन आदि में रौद्र, भयानक और वीभत्स रसों में होता है।

आरव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। आवाज। २ मंद शब्द। धीमी आवाज। ३ आहट।

आरषी(पु)—वि० स्त्री० [सं० आर्ष] आर्षी। ऋषियों की। ऋषि संबंधी।

आरस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।

आरसी—संज्ञा स्त्री० [सं० आदर्श] १ शीशा। आईना। दर्पण। २ रत्न या शीशा जड़ा हुआ वह कटोरीदार छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।

आरा—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० आरी] १ लकड़ी चीरने की लोहे की एक दाँतेदार पट्टी जिसके दोनों ओर लकड़ी के दस्ते लगे रहते हैं। २ चमड़ा सीने का टेकुआ या सूजा। सुतारी।

संज्ञा पुं० [सं० आर] लकड़ी की चौड़ी पट्टी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।

आराइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] सजावट।

यौ०—आरायशी सामान=कमरे की सजावट का सामान, जैसे मेज, कुरसी आदि।

आराकश—संज्ञा पुं० [हिं० आरा+ फा० कश] आरा चलानेवाला।

आराजी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भूमि। जमीन। २ खेत।

आराति—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।

आराधक—वि० [सं०] [स्त्री० आराधिका] उपासक। पूजा करनेवाला।

आराधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य] १. सेवा। पूजा। उपासना। २ तोषण।

आराधना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूजा। उपासना।

(पु)क्रि० स० [सं० आराधन] १ उपासना करना। पूजना। २ संतुष्ट करना। प्रसन्न करना।

आराधनीय—वि० [सं०] आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

आराधित—वि० [सं०] जिसकी आराधना की गई हो। पूजित।

आराध्य—वि० [सं०] १ जिसकी आराधना की जाय। २ आराधना करने योग्य। पूज्य। उपास्य।

आराम—संज्ञा पुं० [सं०] बाग। उपवन।

संज्ञा पुं० [फा०] १ चैन। सुविधा। सुख। २ विश्राम।

मुहा०—आराम करना=(१) सोना। (२) विश्राम करना। आराम लेना= विश्राम करना। सुस्ताना। आराम से= फुरसत में। धीरे धीरे। सुख से।

३ चंगापन। सेहत। स्वास्थ्य।

वि० [फा०] चंगा। तंदुरुस्त। स्वस्थ।

आराम कुरसी—संज्ञा स्त्री० [फा० आराम +अ० कुरसी] लेटकर आराम करने के लिये एक प्रकार की लंबी कुरसी।

आरामगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ विश्राम करने का स्थान। २ सोने की जगह।

आरामतलब—वि० [फा०] [संज्ञा आरामतलबी] १ सुख चाहनेवाला। सुकुमार। २ सुस्त। आलसी।

आरास्ता—वि० [फा०] सजा हुआ। सुसज्जित।

आरि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़] जिद। हठ।

आरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० "आरा" का अल्पा०] १ लकड़ी या अन्य ठोस पदार्थ चीरने का एक दाँतेदार औजार या यंत्र। छोटा आरा। २ लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। अरई। ३ जूता सीने का छोटा सूजा। सुतारी।

संज्ञा स्त्री० [सं० आर=किनारा] १ ओर। तरफ। २ कोर। अवठ।

आरुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] ["अरुण" का भाव०]। अरुणता। लाली।

आरूढ़—वि० [सं०] [भाव० आरूढ़ता] १ चढ़ा हुआ। सवार। २ दृढ़। स्थिर। किसी बात पर जमा हुआ। ३ सनद्ध। तत्पर। उतारू।

आरोⓟ—संज्ञा पुं० दे० "आरव"।

आरोगनाⓟ—क्रि० स० [सं० आ+हिं० रोगना (रुज्=हिंसा)] भोजन करना। खाना।

आरोग्य—संज्ञा पुं० [सं०] नीरोग रहने का भाव। स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती।

आरोधनाⓟ—क्रि० स० [सं० आ+रुंधन] रोकना। छेंकना। आड़ना। घेरना।

आरोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थापित करना। लगाना। मढ़ना, जैसे दोषारोप। २ किसी पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ झूठी कल्पना। ४ एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना (साहित्य)।

आरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोपित, आरोप्य] १ लगाना। स्थापित करना। मढ़ना। २ किसी पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ किसी वस्तु के गुणों को दूसरी वस्तु में मानना। ४ मिथ्या ज्ञान।

आरोपनाⓟ—क्रि० स० [सं० आरोपण] १. लगाना। २ स्थापित करना।

आरोपित—वि० [सं०] १ लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २ रोपा हुआ।

आरोह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोही] १ ऊपर की ओर गमन। चढ़ाव। २ आक्रमण। चढ़ाई। ३ घोड़े हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। ४. वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५ कारण से कार्य का प्रादुर्भाव या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति, जैसे—बीज से अंकुर। ६. क्षुद्र और अल्प चेतनवाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। आविर्भाव। विकास (आधुनिक)। ७ नितंब। ८ संगीत में स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचा स्वर निकालना।

आरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोहिन] चढ़ना। सवार होना।

आरोही—वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरोहिणी] चढ़नेवाला। ऊपर जानेवाला।

संज्ञा पुं० १ संगीत में वह स्वरसाधन जो षड्ज से निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाय। २ सवार।

आर्जव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सीधापन। ऋजुता। २ सरलता। सुगमता। ३ व्यवहार की सरलता। ४ विनय।

आर्त, आर्त्त—वि० [सं०] १ पीड़ित। चोट खाया हुआ। २ दुःखी। कातर। ३ अस्वस्थ।

आर्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीड़ा। दर्द। २ कातरता। दुःख। क्लेश।

आर्तनाद—संज्ञा पुं० [सं०] दुःखसूचक शब्द। पीड़ा के कारण निकली हुई ध्वनि। करुण पुकार। क्रंदन।

आर्तव—वि० [सं०] [स्त्री० आर्तवी] १ ऋतु में उत्पन्न। मौसिमी। सामयिक। २ मासिकधर्म संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] युवतियों का मासिक स्राव।

आर्तस्वर—संज्ञा पुं० [सं०] दुःखसूचक शब्द। क्रंदन।

आर्थिक—वि० [सं०] धन-संबंधी। द्रव्यसंबंधी। रुपए पैसे का। माली।

आर्थी—वि० [सं०] अर्थ संबंधी। मतलब से संबंध रखनेवाली, जैसे—आर्थी उपमा।

आर्द्र—वि० [सं०] [संज्ञा आर्द्रता] १ नम। गीला। भीगा। ओदा। तर। २ सना। लथपथ।

आर्द्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र। २ वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आषाढ़ के आरंभ का काल। ३ ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। ४ अदरक।

आर्य—वि० [सं०] [स्त्री० आर्या] १ माननीय। श्रेष्ठ। २ बड़ा। पूज्य। ३ श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। कुलीन। ४ आर्य जाति का। आर्य संबंधी।

संज्ञा पुं० १ श्रेष्ठ पुरुष। अच्छे कुल में उत्पन्न व्यक्ति। २ मनुष्यों की वह प्राचीन भारोपीय (अं० इंडो-योरोपियन) जाति जो ईसा के हजारों वर्ष पहले से सभ्यता के लिये प्रसिद्ध है।

आर्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ आर्यपन। कुलीनता। भद्रता।

आर्यपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन आर्य नारियों द्वारा अपने पति के लिये प्रयुक्त शब्द।

आर्यसमाज—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन वैदिक धर्म के आधार पर अपने समकालीन हिंदू समाज के सुधार के लिये स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित संस्था।

आर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ सास। ३ दादी। पितामही। ४ मुख्यतः संस्कृत और मराठी में प्रयुक्त एक मात्रिक अर्धसम या विषम वृत्त जिसके पाँच भेद हैं—(१) आर्या या गाहा (गाथा) जिसमें १२, १८, १२, १५ मात्राओं के क्रम से चार चरण होते हैं, (२) गीति या उग्गाहा (उद्गाथा) जिसमें १२, १८, १२, १८ के क्रम से चार चरण होते हैं, (३) उपगीति या गाह जिसमें १२, १५, १२, १५ के क्रम से चार चरण होते हैं, (४) उद्गीति या विग्गाहा (विगाथा) जिसमें १२, १५, १२, १८ के क्रम से चार चरण होते हैं और (५) आर्यागीति साहिनी या खंधा (स्कंधक) जिसमें १२, २०, १२, २० के क्रम से चार चरण होते हैं। आर्या में चार मात्राओं का एक गण होता है और विषम गणों में जगण नहीं रखे जाते।

आर्यागीत—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "आर्या"।

आर्यावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आर्यावर्तीय] हिमालय और विंध्य के बीच का भूखंड। उत्तरी भारतवर्ष। १५ अगस्त, सन् १९४७ के पहले का अविभक्त उत्तर भारत।

आर्ष—वि० [सं०] १ ऋषि संबंधी। २ किसी प्राचीन ऋषि का कहा हुआ। ३. वैयाकरण पाणिनि से पहले का। अपाणिनेय।

आर्ष प्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि के पहले के ग्रंथों में मिलनेवाले व्याकरणविरुद्ध प्रयोग।

आर्ष विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में तीसरा, जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेता था।

आलंकारिक—वि० [सं०] १ अलंकार संबंधी। २ अलंकारयुक्त। ३ अलंकारों से लदा हुआ (काव्य, भाषा)। ४. अलंकार जाननेवाला।

आलंग—संज्ञा पुं० [हिं० अलंग] घोड़ियों की मस्ती।

आलंब—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवलंब। आश्रय। सहारा। २ गति। शरण।

आलंबन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलंबित] १ सहारा। आश्रय। अवलंब। २ भारतीय काव्य और नाट्य शास्त्र के अनुसार किसी दृश्य या श्रव्य काव्य का नायक या नायिका। रस निष्पत्ति के तीन निमित्तों में से एक। ३ आलंबन विभाव। ४ बौद्ध दर्शन में वस्तु का मनोगत परिज्ञान। ध्यानजनित ज्ञान। ५ साधन। कारण। उपकरण।

आलंभ, आलंभन—संज्ञा पुं० [सं०] १ छूना। २ पकड़ना ३ मारण। वध।

आल—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल।

संज्ञा स्त्री० [सं० √अल्=भूषित करना] १ एक पौधा जिसकी छाल और जड़ से लाल रंग निकलता है। २ इस पौधे से बना हुआ रंग।

संज्ञा पुं० [अनु०] झंझट। बखेड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्र] १ गीलापन। तरी। २. आँसू।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेटी की संतति।

यौ०—आल-औलाद=बाल-बच्चे। २ संतान। ३ वंश। कुल। खानदान।

आलकस—संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलजाल—वि० [हिं० आल=झंझट+जाल] व्यर्थ का। ऊटपटाँग।

संज्ञा पुं० आडंबर। बखेड़ा।

आलथी-पालथी—संज्ञा स्त्री० [अनु० आलथी+हिं० पालथी] दाईं जंघापर बाईं और बाईं पर दाहिनी एड़ी रखकर बैठने का ढंग या आसन।

आलन—संज्ञा पुं० [हिं० आल] १ दीवार बनाने की मिट्टी में मिलाया जानेवाला घास-भूसा, खर आदि। २ साग में मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

आलपीन—संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलफिनेट] वह बिना छेद की घुंडीदार सुई जिससे कागज के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

आलबाल—संज्ञा पुं० दे० "आलवाल"।

आलम—संज्ञा पुं० [अ०] १ दुनिया। संसार। २ जनसमूह। भीड़। ३ अवस्था। दशा।

आलमारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी"।

आलय—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर। मकान। २ स्थान।

आलवाल—संज्ञा पुं० [सं०] थाला। आलबाल।

आलस—वि० [सं०] आलसी। सुस्त।

(पु)† संज्ञा दे० "आलस्य"।

आलसी—वि० [हिं० आलस] सुस्त। काहिल।

आलस्य—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य करने में अनुत्साह। सुस्ती। काहिली।

आला—संज्ञा पुं० [सं० आलय] ताक। ताखा।

वि० [अ०] सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० [अ० आल] औजार। हथियार।

(पु)†वि० [सं० आर्द्र] गीला। ओदा।

आलाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] गंदी वस्तु। मल। गलीज।

आलान—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या जंजीर। २ बंधन।

आलाप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलापक, आलापित] १ कथोपकथन। वार्तालाप। संभाषण। पारस्परिक बातचीत। २ संगीत के स्वरों की साधना। तान। ३ तार-स्वर। तेज आवाज।

आलापक—वि० [सं०] १ बातचीत करनेवाला। २ गानेवाला।

आलापचारी—संज्ञा स्त्री० [सं० आलाप+चारी] स्वर साधना। तान लेना।

आलापना—क्रि० स० [सं०] गाना। सुर खींचना। तान लेना।

आलापिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अलापनेवाली। २ बाँसुरी।

आलापी—वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आलापिनी] १ बोलनेवाला। २ आलाप करनेवाला। तान लगानेवाला। गानेवाला।

आलारासी—वि० [?] लापरवाह।

आलिंगन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] भुजाओं में समेटकर छाती से लगाना। गले लगाना। भेंटना।

आलिंगना(पु)—क्रि० स० [सं० आलिंगन] आलिंगन करना।

आलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सखी। सहेली। २. बिच्छू। ३ भ्रमरी। ४ पंक्ति। अवली।

आलिम—वि० [अ०] विद्वान्। पंडित।

आली—संज्ञा स्त्री० [सं० आलि] सखी।

(पु)†वि० स्त्री० [सं० आर्द्र] भीगी हुई।

वि० [अ०] बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलीजाह—वि० [अ०] बहुत ऊँचे पद या मर्यादावाला। महामान्य। (विशेषत. बादशाहों के लिये प्रयुक्त)।

आलीशान—वि० [अ०] भव्य। भड़कीला। शानदार। विशाल।

आलू—संज्ञा पुं० [सं० आलु ?] एक प्रसिद्ध कंद जो तरकारी के काम आता है।

आलूचा—संज्ञा पुं० [फा० आलूच] १ पंजाब और उसके पश्चिम के देशों में होनेवाला एक पेड़। २ इस पेड़ का फल। मोटिया बदाम। गर्दालू।

आलूबुखारा—संज्ञा पुं० [फा०] सुखाया हुआ आलूचा।

आलेख—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलेख्य] लिखावट। लिपि।

आलेखन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखना। लिखाई। २ चित्र अंकित करना।

आलेख्य—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र। तसवीर।

यौ०—आलेख्य विद्या=चित्रकारी।

वि० लिखने या अंकित करने योग्य।

आलेप—संज्ञा पुं० [सं०] लेप। पलस्तर।

आलोक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोक्य, आलोकित] १ प्रकाश। उजाला। रोशनी। २ चमक। ज्योति।

आलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश डालना। २ चमकाना। ३ दिखलाना।

आलोकित—वि० [सं०] १ जिसपर प्रकाश पड़ रहा हो। २ चमकता हुआ।

आलोचक—वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १ जो आलोचना करे। २ देखनेवाला।

आलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुणदोष का विचार। विवेचन। २. दर्शन।

आलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आलोचित] किसी वस्तु के गुणदोष का विचार। समीक्षा।

आलोड़न—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोड़ित] १. मथना। हिलोरना। २ विचार। ३ पर्यालोचन। तर्क वितर्क।

आलोड़ना(पु)—क्रि० स० [सं० आलोड़न] १ मथना। २ हिलोरना। ३ खूब सोचना-विचारना। ऊहापोह करना।

आल्हा—संज्ञा पुं० [देश०] ३१ मात्राओं का वह छंद जिसका प्रयोग जगनिक ने अपने "आल्हा" नामक वीर-रस-प्रधान काव्य में किया है। वीर छंद। इसे मात्रिक सवैया भी कहते हैं, जैसे—बनी रसोई जब आल्हा के बहिमाँ परी साठि मन हींग।

२. मध्यकालीन चंदेल राजाओं की वर्तमान बाँदा जिले में स्थित राजधानी महोवा के दो नवयुवक क्षत्रिय भाइयों (आल्हा और ऊदल) के पराक्रम, युद्धों और वीरगति का ओजस्वी वर्णन करनेवाला काव्य। ३ उक्त काव्य के नायक का नाम। ४ बहुत लबाचौड़ा वर्णन।

आव(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु।

आवज, आवझ—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

आवटणों(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० √आवट्ट= पीड़ना, दुखी करना] पीड़ा। दुख। उ०—जिहि जिहि जौंग विनाण है तिहि घटि आवटणों घणों।—कबीर०।

आवटना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० आवटणों] हलचल। उथल-पुथल। अस्थिरता सकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

आवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

आवभगत—संज्ञा स्त्री० [हिं० आव+भक्ति] आदर-सत्कार।

आवरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवरित, आवृत] १ आच्छादन। ढकन। ढकना। २. वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो। बेठन। ३. परदा। ४ ढाल। ५. दीवार इत्यादि का घेरा। ६ चलाए हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

आवरण-पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज जो किसी पुस्तक के ऊपर लगा रहता है और जिसपर पुस्तक तथा लेखक का नाम आदि रहता है। जिल्द।

आवरण-पृष्ठ—संज्ञा पुं० दे० "आवरण-पत्र"।

आवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवर्जित] छोड़ देना। परित्याग।

आवर्जना—संज्ञा स्त्री० दे० "आवर्जन"।

आवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी का भँवर। २ न बरसनेवाला बादल। ३ एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। लाजवर्द। ४ सोच-विचार। चिंता।

वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

आवर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लौट आनेवाला व्यक्ति। घूमनेवाली वस्तु। २ पुनरावृत्ति करनेवाला व्यक्ति या वस्तु। ३ गणित में दशमलव आदि की दोहराई जानेवाली सख्या।

वि० १ लौटनेवाला। घूमनेवाला। २ दोहराया जानेवाला। ३ गणित में दशमलव आदि का दोहराया जानेवाला (अक)। ४ नियत समय पर बराबर होने या मिलनेवाली (आर्थिक सहायता)।

आवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवर्तनीय, आवर्तित] १ चक्कर। घूम-फिरकर लौट आने की क्रिया। घुमाव। फिराव। २ पुनरावर्तन। पुनरावृत्ति। ३ गणित में किसी अक या सख्या के बार बार दोहराए जाने की क्रिया। ४ मथन। मथन। स्पदन।

आवर्दा—वि० [फा०] १ लाया हुआ। २ कृपापात्र।

आवलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी। कतार।

आवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। श्रेणी। २. वह युक्ति या विधि जिसके द्वारा खेत की उपज का अनुमान होता है।

आवश्यक—वि० [सं०] १ जिसकी जरूरत हो। जरूरी। २ जिसके बिना अपूर्णता रहे। अपेक्षित। जिसके बिना काम न चले। ३ जिसका होना या किया जाना टाला न जा सके। अनिवार्य।

आवश्यकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जरूरत। अपेक्षा। २ अनिवार्यता। वह जरूरत जो टाली न जा सके।

आवश्यकीय—वि० [सं०] जरूरी।

आवाँ—संज्ञा पुं० [सं० आपाक] गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं। आँवाँ।

आवागमन—संज्ञा पुं० [हिं० आवा=आना +सं० गमन] १ आना जाना। आमद रफ्त। २ बार बार जन्म लेना और मरना। ३ हिंदुओं का वह सिद्धांत जिसके अनुसार सृष्टि और ईश्वर के सबंध का ज्ञान न होने तक जीवात्मा को बार बार जन्म लेना और मरना पड़ता है।

यौ०—आवागमन से रहित=मुक्त।

आवागवन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आवागमन"।

आवाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] [सं० आ+वाच्] १ शब्द। ध्वनि। नाद। २ बोली। वाणी। स्वर।

मुहा०—आवाज उठाना =(१) किसी बात या पक्ष की चर्चा आरंभ करना। (२) विरुद्ध कहना। विरोध करना। आवाज देना = जोर से पुकारना। आवाज बैठना=कफ के कारण या गले की कुछ बीमारियों में स्वर साफ और तेज न निकलना। गला बैठना। आवाज भारी होना=कफ के कारण या गले की कई बीमारियों में कठ का स्वर विकृत होना। गला फटना=गले में खराश होने से भद्दी, मोटी और बेढगी आवाज निकलना। गला फाड़ना=बहुत जोर से बोलना। बेमतलब चिल्लाना।

आवाजा—संज्ञा पुं० [फा०] बोली। ठोली। ताना। व्यंग्य।

आवाजाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० आवा= आना+जाही=जाना] आना-जाना। आमदरफ्त।

आवारगी—संज्ञा स्त्री० दे० "आवारापन"।

आवारजा—संज्ञा पुं० दे० "अवारजा"।

आवारा—वि० [फा०] १ व्यर्थ इधर उधर फिरनेवाला। निकम्मा। २ बेठौर-ठिकाने का। उठल्लू। ३ बदमाश। लुच्चा। चरित्र-हीन। बदचलन।

आवारागर्द—वि० [फा०] १. व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला। उठल्लू। निकम्मा। बदचलन। चरित्रहीन। शोहदा।

आवारापन—संज्ञा पुं० [फा० आवारा+हिं० पन (प्रत्य०)] १. आवारा होने का भाव। आवारागर्दी। २ शोहदापन।

आवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने की जगह। निवास-स्थान। २ मकान। घर।

आवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंत्र द्वारा किसी देवता को आमंत्रित करने का कार्य। २ निमंत्रित करना। बुलाना।

आविद्ध—वि० [सं०] १. बेधा हुआ। छिदा हुआ। २ फेंका हुआ।

संज्ञा पुं० तलवार चलाने के ३२ हाथों (ढगों) में से एक।

आविर्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आविर्भूत] १ प्रकाश। प्राकट्य। २ उत्पत्ति। ३ (किसी महापुरुष का) जन्म। ४. (किसी भाव, ग्रह, नक्षत्र या ज्ञान का) उदय। ५ आवेश। सचार।

आविर्भूत—वि० [सं०] १ प्रकाशित। प्रकटित। २ उत्पन्न। उदित।

आविल—वि० [सं०] १ मलिन। गँदला। २ अशुद्ध। अपवित्र। ३ काले या धूमिल रंग का।

आविष्कर्ता—वि० [सं०] [स्त्री० आविष्कर्त्री] आविष्कार करनेवाला। आविष्कारक।

आविष्कार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आविष्कारक, आविष्कर्ता, आविष्कृत] १ प्राकट्य। प्रकाश। २ अभूतपूर्व वस्तु का निर्माण। ३ इस प्रकार निर्मित वस्तु, जैसे—रेल, तार, मोटर, हवाई जहाज, विद्युत शक्ति, रेडियो, अणु और उद्‌जन बम।

आविष्कारक—वि० दे० "आविष्कर्ता"।

आविष्कृत—वि० [सं०] १ प्रकाशित। प्रकटित। निर्मित। २ पता लगाया हुआ। जाना हुआ। ३ ईजाद किया हुआ।

आविष्क्रिया—संज्ञा स्त्री० दे० "आविष्कार"।

आवृत—वि० [सं०] [स्त्री० आवृता] १ छिपा हुआ। ढका हुआ। २ लपेटा या घिरा हुआ।

आवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बार बार अभ्यास। पुनरावृत्ति। २ पढ़ाई। पाठ। ३ किसी पुस्तक, पत्र या पत्रिका का एक बार का समस्त मुद्रण। संस्करण।

आवेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्त की प्रबल वृत्ति। मन का झोंका। जोर। चढ़ाव। बढ़ाव। उबाल। वेग। जोश। तैश। २ रस के ३३ संचारी भावों में से एक। अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता। अस्थिरता। राग द्वेष से उत्पन्न व्यग्रता। घबराहट। ३ मनोविकार।

आवेदक—वि० [सं०] प्रार्थना या आवेदन करनेवाला।

आवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] अपनी किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये प्रार्थना। प्रार्थना। विनती।

आवेदनपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र या कागज जिसपर कोई व्यक्ति अपनी किसी आवश्यकता को लिखकर किसी अधिकारी या योग्य पात्र से उसे दूर करने की प्रार्थना करे। प्रार्थनापत्र। अर्जी।

आवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रभाव। जोश। २ प्रवेश। ३ झोंक। वेग। जोश। तैश। ४ भूत प्रेत के प्रभाव से उत्पन्न शारीरिक या मानसिक विकार। ५ जबरदस्त प्रभाव। ६ मृगी रोग या उसी प्रकार सिर चकराना।

आवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवेष्टित] १ लपेटने या ढकने का कार्य। २ वह वस्तु जिसमें कोई दूसरी वस्तु ढकी, छिपाई या लपेटी जाय। वेठन।

आशंका—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आशंकित] १ डर। भय। २ शक। संदेह। ३ अनिष्ट की भावना।

आशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आशंसित] १ आशा। २ इच्छा। कामना। ३ संभावना। ४ संदेह। शक। ५ प्रशंसा। तारीफ। ६ अभ्यर्थना। आदर-सत्कार।

आशना—संज्ञा स्त्री०, पुं० [फा० आश्ना] १ प्रेमी या प्रेमिका। २ मित्र। परिचित। ३ जार। यार।

आशनाई—संज्ञा स्त्री० [फा० आश्नाई] १ प्रेम। २ मैत्री। परिचय। ३ स्त्री-पुरुष का अनुचित यौन संबंध।

आशय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २ वासना। इच्छा। ३ उद्देश्य। नीयत।

आशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभीष्ट की संभावना जनित अभिलाषा। उम्मीद। २ इच्छा-प्राप्ति में विश्वास। ३ दिशा। ४ दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

यौ०—आशा-पाश = आशा का फंदा। मनुष्य की आशाओं का समाप्त न होनेवाला क्रम।

मु०—आशा पर पानी फिरना = निराश होना। हताश होना। प्रयत्नों का सफल न होना।

आशातीत—वि० [सं० आशा + अतीत] आशा से अधिक। सोचे या समझे हुए से कहीं अधिक। उम्मीद से ज्यादा।

आशिक—संज्ञा पुं० [अ०] [भा० आशिकी, आशिकाना] प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

आशिकाना—वि० [अ० आशिकान] १ आशिकों का सा। २ प्रेमपूर्ण।

आशिकी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रेम का व्यवहार। २ आशिक या आसक्त होना। आसक्ति।

आशिष—संज्ञा स्त्री० [सं० आशिस्] १ किसी के अभ्युदय, कल्याण, सफलता, दीर्घ जीवन आदि की कामना। ऐसी कामना का शब्दों में प्रकाशन या उसकी पूर्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना। आशीर्वाद। असीस। दुआ। २ बड़ों की छोटों के प्रति इस प्रकार की कामना या प्रार्थना। ३ एक अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिये प्रार्थना होती है।

आशिषाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिनसे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो।

आशी—वि० [सं० आशिन्] [स्त्री० आशिनी] खानेवाला। भक्षक।

आशीर्वाद—संज्ञा पुं० दे० "आशिष"।

आशीविष—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

आशु—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्द।

आशुकवि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो तत्क्षण कविता कर सके।

आशुग—वि० [सं०] जल्दी चलनेवाला। शीघ्रगामी।

संज्ञा पुं० १ सूर्य। २ वायु। ३ बाण।

आशुतोष—वि० [सं०] शीघ्र संतुष्ट होनेवाला। जल्दी प्रसन्न होनेवाला।

संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

आश्चर्य—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आश्चर्यित] १ किसी असाधारण बात को सुनने या देखने से उत्पन्न मनोविकार या भाव। अचंभा। विस्मय। ताज्जुब। २ अद्‌भुत रस का स्थायी भाव।

आश्चर्यित—वि० [सं०] चकित। विस्मित।

आश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आश्रमी] १ ऋषियों और मुनियों का निवासस्थान। २ साधुसंत के रहने की जगह। पवित्र स्थान। ३ भारतीय समाज की वह प्राचीन व्यवस्था जिसके अनुसार तीन वर्ण सामान्य आयु मानकर जीवन को ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास इन चार बराबर भागों या अवस्थाओं में बिताने का विधान है। ४ उक्त अवस्थाओं में से कोई एक।

आश्रमी—वि० [सं०] १ आश्रम संबंधी। आश्रम का। २ आश्रम में रहनेवाला। ३ ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला।

आश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आश्रयी, आश्रित] १ आधार। सहारा। अवलंब। २ आधार रूप। वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु हो। ३ शरण। पनाह। ४ जीवन-निर्वाह का हेतु। भरोसा। सहारा। ५ घर।

आश्रयी—वि० [सं० आश्रयिन्] आश्रय लेने या पानेवाला। सहारा लेने या पानेवाला।

आश्रित—वि० [सं०] १ किसी सहारे पर टिका हुआ। किसी आश्रय पर ठहरा हुआ। २ किसी के भरोसे पर रहनेवाला। अधीन। ४ सेवक।

आश्लेपण—सज्ञा पुं० [सं०] १ मिलावट। २ आलिंगन।

आश्लेषा—सज्ञा पुं० [सं०] नवां नक्षत्र।

आश्वस्त—वि० [सं०] १ किसी दुःख या चिंता में जिसे आश्वासन या ढारस मिला हो। जिसे तसल्ली दी गई हो। २ चिंतारहित। निश्चिंत।

आश्वास, आश्वासन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० आश्वासनीय, आश्वासित, आश्वास्य] १ दिलासा। तसल्ली। सान्त्वना। २ दुःख या चिंता मिटाने का निमित्त।

आश्विन—सज्ञा पुं० [सं०] वह महीना जिसकी पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र में पड़े। कुवार का महीना। चान्द्र वर्ष का सातवाँ महीना।

आषाढ़—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह मास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो। चान्द्र वर्ष का चौथा महीना। २ ब्रह्मचारी का पलाश का बना हुआ दंड।

आषाढ़ा—सज्ञा पुं० [सं०] पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी—सज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ मास की पूर्णिमा जिसमें गुरुपूजा का बड़ा धार्मिक महत्व है। गुरुपूजा। गुरुपूर्णिमा।

आसंग—सज्ञा पुं० [सं०] १ साथ। संग। २ लगाव। संबंध। ३ आसक्ति।

आसंदी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ काठ की छोटी चौकी। बैठकी। सिंहासन। २ विष्णु भगवान्।

आस—सज्ञा स्त्री० [सं० आशा] १ आशा। उम्मेद। २ लालसा। कामना। ३ सहारा। आधार। भरोसा।

आसकत—सज्ञा स्त्री० [सं० आ = कमी + शक्ति = बल, स्फूर्ति] [वि० आसकती, क्रि० आसकताना] सुस्ती। आलस्य।

आसकती—वि० दे० "आलसी"।

आसक्त—वि० [सं०] [सज्ञा आसक्ति] १ अनुरक्त। लीन। लिप्त। २ मोहित। लुब्ध। मुग्ध।

आसक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुरक्ति। लिप्तता। २ लगन। चाह। प्रेम।

आसते(पु)—क्रि० वि० दे० "आहिस्ता"।

आसत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सामीप्य। निकटता। २ अर्थबोध के लिये बिना व्यवधान के एक दूसरे से संबंध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का पास पास रहना।

आसन—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिति। बैठने की विधि। बैठने का ढब। २ बैठक। ३ मूँज, कुश, ऊन आदि की बैठने की वस्तु। ४ साधुओं का निवास या पड़ाव। ५ कामशास्त्र और योग में चौरासी प्रकार की शारीरिक मुद्राएँ या अभ्यास, जैसे— मयूरासन, शीर्षासन, धनुरासन आदि (योग में)। बैठक।

मुहा०—आसन उखड़ना = अपनी जगह से हिल जाना। प्रभुत्व कम होना या मिटना। घोड़े की पीठ पर रान न जमना। आसन कसना = अंगों को तोड़-मरोड़कर बैठना। आसन छोड़ना = उठ जाना (आदरार्थ)। आसन जमना = जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे, उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना। बैठने में स्थिर भाव आना। प्रभाव होना। आसन डिगना या डोलना = (१) बैठने में स्थिर भाव न रहना। डाँवाँडोल होना। (२) चित्त चलायमान होना। मन डोलना। चंचल होना। आसन डिगाना = (१) स्थान से हटाना। जगह से विचलित करना (२) चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना = सत्कारार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु देना या बतलाना।

आसना(पु)—क्रि० अ० [सं० अस् = होना] होना। अस्तित्व रखना।

आसनी—सज्ञा स्त्री० [सं० आसन] बैठक। छोटा आसन। छोटा बिछौना।

आसन्न—वि० [सं०] निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त। उपस्थित।

आसन्नभूत—सज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता वर्तमान काल के समीप प्रकट हो, जैसे—मैं गया हूँ। वह गया है।

आसपास—क्रि० वि० [(अनु०) आस + हिं० पास] चारों ओर। निकट। इधर उधर।

आसमान—सज्ञा पुं० [फा०] [वि० आसमानी] १ आकाश। गगन। २ स्वर्ग। देवलोक।

मुहा०—आसमान के तारे तोड़ना = कोई असंभव काम करना। आसमान टूट पड़ना = किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। विपत्तियों का एकाएक घेर लेना। वज्रपात होना। आसमान पर उड़ना = (१) इतराना। अपने सामने किसी को कुछ न समझना। सबको तुच्छ मानना। घमंड करना। (२) बहुत ऊँचे ऊँचे संकल्प करना। आसमान पर चढ़ना = गरूर करना। घमंड दिखाना। आसमान पर चढ़ाना = (१) अत्यंत प्रशंसा करना। (२) अत्यंत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। आसमान में थिगली या चकती लगाना = विकट कार्य करने का प्रयत्न करना। आसमान सिर पर उठाना = (१) ऊधम मचाना। उपद्रव मचाना। (२) हलचल मचाना। खूब आंदोलन करना। दिमाग आसमान (या सातवें आसमान) पर होना = बहुत अभिमान होना। गर्व में चूर रहना।

आसमानी—वि० [फा०] १ आकाश संबंधी। आकाशीय। आसमान का। २ आकाश के रंग का। हलका नीला। ३ दैवी। ईश्वरीय।

सज्ञा स्त्री० ताड़ और खजूर के पेड़ से निकाला हुआ रस जो हलका मादक होता है। ताड़ी। नीरा।

आसमुद्र—क्रि० वि० [सं०] समुद्रपर्यंत। समुद्र के तट तक।

आसय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आशय"।

आसरना(पु)—क्रि० स० [हिं० आसरा] आश्रय लेना। सहारा लेना।

आसरा—सज्ञा पुं० [सं० आश्रय] १. सहारा। आधार। अवलंब। २ भरण-पोषण की आशा। भरोसा। ३ किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४ जीवन या कार्यनिर्वाह का हेतु। आश्रयदाता। सहायक। ५. शरण। पनाह। ६ प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इंतजार। ७ आशा। उम्मीद।

आसव—सज्ञा पुं० [सं०] १ जड़ीबूटियों या फलों को पानी में या ईख के बिना पके रस में सड़ाकर निकाला हुआ मद्य। २ इस प्रकार बनी औषधि। (पके ईख के रस में बनी दवा शीधु और क्वाथ से बनी अरिष्ट कहलाती है।) ३. मदिरा। शराब। ४ अर्क।

आसवी—सज्ञा पुं० [सं० आसविन्] शराब पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

वि० आसव संबंधी। आसव का।

आसा—सज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।

सज्ञा पुं० [अ० असा] सोने या चाँदी का वह सजावटी डंडा जिसे लेकर चोबदार राजा महाराजाओं अथवा बरात के जुलूस के आगे चलते हैं।

यौ०—आसा-बल्लम। आसा-सोंटा।

आसाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] आराम। सुख। चैन।

आसान—वि० [फा०] [संज्ञा आसानी] सहज। सरल। सुकर।

आसानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० आसान] सरलता। सुगमता। सुबीता। सौकर्य।

आसामी—संज्ञा पुं० दे० "असामी"।

वि० [हिं० आसाम] आसाम प्रदेश का। आसाम प्रदेशसंबंधी।

संज्ञा पुं० आसाम प्रदेश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० आसाम प्रदेश की भाषा।

आसामुखी—वि० [सं० आशा+मुखिन्] १ दूसरे का मुँह जोहनेवाला। २ परमुखापेक्षी। परावलंबी। उ०—जो जाकर अस आसामुखी।—पदमावत।

आसामुषी—वि० दे० "आसामुखी"।

आसार—संज्ञा पुं० [अ०] चिह्न। लक्षण।

आसावरी—संज्ञा स्त्री० [?] श्री राग की एक रागिनी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर।

आसिख(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

आसिन—संज्ञा पुं० [सं० आश्विन] दे० "आश्विन"।

आसिरवचन—संज्ञा पुं० [सं० आशी + वचन] दे० "आशीर्वाद"।

आसी(पु)—वि० [सं० आशिन्] दे० "आशी"।

आसीन—वि० [सं०] बैठा हुआ। विराजमान।

आसीस—संज्ञा स्त्री० [सं० आशी] दे० "आशिष"।

आसु(पु)—क्रि० वि० [सं० आशु] दे० "आशु"।

आसुग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० आशुग] दे० "आशुग"।

आसुर—वि० [सं०] असुर संबंधी। असुर का।

यौ०—आसुर विवाह=वह विवाह जो कन्या के माता पिता को द्रव्य देकर किया जाय।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "असुर"।

आसुरी—वि० [सं०] असुर संबंधी। असुरों का। राक्षसी।

यौ०—आसुरी माया=चक्कर में डालनेवाली राक्षसों की चाल। आसुरी संपद=दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, पारुष्य आदि दुर्गुण।

संज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।

आसेब—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आसेबी] भूत-प्रेत की बाधा।

आसोज—संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन मास। क्वार का महीना।

आसौं(पु)—क्रि० वि० [सं० अस्मिन्+संवत् ?] इस वर्ष। इस साल।

आस्तरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ शय्या। २ बिछौना। बिस्तर। ३ दुपट्टा।

आस्तिक—वि० [सं०] [संज्ञा आस्तिकता] १ ईश्वर, वेद, और परलोक इत्यादि में विश्वास करनेवाला। २ ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला। ३ ईश्वर को सृष्टि का उपादान और निमित्त दोनों कारण माननेवाला।

आस्तिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ईश्वर, वेद और परलोक में विश्वास। २ ईश्वर को जगत का उपादान और निमित्त दोनों मानने की धारणा। ३ मरने के बाद आत्मा के परलोक में रहने के सिद्धांत में विश्वास।

आस्तीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जिन्होंने जनमेजय के सर्पयज्ञ में तक्षक का प्राण बचाया था।

आस्तीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है। बाँह।

मुहा०—आस्तीन का साँप=वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे। प्रच्छन्न शत्रु। छिपा दुश्मन।

आस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २ निष्ठा। विश्वास। ३ सभा। बैठक। ४ आलंबन। सहारा।

आस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैठने की जगह। बैठक। २ सभा। दरबार।

आस्पद—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थान। २ आधार। अधिष्ठान। ३. कार्य। कृत्य। ४ पद। प्रतिष्ठा। ५ अल्ल। वंश। ६ कुल। जाति।

आस्फालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आस्फालित] १ आत्मश्लाघा। डींग। २ मर्दन। ३. शोरगुल। हल्लागुल्ला। चिल्लाहट। गुलगपाड़ा।

आस्य—संज्ञा पुं० [सं०] मुख। मुँह।

आस्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाद। जायका। मजा।

आस्वादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आस्वादनीय, आस्वादित] चखना। स्वाद लेना।

आह—अव्य० [सं० अहह] पीड़ा, शोक, दुःख, खेद या ग्लानि-सूचक अव्यय।

संज्ञा स्त्री० कराह। दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। ठंढी साँस। उसाँस।

मुहा०—आह पड़ना=शाप पड़ना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना= ठंढी साँस खींचना। आह लेना=किसी को इतना सताना कि उसके हृदय से आह निकले।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० साहस] १ साहस। हिम्मत। हियाव। २ बल। जोर।

आहचरज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "आश्चर्य"।

आहट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√आ=आना+हट (प्रत्य०)] १ वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है। आने का शब्द। पाँव की चाप। २ वह आवाज जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का अनुमान हो। खड़का। ३ पता। टोह।

आहत—वि० [सं०] [संज्ञा आहति] १ चोट खाया हुआ। घायल। जख्मी। २. जिस संख्या को गुणित करें। गुण्य। ३. ठप्पे आदि से ठोंका हुआ।

यौ०—हताहत=मारे हुए और जख्मी।

आहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अहन्] समय।

संज्ञा पुं० [सं० आहव] युद्ध। लड़ाई।

आहरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आहरणीय, आहृत] १ छीनना। हर लेना। २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३ ग्रहण। लेना।

आहरन—संज्ञा पुं० [सं० आ+धरण] लोहारों और सुनारों की निहाई।

आहव—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वंद्व। युद्ध। लड़ाई। २ यज्ञ।

आहवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आहवनीय] यज्ञ। होम।

आहाँ—संज्ञा स्त्री० [सं० आह्वान] १ हाँक। दुहाई। घोषणा। २ पुकार। बुलावा।

आहा—अव्य० [फा०] आश्चर्य और हर्ष-सूचक अव्यय।

आहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजन। खाना। २ खाने की वस्तु।

आहार-विहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन। भोजन-छाजन। २. शारीरिक आवश्यकताएँ।

आहारी—वि० [सं० आहारिन्] [स्त्री० आहारिणी] खानेवाला। भक्षक।

आहार्य—वि० [सं०] १. ग्रहण करने योग्य। निकट लाने योग्य। २ हटाने योग्य। ३. व्याप्य। ४. खाने योग्य। ५ सवद्ध। सहायक। ६ अभिप्रेत। ७ सजाने योग्य।

सज्ञा पुं० दे० "आहार्याभिनय"।

आहार्याभिनय—सज्ञा पु० [सं०] बिना कुछ बोले या चेष्टा किए केवल रूप और वेश द्वारा नाटक का अभिनय करना। मूक अभिनय।

आहि—क्रि० अ० [स० अस्] 'होना' भाव का द्योतक वर्तमानकालिक अन्य पुरुष का रूप। है।

आहित—वि० [स०] १ रखा हुआ। स्थापित। २ धरोहर या गिरो रखा हुआ।

सज्ञा पुं० [स०] १ पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर उसे चुकाता हो। २ गिरवी रखा हुआ माल। बधक।

आहिस्ता—क्रि० वि० [फा०] धीरे से। धीरे धीरे। शनैं शनैं।

आहुत—सज्ञा पु० [स०] १ आतिथ्य। सत्कार। २ भूतयज्ञ। बलिवैश्वदेव यज्ञ।

आहुति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मत्र पढ़कर देवताओं के लिये घी, जौ, तिल आदि मिश्रित द्रव्यों को अग्नि में डालना। होम। हवन। २ हवन में डालने की सामग्री। ३ होमद्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञ की अग्नि में डाली जाय। ४ बलि। कुर्बानी।

आहूत—वि० [स०] बुलाया हुआ। आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

आहै(पु)—क्रि० अ० [सं० अस्] दे० "आहि"।

आह्निक—वि० [स०] रोजाना। दैनिक। दिन का। दिन सबधी।

आह्लाद—सज्ञा पु० [स०] [वि० आह्लादित] आनद। हर्ष। प्रसन्नता।

आह्वय—सज्ञा पु० [सं०] १ नाम। सज्ञा। २ तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाजी। प्राणिद्यूत।

आह्वान—सज्ञा पुं० [सं०] १. बुलाना। बुलावा। पुकार। २ राजा की ओर से बुलावे का पत्र। समन। ३ यज्ञ में मत्र द्वारा देवताओं का आवाहन।

इ

इ—नागरी वर्णमाला में स्वर के अन्तर्गत तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है। इसका दीर्घ रूप ई है।

इंग—सज्ञा पु० [सं० इङ्ग=सकेत] १ चलना। हिलना। २ सकेत। इशारा। ३ हाथी का दाँत।

इंगन—सज्ञा पुं० [सं०] १. सकेत। इशारा। २ चलना। काँपना। हिलना-डुलना।

इंगनी—सज्ञा स्त्री० [अं० मैंगनीज] एक प्रकार की धातु का मोर्चा (वायवीय संमिश्रण) जो काँच या शीशे का हरापन दूर करने के काम में आता है।

इंगला—सज्ञा स्त्री० [सं० पिंगला के अनु० पर] इड़ा नाम की नाड़ी (हठयोग)।

इंगलिश—वि० [अं०] १ इंगलैंड सबधी। इगलैंड का। अगरेजी।

सज्ञा स्त्री० अँगरेजी भाषा।

इंगलिस्तान—सज्ञा पुं० [अं० इंगलिश+फा० स्तान] १ अगरेजों का देश इगलैंड। ब्रिटेन, जिसमें इंगलैंड, स्काटलैंड और वेल्स देश सम्मिलित हैं। ग्रेट ब्रिटेन।

इंगित—सज्ञा पुं० [स०] अभिप्राय को किसी शारीरिक चेष्टा द्वारा प्रकट करना। इशारा। चेष्टा।

वि० १. हिलता हुआ। चलित। २ इशारा किया हुआ।

इंगुदी(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंगोट का पेड़। २ ज्योतिष्मती वृक्ष। मालकँगनी।

इंगुर—सज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।

इंगुरौटी—सज्ञा स्त्री० [हि० ईंगुर+औटी (प्रत्य०)] वह डिबिया जिसमें सौभाग्यवती स्त्रियाँ ईंगुर या सिंदूर रखती हैं। सिंधोरा।

इंच—सज्ञा पुं० [अ०] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा।

इंचना(पु)†—क्रि० स० दे० "खिंचना"।

इंजन—सज्ञा पुं० [अं० एंजिन] भाप, बिजली आदि से चलनेवाला यंत्र। २ रेलगाड़ी का वह यत्रयुक्त डब्बा जो अन्य डब्बों को खींचता है। ३ कल। पेंच।

इंजीनियर—सज्ञा पु० [अं०] १ यत्र निर्माण करने की कला का विशेषज्ञ। २ यत्रनिर्माता या कलपुर्जा बनाने में निपुण व्यक्ति। सड़क, इमारत, पुल, नहर, जहाज, यत्र आदि लोकहित की चीजों या सैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की बनावट आदि स्थिर करके उनका निर्माण करनेवाला।

इंजील—सज्ञा स्त्री० [अ०] ईसाइयों की धर्मपुस्तक।

इँटकोहरा†—सज्ञा पु० [हिं० ईंट+?] १ ईंट का टुकड़ा। २ ईंट की मिट्टी।

इँडुआ—सज्ञा पुं० [सं० इंडु ?] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर के ऊपर रख लेते हैं। गेंडुरी।

इँडुरी(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "इँडुआ"।

इँडहर—सज्ञा पुं० [?] उर्द की दाल से बना हुआ एक प्रकार का साग।

इंतकाल—सज्ञा पुं० [अ०] १. मृत्यु। मौत। २ किसी सपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतखाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ चुनाव। निर्वाचन। २ पसंद। ३ पटवारी के खाने की नकल।

इंतजाम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रबंध। बंदोबस्त। व्यवस्था।

इंतजार—संज्ञा पुं० [अ०] प्रतीक्षा।

इंतहा—संज्ञा स्त्री० [अ० इंतिहा] १ चरम सीमा। हद। २ अंत। समाप्ति। ३ परिणाम। फल।

इंदऊँ—संज्ञा पुं० दे० "इंदुर"।

इंदव—संज्ञा पुं० [सं० एंदव] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और २ गुरु होते हैं। इसे मालती या मत्तगयंद छंद भी कहते हैं। उ०—भासत गग न तो सम आन कहूँ जग में मम पाप हरैया।

इंदारुन—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रवारुणी] एक प्रकार की तिक्त फलोंवाली लता। कौवा ठोंठी। इंद्रायन।

इंदिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी २ वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं और छठे और ग्यारहवें वर्ण पर विराम होता है, जैसे—नमत प्रेम सों, पाद पकजै। नसत पाप हू, भक्तिहू सजै। इसे कनक-मंजरी भी कहते हैं।

इंदीवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीलोत्पल। नीलकमल। २ कमल।

इंदु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर। ३ एक की संख्या।

इंदुदह—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा में पड़नेवाला श्याम भाग। चंद्रकलंक।

इंदुबधु—संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रवधू"।

इंदुमणि—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रकांतमणि"।

इंदुर—संज्ञा पुं० [सं० इंदूर] चूहा।

इंदुवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमुखी। चंद्रमा के समान आकर्षक मुखवाली। २ चौदह वर्णों का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, जगण, सगण, नगण और अंत के दोनों वर्ण गुरु हों, जैसे—जान मुहि दे घरहि सत्वर विहारी।

इंद्र—वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। विभूति संपन्न। २ श्रेष्ठ। बड़ा, जैसे नरेंद्र।

संज्ञा पुं० १ एक वैदिक देवता जो देवताओं के अधिपति कहलाते हैं।

यौ०—इंद्र का अखाड़ा=(१) इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। (२) बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाचरंग होता हो। इंद्र की परी=(१) अप्सरा। (२) बहुत सुंदरी स्त्री।

२ बारह आदित्यों में से एक। पुराणों के अनुसार कश्यप और अदिति के बेटे तथा विष्णु के बड़े भाई जो अंतरिक्ष और वर्षा के देवता माने जाते हैं और सुरेंद्र, देवेंद्र आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। इनका निवास स्वर्ग है। सूर्य। ३ मालिक। स्वामी। ४ ज्येष्ठा नक्षत्र। ५ चौदह की संख्या। ६ जीव। प्राण। आत्मा।

इंद्रकील—संज्ञा पुं० [सं०] मंदराचल।

इंद्रगोप—संज्ञा पुं० [सं०] मखमल के समान चिकने और चमकदार शरीरवाला वह लाल रंग का छोटा कीड़ा जो वर्षा ऋतु के प्रारंभ में उत्पन्न होता है और सहस्रों की संख्या में खुले मैदानों और कोमल हरी घास पर रेंगता दिखाई देता है। बीरबहूटी। बीरबहूटी। इंद्रवधू।

इंद्रचाप—संज्ञा पुं० दे० "इंद्रधनुष"।

इंद्रजव—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रयव] कुटज या कुड़ा। कौरैया का बीज।

इंद्रजाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० इंद्रजालिक] मायाकर्म। जादूगरी। तिलस्म। बाजीगरी।

इंद्रजाली—वि० [सं० इंद्रजालिन्] [स्त्री०] इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

इंद्रजित्—वि० [सं०] इंद्र को जीतनेवाला।

संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीत—संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्"।

इंद्रदमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित कुंड, ताल अथवा वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। २ इंद्र को दबाने या जीतनेवाला। मेघनाद। ३ एक छोटी जाति की वनस्पति जिसकी पत्तियाँ बड़ी सुगंधित होती हैं। दौना।

इंद्रधनुष—संज्ञा पुं० [सं०] बादलों से गिरती हुई अदृश्य फुहार पर सूर्य किरणों के पड़ने से सामने की दिशा में उत्तर से दक्खिन तक चमकनेवाली सात रंगों की चौड़ी धन्वाकार रेखा। (इसमें सातो विशिष्ट रंग इस क्रम से रहते हैं—बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल।)

इंद्रधनुषी—वि० [सं० इंद्रधनुष+हिं० ई (प्रत्य०)] इंद्रधनुष की तरह सात रंगोंवाला। सतरंगा।

इंद्रनील—संज्ञा पुं० [सं०] एक रत्न। नीलम।

इंद्रप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

इंद्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग। देवलोक।

इंद्रवंशा—संज्ञा पुं० [सं०] १२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त, जैसे—संग्राम भारी धर आजु बान सों। दे इंद्रवंशा लर कौरवान सों।

इंद्रवज्रा—संज्ञा पुं० [सं०] ११ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं; जैसे—सोचो जरा क्या कहते तुम्हीं हो। क्यों इंद्रवज्रा बनता नहीं है।

इंद्रवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीरबहूटी।

इंद्रा, इंद्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्र की पत्नी, शची। २ बड़ी इलायची। ३ इंद्रायन। ४ दुर्गा देवी।

इंद्रायन—संज्ञा स्त्री० [सं० इंद्राणी] एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता है। इनारू। बनकुँदुरू।

इंद्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का शस्त्र या अस्त्र। वज्र। २ इंद्रधनुष।

इंद्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का सिंहासन। भद्रासन। २ राज-सिंहासन। तख्त।

इंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विषयज्ञान की शक्ति और उसके द्वार अवयव या उपकरण, जैसे—आँख, कान, नाक, जीभ त्वचा और मन। ज्ञानेंद्रिय। २ कर्म के पाँच अवयव या साधक अंग, जैसे—हाथ, पैर, जीभ, उपस्थ और गुदा। ३ पाँच कर्मेंद्रिय।

इंद्रियजित्—वि० [सं०] जो इंद्रियों को जीत ले। जो विषयासक्त न हो। जितेंद्रिय।

इंद्रियनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रियों के वेग को रोकना। इंद्रियदमन। इंद्रियों को वश में रखना।

इंद्रियारामी—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय+आराम+हिं० ई (प्रत्य०)] १. इंद्रियों के सुख में रमनेवाला। विलासी। भोगी। २ आराम-तलब।

इंद्री(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय"।

इंद्रीजुलाब—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय+फा० जुलाब] वे औषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आता है।

इंधन—संज्ञा पुं० दे० "ईंधन"।

इंपीरियल—वि० [अं०] साम्राज्य संबंधी। शाही।

इंसाफ—संज्ञा पुं० [अ०] न्याय। फैसला। निर्णय।

यौ०—इंसाफ-पसंद=न्यायप्रिय।

इंस्पेक्टर—संज्ञा पु० [अं०] निरीक्षक।

इअरो(पु)—सर्व० [सं० इतर] दूसरे। अन्य।

इकंग(पु)—वि० दे० "एकांग"।

इकंत(पु)—वि० दे० "एकांत"।

इक(पु)—वि० दे० "एक"।

इकजोर(पु)—क्रि० वि० [सं० एक+हिं० जोर=जोड़ना] इकट्ठा। एक साथ। सम्मिलित। संयुक्त।

इकट्ठा—वि० [सं० एकस्थ] एकत्र। जमा। एक स्थान में। एक जगह।

इकतर(पु)—वि० दे० "एकत्र"।

इकतरा—संज्ञा पु० दे० "अंतरिया"।

इकता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।

इकताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० एकता+हिं० ई (प्रत्य०) १. एक होने का भाव। एकत्व। २ अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान। एकांतसेविता। ३ अद्वितीयता। एकता।

इकतान(पु)—वि० [हिं० एक+तान] १ एक रस। एक सा। स्थिर। अनन्य। एक रूप। २ तन्मय। ध्यानस्थ।

इकतार—वि० [हिं० एक+तार] लगातार। बराबर। एक रस। समान। एक सा।

क्रि० वि० लगातार।

इकतारा—संज्ञा पुं० [हिं० एक+तार] १. सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार रहता है। २ एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा।

इकतालिस, इकतालीस—वि० [सं० एकचत्वारिंशत] चालीस और एक।

संज्ञा पु० चालीस और एक की संख्या। इकतालीस का अंक। ४१।

इकतिस, इकतीस—वि० [सं० एकत्रिंशत] तीस और एक।

संज्ञा पुं० तीस और एक की संख्या। इकतीस का अंक। ३१।

इकत्र(पु)—क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

इकन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० इक (एक) +आना+ई (प्रत्य०)] एक रुपए के सोलहवें हिस्से के मूल्य का भारतीय सिक्का। अन्नी। एक आना।

इकबारगी—क्रि० वि० दे० "एकबारगी"।

इकबाल—संज्ञा पुं० [अ० इकबाल] १ प्रचंड प्रभाव। प्रताप। २ भाग्य। सौभाग्य। ३ स्वीकार।

इकराम—संज्ञा पु० [अ०] १ पारितोषिक। इनाम। २ इज्जत। आदर।

इकरार—संज्ञा पु० [अ० इकरार] १ प्रतिज्ञा। वादा। करार। २ कोई काम करने की स्वीकृति।

इकला(पु)—वि० दे० "अकेला"।

इकलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० इक (एक)+?] १ एक पाट का महीन दुपट्टा या चादर। २ एक साड़ी।

संज्ञा पु० [हिं० इकला+आई प्रत्य०)] अकेलापन।

इकलौता—संज्ञा पु० [हिं० इकला+प्रा० उत्त (सं० पुत्र)] माँ-बाप का अकेला बेटा। एकमात्र पुत्र।

इकल्ला—वि० [हिं० इक (एक)+ला (प्रत्य०)] १ एकहरा। एक पर्त का। (पु)२ अकेला।

इकसठ—वि० [सं० एकषष्ठि] साठ और एक।

संज्ञा पुं० वह अंक जिससे साठ और एक का बोध हो। ६१।

इकसर(पु)—वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] अकेला। एकाकी।

इकसार(पु)—वि० [हिं० (इक) एक+सं० सादृश्य प्रा० सारिस] सदा एक सा रहने वाला। एकतार।

इकसूत(पु)—वि० [सं० एक+सूत्र] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र। एक में बंधा हुआ।

इकहत्तर—वि० [सं०एकसप्तति] सत्तर और एक।

संज्ञा पु० सत्तर और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ७१।

इकहरा—वि० दे० "एकहरा"।

इकहाई(पु)—क्रि० वि० [हिं० इक (एक)+हाई (प्रत्य०)] १ एक साथ। । २ अचानक।

इकांत(पु)—वि० दे० "एकांत"।

इकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० इक+आई (प्रत्य०)] १ एक की संख्या। एक का भाव। एक का मान। २ अन्य समस्त पदार्थों का बोध करानेवाला मान या अभिमान। ३ गणित में अंकों के पहले स्थान की संज्ञा। ४ उक्त स्थान में लिखा अंक।

इकेला—वि० दे० "अकेला"।

इकैठ(पु)—वि० [सं० एकस्थ] इकट्ठा।

इकौंज—संज्ञा स्त्री० [सं० एक (इक) +वंध्या ?] वह स्त्री जिसके एक ही संतान हुई हो। काकवंध्या।

इकौना—वि० [हिं० एक] [स्त्री० इकौनी] अनुपम। बेजोड़। अद्वितीय।

इकौसौ(पु)†—वि० [हिं० इक+अप० ओसास=अवकाश] एकांत। निर्जन। शून्य।

इक्का—वि० [सं० एक] १. एकाकी। अकेला। २ अनुपम। बेजोड़।

संज्ञा पुं० १ एक मोती की कान की बाली। एक मोतीवाला कर्णभूषण। २ अपने झुंड से अलग हुआ पशु। ३. अकेले लड़नेवाला योद्धा। ४ ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो। ५ काठ के दो बड़े पहियों पर चलनेवाली, ताँगे से भिन्न, एक पुराने ढंग की सवारी-गाड़ी (लखनऊ, बनारस आदि में प्रयुक्त) जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है और बैठने का स्थान चौकोर (लगभग एक वर्गगज) होता है।

इक्का-दुक्का—वि० [हिं० इक्का+दुक्का] अकेला दुकेला। छिटफुट।

इक्कीस—वि० [सं० एकविंशत] बीस और एक।

संज्ञा पु० बीस और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—२१।

इक्यावन—वि० [सं० एकपंचाशत, प्रा० एक वण्ण] पचास और एक।

संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—५१।

इक्यासी—वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एकासि] अस्सी और एक।

संज्ञा पु० अस्सी और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—८१।

इक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] ईख। गन्ना।

इक्ष्वाकु—संज्ञा पु० [सं०] १ विवस्वान् (सूर्य) के पुत्र मनु के बेटे और अयोध्या के प्रथम नरेश। २ कड़ुई लौकी।

इखद(पु)—वि० दे० "ईषद्"।

इखराज—संज्ञा पु० [अ०] निकास। खर्च। व्यय।

इखलास—संज्ञा पु० [अ०] १ मेल-मिलाप। मित्रता। २. सच्ची दोस्ती।

इखु(पु)—संज्ञा पु० दे० 'इषु'।

इख्तलाफ—संज्ञा पुं० [अ०] १ विरोध। २ बिगाड़। अनबन।

इख्तियार—संज्ञा पुं० [अ०] १ अधिकार। २ अधिकार क्षेत्र। कब्जा। ३ सामर्थ्य। शक्ति। काबू। ४ प्रभुत्व। स्वत्व। वश।

इगारह(पु)†—वि० दे० "ग्यारह"।

संज्ञा पुं० १. दस इंद्रियाँ और मन। २ ग्यारह का दावँ। उ०—सत जो धरै सो खेलनहारा। ढारि इगारह जाइ न मारा।—पद्मावत।

इच्छना(पु)—क्रि० स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।

इच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० इच्छित, इच्छुक, ऐच्छिक] किसी वस्तु के पाने की उत्सुकता। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह। ख्वाहिश।

इच्छाचारी—वि० [सं० इच्छाचारिन्] [स्त्री० इच्छाचारिणी] अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वतंत्र। स्वेच्छा-चारी।

इच्छाभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. इच्छित पदार्थों का आहार। २ इच्छा के अनुसार आहार। जितनी इच्छा हो उतना खाना। भर पेट आहार।

इच्छित—वि० [सं०] जिसकी इच्छा की जाय। चाहा हुआ। वांछित।

इच्छु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "इक्षु"।

वि० [सं०] चाहनेवाला (यौगिक में)।

इच्छुक—वि० [सं०] चाहनेवाला।

इजमाल—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इजमाली] १. कुल। समष्टि। २. कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा। संमिलित अधिकार।

इजमाली—वि० [अ०] शिरकत का। संयुक्त। साझे का। संमिलित।

इजराय—संज्ञा पुं० [अ०] १. जारी करना। प्रचार करना। २ व्यवहार। अमल।

यौ०—इजराय डिगरी=डिगरी का अमल-दरामद होना। न्यायाधीश के निर्णय का कार्यरूप।

इजलास—संज्ञा पुं० [अ०] १ बैठक। २ वह जगह जहाँ हाकिम बैठकर मुकदमे का फैसला करता है। कचहरी। न्यायालय।

इजहार—संज्ञा पुं० [अ०] १ जाहिर करना। प्रकाशन। प्रकटीकरण। २ अदालत के सामने बयान। गवाही। साक्ष्य।

इजाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अनुमति। २ परवानगी। मंजूरी।

इजाफा—संज्ञा पुं० [अ०] १ बढ़ती। वृद्धि। २. व्यय से बचा हुआ धन। बचत।

इजार—संज्ञा स्त्री० [अ०] पायजामा। सुथन।

इजारबंद—संज्ञा पुं० [फा०] सूत या रेशम का जालीदार बंधन जो पायजामे या लहँगे के नेफे में कमर पर कसने के लिये पड़ा रहता है। नारा। बँधना। बंद।

इजारदार, इजारेदार—वि० [फा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेनेवाला। ठेकेदार। अधिकारी।

इजारा—संज्ञा पुं० [अ० इजार] १. किसी पदार्थ को उजरत या किराए पर देना। २. ठेका। ३ अधिकार। इख्तियार। स्वत्व।

इज्जत—संज्ञा स्त्री० [अ०] मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। आदर।

मुहा०—इज्जत उतारना=मर्यादा नष्ट करना। इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा करना। इज्जत लेना=(१) बेइज्जत करना। (२) अनुचित या बलात् यौन संबंध करना। इज्जत बढ़ाना=समाज में नाम या यश कमाना।

इज्जतदार—वि० [फा०] प्रतिष्ठित।

इज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ।

इठलाना—क्रि० अ० [हिं० ऐंठ+लाना] १. इतराना। ठसक दिखलाना। गर्वसूचक चेष्टा करना। २. मटकना। ३. नखरा करना।

इठलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √इठला+आहट (प्रत्य०)] इठलाने का भाव। ठसक।

इठाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट+हिं० आई (प्रत्य०)] १ रुचि। चाह। प्रीति। २ मित्रता।

इडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। भूमि। २ गाय। ३ वाणी। ४ स्तुति। ५ अन्न। हवि। ६ दुर्गा। ७ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष की एक पुत्री थी। ८ स्वर्ग। ९ (योग में) शरीर की बाईं नाड़ी जो नाक के बाएँ छेद में समाप्त होती है। १०. वैवस्वत मनु की दूसरी पत्नी का नाम।

इत(पु)—क्रि० वि० [सं० इत] इधर। इस ओर। यहाँ।

इतकाद—संज्ञा पुं० दे० "एतकाद"।

इतना—वि० [सं० इयत] [स्त्री० इतनी] इस संख्या, मात्रा या विस्तार का। इस कदर। इस लंबाई, चौड़ाई या मोटाई का। इस तौल या माप का। इस परिमाण का। इस प्रकार।

मुहा०—इतने में=इसी बीच।

इतनो(पु)†—वि० दे० "इतना"।

इतमाम(पु)†—संज्ञा पुं० [अ० इहतिमाम] इंतजाम। बंदोबस्त। प्रबंध।

इतमीनान—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इत-मीनानी]। विश्वास। दिलजमई। संतोष। भरोसा।

इतर—वि० [सं०] १ दूसरा। अपर। और। अन्य। २ नीच। पामर। ३ साधारण।

संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

इतराजी(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० एतराज] विरोध। आपत्ति।

इतराना—क्रि० अ० [सं० इतर ?] १ ठसका दिखाना। इठलाना। २ फूलना। घमंड करना।

इतराहट(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० √इतरा+आहट (प्रत्य०)] दर्प। घमंड। गर्व।

इतरेतर—क्रि० वि० [सं०] परस्पर। एक दूसरे के साथ।

इतरेतराश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्क में एक दोष जिसमें किन्हीं दो वस्तुओं की सिद्धि अन्योन्याश्रित रहती है। दो में से किसी एक की सिद्धि से ही दूसरी वस्तु की सिद्धि होने का दोष (तर्क)।

इतरौहाँ(पु)—वि० [हिं० √इतरा+औहाँ (प्रत्य०)] जिससे इतराने का भाव प्रकट हो। इतराना सूचित करनेवाला।

इतवार—संज्ञा पुं० [सं० आदित्यवार] शनि और सोमवार के बीच का दिन। रविवार।

इतस्ततः—क्रि० वि० [सं०] इधर उधर।

इताति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "इताअत"।

इताल(पु)—क्रि० वि० [सं० तत्काल] तत्काल। शीघ्र। तुरंत।

इति—अव्य० [सं०] समाप्तिसूचक अव्यय जिसका ग्रंथों के अंत में प्रयोग किया जाता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] समाप्ति। पूर्णता। अंत।

यौ०—इतिश्री=समाप्ति। अंत।

इतिकर्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी काम के करने की विधि। परिपाटी। २ कर्म की पराकाष्ठा। जो कुछ किया जा सकता हो।

इतिवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरावृत्त। पुरानी कथा। कहानी। इतिहास। २ वर्णन। हाल। वृत्तांत।

इतिहास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ऐतिहासिक] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उससे संबंध रखनेवाले पुरुषों का कालक्रम से वर्णन। प्राचीन समय या समाज की विशेष बातों या घटनाओं का क्रमिक विवरण।

इतेक†—वि० [हिं० इत+एक] इतना।

इतो(पु)—वि० [सं० इयत् — इतना] [स्त्री० इती] इतना। इस मात्रा का।

इत्तफाक—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इत्तफाकिया, क्रि० वि० इत्तफाकन्] १. मेल। मिलाप। एका। सहमति। २ संयोग। मौका। अवसर।

मुहा०—इत्तफाक पड़ना=संयोग उपस्थित होना। मौका पड़ना। इत्तफाक से=संयोगवश।

इत्तला—संज्ञा स्त्री० [अ० इत्तलाअ] सूचना। खबर।

यौ०—इत्तलानामा=सूचनापत्र।

इत्ता, इत्तो(पु)—वि० दे० "इतो"।

इत्थ—क्रि० वि० [सं०] ऐसे। यों।

इत्थभूत—वि० [सं०] ऐसा।

इत्थमेव—वि० [सं०] ऐसा ही। इतना ही।

क्रि० वि० इसी प्रकार से।

इत्यादि—अव्य० [सं०] इसी प्रकार के अन्य। इसी तरह और। वगैरह। आदि।

इत्यादिक—वि० [सं०] इसी प्रकार के अन्य। ऐसे ही दूसरे। वगैरह।

इत्र—संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

इत्रीफल—संज्ञा पुं० [सं० त्रिफला] शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।

इदम्—सर्व० [सं०] यह।

इदमित्थं—पद [सं०] ऐसा ही। बिल्कुल यही। एकदम इसी प्रकार। ठीक यही है।

इधर—क्रि० वि० [सं० इतर] १. इस ओर। यहाँ। २ इस समय। आजकल।

मुहा०—इधर उधर=(१) यहाँ वहाँ। इतस्ततः। (२) आस पास। इर्द-गिर्द। (३) चारों ओर। सब ओर। इधर उधर करना=(१) टालमटूल करना। हीला हवाला करना। (२) उलट पलट करना। क्रमभंग करना। (३) तितर बितर करना। (४) हटाना। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। गड़बड़ करना। इधर उधर की बात=(१) अफवाह। सुनी सुनाई बात। (२) बेठिकाने की बात। असंबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना=चुगलखोरी करना। झगड़ा लगाना। इधर उधर में रहना=व्यर्थ समय खोना। इधर उधर होना=(१) उलट पुलट होना। बिगड़ना (२) भाग जाना। तितर-बितर होना। इधर की उधर=चुगुली। निंदा। शिकायत।

इन—सर्व० [हिं० इस ?] कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारकों में व्यवहृत 'इस' का बहुवचन।

इनकम टैक्स—संज्ञा पुं० [अं०] आमदनी पर लगनेवाला टैक्स या कर। आयकर।

इनकार—संज्ञा पुं० [अ०] अस्वीकार। नामंजूरी। 'इकरार' का उलटा।

इनफ्लुएंजा—संज्ञा पुं० [अं०] सर्दी के कारण होनेवाला एक प्रकार का सांसर्गिक ज्वर। विसर्प ज्वर। सर्दी-बुखार।

इनसान—संज्ञा पुं० [अ०] मनुष्य।

इनसानियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनुष्यत्व। आदमियत। २. बुद्धि। विवेक। शऊर। ३ भलमनसी। सज्जनता।

इनाम—संज्ञा पुं० [अ० इनआम] पुरस्कार। उपहार। पारितोषिक।

यौ०—इनाम-इकराम = इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय। बखशीश।

इनायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कृपा। दया। अनुग्रह। २ एहसान।

मुहा०—इनायत करना=कृपा करके देना। कृपा करना।

इनारा†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० "कूआँ"।

इने गिने—वि० [(अनु०) इने+हिं० गिने] कतिपय। कुछ। थोड़े से। चुने चुनाए। बहुत कम। विरले।

इन्है(पु)†—सर्व० दे० "इन"।

इफरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अधिकता। २ प्रचुरता।

इबरानी—वि० [अ०] यर्दन नदी के तट पर बसी वह पुरानी जाति जिसमें ईसा और मूसा का जन्म हुआ था। मूसाई। यहूदी।

संज्ञा स्त्री० फिलिस्तीन देश का प्राचीन भाषा। मूसाई जाति की भाषा।

इबादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पूजा। अर्चा।

इबारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० इबारती] १. लेख। मजमून। २ लेखशैली। ३ लिखावट।

इमली—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ली] १ एक बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार लंबी फलियाँ खटाई की तरह प्रयुक्त होती हैं। २ इस पेड़ का फल।

इमाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ अगुआ। २ मुसलमानों का धार्मिक कृत्य करानेवाला मनुष्य। मस्जिद का पंडा। मुसलमानों का पुरोहित या पुजारी। ३. अली के बेटों की उपाधि।

इमामदस्ता—संज्ञा पुं० [फा० हमाम+दस्ता] लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

इमामबाड़ा—संज्ञा पुं० [अ० इमाम+हिं० बाड़ा] १. वह हाता जिसमें शिया मुसलमान ताजिया रखने और उसे दफन करते हैं। २ मुसलमानों की समाधि और उसकी इमारत, जैसे—आसफउद्दौला का इमामबाड़ा।

इमारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] बड़ा और पक्का मकान। भवन।

इमि(पु)—क्रि० वि० [सं० एवम्] इस प्रकार।

इमिरती—संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत] उरद की पीठी और चौरेठा के मिश्रण से बनी एक मिठाई जो जलेबी के आकार की किंतु उससे मोटी और रसीली होती है।

इम्तहान—संज्ञा पुं० [अ०] परीक्षा। जाँच।

इयत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीमा। हद। विस्तार।

इरशाद—संज्ञा पुं० [अ०] १. आज्ञा। हुक्म। २ कहना। फरमाना।

इरषा—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्ष्या"।

इरषित(पु)—वि० [सं० ईर्षित] जिससे ईर्ष्या की जाय।

इरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कश्यप की वह स्त्री जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २ भूमि। पृथ्वी। ३ वाणी।

इराक—संज्ञा पुं० [अ०] अरब के उत्तर का एक देश।

इराकी—वि० [अ०] इराक देश का।

संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।

इरादा—संज्ञा पुं० [अ०] १ विचार। संकल्प। २ मंशा। इच्छा। अभिप्राय।

इर्दगिर्द—क्रि० वि० [(अनु०) इर्द+फा० गिर्द] १ चारों ओर। २ आसपास।

इर्षना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

इलजाम—संज्ञा पुं० [अ० इल्जाम] १. दोष। अपराध। २ अभियोग। दोषारोपण।

इलहाम—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर प्रेरित ज्ञान या वाणी का हृदय में व्यक्त होना। दिव्य भावावेश। देववाणी।

इला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३ सरस्वती। वाणी। ४ गौ।

इलाका—संज्ञा पुं० [अ०] १ कई मौजों की जमींदारी। भूसंपत्ति। रियासत। २ संबंध। लगाव।

इलाज(पु)—संज्ञा पुं० [अ०] १ दवा। औषध। २ चिकित्सा। ३ उपाय। युक्ति।

इलाम(पु)—संज्ञा पुं० [अ० ऐलान] १ इत्तलानामा। सूचनापत्र। २ हुक्म। आज्ञा।

इलायची—संज्ञा स्त्री० [सं० एला+ची (फा० प्रत्य० 'च')] पूर्वी समुद्रतट और जावा सुमात्रा आदि द्वीपों में उत्पन्न होनेवाला एक सदाबहार पेड़ जिसके दो प्रकार के छिलकेदार छोटे फल होते हैं। एक के बीजों में बड़ी सुगंध होती है और मुख सुगंधित करने के लिये खाए जाते हैं। दूसरा इससे कुछ बड़ा होता है और गरम-मसाले आदि में प्रयुक्त होता है।

इलायचीदाना—संज्ञा पुं० [हिं० इलायची+दाना] १ इलायची का बीज। २ चीनी में पगा हुआ इलायची का दाना जो पूजा में चढ़ाया जाता है। ३ खूब साफ चीनी की छोटी और सफेद गोली।

इलावर्त्त—संज्ञा पुं० दे० "इलावृत्त"।

इलावृत्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भौगोलिक विभाजन में जंबुद्वीप के नौ खंडों में से एक।

इलाही—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर। खुदा। वि० दैवी। ईश्वरीय।

इलाही गज—संज्ञा पुं० [अ०] अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ४१ अंगुल (३३⅓ इंच) का होता है और इमारत आदि में नापने के काम आता है।

इलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी। भूमि।

इल्तिजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवेदन।

इल्म—संज्ञा पुं० [अ०] १ विद्या। ज्ञान। २ युक्ति। ३ जानकारी।

इल्लत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ झंझट। बखेड़ा। २ रोग। बीमारी। ३ दोष। अपराध।

इल्ला—संज्ञा पुं० [सं० कील] मांस का कड़ा दाना जो चमड़े पर उभर आता है। एक चर्म रोग।

इल्ली—संज्ञा स्त्री० [देश०] चींटी आदि के बच्चों का वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।

इव—अव्य० [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। तरह।

इशारा—संज्ञा पुं० [अ० इशार] १ सैन। संकेत। २ संक्षिप्त कथन। ३ बारीक सहारा। सूक्ष्म आधार। ४ गुप्त प्रेरणा।

इशिका—संज्ञा स्त्री० दे० "इषीका"।

इश्क—संज्ञा पुं० [अ० इश्क] [वि० आशिक] मुहब्बत। चाह। प्रेम।

इश्तहार—संज्ञा पुं० [अ०] १ विज्ञापन। सूचना। २ दीवालों आदि पर चिपकाया जानेवाला बड़ा विज्ञापन या सूचनापत्र।

इषण(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "एषणा"।

इषीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाण। तीर। २ सरई। तिनका। सींक। ३ दियासलाई की काँटी।

इषु—संज्ञा पुं० दे० "इषीका"।

इषुधि—संज्ञा पुं० [सं०] तरकश। तूण। बाणों को रखने की थैली।

इष्ट—वि० [सं०] १ अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २ पूजित। ३ हितकारी। संज्ञा पुं० १ अग्निहोत्रादि शुभ कर्म। २ इष्टदेव। कुलदेव। ३ अधिकार। देवता की छाया या कृपा। ४ मित्र।

इष्टका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईंट।

इष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] इष्ट का भाव।

इष्टदेव, इष्टदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] १ आराध्य देव। पूज्य देवता। २ किसी गाँव या कुल में विशेष रूप से पूजित देवता। किसी व्यक्ति के निजी आराध्य देवता।

इष्टापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वादी के कथन या बयान में दिखाई हुई वह आपत्ति जिसे वादी स्वीकृत कर ले।

इष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इच्छा। अभिलाषा। २ यज्ञ।

इस—सर्व० [सं० एष] 'यह' शब्द का विभक्ति के साथ प्रयुक्त रूप, जैसे—इसने, इसको (इसे), इसके द्वारा, इसके लिये (इसे), इससे, इसका, इसमें, इसपर।

इसपंज—संज्ञा पुं० [अ० स्पंज] समुद्र में मिलनेवाले एक छोटे जलजंतु की रूई के समान मुलायम और छेददार ठटरी जो नहाने में बदन साफ करने और पानी सुखाने के काम आती है। मुर्दा बादल।

इसपात—संज्ञा पुं० [सं० अयस्पत्र, अथवा पुर्त० स्पेडा] लोहा और कुछ क्षारों या अन्य द्रव्यों के योग से बना कड़ा लोहा। पक्का लोहा।

इसबगोल—संज्ञा पुं० [फा०] फारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं और आमघ्न, वीर्यवर्धक तथा पौष्टिक माने जाते हैं।

इसराज—संज्ञा पुं० [?] सारंगी की तरह का एक बाजा।

इसरार—संज्ञा पुं० [अ०] १ हठ। जिद। २ कुतर्क।

इसलाम—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इसलामिया] मुसलमानी मत। ईसा की सातवीं शती में हजरत मोहम्मद द्वारा प्रवर्तित एक मत और धर्म जिसका मूल ग्रंथ कुरान है।

इसलाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।

इसारत(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० इशारा] संकेत। इशारा।

इसे—सर्व० [सं० एष] 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी—वि० [अ०] सब दिन रहनेवाला। सनातन। स्थायी।

यौ०—इस्तमरारी बंदोबस्त=जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिये नियत कर दी जाती है।

इस्तिंजा—संज्ञा पुं० [अ०] पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से मूत्रेंद्रिय की शुद्धि करने की मुसलमानी रीति।

इस्तिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० √स्तृ] कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरजियों का एक औजार। लोहा।

इस्तीफा—संज्ञा पुं० [अ० इस्तैफा] अपने काम या पद से अलग होने की सूचना का पत्र। त्यागपत्र।

इस्तेमाल—संज्ञा पुं० [अ०] प्रयोग। उपयोग।

इस्म—संज्ञा पुं० [अ०] नाम। संज्ञा।

इस्म-नवीसी—संज्ञा स्त्री० [अ० इस्म+फा० नवीसी] १ लोगों के नाम लिखना या लिखाना। २ अदालत में अपने गवाहों की सूची पेश करना।

इस्मशरीफ—संज्ञा पुं० [अ० इस्म+शरीफ] शुभ नाम। (नाम पूछने के लिये आदरार्थक प्रयोग)।

इह—क्रि० वि० [सं०] इस जगह। इस लोक में। इस काल में। यहाँ। संज्ञा पुं० यह संसार। यह लोक।

इह लीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] इस लोक की लीला या जीवन। यह जिंदगी।

इहाँ†—क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

ई

ई—हिंदी वर्णमाला का चौथा स्वर वर्ण और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

ईंगुर—संज्ञा पुं० [सं० हिंगुल, प्रा० इंगुल] चीन आदि देशों में होनेवाला एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। पारा, गंधक, पोटाश और पानी के योग से यह कृत्रिम भी बनाया जाता है। इसकी बुकनी स्त्रियों के शृंगार के काम आती है। यह औषधियों में भी प्रयुक्त होता है। सिंगरफ।

ईंचना—क्रि० स० दे० "खींचना"।

ईंट—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टका] १. साँचे में ढाला और भट्ठे में पकाया हुआ मिट्टी का प्रायः १० इंच लंबा, ४॥ इंच चौड़ा और ३॥ इंच मोटा और चौखूँटा टुकड़ा जो दीवार बनाने के काम आता है।

मुहा०—ईंट ईंट बिकना = सब संपत्ति समाप्त होना। ईंट से ईंट बजना = किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वस होना। ईंट से ईंट बजाना = किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना। ईंट चुनना = दीवार उठाने के लिये ईंट पर ईंट बैठाना। जोड़ाई करना। डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना = जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। ईंट पत्थर = कुछ नहीं।

२ चाँदी आदि किसी धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। ३. ताश के खेल में लाल रंग के पत्तों का एक भेद।

ईंटा—संज्ञा पुं० दे० "ईंट"।

ईंडरी—संज्ञा स्त्री० [वै० इण्ड्र] कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।

ईंढ—वि० [सं० ईदृश] १. बराबर। समान। २ ऐसा।

ईंदर—संज्ञा पुं० [देश०] हाल की ब्याई गाय या भैंस के दूध की बनी मिठाई। इनरी। प्यौसी।

ईंधन—संज्ञा पुं० [सं०] जलाने की लकड़ी या कंडा। जलावन। जरनी।

ई—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

ⓟसर्व० [सं० ई = निकट का संकेत] यह।

अव्य० [सं० हिं०] जोर देने का शब्द। ही। उ०—पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास। नित प्रति पून्यो ई रहै आनन ओप उजास।—बिहारी०।

ईक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १ दर्शन। देखना। २ आँख। ३ विवेचन। विचार। जाँच।

ईख—संज्ञा स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इस रस से गुड़, चीनी आदि बनाई जाती है। गन्ना। ऊख।

ईखनाⓟ—क्रि० स० [सं० ईक्षण] देखना।

ईछनⓟ—संज्ञा पुं० [सं० ईक्षण] आँख।

ईछनाⓟ—क्रि० स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।

ईछाⓟ—संज्ञा स्त्री० "इच्छा"।

ईछी—संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।

ईजाद—संज्ञा पुं० [अ०] किसी नई चीज का बनाना। नया निर्माण। दे० "आविष्कार"।

ईठⓟ—संज्ञा पुं० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।

ईठनाⓟ—क्रि० स० [सं० इष्ट] इच्छा करना।

ईठि—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि] १ मित्रता। दोस्ती। प्रीति। २. चेष्टा। यत्न।

ईठी—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट] इच्छा। चाह। अभिलाषा।

वि० १ प्रिय। २ अभिलषित। ३. भला।

ईडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तुति। प्रशंसा।

ईढ़ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट, प्रा० इट्ठ] [वि० ईढ़ी] जिद। हठ।

ईतरⓟ—वि० [हिं० इतराना] १ इतरानेवाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख।

वि० [सं० इतर] निम्न श्रेणी का।

ईति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं—(क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पड़ना। (घ) चूहे लगना। (ङ) पक्षियों की अधिकता। (च) दूसरे राजा की चढ़ाई। २ बाधा। ३ पीड़ा। दुःख।

ईथर—संज्ञा पुं० [अँ०] १ एक प्रकार का हवा से भी पतला अति सूक्ष्म द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है। आकाशद्रव्य। २ शीघ्र उड़नेवाला एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेजाब से बनता है।

ईद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रमजान महीने के तीस दिन रोजा (व्रत) रखने के बाद जिस दिन दूज का चाँद दिखाई पड़ता है उसके दूसरे दिन (तृतीया को) मनाया जानेवाला मुसलमानों का एक त्योहार। २ प्रसन्नता या उत्सव का दिन।

यौ०—ईदगाह = वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।

मुहा०—ईद का चाँद = अत्यंत अभिलषित और प्रतीक्षित व्यक्ति या पदार्थ। ईद मुहर्रम होना = प्रसन्नता या सुख में विपत्ति पड़ना।

ईदृश—क्रि० वि० [सं०] [स्त्री० ईदृशी] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे।

वि० इस प्रकार का। ऐसा।

ईप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] इच्छा। वांछा। अभिलाषा। ख्वाहिश।

ईप्सित—वि० [सं०] चाहा हुआ। वांछित। इच्छित। अभिलषित।

ईबी सीबी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिसकारी या 'सी सी' का शब्द जो आनंद या पीड़ा के समय मुँह से निकलता है।

ईमान—संज्ञा पुं० [अ०] १ धर्मविश्वास। ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २ चित्त की सद्वृत्ति। अच्छी नीयत। ३ धर्म। ४ सत्य।

ईमानदार—वि० [फा०] १ ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखनेवाला। आस्तिक। २ विश्वासपात्र। ३ सच्चा। ४. दयानतदार जो लेनदेन या व्यवहार में सच्चा हो। नेकनीयत। ५ सत्य का पक्षपाती।

ईरखाⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।

ईरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईरित] १. आगे बढ़ाना। चलाना। २ उच्च स्वर से कहना। घोषणा करना।

ईरान—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० ईरानी] फारस देश।

ईरानी—संज्ञा पुं० [फा०] ईरान देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० ईरान देश की भाषा।

वि० ईरान का। ईरान संबंधी। ईरान में होनेवाला। ईरान से आया हुआ।

ईर्षणाⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्यण] ईर्ष्या। डाह।

ईर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] [वि० ईर्षालु, ईर्षित, ईर्षु] दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। डाह। हसद।

ईर्षालु—वि० [सं०] ईर्षा करनेवाला । दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला ।
ईर्ष्या—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा" ।
ईवनिंग पार्टी—संज्ञा स्त्री० [अं०] संध्या समय दी जानेवाली जलपान की दावत । सांध्य भोज ।
ईश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी] १ स्वामी । मालिक । २ राजा । ३ ईश्वर । परमेश्वर । ४ महादेव । शिव । रुद्र । ५ ग्यारह की संख्या । ६ आर्द्रा नक्षत्र । ७ एक उपनिषद् । ८ पारा । ९ ८ वर्णों का वह वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक सगण के बाद एक जगण और अंत्य दो गुरुवर्ण होते हैं, जैसे—सजि गग ईश ध्यावौ । नित ताहि नावौ । अघ ओघहू नसैहैं । सब कामना पुजैहैं ।
ईशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व । प्रभुत्व ।
ईशान—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईशानी] १ स्वामी । अधिपति । २ शिव । महादेव । ३ ग्यारह की संख्या । ४ ग्यारह रुद्रों में से एक । ५ पूरब और उत्तर के बीच का कोना ।
ईशिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है । ईशित्व ।
ईशित्व—संज्ञा पुं० दे० "ईशिता" ।
ईश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईश्वरी, ईश्वरीय] १. परमेश्वर । भगवान् । २. क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुषविशेष । घट घट-व्यापी तत्व । ३. महादेव । शिव । ४ मालिक । स्वामी ।
ईश्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर का गुण, धर्म या भाव । ईश्वरपन ।
ईश्वरप्रणिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ महर्षि पतंजलि के योग के शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान इन पाँच नियमों में अंतिम । २ अष्टांग योग की क्रियाओं में किसी प्रतीक पर ईश्वर का आरोप करके चित्त का निरोध करना । ३ श्रद्धा और भक्तिपूर्वक समस्त कर्मों का ईश्वर को समर्पण ।
ईश्वरीय—वि० [सं०] १ ईश्वर संबंधी । २ ईश्वर का । दैवी ।
ईषत्—वि० [सं०] थोड़ा । कुछ । कुछ कम । कुछ कुछ । थोड़ा थोड़ा ।
ईषत्स्पृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार य, र, ल, व अक्षर जिनके उच्चारण में जिह्वा तालु, मूर्द्धा और दाँत को तथा दाँत ओष्ठ को बहुत कम स्पर्श करते हैं ।
ईषद्—वि० दे० "ईषत्" ।
ईषना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा ।
ईस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ईश" ।
ईसन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ईशान] ईशान कोण ।
ईसर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ऐश्वर्य] ऐश्वर्य । उ०—अब ईसर भा दारित खोवा ।—पदमावत ।
संज्ञा पुं० [ईश्वर] महादेव । उ०—ईसर केर घट रन बाजा ।—पदमावत ।
ईसरगोल—संज्ञा पुं० दे० "इसबगोल" ।
ईसवी—वि० [फा०] ईसा से संबंध रखनेवाला । ईसा का ।
यौ०—ईसवी सन्=ईसा मसीह की कल्पित निधनतिथि से गिनी जानेवाली वर्षगणना या संवत् । अँग्रेजी वर्षगणना ।
ईसा—संज्ञा पुं० [अ०] ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह ।
(पु)संज्ञा पुं० [सं० ईश] ईश्वर । महादेव ।
यौ०—ईसा पश्चात्=दे० "ईसवी सन्" । (लैटिन—एनो डोमीनाइ, अँ० आफ्टर क्राइस्ट, संक्षेप=ए० सी० या ए० डी०) ईसापूर्व=ईसा के कल्पित जन्मदिन से पहले के संवत्सर (अँ० बिफोर क्राइस्ट, संक्षेप=बी० सी०) ।
ईसाई—वि० [फा०] ईसा को खुदा का बेटा माननेवाला । ईसा के बताए धर्म पर चलनेवाला । ईसा का अनुयायी ।
ईहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईहित] १. चेष्टा । उद्योग । २ इच्छा । ३. लोभ ।
ईहामृग—संज्ञा पुं० [सं०] १ रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक और मुख, प्रतिमुख तथा निर्वहण ये तीन संधियाँ होती हैं । २ भेड़िया ।

उ

उ—हिंदी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है ।
उँ—अव्य० [अनु०] एक प्राय अव्यक्त शब्द जो प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिये व्यवहृत होता है ।
उंकोत—संज्ञा पुं० [देश०] दे० "उकवथ" ।
उँखारी—संज्ञा स्त्री० [सं० इक्ष्वाटिका] १ वह खेत जिसमें गन्ना बोया जाता हो । २ गन्नेवाले खेत की जुताई ।
उँगनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बैलगाड़ी के पहियों में तेल डालने का कार्य ।
उंगल—संज्ञा स्त्री० दे० "अंगुल" ।
उँगली—संज्ञा स्त्री० [सं० अँगुलि] हाथ या पैर के छोरों पर अलग अलग निकले हुए फलियों के आकार के पाँच अवयव जो कुछ पकड़ने आदि के काम आते हैं । (इनमें छोटा और सबसे मोटा अवयव अँगूठा कहलाता है ।)

मुहा०—(किसी की ओर) उँगली उठना=(किसी का) लोगों की निंदा का लक्ष्य होना । निंदा होना । बदनामी होना । (किसी की ओर) उँगली उठाना =(१) निंदा का लक्ष्य बनाना । लांछित करना । दोषी बताना । (२) हानि पहुँचाना । टेढ़ी नजर से देखना । उँगली करना †=(१) विवश करना । अत्यधिक प्रेरित करना । (२) जल्दी मचाना । (३) सिर पर सवार रहना । उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना=थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिये उत्साहित होना । थोड़े मौके का अनुचित और अधिक लाभ उठाना । उँगलियों पर नचाना=(१) जैसे चाहे वैसे कराना । किसी से अपनी इच्छा के अनुसार काम लेना । मनमानी दौड़धूप कराना । (२) अपनी इच्छा के अनुसार ले चलना । कानी उँगली=कनिष्ठिका या सबसे छोटी उँगली ।

कानों में उँगली देना=किसी बात को न सुनना या उससे विरक्त या उदासीन होकर उसकी चर्चा बचाना। पाँचों उँगलियाँ घी में होना=सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना। लाभातिरेक होना।

उँघाई—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ", "औंघाई"।

उँघाना†—क्रि० अ० [हिं० ऊँघना] १ ऊँघना। नींद आना। २ आलस्ययुक्त होना। अलसाना।

उचन—संज्ञा स्त्री० [सं० उदञ्चन=ऊपर खींचना या उठाना] खाट के पायताने की ओर लगी रस्सी जिसको खींचकर कसने से खाट की बुनावट तनकर कड़ी हो जाती है। अदवायन। अरवान। अरदावन।

उचना—क्रि० स० [सं० उदञ्चन] अदवान तानना। उचन कसना। अदवान खींचना।

उँचाई—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँचाई"।

उँचाना(पु)—क्रि० स० [हिं० ऊँचा] ऊँचा करना। उठाना।

उँचाव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० उच्च] ऊँचाई।

उँचास(पु)†—संज्ञा पु० दे० "ऊँचाई"।

उंछ—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेट पालने के लिये मालिक के ले जाने के पीछे खेत में पड़े हुए अन्न के दाने चुनना। सीला बीनना।

उंछवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्म शुद्धि के लिये खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को चुनकर जीवन निर्वाह करना। प्राचीन काल में तपस्वियों के आहार का एक विशेष ढंग।

उंछशील—वि० [सं०] उंछवृत्ति से जीवन-निर्वाह करनेवाला।

उछाह(पु)—संज्ञा पु० दे० "उत्साह"।

उँजरिया—संज्ञा स्त्री० [सं० उज्ज्वल] चाँदनी। उजियाली। चंद्रमा का प्रकाश।

उँजियार—वि० दे० "उजाला"।

उँजेला—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उँडेरना—क्रि० स० दे० "उँडेलना"।

उँडेलना—क्रि० स० [सं० उद्धेलन] १ तरल पदार्थ को एक बरतन से दूसरे बरतन में ढालना। ढालना। २ तरल पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उँदरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उंदुर] चुहिया। उ०—उँदरी बपुरा मगर गावै कदू एक आनँद सुनावै।—कबीर०।

उंदुर—संज्ञा पु० [सं०] चूहा। मूसा।

उँवरना(पु)—क्रि० स० दे० "उद्धरना"।

उँह—अव्य० [अनु०] १ अस्वीकार, घृणा या उपेक्षा सूचित करनेवाला शब्द। २ वेदनासूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उँहूँ—अव्य० [उँह०] अस्वीकार-सूचक शब्द।

उ—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ नर।

(पु) अव्य० भी।

उअआर†—संज्ञा पुं० दे० "उपकार"।

उअना(पु)—क्रि० अ० दे० "उगना"।

उआना(पु)—क्रि० स० दे० "उगाना"।

(पु) †क्रि० स० [सं० उद्गुरण] किसी के मारने के लिये हाथ या हथियार तानना।

उऋण—वि० [सं० उत+ऋण] १ ऋण-मुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो। २ जो किसी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर चुका हो।

उकचन—संज्ञा पु० [सं० मुचकुंद] मुचकुंद का फूल।

उकचना(पु)—क्रि० अ० [सं० उत्कर्ष] १ उखड़ना। अलग होना। २ पर्त से अलग होना। उचड़ना। ३ उठ भागना।

उकटना—क्रि० स० दे० "उघटना"।

उकटा—वि० [हिं०√उकट+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० उकटी] उकटनेवाला। एहसान जतानेवाला।

संज्ञा पु० किसी के किए हुए अपराध या अपने उपकार को बार बार जताना।

यौ०—उकटा पुरान=दबी दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन। बीती हुई बातों को फिर से उभाड़ना।

उकठना—क्रि० अ० [सं० अव+काष्ठ] १ सूखकर कड़ा होना। २ जड़ से अलग होना। (पेड़ पल्लव आदि का) सूखकर गिर पड़ना। ३ उखड़ना। अलग होना।

उकठा—वि० [हिं०√उकठ] शुष्क। सूखा। खखड़ा।

उकड़ूँ—संज्ञा पु० [सं० उत्कुटुक] घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे जमीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एड़ियों से लगे रहते हैं तथा छाती और सिर सामने झुके रहते हैं।

उकत—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकताना—क्रि० अ० [सं० उत्क] १ ऊबना। २ जल्दी मचाना।

उकति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकलना—क्रि० अ० [सं० उत्कलन= खुलना] १ तह से अलग होना। उचड़ना। २ लिपटी हुई चीज का खुलना। उधड़ना।

उकलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उकल+आई (प्रत्य०)] मिचली। कै। उलटी। वमन।

उकलाना—क्रि० अ० [हिं० उकलना] उलटी करना। वमन करना। कै करना।

उकवथ—संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें शरीर के चमड़े पर दाने या चकत्ते निकलते हैं, खाज होती है और चेप बहता है। (अँ० एक्जिमा)।

उकवाँ—क्रि० वि० [सं० उत्क] १ अनुमानत। २ दे० "उकड़ूँ"।

उकसना—क्रि० अ० [सं० उत्कर्षण या उत्सुक] १ उभरना। ऊपर उठना। २ निकलना। अंकुरित होना। ३ उधड़ना।

उकसनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसना] उठने की क्रिया या भाव। उभाड़।

उकसाना—क्रि० स० [हिं० 'उकसना' का प्रे० रूप] १ ऊपर उठाना। २ उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३ उठा देना। हटा देना। ४ (दीपक की बत्ती) बढ़ाना या आगे करना।

उकसाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उकस+आहट (प्रत्य०)] उकसाने की क्रिया या भाव। उत्तेजना।

उकसौहाँ—वि० [हिं० √उकस+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उकसौहीं] उभड़ता हुआ।

उकाब—संज्ञा पु० [अ०] बड़ी जाति का एक गिद्ध। गरुड़।

उकालना(पु)—क्रि० स० दे० "उकेलना"।

उकासना(पु)—क्रि० स० [हिं० उकसाना] १ उभाड़ना। २ खोदकर ऊपर फेंकना। ३ उघारना। खोलना।

उकासी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√उकास+ई (प्रत्य०)] परदा आदि हट जाने से सामने आना।

संज्ञा स्त्री० [सं० अवकाश] अवकाश। छुट्टी।

उकीरना—क्रि० स० [सं० उत्कीर्णन] १ उखाड़ना। २ खोदना। ३ चिह्नित करना।

उकुति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकुसना(पु)—क्रि० स० [हिं० उकसना] उजाड़ना। उधेड़ना।

उकेलना—क्रि० स० [हिं० उकलना] १ तह या पर्त से अलग करना। उजाड़ना। २ लिपटी हुई चीज को छुड़ाना या अलग करना। उधेड़ना।

उकौना—संज्ञा पुं० [सं० उत्क=इच्छा +हिं० औना (प्रत्य०)] गर्भवती की भिन्न भिन्न वस्तुओं की इच्छा । दोहद ।

उक्त—वि० [सं०] कथित । कहा हुआ ।

उक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथन । वचन । २ अनोखा वाक्य । चमत्कारपूर्ण कथन ।

उखड़ना—क्रि० अ० [सं० उत्खिन्न या उत्कर्षण] १ किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना । जड़ सहित अलग होना । खुदना । "जमना" का उलटा । २ किसी दृढ स्थिति से अलग होना । प्रभाव या अधिकार छिन जाना । ३ जमा या सटा न रहना । जोड़ से हट जाना । ४ (घोड़े की) चाल में भेद पड़ना । गति सम न रहना । ५ (संगीत में) बेताल और बेसुर होना । ६ एकत्र या जमा न रहना । तितर बितर हो जाना । ७ हटना । अलग होना । ८ टूट जाना । ९ नाराज होना । बिगड़ना ।

मुहा०—उखड़ी उखड़ी बातें करना=उदासीनता दिखाते हुए बात करना । विरक्तिसूचक बात करना । उलटी सीधी बातें करना । बेलौस होकर वार्तालाप करना । पैर या पाँव उखड़ना=ठहर न सकना । एक स्थान पर जमा न रहना । लड़ने के लिये सामने न खड़ा रहना । रंग उखड़ना=धाक कम होना ।

उखड़वाना—क्रि० स० [हिं० उखड़ना का प्रे० रूप] किसी को उखाड़ने में प्रवृत्त करना ।

उखम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ऊष्म] गरमी ।

उखमज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ऊष्मज] [वि० उखमजी] १ उष्मज जीव । पसीने से उत्पन्न जूँ आदि क्षुद्र कीट । २ शरारत । नटखटपन । दे० "ऊष्मज" ।

उखरना(पु)—क्रि० अ० दे० "उखड़ना" ।

उखलना—क्रि० अ० [हिं० खौलना] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का खौलना । २ गरम होना ।

उखली—संज्ञा स्त्री० [सं० उलूखल] पत्थर वा लकड़ी का एक पात्र जिसमें डालकर भूसीवाले अनाजों की भूसी मूसल से कूटकर अलग की जाती है । काँड़ी । ओखली । ओखरी ।

उखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उषा" ।

उखाड़—संज्ञा पु० [हिं० उखाड़ना] १ उखाड़ने की अवस्था और क्रिया । उत्पाटन । २ वह युक्ति जिससे कोई पेंच या दलील रद्द की जाती है । तोड़ । ३ कुश्ती का एक पेंच । ४ छिन्न भिन्न होना । समाप्त होना । ५ प्रभाव या धाक का अभाव ।

उखाड़ना—क्रि० स० [हिं० उखड़ना का स० रूप] १ किसी जमी, गड़ी या बैठी हुई वस्तु को उसके स्थान से पृथक् करना । जमा न रहने देना । २ अंग को जोड़ से अलग करना । ३. भड़काना । बिचकाना । ४ तितर बितर कर देना । ५ हटाना । टालना । ६ नष्ट करना । ध्वस्त करना । ७ किसी का रोब, धाक या प्रभाव घटाना ।

मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना=पुरानी बातों को फिर से छेड़ना । गई बीती बात उभाड़ना । पैर उखाड़ देना=स्थान से विचलित करना । हटाना । भगाना । प्रभाव नष्ट करना ।

उखाड़ू—वि० [हिं० उखाड़√+ऊ (प्रत्य०)] १ उखाड़नेवाला । २ चुगली खानेवाला ।

उखारना(पु)†—क्रि० स० दे० "उखाड़ना" ।

उखारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊख+आरी (प्रत्य०)] ईख का खेत ।

उखालिया—संज्ञा पुं० [सं० उष +काल] बहुत सबेरे का भोजन । सरगही ।

उखिलता—संज्ञा स्त्री० [हिं० उखिल+ता (प्रत्य०)] १ अजनबीपन । २ उष्णता । गरमी ।

उखिलताई—संज्ञा स्त्री० दे० "उखिलता" ।

उखेलना(पु)—क्रि० स० [सं० उल्लेखन] उपटाना । उरेहना । लिखना । खींचना (तसवीर) ।

उगटना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्घाटन या उत्कथन] १ उघटना । बार बार कहना । २ ताना मारना । बोली बोलना । व्यंग्य कसना ।

उगना—क्रि० अ० [सं० उद्गमन] १ निकलना । उदय होना । प्रकट होना (सूर्य-चंद्र आदि ग्रह) । २ जमना । अंकुरित होना । ३ उपजना । उत्पन्न होना । भूमि के भीतर से ऊपर निकलना । फूटना (वनस्पति) ।

उगरना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्गिरण] १ भरा हुआ पानी आदि निकलना । २ भरा हुआ पानी आदि निकल जाने से खाली होना । ३ भर जाने के कारण पात्र या आधार से बहना ।

उगलना—क्रि० स० [सं० उद्गिलन; प्रा० उग्गिलन] १ पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना । कै करना । २ मुँह में गई वस्तु को बाहर थूक देना । ३ अपनाया हुआ माल विवश होकर वापस करना । ४ जो बात छिपाने के लिये कही जाय, उसे प्रकट कर देना । ५ रहस्य खोलना ।

मुहा०—उगल पड़ना=तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना । बाहर निकलना । जहर उगलना=ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे । आग उगलना=मर्मभेदी बातें कहना । तीखी और कड़ी बातें कहना ।

उगलवाना—क्रि० स० दे० "उगलाना" ।

उगलाना—क्रि० स० [हिं० उगलना का प्रे० रूप] १ मुख से निकलवाना । कबूल कराना । २ इकबाल कराना । दोष को स्वीकार कराना । ३ पचे हुए माल को निकलवाना । ४ छिपी बात कहलाना । रहस्योद्घाटन कराना ।

उगवना(पु)—क्रि० स० दे० "उगाना" ।

उगसाना(पु)—क्रि० स० दे० "उकसाना" ।

उगसारना(पु)—क्रि० स० [हिं० उकसाना] बयान करना । कहना । प्रकट करना ।

उगहन—संज्ञा पु० [सं० उद्ग्रहण] वसूली । उगाही ।

उगाना—क्रि० स० [हिं० उगना का स० रूप] १ जमाना । अंकुरित करना । (पौधा या अन्न आदि) २ उदय करना । प्रकट करना ।

उगार, उगाल(पु)—संज्ञा पु० [सं० उद्गार, प्रा० उगाल] पीक । थूक । खखार ।

उगालदान—संज्ञा पु० [हिं० उगाल+फा० दान (प्रत्य०)] थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन । पीकदान ।

उगाहना—क्रि० स० [सं० उद्ग्रहण] १ नियमानुसार अन, धन आदि इकट्ठा करना । बकाया वसूल करना । चंदा करना । २ कहीं से प्रयत्नपूर्वक कुछ प्राप्त करना । ३ चुंगी, कर आदि वसूल करना । ४ अपनी शक्ति या अधिकार से इकट्ठा करना ।

उगाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उगाह+ई (प्रत्य०)] १ रुपया पैसा, कर, अन्न, आदि वसूल करने का काम । वसूली । २

वसूल किया हुआ रुपया-पैसा, कर, अन्न आदि। तहसील। ३ उगाहने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

उगिलना(पु)†—क्रि स० दे० "उगलना"।

उग्गाहा—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्गाथा, प्रा० उग्गाहा] आर्या छंद के भेदों में से एक।

उग्र—वि० [सं०] प्रचंड। उत्कट। तेज।

संज्ञा पुं० १ महादेव। २ वत्सनाग-विष। बच्छनाग। जहर। ३ क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ४. केरल देश। ५ सूर्य।

उग्रगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वच। २ अजमोदा। ३ प्याज। ४. लहसुन।

उग्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजी। प्रचंडता।

उघटना—क्रि० अ० [सं० उत्कथन] १ ताल देना। सम पर तान तोड़ना। २ दबी दबाई बात उभाड़ना। ३ किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार-बार कहकर ताना देना। ४ किसी को भला-बुरा कहते कहते उसके बाप-दादे को भी भला बुरा कहने लगना। ५ उधेड़बुन करना।

उघटा—वि० [हिं० √उघट + आ (प्रत्य०)] किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान जतानेवाला। उघटनेवाला।

संज्ञा पुं० उघटने का कार्य।

उघड़ना—क्रि० अ० [सं० उद्घाटन] १ खुलना। आवरण का हटना। पर्दा हटना। २ खुलना। आवरण रहित होना। ३ नंगा होना। ४ प्रकट होना प्रकाशित होना। ५ भंडा फूटना। पर्दा फाश होना।

उघरना(पु)†—क्रि० अ० दे० "उघड़ना"।

उघरारा(पु)†—वि० [हिं० उघड़ा] [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

उघाड़ना(पु)—क्रि० स० [हिं० उघड़ना का स० रूप] १ खोलना। आवरण या पर्दा हटाना। २ खोलना। आवरणरहित करना। ३ नंगा करना। ४ प्रकट करना। प्रकाशित करना। ५ गुप्त बात को खोलना। रहस्योद्घाटन करना। भंडा फोड़ना। परदाफाश करना।

उघाड़ा—वि० [सं० उद्घाटित] जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। खुला। प्रकट। बिना पट का।

उघारना(पु)—क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

उघेलना(पु)—क्रि० स० [हिं० उघारना] दे० उघाड़ना।

उचत(पु)—वि० दे० "उचित"।

संज्ञा पुं० [हिं० ऊँचा = ऊपर ऊपर] वह दी हुई रकम जिसका हिसाब खर्च करने पर दिया जाय।

यौ०—उचतवही = वह बही जिसपर इस प्रकार दी गई रकम का हिसाब रखा जाय।

उचकन—संज्ञा पुं० [सं० उच्च + करण] ईंट पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज को एक ओर ऊँचा करते हैं। टेक।

उचकना—क्रि० अ० [सं० उच्च = ऊँचा + करण = करना] १ ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एँड़ी उठाकर खड़ा होना। २ उछलना। कूदना।

क्रि० स० उछलकर लेना या छीनना।

उचका(पु)—क्रि० वि० [हिं० अचाका] अचानक। सहसा।

उचकाना—क्रि० स० [हिं० उचकना का स० रूप] उठाना। ऊपर करना। ऊँचा करना।

उचक्का—संज्ञा पुं० [हिं० √उचक + आ (प्रत्य०)] [स्त्री० उचक्की] १. उचककर या सफाई से चीज ले भागनेवाला (व्यक्ति)। चाई। ठग। २ बदमाश।

उचटना—क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १ जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उपड़ना। चिपका या जमा न रहना। २ अलग होना। पृथक् होना। छूटना। ३ भड़कना। बिचकना। ४ विरक्त होना। ५ मन न लगना।

उचटाना(पु)—क्रि० स० [सं० उच्चाटन] १ उचाड़ना। नोचना। २ अलग करना। छुड़ाना। ३ उदासीन करना। विरक्त करना। ४ भड़काना। बिचकाना।

उचड़ना—क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १ सटी या लगी हुई चीज का अलग होना। पृथक् होना। २ किसी स्थान से हटना या अलग होना।

उचना(पु)—क्रि० अ० [सं० उच्च] १ ऊँचा होना। ऊपर उठना। उचकना। २ उठना।

क्रि० स० ऊँचा करना। उठाना।

उचनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्च] उभाड़।

उचरंग†—संज्ञा पुं० [हिं० √उछल + अंग ?] उड़नेवाला कीड़ा। पतंग। पतिंगा।

उचरना(पु)—क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।

क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना। उच्चरित होना।

†(पु)—क्रि० अ० दे० "उचड़ना"।

उचाट—संज्ञा पुं० [सं० उच्चाट] मन का न लगना। विरक्ति। उदासीनता।

उचाटन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"

उचाटना—क्रि० स० [सं० उच्चाटन] उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना।

उचाटी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्चाट] उदासीनता। अनमनापन। विरक्ति।

उचाड़ना—क्रि० स० [हिं० उचड़ना का प्रे० रूप] १ लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। नोचना। २ उखाड़ना।

उचाना(पु)†—क्रि० स० [सं० उच्च + करण] १ ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २ उठाना।

उचार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उचारना(पु)—क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। मुँह से शब्द निकालना।

क्रि० स० दे० "उचाटना"।

उचित—वि० [सं०] [संज्ञा औचित्य] योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

उचेलना†—क्रि० स० दे० "उकेलना"।

उचौहाँ(पु)—वि० [हिं० ऊँचा + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ऊचौहीं] ऊँचा उठा हुआ। आस पास की वस्तुओं या व्यक्तियों में कुछ उठा हुआ।

उच्च—वि० [सं०] १ ऊँचा। श्रेष्ठ। बड़ा।

उच्चतम—वि० [सं०] सबसे ऊँचा।

उच्चता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऊँचाई। २ श्रेष्ठता। बड़ाई। ३ उत्तमता।

उच्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत, ओष्ठ, नासिका और जिह्वा के योग से शब्द फूटना।

उच्चरना(पु)—क्रि० स० [सं०] उच्चारण करना। बोलना।

उच्चरित—वि० [सं०] १ जिसका उच्चारण हुआ हो। २ जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो।

उच्चाकांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उच्चाकांक्षी] बड़ी या महत्व की आकांक्षा। कोई बड़ा या महत्व का काम करने की इच्छा।

उच्चाट—संज्ञा पुं० [सं०] १ उचाटने या नोचने की क्रिया । २ अनमनापन । उचाट । उच्चाटन ।

उच्चाटन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित] १ लगी या सटी हुई चीज को अलग करना । विश्लेषण । २ उचाटना । उखाड़ना । नोचना । ३ किसी के चित्त को कहीं से हटाना । (तंत्र के छः अभिचारों या प्रयोगों में से एक) । ४ अनमनापन । विरक्ति । विराग । उदासीनता ।

उच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुँह से शब्द निकलना । बोलना । कथन । २ मूत्र । पेशाब ।

उच्चारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य, उच्चार्यमाण] १ कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत, नासिका, ओष्ठ, और जिह्वा के प्रयत्न द्वारा मनुष्य का मुँह से व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना । मुँह से स्वर और व्यंजनयुक्त शब्द निकालना । २ वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग । तलफ्फुज ।

उच्चारनाⓅ—क्रि० स० [सं० उच्चारण] मुँह से शब्द निकालना । बोलना ।

उच्चारित—वि० [सं०] जिसका उच्चारण किया गया हो । बोला या कहा हुआ ।

उच्चार्य—वि० [सं०] उच्चारण के योग्य ।

उच्चाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी या ऊँची आशा ।

उच्चैःश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० उच्चैःश्रवस्] इंद्र का बड़े कानोंवाला सफेद घोड़ा जो समुद्रमंथन के समय निकला था ।

वि० ऊँचा सुननेवाला । बहरा ।

उच्छन्न—वि० [सं०] दबा हुआ । छिपा हुआ । लुप्त ।

उच्छलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्छलित] ऊपर उठने या उछलने की क्रिया । उछाल । छलकन ।

उच्छलनाⓅ—क्रि० अ० दे० "उछलना" ।

उच्छवⓅ—संज्ञा पुं० दे० "उत्सव" ।

उच्छावⓅ—संज्ञा पुं० दे० "उत्साह" ।

उच्छाहⓅ—संज्ञा पुं० दे० "उछाह" ।

उच्छिन्न—वि० [सं०] १ कटा हुआ । खंडित । २ उखाड़ा हुआ । ३ पृथक् किया हुआ । ४ नष्ट । ५ गायब । लुप्त ।

उच्छिष्ट—वि० [सं०] १ किसी के खाने से बचा हुआ । जूठन । जूठा । २ दूसरे का बरता हुआ । इस्तेमाल किया हुआ ।

संज्ञा पुं० १ जूठी वस्तु । २ शहद ।

उच्छू—संज्ञा स्त्री० [सं० उत्थान, प्रा० उच्छू] एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि रुकने से आने लगती है । सुरसुरी । सुरहुरी ।

उच्छृंखल—वि० [सं०] १ जो शृंखलाबद्ध न हो । क्रमविहीन । अंडबंड । २ निरंकुश । स्वेच्छाचारी । मनमाना काम करनेवाला । ३ जिसकी इंद्रियाँ वश में न हों । अनिग्रही । ४ उद्दंड । अक्खड़ । ५ आवारा ।

उच्छेद, उच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्छिन्न] १ उखाड़ पछाड़ । खंडन । २ नाश ।

उच्छ्रित—वि० [सं०] १ ऊँचा । उच्च । २ उन्नत । उठा हुआ ।

उच्छ्रौ—संज्ञा पुं० दे० "उत्सव" ।

उच्छ्वसित—वि० [सं०] १ उच्छ्वासयुक्त । उच्छ्वास लिया हुआ । २ जिसपर उच्छ्वास का प्रभाव पड़ा हो । ३ विकसित । प्रफुल्ल । ४ प्रसन्न । गद्गद । ५ जीवित ।

उच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी] १ ऊपर खींची हुई साँस । उसाँस । २ गहरा श्वास । ३ ग्रंथ का विभाग । प्रकरण ।

उछंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० उत्संग] १ क्रोड़ । गोद । २ हृदय । छाती ।

उछकना—क्रि० अ० [सं० उच्छक्न] नशा हटना । चेत में आना । होश आना ।

उछरनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "उछलना" ।

उछलकूद—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उछल+√कूद] १ खेलकूद । २ अधीरता, असंतोष आदि व्यक्त करने के लिये उछलने-कूदने का प्रयत्न । ३ दौड़धूप । नाना प्रयत्न ।

उछलना—क्रि० अ० [सं० उच्छलन] १ वेग से ऊपर उठना और गिरना । २ झटके के साथ एकबारगी शरीर को क्षण भर के लिये इस प्रकार ऊपर उठा लेना कि पृथ्वी से लगाव छूट जाय । कूदना । ३ अत्यंत प्रसन्न होना । खुशी से फूलना । ४ रेखा या चिह्न का साफ दिखाई पड़ना । चिह्न पड़ना । उपटना । उभड़ना । ५ उतरना । (तरल पदार्थों के लिये) छलकना । तरंगित होना ।

उछलवाना—क्रि० स० [हिं० उछलना का प्रे० रूप] किसी को उछलने या उछालने में प्रवृत्त करना ।

उछलाना—क्रि० स० [हिं० उछालना का प्रे० रूप] किसी से किसी और को उछालने में प्रवृत्त करना ।

उछाँटना—क्रि० स० [हिं० उचाटना] उचाटना । उदासीन करना । विरक्त करना ।

Ⓟक्रि० स० [हिं० छाँटना] छाँटना । चुनना ।

उछारनाⓅ†—क्रि० स० दे० "उछालना" ।

उछाल—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्छालन] १ सहसा ऊपर उठने की क्रिया । २ फलाँग । चौकड़ी । कुदान । ३ वह अधिकतम ऊँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है । †४ उलटी । कै । वमन । ५ पानी का छींटा । छलक ।

उछालना—क्रि० स० [सं० उच्छालन] १ ऊपर की ओर फेंकना । उचकाना । २ प्रकट करना । प्रकाशित करना ।

उछाला—संज्ञा पुं० [हिं० उछाल] १ जोश । उबाल । २ वमन । कै । उलटी । ३ उछलने की क्रिया । ४ बाजार में किसी चीज का भाव अचानक या बहुत अधिक बढ़ जाना ।

उछास—संज्ञा पुं० दे० "उच्छ्वास" ।

उछाहⓅ—संज्ञा पुं० [सं० उत्साह] [वि० उछाही] १ उत्साह । उमंग । किसी काम में सब कुछ सहने या करने का जोश । २ हर्ष । उत्सव । आनंद की धूम । ३ जैन लोगों की रथयात्रा । ४ इच्छा ।

उछाहीⓅ†—वि० [सं० उत्साही] उत्साह करनेवाला । किसी काम में सब कुछ करने या सहनेवाला । उत्साही । आनंद मनानेवाला ।

उछिष्ट—वि० दे० "उच्छिष्ट" ।

उछीननाⓅ—क्रि० स० [सं० उच्छिन्न] उच्छिन्न करना । उखाड़ना । नष्ट करना । गायब करना ।

उछीरⓅ—संज्ञा पुं० [प्रा० उच्छिन्न] अवकाश । जगह । रंध्र ।

उजड़ना—क्रि० अ० [सं० उज्झ् = त्यागना प्रा० उजड = उजाड़] [वि० उजाट] १ उखड़ना-पखड़ना । अपनी जगह से अलग होना । उच्छिन्न होना । ध्वस्त होना । २ तितर-बितर जाना । तितरबितर होना । ३ बरबाद होना । नष्ट होना । ४ (किसी गाँव का) बसे हुए लोगों से खाली हो जाना । वीरान होना । निर्मानुष होना ।

उजड़वाना—क्रि० स० [हिं० उजाड़ना का प्रे० रूप] १ किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना। २ किसी गाँव की बस्ती या आबादी मे उस गाँव को छोड़वाना।

उजड्ड—वि० [सं० उत्+जट] १ जड। अशिष्ट। असभ्य। गवार। २ उद्दंड। निरकुश।

उजड्डपन—संज्ञा पुं० [हिं० उजड्ड+पन (प्रत्य०)] उद्दंडता। अशिष्टता। असभ्यता। जड़ता। गवारपन।

उजबक—संज्ञा पुं० [तु०] १ तातारियों की एक जाति। २ उजड्ड। मूर्ख। गँवार। ३ सिडी। सनकी। पागल।

उजरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बदला। एवज। २ मजदूरी। पारिश्रमिक।

उजरनाⓟ—क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

उजराⓟ—वि० दे० "उजला"।

उजराई—संज्ञा स्त्री० दे० "उजलापन"।

उजरानाⓟ—क्रि० स० [सं० उज्ज्वल] उज्ज्वल करना। साफ करना।

क्रि० अ० सफेद या साफ होना।

उजलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] जल्दी।

उजलवाना—क्रि० स० [हिं० उजालना का प्रे० रूप] गहने या अस्त्र आदि का साफ करवाना।

उजला—वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] [भाव० उजलापन] १ श्वेत। धौला। सफेद। २ स्वच्छ। साफ। निर्मल।

उजलापन—संज्ञा पुं० [हिं० उजला+पन] सफेद या स्वच्छ होने का भाव। सफेदी, धवलिमा। धौलापन।

उजवना—क्रि० स० [प्रा० √उजव=प्रयत्न करना] १ फेकना। चलाना। २ अपने से दूर हटाना।

उजागर—वि० [सं० उज्जाग्रत=प्रकाशित] [स्त्री० उजागरी] १ प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। सुस्पष्ट। प्रकट। २ प्रसिद्ध। विख्यात। सर्वविदित।

उजाड़—संज्ञा पुं० [सं० उज्झित, प्रा० उज्जड] १ उजड़ा हुआ स्थान। गिरी-पड़ी जगह। २. निर्जन स्थान। वह स्थान जहाँ बस्ती न हो। ३ जगल। बियाबान।

वि० १ ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा पड़ा। २ जो आबाद न हो। निर्जन। त्यक्त।

उजाड़ना—क्रि० स० [हिं० उजाड़] १ ध्वस्त करना। गिराना पटाना। उधेड़ना। २ उच्छिन्न या नष्ट करना। ३ निर्जन बनाना।

उजान—क्रि० वि० दे० "उज्जल"।

उजारⓟ—संज्ञा पुं० दे० "उजाड़"।

उजारनाⓟ—क्रि० स० १ दे० "उजाड़ना"। २ दे० "उजालना"।

उजाराⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० उजाला] उजाला। प्रकाश। रोशनी।

वि० प्रकाशवान्। कांतिमान्।

उजारी—संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"।

उजालना—क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] १ गहने या हथियार आदि साफ करना। चमकाना। निखारना २ प्रकाशित करना। ३ बालना। जलाना।

उजाला—संज्ञा पुं० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजाली] १ प्रकाश। रोशनी। २ चद्रमा का प्रकाश या चाँदनी। ३ कुल या जाति में श्रेष्ठ या अति प्रिय व्यक्ति।

मुहा०—घर का उजाला=घर की शोभा। घर में सबसे अच्छा या प्रिय।

वि० [स्त्री० उजाली] प्रकाशवान्। 'अँधेरा' का उलटा।

उजाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० उजाला] चाँदनी। चद्रिका।

वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त (रात)।

उजास—संज्ञा पुं० [हिं० उजाला+स (प्रत्य०)] चमक। प्रकाश। ज्योति। उजाला। रोशनी।

उजासना—क्रि० अ० [हिं० उजास] प्रकाशित होना। चमकना।

क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

उजियरⓟ—वि० दे० "उजला"।

उजियरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"।

उजियारⓟ—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजियारना—क्रि० स० [हिं० उजियार] १ प्रकाशित करना। २ जलाना।

उजियाराⓟ—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजियाला—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजीरⓟ—संज्ञा पुं० दे० 'वजीर"।

उजुर—संज्ञा पुं० दे० "उज्र"।

उजू—संज्ञा पुं० [अ० वजू] मुसलमानों का नमाज पढ़ने के पूर्व हाथ, पैर और मुँह धोने का धार्मिक नियम या कृत्य।

उजेर—संज्ञा पुं० दे० 'उजाला"।

उजेरो—संज्ञा पुं० दे० 'उजेला"।

उजेला—संज्ञा पुं० [सं० उज्ज्वल] प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।

वि० [स्त्री० उजेली] प्रकाशवान्।

उज्जयिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालवा प्रदेश की प्राचीन राजधानी जो शिप्रा नदी के तट पर है। मोक्ष देनेवाली सप्तपुरियों में से एक। वर्तमान उज्जैन नगर।

उज्जरीⓟ—वि० दे० "उज्ज्वल"।

उज्जल—क्रि० वि० [सं० उद्=ऊपर+जल=पानी] बहाव मे उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। प्रवाह के उद्गम की ओर।

ⓟवि० दे० "उज्ज्वल"।

उज्जीर§—संज्ञा पुं० दे० "वजीर"।

उज्जैन—संज्ञा पुं० दे० "उज्जयिनी"।

उज्याराⓟ—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उज्यारीⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] चाँदनी। उजियाला।

उज्यासⓟ—संज्ञा पुं० दे० "उजास"।

उज्र—संज्ञा पुं० [अ०] १ बाधा। विरोध। आपत्ति। एतराज। विरुद्ध कथन। २ किसी बात के विरुद्ध विनयपूर्वक कुछ कहना।

उज्रदारी—संज्ञा स्त्री० [अ० उज्र+फा० दारी (प्रत्य०)] किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत में किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो।

उज्ज्वल—वि० [सं० उज्ज्वल] [संज्ञा उज्ज्वलता] १ दीप्तिमान्। प्रकाशमान्। २ शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३ बेदाग। ४ श्वेत। सफेद।

उज्ज्वलता—संज्ञा स्त्री० [सं० उज्ज्वलता] १ कांति। दीप्ति। चमक। २ स्वच्छता। निर्मलता। ३ सफेदी।

उज्ज्वलन—संज्ञा पुं० [सं० उज्ज्वलन] [वि० उज्ज्वलित] १ प्रकाश। दीप्ति। २ जलना। बलना। ३ स्वच्छ करने का कार्य।

उज्ज्वला—संज्ञा स्त्री० [सं० उज्ज्वला] १ १५ मात्राओं का वह मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अत में रगण (ऽ।ऽ) होता है, जैसे—नर लहत सकल शुभ कामना। सुख पावत जग नमत्रामना। २ १२ वर्णों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण एक भगण और अत में रगण होता है तथा सातवें और पाँचवें अक्षर पर विराम होता है, जैसे—न नभ र सुवरण, मन भूधरा। लसत नदि द्युति, वरणी धरा।

उझकनाⓟ—क्रि० अ० [हिं० उचकना] १ उचकना। कूदना। २ ऊपर उठना।

उभड़ना। उमड़ना। ३ ताकने के लिये ऊँचा होना। पंजों पर खड़े होना। देखने के लिये सिर उठाना। ४ चौंकना।

उझरना—क्रि० अ० [सं० उत्सरण, प्रा० उच्छरण] ऊपर की ओर उठना।

क्रि० अ० [सं० √उज्झ्=परित्याग करना। छोड़ देना। प्रा० उज्जट=उजाड़] उजड़ना। समाप्त होना। उ०—गए पपनियों उझरी बाजी को काहू कै आवै।—कबीर०।

उझलना—क्रि० स० [हिं० उझरना] किसी बरतन में रखे द्रव या अन्न, कंकड़ आदि वस्तुओं को जमीन या किसी अन्य बरतन में गिराना। डालना। उँडेलना।

उझलनि—संज्ञा स्त्री० [सं० उत+झर] वर्षा प्रवाह।

(पु) क्रि० अ० उमड़ना। बढ़ना। बढ़ना।

उझाँकना—क्रि० अ० दे० "झाँकना"।

उझिला—संज्ञा पुं० [?] उबटन बनाने के लिये उबाली हुई सरसों।

वि० कम गहरा। छिछला। उथला।

उटंग—वि० [सं० उत्तुंग?] पहनने में ऊँचा या छोटा (कपड़ा)। साधारण नापजोख या आकार से कम (कपड़ा)। पहनने के वस्त्रों की सामान्य लंबाई से ऊपर टँगा हुआ (वस्त्र)।

उटगन—संज्ञा पुं० [सं० उट=घास?] ठढे स्थानों और नदी के कछारों पर होनेवाली एक वनस्पति जिसका साग खाया जाता है। आयुर्वेद में वह शीतल, मलरोधक, त्रिदोषघ्न, हलको कसैली और स्वादिष्ट मानी गई है।

उटकना(पु)—क्रि० स० [सं० उत्कलन] अनुमान करना। अटकल लगाना।

उटज—संज्ञा पुं० [सं०] झोपड़ी।

उट्ठा—संज्ञा स्त्री० [देश०] खेल या लागडाँट में बुरी तरह हार मानना।

उठँगन—संज्ञा पुं० [सं० उत्थ+अंग] १ आड़। टेक। २ बैठने में पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु।

उठँगना—क्रि० अ० [हिं० उठँगन] १ किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २ लेटना। पड़ रहना। कमर सीधी करना।

उठँगाना—क्रि० स० [हिं० उठँगना का प्रे० रूप] १ सटा करने में किसी वस्तु से लगाना। सटाना। भिटाना। २ (किवाड़) भिड़ाना या बंद करना। चपकाना।

उठना—क्रि० अ० [सं० उत्थान] १ पहले से ऊपर बढ़ना। पहले से ऊँचा होना। बैठी से खड़ी स्थिति में होना।

मुहा०—उठ जाना=दुनिया से चला जाना। मर जाना। उठती जवानी=युवावस्था का आरंभ। उठते बैठते=प्रत्येक अवस्था में। हर घड़ी। प्रतिक्षण। उठना बैठना=आना जाना। संग साथ।

२ ऊँचा होना। पहले से अधिक ऊँचाई तक चढ़ जाना, जैसे—लहर उठना। ३ ऊपर जाना। ऊपर चढ़ना। आकाश में छाना। ४ कूदना। उछलना। ५ बिस्तर छोड़ना। ६ जागना। (पु) ७ निकलना। उदय होना। ८ उत्पन्न होना। पैदा होना, जैसे—विचार उठना। ९ सहसा आरंभ होना। एकबारगी शुरू होना, जैसे—दर्द उठना। १० तैयार होना। उद्यत होना। ११ किसी शब्द, अक्षर, अंक, कुछ या चिह्न का स्पष्ट होना या उभड़ना। १२ खमीर बनना। खमीर आना। सड़कर उफनाना। १३ किसी दूकान या कार्यालय के किसी दिन के कार्य का समय पूरा होना। १४ किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना। १५ चल पड़ना। प्रस्थान करना। १६ किसी प्रथा का हटना या दूर होना। १७ खर्च होना। काम में लगना, जैसे, इस काम में बड़ा रुपया उठ गया (=खर्च हो गया)। १८ बिकना या भाड़े पर जाना। १९ याद आना। ध्यान पर चढ़ना। २० किसी वस्तु का क्रमशः जुड़-जुड़कर पूरी ऊँचाई पर पहुँचना। २१ पशुओं का कामोत्तेजित होना, मस्ताना या अलँग पर आना। २२ समाप्त या खतम होना।

उठल्लू—वि० [हिं० √उठ+लू (प्रत्य०)] १ एक स्थान पर न रहनेवाला। आसनकोपी। किसी स्थान या काम में स्थिर न रहनेवाला। २ आवारा। बेठिकाने का।

मुहा०—उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा=बेकाम इधर उधर फिरनेवाला। निकम्मा।

उठवाना—क्रि० स० [हिं० उठाना क्रिया का प्रे० रूप] (किसी को) उठाने का काम दूसरे से कराना।

उठाईगीर—वि० [हिं० √उठ+आई (प्रत्य०)+फा० गीर] १ आँख बचाकर चुरा लेनेवाला। उचक्का। चाई। २ बदमाश। लुच्चा। आवारा।

उठान—संज्ञा स्त्री० [सं० उत्थान] १ उठने की क्रिया। (अ० क्रियागत अर्थों के लिये दे० "उठना"।) २ बाढ़। बढ़ने का ढंग। वृद्धिक्रम। ३ गति की प्रारंभिक अवस्था। ४ कोई बात आरंभ करने का प्रसंग या ढंग। आरंभ। ५ खर्च। व्यय। खपत। ६ समाप्ति (गीति आदि की)।

उठाना—क्रि० स० [हिं० उठना का स० रूप] १ बैठी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना, जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। २ नीचे से ऊपर ले जाना। ३ धारण करना। ४ कुछ काल तक ऊपर लिए रहना। ५ जगाना। ६ निकालना। उत्पन्न करना। ७ आरंभ करना। शुरू करना। छेड़ना, जैसे—बात उठाना। ८ तैयार करना। उद्यत करना। ९ मकान या दीवार आदि तैयार करना। १० किसी दूकान या कार्यालय को कुछ समय या अवधि के लिये बंद करना। ११ किसी प्रथा का बंद करना। समाप्त करना। १२ खर्च करना। लगाना। १३ भाड़े या किराए पर देना। १४ भोग करना। अनुभव करना। १५ शिरोधार्य करना। मानना। १६ कसम खाने के लिये हाथ में लेना (गंगाजल, गीता, कुरान आदि)।

मुहा०—उठा न रखना=बाकी न रखना। कसर न छोड़ना।

उठाव—संज्ञा पुं० दे० "उठान"।

उठौआ—वि० दे० "उठौवा"।

उठौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उठ+औनी (प्रत्य०)] १ उठाने की क्रिया। २ उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। ३ वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय। पेशगी। अगौहा। दादनी। ४ बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेनदेन। ५ वह धन जो कुछ जातियों में वर की ओर से कन्या के घर विवाह की बात पक्की या पुष्ट करने के लिये भेजा जाता है। लगन धरौआ। ६ वह धन या अन्न जो संकट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७ वह रीति जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन उसकी बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को रुपया देते और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।

उठौवा—वि० [हिं० √उठ+औवा (प्रत्य०)] १ जिसका कोई स्थान नियत न हो। जो

नियत स्थान पर न रहता हो। २ जो उठाया या हटाया बढ़ाया जाता हो।

संज्ञा पुं० १ विवाह में भोजन आदि के लिये बुलाने की विशेष रीति। २ विवाह स्थिर करने का एक ढंग।

उड़ंकू—वि० [हिं० √उड़+अकू (प्रत्य०)] १. खूब उड़नेवाला। उड़नेवाला। उड़ाकू। जो तेज उड़ सके। २ चलने फिरनेवाला। डोलनेवाला।

उड़ंत छाला—संज्ञा पुं० [सं० उड्डयत+हिं० छाला] वह छाल या वस्त्र जिसे ओढ़कर मनुष्य उड़ सकता है।

उड़(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उडु"।

उड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] उड़ने की क्रिया। उड़ान।

वि० उड़नेवाला। (यौगिक शब्दों के आरंभ में, जैसे, उड़नखटोला)।

उड़नखटोला—संज्ञा पुं० [हिं० उड़न+खटोला] उड़नेवाला खटोला। एक प्रकार का वायुयान या विमान।

उड़नगोला—संज्ञा पुं० दे० "उड़नबम"।

उड़नछू—वि० [हिं० उड़न+छू] चंपत। गायब।

प्र०—उड़नछू होना=गायब होना। धोखा देकर लापता होना।

उड़नझाँई—संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़न+झाँई] चकमा। बुत्ता। बहाली। धोखा।

उड़नफल—संज्ञा पुं० [हिं० उड़न+फल] वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति उत्पन्न हो।

उड़नबम—संज्ञा पुं० [हिं० उड़न+अं० बाम] एक बम जो बहुत दूर से चलाए जाने पर, बहुत ऊँचे आकाश पर से होता हुआ, शत्रु के देश या उसकी सेना पर अपना विध्वंसकारी प्रभाव डालता है।

उड़ना—क्रि० अ० [सं० उड्डयन] १ चिड़ियों का आकाश में या हवा में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २ आकाशमार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३ हवा में ऊपर उठना, जैसे पतंग उड़ती है। ४ हवा में फैलना, जैसे—छींटा उड़ना। ५ इधर उधर हो जाना। छितराना। फैलना। व्याप्त होना। ६ फहराना। फरफराना, जैसे—पताका उड़ना। ७ तेज चलना। भागना। ८ झटके के साथ अलग होना। कटकर दूर जा पड़ना। ९ पृथक् होना। उधड़ना। छितराना। १० जाता रहना। गायब होना। ११ खर्च होना। १२ किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना। १३ आमोद प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना। १४ रंग आदि का फीका पड़ना। धीमा पड़ना। १५ किसी पर मार पड़ना। लगना। १६ बातों में बहलाना। भुलावा देना। चकमा देना। झूठी झूठी बातें बनाना। धोखा देना। बहकना। बहकी बहकी बातें करना। १७ घोड़े का चौफाल कूदना। १८ छलाँग मारना। कूदना (कुश्ती)। १९ समाज में तेजी से फैलना, जैसे—यह बात ऐसी उड़ी कि घंटे भर में ही सारा शहर जान गया।

क्रि० स० छलाँग मारकर किसी वस्तु को लाँघना। कूदकर पार करना।

मुहा०—उड़ चलना=(१) तेज दौड़ना। सरपट भागना। (२) शोभित होना। फबना। (३) मजेदार होना। स्वादिष्ट बनना। (४) कुमार्ग ग्रहण करना। बदराह बनना। (५) इतराना। घमंड करना। उड़ती खबर=बाजारू खबर। किंवदंती। उड़कर खाना=(१) उड़-उड़कर काटना। (२) अप्रिय लगना। बुरा लगना।

वि० उड़नेवाला। उड़ाका।

यौ०—उड़ती खबर=सुनी सुनाई या बिना प्रमाण की खबर।

उड़नी मछली—संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना+ई (प्रत्य०) मछली] एक प्रकार की मछली जो पानी से निकलकर कुछ दूर तक उड़ती भी है।

उड़प—संज्ञा पुं० दे० "उडुप"।

उड़व—संज्ञा पुं० [सं० ओडव] रागों की वह जाति जिसमें सात स्वरों में कोई दो स्वर न लगें, जैसे, मालकोश और हिंडोल। इनमें ऋषभ और पंचम नहीं लगते।

उड़वाना—क्रि० स० [हिं० उड़ाना का प्रे० रूप] उड़ाने में प्रवृत्त करना।

उड़सना—क्रि० अ० [(उप०) उ+हिं० डासन=बिछौना] १ बिस्तर या चारपाई का उठना या उठाया जाना। बिस्तर का सिकुड़ना, मुड़ना सिमटना या लपेटा जाना। २ भंग होना। नष्ट होना।

उड़ाऊ—वि० [हिं० √उड़+आऊ (प्रत्य०)] १ उड़नेवाला। उड़ाकू। २ खूब खर्च करनेवाला। खर्चीला। फजूलखर्च। धन फूँकनेवाला। ३ दूसरे की वस्तु ले उड़नेवाला या चुपके से ले भागनेवाला।

उड़ाका, उड़ाकू—वि० [हिं० √उड़+आका, आकू (प्रत्य०)] उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।

उड़ान—संज्ञा स्त्री० [सं० उड्डयन] १ उड़ने की क्रिया। २ वह दूरी या ऊँचाई जो उड़कर एक बार में तय की जाय। ३. उड़ने की सामर्थ्य या शक्ति। ४ लंबी कुदान। ५ कलाई। गट्टा। पहुँचा।

मुहा०—उड़ान भरना=बहुत ऊपर या दूर तक उड़ना या दौड़ना।

उड़ाना—क्रि० स० [हिं० उड़ना का स० रूप] १ किसी को उड़ने में प्रवृत्त करना। २ हवा में फैलाना, जैसे—धूल उड़ाना। ३ उड़नेवाले जीवों को भगाना या हटाना। ४ झटके के साथ अलग करना। झटपट काटकर दूर फेंकना। ५ हटाना। दूर करना। ६ चुराना। हजम करना। ७ मिटाना। नष्ट करना। ८. खर्च करना। बरबाद करना। ९ खूब खानापीना। चट करना। १० भोग्य वस्तु को भोगना। ११ आमोद प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। १२ प्रहार करना। लगाना। मारना। १३ भुलावा देना। बात टालना। १४ झूठमूठ दोष लगाना। १५ किसी विद्या का इस प्रकार सीख लेना कि उसके आचार्य को खबर न हो।

मुहा०—बेपर की उड़ाना=बे सिर पैर की बात का प्रचार करना। बिना प्रमाण की बात फैलाना। गप्प उड़ाना। अफवाह उड़ाना=झूठी बात फैलाना।

उड़ायक—वि० [हिं० √उड़+आयक (प्रत्य०)] उड़ानेवाला।

उड़ास(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वास] रहने का स्थान। वासस्थान। महल।

उड़ासना—क्रि० स० [सं० उद्वासन] १ बिछौने को समेटना। बिस्तर उठाना। २ बिस्तर सिकोड़ना या उसमें शिकन डालना। (पु)३ किसी चीज को तहस नहस करना। उजाड़ना। ४ बैठने या सोने में विघ्न डालना।

उड़िया—वि० [हिं० उड़ीसा] उड़ीसा प्रदेश का। उड़ीसा में होनेवाली (वस्तु) या वहाँ निवास करनेवाला।

संज्ञा पुं० उड़ीसा प्रदेश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० उड़ीसा प्रदेश की भाषा।

उड़ियाना—संज्ञा पुं० [सं० उड्डयन ?] २२ मात्राओं का वह छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १२ तथा द्वितीय और चतुर्थ में १० मात्राएँ होती हैं और अंत में एक ही

गुरु रहता है, जैसे—ठुमुकि चलत रामचद्र बाजत पैजनियाँ। धाय मातु गोद लेत, दशरथ की रानियाँ। तन मन धन वारि मजु बोलतीं वचनियाँ। कमल वदन दोल मधुर, मद मी हँसनियाँ।

उड़ी—सज्ञा स्त्री० [हि० √उड] १ मालखभ की एक कसरत। २ कलाबाजी।

उड़ीसा—सज्ञा पु० [स० ओड्र] प्राचीन उत्कल देश और वर्तमान उड़ीसा प्रदेश।

उडुंबर—सज्ञा पु० [स०] गूलर। ऊमर।

उडु—सज्ञा पु० [स०] १ नक्षत्र। तारा। २ पक्षी। चिड़िया। ३ केवट। मल्लाह। ४ जल। पानी।

उडुप—सज्ञा पुं० [स०] १ चद्रमा। २ नाव। ३ घडनई या घटई। घड़ों पर बंधे बासों का नदी पार करने का एक उपकरण ४ भिलावाँ। ५ बड़ा गरुड। ६ एक प्रकार का नृत्य जिसके बारह उपभेद होते हैं।

उडुपति—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

उडुराज—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

उडुस—सज्ञा पुं० [सं० उद्दंश] खटमल।

उँडेरना, उडेलना—क्रि० स० दे० "उँडेलना"।

उडैनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० उड्डयन+हि० ई (प्रत्य०)] जुगुनू। ज्योतिरिंगण।

उड़ौहाँ†—वि० [हि० √उड़+औहाँ (प्रत्य०)] उड़नेवाला।

उड्डयन—सज्ञा पु० [स०] उड़ना।

उड्डयन विभाग—सज्ञा पुं० [स०] राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो। विमान विभाग।

उड्डीयमान—वि० [स० उड्डीयमान] [स्त्री० उड्डीयमाना] उडनेवाला। उडता हुआ।

उढकना—क्रि० अ० [प्रा० उट्टक=मार्ग का उन्नत भूभाग] १ अड़ना। ठोकर खाना। २ रुकना। ठहरना। ३ सहारा लेना। टेक लगाना।

उढकाना—क्रि० स० [हि० उढकना का स० रूप] किसी के सहारे खड़ा करना। भिड़ाना। टेकना।

उढरना†—क्रि० अ० [स० ऊढा] किसी विवाहिता स्त्री का परपुरुष के साथ निकल जाना।

उढरी—सज्ञा स्त्री० [हि० उढरना] रखेली। सुरैतिन।

उढाना—क्रि० स० [स० उर्ध्व, प्रा० उड्ढ] ढकना। कपड़े से आच्छादित करना।

उढारना—क्रि० स० [हि० उढरना का स० रूप] दूसरे की स्त्री को ले भागना।

उढावनी(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "ओढनी"।

उत(पु)—अव्य० [स० उत] किंतु। पर।

उतंग(पु)—वि० [स० उत्तुङ्ग] १ ऊँचा। बुलंद। २ श्रेष्ठ। उच्च।

उतत(पु)—वि० [स० उत्पन्न] उत्पन्न। पैदा।

उत्—उप० [सं०] शब्दों के पूर्व लगकर यह उपसर्ग जिन अर्थों की विशेषता करता है उनमें कुछ ये हैं—औत्सुक्य, जैसे—उत्कंठा। उत्सुकता। ऊँचाई या ऊर्ध्वगति, जैसे—उद्गमन। उत्तुंग। उत्थान। झुकाव, जैसे—उन्नमन। प्रकर्ष, जैसे—उत्कर्ष। उन्नति। उल्लास। उत्थापन। चैतन्य, जैसे—उद्बोधन। जन्म, जैसे—उद्गम। उद्भव। जलना, जैसे—उत्सव। पीडा, जैसे—उत्पीडन। खनन, जैसे—उत्खात। अतिक्रमण, जैसे—उल्लघन। साफल्य, जैसे—उत्तीर्ण। निरंकुशता, जैसे—उद्दडता। खिंचाव, जैसे—उत्कर्षण। विघ्न, जैसे—उत्पात। प्राबल्य, जैसे—उद्वेग। उद्घोष। उत्कट। भ्रम, जैसे—उद्भ्राति। बोलने का ढग, जैसे—उच्चारण। प्रकाश, जैसे—उद्भास। दोष या बुराई, जैसे—उन्मार्ग। उत्पथ। चाचल्य, जैसे—उच्छल। शोथ, जैसे—उच्छून। विलोटन, जैसे—उन्मथन। उन्माथ। घूस, जैसे—उत्कोच। अभाव, जैसे—उच्छेद। उच्छिन्न। उद्भिन्न। प्राधान्य, जैसे—उत्कृष्ट। विराग, जैसे—उच्चाटन, इत्यादि।

उत(पु)—क्रि० वि० [स० उत्तर] वहाँ। उधर। उस ओर।

उतन(पु)—क्रि० वि० [स० उत्+तन ?] उस तरफ। उस ओर।

उतना—वि० [हि० इतना के अनु० पर] उस मात्रा का। उस कदर। उस आकार या वजन का।

उतपल(पु)—सज्ञा पुं० दे० "उत्पल"।

उतपात—सज्ञा पु० दे० "उत्पात"।

उतपानना—क्रि० स० [स० उत्पन्न] उत्पन्न करना। उपजाना।

क्रि० अ० उत्पन्न होना।

उतमग(पु)—सज्ञा पुं० [सं० उत्तमाग] सिर। मुड।

उतर(पु)—सज्ञा पु० दे० "उत्तर"।

उतरन—सज्ञा स्त्री० [हिं० उतरना] पहने हुए पुराने कपड़े।

उतरना—क्रि० अ० [स० अवतरण] १. ऊचे स्थान से नीचे आना।

मुहा०—चित्त से उतरना=(१) विस्मृत होना। भूल जाना। (२) नीचा जँचना। अप्रिय लगना।

२ ढलना। अवनति पर होना।

मुहा०—उतरकर=निम्न श्रेणी का। नीचे दरजे का। घटकर। फीका होकर।

३ शरीर में किसी जोड या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४ काति, स्वाद, रग, प्रभाव, या स्वर का फीका पडना। ५ उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना।

मुहा०—चेहरा उतरना=मुख मलीन होना। मुख पर उदासी छाना।

६ वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७ बुनकर तैयार की जानेवाली वस्तु का पूरा होना, जैसे—मोजा उतरना। स्वेटर उतरना। ८ ऐसी वस्तु का तैयार होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई जाय। ९ भाव का कम होना। १० डेरा डालना। ठहरना। टिकना। ११. नकल होना। खिंचना। अंकित होना। १२ बच्चों का मर जाना। १३ भर आना। सचारित होना, जैसे—थन में दूध उतरना। १४ भभके में खिंचकर तैयार होना। १५ सफाई के साथ कटना। जैसे, चाकू से उँगली उतर गई। १६ उचड़ना। उधड़ना। १७ धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १८ ताल में ठहरना। नमूने के अनुरूप होना। १९ किसी बाजे की कसन का ढीला होना जिससे स्वर विकृत हो जाता है। २० जन्म लेना। अवतार लेना। २१ आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। २२ वसूल होना। दूर होना (ऋण, बोझ या पाप का)

मुहा०—उतर पड़ना=किसी काम में तन मन से लग जाना। टूट जाना। तुल जाना। टोपी या पगड़ी उतरना=अपमानित होना। भूत उतरना=झक, सनक या दुराग्रह मिटना। बुद्धि का स्थिर होना। सिर उतरना=(१) गला कटना। (२) अपमानित होना। (३) भूत प्रेत आदि का आवेश आना। (४) एक की बला का दूसरे को लगना।

उतरवाना—क्रि० स० [हिं० उतरना का प्रे० रूप] उतारने का काम कराना।

उतराई—सज्ञा स्त्री० [हिं० √उतर+आई (प्रत्य०)] १ ऊपर से नीचे आने की क्रिया। २. नदी के पार उतारने का महसूल। ३ नीचे की ओर ढलती हुई जमीन। ढालू जमीन।

सज्ञा स्त्री० [स० उत्तर+वायु] उत्तर दिशा से आनेवाली हवा।

उतराना—क्रि० अ० [हिं० उतरना] १ पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २ उबलना। उफान खाना। ३ प्रकट होना। हर जगह दिखाई देना। ४ उद्धार पाना। ५ अत्यधिक बढ़ना।

क्रि० स० दे० "उतरवाना"।

उतरायल—वि० [हिं० √उतर+आयल (प्रत्य०)] किसी के द्वारा पहनकर उतारा हुआ (कपड़ा)। उतरन।

उतरारी—सज्ञा स्त्री० [स० उत्तर+ ?] उत्तर दिशा से आनेवाली हवा।

उतराव—सज्ञा पु० दे० "उतार"।

उतराहाँ—क्रि० वि० [स० उत्तर+हाँ (प्रत्य०)] उत्तर की ओर।

उतरिन—वि० दे० "उऋण"।

उतलाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० उताल की ना० धा०] जल्दी करना।

उतवग—सज्ञा पु० दे० "उतमग"।

उतसहकठा(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "उत्कठा"।

उतान—वि० [सं० उत्तान] १ पीठ को जमीन पर लगाए हुए। चित। २ सोना ताने हुए।

उतायल(पु)—वि० [स० उत+त्वरा] जल्दी तीव्र। तेज।

उतायली—सज्ञा स्त्री० दे० "उतावली"।

उतार—सज्ञा पु० [स० अवतार] १ उतरने की क्रिया। २ क्रमश नीचे की ओर प्रवृत्ति। 'चढ़ाव' का उलटा। ढाल। ३ उतरने योग्य स्थान। ४ किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमश कम होना। ५ घटाव। कमी। ६ नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। हिलान। ७ समुद्र का भाटा। ८ त्यागा हुआ जीर्ण वस्त्र। उतारन। ९ उतारा। न्योछावर। १० वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का दोष दूर हो। परिहार। काट।

उतारन—सज्ञा पु० [स० अवतारण] १ वह पहनावा जो पहनने से पुराना और जीर्ण हो जाने के कारण त्याग दिया गया हो। २ निछावर। उतारा। ३ निकृष्ट वस्तु।

उतारना—क्रि० स० [स० अवतारण] १ ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २ प्रतिरूप बनाना। (चित्र) खींचना। ३ लिखावट की नकल करना। ४ लगी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना। उचाड़ना। उधेड़ना। ५ किसी धारण की हुई वस्तु को त्यागना। पहनी हुई चीज को शरीर से अलग करना। ६ ठहराना। टिकाना। डेरा देना। ७ उतारा करना। किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमाकर भूतप्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। ८ निछावर करना। वारना। ९ वसूल करना। १० किसी उग्र प्रभाव को दूर करना। ११ पीना। घूँटना। गले के नीचे पहुँचाना। १२ ऐसी वस्तु तैयार करना जो मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाय। १३ बाजे आदि की कसन को ढीला करना। १४ भभके से खींचकर तैयार करना या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना। चुआना। स्रावित करना।

क्रि० स० [सं० उत्तारण] पार ले जाना। नदी-नाले के दूसरे किनारे पहुँचाना।

मुहा०—आरती उतारना=पूजा करना। अत्यधिक आदर, प्रेम या सेवा करना। नशा उतारना=घमड दूर करना। होश हवास दुरुस्त करना।

उतारा—सज्ञा पु० [हिं० √उतार+आ (प्रत्य०)] १ डेरा डालने या टिकाने का कार्य। २ उतरने का स्थान। पड़ाव। ३ नदी पार करना। ४ प्रेतबाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। ५ उतार की सामग्री या वस्तु।

उतारू—वि० [हिं० √उतार+ऊ (प्रत्य०)] उद्यत। तत्पर। तुला हुआ। सन्नद्ध।

उताल(पु)—क्रि० वि० [स० उद्+त्वर] शीघ्र। जल्दी से।

सज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

उताली(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० उताल] शीघ्रता। जल्दी। उतावली।

क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

उतावल(पु)—क्रि० वि० [स० उद्+त्वर] जल्दी जल्दी। शीघ्रता से।

उतावला—वि० [स० उद्+त्वर] [स्त्री० उतावली] १ जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज। २ व्यग्र। घबराया हुआ।

उतावली—सज्ञा स्त्री० [स० उद्+त्वर] १ जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाजी। २ व्यग्रता। चचलता।

उताइल—क्रि० वि० [स० उद्+त्वर] जल्दी से।

उताहिल—क्रि० वि० दे० "उताइल"।

उतिम(पु)—वि० दे० "उत्तम"।

उतीथैं—क्रि० वि० [हिं० उत+ही+थैं] वहाँ से। उस जगह से। उ०—उनीथें कोई न आवई जाकूँ बूझौं धाइ।—कबीर०।

उतृण—वि० [स० उत+ऋण] १ ऋण से मुक्त। उऋण। २ जिसने उपकार का बदला चुका दिया हो।

उतै(पु)—क्रि० वि० [हिं० उत] वहाँ। उधर।

उतैला(पु)—वि० दे० "उतावला"।

सज्ञा पुं० [देश०] उटे।

उत्कठ—वि० [सं०] जिसे उत्कठा हो। उत्कठित।

उत्कठा—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० उत्कठित] १ प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा २ किसी कार्य में विलब न सहकर चटपट करने की अभिलाषा। रस के ३३ सचारी भावों में से एक।

उत्कठित—वि० [सं०] उत्कठायुक्त। चाव से भरा हुआ।

उत्कठिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सकेत स्थान में प्रिय के न आने पर तर्कवितर्क करनेवाली नायिका। २ उत्सुकता से भरी हुई स्त्री।

उत्कट—वि० [स०] [सज्ञा उत्कटता] तीव्र। विकट। उग्र।

उत्कर्ण—वि० [स०] [भाव० उत्कर्णता] सुनने के लिये कान खड़े किए हुए।

उत्कर्ष—सज्ञा पु० [स०] [वि० उत्कृष्ट] १ समृद्धि। उन्नति। २ अधिकता। प्रचुरता। ३ श्रेष्ठता। उत्तमता। ४ बड़ाई। प्रशसा।

उत्कर्षता—सज्ञा स्त्री० दे० "उत्कर्ष"।

उत्कल—सज्ञा पु० [स०] उड़ीसा प्रदेश।

उत्कलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तरग। लहर। २ कली। ३ उत्कठा। ४ मन का उद्वेग।

उत्कलित—वि० [स०] १. तरगों से युक्त लहराता हुआ। २ खिला हुआ। ३ उत्कठित। ४ उद्विग्न। अनमना।

उत्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "उत्कंठिता"।
उत्कीर्ण—वि० [सं०] १ लिखा हुआ। खुदा हुआ। २ छिदा हुआ।
उत्कुण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मत्कुण। खटमल। २ बालों का कीड़ा। जूँ।
उत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ २६ वर्णों के एक वृत्त का नाम। २ छब्बीस की संख्या।
उत्कृष्ट—वि० [सं०] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।
उत्कृष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता। अच्छापन। बड़प्पन।
उत्कोच—संज्ञा पुं० [सं०] घूस। रिश्वत।
उत्क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] परिवर्तन। उलट पलट। व्यतिक्रम।
उत्क्रांत—वि० [सं०] १ ऊपर की ओर चढ़नेवाला। २ उत्पन्न। ३ जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण किया गया हो।
उत्क्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रमश उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।
उत्क्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] हल्ला। चिल्लाहट। भीड़ में होनेवाला शब्द। कोलाहल।
उत्क्षिप्त—वि० [सं०] १ फेंका हुआ। २ हटाया हुआ। ३ उछाला हुआ।
उत्खनन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्खात] खोदने की क्रिया। खोदाई।
उत्खाता—वि० [सं० उत्खातृ] खोदनेवाला।
उत्तंग(पु)—वि० दे० "उत्तुंग"।
उत्तंस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।
उत्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उत्] १ आश्चर्य। २ संदेह।
उत्तप्त—वि० [सं०] १ खूब तपा हुआ। बहुत गरम। २ दुखी। पीड़ित। संतप्त।
उत्तम—वि० [सं०] [स्त्री० उत्तमा] [संज्ञा उत्तमता] श्रेष्ठ। अच्छा। सबसे भला।
उत्तमतया—क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह से। भली भाँति।
उत्तमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। खूबी। भलाई।
उत्तमत्व—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छापन।
उत्तम पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में सर्वनाम का वह रूप जो बोलनेवाले व्यक्ति को सूचित करता है, जैसे "मैं", "हम"।
उत्तमर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] ऋण देनेवाला व्यक्ति। महाजन।
उत्तमश्लोक—वि० [सं०] यशस्वी। कीर्तिशाली।
संज्ञा पुं० १ यश। कीर्ति। २ विष्णु।
उत्तमांग—संज्ञा पुं० [सं०] सिर।
उत्तमा दूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे।
उत्तमा नायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल होने पर भी अनुकूल बनी रहे।
उत्तमोत्तम—वि० [सं०] अच्छे से अच्छा।
उत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। २ किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिये कही हुई बात। जवाब। ३ बनाया हुआ जवाब। बहाना। मिस। हीला। ४ प्रतिकार। बदला। ५ वह काव्यालंकार जिसमें उत्तर से प्रश्न का अनुमान किया जाता है अथवा प्रश्नों का ऐसा उत्तर दिया जाता है जो चमत्कारयुक्त हो। ६ वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न के वाक्यों में उत्तर भी होता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।
वि० १ पिछला। बाद का। २ ऊपर का। ३ बढ़कर। श्रेष्ठ। ४ गौण।
क्रि० वि० पीछे। बाद।
उत्तर कोशल—संज्ञा पुं० [सं०] इक्ष्वाकु वंशी राजाओं का एक प्राचीन राज्य जिसकी राजधानी अयोध्या मानी जाती है। अयोध्या के आसपास का देश। अवध।
उत्तरक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंत्येष्टि क्रिया।
उत्तरदाता—संज्ञा पुं० [सं० उत्तरदातृ] [स्त्री० उत्तरदात्री] १ वह (व्यक्ति) जो उत्तर दे। २ दे० "उत्तरदायी"।
उत्तरदायित्व—संज्ञा पुं० [सं०] जवाबदेही। जिम्मेदारी।
उत्तरदायी—संज्ञा पुं० [सं० उत्तरदायिन्] [स्त्री० उत्तरदायिनी] १ दे० "उत्तरदाता"। २ वह जिससे किसी कार्य के बनने बिगड़ने पर पूछताछ की जाय। वह जिसे काम बिगड़ने या बनने का फल भोगना पड़े। जवाबदेह। जिम्मेदार। जिम्मेवर।
उत्तर पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रार्थ या वाद विवाद में वह सिद्धांत जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान हो। जवाब की दलील।
उत्तरपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तर का मार्ग। २ देवयान। देवताओं को संतुष्ट करके मुक्ति पाने का मार्ग।
उत्तरपद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी यौगिक शब्द या समास का अंतिम शब्द।
उत्तरमीमांसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदों के उत्तरार्ध के दार्शनिक विवेचन जिनमें से महर्षि बादरायण व्यास ने ब्रह्मविषयक विचारों को छाँटकर ब्रह्मसूत्रों की रचना की और जिन्हें शंकराचार्य आदि ने वेदांत के नाम से पूर्ण प्रतिष्ठा दी। ज्ञानकांड।
उत्तरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के समय के मत्स्य देश (वर्तमान भरतपुर, अलवर और जयपुर) के राजा विराट की पुत्री और अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे।
उत्तराखंड, उत्तरापथ—संज्ञा पुं० [सं० उत्तर+खंड, पथ] १ भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरी भाग। २ समूचे भारत का उत्तरी भाग।
उत्तराधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के मरने या हटने पर संपत्ति, अधिकार आदि का स्वत्व। वरासत।
उत्तराधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० उत्तराधिकारिन्] [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] वह जो किसी के मरने या हटने पर उसकी संपत्ति, अधिकार आदि का मालिक हो।
उत्तराफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बारहवाँ नक्षत्र।
उत्तराभाद्रपद—संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीसवाँ नक्षत्र।
उत्तराभास—संज्ञा पुं० [सं०] झूठा जवाब। अटपट जवाब (स्मृति)।
उत्तरायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य की, मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर, गति। २ वह छ महीने का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है। ३ माघ से आषाढ़ तक के छ महीने। ४ शिशिर वसंत और ग्रीष्म ऋतु।
उत्तरार्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पिछला आधा। पीछे का अर्द्ध भाग।
उत्तराषाढ़, उत्तराषाढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इक्कीसवाँ नक्षत्र।
उत्तरीय—संज्ञा पुं० [सं०] उपरना। दुपट्टा। चद्दर। ओढ़न।
वि० १ ऊपर का। ऊपरवाला। २ उत्तर दिशा का। उत्तर दिशा संबंधी।

उत्तरोत्तर—क्रि० वि० [सं०] १ एक के पीछे एक । एक के अनतर दूसरा । २ क्रमश । लगातार । बराबर ।

उत्ता—वि० दे० "उतना" ।
वि० दे० "उक्त"

उत्तान—वि० [सं०] पीठ को जमीन पर लगाए हुए । चित । सीधा । पीठ के बल ।

उत्तानपाद—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन राजा जो स्वायभुव मनु के पुत्र और प्रसिद्ध भक्त ध्रुव के पिता थे ।

उत्ताप—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्तप्त, उत्तापित] १ गरमी । तपन । २ कष्ट । वेदना । ३ दुःख । शोक । ४ क्षोभ ।

उत्तीर्ण—वि० [स०] १ पार गया हुआ । पारगत । २ मुक्त । ३. परीक्षा मे कृत कार्य । पास ।

उत्तुंग—वि० [स०] बहुत ऊँचा ।

उत्तू—सज्ञा पुं० [फा०] १ वह औजार जिसको गरम करके कपड़े पर बेलबूटों या चुनट के निशान डालते है । २ बेलबूटे का काम जो इस औजार से किया जाता है ।
मुहा०—उत्तू करना = बहुत मारना ।
वि० बदहवास । नशे में चूर । गाफिल ।

उत्तेजक—वि० [सं०] १ उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला । प्रेरक । २ वेगों को तीव्र करनेवाला । प्रोत्साहित करनेवाला ।

उत्तेजन—सज्ञा पु० दे० "उत्तेजना" ।

उत्तेजना—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १ प्रेरणा । बढ़ावा । प्रोत्साहन । २ वेगों को तीव्र करने की क्रिया ।

उत्तोलन—सज्ञा पुं० [स०] १ ऊँचा करना । तानना । २ तौलना ।

उत्थपना(पु)—क्रि० स० [स० उत्थापन] अनुष्ठान करना । आरभ करना ।

उत्थान—सज्ञा पुं० [स०] १ उठने का कार्य । २ उठान । आरभ । ३ उन्नति । समृद्धि । बढ़ती ।

उत्थानि(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "उत्थान" ।

उत्थापन—सज्ञा पु० [स०] १ ऊपर उठाना । तानना । २ हिलाना । डुलाना । ३ जगाना ।

उत्थि(पु)—क्रि० वि० [हिं० उत] वहाँ ।

उत्पत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्पन्न] १ उद्गम । पैदाइश । जन्म । उद्भव । २ सृष्टि । ३ आरभ । शुरू ।

उत्पन्न—वि० [स०] [स्त्री० उत्पन्ना] जन्मा हुआ । पैदा ।

उत्पल—सज्ञा पु० [स०] कमल का पौधा या फूल ।

उत्पलिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलिनी । कुमुदिनी । २ १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें दो नगण, दो तगण और अतिम गुरु का क्रम होता है तथा सातवें अक्षर पर यति और तेरहवें पर विराम होता है, जैसे—न नित तगि कहू, आन को धाव रे । भजहु हर घरी, राम को बावरे । इसे चद्रिका, विद्युत् और कुटिलगति छद भी कहते हैं ।

उत्पाटन—सज्ञा पु० [स०] [वि० उत्पाटित] उखाड़ना ।

उत्पात—सज्ञा पु० [सं०] १ कष्ट पहुचानेवाली आकस्मिक घटना । उपद्रव । आफत । २ अशाति । हलचल । ३ ऊधम । दगा । शरारत ।

उत्पाती—सज्ञा पुं० [स० उत्पातिन्] [स्त्री० हि० उत्पातिन] उत्पात मचानेवाला । उपद्रवी । नटखट । शरारती ।

उत्पादक—वि० [स०] [स्त्री० उत्पादिका] उत्पन्न करनेवाला ।

उत्पादन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्पादित] १ उत्पन्न करना । पैदा करना । २ बहुत अधिक मात्रा या परिमाण म बनाना ।

उत्पीड़क—सज्ञा पु० [स०] कष्ट पहुचाने वाला । पीड़ा पहुचानेवाला ।

उत्पीड़न—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्पीड़ित] तकलीफ देना । सताना ।

उत्प्रेक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० उत्प्रेक्ष्य] १ उद्भावना । आरोप । २ एक अर्थालकार जिसमें उपमेय के उपमान के समान होने की सभावना या कल्पना होती है, जैसे, "मुख मानो चद्रमा है" ।

उत्प्रेक्षोपमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालकार ।

उत्फुल्ल—वि० [स०] [सज्ञा उत्फुल्लता] १ विकसित । खिला हुआ । २ उत्तान । चित ।

उत्संग—सज्ञा पु० [स०] १ गोद । क्रोड़ । अक । २ मध्य भाग । बीच । ३ ऊपर का भाग ।
वि० निर्लिप्त । रिक्त ।

उत्सर्ग—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्सर्गी, औत्सर्गिक, उत्सर्ग्य] १ त्याग । छोड़ना । २ दान । न्योछावर । ३ समाप्ति ।

उत्सर्गीकृत—वि० [स०] जो या जिसका उत्सर्ग किया जा चुका हो । दिया या छोड़ा हुआ । परित्यक्त । प्रदत्त ।

उत्सर्जन—सज्ञा पु० [स०] [वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १ त्याग । छोड़ना । २ दान ।

उत्सर्पण—सज्ञा पु० [स०] १ ऊपर चढ़ना । चढ़ाव । २ उल्लघन । लाँघना ।

उत्सर्पिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] जैन मत के अनुसार काल की वह गति या अवस्था, जिसमें रूप, रस, गध, स्पर्श की क्रम से वृद्धि होती है ।

उत्सव—सज्ञा पुं० [स०] १ आनद या उत्साह का अवसर । २ धूमधाम से किया जानेवाला कोई सार्वजनिक या शुभ कार्य । समारोह । ३ जलसा । ४ त्योहार । पर्व । ५ उछाह । धूमधाम ।

उत्साह—सज्ञा पु० [स०] [वि० उत्साहित, उत्साही] १ उमग । उछाह । जोश । हौसला । २ हिम्मत । साहस । उमग । (वीररस का स्थायी भाव) ।

उत्साही—वि० [स० उत्साहिन्] उत्साहयुक्त । हौसलेवाला ।

उत्साहिल(पु)—वि० दे० "उत्साही" ।

उत्सुक—वि० [स०] [स्त्री० उत्सुका] १ उत्कठित । अत्यत इच्छुक । २ चाही हुई बात में देर न सहकर उद्योग मे तत्पर । किसी वस्तु को पाने के लिये उत्कट अभिलाषा वाला ।

उत्सुकता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकुलता । तीव्र इच्छा । २ किसी कार्य को करने का अविलव तत्परता । ३३ सचारी भावों मे से एक ।

उत्सूत्र—वि० [स० उत्+सूत्र] सूत्र के विरुद्ध । नियमहीन । विशृखल ।

उत्सृष्ट—वि० [स०] छोड़ा हुआ । त्यक्त ।

उत्सेध—सज्ञा पु० [स०] १ उन्नति । वृद्धि । २ ऊँचाई ।
वि० १ ऊँचा २ श्रेष्ठ । उत्तम ।

उथपना(पु)—क्रि० स० [स० उत्थापन] १ उठाना । २ उखाड़ना । ३ उजाड़ना ।

उथराई—सज्ञा स्त्री० [प्रा० √उत्थर + हिं० आई (प्रत्य०)] कुछ कुछ उठान । थोड़ा ऊचापन ।

उथलना—क्रि० अ० [प्रा० √उत्थल्ल] १ डगमगाना । डाँवाडोल होना । चलायमान होना । २ उलटना । उलट-पुलट होना । ३ पानी का उथला या कम होना ।
क्रि० स० नीचे-ऊपर करना । इधर-उधर करना ।

उथल-पुथल—संज्ञा स्त्री० [प्रा० उत्थलपत्थला] उलट-पुलट। क्रमभंग। विप्लव। अव्यवस्था। वि० उलट-पुलट। अंडबंड। गड़बड़। अव्यवस्थित।

उथला—वि० [सं० उत्+स्थल] कम गहरा। छिछला।

उथापन(पु)—क्रि० स० [सं० उत्थापन] दे० "उथपना"।

उदंड—वि० [सं०] [भाव० उदंडता] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भय न हो। अक्खड़। प्रचंड। उद्धत।

उदंत—वि० [सं० अ+दंत] १ जिसके दाँत न जमे हों। अदंत (चौपायों के लिये)। संज्ञा पुं० [सं० उद्+दंत] वार्ता। वृत्तांत।

उद्—उप० दे० "उत्"।

उदक—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

उदकअद्रि—संज्ञा पुं० दे० "उदगाद्रि"।

उदकक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं को मंत्र पढ़कर अर्घ्य देने का कार्य। देवताओं, सूर्य या चंद्रमा आदि को मंत्रपूर्वक जलदान। जलांजलि। २ पितरों को इसी प्रकार जल देना। पितरों या निकट संबंधियों की मृत आत्माओं को मंत्रपूर्वक तिलमिश्रित जलप्रदान। तिलांजलि। ३ सम्मानार्थ किसी के आगे जल गिराना। अर्घ्य देना।

उदकना(पु)—क्रि० अ० [देश०] १ कूदना। उछलना। २ छटकना।

उदकपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की शपथ का एक भेद जिसमें शपथ करनेवाले को अपने वचन की सत्यता प्रमाणित करने के लिये जल में डूबना पड़ता था।

उदगाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

उदगरना—क्रि० अ० [सं० उद्गरण] १ निकलना। बाहर होना। २ प्रकाशित होना। प्रकट होना। ३ उजड़ना।

उदगर्गल—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या जिससे यह ज्ञान प्राप्त हो कि अमुक स्थान में इतने हाथ की गहराई या दूरी पर जल है।

उदगार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उद्गार"।

उदगारना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्गार] १ राख के नीचे दबी आग को उसके ऊपर करना। २ उगलना। ३ उभाड़ना। भड़काना। उत्तेजित करना। ४ हृदय में छिपी पीड़ा, संताप या दुःख को उभाड़ना। ५ मन में दबे भावों को जगाना या उत्तेजित करना।

उदगारी(पु)—वि० दे० "उद्गारी"।

उदगा(पु)—वि० [सं० उदग्र] १ ऊँचा। उन्नत। २ प्रचंड। उग्र। उद्धत।

उदग्र—वि० [सं०] १ उच्च। ऊँचा। २ विशाल। बड़ा। ३ उद्दंड। ४ विकट। ५ तीव्र। तेज।

उदघटना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्घटन] प्रकट होना। उदय होना।

उदघाटना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्घाटन] प्रकट करना। प्रकाशित करना। खोलना।

उदधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ घड़ा। ३ मेघ।

उदधिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र से उत्पन्न पदार्थ। २ चंद्रमा। ३ अमृत। ४ शंख। ५ कमल।

उदधिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

उदपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुएँ के पास का गड्ढा। खाता। २ कमंडल।

उदबस—वि० [सं० उद्वासन] १ उजाड़। सूना। २ एक स्थान पर न रहनेवाला। खानाबदोश।

उदबासना—क्रि० स० [सं० उद्वासन] १ तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। २ उजाड़ना।

उदमदना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्+मद] पागल होना। उन्मत्त होना।

उदमाद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।

उदमादी(पु)—वि० दे० "उन्मादी"।

उदमानना(पु)—क्रि० अ० [सं० उन्माद] उन्मत्त होना। पागल होना।

उदय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उदित] १ ऊपर आना। निकलना। प्रकट होना। (विशेषतः ग्रहों के लिये)।

मुहा०—उदय से अस्त तक=पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक। सारी पृथ्वी में। आदि से अंत तक।

२ वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। उत्कर्ष। ३ निकलने का स्थान। उद्गम। ४ उदयाचल।

उदयगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] उदयाचल। पुराने विश्वास के अनुसार पूर्व दिशा के अंत में अवस्थित वह पर्वत जहाँ से सूर्य और चंद्रमा उगते हैं।

उदयना(पु)—क्रि० अ० [सं० उदय] उदय होना। उगना।

उदयाचल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से चंद्रमा और सूर्य निकलते हैं।

उदयाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "उदयाचल।"

उदरंभर—वि० [सं० उदरंभरि] १ केवल अपना पेट भरनेवाला। पेटू। २ महास्वार्थी। स्वार्थांध। शरीरसेवी।

उदर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेट। जठर। २ कोख। ३ किसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। पेटा। ४ भीतर का भाग।

उदरना(पु)—क्रि० अ० दे० "ओदरना"।

उदवना(पु)—क्रि० अ० दे० "उगना"।

उदसना(पु)—क्रि० अ० [सं० उदसन या उद्वासन] १ उजड़ना। २ तितर बितर होना।

उदात्त—वि० [सं०] १ ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। खींचकर बोला हुआ, जैसे—"रणाना त्वा" में "आ" का उच्चारण। २ दयावान्। कृपालु। ३. दाता। उदार। ४ श्रेष्ठ। बड़ा। ५ स्पष्ट। विशद। ६ समर्थ। योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद के स्वरों के उच्चारण का एक भेद जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। स्वरों का खींचकर किया जानेवाला उच्चारण, जैसे—"शांत का—विश्वाधार" में "आ" का अथवा "शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिर्वनस्पतयः" में सब स्वरों का। २. उदात्त स्वर। ३ एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन खूब बढ़ा चढ़ाकर किया जाता है। ४ दान।

उदान—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में स्थित पाँच प्रकार की वायुओं का वह भेद या प्रकार जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है।

उदाम(पु)—वि० दे० "उद्दाम"।

उदायन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उद्यान] बाग।

उदार—वि० [सं०] [संज्ञा उदारता, औदार्य] १ दाता। दानशील। २ बड़ा। श्रेष्ठ। ३ ऊँचे दिल का। विशाल हृदयवाला। ४ सरल। सीधा। सुशील।

उदारचरित—वि० [सं०] जिसका चरित्र उदार हो। सबके सुख और भलाई के काम करनेवाला। ऊँचे दिल का। शीलवान्।

उदारचेता—वि० [सं० उदारचेतस्] जिसका

चित्त उदार हो। प्राणिमात्र का हित चाहने वाला। विश्व का कल्याण चाहनेवाला।

उदारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दानशीलता। फैयाजी। २ उच्च विचार। सदाशयता। महत्वाकांक्षा।

उदारना—क्रि० स० [स० उदारण] १ दे० "ओदारना"। २ गिराना। तोड़ना।

उदाराशय—वि० [स०] जिसके विचार और उद्देश्य उच्च हों। महापुरुष। महत्वाकांक्षी।

उदारिज, उदारिज्ज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "औदार्य"।

उदावर्त—संज्ञा पु० [स०] गुदा का एक रोग जिसमें काँच निकल आती है और मलमूत्र रुक जाता है। गुदग्रह। काँच।

उदास—वि० [स०] १ जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २ झगड़े से अलग। निरपेक्ष। तटस्थ। ३ दुखी। खिन्न।

उदासना(पु)—क्रि० अ० [हिं० उदास] उदास होना। रंज होना।

क्रि० स० [स० उद्सन] १ उजाड़ना। २ तितर बितर करना।

उदासी—संज्ञा पुं० [स० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १ विरक्त पुरुष। त्यागी पुरुष। संन्यासी। २ नानकशाही साधुओं का एक भेद।

संज्ञा स्त्री० [स० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १ खिन्नता। २ दुख। ३ विरक्ति।

उदासीन—वि० [स०] [स्त्री० उदासीना, संज्ञा उदासीनता] १ विरक्त। जिसका चित्त हट गया हो। २ झगड़े बखेड़े से अलग। ३ जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ। ४ रूखा। उदासीन। प्रेमशून्य। निर्लिप्त। राग-द्वेष-रहित।

उदासीनता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विरक्ति। त्याग। विराग। २ निरपेक्षता। ३ उदासी। खिन्नता।

उदाहरण—संज्ञा पु० [स०] १ दृष्टांत। मिसाल। २ न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।

उदाहृत—वि० [स०] १ उदाहरण में लिया हुआ। २ वर्णन किया हुआ। कथित। ३ सोदाहरण।

उदित—वि० [सं०] [स्त्री० उदिता] १ जो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २ प्रकट। जाहिर। ३ उज्वल। स्वच्छ। ४ प्रसन्न। ५ कहा हुआ।

उदितयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसमें जवानी के चिह्न प्रकट हो चुके हों। चढ़ती जवानीवाली स्त्री। २ मुग्धा नायिका के सात भेदों में से एक जिसमें तीन हिस्सा यौवन और एक हिस्सा लड़कपन हो।

उदियान—संज्ञा पुं० दे० "उद्यान"।

उदियाना(पु)—क्रि० अ० [स० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना। हैरान होना।

उदीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।

उदीच्य—वि० [स०] १ उत्तर का रहनेवाला। २ उत्तर दिशा का।

उदीच्य (वृत्ति)—संज्ञा पुं० [सं०] पहले और तीसरे चरणों में १४ तथा दूसरे और चौथे में १६ मात्राओं वाले वैताली छंद के विषम (पहले और तीसरे) चरणों में दूसरी और तीसरी ह्रस्व मात्राओं के मेल से एक गुरु वर्ण रखने से उदीच्यवृत्ति छंद बनता है। जैसे—हरैहिं भज जाम आठ हूँ। जनालहिं तजिके करौ यही॥ तजै मनै दै लगा सबै। पाइही परम धाम हौ सही।

उदीपन—संज्ञा पु० दे० "उद्दीपन"।

उदीयमान—वि० [स०] [स्त्री० उदीयमाना] १ जिसका उदय हो रहा हो। उगता हुआ। २ उठता या उमड़ता हुआ।

उदीर्ण—वि० [स०] १ उदित। २ चढ़ा हुआ। उमड़ा या उमड़ा हुआ। ३ कथित। ४ प्रबल।

उदुंबर—संज्ञा पुं० [स०] [वि० औदुंबर] १ गूलर। २ देहली। ड्योढ़ी। ३ नपुंसक। ४ एक प्रकार का कोढ़।

उदूलहुक्मी—संज्ञा स्त्री० [फा०] आज्ञा न मानना। आज्ञा का उल्लंघन।

उदेग(पु)—संज्ञा पु० [स० उद्वेग] उद्वेग।

उदो(पु)—संज्ञा पु० दे० "उदय"।

उदोत(पु)—संज्ञा पुं० [स० उद्योत] प्रकाश।

वि० १ प्रकाशित। दीप्त। २ शुभ्र। ३ उत्तम।

उदोती—वि० [सं० उद्योत] [स्त्री० उदोतिनी] प्रकाश करनेवाला।

उदौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उदय"।

उद्गत—वि० [स०] १ निकला हुआ। उत्पन्न। २ प्रकट। जाहिर। ३ फैला हुआ। व्याप्त।

उद्गता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निकली हुई वस्तु। उत्पन्न वस्तु। २ एक विषम वर्णवृत्त जिसके पहले चरण में क्रम से सगण, जगण, सगण और एक लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण और एक गुरु, तीसरे में भगण, नगण, जगण, लघु और गुरु तथा चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण और एक गुरु कुल ४४ अक्षर होते हैं, जैसे—सब त्यागिए असत काम। शरण गहिए सदा हरी। दुख भवजनित जायं टरी। भजिए अहो निशि हरी हरी हरी।

उद्गम—संज्ञा पु० [स०] १ उदय। आविर्भाव। २ उत्पत्ति का स्थान। उद्भवस्थान। निकास। ३ वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

उद्गाता—संज्ञा पु० [स०] यज्ञ के चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गाथा—संज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छंद का एक भेद।

उद्गार—संज्ञा पुं० [स०] [वि० उद्गारी, उद्गारित] १ प्रकट किया हुआ मन का भाव। २ उबाल। उफान। ३ वमन। कै। ४ थूक। कफ। ५ डकार। ६ बाढ़। आधिक्य। ७ घोर शब्द।

उद्गारी—वि० [सं० उद्गारिन्] [स्त्री० उद्गारिणी] १ उगलनेवाला। बाहर निकालनेवाला। २ मन का भाव प्रकट करनेवाला।

उद्गीत—वि० [सं०] जो ऊँचे स्वर से गाया गया हो।

उद्गीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद जिसमें पहले और तीसरे चरणों में १२—१२ मात्राएँ हों, दूसरे में १५ और चौथे में १८ मात्राएँ हों। इसके विषम चरणों में जगण नहीं रखा जाता और अंत के अक्षर गुरु होते हैं, जैसे—राम भजहु मन लाई, तन मन धन के सहित मीता। रामहि निसि दिन ध्यावी, राम भजै नरहिं जान जग जीता॥

उद्गीथ—संज्ञा पुं० [स०] १ सामगान। २ प्रणव।

उद्ग्रीव—वि० [स०] १ जो गरदन ऊपर उठाए हो। २ उत्सुक।

उद्घाटन—संज्ञा पु० [स०] [वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित] १ खोलना। उघाड़ना। २ प्रकट या प्रकाशित करना।

३ किसी समेलन, सस्था आदि के कार्य का आरभ करना।

उद्घात—सज्ञा पुं० [सं०] १ आरभ। २ उठान। ३ ग्रथविभाग। अध्याय। ४ धक्का। आघात। ठोकर।

उद्घातक—वि० [स०] [स्त्री० उद्घातिका] १ आरभ करनेवाला। २ धक्का मारनेवाला। ठोकर लगानेवाला।

मज्ञा पुं० रूपक में प्रस्तावना के पाँच भेदों में से एक जिसमें कोई पात्र सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका अपने मन के अनुकूल अर्थ लगाता हुआ रगमच पर आता है या नेपथ्य से बोलता है।

उद्घोप—सज्ञा पु० [सं०] किसी बात को उच्च स्वर से कहने की क्रिया।

उद्दाम—वि० [स०] १ बधनरहित। २ निरकुश। उग्र। उद्दड। बेकहा। ३ स्वतत्र। ४ महान्। गभीर। तीव्र।

सज्ञा पुं० [स०] १ वरुण। २ दडक वृत्त का एक भेद।

उद्दित(पु)—वि० १ दे० "उदित"। २ दे० "उद्धत"। ३ दे० "उद्यत"।

उद्दिम(पु)—सज्ञा पुं० दे० "उद्यम"।

उद्दिष्ट—वि० [सं०] १ दिखाया हुआ। इगित किया हुआ। २ लक्ष्य। अभिप्रेत।

सज्ञा पु० पिंगल की वह क्रिया जिसमे यह बतलाया जाता है कि कोई दिया हुआ छद मात्रा प्रस्तार का कौन सा भेद है।

उद्दीपक—वि० [स०] [स्त्री० उद्दीपिका] उत्तेजित करनेवाला। उभाड़नेवाला।

उद्दीपन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य] १ उत्तेजित करने की क्रिया। उभाड़। बढावा। बढाना। जागर्ति। जागृति। जाग्रति। २ उद्दीपन या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ। ३ काव्य में वह वस्तु जो रति आदि भावों को उद्दीप्त करनेवाली हो। भाव का उत्तेजक विभाव।

उद्दीप्त—वि० [सं०] जिसका उद्दीपन हुआ हो। उमड़ा, बढ़ा या जागा हुआ। उत्तेजित।

उद्देश—सज्ञा पुं० [स०] [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित] १. अभिप्राय। लक्ष्य। अभिलाषा। २ हेतु। कारण।

उद्देश्य—वि० [सं०] लक्ष्य। इष्ट।

सज्ञा पुं० १ वह वस्तु जिसपर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय। अभिप्रेत अर्थ। इष्ट। २ व्याकरण में वह जिसके सबध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। विधेय का उलटा। ३ मतलब। मशा। अभिप्राय।

उद्दोत(पु)—सज्ञा पु० [स० उद्योत] प्रकाश।

वि० १ चमकीला। २ उदित। उत्पन्न।

उद्दोतिताई(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "उद्दोत"।

उद्ध(पु)—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

उद्धत—वि० [सं०] [सज्ञा औद्धत्य] १ उग्र। प्रचड। निरंकुश। २ अक्खड़। प्रगल्भ।

सज्ञा पु० ४० मात्राओं का वह छद जिसमें प्रत्येक दसवें अक्षर पर विश्राम होता है और अत में गुरु लघु का क्रम रहता है, जैसे—प्रभु पूरन रघुवर, सुदर हरि नरवर, विभु परम धुरधर, राम जू सुखसार।

उद्धतपन—सज्ञा पु० [सं० उद्धत+हिं० पन (प्रत्य०)] उजड्डपन। उग्रता। निरकुशता।

उद्धना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १ ऊपर उठना। २ उड़ना या फैलना।

उद्धरण—सज्ञा पुं० [स०] [वि० उद्धरणीय, उद्धृत] १ किसी गद्य वा पद्य के पूर्ण या आंशिक रूप को ज्यों का त्यों कहना या लिखना। अवतरण। २ पढे हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये फिर पढना। दोहराना। बार बार कहना। ३ मुक्ति। ४ उत्थान।

उद्धरण-चिह्न—सज्ञा पु० [स०] दे० "अवतरण चिह्न"।

उद्धरणी—सज्ञा स्त्री० [स० उद्धरण+हिं० ई (प्रत्य०)] पढे हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये बार बार पढ़ना या दोहराना। २ दे० "उद्धरण"।

उद्धरना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। उबारना।

क्रि० अ० बचना। छूटना।

उद्धर्षिणी—वि० स्त्री० [स०] १ प्रोत्साहित करनेवाली। जोश, उमग, उत्साह या नवजीवन प्रदान करनेवाली। उन्मत्त कारिणी।

सज्ञा स्त्री० १४ वर्णों का एक छद जिसमें क्रम से एक तगण, एक भगण, दो जगण और दो अत्य गुरु वर्ण होते हैं। 'श्रुतबोध' के अनुसार इसमें ८वें अक्षर पर यति होती है किंतु 'हलायुध' पदात में ही यति मानते हैं, उदाहरण—तैं भोज जोग गुनिकै कहु लाभ हानी। यों मुज बात सुनिकै कह देवज्ञानी। इसके वसततिलका, सिंहोन्नता, वनततिलक आदि कई अन्य नाम भी हैं।

उद्धव—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्सव। २. यज्ञ की अग्नि। ३. कृष्ण के चाचा और सखा जिन्हें कृष्ण ने गोपियों को समझाने के लिये मथुरा से गोकुल भेजा था।

उद्धार—सज्ञा पु० [स०] १ मुक्ति। छुटकारा। निस्तार (दुःख, ऋण, बोझ आदि से)। २. उन्नति। समृद्धि। ३ वह ऋण जिसपर ब्याज न लगे।

उद्धारना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्धार] उद्धार करना। छुटकारा देना। छुड़ाना।

उद्ध्वस्त—वि० [स०] टूटाफूटा। ध्वस्त।

उद्धृत—वि० [स०] १ रचना से ज्यों का त्यों लिया हुआ। उद्धरण के रूप में लिया हुआ। अवतरित। २ ऊपर उठाया हुआ। ३ उगला हुआ।

उद्बुद्ध—वि० [स०] १ प्रबुद्ध। चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। २ जगा हुआ। ३ विकसित। फूला हुआ।

उद्बुद्धा—सज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी ही इच्छा से उपपति से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका।

उद्बोध—सज्ञा पु० [स०] थोड़ा ज्ञान।

उद्बोधक—वि० [स०] [स्त्री० उद्बोधिका] १ बोध करानेवाला। ज्ञान करानेवाला। चेतानेवाला। २ प्रकाशित, प्रकट या सूचित करनेवाला। ३ उत्तेजित करनेवाला ४ जगानेवाला।

उद्बोधन—सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्बोधनीय उद्बोधित, उद्बुद्ध।] १ बोधन। किसी बात का ज्ञान होना या कराना। २ होश। चेत। होश अथवा चेत में होना या लाना।

उद्बोधिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो उपपति के चतुराई द्वारा प्रकट किए हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे।

उद्भट—वि० [स०] [सज्ञा उद्भटना] १ प्रबल। प्रचड। श्रेष्ठ। प्रकांड। जबरदस्त। २ उच्चाशय।

उद्भव—वि० [स०] [वि० उद्भूत] १ उत्पत्ति। जन्म। २ वृद्धि। बढती। ३ नदी आदि के निकलने का स्थान। उद्गम।

उद्भावना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मन की उपज। कल्पना। अनुमान। २ उत्पत्ति।

उद्भास—सज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर] १ प्रकाश। दीप्ति। आभा। २ हृदय में किसी भाव या विचार का उदय। प्रतीति।

उद्भासित—वि० [सं०] [स्त्री० उद्भासिता] १ उत्तेजित। उद्दीप्त। २ प्रकाशित। ३. विदित।

उद्भिज्ज—संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज्ज"।

उद्भिज्ज—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़पौधे।

उद्भिद—संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज्ज"।

उद्भूत—वि० [सं०] उत्पन्न।

उद्भूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। २ उन्नति। ३. विभूति।

उद्भेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ फोड़कर निकलना (पौधों के समान)। २ प्रकाशन। उद्घाटन। ३ प्राचीन आचार्यों के मत से एक काव्यालंकार जिसमें कौशल से छिपाई हुई कोई बात किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित की जाय।

उद्भेदन—संज्ञा पुं० [सं० उद्भेदनीय, उद्भिन्न] १ तोड़ना। फोड़ना। २ फोड़कर निकलना। छेदकर पार होना।

उद्भ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर की ओर भ्रमण करना। २. बुद्धि का विनाश। विभ्रम। ३ उद्वेग। व्याकुलता।

उद्भ्रांत—वि० [सं०] १ घूमता हुआ। चक्कर मारता हुआ। भूला हुआ। भटका हुआ। ३ चकित। भौंचक्का। ४ उन्मत्त। पागल। ५ विकल। विह्वल।

संज्ञा पुं० तलवार चलाने के ३२ हाथों (ढंगों) में से एक।

उद्यत—वि० [सं०] १ तैयार। तत्पर। सनद्ध। प्रस्तुत। मुस्तैद। २ उठाया हुआ। ताना हुआ।

उद्यम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्यमी, उद्यत] १ प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। मेहनत। २ कामधंधा। रोजगार। ३ कष्टसाध्य काम।

उद्यमी—वि० [सं० उद्यमिन्] उद्यम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील। परिश्रमी।

उद्यान—संज्ञा पुं० [सं०] बगीचा। बाग।

उद्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य, जैसे हवन, गोदान इत्यादि।

उद्याम—संज्ञा पुं० [सं०] रस्सी। रज्जु।

उद्युक्त—वि० [सं०] उद्योग में रत। तत्पर। काम में लगा हुआ।

उद्योग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १ प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। मेहनत। २ उद्यम। कामधंधा।

उद्योगी—वि० [सं० उद्योगिन्] [स्त्री० उद्योगिनी] उद्योग करनेवाला। मेहनती। परिश्रमी।

उद्योत—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। उजाला। २. चमक। झलक। आभा।

उद्रेक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्रिक्त] १ वृद्धि। बढ़ती। अधिकता। ज्यादती। आतिशय्य। २ प्रकाश। ३ प्राकट्य। प्रथमावतार। ४ एक काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना वर्णन किया जाता है।

उद्वर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर में तेल, चंदन या उबटन आदि मलना। २ उबटन। बटना।

उद्वह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उद्वहा] १ पुत्र। बेटा, जैसे, रघूद्वह। २ सात वायुओं में से एक जो तृतीय स्कंध पर है। ३ ले जाना या ढोना।

उद्वहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर खिंचना। उठना। २ विवाह।

उद्वासन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्वासनीय, उद्वासक, उद्वासित, उद्वास्य] १ स्थान छुड़ाना। भगाना। खदेड़ना। २ उजाड़ना। वासस्थान नष्ट करना। ३ मारना। वध।

उद्वाह—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।

उद्वाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य] १ ऊपर ले जाना। उठाना। २ ले जाना। हटाना। ३ विवाह।

उद्विग्न—वि० [सं०] १ उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ। व्यग्र। बेचैन।

उद्विग्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकुलता। घबराहट। २ व्यग्रता। बेचैनी।

उद्वीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर की ओर देखना। २ ध्यान से देखना।

उद्वेग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्विग्न] आकुलता। घबराहट। बेचैनी (३३ संचारी भावों में से एक)। २ मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३ झोंक। तरंग।

उद्वेजक—संज्ञा पुं० [सं०] उद्विग्न करनेवाला। बेचैन करनेवाला।

उद्वेजन—संज्ञा पुं० [सं०] उद्विग्न करना। बेचैन करना। बेचैनी।

उद्वेजित—वि० [सं०] व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न। घबराया हुआ। बेचैन।

उद्वेल—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थका किनारे तक भर जाने के कारण इधर उधर बिखरना। २ छलकना। छलछलाना।

उद्वेलित—वि० [सं०] [संज्ञा उद्वेलक, उद्वेलन] १. सीमा के बाहर फैलाया हुआ। २ छलछलाता या छलकता हुआ। ३. इधर उधर हिलता डोलता हुआ। आलोड़ित।

उधड़ना—क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १ खुलना। उखड़ना। २ सिला, जमा या लगा न रहना। ३ उजड़ना।

उधम—संज्ञा पुं० दे० "ऊधम"।

उधर—क्रि वि० [सं० उत्तर ?] उस ओर। उस तरफ। दूसरी तरफ।

उधरना(पु)—क्रि० स० [सं० उद्धरण] १ मुक्त होना। २ दे० "उधड़ना"।

क्रि० स० उद्धार या मुक्त करना।

उधराना—क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १. हवा के कारण छितराना। तितर बितर होना। २ ऊधम मचाना। ३ अहंकारवश दूसरों को सताना।

उधलना—क्रि० अ० [हिं० उधरना] १. मस्त होना। मतवाला होना। २ काम से घबराना। ३ नष्टभ्रष्ट हो जाना। ३ किसी स्त्री का किसी पुरुष के साथ भाग जाना।

उधार—संज्ञा पुं० [सं० उद्धार] १ कर्ज। ऋण।

मुहा०—उधार खाए बैठना = (१) किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। (२) हर समय तैयार रहना।

२ किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास कुछ दिनों के व्यवहार के लिये जाना। मँगनी। (पु) ३ उद्धार। छुटकारा। ४ किसी से सूद पर धन लेना।

उधारक(पु)—वि० दे० "उद्धारक"।

उधारन(पु)—वि० दे० "उद्धारक"।

उधारना—क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। मुक्त करना।

उधारी(पु)—वि० [सं० उद्धारिन्] [स्त्री० उधारिणी] उद्धार करनेवाला।

उधेड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० सं० उद्धरण] उधेड़ने की क्रिया या भाव।

उधेड़ना—क्रि० स० [सं० उद्धरण] १ मिली हुई पर्तों को अलग अलग करना। उचाड़ना। २ टाँका खोलना। सिलाई खोलना। ३ छितराना। बिखराना। बिखेरना। फैलाना।

उधेड़बुन—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उधेड़+√बुन] १ सोचविचार। ऊहापोह। चिंता। उलझन २ युक्ति बाँधना।

उनंत(पु)—वि० [सं० अवनत] झुका हुआ।

उन—सर्व० [?] कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारकों में "वह" शब्द के बहुवचन का और आदरार्थक एकवचन का रूप, जैसे उनको, उनके लिये, उनका, उनपर आदि।

उनइस†—वि० दे० "उन्नीस"।

उनका—संज्ञा पु० [अ० उन्का] एक कल्पित पक्षी जिसे किसी ने देखा नहीं है।

सर्व० [हिं० उन+का] "वह" का संबंध कारक का रूप (बहुवचन और आदरार्थक एकवचन में)।

उनचन—संज्ञा स्त्री० [सं० उदञ्चन] वह रस्सी जो चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिये लगी रहती है।

उनचना—क्रि० स० [सं० उदञ्चन] चारपाई के पायताने की रस्सी (उनचन) को बुनावट कड़ी रखने के लिये खींचना।

उनचास—वि० [सं० एकोनपंचाशत] चालीस और नौ।

संज्ञा पुं० चालीस और नौ की संख्या। ४९।

उनतीस—वि० [सं० एकोनत्रिंशत] एक कम तीस। बीस और नौ।

संज्ञा पुं० बीस और नौ की संख्या २९।

उनदा(पु)—वि० दे० "उनींदा"।

उनदौहाँ—वि० दे० "उनींदा"।

उन्मद(पु)—वि० [सं० उन्मद] उन्मत्त।

उनमना(पु)—वि० दे० "अनमना"।

उनमनि—संज्ञा स्त्री० "उन्मनी"

उनमाथना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्माथ] [वि० उन्माथी] मथना। विलोड़न करना।

उनमाथी(पु)—वि० [हिं० √उनमाथ+ई (प्रत्य०)] मथनेवाला। विलोड़न करनेवाला।

उनमाद—संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।

उनमान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"। उ०—जब जब रावरो बखान करैं कोऊ तब तब छबि-ध्यान कै लखोई उनमान ते।—शृंगार०।

संज्ञा पुं० [सं० उन्मान] १ परिमाण। नाप। तौल। थाह। २ शक्ति। सामर्थ्य।

वि० तुल्य। समान।

उनमानना—क्रि० स० [हिं० उनमान] अनुमान करना। खयाल करना। अदाज लगाना।

उनमुना(पु)—वि० [सं० उन्मन] [स्त्री० उनमुनी] मौन। चुपचाप। रंजीदा। खिन्न।

उनमुनी—संज्ञा स्त्री० दे० "उन्मनी"।

उनमूलना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मूलन] उन्मूलन करना। जड़ से उखाड़ना।

उनमेख(पु)—संज्ञा पु० [सं० उन्मेष] १ आँख खुलना। २ फूल खिलना। ३ प्रकाश।

उनमेखना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मेष] १ आँख खुलना या खोलना। उन्मीलित होना (फूल आदि का)।

उनमेद—संज्ञा पु० [सं० उन्मेदा] बरसात के आरंभ में होनेवाला जल का जहरीला फेन जिससे मछलियाँ मर जाती हैं। उ०—इद्री स्वाद विवस निसि वासर आपु अपुनपौ हारयो। जल उनमेद मीन ज्यों बपुरो पाव कुहारो मारयो।—सूर०।

उनयना—क्रि० अ० "दे० "उनवना"।

उनरना(पु)—क्रि अ० [सं० उद्+√रय् = जाना] १ उठना। उभड़ना। २ कूदते हुए चलना। उछलना।

उनवना(पु)—क्रि० अ० [सं० अवनमन] १ झुकना। लटकना। २ छाना। घिर आना। ३ टूटना। ऊपर पड़ना।

उनवर—वि० [सं० ऊन+वर] १ कम। न्यून। २ कम-बेश। थोड़-बहुत।

उनवान(पु)—संज्ञा पु० दे० "अनुमान"।

उनसठ(पु)—वि० [सं० एकोनषष्ठि] पचास और नौ।

संज्ञा पुं० पचास और नौ की संख्या या अंक। ५९।

उनहत्तर—वि० [सं० एकोनसप्तति] साठ और नौ।

संज्ञा पु० साठ और नौ की संख्या या अंक। ६९।

उनहानि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अनुहरण] समता। बराबरी। सादृश्य।

उनहार(पु)—वि० [सं० अनुहरण] सदृश। समान। बराबर।

उनहारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० अनुहार] समानता। सादृश्य। एकरूपता।

उनाना(पु)—क्रि० स० [सं० अवनमन] १ झुकाना। २. लगाना। प्रवृत्त करना।

क्रि० अ० आज्ञा मानना।

उनारना†—क्रि० स० [सं० उन्नयन] उठाना। २ बढ़ाना। दे० "उनाना"

उनींदा—वि० [सं० उन्निद्र] [स्त्री० उनींदी] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ। नींद में भरा हुआ। ऊँघता हुआ।

उनीदता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उन्निद्रता] उनींदा होने का भाव या अवस्था।

उन्नइस(पु)†—वि० दे० "उन्नीस"।

उन्नत—वि० [सं०] १ ऊँचा। ऊपर उठा हुआ। २ बढ़ा हुआ। समृद्ध। ३ श्रेष्ठ।

उन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऊँचाई। चढ़ाव। २ वृद्धि। समृद्धि। बढ़ती। बाढ़। तरक्की। बड़ाई। अभिवृद्धि।

उन्नतोदर—संज्ञा पु० [सं०] १. चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल। २ वह वस्तु जिसका वृत्तखंड ऊपर को उठा हो। उत्तल। ३ तोंदवाला। तुंदिल।

उन्नाव—संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का बेर जो हकीमी नुसखों में दवा के काम आता है।

उन्नावी—वि० [अ० उन्नाव] उन्नाव के रंग का कालापन लिए हुए लाल।

उन्नायक—वि० [सं०] [स्त्री० उन्नायिका] १ ऊँचा करनेवाला। उन्नत करनेवाला। २ बढ़ानेवाला। ऊपर ले जानेवाला। उत्कर्ष-साधक।

उन्नासी—वि० [सं० ऊनाशीति] १. सत्तर और नौ। एक कम अस्सी।

संज्ञा पुं० सत्तर और नौ की संख्या या अंक। ७९।

उन्निद्र—वि० [सं०] १ निद्रारहित। २ जिसे नींद न आई हो। ३ विकसित। खिला हुआ।

उन्नीस—वि० [सं० एकोनविंशति] एक कम बीस। दस और नौ।

संज्ञा पु० दस और नौ की संख्या या अंक। १९।

मुहा०—उन्नीस बिस्वे=(१) अधिकतर (२) अधिकांश। प्राय। उन्नीस होना=(१) मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा घटना। (२) गुण में घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) उन्नीस बीस होना=एक का दूसरे से कुछ ही अच्छा होना।

उन्मत्त—वि० [सं०] [संज्ञा उन्मत्तता] १ मतवाला। मदांध। २ जो आपे में न हो। बेसुध। ३ पागल। बावला।

उन्मत्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन। पागलपन।

उन्मद—वि० [सं०] १ उन्मत्त । प्रमत्त । २ नशे से युक्त (शराब आदि के) ३ पागल । बावला ।

संज्ञा पुं० उन्माद । पागलपन ।

उन्मन—वि० [सं०] १. जिसमें उद्वेग या व्याकुलता हो । २. अन्यमनस्क । ३ खिन्न ।

उन्मनी—संज्ञा स्त्री० [सं० उन्मनम्] योग शास्त्र में मन की वह अवस्था या मुद्रा जिसमें वृत्तियाँ अंतर्मुखी और स्थिर हो जाती हैं ।

उन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मादक, उन्मादी] १ वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का पारस्परिक सहयोग बिगड़ जाता है । अव्यवस्थित-चित्त । पागलपन । विक्षिप्तता । चित्तविभ्रम । २ अतिशय नशा । ३ अतिशय अनुराग या भावुकता । ४ ३३ संचारी भावों में से एक जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता ।

उन्मादक—वि० [सं०] १ पागल करनेवाला । २ नशा करनेवाला ।

उन्मादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया । २ कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

उन्मादी—वि० [सं० उन्मादिन्] [स्त्री० उन्मादिनी] उन्मत्त । पागल । बावला ।

उन्मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मार्गी] १ कुमार्ग । बुरा रास्ता । २ बुरा ढंग ।

उन्मीलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मीलक उन्मीलनीय, उन्मीलित] १ खुलना (नेत्र का) । २ विकसित होना । खिलना ।

उन्मीलना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मीलन] १ खोलना । २. दिखाना ।

उन्मीलित—वि० [सं०] १ खुला हुआ । २ विकसित । खिला ।

संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े ।

उन्मुक्त—वि० [सं०] १ जिसके बंधन खुल गए हों । छूटा हुआ । २ खुला हुआ । ३ खिला या विकसित । ४ उदार ।

उन्मुक्तहस्त—क्रि० वि० [सं०] दोनों हाथ खोलकर । यथाशक्ति । वित्त भर । भरसक ।

वि० १ दोनों हाथ खोले हुए । २ अतिशय उदार (दान आदि में) ।

उन्मुक्त हृदय—क्रि० वि० [सं०] जी खोलकर । प्रसन्नतापूर्वक । मन भर ।

वि० साफ दिल का । निष्कपट हृदयवाला ।

उन्मुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छुटकारा । छूट । २ ऋण, अभियोग, भार, दोषारोप आदि से मुक्ति । ३ विधि, विधान, कर आदि की पाबंदी से बरी रहने की अवस्था ।

उन्मुख—वि० [सं०] [स्त्री० उन्मुखा, संज्ञा उन्मुखता] १ ऊपर मुँह किए । २. उत्कंठित । उत्सुक । ३ उद्यत । तैयार । ४ किसी की ओर मुँह किए हुए ।

उन्मूलक—वि० [सं०] समूल नष्ट करनेवाला । बर्बाद करनेवाला ।

उन्मूलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १ जड़ से उखाड़ना । २ समूल नष्ट करना ।

उन्मूलना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मूलन] जड़ से उखाड़ फेंकना ।

उन्मोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुक्त करना । स्वतंत्र करना । २ खोलना । ३ प्रतिबंध हटाना ।

उन्हानि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उनहानि" ।

उन्हारि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उनहारि" ।

उन्मेष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मिषित] १ खुलना (आँख का) । २ विकास । खिलना । ३ थोड़ा प्रकाश । ४ ग्रंथ का विभाग ।

उपंग—संज्ञा पुं० [सं० उपाङ्ग] १ नसतरंग नामक बाजा । जलतरंग । २ उद्धव के पिता का नाम ।

उप—उप० [सं०] एक उपसर्ग । यह शब्दों के पहले लगकर जिन अर्थों की विशेषता करता है उनमें कुछ ये हैं—समीपता, जैसे—उपकंठ, उपकूल, उपनयन । नेकी, जैसे—उपकार । गौणता या न्यूनता, जैसे—उपमंत्री, उपसभापति । अनुष्ठान, जैसे—उपक्रम । नाश, जैसे—उपघात । इलाज, जैसे—उपचार । रोग, जैसे—उपदंश । भोग, जैसे—उपभोग ।

उपकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] सामीप्य । निकटता । पड़ोस ।

क्रि० वि० समीप । पास ।

उपकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधन । सामग्री । २ राजाओं के छत्र, चँवर आदि राजचिह्न ।

उपकरना(पु)—क्रि० स० [सं० उपकार] उपकार करना । भलाई करना ।

उपकर्ता—संज्ञा पुं० दे० "उपकारक" ।

उपकल्पन—संज्ञा पुं० [सं०] तैयारी । आयोजन ।

उपकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ हितसाधन । भलाई । नेकी । २ लाभ । फायदा ।

उपकारक—वि० [सं०] [स्त्री० उपकारिका] उपकार करनेवाला । भलाई करनेवाला ।

उपकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भलाई । २ भलाई करने का गुण या स्वभाव ।

उपकारी—वि० [सं० उपकारिन्] [स्त्री० उपकारिणी] १ उपकार करनेवाला । भलाई करनेवाला । २ लाभ पहुँचानेवाला ।

उपकूल—क्रि० वि० [सं०] १ नदी, तालाब आदि के तट पर या तट के समीप । २ समीप । निकट ।

उपकृत—वि० [सं०] [स्त्री० उपकृता] १ जिसका उपकार किया गया हो ।

उपकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपकार ।

उपक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्यारंभ । अनुष्ठान । २ किसी कार्य को आरंभ करने के पहले का आयोजन । तैयारी । ३ भूमिका ।

उपक्रमणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषयसूची । २ भूमिका ।

उपक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] भर्त्सना । निंदा । विगर्हणा । कुत्सा ।

उपक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन । २ आक्षेप ।

उपखान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उपाख्यान" ।

उपगत—वि० [सं०] १ प्राप्त । उपस्थित । २ ज्ञात । जाना हुआ । ३ स्वीकृत ।

उपगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति । स्वीकार । २ ज्ञान ।

उपगीत, उपगीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का वह भेद जिसके विषम चरणों में १२ और सम में १५ मात्राएँ होती हैं किंतु विषम गणों में जगण नहीं रखा जाता और अंत में गुरु रहता है, जैसे—रामा रामा रामा, आठौ यामा जपौ रामा । छाँड़ौ सारे कामा, पैहौ अंतै सुविश्रामा ॥

उपगूहन—संज्ञा पुं० [सं०] आलिंगन । अँकवार । भेंट ।

उपग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ अप्रधान ग्रह । छोटा ग्रह । २ राहु और केतु । वह छोटा

ग्रह जो किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है, जैसे—पृथ्वी का उपग्रह चद्रमा है (आधुनिक)। ३. बँधुआ। कैदी। ४. गिरफ्तारी। कैद।

उपघात—सज्ञा पुं० [स०] [कर्ता० उपघातक, उपघाती] १ नाश करने की क्रिया। २ इंद्रियों का अपने अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३ रोग। व्याधि।

उपचय—सज्ञा पु० [सं०] १ वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २ सचय। जमा करना।

उपचर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सेवा-शुश्रुषा। २ चिकित्सा। इलाज।

उपचार—संज्ञा पुं० [स०] १ चिकित्सा। दवा। इलाज। २ सेवा। तीमारदारी। ३. प्रयोग। विधान। व्यवहार। ४ आवश्यक नियम अथवा विधियों का कार्यव्यवहार में पूरा पूरा पालन। ५ वह व्यवहार जिसमें केवल बाह्यरूप का पालन हो। ऊपरी या दिखावटी व्यवहार। बनावट। ६ उपाय। तरकीब। ढंग। विधान। ७ धर्मानुष्ठान। ८ पूजन के अंग या विधान जो प्रधानत सोलह माने गए हैं; जैसे, षोटशोपचार। ९ खुशामद। १०. घूस। रिश्वत। ११ एक प्रकार की सधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है, जैसे, नि.+छल से निश्छल। १२ (अलकारशास्त्र) आरोप। साधर्म्य। सादृश्य। समानता। १३ अभेद प्रतिपत्ति। समानगुण।

उपचारक—वि० [सं०] [स्त्री० उपचारिका] १ उपचार या सेवा करनेवाला। २ विधान करनेवाला। ३ चिकित्सा करनेवाला। उपाय या तरकीब करनेवाला।

उपचारछल—सज्ञा पुं० [सं०] वादी के कहे वाक्य में जान-बूझकर वाछित अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

उपचारना(पु)—क्रि० स० [सं० उपचार] १ व्यवहार में लाना। २ विधान करना।

उपचारात्—क्रि० वि० [सं०] केवल व्यवहार, दिखावा या रस्म अदा करने के रूप में।

उपचारी—वि० [सं० उपचारिन्] [स्त्री० उपचारिणी] उपचार करनेवाला।

उपचित—वि० [सं०] १ एकत्र। सचित। २ वर्द्धित। पाला हुआ।

उपचित्र—उज्ञा पुं० [स०] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तीन सगण, एक लघु और अत्य गुरु कुल ११ अक्षर होते हैं तथा छठे वर्ण पर यति और अत में विराम होता है, जैसे—ससि सों लग ये, उपचित्र है। सखि देखहु री, सुविचित्र है। मन मोहत है, सबको खरो। अति सु दर है, रस सों भरो॥ इसे चद्रमदिर और चद्रमडल भी कहते हैं। २ एक अर्ध समवृत्त जिसके विषम चरणों में क्रम से तीन सगण, एक लघु और अत्य गुरु तथा सम में तीन भगण और अत में दो गुरु वर्ण होते हैं, जैसे—करुणानिधि माधव मोहना। दीन दयाल सुनो हमरी जू॥ कमलापति यादव सोहना। मैं शरणागत हौं तुम्हरी जू॥

उपचित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १६ मात्राओं का एक छद जिसमें ८वीं और १४वीं मात्रा के बाद एक गुरु तथा कम से कम एक चौकल में जगण आवश्यक है, जैसे—वसुचर गोरस ज्यों उपचित्रा। सियारमण गति चित्र विचित्रा॥ तातें भजिए सतत रामा। होइहौ मीता पूरणकामा॥

उपज—सज्ञा स्त्री० [सं० उद् √पद, प्रा० √ उप्पज्ज] १ उत्पत्ति। उद्भव। २ जन्म। पैदाइश। मिट्टी से पौधों का निकलना। ३ पैदावार, जैसे, खेत की उपज। ४. नई उक्ति। उद्भावना। सूझ। ५ मनगढ़त बात। ६ गाने में राग के माधुर्य के लिये उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिला देना।

उपजना—क्रि० अ० [हि० √उपज] उत्पन्न होना। पैदा होना। उगना।

उपजाऊ—वि० [हिं० √उपज+आऊ (प्रत्य०)] जिसमें प्रचुर अन्न, फल और तरकारियाँ पैदा हों। जरखेज। अच्छी पैदावार का। उर्वर (भूमि)।

उपजाति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ ११ अक्षरों के वे वर्णवृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बनते हैं। इनकी कुल सख्या १४ है—१. कीर्ति (ISSS), २. वाणी (SISS), ३. माला (IISS), ४ शाला (SSIS), ५ हंसी (ISIS), ६ माया (SIIS), ७ जाया (IIIS), ८ बाला (SSSI), ९ आर्द्रा (ISSI) १० भद्रा (SISI), ११ प्रेमा (IISI), १२ रामा (SSII), १३ ऋद्धि (ISII) और १४ सिद्धि या बुद्धि (SIII)। २ किसी जाति से विकसित उसी का विभेद या उपभेद।

उपजाना—क्रि० स० [हिं० उपजना का स० रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।

उपजीवन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपजीवी, उपजीवक] १ जीविका। रोजी। २ निर्वाह के लिये दूसरे का अवलबन। परावलबन।

उपजीविका—सज्ञा स्त्री० [स०] जीवन-यापन का उपाय। पेट पालने का जरिया। उद्योग। धधा। रोजी।

उपजीवी—वि० [स० उपजीविन्] [स्त्री० उपजीविनी] दूसरे के सहारे पर गुजर करनेवाला। परावलबी।

उपटन—सज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

सज्ञा पु० [सं० उत्पटन] वह अंक या चिह्न जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय। निशान। साँट।

उपटना—क्रि० अ० [स० उत्पटन] १ आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना। निशान पड़ना २ उखड़ना।

उपटा—सज्ञा पु० [सं० उत्पतन] १ पानी की बाढ़। २ ठोकर।

उपटाना(पु)—क्रि० स० [हि० उपटना का प्रे० रूप] उबटन लगवाना।

क्रि० स० [सं० उत्पाटन] १ उखड़वाना। २ उखाड़ना। ३ दाब, आघात आदि से चिह्न डालना या टलवाना।

उपटारना(पु)—क्रि० स० [स० उत्पाटन] उच्चाटन करना। उठाना। हटाना।

उपड़ना—क्रि० अ० [सं० उत्पटन] १ उखड़ना। २ उपटना। अकित होना।

उपत्यका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वत के पास की भूमि। तराई।

उपदंश—संज्ञा पु० [सं०] १. अनुचित सभोग के कारण होनेवाला सासर्गिक रोग जिसमें सबसे पहले जननेंद्रिय में सडन और घाव हो जाता है तथा प्रारंभिक निरोध न होने पर सारे शरीर में भयकर ज्वालावाले दाने और चकत्ते निकल पड़ते हैं जिनके कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। चरमावस्था में दवाए जाने पर इस रोग मे तालु में छेद होना, नाक और ओष्ठ का सड़कर अलग होना, नाक के मध्य भाग का बैठ जाना आदि अनेक अंगभगकारी उपद्रव होते हैं। २ गरमी। आतशक। फिरग रोग।

उपदिशा—सज्ञा स्त्री० [स०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

उपदिष्ट—वि० [स०] १ जिसे उपदेश दिया गया हो। ज्ञापित। २ जिसका उपदेश दिया गया हो (वस्तु या क्रिया)।

उपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ हित की बात का कथन। शिक्षा। सीख। नसीहत। २. दीक्षा। गुरुमंत्र।

उपदेशक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपदेशिका] उपदेश करनेवाला। शिक्षा देनेवाला।

उपदेश्य—वि० [सं०] १. उपदेश के योग्य २ सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा—संज्ञा पुं० [सं० उपदेष्टृ] [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला। शिक्षक।

उपदेसना—क्रि० स० [सं० 'उपदेश' की हिं० ना० धा०] उपदेश करना।

उपद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपद्रवी] १ उत्पात। हलचल। विप्लव। २ ऊधम। दंगा-फसाद। ३ विघ्न। बाधा ४. किसी प्रधान रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ।

उपद्रवी—वि० [सं० उपद्रविन्] १ उपद्रव या ऊधम मचानेवाला। २ नटखट।

उपधरनाⓅ—क्रि० स० [सं० उप (उप०) +धरण] अंगीकार करना। अपनाना। मानना।

उपधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छल। कपट। २. व्याकरण में किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले का अक्षर। ३ उपाधि।

उपधातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रधान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती है अथवा खानों से ही मिली-जुली निकलती है; जैसे, काँसा, सोनामुखी।

उपधान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपधृत] १. तकिया। सिरहाना। २ गद्दा। ३ सहारा लेना।

उपननाⓅ—क्रि० अ० [सं० उत्पन्न] पैदा होना।

उपनय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समीप ले जाना। २ बालक को गुरु के पास ले जाना। ३ उपनयन संस्कार। ४ तर्क में कोई उदाहरण देकर उस उदाहरण के धर्म को फिर उपसंहार रूप से साध्य में घटाना।

उपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य,] हिंदुओं के षोडश संस्कारों में से एक। द्विजातियों के लड़कों को विधिवत् ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) पहनाकर ब्रह्मचर्य से विद्याध्ययन के लिये गुरु के समीप ले जाना। यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनागरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्यरचना में वर्णविन्यास का वह ढंग जिसमें श्रुतिमधुर वर्ण (ट ठ ड ढ ढ के अतिरिक्त) अपने अपने अंत्य वर्ण से युक्त स्पर्श वर्ण, ह्रस्व र या ल तथा सानुनासिक अक्षर अधिक प्रयुक्त होते हैं। इस पदयोजना में समास यदि होते हैं तो छोटे ही। २ शब्दालंकार का वह भेद जिसके पदों में एक या अधिक व्यंजन अनेक बार दोहराए जाते हैं।

उपनानाⓅ—क्रि० स० [सं० उत्पादन] उत्पन्न या पैदा करना।

उपनाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूसरा नाम। प्रचलित या पुकारने का नाम। २ पदवी। तखल्लुस।

उपनायक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

उपनिधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरोहर। अमानत। थाती।

उपनियम—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी विधि या विधान के अधीन बनाया हुआ कायदा। उपविधि। २ किसी बड़े कानून का अंग। ३ आचरण या व्यवहार के छोटे छोटे कायदे। ४ कार्यसंपादन की गौण हिदायत। उपक्रिया।

उपनिविष्ट—वि० [सं०] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना। २ अन्य स्थान से आए हुए लोगों की बस्ती। नई आबादी या बस्ती। (अँ० कालोनी)।

उपनिषद्, उपनिषत्—संज्ञा [सं०] वेदों का वह भाग जिसमें आत्म और अनात्म तत्वों का निरूपण किया गया है।

उपनीत—वि० [सं०] १ पास लाया हुआ। २ पास बैठाया हुआ। ३ जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।

उपनेता—संज्ञा पुं० [सं० उपनेतृ] [स्त्री० उपनेत्री] १ लानेवाला। पहुँचानेवाला। २ उपनयन करानेवाला। आचार्य। गुरु।

उपन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपन्यस्त] १ वह काल्पनिक गद्यकथा जिसमें वास्तविक जीवन से मिलते जुलते चरित्रों और कार्यकलापों का विस्तृत और सुसंबद्ध चित्रण हो, जैसे—गोदान। २ रोमांचकारी क्रियाकलापों का ऐसा ही चित्रण। ३ जासूसी क्रियाकलापों से भरा इसी प्रकार का चित्रण। ४ उपक्रम। बंधान।

उपपति—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री अनुचित प्रेम करे। यार। जार।

उपपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। कारण से कार्य का अनुमान। २ चरितार्थ होना। मेल मिलाना। संगति। ३ युक्ति। हेतु। ४ सिद्धि। प्राप्ति।

उपपत्तिसम—संज्ञा पुं० [सं०] वादी के कारण और निगमन आदि का खंडन किए बिना प्रतिवादी द्वारा विरुद्ध विषय का प्रतिपादन। वादी की दलीलों को न छेड़कर दूसरे तर्कों से सिद्ध किया हुआ प्रतिवाद।

उपपत्नी—संज्ञा [स्त्री०] किसी की पत्नी तुल्य अविवाहित स्त्री। रखेली।

उपपन्न—वि० [सं०] १ पास या शरण में आया हुआ। २ प्राप्त। मिला हुआ। ३ युक्त। संपन्न। ४ उपयुक्त।

उपपातक—संज्ञा पुं० [सं०] छोटामोटा पाप। कदाचार। अनाचार; जैसे—निष्प्रयोजन झूठ बोलना, किसी को आशा बँधाकर पूरी न करना, प्रतिज्ञा से पीछे हटना, शौच, संतोष, स्वाध्याय, संध्यावंदन आदि न करना, इत्यादि।

उपपादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य] १ सिद्ध करना। साबित करना। ठहराना। २ कार्य को पूरा करना। संपादन। प्राप्ति। सिद्धि।

उपपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पुराण में बाद में जोड़ा हुआ अंश, जैसे भागवत में जोड़ा हुआ हरिवंश उपपुराण।

उपबरहनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० उपबर्हण] तकिया।

उपभुक्त—वि० [सं०] १ काम में लाया हुआ। भोगा हुआ। व्यवहृत। इस्तेमाल किया हुआ। २ जूठा। उच्छिष्ट।

उपभोक्ता—वि० [सं० उपभोक्तृ] [स्त्री० उपभोक्त्री] उपभोग करनेवाला। भोगनेवाला। इस्तेमाल करनेवाला।

उपभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का व्यवहार। इस्तेमाल। काम में लाना। उपयोग। २ विलास। किसी वस्तु या व्यक्ति के भोग या उपयोग का आनंद। बर्तना। ३ सुख या विलास की सामग्री।

मुहा०—उपभोग करना = मजा लेना। आनंद करना।

उपभोग्य—वि० [सं०] उपभोग या व्यवहार करने के योग्य।

उपमंत्री—संज्ञा पुं० [सं०] वह मंत्री जो किसी मंत्री के नीचे हो (अं० डिप्टी-मिनिस्टर)।

उपमर्द—संज्ञा पुं० दे० "उपमर्दन"।

उपमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपमर्दित, उपमर्द्य] १ बुरी तरह से दबाना या रौंदना। पेषण या पीसना। २ उपेक्षा और तिरस्कार।

उपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वस्तु का किसी दूसरी से सादृश्य-स्थापन। साम्य। २ एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, धर्म, स्वभाव, प्रभाव, क्रिया आदि किसी बात की समानता के आधार पर एक वस्तु दूसरी के समान कही जाती है।

उपमाता—संज्ञा पुं० [सं० उपमातृ] [स्त्री० उपमात्री] उपमा देनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [सं० उप+मातृ] दूध पिलाने वाली दाई। धातृ। धाय।

उपमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वस्तु जिससे किसी की समानता बताई जाय। वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु कही जाय। २ न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन ३ २३ मात्राओं का एक छंद जिसमें अंत में दो गुरु रहते हैं (एक गुरु का प्रयोग भी मिलता है) और १३ मात्राओं पर यति तथा २३ पर विराम होता है, जैसे—अबहुँ सुमिर हरिनाम शुभ, काल जात बीता। हाथ जोर विनती करौं, नाहिं जात रीता॥

उपमानाⓅ—क्रि० स० [सं० उपमा] उपमा देना।

उपमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १५ वर्णों का वह वृत्त जिसमें क्रम से दो नगण, एक भगण और एक रगण होता है तथा ८ वें वर्ण पर यति और १५ वें पर विराम होता है; जैसे—लहत सकल कामैं, अरी सुकुमारि तू। कमलनयन श्यामै, सदा हिय धारि तू॥

उपमित—वि० [सं०] जिसकी उपमा दी गई हो। उपमा दिया हुआ। उपमा में प्रयुक्त।

संज्ञा पुं० कर्मधारय के अंतर्गत एक समास जो दो शब्दों के बीच उपमावाचक शब्द का लोप करने से बनता है, जैसे—पुरुषसिंह।

उपमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।

उपमेय—वि० [सं०] जिसकी उपमा दी जाय। जिस वस्तु को किसी दूसरी के समान कहा जाय। वर्ण्य। वर्णनीय।

उपमेयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय। वह उपमा जिसमें दो वस्तु परस्पर एक दूसरी के उपमान और उपमेय दोनों हों। जैसे समुद्र आकाश के समान और आकाश समुद्र के समान है।

उपयनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उत्प्रयाण] चला जाना। न रह जाना। उड़ जाना।

उपयुक्त—वि० [सं०] योग्य। उचित। ठीक। वाजिब। मुनासिब।

उपयुक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठीक उतरने या होने का भाव। औचित्य। यथार्थता।

उपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १ काम। व्यवहार। इस्तेमाल। प्रयोग। २ योग्यता। ३ फायदा। लाभ। ४ प्रयोजन। आवश्यकता।

उपयोगिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] काम में आने की योग्यता। लाभकारिता।

उपयोगितावाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह सिद्धांत जिसमें क्रिया का औचित्य उसका लाभप्रद होना ही है। २ वह नीति जिसमें लोकव्यवहार का एकमात्र मापदंड अधिकाधिक जीवों का अधिकाधिक हितसाधन है।

उपयोगी—वि० [सं० उपयोगिन्] [स्त्री० उपयोगिनी] १ काम में आनेवाला। प्रयोजनीय। मसरफ का। २ लाभकारी। फायदेमंद। ३ अनुकूल। मुवाफिक।

उपयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] उपयोग या काम में लाना। उपयोग करने की क्रिया।

उपरत—वि० [सं०] १ विरक्त। उदासीन। २ मरा हुआ।

उपरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विषयों से विराग। विरति। २ उदासीनता। उदासी। ३ मृत्यु। मौत।

उपरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] कम दाम के रत्न। घटिया रत्न।

उपरना—संज्ञा पुं० [?] दुपट्टा। चद्दर। उत्तरीय।

† क्रि० अ० [सं० उत्पटन] उखड़ना।

उपरफट—वि० [सं० उपरि+स्फुट] १. ऊपरी। व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। उ०—मेरी बाँह छाँड़ि दे राधे करत उपरफट बातैं। —सूर०।

उपरस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में पारे से गुण करनेवाले पदार्थ, जैसे—गंधक, ईंगुर, अभ्रक आदि।

उपरांत—क्रि० वि० [सं०] अनंतर। बाद।

उपरा—संज्ञा पुं० [सं० उत्पल] [स्त्री०, अल्पा० उपरी] दे० "उपला"।

उपराग—संज्ञा पुं० [सं०] १ रंग। २ किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। उपाधि। निकट की वस्तु के प्रभाव से किसी वस्तु का अपने वास्तविक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ना, जैसे सांख्य के अनुसार पुरुष (आत्मा) कर्ता नहीं है, ऐसा केवल बुद्धि के उपराग या उपाधि से प्रतीत होता है। ३ विपत्ति। ४ चंद्र या सूर्य ग्रहण।

उपराम—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्याग। २. उदासीनता। ३ विराम। विश्राम।

उपरा-चढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊपर+√चढ़+ई (प्रत्य०)] चढ़ा-ऊपरी। प्रतिद्वंद्विता। स्पर्द्धा। होड़।

उपराज—संज्ञा पुं० [सं०] राजप्रतिनिधि। बादशाह के समान अधिकार रखनेवाला शासक। वाइसराय।

उपराजनाⓅ—क्रि० स० [सं० उपार्जन] १. पैदा करना। उत्पन्न करना। २. रचना। बनाना। ३ उपार्जन करना। कमाना।

उपराना†—क्रि० अ० [सं० उपरि] १ ऊपर आना। २ प्रकट होना। ३ उतराना। ४ रहस्य खोलना।

क्रि० स० ऊपर करना। उठाना।

उपरालाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ला (प्रत्य०)] पक्ष ग्रहण। सहायता। रक्षा।

उपरावटाⓅ—वि० [सं० उपरि+आवर्त] जो गर्व से सिर ऊँचा किए हो।

उपराष्ट्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] राष्ट्रपति के समान अधिकार रखनेवाला किंतु उन्हें उसकी अनुपस्थिति में ही बरत सकनेवाला राष्ट्र का द्वितीय अधिकारी।

उपराहनाⓅ—क्रि० अ० [?] प्रशंसा करना।

उपराहींⓅ—क्रि० वि० दे० "ऊपर"।

वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।

उपरि—क्रि० वि० [सं०] ऊपर।

उपरी-उपरा—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर] प्रतिद्वंद्विता । चढ़ा-ऊपरी । स्पर्धा । होड़ ।

उपरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक के १८ उपभेद जो इस प्रकार हैं—(१) नाटिका (२) त्रोटक (३) गोष्ठी (४) सट्टक (५) नाट्यरासक (६) प्रस्थान (७) उल्लाप्य (८) काव्य (९) प्रेंखण (१०) रासक (११) संलापक (१२) श्रीगदित (१३) शिल्पक (१४) विलासिका (१५) दुर्मल्लिका (१६) प्रकणिका (१७) हल्लीश और (१८) भाणिका ।

उपरैनाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "उपरना" ।

उपरैनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० उपरना] ओढ़नी ।

उपरोक्त—वि० [हिं० ऊपर+सं० उक्त] ऊपर कहा हुआ । ["उपर्युक्त" के स्थान पर प्रचलित]

उपरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ अटकाव । रुकावट । २. आच्छादन । ढकना । ३. पर्दा । आड़ । ओट । ४ जनानखाना । अंतःपुर । ५. विघ्न । बाधा ।

उपरोधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोकने या बाधा डालनेवाला । २ भीतर की कोठरी ।

उपरौटा—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+सं० पट ?] (किसी वस्तु के) ऊपर का पल्ला । ऊपरी भाग या हिस्सा ।

उपर्युक्त—वि० [सं०] ऊपर कहा हुआ ।

उपल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर । २ ओला । ३. रत्न । ४. मेघ । बादल ।

उपलक्षक—वि० [सं०] १ अनुमान करनेवाला । ताड़नेवाला । २. संकेतक । परिचायक । बताने या दिखानेवाला । बोध करानेवाला ।

संज्ञा पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा मे अपने वाच्यार्थ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की और वस्तुओं का भी बोध करावे ।

उपलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलक्षक, उपलक्षित] १. बोध करानेवाला चिह्न । संकेत । पहचान । २ शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की और वस्तुओं का भी बोध होता है ।

उपलक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ संकेत । चिह्न । २ दृष्टि । उद्देश्य ।

यौ०—उपलक्ष्य में=दृष्टि मे । विचार से ।

उपलब्ध—वि० [सं०] १ पाया हुआ । प्राप्त । २ जाना हुआ ।

उपलब्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति । २ पारिश्रमिक, वेतन, जेब खर्च, भत्ते आदि के रूप में होनेवाला लाभ । ३ मौलिक सिद्धांत या सफलता की प्राप्ति । ४ बुद्धि । ज्ञान ।

उपला—संज्ञा पुं० [सं० उपलक ?] [अल्पा० उपली] ईंधन के लिये गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा । कंडा । गोहरा ।

उपलेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेप । लिपन । पोतना । लीपना । २. वह वस्तु जिससे लेप करें ।

उपलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लीपना या लेप लगाना ।

उपल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ला (प्रत्य०)] [स्त्री०, अल्पा० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त या तह ।

उपवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाग । बगीचा । फुलवारी । २ वन के समान लतावृक्षों से ढका हुआ स्थान ।

उपवनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उत्प्रयाण] गायब होना । ओझल होना । उड़ जाना ।

उपवसथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाँव । बस्ती । २ यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है ।

उपवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी बड़े वाक्य के अंतर्गत रहनेवाला वह गौण वाक्य जिसमें एक समापिका क्रिया हो ।

उपवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजन का छूटना । फाका । २ वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है । आहारत्याग ।

उपवासी—वि० [सं० उपवासिन्] [स्त्री० उपवासिनी] उपवास करनेवाला ।

उपविष—संज्ञा पुं० [सं०] हलका विष । कम तेज जहर; जैसे, अफीम धतूरा आदि ।

उपविष्ट—वि० [सं०] बैठा हुआ ।

उपवीत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवीती] १ जनेऊ । यज्ञोपवीत । यज्ञसूत्र । २ उपनयन ।

उपवेद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों मे विकसित चार विद्याएँ—(१) आयुर्वेद, (२) धनुर्वेद, (३) गांधर्ववेद, (४) स्थापत्य-शास्त्र (वेद) ।

उपवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १ बैठना । २ स्थित होना । जमना । ३ किसी सभा, समिति या संसद का अधिवेशन या बैठक ।

उपशम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वासनाओं का दबाना । इंद्रियनिग्रह । शमन । निरोध । २ निवृत्ति । शांति । ३ निवारण का उपाय । इलाज । उपचार । ४ युक्ति । तरकीब ।

उपशमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपशमनीय, उपशमित, उपशाम्य] १ शांत रखना । दबाना । निरोध । २ उपाय से दूर करना । निवारण । उपचार । ३ तरकीब ।

उपशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] मकान के पास का उठने बैठने के लिये दालान या छोटा कमरा । बैठक ।

उपशिष्य—संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य का शिष्य । प्रशिष्य ।

उपसंपादक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपसंपादिका] १ किसी कार्य में मुख्य कर्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य करनेवाला व्यक्ति । २ संपादक के अधीन कार्य करनेवाला सहायक व्यक्ति । सहायक संपादक ।

उपसंहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ संहरण । परिहार । २ समाप्ति । खातमा । ३ निराकरण । ४ किसी पुस्तक का वह अंतिम अंश जिसमें पुस्तक में वर्णित बातों का संक्षेप में निष्कर्ष बतलाया गया हो । सारांश । निचोड़ ।

उपसा—संज्ञा स्त्री० [सं० उप+वास= महक] दुर्गंध । बदबू ।

उपसना—क्रि० अ० [सं० उप+वास= महक] १ दुर्गंधित होना । सड़ना ।

उपसमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी बड़ी सभा या समिति द्वारा प्रासंगिक विषयों के लिये निर्मित अपने थोड़े से चुने चुनाए सदस्यों की कोई अंग समिति ।

उपसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शब्द या ध्वनि-चिह्न जो स्वयं अर्थहीन होते हुए भी शब्दों के आदि में जोड़े जाने पर उनके मूल अर्थों को बदल देता है, जैसे—प्रहार, आहार, संहार, निराहार, विहार, परिहार, अनुहार, उद्धार, उपहार, सम.हार में प्र, आ, सं आदि । २ अपशकुन । ३. दैवी उत्पात ।

उपसागर—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा समुद्र । समुद्र का एक भाग । खाड़ी ।

उपसाना—क्रि० स० [हिं० उपसना का स० रूप] बासी करना । सड़ाना ।

उपसुंद—संज्ञा पुं० [सं०] सुंद नाम के दैत्य का छोटा भाई।

उपसेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी से सींचना या भिगोना। पानी छिड़कना। २ गीली चीज। रसा। शोरवा।

उपस्करण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अलंकार। आभूषण। २. सजावट।

उपस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोभा बढ़ाने वाली वस्तु। २ सजावट के साधन।

उपस्कारक—वि० [सं०] शोभा बढ़ानेवाला। अलंकृत करनेवाला। सजानेवाला।

उपस्करणीय—वि० [सं०] सजाने लायक। शोभा बढ़ाने योग्य। अलंकार्य।

उपस्कृत—वि० [सं०] १ सुशोभित। अलंकृत। २ इकठ्ठा। एकत्र। समवेत। संघटित।

उपस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे या मध्य का भाग। २ पेड़ू। ३ पुरुषचिह्न। लिंग। गुप्तांग। ४ स्त्रीचिह्न। भग। ५ गुदा। ६ गोद।
वि० निकट बैठा हुआ।

उपस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १ निकट आना। सामने आना। २ अभ्यर्थना या पूजा के लिये निकट आना। ३ खड़े होकर स्तुति करना। ४ पूजा का स्थान। ५ सभा। समाज।

उपस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] उपस्थित करनेवाला। सामने रखनेवाला। पेश करनेवाला। पेशकार।

उपस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपस्थित करने का कार्य। पेश करने की क्रिया। पेशी। २ सभा, समिति आदि में विचार के लिये प्रस्ताव आदि रखना।

उपस्थित—वि० [सं०] १ समीप बैठा हुआ। सामने या पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। २ ध्यान में आया हुआ। याद। ३ ११ वर्णों का वह छंद जिसमें क्रम से एक जगण, एक सगण, एक तगण और दो अंत्य गुरुवर्ण होते हैं तथा छठे वर्ण पर यति और ११वें पर विराम होता है, जैसे—सुसंग तिनको, है मोदकारी। उपस्थित तहाँ, संपत्ति सारी॥

उपस्थित-प्रचुपित—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसके पहले चरण में क्रम से मगण, सगण, जगण भगण और दो अंत्य गुरु, दूसरे में सगण, नगण, जगण, रगण और एक गुरु, तीसरे में दो नगण और एक सगण तथा चौथे में तीन नगण, एक जगण और अंत में एक यगण रहता है, जैसे—गोविंदा पद में जु मित्त चित्त लगैहौ। निहिचै यहि भवसिंधु पार जैहौ॥ भ्रम अरु मद तज रे। तन मन धन सन भजिए हरि को रे।

उपस्थिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपस्थित का स्त्री० २ एक १० वर्णों का छंद जिसमें क्रम से एक तगण और दो जगण तथा अंत्य गुरु होता है और दूसरे वर्ण पर यति तथा पदांत में विराम होता है, जैसे—फेरौं, सद्‌ज्ञान सुसंस्थिता। ताकी, लखि रानि उपस्थिता॥

उपस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।

उपस्वत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमीन या किसी जायदाद की आमदनी का हक। २ किसी लाभ में साझा।

उपहत—वि० [सं०] १ नष्ट या बरबाद किया हुआ। २ बिगाड़ा हुआ। दूषित। ३ संकट में पड़ा हुआ। ४ रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध। स्तंभित।

उपहसित (हास)—संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों में से चौथा। नाक फुलाकर, आँखें टेढ़ी करके और गर्दन हिलाकर हँसना।

उपहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंट। नजर। नजराना। २ शैवों की उपासना के छः नियम—हसित, गीत, नृत्य, डुडुक्कार, नमस्कार और जप।

उपहास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपहास्य] १ हँसी। दिल्लगी। २ निंदा। बुराई।

उपहासास्पद—वि० [सं०] १ उपहास के योग्य। हँसी उड़ाने के लायक। २ निंद-नीय। खराब। बुरा।

उपहासी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उपहास] हँसी। ठठ्ठा। निंदा।

उपहास्य—वि० दे० "उपहासास्पद"।

उपही(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ही (प्रत्य०)] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी।

उपहृत—वि० [सं०] १ लाया हुआ। २ प्रदत्त। भेंट दिया हुआ। ३ हरण किया हुआ। ४ चढ़ाया हुआ।

उपांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंग का भाग। किसी खंड का हिस्सा, जैसे, उँगलियाँ हाथ की उपांग हैं। अवयव। २ वह वस्तु जिससे किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति हो। ३ वेदों के शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष नामक ६ अंगों में से किसी का पूरक शास्त्र। ४. तिलक। टीका।

उपांत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपांत्य] १ अंत के समीप का भाग। २ आसपास का हिस्सा। किनारे का आखिरी हिस्सा।

उपांत्य—वि० [सं०] अंतवाले के समीपवाला। अंतिम से पहले का।

उपाउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।

उपाकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करना। स्वाध्याय। २ यज्ञोपवीत संस्कार।

उपाख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरा[ानी] कथा। पुराना वृत्तांत। २ किसी कथा [में] आनेवाली कोई और संबद्ध कथा। ग[ौण] कथा। अंतर्कथा, जैसे—महाभारत [में] नकुलोपाख्यान, शकुंतलोपाख्यान आदि। ३ वृत्तांत। ४ छोटी कहानी।

उपाटना(पु)—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपाति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।

उपादान—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव[०] उपादानता] १. प्राप्ति। ग्रहण। स्वीकार। २ ज्ञान। बोध। ३ आरोप। आ[...] (अलंकार शास्त्र)। ४ विषयों से इंद्रियों [की] निवृत्ति। ५ वह कारण जो स्वयं कार्य [रूप] में परिणत हो जाय, जैसे—मिट्टी घड़े [का] उपादान कारण है, कुम्हार उसका निमि[त्त] कारण। वह सामग्री जिससे कोई व[स्तु] तैयार हो। ६ सांख्य की चार आध्याति[्मक] तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही व[...] से पूरे फल की आशा करके और [...] प्रयत्न छोड़ देता है।

उपादि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उपाधि"।

उपादेय—वि० [सं०] [भाव० उपादेयत[ा]] १ ग्रहण करने योग्य। लेने योग्य। [२] उत्तम। श्रेष्ठ। ३ लाभप्रद। काम का।

उपाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक व[स्तु] को दूसरी बतलाने का छल। कपट। [२] वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और [की] और (भिन्न या कुछ की कुछ) अ[...] किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३ उपद्र[व]। उत्पात। ४ कर्तव्य का विचार। धर्मचिं[ता]। ५ प्रतिष्ठासूचक पद। खिताब। ६ सर्वे[...] ग्रह। उपलक्षण। पहचान।

उपाधिधारी—संज्ञा पुं० [सं० उपाधिधारि[न्]] वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो।

उपाधी—वि० [सं० उपाधिन्] [स्त्री० उपाधिनी] उपद्रवी। उत्पात करनेवाल[ा]। बदमाश। शरारती।

उपाध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १ वेद वेदांग का पढानेवाला। आचार्य। मंत्रों की व्याख्या करके उन्हें समझानेवाला। व्याख्याता। २ अध्यापक। शिक्षक। गुरु। ३ ब्राह्मणों की एक उपजाति।

उपाध्याया—संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्यापिका।

उपाध्यायानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी।

उपाध्यायी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी। २. अध्यापिका।

उपानह—संज्ञा पुं० [सं० उपानह्] जूता। पनही।

उपाना(पु)—क्रि० स० [सं० उत्पादन] उत्पन्न करना। पैदा करना। दे० "उपराजना"। २ सोचना।

उपाय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपायी, उपेय] १. वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें। साधन। युक्ति। तदवीर। तरकीव। २ राजनीति में शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, दाम, भेद, और दंड। ३. उपचार। इलाज। दवा। ४ यत्न। प्रयत्न।

उपायन—संज्ञा पुं० [सं०] भेंट। उपहार। नजर। डाली।

उपारना(पु)—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपार्जनीय, उपार्जित] लाभ करना। पैदा करना। परिश्रम करके प्राप्त करना। कमाना।

यौ०—विद्योपार्जन=परिश्रम करके विद्या प्राप्त करना। अर्थोपार्जन=मिहनत मजदूरी करके धन कमाना।

उपार्जित—वि० [सं०] कमाया हुआ। परिश्रम से प्राप्त किया हुआ। संगृहीत।

उपालंभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपालब्ध] उलाहना। शिकायत। निंदा। ताना विगर्हणा। व्यंग्य।

उपालंभन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपालंभनीय, उपालंभित, उपालभ्य, उपालब्ध] उलाहना देना। निंदा करना। ताना मारना। व्यंग्य कसना।

उपाव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।

उपाश्रित—वि० [सं०] किसी के आश्रय में रहनेवाला। २ वह नियम या विधि जो दूसरे नियम या विधि के आश्रित हो। अवलंबित।

उपास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उपवास"।

उपासक—वि० [सं०] [स्त्री० उपासिका] १. पूजा या आराधना करनेवाला। भक्त। २ अनन्य सेवा करनेवाला। ३. अनुरक्त। बहुत चाहनेवाला। बहुत माननेवाला। ४ श्रद्धालु। श्रद्धा रखनेवाला।

उपासना—संज्ञा स्त्री० [सं० उपासन] १ पास बैठने की क्रिया। २ आराधना। पूजा। टहल। परिचर्या। सेवा।

(पु)क्रि० स० उपासना, पूजा या सेवा करना। भजना। जपना।

क्रि० अ० [सं० उपवास] १ उपवास करना। भूखा रहना। २ निराहार व्रत रहना।

उपासनीय—वि० [सं०] सेवा करने योग्य। आराधनीय। पूजनीय।

उपासी—वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी] १ उपासना करनेवाला। सेवक। भक्त। २ अनुरक्त।

उपास्य—वि० [सं०] पूजा के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य। पूज्य।

उपेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र के छोटे भाई, विष्णु (वामन अवतार के रूप में)।

उपेंद्रवज्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ वर्णों का आदि ह्रस्ववाला वह छंद जिसमें शेष १० वर्ण इंद्रवज्रा के समान होते हैं अर्थात् क्रम से जगण, तगण, जगण और अंत में दो गुरुवर्ण रहते हैं, जैसे—जहाँ न कोई गति सूर्य की है। वहाँ प्रभा दिव्य विराजती है।

उपेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य] १ विरक्ति। उदासीन होना। किनाराकशी। २ घृणा। तिरस्कार। उपेक्षा। अवहेलना। ३ त्याग।

उपेक्षणीय—वि० दे० "उपेक्ष्य"।

उपेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २ घृणा। तिरस्कार। अवहेलना। ३ परित्याग।

उपेक्षित—वि० [सं०] १ जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत। २ परित्यक्त।

उपेक्ष्य—वि० [सं०] उपेक्षा के योग्य। छोड़ने लायक। त्याज्य।

उपेत—वि० [सं०] १ बीता हुआ। गत। २ मिला हुआ। प्राप्त। ३ संयुक्त। सम्मिलित।

उपैना(पु)—वि० [सं० अ+उपानह्] [स्त्री० उपैनी] खुला हुआ। नंगा।

क्रि० अ० [?] लुप्त हो जाना। उड़ना।

उपोद्घात—संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्घाटन। २ प्रारंभिक परिचय। पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भूमिका। ३ विशेष वस्तु के विषय में सामान्य कथन से भिन्न कथन (न्याय)।

उपोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य] उपवास। निराहार व्रत।

उपोसथ—संज्ञा पुं० [सं० उपवसथ, प्रा० उपोसथ] निराहार व्रत। उपवास (जैन, बौद्ध)।

उफ—अव्य० [अ०] कष्ट, पीड़ा, विषाद, चिंता और अफ़सोस आदि प्रकट करनेवाला शब्द, जैसे—आह, ओह आदि।

उफड़ना(पु)—क्रि० अ० दे० "उफनना"।

उफनना, उफनाना—क्रि० अ० [सं० उत् +फेन] १ उबलकर फेन के रूप में ऊपर उठना। जोश खाना। खौलने से भाग बनकर बर्तन के बाहर उछलना (दूध, दाल, रस आदि कुछ तरल पदार्थों का)। २ उमड़ना। उतराना।

उफान—संज्ञा पुं० [उत्+फेन] गरमी पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उबाल।

उफाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० फाल] लंबा डग। छलांग।

उबकना—क्रि० अ० [सं० उद्+वुक ?] कै करना। वमन करना। उलटी।

उबकाई(पु)—[हिं० √उबक+आई(प्रत्य०) ओकाई] मतली। कै। वमी। मिचली।

उबट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उद्वाट] अटपट या बुरा रास्ता। विकट मार्ग

वि० ऊबड़ खाबड़। ऊँचा नीचा।

उबटन—संज्ञा पुं० [सं० उद्वर्त्तन] शरीर पर मलने के लिये पिसी हुई सरसों, तिल, आटा, चिरौंजी आदि का लेप। अभ्यंग।

उबटना—क्रि० स० [सं० उद्वर्तन] उबटन लगाना। मलना।

उबना(पु)—क्रि० अ० १ दे० "उगना"। २ दे० "ऊबना"।

उबरना—क्रि० अ० [सं० उद्धारण] १. उद्धार पाना। निस्तार पाना। मुक्त होना। छूटना। २ शेष रहना। बाकी बचना।

उबलना—क्रि० अ० [सं० उद्वेलन या उद्—√वा] १ आँच या गरमी पाकर तरल पदार्थों का बरतन में आंदोलित होना। खौलना। उफनना। २ उमड़ना। वेग से

निकलना। ३ जोश या आवेश से भर जाना। ४ ईर्ष्या या द्वेष से भर जाना।

मुहा०—उबल पड़ना=(१) जोश, द्वेष या आवेश के कारण मन में छिपे भाव प्रकट कर देना। (२) आवेश में उचित अनुचित का विचार किए बिना बोलना।

उबहना(पु)—क्रि० स० [स० उद्वहन, पा० उव्वहन=ऊपर उठना] १ हथियार खींचना। हथियार म्यान से निकालना। शस्त्र उठाना। २ पानी फेंकना। उलीचना। ३ जोतना।

क्रि० अ० [सं० उद्वहन] ऊपर की ओर उठना। उभरना।

वि० [सं० उद्वासन] बिना जूते का। नंगा।

उबाँत(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वान] वमन। कै। उलटी।

उबार—संज्ञा पुं० [स० उद्वारण] १. निस्तार। छुटकारा। उद्धार। २ बचत। बचाव। ३. ओहार।

उबारना—क्रि० स० [सं० उद्वारण] उद्धार करना। छुड़ाना। मुक्त करना। बचाना। बचत करना।

उबाल—संज्ञा पुं० [सं० उद्वेलन या उद्वान] १ द्रव पदार्थों का आँच पाकर बर्तन के ऊपर उठना। उफान। २ जोश। उद्वेग। क्षोभ।

मुहा०—मन का उबाल निकालना=भावों को प्रकट कर चित्त हलका करना।

उबालना—क्रि० स० [सं० उद्वालन] १ तरल पदार्थ को आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह बर्तन के ऊपर उठ आवे। खौलाना। २. चुराना। पकाना। जोश देना। उसिनना। राँधना।

उबासी—संज्ञा स्त्री० [सं० उत्+श्वास ?] जँभाई।

उबाहना(पु)—क्रि० स० दे० "उबहना"।

उबीठना—क्रि० स० [सं० अव+इष्ट] जी भर जाने पर अच्छा न लगना। तृप्तिजनित विरक्ति होना। ऊबना। मन का हट जाना। उबटना।

क्रि० अ० ऊबना।

उबीध—वि० [सं० उद्विद्ध] [स्त्री० उबीधी] १ धँसा हुआ। गड़ा हुआ २ काँटों से भरा या छिदा हुआ। झाड़-झखाड़वाला।

उबीधना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्विद्ध] १ फँसना। उलझना। २ धँसना। गड़ना।

उबेन(पु)†—वि० [हिं० उपैना] नंगे पैर। बिना जूते का।

उबेरना(पु)—क्रि० स० दे० "उबारना"।

उबेहना—क्रि० स० [स० उद्वेधन] १ जड़ना। बैठाना। २ पिरोना। ३ कील, काँटे गाड़ना।

उभटना†—क्रि० अ० [हिं० उभरना] १ अहंकार करना। शेखी करना। २ दे० "उभड़ना"।

उभड़ना—क्रि० अ० [सं० उद्भेदन] १ किसी तल या सतह में से कुछ ऊँचा होना। उकसना। फूलना। ऊपर उठना। २ ऊपर निकलना। उठना, जैसे, अंकुर उभड़ना। ३ उत्पन्न होना। पैदा होना। ४ खुलना। प्रकाशित होना। ५ बढ़ना। अधिक या प्रबल होना। ६ हट जाना। ७. जवानी पर आना। ८ विरोध में सिर उठाना। विरोध करना। ९ पशुओं का कामोत्तेजित होना।

उभना(पु)—क्रि० अ० [स० उद्√भू] १ उठना। २ उभड़ना।

उभय—वि० [सं०] दोनों, उ०—उभय भाँति विधि त्रास घनेरी। —मानस।

सर्व०—दोनों के, उ०—उभय बीच सिय सोहत कैसी। —मानस।

उभयत—क्रि० वि० [स०] १ दोनों ओर से। दोनों तरफ। २ दोनों प्रकार से। ३ दोनों स्थितियों में। दोनों दशाओं में।

उभयतोमुख—वि० [स०] दोनों ओर मुँहवाला। दोरुखा। दोमुहाँ (मकान आदि)।

उभयत्र—क्रि० वि० [स०] १ दोनों ओर। दोनों तरफ। २ दोनों जगह। ३ दोनों पक्षों में। ४ इस लोक और परलोक दोनों में।

उभयनिष्ठ—वि० [सं०] १ जो दोनों में निष्ठा रखता हो। २ जो दोनों में सम्मिलित हो।

उभयविपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

उभरना(पु)—क्रि० अ० दे० "उभड़ना"।

उभरौंहा(पु)—वि० [हिं० √उभर+औंहा (प्रत्य०)] उभार पर आया हुआ। उभरा हुआ। उभड़ता हुआ।

उभाड़—संज्ञा पुं० [उद्भेद] १ उठान। ऊँचापन। ऊँचाई। २ ओज वृद्धि।

उभाड़दार—वि० [हिं० उभाड़+फा० दार] १ उठा या उभरा हुआ। २ भड़कीला।

उभाड़ना—क्रि० स० [हिं० उभाड़] १. ऊपर उठाना। ऊपर करना। धँसी वस्तु को ऊपर खींचना या ऊँचा करना। उकसाना २ उत्तेजित करना। बहकाना। भड़काना। ३ दबी बात खोलना।

उभाना(पु)—क्रि० अ० दे० "अभुआना"।

उभार—संज्ञा पुं० दे० "उभाड़"।

उभारना(पु)—क्रि० स० दे० "उभाड़ना"।

उभिटना(पु)—क्रि० अ० [देश०] ठिठकना। हिचकना। भिटकना।

उभै(पु)—वि० दे० "उभय"।

उमंग—संज्ञा स्त्री० [सं० उन्मग्न, प्रा० उम्मग्ग] १. किसी विषय के प्रति मन का आनंदवर्धक वेग या झुकाव। उत्साह। मौज। तरंग। २. आनंद। उल्लास। ३. आकांक्षा। ४. उभार। अधिकता।

उमँगना(पु)—क्रि० अ० दे० "उमगना"।

उमँड़ना—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

उमग(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।

उमगन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उमग"।

उमगना—क्रि० अ० [हिं० उमंग] १ उमड़ना। उमड़ना। भरकर ऊपर उठना। २ उमंग में होना। उल्लास में होना। हुलसना।

उमगाना—क्रि० स० [हिं० उमगना का प्रे० रूप] १ उमंग भरना। उभाड़ना। २ उल्लसित करना।

उमचना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्+√मच्] १. किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिये कूदना। हुमचना। २. चौकन्ना होना। सजग होना।

उमड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उमड़] १. बाढ़। बढ़ाव। भराव। २. घिराव। ३ धावा।

उमड़ना—क्रि० अ० [हिं० √उमड़] १. द्रव वस्तु के आधिक्य के कारण सतह से ऊपर उठना और फैल जाना। नदी आदि का भरकर बहना। उतराकर बह चलना। २ बढ़ जाना। फैलना, छाना या घेरना; जैसे—बादल का उमड़ना।

यौ०—उमड़ना घुमड़ना=घूम-घूमकर फैलना या छाना (बादल का)।

मुहा०—आँखों का उमड़ना=(१) आँखों का आँसुओं से भर आना। (२) आँखों से आँसुओं की अविरल धारा का बहना। मन का उमड़ना=हृदय का भावावेश से भर जाना। विपत्ति का समुद्र उमड़ना=दुःख का चारों ओर से घेरना।

३ आवेश में भरना। जोश में आना।

उमड़ाना—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमदना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्√मद्] १. उमंग में भरना। मस्त होना। कामोद्वेग से पूर्ण होना। मत्त होना। २ उमगना। उमड़ना। आवेश या जोश से भर जाना।
उमदा—वि० दे० "उम्दा"।
उमदाना(पु)—क्रि० अ० [सं० उद्√मद्] १ मतवाला होना। मद में भरना। मस्त होना। २ उमंग या आवेश में आना।
उमर—संज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १ जीवन का व्यतीत काल। आयु। अवस्था। वय। २ जीवन का कुल समय। जीवनकाल। मुसलमानों के दूसरे खलीफा मोहम्मद उमर।
उमरती—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का बाजा।
उमराव(पु)—संज्ञा पुं० [अ० उमरा (अमीर का बहु०)] १ प्रतिष्ठित लोग। सरदार। २ मुसलमानी दरबार में बादशाह द्वारा प्रतिष्ठित लोग। जागीरदार।
उमस—संज्ञा स्त्री० [सं० ऊष्मन्] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है। निर्वात ताप।
उमसना(पु)—क्रि० अ० [हिं० उमस] उमस होना।
उमहना(पु)—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमहाना(पु)—क्रि० स० दे० "उमाहना"।
उमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव की स्त्री, पार्वती। २ दुर्गा। ३ हलदी। ४ अलसी। ५ कीर्ति। ६ कांति। ७ २२ अक्षरों का वह छंद जिसमें एक के बाद दूसरे के क्रम से ७ भगण और अंत में एक गुरु वर्ण होता है। (इसे मालिनी सवैया, दिवा या मदिरा-वृत्त भी कहते हैं जिसके उपभेदों में सुमुखी, मत्तगयंद, उन्माद, चकोर, दुर्मिल, वाम, किरीट, सुंदरी, अरविंद, सुख आदि अनेक हैं), जैसे—काम न आइ सकै जग के पर-वचक लंपट लोभ भरे।
उमाकना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्√मृश् ?] १ खोदकर फेंक देना। नष्ट करना। २ गड़ी वस्तु को हिलाकर ढीली करना। जड़ से हिला देना।
उमाकिनी(पु)†—वि० स्त्री० [हिं० उमाकना] उखाड़नेवाली। खोदकर फेंक देनेवाली।
उमाचना(पु)†—क्रि० स० [सं० उन्+√मञ्च] १ उभाड़ना। ऊपर उठाना। २ निकालना। ३ किसी वस्तु पर चढ़कर उसी को हिलाना। झकझोरना।
उमाद(पु)—संज्ञा पु० दे० "उन्माद"।
उमाधव—संज्ञा पु० [सं०] उमा के पति, महादेव।
उमापति—संज्ञा पु० [सं०] शिव।
उमाह—संज्ञा पु० [हिं०√उमह] उत्साह। उमंग। जोश। चित्त का उद्गार।
उमाहना—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
क्रि० स० जोश देना। उमगाना।
उमाहल(पु)—वि० [हिं० उमाह] उमंग से भरा हुआ। उत्साहित।
उमेठन—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठन। मरोड़। पेंच। बल।
उमेठना—क्रि० स० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठना। मरोड़ना।
उमेठवाँ—वि० [हिं० उमेठना] ऐंठदार। ऐंठनदार। घुमावदार।
उमेड़ना(पु)—क्रि० स० दे० "उमेठना"।
उमेलना(पु)—क्रि० स० [सं० उन्मीलन] १ खोलना। प्रकट करना। २ वर्णन करना।
उमैना(पु)—क्रि० अ० [हिं० उमहना] मन-माना आचरण करना।
उम्दगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अच्छाई। भलाई। खूबी। उम्दापन। विशिष्टता। गुण।
उम्दा—वि० [अ०] अच्छा। भला। विशिष्ट।
उम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २ जमाअत। समिति। समाज। ३ औलाद। संतान (परिहास)। ४. पैरोकार। अनुयायी। समर्थक।
उम्मीद, उम्मेद—संज्ञा स्त्री० [फा०] आशा। भरोसा। आसरा।
उम्मेदवार—संज्ञा पुं० [फा०] १ आशा या आसरा रखनेवाला। इच्छुक। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना तनखाह काम करनेवाला आदमी। ३ नौकरी या किसी पद का अभिलाषी। प्रार्थी। अभ्यर्थी। ४ किसी पद पर चुने जाने के लिये खड़ा होनेवाला आदमी।
उम्मेदवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आशा। आसरा। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना तनखाह काम करना।
उम्र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अवस्था। वयस। २ जीवनकाल। आयु।
उरंग, उरंगा—संज्ञा पु० दे० "उरग"।
उर—संज्ञा पुं० [सं० उरस्] १ वक्षस्थल। छाती। २ हृदय। मन। चित्त।
उरई†—संज्ञा स्त्री० [सं० उशीर] उशीर। खस।
उरकना(पु)—क्रि० अ० दे० "रुकना"।
उरग—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। २ पेट के बल चलनेवाले जंतु।
उरगना(पु)—क्रि० स० [सं० उरीकरण] १ स्वीकार करना।
उरगारि—संज्ञा पुं०[सं०]सर्पों के शत्रु। गरुड़।
उरगिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी।
उरज, उरजात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उरोज"।
उरझना(पु)—क्रि० अ० दे० "उलझना"।
उरझेर(पु)—संज्ञा पुं० [?] हवा का झकोरा या झोंका।
उरझेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उलझेड़ा"।
उरण—संज्ञा पुं० [सं०] भेड़ा। मेढ़ा।
उरद—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० ऋद्ध] [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है। ये दाने मूँग से मिलते जुलते किंतु उनसे कुछ बड़े, हरे और काले रंग के होते हैं। इसकी पीठी से बड़े, पापड़ आदि बनाए जाते हैं। माष। उड़द।
उरध(पु)—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।
उरधारना—क्रि० स० दे० "उधेड़ना"।
उरवसी—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी"।
उरविजा—संज्ञा स्त्री० [सं० उर्विजा] पृथ्वी की पुत्री, सीता।
उरवी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।
उरमंडन—संज्ञा पुं० [सं० उर+मंडन] हृदय का भूषण। प्रिय।
उरमना(पु)†—क्रि० अ० [सं० अवलंबन, प्रा० ओलंबण] १. लटकना। २. सहारा लेना।
उरमाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० उरमना का स० रूप] लटकाना। झुकाना।
उरमी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ऊर्मि] १ लहर। २ दुःख। पीड़ा। कष्ट।
उररना—क्रि० अ० [सं० उररी ?] बलपूर्वक अंदर घुसना।
उरला—वि० [सं० अवर+हिं० ला (प्रत्य०)] पिछला। पीछे का। इस तरफ का। इधर का।

वि० [हिं० विरल] विरला। निगला।

उरविज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उर्वी+ज= उत्पन्न] भौम। भूमि से उत्पन्न। मंगल ग्रह।

उरस—वि० [सं० अव+रस] फीका। नीरस।

संज्ञा पुं० [सं० उरस्] १ छाती। वक्षस्थल। २. हृदय। चित्त।

उरसना—क्रि० अ० [हिं० उड़सना] ऊपर नीचे करना। उथलपुथल करना। क्रमभंग करना।

उरसिज—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन।

उरहना(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।

उरा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उर्वी] पृथिवी।

उराय—संज्ञा पुं० दे० "उराव"।

उरार(पु)—वि० [सं० उरु] विस्तृत। विशाल।

उराव—संज्ञा पुं० [हिं० उर+आव (प्रत्य०)] चाव। चाह। उमंग। उत्साह। हौसला।

उराहना—संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।

उरिण, उरिन—वि० दे० "उऋण"।

उरु—वि० [सं०] १. लंबा चौड़ा। २. बड़ा।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० ऊरु] जंघा। जाँघ।

उरुझना(पु)—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

उरुवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उलूक, प्रा० उलूअ] उल्लू जाति की एक चिड़िया। रुरुआ।

उरूज(पु)—संज्ञा पुं० [अ०] बढ़ती। वृद्धि। उत्कर्ष।

उरे(पु)—क्रि० वि० [सं० अवार] १. इधर। इस तरफ। यहाँ। २. पास। नजदीक। समीप।

उरेखना(पु)—क्रि० स० [सं० आलेखन, उल्लेख] १ दे० "अवरेखना"। २ दे० "उरेहना"।

उरेह—सं० पुं० [सं० उल्लेख] १. चित्रकारी। २ खुदी हुई लिखावट। ३. खराद। ४ गढ़ाई। ५. रेखांकित करना।

उरेहना—क्रि० स० [सं० उल्लेखन] खींचना। लिखना। रचना।

उरोज—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। कुच।

उर्द—संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "उरद"।

उर्दपर्णी—संज्ञा स्त्री० [हिं० उर्द+सं० पर्णी] माषपर्णी। बनउरदी।

उर्दू—संज्ञा स्त्री० [तु०] १ सत्रहवीं सदी में मुगल दरबार में विकसित, फारसी लिपि में लिखी जानेवाली, हिंदी भाषा की वह विशिष्ट शैली या रीति जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग होता है। २ हिंदुस्तानी।

उर्दू-बाजार—संज्ञा पुं० [तु० उर्दू+ बाजार] १ लशकर या छावनी का बाजार। २ वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें। ३. शाहजहाँ बादशाह द्वारा प्रतिष्ठित आगरे के लालकिले के नीचे लगनेवाला वह बाजार जिसके तीन तरफ छावनी और फौजी अफसरों के आवास थे।

उर्ध(पु)—वि० [सं० ऊर्ध्व] १. ऊर्ध्व। ऊपर। २ बाद।

उर्फ—संज्ञा पुं० [अ०] चलतू नाम। पुकारने का नाम। उपनाम।

उर्मि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।

उर्मिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथिला के राजा जनक के छोटे भाई की कन्या और सीता जी की छोटी चचेरी बहिन जो लक्ष्मण जी से ब्याही थीं।

उर्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपजाऊ भूमि। २ पृथ्वी। भूमि।

वि० स्त्री० उपजाऊ। जरखेज (जमीन)।

उर्वशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।

उर्विजा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वीजा"।

उर्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

उर्वीजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी से उत्पन्न। सीता।

उर्वीधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शेषनाग। २ पर्वत। पहाड़।

उर्स—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. किसी मुसलमान साधु की निर्वाणतिथि। ३. मुसलमानों की और्ध्वदैहिक क्रिया।

उलग(पु)—वि० [सं० उन्नग्न] नंगा।

उलंघन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन"।

उलंघना, उलँघना(पु)—क्रि० स० [सं० उल्लंघन] १ नाँघना। डाकना। लाँघना। कूदकर पार करना। उल्लंघन करना। २ न मानना। अवज्ञा करना। अवहेलना करना। काटना।

उलका(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "उल्का"।

उलचना—क्रि० स० दे० "उलीचना"।

उलछना(पु)—क्रि० स० [हिं० उलचना] १ हाथ से छितराना। बिखराना। २ "उलीचना।"

उलछारना(पु)—क्रि० स० दे० "उछालना"।

उलझन—संज्ञा स्त्री० [सं० अवरुंधन] १ अटकाव। फँसान। गिरह। गाँठ। फेर। लपेट। घुमाव। २ बाधा। ३ पेंच। चक्कर। समस्या। पसोपेश। ४ व्यग्रता। चिंता। परेशानी।

उलझना—क्रि० अ० [हिं० उलझन] १ फँसना। अटकना, जैसे—काँटे में उलझना। 'सुलझना' का उलटा। २ लपेट में पड़ना। बहुत से घुमावों के कारण फँस जाना। ३ लिपटना। ४ काम में लिप्त या लीन होना। ५. तकरार करना। लड़ना झगड़ना। ६ कठिनाई में पड़ना। अड़चन में पड़ना। ७ अटकना। रुकना। ८. बल खाना। टेढ़ा होना।

उलझा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उलझन"।

उलझाना(पु)—क्रि० स० [हिं० उलझना का स० रूप] १ फँसाना। अटकाना। २. लगाए रखना। लिप्त रखना। ३ टेढ़ा करना। घुमाना। मोड़ना।

(पु)क्रि० अ० उलझना। फँसना।

उलझाव—संज्ञा पुं० [हिं० √उलझ+आव (प्रत्य०)] १. अटकाव। फँसान। २ घुमाव। लपेट। ३ झगड़ा। बखेड़ा। ४ चक्कर। फेर।

उलझौंहाँ—वि० [हिं० √उलझ+औंहाँ (प्रत्य०)] १. अटकाने या फँसानेवाला। २ लुभानेवाला।

उलटना—क्रि० अ० [सं० उल्लुठन या उत्तल] १ ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। औंधा होना। पलटना। २. पीछे मुड़ना। लौटना। घूमना। ३. उमड़ना। टूट पड़ना। ४. अंटबंट होना। अस्तव्यस्त होना। ५. विपरीत होना। विरुद्ध होना। ६. क्रुद्ध होना। चिढ़ना। ७ बरबाद होना। नष्ट होना। ८ बेहोश होना। बेसुध होना। ९. गिरना। १०. घमंड करना। इतराना। ११. चौपायों का एक बार जोड़ा खाकर गर्भधारण न करना और फिर जोड़ा खाना। १२. कही हुई बात से इनकार करना। अपनी बात से पीछे हटना। १३. बदलना।

क्रि० स० १. नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना। औंधा गिराना ३ पटकना। गिरा देना। ४. लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना। ५ अंडबंड करना। अस्तव्यस्त करना। ६ विपरीत करना। और का और करना। ७ उत्तर-प्रत्युत्तर करना। बात दोहराना। ८ खोदकर फेंकना। उखाड़ डालना। ९ बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिये खेत

जोतना। एक बार जोते और बोए हुए खेत को फिर जोतना और बोना। १० बेसुध करना। वेहोश करना। ११ कै करना। वमन करना। १२ उँडेलना। अच्छी तरह ढालना। १३ बरबाद करना। नष्ट करना। १४ रटना। जपना। बार बार कहना।

मुहा०—आँख उलटना=क्रोध करना। आँख का उलट जाना=लोभ, ऐश्वर्य या उत्कर्ष के कारण दूसरों को तुच्छ समझना। घमंड से भर जाना। उलट पड़ना=एकाएक आक्रमण कर बैठना। तख्ता उलटना=किसी के किए हुए काम को एकदम बदल देना। कायापलट करना। खेल उलटना=किसी का किया कराया चौपट करना। किसी छल को सफल न होने देना। भंडाफोड़ करना।

उलटपलट (पुलट)—संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटापलटा] १ अदलबदल। अव्यवस्था। गड़बड़ी। २ परिवर्तन।

उलटफेर—संज्ञा पुं० [हिं० √उलट+फेर] १ परिवर्तन। अदलबदल। हेरफेर। रद्दोबदल। २ जीवन की भलीबुरी दशा। बदलनेवाली सुखदुःख की अवस्था।

उलटबाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उलट+बैं० बाशी=बोली] सीधी न कही जाकर घुमा-फिराकर या उलटकर कही हुई बात, जैसे—फील रबाबी बलदु पखावज कौआ ताल बजावै। पहरि चोलना गदहा नाचै भैंसा भगति करावै॥ कहत कबीर सुनहु रे पंडित कीटी परवत खाया। कछुवा कहै अँगार झिलौरी लूकी सबद सनाया॥—कबीर०।

उलटा—वि० [हिं० √उलट] [स्त्री० उलटी] १. जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो। औंधा।

मुहा०—उलटी साँस चलना=साँस का जल्दी जल्दी बाहर निकलना। दम उखड़ना (मरने का लक्षण)। उलटी साँस लेना=जल्दी जल्दी साँस खींचना। मरने के निकट होना। उलटे मुँह गिरना=दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।

२. जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो। इधर का उधर। क्रमविरुद्ध।

मुहा०—उलटा फिरना या लौटना=तुरंत लौट पड़ना। बिना क्षण भर ठहरे पलटना। उलटा हाथ=बायाँ हाथ। उलटी गंगा बहना=अनहोनी बात होना। उलटी माला फेरना=बुरा मनाना। अहित चाहना। उलटे छुरे से मूड़ना=मूर्ख बनाकर या धोखा देकर पैसा ऐंठना। फँसना। उलटे पाँव फिरना=तुरत लौट पड़ना।

३ कालक्रम में जो आगे का पीछे और पीछे का आगे हो। जो समय से आगे पीछे हो। ४ विरुद्ध। विपरीत ५ उचित के विरुद्ध। अंडबंड। अयुक्त।

मुहा०—उलटा जमाना=वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय। अँधेर का समय। उलटा सीधा=बिना क्रम का। अंडबंड। अव्यवस्थित। उलटी खोपड़ी का=जड़। मूर्ख। उलटी सीधी सुनाना=खरीखोटी सुनाना। भलाबुरा कहना। फटकारना। उलटी सीधी हाँकना या झोंकना=लंबी चौड़ी बातें करना। बे सिर-पैर की बातें करना।

क्रि० वि० १ विरुद्ध क्रम से। उलटे तौर से। बेठिकाने। अंडबंड। २ जैसा होना चाहिए उसके विपरीत।

संज्ञा पुं० बेसन चौरेठा आदि से बननेवाला एक पकवान।

उलटानाⓅ—क्रि० सं० [हिं० उलटना का स० रूप] १ पलटना। लौटाना। पीछे फेरना। २ और का और करना या कहना। अन्यथा करना या कहना। ३ फेरना। दूसरे पक्ष में करना। ४. उलटा करना।

उलटापलटा (पुलटा)—वि० [हिं० उलटा+पलटा] इधर का उधर। अंडबंड। बे-सिर-पैर का। बेतरतीब।

उलटापलटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटा+√पलट+ई (प्रत्य०)] फेरफार। हेरफेर। अदल-बदल।

उलटाव—संज्ञा पुं० [हिं० √उलट+आव (प्रत्य०)] १. पलटाव। फेर। २ घुमाव। चक्कर।

उलटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √उलट+ई (प्रत्य०)] १ वमन। कै। २ कलैया। कलाबाजी।

उलटी सरसों—संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटी+सरसों] वह सरसों जिसकी कलियों का मुँह नीचे होता है। यह जादू टोने के काम में आती है। टेरी।

उलटे—क्रि० वि० [हिं० उलटा] १. विरुद्ध क्रम से। बेठिकाने। २ विपरीत व्यवस्थानुसार। विरुद्ध न्याय से।

उलथनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उत्+स्थल] ऊपर नीचे होना। उथल पुथल होना। उलटना।

क्रि० स० ऊपर नीचे करना। उलटना पुलटना।

उलथा—संज्ञा पुं० [सं० उत्+स्थल] १. अनुवाद। भाषांतर। २. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना। ३ कलाबाजी। कलैया। ४. कलाबाजी के साथ पानी में कूदना। उलटा। ५ करवट बदलना (चौपायों के लिये)।

उलदⓅ—संज्ञा स्त्री० [प्रा० उल्लुड=झरना, टपकना] वर्षा की झड़ी। वर्षण।

उलदनाⓅ—क्रि० स० [हिं० उलटना] उड़ेलना। उलटना। ढालना।

क्रि० अ० खूब बरसना।

उलफत—संज्ञा स्त्री० [अ० उल्फत] प्रेम। आशनाई।

उलमना†Ⓟ—क्रि० अ० [सं० अवलम्बन] लटकना। झुकना।

उलरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उद्√लल्] १ उछलना। २ नीचे ऊपर होना। ३ झपटना।

उललनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उद्√लल्] १. ढरकना। ढलना। बहना। इधर उधर होना। बिखरना। तितर बितर होना।

उलसनाⓅ—क्रि० अ० [सं० उल्लसन] शोभित होना। सोहना। सजना। फबना।

उलहना—क्रि० अ० [सं० उद्√लस्] १ उमड़ना। निकलना। प्रस्फुटित होना। २. उमड़ना। हुलसना। फूलना।

संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।

उलाँघना†Ⓟ—क्रि० अ० [सं० उल्लंघन] १ लाँघना। डाँकना। फाँदना। २ अवज्ञा करना। न मानना। काटना। ३ पहले पहल घोड़े पर चढ़ना (चाबुक सवार)।

उलाटना†—क्रि० अ० दे० "उलटना"।

उलार—वि० [हिं० √उलर] जो पीछे की ओर झुका हो। जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो। पीछे के बोझ से जिसके आगे का हिस्सा उठा हो (गाड़ी)।

उलारना†—क्रि० स० [हिं० उलरना का स० रूप] उछालना। नीचे ऊपर फेंकना। लेटाना।

क्रि० अ० लेटना।

क्रि० स० दे० "ओलारना"।

उलाहना—संज्ञा पुं० [सं० उपालंभन] १ भूल वा अपराध को दुःखपूर्वक जताना।

गिला। २ किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत। ३. किसी के दुर्गुण या अपराध को उसके पक्षपाती, समर्थक या सिफारिश करनेवाले से कहना।

उलाहू—संज्ञा पुं० [सं० उल्लास?] उत्साह। उमंग।

उलीचना—क्रि० स० [सं० उदंचन ?] हाथ या बरतन से पानी उछालकर फेंकना। उलचना। एक स्थान में जमा हुआ पानी दूसरे स्थान में फेंकना।

उलू—संज्ञा पुं० दे० "उलूक"।

उलूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ उल्लू चिड़िया। २. इंद्र। ३ दुर्योधन का एक दूत। ४ कणाद मुनि का एक नाम।

यौ०—उलूकदर्शन = महर्षि कणाद का वैशेषिक-दर्शन।

संज्ञा पुं० [सं० उल्का] लुक। लौ।

उलूखल—संज्ञा पुं० [सं०] १ ओखली। २ खल। खरल। ३ गुग्गुल।

उलेड़नाⓅ—क्रि० स० [हिं० उँड़ेलना] ढरकाना। उँड़ेलना। ढालना।

उलेलⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्√लल् ?] १ उमंग। जोश। २ उछलकूद।

वि० बेपरवाह। अल्हड़।

उल्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लुक। लुआठा। २ ज्वालाहीन पदार्थ। ठंढा या बुझा हुआ अग्निपिंड। ३. अपने मूल ग्रहों या नक्षत्रों से टूटकर आकाश में अलग घूमते रहनेवाले वे छोटे छोटे ज्वालाहीन असंख्य टुकड़े जो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से खिंचकर भूमि पर वेग से गिरते समय वायुमंडल की रगड़ से जलकर चमक उठते हैं और रात में अक्सर दिखाई देते हैं। टूटता तारा। टूटता सितारा। ४ मशाल। दस्ती। ५ दीया। ६ ज्योतिष में ग्रहों की आठ दशाओं में से एक।

उल्कापात—संज्ञा पुं० [सं०] १ तारा टूटना। लुक गिरना। २ उत्पात। विघ्न।

उल्कापाती—वि० [सं० उल्कापातिन्] [स्त्री० उल्कापातिनी] दंगा मचानेवाला। उत्पाती।

उल्कामुख—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री० उल्कामुखी] १ गीदड़। २ एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। अगियावैताल। ३ महादेव का एक नाम।

उल्था—संज्ञा पुं० [हिं० उलथा] एक भाषा से दूसरी में करना। भाषांतर। अनुवाद। तरजुमा।

उल्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंगारा। २ लुकाठी। लूका। लुक। लुआठी।

उल्लंघन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाँघना। डाँकना। २ अतिक्रमण। ३. न मानना। पालन न करना।

उल्लंघनाⓅ—क्रि० स० दे० 'उलंघना"।

उल्लसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उल्लसित, उल्लासी] १ हर्ष करना। खुशी मनाना। २ रोमांच।

उल्लसित—वि० [सं०] [स्त्री० उल्लसिता] प्रसन्न। खुश।

उल्लाप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपरूपक के अठारह भेदों में से एक। २ सात प्रकार के गीतों में से एक।

उल्लाल—संज्ञा पुं० [सं० उद्√लल्] एक मात्रिक अर्द्धसम छंद जिसके विषम चरणों में १५ और सम में १३ मात्राएँ होती हैं, जैसे—कहं कवित कहा बिन रुचिर मति। मति सुकहा बिनही बिरति॥ कह बिरति उलाल गुपाल के। चरन न होइ जु प्रीति अति॥

उल्लाला—संज्ञा पुं० [सं०√ उल्लल्] १३ मात्राओं का एक छंद, जिसे चंद्रमणि भी कहते हैं, जैसे—काव्य कथा रुचि शास्त्रगति। पुनि चाहिय हरिचरन रति।

उल्लास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उल्लासक, उल्लसित] १ हर्ष। आनंद। २ ग्रंथ का एक भाग। पर्व। ३ प्रकाश। चमक। झलक। ४ एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है।

उल्लासक—वि० [सं०] [स्त्री० उल्लासिका] आनंद करनेवाला। आनंदी।

उल्लासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हर्षित होना। प्रकट करना। प्रकाशित करना।

उल्लासना—क्रि० स० [सं० उल्लासन] १. प्रसन्न करना। २. प्रकट करना।

उल्लासी—वि० [सं० उल्लासिन्] [स्त्री० उल्लासिनी] आनंदी। सुखी।

उल्लिखित—वि० [सं०] १ लिखा हुआ। लिखित। २ खोदा हुआ। उत्कीर्ण। ३ छीला हुआ। खरादा हुआ। ४ ऊपर लिखा हुआ। ५ खींचा हुआ। चित्रित।

उल्लू—संज्ञा पुं० [सं० उलूक] दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। घुग्घू। कुचकुचवा।

मुहा०—कहीं उल्लू बोलना = उजाड़ होना। उल्लू सीधा करना = स्वार्थ सिद्ध करना। मतलब गाँठना। उल्लू बनाना = धोखा देना। ठगना। उल्लू बनना = बहस आदि में हारकर निरुत्तर होना।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

उल्लेख—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेख। २. वर्णन। चर्चा। जिक्र। ३ चित्र। ४. निर्देश। हवाला। ५ एक काव्यालंकार जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में दिखाई पड़ना वर्णन किया जाय।

उल्लेखन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेखन। चित्रण।

उल्लेखनीय—वि० [सं०] लिखने के योग्य। वर्णन के योग्य।

उल्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है। आँवल। आँवरी। २ गर्भाशय।

उवनाⓅ—क्रि० अ० दे० "उगना"।

उवनि—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्भव, प्रा० उब्भव] १ उदय। २ उठान। ३ उन्नति।

उशबा—संज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ जिसकी जड़ रक्तशोधक है।

उशीर—संज्ञा पुं० [सं०] गाँडर की जड़। खस।

उषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रभात। तड़का। २ सूर्योदय के पहले या सूर्यास्त के बाद का वह समय जब आकाश की लाली की झलक का प्रकाश रहता है। ३ अरुणोदय और संध्या की लालिमा या उस समय का प्रकाश। ४ नोनी मिट्टी। सज्जी। ५ गाय। ६ रात। ७ एक यगण और अंत्य गुरु कुल चार वर्णों का एक छंद। जैसे—उषा वीर। धरो धीर। रमानाथ। मिलैं साथ। ८ (वेदों में) स्वर्ग की कन्या और आदित्यों की बहन का सायं-प्रातःकालीन आकाश की लाली में अधिष्ठित रूप। ९ बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी।

उषाकाल—संज्ञा पुं० [सं०] भोर। प्रभात। तड़का।

उषापति—संज्ञा पुं० [सं०] अनिरुद्ध। सूर्य।

उष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट।

उष्ण—वि० [सं०] १ तप्त। गरम। २ फुरतीला। तेज।

संज्ञा पुं० १ ग्रीष्म ऋतु। २ प्याज। ३ एक नरक का नाम।

उष्णक—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रीष्म काल। २ ज्वर। बुखार। ३ सूर्य।

वि० १ गरम। तप्त। २ ज्वरयुक्त। ३ तेज। फुरतीला।

उष्ण कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच पड़ता है। भूमध्य रेखा से २३ $\frac{1}{2}$ अंश उत्तर और उतना ही दक्षिण का भूभाग।

उष्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गरमी। ताप।

उष्णत्व—संज्ञा पुं० [सं०] गरमी।

उष्णीष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पगड़ी। साफा। २ मुकुट। ताज।

उष्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ताप। २ धूप। ३ गरमी की ऋतु।

उष्मज—संज्ञा पुं० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं, जैसे, खटमल, जूँ, चीलर आदि।

उष्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरमी। २ धूप। ३ गुस्सा। क्रोध। रिस।

उस—सर्व०उभ० [?] विभक्तियों के साथ प्रयुक्त 'वह' शब्द का रूप, जैसे—उसने, उसको।

उसकन—संज्ञा पुं० [सं० उत्कर्षण] घास-पात या पयाल का वह पोटा या अंश जिससे बरतन माँजते हैं। उबसन।

उसकना†—क्रि० अ० दे० "उकसना"।

उसकाना†—क्रि० स० दे० "उकसाना"।

उसतति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।

उसनना—क्रि० स० [सं० उष्ण] १ उबालना। पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। २ पकाना।

उसनाना—क्रि० स० [हिं० उसनना का प्रे० रूप] उबलवाना। पकवाना।

उसनीस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उष्णीष"।

उसमा†—संज्ञा पुं० [अ० वसमा] उबटन।

उसरना(पु)—क्रि० अ० [सं० उत्सरण = जाना] १ हटना। टलना। दूर होना। स्थानांतरित होना। २ बीतना। गुजरना। छिन्न भिन्न होना। ३ भूलना। विस्मृत होना। बिसरना। ४ बनकर खड़ा होना।

उसलना(पु)—क्रि० अ० दे० "उसरना"।

उससना(पु)—क्रि० अ० [सं० उत्सरण] खिसकना। टलना। स्थानांतरित होना।

क्रि० स० [हिं० उसास] साँस लेना।

उसाँस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उसास"।

उसारना(पु)—क्रि० स० [सं० उत्सरण] १ उखाड़ना। उपाड़ना। २ हटाना। फैलाना। ३ बनाकर खड़ा करना।

उसारा†—संज्ञा पुं० दे० "ओसारा"।

उसालना(पु)—क्रि० स० [हिं० उसारना] १. उखाड़ना। २. टालना। ३. भगाना।

उसास—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्छ्वास] १. लंबी साँस। ऊपर को खींची हुई साँस। २ साँस। श्वास। ३ दुःख या शोकसूचक श्वास। ठंढी साँस।

उसासी†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० उसास] दम लेने की फुरसत। अवकाश। छुट्टी।

उसिनना†—क्रि० स० दे० "उसनना"।

उसीर—संज्ञा पुं० दे० "उशीर"।

उसीसा—संज्ञा पुं० [सं० उत+शीर्ष] १. सिरहाना। २ तकिया।

उसूल—संज्ञा पुं० [अ०] सिद्धांत।

उस्तरा—संज्ञा पुं० दे० "उस्तुरा"।

उस्ताद—संज्ञा पुं० [फा०] १ गुरु। शिक्षक। अध्यापक। २ मर्मज्ञ। किसी कला या हुनर में दक्ष। जानकार।

वि० १ चालाक। छली। धूर्त (व्यंग्य)। २ पंडित। माहिर। ३ होशियार। समझदार। ४ निपुण। प्रवीण। दक्ष।

उस्तादी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिक्षक की वृत्ति। गुरुआई। २. चतुराई। निपुणता ३ विज्ञता। ४ चालाकी। धूर्तता (व्यंग्य)।

उस्तानी—संज्ञा स्त्री० [फा० उस्ताद का स्त्रीलिंग] १ गुरुआनी। गुरुपत्नी। २ वह स्त्री जो शिक्षा दे। ३ चालाक स्त्री। ठगिन (व्यंग्य)।

उस्तुरा—संज्ञा पुं० [फा०] बाल बनाने का औजार। छुरा। अस्तुरा।

उस्वास—संज्ञा पुं० दे० "उसाँस"।

उहटना(पु)—क्रि० अ० दे० "हटना"।

उहदा†—संज्ञा पुं० दे० "ओहदा"।

उहवाँ†—क्रि० वि० दे० "वहाँ"।

उहाँ—क्रि० वि० दे० "वहाँ"।

उहार†—संज्ञा पुं० दे० "ओहार"।

उहै†—सर्व० दे० "वही"।

ऊ

ऊ—हिंदी वर्णमाला का छठा स्वर वर्ण जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

ऊँग—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।

ऊँगा—संज्ञा पुं० [सं० अपामार्ग ?] चिचड़ा। एक सब्जी।

ऊँघ—संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] उँघाई। निद्रागम। तंद्रा। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।

ऊँघन—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँघ]। झपकी।

ऊँघना—क्रि० अ० [हिं० ऊँघ] झपकी लेना। नींद में झूमना।

ऊँच(पु)—वि० दे० "ऊँचा"।

यौ०—ऊँच नीच=(१) छोटा बड़ा। भला भद्दा। (२) कुलीन और अकुलीन। छोटी जाति का और बड़ी जाति का। (३) हानि और लाभ। भला और बुरा।

ऊँचा—वि० [सं० उच्च] [स्त्री० ऊँची] १ जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो। उठा हुआ। उन्नत। बुलंद।

मुहा०—ऊँचा नीचा=(१) ऊबड़ खाबड़। जो समथल न हो। (२) भला बुरा। हानि लाभ। २ जिसका छोर बहुत नीचे तक न हो। जिसका लटकाव कम हो, जैसे, ऊँचा कुरता। ३ श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।

मुहा०—ऊँचा नीचा न सोचना=परिणाम का विचार न करना। बुरा भला न विचारना। ऊँचा नीचा या ऊँची-नीची सुनाना=खोटी खरी सुनाना। भला बुरा कहना।

४ जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।

मुहा०—ऊँचा सुनना=केवल जोर की आवाज सुनना। कम सुनना।

ऊँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँचा+ई (प्रत्य०)] १ ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। बुलंदी। २ गौरव। बड़ाई।

ऊँचे(पु)—क्रि० वि० [हिं० ऊँचा] १ ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २ जोर से (शब्द करना)।

मुहा०—ऊँचे नीचे पैर पड़ना=बुरे काम में फँसना। ऊँचे नीचे पैर रखना=कुमार्ग पर चलना। बुरा काम करना।

ऊँछ—सज्ञा पु० [देश०] एक राग।

ऊँछना—क्रि० अ० [स० उञ्छन=चुनना। दाने बिनना।] १ कघी करना। २. बाल झाड़ना।

ऊँट—सज्ञा पु० [स० उष्ट्र, पा० उट्ट] [स्त्री० ऊँटनी] ऊँचा, लवा, एक कूबड का (अरबी) या दो कूबडवाला (वैक्टीरिया का) चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम आता है।

ऊँटकटारा—सज्ञा पु० [स० उष्ट्रकट] एक कँटीली झाडी जो जमीन पर फैलती है। इसे ऊँट वड़े चाव से खाते हैं।

ऊटवान—संज्ञा पुं० [हिं० ऊँट+वान (प्रत्य०)] ऊँट चलानेवाला।

ऊँड़ा(पु)—सज्ञा पुं० [स० कुड] १ वह वरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ दें। २ चहवच्चा। तहखाना।

वि० गहरा। गभीर।

ऊँदर†—सज्ञा पुं० [स० उदुर] चूहा।

ऊँहूँ—अव्य० [अनु०] १ नकारात्मक शब्द। नहीं। कभी नहीं। हर्गिज नहीं (उत्तर में)।

ऊ—सज्ञा पु० [स०] १ महादेव। २ चद्रमा।

(पु)†अव्य० [स० उव] भी।

(पु)†सर्व० [?] वह।

ऊअना(पु)†—क्रि० अ० [स० उदयन] उगना। उदय होना।

ऊआबाई—वि० [?] अडवड। निरर्थक। व्यर्थ।

ऊक(पु)—सज्ञा पुं० [सं० उल्का] १ उल्का। टूटता हुआ तारा। २ लुक। लुआठा। ३ दाह। जलन। ताप। तपन।

सज्ञा स्त्री० [हिं० चूक का अनु०] भूल। चूक। गलती।

ऊकना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० चूकना का अनु०] १ चूकना। खाली जाना। लक्ष्य पर न पहुँचना। २ भूल करना। गलती करना।

क्रि० स० १. भूल जाना। २ छोड़ देना। उपेक्षा करना।

क्रि० स० [हिं० उक] जलाना। दाहना। भस्म करना।

ऊख—सज्ञा पु० [स० इक्षु] ईख। गन्ना। उ०–सन सूक्यौ, बीत्यो बनौ, ऊखौ लई उखारि। हरी हरी अरहरि अजौ, धरि धरहरि जिय नारि॥ —विहारी०।

(पु)सज्ञा पुं० [सं० ऊष्म] गरमी ऊमस।

वि० तपा हुआ। गरमी से व्याकुल।

ऊखल—सज्ञा पु० [स० उलूखल] काठ या पत्थर का गहरा बरतन जिसमें धान आदि भूसी अलग करने के लिये मूसल से कूटते हैं। ओखली। कोंड़ी। हावन। कूँडी।

ऊगना—क्रि० अ० दे० "उगना"।

ऊज(पु)—सज्ञा पुं० [सं० उद्√रुज्] उपद्रव। ऊधम। अधेर।

ऊजड—वि० दे० "उजाड"।

ऊजर(पु)—वि० दे० "उजला"।

वि० [हिं० उजडना] उजाड।

ऊजरा(पु)—वि० दे० "उजला"।

ऊटक नाटक—सज्ञा पुं० [सं० उत्कट+नाटक] १ व्यर्थ का काम। फजूल इधर उधर करना। २ इधर उधर का काम।

ऊटना(पु)—क्रि० अ० [हिं० औटना] १ उत्साहित होना। हौसला करना। उमंग में आना। २ तर्क वितर्क करना। सोच विचार करना।

ऊटपटाँग—वि० [हिं० अटपट ?+अग ?] १ अटपट। टेढ़ामेढा। बेढगा। २ असवद्ध। बेजोड़। बेमेल। ३ निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।

ऊठ—सज्ञा स्त्री० [स० उद्√स्था] उमग। उत्साह। उठान।

ऊढ़ना(पु)—क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।

ऊड़ा—सज्ञा पुं० [स० ऊन, प्रा० ऊण] १ कमी। टोटा। घाटा। २ गिरानी। महँगाई। महार्घता। ३ अकाल। ४ नाश। लोप।

ऊड़ी—सज्ञा स्त्री० [स०√वुट्=छिपाना, ढकना, वुडवुड=किसी वस्तु के पानी में डूबने की ध्वनि, प्रा०√वुड्ड=डूबना, मि० हिं० बूड़ना] गोता। डुबकी।

ऊढ़—वि० [स०] [स्त्री० ऊढ़ा] विवाहित।

ऊढ़ना(पु)—क्रि० अ० [स०√ऊह्] तर्क-वितर्क करना। सोचविचार करना। अनुमान करना।

क्रि० अ० [सं० ऊढ] विवाह करना।

ऊढ़ा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाहिता स्त्री। २ परकीया नायिका का एक भेद। वह व्याही स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।

ऊत—वि० [स० अपुत्र] १ विना पुत्र का। निसंतान। निपूता (स्त्रियों में प्रचलित गाली)। २ उजड्ड। बेवकूफ।

सज्ञा पु० वह जो निसतान मरने के कारण पिंड आदि न पाकर भूत होता है।

ऊतर(पु)—सज्ञा पुं० दे० १ "उत्तर"। २. दे० "वहाना"।

ऊतला(पु)—वि० [हिं० उतावला] १. चचल। २ वेगवान्।

ऊतिम(पु)†—वि० दे० "उत्तम"।

ऊद—सज्ञा पु० [अ०] अगर का पेड या लकडी।

सज्ञा पुं० [स० उद्र] ऊदविलाव।

ऊदवत्ती—सज्ञा स्त्री० [अ० ऊद+हिं० वत्ती] अगर की वत्ती जिसे सुगध के लिये जलाते हैं।

ऊदविलाव—सज्ञा पु० [हिं० ऊद+विलाव] नेवले के समान मुँह और मोटी विल्ली के समान डीलडौल का जल और स्थल दोनों में रहनेवाला जतु। ऊद।

ऊदल—सज्ञा पुं० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] आल्हा का छोटा भाई और बारहवीं शताब्दी में महोवे के चदेल राजा परमाल के मुख्य वीर सामंतों में से एक। दे० "आल्हा"।

ऊदा—वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] ललाई लिए हुए काले रग का। बैंगनी।

सज्ञा पुं० १ ऊदे रग का घोड़ा। २ दे० "ऊदल"।

ऊध—क्रि० वि० [स० ऊर्ध्व] ऊपर।

वि० ऊँचा। खड़ा।

ऊधम—सज्ञा पु० [प्रा० उद्धम ?] उपद्रव। उत्पात। धूम। हुल्लड़।

ऊधमी—वि० [हिं० ऊधम+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती। उपद्रवी।

ऊधो—सज्ञा पुं० दे० "उद्धव"।

ऊन—सज्ञा पु० [सं० ऊर्ण, प्रा० उण्ण] भेड़ बकरी आदि का रोयाँ जिससे कवल और पहनने के गरम कपड़े बनते हैं।

वि० [स० ऊन] [स्त्री० ऊनी] १ कम। थोड़ा। छोटा। २ तुच्छ।

ऊनता—सज्ञा स्त्री० [सं०] कमी। न्यूनता।

ऊना—वि० [सं० ऊन+हिं० आ (प्रत्य०)] १ कम। न्यून। थोड़ा। २ तुच्छ। हीन।
संज्ञा पुं० खेद। दुःख। रंज। गम।

ऊनी—वि० [सं० ऊन+हिं० ई (प्रत्य०)] कम। न्यून।
संज्ञा स्त्री० उदासी। रंज। खेद।
वि० [हिं० ऊन+ई (प्रत्य०)] ऊन का बना हुआ (वस्त्र आदि)।

ऊपना—क्रि० अ० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न होना। पैदा होना।

ऊपर—क्रि० वि० [सं० उपरि] [वि० ऊपरी] १ ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। आकाश की ओर। २ आधार पर। सहारे पर। सिर पर। सिरे पर। स्थान या स्थिति में ऊँचा या उठा हुआ। उत्थित। किसी आधार या वस्तु से ऊँचा। किसी से उठा हुआ। ३ ऊँची श्रेणी में। उच्च कोटि में। बढ़कर। श्रेष्ठ। ४. (लेख में) पहले। ५ अधिक। ज्यादा। ६ प्रकट में। देखने में। ७. तट पर। किनारे पर। ८ अतिरिक्त। परे। प्रतिकूल। ९. पीछे। बाद में। उपरांत, जैसे—राम के ऊपर भरत और उनके ऊपर लक्ष्मण हुए। १०. शासन या अधिकार में उच्च स्थान का, जैसे—तहसीलदार के ऊपर कलक्टर है। ११ रक्षा या हितचिंतन में, जैसे—पिता के मरते ही वह असहाय हो गया। उसके ऊपर कोई न रहा।

मुहा०—ऊपर ऊपर=(१) बिना और किसी के जनाए। चुपके से। बाहर ही बाहर। (२) बिना घुलेमिले या एक हुए; जैसे—पानी में तेल ऊपर ही ऊपर फैल जाता है लेकिन दूध में पानी ऊपर नहीं आता। (३) पक्की लिखापढ़ी या आवश्यक कार्रवाई किए बिना। ऊपर की आमदनी=(१) वह प्राप्ति जो वेतन के अतिरिक्त हो। (२) इधर उधर से घूस आदि के द्वारा प्राप्त रकम। ऊपर तले=(१) ऊपर नीचे। (२) एक के पीछे एक। आगे पीछे। क्रमशः। ऊपर तले के=वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो। ऊपर लेना=(किसी कार्य का) जिम्मा लेना। हाथ में लेना। ऊपर से=(१) ऊँचे से। (२) इसके अतिरिक्त। इसके सिवा। (३) वेतन से अधिक। घूस के रूप में। (४) प्रत्यक्ष में। दिखाने के लिये। ऊपर होना=(१) बढ़कर होना। (२) रक्षा या सहायता में निरत होना। (३) परम स्वतंत्र होना, जैसे—वह सबके ऊपर है। ऊपर का प्रकोप=ईश्वर का कोप। ऊपर की आज्ञा=किसी ऊपर के अधिकारी या शासक का हुक्म। ऊपर ही ऊपर=(१) नीचे तक न पहुँचकर। (२) कुछ इने गिने लोगों तक ही। (३) मुख्य को छोड़कर अप्रधान में ही। (४) संबद्ध के अतिरिक्त असंबद्ध में ही।

ऊपरी—वि० [हिं० ऊपर+ई (प्रत्य०)] १ ऊपर का। २ बाहर का। बाहरी। ३ बँधे हुए के सिवा। असामान्य। ४ नुमाइशी। बनावटी। दिखावटी। ५ अवास्तविक। नकली। ६ मन के भीतर के भावों के अतिरिक्त। ७ असंबद्ध। फालतू। व्यर्थ।

ऊब—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्√विज्] १ कुछ काल तक एक ही अवस्था में रहने से चित्त की व्याकुलता। उद्वेग। घबराहट। २ विकर्षण। विराग। उच्चाटन। मन का हट जाना या खिंच जाना। उचाट। चित्त का उचटना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊभ] उत्साह। उमंग। उ०—नदनँदन लै गए हमारी अब ब्रजकुल की ऊब। —सूर०।

ऊबट—संज्ञा पुं० [सं० उद्=बुरा+वर्त्म, प्रा० वट्ट=मार्ग] कठिन मार्ग। अटपट रास्ता।
वि० ऊबड़ खाबड़। ऊँचा नीचा।

ऊबड़ खाबड़—वि० [हिं० ऊबट+प्रा० खवड्डिअ=स्खलित] ऊँचा नीचा। जो समथल न हो। अटपट।

ऊबना—क्रि० अ० [सं० उद्वेजन] उकताना। घबराना। अकुलाना। उचटना। विरक्त होना।

ऊबरना—क्रि० अ० दे० "उबरना"।

ऊभ (पु)—वि० [सं० ऊर्ध्व, प्रा० √उब्भ] ऊँचा। उभरा हुआ। उठा हुआ।

ऊभट—क्रि० अ० दे० "ऊबट"।

ऊभना (पु)—क्रि० अ० [सं० ऊर्ध्व, प्रा० उब्भ] उठना।

ऊभा—वि० [सं० ऊर्ध्वित, प्रा० उब्भिय] १ खड़ा। २ चैतन्य।

ऊमक (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उमंग] झोंक। उठान। वेग। तरंग।

ऊमना (पु)—क्रि० अ० [देश०] उमड़ना। उमगना।

ऊरज—वि०, संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज"।

ऊरध (पु)—वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊरस—वि० दे० "उरस"।

ऊरु—संज्ञा पुं० [सं०] जानु। जंघा।

ऊरुस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।

ऊर्ज—वि० [सं०] बलवान्। शक्तिमान्। वीर्यवान्। तेजस्वी।
संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १ बल। शक्ति। तेज। कांति। २ कार्तिक मास। ३ एक काव्यालंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार का न छोड़ना वर्णन किया जाता है।

ऊर्जस्वल—वि० दे० "ऊर्जस्वी"।

ऊर्जस्वित—वि० [सं०] १. ऊपर की ओर चढ़ा हुआ। २ बहुत बढ़ा हुआ।

ऊर्जस्वी—वि० [सं०] १ बलवान्। शक्तिमान्। २ तेजवान्। ३ प्रतापी।
संज्ञा पुं० [सं०] एक काव्यालंकार जो वहाँ माना जाता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो।

ऊर्जित—वि० [स्त्री० ऊर्जिता] दे० "ऊर्ज"।

ऊर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] भेड़ या बकरी के बाल। ऊन।

ऊर्ध—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊर्ध्व—क्रि० वि० [सं०] ऊपर। ऊपर की ओर।
वि० १ ऊँचा। २ खड़ा।
विशेष—हिंदी में इस शब्द का व्यवहार प्रायः यौगिक शब्दों में ही होता है, जैसे—ऊर्ध्वगमन, ऊर्ध्वश्वास, ऊर्ध्वरेता।

ऊर्ध्वगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऊपर की ओर गति। २ मुक्ति।

ऊर्ध्वगामी—वि० [सं०] १ ऊपर जानेवाला। २. मुक्त। निर्वाणप्राप्त।

ऊर्ध्वचरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करते हैं।

ऊर्ध्वद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मरंध्र।

ऊर्ध्वपुंड्र—संज्ञा पुं० [सं०] खड़ा तिलक। वैष्णवी तिलक।

ऊर्ध्वबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार के तपस्वी जो अपनी एक बाहु ऊपर की ओर उठाए रहते हैं। २ वह व्यक्ति जो हाथ उठाए हो।

ऊर्ध्वरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार राम, कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरणचिह्नों में से एक।

ऊर्ध्वरेता—वि० [सं०] जो अपने वीर्य को ब्रह्मांड में केंद्रित रखे। जो अपने वीर्य को गिरने न दे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी। बाल ब्रह्मचारी।

संज्ञा पुं० १ महादेव। २ भीष्मपितामह। ३ हनुमान्। ४ सनकादिक महर्षि। ५. सन्यासी।

ऊर्ध्वलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। २ वैकुंठ। स्वर्ग।

ऊर्ध्वश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर को चढ़ती हुई साँस। २ श्वास की कमी या तंगी। श्वासकृच्छ्र।

ऊर्मि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लहर। तरंग। २ पीड़ा। दुःख। ३ छः की संख्या। ४ शिकन। कपड़े की सलवट।

ऊर्मिमाली—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

ऊर्मिल—वि० [सं०] जिसमें लहरें उठती हों। तरंगित।

ऊर्मी—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।

ऊलजलूल—वि० [देश०] १. असंबद्ध। बे-सिर-पैर का। अंडबंड। २. अनाड़ी। नासमझ। ३. बेअदब। अशिष्ट।

ऊलना(पु)—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

ऊवट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ऊवट"।

ऊष—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊषा"।

ऊषन—वि० दे० "ऊष्ण"।

ऊषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सबेरा। २ अरुणोदय। पौ फटने की लाली। ३ बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से व्याही थी।

ऊषाकाल—संज्ञा पुं० [सं०] सबेरा। तड़का।

ऊष्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। २ भाप। ३ गरमी का मौसिम।

वि० गरम।

ऊष्मवर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] "श, ष, स, ह" ये ४ अक्षर।

ऊष्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ग्रीष्म काल। २ तपन। गरमी। ३ भाप।

ऊसर—संज्ञा पुं० [सं० ऊषर] वह भूमि जिसमें रेह या लोनी मिट्टी अधिक होने के कारण पानी बरसने पर भी घास तक नहीं जमती। यह मिट्टी कपड़े साफ करने के काम आती है। प्राचीन काल में इससे नमक बनाया जाता था। क्षारमृत्तिका या खारी जमीन। उ०—ऊसर बरषै तृन नहिं जामा। संत हृदय जस उपज न कामा।—मानस।

ऊह—अव्य० [सं०] १ क्लेश या दुःखसूचक शब्द। ओह। २ विस्मयसूचक शब्द।

संज्ञा पुं० [सं०] १ अनुमान। विचार। २ तर्क। दलील।

ऊहा—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊह"।

ऊहापोह—संज्ञा पुं० [सं० ऊह+अपोह] तर्कवितर्क। सोचविचार।

ऋ

ऋ—नागरी वर्णमाला का सातवाँ स्वर वर्ण। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवमाता। अदिति। २ निंदा। बुराई।

ऋक्—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋचा। वेदमंत्र।

संज्ञा पुं० दे० "ऋग्वेद"।

ऋक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] १ भालू। २ तारा। नक्षत्र। ३ मेष, वृष आदि राशियाँ।

ऋक्षपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ जाबवान्।

ऋक्षवान्—संज्ञा पुं० [सं०] ऋक्ष पर्वत जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है।

ऋग्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] पहला वेद। वह वेद जिसमें सविता, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी अग्नि, इंद्र, वरुण, यम, कुबेर, रुद्र, निर्ऋति आदि प्रकृति के नाना रूपों में व्यक्त शक्तियों की देवता के रूप में कल्पना कर विविध प्रकार से उपासना और वर्णन है। ये वर्णन मंत्र या ऋचा कहलाते हैं।

ऋग्वेदी—वि० [सं० ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने या पढ़नेवाला।

ऋचा—संज्ञा स्त्री० [संस्कृत या वैदिक ऋच् शब्द का विभक्तिगत रूप] १ वेदमंत्र जो पद्य में हो। २ वेदमंत्र। कंडिका। ३ स्तोत्र।

ऋच्छ—संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।

ऋजु—वि० [सं०] [स्त्री० ऋज्वी] १ जो टेढ़ा न हो। सीधा। २ सरल। सुगम। सहज। ३ सरल चित्त का। साफ व्यवहार रखनेवाला। सज्जन। ४ अनुकूल। प्रसन्न।

ऋजुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीधापन। २ सरलता। सुगमता। ३ सज्जनता।

ऋण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ऋणी] किसी दूसरे से कुछ समय के लिये लिया हुआ द्रव्य। किसी दूसरे से सूद पर लिया हुआ धन। कर्ज। उधार।

मुहा०—ऋण उतरना=कर्ज अदा होना। ऋण चढ़ाना=जिम्मे रुपया निकालना। ऋण पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।

ऋणी—वि० [सं० ऋणिन्] १ जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार। देनदार। अधमर्ण। २ उपकृत। अनुगृहीत। ३ उपकार माननेवाला।

ऋत—वि० [सं०] १ सच्चा। २ ईमानदार। ३ उचित। ४ पूजित।

संज्ञा १ सत्य। २ दैवी विधान।

ऋतु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जाड़ा, गरमी और बरसात के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के अलग अलग विभाग जो चैत्र से प्रारंभ करके फाल्गुन तक कुल ६ हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। २ रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भधारण के योग्य होती हैं। ३ रज स्राव काल। ४ रज स्राव। स्त्रियों का मासिक धर्म।

ऋतुकांत—संज्ञा पुं० [सं०] ऋतुओं का राजा। ऋतुओं का नायक। ऋतुओं में श्रेष्ठ। वसंत।

ऋतुचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

ऋतुमती—वि० स्त्री० [सं०] १ रजस्वला। पुष्पवती। मासिक-धर्म-युक्ता। २ रज स्राव या मासिक धर्म से १६ दिन बाद तक की स्त्री जो गर्भ धारण करने में समर्थ समझी जाती है।

ऋतुराज—संज्ञा पुं० [सं०] ऋतुओं का राजा। वसंत।

ऋतुवती(पु)—वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।

ऋतुस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री०

(२) व्याप्त होना। भिन्न स्थानों में अनवरत पहुँचते रहना या दिखाई पड़ना, जैसे—धन के लिये श्यामू ने दिल्ली और कलकत्ता एक कर दिया है। एक कलम=बिलकुल। सब। एक साथ। अपनी और किसी की जान एक करना=(१) किसी की और अपनी दशा एक सी करना। (२) मारना और मर जाना। एकटक=(१) अनिमेष। स्थिर दृष्टि से। बिना पलक गिराए। नजर गड़ाकर। (२) लगातार देखते हुए। एकताक=समान। बराबर। तुल्य। एकतार=(१) एक ही रूपरंग का। समान। बराबर। (२) समभाव से। बराबर। लगातार। एक तो=पहले तो। पहली बात तो यह कि। एकदम=(१) बिना रुके। लगातार। (२) फौरन। उसी समय। (३) एकबारगी। एक साथ। एक दिल=(१) खूब मिला जुला। (२) एक ही विचार या लक्ष्य का। अभिन्न हृदय। एक दूसरे क (को, पर, में, से)=परस्पर। एक न चलना=कोई युक्ति सफल न होना। सारे प्रयत्न विफल होना। एक पेट के=एक ही माँ से उत्पन्न। सहोदर (भाई या बहन)। एक-ब-एक=अकस्मात्। अचानक। एक बात=(१) दृढ़ वचन। (२) ठीक बात। सच्ची बात। एक सा=समान। बराबर। एक से एक=एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना=(१) एकमत होकर कहना। (२) बिना रुके कहना। (३) लगातार कहते जाना। बोलने में साँस या दम न लेना। (४) एक साथ बोलना। एक होना=(१) मिलना-जुलना। मेल करना। (२) तद्रूप होना। एक जुज होना। (३) मिल जाना। गोल बनाना। एक दल बन जाना। गुटबंदी करना।

एकचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का रथ। २ सूर्य।

एकछत्र—वि० [सं०] बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें कहीं और किसी का राज्य या अधिकार न हो। किसी एक व्यक्ति के ही अधिकार, शासन या प्रभाव का (क्षेत्र, राज्य आदि)।

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन पद्धति जिसमें किसी देश के शासन का सारा अधिकार एक ही व्यक्ति के हाथ में हो।

एकज—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसका विधारंभ संस्कार न हो। शूद्र। २ राजा।

वि० [सं० एक+ज ?] एक ही।

एकजद्दी—वि० [फा०] एक ही पूर्वज से उत्पन्न। सगोत्र।

एकजन्मा—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "एकज"।

एकड़—संज्ञा पुं० [अं० एकर] भूमि और खेतों की ४८४० वर्ग गज की एक माप जो १६ बीघे के बराबर होती है।

एकडाल—संज्ञा पुं० [सं० एक+हिं० डाल] वह कटार या छुरा जिसका फल और बेंट एक ही लोहे का हो।

एकतंत्र—संज्ञा पुं० दे० "एकच्छत्र"।

एकत—क्रि० वि० [सं०] एक ओर से। एक तरफ से।

एकत(पु)—क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

एकतरफा—वि० [फा०] १. एक ओर का। एक पक्ष का। २ जिसमें तरफदारी की गई हो। पक्षपातग्रस्त। ३ एकरुखा। एक पार्श्व का।

मुहा०—एकतरफा डिगरी=वह डिगरी या न्यायालय का निर्णय जो प्रतिवादी के हाजिर न होने के कारण वादी को प्राप्त हो। एक पक्ष में निर्णय।

एकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐक्य। मेल। २ समानता। बराबरी।

वि० [फा० यकता] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।

एकतान—वि० [सं०] १ तन्मय। लीन। एकाग्रचित्त। २ मिलकर एक।

एकतानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एकाग्रता। २. एकता। ३ एकरूपता। एकरति। किसी एक में रति। किसी एक में अनुरक्त या लीन रहने का भाव।

एकतारा—संज्ञा पुं० [हिं० एक+तार+आ (प्रत्य०)] एक तार का सितार या बाजा।

एकतारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+तार+ई (प्रत्य०)] गले में पहनने की सोने की एक तार की जाली या सिकड़ी। गले में पहनने का एक प्रकार का सोने का आभूषण।

एकतालिस, एकतालीस—वि० [सं० एक चत्वारिंशत्] गिनती में चालीस और एक। इकतालीस।

संज्ञा पुं० ४१ की संख्या का बोध करानेवाला अंक।

एकतिस, एकतीस—वि० [सं० एकत्रिंश] गिनती में तीस और एक। इकतीस।

संज्ञा पुं० ३१ की संख्या का बोधक अंक।

एकत्र—क्रि० वि० [सं०] १ इकट्ठा। २. एक जगह। एक स्थान में।

एकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक होने का भाव। एकता। २ एक ही तरह का या बिलकुल एक सा होना। पूरी समानता। ३ अकेलापन।

एकदंत—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

वि० [सं०] एक दाँतवाला।

एकदा—क्रि० वि० [सं०] १ एक बार। २ एक समय।

एकदेशीय—वि० [सं०] १ एक ही अवसर या स्थल का परिमित प्रभाव या प्रयोगवाला। अंशगत। सीमित।

एकनयन—वि० [सं०] एक आँख का। काना। एकाक्ष।

संज्ञा पुं० १. कौवा। २ कुबेर। ३. जयंत। ४ शुक्राचार्य।

एकनिष्ठ—वि० [सं०] १ जिसकी निष्ठा एक में हो। एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला। २ एक ही पर अवलंबित, आश्रित या स्थित। ३. एक आसन या स्थान का।

एकन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० एक+हिं० अन्नी] एक आने मूल्य का सिक्का। इकन्नी।

एकपक्षीय—वि० [सं०] एक ओर का। एकतरफा। एक ही पक्ष का।

एकपत्नी-व्रत—वि० [सं०] १. एक ही स्त्री से विवाह या प्रेम करनेवाला। २ एक पत्नी के रहते किसी दूसरी स्त्री को पत्नी न बनानेवाला।

संज्ञा पुं० एक ही पत्नी रखने का नियम।

एकबारगी—क्रि० वि० [सं० एक+फा० बारगी] एक ही दफे में। एक समय में। इकबारगी। २. अचानक। अकस्मात्। ३ बिलकुल। सारा।

एकबाल—संज्ञा पुं० दे० "इकबाल"।

एकभुक्त—वि० [सं०] रातदिन में केवल एक बार भोजन करनेवाला। एकाहारी। २. एक ही के द्वारा उपभोग किया जानेवाला।

एकमत—वि० [सं०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।

एकमात्रिक—वि० [सं०] एक मात्रा का।

एकमुखी—वि० [सं०] एक मुँहवाला।

यौ०—एकमुखी रुद्राक्ष=वह रुद्राक्ष जिसमें फाँकवाली लकीर एक ही हो।

एकरंग—वि० [सं० एक+रंग] १ समान। तुल्य। २ कपटशून्य। साफ दिल का। ३. जो चारों ओर एक सा हो।

एकरदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
वि० [सं०] एक दाँतवाला।

एकरस—वि० [सं०] एक ढंग का। समान।

एकरार—संज्ञा पुं० [अ०] दे० "इकरार"।
यौ०—एकरारनामा=वह पत्र जिसमें दो या अधिक व्यक्ति परस्पर प्रतिज्ञावद्ध हों। प्रतिज्ञापत्र। शर्तनामा।

एकरूप—वि० [सं०] १ समान आकृति का। एक ही रंगढंग का। २ ज्यों का त्यों। वैसा ही।

एकरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समानता। एकता। सादृश्य। २ सायुज्य मुक्ति।

एकलⓅ—वि० [हिं० एक] १ अकेला। एकमात्र। २ अनुपम। बेजोड़।

एकलव्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक भील युवक जिसने द्रोणाचार्य की प्रतिमा को गुरु के समान सामने रखकर धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त की थी और गुरुदक्षिणा माँगने पर अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काटकर द्रोणाचार्य को दे दिया था।

एकलाⓅ†—वि० दे० "अकेला"।

एकलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक नाम। २ शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के प्रधान कुलदेव हैं।

एकलौता—वि० [हिं० एकल+औता (प्रत्य०)] [स्त्री० एकलौती] अपने माँ बाप का एक ही (लड़का)। जिसके और भाई-बहन न हों। इकलौता।

एकवचन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।

एकबाँझ—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसे एक ही बार बच्चा पैदा हो। काकवंध्या।

एकवाक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐकमत्य। लोगों के मत का परस्पर मिल जाना। एक राय।

एकवेणी—वि० [सं०] १ जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले। २ वियोगिनी। ३ विधवा।

एकसठ—वि० [सं० एकषष्ठि] साठ और एक। इकसठ।
संज्ञा पुं० वह अंक जिससे एकसठ की संख्या का बोध होता है। ६१।

एकसरⓅ†—वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] १ अकेला। २ एक पल्ले का। ३ एकच्छत्र।
वि० [फा०] बिलकुल। तमाम।

एकसाँ—वि० [फा०] बराबर। समान। एक तरह का।

एकसार—वि० [सं० एक+प्रा० सरि=सदृश] १. समान। एकसाँ। २ एकरस।

एकहत्तर—वि० [सं० एकसप्तति] सत्तर और एक। इकहत्तर।
संज्ञा पुं० सत्तर और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ७१।

एकहत्था—वि० [सं० एक+प्रा० हत्थ+हिं० आ (प्रत्य०)] १ एक हाथवाला। २ एक व्यक्ति के ही हाथ या अधिकार का। एक ही व्यक्ति के अधीन (काम या व्यवसाय)। जो एक ही व्यक्ति के हाथ में हो।

एकहरा—वि० [सं० एक+धर, प्रा० हर] [स्त्री० एकहरी] १. एक पाट का। एक परत का, जैसे—एकहरा अंगा (दोहरा के विपरीत)। २ एक लड़ी का। ३ अकेला।
यौ०—एकहरा बदन=दुबला-पतला शरीर।

एकांकी नाटक—संज्ञा पुं० [सं० एकांकिन्+नाटक] वह नाटक जिसमें एक ही अंक हो। एक ही अंकवाला नाटक।

एकांग—वि० [सं०] एक ही अंगवाला।

एकांगी—वि० [सं० एकांगिन्] एक पक्ष का। एकतरफा। एक ही अंश या हिस्से का। २ हठी। जिद्दी।

एकांत—वि० [सं०] १ अत्यंत। बिलकुल। २ अलग। अकेला। ३ निर्जन। सूना। ४ प्रशांत और निःस्तब्ध।
संज्ञा पुं० [सं०] निराला स्थान। सूना स्थान। मनुष्यों की बस्ती या शोरगुल से दूर की जगह।

एकांत कैवल्य—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति का एक भेद। जीवन-मुक्ति।

एकांतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अकेलापन। २ सूनापन। ३. निरालापन।

एकांतवास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० एकांतवासी] १ निर्जन स्थान में रहना। २ अकेले रहना।

एकांतिक—वि० [सं०] १ जो एक ही स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे। एकदेशीय। २ अनन्य। एक ही अंश या भाग में सीमित।

एकांती—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या, बुद्धि, कला, प्रेम, भक्ति आदि अपने किसी गुण या भाव का ढिंढोरा न पीटनेवाला व्यक्ति। २ अपनी भक्ति का प्रचार न करनेवाला व्यक्ति। ३. अकेला रहना पसंद करनेवाला व्यक्ति। ४ किसी एक से ही श्रद्धा, भक्ति, अनुराग और प्रेम करनेवाला व्यक्ति। ५. एक ही में रत या लगा हुआ व्यक्ति।

एका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
संज्ञा पुं० [सं० एक] १. एकता। ऐक्य। मेल। २ मत, विचार, उद्देश्य या लक्ष्य के एक होने के भाव। ३ अभेद। एकरूपता।

एकाई—संज्ञा स्त्री० [सं० एक+हिं० आई (प्रत्य०)] १ एक का भाव। एक का मान। २ वह मौलिक मात्रा जिसके गुणन या विभाग से और दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। ३ अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान। ४ उस स्थान पर लिखा जानेवाला अंक। अकेली संख्या। १ से ९ तक की संख्या। ५ अनेक की एकरूपता या संयुक्त स्वरूप।

एकाएक—क्रि० वि० [फा० यकायक] अकस्मात्। अचानक। सहसा। एकबारगी।

एकाएकीⓅ—क्रि० वि० १ दे० "एकाएक"। २ एक एक के क्रम से। एक एक करके।
वि० [सं० एकाकी] अकेला।

एकाकार—संज्ञा पुं० [सं०] मिल-मिलाकर एक होने की दशा। एक होना। अनेक की एकरूपता।
वि० एक आकार का। समान।

एकाकी—वि० [सं० एकाकिन्] [स्त्री० एकाकिनी] अकेला।

एकाकीपन—संज्ञा पुं० [हिं० एकाकी+पन (प्रत्य०)] अकेलापन।

एकाक्ष—वि० [सं०] एक आँख का। दे० "एकनयन।"
यौ०—एकाक्ष रुद्राक्ष=एकमुखी रुद्राक्ष।
संज्ञा पुं० १ कौआ। २ शुक्राचार्य। ३ कुबेर।

एकाक्षरी—वि० [सं० एकाक्षरिन्] एक अक्षर का। जिसमें एक ही अक्षर हो।
यौ०—एकाक्षरी कोश=वह कोश जिसमें अक्षरों के अलग अलग अर्थ दिए हों, जैसे, "अ" से वासुदेव या ब्रह्मा। "उ" से विष्णु। "म" से शिव। "क" से पानी। "ख" से आकाश। "ल" से लघु। "ग" से गुरु। "इ" से कामदेव इत्यादि।

एकाग्र—वि० [सं०] [संज्ञा एकाग्रता] १ एक ओर स्थिर। निरत। एकरत। किसी

एक में लीन। निश्चल। चंचलतारहित। २ जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्रचित्त—वि० [सं०] जिसका ध्यान बँधा हो। स्थिरचित्त। ध्यानस्थ।

एकाग्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चित्त का स्थिर होना। अचंचलता। २ ध्यानावस्था। तल्लीनता।

एकात्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एकता। अभेद। २ मिल-मिलाकर एक होना। एकरूपता।

एकात्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह सिद्धांत जिसमें संसार के प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा का व्याप्त होना माना जाता है। २ जीवात्मा और परमात्मा की एकता और अभेद का सिद्धांत। ३ एक ही आत्मा को जगत और जीवन का मूल मानने का सिद्धांत।

एकादश—वि० [सं०] ग्यारह।

संज्ञा—ग्यारह की संख्या। ११।

एकादशाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी मनुष्य की मृत्यु का ग्यारहवाँ दिन। २ कर्मकांड के अनुसार द्विजातियों के मरने के ग्यारहवें दिन के कृत्य। ३. हिंदुओं में अंत्येष्टि क्रियाओं का ग्यारहवाँ दिन।

एकादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि। हिंदू महीने की ११ वीं और २६ वीं तारीख। २ हिंदुओं (विशेषत वैष्णवों) में व्रत, उपवास, कथा, पुराण आदि धार्मिक और शुभ कार्यों के करने का दिन। ३ उपवास का दिन। निराहार का दिन।

यौ०—बड़ी एकादशी, हरि प्रबोधिनी (प्रबोधिनी) एकादशी, देवोत्थान एकादशी या "डिठवन" एकादशी=कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु (नारायण) अपनी चार महीने की निद्रा भंग कर जागते हैं। यह व्रत, उपवास और पूजापाठ का बहुत बड़ा दिन है।

हरिशयनी एकादशी=आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी जब भगवान् विष्णु (नारायण) आठ महीने के जागरण के बाद शयन करते हैं।

निर्जला एकादशी=वह एकादशी जब व्रत या उपवास में अन्न जल दोनों त्याग दिए जाते हैं।

मुहा०—एकादशी होना=आहार न मिलना, जैसे—आजकल शास्त्री जी के यहाँ हर तीसरे दिन एकादशी रहती है। आज उसके घर एकादशी है। एकादशी मनाना =निराहार रहना, जैसे—उस दिन शास्त्री जी के घर सब अतिथियों को एकादशी मनानी पड़ी। ऐन होली को शास्त्री जी ने एकादशी मनाई।

एकाधिकार—संज्ञा पुं० दे० "एकाधिपत्य"।

एकाधिपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु, कार्य, व्यापार या देश आदि पर होनेवाला एकमात्र अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। अनन्य अधिकार।

एकार्थक—वि० [सं०] १ एक ही अर्थ का। २ उसी अर्थवाला। समानार्थक।

एकावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अलंकार जिसमें पूर्व-पूर्व कही वस्तुओं के लिये उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय, जैसे—सुमति वही, निज हित लखै, हित वह जित उपकार। उपकृति वह जहँ साधुता, साधुन हरि आधार। २ १३ वर्णों का वह छंद जिसमें क्रम से भगण, नगण, दो जगण और अंत्य लघु वर्ण होता है, जैसे—भानुज जल महँ आय परै जब। कंज अवलि विकसै सर में तब॥ इसे कंजअवलि, पंकजअवलि, पंकावली और पंकजवाटिका भी कहते हैं। ३ एक लड़ी का हार।

एकाह—वि० [सं०] १ एक दिनवाला। २. एक दिन में पूरा होनेवाला, जैसे—एकाह पाठ।

एकीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० एकीकृत] मिलाकर एक करना। संयोग। संमिश्रण।

एकीभूत—वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। जो मिलकर एक हो गया हो। एककार। एकरूप।

एकेंद्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सांख्य के अनुसार इंद्रियों को विषयों से हटाकर मन में लीन करनेवाला। २ वह जीव जिसके केवल एक ही इंद्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है, जैसे—जोंक केंचुआ।

एकेश्वरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह सिद्धांत जिसमें एक ही ईश्वर माना जाता है और अनेक देवी देवताओं का अस्तित्व नहीं माना जाता। उसी एक ईश्वर के द्वारा सृष्टि का रचा जाना माना जाता है। अद्वैतवाद के विपरीत इस सिद्धांत में ईश्वर (या ब्रह्म) जगत का उपादान कारण नहीं माना जाता। वह केवल निमित्त है। उपादान उसकी इच्छा मात्र से उत्पन्न हो जाता है। अत इस सिद्धांत के अनुसार "जीव" और "ईश्वर" में अभेद नहीं है।

एकोतरसो—वि० [सं० एकोत्तरशत] एक सौ एक।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह श्राद्ध जो एक के उद्देश्य से किया जाय। २ वह श्राद्ध जो किसी एक ही विशिष्ट पितर के निमित्त किया जाय।

एकौंझ(पु)—वि० [हिं० एक+औंझ (प्रत्य०)] अकेला। अकेले का। एक ही का।

एक्का—वि० [हिं० एक+का (प्रत्य०)] १ एक से संबंध रखनेवाला। २ अकेला।

यौ०—एक्का दुक्का=१ अकेला दुकेला। २ कभी कभी। रुक रुककर।

संज्ञा पुं० १ वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है। इक्का। ३ वह सिपाही जो अकेले बड़े बड़े काम कर सकता हो। ४ ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्की।

एक्कावान—संज्ञा पुं० [हिं० एक्का+वान (प्रत्य०)] एक्का हाँकनेवाला। इक्कावान।

एक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक] १ वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २ ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्का।

एक्यानवे—वि० [सं० एकनवति, प्रा० एक्काणउइ] नब्बे और एक। इक्यानवे।

संज्ञा पुं० नब्बे और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ९१।

एक्यावन—वि० [सं० एकपंचाश, प्रा० एक्कावन्न] पचास और एक। इक्यावन।

संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या का बोधक अंक। ५१।

एक्यासी—वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि] अस्सी और एक। इक्यासी।

संज्ञा पुं० एक और अस्सी की संख्या का बोधक अंक। ८१।

एड़—संज्ञा स्त्री० [सं० एड़क] मनुष्यों के पैर के पीछे का अंतिम भाग। एड़ी।

मुहा०—एड़ करना=(१) एड़ का प्रयोग करना। (२) चल देना। रवाना होना। एड़ देना या लगाना=(१) लात मारना। (२) सवार का घोड़े को आगे बढ़ाने के लिये उसे एड़ से मारना (३) उसकाना। उत्तेजित करना। (४) बाधा

डालना। विघ्न खड़ा करना। एडवेंड बकना=अडबड बोलना। बे-सिर-पैर की बातें करना।

संज्ञा पुं० दे० "ऐंड़"।

एडिशन—संज्ञा पुं० [अं०] दे० "आवृत्ति"।

एड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० एड्रूक=हड्डी] मनुष्यों के पैर के पीछे का अंतिम भाग। टहनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग। एड़।

मुहा०—एड़ी घिसना या रगड़ना=(१) एड़ी को मल-मलकर धोना। (२) बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना। (३) बहुत दौड़धूप करना। एड़ी से चोटी तक=(१) सिर से पैर तक। नीचे से ऊपर तक। (२) अत्यधिक। एड़ी चोटी एक करना=असाधारण प्रयत्न या दौड़धूप करना।

एड्रेस—संज्ञा पुं० [अं०] १ पता। २ अभिनंदनपत्र। ३ संबोधन।

एण—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी मृग।

एतकाद—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास।

एतद्—सर्व० [सं०] यह।

एतदर्थ—क्रि० वि० [सं०] १ इसलिये। २ इसी के लिये। इसी काम या अभिप्राय के लिये।

एतद्देशीय—वि० [सं०] इस देश से संबंध रखनेवाला। इस देश का। इधर का।

एतबार—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। प्रतीति। भरोसा।

एतराज—संज्ञा पुं० [अ०] विरोध। आपत्ति। आक्षेप।

एतवार—संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।

एता(पु)—वि० [सं० इयत्] [स्त्री० एती] इस मात्रा का। इतना।

एतादृश्—वि० [सं०] ऐसा। ऐसा ही। इसी प्रकार। इसी प्रकार का।

एतिक(पु)†—वि० स्त्री० [सं० इयत्] १ इतनी। इतनी ही। २ कम। इतनी थोड़ी।

एतिहात—संज्ञा स्त्री० दे० "एहतियात"।

एनी—संज्ञा स्त्री० [सं० एणी] हरिणी। उ०—ऊँचे तन भारे भभकारे करे छूटिबे कों। उर थरहरे जिमि एनी जाल परिकै।—शृंगार०।

एमन—संज्ञा पुं० [सं० यवन, फा० यमन] संपूर्ण जाति का एक राग।

एरंड—संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा पौधा जिसमें बड़े आँवले के आकार का नोकदार फल लगता है और जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है। यह तेल गरम और रेचक होता है। रेंड़। रेंडी।

एराक—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब के उत्तर का एक देश जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।

एराकी—वि० [फा०] एराक का।

संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी नस्ल एराक देश की हो।

एलची—संज्ञा पुं० [तु०] वह जो एक राज्य का संदेशा लेकर दूसरे राज्य में जाता है। दूत। राजदूत।

एला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ १५ वर्णों का वह छंद जिसमें क्रम से सगण, जगण, दो नगण और एक यगण होता है तथा ५वें वर्ण पर यति और १५वें पर विराम होता है, जैसे—नहिं अन्य है, तुम कहँ जग महँ देवा। तिय पावतीं, शुभ गति निज पति सेवा। २ दे० "इलायची"।

एलुवा—संज्ञा पुं० [अं० एलो] एक पेड़ जिससे बहुत कड़वा रस प्राप्त होता है। इसमें लगनेवाली फलियाँ चौड़ी और लंबी होती हैं। इनका रस विरेचक और विविध औषधियों में प्रयुक्त होता है। मुसब्बर।

एव—क्रि० वि० [सं०] १ ऐसा ही। इसी प्रकार। २ और। तथा।

यौ०—एवमस्तु=ऐसा ही हो।

अव्य० ऐसे ही और। इसी प्रकार और। एवमेव=ठीक ऐसा ही। बिलकुल यही।

एव—अव्य० [सं०] १ एक निश्चयार्थक शब्द। ही। भी।

एवज—संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रतिफल। प्रतिकार। २ परिवर्तन। बदला। ३. दूसरे की जगह पर कुछ काल तक के लिये काम करनेवाला। स्थानापन्न पुरुष।

एवजी—संज्ञा स्त्री० [अ० एवज] १ दूसरे की जगह पर कुछ काल के लिये काम करनेवाला आदमी। स्थानापन्न पुरुष। २ स्थानापन्नता। किसी के स्थान या बदले में काम करने की अवस्था।

एवमस्तु—अव्य० [सं०] ऐसा ही हो (शुभाशीर्वाद)।

एवमेव—क्रि० वि० [सं०] ठीक इसी प्रकार से। एक दम ऐसे ही। बिलकुल यही।

एषण—संज्ञा पुं० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।

एषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।

एह(पु)—सर्व० [सं० एष.] यह।

वि० यह।

एहतियात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सावधानी। ख्याल। होशियारी। २ परहेज।

एहसान—संज्ञा पुं० [अ०] उपकार। कृतज्ञता। निहोरा।

एहसानमंद—वि० [अ०] निहोरा या उपकार माननेवाला। कृतज्ञ।

एहि—सर्व० [हिं० एह] १ "एह" का विभक्ति के पहले का रूप, जैसे—एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान स्रुति सारा॥ या—एहि कर फल पावहुगे आगे। बानर भालु चपेटन लागे॥—मानस। २ कर्ता और कर्मकारक में "एह" का रूप, जैसे—पालव बैठि पेड़ एहि काटा। सुख महँ सोक ठाटु धरि ठाटा॥—मानस। जो एहि कथहिं सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता॥—मानस।

एहो—अव्य० संबोधन शब्द। हे। ऐ।

ऐ

ऐ—हिंदी या देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारणस्थान कंठ और तालु है।

ऐं—अव्य० [अनु०] १ एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिये होता है। पुनरावृत्ति कराने के लिये प्रयुक्त शब्द। २ एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

ऐंचन—संज्ञा पुं० [सं० अति+अञ्चन, प्रा० अइंछण] १ खिंचाव + तनाव। तानना। २ दूसरे के कर्ज का उत्तरदायित्व या जिम्मा। ओढ़ना।

ऐंचा—संज्ञा पुं० [सं० अति+अञ्चित, प्रा० अइंचिअ] १ दे० "ऐंचा ताना"। २ दे० "आँकुड़ा"।

ऐंचाताना—वि० [हिं० √ऐंच+√तान] जिसके एक आँख की पुतली ताकने में दूसरी ओर खिंचती हो। भेंगा।

ऐंचातानी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ऐंच+√तान] खींचाखींची। अपने अपने पक्ष का आग्रह। खींचातानी।

ऐंछनाⓅ—क्रि० स० [सं०√उञ्छ= चुनना] १ झाड़ना। साफ करना। २. (बालों में) कघी करना। ऊँछना।

ऐंठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंठन] १ अकड़। ठसक। २ गर्व। घमंड। ३ कुटिल भाव। द्वेष। विरोध। दुर्भाव।

ऐंठदार—वि० [हिं० ऐंठ+फा० दार (प्रत्य०)] १ घुमावदार। लपेटवाला। पेचीदा। २. ठसकवाला। घमंडी।

ऐंठन—संज्ञा स्त्री० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव। लपेट। पेंच। मरोड़। बल। फेर। २. खिचाव। अकड़ाव। तनाव। फेरवट।

ऐंठनदार—वि० [हिं० ऐंठन+फा० दार (प्रत्य०)] घुमावदार। कई बलवाला। खूब लिपटा हुआ।

ऐंठना—क्रि० स० [सं० आवेष्टन] १ घुमाव देना। बल देना। मरोड़ना। २ दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। मूँसना।

क्रि० अ० १ बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २ तनना। खिंचना। अकड़ना। ३ मरना। ४ अकड़ दिखाना। घमंड करना। ५ टेढ़ी बातें करना। ढर्राना।

ऐंठवाना—क्रि० स० [हिं० ऐंठना का प्रे० रूप] ऐंठने का काम दूसरे से करवाना।

ऐंड़—संज्ञा पुं० [हिं० ऐंठ] १ ठसक। गर्व। २. पानी का भँवर।

वि० निकम्मा। नष्ट।

ऐंड़दार—वि० [हिं० ऐंड़+फा० दार (प्रत्य०)] १. ठसकवाला। गर्वीला। घमंडी। २ शानदार। बाँका। तिरछा।

ऐंड़ना—क्रि० अ० [हिं० ऐंठन] १. ऐंठना। बल खाना। २ अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। ३. इतराना। घमंड करना।

क्रि० स० ऐंठना। बल देना।

ऐंड़-बेंड़Ⓟ—वि० [हिं० ऐंड़ा+ बेंड़ा] टेढ़ा। तिरछा।

ऐंड़ा—वि० [हिं० ऐंठा] [स्त्री० ऐंड़ी] टेढ़ा। ऐंठा हुआ।

मुहा०—अंग ऐंडा करना = ऐंठ दिखाना।

ऐंड़ाना—क्रि० अ० [हिं० ऐंड़ना] १ अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। बदन तोड़ना। २ इठलाना। अकड़ दिखाना।

ऐंद्रजालिक—वि० [सं०] १ बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर। २ मायावी। छली।

ऐंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्र की स्त्री। इंद्राणी। शची। २ दुर्गा। ३ इंद्रवारुणी। ४ इलायची।

यौ०—ऐंद्रीदिक्=इंद्र की दिशा। पूर्व।

ऐ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

अव्य० [सं० अयि या हे] एक संबोधन। हे। ओ।

ऐकमत्य—संज्ञा पुं० [सं०] एकमत होने का भाव। एक राय।

ऐक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक का भाव। एकत्व। २ एका। मेल। एकता।

ऐगुनⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"। उ०—ग्वाल बाल के सँग जगे भए लाल-दृग लाल। ऐगुन बूझिहचो सखी करि दृग लाल मृनाल।—रससाराश।

ऐच्छिक—वि० [सं०] जो अपनी इच्छा पर हो। इच्छानुसार।

ऐजन—अव्य० [अ० ऐज़न] तथा। तथैव। वही।

ऐतⓅ—वि० दे० "इतना"।

ऐतरेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ इतर या इतरा की संतान जिन्हें इसी नाम के चालीस अध्यायोंवाले ऋग्वेद के एक ब्राह्मण और आरण्यक (जिसके दूसरे और तीसरे खंड या अध्याय उपनिषद् हैं) के निर्माता कहा जाता है।

यौ०—ऐतरेय ब्राह्मण=ऐतरेय का बनाया हुआ ब्राह्मण। ऐतरेयारण्यक=ऐतरेय का बनाया हुआ आरण्यक। ऐतरेयोपनिषद्=ऐतरेय आरण्यक के दूसरे और तीसरे खंड अथवा केवल दूसरे खंड के अंतिम चार भाग। ऐतरेयभाष्य=ऐतरेयोपनिषद् की टीका या व्याख्या।

ऐतिहासिक—वि० [सं०] १ इतिहास संबंधी। जो इतिहास में हो। २ जो इतिहास जानता हो।

ऐतिहासिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐतिहासिक होने का भाव। २ प्राचीनता।

ऐतिह्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ रूढ़ि। प्रथा। रिवाज। २ इतिवृत्त। लेखाजोखा।

ऐतुⓅ—वि० [सं० अयुत] दस सहस्र। उ०—अट्ठारह धृति छब्बिस ऐतु इकीस सै ऊपर चव्वालीस।—छंदार्णव।

ऐन—संज्ञा पुं० दे० "अयन"।

वि० [अ०] १. ठीक। उपयुक्त।

ऐनक—संज्ञा स्त्री० [अ० ऐन=आँख] चश्मा।

ऐपन—संज्ञा पुं० [सं० अर्पण] हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से दीवाल, बैठने की वस्तु और घड़ा, कलश आदि पर थापा लगाते हैं।

ऐब—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ऐबी] १. दोष। दूषण। नुक्स। २ अवगुण। कलंक।

ऐबी—वि० [अ०] १ खोटा। बुरा। २. नटखट। दुष्ट। ३ विकलांग, विशेषत काना।

ऐया†—संज्ञा स्त्री० [सं० आर्या प्रा० अज्जा] १ बड़ी बूढ़ी स्त्री। २ दादी। ३ सास या सास की सास।

ऐयार—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० ऐयारा, ऐयारी] चालाक। धूर्त। धोखेबाज। छली। मक्कार।

ऐयारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] चालाकी। धूर्तता। मक्कारी।

ऐयाश—वि० [अ०] [संज्ञा ऐयाशी] १. बहुत ऐश या आराम करनेवाला। विलासी। २ विषयी। लंपट। इंद्रियलोलुप।

ऐयाशी—संज्ञा स्त्री० [अ०] विषयासक्ति। भोगविलास।

ऐराक—संज्ञा पुं० दे० "एराक"।

ऐरा-गैरा—वि० [अ० गैर] १ बेगाना। अजनबी। अपरिचित (आदमी)। २ तुच्छ। हीन।

मुहा०—ऐरा-गैरा-नत्थू खैरा = अपरिचित व्यक्ति। राह चलता आदमी।

ऐरापतिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ऐरावत"।

ऐरावत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ऐरावती] १ बिजली से चमकता हुआ बादल। २ इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।

ऐरावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐरावत हाथी की हथिनी। २ बिजली। ३ रावी नदी।

ऐल—संज्ञा पुं० [सं०] मनु की कन्या इला और बुध से उत्पन्न पुत्र। पुरूरवा। १ बाढ़। बूड़ा। २ अधिकता। बहुतायत। ३ कोलाहल।

ऐश—संज्ञा पुं० [अ०] आराम। चैन। भोग विलास।

ऐश्वर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विभूति। धन-

संपत्ति। समृद्धि। २. अणिमादिक सिद्धियाँ। ३. प्रभुत्व। आधिपत्य।

ऐश्वर्यवान्—वि० [सं०] [स्त्री० ऐश्वर्यवती] वैभवशाली। संपत्तिवान्। सपन्न। समृद्ध।

ऐसा—वि० दे० "ऐसा"।

ऐसा—वि० [सं० ईदृश] [स्त्री० ऐसी] इस प्रकार का। इस ढग का। इसके समान।

मुहा०—ऐसा तैसा या ऐसा वैसा = साधारण। तुच्छ। अदना।

ऐसी की तैसी = किसी के प्रति अत्यत उपेक्षा, निरादर और अमर्ष सूचित करने का भाव।

ऐसे—क्रि० वि० [हिं० ऐसा] इस ढब से। इस ढग से। इस तरह से।

ऐहिक—वि० [सं०] इस लोक से सबंध रखनेवाला। सासारिक। दुनियावी।

ओ

ओ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और कठ है।

ओं—अव्य० [अनु०] १. अनुमोदन या स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ। अच्छा। तथास्तु। २ परब्रह्मवाचक शब्द जो प्रणव मंत्र भी कहलाता है। ३. स्मृतियों के अनुसार ब्रह्म के मुँह से निकला हुआ पहला शब्द जो बड़ा मांगलिक माना जाता है और शुभ कार्य के आदि में प्रयुक्त होता है। ४ ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति का द्योतक शब्द जिसमें अ = विष्णु, उ = शिव और म् = ब्रह्मा का संकेतक माना जाता है। प्रणव। ओंकार।

ओंछना—क्रि० स० [सं० अचन] वारना। निछावर करना।

ओंकना—क्रि० अ० [सं०√उख्] हट या फिर जाना (मन का)।

क्रि० अ० दे० "ओकना"।

ओंकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. परब्रह्म का सूचक "ओं" शब्द। २. सोहन चिड़िया।

ओंगना—क्रि० स० [सं० अजन] गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से फिरे।

ओंठ—संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] १. मुँह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं। लब। होंठ। २ किनारा। छोर।

मुहा०—ओंठ चबाना = क्रोध और दु ख प्रकट करना। ओंठ चाटना = किसी वस्तु को खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओंठों पर जीभ फेरना। ओंठ दबाना = (१) भय प्रकट करना। (२) निवारण करना। रोकना। ओंठ फड़कना = क्रोध के कारण ओंठ काँपना। ओंठ हिलना या हिलाना = बोलने का प्रयत्न करना।

ओंडा (पु)—वि० [?] गहरा।

सज्ञा पु० १ गड्ढा। गढा। २ चोरों की खोदी हुई सेंध।

ओंवी (वी)—सज्ञा स्त्री० [देश०] हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित एक छद जो मूलत पहले तीन चरणों में ८ और अतिम चरण में ७ वर्णों का है किंतु कवियों ने इस नियम को न मानकर वर्णों को इच्छानुसार घटा बढा लिया है, जैसे—पौरववशी प्रख्यातकीर्ती। दुष्यंतनामा गुणैक मूर्ती। श्रेष्ठ भूपाल चक्रवर्ती। वीर्ये शौर्ये आगळा (१०-१०-६-७ वर्ण)। इसके जन्मदाता आचार्य ज्ञानेश्वर जी माने जाते हैं। इसकी सबसे बड़ी पहचान प्रथम तीन चरणों में अत्यानुप्रास या उसकी ध्वनि है।

ओ—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

अव्य० १. एक सबोधनसूचक शब्द। २ विस्मय या आश्चर्यसूचक शब्द। ओह। ३ एक स्मरणसूचक शब्द।

ओक—सज्ञा पुं० [सं०] १ घर। निवास-स्थान। आश्रय। ठिकाना। २ नक्षत्रों या ग्रहों का समूह।

सज्ञा स्त्री० [अनु०] मतली। कै।

सज्ञा पुं० [?] अंजली।

ओकना—क्रि० अ० [अनु०] १ कै करना। २ भैंस की तरह चिल्लाना।

ओकपति—सज्ञा पुं० [स० ओक+पति।] १ गृहपति। २ सूर्य। ३ चद्रमा।

ओकाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० ओक+आई (प्रत्य०)] वमन। कै।

ओकारांत—वि० [सं०] जिसके अत में "ओ" अक्षर हो, जैसे—फोटो, देखो, लाओ।

ओखद—सज्ञा स्त्री० दे० "औषध"।

ओखली—सज्ञा स्त्री०[सं० उलूखल] ऊखल।

मुहा०—ओखली में सिर देना = कष्ट सहने पर उतारू होना।

ओखली में सिर देना तब मूसलों को क्या गिनना = कठिन काम हाथ में लेने पर विघ्न-बाधाओं की परवाह न करना।

ओखा (पु)—सज्ञा पुं० [सं० √ओख् ?] मिस। बहाना। हीला।

वि० [सं०√ओख् = सूखना, पं० ओखा = टेढ़ा, कठिन] १. रूखा सूखा। २ कठिन। विकट। टेढ़ा। ३. खोटा। जो शुद्ध या खालिस न हो। 'चोखा' का उलटा। ४. झीना। विरल।

ओखाणो—सज्ञा पुं० [सं० उपाख्यान] १ कहानी। कथा। २ कहावत।

ओग (पु)—सज्ञा पुं० [हिं०√उगह] कर। चदा। उ०—पैंडो देहु बहुत अब कीनो सुनत हँसैंगे लोग। सूर हमैं मारग जनि रोकहु घर तें लीजै ओग।—सूर०।

ओघ—सज्ञा पु० [सं०] १ समूह। ढेर। उ०—सिय निंदक अघ ओघ नसाए। लोक विसोक बनाइ बसाए।—मानस। २ किसी वस्तु का घनत्व। ३ बहाव। धारा। बाढ़। उ०—प्यासा हूँ मैं अब भी प्यासा संतुष्ट ओघ से मैं न हुआ।—कामायनी। ४ "काल पाकर सब काम आप ही हो जायगा।" इस प्रकार का सतोष। कालतुष्टि (सांख्य)।

ओछा—वि० [सं० अवच] १. जो गभीर या उच्च.शय न हो। तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। उ०—इन बातन कहुँ होत बड़ाई। डारत, खात देत नहिं काहू ओछे घर निधि आई।—सूर०। २ जो गहरा न हो। छिछला। ३ हलका। कमजोर। ४. छोटा। कम।

ओछाई—संज्ञा स्त्री० दे० "ओछापन"।

ओछापन—संज्ञा पुं० [हिं० ओछा+पन (प्रत्य०)] नीचता। क्षुद्रता। छिछोरापन।

ओज—संज्ञा पुं० [सं० ओजस्] १. बल। वीर्य। प्रताप। तेज। शक्ति। योग्यता। २. उजाला। प्रकाश। ३. काव्य या साहित्य का वह गुण जिसमें सुननेवाले के चित्त में आवेश उत्पन्न हो। टवर्गी अक्षरों की अधिकता, संयुक्ताक्षरों की बहुतायत और समासयुक्त शब्दों से यह गुण अधिक आता है। वीर और रौद्र रस के लिये यह गुण आवश्यक है। ४. शरीर के भीतर रसों का सार भाग।

ओजना†—क्रि० स० [सं० अवरुधन] अपने ऊपर लेना। रोकना।

ओजस्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेज। कांति। दीप्ति। प्रभाव।

ओजस्वी—वि० [सं० ओजस्विन्] [स्त्री० ओजस्विनी] शक्तिवान्। प्रभावशाली।

ओझ—संज्ञा पुं० [हिं० ओझर] १ पेट की थैली। पेट। २ आँत।

संज्ञा पुं० दे० "ओझा"।

ओझर—संज्ञा पुं० [प्रा० ओज्झरी] पेट।

ओझरी—संज्ञा पुं० दे० "ओझर"। उ०—ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे।—कविता०।

ओझल—संज्ञा पुं० [सं० अवरुधन प्रा० ओरुज्झन] ओट। आड़।

वि० लुप्त। गायब। अदृश्य।

ओझा—संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] १ ब्राह्मणों की एक शाखा जो सरयूपारीणों में "ओझा" और मैथिलों तथा गुजराती ब्राह्मणों में केवल "झा" कहलाती है। २ भूतप्रेत झाड़नेवाला। ३. सयाना। वृद्ध। गुणी।

ओझाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओझा+ई (प्रत्य०)] ओझा की वृत्ति। भूतप्रेत झाड़ने का काम।

ओट—संज्ञा स्त्री० [?] १ रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। व्यवधान। आड़।

मुहा०—ओट में=बहाने से। हीले से।

२. आड़ करनेवाली वस्तु। उ०—तृण धरि ओट कहत वैदेही।—मानस। ३ शरण। पनाह। रक्षा।

ओटना—क्रि० स० [सं० आवर्तन] १ कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौलों को अलग करना। २ अपनी ही बात कहते जाना। बार बार दोहराना।

क्रि० स० [हिं० √ओढ़] बर्दाश्त करना। सहना।

ओटनी, ओटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओटना] ओटने की चरखी। बेलनी।

ओटपाय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० उत्पात] उपद्रव। झगड़ा।

ओठँगना†—क्रि० अ० [सं० अवस्थान+अंग ?] १. किसी वस्तु से टिककर बैठना। सहारा लेना। टेक लगाना। २ थोड़ा आराम करना। कमर सीधी करना।

ओठँगाना†—क्रि० स० [हिं० ओठगना का प्रे० रूप] १ सहारे से टिकाना। भिड़ाना। २ दो दरवाजों को सटाना। किवाड़ बंद करना।

ओड़—संज्ञा पुं० [हिं० ओट] दे० "ओट"।

संज्ञा पुं० [?] २ मिट्टी खोदने या उठाने वाला मजदूर। बेलदार। उ०—चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार। नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार।—बिहारी०।

ओड़न†—संज्ञा पुं० [हिं० ओड] १ ओड़ने की वस्तु। आघात या वार रोकने की चीज। २. ढाल। फरी।

ओड़ना—क्रि० स० [हिं० ओडन] १ रोकना। वारण करना। ऊपर लेना। २ (कुछ लेने के लिये) फैलाना। पसारना।

ओड़व—संज्ञा पुं० [सं०] रागों की वह जाति जिसमें पाँच ही स्वर हों।

ओड़ा—संज्ञा पुं० [?] १ दे० "औंडा"। २ बड़ा टोकरा। खाँचा। ३ कमी। टोटा।

ओड्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ उड़ीसा प्रदेश। २ उड़ीसा का निवासी। उड़िया।

ओढ़ना—क्रि० स० [प्रा० ओड्ढण] १ शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से ढकना। २ अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना। अपने ऊपर लेना। जिम्मा लेना।

संज्ञा पुं० ओढ़ने का वस्त्र।

ओढ़नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओढ़ना] स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। उपरनी। फरिया। चादर। चद्दर।

ओढ़र(पु)—संज्ञा पुं० [?] बहाना।

ओढ़ाना—क्रि० स० दे० "उढ़ाना"।

ओत—संज्ञा स्त्री० [सं० अवधि] १ आराम। चैन।† २. आलस्य। ३ किफायत। कंजूसी।

संज्ञा स्त्री० [सं० अवाप्ति] प्राप्ति। लाभ।

वि० [सं०] बुना हुआ।

ओतप्रोत—वि० [सं०] १. खूब मिला-जुला। घुलामिला। एक जुज। २. रंजित। व्याप्त। अनुस्यूत। ३. सराबोर। तर। डूबा हुआ।

संज्ञा पुं० तानाबाना।

ओता(पु)†—वि० दे० "उत्ता"।

ओद—वि० [सं० औदक] नम। तर। भीगा। गीला।

ओदन—संज्ञा पुं० [सं०] पका हुआ चावल। भात।

ओदर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उदर"।

ओदरना—क्रि० अ० [सं० अवदारण] १ विदीर्ण होना। फटना। जगह जगह से फटकर अलग होना या गिरना (मिट्टी आदि की दीवाल का)। २ छिन्न भिन्न होना। नष्ट होना।

ओदा—वि० पुं० [सं० औदक] [स्त्री० ओदी] गीला। नम। तर। भीगा।

ओदारना†—क्रि० स० [सं० अवदारण] १ विदीर्ण करना। फाड़ना। २ छिन्न भिन्न करना। नष्ट करना।

ओनंत(पु)—वि० [सं० अवनत] १ झुकता हुआ। नत होता हुआ। २ झुका हुआ। नत।

ओनचन—संज्ञा स्त्री० दे० "उनचन"।

ओनचना—क्रि० स० दे० "उनचना"।

ओनवना(पु)†—क्रि० अ० दे० "उनवना"।

ओना†—संज्ञा पुं० [सं० उद्गमन] तालाबों में पानी के निकलने का मार्ग। निकास।

ओनामासी—संज्ञा स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १ अक्षरारंभ। २ प्रारंभ। शुरू।

ओप—संज्ञा स्त्री० [प्रा० ओप्पा] १ चमक। दीप्ति। आभा। कांति। शोभा। उ०—पिय आगम औरै बढ़ी आनन ओप अनूप।—बिहारी०। २. पालिश।

ओपची—संज्ञा पुं० [हिं० ओप+फा० ची (प्रत्य०)] कवचधारी योद्धा। रक्षक। योद्धा।

ओपना—क्रि० स० [हिं० ओप] चमकाना। पालिश करना।

क्रि० अ० चमकना।

ओपनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।

ओपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओप] १ मसाव या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर सोना या चाँदी चमकाते

है। मोहरा। २. पत्थर या ईंट का टुकड़ा जिसपर तलवार, कटारी आदि रगड़कर साफ की जाती है।

ओफ—अव्य० [अनु०] पीड़ा, खेद, शोक और आश्चर्यसूचक शब्द। ओह।

ओबरी|—संज्ञा स्त्री० [सं० अपवरका] छोटा घर। अंधकारमय कोठरी। अंध-कोठरी।

ओम्—संज्ञा पुं० [सं०] प्रणव मंत्र। ओंकार। दे० "ओं"।

ओर—संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १ किसी वस्तु या स्थान का पार्श्व जिसकी स्थिति व्यक्त करने के लिये दाहिनी (दाहिना, दाहिने), बाँई (बायाँ, बाएँ), ऊपर, नीचे आदि शब्दों का व्यवहार होता है। तरफ। २ दिशा। ३ पक्ष, जैसे—आप उनकी ओर से कुछ कहना चाहते हैं।

विशेष—इस शब्द के पहले किसी संख्यावाचक शब्द के रहने पर इसका व्यवहार पुलिङ्ग के समान होता है; जैसे, घर के चारों ओर। उसके दोनों ओर।

संज्ञा पुं० सिरा। छोर। किनारा।

मुहा०—ओर निभाना या निबाहना = अंत तक किसी का साथ देना। किसी की सहायता बराबर करते रहना।

४ आदि। आरंभ।

ओरती—संज्ञा स्त्री० दे० "ओलती"।

ओरना(पु)|—क्रि० अ० [हिं० ओर] समाप्त होना। खत्म होना।

ओरमना—क्रि० अ० [सं० अवलंबन] लटकना। झुकना।

ओरवना|—क्रि० अ० [?] १ बच्चा देने का समय निकट आ जाना (चौपायों के लिये)।

ओरहा—संज्ञा पुं० दे० "होरहा"।

ओराना|—क्रि० अ० [हिं० ओर = अंत + आना] समाप्त होना। खतम होना।

ओराहना|—संज्ञा पु० दे० "उलाहना"।

ओरी|—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओर] १ दे० "ओलती"। २. ओर। तरफ। पक्ष। उ०—इत वसिष्ट मुनि उतहि सतानँद, बंस-बखान करैं दोउ ओरी।—गीता०।

ओरौता|—वि० [हिं० ओर + औता (प्रत्य०)] अंतवाला। समाप्तिवाला।

ओरौती|—संज्ञा स्त्री० दे० "ओलती"।

ओलंदेज, ओलंदेजी—वि० [हालैंड देश] हालैंड देश संबंधी। हालैंड देश का।

ओलंबा, ओलंभा—संज्ञा पु० [सं० उपालंभ] उलाहना। शिकायत।

ओल—संज्ञा पु० [सं०] सूरन। जमीकंद। वि० गीला। ओदा।

संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड] १ गोद। २ आड़। ओट। ३ शरण। पनाह। ४. किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास ऋण की जमानत में उस समय तक के लिये रहना जब तक उस व्यक्ति को कुछ रुपया न लौटा दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी हो जाय। जमानत। ५ वह वस्तु या व्यक्ति जो दूसरे के पास इस प्रकार जमानत में रहे। एवज। ६ बहाना। मिस।

ओलती—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओर ?] ढालुवाँ छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है। ओरी।

ओलना—क्रि० स० [हिं० ओल] १ परदा करना। ओट में करना। २ ओढ़ना। रोकना। ३ ऊपर लेना। सहना।

क्रि० स० [सं० शूल, हिं० हूल] घुसाना। ठूँसना।

ओला—संज्ञा पु० [सं० उपल] १ बादलों से गिरनेवाले बर्फ के टुकड़े। वर्षोपल। करका। पत्थर। बिनौली। २. चीनी के छोटे छोटे गोले जिनसे शरबत बनाया जाता है।

वि० ओले जैसा ठंढा। बहुत सर्द।

संज्ञा पुं० [हिं० ओल] १ परदा। ओट। २ भेद। गुप्त बात। रहस्य।

ओलियाना—क्रि० अ० [हिं० ओल = गोद] १ गोद में समाना या घुसना। २. बल-पूर्वक भीतर घुसना।

क्रि० स० [हिं० √हूल] अंदर घुसाना। ठूँसना।

ओली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओल] १ गोद। २. अंचल। पल्ला।

मुहा०—ओली ओड़ना = आँचल फैला कर कुछ माँगना।

३ झोली।

ओलू—संज्ञा पुं० [?] विरहजन्य-स्मृति। जुदाई की याद।

ओवरकोट—संज्ञा पु० [अँ०] जाड़े में पहनने का एक प्रकार का बड़ा कोट। कोट के ऊपर पहना जानेवाला कोट। लबादा।

ओषधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दवा। जड़ीबूटी जो दवा में काम आवे। २ पौधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।

ओषधिपति, ओषधीप—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

ओष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] होंठ। ओंठ।

ओष्ठ्य—वि० [सं०] १. ओंठ संबंधी। २. जिसका उच्चारण ओंठ से हो।

यौ०—ओष्ठ्यवर्ण, उ, ऊ, प, फ, ब, भ और म।

ओस—संज्ञा स्त्री० [सं० अवश्याय] वायु-मंडल में मिली हुई भाप जो रात की सरदी से ठंढी होकर जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शबनम।

मुहा०—ओस पड़ना या पड़ जाना = (१) कुम्हलाना। बेरौनक हो जाना। (२) उमंग नष्ट हो जाना। (३) लज्जित होना। शरमाना।

ओसर|—संज्ञा स्त्री० [सं० उपसर्या] बिना ब्याई हुई जवान भैंस।

ओसरी|—संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर] पारी। बारी।

ओसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ओसा + आई (प्रत्य०)] १. ओसाने का काम। २ ओसाने के काम की मजदूरी। दे० "ओसाना"।

ओसाना—क्रि० स० [सं० आवर्षण] दले, मले या दाँए हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर दाना और भूसा अलग करना। बरसाना। डाली देना।

ओसार—संज्ञा पुं० [सं० अवसर] १ फैलाव। विस्तार। चौड़ाई। २ दालान। बरामदा।

ओसारा|—संज्ञा पुं० [सं० उपशाला] [स्त्री० अल्पा० ओसारी] १ दालान। बरामदा। २. ओसारे की छाजन। साय-बान।

ओह—अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, दुःख या बेपरवाही का सूचक शब्द।

ओहट(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ओट"।

ओहदा—संज्ञा पु० [अ०] १ पद। स्थान।

ओहदेदार—संज्ञा पुं० [फा०] पदाधि-कारी। हाकिम। अधिकारी।

ओहरना|—क्रि० अ० [सं० अव √हृ, प्रा० ओहर] बढ़ी हुई नदी आदि का घटना। बाढ़ कम होना।

ओहार—संज्ञा पुं० [सं० अव + धार] आड़ या परदे के लिये रथ या पालकी को ढकने-वाला कपड़ा या परदा।

ओहो—अव्य० [सं० अहो] आश्चर्य या आनंदसूचक शब्द।

औ

औ—हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वरवर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह 'अ' और 'ओ' के संयोग से बना है।

औंकना—क्रि० अ० [हिं० ओंकना] हट जाना या फिर जाना। उचटना। उ०—काँपि उठी कमला मन सोचति मो सों कहा हरि को मन औंको—सुदामा०।

औंगना—क्रि० स० [सं० अंजन] बैलगाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।

औंगा—वि० [सं० अवाक्] गूँगा। मूक।

औंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० औंगा] १ गूँगी। न बोल सकनेवाली स्त्री या मादा। २ चुप्पी। गूँगापन।

औंघना, औंघाना—क्रि० अ० [सं० अवाङ्] ऊँघना। झपकी लेना।

औंघाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० औंघना] हलकी नींद। झपकी। ऊँघ।

औंजन(पु)—क्रि० अ० [सं० आ+√विज् =लौटना, भागना, काँपना] ऊबना। व्याकुल होना। अकुलाना।

क्रि० स० [देश०] ढालना। उड़ेलना।

औंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० √ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ भाग। किनारा। बारी। छोर।

औंड(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ओकर"।

औंडा—वि० [सं० अवट] [स्त्री० औंडी] गहरा। गंभीर।

वि० [हिं० √उमड़] उमड़ा हुआ।

औंदना(पु)—क्रि० अ० [सं० उन्माद या उद्विग्न] १. उन्मत्त होना। बेसुध होना। २ व्याकुल होना। घबराना। अकुलाना।

औंदाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० औंदना] ऊबना। व्याकुल होना। दम घुटने के कारण घबराना।

औंधना—क्रि० अ० [हिं० औंधा की ना० धा०] उलट जाना। उलटा होना।

क्रि० स० उलटा कर देना।

औंधा—वि० [सं० अव+मूर्धा] [स्त्री० औंधी] १. जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उलटा। २. पेट के बल लेटा हुआ। पट। ३. दुर्बुद्धि। मुँहदरोन। उलटी समझ का।

मुहा०—औंधी खोपड़ी का=मूर्ख। जड़। औंधी समझ=उलटी समझ। जड़ बुद्धि। औंधे मुँह गिरना=बेतरह धोखा खाना।

४ नीचा।

संज्ञा पुं० उलटा या चिलड़ा नाम का एक पकवान।

औंधाना—क्रि० स० [हिं० औंधना का स० रूप] १. उलटना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। उ०—औंधाई सीसी सुलखि विरह बरत बिललात। बीचहि सूखि गुलाब गौ छींटौ छुई न गात।—विहारी०। २ नीचा करना। लटकाना।

औंधापन—संज्ञा पुं० [हिं० औंधा+पन (प्रत्य०)] औंधा होने का भाव।

औंसना—क्रि० अ० [हिं० उमस] उमस होना।

औ(पु)—अव्य० दे० "और"।

औकात—संज्ञा पुं० [अ० वक्त का बहु०] समय। वक्त।

संज्ञा स्त्री० एक० १ वक्त। समय। २ हैसियत। वित्त। पौरुष।

औगत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अव+गति] दुर्दशा। दुर्गति।

वि० दे० "अवगत"।

औगाहना(पु)—क्रि० स० दे० "अवगाहना"।

औगी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। २ बैल हाँकने की छड़ी। पैना।

संज्ञा स्त्री० [सं० अवगर्त] जानवरों (विशेषत. हाथियों) को फँसाने का घास-फूस से ढँका गड्ढा।

औगुन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

औघट(पु)—वि० दे० "अवघट"।

औघड़—संज्ञा पुं० [सं० अघोर] [स्त्री० औघड़िन] १ आहार-विहार में शौच का एकांत परित्याग करनेवाला। श्मशान भूमि के अधजले मांस, मलमूत्र आदि से घृणा न करनेवाला। अघोर मत का पुरुष। अघोरी। २. बहुत गंदा व्यक्ति। काम में अच्छे बुरे का विचार न करनेवाला। अविवेकी।

वि० अंडबंड। उलटा पलटा।

यौ०—औघड़पंथ=तांत्रिक योगियों का वह मत और संप्रदाय जिसमें मलमूत्र में सना रहना, शव आदि का मांस खाना, मद्यपान करना, इत्यादि अनेक शौच विरुद्ध बातें कर्तव्य और सिद्धि के मार्ग की तरह ग्रहण की जाती हैं। काशी के कीनाराम बाबा इस पंथ के बहुत बड़े सिद्ध हो गए हैं। औघड़ पंथी=(१)औघड़ पंथ का अनुयायी। (२) औघड़ पंथ के सिद्धांत। (३) औघड़ पंथ का। औघड़ पंथ से संबद्ध।

औघर—वि० [सं० अव+घट] १ अटपट। अनगढ़। अंडबंड। 'सुघर' का प्रतिकूल। २ अनोखा। विलक्षण।

औचक—क्रि० वि० [सं० अव+√चक्] अचानक। एकाएक। सहसा। अतर्कित। उ०—औचक आइ गए गृह मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हों।—सूर०।

औचट—संज्ञा स्त्री० [सं० अव+√चट्] अंडस। संकट। कठिनता। अटपट।

क्रि० वि० १. अचानक। अकस्मात्। २. अनचीते में। भूल से। अनजान में। बिना सोचे हुए।

औचित(पु)—वि० [सं० अव+चिंता] १. चिंता रहित। २ बेखबर। ३. बेसुध। ४. किसी बात की फिक्र या परवाह न करनेवाला।

औचित्य—संज्ञा पुं० [सं०] उचित का भाव। उपयुक्तता।

औज—संज्ञा पुं० दे० "ओज"।

औजार—संज्ञा पुं० [अ०] वे उपकरण या काम करने में सहायक वस्तुएँ जिनसे इंजीनियर, सोनार, लोहार, बढ़ई, चमार, मिस्त्री, राज आदि कारीगर अपना काम करते हैं; जैसे—चिमटी, सँड़सी, हथौड़ी, घन, आरी, आरा, रेती, छेनी, करनी, बँसुली, बसूला, टेकुआ, सूजा आदि हथियार। राछ।

औझक—क्रि० वि० दे० "औचक"।

औझड़, औझर—क्रि० वि० [सं० अव+हिं० झड़ी] लगातार। निरंतर।

औटन—संज्ञा स्त्री० [हिं० औटना] औटने की क्रिया या भाव।

औटना—क्रि० स० [सं० आवर्तन, प्रा० आवट्टण] १ दूध या किसी पतली चीज को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। खौलाना। (पु) २ मथना। आलोड़ित करना। ३ किसी बात को आवश्यकता से अधिक दोहराना। ४ नाहक परेशान या तंग करना। व्यर्थ घूमना।

क्रि० अ० किसी तरल वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।

औटाना—क्रि० स० दे० "औटना"।

औठपाय—संज्ञा पुं० दे० "अठपाव"।

औढर—वि० [सं० अव+हिं० √ढर या √ढल]

१. जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाली। मनमौजी। २. पात्रापात्र का विचार न करके दान देनेवाला। ३. आगा-पीछा या परिणाम सोचे बिना काम करनेवाला।

औढरदानी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० औढर+दानी] १. पात्रापात्र, परिणाम या फल पर विचार न करके दान देनेवाला। २ शिव जी, जिन्होंने भस्मासुर, रावण, गुणनिधि आदि को परिणाम सोचे बिना वरदान दे दिया। उ०—औढरदानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन कर जोरे।—विनय०।

औतरना(पु)—क्रि० अ० दे० "अवतरना"

औतार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।

औत्तापिक—वि० [सं०] उत्ताप संबंधी। दुःख या संताप का।

औत्पत्तिक—वि० [सं०] उत्पत्ति संबंधी। जन्म का।

औत्सुक्य—संज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता।

औथरा(पु)—वि० दे० "उथला"। उ०—अति अगाधु, अति औथरो, नदी, कूपु, सरु, बाइ। सो ताकौ सागरु, जहाँ जाकी प्यास बुझाइ।—बिहारी०।

औदरिक—वि० [सं०] १ उदर या पेट संबंधी। २ बहुत खानेवाला। पेटू।

औदसा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अवदशा"।

औदार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. उदारता। २ सात्विक नायक का एक गुण।

औदास्य—संज्ञा पुं० [सं०] उदासीनता। उदासी। खिन्नता।

औदुंबर—वि० [सं०] १ उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. ताँबे का बना हुआ। ३ गूलर के वृक्षों से भरा हुआ।

संज्ञा पुं० १ गूलर की लकड़ी। गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २ तपस्वियों का एक संप्रदाय। ३ एक प्रकार का कीड़ा। ४ यम। ५ एक प्रकार का बाजा।

औद्धत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ अक्खड़पन। उजड्डपन। २ धृष्टता। ढिठाई। ३ चंचलता। ४. छिछोरापन।

औद्योगिक—वि०[सं०] उद्योग संबंधी। कारबार या व्यवसाय-धंधों से संबंध रखनेवाला।

औध(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवध"। संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

औधारना—क्रि० स० दे० "अवधारना"।

औधि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

औनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।

औनि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अवनिप] राजा।

औनेपौने—क्रि० वि० [हिं० ऊन (कम) +पौना (¾ भाग)] आधे तीहे पर। थोड़े बहुत पर। कमती बढ़ती पर।

मुहा०—औने पौने करना=जितना बाजार भाव हो उतने ही पर या उससे कुछ कम पर भी बेच डालना।

औपचारिक—वि० [सं०] १ उपचार-संबंधी। काम चलाऊ। २. जो केवल कहने सुनने के लिये हो। जो वास्तविक न हो। जो केवल दिखावे के लिये हो।

औपनिवेशिक—वि० [सं०] १ नए बसाए हुए प्रदेश या उपनिवेश संबंधी। २ उपनिवेशों का सा।

यौ०—औपनिवेशिक स्वराज्य=कुछ विशिष्ट अधिकारों से युक्त एक प्रकार का स्वराज्य (आंतरिक शासन की स्वतंत्रता) जो ब्रिटिश साम्राज्य में आस्ट्रेलिया और कनाडा आदि उपनिवेशों को प्राप्त है (अं० डोमिनियन स्टेटस)।

औपनिषदिक—वि० [सं० औपनिषद] उपनिषद् संबंधी। उपनिषद् के समान।

औपन्यासिक—वि० [सं०] १ उपन्यास-विषयक। उपन्यास संबंधी। २ उपन्यास की बातों के समान। २ उपन्यास में वर्णन करने योग्य। ४. अद्भुत।

संज्ञा पुं० उपन्यास लेखक।

औपपत्तिक—वि० [सं०] १ तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला। तर्कसाध्य। २ सैद्धांतिक।

औपपत्तिक शरीर—संज्ञा पुं० [सं०] देव-लोक और नरक के जीवों का नैसर्गिक या सहज शरीर। लिंग शरीर।

औपश्लेषिक (आधार)—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में अधिकरण कारक के अंतर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरी वस्तु का लगाव हो।

औपसर्गिक—वि० [सं०] उपसर्ग संबंधी।

औम(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अवम] एक सूर्योदय के बाद और दूसरे सूर्योदय के पहले प्रारंभ और समाप्त हो जाने से न गिनी जानेवाली तिथि। अवम तिथि।

और—अव्य०[सं० अपर] एक संयोजक शब्द। दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द।

वि० १ दूसरा। अन्य। २ भिन्न।

मुहा०—और का और=कुछ का कुछ। विपरीत। अंडबंड। और क्या=हाँ। ऐसा ही। बिलकुल यही। (उत्तर में) उत्साह-वर्धक वाक्य। और तो और=दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य की बात नहीं। दूसरों की बात जाने दीजिए। और ही कुछ होना=सबसे निराला होना। विलक्षण होना। और तो क्या=और बातों का तो जिक्र ही क्या।

३ अधिक। ज्यादा।

औरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्त्री। २. जोरू।

औरस—संज्ञा पुं० [सं०] विधिवत् पाणि-गृहीता स्त्री से उत्पन्न संतान।

वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो। वैध।

औरसना(पु)—क्रि० अ० [सं० अव=बुरा+रस] विरस होना। अनखाना। रुष्ट होना।

औरेब—संज्ञा पुं० [फा० उरेब] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। ३ पेंच। उलझन। ४ पेंच की बात। चाल की बात।

औलना—क्रि० अ० [सं०√उल्=जलना] १ जलना। गरम होना। २ गरमी पड़ना।

औलाद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संतान। संतति। २ वंशपरंपरा। नस्ल।

औलामौला—वि० [अ० औला+मौला] मनमौजी।

औलिया—संज्ञा पुं० [अ० वली का बहु०] मुसलमान सिद्ध। पहुँचा हुआ फकीर।

औवल—वि० [अ०] १. पहला। प्रथम। २ प्रधान। मुख्य। ३ सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

संज्ञा पुं० आरंभ। शुरू।

औशि(पु)—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औषध—संज्ञा स्त्री० [सं०] रोग दूर करनेवाली वस्तु। दवा।

औसत—संज्ञा पुं० [अ०] १. बराबर का परता। समष्टि का समविभाग। २. सामान्य। मामूली। साधारण।

वि० माध्यमिक। दरमियानी।

औसना†—क्रि० अ० [हिं० ऊमस] १ गरमी पड़ना। ऊमस होना। २. खाने की चीजों का बासी होकर सड़ना। ३. गरमी से व्याकुल होना।

औसर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवसर"।

औसान—संज्ञा [सं० अवसान] १. अंत। २. परिणाम।

संज्ञा पुं० [फा०] सुधबुध। होशहवास।

औसि(पु)—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औसेर—संज्ञा स्त्री० दे० "अवसेर"।

औहत—संज्ञा स्त्री० [सं० अपघात] १ अपमृत्यु। २. दुर्गति। दुर्दशा।

औहाती—संज्ञा स्त्री० दे० "अहिवाती"।

क

क—हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं।

कं—संज्ञा पुं० [सं० कम्] १ जल। उ०—सिंधु भव के पत्र वन दो वनै चक्र अनूप। देव क को छत्र छावत सकल सोभा रूप॥—सूर०। सत्य तोयनिधि, कपति, उदधि, पयोधि, नदीश।—मानस। २ मस्तक। ३ सुख। ४ अग्नि। ५. काम। ६ ब्रह्मा या प्रजापति। ७ विष्णु। ८ वायु। ९ यम। १० सूर्य। ११. आत्मा। १२ राजा या राजकुमार। १३ गरुड। १४ मयूर। १५. पक्षी। १६. मन। १७ शरीर। १८ समय। १९ बाल। २० बादल। २१ ज्योति। चमक। २२. धन। संपत्ति। २३ शब्द। ध्वनि। २४ एक तद्धित जो विशेषत संज्ञा में लगकर कमी, समानता, स्नेह आदि का अर्थ प्रकट करता है, जैसे—बालक, शावक, पुत्रक, कुलक आदि।

कंक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कंका, कंकी] (पु) १ सफेद चील। काँक। २ क्रौंच। बकुला। बगला।

यौ०—कंकपत्र=क्रौंच के पंख से सजा या सजाया हुआ तीर। वह तीर या बाण जिसके एक ओर क्रौंच का पंख लगा हो।

३. एक प्रकार का बड़ा आम। ४ यम। ५. क्षत्रिय। वृष्णि वंशी। ६ नकली या बना हुआ ब्राह्मण। युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे अपने वनवास के अज्ञातवासवाले तेरहवें वर्ष मत्स्य देश के राजा विराट के यहाँ ब्राह्मण बनकर अपने दिन काट रहे थे।

कंकड़—संज्ञा पुं० [सं० कर्कर=१ कड़ा, सख्त। २. टुकड़ा] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी] [वि० कँकड़ीला] १ पत्थर का छोटा टुकड़ा। २ चिकनी मिट्टी और चूने के योग से बना प्राकृतिक रोड़ा जो सड़क बनाने के काम आता है। रोड़ा। ३ किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके। अँकड़ा। ४ सूखा या सेंका हुआ तमाकू।

मुहा०—कंकड़ पत्थर=व्यर्थ की चीज। कूड़ा करकट।

कँकड़ीला—वि० [हिं० कंकड़+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँकड़ीली] कंकड़ मिला हुआ।

कंकण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कलाई में पहनने का आभूषण। कंगन। कड़ा। वलय। २ वह धागा जो विवाह से पहले दुलहे या दुलहिन के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "कंकण।"

कंकरीट—संज्ञा स्त्री० [अँ० कांक्रीट] १. चूना, कंकड़, बालू इत्यादि से मिलकर बना हुआ छत या सड़क आदि बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २ छोटी छोटी कंकड़ी जो सड़कों में बिछाई और कूटी जाती है।

कँकरीला—वि० दे० "कँकड़ीला।"

कँकरेत—वि० दे० "कँकड़ीला"।

कंकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठठरी। पंजर। अस्थिपंजर। (शरीर का) हड्डियों का ढाँचा। २ संगीत की एक तर्ज।

कंकालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा का एक रूप। २ उग्र और दुष्ट स्वभाव की स्त्री। कर्कशा।

कंकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नीच जाति जो कंजड़ों की तरह गाँवों में घूमा करती है और गाय भी काटती है।

संज्ञा पुं० ब्रह्म पुराण के एक यक्ष का नाम।

संज्ञा स्त्री० दे० "कंकालिनी।"

कंकेलि—संज्ञा पुं० [सं०] अशोक का पेड़।

कंकोल—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद जिसके फल महँकदार, बड़े और कड़े होते हैं। कँकोर।

कँखवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+वारी] वह फुड़िया जो काँख में होती है।

कँखौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+औरी] १ काँख। २ दे० "कँखवारी"।

कंगन—संज्ञा पुं० [सं० कंकण] दे० "कंकण"।

मुहा०—हाथ कंगन को आरसी क्या=प्रत्यक्ष बात के लिये प्रमाण की क्या आवश्यकता।

कँगना—संज्ञा पुं० [हिं० कंगन] [स्त्री० कँगनी] १ दे० "कंकण"। २ वह गीत जो कंकण बाँधते समय गाया जाता है।

कँगनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कँगना] १ छोटा कंगन। २ छत या छाजन के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर जो खूबसूरती के लिये बनाई जाती है। कगर। कार्निस। ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगूरे हों।

संज्ञा स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाए जाते हैं। काकुन। ककुनी। टाँगुन।

कँगला—वि० दे० "कंगाल"।

कंगाल—वि० [सं० कंकाल] १ भुखमरा। भुक्खड़। अकाल का मारा। २ निर्धन। दरिद्र। अकिंचन।

कंगाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंगाल] निर्धनता। गरीबी।

कँगुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कानी+उँगली] सबसे छोटी उँगली।

कँगूरा—संज्ञा पुं० [फा० कुंगुर.] [वि० कँगूरेदार] १ शिखर। चोटी। २ किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ खड़े होकर प्राचीन काल में सिपाही लड़ते थे। बुर्ज। ३ कँगूरे के आकार का छोटा रवा (गहनों में)।

कंघा—संज्ञा पुं० [सं० कंकट] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १ लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई चीज जिसमें बहुत से लंबे लंबे पतले दाँत होते हैं और जिससे सिर के बाल झाड़े या सँवारे जाते हैं। २ जुलाहों का एक औजार जिससे वे करघे में भरनी के तागों को कसते हैं। बय। बौला।

कंघी—संज्ञा स्त्री० [सं० कंकतिका] १ छोटा कंघा।

मुहा०—कंघी चोटी=बनाव सिंगार।

२ जुलाहों का कंघी नामक औजार जिससे करघे पर सूत बैठाए जाते हैं। ३ एक पौधा जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा के काम में आती है। अतिबला।

कँघेरा—संज्ञा पुं० [हिं० कंघा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कँघेरिन] कंघा बनानेवाला।

कंचन—संज्ञा पुं० [सं० कांचन] १. सोना। सुवर्ण।

मुहा०—कंचन बरसना=अटूट धन संपत्ति होना। उ०—आवत ही हरपै नहीं, नैनन नहीं सनेह। तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरपै मेह।—दोहा०।

२ धन । सपत्ति । ३. धतूरा । ४. एक प्रकार का कचनार । रक्तकाचन । ५ [स्त्री० कचनी] एक जाति का नाम जिसमें स्त्रियाँ प्राय. वेश्या का काम करती हैं । ६. सोने सा रग । स्वर्ण के समान वर्ण या शरीर की कांति । चंपक वर्ण । ७ पीलापन लिए लाली ।

वि० १ नीरोग । स्वस्थ । २ स्वच्छ ।

कंचनक—सज्ञा पुं० [स०] १. कचनार । २ मैनफल । ३. स्वर्ण ।

कचनवान—सज्ञा पुं० दे० "धनवान" ।

कचनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० कचन] वेश्या ।

कचु, कँचुआ—संज्ञा पु० दे० "कचुक" ।

कचुक—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० कचुकी] १ जामा । चपकन । अचकन । २. चोली । अँगिया । ३ वस्त्र । आवरण । ढक्कन । ४ बक्तर । कवच । ५ केंचुल । ६ छिपने या छिपाने का साधन । आच्छादक । ७ वाना । पोशाक । वर्दी ।

कचुकी—सज्ञा स्त्री० [सं० कचुक] अँगिया । चोली ।

सज्ञा पुं० [स०] १ रनिवास की दास-दासियों का अध्यक्ष । अंत पुर-रक्षक । २ द्वारपाल । ३ साँप । ४ लपट ।

कचुरि⑤—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचुल", "केचुली" ।

कँचेरा—सज्ञा पु० [हिं० काँच+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कँचेरिन] काँच का काम करनेवाला । चूड़ियाँ वनानेवाला ।

कज—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा । २. भगवान् विष्णु की नाभि से निकला हुआ कमल । ३ पैरों में कमल के आकार की उपटी हुई रेखाएँ । कमल । पद्म । ४ अमृत । ५. सिर के वाल । केश ।

कजई—वि० [हिं० कजा] १ कजे के रग का । धूएँ के रग का । खाकी । २ गाढे हरे रग का ।

सज्ञा पुं० १ खाकी रग । २ गाढा हरा रग । ३. वह घोड़ा जिसकी आँख कजई रंग की हो ।

कंजड़, कजर—सज्ञा पुं० [देश० या कालंजर] [स्त्री० कजड़िन] १ एक खानावदोश जगली जाति । विलायत के जिप्सियों की तरह की एक असभ्य भारतीय जाति जो अपने वालवच्चों के साथ घर का सारा सामान लादकर देश भर में घूमती फिरती जीवन विताती है । एक घूमनेवाली जाति । २ रस्सी बटने और सिरकी वनाने का काम करनेवाली एक जाति ।

कजा—संज्ञा पुं० [स० करज] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली के दाने औषध के काम में आते हैं । करजुवा ।

वि० [स्त्री० कंजी] १ कजे रग का । गहरा खाकी । २ जिसकी आँख कजे रग की हो ।

कंजावलि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त ।

कँजियाना—क्रि० अ० [हिं० कजा] १ अंगारे का ठंडा पड़ना । २ काला पड़ना । ३ आँखों का कजा होना ।

कजूस—वि० [?] [सज्ञा कजूसी] जो धन का भोग न करे । कृपण । सूम ।

कंटक—सज्ञा पुं० [स०] [वि० कटकित] १ काँटा । २ सूई की नोक । ३. शत्रु । ४ विघ्न । वाधा । वखेड़ा । ५ रोमाच । ६ वाधक । विघ्नकर्ता । ७ कवच ।

कटकफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कटहल । पनस । २ सिंघाड़ा । ३ काँटेदार छिलकेवाला फल ।

कंटकारी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ भटकटैया । कटेरी । छोटी कटाई । २ सेमल ।

कटकित—वि० [स०] [स्त्री० कटकिता] १ काँटेदार । २ काँटों से भरा या घिरा हुआ । ३ रोमाचित । पुलकित ।

कंटकी—वि० [सं० कटकिन्] काँटेदार ।

सज्ञा स्त्री० [स०] भटकटैया ।

कंटकीफल—दे० "कटकफल" ।

कंटर—सज्ञा पुं० [अँ० डिकैंटर] शीशे की वनी सुदर सुराहीनुमा टोंटीदार वोतल जिसमें शराव दस्तरखान (खाने की मेज) पर लाई जाती है ।

कंटाइन—सज्ञा स्त्री० [स० कृत्यका] १ चुड़ैल । डाइन । २. झगड़ालू स्त्री ।

कटाय—सज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] एक कँटीला पेड़ जिसकी लकड़ी के यज्ञपात्र वनते हैं ।

कँटार—वि० [हिं० काँटा] १ काँटेदार । कँटीला । २ खुरदरा ।

कँटिया—सज्ञा स्त्री० [हिं० काँटी+इया (प्रत्य०)] १ काँटी । छोटी कील । २ मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी । ३ अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं । ४. सिर पर का एक गहना ।

कँटीला—वि० [हिं० काँटा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँटीली] काँटेदार । जिसमें काँटे हों ।

कंटोप—सज्ञा पुं० [हिं० कान+√तोप] टोपी जिससे सिर और कान ढके रहते हैं ।

कंठ—संज्ञा पुं० [स०] [वि० कठ्य, भाव० कठता] १ टेंटुआ । घाँटी । घेंटुआ । घेघा । २ गला । गर्दन । ३. स्वरनलिका । वायु के शरीर में आनेजाने की नली । श्वास-प्रश्वास की नली । ४. भोजन की नली । ५ स्वर । शब्द । ध्वनि । आवाज । ६. किसी वरतन का मुख । मोहाड़ । मोहाडी । मुँही । ७ सामीप्य । ८ पक्षियों के गले में पूर्ण अवस्था पर पड़नेवाली रंग विरंगी रेखा । हँसली । कंठा । ९. तट । तीर । किनारा ।

मुहा०—कठ फूटना =(१) वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना । (२) मुँह से शब्द निकलना । (३) घाँटी फूटना । युवावस्था आरंभ होने पर आवाज का वदलना । कठ करना या रखना = जवानी याद करना या रखना । कठ होना = याद होना । स्मरण रहना । कठ सूखना = प्यास से व्याकुल होना । कठ दवाना = मार डालना । कंठ खुलना = मुँह से आवाज निकलना । कठ खोलना = वोलना शुरू करना । कंठ फोड़ना = बोलने का अभ्यास करना । कंठ वैठना = गला वैठना । कठ में होना या वैठना = (१) सदा उपस्थित रहना । (२) वरावर याद रहना । कठ में सरस्वती का वैठना = सवका ज्ञान हो जाना । कृतविद्य होना ।

कंठगत—वि० [स०] १ गले में आया हुआ । गले में अटका हुआ । २. मरणासन्न । समाप्तप्राय ।

मुहा०—प्राण कठगत होना = प्राण निकलने पर होना । मृत्यु का निकट आना ।

कंठतालव्य—वि० [सं०] (वर्ण) जिनका उच्चारण कठ और तालु स्थानों से मिलकर हो । 'ए' और 'ऐ' वर्ण ।

कठमाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] गले का एक रोग जिसमें क्षुधाक्षीणता (मंदाग्नि) और मदज्वर के साथ गले की गिलटियाँ सूज आती हैं और कुछ दिनों तक दर्द करने के वाद पककर वहने लगती हैं और रोगी सूखकर मर जाता है । डाक्टरों के अनुसार गिलटियों का क्षय या यक्ष्मा । गलगड । गडमाला ।

कंठसिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कंठश्री] गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण। २. कंठी।

कंठस्थ—वि० [सं०] १ गले में अटका हुआ। कंठगत। २. जुबानी। कंठाग्र।

कंठा—संज्ञा पुं० [सं० कंठक] [स्त्री० अल्पा० कंठी] १. वह विभिन्न रंगों की रेखा जो पक्षियों के गले के चारों ओर निकल आती है। हँसली। २ गले का एक गहना जिसमें बड़े बड़े मनके होते हैं। ३ कुरते या अँगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले पर रहता है।

कंठाग्र—वि० [सं०] कंठस्थ। जबानी।

कंठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी गुरियों का कंठा। २ तुलसी आदि की मनियों की माला (वैष्णव)।

मुहा०—कंठी देना या बाँधना=चेला करना या चेला बनाना। कंठी लेना=(१) किसी गुरु से दीक्षा लेना। गुरुमंत्र लेना। (२) धार्मिक जीवन बिताना। (३) मद्यमांस छोड़ना। संयम-नियम का पालन करना। नेमधर्म निबाहना।

३. तोते आदि पक्षियों के गले की रेखा। हँसली। कंठी।

कंठीरव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह। व्याघ्र। शेर। २. कबूतर। तीतर। ३ मस्त हाथी।

कंठौष्ठ्य—वि० [सं०] [सं० कंठ+ ओष्ठ्य)] जो एक साथ कंठ और ओठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण।

कंठ्य—वि० [सं०] १. कंठ का। कंठ में। कंठ पर। २. कंठ या गले से उत्पन्न। ३ जिसका उच्चारण कंठ से हो। ४ गले या स्वर के लिये हितकारी।

संज्ञा पुं० १. वे वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता है; जैसे—अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग। २ गले के लिये उपकारी औषध।

कंडरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मांस पेशियों को हड्डी से जुड़ी रखनेवाली नस (जिनकी मनुष्य शरीर में कुल संख्या १६ मानी जाती है)। शरीर की नस। २ हृदय से सर्वांग में रक्त पहुँचानेवाली मोटी नस। ३ सर्वांग से हृदय में रक्त पहुँचानेवाली नस। ४. नाड़ी। शिरा। धमनी।

कंडा—संज्ञा पुं० [सं०√कंड्+हिं० आ (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १. जलाने का सूखा या सुखाया हुआ गोबर। उपला। गोहरी। गोइँठा।

मुहा०—कंडा होना=१ सूखना। दुर्बल हो जाना। २ मर जाना।

३. सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

कंडाल—संज्ञा पुं० [सं० कंडोल] नरसिंहा। तुरही। तूरी।

संज्ञा पुं० [सं० कंठाल] पानी रखने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

कंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंडा का अल्पा०] १. छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २. सूखा मल। गोटा।

कंडील—संज्ञा स्त्री० [अ० कंदील] मिट्टी, अबरक या कागज की वह लालटेन जिसमें मोमबत्ती या दीया रखा जाता है। यह प्राय. सजावट, बाँस पर लटकाने और आकाश में उड़ाने के काम आती है।

कंडु—संज्ञा स्त्री० [सं०] खुजली। खाज।

कंडौरा—संज्ञा पुं० [हिं० कंडा+औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कंडा पाथा या रखा जाय।

कंत, कंथ(५)—संज्ञा पुं० दे० "कांत"।

कंथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुदड़ी। कथड़ी।

†संज्ञा पुं० दे० "कांत"।

कंथी—संज्ञा पुं० [हिं० कंथा+ई (प्रत्य०)] गुदड़ीवाला। जोगी। साधु।

कंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे की हो, जैसे सूरन, शकरकंद इत्यादि। खाने योग्य गाँठदार जड़। २ लहसुन। ३. सूरन। ओल। ४ बादल। ५. संगीत में एक प्रकार का स्वर भेद। ६ तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें चार यगण और अंत्य लघु वर्ण होता है, जैसे—हरे ! राम ! हे राम ! हे राम ! हे राम ! हिए दास के आय कीजे सदा धाम ॥ ७ छप्पय के ७१ भेदों में से एक।

संज्ञा पुं० [फा० कंद] जमाई हुई चीनी। मिश्री।

कदन—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। ध्वंस।

कंदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। गुहा। घाटी।

कंदर्प—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कंदला—संज्ञा पुं० [सं० कंदल] १ चाँदी की वह गुल्ली या लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। पासा। रैनीं। गुल्ली। २ सोने या चाँदी का पतला तार।

प्र०—कंदला गलाना=चाँदी और सोने को एक में मिलाकर गलाना।

कंदा—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १. दे० "कंद"। २ शकरकंद। गंजी। † ३ घुइयाँ। अरुई।

कंदील—संज्ञा स्त्री० दे० "कंडील"।

कंदुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गेंद। २. गाल-तकिया। गलतकिया। गेंडुआ। ३. सुपारी। पुंगीफल। ४. उबालने का बर्तन। कड़ाही। तसला। ५ संगीत में एक प्रकार का स्वर। ६ १३ अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण और अंत्य गुरु रहता है, जैसे—धरो रूप वाराह धारी मही माथा। लियो कंदुकै काज काली अहीनाथा ॥

कँदैला—वि० [सं० कर्दम, प्रा० कद्दम+हिं० ऐला (प्रत्य०)] मलिन। गँदला। मलयुक्त।

कँदोरा—संज्ञा पुं० [हिं० कटि+डोरा] कमर में पहनने का एक तागा। करधनी।

कंध(५)—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १ डाली। २ दे० "कंधा"।

कंधनी—संज्ञा स्त्री० दे० "करधनी"।

कंधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरदन। ग्रीवा। २. बादल। ३. मुस्ता। मोथा।

कंधरा—संज्ञा स्त्री० दे० "कंधर"।

कंधा—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १ मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। गले के पास का पीठ का ऊपरी भाग जिससे दोनों हाथ जुटे रहते हैं। २ बाहुमूल। मोढ़ा।

मुहा०—कंधा देना=(१) अर्थी में कंधा लगाना। (२) सहारा देना। सहायता देना। कंधा बदलना=बोझ को एक कंधे से दूसरे कंधे पर लेना। कंधे से कंधा छिलना=बहुत अधिक भीड़ होना।

कंधार—संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] १. केवट। २ पार लगानेवाला। ३ चालक।

संज्ञा पुं० [सं० गन्धार] अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश।

कंधारी—वि० [हिं० कंधार] जो कंधार देश में उत्पन्न हुआ हो। कंधार का।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

कँधावर—संज्ञा स्त्री० [सं० कंध+आवरण] १ जूए का वह भाग जो बैल के कंधे के ऊपर रहता है। २ वह चद्दर या दुपट्टा जो कंधे पर डाला जाता है।

कँधेला—संज्ञा पुं० [हिं० कंधा+एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

कंप—संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी। काँपना। (८ सात्विक भावों में से एक)।
संज्ञा पुं० [अं० कैंप] पड़ाव। लशकर। छावनी। डेरा।
कँपकँपी—संज्ञा स्त्री० [सं० कंप+कंप+हिं० ई (प्रत्य०)] थरथराहट। काँपना।
कंपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंपित] काँपना। थरथराहट। कँपकँपी।
कँपना—क्रि० अ० [सं० कंपन] १ हिलना। डोलना। काँपना। २ भयभीत होना।
कंपमान—वि० दे० "कंपायमान"।
कंपा—संज्ञा पुं० [सं०√कंप ?] बाँस की पतली तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाते हैं।
कँपाना—क्रि० स० [हिं० कँपना का प्रे० रूप] १. हिलाना डुलाना। २ भय दिखाना।
कंपायमान—वि० [सं०] हिलता हुआ।
कंपास—संज्ञा पुं० [अं०] १. एक यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा। दिग्दर्शक। २ वृत्त बनाने का दो भुजाओंवाला औजार। ३ भूमि की नापजोख में समकोण का अनुमान करानेवाला यंत्र। परकार (रेखागणित में प्रयुक्त यंत्र विशेष)।
कंपित—वि० [सं०] १ काँपता हुआ। कँपाया हुआ। चंचल। २ भयभीत। डरा हुआ।
कंपू—संज्ञा पुं० [अं० कैंप] १ वह स्थान जहाँ फौज रहती या ठहरती हो। छावनी। पड़ाव। जनस्थान। २ डेरा। खेमा।
कंबल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कमली] १ ऊन का बना हुआ मोटा कपड़ा जिसका उपयोग ओढ़ने-बिछाने में होता है। २ एक बरसाती कीड़ा। कमला।
कंबु, कंबुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शंख। २ शंख की चूड़ी। ३ घोंघा। ४ हाथी। ५ गर्दन।
कंबोज—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कांबोज] अफगानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गांधार के पास पड़ता था।
कँवल—संज्ञा पुं० दे० "कमल"।
कँवलगट्टा—संज्ञा पुं० [सं० कमल+हिं० गट्टा] कमल का बीज।
कंस—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँसा। २ प्याला। कटोरा। ३ सुराही। ४ मँजीरा। झाँझ। ५ काँसे का बना हुआ बरतन। ६ मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का और श्रीकृष्ण का मामा जो पिता को कैद करके राजा बन बैठा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
कंसकार—संज्ञा पुं० [सं०] बरतन बनाने और बेचनेवाली एक जाति। कसेरा।
कँसताल—संज्ञा पुं० [सं० कांस्यताल] झाँझ।
क—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ कामदेव। ४ सूर्य। ५ ज्योति। प्रकाश। ६ प्रजापति। ७. दक्ष। ८ अग्नि। ९ वायु। १० राजा। ११. यम। १२ आत्मा। १३ मन। १४ शरीर। १५ काल। १६ धन। १७ शब्द। १८. समय। १९ आनंद। २० जल। २१ सिर। २२ बाल। २३ एक हीनतावाची उपसर्ग, जैसे—कपूत, कदर्थ। २४ ह्रस्वता, सादृश्य या स्नेहवाचक प्रत्यय, जैसे—बालक, चंद्रक, पुत्रक। २५ संबंधवाचक विभक्ति। का।
कई—वि० [सं० कति प्रा० कइ] एक से अधिक। अनेक।
ककड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटी] १ गरमी के दिनों में फलनेवाली एक बेल जिसकी दो जातियाँ हैं। एक वह जिसके फल पतले और लंबे होते हैं और दूसरी वह जिसमें गोल और मोटे फल लगते हैं। २ इसके फल जो खाए जाते हैं।
ककनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कंगन"।
ककनू—संज्ञा पुं० दे० "कुकनू"।
ककहरा—संज्ञा पुं० [क+क+ह+रा (प्रत्य०)] 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।
ककही|—संज्ञा स्त्री० दे० "कंघी"।
ककुद्—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ की चोटी या शिखर। २ मुख्य। प्रधान। ३ बढ़ा हुआ अंग या अंश। ४ बैल के कंधे का कूबड़। टिल्ला। ५ राजचिह्न।
ककुत्स्थ—संज्ञा पुं० [सं०] राजा इक्ष्वाकु के पुत्र शशाद के बेटे जिन्होंने युद्ध में बैल बने हुए इंद्र के ककुद् पर खड़े होकर विजय प्राप्त की थी। ऋग्वेद में इन्हें भगीरथ का पुत्र कहा गया है।
ककुभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिखर। चोटी। २ शिखा। ३ चंपा की माला। ४ शोभा। ५ शास्त्र। ६ दक्ष की कन्या और धर्म की स्त्री। ७ अर्जुन का पेड़। ८ एक रागिनी। ९ क्रम से ८, १२ और ८ वर्णों का संस्कृत का एक त्रिपदी छंद। १०. दिशा। ११ प्रेत।
ककुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिशा। २ एक रागिनी।
ककोड़ा—संज्ञा पुं० दे० "खेखसा"।
ककोरना|—क्रि० स० [?] १ खरोंचना। २ मोड़ना। ३ सिकोड़ना।
कक्कड़—संज्ञा पुं० [सं० कर्कर] १ सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं। ककड़। २ खत्रियों की एक उपजाति।
कक्का—संज्ञा पुं० [सं० केकय] केकय देश।
संज्ञा पुं० [सं०] नगाड़ा। दुंदुभी।
संज्ञा पुं० दे० "काका"।
कक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँख। बगल। २ काछ। कछौटा। लाँग। ३ कछार। कच्छ। ४ कास। घास। ५ जंगल। ६ सूखी घास। ७ सूखा वन। ८ भूमि। ९ घर। कमरा। कोठरी। १० पाप। दोष। ११ काँख का फोड़ा। कखवार। १२ दर्जा। श्रेणी। १३. सेना के अगल बगल का भाग। १४ कमरबंद। पेटी। पटुका। १५ छिपने की जगह। गुप्त स्थान। १६ ग्रहों के चलने का मार्ग। १७. चहारदीवारी। घेरा। १८ घिरा हुआ स्थान। १९ एकांत कमरा। २० घेरा। वृत्त। २१ सादृश्य। बराबरी। २२ स्पर्धा। २३ रस्सी। २४ बहस का जवाब या दलील। वितर्क। आक्षेप।
कक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिधि। २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३ तुलना। समता। बराबरी। ४ श्रेणी। दर्जा। ५ ड्योढ़ी। देहली। ६ काँख। ७ कखवार। फोड़ा। ८ किसी घर की दीवार या पाख। ९ काँछ। कछौटा।
कखौरी|—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+औरी (प्रत्य०)] १ दे० "काँख"। २ काँख का फोड़ा।
कगर—संज्ञा पुं० [सं० क=जल+अग्र] १ कुछ ऊँचा किनारा। २ बाढ़। ओंठ। बारी। ३ मेंड़। डाँड़। ४ छत या छाजन के नीचे दीवार में रीढ़ सी उभड़ी हुई लकीर। कारनिस। कँगनी।
क्रि० वि० १ किनारे पर। २ समीप।
कगरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कगार"।
कगार—संज्ञा पुं० [हिं० कगर] १ ऊँचा किनारा। २ नदी का करारा। ३ टीला।
कच—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाल। २ सूखा फोड़ा या जख्म। पपड़ी। दाग। ३ झुंड।

४ बादल । ५ बृहस्पति का पुत्र । ६ वस्त्र का छोर ।

संज्ञा पुं० [सं० √कच् = ध्वनि करना, चिल्लाना] १ धँसने या चुभने का शब्द । २ कुचले जाने का शब्द ।

वि० 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसका व्यवहार समास में होता है, जैसे, कचपेंदिया, कचलोहू ।

कचक†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने से लगे । कुचल जाने की चोट ।

कचकच—संज्ञा स्त्री० [सं० कचाकचि = बालों की खींचातानी] बकवाद । झकझक । किचकिच ।

कचकचाना—क्रि० अ० [हिं० कचकच] १ कचकच शब्द करना । २ दाँत पीसना ।

कचकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कच्चर ?] रासायनिक विधि से कई वस्तुओं को मिलाकर बनाई गई एक हल्की वस्तु जिससे खिलौना, गिलास, तश्तरी आदि बनाते हैं ।

कचकोल—संज्ञा पुं० [फा० कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र । कपाल ।

कचटⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "कचोट" ।

कचड़ा—संज्ञा पुं० कूड़ा-करकट ।

कचदिला—वि० [हिं० कच्चा + फा० दिल] कच्चे दिल का । जिसे किसी प्रकार का कष्ट, पीड़ा आदि सहने का साहस न हो । बुजदिल ।

कचनार—संज्ञा पुं० [सं० काञ्चनार] एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं । कोविदार ।

कचपच—संज्ञा पुं० [अनु०] १ थोड़े से स्थान में बहुत सी चीजों या लोगों का भर जाना । गिचपिच । २ दे० "कचकच" ।

कचपचिया, कचपची—संज्ञा स्त्री० [हिं० कचपच] १ कृत्तिका नक्षत्र । छ तारों का एक समूह । उ०—पहिरे खुभी सिंघलदीपी । जनौ भरे कचपचिआ सीपी । —पद्मावत । २ चमकीले बुंदे जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं ।

कचपेंदिया—वि० [सं० कच्चर + हिं० पेंदी] १ पेंदी का कमजोर । २ अस्थिर विचार का । बात का कच्चा । ओछा ।

कचर कचर—संज्ञा पुं० [अनु०] १ कच्चे फल के खाने का शब्द । २. बकवाद ।

कचरकूट—संज्ञा पुं० [हिं० √कचर + √कूट] १ खूब पीटना और लतियाना । मारकूट । †२. खूब पेट भर भोजन । इच्छा भोजन ।

कचरनाⓅ†—क्रि० स० [सं० कचर] १. पैर से कुचलना । रौंदना । २ खूब खाना ।

कचरा—संज्ञा पुं० [सं० कच्चर, प्रा० कच्चरा] १ कच्चा खरबूजा । २ फूट का कच्चा फल । ककड़ी । ३ कूड़ा-करकट । रद्दी चीज । कतवार । ४ उरद या चने की पीठी । ५. समुद्र का सेवार ।

कचरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्चरिका] १ ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल खाए जाते हैं । पेहँटा । २ कचरी या कच्चे पेहँटे के सुखाए हुए टुकड़े । ३ सूखी कचरी की तली हुई तरकारी । उ०—पापर बरी फुलौरी फचौरी । कूरबरी कचरी औ मिथौरी । —सूर० । ४ काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिये रखे जाते हैं । उ०—कुंदुरु और ककोड़ा कौंरे । कचरी चार चचेंड़ा सौंरे । —सूर० । ५ छिलकेदार दाल ।

कचलोंदा—संज्ञा पुं० [सं० कच्चर + हिं० लोंदा] कच्चे आटे का पेड़ा । लोई ।

कचलोन—संज्ञा पुं० [सं० काचलवण] एक प्रकार का लवण जो काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनता है । यह औषधि के काम आता है और इसमें क्षार, लोह, चूना और गंधक का सम्मिश्रण रहता है तथा पुष्टिकारक माना जाता है । काला नमक ।

कचलोहू—संज्ञा पुं० [सं० कच्चर + हिं० लोहू] वह पनछा या पानी जो खुले जख्म से थोड़ा थोड़ा निकलता है । रस धातु ।

कचहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० √कच् = बेड़ी डालना + गृह] १ न्यायालय । अदालत । २ दरबार । राजसभा । ३ गोष्ठी । जमावड़ा । ४ दफ्तर ।

मुहा०—कचहरी करना = (१) फैसला करना । (२) न्याय का आडंबर करना । कचहरी लगाना = (१) भीड़ लगाना । (२) गुल मचाना । कचहरी चढ़ना = अदालत में मुकदमा ले जाना ।

यौ०—कचहरी के कुत्ते = अदालत के घूस लेनेवाले अहलकार ।

कचाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कच्चा + हिं० ई (प्रत्य०)] १ कच्चापन । २ नातजुर्बेकारी ।

कचाना†—क्रि० अ० [हिं० कच्चा ?] १ पीछे हटना । हिम्मत हारना । २ डरना ।

कचायँध—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा + गंध] कच्चेपन की महक ।

कचारना†—क्रि० स० [प्रा० √कच्च = पीड़ित करना] कपड़ा धोना ।

कचालू—संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + आलू] १ एक प्रकार की अरुई । बंडा । २ उबाले आलू तथा खटाई की बनी चाट ।

कचिया—संज्ञा स्त्री० [प्रा० √कच्चन + हिं० इया (प्रत्य०)] दाँती । हँसिया ।

कचियाना†—क्रि० अ० दे० "कचाना" ।

क्रि० स० 'कचाना' का स० रूप ।

कचीर्चीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० √कच् = शब्द करना] जबड़ा । दाढ़ ।

मुहा०—कचीची बँधना = दाँत बैठना (मरने के समय) ।

कचुल्ला†—संज्ञा पुं० दे० "कटोरा" ।

कचूमर—संज्ञा पुं० [सं० √कुच् = मिलाना, तोड़ना मोड़ना] १ बुरी तरह कुचली हुई वस्तु । २ कुचलकर बनाया हुआ अचार ।

मुहा०—कचूमर करना या निकालना = (१) खूब कूटना । चूर चूर करना । कुचलना । (२) नष्ट करना । खूब पीटना ।

कचूर—संज्ञा पुं० [सं० कर्चूर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की सी कड़ी महक होती है । नरकचूर ।

कचोट—संज्ञा पुं० [सं० कुचन] मन की पीड़ा ।

कचोटना—क्रि० अ० [सं० कुंचन] मन में पीड़ा अनुभव करना ।

कचोना—क्रि० स० [सं० √कच् = धसाने का शब्द] चुभाना । धँसाना ।

कचोर, कचोराⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० कच्चोलक, पा० कच्चोल, कच्चोलय] [स्त्री० कचोरी] कटोरा । प्याला । उ०—हिया थार कुच कंचन लारू । कनक कचोर उठे जनु चारू ॥ —पद्मावत ।

कचौड़ी, कचौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्चरिका या हिं० [illegible]] एक प्रकार की पूड़ी जिसके भीतर [illegible] की पीठी भरी जाती है ।

कच्चा—[illegible] [[illegible] कच्चर = बुरा, खराब] १ जो पका न हो । [illegible] बिना रस का । अपक्व । २ जो आँच [illegible], जैसे कच्चा घड़ा । ३ जो पुष्ट न हो । अपरिपुष्ट । ४ जिसके तैयार होने में कसर हो । ५ अदृढ़ । कमजोर ।

मुहा०—कच्चा जी या दिल = विचलित होनेवाला चित्त । धैर्यच्युत होनेवाला चित्त । कच्चा करना = डराना । भयभीत करना ।

६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। जो ठीक न हो।

मुहा०—कच्चा करना=(१) अप्रामाणिक ठहराना। झूठा साबित करना। (२) लज्जित करना। शरमाना। (३) पक्की सिलाई करने के पहले कपड़े पर टाँका लगाना। कच्चा पड़ना=(१) अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। (२) खिटपिटाना। संकुचित होना। कच्ची पक्की=भली बुरी। उलटी-सीधी। दुर्वचन। गाली। कच्ची बात=अश्लील बात। लज्जाजनक बात। कच्ची गृहस्थी=वह कुटुंब जिसके छोटे छोटे बच्चों की देखभाल करनेवाला कोई बड़ा व्यक्ति न हो।

७ जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो जैसे—कच्चा सेर। ८ कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ९ अपरिपक्व। अपटु। अनाड़ी।

संज्ञा पु० १ वह दूर दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिसपर दरजी बखिया करते हैं। २ ढाँचा। खाका। ३ मसविदा। ४. जबड़ा। दाढ़। ५ बहुत छोटा ताँबे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो। कच्चा पैसा।

कच्चा चिट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+चिट्ठा] १ वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय। २ गुप्त भेद। रहस्य।

कच्चा माल—संज्ञा पु० [हिं० कच्चा+माल] १ वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री, जैसे, रूई, तिल। २ खान से निकला बिना साफ किया द्रव्य।

कच्चा हाथ—संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+हाथ] वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।

कच्ची—वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।

कच्ची चीनी—संज्ञा स्त्री०[हिं० कच्ची+चीनी] वह चीनी जो खूब साफ न की गई हो।

कच्ची बही—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+बही] वह बही या आयव्यय का रजिस्टर जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो। नियमानुसार परीक्षित होने के पहले का हिसाब दर्ज करने का रजिस्टर।

कच्ची रसोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+रसोई] केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो, जैसे, रोटी, दाल, भात।

कच्ची सड़क—संज्ञा [स्त्री० हिं० कच्ची+सड़क] वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो।

कच्ची सिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा+सिलाई] दूर दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाँका और लगर। कोका।

कच्चू—संज्ञा पु० [सं० कचुस्] १. अरुई। घुइयाँ। २ बंडा।

कच्चे पक्के दिन—संज्ञा पु० बहु० १ गर्भकाल का चौथा या पाँचवाँ महीना। २ दो ऋतुओं की संधि के दिन।

कच्चे बच्चे—संज्ञा पु० [हिं० कच्चा (बहु० में) +बच्चा (बहु० में)] बहुत छोटे छोटे बच्चे। बहुत से लटकेवाले।

कच्छ—संज्ञा पुं० [सं०, प्रा० कच्छ] १ किनारा। तट। २ जलप्राय देश। अनूप देश। ३ नदी आदि के किनारे की भूमि। कछार। ४ दलदल। ५ घेरा। घिराव। ६ अधोवस्त्र का कमर में बाँधा जानेवाला हिस्सा। लाँग। काँछ। ७. भारत के पश्चिमी समुद्र तट का एक प्रदेश। ८ कच्छुर का एक अंग। ९ नाव का एक भाग। १० दूह।

[वि० कच्छी] १ कच्छ प्रदेश का। २ कच्छ का घोड़ा। (प) कछुआ।

कच्छप—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कच्छपी] १. कछुआ। २ विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ४ शराब साफ करने का एक पात्र विशेष। ५ तालु का एक प्रकार का फोड़ा। ६ कुश्ती का एक पेंच। दोहे का एक भेद।

कच्छपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कच्छप का स्त्री०। कछुई। २ सरस्वती की वीणा जिसका रूप कछुई से मिलता जुलता है।

कच्छा—संज्ञा पु० [सं० कच्छ] १ दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं। २ कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बटा बेटा।

कच्छी—वि० [हिं० कच्छ] १ कच्छ प्रदेश का। २ कच्छ देश में उत्पन्न।

संज्ञा पु० [हिं० कच्छ] घोड़े की एक जाति।

कच्छू|— संज्ञा स्त्री० [सं० कच्छप] १. खुजली। खाज। २ चर्मरोग।

संज्ञा पु० कछुआ।

कछनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कच्छ, प्रा० कच्छोटी] १ घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती २ छोटी धोती। ३ वह वस्तु जिसमें कोई चीज काछी जाय।

कछवाहा—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] राजपूतों की एक जाति।

कछान, कछाना—संज्ञा पुं० [हिं० काछनि] धोती पहनने का वह प्रकार जिसमें वह घुटनों के ऊपर चढ़ाकर कसी जाती है।

कछार—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ+हिं० आर (प्रत्य०)] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।

कछु(प)|—वि० दे० "कुछ"।

कछुआ—संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] [स्त्री० कछुई] एक जलजंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक(प)—वि० [हिं० कछु+एक] कुछ।

कछोटा, कछौटा—संज्ञा पुं०[सं० कच्छ, प्रा० कच्छोटी] [स्त्री० अल्पा० कछौटी] १ स्त्रियों के धोती पहनने का वह ढंग जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है। २ कछनी।

कज—संज्ञा पु० [फा०] १ टेढ़ापन। २ ऐब।

कजरा|—संज्ञा पु० [सं० कज्जल] १ दे० "काजल"। २ काली आँखोंवाला बैल।

कजराई(प)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कजरा+आई (प्रत्य०)] कालापन।

कजरारा—वि० [सं० कज्जल+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कजरारी] १. काजलवाला। जिसमें काजल लगा हो। २ अंजनयुक्त। काजल के समान काला।

कजरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कजली"।

कजरौटा—संज्ञा पुं० दे० "कजलौटा"।

कजलाना—क्रि० अ० [हिं० 'काजल' की ना० धा०] १ काला पड़ना। २ आग का बुझना।

क्रि० स० काजल लगाना। आँजना।

कजली—संज्ञा स्त्री० [सं० कज्जल] १ कालिख। २ एक साथ पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३ रस फूँकने में धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़कर पात्र में लग जाता है। ४ गन्ने की एक जाति। ५ वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ६ एक बरसाती त्योहार। ७ एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

कजलौटा—संज्ञा पुं० [हिं० काजल+औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी] काजल रखने की टिपिया।

कजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] मौत। मृत्यु।

कजाक(प)—संज्ञा पुं० [तु०] लुटेरा। डाकू।

कजाकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ लुटेरापन।

लूटमार । २ छलकपट । धोखेबाजी । उ०—फिरिफिरि दौरत देखियत, निचले नैक रहैं न । ये कजरारे कौन पर करत कजाकी नैन ।—विहारी० ।

कजावा—संज्ञा पुं० [फा०] ऊँट की काठी ।

कजिया—संज्ञा पुं० [अ० क़ज़िआ] झगडा । लड़ाई ।

कजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. टेढापन । २ दोष । ऐब । कसर ।

कज्जल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कज्जलित, भाव० कज्जलता] १ अंजन । काजल । २ सुरमा । ३. कालिख । ४ बादल । ५. १४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में एक गुरु-लघु का क्रम रहता है, जैसे—प्रभु मम ओरी देख लेव । तुम सम नाहीं और देव ।। कस प्रभु कीजै तोरि सेव । पाव न कोऊ तोर भेव ।

कज्जाक—संज्ञा पुं० दे० "कजाक" ।

कट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुश । कुश की चटाई । २. हाथी का गंडस्थल । ३ गंड-स्थल । ४. नरसल । नरकट । ५ नरकट की चटाई । ६ टट्टी । ७ खस, सरकंडा आदि घास । ८ शव । लाश । ९ अरथी । मुर्दा ढोने का रथ । १० श्मशान । ११ कूल्हा । कमर के नीचे का भाग । नितंब । चूतड़ । १२ मौसम । ऋतु । समय । १३. आधिक्य । १४ कनपटी । १५ जूए का दावँ । १६ तिरछी नजर ।

संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का काला रंग । २ 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है, जैसे—कटखना कुत्ता ।

संज्ञा पुं० [अं०] काट । तराश ।

कटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना । फौज । २ राजशिविर । ३ कंकण । कड़ा । ४ पर्वत के किनारे का भाग । किनारा । बगल । पार्श्व । ५. नितंब । चूतड़ । ६ घासफूस की चटाई । गोंदरी । सथरी । ७ हाथी के दाँतों पर जड़े हुए पीतल के बंद या सामी । ८ समूह । ९ साँकल । साँकल का जोड़ । १० अँगूठी । ११ घाटी ।

कटकई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कटक+हिं० ई (प्रत्य०)] कटक । फौज । लश्कर । उ०—विजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ।—मानस ।

कटकट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. दाँतों के बजने का शब्द । २. लड़ाई-झगड़ा ।

कटकटाना—क्रि० अ० [हिं० कटकट] दाँत पीसना । उ०—कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ।—मानस ।

कटकाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कटक+हिं० आई (प्रत्य०)] सेना । फौज ।

कटखना—वि० [हिं० √काट+खाना] काट खानेवाला । दाँत से काटनेवाला ।

संज्ञा पुं० युक्ति । चाल । हथकंडा ।

कटघरा—संज्ञा पुं० [हिं० काठ+घर] १ काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो । २ बड़ा भारी पिंजड़ा । ३ जेल । ४ काठ का घेरा या ढाँचा ।

कटजीरा—संज्ञा पुं० [सं० कठ+हिं० जीरा] दे० "कालाजीरा" । उ०—कूट कायफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत । आल मजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत ।—सूर० ।

कटड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कटाह] [स्त्री० कटड़ी] भैंस का नर बच्चा । पाड़ा । पँड़वा ।

कटड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "कटरी" ।

कटती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कट+ती (प्रत्य०)] बिक्री ।

कटन—संज्ञा स्त्री० [सं० √कट् या √कृत्, प्रा० √कट्ट] किसी वस्तु के कटे हुए अंश ।

कटना—क्रि० अ० [सं० √कट् या √कृत, प्रा० √कट्ट] १ किसी धारदार चीज की दाब से दो टुकड़े होना ।

मुहा०—कटती कहना=मर्मभेदी बात कहना । कट जाना=लज्जित हो जाना ।

२ पिसना । महीन चूर होना । ३ किसी धारदार चीज से घाव होना । ४ किसी भाग का अलग हो जाना । ५ लड़ाई में मरना । ६ कतरा जाना । ब्योंता जाना । ७ छीजना । कम होना । ८ नष्ट होना । ९. समय का बीतना । १० रास्ता खतम होना । ११ धोखा देकर साथ छोड़ देना । खिसक जाना । १२ लज्जित होना । झेंपना । १३ जलना । डाह करना । १४ मोहित होना । आसक्त होना । उ०—पूछै क्यों रूखी परति, सगिबगि गई सनेह । मन-मोहन-छवि पर कटी, कहै कँट्यानी देह ।—विहारी० । १४ बिकना । खपना । १६ प्राप्ति होना । आय होना; जैसे—माल कटना । १७ कलम की लकीर से किसी लिखावट का रद्द होना । मिटना । खारिज होना । १८ एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगना कि शेष कुछ न बचे ।

कटनास|—संज्ञा पुं० [देश० या सं० कीट+नाश] नीलकंठ । चाष पक्षी ।

कटनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १. काट । २ प्रीति । आसक्ति । रीझ । उ०—करतु जातु जेती कटनि बढि रस-सरिता सोतु । आलवाल उर प्रेमतरु तितौ तितौ दृढ़ होतु ।—विहारी० ।

कटनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १ काटने का औजार । २ काटने का काम ।

कटर|—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक प्रकार की बड़ी नाव जो चरखियों के सहारे चलती है । २ पनसुइया । छोटी नाव । ३ काटने-वाला । ४ पेंसिल बनानेवाला औजार ।

कटरा—संज्ञा पुं० [हिं० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार ।

संज्ञा पुं० [सं० कटाह] भैंस का नर बच्चा ।

कटरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कटाही] भैंस का मादा बच्चा । कटड़ी ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] धान की फसल का एक रोग ।

कटवाँ—वि० [हिं० काट+वाँ (प्रत्य०)] जो काटकर बना हो । कटा हुआ ।

कटसरैया—संज्ञा स्त्री० [?] अड़ूसे की तरह का एक कँटीदार पौधा ।

कटहर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कटहल" ।

कटहरा—संज्ञा पुं० दे० "कटघरा" ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक छोटी मछली जो उत्तरी भारत और आसाम की नदियों में पाई जाती है ।

कटहल—संज्ञा पुं० [सं० कंटकफल] १ एक सदाबहार घना पेड़ जिसमें मोटे, भारी और नोकीले छिलकोंवाले हाथ सवा हाथ के फल लगते हैं । २ इस पेड़ के फल जो कच्चे रहने पर तरकारी के काम आते हैं और पकने पर खाए जाते हैं ।

कटहा(पु)—वि० [हिं० काट+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० कटही] काट खानेवाला ।

कटा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० √कट+आ (प्रत्य०)] मारकाट । वध । हत्या । कत्लआम ।

कटाइक(पु)—वि० दे० "कटायक" ।

कटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कट+आई (प्रत्य०)] १ काटने का काम । २ फसल

काटने का काम। ३. फसल काटने की मजदूरी।

कटाकट—संज्ञा स्त्री० [सं० कटकटा] १. कटकट शब्द। २ लड़ाई।

क्रि० वि० कटकट शब्द के साथ।

कटाकटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कटाकट] १ मारकाट। २ घोर वैमनस्य।

कटाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ तिरछी चितवन। तिरछी नजर। २ व्यंग्य। आक्षेप।

कटाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूखी घासफूस की आग जिसमें पहले लोग जलते या जलाए जाते थे।

कटाछ—संज्ञा पुं० दे० "कटाक्ष"। उ०—चमकै बरुनी बरछी भ्रुव खंजर कैबर तीर कटाछ महै। —शृंगार०।

कटाछनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कटाकटी"।

कटान—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कट+आन (प्रत्य०)] काटने की क्रिया, भाव या ढंग। कटाव।

कटाना—क्रि० स० [हिं० काटना का प्रें० रूप] काटने का काम दूसरे से कराना।

कटायक(पु)—वि० [हिं०√कट+आयक (प्रत्य०)] काटनेवाला। कटार।

कटार, कटारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कट्टार] [स्त्री० अल्पा० कटारी] एक बालिश्त का छोटा, तिकोना और दुधारा हथियार।

कटाव—संज्ञा पुं० [हिं०√कट+आव (प्रत्य०)] १ काट। काटछाँट। कतरब्योंत। २ काटकर बनाए हुए बेलबूटे।

कटावदार—वि० [हिं० कटाव+दार (प्रत्य०)] जिसपर खोद या काटकर चित्र और बेलबूटे बनाए गए हों।

कटावन†—संज्ञा पुं० [हिं०√कट+आवन (प्रत्य०)] १. कटाई करने का काम। २ किसी वस्तु का काटा हुआ टुकड़ा। कतरन।

कटास—संज्ञा पुं० [हिं०√कट+आस (प्रत्य०)] एक प्रकार का वनबिलाव। कटार। खीखर।

कटाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ कड़ाह। बड़ी कड़ाही। २ कछुए की खोपड़ी। ३ कुआँ। ४ नरक। ५. झोपड़ी। ६ भैंस का बच्चा। ७ ढूह। ऊँचा टीला। ८. सूप।

कटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है। १ कमर। २ हाथी का गंडस्थल।

कटिजेब—संज्ञा स्त्री० [सं० कटि+हिं० जेब=रस्सी] किंकिणी। करधनी। मेखला।

कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमरबंद। २. गरमी सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक, जैसे उष्णकटिबंध। ३ मेखला।

कटिबद्ध—वि० [सं०] १ कमर बाँधे हुए। २ तैयार। तत्पर। उद्यत।

कटियाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० काँटा की ना० धा०] रोओं का खड़ा हो जाना। कटकित होना।

कटिसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कमर में पहनने का डोरा। मेखला। सूत की करधनी।

कटीला—वि० [हिं०√कट+ईला (प्रत्य०) स्त्री० कटीली] १ काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २ बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला। ४ नोकझोंक का।

वि० [हिं० काँटा+ईला (प्रत्य०)] १ काँटेदार। काँटों से भरा हुआ। २ पुलकित। रोमाञ्चित। उ०—'दास' कटीले है गात कँपै बिहँसौहीं हँसौहीं लसै दृग लोरति। —शृंगार०। २ नुकीला। तेज।

कटु, कटुक—वि० [सं०] १ छः भोज्य या आस्वाद्य रसों में से एक। चरपरा। तेज। तीक्ष्ण। दुर्गंधयुक्त। कड़ुआ। २ बुरा लगनेवाला। अनिष्ट। ३ काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना। कानों को बुरा लगनेवाला। ४ ईर्ष्या या द्वेष रखनेवाला। ५ चिड़चिड़ा। ६ बदमिजाज। क्रोधी।

कटुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कड़ुवापन।

कटुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] कड़ुवापन।

कटूक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।

कटुवादी—वि० [सं०] कटी बात बोलने वाला। अप्रिय वक्ता।

कटेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कंटकारी] भटकटैया।

कटैया†—संज्ञा पुं० [हिं०√काट+ऐया (प्रत्य०)] काटनेवाला। जो काट डाले।

कटोरदान—संज्ञा पुं० [सं० कटोरा+फा० दान (प्रत्य०)] पीतल का एक ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं।

कटोरा—संज्ञा पुं० [सं०] खुले मुँह, नीची दीवार और चौटी पेंदी का एक छोटा बरतन।

कटोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कटोरा का अल्पा०] १. छोटा कटोरा। बेलिया। प्याली। २ अँगिया का वह जुटा हुआ भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। ३ तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। ४ फूल को डंडी का चौड़ा सिरा जिसपर दल रहते हैं।

कटौती—संज्ञा स्त्री० [हिं०√कट+औती (प्रत्य०)] किसी रकम को देते हुए उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

कट्टर—वि० [प्रा०√कट्ट ?] १. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सुननेवाला या न माननेवाला। अंधविश्वासी। २ हठी। दुराग्रही। दृढ। †३ काट खानेवाला। कटहा।

कट्टहा—संज्ञा पुं० [सं० कट=शव+हिं० हा (प्रत्य०)] महाब्राह्मण। कट्टिया। महापात्र।

कट्टा—वि० [सं०√कट्ट्=ढेर लगाना+हिं० आ (प्रत्य०)] १. मोटाताजा। हट्टाकट्टा। २ बलवान्। बली।

संज्ञा पुं० जबड़ा। कल्ला।

मुहा०—कट्टे लगाना=किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या उसका दूसरे के हाथ लगना।

कट्टा—संज्ञा पुं० [सं०√कट्ट्=मिट्टी का ढेर लगाना] १ जमीन की एक नाप जो पाँच हाथ, चार अंगुल की होती है। २ गोटा या खराब गेहूँ।

कठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि जो वैशंपायन के शिष्य और यजुर्वेद की एक शाखा के प्रणेता थे। २ एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। ३ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। ४ ब्राह्मण।

वि० [सं० काष्ठ] (केवल समस्त पदों में) १ निकृष्टता। हीनता, जैसे—कठजामुन। कठगूलर। कठकेला। काठबैस। कठहुज्जत। कठबाप। २. अधूरापन। कच्चापन, जैसे—कठमुल्ला। कठपटित। ३ अनौचित्य, जैसे—कठमस्त।

संज्ञा पुं० [सं० काष्ठ] (केवल समस्त पदों में) काठ, जैसे—कठघरा। कठफोड़वा। कठबंधन। कठमलिया।

कठकेला—संज्ञा पुं० [सं० कठ+हिं० केला] एक प्रकार का केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।

कठगूलर—संज्ञा पुं० [सं० कट+हिं० गूलर] बहुत कड़ी, कषाय और बेस्वाद गूलर का फल।

कठघरा—संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"।

कठजामुन—संज्ञा पुं० [सं० कट+हिं०

जामुन] बेस्वाद और कसैला जामुन का फल।

कठड़ा—संज्ञा पुं० [सं० काष्ठ+गृह] १. कठघरा। कठहरा। २ काठ का बड़ा संदूक। ३ काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

कठताल—संज्ञा पु० दे० "करताल"।

कठपंडित—संज्ञा पु० [सं० कठ+पंडित] बनावटी पंडित जिसे कुछ आता जाता न हो।

कठपुतली—संज्ञा स्त्री० [सं० काष्ठ+पुत्तली] १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं। २ वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

कठप्रेम—संज्ञा पुं० [सं० कठ+प्रेम] वह प्रेम जो प्रिय के अप्रसन्न होने पर भी किया जाता है।

कठफोड़वा—संज्ञा पुं० [हिं० काठ+√फोड़+वा (प्रत्य०)] खाकी रंग की लंबी चोंचवाली एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

कठबंधन—संज्ञा पुं० [हिं० काठ+बंधन] काठ की वह बेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है। अँदुआ।

कठबाप—संज्ञा पुं० [सं० कठ+हिं० बाप] सौतेला बाप।

कठबैस—संज्ञा पु० [सं० कठ+हिं० बैस] क्षत्रिय जाति की एक शाखा।

कठमलिया—संज्ञा पुं० [हिं० काठ+माला] १. काठ की माला या कंठी पहननेवाला वैष्णव। २. झूठमूठ कंठी पहननेवाला। बनावटी साधु। झूठा संत। उ०—करमठ कठमलिया कहैं, ज्ञानी ज्ञानविहीन। तुलसी त्रिपथ विहाय गो, रामदुआरे दीन।—दोहा०।

कठमस्त—वि० [सं० कठ+फा० मस्त] १. मुसंडमुसंड। २. व्यभिचारी।

कठमस्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० कठमस्त] मुसंडापन। बदमस्ती। शरारत।

कठमुल्ला—संज्ञा पुं० [सं० कठ+अ० मुल्ला] १. बनावटी मुल्ला। वह अरबी-फारसी के ज्ञान का दावा करनेवाला व्यक्ति जो वास्तव में कुछ जानता नहीं। २ दुराग्रही आलिम।

कठरा—संज्ञा पुं० [हिं० काठ+रा ?] १ दे० "कठघरा"। २. काठ का संदूक। ३. काठ का बरतन। कठौता।

कठला—संज्ञा पुं० [सं० कठ+हिं० ला (प्रत्य०)] बच्चों के पहनने की एक प्रकार की माला।

कठवत—संज्ञा स्त्री० दे० "कठौत"।

कठवता—संज्ञा पुं० दे० "कठौता"।

कठवल्ली—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का एक उपनिषद्।

कठहुज्जत—संज्ञा स्त्री० [सं० कठ+अ० हुज्जत] बिना कारण का विवाद। अकारण तकरार। बेमतलब का झगड़ा। दुराग्रह। जिद।

कठिन—वि० [सं०] १ कड़ा। सख्त। कठोर। २ मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य। ३ न बदलनेवाला। ४ क्रूर। निर्दय।

कठिनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुश्किल। असाध्यता। २ कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। ३ निर्दयता। बेरहमी। ४ मजबूती। दृढ़ता।

कठिनाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कठिन+हिं० आई (प्रत्य०)] १. मुश्किल। दिक्कत। २ असाध्यता। ३. कठोरता। सख्ती।

कठिया—वि० [सं० कठ+हिं० इया (प्रत्य०)] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो, जैसे कठिया बादाम।

कठियाना—क्रि० अ० [हिं० काठ से ना० धा०] सूखकर कड़ा हो जाना।

कठिहार—वि० [?] १ काढ़ने या निकालने वाला। २ उद्धार करनेवाला।

कठुवाना—क्रि० अ० [हिं० काठ+उवाना (प्रत्य०)] १ सूखकर काठ की तरह कड़ा होना। २. ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना। ३ सिकुड़कर काठ के समान कड़ा हो जाना।

कठूमर—संज्ञा पुं० [सं० कठ+उदुंबर] जंगली गूलर।

कठेठ, कठैठा—वि० [सं० कठ+हिं० एठ (प्रत्य०)] [स्त्री० कठेठी] १ कड़ा। कठोर। कठिन। दृढ़। सख्त। २ कटु। अप्रिय। ३ अधिक बलवाला। तगड़ा। मजबूत।

कठोदर—संज्ञा पुं० [सं० कठ+उदर] १ पेट का एक रोग जिसमें पेट बढ़ता और कड़ा हो जाता है। २ रोग जिसमें यकृत या प्लीहा बढ़कर कड़ा हो जाता है।

कठोर—वि० [सं०] [स्त्री० कठोरा] १ सख्त। कड़ा। २ निर्दय। निष्ठुर। निठुर। बेरहम।

कठोरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कड़ाई। सख्ती। २ निर्दयता। बेरहमी।

कठोरपन—संज्ञा पुं० [सं० कठोर+हिं० पन (प्रत्य०)] १ कठोरता। कड़ापन। सख्ती। २ निर्दयता। निष्ठुरता।

कठौत, कठौता—सं० स्त्री० [सं० काष्ठ, प्रा० कट्ठ+सं० वृत्त, प्रा० वट्ट] काठ का चौड़े मुँह और ऊँचे किनारे का बर्तन।

कड़क—संज्ञा स्त्री० [सं० कड़कार] १. कड़कड़ाहट का शब्द। २ तड़प। डपट। ३ गाज। वज्र। ४ घोड़े की सरपट चाल। संज्ञा स्त्री० [सं० √कट्+हिं० क (प्रत्य०)] १. कसक। रह रहकर होनेवाली पीड़ा। २ रुक रुककर या बूँद बूँद और जलन तथा दर्द के साथ पेशाब होना। मूत्रकृच्छ्र।

कड़कड़—संज्ञा पुं० [सं० √कट्+√कट्] १. दो वस्तुओं के आघात का कठोर शब्द। घोर शब्द। २ कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

कड़कड़ाता—वि० [हिं० कड़कड़] [स्त्री० कड़कड़ाती] १ कड़कड़ शब्द करता हुआ। २ कड़ाके का। बहुत तेज। घोर। प्रचंड।

कड़कड़ाना—अ० [हिं० कड़कड़ से ना० धा०] १ कड़कड़ शब्द होना। २ 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। ३ घी, तेल आदि का आग पर खूब तपकर कड़कड़ बोलना। क्रि० स० १ कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। २ घी, तेल आदि को खूब तपाना।

कड़कड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़+आहट (प्रत्य०)] कड़कड़ शब्द। गरज। घोर नाद।

कड़कना—क्रि० अ० [हिं० कड़क] १ कड़कड़ शब्द होना। २ चिटकने का शब्द होना। ३ डपटना। डाँटना। ४ चिटकना। फटना। दरकना।

यौ०—बिजली की कड़क।

मुहा०—कड़क उठना = एकाएक गरजकर बोलना।

कड़कनाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क+नाल] चौड़े मुँह की तोप।

कड़कबिजली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क+बिजली] १ कान का एक गहना। चाँदवाला। २ तोड़ेदार बंदूक।

कड़का—संज्ञा स्त्री० [सं० करका] १ ओले की वृष्टि। पत्थर की वर्षा २ कड़कड़ाती हुई ध्वनि।

कड़खा—संज्ञा पु० [हिं० कड़क] लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।

कड़खैत—संज्ञा पुं० [हिं० कड़खा+ऐत (प्रत्य०)] १ कड़खा गानेवाला। २ भाट। चारण।

कड़बड़ा—वि० [सं० कर्बुर=कबरा] जिसके कुछ बाल सफेद और कुछ बाल काले हों।

कड़वा—वि० दे० "कड़ुआ"।

कड़वी—संज्ञा स्त्री० [सं० काड, हिं० काँडा] ज्वार का पेड जिसके भुट्टे काट लिए गए हों और जो चारे के लिये छोड़ा हो। चरी। चारा।

कड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कटक] [स्त्री० कड़ी] १ हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २ लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३ एक प्रकार का कबूतर।

वि० [सं० √कड्ड=कड़ा या निष्ठुर होना] [स्त्री० कड़ी] १ जो दबाने से जल्दी न दबे। कठोर। कठिन। सख्त। ठोस। २ जिसकी प्रकृति कोमल न हो। रूखा। नियम का सख्ती से पालन करनेवाला। ३ उग्र। दृढ़। ४ कसा हुआ। चुस्त। ५ जो गीला न हो। कम गीला। ६ हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ७. जोर का। प्रचंड। तेज, जैसे—कड़ी प्यास। ८ सहनेवाला। भेलनेवाला। धीर। ९ दुष्कर। दुःसाध्य। मुश्किल। १० तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ११ असह्य। बुरा लगनेवाला। १२ कर्कश।

यौ०—कड़ा जवाब=सख्त जवाब। कड़ा कोस=एक कोस से अधिक।

मुहा०—कड़ा पड़ना=किसी मामले में कठोरता धारण करना। कड़ा करना=मजबूत करना, जैसे—दिल कड़ा करना, जी कड़ा करना। कड़ा होना=(१) निर्दय होना। (२) भाव तेज होना।

कड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा+आई (प्रत्य०)] कठोरता। कड़ापन। सख्ती।

कड़ाका—संज्ञा पुं० [सं० कटत्कार] १ किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

मुहा०—कड़ाके का=जोर का। तेज, जैसे—कड़ाके का जाड़ा।

२ उपवास। लघन। फाका।

कड़ाबीन—संज्ञा स्त्री० [तु० करावीन] १. चौड़े मुँह की बंदूक। २ छोटी बंदूक।

कड़ाह, कड़ाहा—संज्ञा पुं० [सं० कटाह, प्रा० कडाह] [स्त्री० अल्प० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।

कड़ाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाह।

कड़ियल†—वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।

कड़िहार—वि० दे० "कढ़िहार"।

कड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा] १ जंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। २. छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने के लिये लगाया जाय। ३ लगाम। ४ गीत का एक पद।

संज्ञा स्त्री० [सं० काड] छोटी धरन।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा=कठिन] अड़स। संकट। दुःख। मुसीबत।

कड़ीदार—वि० [हिं० कड़ी+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें कड़ी हो। छल्लेदार।

कड़ुआ—वि० [सं० कटुक] [स्त्री० कड़ुई] १ स्वाद में कसैला या कटु। स्वाद में उग्र और अप्रिय, जैसे—नीम, चिरायता आदि। २ तीखी प्रकृति का। गुस्सैल। अक्खड़। ३ अप्रिय। जो भला न मालूम हो।

मुहा०—कड़ुआ करना=(१) धन बिगाड़ना। रुपए लगाना। (२) कुछ दाम खड़ा करना। कड़ुवा मुँह=वह मुँह जिसमे कटु शब्द निकलें। कड़ुवा होना=बुरा बनना।

४ विकट। टेढ़ा। कठिन।

मुहा०—कड़ुए कसैले दिन=(१) बुरे दिन। कष्ट के दिन। (२) जोरमे दिन जिनमें रोग फैलता है। कड़ुआ घूँट=(१) कठिन काम। (२) असह्य बात।

कड़ुआ तेल—संज्ञा पुं० [हिं० कड़ुआ+तेल] सरसों का तेल।

कड़ुआना—क्रि० अ० [हिं० कड़ुआ] १ कड़ुआ लगना। अच्छा न मालूम पड़ना। २ बिगड़ना। खीझना। ३ आँख में किरकिरी पड़ने का सा दर्द होना।

कड़ुआहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ुआ+हट (प्रत्य०)] कड़ुआपन।

कड़वा—वि० दे० "कड़ुआ"।

कड़ुवाहट—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ुआहट"।

कढ़ना—क्रि० अ० [सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण] १ निकलना। बाहर आना। खिंचना। २. उदय होना। ३ बढ़ जाना। ४ (प्रतिद्वंद्विता में) आगे निकल जाना। ५ स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़कर चला जाना। ६ (कढ़ाई, सिलाई आदि में) उभड़ आना। ऊपर उठ आना।

क्रि० अ० [सं० √क्वथ्, प्रा० √कढ] दूध का औटाया जाकर गाढ़ा होना।

कढ़राना, कढ़लानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० √काढ+लाना] घसीटना। घसीटकर बाहर करना। उ०—नाहिनै काँचो कृपानिधि, करौ कहा रिसाइ। सूर तबहुँ न द्वार छाँड़ै डारिहौ कढ़राइ।—सूर०।

कढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √काढ] काढ़ने की क्रिया या मजदूरी।

कढ़ाना, कढ़वाना—क्रि० स० [हिं० काढना का प्रे० रूप] निकलवाना। बाहर कराना। उभड़वाना। ऊपर उठवाना।

कढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० √काढ़+आव (प्रत्य०)] १. बूटे, कशीदे का काम। २ बेलबूटों का उभार।

कढ़िरानाⓅ†—क्रि० स० दे० "कढ़राना"।

कढ़िहार—वि० [हिं० √काढ+हार (प्रत्य०)] १ काढ़ने या निकालनेवाला। २ उद्धार करनेवाला।

कढ़ी—संज्ञा स्त्री० [प्रा० कढिआ] एक प्रकार का सालन जो पानी में घोले हुए बेसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है। उ०—दाल भात घृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान।—सूर०।

मुहा०—कढ़ी का सा उबाल=शीघ्र ही घट जानेवाला जोश।

कढ़ैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।

†संज्ञा पुं० [हिं० √काढ़+ऐया (प्रत्य०)] १ निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। बचानेवाला।

कढ़ोरनाⓅ—क्रि० स० [सं० कर्षण] खींचना। घसीटना। उ०—तोरि जमकातरि मदोदरी कढ़ोरि आनी, रावन की रानी मेघनाद महतारी है।—हनु०।

कण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कनका। रवा। अत्यंत छोटा टुकड़ा। २ चावल का बारीक टुकड़ा। कना। ३ अन्न का दाना। ४ भिक्षा।

कणाद—संज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक शास्त्र के रचयिता एक मुनि। उलूक मुनि।

कणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कनका। टुकड़ा।

कण्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मंत्रकार ऋषि। २ कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने शकुंतला को पाला था।

कत—संज्ञा पुं० [अ०] देशी कलम की नोक की आड़ी काट।

†Ⓟअव्य [सं० कुत, प्रा० कत] क्यों। किसलिये। काहे को। उ०—बन मिस देइ हमहिं कोउ गाई। गालु करब केहि कर बलु पाई।—मानस।

कतई—अव्य० [अ०] बिलकुल। एकदम।

कतक(पु)—अव्य० [सं० कुत. ?] किसलिये। क्यों।
अव्य० [सं० कति+एक] कितना।

कतनई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कातना]

कतना—क्रि० अ० [हिं० कातना] काता जाना।

कतरन—संज्ञा स्त्री० [सं० कृतन] कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो काटछाँट के पीछे बच रहते हैं।

कतरना—क्रि० स० [सं० कृंतन] कैंची या किसी औजार से काटना।

कतरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] १ बाल, कपड़े आदि काटने का एक औजार। कैंची। २ धातुओं को चद्दर आदि काटने का, सँड़सी के आकार का, एक औजार। कानी।

कतरब्योंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कतर + √ब्योंत] १ काटछाँट। २ उलट फेर। इधर का उधर करना। ३. उधेड़बुन। सोचविचार। ४ दूसरे के सौदे-सुलुफ में से कुछ रकम अपने लिये निकाल लेना। ५ युक्ति। जोड़तोड़। ढंग। ढर्रा।

कतरवाना—क्रि० स० दे० "कतराना"।

कतरा—संज्ञा पुं० [हिं० √कतर] कटा हुआ टुकड़ा। खंड।
संज्ञा पु० [अ०] बूँद। बिंदु।

कतराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कतर+आई (प्रत्य०)] १. कतरने का काम। २ कतरने की मजदूरी।

कतराना—क्रि० अ० [हिं० √कतर+आना (प्रत्य०)] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।
क्रि० स० [हिं० कतरना का प्रे० रूप] कटाना। कटवाना। छँटवाना।

कतरी—संज्ञा स्त्री० [?] १ कोल्हू का पाट जिसपर आदमी बैठकर बैलों को हाँकता है। कातर। २ हाथ में पहनने का पीतल का एक जेवर।

कतल—संज्ञा पुं० [अ० कत्ल] वध। हत्या।

कतलबाज—संज्ञा पुं० [अ० क़त्ल+फा० बाज] वधिक। जल्लाद।

कतलाम—संज्ञा पु० [अ० कत्लेआम] सर्वसाधारण का वध। सर्वसंहार।

कतली—संज्ञा स्त्री० [फा० कतरा] मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।

कतवाना—क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे० रूप] दूसरे से कताने का काम लेना।

कतवार—संज्ञा पु० [प्रा० कत्तर] कूड़ा-करकट। बेकाम घासफूस।
यौ०—कतवारखाना = कूड़ा फेंकने की जगह।
(पु)†संज्ञा पुं० [हिं० √कात+वाला ?] कातनेवाला।

कतहुँ, कतहूँ(पु)†—अव्य० [हिं० कहँ+हूँ] कहीं। किसी स्थान पर। किसी जगह।

कता—संज्ञा स्त्री० [अ० कतअ] १ बनावट। आकार। २ ढंग। वजा। ३ कपड़े की काटछाँट।

कताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कात+आई (प्रत्य०)] १. कातने की क्रिया। २ कातने की मजदूरी।

कतान—संज्ञा पुं० [फा०] १ अलसी की छाल का बना एक बढ़िया कपड़ा जो पहले बनता था। २ बढ़िया बुनावट का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कताना—क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे० रूप] किसी अन्य से कताने का काम कराना।

कतार—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पंक्ति। पाँत। श्रेणी। २ समूह। झुंड।

कतारा—संज्ञा पुं० [सं० कांतार] [स्त्री० अल्पा० कतारी] लाल रंग का मोटा गन्ना।

कतारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "कतार"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कतारा] कतारे की जाति की छोटी और पतली ईख।

कति(पु)—वि० [सं०] १ (गिनती में) कुछ। कई। कितने। २ कितना (तौल या माप में)। ३ कौन। ४ बहुत से। अगणित।

कतिक(पु)†—वि० [सं० कति+एक] १ कितना। २ बहुत। अनेक।

कतिपय—वि० [सं०] १ कितने ही। कई एक। २ कुछ। थोड़े से।

कतीरा—संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम आता है।

कतेक(पु)†—वि० दे० "कितने"।

कतेब(पु)—संज्ञा पुं० [अ० किताब ?] कुरान।

कतौना—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कात+औना (प्रत्य०)] १ कातने का काम या मजदूरी। २ कोई काम करने के लिये देर तक बैठे रहना।

कत्ता—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तरी] १ बाँस चीरने का एक औजार। बाँका। बाँसा। २ छोटी टेढ़ी तलवार।

कत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्तरी] १. चाकू। छुरी। २ छोटी तलवार। ३ कटारी। पेशकब्ज। ४ सोनारों की कतरनी। ५. वह पगड़ी जो बत्ती के समान बटकर बाँधी जाती है।

कत्थई—वि० [हिं० कत्था] खैर के रंग का।

कत्थक—संज्ञा पुं० [सं० √कत्थ्+क (प्रत्य०)] एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है।

कत्था—संज्ञा पु० [सं० क्वाथ] खैर की लकड़ियों को उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा और सुखाया अर्क जो पान में खाया जाता है। २ खैर का पेड़।

कत्ल—संज्ञा पु० दे० "कतल"।

कथंचित्—क्रि० वि० [सं०] शायद।

कथक—संज्ञा पु० [सं०] १ कथा या किस्सा कहनेवाला। २ पुराण बाँचनेवाला। पौराणिक। ३ दे० "कत्थक"।

कथकीकर—संज्ञा पुं० [हिं० कत्था+कीकर] खैर का पेड़।

कथक्कड़—संज्ञा पुं० [सं० कथा+हिं० अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत कथा कहनेवाला।

कथन—संज्ञा पु० [सं०] १ कहना। बयान। २ बात। उक्ति।

कथना(पु)—क्रि० स० [सं० कथन] १. कहना। बोलना। उ०—जिमि जिमि तापसु कथै उदासा। तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा॥—मानस। २ निंदा करना। बुराई करना।

कथनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कथन+हिं० ई (प्रत्य०)] १ बात। कथन। २ हुज्जत। बकवाद।

कथनीय—वि० [सं०] [स्त्री० कथनीया] १ कहने योग्य। वर्णनीय। २ निंदनीय। बुरा।

कथरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कथा+हिं० री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़ जाड़कर बनाया हुआ बिछावन। गुदड़ी।

कथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किस्सा। कहानी। २ चर्चा। जिक्र। बात। ३ धर्म विषयक व्याख्यान। ४ समाचार। हाल। ५ वादविवाद। कहासुनी।

कथानक—संज्ञा पु० [सं०] १ कथा। २ छोटी कथा। कहानी।

कथामुख—संज्ञा पुं० [सं०] किसी आख्यान या कथा की प्रस्तावना।
कथावस्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपन्यास या कहानी का ढाँचा। मूल विषय या प्रसंग। प्लाट।
कथावार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनेक प्रकार की बातचीत। २. पौराणिक आख्यान।
कथित—वि० [सं०] कहा हुआ।
कथीर—संज्ञा पुं० [सं० कस्तीर] राँगा। उ०—कबीर अब तौ ऐसा भया निरमोलिक निज नाउँ। पहली काच कथीर था, फिरता ठाँवें ठाँउँ ॥—कबीर०।
कथील, कथीला—संज्ञा पुं० दे० "कथीर"।
कथोद्घात—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथा-प्रारंभ। २ (नाटक में) सूत्रधार या प्रबंधक के अंतिम शब्दों को दोहराते हुए रंगमंच पर सबसे पहले आनेवाले पात्र द्वारा अभिनय का आरंभ।
कथोपकथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ आपस का वार्तालाप। वर्णन। बातचीत। २. वादविवाद। कहासुनी।
कथ्य—वि० [सं०] १. कहने के योग्य। कथनीय। २ साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित। ३. जो कहा जाता हो। कहलानेवाला।
कदंब—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। २. समूह। ढेर। झुंड। ३ सफेद सरसों।
कद—संज्ञा स्त्री० [अ० कद] [वि० कदी] १ द्वेष। शत्रुता। २ हठ। जिद।
†अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।
संज्ञा पुं० [अ० क़द] ऊँचाई (आखियों के लिये)।
यौ०—कदेआदम=मानव शरीर के बराबर ऊँचा। आदमकद। मानवाकार।
कदध्व(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कदध्वा] खोटा मार्ग। कुपथ। बुरा रास्ता।
कदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मरण। विनाश। २ मारना। वध। हिंसा। संहार। ध्वंस। उ०—कदन ज्यों करके दिशि कालिमा विकसता नभ में नलिनीश है।—प्रिय०। ३ युद्ध। संग्राम। ४. पाप। ५ दुःख।
कदन्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्सित अन्न। बुरा अन्न। २ मोटा अन्न, जैसे, कोदो।
कदम—संज्ञा पु० [सं० कदंब] १ एक सदाबहार जाति का बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं। २ इसका फल। ३. एक घास।
संज्ञा पुं० [अ०] १. पैर। पाँव।
मुहा०—कदम उठाना=(१) तेज चलना। (२) उन्नति करना। (३) कोई काम प्रारंभ करना। कदम चूमना=अत्यंत आदर करना। कदम छूना=(१) प्रणाम करना। (२) शपथ खाना। कदम बढ़ाना या कदम आगे बढ़ाना=(१) तेज चलना। (२) उन्नति करना। कदम रखना=प्रवेश करना। दाखिल होना आना।
२. धूल या कीचड़ में बना पैर का चिह्न।
मुहा०—कदम पर कदम रखना=(१) ठीक पीछे पीछे चलना। (२) अनुकरण करना।
३ चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अंतर। पैंड। पग। फाल। ४. घोड़े की वह चाल जिसमें केवल पैरों में गति होती है और बदन नहीं हिलता।
कदमबाज—वि० [अ०] कदम की चाल चलनेवाला (घोड़ा)।
कदर—संज्ञा स्त्री० [अ० क़द्र] १ मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई। २ मात्रा। मिकदार।
कदराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर] कायरता।
कदरज—वि० दे० "कदर्य"।
कदरदान—वि० [फा०] कदर करनेवाला। गुणग्राही। गुणग्राहक।
कदरदानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुण-ग्राहकता।
कदरमस(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कदन+हिं० मस (प्रत्य०)] मारपीट। लड़ाई। संग्राम।
कदराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर+आई (प्रत्य०)] कायरपन। भीरुता। कायरता।
कदराना(पु)—क्रि० अ० [हिं० कादर की ना० धा०] कायर होना। डरना। भयभीत होना।
कदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कद=बुरा+रव=शब्द] एक पक्षी जो डीलडौल में मैना के बराबर होता है।
कदर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] निकम्मी वस्तु। कूड़ा करकट।
वि० कुत्सित। बुरा।
कदर्थना—संज्ञा स्त्री० [सं० कदर्थन] [वि० कदर्थित] १ दुर्गति। दुर्दशा। बुरी दशा। २ पीड़ा। बाधा। व्यथा।
कदर्थित—वि० [सं०] १. जिसकी दुर्दशा की गई हो। दुर्गतिप्राप्त। दुखी। २. बेकाम। त्यक्त। तिरस्कृत।
कदर्य—वि० [सं०] [संज्ञा कदर्यता] १. कंजूस। २. लोभी। ३. तुच्छ। बुरा। नीच।
कदली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केला। २. एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज बनाने के काम आती है। ३. एक तरह का हिरन।
कदा—क्रि० वि० [सं०] कब। किस समय।
मुहा०—यदाकदा=कभी कभी। जबतब।
कदाकार—वि० [सं०] बुरे आकार का। बदसूरत। बदशकल। भद्दा।
कदाख्य—वि० [सं०] बदनाम।
कदाच(पु)—क्रि० वि० [सं० कदाचन] शायद। कदाचित्।
कदाचन—क्रि० वि० [सं०] १. किसी समय। कभी। २ शायद।
कदाचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कदा-चारी] बुरी चाल। बुरा आचरण। बदचलनी।
कदाचित्—क्रि० वि० [सं०] १ कभी। २. शायद।
कदापि—क्रि० वि० [सं०] कभी भी। किसी समय भी।
कदी—वि० [अ० कद] हठी। जिद्दी।
क्रि० वि० दे० "कधी", "कभी"।
कदीम—वि० [अ०] पुराना। प्राचीन।
कदीमी—वि० [अ० कदीम] पुराना।
कदुष्ण—वि० [सं०] थोड़ा गर्म। कुनकुना।
कदूरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] रंजिश। मन-मोटाव। कीना।
कदे—क्रि० वि० [सं० कदा] कभी। उ०—कबीर संगति साध की कदे न निरफल होइ।—कबीर०।
कदावर—वि० [फा०] बड़े डीलडौल का।
कद्दी—वि० दे० "कदी"।
कद्रुज—संज्ञा पुं० [सं०] कद्रु की संतान। सर्प। साँप।
कद्दू—संज्ञा पुं० [फा० कदू] लौकी। घिया।
कद्दूकश—संज्ञा पुं० [फा०] लोहे, पीतल आदि की छेददार चौकी जिसपर कद्दू को रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं।
कद्दूदाना—संज्ञा पुं० [फा०] पेट के भीतर के छोटे छोटे सफेद कीड़े जो मल के साथ गिरते हैं।
कधी—क्रि० वि० दे० "कभी"।

कन—संज्ञा पुं० [सं० कण] १ बहुत छोटा टुकड़ा। २ अन्न का एक दाना। ३ अनाज के दाने का टुकड़ा। ४. प्रसाद। जूठन। ५. भीख। भिक्षान्न। ६ चावलों की धूल। कना। ७ बालू या रेत के कण। ८ शारीरिक शक्ति।

संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] 'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है, जैसे—कनपटी।

कनई†—संज्ञा स्त्री० [सं० कदल] कनखा। नई शाखा। कल्ला। कोंपल।

†संज्ञा स्त्री० [सं० कर्दम] गीली मिट्टी। कीचड़।

कनउडⓅ—वि० दे० "कनौडा"।

कनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। सुवर्ण। २ धतूरा। ३. पलाश। टेसू। ढाक। ४ नागकेसर। ५ खजूर। ६ छप्पय छंद के ७१ भेदों में से एक। ७ केले की एक जाति।

संज्ञा पुं० [सं० कणिक] १ गेहूँ। २. गेहूँ का आटा।

कनककली—संज्ञा पुं० [सं० कनक+हिं० कली] कान में पहनने का फूल।

कनककशिपु—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

कनकचंपा—संज्ञा स्त्री० [सं० कनक+हिं० चंपा] मध्यम आकार का एक पेड़ जिसके फल बहुत सफेद और मीठी सुगंध के होते हैं। कर्णिकार। कनियारी।

कनकजीरा—संज्ञा पुं० [सं० कनक+हिं० जीरा] एक महीन धान जो अगहन में होता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

कनकटा—वि० [हिं० कान+कटा] १ जिसका कान कटा हो। बूचा। २. कान काट लेनेवाला।

कनकना—वि० [सं० कणन] जरा से आघात से टूटनेवाला। 'चीमड़' का उलटा।

वि० [सं० क्वणन] [स्त्री० कनकनी] १ जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। २ चुनचुनानेवाला। ३. अरुचिकर। नागवार। ४ चिड़चिड़ा। थोड़ी बात पर चिढ़नेवाला।

कनकनाना—क्रि० अ० [हिं० कनकना] [संज्ञा कनकनाहट] १ सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना। चुनचुनाना। २. चुनचुनाहट या कनकनाहट उत्पन्न करना। गला काटना। ३ अरुचिकर लगना नागवार मालूम होना।

क्रि० अ० [हिं० कान] १. चौकन्ना होना। २. रोमांचित होना।

कनकनाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कनकना+आहट (प्रत्य०)] कनकनाने का भाव। कनकनी।

कनकफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ धतूरे का फल। २ जमालगोटा।

कनका—संज्ञा पुं० [सं० कणिक] १ अन्न के टूटेफूटे दाने। २ छोटा कण।

कनकाचल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने का पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।

कनकानी—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति जो गधे से कुछ ही बड़ी और बड़ी कदमबाज होती है। उ०—चले पथ बेसर सुलतानी। तीख तुरग बाँक कनकानी॥—पद्मावत।

कनकी—संज्ञा स्त्री० [सं० कणिका] १ चावल के टूटे हुए छोटे टुकड़े। २ छोटा कण।

कनकूत—संज्ञा पुं० [सं० कण+हिं० √कूत] खेत में खड़ी फसल की उपज का अनुमान।

कनकौवा—संज्ञा पुं० [हिं० कन्ना+कौवा] कागज की बड़ी पतंग। गुड्डी।

कनखजूरा—संज्ञा पुं० [हिं० कान+सं० खर्जु =एक कीड़ा] एक जहरीला कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं। कनगोजर।

कनखा†—संज्ञा पुं० [?] कोंपल।

संज्ञा पुं० [सं० कर्ण+अक्षि] कटाक्ष। उ०—कनखा करिकै पग सों परिकै पुनि सूने निकेत में जाइ रही।—शृंगार०।

कनखियाना—क्रि० स० [हिं० कनखी से ना० धा०] १. कनखी या तिरछी नजर से देखना। २ आँख से इशारा करना।

कनखी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ण+अक्षि] १. पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा। २ दूसरों की दृष्टि बचाकर देखने का ढंग। ३ आँख का इशारा।

मुहा०—कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

कनखैया†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

कनखोदनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+खोदनी] कान की मैल निकालने की सलाई।

कनगुरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कानी+अँगुरी] सबसे छोटी उँगली।

कनछेदन—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण+छेदन] हिंदुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है। कर्णवेध।

कनटोप—संज्ञा पुं० [हिं० कान+टोप] कानों को ढँकनेवाली टोपी।

कनतूतुर—संज्ञा पुं० [हिं० कान+तूतू (शब्द)] छोटी जाति का एक जहरीला मेढक जो बहुत ऊँचा और लंबा उछलता है।

कनधारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

कनपटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+सं० पट्ट] कान और आँख के बीच का स्थान।

कनपेड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० कान+पेड़ा] एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिल्टी निकल आती है।

कनफटा—संज्ञा पुं० [हिं० कान+फटा] गोरखपंथी योगी जो कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर, मिट्टी, लकड़ी आदि के छल्ले पहनते हैं।

वि० जिसका कान फटा हो।

कनफुँका—वि० [हिं० कान+√फूँक+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० कनफुँकी] १ कान फूँकनेवाला। दीक्षा देनेवाला। २ जिसने दीक्षा ली हो।

कनफुसकी—संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कनफूल—संज्ञा पुं० दे० "करनफूल"।

कनमनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ सोए हुए प्राणी का, आहट पाकर कुछ हिलना डोलना या सचेष्ट होना। २ किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनमैलिया—संज्ञा पुं० [हिं० कान+मैल+इया (प्रत्य०)] कान की मैल निकालनेवाला।

कनयⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कनक"।

कनरस—संज्ञा पुं० [हिं० कान+रस] १ गाना-बजाना सुनने का आनंद। २. गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।

कनरसिया—संज्ञा पुं० [हिं० कान+रसिया] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

कनसलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+सलाई] कनखजूरे की तरह का एक कीड़ा।

कनसार—संज्ञा पुं० [कांस्यकार] ताम्रपत्र पर लेख खोदनेवाला।

कनसाल—संज्ञा पुं० [हिं० कोन+√साल] चारपाई के पायों के तिरछे पड़े छेद जिनके कारण चारपाई में कनेव आ जाय।

कनसुई—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ण+सूच्य] आहट। टोह।

मुहा०—कनसुई या कनसुइयाँ लेना = (१) छिपकर किसी की बात सुनना। (२) भेद लेना।

कनस्तर—संज्ञा पुं० [अं० कनिस्टर] टीन का चौकोर बर्तन जिसमें घी तेल आदि रखा जाता है।

कनहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह। नाविक।

कना—संज्ञा पुं० दे० "कन"।

कनाउड़(पु)—वि० दे० "कनौड़ा"।

कनागत—संज्ञा पुं० [सं० कन्यागत] १. वह समय जब सूर्य कन्या राशि में हो। २. पितृपक्ष। ३ श्राद्ध।

कनात—संज्ञा स्त्री० [तु०] मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं।

कनारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कनारा+ई (प्रत्य०)] दक्षिण भारत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा।

संज्ञा पुं० कनारा का निवासी।

कनावड़ा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कनौड़ा"।

कनिआरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णिकार] कनकचंपा का पेड़।

कनिका(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका"।

कनिगर(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० कानि+फा० गर (प्रत्य०)] अपनी मर्यादा का ध्यान रखनेवाला। नाम की लाज रखनेवाला।

कनियाँ(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] गोद। कोरा। उत्संग।

कनियाना—क्रि० अ० [हिं० कनी ?] आँख बचाकर निकल जाना। कतराना।

क्रि० अ० [हिं० कन्नी, कन्ना] पतंग का किसी ओर झुक जाना। कन्नी खाना।

†क्रि० अ० [हिं० कनियाँ] गोद लेना। गोद में उठाना।

कनियार—संज्ञा पुं० [सं० कर्णिकार] कनकचंपा।

कनिष्ठ—वि० [सं०] [स्त्री० कनिष्ठा] १ बहुत छोटा। अत्यंत लघु। सबसे छोटा। २ जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३ उमर में छोटा। ४ छोटा भाई। ५ हीन। निकृष्ट।

कनिष्ठा—वि० स्त्री० [सं०] १. बहुत छोटी। सबसे छोटी। २ हीन। निकृष्ट। नीच।

संज्ञा स्त्री० १ दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। २ नायिकाभेद के अनुसार दो या अधिक स्त्रियों में वह स्त्री जिसपर पति का प्रेम कम हो। ३ छोटी उँगली। छिगुनी।

कनिष्ठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली। छिगुनी।

कनिहार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

कनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कन] १ छोटा टुकड़ा। २ हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

मुहा०—कनी खाना या चाटना=हीरे की कनी निगलकर प्राण देना।

३. चावल के छोटे छोटे टुकड़े। किनकी। ४. चावल का मध्य भाग जो कभी कभी नहीं गलता। ५ बूँद।

कनीनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आँख की पुतली। तारा। २ कन्या।

कनीर—संज्ञा पुं० दे० "कनेर"।

कनूका—संज्ञा पुं० [सं० कण] अनाज का दाना। कनका।

कने†—क्रि० वि० [सं० कर्णे=स्थान में] १ पास। निकट। समीप। २ ओर। तरफ। ३ अधिकार में। कब्जे में।

कनेक्शन—संज्ञा पुं० [अं०] लगाव। संबंध।

कनेठा†—वि० [हिं० काना+एठा (प्रत्य०)] १ काना। २ भेंगा। ऐंचा-ताना।

कनेठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+√ऐंठ] कान मरोड़ने की क्रिया।

कनेर—संज्ञा पुं० [सं० कर्णेर] एक पेड़ जिसमें लाल या पीले रंग के सुंदर फूल लगते हैं।

कनेरिया—वि० [हिं० कनेर +इया (प्रत्य०)] कनेर के फूल के रंग का। कुछ श्यामता लिए लाल।

कनेव†(पु)संज्ञा पुं० [?] चारपाई का टेढ़ापन।

कनोखी—वि० [हिं० कनखी] तिरछी (आँख या दृष्टि)।

कनौजिया—वि० [हिं० कन्नौज+इया (प्रत्य०)] १ कन्नौज-निवासी। २. जिसके पूर्वज कन्नौज के रहनेवाले रहे हों।

संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

कनौड़ा—वि० [हिं० काना+औड़ा (प्रत्य०)] १ काना। २ जिसका कोई अंग खंडित हो। अपंग। खोंड़ा। ३ कलंकित। निंदित। ४ लज्जित। संकुचित।

संज्ञा पुं० [हिं०√कीन=मोल लेना +औड़ा (प्रत्य०)] १ मोल लिया हुआ गुलाम। क्रीत दास। २ कृतज्ञ मनुष्य। एहसानमंद आदमी। उ०—कपि सेवा बस भए कनौड़े, कह्यो पवनसुत आउ। देबे को न कछू रिनियाँ हौं, धनिक तु पत्र लिखाउ। —विनय०। ३ तुच्छ मनुष्य। गुलाम।

कनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+औती (प्रत्य०)] १ पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। २. कानों के उठाए रखने का ढंग। ३ कान में पहनने की बाली।

कन्ना—संज्ञा पुं० [सं० कर्णकी, प्रा० कण्ण] [स्त्री० कन्नी] १ पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और ढड्ढे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के कुछ ऊपर बाँधा जाता है। २. किनारा। कोर। औंठ।

मुहा०—कन्ने से काटना=किसी कार्य को मूल से नष्ट कर देना। कन्ना कटना=प्रयत्न का निष्फल होना।

संज्ञा पुं० [सं० कण] चावल का कन।

संज्ञा पुं० [सं० कर्णक] वनस्पति का एक रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़े पड़ जाते हैं।

कन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कन्ना] १ पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २ वह धज्जी जो पतंग की कन्नी में इसलिये बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े। ३ किनारा। हाशिया।

संज्ञा पुं० [सं० करण] राजगीरों का करनी नामक औजार।

कन्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कन्या। क्वारी लड़की। २. पुत्री। बेटी।

कन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अविवाहिता लड़की। क्वारी लड़की।

यौ०—पंचकन्या=पुराणों के अनुसार वे पाँच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, मंदोदरी, तारा, कुंती और द्रौपदी।

२ पुत्री। बेटी। ३ बारह राशियों में से छठी राशि। ४ घीकुआर। ५. बड़ी इलायची। ६ एक वर्णवृत्त जिसमें एक मगण और एक गुरु वर्ण रहते हैं, जैसे—माँगी कन्या। माता धन्या। बोल्यो कसा। नासौं बसा॥

कन्याकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या+कुमारी] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप। रासकुमारी।

कन्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

कन्याधन—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो। कन्या की संपत्ति। कन्या का अंश।

कन्यारासी—वि० [सं० कन्याराशिन्] १ जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्याराशि में हो। २ दुर्बलप्रकृति या मंदभाग्य व्यक्ति।

कन्यावानी—संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या+वत +ई (प्रत्य०)] कन्या के सूर्य के समय की वर्षा।

कन्हाई, कन्हैया—संज्ञा पुं० [सं० कृष्ण, प्रा० कण्ह, कन्ह] १. श्रीकृष्ण। २ अत्यंत प्यारा आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३ बहुत सुंदर लड़का।

कन्हावर—संज्ञा पुं० [सं० स्कंधावरण] १ कंधे पर डाला जानेवाला दुपट्टा। २ जुवे का वह भाग जो बैल के कंधे पर रहता है।

कपट—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कपटी] १ अभिप्राय साधन के लिये हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। छल। दंभ। धोखा। २ दुराव। छिपाव।

कपटना—क्रि० स० [सं० कल्पन] १ काटकर अलग करना। छाँटना। खोंटना। २ काटकर अलग निकालना।

कपटी—वि० [सं०] कपट करनेवाला। छली। धोखेबाज। धूर्त्त।

कपड़छन, कपड़छान—संज्ञा पुं० [हिं० कपड़ा+√छान] किसी पिसी हुई बुकनी या तरल पदार्थ में घुली हुई वस्तु को कपड़े में छानने का कार्य।

कपड़द्वार—संज्ञा पुं० [हिं० कपड़ा+द्वार] कपड़ों का भंडार। तोशागार। तोशाखाना।

कपड़धूलि—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा+सं० धवल=चमकदार, सुंदर, सफेद] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा। करेब।

कपड़मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा+मिट्टी] धातु या ओषधि फूँकने के लिये बनाई हुई पोटली पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़ौटी। गिल-हिकमत।

कपड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कर्पट, प्रा० कप्पड] १. रूई, रेशम, ऊन या सन आदि के तागों से बना हुआ शरीर का आच्छादन। वस्त्र। पट।

मुहा०—कपड़ों से होना=मासिक धर्म से होना। रजस्वला होना (स्त्री का)। २ पहनावा। पोशाक।

यौ०—कपड़ा लत्ता=पहनने ओढ़ने का सामान।

कपड़ौटी—संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी"।

कपर्द, कपर्दक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कपर्दिका] १ (विशेषत शिव का) एक दूसरे से उलझकर गुत्थी के रूप में परिणत बालों का पाश। जटाजूट। २ कौड़ी।

कपर्दिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी।

कपर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कपर्दी—संज्ञा पुं० [सं० कपर्दिन्] [स्त्री० कपर्दिनी] १. शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक।

कपाट—संज्ञा पुं० [सं०] किवाड़। पट।

कपाटबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके अक्षरों को विशेष रूप से लिखने से किवाड़ों का चित्र बन जाता है।

कपार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "कपाल"।

कपाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कपाली, कपालिका] १ सिर के ऊपर का अस्थि-पंजर। मुंड। खोपड़ा। खोपड़ी। २ ललाट। मस्तक। ३. अदृष्ट। भाग्य। ४ घड़े आदि के नीचे या ऊपर का भाग। खपड़ा। खर्पर। ५ मिट्टी का भिक्षा पात्र जिसमें पहले भिक्षुक लोग भिक्षा लेते थे। खप्पर। ६ वह बरतन जिसमें यज्ञों में देवताओं के लिये पुरोडाश पकाया जाता था। ७ ढक्कन। ८ अंडे का छिलका।

कपालक(पु)—वि० दे० "कापालिक"।

कपालक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कपाल+क्रिया] मृतक संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं। कपालस्फोट।

मुहा०—कपालक्रिया करना=नष्ट करना।

कपालमाली—संज्ञा पुं० [सं०] मुंडमाला धारण करनेवाला। शंकर। महादेव।

कपालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपड़ी।

संज्ञा स्त्री० [सं० कापालिका] काली। रणचंडी।

कपालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कपाली—संज्ञा पुं० [सं० कपालिन्] [स्त्री० कपालिनी] १ शिव। महादेव। २ भैरव। ३ मनुष्य की खोपड़ी में भीख माँगनेवाला। ठीकरा या खप्पर लेकर भीख माँगनेवाला। ४ एक वर्णसंकर जाति। कपरिया।

कपास—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पास] [वि० कपासी] १. रूई का पौधा। २ रूई।

कपासी—वि० [हिं० कपास] कपास के फूल के रंग का। बहुत हलके पीले रंग का।

संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग।

कपिंजल—संज्ञा पुं० [सं०] १ चातक। पपीहा। २ गौरा पक्षी। ३ भरदूल। भरुही। ४ तीतर। ५ एक मुनि।

वि० [सं०] हलके पीले रंग का।

कपि—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। २. हाथी। ३. करंज। कंजा। ४. सूर्य। ५. विष्णु। कृष्ण।

कपिकच्छु—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच। उ०—बात तरुमूल, बाहुसूल कपिकच्छु बेलि उपजी,सकेलि,कपि,खेल ही उखारिए।—हनु०।

कपिकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।

कपिखेल—संज्ञा पुं० दे० "कपिकच्छु"।

उ०—द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर, कंदुक ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो।—हनु०।

कपित्थ—संज्ञा पुं० [सं०] कैथ का पेड़ या फल।

कपिध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।

कपिल—वि० [सं०] १. भूरा। मटमैला। तामड़े रंग का। २ सफेद।

संज्ञा पुं० १ अग्नि। २. कुत्ता। ३ चूहा। ४ शिलाजीत। ५. महादेव। ६. सूर्य। ७. विष्णु। ८ एक मुनि जो सांख्य-शास्त्र के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं।

कपिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच।

कपिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भूरापन। २ ललाई। ३. पीलापन। ४ सफेदी।

कपिलवस्तु—संज्ञा पुं० [सं०] गौतमबुद्ध का जन्मस्थान जो नेपाल की तराई में है।

कपिला—वि० स्त्री० [सं०] १. भूरे रंग की। मटमैले रंग की। २ सफेद। ३. जिसके शरीर में सफेद दाग हों। ४ सीधी सादी। भोली भाली।

संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। २. सीधी गाय। उ०—तिन्हकर मंत सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालइ हरहाई।—मानस। ३. पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी। ४. दक्ष की एक कन्या।

कपिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का मद्य। २. एक नदी जिसे आजकल कसाई कहते हैं। ३. कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे।

कपिस—वि० [सं०] १. काला और पीला रंग लिए भूरे रंग का। मटमैला। २ पीला-भूरा। ३ लाल-भूरा।

कपीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वानरों का राजा; जैसे—सुग्रीव इत्यादि। २ हनुमान।

कपूत—संज्ञा पुं० [सं० कुपुत्र] बुरे चाल-चलन का पुत्र। बुरा लड़का। नालायक बेटा।

कपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूत] पुत्र के अयोग्य आचरण। नालायकी।

कपूर—संज्ञा पुं० [सं० कर्पूर] १. एक सफेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है और बहुत जल्द जल उठता है। २ एक प्राचीन भौगोलिक द्वीप का नाम।

कपूरकचरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूर+कचरी] एक बेल जिसकी जड़ सुगंधित होती है और दवा के काम में आती है। सितरुती।

कपूरमनि—संज्ञा पुं० [सं० कर्पूरमणि] १ एक प्रकार की मणि। २ एक श्वेतखनिज।

कपूरी—वि० [हिं० कपूर] १. कपूर का बना हुआ। २ हलके पीले रंग का।

संज्ञा पुं० १ कुछ हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का पान।

कपोत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १ कबूतर। २ परेवा। ३ पक्षी। चिड़िया। ४ भूरे रंग का कच्चा सुरमा।

कपोतव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] निर्विरोध अत्याचार सहन करने की क्रिया।

कपोती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कबूतरी। २ पेंडुकी। ३ कुमरी।

वि० [सं०] कपोत के रंग का। धूमिल रंग का।

कपोल—संज्ञा पुं० [सं०] १. गाल। २. हाथी का गंडस्थल।

कपोलकल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं० कपोल+कल्पना] मनगढ़ंत या बनावटी बात। गप्प।

कपोलकल्पित—वि० [सं० कपोल+कल्पित] बनावटी। मनगढंत। झूठ।

कपोल गेंदुआ—संज्ञा पुं० [सं० कपोल+हिं० गेंद] गाल के नीचे रखने का तकिया। गलतकिया। छोटा और गोल या चौकोर तकिया।

कफ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह गाढ़ी लसीली और अंठेदार वस्तु जो खाँसने या थूकने पर मुँह से बाहर आती है तथा नाक से भी निकलती है। श्लेष्मा। बलगम। २ शरीर के भीतर की एक धातु (वैद्यक)।

संज्ञा पुं० [अं०] कमीज या कुर्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं।

संज्ञा पुं० [फा०] झाग। फेन।

कफन—संज्ञा पुं० [अ०] वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या जलाया जाता है।

यौ०—कफनचोर=(१) वह चोर जो कब्र से मुर्दों के कफन चुराया करता है। (२) कफनखसोट। मक्खीचूस।

मुहा०—कफन को कौड़ी न होना या रहना=अत्यंत दरिद्र होना। कफन की कौड़ी न रखना=जो कमाना, वह सब खा डालना। कफन बाँधना, कफन सिर से लपेटना या बाँधना=युद्ध के लिये रवाना होना। मरने को तैयार होना। जान खतरे में डालना। जान पर खेलना। सिर हथेली पर रखना। कफन फाड़कर बोलना=बहुत बुलंद आवाज से बोलना। शोर मचाना।

कफनखसोट—वि० [अ० कफन+हिं०√खसोट] कंजूस। मक्खीचूस। अत्यंत लोभी।

कफनखसोटी—संज्ञा स्त्री० [अ० कफन+हिं०√खसोट+ई (प्रत्य०)] १. डोमों का कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफन फाड़कर लेते हैं। २ इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन एकत्र करने की वृत्ति। ३ कंजूसी।

कफनाना—क्रि० स० [अ० कफन से हिं० ना० धा०] गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना।

कफनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन] १ वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं। २. साधुओं के पहनने का घुटने तक का लंबा कुर्ता।

कफस—संज्ञा पुं० [अ०] १ पिंजरा। २ काबुक। दरबा। ३ बंदीगृह। कैदखाना। ४ बहुत तंग जगह।

कफोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँह के बीच की गाँठ। कुहनी। कोहनी।

कबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीपा। कंडाल। २ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्यबिंब को ढकनेवाले बादल। मेघ। ३ पेट। उदर। ४ जल। ५ बिना सिर का (विशेषत जीवित) धड़। रुंड। ६ दनु नामक राक्षस जिसके सिर और जाँघों को इंद्र ने (ललकारने पर) अपने वज्र से उसके पेट में घुसा दिया था और उसकी लंबी भुजाओं और पेट में एक चौड़ा मुँह मात्र बच गया था। त्रेता युग में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम ने उसका उद्धार किया। ७ राहु।

कब—क्रि० वि० [सं० कदा] १ किस समय। किस वक्त। (प्रश्नसूचक)।

मुहा०—कब का, कब के, कब से=देर से। विलंब से। कब नहीं=बराबर। सदा।

२. कभी नहीं। नहीं।

कबड्डी—संज्ञा स्त्री० [देश०] दो दलों के बीच खेला जानेवाला एक भारतीय खेल जिसमें एक पक्ष का व्यक्ति दूसरे पक्ष में 'कबड्डी' 'कबड्डी' कहकर खेलने जाता है।

कबर—संज्ञा स्त्री० दे० "कब्र"।

कबरा—वि० [सं० कर्बुर, पा० कब्बर] [स्त्री० कबरी] सफेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दागवाला। चितला। अबलक। मिश्रित रंग का। चित्रित।

कबरिस्तान—संज्ञा पुं० दे० "कब्रिस्तान"।

कबरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों के सिर की चोटी। सुंदर केश पाश।

कबल—अव्य० [अ०] पहले।

कबहुँ—क्रि० वि० [हिं० कब+हुँ (प्रत्य०)] कभी। किसी अवसर पर।

कबहुँक—क्रि० वि० [हिं० कबहुँ+क (प्रत्य०)] यदा कदा। कभी। उ०—मिलन होत कबहुँक छिनक बिछुरन होत सदाहि। —शृंगार०।

कबा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।

कबाड़—संज्ञा पुं० [सं० कर्पट] [संज्ञा कबाड़ी] १ काम में न आनेवाली वस्तु। अंगड़ खंगड़। २ अडबंड काम। व्यर्थ का व्यापार। ३. तुच्छ व्यवसाय।

कबाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] व्यर्थ की बात। झंझट। बखेड़ा।

कबाड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़+इया (प्रत्य०)] पुरानी या टूटीफूटी चीजें बेचनेवाला आदमी। २ तुच्छ व्यवसाय-करनेवाला पुरुष। ३ झगड़ालू आदमी।

कबाड़ी—संज्ञा पुं० दे० "कबाड़िया"।

कबाब—संज्ञा पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाबचीनी—संज्ञा स्त्री० [अ० कबाब+हिं० चीनी] १. मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी जिसके गोल फल खाने में कड़ुए और ठंढे मालूम होते हैं। २ कबाबचीनी का गोल फल या दाना।

कबाबी—वि० [अ० कबाब] १ कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

कबार—संज्ञा पुं० [हिं० कारोबार] १. व्यापार। रोजगार। व्यवसाय। उ०—एहि परिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानौं कछु और कबारू।—मानस। २. दे० "कबाड़"।

संज्ञा पुं० [सं०√कब्] कीर्ति वर्णन। यशोवर्णन। उ०—मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कबार।—गीता०।

कबारना—क्रि० स० [देश०] उखाड़ना।

कबाला—संज्ञा पुं० [अ०] वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय, जैसे—बयनामा।

कबाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुराई। खराबी। २ दिक्कत। तरद्दुद। अड़चन। परेशानी।

कबीर—संज्ञा पुं० [अ० कबीर=बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जिन्हें पैदा होते ही माता-पिता ने त्याग दिया था और नूरी नामक जुलाहे और उसकी पत्नी ने पाल-पोसकर बड़ा किया था। २ एक प्रकार का प्रायः अश्लील गीत या पद जो होली में गाया जाता है और जिसमें प्रत्येक चरण में कुल २७ मात्राएँ होती हैं तथा १६ मात्राओं पर यति, २७ पर विराम और अंत्य वर्ण लघु होता है; जैसे—आपस में ना करैं मुकदमा, घूस हजारों देयँ। डिगिरी पावैं खरचा जोड़ैं, लंबी साँसें लेयँ॥ (भला पचायत को नहिं मानैंगे)। इसे सरसी और सुमंदर भी कहते हैं।

विं० श्रेष्ठ। बड़ा।

कबीरपंथी—वि० [हिं० कबीर+पंथी] कबीर के सम्प्रदाय का। कबीर के उपदेशों को माननेवाला।

कबीला—संज्ञा पुं० [अ० क़बील] १ समूह। झुंड। २ एक गोत्र के सब लोगों का वर्ग।

संज्ञा स्त्री० जोरू। पत्नी।

संज्ञा पुं० दे० "कमीला"।

कबुलवाना, कबुलाना—क्रि० स० [हिं० कबूलना का प्रे० रूप] कबूल कराना। स्वीकार कराना। मनवाना।

कबूतर—संज्ञा पुं० [फा०, मि० स० कपोत] [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।

कबूतरखाना—संज्ञा पुं० [फा०] पालतू कबूतरों के रहने का दरबा।

कबूतरबाज—वि० [फा०] जिसे कबूतर पालने और उड़ाने की लत हो।

कबूल—संज्ञा पुं० [अ०] स्वीकार। मजूर।

कबूलना—क्रि० स० [अ० क़बूल] स्वीकार करना। सकारना। मजूर करना। मानना।

कबूलियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पदा देनेवाले को लिखकर देता है।

कबूली—संज्ञा स्त्री० [फा०] चने की दाल की खिचड़ी।

कब्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १ पाखाने का साफ न होना। मलावरोध। २ ग्रहण। पकड़।

कब्जा—संज्ञा पुं० [अ०] १ मूँठ। दस्ता।

मुहा०—कब्जे पर हाथ डालना= तलवार खींचने के लिये मूँठ पर हाथ ले जाना।

२. किवाड़ या संदूक में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। नरमादगी। पकड़। ३. दखल। अधिकार। वश। इख्तियार।

कब्जादार—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० संज्ञा कब्जादारी] १ वह अधिकारी जिसका कब्जा हो। २ दखीलकार असामी।

वि० जिसमें कब्जा लगा हो।

कब्जियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पाखाने का साफ न आना। मलावरोध।

कव्य—संज्ञा पुं० [सं० कव्य] दे० "कव्य"।

कब्र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि अपने मुर्दे गाड़ते हैं। २ वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

मुहा०—कब्र में पैर या पाँव लटकाना=मरने के करीब होना। बूढ़ा होना।

कब्रिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कभी—क्रि० वि० [हिं० कब+ही] किसी समय। किसी अवसर पर।

मुहा०—कभी का=बहुत देर से। कभी न कभी=आगे चलकर। किसी अवसर पर अवश्य।

कभू(पु)—क्रि० वि० दे० "कभी"।

कमंगर—संज्ञा पुं० [फा० कमानगर] १ धनुष या कमान बनानेवाला। २ जोड़ से उखड़ी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला। २ चितेरा। मुसव्विर।

†वि० दक्ष। कुशल। निपुण।

कमगरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कमगर] १ धनुष या कमान बनाने का पेशा या हुनर। २ हड्डी बैठाने का काम। ३ मुसव्विरी।

कमडल—संज्ञा पुं० दे० "कमडलु"।

कमंडली—वि० [हिं० कमडल+ई (प्रत्य०)] १ कमडल लिए रहनेवाला। साधु। वैरागी। २ पाखडी। ३ ब्रह्मा। विधाता।

कमंडलु—संज्ञा पुं० [सं०] १ सन्यासियों का जलपात्र, जो धातु, मिट्टी, तुमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है। २ पूजा का जलपात्र। ३ जलपात्र।

कमंद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कबंध"।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। फंदा। पाश। २ फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम—वि० [फा०] १ थोड़ा। न्यून। अल्प।

मुहा०—कम से कम=अधिक नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना जरूर।

२ बुरा, जैसे—कमबख्त।

क्रि० वि० प्रायः नहीं। बहुधा नहीं।

कमअसल—वि० [फा० कम+अ० असल] वर्णसकर। दोगला।

कमखाब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तू के बेलबूटे बने होते हैं।

कमची—संज्ञा स्त्री० [तु० मि० स० कचिका] १. पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी बनाते हैं। तीली। २ पतली लचकदार छड़ी। ३ लकड़ी आदि की पतली फट्टी।

कमच्छा—संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या"।

कमजोर—वि० [फा०] दुर्बल। अशक्त।

कमजोरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] निर्बलता। दुर्बलता। अशक्तता।

कमठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कमठी] १ कछुआ। २ साधुओं का तुंबा या जलपात्र। ३ बाँस। ४ एक असुर। ५ एक मुनि। ६ एक राजा। ७ साही नामक जानवर जिसकी पीठ पर लंबे लंबे काँटे होते हैं।

कमठा—संज्ञा पुं० [सं० कमठ=बाँस] १ धनुष। कमान। २ अपनी तपस्या से सकाम निर्जरा प्राप्त करनेवाले एक जैन महात्मा।

कमठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कछुई। उ०—सकुचि गात गोपति कमठी ज्यों हहरी हृदय, विकल भइ भारी। —श्रीकृष्णगीतावली।

संज्ञा स्त्री० [सं० कमठ] बाँस की पतली लचीली धज्जी। पट्टी।

कमती—संज्ञा स्त्री० [फा० कम+हिं० ती (प्रत्य०)] कमी। घटती।

वि० कम। थोड़ा।

कमना(पु)†—क्रि० अ० [फा० कम] कम होना। न्यून होना। घटना।

कमनी—वि० दे० "कमनीय"।

कमनीय—वि० [सं०] [भाव० कमनीयता] [स्त्री० कमनीया] १ कामना करने योग्य। वाञ्छनीय। २ मनोहर। सुदर।

कमनैत—सज्ञा पुं० [फा० कमान+हिं० ऐत (प्रत्य०)] कमान चलानेवाला। तीरंदाज। उ० —किए काम-कमनैत दृढ रहत निसानो मोहिं। अहे निसा नीहूँ नहीं निसा निसासिनि तोहि।—रससारांश।

कमनैती—संज्ञा स्त्री० [फा० कमान+हिं० ऐती (प्रत्य०)] तीर चलाने की विद्या।

कमबख्त—वि० [फा०] भाग्यहीन। अभागा।

कमबख्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] बदनसीबी। दुर्भाग्य। अभाग्य।

कमर—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर होता है।

मुहा —कमर कसना या बाँधना= (१) तैयार होना। उद्यत होना। (२) चलने की तैयारी करना। कमर टूटना=(१) निराश होना। उत्साह का न रहना। (२) असहाय या निरवलव हो जाना।

(२) किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग, जैसे कोल्हू की कमर। ३. अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है। लपेट।

कमरकोट, कमरकोटा—सज्ञा पुं० [फा० कमर+हिं० कोट] १ वह छोटी दीवार जो किलों और चारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं। २ रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार।

कमरख—सज्ञा पुं० [स० कर्मरक] १ एक पेड़ जिसके फाँकवाले लबे लबे खट्टे फल खाए जाते हैं और चटनी बनाने के काम आते हैं। कर्मरग। कमरंग। २ इस पेड़ का फल।

कमरखी—वि० [हिं० कमरख] जिसमें कमरख के ऐसी उभड़ी हुई फाँकें हों।

कमरबंद—सज्ञा पुं० [फा०] १ लबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटका। २ पेटी। ३ इजारबद। नाड़ा।

वि० कमर कसे तैयार। मुस्तैद।

कमरबल्ला—सज्ञा पुं० [फा० कमर+हिं० बल्ला] १ खपड़े की छाजन में वह लकड़ी जो तड़क के ऊपर और कोरों के नीचे लगाई जाती है। कमरबस्ता। २ कमरकोटा।

कमरा—सज्ञा पुं० [यू०, अँ० कैमेरा] १ कोठरी। ‡२. फोटोग्राफी का वह यंत्र जो एक विशेष शीशे (लेंस) की सहायता से प्रतिबिंबित वस्तु का चित्र अंकित करता है।

(पु)सज्ञा पु० दे० "कंबल"।

कमरिया—सज्ञा पुं० [फा० कमर] एक प्रकार का हाथी जो डीलडौल में छोटा पर बहुत जबर्दस्त होता है। बौना हाथी।

‡सज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

कमरी‡—सज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

कमल—सज्ञा पुं० [स०] १. पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुदर हल्के लाल, नीले, पीले या सफेद फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २ इस पौधे का फूल। ३ कमल के आकार का एक मास पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४ जल। पानी। ५ ताँबा। ६ [स्त्री० कमली] एक प्रकार का मृग। ७ सारस। ८ आँख का कोया। ढेला। ९. योनि के भीतर कमलाकार एक गाँठ। फूल। धरन। १० छ मात्राओं का एक छद जिसके प्रत्येक चरण में गुरु लघु, गुरु लघु (SISI) होता है, जैसे—दीनवधु। शीलसिंधु। ११ छप्पय के ७१ भेदों में से एक भेद जिसमें ४३ गुरु ६६ लघु, कुल १०९ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं। १२ एक वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक चरण एक नगण का होता है। जैसे—न वन। भजन॥ कमत। नयन॥ १३ काँच का एक प्रकार का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। १४ एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। पीलू। कमला। काँवर। १५ मूत्राशय। मसाना। १६ सगीत में ध्रुवताल का एक भेद। १७. नक्षत्रों का एक समूह। १८ एक ओषध। १९ ब्रह्मा। २० वैशपायन का एक शिष्य। २१ एक दानव का नाम।

कमलगट्टा—सज्ञा पुं० [स० कमल+हिं० गट्टा] कमल का बीज। पद्मबीज।

कमलज—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कमलनयन—वि० [सं०] [स्त्री० कमलनयनी] जिसकी आँखें कमल की पखड़ी की तरह बड़ी और सुदर हों।

सज्ञा पुं० १ विष्णु। २ राम। ३ कृष्ण।

कमलनाभ—सज्ञा पुं० [स०] जिसकी नाभि में कमल हो। विष्णु।

कमलनाल—सज्ञा स्त्री० [सं०] कमल की डंटी, जिसपर फूल रहता है।

कमलबंध—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

कमलबाई—सज्ञा स्त्री०[स०कमल+हिं०बाई] एक रोग जिसमें शरीर, विशेषकर आँख पीली पड़ जाती है।

कमलयोनि—सज्ञा पुं० [स०] जो कमल से उत्पन्न हो। ब्रह्मा।

कमला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लक्ष्मी। २ धन। ऐश्वर्य। ३ एक प्रकार की बड़ी नारगी। सतरा। ४ रूपवती स्त्री। ५ एक वर्णवृत्त जिसमें क्रम से दो नगण और एक सगण होता है, जैसे—न निसि घरं तजि धरी। कबहुँ जग कुलनरी॥ धरति पद पर धरा। सुमति युत सति वरा॥ रतिपद। कुमुद।

सज्ञा पुं० [सं० कबल] १ रोएँदार कीड़ा जिसके शरीर में छू जाने से खुजलाहट होती है। झाँझाँ। सूँडी। २. अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लबा सफेद रग का कीड़ा। ढोला।

कमलाकार—सज्ञा पुं० [स०] छप्पय के ७१ भेदों में से एक।

कमलाक्ष—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० कमलाक्षी] १ कमल का बीज। २ दे० "कमलनयन"।

कमलापति—सज्ञा पुं० [सं०] कमला का स्वामी। विष्णु।

कमलालया—सज्ञा स्त्री० [सं०] कमल में रहनेवाली। लक्ष्मी।

कमलावती—सज्ञा स्त्री० [स०] पद्मावती छद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती है और दस दसवीं तथा अठारहवीं मात्राओं पर यति तथा अत में विराम होता है। इसमें जगण नहीं रखा जाता, जैसे—है शक्ति अनादी, मुनि सनकादी, महिमा नाहिं सकते गाए। ताको नित गैए, सहजहिं लहिए, चारि पदारथ मन भाए॥

कमलासन—सज्ञा पुं० [स०] १. ब्रह्मा। २ योग का एक आसन जिसमें बायाँ पैर दाहिनी जघा पर और दाहिना बाई जाँघ पर रखकर बैठा जाता है। पद्मासन।

कमलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा कमल। २ वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली—सज्ञा पुं० [सं० कमलिन्] ब्रह्मा।

सज्ञा स्त्री० छोटा कंबल।

कमवाना—क्रि० स० [हिं० कमाना का प्रे० रूप] कमाने का काम दूसरे से कराना।

कमसिन—वि० [फा०] [संज्ञा कमसिनी] कम उम्र का। छोटी अवस्था का।

कमसिनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लड़कपन। बचपन।

कमाइच—संज्ञा पुं० [फा० कमानचा] इसराज, सारंगी आदि बजाने का गज। उ०—बीना बेनु कमाइच गहे। बाजे अमृत तहँ गहगहे।—पदमावत।

कमाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कमा+आई (प्रत्य०)] १. कमाया हुआ धन। अर्जित द्रव्य। २. कमाने का काम। ३. व्यवसाय। उद्यम। धंधा।

कमाऊ—वि० [हिं० √कमा+आऊ (प्रत्य०)] कमानेवाला।

कमाच—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कमाची—संज्ञा स्त्री० दे० "कमची"।

संज्ञा स्त्री० [फा० कमानचा] कमान की तरह झुकाई हुई तीली।

कमान—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. धनुष।

मुहा०—कमान चढ़ना=(१) दौरदौरा होना। (२) त्योरी चढ़ना। क्रोध में होना।

२ इंद्रधनुष। ३. मेहराव। ४. तोप। उ०—गरजन बाँधि कमानै धरीं। वज्र-आगि मुख दारू भरी।—पदमावत। ५. बंदूक।

संज्ञा स्त्री० [अँ० कमांड] १. आज्ञा। हुक्म। २ फौजी आज्ञा। ३ फौजी नौकरी।

मुहा०—कमान पर जाना=लड़ाई पर जाना। कमान बोलना=सिपाही को नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कमानगर—संज्ञा पुं० दे० "कमँगर"।

कमानचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटी कमान। २ सारंगी बजाने की कमानी। बढ़इयों, लोहारों आदि की बरमा चलाने की कमानी। ३. मिहराव। डाट।

कमाना—क्रि० स० [हिं० काम] १. कामकाज करके रुपया पैदा करना। २ सुधारना या काम के योग्य बनाना।

यौ०—कमाई हुई हड्डी या देह=कसरत से वलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया साँप=वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिए गए हों। कमाना-धमाना=मिहनत मजदूरी करके पेट पालना।

३. सेवा संबंधी छोटे छोटे काम करना; जैसे—पाखाना कमाना (उठाना)। ४. कर्म संचय करना। जैसे—पाप कमाना।

क्रि० अ० १ मेहनत मजदूरी करना। २ कसब करना। खर्चीं कमाना।

क्रि० स० [हिं० कम] कम करना। घटाना।

कमानिया—संज्ञा पुं० [फा० कमान+हिं० इया (प्रत्य०)] धनुष चलानेवाला। तीरंदाज।

वि० धन्वाकार। मेहराबदार।

कमानी—संज्ञा स्त्री० [फा० कमान] [वि० कमानीदार] १. लोहे की तीली, तार अथवा और कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाव पड़ने से दब जाय और हटने पर फिर अपनी जगह पर आ जाय।

यौ०—बाल-कमानी=घड़ी की एक बहुत पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता है।

२ झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली। ३. एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं। ४ कमान के आकार की कोई झुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्सी, तार या बाल बँधा हो।

कमाल—संज्ञा पुं० [अ०] १ परिपूर्णता। पूरापन। समाप्ति। खातमा। अंत। २ निपुणता। कुशलता। ३. अद्भुत कर्म। अनोखा कार्य। ४. कारीगरी। ५ कबीरदास के बेटे का नाम।

वि० १ पूरा। संपूर्ण। सब। २ सर्वोत्तम। ३ अत्यंत। बहुत ज्यादा।

कमालियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ परिपूर्णता। पूरापन। समाप्ति। २ निपुणता। कुशलता।

कमासुत—वि० [हिं० √कमा+सुत ?] १ कमाई करनेवाला। खूब रुपए पैसे पैदा करनेवाला। २ उद्यमी।

कमी—संज्ञा स्त्री० [फा० कम] १ न्यूनता। कोताही। अल्पता। २ हानि। नुकसान।

कमीज—संज्ञा स्त्री० [अ० क़मीस] वह कुर्ता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते।

कमीना—वि० [फा०] [स्त्री० कमीनी] ओछा। नीच। क्षुद्र।

कमीनापन—संज्ञा पुं० [फा० कमीना+हिं० पन (प्रत्य०)] नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।

कमीला—संज्ञा पुं० [सं० कपिल्ल] एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम में आती है।

कमुकंदरⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० कार्मुक+√दल्] धनुष तोड़नेवाले रामचंद्र।

कमेरा—संज्ञा पुं० [हिं० काम+एरा (प्रत्य०)] (स्त्री० वि० कमेरी) काम करनेवाला। मजदूर। नौकर।

कमेला—संज्ञा पुं० [हिं० काम+एला (प्रत्य०)] वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं। वधस्थान। कसाईखाना।

कमोदिक—संज्ञा पुं० [सं० कामोद (राग)] गवैया।

कमोदिनⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कमोरा—संज्ञा पुं० [सं० कुंभ+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] चौड़े मुँह का मिट्टी का एक बड़ा बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है। घड़ा। कछरा।

कम्यूनिज्म—संज्ञा पु० दे० "साम्यवाद"।

कम्यूनिस्ट—वि० दे० "साम्यवादी"।

कम्यूनीके—संज्ञा पुं० [अँ०] सरकारी सूचना या विवरण का पत्र।

कयपूती—संज्ञा स्त्री० [मला० कयु=पेड़+पूती=सफेद] एक सदाबहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है।

कयाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "काया"।

कयाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ ठहराव। टिकान। २ ठहरने की जगह। विश्रामस्थान। ३. ठौरठिकाना। निश्चय। स्थिरता।

कयामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। लेखे का अंतिम दिन। २ प्रलय। ३ हलचल। खलबली।

कयास—संज्ञा पु० [अ०] [वि० कयासी] अनुमान। अटकल। सोच विचार।

करंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक। खोपड़ी। २ कमंडलु। ३ नारियल की खोपड़ी। नारियल की खोपड़ी का बना हुआ पात्र। ४ पंजर। ठठरी। ५ शरीर की कोई हड्डी। ६ एक प्रकार की ईख।

करंज—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंजा। २ एक छोटा जंगली पेड़ जो दवा के काम आता है। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी।

संज्ञा पुं० [फा० कुलंग, स० कलिंग] मुर्गा।

करंजा—संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।

करंजुआ—संज्ञा पुं० दे० "करंज"।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार के अंकुर जो बाँस या ऊख में होते और उनको हानि पहुँचाते हैं। घमोई।

वि० [सं० करंज] करंज के रंग का। खाकी।

संज्ञा पुं० खाकी रंग। करंज का सा रंग।

करंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ शहद का छत्ता। २ तलवार ३ कारंडव नाम का हंस। ४. बाँस की टोकरी या पिटारी। डला। ५ लकड़ी का टुकड़ा।

संज्ञा पुं० [सं० कुरुविंद ?] कुरुल पत्थर जिसपर रखकर हथियार तेज किए जाते हैं।

करंतीना—संज्ञा पुं० [अँ० क्वारंटाइन = ४० दिन] १ कानून द्वारा निर्धारित वह समय जिसमें किसी संक्रामक बीमारी से ग्रसित क्षेत्रों से आए हुए यात्री या रोगी जन-साधारण से दूर रखे जाते हैं। २ वह स्थान जहाँ ऐसे लोग कुछ दिन रखे जाते हैं जो किसी फैलनेवाली बीमारी के स्थान से आते हैं।

कर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २ हाथी की सूँड। ३. सूर्य या चंद्रमा की किरण। ४ ओला। पत्थर। ५ राजस्व। मालगुजारी। महसूल। ६. छल। युक्ति। पाखंड।

वि० [सं०] [स्त्री० करी] करनेवाला (यौ० के अंत में), जैसे—गुणकर। क्षेमकर। हितकर। दिनकर। निशाकर।

(पु) प्रत्य० [सं० कृत?] संबंध कारक का चिह्न, का, जैसे—राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा। —मानस।

करक—संज्ञा पुं० [अ०] १ कमंडलु। जल-पात्र। करवा। २ दाड़िम। अनार। ३ कचनार। ४. पलास। ५ बकुल। मौलसिरी। ६ करील का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क] १ रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा। कसक। चिलक। उ०—मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै, जानै सोई जाके उर कसकै करक सी। —गीता०। २ रुक-रुककर और जलन के साथ पेशाब होने का रोग। ३. नखक्षत। ४ वह चिह्न जो शरीर पर किसी वस्तु की दाब, रगड़ या आघात से पड़ जाता है। साँट। ५ नारियल की खोपड़ी का बना बरतन। ६ एक प्रकार का पक्षी।

करकच—संज्ञा पुं० [देश०] १. समुद्री नमक। २ झगड़ा। फसाद।

करकट—संज्ञा पुं० [हिं० खर+स० कट] कूड़ा। झाड़न। बहारन। कतवार।

यौ०—कूड़ा करकट।

करकना—क्रि० अ० दे० "कड़कना"।

(पु) वि० [स० कर्कर] [स्त्री० करकरी] जिसके कण उँगलियों में गड़ें। खुरखुरा।

करकरा—संज्ञा पुं० [स० कर्कराटुक] एक प्रकार का सारस।

वि० [सं० कर्कर] खुरखुरा।

करकराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० करकरा+आहट (प्रत्य०)] १ कड़ापन। खुरखुराहट। २ आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा।

करकस(पु)—वि० दे० "कर्कश"।

करका—संज्ञा स्त्री० [स०] आकाश से गिरनेवाला पत्थर। ओला।

करखना(पु)—क्रि० अ० [स० कर्षण] जोश में आना। उत्तेजित होना।

करखा—संज्ञा पुं० १ दे० "कड़खा"।

२ वह मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ होती हैं और ८, २०, और २८ मात्राओं पर यति तथा अंत में विराम होता है। इसके प्रत्येक चरणांत में यगण रहता है, जैसे—ब्रह्म रुद्रादि, सिर नाय जय जय कहत, भक्त प्रह्लाद निज गोद लीनो। प्रीति सों चाहि, दै राज सुख साज सब, नरायनदास, वर अभय दीनो।

संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] उत्तेजना। बढ़ावा। ताव।

संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।

करगत—वि० [स०] हाथ में आया हुआ। हस्तगत। प्राप्त। उ०—नाथ एक संसउ बड़ मोरे। करगत वेद तत्व सब तोरे। —मानस।

करगता—संज्ञा पुं० [सं० कटि+गता] सोने, चाँदी या सूत की करधनी।

करगल—संज्ञा पुं० [फा०] १ गिद्ध। २ तीर।

करगह—संज्ञा पुं० [फा० कारगाह] १ जुलाहों के कारखाने की वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं और कपड़ा बुनते हैं। २ कपड़ा बुनने का यंत्र। करघा।

करगहना—संज्ञा पुं० [हिं० करगह] पत्थर या लकड़ी जिसे खिड़की या दरवाजा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं। भरेठा।

करग्रह—संज्ञा पुं० [सं० कर+ग्रह(ण)] ब्याह। पाणिग्रहण।

करघा—संज्ञा पुं० दे० "करगह"।

करचंग—संज्ञा पुं० [स० कर+हिं० चंग] १ ताल देने का एक बाजा। २. डफ।

करछा—संज्ञा पुं० [प्रा० कड़च्छु] [स्त्री० करछी] बड़ी कलछी जिससे खाना पकाते समय दाल आदि चलाई जाती है।

करछाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० कर+उछाल ?] उछाल। छलांग। कुदान।

करछी—संज्ञा स्त्री० दे० "कलछी"।

करज—संज्ञा पुं० [सं०] १. नख। नाखून। २ उँगली। ३ नख नामक सुगंधित द्रव्य।

करजोड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर+हिं० जोड़ी] हत्थाजोड़ी नाम की ओषधि।

करटक—संज्ञा पुं० [स०] १ कौआ। २ हाथी की कनपटी। ३ कुसुम का पौधा।

करटी—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

करण—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसके चिह्न 'से' और 'के द्वारा' हैं। २ हथियार। औजार। ३. बोलने की या ज्ञान की इंद्रिय। ४ देह। ५. क्रिया। कार्य। उ०—कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। —सूर०। ६ स्थान। ७ हेतु। ८ ज्योतिष में तिथियों का एक विभाग। एक प्रकार की गणना। दिन का एक तरह का काल-विभाजन। ९ वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्गमूल न निकल सके। करणीगत संख्या। १० कानून में वह लेख जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का साधक हो। साधनपत्र। दस्तावेज। ११ लिखने का काम करनेवाला। कातिब। लेखक। १२. ध्वनि। शब्द। १३ किसी जाति का कोई खास पेशा या धंधा। १४ तपस्वियों का एक प्रकार का आसन। १५ कामशास्त्र का एक आसन। १६ ग्रहों की चाल पर लिखा हुआ वराहमिहिर का निबंध। १७ साधन। साधक। १८. मन। हृदय। १९ सहायक। साथी। २०. एक संकर जाति।

(पु) संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।

करणीय—वि० [सं०] [स्त्री० करणीया] करने योग्य।

करतव—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तव्य] [वि० करतवी] १. कार्य। काम। २ पुरुषार्थ। बहादुरी। उ०—जौ अतहु अस करतबु रहेउ। माँगु माँगु तुम्ह केहि बल कहेउ॥—मानस। ३. कला। हुनर। उ०—अब तौ कठिन कान्ह के करतव तुम्ह हौ हँसति कहा कहि लीवो।—श्रीकृष्ण० गीतावली। ४. करामात। जादू।

करतवी—वि० [हिं० करतव+ई (प्रत्य०)] १ करनेवाला। पुरुषार्थी। २. निपुण। गुणी। ३ करामात दिखानेवाला। बाजीगर।

करतरीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्त्तरी"

करतल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करतली] १ हाथ की गदोरी। हथेली। उ०—रूप विसेष नाम बिनु जाने। करतलगत न परहिं पहिचाने॥—मानस। २ चार मात्राओं के गण (डगण) का एक रूप।

करतली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हथेली। २ हथेली का शब्द। ताली।

करता—संज्ञा पु० दे० "कर्ता"।

संज्ञा पुं० १. वह वर्णवृत्त जिसमें एक नगण, एक लघु और अंत्य गुरु कुल पाँच वर्ण रहते हैं, जैसे—नलग मना। अधम जना। सिय भरता। जग करता॥ २ उतनी दूरी जहाँ तक बंदूक की गोली जाय।

करतार—संज्ञा पुं० [सं० "कर्तृ" के कर्ता कारक का बहु० कर्तार] ईश्वर।

संज्ञा पुं० दे० "करताल"।

करतारीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "करताल"। उ०—रामकथा सुंदर करतारी। संसय विहँग उड़ावनहारी।—मानस।

वि० [हिं० करतार] ईश्वरीय।

करताल—संज्ञा पुं० [सं०] १ हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। ताली बजना। २. लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाते हैं। ३. झाँझ। मँजीरा।

करताली—संज्ञा स्त्री० [सं० करतालिका] दे० "करताल।"

करतूत—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्तृत्व] १ कर्म। करनी। काम। २ कला। गुण। हुनर।

करतूति—संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"।

करद—वि० [सं०] १ कर देनेवाला। अधीन। २ सहारा देनेवाला।

करदम—संज्ञा पु० दे० "कर्दम"।

करदा—संज्ञा पुं० [हिं० गर्द ?] १ बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ाकरकट या खूद-खाद। २ दाम में वह कमी जो किसी वस्तु में कूड़े करकट आदि का वजन निकाल देने के कारण की जाय। कटौती।

करधनी—संज्ञा स्त्री० [?] १ सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना। २ कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना जाता है।

करधर—संज्ञा पुं० [सं० कर=वर्षोपल+धर] बादल। मेघ।

करधृत—वि० [सं०] १ हस्तगत। गृहीत। २ विवाहित। ३. हाथों का सहारा पाया हुआ।

करनⓟ—संज्ञा पु० दे० "कर्ण"।

करनधारⓟ—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

करनफूल—संज्ञा पुं० [सं० कर्णपूर] कान का एक गहना। तरौना। काँप।

करनवेध—संज्ञा पु० [सं० कर्णवेध] बच्चों के कान छेदने का संस्कार या रीति।

करना—संज्ञा पु० [सं० कर्णा] एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं। सुदर्शन। उ०—कोइ चंपा कोइ कुंद सहेली। कोइ सुकेत, करना, रसबेली।—पद्मावत।

संज्ञा पुं० [सं० करुण] बिजौरे की तरह का एक बड़ा नीबू।

ⓟसंज्ञा पुं० [सं० करण] पुण्य कार्य। काम। करनी। करतूत।

क्रि० स० [सं० करण] १ किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना। निबटाना। भुगताना। अंजाम देना। संपादित करना। २ पकाकर तैयार करना। राँधना। ३. ले जाना। पहुँचाना। ४ पति या पत्नी रूप से रखना। ५ रोजगार खोलना। व्यवसाय खोलना। ६ सवारी ठहराना। भाड़े पर सवारी लेना। ७ रोशनी बुझाना। ८ एक रूप से दूसरे रूप में लाना। बनाना। ९ कोई पद देना। १० किसी वस्तु को पोतना, जैसे रंग करना।

करनाई—संज्ञा स्त्री० [अ० करनाय] तुरही।

करनाटक—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाटक] मद्रास प्रांत का एक भाग।

करनाटकी—संज्ञा पु० [सं० कर्णाटकी] १ करनाटक प्रदेश का निवासी। २ कलाबाज। कसरत दिखानेवाला मनुष्य। ३ जादूगर। इंद्रजाली।

करनाल—संज्ञा पु० [अ० करनाय] १ एक बाजा। सिंघा। नरसिंहा। भोंपा। धूतू। २. एक प्रकार का बड़ा ढोल। ३. एक प्रकार की तोप।

करनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० करन] १ कार्य। कर्म। करतूत। २ अंत्येष्टि क्रिया। उ०—पितु हित भरत कीन्हि जस करनी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी॥—मानस। ३ दीवार पर पलस्तर या गारा लगाने का औजार। कन्नी।

करपरⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पर] खोपड़ी।

वि० [सं० कृपण] कंजूस।

करपरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पीठी की बरी।

करपलई—संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।

करपल्लवी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर+पल्लव+हिं० ई (प्रत्य०)] उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या जिसका सूत्र है—अहिफन, कमल, चक्र, टंकार। तरु, पर्वत यौवनशृंगार। अँगुरिन अच्छर, चुटकिन मंत्र। कहैं राम बूझैं हनुमंत॥ जैसे, कमल का आकार दिखाने से कवर्ग का ग्रहण होता है। उसके बाद एक उँगली दिखाने से 'क', दो से 'ख', इसी प्रकार और अक्षर समझ लिए जाते हैं।

करपिचकी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर+हिं० पिचकी] जलक्रीड़ा में पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने के लिये दोनों हथेलियों से बनाया हुआ संपुट।

करपीड़न—संज्ञा पु० [सं०] विवाह।

करपुट—संज्ञा पुं० [सं०] बँधी हुई अंजुलि। अँजुरी।

करपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] हथेली के पीछे का भाग।

करबरना—क्रि० अ० [अनु०] १ कुलबुलाना। २ कलरव करना। चहकना। चहचहाना।

करबला—संज्ञा पुं० [अ०] १ अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हजरत मोहम्मद के नाती और हजरत अली के छोटे बेटे हुसैन मारे और दफनाए गए थे। २ वह स्थान जहाँ मोहर्रम में ताजिए दफन हों। ३ वह स्थान जहाँ पानी न मिले।

करबी—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़बी"।

करवीर—संज्ञा पु० [सं० करवीर] कनेर का फूल। उ०—बीर करैं करवीर मरैं निखिलै हरपै छवि आपनी पाइकै।—शृंगार०।

करखूस—संज्ञा पुं० [अ० करब+हिं० ऊस (प्रत्य०)] हथियार लटकाने के लिये घोड़े की जीन या चारजामे में टँकी हुई रस्सी या तसमा।

करगोटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक तरह का पक्षी।

करभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग। करपृष्ठ। २. ऊँट का बच्चा। ३ हाथी का बच्चा। ४ सूँड़। ५. नख नाम की सुगंधित वस्तु। ६ कटि। कमर। ७ दोहे के सातवें भेद का नाम।

करभोरु—संज्ञा स्त्री० [सं० करभोरू] हाथी के सूँड़ के समान जंघावाली स्त्री। उ०—पृथु नितंब करभोरु कमलपद नख मणि चंद्र अनूप।—सूर०।

करम—संज्ञा पुं० [सं० कर्म] १. कर्म। काम।

यौ०—करम-भोग=वह दुःख जो अपने किए हुए कर्मों के कारण हो।

२ कर्म का फल। भाग्य। किस्मत।

मुहा०—करम का मारा=अभागा। भाग्यहीन। करम फूटना=भाग्य मंद होना।

यौ०—करमरेख=किस्मत में लिखी बात। भाग्य लेख।

संज्ञा पुं० [अ०] मिहरबानी। कृपा।

करमकल्ला—संज्ञा पुं० [अ० करम+हिं० कल्ला] एक प्रकार की गोभी जिसमें केवल कोमल कोमल पत्तों का बँधा हुआ संपुट होता है। बंद गोभी। पातगोभी।

करमचंद(पु)†—संज्ञा पुं० [स० कर्म+हिं० चंद] कर्म। भाग्य। किस्मत। उ०—बाँस पुरान साज सब अटखट सरल तिकोन खटोला रे। हमहिं दिहल करि कुटिल करमचंद मंद मोल बिनु डोला रे॥ —विनय०।

करमट्ठा(पु)—वि० [?] कंजूस।

करमठ(पु)†—वि० [सं० कर्मठ] १ कर्मनिष्ठ। २ कर्मकांडी। ३ परिश्रमी। ४. काम करने में कुशल। दक्ष। निपुण। चतुर। ५. यज्ञकर्ता और उसका व्यवस्थापक।

करमात(पु)—संज्ञा पुं० [स० कर्म] भाग्य।

करमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] उँगलियों के पोर जिनपर उँगली रखकर माला के अभाव में जप की गिनती करते हैं। माला के समान प्रयुक्त हाथ।

करमाली—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य। उ०—हिम-तम-करि-केहरि करमाली। दहन दोष-दुख-दुरित-रुजाली॥ —विनय०।

करमी—वि० [सं० कर्मी] १. कर्म करनेवाला। २ किसी काम या व्यवसाय में लगा हुआ। ३ किसी काम से संबद्ध। ४ मजदूर। श्रमजीवी। ५ कर्मठ। धार्मिक काम करनेवाला। कर्मकांडी।

करमुँहा—वि० दे० "कलमुहाँ"।

करमुखा(पु)—वि० दे० "कलमुहाँ"।

करर—संज्ञा पु० [देश०] १. एक जहरीला कीड़ा जिसके शरीर में बहुत गाँठें होती हैं। २ रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद। ३ एक प्रकार का जंगली कुसुम।

कररना, करराना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] १. चरमराकर टूटना। २ कर्कश शब्द करना।

कररुह—संज्ञा पु० [सं०] नाखून।

करल—संज्ञा पु० [स० कटाह ?] कड़ाही।

करला—संज्ञा पुं० दे० "कल्ला"।

करवट—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्वट=पहाड़ की ढाल] १ हाथ के बल लेटने की मुद्रा। वह स्थिति जो पार्श्व के बल लेटने से हो। २ ढंग। ३ पहलू।

मुहा०—करवट बदलना=(१) जमाने का फिर जाना। पलटा खाना। और का और हो जाना। पक्ष या साथ बदलना। करवट खाना या होना=उलट जाना। फिर जाना। बदल जाना। करवट न लेना=किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना। कुछ न करना। खबर न लेना। न लौटना। करवटें बदलना=बिस्तर पर बेचैन रहना। तड़पना। करवट लेना=(१) जागना। चैतन्य होना। (२) इस पहलू से उस पहलू होना (सोने में)। करवटों में रात काटना=व्याकुलता या उत्कंठा में रात बिताना।

संज्ञा पुं० [स० करपत्र] १ करवत। आरा। २ वे प्राचीन आरे या चक्र जिनके नीचे लोग शुभ फल की आशा से प्राण देते थे।

करवत—संज्ञा पु० [स० करपत्र] आरा।

करवर(पु)†—संज्ञा स्त्री० [देश०] विपत्ति। आफत। संकट। मुसीबत। उ०—आनँद-बधावनो मुदित गोप-गोपीगन, आजु परी कुसल कठिन करवर तें॥—श्रीकृष्णगीतावली।

करवरना(पु)—क्रि० अ० [सं० कलरव] कलरव करना। चहकना। चहचहाना।

करवा—संज्ञा पुं० [सं० करक] धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा। उ०—पातक पीन, कुदारिद दीन, मलीन धरे कथरी करवा है। लोक कहै बिधि हू न लिख्यो सपनेहुँ नहीं अपने बर बाहै। —कविता०। बधना।

करवाचौथ—संज्ञा स्त्री० [सं० करका+चतुर्थी] कार्तिक कृष्ण चतुर्थी जिस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत करती हैं।

करवानक—संज्ञा पुं० [?] गौरैया। चिड़ा।

करवाना—क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में प्रवृत्त करना।

करवार(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] तलवार।

करवाल—संज्ञा पु० [सं०] १. नख। नाखून। २. तलवार।

करवाली—संज्ञा स्त्री० [स० करवाल] छोटी तलवार। करौली।

करवीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कनेर का पेड़। २. तलवार। खड्ग। ३. श्मशान।

करवील—संज्ञा पुं० दे० "करील"।

करवैया(पु)†—वि० [हिं०√कर+वैया (प्रत्य०)] करनेवाला।

करश्मा—संज्ञा पुं० [फा०] १. अद्भुत काम। चमत्कार। हस्तकौशल आदि सफाई के काम। २ हाव-भाव। लीला विलास की क्रियाएँ। नाज-नखरा। ३ संकेत। इशारा। ४. मंत्र। तंत्र। जादू। टोना। तावीज।

करष—संज्ञा स्त्री० [स० कर्ष] १ खिंचाव। मनमोटाव। अकस। तनाव। द्रोह। विरोध। उ०—बातहिं बात करष बढ़ि आई। जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई॥ —मानस। २ ताव। जोश।

करषना(पु)—क्रि० स० [सं० कर्षण] १. खींचना। तानना। घसीटना। २ सोख लेना। सुखाना। ३ बुलाना। निमंत्रित करना। आकर्षण करना। उ०—उर बन-माल पदिक अति सोभित, बिप्र चरन चित कहँ करषै। —विनय०। ४ समेटना।

करषा—संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] जोश। उमंग। उत्साह। उ०—भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा। एकहि एक बढ़ावइ करषा॥ —मानस।

करसना(पु)—क्रि० स० दे० "करषना"।

करसान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।

करसायर, करसायल—संज्ञा पुं० [स० काल=काला+सागर=मृग] काला मृग। काला हिरन।

करसी—संज्ञा स्त्री० [सं० करीष] १. उपले या कंडे का टुकड़ा या चूर। २. कंडा। उपला। गोसा।

मुहा०—करसी लेना = कंडे की आग में अपने शरीर को जलाकर राख कर देना; जैसे—सोइ सुकृती सुचि साँचो जाहि राम तुम रीझे। गनिका, गीध, बधिक हरिपुर गए लै करसी प्रयाग कब सीझे॥ —विनय०।

करहंच—संज्ञा पुं० [सं० करहञ्च] दे० "करहस"।

करहंत—संज्ञा पुं० दे० "करहंस"।

करहंस—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, एक सगण और अंत्य लघु, कुल ७ वर्ण होते हैं, जैसे—निसि लखु गुपाल। ससिहिं मम बाल॥ लखत अरि कंस। नखत करि हंस।

करहⓅ—संज्ञा पुं० [सं० करभ] ऊँट।

संज्ञा पुं० [सं० कलिका ?] फूल की कली। उ०—दसरथ सुकृत-मनोहर-बिरवनि रूप-करह जनु लाग॥ —गीता०।

करहाट, करहाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल की रेशेदार जड़। भँसीड़। उ०—कोऊ कहै करहाट के तंत में कोऊ परागन में उनमानो। ढूँढहु री मकरंद के बुंद में 'दास' कहैं जलजा-गुन ज्ञानी। —शृंगार०। २ कमल का छत्ता।

कराँकुल—संज्ञा पुं० [सं० कलांकुर] पानी के किनारे की एक बड़ी चिड़िया। कूँज।

कराⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कला"। उ०—अस भा सूर पुरुष निरमरा। सूर चाहि दस आगर करा। —पदमावत।

कराइत—संज्ञा पुं० [हिं० कारा+इत (प्रत्य०)] एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है।

कराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० केराना ?] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।

संज्ञा स्त्री० [सं० काल+हिं० आई प्रत्य०] कालापन। श्यामता।

Ⓟसंज्ञा स्त्री० [हिं० √कर+आई (प्रत्य०)] करने या कराने का भाव या मजदूरी।

करात—संज्ञा पुं० [अ० कीरात] चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम आती है।

कराना—क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] करने में लगाना।

करावा—संज्ञा पुं० [अ०] शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।

करामात—संज्ञा स्त्री० [अ० 'करामत' का बहु०] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करश्मा।

करामाती—वि० [हिं० करामात+ई (प्रत्य०)] करामात या करश्मा दिखानेवाला। सिद्ध। चमत्कार दिखानेवाला।

करार—संज्ञा पुं० [अ० क़रार] १. ठहराने या निश्चित करने का भाव। ठहराव। स्थिरता। २. धैर्य। धीरज। तसल्ली। संतोष। ३. आराम। चैन। ४ वादा। प्रतिज्ञा।

संज्ञा पुं० [सं० कराल] १ पानी के काटने से बना हुआ नदी का ऊँचा किनारा। २ टीला। ऊँचा किनारा। डूह।

करारनाⓅ—क्रि० अ० [सं० कराल] काँ काँ शब्द करना। कर्कश स्वर निकालना।

करारा—संज्ञा पुं० [सं० कराल] १ नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। २ टीला। डूह। ३. ऊँचा किनारा।

संज्ञा पुं० [सं० करवट] कौआ। उ०—असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा॥—मानस।

वि० [सं० कर्कर] १ छूने में कठोर। कड़ा। २ दृढ़चित्त। ३ आँच पर इतना तला या सेका हुआ कि तोड़ने से कुर कुर शब्द करे। ४ उग्र। तेज। तीक्ष्ण। जबरदस्त। ५ चोखा। खरा। ६ अधिक गहरा। घोर। ७ हट्टा-कट्टा। बलवान्।

करारापन—संज्ञा पुं० [हिं० करारा+पन (प्रत्य०)] करारा होने का भाव। कड़ापन। काठिन्य।

कराल—वि० [सं०] १ विस्तृत मुँह और निकले हुए दाँतवाला। २ खूब खुला हुआ। ३ अदम्य। दुर्निवार। ४ भयकर। विकराल। डरावना।

कराला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक रूप।

कराली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं और नौ समिधों में से एक। २. कटारी।

वि० डरावनी। भयावनी।

कराव, करावा—संज्ञा पुं० [हिं० √कर+आव (प्रत्य०)] विवाह के बिना पति या पत्नी बना लेना। सगाई। बैठावा।

कराह—संज्ञा स्त्री० [अ० कराहत ?] कराहने का शब्द। पीड़ा का शब्द।

Ⓟ† संज्ञा पुं० दे० "कड़ाह"।

कराहना—क्रि० अ० [अ० कराहत ?] व्यथा-सूचक शब्द मुँह से निकालना। आह आह करना।

करिंद—संज्ञा पुं० [सं० करींद्र] १. उत्तम या बड़ा हाथी। २ इंद्र का ऐरावत नामक सफेद हाथी।

करिंदा—संज्ञा पुं० [अ० कारिंदा] जमींदार की ओर से जमींदारी का प्रबंध करने के लिये नियुक्त वैतनिक कर्मचारी।

करि—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] हाथी। उ०—जेहिं सुमिरत सिधि होइ। गन नायक करिबरबदन।—मानस।

Ⓟ—अव्य० [सं० करण] से। द्वारा।

करिकुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का सिर। गजमस्तक। उ०—एरी तेरे कुच्छ सरि होत-करि कुंभ तौ वै उन पर लै लै छार डारते क्यों रहते ?—शृंगार०।

करिखाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।

करिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।

करियाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण ?] १ पतवार। कलवारी। २. [सं० कर्णधार] माँझी। केवट। मल्लाह। उ०—सत्तु अहै जो करिया कबहुँ सो बोरै नाव।—पदमावत।

†वि० [सं० काल] काला। श्याम।

करियाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० करिया+ई (प्रत्य०)] कालापन।

करियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्णक ?] लगाम। बाग।

करिल—संज्ञा पुं० [सं० करीर, प्रा० करिल्ल] कोंपल।

वि० [हिं० करिया ?] काला। उ०—करिलकेस बिसहर बिस-भरे। लहरैं लेहिं कमलमुख धरे—पदमावत।

करिवदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

करिश्मा—संज्ञा पुं० [फा०] दे० "करश्मा"।

करिष्णु—वि० [सं०] १ कर्तव्य परायण। कर्तव्यशील। २. करनेवाला या करने के लिये उद्यत।

करिहाँव†—संज्ञा स्त्री० [सं० कटिभाग] कमर।

करी—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] [स्त्री० करिणी] हाथी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ी] १. छत पाटने का शहतीर। कड़ी। Ⓟ२ कली। ३ पंद्रह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा

रहती है, —जैसे—यहै कहत सब वेद पुरान। शरणागत वत्सल भगवान॥
प्रत्य० [सं०] करनेवाला (यौगिक शब्दों के अंत में) जैसे, अर्थकरी विद्या। उ०—निर्वान दायक क्रोध जाकर भगति अवसहि बसकरी॥—मानस।

करीनाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "किराना"।
संज्ञा पुं० [अ०] १. ढंग। तर्ज। तरीका। चाल। २ क्रम। तरतीब। ३ शऊर। सलीका।

करीब—क्रि० वि० [अ०] १. समीप। पास। निकट। २ लगभग।
यौ०—करीब-करीब = प्राय। लगभग।

करीम—वि० [अ०] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

करीया—संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार ?]

करीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का नया कल्ला। २ करील का पेड़। ३. घड़ा।

करील—संज्ञा पुं० [सं० करीर, प्रा० करिल्ल] ऊसर और ककरीली भूमि में होनेवाली एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं। उ०—नव रसाल वन बिहरन सीला। सोह कि कोकिल विपिन करीला॥

करीश—संज्ञा पुं० [सं०] गजराज।

करीष—संज्ञा पुं० [सं०] सूखा गोबर जो जंगलों में मिलता है और जलाया जाता है। अरना कंडा। वनकंडा। वन उपला।

करुआⓅ†—वि० दे० "कडुआ"।

करुआईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कडुआपन"। उ०—घूमउ तजै सहज करुआई। अगरु प्रसग सुगंध बसाई।—मानस

करुआना†—क्रि अ० दे० "कडुआना"।

करुखीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"। तिरछी नजर। उ०—सूरदास प्रभु तिय मिली, नैन प्राण सुख भयी चितए करुखि-यनि अनकनि दिए।—सूर०।

करुण—संज्ञा पुं० [सं०] १ काव्य के नव रसों में से एक। २ एक बुद्ध। ३ एक तीर्थ। ४ एक राक्षस। ५. परमेश्वर।
वि० १ दयनीय। करुणाजनक। २ दयार्द्र। करुणामय।

करुणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मनोविकार या दुःख जो दूसरे के दुःख के ज्ञान से उत्पन्न होता है और दूसरों के दुःख को दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम। तर्स। २ इष्ट मित्र आदि के वियोग से उत्पन्न मनोविकार।

करुणादृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दया दृष्टि।

करुणानिधान—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १ करुणा के कोश या खजाने के समान (व्यक्ति)। २ जिसका चित्त करुणा से भरा हो। दयालु।

करुणानिधि—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] १ करुणा के समुद्र के समान (व्यक्ति)। २. करुणा से भरा हुआ।

करुणामय—वि० [सं०] [संज्ञा करुणा-मयता] दयावान्।

करुणार्द्र—वि० [सं०] [संज्ञा करुणार्द्रता] जिसका मन करुणा से पसीज गया हो।

करुनाⓅ—संज्ञा स्त्री० उ०—जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू॥—मानस। दे० "करुणा"।

करुनानिधान—संज्ञा पुं०, वि०, दे० "करुणानिधान"। उ०—जनकसुता जग-जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥—मानस।

करुनानिधि—संज्ञा पुं०, वि०, दे० करुणा-निधि"। उ०—करुनानिधि मन दीख विचारी। उर अकुरेउ गर्व तरु भारी। —मानस।

करुरⓅ—वि० [सं० कटु] कड़ुआ।

करुवाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "करवा"।
संज्ञा पुं० दे० "कड़ुआ"।

करुवार—संज्ञा पुं० [सं० कर + वार (प्रत्य०)] नाव चलाने का डाँडा।

करूⓅ—वि० दे० "कडुआ"।

करूला†—संज्ञा पुं० [हिं० कड़ा + ऊला (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का कड़ा।

करूष—संज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम जो रामायण के अनुसार गंगा के किनारे था।

करेज—संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"। उ०—तनु तनु करे करेज कों अतनु कसाई ल्याइ। छनदा छिन छिन दाहती लोनो नेह लगाइ। —रससाराश।

करेजाⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"।

करेणु—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २ हथिनी। ३ एक प्रकार का पौधा जिसके फल जहरीले होते हैं।

करेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हथिनी। २ करेणु नामक पौधे का जहरीला फल।

करेब—संज्ञा स्त्री० [अ० क्रेप] एक पारदर्शी और एक ओर लहरदार (सिकुड़नवाला) झीना रेशमी, (या बनावटी सिल्क का) कपड़ा।

करेमू—संज्ञा पुं० [सं० कलेब] पानी में होनेवाली एक घास जिसका साग खाया जाता है।

करेरⓅ—वि० [सं० कर्कर ?] कठोर।

करेला—संज्ञा पुं० [सं० कारवेल्ल] १. एक छोटी बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते है। २ माला या हुमेल की लबी गुरिया जो बड़े दानों के बीच में लगाई जाती है।

करेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० करेला] जगली करेला जिसके फल छोटे होते हैं]

करैत—संज्ञा पुं० [हिं० कारा + ऐत (प्रत्य०)] काला फनदार साँप जो बहुत विषैला होता है।

करैल—संज्ञा स्त्री० [हिं० कारा (सं० काल)] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्राय तालों के किनारे मिलती है और बहुत उपजाऊ होती है।
संज्ञा पुं० [सं० करीर] १ बाँस का नरम कल्ला। २ डोम-कौआ।

करैला—संज्ञा पुं० दे० "करेला"।

करैली मिट्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "करैल"।

करोटन—संज्ञा पुं० [अं० क्रोटन] १ वनस्पति की एक जाति। २ एक प्रकार के पौधे जो अपने रंग-बिरंग और विलक्षण आकार के पत्तों के लिये लगाए जाते हैं। इनकी एक जाति से बहुत विरेचक तेल निकाला जाता है।

करोटीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।

करोड़—वि० [सं० कोटि] सौ लाख की सख्या, १,००,००,०००।

करोड़पति—वि० [हिं० करोड़ + सं० पति] वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों। बहुत बड़ा धनी।

करोड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० करोड] १ रोकड़िया। तहसीलदार। २ मुसलमानी राज्यकाल का एक अफसर जो एक नियत सख्या तक राजस्व वसूल करता था।

करोदना—क्रि० स० [सं० क्षुरण ?] खुर-चना। रगड़कर साफ करना।

करोना†—क्रि० स० [सं० क्षुरण ?] खुरचना। रगड़कर साफ करना।

करोलाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० करवा +] करवा। गड़ुवा।

करौंछाⓅ†—वि० [हिं० काला + औंछा (प्रत्य०)] [स्त्री० करौंछी] कुछ काला। श्यामता लिए हुए।

करौंजी (पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कलौंजी"।
करौंट (पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।
करौंदा—संज्ञा पुं० [सं० करमर्द] १ एक कँटीला झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे फल खटाई के रूप में खाए जाते हैं। २ एक छोटी कँटीली जंगली झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल लगते हैं।
करौंदिया—वि० [हिं० करौंदा] करौंदे के समान हलकी स्याही लिए हुए खुलता लाल।
करौत—संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] [स्त्री० करौती] लकड़ी चीरने का आरा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० √कर+औत (प्रत्य०)] रखेली स्त्री।
करौता—संज्ञा पुं० दे० "करौत"।
संज्ञा पुं० [हिं० करवा+औता (प्रत्य०)] काँच का बड़ा बरतन या शीशी। करावा।
करौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० करौता] लकड़ी चीरने का औजार। आरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० करवा+औती (प्रत्य०)] १. शीशे का छोटा बरतन। करावा। २ काँच की भट्ठी।
करौला (पु)—संज्ञा पुं० [तु० करौली=शिकार का पीछा करना] १ हँकवा करने वाला। २. शिकारी। उ०—एक समैं सजिकै सब सैन सिकार को आलमगीर सिधाए। "आवत है सरजा सँभरौ" इक और तें लोगन बोलि जनाए॥ भूषन भो भ्रम औरँग को सिव भौंसला भूप की धाक धुकाए। धायकै "सिंह" कह्यो समुझाय करौलनि आय अचेत उठाए।—भूषण०।
करौली—संज्ञा स्त्री० [सं० करवाली] १ एक प्रकार की सीधी छुरी। २ एक छोटा शस्त्र।
कर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ केकड़ा। २ बारह राशियों में से चौथी राशि। ३ काकड़ासिंगी। ४ अग्नि। ५ दर्पण। ६ शोभा। सौंदर्य।
कर्कट—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कर्कटी, ककटा] १ केकड़ा। २ कर्क राशि। ३ एक प्रकार का सारस। करकरा। करकटिया ४ लौकी। घीआ। ५ कमल की मोटी जड़। मसींड़। ६ सँड़सा। तराजू का सिरा या छोर। ८ एक प्रकार का स्वर। ९ हाथों के रखने का एक ढंग। १० दे० "करकट"।
कर्कटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कछुई। २ ककड़ी। ३ सेमर क फल। ४ साँप।
कर्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हड्डी। २ हथौड़ा। ३. दर्पण। ४. पत्थर। वह पत्थर जिससे चूना बनाया जाता है। ५ कुरज पत्थर जिसके चूर्ण की सान बनती है।
वि० १. कड़ा। करारा। २ खुरखुरा।
कर्कश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमीले का पेड़। २ ईख। ३ तलवार। कटार। ४ ईख की एक जाति।
वि० १ कठोर। कड़ा, जैसे, कर्कश स्वर। २ खुरखुरा। काँटेदार। ३ तेज। तीव्र। प्रचंड। ४. क्रूर।
कर्कशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कठोरता। कड़ापन। २ खुरखुरापन।
कर्कशा—वि० स्त्री० [सं०] झगड़ालू। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी।
कर्कोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेल का पेड़। २ खेखसा। ककोड़ा।
कर्चूर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। सुवर्ण। २ कचूर। नरकचूर।
कर्ज, कर्जा—संज्ञा पुं० [अ० कर्ज] ऋण। उधार।
मुहा०—कर्ज उतारना=कर्ज चुकाना। उधार बेबाक करना। कर्ज खाना=(१) कर्ज लेना। (२) उपकृत होना। वश में होना।
कर्जदार—वि० [फा०] उधार लेनेवाला।
कर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] कान। श्रवणेंद्रिय। २ कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी प्रसिद्ध है। ३ वृत्त की मध्य रेखा। ४ छंद-शास्त्र में दो मात्राओंवाले वर्णों का (दीर्घ स्वर) एक बार साथ आना। डगण।
मुहा०—कर्ण का पहरा=प्रभातकाल। दान-पुण्य का समय।
५ नाव की पतवार। ६ समकोण। त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा।
कर्णकटु—वि० [सं०] कान को अप्रिय। जो सुनने में कर्कश लगे।
कर्णकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] कान में पहनने का करनफूल।
कर्णकुहर—संज्ञा पुं० [सं०] कान का छेद।
कर्णगोचर—वि० [सं०] सुनाई पड़नेवाला।
कर्णधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाविक। माझी। मल्लाह। २ अवलंब। सहारा। सहायता करनेवाला व्यक्ति।
कर्णनाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कान में सुनाई पड़ती हुई गूँज। घनघनाहट। २ कान का एक रोग जिसमें कान में स्वत उत्पन्न शब्द सुनाई पड़ा करते हैं। कान में सुनाई देनेवाली गूँज।
कर्णपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कान की लौंग। २ कान की बाली। मुरकी।
कर्णपिशाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिसके सिद्ध होने पर कहा जाता है कि मनुष्य जो चाहे सो जान सकता है (तंत्र-शास्त्र)।
कर्णभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] कान में पहनने का एक गहना।
कर्णमूल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कान की जड़। २ कनपेड़ा रोग।
कर्णवेध—संज्ञा पु० [सं०] बालकों के कान छेदने का संस्कार। कनछेदन।
कर्णाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २ संपूर्ण जाति का एक राग जिसे मेघराग का दूसरा पुत्र माना जाता है। यह रात के पहले पहर में गाया जाता है और इसका स्वरपाठ 'प ध नि सा रे ग म प' है।
कर्णाटक—संज्ञा पुं० दे० "कर्णाट"।
कर्णाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी जो मालव या दीपक राग की पत्नी मानी जाती है और रात के दूसरे पहर की दूसरी घड़ी में गाई जाती है। इसका स्वरपाठ "नि सा रि ग म प ध नी है।" २ कर्णाट देश की स्त्री। ३. कर्णाट देश की भाषा। ४. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग के ही अक्षर आते हैं।
कर्णाधार—संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] दे० कर्णधार। उ०—न लाए कोई कर्णाधार। कौन पहुँचा देगा उस पार।—यामा।
कर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कान का आभूषण। ताटक। २ हाथ की बिचली उँगली। ३ हाथी की सूँड़ की नोक। ४. कमल का छत्ता। ५ सेवती। सफेद गुलाब। ६ कलम। लेखनी। ७ डंठल।
कर्णिकार—संज्ञा पुं० [सं०] कनियारी या कनकचंपा का पेड़। उसका फूल।
कर्णी—संज्ञा पु० [सं० कर्णिन्] कान के आकार के सिरेवाला एक प्रकार का बाण।
कर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १. काटना। कतरना। २ (सूत इत्यादि) कातना।
कर्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्तनिका] कैंची।

कर्त्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कैंची। कतरनी। २ (सुनारों की) काती। ३ कटारी। ४. ताल देने का एक बाजा। ५. दो क्रूर ग्रहों के बीच में चंद्रमा या किसी लग्न के आने की स्थिति।

कर्तव्य—वि० [सं०] करने योग्य। करणीय।

संज्ञा पुं०, करने के योग्य। कार्य। धर्म। फर्ज। उचित काम। उ०—सब विधि सोइ कर्तव्य तुम्हारे। दुखु न पाव पितु सोच हमारे॥—मानस।

यौ०—कर्तव्याकर्तव्य = करने और न करने योग्य कर्म। उचित और अनुचित कर्म।

कर्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कर्तव्य का भाव।

यौ०—इतिकर्तव्यता = उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा। दौड़ की हद। प्रयत्न की समाप्ति का अंत।

२ कर्तव्य या कर्मकांड कराने की दक्षिणा।

कर्तव्यमूढ़—वि० [सं०] १ जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना है। २ भौंचक्का। घबराया हुआ।

कर्ता—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कर्त्री] १ करनेवाला। काम करनेवाला। २ रचनेवाला। बनानेवाला। ३ ईश्वर। ४ व्याकरण के छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है।

कर्तार—संज्ञा पुं० [सं० 'कर्तृ' की प्रथमा का बहु० कर्तारः] १. करनेवाला। बनानेवाला। ब्रह्मा। २ ईश्वर।

कर्तृक—वि० [सं०] किया हुआ। संपादित। बनाया हुआ।

कर्तृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] कर्ता का भाव। कर्ता का धर्म।

यौ०—कर्तृत्वशक्ति = काम करने की शक्ति या सामर्थ्य।

कर्तृवाचक—वि० [सं०] कर्ता का बोध करानेवाला (व्या०)।

कर्तृवाच्य क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध प्रधान रूप से हो, जैसे—खाना, पीना, मारना। इसके विपरीत खाया जाना, पीया जाना, किया जाना आदि कर्म प्रधान क्रियाएँ हैं।

कर्दम—संज्ञा पुं० [सं०] १ कीचड़। कीच। चहला। २ मांस। ३. पाप। ४ स्वायंभुव मन्वंतर के एक प्रजापति जिनकी स्त्री का नाम देवहूति और पुत्र का कपिल (सांख्य शास्त्र के जन्मदाता) था।

कर्नैता—संज्ञा पुं० [देश०] रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद।

कर्पट—संज्ञा पुं० [सं०] गूदड़। लत्ता।

कर्पटी—संज्ञा पुं० [सं० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला। भिखारी।

कर्पर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पात्र। प्याला। खुले मुँह का छोटा और छिछला बर्तन। २. खोपड़ी। ३ खप्पर। ४. कछुए के शरीर के ऊपर का गोल और कड़ा अंग। ५ एक शस्त्र। ६. कड़ाह। ७ गूलर। ८. चोर।

कर्परी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खपरिया। २ एक प्रकार का अंजन।

कर्पास—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपास। २ रूई।

कर्पूर—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

कर्बुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धतूरा। ३ जल। ४ पाप। ५. राक्षस। ६ जड़हन धान। कचूर।

वि० रंग बिरंगा। चितकबरा। चित्रित। कबरा।

कर्म—संज्ञा पुं० [सं० कर्मन् का प्रथमा और द्वितीया (कर्ता और कर्म कारक) के एकवचन का रूप] १ वह जो किया जाय। क्रिया। कार्य। काम। करनी। (वैशेषिक के छः पदार्थों में से एक) २ यज्ञयाग आदि कर्म। (मीमांसा) ३. व्याकरण में वह शब्द जिसपर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४ वह कार्य या क्रिया जिसका करना कर्तव्य हो, जैसे—ब्राह्मणों के षट्कर्म। ५. भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। उ०—सो परत्र दुख पावै, सिर धुनि धुनि पछिताइ। कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ॥—मानस। ६ मृतक-संस्कार। क्रियाकर्म।

कर्मकर—संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार"।

कर्मकांड—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों के वे भाग जिनमें यज्ञादि के विधि-विधानों का विस्तृत विवरण है। यज्ञादि कर्म। २ धार्मिक कृत्य।

मुहा०—कर्मकांड करना = बड़े लंबे चौड़े ढंग से कोई काम करना।

कर्मकांडी—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ या धार्मिक कृत्य करानेवाला।

कर्मकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णसंकर जाति। कर्मकर। २ लोहे या सोने का काम बनानेवाला। ३ लोहार। सोनार। ४ बैल। ५ नौकर। सेवक। ६ बेगार। बिना मजदूरी के काम करनेवाला।

कर्मक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्मभूमि। २ धार्मिक या आध्यात्मिक कर्म करने का स्थान। ३. भारतवर्ष।

कर्मचारी—संज्ञा पुं० [सं० कर्मचारिन्] १ काम करनेवाला। कार्यकर्ता। काम करने में लगा हुआ। २ राज्यप्रबंध का काम करनेवाला। अमला। सरकारी नौकर।

कर्मठ—वि० [सं०] १ काम करने में चतुर। दक्ष। निपुण। परिश्रम से काम करनेवाला। २ धर्म संबंधी कृत्य में अनुरक्त। कर्मनिष्ठ। ३ यज्ञ करनेवाला। ४ यज्ञ का व्यवस्थापक।

संज्ञा पुं० अग्निहोत्र, संध्या आदि धार्मिक नित्यकर्मों को विधिपूर्वक करनेवाला व्यक्ति।

कर्मणा—क्रि० वि० [सं० कर्मन् का करण कारक एकवचन का रूप] कर्म से। कर्म द्वारा, जैसे—मनसा, वाचा, कर्मणा।

कर्मण्य—वि० [सं०] १ खूब काम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील। २ काम में कुशल। दक्ष। चतुर। ३ काम के योग्य। धार्मिक कृत्य संपादन की योग्यता रखनेवाला। ४ किसी काम से संबद्ध। ५ शक्ति।

कर्मण्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्यकुशलता।

कर्मधारय समास—संज्ञा पुं० [सं०] वह समास जिसमें पहला शब्द विशेषण हो; जैसे—कृष्णसर्प। महासागर।

कर्मना(पु)—क्रि० वि० दे० "कर्मणा"।

कर्मनाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी जो चौसा के पास गंगा में मिलती है। २ पुण्य का अथवा कर्म का नाश करनेवाली वस्तु।

कर्मनिष्ठ—वि० [सं०] संध्या, अग्निहोत्र आदि धार्मिक कर्तव्य करनेवाला। क्रियावान्। धार्मिक कृत्यों में निष्ठा, अनुराग और परिश्रम करनेवाला। २ कार्यरत।

कर्मभू—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।

कर्मभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्मफल। करनी का फल। २ पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम। ३ किए हुए कर्म के परिणाम का उपभोग।

कर्ममास—संज्ञा पुं० [सं०] १. ३० दिनों का महीना। २ सावन का महीना।

कर्मयुग—संज्ञा पुं० [सं०] कलयुग।

कर्मयोग—संज्ञा पुं० [स०] १ चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्रविहित कर्म। धार्मिक कार्य। २ कर्तव्य कर्म का साधन जो सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रखकर किया जाय। ३. परिश्रम। उद्योग। ४. खेती-बाड़ी और व्यापार।

कर्मरेख—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्म+रेखा] कर्म की रेखा। भाग्य की लिखन। तकदीर।

कर्मवाच्य क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्ता के रूप से आया हो।

कर्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है। २. कर्मयोग।

कर्मवादी—संज्ञा पु० [सं० कर्मवादिन्] १. कर्मकाड को प्रधान माननेवाला। मीमांसक। २ काम को प्रधान माननेवाला ३ भाग्य को प्रधान माननेवाला।

कर्मवान्—वि० दे० "कर्मनिष्ठ।"

कर्मविपाक—संज्ञा पुं० [स०] पूर्व जन्म के किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।

कर्मशील—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर स्वभावत काम करे। कर्मवान्। २ यत्नवान्। उद्योगी।

कर्मशूर—संज्ञा पु० [सं०] वह जो साहस और दृढ़ता के साथ कर्म करे उद्योगी।

कर्मसंन्यास—संज्ञा पुं० [स०] १ कर्म का त्याग। २ कर्म के फल का त्याग।

कर्मसाक्षी—वि० [सं० कर्मसाक्षिन्] जिसके सामने कोई काम हुआ हो।

संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं और उनके साक्षी रहते हैं, जैसे—सूर्य, चद्र, अग्नि।

कर्महीन—वि० [सं० कर्म+हीन] १. जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। २ अभागा। भाग्यहीन।

कर्मा—वि० [सं०] (प्राय यौगिक शब्दों के अत में) करनेवाला। जैसे, क्रूरकर्मा। विश्वकर्मा।

कर्मिष्ठ—वि० [स०] १. कर्म करनेवाला। काम में चतुर। २ दे० "कर्मनिष्ठ"।

कर्मी—वि० [सं० कर्मिन्] [स्त्री० कर्मिणी] १. कर्मकरनेवाला। २ फल की आकांक्षा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। ३ बहुत काम करनेवाला। कर्मठ। ४. मजदूर।

कर्मेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अग जिससे कोई क्रिया की जाती है। ये पाँच हैं—हाथ, पैर, जिह्वा या कठ, गुदा और उपस्थ।

कर्रा—संज्ञा पुं० [स० कराल] जुलाहों का सूत फैलाकर तानने का काम।

वि० (१) कड़ा। सख्त। (२) कठिन। मुश्किल। ३. व्याघ्रों की एक जाति।

कर्रानाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० कर्रा] कड़ा होना। कठोर होना।

कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोलह माशे का एक मान। २. पुराना सिक्का। ३ खिंचाव। तनाव। ४ जोताई। जोत। ५. (लकीर आदि) खींचना। ६ जोश।

कर्षक—संज्ञा पुं० वि० [स०] १ खींचनेवाला। २ हल जोतनेवाला। किसान।

कर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कर्ष्य] १. खिंचाव। तनाव। २ खरोंच। रेखाकन। ३ जोताई। ४ कृषि। खेती।

कर्षनⓟ—संज्ञा पुं० [सं० कर्षण] खींचनेवाला। तितर बितर करनेवाला। उ०—जयति मंदोदरी-केस-कर्षन विद्यमान-दसकठ-भट,मुकुट-मानी।—विनय०।

कर्षनाⓟ—क्रि० स० [सं० कर्षण] खींचना। तानना।

कलंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाग। धब्बा। २. लाछन। बदनामी। ३ ऐब। दोष। ४ कालिख। कजली। ५. चद्रमा का काला दाग।

कलंकित—वि० [सं०] [स्त्री० कलंकिता] जिसे कलक लगा हो। लाछित। दोषयुक्त। बदनाम।

कलंकी—वि० [स० कलंकिन्] [स्त्री० कलंकिनी] जिसे कलक लगा हो। दोषी। अपराधी। बदनाम।

†संज्ञा पुं० [स० कल्कि] कल्कि अवतार।

कलँगा—संज्ञा पुं० दे० "कलगा"।

कलंदर—संज्ञा पुं० [अ० कलदर] १ एक प्रकार के मुसलमान साधु जो ससार से विरक्त होते हैं। २ रीछ और बदर नचानेवाला। एक सकर जाति। ३ दे० "कलंदरा"।

कलंदरा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। गुद्दड़।

कलंब—संज्ञा पु० [सं०] १ शर। २ शाक का डंठल। ३ कदंब।

कलंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ग्रीवा के पीछे की नाड़ी। मन्या। २ एक प्रकार का शाक।

कल—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अव्यक्त मधुर ध्वनि, जैसे—कोयल की कूक। मर्मरध्वनि। सुरीली आवाज। २ मात्रा। कला (छंद-शास्त्र)

संज्ञा पुं० १. बल। वीर्य। २. साल वृक्ष।

वि० १ सुदर। मनोहर। २. मधुर। सरस। कोमल। उ०—कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।—मानस।

संज्ञा स्त्री० [स० कल्य] १. आराम। सुख। २. आरोग्य। तंदुरुस्ती।

मुहा०—कल से = (१) चैन से। † (२) धीरे धीरे। आहिस्ता आहिस्ता।

३. सतोष। तुष्टि। चैन।

मुहा०—कल पड़ना या पाना = आराम या विश्राम मिलना।

क्रि० वि० [सं० कल्य] १ आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। २. भविष्य में। ३ गया दिन। बीता हुआ दिन।

मुहा०—कल का = थोड़े दिनों का।

संज्ञा स्त्री० [सं० कला ?] १. ओर। बल। पहलू। २ अंग। अवयव। पुरजा। ३ युक्ति। ढग। ४. पेंचों और पुरजों से बनी हुई वस्तु जिससे काम लिया जाय। यत्र।

यौ०ⓟ—कलदार = (यत्र से बना हुआ) रुपया। ५ पेंच। पुर्जा।

मुहा०—कल ऐंठना = किसी के चित्त को किसी ओर फेरना।

६ बदूक का घोड़ा या चाप।

वि० [हिं० "काला" शब्द का सक्षिप्त रूप] (यौगिक में।) जैसे—कलमुहाँ।

कलई—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ राँगे का पतला लेप जो बरतन इत्यादि पर लगाते हैं। मुलम्मा। २ वह लेप जो रग चढ़ाने या चमकाने के लिये किसी वस्तु पर लगाया जाता है। ३ राँगा। ४ बाहरी चमक दमक। तड़क भड़क। उ०—साँति सत्य सुभरीति गई घटि, बढ़ी कुरीति कपट कलई है।—विनय०। ५ चने का लेप। सफेदी।

मुहा०ⓟ—कलई खुलना = असली भेद खुलना। वास्तविक रूप का प्रकट होना।

कलई न लगना=युक्ति न चलना। कलई खोलना=छिपी हुई बुराइयाँ प्रकट कर देना।

कलईगर—संज्ञा पुं० [अ० क़लई+फा० गर] वह जो बरतनों पर कलई करता हो।

कलईदार—वि० [अ० क़लई+फा० दार] जिसपर कलई या राँगे का लेप चढ़ा हो।

कलकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कलकंठी] १. मधुरध्वनि। २ कोकिल। कोयल। उ०—खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥ —मानस। ३. पारावत। परेवा। ४ हंस।

वि० मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक—संज्ञा पुं० [अ० क़लक़] १ रंज। दुःख। खेद। २ बेचैनी। घबराहट।

संज्ञा पुं० दे० "कल्क"।

कलकना(पु)—क्रि० अ० [अ० क़लक़] चिल्लाना। शोर करना। चीत्कार करना।

कलकल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिली जुली आवाज। मिश्रित और अस्फुट ध्वनि। २ झरने आदि के जल के गिरने का शब्द। ३ कोलाहल।

संज्ञा स्त्री० झगड़ा। वाद-विवाद।

कलकानि—संज्ञा स्त्री० [अ० क़लक़] दिक़्क़त। हैरानी। दुःख।

कलकूजक—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कलकूजिका] मधुर ध्वनि करनेवाला।

कलगा—संज्ञा पुं० [तु० कलगी] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी। मुर्गकेश।

कलगी—संज्ञा स्त्री० [तु०] १ चिड़ियों के सिर की चोटी। २ शतुर्मुर्ग आदि चिड़ियों के सुंदर पर जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। ३. मोती या सोने का बना सिर का एक गहना। ४ इमारत का शिखर। ५ लावनी का एक ढंग।

कलघोष—संज्ञा पुं० [सं०] कोयल। कोकिल।

वि० मधुरभाषी।

कलचुरि—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।

कलछा—संज्ञा पुं० [प्रा० कडच्छु] बड़ी डाँड़ी का चम्मच या बड़ी कलछी।

कलछी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कलछा] बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।

कलजिब्भा—वि० [सं० कालजिह्व] [स्त्री० कलजिब्भी] १ जिसकी जीभ काली हो। २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें।

कलजीहा—वि० दे० "कलजिब्भा"।

कलझँवाँ—वि० [हिं० काला+प्रा० झाम=दग्ध] काले रंग का। साँवला।

कलत्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री। पत्नी।

कलदार—वि० [हिं० कल+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें कल लगी हो। पेचदार।

संज्ञा पुं० रुपया।

कलधूत—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी।

कलधौत—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। २ चाँदी। ३ मधुर ध्वनि।

कलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलित] १ उत्पन्न करना। बनाना। संपन्न करना। २ धारण करना। ३ आचरण। व्यवहार। ४ लगाव। संबंध। ५ गणना। जोड़, बाकी या जोड़ने घटाने की क्रिया। हिसाब किताब (गणित)। ६ ग्रास। कौर। ७ ग्रहण। ८ शुक्र और शोणित के संयोग का वह विकार जो गर्भ की प्रथम रात्रि में होता है और जिससे कलल बनता है। ९ धब्बा। दाग। १०. दोष। त्रुटि। ११ इधर उधर घूमना। हिलना डोलना। १२ मरमराना। शब्द करना। गुनगुनाना।

कलना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धारण या ग्रहण करना। २ विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना। ३ गणना। विचार। ४. लेनदेन। व्यवहार।

कलप—संज्ञा पुं० [सं० कल्प] १ कलफ। २ खिजाब। ३ ब्रह्मा का एक दिन। बहुत अधिक काल। उ०—जदुपति मुख छवि कलप कोटि लगि कहि न जाइ जाके मुख चारी। —श्रीकृष्णगीतावली।

कलपना—क्रि० अ० [सं० कल्पन] १. विलाप करना। विलखना। (पु)२ कल्पना करना।

क्रि० स० [सं० कल्पन] काटना। कतरना।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना"।

कलपविरिछ—संज्ञा पुं० [सं० कल्पवृक्ष] एक प्रकार का स्वर्गीय वृक्ष जो इष्ट फल को देनेवाला होता है।

कलपाना—क्रि० स० [हिं० कलपना का स० रूप] दुःखी करना। जी दुखाना।

कलफ—संज्ञा पुं० [अ०, मि० सं० कल्प] १ पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं। माँड़ी। २ चेहरे पर का काला धब्बा। झाँई।

कलबंकी—संज्ञा स्त्री० [सं० कलविंक] गौरैया। चटका पक्षी। उ०—कलबंकी को कैसे भावै जदपि मुकुल अति जगत प्रससी। —छंदार्णव।

कलबल—संज्ञा पुं० [सं० कला+बल] उपाय। दाँवपेंच। जुगुत।

संज्ञा पुं० [सं० कल+अनु० बल] शोरगुल। हल्लागुल्ला। उ०—सखिन सहित सो नित प्रति आवै। कलबल मुनि के निकट मचावै। —विश्रामसागर।

वि० अस्पष्ट (स्वर)। अलग अलग न मालूम पड़नेवाले (शब्द)। उ०—गहि मनि-खंभ डिंभ डगि डोलत। कलबल बचन तोतरे बोलत। —गीता०।

कलबूत—संज्ञा पुं० [फा० कालबुद] १. ढाँचा। साँचा। २. लकड़ी का वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर जूता सिया जाता है। फरमा। ३ गुंबदनुमा ढाँचा जिसपर रखकर टोपी या पगड़ी आदि बनाई जाती है। गोलंबर। कालिब।

कलभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी या उसका बच्चा। २ ऊँट का बच्चा। ३. धतूरा। ३ एक जाति की सब्जी।

कलम—संज्ञा स्त्री० [अ०, सं०] १ लिखने का साधन। लेखनी। लकड़ी का नोक या जीभवाला एक लंबा टुकड़ा जिसे स्याही में डुबाकर लिखते हैं। लकड़ी या किसी मसाले (सैलूलाइड आदि) का धातु की निब लगा हुआ ऐसा ही साधन।

मुहा०—कलम चलना=लिखाई होना। कलम चलाना=लिखना। कलम तोड़ना=लिखने की हद कर देना। अनूठी उक्ति करना।

२ किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिये काटी जाय।

मुहा०—कलम करना=काटना-छाँटना। नष्ट करना।

३ जड़हन धान। ४ वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिए जाते हैं। ५ गिलहरी आदि की पूँछ के बालों की बनी कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं। ६ चित्र अंकित करने की शैली। आलेखन-शैली। ७ शीशे का कटा हुआ लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ८ शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा लंबा

टुकड़ा। रवा। ९ वह औजार जिससे महीन चीज काटी, खोदी या नकाशी जाय। १० शीशा काटने का एक औजार।

कलम कसाई—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो कुछ लिख पढ़कर लोगों की हानि करे।

कलमकारी—संज्ञा स्त्री० [अ० कलम+फ़ा० कारी] कलम से किया हुआ काम, जैसे—नक्काशी।

कलमखⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कल्मष"।

कलमतराश—संज्ञा पुं० [सं०, अ० कलम+फ़ा० तराश] कलम बनाने की छुरी। चाकू।

कलमदान—संज्ञा पुं० [सं०, अ० क़लम +फ़ा० दान] कलम, दवात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।

कलमनाⓅ—क्रि० स० [अ०, सं० कलम] काटना। दो टुकड़े करना।

कलमलना, कलमलानाⓅ—क्रि० अ० [अनु०] दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना। कुलबुलाना। उ०—चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले।—मानस।

कलमा—संज्ञा पुं० [अ० कल्म] १ वाक्य। बात। २ वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मुख्य मंत्र है।

मुहा०—कलमा पढ़ना=(१) मुसलमान होना। (२) विश्वास करना। ईमान लाना।

कलमी—वि० [फ़ा०] १ लिखा हुआ। लिखित। २ जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो, जैसे, कलमी आम। ३ जिसमें कलम या रवा हो। जैसे, कलमी शोरा।

कलमुहाँ—वि० [हिं० काला+मुँह] १ जिसका मुँह काला हो। २ कलंकित। लांछित। ३ अभागा। (गाली)

कलरव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलरवित] १ मधुर शब्द। २ कोकिल। ३ कबूतर।

कलल—संज्ञा पुं० [सं०] गर्भाशय में रज और वीर्य के संयोग की वह प्रारंभिक अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जाता है। भ्रूण।

कलवरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कलवार +इया (प्रत्य०)] शराब की दुकान।

कलवार—संज्ञा पुं० [सं० कल्यपाल] एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है।

कलविंक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चटक। गौरया। २ तरबूज। ३ सफेद चँवर। ४ धब्बा। दाग। ५ कलंक। ६ कोयल।

कलश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कलशी] १ घड़ा। गगरा। २ मंदिर, चैत्य या स्तूप आदि का शिखर। ३ मंदिरों या मकानों के शिखर पर का कँगूरा। ४ एक मान जो द्रोण या ८ सेर के बराबर होता था। ५ चोटी। सिरा।

कलशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गगरी। छोटा कलश। २ मंदिर का छोटा कँगूरा।

कलस—संज्ञा पुं० दे० "कलश"।

कलसा—संज्ञा पुं० [सं० कलश] [स्त्री० अल्पा० कलसी] १. पानी रखने का बरतन। गगरा। घड़ा। २ मंदिर का शिखर।

कलसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कलस] १ छोटा गगरा। २ छोटा शिखर या कँगूरा।

कलहंतरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "कलहांतरिता"।

कलहंस—संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस। २ राजहंस। ३ श्रेष्ठ राजा। ४ परमात्मा। ब्रह्म। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक सगण, एक जगण, दो सगण और अंत्य गुरु वर्ण रहता है, जैसे—सजि सो सिंगार कलहंस गती सी। चलि आइ राम छवि मंडप दीसी॥ जयमाल करि जबही महँ डारी। सुर लोग हर्ष खल-भूप दुखारी॥ ६ क्षत्रियों की एक शाखा।

कलह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलहकारी, कलही] १ विवाद। झगड़ा। २ लड़ाई।

कलहकारी—वि० [सं० कलहकारिन्] [स्त्री० कलहकारिणी] झगड़ा करनेवाला।

कलहप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] नारद।

वि० [स्त्री० कलहप्रिया] जिसे लड़ाई भली लगे। लड़ाका। झगड़ालू।

कलहांतरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक या पति से झगड़कर अलग हो जाती है और बाद में पश्चात्ताप करती है।

कलहाⓅ—वि० दे० "कलही"।

कलहारीⓅ—वि० स्त्री० [सं० कलहकारिका, प्रा० कलहारि] कलह करनेवाली। लड़ाकी। झगड़ालू। कर्कशा।

कलही—वि० [सं० कलहिन्] [स्त्री० कलहिनी] झगड़ालू।

संज्ञा स्त्री० कलहांतरिता नायिका। उ०—पिय आगम - सुख - सौंच बामसेज्या उत्का तिय। कलही झुकि पछिताइ मिलनु साधे अभिसारिय। —रसरास।

कलाँ—वि० [फ़ा०] बड़ा। दीर्घाकार।

कलांकुर—संज्ञा पुं० दे० "कराकुल"।

कला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अंश। भाग। सोलहवाँ हिस्सा। २ चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। ३. अग्निमंडल के दस भागों में से एक। ४ समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ५ राशि के तीसवें अंश का ६०वाँ भाग। ६. काल विभाजन में एक दिन का ६०० वाँ भाग (मनुस्मृति) या १८०० वाँ भाग (हरिवंश)। राशिचक्र के एक अंश का ६०वाँ भाग। ७. छंदःशास्त्र या पिंगल में 'मात्रा'। ८ चिकित्साशास्त्र के अनुसार शरीर के सात धातुओं में से एक। ९ किसी कार्य को भली भाँति करने का कौशल। निपुणता। फन। हुनर। शैव तंत्र में गिनाए नृत्य, गीत, वाद्य इत्यादि ६४ ललित कलाओं में से कोई। कामशास्त्र की ६४ कलाओं में से कोई। १०. मनुष्य के शरीर के धर्म और दर्शन शास्त्र में माने जानेवाले १६ विभाग—पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण और मन। ११ वृद्धि। सूद। १२ जिह्वा। १३ नौका (छंद)। १४ स्त्री का रज। १५ विभूति। ऐश्वर्य। १६ शोभा। छटा। प्रभा। १७ तेज। १८ कौतुक। खेल। लीला। †१९. छल। कपट। धोखा। २१ ढंग। युक्ति। तरकीब। करतब। २१. नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। ढेकली। कलैया। २२. यंत्र। पेंच। २३. नाव। २४ मंद और मधुर ध्वनि। २५ हस्तकौशल। दस्तकारी। २६ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और अंत्य गुरु, कुल चार वर्ण होते हैं, जैसे—भाग भरे। ग्वाल खरे॥ पूर्ण कला। नंदलला॥ २७ १६ की संख्या का वाचक शब्द। २८ रूप। उ०—बिरहा कठिन काल कै कला। बिरह न सहि, काल बरु भला॥ —पदमावत। २९ †नकलबाजी। बहानेबाजी। उ०—पुनि सिंगार करु कला नेवारी। कदम सेवती बैठु पियारी॥ —पदमावत।

कलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कलाचिका, प्रा० कलाइआ] हाथ के पहुँचे का भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा। प्रकोष्ठ।

संज्ञा स्त्री० [सं० कलाप] १ सूत का लच्छा। करछा। कुकरी। २ हाथी के गले में बाँधने का कलावा।

कलाकंद—संज्ञा पुं० [फा०] खोए और मिश्री की बनी बरफी।

कलाकार—संज्ञा पुं० [सं० कला+कार] वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो।

कलाकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं० कला+कारिता] कलाकार का काम या भाव।

कलाकौशल—संज्ञा पुं० [सं० कला+कौशल] १ किसी कला की निपुणता। हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। २ शिल्प।

कलाद—संज्ञा पुं० [सं०] सोनार। उ०—जा दिन तें तजी तुम ता दिन तें प्यारी पै कलाद कैसो पेसो लियो अधम अनगु है। —रससाराश।

कलादा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कलाप ?] हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है। कलावा। किलावा।

कलाधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ दंडक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में गुरु लघु के क्रम से कुल ३१ वर्ण होते हैं, जैसे—जाय के भरत्थ चित्रकूट राम पास वेगि हाथ जोरि दीन ह्वै सुप्रेम तें विनै करी। सीय तात मात कौसिला वसिष्ठ आदि पूज्य लोक वेद प्रीति नीति की सुरीतिही धरी। इसमें अंतिम वर्ण गुरु रहता है।

कलानाथ—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कलानिधि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुच्छा। बंडल। २ समूह। झुंड। जैसे—क्रिया-कलाप। ३ मोर की पूँछ। ४ कपूला। मुट्ठा। ५ तूण। तरकश। ६ कमरबंद। पेटी। ७ करधनी। ८ चंद्रमा। ९ कलावा। १० कातंत्र व्याकरण। ११ व्यापार। १२ आभरण। जेवर। भूषण। १३ हाथी के गले में पहनाया जानेवाला रस्सा। १४ चतुर व्यक्ति।

कलापक—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। २ पूला। मुट्ठा। ३ हाथी के गले का रस्सा। ४ चार श्लोकों या पदों का समूह। ५ आभूषण। मोतियों की माला।

कलापिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। २ मयूरी। मोरनी। ३ चंद्रमा। ४ नागरमोथा।

कलापी—संज्ञा पुं० [सं० कलापिन्] [स्त्री० कलापिनी] १। मोर। उ०—चौहैं नचैं विपुल कलापी फेरी। पी-पी बोलै पपिहो पापी वैरी।—छत्रार्णव। २ कोकिल।

वि० १ तीरों के बंडल से सज्जित। तूणीर बाँधे हुए। तरकशबंद। २ झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू—संज्ञा पुं० [तु० कलावतून] [वि० कलाबतूनी] १ सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय। २ सोने-चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है।

कलाबाज—वि० [हिं० कला+फा० बाज] १ कलाबाजी या नट-क्रिया करनेवाला। २ हाथों की सफाई के काम दिखानेवाला। चमत्कार करनेवाला।

कलाबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कला+फा० बाजी] सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली। कलैया।

कलाभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कलाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ वाक्य। वचन। २ बातचीत। कथन। ३ वादा। प्रतिज्ञा। उ०—वितवति रजनि सलाम करि करि करि कोटि कलाम। सुनत सौगुनो सुरत तें सुख पावत सुखधाम।—रससाराश। ४ उज्र। एतराज।

कलार—संज्ञा पुं० दे० "कलवार"।

कलाल—संज्ञा पुं० [सं० कल्यपाल] [स्त्री० कलाली] कलवार। मद्य बेचनेवाला।

कलावंत—संज्ञा पुं० [सं० कर्ता कारक के बहु० "कलावत" से व्युत्पन्न] १ संगीत कला में निपुण व्यक्ति। गवैया। उस्ताद। २ कलाबाजी करनेवाला। नट। ३ ६४ कलाओं में से किसी का ज्ञाता। ४ चंद्रमा।

वि० कलाओं का जाननेवाला।

कलावत—संज्ञा पुं० दे० "कलावंत"।

कलावती—वि० स्त्री० [सं०] १ जिसमें कला हो। २ शोभावाली। छविवाली। ३ संगीत की एक मूर्च्छना। ४ तुंबुरु नामक गंधर्व की वीणा। ५ अलंबुषा नामक अप्सरा की कन्या।

कलावा—संज्ञा पुं० [सं० कलापक] [स्त्री० अल्पा० कलाई] १ सूत का लच्छा जो तकले पर लिपटा रहता है। २ लाल पीले सूत के तागों का लच्छा जिसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ या घड़ों आदि पर बाँधते हैं। ३ हाथी की गरदन।

कलावान्—वि० [सं०] [स्त्री० कलावती] कला-कुशल। गुणी।

कलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ मटमैले रंग की एक चिड़िया। कुलंग। २. कुटज। कुरैया। ३ इंद्रजौ। ४ सिरिस का पेड़। ५ पाकर का पेड़। ६ तरबूज। ७ कलिंगड़ा राग। ८ समुद्र तट पर कटक से मद्रास तक फैला हुआ प्रदेश।

कलिंगड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कलिंग] एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है।

कलिंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहेड़ा। २ सूर्य। ३ एक पर्वत जिसमें यमुना नदी निकलती है।

कलिंदजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

कलिंदी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कालिंदी"।

कलि—संज्ञा पुं० [सं०] चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है। ४,३२,००० वर्षों का वर्तमान युग। २ पाप। ३ कलह। विवाद। ४ बहेड़े का फल या बीज। ५ छंद में टगण का एक भेद जिसमें पहले दो वर्ण दीर्घ और बाद में दो ह्रस्व रहते हैं। ६ सूरमा। वीर। जवाँमर्द। ७ क्लेश। दुःख। ८ संग्राम। युद्ध। ९ पासे की वह गोटी जिसपर एक ही बिंदु अंकित रहता है।

वि० [सं०] श्याम। काला।

कलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिना खिला फूल। कली। २ वीणा का मूल। ३ प्राचीन काल का एक बाजा। ४ एक छंद। ५ अंग। अंश। भाग। हिस्सा।

कलिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] कलियुग। ४,३२,००० वर्षों का वर्तमान युग।

कलित—वि० [सं०] [स्त्री० कलिता] १ विदित। ख्यात। २ प्राप्त। गृहीत। ३ सजाया हुआ। सुसज्जित। ४ सुंदर। मधुर। ५ गिना हुआ। विचारा हुआ। सोचा हुआ। माना हुआ।

कलिमल—संज्ञा पुं० [सं०] पाप। कलुष।

यौ०—कलिमल सरि = कर्मनाशा नदी।

कलिया—संज्ञा पुं० [अ० कलिय] भूना हुआ मांस। पकाया हुआ रसेदार मांस।

कलियाना—क्रि० अ० [हिं० कली] १ कली लेना। कलियों से युक्त होना। २ चिड़ियों का नया पंख निकलना।

कलियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कलिहारी] एक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

कलियुग—संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से चौथा युग। वर्तमान युग।

कलियुगाद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ की पूर्णिमा जब कलियुग का आरंभ हुआ था।

कलियुगी—वि० [सं० कलियुग+हिं० ई (प्रत्य०)] १ कलियुग का। २ कुप्रवृत्ति-वाला। तुच्छ प्रकृति का। हीनवृत्त।

कलिल—वि० [सं०] १ मिला हुआ। मिश्रित २ भरा या ढका हुआ। घना। ३. अभेद्य। दुर्गम।

सज्ञा पुं० १ ढेर। समूह। २ झाड़-झखाड़। ३ अव्यवस्था। गोलमाल।

कलिवर्ज्य—वि० [सं० कलि+वर्ज्य] जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो, जैसे, अश्वमेध, नियोग आदि।

कलिहारी—संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।

कलींदा—संज्ञा पुं० [सं० कालिंदक] तरबूज।

कली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिना खिला फूल। मुँह-बँधा फूल। बोंड़ी। कलिका।

मुहा०—दिल की कली खिलना=आनंदित होना। चित्त प्रसन्न होना।

२ चिड़ियों का नया निकला हुआ पर। ३ वह तिकोना कटा हुआ कपड़ा जो कुर्ते, अँगरखे आदि में लगाया जाता है। ४ हुक्के का नीचेवाला भाग।

संज्ञा स्त्री० [अ० कलई] पत्थर या सीप आदि का फूँका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है, जैसे—कली का चूना।

कलीट(पु)—वि० [हिं० काली ?] काला कलूटा।

कलीरा—संज्ञा पुं० [देश०] कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह में दी जाती है।

कलील—संज्ञा पुं० [अ०] थोड़ा। कम।

कलीमा—संज्ञा पुं० [यू० इक्लेजिया=जमावड़ा, गिरजा, फा० कलीस] ईसाइयों या यहूदियों की आराधना का स्थान। प्रार्थना-गृह।

कलीसिया—संज्ञा पुं० [यू० इक्लेजिया=जमावड़ा, गिरजा, फा० कलीसह्] ईसाइयों, यहूदियों की धर्ममंडली। प्रार्थना-गृह।

कलुख—संज्ञा पुं० दे० "कलुष"।

कलुखी—वि० [सं० कलुषिन्] १ पापी दुष्कर्मी। २ दोषी। ३ निंदित।

कलुवावीर—संज्ञा पुं० [हिं० काला+उवा (प्रत्य०)+वीर] टोना टामर या साबरी मंत्रों का एक देवता जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।

कलुष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलुषित, कलुषी] १. मलिनता। २ पाप। ३ क्रोध।

वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १ मलिन। मैला। २ निंदित। ३ दोषी। पापी।

कलुषाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कलुष+हिं० आई (प्रत्य०)] बुद्धि की मलिनता। चित्त का विकार।

कलुषित—वि० [सं०] [स्त्री० कलुषिता] १. दूषित २. मैला। ३ पापी। ४ काला।

कलुषी—वि० स्त्री० [सं०] १. पापिनी। दोषी। २ मलिन। गंदी।

वि० पुं० [सं० कलुषिन्] १. मलिन। मैला। गंदा। २ पापी। दोषी।

कलू—संज्ञा पुं० दे० "कलियुग"। उ०—झूठे फोकट कलू मँझारा, राम कहैं ते दास नियारा। —कबीर०।

कलूटा—वि० [हिं० काला+ऊटा (प्रत्य०)] [स्त्री० कलूटी] गाढ़े काले रंग का। खूब काला।

कलेऊ—संज्ञा पुं० दे० "कलेवा"।

कलेजा—संज्ञा पुं० [सं० कालेय=जिगर] १ यकृत। जिगर। २ हृदय। दिल।

मुहा०—कलेजा उलटना=(१) वमन करते करते जी घबराना। (२) होश का जाता रहना। कलेजा काँपना=जी दहलना। डर लगना। कलेजा चीरकर रखना=हृदय में छिपे भावों को व्यक्त करना। कलेजे का टुकड़ा=अत्यंत प्रिय व्यक्ति (विशेषत संतान के लिये)। कलेजा छिदना=कड़ी बातों से आंतरिक व्यथा होना। कलेजा जलाना=दुःख देना। कलेजा टूक टूक होना=शोक से हृदय विदीर्ण होना। कलेजा ठंढा करना=संतोष देना। तुष्ट करना। कलेजा थामकर बैठ या रह जाना=शोक के वेग को दबाकर रह जाना। मन मसोसकर रह जाना। कलेजा धक धक करना या होना=(१) भय से व्याकुल होना। (२) घबराना। कलेजा धड़कना=(१) डर से जी काँपना। भय से व्याकुल होना। (२) चित्त में चिंता होना। जी में खटका होना। कलेजा निकालकर रखना=(१) अत्यंत प्रिय वस्तु समर्पण करना। सर्वस्व दे देना। (२) जी तोड़ परिश्रम करना। (३) मर्म या भेद खोलना। कलेजा पक जाना=दुःख सहते सहते तंग आ जाना। पत्थर का कलेजा=(१) कड़ा जी। दुःख सहने में समर्थ हृदय। (२) कठोर चित्त। कलेजा पत्थर का करना=(१) भारी दुःख झेलने के लिये चित्त को कड़ा करना। (२) निष्ठुर होना। कलेजा पसीजना=करुणा या दया से भर जाना। कलेजा फटना=किसी के दुःख को देखकर मन में अत्यंत कष्ट होना। कलेजा बाँसों, बल्लियों या हाथों उछलना=(१) आनंद से चित्त प्रफुल्ल होना। (२) भय या आशंका से जी धक धक करना। कलेजा बैठ जाना=क्षीणता के कारण शरीर और मन की शक्ति का मंद पड़ना। कलेजा मुँह को या मुँह तक आना=(१) जी घबराना। जी उकताना। व्याकुल होना। (२) संताप होना। दुःख से व्याकुल होना। कलेजा हिलना=कलेजा काँपना। अत्यंत भय होना। कलेजे पर साँप लोटना=चित्त में किसी बात के स्मरण आ जाने से एकबारगी शोक छा जाना।

३. छाती। वक्षःस्थल।

मुहा०—कलेजे से लगाना=छाती या गले से लगाना। आलिंगन करना।

४ जीवट। साहस। हिम्मत।

कलेजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कलेजा] बकरे आदि के कलेजे का मांस।

कलेवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। देह। चोला।

मुहा०—कलेवर बदलना=(१) एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करना। (२) एक रूप से दूसरे रूप में जाना। (३) जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति का स्थापित होना।

२ ढाँचा।

कलेवा—संज्ञा पुं० [सं० कल्यवर्त] १ वह हलका भोजन जो सवेरे बासी मुँह किया जाता है। नहारी। जलपान। उ०—अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जगु काल कलेवा। —मानस।

मुहा०—कलेवा करना=(१) निगल जाना। खा जाना। (२) मार डालना।

२ वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं। पाथेय। सबल। ३ विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है। बासी।

कलेस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "क्लेश"।

कलैया—संज्ञा स्त्री० [सं० कला+हिं० ऐया

(प्रत्य०)] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया। कलाबाजी।

कलोर—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्या] वह जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

कलोल—संज्ञा पुं० [सं० कल्लोल] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। केलि। उ०—काम के कलोलन की चरचा सुनत फिरैं। चद्रावलि ललिता को लीन्हे कखियान में।—शृंगार०।

कलोलना(पु)—क्रि० अ० [हिं० कलोल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

कलोलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोलिनी] नदी। सरिता।

वि० कलोल करनेवाली। क्रीड़ा करने वाली।

कलौंजी—संज्ञा स्त्री० [?] १. एक पौधा। २ इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम आते हैं। मँगरैला। ३ एक प्रकार की तरकारी। भरगल।

कलौंस—वि० [हिं० काला+औंस (प्रत्य०) कालापन लिए। सियाहीमायल।

संज्ञा १ कालापन। २ कलंक।

कल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ चूर्ण। बुकनी। २. पीठी। ३ गूदा। ४ दंभ। पाखंड। ५ शठता। ६. मैल। कीट। ७ विष्ठा। ८ पाप। ९ गीली या भिगोई हुई औषधियों को बारीक पीसकर बनाई हुई चटनी। अवलेह। १०. बहेड़ा।

कल्कि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार, विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो संभल (मुरादाबाद) में कलियुग के अंत में होगा। इस अवतार में विष्णु हाथ में नंगी तलवार लिए श्वेत घोड़े पर सवार होकर दुष्टों का संहार करते हुए प्रकट होंगे।

कल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधान। विधि। कृत्य। जैसे, प्रथम कल्प। ढंग। तरीका। २ वेद के प्रधान छ अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि के करने का विधान है। ३ औषध-निर्माण की विद्या। ४. वैद्यक के अनुसार रोगनिवृत्ति का उपाय या युक्ति। जैसे, केश-कल्प, काया-कल्प। ५ प्रकरण। विभाग। ६ काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिस में १४ मन्वंतर या ४,३२,००,००,००० वर्ष होते हैं। ७ नृत्य का एक भेद।

वि० १ तुल्य। समान। जैसे, देवकल्प। २. संभव। ३ उचित। योग्य। उपयुक्त।

कल्पक—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० कल्पकता] १. नाई। बाल बनाने वाला। २ कचूर।

वि० १. रचनेवाला। २ काटनेवाला। ३ कल्पना करनेवाला।

कल्पकार—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पशास्त्र का रचनेवाला व्यक्ति।

कल्पतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष। सुरतरु।

कल्पद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

कल्पन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रचना। बनावट। २. कल्पना। विचार। ३ विधान। क्रम से रखना।

कल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह शक्ति जो अंतःकरण में ऐसी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इंद्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं होतीं। भावना। मानसिक चित्र। रूपविधान। मन में आकार या मूर्ति बनाना। उद्भावना। अनुमान। २ रचना। बनावट। सजावट। निर्माण। ३ किसी एक वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप। अध्यारोप। ४ मान लेना। फर्ज करना। ५ मनगढ़ंत बात।

कल्पलता—संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।

कल्पवल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।

कल्पवास—संज्ञा पुं० [सं०] माघ में महीने भर गंगा तट पर संयम और नियम के साथ रहना।

कल्पवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार देवलोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है। यह समुद्र मंथन के समय समुद्र से निकला हुआ और चौदह रत्नों में से एक माना जाता है। २ एक वृक्ष जो सब पेड़ों से बड़ा और दीर्घजीवी होता है। गोरख इमली।

कल्पसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के विविध यज्ञों के विधि-विधानों की सूत्रों में प्रस्तुत नियमावलियाँ।

कल्पांत—संज्ञा पुं० [सं०] कल्प का अन्त। प्रलय।

कल्पित—वि० [सं०] १ जिसकी कल्पना की गई हो। २ मनमाना। मनगढ़ंत। फर्जी। ३ बनावटी। नकली।

कल्मष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। २. मैल। मल। ३ पीव। मवाद।

कल्माष—वि० [सं०] १ चितकबरा। चित्रवर्ण। २ काला।

कल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबेरा। भोर। प्रातःकाल। २ मधु। शराब। ३. कल (आनेवाला)। ४ कल बीता हुआ।

वि० १ स्वस्थ। नीरोग। बलवान्। २ दक्ष। चतुर। निपुण। ३ अनुकूल। ४ शुभ। ५ शिक्षाप्रद। ६ गूँगा-बहरा।

कल्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] कलवार।

कल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बरदाने के योग्य बछिया। कलोर।

कल्याण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल। शुभ। भलाई। २ सोना। ३ एक रोग। ४ स्वर्ग। ५ सौभाग्य। ६ सुख। समृद्धि। ७ गुण। पुण्य। ८ शील। सदाचार।

वि० [स्त्री० कल्याणी] १ अच्छा। भला। २ सुंदर। मनोहर। ३ तेजस्वी। ४. गुणवान्। धर्मात्मा। ५ शुभ। ६. उदार। ७ श्रेष्ठ। ८ लाभप्रद। हितकर। ९. सुखी। समृद्ध। भाग्यशाली। १०. उचित। ठीक।

कल्याणी—वि० [सं०] १ कल्याण करनेवाली। २ सुंदरी।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माषपर्णी। २ गाय।

कल्यान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कल्याण"।

कल्लर—संज्ञा पुं० [देश०] १ नोनी मिट्टी। २ रेह। ३ ऊसर। बंजर।

कल्लाँच—वि० [तु० कल्लाश] १ लुच्चा। शोहदा। गुंडा। २ दरिद्र। कंगाल।

कल्ला—संज्ञा पुं० [सं० कलब=पौधे का डंठल ?] १ अंकुर। कलफा। किल्ला। गोंफा। २ हरी निकली हुई टहनी।

संज्ञा पुं० [फा० कल्ल] १ गाल के भीतर का अंश। जबड़ा। २ जबड़े के नीचे गले तक का स्थान। गला। ३. स्वर। आवाज। ४ पशुओं का सिर। ५ लैंप का सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बर्नर।

कल्लातोड़—वि० [हिं० कल्ला+तोड़] १ मुँहतोड़। प्रबल। २ जोड़-तोड़ का।

कल्लादराज—वि० [फा०] [संज्ञा कल्लादराजी] १ बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। मुँहजोर। २ बहुत चिल्लाने या शोर मचानेवाला।

कल्लाना—क्रि० अ० [सं०√कल्=पीड़ा पहुँचाना] चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना।

कल्लोल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी की लहर। तरंग। २ आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। ३. विरोधी। शत्रु।

कल्लोलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

कल्हँ†—क्रि० वि० दे० "कल"।

कल्हर—संज्ञा पुं० दे० "कल्लर"।

कल्हरना(पु)—क्रि० अ० [?] कड़ाही में तला जाना। भुनना। तला जाना।

कल्हारना†—क्रि० स० [हिं० कल्हरना का स० रूप] कड़ाही में भूनना या तलना।

(पु)क्रि० अ० [सं० √कल्ल् = अस्पष्ट शब्द करना] दुःख से कराहना। चिल्लाना।

कवच—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कवची] १. लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे। बिरह-बख्तर। तनुत्र। सनाह। २. आवरण। छाल। छिलका। ३. तंत्रशास्त्र का एक अंग जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा के लिये प्रार्थना की जाती है। ४. इस प्रकार रक्षामंत्र लिखा हुआ तावीज। ५. बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है। पटह। डंका।

कवन†—सर्व० दे० "कौन"। उ०—रामु कवन प्रभु पूछौं तोही। कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही॥ —मानस।

कवर—संज्ञा पुं० [सं० कवल] ग्रास। कौर। नेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कवरी] १. केशपाश। २. गुच्छा।

संज्ञा पुं० [अँ०] १. ढकना। २. पुस्तक का आवरणपृष्ठ।

कवरना—क्रि० स० दे० "कौरना"।

कवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोटी। जूड़ा।

कवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कवर्गीय] क से ङ तक के ५ अक्षर।

कवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में मुँह में रखी जा सके। कौर। ग्रास। लुकमा। गस्सा। २. उतना पानी जितना मुँह साफ करने के लिये एक बार मुँह में लिया जा सके। कुल्ली। ३. एक प्रकार की मछली। ४. एक प्रकार की तौल।

संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कवली] १. एक पक्षी। २. घोड़े की एक जाति।

कवला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कमला] १. लक्ष्मी। २. धन।

कवलाकंत(पु)—संज्ञा पुं० [कमलाकांत] विष्णु। नारायण। उ०—दान एक माँगौं कवलाकंत, कबीर के दुख हरन अनंत। —कबीर०।

कवलित—वि० [सं०] कौर किया हुआ। खाया हुआ। भक्षित। निगला हुआ।

कवाम—संज्ञा पुं० [अ०] १. पकाकर शहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस। किवाम। २. चाशनी। शीरा।

कवायद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नियम। व्यवस्था। २. व्याकरण। ३. सेना के युद्ध करने के नियम। ४. लड़नेवाले सिपाहियों के युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।

कवि—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य करनेवाला। कविता रचनेवाला। २. गानेवाला। कलाविद्। ३. तत्त्वचिंतक। प्रज्ञावान्। विद्वान्। ४. ऋषि। ५. ब्रह्मा। ६. शुक्राचार्य। ७. अग्नि। ८. सूर्य। ९. वरुण। १०. इंद्र। ११. (सांख्य दर्शन में) आत्मा। १२. छिपकर युद्ध करनेवाला। १३. लगाम।

कविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगाम। २. केवड़ा। ३. एक प्रकार की मछली।

कविता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकारों पर प्रभाव डालनेवाला रमणीय पद्यमय वर्णन। काव्य।

कविताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"।

कवित्त—संज्ञा पुं० [सं० कवित्व] १. कविता। काव्य। २. दंडक के अंतर्गत ३१ से ३३ अक्षरों के प्रत्येक चरणवाला छंद जिसके मनहर, जनहरण, कलाधर, रूपघनाक्षरी, जलहरण, डमरू, कृपाण, विजया और देव घनाक्षरी ये ९ भेद हैं।

कवित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्यरचना की कुशलता, प्रतिभा या शक्ति। २. काव्य का गुण। ३. बुद्धि। समझ। प्रज्ञा।

कविनासा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनासा"। उ०—कासी मग सुरसरि कविनासा। मरु मारव महिदेव गवासा। —मानस।

कविराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३. वैद्यों की एक उपाधि।

कविराय—संज्ञा पुं० दे० "कविराज १ और २."

कविला—संज्ञा पुं० दे० "करबला"। उ०—मन करि मका कविला करि देही, बोलनहार जगत गुर येही। —कबीर०।

कविलास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कैलाश] १. कैलास। २. स्वर्ग।

कवेला—संज्ञा पुं० [हिं० कौआ+एला (प्रत्य०)] कौए का बच्चा।

कव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंड, पितृ-यज्ञादि किए जायँ।

कव्व(पु)—संज्ञा पुं० दे० "काव्य"। उ०—तै मीन्हें भल्लो निम्मिर गए, जइसओ तइसओ कव्व।

कश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कशा] चाबुक। कोड़ा।

संज्ञा पुं० [फा०] १. खिंचाव।

यौ०—कशमकश।

२. हुक्के या चिलम का दम। फूँक।

कशकोल—संज्ञा पुं० दे० "कजकोल"।

कशमकश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खींचा-तानी। २. भीड़भाड़। धक्कमधक्का। ३. आगापीछा। सोचविचार। दुविधा। असमंजस।

कशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रस्सी। २. कोड़ा। चाबुक। ३. रास। लगाम।

कशिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] आकर्षण। खिंचाव।

कशीदा—संज्ञा पुं० [फा०] कपड़े पर सुई और तागे से निकाले हुए बेलबूटे।

कश्चित्—वि० [सं०] कोई। कोई एक।

सर्व० [सं०] कोई (व्यक्ति)।

कश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नौका। नाव। २. पान, मिठाई या खाना बाँटने के लिये धातु या काठ का बना हुआ एक छिछला बर्तन। ३. शतरंज का एक मोहरा।

कश्मल—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपवित्रता। गंदगी। कीचड़। पाप। २. मोह। ३. दोष। दुर्गुण। ४. मूर्च्छा। ५. बुद्धि विक्षेप। निराशा। निरुत्साह।

वि० [स्त्री० कश्मला] १. पापी। २. मलिन। गंदा। अशुद्ध। ३. डरपोक। भीरु।

कश्मीर—संज्ञा पुं० [सं०] पंजाब के उत्तर में हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिये संसार में प्रसिद्ध है।

कश्मीरी—वि० [हिं० कश्मीर+ई (प्रत्य०)] कश्मीर का। कश्मीर देश में उत्पन्न।

संज्ञा स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।

संज्ञा पुं० [स्त्री० कश्मीरिन] १. कश्मीर देश का निवासी। २. कश्मीर देश का घोड़ा।

कश्यप—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि। २. एक प्रजापति। दक्ष की अदिति प्रभृति १३ कन्याओं के पति जिनसे देवता और दानव आदि उत्पन्न हुए। ३. कछुआ। ४. सप्तर्षियों में से एक जो परशुराम के

पुरोहित थे। ५ सप्तर्षि मंडल का एक तारा। ६ एक जाति का हिरन। ७ एक प्रकार की मछली।

कष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सान। २ कसौटी (पत्थर)। ३ रगड़ या खुरचकर साफ करने की क्रिया। ४ परीक्षा। जाँच। ५ कोड़ा।

कषा—संज्ञा पुं० दे० "कशा"।

कषाय—वि० [सं०] १. कसैला। बाकठ। कड़ुआ (छः रसों में से एक)। २ सुगंधित। खुशबूदार। ३ रँगा हुआ। ४ गेरू के रंग का। गैरिक। ५ पीत-रक्त। पीलापन लिए लाल।

संज्ञा पुं० [सं०] १. कसैली वस्तु। कसैला स्वाद। कसाव। २ गोंद। ३ अर्क। गाढ़ा रस। ४ पीने की दवा। ५ उबटन। लेप। ६ धूल। गर्द। गंदगी। ७ अपवित्रता। पाप। ८ दोष। माध। अपकर्ष। ९ क्रोध, लोभ आदि मनोविकार (जैन)। १० कलियुग। ११ एक कँटीली झाड़ी। एक प्रकार का वृक्ष। १२ विषयानुराग।

कष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्लेश। पीड़ा। तकलीफ। २ संकट। आपत्ति। मुसीबत। दुर्दशा। ३ मेहनत। शारीरिक परिश्रम ४ अशांति। कठिनाई। बेचैनी।

कष्टकल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं० कष्ट+कल्पना] बहुत खींच-खाँच की अस्वाभाविक कल्पना या निर्माण-विधि।

कष्टसाध्य—वि० [सं०] जिसका करना कठिन हो। मुश्किल से होनेवाला। कष्टकर। परिश्रमपूर्ण। श्रमसाध्य।

कष्टी—वि० [सं० कष्ट+हिं० ई (प्रत्य०)] पीड़ित। दुःखी। उ०—दरशनारत दास, त्रसित-माया-पाश, त्राहि त्राहि, दास कष्टी। —विनय०।

कस—संज्ञा पुं० [सं० कष] १ परीक्षा। कसौटी। जाँच। उ०—द्वंद्व रहित गतमान, ज्ञान-रत, विषय-विरत खटाइ नाना कस। —विनय०। २ तलवार की लचक जिसमें उसकी उत्तमता की परख होती है। ३ आसव। शराब। ४ कोटा।

संज्ञा पुं० [कर्ष] १ जोर। बल। २ वश। काबू।

मुहा०—कस का=जिसपर अपना इख्तियार हो। कस में करना या रखना =वश में रखना। अधीन रखना।

३ रोक। अवरोध।

संज्ञा पुं० [सं० कषाय, हिं० कसाव] १. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप। २ निकाला हुआ अर्क। ३ सार। तत्व।

(पु) † क्रि० वि० [सं० कीदृश] १ कैसे। २ क्यों। उ०—सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ॥ —मानस।

कसक—संज्ञा स्त्री० [सं० √कष्] १ हलका या मीठा दर्द। साल। टीस। २ बहुत दिन का मन में रखा हुआ द्वेष। पुराना वैर।

मुहा०—कसक निकालना=पुराने वैर का बदला लेना।

३ हौसला। अरमान। अभिलाषा। ४. हमदर्दी। सहानुभूति।

कसकना—क्रि० अ० [हिं० कसक] दर्द करना। सालना। टीसना।

कसकुट—संज्ञा पुं० [सं० कस+कुट्ट] एक मिश्रित धातु जो ताँबे, पीतल, और जस्ते आदि को मिलाकर बनाई जाती है। भरत। काँसा। बेधा।

कसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १ कसने की क्रिया या ढंग। २ कसने की रस्सी।

संज्ञा स्त्री० [सं० कष] दुःख। क्लेश।

कसना—क्रि० स० [सं० कर्षण] १ बंधन को दृढ़ करने के लिये उसकी डोरी आदि को खींचना। २ बंधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना।

मुहा०—कसकर=(१) जोर से। बलपूर्वक। (२) पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा=पूरा पूरा। बहुत अधिक, जैसे—कसा दाम।

३ जकड़कर बाँधना। जकड़ना। ४ पुर्जों को दृढ़ करके बैठाना। ५ साज रखकर सवारी के लिये तैयार करना।

मुहा०—कसा कसाया=चलने के लिये बिलकुल तैयार।

६ ठूस-ठूसकर भरना।

क्रि० अ० १ बंधन का खिंचना जिसमें वह अधिक जकड़ जाय। जकड़ जाना। २ लपेटने या पहनने की वस्तु का तंग होना। ३ बँधना। ४. साज रखकर सवारी का तैयार होना। ५. खूब भर जाना।

क्रि० स० [सं० कषण] १ परखने के लिये सोने आदि धातुओं को कसौटी पर घिसना। कसौटी पर चढ़ाना। २ परखना। जाँचना। आजमाना। ३ तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ४ दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना। ५ क्लेश देना। कष्ट पहुँचाना।

कसनि(पु) †—संज्ञा स्त्री० दे० "कसन"।

कसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १ रस्सी जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. वेठन। गिलाफ। ३. कचुकी। अँगिया। उ०—हुलसे कुच कसनी-बँद टूटे। हुलसी भुजा, वलय कर फूटे॥—पदमावत। ४ कसौटी। ५ परीक्षा। परख। जाँच।

कसब—संज्ञा पुं० [अ०] १ उपार्जन। कमाई। २ हुनर। कला। कौशल। ३ वेश्यावृत्ति। ४ पेशा। रोजगार। व्यवसाय। उ०—चाकरी न आकरी न खेती न बनिज भीख। जानत न कूर कछु कसब कबारु है।—कविता०।

कसबल—संज्ञा पुं० [हिं० कस+बल] १ शक्ति। बल। २ साहस। हिम्मत।

कसबा—संज्ञा पुं० [अ० कस्ब] [वि० कसबाती] साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

कसबिन, कसबी—संज्ञा स्त्री० [अ० कसब +हिं० इन (प्रत्य०)] १ वेश्या। रंडी। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

कसम—संज्ञा स्त्री० [अ०] शपथ। सौगंध। उ०—भुजा उठाइ, साखि संकर करि कसम खाइ तुलसी भनी।—गीता०।

मुहा०—कसम उतारना (१) शपथ का प्रभाव दूर करना। (२) किसी काम को नाम मात्र के लिये करना। कसम खाना=(१) शपथ लेना। (२) प्रतिज्ञा करना। (३) दूर रहना। बाज आना। परहेज करना। कसम खाने को=नाम मात्र को। कसम देना, दिलाना या रखाना= किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसम लेना=कसम खिलाना। प्रतिज्ञा कराना।

कसमल—संज्ञा पुं० [सं० कश्मल] दे० "कश्मल"।

कसमस—संज्ञा स्त्री० [वै० कश्मश ?] दे० "कसमसाहट"।

कसमसाना—क्रि० अ० [हिं० कसमस] १ बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का एक दूसरे से रगड़ खाते हुए हिलना डोलना। खलबलाना। कुलबुलाना। २ ऊबकर हिलना डोलना। ३ घबराना। बेचैन होना। ४ आगा पीछा करना। हिचकना।

कसमसाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कसमस+आहट (प्रत्य०)] १ कुलबुलाहट। २ बेचैनी। घबराहट।

कसर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। २ द्वेष। वैर। मनमोटाव।
मुहा०—कसर निकालना=(१) बदला लेना। (२) कमी पूरी करना।
३ टोटा। घाटा। हानि। ४ नुक्स। दोष। विकार। त्रुटि। ५ किसी वस्तु के सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकलने से हो जानेवाली कमी।

कसरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] शरीर को पुष्ट और बलवान् बनानेवाले दंड, बैठक आदि परिश्रम के काम। व्यायाम। मेहनत।
संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकता। ज्यादती।

कसरती—वि० [अ० कसरत+हिं० ई (प्रत्य०)] १ कसरत करनेवाला। २ कसरत से पुष्ट और बलवान् बनाया हुआ।

कसवाना—क्रि० स० [हिं० कसना का प्रे० रूप] कसने का काम दूसरे से कराना।

कसहँड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कंस+हिं० हंडा] [स्त्री० कसहँडी] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

कसाई—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० कसाइन] १ वधिक। घातक। पशुओं को मारनेवाला। २ बूचड़। कस्साब।
वि० निर्दय। बेरहम। निठुर।

कसाना—क्रि० अ० [सं० कषाय, हिं० कसाव] स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे के योग से खट्टी चीज का बिगड़ जाना।
क्रि० स० दे० "कसवाना"।

कसार—संज्ञा पुं० [सं० कृसर] चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।

कसारी—संज्ञा स्त्री० दे० खिसारी।

कसाला—संज्ञा पुं० [सं० √कष्+हिं० आला (प्रत्य०)] १ कष्ट। तकलीफ। २ कठिन परिश्रम। मेहनत।

कसाव—संज्ञा पुं० [सं० कषाय] कसैलापन।
संज्ञा पुं० [हिं० √कस+आव (प्रत्य०)] खिंचाव। तनाव।

कसावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कस+आवट (प्रत्य०)] कसने का भाव। तनाव। खिंचावट।

कसीदनाⓅ—क्रि० स० दे० "कसना"।

कसीदा—संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"।
संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू या फारसी की एक प्रकार की कविता जिसमें १५ से अधिक चरणों में किसी की स्तुति या निंदा की जाती है।

कसीस—संज्ञा पुं० [सं० कासीस] लोहे का एक विकार जो खानों में मिलता है।
संज्ञा स्त्री० [फा० कशिश] खिंचाव। कर्षण। उ०—पै विन पनिच बिन करकी कसीस बिन, चलत इसारे यह जिनको प्रमान है।—शृंगार०।

कसीसनाⓅ—क्रि० स० [हिं० कसीस] आकर्षित करना। खींचना।

कसुⓅ—क्रि० वि० [सं० √कृष्] खींचतान।

कसुँभा—संज्ञा पुं० दे० "कुसुंभा"।

कसुँभी—वि० [हिं० कसुँभा] कुसुम के रंग का। लाल।

कसूर—संज्ञा पुं० [अ०] अपराध। दोष। त्रुटि। गलती।

कसूरमंद, कसूरवार—वि० [फा०] दोषी। अपराधी।

कसेरा—संज्ञा पुं० [सं० कसकार] [स्त्री० कसेरिन] १ काँसे फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला। २ हिंदुओं की एक जाति।

कसेरू—संज्ञा पुं० [सं० कसेरु] १ रीढ़। २ एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो मीठी होती है।

कसैयाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० √कस+ऐया (प्रत्य०)] १ कसनेवाला। २ जकड़कर बाँधनेवाला। ३ परखनेवाला। जाँचनेवाला।

कसैला—वि० [हिं० कसाव+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० कसैली] कषाय स्वादवाला। जिसमें कसाव हो, जैसे, आँवला, हड़ आदि।

कसैली†—संज्ञा पुं० [हिं० कसैला] सुपारी।

कसोरा—संज्ञा पुं० [सं० कंस+हिं० ओरा (प्रत्य०)] १ मिट्टी का प्याला। २ कटोरा।

कसौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० कषपट्टिका] १ एक प्रकार का काला पत्थर जिसपर रगड़कर सोने की परख की जाती है। उ०—प्यारे के तारे कसौटिन में अपनी छवि कंचन सी कसि जाती।—शृंगार०। २ परीक्षा। जाँच। परख।
मुहा०—कसौटी पर कसना=जाँचना। परखना। आजमाना।

कस्टम—संज्ञा पुं० [अँ०] १ प्रथा। रिवाज। रूढ़ि। २ आयात और निर्यात पर लगनेवाला कर। राजस्व।

कस्तूर—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।

कस्तूरा—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] १. कस्तूरी मृग। २ वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।
संज्ञा पुं० [देश०] १ वह सीप जिससे मोती निकलता है। २. एक ओषधि जो पोर्टब्लेयर की चट्टानों से खुरचकर निकाली जाती और बहुत बलकारक होती है।

कस्तूरिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

कस्तूरिया—संज्ञा पुं० दे० "कस्तूरीमृग"।
वि० १. कस्तूरीवाला। कस्तूरी-मिश्रित। २. कस्तूरी के रंग का। मुश्की।

कस्तूरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक विशेष मृग की नाभि से निकलता है। मुश्क।

कस्तूरीमृग—संज्ञा पुं० [सं०] कश्मीर, नेपाल, भूटान और पश्चिमी आसाम आदि हिमालय के ठंढे पहाड़ी स्थानों में पाया जानेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कहँⓅ—प्रत्य० [सं० कक्ष] कर्म और संप्रदान का चिह्न। 'को' के लिये (अवधी)।
Ⓟक्रि० वि० दे० "कहाँ"। उ०—कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा॥—मानस।

कहँरना—क्रि० अ० दे० "कहरना"।

कहकहा†—संज्ञा पुं० [अ० क़हक़ह] जोर की हँसी। ठहाका। अट्टहास।

कहगिल—संज्ञा स्त्री० [फा० काह=घास+गिल=मिट्टी] दीवार में लगाने का गारा।

कहत—संज्ञा पुं० [अ०] दुर्भिक्ष। अकाल।
यौ०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय।

कहता—वि० [हिं० √कह] कहनेवाला।

कहन—संज्ञा स्त्री० [सं० कथन] १ कथन। उक्ति। २ वचन। बात। ३ कहावत। ४ कविता।

कहना—क्रि० स० [सं० कथन] १ बोलना। उच्चारण करना। वर्णन करना।
मुहा०—कह-बदकर=(१) प्रतिज्ञा करके। दृढ़ संकल्प करके। (२) ललकारकर। दावे के साथ। कहने को=(१) नाममात्र को। (२) भविष्य में स्मरण के लिये। कहने की बात=वह बात जो वास्तव में न हो।

२. प्रकट करना। खोलना। जाहिर करना। ३. सूचना देना। खबर देना। ४. नाम रखना। पुकारना। ५. समझाना-बुझाना।

मुहा०—कहना-सुनना=समझाना। मनाना। ६. कविता करना।

संज्ञा पु० १ कथन। २. आज्ञा। अनुरोध।

कहनाउतⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत"।

कहनावत—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहन+आवत (प्रत्य०)] १. वात। कथन। २. कहावत।

कहनि†—संज्ञा स्त्री० दे० "कहन"।

कहनूत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहन+ऊत (प्रत्य०)] कहावत। मसल।

कहर—संज्ञा पुं० [अ० कह्र] विपत्ति। आफत।

वि० [अ० कुह ?] अपार। घोर। भयंकर।

कहरना†—क्रि० अ० दे० "कराहना"।

कहरवा—संज्ञा पुं० [हिं० कहार ?] १. पाँच मात्राओं का एक ताल। २ दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। ३. वह नाच जो कहरवा ताल पर होता है।

कहरी—वि० [अ० कह्र] आफत ढानेवाला।

कहरुवा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके के पास रखें तो उसे चुबक की तरह पकड़ लेता है।

कहलⓅ†—संज्ञा पुं० [देश०] १. ऊमस। थौंस। २ ताप। ३. कष्ट।

कहलनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० कहल] १. कसमसाना। अकुलाना। २ गरमी या ऊमस से व्याकुल होना। ३ दहलना।

कहलवाना—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहलाना—क्रि० स० [कहना का प्रे० रूप] १ दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २ सँदेशा भेजना। ३ पुकारा जाना।

क्रि० अ० [हिं० कहल] ऊमस से या गरमी से व्याकुल या शिथिल होना।

कहवाँⓅ†—क्रि० अ० दे० "कहाँ"।

कहवा—संज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ का बीज जिसके चूर से चाय की तरह पेय बनाते हैं।

कहवानाⓅ—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहवैयाⓅ—वि० [हिं० √कह+वैया (प्रत्य०)] कहनेवाला।

कहाँ—क्रि० वि० [वै० कुह] किस जगह ? किस स्थान पर ?

मुहा०—कहाँ का=(१) न जाने कहाँ का। असाधारण। बड़ा भारी। (२) कहीं का नहीं। नहीं। कहाँ का कहाँ=बहुत दूर। कहाँ की बात=यह बात ठीक नहीं है। कहाँ यह कहाँ वह=इनमें बड़ा अंतर है। कहाँ से=क्यों। व्यर्थ। नाहक।

कहाⓅ†—संज्ञा पु० [सं० कथन] १. कथन। वात। २. आज्ञा। उपदेश। ३. कथा। कहानी।

क्रि० वि० [सं० कथम्] कैसे। किस तरह।

Ⓟ†सर्व० [सं० क] क्या (व्रज)।

कहाकही—संज्ञा स्त्री० दे० "कहासुनी"।

कहाणी§—संज्ञा स्त्री० दे० "कहानी"। उ०—पुण्ण कहाणी पिन्न कहहु सामिअ सुनओ सुहेण।

कहाना—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहानी—संज्ञा स्त्री० [सं० कथानक, प्रा० कहाणय] १. छोटी कथा या किस्सा। आख्यायिका। २. झूठी वात। गढ़ी वात। बनावटी वात।

यौ०—रामकहानी=(१) लंबा चौड़ा वृत्तांत। (२) आत्मकथा।

कहार—संज्ञा पुं० [सं० कहारक ?, प्रा० काहार] एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

कहारा—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध+भार] टोकरा।

कहाल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वाजा।

कहावत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कह+आवत (प्रत्य०)] १ ऐसा वँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की वात संक्षेप में चमत्कारिक ढग से कही गई हो। कहनूत। लोकोक्ति। मसल। २ कही हुई वात। उक्ति।

कहासुना—संज्ञा पुं० [हिं० √कह+√सुन] अनुचित कथन और व्यवहार। भूलचूक।

कहासुनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहासुना] वादविवाद। झगड़ा-तकरार।

कहियाⓅ†—क्रि० वि० [वै० कुह] कव।

कहीं—क्रि० वि० [हिं० कहाँ] १ किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसे स्थान में जिसका ठीक-ठिकाना न हो।

मुहा०—कहीं और=दूसरी जगह। अन्यत्र। कहीं का=(१) न जाने कहाँ का। (२) बड़ा भारी। कहीं का न रहना या होना=दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। वरवाद होना। कहीं का न छोड़ना=तबाह करना। वरवाद करना। कहीं न कहीं=किसी स्थान पर अवश्य।

२. (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) नहीं। कभी नहीं। ३ कदाचित्। यदि। अगर (आशंका और इच्छा सूचक), जैसे—पास के अटाले में कहीं आग लगी तो यह झोपड़ी जल जायगी। ४. वहुत अधिक। बहुत बढ़कर।

कहुँⓅ—क्रि० वि० दे० "कहीं"।

कहुला†—वि० दे० "काला"।

कहूँⓅ—क्रि० वि० दे० "कहीं"।

काइयाँ—वि० [?] चालाक। धूर्त। मक्कार।

काँईⓅ—अव्य० [सं० किम्] क्यों।

सर्व० [सं० कानि ?] क्या।

काँकरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।

काँकरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँकर] छोटा कंकड़।

मुहा०—काँकरी चुनना=चिंता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना।

कांक्षनीय—वि० [सं० कांक्षणीय] इच्छा करने योग्य। चाहने लायक।

कांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कांक्षित] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

कांक्षी—वि० [सं० कांक्षिन्] [स्त्री० कांक्षिणी] चाहनेवाला। इच्छा रखनेवाला।

काँख—संज्ञा स्त्री० [सं० कक्ष] वाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा। बगल। उ०—एक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालि की काँख। इन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य वदहि तजि माख। —मानस।

मुहा०—काँख में कतरनी रखना=छल करना।

काँखना—क्रि० अ० [सं०√कांक्ष्=प्रयत्न करना] १. मल निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना। २ खूब परिश्रम करना। ३ शक्ति से अधिक परिश्रम करते समय नाक से ध्वनि निकालना। ४ अत्यधिक परिश्रम करने में व्यथित होना। ५. पीड़ा के आधिक्य से कराहना। ६ वहुत दिनों तक रोगशय्या पर पड़े रहना।

काँखासोती—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+सं० श्रोत्र] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग। उ०—पियर उपरना काँखासोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती॥ —मानस।

काँगड़ा—सज्ञा पुं० [देश०] पजाव प्रात का वह पहाड़ी हिस्सा जिसमें एक छोटा ज्वालामुखी पर्वत है जो ज्वाला (मुखी) देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

काँगड़ी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसे जाड़े में कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।

काँगनी—सज्ञा स्त्री० दे० "कँगनी"।

काँगुरा—सज्ञा पुं० दे० "कँगूरा"।

काँच—सज्ञा स्त्री० [स० कक्ष, प्रा० कच्छ] १ धोती का वह छोर जिसे दोनों जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसते हैं। लाँग। २ गुदेंद्रिय के भीतर का भाग। गुदाचक्र।

मुहा०—काँच निकलना = किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना।

सज्ञा पु० [स० काच] एक मिश्र पदार्थ जो पोटाश, बालू और सोडा या रेह (खारी मिट्टी) आदि के योग से बनती और पारदर्शक होती है। शीशा।

काचन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० काचनीय] १ सोना। २ धन-सपत्ति। ३ कचनार। ३ चपा। ४ नागकेसर। ५. धतूरा।

कांचनचगा—सज्ञा पुं० [सं० कांचनशृ ग] हिमालय की एक चोटी।

काँचरी, काँचली(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० कंचुलिका] साँप की केंचुली।

काँचा(पु)—वि० दे० "कच्चा"।

काची—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेखला। २ (विशेषत स्त्रियों के पहनने की छोटी छोटी घंटियों और अन्य भूषणों से युक्त) करधनी। ३ गोटा-पट्ठा। ४ गुजा। घुँघुची। ५. हिंदुओं की सात पुरियों में से एक पुरी। काजीवरम् नामक नगर।

कांचीपुरी—सज्ञा स्त्री० [स० कांची + पुरी] कांजीवरम् नामक नगर।

काँचुरी—सज्ञा स्त्री० दे० "काँचली"। उ०—कबीर गरबु न कीजिये देही देखि सुरग। आजु कालि तज जाहुगे ज्यों काँचुरी भुअग।—कबीर०।

काँछना(पु)—क्रि० स० दे० "काछना"।

काँछा(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "काछा"।

काजिक—सज्ञा पु० [स०] खट्टा, गाढा, रसीला खाद्य। कढ़ी। २ वह माँड़ जिसमें खमीर पैदा हो गया हो। काँजी।

वि० १ काँजी के स्वाद का। २ खट्टा।

काँजी—सज्ञा स्त्री० [स० काजी] १. एक प्रकार का खट्टा गाढा रस जो पिसी हुई राई के साथ नमक, जीरा सोंठ आदि मिलाकर पानी में घोलकर रखने से खमीर उठने पर बनता है और जिसमें बड़े, अचार आदि डालकर खाए जाते हैं। उ०—भरतहिं होइ न राजमद, विधि-हरि-हर-पद पाइ। कबहुँ कि काँजी सीकरनि, छीरसिंधु बिनसाइ॥—मानस। २ मट्ठे या दही का पानी। छाछ। ३ फटे हुए दूध का पानी। उ०—दूध फाटि जैसे भइ काँजी कौन स्वाद करि खाइ।—सूर०।

काँजी हाउस—सज्ञा पुं० [अं० काइन हाउस] वह सरकारी पशुशाला जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बंद किए जाते हैं। मवेशीखाना।

काँट(पु)—सज्ञा पुं० [सं० कण्ट] दे० "काँटा"। उ०—काँट कुरायँ लपेटन लोटन ठाँवहिं ठाँवँ बझाऊ रे।—विनय०।

काँटा—सज्ञा पुं० [सं० कटक] [वि० कँटीला] १. किसी किसी पेड़ की डालियों में निकले हुए सुई की तरह नुकीले और कड़े अकुर। कटक। उ०—रोयँ रोयँ अनुरागहिं चाँटे। सूत सूत बेधे जनु काँटे॥—पदमावत। २. विघ्न। बाधा। रुकावट। झझट। दुःख। तकलीफ। परेशानी।

मुहा०—काँटा निकलना = (१) बाधा या कष्ट दूर होना। (२) खटका मिटना। रास्ते में काँटा बिछाना = विघ्न करना। बाधा डालना। काँटा बोना = (१) बुराई करना। अनिष्ट करना। (२) अड़चन डालना। उपद्रव मचाना। (आँखों में) काँटा सा खटकना = अच्छा न लगना। दुःखदायी होना। काँटा होना = (१) विघ्न या बाधा बनना। (२) बहुत दुबला होना। काँटों में हाथ डालना = सकट में फँसना। काँटों में घसीटना = (१) दुःख, झझट या सकोच में डालना। (२) इतनी अधिक प्रशसा या आदर करना जिसके योग्य प्रशसित व्यक्ति अपने को नहीं समझता। काँटों पर लोटना = दुःख से तड़पना। बेचैन होना। काँटे से काँटा निकालना = एक शत्रु से दूसरे का नाश करना।

३. वह काँटा जो मोर, मुर्ग, तीतर आदि पक्षियों की नर जातियों के पैरों में पंजे के ऊपर निकलता है। खाँग। ४ वह काँटा जो मैना आदि पक्षियों के गले में रोग के रूप में निकलता है। ५. छोटी छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसियाँ जो जीभ में निकलती हैं। ६. लोहे की बड़ी कील। ७. मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार अँकुड़ी या कँटिया। ८. लोहे की झुकी हुई अँकुड़ियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ९ सूई या कील की तरह की कोई नुकीली वस्तु। १० दुःखदायी वस्तु। ११ तराजू की डाँडी पर वह सूई जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। १२. वह लोहे की तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है।

मुहा०—काँटे की तौल = न कम न बेश। ठीक ठीक। काँटे में तुलना = महँगा होना।

१३ नाक में पहनने की कील। लौंग। १४. पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औजार जिससे विलायत के लोग खाना खाते हैं। १५ घड़ी की सूई। १६. गणित में गुणनफल के शुद्ध अशुद्ध की जाँच की क्रिया या युक्ति। किसी वस्तु का गुणदोष परखने की तरकीब। १७ शत्रु। दुश्मन।

काँटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] १ छोटा काँटा। कील। २ वह छोटी तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा लगा हो। ३ झुकी हुई छोटी कील। अँकुड़ी। ४ बेड़ी।

काँठा(पु)—सज्ञा पु० [स० कठ] १ गला। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा। ३ किनारा। तट। उ०—गाइ विभीषन जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनि सायर काँठे।—कविता०। ४ पार्श्व। बगल।

कांड—सज्ञा पुं० [स०] १ बाँस ईख या पौधों आदि का जोड़। वह अश जो दो गाँठों के बीच में हो। पोर। गाँडा। गेंटा। २ अश। भाग। हिस्सा (किसी ग्रथ आदि का)। ३ बेंत। शर। सरकडा। ४. वृक्षों की पेड़ी। तना। ५ शाखा। डाली। टहल। ६ गुच्छा। ७ किसी कार्य या विषय का स्वतत्र विभाग, जैसे—कर्मकांड, ज्ञानकांड, उपासना कांड। ८ किसी ग्रथ का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसग हो। अध्याय। अक। ६ समूह। वृद।

काँड़ना(पु)†—क्रि० स० [स० कडन] १ रौंदना। कुचलना। उ०—बाटिका उजारि अच्छ रच्छकनि मारि भट भारी भारी रावरे के चाउर से काँड़िगो।—कविता०। २ धान को कूटकर चावल से भूसी अलग करना। कूटना। ३ खूब मारना।

कांडर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जिसने वेद के किसी कांड का संकलन या विवेचन किया हो, जैसे—जैमिनि, व्यास और शांडिल्य।

काँडी—संज्ञा स्त्री० [सं० कांड] १ लकड़ी का बड़ा टुंडा। २. बाँस या लकड़ी का कुछ पतला सीधा लट्ठा।

मुहा०—काँडी कफन=मुरदे की रथी का सामान।

कांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ पति। शौहर। २. श्रीकृष्णचंद्र। ३ चंद्रमा। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ कार्तिकेय। ७ वसंत ऋतु। ८ कुंकुम। ९ एक प्रकार का बढ़िया लोहा। कांतसार। १० एक मूल्यवान् पत्थर। सूर्यकांत मणि। ११. केसर। १२ चुंबक।

वि० १ सुंदर। मनोहर। २ प्रिय। ३ वांछनीय।

कांतसार—संज्ञा पुं० [सं०] कांत लोहा। पक्का लोहा। स्टील।

कांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रिया। प्रेयसी। सुंदर स्त्री। २ भार्या। पत्नी। ३. १७ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, भगण, नगण, रगण, सगण और अंत्य लघु गुरु अक्षर होते हैं, जैसे—वही कांता, प्रकृति सरला, धामा जनु मत की। वही धन्या, पतिरत सदा, प्रिया निज कंत की।

कांतार—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्गम और गहन वन। २ भयानक स्थान। ३ बंजर। ऊसर। बयावान। ४. बाँस। ५. छेद।

कांतासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति का एक भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर पत्नीभाव से भक्ति करता है। माधुर्य भाव।

कांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीप्ति। प्रकाश। तेज। आभा। २ सौंदर्य। शोभा। छवि। ३ सजावट। ४ चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक। ५ चंद्रमा की एक स्त्री का नाम। ६ आर्या छंद का एक भेद जिसमें १६ लघु और २५ गुरु मात्राएँ होती हैं।

कांतिमान्—वि० [सं०] [स्त्री० कांतिमती] १ तेजोमय। प्रकाशमय। २ सुंदर। मनोहर। ३ भव्य। शानदार।

संज्ञा पुं० १ चंद्रमा। २ कामदेव।

कांतिसार—संज्ञा पुं० दे० "कांत ९"।

काँथरि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

काँदना(पु)—क्रि० अ० [सं० क्रंदन] रोना।

काँदा—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १ एक गुल्म जिसमें प्याज की तरह गाँठ पड़ती है। २ प्याज। ३ दे० "काँदो"।

काँदो(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० कर्दम] कीचड़।

काँध(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "कंधा"।

काँधना(पु)—क्रि० वि० [सं०√स्कुंद्=उठाना] १. उठाना। सिर पर लेना। सँभालना। २ ठानना। प्रारंभ करना। ३ स्वीकार करना। ४ भार लेना।

काँधर, काँधा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "कान्ह"।

काँप—संज्ञा स्त्री० [सं० कंबु] १ बाँस आदि की पतली लचीली तीली। २ पतंग या कनकौवे की धनुष की तरह झुकी हुई तीली। ३ सूअर का खाँग। ४ हाथी का दाँत। ५ कान में पहनने का एक गहना। ६ एक प्रकार की मिट्टी।

काँपना—क्रि० अ० [सं० कंपन] १ हिलना। थरथराना। २ डर से काँपना। थर्राना।

कांबोज—वि० [सं०] कंबोज देश का।

काँय काँय, काँव काँव—संज्ञा पुं० [अनु० सं० काका] १ कौवे का शब्द। २ व्यर्थ का शोर।

काँवर—संज्ञा स्त्री० [प्रा० कावड] बहँगी।

काँवरि—संज्ञा स्त्री० दे० "काँवर"। उ०—कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। विविध वस्तु को बरनै पारा।—मानस

काँवरा†—वि० [पं० कमला] घबराया हुआ।

काँवरिया—संज्ञा पुं० [प्रा० कावडिय] काँवर लेकर चलनेवाला तीर्थयात्री। कामारथी।

काँवरू—संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।

काँवाँरथी—संज्ञा पुं० [सं० कामार्थी] वह जो किसी तीर्थ में किसी कामना से काँवर लेकर जाय।

काँस—संज्ञा पुं० [सं० कास] १ एक प्रकार की लंबी घास जो पवित्र मानी जाती है और जिसका देवताओं और पितरों के कार्य में उपयोग होता है तथा चटाई, आसनी, रस्सी आदि बनाई जाती हैं। उ०—फूले काँस सकल महि छाई। जनु वर्षा ऋतु प्रकट बुढ़ाई।—मानस।

मुहा०—काँस में फँसना=संकट में पड़ना।

काँसा—संज्ञा पुं० [सं० कांस्य] एक मिश्रित धातु जो ताँबे, पीतल और जस्ते के संयोग से बनती है। जस्ते और ताँबे का किसी प्रकार का मिश्रण। कसकुट। भरत। बेधा। उ०—काँसे ऊपर बीजरी, परै अचानक आय। ताते निर्भय ठीकरा, सतगुरु दिया बताय।—कबीर०।

यौ०—कँसभरा=काँसे के गहने बनाने और बेचनेवाला।

संज्ञा पुं० [फा० काँसा] भीख माँगने का ठीकरा या खप्पर।

काँसागर—संज्ञा पुं० [सं० कांस्यकार] काँसे का काम करनेवाला।

कांस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. काँसा। कसकुट। २ काँसे की बनी वस्तु।

का—प्रत्य० [सं० कृत ?] १. संबंध या षष्ठी का चिह्न, जैसे—राम का घोड़ा। २. [सं०] एक हीनतावाचक उपसर्ग, जैसे कापुरुष।

अव्य० [सं० किम् ?] क्या। उ०—बातुल मातुल की न सुनी सिख, का तुलसी कपि लंक न जारी ?—कविता०।

काअथ§—संज्ञा पुं० [सं० कायस्थ] कायस्थ (एक जाति)। उ०—बहुल बम्हण बहुल काअथ राजपुत्तकुल बहुल।

काई—संज्ञा स्त्री० [सं० कावार] १. जल, सीड़ या वृक्षों के तनों में होनेवाला एक प्रकार का पराग-कोष-रहित, फैलनेवाला और सूक्ष्म वनस्पति-जाल। उ०—काई कुमति केकई केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी॥—मानस।

मुहा०—काई सा फट जाना=तितर बितर हो जाना। छँट जाना।

२ एक प्रकार का मुर्चा जो ताँबे इत्यादि पर जम जाता है। ३ मल। मैल। गंदगी।

मुहा०—(१) काई छुड़ाना=दूर करना। (२) दुःख दारिद्र्य मिटाना।

काउंसिल—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ विशिष्ट विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति। २ शासन में सलाह देनेवाली सभा। ३ गोष्ठी। जमावड़ा।

काऊ(पु)†—क्रि० वि० [सं० कदा] कभी। उ०—एहि बन रहत गई हम्ह आऊ। तरिवर चलत न देखा काऊ।—पदमावत।

सर्व० [सं० क] १ कोई। २ कुछ। ३ किसी पर या किसी को। उ०—सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ॥—मानस०।

काक—संज्ञा पुं० [सं०] कौआ।

संज्ञा पुं० [अँ० कार्क] एक प्रकार की नरम लकड़ी जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है। काग।

काकगोलक—संज्ञा पुं० [सं० काक+गोलक] कौवे की आँख की पुतली, जो एक ही दोनों आँखों में घूमती हुई कही जाती है।

काकजंघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चकसेनी। मसी का पौधा। २ गुंजा। घुँघुची। ३. मुर्गान या मुगवन नाम की लता।

काकसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० काक+सुता] कोयल।

काकड़ासींगी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटशृंगी] काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम आती है।

काकतालीय—वि० [सं०] संयोगवश होनेवाला। इत्तफाकिया। आकस्मिक।

यौ०—काकतालीय न्याय।

काकदंत—संज्ञा पुं० [सं०] (कौए के दाँत के समान) कोई असंभव बात। अनहोनी वस्तु।

काकपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं। कुल्ला। जुल्फ। २ कौए का पंख।

काकपच्छ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "काकपक्ष"।

काकपद—संज्ञा पुं० [सं०] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिये पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

काकवंध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे एक संतति के उपरांत दूसरी न हुई हो।

काकवलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं आदि को दिया जाता है। कागौर।

काकभुशुंडि—संज्ञा पुं० [सं०] एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे।

काकरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ककड़ी"।

काकरेजा—संज्ञा पुं० [फा० काकरेजी=गाढ़ा काला रंग] गाढ़े काले रंग का कपड़ा।

काकरेजी—संज्ञा पुं० [फा०] कोकची रंग जो लाल और काले के मेल से बनता है। गाढ़ा काला या नीला रंग।

वि० काकरेजी रंग का।

काकली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंद और मधुर ध्वनि। कलनाद। २ सेंध लगाने की सबरी।

काकसिखा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० काक+शिखा] दे० "काकपक्ष"। उ०—काकसिखा सिर, कर केलि-तून-धनु-सर बालक-विनोद जातुधाननि सौं रनु भो।—गीता०।

काका—संज्ञा पुं० [फा० काक=बड़ा भाई] [स्त्री० काकी] पिता का भाई। चाचा।

काकाकौआ—संज्ञा पुं० दे० "काकातूआ"।

काकाक्षिगोलक न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ जनश्रुति के अनुसार जिस प्रकार कौए की दोनों आँखों में एक ही पुतली घूमा करती है उसी प्रकार एक ही शब्द या वाक्य का इच्छानुसार दो प्रकार अन्वय या अर्थ करने की रीति (न्याय शास्त्र)। २ एक ही शब्द या वाक्य का यथेच्छ उलटा सीधा अर्थग्रहण।

काकातूआ—संज्ञा पुं० [मला०] एक प्रकार का बड़ा तोता जो प्राय सफेद रंग का होता है। इसके सिर पर एक टेढ़ी चोटी होती है जिसे वह ऊपर नीचे कर सकता है। इसका शब्द कर्कश होता है।

काकिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घुँघची। गुंजा। २. पण का चतुर्थ भाग जो २० कौड़ियों का होता है। बीस कौड़ियों के बराबर मूल्य का एक छोटा सिक्का। ३ माशे का चौथाई भाग। ४ कौड़ी। ५ दंड का चौथा हिस्सा या १८ से २२ इंचों की प्राचीन नाप।

काकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौए की मादा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० काका] चाची। चची।

काकु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीड़ा, भय, शोक, क्रोध, दुःख आदि मनोविकारों के कारण स्वर या कंठध्वनि का विकार। २ छिपी हुई चुटीली बात। व्यंग्य। तनज। ताना। उ०—कहियत काकु कूदरी हूँ की, सो कुबानि बस नारि।—श्रीकृष्ण गीतावली। ३ अलंकार में वक्रोक्ति का एक भेद जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही में दूसरा अभिप्राय ग्रहण हो।

काकुत्स्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्यवंश के प्रतापी राजा ककुत्स्थ के वंशज। २ श्रीराम या लक्ष्मण।

काकुल—संज्ञा पुं० [फा०] कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।

काकोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर की तरह की एक ओषधि जो अब दुष्प्राप्य है। च्यवनप्राश नामक अवलेह में डाली जानेवाली प्रमुख अष्टवर्गीय औषधि।

काग—संज्ञा पुं० [सं० काक, प्रा० काग] कौआ।

संज्ञा पुं० [अं० कार्क] १. बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़ जो स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस तथा अफ्रीका के उत्तरी भागों में होता है। इसकी लकड़ी बहुत हलकी होती है। २. बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।

कागज—संज्ञा पुं० [अ० कागज, सं० कागद] [वि० कागजी] १. सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं।

यौ०—कागजपत्र=(१) लिखे हुए कागज। (२) प्रामाणिक लेख। दस्तावेज।

मुहा०—कागज काला करना या रँगना=व्यर्थ कुछ लिखना। कागज की नाव=क्षणभंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज। कागजी घोड़े दौड़ाना=लिखापढ़ी करना।

२ लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। प्रमाणपत्र। दस्तावेज। ३ समाचार पत्र। अखबार। ४. प्रामिसरी नोट।

कागजात—संज्ञा पुं० बहु० [अ० कागज का बहु०] कागजपत्र।

कागजी—वि० [अ० कागज] १ कागज का बना हुआ। २ जिसका छिलका कागज की तरह पतला हो; जैसे—कागजी बादाम। ३ लिखा हुआ। लिखित।

कागद—संज्ञा पुं० दे० "कागज"।

कागभुसुंड—संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडि"।

कागर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कागज" उ०—कागर प्तरा ऐस सरीरा। पवन उड़ाइ परा मँझ नीरा।—पद्मावत।

संज्ञा पुं० [हिं० काग ?] चिड़ियों के वे रूई के से मुलायम पर जो झड़ जाते हैं। उ०—कीर के कागर ज्यों नृप चीर विभूषन, उप्पम अंगनि पाई।—कविता०।

कागरी(पु)—वि० [हिं० कागर+ई(प्रत्य०)] तुच्छ।

कागावासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काग+बासी] १ वह भाँग जो सवेरे कौआ बोलते समय छानी जाय। २ एक प्रकार का मोती जो कुछ काला होता है।

कागारोल—संज्ञा पुं० [हिं० काग+रोर=शोर] हल्ला। हुल्लड़। शोरगुल।

कागौर—संज्ञा पुं० दे० "काकवलि"।

काचलवण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का औषधीय नमक जिसमें लोहा, चूना और गंधक के अंश मिले रहते हैं। कचिया नोन। काला नोन।

काछी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्छा] १ दूध रखने की हाँडी। २ तीखुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ।

काछ—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] १. पेड़ू और जाँघ के जोड़ तथा उसके कुछ नीचे तक का स्थान। २. धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। लाँग। ३. अभिनय के लिये नटों का वेष या बनाव।

मुहा०—काछ काछना = वेष बनाना।

काछना—क्रि० स० [हिं० काछ] १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कसकर खोंसना। २ बनाना। सँवारना।

क्रि० स० [सं० कर्षण] हथेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना या इकट्ठा करना।

काछनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काछना] १ कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी। २ घाघरे की तरह का एक चुनन्दार आधी जंघा तक का पहनावा।

काछा—संज्ञा पुं० दे० "काछनी"।

काछिअ(पु)—क्रि० स० [हिं० काछ] दे० "काछना"। उ०—तुम्ह जो कहहु करहु सबु साचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥ —मानस।

काछी—संज्ञा पुं० [कच्छ = जलप्राय देश] १. तरकारी बोने और बेचनेवाली एक जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

काछू(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कछुआ"।

काछे—क्रि० वि० [सं० कक्ष, प्रा० कच्छ = तट, किनारा] निकट। पास।

काज—संज्ञा पुं० [सं० कार्य्य] १. कार्य। काम। कृत्य। क्रिया।

मुहा०—के काज = के हेतु। निमित्त।

२. व्यवसाय। पेशा। रोजगार। ३ प्रयोजन। मतलब। उद्देश्य। अर्थ। ४ विवाह।

यौ०—काज-प्रयोजन = काम - काज। शुभाशुभ कार्य। मरनी-करनी।

संज्ञा पुं० [अ० कायज] वह छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है। बटन का घर।

काजर—संज्ञा पुं० दे० "काजल"।

काजरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कज्जली] वह गाय जिसकी आँखों पर काला घेरा हो।

काजल—संज्ञा पुं० [सं० कज्जल] दीपक का जमाया हुआ धुआँ जो आँखों में लगाया जाता है अंजन।

मुहा०—काजल की कोठरी = ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य को कलंक लगे। काजल घुलाना, डालना, देना या सारना = (आँखों में) काजल लगाना। काजल पारना = दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना।

काजी—संज्ञा पुं० [अ० काजी] १. मुसलमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। २ न्यायकर्ता।

काजू—संज्ञा पुं० [कोंक० काज्जु] १ एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को लोग भूनकर खाते हैं। २. इस वृक्ष के फल की गुठली के भीतर की मींगी या गिरी।

काजू भोजू—वि० [हिं० काज + सं० भोग] ऐसी दिखाऊ वस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके।

काट—संज्ञा स्त्री० [सं० √कृत, प्रा० √कट्ट] १. काटने की क्रिया या भाव।

यौ०—काट-छाँट = (१) मार काट। लड़ाई। (२) काटने से बचा खुचा टुकड़ा। कतरन। (३) किसी वस्तु में कमी-बेशी। घटाव-बढ़ाव। मार काट = तलवार आदि की लड़ाई।

२ काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३ कटा हुआ स्थान। घाव। जख्म। ४. कपट। चालबाजी। विश्वासघात। ५. कुश्ती में पेंच का तोड़। ६ किसी बुरी वस्तु के नाश करने का उपाय। ७ विरोध। ८. कीट। तेल आदि का तलछट।

काटना—क्रि० स० [सं० कर्तन] १ शस्त्र आदि की धार धँसाकर किसी वस्तु के दो खंड करना।

मुहा०—काटो तो खून नहीं = एकबारगी सन्न हो जाना। बिलकुल स्तब्ध हो जाना।

२ घाव करना। जख्म करना, जैसे, जूते का काटना। ३ किसी वस्तु का कोई अंश निकालना, जैसे, उसके वेतन से १००) काट लो। किसी भाग को कम करना, जैसे, इस वर्ष नदी बहुत जमीन काट ले गई। ४ युद्ध में मारना। वध करना, जैसे, युद्ध में सैकड़ों सिपाही काटे गए। ५ पीसना। महीन चूरा करना, जैसे—भाँग काटना, मसाला काटना। ६ कतरना। ब्योंतना, जैसे—तुमने कोट नहीं काटा। ७ नष्ट करना। ८. बिताना। दुःख काटना, जैसे—जाड़ा काटना। ९ रास्ता खतम करना। दूरी तै करना। १०. अनुचित प्राप्ति करना। बुरे ढंग से आय करना। ११. कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद्द करना। छेंकना। मिटाना। १२ ऐसे कामों को तैयार करना जो लकीर के रूप में कुछ दूर तक चले गए हों, जैसे—सड़क काटना, नहर काटना। १३ ऐसे कामों को तैयार करना जिनमें लकीरों द्वारा कई विभाग किए गए हों, जैसे—क्यारी काटना। १४ एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। १५ जेलखाने में दिन बिताना, जैसे—जेल काटना। १६ विषैले जंतु का डंक मारना या दाँत धँसाना। डसना, जैसे—साँप का काटना, भिड़ का काटना, कुत्ते का काटना।

मुहा०—काटने दौड़ना = चिड़चिड़ाना। खीझना, जैसे, रुपए माँगने पर वह काटने दौड़ता है।

१७ किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन और छरछराहट पैदा करना, जैसे, पान में चूना अधिक था, उसने सारा मुँह काट लिया। १८ एक रेखा का दूसरी रेखा के ऊपर से चार कोण बनाते हुए निकल जाना। १९ (किसी मत का) खंडन करना। अप्रमाणित करना। २० दुःखदायी लगना। २१ किसी जीव का सामने से निकल जाना, जैसे—बिल्ली का रास्ता काटना बुरा है। २२ धक्के से डोरी आदि तोड़ना, जैसे, पतंग काटना। २३ किसी शृंखला में से कोई भाग अलग करना, जैसे—गाड़ी से तीन डब्बे काट दिए गए। २४ दुःखदायी होना। बुरा लगना, जैसे—जाड़े में पानी काटता है।

मुहा०—कान काटना = परास्त करना। नाक काटना = अपमानित करना। हाथ काटना = मुख्य सहारा या साधन छीन लेना।

मुहा०—काटे खाना या काटने दौड़ना = (१) बुरा मालूम होना। चित्त को व्यथित करना। (२) सूना और उजाड़ लगना।

काटर(पु)—वि० [सं० कट्टर] १. दुराग्रही। हठी। कट्टर। उ०—आना काटर एक तुखारू। कहा सो फेरौ, भा असवारू।

—पद्मावत। २ काटनेवाला। ३ कड़ा। ४ कठोर।

काढ़ू—संज्ञा पुं० [हिं० √काट+ऊ (प्रत्य०)] १ काटनेवाला। २ कटाऊ। डरावना। भयानक।

काठ—संज्ञा पुं० [सं० काष्ठ] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो आधार से अलग हो गया हो। लकड़ी।

यौ०—काठ-कबाड़=टूटाफूटा सामान।

मुहा०—काठ का उल्लू=जड़। वज्र मूर्ख। काठ होना=(१) सज्ञाहीन होना। चेतनारहित होना। स्तब्ध होना। (२) सूखकर कड़ा हो जाना। काठ की हाँडी=ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।

२ ईंधन। जलाने की लकड़ी। ३ शहतीर। लक्कड़। ४ लकड़ी की बनी हुई बेड़ी। कलंदरा।

मुहा०—काठ मारना या काठ में पाँव देना=अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

५ शरीर पिंजर। काया। उ०—गुरु मोरे मोरे हिए, दिए तुरंगम ठाठ। भीतर करहिं डोलावै, बाहर नाचै काठ। —पद्मावत।

काठड़ा—संज्ञा पुं० दे० "कठौता"।

काठिन्य—संज्ञा पुं० दे० "कठिनता"।

काठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ+ई (प्रत्य०)] १ घोड़ों या ऊँट की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। अगरेजी जीन। २ शरीर की गठन। अँगलेट। ३ तलवार या कटार की म्यान। ४ ईंधन। उ०—विरह के दगध कीन्ह तन भाठी। हाड़ जराइ दीन्ह सब काठी। —पद्मावत।

वि० [काठियावाड़ (देश)] काठियावाड़ का।

काढ़ना—क्रि० स० [सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण] १ किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना। निकालना। उ०—मीन दीन जनु जल ते काढ़े। —मानस। २ किसी आवरण को हटाकर कोई वस्तु प्रत्यक्ष करना। खोलकर दिखाना। ३. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से अलग करना। बाहर निकालना। उ०—त्यों त्यों सुकृत सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे बहि काढ़न।—विनय०। ४ लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर बेल बूटे बनाना। उरेहना। चित्रित करना। उ०—सुर-प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ी। —मानस। ५ उधार लेना। ऋण लेना। उ०—सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बहु बाढ़ा। —मानस। ६ घी, तेल आदि में पकाकर निकालना। कड़ाहे से निकालना। छानना। ७ खींचकर बाहर निकालना। उ०—प्रतिउत्तर सँड़सिन्ह मनहुँ, काढ़त भट दससीस। —मानस।

काढ़ा—संज्ञा पुं० [सं० क्वाथ, प्रा० काढ] ओषधियों को उबालकर उतारा हुआ अर्क। क्वाथ।

कातंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शर्व वर्मा नामक महावैयाकरण का कुमार कार्तिकेय के आदेश से बनाया हुआ संस्कृत का व्याकरण। कौमारव्याकरण। कलाप व्याकरण।

कातना—क्रि० स० [सं० कर्तन] १ रूई बटकर तागा बनाना। उ०—अपजस जोग कि जानकी, मनि चोरी की कान्ह। तुलसी लोग रिझाइबो, करषि कातिबो नान्ह। —दोहा०। २ चरखा चलाना।

कातर—वि० [सं०] १ अधीर। व्याकुल। चंचल। घबराया हुआ। उ०—लखि सनेह कातर महतारी। —मानस। २. डरा हुआ। भयभीत। ३ डरपोक। बुजदिल। भीरु। ४ आर्त। दुःखित। ५ हतप्रभ। ६. हतोत्साह।

संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्तृ] कोल्हू में लकड़ी का वह तख्ता जिसपर हाँकनेवाला बैठता है।

कातरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कातर] १ अधीरता। चंचलता। घबराहट। २ दुःख की व्याकुलता। ३ डरपोकपन। भीरता। ४ उत्साहहीनता।

काता—संज्ञा पुं० [हिं० √कात] काता हुआ सूत। तागा। डोरा।

यौ०—बुढ़िया का काता=बहुत महीन सूत की तरह बनाई हुई चीनी की मिठाई।

कातिक—संज्ञा पुं० [सं० कार्तिक] वह महीना जो क्वार के बाद पड़ता है। कार्तिक।

कातिब—संज्ञा पुं० [अ०] लिखनेवाला। लेखक। मुंशी। मुहर्रिर।

कातिल—वि० [अ०] घातक। हत्यारा। कत्ल करनेवाला।

कातीं—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्तरी] १ कैंची। २ सुनारों की कतरनी। ३ चाकू। छुरी। ४ छोटी तलवार। कत्ती।

कात्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कात्यायनी] १ कत नामक वैदिक ऋषि के वंशज जिनमें तीन प्रसिद्ध हैं—एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन। २ पाली व्याकरण के कर्ता एक बौद्ध आचार्य।

कात्यायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २ कात्यायन ऋषि की पत्नी। ३ दुर्गा। ४ याज्ञवल्क्य ऋषि की दूसरी पत्नी।

काथⓅ—संज्ञा दे० "कत्था"।

काथरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

कादंब—संज्ञा पुं० [सं०] १ काले परोंवाला हंस। कलहंस। २ ऊख। ३ बाण। ४ कदंब वृक्ष। ५ कदंब की बनी शराब।

वि० कदंब संबंधी। कदंब का।

कादंबरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोकिल। कोयल। २ सरस्वती। वाणी। ३ मदिरा। शराब। ४ मैना। ५ बाणभट्ट की लिखी प्रसिद्ध आख्यायिका और उसकी नायिका का नाम।

कादंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघमाला। बादलों की घटा।

कादर—वि० [सं० कातर] १ डरपोक। भीरु। उ०—कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा। —मानस। २ अधीर। व्याकुल।

कादिरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की चोली। सीनाबंद।

कान—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १ वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। सुनने की इंद्रिय। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र।

मुहा०—कान उठाना=(१) सुनने के लिये तैयार होना। आहट लेना। (२) चौकन्ना होना। सचेत या सजग होना। कान उमेठना=(१) दंड देने के हेतु किसी का कान मरोड़ देना। (२) किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। कान करना=सुनना। ध्यान देना। कान काटना=मात करना। बढ़कर होना। कान का कच्चा=जो किसी के कहने पर बिना सोचे समझे विश्वास कर ले। कान खड़े करना=सचेत करना। होशियार करना। कान खाना या खा जाना=बहुत शोर गुल करना। बहुत बातें करना। कान गरम करना या कर देना=कान उमेठना। कान पूँछ दबाकर चला जाना=चुपचाप चला जाना। बिना विरोध किए टल जाना।

(किसी बात पर) कान देना या धरना = ध्यान देना। ध्यान से सुनना। कान पकड़ना = (१) कान उमेठना। (२) अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना। (किसी बात से) कान पकड़ना = पछतावे के साथ किसी बात के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर जूँ न रेंगना = कुछ भी परवा न होना। कुछ भी ध्यान न होना। कान फुँकवाना = गुरुमंत्र लेना। दीक्षा लेना। कान फूँकना = (१) दीक्षा देना। चेला बनाना। (२) कान भरना = किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना। खयाल खराब करना। कान मलना = दे० "कान उमेठना"। कान मूँदना = सुनना न चाहना। कान में तेल डाले बैठना = बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। कान में डाल देना = सुना देना। सूचित कर देना। काना-फूसी करना = कान से सटकर धीरे धीरे भेद बताना या बोलना। कानोंकान खबर न होना = जरा भी खबर न होना। किसी के सुनने में न आना। कानों पर हाथ धरना या रखना = किसी बात के करने से एकबारगी इनकार करना।

२ सुनने की शक्ति। श्रवण शक्ति। ३ लकड़ी का एक टुकड़ा जो कूँड अधिक चौड़ी करने के लिये हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है। कन्ना। ४ सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है। ५ चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ६ किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े। ७ तराजू का पलड़ा। ८ तोप या बंदूक में वह स्थान जहाँ रंजक रखी और बत्ती दी जाती है। पियाली। रंजकदानी। ९ नाव की पतवार। १० कड़ाही आदि बर्तनों का दस्ता या हैंडल।

संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।

कानन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगल। २ घर। ३ कान का बहुवचन। (व्रजभाषा)

काना—वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख बेकार हो। एकाक्ष। एक आँखवाला।

वि० [सं० कर्णक] वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो। कन्ना।

संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १ 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका रूप [ा] है। २ पाँसे पर की बिंदी या चिह्न, जैसे तीन काने।

वि० [सं० कर्ण] जिसका कोई कोना या भाग निकला हो। तिरछा। टेढ़ा।

कानाकानी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णाकर्णी] कानाफूसी। चर्चा।

कानाफुसकी, कानाफूसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+अनु० 'फुस'] वह बात जो कान के पास धीरे से कही जाय।

कानाबाती—संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कानि—संज्ञा स्त्री० [?] १ लोकलज्जा। मर्यादा। प्रतिष्ठा। २ लिहाज। संकोच। उ०—सेवक सेवकाई जानि जानकीस मानै कानि, सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाक को।—हनु०।

कानी—वि० स्त्री० [हिं० काना] एक आँखवाली। जिसकी एक आँख बेकाम हो।

मुहा०—कानी कौड़ी पास न होना = एक पैसा भी पास न रहना। निर्धन होना।

वि० स्त्री० [सं० कनीनी] सबसे छोटी (उँगली), जैसे—कानी उँगली।

कानीन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी अविवाहित कन्या से पैदा हुआ व्यक्ति।

कानी हाउस—संज्ञा पुं० [अं० काइन हाउस] दे० "काँजी हाउस"।

कानून—संज्ञा पुं० [अ०, यू० केनान] [वि० कानूनी] राज्य में शांति रखने का नियम। राजनियम। आईन। विधि। विधान।

मुहा०—कानून छाँटना या बघारना = अनावश्यक तर्क या हुज्जत करना।

कानूनगो—संज्ञा पुं० [फा०] माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागजों की जाँच करता है।

कानूनदाँ—संज्ञा पुं० [फा०] कानून जाननेवाला। विधिज्ञ।

कानूनिया—वि० [अ० कानून+हिं० इया (प्रत्य०)] १ कानून जाननेवाला। २ हुज्जती।

कानूनी—वि० [अ० कानून] १ जो कानून जाने। २ कानून संबंधी। अदालती। ३ जो कानून के मुताबिक हो। नियमानुकूल। ४ तकरार करनेवाला। हुज्जती।

कान्यकुब्ज—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन समय का एक प्रदेश जो वर्तमान कन्नौज के आसपास था। २ इस देश का निवासी। ३ इस देश का ब्राह्मण।

कान्ह⑤—संज्ञा पुं० [सं० कृष्ण, प्रा० कन्ह] श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाट] दे० "कर्णाट"।

कान्हड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णाटी] दे० "कर्णाटी।"

कान्हर⑤—संज्ञा पुं० [हिं० कान्ह] श्रीकृष्ण।

कापर⑤—संज्ञा पुं० दे० "कपड़ा"। उ०—हस्ति घोर औ कापर सबहिं दीन्ह नव साज।—पद्मावत।

कापाल—वि० [सं०] कपाल संबंधी। कपाल का।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अस्त्र। २ एक प्रकार की संधि। ३ शैव मत के संन्यासियों का संप्रदाय जिसके अनुयायी नर खोपड़ी में आहार करते हैं। कापालिक।

कापालिक—संज्ञा पुं० [सं०] शैवमत के तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते हैं और मद्य मांसादि खाते हैं।

कापाली—संज्ञा पुं० [सं० कापालिन्] [स्त्री० कापालिनी] १ शिव। २ एक प्रकार का वर्णसंकर।

कापिल—वि० [सं०] १ कपिल संबंधी। कपिल का। कपिल के मत को माननेवाला। सांख्यवादी। ३ भूरा।

संज्ञा पुं० [सं०] १ सांख्य दर्शन। २ कपिल के दर्शन का अनुयायी। ३ भूरा रंग।

कापी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ नकल। प्रतिलिपि। २ लिखने की कोरे कागजों की पुस्तक। ३ प्रति। जिल्द।

कापीराइट—संज्ञा पुं० [अं०] निर्धारित समय के लिये लेखक, निर्माता आदि को अपनी कृति के मुद्रण, प्रकाशन, विक्रय आदि का विधान द्वारा प्राप्त स्वत्व या एकाधिकार।

कापुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ कायर। डरपोक। २ अधम। नीच।

काफिया—संज्ञा पुं० [अ०] अंत्यानुप्रास। तुक। सज।

यौ०—काफियाबंदी = तुकबंदी। तुक जोड़ना।

मुहा०—काफिया तंग करना = बहुत हैरान करना। नाकों दम करना। काफिया तंग होना = लाचार होना।

काफिर—वि० [अ०] १ मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २ ईश्वर को न माननेवाला। ३ निर्दय। निष्ठुर। बेदर्द। ४ दुष्ट। बुरा। ५ काफिर देश का रहनेवाला।

संज्ञा पुं० [अ०] [वि० काफिरी] १ दक्षिणी अफ्रिका की वाटू जाति की एक शाखा का नाम। २ इसकी भाषा। ३ एशिया में सिंधु नद के उत्तर-पश्चिम और वक्षु नदी के बीच का प्रदेश।
काफिला—संज्ञा पुं० [अ०] यात्रियों का दल।
काफी—वि० [अ०] १ जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। २ एक प्रकार का पेय, कहवा। ३ एक राग।
काफूर—संज्ञा पुं० [फा०] कपूर।
मुहा०—काफूर होना=चपत होना। गायब होना। भाग जाना।
काफूरी—वि० [हिं० काफूर] १ काफूर का। २ काफूर के रंग का।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत हलका हरा रंग।
काब—संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकाबी।
काबर—वि० [सं० कर्बुर प्रा० कब्बुर] कई रंगों का। चितकबरा।
काबा—संज्ञा पुं० [अ०] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।
काबिज—वि० [अ०] १ अधिकार रखनेवाला। अधिकारी। २ मल का अवरोध करनेवाला। दस्त रोकनेवाला।
काबिल—वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १. योग्य। लायक। २ विद्वान्। पंडित।
काबिलीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। लियाकत। २. पांडित्य। विद्वत्ता।
काबिस—संज्ञा पुं० [सं० कपिश] एक रंग जिससे मिट्टी के कच्चे बरतन रँगते हैं।
काबुक—संज्ञा पुं० [फा०] कबूतरों का दरबा।
काबुल—संज्ञा पुं० [सं० कुभा] [वि० काबुली] १ एक नदी जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है। २ अफगानिस्तान की राजधानी।
काबुली—वि० [हिं० काबुल] काबुल का।
संज्ञा पुं० काबुल का निवासी।
काबू—संज्ञा पुं० [तु०] वश। इख्तियार।
काम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कामुक, कामी] १ इच्छा। मनोरथ। २ महादेव। ३ कामदेव। ४. इंद्रियों की अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति (कामवासना)। ५. सहवास की इच्छा। ६. चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक चार पदार्थों में से तीसरा।
संज्ञा पुं० [सं० कर्म, प्रा० कम्म] १ वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य।
मुहा०—काम आना=लड़ाई में मारा जाना। काम करना=(१) प्रभाव डालना। असर डालना (२) फल उत्पन्न करना। काम चलना=(१) काम जारी रहना। (२) क्रिया का संपादन होना। काम तमाम करना=(१) काम पूरा करना। (२) मार डालना। जान लेना।
२. कठिन शक्ति या कौशल का कार्य।
मुहा०—काम रखता है=बड़ा कठिन कार्य है। मुश्किल बात है, जैसे—इस भीड़ में से होकर जाना काम रखता है।
३. प्रयोजन। अर्थ। मतलब।
मुहा०—काम निकलना=(१) प्रयोजन सिद्ध होना। उद्देश्य पूरा होना। मतलब गँठना। (२) कार्यनिर्वाह होना। आवश्यकता पूरी होना। काम पड़ना=आवश्यकता होना।
४ गरज। वास्ता। सरोकार।
मुहा०—किसी के काम पड़ना=किसी से पाला पड़ना। किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना। काम से काम रखना=अपने प्रयोजन पर ध्यान रखना। व्यर्थ बातों में न पड़ना।
५ उपयोग। व्यवहार। इस्तेमाल।
मुहा०—काम आना=(१) व्यवहार में आना। उपयोगी होना। (२) सहारा देना। सहायक होना। काम का=व्यवहार योग्य। उपयोगी (वस्तु)। काम देना=व्यवहार में आना। उपयोगी होना। काम न आना या काम न देना=बेकाम हो जाना। काम में लाना=बरतना। व्यवहार करना।
६. कारबार। व्यवसाय। रोजगार। ७. कारीगरी। बनावट। रचना। ८. बेल-बूटा या नक्काशी।
कामकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मैथुन। रति। २. कामदेव की स्त्री। रति।
कामकलोल—संज्ञा स्त्री० [सं० काम+हिं० कलोल] काम-क्रीड़ा। उ०—मज्जा बैरिनि मानों ठानी मैनुन मोलै। प्यारे प्रीतम जू सों कीजै कामकलोलै।—ईदारांव।
कामकाज—संज्ञा पुं० [हिं० काम+काज] १ कामधंधा। कार्य। २ व्यापार।
कामकाजी—वि० [हिं० काम+काज+ई (प्रत्य०)] काम करनेवाला। कामधंधे में रहनेवाला।
कामग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। २. दुराचारी। लंपट।
कामगार—संज्ञा पुं० १ दे० "कामदार"। २ दे० "मजदूर"।
कामचलाऊ—वि० [हिं० काम+चलाऊ] जिससे किसी प्रकार काम निकल सके। जो बहुत से अंशों में काम दे जाय।
कामचारी—वि० [सं०] १ जहाँ चाहे वहाँ विचरनेवाला। २ मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३ कामुक।
कामचोर—वि० [हिं० काम+चोर] काम से जी चुरानेवाला। अकर्मण्य। आलसी।
कामज—वि० [सं०] वासना से उत्पन्न।
कामजित्—वि० [सं०] काम को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ कार्तिकेय। ३. जिन देव।
कामज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियों और पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य पालन करने से हो जाता है।
कामड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० कामरी?] रामदेव के मत के अनुयायी चमार साधु।
कामतरु—संज्ञा पुं० दे० "कल्पवृक्ष"।
कामता(५)—संज्ञा पुं० [सं० कामद] १. चित्रकूट। २ चित्रकूट के पास का एक गाँव।
वि०—इच्छाओं को पूर्ण करनेवाला। उ०—कामदमन कामता कल्पतरु सो जुग जुग जागत जगती तलु।—विनय०।
यौ०—कामतानाथ=चित्रकूट के पास की एक पहाड़ी का नाम।
कामद—वि० [सं०] [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला। इच्छानुसार फल देनेवाला। उ०—रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई॥—मानस।
कामद मणि—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।
कामदहन—संज्ञा पुं० [सं० काम+दहन] कामदेव को जलानेवाले, शिव।
कामदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामधेनु। २. दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक रगण, एक यगण, एक जगण और अंत्य गुरु वर्ण होता

है, जैसे—हाय, देवकी दीन्ह आपदा। नैन ओट कै मूर्ति कामदा॥

कामदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काम+दानी (प्रत्य०)] वेलबूटा जो बादले के तार या सलमे-सितारे से बनाया जाय।

कामदार—संज्ञा पुं० [हिं० काम+फा० दार (प्रत्य०)] कारिंदा। अमला। प्रबंधकर्ता।

वि० जिसपर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों, जैसे—कामदार टोपी।

कामदुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

कामदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। २. वीर्य। ३ संभोग की इच्छा।

कामधाम—संज्ञा पुं० [हिं० काम+धाम (अनु०)] कामकाज। धंधा।

कामधुक(पु)—वि० [सं० काम+धुक्] १ यथेच्छ दुहा जानेवाला। २ इच्छाएँ पूर्ण करनेवाला। ३ इच्छानुसार चाहे जब और जितनी बार दुही जानेवाली, जैसे, कामधुक गाय। उ०—भक्ति प्रिय भक्तजन कामधुक-धेनु हरि हरन दुर्घट-विकट विपति भारी।—विनय०।

कामधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय वही मिलता है। सुरभि। २ वसिष्ठ की शबला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनका विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

कामना—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।

कामपंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं० काम+पंचमी] वसंत पंचमी।

कामबाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बाण, जो पाँच हैं—उन्मादन, संतापन, शोषण, स्तंभन और संमोहन। बाणों को फूलों का मानने पर, पाँच बाण ये हैं—लाल कमल, अशोक, आम की मंजरी, चमेली और नील कमल।

कामभूरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

कामयाब—वि० [फा०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो। सफल। कृतकार्य।

कामयाबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सफलता।

कामरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

कामरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

कामरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रामायण के अनुसार एक अस्त्र जिसे विश्वामित्र जी ने रामचंद्र जी को दिया था। इससे वे अन्य अस्त्रों को व्यर्थ करते थे।

कामरू—संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।

कामरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्वी बंगाल और पश्चिमी कामरूप के भागों से बना एक प्राचीन जनपद या प्रदेश जिसमें वर्तमान आसाम, कूचविहार, जलपाइगुड़ी और रंगपुर भी संमिलित बतलाए गए हैं। २ आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। ३ एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे। ४ २६ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में गुरु लघु का क्रम रहता है, जैसे—दससीस समबहु, नष्ट मे सब, गर्व के जे गेह। तासों कहा तुहि, मान मेरी, राम सों कर नेह। ५ देवता।

वि० मनमाना रूप बनानेवाला।

कामल—संज्ञा पुं० [सं०] कमल रोग। पित्त का अत्यधिक बनना या एकदम न बनना।

कामला—संज्ञा पुं० दे० "कामल"।

कामली(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

कामवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] काम या संभोग की वासना रखनेवाली स्त्री।

कामवान्—वि० [सं०] [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छा करनेवाला।

कामशर—संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।

कामशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या ग्रंथ जिसमें दांपत्य प्रेम और उसके आनंद से संबद्ध व्यवहारों का वर्णन हो।

कामसखा—संज्ञा पुं० [सं० कामसख] १ वसंत ऋतु। २ चैत्र मास। ३ आम्र वृक्ष।

कामांध—वि० [सं०] जिसे कामवासना की प्रबलता में भले बुरे का ज्ञान न हो। कामवासना के पीछे पागल।

कामा—संज्ञा स्त्री० [सं० काम] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में कुल दो गुरुवर्ण होते हैं, जैसे—गंगा ध्यावौ। कामा पावौ॥

[अं० कामा] एक विराम चिह्न (,), जो किसी वाक्य के खंड, शब्द या शब्द-समूह को अलग करने में प्रयुक्त होता है।

कामाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र के अनुसार देवी की एक मूर्ति। २ दुर्गा का एक रूप।

कामाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र में देवी का एक रूप। २ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम। ३ दे० "कामरूप"।

कामातुर—वि० [सं०] १. काम के वेग से व्याकुल। संगागम की इच्छा से उद्विग्न। २ वासना से पीड़ित।

कामायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदी का एक प्रसिद्ध प्रबंध काव्य।

कामारथी†—संज्ञा पुं० दे० "कामार्थी"।

कामारि—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

कामार्थी—वि० [सं०] १ आनंद या प्रेम की इच्छा रखनेवाला। कामी। २ किसी वस्तु की इच्छा रखनेवाला।

कामावसायिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपनी इच्छा से समस्त वासनाओं का दमन। २ शिव के अणिमादिक आठ ऐश्वर्यों में से एक। ३ योग की अष्ट-सिद्धियों में से एक। ४ सत्यसंकल्पता।

कामित(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० काम] कामना। इच्छा।

कामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामवती स्त्री। २ स्त्री। सुंदरी। ३ मदिरा।

कामिनीमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] स्रग्विणी छंद का एक नाम।

कामिल—वि० [अ०] १ पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २. योग्य। व्युत्पन्न।

कामी—वि० [सं० कामिन्] [स्त्री० कामिनी] १ कामना रखनेवाला। २ विषयी। कामुक।

संज्ञा पुं० [सं०] १ चकवा। २ कबूतर। ३ चिड़ा। ४ सारस। ५ चंद्रमा।

कामुक—वि० [सं०] [स्त्री० कामुकी, कामुका] १ इच्छा करनेवाला। चाहने-वाला। २ कामी। विषयी।

कामेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र के अनुसार एक भैरवी। २ कामाख्या की पाँच मूर्तियों में से एक।

कामोद—संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

कामोद्दीपक—वि० [सं० काम+उद्दीपक] १ वासना (विशेषत संभोग की) को उत्ते-जित करनेवाला या बढ़ानेवाला।

कामोद्दीपन—संज्ञा पुं० [सं० काम+उद्दी-पन] वासना (विशेषत संभोग की) की वृद्धि या वेगाधिक्य।

काम्य—वि० [सं०] १ जिसकी इच्छा हो। वांछनीय। २ कमनीय। सुंदर। ३. प्रिय। पसंद। इच्छानुकूल। ४ किसी कामना से किया हुआ। सकाम।

संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ या कर्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय, जैसे—यज्ञादिक धार्मिक कर्म।

काम्येष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यज्ञ जो कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

काय—वि० [सं०] प्रजापति संबंधी।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। जिस्म। २ प्रजापति तीर्थ। कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग (स्मृति)। ३ प्रजापति का हवि। ४. प्राजापत्य विवाह। ५. मूल-धन। पूँजी। ६ समुदाय। संघ।

कायकल्प—संज्ञा पुं० दे० "कायाकल्प"।

कायचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शारीरिक रोगों का इलाज।

कायजा—संज्ञा पुं० [अ० कायज] घोड़े की लगाम की डोरी, जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं।

कायथ—संज्ञा पुं० दे० "कायस्थ"।

कायदा—संज्ञा पुं० [अ० कायद] १ नियम। २ चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३ विधि। विधान। ४ क्रम। व्यवस्था।

कायफल—संज्ञा पुं० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल, फल और फूल दवा के काम आते हैं।

कायम—वि० [अ०] १ ठहरा हुआ। स्थिर। २ स्थापित। ३ निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

कायममुकाम—वि० [अ०] स्थानापन्न। एवजी।

कायर—वि० [सं० कातर] डरपोक। भीरु।

कायरता—संज्ञा स्त्री० [सं० कातरता] डरपोकपन। भीरुता।

कायल—वि० [अ०] जो तर्क वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। कबूल करनेवाला।

कायली—संज्ञा स्त्री० [सं० क्ष्वेलिका ?] मथानी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कायर] ग्लानि। लज्जा।

संज्ञा स्त्री० [अ० कायल] कायल या तर्क में परास्त होने की क्रिया का भाव।

यौ०—कायली माकूली = तर्क करना और तर्कसिद्ध बात मानना।

कायव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर में वात, पित्त, कफ तथा त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम। २ योगियों की अपने कर्मों के भोग के लिये चित्त में एक एक इंद्रिय और अंग की कल्पना करना। ३ सैनिक घेरा।

कायस्थ—वि० [सं०] काय में स्थित। शरीर में रहनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १ जीवात्मा। २ परमात्मा। ३ एक जाति का नाम।

काया—संज्ञा स्त्री० [सं० काय] शरीर। तन।

मुहा०—काया पलट जाना = रूपांतर हो जाना। और से और हो जाना।

कायाकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सबल करने की क्रिया।

कायापलट—संज्ञा स्त्री० [हिं० काया + √पलट] १ भारी हेरफेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। २ एक शरीर या रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना। और ही रंग-रूप का होना।

कायिक—वि० [सं०] १ शरीर संबंधी। २ शरीर से किया हुआ या उत्पन्न, जैसे—कायिक पाप। ३ संघ संबंधी (बौद्ध)।

कारंड, कारंडव—संज्ञा पुं० [सं०] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।

कारंधम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "कारंधमी"।

कारंधमी—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिश्रित धातुओं से चीजें बनानेवाला। २ रसायनी। कीमियागर।

कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य, जैसे—उपकार, स्वीकार। २ बनानेवाला। रचनेवाला, जैसे, कुंभकार, ग्रंथकार। ३ एक शब्द जो किसी अक्षर के आगे लगकर उसी एक अक्षर का बोध कराता है, जैसे—चकार, लकार। ४ एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है, जैसे—चीत्कार। हाहाकार।

संज्ञा पुं० [फा०] कार्य। काम।

संज्ञा स्त्री० [अं०] मोटर (गाड़ी)।

Ⓟवि० दे० "काला"।

कारक—वि० [सं०] [स्त्री० कारिका] करनेवाला; जैसे, हानिकारक, सुखकारक।

संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रिया-हेतु या निमित्त। २ व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

कारकदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में दीपक नामक अर्थालंकार का वह भेद जिसमें कई क्रियाओं का एक ही कर्ता वर्णन किया जाय, जैसे—कहति, नटति, रीझति, खिझति, हिलति, मिलति, बतियात। भरे भवन में करत है नैनन ही सों बात।

कारकुन—संज्ञा पुं० [फा०] १ इंतजाम करनेवाला। प्रबंधकर्ता। २ कारिंदा।

कारखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है। २. कारबार। व्यवसाय।

मुहा०—कारखाना फैलाना—अनावश्यक विस्तार या आडंबर करना।

३ घटना। दृश्य। मामला। ४ क्रिया।

कारगर—वि० [फा०] १. प्रभावजनक। असर करनेवाला। २ उपयोगी।

कारगुजार—वि० [फा०] [संज्ञा कारगुजारी] अपना कर्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला। दक्ष। कुशल।

कारगुजारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पूरी तरह और आज्ञा पर ध्यान देकर काम करना। कर्तव्यपालन। २ कार्यपटुता। होशियारी। ३ कर्मण्यता।

कारचोब—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० संज्ञा कारचोबी] १ लकड़ी का एक चौकठा जिसपर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २ जरदोजी या कसीदे का काम करनेवाला। जरदोज।

कारचोबी—वि० [फा०] जरदोजी का।

संज्ञा स्त्री० [फा०] जरदोजी। गुलकारी।

कारजⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "कार्य"।

कारटाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० करट] कौआ।

कारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हेतु। वजह। सबब। वह जिसके प्रभाव से कोई बात हो या जिसके विचार से कुछ किया जाय। २ वह जिसमें दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो। हेतु। निमित्त। प्रत्यय। ३ आदि। मूल। ४. साधन। ५ कर्म। ६ प्रमाण। ७ अभिप्राय। लक्ष्य। ८ मूल तत्व।

कारणमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कारणों या हेतुओं की श्रेणी। २ काव्य में एक अर्थालंकार जिसमें क्रम से बाद में कही वस्तुओं के कारण पहले कही बातें हों, जैसे—जितेंद्रियता विनय का, विनय गुणप्रकर्ष का, गुणप्रकर्ष लोकानुराग का और लोकानुराग सब समृद्धियों का कारण है। अथवा—दल ते बल, बल ते विजय, ताते राज हुलास। कृत ते सुत, सुत ते सुयश, यश ते दिवि महँ बास।

कारणशरीर—संज्ञा पुं० [सं०] सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें

इंद्रियों का विषय-व्यापार तो नहीं रहता है, पर अहंकार आदि का संस्कार रहता है वेदांत]।

कारतूस—संज्ञा पुं० [पुर्त० कार्टूश] गोली-बारूद भरी एक नली जिसे बंदूक, रिवाल्वर आदि में भरकर चलाते हैं।

कारन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कारण"।
(पु)संज्ञा स्त्री० [कारुण्य] रोने का आर्तनाद। करुण स्वर। उ०—कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिन्ह की माला। —पदमावत।

कारनामा—संज्ञा पुं० [फा०] किसी के किए हुए कामों आदि का विवरण।

कारनिस—संज्ञा स्त्री० [अं०] दीवार की कँगनी। कगर।

कारनी—संज्ञा पुं० [सं० कारण] प्रेरक। भेदक।
संज्ञा पुं० [सं० कारिनी] भेद करानेवाला। भेदक। बुद्धि पलटनेवाला।

कारपरदाज—वि० [फा०] १. काम करनेवाला। कारकुन। २. प्रबंधकर्ता। कारिंदा।

कारपरदाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दूसरे की ओर से किसी कार्य के प्रबंध करने का काम। २ कार्य करने की तत्परता।

कारबार—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० कारबारी] कामकाज। व्यापार। पेशा। व्यवसाय।

कारबारी—वि० [फा०] कामकाजी।
संज्ञा पुं० कारकुन। कारिंदा।

कारवाँ—संज्ञा पुं० [फा०] यात्रियों का दल।

काररवाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ काम। कृत्य। करतूत। २ कार्य तत्परता। कर्मण्यता। ३ गुप्त प्रयत्न। चाल।

कारसाज—वि० [फा०] [संज्ञा कारसाजी] बिगड़े काम को सँभालनेवाला। काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।

कारसाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ काम पूरा उतारने की युक्ति। २ गुप्त कार्रवाई। चालबाजी। कपट-प्रयत्न।

कारस्तानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कारसाजी। काररवाई। २ चालबाजी।

कारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बंधन। कैद। बंदीगृह। जेलखाना। २ पीड़ा। क्लेश।
वि० (पु)† दे० "काला"

कारागार, कारागृह—संज्ञा पुं० [सं०] कैदखाना। बंदीगृह।

कारारोध—संज्ञा पुं० [सं०] कारागार में बंद करने या होने की क्रिया या दशा।

कारावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ कैद। बंदीगृह। २ कैद में रहना।

कारिंदा—संज्ञा पुं० [फा०] दूसरे की ओर से काम करनेवाला। कर्मचारी। गुमाश्ता।

कारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ (दर्शन, व्याकरण, अलंकारशास्त्र आदि की) पद्यबद्ध और संक्षिप्त व्याख्या। किसी शास्त्र के सिद्धांतों की ऐसी ही व्याख्या। २. नट की स्त्री। ३. नर्तकी।

कारिख—संज्ञा स्त्री० दे० "कालिख"।

कारित—वि० [सं०] कराया हुआ।

कारी—संज्ञा पुं० [सं० कारिन्] [स्त्री० कारिणी] करनेवाला। बनानेवाला।
वि० [फा०] घातक। मर्मभेदी।

कारीगर—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० कारीगरी] लकड़ी, पत्थर आदि से सुंदर वस्तुओं की हाथों से रचना करनेवाला। शिल्पकार।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल। निपुण। हुनरमंद।

कारीगरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथों से अच्छे अच्छे काम बनाने की कला। निर्माण-कला। २ सुंदर बना हुआ काम। मनोहर रचना।

कारु—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० कारुता] १. देवताओं के शिल्पी का नाम। विश्वकर्मा का एक नाम। २ शिल्पी। कारीगर। दस्तकार। ३ विद्या। कला।

कारुणिक—वि० [सं०] [संज्ञा कारुणिकता] कृपालु। दयालु।

कारुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] करुणा का भाव। दया। मेहरबानी।

कारूँ—संज्ञा पुं० [अ०] १ हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी और कंजूस था। २ कंजूस और धनी।
यौ०—कारूँ का खजाना = अनंत धनराशि।

कारूनी—संज्ञा स्त्री० [?] घोड़ों की एक जाति।

कारूरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ फुँकनी शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रखा जाता है। २ मूत्र। पेशाब।

कारौंछ—संज्ञा स्त्री० दे० "कालौंछ"।

कारोबार—संज्ञा पुं० दे० "कारबार"।

कार्ड—संज्ञा पुं० [अं०] १ मोटे कागज का वह टुकड़ा जिस पर समाचार या पता आदि लिखा जाता है।

कार्तवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] कृतवीर्य का पुत्र और हैहयों का राजा सहस्रार्जुन जिसे परशुराम ने मारा था।

कार्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] क्वार और अगहन के बीच में पड़नेवाला महीना।

कार्तिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले शिव जी के पुत्र स्कंद जी। षडानन। कुमार। स्कंद। सुब्रह्मण्य।

कार्पण्य—संज्ञा पुं० [सं०] कृपणता। कंजूसी।

कार्पास—संज्ञा पुं० [सं०] कपास।

कार्मण—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र तंत्र आदि का प्रयोग।

कार्मना(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कार्मण] १. मंत्रतंत्र या जादू का प्रयोग। कृत्या। २ मंत्र। तंत्र। जादू। टोना।

कार्मुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। २. कोई धन्वाकार शस्त्र। ४ अर्धवृत्त (ज्यामिति)। ३ इंद्रधनुष। ४ बाँस। ५ सफेद खैर। ६ बकायन। ७ धनु राशि। नवीं राशि।

कार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ काम। कृत्य। व्यापार। धंधा। २ वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्ता क्रिया करे। ३ फल। परिणाम। क्रिया का विकार।

कार्यकर्ता—संज्ञा पुं० [सं०] काम करनेवाला। कर्मचारी।

कार्यकारण भाव—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य और कारण का संबंध। किन्हीं दो वस्तुओं में एक दूसरी का परस्पर कारण और कार्य होना।

कार्यक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ होने या किए जानेवाले कार्यों का क्रम। २ इस प्रकार के कार्यों की सूची या विवरण। प्रोग्राम।

कार्यसम—संज्ञा पुं० [सं०] (न्याय शास्त्र में) एक विशेष प्रकार की भ्रांत आपत्ति जिसमें इस तथ्य की उपेक्षा रहती है कि असदृश परिस्थितियों से भी सदृश परिणाम निकल सकते हैं।

कार्यसाधक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम को पूरा करनेवाला। कार्यघटक।

कार्यसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी काम की समाप्ति। सफलता।

कार्याक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] (अलंकार

शास्त्र में) विशेष परिस्थिति में होनेवाले निर्धारित परिणामों को न मानना।

कार्यातिपात—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य की अवहेलना। किसी काम में लापरवाही।

कार्याधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य का प्रबंध आदि हो। काम की देखभाल और सुव्यवस्था रखनेवाला अफसर।

कार्याधिप—संज्ञा पुं० [सं०] (ज्योतिष में) किसी बात को स्थिर करनेवाला सर्वोच्च ग्रह। कार्येश। कार्येश्वर।

कार्यान्वित—वि० [सं०] १ कार्य में बदला हुआ। २ संपादित।

कार्यार्थी—वि० [सं०] १ कार्य की सिद्धि चाहनेवाला। २ कोई काम करने की इच्छा रखनेवाला।

कार्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई काम होता हो। दफ्तर। कारखाना। कार्यस्थान।

कार्रवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।

कार्षापण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन सिक्का या माप।

काल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संबंध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है। समय। वक्त।

मुहा०—काल पाकर=कुछ दिनों पीछे।

२ अंतिम समय। नाश का समय। मृत्यु। ३ यमराज। यमदूत। ४. उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ५ अकाल। महँगी। दुर्भिक्ष। ६ [स्त्री० काली] शिव का एक नाम। महाकाल।

वि० काला। काले रंग का।

Ⓟक्रि० वि० दे० "कल"।

कालकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ मोर। मयूर। ३ नीलकंठ पक्षी। ४. खंजन। खिड़रिच।

कालका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।

कालकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष। काला बच्छनाग। उ०—गौर सरीर स्यामु मन माहीं। कालकूट मुख पयमुख नाहीं।—मानस। २ सींगिया की जाति के एक पौधे की जड़ जिसपर चित्तियाँ होती हैं।

कालकेतु—संज्ञा पुं० [सं० काल+केतु] एक राक्षस। उ०—कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहि सूकर होइ नृपहि भुलावा।—मानस।

कालकोठरी—संज्ञा स्त्री० [सं० काल+हिं० कोठरी] १ जेलखाने की बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाईवाले कैदी रखे जाते हैं। २ बहुत छोटा और अँधेरा कमरा।

कालक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन काटना। वक्त बिताना। २ निर्वाह। गुजर-बसर।

कालखंज—संज्ञा पुं० [सं०] यकृत।

कालगँडेत—संज्ञा पुं० [हिं० काला+√गंडा] वह विषधर साँप जिसके ऊपर काले गंडे या चित्तियाँ होती हैं।

कालचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ समय का चक्र या पहिया। समय का हेरफेर। जमाने की गर्दिश। २ एक अस्त्र।

कालछेप—संज्ञा पुं० दे० "कालक्षेप"। उ०—सहवासी काचो गिलहिं, पुरजन पाक प्रवीन। कालछेप केहि मिलि करहिं, तुलसी खग, मृग, मीन।—दोहा०।

कालज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ समय के हेर-फेर को जाननेवाला। २ ज्योतिषी।

कालज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिति और अवस्था की जानकारी। २ मृत्यु का समय जान लेना।

कालतुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में एक तुष्टि। यह विचारकर संतुष्ट रहना कि जब समय आ जायगा, तब यह बात स्वयं हो जायगी।

कालदंड—संज्ञा पुं० [सं०] यमराज का दंड।

कालधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ मृत्यु। विनाश। अवसान। २ वह व्यापार जिसका होना किसी विशेष समय पर स्वाभाविक हो। समयानुसार धर्म या व्यापार। ३ समय का प्रभाव। ४ सामयिकता।

कालनिशा—संज्ञा स्त्री० [सं० काल+निशा] १ दिवाली की रात। २ अँधेरी, भयावनी रात।

कालनेमि—संज्ञा पुं० [सं०] १ रावण का मामा, एक राक्षस। २ एक दानव जिसने देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था।

कालपाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह नियम जिसके कारण भूतप्रेत कुछ समय तक के लिये कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते। २ यमराज का बंधन। यमपाश।

कालपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर का विराट् रूप। २ काल।

कालबंजर—संज्ञा पुं० [सं० काल+हिं० बंजर] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।

कालबूत—संज्ञा पुं० [फ़ा० कलबुद] १ वह कच्चा भराव जिसपर महराब बनाई जाती है। छैना। २ चमारों का वह काठ का साँचा जिसपर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं।

कालभैरव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के मुख्य गणों में से एक।

कालयवन—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार यवनों का एक राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी।

कालयापन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कालक्षेप। समय बिताना। २ दिन काटना। गुजारा करना।

कालर—संज्ञा पुं० दे० "कल्लर"।

संज्ञा पुं० [अं०] १. कोट या कमीज में की वह पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है। २ कुत्तों आदि के गले में बँधनेवाला पट्टा।

कालरातिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।

कालरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अँधेरी और भयावनी रात। २ ब्रह्मा की रात्रि जिसमें सारी सृष्टि लय को प्राप्त रहती है, केवल नारायण ही रहते हैं। प्रलय की रात। ३ मृत्यु की रात्रि। ४ दिवाली की अमावस्या। ५ दुर्गा की एक मूर्ति। ६ यमराज की बहिन जो सब प्राणियों का नाश करती है। ७. मनुष्य की आयु में सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने की सातवीं रात जिसके बाद वह नित्यकर्म आदि से मुक्त समझा जाता है।

कालवाचक, कालवाची—वि० [सं०] समय का ज्ञान करानेवाला। जिसके द्वारा समय का ज्ञान हो।

कालविपाक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम का समय पूरा होना।

कालसर्प—संज्ञा पुं० [सं० काल+सर्प] वह साँप जिसके काटने से आदमी मर जाय।

काला—वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १ काजल या कोयले के रंग का। स्याह।

मुहा०—(अपना) मुँह काला करना =(१) कुकर्म करना। पाप करना। (२)

व्यभिचार करना। अनुचित सहगमन करना। (३) किसी बुरे आदमी का दूर होना।

२ कलुषित। बुरा। ३ भारी। प्रचड।

मुहा०—काले कोसों = बहुत दूर।

सज्ञा पुं० [सं० काल] काला साँप।

कालाकलूटा—वि० [हिं० काला+कलूटा] बहुत काला। अत्यत श्याम (मनुष्य)।

कालाक्षरी—वि० [स०] काले अक्षर मात्र का अर्थ बता देनेवाला। अत्यंत विद्वान्।

कालाग्नि—सज्ञा पु० [स०] १ प्रलय काल की अग्नि। २ प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

काला चोर—सज्ञा पु० [हिं० काला+चोर] १ बहुत भारी चोर। २ बुरे से बुरा आदमी।

काला जीरा—सज्ञा पु० [हि० काला+जीरा] स्याह जीरा। मीठा जीरा। पर्वत जीरा।

कालातीत—वि० [स०] जिसका समय बीत गया हो।

सज्ञा पुं० १. न्याय के पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से वह जिसमें अर्थ एक देश काल के ध्वस से युक्त हो और इस कारण असत् ठहरता हो। २ आधुनिक न्याय में एक प्रकार का बोध जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित रहता है।

काला दाना—सज्ञा पुं० [हिं० काला+दाना] १ एक प्रकार की लता जिससे काले दाने निकलते हैं। २ इस लता का दाना या बीज जो अत्यत रेचक होता है।

काला नमक—सज्ञा पु० [हिं० काला+फा० नमक] सज्जी के योग से बना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण। सोंचर।

काला नाग—सज्ञा पुं० [हिं० काला+सं० नाग] १ काला साँप। विषधर सर्प। २ अत्यत कुटिल या खोटा आदमी।

काला पहाड़—सज्ञा पु० [हिं० काला+पहाड़] १ बहुत भारी या भयानक। दुस्तर (वस्तु)। २ बहलोल लोदी का एक भाजा जो सिकदर लोदी से लड़ा था। ३ मुरशिदाबाद के नवाब दाऊद का एक सेनापति जो बड़ा क्रूर और कट्टर मुसलमान था।

काला पान—सज्ञा पु० [हिं० काला+पान] ताश की बूटियों का वह रंग जो हुकुम कहलाता है।

काला पानी—सज्ञा पु० [हिं० काला+पानी] १ बगाल की खाड़ी के समुद्र में वह स्थान जहाँ का पानी अत्यत काला दिखाई पड़ता है। २ देशनिकाले का दड। अडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देशनिकाले के कैदी भेजे जाते हैं। ४ शराब। मदिरा।

कालाभुजग—वि० [हिं० काला+स० भुजंग] बहुत काला। घोर कृष्ण वर्ण का।

कालास्त्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का निधन निश्चय समझा जाता था।

कालिंग—वि० [स०] कलिंग देश का। कलिंग सबधी।

सज्ञा पु० [सं०] १ कलिंग देश का निवासी। २ कलिंग देश का राजा। ३ हाथी। ४ साँप। ५ तरबूज।

कालिंजर—सज्ञा पुं० [स० कालजर] एक पर्वत जो बाँदे से ३० मील पूर्व की ओर है और जिसका माहात्म्य पुराणों में है।

कालिंदी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २ श्रीकृष्ण की एक स्त्री। ३ एक वैष्णव सप्रदाय।

कालिⓅ—क्रि० वि० दे० "कल"।

कालिक—वि० [स०] १ समय सबधी। समय का। २ जिसका समय नियत हो।

सज्ञा पु० [अँ० कॉलिक] एक प्रकार की पेट या गुर्दों की असह्य पीड़ा।

कालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवी का एक स्वरूप। चडिका। काली। २ कालापन। कालिख। ३ बिछुआ नामक पौधा। ४ मेघ। घटा। ५ स्याही। मसि। ६ मदिरा। शराब। ७ आँख की काली पुतली। ८ रणचडी।

कालिकापुराण—सज्ञा पु० [स०] एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी का माहात्म्य है।

कालिकालाⓅ—क्रि० वि० [हिं० कालि+काला] कदाचित। कभी। किसी समय।

कालिख—सज्ञा स्त्री० [स० कालक] वह काली बुकनी जो धुएँ के जमने से लग जाती है। कलौंछ। स्याही।

मुहा०—मुँह में कालिख लगना = बदनामी के कारण मुँह दिखलाने लायक न रहना।

कालिब—सज्ञा पुं० [अ०] १ टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा जिसपर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। २ शरीर। देह।

कालिमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कालापन। २ कलौंछ। कालिख। ३ अँधेरा। ४ कलक। दोष। लाछन।

कालिय—सज्ञा पु० [सं०] एक सर्प जिसे श्रीकृष्ण ने वश में किया था।

काली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चडी। कालिका। दुर्गा। २ पार्वती। गिरिजा। ३ दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या।

कालीघटा—सज्ञा स्त्री० [हिं० काली+घटा] घने काले बादलों का समूह। कादंबिनी।

काली जबान—सज्ञा स्त्री० [हिं० काली+फा० जबान] वह जीभ जिससे निकली अशुभ बातें घट जायँ।

काली जीरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० काला+जीरा] एक ओषधि जो एक पेड़ की बोंडी के भालदार बीज हैं।

कालीदह—सज्ञा पु० [स० कालिय+हिं० दह] वृंदावन में यमुना का एक दह या कुड जिसमें कालीय नामक नाग रहा करता था।

कालीनⓅ—वि० [स०] किसी काल या समय से सबध रखनेवाला। किसी काल या समय का, जैसे—प्राक्कालीन। बहुकालीन। अल्पकालीन। समकालीन।

सज्ञा पु० [अ०] १ मोटे सूत के तागों का बुना बहुत मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेलबूटे आदि बने रहते हैं। २. इसी प्रकार का ऊन का बिछावन। गलीचा।

काली मिर्च—सज्ञा स्त्री० [हिं० काली+मिर्च] काले छिलके सहित गोल मिर्च।

काली शीतला—सज्ञा स्त्री० [हिं० काली+स० शीतला] एक प्रकार की भयकर शीतला या चेचक (रोग) जिसमें काले दाने निकलते हैं।

कालौंछ—सज्ञा स्त्री० [हिं० काला+औंछ (प्रत्य०)] १ कालापन। स्याही। कालिख। २ धुएँ की कालिख। रहूँ।

काल्पनिक—सज्ञा पुं० [स०] कल्पना करनेवाला।

वि० [स०] कल्पित। मनगढ़त।

काल्हि—क्रि० वि० दे० "कल"।

कावा—सज्ञा पुं० [फा०] घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।

मुहा०—कावा काटना = (१) वृत्त में दौड़ना। चक्कर खाना। (२) आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना = चक्कर देना।

काव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय को किसी भाव का रस रूप में अनुभूति करानेवाली पद्यबद्ध, गद्यमय या गद्य-पद्य-मय रचना । २ वह पुस्तक जिसमें ऐसी रचना हो । काव्य का ग्रंथ । ३ रोला छंद का वह भेद जिसमें ग्यारहवीं मात्रा लघु होती है, जैसे—मोहन मदन गुपाल, राम-प्रभु शोक निवारन । सोहन परम दयाल, दीन जन पाप उधारन ॥

काव्यलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय, जैसे—(वाक्यार्थ द्वारा) कनक कनक ते सौ गुनो, मादकता अधिकाय । वह खाए बौरात है, यह पाए बौराय ॥ यहाँ सोने की अधिक मादकता का कारण "यह पाए बौराय" वाक्य द्वारा दिया गया है । (पद के अर्थ द्वारा) जनि उपाय औरे करौ, यहै राखु निरधार । हिय वियोग तम हारिहै, विधुवदनी वह नार ॥ यहाँ वियोग रूप तम दूर होने का कारण "विधुवदनी" पद के अर्थ द्वारा कहा गया है ।

काव्यार्थापत्ति—संज्ञा पुं० दे० "अर्थापत्ति" ।

काश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की घास । काँस । २ खाँसी ।

अव्य० [फा०] यदि यह संभव होता ।

काशिका—वि० स्त्री० [सं०] १ प्रकाश करनेवाली । २ प्रकाशित । प्रदीप्त ।

संज्ञा स्त्री० १. काशीपुरी । २ पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति ।

काशीकरवट—संज्ञा पुं० [सं० काशी+करपत्र] काशीस्थ एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर अपने प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे ।

काशीफल—संज्ञा पुं० [सं० कोशफल] कुम्हड़ा ।

काश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ खेती । कृषि । २ कुछ वार्षिक लगान देकर जमीन पर खेती करने का स्वत्व ।

काश्तकार—संज्ञा पुं० [फा०] १ किसान । कृषक । खेतिहर । २. वह जिसने लगान देकर जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो ।

काश्तकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ खेती-बारी । किसानी । २ काश्तकार का हक ।

काश्मरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी का पेड़ ।

काश्मीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारत के उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेश । दे० "कश्मीर" । कश्मीर का निवासी । ३ केसर ।

काश्मीरा—संज्ञा पुं० [सं० काश्मीर] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा ।

काश्मीरी—वि० [सं० काश्मीर+हिं० ई (प्रत्य०)] १. कश्मीर देश-संबंधी । २ कश्मीर देश का निवासी ।

काश्यप—वि० [सं०] कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का । कश्यप संबंधी ।

काषाय—वि० [सं०] १ हड़, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ । २ गेरुआ ।

काष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ काठ । २ ईंधन ।

काष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हद । अवधि । २ उच्चतम चोटी या ऊँचाई । उत्कर्ष । ३ अठारह पल का समय या एक कला का ३०वाँ भाग । ४. चंद्रमा की एक कला या सोलहवाँ अंश । ५ दिशा । ओर ।

कास—संज्ञा पुं० [सं०] खाँसी ।

संज्ञा पुं० [सं० काश] काँस ।

कासनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम आते हैं । २ कासनी का बीज । ३ एक प्रकार का नीला रंग जो कासनी के फूल के रंग के समान होता है ।

कासा—संज्ञा पुं० [फा०] १ प्याला । कटोरा । २ आहार । भोजन । ३. दरियाई नारियल का बरतन जो फकीर रखते हैं ।

कासार—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा ताल । तालाब । २ २८ रगण का एक दंडक वृत्त । ३ दे० "कसार" ।

कासिद—संज्ञा पुं० [अ०] सँदेशा ले जानेवाला । हरकारा । पत्रवाहक ।

काहँ(पु)—प्रत्य० दे० "कहँ" ।

काह(पु)—क्रि० वि० [सं० क ?] क्या ? कौन वस्तु ?

काहली—वि० दे० "काहिल" । उ०—रामही के द्वारे पै बोलाइ सनमानियत, मोसे दीन दूबरे कुपूत कूर काहली ।—कविता० ।

काहि(पु)—सर्व० [हिं० काह] १ किसको ? किसे ? २ किससे ?

काहिल—वि० [अ०] आलसी । सुस्त ।

काहिली—संज्ञा स्त्री० [अ०] सुस्ती । आलस्य ।

काही—वि० [फा० काह या हिं० काई] घास के रंग का । कालापन लिए हुए हरा ।

काहु(पु)—सर्व० दे० "काहू" ।

काहू—सर्व० [हिं० का+हू (प्रत्य०)] किसी ।

संज्ञा पुं० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं ।

काहे(पु)—क्रि० वि० [सं० कथ, प्रा० कह] क्यों ? किसलिये ?

यौ०—काहे को = किसलिये ? क्यों ?

किं—अव्य० दे० "किम्" ।

किंकर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १ दास । २ राक्षसों की एक जाति ।

किंकर्तव्य-विमूढ़—वि० [सं० किंकर्तव्य+विमूढ़] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब आगे क्या करना चाहिए । हक्का बक्का । भौंचक्का । घबराया हुआ ।

किंकिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षुद्रघंटिका । २ करधनी । जेहर । कमरकस ।

किंगरी—संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटा चिकारा । छोटी सारंगी जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं ।

किंचन—संज्ञा पुं० [सं०] थोड़ी वस्तु ।

किंचित्—वि० [सं०] कुछ । थोड़ा ।

यौ०—किंचिन्मात्र = थोड़ा भी । थोड़ा ही ।

क्रि० वि० कुछ । थोड़ा ।

किंजल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ पद्मकेशर । कमल का केशर । २ कमल । ३ कमल के फूल का पराग । ४ नागकेशर ।

वि० [सं०] कमल के केशर के रंग का पीला । उ०—घनश्याम काम अनेक छवि, लोकाभिराम मनोहरं । किंजल्क-वसन, किसोर मूरति, भूरि-गुन करुनाकरं ॥ —श्रीकृष्णगीता० ।

किंडरगार्टन—संज्ञा पुं० [अँ०, जर्मन "किंदेर गार्तन" = बच्चों का बाग] बच्चों को खेल खिलौनों से बहलाते हुए शिक्षा देने की पद्धति ।

किंतु—अव्य० [सं०] १. पर । लेकिन । परंतु । २ वरन् । बल्कि ।

किंपुरुख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "किंपुरुष" ।

किंपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवयोनि में गिने गए मनुष्यों के समान किंतु घोड़े के मुँहवाले एक विशेष प्रकार के प्राणी । २ दोगला । वर्णसंकर । ३ प्राचीन काल की मनुष्यों से मिलती जुलती एक मानव जाति ।

किंभूत—वि० [सं०] १ किस प्रकार का। कैसा। २ विलक्षण। अद्भुत। ३ भोंडा। भद्दा।

यौ०—किंभूत-किमाकार = विलक्षण और भद्दा या भोंडा। कैसा और कितना बड़ा।

किंवदंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] अफवाह। उड़ती खबर। जनरव।

किंवा—अव्य० [सं०] या। या तो। अथवा।

किंशुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलाश। ढाक। टेसू। २ तुन का पेड़।

कि—सर्व० [सं० किम्] क्या ? किस प्रकार। उ०—जगदंबा जहँ अवतरी सो पुनि बरनि कि जाइ। रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ।—मानस।

अव्य० [सं० किम् या फा० कि] १ एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषयवर्णन के पहले आता है। २ इतने में। ३ या। अथवा। उ०—सुनु नृप विविध जतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं।—मानस।

किआरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"। उ०—महावृष्टि चलि फूटि किआरी। जिमि सुतंत्र भए बिगरहिं नारी।—मानस।

किकियाना—क्रि० अ० [अनु०] १ कीं कीं या कें कें का शब्द करना। २ रोना। चिल्लाना।

किचकिच—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ व्यर्थ की वादविवाद। बकवाद। २ झगड़ा।

किचकिचाना—क्रि० अ० [हिं० किचकिच] १ (क्रोध से) दाँत पीसना। २ भरपूर बल लगाने के लिये दाँत पर दाँत रखकर दबाना। ३ दाँत पर दाँत दबाना।

किचकिचाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिच+आहट (प्रत्य०)] किचकिचाने का भाव।

किचकिची—संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिच] किचकिचाहट। दाँत पीसने की अवस्था।

किचड़ाना—क्रि० अ० [हिं० कीचड़ से ना० धा०] (आँख का) कीचड़ से भरना।

किचरपिचर—वि० दे० "गिचपिच"।

किछुⓟ†—वि० दे० "कुछ"। उ०—जो किछु कहब थोर सखि सोई। रामबधु अस काहे न होई।—मानस।

किटकिट—संज्ञा स्त्री० [किक्किटा] किचकिच।

किटकिटाना—क्रि० अ० [हिं० किटकिट] १. क्रोध से दाँत पीसना। २ दाँत के नीचे कंकड़ की तरह कड़ा लगना।

किटकिना—संज्ञा पुं० [प्रा० कुत्त = ठीका] १ वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठीकेदार अपने ठीके की चीज का ठीका दूसरे असामियों को देता है। २ चाल। चालाकी।

किटकिनादार—संज्ञा पुं० [हिं० किटकिना + फा० दार (प्रत्य०)] वह पुरुष जो किसी वस्तु को किसी दूसरे ठीकेदार से ठीके पर ले।

किट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ धातु की मैल। २ तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल। कीट।

कितⓟ†—क्रि० वि० [सं० कुत्र] १ कहाँ। २ किस ओर। किधर। ३ ओर। तरफ।

कितकⓟ†—वि०, क्रि० वि० [सं० कियत] कितना।

कितना—वि० [सं० कियत] [स्त्री० कितनी] १ किस परिमाण, मात्रा या संख्या का (प्रश्नवाचक)। २ अधिक। बहुत।

क्रि० वि० १ किस परिमाण या मात्रा में। कहाँ तक। २ अधिक।

कितव—संज्ञा पुं० [सं०] १. जुआरी। २ धूर्त। छली ३ पागल। ४ दुष्ट।

किता—संज्ञा पुं० [अ०] १ सिलाई के लिये कपड़े की काटछाँट। ब्योंत। २ ढंग। चाल। ३ संख्या। अदद। ४ विस्तार का एक भाग। ५ सतह का हिस्सा। ६ प्रदेश। प्रांगण। भूभाग।

किताब—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १ पुस्तक। ग्रंथ। २ रजिस्टर। बही।

मुहा०—किताबी कीड़ा = (१) वह कीड़ा जो पुस्तकों को चाट जाता है। (२) वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो। किताबी चेहरा = वह चेहरा जिसकी आकृति लंबाई लिए हो।

किताबी—वि० [अ० किताब] १. किताब के आकार का। २ किताब का। किताब संबधी।

कितिकⓟ†—वि० दे० "कितक", "कितना"।

कितेकⓟ†—वि० [सं० कियत + एक] १ कितना। २ असंख्य। बहुत।

कितैⓟ†—अव्य० दे० "कित"।

कितोⓟ†—वि० [स्त्री० किती] दे० "कितना"।

क्रि० वि० कितना।

कित्तिⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० कीर्ति] यश।

कित्तिम§—वि० दे० "कृत्रिम" उ०—लज्ज कित्तिम कपट तारुन्न।

किधर—क्रि० वि० [सं० कुत्र] किस ओर। किस तरफ।

किधौंⓟ—अव्य [सं० किम् + नु] १ अथवा। या। २ या तो। ३ न जाने।

किन—सर्व० [?] "किस" का बहुवचन।

ⓟसर्व० [सं० केन] किसने।

क्रि० वि० [सं० किम् + नु] १ क्यों न। चाहे। २ क्यों नहीं।

संज्ञा पुं० [सं० किण] चिह्न। दाग।

किनका—संज्ञा पुं० [सं० कणिका] [स्त्री० अल्पा० किनकी] १ अन्न का टूटा हुआ दाना। २ चावल आदि की खुद्दी।

किनवानी—संज्ञा स्त्री० [सं० कण + हिं० पानी] छोटी छोटी बूँदों की झड़ी। फूही।

किनहा†—वि० [सं० कर्णक] (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कन्ना।

किनारⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "किनारा"।

किनारदार—वि० [फा० किनारा + दार] (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।

किनारा—संज्ञा पुं० [फा०] १ अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती हो। लंबाई के बल की कोर। २ नदी या जलाशय का तट। तीर।

मुहा०—किनारे लगना = (किसी कार्य का) समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना।

३ लंबाई चौड़ाईवाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग जहाँ से उसके विस्तार का अंत होता हो। प्रांत। भाग। ४ [स्त्री० किनारी] कपड़े आदि में किनारे पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है। हाशिया। गोट। ५ किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो, जैसे—तागे का किनारा। छोर। ६ पार्श्व। बगल।

मुहा०—किनारा खींचना = दूर होना। हटना। किनारे न जाना = अलग रहना। बचना। किनारे बैठना, रहना या होना = अलग होना। छोड़कर दूर हटना।

किनारी—संज्ञा स्त्री० [फा० किनारा] सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।

किनारे—क्रि० वि० [हिं० किनारा] १ कोर या बाढ़ पर। २ तट पर। ३. अलग।

किन्नर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किन्नरी] १ एक प्रकार के देवयोनि में माने जानेवाले प्राणी जिनका मुख घोड़े के समान होता है। २ गानेबजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।

किन्नरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किन्नर की स्त्री। २ किन्नर जाति की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी वीणा] १. एक प्रकार का तंबूरा। २ किंगरी। सारंगी।

किफायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ काफी या अलम् होने का भाव। २ कमखर्चा। थोड़े में काम चलाना। ३ बचत।

किफायती—वि० [अ०] किफायत+हिं० ई (प्रत्य०)] कम खर्च करनेवाला। सँभालकर खर्च करनेवाला।

किबला—संज्ञा पुं० [अ०] १ पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २ मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता। बाप।

किबलानुमा—संज्ञा पुं० [फा०] पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक प्राचीन यंत्र जिसका व्यवहार जहाजों पर अरब के मल्लाह करते थे।

किम्—वि०, सर्व० [सं०] १ क्या ? २ कौन सा ?

यौ०—किमपि=कोई भी। कुछ भी।

किमरिक—संज्ञा पुं० [अँ० कैम्ब्रिक] एक प्रकार का बारीक चिकना और सफेद कपड़ा।

किमाकार—वि० दे० "किंभूत"।

किमाछ—संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।

किमाम—संज्ञा पुं० [अ० किवाम] शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत। खमीर, जैसे—सुरती का किमाम।

किमाश—संज्ञा पुं० [अ०] तर्ज। ढंग। वजा। २ गंजीफे का एक रंग। ताज।

किमिⓅ—क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे ? किस प्रकार ? किस तरह ? उ०—मिलिहि किमि मोर। तक्रत ससि चोर। थकित सो विसेषि। बदन छवि देखि।—छंदार्णव।

किम्मत‡—संज्ञा स्त्री० [अ० हिकमत ?] कौशल। उपाय। तरकीब।

कियत्—वि० [सं०] कितना।

कियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० केदार] १ खेतों या बगीचों में थोड़े थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें पौधे लगाए जाते हैं। क्यारी। २ खेतों के वे विभाग जो सिंचाई के लिये नालियों द्वारा बनाए जाते हैं। ३ वह बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का खारा पानी नमक नीचे बैठाने के लिये भरते हैं। ४ थाला। ५ शिव के लिंगों में से एक।

कियाह—संज्ञा पुं० [सं०] लाल घोड़ा।

किरंटा—संज्ञा पुं० [अँ० क्रिश्चियन ?] छोटे दरजे का क्रिस्तान। किरानी (तुच्छ)।

किरका—संज्ञा पुं० [सं० कर्कट=ककड़ी] छोटा टुकड़ा। कंकड़। किरकिरी।

किरकिटी—संज्ञा स्त्री० दे० "किरकिरी"।

किरकिरा—वि० [सं० कर्कट] कँकरीला। ककड़दार। जिसमें महीन और कड़े रवे हों।

मुहा०—किरकिरा हो जाना=रंग में भंग हो जाना। आनंद में विघ्न पड़ना।

किरकिराना—क्रि० अ० [हिं० किरकिरा] १ किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना। २ दे० "किटकिटाना"।

किरकिराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० किरकिरा+आहट (प्रत्य०)] १ आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा। २ दाँत के नीचे कँकरीली वस्तु के पड़ने का शब्द। ३ किटकिटापन। कंकरीलापन।

किरकिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर] १ धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा देता है। २ अपमान। हेठी।

किरकिल—संज्ञा पुं० [सं० कृकलास] गिरगिट।

Ⓟ संज्ञा स्त्री० दे० "कृकल"।

किरच—संज्ञा स्त्री० [सं० कृति=कैंची (अस्त्र)] १ एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। २ छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे काँच आदि का)।

किरण—संज्ञा स्त्री० [सं०] किरन।

किरणमाली—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

किरन—संज्ञा स्त्री० [सं० किरण] १ ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई पड़ती हैं। रोशनी की लकीर।

मुहा०—किरन फूटना=सूर्योदय होना।

२ कलाबत्तू या बादले की बनी झालर।

किरपाⓅ‡—संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा"।

किरपानⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।

किरम—संज्ञा पुं० [सं० कृमि, फा० किर्म] १ दे० "किरिमदाना"। २ कीट। कीड़ा।

किरमालⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० करवाल] तलवार। खड्ग।

किरमिच—संज्ञा पुं० [अँ० कैनवस] एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बेग आदि बनते हैं।

किरमिज—संज्ञा पुं० [अ० किरमिज] [वि० किरमिजी] १ एक प्रकार का रंग। हिरमजी। दे० "किरिमदाना"। २ मटमैलापन लिए करौंदिया रंग का घोड़ा।

किरमिजी—वि० [अ० किरमिज] किरमिज के रंग का। मटमैलापन लिए हुए करौंदिया।

किरराना—क्रि० अ० [अनु०] १ क्रोध से दाँत पीसना। २ किर्र किर्र शब्द करना।

किरवानⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"। उ०—काम कुपित कामिनिन्ह पर धरत सान किरवान।—रससाराश।

किरवारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "करवाल"।

किरवाराⓅ—संज्ञा पुं० [सं० कृतमाल] अमलतास।

किरोंची—संज्ञा स्त्री० [अँ० कैरेज] १ वह बैलगाड़ी जिसपर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है। २ मालगाड़ी का डब्बा।

किरात—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] १. एक प्राचीन जंगली जाति। २ हिमालय के पूर्वीय भाग तथा उसके आसपास के देश का प्राचीन नाम।

संज्ञा स्त्री० [अ० कीरात] जवाहरात की एक तौल जो लगभग ४ जौ के बराबर होती है।

किराना—संज्ञा पुं० [सं० क्रयाणक] नमक, मसाला, हलदी आदि चीजें जो पसारियों के यहाँ मिलती हैं।

किरानी—संज्ञा पुं० [अँ० क्रिश्चियन] १ वह जिसके माता पिता में से कोई एक यूरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो। किरंटा। युरेशियन। २ अँगरेजी दफ्तर में लिखने पढ़ने का काम करनेवाला। मुंशी। क्लर्क।

किराया—संज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो दूसरे की कोई वस्तु कुछ काल तक काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाय। भाड़ा। महसूल।

किरायेदार—संज्ञा पुं० [फा० किरायादार] किसी की कोई वस्तु (विशेषत मकान) भाड़े पर लेनेवाला। कुछ धन देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।

किरावल—संज्ञा पुं० [तु० करावल] १ वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के

लिये आगे जाय। २ बंदूक से शिकार करनेवाला आदमी।

किरासन—संज्ञा पुं० [अं० केरोसिन] तेल। मिट्टी का तेल।

किरिच—संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।

किरिम—संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

किरिमदाना—संज्ञा पुं० [फ़ा० किर्म+दाना] किरमिज नामक कीड़ा जो लाख की तरह थूहर के पेड़ में लगता है और सुखाकर रँगने के काम में आता है।

किरिया(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रिया] १ शपथ। सौगंध। कसम। २ कर्तव्य। काम। ३ मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म। मृतकर्म।

यौ०—किरिया करम=क्रियाकर्म। मृतकर्म।

किरीट—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे में बाँधा जाता था। २ आठ भगण का एक वर्णवृत्त या सवैया, जैसे—भाव सुधातल पाप महा तव धाइ धरा गइ देवसभा जहँ। आरतनाद पुकार करी सुनि वाणि भई नभ धीर धरी तहँ॥

किरीटी—संज्ञा पुं० [सं० किरीटिन्] १ वह जो किरीट पहने। २ इंद्र। ३ अर्जुन। ४ राजा।

किरोलना—क्रि० स० [सं० कर्त्तन ?] करोदना।

किर्च(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।

किर्मिज—संज्ञा पुं० [सं० कृमिज] १ एक प्रकार का रंग। किरमिजी। दे० "किरिमदाना"। २ किरमिजी रंग का घोड़ा।

किल—अव्य० [सं०] निश्चय। सचमुच। उ०—किल कंचन सी वह अंग कहाँ कहँ रंग कदंबनि के तुम कारो। —शृंगार०।

किलक—संज्ञा स्त्री० [सं० किलकिला] १ किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया। २ हर्षध्वनि। किलकार।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा० किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलकना—क्रि० अ० [हिं० √किलकिल] किलकार मारना। हर्षध्वनि करना।

किलकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलक] हर्षध्वनि।

किलकारना—क्रि० अ० [हिं० किलकार] १ हर्षध्वनि करना। २ चिल्लाना।

किलकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकार] १ हर्षध्वनि। २ चीख।

किलकिंचित—संज्ञा पुं० [सं०] (साहित्य-दर्पण के अनुसार) नायिका का हर्षातिरेक में नायक के समक्ष झूठी हँसी, रोदन, भय, रोष और श्रांति आदि का मिलाजुला प्रदर्शन।

किलकिल—संज्ञा स्त्री० दे० "किचकिच"।

किलकिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्षध्वनि। आनंदसूचक शब्द। किलकारी।

संज्ञा पुं० [सं० कृकल] मछली खाने-वाली एक छोटी पानी की चिड़िया।

संज्ञा पुं० [अनु०] समुद्र का वह भाग जहाँ की लहरें भयंकर शब्द करती हों।

किलकिलाना—क्रि० अ० [हिं० किलकिला] १ आनंदसूचक शब्द करना। हर्षध्वनि करना। २ चिल्लाना। हल्लागुल्ला करना। ३ वादविवाद करना। झगड़ा करना।

किलकिलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकिला +आहट (प्रत्य०) किलकिलाने का शब्द या भाव।

किलना—क्रि० अ० [हिं० कील] १ कीलन होना। कीला जाना। २ वश में किया जाना। ३. गति का अवरोध होना।

किलनी—संज्ञा स्त्री० [सं० किण=कीड़ा ?] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा। किल्ली।

किलबिलाना—क्रि० अ० दे० "कुल-बुलाना"।

किललाना(पु)—यौ० [हिं० किलकिलाना] चिल्लाना।

किलवाँक—संज्ञा पुं० [देश०] काबुल देश का एक प्रकार का घोड़ा।

किलवाना—क्रि० स० [हिं० किलना का प्रे० रूप] १ कील लगवाना या जड़वाना। २ तंत्र या मंत्र द्वारा किसी भूत-प्रेत के विघ्नकारी कृत्य को रोकवा देना। जादू या टोना करा देना।

किलवारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ण ?] १ पतवार। कन्ना। २ छोटा डाँड़ा।

किलविष—संज्ञा पुं० दे० "किल्विष"।

किलहँटा—संज्ञा पुं० [देश०] सिरोही पक्षी।

किला—संज्ञा पुं० [अ०] लड़ाई के समय बचाव का एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़।

यौ०—किलेदार=(१) दुर्गपति। गढ़-पति। (२) दुर्गपाल। गढ़रक्षक।

मुहा०—किला फतह करना=कोई कठिन काम कर लेना। किला बाँधना=शतरंज में बादशाह को मात से बचाने के लिये किसी घर में सुरक्षित करना।

किलात—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों के एक पुरोहित का नाम।

किलाना—क्रि० स० दे० "किलवाना"।

किलाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ दुर्ग-निर्माण। २ व्यूह-रचना। ३ रक्षा का जबरदस्त इंतजाम।

किलावा—संज्ञा पुं० [फ़ा० कलाव] हाथी के गले में पड़ा रस्सा जिसमें पैर फँसाकर महावत उसे चलाता है।

किलिक—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० किल्क] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलिकिलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकिल] दे० "किचकिच"। उ०—लहुरी धीइ सबै कुल खोयी तब ढिग बैठन पाई। कहै कबीर भाग बपरी को किलिकिलि सबै चुकाई॥ —कबीर०।

किलेदार—संज्ञा पुं० [अ० किला+फ़ा० दार] [भाव० किलेदारी] १ किले का प्रधान अधिकारी। २ दुर्गपति। गढ़पति।

किलेबंदी—संज्ञा स्त्री० दे० "किलाबंदी"।

किलोल†—संज्ञा पुं० दे० "कलोल"।

किल्लत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। २ संकोच। तंगी।

किल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० कील] बहुत बड़ी कील या मेख। खूँटा।

किल्ली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कील] १ कील। खूँटी। मेख। २ सिटकिनी। बिल्ली। ३ किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।

मुहा०—किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना=किसी की चाल किसी के हाथ में होना। किल्ली घुमाना या ऐंठना =दाँव चलाना। युक्ति लगाना।

किल्विष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। अप-राध। दोष। २ रोग। ३ अन्याय। ४ हानि। नुकसान। चोट।

किवाँच—संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।

किवाड़—संज्ञा पुं० [सं० कपाट] [स्त्री० किवाड़ी] लकड़ी का पल्ला जो द्वार बंद करने के लिये चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।

किशमिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।

किशमिशी—वि० [फ़ा०] १. जिसमें किश-मिश हो। २. किशमिश के रंग का।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का अमौआ रंग।
किशलय—संज्ञा पुं० [सं०] नया निकला हुआ पत्ता। कोमल पत्ता। कल्ला।
किशोर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किशोरी] १ ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २ पुत्र। बेटा।
किश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना। शह।
किश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० कश्ती] १. नाव। २ एक प्रकार की छिछली थाली या तश्तरी। ३ शतरंज का एक मोहरा। हाथी।
किश्तीनुमा—वि० [फा०] नाव के आकार का। जिसके दोनों किनारे धन्वाकार होकर दोनों छोरों पर कोना डालते हुए मिलें।
किष्किंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण भारत के मैसूर राज्य में एक पर्वत जिसकी एक गुफा में वाली रहता था। २ मैसूर राज्य के उत्तरी भाग में पंपा नदी के उद्गम के आसपास का भाग।
किष्किंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किष्किंध पर्वत की एक गुफा जिसमें वाली रहता था। २ किष्किंध प्रदेश की राजधानी जहाँ वाली रहता था।
किस—सर्व० [सं० कस्य, प्रा० कस्स] "कौन" और "क्या" का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
किसनई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "किसानी"।
किसव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कसब"।
किसवत—संज्ञा स्त्री० [अ० किस्वत] वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।
किसमत—संज्ञा स्त्री० दे० "किस्मत"।
किसमी(पु)—संज्ञा पुं० [अ० कस्ब] श्रमजीवी। कुली। मजदूर।
किसलय—संज्ञा पुं० दे० "किशलय"।
किसान—संज्ञा पुं० [सं० कृषाण मि० फा० किर्सान] कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।
किसानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० किसान] खेती। कृषिकर्म। किसान का काम।
किसी—सर्व० [हिं० किस+ही] "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है, जैसे—किसी ने।
किसू(पु)—सर्व० दे० "किसी"।
किसोर—संज्ञा पुं० दे० किशोर।
किस्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कई बार करके ऋण या देय (देना) चुकाने का ढंग। २. किसी ऋण या देने का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय।
किस्तबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।
किस्तवार—क्रि० वि० [फा०] १ किश्त के ढंग से। किस्त करके। २ हर किस्त पर।
किस्म—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रकार। भेद। भाँति। तरह। २ ढंग। तर्ज। चाल।
किस्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। करम। तकदीर।
मुहा०—किस्मत आजमाना=किस्मत के भरोसे पर कोई कार्य करना। किस्मत चमकना या जागना=भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। किस्मत फूटना=भाग्य बहुत मंद हो जाना। किस्मत लड़ना=(१) भाग्य की परीक्षा होना। (२) भाग्य खुलना। प्रारब्ध अच्छा होना।
२ किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें पहले कई जिले रहते थे। कमिश्नरी।
किस्मतवर—वि० [फा०] भाग्यवान्।
किस्सा—संज्ञा पुं० [अ०] १ कहानी। कथा। आख्यान। २ वृत्तांत। समाचार। हाल। ३ कांड। झगड़ा। तकरार।
किस्साख्वाँ—संज्ञा पुं० [अ० किस्सा+फा० ख्वाँ] [भाव० किस्साख्वानी] वह जो किस्से कहानियाँ सुनाने का काम करता हो।
किस्सागो—संज्ञा पुं० [भाव० किस्सागोई] दे० "किस्साख्वाँ"।
किहिँ(पु)—सर्व० [हिं० कौन] किसका।
कींगरी—संज्ञा स्त्री० दे० "किंगरी"। उ०—जगत गुरु अनहद कींगरी बाजै, तहाँ दीरघ नाद ल्यौ लागै। —कबीर०।
की—प्रत्य० [हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप] दे० "का"।
क्रि० स० [सं० कृत, प्रा० किअ] हिं० "करना" के भूतकालिक रूप "किया" का स्त्री०।
कीक—संज्ञा पुं० [अनु०] चीत्कार। चीख।
कीकट—संज्ञा पुं० [सं०] १ मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। २ घोड़ा। ३ [स्त्री० कीकटी] प्राचीन काल की एक अनार्य जाति जो कीकट देश में बसती थी।
कीकना—क्रि० अ० [अनु०] कीकी करके चिल्लाना। चीत्कार करना।
कीकर—संज्ञा पुं० [सं० किंकराल ?] बबूल का पेड़।
कीका—संज्ञा पुं० [सं० कीकट] घोड़ा।
कीकान—संज्ञा पुं० [सं० केकाण] १ भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर का एक देश जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। २ इस देश का घोड़ा। ३. घोड़ा।
कीच—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] कीचड़। कर्दम।
कीचक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस जिसके छेद में घुसकर वायु सीटी के समान शब्द करती है। २ राजा विराट का साला और सेनानायक जिसे अज्ञातवास करते समय भीम ने मार डाला था।
कीचड़—संज्ञा पुं० [हिं० कीच+ड़ (प्रत्य०)] १. पानी मिली हुई धूल या मिट्टी। कर्दम। पंक। २. आँख का सफेद मल।
कीट—संज्ञा पुं० [सं०] रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु। कीड़ा। मकोड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० किट्ट] जमी हुई मैल। मल।
कीटभृंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब कई वस्तुएँ बिलकुल एकरूप हो जाती हैं। उ०—भइ गति कीट भृंग की नाईं। जहँ तहँ मैं देखें रघुराई।—मानस।
कीड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कीटक] १ छोटा उड़ने या रेंगनेवाला जंतु। मकोड़ा। २ कृमि। सूक्ष्म कीट।
मुहा०—कीड़े काटना = चंचलता होना। जी उकताना। कीड़े पड़ना=(१) (वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना। (२) दोष होना। ऐब होना।
३ साँप। ४ जूँ, खटमल आदि।
कीड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कीड़ा] १ छोटा कीड़ा। २ चींटी। पिपीलिका।
कीदहुँ(पु)—अव्य दे० "किधौं"।
कीनखाब—संज्ञा पुं० दे० "कमखाब"।
कीनना†—क्रि० स० [सं० क्रीणन] खरीदना। मोल लेना। क्रय करना।
कीना—संज्ञा पुं० [फा० कीन.] द्वेष। बैर।
कीप—संज्ञा स्त्री० [अ० कीफ़] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें ढालते समय बाहर न गिरे। छुच्छी।
कीमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दाम। मूल्य।
कीमती—वि० [अ०] अधिक दामों का। बहुमूल्य।
कीमा—संज्ञा पुं० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

कीमिया—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रासायनिक क्रिया। रसायन।
यौ०—कीमियागर।

कीमियागर—संज्ञा पुं० [फा०] रसायन बनानेवाला। रासायनिक परिवर्तन में प्रवीण।

कीमुख्त—संज्ञा पुं० [अ०] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक। सुग्गा। तोता। २. कश्मीर देश। ३ कश्मीर देशवासी।

कीरतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्ति"।

कीर्ण—वि० [सं०] १ बिखरा हुआ। २ फैला हुआ। व्याप्त। ३ छाया हुआ। आच्छन्न।

कीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। यशवर्णन। गुणकथन। २ भगवान् के अवतार संबंधी भजन और कथा आदि।

कीर्तनिया—संज्ञा पुं० [सं० कीर्तन+हिं० इया (प्रत्य०)] कीर्तन करने या सुननेवाला।

कीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुण्य। २ ख्याति। बड़ाई। नामवरी। नेकनामी। यश। ३ सीता की सखी का नाम। ४ आर्या छंद के भेदों में से वह जिसमें १४ गुरु और २९ लघुवर्ण होते हैं। ५ दशाक्षरी (तीन सगण और अंत्य गुरु) वृत्तों में से एक; जैसे—ससि सों गुनिए मुख राधा। सखि साँचहिं आवत बाधा। ६ एकादशाक्षरी वृत्तों में से एक वृत्त। ७ प्रसाद। ८ प्रजापति दक्ष की कन्या और धर्म की पत्नी। ९. दीप्ति। १० संगीत में एक ताल। ११ मातृका विशेष।

कीर्तिमान्—वि० [सं०] यशस्वी। नेकनाम। मशहूर। विख्यात।

कीर्तिस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्तंभ जो किसी की कीर्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय। २ वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्ति स्थायी हो।

कील—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे या काठ की मेख। काँटा। परेग। खूँटी। २ वह मृतगर्भ जो योनि में अटक जाता है। ३ नाक में पहनने का छोटा आभूषण। लौंग। ४ मुहाँसे की माँसकील। ५. जाँते के बीचोंबीच की खूँटी। ६ वह खूँटी जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है। ७ आग की लपट। अग्निशिखा।

कीलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ खूँटी। कील। २. तंत्र के अनुसार एक देवता। ३. वह मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय। ४ किसी मंत्र का मध्य भाग। ५ एक स्तव जो सप्तशती पाठ करने में किया जाता है।

कीलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंधन। रोक। रुकावट। २ मंत्र को कीलने का काम।

कीलना—क्रि० स० [सं० कीलन] १ मेख जड़ना। कील लगाना। २ कील ठोककर मुँह बंद करना (तोप आदि का)। ३ किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। ४ साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। ५. अधीन करना। वश में करना।

कीला—संज्ञा पुं० [सं० कील] बड़ी कील।
संज्ञा स्त्री० [सं० क्रीड़ा] क्रीड़ा। उ०—सुभ्र सोभा सबै अंग में सुंदरी सर्वदा संग में लीन है, राग और रंग में नृत्य कीला करै तो कहा।—छंदार्णव।

कीलाक्षर—संज्ञा पुं० [सं० कील+अक्षर] बाबुल की एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील से लिखे जाते थे। इस लिपि के ईसा से कई सौ वर्ष पूर्व के कई लेख पाए गए हैं।

कीलाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अमृत के समान एक दिव्य पेय। २ एक प्रकार का मधुर पेय। ३ जल। ४ रक्त। ५ मधु। ६ पशु।

कीलित—वि० [सं०] १. जिसमें कील जड़ी हो। २. मंत्र से स्तंभित। कीला हुआ। ३. बँधा हुआ। जड़ा हुआ।

कीली—संज्ञा स्त्री० [सं० कील] १ किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिसपर वह घूमता है। २ दे० "कील" और "किल्ली"।

कीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंदर। वानर।
यौ०—कीशध्वज=अर्जुन।
२ चिड़िया। ३ सूर्य।

कीसा—संज्ञा पुं० [फा० कीस] थैली। खीसा।

कुँअर—संज्ञा पुं० [सं० कुमार, प्रा० कुमर] [स्त्री० कुँअरि] १ लड़का। पुत्र। बालक। २ राजपुत्र। राजकुमार।

कुँअर-विलास—संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर+सं० विलास] एक प्रकार का धान या चावल।

कुँअरेटाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर+एटा] [स्त्री० कुँअरेटी] लड़का। बालक।

कुँआँ—संज्ञा पुं० दे० "कूआँ"।

कुँआरा—वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँआरी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।

कुँई—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कुंकुम—संज्ञा पुं० [सं०] १ केसर। जाफरान। २ रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं। ३ कुकुमा।

कुंकुमा—संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] भिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं।

कुंचन—संज्ञा पुं० [सं०] सिकुड़ने या बटुरने की क्रिया। सिमटना।

कुंचित—वि० [सं०] १ घूमा हुआ। टेढ़ा। २. घूँघरवाले। छल्लेदार (बाल)।

कुंची—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंजी"।

कुंज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जो वृक्ष, लता आदि से मंडप की तरह ढका हो। लताओं, वृक्षों और पेड़ पौधों से ढका हुआ स्थान। २. १५ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, जगण, रगण, सगण और रगण होते हैं, जैसे—तू जा रस-रूप-पुंज, कुंज जहाँ श्याम री। काहे श्रम मान ठानि, बैठ रही धाम री॥
संज्ञा पुं० [फा० कुंज=कोना] वे बूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाए जाते हैं।
संज्ञा पुं० [सं० क्रौंच, प्रा० कुंच] क्रौंच या करॉकुल नामक पक्षी। उ०—अंबर कुंजाँ कुरलियाँ गरजि भरे सब ताल। जिनि पै गोविंद बीछुटे, तिनके कौण हवाल॥—कबीर०।

कुंजकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० कंचुकिन्] ड्योढ़ी पर का वह चोबदार जो अंतःपुर में आता जाता हो। कंचुकी।

कुंजकुटीर—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंजगृह। लताओं से घिरा हुआ घर।

कुंजगली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंज+गली] १ बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ। २ पतली तंग गली।

कुँजड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुंज+हिं० ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] १ तरकारी बोने और बेचनेवाली जाति जो प्रायः मुसलमान होती है। २. झगड़ालू।

कुंजर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुंजरा, कुंजरी] १ हाथी।

मुहा०—कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो नरो = हाथी या मनुष्य। श्वेत या कृष्ण। अनिश्चित या दुविधा की बात।

२ बाल। केश। ३ अंजना के पिता और हनुमान् के नाना का नाम। ४ छप्पय के इक्कीसवें भेद का नाम। ५ पाँच-मात्राओं के छंदों के प्रस्तार में पहला प्रस्तार। ६. आठ की संख्या। ७ मलयाचल की एक चोटी का नाम।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम, जैसे—पुरुष-कुंजर।

कुंजरारि—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

कुंजल—संज्ञा पुं० दे० "कुंजर"।

कुंजविहारी—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

कुंजित—वि० [सं०] कुंजों से युक्त। लता-मंडपोंवाला।

कुंजी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचिका] १ चाभी। ताली।

मुहा०—(किसी की) कुंजी हाथ में होना = किसी का वश में होना।

२. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले। टीका।

कुंठ—वि० [सं०] १ जो चोखा या तीक्ष्ण न हो। गुठला। कुंद। २ मूर्ख।

कुंठित—वि० [सं०] १ जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो। कुंद। गुठला। २ मंद। बेकाम। निकम्मा।

कुंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन। कुंडा। २ प्राचीन काल का एक मान जिससे अनाज नापा जाता था। ३ छोटा तालाब। ४ पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र जिसमें आग जलाकर अग्नि-होत्रादि करते हैं। ५ बटलोई। ६ ऐसी स्त्री का जारज लड़का जिसका पति जीता हो। ७ पूला। गट्ठा। ८. लोहे का टोप। कूँड़। खोद। ९ हौदा।

कुँडरा—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] मटका।

कुंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने चाँदी आदि का बना हुआ कान का एक मंडलाकार आभूषण। बाली। मुरकी। २ एक गोल आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कनफटे साधु कानों में पहनते हैं। ३ कोई मंडलाकार आभूषण, जैसे—कड़ा, चूड़ा आदि। ४ रस्सी आदि का गोल फंदा। ५ लोहे का वह गोल मँडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है। मेखला। मेंडरी। ६ किसी लंबी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति। फेंटी। मंडल। ७ वह मंडल जो कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पड़ता है। ८. छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो। ९ बाईस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो दीर्घ मात्राएँ हों, जैसे—भानुराग कर्ण देखि, कुंडल पहिरायो। ताहि दै असीस भूमि, दीय मों लगायो॥

कुंडलाकार—वि० [सं०] वर्तुलाकार। गोल। मंडलाकार।

कुंडलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंडलाकार रेखा। २ कुंडलिया छंद।

कुंडलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र और हठयोग के अनुसार एक सर्पाकार वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है। २ जलेबी या इमरती नाम की मिठाई।

कुंडलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडलिका] एक मात्रिक छंद जो एक दोहे के बाद एक रोला छंद रखने से बनता है, जैसे—मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय। जा तन की झाईं परे, स्याम हरित दुति होय॥ स्याम हरित दुति होय, कटै भव कलुप कलेसा। मिटै चित्त को भरम, रहै नहिं कछुक अँदेसा। कह पठान सुलतान, काटु यम दुख की बेरी। राधा बाधा हरहु, हहा! विनती सुन मेरी॥

कुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जलेबी। २ कुंडलिनी। ३ गुडुचि। गिलोय। ४ जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं। ५ गेंडुरी। इँडुवा। ६ साँप के बैठने की मुद्रा।

संज्ञा पुं० [सं० कुंडलिन्] १ साँप। २ वरुण। ३. मोर। ४ विष्णु।

कुंडा—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] मिट्टी का चौड़े मुँह का एक बहुत बड़ा गहरा बरतन। बड़ा मटका। कठरा।

संज्ञा पुं० [सं० कुंडल] दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोंढा जिसमें साँकल फँसाई जाती और ताला लगाया जाता है।

कुंडिनपुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर जो विदर्भ देश में था।

कुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंड] पत्थर या मिट्टी का कटोरे के आकार का बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंडा] १ जंजीर की कड़ी। २ किवाड़ में लगी हुई साँकल।

कुंत—संज्ञा पुं० [सं०] १ गवेधुक। कौड़िल्ला। २ भाला। बरछी। ३ जूँ। ४ क्रूर भाव। चनक।

कुंतल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर के बाल। केश कलाप। २ प्याला। चुक्कड़। ३ जौ। ४ हल। ५. एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के बीच में था। ६. वेष बदलनेवाला पुरुष। बहुरूपिया। ७ संगीत में ध्रुवक का एक भेद। ८ एक प्रकार का सुगंध।

कुंता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती"।

कुंतिभोज—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जिसने कुंती या पृथा को गोद लिया था।

कुंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता। पृथा।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुंत] बरछी। भाला।

कुँथना—क्रि० अ० [हिं० कुँथना] पीटा जाना।

कुंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं। २. कनेर का पेड़। ३ कमल। ४ कुंदुर नाम का गोंद। ५ एक पर्वत का नाम। ६ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ७ नौ की संख्या। ८ विष्णु।

वि० [फा०] १ कुंठित। गुठला। २ स्तब्ध। मंद।

यौ०—कुंदज़ेहन = मंदबुद्धि।

कुंदन—संज्ञा पुं० [सं० कुंद] १ बहुत अच्छे और साफ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जड़ते हैं। २ बढ़िया या खालिस सोना।

वि० १ कुंदन के समान चोखा। खालिस। स्वच्छ। बढ़िया। २ नीरोग।

कुंदरू—संज्ञा पुं० [सं० कुंदुर = करेला] एक बेल जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी तरकारी होती है। बिंबा।

कुंदलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीस अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से ८ सगणों के बाद दो अंत्य लघु वर्ण होते हैं। इसे किशोर और सुखसवैया भी कहते हैं, जैसे—धरि मातु रजायसु सीस हरी नित यामुन कच्छ फिरै सह गोपन। यहि भाँति हरी जसुदा उपदेसहि मापत नेह लहैं सुख सों धन॥

कुंदा—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० स्कंध] १ लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है। लक्कड़। २ लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढते, कुंदीगर कपड़े पर कुंदी करते और किसान घास के टुकड़े करते हैं। निहठा। निष्ठा। ३. बंदूक का पिछला चौड़ा भाग। ४ वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। काठ। ५. दस्ता। मूठ। बेंट। ६ लकड़ी की बटी मुँगरी जिसमें कपड़ों की कुंदी की जाती है।

संज्ञा पुं० [सं० स्कंध, हिं० कंधा] १ चिड़िया का पर। डैना। २ कुश्ती का एक पेंच।

संज्ञा पुं० [सं० कुंड ?] भुना हुआ दूध। खोवा। मावा।

कुंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंदा] १ कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मोगरी से कूटने की क्रिया। २ खूब मारना। ठोकपीट।

कुंदीगर—संज्ञा पुं० [हिं० कुंदी+गर (प्रत्य०)] कुंदी करनेवाला।

कुंदुर—संज्ञा पुं० [सं० कुंदुरु] एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम में आता है।

कुँदेरना—क्रि० स० [सं०√क्षुद् ?] १ खुरचना। २ खरादना।

कुँदेरा—संज्ञा पुं० [हिं०√कुँदेर+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० कुँदेरी] खरादनेवाला। कुनेरा।

कुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी का घड़ा। घट। कलश। २ हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ३ ज्योतिष में दसवीं राशि। ४ दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान या तौल। ५ प्राणायाम के तीन लक्षणों में से एक। कुंभक। ६ एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है। ७. प्रह्लाद का पुत्र और निकुंभ का भाई। ८ एक प्रकार का सुगंधित गोंद। गुग्गुल एवं उसका वृक्ष। ९ सोना।

कुंभक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणायाम का एक लक्षण या अंग जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोक रखते हैं।

कुंभकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जो रावण का भाई था।

कुंभकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २ मुर्गा।

कुंभज, कुंभजात—संज्ञा पुं० [सं०] १ घड़े से उत्पन्न पुरुष। २ अगस्त्य मुनि।

कुंभसंभव—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

कुंभिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुंभी। जलकुंभी। २ वेश्या। ३. कायफल। ४ आँख की एक फुंसी। गुहांजनी। बिलनी। ५ परवल का पेड़। ६. शूक रोग।

कुँभिलानाⓟ—क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।

कुंभी—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी। २ मगर। ३ गुग्गुल। ४ एक जहरीला कीड़ा। ५ एक राक्षस जो बच्चों को क्लेश देता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा घड़ा। २ कायफल का पेड़। ३ दंती का पेड़। दाँती। ४ एक वनस्पति जो जलाशयों में होती है। जलकुंभी। ५ एक नरक का नाम। कुंभीपाक नरक। ६ खंभे के नीचे का चौकोर पत्थर। चौकी।

कुंभीधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई गृहस्थ या परिवार छः दिन, या किसी किसी के मत से साल भर, खा सके (स्मृति)।

कुंभीधान्यक—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतना अन्न रखनेवाला जितना कोई गृहस्थ छः दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके।

कुंभीनस—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० कुंभीनसी] १ एक बड़ा और जहरीला साँप। २ एक प्रकार का जहरीला कीड़ा। ३ रावण।

कुंभीपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक नरक जिसमें पापी अग्नि में जलाए जाते हैं। २ एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमें नाक से काला खून जाता है।

कुंभीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नक्र या नाक नामक जलजंतु (विशेषतः गंगा में रहनेवाला और बहुत बड़े मुँह का)। घड़ियाल। २ एक प्रकार का कीड़ा।

कुँवर—संज्ञा पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवरि] १ लड़का। पुत्र। बेटा। २ राजपुत्र। राजा का लड़का।

कुँवरेटा—संज्ञा पुं० [हिं० कुँवर+एटा (प्रत्य०)] बालक। छोटा लड़का। बच्चा।

कुँवारा—वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवारी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।

कुँहकुँहⓟ—संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] केसर।

उ०—भइ जेवनार, फिरा खँड़वानी। फिरा अरगजा कुँहकुँह पानी।—पदमावत।

कु—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा से पहले लगकर उसके अर्थ में छोटाई, न्यूनता, रुकावट, बुराई, तिरस्कार और दोष आदि अर्थ देता है, जैसे—कुकर्म। कुकवि। कुकार्य। कुकाव्य। कुख्याति। कुगति। कुचरित्र। कुचंदन। कुचेष्टा। कुतर्क। कुदृष्टि। कुदृश्य। कुबुद्धि। कुब्राह्मण। कुमार्ग। कुयोग। कुराज। कुशिष्य। कुस्थान। कुस्वामी।

संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी।

कुआँ—संज्ञा पुं० दे० "कूआँ"।

कुआर—संज्ञा पुं० [सं० कुमार, प्रा० कुँवार] [वि० कुआरी] १ हिंदी वर्ष का सातवाँ महीना। शरद् ऋतु का पहला महीना। आश्विन। २ अविवाहित (कुमार)।

कुइयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुआँ] छोटा कुआँ।

यौ०—कठकुइयाँ=वह छोटा छोटा कुआँ जो काठ से बँधा हो।

कुई—संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ"।

संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी।

कुकटी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी=सेमल] कपास की एक जाति जिसकी रूई ललाई लिए होती है।

कुकड़ना—क्रि० अ० [सं० कुञ्चन] सिकुड़ जाना। संकुचित हो जाना।

कुकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी] १ कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा जो कातकर तकले पर से उतारा जाता है। मुट्ठा। अंटी। २. दे० "खुखड़ी"।

कुकनू—संज्ञा पुं० [यू०] एक (कल्पित) पक्षी जो गाने में विलक्षण माना जाता है। कहा जाता है कि जब यह गाने लगता है तब आग निकल पड़ती है जिसमें यह भस्म हो जाता है।

कुकर—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का कटोरदान जिसमें दाल, चावल, तरकारी आदि एक साथ पकाई जा सकती है।

कुकरीⓟ†—[सं० कुक्कुटी] वनमुर्गी।

कुकरौंधा—संज्ञा पुं० [सं० कुक्कुरद्रु] पालक से मिलता जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है।

कुकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा या खोटा काम।

कुकर्मी—वि० [हिं० कुकर्म] बुरा काम करनेवाला। पापी।

कुकुभ—संज्ञा पुं० [सं०] ३० मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें दो अंत्य गुरु हों। जैसे—सोरह रत्न कला प्रति पादे। कुकुभा अतै दे कर्णा॥ पारवती तप कियो अपारा। खाय खाय सूखे पर्णा॥

कुकुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। २ अंधक नामक यदुवंशी राजा का पुत्र और उसकी संतति। ३ एक प्राचीन प्रदेश जिसमें कुकुर जाति के लोग रहते थे। ४ एक साँप का नाम। ५ कुत्ता।

कुकुरखाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुक्कुर+खाँसी] वह सूखी खाँसी जिसमें कफ न गिरे और खाँसते खाँसते उलटी हो जाय। सुरसुरी। ढुरढुरी। ढाँसी।

कुकुरदंत—संज्ञा पुं० [हिं० कुक्कुर+दंत] [वि० कुकुरदंता] वह दाँत जो किसी किसी को साधारण दाँतों के अतिरिक्त और उनसे कुछ नीचे आड़ा निकलता है तथा जिसके कारण ऊपर का होंठ कुछ उठ जाता है।

कुकुरमाछी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुक्कुर+माछी] एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं को काटती है।

कुकुरमुत्ता—संज्ञा पुं० [हिं० कुक्कुर+मूत] एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है। छत्रक।

कुकुही(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुभ] वनमुर्गी।

कुक्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुर्गा। २. चिनगारी। ३ लुक। ४ जटाधारी पौधा।

कुक्कुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुक्कुरी] १ कुत्ता। श्वान। २ यदुवंशियों की एक शाखा। कुकुर। ३ एक मुनि।

कुक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पेट। उदर।

कुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेट। २ कोख। ३ किसी चीज के बीच का भाग।

संज्ञा पुं० [सं०] १ एक दानव। २ राजा बलि। ३ एक प्राचीन देश।

कुखेत—संज्ञा पुं० [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्थान। खराब जगह। कुठाँव।

कुख्यात—वि० [सं०] निंदित। बदनाम।

कुख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गति। दुर्दशा।

कुगहनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+ग्रहण] अनुचित आग्रह। हठ। जिद।

कुगोल—संज्ञा पुं० [सं० कु+गोल] पृथ्वी। भूमंडल। उ०—मच्छ ह्वैके वेद काढ्यो कच्छ ह्वै रतन गाढ्यो, कोल ह्वै कुगोल रद राख्यो सविलास है।—शृंगार०।

कुग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह।

कुघा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि ?] दिशा। ओर। तरफ।

कुघात—संज्ञा पुं० [सं० कु+घात] १ कुअवसर। बेमौका। २ बुरा दाँव। छल कपट।

कुच—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। छाती।

कुचकुचाना—क्रि० स० [सं०√कुच्, प्रा० कच्चत=पीड़ित किया जाता हुआ] १ लगातार कोंचना। बार बार नुकीली चीज धँसाना या बाँधना। २ थोड़ा कुचलना।

कुचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरों को हानि पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न। षड्यंत्र।

कुचक्री—संज्ञा पुं० [सं० कुचक्रिन्] षड्यंत्र रचनेवाला। गुप्त प्रयत्न करके दूसरों को हानि पहुँचानेवाला।

कुचना(पु)—क्रि० अ० [सं० कुंचन] सिकुड़ना। सिमटना।

कुचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरे स्थानों में घूमनेवाला। आवारा। २ नीच कर्म करनेवाला। ३ वह जो पराई निंदा करता फिरे।

कुचरचा—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+चर्चा] बुरी अफवाह। बदनामी। उ०—भँवर डसै कटक लगै चलै कुचरचा गाँउँ। नँदनंदन के बाग में कहे सुमन कों जाँउँ।—रससाराश।

कुचलना—क्रि० सं० [सं०√कुच्, प्रा० कच्चत=पीड़ित किया जाता हुआ] १. किसी चीज पर सहसा ऐसी दाब पहुँचाना जिससे उसे हानि पहुँचे अथवा वह बहुत दब कर विकृत हो जाय। मसलना। २ पैरों से रौंदना।

मुहा०—सिर कुचलना = पराजित करना।

कुचला—संज्ञा पुं० [सं० कचीर] एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम में आते हैं।

कुचली—संज्ञा स्त्री० [सं०√कुच्] वे दाँत जो दाढ़ों और राजदंत के बीच में होते हैं। कीला। सीता दाँत।

कुचाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चाल] १ बुरा आचरण। खराब आचरण। खराब चालचलन। २ दुष्टता। पाजीपन। बदमाशी।

कुचाली—संज्ञा पुं० [हिं० कुचाल+ई(प्रत्य०)] १ कुमार्गी। बुरे आचरणवाला। २ दुष्ट।

कुचाह(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चाह] बुरी खबर। अशुभ बात।

कुचिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० कुचिका] छोटी टिकिया।

कुचील(पु)†—वि० [सं० कुचैल] मैले वस्त्रवाला। मैला कुचैला। मलिन।

कुचीला(पु)—वि० दे० "कुचैला"।

कुचेष्ट—वि० [सं०] बुरी चेष्टावाला।

कुचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कुचेष्ट] १ बुरी चेष्टा। हानि पहुँचाने का यत्न। बुरी चाल। २ चेहरे का बुरा भाव।

कुचैन(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चैन] कष्ट। दुःख। व्याकुलता।

वि० बेचैन। व्याकुल।

कुचैला—वि० [सं० कुचैल] [स्त्री० कुचैली] १ जिसका कपड़ा मैला हो। मैले कपड़ेवाला। २ मैला। गंदा।

कुच्छित(पु)—वि० दे० "कुत्सित"।

कुछ—वि० [सं० किंचित्, प्रा० किंचि] थोड़ी संख्या या मात्रा का। जरा सा। थोड़ा सा।

मुहा०—कुछ एक=थोड़ा सा। कुछ कुछ=थोड़ा। कुछ ऐसा=विलक्षण। असाधारण। कुछ न कुछ=थोड़ा बहुत। कम या ज्यादा।

सर्व० [सं० कश्चित्] १ कोई (वस्तु)। कुछ का कुछ=और का और। उलटा। कुछ कहना=कड़ी बात कहना। बिगड़ना। कुछ कर देना=जादू टोना कर देना। मंत्रप्रयोग कर देना। (किसी को) कुछ हो जाना=कोई रोग या भूतप्रेत की बाधा हो जाना। कुछ हो=चाहे जो हो।

२ बड़ी या अच्छी बात। ३ सार वस्तु। काम की वस्तु। ४. गण्यमान्य मनुष्य।

मुहा०—कुछ लगाना=(अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना। कुछ हो जाना=किसी योग्य हो जाना। गण्यमान्य हो जाना।

कुजंत्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कुयंत्र] बुरा यंत्र। अभिचार। टोटका। टोना।

कुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल ग्रह। २ वृक्ष। पेड़। ३ नरकासुर जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता था।

कुजन—संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट। बुरा आदमी।

कुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० कु=पृथ्वी+जा=जायमान] १. जानकी। २ कात्यायिनी।

कुजात—संज्ञा पुं०—स्त्री० दे० "कुजाति"।

कुजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी जाति। नीच जाति।

संज्ञा पुं० १ बुरी जाति का आदमी। नीच पुरुष। २ पतित या अधम पुरुष।

कुजोग|(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कुयोग] १. कुसंग। कुमेल। बुरा मेल। २ बुरा अवसर।

कुजोगी(पु)—वि० [सं० कुयोगिन्] १ असंयमी। २ बनावटी योगी या साधु।

कुटंत|—संज्ञा स्त्री० [सं० कुट्टन] १. कूटने का भाव। कुटाई। मार।

कुट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुटी] १ घर। गृह। २. कोट। गढ़। ३ कलश।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] एक बड़ी मोटी झाड़ी जिसकी जड़ सुगंधित होती है।

संज्ञा पुं० [सं० √कुट्ट्=कूटना] १. कूटा हुआ टुकड़ा। छोटा टुकड़ा। जैसे, तिलकुट। २ एक प्रकार का चावल।

कुटका—संज्ञा पुं० [सं० कुट्टक] [स्त्री० अल्पा० कुटकी] छोटा टुकड़ा।

कुटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० कटुका] १ एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ की गोल गाँठें दवा के काम में आती हैं। २ एक जड़ी।

|संज्ञा स्त्री० [सं० कुटका] कँगनी। चेना।

|संज्ञा स्त्री० [सं० कीटक ?] एक उड़नेवाला छोटा कीड़ा जो कुत्ते, बिल्ली आदि के रोयों में घुसा रहता है।

कुटज—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुरैया। कर्ची। कुड़ा। २ अगस्त्य मुनि।

कुटनपन—संज्ञा पुं० [सं० कुट्टनी+हिं० पन (प्रत्य०)] १ कुटनी का काम। २ दूतीकर्म। ३ झगड़ा लगाने का काम। ४ स्त्रियों को बहकाने या भगाने का काम।

कुटनपेशा—संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।

कुटनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना+हारी (प्रत्य०)] धान कूटनेवाली स्त्री।

कुटना—संज्ञा पुं० [हिं० कुटनी] १ स्त्रियों को बहकाकर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाला। दूत। दाल। २ दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला। चुगलखोर।

संज्ञा पुं० [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कुटाई की जाय।

क्रि० अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना।

कुटनाना—क्रि० स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना।

कुटनापा—संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।

कुटनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुट्टनी] १ स्त्रियों को बहकाकर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाली स्त्री। दूती। २ दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली।

कुटवाना—क्रि० स० [हिं० कूटना का प्रे० रूप] कूटने की क्रिया दूसरे से कराना।

कुटवारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कोटपाल, प्रा० कुट्टवाल] कोतवाल का कार्य। नगर-रक्षा या चौकसी। उ०—कैसैं नगरि करौं कुटवारी, चंचल पुरिष बिचषन नारी।—कबीर०।

कुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कूट + आई (प्रत्य०)] १ कूटने का काम। २. कूटने की मजदूरी।

कुटास—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कूट+आस (प्रत्य०)] मारपीट।

कुटिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटि] झोपड़ी।

कुटिल—वि० [सं०] [स्त्री० कुटिला] १ वक्र। टेढ़ा। २ कुंचित। घूमा या बल खाया हुआ। ३ छल्लेदार। घुँघराला। ४ दगाबाज। कपटी। छली।

संज्ञा पुं० [सं०] १ शठ। खल। २ वह जिसका रंग पीलापन लिए सफेद और आँखें लाल हों। ३ चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक सगण, एक भगण, एक नगण, एक यगण और दो अंत्य गुरु वर्ण रहते हैं, जैसे—तजि सारे कुटिलन कपटी को साथा। तिन पाई अति शुभ गति गावैं गाथा॥

कुटिलगति—संज्ञा पुं० [सं०] १३ वर्णों का वह वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, दो तगण और अंत्य गुरु होता है, जैसे—लखन जुत भजौ मातु सीता सती। बदन दुति लखे चंद्रिका लाजती॥ इसे उत्पलिनी, विद्युत और चंद्रिका भी कहते हैं।

कुटिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ापन। २ खोटापन। छल। कपट।

कुटिलपन—संज्ञा पुं० दे० "कुटिलता"।

कुटिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती नदी। २ एक प्राचीन लिपि।

कुटिलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"।

कुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घासफूस से बनाया हुआ छोटा घर। पर्णशाला। कुटिया। झोपड़ी। २ मुरा नामक गंधद्रव्य। ३ श्वेत कुटज।

कुटीचक—संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो शिखासूत्र का त्याग नहीं करता और अपने पुत्र का आश्रित होकर घर पर ही रहने में आनंद मानता है।

कुटीचर—संज्ञा पुं० दे० कुटीचक।

संज्ञा पुं० कपटी। छली।

कुटीर—संज्ञा पुं० दे० "कुटी"।

कुटुंब—संज्ञा पुं० [सं०] परिवार। कुनबा। खानदान।

कुटुंबी—संज्ञा पुं० [सं०] कुटुंबिन्] [स्त्री० कुटुंबिनी] परिवारवाला। कुनबेवाला। २ कुटुंब के लोग। संबंधी। नातेदार।

कुटुम(पु)|—संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब"।

कुटेक—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० टेक] अनुचित हठ। बुरी जिद।

कुटेव—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० टेव] खराब आदत। बुरी बान।

कुट्टनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी"।

कुट्टमित—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग के समय स्त्रियों की मिथ्या दुःखचेष्टा जो हावों में है। प्रिय का बनावटी तिरस्कार।

कुट्टा—संज्ञा पुं० [सं० √कुट्ट] १ पर कटा कबूतर। २ पैर बाँधकर जाल में छोड़ा हुआ पक्षी जिसे देखकर और पक्षी फँसते हैं।

कुट्टी—संज्ञा स्त्री० [सं० √कुट्ट] १ चारे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया। २ गँड़ासे से बारीक काटा हुआ चारा। ३ कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिससे कलमदान इत्यादि बनते हैं। ४ लड़कों का मैत्रीभंग-सूचक एक संकेत जो दाँतों पर नाखून बजाकर किया जाता है। मैत्री-भंग। ५ परकटा कबूतर।

कुठला—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठ, प्रा० कोट्ठ +ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कुठली] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाँउ—संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।

कुठाँव(पु)|—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० ठाँव] बुरी ठौर। बुरी जगह।

मुहा०—कुठाँव मारना=ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट या दुर्गति हो।

कुठाट—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ठाट] १ बुरा साज। बुरा सामान। २. बुरा प्रबंध। बुरा आयोजन। खराब काम करने की तैयारी।

कुठार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुठारी] १ कुल्हाड़ी। २ परशु। फरसा। ३ नाशक।

संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठागार] अन्न, धन आदि रखने का स्थान। भंडार।

कुठाराघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुल्हाड़ी का आघात। २ गहरी चोट।

संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठागार] अनाज आदि रखने का बड़ा बर्तन। कोठिला।

कुठारपानि—संज्ञा पुं० [सं० कुठार+पाणि] परशुराम। उ०—वीर-करि-केसरी कुठारपानि मानी हारि, तेरी कहा चली, बिड तो सो गनै घालि को।—कविता०।

कुठारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुल्हाड़ी। टाँगी। २ नाश करनेवाली।

संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठागारिक] वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता है।

कुठाली—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+स्थाली] मिट्टी की घरिया जिसमें सोना, चाँदी गलाते हैं।

कुठाहरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ठाहर] १ कुठौर। कुठाँव। बुरा स्थान। २ बेमौका। बुरा अवसर। उ०—चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधिवस कुमति बसी जिय तोरें। सो सबु मोर पाप परिनामू। भएउ कुठाहर जेहि बिधि बामू।—मानस।

कुठिया|—संज्ञा स्त्री० दे० "कुठला"।

कुठौर—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ठौर] १ कुठाँव। बुरी जगह। २ बेमौका।

कुड़—संज्ञा पुं० [सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ठ] कुट नाम की ओषधि।

कुड़कुड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] १. मन ही मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना। २. बड़-बड़ाना।

कुड़कुड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।

मुहा०—कुड़कुड़ी होना=किसी बात को जानने के लिये आकुलता होना।

कुड़बुड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

कुडमल—संज्ञा पुं० [सं० कुड्मल] कली।

कुड़ल—संज्ञा स्त्री० [सं० कु चन] शरीर में ऐंठन की पीड़ा जो रक्त की कमी या उसके ठंढे पड़ने से होती है। बायँटा।

कुड़व—संज्ञा पुं० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान जो चार अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा होता था, और जिसमें डेढ़ पाव से कुछ अधिक अन्न रखा जा सकता था।

कुड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुटज] इंद्रजौ का

कुड़क—संज्ञा स्त्री० [फा० कुरक] अंडा न देनेवाली मुर्गी।

कुडौल—वि० [सं० कु+हिं० डौल] बेढंगा। भद्दा। भोंडा।

कुढंग—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ढंग] बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।

वि० १ बुरे ढंग का। बेढंगा। भद्दा। बुरा। २ बुरी तरह का।

कुढंगा—वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० कुढंगी] १ बेशऊर। उजड्ड। २. बेढंगा। भद्दा।

कुढंगी—वि० [हिं० कुढंग] कुमार्गी। बुरे चालचलन का।

कुढ़न—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोधन] वह क्रोध या दुःख जो मन ही मन रहे। चिढ़।

कुढ़ना—क्रि० अ० [हिं० √कुढ़] १ भीतर ही भीतर क्रोध करना। मन ही मन खीझना या चिढ़ना। बुरा मानना। २ डाह करना। जलना। ३ भीतर ही भीतर दुःखी होना। मसोसना।

कुढब—वि० [सं० कु+हिं० ढब] १ बुरे ढंग का। बेढब। २ कठिन। दुस्तर।

कुढ़ाना—क्रि० स० [हिं० कुढ़ना का प्रे० रूप] १ क्रोध दिलाना। चिढ़ाना। खिझाना। २ दुःखी करना। कलपाना।

कुणप—संज्ञा पुं० [सं०] १ शव। लाश। २ इंगुदी। गोंदी। ३ राँगा। ४ बरछा।

कुणपाशी—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का प्रेत जो मुर्दा खाता है। २ मुर्दा खानेवाला जंतु।

कुतका—संज्ञा पुं० [हिं० गतका] १ गतका। २ मोटा डंडा। सोंटा। ३ भाँग घोटने का डंडा। भँग घोटना।

कुतना—क्रि० अ० [हिं० कूतना] कूतने का कार्य होना। कूता जाना।

कुतप—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन का आठवाँ मुहूर्त जो मध्याह्न समय में होता है। २ श्राद्ध में आवश्यक बातें, जैसे—मध्याह्न, गैंडे के चमड़े का पात्र, कुश, तिल आदि। ३ सूर्य। ४ अग्नि। ५ द्विज।

कुतरकी—संज्ञा पुं० दे० "कुतर्की"। उ०—हरिहर-पद-रति-मति न कुतरकी। तिन्ह-कहुं मधुर कथा रघुबर की।—मानस।

कुतरना—क्रि० [सं० कर्तन] १ दाँत से छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में काटना। २ बीच ही से कुछ अंश उड़ा लेना।

कुतर्क—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा तर्क। बेढंगी दलील। वितंडा। बकवाद।

कुतर्की—संज्ञा पुं० [सं० कुतर्किन्] व्यर्थ तर्क करनेवाला। बकवादी। वितंडावादी।

कुतवारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतवाल|—संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुताही—संज्ञा स्त्री० दे० "कोताही"।

कुतिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुत्ती] कुत्ते की मादा। कुकरी। कुत्ती।

कुतुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्सुकता। कुतूहल। २. आनंद।

कुतुब—संज्ञा पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

कुतुबनुमा—संज्ञा पुं० [अ०] वह यंत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है। दिग्दर्शक यंत्र।

कुतूहल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] १ किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २ वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो। कौतुक। ३ क्रीड़ा। खिलवाड़। ४ आश्चर्य। अचंभा।

कुतूहली—वि० [सं० कुतूहलिन्] १ जिसे वस्तुओं को देखने या जानने की अधिक उत्कंठा हो। २ कौतुकी। खिलवाड़ी।

कुत्ता—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कुत्ती] १ भेड़िए, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का एक पालतू या जंगली जानवर। श्वान। कूकुर।

यौ०—कुत्तेखसी=व्यर्थ और तुच्छ कार्य।

मुहा०—क्या कुत्ते ने काटा है?=क्या पागल हुए हैं? कुत्ते की मौत मरना=बहुत बुरी तरह से मरना। कुत्ते का दिमाग होना या कुत्ते का भेजा खाना=बहुत बक्की होना।

२ एक प्रकार की घास जिसकी बालें कपड़ों में लिपट जाती हैं। लपटौवाँ। ३ कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४ लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाजा नहीं खुल सकता। बिल्ली। ५ बंदूक का घोड़ा। ६ नीच या तुच्छ मनुष्य। क्षुद्र।

कुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुत्सित—वि० [सं०] १ नीच। अधम। २ निंदित। गर्हित। खराब।

कुदकना—क्रि० अ० दे० "कूदना"।

कुदक्का|—संज्ञा पुं० [हिं० √कूद] उछल-कूद।

कुदरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकृति। माया। ईश्वरी शक्ति। २ कारीगरी। रचना। ३. शक्ति। प्रभुत्व। इख्तियार।

कुदरती—वि० [अ०] १ प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ दैवी। ईश्वरीय।

कुदरा†—संज्ञा पुं० दे० "कुदाल"।

कुदर्शन—वि० [सं०] कुरूप। बदसूरत।

कुदलानाⓅ—क्रि० अ० [हिं० कूदना] कूदते हुए चलना। उछलना। कूदना।

कुदाँव—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० दाँव] १. बुरा दाँव। कुघात। २ विश्वासघात। दगा। धोखा। †३ औचट। बुरी स्थिति। संकट की स्थिति। ४. बुरा स्थान। विकट स्थान। ५. मर्मस्थान।

कुदाईⓅ—वि० [हिं० कुदाँव] बुरे ढंग से दाँवघात करनेवाला। छली। विश्वासघाती।

कुदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह दान जिसे लेना बुरा समझा जाता है, जैसे—शय्यादान, गजदान आदि। २ कुपात्र या अयोग्य व्यक्ति को दिया जानेवाला दान। ३. बिना श्रद्धा का दान।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कूदना] १ कूदने की क्रिया या भाव। २ बहुत पहुँचकर कहना। ३ उतनी दूरी जितनी एक बार कूदने में पार की जाय।

कुदाना—क्रि० स० [हिं० कूदने का प्रे० रूप] कूदने के लिये प्रेरित करना।

कुदामⓅ—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० दाम] खोटा सिक्का। खोटा रुपया।

कुदाय—संज्ञा पुं० दे० "कुदाँव"।

कुदाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार।

कुदास—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुदासी] दुष्ट या बुरा सेवक।

कुदिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ आपत्ति का समय। खराब दिन। २ एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय। ३ सावन का दिन। वह दिन जिसमें ऋतुविरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।

कुदिष्टि—संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।

कुदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी नजर। पापदृष्टि।

कुदेव—संज्ञा पुं० [सं० कु=भूमि+देव] भूदेव। भूसुर। ब्राह्मण।

संज्ञा पुं० [सं० कु=बुरा+देव] राक्षस।

कुद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] कोदो। (अन्न)।

संज्ञा पुं० [देश०] तलवार चलाने के ३२ हाथों या प्रकारों में से एक।

कुधर—संज्ञा पुं० [सं० कुध्र] १ पहाड़। पर्वत। २. शेषनाग।

कुधातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी धातु। २ लोहा। उ०—सठ सुधरहिं सत सगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई।—मानस।

कुनकुना—वि० [सं० कदुष्ण प्रा० कउण्ह] थोड़ा गरम। कुछ गरम। गुनगुना।

कुनना—क्रि० स० [सं० √क्ष्णु] १. बरतन आदि खरादना। २ खरोंचना।

कुनप—संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।

कुनबा—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब।

कुनबी—संज्ञा पुं० [हिं० कुनबा] १ हिंदुओं की एक जाति जो प्राय खेती करती है। २ गृहस्थ।

कुनवा—संज्ञा पुं० [हिं० कुनना] बरतन आदि खरादनेवाला मनुष्य। खरादी।

कुनह—संज्ञा स्त्री० [फा० कीन] [वि० कुनही] १ द्वेष। मनोमालिन्य। २ पुराना बैर।

कुनही—वि० [हिं० कुनह] द्वेष रखनेवाला।

कुनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √कुन+आई (प्रत्य०)] १ वह चूर या बुकनी जो किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलती है। बुरादा। भस्सी। २ खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कुनाम—संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी।

कुनितⓅ—वि० दे० "क्वणित"।

कुनियाँ—संज्ञा स्त्री० दे० "कोनियाँ"।

कुनैन—संज्ञा स्त्री० [अं० क्विनीन] सिनकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अँगरेजी चिकित्सा में शीतज्वर के लिये अत्यत उपकारी माना जाता है।

कुपथ—संज्ञा पुं० [सं० कुपथ] १ बुरा मार्ग। २ निषिद्ध आचरण। कुचाल। ३ बुरा मत। कुत्सित सिद्धांत या सप्रदाय।

कुपर्थी—वि० दे० "कुमार्गी"।

कुपढ़—वि० [सं० कु+हिं० √पढ़] १ अनपढ। २ ठीक से न पढ़ा हुआ।

कुपंथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा रास्ता। २ निषिद्ध आचरण। बुरी चाल।

यौ०—कुपथगामी=निषिद्ध आचरणवाला।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० कुपथ्य] वह भोजन या आचरण जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो।

कुपथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को खराब करे। बदपरहेजी।

कुपनाⓅ—क्रि० अ० दे० "कोपना"।

कुपाठ—संज्ञा पुं० [सं०] बुरी सलाह।

कुपात्र—वि० [सं०] १ अनधिकारी। अयोग्य। नालायक। २ वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो।

कुपारⓅ—संज्ञा पुं० [सं० अकूपार] समुद्र।

कुपित—वि० [सं०] १ क्रुद्ध। क्रोधित। २ अप्रसन्न। नाराज।

कुपुटना—क्रि० स० [सं० कु+√पुट्] चुटकी में फूल या साग आदि तोड़ना।

कुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो कुपथगामी हो। कपूत। दुष्ट पुत्र।

कुप्पा—संज्ञा पुं० [सं० कूपक] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।

मुहा०—कुप्पा होना या हो जाना=(१) फूल जाना। सूजना। (२) मोटा होना। हृष्टपुष्ट होना। (३) रूठना। मुँह फुलाना।

कुप्पी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुप्पा] छोटा कुप्पा।

कुप्रबंध—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा प्रबंध। बुरा इतजाम।

कुफुरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "कुफ्र"।

कुफेनⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं०] काबुल नदी का पुराना नाम।

कुफ्र—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।

कुबड—संज्ञा पुं० [सं० कोदंड] धनुष। उ०—कुबड कियो विखिड महा बरबड प्रचड भुजा बल तें।—हनुमन्नाटक।

Ⓟवि० [सं० कु+वठ=खज] खोंडा। विकृताग। उ०—हौं जीति सुरेश महेश को पूत गणेश को दंत उपार लियो। यम को वश कै पुनि वाहन को जिन तोरि विषाण कुबड कियो।—हनुमन्नाटक।

कुबजा—संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।

कुबड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुब्ज] [स्त्री० कुबड़ी] वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या झुक गई हो।

वि० १ झुका हुआ। टेढ़ा। २ जिसकी पीठ झुकी हो।

कुबड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १ दे० "कुबरी"। २. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो। टेढ़िया।

कुबत(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० बात] १ बुरी बात। २ निंदा। उ०—करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल। दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल। —बिहारी०। ३ बुरी चाल। उ०—कहति न देवर की कुबत कुल-तिय कलह डराति। पंजर-गत-मंजार-ढिग सुक ज्यौं सूकति जाति। —बिहारी०।

कुबरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ी] १ कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र पर अधिक प्रेम रखती थी। कुब्जा। २ वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो। टेढ़िया।

कुबाक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कुवाक्य"।

कुबानि—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० बानी] बुरी आदत। बुरी लत। कुटेव।

कुबानी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कुवाणिज्य] बुरा व्यापार।

कुबुद्धि—वि० [सं०] दुर्बुद्धिवाला। मूर्ख। संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूर्खता। बेवकूफी। २ बुरी सलाह। कुमंत्रणा।

कुबेणी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुवेणी] बंसी। मछली पकड़ने की अकुसी। उ०—लखि रसमय चख-मख लगे, कढ़त बढ़त अति पीर। भई सुबेनी रावरी, नई कुबेनी बीर। —रससाराश।

कुबेर—संज्ञा पुं० दे० "कुवेर"।

कुबेला—संज्ञा स्त्री० [सं० कुवेला] १ बुरा समय। २ अनुपयुक्त काल।

कुबोलना—वि० [सं० कु+बोलना] [स्त्री० कुबोलनी] बुरी या अशुभ बातें कहनेवाला।

कुब्ज—वि० [सं०] [स्त्री० कुब्जा] जिसकी पीठ टेढ़ी हो। कुबड़ा।

संज्ञा पुं० [सं०] एक वातरोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है।

कुब्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र से प्रेम रखती थी। कुबरी। २ कैकेयी की मंथरा नाम की एक दासी।

कुब्बा—संज्ञा पुं० दे० "कूबड़"।

कुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी की छाया। २ बुरी दीप्ति। ३ काबुल नदी।

कुमंठी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कमठ=बाँस] पतली लचीली टहनी।

कुमक—संज्ञा स्त्री० [तु०] १ सहायता। मदद। २ पक्षपात। हिमायत। तरफदारी।

कुमकी—वि० [तु० कुमक] कुमक का। कुमक से संबंध रखनेवाला।

संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिये सिखाई हुई हथिनी।

कुमकुम—संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] १. केसर। २. कुमकुमा।

कुमकुमा—संज्ञा पुं० [तु० कुमकुम] १ लाख का बना हुआ एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में लोग एक दूसरे पर मारते हैं। २. एक प्रकार का तंग मुँह का छोटा लोटा। ३. काँच के बने हुए पोले छोटे गोले।

कुमरिया—संज्ञा पुं० [?] हाथियों की एक जाति।

कुमरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक की जाति की एक चिड़िया।

कुमाच—संज्ञा पुं० [अ० कुमाश] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

कुमार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुमारी] १ पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। २ पुत्र। बेटा। ३ युवराज। ४ कार्तिकेय। ५ युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष। ६ सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं। ७ खरा सोना। ८ तोता। सुग्गा। ९ सिंधु नद। १० एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है।

वि० [सं०] बिना ब्याहा। कुँवारा।

कुमारग†—संज्ञा पुं० दे० "कुमार्ग"।

कुमारतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान और चिकित्सा हो। बालतंत्र।

कुमारबाज—संज्ञा पुं० [फा०] [अ० किमार+फा० बाज] जुआरी। जुआ खेलनेवाला।

कुमारभृत्या—संज्ञा पुं० [सं०] १ गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २ गर्भिणी या नवप्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।

कुमारललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और उसके बाद एक सगण तथा अंत में एक गुरुवर्ण रहता है, जैसे—जु सोगहिं नसावै। प्रमोद उपजावै॥ अतीव सुकुमारी। कुमारललिता री॥

कुमारलसिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ अक्षरों का एक वृत्त।

कुमारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमारी। दस से बारह वर्ष तक की उम्रवाली कन्या। अविवाहित लड़की।

कुमारिल भट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] सातवीं सदी के एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने जैन और बौद्ध मत के विरुद्ध प्राचीन वैदिक धर्म का प्रचार किया था। इन्होंने शबर भाष्य (जैमिनि सूत्र) के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद का 'श्लोक वार्तिक' और द्वितीय पाद से चतुर्थ अध्याय तक 'तंत्रवार्तिक' या 'मीमांसा-तंत्र-वार्तिक' नामक वार्तिक तथा 'आश्वलायन-गृह्य-पद्धति-कारिका', 'श्रौतसूत्र भाष्य' और 'लघुवार्तिक' नामक ग्रंथ भी लिखे।

कुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २ घी-कुवाँर। ३ नवमल्लिका। ४. बड़ी इलायची। ५ सीता जी का एक नाम। ६ पार्वती। ७ दुर्गा। ८ एक अंतरीप, जो भारतवर्ष के दक्खिन में है। ९ पृथ्वी का मध्य।

वि० स्त्री० बिना ब्याही।

कुमारी पूजन—संज्ञा पुं० [सं०] कुमारी कन्याओं की एक प्रकार की पूजा जिसमें उन्हें नवरात्र में देवी (दुर्गा) का प्रतीक मानकर बड़े भक्तिभाव से पूजा जाता है और भाँति भाँति के उत्तम पदार्थ खिलाए जाते हैं।

कुमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुमार्गी] १ बुरा मार्ग। बुरी राह। २ अधर्म।

कुमार्गी—वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १ बदचलन। कुचाली। २ अधर्मी।

कुमुख—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुमुखी] जिसका चेहरा देखने में अच्छा न हो।

कुमुद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद कुईं। कोका। २ लाल कमल। ३ चाँदी। ४ विष्णु। ५ एक बंदर जो राम-रावण के युद्ध में लड़ा था। ६ कपूर। ७ दक्षिण-पश्चिम कोण का दिग्गज। ८ संगीत में ध्रुवक का एक भेद।

कुमुदबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कुमुदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुईं। कोईं। २ वह स्थान जहाँ कुमुद हों।

कुमुदिनीपति—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कुमुद्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुमुद से भरा हुआ स्थान। २ कुमुदों का समूह।

कुमेरु—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणी ध्रुव।
कुमोदⓅ—संज्ञा पुं० दे० 'कुमुद'।
कुमोदिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।
कुम्मैत—संज्ञा पुं० [तु० कुमेत] १ घोड़े का एक रंग जो स्याही लिए लाल होता है। लाखी। २ इस रंग का घोड़ा।
यौ०—आठो गाँठ कुम्मैत=अत्यंत चतुर। छँटा हुआ। चालाक। धूर्त्त।
कुम्मैदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कुम्मैत"।
कुम्हड़-बतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्मांड+वर्तिका] १ कुम्हड़े का नवजात फल। २ कमजोर व्यक्ति। उ०—इहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥—मानस।
कुम्हड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुष्मांड] एक बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है। इसका फल। काशीफल।
मुहा०—कुम्हड़े की बतिया=(१) कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल (२) अशक्त और निर्बल मनुष्य।
कुम्हड़ौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] एक प्रकार की बरी जो पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है। बरी।
कुम्हलाना—क्रि० अ० [सं० कु+म्लान] १ पौधे की ताजगी का जाता रहना। मुरझाना। २ सूखने पर होना। ३ कांति का मलिन पड़ना। प्रभाहीन होना।
कुम्हार—संज्ञा पुं० [सं० कुंभकार] [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।
कुम्हारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हार] १ 'कुम्हार' का स्त्रीलिंग रूप। २ दे० "अंजन-हारी" २।
कुम्ही—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंभी] जलकुंभी।
कुयश—संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी। अपयश।
कुरंग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुरंगी, कुरंगिन] १ बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २ मृग। हिरन। ३ बरवै छंद, जिसके विषम चरणों में १२ और सम में ७ मात्राएँ होती हैं, जैसे—कविसमाज को बिरवा, चले लगाइ। सींचन की सुधि लीजो, मुरझि न जाय ॥
संज्ञा पुं० [सं० कु+रंग] १ बुरा रंगढंग। बुरा लक्षण। २ घोड़े का एक रंग जो लाह के समान होता है। नीला। कुम्मैत। लखौरी। ३ इस रंग का घोड़ा।
वि० बुरे रंग का।
कुरंगसार—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।
कुरंटक—संज्ञा पुं० [सं०] पीली कटसरैया।
कुरंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पौधा। २ अंडकोश की वृद्धि या आँत उतरने का रोग।
कुरकी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्की"।
कुरकुटा†—संज्ञा पुं० [सं०√कुट्ट ?] १ छोटा टुकड़ा २ रोटी का टुकड़ा। उ०—कैसे सहब खिनहि खिन भूखा। कैसे खाब कुरकुटा रूखा। —पदमावत।
कुरकुर—संज्ञा पुं० [अनु०] खरी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द।
कुरकुरा—वि० [हिं० कुरकुर] [स्त्री० कुरकुरी] खरा और करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो। खस्ता।
कुरकुरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली मुलायम हड्डी। जैसे, कान की।
कुरता—संज्ञा पुं० [तु०] [स्त्री० कुरती] कंधे से घुटने तक का एक बाँहदार पहनावा।
कुरनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "कुरलना"।
कुरबान—वि० [अ०] जो निछावर या बलिदान किया गया हो।
मुहा०—कुरबान जाना=निछावर होना।
कुरबानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] बलिदान।
कुरर—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिद्ध की जाति का एक पक्षी। २ करौंकुल। क्रौंच।
कुररा—संज्ञा पुं० [सं० कुरर] [स्त्री० कुररी] १. करौंकुल। क्रौंच। २ टिटिहरी।
कुररी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आर्या छंद का एक भेद। २ 'कुररा' का स्त्रीलिंग।
कुरलनाⓅ—क्रि० अ० [सं०√कुर्=आवाज करना, प्रा०√कुरुल, नि० नेपाली कुर्लनु=चिल्लाना, कूकना] पक्षियों का बोलना। कूकना। उ०—भँवर कुंजा कुरलियाँ गरजि भरे सब ताल। जिनि पै गोविंद बीछुटे, तिनके कौण हवाल ॥ —कबीर०।
कुरला—संज्ञा स्त्री० [?] क्रीड़ा।
संज्ञा पुं० दे० "कुल्ला"।
कुरव—वि० [सं०] बुरी बोली बोलनेवाला।
कुरवना—क्रि० स० [हिं० कूरा] ढेर या राशि लगाना। एकबारगी बहुत सा रखना।
कुरवारनाⓅ—क्रि० स० [सं० कर्तन] १ खोदना। २ खरोचना। करोदना। उ०—सुख कुरवारि फरहरी खाना। ओहु विष भा जब व्याध तुलाना। —पदमावत।
कुरविंद—संज्ञा पुं० दे० "कुरुविंद"।
कुरसी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है।
यौ०—आराम कुरसी=एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सकता है।
२. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। ३. पीढ़ी। पुश्त।
कुरसीनामा—संज्ञा पुं० [फा०] लिखी हुई वंशपरंपरा। वंशवृक्ष।
कुरा—संज्ञा पुं० [अ० कुरह] वह गाँठ जो पुराने जख्म में पड़ जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० कुरव] कटसरैया।
कुराइ—संज्ञा स्त्री० दे० "कुराय"।
कुरान—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है।
कुराय—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+फा० राह] पानी से पोली जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा।
कुराह—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+फा० राह] [वि० कुराही] १. कुमार्ग। बुरी राह। २ बुरी चाल। खोटा आचरण।
कुराहरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।
कुराही—वि० [हिं० कुराह+ई (प्रत्य०)] कुमार्गी। बदचलन।
संज्ञा स्त्री० बदचलनी। दुराचार।
कुरिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] १ फूस की झोपड़ी। कुटी। २ बहुत छोटा गाँव।
कुरियाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।
मुहा०—कुरियाल में आना=(१) चिड़ियों का आनंद में होना। (२) मौज में आना।
कुरिहारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"। उ०—को नहिं हरषि बैठि तेहि डारा। को नहि करै केलि कुरिहारा।—पदमावत।
कुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] मिट्टी का छोटा धुस या टीला।
Ⓟसंज्ञा स्त्री० [सं० कुल] वंश। घराना। उ०—भै आहा पदमावति चली। छत्तिस कुरि भईं गोहन भली।—पदमावत।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] खंड। टुकड़ा। उ०—तेइ सत बोहित कुरी चलाए। तेइ सत पवन पंख जनु लाए।—पदमावत।
कुरीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी रीति। कुप्रथा। २ कुचाल।
कुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ हस्तिनापुर का एक चंद्रवंशी राजा जिसके वंश में कौरवों और पांडवों का जन्म हुआ था। २ प्राचीन भौगोलिक विभाजन में हिमालय के उत्तर और दक्षिण में फैला

हुआ एक विस्तृत प्रदेश जिसके उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु नामक दो खड थे। दक्षिण कुरु पंचाल प्रदेश से सटा था जिसके कारण दोनों का एक साथ बोध कराने के लिये "कुरु पांचाल" शब्द का प्रयोग महाभारत और ऐतरेय ब्राह्मण में बहुत हुआ है। ३ कुरु प्रदेश का रहनेवाला।

कुरुई—सज्ञा स्त्री० [सं० कुडव] बाँस या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया। मौनी।

कुरुक्षेत्र—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो अबाला और दिल्ली के बीच में है। महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।

कुरुख—वि० [स० कु+फा० रुख] जिसके चेहरे से अप्रसन्नता झलकती हो। नाराज।

कुरुखेत†—सज्ञा पुं० "कुरुक्षेत्र"।

कुरुजांगल—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन पाचाल प्रदेश के पश्चिम का एक प्रदेश।

कुरुमⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।

कुरुविंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोथा। २ काच लवण। ३ उरद। ४. दर्पण। एक किस्म का जौ।

कुरूप—वि० [स०] [स्त्री० कुरूपा] बुरी शक्ल का। बदसूरत। बेडौल। बेढगा।

कुरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बदसूरती।

कुरेदना—क्रि० स० [स० कर्तन] १ खुरचना। खरोचना। करोदना। खोदना। २ राशि या ढेर को इधर उधर चलाना।

कुरेरⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "कुरल"।

कुरेलना—क्रि० स० दे० "कुरेदना"।

कुरैना†—क्रि० स० दे० "कुरवना"।

कुरैया—सज्ञा स्त्री० [सं० कुटज] सुदर फूलोंवाला जँगली पेड जिसके बीज "इद्रजौ" कहलाते हैं।

कुरौनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० कूरा=ढेर] ढेर लगाना। कूरा लगाना।

कुर्क—वि० [तु० कुर्क] [सज्ञा कुर्की] जब्त।

कुर्क अमीन—सज्ञा पुं० [तु० कुर्क+फा० अमीन] वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत की आज्ञा से जायदाद कुर्क करता है।

कुर्की—सज्ञा स्त्री० [तु० कुर्क+ई (प्रत्य०)] कर्जदार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये सरकार द्वारा जब्त किया जाना।

कुर्मी—संज्ञा पुं० [स० कर्मिन्] हिंदुओं की एक जाति जिसका प्रधान धधा खेतीबाड़ी है।

कुर्री—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ हेंगा। पटरा। २ कुरकुरी हड्डी। ३ गोल टिकिया।

कुर्लंग—संज्ञा पु० [फा०] १. एक पक्षी जिसका सिर लाल और बाकी शरीर मटमैले रग का होता है। २. मुर्गा।

कुलंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अदरक की तरह का पौधा जिसकी जड़ गरम और दीपन होती है। २ पान की जड़।

कुल—सज्ञा पुं० [सं०] १ वश। घराना। खानदान। २ जाति। ३. समूह। समुदाय। झुड। ४ घर। मकान। ५. वाममार्ग। कौल धर्म। ६. व्यापारियों का सघ।

वि० [अ०] समस्त। सब। सारा।

यौ०—कुल जमा=(१) सब मिलाकर। (२) केवल। मात्र।

कुलकना—क्रि० अ० [हिं० किलकना] आनदित होना। खुशी से उछलना।

कुलकलंक—सज्ञा पु० [सं०] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

कुलकानि—सज्ञा स्त्री० [सं० कुल+हिं० कानि=मर्यादा] कुल की मर्यादा। कुल की लज्जा। कुल की प्रतिष्ठा।

कुलकुलाना—क्रि० अ० [अनु०] कुलकुल शब्द करना।

मुहा०—आँत कुलकुलाना=भूख लगना।

कुलकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपने वश में ध्वजा के समान हो। कुल की शोभा बढ़ानेवाला। अपने कुल का सबसे श्रेष्ठ या प्रतिष्ठित व्यक्ति।

कुलक्षण—संज्ञा पुं० [स० कु+लक्षण] १ बुरा लक्षण। २ कुचाल। बदचलनी।

वि० [स०] [स्त्री० कुलक्षणा] १ बुरे लक्षणवाला। २ दुराचारी।

कुलच्छन—सज्ञा पु० दे० "कुलक्षण"।

कुलच्छनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुलक्षणी"।

कुलज—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलजा] उत्तम कुल में उत्पन्न पुरुष।

कुलजा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कुलीना। उ०—कुलटा तजै न कुल अटनि कुलजा तजै न कानि।—रससारांश।

कुलट—वि० पु० [स०] [स्त्री० कुलटा] औरस के अतिरिक्त अन्य प्रकार का पुत्र, जैसे, क्षेत्रज, क्रीत, दत्तक आदि।

कुलटा—वि० स्त्री० [सं०] बहुत पुरुषों से प्रेम रखनेवाली। छिनाल (स्त्री)। बद-चलन (औरत)।

सज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुलतारन—वि० [सं० कुल+तारण] [स्त्री० कुलतारनी] कुल को तारनेवाला।

कुलत्थी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुलत्थ या कुल-त्थिका] १ एक प्रकार का मोटा अन्न। २ एक प्रकार की दाल।

कुलदेव—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलदेवी] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में पर-परा से होती आई हो। कुलदेवता।

कुलदेवता—सज्ञा पु० दे० "कुलदेव"।

कुलधन्य—वि० [सं०] अपने कुल को धन्य करनेवाला। कुल का नाम उज्ज्वल करनेवाला।

कुलधर्म—सज्ञा पुं० [स०] १ कुल परंपरा से चला आता हुआ कर्तव्य, रीति या रस्म। २. किसी कुल या जाति के विशिष्ट रिवाज।

कुलना—क्रि० अ० [हिं० कल्लाना] टीस मारना। दर्द करना।

कुलपति—सज्ञा पुं० [स०] १. घर का मालिक। किसी कुल का मुखिया। वशवृद्ध। २. वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३ वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न, भोजन, वस्त्र और शिक्षा दे। ४ किसी विश्वविद्यालय का उपप्रधान सर्वोच्च अधिकारी। (अँ० वाइसचासलर)।

कुलपूज्य—वि० [सं० कुल+पूज्य] जिसका मान कुलपरपरा से होता आया हो। कुल का पूज्य।

कुलफⓅ†—संज्ञा पु० [अ० कुफ्ल] ताला।

कुलफत—सज्ञा स्त्री० [अ०] मानसिक दुःख। चिंता।

कुलफा—सज्ञा पु० [फा० खुर्फा] एक साग। बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी—सज्ञा स्त्री० [हिं० कुलफ] १ पेंच। २ टीन आदि का छोटा चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ जमाते हैं। ३ उपर्युक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत।

कुलबधू—सज्ञा स्त्री० दे० "कुलवधू"।

कुलबुल—संज्ञा पुं० [अनु०] [सज्ञा कुल-बुलाहट] छोटे छोटे जीवों के हिलने डोलने की आहट।

कुलबुलाना—क्रि० अ० [हिं० कुलबुल] १ बहुत छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डोलना। इधर उधर रेंगना। २ चचल होना। आकुल होना।

कुलबोरना—वि० [हिं० कुल+बोरना] वंश की मर्यादा भ्रष्ट करनेवाला । कुल में दाग लगानेवाला ।

कुलवंत—वि० [सं०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन ।

कुलवट—संज्ञा स्त्री० [स० कुल+वर्त्म] कुल की राह । वंश की परंपरा ।

कुलवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छे कुल की सच्चरित्रा वधू । मर्यादा का पालन करने-वाली बहू ।

कुलवान्—वि० [स०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन । अच्छे वंश का ।

कुलसंस्कार—संज्ञा पुं० [स०] कुलीनों के लक्षण और गुण । आभिजात्य ।

कुलह—संज्ञा स्त्री० [फा० कुलाह] १ टोपी । २ शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन । अँधियारी । उ०—बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुविहंग कुलह जनु खोली । —मानस ।

कुलहाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कुलह" ।

कुलही—संज्ञा स्त्री० [फा० कुलाह] बच्चों के सिर पर देने की टोपी । कनटोप । उ०—कुलही चित्रबिचित्र झँगूली । निरखत मातु मुदित मन फूली । —गीता० ।

कुलांगार—संज्ञा पु० [स०] कुल का नाश करनेवाला । सत्यानाशी । अपने कुल में झगड़ा लगानेवाला या अन्य प्रकार से उसकी मर्यादा नष्ट करनेवाला ।

कुलाँच, कुलाँटⓅ—संज्ञा स्त्री० [तु० कुलाज ?] चौकड़ी । छलाँग । उछाल ।

कुलाचल—संज्ञा पु० दे० "कुलपर्वत" ।

कुलाचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुलगुरु । २ कुल-पुरोहित ।

कुलाधिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० कुल+आधि] पाप ।

कुलाबा—संज्ञा पु० [अ०] १ लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है । पायजा । २. मोरी ।

कुलाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] [स्त्री० कुलाली] १ मिट्टी के बरतन बनानेवाला । कुम्हार । २ जंगली मुर्गा । ३ उल्लू ।

कुलाह—संज्ञा पुं० [सं०] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर गाँठ से सुमों तक काले हों ।

संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊँची नोकदार टोपी जो अफगानिस्तान में पहनी जाती है । तातारी टोपी ।

कुलाहलⓅ—संज्ञा पुं० [स० कोलाहल] दे० "कोलाहल" ।

संज्ञा पुं० [स०] १. एक पौधा जिसकी जड़ ओषधि के काम आती है । २. एक पौधा जिसे कुत्ते पेशाब करने के पहले बहुत सूँघते हैं ।

कुलिंग, कुलिंगु—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पक्षी । उ०—नीचीयै नीची निपट दीठि कुही लौं दौरि । उठि ऊँचैं, नीचौ दयौ मनु कुलिंगु झपि, झौरि । —बिहारी० । २ चिड़ा । गौरा । ३ पक्षी ।

कुलिक—संज्ञा पु० [सं०] शिल्पकार । दस्तकार । कारीगर । २ उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष । ३ किसी संघ या समुदाय का प्रधान पुरुष । ४ शिकारी ।

कुलिश—संज्ञा पुं० [स०] १ हीरा । २ इंद्र का वज्र । बिजली । गाज । ३ राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न । ४ कुठार ।

कुली—संज्ञा पुं० [तु०] बोझ ढोनेवाला । मजदूर ।

यौ०—कुली-कबाड़ी = छोटी जाति के लोग ।

कुलीन—वि० [स० [संज्ञा कुलीनता] १ उत्तम कुल में उत्पन्न । अच्छे घराने का । खानदानी । २ पवित्र । शुद्ध । साफ ।

कुलुफⓅ—संज्ञा पुं० [अ० कुफ़्ल] ताला ।

कुलू—संज्ञा पु० [स० कुलूत] १ काँगड़े के पास का देश । २ वहाँ का निवासी ।

कुलूत—संज्ञा पुं० [सं०] कुलू देश ।

कुलेल—संज्ञा स्त्री० [स० कल्लोल] क्रीड़ा । कलोल ।

कुलेलनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० कुलेल] क्रीड़ा करना । आमोद प्रमोद करना ।

कुल्माष—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुलथी । २ उर्द । माष । ३ बोरो धान । ४ वह अन्न जिसमें दो भाग हों । द्विदल अन्न ।

कुल्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कृत्रिम नदी । नहर । २ छोटी नदी । ३ नाली ।

कुल्ला—संज्ञा पु० [स० कवल] [स्त्री० कुल्ली] मुँह को साफ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया । गरारा ।

संज्ञा पु० [?] १. घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है । २ इस रंग का घोड़ा ।

संज्ञा पुं० [फा० काकुल] जुल्फ । काकुल ।

कुल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला" ।

कुल्हड़—संज्ञा पु० [सं० कुल्हरिका] [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा । चुक्कड़ ।

कुल्हाड़ा—संज्ञा पुं० [स०] कुठार [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] एक औजार जिससे पेड़ काटते और लकड़ी चीरते हैं । कुठार ।

कुल्हाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा कुल्हाड़ा । कुठारी । टाँगी ।

कुल्हिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़ । चुक्कड़ ।

मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = इस प्रकार कोई कार्य करना जिसमें किसी को खबर न हो ।

कुवज—संज्ञा पु० [स० कुव+ज] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा ।

कुवलय—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोई जो प्रायः रात में खिलती है । कोका । २. नीलकमल । ३. भूमंडल । ४ एक प्रकार के असुर ।

कुवलयापीड़—संज्ञा पु० [स०] कंस का एक हाथी जिसे कृष्णचंद्र ने मारा था ।

कुवलयाश्व—संज्ञा पुं० [स०] १ धुंधुमार राजा । २ ऋतुध्वज राजा । ३ एक घोड़ा जिसे ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिये सूर्य ने पृथ्वी पर भेजा था ।

कुवाँ—संज्ञा पु० दे० "कूआँ" ।

कुवाच्य—वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो । गंदा । बुरा ।

संज्ञा पुं० दुर्वचन । गाली ।

कुवार—संज्ञा पुं० [सं० अश्विनीकुमार] [वि० कुवारी] आश्विन का महीना । असोज ।

कुवासना—वि० [स० कु+वासना] बुरी इच्छा । खराब बातों या कामों की चाह ।

कुविचार—संज्ञा पु० [सं०] बुरा विचार ।

कुविचारी—वि० [स० कुविचारिन्] [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचारवाला ।

कुवेर—संज्ञा पु० [सं०] १ (वेदों में) वैश्रवण नाम के तामसिक जीव । २. (पुराणों में) विश्रवा और इडावती के पुत्र और यक्षों के राजा जो शंकर जी के मित्र और देवताओं के कोषाध्यक्ष माने जाते हैं । प्रसिद्ध है कि इनके एक आँख, तीन टाँगें और कुल आठ दाँत हैं तथा सवारी पालकी है । ३ रावण के सौतेले बड़े भाई । ४. कुरूप । भयंकर ।

कुवेराचल—संज्ञा पुं० [स० कुवेर+अचल] १ कैलास पर्वत । २ हिमालय पहाड़ ।

कुश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुशा, कुशी] १. कास की तरह की एक पवित्र घास (दर्भ) जिसका यज्ञों और धार्मिक कृत्यों में उपयोग होता है । २ जल। पानी । ३. रामचंद्र के एक पुत्र । ४. दे० "कुशद्वीप" । ५. हल । फाल । कुशी ६ हल को जुए से जोड़नेवाली कुश की बनी रस्सी ।

कुशकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "कुश-ध्वज" ।

कुशद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भौगोलिक विभाजन के सात द्वीपों में से एक जो चारों ओर घृत समुद्र से घिरा है ।

कुशध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] सीरध्वज । जनक के छोटे भाई जिनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं ।

कुशन—संज्ञा पुं० [अं०] मोटा गद्दा ।

कुशमुद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० कुश+मुद्रिका] कुश की बनी हुई अँगूठी । पवित्री ।

कुशल—वि० [सं०] [स्त्री० कुशला] १. चतुर । दक्ष । प्रवीण । २ श्रेष्ठ । अच्छा । भला । ३. उचित । ठीक । उपयुक्त । पुण्यशील ।

संज्ञा पुं० [सं०] क्षेम । मंगल । खैरियत । राजी । खुशी ।

कुशलक्षेम—संज्ञा पुं० [सं०] राजीखुशी । खैर-आफियत ।

कुशलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुराई । चालाकी । २. योग्यता । प्रवीणता । ३. क्षेम । खैरियत ।

कुशलप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं० कुशल+प्रश्न] किसी का कुशलमंगल पूछना ।

कुशलताई, कुशलात(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुशल] कल्याण । क्षेम । खैरियत । उ०—मधुकर त्याए जोग सँदेसो । भली स्याम कुसलात सुनाई सुनतहिं भयो अँदेसो । —सूर० ।

कुशली—वि० [सं० कुशलिन्] १ कल्याण-युक्त । सकुशल । २. नीरोग । तंदुरुस्त ।

कुशा—संज्ञा स्त्री० दे० "कुश" ।

कुशाग्र—वि० [सं०] १ कुश की नोक की तरह तीखा । तीव्र । तेज, जैसे—कुशाग्र-बुद्धि ।

कुशादा—वि० [फा०] [संज्ञा कुशादगी] १. खुला हुआ । २. विस्तृत । लंबा चौड़ा ।

कुशासन—संज्ञा पुं० [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन ।

कुशिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों के अनुसार विश्वामित्र ऋषि के पिता और महाभारत के अनुसार उनके पितामह का नाम । २. कुशिक का वंश । ३ कुशिक के वंशज । ४. महाभारत के अनुसार विश्वामित्र के पिता गाधि नामक राजा के पिता का नाम । ५. फाल ।

कुशीद—संज्ञा पुं० दे० "कुसीद" ।

कुशीनगर—संज्ञा पुं० [सं० कुश+नगर] उत्तरप्रदेश के देवरिया नामक जिले में एक स्थान जहाँ साल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था ।

कुशीलव—संज्ञा पुं० [सं०] १. कवि । चारण । २ नाटक खेलनेवाला । नट । ३ गवैया । ४ वाल्मीकि ऋषि ।

कुसूलधान्यक—संज्ञा पुं० [सं०] वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिये खाने भर को अन्न संचित हो ।

कुशेशय—संज्ञा पुं० [सं०] कमल ।

कुश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] १ मारे हुए की लाश । २ वह भस्म जो धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया जाय ।

वि० १. मारा गया । २ सताया हुआ ।

कुश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिये लड़ना । मल्लयुद्ध । पकड़ ।

मुहा०—कुश्ती मारना=कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना । कुश्ती खाना=कुश्ती में हार जाना ।

कुश्तीबाज—वि० [फा०] कुश्ती लड़नेवाला । लड़ता । पहलवान ।

कुषुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] कीड़ों की वह थैली या कोश जिसमें उनका विष रहता है ।

कुष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोढ़ । २. कुट नामक ओषधि । ३ कुड़ा नामक वृक्ष ।

कुष्ठी—संज्ञा पुं० [सं० कुष्ठिन्] [स्त्री० कुष्ठिनी] वह जिसे कोढ़ हुआ हो । कोढ़ी ।

कुष्मांड—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुम्हड़ा । २ एक प्रकार के देवता जो शिव के अनुचर हैं ।

कुसंग—संज्ञा पुं० दे० "कुसंगति" ।

कुसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरों का संग । बुरे लोगों के साथ उठना बैठना ।

कुसंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त में बुरी बातों का जमना । बुरी वासना ।

कुसगुन—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० सगुन] बुरा सगुन । असगुन । कुलक्षण ।

कुसमय—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा समय । २ वह समय जो किसी कार्य के लिये ठीक न हो । अनुपयुक्त अवसर । ३ नियत से आगे या पीछे का समय । ४ संकट का समय । दुःख के दिन ।

कुसल(पु)†—वि० दे० "कुशल" ।

कुसलई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+ई (प्रत्य०)] निपुणता । चतुराई ।

कुसलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुसल +आई (प्रत्य०)] १ कुशलता निपुणता २ कुशलक्षेम । खैरियत ।

कुसलात(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कुशलात" ।

कुसली(पु)—वि० दे० "कुशली" । उ०—तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसलधनी ।—मानस ।

संज्ञा पुं० [हिं० कसौली] १ आम की गुठली । २ गोझा । पिराक ।

कुसवारी—संज्ञा पुं० [सं० कोशकार] १. रेशम का जंगली कीड़ा । २ रेशम का कोया ।

कुसाइत—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+अ० साइत] १ बुरी साइत । बुरा मुहूर्त । कुसमय । २ अनुपयुक्त समय । बेमौका ।

कुसाखी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कु+शाखी] खराब पेड़ ।

कुसियार—संज्ञा पुं० [सं० कोशकार] एक प्रकार की मोटी ईख जिसमें बहुत रस होता है ।

कुसी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशी] हल का फाल ।

कुसीद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुसीदिक] १ सूद । ब्याज । वृद्धि । २ ब्याज पर दिया हुआ धन ।

कुसुंब—संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के काम में आती है ।

कुसुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुसुम । बरें । २ केसर । कुमकुम ।

कुसुंभा—संज्ञा पुं० [सं० कुसुंभ] १ कुसुम का रंग । २. अफीम और भाँग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य ।

कुसुंभी—वि० [सं० कुसुंभ] कुसुम के रंग का लाल ।

कुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुसुमित] १ फूल । पुष्प । २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों । ३ आँख का एक रोग

४ मासिक धर्म। रजोदर्शन। रज। ५- छंद में ठगण का छठा भेद।

सज्ञा पुं० दे० "कुसुंव"।

सज्ञा पुं० [सं० कुसुंभ] एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं। बरें।

कुसुमपुर—सज्ञा पुं० [सं०] पटना नगर का एक प्राचीन नाम।

कुसुमवाण—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमविचित्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, यगण, नगण और यगण कुल १२ वर्ण होते हैं, जैसे—नयन यही तें तुम वदनामा। हरि छवि देखौ किन वसु जामा।

कुसुमशर—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमस्तवक—सज्ञा पुं० [सं०] दडक छद का एक भेद जिसमें ६ सगण होते हैं, जैसे—छहरैं सिर पै छवि मोरपखा उनके नथ के मुकना थहरैं। फहरैं पियरो पट वेनी इतै उनकी चुनरी के झवा झहरैं।

कुसुमाउँह(पु)—सज्ञा पुं० [सं० कुसुमायुध] दे० "कुसुमायुध"। उ०—तसु नदन भोगीसराअ, वर भोग पुरदर। हुअ हुआसन तेजिकति कुसुमाउँह सुदर।

कुसुमांजलि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ फूलों से भरी अजलि। २ षोडशोपचार पूजन में देवता पर हाथ की अँजुली में फूल भरकर चढाना। पुष्पांजलि।

कुसुमाकर—सज्ञा पुं० [सं०] १ वसंत ऋतु या चैत्र और वैशाख के महीने। २. छप्पय का एक भेद।

कुसुमायुध—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमावलि—सज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।

कुसुमासव—सज्ञा पुं० [सं०] १ फूलों का रस। मकरद। २ शहद। मधु।

कुसुमित—वि० [सं०] फूला हुआ। पुष्पित।

कुसूत—सज्ञा पुं० [सं० कु+सूत्र, प्रा० सुत्त] १ बुरा सूत। २ कुप्रवध। कुव्यौंत।

कुसेसय(पु)—सज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"। उ०—राजिवदल इदीवर सतदल, कमल कुसेसय जाति। निसि मुद्रित प्रातहि वे विगसत दिन राति। सूर०।

कुहक—सज्ञा पुं० [सं०] १. माया। धोखा। जाल। फरेव। २ धूर्त। मक्कार। ३ मुर्गे की कूक। ४ इंद्रजाल जाननेवाला।

कुहकना—क्रि० अ० [सं० कुहुक या कुहू] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना। पीकना।

कुहकिनी—वि० [हिं० कुहकना] कुहकनेवाली।

सज्ञा स्त्री० कोयल।

कुहकुहाना—क्रि० अ० दे० "कुहकना"।

कुहना(पु)—क्रि० स० [सं० कु+हनन] बुरी तरह से मारना। खूब पीटना।

क्रि० अ० [अनु०] गाना। अलापना।

कुहनी—सज्ञा स्त्री० [सं० कफोणि] हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी।

कुहप—सज्ञा पुं० [सं० कुहू=अमावस्या +प ?] रजनीचर। राक्षस।

कुहर—सज्ञा पुं० [सं०] १ गड्ढा। बिल। छेद। सूराख। २ गले का छेद।

कुहरा—सज्ञा पुं० [सं० कुहेलिका या कुहेडिका] वर्षा की बूँदों से भी सूक्ष्म रूप में पृथ्वी पर टपकनेवाली वायुमडल में फैली हुई स्थानीय जल की भाप।

कुहराम—सज्ञा पुं० [अ० कहर+आम] १ विलाप। रोना पीटना। हलचल।

कुहाड़ा—सज्ञा पुं० दे० "कुल्हाड़ा"। उ०—पाइ कुहाड़ा मारिया, गाफिल अपणै हाथि। —कबीर०।

कुहाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० कोह से ना० धा०] रिसाना। नाराज होना। रूठना।

कुहारा(पु)—सज्ञा पुं० दे० "कुल्हाड़ा"।

कुहासा†—सज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।

कुही—सज्ञा स्त्री० [सं० कुधि=एक पक्षी] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। कुहर। उ०—नीचीयै नीची निपट दीठि कुही लौं दौरि। उठि ऊँचै, नीचौ दयो मनु कुलिगु झपि, झौरि। विहारी०।

सज्ञा पुं० [फा० कोही=पहाड़ी] घोड़े की एक जाति। टाँगन।

(पु)वि० [हिं० कोह=क्रोध+ई (प्रत्य०)] क्रोधी।

कुहुक—सज्ञा पुं० [सं० कुहुक] पक्षियों का मधुर स्वर। पीक।

कुहुकना—क्रि० अ० [हिं० कुहकना] पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।

कुहुकवान—सज्ञा पुं० [हिं० कुहुक+बान] एक प्रकार का बाण जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

कुहुकिनी—सज्ञा स्त्री० दे० "कुहकनी"।

कुहू—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमावस्या, जिसमें चद्रमा बिलकुल दिखलाई न दे। २ मोर या कोयल की बोली। (इस अर्थ में "कुहू" के साथ कठ, मुख आदि शब्द लगाने से कोकिलवाची शब्द बनते हैं।)

कूँख—सज्ञा स्त्री० दे० "कोख"।

कूँखना—क्रि० अ० दे० "काँखना"।

कूँच—सज्ञा स्त्री० [सं० कूर्च ?] वह मोटी नस जो मनुष्यों की एड़ी के ऊपर और जानवरों के टखने के नीचे होती है। पै। घोड़ानस।

कूँचना†—क्रि० स० दे० "कुचलना"।

कूँचा—सज्ञा पुं० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू। बुहारी।

कूँची—सज्ञा स्त्री० [हिं० कूँचा] १ छोटा कूँचा। छोटा झाड़ू। २ कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या उनपर रग फेरते हैं। ३. चित्रकार की रग भरने की कलम।

कूँज—सज्ञा पुं० [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी।

कूँड़—सज्ञा पुं० [सं० कुंड] १ लोहे की ऊँची टोपी जिसे लड़ाई के समय पहनते थे। खोद। २ मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं। ३. वह नाली जो खेत में हल जोतने से बन जाती है। कुंड।

कूँड़ा†—सज्ञा पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँड़ी] १ पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। २ छोटे पौधे लगाने का बरतन। गमला। ३ रोशनी करने की बड़ी हाँड़ी। टोल। ४ मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

कूँड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० कूँड़ा] १. पत्थर, मिट्टी आदि की प्याली। पथरी। २. छोटी नाँद।

कूँथना(पु)—क्रि० अ० [सं० कुंथन] १. दुःख या श्रम के कारण मुँह से पीडासूचक शब्द निकालना। काँखना। २. कष्ट झेलना। ३ कबूतरों का गुटरगूँ करना।

क्रि० स० १. किसी को दुःख देना या नुकसान पहुँचाना। २. मारना पीटना। तग करना।

कूआँ—सज्ञा पुं० [सं० कूप] १. पानी निकालने के लिये पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप। इंदारा।

मुहा०—(किसी के लिये) कूआँ खोदना=(१) हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। (२) जीविका के लिये प्रयत्न करना। कूएँ में गिरना=विपत्ति में पड़ना। कूएँ में बाँस डालना=बहुत ढूँढना। कूएँ

में भाँग पड़ना = सबकी बुद्धि खराब होना। नित्य कूआँ खोदना = प्रति दिन कार्य करके कमाना और उसी से जीवननिर्वाह करना।

कूईं—संज्ञा स्त्री० [सं० कुमुदिनी ?] १ जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूलों का चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकावेली। २ छोटा कूआँ।

कूक—संज्ञा स्त्री० [सं० √कूज्] १ लबी सुरीली ध्वनि। २. मोर या कोयल की बोली।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंजी] घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।

कूकना—क्रि० अ० [सं० √कू] १. कोयल या मोर का बोलना। २ आर्त स्वर से चिल्लाना। उ०—केसी कहि कहि कूकिए ना सोइयै असरार। रात दिवस कै कूकयैं (मत) कबहूँ लगै पुकार।—कबीर०।

क्रि० स० [हिं० कुंजी] कमानी कसने के लिये घड़ी या बाजे में कुंजी भरना।

कूकर—संज्ञा पुं० [सं० कुक्कुर] [स्त्री० कूकरी] कुत्ता। श्वान। उ०—जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों, तुलसी भजु कोसलराजहि रे।—कविता०।

कूकरकौर—संज्ञा पुं० [हिं० कूकर+कौर] १. वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है। टुकड़ा। २. तुच्छ वस्तु।

कूकरनिंदिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूकर+निंदिया] वह हलकी नींद जो थोड़े ही खटके से टूट जाय।

कूकस—संज्ञा पुं० [?] अनाज की भूसी।

कूका—संज्ञा पुं० [हिं० कूक ?] सिक्खों का एक पंथ।

कूच—संज्ञा पुं० [तु०] प्रस्थान। रवानगी।

मुहा०—कूच कर जाना = मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना = होश हवास जाता रहना। भय या किसी और कारण से स्तंभित हो जाना। कूच बोलना = प्रस्थान करना।

कूचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटा रास्ता। गली। २ दे० "कूँचा"।

संज्ञा पुं० [सं० क्रौंच] क्रौंच। कराकुल उ०—बाएँ कुकरी दहिने कूचा। पहुँचै भुगुति जैस मन रूचा।—पदमावत।

कूज—संज्ञा स्त्री० [सं०] ध्वनि। अस्फुट स्वर।

कूजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कूजित] मधुर शब्द बोलना (पक्षियों का)।

कूजना—क्रि० अ० [सं० कूजन] कोमल और मधुर शब्द करना (पक्षियों का)

कूजा—संज्ञा पुं० [फा० कूजा] १ मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। उ०—कतहु तंबारु कतहु कूजा, कतहु नीमाज कतहु पूजा। २ मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिश्री। मिश्री की डली।

संज्ञा पुं० [सं० कुब्जक] एक प्रकार का गुलाब। उ०—सुरँग गुलाल कदम और कूजा। सुगँध बकौरी गभ्रव पूजा।—पदमावत।

कूजित—वि० [सं०] १ जो बोला या कहा गया हो। ध्वनित। २ गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण (स्थान आदि)। ३ पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त।

कूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़ की ऊँची चोटी, जैसे—हेमकूट। २ सींग। ३ (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि, ढेरी; जैसे—अन्नकूट। ४ छल। धोखा। फरेब। ५ मिथ्या। असत्य। झूठ। ६. गूढ़ भेद। रहस्य। ७ वह जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो, जैसे, सूर का कूट। पहेली। ८ वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो। उ०—करहि कूट नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई।—मानस।

वि० [सं०] १ झूठा। मिथ्यावादी। छलपूर्ण। २ धोखा देनेवाला। छलिया। ३ कृत्रिम। बनावटी। नकली। ४ प्रधान। श्रेष्ठ। ५ ऊँचा।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] कुट नाम की ओषधि।

संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना या कूटना] काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया।

कूटकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] छल। कपट। धोखा।

कूटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कठिनाई। २ झुठाई। ३ छल। कपट।

कूटत्व—संज्ञा पुं० दे० "कूटता"।

कूटना—क्रि० स० [सं० कुट्टन] १ किसी चीज को तोड़ने आदि के लिये उसपर बार बार कोई चीज पटकना, जैसे, धान कूटना।

मुहा०—कूट-कूटकर भरना = खूब कस-कसकर भरना। ठसाठस भरना।

२. मारना। पीटना। ठोंकना। ३ सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना। दाँत निकालना।

कूटनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दाँवपेंच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल। घात।

कूटयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय।

कूटयोजना—संज्ञा स्त्री० [सं० कूट+योजना] षड्यंत्र। भीतरी चालबाजी।

कूटसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं०] झूठा गवाह।

कूटस्थ—वि० [सं०] १ सर्वोपरि स्थित। आला दर्जे का। २. समूह में स्थित। ३ अटल। अचल। ४ न बदलनेवाला। सदा एक सा बना रहनेवाला, जैसे—आत्मा, देश काल, शब्द आदि (दर्शन)। ५ अविनाशी। विनाशरहित। ६ गुप्त। छिपा हुआ।

कूटू—संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है। काफर। कुल्टू। काटू। कोटू।

कूड़ा—संज्ञा पुं० [सं० √कूड्, कूल् = दूर करना, प्रा० कूड = ढेर] १ जमीन पर पड़ी हुई गर्द, खर, पत्ते आदि जिन्हें साफ करने के लिये झाड़ू दिया जाता है। कतवार। २ निकम्मी चीज।

कूड़ाखाना—संज्ञा पुं० [हिं० कूड़ा+फा० खाना] वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो। कतवारखाना।

कूढ़—संज्ञा पुं० [सं० कुष्टि] बोने की वह रीति जिसमें हलकी गड़ारी में बीज डाला जाता है। "छींटा" का उलटा।

वि० [सं० कु+ऊह = कूह, प्रा० कूध] नासमझ। अज्ञानी। बेवकूफ।

कूढ़मग्ज—वि० [हिं० कूढ़+फा० मग्ज] मंदबुद्धि। कुंदजेहन।

कूत—संज्ञा स्त्री० [सं० आकूत = आशय] १ वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। २ दे० "कनकूत"।

कूतना—क्रि० स० [हिं० कूत] १ अनुमान करना। अंदाज लगाना। २ बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य या परिमाण आदि का अनुमान करना। ३ दे० "कनकूत"।

कूद—संज्ञा स्त्री० [सं० कूर्द] कूदने की क्रिया या भाव।

यौ०—कूद फाँद = कूदने या उछलने की क्रिया।

कूदना—क्रि० अ० [सं० √कूर्द्] १ दोनों पैरों को पृथिवी पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना। उछलना। फाँदना। २ जान-बूझकर ऊपर से नीचे

की ओर गिरना। ३ बीच में सहसा आ मिलना या दखल देना। ४. क्रमभग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। अत्यत प्रसन्न होना। दे० "उछलना"। ६ बढ़-बढ़कर बातें करना।

मुहा०—किसी के बल पर कूदना = किसी का सहारा पाकर बहुत बढ-बढ़कर बोलना।

क्रि० स० उल्लघन कर जाना। लाँघ जाना।

कूनना—क्रि० स० दे० "कुनना"।

कूप—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुआँ। इनारा। २ कुप्पी। ३. छेद। सुराख। ४. गहरा गड्ढा।

कूपक—संज्ञा पुं० [सं०] कूप। उ०—नरक अधिकार मम घोर ससार तम-कूपकहिं, भूप! मोहिं सक्ति अ.पान की।—विनय०।

कूपन—संज्ञा पुं० [अं०] वह पर्ची जिसे दिखाने पर या देने पर अन्न, वस्त्र, तेल आदि नित्य के काम की चीजें मिलती हैं।

कूपमंडूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुएँ में रहनेवाला मेंढक। २. वह मनुष्य जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो। बहुत थोड़ी जानकारी का मनुष्य। ३ जो अपने सीमित क्षेत्र या ज्ञान से बाहर न जाता हो।

कूपल—संज्ञा स्त्री० दे० "कोंपल"। उ०—सहज बेलि जब फूलण लागी, डाली कूपल मेल्ही।—कबीर०।

कूब—संज्ञा पुं० दे० "कूबड़"।

कूबड़—संज्ञा पुं० [सं० कूबर] १ पीठ का टेढ़ापन। २ किसी चीज का टेढ़ापन।

कूबरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुबरी"।

कूर—वि० [सं० क्रूर] १. दयारहित। निर्दय। २ भयकर। डरावना। ३ मनहूस। असगुनियाँ। ४ दुष्ट। बुरा। ५. अकर्मण्य। निकम्मा। ६ मूर्ख। ७ टेढ़ा। वक्र। उ०—गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की।—मानस।

कूरता—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रूरता] १ निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २ जडता। मूर्खता। ३ अरसिकता। ४ कायरता। डरपोकपन। ५ खोटापन। बुराई।

कूरपन—संज्ञा पुं० दे० "कूरता"।

कूरम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।

कूरा—संज्ञा पुं० [सं० कूट] [स्त्री० कूरी] १ ढेर। राशि। २ भाग। अश। हिस्सा।

कूर्चिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कूँची। २ कली। ३ कुंजी। ४. सूई।

कूर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्छप। कछुआ। २. पृथिवी। ३. प्रजापति का एक अवतार। ४. एक ऋषि। ५. वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बद होती हैं। ६ विष्णु का दूसरा अवतार।

कूर्मपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह मुख्य पुराणों में से एक।

कूल—संज्ञा पुं० [सं०] १. किनारा। तट। तीर। २ सेना के पीछे का भाग। ३. समीप। पास। ४ नहर। ५ तालाब।

कूलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

कूल्हा—संज्ञा पुं० [सं० क्रोड] कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

कूवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शक्ति। बल।

कूवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रथ का वह भाग जिसपर जूआ बाँधा जाता है। युगंधर। हरसा। २ रथ में रथी के बैठने का स्थान। ३. कुबड़ा।

कूष—संज्ञा स्त्री० दे० "कोख"। उ०—दुनियाँ भाँडा दु ख का, भरी मुहाँमुह भूष। अदया अलह राम की कुरहै ऊँणीं कूष।—कबीर०।

कूष्मांड—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुम्हड़ा। २. पेठा। ३. वैदिक काल के एक ऋषि।

कूह(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूक] १ चिंग्घाड़। हाथी की चिक्कार। २ चीख। चिल्लाहट।

कृकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक की वायु जिसके वेग से छींक आती है। २ वायु के पाँच प्रकारों में से एक जिससे पाचन क्रिया में सहायता मिलती है।

कृकलास—संज्ञा पुं० [सं०] गिरगिट। उ०—जो निज धर्म बेद-बोधित सो करत न कछु बिसरयो। बिनु अवगुन कृकलास कूप-मज्जित कर गहि उधरयो।—कविता०।

कृकाट, कृकाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गले का जोड़। २ गरदन। ३ किसी खभे का हिस्सा।

कृकाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "कृकाट।" उ०—सुगढ़ पुष्ट उन्नत कृकाटिका कबु कठ सोभा मन मानति।—गीता०।

कृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. कष्ट। दुःख। २ पाप। ३. मूत्र-कृच्छ्र रोग। ४ कोई व्रत जिसमें पचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाय।

वि० कष्टसाध्य। मुश्किल।

कृत—वि० [सं०] १ किया हुआ। संपादित। २ बनाया हुआ। रचित।

संज्ञा पुं० [सं०] १. चार युगों में से पहला युग। सत्ययुग। २ वह दास जिसने कुछ नियत काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा की हो। ३ चार की सख्या।

कृतकाज—वि० दे० "कृतकार्य"।

कृतकार्य—वि० [सं०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। सफल मनोरथ।

कृतकृत्य—वि० [सं०] जिसका काम पूरा हो चुका हो। कृतार्थ। सफल मनोरथ।

कृतघन—वि० दे० "कृतघ्न"।

कृतघ्न—वि० [सं०] [संज्ञा कृतघ्नता] किए हुए उपकार को न माननेवाला। अकृतज्ञ।

कृतघ्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को न मानने का भाव। अकृतज्ञता।

कृतघ्नी(पु)—वि० दे० "कृतघ्न।

कृतज्ञ—वि० [सं०] [संज्ञा कृतज्ञता] उपकार को माननेवाला। एहसान माननेवाला।

कृतज्ञता—संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को मानना। एहसानमंदी।

कृतयुग—संज्ञा पुं० [सं०] जिसे किसी विद्या का अभ्यास हो। जानकार। पंडित।

कृतहीन—वि० दे० "कृतघ्न"।

कृतांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रारंभ किए हुए कार्य को समाप्त करनेवाला। अंत करनेवाला। २ यम। धर्मराज। ३. पूर्व जन्म में किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल। भाग्य। ४ मृत्यु। ५. पाप। ६. देवता। ७ दो की सख्या। ८. निष्कर्ष।

कृतात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] जिसने अपने आप को वश में कर लिया है। महात्मा।

कृतात्यय—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य के अनुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।

कृतार्थ—वि० [सं०] जिसका काम सिद्ध हो चुका हो। कृतकृत्य। सफल मनोरथ। २ सतुष्ट। ३ कुशल। निपुण। होशियार।

कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य। काम। २ रचना। ३ करतूत। करनी। ४ आघात। क्षति। ५ इंद्रजाल। जादू। ६ दो समान अकों का घात। वर्ग सख्या (गणित)। ७ बीस की सख्या।

कृती—वि० [सं०] १ करनेवाला। २. कुशल। निपुण। दक्ष। ३ साधु। पुण्यात्मा।

४. विहित कर्म करनेवाला। ५. कृतकार्य। संतुष्ट।

कृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृगचर्म। २ चमड़ा। खाल। ३. भोजपत्र नामक वृक्ष और उसकी छाल। ४. चमड़े या भोजपत्र का वस्त्र।

कृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र। २. पुराणों में स्कंद को पालनेवाली ६ देवियाँ जिन्हें समुद्र, नदी, वन, पर्वत आदि की अधिष्ठात्री माना जाता है। ३ सफेद धब्बे या दाग। ४ छकड़ा। ठेला। छोटी गाड़ी।

कृत्तिवास—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव, जो मृगचर्म या गजचर्म पहने रहते हैं।

कृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्तव्य-कर्म। वेदविहित आवश्यक कार्य। उचित कार्य, जैसे—यज्ञ, संस्कार। २. करनी। करतूत। कर्म।

कृत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु को नष्ट करने के लिये सिद्ध करते हैं। २ दुष्टा या कर्कशा स्त्री। ३ अभिचार। जादू। टोना।

कृत्रिम—वि० [सं०] १. जो असली न हो। नकली। बनावटी। २ वह अनाथ बालक जिसे पालकर किसी ने अपना पुत्र बनाया हो।

कृदंत—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने, जैसे—पाचक, भोक्ता, भोक्तव्य आदि।

कृपण—वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० कृपणता] १ कंजूस। सूम। २ क्षुद्र। नीच। ३ गरीब। दयनीय। कमजोर।

कृपणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कंजूसी।

कृपनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।

कृपया—क्रि० वि० [सं० करण कारक का एकवचन] कृपापूर्वक। अनुग्रहपूर्वक। मेहरबानी करके।

कृपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] १ बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति। अनुग्रह। दया। करुणा। २. क्षमा। माफी।

कृपाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ तलवार। २ कटार। ३ दंडक वृत्त का एक भेद।

कृपापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसपर कृपा हो। कृपा का आधार।

कृपायतन—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कृपालु।

कृपाल(पु)—वि० दे० "कृपालु"।

कृपालु—वि० [सं०] कृपा करनेवाला।

कृपालुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दया का भाव। मेहरबानी।

कृपिण(पु)—वि० दे० "कृपण"।

कृमि—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कृमिल] १ क्षुद्र कीट। छोटा कीड़ा। २ हिरमजी कीड़ा या मिट्टी। किरमिज। ३ लाह। ४ रेशम का कीड़ा।

कृमिज—वि० [सं०] कीड़ों से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृमिजा] १. रेशम। २ अगर। ३ किरमिजी। हिरमिजी।

कृमिरोग—संज्ञा पुं० [सं०] आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश—वि० [सं०] १ दुबला पतला। क्षीण। २ अल्प। छोटा। सूक्ष्म।

कृशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुबलापन। दुर्बलता। २ अल्पता। कमी।

कृशताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कृशता"।

कृशर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृशरा] १ तिल और चावल की खिचड़ी। २ खिचड़ी। ३ लोबिया मटर। खेसारी। दुबिया मटर।

कृशानु—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

कृशित—वि० [सं०] दुबला पतला।

कृशोदरी—वि० स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री)।

कृषक—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसान। खेतिहर। काश्तकार। २ हल का फाल।

कृषि—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृष्य] खेती। काश्त। किसानी।

कृषीवल—संज्ञा पुं० [सं० कृषीवल] किसान।

कृष्ण—वि० [सं०] १ श्याम। काला। स्याह। २ नीला या आसमानी। ३ दुष्ट।
संज्ञा पुं० [स्त्री० कृष्णा] १ वेदों के अनुसार घोर आंगरस के शिष्य एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि। २ पुराणों के अनुसार यदुवंशी वसुदेव और देवकी के आठवें पुत्र जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। ३ एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। ४ अंगिरा के वंश में उत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। ५ अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ६ छप्पय छंद का एक भेद। ७. चार अक्षरों का एक वृत्त। ८. वेदव्यास। ९ अर्जुन। १० कोयल। ११ कौआ। १२ कदम का पेड़। १३. अँधेरा पक्ष। १४ कलियुग। १५ चंद्रमा का धब्बा। १६ हिरन।

कृष्णचंद्र—संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण"।

कृष्णद्वैपायन—संज्ञा पुं० [सं०] पराशर के पुत्र वेदव्यास। पाराशर्य्य।

कृष्णपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो। पूर्णिमा से अमावस्या तक के १५ दिन। अँधेरा पाख।

कृष्णलौह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "चुंबक"।

कृष्णसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. काला हिरन। करसायल। २ सेंहुड़। थूहर।

कृष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ द्रौपदी। २ पीपल। पिप्पली। ३ दक्षिण देश की एक नदी। ४. काली दाख। ५ काला जीरा। ६ काली (देवी)। ७ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ८ काले पत्ते की तुलसी।

कृष्णाभिसारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत-स्थान में जाय।

कृष्णाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

कृष्य—वि० [सं०] खेती करने योग्य (भूमि)।

कृसोदरि—वि० [सं० कृशोदरी] पतली कमरवाली। उ०—सुंदरि सुभ्र सुवेपि सुकेसि सुश्रोनि सुठौनि सुदति सुसैनी। तुंगतनी मृदुअंग कृसोदरि चंद्रमुखी मृगसावकनैनी।—छंदार्णव।

कें कें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिड़ियों का कष्टसूचक शब्द। २ झगड़ा या असंतोष सूचक शब्द।

केंचली—संज्ञा स्त्री० [सं० कंचुक] सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है।

केंचुआ—संज्ञा पुं० [सं० किंचिलिक] १ सूत के आकार का एक बरसाती कीड़ा जो लगभग एक बालिश्त लंबा होता है। २. केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा जो मल या वमन के साथ बाहर निकलता है।

केंचुरि—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"। उ०—राम-प्रेम-पथ पेखिए दिए विषय तनु पीठि। तुलसी केंचुरि परिहरे होत साँपहूँ डीठि।—दोहा०।

केंचुली—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"।
केंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वृत्त के अंदर का वह बिंदु जिससे परिधि तक खींची हुई सब रेखाएँ परस्पर बराबर हों। नाभि। ठीक मध्य का बिंदु। २ किसी निश्चित अंश से ६०, १८०, २७० और ३६० अंश के अंतर का स्थान। ३. मुख्य या प्रधान स्थान। ४ रहने का स्थान। ५ बीच का स्थान।
केंद्रित—वि० [सं०] एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ। एक जगह लाया हुआ।
केंद्री—वि० [सं० केंद्रिन्] केंद्र में स्थित।
केंद्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केंद्र में लाने का काम।
केंद्रीय—वि० [सं०] केंद्र से संबध रखनेवाला। मुख्य-स्थानीय।
के—प्रत्य० [हिं० का] १ संबधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप, जैसे—राम के घोड़े। २ "का" का वह रूप जो उसे कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारकों में प्रयुक्त शब्द के पूर्व लगने पर प्राप्त होता है, जैसे राम के घोड़े पर। "यहाँ" शब्द के पूर्व आने पर भी "का" को यह रूप प्राप्त होता है, जैसे—मैं राम के यहाँ गया। ३. संबंध कारक के बहुवचन की विभक्ति।
†सर्व० [सं० "क"] कौन (अवधी)।
केउ†—सर्व० [हिं० के+उ] कोई।
केउरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "केयूर"।
केकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कर्कट] पानी का एक जंतु जिसकी आठ टाँगे और दो पंजे होते हैं।
केकय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सतलज नदी से पश्चिम तथा व्यास और शाल्मली नदियों के दूसरी ओर के प्रदेश का प्राचीन नाम जो अब कश्मीर के अंतर्गत है और कक्का कहलाता है। २. [स्त्री० केकयी] सूर्यवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। ३ इस शाखा के लोगों के रहने का प्रदेश। ४. केकय शाखा के क्षत्रियों के राजा। ५ केकय का रहनेवाला।
केकयी—संज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।
केका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोर की बोली।
केकी—संज्ञा पुं० [सं० केकिन्] मोर। मयूर।
केचित्—सर्व० [सं०] कोई कोई।
केड़ा—संज्ञा पुं० [सं० काड] १ नया पौधा या अंकुर। कोंपल। २ नवयुवक।
केत—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। भवन। २. स्थान। जगह। बस्ती। ३ केतु। ध्वजा। ४ कामना। इच्छा। ५ चिह्न। ६. रूप। आकार।
केतक—संज्ञा पुं० [सं०] केवड़ा।
वि० [सं० कति+एक] १. कितने। किस कदर। २ बहुत। बहुत कुछ।
केतकरⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "केतकी"।
केतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसमें काड के चारों ओर तलवार के से लंबे काँटेदार पत्ते निकले होते हैं और कोश में बंद मंजरी के रूप में बहुत सुगंधित फूल लगते हैं।
केतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वजा। २ चिह्न। ३. निमंत्रण। आह्वान। ४ घर। ५. स्थान। जगह। ६ शरीर।
केताⓅ†—वि० [सं० कियत] [स्त्री० केति] कितना।
केतिकⓅ†—वि० [सं० कति+एक] १ कितना। किस कदर। २ कितना। किस संख्या में।
केतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वजा। पताका। २ निशान। चिह्न। ३ ज्ञान। ४ दीप्ति। प्रकाश। ५ पुराणानुसार राहु राक्षस का धड़। ६ एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। ७ नवग्रहों में से एक ग्रह (फलित)। ८ चंद्रकक्ष और क्रांतिरेखा के अध पात का बिंदु। (गणित ज्योतिष) ९ रोग। १० शत्रु। ११ प्रधान। श्रेष्ठ। मुख्य।
केतुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्णार्द्ध समवृत्त। २ रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी।
केतुमान्—वि० [सं०] १. तेजवान्। तेजस्वी। २ ध्वजावाला। ३ बुद्धिमान्।
केतुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्ष, ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद।
केतू—संज्ञा पुं० दे० "केतु" ११। उ०—कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गए बनहि तप हेतू।—मानस।
केतोⓅ—वि० [सं० कति] [स्त्री० केति] कितना।
केदली†—संज्ञा पुं० दे० "कदली"।
केदार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह खेत जिसमें धान बोया या रोपा जाता हो। उ०—यह केसरि के दार में लागी सब्री अवार। केसर के सर कुच लगे नहि ढिग हरि केदार।—रससारांश। २. खेत (विशेषत. पानी से भरा हुआ)। ३ खेत। खुला मैदान। ४ नक्षत्रों का एक समूह। ५. संगीत में एक राग। ६. हिमालय पर्वत का एक पहाड़ी प्रदेश। ७ सिंचाई के लिये खेत में किया हुआ विभाग। कियारी। ८. वृक्ष के नीचे का थाला। थाँवला। ९ दे० "केदारनाथ"। १० शिव के ज्योतिर्लिंगों में से एक।
केदारनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।
केदारा—संज्ञा पुं० [सं० केदार] एक राग। उ०—अरी कान्हा कहाँ जैहै। सुतेरो 'दास' है रैहै। सितारा लै बजावै तूँ। केदारा सुद्ध गावै तूँ।—छंदार्णव।
केन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
केबिन—संज्ञा पुं० [अं०] १. छोटा कमरा या घर। २ जहाज में अफसरों या यात्रियों के रहने की कोठरी।
केमⓅ—संज्ञा पुं० दे० "कदंब"।
केयूर—संज्ञा पुं० [सं०] बाँह में पहनने का बिजायठ। बजुल्ला। अंगद। बहूँटा। भुजबंद। बाजूबंद।
केयूरी—वि० [सं०] जो केयूर पहने हो। केयूरधारी।
केर†—प्रत्य० [सं० कृत, प्रा० केर] [स्त्री० केरी] संबधसूचक विभक्ति। का (अवधी)। उ०—बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निसि सुंदरी केर सिंगारा॥—मानस।
केरल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. [स्त्री० केरली] केरल देशवासी पुरुष। ३ एक प्रकार का फलित ज्योतिष।
केरा†—प्रत्य० दे० "केर"। उ०—परममित्र तापस नृप केरा। जानै सो अति कपट घनेरा।—मानस। संज्ञा पुं० दे० "केला"। उ०—सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा।—मानस।
केराना†—संज्ञा पुं० दे० किराना।
केरानी—संज्ञा पुं० दे० किरानी।
केराव†—संज्ञा पुं० [सं० कलाय] मटर।
केरिⓅ—प्रत्य० [सं० कृत, प्रा० केर] दे० "केरी"।
संज्ञा स्त्री० दे० "केलि"।

केरी(पु)—प्रत्य० [सं० कृत, प्रा० केर] की। "केर" विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप।

सज्ञा स्त्री० [देश०] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।

केरो—प्रत्य० [सं० कृत, प्रा० केर] का। उ०—तेरो श्री सबनि केरो जाके कर निरधार ताके दरबार तों सलाम हू को चोर है। —रससारांश।

केरोसिन—सज्ञा पुं० [अं०] मिट्टी का तेल।

केला—सज्ञा पुं० [सं० कदल, प्रा० कयल] १. गरम जगहों में होनेवाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार तथा मीठे होते हैं। २ इस वृक्ष का फल।

केलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खेल। क्रीड़ा। २. रति। मैथुन। स्त्रीप्रसग। ३ हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। स्वाँग। ४ दिल बहलाव। आमोद-प्रमोद। ५. पृथ्वी।

केलिकला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती की वीणा। २. कामक्रीड़ा।

केवका—सज्ञा पुं० [स० कवक=ग्रास] वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।

केवट—सज्ञा पुं० [सं० केवर्त] एक जाति जो आजकल नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करती है।

केवटी दाल—सज्ञा पुं० [हि० केवट+ई (प्रत्य०)+दाल] दो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।

केवटी मोथा—संज्ञा पुं० [सं० केवर्त+मुस्तक] एक प्रकार का सुगधित मोथा।

केवड़ई—वि० [हिं० केवड़ा+ई (प्रत्य०)] केवड़े के समान। हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद, जैसे—केवड़ई रग।

केवड़ा—संज्ञा पुं० [स० केविका] १ सफेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २. इस पौधे का फूल। ३. इसके फूल से उतरा हुआ सुगंधित जल।

केवल—वि० [सं०] १ एकमात्र। अकेला। २ शुद्ध। पवित्र। ३ उत्कृष्ट। उत्तम। श्रेष्ठ।

क्रि० वि० मात्र। सिर्फ।

सज्ञा पुं० [वि० केवली] वह ज्ञान जो भ्रांतिशून्य और विशुद्ध हो।

केवलव्यतिरेकी—सज्ञा पुं० [सं० केवलव्यतिरेकिन्] १. कार्य को प्रत्यक्ष देखकर कारण का अनुमान, जैसे—नदी का चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनुमान। शेषवत्। २. केवल पार्थक्य से सबद्ध। ३. कार्य से कारण का अनुमान (तर्क०)।

केवलात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २ वह जिसका स्वभाव (पूर्ण) शुद्ध ऐक्य हो (तर्क०)।

केवलान्वयी—सज्ञा पुं० [सं० केवलान्वयिन्] १. कारण द्वारा कार्य का अनुमान, जैसे—बादल देखकर पानी बरसने का अनुमान। पूर्ववत्। २ सबंध मात्र का तर्क (तर्क०)।

केवली—संज्ञा पुं० [सं०] अकेला। एकमात्र।

केवाँच—सज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

केवा—संज्ञा पुं० [सं० कुव=कमल] १. कमल। उ०—सरग सूर भुईं सरवर केवा। बनखँड भँवर होइ रस लेवा॥ —पदमावत। २ केतकी। केवड़ा।

सज्ञा पुं० [सं० किंवा] बहाना। मिस। टालमटूल।

केवाड़ा—सज्ञा पुं० दे० "किवाड़"।

केश—सज्ञा पुं० [सं०] १ रश्मि। किरण। २ वरुण। ३. विश्व। ४. विष्णु। ५ सूर्य। ६. सिर का बाल। ७ अयाल।

मुहा०—केश न टाल सकना=(किसी को) तनिक भी क्षति न पहुँचा सकना।

केशकर्म—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाल झाड़ने और गूँथने की कला। केशविन्यास। २. केशांत नामक संस्कार।

केशपाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालों की लट। २ काकुल।

केशरंजन—सज्ञा पुं० [स०] भँगरैया।

केशर—सज्ञा पुं० दे० "केसर।

केशराज—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का भुजगा पक्षी। २ भँगरैया। भृ गराज।

केशरिणि—सज्ञा स्त्री० [सं०] सिंह की स्त्री। सिंहिनी। उ०—शुंभ निशुंभ कुंभीश रणकेशरिणि, क्रोधवारिधि वैरिवृंद बोरे।—विनय०।

केशरी—सज्ञा पुं० दे० "केसरी"।

केशव—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ कृष्णचंद्र। ३ ब्रह्म। परमेश्वर। ४ विष्णु के २४ मूर्तिभेदों में से एक।

केशविन्यास—सज्ञा पुं० [सं०] बालों की सजावट। बालों का सँवारना।

केशांत—सज्ञा पुं० [सं०] १ सोलह सस्कारों में से एक जिसमें यज्ञोपवीत के बाद सिर के बाल मूँड़े जाते हैं। २ दीर्घांत मुंडन।

केशि—सज्ञा पुं० [स०] एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था।

केशिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसके सिर के बाल सुंदर और बड़े हों। २. एक अप्सरा। ३ पार्वती की एक सहचरी। ४ रावण की माता कैकसी का एक नाम।

केशी—सज्ञा पुं० [सं० केशिन्] [स्त्री० केशिनी] १. प्राचीन काल के एक गृहपति का नाम। २. एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था। ३. घोड़ा। ४. सिंह।

वि० १. किरण या प्रकाशवाला। २. अच्छे बालोंवाला।

केस—सज्ञा पुं० दे० "केश"।

सज्ञा पुं० [अं०] १. किसी चीज के रखने का खाना या घर। २. मुकदमा। ३. दुर्घटना।

केसर—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाल की तरह पतले पतले रेशे जो फूलों के बीच में रहते हैं। २. ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसके फूलों के भीतर प्राप्त होनेवाले रेशे स्थायी सुगंध के लिये प्रसिद्ध हैं। कुंकुम। जाफरान। ३. घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। अयाल। ४ नागकेसर। ५. बकुल। मौलसिरी। ६. स्वर्ण।

केसरि-खौरि—संज्ञा स्त्री० [सं० केसर+खौर ?] केसर का चंदन। केसर का तिलक। उ०—केसरिया निज सारी रँगे लखि केसरि-खौरि गोपाल के गातनि। 'दास' चितै चित कुंजबिहारी बिछावति सेज नए तरु-पातनि। —शृंगार०।

केसरिया—वि० [स० केसर+हिं० इया (प्रत्य०)] १ केसर के रग का। पीला। जर्द। २ केसर मिश्रित।

केसरी—सज्ञा पुं० [स० केसरिन्] १ सिंह। २ घोड़ा। ३ नागकेसर। ४. हनुमान् जी के पिता का नाम।

केसरीसुवन—सज्ञा पुं० [स० केसरी+सुनु] हनुमान। उ०—जयति निर्भरानंद-संदोह कपिकेसरी केसरीसुवन भुवनैकभर्त्ता। —मानस।

केसारी—सज्ञा स्त्री० दे० "खिसारी"।

केसू—संज्ञा पुं० दे० "टेसू"।

केहरी(पु)—सज्ञा पुं० [सं० केसरी] १ सिंह। शेर। २ घोड़ा।

केहा—सज्ञा पुं० [स० केका] मोर। मयूर

कोहि(पु)—सर्व० [हिं० के+हि (विभक्ति)] किसको । (अवधी) ।

कोहूँ(पु)—क्रि० वि० [सं० कथम्] किसी प्रकार । किसी भाँति । किसी तरह । उ०—को जानै कब आयो सुनि आली । उरतें कढ़त न केहूँ बनमाली ।—छदार्णव ।

केहू—सर्व० [हिं० के] कोई ।

कैंकर्य—संज्ञा पु० [सं०] १ 'किंकर' का भाव । किंकरता । २. सेवा ।

कै(पु)—प्रत्य० [हिं० के] के ।

कैंचा—वि० [हिं काना +ऐंचा=कनैंचा] ऐंचाताना । भेंगा ।

संज्ञा पुं० [तु० कैंची] बड़ी कैंची ।

कैंची—संज्ञा स्त्री० [तु०] १. बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का यंत्र । कतरनी । २ दो सीधी तीलियाँ या लकड़ियाँ जो एक दूसरी के ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों ।

कैंड़ा—संज्ञा पुं० [स० काण्ड] १ वह यंत्र जिससे किसी चीज का नकशा ठीक किया जाता है । २. पैमाना । मान । नपना । ३ चाल । ढग । काटछाँट । ४ चालबाजी । चतुराई ।

कै—वि० [स० कति, प्रा० कइ] कितना ।

प्रत्य० [प्रा० केर] के । उ०—तेहि कै आगि उहै पुनि जरा । लका छाड़ि पलंका परा ॥ —पदमावत ।

(पु)अव्य० [स० किम्] या । वा । अथवा ।

संज्ञा स्त्री० [अ० कै] वमन । उलटी ।

कैकस—संज्ञा पुं० [स०] एक राक्षस ।

कैकसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमाली राक्षस की कन्या और रावण की माता ।

कैकेयी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वाल्मीकि रामायण के अनुसार केकय के राजा अश्वपति की कन्या जिसका विवाह कोशल के राजा दशरथ से हुआ था, जिससे श्री रामचद्र के छोटे भाई भरत का जन्म हुआ था । इसके भाई का नाम युधाजित था ।

कैटभ—संज्ञा पुं० [स०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था ।

कैटभारि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

कैतव—संज्ञा पु० [स०] १ धोखा । छल । कपट । २ जुआ । द्यूतक्रीड़ा । ३ वैदूर्य मणि ।

वि० १ धोखेबाज । छली । २ धूर्त । शठ । ३ जुआरी ।

कैतवापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [स०] अपह्नुति अलंकार का वह भेद जिसमें वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दों में न करके व्याज से किया जाता है ।

कैतून—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बारीक लैस जो कपड़ों में लगाई जाती है ।

कैथ, कैथा—संज्ञा पुं० [सं० कपित्थ] एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के बहुत कड़े छिलकेवाले कसैले और खट्टे फल लगते हैं ।

कैथिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ+इन (प्रत्य०)] कायस्थ जाति की स्त्री ।

कैथी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ+ई (प्रत्य०)] शिर की रेखा रहित एक पुरानी लिपि या लिखावट जो शीघ्र लिखी जाती है ।

कैद—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कैदी] १ बंधन । अवरोध । २ पहरे में बद स्थान में रखना । कारावास ।

मुहा०—कैद काटना=कैद में दिन बिताना ।

३. किसी प्रकार की शर्त, अटक या प्रतिबंध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो ।

कैदक—संज्ञा स्त्री० [अ०] कागज का बद या पट्टी जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं ।

कैदखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ कैदी रखे जाते हों । कारागार । वदीगृह । जेलखाना ।

कैद तनहाई—संज्ञा स्त्री० [अ० कैद+फा० तनहाई] वह कैद जिसमें कैदी को अकेला रखा जाय । कालकोठरी ।

कैदमहज—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह कैद जिसमें कैदी को किसी प्रकार का काम न करना पड़े । सादी कैद ।

कैदसख्त—संज्ञा स्त्री० [अ० कैद+फा० सख्त] वह कैद जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े । कड़ी कैद ।

कैदी—संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसे कैद की सजा दी गई हो । बंदी ।

कैधौं(पु)—अव्य० [हिं० कै+धौं] या । वा । अथवा ।

कैफियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. समाचार । हाल । वर्णन । २ विवरण । ब्योरा ।

मुहा०—कैफियत तलब करना=नियमानुसार विवरण माँगना । कारण पूछना ।

३. आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना ।

कैबर—संज्ञा स्त्री० [देश०] तीर का फल । गाँसी । उ०—चमकै वरुनी बरछी भ्रुव खंजर कैबर तीछ कटाछ मढ़ै ।—शृगार० ।

कैबा—संज्ञा स्त्री० अव्य० [हिं० कै=कितनी+बार] १ कितनी बार । २. बहुत बार । उ०—कैबा मैं निहारे पिछवारे की गली में अली, झाँकि कै झरोखे नित करत सलामैं है ।—शृगार० ।

कैबार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "किवाड़" ।

कैम, कैमा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कदब" ।

कैमुतिक न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक न्याय या उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिये होता है कि जब उतना बड़ा काम हो गया, तब यह क्या है । २. (न्यायशास्त्र में) किसी तर्क में एक कारण के विरुद्ध उससे मजबूत प्रमाण रखना । सबल प्रमाणों के साथ तर्क करना ।

कैरव—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० कैरवी] १. कुमुद । २ सफेद कमल । ३. शत्रु ।

कैरवाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कैरवों का समूह ।

कैरा—संज्ञा पुं० [सं० कैरव] [स्त्री० कैरी] १ भूरा रंग । २. वह सफेदी जिसमें ललाई की झलक या आभा हो । ३ वह बैल जिसके सफेद रोओं के अंदर से चमड़े की ललाई झलकती हो । सोकन । ४. व्याघ्रों की एक जाति ।

वि० १. कैरे रंग का । २. जिसकी आँखें भूरी हों । कजा ।

कैलास—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिमालय की एक चोटी जो मानसरोवर के उत्तर में है (यहाँ शिव जी का निवास माना जाता है) । २. शिवलोक ।

यौ०—कैलासनाथ, कैलासपति=शिव ।

कैलासवास—संज्ञा पु० [सं०] मरण । मृत्यु ।

कैलेंडर—संज्ञा पु० [अँ०] दे० "दिनपत्र" ।

कैवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] केवट ।

कैवर्तमुस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] केवटी मोथा ।

कैवल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. पार्थक्य । निर्लेप । संबध का अभाव । बेमेलपन । निर्लिप्तता । २. (वेदांत में) शुद्ध ऐक्य । अद्वैत । ३. आत्मा की सत्व, रज और तम रूप त्रिगुणों और उनके समस्त विकारों से निर्लिप्तता । मुक्ति । मोक्ष । निर्वाण । ४. एक उपनिषद् का नाम ।

कैशिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक लिखने की मुख्य चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग-विलास आदि का प्रचुर वर्णन रहता है । शृंगार रस के वर्णन में इस वृत्ति या शैली का प्रयोग होता है ।

कैसर—संज्ञा पुं० [लै० सीजर] १. सम्राट्। बादशाह। २ जर्मनी के बादशाह।

कैसा—वि० [सं० कीदृश] [स्त्री० कैसी] १. किस प्रकार का। किस ढंग का। किस रूप या गुण का। गुण, धर्म, स्वभाव, कारण, आकार, प्रकार और परिमाण आदि के प्रश्न का वाचक शब्द। २. (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं, जैसे—जब हम उस मकान में रहते नहीं, तब किराया कैसा ? ३ सदृश। समान। ऐसा।

कैसे—क्रि० वि० [हिं० कैसा] १. किस प्रकार। किस ढग से। २ किस हेतु। क्यों।

कैसो(पु)†—वि० दे० "कैसा"।

कोंई—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंई"।

कोंकण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी।

कोंचना—क्रि० स० [सं०√कुच्] चुभाना। गोदना। गड़ाना। धँसाना।

कोंचा—संज्ञा पुं० दे० "कौंच"।

संज्ञा पुं० [हिं०√कोंच] बहेलियों की वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाए रहते हैं।

कोंछना—क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।

कोंछियाना—क्रि० सं० [हिं० कोंछना] (स्त्रियों की) साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है।

क्रि० स० (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज भरकर कमर में खोंस लेना।

कोंढ़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुण्डल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाती है।

वि० जिसमें कोंढ़ा लगा हो। जैसे, कोंढा रुपया।

कोंथना—क्रि० अ० दे० "कूँथना"।

कोंपन(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोंपल] डाली का नवजात पत्ता। कोमल पत्ता।

कोंपर—संज्ञा पुं० [हिं० कोंपल] छोटा अधपका या डाल का पका आम।

कोंपल—संज्ञा स्त्री० [सं० कुड्मल, प्रा० कुंपल] नई और मुलायम पत्ती। अंकुर। कल्ला।

कोंरी—वि० स्त्री० [सं० कोमल] कोमल। सुकुमार। उ० वह कौल सों कोंरी किसोरी कहाँ औ कहाँ गिरधारन पानि तिहारो।—शृंगार०।

कोंवर(पु)†—वि० [सं० कोमल] नरम। मुलायम। नाजुक।

कोंवरी—वि० [हिं० 'कोंवर' का स्त्री०] मुलायम। नरम। उ०—लुचुई और सोहारी धरी। एक तो ताती औ सुठि कोंवरी।—पदमावत।

कोंहड़ा†—संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा"।

कोंहड़ौरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोंहड़ा+बरी] कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बरी।

को(पु)—सर्व० [सं० क] कौन।

प्रत्य० [सं० कक्ष ?] कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति, जैसे—साँप को मारो।

कोआ—संज्ञा पुं० [सं० कोश] १ रेशम के कीड़े का कोश। कुसियारी। २ टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३ महुए का पका फल। कोलँदा। गोलँदा। ४ कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोश। ५. दे० "कोया"।

कोइरी—संज्ञा पुं० [हिं० कोयर] साग, तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति। काछी।

कोइला—संज्ञा पुं० दे० "कोयला"।

कोइली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोयल] १ वह कच्चा आम जिसमें काला दाग पड़ जाता है और एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। २ आम की गुठली।

कोईं—संज्ञा स्त्री० [सं० कुमुदिनी] कुमुदिनी। कुईं। उ०—जानहिं मरम कँवल कर कोईं। देखि बिथा बिरहिन कै रोईं॥—पदमावत।

कोई—सर्व०, वि० [सं० कोऽपि] १ ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन एक।

मुहा०—कोई न कोई=एक नहीं तो दूसरा। यह न वह।

२ बहुतों में से चाहे जो एक। अवशेष वस्तु या व्यक्ति। ३ एक भी (मनुष्य)।

क्रि० वि० लगभग। करीब करीब।

कोउ(पु)†—सर्व० दे० "कोई"।

कोउक(पु)†—सर्व० [हिं० कोउ+एक] कोई एक। कतिपय। कुछ लोग।

कोऊ†(पु)—सर्व० दे० "कोई"।

कोक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कोकी] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। सुरखाब। २ विष्णु। ३ मेढक।

कोकई—वि० [तु० कोक] ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की झलक हो। कोकियाला।

कोककला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोक्कोक नामक विद्वान् द्वारा लिखे रतिरहस्य नामक कामशास्त्र के ग्रंथ में वर्णित काम की कलाएँ। २. रति विद्या। संभोग संबंधी विद्या।

कोकदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कोकशास्त्र या रतिरहस्य का रचयिता एक पंडित जिसका नाम कोक्कोक भी था।

कोकनद—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाल कमल। २ लाल कुमुद।

कोकनी—संज्ञा पुं० [तु० कोक=आसमानी] एक प्रकार का रंग।

वि० [देश०] १. छोटा। नन्हा। २. घटिया।

कोकशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] कोककृत रतिरहस्य। कामशास्त्र।

कोका—संज्ञा पुं० [अं०] दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या कहवे की भाँति स्फूर्तिवर्द्धक समझी जाती हैं।

संज्ञा पुं०, स्त्री० [तु०] धाय की संतान। दूधभाई या दूधबहिन।

संज्ञा स्त्री० दे० "कोकाबेली"।

कोक (बेरी), कोकाबेली—संज्ञा स्त्री० [सं० कोकनद+हिं० बेल] नीली कुमुदिनी।

कोकाह—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद घोड़ा।

वि० [सं०] सफेद रंग का। उ०—हरे, कुरंग, महुअ बहु भाँती। गरर, कोकाह, बुलाह सुपाँती।—पदमावत।

कोकिल—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोयल चिड़िया। २. नीलम की एक छाया। ३. छप्पय का १९वाँ भेद। ४. कोयला।

कोकिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोयल। २. दे० "कोयला"। उ०—चकई निसि बिछुरै, दिन मिला। हौं दिन राति बिरह कोकिला।—पदमावत।

कोकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा चकवा।

कोकीन, कोकेन—संज्ञा स्त्री० [अं०] कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की मादक ओषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कौआ। लड़कों को बहकाने का शब्द।

संज्ञा पुं० स्त्री० [पुर्त०] चाय के समान एक पेय।

कोख—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] १ उदर।

जठर। पेट। २ पेट के दोनों बगल का स्थान। ३ गर्भाशय।

यौ०—कोख-जली = जिसकी संतान मर गई हो या मर जाती हो।

मुहा०—कोख उजड़ जाना = (१) संतान मर जाना (२) गर्भ गिर जाना। कोख बंद होना = वंध्या होना। कोख या कोख माँग से ठंढी या भरी पूरी रहना = बालक या बालक और पति का सुख देखते रहना (आशीर्वाद)।

कोखि—संज्ञा स्त्री० दे० "कोख"

कोगी—संज्ञा पुं० [देश०] घोर वनों में रहनेवाला कुत्ते से मिलता जुलता एक शिकारी और खूँखार जानवर जो झुंड में रहता है। सोनहा।

कोच—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक प्रकार की चौपहिया बढ़िया घोड़ागाड़ी। २ गद्देदार बढ़िया पलग, बेंच या कुरसी।

कोचकी—संज्ञा पुं० [?] एक रंग जो ललाई लिए भूरा होता है।

कोचना—क्रि० स० दे० "कोंचना"।

कोचबकस—संज्ञा पुं० [अं० कोच+बॉक्स] घोड़ागाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जिसपर हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान—संज्ञा पुं० [अं० कोचमैन] घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचा—संज्ञा पुं० [हिं०√कोंच] १. तलवार कटार आदि का हलका घाव जो पार न हुआ हो। २ लगती हुई बात। ताना।

कोजागर—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिंगपुराण के अनुसार आश्विन पूर्णिमा की चाँदनी रात का वह प्राचीन उत्सव जिसमें लोग रातभर विविध क्रीड़ाओं और आमोद प्रमोद में जागते रहते थे और यह सामान्य विश्वास था कि इस रात में लक्ष्मी देवी स्वर्ग से आकर लोगों से पूछती हैं कि 'कौन जागता है?' और फिर जागनेवालों को धन का प्रसाद देती हैं। २ आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूनो (जागरण का उत्सव)।

कोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्ग। गढ़। किला। २ शहरपनाह। ३ महल। राजप्रासाद। ४ विस्तार। लबाई।

संज्ञा पुं० [सं० कोटि] समूह। यूथ।

संज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी ढंग का एक पहनावा।

कोटपाल—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला। किलेदार।

कोटर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्ग के आसपास का वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिये लगाया जाता था।

कोटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धनुष का सिरा। २ अस्त्र की नोक या धार। ३ वर्ग। श्रेणी। दरजा। ४. किसी वादविवाद का पूर्व पक्ष। ५ उत्कृष्टता। उत्तमता। ६ समूह। जत्था। ७ किसी ९० अंश के चाप के दो भागों में से एक। ८ किसी त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा।

वि० [सं०] सौ लाख। करोड़।

कोटिक—वि० [सं० कोटि+क] १. करोड़। २ अनगिनत। बहुत अधिक।

कोटिश—क्रि० वि० [सं०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।

वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोटू—संज्ञा पुं० दे० "कूटू"।

कोठा—वि० [सं० कुंठ] खटाई के असर से किसी वस्तु का कूँचा या चबाया न जा सकना। कुंठित (दाँत)।

कोठरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठा+ड़ी (री) (अल्पा० प्रत्य०)] छोटा कमरा।

कोठा—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठक] १. बड़ी कोठरी। चौड़ा कमरा। २. भंडार। ३ मकान में छत या पाटन के ऊपर का कमरा। अटारी।

यौ०—कोठेवाली = वेश्या।

४ उदर। पेट। पक्वाशय।

मुहा०—कोठा बिगड़ना = अपच आदि रोग होना। कोठा साफ होना = साफ दस्त होना।

५ गर्भाशय। धरन। ६ खाना। घर। ७ किसी एक अंक का पहाड़ा जो एक खाने में लिखा जाता है। ८ शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति या वृत्ति रहती हो।

कोठार—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठागार] अन्न, धन आदि रखने का स्थान। भंडार।

कोठारी—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठागारिक] भंडार का प्रबंध करनेवाला अधिकारी। भंडारी।

कोठिला—संज्ञा पुं० दे० "कुठला"।

कोठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठा] १ बड़ा पक्का मकान। हवेली। बँगला। २ वह मकान जिसमें रुपए का लेनदेन या कोई बड़ा कारबार हो। बड़ी दूकान। ४ अनाज रखने का कुठला। बखार। गंज। ५. ईंट या पत्थर की वह जोड़ाई जो कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के भीतर जमीन तक होती है। ६ गर्भाशय।

संज्ञा स्त्री० [सं० कोटि = समूह] उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते हैं।

कोठीवाल—संज्ञा पुं० [हिं० कोठी+वाला] १ महाजन। साहूकार। २ बड़ा व्यापारी। ३. महाजनी अक्षर जो कई प्रकार के होते हैं। कोठीवाली। मुड़िया।

कोठीवाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठी+वाली] १ कोठी चलाने का काम। २. कोठीवाल अक्षर।

कोड़ना—क्रि० स० [सं०√कुड्] १. खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलट देना। गोंड़ना। २ खोदना।

कोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कवर] १. डंडे में बँधी हुई बटे सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं। चाबुक। सोंटा। दुर्रा। २ उत्तेजक बात। मर्मस्पर्शी बात। ३ चेतावनी।

कोड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√कोड़+आई (प्रत्य०)] कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कोड़ी—संज्ञा स्त्री० [अं० स्कोर] बीस का समूह। बीसी।

कोढ़—संज्ञा पुं० [सं० कुष्ठ] [वि० कोढ़ी] एक प्रकार का रक्त और त्वचा संबंधी संक्रामक और घिनौना रोग। वैद्यक में इसके १८ भेद हैं जिनमें से एक में हाथ पैर की उँगलियाँ गलने लगती हैं।

मुहा०—कोढ़ चूना या टपकना = कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना। कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज = दुःख पर दुःख।

कोढ़ी—संज्ञा पुं० [हिं० कोढ+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० कोढ़िन] कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विभिन्न दिशाओं से आकर मिलने या एक दूसरे को काटने वाली दो सीधी रेखाओं के बीच का स्थान। २ किसी खुली या बंद जगह का वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिली हों। कोना। ३ दो दिशाओं के मिलने की दिशा। विदिशा; ये चार हैं-अग्नि, नैर्ऋति, ईशान और वायव्य। ४. एकांत और गुप्त स्थान।

कोत—संज्ञा स्त्री० दे० "कुवत"।

कोतल—संज्ञा पुं० [फा०] १ सजा सजाया घोड़ा जिसपर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा। २ स्वयं राजा की सवारी का

घोड़ा। २. वह घोड़ा जो जरूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है।

कोतवार—संज्ञा पुं० [सं० कोटपाल] दे० "कोटपाल"। उ०—फिरहिं पाँच कोतवार सुभौंरी। काँपै पावँ चपत वह पौरी। —पदमावत।

कोतवाल—संज्ञा पुं० [सं० कोटपाल] १. नगरस्थ पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी। २. पंडितों की सभा, बिरादरी की पंचायत अथवा साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोज आदि का निमत्रण देने और उनका ऊपरी प्रबंध करनेवाला।

कोतवाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोतवाल+ई (प्रत्य०)] १. वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो। २ कोतवाल का पद या काम।

कोताⓅ†—वि० [फा० कोताह] [स्त्री० कोती] छोटा। कम। अल्प।

कोताह—वि० [फा०] छोटा। कम।

कोताही—संज्ञा स्त्री० [फा०] त्रुटि। कमी।

कोतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोथला—संज्ञा पुं० [प्रा० कोत्थल] १. बड़ा थैला। २. पेट।

कोथली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोथला] रुपए पैसे रखने की एक प्रकार की लबी थैली जिसे कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

कोदंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. धनु राशि। ३. भौंह।

कोदⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण अथवा कुत्र] १. दिशा। ओर। तरफ। २ कोना।

कोदव—संज्ञा पु० [सं० कोद्रव] दे० "कोदो"। उ०—फूरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक ताली। —मानस।

कोदों, कोदो—संज्ञा पुं० [सं० कोद्रव] एक खाद्यान्न जो प्राय. सारे भारतवर्ष में होता है।

मुहा०—कोदो देकर पढ़ना या सीखना=अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। छाती पर कोदो दलना=किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

कोधⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोन†—संज्ञा पु० दे० "कोना"।

कोना—संज्ञा पुं० [सं० कोण] १. वह स्थान जहाँ दो किनारे या छोर मिलते हैं। खूँट। २. वह जगह जहाँ दो दीवारें मिलती हैं। ३ कोण। ४ एकांत और छिपा हुआ स्थान।

मुहा०—कोना झाँकना=भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना।

कोनियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोना] १. दीवार के कोने पर चीजें रखने के लिये बैठाई हुई पटरी या पटिया। पटनी। २. किसी चित्र या मूर्ति आदि के चारों कोनों का अलंकरण।

कोप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुपित] क्रोध। रिस। गुस्सा।

कोपन—वि० [सं०] [स्त्री० कोपना] कोप करनेवाला। क्रोधी। गुस्सेवर।

कोपनाⓅ—क्रि० अ० [सं० कोप] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। नाराज होना।

कोपभवन—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठ कर जा रहे।

कोपर—संज्ञा पुं० [हिं० कोंपल] डाल का पका हुआ आम। टपका सीकर।

संज्ञा पुं० [सं० कपाल] बड़ा थाल।

कोपल—संज्ञा स्त्री० दे० कोंपल।

कोपि—सर्व० [सं०] कोई।

कोपी—वि० [सं० कोपिन्] कोप करनेवाला। क्रोधी। उ०—चला न अचल रहा रथ रोपी। रन दुर्मद रावन अति कोपी। —मानस।

कोपीन—संज्ञा पुं० दे० "कौपीन"।

कोफ्ता—संज्ञा पुं० [फा०] कूटे हुए मास का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोबी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोभी"।

कोमल—वि० [सं०] [स्त्री० कोमला] १ मृदु। मुलायम। नरम। २ सुकुमार। नाजुक। ३ अपरिपक्व। कच्चा। ४ सुंदर। मनोहर। ५ स्वर का एक भेद (संगीत)।

कोमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृदुलता। मुलायमत। नरमी। २ मधुरता।

कोमला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अलकार शास्त्र में वह वृत्ति या अक्षरयोजना जिसमें कोमल पद और प्रसाद गुण हों।

कोमलाईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "कोमलता"।

कोयⓅ†—सर्व० दे० "कोई"। उ०—तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय। बड़े भाग अनुराग राम सन होय।—बरवै०।

कोयर—संज्ञा पुं० [हिं० कोंपल] १. साग-पात। सब्जी तरकारी। २. हरा चारा।

कोयल—संज्ञा स्त्री० [सं० कोकिल] बहुत सुंदर बोलनेवाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।

संज्ञा स्त्री० एक लता जिसकी पत्तियाँ गुलाब की पत्तियों से मिलती जुलती होती हैं। अपराजिता।

कोयला—संज्ञा पुं० [सं० कोकिल=अँगारा] १. वह जला हुआ पदार्थ जो अंगारों को बुझाने से बच रहता है। २ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता है और जलाने के काम में आता है।

कोया—संज्ञा पुं० [सं० कोण] १. आँख का डेला। उ०—लोयन कोयन लाल पै प्रगटे गोए मान। —रससारांश। २. आँख का कोना।

संज्ञा पुं० [सं० कोश] कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।

कोर—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] १ किनारा। सिरा। हाशिया। उ०—सान सों डीठि चलै लगी जोरि दोऊ दृग कोर गई मिलि कान सों। —रससारांश। २ कोना।

मुहा०—कोर दबना=किसी प्रकार के दबाव या वश में होना।

३. द्वेष। बैर। वैमनस्य। ४. दोष। ऐब। बुराई। ५ हथियार की धार। बाढ़। ६ पंक्ति। श्रेणी। कतार।

कोरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कली। मुकुल। २ फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। फूल की कटोरी। ३. कमल की नाल या डंडी। मृणाल।

कोर कसर—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोर+फा० कसर] १ दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २. अधिकता और न्यूनता। कमीबेशी।

कोरना†—क्रि० स० [हिं० कोर] १ कोड़ना। २ खरोंचना। ३ कुतरना।

कोरमा—संज्ञा पुं० [तु०] भुना हुआ मास जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।

कोरवा†—संज्ञा पुं० दे० "पुरवा"।

कोरहन—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का धान।

कोरा—वि० [सं० केवल] [स्त्री० कोरी] १ जो बरता न गया हो। नया। अछूता।

मुहा०—कोरी धार या बाढ़=हथियार की धार जिसपर अभी सान रखी गई हो।

२ (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो। ३ जिसपर कुछ लिखा या चित्रित न किया हो। सादा।

मुहा०—कोरा जवाब=साफ इनकार। स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार।

४ खाली। रहित। वंचित। विहीन। ५. आपत्ति या दोष से रहित। बेदाग। ६. मूर्ख। अपढ़। जड़। ७ धनहीन। अकिंचन। ८. केवल। सिर्फ।

संज्ञा पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती।

†संज्ञा पुं० [सं० क्रोड़] गोद। उछंग।

कोरापन—संज्ञा पुं० [हिं० कोरा+पन (प्रत्य०)] नवीनता। अछूतापन।

कोरि—वि० दे० "कोटि"।

कोरिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुटिया] झोपड़ी।

कोरी—संज्ञा पुं० [सं० कोल] [स्त्री० कोरिन] हिंदुओं में एक कपड़ा बुननेवाली जाति।

संज्ञा पुं० [सं० कोटि] करोड़। अनेक। उ०—रघुपति विमुख जतन कर कोरी। कवन सकै भव बंधन छोरी।—मानस।

कोरौ—संज्ञा स्त्री० [?] ओसारे के छप्पर में लगनेवाली बाँस की आड़ी टुकड़ियाँ। छाजन के ठाठ में लगे बाँस या लकड़ी। उ०—कोरौ कहाँ ठाठ नव साजा? तुम बिनु कंत न छाजनि छाजा।—पद्मावत।

कोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूअर। शूकर। २. गोद। उत्संग। ३ बेर। बदरीफल। ४ तोले भर की एक तौल। ५. काली मिर्च। ६ दक्षिण के एक प्रदेश या राज्य का प्राचीन नाम। ७. एक जंगली जाति।

कोलना—क्रि० स० [सं० क्रोडन] खोदकर बीच में पोला करना।

कोलाहल—संज्ञा पुं० [सं०] शोर। हौरा।

कोली—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] गोद।

संज्ञा पुं० हिंदुओं में एक कपड़ा बुननेवाली जाति। कोरी।

कोल्हू—संज्ञा पुं० [प्रा० कोल्हुअ] दानों से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र। घानी।

मुहा०—कोल्हू का बैल=बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद—वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] १. पंडित। विद्वान्। कृतविद्य। २ अनुभवी। कुशल। निपुण (विद्याओं और कलाओं में)।

कोविदार—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार।

कोश—संज्ञा पुं० [स०] १ अंट। अंडा। २ संपुट। डिब्बा। गोलक। ३ फूलों की बँधी कली। ४. पचपात्र नामक पूजा का बरतन। ५. तलवार, कटार आदि की म्यान। ६. आवरण। खोल। ७. वेदांत में निरूपित आत्मा को ढँके रहनेवाले अन्नमय-प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और ज्ञानमय या आनंदमय नामक पाँच आवरण जो प्राणियों में होते हैं। ८ थैली। ९. संचित धन। १० वह ग्रंथ जिसमें शब्दों के मुख्य अर्थ लिखे रहते हैं। अभिधान। ११. समूह। १२. अंडकोश। १३ रेशम का कोया। कुसियारी। १४. कटहल आदि फलों का कोया।

कोशकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ म्यान बनानेवाला। २ शब्दकोश बनानेवाला। अर्थसहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करने वाला। ३ रेशम का कीड़ा।

कोशकीट—संज्ञा पुं० [सं०] रेशम का कीड़ा।

कोशपान—संज्ञा पुं० [सं०] अपराध की एक प्राचीन परीक्षाविधि जिसमें अभियुक्त को एक दिन उपवास करने के बाद कुछ प्रतिष्ठित लोगों के सामने तीन चुल्लू जल पीना पड़ता था।

कोशपाल—संज्ञा पुं० [सं०] खजाने की रक्षा करनेवाला।

कोशल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। २. उपर्युक्त देश में बसनेवाली क्षत्रिय जाति। ३. अयोध्या नगर।

कोशलसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० कोशल+सुता] कौशिल्या। राम की माँ। उ०—जयति कोशलाधीश कल्याण, कोशलसुता-कुशल, कैवल्य-फल-चारु चारी।—विनय०।

कोशला—संज्ञा स्त्री० [सं० कोशल] अयोध्या।

कोशलाधीश—संज्ञा पुं० [सं० कोशल+अधीश] १. राजा दशरथ। २ श्री रामचंद्र।

कोशवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडवृद्धि रोग।

कोशांबी—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशांबी"।

कोशागार—संज्ञा पुं० [सं०] खजाना।

कोशिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रयत्न। चेष्टा।

कोष—संज्ञा पुं० दे० "कोश"।

कोषाणु—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत छोटे कणों या कोषों में रहनेवाला वह मूल तत्व जिससे प्राणियों के शरीर का निर्माण होता है।

कोषाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] खजानची।

कोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी हिस्सा। २. शरीर के भीतर का भाग जिसमें पक्वाशय, मलाशय, आमाशय, गर्भाशय आदि कोष हैं। ३. कोठा। घर का भीतरी भाग। ४. वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाय। गोला। ५. कोश। भंडार। खजाना। ६ प्राकार। शहरपनाह। चहारदीवारी। ७. वह स्थान जो लकीर, दीवार, बाढ़ आदि से चारों ओर से घिरा हो।

कोष्ठक—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और किसी वस्तु से घिरा स्थान। खाना। कोठा। २ किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। सारिणी। ३. लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोड़ा जिसके अंदर प्रकृत वाक्य से संबद्ध वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं, जैसे—[ ], { }, ( )।

कोष्ठबद्धता—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठ+बद्धता] पेट में मल का रुकना। कब्जियत।

कोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जन्मपत्री।

कोस—संज्ञा पुं० [सं० क्रोश] १. दूरी की एक नाप जो प्राचीन काल में ४००० या ८००० हाथ की मानी जाती थी। २. आजकल दो मील या ७०४० हाथ की दूरी।

मुहा०—कोसों या काले कोसों=बहुत दूर। कोसों दूर रहना=अलग रहना।

कोसना—क्रि० स० [सं० क्रोशण] शाप के रूप में गालियाँ देना।

मुहा०—पानी पी-पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना=शाप और गाली देना।

कोसा—संज्ञा पुं० [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम।

संज्ञा पुं० [सं० कोश=प्याला] [स्त्री० कोसिया] मिट्टी का बड़ा दीया। कसोरा।

कोसा-काटी—संज्ञा स्त्री० [हिं √कोस +√काट] शाप के रूप में गाली। बददुआ।

कोसिला†—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"

कोहँड़ौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] उर्द की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी।

कोह—संज्ञा पुं० [फा०] पर्वत। पहाड़।

†(पु)संज्ञा पुं० [सं० क्रोध] क्रोध। गुस्सा।

सज्ञा पुं० [सं० ककुभ] अर्जुन-वृक्ष।
कोहनी—सज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी"।
कोहनूर—सज्ञा पुं० [फा० कोह+अ० नूर] भारत का वह इतिहास-प्रसिद्ध हीरा जो १८४६ में पंजाब विजय पर अँगरेजों के हाथ लगा जिन्होंने उसे दूसरे वर्ष महारानी विक्टोरिया को समर्पित कर दिया। पहले यह हीरा ३१६ रत्ती का था और ससार में सबसे बड़ा समझा जाता था। पर अब यह कटते छँटते कुल १०२३ रत्ती रह गया है।
कोहबर—सज्ञा पुं० [सं० कोष्ठवर ?] वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं।
कोहरा—संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।
कोहल—सज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जो नाट्यकला के आदि आचार्य कहे जाते हैं।
कोहान—सज्ञा पुं० [फा०] ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड़।
कोहानाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० कोह से ना० धा०] १ रूठना। नाराज होना। मान करना। २. गुस्सा होना। क्रोध होना।
कोहिस्तान—सज्ञा पुं० [फा०] पहाड़ी देश।
कोही—वि० [हिं० कोह+ई (प्रत्य०)] क्रोध करनेवाला। उ०—कर कुठार मैं, अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।—मानस।
वि० [फा० कोह] पहाड़ी।
कोहु—सज्ञा पुं० दे० "कोह"। उ०—तुम्ह जोगी वैरागी कहत न मानहु कोहु।—पदमावत।
कौंⓟ—प्रत्य० [हिं० को] को। के लिये। उ०—देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अज्ञान। धर्म सुजस प्रभु तुम्हकौं इन्ह कहँ अति कल्यान।—मानस।
कौंच—सज्ञा स्त्री० [सं० कच्छु] सेम की तरह की एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं। कपि-कच्छु। केवाँच।
कौंछ—सज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
कौंतेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुंती के तीन पुत्र युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन में से कोई। २ अर्जुनवृक्ष।
कौंध—सज्ञा स्त्री० [हिं० कौंधना] बिजली की चमक।
कौंधना—क्रि० अ० [सं० कनन=चमकना +अध] बिजली का चमकना।
कौंला—सज्ञा पु० [सं० कमला] एक प्रकार का मीठा नीबू या सतरा।
कौंहर—सज्ञा पुं० [सं० कटुफल या काक-फल] इद्रामया का फल जो पकने पर अत्यत रक्त वर्ण का हो जाता है। माहुर।
कौ—क्रि० वि० दे० "कत्र"। उ०—क्यों कहि जात महा सुखमा, उपमा तकि ताकत है कवि कौ की।—कविता०।
कौआ—सज्ञा पुं० [सं० काक] [स्त्री० कौवी] १. एक बड़ा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। काक।
यौ०—कौआ-गुहार या कौआ-रोर=१ बहुत अधिक बकवक। २. गहरा शोर-गुल।
२ बहुत धूर्त मनुष्य। काइयाँ। ३. वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिये लगाई जाती है। कौहा। बहुवाँ। ४. गले के अदर तालू की झालर के बीच का लट-कता हुआ मास का टुकड़ा। घाँटी। लगर। ललरी। ५ एक प्रकार की मछली जिसका मुँह बगले की चोंच की तरह होता है।
कौआठोंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० काकतुडी] एक लता जिसके फूल सफेद और नीले रंग के तथा आकार में कौवे की चोंच के समान होते हैं। काकतुडी। काकनासा।
कौआना†—क्रि० अ० [कौआ] १. भौचक्का होना। चकपकाना। २ अचानक कुछ बड़-बड़ा उठना।
कौटिल्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. टेढ़ापन। २ कपट। ३ चाणक्य का एक नाम।
कौटुंबिक—वि० [स०] १ कुटुब का। कुटुब सबधी। २ परिवारवाला।
कौड़ा—सज्ञा पुं० [सं० कपर्दक] बड़ी कौड़ी।
सज्ञा पुं० [सं० कुड] जाड़े के दिनों में तापने के लिये जलाई हुई आग। अलाव।
कौड़िया—वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रग का। कुछ स्याही लिए हुए सफेद।
सज्ञा पुं० कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला। उ०—सरग सीस धर धरती, हिया सो प्रेम-समुद। नैन कौड़िया होइ रहे, लेइ लेइ उठहिं सो बुद।—पदमावत।
कौड़ियाला—वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रग का। ऐसा हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ झलक हो। कोकई।
सज्ञा पु० १ कोई रग। २ एक प्रकार का विषैला साँप। ३ कृपण धनाढ्य। कजूस अमीर। ४ एक पौधा जिसमें छुच्छी के आकार के छोटे छोटे फूल लगते हैं। ५ कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला।
कौड़ियाही—सज्ञा स्त्री० [हिं० कौड़ी] मजदूरी की एक रीति जिसमें प्रति खेप कुछ कौड़ियाँ दी जाती हैं।
कौड़िल्ला—सज्ञा पुं० [हिं० कौड़ी] मछली खानेवाली एक चिड़िया। किलकिला।
कौड़ी—सज्ञा स्त्री० [सं० कपर्दिका] १ समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह अस्थिकोश के अंदर रहता है और जिसका प्राणहीन अस्थिकोश प्राचीन काल में सबसे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आता था। कपर्दिका। वराटिका।
मुहा०—कौड़ी काम का नहीं=निकम्मा। निकृष्ट। कौड़ी का, या दो कौड़ी का=(१) जिसका कुछ मूल्य न हो। तुच्छ। निकम्मा। (२) निकृष्ट। खराब। कौड़ी का तीन होना=(१) बहुत सस्ता होना। (२) तुच्छ होना। बेकदर होना। ना-चीज होना। कौड़ी कौड़ी अदा करना, चुकाना या भरना=सब ऋण चुका देना। कुल बेबाक कर देना। कौड़ी कौड़ी जोड़ना=बहुत थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना। बड़े कष्ट से रुपया बटोरना। कौड़ी भर=बहुत थोड़ा सा। जरा सा। कानी या झंझी कौड़ी=(१) वह कौड़ी जो टूटी हो। (२) अत्यत अल्प द्रव्य। चित्ती कौड़ी=वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें हों (इसका व्यवहार जुए में होता है)।
२ धन। द्रव्य। रुपया-पैसा। ३ वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है। ४. आँख का डेला। ५ छाती के नीचे बीचोबीच की वह छोटी हड्डी जिसपर नीचे की दोनों पसलियाँ मिलती हैं। ६ जघा, काँख, या गले की गिल्टी। ७ कटार की नोक।
कौणप—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक राक्षस। २ पापी। अधर्मी।
कौतिगⓟ†—सज्ञा पुं० दे० "कौतुक"। उ०—पति सग जागी सुंदरी, कौतिग दीठा तेणि।—कबीर०।
कौतिगहार—वि० [हिं० कौतिग+हार] कौतुक देखनेवाला। तमाशबीन। उ०—भगति दुहेली राम की, जैसि अगिनि की झाल। डाकि पडे ते ऊबरे दाधे कौतिग-हार।—कबीर०।
कौतुक—सज्ञा पुं० [स०] [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २ आश्चर्य। अचभा। ३ विनोद। दिल्लगी। ४ आनद। प्रसन्नता। ५ खेल-तमाशा।

कौतुकिया—संज्ञा पुं० दे० "कौतुकी"।

कौतुकी—वि० [सं०] १. कौतुक करनेवाला। विनोदशील। २ विवाह-संबंध करनेवाला। ३ खेलतमाशा करनेवाला।

कौतूह, कौतूहल—संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल"।

कौथा—संज्ञा स्त्री० [हिं० कौन+तिथि] १. कौन सी तिथि। कौन तारीख। २ कौन सा संबंध। कौन सा वास्ता।

कौथा—वि० [हिं० कौन+सं० स्था (स्थान)] किस संख्या का। गणना में किस स्थान का।

कौन—सर्व० [प्रा० कवण] एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।

मुहा०—कौन सा=कौन। कौन होना =(१) क्या अधिकार रखना। क्या मतलब रखना। (२) कौन संबंधी होना। रिश्ते में क्या होना।

कौनप—संज्ञा पुं० दे० "कौणप"। उ०—केवट कुटिल भालु कपि कौनप कियो सकल सँग भाई।—विनय०।

कौपीन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मचारियों और संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी। चीर। कफनी। काछा।

कौम—संज्ञा स्त्री० [अ०] वर्ण। जाति।

कौमार—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० कौमारी] १ कुमार अवस्था। जन्म से पाँच वर्ष तक की या (तंत्र के मत से) १६ वर्ष तक की अवस्था। २. कुमार।

कौमारभृत्य—संज्ञा पुं० [सं० कौमारभृत्यम्] बालकों के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की विद्या। धात्रविद्या। दायागिरी।

कौमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुरत की ब्याही कुमारी। २. देवताओं की सात शक्तियों या मातृकाओं में से एक। ३ पार्वती।

कौमी—वि० [अ० कौम] कौम का। जाति-संबंधी। जातीय।

कौमुदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्योत्स्ना। चाँदनी। जुन्हैया। २ कार्तिकी पूर्णिमा। ३ आश्विनी पूर्णिमा। ४ दीपोत्सव की तिथि। ५ कुमुदिनी। कोईं। ६ उत्सव। ७ किसी सिद्धांत या विषय का स्पष्टीकरण। व्याख्या, जैसे—सिद्धांत-कौमुदी, कविता-कौमुदी।

कौमोदी, कौमोदकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की गदा।

कौर—संज्ञा पुं० [सं० कवल] १ उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला।

मुहा०—मुँह का कौर छीनना=देखते देखते किसी का अंश दबा बैठना।

२ उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिये डाला जाय।

कौरना—क्रि० स० [हिं० कौड़ा] थोड़ा भूनना, सेंकना।

कौरव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कौरवी] १. कुरु राजा की संतान। कुरुवंशज। २ धृतराष्ट्र के पुत्र।

वि० [सं०] [स्त्री० कौरवी] कुरु-संबंधी।

कौरवपति—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्योधन।

कौरा—संज्ञा पुं० [सं० कोल] द्वार के दोनों ओर के वे भाग जिनसे खुलने पर किवाड़ सटे रहते हैं।

संज्ञा पुं० [सं० कवल]। वह अन्न जो कुत्ते आदि के सामने डाल दिया जाता है।

कौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] अँकवार। गोद।

कौलंज—संज्ञा पुं० [यू० कोलिकोस्] पसलियों के नीचे का दर्द। वायसूल।

कौल—वि० [सं०] १ उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे खानदान का। २ वाममार्गी।

संज्ञा पुं० [सं० कमल] कमल का फूल। उ०—कौल उरोजवतीन को आनन मोहन-नैन भ्रमै जिमि भौंर।—शृंगार०।

संज्ञा पुं० [सं० कवल] कौर। ग्रास।

संज्ञा पुं० [अ० कौल] १ कथन। उक्ति। वाक्य। २. प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।

यौ०—कौल करार=परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा।

कौलटेय—संज्ञा पुं० [सं०] कुलटा का पुत्र।

कौला—संज्ञा पुं० दे० "कोरा"।

कौवाल—संज्ञा पुं० [अ० कव्वाल] कौवाली गानेवाला।

कौवाली—संज्ञा स्त्री० [अ० कव्वाली] १ एक प्रकार का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत जो सूफियों की मजलिसों में गाया जाता है। २ इस धुन में गाई जानेवाली कोई गजल। ३ कौवालों का पेशा।

कौशल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षता। चतुराई। निपुणता। २ कुशल-मंगल। क्षेम। दुःख, झंझट और परेशानी का अभाव। सौभाग्य। सुख-चैन। समृद्धि। ३. कोशल देश का निवासी।

कौशलेय—संज्ञा पुं० [सं०] कौशल्या के पुत्र श्रीरामचंद्र जी।

कौशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोशल के राजा दशरथ की पटरानी और श्रीरामचंद्र की माता।

कौशांबी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमान इलाहाबाद नगर से थोड़ी दूर कोसम नामक गाँव में यमुना के किनारे बसी एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।

कौशिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २ कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३. विश्वामित्र। ४ कोषाध्यक्ष। ५ कोशकार। ६. रेशमी कपड़ा। ७ शृंगार रस। ८ एक उपपुराण। ९ हनुमत के मत से छः रागों में से एक। १० उल्लू।

कौशिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंडिका। २. राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री। ३ काव्य या नाटक में वह वृत्ति जिसमें करुण, हास्य और शृंगार रस का वर्णन हो और सरल वर्ण आवें।

कौशिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

कौशेय—वि० [सं०] रेशम का। रेशमी।

कौषिकी—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी"।

कौषीतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऋग्वेद की एक शाखा। २ ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद्।

कौसल⑤—संज्ञा पुं० दे० "कौशल"।

कौसिक—संज्ञा पुं० दे० "कौशिक"।

कौसिला⑤†—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।

कौसीस⑤—संज्ञा पुं० [सं० कपिशीर्षक] कगूरा। उ०—सोवारी रहटघाट कौसीसे प्रकार पुर विन्यास कथा कहुओ का।

कौसीसा—संज्ञा पुं० दे० "कौसीस"।

कौस्तुभ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्ष स्थल पर पहने रहते हैं।

कौहर—संज्ञा पुं० [?] इंद्रायण, जिसका फल पकने पर अत्यंत लाल होता है। उ०—तरवा मनोहर सु एड़ी मृदु कौहर सी, सौहर ललाई की न ह्वैहै लालगन मैं।—शृंगार०।

क्या—सर्व० [सं० किम् ?] एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। कौन वस्तु या बात।

मुहा०—क्या कहना है या क्या खूब !=प्रशंसासूचक वाक्य। धन्य। वाह वा। बहुत अच्छा है। क्या कुछ, क्या क्या कुछ=सब कुछ। बहुत कुछ। क्या चीज है!=नाचीज है। तुच्छ है। क्या जाता है!=क्या नुकसान होता है? कुछ हानि नहीं। क्या जानें!=कुछ नहीं जानते। ज्ञात नहीं। मालूम नहीं। क्या पड़ी है?=क्या आवश्यकता है? कुछ जरूरत नहीं। कुछ गरज नहीं। और क्या=हाँ ऐसा ही है।

वि० (१) कितना। किस कदर। (२) बहुत अधिक। बहुतायत से। (३) अपूर्व। विचित्र। (४) बहुत अच्छा। कैसा उत्तम!

क्रि० वि० क्यों। किसलिये।

अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।

क्यारी—संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"।

क्यों—क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी व्यापार या घटना के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस कारण। किसलिये। किस वास्ते।

यौ०—क्योंकि=इसलिये कि। इस कारण कि।

मुहा०—क्योंकर=किस प्रकार। कैसे। क्यों नहीं!=(१) ऐसा ही है। ठीक कहते हो। निःसंदेह। बेशक (२) हाँ। जरूर। (३) कभी नहीं। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।

(पु) २. किस भाँति? किस प्रकार?

क्रंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोना। विलाप। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान। ललकार।

क्रकच—संज्ञा पुं० [सं०] १. आरा। करवत। २. एक नरक। ३ ज्योतिष में एक अशुभ योग। ४. करील का पेड़। ५ एक बाजा।

क्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ। २ जीव। ३. इंद्रिय। ४. संकल्प। ५ इच्छा। अभिलाषा। ६. निश्चय। ७ विष्णु।

यौ०—क्रतुपति=विष्णु। क्रतुफल=यज्ञ का फल, स्वर्ग आदि।

८. आषाढ़ मास। ९ ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से हैं।

क्रतुध्वंसी—संज्ञा पुं० [सं०] (दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव।

क्रतुपशु—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञपशु।

क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर रखने या डग भरने की क्रिया। २. वस्तुओं या कार्यों के परस्पर आगे पीछे आदि होने का नियम। पूर्वापर संबंधी व्यवस्था। शैली। तरतीब। सिलसिला। ३. कार्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली।

मुहा०—क्रम क्रम करके=धीरे धीरे। शनैः शनैः। क्रम से, क्रम क्रम से=धीरे-धीरे।

४. वेदपाठ की एक प्रणाली। ५. किसी कृत्य के पीछे कौन सा कृत्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। वैदिक विधान। कल्प। ६ वह काव्यालंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय।

(पु) संज्ञा पुं० दे० "कर्म"।

क्रमनासा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

क्रमशः—क्रि० वि० [सं०] १ क्रम से। सिलसिलेवार। २ धीरे धीरे। थोड़ा थोड़ा करके।

क्रमसंन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाय।

क्रमागत—वि० [सं०] १ क्रमशः किसी रूप को प्राप्त। २. जो सदा से होता आया हो। परंपरागत।

क्रमात्—क्रि० वि० [सं०] १ क्रम या सिलसिले से। यथानुक्रम। २ क्रम क्रम से। धीरे धीरे।

क्रमानुकूल, क्रमानुसार—वि०, क्रि० वि० [सं०] श्रेणी के अनुसार। क्रम से। सिलसिलेवार। तरतीब से।

क्रमिक—वि० [सं०] १ क्रमयुक्त। क्रमागत। २. परंपरागत। ३. क्रम क्रम से होनेवाला।

क्रमुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपारी। २ नागरमोथा। ३ एक प्राचीन देश।

क्रमेल, क्रमेलक—संज्ञा पुं० [सं०, यूना० कमेलस] ऊँट।

क्रय—संज्ञा पुं० [सं०] मोल लेने की क्रिया। खरीदने का काम।

यौ०—क्रय-विक्रय=खरीदने और बेचने की क्रिया। व्यापार।

क्रयी—संज्ञा पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला।

क्रय्य—वि० [सं०] जो बिक्री के लिये रखा जाय। जो चीज बेचने के लिये हो।

क्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] मांस।

क्रव्याद—संज्ञा पुं० [सं०] १ मांस खानेवाला जीव। २. चिता की आग। ३, भयंकर आग।

क्रांत—वि० [सं०] १. दबा या ढका हुआ। २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। ग्रस्त। ३ आगे बढ़ा हुआ; जैसे—सीमाक्रांत।

क्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कदम रखना। गति। आगे बढ़ना। २ खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिसपर सूर्य घूमता है। ३. किसी ग्रह का अपक्रम। ४ एक दशा से दूसरी दशा में भारी परिवर्तन। फेरफार। उलटफेर; जैसे—राज्यक्रांति।

क्रांतिमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त जिसपर सूर्य घूमता है।

क्रांतिवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का मार्ग।

क्रिचयन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० कृच्छ्रचांद्रायण] चांद्रायण व्रत।

क्रिमि—संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

क्रिमिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लाह। लाख। २ रेशम।

क्रियमाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किया जा रहा हो। २ वर्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।

क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी काम का होना या किया जाना। कर्म। २. प्रयत्न। चेष्टा। ३. गति। हरकत। हिलना डोलना। ४. अनुष्ठान। आरंभ। ५. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय; जैसे—आना, मारना। ६ शौच आदि कर्म। नित्यकर्म। ७. श्राद्ध आदि प्रेतकर्म।

यौ०—क्रियाकर्म=अंत्येष्टि क्रिया।

८ उपचार। चिकित्सा।

क्रियाचतुर—संज्ञा पुं० [सं०] क्रिया या घात में चतुर नायक।

क्रियातिपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रकृत से भिन्न कल्पना करके किसी विषय का वर्णन किया जाय। कुछ लोग इसे अतिशयोक्ति का और कुछ लोग संभावना का एक भेद मानते हैं।

क्रियात्मक—वि० [सं०] क्रिया के रूप में किया हुआ। जो सचमुच कर दिखलाया गया हो। क्रियामय।

क्रियानिष्ठ—वि० [सं०] संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।

क्रियायोग—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की पूजा करना और मंदिर आदि बनवाना।

क्रियार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधिवाक्य।

क्रियावान्—वि० [सं०] कर्मनिष्ठ। कर्मठ।

क्रियाविदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करे।

क्रियाविशेषण—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे किसी वाक्य में क्रिया के बारे में कोई विशेष बात प्रकट हो, जैसे—कैसे, धीरे, क्रमशः, अचानक इत्यादि।

क्रिस्तान—संज्ञा पुं० [अँ० क्रिश्चियन्] ईसा के मत पर चलनेवाला। ईसाई।

क्रिस्तानी—वि० [हिं० क्रिस्तान+ई (प्रत्य०)] १ ईसाइयों का। २. ईसाई मत के अनुसार।

क्रीट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।

क्रीडन—संज्ञा पुं० दे० "क्रीड़ा"।

क्रीड़ना—क्रि० अ० [सं०] क्रीड़ा करना। खेलना।

क्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केलि। आमोद प्रमोद। खेलकूद। २ एक छंद या वृत्त।

क्रीड़ाचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] छ यगणों का एक वृत्त या छंद। महामोदकारी; जैसे—यही पूरवैगो सबै लालसा तो लला देवकी को। करै गाथ जाको महामोदकारी सबै काव्य नीको॥

क्रीड़ित—वि० [सं०] जिससे क्रीड़ा की जाय। क्रीड़ा के काम में आया हुआ।

क्रीत—वि० [सं०] खरीदा हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "क्रीतक"। २. पंद्रह प्रकार के दासों में से वह जो मोल लिया गया हो।

क्रीतक—संज्ञा पुं० [सं०] मनुस्मृति के अनुसार बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो माता पिता को धन देकर उनसे खरीदा गया हो।

क्रुद्ध—वि० [सं०] कोपयुक्त। क्रोध में भरा हुआ।

क्रुद्धित—वि० दे० "क्रोधित"। उ०—क्षुब्ध निरुधित उधत क्रुद्धित वीर बली दसकंधर धावै।—रससाराश।

क्रूर—वि० [सं०] [स्त्री० क्रूरा] १ परपीड़क। दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला। २ निर्दय। जालिम। ३ कठिन। ४ तीक्ष्ण।

क्रूरकर्मा—संज्ञा पुं० [सं०] क्रूर काम करनेवाला।

क्रूरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निष्ठुरता। निर्दयता। कठोरता। २. दुष्टता।

क्रूरात्मा—वि० [सं०] दुष्ट प्रकृतिवाला।

क्रूस—संज्ञा पुं० [अं० क्रास] ईसाइयों का एक धर्मचिह्न जो उस सूली का सूचक है जिसपर ईसामसीह चढ़ाए गए थे।

क्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] खरीदनेवाला। मोल लेनेवाला। खरीदार।

क्रोड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ आलिंगन में दोनों बाहों के बीच का भाग। भुजांतर। वक्ष स्थल। २. गोद। अँकवार। कोल।

क्रोड़पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी किसी छूट की पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय। परिशिष्ट। पूरक।

क्रोध—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त का उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

क्रोधवंत(पु)—वि० दे० "क्रुद्ध"।

क्रोधित(पु)—वि० [हिं० क्रोध] कुपित। क्रुद्ध।

क्रोधी—वि० [सं० क्रोधिन्] [स्त्री० क्रोधिनी] क्रोध करनेवाला। गुस्सावर।

क्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] कोस।

क्रौंच—संज्ञा पुं० [सं०] १ करौंकुल नामक पक्षी। २ हिमालय की एक चोटी। ३ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ४. एक प्रकार का अस्त्र। ५ वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण, सगण, भगण, चार नगण और अंत्य गुरु कुल २५ वर्ण होते हैं, जैसे—पूत जहाँ है, मानत माता, जनक सहित नित, अरचन करिकै। नारि सुशीला, क्रौंच समाना, पति वचननि सुन, तिय तन धरिकै॥

क्लब—संज्ञा पुं० [अँ०] सार्वजनिक विषयों के विचार या आमोद प्रमोद के लिये बनी संस्था या समिति।

क्लर्क—संज्ञा पुं० [अँ०] कार्यालय का मुशी। मुहर्रिर।

क्लांत—वि० [सं०] थका हुआ। श्रांत।

क्लांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिश्रम। २. थकावट।

क्लिप—संज्ञा स्त्री० [अ०] कागज या बालों आदि को दबाने की कमानी।

क्लिशित—वि० [सं० क्लेशित] दे० "क्लेशित"।

क्लिष्ट—वि० [सं०] १ क्लेशयुक्त। दुखी। दुःख से पीड़ित। २. बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य)। ३. कठिन। मुश्किल। ४. जो कठिनता से सिद्ध हो।

क्लिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लिष्ट होने का भाव। कठिनाई।

क्लिष्टत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. कठिनता। क्लिष्टता। २. काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनता होती है।

क्लीव—वि० पुं० [सं०] १ षंढ। नपुंसक। नामर्द। २ डरपोक। कायर।

क्लीवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लीव का भाव। नपुंसकता।

क्लीवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता।

क्लेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. गीलापन। आर्द्रता। २ पसीना। ३ पीप। मवाद।

क्लेदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पसीना लानेवाला। २ शरीर में एक प्रकार का कफ जिससे पसीना उत्पन्न होता है। ३. शरीर की दस प्रकार की अग्नियों में से एक।

क्लेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुःख। कष्ट। व्यथा। वेदना। †२. झगड़ा। लड़ाई।

क्लेशित—वि० [सं०] जिसे क्लेश हो। दुःखित। पीड़ित।

क्लैव्य—संज्ञा पुं० [सं०] क्लीवता।

क्लोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाहिना फेफड़ा। २ फेफड़ा। फुफ्फुस।

क्वचित्—क्रि० वि० [सं०] कोई ही। शायद ही कोई। बहुत कम।

क्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १ घुँघरू का शब्द। २. वीणा की झंकार।

क्वणित—वि० [सं०] १ शब्द करता हुआ। २ बजता हुआ।

क्वाँरा—संज्ञा पुं० दे० "क्वारा"।

क्वाथ—संज्ञा पुं० [सं०] पानी में उबालकर ओषधियों का निकाला हुआ रस। काढ़ा।

क्वान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "क्वण"।

क्वारपन—संज्ञा पुं० [हिं० क्वारा+पन (प्रत्य०)] क्वारापन। कुमारपन। क्वारा का भाव।

क्वारा—संज्ञा पुं०, वि० [सं० कुमार] [स्त्री० क्वारी] जिसका विवाह न हुआ हो। कुँआरा। बिन ब्याहा।

क्वारापन—संज्ञा पुं० दे० "क्वारापन"।

क्वारेंटाइन—संज्ञा पुं० [अँ०] वह स्थान जहाँ विदेशों से आए हुए रोगी इसलिये कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा कोई संक्रामक रोग देश में न फैले।

क्वासि—वाक्य [सं०] तू कहाँ है? तू किस स्थान पर है?

क्वैला—संज्ञा पुं० दे० "कोयला"।

क्षंतव्य—वि० दे० "क्षम्य"।

क्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षणिक] १ काल या समय का सबसे छोटा भाग। पल का चतुर्थांश।

मुहा०—क्षण मात्र=थोड़ी देर।

२. काल। ३ अवसर। मौका। ४. समय। ५ उत्सव। पर्व का दिन।

क्षणदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

क्षणप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणभंगुर—वि० [सं०] शीघ्र या क्षण भर में नष्ट होनेवाला। अनित्य।

क्षणिक—वि० [सं०] एक क्षण रहनेवाला। क्षणभंगुर। अनित्य।

क्षणिकवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु का उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नाश हो जाना माना जाता है।

क्षणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणेक—क्रि० [वि०] [सं० क्षण+एक] क्षण भर। बहुत थोड़ी देर तक।

क्षत—वि० [सं०] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो। घाव लगा हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. घाव। जख्म। २. व्रण। फोड़ा। ३ मारना। काटना। ४ क्षति या आघात पहुँचाना।

क्षतज—वि० [सं०] १. क्षत से उत्पन्न; जैसे—क्षतज शोथ। २. लाल। सुर्ख।

संज्ञा पुं० [सं०] रक्त। रुधिर। खून।

क्षतयोनि—वि० [सं०] (स्त्री) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षत-विक्षत—वि० [सं०] जिसे बहुत चोटें लगी हों। घायल। लहूलुहान।

क्षतव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।

क्षता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका विवाह से पहले ही किसी पुरुष से दूषित संबंध हो चुका हो।

क्षताशौच—संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल या जख्मी होने के कारण लगता है।

क्षति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हानि। नुकसान। २. क्षय। नाश।

क्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधिपत्य। प्रभुत्व। २ बल। ३ राष्ट्र। ४ धन। ५. शरीर। ६ जल। ७ शासन। शासकवर्ग। ८. सैन्यवर्ग। राजन्यवर्ग। क्षत्रिय। योद्धा।

क्षत्रकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियोचित कर्म।

क्षत्रधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का धर्म, यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजापालन आदि।

क्षत्रप—संज्ञा पुं० [सं० या पुरानी फा०] ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि जो भारत के शक राजाओं ने ग्रहण की थी।

क्षत्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

क्षत्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में राजयोग।

क्षत्रवेद—संज्ञा पुं० [सं०] धनुर्वेद।

क्षत्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] १ हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना है। २. राजा।

क्षत्री—संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।

क्षपणक—वि० [सं०] निर्लज्ज।

संज्ञा पुं० [सं०] १. नंगा रहनेवाला जैन यती। दिगंबर यती। २. बौद्ध सन्यासी।

क्षपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

क्षपाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. चद्रमा। २ कपूर।

क्षपाचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षपाचरी] निशाचर। राक्षस।

क्षपानाथ—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

क्षपेस—संज्ञा पुं० [सं० क्षपा+ईश] चद्रमा। उ०—धौल अटा लखि नौल क्षपेस दियो छिटकाइ छटा छबिजालहिं।—शृंगार०।

क्षम—वि० [सं०] सशक्त। योग्य। समर्थ। उपयुक्त (यौगिक में), जैसे—कार्यक्षम।

संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति। बल।

क्षमणीय—वि० [सं०] १. क्षमा करने योग्य। २ बरदाश्त करने लायक।

क्षमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. योग्यता। सामर्थ्य। २ धैर्य। बरदाश्त की शक्ति।

क्षमना(५)—क्रि० स० दे० "छमना"।

क्षमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्त की एक वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को दंड देने की शक्ति रखता हुआ भी चुपचाप सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता। शांति। माफी। २ सहिष्णुता। सहनशीलता। धैर्य। ३. पृथ्वी। ४. एक की संख्या। ५. दक्ष की एक कन्या। ६. दुर्गा। ७. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

क्षमाई(५)—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षमा+हिं० आई (प्रत्य०)] क्षमा करने की क्रिया।

क्षमाना(५)—क्रि० स० दे० "छमाना"।

क्षमालु—वि० [सं०] क्षमाशील। क्षमावान्।

क्षमावान्—वि० पुं० [सं० क्षमावत] [स्त्री० क्षमावती] १ क्षमा करनेवाला। माफ करनेवाला। २ सहनशील। गमखोर।

क्षमाशील—वि० [सं०] १. माफ करनेवाला। क्षमावान्। २. शांत प्रकृति का।

क्षमितव्य—वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।

क्षमी—वि० [सं० क्षमिन्] १. क्षमाशील। माफ करनेवाला। २. शांत प्रकृति का। ३. समर्थ। सशक्त।

क्षम्य—वि० [सं०] माफ करने योग्य। जो क्षमा किया जाने योग्य हो। क्षंतव्य।

क्षय—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० क्षयित्व] १. धीरे धीरे घटना। ह्रास। अपचय। २ प्रलय। कल्पांत। ३. नाश। ४. घर। मकान। ५. यक्ष्मा नामक रोग। क्षयी। ६ अंत। समाप्ति। ७ ज्योतिष के अनुसार वह चांद्रमास जो चांद्र और सौर वर्षों के मेल के लिये गणना में नहीं लिया जाता। ८. ज्योतिष के अनुसार किसी वर्ष का वह महीना जो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरंभ होकर अमावास्या तक रहता है। इसमें दो संक्रांतियाँ होती हैं और इसके तीन महीने पहले और तीन महीने बाद एक एक अधिमास पड़ता है। कार्तिक, अगहन और पूस को छोड़ और कोई महीना क्षयमास नहीं हो सकता। सिद्धांतशिरोमणि के अनुसार यह महीना प्राय. १४१ वर्षों के अंतर पर पड़ता है। इस मास में किसी प्रकार का मंगलकार्य करना निषिद्ध है। इसे अहंस्पति भी कहते हैं।

क्षय पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण पक्ष।

क्षयिष्णु—वि० [सं०] क्षय या नष्ट होनेवाला।

क्षयी—वि० [सं०] १. क्षय होनेवाला। नष्ट होनेवाला। २ जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो।

संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

संज्ञा स्त्री० [सं० क्षय] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता और सारा शरीर धीरे धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।

क्षय्य—वि० [सं०] क्षय होने के योग्य ।

क्षर—वि० [सं०] १ नाशवान् । नष्ट होनेवाला । २. पिघलने, टपकने या धीरे धीरे बहनेवाला ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ जल । २ मेघ । ३ जीवात्मा । ४. शरीर । ५. अज्ञान ।

क्षरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रस रसकर चूना । स्राव होना । रसना । २ झगड़ा । ३. नाश या क्षय होना । ४. छूटना । ५. पतन । पात । गिरना । ६. साफ करना ।

क्षांत—वि० [सं०] [स्त्री० क्षांता] १ क्षमाशील । क्षमा करनेवाला । २ सहनशील ।

क्षांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहिष्णुता । सहनशीलता । २ क्षमा ।

क्षात्र—वि० [सं०] क्षत्रिय संबंधी । क्षत्रियों का ।

संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियत्व । क्षत्रियपन ।

क्षाम—वि० [सं०] [स्त्री० क्षामा] १ क्षीण । कृश । दुबला पतला ।

यौ०—क्षामोदरी = पतली कमरवाली (स्त्री) ।

२ दुर्बल । कमजोर । ३ अल्प । थोड़ा ।

क्षार—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाहक, जारक या विस्फोटक ओषधियों को जलाकर या खनिज पदार्थों को पानी में घोलकर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके तैयार की हुई राख का नमक । खार । खारी । २ नमक । ३ सज्जी । खार । ४ शोरा । ५ सुहागा । ६ भस्म । राख ।

वि० [सं०] १. क्षरणशील । २ खारा ।

क्षारलवण—संज्ञा पुं० [सं०] खारी नमक ।

क्षालन—संज्ञा पुं० [सं०] धोना । साफ करना ।

क्षालित—वि० [सं०] धुला हुआ । साफ किया हुआ ।

क्षिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथिवी । २. वासस्थान । जगह । ३ राज्य । ४ गोरोचन । ५ क्षय । ६ प्रलय काल ।

क्षितिज—संज्ञा पुं० [सं०] १ खगोल में वह तिर्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश हो । २ दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले हुए जान पड़ते हों । ३ मगल ग्रह । ४ नरकासुर । ५. केंचुआ । ६ वृक्ष । पेड़ ।

क्षिप्त—वि० [सं०] १ फेंका हुआ । त्यागा हुआ । २. विकीर्ण । ३. अवज्ञात । अपमानित । ४. पतित । ५ वात रोग से ग्रस्त । ६. उचटा हुआ । चचल । विचलित ।

क्षिप्र—क्रि० वि० [सं०] १. शीघ्र । जल्दी । २ तत्क्षण । तुरत ।

वि० [सं०] १ तेज । जल्द । २ चचल ।

क्षिप्रहस्त—वि० [सं०] शीघ्र या तेज काम करनेवाला ।

क्षीण—वि० [सं०] १ दुबला पतला । २ सूक्ष्म । ३ घटा हुआ । जो कम हो गया हो ।

क्षीणचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चद्रमा ।

क्षीणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्बलता । कमजोरी । २. दुबलापन । ३ सूक्ष्मता ।

क्षीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूध । पय ।

यौ०—क्षीरसार = मक्खन ।

२ द्रव या तरल पदार्थ । ३ जल । पानी । ४ पेड़ों का रस या दूध । ५ खीर ।

क्षीरकाकोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की काकोली जड़ी जो अष्टवर्ग के अंतर्गत है ।

क्षीरज—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा । २ शख । ३ कमल । ४ दही ।

क्षीरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

क्षीरधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

क्षीरनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

क्षीरव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] केवल दूध पीकर रहने का व्रत ।

क्षीरसागर—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है ।

क्षीरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षीरकाकोली । २ खिरनी ।

क्षीरोद—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीरसमुद्र ।

यौ०—क्षीरोदतनया = लक्ष्मी ।

क्षुण्ण—वि० [सं०] १ अभ्यस्त । २ दलित । ३ टुकड़े टुकड़े किया हुआ । ४. खडित । ५ सुविचारित ।

क्षुत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूख । क्षुधा ।

क्षुद्र—वि० [सं०] १ कृपण । कजूस । २ अधम । नीच । ३ अल्प । छोटा या थोड़ा । ४ क्रूर । खोटा । ५ दरिद्र ।

क्षुद्रघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घुँघरूदार करधनी । २ घुँघरू ।

क्षुद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीचता । कमीनापन । २ ओछापन ।

क्षुद्रप्रकृति—वि० [सं०] ओछे या खोटे स्वभाववाला । नीच प्रकृति का ।

क्षुद्रबुद्धि—वि० [सं०] १. दुष्ट या नीच बुद्धिवाला । २. नासमझ । मूर्ख ।

क्षुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मधुमक्खी । २ वेश्या । ३. लोनी । अमलोनी ।

क्षुद्रावली—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र+अवली] क्षुद्रघंटिका । उ०—अग अभूषण जननि उतारति । दुलरी ग्रीव माल मोतिन की केयुर लै भुज, श्याम निहारति । क्षुद्रावली उतारति कटि तें सैंति धरति मनही मन वारति ।—सूर० ।

क्षुद्राशय—वि० [सं०] नीचप्रकृति । कमीना । "महाशय" का उल्टा ।

क्षुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भोजन करने की इच्छा । भूख ।

क्षुधातुर—वि० [सं०] बहुत भूखा । भूख से व्याकुल ।

क्षुधावंत—वि० दे० "क्षुधावान्" ।

क्षुधावान्—वि० [सं०] [स्त्री० क्षुधावती] जिसे भूख लगी हो । भूखा ।

क्षुधित—वि० [सं०] भूखा ।

क्षुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटी डालियोंवाला वृक्ष । पौधा । २. झाड़ी ।

क्षुब्ध—वि० [सं०] १ चचल । अधीर । २ व्याकुल । विह्वल । ३. भयभीत । डरा हुआ । ४ कुपित । क्रुद्ध ।

क्षुभित—वि० [सं०] क्षुब्ध ।

क्षुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ छुरा । उस्तरा । २ पशुओं के पाँव का खुर ।

क्षुरधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. छुरे की धार । २. (बौद्धों में) एक नरक । ३. एक प्रकार का बाण जिसमें तेज धारवाली कोई वस्तु लगी रहती है ।

क्षुरप्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का तेज धारवाला बाण । २ खुरपा ।

क्षुरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुरी । चाकू । २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद् ।

क्षुरी—संज्ञा पुं० [सं० क्षुरिन्] [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई । हज्जाम । २ वह पशु जिसके पाँव में खुर हों ।

संज्ञा स्त्री० [सं०] छुरी । चाकू ।

क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता है । खेत । २ समतल भूमि । ३. उत्पत्ति स्थान । ४. घर । स्थान ।

प्रदेश। ५. तीर्थ-स्थान। ६. स्त्री। जोरू। ७. शरीर। बदन। ८. अंतःकरण। ९. वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हुआ हो। १०. प्रभाव या क्रिया का दायरा।

क्षेत्रगणित—संज्ञा पुं० [सं०] क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित। रेखागणित।

क्षेत्रज—वि० [सं०] जो क्षेत्र से उत्पन्न हो।

संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की बिना संतानवाली स्त्री के गर्भ से दूसरे पुरुष द्वारा उत्पन्न हो।

क्षेत्रज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा। शरीर और उसमें रहनेवाले चैतन्य और आत्मा को जाननेवाला। २ परमात्मा। ३. किसान। खेतिहर। खेती का पूरा जानकार व्यक्ति।

वि० [सं०] जानकार। ज्ञाता। निपुण। कुशल।

क्षेत्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. खेत का मालिक। २. खेतिहर। किसान। ३. जीवात्मा। ३. परमात्मा।

क्षेत्रपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. खेत का रखवाला। क्षेत्ररक्षक। २. एक प्रकार के भैरव। ३ द्वारपाल। ४. किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्ता। भूमिया।

क्षेत्रफल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी क्षेत्र का वर्गात्मक परिमाण। रकबा।

क्षेत्रविद्—संज्ञा पुं० [सं०] जीवात्मा।

क्षेत्री—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रिन्] १ खेत का मालिक। २. नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति। ३ स्वामी।

क्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। २ ठोकर। घात। ३. आक्षेप। ४. निंदा। बदनामी। ५. दूरी। ६ बिताना। गुजारना। जैसे—कालक्षेप। ७. फैलाना। ८. लेप चढ़ाना। लीपना।

क्षेपक—वि० [सं०] १ फेंकनेवाला। २. मिलाया हुआ। मिश्रित। ३. निंदनीय।

संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर से या पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण—संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। २ गिराना। ३. बिताना। गुजारना।

क्षेमंकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की चील जिसका गला सफेद होता है। २. एक देवी।

क्षेमकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "क्षेमंकरी"।

क्षेम—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राप्त वस्तु की रक्षा। सुरक्षा। हिफाजत।

यौ०—योगक्षेम=सही सलामती। निश्चिंतता।

२. कुशल। मंगल। ३. अभ्युदय। ४ सुख। आनंद। ५. मुक्ति।

क्षैण्य—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीण का भाव। क्षीणता।

क्षोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. एक की संख्या।

क्षोणिप—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

क्षोणी—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"।

क्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. विचलता। खलबली। २. व्याकुलता। घबराहट। ३. भय। डर। ४. रंज। शोक। ५. क्रोध।

क्षोभण—वि० [सं०] क्षोभित करनेवाला। क्षोभक।

संज्ञा पुं० [सं०] काम के पाँच बाणों में से एक।

क्षोभितⓅ—वि० [सं० क्षोभ] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २ विचलित। चलायमान। ३. डरा हुआ। भयभीत। ४. क्रुद्ध।

क्षोभी—वि० [सं० क्षोभिन्] उद्वेगशील। व्याकुल। चंचल।

क्षोम—संज्ञा पुं० दे० "क्षौम"।

क्षौणि, क्षौणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २ एक की संख्या।

क्षौद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्षुद्र का भाव। क्षुद्रता। २ छोटी मक्खी का मधु। ३. जल।

क्षौम—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेशमी वस्त्र। सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। ३ वस्त्र। कपड़ा।

क्षौर—संज्ञा पुं० [सं०] हजामत। सिर मुड़ाना।

क्षौरिक—संज्ञा पुं० [सं०] नाई। हज्जाम।

क्ष्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। धरती। २. एक की संख्या।

क्ष्वेड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. अव्यक्त शब्द या ध्वनि।

वि० [सं०] १. छिछोरा। २. कपटी।

ख

ख—हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।

खं—संज्ञा पुं० [सं० खम्] १. शून्य स्थान। खाली जगह। २ बिल। छिद्र। ३ आकाश। ४. निकलने का मार्ग। ५. इंद्रिय। ६. बिंदु। शून्य। ७ स्वर्ग। ८. सुख। ९. ब्रह्म। १०. मोक्ष। निर्वाण। ११. क्रिया। कार्य।

खंख—वि० [सं० कंक] १. छूछा। खाली। २. उजाड़। वीरान।

खखरा—संज्ञा पुं० [देश०] ताँबे का बड़ा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है।

वि० [देश०] १. जिसमें बहुत से छेद हों। २ जिसकी बुनावट घनी या ठस न हो। झीना।

खँखार—संज्ञा पुं० दे० "खखार"।

खंग—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] १. तलवार। २ गैंडा।

खंगड़—वि० [देश०] उद्दंड। उग्र। उजड्ड।

खँगना—क्रि० अ० [सं० क्षय] कम होना। घट जाना।

खँगहा—वि० दे० "खँगैल"।

संज्ञा पुं० १. गैंडा। २ बाज पक्षी। ३. गरुड़।

खँगालना—क्रि० स० [सं० चालन] १ हलका धोना। थोड़ा धोना। २. सब कुछ उठा ले जाना। खाली कर देना।

खँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√खँग] कमी। घटी।

खँगैल—वि० [हिं० खाँग+ऐल] जिसे खाँग या दाँत निकले हों।

खँघारना—क्रि० स० दे० "खँगालना"।

खँचना†—क्रि० अ० [सं०√खच्=निकालना या जड़ना] चिह्नित होना। निशान पड़ना।

खँचाना—क्रि० स० [सं०√खच्] १ अंकित करना। चिह्न बनाना। २ जल्दी जल्दी लिखना। ३ दे० "खींचना"।

खँचिया—संज्ञा स्त्री० दे० "खाँची"।

खंज—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक रोग जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है। २. लँगड़ा।

खंजक—संज्ञा पुं० [सं०] लँगड़ा।

(पु) संज्ञा पुं० [सं० खंजन] खंजन पक्षी।

खँजड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी"।

खंजन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरद से लेकर शीतकाल तक दिखाई देता है। खिड़रिच। ममोला। २ खिड़रिच के रंग का घोड़ा। ३ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक के बाद दूसरे के क्रम से ८ रगण होते हैं; जैसे—जन्म बीता सबै चेत मीता अबै कीजिए का तबै काल ले आनकै। मुंडमाला गरै सीस गंगा धरै आठ यामै हरै ध्यान ले गान कै॥ गंगाधर। लक्ष्मी।

खंजर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कटार।

खँजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० खंजरीट=एक ताल] डफली की तरह का एक बाजा।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा० खंजर] १ रंगीन कपड़ों की लहरियेदार धारी। २ धारीदार कपड़ा।

खंजरीट—संज्ञा पुं० [सं०] खंजन। ममोला।

खंजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध समवृत्त जिसके विषम चरण में ३१ और सम में २९ वर्ण होते हैं। जैसे—किमि अरसत मन भजत न किमि तिहिं भज भज भज शिव धरि चित हीं। हर हर हर हर हर हर हर हर हर हर हर नित हीं॥

खंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाग। टुकड़ा। हिस्सा। २. देश। वर्ष, जैसे—भरतखंड। ३ नौ की संख्या। ४. समीकरण की एक क्रिया। (गणित)। ५. खाँड़। चीनी। ६ दिशा। दिक्।

वि० १. खंडित। अपूर्ण। २. छोटा। लघु।

संज्ञा पुं० [सं० खङ्ग] खाँड़ा।

खंडकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कथा का एक भेद जिसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक होता है और चार प्रकार का विरह रहता है।

खंडकाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा कथात्मक प्रबंधकाव्य, जैसे—मेघदूत।

खंडन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खंडनीय, खंडित] १ तोड़ने फोड़ने की क्रिया। भंजन। छेदन। २ किसी बात को अयथार्थ ठहराना। बात काटना। मंडन का उलटा। विरोध।

खँडना†—संज्ञा पुं० [सं० खंड ?] एक प्रकार का नमकीन पकवान।

खंडना(पु)—क्रि० स० [सं० खंडन] १. टुकड़े टुकड़े करना। तोड़ना। २. बात काटना।

खंडनी—संज्ञा स्त्री० [सं० खंडन] मालगुजारी की किश्त। कर।

वि० [सं० खंडन] नष्ट करनेवाली। तोड़नेवाली। उ०—कोकिल को किल कीर कपोतन की कल बोल की खंडनी मानो। —शृंगार०।

खंडनीय—वि० [सं०] १ तोड़ने फोड़ने लायक। २ खंडन करने योग्य। ३. जो अयुक्त ठहराया जा सके।

खंडपरशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ विष्णु। ३ परशुराम।

खंडपाल—संज्ञा पुं० [सं०] हलवाई।

खंडपूरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड़+पूरी] एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।

खंडप्रलय—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।

खंडबरा—संज्ञा पुं० [हिं० खाँड़+बरा] मीठा बड़ा (पकवान)।

खंडमेरु—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में एक क्रिया।

खंडर—संज्ञा पुं० दे० "खँडहर"।

खंडरना—क्रि० स० दे० "खंडना"।

खँडरा—संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं० बरा] बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।

खँडरिच—संज्ञा पुं० [सं० खंजरीट] खंजन पक्षी।

खँडला—संज्ञा पुं० [सं० खंड] कतरा। टुकड़ा।

खँडवानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड+पानी] १ खाँड़ का रस। शरबत। २ कन्या पक्षवालों की ओर से बरातियों को जलपान या शरबत भेजने की क्रिया।

खँडसाल—संज्ञा स्त्री० [सं० खंड+शाला] खाँड़ या शक्कर बनाने का कारखाना।

खँडहर—संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं० घर] किसी टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।

खंडित—वि० [सं०] १ टूटा हुआ। भग्न। २. जो पूरा न हो। अपूर्ण।

खंडिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे।

खंडिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूमि। पृथिवी।

खँडिया—संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] छोटा टुकड़ा।

खंडी—वि० स्त्री०[हिं० खंड] खंड करनेवाली। उ०—कलुष कुमति मद मत्सर खंडी। जयति जयति जनतारनि चंडी।—छंदार्णव।

खँडौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० खाँड़+औरा (प्रत्य०)] मिसरी का लड्डू। ओला।

खंतरा—संज्ञा पुं० [सं० कांतार या हिं० अँतरा] १ दरार। खोंडरा। २ कोना। अँतरा।

खंता†—संज्ञा पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खंती] १. कुदाल। २ फावड़ा। ३. गैंती।

संज्ञा पुं० [सं० खनातक] खोदी हुई भूमि।

खंदक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ शहर या किले के चारों ओर की खाई। २ बड़ा गड्ढा।

खंदा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० खंता] खोदनेवाला।

खँधवाना—क्रि० स० [हिं० खंदा ?] खाली कराना।

खँधार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्कंधावार, अ० खंधावार] १ फौज के सिपाहियों का शिविर या पड़ाव। छावनी। २ डेरा। खेमा।

संज्ञा पुं० [सं० खंडपाल] सामंत राजा। सरदार।

खँधारू(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्कंधावार] छावनी। उ०—उहाँ त लूटौं कटक खँधारू। इहाँ त जीतौं तोर सिंगारू।—पदमावत।

खँधियाना†—क्रि० स० [हिं० खधवाना] बाहर निकालना। खाली करना।

खभ—संज्ञा पुं० दे० "खभा"।

खंभा—संज्ञा पुं० [सं० स्कभ या स्तभ] [स्त्री० खँभिया] १ पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है। स्तंभ। २ बड़ी लाट। पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा।

खँभार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० क्षोम, प्रा० खोभ] १ अंदेशा। चिंता। २ घबराहट। व्याकुलता। ३ डर। भय। ४ शोक।

खंभावती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्कभावती] एक प्रकार की रागिनी। खमावती। खमाच।

खँभिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खभा] छोटा पतला खंभा।

खँसना(पु)—क्रि० अ० दे० "खसना"।

ख—संज्ञा पुं० [सं०] १ गड्ढा। गर्त। २ खाली स्थान। ३ निगम। निकास। ४ छेद। बिल। ५ इंद्रिय। ६ गले की वह नली जिससे प्राणवायु आती जाती है। ७ कुआँ। ८. तीर का घाव। ९ आकाश। १० स्वर्ग। ११. मुख। १२. कर्म। १३. बिंदु। शून्य। १४. ब्रह्म। १५. शब्द।

खई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षयी] १ क्षय। २ लड़ाई। युद्ध। ३ तकरार। झगड़ा।

खए—संज्ञा पुं० [?] बाहुमूल। पखौरा। उ०—लाहु कहा खए बेंदी दिए औ कहा है तरौना के बाँह गड़ाए। ककन पीठि हिए ससि-रेख की बात बनै बलि मोहिं बताए। —शृंगार०।

खक्खा—संज्ञा पुं० [सं० √खक्ख् या कक्ष्] १ जोर की हँसी। अट्टहास। कहकहा। २ अनुभवी पुरुष। ३. बेड़ा और ऊँचा हाथी।

खखार—संज्ञा पुं० [सं० √खक्ख्] गाढ़ा थूक या कफ जो खखारने से निकले। कफ।

खखारना—क्रि० अ० [हिं० खखार की ना० धा०] थूक या कफ बाहर करने के लिये गले से शब्दसहित वायु निकालना।

खखेटना(पु)—क्रि० स० [सं० आखेट ?] १ दबाना। २ भगाना। ३ घायल करना।

खखेटा—संज्ञा पुं० [?] १ छिद्र। छेद। २ शंका। खटका।

खग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २ गधर्व। ३. बाण। तीर। ४. ग्रह। तारा। ५ बादल। ६ देवता। ७. सूर्य। ८ चंद्रमा। ९ वायु।

खगकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

खगना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० खाँग=काँटा] १. चुभना। धँसना। २ चित्त में बैठना। मन में धँसना। ३ लग जाना। लिप्त होना। ४ चिह्नित हो जाना। उपट आना। ५ अटक रहना। अड़ जाना।

खगनाथ, खगनायक, खगपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ गरुड़।

खगहा—संज्ञा पुं० [हिं० खाँग+हा (प्रत्य०)] गैंड़ा। उ०—खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष वृष साजु सराहा। —मानस।

खगासन—संज्ञा पुं० [सं० खग+आसन] विष्णु।

खगेश—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

खगोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाशमंडल। २ खगोलविद्या।

खगोलविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो। ज्योतिष।

खग्ग†—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] तलवार। उ०—जो अपमाने दुक्ख न मानइ। दान खग्ग को मम्म न जानइ॥

खग्रास—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चद्र का सारा मडल ढँक जाय। सर्वग्रास।

खचन—संज्ञा पुं० [सं० √खच्] [वि० खचित] १ बाँधने या जड़ने की क्रिया। २ अंकित करने या होने की क्रिया।

खचना(पु)—क्रि० अ० [सं० √खच्] १ जड़ा जाना। २ अंकित होना। चित्रित होना। ३ रम जाना। अड़ जाना। ४. अटक जाना। फँसना।

क्रि० स० १ जड़ना। २ अंकित करना।

खचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २ मेघ। ३ ग्रह। ४ नक्षत्र। ५ वायु। ६ पक्षी। ७ बाण। तीर।

वि० आकाश में चलनेवाला।

खचरा—वि० [हिं० खच्चर] १ वर्णसंकर। दोगला। २ दुष्ट। पाजी।

खचाखच—क्रि० वि० [अनु०] बहुत भरा हुआ। ठसाठस।

खचित—वि० [सं०] खींचा हुआ। चित्रित या लिखित।

खचेरना(पु)—क्रि० स० [हिं० खचना] दबाना। अभिभूत करना।

खच्चर—संज्ञा पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।

खज(पु)—वि० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] *खाने योग्य। जो खाया जा सके। भक्ष्य।*

खजला—संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

खजहजा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० खाद्याद्य] खाने योग्य उत्तम फल या मेवा। उ०—पुनि महुआ चुअ अधिक मिठासू। मधु जस मीठ, पुहुप जस बासू। और खजहजा अनवन नाऊँ। देखा सब राउन अमराऊँ। —पदमावत।

खजानची—संज्ञा पुं० [फा०] खजाने का अफसर। कोषाध्यक्ष।

खजाना—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज सग्रह करके रखी जाय। धनागार। २ राजस्व। कर।

खजीना—संज्ञा पुं० दे० "खजाना"।

खजुआ†—संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

खजुरा†—संज्ञा पुं० [हिं० खजूर] स्त्रियों के सिर की चोटी गूँथने की डोरी।

खजुली†—संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाजे की तरह की एक मिठाई।

खजूर—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० खर्जूर] १ ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं और रस से गुड़ और मिसरी बनती है। २. एक प्रकार की मिठाई।

खजूरी—वि० [हिं० खजूर] १ खजूर-संबंधी। खजूर का। २ खजूर के आकार का। ३. तीन लर का गूँथा हुआ।

खट—संज्ञा पुं० [अनु०] दो चीजों के टकराने या किसी कड़ी चीज के टूटने या गिरने से उत्पन्न शब्द। ठोंकने पीटने की आवाज।

मुहा०—खट से=तुरत। तत्काल।

खटक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] खटका। चिंता। वेदना।

खटकना—क्रि० अ० [अनु०] १ 'खटखट' शब्द होना। टकराने या टूटने का सा शब्द होना। २ रह रहकर पीड़ा होना। ३ बुरा मालूम होना। खलना। ४ विरक्त होना। उचटना। ५ डरना। भय करना। ६ परस्पर झगड़ा होना। ७ अनिष्ट की भावना या आशंका होना। ८ ठीक न जान पड़ना। ९ मन में चिंता उत्पन्न करना।

खटका—संज्ञा पुं० [सं० खटक, या खटिका?] १. 'खट खट' शब्द। टकराने या पीटने का सा शब्द। २ डर। भय। आशंका। ३. चिंता। फिक्र। ४ किसी प्रकार का पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई वस्तु खुलती या बंद होती हो। ५ किवाड़ की सिटकिनी। बिल्ली। ६ पेड़ में बँधा बाँस का वह टुकड़ा जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते हैं।

खटकाना—क्रि० स० [हिं० खटकना का स० रूप] १ 'खटखट' शब्द करना। ठोंकना। हिलाना या बजाना। २ शंका उत्पन्न करना।

खटकीड़ा—संज्ञा पुं० दे० 'खटमल'।

खटखट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठोंकने-पीटने का शब्द। २ झंझट। झमेला। ३ लड़ाई। झगड़ा। रार।

खटखटाना—क्रि० स० [अनु० हिं० खटखट] 'खट खट' शब्द करना। खड़खड़ाना।

खटना—क्रि० स० [सं० कष्ट?] धन कमाना।

क्रि० अ० काम धंधे में लगना।

खटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ अनबन। लड़ाई। झगड़ा। २ ठोंकने पीटने या टकराने का शब्द।

खटपटिया—वि० [हिं० खटपट+इया (प्रत्य०)] झगड़ालू।

संज्ञा स्त्री० [अ०] खड़ाऊँ।

खटपद—संज्ञा पुं० दे० "षट्पद"।

खटपाटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट+पाटी] खाट की पाटी।

खटबुना—संज्ञा पु० [हिं० खाट+√बुन] चारपाई आदि बुननेवाला।

खटमल—संज्ञा पुं० [हिं० खाट+सं० मल=मैल] उन्नाबी रंग का एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में उत्पन्न होता है। खटकीड़ा।

खटमिट्ठा—वि० [हिं० खट्टा+मीठा] कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटमुख—संज्ञा पु० दे० "षट्मुख"।

खटरस—संज्ञा पुं० दे० "षट्रस"।

खटराग—संज्ञा पुं० दे० "षट्राग"।

संज्ञा पुं० [सं० षट्+राग] १ झंझट बखेड़ा। २. व्यर्थ और अनावश्यक चीजें।

खटवाट—संज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी"।

खटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा+आई (प्रत्य०)] १. खट्टापन। तुरशी। २. खट्टी चीज।

मुहा०—खटाई में डालना=दुविधा में डालना। कुछ निर्णय न करना।

खटाका—संज्ञा पुं० [अ०] 'खट'-शब्द।

क्रि० वि० जल्दी। तुरत।

खटाखट—संज्ञा पुं० [अनु०] ठोंकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द।

क्रि० वि० १. खटखट शब्द के साथ। २ जल्दी जल्दी। बिना रुकावट के।

खटाना—क्रि० अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना। खट्टा होना।

क्रि० अ० [?] १ निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। २ ठहराना। ३ जाँच में पूरा उतरना।

खटापटी—संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"।

खटाव—संज्ञा पुं० [हिं० √खट+आव (प्रत्य०)] निर्वाह। गुजर।

खटास—संज्ञा पुं० [सं० खट्वास] गंध-बिलाव।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा+आस (प्रत्य०)] खट्टापन। तुरशी।

खटिक—संज्ञा पुं० [सं० खट्टिक] [स्त्री० खटकिन] एक छोटी जाति जिसका काम फल, तरकारी आदि बेचना है।

खटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट+इया (प्रत्य०)] छोटी चारपाई या खाट। खटोली।

खटेटी—वि० [हिं० खाट+एटी (प्रत्य०)] वह खाट जिसपर बिछौना न हो।

खटोलना—संज्ञा पुं० दे० "खटोला"।

खटोला—संज्ञा पुं० [हिं० खाट+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट।

खट्टा—वि० [सं० कटु] कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।

मुहा०—जी खट्टा होना=चित्त अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।

संज्ञा पुं० [हिं० खट्टा] नीबू की जाति का एक बहुत खट्टा फल। गलगल।

खट्टा-मीठा—वि० दे० "खटमिट्ठा"।

खट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टा नीबू।

खट्टू—संज्ञा पुं० [हिं० √खट+ऊ (प्रत्य०)] कम नेवाला खूब मिहनत करनेवाला।

खट्वांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ चारपाई का पाया या पाटी। २. शिव का एक अस्त्र। ३ वह पात्र जिसमें प्रायश्चित करते समय भिक्षा माँगी जाती है।

खट्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खटिया। खाट। चारपाई।

खड़ंजा—संज्ञा पुं० [हिं० खड़ा+अंग?] फर्श पर ईंटों की खड़ी चुनाई।

खड—संज्ञा पुं० [सं० खड] १. एक प्रकार की घास। २ सूखी घास। तिनका।

खड़क—संज्ञा स्त्री० दे० "खटक"।

खड़का—संज्ञा पुं० दे० "खटका"।

खड़कना—क्रि० अ० दे० "खटकना"।

खड़खड़ा—संज्ञा पुं० [अनु०] १ दे० "खटखटा"। २ काठ का एक ढाँचा जिसमें जोतकर गाड़ी के लिये घोड़े सधाए जाते हैं।

खड़खड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना।

क्रि० स० कई वस्तुओं का परस्पर टकराना।

खड़खड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़खड़ा?] पालकी। पीनस।

खड़गⓅ—संज्ञा पु० दे० "खड्ग"।

खड़गीⓅ—वि० [सं० खड्गिन्] तलवार लिए हुए। तलवारवाला।

संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] गैंडा।

खड़जी—संज्ञा पुं० दे० "खड़गी"।

खड़बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ खटखट शब्द। २ उलटफेर। ३ हलचल।

खड़बड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] १. विचलित होना। घबराना। २ बेतरतीब होना।

क्रि० स० १. किसी वस्तु को उलट-पुलटकर शब्द उत्पन्न करना। २ उलटफेर करना। ३ घबरा देना।

खड़बड़ाहट—संज्ञा पु० [हिं० खड़बड़+आहट (प्रत्य०)] "खड़बड़ाना" का भाव।

खड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़बड़] १ व्यतिक्रम। उलटफेर। २ हलचल।

खड़बीहड़—वि० दे० "खटबिड़ा"।

खड़मंडल—संज्ञा पु० [सं० खंड+मंडल] गड़बड़घोटाला।

वि० उलट पुलट। नष्टभ्रष्ट।

खड़ा—वि० [सं० खटक=खंभा। थूना] [स्त्री० खड़ी] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। ऊपर को उठा हुआ, जैसे—झंडा खड़ा करना। २ पृथ्वी पर पैर रखकर टाँगों

को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए। दंडायमान।

मुहा०—खड़े खड़े=तुरंत। झटपट। खड़ा जवाब=(१) साफ जवाब। (२) अविलंब इनकार या अस्वीकृति। खड़ा होना=(१) सहायता देना। मदद करना। (२) किसी पद या चुनाव के लिये उम्मेदवार बनना।

३ ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४ प्रस्तुत। उपस्थित। तैयार। ५ संनद्ध। उद्यत। ६ आरंभ। जारी। ७ (घर, दीवार आदि) स्थापित। निर्मित। उठा हुआ। ८. जो उखाड़ा या काटा न गया हो, जैसे—खड़ी फसल। ९. बिना पका। असिद्ध। कच्चा। १०. समूचा। पूरा। ११ ठहरा हुआ। स्थिर।

खड़ाऊँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ+पाँव या 'खटखट' अनु०] काठ के तल्ले का खुला जूता। पादुका।

खड़ाका—संज्ञा पुं०, क्रि० वि० दे० "खटाका"।

खड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० खटिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी। खरिया। खड़ी।

खड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

खड़ीबोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़ी+बोली] पश्चिमी हिंदी की वह बोली जिसका प्रयोग मेरठ और दिल्ली के आस-पास के प्रदेश में होता है। वर्तमान हिंदी का मूल स्रोत यही बोली है।

खड्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की तलवार। खाँडा। २ गैंडा।

खड्गकोश—संज्ञा पुं० [सं०] म्यान।

खड्गपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमपुरी का वह वन जिसके पेड़ों में तलवार के से पत्ते होते हैं। २ तलवार की धार। ३. म्यान।

खड्गी—संज्ञा पुं० [सं० खड्गिन्] १ वह जिसके पास खड्ग हो। खड्गधारी। २. गैंडा।

खड्ड, खड्डा—संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा।

खण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० क्षण] दे० "क्षण"। उ०—खण यक चुप मैं रहइ गारी गाढ़ू दे तबही।

खत—संज्ञा पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।

संज्ञा पुं० [अ०] १. पत्र। चिट्ठी। २ लिखावट। ३. रेखा। लकीर। ४ दाढ़ी के बाल। हजामत।

खतकशी—संज्ञा स्त्री० [अ० खत+फा० कशी] चित्र बनाने के पहले आवश्यक रेखाएँ अंकित करना। रेखाकर्म। टीपना।

खतखोट†—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षत+हिं० खुड्ड] घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड।

खतना—क्रि० अ० [हिं० खाता की ना० धा०] खाते पर चढ़ना। खतियाया जाना।

संज्ञा पुं० [अ०] लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। सुन्नत। मुसलमानी।

खतम—वि० [अ० खत्म] १ पूर्ण। समाप्त। २ नष्ट।

मुहा०—खतम करना=मार डालना।

खतमी—संज्ञा स्त्री० [अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा।

खतर, खतरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ डर। भय। खौफ। २ आशंका।

खतरेटा—संज्ञा पुं० [हिं० खत्री+एटा (प्रत्य०)] "खत्री" के लिये उपेक्षा या निंदावाची शब्द।

खता—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कसूर। अपराध। २ धोखा। ३ भूल। गलती।

खता(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "खत"।

खतावार—वि० [अ० खता+फा० वार] दोषी। अपराधी।

खति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षति"।

खतियाना—क्रि० स० [हिं० खाता की ना० धा०] आय-व्यय और क्रय-विक्रय आदि को खाते में अलग अलग मद में लिखना।

खतियौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें अलग अलग हिसाब हो। खाता। २ खतियाने का काम।

खत्ता—संज्ञा पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १ गड्ढा। २ अन्न रखने का स्थान।

खत्तिअ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० क्षत्रिय] दे० "क्षत्रिय"। परसुराम अरु पुरिस खत्तिअ खअ करिअऊँ।

खत्म—वि० दे० "खतम"।

खत्री—संज्ञा पुं० [सं० क्षत्रिय] [स्त्री० खतरानी] हिंदुओं में एक जाति।

खदबदाना—क्रि० अ० [अनु०] उबलने का शब्द होना।

खदरा†—संज्ञा पुं० [सं० खनन] गड्ढा।

वि० रद्दी। निकम्मा।

खदान—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना या खान] वह गड्ढा जो कोई खनिज वस्तु निकालने के लिये खोदा जाय। खान।

खदिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. खैर का पेड़। २ कत्था। ३. चंद्रमा। ४. इंद्र।

खदेरना—क्रि० सं० [हिं० खेदना] दूर करना।

खद्द, खद्दर—संज्ञा पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का बुना कपड़ा। खादी। गाढ़ा।

खद्योत—संज्ञा पुं० [सं०] १ जुगनू। २. सूर्य।

खन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

संज्ञा पुं० [सं० खण्ड] (मकान का) खंड।

खनक—संज्ञा पुं० [सं०] जमीन खोदनेवाला। २ चूहा। ३. सेंध लगानेवाला। चोर।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।

खनकना—क्रि० अ० [अनु०] खनखनाना। धातुखंडों के टकराने का शब्द होना।

खनकाना—क्रि० अ० [अनु०] धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना।

खनखनाना—क्रि० अ० [अनु०] खनकना।

क्रि० स० [अनु०] खनकाना।

खनना(पु)†—क्रि० स० [सं० खनन] १. खोदना। २ कोड़ना।

खनवाना, खनाना—क्रि० स० [हिं० खनना का प्रे० रूप] खनने का काम दूसरों से कराना।

खनिज—वि० [सं०] खान से खोदकर निकाला हुआ।

खनित्र—संज्ञा पुं० [सं०] खोदने का औजार। गैंती। खंता।

खनोना(पु)†—क्रि० स० दे० "खनना"।

खपची—संज्ञा स्त्री० [तु० कमची] १ बाँस की पतली तीली। २ कमठी। बाँस की पतली पटरी।

खपड़ा—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. पटरी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है। २. भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। खप्पर। ३ मिट्टी के टूटे बरतन का टुकड़ा। ठीकरा। ४ कछुए की पीठ पर का कड़ा ढक्कन।

खपड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० खर्पर] १ नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। २. दे० "खोपड़ी"।

खपड़ैल—संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।

खपत, खपती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √खप+त

(प्रत्य०)] १. समाई। गुंजाइश। २. माल की कटती या बिक्री।

खपना—क्रि० अ० [सं० क्षेपण] [संज्ञा खपत] १. किसी प्रकार व्यय होना। काम में आना। लगना। कटना। २ चला जाना। गुजारा होना। निभना। ३. नष्ट होना। ४. तंग होना। दिक होना।

खपर—संज्ञा पुं० दे० "खप्पर"। उ०—माँगै भीख खपर लेइ, मुए न छाँड़ै बार।—पद्मावत।

खपरिया—संज्ञा स्त्री० [सं० खर्परी] भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ। दर्विका। रसक।

खपरैल—संज्ञा स्त्री० [हिं० खपड़ा] खपड़े से छाई हुई छत।

खपाना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १ किसी प्रकार व्यय करना। काम में लाना।

मुहा०—माथा या सिर खपाना=सिर-पच्ची करना। सोचते सोचते हैरान होना।

२. निर्वाह करना। निभाना। ३ नष्ट करना। समाप्त करना। ४. तंग करना।

खपुआ—वि० [सं० खर्पर=दुष्ट] १ दुष्ट। दगाबाज। धूर्त। २. डरपोक। कायर। भगोड़ा।

संज्ञा पुं० [हिं० खपची]

लकड़ी की वह खपची जो किसी दरवाजे के नीचे उसकी चूल को छेद में दृढ़ बैठाने के लिये लगाई या ठोंकी जाती है।

खपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधर्व मंडल जो कभी कभी आकाश में उदय होता है जिससे अनेक शुभाशुभ फल होते हैं। २ पुराणा-नुसार एक नगर जो आकाश में है। ३ राजा हरिश्चंद्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है।

खपुवा—वि० दे० "खपुआ"।

उ०—तुलसी करि केहरि नाद भिरे, भट खग्ग खगे खपुवा खरके।—कविता०।

खपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश-कुसुम। २ असंभव बात। अनहोनी घटना।

खप्पर—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १ भिक्षा-पात्र। २ खोपड़ी। ३. तसले के आकार का कोई पात्र।

मुहा०—खप्पर भरना=खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना।

खफगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २ क्रोध। कोप।

खफा—वि० [अ०] १. अप्रसन्न। नाराज। २. क्रुद्ध। रुष्ट।

खफीफ—वि० [अ०] १ थोड़ा। कम। २ हलका। ३. तुच्छ। क्षुद्र। ४. लज्जित।

खबर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. समाचार। वृत्तांत। हाल।

मुहा०—खबर उड़ना=चर्चा फैलना। अफवाह होना। खबर लेना=(१) सहायता करना। सहानुभूति दिखलाना। (२) सजा देना।

२ सूचना। ज्ञान। जानकारी। ३. भेजा हुआ समाचार। संदेशा। ४. चेत। सुधि। संज्ञा। ५ पता। खोज।

खबरगीर—वि० [अ० खबर+फा० गीर] [संज्ञा खबरगीरी] देखभाल करनेवाला।

खबरदार—वि० [फा०] होशियार। सजग।

खबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सावधानी। होशियारी।

खबरनवीस—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० खबरनवीसी] वह जो राजाओं आदि के पास नित्य के समाचार लिखकर भेजता हो। समाचार लेखक।

खबरि, खबरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "खबर"।

खबीस—संज्ञा पुं० [अ०] १. दुष्टात्मा। भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि। २ वह जो बहुत दुष्ट और क्रूर हो। ३. कंजूस। मक्खीचूस।

खब्त—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० खब्ती] पागलपन। सनक। झक।

खब्ती—वि० [अ०] सनकी। पागल।

खँभरना(प)†—क्रि० स० [हिं० भरना] १ मिश्रित करना। २ उथल पुथल मचाना।

खभार—संज्ञा पुं० दे० "खँभार"।

खम—संज्ञा पुं० [फा०] टेढ़ापन। झुकाव।

मुहा०—खम खाना=(१) मुड़ना। झुकना। दबना। (२) हारना। पराजित होना। खम ठोकना=(१) लड़ने के लिये ताल ठोकना। (२) दृढ़ता दिखलाना। खम ठोककर=दृढ़ता या निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

खमकना—क्रि० अ० [अनु०] खमखम शब्द करना।

खमदम—संज्ञा पुं० [फा० खम+दम] पुरुषार्थ। साहस।

खमसा—संज्ञा पुं० [अ० खमस=पाँच संबंधी] एक प्रकार की गजल।

खमा(प)—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

खमीर—संज्ञा पुं० [अ०] १ गूँधे हुए आटे का सड़ाव। २. गूँधकर उठाया हुआ आटा। माया। ३. कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है। ४. स्वभाव। प्रकृति।

खमीरा—वि० पुं० [अ०] [स्त्री० खमीरी] १ खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ। २ शीरे में पकाकर बनाई हुई औषधि, जैसे—खमीरा बनफशा।

खमोश—वि० दे० "खामोश"।

खम्माच—संज्ञा स्त्री० [हिं० खभावती] मालकोस राग की दूसरी रागिनी।

खय(प)†—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

खयकारी—वि० [सं० क्षयकारिन्] नाश करनेवाला। क्षय करनेवाला। उ०—दुसह-रोष-मूरति भृगुपति अति नृपति-निकर-खय-कारी। क्यों सौंप्यो सारंग हारि हिय, करी है बहुत मनुहारी।—गीता०।

खया—संज्ञा पुं० दे० "खवा"।

खयानत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। गबन। २ चोरी या बेईमानी।

खयाल—संज्ञा पुं० "ख्याल"।

खर—संज्ञा पुं० [सं०] १ गधा। २ खच्चर। ३ बगला। ४ कौवा। ५ एक राक्षस जो रावण का भाई था। ६ तृण। तिनका। घास। ७. साठ संवत्सरों वाले बृहस्पति चक्र का पच्चीसवाँ वर्ष। ८ एक काँटेदार वृक्ष। ९ छप्पय छंद का एक भेद।

वि० [सं०] १ कड़ा। सख्त। २ तेज। तीक्ष्ण। ३ हानिकारक। ४ कड़ुआ। ५ कठोर। ६ घना। ७ गरम। ८ खुर-खुरा। ९ काँटेदार। १० अमांगलिक, जैसे—खरमास। खरवार। ४. तेज धार का।

खरक—संज्ञा पुं० [सं० खड़क] १ चौपायों को रखने के लिये लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा। बाड़ा। २ पशुओं के चरने का स्थान। ३ बाँसों की फट्टियों का किवाड़। टट्टर।

संज्ञा स्त्री० दे० "खड़क"।

खरकना—क्रि० अ० [अनु०] १ दे० "खड़कना"। २ बाँस चुभने का सा दर्द होना। सरकना। चल देना।

खरका—संज्ञा पुं० [हिं० खर] तिनका ।
मुहा०—खरका करना=भोजन के उपरात तिनके से खोदकर दाँत साफ करना ।
संज्ञा पुं० दे० "खरक" ।
खरखरा—वि० दे० "खुरखुरा" ।
खरखशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. झगड़ा । लड़ाई । २ भय । आशका । ३. झंझट । बखेड़ा ।
खरखौकी (पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० खर+√खा] खर, तृण आदि खानेवाली अग्नि ।
खरग—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग" ।
खरगोश—संज्ञा पुं० [फा०] खरहा ।
खरच—संज्ञा पुं० दे० "खर्च" ।
खरचना—क्रि० स० [फा० खर्च] १ व्यय करना । खर्च करना । २ व्यवहार में लाना ।
खरचरी—सं० स्त्री० [सं०√खर्+√चर्] मवेशियों के चरने पर वसूल होनेवाला कर ।
खरचा—संज्ञा पुं० दे० १ "खरका" । २ दे० "खर्चा" ।
खरचा—संज्ञा स्त्री० [फा० खर्च] १ जीविका निर्वाह का साधन । २ खाने पीने की वस्तु । ३ वेश्याओं को उनकी वृत्ति के बदले प्राप्त होनेवाला धन ।
खरतर—वि० [सं०] अधिक तीक्ष्ण । बहुत तेज ।
खरतल—वि० [हिं० खरा] १. खरा । स्पष्टवादी । २ शुद्ध हृदयवाला । ३ मुरौवत न करनेवाला । ४ साफ । स्पष्ट । ५. प्रचंड । उग्र ।
खरतुआ—संज्ञा पुं० [हिं० खर] बथुए की तरह की एक घास । चमर बथुआ ।
खरदुक—संज्ञा पुं० [फा० खुर्द ?] एक पुराना पहनावा । उ०—सात रंग औ चित्र चितेरे । भरि कै दीठि जाहि नहिं हेरे । चँदनौता औ खरदुक भारी । बाँसपूर झिलमिल कै सारी ।—पदमावत ।
खरदूषण—संज्ञा पुं० [सं०] खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे ।
खरधार—वि० [सं०] तेज धारवाला (अस्त्र) ।
खरब—संज्ञा पुं० [सं० खर्व] सौ अरब की संख्या ।
खरबूजा—संज्ञा पुं० [फा० खर्बुजा] ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल ।
खरभर—संज्ञा पुं० [अनु०] १. शोर । गुल । २ हलचल । गड़बड़ ।
खरभरना—क्रि० अ० [हिं० खरभर] १. क्षुब्ध होना २. घबराना ।
खरभराना—क्रि० अ० [हिं० खरभर] १ खरभर शब्द करना । २ शोर करना । ३ गड़बड़ या हलचल मचाना । ४ व्याकुल होना ।
खरभरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खरभर] खलबली । हलचल । व्यग्रता ।
खरमंडल—वि० दे० "खड़मंडल" ।
खरमस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुष्टता । पाजीपन । शरारत ।
खरमास—संज्ञा पुं० दे० "खरवाँस" ।
खरमिटाव—संज्ञा पुं० [हिं० खर+मिटाव] जलपान । कलेवा ।
खरल—संज्ञा पुं० [सं० खल] पत्थर की कूँड़ी जिसमें औषधियाँ कूटी जाती हैं । खल ।
खरवाँस—संज्ञा पुं० [हिं० खर+मास] पूस और चैत का महीना जब सूर्य धन और मीन का होता है । (इनमें मांगलिक कार्य करना वर्जित है ।)
खरसा—संज्ञा पुं० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान । उ०—भई पिथौरी, सिरका घरा । सोंठि नाइकै खरसा धरा ।—पदमावत ।
खरसान—संज्ञा स्त्री० [हिं० खर+सान] हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान ।
खरहरा—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १ अरहर के डंठलों से बना हुआ झाड़ू । झँखरा । २ घोड़े के रोएँ साफ करने के लिये दाँतीदार कंघी ।
खरहरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मेवा । (कदाचित् खजूर) ।
खरहा—संज्ञा पुं० [हिं० खर=घास+हा (प्रत्य०)] खरगोश नामक जंतु ।
खरांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।
खरा—वि० [सं० खर=तीक्ष्ण] १ अच्छा । बढ़िया । विशुद्ध । बिना मिलावट का । २ तेज । तीखा । ३. सेंककर कड़ा किया हुआ । करारा । ४ चीमड़ । कड़ा । ५ जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो । साफ छलछिद्र-शून्य । ६ नगद (दाम) ।
मुहा०—रुपए खरे होना=रुपए मिलना या मिलने का निश्चय होना ।
७ लगी लिपटी न कहनेवाला । स्पष्ट-वक्ता । ८ (बात के लिये) यथातथ्य । सच्चा ।
(पु) ९. बहुत अधिक । ज्यादा ।
खराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खरा+ई (प्रत्य०)] "खरा" का भाव । खरापन ।
संज्ञा स्त्री० [देश०] सवेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के कारण तबीअत खराब होना ।
खराद—संज्ञा पुं० [फा० खर्राद] एक औजार जिसपर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है ।
संज्ञा स्त्री० १ खरादने का भाव या क्रिया । २ बनावट । गढ़न ।
खरादना—क्रि० स० [हिं० खराद] खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ और सुडौल करना । २ काट-छाँटकर सुडौल बनाना ।
खरादी—संज्ञा पुं० [हिं० खराद+ई (प्रत्य०)] खरादनेवाला ।
खरापन—संज्ञा पुं० [हिं० खरा+पन] १ खरा का भाव । २ सत्यता । सचाई । ३ स्पष्टवादिता ।
खराब—वि० [अ०] १ बुरा । निकृष्ट । २ दुर्दशाग्रस्त । ३ पतित । मर्यादाभ्रष्ट । बुरे चालचलन का ।
खराबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बुराई । दोष । अवगुण । २ दुर्दशा । दुरवस्था ।
खरायध—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार+गंध] १ क्षार की सी गंध । मूत्र की दुर्गंध ।
खरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्र । २ विष्णु भगवान् । ३ कृष्णचंद्र ।
खराश—संज्ञा स्त्री० [फा०] खरोंच । छिलन ।
खरिक—संज्ञा पुं० दे० "खरक" ।
खरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खर+इया (प्रत्य०)] १ घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली । पाँसी । २ झोली ।
संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया" ।
खरियाना—क्रि० स० [हिं० खरिया=झोली] १ झोली में डालना । थैले में भरना । २ हस्तगत करना । ले लेना । ३ झोली में से गिराना ।
खरिहान—संज्ञा पुं० दे० "खलियान" ।
खरी—संज्ञा स्त्री० १ दे० "खड़िया" । २ "खली" ।

खरीता—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १ थैली। खीसा। २ जेब। ३ वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ।

खरीद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मोल लेने की क्रिया। क्रय। २ खरीदी हुई चीज।

खरीदना—क्रि० स० [फा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।

खरीदार—संज्ञा पुं० [फा०] १. मोल लेनेवाला। ग्राहक। २. चाहनेवाला।

खरीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह फसल जो आषाढ से अगहन के बीच काटी जाय।

खरेईⓅ—क्रि० वि० [हिं० खरा+ही प्रत्य०)] सचमुच।

खरोंच—संज्ञा स्त्री० [स० क्षुरण] १ छिलने का चिह्न। खराश। २. एक पकवान।

खरोंचना—क्रि० स० [स० क्षुरण] खुरचना। करोना। छीलना।

खरोई—संज्ञा स्त्री० दे० "खरेई"।

खरोट—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।

खरोटना—क्रि० स० [सं० क्षुरण] १ नाखून गड़ाकर शरीर में घाव करना। २ दे० "खरोंचना"।

खरोष्ट्री, खरोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि।

खरौंट—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।

खरौंहा—वि० [हिं० खारा+औंहा] कुछ कुछ खारा। नमकीन।

खरौट—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"। उ०—ये गुलाब की पाँखुरी परा खरौटैं गात।—रससाराश।

खरौरा—संज्ञा पु० दे० "खिरौरा"। उ०—पुहुप-पंक रस अमृत साँधे। केइ यह सुरंग खरौरा बाँधे?—पद्मावत।

खर्ग—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।

खर्च—संज्ञा पु० [फा० खर्च] १ किसी काम में किसी वस्तु का लगना। व्यय। सरफा। खपत। २ वह धन जो किसी काम में लगाया जाय।

खर्चा—संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।

खर्चीला—वि० [हिं० खर्च+ईला (प्रत्य०)] बहुत खर्च करनेवाला।

खजूर—संज्ञा पुं० [स०] १. खजूर। २. चाँदी। ३ हरताल। ४ बिच्छू।

खर्पर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भिक्षापात्र। २ तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। ३ काली देवी का वह पात्र जिसमें वे रुधिर पान करती हैं। ४ खोपड़ा। ५. खपरिया नामक उपधातु।

खर्रा—संज्ञा पुं० [खर खर से अनु०] १. वह लबा कागज, जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो। २ पीठ पर छोटी छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग।

खर्राचा†—वि० दे० "खर्चीला"।

खर्राटा—संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो सोते समय नाक से निकलता है।

मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना=बेखबर सोना।

खर्व—वि० [सं०] १ जिसका अंग भग्न या अपूर्ण हो। न्यूनाग। २ छोटा। लघु। ३. वामन। बौना।

संज्ञा पुं० [सं०] १ सौ अरब की सख्या। खरब। २. कुबेर की नौ निधियों में से एक।

खल—वि० [स०] १. क्रूर। २. नीच। अधम। ३ दुर्जन। दुष्ट।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २ तमाल का पेड़। ३ धतूरा। ४ खलिहान। ५ पृथ्वी। ६ स्थान। ७ खरल।

खलई†—संज्ञा स्त्री० दे० "खलाई"।

खलक—संज्ञा पुं० [अ०] १. सृष्टि के प्राणी या जीवधारी। २ दुनिया। संसार।

खलड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "खाल"।

खलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता। नीचता।

खलना—क्रि० अ० [सं० खर=तीक्ष्ण] बुरा लगना। अप्रिय होना।

खलबल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हलचल। २. शोर। हल्ला। ३ कुलबुलाहट।

खलबलाना—क्रि० अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २ खौलना। ३ हिलना डोलना। ४ विचलित होना।

खलबली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल। २ घबराहट। व्याकुलता।

खलल—संज्ञा पुं० [अ०] रोक। बाधा।

खलाई†—संज्ञा स्त्री० [स० खल+हिं० आई (प्रत्य०)] खलता। दुष्टता।

खलानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० खाली] १ खाली करना। २ गड्ढा करना। ३ फूली हुई सतह को नीचे धँसाना। पिचकाना।

खलास—वि० [अ०] १ छूटा हुआ। मुक्त। २. समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

खलासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खलास] छुटकारा। छुट्टी।

संज्ञा पुं० [देश०] जहाज पर का नौकर।

खलाल—संज्ञा पुं० [अ०] दाँत खोदने का खरका।

खलितⓅ—वि० [सं० स्खलित] १ चलायमान। चंचल। २ गिरा हुआ।

खलियान—संज्ञा पुं० [सं० खल+स्थान] १ वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और बरसाई जाती है। २ राशि। ढेर।

खलियाना—क्रि० स० [हिं० खाल से ना० धा०] खाल उतारना। चमड़ा अलग करना।

†क्रि० स० [हिं० खाली] खाली करना।

खलिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] कसक। पीड़ा।

खली—संज्ञा स्त्री० [सं० खल] तेल निकाल लेने पर तिलहन की बची हुई सीठी।

खलीता—संज्ञा पुं० दे० "खरीता"।

खलीफा—संज्ञा पुं० [अ०] १. उत्तराधिकारी। वारिस। २ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी जो मुसलमानों के सर्वोच्च धार्मिक नेता माने जाते थे। ३ अध्यक्ष। अधिकारी। ४ कोई बूढ़ा व्यक्ति। ५ खुर्राट। ६ खानसामाँ। बावर्ची। ७ हज्जाम, दर्जी आदि के लिये सबोधन का शब्द।

खलु—अव्य०, क्रि० वि० [स०] एक निश्चयवाचक शब्द।

खलेल—संज्ञा पु० [हिं० खली+तेल?] खली आदि का वह अश जो फुलेल में रह जाता है।

खल्लड़—संज्ञा पुं० [सं० खल्ल] १. चमड़े की मशक या थैला। २ ओषधि कूटने का खल। ३ चमड़ा।

खल्व—संज्ञा पुं० [स०] वह रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज।

खल्वाट—संज्ञा पुं० [सं०] गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।

वि० [सं०] जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। गंजा।

खवा—संज्ञा पुं० [सं० स्कध] कंधा। भुजमूल।

खवानाⓅ†—क्रि० स० दे० "खिलाना"।

खवाराⓅ—वि० [फा० ख्वार] बुरा। खोटा।

खवास—संज्ञा पुं० [अ० खवास] [स्त्री० खवासिन] १. राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार । २. राजाओं को पान खिलानेवाला या कपड़े, जूते आदि पहनानेवाला । उ०—पठयो है छपद छबीले कान्ह कैहू कहूँ, खोजि कै खवास खासो कूबरी सी बाल को ।—कविता० । ३. हिंदुओं की एक जाति ।

खवासिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० खवास] रानियों की खास खिदमत करनेवाली दासी । २. राजाओं की रखेली ।

खवासिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "खवासिन" । उ०—केती सहवासिनी सुआसिनी खवासिनी, हुकुम जो हैं बैठी खड़ी आपने हदन में ।—शृंगार० ।

खवासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खवास+ई (प्रत्य०)] १ खवास का काम । खिदमतगारी । २. चाकरी । नौकरी । ३ हाथी के हौदे या गाड़ी आदि में पीछे की ओर वह स्थान जहाँ खवास बैठता है ।

खवैया—संज्ञा पुं० [हिं० √खा+वैया (प्रत्य०)] खानेवाला ।

खस—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्तमान गढवाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का एक प्राचीन नाम । उ०—कोल, खस, भिल्ल जमनादि खल राम कहि नीच है ऊँच पद को न पायो ।—विनय० । २ इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति ।

संज्ञा स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़ ।

खसकंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √खसक+अंत (प्रत्य०)] खसकने का काम ।

खसकना—क्रि० अ० [सं० √कम्] धीरे धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना । सरकना ।

खसकाना—क्रि० स० [हिं० खसकना का स० रूप] १ स्थानांतरित करना । हटाना । २ गुप्त रूप से कोई चीज हटाना ।

खसखस—संज्ञा स्त्री० [फा० खशखाश] पोस्ते का दाना ।

खसखसा—वि० [अनु०] जिसके कण दबाने से अलग अलग हो जायँ । भुरभुरा ।

वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल) ।

खसखाना—संज्ञा पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी ।

खसखास—संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस" ।

खसखासी—वि० [हिं० खसखास] पोस्ते के फूल के रंग का । नीलापन लिए सफेद ।

खसनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० खसकना] अपने स्थान से हटना । खसकना । गिरना ।

खसबो†—संज्ञा स्त्री० दे० "खुशबू" ।

खसम—संज्ञा पुं० [अ०] १. पति । खाविंद । २ स्वामी । मालिक ।

खसरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ पटवारी का एक कागज जिसमें प्रत्येक खेत की संख्या, क्षेत्रफल आदि लिखा रहता है । २ हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा ।

संज्ञा पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली जिसमें उँगलियों के बीच से शुरू होकर शरीर के चमड़े पर पानी से भरे हुए छोटी मटर के बराबर छाले निकल आते हैं और बहुत खुजली पैदा करते हैं ।

खसलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वभाव । आदत ।

खसाना—क्रि० स० [हिं० खसना का स० रूप] नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना । गिराना ।

खसिया—वि० [अ० खस्सी] १. वह पशु जिसके अंडकोष निकाल लिए गए हों । बधिया । २ नपुंसक । हिजड़ा । ३ बकरा ।

खसी—संज्ञा पुं० [अ० खसी] बकरा ।

खसीस—वि० [अ० खसीस] १. कंजूस । सूम । २ अयोग्य । ३ दुष्ट ।

खसोट—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ष] १ बुरी तरह उखाड़ने या नोचने की क्रिया । २ उचकने या छीनने की क्रिया ।

खसोटना—क्रि० स० [सं० कर्षण] १ बुरी तरह नोचना या उखाड़ना । २ बलपूर्वक लेना । छीनना ।

खसोटी—संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट" ।

खस्ता—वि० [फा० खस्त.] बहुत थोड़ी दाब से टूट जानेवाला । भुरभुरा ।

खस्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित बिंदु जो सिर के ऊपर आकाश में माना गया है । शीर्षबिंदु । पादबिंदु का उलटा ।

खस्सी—संज्ञा पुं० [अ० खस्सी] बकरा ।

वि० [अ०] १ बधिया । २. हिजड़ा । नपुंसक ।

खहर—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में वह राशि जिसका हर (विभाजक) शून्य हो ।

खाँ—संज्ञा पुं० दे० "खान" ।

खाँखर†—वि० [हिं० खोंख] १. जिसमें बहुत छेद हों । सूराखदार । २ जिसकी बिनावट दूर दूर पर हो । ३ खोखला ।

खाँग†—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग, प्रा० खग्ग] १. काँटा । कंटक । २ वह काँटा जो तीतर, मुर्गे आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है । ३. गैंडे के मुँह पर का सींग । ४. जंगली सूअर का मुँह के बाहर निकला हुआ दाँत ।

†संज्ञा स्त्री० [सं० खंज] त्रुटि । कमी ।

खाँगना†—क्रि० अ० [सं० खंज=लोंड़ा] कम होना । घटना ।

खाँगड़, खाँगड़ा—वि० [हिं० खाँग+ड़ (प्रत्य०)] १ जिसके खाँग हो । खाँगवाला । २. हथियारबंद । शस्त्रधारी । ३ बलवान् । ४. अक्खड़ । उद्दंड ।

खाँगा—संज्ञा पुं० दे० "खाँगी" । उ०—कहहु सो पीर, काह पुनि खाँगा ? । समुद सुमेरु आव तुम्ह माँगा ।—पदमावत ।

खाँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँग] कमी । घाटा । त्रुटि ।

खाँचा—संज्ञा स्त्री० [सं०√खच्] १. संधि । जोड़ । २ खींचकर बनाया हुआ निशान । ३. गठन । खचन ।

खाँचनाⓅ†—क्रि० स० [सं० √खच्] [वि० खँचैया] १. अंकित करना । चिह्न बनाना । २ खींचना । जल्दी जल्दी लिखना ।

क्रि० अ० खाँचा जाना या खिंचना । अंकित होना ।

खाँचा—संज्ञा पुं० [हिं०√खाँच] [स्त्री० खाँची] पतली टहनियों आदि का बना हुआ बड़े बड़े छेदों का टोकरा । झावा ।

खाँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] बिना साफ की हुई चीनी । कच्ची शक्कर ।

खाँड़ना—क्रि० स० [सं० खंडन] १. तोड़ना । २ चबाना । कूचना ।

खाँडर—संज्ञा पुं० [सं० खंड] टुकड़ा । उ०—भाँति भाँति सब खाँडर तरे । अंडा तरि तरि बेहर धरे ।—पदमावत ।

खाँडा—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] खड्ग (अस्त्र) ।

संज्ञा पुं० [सं० खंड] भाग । टुकड़ा ।

खाँधनाⓅ—क्रि० स० [सं० खादन] खाना ।

खाँभⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० खंभा] खंभा ।

खाँवाँ—संज्ञा पुं० [सं० खात] चौड़ी खाई ।

खाँसना—क्रि० स० [सं० √कास्] कफ

या और कोई अटकी हुई चीज निकालने के लिये वायु को शब्द के साथ कंठ के बाहर निकालना।

खाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० कास] १. गले और श्वास की नलियों में फँसे या जमे हुए कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिये शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया। २ अधिक खाँसने का रोग। कास रोग। ३. खाँसने का शब्द।

खाई—संज्ञा स्त्री० [सं० खनि] वह नहर जो किसी गाँव या महल आदि के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई हो। खंदक।

खाऊ—वि० [हिं० √खा+ऊ (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला। पेटू।

खाक- संज्ञा स्त्री० [फा० खाक] १. धूल। मिट्टी।

मुहा०—(कहीं पर) खाक उड़ना=वरबादी होना।उजाड़ होना। खाक उड़ाना या छानना=मारा मारा फिरना। खाक में मिलना=बिगड़ना। बरबाद होना।

२ तुच्छ। अकिंचन। ३ कुछ नहीं। जैसे—वे खाक पढ़ते लिखते हैं।

खाकसार—वि० [फा०] [संज्ञा खाकसारी] १. धूल में मिला हुआ। २ तुच्छ। अकिंचन (नम्रतावाचक)।

संज्ञा पुं०—मुसलमानों का एक राजनीतिक दल (आधुनिक)।

खाकसीर—संज्ञा स्त्री० [फा० खाकशीर] एक औषध जिसे खूबकलाँ भी कहते हैं।

खाका—संज्ञा पुं० [फा० खाक] १. चित्र आदि का डौल ढाँचा। नकशा।

मुहा०—खाका उड़ाना=उपहास करना।

२. वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय। चिट्ठा। तखमीना। तकदमा। ३. मसौदा।

खाकी—वि० [फा०] १. मिट्टी के रंग का। भूरा। २ बिना सींची हुई भूमि।

खाख—संज्ञा स्त्री० दे० "खाक"।

खागना—क्रि० अ० [हिं० खाँग=काँटा] चुभना। गड़ना।

खाज—संज्ञा स्त्री० [सं० खर्जु] एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। खुजली।

मुहा०—कोढ़ की खाज=दुःख में दुःख बढ़ानेवाली वस्तु।

खाजा—संज्ञा पुं० [सं० खाद्य] १ भक्ष्य वस्तु। खाद्य। २ एक प्रकार की मिठाई।

खाजी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाद्य पदार्थ। भोजन की वस्तु।

मुहा०—खाजी खाना=मुँह की खाना। बुरी तरह परास्त या असतकार्य होना।

खाट—संज्ञा स्त्री० [सं० खट्वा] चारपाई। पलँगड़ी। खटिया। माचा।

खाटा(पु)—वि० दे० "खट्टा"।

खाड़(पु)—संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।

खाड़व—संज्ञा पुं० दे० "षाड़व"।

खाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाड़] समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। आखात। खलीज।

खाण(पु)—संज्ञा पुं० [फा० खान] पठानों की एक उपाधि। खान। उ०—जमण खाड़ ले भाग माग रिसिआड़ खाण है।

खात—संज्ञा पुं० [सं०] १. खोदना। खुदाई। २ तालाव। पुष्करिणी। ३ कुआँ। ४. गड्ढा। ५. खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा।

खातमा—संज्ञा पुं० [फा०] १. अंत। समाप्ति। २ मृत्यु।

खाता—संज्ञा पुं० [सं० खात] १. अन्न रखने का गड्ढा। बखार। २ कूएँ के पास का गड्ढा।

संज्ञा पुं० [हिं० खत] १ वह बही जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो।

मुहा०—खाता खोलना=नया व्यवहार करना।

२ मदद। विभाग।

खातिर—संज्ञा स्त्री० [अ०] आदर। संमान।

†अव्य० [अ०] वास्ते। लिये।

खातिरखाह—अव्य०, क्रि० वि० [फा०] जैसा चाहिए, वैसा। इच्छानुसार। यथेच्छ।

खातिरजमा—संज्ञा स्त्री० [अ०] संतोष। इतमीनान। तसल्ली।

खातिरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] संमान। आदर। आवभगत।

खातिरी—संज्ञा स्त्री० [फा० खातिर] १ संमान। आदर। आवभगत। २ तसल्ली। इतमीनान। संतोष।

खाती—संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १. खोदी हुई भूमि। २ खत्ती। जमीन खोदनेवाली एक जाति। खतिया। ३ बढ़ई।

खाद—संज्ञा स्त्री० [सं० खाद्य] वे सड़े गले पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिये डाले जाते हैं। पाँस।

(पु)संज्ञा पुं० खाने योग्य पदार्थ।

खादक—वि० [सं०] खानेवाला। भक्षक।

खादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खादित, खाद्य, खादनीय] भक्षण। भोजन। खाना।

खादर—संज्ञा पुं० [हिं० खाड़ ?] नीची जमीन। बाँगर का उलटा। कछार।

खादित—वि० [सं०] खाया हुआ। भक्षित।

खादिम—संज्ञा पुं० [फा०] सेवक। नौकर।

खादी—वि० [सं० खादिन्] १. खानेवाला। भक्षक। २ शत्रु का नाश करनेवाला। ३ रक्षक। ४ कँटीला।

संज्ञा स्त्री० [देश०] गजी या और कोई मोटा कपड़ा। २ हाथ से काते हुए सूत का हाथ के करघे पर बना कपड़ा। खद्दर।

† वि० [सं० क्षुद्र ?] १. दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २ दूषित।

खादुक—वि० [सं०] जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर रहे।

खाद्य—वि० [सं०] खाने योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] भोजन। खाने की वस्तु।

खाधु(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० खाद्य] भोज्य पदार्थ।

खाधुक(पु)—वि० [सं० खादुक] खानेवाला।

खान—संज्ञा पुं० [हिं० खाना] १ खाने की क्रिया। भोजन। २ भोजन की सामग्री। ३. भोजन करने का ढंग या आचार।

संज्ञा स्त्री० [सं० खनि] १. वह स्थान जहाँ से धातु, पत्थर आदि खोदकर निकाले जायँ। खान। आकार। खदान। २ जहाँ कोई वस्तु बहुत सी हो। खजाना।

संज्ञा पुं० [तातार या मंगोल काऊ=सरदार] १ सरदार। २ पठानों की उपाधि।

खानक—संज्ञा पुं० [सं० खनक] १. खान खोदनेवाला। २. बेलदार। ३. मेमार। राज।

खानकाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।

खानगी—वि० [फा०] निज का। आपस का। घरेलू। घरू।

संज्ञा स्त्री० [फा०] केवल कसब करनेवाली तुच्छ वेश्या। कसवी।

खानदान—संज्ञा पुं० [फा०] वंश। कुल।

खानदानी—वि० [फा०] १ ऊँचे वंश का। अच्छे कुल का। २ वंशपरंपरागत। पैतृक। पुश्तैनी।

खानपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाना-पीना। २ खाने पीने का आचार ३. अन्न-पानी। आबदाना। ४ खाने पीने का संबंध।

खानसामा—संज्ञा पुं० [फा०] अँगरेजों, मुसलमानों आदि का भंडारी या रसोइया।

खाना—क्रि० स० [सं० खादन] १ भोजन करना। भक्षण करना। पेट में डालना।

मुहा०—खाता कमाता=खाने पीने भर को कमानेवाला। खाना कमाना=काम धंधा करके जीविका निर्वाह करना। खा-पका जाना (या डालना) =खर्च कर डालना। खाना न पचना=चैन न पड़ना। जी न मानना।

२ हिंसक जंतुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना।

मुहा०—खा जाना या कच्चा खा जाना =मार डालना। प्राण ले लेना। खाने दौड़ना=चिड़चिड़ाना। क्रुद्ध होना।

३ विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४ तंग करना। दिक करना। कष्ट देना। ५ नष्ट करना। बरबाद करना। ६ उड़ा देना। दूर कर देना। न रहने देना। ७ हजम करना। मार लेना। हड़प जाना। ८ बेईमानी से रुपया पैदा करना। रिशवत आदि लेना। ९. (आघात, प्रभाव आदि) सहना। बर्दाश्त करना।

मुहा०—मुँह की खाना=(१) नीचा देखना। (२) पराजित होना। हार जाना।

खाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ घर। मकान, जैसे—डाकखाना, दवाखाना। २ किसी चीज के रखने का घर। केस। ३ विभाग। हिस्सा। खंड। कोठा। घर। ४ सारिणी या चक्र का विभाग। कोष्ठक।

खाना-खराब—वि० [फा०] जिसका घर-बार तक न रह गया हो। दुर्दशाग्रस्त।

खानाजाद—वि० [फा०] १ घर में पला हुआ। २. सेवक। दास।

खानातलाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छानबीन करना।

खानापूरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाना+सं० पूर्ति] किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथास्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नकशा भरना।

खानाबदोश—वि० [फा०] जिसका घर-बार न हो।

खानि—संज्ञा स्त्री० [सं० खनि] १ दे० "खान"। २ ओर। तरफ। ३ प्रकार। तरह। ढंग।

खानिक(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"।

खाब(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ख्वाब"।

खाम—संज्ञा पुं० [हिं० खामना] १ चिट्ठी का लिफाफा। २ संधि। जोड़। टाँका।

(पु)†वि० [सं० क्षाम] घटा हुआ। क्षीण।

वि० [फा०] १ जो पका न हो। कच्चा। २ जिसे अनुभव न हो।

खाम-खयाली—संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यर्थ का या बिना आधार का विचार।

खामखाह, खामखाही—क्रि० वि० दे० "ख्वाहमख्वाह"।

खामना—क्रि० स० [सं० स्कभन] १ गीली मिट्टी या आटे से किसी पात्र का मुँह बंद करना। २ चिट्ठी को लिफाफे में बंद करना।

खामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कच्चापन। कचाई। २ त्रुटि। दोष।

खामोश—वि० [फा०] चुप। मौन।

खामोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मौन। चुप्पी।

खार—संज्ञा पुं० [सं० क्षार] १ दे० "क्षार"। २ सज्जी। ३. लोना। लोनी। कल्लर। रेह। ४. धूल। राख। ५. एक पौधा जिससे खार निकलता है।

संज्ञा पुं० [फा०] १ काँटा। कंटक। फाँस। २ खाँग। ३ डाह। जलन।

मुहा०—खार खाना=डाह करना। चलना।

खारक—संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] छुहारा।

खारा—वि० पुं० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १ क्षार या नमक के स्वाद का। २ कड़ुआ। अरुचिकर।

संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] १ एक धारी-दार कपड़ा। २ घास या सूखे पत्ते बाँधने के लिये जालदार बँधना। ३. जालीदार थैला। ४ झाबा। खाँचा।

खारिक(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] छोहारा।

खारिज—वि० [अ०] १ बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। बहिष्कृत। रद्द किया हुआ। २ भिन्न। अलग। ३ जिस (अभियोग) की सुनाई करने से इनकार किया गया हो।

खारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] खुजली।

खारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार लवण।

वि० क्षारयुक्त। जिसमें क्षार हो।

खारुआँ, खारुवा—संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] १ आल से बना हुआ एक प्रकार का गाढा लाल रंग। २ इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।

खाल—संज्ञा स्त्री० [प्रा० खल्ला] १ मनुष्य, पशु आदि के शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।

मुहा०—खाल उधेड़ना या खींचना= बहुत मारना या पीटना या कड़ा दंड देना।

२ आधा चरसा। अधौड़ी। ३ धौंकनी। भाथी। ४. मृत शरीर।

संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १. नीची भूमि जिसमें प्रायः बरसात का पानी जमा हो जाता हो। २ खाड़ी। खलीज। ३. खाली जगह।

खालसा—वि० [अ० खालिस=शुद्ध] १ जिसपर केवल एक का अधिकार हो। २ राज्य का। सरकारी।

मुहा०—खालसा करना=(१) स्वायत्त करना। जब्त करना। (२) नष्ट करना।

संज्ञा पुं० सिक्खों की एक विशेष मंडली।

खाला—वि० [हिं० खाल] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न।

संज्ञा स्त्री० [अ०] माता की बहिन। मौसी।

मुहा०—खाला जी का घर=सहज काम।

खालिक—संज्ञा पुं० [अ० खालिक] सृष्टि-कर्ता। उत्पन्न करनेवाला। उ०—कबीर खालिक जागिया और न जागै कोइ। कै जागै विषई विष भरया, कै दास बंदगी होइ। —कबीर०।

खालिस—वि० [अ०] जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। शुद्ध।

खाली—वि० [अ०] १ जिसके भीतर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २ जिसपर कुछ न हो। ३ जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो।

मुहा०—हाथ खाली होना=हाथ में रुपया पैसा न होना। निर्धन होना। खाली पेट=बिना कुछ खाए हुए।

३. रहित। विहीन। ४. जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो (वस्तु)। ६ व्यर्थ। निष्फल।

मुहा०—निशाना या वार खाली जाना=ठीक न बैठना। लक्ष्य पर न पहुँचना। बात खाली जाना या पड़ना=वचन निष्फल होना। कहने के अनुसार कोई बात न होना।

क्रि० वि० केवल। सिर्फ।

खाविंद—संज्ञा पुं० [फा०] १. पति। खसम। २ मालिक। स्वामी।

खास—वि० [अ०] १. विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।

मुहा०—खासकर=विशेषत। प्रधानत।

२ निज का। आत्मीय। ३ स्वय। खुद। ४ ठीक। ठेठ। विशुद्ध।

सज्ञा स्त्री० [अ० कीसा] गाढ़े कपड़े की थैली।

खासकलम—सज्ञा पु० [अ०] निज का मुशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।

खासगी—वि० [अ० खास+गी (प्रत्य०)] १ राजा या मालिक आदि का। २. व्यक्तिगत। निजी। निज का।

खासबरदार—सज्ञा पुं० [फा०] वह सिपाही जो राजा की सवारी के आगे चलता है।

खासा—सज्ञा पुं० [अ०] १. राजा का भोजन। राजभोग। २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३ एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपड़ा।

वि० पुं० [स्त्री० खासी] १ अच्छा। भला। उत्तम। २ स्वस्थ। तदुरुस्त। नीरोग। ३ मध्यम श्रेणी का। ४ सुडौल। सुदर। ५ भरपूर। पूरा पूरा। सर्वांगपूर्ण।

खासियत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्वभाव। प्रकृति। आदत। २ गुण। सिफत।

खाहिश—सज्ञा स्त्री० दे० "ख्वाहिश"।

खिंचना—क्रि० अ० [सं० √कृष्, प्रा० √खच] १. घसीटा जाना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकल जाना। ३. एक या दोनों छोरों का एक या दोनों ओर बढ़ना। तनना। ४. किसी ओर बढ़ना या जाना। आकर्षित होना। प्रवृत्त होना। ५ सोखा जाना। खपना। चुसना। ६. भभके से अर्क या शराब आदि तैयार होना। ७. गुण या तत्व का निकल जाना।

मुहा०—पीड़ा या दर्द खिंचना=(औषध आदि से) दर्द दूर होना।

८ कलम आदि से बनकर तैयार होना। चित्रित होना। ९ रुक रहना। रुकना।

मुहा०—हाथ खिंचना=देना बद होना।

१० माल का चालान होना। माल खपना। ११ अनुराग कम होना।

खिंचवाना—क्रि० स० [हिं० खींचना का प्रे० रूप] खींचने का काम दूसरे से कराना।

खिंचाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० √खिंच+आई (प्रत्य०)] १ खींचने की क्रिया। २. खींचने की मजदूरी।

खिंचाना—क्रि० स० दे० "खिंचवाना"।

खिंचाव—सज्ञा पुं० [हिं० √खिंच+आव (प्रत्य०)] "खिंचना" का भाव०।

खिंडाना—क्रि० स० [सं० √क्षिप्] बिखराना। छितराना।

खिंथा—सज्ञा स्त्री० [स० कंथा] गुदड़ी। जोगियों का पहनावा।

खिखिंध(पु)—सज्ञा पुं० दे० "किष्किंधा"।

खिचड़वार—सज्ञा पु० [सं० कृसर+वार] मकर सक्रांति।

खिचड़ी—सज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] १ एक में मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल।

मुहा०—खिचड़ी पकाना=गुप्त भाव से कोई सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना=सबकी समति के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई कार्य करना।

२ विवाह की एक रस्म जिसमें वर और उसके छोटे भाइयों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। ३ एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ। ४ मकर सक्रांति।

वि० १ मिला जुला। २ गड़बड़।

खिजमत(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "खिदमत"।

खिजलाना—क्रि० अ० [हिं० खीजना] झुँझलाना। चिढ़ना।

क्रि० स० [हिं० खीजना का प्रे० रूप] दुखी करना। चिढ़ाना।

खिजाँ—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ वृक्षों के पत्ते झड़ने के दिन। हेमत ऋतु। २. पतझड़। ३ ह्रास या पतन के दिन।

खिजाब—सज्ञा पुं० [अ०] सफेद बालों को काला करने की औषधि। केशकल्प।

खिझ(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज"।

खिझना—क्रि० अ० दे० "खीजना"।

खिझाना—क्रि० स० [हिं० खीझना का स० रूप] चिढ़ाना।

खिड़कना—क्रि० अ० [हिं० खिसकना] चुपचाप बिना कहे सुने चल देना।

खिड़की—सज्ञा स्त्री० [सं० खटक्किका] १. झरोखा। २ छोटा दरवाजा। दरीचा।

खिताब—सज्ञा पुं० [अ०] पदवी। उपाधि।

खित्ता—सज्ञा पुं० [अ०] प्रात। देश।

खिदमत—सज्ञा स्त्री० [फा०] सेवा। टहल।

खिदमतगार—सज्ञा पुं० [फा०] खिदमत करनेवाला। सेवक। टहलुवा।

खिदमती—वि० [फा० खिदमत] १. जो खूब सेवा करे। २ सेवा सबंधी अथवा जो सेवा के बदले में प्राप्त हुआ हो।

खिन(पु)—सज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

वि० [स० क्षीण] दुर्बल। कमजोर। उ०—उष्णकाल अरु देह खिन, मगपथी, तन ऊख। चातक बतियाँ ना रुचीं अन जल सींचे रूख।—दोहा०।

खिनक—सज्ञा पुं० [सं० क्षण+एक] एक क्षण। क्षणैक। उ०—वह मोक्षदेनी पातखिन कों खिनक बीच साधु मन बाँधै यह कौन धौं बड़ाई है।—शृगार०।

खिन्न—वि० [सं०] १ उदासीन। चिंतित। २ अप्रसन्न। नाराज। ३ दीनहीन। असहाय।

खिपना(पु)—क्रि० अ० [सं० क्षिप्] १ खपना। २ तल्लीन होना। निमग्न होना।

खियाना—क्रि० अ० [सं० क्षय या हिं० खाना] रगड़ से घिस जाना।

क्रि० वि० दे० "खिलाना"।

खियाल—सज्ञा पुं० दे० "ख्याल"।

खिरनी—सज्ञा स्त्री० [सं० क्षीरिणी] एक ऊँचा पेड़ और उसके फल जो खाए जाते है।

खिराज—संज्ञा पुं० [अ०] राजस्व। कर।

खिरिरना(पु)—क्रि० स० [अनु०] १. अनाज छानना। २ खुरचना।

खिरैंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० खरयष्टिका] बला। बरियारा। बीजबंद।

खिरौरा—संज्ञा पुं० [हिं० खीर+औरा] एक प्रकार का लड्डू।

खिरौरी—संज्ञा स्त्री० [?] केवड़ा देकर बाँधी हुई खैर या कत्थे की टिकिया। उ०—सोंधा सबै बैठले गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।—पद्मावत।

खिलअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह वस्त्र आदि जो किसी राजा की ओर से सम्मानार्थ किसी को दिया जाता है।

खिलकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सृष्टि। संसार। २. बहुत से लोगों का समूह। भीड़।

खिलकौरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेल+कौरी (प्रत्य०)] खेल। खिलवाड़।

खिलखिलाना—क्रि० अ० [अनु०] खिल-खिल शब्द करके हँसना। जोर से हँसना।

खिलत, खिलति(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "खिलअत"।

खिलना—क्रि० अ० [सं०√किल् ?] १. कली से फूल होना। विकसित होना। २. प्रसन्न होना। ३. शोभित होना। ठीक या उचित जँचना। ४. बीच से फट जाना। ५ अलग अलग हो जाना।

खिलवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] एकांत। शून्य या निर्जन स्थान।

खिलवतखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ कोई गुप्त सलाह हो। एकांत। मंत्रणा-स्थान।

खिलवाड़—संज्ञा पुं० दे० "खेलवाड़"।

खिलवाना—क्रि० स० [हिं० खाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा भोजन करवाना।

क्रि० स० [हिं० खिलाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा प्रफुल्लित करवाना।

क्रि० स० दे० "खेलाना"।

खिलवार—संज्ञा पुं० दे० "खिलवाड़"।

खिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√खा] खाने या खिलाने का काम।

संज्ञा स्त्री० वह दाई या मजदूरनी जो बच्चों को खिलाती हो।

खिलाड़, खिलाड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० खेल+आड़, आड़ी (प्रत्य०)] [स्त्री० खिलाड़िन] १. खेल करनेवाला। खेलनेवाला। २ कुश्ती लड़ने, पटा बनेठी खेलने या ऐसे ही और काम करनेवाला। ३. जादूगर।

खिलाना—क्रि० स० [हिं० खेलना का स० रूप] किसी को खेल में लगाना। खेल करना।

क्रि० स० [हिं० 'खाना' का प्रे० रूप] भोजन कराना।

क्रि० स० [हिं० खिलना का स० रूप] खिलने में प्रवृत्त करना। विकसित करना। फुलाना।

खिलाफ—वि० [अ०] विरुद्ध। उलटा। विपरीत।

खिलाफत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खलीफा का पद। २. खलीफापन। ३ उत्तराधिकार। ४ राजनीतिक बादशाहों (मुसलमान) पर खलीफा का प्रभुत्व। ५ १९१८ में खलीफा का मुसलमान राजाओं पर अधिकार नष्ट हो जाने से अँगरेजों के विरुद्ध भारतीय मुसलमानों का आंदोलन।

खिलौना—संज्ञा पुं० [हिं० खेल+औना (प्रत्य०)] कोई मूर्ति जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली—संज्ञा स्त्री० [हिं०√खिल] हँसी। हास्य। दिल्लगी। मजाक।

यौ०—खिल्लीबाज=दिल्लगीबाज।

†संज्ञा स्त्री० [सं० कील, प्रा० खील] (१) पान का बीड़ा। गिलौरी। (२) कील। काँटा।

खिवना—क्रि० अ० [?] चमकना। प्रकाशित होना।

खिसकना—क्रि० अ० दे० खसकना।

खिसना(पु)—क्रि० अ० दे० "खिसकना"।

खिसाना(पु)†—क्रि० अ० दे० "खिसियाना"।

खिसारा—संज्ञा पुं० [फा०] घाटा। नुकसान। हानि।

खिसारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कृशर] दुबिया मटर। कसारी। लतरी।

खिसियाना—क्रि० अ० [हिं० खीस=दाँत?] १. लजाना। लज्जित होना। शरमाना। २. खफा होना। क्रुद्ध होना। रिसाना।

खिसी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसियाना] १. लज्जा। शरम। २. ढिठाई। धृष्टता। ३. विषाद। दुःखद घटना। उ०—आवत अवन अधर दै भाल महावर लाल। हँसो खिसी ह्वै जाइ जो सही गुनै कहुँ बाल।—रस-साराश।

खिसौहाँ(पु)—वि० [हिं० खिसाना] १. लज्जित-सा। २ कुढ़ा या रिसाया सा।

खींच—संज्ञा स्त्री० [सं०√कृष्, प्रा०√खंच] खींचने का भाव।

खींचतान—संज्ञा स्त्री० [हिं० खींच+तान] १. दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचाखींची। २. क्लिष्ट कल्पना द्वारा किसी शब्द या वाक्य आदि का अन्यथा अर्थ करना।

खींचना—क्रि० स० [हिं० खींच] [प्रे० खिंचवाना] १. घसीटना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकालना। ३. किसी वस्तु को छोर या बीच से पकड़कर अपनी ओर लाना। ४ बलपूर्वक अपनी ओर बढ़ाना। तानना। ऐंचना। ५ आकर्षित करना। किसी ओर ले जाना।

मुहा०—चित्त खींचना=मन को मोहित करना।

६ सोखना। चूसना। ७ भभके से अर्क, शराब आदि टपकाना। ८ किसी वस्तु के गुण या तत्व को निकाल लेना।

मुहा०—पीड़ा या दर्द खींचना=औषध आदि से दर्द दूर करना।

९. कलम फेरकर लकीर आदि डालना। लिखना। चित्रित करना। १०. रोक रखना।

मुहा०—हाथ खींचना=किसी काम को न करना। विरत होना।

खींचाखींची, खींचातानी—संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान"।

खीज—संज्ञा स्त्री० [सं० √खिद्] १. खीजने का भाव। झुँझलाहट। २ वह बात जिससे कोई चिढ़े।

खीजना—क्रि० अ० [हिं० खीज] दुखी और क्रुद्ध होना। झुँझलाना। खिजलाना।

खीझ(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "खीज"।

खीझना(पु)†—क्रि० अ० दे० "खीजना"।

खीन(पु)†—वि० [सं० क्षीण] क्षीण।

खीनताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षीणता"।

खीनि(पु)—वि० [सं० क्षीण] दे० "क्षीण"। उ०—दोखे हीनि, माम्ह खीनि।

खीनी—वि० दे० "खीन"।

खीर—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] १ दूध में पकाया हुआ चावल। २ दूध।

मुहा०—खीर चटाना=बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाना।

खीरा—संज्ञा पुं० [सं० क्षीरक] ककड़ी की जाति का एक लंबा फल।

खीरी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] चौपायों के थन के ऊपर का वह भाग जिसमें दूध रहता है। बाख।

संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीरी] खिरनी।

खील—संज्ञा स्त्री० [हिं० खिलना] भूना हुआ धान। लावा।

†संज्ञा स्त्री० दे० "कील"।

खीला†—संज्ञा पुं० [हिं० कील] काँटा। मेख। कील।

खीली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खील] पान का बीड़ा। खिल्ली।

खीवन, खीवनि—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीवन] मतवालापन। मस्ती।

खीसⓅ†—वि० [सं० √क्षिप्] नष्ट। बरबाद। उ०—मूस मृगेस बली वृषवाहन किंकर कीनो करोर तँतीस कों। हाथन में फरसा करवाल त्रिसूल धरे खल खोइबे खीस को।—शृंगार०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खीज] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध। रोष। गुस्सा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसिआना] लज्जा। शरम।

संज्ञा स्त्री० [?] ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खीसा—संज्ञा पुं० [फा० कीसा] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १. थैला। २ जेब। खलीता।

खुँदाना—क्रि० स० [सं० √क्षुद्र=रौंदना] (घोड़ा) कुदाना।

खुंभी—संज्ञा स्त्री० दे० "खुमी"।

खुआरⓅ†—वि० दे० "ख्वार"।

खुदी—संज्ञा स्त्री० दे० "खूँद"।

खुक्ख—वि० [सं० शुष्क] जिसके पास कुछ न हो। छूछा। खाली।

खुखड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। कुकड़ी। २ नैपाली कटार।

खुगीर—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे रहता है। नमदा। २. चारजामा। जीन।

मुहा०—खुगीर की भरती=अनावश्यक और व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का समूह।

खुचर, खुचुर—संज्ञा स्त्री० [सं० कुचर] झूठमूठ अवगुण दिखलाने का कार्य। ऐबजोई।

खुजलाना—क्रि० स० [सं०√खर्ज] खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अंग पर फेरना। सहलाना।

क्रि० अ० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली मालूम होना।

खुजलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजली+आहट] सुरसुरी। खुजली।

खुजली—संज्ञा स्त्री० [सं०√खर्ज] १. खुजलाहट। सुरसुरी। २ एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। ३ एक रोग जिसमें शरीर में खुजलानेवाले दाने निकल आते हैं।

खुजाना—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० "खुजलाना"।

खुट—संज्ञा स्त्री० दे० "कुट्टी"।

खुटकⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खटकना] खटका। आशंका। चिंता।

खुटकना—क्रि० स० [सं०√खुड् या √खुड्] किसी वस्तु को ऊपर ऊपर से तोड़ या नोच लेना।

खुटका—संज्ञा पुं० दे० "खटक"।

खुटचालⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटी+चाल] १. दुष्टता। पाजीपन। २ खराब चालचलन। ३ उपद्रव।

खुटचालीⓅ—वि० [हिं० खुटचाल+ई (प्रत्य०)] १ दुष्ट। पाजी। २. दुराचारी। बदचलन।

खुटनाⓅ†—क्रि० अ० [सं०√खुड्] खुलना।

क्रि० अ० समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना—संज्ञा पुं० [हिं० खोटा+पन, पना (प्रत्य०)] खोटापन। दोष। ऐब।

खुटाना†—क्रि० अ० [सं०√खुड्] समाप्त होना। खतम होना।

खुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटाई] खोटापन। दोष।

खुटिला—संज्ञा पुं० [देश०] करनफूल नामक कान का गहना।

खुटी†—संज्ञा स्त्री० [खुट से अनु०] १ रेवड़ी नाम की मिठाई। २ दे० "कुट्टी" (४)।

खुट्टी†—संज्ञा स्त्री० [?] दे० "खुरंड"।

खुडुआ†—संज्ञा पुं० दे० "घोघी"।

खुड्डी, खुड्ढी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड्ढा] १ पाखाने में पैर रखने के पायदान। २ पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा—संज्ञा पुं० [अ०] १. तारीफ। प्रशंसा। २. सामयिक राजा की प्रशंसा या घोषणा।

मुहा०—किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना=सर्वसाधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना (मुसल०)।

खुत्थी, खुथीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटी] १ पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी में गड़ा रह जाता है। खूँथी। खूँटी। २ थाती। धरोहर। अमानत। ३ वह पतली लंबी थैली जिसमें रुपया भरकर कमर में बाँधते हैं। वसनी। हिमयानी। ४. धन। दौलत।

खुद—अव्य० [फा०] स्वयं। आप।

मुहा०—खुद व खुद=आपसे आप। बिना किसी दूसरे के प्रयास, यत्न या सहायता के।

खुदकाश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोए, पर वह सीर न हो।

खुदकुशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] आत्महत्या।

खुदगरज—वि० [फा०] अपना मतलब साधनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्वार्थपरता।

खुदना—क्रि० अ० [हिं० खोदना] खोदा जाना।

खुदमुख्तार—वि० [फा०] जिसपर किसी का दबाव न हो। स्वतंत्र। स्वच्छंद।

खुदरा—संज्ञा पुं० [सं० क्षुद्र] १ छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज। २ रेजकारी।

खुदवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोद+वाई (प्रत्य०)] खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना—क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम कराना।

खुदा—संज्ञा पुं० [फा०] स्वयंभू। ईश्वर।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ईश्वरता। २ सृष्टि।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√खोद+आई (प्रत्य०)] खोदने का भाव, काम या मजदूरी।

खुदाई खिदमतगार—संज्ञा पुं० [फा०] भारत के स्वाधीनता आंदोलन में कांग्रेस का साथ देनेवाला तत्कालीन उत्तर-पश्चिम भारत के पठानों का एक राजनीतिक दल।

खुदावंद—संज्ञा पुं० [फा०] १ ईश्वर। २ मालिक। अन्नदाता। ३ हुजूर। श्रीमान्।

खुदाव—संज्ञा पुं० [हिं० खोदाव] १ खुदाई। २. खोदकर बनाए हुए बेलबूटे। नक्काशी।

खुदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अहंकार। २. अभिमान। घमंड। शेखी।

खुद्दी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र] चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।

खुनखुना—संज्ञा पुं० [अनु०] बच्चों का एक प्रकार का बजनेवाला खिलौना। घुनघुना। झुनझुना।

खुनस—संज्ञा स्त्री० [सं० खिन्नमनस्] [वि० खुनसी] क्रोध। गुस्सा। रिस।

खुनसाना†—क्रि० अ० [सं० खिन्नमनस्] क्रोध करना। गुस्सा होना।

खुनसी—वि० [हिं० खुनस+ई (प्रत्य०)] क्रोधी।

खुफिया—वि० [फा०] गुप्त। पोशीदा। छिपा हुआ।

खुफिया पुलिस—संज्ञा स्त्री० [फा० खुफिया+अं० पुलीस] गुप्त पुलिस। भेदिया। जासूस।

खुभना—क्रि० स० [अनु०] चुभना। घुसना। धँसना।

खुभराना(पु)†—क्रि० अ० [सं०√क्षुभ्] उपद्रव के लिये घूमना। इतराए फिरना।

खुभाना—क्रि० स० [अनु०] दे० "चुभाना"।

खुभी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ खुभ] कान में पहनने का लौंग।

खुमान—वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी (आशीर्वाद)।

खुमार—संज्ञा पुं० दे० "खुमारी"।

खुमारी—संज्ञा स्त्री० [अ० खुमार] १. मद। नशा। २ नशा उतरने के समय की हलकी थकावट। ३. वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।

खुमी—संज्ञा स्त्री० [अ० कुमा] पत्रपुष्परहित क्षुद्र उद्भिद् की एक जाति जिसके अंतर्गत भूफोड़, ढिंगरी और कुकुरमुत्ता आदि हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं०√खुभ] १ सोने की कील जिसे लोग दाँतों में जड़वाते हैं। २ धातु का पोला छल्ला जो हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाता है।

खुरंड—संज्ञा पुं० [सं०√खुर्=खरोचना+अंड ?] सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।

खुर—संज्ञा पुं० [सं०] सींगवाले चौपायों के पैर की टाप जो बीच से फटी होती है।

खुरका†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुटक] सोच। खटका। अंदेशा।

खुरखुर—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण साँस लेते समय होता है। घरघर शब्द।

खुरखुरा—वि० [सं०√खुर्=खरोचना] जिसको छूने से हाथ में कण या रवे गड़ें। नाहमवार। खुरदरा।

खुरखुराना—क्रि० अ० [खुरखुर से अनु०] गले में कफ के कारण घरघराहट होना।

क्रि० अ० [हिं० खुरखुरा] खुरखुरा मालूम होना। कण या रवे आदि गड़ना।

खुरखुराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुर+आहट (प्रत्य०)] साँस लेते समय गले का शब्द।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुरा] खुरदरापन।

खुरचन—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय।

खुरचना—क्रि० अ० [सं० √खुर्] किसी जमी हुई वस्तु को कुरेदकर अलग कर लेना। करोचना। करोना।

खुरचनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] खुरचने का औजार।

खुरचाल—संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल"।

खुरजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला। बड़ा थैला।

खुरतार†—संज्ञा स्त्री०[सं० खुर=टाप+ताल =चोट] टाप या खुर की चोट। सुम का आघात।

खुरपका—संज्ञा पुं० [हिं० खुर+√पक] चौपायों का एक रोग जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं।

खुरपा—संज्ञा पुं० [सं० क्षुरप्र] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का औजार।

खुरमा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छोहारा। २ एक प्रकार का पकवान या मिठाई।

खुराक—संज्ञा स्त्री० [फा०] भोजन। खाना। आहार।

खुराकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय।

खुराफात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बेहूदी और रद्दी बात। २ गालीगलौज। ३ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।

खुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] टाप का चिह्न।

खुरुक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "खुरक"। उ०—मोट बड़े सो टोइ टोइ धरे। ऊवर दूवर खुरुकन, चरे।—पदमावत।

खुर्द—वि० [फा०] छोटा। लघु।

खुर्दबीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी दिखाई देती है। सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

खुर्द बुर्द—क्रि० वि० [फा०] नष्टभ्रष्ट।

खुर्दा—संज्ञा पुं० [फा०] छोटी मोटी चीज।

खुर्राट—वि० [देश०] १ बूढ़ा। वृद्ध। २. अनुभवी। तजरुबेकार। ३ चालाक। धूर्त।

खुलना—क्रि० अ० [सं०√खुड्=भेदन ?] १ अवरोध या आवरण का दूर होना। बंद न रहना; जैसे—किवाड़ खुलना।

मुहा०—खुलकर=बिना रुकावट के।

२ ऐसी वस्तु का हट जाना जो छाए या घेरे हो। ३ दरार होना। छेद होना। फटना। ४. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना। ५ जारी होना। ६ सड़क, नहर आदि तैयार होना। ७. किसी कारखाने, दूकान, संस्था, पाठशाला, न्यायालय या दफ्तर आदि का नित्य का कार्य आरंभ होना। ८ किसी सवारी का रवाना हो जाना। ९. गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना। १० कार्यारंभ होना।

मुहा०—खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान=सबके सामने। छिपाकर नहीं।

११ मन की बात कहना। भेद बताना। १२ देखने में अच्छा लगना। सजना।

मुहा०—खुलता रंग=हलका सोहावना रंग।

खुलवाना—क्रि० स० [हिं० खोलना का प्रे० रूप] खोलने का काम दूसरे से कराना।

खुला—वि० पुं० [हिं०√खुल] १ बंधनरहित। जो बँधा न हो। २ जिसे कोई रुकावट न हो। अवरोधहीन। ३ जो छिपा न हो। स्पष्ट। प्रकट। जाहिर।

खुलासा—संज्ञा पुं० [अ०] सारांश।

वि० [हिं० खुला] १ खुला हुआ। २ अवरोधरहित। ३ साफ साफ। स्पष्ट।

खुल्लमखुल्ला—क्रि० वि० [हिं०√खुल+खुला] प्रकाश्य रूप से। खुले आम।

खुवार(पु)—वि० दे० "ख्वार"।

खुश—वि० [फा०] १ प्रसन्न। मगन। आनंदित। २ अच्छा (यौगिक में), जैसे—खुशहाल, खुशनसीब, खुशमिजाज आदि।

खुशकिस्मत—वि० [फा०] भाग्यवान्।
खुशकिस्मती—सज्ञा स्त्री० [फा०] सौभाग्य।
खुशखबरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्न करनेवाला समाचार। अच्छी खबर।
खुशदिल—वि० [फा०] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २ हँसोड़। मसखरा।
खुशनसीब—वि० [फा०] भाग्यवान्।
खुशबू—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुगधि। सौरभ।
खुशबूदार—वि० [फा०] उत्तम गधवाला।
खुशमिजाज—वि० [फा०] सदा प्रसन्न रहनेवाला। हँसमुख।
खुशमिजाजी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मन का सदा प्रसन्न रहना। २ कुशल समाचार। खैरियत।
खुशहाल—वि० [फा०] सुखी। सपन्न।
खुशामद—सज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशसा। चापलूसी।
खुशामदी—वि० [फा० खुशामद+ई (प्रत्य०)] खुशामद करनेवाला। चापलूस।
खुशामदी टट्टू—सज्ञा पु० [हिं० खुशामदी+ टट्टू] वह जिसका काम खुशामद करना हो।
खुशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] आनद। प्रसन्नता।
खुश्क—वि० [फा०, मि० स० शुष्क] १ जो तर न हो। सूखा। २. जिसमें रसिकता न हो। रूखे स्वभाव का। ३ किसी दूसरी आमदनी के बिना। केवल। मात्र।
खुश्की—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूखापन। शुष्कता। नीरसता। २ स्थल या भूमि।
खुसाल, खुस्याल(पु)—वि० [फा० खुशहाल] आनदित। मुदित। खुश।
खुसिया—सज्ञा पु० [अ० खुसिय.] अंड-कोश।
खुही—सज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।
खूँखार—वि० [फा०] १ खून पीनेवाला। २ भयकर। डरावना। ३ क्रूर। निर्दय।
खूँट—सज्ञा पुं० [सं० खड] १ छोर। कोना। उ०—तेहि पर खूँट दीप दुइ वारे। दुइ धुप दुओ खूँट बैसारे।—पद्मावत। २ ओर। तरफ। ३ भाग। हिस्सा।
सज्ञा स्त्री० [हिं० खोट] कान की मैल।
खूँटना—क्रि० स० [स० खडन] १ पूछ-ताछ करना। टोकना। २ छेड़छाड़ करना। ३ कम होना। ४ दे० "खोंटना"।
खूँटा—सज्ञा पुं० [स० क्षोड] पशु बाँधने के लिये जमीन में गड़ी लकड़ी या मेख।
खूँटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटा] १ छोटी मेख। छोटी गटी लकड़ी। २ अरहर, ज्वार आदि के पौधे की सूखी पेड़ी का अश जो फसल काट लेने पर खेत में खड़ा रह जाता है। ३ गुल्ली। अंटी। ४ वालों के नए निकले हुए कड़े अकुर। चौर में छूटी हुई वालों की जड़ें। ६ सीमा। हद। ७ मेख के आकार की लकड़ी।
खूँद—सज्ञा स्त्री० [स० √स्कुद्] थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर चलते या पैर पटकते रहना।
खूँदना—क्रि० अ० [स० √स्कुद्] १ पैर उठा उठाकर जल्दी जल्दी भूमि पर पटकना। उछल कूद करना। कूदना। उ०—चढ़े न जाइ वार ओहि खूँदी। परै त सेंधि सीस बल मूँदी।—पदमावत। २ पैरों से रौंदकर खराब करना। †३ कुचलना।
खूक, खूखू(पु)—सज्ञा पुं० [फा० खूक] सूअर।
खूझा—सज्ञा पुं० [स० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १ फल के अदर का निकम्मा रेशेदार भाग। २ उलझा हुआ रेशेदार लच्छा।
खूटना(पु)†—क्रि० अ० [स० √त्रुद् ?] १ रुक जाना। वद हो जाना। २ खतम होना।
क्रि० स० छेड़ना। रोक टोक करना।
खूटा(पु)—वि० दे० "खोटा"।
खूठी—सज्ञा स्त्री० [देश] कान में पहनने का एक प्रकार का प्राचीन आभूषण। खुभी।
खूद, खूदड़, खूदर†—सज्ञा पु० [स० क्षुद्र] किसी वस्तु को छान लेने या साफ कर लेने पर वचा हुआ निकम्मा भाग।
खून—सज्ञा पुं० [फा०] १ रक्त। रुधिर।
मुहा०—खून उवलना या खौलना = क्रोध से शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। खून का प्यासा = वध का इच्छुक। खून सिर पर चढ़ना या सवार होना = किसी को मार डालने या किसी प्रकार का और कोई अनिष्ट करने पर उद्यत होना। खून पीना = (१) मार डालना। (२) वहुत तंग करना। सताना।
२ वध। हत्या। कतल।
खूनखराबा—सज्ञा पुं० [हिं० खून+ खराबी] मारकाट।
खूनखराबी—सज्ञा स्त्री० दे० "खून-खराबा"।
खूनी—वि० [फा०] १ मार डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी। ३. लाल।
खूब—वि० [फा०] [संज्ञा खूबी] अच्छा। भला। उमदा। उत्तम।
क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह से।
खूबकलाँ—सज्ञा स्त्री० [फा०] फारस की एक घास के बीज। खाकसीर।
खूबसूरत—वि० [फा०] सुंदर। रूपवान्।
खूबसूरती—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुंदरता।
खूबानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] जरदालू।
खूबी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २ गुण। विशेषता।
खूसट—सज्ञा पुं० [स० कौशिक] उल्लू।
वि० शुष्कहृदय। अरसिक। मनहूस।
खूसर†—सज्ञा पुं० वि० दे० "खूसट"।
खृष्टीय—वि० [हिं० खृष्टि+स० ईय (प्रत्य०)] ईसा सबधी। ईसा का। ईसाई।
खेकसा, खेखसा—सज्ञा पुं० [देश०] पर-वल के आकार का एक रोएँदार फल या तरकारी। ककोड़ा।
खेचर—सज्ञा पु० [सं०] १ वह जो आस-मान में चले। आकाशचारी। २ सूर्य, चद्र आदि ग्रह। ३ तारागण। ४ वायु। ५. देवता। ६ विमान। ७ पक्षी। ८ वादल। ९ भूत-प्रेत। १० राक्षस।
खेचरी गुटिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] योग-सिद्ध गोली जिसको मुँह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है (तत्र)।
खेचरी मुद्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] योगसाधन की एक मुद्रा जिसमें मस्तक पर दृष्टि गड़ाने के वाद जीभ को उलटकर तालू मे लगाते हैं।
खेटक—सज्ञा पुं० [स०] १ खेड़ा। छोटा गाँव। २ सितारा। ३. वलदेव जी की गदा।
(पु)सज्ञा पुं० [स० आखेट] शिकार।
खेटकी—सज्ञा पुं० [?] भड्डरी। भड़ेरिया।
सज्ञा पुं० [स० खेट=आखेट] १. शिकारी। अहेरी। २ वधिक।
खेड़ा†—सज्ञा पुं० [स० खेट] छोटा गाँव।
खेड़ी—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का देशी लोहा। भुरकुटिया लोहा। २ वह मासखड जो जरायुज जीवों के वच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।
खेत—सज्ञा पु० [स० क्षेत्र] १. अनाज आदि

की फसल उत्पन्न करने योग्य जोतने बोने की जमीन।

मुहा०—खेत करना=(१) समतल करना। (२) उदय के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना।

२. खेत में खड़ी हुई फसल। ३ किसी चीज के, विशेषत. पशुओं आदि के, उत्पन्न होने का स्थान या देश। ४ समर भूमि।

मुहा०—खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत रखना=समर में विजय प्राप्त करना।

५ तलवार का फल।

खेतिहर—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्र+धर] खेती करनेवाला। कृषक। किसान।

खेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेत+ई (प्रत्य०)] १. खेत में अनाज बोने का कार्य। कृषि। किसानी। २. खेत में बोई हुई फसल।

खेतीबारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेती+बारी] किसानी। कृषिकर्म।

खेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] १ अप्रसन्नता। दुःख। रंज। २ शिथिलता। थकावट।

खेदना†—क्रि० स० [सं०√खिद्] १ मारकर हटाना। भगाना। खदेरना। २ शिकार के पीछे दौड़ना।

खेदा—संज्ञा पुं० [सं० खेदन ?] १ किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। हाँका। २. शिकार। अहेर। आखेट।

खेदित—वि० [सं०] १ दुःखित। रंजीदा। २ थका हुआ। शिथिल।

खेना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १ नाव के डाँड़ों को चलाना जिससे नाव चले। २ कालक्षेप करना। बिताना। काटना।

खेप—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में ले जाई जाय। लदान। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] बिताना। काटना। गुजारना।

खेम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

खेमटा—संज्ञा पुं० [देश०] १ बारह मात्राओं का एक ताल। २ इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।

खेमा—संज्ञा पुं० [अ०] तंबू। डेरा।

खेरे—संज्ञा पुं० [सं० खेट, प्रा० खेड] छोटा गाँव। उ०—बैरष बाँह बसाइए पै, तुलसी घरु ब्याध अजामिल खेरे।—कविता०।

खेरौरा†—संज्ञा पुं० [?] मिसरी का लड्डू। ओला।

खेल—संज्ञा पुं० [सं० खेलन (√खेल्)] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछल कूद, दौड़ धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें कभी कभी हार जीत भी होती है। क्रीड़ा।

मुहा०—खेल खेलाना=बहुत तंग करना।

२ मामला। बात। ३ बहुत हलका या तुच्छ काम। ४ अभिनय, तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। ५ कोई अद्भुत बात। विचित्र लीला।

खेलक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

खेलना—क्रि० अ० [सं०√खेल्] [प्रे० खेलाना] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर उधर उछलना, कूदना, दौड़ना आदि। क्रीड़ा करना। २ कामक्रीड़ा करना। विहार करना। ३ भूतप्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ पैर आदि पटकना। अभुआना। ४. विचरना। चलना। बढ़ना।

क्रि० स० १ मन बहलाव का काम करना, जैसे—गेंद खेलना, ताश खेलना।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो। बड़े साहस का काम करना।

२ नाटक या अभिनय करना।

खेलमिचौनी—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख मिचौली"।

खेलवाड़—संज्ञा पुं० [हिं० खेल+वाड़ (प्रत्य०)] खेल। क्रीड़ा। तमाशा। मन-बहलाव। दिल्लगी।

खेलवाड़ी—वि० [हिं० खेलवाड़+ई (प्रत्य०)] १ बहुत खेलनेवाला। २ विनोदशील।

खेला—संज्ञा पुं० दे० "खट्टा"।

खेलाड़ी—वि० [हिं० खेल+आड़ी (प्रत्य०)] १ खेलनेवाला। क्रीड़ाशील। २ विनोदी।

संज्ञा पुं० १ खेल में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। वह जो खेले। २. तमाशा करनेवाला। ३ ईश्वर।

खेलाना—क्रि० स० [हिं० 'खेलना' का प्रे० रूप] १ किसी दूसरे को खेल में लगाना। २ खेल में शामिल करना। ३ उलझाए रखना। बहलाना।

खेलार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

खेलौना—संज्ञा पुं० दे० "खिलौना"।

खेवक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० क्षेपक] नाव खेनेवाला। मल्लाह। केवट।

खेवट—संज्ञा पुं० [हिं० खेत+बाँट] पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार का नाम और हिस्सा लिखा रहता है।

संज्ञा पुं० [हिं० खेना] मल्लाह। माँझी।

खेवना(पु)—क्रि० स० दे० "खेना"।

खेवरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार के तांत्रिकों का संप्रदाय। इसके माननेवाले हाथ में खप्पर लिए रहते हैं। उ०—सेवरा, खेवरा, बानपर, सिध, साधक, अवधूत। आसन मारे बैठ सब जोरि आतमाभूत।—पदमावत।

खेवा—संज्ञा पुं० [हिं० खेना] १ नाव का किराया। २ नाव द्वारा नदी पार करने का काम। ३ बार। दफा। काल। समय। ४ बोझ से भरी नाव।

खेवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√खे+वाई (प्रत्य०)] १ नाव खेने का काम। २ नाव खेने की मजदूरी।

खेवैया—वि० [हिं०√खे+वैया (प्रत्य०)] खेनेवाला।

संज्ञा पुं० मल्लाह। उ०—जहँ धार भयकर वार न पार न बोहित नाव न नीक खेवैया।—कविता०।

खेस—संज्ञा पुं० [देश०] बहुत मोटे सूत की लंबी चादर। उ०—तब लौं दयावनो दुसह दुख दारिद के, साथरी को सोइबो, ओढिबो झूने खेस को।—कविता०।

खेसारी—संज्ञा स्त्री० दे० खिसारी।

खेह—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार] धूल। राख।

मुहा०—खेह खाना=(१) धूल फाँकना। व्यर्थ समय खोना। (२) दुर्दशाग्रस्त होना।

खेहर†—संज्ञा स्त्री० दे० "खेह"। उ०—सुनि सीतापति सील सुभाउ, मोद न मन तन पुलक नयन जल सो नर खेहर खाउ॥—विनय०।

खेहा—संज्ञा पुं० दे० "क्षेह"। उ०—धरे परेवा पंडुक हेरी। खेहा, गुडरू और बगेरी।—पदमावत।

खैंचना—क्रि० स० दे० "खींचना"।

खैर—संज्ञा पुं० [सं० खदिर] १ एक प्रकार का बबूल। कथकीकर। सोनकीकर। २. इस वृक्ष की लकड़ी को उबालकर निकाला और जमाया हुआ रस जो पान में खाया जाता है। कत्था। ३ एक पक्षी।

संज्ञा स्त्री० [फा० खैर] कुशल। क्षेम।

अव्य० १. कुछ चिंता नहीं। कुछ परवा नहीं। २. अस्तु। अच्छा।
खैरआफियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] कुशल-मंगल। क्षेम-कुशल।
खैरख्वाह—वि० [फा०] [संज्ञा खैरखाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।
खैरमैर—संज्ञा पुं० [अनु०] १ होहल्ला। २ हलचल।
खैरा—वि० [हिं० खैर] खैर के रंग का। कत्थई।
खैरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान। पुण्य।
खैरियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कुशल-क्षेम। राजीखुशी। २. भलाई। कल्याण।
खैलभैल—संज्ञा पुं० दे० "खैरमैर"।
खैलर—संज्ञा स्त्री० [सं० क्ष्वेड] मथानी।
खैला—संज्ञा पुं० दे० "खैलर"।
खोंइचा—संज्ञा पुं० [हिं० खूँट ?] स्त्रियों की साड़ी का आँचल। पल्ला। खूँट।
खोंगाह—संज्ञा पुं० [सं०] पीलापन लिए सफेद रंग का घोड़ा।
खोंच—संज्ञा स्त्री० [सं० √कुच्] १ किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंट। २. काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।
खोंचा—संज्ञा पुं० [सं० √कुच्] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।
खोंचिया†—संज्ञा पुं० [हिं० खोंची] भिखारी।
खोंची—संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँट] भिक्षा। भीख। उ०—खायो खोंची माँगि मैं तेरो नाम लिया रे। तेरे बल, बलि, आज लौं जग जागि जिया रे।—विनय०।
खोंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोंटना] १ खोंटने या नोचने की क्रिया। २ नोचने से पड़ा हुआ दाग। खरोंट।
खोंटना—क्रि० स० [सं० √खुड्] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना। कपटना।
खोंडर—संज्ञा पुं० [सं० कोटर] पेड़ का खोखला या पोला भाग।
खोंड़ा—वि० [सं० √खुड्] १ जिसका कोई अंग भंग हो। २ जिसके आगे के दाँत टूटे हों।
खोंता—संज्ञा पुं० [देश०] चिड़ियों का घोंसला। नीड़।
खोंपा—संज्ञा पुं० [सं० चुप] चोटी का गुच्छा। जूरा। उ०—सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई।—पदमावत।
खोंसना—क्रि० स० [सं० √कुश् = पकड़ना, लपेटना] किसी वस्तु को कहीं स्थिर रखने के लिये उसका कुछ भाग दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना। अटकाना।
खोआ†—संज्ञा पुं० दे० "खोया"।
खोई—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र] १ रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े। छोई। २ धान की खील। लाई। ३ कंबल की घोघी।
खोखला—वि० [हिं० खुक्ख + ला (प्रत्य०)] जिसके भीतर कुछ न हो। पोला।
खोखा—संज्ञा पुं० [हिं० खुक्ख] १ वह कागज जिसपर हुंडी लिखी जाती है। २ वह हुंडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।
खोगीर—संज्ञा पुं० दे० "खुगीर"।
खोज—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोजना] १ अनुसंधान। तलाश। शोध। २ चिह्न। निशान। पता। ३ गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न।
खोजना—क्रि० स० [सं० √खुज् = चुराना] तलाश करना। पता लगाना। ढूँढ़ना।
खोजवाना—क्रि० स० [हिं० खोजना का प्रे० रूप] पता लगवाना। ढुँढ़वाना।
खोजा—संज्ञा पुं० [फा० ख्वाजा] १ वह नपुंसक जो मुसलमानी हरमों में सेवक की भाँति रहता है। २ सेवक। नौकर। ३ माननीय व्यक्ति। सरदार। ४ गुजराती मुसलमानों की एक जाति।
खोजी—वि० [हिं० खोज + ई (प्रत्य०)] खोजने या ढूँढ़नेवाला।
खोट—संज्ञा स्त्री० [सं० √खोट्] १ दोष। ऐब। बुराई। २ किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।
खोटता†—संज्ञा स्त्री० दे० "खोटाई"।
खोटा—वि० [सं० √खोट्] [स्त्री० खोटी] जिसमें ऐब हो। बुरा। "खरा" का उलटा।
मुहा०—खोटी खरी सुनाना = डाँटना। फटकारना।
खोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटा + आई (प्रत्य०)] १ बुराई। दुष्टता। क्षुद्रता। २ छल। कपट। ३ दोष। ऐब। नुक्स।
खोटापन—संज्ञा पुं० [हिं० खोटा + पन (प्रत्य०)] खोटा होने का भाव। क्षुद्रता।
खोड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोंट] भूतप्रेत आदि की बाधा।
खोड़रा—संज्ञा पुं० [सं० कोटर] पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा।
खोद—संज्ञा पुं० [फा० खोद] युद्ध में पहनने का लोहे का टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।
खोदना—क्रि स० [सं० क्षोद, प्रा० खोद] १ सतह की मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना। गड्ढा करना। खनना। २ मिट्टी आदि उखाड़ना। ३ खोदकर उखाड़ना या गिराना। ४ नक्काशी करना। ५ उँगली, छड़ी आदि से छूना या दबाना। गड़ाना। ६ छेड़छाड़ करना। छेड़ना। ७. उत्तेजित करना। उसकाना। उभाड़ना।
खोदविनोद†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोद + विनोद (अनु०)] छानबीन। जाँच-पड़ताल।
खोदवाना—क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे० रूप] खोदने का काम दूसरे से करवाना।
खोदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोद + आई (प्रत्य०)] १. खोदने का काम। २. खोदने की मजदूरी।
खोदालंब—संज्ञा पुं० [फा० खुदा + अ० आलम] खुदावंद। उ०—खोदालंब सुपसन्न हुअ पुच्छ कुसलमय वत्त।
खोना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. अपने पास की वस्तु को निकल जाने देना। गँवाना। २ भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ देना। ३ खराब करना। बिगाड़ना।
क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना। किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना।
खोनचा—संज्ञा पुं० [फा० ख्वान्चा] बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।
खोपड़ा—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. सिर की हड्डी। कपाल। २ सिर। ३. गरी का गोला। गरी। ४ नारियल।
खोपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।
मुहा०—औंधी या औंधी खोपड़ी का = नासमझ। मूर्ख। खोपड़ी खा या चाट जाना = बहुत बातें करके दिक करना।
खोपा—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १ छप्पर का कोना। २ मकान का कोना जो किसी रास्ते की ओर पड़े। ३. स्त्रियों की गुथी चोटी की तिकोनी बनावट। ४. जूड़ा। वेणी। ५ गरी का गोला।

खोभराⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० खुभना] खूँटी आदि चुभनेवाली चीज।

खोमार†—संज्ञा पुं० [?] १. कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढा। २ सूअरों के रहने का स्थान।

खोमⓅ—संज्ञा पुं० [अ० कौम] समूह।

खोय†—संज्ञा स्त्री० [फा० खू] आदत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खोह] कंदरा। उ०—खोयन खायन नाकै दायन धायन ताकै पायन पायन पारावार लौं तिरतु है।—रससाराश।

खोया—संज्ञा पुं० [सं० क्षुद्र] आँच पर चढ़ाकर इतना गाढ़ा किया हुआ दूध कि उसकी पिंडी बँध सके। मावा। खोवा।

खोर—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] १. सँकरी गली। कूचा। २. चौपायों को चारा देने की नाँद।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खोरना] स्नान। नहान।

खोरना†—क्रि० अ० [सं० क्षालन] नहाना।

खोरा—संज्ञा पुं० [सं० खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० खोरिया] १. कटोरा। वेला। २ पानी पीने का वरतन। आबखोरा।

†Ⓟवि० [सं० खोर या खोट] लँगड़ा।

खोराक—संज्ञा पुं० दे० "खुराक"।

खोरिⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर ?] तंग गली। उ०—खेलत अवध खोरि, गोली, भौरा, चकडोरि, मूरति मधुर बसै तुलसी के हियरे।—गीता०।

संज्ञा स्त्री० [सं० खोट या खोर] १ ऐब। दोष। उ०—काल कवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं।—मानस। २ बुराई।

खोरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोरा+इया (प्रत्य०)] १ छोटी कटोरी। २ सिर पर लगाने के चमकीले बुंदे।

खोल—संज्ञा पुं० [सं० खोल] १ ऊपर से चढ़ा हुआ ढकना। गिलाफ। २ कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जिसे समय समय पर वे वदला करते हैं। ३. मोटी चादर।

खोलना—क्रि० स० [सं०√खुद्=भेदन] १ छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना, जैसे—किवाड़ खोलना। २. दरार करना। छेद करना। शिगाफ करना। ३. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को अलग करना। बंधन तोड़ना। ४ किसी बँधी हुई वस्तु को मुक्त करना। ५ किसी क्रम को चलाना या जारी करना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार करना। ७ दूकान, दफ्तर, संस्था, इजलास आदि का दैनिक कार्य आरंभ करना। ८ गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट या स्पष्ट कर देना।

खोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोल] आवरण। गिलाफ, जैसे—तकिए की खोली।

खोह—संज्ञा स्त्री० [सं० गोह] गुहा। गुफा। कंदरा।

खोही—संज्ञा स्त्री० [सं० खोलक ?] १ पत्तों की छतरी। उ०—सिरनि जटा मुकुट मंजुल सुमन जुत, तैसिए लसत नव पल्लव खोही।—गीता०। २ घुग्घी।

खौं—संज्ञा स्त्री० [सं०√खन्] १ खात। गड्ढा। २ अन्न रखने का गहरा गड्ढा।

खौंचा—संज्ञा पुं० [सं० षट्+च] साढ़े छः का पहाड़ा।

खौफ—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० खौफनाक] डर। भय। भीति। दहशत।

खौर—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षौर] १. चंदन का तिलक। टीका। २ स्त्रियों का सिर का एक गहना।

खौरना—क्रि० स० [हिं० खौर] १. लगाना। चंदन का टीका लगाना। २ भूनना। ३. छौंटना। क्षीण करना।

खौरहा—वि० [हिं० खौरा+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० खौरही] १ जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। २ जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो (पशु)।

खौरा—संज्ञा पुं० [सं० क्षौर, फा० बालखोरा] एक प्रकार की बड़ी खुजली।

वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।

खौलना—क्रि० अ० [सं० क्ष्वेल] (तरल पदार्थ का) उबलना। जोश खाना।

खौलाना—क्रि० स० [हिं० खौलना का स० रूप] जल, दूध आदि गरम करना।

ख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। विदित।

ख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

ख्याल—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ख्याली] १ ध्यान। मनोवृत्ति।

मुहा०—ख्याल रखना=ध्यान रखना। देखते भालते रहना। Ⓟख्याल पड़ना=दिक करने पर उतारू होना। पीछे पड़ना।

२ स्मरण। स्मृति। याद।

मुहा०—ख्याल से उतारना=भूल जाना। याद न रहना।

३ विचार। भाव। समति। ४. आदर। ५. एक प्रकार का गाना।

Ⓟ†संज्ञा पुं० [हिं० खेल] खेल। क्रीड़ा।

ख्याली—वि० [हिं० ख्याल] कल्पित। फर्जी।

मुहा०—ख्याली पुलाव पकाना=असंभव बातें सोचना।

वि० [हिं० खेल] खेल या कौतुक करनेवाला।

ख्रिष्टान—संज्ञा पुं० [अं० क्राइस्ट] ईसाई।

ख्रिष्टीय—वि० [अं० क्राइस्ट] १ ईसाई। २ ईसाई धर्म संबंधी।

ख्रीष्ट—संज्ञा [अं० क्राइस्ट] [वि० ख्रिष्टीय] ईसा मसीह।

ख्वाजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. मालिक। २ सरदार। ३ ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर। ४ रनिवास का नपुंसक भृत्य। ख्वाजासरा।

ख्वाब—संज्ञा पुं० [फा०] १. सोने की अवस्था। नींद। २ स्वप्न।

ख्वार—वि० [फा०] [संज्ञा ख्वारी] १ खराब। सत्यानाश। २ अनादृत। तिरस्कृत।

ख्वारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खराबी। दुर्दशा। २ सर्वनाश।

ख्वाह—अव्य० [फा०] या। अथवा। या तो।

यौ०—ख्वाह-म-ख्वाह= (१) कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। (२) जरूर। अवश्य।

ख्वाहिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० ख्वाहिशमंद] इच्छा। अभिलाषा। आकांक्षा।

ग

ग—व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारणस्थान कंठ है।

गंग—संज्ञा पुं० [सं० गंगा] १. एकमात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में कुल ९ मात्राएँ होती हैं और अंत में दो गुरु (ऽऽ) रहते हैं, जैसे—वरगंग भक्ती। दै पूर्ण शक्ती॥ अघ ओघ जारै। भवसिंधु तारै॥ २ हिंदी भाषा के एक प्रसिद्ध कवि।

संज्ञा स्त्री० [सं० गंगा] गंगा नदी।

गंगबरार—संज्ञा पुं० [हिं० गंगा+फा० बरार] वह जमीन जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है।

गंगशिकस्त—संज्ञा पुं० [हिं० गंगा+फा० शिकस्त] वह जमीन जिसे कोई नदी काट ले गई हो।

गंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी जो हिमालय से निकलकर उत्तरप्रदेश, बिहार और बंगाल को सींचती हुई गंगासागर में समुद्र में मिलती है। इसे हिंदू बहुत पवित्र नदी मानते हैं। जाह्नवी।

गंगागति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु।

गंगाजमनी—वि० [सं० गंगा+यमुना] १ मिला जुला। संकर। दुरंगा। २ सोने, चाँदी, पीतल, ताँबे आदि दो धातुओं का बना हुआ। ३ काला उजला। स्याह सफेद। अबलक।

गंगाजल—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगा का पानी। २ एक बारीक सफेद कपड़ा।

गंगाजली—संज्ञा स्त्री० [सं० गंगाजल] १ वह सुराही या शीशी जिसमें यात्री गंगाजल भरकर ले जाते हैं। २ धातु की सुराही।

मुहा —गंगाजली उठाना=गंगाजली हाथ में लेकर कसम खाना।

गंगाधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ एक छंद। दे० "गंगोदक"।

गंगापुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीष्म। २ एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं। ३ एक वर्णसंकर जाति।

गंगायात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरणासन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिये गमन। २. मृत्यु।

गंगाल—संज्ञा पुं० [सं० गंगा+आलय] पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

गंगालाभ—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु।

गंगासागर—संज्ञा पुं० [सं० गंगा+सागर] १ एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। २ एक प्रकार की बड़ी टोंटीदार झारी।

गँगेरन—संज्ञा स्त्री० [सं० गांगेरुकी] एक पौधा जो चतुर्विध बला के अंतर्गत माना जाता है। नागबला।

गंगोक(५)—संज्ञा पुं० दे० "गंगोदक"।

गंगोझ—संज्ञा पुं० [सं० गंगोदक] गंगा का पानी। गंगाजल। उ०—तुलसी रामहिं परिहरे निपट हानि सुनु ओझ। सुरसरिगत सोई सलिल, सुरा सरिस गंगोझ।—दोहा०।

गंगोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंगाजल। २ चौबीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक के बाद दूसरे के क्रम से कुल ८ रगण होते हैं, जैसे—जन्म बीता सबै चेत मीता अबै कीजिए का तबै काल ले आन कै। मुंडमाला गरै सीस गंगाधरै आठ यामै हरै ध्याय ले ध्यान कै॥

गंगौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गंगा+मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी।

गंज—संज्ञा पुं० [सं०√गंज् ?] १ सिर के बाल उड़ने का रोग। चाई। चँदलाई। खल्वाट। २ सिर में छोटी छोटी फुंसियों का रोग। बालखोरा।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ खजाना। कोष। २ ढेर। अंबार। राशि। अटाला। ३ समूह। झुंड। ४. गल्ले की मंडी। गोला। हाट। बाजार। ५ वह चीज जिसके भीतर बहुत सी काम की चीजें हों।

गंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवज्ञा। तिरस्कार। २ पीड़ा। कष्ट। ३ नाश।

गंजना—क्रि० स० [सं० गंजन] १ अवज्ञा करना। नाश करना।

गंजनिहार—वि० [सं० गंजन+हिं० हार (प्रत्य०)] नष्ट करनेवाला। मारनेवाला। उ०—कै निदरहु कै आदरहु सिंहहि स्वान सियार। हरष विषाद न केसरिहिं कुंजर-गंजनिहार।—दोहा०।

गँजाना—क्रि० स० [सं० गंजन] १ देखिए "गंजना"। २ गंजने का काम दूसरे से कराना।

गंजा—संज्ञा पुं० [सं० √गंज् ?] गंज रोग।

वि० जिसको गंज रोग हो। खल्वाट।

गंजिया—संज्ञा स्त्री० [सं० गंजिका] १. सूत की बुनी हुई जालीदार थैली। २. (घसियारों की) घास रखने की रस्सी की थैली।

गंजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गंज] १. ढेर। समूह। गाँज। †२ शकरकंद। कंदा।

संज्ञा स्त्री० [अं० गुएरनेसी=एक टापू] बुनी हुई छोटी कुरती या बंडी जो बदन में चिपकी रहती है। बनियायन।

संज्ञा पुं० दे० "गँजेड़ी"।

गंजीफा—संज्ञा पुं० [फा०] एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—वि० [हिं० गाँजा+एड़ी (प्रत्य०)] गाँजा पीनेवाला।

गँठजोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ+जोड़] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

गँठबंधन—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ+सं० बंधन] दे० "गँठजोड़ा"।

गंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपोल। गाल। २ कनपटी। ३ गंडा जो गले में पहना जाता है। ४ फोड़ा। ५ चिह्न। लकीर। दाग। ६ गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर। गराड़ी। गंडा। ७ गाँठ। ८. वीथी नामक नाटक का एक अंग।

गंडक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गले में पहनने का जंतर या गंडा। २ गंडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के निवासी।

गंडका—संज्ञा स्त्री० [सं० गंडक] २० वर्णों का एक वृत्त जिसमें क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण गुरु और लघु रहता है, जैसे—रोज रोज राज गैल तें लिए गोपाल ग्वाल तीन सात। वायु सेवनार्थ प्रात बाग जात आव लै सुफूल पात॥

संज्ञा स्त्री० दे० "गंडकी"।

गंडकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा में गिरनेवाली उत्तरभारत की एक नदी।

गंडमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें गले की छोटी छोटी बहुत सी गिल्टियाँ सूजकर पकने लगती हैं और मंद ज्वर के साथ मंदाग्नि आदि अनेक शारीरिक विकार उत्पन्न होते हैं। गलगंड। कंठमाला।

गंडस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी की कनपटी। २ कनपटी। कपोल।

गंडा—संज्ञा पुं० [सं० गडक] १ गाँठ। २ मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया धागा जिसे लोग रोग और भूतप्रेत की बाधा दूर करने के लिये गले में बाँधते हैं। ३. चार को एक मानकर गिनने का क्रम। चार का संकेत। पैसे, कौड़ी के गिनने में चार चार की संख्या का समूह।

मुहा०—गंडा तावीज=मंत्र यंत्र। टोटका।

संज्ञा पुं० [सं० गंड=चिह्न] १. आड़ी लकीरों की पंक्ति। २ तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धारी। कंठा। हँसली। ३. फोड़ा, फुंसी या दाना। ३. गिल्टी। ४. निशान। चिह्न। ५ कपोल। गाल।

गँड़ासा—संज्ञा पुं० [सं० गंड या खड+आयस ?] [स्त्री०, अल्पा० गँड़सी] १ चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार। २ एक शस्त्र। परशु।

गंडूष—संज्ञा पुं० [सं० गंडप=हथेली का गड्ढा।] १ चुल्लू। २ कुल्ला।

गँडेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कांड या गंड] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गँडोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्ची शकर। २. गुड़। ३ ईख। ४ ग्रास। कौल।

गंता—वि० [सं० गतृ] जानेवाला।

गंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मैलापन। मलिनता। २ अपवित्रता। अशुद्धता। नापाकी। ३ मैला। गलीज। मल।

गंदना—संज्ञा पुं० [सं० गंधन] लहसुन या प्याज की तरह का एक मसाला।

गँदला—वि० [हिं० गंदा+ला (प्रत्य०)] मैलाकुचैला। गंदा। मलिन।

गंदा—वि० [फा०] [स्त्री० गंदी] १ मैला। मलिन। २ अपवित्र। अशुद्ध। ३ घिनौना। घृणित।

§संज्ञा पुं० [फा० गोयंद] १ जासूस। २. सिपाही। उ०—कहीं कोटि गंदा कहीं वादि वंदा, कहीं दूर रिक्काविए [illegible]।

गंदुम—संज्ञा पुं० [फा०] गेहूँ।

गंदुमी—वि० [फा० गंदुम] गेहूँ के रंग का।

गंध—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वास। महक। २. सुगंध। अच्छी महक। ३. सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाय। ४ लेश। अणुमात्र। ५. संस्कार। संबंध।

गंधक—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० गंधकी] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ।

गंधकी—वि० [हिं० गंधक] गंधक के रंग का हलका पीला।

गंधपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद तुलसी। २ मरुवा। ३ नारंगी। ४ बेल।

गंधबिलाव—संज्ञा पुं० [सं० गंध+हिं० बिलाव] नेवले और लोमड़ी के बीच की आकृति और आकार का एक मांसभक्षी पशु जिसकी नाभि से सुगंधित चेप निकलता है।

गंधमार्जार—संज्ञा पुं० [सं०] गंधबिलाव।

गंधमादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणों में अपने सुगंधमय वनों के लिये प्रसिद्ध मेरु से पूर्व का एक पहाड़। २ भौंरा।

गंधर्व—संज्ञा पुं० [सं०] [सं० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री० गंधर्विन] १ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अप्सराओं के साथ रहनेवाली, अमृत की रक्षा करनेवाली, चिकित्सा में निपुण, स्त्रियों पर आधिदैविक प्रभाव रखनेवाली, कभी कभी मनुष्यों को भूतप्रेतों की तरह सतानेवाली और गाने बजाने में परम प्रवीण एक देवयोनि। २ मृग। ३ घोड़ा। ४ वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़कर दूसरा ग्रहण किया हो। ५ एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं। ६ विधवा स्त्री का दूसरा पति।

गंधर्वनगर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टिदोष से दिखाई पड़ता है। २. मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ३. चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है। ४ संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंगबिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली।

गंधर्वविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत।

गंधर्वविवाह—संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वह संबंध जो वर और वधू अपने मन से कर लेते हैं।

गंधर्ववेद—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है।

गंधवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ चंदन।

वि० १. गंध ले जाने या पहुँचानेवाला। २ सुगंधित। खुशबूदार।

गंधा—वि० स्त्री० [सं०] गंधवाली (यौगिक शब्दों के अंत में), जैसे—मत्स्यगंधा, उग्रगंधा, आदि।

गंधाना—क्रि० स० [सं० गंध] १ गंध देना। बसाना। २ दुर्गंध करना।

गंधार—संज्ञा पुं० दे० "गांधार"।

गंधाविरोजा—संज्ञा पुं० [हिं० गंध+बिरोजा] चीर नामक वृक्ष का गोंद।

गँधिया—संज्ञा पुं० [सं० गंध] १. एक प्रकार का बदबूदार कीड़ा। २ एक तरह की घास।

गंधी—संज्ञा पुं० [सं० गंधिन्] [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १ सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला। अत्तार। २ गँधिया घास। गाँधी। ३. गँधिया कीड़ा।

गँधीला—वि० [सं० गंध+हिं० ईला (प्रत्य०)] बुरी गंधवाला। बदबूदार।

गंभारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बड़ा पेड़। काश्मरी।

गंभीर—वि० [सं०] १ जिसकी थाह जल्दी न मिले। नीचा। गहरा। २ घना। गहन। ३. जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो। गूढ़। जटिल। ४ घोर। भारी। ५ शांत। संजीदा।

गँवँ†—संज्ञा स्त्री० [सं० गम्य] १ घात। २ दाँव। मतलब। प्रयोजन। ३ अवसर। मौका। ४ ढंग। उपाय। युक्ति।

मुहा०—गँवँ से=ढंग से। युक्ति से। †Ⓟ धीरे से। चुपके से।

गँवई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँव] [वि० गँवईयाँ] गाँव की बस्ती।

गँवरमसला—संज्ञा पुं० [हिं० गँवार+अ० मसल] गँवारों की कहावत या उक्ति।

गँवाना—क्रि० स० [सं० गमन] १ (समय) बिताना। काटना। २. पास की वस्तु को निकल जाने देना। खोना।

गँवार—वि० [हिं० गाँव+आर (प्रत्य०)] [स्त्री० गँवारिन] [वि० गँवारू, गँवारी] १. गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती। २ असभ्य। ३ बेवकूफ। मूर्ख। ४ अनाड़ी।

गँवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गँवार+ई (प्रत्य०)] १ गँवारपन। देहातीपन। २ मूर्खता। बेवकूफी ३ गँवार स्त्री।

वि० १ गँवार का सा। २ भद्दा। बदसूरत।

गँवारू—वि० दे० "गँवारी"।

गँवेला†—वि० दे० "गँवार"।

गँसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथि ?] १ गाँठ। द्वेष। वैर। उ०—मानी राम अधिक जननी तें जननिहु गँस न गही। —गीता०। २. मन में चुभनेवाली बात। ताना। चुटकी।

संज्ञा स्त्री० [सं० कषा] तीर की नोक।

गँसनाⓅ†—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १.

अच्छी तरह कसना। जकड़ना। गाँठना। २ बुनावट में सूतों को परस्पर खूब मिलाना।

क्रि० अ० १ बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना। २. ठसाठस भरना।

गँसीला—वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] तीर के समान नोकदार। चुभनेवाला।

गँहना—क्रि० स० [सं० ग्रहण] ग्रहण करना। पकड़ना। ठहरना। रुकना।

ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ गीत। २ गंधर्व। ३ गुरु मात्रा। ४ गणेश। ५ गानेवाला। ६ जानेवाला।

गइंदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गयंद"।

गइ—संज्ञा पुं० [हिं० गय] हाथी। गज।

गई करनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० गई+करना] तरह देना। जाने देना। छोड़ देना।

गई बहोर—वि० [हिं० गया+बहुरि] खोई हुई वस्तु को पुनः देने अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला।

गऊ—संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गकरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "गाकरी"।

गगन—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। २. शून्य स्थान। ३. छप्पय छंद का एक भेद।

गगनचर—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी।

गगनचुंबी—वि० दे० "गगनभेदी"।

गगनधूल—संज्ञा स्त्री० [सं० गगन+हिं० धूल] १. खुमी का एक भेद। एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। २ केतकी के फूल की धूल।

गगनबाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश की वाटिका। २ असभव बात।

गगनभेड़—संज्ञा स्त्री० [सं० गगन+हिं० भेड़] करांकुल या कूँज नाम की चिड़िया।

गगनभेदी, गगनस्पर्शी—वि० [सं०] आकाश तक पहुँचनेवाला। बहुत ऊँचा।

गगनांगना—संज्ञा पुं० [सं०] पचीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १६वीं मात्रा पर यति और २५ वीं पर विराम रहता है। इसके प्रत्येक चरण में ५ गुरु और १५ लघु होते हैं और अंत में रगण रहता है, जैसे—रूप सुभग जड़ अर्थ न कछु है, अनरथ मड़ती। नाच रग महँ रहती निसि दिन, मुनि तप खड़ती॥

गगरा—संज्ञा पुं० [सं० गर्गर] [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का घड़ा। कलसा।

गच—संज्ञा पुं० [सं० √किच्] १ किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २ चूने सुरखी का मसाला जिससे जमीन पक्की की जाती है। ३ चूने सुरखी से पिटी हुई जमीन। पक्का फर्श। लेट।

गचकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] गच का काम। चूने, सुरखी का काम।

गचगीर—संज्ञा पुं० [हिं० गच+फा० गीर] [भाव० गचगीरी] गच बनानेवाला।

गचनाⓅ—क्रि० स० [अनु० गच] १ बहुत अधिक या कसकर भरना। २ दे० "गाँसना"।

गछ—संज्ञा पुं० [सं० गच्छ] १ पेड़। वृक्ष। २ पौधा।

गछनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० गच्छ] जाना। चलना।

क्रि० स० १. चलाना। निबाहना। २ अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।

गजंदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गयंद"।

गज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गजी] १ हाथी। २ एक राक्षस। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ आठ की संख्या।

संज्ञा पुं० [फा०] १ लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है। २ लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बंदूक भरी जाती है। ३ एक प्रकार का तीर।

गजइलाही—संज्ञा पुं० [फा० गज+इलाही] अकबरी गज जो ४१ अंगुल का होता है।

गजक—संज्ञा पुं० [फा० कजक] १ वह चीज जो शराब पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है। चाट। चिखना, जैसे—कबाब, पापड़ आदि। २ तिलपपड़ी। तिल शकरी। ३ नाश्ता। जलपान।

गजगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी की सी मद चाल। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, एक भगण और अंत में क्रम से एक लघु और एक गुरु, कुल ८ वर्ण होते हैं, जैसे—वदत मातु ! युवती। असत ई गज गती।

गजगमन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सी मद चाल।

गजगामिनी—वि० स्त्री० [सं०] हाथी के समान मद गति से चलनेवाली।

गजगाह—संज्ञा पुं० [सं० गज+ग्राह] हाथी की झूल।

गजगौनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गजगमन"।

गजगौहर—संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता"।

गजदंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी का दाँत। २ दीवार में गड़ी खूँटी। ३. वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। ४ दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत।

गजदंती—वि० [सं० गज+दंत] हाथी दाँत का बना हुआ।

गजदान—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का मद।

गजनवी—वि० [फा०] गजनी नगर का रहनेवाला।

गजनाⓅ—क्रि० अ० दे० "गाजना"।

गजनाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

गजपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा हाथी। २ वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों।

गजपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसकी मंजरी औषध के काम आती है।

गजपीपल—संज्ञा पुं० दे० "गजपिप्पल"।

गजपुट—संज्ञा पुं० [सं०] १ आग जलाने के लिये जमीन में खोदा हुआ छोटा गड्ढा जिसपर औषधि या भोजन पकाया जा सके। २ इस प्रकार के गड्ढे में धातु फूँकने की एक रीति (वैद्यक)।

गजब—संज्ञा पुं० [अ०] १ कोप। रोष। गुस्सा। २. आपत्ति। आफत। विपत्ति। ३ अंधेर। अन्याय। जुल्म। ४ विलक्षण बात।

मुहा०—गजब का = विलक्षण। अपूर्व।

गजबदन—संज्ञा पुं० दे० "गजवदन"।

गजबाँक, गजबाग—संज्ञा पुं० [सं० गज+हिं० बाँक या बाग] हाथी का अंकुश।

गजमणि, गजमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन विश्वास के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।

गजमोती—संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता"।

गजर—संज्ञा पुं० [सं० गर्ज, हिं० गरज] १ पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। पारा। २ सवेरे के समय का घंटा।

मुहा०—गजरदम = तड़के। सवेरे।

३. चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार जल्दी जल्दी फिर घंटा बजना।

गजरा—संज्ञा पुं० [हिं० गज] १ फूलों की घनी गुथी हुई माला। २ एक गहना जो कलाई में पहना जाता है। ३ एक रेशमी कपड़ा।

गजराज—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा हाथी।
गजारि—संज्ञा पुं० [सं० गज+अरि] सिंह। उ०—अजहूँ तौं भलो रघुनाथ फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी। —कविता०।
गजल—संज्ञा स्त्री० [अ०] फारसी और उर्दू में एक प्रकार का छंद।
गजवदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गजवान—संज्ञा पुं० [सं० गज+हिं० वान (प्रत्य०)] महावत। हाथीवान।
गजशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें हाथी बाँधे जाते हैं। फीलखाना। हथिसाल।
गजा—संज्ञा पुं० [फा० गज] नगाड़ा बजाने-वाला डंडा।
गजाधर—संज्ञा पुं० दे० "गदाधर"।
गजानन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गजी—संज्ञा स्त्री० [फा० गज] एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।
गजेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐरावत। २ बड़ा हाथी। गजराज।
गजूह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गज+व्यूह] १ हाथियों का झुंड। २ युद्ध में एक प्रकार का सैन्यसगठन। व्यूह विशेष।
गज्म†—संज्ञा पुं० [सं०√गज्=मात होना ?] दूध, पानी आदि के छोटे छोटे बुलबुलों का समूह। गाज।
†संज्ञा पु० [सं० गज] १ ढेर। गाँज। अंबार। २. खजाना। कोश। ३. धन।
गझिन†—वि० [हिं० गझना] १. सघन। घना। २ गाढा। मोटा। ठस बुनावट का।
गटई—संज्ञा स्त्री० [स० कंठ] गला।
गटकना—क्रि० स० [गट से अनु०] १ खाना। निगलना। २ हड़पना। दबा लेना।
गटकीला—वि० [हिं० गटकना] गटकने या निगलनेवाला।
गटगट—संज्ञा पुं० [अनु०] निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से उत्पन्न शब्द।
गटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बहुत अधिक मेल। मिलावट। २. घनिष्ठता। ३ सहवास। प्रसंग।
गटरमाला—संज्ञा स्त्री० [अनु० गट्ट+स० माला] बड़े दानों की माला।
गटा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गट्टा"। उ०—पहुँची रुद्र-कँवल कै गटा। ससि माथे औ सुरसरि जटा। —पदमावत।
गटी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १ गाँठ। २. पकड़। लपेट।
गट्ट—संज्ञा पुं० [अनु०] किसी वस्तु के निगलने में गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।
गट्टा—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ, प्रा० गठ, हिं० गाँठ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। कलाई। २. पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। ३. गाँठ। ४. बीज। ५ एक प्रकार की मिठाई।
गट्ठर—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] बड़ी गठरी।
गट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १ घास, लकड़ी आदि का बोझ। भार। गट्ठर। २ बड़ी गठरी। बुकचा। ३ प्याज या लहसुन की गाँठ।
गठन—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रथन] बनावट।
गठना—क्रि० अ० [सं० ग्रथन] १. दो वस्तुओं का मिलकर एक होना। जुड़ना। सटना। २. मोटी सिलाई होना। ३ बुनावट का दृढ़ होना।
यौ०—गठा बदन=हृष्टपुष्ट और कड़ा शरीर।
४. किसी षट्चक्र या गुप्त विचार में सहमत या सम्मिलित होना। ५ दाँव पर चढ़ना। अनुकूल होना। सधना। ६ अच्छी तरह निर्मित होना। भली भाँति रचा जाना। ७ संभोग होना। विषय होना। ८ अधिक मेलमिलाप होना।
गठरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठर] १. कपड़े में गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। बुकची। २ जमा की हुई दौलत।
मुहा०—गठरी मारना=अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना। ठगना।
गठवाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] गट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।
गठवाना—क्रि० स० [हिं० गाठना का प्रे० रूप] १ गठाना। सिलवाना। २ जुड़वाना। जोड़ मिलवाना।
गठा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गट्ठा"।
गठाव—संज्ञा पुं० दे० "गठन"।
गठित—वि० [सं० ग्रथित] गठा हुआ।
गठिबंध(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गठबंधन"।
गठिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ+इया (प्रत्य०)] १. बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला। खुरजी। २, बड़ी गठरी। ३. एक रोग जिसमें जोड़ों मे सूजन और पीड़ा होती है।
गठियाना†—क्रि० स० [हिं० गाँठ से ना० धा०] १. गाँठ देना। गाँठ लगाना। २. गाँठ में बाँधना।
गठिवन—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथिपर्ण] मध्यम आकार का एक पेड़।
गठीला—वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत सी गाँठें हों।
वि० १. गठा हुआ। चुस्त। सुडौल। २ मजबूत। दृढ़।
गठौत, गठौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गठ+औत, औती (प्रत्य०)] १. मेलमिलाप। मित्रता। २. मिलकर पक्की की हुई बात। अभिसंधि।
गड़ंगा†—संज्ञा पुं० [सं० गर्व] [वि० गड़ंगिया] १. घमंड। शेखी। डींग। २. आत्म-श्लाघा। बड़ाई।
गड—संज्ञा पुं० [सं०] १. ओट। आड़। २ घेरा। चहारदीवारी। ३ गड्ढा। ४ एक प्रकार की मछली।
गड़कना—क्रि० अ० [अ० गर्क] डूबना।
क्रि० अ० दे० "गरजना"।
गड़गड़—संज्ञा स्त्री० [प्रा० गटयड] १ बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द। २. पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द।
गड़गड़ा—संज्ञा पु० [अनु०] एक प्रकार का हुक्का।
गड़गड़ाना—क्रि० अ० [हिं० गड़गड़] गर-जना। गड़कना।
क्रि० स० गड़गड शब्द उत्पन्न करना।
गड़गड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़गड+आहट (प्रत्य०)] गड़गड शब्द। बादल गरजने या गाड़ी चलने आदि का शब्द।
गड़गड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़गड+ई (प्रत्य०)] एक तरह की डुग्गी। नगाड़ा। डुगडुगी।
गड़दार—संज्ञा पु० [सं० गड=गँडासा+दार] मस्त हाथी के साथ भाला लिए हुए चलनेवाला महावत।
गड़ना—क्रि० अ० [स० गर्त] १. धँसना। चुभना। २ शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचना। खुरखुरा लगना। ३. दर्द करना। दुखना। पीड़ित होना (आँख और पेट के लिये)। ४ मिट्टी आदि के नीचे दबना। दफन होना। ५ समाना। पैठना। घुसना। ६ खड़ा होना। भूमि पर ठहरना। ७ जमना। स्थिर होना। डटना। अटना।
गड़प—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पानी, कीचड

आदि में किसी वस्तु के सहसा घुस जाने का शब्द।

मुहा०—गड़ जाना=झेंपना। लज्जित होना। गड़े मुर्दे उखाड़ना=दबी दबाई या पुरानी बात उभाड़ना।

गड़पना—क्रि० स० [हिं० गड़प] १ निगलना। खा लेना। २ हजम करना। अनुचित अधिकार करना।

गड़प्पा—संज्ञा पुं० [हिं० गड़प] १ गड्ढा। २ धोखा खाने का स्थान।

गड़बड़—वि० [प्रा० गड़बड़] [वि० गड़बड़िया] १ ऊँचा नीचा। असमतल। २. अस्तव्यस्त। अडबड।

संज्ञा पुं० १ क्रमभंग। अव्यवस्था। २ कुप्रबंध। गड़बड़ी।

गड़बड़झाला—संज्ञा पुं० [हिं० गड़बड़+झाला] १. गोलमाल। अव्यवस्था। २ उपद्रव। दगा।

गड़बड़ाना—क्रि० अ० [हिं० गड़बड़] १ गड़बड़ी में पड़ना। चक्कर या भूल में पड़ना। २ क्रमभ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। ३ अस्तव्यस्त होना। बिगड़ना।

क्रि० स० १. गड़बड़ी में डालना। २ भ्रम में डालना। भुलवाना। ३ बिगाड़ना। खराब करना।

गड़बड़िया—वि० [हिं० गड़बड़+इया (प्रत्य०)] गड़बड़ करनेवाला। उपद्रवी।

गड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।

गड़रिया—संज्ञा पुं० [सं० गड्डरिक] [स्त्री० गड़ेरिन] एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।

गड़हा—संज्ञा पुं० [स्त्री० गड़ही] दे० "गड्ढा"।

गड़ा—संज्ञा पुं० [सं० गण] ढेर। राशि।

गड़ाना—क्रि० स० [हिं० गड़ना का स० रूप] चुभाना। धँसना। भोंकना।

क्रि० स० [हिं० 'गड़ना' का प्रे० रूप] चुभवाना। धँसवाना। भोंकवाना।

गड़ायत(पु)—वि० [हिं० √गड़+आयत (प्रत्य०)] गड़नेवाला। चुभनेवाला।

गड़ारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुण्डल ?] १ मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २ घेरा।

संज्ञा स्त्री० [सं० गड] लगातार पास पास आड़ी धारियाँ। गड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुण्डली] गोल चरखी जिसपर रस्सी चढ़ाकर कुएँ से पानी खींचते हैं। घिरनी।

गड़ारीदार—वि० [हिं० गड़ारी+फा० दार] १ जिसपर गड़े या धारियाँ पड़ी हों। २ घेरदार, जैसे—गड़ारीदार पायजामा।

गडुई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़ुवा] पानी पीने का टोंटीदार छोटा बरतन। झारी।

गड़ुवा—संज्ञा पुं० [?] टोंटीदार लोटा।

गड़ेरिया—संज्ञा पुं० दे० "गड़रिया"।

गड़ोना—क्रि० स० दे० "गड़ाना"।

गड़ौना—संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ना] १ एक प्रकार का पान। उ०—दौं तुम्ह नेह पियर भा पानू। पेड़ी हुँत सोनरास बखानू। सुनि तुम्हार संसार बड़ौना। जोग लीन्ह, तन कीन्ह गड़ौना।—पदमावत। २ काँटा।

गड्ड—संज्ञा पुं० [सं० गण] [स्त्री० गड्डी] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों। गड्डी। गंज।

†(पु)संज्ञा पुं० [सं० गर्त] गड्ढा।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—संज्ञा पुं० [हिं० गड्ड] [भाव० गड्डमड्डपन] बेमेल की मिलावट। घालमेल। घपला।

वि० बेसिलसिले। मिला जुला। अटवट।

गड्डरिक—संज्ञा पुं० [सं०] गड़ेरिया।

वि० १ भेड़ का। २ भेड़ संबंधी।

गड्डाम†—वि० [अँ० गो+डैम] नीच। लुच्चा। बदमाश। पाजी।

गड्डी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड्ड"। गड्डी

†संज्ञा स्त्री० गाड़ी।

गड्ढा—संज्ञा पुं० [सं० गर्त प्रा० गड्ड] १ जमीन में गहरा या खुदा हुआ स्थान। खाता। गड़हा। २ खड्ड।

मुहा०—किसी के लिये गड्ढा खोदना=किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना।

गढ़ंत—वि० [हिं० √गढ़+अंत (प्रत्य०)] कल्पित। बनावटी (बात)।

गढ़—संज्ञा पुं० [सं० गड] [स्त्री०, अल्पा० गढ़ी] किला। कोट। दुर्ग।

मुहा०—गढ़ जीतना या तोड़ना=(१) किला जीतना। (२) बहुत कठिन काम करना।

गढ़त, गढ़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गढ़] गढ़ने की क्रिया या भाव। बनावट। गठना।

गढ़ना—क्रि० स० [सं० घटन] १. काट छाँटकर काम की वस्तु बनाना। सुघटित करना। रचना। २ सुडौल करना। दुरुस्त करना। ३ बात बनाना। कपोल-कल्पना करना। ४. मारना। पीटना। ठोंकना।

गढ़पति—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+सं० पति] १. किलेदार। २ राजा। सरदार।

गढ़वई, गढ़वै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

गढ़वाल—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+वाला (प्रत्य०)] वह जिसके अधिकार में गढ़ हो। गढ़वाला।

संज्ञा पुं० हिमालय की तलहटी में उत्तरप्रदेश का एक जिला।

गढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गढ़+आई (प्रत्य०)] १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २ गढ़ने की मजदूरी।

गढ़ाना—क्रि० स० [हिं० गढ़ना का प्रे० रूप] गढ़ने का काम कराना। गढ़वाना।

क्रि० अ० [हिं० गाढ़=कठिन] कष्टकर प्रतीत होना। मुश्किल गुजरना। खलना।

गढ़िया—संज्ञा पुं० [हिं० √गढ़+इया प्रत्य०)] गढ़नेवाला।

गढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़] छोटा किला।

गढ़ीश—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+सं० ईश] गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी।

गढ़ैया—वि० [हिं० √गढ़+ऐया (प्रत्य०)] गढ़नेवाला।

गढ़ोई(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

गण—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। राशि। झुंड। जत्था। २ श्रेणी। जाति। कोटि। ३ ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। ४ सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हों। ५ छंद शास्त्र में तीन वर्णों का समूह। लघु, गुरु के क्रम के अनुसार गण आठ माने गए हैं—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण। ६ व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम और वर्णविकारादि हों। ७ शिव के पारिषद्। प्रमथ। ८ दूत। सेवक। पारिषद्। ९ परिचारक। अनुचरों का दल।

गणक—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी। गणना करनेवाला।

गणतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र (राज्य)। प्रजा से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा शासित राष्ट्र, उदा०—वर्तमान भारत।

गणदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] समूहचारी देवता, जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र, आदित्य, वसु, मरुद्।

गणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १ गिनना। २. गिनती।

गणना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिनती। शुमार। २. हिसाब। ३ संख्या।

गणनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

गणपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाज, जाति या सेना का नायक। गणेश। २. शिव।

गणराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जो प्रजा के चुने हुए मुखियों, प्रतिनिधियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।

गणाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. गणेश। २. साधुओं का अधिपति या महंत। समुदाय का मुख्य।

गणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

गणित—संज्ञा पुं० [सं०] १ गणनाशास्त्र जिसके अंकगणित, बीजगणित और ज्यामिति ये तीन अंग हैं। २. हिसाब।

गणितज्ञ—वि० [सं०] १. गणित शास्त्र जाननेवाला। गिननेवाला। हिसाबी। २. ज्योतिषी।

गणेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. गणपति। शिवजी के पुत्र। शुभ कार्यों में प्रथम पूजनीय देवता। मनुष्य के समान शरीर और हाथी के सिरवाले देवता।

गण्य—वि० [सं०] १. गिनने के योग्य। २ जिसकी पूछ हो। प्रतिष्ठित। मान्य।

यौ०—गण्यमान्य=प्रतिष्ठित।

गत—वि० [सं०] [स्त्री० गता] १. गया हुआ। बीता हुआ। २ मरा हुआ। ३. रहित। हीन।

संज्ञा स्त्री० [सं० गत] १. अवस्था। दशा।

मुहा०—गत बनाना=दुर्दशा करना।

२ रूप रंग। वेश। ३. सुगति। उपयोग। ४. दुर्गति। दुर्दशा। नाश। ५. बाजों की कुछ ध्वनियों का क्रमबद्ध मिलान। ६ नृत्य में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा। नाचने का ठाठ।

गतका—संज्ञा पुं० [सं० गदा] १. लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े का खोल चढ़ा रहता है। २. वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।

गतांक—वि० [सं०] गया बीता। निकम्मा।

संज्ञा पुं० १. पिछला अंक। २. पिछली संख्या (पत्र, पत्रिका आदि की)।

गतानुगतिक—वि० [सं०] १. पुराने उदाहरण पर चलनेवाला। दूसरों के पीछे चलनेवाला। २. अंधानुकरण करनेवाला।

गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० गतिता] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। चाल। गमन। २. हिलने डोलने की क्रिया। हरकत। स्पंदन। ३. अवस्था। दशा। हालत। ४. रूपरंग। वेश। उ०—तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरे।—मानस। ५ पहुँच। प्रवेश। पैठ। ६ प्रयत्न की सीमा। अंतिम उपाय। दौड़। तदबीर। ७ सहारा। अवलंब। शरण। ८ चेष्टा। प्रयत्न। ९ लीला। माया। १० ढंग। रीति। ११ मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा। १२ मोक्ष। मुक्ति। १३. पैंतरा।

गत्ता—संज्ञा पुं० [देश०] कागज के कई परतों को साटकर बनाई हुई दफ्ती। कुट।

गत्तालखाता—संज्ञा पुं० [सं० गर्त+हिं० खाता] बट्टाखाता। गईबीती रकम का लेखा।

गथ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० √ग्रथ्] १. पूँजी। जमा। उ०—डारिगो मानो कछू गथ तें इमि व्याकुल कै इक गोपकुमारि गो।—रससाराश। २ माल। ३ झुंड।

गथना(पु)—क्रि० स० [सं० √ग्रथ्] १. जोड़ना। आपस में गूँथना। २ बात गढ़ना। बात बनाना।

गद—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष। २. रोग। ३ वसुदेव के सबसे छोटे लड़के। श्रीकृष्णचंद्र के छोटे भाई।

संज्ञा पुं० [अनु०] गुलगुली या कोमल वस्तु पर आघात लगने का शब्द।

गदका†—संज्ञा पुं० दे० "गतका"।

गदकारा—वि० पुं० [हिं० गद+कारा (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] मुलायम और दब जानेवाला। गुलगुला। गुदगुदा।

गदगदा(पु)—वि० दे० "गद्गद"।

गदना(पु)—क्रि० स० [सं० गदन] कहना।

गदर—संज्ञा पुं० [अ०] १. बलवा। बगावत। विद्रोह। २ हलचल। खलबली। उपद्रव।

गदराना—क्रि० अ० [हिं० अनु० गद] १ (फल आदि का) पकने पर होना। २. जवानी में अंगों का भरना। ३ आँख में कीचड़ आदि का आना।

क्रि० अ० [हिं० गंदा] गँदला होना।

वि० गदराया हुआ।

गदहपचीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "गधापचीसी"।

गदहपन—संज्ञा पुं० दे० "गधापन"।

गदहपूरना—संज्ञा स्त्री० [सं० गदह=रोग +पुनर्नवा] पुनर्नवा नाम का पौधा।

गदहा—संज्ञा पुं० [सं०] रोग हरनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।

संज्ञा पुं० [सं० गर्दभ] दे० "गधा"।

गदहिला†—संज्ञा पुं० [हिं० गदहा] वह गदहा जिसपर ईंटें या मिट्टी लादते हैं।

गदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक डंडे के एक ओर लट्टू रहता था।

संज्ञा पुं० [फा०] फकीर। भिखारी। भिक्षुक।

गदाई—वि० [फा० गदा=फकीर+ई (प्र०)] १ तुच्छ। नीच। क्षुद्र। वाहियात। रद्दी। २ भिक्षावृत्ति।

गदाधर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। नारायण।

गदेला—संज्ञा पुं० [हिं० गद्दा+एला (प्रत्य०)] १ मोटा ओढ़ना या बिछौना। गद्दा। २ हाथी की पीठ पर कसने का भारी गद्दा। ३ छोटा लड़का।

गदोरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली।

गद्गद—वि० [सं०] १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। २ अधिक हर्ष प्रेम आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट या असंबद्ध। रुँधा हुआ। रुद्धकंठ। ३ प्रसन्न। पुलकित।

गद्द—संज्ञा पुं० [अनु०] १ मुलायम जगह पर किसी चीज के गिरने का शब्द। २. किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचनेवाली चीज के कारण पेट का भारीपन।

गद्दर—वि० [देश०] १ जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २ मोटा गद्दा।

गद्दा—संज्ञा पुं० [हिं० गद्द से अनु०] १. रूई, पयाल आदि भरा हुआ मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक। गदेला। २ घास, पयाल, रूई आदि मुलायम चीजों का बिछौना। ३. वह मोटा बिछौना जिसे हाथी की पीठ पर बिछाकर हौदा कसा जाता है।

गद्दी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्पा०] १ छोटा गद्दा। २ वह कपड़ा जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने के लिये डाला जाता है। ३ व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ४ किसी बड़े

अधिकारी का पद। राजसिंहासन। ५ किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य की शिष्यपरंपरा। ६ हथेली।

मुहा०—गद्दी पर बैठना=(१) सिंहासनारूढ़ होना। (२) पदारूढ़ होना।

गद्दीनशीन—वि० [हिं० गद्दी+फा० नशीन] १ सिंहासनारूढ़। जिसे राज्याधिकार मिला हो। पदारूढ़।

गद्दीनशीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी+फा० नशीनी] गद्दी पर बैठने का समारोह। राज्यारोहण।

गद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह रचना जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और क्रम आदि का कोई नियम न हो। छंदरहित पद-रचना। वार्तिक। वचनिका। पद्य का उलटा।

गधा—संज्ञा पुं० [सं० गर्दभ] [स्त्री० गधी] १ घोड़े के आकार का, पर उससे छोटा, एक चौपाया। २ मूर्ख। बेवकूफ। गँवार।

मुहा०—गधे पर चढ़ाना=बहुत अपमानित या बदनाम करना। गधे का हल चलना=बिल्कुल उजट जाना। बरबाद हो जाना।

गधापच्चीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गधा+पच्चीसी] सोलह से पच्चीस वर्ष की अवस्था जिसमें अनुभव कम रहता है। अनुभवहीनता या नासमझी की अवस्था।

गधापन—संज्ञा पुं० [हिं० गधा+पन (प्रत्य०)] मूर्खता। बेवकूफी।

गनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गण"।

गनकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गणक] ज्योतिषी।

गनगन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] काँपने या रोमांच होने की मुद्रा।

गनगनाना—क्रि० अ० [अनु० गनगन] शीत आदि से रोमांच या कंप होना।

गनगौर—संज्ञा स्त्री० [सं० गण+गौरी] चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनना†—क्रि० स० दे० "गिनना"।

गनानाⓅ—क्रि० स० दे० "गिनाना"।

क्रि० अ० गिना जाना।

गनियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० गणिकारी] शमी की तरह का एक पौधा। छोटी अरनी।

गनी—वि० [अ०] धनी। धनवान्।

गनीम—संज्ञा पुं० [अ०] १. लुटेरा। डाकू। २. बैरी। शत्रु।

गनीमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लूट का माल। २. वह माल जो बिना परिश्रम मिले। मुफ्त का माल। ३ संतोष की बात।

गन्ना—संज्ञा पुं० [सं० काण्ड] ईख। ऊख।

गप—संज्ञा स्त्री० [सं० जल्प; फा० गप] [वि० गप्पी] १ इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो। २ वह बात जो केवल जी बहलाने के लिये की जाय। बकवाद।

यौ०—गपशप=इधर उधर की बातें।

३ झूठी खबर। मिथ्या संवाद। अफवाह। ४ वह झूठी बात जो बड़ाई प्रकट करने के लिये की जाय। डींग।

संज्ञा पुं० [अनु०] १ वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में घुसने आदि से होता है।

यौ०—गपागप=जल्दी जल्दी। झटपट।

२ निगलने या खाने की क्रिया। भक्षण।

गपकना—क्रि० अ० [अनु० गप+हिं० करना] चटपट निगलना। झट से खा लेना।

गपड़चौथ—संज्ञा स्त्री० [हिं० गपोड़ा=बात+चौथ] व्यर्थ की गोष्ठी। व्यर्थ की बात।

वि० लीपपोत। अंडबंड।

गपनाⓅ—क्रि० स० [हिं० गप] गप मारना। बकवाद करना। बकना।

गपिहा—वि० [हिं० गप+हा (प्रत्य०)] १. गप्पी। झूठ बोलनेवाला। २ बकवादी।

गपोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० गप+ओड़ा (प्रत्य०)] मिथ्या बात। कपोल-कल्पना। गप।

गपोड़ी—वि० दे० "गप्पी"।

गप्प—संज्ञा स्त्री० दे० "गप"।

गप्पा—संज्ञा पुं० [अनु० गप] धोखा। छल।

गप्पी—वि० [हिं० गप] गप मारनेवाला। छोटी बात को बढ़ाकर कहनेवाला।

गप्फा—संज्ञा पुं० [अनु० गप] १ बहुत बड़ा ग्रास। बड़ा कौर। २ लाभ। फायदा।

गफ—वि० [सं०√गुफ्] घना। ठस। गाढ़ा। घनी बुनावट का।

गफलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ असावधानी। बेपरवाही। २ बेखबरी। चेत या सुध का अभाव। ३. भूल। चूक।

गफिलाईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "गफलत"।

गबन—संज्ञा पुं० [अ०] किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना। खयानत।

गबरा†—वि० दे० "गब्बर"।

गबरू—वि० [सं० गह्वर ?] १. उभड़ती जवानी का। पट्ठा। २ भोलाभाला। सीधा।

†संज्ञा पुं० दूल्हा। पति।

गबरून—संज्ञा पुं० [फा० गबरून ?] चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।

गब्बर—वि० [सं० गर्वर] १ घमंडी। गर्वीला। अहंकारी। २ जल्दी काम न करनेवाला या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला। मट्ठर। मंद। ३ बहुमूल्य। कीमती। ४. मालदार। धनी।

गभस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। २ सूर्य। ३ बाँह। हाथ।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री। स्वाहा।

गभस्तिमान्—संज्ञा पुं० [सं० गभस्तिमत्] १ सूर्य। २ प्राचीन भौगोलिक विभाजन के नौ द्वीपों में से एक। ३ एक विशेष नरक।

वि० प्रकाशमय। चमकीला। तेजोमय।

गभीरⓅ—वि० [स्त्री० गभीरा] दे० "गंभीर"।

गभुआर—वि० [सं० गर्भ+हिं० आर (प्रत्य०)] १ गर्भ का (बाल)। जन्म के समय का रखा हुआ (बाल)। २. जिसके सिर के जन्म के बाल न कटे हों। जिसका मुंडन न हुआ हो। ३ नादान। अनजान।

गम—संज्ञा स्त्री० [सं० गम्य] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश। पहुँच। गुजर।

संज्ञा पुं० [अ०] दुःख। शोक।

मुहा०—गम खाना=सहन करना। जाने देना।

गमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जानेवाला। २ बोधक। सूचक। बतलानेवाला।

संज्ञा स्त्री० १ संगीत में एक श्रुति या स्वर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का ढंग। २. तबले की गंभीर आवाज। ३ सुगंध। महक।

गमकना—क्रि० अ० [हिं० गमक से ना० धा०] महकना।

गमखोर—वि० [फा० गमख्वार] [स्त्री० गमखोरी] सहिष्णु। सहनशील।

गमगीन—वि० [अ० गम+फा० गीं] दुःखी। उदास। रंजीदा।

गमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गम्य] १ जाना। चलना। यात्रा करना। २. संभोग, जैसे—वेश्यागमन। ३ राह। रास्ता।

गमनाⓅ—क्रि० अ० [सं० गमन] जाना। चलना।

(पु)क्रि० अ० [अ० गम] १. सोच करना। रंज करना। २ ध्यान देना।
गमला—संज्ञा पुं० [?] १ फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का वरतन। २ पाखाना फिरने का वरतन। कमोड।
गमाना(पु)—क्रि० स० दे० "गँवाना"।
गमार†—वि० दे० "गँवार"।
गमी—संज्ञा स्त्री० [अ० गम] १ वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं। सोग। २. मृत्यु। मरनी। ३ शोक की अवस्था या काल।
गम्य—वि० [सं०] १ जाने योग्य। गमन योग्य। २ प्राप्य। लभ्य। ३ संभोग करने योग्य। भोग्य। ४. साध्य।
गयद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गजेन्द्र] बड़ा हाथी।
गय—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर। मकान। २ अंतरिक्ष। आकाश। ३ धन। संपत्ति। ४ प्राण। ५ पुत्र। अपत्य। ६. एक असुर। ७ गया नामक तीर्थ। ८ एक राजर्षि का नाम।
(पु)संज्ञा पुं० [सं० गज] हाथी।
गयनाल—संज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल"।
गयल(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गैल"।
गयशिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतरिक्ष। आकाश। २ गया के पास का एक पर्वत।
गया—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि वहाँ पिंडदान करने से पितरों का मोक्ष हो जाता है। २ गया में होनेवाला पिंडदान।
क्रि० अ० [सं० गम] 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुआ।
मुहा०—गयागुजरा या गयाबीता = बुरी दशा को पहुँचा हुआ। नष्ट। निकृष्ट।
गयावाल—संज्ञा पुं० [हिं० गया + वाल (प्रत्य०)] गया तीर्थ का पंडा।
गर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोग। बीमारी। २ विष। जहर। ३ वत्सनाभ। बछनाग।
(पु)† संज्ञा पुं० [हिं० गल] गला। गरदन।
प्रत्य० [फा०] (किसी काम को) बनाने या करनेवाला, जैसे—बाजीगर, कलईगर।
गरक—वि० [अ० गर्क़] १ डूबा हुआ। निमग्न। २ विलुप्त। नष्ट। बरबाद।
गरगज—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ + गज] १. किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं। २ वह ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता चलाया जाता है। ३. तख्तों से बनी हुई नाव की छत। ४. फाँसी की टिकठी।
वि० बहुत बड़ा। विशाल।
गरगरा—संज्ञा पुं० [अनु०] गड़ारी। घिरनी।
गरगाव—वि० [फा० गरकाब] डूबा हुआ। नीची भूमि। खलार।
गरज—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्जन] १ बहुत गंभीर और ऊँचा शब्द। कड़क। २ बादल या सिंह का शब्द। ३ मनुष्य का क्रोध या आवेश में ऊँची आवाज से बोलना।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आशय। प्रयोजन। मतलब। २ आवश्यकता। जरूरत। ३ चाह। इच्छा।
अव्य० १. निदान। आखिरकार। अततोगत्वा। २ मतलब यह कि। सारांश यह कि।
गरजना—क्रि० अ० [सं० गर्जन] १. बहुत गंभीर और ऊँचा शब्द करना। उदा०—बादल का गरजना, शेर का गरजना। २ मनुष्य का क्रोध या आवेश में बहुत जोर से बोलना, जैसे—हाकिम के गरजने से गवाह डर गए। ३ मोती का चटकना। तड़पना। फूटना।
वि० गरजनेवाला।
गरजमद—वि० [फा०] [संज्ञा गरजमदी] १. जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २ इच्छुक। चाहनेवाला।
गरजी—वि० दे० "गरजमद"।
गरजू†—वि० दे० "गरजमद"।
गरट्ट—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ] समूह। झुंड।
गरद—संज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"।
गरदन—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। ग्रीवा।
मुहा०—गरदन उठाना = विरोध करना। विद्रोह करना। गरदन काटना = (१) धड़ से सिर अलग करना। मार डालना। (२) बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर = ऊपर। जिम्मे, जैसे—इसका पाप तुम्हारी गरदन पर है। गरदन मारना = सिर काटना। मार डालना। गरदन में हाथ देना या डालना = (१) क्रोध में किसी की गरदन पकड़ना (२) गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना। गरदनियाँ देना।
२. बरतन आदि का ऊपरी भाग।
गरदना†—संज्ञा पुं० [हिं० गरदन] १. मोटी गरदन। २ वह धौल जो गरदन पर लगे।
गरदनियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन + इयाँ (प्रत्य०)] (किसी को किसी स्थान से) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया।
गरदनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन + ई (प्रत्य०)] १ कुरते का गला। २. गले में पहनने की हँसली। ३ घोड़े की गरदन और पीठ पर रखने का कपड़ा। ४. कारनिस। कँगनी।
गरदा—संज्ञा पुं० [फा० गर्द] धूल। गुबार। मिट्टी। खाक। गर्द।
गरदान—वि० [फा०] घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला।
संज्ञा स्त्री० शब्दों का रूप साधन।
संज्ञा पुं० वह कबूतर जो घूम फिरकर सदा अपने स्थान पर आता हो।
गरना(पु)†—क्रि० अ० १. दे० "गलना"। २ दे० "गड़ना"।
क्रि० अ० [सं० गरण] निचुड़ना।
गरनाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० गर + नाल]। बहुत चौड़े मुँह की तोप। घननाल। घननाद।
गरब(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० गर्व] १ दे० "गर्व"। २ हाथी का मद।
गरबई—संज्ञा स्त्री० दे० "गर्व"।
गरबगहेला—वि० [सं० गर्व + हिं० गहेला] घमंड करनेवाला। गर्वीला।
गरबगहेली—वि० स्त्री० [हिं० गरब-गहेला] गरबीली। अभिमान युक्त। उ०—अछरी रूप छपानी जबहिं चली धनि साजि। जावत गरबगहेली सबै छपीं मन लाजि।—पदमावत।
गरबना, गरबाना(पु)†—क्रि० अ० [सं० गर्व] घमंड में आना। अभिमान करना।
गरबीला—वि० [सं० गर्व] [स्त्री० गरबीली] जिसे गर्व हो। घमंडी। अभिमानी।
गरभ—संज्ञा पुं० दे० "गर्भ"।
गरभाना—क्रि० अ० [सं० गर्भ] १ गर्भिणी होना। गर्भ से होना। २ धान, गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।
गरम—वि० [फा० गर्म] १ तप्त। उष्ण। जलता हुआ।
यौ०—गरमागरम = तप्त। उष्ण। गरम कपड़ा = शरीर गरम रखनेवाला

कपड़ा। ऊनी कपड़ा। गरम खबर=जोश पैदा करनेवाला समाचार। गरम मसाला= धनियाँ, लौंग, बड़ी इलायची, जीरा, मिर्च, इत्यादि मसाले। गरम मिजाज=चिड़चिड़ा। बहुत जल्द उत्तेजित होनेवाला। २ तीक्ष्ण। उग्र। खरा। ३ तेज। प्रबल। प्रचंड। जोरशोर का। ४ जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी बढ़े। ५ उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

गरमाई—संज्ञा स्त्री० दे० "गरमी"।

गरमागरम—वि० [फा० गर्म] १. बिलकुल गरम। २. ताजा।

गरमागरमी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरमा-गरम+ई० (प्रत्य०)] १. मुस्तैदी। २ कहासुनी। बकझक।

गरमाना—क्रि० अ० [हिं० गरम] १. गरम पड़ना। उष्ण होना। २. उमंग पर आना। मस्ताना। ३. आवेश में आना। क्रोध करना। झल्लाना। ४ कुछ देर लगातार दौड़ने या परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेजी पर आना।

†क्रि० स० गरम करना। तपाना। औटाना।

गरमाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरम+आहट (प्रत्य०)] गरमी।

गरमी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उष्णता। ताप। जलन। २. तेजी। उग्रता। प्रचंडता। ३ आवेश। क्रोध। गुस्सा। ४ उमंग। जोश। ५ ग्रीष्म ऋतु। कड़ी धूप के दिन। ६ एक रोग जो प्राय दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है। आतशक। फिरंग रोग।

मुहा०—गरमी निकालना=गर्व दूर करना।

गरमीदाना—संज्ञा पुं० [हिं० गरमी+दाना] अम्हौरी। पित्ती।

गरयारा—संज्ञा पुं० दे० "गलियारा"।

गरर—वि० दे० "गर्रा"। उ०—दुरे, कुरंग महुअ बहु भाँती। गरर, कोकाह बुलाह सुपाँती।—पदमावत।

गररा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गर्रा"।

गरराना—क्रि० अ० [अनु०] भीषण ध्वनि करना। गरजना।

गरल—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० गरलता] १ विष। जहर। २ साँप का जहर।

गरवा(पु)—वि० [सं० गुरु] भारी।

संज्ञा पुं० दे० "गला"।

गरसना—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गरह—संज्ञा पुं० दे० "ग्रह"।

गरहन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ग्रहण"।

गराँव—संज्ञा पुं० [हिं० गर=गला] दोहरी रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है।

गरा†—संज्ञा पुं० दे० "गला"।

गराज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्जन] गरज।

गराड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु० गड़गड़ या सं० कुंडली] काठ या लोहे का गोल चक्कर जिसके घाट में रस्सी डालकर कुएँ से घड़ा या पंखा आदि खींचते हैं। चरखी।

संज्ञा स्त्री० [सं० गड=चिह्न] रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर। साँट।

गराना(पु)—क्रि० स० दे० "गलाना"।

क्रि० स० [हिं० गारना का प्रे० रूप] १. गारने का काम दूसरे से कराना। २. गारना।

गरारा—वि० [स० गर्व+हिं० आर (प्रत्य०)] १. गर्वयुक्त। २ प्रबल। प्रचंड। बलवान्।

संज्ञा पुं० [अ० गरगरा] १. कुल्ली। २ कुल्ली करने की दवा।

संज्ञा पुं० [हिं० घेरा] १. पायजामे की ढीली मोहरी। २ बहुत बड़ा थैला।

गरास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ग्रास"।

गरासना(पु)—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गरिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० गरिमन्] १ गुरुत्व। भारीपन। बोझ। २ महिमा। महत्व। गौरव। ३ गर्व। अहंकार। घमंड। ४ आत्मश्लाघा। शेखी। ५ आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरियाना†—क्रि० अ० [हिं० गारी से ना० धा०] गाली देना।

गरियार—वि० [हिं० गड़ना=एक जगह रुक जाना] सुस्त। बोदा। मट्ठर (चौपाया)।

गरिष्ठ—वि० [सं०] १ अति गुरु। अत्यंत भारी। २ जो जल्दी न पचे।

गरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गरिका] १ नारियल के फल के भीतर का मुलायम गोला। २. बीज के अंदर की गूदी। गिरी। मींगी।

गरीब—वि० [अ० गरीब]। १ दरिद्र। निर्धन। कंगाल। २ दीन। हीन। ३ नम्र।

गरीबनिवाज—वि० [फा० गरीब+नवाज] दीनों पर दया करनेवाला। दयालु।

गरीबपरवर—वि० [फा०] गरीबों को पालनेवाला। दीन-प्रतिपालक।

गरीबाना—क्रि० वि० [फा० गरीबान] गरीबों का सा।

गरीबामऊ—वि० दे० "गरीबाना"।

गरीबी—संज्ञा स्त्री० [अ० गरीब] १. दीनता। अधीनता। नम्रता। २ दरिद्रता। निर्धनता। कंगाली। मुहताजी।

गरीयस—वि० [सं०] [स्त्री० गरीयसी] १ बड़ा भारी। गुरु। २. महान्। प्रबल।

गरु, गरुआ(पु)—वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई] १ भारी। वजनी। २. गौरवशाली।

गरुआई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरुआ+ई (प्रत्य०)] गुरुता।

गरुआना—क्रि० अ० [सं० गुरु] भारी होना।

गरुड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणों के अनुसार कश्यप और विनता के पुत्र तथा विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं। सूर्य के सारथी अरुण के बड़े भाई। २. कुछ लोगों के मत से उकाब पक्षी। †३ एक सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी। पँड़वा ढेक। ४ सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। ५ छप्पय छंद का एक भेद।

गरुड़गामी—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

गरुड़पुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक।

गरुड़रुत—संज्ञा पुं० [सं०] सोलह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण और तगण और अंत में एक गुरु रहता है, जैसे—न जु भजु तैं गुपाल निशि वासरा रे मना। लहसि न सौख्य भूलि कहुँ यत्न कीन्हें घना।

गरुड़व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] रणस्थल में सेना के जमाव या स्थापन का एक प्रकार।

गरुता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।

गरुवाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई"।

गरू(पु)—वि० [सं० गुरु] भारी। वजनी।

गरूर—संज्ञा पुं० [अ०] घमंड। अभिमान।

गरूरत, गरूरता—संज्ञा स्त्री० दे० "गरूर"।

गरूरी†—वि० [अ० गरूरी] घमंडी।

संज्ञा स्त्री० अभिमान। घमंड।

गरेवान—संज्ञा पुं० [फा०] अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।

गरेरना—क्रि० स० [हिं० घेरना] घेरना।

गरेरा—संज्ञा पुं० दे० "घेरा"।

गरेरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "गराड़ी"।

गरैयाँ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गला] गराँव।

गरोह—संज्ञा पुं० [फा०] झुंड। जत्था।

गर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि। २. बैल। साँड़। ३ एक पर्वत का नाम।

गर्ज—संज्ञा स्त्री० दे० "गरज"।

गर्जन—संज्ञा पु० [सं०] भीषण ध्वनि। गरजना। गरज। गंभीर नाद। कड़क।

यौ०—गर्जन-तर्जन = (१) तड़प। (२) डाँटडपट।

गर्जना—क्रि० अ० दे० "गरजना"।

गर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। गड़हा। २. दरार। ३. घर। ४ रथ।

गर्द—संज्ञा स्त्री० [फा०] धूल। राख।

यौ०—गर्दगुवार = धूलधक्कड़।

गर्दखोर, गर्दखोरा—वि० [फा० गर्दखोर] जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराव न हो।

संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा।

गर्दन—संज्ञा स्त्री० दे० "गरदन"।

गर्दभ—संज्ञा पुं० [सं०] गधा।

गर्दिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घुमाव। चक्कर। २ विपत्ति। आपत्ति।

गर्बीला—वि० दे० "गरवीला"।

गर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेट के अंदर का बच्चा। हमल।

मुहा०—गर्भ गिरना = पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही निकल जाना। गर्भपात।

२. स्त्री के पेट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। गर्भाशय। बच्चेदानी। ३ मध्य। बीच। भीतरी हिस्सा।

गर्भकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं।

गर्भगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान के बीच की कोठरी। मध्य का घर। २. घर का मध्य भाग। आँगन। ३ मंदिर की वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी जाती है। ४. शयनागार। सोने का कमरा।

गर्भनाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूल के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है।

गर्भपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेट से बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल जाना। २ गर्भधारण के चार महीने बाद और नवें महीने के पहले गर्भ का गिरना।

गर्भवती—वि० स्त्री० [सं०] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में पाँच प्रकार की संधियों में से एक।

गर्भस्थ—वि० [सं०] जो गर्भ में हो।

गर्भस्राव—संज्ञा पुं० [सं०] चार महीने के अंदर का गर्भपात।

गर्भांक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य। नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य।

गर्भाधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ गर्भ की स्थिति। गर्भधारण। २ मंत्र पढ़कर सूर्य को अर्घ्य आदि देकर शुभ मुहूर्त में पवित्र मन से संतानोत्पादन के लिये पत्नी से सहवास करना।

गर्भाशय—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। बच्चेदानी।

गर्भिणी—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

गर्भित—वि० [सं०] १ गर्भयुक्त। २ भरा हुआ। पूर्ण।

गर्रा—वि० [?] लाख के रंग का।

संज्ञा पुं० [?] १ लाही रंग। २ घोड़े का एक रंग जिसमें लाही बालों के साथ कुछ सफेद बाल मिले होते हैं। ३ इस रंग का घोड़ा। ४ लाही रंग का कबूतर।

गर्व—संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार। घमंड।

गर्वानाⓅ—क्रि० अ० [सं० गर्व] गर्व करना।

गर्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।

गर्विष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] घमंडी।

गर्वी—वि० [सं० गर्विन्] [स्त्री० गर्विणी] घमंडी। अहंकारी।

गर्वीला—वि० [सं० गर्व + हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] घमंडी। अभिमानी।

गर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा। शिकायत।

गर्हित—वि० [सं०] दूषित। बुरा।

गर्ह्य—वि० [सं०] गर्हणीय।

गल—संज्ञा पुं० [सं०] गला। कंठ।

गलकंबल—संज्ञा पुं० [सं०] साँड़ और गाय आदि के गले के नीचे झूलनेवाली मोटे चमड़े की झालर। लहर। उ०—अंतर अयन अयन भल, थनफल, बच्छ वेद-बिस्वासी। गलकवल वरुना बिभाति, जनु लूम लसित सरिता सी।—विनय०।

गलका—संज्ञा पुं० [सं० √गल् + हिं० का (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है। २ एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

गलगंज—संज्ञा पु० [हिं० गल + गाँजना] शोरगुल। हल्ला। कोलाहल।

गलगंड—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें गला सूजकर लटक आता है। घेघा।

गलगर्जना—क्रि० अ० [हिं० गलगज] शोर करना। हल्ला करना।

गलगल—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. मैना की जाति की एक चिड़िया। सिरगोटी। गलगलिया। २ एक प्रकार का बड़ा नींबू। ३ एक प्रकार का रोग।

गलगला—वि० [हिं० गीला] आर्द्र। तर।

गलगाजना—क्रि० अ० [हिं० गाल + गाजना] गाल बजाना। बढ़बढ़कर बातें करना।

गलगुथना—वि० [हिं० गाल + गुथना] जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों। मोटा।

गलग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ गला पकड़ना। गला घोटना। २ मछली का काँटा। ३ एक प्रकार की पकी हुई मछली। ४. वह आपत्ति जो कठिनता से टले।

गलछुट—संज्ञा स्त्री० दे० "गलफड़ा"।

गलजँदड़ा—संज्ञा पुं० [सं० गल + यंत्र, पं० जंदरा] १ वह जो कभी पिंड न छोड़े। गले का हार। २ कपड़े की पट्टी जो गले में चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिये बाँधी जाती है।

गलझंप—संज्ञा पुं० [हिं० गल + झंप] हाथी के गले में पहनाने की लोहे की झूल या जंजीर।

गलतंस—संज्ञा पु० [सं० गलित + वंश] निस्संतान व्यक्ति की संपत्ति। लावारिस जायदाद।

गलत—वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० गलती] १ जो ठीक न हो। अशुद्ध। भ्रममूलक। २ असत्य। मिथ्या। झूठ।

गलतकिया—संज्ञा पुं० [हिं० गाल + तकिया]

छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है।

गलतफहमी—संज्ञा स्त्री० [अ० गलत+फा० फहम] गलत समझना। किसी बात को और का और समझना। भ्रम।

गलतान—वि० [फा० गल्ताँ] लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपड़ा।

गलती—संज्ञा स्त्री० [अ० गलत] १ भूल। चूक। धोखा। २ अशुद्धि। त्रुटि।

गलथना—संज्ञा पुं० [सं० गलस्तन] वे थैलियाँ जो कुछ बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकती रहती हैं।

गलथैली—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल+थैली] बंदरों के गाल के नीचे की थैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।

गलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरना। पतन। २ गलना।

गलना—क्रि० अ० [हिं० गलन] १. ठोस वस्तु का तरल होना। पिघलना। २ अधिक पककर नरम होना। सड़ना। कोढ़ आदि रोग के द्वारा शरीर का सड़ना। ३ बहुत जीर्ण होना। ४ शरीर का दुर्बल होना। बदन सूखना। ५ बहुत अधिक सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना। ६ वृथा या निष्फल होना। बेकाम होना। ७ धन आदि का बहुत अधिक खर्च होना।

गलफड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० गाल+√फट] १. जलजतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २ गाल का चमड़ा।

गलफाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गल+फाँसी] १ गले की फाँसी। २ कष्टदायक वस्तु या कार्य। जंजाल।

गलबल—संज्ञा पुं० [अनु०] कोलाहल। खलबली। गड़बड़ी। उ०—गलबल सब नगर परयो प्रगटे यदुबंशी। द्वारपाल इहै कही जोधा कोउ बच्यो नहीं काँध गजदंत धरे सुर अद्ध अंसी।—सूर०।

गलबहियाँ, गलबाँही—संज्ञा स्त्री० [हिं० गल+बाँह] गले में बाँहें डालना। आलिंगन।

गलमुँदरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल+सं० मुद्रा] १ शिव जी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा। गलमुद्रा। २ गाल बजाना।

गलमुच्छा—संज्ञा पुं० [हिं० गाल+मूँछ] गालों पर के बढ़ाए हुए बाल। गलगुच्छा।

गलमुद्रा—संज्ञा स्त्री० दे० "गलमुँदरी।

गलवाना—क्रि० स० [हिं० 'गलना' का प्रे० रूप] गलाने का काम दूसरे से कराना।

गलशुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीभ के आकार का मांस का छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास होता है। छोटी जबान या जीभ। जीभी। कौआ। २ एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।

गलसुआ—संज्ञा पुं० [हिं० गाल+सूजना] एक रोग जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज आता है।

गलसुई, गलसूई—संज्ञा स्त्री० दे० "गलतकिया"। उ०—चहुँदिसि गेंडुवा औ गलसूई। काँची पाट भरी धुनि रूई।—पदमावत।

गलस्तन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "गलथना।"

गलही—संज्ञा स्त्री० [हिं० गला] नाव का अगला उठा हुआ भाग।

गला—संज्ञा पुं० [सं० गल] १ शरीर का वह अवयव जो सिर को धड़ से जोड़ता है। गरदन। कंठ। २ मुहँ के नीचे खुली हुई, पेट में आहार पहुँचानेवाली और श्वास-प्रश्वास के लिये फेफड़ों में वायु ले जानेवाली (तथा ध्वनि निकालनेवाली) दोनों नलियों में से कोई एक।

मुहा०—गला काटना=(१) धड़ से सिर जुदा करना। (२) बहुत हानि पहुँचाना। (३) सूरन, बड़े आदि का गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट उत्पन्न करना। कनकनाना। गला घुटना=दम रुकना। अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोटना=(१) गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय। टेटुआ दबाना। (२) जबरदस्ती करना। जब्र करना। (३) मार डालना। गला दबाकर मार डालना। गला छूटना=पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। गला दबाना=अनुचित दबाव डालना। गला फाड़ना=बहुत जोर से चिल्लाना। गला रेतना=दे० "गला काटना"। गले का हार=(१) इतना प्यारा (व्यक्ति या वस्तु) कि पास से कभी जुदा न किया जाय। अत्यंत प्रिय। चिर सहचर। (२) पीछा न छोड़नेवाला। (बात) गले के नीचे उतरना या गले उतरना=(बात) मन में बैठना। जी में जँचना। ध्यान में आना। गले पड़ना=इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। न चाहने पर भी मिलना। (दूसरे के) गले बाँधना या मढ़ना=दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। जबरदस्ती देना। गले लगाना=(१) भेंटना। मिलना। आलिंगन करना। (२) दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना।

३ गले का स्वर। कंठस्वर। ४. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग। गरेबान। ५ बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग। ६ चिमनी का कला।

वि० १. अधिक पका हुआ (फल आदि)। २ जीर्ण-शीर्ण (वस्त्र आदि)। ३ मुलायम। कोमल।

गलाना—क्रि० स० [हिं० गलना का स० रूप] १ किसी वस्तु के सयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, गीला या द्रव करना। पिघलाना। पुलपुला करना। २ धीरे धीरे लुप्त करना। ३ (रुपया) खर्च कराना।

गलानि (पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गलानी—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"। उ०—राम सुपेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी।—मानस।

गलित—वि० [सं०] १ अधिक दिन का होने के कारण नरम पड़ा हुआ। २ गला हुआ। ३ गिरा हुआ। ४ पुराना पड़ा हुआ। जीर्णशीर्ण। खण्डित। ५. पिघला हुआ। चुआ हुआ। च्युत। ६. नष्ट-भ्रष्ट। ७ परिपक्व।

गलित कुष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह कोढ़ जिसमें अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।

गलितयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गलियारा—संज्ञा पुं० [हिं० गली+आरा (प्रत्य०)] १ गली की तरह का छोटा तंग रास्ता। २ दो कमरों, स्थानों या प्रदेशों आदि के बीच का अलग, सीधा और सुरक्षित मार्ग।

गली—संज्ञा स्त्री० [सं० गल=गला] १ घरों की पंक्तियों के बीच से होकर गया हुआ तंग रास्ता। खोरी। कूचा।

मुहा०—गली गली मारे मारे फिरना=(१) इधर उधर व्यर्थ घूमना। (२) जीविका के लिये इधर से उधर भटकना। (३) चारों ओर अधिकता से मिलना। सब जगह दिखाई पड़ना।

२ मुहल्ला। महाल।

गलीचा—संज्ञा पुं० [फा० गालीच.] ऊन या सूत का बुना हुआ मोटा बिछौना जिस

पर रंग-बिरंगे बेल-बूटे आदि बने रहते हैं। कालीन।

गलीज—वि० [अ०] १. गंदा। मैला। २. नापाक। अशुद्ध। अपवित्र।

संज्ञा पुं० १ कूड़ा-करकट। गंदी वस्तु। मैला। गदगी। २ पाखाना। मल।

गलीतⓅ—[अ० गलीज] मैला कुचैला। गलत।

गलेबाज—वि० [हिं० गला+फा० बाज] जिसका गला अच्छा हो। अच्छा गानेवाला।

गलेबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गलाबाज] १. अच्छा गाना। २ बहुत बढ़ बढ़कर बातें बनाना। डींग। ३ पक्का गाना गाते समय बहुत तान आलाप आदि लेना।

गल्प—संज्ञा स्त्री० [सं० जल्प] १ मिथ्या प्रलाप। गप। २ छोटी कहानी।

गल्ला—संज्ञा पुं० [अ० गुल] शोर। हौरा।

संज्ञा पुं० [फा० गल्ला] झुंड। दल। (चौपायों के लिये)

संज्ञा पुं० [अ०] [वि० गल्लई] १ जोतने बोने से उत्पन्न फलफूल आदि की उपज। फसल। पैदावार २ अन्न। अनाज। ३. वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता है। गोलक। ४ धन राशि। ५ मद। फंड। खाता।

गवँ—संज्ञा स्त्री० [सं० गम] १ प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर। घात। २ मतलब।

मुहा०—गवँ से=(१) घात देखकर। मौका तजवीजकर। (२) धीरे से। चुपचाप।

गवनⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० गमन] १ प्रस्थान। प्रयाण। चलना। जाना। २ गति। वधू का पहले पहल पति के घर जाना। गौना।

गवनचार—संज्ञा पुं० [हिं० गवन+चार] बर के घर वधू के जाने की रस्म।

गवननाⓅ—क्रि० अ० [सं० गमन] जाना।

गवना—संज्ञा पुं० दे० "गौना"।

गवय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गवयी] १. नीलगाय। २ एक छंद।

गवाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी खिड़की। गौखा। झरोखा।

गवाखⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गवाक्ष"।

गवाना—क्रि० स० [हिं० गाना का प्रे० रूप] गाने का काम दूसरे से कराना।

गवामयन—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ।

गवारा—वि० [फा०] १ मनभाता। अनुकूल। पसंद। २ सह्य। अंगीकार करने के योग्य।

गवारि—संज्ञा स्त्री० [सं० गोपालिका] गोपी। नायिका। उ०—अनिमिष दृग नखसिख वनिक, रही गवारि निहारि। मुरि मुसुकानी नववधू, मुख पर अंचल डारि। —रससाराश।

गवासⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गवाशन] कसाई।

संज्ञा स्त्री० [सं०√गै+इष्] गाने की इच्छा।

गवाह—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा गवाही] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २ वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो। साक्षी। ३. किसी घटना या बात के विषय में अपनी जानकारी बतानेवाला।

गवाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी घटना के विषय में ऐसे मनुष्य का कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण। साक्ष्य।

गवीश—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोस्वामी। २. विष्णु। ३ साँड़।

गवेजा—संज्ञा पुं० [हिं० गप] गप। बातचीत। उ०—केवट हँसे सो सुनत गवेजा। समुद न जानु कुवाँ कर मेजा। —पदमावत।

गवेधु, गवेधुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कसेई। कौड़िल्ला। २ एक विषधर सर्प।

गवेला†—वि० [हिं० गाँव] देहाती।

गवेषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोज। अन्वेषण।

गवेषी—वि० [सं० गवेषिन्] [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला। ढूँढनेवाला।

गवेसनाⓅ—क्रि० स० [सं० गवेषणा] ढूँढ़ना।

गवैंहा—वि० [हिं० गाँव+ऐंहा (प्रत्य०)] गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती।

गवैया—वि० [हिं०√गा=गाना+वैया] गानेवाला। गायक।

गव्य—वि० [सं०] गौ से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी।

संज्ञा पुं० १ गायों का झुंड। २ पंचगव्य।

गश—संज्ञा पुं० [फा०] मूर्च्छा। बेहोशी। अचेत। ताँवर।

मुहा०—गश खाना=बेहोश होना।

गश्त—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० गश्ती] १. टहलना। घूमना। फिरना। भ्रमण। दौरा। चक्कर। २. पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या गली कूचों आदि में घूमना। रौंद। गिरदावरी। दौरा।

गश्ती—वि० [फा०] घूमनेवाला। फिरनेवाला। चलता।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

गसी—वि० स्त्री० [सं०√ग्रस्] घिरी हुई। बँधी या फँसी हुई। ग्रस्त। उ०—विथा में गसी सी भुजंगै डसी सी छरी सी मरी सी धरी सी भरै जू। —छंदार्णव।

गसीला—वि० [सं०√ग्रस्] [स्त्री० गसीली] १ जकड़ा या गठा हुआ। गुथा हुआ। २. (कपड़ा) जिसके सूत खूब मिले हों। गफ।

गस्सा—संज्ञा पुं० [सं० ग्रास] ग्रास। कौर। नेवाला।

गह—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रह] १ पकड़। पकड़ने की क्रिया या भाव। २ हथियार आदि थामने की जगह। मूठ। दस्ता।

मुहा०—गह बैठना=मूठ पर हाथ भरपूर जमना।

गहकना—क्रि० अ० [सं० गद्‌गद्?] १ चाह से भरना। लालसा से पूर्ण होना। ललकना। लहकना। २ उमंग से भरना।

गहगड्ड—वि० [सं० गह=गहरा+गड्ड=गड्ढा] गहरा। भारी। घोर (नशे के लिये)।

गहगहⓅ—वि० [सं० गद्‌गद्?] प्रफुल्ल। प्रसन्नतापूर्ण। उमंग से भरा हुआ।

क्रि० वि० धमाधम। धूम के साथ (बाजे के लिये)।

गहगहा—वि० [हिं० गहगह] १ उमंग और आनंद से भरा हुआ। प्रफुल्ल। २ धमाधम। धूमधामवाला।

गहगहाना—क्रि० अ० [हिं० गहगहा] १ आनंद से फूलना। बहुत प्रसन्न होना। २ पौधों का लहलहाना।

गहगहे—क्रि० वि० [हिं० गहगह] १ बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २ धूम के साथ।

गहडोरना—क्रि० स० [देश०] पानी को मथकर या हिला डुलाकर गँदला करना।

गहन—वि० [सं०] १. गंभीर। गहरा। अथाह। २ दुर्गम। घना। दुर्भेद्य। ३ कठिन। दुरूह। ४ निविड़। घना।

संज्ञा पुं० १ गहराई । थाह । २. दुर्गम स्थान । ३ वन या कानन में गुप्त स्थान ।

†संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण] १ चद्रमा या सूर्य के प्रकाश का किसी अन्य पिंड द्वारा अवरोध । ग्रहण । २. कलंक । दोष । ३. दुःख । कष्ट । विपत्ति । ४. बंधक । रेहन ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना = पकड़ना] १ पकड़ने का भाव । पकड़ । २. हठ । जिद ।

गहनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गहन, दुर्गम या गंभीर होने का भाव ।

गहना—संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण = धारण करना] १. आभूषण । जेवर । २ रेहन । बंधक ।

क्रि० स० [सं० ग्रहण] पकड़ना । धरना ।

गहनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रहण] १ टेक । अड़ । जिद । हठ । २. पकड़ ।

गहबर(पु)†—वि० [सं० गह्वर] १. दुर्गम । विषम । २ व्याकुल । उद्विग्न । ३ आवेग से भरा हुआ । मनोवेग से आकुल ।

गहबरना—क्रि० अ० [हिं० गहबर] १ आवेग से भरना । मनोवेग से आकुल होना । २ घबराना । उद्विग्न होना ।

गहर—संज्ञा स्त्री० [?] देर । विलंब ।

संज्ञा पुं० [सं० गह्वर] गहरा । दुर्गम । गूढ़ ।

गहरना—क्रि० अ० [हिं० गहर = देर] देर लगाना । विलंब करना ।

क्रि० अ० [सं० गह्वर] १ झगड़ना । उलझना । २ कुढ़ना । नाराज होना ।

गहरवार—संज्ञा पुं० [गहिरदेव = एक राजा] एक क्षत्रिय वंश ।

गहरा—वि० [सं० गंभीर] [स्त्री० गहरी] १. (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो । गंभीर । निम्न । अतलस्पर्श ।

मुहा०—गहरा पेट = ऐसा पेट जिसमें सब बातें पच जायँ । ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले ।

२ जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो । ३ बहुत अधिक । ज्यादा । घोर ।

मुहा०—गहरा असामी = (१) भारी या मालदार आदमी । (२) बड़ा आदमी । गहरे लोग = चतुर लोग । भारी उस्ताद । घोर धूर्त । गहरा हाथ = हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट लगे ।

४ दृढ़ । मजबूत । भारी । कठिन । ५ जो हलका या पतला न हो । गाढ़ा ।

मुहा —गहरी घुटना या छनना = (१) खूब गाढ़ी भंग घुटना या पीसना । (२) गाढ़ी मित्रता होना । बहुत अधिक हेल मेल होना ।

गहराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गहरा + ई(प्रत्य०)] गहरा का भाव । गहरापन ।

गहराना†—क्रि० अ० [हिं० गहरा] गहरा होना ।

क्रि० स० [हिं० गहरा] गहरा करना ।

क्रि० अ० दे० "गहरना" ।

गहराव†—संज्ञा पुं० [हिं० गहरा + आव (प्रत्य०)] गहराई ।

गहरु(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गहर" ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० गहर] देर । उ०— गहरु होत रिस तासु सँभारो । उतहि लाल द्रुत पाउन धारो ।—छदार्णव ।

गहलौत—संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों का एक वंश ।

गहवाना—क्रि० स० [हिं० गहना का प्र० रूप] पकड़ने का काम कराना । पकड़ाना ।

गहवारा—संज्ञा पुं० [हिं० गहना] पालना । झूला । हिंडोला ।

गहाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गह + आई (प्रत्य०)] गहने का भाव । पकड़ ।

गहागड्ड—वि० दे० "गहगड्ड" ।

गहागह—वि० दे० "गहगह" । उ०—सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ।—मानस ।

गहाना—क्रि० स० [हिं० गहना का प्रे० रूप] धराना । पकड़ना ।

गहासना(पु)—क्रि० स० दे० "ग्रसना" ।

गहिला—वि० [हिं० गहेला] बावला । पागल । उन्मत्त ।

गहीला—वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहीली] १ गर्वयुक्त । घमंडी । २ पागल ।

गहुआ†—संज्ञा पुं० [हिं० √गह + उआ (प्रत्य०)] एक तरह की सँड़सी ।

गहेजुआ†—संज्ञा पुं० [देश०] छछूँदर ।

गहेलरा†—वि० दे० "गहेला" ।

गहेला†—वि० [हिं० √गह = पकड़ना + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १ हठी । जिद्दी । २. अहंकारी । मानी । घमंडी । ३ पागल । ४ गँवार । अनजान । मूर्ख ।

गहैया—वि० [हिं० √गह + ऐया (प्रत्य०)] १. पकड़नेवाला । ग्रहण करनेवाला । २ अंगीकार करनेवाला । स्वीकार करनेवाला ।

गह्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकारमय और गूढ़ स्थान । २ जमीन में छोटा सूराख । बिल । ३. विषम स्थान । दुर्गम स्थान । ४ गुफा । कंदरा । गुहा । ५. निकुंज । लतागृह । ६ झाड़ी । ७. जंगल । वन ।

वि० १. दुर्गम । विषम । २ गुप्त ।

गाँउ—संज्ञा पुं० दे० "गाँव" । उ०—दाँउ घाट लै आइए लखिए, ठाँउ कुठाँउ । नाँउ धरैं बिनु जाने ही नाँर चवाई गाँउ ।—रससाराश ।

गांग—वि० [सं०] गंगा संबंधी । गंगा का ।

गांगेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीष्म । २. कार्तिकेय । ३ हेलसा मछली । ४ कसेरू ।

गाछना—क्रि० स० [सं० ग्रंथन]

गाँज—संज्ञा पुं० [सं० गंज] राशि । ढेर ।

गाँजना—क्रि० स० [हिं० गाँज से ना० धा०] राशि लगाना । ढेर करना ।

गाँजा—संज्ञा पुं० [सं० गंजा] भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कलियों का धूआँ कुछ लोग पीते हैं ।

गाँठ—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि, प्रा० गंठि] [वि० गँठीली] १ रस्सी, डोरी, कपड़े आदि का फंदा या बंधन । गिरह । ग्रंथि ।

मुहा०—मन या हृदय की गाँठ खोलना = (१) जी खोलकर कोई बात कहना । मन में रखी हुई बात कहना । (२) अपनी भीतरी इच्छा प्रगट करना । (३) हौसला निकालना । लालसा पूरी करना । मन में गाँठ पड़ना = आपस के संबंध में भेद पड़ना । मनमोटाव होना ।

२ अंचल, चद्दर या किसी कपड़े की खूँट में कोई वस्तु (जैसे, रुपया) लपेटकर लगाई हुई ग्रंथि ।

मुहा०—गाँठ कतरना या काटना = गाँठ काटकर रुपया निकाल लेना । जेब कतरना । गाँठ का = पास का । पल्ले का । गाँठ का पूरा = धनी । मालदार । गाँठ जोड़ना = विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना । गँठजोड़ा करना ।

(कोई बात) गाँठ में बाँधना = अच्छी तरह याद रखना । स्मरण रखना । सदा ध्यान में रखना । गाँठ से = पास से । पल्ले से ।

३. गठरी। बोरा। गट्ठा। ४. अग का जोड़। बंद; जैसे—पैर की गाँठ। ५ ईख, बाँस आदि में थोड़े थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ जोड़। पोर। पर्व। ६ गाँठ के आकार की जड़। अटी। गुत्थी। ७ घास का बँधा हुआ बोझ। गट्ठा।

गाँठगोभी—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे की सी गोल गाँठ होती है।

गाँठदार—वि० [हिं० गाँठ+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें बहुत सी गाँठें हों। गठीला।

गाँठना—क्रि० स० [सं० ग्रथन, प्रा० गठन] १. गाँठ लगाना। सीकर, मुर्री लगाकर या बाँधकर मिलाना। साटना। २ फटी हुई चीजों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। गूथना। ३. मिलाना। जोड़ना। ४ तरतीब देना।

मुहा०—मतलब गाँठना=काम निकालना।

५ अपनी ओर मिलाना। अनुकूल करना। पक्ष में करना। ६ गहरी पकड़ पकड़ना। ७. वश में करना। वशीभूत करना। ८ वार को रोकना।

गाँठरी—संज्ञा स्त्री० दे० "गठरी"। उ०—खायो कालकूट भयो अजर अमर तनु भवन मसान गथ गाँठरी गरद की।—कविता०।

गाँठी—संज्ञा स्त्री० दे० "गाँठ"।

गाँडर—संज्ञा स्त्री० [सं० गाडीर ?] मूँज की तरह की एक घास। गंडदूर्वा।

गाँडा—संज्ञा पुं० [सं० गंड, कांड या खंड ?] [स्त्री० गँडी] १. किसी पेड़, पौधे या डंठल का छोटा कटा खंड, जैसे—ईख का गाँडा। २ ईख का छोटा कटा टुकड़ा। गँडेरी।

गांडीव—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष जिसके लिये महाभारत में कथा है कि इसे ब्रह्मा ने प्रजापति को दिया था और प्रजापति ने इंद्र को दिया। इंद्र ने यह धनुष सोम को दे दिया जिससे वरुण ने पाया। अंत में अग्नि ने वरुण से लेकर उसे अर्जुन को दिया। यह गांडी या वज्रग्रंथि का बना था। गांडिव।

गाँती—संज्ञा स्त्री० दे० "गाती"।

गाँथना(पु)—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १ गूँथना। गूँधना। २ मोटी सिलाई ना।

गांधर्व—वि० [सं०] १ गंधर्व संबंधी। २ गंधर्वदेशोत्पन्न। ३ गंधर्व जाति का।

संज्ञा पुं० [सं०] १ सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर, तालादि का वर्णन है। गंधर्वविद्या। गंधर्ववेद। २ गानविद्या। संगीतशास्त्र। ३ आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो वर और कन्या की स्वेच्छा मात्र से होता है। यह विवाह क्षत्रियों के लिये विहित है।

गांधर्ववेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सामवेद का उपवेद। २ संगीत शास्त्र।

गांधार—संज्ञा पुं० [सं०, फा० कंदहार] १ सिंधु नद के पश्चिम का देश। २ [स्त्री० गांधारी] गांधार देश का रहनेवाला। ३ संगीत में सात स्वरों में तीसरा स्वर।

गांधारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गांधार देश की स्त्री या राजकन्या। २ धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता का नाम।

गांधी—संज्ञा स्त्री० [सं० गांधिक] १ हरे रंग का एक छोटा कीड़ा। २ एक घास। †३. हींग। ४ इत्र और सुगंधित तेल बेचनेवाली जाति। गंधी। ५ गुजराती वैश्यों की एक जाति। ६ महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी।

गांभीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. गहराई। गंभीरता। २ स्थिरता। अचंचलता। ३ हर्ष, क्रोध, भय आदि मनोवेगों से चंचल न होने का गुण। शांति का भाव। धीरता। ४ गूढ़ता। गहनता।

गाँव—संज्ञा पुं० [सं० ग्राम] १ ग्राम। किसानों की छोटी बस्ती। खेड़ा। २ नगर से भिन्न, खेतों पर अवलंबित लोगों की बस्ती। ३ ऐसी बस्ती के सब लोग।

गाँस—संज्ञा स्त्री० [सं० √ग्रस्] १. रोक-टोक। बंधन। २ वैर। द्वेष। ईर्ष्या। ३ हृदय की गुप्त बात। भेद की बात। रहस्य। ४ गाँठ। फंदा। गठन। ५ तीर या बरछी का फल। †६ वश। अधिकार। शासन। ७ देखरेख। निगरानी। ८ अड़चन। कठिनता। संकट।

गाँसना—क्रि० स० [सं० ग्रसन] १ एक दूसरे से लगाकर कसना। गूथना। २ सालना। छेदना। चुभोना। ३. ताने में कसना जिससे बुनावट ठस हो।

मुहा०—बात को गाँसकर रखना=मन में बैठाकर रखना। हृदय में जमाना। †४ वश में रखना। शासन में रखना।

५ पकड़ में करना। दबोचना। ६ ठूसना। भरना।

गाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर या बरछी आदि का फल। हथियार की नोक। २. गाँठ। गिरह। ३ कपट। छल-छंद। ४ मनोमालिन्य।

गाइ, गाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "गाय"।

गाकरी†—संज्ञा स्त्री० [?] १ लिट्टी। बाटी। २ रोटी।

गागर, गागरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"।

गाच—संज्ञा स्त्री० [अं० गाज] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिसपर रेशमी बेल-बूटे बने रहते हैं। फुलवर।

गाछ—संज्ञा पुं० [सं० गच्छ] १. छोटा पेड़। पौधा। २ पेड़। वृक्ष।

गाज—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्ज] १ गर्जन। गरज। शोर। २ बिजली गिरने का शब्द। वज्रपातध्वनि। ३ बिजली। वज्र।

मुहा०—किसी पर गाज पड़ना=आफत आना। ध्वंस होना। नाश होना।

संज्ञा पुं० [अनु० गजगज] फेन। झाग।

गाजना—क्रि० अ० [सं० गर्जन प्रा० गज्जन] १ शब्द करना। हुंकार करना। गरजना। चिल्लाना। २ हर्षित होना। प्रसन्न होना।

मुहा०—गाल गाजना=हर्षित होना।

गाजर—संज्ञा स्त्री० [सं० गृंजन] मूली की आकृति का एक मीठा कंद जो कच्चा तथा तरकारी, मुरब्बा आदि बनाकर खाया जाता है।

मुहा०—गाजर मूली समझना=तुच्छ समझना।

गाजा—संज्ञा पुं० [फा०] मुँह पर मलने का एक प्रकार का रोगन।

गाजी—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे। विधर्मियों को कत्ल करनेवाला। २ बहादुर। वीर।

गाञो(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गाँव"। उ०—जहाँ जाइअ जेहे गाञो, भोगाइ रजा क बड़ि नाओ।

गाड़—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्त] १ गड़हा। गड्ढा। उ०—ठोढ़ी की गाड़ नखच्छत मूँदौ न 'दासजू' होती यों बेसुधि कामी।—शृंगार०। २ वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। ३. कुएँ की ढाल। भगाड़।

गाड़ना—क्रि० स० [हिं० गाड़] १. गड्ढे में दबाना या ढकना। जमीन में दफनाना।

२ धरती में धँसाना। ३ छिपाना। गुप्त रखना।

गाडर—संज्ञा स्त्री० [सं० गड्डरिका] भेड़।

गाडरू—संज्ञा पुं० [सं० गारुडी] मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारनेवाला।

गाड़ा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शकट ?] गाड़ी। छकड़ा। बैलगाड़ी।

संज्ञा पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] वह गड्ढा जिसमें छिपकर लोग शत्रु, डाकू आदि का पता लेते थे।

गाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकट ?] पहिए-वाली सवारी। उ०—बैलगाड़ी, फिटन, मोटर, रेल आदि।

गाड़ीखाना—संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी+खाना] वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रहती हों।

गाड़ीवान—संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी+वान (प्रत्य०)] १ गाड़ी हाँकनेवाला। २ कोचवान।

गाढ़—वि० [सं० गाढ] १. अधिक। बहुत। अतिशय। २. दृढ़। मजबूत। उ०—काठहि काह गाढ़ का ढीला ? । बूड़ न समुद, मगर नहिं लीला।—पद्मावत।

३ घना। गाढ़ा। जो पानी की तरह पतला न हो। ४ गहरा। अथाह। ५ विकट। कठिन। दुरूह। दुर्गम।

संज्ञा पुं० कठिनाई। आपत्ति। संकट। उ०—सदा पिरीतम गाढ़ करेई। ओहि न भुलाइ, भूलि जिउ देई।—पद्मावत।

गाढ़ा—वि० [सं० गाढ] [स्त्री० गाढ़ी] १. जिसमें अधिक तरलता या पतलापन न हो। २ जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस। मोटा (कपड़े आदि के लिये)। ३ घनिष्ठ। गहरा। गूढ़। ४. बढ़ाचढ़ा। ५ घोर। कठिन। विकट।

मुहा०—गाढ़े की कमाई=बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। गाढ़े का साथी या संगी=संकट में समय का मित्र। विपत्ति के समय सहारा देनेवाला। गाढ़े दिन=संकट के दिन।

संज्ञा पुं० [सं० गाढ] १ एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २ मस्त हाथी।

गाढ़े(पु)—क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १ दृढ़ता से। जोर से। २ अच्छी तरह।

गाणपत—वि० [सं०] गणपतिसंबंधी।

संज्ञा पुं० एक संप्रदाय जो गणेश की उपासना करता है।

गाणपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ गणेश का उपासक। २ वह सम्प्रदाय जिसमें सबसे बड़े देवता गणेश जी माने जाते हैं। ३ नेतृत्व।

गात—संज्ञा पुं० [सं० गात्र] १. शरीर। अंग। २. पान का एक भेद।

गाता—वि० [सं० गातृ] गानेवाला।

गाती—संज्ञा स्त्री० [सं० गात्री] १ वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं। २ चद्दर या अँगोछा लपेटने का एक ढंग।

गात्र—संज्ञा पुं० [सं०] अंग। देह। शरीर।

गाथ—संज्ञा पुं० [सं० गाथा] यश। प्रशंसा।

गाथना—क्रि० स० दे० "गाँथना"।

गाथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्तुति। २ वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। ३ प्राचीन काल की ऐतिहासिक रचना जिसमें लोगों के दान, यज्ञादि का वर्णन होता था। ४ आर्यावृत्त। ५. एक प्रकार की प्राचीन भाषा। ६ श्लोक। ७ गीत। ८. कथा। वृत्तांत। ९ पारसियों के धर्मग्रंथ का एक भेद। १० छोटे छोटे प्रसंगों पर बने हुए पद्य और उनका संग्रह, जैसे, गाथा सप्तशती।

गाद—संज्ञा स्त्री० [सं० गाध] १ तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २ तेल की कीट। ३ गाढ़ी चीज।

गादड़, गादर—वि० [सं० कातर या कदर्य, प्रा० कादर] कायर। डरपोक। भीरु।

संज्ञा पुं० [स्त्री० गादड़ी] गीदड़। सियार।

गादा—संज्ञा पुं० [सं० गाध=कम गहरी जगह] १ खेत का वह अन्न जो अच्छी तरह न पका हो। अधपका अन्न। गदर। २ बेपकी फसल। कच्ची फसल। ३ बरगद का फल।

गादी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] १ एक पकवान। †२ दे० "गद्दी"।

गादुर—संज्ञा पुं० दे० "चमगादड़"। उ०—भलो कहै बिन जानेहू, बिनु जाने अपवाद। ते नर गादुर जानि जिय करिय न हरष विषाद।—दोहा०।

गाध—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। छिछली भूमि। कम गहरी जगह। थाह। ३ नदी का बहाव। कूल। ४ लोभ। कामना। अभिलाषा।

वि० [स्त्री० गाधा] १ जिसे हलकर पार कर सकें। जो बहुत गहरा न हो। छिछला। पायाब। २ थोड़ा। स्वल्प।

गाधि—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के पिता।

गान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गेय, गेतव्य] १ गाने की क्रिया। संगीत। गाना। २ गाने की चीज। गीत।

गाना—क्रि० स० [सं० गान] १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २. मधुर ध्वनि करना। ३ वर्णन करना। विस्तार के साथ कहना।

मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते जाना। अपना ही हाल कहना।

४ स्तुति करना। प्रशंसा करना।

संज्ञा पुं० १ गाने की क्रिया। गान। २ गाने की चीज। गीत।

गाफिल—वि० [अ०] [संज्ञा गफलत] १ बेसुध। बेखबर। २. असावधान।

गाभ—संज्ञा पुं० [सं० गर्भ, प्रा० गब्भ] १ पशुओं का गर्भ। २ दे० "गाभा"। ३. मध्य।

गाभा—संज्ञा पुं० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १ नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता। नया कल्ला। कोंपल। २ केले आदि के डंठल के अंदर का भाग। ३ लिहाफ, रजाई आदि के अंदर की निकाली हुई पुरानी रूई। गुदड़। ४ कच्चा अनाज। खड़ी खेती।

गाभिन, गाभिनी—वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी (चौपायों के लिये)।

गाम—संज्ञा पुं० [सं० ग्राम] गाँव।

गामी—वि० [सं० गामिन्] [स्त्री० गामिनी] १ चलनेवाला। चालवाला। २ गमन करनेवाला। जानेवाला। ३ संभोग करनेवाला।

गाय—संज्ञा स्त्री० [सं० गो] १ सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है। बैल की मादा। २ बहुत सीधा मनुष्य। दीन मनुष्य।

गायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गायिका, गायकी] गानेवाला। गवैया।

गायकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गानेवाली स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [सं० गायक] १. गानविद्या का पूरा ज्ञान। २. गानविद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना। ३ गानविद्या।

गायगोठ—संज्ञा स्त्री० दे० "गोशाला"।

गायताल—संज्ञा पुं० दे० "गत्तालखाता"।

गायत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चौबीस वर्णों का तीन चरणों में विभक्त एक वैदिक छंद। २ इस छंद में बना स्तोत्र, मंत्र या गान। ३. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्व का माना जाता है। ४. खैर। ५ दुर्गा। ६ गंगा। ७. छ अक्षरों के प्रत्येक चरण का एक वर्णवृत्त।

गायन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गायिनी] १. गानेवाला। गवैया। गायक। २ गान। गाना। ३. कार्तिकेय।

गायब—वि० [अ०] लुप्त। अंतर्धान।

गायबाना—क्रि० वि० [अ०] पीठ पीछे। अनुपस्थिति में।

गायिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गानेवाली स्त्री। २. एक मात्रिक छंद।

गार—संज्ञा पुं० [अ०] १. गहरा गड्ढा। २ गुफा। कंदरा।

संज्ञा स्त्री० दे० "गाली"।

गारत—वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

गारद—संज्ञा स्त्री० [अं० गार्ड] सैनिकों या सिपाहियों का दस्ता जो किसी व्यक्ति, स्थान या नगर की रक्षा आदि पर नियुक्त हो। पहरा। चौकी।

गारना—क्रि० स० [सं० गालन] १ दबाकर पानी या रस निकालना। निचोड़ना। २ पानी के साथ घिसना, जैसे—चंदन गारना। (पु) ३ निकालना। त्यागना।

(पु)† क्रि० स० [सं०√गल्] १ गलाना।

मुहा०—तन या शरीर गारना=शरीर गलाना। शरीर को कष्ट देना। तप करना।

२. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. किसी का अभिमान चूर्ण करना।

गारा—संज्ञा पुं० [सं०√गल्] १. मिट्टी अथवा चूने, सुर्खी आदि का लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है। २ कीचड़।

गारी(पु)—संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "गाली"।

गारुड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप का विष उतारने का मंत्र। २. सेना की एक व्यूह-रचना। ३ सुवर्ण। सोना।

वि० गरुड़ संबंधी।

गारुड़ि—संज्ञा पुं० दे० "गारुडी"। उ०—ससय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता। तव सरूप गारुड़ि रघुनायक। मोहिं जिआएउ जनसुखदायक। —मानस।

गारुड़ी—संज्ञा पुं० [सं० गारुडिन्] मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।

गारो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गर्व, प्रा० गारव] गर्व। घमंड। अहंकार।

संज्ञा पुं० [सं० गौरव] महत्व का भाव। बड़प्पन। मान।

संज्ञा पुं० [देश०] आसाम प्रांत की एक जाति।

गारौ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गौरव] मान बड़प्पन। महत्व। उ०—जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्व। कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्व।—पदमावत।

गार्गी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री। २. दुर्गा। ३. याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री।

गार्जियन—संज्ञा पुं० [अं०] (नाबालिगों आदि का) अभिभावक। सरक्षक।

गार्ड—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह जो रक्षा आदि के लिये नियुक्त हो। रक्षक। २ रेलगाड़ी की रक्षा के लिये साथ रहनेवाला उसका जिम्मेदार कर्मचारी।

गार्हपत्याग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कर्मकांड के अनुसार छ प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।

गार्हस्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ गृहस्थ का धर्म या कर्तव्य। २ जीवन के चार विभागों में से दूसरा विभाग जिसमें गृहस्थी चलाना मनुष्य का कर्तव्य माना जाता है (धर्म शास्त्र)। गृहस्थाश्रम।

गाल—संज्ञा पुं० [सं० गड, गल्ल] १ मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग। गंड। कपोल।

मुहा०—गाल फुलाना=रूठकर न बोलना। रूठना। रिसाना। गाल बजाना या मारना=डींग मारना। बढ़ बढ़कर बातें करना।

२ डाढ़। मुख।

मुहा०—काल के गाल में जाना=मृत्यु के मुख में पड़ना।

३ बकवाद करने की लत। मुँहजोरी।

मुहा०—गाल करना=(१) मुँहजोरी करना। मुँह से अंडबंड निकालना। (२) बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

४. मध्य। बीच। ५ उतना अन्न जितना एक बार मुँह में डाला जाय। फंका। ग्रास।

गालगूल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० गाल+अनु० गूल] व्यर्थ बात। गपशप। अनापशनाप। उ०—कहु के लहे फल रसाल बबुर बीज बपत। हारहि जनि जनम जाय गालगूल गपत।—विनय०।

गालमसूरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पकवान या मिठाई।

गालव—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरण। ३ लोध का पेड़। ४ एक स्मृतिकार।

गाला—संज्ञा पुं० [हिं० गाल=ग्रास] धुनी हुई रूई का गोला जो चरखे में कातने के लिये बनाया जाता है। पूनी।

मुहा०—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल।

†संज्ञा पुं० [हिं० गाल] १. बड़बड़ाने की लत। अंडबंड बकने का स्वभाव। मुँहजोरी। कल्लेदराजी। २ ग्रास।

गालिब—वि० [अ०] १ जीतनेवाला। बढ़ जानेवाला। विजयी। श्रेष्ठ। २. उर्दू के एक विख्यात कवि।

गालिम(पु)—वि० दे० "गालिब"।

गाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोष में कही हुई कुल, शील, योग्यता आदि के विषय में अपमान या लज्जाजनक उक्ति। २. कलंकसूचक आरोप। दुर्वचन।

मुहा०—गाली खाना=दुर्वचन सुनना। गाली सहना। गाली देना=दुर्वचन कहना।

गालीगलौज—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाली+अनु० गलौज] परस्पर गाली देना। तू तू मैं मैं। दुर्वचन।

गालीगुफ्ता—संज्ञा पुं० दे० "गालीगलौज"।

गालना, गाल्हना(पु)†—क्रि० अ० [सं० गल्प=बात] बात करना। बोलना।

गालू—वि० [हिं० गाल+ऊ(प्रत्य०)] १ गाल बजानेवाला। व्यर्थ डींग मारनेवाला। २ बकवादी। गप्पी।

गाव—संज्ञा पुं० [फा०] गाय।

गावकुशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गोवध।

गावजबान—संज्ञा स्त्री० [फा०] फारस या ईरान में होनेवाली एक बूटी जो दवा के काम आती है।

गावतकिया—संज्ञा पुं० [फा०] बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फर्श पर बैठते है। मसनद।

गावदी—वि० [हिं० गाय+सं० धी] कुंठित बुद्धि का। अबोध। नासमझ। बेवकूफ। मूर्ख।

गावदुम—वि० [फा] १ जो ऊपर से गाय की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २ चढ़ाव-उतारवाला। ढालुवाँ।

गासिया—संज्ञा पुं० [अ० गाशिया] जीन-पोश।

गाह—संज्ञा पुं० [सं० ग्राह] १. ग्राहक। गाहक। २ पकड़। घात। ३. ग्राह।

गाहक—संज्ञा पुं० [सं०] अवगाहन करनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं० ग्राहक] १ खरीदार। मोल लेनेवाला। २ कदर करनेवाला। चाहनेवाला, जैसे—किसी का गुनगाहक होना।

मुहा०—जी या प्राण का गाहक=(१) प्राण लेनेवाला। मार डालने की ताक में रहनेवाला। (२) दिक करनेवाला।

गाहकताईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्राहकता] कदरदानी। चाह।

गाहकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाहक] १. बिक्री। २ गाहक।

गाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गाहित] गोता लगाना। विलोड़न। स्नान।

गाहना—क्रि० स० [सं० अवगाहन] १ डूबकर थाह लेना। अवगाहन करना। २ मथना। विलोड़ना। हलचल मचाना। ३ धान आदि के डंठल को झाड़ना जिसमें दाना नीचे झड़ जाय। ओहना।

गाहाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० गाथा] १ कथा। वर्णन। चरित्र। वृत्तांत। २ आर्या छंद का एक भेद।

गाही—संज्ञा स्त्री० [सं० √ग्रह्] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।

गाहू—संज्ञा स्त्री० [?] आर्या छंद का एक भेद। उपगीति छंद।

गिंजना—क्रि० अ० [हिं० √ गींज] किसी चीज (विशेषत कपड़े) का उलटे पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना। गींजा जाना।

गिंजाई—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।

संज्ञा स्त्री० [हिं०√गींज+आई (प्रत्य०)] गींजने का भाव।

गिंडुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "इंडुआ"।

गिंदौड़ा गिंदौरा—संज्ञा पुं० [हिं० गेंद ?] मोटी रोटी के आकार में ढाली हुई चीनी।

गिआनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान"।

गिउⓅ—संज्ञा पुं० [सं० ग्रीवा] गला। गरदन। उ०—माते पिते जनम कित पाला। जो अस फाँद पेम गिउ घाला।—पद्मावत।

गिचपिच—वि० [अनु०] जो साफ या क्रम से न हो। अस्पष्ट।

गिचिर पिचिर—वि० दे० "गिचपिच"।

गिजगिजा—वि० [अनु०] १ ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न लगे। २ जो छूने में मासल मालूम हो।

गिजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] भोजन। खुराक।

गिटकिरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।

गिटपिट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] निरर्थक शब्द।

मुहा०—गिटपिट करना=टूटी फूटी या साधारण अँगरेजी भाषा बोलना।

गिट्टक—संज्ञा स्त्री० [?] चिलम के नीचे रखने का कंकर। चुगल।

गिट्टी—संज्ञा स्त्री० [?] १ पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। २ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ठीकरी। ३ चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] अत्यंत दीन होकर प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गिड़गिड़ाना (=गिड़गिड़ाना)+आहट (प्रत्य०)] १ विनती। २. गिड़गिड़ाने का भाव।

गिद्ध—संज्ञा पुं० [सं० गृध्र] १ एक प्रकार का बड़ा मांसाहारी पक्षी। २ छप्पय छंद का ५२वाँ भेद।

गिद्धराज—संज्ञा पुं० [हिं० गिद्ध+राज] जटायु।

गिधयाना—क्रि० स० [सं०√गृध् या गर्धन] परचाना। परिचित करना।

गिनती—संज्ञा स्त्री० [हिं०√गिन+ती (प्रत्य०)] १ संख्या। गणना। शुमार। २ मूल महत्व। ३ उपस्थिति की जाँच। हाजिरी (सिपाहियों के लिये)।

मुहा०—गिनती के=बहुत थोड़े। गिनती गिनाने के लिये=नाम मात्र के लिये। कहने सुनने भर को। गिनती में आना या होना=कुछ महत्व का समझा जाना।

४ एक से सौ तक की अंकावलि।

गिनना—क्रि० स० [सं० गणन] १. गणना या संख्या निश्चित करना।

मुहा०—दिन गिनना=(१) आशा में समय बिताना। (२) किसी प्रकार कालक्षेप करना।

२. गणित करना। हिसाब लगाना। ३. कुछ महत्व का समझना। खातिर में लाना।

गिनवाना—क्रि० स० दे० "गिनाना"।

गिनाना—क्रि० स० [हिं० गिनना का प्रे० रूप] गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिन्नी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ सोने का सिक्का। २. एक विलायती घास।

गिन्नी—संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी"।

गिब्बन—संज्ञा पुं० [अं०] लंबी भुजाओंवाला एक प्रकार का बंदर (विशेषत. पूर्वी द्वीपसमूह में रहनेवाला)।

गिमटी—संज्ञा स्त्री० [अं० डिमिटी] पलँगपोश, पर्दे आदि का एक प्रकार का बूटीदार मजबूत कपड़ा।

गियⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गिउ"।

गियाह—संज्ञा पुं० [?] एक तरह का घोड़ा।

गिरंदा—संज्ञा पुं० [फा०] फंदा लगानेवाला। फाँसनेवाला।

गिर—संज्ञा पुं० [सं० गिरि] १. पहाड़। पर्वत। २ संन्यासियों के दस भेदों में से एक।

गिरई—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गिरगिट—संज्ञा पुं० [सं० कृकलास] छिपकली की जाति का पेड़ों पर रहनेवाला एक जंतु जो अपना रंग बदल सकता है और अधिक समय तक बिना खाए जी सकता है। गिरगिटान।

मुहा०—गिरगिट की तरह रंग बदलना=बहुत जल्दी संमति या सिद्धांत बदल देना।

गिरगिरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] लड़कों का एक खिलौना।

गिरजा—संज्ञा पुं० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थनामंदिर।

संज्ञा स्त्री० [सं० गिरिजा] पार्वती।

गिरदा—संज्ञा पुं० [फा० गिर्द] १ घेरा। चक्कर। २ तकिया। गेंडुआ। बालिश। ३

काठ की थाली जिसमें हलवाई मिठाई रखते हैं। ४ ढाल। फरी।

गिरदान†—संज्ञा पुं० [हिं० गिरगिट] गिरगिट।

गिरदावर—संज्ञा पुं० दे० "गिर्दावर"।

गिरधर—संज्ञा पुं० दे० "गिरिधर"।

गिरना—क्रि० अ० [सं० गलन] १ एकदम ऊपर से नीचे आ जाना। अपने स्थान से नीचे आ रहना। पतित होना। २ खड़ा न रह सकना। जमीन पर पड़ जाना। ३ अवनति या घटाव पर होना। बुरी दशा में होना। ४. किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना। ५ शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना। ६. बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना। टूटना। ७ अपने स्थान से हट, निकल या मुड़ जाना। ८ किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर की ओर से नीचे को आता माना जाता है, जैसे—फालिज गिरना। ९ सहसा उपस्थित होना। प्राप्त होना। १०. लड़ाई में मारा जाना।

गिरनार—संज्ञा पुं० [सं० गिरि+हिं० नार=नगर] [वि० गिरनारी] जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर है। रैवतक पर्वत।

गिरफ्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पकड़। २ दोष का पता लगाने का ढंग।

गिरफ्तार—वि० [फा०] १. जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो। २ ग्रसा हुआ। ग्रस्त।

गिरफ्तारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया।

गिरमिट—संज्ञा पुं० [अँ० गिमलेट] (लकड़ी में छेद करने का) बड़ा बरमा।

†संज्ञा पुं० [अँ० एग्रीमेंट=इकरारनामा] १ इकरारनामा। शर्तनामा। २ स्वीकृति या प्रतिज्ञा। इकरार।

गिरवानⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "गीर्वाण"।

संज्ञा पुं० [फा० गरेवान] १ अंगे या कुरते का वह गोल भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता है। २ गर्दन। गला।

गिरवाना—क्रि० स० [हिं० गिराना का प्रे० रूप] गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी—वि० [फा०] गिरो रखा हुआ। बंधक। रेहन।

गिरवीदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो।

गिरह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गाँठ। ग्रंथि। २ उलझन। ३. बैर। ४. जेब। खीसा। खरीता। ५. दो पोरों के जुड़ने का स्थान। ६. एक गज का सोलहवाँ भाग। ७. कलैया। कलाबाजी।

गिरहकट—वि० [फा० गिरह=गाँठ + हिं० काट] जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला। चाई।

गिरहबाज—संज्ञा पुं० [फा०] एक जाति का कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिरहीⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "गृही"।

गिराँ—वि० [फा० गराँ] १. जिसका दाम अधिक हो। महँगा। २ भारी। हलका का उलटा। ३ जो भला न मालूम हो। अप्रिय।

गिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाणी की शक्ति। बोलने की ताकत। २ जिह्वा। जीभ। जबान। ३ वचन। वाणी। कलाम। ४ सरस्वती देवी।

गिराना—क्रि० स० [हिं० गिरना का स० रूप] १ नीचे टालना। पतन करना। २ लुढ़काना ३. अवनत करना। घटाना। ४. बहाना ५ शक्ति या स्थिति आदि में कमी करना। ६ किसी चीज को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। ७ ढहाना। ८ सहसा उपस्थित करना। ९ लड़ाई में मार डालना।

गिरानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. महँगापन। महँगी। २ अकाल। कहत। ३ कमी। अभाव। टोटा। ४ पेट का भारीपन।

गिरापति—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

गिरापितुⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गिरा+पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गिर+आवट (प्रत्य०)] गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरासⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ग्रास"।

गिरासना†Ⓟ—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गिराहⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ग्राह"।

गिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २ दशनामी संप्रदाय के अंतर्गत एक प्रकार के संन्यासी। ३ परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। गौरी। २ गंगा।

गिरिधर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गिरिधारनⓅ—दे० "गिरिधर"।

गिरिधारी—संज्ञा पुं० [सं० गिरिधारिन्] श्रीकृष्ण।

गिरिनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा। ३ नदी।

गिरिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

गिरिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। २. पहाड़ी रास्ता।

गिरिराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा पर्वत। २ हिमालय। ३ गोवर्द्धन पर्वत। ४ मेरु।

गिरिव्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १ केकय देश की राजधानी। २ प्राचीन मगध के राजा जरासंध की राजधानी जिसे पीछे राजगृह कहते थे।

गिरिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] मैनाक पर्वत।

गिरिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

गिरींद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा पर्वत। २ हिमालय। ३ शिव।

गिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गरिका] वह गूदा जो बीज के अंदर से निकलता है।

Ⓟ संज्ञा पुं० दे० "गिरि"।

गिरीश—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २ हिमालय पर्वत। ३ सुमेरु पर्वत। ४ कैलाश पर्वत। ५ गोवर्द्धन पर्वत। ६ कोई बड़ा पहाड़।

गिरैयाँ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गेराँव] गले का छोटा रस्सा।

गिरो—वि० [फा०] रेहन। बंधक। गिरवी।

गिर्द—अव्य० [फा०] आसपास। चारों ओर।

यौ०—इर्द गिर्द=अगल बगल। आसपास।

गिर्दावर—संज्ञा पुं० [फा०] १ घूमनेवाला। दौरा करनेवाला। २ घूम घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिल—संज्ञा स्त्री० [फा०] मिट्टी। गारा।

गिलकार—संज्ञा पुं० [फा०] गारा या पलस्तर करनेवाला व्यक्ति।

गिलकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम।

गिलगिलिया—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिरोही चिड़िया।

गिलगिली—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

गिलट—संज्ञा पुं० [अँ० गिल्ड] १ सोना

चढ़ाने का काम। २ चाँदी सी सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।

गिलटी—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि ?] १. शरीर पोषण के लिये उपयोगी रस बनानेवाला या अनुपयोगी पदार्थ बाहर निकालनेवाला ग्रंथि के आकार का अवयव, जैसे, यकृत, वृक्क, वृषण आदि। ग्रंथि।

२ एक रोग जिसमें ये गाँठें विकृत हो जाती हैं, सूज जाती हैं और कष्टदायी हो जाती हैं।

गिलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गिलित] निगलना। लीलना।

गिलना—क्रि० स० [सं० गिलन] १. बिना दाँतों से तोड़े गले में उतार जाना। निगलना। २ मन ही मन में रखना। प्रकट न होने देना।

गिलबिलाना—क्रि० अ० [अनु०] अस्पष्ट ध्वनि में कुछ कहना।

गिलम—संज्ञा स्त्री० [फा० गिलीम= कंबल] १. नरम और चिकना ऊनी कालीन। २ मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना।

वि० कोमल। नरम।

गिलमिल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

गिलहरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धारीदार कपडा। दे० "बेलहरा"।

गिलहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गिरिका= चुहिया] चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु जो पेड़ों पर रहता है। गिलाई। चेखुरा।

गिला—संज्ञा पुं० [फा०] १. उलाहना। २ शिकायत। निंदा।

गिलानⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गिलाफ—संज्ञा पुं० [अ०] १ कपड़े का थैला जो तकिए, लिहाफ आदि के ऊपर चढ़ा दिया जाता है। खोल। †२ बड़ी रजाई। लिहाफ। ३ म्यान।

गिलावा†—संज्ञा पुं० [फा० गिल+आब], गीली मिट्टी जिससे ईंट पत्थर जोड़ते हैं। गारा। उ०—हीरा ईंट कपूर गिलावा। मलयागिरि चंदन सब लावा।—पद्मावत।

गिलास—संज्ञा पुं० [अं० ग्लास] १ पानी, दूध आदि पीने का एक गोलाई लिए लंबा बरतन। २ आलूबालू या ओलची नाम का पेड़।

गिलिम—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलम"।

गिली—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल्ली"।

गिलोय—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुरुच। गडूची।

गिलोला—संज्ञा पुं० [फा० गुलेला] मिट्टी का छोटा गोला जो गुलेल से फेंका जाता है।

गिलौरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पान का बीडा।

गिलौरीदान—संज्ञा पुं० [हिं० गिलौरी+फा० दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।

गिल्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलटी"।

गिल्यानⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गिल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल्ली"।

गींजना—क्रि० स० [सं० गंजन] किसी कोमल पदार्थ, विशेषत कपड़े आदि को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय।

गी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी। बोलने की शक्ति। २ सरस्वती देवी।

गीउⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "गीव"।

गीड, गीडर—संज्ञा पुं० [सं० किट्ट] आँख का कीचड या मैल।

गीत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाता हो। गाना।

मुहा०—गीत गाना=बड़ाई करना। प्रशंसा करना। अपना ही गीत गाना= अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना।

२ बड़ाई। यश।

वि० [सं०] गाया हुआ।

गीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुरु-शिष्य के संवाद के रूप में लिखित ब्रह्मज्ञान-संबंधी पद्य ग्रंथ। २ महाभारत के भीष्म पर्व में वर्णित १८ अध्यायोंवाला वह पद्यात्मक उपदेश जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था। भगवद्गीता। ३. २६ मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में क्रम से एक गुरु और एक लघु मात्रा होती है। उ०—दुहुँ लोक में कल्याणकर, यह मेट भव को शूल। तातें कहौं प्यारे करौ, उपदेश हरि ना भूल॥ ४ वृत्तांत कथा। हाल। ५ उपदेश।

गीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गान। गीत। २ आर्या छंद के भेदों में से एक जिसके विषम चरणों में १२ और सम में १८ मात्राएँ होती हैं तथा छठे में जगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—रामा रामा रामा, आठौ यामा जपौ यही नामा। त्यागौ सारे कामा, पैहौ अंते हरी जू को धामा॥

गीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. २६ मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में क्रम से एक लघु और एक गुरु होता है। उ०—पाय के नर जन्म प्यारे, कृष्ण के गुण गाइए। पाद पंकज हीय में धरि, जन्म को फल पाइए॥ २. गीत। गाना।

गीतिकाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मुक्तक काव्य जो गाया जा सके।

गीतिरूपक—संज्ञा पुं० [सं० गीति+रूपक] वह रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक होता है।

गीदड—संज्ञा पुं० [सं० गृध्र, फा० गीदी] सियार। शृगाल।

यौ०—गीदड़-भभकी=मन में डरते हुए ऊपर से दिखाऊ साहस या क्रोध प्रकट करना।

वि० डरपोक। बुजदिल।

गीदी—वि० [फा०] डरपोक। कायर।

गीध—संज्ञा पुं० दे० "गिद्ध"।

गीधनाⓟ†—क्रि० अ० [सं० √गृध्=लालच करना] एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसका इच्छुक रहना। परचना।

गीबत†—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अनुपस्थिति। गैरहाजिरी। २. पिशुनता। चुगुलखोरी।

गीरⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० गी.] वाणी।

गीर्देवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

गीर्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २ विद्वान्।

गीर्वाण—संज्ञा पुं० [सं०] देवता। सुर।

गीला—वि० [हिं० √गल] [स्त्री० गीली] भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र।

गीलापन—संज्ञा पुं० [हिं० गीला+पन (प्रत्य०)] गीला होने का भाव। नमी। तरी।

गीवⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीवा"।

गीष्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २ विद्वान्। पंडित।

गुंग, गुंगा—संज्ञा पुं० दे० "गूँगा"।

गुंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँगा] दोमुहाँ साँप। चुकरैंड।

गुंगुआना—क्रि० अ० [अनु०] १. धुआँ देना। अच्छी तरह न जलना। २ गूँ गूँ शब्द करना। गूँगे की तरह बोलना।

गुंचा—संज्ञा पुं० [अ०] १. कली। कोरक। २ नाचरंग। विहार। जश्न।

गुंचीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "घुँघची"।

गुंज—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भौंरों के

भनभनाने का शब्द। गुंजार। २ आनंद ध्वनि। कलरव। ३ दे० "गुंजा"।
गुंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भौंरों का गूँजना। भनभनाहट। कोमल मधुर ध्वनि।
गुंजना—क्रि० अ० [सं०√गुंज्] भौंरों का भनभनाना। मधुर ध्वनि निकालना। गुनगुनाना।
गुंजनिकेतन—संज्ञा पुं० [सं० गुंज+निकेतन] भौंरा। मधुकर।
गुंजरना—क्रि० अ० [हिं० गुंजार से ना० धा०] १ गुंजार करना। भौंरों का गूँजना। भनभनाना। २ शब्द करना। गरजना।
गुंजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची नाम की लता।
गुंजाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अँटने की जगह। समाने भर को स्थान। अवकाश। २ समाई। सुभीता।
गुंजान—वि० [फा०] घना। अविरल। सघन।
गुंजायमान—वि० [सं०] गुंजारता हुआ। गूँजता हुआ।
गुंजार—संज्ञा पुं० [सं० गुंज+हिं० आर (प्रत्य०)] भौंरों की गूँज। भनभनाहट।
गुंजारित—वि० दे० "गुंजित"।
गुंजित—वि० [सं०] भौंरों आदि के गुंजन से युक्त। जिसमें गुंजार हो।
गुंठा—संज्ञा पुं० [सं० गठित ?] एक प्रकार का नाटे कद का घोड़ा। टाँगन। † वि० वि० [देश०] नाटा। बौना।
गुंड—संज्ञा पुं० [?] रागों का एक भेद। उ०—पिकबयनी मृगलोचनी सारद ससि सम तुंड। राम सुजस सब गावहीं सुसुर सुसारँग गुंड।—गीता०।
गुंडई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुंडा+ई (प्रत्य०)] गुंडापन। बदमाशी।
गुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] १. फेंटा। कुंडली। २ गेंडुरी। ईंडुरी।
गुंडा—वि० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी] १ बदचलन। कुमार्गी। बदमाश। २ छैला। चिकनिया।

संज्ञा पुं० [?] गोला। उ०—अति गह सुमर पोदाए पाए ले मौंग क गुंडा।
गुंडापन—संज्ञा पुं० [हिं० गुंडा+पन (प्रत्य०)] बदमाशी।
गुँथना—क्रि० अ० [सं० गुत्स, गुत्थ=गुच्छा] १. तागों, बाल की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बँधना। २ एक में उलझकर मिलना। उलझकर बँधना। ३ मोटे तौर पर सिलना। नत्थी होना। ४ गूँथा जाना। माड़ा जाना।
गुँदला—संज्ञा पुं० [सं० गुंडाला] नागरमोथा।
गुँधना—क्रि० अ० [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सानकर मसला जाना। गूँधा जाना।

†क्रि० अ० दे० "गुँधना"।
गुँधवाना—क्रि० स० [हिं० गूँधना का प्रे० रूप] गूँधने का काम दूसरे से कराना। गुँथवाना।
गुँधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√गूँध+आई (प्रत्य०)] गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव। २ गूँधने या माड़ने की मजदूरी।
गुँधावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√गूँध+आवट (प्रत्य०)] गूँधने या गूँधने की क्रिया या ढंग।
गुंफ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुंफित] १. उलझन। फँसाव। गुत्थमगुत्थी। २ गुच्छा। ३ दाढ़ी। गलमुच्छा। ४ कारणमाला अलंकार।
गुंफन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुंफित] उलझाव। फँसाव।
गुंबज—संज्ञा पुं० [फा० गुंबद] गोल और ऊँची छत।
गुंबजदार—वि० [फा० गुंबद+दार] जिसपर गुंबज हो।
गुंबद—संज्ञा पुं० दे० "गुंबज"।
गुंबा—संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अंब=आम] वह कड़ी, गोल सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमा।
गुंभी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० गुंफ] अंकुर। गाभ।
गुंमज—संज्ञा पुं० [हिं० गुंबज] गुंबद। उ०—चक्रवती द्वै एकत्र भए मनो जोम के तोम दुहूँ उर बाढे। गुच्छ के गुंमज के गिरि के गिरिराज के गर्व गिरावत ठाढे।—शृंगार०।
गुआ—संज्ञा पुं० [सं० गुवाक] १ चिकनी सुपारी। २ सुपारी। उ०—निकस्यो कंपित कंठस्वर निरखे स्याम प्रबीन। गुआ लगी कहि ग्वालि यों डारि दियो महि बीन।—रससाराश।
गुइयाँ—संज्ञा स्त्री०, पुं० [हिं० गोहन] १ साथी। सखा। गोइयाँ। २ सखी। सहचरी।
गुग्गुल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक काँटेदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये जलाते और दवा के काम में लाते हैं। गूगल। २ सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है।
गुच्ची—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह छोटा गड्ढा जो लड़के गोली या गुल्लीडंडा खेलने के लिये बनाते हैं।

वि० स्त्री० बहुत छोटी। नन्हीं।
गुच्चीपारा, गुच्चीपाला—संज्ञा पुं० [हिं० गुच्ची=गड्ढा+पारना=डालना] एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें कौड़ियाँ फेंकते हैं।
गुच्छ, गुच्छक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक में बँधे हुए फूलों या पत्तियों का समूह। गुच्छा। २. घास की जूरी। ३ वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली टहनियाँ फैलें। झाड़। ४. मोर की पूँछ।
गुच्छा—संज्ञा पुं० [सं० गुच्छ] १. एक में लगे या बँधे कई पत्तों या फलों का समूह। गुच्छा। २ एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह, जैसे, कुंजियों का गुच्छा। ३. फुँदना। झब्बा।
गुच्छी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुच्छ] १. करंज। कंजा। २ रीठा। ३. एक तरकारी जो पंजाब में विशेषतः खाई जाती है।
गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें गुच्छा हो।
गुजर—संज्ञा पुं० [फा०] १ गति। निकास २. पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३ निर्वाह। गुजारा।
गुजरना—क्रि० अ० [फा० गुजर] १ समय व्यतीत होना। कटना। बीतना।

मुहा०—किसी पर गुजरना=किसी पर (संकट या विपत्ति) पड़ना।

२ किसी स्थान से होकर आना या जाना।

मुहा०—गुजर जाना=मर जाना।

३ निर्वाह होना। निपटना। निभना।
गुजर बसर—संज्ञा स्त्री० [फा०] निर्वाह। गुजारा। कालक्षेप।
गुजरात—संज्ञा पुं० [सं० गुर्जर+राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतवर्ष के पश्चिम का एक प्रांत।
गुजराती—वि० [हिं० गुजरात+ई (प्रत्य०)] १ गुजरात का निवासी। गुजरात देश में उत्पन्न। २ गुजरात का बना हुआ।

संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा। २. छोटी इलायची।

गुजरान—संज्ञा पुं० दे० "गुजर ३"।

गुजरानाⓅ—क्रि० स० दे० "गुजारना"।

गुजरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर+इया (प्रत्य०)] १. गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। गोपी।

गुजरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर+ई (प्रत्य०)] १ कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २. दे० "गूजरी"।

गुजरेटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर+एटी (प्रत्य०)] गूजर जाति की कन्या। २ गूजरी। ग्वालिन।

गुजश्ता—वि० [फा०] बीता हुआ। गत। व्यतीत। भूत (काल)।

गुजारना—क्रि० स० [फा० गुजर] १ बिताना। काटना। २. पहुँचाना। पेश करना।

गुजारा—संज्ञा पुं० [फा०] १. गुजर। गुजरान। निर्वाह। २ वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिये दी जाय। ३ महसूल लेने का स्थान।

गुजारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] निवेदन। प्रार्थना।

गुज्जरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गूजरी। २ एक रागिनी।

गुझरौटⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० गुह्य+हिं० औट (प्रत्य०), सं० आवर्त्त] १. कपड़े की सिकुड़न। शिकन। सिलवट। २ स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग।

गुझिया—संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्यक] १ एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २. खोए की एक मिठाई।

गुझौटⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गुझरौट"।

गुटकना—क्रि० अ० [अनु०] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

†क्रि० स० १ निगलना। २ खा जाना।

गुटका—संज्ञा पुं० [सं० गुटिका] १ दे० "गुटिका"। २ छोटे आकार की पुस्तक। ३ लट्टू। ४ गुपचुप मिठाई।

गुटरगूँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कबूतरों की बोली।

गुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटिका। बटी। गोली। २ एक अभिमंत्रित गोली जिसे मुँह में रखनेवाला दूसरों को दिखाई नहीं देता।

गुटेका—संज्ञा पुं० [सं० गुटिका] दे० "गुटिका"। उ०—जब सकर सिद्धि दीन्ह गुटेका। परी हूल जोगिन्ह गढ छेंका। —पद्मावत।

गुट्ट—संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] १ समूह। झुंड। २ दल। यूथ।

गुट्ठल—वि० [हिं० गुठली] १ (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २ गुठली के आकार का। ३ जड़। मूर्ख। कूढ़मगज।

संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ। गुलथी। २ गिलटी।

गुट्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] मोटी गाँठ।

गुठली—संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो, जैसे—आम की गुठली।

गुड़ंबा—संज्ञा स० [हिं० गुड़+आँब, आम] उबालकर शीरे में डाला हुआ कच्चा आम।

गुड़—संज्ञा पुं० [सं०] पकाकर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस जो बट्टी या भेली के रूप में होता है।

मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फूटना=गुप्त रीति से कोई कार्य होना। छिपे छिपे सलाह होना।

गुड़गुड़—संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने से होता है, जैसे हुक्के में।

गुड़गुड़ाना—क्रि० अ० [हिं० गुड़गुड़] गुड़गुड़ शब्द होना।

क्रि० स० [अनु०] हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़+आहट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।

गुड़गुड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का हुक्का। पेचवान। फरशी।

गुड़च—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलोय"।

गुड़धानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़+धान+ई (प्रत्य०)] वह लड्डू जो भुने हुए गेहूँ को गुड़ में मागकर बाँधे जाते हैं।

गुड़रू—संज्ञा पुं० [देश०] गडुरी चिड़िया।

गुड़हर—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़+हर] अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

गुड़हल—संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर"।

गुड़ाकू—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़+आकू (प्रत्य०)] गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।

गुडाकेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ अर्जुन।

गुड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड्डा+इया (प्रत्य०)] कपड़ों की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।

मुहा०—गुड़ियों का खेल=सहज काम।

गुड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड्डी] पतंग। चग। कनकौवा। गुड्डी।

गुडूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—संज्ञा पुं० [सं० गुड=खेलने की गोली] गुड्डवा। कपड़े का बना हुआ पुतला।

मुहा०—गुड्डा बाँधना=अपकीर्ति करते फिरना। निंदा करना।

संज्ञा पुं०† [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग।

गुड्डी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+उड्डीन] पतंग। कनकौवा। चग।

संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १ घुटने की हड्डी। २ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुढ़ना—क्रि० अ० [सं० गूढ़] १ छिपना। २ गूढ़ अर्थ समझना, जैसे—पढ़ना-गुढना।

गुढ़ा—संज्ञा पुं० [सं० गूढ़] १ छिपने की जगह। गुप्त स्थान। २ मवास।

गुढ़ासी—संज्ञा पुं० [सं० गूढाशयी] १ अपने मन में कोई गूढ आशय रखनेवाला। २ विप्लव करनेवाला।

गुण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुणी] (किसी वस्तु का) जातिस्वभाव, लक्षण या विशेषता। धर्म। २ प्रकृति के तीन भाव—सत्व, रज और तम। ३ निपुणता। प्रवीणता। ४ कोई कला या विद्या। हुनर। ५ असर। तासीर। प्रभाव। ६. अच्छा स्वभाव। शील।

मुहा०—गुण गाना=प्रशसा करना। तारीफ करना। गुण मानना=एहसान मानना। कृतज्ञ होना।

७ विशेषता। खासियत। ८ तीन की संख्या। ९. प्रकृति। १० व्याकरण में 'अ' 'ए' और 'ओ'। ११ रस्सी या तागा। डोरा। सूत। १२ धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है, जैसे—द्विगुण।

गुणक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।

गुणकारक (कारी)—वि० [सं०] फायदा करनेवाला। लाभदायक।

गुणगौरि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतिव्रता स्त्री। २ सुहागिन। ३. स्त्रियों का एक व्रत।

गुणग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य। कदरदान।

गुणग्राही—वि० दे० "गुणग्राहक"।

गुणज्ञ—वि० [सं०] १. गुण को पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २. गुणी।

गुणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १ गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तखमीना करना। ३. उद्धरणी करना। रटना। ४ मनन करना।

गुणनफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक या संख्या जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे।

गुणना—क्रि० स० [सं० गुणन] जरब देना। गुणन करना।

गुणमता—वि० [सं० कर्ता बहु० "गुणवत."] गुणवत। गुणी। उ०—ज गुणमता अलहना गौरव लहइ मुअग। वेसा मदिर धुअ वसइ धुत्तह रुअ अनग।

गुणवंत—वि० दे० "गुणवान्"।

गुणवाचक—वि० [सं०] जो गुण को प्रकट करे।

यौ०—गुणवाचक संज्ञा=व्याकरण में वह संज्ञा जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

गुणवान्—वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] गुणवाला। गुणी।

गुणांक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसको गुणा करना हो।

गुणा—संज्ञा पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की एक क्रिया। जरब।

गुणाकर—वि० [सं०] जिसमें बहुत से गुण हों। गुणनिधान।

गुणाढ्य—वि० [सं०] गुणपूर्ण। गुणी।

संज्ञा पुं० पैशाची भाषा के एक प्रसिद्ध कवि जिनके ग्रंथ 'बड्डकहा' के आधार पर क्षेमेंद्र ने 'बृहत्कथा' और सोमदेव ने 'कथासरित्सागर' नाम की पुस्तकें लिखीं।

गुणानुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] गुणकथन। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई।

गुणित—वि० [सं०] गुणा किया हुआ।

गुणी—वि० [सं० गुणिन्] गुणवाला। जिसमें कोई गुण हो।

संज्ञा पुं० १ कलाकुशल पुरुष। २ झाड़फूँक करनेवाला। ओझा। ३. रस्सीयुक्त। डोरीवाला।

गुणीभूत व्यंग्य—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो वरन् वाच्यार्थ के साथ गौण रूप से आया हो।

गुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसको गुणा करना हो। २ वह जिसमें विशिष्ट गुण हों।

गुत्थमगुत्था—संज्ञा पुं० [हिं० √गुथ] १ गुथ जाने का भाव या स्थिति। २ परस्पर खूब लिपटकर लड़ना। भिड़ंत। ३ उलझाव। फँसाव।

गुत्थी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुथ] १ गाँठ। गिरह। २. उलझन। कठिनाई। समस्या।

गुथना—क्रि० अ० [सं० गुत्सन] १ एक लड़ी या गुच्छे में नाथा जाना। २. टँकना। गाँथा जाना। ३ भद्दी सिलाई होना। टाँका लगना। ४ लड़ने के लिये एक दूसरे से खूब लिपट जाना। ५. भिड़ंत।

गुथवाना—क्रि० स० [हिं० गूथना का प्रे० रूप] गूथने का काम दूसरे से कराना।

गुथुवाँ—वि० [हिं० गुथना] जो गुँथकर बनाया गया हो।

गुदकार, गुदकारा—वि० [हिं० गूदा या गुदार] १. गूदेदार। जिसमें गूदा हो। २ गुदगुदा। मोटा। मांसल।

गुदगुदा—वि० [हिं० गूदा] १ गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २ मुलायम।

गुदगुदाना—क्रि० स० [हिं० गदगुदा] १ हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना। २ मनबहलाव या विनोद के लिये छेड़ना। ३ किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदगुदा] १ वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। २ उत्कंठा। शौक। ३ आह्लाद। उल्लास। उमग।

गुदड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √गुथ+ड़ी (प्रत्य०)] [संज्ञा पुं० गुदड़ा] फटे पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया जाता है।

मुहा०—गुदड़ी में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।

गुदड़ी बाजार—संज्ञा पुं० [हिं० गुदड़ी+फा० बाजार] वह बाजार जहाँ टूटीफूटी या पुरानी चीजें बिकती हैं।

गुदना—संज्ञा पुं० दे० "गोदना"।

क्रि० अ० [हिं० गोदना] चुभना। धँसना।

गुदभ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] काँच निकलने का रोग।

गुदर(प)—संज्ञा पुं० दे० "गुजर"।

गुदरना(प)†—क्रि० अ० [फा० गुजर] गुजरना। बीतना।

क्रि० स० निवेदन करना। पेश करना।

गुदरानना(प)—क्रि० स० [फा० गुज़रान] १ पेश करना। सामने रखना। २ निवेदन करना।

गुदरैन(प)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदर+ऐन (प्रत्य०)] १ पढ़ा हुआ पाठ शुद्धतापूर्वक सुनाना। २ परीक्षा। इम्तहान।

गुदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मलद्वार।

गुदाना—क्रि० स० [हिं० गोदना का प्रे० रूप] गोदने की क्रिया कराना।

गुदार†—वि० [हिं० गूदा] गूदेदार।

गुदारना(प)—क्रि० स० दे० "गुजारना"।

गुदारा(प)†—संज्ञा पुं० [फा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। उ०—एहि विधि राति लोगु सबु जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा।—मानस। २ दे० "गुजारा"।

गुद्दी†—संज्ञा पुं० [हिं० गूदा] १ फल के बीज के भीतर का गूदा। मग्ज। मींगी। गिरी। २ सिर का पिछला भाग। ३ हथेली का मांस।

गुन(प)†—संज्ञा पुं० दे० "गुण"।

गुनगुना—वि० दे० "कुनकुना"।

गुनगुनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ गुनगुन शब्द करना। २. नाक में बोलना। ३ बहुत धीमे या अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना—क्रि० स० [सं० गुणन] १ गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तखमीना करना। ३ उद्धरणी करना। रटना। ४ सोचना। चिंतन करना। ५ ज्ञान को व्यवहार में लाना। उ०—उसने पढ़ा है पर गुना नहीं। ६. किसी का महत्व समझना।

गुनहगार—वि० [फा०] १ पापी। २. दोषी। अपराधी।

गुनही†—संज्ञा पुं० [फा० गुनाह] गुनहगार।

गुना—संज्ञा पुं० [सं० गुणन] १ एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना सूचित करता है, जैसे—पाँचगुना। २. गुणा (गणित)।

गुनाह—संज्ञा पुं० [फा०] १ पाप । २ दोष । कसूर । अपराध ।

गुनाही—संज्ञा पुं० दे० "गुनहगार" ।

गुनिया†—संज्ञा पुं० [हिं० गुणी] गुणवान् ।

गुनियालाⓅ—वि० दे० "गुनिया" ।

गुनी—वि०, संज्ञा पुं० दे० "गुणी" ।

गुनीलाⓅ—वि० दे० गुनिया ।

गुप—वि० दे० "घुप" ।

गपचुप—क्रि० वि० [सं० गुप्त+हिं० चुप] बहुत गुप्त रीति से । छिपाकर । चुपचाप ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई ।

गुपाल—संज्ञा पुं० दे० "गोपाल" ।

गुपुतⓅ—वि० दे० "गुप्त" ।

गुप्त—वि० [सं०] [भाव० गुप्तता] १ छिपा हुआ । २ गूढ़ । जिसके जानने में कठिनता हो ।

संज्ञा पुं० [सं०] वैश्यों का अल्ल ।

गुप्तचर—संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो किसी बात का भेद लेता हो । भेदिया । जासूस ।

गुप्तदान—संज्ञा पुं० [सं०] वह दान जिसका दाता ज्ञात न हो । गुप्त रीति से या छिपाकर दिया जानेवाला दान ।

गुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह नायिका जो प्रेम छिपाने का उद्योग करती है । २ रखी हुई स्त्री । सुरैतिन । रखेली ।

गुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छिपाने की क्रिया । २ रक्षा करने की क्रिया । ३ कारागार । कैदखाना । ४ गुफा । ५ अहिंसा आदि के योग के अंग । यम ।

गुप्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० गुप्त] वह छड़ी जिसके अंदर किरच या पतली तलवार छिपी हो ।

गुफा—संज्ञा स्त्री० [सं० गुहा] पहाड़ या जमीन में बना लंबा गड्ढा । खोह । कंदरा ।

गुफ्तगू—संज्ञा स्त्री० [फा०] बातचीत ।

गुबरैला—संज्ञा पुं० [हिं० गोबर+ऐला (प्रत्य०)] एक प्रकार का छोटा कीड़ा ।

गुबार—संज्ञा पुं० [अ०] १ गर्द । धूल । २ मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि ।

गुबिंदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद" ।

गुब्बारा—संज्ञा पुं० [हिं० कुप्पा] १ कागज, रबर आदि की बनी वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं । २. एक आतिशबाजी ।

गुम—संज्ञा पुं० [फा०] १ खोया हुआ । २ गुप्त । छिपा हुआ । ३. अप्रसिद्ध ।

गुमटा—संज्ञा पुं० [सं० गुंबा+टा (प्रत्य०)] १ वह गोल सूजन जो मत्थे या सिर पर चोट लगने से होती है । गुलमा । २ कपास का एक कीड़ा ।

गुमटी—संज्ञा स्त्री० [फा० गुंबद] १. मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की छत जो सबसे ऊपर उठी हुई होती है । २ रेल की लाइन के किनारे बनी कोठरी । ३ सड़क के नीचे वर्षा आदि का जल बहने के लिये बनाया हुआ पुल ।

गुमना†—क्रि० अ० [फा० गुम] गुम होना । खो जाना ।

गुमनाम—वि० [फा०] १ अप्रसिद्ध । अज्ञात । २ जिसमें नाम न दिया हो ।

गुमर—संज्ञा पुं० [फा० गुमान] १ अभिमान । घमंड । शेखी । २ मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि । गुबार । ३. धीरे धीरे की जानेवाली बातचीत । कानाफूसी ।

गुमराह—वि० [फा०] १ बुरे मार्ग पर चलनेवाला । २ भूला भटका हुआ ।

गुमान—संज्ञा पुं० [फा०] १ अनुमान । कयास । २ घमंड । अहंकार । गर्व । ३ लोगों की बुरी धारणा । बदगुमानी ।

गुमाना†—क्रि० स० १ छिपाना । गायब करना । २ दे० "गँवाना"

गुमानी—वि० [हिं० गुमान+ई (प्रत्य०)] घमंडी । अहंकारी । गरूर करनेवाला ।

गुमाश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने के लिये नियुक्त मनुष्य । एजेंट ।

गुम्मट—संज्ञा पुं० [फा० गुंबद] गुंबद ।

संज्ञा पुं० [सं० गुल्म] दे० "गुमटा" ।

गुम्मा—[फा० गुम] चुप्पा । न बोलनेवाला ।

गुरव, गुरवा—संज्ञा पुं० दे० "गुड़वा" ।

गुर—संज्ञा पुं० [सं० गुरुमंत्र] वह साधन या क्रिया जिसके करते ही कोई काम तुरत हो जाय । मूलमंत्र । भेद । युक्ति ।

†संज्ञा पुं० दे० "गुरु" ।

गुरगा—संज्ञा पुं० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १ चेला । शिष्य । २ टहलुआ । नौकर । ३ गुप्तचर । जासूस ।

गुरगाबी—संज्ञा पुं० [फा०] मुंडा जूता ।

गुरचौं†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुरुच] सिकुड़न । बट । बल ।

गुरचों—संज्ञा स्त्री० [अनु०] परस्पर धीरे धीरे बातें करना । कानाफूसी ।

गुरज—संज्ञा पुं० [फा० गुर्ज] गदा । सोंटा ।

गुरझन—संज्ञा स्त्री० उलझन । गाँठ ।

गुरदा—संज्ञा पुं० [फा० गुर्द] १ रीढ़दार जीवों के अंदर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है । २. साहस । हिम्मत । ३ एक प्रकार की छोटी तोप ।

गुरबा—संज्ञा पुं० [अ०] 'गरीब' का बहुवचन ।

गुरमुख—वि० [सं० गुरु+मुख] जिसने गुरु से मंत्र लिया हो । दीक्षित ।

गुरम्मर†—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़+आम] मीठे आमों का वृक्ष ।

गुरवी—वि० [सं० गर्व] घमंडी ।

गुरसी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोरसी" ।

गुराई†—संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई" ।

गुराब—संज्ञा पुं० [देश०] तोप लादने की गाड़ी ।

गुरिंदⓅ†—संज्ञा पुं० [फा० गुर्ज] गदा ।

गुरिया—संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १ वह दाना या मनका जो माला का एक अंश हो । २ चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा । ३ मछली के मांस की बोटी ।

गुरु—वि० [सं०] १ लंबेचौड़े आकारवाला । बड़ा । २ भारी । वजनी । ३ कठिनता से पकने या पचनेवाला (खाद्य) । ४ शक्तिशाली ।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गुरुआनी] १ आचार्य । गायत्री मंत्र का उपदेश देनेवाला । २ किसी मंत्र का उपदेष्टा । ३ शिक्षक । उस्ताद । ४ पूज्य पुरुष । ५ देवताओं के आचार्य बृहस्पति । ६ पुष्य नक्षत्र । ७ दो मात्राओंवाला अक्षर (पिंगल) । ८ ब्रह्मा । ९ विष्णु । १० शिव ।

यौ०—गुरुघंटाल = बहुत चालाक । धूर्त ।

गुरुआनी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+हिं० आनी (प्रत्य०)] १ गुरु की स्त्री । २. वह स्त्री जो शिक्षा देती हो ।

गुरुआई—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+हिं० आई (प्रत्य०)] १ गुरु का धर्म । २ गुरु का काम । ३ चालाकी । धूर्तता ।

गुरुकुल—संज्ञा पुं० [सं०] गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ वह

विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।

गुरुच—संज्ञा स्त्री० [सं० गुडूची] एक प्रकार की मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ती है और दवा के काम में आती है। गिलोय।

गुरुज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गुर्ज"।

गुरुजन—संज्ञा पुं० [सं०] बड़े लोग। माता-पिता, आचार्य आदि।

गुरुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुरुत्व। महत्व। बड़प्पन। २. भारीपन। ३ गुरुपन। गुरुताई।

गुरुताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।

गुरुतोमर—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।

गुरुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारीपन। २ वजन। बोझ। महत्व। बड़प्पन।

गुरुत्वकेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ में वह बिंदु जिसपर उस समस्त पदार्थ का भार एकत्र और कार्य करता हुआ मानते हैं।

गुरुत्वाकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] वह आकर्षण जिसके द्वारा (हवा से अधिक) भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।

गुरुदक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।

गुरुद्वारा—संज्ञा पुं० [सं० गुरु+द्वार] १ आचार्य या गुरु के रहने की जगह। २ सिक्खों का मंदिर।

गुरुविनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गुर्विणी"।

गुरुभाई—संज्ञा पुं० [सं० गुरु+हिं० भाई] एक ही गुरु का शिष्य होने के संबंध से भाई।

गुरुमुख—वि० [सं० गुरु+मुख] दीक्षित। जिसने गुरु से मंत्र लिया हो।

गुरुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+मुखी] गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि।

गुरुलोए(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गुरु+लोक] गुरुजन। उ०—माण लपइ अवरु गुरुलोए मंति मित्त सिक्खइ। कबहुँ एहु नहि कम्म करिअइ।

गुरुवार—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति का दिन। बृहस्पति। †बीफै। †बीरवार।

गुरू—संज्ञा पुं० [सं० गुरु] गुरु। अध्यापक।
यौ०—गुरुघंटाल=बड़ा चालाक।

गुरेज—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ भागना। बचना। २. दूर रहना।

गुरेरना†—क्रि० स० [सं० गूरण ?] आँखें फाड़कर देखना। घूरना।

गुरेरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गुलेला"।

गुर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] १ भेड़िया। २ शृगाल।

गुर्ज—संज्ञा पुं० [फा०] गदा। सोंटा।
यौ०—गुर्जबर्दार=गदाधारी सैनिक।
संज्ञा पुं० दे० "बुर्ज"।

गुर्जर—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुजरात देश। २ गुजरात देश का निवासी। ३ गूजर।

गुर्जरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुजरात देश की स्त्री। २ भैरव राग की स्त्री (रागिनी)।

गुर्रा—संज्ञा पुं० [अ० गुर्र] १ घोड़े के माथे पर का सफेद दाग। २ लाल रंग का घोड़ा। ३ उत्कृष्ट वस्तु। ४. चांद्रमास की पहली तिथि। ५ उपवास। फाका।
मुहा०—गुर्रा बताना=बिना कुछ दिए टाल देना।

गुर्राना—क्रि० अ० [अनु०] १ डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना (जैसे कुत्ते, बिल्ली करते हैं)। २ क्रोध या अभिमान में कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्विणी—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

गुर्वी—वि० स्त्री० [सं०] १ बड़ा। भारी। २ प्रधान। मुख्य। ३ गौरवशाली। ४ गर्भवती।
संज्ञा स्त्री० गुरु की पत्नी।

गुल—संज्ञा पुं० [फा०] १ गुलाब का फूल। २ फूल। पुष्प।
मुहा०—गुल खिलना=(१) विचित्र घटना होना। (२) बखेड़ा खड़ा होना।
३ पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। ४ वह गड्ढा जो गालों में हँसने आदि के समय पड़ता है। ५ शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिह्न। दाग। छाप। ६ दीपक में बत्ती का वह अंश जो जलकर उभर आता है।
मुहा०—(चिराग) गुल करना=(चिराग) बुझाना या ठंढा करना।
७ तमाकू का जला हुआ अंश। जट्टा। ८ किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई निशान। ९ जलता हुआ कोयला।
संज्ञा पुं० कनपटी।
संज्ञा पुं० [फा०] शोर। हल्ला।

गुलअब्बास—संज्ञा पुं० [फा० गुल+अ० अब्बास] एक पौधा जिसमें बरसात के दिनों में लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं। गुलाबाँस।

गुलकंद—संज्ञा पुं० [फा०] मिस्री या चीनी में मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पँखड़ियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।

गुलकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेलबूटे का काम।

गुलकेश—संज्ञा पुं० [फा० गुल+केश] मुर्गकेश का पौधा या फूल। जटाधारी।

गुलखैरू—संज्ञा पुं० [फा० गुल+खैरू] एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।

गुलगपाड़ा—संज्ञा पुं० [अ० गुल+गप्प] बहुत अधिक चिल्लाहट। शोरगुल।

गुलगुल—वि० [हिं० गुलगुला] नरम। मुलायम। कोमल।

गुलगुला—संज्ञा पुं० दे० "गुलगुल"।
संज्ञा पुं० [हिं० गोल+गोला ?] १ एक मीठा पकवान। २ कनपटी। गंडस्थल।

गुलगुलाना†—क्रि० स० [हिं० गुलगुल] गूदेदार चीज को दबा या मलकर मुलायम करना।

गुलगोथना—संज्ञा पुं० [हिं० गुलगुल+सं० तन] ऐसा नाटा मोटा आदमी जिसके गाल आदि अंग खूब फूले हुए हों।

गुलचना(पु)—क्रि० स० दे० "गुलचाना"।

गुलचा—संज्ञा पुं० [हिं० गाल] धीरे से प्रेमपूर्वक गालों पर किया हुआ हाथ का आघात।

गुलचाना, गुलचिआना (पु) †—क्रि० स० [हिं० गुलचा] गुलचा मारना।

गुलछर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० गुल+छर्रा] कर्तव्य भूलकर स्वच्छंद वृत्ति से किया जानेवाला भोगविलास।

गुलजार—संज्ञा पुं० [फा०] बाग। वाटिका।
वि० हराभरा। आनंद और शोभायुक्त। चहलपहल युक्त। रौनक।

गुलझटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+सं० झट=जमाव] १ उलझन की गाँठ। २ सिकुड़न। शिकन।

गुलथी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+सं० अस्थि] १ पानी जैसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोला। २. मांस की गाँठ।

गुलदस्ता—संज्ञा पुं० [फा०] सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह। गुच्छा।

गुलदाउदी—संज्ञा स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिये लगाया जाता है।

गुलदान—संज्ञा पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र।

गुलदार—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का कबूतर। २ एक प्रकार का कशीदा।

वि० दे० "फूलदार"।

गुलदुपहरिया—संज्ञा पुं० [फा० गुल+हिं० दुपहरिया] एक छोटा सीधा पौधा जिसमें कटोरे के आकार के गहरे लाल रंग के सुंदर फूल लगते हैं।

गुलनार—संज्ञा पुं० [फा०] १ अनार का फूल। २ अनार के फूल का सा गहरा लाल रंग।

गुलबकावली—संज्ञा स्त्री० [फा० गुल+सं० बकावली] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसमें सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलबदन—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

वि०—सुकुमार। कोमल अंगों का।

गुलमेंहदी—संज्ञा पुं० [फा० गुल+हिं० मेंहदी] एक प्रकार के फूल का पौधा।

गुलबर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] गुलाब की पत्ती।

गुलमेख—संज्ञा पुं० [फा०] वह कील जिसका सिरा गोल होता है। फुलिया।

गुललाला—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का फूल।

गुलशन—संज्ञा पुं० [फा०] वाटिका। बाग।

गुलशब्बो—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ लहसुन से मिलता जुलता एक छोटा पौधा। २ रजनी गंधा। सुगंधरा। सुगंधिराज।

गुलहजारा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गुललाला।

गुलाब—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक झाड़ या कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं। २ उसका फूल। ३. गुलाब जल।

गुलाबजामुन—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब+जामुन] १ एक मिठाई। २ एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल नीबू के बराबर पर कुछ चपटा होना है।

गुलाबपाश—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब+फा० पाश] झारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाबपाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुलाब जल का छिड़काव।

गुलाबबाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुलाब+बाड़ी] वह आमोद या उत्सव जिसमें कोई स्थान गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।

गुलाबा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी—वि० [फा०] १ गुलाब के रंग का। २. गुलाब संबंधी। ३ गुलाबजल से बनाया हुआ। ४ थोड़ा या कम। हलका।

संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का हलका लाल रंग।

गुलाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २ साधारण सेवक। नौकर। ३ पराधीन व्यक्ति। ४ ताश का एक पत्ता।

गुलामी—संज्ञा स्त्री० [अ० गुलाम+हिं० ई (प्रत्य०)] १ गुलाम का भाव। दासत्व। २ सेवा। नौकरी। ३. पराधीनता। परतंत्रता।

गुलाल—संज्ञा पुं० [फा० गुल्लाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

गुलाला—संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।

गुलिक—संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका] गुरिया। मोती। उ०—रह्यो अधगुह्यो हारकर, दौरी सुनत गोपाल। गुलिक गिरे जनु फल झरे कनकबेलि वर बाल।—रसराज।

गुलिस्ताँ—संज्ञा पुं० [फा०] बाग। वाटिका।

गुलू—संज्ञा पुं० [फा०] १ गला। २ स्वर।

गुलुफ—संज्ञा पुं० दे० "गुल्फ"। उ०—चरन पीठ उन्नत नत पालक, गूढ़ गुलुफ, जंघा कदली जति।—गीता०।

गुलूबंद—संज्ञा पुं० [फा०] १ लंबी और प्राय एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २ गले का एक गहना।

गुलेनार—संज्ञा पुं० दे० "गुलनार"।

गुलेल—संज्ञा स्त्री० [फा० गिलूल] वह कमान जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला—संज्ञा पुं० [फा० गुलूला] १ मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।

गुल्फ—संज्ञा पुं० [सं०] एँड़ी पर की गाँठ।

गुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई शाखाओं में होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो, जैसे, ईख, शर आदि। २ सेना का एक समुदाय जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घुड़सवार और ४५ पैदल होते हैं। ३ पेट का एक रोग।

गुल्लक—संज्ञा स्त्री० दे० "गोलक"।

गुल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० गोला] मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं।

संज्ञा पुं० [अ० गुल] शोर। हल्ला।

संज्ञा पुं० दे० "गुलेल"।

गुल्लाला—संज्ञा पुं० [फा० गुल+लाल] एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।

गुल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका=गुठली] १. किसी फल की गुठली। २. लकड़ी या किसी धातु का गोल तथा नुकीले छोर का टुकड़ा। ३ मकई की गुठली या खुखड़ी। ४. छत्ते में वह जगह जहाँ मधु होता है।

गुल्लीडंडा—संज्ञा पुं० [हिं० गुल्ली+डंडा] लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है।

गुवाक—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी का पेड़। २ इस वृक्ष का फल।

गुवाल—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।

गुविंद(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद"।

गुसाँई—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।

गुसा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "गुस्सा"।

गुस्ताख—वि० [फा०] बड़ों का संकोच न रखनेवाला। ढीठ। अशालीन। अशिष्ट।

गुस्ताखी—संज्ञा स्त्री० [फा०] धृष्टता। ढिठाई। अशिष्टता। बेअदबी।

गुस्ल—संज्ञा पुं० [अ०] स्नान। नहाना।

गुस्लखाना—संज्ञा पुं० [अ० गुस्ल+फा० खाना] स्नानागार। नहाने का घर।

गुस्सा—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध। कोप। रिस।

मुहा०—गुस्सा उतरना या निकलना=क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना=क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोप का फल चखाना। गुस्सा चढ़ना=क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल—वि० [अ० गुस्सा+हिं० ऐल (प्रत्य०)] जिसे जल्दी क्रोध आवे। गुस्सावर।

गुह—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिकेय। २ घोड़ा। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ६ गुफा। ७ हृदय।

†संज्ञा पुं० [सं० गूथ] गूह। मैला।

गुहना†—क्रि० स० दे० "गूथना"।

गुहराना†—क्रि० स० [हिं० गुहार से ना० धा०] पुकारना। चिल्लाकर बुलाना।

गुहवाना—क्रि० स० [हिं० गुहना का प्रे० रूप] गुहने का काम करवाना। गुँथवाना।

गुहांजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्य+अंजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुड़िया। बिलनी।

गुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। कंदरा।

गुहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√गुह+आई (प्रत्य०)] १. गुहने की क्रिया, ढंग या भाव। २ गुहने की मजदूरी।

गुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० गो+हार] १ दुहाई। रक्षा या सहायता के लिये पुकार। २ हल्लागुल्ला। शोर।

गुहेरा—संज्ञा पुं० [सं० गोधा] गोह।

संज्ञा पुं० [हिं०√गुह+एरा (प्रत्य०)] चाँदी सोने की मालाएँ आदि गुहनेवाला। पटेहरा।

गुहेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुहांजनी] आँख की पलक की फुंसी। बिलनी।

गुह्य—वि० [सं०] १ गुप्त। छिपा हुआ। पोशीदा। २ गोपनीय। छिपाने योग्य। ३ गूढ़। जिसका तात्पर्य सहज में न खुले।

गुह्यक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर के साथ रहनेवाली और उनके खजानों की रक्षा करनेवाली एक विशेष देवयोनि। २. इस योनि का व्यक्ति।

गुह्यपति—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

गुह्यांग—संज्ञा पुं० [सं०] गोपनीय।

गूँगा—वि० [फा० गुंग=जो बोल न सके] [स्त्री० गूँगी] जो बोल न सके। जिसे वाणी न हो। मूक।

मुहा०—गूँगे का गुड़=ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

गूँज—संज्ञा स्त्री० [सं० गुंज] १ भौंरों के गूँजने का शब्द। कलध्वनि। २ प्रतिध्वनि। ३ लट्टू की कील। ४ कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार।

गूँजना—क्रि० अ० [सं० गुंजन] १ भौंरों या मक्खियों की मधुर ध्वनि।

गूँधना—क्रि० स० [सं० √गुध्=क्रीड़ा] पानी में सानकर हाथों से दबाना या मलना। माड़ना। मसलना।

क्रि० स० [ग्रथन] गूँथना। पिरोना।

गूजर—संज्ञा पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति। ग्वाला।

गूजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुर्जरी] १ गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २ पैर में पहनने का एक जेवर। उ०—पंकज से पायन में गूजरी जरायन की घाँघरे को घेर दीठि घेरि घेरि रखियाँ।—शृंगार०। ३ एक रागिनी।

गूझा—संज्ञा पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० गुझिया] १ गोझा। बड़ी पिराक। †२ फलों के भीतर का रेशा।

गूढ़—वि० [सं० गूढ] १ गुप्त। छिपा हुआ। २ जिसमें बहुत सा अभिप्राय छिपा हो। अभिप्रायगर्भित। गंभीर। ३ जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे।

गूढ़गेह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यज्ञशाला"।

गूढ़ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुप्तता। छिपाव। २ कठिनता।

गूढ़पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] जासूस।

गूढ़ोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे को सुनाते हुए तीसरे के प्रति कही जाती है, जैसे—वृष भागहु पर खेत से आयो रक्षक खेत (यहाँ समीप चरते हुए बैल के बहाने किसी परकीया के नायक को भगाने के लिये उक्ति है)।

गूढ़ोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय या मतलब लिए हुए दिया जाता है, जैसे—ग्वालिन देहुँ बताइ हौं मोहिं कछू तुम देहु। बसीवट की छाँह में लाल जाय तुम लेहु॥ (यहाँ उत्तर में 'लाल' शब्द के द्वारा नायक से मिलने का संकेत है)।

गूथना—क्रि० स० [सं० ग्रथन] दे० "गूँथना"।

गूदड़—संज्ञा पुं० [हिं० √गूथ+ड़] [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

गूदा—संज्ञा पुं० [सं० गुप्त] [स्त्री० गूदी] १ फल के भीतर का वह अंश जिसमें रस आदि रहता है। २ भेजा। मग्ज। खोपड़ी का सार भाग। ३ मींगी। गिरी।

गून—संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जिससे नाव खींचते हैं।

गूनी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोनी"।

गूमा—संज्ञा पुं० [सं० कुंभा] एक छोटा पौधा। द्रोणपुष्पी।

गूलर—संज्ञा पुं० [सं० गोलक ?] वटवर्ग का एक बड़ा पेड़ जिसमें लट्टू के से गोल फल लगते हैं जिनमें पकने पर उड़नेवाले छोटे छोटे काले रंग के कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। यह वृक्ष बिना फूले ही फलता है। उदुंबर। ऊमर।

मुहा०—गूलर का फूल=वह जो कभी देखने में न आवे। दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु।

गूथ—संज्ञा पुं० [सं० गूथ] गलीज। मल। मैला। विष्ठा।

गृंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाजर। २ शलजम।

गृध्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिद्ध। २ जटायु, संपाति आदि पौराणिक पक्षी।

गृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर। मकान। निवासस्थान। २ कुटुंब। वंश।

गृहजात—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर में पैदा हुआ पशु, पक्षी आदि। २ वह दास जो घर की दासी से पैदा हो।

गृहप, गृहपति—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गृहपत्नी] १ घर का मालिक। २ अग्नि।

गृहपसु—संज्ञा पुं० [सं० गृह+पशु] कुत्ता। उ०—लोलुप भ्रम गृहपसु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै। तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै।—विनय०।

गृहपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर का रक्षक। चौकीदार। पाहरू। २ कुत्ता।

गृहमंत्री—संज्ञा पुं० दे० "गृहसचिव"।

गृहयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर के भीतर का झगड़ा। एक कुटुंब के व्यक्तियों में होनेवाला झगड़ा। २ किसी देश के भीतर शासक और शासितों में होनेवाली राजनीतिक लड़ाई।

गृहसचिव—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का वह मंत्री जो देश की भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो। देश के भीतर की व्यवस्था करनेवाला मंत्री।

गृहस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मचर्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहनेवाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २ घरबारवाला। बालबच्चोंवाला आदमी। †३ वह जिसके यहाँ खेती होती हो।

गृहस्थाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का कामकाज देखते हैं।

गृहस्थी—संज्ञा स्त्री० [सं० गृहस्थ+हिं० ई (प्रत्य०)] १ गृहस्थाश्रम। गृहस्थ का कर्तव्य। २. घरवार। गृहव्यवस्था। ३ कुटुंब। लड़के वाले। ४ घर का सामान। माल असवाब। †५ खेती बारी।

गृहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घर की मालकिन। २ भार्या। स्त्री।

गृही—संज्ञा पुं० [सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी] १ गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी। २ यात्री (मल्लाहों की बोली)।

गृहीत—वि० [सं०] [स्त्री० गृहीता] १ लिया, पकड़ा या रखा हुआ। २ प्राप्त। ३ स्वीकृत। मंजूर। ४ समझा हुआ। ज्ञात। ५ आश्रित।

गृह्य—वि० [सं०] गृह संबंधी।

गृह्यसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक पद्धति की वह पुस्तक जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं।

गेंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० गृष्टि] वाराही कंद।

गेंडा—संज्ञा पुं० [सं० कांड] ऊख के ऊपर का पत्ता। अगौरा।

संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] घेरा। अहाता।

गेंडना—क्रि० स० [हिं० गेंड] १ खेतों को मेड़ से घेरकर हद बाँधना। २ अन्न रखने के लिये मेड़ बनाना। ३. घेरना। गोंठना।

गेंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] कुंडल। फेंटा, जैसे—साँप की गेंडली।

गेंड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कांड] १ ईख के ऊपर के पत्ते। अगोरी। २ ईख। गन्ना।

गेंडुआ†—संज्ञा पुं० [सं० गडुक=तकिया] १ तकिया। सिरहाना। उ०—लोगनि भलो मनाव जो भलो होन की आस। करत गगन को गेंडुआ सो सठ तुलसीदास।—दोहा०। २ बड़ी गेंद।

गेंडुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] १ रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिसपर घड़ा रखते हैं। इँडुरी। बिंड़वा। २ फेंटा। कुंडली। ३ साँपों का कुंडलाकार बैठना।

गेंद—संज्ञा स्त्री० [सं० गेंडुक, कंदुक] १ कपड़े, रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक। २ कालिव [illegible]

गेंदतड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गेंद+तड़ (अनु०)] वह खेल जिसमें लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।

गेंदवा†—संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] तकिया।

गेंदा—संज्ञा पुं० [हिं० गेंदा] १.एक पौधा। २ उसमें लगनेवाला पीले या नारंगी रंग का फूल।

गेंदुकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] गेंद।

गेंदुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गेंडुरी] घड़ा रखने का मूँज आदि का उपकरण। उ०—पृथुल नितंब लंक नाम अवलंब लौट, गेंदुरी पै कुच द्वै कलस कलसान के।—शृंगार०।

गेंदुवा—संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] गेंडुआ। उसीसा। तकिया। गोल तकिया।

गेड़ना—क्रि० स० [सं० गड=चिह्न, हिं० गड्डा] १. लकीर से घेरना। २ परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना।

गेय—वि० [सं०] गाने के लायक।

गेरना†—क्रि० स० [सं० गलन या गिरण] १ गिराना। नीचे डालना। २ ढालना। उँडेलना। ३ डालना।

गेरुआ—वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १. गेरू के रंग का। मटमैलापन लिए लाल रंग का। २. गेरू में रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

गेरुई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गेरू] चैत की फसल का एक रोग।

गेरू—संज्ञा स्त्री० [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है। गिरमाटी। गैरिक।

गेह—संज्ञा पुं० [सं० गृह] घर। मकान।

गेहनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० गृहिणी] गृहिणी। घरवाली। पत्नी। उ०—तुम रानी वसुदेव गेहनी हौं गँवारि ब्रजवासी। पठै देहु मेरो लाड़ लड़ैतो वारौं ऐसी हाँसी।—सूर०।

गेहीⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० गेह] [स्त्री० गेहिनी] गृहस्थ।

गेहुँअन—संज्ञा पुं० [हिं० गेहूँ] मटमैले रंग का एक अत्यंत विषधर फनदार साँप।

गेहुँआ—वि० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का। बादामी।

गेहूँ—संज्ञा पुं० [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

गैंडा—संज्ञा पुं० [सं० गंडक] भैंसे के आकार का एक बहुत मोटे चमड़े का पशु जिसकी नाक पर एक सींग होता है। अफ्रीका और सुमात्रा में यह दो सींगवाला भी मिलता है।

गैंता—संज्ञा पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० गैंती] खोदने का एक औजार।

गैनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गमन] गैल। मार्ग।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "गगन"।

गैना—संज्ञा पुं० [?] नाटा बैल।

गैनी—संज्ञा स्त्री० दे० "खता"।

वि० [सं० गमन] चलनेवाली।

गैब—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो सामने न हो। परोक्ष।

गैबरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गजवर] १ बड़ा हाथी। २ एक प्रकार की चिड़िया।

गैबी—वि० [अ० गैब] १. गुप्त। छिपा हुआ। २ अजनबी। अज्ञात।

गैयरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० गजवर] हाथी। उ०—गैयर चढ़ावौ तौ न गहिए गयर नाँगे, पैरन चलायौ तौ न याको दुख भारी है।—रससारांश।

गैया—संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय।

गैर—वि० [अ०] १ अन्य। दूसरा। २ अजनबी। अपने कुटुंब या समाज से बाहर का (व्यक्ति)। पराया। ३ विरुद्ध अर्थवाची या निषेधवाचक शब्द, जैसे—गैरमुमकिन, गैरहाजिर।

गैरⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ०] अत्याचार। अंधेर। उ०—आवत हैं हम कछु दिन माहीं। चलै गैर तिनकी तब नाहीं।—विश्रामसागर।

गैरजिम्मेदार—वि० [अ०+फा०] [संज्ञा गैरजिम्मेदारी] अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला। अनुत्तरदायी।

गैरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। हया।

गैरमनकूला—वि० [अ०] जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले न जा सकें। स्थिर। अचल।

गैरमामूली—वि० [अ०] असाधारण।

गैरमिसिल—वि० [अ०] १ अनुचित। २. बेसिलसिले।

गैरमुनासिब—वि० [अ०] अनुचित।

गैरमुमकिन—वि० [अ०] असंभव।

गैरवाजिब—वि० [अ०] अयोग्य। अनुचित।

गैरसरकारी—वि० [अ०+फा०] जो सरकारी न हो।

गैरहाजिर—वि० [अ०] जो हाजिर न हो। अनुपस्थित।

गैरहाजिरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति। नागा।

गैरिक—सज्ञा पुं० [सं०] १. गेरू। २ सोना।

गैल—सज्ञा स्त्री० [हिं० गली] मार्ग। रास्ता।

गोंइंड—सज्ञा पुं० [हिं० गाँव+मेड़] गाँव के आसपास की जमीन।

गोंठ—सज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

गोंठना—क्रि० स० [सं० कुंठन] १ किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली कर देना। २ गोफे या पुवे की कोर को मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना।

क्रि० स० [सं० गोष्ठ] चारों ओर से घेरना।

गोंड़—सज्ञा पुं० [सं० गोंड] १ एक जाति जो मध्यप्रदेश में पाई जाती है। २ वग और भुवनेश्वर के बीच का देश।

गोंडरा†—सज्ञा पुं० [सं० कुडल] स्त्री० गोंडरी] १ लोहे का मँड़रा जिसपर मोट का चरसा लटकता है। २ कुंडल के आकार की वस्तु। मँड़रा। ३ गोल घेरा।

गोंड़ा—सज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] १ वाड़ा। घेरा हुआ स्थान (विशेषकर चौपायों के लिये)। २ पुरा। गाँव। खेड़ा।

गोंद—सज्ञा पुं० [सं० कुंदुरु या हिं० गूदा] पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव। लासा। निर्यास।

यौ०—गोंददानी=वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखा रहे।

गोंदपँजीरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० गोंद+ पँजीरी] गोंद मिली हुई पँजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियों को खिलाते हैं।

गोंदपाग—सज्ञा पुं० [हिं० गोंद+पाग] गोंद और चीनी के मेल से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। पपड़ी। उ०—पेठापाग जलेबी, पेरा। गोंदपाग, तिनगरी, गिंदौरा। —सूर०।

गोंदरी—सज्ञा स्त्री० [सं० गुद्रा] १ पानी में होनेवाली एक घास। २ इस घास की बनी हुई चटाई।

गोंदी—सज्ञा स्त्री० [सं० गोवदिनी=प्रियंगु] १ मौलसिरी की तरह का एक पेड़। २ इगुदी। हिंगोट।

गो—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय। गऊ। २ किरण। ३ वृष राशि। ४. इंद्रिय। ५ बोलने की शक्ति। वाणी। ६. सरस्वती। ७ आँख। दृष्टि। ८ विजली। ९. पृथ्वी। जमीन। १० दिशा। ११. माता। जननी। १२ बकरी, भैंस, भेड़ इत्यादि दूध देनेवाले पशु। १३. जीभ। जबान।

सज्ञा पुं० [सं०] १. बैल। २. नदी नामक शिवगण। ३ घोड़ा। ४. सूर्य। ५. चद्रमा। ६. बाण। तीर। ७. आकाश। ८ स्वर्ग। ९. जल। १० वज्र। ११ शब्द। १२ नौ का अक।

अव्य० [फा०] यद्यपि।

यौ०—गोकि=यद्यपि। गो।

प्रत्य० [फा०] कहनेवाला (यौ०में)।

गोइँठा†—सज्ञा पुं० [सं० गो+विष्ठा] ईंधन के लिये सुखाया हुआ गोबर। उपला। कडा। गोहरा।

गोइंदा—सज्ञा पुं० [फा० गोयद] गुप्त भेदिया। गुप्तचर। जासूस।

गोइ—सज्ञा पुं० दे० "गोय"।

गोइयाँ—सज्ञा पुं० स्त्री० [हिं० गोहनिया] साथ में रहनेवाला। साथी। सहचर।

गोई—सज्ञा स्त्री० दे० "गोइयाँ।"

गोकन्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

गोऊ(पु)†—वि० [हिं० √गो+ऊ (प्रत्य०)] चुरानेवाला। छिपानेवाला।

गोकर्ण—सज्ञा पुं० [सं०] १ हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र जो मलाबार में है। २ इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति।

वि० [सं०] गऊ के से लबे कानवाला।

गोकर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता। मुरहरी। चुरनहार।

गोकुल—सज्ञा पुं० [सं०] १ गौओं का झुड। गोसमूह। २. गोशाला। ३ एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा से पूर्व दक्षिण की ओर है।

गोकोस—सज्ञा पुं० [सं० गो+क्रोश] १ उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े। २ छोटा कोस।

गोच—सज्ञा पुं० [सं०] जोंक नामक कीड़ा। उ०—कच्छप मकर कूरम उरग, ग्राह गोह शिशुमार। विछलत पछिलत उच्छलत ध वन सुरधुनि धार।—विश्रामसागर।

गोक्षुर—सज्ञा पुं० दे० "गोखरू"।

गोखग—सज्ञा पुं० [सं०] स्थल में रहने- वाले पशु। जानवर।

गोखरू—सज्ञा पुं० [सं० गोक्षुर] १. एक प्रकार का क्षुप जिसमें चने के आकार के कड़े और कँटीले फल लगते हैं। २ धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिए जाते हैं। ३. गोटे और बादले के तारों से गूथकर बनाया हुआ एक साज। ४ कड़े के आकार का एक आभूषण।

गोखा—सज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

गोग्रास—सज्ञा पुं० [सं०] पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है।

गोचना—क्रि० स० [हिं० अगोछन] रोकना छेंकना।

सज्ञा पुं० चना मिला हुआ गेहूँ।

गोचर—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके। २. गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। चरी।

गोज—सज्ञा पुं० [फा०] अपान वायु। पाद।

गोजई—सज्ञा स्त्री० [हिं० गेहूँ+जौ] एक में मिला हुआ गेहूँ और जौ।

गोजर—सज्ञा पुं० [सं० खर्जू] कनखजूरा।

गोजी—सज्ञा स्त्री० [सं० गवाजन] १ गौ हाँकने की लकड़ी। २ बड़ी लाठी। लट्ठ।

गोझनवट†—सज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला।

गोझा—सज्ञा पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १ गुझिया नामक पकवान। पिराक। उ०—भा बिनु जिउ नहिं आवत ओझा। विष भइ पूरि, काल भा गोझा।—पद्मावत। २ एक प्रकार की कँटीली घास। गुज्झा। ३ जेब। खलीता।

गोट—सज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं। मगजी। २ किसी प्रकार का किनारा।

सज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठी] मडली। गोष्ठी।

सज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] चौपट का मोहरा। नरद। गोटी।

गोटा—सज्ञा पुं० [हिं० गोट] १. बादले का बुना हुआ पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है। २ धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी। ३ छोटे

टुकड़ों में कतरी और एक में मिली इलायची, सुपारी और खरबूजे बादाम की गिरी। ४ सूखा हुआ मल। कड़ी। मुद्दा।

संज्ञा पुं० [सं० गुटिका] गोला। उ०—औ जौं छुटहिं वज्र कर गोटा। बिसरिहि भुगुति, होइ सब रोटा।—पदमावत।

गोटी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १. कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। २. चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३ एक खेल जो गोटियों से खेला जाता है। ४ लाभ का आयोजन।

मुहा०—गोटी जमना या बैठना = (१) युक्ति सफल होना। (२) आमदनी की सूरत होना।

गोठ—संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ गोशाला। गोस्थान। २ गोष्ठी। श्राद्ध। ३ सैर।

गोड़—संज्ञा पुं० [प्रा० गोट] पैर।

गोड़इत—संज्ञा पुं० [हिं० गोइँड+ऐत (प्रत्य०)] गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।

गोड़ना—क्रि० स० [हिं० कोड़ना] मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिसमें वह पोली और भुरभुरी हो जाय। कोड़ना।

गोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० गोड] १ पलँग आदि का पाया। २ घोड़िया।

गोड़ाई—संज्ञा पुं० [हिं० √गोड+आई (प्रत्य०)] गोड़ने की क्रिया या मजदूरी।

गोड़ाना—क्रि० स० [हिं० गोड़ना का प्रे० रूप] गोड़ने का काम दूसरे से कराना।

गोड़ापाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़+पाई = बाने के सूत फैलाने का ढाँचा] १ किसी मंडल में घूमने की क्रिया। मंडल देना। २ किसी स्थान पर बारबार आना जाना।

गोड़ारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़ = पैर+आरी (प्रत्य०)] १ पलँग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है। पैताना। २ जूता।

गोड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़+इया (प्रत्य०)] छोटा पैर।

गोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोटी] लाभ का आयोजन। गोटी।

गोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टाट का दोहरा बोरा। गोन। २ एक पुरानी माप।

गोत—संज्ञा पुं० [सं० गोत्र] १ गोत्र। २ कुल। वंश। खानदान। ३ समूह। जत्था। गरोह। उ०—सखिन तव भुज गहि उठाए कहा बावरे होत। सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [अ० गोत] उड़ती हुई पतंग का ऊपर से नीचे की ओर आना।

गोतम—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि।

गोतमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की स्त्री। अहल्या।

गोता—संज्ञा पुं० [अ० गोत] डूबने की क्रिया। डुब्बी।

मुहा०—गोता खाना = धोखे में आना। फरेब में आना। गोता मारना = (१) डुबकी लगाना। डूबना। (२) बीच में अनुपस्थित रहना।

गोताखोर—संज्ञा पुं० [अ० गोत+फ़ा० खोर] १ डुबकी लगानेवाला। डुबकी मारनेवाला। २ डुबकनी नाव।

गोतिया—वि० दे० "गोती"।

गोती—वि० [सं० गोत्रीय] अपने गोत्र का। जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो। गोत्रीय। भाईबंधु।

गोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है। २ वंश। खानदान। ३ जत्था। गिरोह। ४. बंधु। भाई। ५ नाम। ६ क्षेत्र। ६ राजा का छत्र।

गोत्रसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

गोदंती—संज्ञा स्त्री० [सं० गोदंत] १ कच्ची या सफेद हरताल। २ एक रत्न।

गोद—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड] १. वह स्थान जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं। कोरा। २ आँचल।

मुहा०—गोद का = छोटा बालक। बच्चा। गोद बैठना = दत्तक बनना। गोद पसारकर = अत्यंत अधीनता से। गोद भरना = (१) सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में चावल, हल्दी नारियल आदि पदार्थ देना। (२) संतान होना। औलाद होना। गोद भरी रहे = पुत्रवती बनी रहे।

गोदनशीन—संज्ञा पुं० [हिं० गोद+फ़ा० नशीन] वह जिसे किसी ने गोद लिया हो। दत्तक।

गोदनशीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोद+फ़ा० नशीनी] गोद बैठने का समारोह। दत्तक होना।

गोदनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोदना+हारी (प्रत्य०)] कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।

गोदना—क्रि० स० [हिं० खोदना] १. चुभाना। गड़ाना। २ किसी कार्य के लिये बार बार जोर देना। ३ चुभती या लगती हुई बात कहना। ताना देना। ४. नील या कोयले के पानी में सुई को डुबाकर शरीर को विविध प्रकार से चिह्नित करना।

संज्ञा पुं० गोदने से बना चिह्न या आकृति।

गोदा—संज्ञा पुं० [हिं० घौंद] बड़, पीपल या पाकर के पक्के फल।

गोदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ को विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया। २ केशांत संस्कार।

गोदाम—संज्ञा पुं० [अं० गोडाउन] वह स्थान जहाँ बिक्री का बहुत सा माल रखा जाता हो।

गोदावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

गोदी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोद"।

गोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौओं का समूह। गौओं का झुंड। २ गौ रूपी संपत्ति। ३ एक प्रकार का तीर।

Ⓟ संज्ञा पुं० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्धन पर्वत।

गोधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोह नामक जंतु।

गोधूम—संज्ञा पुं० [सं०] गेहूँ।

गोधूलि, गोधूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुँधली छा जाय। संध्या का समय।

गोन—संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १ टाट, कंबल चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है। २. साधारण बोरा। खास।

संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] रस्सी जिसे नाव खींचने के लिये मस्तूल में बाँधते हैं।

गोनर्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. नागरमोथा। २ सारस पक्षी। ३ एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

गोनस—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का साँप। २ वैक्रांत मणि।

गोनाⓅ—क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोनिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औजार।

संज्ञा पुं० [हिं० गोन=बोरा+इया (प्रत्य०)] स्वय अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।

गोनी—संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १ टाट का थैला। बोरा। २ पटुआ। सन। पाट।

गोप—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ की रक्षा करनेवाला। २. ग्वाला। अहीर। ३ गोशाला का अध्यक्ष या प्रबंध करनेवाला। ४ भूपति। राजा। ५ गाँव का मुखिया।

संज्ञा पुं० [सं० गुंफ] गले में पहनने का एक आभूषण।

गोपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ ग्वाल। गोप। ५ राजा। ६ सूर्य।

गोपद—संज्ञा पुं० [सं० गोष्पद] १. गौशाला। २ गौ के खुर का निशान।

गोपदी—वि० [हिं० गोपद] गौ के खुर के समान। बहुत छोटा।

गोपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिपाव। दुराव। २ छिपाना। लुकाना। ३ रक्षा।

गोपना(पु)—क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोपनीय—वि० [सं०] छिपाने के लायक।

गोपांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोप जाति की स्त्री।

गोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय पालनेवाली, अहीरिन। ग्वालिन। २ श्यामा लता। ३. महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।

गोपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का पालनपोषण करनेवाला। २ अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४ एक छंद।

गोपालतापन, गोपालतापनीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

गोपाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

गोपिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोप की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वालिन।

गोपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ग्वालिनी। गोपपत्नी। २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका, व्रज की गोपजातीय स्त्रियाँ।

गोपीचंदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी।

गोपीत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का खजन पक्षी।

गोपीनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गोपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ की पूँछ। २. एक प्रकार का गावदुमा हार।

गोपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नगर का द्वार। शहर का फाटक। २ किले का फाटक। ३ फाटक। दरवाजा। ४ स्वर्ग।

गोपेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २ गोपों में श्रेष्ठ, नंद।

गोप्ता—वि० [सं० गोप्तृ] रक्षा करनेवाला। रक्षक।

गोप्य—वि० [सं०] गुप्त रखने योग्य।

गोफ—संज्ञा पुं० दे० "गोफा"।

गोफन, गोफना—संज्ञा पुं० [सं० गोफण] छींके के आकार का जाल जिसमें ढेले आदि भरकर चलाते हैं। ढेलवाँस। फन्नी।

गोफा—संज्ञा पुं० [सं० गुंफ] नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता।

गोबर—संज्ञा पुं० [सं० गोमय] गाय की विष्ठा। गौ का मल।

गोबरगणेश—वि० [हिं० गोबर+सं० गणेश] १ मूर्ख। बेवकूफ। २ भद्दा। बेडौल।

गोबरहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोबर+हारी (प्रत्य०)] गोबर पाथने या काढ़ने का कार्य करनेवाली औरत। उ०—कंस की गोबरहारी जातिपाँतिहू सौं न्यारी, मलिन महा री अब कछू न कह्यौ परै।—रससाराश।

गोबरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोबर+ई (प्रत्य०)] १ गोबर की लिपाई। २ कंडा। उपला।

गोबरैला—संज्ञा पुं० दे० "गुबरैला"।

गोभ—संज्ञा पुं० [हिं० गोफा] पौधों का एक रोग।

गोभा—संज्ञा स्त्री० [सं० गुंफ] लहर।

संज्ञा पुं० [?] अंकुर। आँख।

गोभिल—संज्ञा पुं० [सं०] सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी—संज्ञा स्त्री० [सं० गोजिह्वा या गुंफ=गुच्छा] १ एक शाक जिसके तीन प्रकार हैं—फूलगोभी, पातगोभी और गाँठगोभी। २ एक प्रकार की घास। वनगोभी।

गोम—संज्ञा स्त्री० [देश०] घोड़ों की एक भौंरी।

गोमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी। वासिष्ठी। २ एक देवी। ३ ग्यारह मात्राओं का एक छंद।

गोमय—संज्ञा पुं० [सं०] गौ का मल। गोबर।

गोमर—संज्ञा पुं० [हिं० गौ+√मार] कसाई। उ०—हा वलसिंधु लषन सुखदाई। परी तात गोमर कर गाई।—विश्रामसागर।

गोमाय, गोमायु—संज्ञा पुं० [सं०] गीदड़। उ०—गोमाय गृद्ध करार खर रव स्वान बोलहिं अति घने। जनु कालदूत उलूक बोलहिं वचन परम भयावने।—मानस।

गोमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का मुँह।

मुहा०—गोमुख नाहर या व्याघ्र=वह मनुष्य जो देखने में बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो।

२ वह शंख जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है। ३ नरसिंहा नाम का बाजा। ४ दे० "गोमुखी"।

गोमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जपमाली। जपगुथली। २ गौ के मुँह के आकार का गंगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती है।

गोमूत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का चित्रकाव्य। २ चित्रण आदि में लहरियेदार बेल। बरदमुतान। बैलमुतनी।

गोमेद, गोमेदक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिए पीला होता है। राहुरत्न।

गोमेध—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।

गोयँड़—संज्ञा पुं० दे० "गोइँड़"।

गोय—संज्ञा पुं० [फा०] गेंद।

गोया—क्रि० वि० [फा०] मानो।

गोर—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय। कब्र।

†वि० [सं० गौर] गोरा।

गोरख—संज्ञा पुं० दे० "गोरखनाथ"।

गोरखइमली—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरख+इमली] एक बहुत बड़ा पेड़। कल्पवृक्ष।

गोरखधंधा—संज्ञा पुं० [हिं० गोरख+धंधा] १ कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिनको विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ते या अलग करते हैं। २ कोई ऐसी चीज या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो।

गोरखनाथ—संज्ञा पुं० [हिं० गोरक्षनाथ] एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी।

गोरखपंथी—वि० [हिं० गोरख+पंथी] गोरखनाथ के चलाए हुए सम्प्रदायवाला।

गोरखमुंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरख+सं० मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमें घुंडी के समान गोल गुलाबी रंग के फूल लगते हैं।

गोरखर—संज्ञा पुं० [फा०] गधे की जाति का एक जंगली पशु।

गोरखा—संज्ञा पुं० [हिं० गोरख] १ नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश। २ इस देश का निवासी।

गोरज—संज्ञा पुं० [सं०] गौ के खुरों से उठी हुई धूल।

गोरट(पु)—वि० पुं० [हिं० गोरा] [स्त्री० गोरटी] गोरे रंगवाला। गोरा।

गोरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूध। । २. दही। ३ तक्र। मठा। छाछ। ४ इंद्रियों का सुख।

गोरसा—संज्ञा पुं० [सं० गोरस] गौ के दूध से पला हुआ बच्चा।

गोरसी—संज्ञा स्त्री० [सं० गोरस+हिं० ई (प्रत्य०)] दूध गरम करने की अँगीठी।

गोरा—वि० [सं० गौर] सफेद और स्वच्छ वर्णवाला। जिसके शरीर का चमड़ा सफेद और साफ हो (मनुष्य)।

संज्ञा पुं० यूरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी। फिरंगी।

गोराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरा+ई (प्रत्य०)] १ गोरापन। २ सुन्दरता। सौंदर्य।

गोरिल्ला—संज्ञा पुं० [अफ्रिका] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का वनमानुस।

गोरि(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० गोर] कब्र। उ०—गोरि गोमर पुरिल मही, पएरहु देना एक ठाम नहीं।

गोरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गोरी] सुंदर और गौर वर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।

गोरू—संज्ञा पुं० [सं० गोरूप] १ सींगवाला पशु। २ गाय, बैल, भैंस आदि।

गोरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] पीले रंग का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।

गोलंदाज—संज्ञा पुं० [फा०] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।

गोलंबर—संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अंबर] १ गुंबद। २ गुंबद के आकार का कोई गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ। ३ गोलाई। ४ कलबूत। कालिब।

गोल—वि० [सं०] १ जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो। चक्र के आकार का। वृत्ताकार। २ मोटा या घनात्मक होते हुए वृत्ताकार। गोले या गेंद के आकार का।

मुहा०—गोल गोल (१) स्थूल रूप से। मोटे हिसाब से। (२) अस्पष्ट रूप से। गोल बात = ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। गोल हो जाना = गायब हो जाना।

संज्ञा पुं० [सं०] १ मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त। २ गोलाकार पिंड। गोला। वटक।

संज्ञा पुं० [फा० गोल] मंडली। झुंड।

संज्ञा पुं० [अँ०] १ फुटबाल आदि के खेल में जीत के लिये गेंद पहुँचाने का स्थान। २ इस प्रकार गेंद पहुँचाने की क्रम-संख्या।

गोलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोलोक। २ गोल पिंड। ३ विधवा का जारज पुत्र। ४ मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५ आँख का ढेला। ६ आँख की पुतली। ७. गुंबद। ८ वह संदूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय। ९ गल्ला। गुल्लक। १० वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिये संग्रह करके रखा जाय। फंड।

गोलगप्पा—संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अनु० गप] एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुलकी।

गोलमाल—संज्ञा पुं० [सं० गोल +अ० माल] गड़बड़। अव्यवस्था।

गोलमिर्च—संज्ञा स्त्री दे० "काली मिर्च"।

गोलयंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे ग्रहों, नक्षत्रों की गति और अयन परिवर्तन आदि जाने जाते हों।

गोलयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में एक बुरा योग। २ गड़बड़। गोलमाल।

गोला—संज्ञा पुं० [हिं० गोल] १ किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड, जैसे—लोहे का गोला। २ लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। ३ वायु गोला। ४ जंगली कबूतर। ५ नारियल की गिरी का गोल पिंड। गरी का गोला। ६ वह बाजार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों। ७ लकड़ी का लंबा लट्ठा जो छाजन में लगाने तथा दूसरे कामों में आता है। कड़ी। बल्ला। ८ रस्सी, सूत आदि की गोल लपेटी हुई पिंडी।

गोलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+आई (प्रत्य०)] गोल का भाव। गोलापन।

गोलाकार, गोलाकृति—वि० [सं०] जिसका आकार गोल हो। गोल आकृतिवाला।

गोलार्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचों बीच काटने से बनता है।

गोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोला का अल्पा०] १ छोटा गोलाकार पिंड। वटिका। वटिया। २ औषध की वटिका। वटी। ३. मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। ४ गोली का खेल। ५. कागज, धातु आदि की बनी विस्फोटक टोपी जिसे बंदूक, तमंचे आदि में भरकर चलाया जाता है।

गोलोक—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है।

गोवना(पु)—क्रि० स० दे० "गोना"।

गोवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] वृंदावन का एक पर्वत। प्रसिद्ध है कि इसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था।

गोविंद—संज्ञा पुं० [सं० गोपेंद्र, प्रा० गोविंद] १ श्रीकृष्ण। २ वेदांतवेत्ता। तत्वज्ञ।

गोश—संज्ञा पुं० [फा०] सुनने की इंद्रिय। कान।

गोशमाली—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कान उमेठना। २ ताड़ना। कड़ी चेतावनी।

गोशवारा—संज्ञा पुं० [फा०] १ खंजन नामक पेड़ का गोंद। २ कान का बाला। कुंडल। ३ बड़ा मोती जो सीप में अकेला हो। ४ कलाबत्तू से बुना हुआ पगड़ी का आँचल। ५ तुर्रा। कलँगी। सिरपेच। ६ जोड़। मीजान। ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आयव्यय अलग अलग दिखलाया गया हो।

गोशा—संज्ञा पुं० [फा०] १ कोना। अंतराल। २ एकांत स्थान। ३ तरफ। दिशा। ओर। ४ कमान की दोनों नोकें। धनुष-कोटि।

गोशानशीन—वि० [फा०] एकांतवास करनेवाला।

गोशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौओं के रहने का स्थान। गोष्ठ।

गोश्त—संज्ञा पुं० [फा०] मांस।

गोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोशाला। २ परामर्श। सलाह। ३ दल। मंडली।

गोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत से लोगों का समूह। सभा। मंडली। २ वार्तालाप। बातचीत। ३ परामर्श। सलाह। ४ एक ही अंक का एक रूपक।

गोसमावल—संज्ञा पुं० दे० "गोशवारा"।

गोसाईं—संज्ञा पुं० [सं० गोस्वामी] १ गौओं का स्वामी या अधिकारी। २ ईश्वर। ३ मालिक। प्रभु। ४ सन्यासियों का एक संप्रदाय। ५ विरक्त साधु। अतीत।

गोसैयाँ†—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।
गोस्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंगूर। द्राक्षा।
गोस्वामी—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। जितेंद्रिय। २ वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी। ३ संन्यासियों का एक सम्प्रदाय।
गोह—संज्ञा स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।
गोहन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० गोधन] १. संग रहनेवाला। साथी। उ०—सूरदास प्रभु मोहन गोहन की छवि बाढ़ी मेटति दुख निरखि नैन मैन के दरद को। —सूर०। २ संग। साथ। उ०—कीन्ह्यो बहुतेरो वहूँ फिरत न फेरो मन, मेरो मन मोहन के गोहन फिरतु है। —रससाराश।
गोहरा—संज्ञा पुं० [सं० गो+हरा ?] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर। कंडा। उपला।
गोहराना†—क्रि० अ० [हिं० गोहार] पुकारना। बुलाना। आवाज देना।
गोहार—संज्ञा स्त्री० [सं० गो+हार (हरण)] १ पुकार। दुहाई। रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना। २. हल्लागुल्ला। शोर।
गोहारी†—संज्ञा स्त्री० दे० "गोहार"। उ०—चढ़े अस्त्र लै कृस्न मुरारी। इंद्रलोक सब लाग गोहारी। —पदमावत।
गोही(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० गोपन] १ दुराव। छिपाव। २ छिपी हुई बात। गुप्त वार्ता। उ०—अपनो बनिज दुरावत हो कत नाउँ लियो इतनो ही। कहा दुरावति ही मो आगे सब जानत तुव गोही। —सूर०।
गोहुअन—संज्ञा पुं० दे० "गेहुँअन"।
गौं—संज्ञा स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १ प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर। सुयोग। मौका। घात।

यौ०—गौं घात=उपयुक्त अवसर या स्थिति।

२ प्रयोजन। मतलब। गरज। अर्थ।

मुहा०—गौं का यार=मतलबी। स्वार्थी। गौं निकलना=काम निकलना। स्वार्थसाधन होना। गौं पड़ना=गरज होना।

३. ढंग। ढब। तर्ज। ४ पार्श्व। पक्ष।
गौ—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय। गैया।
गौखा†—संज्ञा स्त्री० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की। झरोखा। २. दालान या बरामदा।
गौखा†—संज्ञा पुं० दे० "गौख"।

संज्ञा पुं० [हिं० गौ+खाल] गाय का चमड़ा।
गौगा—संज्ञा पुं० [अ०] १ शोर। गुलगपाड़ा। हल्ला। २. अफवाह। जनश्रुति।
गौचरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौ+√चर+ई (प्रत्य०)] गाय चराने का कर या महसूल।
गौड़—संज्ञा पुं० [सं० गौड] १. बंग देश का एक प्राचीन विभाग। २ ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं। ३ ब्राह्मणों की एक जाति। ४ गौड़ देश का निवासी। ५ कायस्थों का एक भेद। ६ संपूर्ण जाति का एक राग।
गौड़िया†—वि० [हिं० गौड़+इया (प्रत्य०)] गौड देश का। गौड देश संबंधी।
गौड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुड से बनी मदिरा। २ काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें टवर्ग, संयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते हैं। ३ एक रागिनी।
गौण—वि० [सं०] १ जो प्रधान या मुख्य न हो। २ सहायक। संचारी।
गौणी—वि० स्त्री० [सं०] १ अप्रधान। साधारण। जो मुख्य न मानी जाय।

संज्ञा स्त्री० एक लक्षण जिसमें किसी एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है।
गौतम—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौतम ऋषि के वंशज ऋषि। न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य ऋषि। ३ बुद्धदेव। ४ सप्तर्षिमंडल के तारों में से एक।
गौतमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या। २ कृपाचार्य की स्त्री। ३ गोदावरी नदी। ४ दुर्गा।
गौदुमा—वि० दे० "गावदुम"।
गौन†—संज्ञा पुं० दे० "गमन"।
गौनहाई†—वि० स्त्री० [हिं० गौना+हाई (प्रत्य०)] जिसका गौना हाल में हुआ हो।
गौनहार—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौना+हार (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय। २ दे० "गौनहारी"।
गौनहारिन, गौनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गावना+हार (प्रत्य०)] गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।
गौना—संज्ञा पुं० [सं० गमन] विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वर वधू को अपने साथ घर लाता है। द्विरागमन। मुकलावा।
गौमुखी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोमुखी"।
गौर—वि० [सं०] १. गोरे चमड़ेवाला। गोरा। २ श्वेत। उज्ज्वल। सफेद।

संज्ञा पुं० [सं०] १ लाल रंग। २. पीला रंग। ३. चंद्रमा। ४. सोना। ५. केसर।

संज्ञा पुं० दे० "गौड़"।

संज्ञा पुं० [अ०] १ सोचविचार। चिंतन। २ खयाल। ध्यान।
गौरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोराई। गोरापन। २ सफेदी।
गौरव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़प्पन। महत्त्व। २ सम्मान। इज्जत। ३. उत्कर्ष। ४ भारीपन।
गौरवा—संज्ञा पुं० [?] गौरा पक्षी। उ०—जाहि बया होइ पिउ कंठ लवा। करै मेराव सोइ गौरवा।—पदमावत।
गौरवान्वित—वि० [सं०] गौरव या महिमा से युक्त। मान्य। सम्मानित।
गौरवित—वि० दे० "गौरवान्वित"।
गौरवी—वि० [सं० गौरविन्] [स्त्री० गौरविनी] १ गौरवान्वित। २ अभिमानी।
गौरांग—संज्ञा पुं० [सं०] १. चैतन्य महाप्रभु। २ विष्णु। ३ युरोपीय व्यक्ति।
गौरा—संज्ञा स्त्री० [सं० गौर] गोरे रंग की स्त्री। २ पार्वती। गिरिजा। ३ हल्दी।
गौरासार—संज्ञा पुं० दे० "जवादि"।
गौरिया—संज्ञा स्त्री० [?] १ काले रंग का एक जलपक्षी। २ मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।
गौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३ आठ वर्ष की कन्या। ४ हल्दी। ५ तुलसी। ६ गोरोचन। ७ सफेद रंग की गाय। ८ सफेद दूब। ९ गंगा नदी। १० पृथिवी।
गौरीशंकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।
गौरीश—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
गौरैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया"।
गौल्मिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक गुल्म या ३० सैनिकों का नायक।
गौहर—संज्ञा पुं० [फा०] मोती।

गोहरा—संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] गायों के रखने का स्थान । गौशाला ।
ग्याति—संज्ञा स्त्री० दे० "जाति" ।
ग्यान†—संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान" ।
ग्यारस—संज्ञा स्त्री० [सं० एकादश] एकादशी ।
ग्यारह—वि० [सं० एकादश, हिं० ग्यारस] दस और एक ।
संज्ञा पुं० दस और एक की सूचक संख्या ११ ।
ग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुस्तक । किताब । २ गाँठ लगाना । ग्रथन । ३ धन ।
ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रथ की रचना करनेवाला ।
ग्रंथचुंबक—संज्ञा पुं० [सं० ग्रथ+चुंबक =चूमनेवाला] जो ग्रथों का पाठ मात्र कर गया हो, उसके विषय को समझा न हो, जैसे 'साधारण योग्यतावाले ग्रथचुंबकों की उसके सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी ।'—सौ अजान० । अल्पज्ञ ।
ग्रंथचुंबन—संज्ञा पुं० [सं० ग्रथ+चुंबन] किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना ।
ग्रंथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोंद लगाकर जोड़ना । २ जोड़ना । ३ गूँथना ।
ग्रंथनाⓅ—क्रि० स० दे० "ग्रथन" ।
ग्रंथसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रथ का विभाग, जैसे—सर्ग, अध्याय आदि ।
ग्रंथसाहब—संज्ञा पुं० [हिं० ग्रथ+साहब] सिक्खों की धर्मपुस्तक ।
ग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाँठ । २ बंधन । ३ मायाजाल । ४ एक रोग जिसमें गाँठों की तरह सूजन होती है ।
ग्रंथित—वि० [सं० ग्रथित] १ गूँथा हुआ । २ गाँठ दिया हुआ । जिसमें गाँठ लगी हो ।
ग्रंथिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाडर दूब ।
ग्रंथिबंधन—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को गाँठ देकर बाँधना । गँठबंधन ।
ग्रंथिल—वि० [सं०] गाँठदार । गँठीला ।
ग्रथित—वि० [सं०] १ गाँठ देकर बाँधा हुआ । २. एक में गूथा या पिरोया हुआ ।
ग्रसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भक्षण । निगलना । २ पकड़ । ग्रहण । ३ बुरी तरह पकड़ना । ४ ग्रास ।
ग्रसना—क्रि० स० [सं० ग्रसन] १ बुरी तरह पकड़ना । २ सताना ।
ग्रसित—वि० दे० "ग्रस्त" ।
ग्रस्त—वि० [सं०] [स्त्री० ग्रस्ता] १ पकड़ा हुआ । २. पीड़ित । ३ खाया हुआ । निगला हुआ । ४ ग्रहण लगा हुआ ।
ग्रस्तास्त—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना ।
ग्रस्तोदय—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि उनपर ग्रहण लगा हो ।
ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौर मंडल के नौ प्रधान तारे—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु शुक्र, शनि, राहु और केतु । २ नौ की संख्या । ३. चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण । ४. ग्रहण करना । लेना । ५ अनुग्रह । कृपा । ६ राहु । ७ स्कंद, शकुनी आदि छोटे बच्चों के रोग ।
मुहा०—अच्छे ग्रह होना=अच्छा समय होना । फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह होना । बुरे ग्रह होना=ग्रहों का प्रतिकूल होना ।
† ६ वि० बुरी तरह से पकड़ने या तंग करनेवाला । दिक करनेवाला ।
ग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है । उपराग । २ पकड़ने या लेने की क्रिया । ३ स्वीकार । मंजूरी ।
ग्रहणीय—वि० [सं०] ग्रहण करने के योग्य ।
ग्रहदशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोचर ग्रहों की स्थिति । २ ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था । ३ अभाग्य । कमबख्ती ।
ग्रहपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य । २ शनि । ३. आक का पेड़ ।
ग्रहवेध—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रह की स्थिति आदि का जानना ।
ग्रांडील—वि० [अं० ग्रैंडियर] ऊँचे कद का । बहुत बड़ा या ऊँचा ।
ग्राउंड—संज्ञा पुं० [अं०] १ जमीन । भूमि । २ खुला मैदान । ३ आधार ।
ग्राम—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटी बस्ती । गाँव । २ मनुष्यों के रहने का स्थान । बस्ती । आबादी । जनपद । ३ समूह । ढेर । ४. शिव । ५ क्रम से सात स्वरों का समूह । सप्तक (संगीत) ।
ग्रामणी—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाँव का मालिक । २ प्रधान । अगुआ ।
ग्रामदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी एक गाँव में पूजा जानेवाला देवता । २ गाँव का रक्षक देवता । डीहराज ।
ग्रामसिंह—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता ।
ग्रामिक—वि० [सं०] १. गाँव में रहनेवाला । २ उजड्ड । गँवार ।
ग्रामीण—वि० [सं०] १ ग्रामसंबंधी । २ दे० "ग्रामिक" ।
ग्राम्य—वि० [सं०] [स्त्री० ग्राम्या] १ गाँव से संबंध रखनेवाला । ग्रामीण । २ बेवकूफ । मूढ़ । ३ अश्लील ।
संज्ञा पुं० १ काव्य में भद्दे या गँवारू शब्दों के प्रयोग का दोष । २ अश्लील शब्द या वाक्य । ३ मैथुन । स्त्रीप्रसंग ।
ग्राम्यधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन । स्त्रीप्रसंग ।
ग्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत । २ पत्थर । ३ ओला ।
ग्रास—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय । गस्सा । कौर । निवाला । २ पकड़ने की क्रिया । पकड़ । ३ ग्रहण लगना ।
ग्रासक—वि० [सं०] १ पकड़नेवाला । २. निगलनेवाला । ३ छिपाने या दबानेवाला ।
ग्रासना—क्रि० स० दे० "ग्रसना" ।
ग्रासित—वि० दे० "ग्रस्त" ।
ग्राह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मगर । घड़ियाल २ ग्रहण । उपराग । ३ पकड़ना । लेना ।
ग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रहण करनेवाला । २ मोल लेनेवाला । खरीदनेवाला । खरीदार । ३. लेने या पाने की इच्छा रखनेवाला । चाहनेवाला । ४. वह औषधि जिससे बँधा पाखाना होने लगे ।
ग्राही—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ग्राहिणी] १ वह जो ग्रहण करे । स्वीकार करनेवाला । पकड़नेवाला । २ मल रोकनेवाला पदार्थ ।
ग्राह्य—वि० [सं०] १ लेने योग्य । २ स्वीकार करने योग्य । ३ जानने योग्य ।
ग्रीखमⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म" ।
ग्रीवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्दन । गला ।
ग्रीषमⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म" ।
ग्रीष्म—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरमी की ऋतु । जेठ आषाढ़ का समय । २ उष्ण । गरम ।
ग्रेहⓅ—संज्ञा पुं० दे० "गेह" ।

ग्रेही(पु)—संज्ञा पुं० दे० "गृहस्थ"।

ग्लानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शारीरिक या मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। खेद। २ अपनी दशा, बुराई या दोष आदि को देखकर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता।

ग्वार—संज्ञा स्त्री० [सं० गोराणी] एक वार्षिक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। कौरी। खुरथी।

संज्ञा पुं० [हिं० ग्वाल] अहीर।

ग्वारनट, ग्वारनेट—संज्ञा स्त्री० [अं० गारनेट] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा—संज्ञा पुं० दे० "घीकुआँर"।

ग्वारफली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वार+फली] ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

ग्वारी—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार"।

ग्वाल—संज्ञा पुं० [सं० गो+पाल, प्रा० गोवाल] १ अहीर। गोप। २ एक छंद का नाम। ३ ब्रजभाषा के एक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

ग्वाला—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।

ग्वालिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वाल] १ ग्वाले की स्त्री। ग्वाल जाति की स्त्री। २ ग्वार।

संज्ञा स्त्री० [सं० गोपालिका] एक बरसाती कीड़ा। गिजाई। घिनौरी।

ग्वैंठना(पु)—क्रि० स० [सं० गुंठन, हिं० गुमेठना] मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।

ग्वैंड़ा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "गोइँठ"। उ०—घर घर ते पकवान चलाए। निकसि गाँव के ग्वैंड़े आए।—सूर०।

घ

घ—हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है।

घँघरा—संज्ञा पुं० दे० "घाँघरा"।

घँघोलना—क्रि० स० [हिं० घना+घोलना] १ हिलाकर घोलना। पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना। २ पानी को हिलाकर मैला करना।

घंट—संज्ञा पुं० [सं० घट] १ घड़ा। २ मृतक की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।

संज्ञा पुं० दे० "घंटा"।

घंटा—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० घंटी] १ धातु का एक बाजा। घड़ियाल। २ वह घड़ियाल जो समय की सूचना देने के लिये बजाया जाता है। ३ दिन-रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय।

घंटाघर—संज्ञा पुं० [हिं० घंटा+घर] वह ऊँची मीनार जिसपर ऐसी बड़ी घड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत छोटा घंटा। २ घुँघुरू।

घंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० घंटिका] पीतल या फूल की छोटी लुटिया।

संज्ञा स्त्री० [सं० घंटी] १ बहुत छोटा घंटा। २ घंटी बजने का शब्द। ३ घुँघुरू। चौरासी। ४ गले की हड्डी की वह गुरिया जो अधिक निकली रहती है। ५ गले के अंदर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास लटकती रहती है। कौआ।

घई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० गभीर] १ गंभीर भँवर। पानी का चक्कर। उ०—प्रीति-प्रतीति-रीति-सोभासरि थाहत जहँ तहँ घई।—गीता०। २ थूनी। टेक।

वि० [सं० गभीर] जिसकी थाह न लग सके। बहुत गहरा। अथाह।

घघरबेल—संज्ञा स्त्री० दे० "बदाल"।

घघरा—संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

घट—संज्ञा पुं० [सं०] १ घड़ा। जलपात्र। कलसा। २ पिंड। शरीर।

मुहा०—घट में बसना या बैठना = मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना।

वि० [हिं० घटना] घटा हुआ। कम। थोड़ा। छोटा।

घटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीच में पटनेवाला। मध्यस्थ। २ विवाह संबंध तय करानेवाला। बरेखिया। ३ दलाल। ४ काम पूरा करनेवाला। चतुर व्यक्ति। ५ वंशपरंपरा बतलानेवाला। चारण।

घटकर्ण(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कुंभकर्ण"।

घटका—संज्ञा पुं० [सं० घटक=शरीर] मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक रुककर घरघराहट के साथ निकलती है। कफ छेंकने की अवस्था। घर्रा।

घटती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घट+ती (प्रत्य०)] १ कमी। कसर। न्यूनता। २ हीनता। अप्रतिष्ठा।

घटदासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुटनी।

घटन—सं० पुं० [सं०] [वि० घटनीय, घटित] १ गढ़ा जाना। २ उपस्थित होना।

घटना—क्रि० अ० [सं० घटन] १ होना। उपस्थित होना। २ लगना। सटीक बैठना। ३ ठीक उतरना।

क्रि० अ० [हिं० कटना] १ कम होना। क्षीण होना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] कोई बात जो हो जाय। वाकया। वारदात।

घट-बढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घट+√बढ़] कमीबेशी। न्यूनाधिकता।

घटयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घटवाना—क्रि० स० [हिं० घटाना का प्रे० रूप] घटाने का काम कराना। कम कराना।

घटवाई—संज्ञा पुं० [हिं० घाट+वाई (प्रत्य०)] घाट का कर लेनेवाला। उ०—आवन जान न पावत कोऊ तुम मग में घटवाई। सूर-श्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी माई।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √घट+वाई (प्रत्य०)] कम करवाई।

घटवार—संज्ञा पुं० [हिं० घाट+पाल या वाला] १ घाट का महसूल लेनेवाला। २ मल्लाह। केवट। ३ घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटसंभव—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घट-स्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी मंगल कार्य या पूजन आदि के पूर्व जल-भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन। (इस दिन से देवी की पूजा आरंभ होती है।)

घटहा†—संज्ञा पुं० [हिं० घाट+हा (प्रत्य०)] १ घाट का ठेकेदार। २ वह नाव जो इस पार से उस पार जाती हो।

घटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल। २ समूह। झुंड।

घटाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घट+आई (प्रत्य०)] हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश—संज्ञा पुं० [सं०] घड़ों के अंदर की खाली जगह।

घटाटोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो। २ गाड़ी या बहली को ढक लेनेवाला ओहार।

घटाना—क्रि० स० [हिं० घटना का स० रूप] १ कम करना। क्षीण करना। २ बाकी निकालना। काटना। ३ अप्रतिष्ठा करना।

घटाव—संज्ञा पुं० [हिं० √घट+आव (प्रत्य०)] १ कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २ अवनति। ३ नदी की बाढ़ की कमी।

घटावना†Ⓟ—क्रि० स० दे० "घटाना"।

घटिक—संज्ञा पुं० [सं०] घटा पूरा होने पर घड़ियाल बजानेवाला व्यक्ति। घड़ियाली।

घटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा घड़ा या नाँद। २ घटी यंत्र। घड़ी। ३ एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित—वि० [सं०] १ जो हुआ हो। २ रचा हुआ। निर्मित। रचित।

घटिताईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० घटी] घाटा। कमी।

घटिया—वि० [हिं० √घट+इया (प्रत्य०)] १ जो अच्छे मेल का न हो। खराब। सस्ता। 'बढ़िया' का उलटा। २ अधम। तुच्छ।

घटिहा—वि० [हिं० घात+हा (प्रत्य०)] १ घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २ चालाक। मक्कार। ३ धोखेबाज। ४ व्यभिचारी। लंपट। ५ दुष्ट।

घटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौबीस मिनट का समय। घड़ी। मुहूर्त। २ समयसूचक यंत्र। घड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √घट+ई (प्रत्य०)] १ कमी। न्यूनता। २ हानि। क्षति। नुकसान। घाटा।

घटूकचⓅ—संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

घटोत्कच—संज्ञा पुं० [सं०] हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घट्टा—संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

घड़घड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु० घड़घड़+आहट (प्रत्य०)] घड़घड़ शब्द होने का भाव।

घड़ना—क्रि० स० दे० "गढ़ना"।

घड़नाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा+नैया (नाव)] बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़नैल—संज्ञा पुं० दे० "घड़नई"।

घड़ा—संज्ञा पुं० [सं० घट] मिट्टी का पानी भरने का बरतन। जलपात्र। बड़ी गगरी।

मुहा०—घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यंत लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

घड़ाना—क्रि० स० दे० "गढ़ाना"।

घड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका] १ मिट्टी का बरतन जिसमें सुनार सोना, चाँदी गलाते हैं। २ मिट्टी का छोटा प्याला।

घड़ियाल—संज्ञा पुं० [सं० घटिका, प्रा० घड़िया+ल ?] वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिये बजाया जाता है।

संज्ञा पुं० [?] एक बड़ा और हिंसक जलजंतु। ग्राह।

घड़ियाली—संज्ञा पुं० [हिं० घड़ियाल] घंटा बजानेवाला।

घड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० घटी] १ दिनरात का ३२ वाँ भाग। २४ मिनट का समय।

मुहा०—घड़ी घड़ी=बार बार। थोड़ी थोड़ी देर पर। घड़ी गिनना=(१) किसी बात का बड़ी उत्सुकता के साथ आसरा देखना। (२) मरने के निकट होना।

२ समय। काल। ३. अवसर। उपयुक्त समय। ४ समयसूचक यंत्र।

घड़ीदिआ—संज्ञा पुं० [हिं० घटी+दीआ =दीपक] वह घड़ा और दीया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज—संज्ञा पुं० [हिं० घड़ी+फ़ा० साज] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़ोला—संज्ञा पुं० [हिं० घड़ा+ओला (प्रत्य०)] छोटा घड़ा।

घड़ौंची—संज्ञा स्त्री० [सं० घटमंच प्रा० घडवच] पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई।

घतिया—संज्ञा पुं० [हिं० घात+इया (प्रत्य०)] घात करनेवाला। धोखा देनेवाला।

घतियाना—क्रि० स० [हिं० घात से ना० धा०] १ अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २ चुराना। छिपाना।

घन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ लुहारों का बड़ा हथौड़ा। ३ समूह। झुंड। ४ कपूर। ५ घंटा। घड़ियाल। ६ वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणन करने से लब्ध हो। ७ लंबाई चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ८ ताल देने का बाजा। ९ पिंड। शरीर। १० वेद-पाठ का एक प्रकार।

वि० १ घना। गझिन। २ गठा हुआ। ठोस। ३ दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक। ज्यादा।

घनक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] गड़गड़ाहट। गरज।

घनकना—क्रि० अ० [अनु०] गरजना।

घनकारा—वि० [हिं० घनक] गरजनेवाला।

घनकोदंड—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष। उ०—कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड। मदन धनु मनो शर सँधाने देखि घनकोदंड।—सूर०।

घनगरज—संज्ञा स्त्री० [सं० घन+गर्जन] १ बादल के गरजने की ध्वनि। २ एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। ढिंगरी। ३ एक प्रकार की तोप।

घनघनाना—क्रि० अ० [अनु०] घंटे की सी ध्वनि निकलना।

क्रि० स० [अनु०] घन घन शब्द करना।

घनघनाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु० घनघन+आहट (प्रत्य०)] घनघन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।

घनघोर—संज्ञा पुं० [सं० घन+घोर] १ भीषण ध्वनि। २ बादल की गरज।

वि० १ बहुत घना। गहरा। २ भीषण।

यौ०—घनघोर घटा=बड़ी गहरी काली घटा।

घनचक्कर—संज्ञा पुं० [सं० घन+चक्र] १ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदैव चंचल रहे। २ मूर्ख। बेवकूफ। मूढ़। ३ वह जो व्यर्थ इधर उधर फिरा करे। आवारागर्द।

घनता—संज्ञा स्त्री० दे० "घनत्व"।

घनताल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पपीहा। चातक। २ करताल। ताली।

घनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ घना होने का भाव। घनापन। सघनता। २ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव। ३ गठाव। ठोसपन।

घननाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादलों की गरज २ मेघनाथ।

घनफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। २ वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो वार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनबान—संज्ञा पुं० [हिं० घन+वाण] एक प्रकार का वाण जिससे बादल छा जाते थे।

घनबेल—वि० [हिं० घन+बेल] जिसमें बेलबूटे हों। बेलबूटेदार।

घनमूल—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक, जैसे—२७ का घनमूल ३ है।

घनरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। पानी २ कपूर। ३ हाथियों का एक रक्तरोग जिसमें उनके पैर के नाखून गलने लगते हैं और वे लँगड़ाने लगते हैं।

घनवर्धन—संज्ञा पुं० [सं०] धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।

घनवर्धनीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे वे पीटने पर बढ़ती हैं।

घनश्याम—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला बादल। २ श्रीकृष्ण। ३ रामचंद्र।

घनसार—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

घना—वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १ जिसके अवयव या अंश पास पास सटे हों, जैसे—घनी आबादी या घना जंगल। सघन। गझिन। गुंजान। २ घनिष्ट। नजदीकी। निकट का। ३ बहुत।

घनाक्षरी—संज्ञा पुं० [सं०] दंडक या मनहर छंद जिसे लोग कवित्त कहते हैं। इसमें १६, १५ के विश्राम से प्रत्येक चरण में ३१ अक्षर होते हैं। अंत में प्राय गुरु वर्ण होता है। शेष के लिये लघु गुरु का कोई नियम नहीं है।

घनात्मक—वि० [सं०] १ जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) बराबर हो। २ जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

घनानंद—संज्ञा पुं० [सं०] गद्यकाव्य का एक भेद।

घनाली—संज्ञा स्त्री० [सं० घन+अवली] मेघों की पंक्ति या समूह।

घनिष्ट—वि० [सं०] १ गाढ़ा। घना। २ पास का। निकटस्थ। अतरंग (संबंध)।

घने—वि० [सं० घन] बहुत से। अनेक।

घनेरा(पु)†—वि० [हिं० घना+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक। अतिशय।

घन्नई—संज्ञा स्त्री० [सं० घटनौका] मिट्टी के घड़ों और बाँस के टुकड़ों को बाँधकर बनाया गया बेड़ा।

घपचिआना†—क्रि० अ० दे० "घबराना"।

घपची—संज्ञा स्त्री० [हिं० घन+पच] दोनों हाथों की मजबूत पकड़।

घपला—संज्ञा पुं० [अनु०] ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को अलग करना कठिन हो। गड़बड़। गोलमाल।

घपुआ†—वि० [हिं० भकुआ] मूर्ख। जड़। नासमझ।

घबराना—क्रि० अ० [सं० गह्वर या हिं० गड़बड़ाना] १ व्याकुल होना। चंचल होना। उद्विग्न होना। २ भौंचक्का होना। किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना। ३ उतावली में होना। जल्दी मचाना। ४ जी न लगना।

क्रि० स० १ व्याकुल करना। अधीर करना। २ भौंचक्का करना। ३ जल्दी में डालना। गड़बड़ी में डालना। ४ हैरान करना। ५ उचाट करना।

घबराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घबरा+आहट (प्रत्य०)] १ व्याकुलता। अधीरता। उद्विग्नता। २ किंकर्त्तव्यविमूढ़ता। ३ उतावली। बेसब्री।

घमंका—संज्ञा पुं० दे० "घमका"।

घमंड—संज्ञा पुं० [सं० गर्व] १ अभिमान। शेखी। अहंकार। २ जोर। भरोसा। उ०—जासु घमंड बदति नहिं काहुहि कहा दुरावति मोसों। —सूर०।

घमंडी—वि० [हिं० घमंड+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० घमंडिन] अहंकारी। अभिमानी। मगरूर। शेखीबाज।

घमकना—क्रि० अ० [अनु० घम] १ 'घम-घम' या और किसी प्रकार का गंभीर शब्द होना। घहराना। गरजना।

† क्रि० स० घूँसा मारना।

घमका—संज्ञा पुं० [अनु०] १ गदा या घूँसा पड़ने का शब्द। २ आघात की ध्वनि।

घमघमाना—क्रि० अ० [अनु०] घम घम शब्द होना।

क्रि० स० प्रहार करना। मारना।

घमड़ना—क्रि० अ० दे० "घुमड़ना"।

घमर—संज्ञा पुं० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। गंभीर ध्वनि। उ०—नित प्रति सहस मथानी मथिए मेघ शब्द दधि माट घमर को। —सूर०।

घमरौल—संज्ञा स्त्री० [देश०] हल्ला-गुल्ला। ऊधम। गड़बड़।

घमसा—संज्ञा पुं० [हिं० घाम] १ वायु के रुकने और अधिक धूप से होनेवाली गरमी। उमस। २ घनापन। अधिकता।

घमसान—संज्ञा पुं० [अनु० घम+सान (प्रत्य०) ?] भयंकर युद्ध। घोर रण। गहरी लड़ाई।

घमाका—संज्ञा पुं० [अनु० घम] भारी आघात का शब्द।

घमाघम—संज्ञा स्त्री० [अनु० घम] १ घमाघम की ध्वनि। २ धूमधाम। चहल पहल।

क्रि० वि० घम घम शब्द के साथ।

घमाना†—क्रि० अ० [हिं० घाम से ना० धा०] घाम लेना। गरम होने के लिये धूप में बैठना।

घमासान—संज्ञा पुं० दे० "घमासान"।

घमोई—संज्ञा स्त्री० दे० "घमोय"। उ०—देखेहुँ तोरे मँदिर घमोई। मातु तोहि आँधरि भइ रोई। —पदमावत।

घमोय—संज्ञा स्त्री० [देश०] कँटीले पत्तों का एक पौधा। सत्यानाशी। भँड़भाँड़।

घमौरी—संज्ञा स्त्री० दे० "अम्हौरी"।

घर—संज्ञा पुं० [सं० गृह] [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १ मनुष्यों के रहने का दीवारों से घिरा छतवाला स्थान। निवासस्थान। आवास। मकान। ठिकाना।

मुहा०—घर करना (१) बसना। रहना। निवास करना। (२) समाने या अँटने के लिये स्थान निकालना। (३) घुसना। धँसना। चित्त, मन या आँख में घर करना=इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। जँचना। अत्यंत-प्रिय होना। घर का=(१) निज का। अपना। (२) आपस का। संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का। घर का न

घाट का=(१) जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। (२) निकम्मा। बेकाम। घर के वादे=घर ही में बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। घर के घर रहना=न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। घर घाट=(१) रंगढग। चालढाल। गति और अवस्था। (२) ढग। ढब। प्रकृति। (३) ठौर-ठिकाना। घरद्वार। स्थिति। घर घालना=(१) घर बिगाडना। परिवार में अशाति या दुःख फैलाना। (२) कुल में कलक लगाना। (३) मोहित करके वश में करना। घर फोड़ना=परिवार में झगड़ा लगाना। घर बसना=(१) घर आबाद होना। (२) घर में धनधान्य होना। (३) घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। घर बैठे=बिना कुछ काम किए। बिना हाथ पैर डुलाए। बिना परिश्रम। (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना=किसी के घर पत्नी भाव से रहने लगना। घर से=(१) पास से। पल्ले से। (२) पति। स्वामी। (३) स्त्री। पत्नी।

२. जन्मस्थान। जन्मभूमि। स्वदेश। ३ घराना। कुल। वश। खानदान। ४. कार्यालय। कारखाना। ५ कोठरी। कमरा। ६ आड़ी खड़ी खींची हुई रेखाओं से घिरा स्थान। कोठा। खाना। ७ कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। ८ पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोठा। ९ किसी वस्तु के अँटने या जड़ने का स्थान। छोटा गड्ढा। १० छेद। बिल। ११. मूल कारण। १२ गृहस्थी।

घरघराना—क्रि० अ० [अनु०] कफ के कारण गले से साँस लेते समय घर्र घर्र शब्द निकलना।

घरघाल—वि० दे० "घरघालन"।

घरघालन—वि० [हिं० घर+घालन] [स्त्री० घरघालिनी] १ घर बिगाडनेवाला। २ कुल में कलक लगानेवाला।

घरजाया—सज्ञा पुं० [हिं० घर+जाया =पैदा] गृहजात दास। घर का गुलाम।

घरदासी—सज्ञा स्त्री० [हिं० घर+स० दासी] गृहिणी। भार्या। पत्नी।

घरद्वार—सज्ञा पुं० दे० "घरबार"।

घरनाल—सज्ञा स्त्री० [हिं० घडा+नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहकला।

घरनी—सज्ञा स्त्री० [सं० गृहिणी, प्रा० घरणी] घरवाली। भार्या। गृहिणी।

घरफोरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० घर+ √फोड] परिवार में कलह फैलानेवाली।

घरबसा—सज्ञा पुं० [हिं० घर+ √बस]। [स्त्री० घरबसी] १ उपपति। यार। २ पति।

घरबार—सज्ञा पुं० [हिं० घर+बार=द्वार] [वि० घरबारी] १ रहने का स्थान। ठौर-ठिकाना। २ घर का जजाल। गृहस्थी। ३ सारी निजी सपत्ति।

घरबारी—सज्ञा पुं० [हिं० घर+बार] बालबच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुबी।

घरमना—क्रि० अ० [स० घर्म] प्रवाह के रूप में गिरना। टपकना। बहना।

घरवात(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० घर+वात (प्रत्य०)] घर गृहस्थी का सामान। घरेलू प्रयोग की चीजें।

घरवाला—सज्ञा पु० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० घरवाली] १. घर का मालिक। २ पति। स्वामी।

घरसा(पु)—सज्ञा पुं० [सं० घर्ष] रगड़।

घरहोई(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० घर+स० घाती, हिं० घाई] १. घर में विरोध करानेवाली स्त्री। २ अपकीर्ति फैलानेवाली स्त्री।

घराऊ—वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] १. घर से संबंध रखनेवाला। गृहस्थी सबधी। २ आपस का। अपना।

घराती—सज्ञा पुं० [हिं० घर+आती (प्रत्य०)] विवाह में कन्यापक्ष के लोग।

घराना—संज्ञा पुं० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] खानदान। वंश। कुल।

घरिया—संज्ञा स्त्री० दे० "घड़िया"।

घरियाना†—क्रि० स० [हिं० घरी से ना० धा०] घरी या तह लगाना।

घरी—सज्ञा स्त्री० [स० घटी] तह। परत। लपेट।

घरीक(पु)†—क्रि० वि० [हिं० घड़ी+एक] एक घड़ी। थोड़ी देर।

घरू—वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] जिसका सबंध घरगृहस्थी से हो। घर का।

घरेलू—वि० [हिं० घर+एलू (प्रत्य०)] १ जो घर में रहे। २ घर का पालतू। अपना। घरू। ३ घर का बना हुआ।

घरैया†—वि० [हिं० घर+ऐया (प्रत्य०)] घर या कुटुब का। अत्यत घनिष्ठ सबधी।

घरो(पु)—सज्ञा पु० दे० "घड़ा"।

घरौंदा, घरौंधा—सज्ञा पु० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १ कागज मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर जिससे छोटे बच्चे खेलते हैं। २ छोटा-मोटा घर।

घरौना—सज्ञा पुं० दे० "घरौंदा"।

घर्म—संज्ञा पुं० [स०] घाम। धूप।

घर्रा—सज्ञा पु० (अनु०) १. एक प्रकार का अजन। २ कफ के कारण गले की घरघराहट।

घर्राटा—सज्ञा पुं० दे० "खर्राटा"।

सज्ञा पुं० [अनु०] घर घर शब्द।

घर्षण—सज्ञा पु० [सं०] रगड़। घिस्सा।

घर्षित—वि० [सं०] [स्त्री० घर्षिता] रगड़ा हुआ। रगड़ खाया हुआ। घिसा हुआ।

घलना†—क्रि० अ० [हिं० घालना] १ गिर पड़ना। फेंका जाना। २ चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट पड़ना। ३ मारपीट हो जाना। बिगड़ना। नष्ट होना।

घलाघल, घलाघली—सज्ञा स्त्री० [हिं० √घल] मारपीट। आघात-प्रतिघात।

घलुआ†—सज्ञा पु० [हिं० घाल] वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जाय। घाल।

घवरि(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "घौद"।

घसखुदा—सज्ञा पुं० [हिं० घास+ √खोद]। १. घास खोदनेवाला। २ अनाड़ी। मूर्ख।

घसना(पु)†—क्रि० अ० दे० "घिसना"।

घसिटना—क्रि० अ० [स० घर्षित] घसीटा जाना।

घसियारा—सज्ञा पुं० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी या घसियारिन] घास बेचनेवाला। घास छीलकर लानेवाला।

घसीट—सज्ञा स्त्री० [हिं० घसीटना] १ जल्दी जल्दी लिखने का भाव। २ जल्दी का लिखा हुआ लेख। ३ घसीटने का भाव।

घसीटना—क्रि० स० [स० घृष्ट, प्रा० घिट्ट+ना (प्रत्य०)] १ किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड खाती हुई जाय। कढ़ोरना। २ जल्दी जल्दी लिखकर चलता करना। ३ किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

घहघह—सज्ञा स्त्री० [अनु०] बादल के गरजने की ध्वनि। उ०—चहचह चिरीधुनि कहकह के किनकी, घहघह घनसोर सुनतै अखरिहै। —शृगार०।

घहनाना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] घंटे आदि की ध्वनि निकालना। घहराना।

घहरना—क्रि० अ० [अनु०] गरजन का सा शब्द करना। गभीर ध्वनि निकालना।

घहराना—क्रि० अ० [अनु०] दे० "घहरना"।

घहरानि‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० घहराना] गंभीर ध्वनि। तुमुल शब्द। गरज।

घहरारा‡(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० घहराना] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज।

वि० घोर शब्द करनेवाला।

घहरारी—संज्ञा स्त्री० "दे० "घहरारा"।

घाँ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० रव या घाट = ओर] १ दिशा। दिक्। २ ओर। तरफ।

घाँघरा—संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

घाँटी†—संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका] १ गले के अंदर की घंटी। कौआ। २ गला।

घाँटो—संज्ञा पुं० [हिं० घट] एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है। चैती।

घाँह†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० घाँ] तरफ। ओर।

घा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ख या घाट] ओर। तरफ।

घाइ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

घाइल†(पु)—वि० दे० "घायल"।

घाई†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १ ओर। तरफ। २ दो वस्तुओं के बीच का स्थान। संधि। ३ बार। दफा। ४ पानी में पड़नेवाला भँवर।

घाई—संज्ञा स्त्री० [सं० गभस्ति ?] दो उँगलियों के बीच की संधि। अटी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० घाव] १ चोट। आघात। प्रहार। वार। २ धोखा। चालबाजी।

घाऊघप—वि० [हिं० घाऊ + घप] चुपचाप माल हजम करनेवाला।

घाएँ—अव्य [हिं० घाँ] ओर। तरफ।

घाघ—संज्ञा पुं० [?] उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले के १८ वीं सदी के एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति जिनकी खेतीबाड़ी और मौसम इत्यादि पर बहुत सी कहावतें प्रसिद्ध हैं।

वि० बहुत चालाक। खुर्राट।

घाघरा—संज्ञा पुं० [सं० घर्घर = क्षुद्रघंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] वह चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे स्त्रियों का कमर से नीचे का अंग ढका रहता है। लहँगा।

संज्ञा स्त्री० [सं० घर्घर] सरजू नदी।

घाघस—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मुरगी।

घाट—संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] १ किसी जलाशय या नदी का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते-धोते या नाव पर चढ़ते हैं। २ तट। तीरभूमि। ३ चढ़ाव उतार का पहाड़ी मार्ग। ४. पहाड़। ५ ओर। तरफ। दिशा। ६ रंगढंग। चालढाल। डौल। ढब। तौरतरीका। ७ तलवार की धार।

मुहा०—घाट घाट का पानी पीना = (१) चारों ओर देश देशांतर में घूमकर अनुभव प्राप्त करना। (२) इधर उधर मारे मारे फिरना

†संज्ञा स्त्री० [सं० घात या हिं० घट = कम] १ धोखा। छल। २ बुराई।

†वि० [हिं० घट] कम। थोड़ा।

घाटवाल—संज्ञा पुं० [हिं० घाट + वाला (प्रत्य०)] घाटिया। गंगापुत्र।

घाटा—संज्ञा पुं० [हिं० घट] हानि। कमी।

घाटारोह†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० घाट + सं० रोध] घाट रोकना। घाट से जाने न देना। उ०—इथवाँसहु बोरहु तरनि, कीजिय घाटारोह। —मानस।

घाटि(पु)†—वि० [हिं० घट] कम। न्यून। घटकर।

संज्ञा स्त्री० [सं० घात] नीच कर्म। पाप।

घाटिया—संज्ञा पुं० [हिं० घाट + इया (प्रत्य०)] घाटवाल। गंगापुत्र।

घाटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घाट] पर्वतों के बीच का सकरा मार्ग, दर्रा।

घात—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० घाती] १ प्रहार। चोट। मार। धक्का। जरब। २ वध। हत्या। ३ अहित। बुराई। ४ (गणित में) गुणनफल।

संज्ञा स्त्री० १ कोई कार्य करने के लिये अनुकूल स्थिति। दाँव। सुयोग। मौका। अवसर। २ किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध षड्यंत्र करने के लिये अनुकूल अवसर की खोज। ताक। ३ दाँव-पेंच। चाल। छल। रंगढंग। तौर तरीका।

मुहा०—घात पर चढ़ना या घात में आना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। चाल में फँसना। दाँव पर चढ़ना। हत्थे चढ़ना। घात में = ताक में। घाते में = मुफ्त में। नफे में। प्राप्य के अतिरिक्त। घात लगना = मौका मिलना। घात लगाना = युक्ति भिड़ाना। तरकीब करना।

घातक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० घातिका] १ मार डालनेवाला। हत्यारा। २. हिंसक। वधिक। ३ हानिकर।

घातकी—संज्ञा पुं० दे० "घातक"।

घातिनी—वि० स्त्री० [सं०] मारनेवाली। वध करनेवाली।

घातिया—वि० दे० "घाती"।

घाती—वि० [सं० घातिन्] [स्त्री० घातिनी] १. घातक। संहारक। २ नाश करनेवाला। ३ धोखेबाज।

घान—संज्ञा पुं० [सं० घन = समूह] १ उतनी वस्तु जितनी एक बार डालकर कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाय। २ उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई या भूनी जाय।

संज्ञा पुं० [हिं० घन] प्रहार। चोट।

घाना†(पु)—क्रि० स० [सं० घात] मारना।

घानी—संज्ञा स्त्री० दे० "घान"।

घाम†—संज्ञा पुं० [सं० घर्म] धूप। आतप।

घामड़—वि० [हिं० घाम] १ घाम या धूप में व्याकुल (चौपाया)। २ मूर्ख।

घामर(पु)—वि० [हिं० घाम] दे० "घामड़"।

घाय†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

घायक—वि० [हिं० घायक] विनाशक। नाशकारी।

घायल—वि० [हिं० घाय] १ जिसको घाव लगा हो। चुटैल। जख्मी। आहत। २ प्रेम का मारा।

घाल†—संज्ञा पुं० [हिं० घालना] दे० "घलुआ"। उ०—समुद अपार सरग जनु लागा। सरग न घाल गनै बैरागा। —पदमावत।

घालक—संज्ञा पुं० [हिं० √घाल] [स्त्री० घालिका, घालिनी] [भाव० घालकता] मारने या नाश करनेवाला।

घालना†—क्रि० स० [सं० घटन] १ भीतर या ऊपर रखना। डालना। रखना। उ०—मातै पितै जनम कित पाला। जो अस फाँद पेम गिउ घाला। —पदमावत। २ फेंकना। चलाना। छोड़ना। ३ बिगाड़ना। नाश करना। ४ मार डालना।

घालमेल—सं० पुं० [हिं० √घाल + मेल] १ कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट। गड्डबड्ड। २ मेलजोल।

घाव—संज्ञा पुं० [सं० घात, प्रा० घाअ] शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो। क्षत। जख्म।

मुहा०—घाव पर नमक या नोन छिड़कना = दुःख के समय और दुःख देना।

शोक पर और शोक उत्पन्न करना। घाव पूजना या भरना=घाव का अच्छा होना।
घावपत्ता—संज्ञा पुं० [हिं० घाव+पत्ता] एक लता जिसके पान के से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर बांधे जाते हैं।
घावरियाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० घाव+सं० वारक] घावों की चिकित्सा करनेवाला।
घास—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे छोटे उद्भिद् जिन्हें चौपाए चरते हैं। तृण। चारा।

यौ०—घासपात या घासफूस=(१) तृण और वनस्पति। (२) खरपतवार। कूड़ाकरकट।

मुहा०—घास काटना, खोदना या छीलना=(१) तुच्छ काम करना। (२) व्यर्थ काम करना।
घाहⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "घाई"।
घिग्घी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ साँस लेने में वह रुकावट जो रोते रोते पड़ने लगती है। हिचकी। सुबकी। २ बोलने में वह रुकावट जो भय के मारे पड़ती है।
घिघियाना—क्रि० अ० [हिं० घिग्घी से ना० धा०] १. करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना। †२ चिल्लाना।
घिचपिच—संज्ञा स्त्री० [सं० घृष्ट+पिष्ट] १ जगह की तंगी। सँकरापन। २ थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का समूह।

वि० अस्पष्ट। गिचपिच।
घिन—संज्ञा स्त्री० [सं० घृणा] १. अरुचि। नफरत। घृणा। २ गंदी चीज देखकर जी मचलाने की सी अवस्था। जी बिगड़ना।
घिनाना—क्रि० अ० [हिं० घिन से ना० धा०] घृणा करना। नफरत करना।
घिनावना—वि० दे० "घिनौना"।
घिनौना†—वि० [हिं० घिन] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से घिन लगे। घृणित। बुरा। बीभत्स।
घिन्नी—संज्ञा स्त्री० १ दे० "घिरनी"। २ दे० "गिन्नी"।
घिय—संज्ञा पुं० दे० "घी"।
घिया—संज्ञा स्त्री० [?] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। कद्दू। लौकी।
घियाकश—संज्ञा पुं० दे० "कद्दूकश"।
घियातोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घिया+तोरी] १ एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। नेनुआ। २ छिलके पर गहरी रेखाएँ पड़ी हुई तरोई।

घिरना—क्रि० अ० [सं० ग्रहण] १ सब ओर घेरा जाना, छेका जाना या रोका जाना। घेरे में आना। २ चारों ओर से आना। फैलना, जैसे—घटा घिरना।
घिरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० घूर्णन] १ गराड़ी। चरखी। २ चक्कर। फेरा ३ रस्सी बटने की चरखी। ४ दे० "घिन्नी"।
घिराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घिर+आई (प्रत्य०)] १ घेरने की क्रिया या भाव। २ पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।
घिरायँध—संज्ञा स्त्री० दे० "खरायँध"।
घिराव—सं० पुं० [हिं० √घिर+आव (प्रत्य०)] १ घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २ घेरा।
घिरिनि—संज्ञा पुं० [?] गिरहबाज। उ०—कहँ वह भौंर कवँल रसलेवा। आइ परै होइ घिरिनि परेवा—पद्मावत।
घिरौरा—संज्ञा पुं० [देश०] घूस का बिल।
घिर्राना—क्रि० स० [अनु० घिर घिर] १ घसीटना। २ गिड़गिड़ाना।
घिसघिस—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घिस] १ कार्य में शिथिलता। अनुचित विलंब। ढिलाई। २ व्यर्थ का विलंब। अनिश्चय।
घिसटना—क्रि० अ० [हिं० घसीटना] घसीटा जाना।
घिसना—क्रि० स० [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर खूब दबाते हुए इधर उधर फिराना। रगड़ना।

क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ घिसघिस। २ सट्टावट्टा। मेलजोल।
घिसवाना—क्रि० स० [हिं० घिसना का प्र० रूप] घिसने का काम करवाना। रगड़वाना।
घिसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घिस+आई (प्रत्य०)] घिसने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
घिस्सा—संज्ञा पुं० [हिं० √घिस] १ रगड़ा। २ धक्का। ठोकर। ३ वह आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से देते हैं। कुंदा। रद्दा।
घींच—संज्ञा स्त्री० [?] दे० "गरदन"।
घी—संज्ञा पुं० [सं० घृत प्रा० घीअ] दूध का चिकना सार जिसमें से जल का अंश तपाकर निकाल दिया गया हो। तपाया हुआ मक्खन। घृत।

मुहा०—घी के दिए जलना=(१) कामना पूरी होना। मनोरथ सफल होना।

(२) आनंद मंगल होना। उत्सव होना। (किसी की) पाँचो उँगलियाँ घी में होना=खूब आराम चैन का मौका मिलना। खूब लाभ होना।
घीकुँवार—संज्ञा पुं० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गींदपट्ठा।
घुँइयाँ—संज्ञा स्त्री० [देश०] अरवी कंद।
घुँगची, घुँघची—संज्ञा स्त्री० [गुंजा] एक प्रकार की बेल जिसके लाल बीज प्रसिद्ध हैं। गुंजा।
घुँघनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।
घुँघरारेⓅ—वि० दे० "घुँघराले"।
घुँघराले—वि० [हिं० घुमर+वाले] [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए और बल खाए हुए (बाल)। छल्लेदार।
घुँघरू—संज्ञा पुं० [सं० घुघुरव या घुघु+रू] १ किसी धातु का बना हुआ बजनेवाला गोल दाना। २ ऐसे दानों की लड़ी। चौंरासी। मजीर। ३ ऐसे दानों का बना हुआ पैर का गहना। ४ गले का वह घुर घुर शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घटका। घट्का।
घुँघुवारे—वि० दे० "घुँघराले"।
घुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १ कपड़े का गोल बटन। गोपक। २ हाथ पैर में पहनने के कड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ। ३ कोई गोल गाँठ।
घुग्घी—संज्ञा स्त्री० [देश०] तिकोना लपेटा हुआ कंबल आदि जिसे किसान या गड़रिए धूप, पानी और शीत से बचने के लिये सिर पर डालते हैं। घोघी। खुड़ुआ।
घुग्घू—संज्ञा पुं० [सं० घूक] उल्लू पक्षी।
घुघुआ—संज्ञा पुं० दे० "घुग्घू"।
घुघुआना—क्रि० अ० [हिं० घुग्घू से ना० धा०] १ उल्लू पक्षी का बोलना। २ बिल्ली का गुर्राना।
घुटकना—क्रि० स० [हिं० घूँट+करना] १ घूँट घूँट कर पीना। २ निगल जाना।
घुटना—संज्ञा पुं० [सं० घुटक] टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ। जाँघ के नीचे और टाँग के ऊपर का जोड़।

क्रि० अ० [हिं० घूँटना या घोटना] १ साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना। रुकना। फँसना।

मुहा०—घुट घुटकर मरना=दम तोड़ते हुए साँसत से मरना।

२ उलझकर कड़ा पड़ जाना। फँसना। ३ गाँठ या बंधन का दृढ़ होना।

क्रि० अ० [हिं० घोटना] १ घोटा जाना।

मुहा०—घुटा हुआ = पक्का चालाक।

२ रगड़ खाकर चिकना होना। ३ घनिष्ठता होना। मेल जोल होना।

घुटन्ना—संज्ञा पु० [हिं० घुटना] पायजामा।

घुटरूँ—संज्ञा पु० [सं० घुट] घुटना।

घुटवाना—क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे० रूप] १ घोटने का काम कराना। २ बाल मुँडाना।

घुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√घुट+आई (प्रत्य०)] १ घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया। २ घोटने की मजदूरी।

घुटाना—क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे० रूप] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घुटुरूँ—संज्ञा पु० [हिं० घुटना] घुटना।

घुटुरुअन—क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनों के बल।

घुट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।

मुहा०—घुट्टी में पड़ना = स्वभाव में होना।

घुड़कना—क्रि० स० [सं०√घुर्] डपटना। कड़ककर बोलना। डाँटना।

घुड़की—संज्ञा स्त्री० [हिं०√घुड़क] १ वह बात जो क्रोध में आकर डराने के लिये जोर से कही जाय। डाँटडपट। फटकार। २ घुड़कने की क्रिया।

यौ०—बंदरघुड़की = झूठमूठ डर दिखाना।

घुड़चढ़ा—संज्ञा पु० [हिं० घोड़ा+√चढ़] सवार। अश्वारोही।

घुड़चढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+√चढ़] १ विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। २ एक प्रकार की तोप। घुड़नाल। ३ निम्न कोटि की वेश्या। रंडी।

घुड़दौड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+दौड़] १ घोड़ों की दौड़। २ दौड़ में घोड़ों की हारजीत पर निर्भर जुए का खेल। ३ घोड़े दौड़ाने का स्थान या सड़क। ४ एक प्रकार की बड़ी नाव।

घुड़नाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+नाल] एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती है।

घुड़बहल—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+बहल] वह रथ जिसमें घोड़े जुतते हों।

घुड़सवार—संज्ञा पु० [हिं० घोड़ा+फा० सवार] [भाव० घुड़सवारी] वह जो घोड़े पर सवार हो। अश्वारोही।

घुड़साल—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+सं० शाला] अस्तबल।

घुड़िया—संज्ञा स्त्री० दे० "घोड़िया"।

घुणाक्षरन्याय—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं।

घुन—संज्ञा पु० [सं० घुण] एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।

मुहा०—घुन लगना = (१) घुन का अनाज या लकड़ी को खाना। (२) अंदर ही अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनघुना—संज्ञा पुं० दे० "झुनझुना"।

घुनना—क्रि० अ० [हिं० घुन] १ घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २ दोष के कारण अंदर ही से छीजना।

घुन्ना—वि० [अनु० घुनघुनाना] [स्त्री० घुन्नी] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रखे। चुप्पा।

घुप—वि० [सं० कूप या अनु०] गहरा अँधेरा)] निविड़ (अंधकार)।

घुमँडना—क्रि अ० दे० "घुमड़ना"।

घुमक्कड़—वि० [हिं० √घूम+अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत घूमनेवाला।

घुमटा—संज्ञा पुं० [हिं० √घूम+टा (प्रत्य०)] सिर का चक्कर। जी घूमना।

घुमड़—संज्ञा स्त्री० [सं० घूर्णन, प्रा० घुम्मण] बरसनेवाले बादलों की घेरघार।

घुमड़ना—क्रि० अ० [हिं० घुमड़] १ बादलों का चारों ओर से इकट्ठा होना। मेघों का छाना। २ इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घुमड़] सिर में चक्कर आना।

घुमना—वि० [हिं० घूमना] [स्त्री० घुमनी] घूमनेवाला।

घुमरना—क्रि० अ० [अनु० घम घम] १ घो घो शब्द करना। ऊँचे शब्द से बजना। २ दे० "घुमड़ना"। †३ घूमना।

घुमराना—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुमरी—संज्ञा स्त्री० [?] १ घुमड़ी। २ भौंरी। भँवर (पानी का)। ३ चौपायों का घुमरी नाम का एक रोग।

घुमाना—क्रि० स० [हिं० घूमना का प्रे० रूप] १ चक्कर देना। चारों ओर फिराना। २ इधर उधर टहलाना। सैर कराना। ३ किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना।

घुमाव—संज्ञा पुं० [हिं० घूम+आव (प्रत्य०)] १ घूमने या घुमाने का भाव। २ फेर। चक्कर।

मुहा०—घुमाव फिराव की बात = पेचीदी बात। हेरफेर की बात।

३ रास्ते का मोड़।

घुमावदार—वि० [हिं० घुमाव+दार] जिसमें कुछ घुमाव फिराव हो। चक्करदार।

घुम्मरना(पु)—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुरकना—क्रि० स० दे० "घुड़कना"।

घुरघुरा—संज्ञा पु० [देश०] झींगुर।

घुरघुराना—क्रि० अ० [अनु० घुरघुर] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना(पु)—क्रि० अ० दे० "घुलना"।

क्रि० अ० [सं० घुर] शब्द करना। बजना।

घुरबिनिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० घूरा+√बीन] घूर पर से दाना इत्यादि बीन बीनकर एकत्र करने या गली कूचों में से टूटीफूटी चीज चुनकर एकत्र करनेवाली स्त्री। उ०—नाम गरीब निवाज को, राज देत जन जानि। तुलसी मन परिहरत नहिं, घुरबिनिया की बानि।—दोहा०।

घुरमना(पु)—क्रि० अ० दे० "घूमना"।

घुराना†—क्रि० अ० १ दे० "घुमाना"। २ दे० "घुलाना"।

घुर्मित—क्रि० वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ।

घुलना—क्रि० अ० [सं० घूर्णन, प्रा० घुलन] १ पानी, दूध आदि पतली चीजों में खूब हिलमिल जाना। हल होना।

मुहा०—घुल घुलकर बातें करना = खूब मिल जुलकर बातें करना।

२ द्रवित होना। गलना। ३ पककर पिलपिला होना। ४ रोग आदि से शरीर का क्षीण होना। दुर्बल होना।

मुहा०—घुला हुआ = बुड्ढा। वृद्ध। घुल-घुलकर काँटा होना = बहुत दुबला हो जाना। घुल घुलकर मरना = बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना।

५ (समय) बीतना। व्यतीत होना।

घुलवाना—क्रि० स० [हिं० घुलाना या घोलना का प्रे० रूप] १. गलवाना। द्रवित कराना। २ आँख में सुरमा लगवाना। ३ किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना। हल कराना।

घलाना—क्रि० स० [हिं० घुलना का स० रूप] १ गलाना। द्रवित करना। २ शरीर दुर्बल करना। ३ मुँह में रखकर धीरे धीरे रस चूसना। गलाना। चुभलाना। ४ गरमी या दाव पहुँचाकर नरम करना। ५ (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ६ (समय) विताना। व्यतीत करना।

घुलावट—सज्ञा स्त्री० [हिं०√घुल+आवट (प्रत्य०)] घुलने का भाव या क्रिया।

घुसडना†—क्रि० अ० दे० "घुसना"।

घुसना—क्रि० अ० [सं०√कुश्] १ अदर पैठना। प्रवेश करना। भीतर जाना। २ धँसना। चुभना। गड़ना। ३ अनधिकार चर्चा, प्रवेश या कार्य करना। ४ मनोनिवेश करना।

घुसपैठ—सज्ञा स्त्री० [हिं०√घुस+पैठ] पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

घुसाना—क्रि० स० [हिं० घुसना का स० रूप] १ भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २ चुभाना। धँसाना। ३ अनधिकार प्रवेश या कार्य कराना।

घुसेड़ना—क्रि० स० दे० "घुसाना"।

घूघट—सज्ञा पुं० [स० गुंठन] १ वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। २ परदे की वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने भीतर की ओर रहती है। गुलामगर्दिश। ओट।

घूँघर—सज्ञा पुं० [हिं०√घुमर] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़। गलगढ।

घूँघरवाले—वि० [हिं० घूँघर+वाले] टेढे। छल्लेदार। कुंचित। भवरीले (बाल)।

घूँघरी—सज्ञा स्त्री० दे० "घुँघरू"।

घूँट—सज्ञा पुं० [अनु० घुटघुट] द्रव पदार्थ का उतना अश जितना एक वार में गले के नीचे उतारा जाय। चुसकी।

घूँटना—क्रि० स० [हिं० घूँट] द्रव पदार्थं को गले के नीचे उतारना। पीना।

घूँटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] एक औषध जो छोटे बच्चों को पाचन और पेट की सफाई के लिये नित्य पिलाई जाती है।

यौ०—जनम घूँटी=वह घूँटी जो बच्चे को उसका पेट साफ करने के लिये जन्म के दूसरे दिन दी जाती है।

घूँस—सज्ञा स्त्री० दे० "घूस"।

घूँसा—सज्ञा पु० [हिं० घिस्सा] १ बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय। मुक्का। २ बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।

घूआ—सज्ञा पु० [देश०] १ काँस, मूँज या सरकडे आदि का रुई की तरह का फूल। २ एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।

घूक—सज्ञा पुं० [स०] घुग्घू। उल्लू। रुरुआ।

घूगस†—सज्ञा पु० [देश०] ऊँचा बुर्ज।

घूघ—सज्ञा स्त्री० [हिं० घोघी या फा० खोद] लोहे या पीतल की बनी टोपी।

घूटना—क्रि० स० दे० "घूँटना"।

घूम—सज्ञा स्त्री० [हिं० घूमना] १ घूमने का भाव। घुमाव। चक्कर। २ मोड़।

घूमना—क्रि० अ० [स० घूर्णन] १ चारों ओर फिरना। चक्कर खाना। २ सैर करना। टहलना। ३ देशातर में भ्रमण करना। सफर करना। ४ वृत्त की परिधि में गमन करना। कावा काटना। मँडराना। ५ किसी ओर को मुड़ना। ६ वापस आना या जाना। लौटना।

मुहा०—घूम पड़ना=सहसा क्रुद्ध हो जाना।

(प)† ७ उन्मत्त होना। मतवाला होना।

घूरना—क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १ आँख गड़ाकर देखना। २ काम या क्रोध से एकटक देखना। †३ घूमना।

घूरा—सज्ञा पु० [स० कूट, हिं० कूरा] १ कूड़े करकट का ढेर। २ कतवारखाना।

घूस—सज्ञा स्त्री० [गुहाशय] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जतु।

सज्ञा स्त्री० [स० गुह्याशय ?] वह द्रव्य जो किसी को अपने अनुकूल कोई कार्य कराने के लिये अनुचित रूप से दिया जाय। रिश्वत। उत्कोच। लाँच।

यौ०—घूसखोर=घूस खानेवाला। घूसखोरी=घूस लेने की क्रिया। घूस। रिश्वत।

घृणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] घिन। नफरत।

घृणित—वि० [सं०] १ घृणा करने योग्य। २ जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो।

घृत—सज्ञा पुं० [स०] घी।

घृतकुमारी—सज्ञा स्त्री० [स०] घीकुँवार।

घृताची—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।

घृनी—वि० [सं० घृणिन्] दयालु।

घेघा—सज्ञा पु० [देश०] गला फूल जाने का एक रोग।

घेर—सज्ञा पुं० [हिं० घेरना] चारों ओर का फैलाव। घेरा। परिधि।

घेरघार—सज्ञा स्त्री० [हिं० घेर] १ चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया। २ चारों ओर का फैलाव। विस्तार। ३ खुशामद। विनती।

घेरना—क्रि० स० [स० ग्रहण] १ चारों ओर हो जाना। चारों ओर से छेंकना। बाँधना। २ चारों ओर से रोकना। आक्रात करना। छेंकना। ग्रसना। ३ गाय आदि चौपायों को चराना। ४ किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ५ किसी के पास बारबार जाकर किसी कार्य के लिये आग्रह या विनय करना। खुशामद करना।

घेरा—सज्ञा पु० [हिं० घेर] १ चारों ओर की सीमा। लबाई चौड़ाई आदि का सारा विस्तार या फैलाव। परिधि। २ चारों ओर की सीमा की माप का जोड़। परिधि का मान। ३ वह वस्तु जो किसी स्थान के चारों ओर हो, जैसे, दीवार आदि ४ घिरा हुआ स्थान। हाता। मडल। ५ सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेंकने का काम। मुहासरा।

घेवर—सज्ञा पु० [?] एक प्रकार की मिठाई।

घैया—सज्ञा पु० [?] १ ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। २ थन से छूटती हुई दूध की धारा जो मुँह रोपकर पी जाय।

सज्ञा स्त्री० [हिं० घाई ?] ओर। तरफ।

घैर, घैरु, घैरो(प)†—सज्ञा पु० [देश०] १ निंदामय चर्चा। बदनामी। अपयश। उ०—सोर घैरु को नहिं गनै निरखत नदकिसोर। लखति चारु मुख ओर कछु करत विचारु न ओर।—रससारांश। २ चुगली। गुप्त शिकायत।

घैरुहारिनि—वि० [हिं० घैरु+स० हारिणी] निंदा करनेवाली। उ०—'दास' घरवसी घैरहारिनि के डर हियो, चलदल-पात लौं है तोसों बतलात लौं।—शृंगार०।

घैला—सज्ञा पुं० [सं० घट] घड़ा।

घैहल†—वि० [हिं० घायल] घायल।

घोंघा—संज्ञा पुं० [सं० घोङ्घ] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक।

वि० १ जिसमें कुछ सार न हो। २ मूर्ख।

घोंचुआ—संज्ञा पुं० दे० "घोंसला"।

घोंचू—संज्ञा पुं० [सं० घोंचुलिक] १ मति-मंद। नासमझ। गँवार। वज्र मूर्ख।

घोंटना—क्रि० स० [हिं० √घोंट] १ घूँट घूँट करके पीना। २ हजम करना।

क्रि० स० दे० "घोटना"।

घोंपना—क्रि० स० [अनु० घप] १ धँसाना। चुभाना। गड़ाना। २ बुरी तरह सीना।

घोंसला—संज्ञा पुं० [?] घास, फूस या तिनके आदि से बना हुआ वह घर जिसमें पक्षी रहते हैं। नीड़। खोता।

घोंसुआ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "घोंसला"।

घोखना—क्रि० स० [सं० √घुष्] पाठ की बार बार आवृत्ति करना। रटना। घोटना।

घोघी†—संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।

घोट, घोटक—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा।

घोटना—क्रि० स० [सं० √घुट्] १ चिकना या चमकीला करने के लिये बार बार रगड़ना। २ बारीक पीसने के लिये बार बार रगड़ना। ३ बट्टे आदि से रगड़-कर परस्पर मिलाना। हल करना। ४ अभ्यास करना। मश्क करना। ५ दुहराना। बार बार आवृत्ति करना। ६ डाँटना। फटकारना। ७ (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय। ८ उस्तरे से बाल साफ करना।

संज्ञा पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार।

घोटवाना—क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे० रूप] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घोटा—संज्ञा पुं० [हिं० √घोट] १ वह वस्तु जिससे घोटा जाय। २ घुटा हुआ चमकीला कपड़ा। ३ रगड़ा। घुटाई।

घोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √घोट+आई (प्रत्य०)] घोटने का काम या मजदूरी।

घोटाला—संज्ञा पुं० [देश०] घपला। गड़बड़।

घोड़साल—सं० स्त्री० दे० "घुड़साल"।

घोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] [स्त्री० घोड़ी] १ चार पैरों का बिना फटे खुरों, अयाल, और दुमवाला पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने तथा बोझ ढोने के काम में आता है। अश्व।

मुहा०—घोड़ा उठाना=घोड़े को तेज दौड़ाना। घोड़ा कसना=घोड़े पर सवारी के लिये जीन या चारजामा कसना। घोड़ा डालना=किसी ओर वेग से घोड़ा बढ़ाना। घोड़ा निकालना=घोड़े को सिखाकर सवारी के योग्य बनाना। घोड़ा फेंकना=वेग से घोड़ा दौड़ाना। घोड़ा बेचकर सोना=खूब निश्चित होकर सोना।

२ वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक की गोली चलती है। ३ टोंटा जो भार सँभालने के लिये दीवार में लगाया जाता है। ४ शतरंज का मोहरा।

घोड़ागाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+गाड़ी] वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है।

घोड़ानस—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+नस] वह बड़ी और मोटी नस जो एँड़ी के पीछे ऊपर को जाती है। कूँच। पै।

घोड़ावच—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+वच] दवा के काम आने वाली वह खुरासानी वच जो सफेद रंग की और उग्र गंधवाली होती है।

घोड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ी+इया (प्रत्य०)] १ छोटी घोड़ी। २ दीवार में गड़ी हुई खूँटी। ३ छज्जे का भार सँभालनेवाली पत्थर आदि की बनी टोंटी।

घोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा] १ घोड़े की मादा। २ पायों पर खड़ी काठ की लंबी पटरी। पटा। ३ विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़ी पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। ४ विवाह के गीत।

घोर—वि० [सं०] १ भयंकर। भयानक। डरावना। विकराल। २ सघन। घना। दुर्गम। ३. कठिन। कड़ा। ४ गहरा। गाढ़ा। ५ बुरा। ६ बहुत ज्यादा।

संज्ञा स्त्री० [सं० घुर] शब्द। गर्जन। ध्वनि।

†संज्ञा पुं० [सं० घोटक] दे० "घोड़ा"। उ०—हस्ति घोर औ कापर सबहिं दीन्ह नव साज। भए गृही औ लखपती घर घर मानहु राज।—पदमावत।

घोरना(पु)—क्रि० अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना। गरजना।

घोरा—संज्ञा पुं० [हिं० घोड़ा] १ घोड़ा। २ खूँटा।

घोरिला(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० घोरा] लड़कों के खेलने का घोड़ा।

घोल—संज्ञा पुं० [हिं० घोलना] वह जो घोलकर बनाया गया हो।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "घोड़ा"। उ०—काहुँ कापल काहु घोल, काहु मवल देल धोल।

घोलना—क्रि० स० [हिं० घुलना का स० रूप] पानी या और किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अहीरों की बस्ती। २ अहीर। ३ गोशाला। ४ तट। किनारा। ५ शब्द। आवाज। नाद। ६ गरजने का शब्द। ७ व्याकरण में शब्दों के उच्चारण के प्रयत्नों में से एक।

घोषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। २ राजाज्ञा आदि का प्रचार। मुनादी। डुग्गी।

यौ०—घोषणापत्र=वह पत्र जिसमें सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो।

३ गर्जन। ध्वनि। शब्द। आवाज।

घोसी—संज्ञा पुं० [सं० घोष] गाय भैंस पालने और दूध बेचने का पेशा करनेवाली एक मुसलमान जाति।

घौद, घौर—संज्ञा पुं० [देश०] फलों का गुच्छा। गौद।

घ्राण—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० घ्रेय] १ नाक। २ सूँघने की शक्ति। ३ सुगंध।

ङ

ङ—हिंदी वर्णमाला में व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारणस्थान कंठ और नासिका है।

ङ—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूँघने की शक्ति। २ गंध। सुगंध। ३ भैरव। ४ विषय। ५ तृष्णा।

च

च—हिंदी वर्णमाला का छठा व्यंजन जिसका उच्चारणस्थान तालु है।

चकुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रथ। यान। सवारी। २ वृक्ष। पेड़।

चक्र—वि० [सं० चक्र] पूरा पूरा। समूचा। सारा। समस्त।

चक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर घूमना। टहलना। धीरे धीरे चलना। चक्कर लगाना।

चंग—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] डफ के आकार का एक छोटा बाजा।

संज्ञा पुं० [?] गंजीफे का एक रंग।

संज्ञा स्त्री० [सं० चं=चंद्रमा] पतंग। गुड्डी।

मुहा०—चंग चढ़ना या उमहना=बढ़ी चढ़ी बात होना। खूब जोर होना। चंग पर चढ़ाना (१) इधर उधर की बात कहकर अपने अनुकूल करना। (२) मिजाज बढ़ा देना।

संज्ञा पुं० दे० "चंगुल"।

चँगना(पु)—क्रि० स० [हिं० चंगा या फ़ा० तंग] तंग करना। कसना। खींचना।

चंगा—वि० [सं० चंग] [स्त्री० चंगी] १ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। २ अच्छा। भला। सुंदर। ३ निर्मल। शुद्ध।

चंगु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चंगुल"।

चंगुल—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १ चिड़ियों या पशुओं का पंजा। २ पकड़। ३ हथकंडा।

मुहा०—चंगुल में फँसना=वश या पकड़ में आना। काबू में होना।

चँगेर, चँगेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चंगेरिक] १ बाँस की छिछली डलिया। बाँस की चौड़ी टोकरी। २ फूल रखने की डलिया। डगरी। ३ चमड़े का जलपात्र। मशक। पखाल। ४ रस्सी में बाँधकर लटकाई हुई टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर पालना झुलाते हैं।

चँगेली—संज्ञा स्त्री० दे० "चँगेर"।

चंच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चंचु"।

चंचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भ्रमरी। भँवरी। २ चाँचरि। होली में गाने का एक गीत। ३ हरिप्रिया नामक मात्रिक छंद जिसके चारों चरणों में १२, १२, १२ और १० के क्रम से कुल ४६ मात्राएँ होती हैं, जैसे—वंदौं जगमात तात, चरण युगल नीर जात, जाको सुर सिद्ध वित, मुनि जन अभिलाखैं। इसके पदांत में गुरु रखने का नियम है। ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, सगण, दो जगण, भगण और रगण कुल १८ वर्ण होते हैं। आठवें वर्ण पर यति और १८ वें पर विराम होता है। यही ८, ५, ५, पर यति रखने से हरनर्तन कहलाता है। उ०—भूलि के यदि रामही, कहुँ आनको गुण गाइ है। ना हरी जन चंचरी, मन चोपकै सम भाइ है। चर्चरी। चचली। विबुधप्रिया। हरनर्तन। ५ छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

चंचरीक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंचरीकी] भ्रमर। भौंरा।

चंचरीकावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, दो रगण और अंत्य गुरु रहता है तथा छठे वर्ण पर यति और १३ वें पर विराम होता है, जैसे—यमौ रे ! रागों में, जन्म काहे गमावौ। न भूलो माधो को, धर्म में चित्त लावौ ॥

चंचल—वि० [सं०] [स्त्री० चंचला] १ चलायमान। अस्थिर। हिलता डोलता। २ अधीर। अव्यवस्थित। एकाग्र न रहनेवाला। ३ उद्विग्न। घबराया हुआ। ४ नटखट। चुलबुला। शोख। ५ रसिक। कामुक।

चंचलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अस्थिरता। चपलता। २ नटखटी। शरारत।

चंचलताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ बिजली। ३ पिप्ली। ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण जगण, रगण और अंत्य लघु तथा आठवें वर्ण पर यति और १६ वें पर विराम रहता है, जैसे—देखि गोपिका कहैं परी जु टूटि पुष्पमाल। चंचला मनो गई लिवाय आजु नंदलाल ॥ इसे चित्रछंद भी कहते हैं।

चंचलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचु—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का शाक। चेंच। २ रेंड का पेड। ३ मृग। हिरन।

संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चँचोरना—क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चंट—वि० [सं० चंट] १ चालाक। होशियार। सयाना। २ धूर्त। छँटा हुआ।

चंड—वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] १ तेज। तीक्ष्ण। उग्र। प्रखर। २ बलवान्। दुर्दमनीय। ३ कठोर। कठिन। विकट। ४ उद्धत। क्रोधी। गुस्सावर।

संज्ञा पुं० [सं०] १ ताप। गरमी। २ एक यमदूत। ३ एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ४ कार्तिकेय।

चंडकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

चंडता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उग्रता। प्रबलता। २ बल। प्रताप।

चंड मुंड—संज्ञा पुं० [सं०] दो राक्षसों के नाम जो दुर्गा देवी के हाथों से मारे गए थे।

चंडरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण कुल ६ वर्ण होते हैं। इसे शशिवदना भी कहते हैं। उ०—नय धरु एका, न भजु अनेका। गहु पन खासो, शशिवदना सो ॥

चंडवृष्टिप्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक-वृत्त जिसमें क्रम से २ नगण और ७ रगण होते हैं, जैसे—भजहु सतत राम सीता महामंत्र जासों महा कष्ट तेंगे सभी मूल तें।

तजहु असत काम को जो चाहो आपनो त्राण या दुष्ट भीजाल की शूल त ॥

चडांशु—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

चँडाई—सज्ञा स्त्री० [स० चड=तेज+आई (प्रत्य०)] १ शीघ्रता । जल्दी । फुरती । उतावली । २ प्रबलता । जबरदस्ती । ऊधम । अत्याचार ।

चंडाल—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चटालिन, चटालिनी] १ एक अत्यज जाति । चाटाल । श्वपच । २ नीच व्यक्ति । क्रूर कर्म करनेवाला व्यक्ति ।

वि० नोच, क्रूरकर्मी । घृणित ।

चंडाल पक्षी—सज्ञा पु० [सं०] काक । कौवा ।

चडालिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ एक प्रकार की वीणा । ३ एक प्रकार का पौधा ।

चडालिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चटाल वर्ण की स्त्री । २ दुष्टा स्त्री । दुश्चरित्रा स्त्री । ३ एक प्रकार का दोहा छद (दूषित) ।

चडावल—सज्ञा पुं० [सं० चड+आवलि] १. सेना के पीछे का भाग । 'हरावल' का उलटा । २ बहादुर सिपाही । ३ सतरी ।

चडिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ झगड़ालू स्त्री । ३ गायत्री देवी । ४ १३ मात्राओं का एक मात्रिक छद जिसके अत में रगण रहता है, जैसे—सुत जिनके जग वदना । गणपति शकर नदना ॥ इसे धरणी छद भी कहते हैं ।

चडी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिये धारण किया था । २ कर्कशा और उग्र स्त्री । ३ तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, दो सगण और अत्य गुरु होता है, जैसे वुबुध वुजन अघ ओघत दडी । भजहु भजहु जन पालिनि चडी ॥

चडू—सज्ञा पु० [सं० चड=तीक्ष्ण ?] अफीम का किमाम जिसका धुआँ नशे के लिये नली के द्वारा पीते हैं ।

चंडूखाना—सज्ञा पुं० [हिं० चडू+फा० खाना] वह घर जहाँ लोग चडू पीते हैं ।

मुहा०—चडूखाने की गप=मतवालों की झूठी वकवाद । बिलकुल झूठी बात ।

चंडूबाज—सज्ञा पु० [हिं० चडू+फा० बाज (प्रत्य०)] चडू पीनेवाला ।

चडूल—सज्ञा पुं० [देश०] १ खाकी रग को एक छोटी चिड़िया । २ बेडौल, भद्दा या मूर्ख आदमी ।

चडोल—सज्ञा पु० [स० चंद+दोल] एक प्रकार की पालकी ।

चद—सज्ञा पु० [स० चद्र] १ दे० "चद्र"। २ बारहवीं सदी के हिंदी के एक कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि और मित्र तथा पृथ्वीराज रासो के रचयिता थे ।

वि० [फा०] थोड़े से । कुछ ।

चदक—सज्ञा पु० [सं० चद्र] १ चद्रमा । २ चाँदनी । ३ चाँद नाम की मछली । ४. माथे पर पहनने का अर्द्ध चंद्राकार गहना । ५ नथ में पान के आकार की बनावट ।

चदन—सज्ञा पुं० [स०] १ एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देव-पूजन और मस्तक आदि पर लेप में होता है । श्रीखड । सदल । २ चदन की लकड़ी या टुकड़ा । ३ घिसे हुए चदन का लेप । ४ छप्पय छद का तेरहवाँ भेद ।

चदनगिरि—सज्ञा पुं० [स०] मलयाचल ।

चदनहार—सज्ञा पुं० दे० "चद्रहार" ।

चदना—सज्ञा पुं० दे० "चद्रमा" ।

चदनी—सज्ञा स्त्री० दे० "चाँदनी" ।

चँदनौता—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का लहँगा ।

चंदबान—सज्ञा पु० दे० "चद्रबाण" ।

चँदराना—क्रि० स० [?] १ फुठलाना । बहकाना । बहलाना । २ जानबूझकर अनजान बनना ।

चँदला—वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] गजा ।

चँदवा—सज्ञा पु० [स० चद्र या चद्रोदय] एक प्रकार का छोटा मडप । चँदोवा ।

सज्ञा पुं० [स० चद्रक] १ गोल आकार की चकती । मोर की पूँछपर का अर्द्धचद्राकार चिह्न । २ तालाब के भीतर का गहरा गड्ढा जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं ।

चदा—सज्ञा पुं० [स० चद्र] १ चद्रमा । २ पीतल आदि की गोल चद्दर ।

सज्ञा पु० [फा० चद=कई एक] १ वह थोडा थोडा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य के लिये लिया जाय । बेहरी । उगाही । २ किसी सस्था की सदस्यता के लिये समय समय पर दिया जानेवाला धन । ३ किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक मूल्य ।

चदावल—सज्ञा पुं० दे० "चडावल" ।

चँदोआ—सज्ञा पु० दे० "चँदवा" ।

चदिका—सज्ञा स्त्री० दे० "चद्रिका" ।

चँदिनि, चंदिनी—सज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] चाँदनी । चद्रिका ।

चदिया—सज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] खोपड़ी । सिर का मध्य भाग ।

चदिर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा ।

चँदेरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० चंदेल] एक प्राचीन नगर जो ग्वालियर राज्य में है । प्राचीन चेदि देश की राजधानी ।

चँदेरीपति—सज्ञा पुं० [सज्ञा स०] शिशुपाल ।

चदेल—सज्ञा पु० [सं०] चंद्रवशी क्षत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी ।

चँदोवा—सज्ञा पुं० दे० "चँदवा" । उ०—रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनै जान जेहि जोवा ।—मानस ।

चद्र—सज्ञा पु० [सं०] १ चंद्रमा । २ एक की सख्या । ३ मोर की पूँछ की चद्रिका । ४ कपूर । ५ जल । ६ सोना । सुवर्ण । ७ पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपों में से एक । ८ वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाती है । ९ पिंगल में टगण का दसवाँ भेद (।।ऽ।।) । १० हीरा । ११ कोई आनददायक वस्तु । १२ १७ मात्राओं का एक छद जिसमें १०वीं मात्रा पर यति और १७वीं पर विराम होता है, जैसे—मत दस मुनि रचौ रुचिर चद्रै । धार मत तू कर्मी मलिन तद्रै ॥

वि० १ आनददायक । २. सुदर ।

चंद्रक—सज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा । २ चद्रमा के समान मडल या घेरा । ३ चद्रिका । चाँदनी । ४ मोर की पूँछ की चद्रिका । ५ नहँ । नाखून । ६ कपूर ।

चद्रकला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चद्रमडल का सोलहवाँ अश । २ चद्रमा की किरण या ज्योति । ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक के बाद दूसरे के क्रम से कुल ८ सगण होते हैं । इसे दुर्मिल सवैया भी कहते हैं, जैसे—सब सों करि नेह भजो रघुनदन राजत हीरन माल हिए । नवनील वपू कल पीत झँगा झलकै अलकै घुँघुरारि लिए । ४ माथे पर पहनने का एक गहना ।

चंद्रकांत—सज्ञा पुं० [स०] एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चद्रमा के सामने करने से पसीजता है ।

चद्रकाता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ चद्रमा की स्त्री । २ रात्रि । रात । ३ पद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम

से दो रगण, एक मगण, एक सगण और एक यगण होता है तथा ७वें वर्ण पर यति और १५वें पर विराम होता है; जैसे—द्वार मौंसों यही है, त्यागै किन चंद्रकांता। क्यों न मीता पढ़ै तू, रामायण चित्त शांता।

चंद्रकी—संज्ञा पुं० [सं० चंद्रकिन्] मोर। मयूर।

चंद्रगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रगुप्त। २ ईसवी पूर्व चौथी शताब्दी में मगध के राजा महापद्मनंद के बाद गद्दी पर बैठनेवाला तथा सिकंदर के 'सिल्यूकस' नामक सेना नायक को जीतनेवाला प्रथम मौर्य सम्राट्। ३ गुप्त साम्राज्य का संस्थापक। गुप्त साम्राज्य के प्रसिद्ध राजा चंद्रगुप्त द्वितीय जिन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

चंद्रग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का ग्रहण।

चंद्रचूड़—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रजोत—संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र+ज्योति] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चंद्रधनु—संज्ञा पुं० [सं० चंद्र+धनु] वह इंद्रधनुष जो रात को चंद्रमा का प्रकाश पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है।

चंद्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रवधूटी—संज्ञा स्त्री० दे० "वीरबहूटी"।

चंद्रप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की ज्योति। चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्रबाण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन बाण जिसका फल अर्द्ध चंद्राकार होता था।

चंद्रबिंदु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी जिसका रूप यह 'ँ' है।

चंद्रबिंब—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का मंडल।

चंद्रभाल—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

चंद्रमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रकांत मणि। २ १३ मात्राओं का उल्लाला छंद, जैसे—काव्य कहा बिनु रुचिर मति, मति सु कहा बिनु ही बिरति।

चंद्रमा—संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमस्] १ ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार रात को प्रकाश देनेवाला पृथ्वी का एक ग्रह जो २७ दिन, ७ घंटे, ३ मिनट और ११ सेकेंड में एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता है और सूर्य से प्रकाश पाकर चमकता है तथा एक पक्ष में घटता रहता और दूसरे में बढ़ता है। चाँद। शशि। विधु। २ नवग्रहों में से एक।

चंद्रमाललाम—संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमा+ललाम=भूषण] महादेव। शंकर। शिव।

चंद्रमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] २८ मात्राओं का एक छंद।

चंद्रमौलि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्ररेखा, चंद्रलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की कला। २ चंद्रमा की किरण। ३ द्वितीया का चंद्रमा। ४ वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, एक मगण, दो रगण और अंत्य गुरु तथा छठे वर्ण पर यति और १३वें पर विराम होता है; जैसे—लखि यह गती, जो बिधाता रची है। सुर नर थके, बुद्धि सारी पची है। ५ वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, रगण, मगण और दो यगण होते हैं तथा ७ वें वर्ण पर यति और १५वें पर विराम होता है, जैसे—मेरी मय्या ! यही तो, लगी चंद्रलेखा खिलौना। रोवै आली ! न मानै, मेरी कही यो सुछौना॥

चंद्रललाम—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रमाललाम"।

चंद्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का लोक।

चंद्रवंश—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन क्षत्रियों का वह वंश जिसकी उत्पत्ति महर्षि अत्रि के पुत्र चंद्रमा से मानी जाती है। बुध इन्हीं चंद्रमा के पुत्र थे जिन्होंने सूर्यवंश के राजा इक्ष्वाकु की कन्या इला से विवाह किया था। चंद्रवंश के प्रतापी राजा पुरूरवा इन्हीं इला और बुध के संयोग से उत्पन्न हुए थे।

चंद्रवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण, भगण और सगण कुल १२ वर्ण होते हैं, जैसे—रे! न भासु हर भाल शशि समा। जानि त्यागि हिय की कनक तमा॥

चंद्रवार—संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार।

चंद्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। २ घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।

चंद्रशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] गले में पहनने की एक प्रकार की रत्नों की माला। नौलखा हार।

चंद्रहास—संज्ञा पुं० [सं०] १ खड्ग। तलवार। २ रावण की तलवार। उ०—चंद्रहास हर मम परितापं। रघुपति बिरह अनल संजातं।—मानस।

चंद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] मरने के समय की वह अवस्था जब टकटकी बँध जाती है।

चंद्रातप—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाँदनी। चंद्रिका। २ चँदवा। वितान।

चंद्रार्क—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बननेवाली एक मिश्रित धातु।

चंद्रावर्त्ता—संज्ञा—पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।

चंद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २ मोर की पूँछ के पर का गोल चिह्न। ३ इलायची। ४ जूही या चमेली। ५ एक देवी। ६ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, दो तगण, और अंत्य गुरु रहता है तथा ७ वें वर्ण पर यति और १३ वें पर विराम होता है, जैसे—लखनजुत भजौ, मातु सीता सती। बदनदुति लसे, चंद्रिका लाजती॥ इसे उत्पलिनी, विद्युत और कुटिलगति भी कहते हैं। ७ माथे पर का एक भूषण। बेंदी। बेंदा।

चंद्रोदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा का उदय। २ वैद्यक में एक रस। ३ चँदवा। चँदोवा। वितान।

चंपई—वि० [हिं० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीले रंग का।

चंपक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंपा। २ चंपा केला। ३ सांख्य में एक सिद्धि।

चंपकमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

चंपत—वि० [देश०] चलता। गायब। अंतर्धान।

चँपना—क्रि० अ० [सं० √चप्] १ बोझ से दबना। २ उपकार आदि से दबना।

चंपलता—संज्ञा स्त्री० [सं० चंपक+लता] चंपे की लता। उ०—लगी ढूँढ़न चंपलता लतिका चलि ता छिन मोहिं बन्यो छपनो।—शृंगार०।

चंपा—संज्ञा पुं० [सं० चंपक] १ मझोले कद का एक पेड़ और उसके हलके पीले रंग के कड़ी महक के फूल। २ एक पुरी जो प्राचीन काल में अंग देश की राजधानी थी। ३ एक प्रकार का मीठा केला। ४ घोड़े की एक जाति। ५ रेशम का कीड़ा।

चंपाकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चंपा+कली] गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

चंपारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्थान जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।
चंपू—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यग्रंथ जिसमें गद्य के बीच बीच में पद्य भी हों।
चंबल—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १ एक नदी। २ नालों के किनारे की वह लकड़ी जिससे सिंचाई के लिये पानी ऊपर चढ़ाते हैं।
संज्ञा पुं० पानी की बाढ़।
संज्ञा पुं० [फा० चुँबल] १ भीख माँगने का पात्र। २ चिलम का सरपोश।
चँवर—संज्ञा पुं० [सं० चामर] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १ डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिर पर डुलाया जाता है।
मुहा०—चँवर ढलना=ऊपर चँवर हिलाया जाना।
२ घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलँगी। ३ झालर। फुँदना।
चँवरढार—संज्ञा पुं० [हिं० चँवर+√ढार] चँवर डुलानेवाला सेवक।
चंसुर—संज्ञा पुं० [सं० चंद्रशूर] हालोंया हालिम नाम का पौधा।
च—संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्छप। कछुआ। २ चंद्रमा। ३ चोर। ४ दुर्जन।
चउक—संज्ञा पुं० दे० "चौक"।
अव्य० और।
चउर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चँवर"।
चउहट्ट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट"। उ०—चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु विधि बना। —मानस।
चउहा—संज्ञा पुं० [चतुर्विध] चार प्रकार का।
चए—संज्ञा पुं० [सं० चयन] समूह। राशि। उ०—नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन पुनि पुनि बरषहिं सुमन चए। —गीता०।
चक—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १ चकई नाम का खिलौना। उ०—इत आवत दै जात दिखाई ज्यों भँवरा चक डोर। उतनें सूत न टारत कतहूँ मोसों मानत कोर।—सूर०। २ चक्रवाक पक्षी। चकवा। ३ चक्र नामक अस्त्र। ४ चक्का। पहिया। ५ जमीन का बड़ा टुकड़ा। पट्टी। ६ छोटा गाँव। खेड़ा। पट्टी। पुरवा। ७ किसी बात की निरंतर झोंकना। ८ अधिकार। दखल।
वि० भरपूर। अधिक। ज्यादा।
वि० [सं०] चकपकाया हुआ। भ्रांत।
चकई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।
संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] घिरनी या गड़ारी के आकार का एक खिलौना।
चकचकाना—क्रि० अ० [अनु०] १ किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना। रिस रिसकर बाहर आना। २ भींग जाना।
चकचाना(पु)†—क्रि० अ० [अनु०] चौंधियाना। चकाचौंध लगना।
चकचाल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चक्र+हिं० चाल] चक्कर। भ्रमण। फेरा।
चकचाव†—संज्ञा पुं० [अनु०] चकाचौंध।
चकचून, चकचूर—वि० [सं० चक्र+चूर्ण] चूर चूर किया हुआ। चकनाचूर।
चकचौंध—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चकचौंधना—क्रि० अ० [सं० चक्षुष्+अंध] आँख का अत्यंत अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना। चकाचौंध होना।
क्रि० स० चकाचौंधी उत्पन्न करना।
चकचौंह(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चकचौंहना—क्रि० स० [देश०] चाह भरी दृष्टि से देखना।
चकचौंहाँ—वि० [हिं० चकचौंह] देखने योग्य। सुंदर।
चकडोर, चकडोरि—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकई +डोर] चकई नामक खिलौने में लपेटा हुआ सूत। उ०—खेलत अवध खोरि, गोली भौंरा चक डोरि, मूरति मधुर बसै तुलसी के हियरे। —गीता०।
चकता—संज्ञा पुं० दे० "चकत्ता"।
चकती—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रवत्] १ चमड़े, कपड़े आदि में से काटा हुआ, गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। पट्टी। २ फटे टूटे स्थान को बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या धज्जी। थिगली।
मुहा०—बादल में चकती लगाना = अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।
चकत्ता—संज्ञा पुं० [सं० चक्रवत्] १ रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २ खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन। ददोरा। ३ दाँतों से काटने का चिह्न।
संज्ञा पुं० [तु० चगताई] १ मोगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह थे। २ चगताई वंश का पुरुष।
चकना(पु)—क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १ चकित होना। भौंचक्का होना। चकपकाना। २ चौंकना। आशंकायुक्त होना।
चकनाचूर—वि० [हिं० चक=भरपूर+चूर] १. जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे छोटे टुकड़े हो गए हों। चूर चूर। खंड खंड। चूर्णित। २. बहुत थका हुआ।
चकपक, चकबक—वि० [सं० चक्र] चकित। स्तंभित।
चकपकाना—क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] आश्चर्य से इधर उधर ताकना। भौंचक्का होना। चौंकना।
चकफेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक+हिं० फेरी] परिक्रमा। भँवरी।
चकबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चक+फा० बंदी] भूमि को कई भागों में विभक्त करना।
चकमक—संज्ञा पुं० [तु०] एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिसपर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।
चकमा—संज्ञा पुं० [सं० चक्र=भ्रांत] १ भुलावा। धोखा। २ हानि। नुकसान।
चकर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।
चकरबा—संज्ञा पुं० [सं० चक्रव्यूह] १ कठिन स्थिति। असमंजस। २ बखेड़ा।
चकरा(पु)—वि० [सं० चक्र] [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।
चकराना—क्रि० अ० [सं० चक्र] १ (सिर का) चक्कर खाना। (सिर) घूमना। २ भ्रांत होना। चकित होना। ३ चकपकाना। चकित होना। घबराना।
क्रि० स० आश्चर्य में डालना।
चकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्री] १ चक्की। २. चकई नाम का खिलौना। उ०—तैसेइ हरि तैसेइ सब बालक कर भौंरा चकरीन की जोरी। —सूर०।
वि० चक्र के समान भ्रमणशील। भ्रमित। अस्थिर। चंचल।
चकल—संज्ञा पुं० दे० "चौकल"। उ०—कमल रतन कर बाहु भुज, भुज आभरन अभिराम। गज आभरन प्रहरन असनि, चकल अनगुरु नाम। —छंदार्णव।
चकलई—संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई"।
चकला—संज्ञा पुं० [सं० चक्र, हिं० चक+ला (प्रत्य०)] १ पत्थर या काठ का गोल पाटा जिसपर रोटी बेली जाती है। चौका। २. चक्की। ३ इलाका। जिला। ४ व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा।

वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा ।
चकली—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक] १. घिरनी । गड़ारी । २ छोटा चकला जिसपर चंदन घिसते हैं । होरसा ।
चकलेदार—संज्ञा पुं० [देश०] किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला ।
चकवँड़—संज्ञा पुं० [सं० चक्रमर्द] एक बरसाती पौधा । पमार । पवाड़ ।
चकवा—संज्ञा पुं० [सं० चक्रवाक] [स्त्री० चकवी, चकई] एक जलपक्षी जिसके संबंध में प्रवाद है कि उनका रात को जोड़े से वियोग हो जाता है । सुरखाब ।
चकवाना(पु)—क्रि० अ० [सं० चकित] चकपकाना ।
चकवार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "कछुआ" ।
चकवाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चकवा" ।
चकहा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] पहिया ।
चका(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १ पहिया । चक्का । चाक । २ चकवा पक्षी ।
चकाचक—वि० [अनु०] तराबोर । लथपथ ।

क्रि० वि० खूब । भरपूर ।
चकाचौंध—संज्ञा स्त्री० [सं० √चक् = चमकना + चौ = चारों ओर + अंध] अत्यधिक चमक के सामने आँखों की झपक । तिलमिलाहट । तिलमिली ।
चकाना(पु)—क्रि० अ० दे० 'चकपकाना'
चकाबू—संज्ञा पुं० [सं० चक्रव्यूह] १ एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की स्थिति । २ भूलभुलैयाँ ।
चकासना(पु)—क्रि० अ० दे० "चमकना" ।
चकित—वि० [सं०] [स्त्री० चकिता] १ चकपकाया हुआ । विस्मित । दंग । हक्काबक्का । २ हैरान । घबराया हुआ । ३ चौकन्ना । शंकित । डरा हुआ । ४. डरपोक । कायर ।
चकिताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० चकित + हिं० आई (प्रत्य०)] चकित होने की क्रिया या भाव । आश्चर्य ।
चकुला(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] चिड़िया का बच्चा । चेंटुवा ।
चकृत(पु)—वि० दे० "चकित ।"
चकैया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चकई" ।
चकोट—क्रि० स० दे० "चकोटना" । उ०—चंचल चपेट चोट चरन चकोट चाहैं, हूहरानी फौजें भहरानी जातुधान की ।—कविता० ।
चकोटना—क्रि० स० [हिं० चिकोटी] चुटकी से मांस नोचना । चुटकी काटना ।
चकोतरा—संज्ञा पुं० [सं० चक्र = गोला] एक प्रकार का बड़ा जँबीरी नींबू ।
चकोर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चकोरी, चकोरिका] १ एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है । २ एक वर्णवृत्त का नाम ।
चकौंध(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध" ।
चक्क—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १ चक्रवाक । चकवा । २ कुम्हार का चाक ।
चक्कर—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १ पहिए के आकार की कोई (विशेषत घूमनेवाली) बड़ी गोल वस्तु । मंडलाकार पटल । चाक । २ गोल या मंडलाकार घेरा । मंडल । ३ मंडलाकार गति । परिक्रमण । फेरा । ४ पहिए के ऐसा भ्रमण । अक्ष पर घूमना । ५ चलने में अधिक दूरी । फेर । ६ हैरानी । असमंजस । ७ पेंच । जटिलता । दुरूहता । ८ सिर घूमना । घुमटा । ९ पानी का भँवर । जंजाल ।

मुहा०—किसी के चक्कर में आना या पड़ना = किसी के धोखे में आना या पड़ना । चक्कर काटना । परिक्रमा करना । मँडराना । चक्कर खाना = (१) पहिए की तरह घूमना । (२) भटकना । भ्रांत होना । हैरान होना ।
चक्कवा—संज्ञा पुं० [सं० चक्रवाक] चकवा पक्षी ।
चक्कवइ(पु)—वि० दे० "चक्रवर्ती" । उ०—ससुर चक्कवइ कोसलराऊ । भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ ।—मानस ।
चक्का—संज्ञा पुं० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १ पहिया । चाका । २ पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु । ३ बड़ा चिपटा टुकड़ा । बड़ा थक्का । ढेला ।
चक्की—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्री] आटा पीसने या दाल दलने का पत्थर का यंत्र । जाँता ।

मुहा०—चक्की पीसना = कड़ा परिश्रम करना

संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रिका] १ पैर के घुटने की गोल हड्डी । २. बिजली । वज्र ।
चक्खी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चख] खाने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज । चाट ।
चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहिया । चाका । २. कुम्हार का चाक । ३ चक्की । जाँता । ४ तेल पेरने का कोल्हू । ५. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु । ६ लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिए के आकार का होता है । ७ पानी का भँवर । ८ वातचक्र । बवंडर । ९. समूह । समुदाय । मंडली । १० एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति । ११ मंडल । प्रदेश । राज्य । १२ एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश । आसमुद्रांत भूमि । १३. चक्रवाक पक्षी । चकवा । १४ योग के अनुसार शरीरस्थ छ पद्म । १५ दिशा । प्रांत । १६ एक वर्णवृत्त । १७ देशभक्ति या वीरता आदि के लिये सरकार की ओर से दिया जानेवाला पदक या तमगा, उदा०—वीरचक्र, महावीरचक्र आदि ।
चक्रचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ तेली । २ कुम्हार ।
चक्रतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण म वह तीर्थस्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतमाला के बीच तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है । २ नैमिषारण्य का एक कुंड ।
चक्रधर—वि० [सं०] जो चक्र धारण करे ।

संज्ञा पुं० १ विष्णु भगवान् । २ श्रीकृष्ण । ३ बाजीगर । इंद्रजाल करनेवाला । ४ कई ग्रामों या नगरों का अधिपति ।
चक्रधारी—संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर" ।
चक्रपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।
चक्रपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिकों की एक पूजाविधि ।
चक्रबंध—संज्ञा पुं० [सं०] चक्र के आकार का एक चित्रकाव्य ।
चक्रमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] चकवँड़ ।
चक्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु तथा और अंगों पर छपाते हैं ।
चक्रवती—संज्ञा पुं० [सं० चक्रवर्तिन्] चक्रवर्ती । उ०—चक्रवती द्वै एकत्र भए मनो जोभ के तोम दुहूँ उर बाढ़े । गुच्छ के गुंमज के गिरि के गिरिराज के गर्व गिरावत ठाढ़े ।—शृंगार० ।
चक्रवर्ती—वि० [सं० चक्रवर्तिन्] [स्त्री० चक्रवर्तिनी] आसमुद्रांत भूमि पर राज्य करनेवाला । सार्वभौम ।
चक्रवाक—संज्ञा पुं० [सं०] चकवा पक्षी ।

यौ०—चक्रवाकवधु = सूर्य ।
चक्रवात—संज्ञा पुं० [सं०] वेग से चक्कर खाती हुई वायु । वातचक्र । बवंडर ।
चक्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिधि । घेरा । २. समूह । जनसमाज । ३ एक

पौराणिक पर्वतमाला जो पृथ्वी के चारो ओर फैली हुई मानी जाती है।

चक्रवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सूद या ब्याज जिसमें ब्याज पर भी ब्याज लगता जाता है। सूद दर सूद।

चक्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।

चक्रांक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चक्रांकित] चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर पर दगवाते हैं।

चक्रांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ चकवा। २ रथ या गाड़ी। ३ हंस।

चक्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

चक्रितⓅ—वि० दे० "चकित"।

चक्री—संज्ञा पुं० [सं० चक्रिन्] १ वह जो चक्र धारण करे, जैसे विष्णु। २ वह जो चक्र चलावे, जैसे कुम्हार। ३. गाँव का पंडित या पुरोहित। ४ चक्रवाक। चकवा। ५. सर्प। ६ जासूस। मुखबिर। चर। ७ चक्रवर्ती। ८ चक्रमर्द। चकवँड़।

चक्षु—संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्] १ दर्शनेंद्रिय। आँख। २ एक नदी जिसे आजकल आक्सस या जेहूँ कहते हैं। चक्षुनद।

चक्षुरिंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख।

चक्षुष्य—वि० [सं०] १ जो नेत्रों को हितकारी हो (ओषधि आदि)। २ सुंदर। प्रियदर्शन। ३ नेत्र संबंधी।

चखⓅ—संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्] आँख। उ०—लखे कलस-कुच रस भरे परे लाल-चख-मीन।—रससाराश।

संज्ञा पुं० [फा०] झगड़ा। तकरार। कलह।

यौ०—चख चख=तकरार। कहा=सुनी।

चखचौंधⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चखना—क्रि० स० [सं० चष] स्वाद लेना। स्वाद लेने के लिये मुँह में रखना।

चखाचखी—संज्ञा स्त्री० [फा० चख=झगड़ा] लागडाँट। विरोध। वैर।

चखाना—क्रि० स० [हिं० चखना का प्रे० रूप] स्वाद दिलाना।

चखुⓅ—संज्ञा पुं० दे० "चक्षु"

चखोड़ाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० चख+औड़] दिठौना। डिठौना।

चगड़—संज्ञा [देश०] चतुर। चालाक।

चगताईⓅ—संज्ञा पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताई खाँ से चला था।

चचा—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चची] बाप का भाई। पितृव्य।

चचिया—वि० [हिं० चचा] चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला।

Ⓟ**यौ०**—चचिया ससुर=पति या पत्नी का चाचा।

चचींडा†—संज्ञा पुं० [सं० चिचिंड] १ तोरई की तरह की एक तरकारी। २ चिचड़ा।

चचेरा—वि० [हिं० चचा+एरा(प्रत्य०)] चाचा से उत्पन्न। चाचाजाद, जैसे—चचेरा भाई।

चचोड़ना—क्रि० स० [अनु० या देश०] दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना।

चट—क्रि० वि० [सं० चटुल=चंचल] जल्दी से। झट। तुरंत। फौरन। शीघ्र।

Ⓟ†संज्ञा पुं० [सं० चित्र] १ दाग। धब्बा। २ घाव या चकत्ता।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। २ वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है।

वि० [हिं० √चाट] चाट पोंछकर खाया हुआ। समाप्त। नष्ट।

मुहा०—चट कर जाना=(१) सब खा जाना (२) दूसरे की वस्तु लेकर न देना।

चटक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चटका] गौरा पक्षी। गौरवा। गौरैया। चिड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल=सुंदर] चटकीलापन। चमक दमक। कांति। शोभा।

†वि० चटकीला। चमकीला।

संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल] तेजी। फुरती।

क्रि० वि० चटपट। तेजी से।

वि० चटपटा। चटकारा। चरपरा।

चटकई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चटक] तेजी। फुर्ती।

चटकदार—वि० दे० "चटकीला"।

चटकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० चट] थप्पड़। तमाचा। उ०—विकट चटकन चपट, चरन गहि पटक महि, निघटि गए सुभट, सत सब को छूट्यो।—कविता०।

चटकना—क्रि० अ० [अनु० चट] 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना। तड़कना। कड़कना। २ कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। ३. कोयले, गँठीली लकड़ी आदि का जलते समय चटचट करना। ४ चिट-चिटाना। झुँझलाना। गरज पड़ना। स्थान स्थान पर फटना। ६. अनबन होना। खटकना।

संज्ञा पुं० [अनु० चट] तमाचा। थप्पड़।

चटकनी—संज्ञा स्त्री० [अनु० चट] सिट-किनी।

चटक-मटक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चटक+√मटक] बनाव सिंगार। सजधज। नाज नखरा।

चटका†—संज्ञा पुं० [हिं० चट] फुरती।

चटकाना—क्रि० स० [अनु० चट] १ ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय। तोड़ना। २ उँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए दबाकर 'चट चट' शब्द निकालना। ३ बार बार टकराना जिससे 'चट चट' शब्द निकले। ४ टक मारना।

मुहा०—जूतियाँ चटकाना = जूता घसीटते हुए फिरना। मारा मारा फिरना।

५ अलग करना। दूर करना। ६ चिढ़ाना। कुपित करना।

चटकारा—वि० [सं० चटुल] १ चटकीला। चमकीला। २ चंचल चपल। तेज।

वि० [अनु० चट] स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकाली—संज्ञा स्त्री० [सं० चटक+आलि] १ गौरैयों की पंक्ति। २ चिड़ियों की पंक्ति।

चटकीलता—संज्ञा पुं० [हिं० चटकीला+ता (प्रत्य०)] चटक। दीप्ति। तेज। उ०—चंद सी आनन की चटकीलता कुंदन सी तन की छवि न्यारी। मंजु मनोहर वार की बानक जागे कि वे अँखियाँ रतनारी।—शृंगार०।

चटकीला—वि० [हिं० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] १ जिसका रंग फीका न हो। शुलता। शोख। भड़कीला। २ चमकीला। चमकदार। आभायुक्त। ३ चरपरा। चटपटा। मजेदार।

चटकोरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना—क्रि० अ०, संज्ञा पुं० दे० "चटकना"।

चट चट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चटकने का शब्द। 'चट चट' शब्द।

चटपटाना—क्रि० अ० [सं० चट=भेदन] १ 'चट चट' करते हुए टूटना या फूटना। २ लकड़ी कोयले आदि का 'चट चट' शब्द करते हुए जलन।

चटचेटक—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] इंद्रजाल। जादू।

चटनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] १ चाटने की चीज। अवलेह। २ वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय।

चटपट—क्रि० वि० [अनु०] शीघ्र। जल्दी।

चटपटा—वि० [हिं० चाट] [स्त्री० चटपटी] चरपरा। तीक्ष्ण स्वाद का। मजेदार। मिर्च मसालेदार।

चटपटाना—क्रि० अ० दे० 'छटपटाना'।

चटपटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चटपट] [वि० चटपटिया] १ आतुरता। उतावली। शीघ्रता। २ घबराहट। व्यग्रता।

वि० स्त्री० दे० "चटपटा"। संज्ञा स्त्री० चटपटी चीज।

चटवाना—क्रि० स० दे० "चटाना"।

चटशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।

चटसार(५)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चट्टा= चेला+सार=शाला] बच्चों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मकतब।

चटाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कट=चटाई ?] फूस, सींक, पतली फट्टियों आदि का बिछावन। तृण का आसन। साथरी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √चाट +आई (प्रत्य०)] चाटने की क्रिया।

चटाक—संज्ञा पुं० दे० "चटाका"। उ०—महाभुजदंड द्वै अटकटाइ चपेट की चोट चटाक दै फोरौं।—कविता०।

चटाका—संज्ञा पुं० [अनु०] लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द।

चटाना—क्रि० स० [हिं० चाटना का प्रे० रूप] १ चाटने का काम कराना। २ थोड़ा थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना। खिलाना। ३. घूस देना। रिश्वत देना। ४ छुरी, तलवार आदि पर सान रखना।

चटापटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चटपट] १ शीघ्रता। २. महामारी आदि जिसमें लोग चटपट मर जाते हैं।

चटावन—संज्ञा पुं० [हिं० चटाना] बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना। अन्नप्राशन।

चटिक(५)—क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट।

चटियल—वि० [देश०] जिसमें पेड़पौधे न हों। निचाट (मैदान)।

चटी—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।

संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टी"।

चटुल—वि० [सं०] [स्त्री० चटुला] १ चंचल। चपल। चालाक। २ सुंदर। प्रियदर्शन। उ०—चटुल चारु रतिनाथ के हरि होरी है। सीखत होइ अयान अहो हरि होरी है।—सूर०। ३. मधुरभाषी।

चटुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का केशविन्यास।

चटोरा—वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] १ जिसे चटपटी या स्वादिष्ट चीजें खाने की लत हो। स्वादलोलुप। २ लोलुप। लोभी।

चटोरपन—संज्ञा पुं० दे० "चटोरापन"

चटोरापन—संज्ञा पुं० [हिं० चटोरा+पन (प्रत्य०)] चटपटी या स्वादिष्ट चीजें खाने का व्यसन।

चट्टा—वि० [हिं० चाटना] १. चाटपोंछकर खाया हुआ। २ समाप्त। नष्ट। गायब।

चट्टा—संज्ञा पुं० [देश०] चटियल मैदान।

संज्ञा पुं० [हिं० चकत्ता] शरीर पर कुष्ट आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता। दाग।

चट्टान—संज्ञा स्त्री० [हिं०] पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा। विस्तृत शिलापटल। शिलाखंड।

चट्टाबट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० चट्टू+बट्टा= गोला] काठ के खिलौनों का एक समूह। २ गोले और गोलियाँ जिन्हें बाजीगर एक थैली में से निकालकर लोगों को तमाशा दिखाते हैं।

मुहा०—एक ही थैली के चट्टे बट्टे= एक ही मेल के मनुष्य। चट्टे बट्टे लगाना= इधर की उधर लगाकर लड़ाई कराना।

चट्टी—संज्ञा स्त्री० [देश०] टिकान। पड़ाव।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चपटा या अनु० चट चट] एँड़ी की ओर खुला हुआ जूता। स्लिपर।

चट्टू—वि० [हिं० चाट] स्वादलोलुप। चटोरा।

संज्ञा पुं० [अनु०] पत्थर का बड़ा खरल।

चड्ढी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चढ़] एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठपर चढ़कर चलते हैं।

चढ़त, चढ़न—संज्ञा स्त्री० हिं० √चढ़+त, न (प्रत्य०)] देवता को चढ़ाई हुई वस्तु। देवता की भेंट।

चढ़ना—क्रि० अ० [सं० उच्चलन ?] १. नीचे से ऊपर को जाना। ऊँचाई पर जाना। २ ऊपर उठना। उड़ना। ३ ऊपर की ओर सिमटना। ४ ऊपर से ढँकना। मढ़ा जाना। ५ उन्नति करना।

मुहा०—चढ़ बनना=सुयोग मिलना।

६ (नदी या पानी का) बाढ़ पर आना। ७ धावा करना। चढ़ाई करना। ८ बहुत से लोगों का दल बाँधकर किसी काम के लिये जाना। उ०—आपके साथ मैं सारे इंदरलोक को समेट कुँवर उदयभान को ब्याहने चढ़ूँगा।—रानी केतकी०। ९. महँगा होना। भाव का बढ़ना। १० सुर ऊँचा होना। ११ धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। १२ ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का अधिक कस जाना। तनना।

मुहा०—नस चढ़ना=नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना।

१३ किसी देवता, महात्मा आदि को भेंट दिया जाना। देवार्पित होना। १४. सवारी पर बैठना। सवार होना। १५ वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरंभ होना। १६ ऋण होना। कर्ज होना। १७. बही या कागज आदि पर लिखा जाना। टँकना। दर्ज होना। १८ किसी वस्तु का बुरा और उद्वेगजनक प्रभाव होना। १९ पकने या आँच खाने के लिये चूल्हे पर रखा जाना। २० लेप होना। पोता जाना।

चढ़वाना—क्रि० स० [हिं० चढ़ाना का प्रे० रूप] चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चढ़+आई (प्रत्य०)] १ चढ़ने की क्रिया या भाव। २ ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३ शत्रु से लड़ने के लिये प्रस्थान। धावा। आक्रमण।

चढ़ाउतरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चढ़+√उतर] बार बार चढ़ने उतरने की क्रिया।

चढ़ाऊपरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चढ़+ऊपर] एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न। लागडाँट। होड़।

चढ़ाचढ़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ाऊपरी"।

चढ़ाना—क्रि० स० [हिं० चढ़ना का प्रे० रूप] १ चढ़ना का सकर्मक रूप। चढ़ने में प्रवृत्त करना। २ ऊपर ले जाना। ऊपर पहुँचाना। ऊपर खींचना। ३ ऊपर सरकाना।

उदा०—आस्तीन चढ़ाना। ४. तानना (भौं, कमान)। ५ देवता को भेंट देना। ६. बही, कागज आदि पर लिखना। ७ सिर पर होना (कर्ज)। ८ पोतना। ९ पी जाना।

चढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० चढ़ +आव (प्रत्य०)] १ चढ़ने की क्रिया या भाव। उन्नति।

यौ०—चढ़ाव उतार = ऊँचा नीचा स्थान।

२ बढ़ने का भाव। वृद्धि। बाढ़।

यौ०—चढ़ावउतार = एक सिरे पर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमश पतला होते जाने का भाव। गावदुम आकृति।

३ दे० "चढ़ावा"। ४ वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो। 'बहाव' का उलटा।

चढ़ावा—संज्ञा पुं० [हिं० √चढ़ +आवा (प्रत्य०)] १ वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २ वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। पुजापा। ३ बढ़ावा। दम।

मुहा०—चढ़ावा बढ़ावा देना = उत्साह बढ़ाना। उकसाना। उत्तेजित करना।

चणक—संज्ञा पुं० [सं०] चना।

चतुरंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। २ सेना के चार अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। ३ चतुरंगिणी सेना। ४ शतरंज।

चतुरंगिणी—वि० स्त्री० [सं०] चार अंगों वाली (विशेषत सेना)।

चतुर—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० चतुरा] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला। वक्रगामी। २ फुरतीला। तेज। ३ प्रवीण। होशियार। निपुण। ४ धूर्त। चालाक।

संज्ञा पुं० शृंगार रस में नायक का एक भेद।

चतुरई—संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"। उ०—बहुनायकी आजु मैं जानी कहा चतुरई तौलत हौ।—सूर०।

चतुरता—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर+ता (प्रत्य०)] चतुराई। प्रवीणता। होशियारी। चालाकी।

चतुरपन†—संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।

चतुरसम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चतुस्सम"।

चतुरस्र—वि० [सं०] चौकोर।

चतुराई—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर+हिं० आई (प्रत्य०)] १ होशियारी। निपुणता। दक्षता। २ धूर्तता। चालाकी।

चतुरानन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

चतुरिंद्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] चार इंद्रियोंवाले जीव, जैसे—मक्खी, भौंरा, साँप आदि।

चतुर्गुण—वि० [सं०] १. चौगुना। २ चार गुणोंवाला।

चतुर्थ—वि० [सं०] चौथा।

चतुर्थांश—संज्ञा पुं० [सं०] चौथाई।

चतुर्थाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।

चतुर्थी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २. वह गंगापूजन आदि कर्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।

चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।

चतुर्दिक्—संज्ञा पुं० [सं०] चारों दिशाएँ।

क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्भुज—वि० [सं०] [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओंवाला। जिसकी चार भुजाएँ हों।

संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।

चतुर्भुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक देवी। २ गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी—संज्ञा पुं० [सं० चतुर्भुज+हिं० ई (प्रत्य०)] एक वैष्णव संप्रदाय।

वि० चार भुजाओंवाला।

चतुर्मास—संज्ञा पुं० दे० "चातुर्मास"।

चतुर्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

वि० [स्त्री० चतुर्मुखी] चार मुखवाला।

क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्युगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चारों युगों का समय। ४३,२०,००० वर्ष का समय। चौजुगी। चौकड़ी।

चतुर्वर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चतुर्वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। ईश्वर। २ चारों वेद।

चतुर्वेदी—संज्ञा पुं० [सं० चतुर्वेदिन्] १ चारों वेदों का जाननेवाला पुरुष। २ ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २ विष्णु।

चतुष्कल—वि० [सं०] चार कलाओंवाला। जिसमें चार मात्राएँ हों।

चतुष्कोण—वि० [सं०] चार कोनोंवाला। चौकोर। चौकोना।

चतुष्टय—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार की संख्या। २. चार चीजों का समूह।

चतुष्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] चौराहा।

चतुष्पद—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौपाया। २ चौपद नामक छंद।

वि० चार पैरोंवाला।

चतुष्पदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपैया छंद।

चतुष्पदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ १५ मात्राओं का चौपाई छंद। २. चार पद का गीत।

चत्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. चौमुहानी। चौरास्ता। २ चबूतरा। वेदी।

चद्दिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर। २ चंद्रमा। ३ हाथी। ४ साँप।

चद्दर—संज्ञा स्त्री० [फा० चादर] १ दे० "चादर"।

चनक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चना"। उ०—बारे तें ललात बिललात द्वार द्वार दीन, जानत हौ चारि फल चारि ही चनक कौ। —कविता०।

चनकना†—क्रि० अ० दे० "चटकना"।

चनखना—क्रि० अ० [हिं० चनकना] खफा होना। चिढ़ना। चिटकना।

चनन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चंदन"।

चना—संज्ञा पुं० [सं० चणक] चैती फसल का एक प्रधान अन्न। बूट। छोला।

मुहा०—नाकों चने चबवाना = बहुत तंग करना। बहुत दिक या हैरान करना। लोहे का चना = अत्यंत कठिन काम। विकट कार्य।

चपकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपकना] १ एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २ किवाड़, संदूक आदि के लोहे या पीतल का वह साज जिसमें ताला लगाया जाता है।

चपकना—क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपकुलिश—संज्ञा स्त्री० [तु०] १ कठिन स्थिति। अड़चन। फेर। कठिनाई। झंझट। अटस। २ बहुत भीड़भाड़।

चपटना†—क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपटा†—वि० दे० "चिपटा"।

चपड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० चपटा] १ साफ की हुई लाख का पत्तर। २ लाल रंग का एक कीड़ा।

चपत—संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १ तमाचा। थप्पड़। २ धक्का। हानि।

चपना—क्रि० अ० [सं० चपन=कूटना, कुचलना] १ दबाना। कुचल जाना। २ लज्जा से गड़ जाना। लज्जित होना।

चपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना] १ छिछला कटोरा। कटोरी। २ दरियाई नारियल का कमंडल। ३ हाँड़ी का ढक्कन।

चपरगट्टू—वि० [हिं० चौपट+गटपट] १ सत्यानाशी। चौपट। २ आफत का मारा। अभागा। ३. गुत्थमगुत्थ। एक में उलझा हुआ। ४ पकड़कर दबाया हुआ। ५. मूर्ख।

चपरना†(पु)—क्रि० स० [अनु० चपचप] १. दे० "चुपड़ना"। २ परस्पर मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना। उ०—विषय चिंता दोउ है माया। दोउ चपरि ज्यों तरुवर छाया।—सूर०। ३ धोखा देना।

क्रि० अ० [सं० चपल] जल्दी करना।

चपरा—अव्य० [हिं० √चपर] १ झटपट। २ दे० "चपड़ा"।

चपरास—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपरासी] दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगाकर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बिल्ला। बैज।

चपरासी—संज्ञा पुं० [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] वह नौकर जो चपरास पहने हो। प्यादा। अरदली।

चपरि—क्रि० वि० [सं० चपल] तेजी से। शीघ्रता से। उ०—नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु। चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।—मानस।

चपल—वि० [सं०] १ स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चुलबुला। २ बहुत काल तक न रहनेवाला। क्षणिक। ३ उतावला। जल्दे-बाज। ४ चालाक। धृष्ट।

चपलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंचलता। तेजी। जल्दी। २ धृष्टता। ढिठाई।

चपला—वि० स्त्री० [सं०] चंचला। स्थिर या गंभीर न रहनेवाली। फुरतीली। तेज।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ बिजली। ३. आर्या छंद का एक भेद। ४ पुंश्चली स्त्री। ५ जीभ। जिह्वा।

चपलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चपलाना(पु)—क्रि० अ० [सं० चपल] चलना। हिलना। डोलना।

क्रि० स० चलाना। हिलाना।

चपटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपटी] दे० चप्पल।

चपाक(पु)—क्रि० वि० दे० "चटपट"।

चपाती—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्पटी] पतली रोटी। फुल्का।

चपाना—क्रि० स० [हिं० चपना का प्रे० रूप] १ दबाने का काम कराना। दबवाना। २ लज्जित करना। झिपाना। शरमिंदा करना।

चपेट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चप+एट (प्रत्य०)] १. झोंका। रगड़ा। धक्का। आघात। २ थप्पड़। झापड़। तमाचा। ३ दबाव। संकट।

चपेटना—क्रि० स० [हिं० चपेट] १ दबाना। दबोचना। २ बलपूर्वक भगाना। ३ फट कार बताना। डाँटना।

चपेटा—संज्ञा पुं० दे० "चपेट"।

चपेरना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चापना] दबाना।

चप्पड़—संज्ञा पुं० दे० "चिप्पड़"।

चप्पन—संज्ञा पुं० [हिं० चपना=दबाना] छिछला कटोरा।

चप्परि(पु)—क्रि० वि० [प्रा० चपण=चाँपना दबाना] बलपूर्वक। उ०—ठाकुर ठक भए गेल चोरें चप्परि घर लिज्झिअ।

चप्पल—संज्ञा पुं० [हिं० चपटा] खुली एड़ी का जूता जिसमें आगे की ओर चमड़े आदि के तस्मे या पट्टियाँ होती हैं।

चप्पा—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पाद] १ चतुर्थांश। चौथा भाग। २ थोड़ा भाग। ३ चार अंगुल जगह। ४ थोड़ी जगह।

चप्पी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चप] धीरे धीरे हाथ पैर दबाने की क्रिया। चरणसेवा।

चप्पू—संज्ञा पुं० [हिं० √चाँप] एक प्रकार का डाँड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

चबकना—क्रि० अ० [देश०] १ रह रहकर दर्द करना। टीसना। २ हूल मारना। चिलकना।

चबवाना—क्रि० स० [हिं० चबाना का प्रे० रूप] चबाने का काम कराना।

चबाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] चबाने की क्रिया या भाव।

संज्ञा पुं० दे० "चवाई"।

चबाना—क्रि० स० [सं० चर्वण] १ दाँतों से कुचलना। जुगालना।

मुहा०—चबा चबाकर बातें करना=एक एक शब्द धीरे धीरे बोलना। मठार मठारकर बातें करना। चबे को चबाना=किए हुए काम को फिर फिर करना। पिष्टपेषण करना।

†२. दाँतों से काटना। दरदराना।

चबाव, चबावन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चवाव"।

चबीना—संज्ञा पुं० दे० "चबेना"। उ०—झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मनमोद। खलक चबीणा काल ? कुछ मुख मैं कछु गोद।—कबीर०।

चबूतरा—संज्ञा पुं० [सं० चत्वर] १. बैठने के लिये चौरस बनाई हुई ऊँची जगह। चौतरा। †२ कोतवाली। बड़ा थाना।

चबेना—संज्ञा पुं० [हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिये सूखा भुना हुआ अनाज। चर्वण। भूँजा।

चबेनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] जलपान का सामान।

चभाना—क्रि० स० [हिं० चाभना का प्रे० रूप] खिलाना। भोजन कराना।

चभोरना—क्रि० स० [हिं० चुभकी] १ डुबोना। गोता देना। २. तर करना। उ०—मीठे अति कोमल हैं नीके। ताते तुरत चभोरे घी के।—सूर०।

चमक—संज्ञा स्त्री० [सं० चमत्कृत] १ प्रकाश। ज्योति। रोशनी। २ कांति। दीप्ति। आभा। दमक। ३ कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। लचक। चिक।

चमकताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चमक"।

चमक दमक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक+दमक अनु०] १ दीप्ति। आभा। २ तड़क भड़क।

चमकदार—वि० [हिं० चमक+फा० दार] जिसमें चमक हो। चमकीला।

चमकना—क्रि० अ० [हिं० चमक] १ प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना। प्रकाशित होना। जगमगाना। २ कांति या आभा से युक्त होना। दमकना। ३ श्रीसंपन्न होना। उन्नति करना। ४ जोर पर होना। बढ़ना। ५ चौंकना। भड़कना। ६ फुरती से खिसक जाना। उ०—सखा साथ के चमकि गए सब गह्यो स्याम कर धाइ।—सूर०। ७ एकबारगी दर्द हो उठना। ८ मटकना। उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना। ९ कमर में चिक आना। लचक आना।

चमकाना—क्रि० स० [हिं० चमकना का स० रूप] १ चमकीला करना। चमक लाना। झलकाना। २ उज्वल करना।

साफ करना। ३. भड़काना। चौंकाना। ४. चिढ़ाना। खिझाना। ५ घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना। ६ भाव बताने के लिये उँगली आदि हिलाना। मटकाना।

चमकारी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० 'चमक'।
वि० चमकीली।

चमकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक] कारचोबी में लपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे ओटे चिपटे टुकड़े। सितारे। तारे।

चमकीला—वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य)] [स्त्री० चमकीली] १ जिसमें चमक हो। चमकनेवाला। २ भड़कीला। शानदार।

चमकौवल—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक +औवल (प्रत्य०)] १ चमकाने की क्रिया। २ मटकाने की क्रिया।

चमक्को—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक] १ चमकने मटकनेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज स्त्री। २ कुलटा स्त्री। ३ झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़—संज्ञा पुं० [सं० चर्मचटका] चमड़े के परोंवाला एक स्तनपायी जंतु जो रात में ही बाहर निकलता है।

चमचम—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई।
क्रि० वि० दे० "चमाचम"।

चमचमाना—क्रि० अ० [हिं० चमचम] चमकना। प्रकाशमान होना। दमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक लाना।

चमचा—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १ एक प्रकार की छोटी कड़छी या कलछी। चम्मच। डोई। २ चमटा।

चमजूई, चमजोई—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मयूका] १ एक प्रकार की किलनी। २ पीछा न छोड़नेवाली वस्तु।

चमड़ा—संज्ञा पुं० [सं० चर्म] १ प्राणियों के सारे शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म। त्वचा। जिल्द। खाल। २ प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बैग आदि चीजें बनती हैं। खाल। चरसा।
प्र०—चमड़ा सिझाना=चमड़े को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी में डालकर मुलायम करना।
३ छाल। छिलका।
मुहा०—चमड़ा उधेड़ना या खींचना =(१) चमड़े को शरीर से अलग करना। (२) बहुत मार मारना।

चमड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० 'चमड़ा'।

चमत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १ आश्चर्य। विस्मय। २ आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना। करामात। ३ अनूठापन। विचित्रता।

चमत्कारी—वि० [सं०] [स्त्री० चमत्कारिणी] १ जिसमें विलक्षणता हो। अद्भुत। २ चमत्कार या करामात दिखानेवाला।

चमत्कृत—वि० [सं०] आश्चर्यित। विस्मित। ताज्जुब में आया हुआ।

चमत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्चर्य।

चमन—संज्ञा पुं० [फा०] १. हरीभरी क्यारी। २ फुलवारी। छोटा बगीचा।

चमर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चमरी] १ सुरागाय। २ सुरागाय की पूँछ का बना चँवर। चामर।

चमरख—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाम+सं०रक्षा] मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।

चमरबधुआ—संज्ञा पुं० दे० "खरधुआ"।

चमरशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०चमर+शिखा] घोड़ों की कलगी।

चमरस—संज्ञा पुं० [हिं० चाम] जूते या चमड़े की रगड़ से होनेवाला घाव।

चमरी—संज्ञा स्त्री० दे० "चमर"।

चमरौधा—संज्ञा पुं० दे० "चमौवा"।

चमरौट—संज्ञा पुं० [हिं० चमार+औट (प्रत्य०)] खेत, फसल आदि का वह भाग जो गाँव में चमारों को उनके काम के बदले में मिलता है।

चमला—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा या पात्र।

चमस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० चमसी] १ सोमपान करने का चम्मच के आकार का यज्ञपात्र। २ कड़छी। चम्मच।

चमाऊ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चमर] चँवर।

चमाचम—वि० [हिं० चमकना का अनु०] उज्वल कांति के सहित। झलक के साथ।

चमार—संज्ञा पुं० [सं० चर्मकार] [स्त्री० चमारिन, चमारी] एक जाति जो चमड़े का काम बनाती और झाड़ू देती है।

चमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमार] १ चमार की स्त्री। २ चमार का काम।

चमू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। फौज। २ नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।

चमेली—संज्ञा स्त्री० [सं० चंपकवेलि] १ एक झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २ इस झाड़ी का फूल जो सफेद, छोटा और सुगंधित होता है।

चमोटा—संज्ञा पुं० [हिं० चाम+ओटा (प्रत्य०)] मोटे चमड़े का टुकड़ा जिसपर रगड़कर नाई छूरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाम+ओटी (प्रत्य०)] १ चाबुक। कोड़ा। २ पतली छड़ी। कमची। बेंत। ३ चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार घिसते हैं।

चमौवा—संज्ञा पुं० [हिं० चाम+औवा (प्रत्य०)] एक तरह का भद्दा देशी जूता। चमरौधा।

चम्मच—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० चमस्] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी।

चय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। ढेर। राशि। २ धुस्स। टीला। ढूह। ३ गढ़। किला। ४. धुस। कोट। चहारदीवारी। प्राकार। ५ बुनियाद। नींव। ६ चबूतरा। ७ चौकी। ऊँचा आसन।

चयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इकट्ठा करने का कार्य। संग्रह। संचय। २ चुनने का कार्य। चुनाई। ३ यज्ञ के लिये अग्नि का संस्कार। ४ क्रम से लगाना या चुनना।
(पु)† संज्ञा पुं० दे० "चैन"।

चयना(पु)—क्रि० स० [सं० चयन] संचय करना। इकट्ठा करना।

चर—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा की ओर से नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जिसका काम प्रकाश्य या गुप्त रूप से अपने अथवा पराए राज्यों की भीतरी दशा का पता लगाना हो। गूढ़ पुरुष। भेदिया। जासूस। २ किसी विशेष कार्य के लिये भेजा हुआ आदमी। दूत। ३ वह जो चले, जैसे—अनुचर, खेचर। ४ खंजन पक्षी। ५ कौड़ी। कपर्दिका। ६ मंगल। भौम। ७ नदियों के किनारे या संगमस्थान पर की वह गीली भूमि जो नदी के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के जमने से बनती है। ८ दलदल। कीचड़। ९. नदियों के बीच में बालू का बना हुआ टापू। रेता।
वि० [सं०] १ आप से आप चलनेवाला। जंगम। २ एक स्थान पर न ठहरनेवाला। अस्थिर। ३ खानेवाला।

चरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चारा] पशुओं के चारा खाने का गड्ढा।

संज्ञा स्त्री० [?] सितार आदि की खूँटी।

चरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूत। चर। २ गुप्तचर। भेदिया। जासूस। ३ वैद्यक के एक प्रधान आचार्य जिनकी रची 'चरक-संहिता' वैद्यक का एक मान्य ग्रंथ है। ४ चरकसंहिता नामक ग्रंथ। ५ मुसाफिर। बटोही। पथिक। ६ दे० "चटक"।

चरकटा—संज्ञा पुं० [हिं० चारा+√काट] चारा काटकर लानेवाला आदमी।

चरकना(पु)—क्रि० अ० दे० "दरकना"।

चरका—संज्ञा पुं० [फा० चरक] १ हलका घाव। जख्म। २. गरम धातु से दागने का चिह्न। ३ हानि। ४. धोखा। छल।

चरख—संज्ञा पुं० [फा० चर्ख] १ घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २ खराद। ३ सूत कातने का चरखा। ४. कुम्हार का चाक। ५ गोफन। ढेलवाँस। ६ वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। ७. लकड़बग्घा। ८ एक शिकारी चिड़िया।

चरखपूजा—संज्ञा स्त्री० [फा चर्ख=एक बौद्ध तांत्रिक सम्प्रदाय+पूजा] एक प्रकार की उग्र शैव पूजा जो चैत की संक्रांति को होती है।

चरखा—संज्ञा पुं० [फा० चर्ख] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। २ लकड़ी का यंत्र जिसकी सहायता से ऊन, कपास या सन आदि को कातकर सूत बनाते हैं। रहट। ३ कुएँ से पानी निकालने का रहट। ४. सूत लपेटने की गराड़ी। चरखी। रील। ५ गराड़ी। घिरनी। ६. बड़ा या बेडौल पहिया। ७ गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकालते हैं। खड़खड़िया। ८ झंझट का काम।

चरखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री०, अल्पा०] १. पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २. छोटा चरखा। ३. कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटनी। ४ सूत लपेटने की फिरकी। ५ कुएँ से पानी खींचने आदि की गराड़ी। घिरनी।

चरग—संज्ञा पुं० [फा०] १. बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया। चरख। उ०—चरग चंगुगत चातकहि नेम प्रेम की पीर। तुलसी परबस हाड़ पर परिहैं पुहुमी नीर।—दोहा०। २. लकड़बग्घा नामक जंतु।

चरचना—क्रि० स० [सं० चर्चन] १ देह में चंदन आदि का लगाना। २ लेपना। पोतना। ३ भाँपना। अनुमान करना।

चरचराना—क्रि० अ० [अनु० चरचर] १ चर चर शब्द के साथ टूटना या जलना। २ घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना। चर्राना।

क्रि० स० चर चर शब्द के साथ (लकड़ी आदि) तोड़ना।

चरचा—संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चरचा] १ चर्चा चलानेवाला। २ निंदक।

चरजना(पु)—क्रि० अ० [सं० चर्चन] १ बहकाना। भुलावा देना। बहाली देना। २ अनुमान करना। अंदाज लगाना।

चरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पग। पैर। पाँव। २ बड़ों का सान्निध्य। बड़ों का संग। ३ किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद। ४ किसी चीज का चौथाई भाग। ५ मूल। जड़। ६. गोत्र। ७ क्रम। ८ आचार। ९ घूमने की जगह। १०. सूर्य आदि की किरण। ११ अनुष्ठान। १२ गमन। जाना। १३. भक्षण। चरने का काम।

चरणगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

चरणचिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैरों के तलुए की रेखा। २ पैर का निशान।

चरणदासी—संज्ञा स्त्री० [सं० चरण+दासी] १ चरणों की दासी। सेविका। २ स्त्री। पत्नी। ३. जूता। पनही।

वि० [चरणदास] महात्मा चरणदास के सम्प्रदाय का। चरणदास का अनुयायी।

चरणपादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खड़ाऊँ। पाँवड़ी। २ पत्थर आदि का बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न।

चरणपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] चरणपादुका।

चरणसहस्र—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

चरणसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० चरण+सेवा] १ पैर दबाना। २ बड़ों की सेवा।

चरणामृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पानी जिसमें किसी महात्मा या बड़े के चरण धोए गए हों। पादोदक। २. एक में मिला हुआ दूध, दही, घी, शक्कर और शहद जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।

चरणायुध—संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।

चरणोदक—संज्ञा पुं० [सं०] चरणामृत।

चरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चलने का भाव। २ पृथ्वी।

चरती—संज्ञा पुं० [सं०√चर्] व्रत के दिन उपवास न करनेवाला।

चरन—संज्ञा पुं० दे० "चरण"।

चरनपीठ—संज्ञा पुं० [सं० चरणपीठ] चरणपादुका। खड़ाऊँ। उ०—चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के।—मानस।

चरना—क्रि० स० [सं०√चर्] पशुओं का घूम घूमकर घास चारा आदि खाना।

क्रि० अ० घूमना फिरना।

संज्ञा पुं० [सं० चरण=पैर] काछा।

चरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] चाल।

चरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १ पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २ वह नाँद जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है। ३ पशुओं का आहार, घास, चारा आदि। उ०—कमल वदन कुम्हिलात सबन के गौवन छाँडी तृन की चरनी।—सूर०।

चरपट—संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १ चपत। तमाचा। थप्पड़। २. उचक्का। ३ एक छंद। चपट।

चरपरा—वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण। झालदार। तीता।

चरपराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० चरपरा+हट (प्रत्य०)] १ स्वाद की तीक्ष्णता। झाल। २ घाव आदि की जलन। ३. द्वेष। डाह। ईर्ष्या।

चरफराना(पु)—क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

चरब—वि० [फा० चर्ब] तेज। तीखा।

चरबना—संज्ञा पुं० दे० "चैना"।

चरबाँक, चरबाक—वि० [सं० चार्वाक] १ चतुर। चालाक। २ शोख। निडर।

चरबा—संज्ञा पुं० [फा० चरब] प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।

चरबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सफेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है। मेद। वसा।

मुहा०—चरबी चढ़ना=मोटा होना। चरबी छाना=(१) बहुत मोटा हो जाना। शरीर में मेद बढ़ जाना। (२) मदांध होना।

चरम—वि० [सं०] अंतिम। सबसे बढ़ा हुआ। चोटी का।

चरमकरण—संज्ञा पुं० [सं० चरम्+करण] उत्तम कृत्य। पुण्य कार्य।

चरमर—संज्ञा पुं० [अनु०] तनी या चीमड़ वस्तु (जैसे—जूता, चारपाई) के दबने या मुड़ने का शब्द।

चरमराना—क्रि० अ० [अनु०] चरमर शब्द होना।

क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चर्मण्वती"।

चरमावर्तन—संज्ञा पुं० [सं० चरम+आवर्तन] अंतिम फेरा।

चरवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चर+वाई (प्रत्य०)] १ चराने का काम। २ चराने की मजदूरी।

चरवाना—क्रि० स० [हिं० चराना का प्रे० रूप] चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवारा(पु)—वि० दे० "चरवाहा"।

चरवाहा—संज्ञा पुं० [हिं० √चर+वाहा =वाहक] गाय, भैंस आदि चरानेवाला।

चरवाही—संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।

चरवैया†—संज्ञा पुं० [हिं० √चर+वाई (प्रत्य०)] १ चरनेवाला। २ चरानेवाला।

चरष(पु)—संज्ञा पुं० [फा० चर्ख] एक प्रकार का नाच। उ०—चरष नाच तुरुकिनी आन किछु काहु न भावइ।

चरस—संज्ञा पुं० [सं० चर्म] १ भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिये पानी निकाला जाता है। चरसा। तरसा। पुर। मोट। २ भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। ३ गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप जिसका धुआँ नशे के लिये चिलम पर पीते हैं।

संज्ञा पुं० [फा० चर्ज] आसाम प्रांत में होनेवाला एक पक्षी। बनमोर। चीनी मोर।

चरसा—संज्ञा पुं० [हिं० चरस] १ भैंस, बैल आदि का चमड़ा। २ चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। ३ चरस। मोट।

चरसी—संज्ञा पुं० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] १. चरस द्वारा खेत सींचनेवाला। २ वह जो चरस पीता हो।

चराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चर+आई (प्रत्य०)] १ चरने का काम। २ चराने का काम या मजदूरी।

चरागाह—संज्ञा पुं० [फा०] वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।

चराचर—वि० [सं०] १. चर और अचर। जड़ और चेतन। २. जगत। संसार।

चराना—क्रि० स० [हिं० चरना का प्रे० रूप] १ पशुओं को चारा खिलाने के लिये खेतों या मैदानों में ले जाना। २ बातों में बहलाना।

चरावर†(पु)—संज्ञा स्त्री० [देश०] व्यर्थ की बात। बकवाद।

चरिंदा—संज्ञा पुं० [फा०] चलनेवाला जीव। पशु। हैवान।

चरित—संज्ञा पुं० [सं०] १ रहनसहन। आचरण। २ काम। करनी। करतूत। कृत्य। ३ किसी के जीवन की विशेष घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन। जीवनचरित। जीवनी, जैसे—रामचरित (मानस), सुदामाचरित, बुद्धचरित आदि।

चरितनायक—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितार्थ—वि० [सं०] [संज्ञा चरितार्थता] १ जिसके उद्देश्य या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो। कृतकृत्य। कृतार्थ। २ जो ठीक ठीक घट चुका हो।

चरित्तर†—संज्ञा पुं० [सं० चरित्र] १ धूर्तता की चाल। नखरेबाजी। नकल।

चरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वभाव। २ वह जो किया जाय। कार्य। ३ शील। आचरण। चालचलन। करनी। करतूत। ४ चरित।

चरित्रनायक—संज्ञा पुं० दे० "चरितनायक"।

चरित्रवान्—वि० [सं०] [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे चरित्रवाला। उत्तम आचरणवाला।

चरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चर] १ पशुओं के चरने की जमीन। २ छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो चारे के काम में आते हैं। कड़वी।

चरु—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चरव्य] १ हवन या यज्ञ की आहुति के लिये पकाया हुआ अन्न। हव्यान्न। देवताओं या पितरों को दिया जानेवाला पक्वान्न। हविष्यान्न। २ वह पात्र जिसमें उक्त अन्न पकाया जाय। ३ पशुओं के चरने की जमीन। ४ यज्ञ।

चरखला†—संज्ञा पुं० [हिं० चरखा] सूत कातने का चरखा।

चरुपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पात्र जिसमें हविष्यान्न रखा या पकाया जाय।

चरेरा—वि० [चरचर से अनु०] [स्त्री० चरेरी] १. कड़ा और खुरदुरा। २ कर्कश।

चरेरु†—संज्ञा पुं० [हिं० चरना] चिड़िया।

चरैया†—संज्ञा पुं० [हिं०√चर+ऐया (प्रत्य०)] १. चरानेवाला। २ चरनेवाला।

चर्चक—संज्ञा पुं० [सं०] चर्चा करनेवाला।

चर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चर्चा। २ लेपन।

चर्चरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिकापात होने पर होता है।

चर्चरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का गाना जो वसंत में गाया जाता है। फाग। चाँचर। २ होली की धूमधाम या हुल्लड़। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, सगण, दो जगण, भगण और रगण होता है तथा ८वें वर्ण पर यति और १८वें पर विराम रहता है; जैसे—भूलि के यदि रामहीं, कहुँ आन को गुण गाइहै। ना हरीजन चचरी, मन चपकै सँग भाइहै। इसे चचरी, और विबुधप्रिया भी कहते हैं। इसमें ८, ५, ५, पर यति रखने से हरनर्तन छंद होता है। ४ करतलध्वनि। ताली बजाने का शब्द। ५ चर्चरिका। ६. आमोद प्रमोद। क्रीड़ा।

चर्चा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिक्र। वर्णन। बयान। २ वार्तालाप। बातचीत। ३. किंवदंती। अफ़वाह। ४ लेपन। पोतना। लीपापोती। ५ गायत्रीरूपा महादेवी। दुर्गा।

चर्चिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चर्चा। जिक्र। २ दुर्गा।

चर्चित—वि० [सं०] १ लगा या लगाया हुआ। पोता हुआ। लेपित। २ जिसकी चर्चा हो।

चर्पट—संज्ञा पुं० [सं०] १ चपत। थप्पड़। २ हाथ की खुली हुई हथेली।

चर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ चमड़ा। २ ढाल। सिपर।

चर्मकशा, चर्मकषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। चमरखा।

चर्मकार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति। चमार।

चर्मकील—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बवासीर। २ एक रोग जिसमें शरीर में एक नुकीला मसा निकल आता है।

चर्मचक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण चक्षु। ज्ञानचक्षु का उलटा।
चर्मण्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुंदेलखंड में बहती हुई गंगा में गिरनेवाली एक नदी। चंबल। २ केले का पेड़।
चर्मदंड—संज्ञा पुं० [सं०] चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।
चर्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण दृष्टि। आँख। ज्ञानदृष्टि का उलटा।
चर्मपादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूता।
चर्मवसन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
चर्य्य—वि० [सं०] जो करने योग्य हो।
चर्य्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जो किया जाय। आचरण। २. आचार। चालचलन। ३ कामकाज। ४ वृत्ति। जीविका। ५ सेवा। ६ चलना। टहलना।
चर्राना—क्रि० अ० [अनु०] १ लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने के समय चर चर शब्द करना। २ घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हलकी पीड़ा होना। ३ सुटते हुए चमड़े में तनाव के कारण पीड़ा होना। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना। ४ किसी बात की तीव्र इच्छा होना।
चर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० चर्राना] लगती हुई व्यंग्यपूर्ण बात। चुटीली बात।
चर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चर्व्य] १ दाँतों से खूब दबा दबाकर खाना। चबाना। २ वह वस्तु जो चबाई जाय। ३ भूना हुआ दाना जो चबाकर खाया जाता है। चबैना। बहुरी। दाना।
चर्वित—वि० [सं०] चबाया हुआ।
चर्वितचर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चबाई हुई वस्तु को फिर से चबाना। २ किसी किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।
चल—वि० [सं०] १ चंचल। अस्थिर। २ चलता हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। २. दोहा छंद का एक भेद। ३ शिव। ४ विष्णु।
चलकना—क्रि० अ० दे० "चमकना"।
चलचलाव—संज्ञा पुं० [हिं० √चल + चलाव] १ प्रस्थान। यात्रा। चलाचली। २ मृत्यु।
चलचाल—क्रि० वि० हिं० √चल + चाल चलविचल। चंचल। अस्थिर।
चलचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी लंबी फिल्म पर लिए हुए चित्र जो परदे पर सजीव प्राणियों की तरह चलते फिरते दिखाई देते हैं। सिनेमा।
चलचूक—संज्ञा स्त्री० [सं० चल = चंचल + हिं० चूक = भूल] धोखा। छल। कपट।
चलता—वि० [हिं० √चल] [स्त्री० चलती] १ चलता हुआ। गमन करता हुआ। हिलता डोलता।
मुहा०—चलता करना = (१) हटाना। भगाना। भेजना। (२) किसी प्रकार निपटाना। चलता बनना = चल देना।
२ जिसका क्रमभंग न हुआ हो। जो बराबर जारी हो। ३ जिसका रिवाज बहुत हो। प्रचलित। ४ काम करने योग्य। जो अशक्त न हुआ हो। ५ चालाक।
संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें बेल के से फल लगते हैं। २ कवच। झिलम।
संज्ञा स्त्री० [सं०] चल होने का भाव। चंचलता। अस्थिरता।
चलता खाता—संज्ञा पुं० [हिं० चलता + खाता] १ बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेनदेन चालू हो। २ बैंक का वह खाता जिससे अपना रुपया निकालने में कोई प्रतिबंध नहीं रहता और मनमाने चेक काटे जा सकते हैं। ३ कोई चलता हिसाब।
चलती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चल + ती (प्रत्य०)] मानमर्यादा। प्रभाव। अधिकार।
चलतू—वि० दे० "चलता"।
चलदल—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष।
चलन—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १ चलने का भाव। गति। चाल। २ रिवाज। रस्म। रीति। ३ किसी चीज का व्यवहार, उपयोग या प्रचार।
संज्ञा स्त्री० [सं०] (ज्योतिष में) सूर्य की वह गति जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं (अर्थात् २० मार्च और २२ या २३ सितंबर)।
संज्ञा पुं० [सं०] गति। भ्रमण।
चलन कलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिनरात के घटने बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है। २ एक प्रकार का गणित।
चलनसार—वि० [हिं० चलन + सार (प्रत्य०)] १ जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २ जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।
चलना—क्रि० अ० [सं० चलन] १ एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। गमन करना। प्रस्थान करना।
मुहा०—चलते बैल को अरई (या आर) लगाना = किसी के काम करते रहने पर भी ताकीद करके उसे तंग करना।
२ हिलना डोलना।
मुहा०—पेट चलना = (१) दस्त आना। (२) निर्वाह होना। गुजर होना। मन चलना = इच्छा होना। लालसा होना। मुँह चलना = खूब बोलना। मुँह चलाना (१) अनधिकार बोलना। (२) खाना। चल बसना = मर जाना। अपने चलते = भरसक। यथाशक्ति।
३ कार्यनिर्वाह में समर्थ होना। निभना। ४ प्रवाहित होना। बहना। ५ वृद्धि पर होना। बढ़ना। ६ किसी कार्य में अग्रसर होना। किसी युक्ति या काम में आना। ७ आरंभ होना। छिड़ना। ८ जारी रहना। क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। ९ बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। १० लेनदेन के काम में आना। ११ प्रचलित होना। जारी होना। १२ प्रयुक्त होना। व्यवहृत होना। काम में लाया जाना। १३ तीर, गोली आदि का छूटना। १४ लड़ाई झगड़ा होना। विरोध होना। १५ पढ़ा जाना। बाँचा जाना। १६ कारगर होना। उपाय लगना। वश चलना। १७ आचरण करना। व्यवहार करना। १८ निगला जाना। खाया जाना, जैसे—अब बिना घी के एक कौर नहीं चलता।
क्रि० स० शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी को अपने स्थान से आगे बढ़ाना या हटाना। ताश या गंजीफे आदि खेलों में किसी पत्ते को सब खेलनेवालों के सामने रखना।
मुहा०—चाल चलना = छल करना। धोखा देना।
संज्ञा पुं० [हिं० चलनी] बड़ी चलनी।
चलनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चलन"।
चलनी—संज्ञा स्त्री० दे० "छलनी"।
चलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष।
चलवत—संज्ञा पुं० [हिं० √चल + वत] पैदल। सिपाही।
चलवाना—क्रि० स० [हिं० चलना का प्रे० रूप] १ चलाने का कार्य दूसरे से कराना। २. चलाने का काम कराना।

चलविचल—वि० [सं० चल+विचल] १ जो ठीक जगह से इधर उधर हो गया हो। उखड़ा पुखड़ा। बेठिकाने का। २ जिसके क्रम या नियम का उल्लंघन हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन।

चलवैया†—संज्ञा पुं० [हिं० √चल+वैया (प्रत्य०)] चलनेवाला।

चला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली। २ लक्ष्मी। ३ पृथ्वी। भूमि।

चलाऊ—वि० [हिं० √चल+आऊ (प्रत्य०)] जो बहुत दिनों तक चले। मजबूत। टिकाऊ।

चलाक—वि० दे० "चालाक"।

चलाका†(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० चला] बिजली।

चलाचल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चलाचली। २ गति। चाल।

वि० [सं०] १. चंचल। चपल। २ चलविचल।

चलाचली—संज्ञा स्त्री० [सं० चलाचल+हिं० ई (प्रत्य०)] १ चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी। रवारवी। २ बहुत से लोगों का प्रस्थान। ३ चलने की तैयारी या समय।

वि० जो चलने के लिये तैयार हो।

चलान—संज्ञा पुं० [हिं० √चल+आन (प्रत्य०)] १ भेजे जाने या चलने की क्रिया। २ भेजने या चलाने की क्रिया। ३ किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिये न्यायालय में भेजा जाना। ४ माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। ५ भेजा या आया हुआ माल। ६ वह कागज जिसमें किसी की सूचना के लिये भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो। रवन्ना।

चलाना—क्रि० स० [हिं० चलना का प्रे० रूप] १. किसी को चलने में लगाना। चलने के लिये प्रेरित करना। २ गति देना। हिलाना डुलाना। हरकत देना।

मुहा०—किसी को चलाना = किसी के बारे में कुछ कहना। मुँह चलाना = (१) खाना। भक्षण करना। (२) बोलना। हाथ चलाना = मारने के लिये हाथ उठाना। मारना पीटना।

३. कार्यनिर्वाह में समर्थ करना। निभाना। ४ प्रवाहित करना। बहाना। ५ वृद्धि करना। उन्नति करना। ६ किसी कार्य को अग्रसर करना। ७ आरंभ करना। छेड़ना। ८ जारी रखना। ९. बराबर काम में लाना। टिकाना। १० व्यवहार में लाना। लेनदेन के काम में लाना। ११ प्रचलित करना। प्रचार करना। १२. व्यवहृत करना। प्रयुक्त करना। १३ तीर, गोली आदि छोड़ना। १४ किसी चीज से मारना। १५ किसी व्यवसाय की वृद्धि करना।

चलापन—संज्ञा पुं० [हिं० √चल+पन] चंचलता।

चलायमान—वि० [सं०] १ चलनेवाला। जो चलता हो। २ चंचल। ३ विचलित।

चलाव†—संज्ञा पुं० [हिं० √चल+आव (प्रत्य०)] १ चलने का भाव। २ यात्रा।

चलावना—क्रि० स० दे० "चलाना"।

चलावा—संज्ञा पुं० [हिं० चलाव] १ रीति। रस्म। रवाज। २ आचरण। चालचलन। ३ द्विरागमन। गौना। मुकलावा। ४. एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवों में भयंकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है। इसे लोग बाजा बजाते हुए अपने गाँव के बाहर किसी दूसरे गाँव की सीमा पर रख आते हैं और समझते हैं कि वह बीमारी उनके गाँव से निकलकर उस गाँव में चली गई।

चलित—वि० [सं०] १ अस्थिर। चलायमान। २ चलता हुआ।

चलैया†—संज्ञा पुं० [हिं० √चल+ऐया (प्रत्य०)] चलनेवाला।

चवना—क्रि० अ० [सं० च्यवन] १ टपकना। बहना। निकलना। २ गर्भपात होना।

चवन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ (चार का अल्पा०)+आना+ई (प्रत्य०)] चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का। एक रुपए का चौथाई हिस्सा।

चवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के ५ अक्षरों का समूह।

चवा(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौवाई] एक साथ सब दिशाओं से बहनेवाली वायु।

चवाई—संज्ञा पुं० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] बदनामी फैलानेवाला। निंदक। चुगलखोर। उ०—दाँउ घात लै आइए लखिए ठाँउ कुठाँउ। नाँउ धरै बिनु जाने ही नाँउ चवाई गाँउ।—रससारांश।

चवाव—संज्ञा पुं० [हिं० चौवाई] १ चारों ओर फैलनेवाली चर्चा। प्रवाद। अफवाह। २ बदनामी। निंदा।

चवेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमेली] चमेली। उ०—भावतो आवतो जानि नवेली चवेली के कुंज जौ बैठति जाइकै। 'दास' प्रसूननि मोनजुही करै कंचन सी तन जोति मिलाइकै।—शृंगार०।

चव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बचा। औषधि। २ रुई का पौधा।

चश्मदीद—वि० [फा०] आँखों से देखा हुआ।

यौ०—चश्मदीद गवाह = वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे।

चश्मनुमाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] आँख दिखाना। घुड़कना।

चश्मा—संज्ञा पुं० [फा०] १ दृष्टिशक्ति बढ़ाने या ठंडक रखने के लिये आँखों पर पहना जानेवाला कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के तालों का जोड़ा। ऐनक। २. पानी का सोता। स्रोत।

चष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चक्षु] आँख।

चषक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्य पीने का पात्र। २ मधु। शहद। ३ मद्य।

चषचोल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चष+चोल = वस्त्र] आँख की पलक।

चसक—संज्ञा स्त्री० [देश०] हलका दर्द।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "चषक"।

चसकना—क्रि० अ० [हिं० चसक] हलकी पीड़ा होना। टीसना।

चसका—संज्ञा पुं० [सं० चषण] १ किसी वस्तु या कार्य से मिला हुआ आनंद, जो उस चीज के पुनः पाने या उस काम के पुनः करने की इच्छा उत्पन्न करता है। शौक। चाट। २ आदत। लत।

चसना—क्रि० अ० [हिं० चाशनी] दो चीजों का एक में सटना। लगना। चिपकना।

यौ०—चस जाना = मर जाना।

चसम(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चश्म"।

चसमा(पु)—दे० चश्मा।

चस्पाँ—वि० [फा०] चिपकाया हुआ।

चह—संज्ञा पुं० [सं० चय ?] नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिये चबूतरा। घाट।

(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० चाह] गड्ढा।

चहक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चहकना] पक्षियों का मधुर शब्द। चिड़ियों की चहचह।

चहकना—क्रि० अ० [अनु०] १ पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना। चहचहाना। २ उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना।

चहकार—संज्ञा स्त्री० दे० "चहक"।
चहकारना|—क्रि० अ० दे० "चहकना"।
चहचहा—संज्ञा पुं० [हिं० चहचहाना] १. 'चहचहाना' का भाव। चहक। २ हँसी-दिल्लगी। ठट्ठा।
वि० १ जिसमें चहचह शब्द हो। उल्लास। शब्दयुक्त। २ आनद और उमग उत्पन्न करनेवाला। बहुत मनोहर। ३ ताजा।
चहचहाना—क्रि० अ० [अनु०] पक्षियों का चहचह शब्द करना। चहकना।
चहनना|—क्रि० स० [?] दबाना। रौंदना।
चहना(पु)|—क्रि० स० दे० "चाहना"।
चहनि|(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चाह"।
चहबच्चा—संज्ञा पुं० [फा०] चाह=कुआँ+बच्चा] १ पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज। २ धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना।
चहर|(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल] १ आनद की धूम। रौनक। २ शोरगुल। हल्ला।
वि० १ बढ़िया। उत्तम। २ चुलबुला।
चहरना|(पु)—क्रि० अ० [हिं० चहल] आनदित होना। प्रसन्न होना।
चहल—संज्ञा स्त्री० [सं० चिकिल] कीचड़। कीच।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चहचहाना] आनद की धूम। आनदोत्सव। रौनक।
चहलकदमी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल+फा० कदम] धीरे धीरे टहलना या घूमना।
चहल पहल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम। आबादानी। २ रौनक।
चहला|—संज्ञा पुं० [सं० चिकिल] कीचड़।
चहारदीवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी स्थान के चारों ओर की दीवार। प्राचीर।
चहारुम—वि० [फा०] किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग। चतुर्थांश। चौथाई।
चही, चहा—क्रि० अ० [?] लुक छिपकर देखना।
चहुँ(पु)—वि० [सं० चतुर्] चार। चारों।
चहुँकना—क्रि० अ० दे० "चौंकना"।
चहुँघा—क्रि० वि० [सं० चतुर्धा] चारों ओर। उ०—'दास' चितै चहुँघा चित चाय सों औसर पाइ चले पिलि दोऊ।—शृंगार०।
चहुँपाहीं|—क्रि० वि० [सं० चतु पार्श्व ?] चारों ओर। उ०—मिली जाइ ससि के चहुँपाहीं। सूर न चाँपै पावै छाँहा।—पद्मावत।
चहुँवान—संज्ञा पुं० दे० "चौहान"।
चहूँ—वि० दे० "चहुँ"।
चहूँटना|—क्रि० अ० [हिं० चिमटना] सटना। लगना। मिलना।
चहेटना—क्रि० स० [?] १ गारना। दबाना। निचोड़ना। २ दे० "चपेटना"।
चहेता—वि० [हिं० चाह+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे चाहा जाय। प्यारा।
चहोरना|—क्रि० अ० [देश०] १ पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। २ सहेजना। सँभालना।
चाँई—वि० [देश०] १ ठग। उचक्का। २ होशियार। छली। चालाक।
चाँक—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अक=चिह्न] काठ की वह थापी जिससे खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाते हैं।
चाँकना—क्रि० स० [हिं० चाँक] १ खलिहान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। २ सीमा घेरना। हद खींचना। हद बाँधना। ३ पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना।
चाँगला|—वि० [सं० चग, हिं० चगा] १ स्वस्थ। तदुरुस्त। हृष्टपुष्ट। २ चतुर।
संज्ञा पुं० घोड़ों का एक रग।
चाँचर, चाँचरि—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] वसत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। चर्चरी राग।
संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का वस्त्र। उ०—पाँवरी पैन्हि लै प्यारी जराइ की ओढ़ि लै चाँचरि चारु असावरी।—रस-साराश।
चांचल्य—संज्ञा पुं० [सं०] चचलता। चपलता।
चाँचु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चचु] दे० "चोंच"।
चाँटा|—संज्ञा पुं० [हिं० चिमटना] [स्त्री० चाँटी] बड़ी च्यूँटी। चिउँटा।
संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] थप्पड़। तमाचा।
चाँटी—संज्ञा स्त्री० दे० "चींटी"।
चाँड़—वि० [सं० चड] १ प्रबल। बलवान्। २ उग्र। उद्धत। शोख। ३ बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। ४ तृप्त। सतुष्ट।
संज्ञा स्त्री० [सं० चड=प्रबल] १. भार सँभालने का खभा। टेक। थूनी। २. किसी अभावपूर्ति के निमित्त आकुलता। भारी जरूरत। गहरी चाह। उ०—तोरे धनुष चाँड नहिं सरई। जीवत हमहिं कुँवरि को वरई।—मानस।
मुहा०—चाँड़ सरना=इच्छा पूरी होना।
३ दबाव। सकट। ४ प्रबलता। अधिकता। बढ़ती।
चाँड़ना—क्रि० स० [?] १. खोदना। खोदकर गिराना। २ उखाड़ना। उजाड़ना। ३ जोर से दबाना।
चांडाल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चाडालिन] १ एक अत्यज जाति। डोम। श्वपच। २. पतित मनुष्य। (गाली)।
चांडिला(पु)|—वि० [सं० चड] [स्त्री० चाडिली] १. प्रचड। प्रबल। उग्र। २. उद्धत। नटखट। शोख। ३. बहुत अधिक।
चाँडू—वि० [सं० चाटुकार=खुशामदी, प्रा० चाडुअ ?] चाहनेवाला। उ०—मान न करसि, पोढ करु लाडू। मान करत रिस मानै चाँडू।—पदमावत।
चाँद—संज्ञा पुं० [सं० चद] १. चद्रमा।
मुहा०—चाँद का टुकड़ा=अत्यत सुदर मनुष्य। चाँद पर थूकना=किसी महात्मा पर कलक लगाना जिसके कारण स्वय अपमानित होना पड़े। किधर चाँद निकला है ?=आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े ?
२ चाद्र मास। महीना। ३ द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण। ४ चाँदमारी का काला दाग जिसपर निशाना लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँदतारा—संज्ञा पुं० [हिं० चाँद+तारा] १ एक प्रकार की बारीक मलमल जिसपर चमकीली बूटियाँ होती हैं। २ एक प्रकार की पतंग या कनकौआ।
चाँदना—संज्ञा पुं० [हिं० चाँद] १ प्रकाश। उजाला। २ चाँदनी।
चाँदनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] १. चद्रमा का प्रकाश। चद्रमा का उजाला। चद्रिका।
मुहा०—चाँदनी का खेत=चद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। चार दिन की चाँदनी=थोड़े दिन रहनेवाला सुख या आनद।

२ बिछाने की बड़ी सफेद चद्दर। सफेद फर्श। उ०—चाँदनी विचित्र लखि चाँदनी बिछौना पर, दूरिकै चँदोवन को विलसै अकेली।—शृंगार०। ३ ऊपर तानने का सफेद कपड़ा।

चाँदवाला—संज्ञा पुं० [हिं० चाँद+वाला] कान में पहनने का एक गहना।

चाँदमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद+√मार] दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं। रजत।

मुहा०—चाँदी का जूता=घूस। रिश्वत। चाँदी काटना=खूब रुपया पैदा करना।

चान्द्र—वि० [सं०] चंद्रमा संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] १ चान्द्रायण व्रत। २ चंद्रकांत मणि। ३ अदरख।

चान्द्र मास—संज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। एक पूर्णिमा या अमावस्या से दूसरी पूर्णिमा या अमावस्या तक का समय।

चान्द्रायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना बढ़ाना पड़ता है। २ एक मात्रिक छंद जिसके चरण में २१ मात्राएँ होती हैं और ११ वीं मात्रा पर यति तथा २१ वीं पर विराम होता है। इसमें ग्यारह मात्राएँ जगणांत और दस रगणांत होती हैं, जैसे—शिव दस जरा सु चंद्र, अयन कवि कीजिए। प्रभु जू दया निकेत, शरण रख लीजिए॥

चाँप—संज्ञा स्त्री० [सं०√चप्] १ चँप या दब जाने का भाव। दबाव। २ रेलपेल। धक्का। ३ किसी बलवान् की प्रेरणा। ४ बंदूक का वह पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है।

†(पु)संज्ञा पुं० [हिं० चंपा] चंपा का फूल। उ०—कोई परा भौंर होइ, बास लीन्ह जनु चाँप। कोइ पतंग भा दीपक, कोइ अध-जर तन काँप।—पद्मावत।

चाँपना—क्रि० स० [हिं० चाँप] दबाना।

चाँयँ चाँयँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद। बकबक।

चाइ, चाउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चाव"। उ०—दृढ़ हूजै छूजै न तन पूजैगो चितचाइ। ढिग सजनी रजनी न गत बजनी बजनी पाइ।—रससाराश।

चाउर†—संज्ञा पुं० "चावल"।

चाक—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १ कील पर घूमता हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिसपर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलालचक्र। २ पहिया। ३ कुएँ से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी। ४ थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं। ५ मंडलाकार चिह्न की रेखा।

संज्ञा पुं० [फा०] दरार। चीर।

वि० [तु० चाक] दृढ़। मजबूत। पुष्ट। २ हृष्टपुष्ट। तंदुरुस्त।

यौ०—चाक चौबंद=(१) हृष्टपुष्ट। तगड़ा। (२) चुस्त। चालाक। (३) फुर-तीला। तत्पर।

चाकचक—वि० [तु० चाक+अनु० चक] चारों ओर से सुरक्षित। दृढ़। मजबूत।

चाकचक्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमक-दमक। चमचमाहट। उज्ज्वलता। २ शोभा। सुंदरता।

चाकना—क्रि० स० [हिं० चाक] १ सीमा बाँधने के लिये किसी वस्तु को रेखा या चिह्न खींचकर चारों ओर से घेरना। हद खींचना। २ खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। ३ पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

चाकर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० चाकरानी] दास। भृत्य। सेवक। नौकर।

चाकरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सेवा। नौकरी।

चाकसू—संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्या] १ वनकुलथी। २ निर्मली।

चाकि—संज्ञा पुं० दे० "चाक"। उ०—कबीर हरि रस यौं पिया, बाकी रही न थाकि। पाका कलस कुँभार का, बहुरि न चढ़ई चाकि।—कबीर०।

चाकी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की"।

संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] १ बिजली। वज्र। २ भारी अनर्थ।

चाकू—संज्ञा पुं० [सं०] छुरी।

चाक्षुप—वि० [सं०] १ चक्षु संबंधी। २ जिसका ज्ञान नेत्रों से हो। चक्षुर्ग्राह्य।

संज्ञा पुं० १ न्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका ज्ञान नेत्रों द्वारा हो। २ छठे मनु का नाम।

चाख—संज्ञा पुं० [सं० चाष] नीलकंठ नाम का एक पक्षी।

चाखना†—क्रि० स० दे० "चखना"।

चाचर, चाचरि—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] १ होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। चर्चरी राग। २ होली में होनेवाले खेल तमाशे। होली की धमार। ३ उपद्रव। दंगा। हलचल। हल्लागुल्ला।

चाचरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] काका। पितृव्य। बाप का भाई।

चाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] १ चटपटी चीजों के खाने या चाटने की प्रबल इच्छा। २ एक बार किसी वस्तु का आनंद लेकर फिर उसी का आनंद लेने की चाह। चसका। शौक। लालसा। ३ प्रबल इच्छा। कड़ी चाह। लोलुपता। ४ लत। आदत। बान। टेव। ५ चरपरी और नमकीन खाने की चीजें। गजक।

चाटना—क्रि० स० [अनु० चट चट] १ खाने के या स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाकर खाना। जीभ लगाकर या जीभ से पोंछकर खाना। २ पोंछकर खाना। चट कर जाना। ३ प्यार से किसी वस्तु पर जीभ फेरना। ४ पशुओं का शरीर साफ करने के लिये शरीर पर जीभ फेरना।

यौ०—चूमना चाटना=प्यार करना।

५ कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना।

चाटु—संज्ञा पुं० [सं०] १ मीठी बात। प्रिय बात। २ खुशामद। चापलूसी।

चाटुकार—संज्ञा पुं० [सं०] खुशामद करनेवाला। चापलूस।

चाटुकारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चाटुकार+हिं० ई (प्रत्य०)] खुशामद।

चाड़(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँड़"।

संज्ञा पुं० [सं० चाट ?] उत्कट इच्छा। उ०—स्रवनि बसन भूषन सजे अपने अपने चाड़। मन मोहति प्यारी दिए वा दिनवारी आड़।—रससाराश।

चाढ़ा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चाड़] [स्त्री० चाढ़ी] प्रेमपात्र। प्यारा। प्रिय।

चाणक्य—संज्ञा पुं० [सं०] ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के राजनीति के एक आचार्य जो

पाटलिपुत्र के सम्राट् चद्रगुप्त के गुरु और मंत्री थे। इनका नाम विष्णुगुप्त था और चाणक्य उपाधि थी। इन्हें कौटिल्य भी कहते हैं। इनका लिखा 'अर्थशास्त्र' तत्कालीन राजनीति का एक प्रामाणिक ग्रथ माना जाता है।

चातक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातर—वि० दे० "चातुर"।

चातिक—सज्ञा पु० [स० चातक] पपीहा। उ०—बारहौं मास निरास रहै ज्यों चहै वहै चातिक स्वाति के बुदहि। दास ज्यों कज के भानु को काम विचारै न घाम के तेज के तुदहि।—शृगार०।

चातुर—वि० [स०] १ गोचर। प्रकट। २. चतुर। ३ खुशामदी। चापलूस।

चातुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चतुरता। चतुराई। व्यवहारदक्षता। २ चालाकी।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक—सज्ञा पु० [स०] १ चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। २ किन्हीं चार औषधीय पौधों का सग्रह।

चातुर्मासिक—वि० [सं०] चार महीने में होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

चातुर्मास्य—सज्ञा पुं० [स०] १ चार महीनों के मौसम का प्रारभ। वर्षाकाल। बरसात। २ तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार चार चार महीनों के तीन मौसमों के प्रारभ में किए जानेवाले वैश्वदेव, वरुणप्रधास और शाकमेध यज्ञ। ३ इन यज्ञों से सबद्ध। ४ वर्षाकाल में होनेवाला चार महीने का एक पौराणिक व्रत।

चातुर्य—सज्ञा पुं० [स०] चतुराई।

चातुर्वर्ण्य—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चारों वर्ण।

चात्रिकⓅ—संज्ञा पु० दे० "चातक"।

चादर—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कपडे का लबाचौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढने के काम में आता है। २ हलका ओढना। चौड़ा दुपट्टा। पिछौरी। ३ किसी धातु का बड़ा चौखूँटा पत्तर। चद्दर। ४ पानी की चौड़ी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। वर्षा में बाढ़ की तरगों के कारण नदी के जल पर चद्दर के समान पड़ी हुई जलराशि। ५ फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढाई जाती है (मुसल०)।

चानⓅ—सज्ञा पु० दे० "चद्रमा"।

चानकⓅ—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

चाननⓅ—सज्ञा पु० दे० "चदन"।

चाप—सज्ञा पु० [स०] १ धनुष। कमान। २ गणित में आधा वृत्तक्षेत्र। ३ वृत्त की परिधि का कोई भाग। ४ धनु राशि।

सज्ञा स्त्री० [हिं० चाँप] १ दबाव। २ पैर की आहट।

चापट, चापड़—वि० [हिं० चाँप] १. दबाया या कुचला हुआ। २. बराबर। समतल। ३ बरबाद। चौपट।

चापना†—क्रि० स० [स० √चप्] दबाना।

चापलⓅ—वि० दे० "चपल"।

चापलताⓅ—सज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चापलूस—वि० [फा०] खुशामदी। लल्लो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार।

चापलूसी—सज्ञा स्त्री० [फा०] खुशामद।

चापल्य—सज्ञा स्त्री० [स०] चपलता।

चाब—सज्ञा स्त्री० [स० चव्य] १ गजपिपली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। चाव्य। २ इस पौधे का फल।

सज्ञा स्त्री० [स० √चव्] १ वे चौखूँटे दाँत जिनसे भोजन कुचलकर खाया जाता है। डाढ़। चौभड़। २ बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

चाबना—क्रि० स० [सं० चर्वण] १ चबाना। २ खूब कूँच कूँचकर भोजन करना। खाना।

चाबी—सज्ञा स्त्री० [हिं० चाप] कुजी। ताली।

चाबुक—सज्ञा पु० [फा०] १ कोड़ा। हटर। २ सोंटा। ३ जोश दिलानेवाली बात।

चाबुकसवार—सज्ञा पुं० [फा०] [सज्ञा चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखानेवाला।

चाभना—क्रि० स० [हि० चाबना] खाना।

मुहा०—माल चाभना = बढिया बढ़िया चीजें खाना।

चाभी—सज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।

चाम—सज्ञा पु० [स० चर्म] चमड़ा। खाल।

मुहा०—चाम के दाम चलाना = चलती में अन्याय करना। अंधेर करना।

चामर—सज्ञा पुं० [स०] १ चौंर। चँवर। चौंरी। २ मोरछल। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण और रगण कुल १५ वर्ण होते हैं। जैसे—रोज रोज राधिका सखीन सग आइकै। खेल रास कान्ह सग चित्त हर्ष लाइ कै॥

चामिलⓅ—सज्ञा स्त्री० दे० "चबल"।

चामीकर—सज्ञा पु० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धतूरा।

वि० स्वर्णमय। सुनहरा।

चामुंडा—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा देवी का वह रूप जिसमें उन्होंने चड और मुड नामक दैत्यों का वध किया था।

चाय—सज्ञा स्त्री० [चीनी चा] १ एक पौधा जिसकी सुखाई हुई पत्तियों का काढ़ा चीनी और दूध मिलाकर पीने की चाल अब भारत में प्राय सर्वत्र है। २ चाय के साथ उबाला हुआ पानी।

यौ०—चायपानी = जलपान।

सज्ञा पुं० दे० "चाव"। उ०—लाल कहा तुमको छतिलाभ हमैं चित काय सों औचित चाय सों। बावरी बूढ़ो बुरो बहिरो तो हमारो है त्यारो तिहारी बलाय सों।—रससाराश।

चायकⓅ—सज्ञा पु० [हि० चाय] चाहनेवाला।

चार—वि० [स० चतुर] १ जो गिनती में दो और दो हों। तीन से एक अधिक।

मुहा०—चार आँखें होना = नजर से नजर मिलना। देखादेखी होना। साक्षात्कार होना। चार चाँद लगना = (१) चौगुनी प्रतिष्ठा होना। (२) चौगुनी शोभा होना। सौंदर्य बढना। ‡चारों फूटना = चारों आँखें (दो हिए की, दो ऊपर की) फूटना। उ०—करी न प्रीति कमललोचन सों जन्म जुवा ज्यों हारयो। निसिदिन विषय विलासिनि विलसत फूटि गई तव चारयो।—सूर०।

२ कई एक। बहुत से। ३ थोड़ा बहुत। कुछ।

सज्ञा पुं० चार का अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

सज्ञा पु० [सं०] [वि० चरित, चारी] १ गति। चाल। गमन। २ बधन। कारागार। ३ गुप्त दूत। चर। जासूस। ४ दास। सेवक। ५ चिरौंजी का पेड़। पियार अचार। ६ आचार। रीति। रस्म।

चार-आइना—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चार काने—सज्ञा पुं० [हिं० चार+काना = मात्रा] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें धारियों के द्वारा चौखूँटे घर बने रहते हैं।

चारजामा—संज्ञा पुं० [फा०] जीन । पलान ।

चारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वंश की कीर्ति गानेवाला । भाट । बंदीजन । २ राजपूताने की एक जाति । ३ भ्रमणकारी ।

चारदीवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ घेरा । हाता । २ शहरपनाह । प्राचीर ।

चारना⑤†—क्रि० स० [सं० चारण] चराना ।

चारपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चार+पाया] छोटा पलंग । खाट । खटिया । मंजी ।

मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लेना=इतना बीमार होना कि चारपाई से न उठ सके । चारपाई से लगना=बीमारी के कारण चारपाई न छोड़ सकना ।

चारपाया—संज्ञा पुं० दे० "चौपाया" ।

चारबाग—संज्ञा पुं० [फा०] १ चौखूँटा बगीचा । २. चार बराबर खानों में बँटा हुआ रूमाल ।

चारयारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चार फा० यार] १ चार मित्रों की मंडली । २ मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली । ३ चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है ।

चारा—संज्ञा पुं० [सं० √चर्, प्रा० चारि] पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि ।

• संज्ञा पुं० [फा०] उपाय । तदबीर ।

चारिणी—वि० स्त्री० [सं०] आचरण करनेवाली । चलनेवाली ।

चारित—वि० [सं०] चलाया हुआ ।

चारित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुलक्रमागत आचार । २ चालचलन । व्यवहार । स्वभाव । ३ संन्यास (जैन) ।

चारित्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] चरित्र ।

चारी—वि० [सं० चारिन्] [स्त्री० चारिणी] १ चलनेवाला । २ आचरण करनेवाला ।

संज्ञा पुं० १ पदाति सैन्य । पैदल सिपाही । २ संचारी भाव ।

चारु—वि० [सं०] सुंदर । मनोहर ।

चारुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता ।

चारुहासिनी—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर हँसनेवाली । मनोहर मुसकानवाली ।

संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद ।

चार्वाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक ।

चाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चल] १ गति । गमन । चलने की क्रिया । २. चलने का ढंग । गमन-प्रकार । ३ आचरण । बर्ताव । व्यवहार । उ०—अपने सुत की चाल न देखत उलटी तू हम पै रिस ठानति—सूर० । ४ आकार प्रकार । बनावट । गढ़न । ५. रीति । रवाज । रस्म । प्रथा । परिपाटी । ६ गमनमुहूर्त । चलने की सायत । चाला । ७ कार्य करने की युक्ति । ढंग । तदबीर । ढब । ८ कपट । छल । धूर्तता । ९ ढंग । प्रकार । तरह । १० शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी को एक घर से दूसरे घर में ले जाने अथवा पत्ते या पासे को दाँव पर डालने की क्रिया । ११ हलचल । धूम । आंदोलन । १२ हिलने डोलने का शब्द । आहट । खटका ।

चालक—वि० [सं०] चलानेवाला । संचालक ।

संज्ञा पुं० [हिं० चाल] धूर्त । छली । उ०—घरघाल चालक कलहप्रिय कहियत परम परमारथी । तैसी बरेखी कीन्हि पुनि मुनिसात स्वारथ सारथी ।—पा० म० ।

चालचलन—संज्ञा पुं० [हिं० चाल+चलन] आचरण । व्यवहार । चरित्र । शील ।

चालढाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाल+ढाल] १ आचरण । व्यवहार । २ तौर तरीका ।

चालन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चलाने की क्रिया । २ चलने की क्रिया । गति ।

संज्ञा पुं० [हिं० चालना] भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है ।

चालना⑤†—क्रि० स० [सं० चालन] १ चलाना । परिचालित करना । २ एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना । ३ (बहू) विदा कराके ले आना । ४ हिलना । डोलना । ५ कार्यनिर्वाह करना । भुगताना । ६ बात उठाना । प्रसंग छेड़ना । ७ आटे को छलनी में रखकर छानना ।

क्रि० अ० [सं० चालन] चलना ।

चालनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चलनी"

चालबाज—वि० [हिं० चाल+फा० बाज] [संज्ञा चालबाजी] धूर्त । छली ।

चाला—संज्ञा पुं० [हिं० चाल] १ प्रस्थान । कूच । रवानगी । २ नई बहू का पहले-पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना । ३ यात्रा का मुहूर्त ।

चालाक—वि० [फा०] १ व्यवहारकुशल । चतुर । दक्ष । २. धूर्त । चालबाज ।

चालाकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चतुराई । व्यवहार-कुशलता । दक्षता । पटुता । २ धूर्तता । चालबाजी । ३ युक्ति ।

चालान—संज्ञा पुं० दे० "चलान" ।

चालिया—वि० दे० "चालबाज" ।

चाली—वि० [हिं० चाल] १ चालिया । धूर्त । चालबाज । २ चंचल । नटखट ।

चालीस—वि० [सं० चत्वारिंशत्] जो गिनती में बीस और बीस हो ।

संज्ञा पुं० बीस और बीस की संख्या या अंक । ४० ।

चालीसा—संज्ञा पुं० [हिं० चालीस] [स्त्री० चालीसी] १ चालीस वस्तुओं का समूह । २. चालीस दिन का समय । चिल्ला ।

चाल्ह, चाल्हा—संज्ञा स्त्री० [देश०] चेल्हवा मछली । उ०—ततखन चाल्हा एक देखावा । जनु धौलागिरि परवत आवा । —पद्मावत ।

चावँ चावँ—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँयँ चाँयँ" ।

चाव—संज्ञा पुं० [हिं० चाह] १ प्रबल इच्छा । अभिलाषा । लालसा । अरमान । उ०—चित्रकेतु पृथ्वीपति राव । सुतहित भयो तासु हिय चाव ।—सूर० । २ प्रेम । अनुराग । चाह । ३ शौक । उत्कंठा । ४ लाड़-प्यार । दुलार । नखरा । ५ उमंग । उत्साह । आनंद ।

चावना—क्रि० स० दे० "चाहना" ।

चावल—संज्ञा पुं० [सं० तंडुल ?] १ एक प्रसिद्ध अन्न । धान के दाने की गुठली । तंडुल । २ पकाया चावल । भात । ३ चावल के आकार के दाने । ४ एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल ।

चाष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीलकंठ पक्षी । २ चाहा पक्षी ।

संज्ञा पुं० [सं० चक्षु] आँख । नेत्र ।

चाषु—संज्ञा पुं० [सं० चाष] नीलकंठ पक्षी । उ०—बिरिख सँवरिया दहिने बोला । बाएँ दिसा चाषु चरि डोला ।—पद्मावत ।

चासनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चीनी, मिश्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस । २ चसका । मजा । ३. नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिये सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है ।

चासा—संज्ञा पुं० [देश०] १ हलवाहा । हल जोतनेवाला । २ किसान । खेतिहर ।

चाह—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा । अथवा सं० उत्साह, प्रा० √ वाह] १ इच्छा । अभिलाषा । २ प्रेम । अनुराग । प्रीति । ३ आदर । कदर । ४ माँग । जरूरत ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चाय] चाय नामक पेय ।

(पु)संज्ञा [हिं० चाल = आहट] १. खबर । समाचार । २ गुप्त भेद । मर्म ।

क्रि० अ० देखना ।

चाहक(पु)—संज्ञा पु० [हिं० चाह + क (प्रत्य०)] चाहनेवाला । प्रेम करनेवाला ।

चाहत—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाह + त (प्रत्य०)] चाह । प्रेम ।

वि० इच्छित । उ०—पदमावति चाहत ऋतुपाई । गगन सोहावन, भूमि सोहाई । —पदमावत ।

चाहना—क्रि० स० [हिं० चाह] १ इच्छा करना । अभिलाषा करना । २. प्रेम करना । प्यार करना । ३ माँगना । ४ प्रयत्न करना । कोशिश करना । (पु)५ देखना । ताकना । ६ ढूँढ़ना ।

संज्ञा स्त्री० चाह । जरूरत ।

चाहा—संज्ञा पुं० [सं० चाप] बगले की तरह का एक जलपक्षी ।

चाहि(पु)—अव्य० [प्रा० चाहिय = वाछित, अपेक्षित] अपेक्षाकृत (अधिक) । बनिस्बत ।

चाहिए(पु)—अव्य० [प्रा० चाहिय = वाछित, अपेक्षित] उचित है । उपयुक्त है । मुनासिब है ।

चाही—वि० स्त्री० [हिं० चाह] चहेती । प्यारी ।

वि० [फा० चाह = कूआँ] कूएँ से सींची जानेवाली (जमीन) ।

चाहे—अव्य० [प्रा० चाहिय] १ जी चाहे । इच्छा हो । मन में आवे । २ यदि जी चाहे तो । जैसा जी चाहे । ३ होना चाहता हो । होनेवाला हो ।

चिआँ—संज्ञा पुं० [सं० चिंचा] इमली का बीज ।

चिउँटा—संज्ञा पु० [हिं० √ चिमट] एक कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है ।

चिउँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिउँटा] एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है । चींटी । पिपीलिका ।

मुहा०—चिउँटी की चाल = बहुत सुस्त चाल । मंद गति । चिउँटी (या चिउँटा) के पर निकलना = ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो । मरने पर होना ।

चिंगना†—संज्ञा पु० [देश०] १. किसी पक्षी का, विशेषत मुरगी का, छोटा बच्चा । २ छोटा बालक । बच्चा ।

चिंघाड़—संज्ञा स्त्री० [सं० चीत्कार प्रा० चिक्कार] १. चीख मारने का शब्द । २ किसी जंतु का घोर शब्द । चिल्लाहट । ३ हाथी की बोली ।

चिंघाड़ना—क्रि० अ० [हिं० चिंघाड] १ चीखना । चिल्लाना । २ हाथी का बोलना या चिल्लाना ।

चिंचिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० तिंतिड़ी] १ इमली का पेड़ । २ इमली का फल । उ०—तेरी महिमा तें चलै चिंचिनी-चिर्यों रे । अँधियारे मेरी बार क्यों ? त्रिभुवन-उजियारे ।—विनय० ।

चिंज, चिंजा†(पु)—संज्ञा पु० [सं० चिरजीव] [स्त्री० चिंजी] लड़का । पुत्र । बेटा ।

चिंड—संज्ञा पु० [?] नाच का एक प्रकार ।

चिंत—संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता" ।

चिंतक—वि० [सं०] [संज्ञा चिंतकता] १ चिंतन करनेवाला । ध्यान करनेवाला । २. सोचनेवाला ।

चिंतन—संज्ञा पु० [सं०] १ बार बार स्मरण । ध्यान । २ विचार । विवेचना । गौर ।

चिंतना(पु)—क्रि० स० [सं० चिंतन] १ ध्यान करना । स्मरण करना । २ सोचना ।

संज्ञा स्त्री० [सं० चिंतन] १ ध्यान । स्मरण । भावना । २ चिंता । सोच ।

चिंतनीय—वि० [सं०] १. चिंतन या ध्यान करने योग्य । भावनीय । २ जिसकी फिक्र करना उचित हो । ३ विचार करने योग्य । ४ संदिग्ध ।

चिंतवन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चिंतन" ।

चिंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोच । फिक्र । खुटका । २ ध्यान । भावना ।

चिंतामणि—संज्ञा पु० [सं० १ एक] कल्पित रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है । २ ब्रह्मा । ३ परमेश्वर । ४. सरस्वती का मंत्र जिसे विद्या आने के लिये लड़के की जीभ पर लिखते हैं ।

चिंतित—वि० [सं०] [स्त्री० चिंतिता] जिसे चिंता हो । चिंतायुक्त । फिक्रमंद ।

चिंत्य—वि० [सं०] १ भावनीय । विचारणीय । विचार करने योग्य । २ संदिग्ध ।

चिंदी—संज्ञा स्त्री० [देश०] टुकड़ा ।

मुहा०—हिंदी की चिंदी निकालना = अत्यंत तुच्छ भूल निकालना । कुतर्क करना ।

चिंपांजी—संज्ञा पु० [अं०] एक प्रकार का वनमानुष ।

चिउड़ा—संज्ञा पु० दे० "चिड़वा" ।

चिक—संज्ञा स्त्री० [तु० चिक] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा । चिलमन ।

संज्ञा पुं० पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला । बूचर । बकरकसाई ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] कमर का वह दर्द जो एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है । चमक । चिलक । झटका ।

चिकट—वि० [प्रा० चिक्खल्ल] १. चिकना और मैल से गंदा । मैलाकुचैला । २ लसीला ।

चिकटना—क्रि० अ० [हिं० चिकट] जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना ।

चिकन—संज्ञा पु० [फा०] महीन सूती कपड़ा जिसपर उभड़े हुए बूटे बने रहते हैं ।

चिकनई—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन" । उ०—आई वक्षोपरि चिकनई । छूटै लागी तन लरिकई ।—छदार्णव ।

चिकना—वि० [सं० चिक्कण] [स्त्री० चिकनी] १ जो छूने में खुरदुरा न हो । जो साफ और बराबर हो । २ जिसपर पैर आदि फिसले । ३ जिसमें तेल लगा हो ।

मुहा०—चिकना घड़ा = निर्लज्ज । बेहया ।

४ साफ सुथरा । सँवारा हुआ । सुंदर ।

मुहा०—चिकनी चुपड़ी बातें = बनावटी स्नेह से भरी बातें । कृत्रिम मधुर भाषण ।

५ लल्लोचप्पो करनेवाला । चाटुकार । खुशामदी । ६ स्नेही । अनुरागी । प्रेमी ।

संज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ ।

चिकनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिकना + ई (प्रत्य०)] १ चिकना होने का भाव । चिकनापन । चिकनाहट । २ स्निग्धता । सरसता ।

चिकनाना—क्रि० स० [हिं० चिकना] १ चिकना करना । स्निग्ध करना । २ साफ करना । सँवारना ।

क्रि० अ० १ चिकना होना । २.

स्निग्ध होना। ३ चरबी से युक्त होना। हृष्टपुष्ट होना। मोटाना। ४ स्नेहयुक्त होना। उ०—नहिं नचाइ चितवति दृगनु। नहिं बोलति मुसकाइ। ज्यौं ज्यौं रूखी रुख करति, त्यौं त्यौं चितु चिकनाइ। —बिहारी०।

चिकनापन—संज्ञा पुं० [हिं० चिकना+पन (प्रत्य०)] चिकना होने का भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनाहट—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन"।

चिकनिया—वि० [हिं० चिकना+इया (प्रत्य०)] छैला। शौकीन। बाँका। बना-ठना।

चिकनी सुपारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिकनी+सुपारी] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकरना—क्रि० अ० [सं० चीत्कार] चीत्कार करना। चिंघाड़ना। चीखना।

चिकवा†—संज्ञा पुं० [हिं० चिक] मांस बेचनेवाला। बूचड़।

संज्ञा [पुं० ?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। उ०—चिकवा चीर मघौना लोने। मोति लाग औ छापे सोने।—पद्मावत।

चिकार—संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़"।

चिकारना—क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना"

चिकारा—संज्ञा पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १ सारंगी की तरह का एक बाजा। २ हिरन की जाति का एक जानवर।

चिकित्सक—संज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करने का उपाय करनेवाला। वैद्य।

चिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० चिकित्सक, चिकित्स्य] १ रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया। इलाज। २ वैद्य का व्यवसाय या काम।

चिकित्सालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ रोगियों की दवा हो। अस्पताल।

चिकियाना—संज्ञा पुं० [हिं० चिक=बूचड़+इयाना (प्रत्य०)] चिकों या बूचड़ों का मोहल्ला।

चिकुटी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकोटी"।

चिकुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर के बाल। केश। २ पर्वत। ३ साँप आदि रेंगनेवाले जंतु। ४ छछूँदर। ५ गिलहरी।

चिकुरारी—संज्ञा पुं० [सं० चिकुर+अवली] केशों का समूह। उ०—पद-पानिन कंचन चूरें जराई जरे मनि-लालन सोभ धरै। चिकुरारी मनोहर पीत झँगा पहिरें मनि-आँगन में विहरैं।—रससाराश।

चिकोटी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चुटकी"।

चिक्कट—संज्ञा पुं० [प्रा० चिक्खल] गर्द, तेल आदि की मैल जो कहीं जम गई हो। कीट।

वि० मैला कुचैला। गंदा।

चिक्कण—वि० [सं०] चिकना।

चिक्करना—क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना"।

चिक्कार—संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़"।

चिखुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी"।

चिचड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] १ डेढ़, दो हाथ ऊँचा एक पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। ओंगा। अझाझार। लटजीरा। २ दे० "चिचड़ी"।

चिचड़ी—संज्ञा स्त्री० [?] एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिमटा रहता है और उनका खून पीता है। किलनी। किल्ली।

चिचान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सचान] बाज पक्षी।

चिचिंडा—संज्ञा पुं० दे० "चचींड़ा"।

चिचियाना†—क्रि० अ० दे० "चिल्लाना"।

चिचुकना—क्रि० अ० दे० "चुचुकना"।

चिचोड़ना†—क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चिजारा—संज्ञा पुं० [फा० चीदन=चुनना] कारीगर। मेमार। राज।

चिट—संज्ञा स्त्री० [हिं० चीड़ना] १ कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा। २ पुरजा। छोटा पत्र।

चिटकना—क्रि० अ० [अनु०] १ सूखकर जगह जगह पर फटना। २ लकड़ी का जलते समय 'चिटचिट' शब्द करना। ३. चिढ़ना।

चिटकाना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी सूखी हुई चीज को तोड़ना या तड़काना। २ खिझाना। चिढ़ाना।

चिटनवीस—संज्ञा पुं० [हिं० चिट+फा० नवीस] लेखक। मुहर्रिर। कारिंदा।

चिट्टकी—संज्ञा स्त्री० [देश०] चुटकी।

चिट्टा—वि० [सं० सित] सफेद। श्वेत।

संज्ञा पुं० [?] झूठा बढ़ावा।

चिट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० चिट] १ हिसाब की बही। खाता। लेखा। २ वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जाँचकर नफा-नुकसान दिखाया जाता है। ३ किसी रकम की सिलसिलेवार फिहरिस्त। सूची। ४ वह रुपया जो प्रति दिन, प्रति सप्ताह या प्रति मास मजदूरी या तनख्वाह के रूप में बाँटा जाय। ५ खर्च की फिहरिस्त।

मुहा०—कच्चा चिट्ठा=(१) ऐसा सविस्तार वृत्तांत जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो। (२) गुप्त वृत्तांत।

चिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिट] १ वह कागज जिसपर कहीं भेजने के लिये समाचार आदि लिखा हो। पत्र। खत। २ कोई छोटा पुरजा या कागज जिसपर कुछ लिखा हो। ३ एक क्रिया जिसके द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि कोई माल पाने या कोई काम करने का अधिकारी कौन हो। लाटरी। ४ किसी बात का आज्ञापत्र।

चिट्ठीपत्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिट्ठी+पत्री] १ पत्र। खत। २ पत्रव्यवहार। पत्राचार। पत्रालाप।

चिट्ठीरसाँ—संज्ञा पुं० [हिं० चिट्ठी +फा० रसाँ] चिट्ठी बाँटनेवाला। डाकिया।

चिड़चिड़ा—संज्ञा पुं० दे० "चिचड़ा"।

वि० [हिं० चिड़चिड़ाना] शीघ्र चिढ़नेवाला। जल्दी अप्रसन्न हो जानेवाला।

चिड़चिड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] १ जलने में चिड़चिड़ शब्द होना। २ सूखकर जगह जगह से फटना। खरा होकर दरकना। ३ चिढ़ना। बिगड़ना। झुँझलाना।

चिड़वा—संज्ञा पुं० [सं० चिपिट] हरे, भिगोए या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना। चिउड़ा।

चिड़ा—संज्ञा पुं० [सं० चटक] गौरा पक्षी। 'गौरैया' का नर।

चिड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० चटक] १ पक्षी। पखेरू। पंछी।

मुहा०—चिड़िया का दूध=अप्राप्य वस्तु। सोने की चिड़िया=धन देनेवाला असामी।

२ चिड़िया के आकार का गढ़ा या काटा हुआ। टुकड़ा। ३ ताश का एक रंग।

चिड़ियाखाना—संज्ञा पुं० [हिं० चिड़िया+फा० खाना] वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिये रखे जाते हैं।

चिड़िहार†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

चिड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिड़ीमार—संज्ञा पुं० [हिं० चिड़ी+√मार] चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया।

चिढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिढ़चिढ़ाना] १ चिढ़ने का भाव। अप्रसन्नता। कुढ़न। खिजलाहट। २ नफरत। घृणा।

चिढ़ना—क्रि० अ० [हिं० चिड़चिड़ाना] १ खीजना। झुँझलाना। २ नाराज होना। बिगड़ना। ३. द्वेष रखना। बुरा मानना।

चिढ़ाना—क्रि०स० [हिं० चिढ़ना का स० रूप] १ चिढ़ने के लिये प्रेरित करना। खिझाना। कुढ़ाना। २ किसी को कुढ़ाने के लिये मुँह बनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना। ३ उपहास करना।

चित्—संज्ञा स्त्री० [स०] चेतना। ज्ञान।

चित—संज्ञा पुं० [सं० चित्त] चित्त। मन।

Ⓟसंज्ञा पु० [हिं० चितवन] चितवन। दृष्टि।

वि० [सं० चित=ढेर किया हुआ] पीठ के बल पड़ा हुआ। 'पट' का उलटा।

चितउनⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

चितकबरा—वि० [स० चित्र+कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] किसी एक रग पर दूसरे रंग के दागवाला। रगविरंगा। कबरा। चितला।

चितचोर—वि० [हिं० चित+चोर] चित्त को चुरानेवाला। प्यारा। प्रिय।

चितभंग—संज्ञा पुं० [स० चित्त+भग] १ ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २. होश का ठिकाने न रहना। मतिभ्रम। उ०—तूँ रे भाँट, ए जोगि, तोहि एहि काहे क भंग ? काह छरे अस पावा, काह भएउ चितभंग।—पदमावत।

चितरनाⓅ—क्रि० स० [स० चित्र] चित्रित करना। चित्र बनाना।

चितरोख—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र+फा० रुख] एक प्रकार की चिड़िया। चितरवा।

चितला—वि० [स० चित्रल] कबरा। चितकबरा। रगविरगा।

संज्ञा पुं० १ लखनऊ का एक प्रकार का खरबूजा। २ एक प्रकार की बड़ी मछली।

चितवन—स० स्त्री० [हिं० चेतना ?] ताकने का भाव या ढग। अवलोकन। दृष्टि।

चितवनाⓅ—क्रि० स० [हिं० चितवन] देखना।

चितवानाⓅ—क्रि० स० [हिं० चितवना का प्रे० रूप] तकाना। दिखाना।

चिता—संज्ञा स्त्री० [स० चित्या] १ चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिसपर मुरदा जलाया जाता है। Ⓟ२ श्मशान। मरघट।

चिताना—क्रि० स० [हिं० चेतना का स० रूप] १ सावधान करना। होशियार करना। २ स्मरण कराना। याद दिलाना। ३ आत्मबोध कराना। ज्ञानोपदेश कराना। ४ (आग) जलाना। सुलगाना।

चितावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिताना] १ चिताने की क्रिया। सतर्क या सावधान करने की क्रिया। २ वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय।

चितारना—क्रि० अ० [सं० चित्रण] चित्रित करना। अंकित करना।

चिति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चिता। २ समूह। ढेर। ३ चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया। चुनाई। ४ चैतन्य। ५ दुर्गा।

चितेरा—संज्ञा पु० [स० चित्रकार] स्त्री० चितेरिन] चित्रकार। चित्र बनानेवाला।

चितौन—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

चितौनी—संज्ञा स्त्री० दे० "चेतावनी"।

चित्त—संज्ञा पुं० [स०] अंतःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति। २ अंतःकरण। जी। मन। दिल।

मुहा०—चित्त चढ़ना=दे० "चित्त पर चढ़ना"। चित्त चुराना=मन मोहना। मोहित करना। चित्त देना=ध्यान देना। मन लगाना। चित्त पर चढ़ना=(१) मन में आना। बार बार ध्यान में आना (२) स्मरण होना। याद पड़ना। चित्त बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। चित्त में धँसना, जमना या बैठना=(१) हृदय में दृढ़ होना। मन में धँसना। (२) समझ में आना। असर करना। चित्त से उतरना=(१) ध्यान में न रहना। भूल जाना। (२) दृष्टि से गिरना।

चित्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त का भाव। चित्तपन। चित्तत्व।

चित्तभूमि—संज्ञा स्त्री० [स०] योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।

चित्तर—संज्ञा पुं० दे० "चित्र"।

चित्तरसारी—संज्ञा स्त्री० दे० "चित्रशाला"।

चित्तविक्षेप—संज्ञा पु० [सं०] चित्त की चचलता या अस्थिरता।

चित्तविभ्रम—संज्ञा पु० [स०] १ भ्रांति। भ्रम। भौचक्कापन। २ उन्माद।

चित्तवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त की गति। चित्त की अवस्था।

चित्ती—संज्ञा स्त्री० [स० चित्र] छोटा दाग या चिह्न। छोटा धब्बा। बुँदकी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चित्त] वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जुए के दाँव फेंकते हैं। टैयाँ।

चित्तौर—संज्ञा पु० [सं० चित्रकूट] एक इतिहासप्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी था।

चित्र—संज्ञा पु० [स०] [वि० चित्रित] १ चंदन आदि से माथे पर बनाया हुआ चिह्न। तिलक। २ किसी वस्तु का स्वरूप या आकार जो कलम और रग आदि के द्वारा बना हो। तसवीर।

मुहा०—चित्र उतारना=(१) चित्र बनाना। तसवीर खींचना। (२) वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना।

३ काव्य के तीन भेदों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती। अलंकार। ४ काव्य में एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं। ५ एक वर्णवृत्त। ६ आकाश। ७ एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद चित्तियाँ या दाग पड जाते हैं। ८ चित्रगुप्त। ९ चीते का पेड़। चित्रक।

वि० १ अद्भुत। विचित्र। २ चितकबरा। कबरा। ३ रंगविरगा।

चित्रक—संज्ञा पु० [स०] १ तिलक। २ चीते का पेड़। ३ चीता। बाघ। ४ चिरायता। ५ चित्रकार।

चित्रकला—संज्ञा स्त्री० [स०] चित्र बनाने की विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्रकार+हिं० ई (प्रत्य०)] चित्रविद्या। चित्र बनाने की कला।

चित्रकाव्य—संज्ञा पु० दे० "चित्र"।

चित्रकूट—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था। २ चित्तौर।

चित्रगुप्त—संज्ञा पु० [स०] १ चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रजल्प—संज्ञा पुं० [सं०] वह भावगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे से कहते हैं (साहित्य)।

चित्रना(पु)—क्रि० स० [सं० चित्रण] चित्रित करना। तसवीर बनाना।

चित्रपट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चित्रपटी] १ वह कपड़ा, कागज या पटरी जिसपर चित्र बनाया जाय। चित्राधार। २ छींट। ३ सिनेमा।

चित्रपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

चित्रमद—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरहसूचक भाव दिखलाना।

चित्रमृग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

चित्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला।

चित्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

चित्रलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्ण वृत्त। २ चित्र बनाने की कलम या कूँची। ३ बाणासुर की कन्या उषा की एक सखी जो चित्रकला में निपुण थी।

चित्रविचित्र—वि० [सं०] १ रंगबिरंगा। कई रंगों का। २ बेलबूटेदार।

चित्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह घर जहाँ चित्र बनते हों। २ वह घर जहाँ चित्र रखे जाते हों या उनका प्रदर्शन होता हो। रंगबिरंग की सजावट का स्थान।

चित्रसार—संज्ञा पुं० दे० "चित्रशाला"। उ०—तुलसी सहज सनेह सुरंग सब, सो समाज चित-चित्रसार लागी लेखन। गीता०।

चित्रसारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र+शाला] १ वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर बने हों। २ सजा हुआ सोने का कमरा। विलासभवन। रंगमहल। ३ चित्रकारी।

चित्रस्थ—वि० [सं०] १ चित्र में अंकित किया हुआ। २ चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध।

चित्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] वार का एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

वि० जिसने वार करने के लिये हाथ उठाया हो।

चित्रांग—वि० [सं०] [स्त्री० चित्रांगी] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों।

संज्ञा पुं० १ चित्रक। चीता २ एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३ ईंगुर।

चित्रांगद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्यवती से उत्पन्न राजा शांतनु के एक पुत्र। २ एक गंधर्व। ३ दशार्ण देश का राजा।

चित्रांगदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अर्जुन की पत्नी का नाम। २ रावण की पत्नी का नाम।

चित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र। २ मूषिकपर्णी। ३. ककड़ी या खीरा। ४ दंती वृक्ष। ५ गंडदूर्वा। ६ मजीठ। ७ वायविडंग। ८ मूसाकानी। आखुकर्णी। ९ अजवाइन। १० एक रागिनी। ११ पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तीन मगण और दो यगण होते हैं तथा आठवें वर्ण पर यति और अंत में विराम होता है, जैसे—नारीरूपा मोरी माया, पार्थ जानो विचित्रा। जोई धारे भक्ती मोरी, मुक्ति पावै सुमित्रा। १२ १६ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक गुरु होता है। इसकी ५ वीं, ८ वीं और ९ वीं मात्रा लघु होती है। यह चौपाई का एक भेद है, जैसे—कवि कोविद अस हृदय विचारी। गावहिं हरि गुन कलिमल हारी॥

चित्राधार—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते हैं। चित्रसंग्रह।

चित्रिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामशास्त्र में वर्णित पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित—वि० [सं०] १ चित्र में खींचा हुआ। चित्र द्वारा दिखाया हुआ। २ जिसपर बेलबूटे आदि बने हों। ३ जिसपर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों। ४ शब्दों में चित्रण किया हुआ। वर्णित।

चित्रोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है। उ०—(क) को कहिए जल सों सुखी का कहिए पर श्याम। का कहिए जे रस बिना को कहिए सुख धाम॥ इसमें 'कोक', 'काक' 'वाम' आदि उत्तर दोहे के शब्दों में ही निकल आते हैं। (ख) गाउ पीठ पर लेहु अंग राग अरु हार करु। गृह प्रकाश कर देहु कान्ह कह्यो सारँग नहीं। यहाँ 'सारँग नहीं' से सब प्रश्नों का उत्तर हो जाता है।

चिथड़ा—संज्ञा पुं० [सं० चीवर या चीर ?] फटा पुराना कपड़ा। लत्ता। लुगरा।

चिथाड़ना—क्रि० स० [हिं० चिथड़ा] १. चीरना। फाड़ना। २ अपमानित करना।

चिदात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानमय आत्मा। ब्रह्म।

चिदानंद—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञान और आनंदमय। ब्रह्म।

चिदाभास—संज्ञा पुं० [सं०] १ चैतन्य-स्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब जो अंतःकरण पर पड़ता है। २ जीवात्मा।

चिद्रूप—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानस्वरूप। परमात्मा।

चिद्विलास—संज्ञा पुं० [सं०] चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया।

चिनक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिनगी] जलन लिए हुए पीड़ा। चुनचुनाहट।

चिनगटा—संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।

चिनगारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चिन्न+अंगार] १ जलती हुई आग का छोटा कण या टुकड़ा। २. दहकती हुई आग में से फूट फूटकर उड़नेवाला कण। अग्निकण।

मुहा०—आँखों से चिनगारी छूटना = क्रोध से आँखें लाल होना।

चिनगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिनगारी] १ अग्निकण। चिनगारी। २ चुस्त और चालाक लड़का। तेज और फुरतीला लड़का। ३ वह लड़का जो नटों के साथ रहता है।

चिनाना(पु)—क्रि० स० दे० "चुनवाना"।

चिनिया—वि० [हिं० चीनी] १ चीनी के रंग का। सफेद। २ चीन देश का।

चिनिया केला—संज्ञा पुं० हिं० [चिनिया+केला] छोटी जाति का केला।

चिनिया बदाम—संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

चिन्मय—वि० [सं०] [स्त्री० चिन्मयी] शुद्ध ज्ञानमय।

संज्ञा पुं० परमेश्वर।

चिन्ह(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

चिन्हवाना†—क्रि० स० दे० "चिन्हाना"।

चिन्हाना—क्रि० स० [सं० चिह्न] [हिं० चीन्हना का प्रे० रूप] पहचनवाना। परिचित कराना।

चिन्हानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिह्न] १ चीन्हने की वस्तु। पहचान। लक्षण। २

स्मारक। यादगार। ३ रेखा। धारी। लकीर।

चिन्हार—वि० [हिं० चिन्ह+आर (प्रत्य०)] अपने पहचान का। परिचित।

चिन्हारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिन्हार+ई (प्रत्य०)] जान पहचान। परिचय।

चिपकना—क्रि० अ० [अनु० चिप-चिप] किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना। सटना। चिमटना। २ किसी कार्य में लगना।

चिपकाना—क्रि० स० [हिं० चिपकना का स० रूप] १ लसीली वस्तु को बीच में देकर दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना। चिमटाना। श्लिष्ट करना। चस्पाँ करना। २ लिपटाना।

चिपचिपा—वि० [अनु० चिपचिप] चिपकनेवाला। लसदार। लसीला।

चिपचिपाना—क्रि० अ० [हिं० चिपचिपा] छूने में चिपचिपा जान पड़ना। लसदार मालूम होना।

चिपटना—क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चिपटा—वि० [सं० चिपिट] जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो। बैठा या धँसा हुआ।

चिपड़ी, चिपरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिप्पड़] गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। उपली।

चिप्पड़—संज्ञा पुं० [सं० चिपिट] १ छोटा चिपटा टुकड़ा। २ सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छूटी हुई छाल का टुकड़ा। पपड़ी। ३. किसी वस्तु के ऊपर से छीलकर निकाला हुआ टुकड़ा।

चिप्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिड़िया।

चिप्पी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिप्पड़] १ छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। २ उपली। गोहँठी।

चिबुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठोढ़ी। २ गाल।

चिमटना—क्रि० अ० [हिं० चिपटना] १ चिपकना। सटना। २ आलिंगन करना। लिपटना। ३ हाथ पैर आदि सब अंगों को लगाकर दृढ़ता से पकड़ना। गुथना। ४ पीछा न छोड़ना। पिंड न छोड़ना।

चिमटा—संज्ञा पुं० [हिं० √चिमट] [स्त्री० अल्पा० चिमटी] एक औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते। दस्तपनाह।

चिमटाना—क्रि० स० [हिं० चिमटना का स० रूप] १ चिपकाना। सटाना। २ लिपटाना।

चिमटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिमटा] बहुत छोटा चिमटा।

चिमड़ा—वि० दे० "चीमड़"।

चिमनी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ मकान या कारखाने आदि का धूआँ बाहर निकालनेवाली विशेष नली। २ लप या लालटेन पर की शीशे की नली।

चिरंजीव—वि० [सं०] १ चिरजीवी। बहुत दिनों तक जीनेवाला। २ आशीर्वाद का शब्द जिसका अभिप्राय है—"बहुत दिन जियो"।

चिरंतन—वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।

चिर—वि० [सं०] १ बहुत। दीर्घ। २ बहुत दिनों पूर्व का। ३ बहुत दिनों तक रहनेवाला। दीर्घस्थायी। ४ सदा रहनेवाला।

क्रि० वि० बहुत दिनों तक। सदा।

संज्ञा पुं० तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।

चिरई†—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरकना—क्रि० अ० [अनु०] थोड़ा थोड़ा मल निकलना।

चिरकाल—संज्ञा पुं० [सं०] दीर्घ काल। बहुत समय।

चिरकालिक—वि० [सं०] बहुत दिनों का। पुराना।

चिरकीन—वि० [फा०] गंदा।

चिरकुट—संज्ञा पुं० [सं० चीर+ √कुट्ट= काटना] फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा। गूदड़।

चिरचिटा—संज्ञा पुं० [देश०] चिचड़ा। अपामार्ग।

चिरजीवन—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत दिनों तक बना रहनेवाला जीवन। अमरत्व।

चिरजीवी—वि० [सं०] १ बहुत दिनों तक जीनेवाला। २ अमर।

संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ कौवा। ३ मार्कंडेय ऋषि। ४ शाल्मलि या सेमर का पेड़। ५ अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गए हैं। ६ काकभुसुंडि।

चिरना—क्रि० अ० [सं० चीर्ण] १ फटना। सीध में कटना। २ लकीर के रूप में घाव होना।

चिरनिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० चिरनिद्रित] मृत्यु। मौत।

चिरम—संज्ञा पुं० [देश०] गुंजा। घुँघची।

चिरमि, चिरमिटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] गुंजा। घुँघची।

चिरवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चीर+वाई (प्रत्य०)] चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी।

चिरवाना—क्रि० स० [हिं० चीरना का प्रे० रूप] चीरने का काम कराना। फड़वाना।

चिरस्थायी—वि० [सं० चिरस्थायिन्] बहुत दिनों तक रहनेवाला।

चिरस्मरणीय—वि० [सं०] १ बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य। २ पूजनीय।

चिरहटा†—संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

चिराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चीर+आई (प्रत्य०)] चीरने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

चिराकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "चिराग"।

चिराग—संज्ञा पुं० [फा० चिराग] दीपक। दीआ।

चिरागदान—संज्ञा पुं० [फा०] दीवट। शमादान।

चिरागी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का खर्च। २ मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट।

चिरातन—वि० दे० "चिरंतन"।

चिराना—क्रि० स० [हिं० चीरना का प्रे० रूप] चीरने का काम दूसरे से कराना। फड़वाना।

वि० [सं० चिरंतन] १ पुराना। उ०—भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना।—मानस। २ जीर्ण।

चिरायँध—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्म+गंध] वह दुर्गंध जो चमड़े, बाल, मांस आदि जलने से फैलती है।

चिरायता—संज्ञा पुं० [सं० चिरतिक्त या चिरात] एक पौधा जो बहुत कड़ुवा होता और दवा के काम में आता है।

चिरायु—वि० [सं० चिरायुस्] बड़ी उम्रवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घायु।

चिरारी—संज्ञा स्त्री० दे० "चिरौंजी"।

चिरिया†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरिहार—संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

चिरीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरौंजी—संज्ञा स्त्री० [सं० चार+बीज] प्रियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।

चिरौरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्ण प्रार्थना।

चिलक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिलकना] १. आभा। कांति। द्युति। २ रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

चिलकना—क्रि० अ० [हिं० चिल्ली = बिजली, या अनु०] १ रह रहकर चमकना। चमचमाना। २ रह रहकर दर्द उठना।

चिलका—संज्ञा [पुं० [हिं०√चिलक] चमकता हुआ नया रुपया।

चिलकाना†—क्रि० स० [हिं० चिलक] चमकाना। झलकाना।

चिलगोजा—संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा।। चीढ़ या सनोवर का फल।

चिलचिलाना—क्रि० अ० दे० "चिलकना"।

चिलड़ा—संज्ञा पु० [देश०] उलटा नाम का एक पकवान।

चिलता—संज्ञा पु० [फा० चिलत] एक प्रकार का कवच।

चिलबिल—संज्ञा पु० [सं० चिरविल्व] १ मजबूत लकड़ीवाला एक बड़ा जंगली वृक्ष।

चिलबिला, चिलबिल्ला—वि० [सं० चल +बल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल। चपल।

चिलम—संज्ञा स्त्री० [फा०] कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का एक बरतन जिसपर तंबाकू जलाकर धुआँ पीते हैं।

चिलमची—संज्ञा स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ मुँह धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

चिलमन—संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँस की फट्टियों का परदा। चिक।

चिलवाँस—संज्ञा पु० [सं० चटक+पाश] चिड़िया फँसाने का फंदा।

चिल्लड़—संज्ञा पु० [सं० चिल = वस्त्र] जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा।

चिल्लपों—संज्ञा स्त्री० [प्रा० चिल्ल = बच्चा+प्रा० √पोक्क = पुकारना] चिल्लाना। शोर-गुल। पुकार।

चिल्लर†—संज्ञा पुं० [देश०] दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के। रेजगी।

चिल्लवाना—क्रि० स० [हिं० चिल्लाना का प्रे० रूप] चिल्लाने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

चिल्ला—संज्ञा पुं० [फा०] १ चालीस दिन का समय। २ चालीस दिन का बंधेज या किसी पुण्यकार्य का नियम (मुसल०)।

मुहा०—चिल्ले का जाड़ा। = बहुत कड़ी सरदी।

संज्ञा पु० [देश०] १ एक जंगली पेड़। २ उड़द या मूँग आदि की घी चुपड़कर सेंकी हुई रोटी। चीला। उलटा। ३ धनुष की डोरी।

चिल्लाना—क्रि अ० [प्रा० चिल्ल (= बच्चा) से हिं० ना० धा०] जोर से बोलना। शोर करना। हल्ला करना।

चिल्लाहट—संज्ञा स्त्री० [प्रा० चिल्ल + हिं० आहट (प्रत्य०)] १ चिल्लाने का भाव। २ हल्ला। शोर।

चिलिंग—संज्ञा स्त्री० दे० "चिलक"।

चिल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० ?] झिल्ली (कीड़ा)।

संज्ञा स्त्री० [सं० √चिरि = मार डालना, प्रा० चिल्लिअ = चमकता हुआ] बिजली। वज्र।

चिल्ही†—संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

चिहुँकना(पु)†—क्रि० अ० दे० "चौंकना"।

चिहुँटना(पु)—क्रि० स० [सं० चिपिट, हिं० चिमटना] १ चुटकी काटना।

मुहा०—चित्त चिहुँटना = मर्म स्पर्श करना। चित्त में चुभना।

२ चिपटना। लिपटना।

चिहुँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चिहुँट] चुटकी। चिकोटी।

चिहुर(पु)—संज्ञा पु० [सं० चिकुर] सिर के बाल। केश।

चिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लक्षण जिससे किसी चीज की पहचान हो। निशान। २ पताका। झंडी। ३ किसी संस्था या पद आदि की सूचक वस्तु। ४ दाग। धब्बा। ५ छाप। ६ स्मरण दिलाने के लिये कोई वस्तु। निशानी।

चिह्नित—वि० [सं०] चिह्न किया हुआ। जिसपर चिह्न हो।

चीं, चींचीं—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।

चीं-चपड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] विरोध में कुछ बोलना।

चींटवा, चींटा—संज्ञा पु० दे० "चिउँटा"।

चींतना(पु)—क्रि० स० दे० "चित्रना"।

चींथना—क्रि० स० [?] नोचकर फाड़ना (कपड़ा)।

चीक—संज्ञा स्त्री० [सं० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द। चिल्लाहट।

चीकट—संज्ञा पुं० [हिं० कीचड़] १ तेल की मैल। तलछट। २ लसार मिट्टी।

संज्ञा पु० [देश०] चिकट नाम का कपड़ा।

वि० बहुत मैला या गंदा।

चीकना—क्रि० अ० [हिं० चीक] १ पीड़ा या कष्ट आदि के कारण जोर से चिल्लाना। २ बहुत जोर से बोलना।

वि० दे० "चिकना"।

चीख—संज्ञा स्त्री० दे० "चीक"।

चीखना—क्रि० स० [सं० चषण] स्वाद जानने के लिये, थोड़ी मात्रा में खाना।

क्रि० अ० [हिं० चीक] १ पीड़ा या कष्ट आदि के कारण जोर से चिल्लाना। २ बहुत जोर से बोलना।

चीखर, चीखल—संज्ञा पुं० दे० "कीचड़।

चीखुर—संज्ञा पुं० [हिं० चिखुरा] गिलहरी।

चीज—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सत्तात्मक वस्तु। पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २ आभूषण। गहना। ३ गाने की चीज। गीत। ४ विलक्षण वस्तु। ५ महत्व की वस्तु। ६ बात। ७ काम।

चीठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० चीकट] मैला।

चीठा—संज्ञा पुं० दे० "चिट्ठा"। उ०—तुलसिदास प्रभु सों एकहि बल बचन कहत अति ढीठे। नाम की लाज राम करुनाकर केहि न दिये करि चीठे।—विनय०।

चीठी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी"।

चीड़—संज्ञा पु० [सं० चीड ?] एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधाबिरोजा और तारपीन का तेल निकलता है।

चीत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चित्रा] चित्रा नक्षत्र।

चीतना—क्रि० स० [सं० चेत] [वि० चीता] १ सोचना। विचारना। २. चैतन्य होना। ३ स्मरण करना।

क्रि० स० [सं०] चित्र विचित्र करना। तसवीर या बेलबूटे बनाना।

चीतल—संज्ञा पुं० [सं० चित्रल] १ एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर चित्तियाँ होती हैं। २ अजगर की जाति का एक प्रकार का चित्तीदार साँप।

चीता—संज्ञा पुं० [सं० चित्रक] १ बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु जिसके चमड़े पर चित्तियाँ या धब्बे होते हैं। २ एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम में आती है।

संज्ञा पुं० [सं० चित्त] १. चित्त। हृदय। दिल। उ०—अति अनन्य गति इंद्री जीता। जाको हरि बिनु कतहुँ न चीता।—वैराग्य०। २ होश। संज्ञा।

वि० [हिं० √चेत] सोचा या विचारा हुआ।

चीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] चिल्लाहट। हल्ला। शोर। गुल।

चीथड़ा—संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।

चीथना—क्रि० स० [सं० चीर्ण] टुकड़े टुकड़े करना। चीथना। फाड़ना।

चीन—संज्ञा पुं० [सं०] झंडी। पताका। २ सीसा नामक धातु। ३. तागा। सूत। ४ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ५. एक प्रकार का हिरन। ६ एक प्रकार का साँवाँ। चेना। ७. भारतवर्ष के पूर्वोत्तर में बसा हुआ एक प्राचीन देश जिसकी राजधानी पेकिंग है।

चीनना|—क्रि० स० दे० "चीन्हना"।

चीनांशुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की लाल बनात जो पहले चीन से आती थी। २ चीन से आनेवाला रेशमी कपड़ा।

चीना—संज्ञा पुं० [हिं० चीन] १ चीन देशवासी। २ एक तरह का साँवाँ। चेना। ३ चीनी कपूर।

वि० चीन देश का।

चीना बदाम—संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

चीनिया—वि० [देश०] चीन देश का।

चीनी—संज्ञा स्त्री० [चीन (देश०) +ई (प्रत्य०)] ईख, चुकंदर, खजूर आदि के रस से बना हुआ खूब साफ और मीठा चूर्ण। शक्कर।

वि० चीन देश का।

चीनी मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चीनी (वि०) +मिट्टी] एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसपर पालिश बहुत अच्छी होती है और जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीन्ह|—संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

चीन्हना—क्रि० स० [सं० चिह्न] पहचानना।

चीप—संज्ञा पुं० १ दे० "चिप्पड़"। २ दे० "चेप"।

चीफ—संज्ञा पुं० [अं०] बड़ा सरदार या राजा।

यौ०—रूलिंग चीफ=वह राजा जिसे अपने राज्य में शासन का पूरा अधिकार हो।

वि० प्रधान। मुख्य।

चीमड़—वि० [हिं० चमड़ा] जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से फटे या टूटे नहीं।

चीयाँ—संज्ञा पुं० दे० "चियाँ"।

चीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। कपड़ा। २ वृक्ष की छाल। ३ चिथड़ा। लत्ता। ४ गौ का थन। ५ मुनियों, विशेषत बौद्ध भिक्खुओं के पहनने का कपड़ा। ६ धूप का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [सं० √चिरि या चीर्ण] चीरने का भाव या क्रिया। २ चीरकर बनाया हुआ शिगाफ या दरार।

चीर-चरम|(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चीर+चर्म] बाघंबर। मृगचर्म। मृगछाला।

चीरना—क्रि० स० [सं० चिरि या चीर्ण] विदीर्ण करना। फाड़ना।

मुहा०—माल (या रुपया आदि) चीरना =अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।

चीरफाड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चीर+√फाड़] १ चीरने फाड़ने का काम या भाव। २ शल्यचिकित्सा। जर्राही।

चीरा—संज्ञा पुं० [हिं० √चीर] १ एक प्रकार का लहरियेदार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २ गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर या खंभा। ३ चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

चीरी|(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चिड़िया" उ०—साँसति सहत दास कीजै पेखि परिहास, चीरी को मरन खेल बालकनि को सोहै।—हनु०।

चीरु—संज्ञा पुं० दे० 'चीरू'।

चीर्ण—वि० [सं०] फाड़ा या चीरा हुआ।

चील—संज्ञा स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

चीलर—संज्ञा पुं० दे० "चिल्लड़"।

चीला—संज्ञा पुं० दे० "चिलड़ा"।

चील्ह—संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

चील्ही—संज्ञा स्त्री० [देश०] बालकों के कल्याणार्थ एक प्रकार का तंत्रोपचार।

चीवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ संन्यासियों, भिक्षुओं या भिक्खुओं का फटा पुराना कपड़ा। २ बौद्ध या जैन संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।

चीवरी—संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्ध भिक्षु। भिक्खु। २ भिक्षुक। भिखमंगा।

चीस—संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।

चुंगल—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+अंगुल] १ चिड़ियों या जानवरों का पंजा। चंगुल। २ मनुष्य के पंजे की वह स्थिति जो किसी वस्तु को पकड़ने में होती है। पंजा।

मुहा०—चुंगल में फँसना=वश में आना।

चुंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुंगल] १ चुंगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २ किसी वस्तुराशि का वह अंश जो कोई अधिकारी व्यक्ति या संस्था अपने स्वत्व के रूप में वसूल करती है। ३ नगरपालिका आदि द्वारा बाहर से लाए हुए कुछ मालों पर वसूल होनेवाला महसूल या कर।

चुँघाना—क्रि० स० [हिं० चुसाना] चुसाना।

चुंडा—संज्ञा पुं० [सं० चुंटा ?] [स्त्री० अल्पा० चुंडी] कुआँ। कूप।

चुंडित(पु)—वि० [हिं० चुंडी] चुटियावाला। चुंडीवाला।

चुंदी—संज्ञा स्त्री० [सं० चूड़ा] बालों की शिखा जिसे हिंदू सिर पर पीछे की ओर रखते हैं। चुटिया।

चुँधलाना—क्रि० अ० [हिं० चौ=चार+सं० अंध] चौंधना। चकाचौंध होना।

चुंधा—वि० [हिं० चौ=चार+सं० अंध] [स्त्री० चुंधी] १ जिसे सुझाई न पड़े। २ छोटी आँखोंवाला।

चुँधियाना—क्रि० अ० दे० "चुँधलाना"।

चुंबक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो चुंबन करे। २ कामुक। कामी। ३ धूर्त। ४ ग्रंथों को केवल इधर उधर उलटनेवाला। ५. एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।

चुंबकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] चुंबक पत्थर का वह गुण जिससे वह लोहे को अपनी तरफ खींचता है। आकर्षण।

चुंबन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चुंबनीय, चुंबित] प्रेमवश होठों से (किसी के) ओठ, गाल सिर आदि अंगों का स्पर्श। चुम्मा।

चुंबना—क्रि० स० दे० "चूमना"।

चुंबित—वि० [सं०] १ चूमा हुआ। २ प्यार किया हुआ। ३ स्पर्श किया हुआ।

चुंबी—वि० [सं० चुम्बिन्] १ चूमनेवाला २ छूने या स्पर्श करनेवाला।

चुअना(पु)—क्रि० अ० दे० "चूना"।

चुआई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुआना] चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।

चुआन—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना = टपकना] १ खाई। नहर। २ गड्ढा।

चुआना—क्रि० स० [हिं० चूना का स० रूप] १ टपकाना। बूँद बूँद गिराना। ⓟ२ चुपड़ना। चिकनाना। ३समय करना। भभके से अर्क उतारना।

चुकंदर—संज्ञा पु० [फा०] गाजर की तरह की एक जड़ जो मीठी होती है। इसकी लाल और सफेद दो जातियाँ पाई जाती हैं। लाल खाने और तरकारी, सलाद के काम आती है। सफेद मे चीनी बनाई जाती है।

चुक—संज्ञा पु० दे० "चूक"।

चुकचुकाना—क्रि० अ० [हिं० चूना = टपकना] १ किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना। २ पसीजना।

चुकता—वि० [हिं० चुकना] बेबाक। ऋण या देय रहित।

निःशेष। अदा (ऋण)।

चुकती—वि० दे० "चुकता"।

चुकना—क्रि० अ० [सं० च्युतक, प्रा० चुक्क] १ समाप्त होना। खतम होना। बाकी न रहना। २ बेबाक होना। अदा होना। चुकता होना। ३ तै होना। निबटना। ⓟ४ चूकना। भूल करना। त्रुटि करना। ५ ⓟखाली जाना। व्यर्थ होना। ६ एक समाप्तिसूचक सयोज्य क्रिया।

चुकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चुक + आई (प्रत्य०)] चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना—क्रि० स० [हिं० चुकना का स० रूप] अदा करना। बेबाक करना। २ तै करना। ठहराना।

चुक्कड़—संज्ञा पु० [सं० चषक?] मिट्टी का गोल छोटा बरतन जिसमें पानी या शराब आदि पीते हैं। पुरवा। कुल्हड़।

चुक्र—संज्ञा पु० [सं०] १ चूक नाम की खटाई। चुक्र। महाम्ल। २ एक प्रकार का खट्टा शाक। चूका। ३ काँजी।

चुखाना—क्रि० स० [सं०√चूष्] दुहते समय गाय के थन मे दूध उतारने के लिये पहले उसके बछड़े को दूध पिलाना। उ०—भरि अपने कर कनक कचोरा पीवनि प्रियहिं चुखाए।—सूर०।

चुगद—संज्ञा पुं० [फा०] १ उल्लू पक्षी। २. मूर्ख। बेवकूफ।

चुगना—क्रि० स० [सं० √चि के 'चिनुते' रूप से] चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना।

चुगलखोर—संज्ञा पुं० [फा०] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला। लुतरा।

चुगलखोरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] चुगली खाने का काम।

चुगली—संज्ञा स्त्री० [फा०] दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।

चुगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चुग + आई (प्रत्य०)] चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।

चुगाना—क्रि० स० [हिं० चुगना का स० रूप] चिड़ियों को दाना या चारा डालना।

चुगुलⓟ†—संज्ञा पु० दे० "चुगल"

चुचकारना—क्रि० स० [अनु०] चुमकारना।

चुचकना†—क्रि० स० [सं० √चुक् या चुक्कन] ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।

चुचकारी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।

चुचाना—क्रि० अ० [सं० च्यवन] चूना। टपकना। रसना। निचुड़ना।

चुटका†—संज्ञा पु० [हिं० चोट] कोड़ा। चाबुक।

संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] चुटकी।

चुटकाना—क्रि० स० [हिं० चोट] कोड़ा या चाबुक मारना।

क्रि० स० [हिं० चुटकी] १ चुटकी से तोड़ना। २ साँप का काटना।

चुटका—संज्ञा पु० [हिं० चुटकी] १ बडी चुटकी। २ चुटकी भर अन्न।

चुटकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० चुटचुट] १ किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिये अँगूठे और पास की उँगली का मेल।

मुहा०—चुटकी बजाना = अँगूठे को बीच की उँगली पर रखकर जोर से छटकाकर शब्द निकालना। चुटकी बजाते = चटपट। देखते देखते। बात की बात में। चुटकी भर = बहुत थोड़ा। जरा सा। चुटकियों में = बहुत शीघ्र। चटपट। चुटकियों में (पर) उड़ाना = अत्यंत तुच्छ या सहज समझना। कुछ न समझना।

२ चुटकी भर या थोड़े से आटे की भीख।

मुहा०—चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना।

३ चुटकी बजने का शब्द। ४ अँगूठे और तर्जनी के सयोग से (दूसरे व्यक्ति के) शरीर के किसी भाग को दबाना या उसपर नाखून गड़ाना।

मुहा०—चुटकी भरना = (१) चुटकी काटना। (२) चुभती या लगती हुई बात कहना। चुटकी लेना = (१) हँसी उड़ाना। दिल्लगी उड़ाना। (२) चुभती या लगती हुई बात कहना।

५ अँगूठे और उँगली से मोटकर बनाया हुआ गोखरू, गोटा या लचका। ६ बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा।

चुटकुला—संज्ञा पु० [हिं० चोट + सं० कला] १ चमत्कारपूर्ण संक्षिप्त उक्ति। लतीफा। मजेदार बात।

मुहा०—चुटकुला छोड़ना = (१) दिल्लगी की बात कहना। (२) कोई ऐसी बात कहना जिसमे एक नया मामला खड़ा हो जाय।

२ दवा का कोई छोटा नुसखा जो बहुत गुणकारक हो। लटका।

चुटफुट†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुटकी?] फुटकर वस्तु। फुटकर चीज।

चुटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी + इया (प्रत्य०)] शिखा। चुंदी। चुटैया। चोटी।

चुटीला—वि० [हिं० चोट + ईला (प्रत्य०)] जिसे चोट या घाव लगा हो।

संज्ञा पु० [हिं० चोटी + ईला (प्रत्य०)] छोटी चोटी। अगल बगल की पतली चोटी। मेंढ़ी।

वि० सिरे का। सबसे बढ़िया।

चुटैल—वि० [हिं० चोट + ऐल (प्रत्य०)] १ जिसे चोट लगी हो। घायल। ‡ २ चोट या आक्रमण करनेवाला।

चुड़िहारा—संज्ञा पुं० [हिं० चूड़ी + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ी बेचनेवाला।

चुड़ैल—संज्ञा स्त्री० [सं० √चुण्ट + हिं० ऐल (प्रत्य०)] १ भूतनी। डायन। प्रेतनी। पिशाचिनी। २ कुरूपा स्त्री। ३ क्रूर स्वभाव की स्त्री। प्रचंडा स्त्री।

चुनचुना—वि० [हिं० चुनचुनाना] जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीड़ा हो।

संज्ञा पुं० सूत की तरह के महीन सफेद कीड़े जो पेट के मल के साथ निकलते हैं।

चुनचुनाना—क्रि० अ० [सं० चुमुचुमायन] १ कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी मंद मंद पीड़ा होना। २ फोड़े या घाव की खुजली।

चुनट—संज्ञा स्त्री० दे० "चुनन"।

चुनन—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] वह सिकुड़न जो दाव पाकर कपड़े, कागज आदि पर पड़ती है। सिलवट। शिकन। चुनट।

चुनना—क्रि० स० [स० √चि के 'चुनते' रूप से] १ छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक एक करके उठाना। २ छाँट छाँटकर अलग करना। ३ बहुतों में से कुछ को पसंद करके लेना। ४ तरतीब से लगाना। सजाना। ५ जोड़ाई करना। दीवार उठाना।

मुहा०—दीवार में चुनना = किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर, चारों ओर ईंटों की जोड़ाई करना।

६ कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना।

चुनरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] १ वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच बुँदकियाँ होती हैं। २ याकूत। चुन्नी।

चुनवाना—क्रि० स० दे० "चुनाना"

चुनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चुन+आई (प्रत्य०)] १ चुनने की क्रिया या भाव। २ दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३ चुनने की मजदूरी।

चुनाना—क्रि० स० [हिं० चुनाना का प्रे० रूप] चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाव—संज्ञा पुं० [हिं०√चुन + आव (प्रत्य०)] १ चुनने का काम या भाव। २ बहुत सी चीजों या व्यक्तियों में से कुछ को पसंद करना या छाँटना। ३ किसी पद के लिये बहुमत द्वारा स्वीकृत करना। ४ लोकसभा और विधान सभाओं के लिये जनता का मत देकर चुनना। ५ मतदान। निर्वाचन।

चुनिंदा—वि० [हिं०√चुन+इंदा (प्रत्य०)] १ चुना हुआ। छँटा हुआ। २ बढ़िया।

चुनी—संज्ञा स्त्री० दे० "चुन्नी"।

चुनौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना+औटी (प्रत्य०)] चूना रखने की डिबिया।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनौती] उत्पीड़न करनेवाली। उ०—लाल-मन वृद्धिवे कों देव-सरि-सोती भई, सौतिन चुनौटी भई वाकी सेव सारी री।—शृंगार०।

चुनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं०√चुन+औती (प्रत्य०)] १ उत्तेजना। बढ़ावा। चिट्टा। २ युद्ध के लिये आह्वान। ललकार। प्रचार।

चुन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्ण] १ मानिक, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा नग। २. अनाज का चूरा। ३ लकड़ी का बारीक चूरा। कुनाई। ४ चमकी। सितारा।

चुप—वि० [सं०√च्युप् = मंद गति] १ जिसके मुँह से शब्द न निकले। अवाक्। मौन।

यौ०—चुपचाप = १ मौन। खामोश। २ शांत भाव से। बिना चंचलता के। ३ धीरे से। छिपे छिपे। ४ निरुद्योग। प्रयत्नहीन। ५ विरोध में बिना कुछ कहे। बिना चीं-चपड़ के।

संज्ञा स्त्री० मौनावलंबन।

चुपका—वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुपकी] मौन। खामोश।

मुहा०—चुपके से = (१) बिना कुछ कहे सुने (२) गुप्त रूप से। धीरे से।

चुपकि—वि० [हिं० चुपका] मौन। खामोश। उ०—चुपकिन रहत, कह्यो कछु चाहत, ह्वैहै कीच कोठिलो धोए।—श्री कृष्णगीता०।

चुपचाप—वि०, क्रि० वि० दे० "चुप"।

चुपड़ना—क्रि० स० [हिं० चिपचिपा] १ किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना। पोतना, जैसे—रोटी में घी चुपड़ना। २ किसी दोष का आरोप दूर करने के लिये इधर उधर की बातें करना। ३ चिकनी चुपड़ी कहना। चापलूसी करना।

चुपाना†(पु)—क्रि० अ० [हिं० चुप से ना० धा०] चुप हो रहना। मौन रहना।

चुप्पा—वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] जो बहुत कम बोले। घुन्ना।

चुप्पी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुप] मौन।

चुबलाना—क्रि० स० [अनु०] स्वाद लेने के लिये मुँह में रखकर इधर उधर डुलाना।

चुभकना—क्रि० अ० [अनु०] गोता खाना।

चुभकी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] डुब्बी। गोता। उ०—लै चुभकी चलि जाति जित जित जल-केलि अधीर। कीजत केसरि नीर से तित तित केसरि-नीर।—बिहारी०।

चुभना—क्रि० अ० [√चुब् = नुकसान पहुचाना, कष्ट देना] १ किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर गड़ना। धँसना। २ हृदय में खटकना। मन में व्यथा उत्पन्न करना। ३ मन में बैठना।

चुभलाना—क्रि० स० दे० 'चुबलाना'।

चुभाना, चुभोना—क्रि० स० [हिं० चुभना का प्रे० रूप] धँसाना। गड़ाना।

चुमकार—संज्ञा स्त्री० [हिं०√चूम+कार] चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिये मुँह से निकालते हैं। पुचकार।

चुमकारना—क्रि० स० [हिं० चुमकार]। प्यार दिखाने के लिये मुँह से चूमने का सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।

चुम्मा†—संज्ञा पुं० दे० "चूमा"।

चुर—संज्ञा पुं० [देश०] बाघ आदि के रहने का स्थान। माँद। बैठक।

(पु) वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक। उ०—प्रेम प्रशंसा विनययुत वेग वचन ये आहिं। तेहिं ले होत अनंद चुर फुर उर लागत नाहिं।—विश्रामसागर।

चुरकना, चुरगना—क्रि० अ० [अनु०] १ चहकना। चीं चीं करना (व्यंग्य या तिरस्कार)।

†२ चटकना। टूटना।

चुरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी] चुटिया।

चुरकुट—वि० [हिं० चूर+√कूट] चकनाचूर। चूर चूर। चूर्णित। उ०—मुष्टिकी गद मरदि चार गूर चुरकुट करयो कस मनु कप भयो भई रंगभूमि अनुराग रागी।—सूर०।

चुरकुस(पु)†—वि० दे० "चुरकुट"। उ०—तिलक पलीता माथे दसन वज्र के बान। जेहि हेरहिं तेहि मारहिं चुरकुस करें निदान।—सूर०।

चुरना†—क्रि० अ० [सं०√चूर् = जलना] १ आँच पर खौलते हुए पानी के साथ किसी वस्तु का पकना। सीझना। २ आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।

चुरमुर—संज्ञा पुं० [सं० चुरुचुर] खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।

चुरमुरा—वि० [सं० चुरचुर] जो दबाने पर चुरचुर शब्द करके टूट जाय। करारा।

चुरमुराना—क्रि० अ० [सं० चुरचुरण] चुरमुर शब्द करके टूटना।

क्रि० स० [सं० चुरचुरण] १ चुरमुर शब्द करके तोड़ना। २. करारी या खरी चीज चबाना।

चुरवाना—क्रि० स० [हिं० चुराना (= पकाना) का प्रे० रूप] पकाने का काम कराना।

क्रि० स० दे० "चोरवाना"।

चुरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "चुरा"।

चुराना—क्रि० स० [सं०√चुर् = चोरी करना] १ गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना। चोरी करना।

मुहा०—चित्त चुराना = मन मोहित

करना। जी चुराना=मन न लगाना। काम से भागना।

२ लोगों की दृष्टि से बचाना या छिपाना (आँख, मुँह, नजर आदि), जैसे—वह गाय दूध चुराती है।

क्रि० स० [हिं० चुरना] खौलते पानी में पकाना। सिझाना।

चुरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चूड़ी"। उ०—घर घर तुरकिनि हिंदुनी देति असीस सराहि। पतिनु राखि चादर, चुरी तैं राखी जयसाहि।—बिहारी०।

चुरुट—संज्ञा पुं० [अं० शेरूट] तबाकू के पत्ते या चूर की दोनों ओर खुली हुई बत्ती जिसका धुँआ लोग पीते हैं। सिगार।

चुरू(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चुलु] दे० "चुल्लू"।

चल—संज्ञा स्त्री० [सं० चल=चचल] किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट।

चुलचुलाना—क्रि० अ० [हिं० चुल] १ खुजलाहट होना। २ दे० "चुलबुलाना"।

चुलचुली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुल] चुल। खुजलाहट।

चुलबुला—वि० [हिं० चुल+अनु० बुल] [स्त्री० चुलबुली] १ चचल। चपल। २ नटखट।

चुलबुलाना—क्रि० अ० [हिं० चुलबुला] १ चुलबुल करना। रह रहकर हिलना। २ चचल होना। चपलता करना।

चुलबुलापन—संज्ञा पुं० [हिं० चुलबुला+पन (प्रत्य०)] चचलता। चपलता। शोखी।

चुलबुलाहट—संज्ञा स्त्री० [देश० हिं० चुलबुला+आहट (प्रत्य०)] चचलता।

चुलाना—क्रि० स० दे० "चुवाना"।

चुलियाला—संज्ञा पुं० [?] एक मात्रिक छद जिसके दो भेद हैं—(१) दो पद का छद जिसमें दोहे के अत में एक जगण और एक लघु रखा जाता है, और (२) चार पद का छद जिसके अत में मगण रहता है। पहले में १३-१६ मात्राएँ होती हैं, जैसे मेरी विनती मानिके, हरि जू देखो नेक दयाकर। दूसरे में भी १३-१६ मात्राएँ होती हैं। जैसे—हरि प्रभु माधव बीर वर, मनमोहन गोपति अविनासी। कर मुरलीधर धीर नर, वरदायक काटत भव फाँसी।

चुलुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारी दलदल या कीचड़। २ चुल्लू।

चुल्ला, चुल्ली—वि० [हिं० चुलबुला] चुलबुला। पाजी। शरारती।

चुल्लू—संज्ञा पुं० [सं० चुलु] गहरी की हुई हथेली जिसमें कुछ लिया या पिया जा सके।

मुहा०—चुल्लू भर पानी में डूब मरो=मुँह न दिखाओ। लज्जा के मारे मर जाओ।

चुल्लू में उल्लू होना=थोड़ी सी भाँग या शराब में बेसुध होना। चुल्लुओं रोना=बहुत रोना। चुल्लुओं लहू पीना=बहुत सताना। चुल्लू में समुद्र न समाना=छोटे पात्र में बहुत बड़ी वस्तु न आना। कुपात्र या क्षुद्र मनुष्य से कोई बड़ा या अच्छा काम न हो सकना।

चुवना(पु)—क्रि० अ० दे० "चूना"।

चुवाना(पु)—क्रि० स० [हिं० चूना का प्रे० रूप] बूँद बूँद करके गिराना। टपकाना।

चुसकी—संज्ञा स्त्री० [सं० चुष्] ओंठ से लगाकर थोड़ा थोड़ा करके पीने की क्रिया। सुड़क। घूँट। दम।

चुसना—क्रि० अ० [सं० √चूष्] १ चूसा जाना। ओठों से दबाकर पिया जाना। २ निचुड़ जाना। निकल जाना। ३ सारहीन होना। ४ देते देते पास में कुछ न रह जाना।

चुसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुसना] १ बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं। २ दूध पिलाने की शीशी।

चुसाना—क्रि० स० [हिं० चूसना का प्रे० रूप] चूसने का काम दूसरे से कराना।

चुस्त—वि० [फा०] १ कसा हुआ। जो ढीला न हो। सकुचित। तग। २ जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चलता। मुस्तैद ३ दृढ। मजबूत। ४ सटीक। उपयुक्त।

चुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ फुर्ती। तेजी। २ कसावट। तगी। ३ दृढता। मजबूती।

चुहँटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] चुटकी।

चुहचुहा—वि० [अनु०] [स्त्री० चुहचुही] १ चुहचुहाता हुआ। २ रसीला। शोख।

चुहचुहाता—वि० [हिं० चुहचुहा] रसीला। सरस। रँगीला। मजेदार।

चुहचुहाना—क्रि० अ० [हिं० चुहचुहा] १ रस टपकना। २ चटकीला लगना। ३ चिड़ियों का बोलना। चहचहाना। उ०—मैं जानी जिय जहँ रति मानी। तुम आए ही ललना जब चिरियाँ चुहचुहानी।—सूर०।

चुहचुही—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमकीले काले रग की एक बहुत छोटी चिड़िया। फुलचुही।

चुहटना(पु)—क्रि० स० [देश०] १ रौंदना। कुचलना। परेशान करना। २ चिपटना। लिपटना। कसकना।

चुहड़ा—संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा"।

चुहल—संज्ञा स्त्री० [अनु० चुहचुह=चिड़ियों की बोली] हँसी। ठठोली। मनोरजन।

चुहलबाज—वि० [हिं० चुहल+फा० बाज (प्रत्य०)] ठठोल। मसखरा। दिल्लगी-बाज।

चुहाड़ा—वि० [हिं० चुहल] दुष्ट। पाजी।

चुहिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा] 'चूहा' का स्त्री० और अल्पा० रूप। छोटा चूहा।

चुहुँटना(पु)—क्रि० स० दे० "चिपटना"।

चुहुटिनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] गुजा। घुँघची। उ०—हँसि उतारि हिय तें दई तुम जु तिहिं दिना लाल। राखति प्रान कपूर ज्यौं वहै चुहुटिनी माल।—बिहारी०।

चूँ—संज्ञा पुं० [अनु०] १ छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २ चूँ शब्द।

मुहा०—चूँ करना=(१) कुछ कहना। (२) प्रतिवाद करना। विरोध में कुछ कहना।

चूँकि—क्रि० वि० [फा०] इस कारण से कि। क्योंकि। इसलिये कि।

चूँदरी—संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूअ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चूत] आम। उ०—पल्लविअ कुसुमिअ फलिअ उपवन चूअ चम्पक सोहिआ।

चूक—संज्ञा स्त्री० [सं० च्युतक, प्रा० चुक्क] १ भूल। गलती। छूट। (पु)२ कपट। धोखा। छल।

संज्ञा पुं० [सं० चुक्र] १ नीबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस को गाढा करके बनाया हुआ एक अत्यत खट्टा पदार्थ। सिरका २ एक प्रकार का खट्टा साग।

वि० बहुत अधिक खट्टा, जैसे—खट्टा चूक।

चूकना—क्रि० अ० [सं० च्युतक, प्र० चुक्क] १ भूल करना। गलती करना। छोड़ देना। २ लक्ष्यभ्रष्ट होना। ३ सुअवसर खो देना।

चूका—संज्ञा पुं० [सं० चुक्र] एक खट्टा साग।

चूची—संज्ञा स्त्री० [सं० चुचि] स्तन। कुच।

चूचुक—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन का अगला भाग।

चूजा—संज्ञा पुं० [फा०] मुरगी का बच्चा।

चूड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोटी। शिखा। २ सिर। ३. खभे, मकान या पहाड़ का ऊपरी भाग। ४ एक प्रकार का कंकण। ५ छोटा कुँआ।

चूड़ांत—वि० [सं०] चरम सीमा। पराकाष्ठा

क्रि० वि० अत्यंत। बहुत अधिक।

चूड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चोटी। शिखा। चुरकी। २. मोर के सिर पर की चोटी। ३ कुआँ। ४. गुजा। घुँघची। ५. बाँह में पहनने का एक अलंकार। ६. चूड़ाकरण नाम का सस्कार जिसमें शास्त्रीय रीति से बच्चे के सिर के गर्भ के बालों का मुडन किया जाता है।

संज्ञा पुं० [सं०] १. कंकण। कड़ा। वलय। २. हाथीदाँत की चूड़ियाँ।

चूड़ाकरण—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चे का पहले पहल सिर मुड़वाकर चोटी रखवाने का हिंदू सस्कार। मुडन।

चूड़ाकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] चूड़ाकरण। मुडन सस्कार।

चूड़ापाश—संज्ञा पुं० [स०] १. स्त्रियों के सिर का बँधा हुआ बाल। जूड़ा। २ एक प्रकार का स्त्रियों का केशविन्यास। केश-प्रसाधन।

चूड़ामरस—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का केशविन्यास।

चूड़ामणि—संज्ञा पुं० [सं०] सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना।

वि० सर्वोत्कृष्ट। सबसे श्रेष्ठ।

चूड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूड़ा] १. कोई मंडलाकार पदार्थ। वृत्ताकार पदार्थ। २ सोना, चाँदी, काँच, शख, हाथीदाँत आदि का स्त्रियों का हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना।

मुहा०—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना = पति के मरने के समय स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना = (१) स्त्रियों का वेश धारण करना (व्यंग्य और हास्य)। (२) विधवा का किसी के घर बैठ जाना।

३. फोनोग्राफ या ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है। ४ किसी कील या ढकने आदि में कसने के निमित्त बनी घुमावदार गहरी रेखाएँ।

चूड़ीदार—वि० [हिं० चूड़ी+फा० दार] जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों।

यौ०—चूड़ीदार पायजामा = एक प्रकार का घुटनों तक चुस्त पायजामा।

चूत—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [सं० च्युति] योनि। भग।

चूतड़—संज्ञा पुं० [हिं० चूत+सं० तल] पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग। नितंब।

चून—संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] आटा। पिसान। दे० "चूना"।

चूनर, चूनरी—संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूना—संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] एक प्रकार का तीक्ष्ण और सफेद क्षार-भस्म जो पत्थर, कंकड़, शख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है।

क्रि० अ० [स० च्यवन] १. किसी द्रव पदार्थ का बूँद बूँद होकर नीचे गिरना। टपकना। २. किसी चीज का, विशेषत फल आदि का, अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. गर्भपात होना। ४ किसी चीज में ऐसा छेद या दरज हो जाना जिसमें से होकर कोई द्रव पदार्थ बूँद बूँद गिरे।

†वि० [हिं० चूना (क्रि०)] जिसमें किसी चीज के चूने योग्य छेद या दरज हो।

चूनादानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना+फा० दान] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

चूनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्णिका] १ अन्न का छोटा टुकड़ा। अन्नकण। २. चुन्नी।

चूमना—क्रि० स० [स० चुबन] होठों से (किसी दूसरे के) ओठ, हाथ, गाल, मस्तक आदि अगों को अथवा किसी पदार्थ को स्पर्श करना या दबाना। चुम्मा लेना।

चूमा—संज्ञा पुं० [सं० चुबन, हिं० चूमना] चूमने की क्रिया या भाव। चुबन। चुम्मा।

चूर—संज्ञा पुं० [स० चूर्ण] किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, काटने पीसने, कुचलने, कूटने आदि से बनते हैं। बुकनी। चूर्ण।

वि० १. तन्मय। निमग्न। तल्लीन। २ मदविह्वल। नशे में मस्त।

चूरन—संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।

चूरना†(पु)—क्रि० स० [स० चूर्णन] १ चूर करना। टुकड़े टुकड़े करना। २ तोड़ना। चूर्ण करना।

चूरमा—संज्ञा पुं० [स० चूर्ण] रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ खाद्य पदार्थ।

चूरा—संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] चूर्ण। बुरादा।

चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ। बुकनी। चूरा। २. पाचक औषधों की बारीक बुकनी। चूरन। ३ सुगंधित पाउडर।

यौ०—चूर्णभाष्य = पद्य से गद्य में व्याख्या करना।

वि० तोड़ा-फोड़ा या नष्टभ्रष्ट किया हुआ।

चूर्णक—संज्ञा पुं० [स०] १ सत्तू। सतुआ। २ वह गद्य जिसमें छोटे छोटे शब्द हों, लंबे समासवाले शब्द न हों। ३ धान।

चूर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छद का एक भेद।

चूर्णित—वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ।

चूल—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिखा। २ बाल।

संज्ञा स्त्री० [देश०] किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिये ठोंका जाय।

चूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में नेपथ्य से किसी बात की सूचना, जैसे—सस्कृत में भवभूति के महावीरचरित में नेपथ्य से दी हुई राम के परशुराम को हराने की सूचना।

चूल्हा—संज्ञा पुं० [सं० चुल्ली या चुल्ही] मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिसपर नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है।

मुहा०—चूल्हा जलना = भोजन बनना। चूल्हा न्योतना = घर के सब लोगों को निमत्रण देना। चूल्हा फूँकना = भोजन पकाना। चूल्हे में जाय या पड़े = नष्ट भ्रष्ट हो। चूल्हे से निकलकर भाड़ या भट्ठी में पड़ना = छोटी विपत्ति से छूटकर बड़ी विपत्ति में फँसना।

चूषण—संज्ञा पुं० [स०] चूसने की क्रिया।

चूष्य—वि० [सं०] चूसने के योग्य।

चूसना—क्रि० स० [सं० चूषण] १. जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। २ किसी चीज का सार भाग ले लेना। ३ धीरे धीरे धन आदि लेना।

चूहड़—वि० दे० "चुहाड़ा"।

चूहड़ा—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० चूहड़ी] भंगी या मेहतर। चांडाल। श्वपच।

चूहर—संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा"।

चूहा—संज्ञा पुं० [सं० √चूप्+क ?] [स्त्री० अल्पा० चुहिया, चूही] एक प्रसिद्ध छोटा जंतु जो प्राय घरों और खेतों में बिल बनाकर रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा।

चूहादंती—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा+दाँत] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।

चूहादान—संज्ञा पुं० [हिं० चूहा+फा० दान] चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।

चूहेदानी—संज्ञा स्त्री० दे० "चूहादान"।

चें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़ियों के बोलने का शब्द। चें चे।

चेंच—संज्ञा पुं० [सं० चञ्चु] १ एक प्रकार का साग। २ बोझ। भार।

चें चें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिड़ियों या बच्चों के बोलने का शब्द। चीं चीं। २ व्यर्थ की बकवाद। बकबक।

चेंदुआ—संज्ञा पुं० [सं० चटक] चिड़िया का बच्चा।

चें-पें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिल्लाहट। असतोष की पुकार। २ बकबक।

चेकितान—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतिभावान या बुद्धिमान व्यक्ति। २ महादेव। ३ पाडवों के एक सहायक और मित्र राजा का नाम।

चेचक—संज्ञा स्त्री० [फा०] शीतला रोग।

चेचकरू—संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों।

चेजा—संज्ञा पुं० [हिं० छेद] छेद। छिद्र। सूराख।

चेजारा—संज्ञा पुं० [?] चुनाई का काम करनेवाला। राजगीर। उ०—कबीर मंदिर ढहि पड्या, सैंट भई सैवार। कोई चेजारा चिणि गया, मिल्या न दूजी बार—कबीर०।

चेट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चेटी या चेटिका] १ दास। सेवक। नौकर। २ पति। ३ नायक और नायिका को मिलाने वाला। भँड़वा। ४ भाँड़।

चेटक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चेटकी] १ सेवक। दास। नौकर। २ चटक मटक। ३ दूत। ४. जादू या इंद्रजाल की विद्या।

चेटकनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "चेटकी"।

चेटका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० चिता] १ चिता। २ श्मशान। मरघट।

चेटकी—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्रजाली। जादूगर। २ कौतुक करनेवाला। कौतुकी। उ०—परम गुरु रतिनाथ हाथे सिर दियो प्रेम उपदेश। चतुर चेटकी मथुरानाथ सो कहियो जाय आदेश। सूर०।

संज्ञा स्त्री० "चेटक" की स्त्री०।

चेटिका—संज्ञा स्त्री० दे० "चेटी"।

चेटिया—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] चेला। शिष्य।

चेटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

चेटुवा—संज्ञा पुं० [सं० चटक] चिड़िया का बच्चा। उ०—अंड फोरि कियो चेटुवा, तुष परयो नीर निहारि। गहि चगुल चातक चतुर डारयो बाहिर वारि।—दोहा०।

चेत्—अव्य० [सं०] १ यदि। अगर। २ शायद। कदाचित्।

संज्ञा पुं० [सं० चेतस्] १ चित्त की वृत्ति। चेतना। संज्ञा। होश। २ ज्ञान। बोध। ३ सावधानी। चौकसी। ४ खयाल। स्मरण। सुध।

चेतक—संज्ञा पुं० [हिं०] १. जादूगरी। २ महाराणा प्रताप का वह इतिहासप्रसिद्ध घोड़ा जो हल्दीघाटी की लड़ाई में मरा था।

चेतन—वि० [सं०] जिसमें चेतना हो। ज्ञानयुक्त। प्राणयुक्त।

संज्ञा पुं० १ आत्मा। जीव। २ मनुष्य। ३ प्राणी। जीवधारी। ४ परमेश्वर।

चेतनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतन का धर्म। चैतन्य। सज्ञानता।

चेतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चैतन्य। संज्ञा। होश। ज्ञान। २ बुद्धि। ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। समझ। ३ स्मृति। सुधि। याद। ४ जीवन।

क्रि० अ० [हिं० चेत] १ संज्ञा में होना। होश में आना। २ सावधान होना। चौकस होना।

क्रि० स० विचारना। समझना।

चेता—वि० [सं०] चित्तवाला। (यौ० के अंत में, जैसे—दृढ़चेता।)

चेतावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √चेत+आवनी (प्रत्य०)] वह बात जो किसी को होशियार करने के लिये कही जाय। सतर्क होने की सूचना।

चेतिका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० चिति] मुर्दा जलाने की चिता। सरा।

चेदि—संज्ञा पुं० [सं०] १. भारत का एक प्राचीन प्रदेश। २ इस प्रदेश का राजा। ३. इस प्रदेश का निवासी।

चेदिराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. चेदि का राजा। २ शिशुपाल।

चेना—संज्ञा पुं० [सं० चणक] १ कँगनी या साँवाँ की जाति का एक मोटा अन्न। २ एक प्रकार का साग।

चेप—संज्ञा पुं० [चिपचिप से अनु०] १ कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस। २. चिड़ियों को फँसाने का लासा।

चेपदार—वि० [हिं० चेप+फा० दार] जिसमें चेप या लस हो। चिपचिपा।

चेर, चेरा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेरी] १ नौकर। सेवक। २. चेला शिष्य।

चेराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेरा+ई] दासत्व। सेवा। नौकरी। उ०—जो पै चेराई राम की करतो न लजातो। तौ तू दाम कुदाम ज्यों कर कर न बिकातो। —विनय०।

चेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।

चेल—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा।

चेलकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला] चेलहाई।

चेलहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला+हाई (प्रत्य०)] चेलों का समूह। शिष्यवर्ग।

चेला—संज्ञा पुं० [सं० चेलक या प्रा० चिल्ल] [स्त्री० चेलिन, चेली] १ वह जिसने किसी से कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो। शिष्य। २. वह जिसने किसी से शिक्षा ली हो। शागिर्द। विद्यार्थी। ३. किसी गुरु से मंत्र लेनेवाला। कान फुँकवानेवाला। दीक्षा लेनेवाला। ४. शिक्षा लेनेवाला।

मुहा०—पक्का चेला=किसी के भेद को जाननेवाला। बड़े गुरु का चेला=(१) अच्छा ज्ञाता। (२) खूब घुटा हुआ व्यक्ति।

चेलिन, चेली—संज्ञा स्त्री० १ "चेला" का स्त्री०। २ दीक्षा लेनेवाली स्त्री। शिक्षा लेनेवाली महिला।

चेल्हवा—संज्ञा स्त्री० [सं० चिल ? (मछली)] एक तरह की छोटी मछली।

चेष्टा—संज्ञा स्त्री० दे० "चेष्टा"। उ०—अब कहियत तिन तियन के रति-सजोग-प्रकार। होत चेषटा वचन तें प्रगट जु भाव अपार। —शृंगार०।

चेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर के अंगों की गति। २. अंगों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। ३. उद्योग।

प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य। काम। ५ श्रम। परिश्रम। ६ कार्य या व्यवहार से सूचित भाव।

चेस्टर—संज्ञा पुं० [अं० 'चेस्टरफील्ड' का संक्षिप्त रूप] ओवरकोट की तरह का एक प्रकार का बड़ा कोट जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और ठंढ से बचने के लिये पहना जाता है।

चेहरा—संज्ञा पुं० [फा०] १. गरदन के ऊपर का अगला भाग। शरीर का वह हिस्सा जिसमें मुँह, आँख, कान, नाक, मस्तक आदि होते हैं। मुखड़ा। वदन।

यौ०—चेहराशाही = वह रुपया जिस-पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो। प्रचलित रुपया। चालू सिक्का।

मुहा०—चेहरा उतरना = लज्जा, शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना = फौज में नाम लिखा जाना।

२ किसी चीज का अगला भाग। आगा। ३ देवता, दानव, या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

चेहलुम—संज्ञा पुं० [फा०] १. मुसलमानों में मृत्यु के चालीसवें दिन का फातिहा और भोज। २ मुहर्रम के चालीसवें दिन कर्बला के शहीदों को दी जानेवाली श्रद्धांजलियाँ।

चै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चय"।

चैत—संज्ञा पुं० [सं० चैत्र] १. फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना। चैत्र। चांद्र वर्ष का पहला महीना। २ एक चलता गाना जो चैत में गाया जाता है। चैती।

चैतन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्स्वरूप आत्मा। चेतन आत्मा। २. ज्ञान। बोध। चेतना। ३ ब्रह्म। ४. परमेश्वर। ५ प्रकृति। ६ एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा।

चैता—संज्ञा पुं० [हिं० चैत + आ (प्रत्य०)] एक चलता गाना जो चैत के महीने में गाया जाता है। चैती। घाटो।

चैती—संज्ञा स्त्री० [हिं० चैत + ई (प्रत्य०)] १ वह फसल जो चैत में काटी जाय। रबी। २ चैत में गाया जानेवाला एक प्रकार का चलता गाना। घाटो। चैता।

वि० चैत संबंधी। चैत का।

चैत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिता संबंधी। समाधि या स्तूप से संबद्ध। २ बड़ा मकान। घर। ३ मंदिर। देवालय। मठ। विहार। ४. वह स्थान जहाँ यज्ञ हो। यज्ञशाला। ५ गाँव में वह पेड़ जिसके नीचे ग्रामदेवता की वेदी या चबूतरा हो। ६. किसी देवी-देवता का चबूतरा। ७ बुद्ध की मूर्ति। ८ अश्वत्थ का पेड़। ९. बौद्ध सन्यासियों के रहने का मठ। विहार। १० चिता। ११ स्तूप।

चैत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ चांद्र वर्ष का प्रथम मास। चैत। २ बौद्ध या जैन सन्यासी। ३. यज्ञभूमि। ४ देवालय। मंदिर। ५ समाधि। चौरा। स्तूप।

चैत्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के बाग का नाम।

चैन—संज्ञा पुं० [सं० शयन ?] आराम। सुख।

मुहा०—चैन उड़ाना = आनंद करना। चैन की वंशी बजाना = निर्द्वंद्व रहना। निश्चिंत रहना। आनंद में मग्न रहना। चैन पटना = शांति मिलना। सुख मिलना।

चैपला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

चैयाँ†—संज्ञा स्त्री० [?] बाँह।

चैल—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र। उ०—विप्र वधू सब भूप बोलाई। चैल चारु भूषन पहिराई।—मानस।

चैला—संज्ञा पुं० [हिं० √छील] [स्त्री०, अल्पा० चैली] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।

चोंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोख] वह चिह्न जो चुंबन में दाँत लगने से पड़ता है।

चोंगा—संज्ञा पुं० [?] १ कोई वस्तु रखने के लिये खोखली नली। कागज, टीन आदि की बनी हुई नली। २ मूर्ख। जड़।

चोंघना(पु)†—क्रि० स० दे० "चुगना"।

चोंच—संज्ञा स्त्री० [सं० चंचु] १ पक्षियों के मुँह का निकला हुआ अगला भाग। टोंट। तुंड। २ मुँह (व्यंग्य)।

मुहा०—दो दो चोंचें होना = कहा-सुनी होना। कुछ लड़ाई झगड़ा होना।

चोंटना—क्रि० स० दे० "खोंटना"।

चोंडा†—संज्ञा पुं० [सं० चूड़ा] स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा।

चोंड़ा—संज्ञा पुं० [सं० चुंडा = छोटा कुआँ] सिंचाई के लिये खोदा हुआ छोटा कुआँ।

चोंथ—संज्ञा पुं० [सं० √चुंठ ?] उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।

चोंथना†—क्रि० स० [सं० √चुंठ् ?] किसी चीज में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।

चोंधर—वि० [हिं० चौंधियाना] १ जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। २ मूर्ख।

चोआ—संज्ञा पुं० [हिं० चुआना] एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंधद्रव्यों को एक साथ मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है।

चोई—संज्ञा स्त्री० [?] धोई हुई दाल का छिलका।

चोकर—संज्ञा पुं० [हिं० चून = आटा + कराई = छिलका] गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा चालने के बाद बच जाता है।

चोका—संज्ञा पुं० [सं० चोष्य] १ चूसने की क्रिया या भाव। उ०—ते छकि रस नवकेलि करेहीं। चोका लाइ अधररस लेहीं।—पदमावत। २ चूसने की वस्तु।

चोख(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्षण या चोक्ष ? प्रा० चोक्ख] तेजी।

चोखन—वि० [हिं० चोख] तेज। प्रचंड। उ०—चोखन है कियो घाम अनोखो सखी न अली यह है सविताई।—शृंगार०।

चोखना(पु)—क्रि० स० [सं० चूषण] चूसना।

चोखनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० चूषण] चूसकर पीने की क्रिया।

चोखा—वि० [सं० चोक्ष प्रा० चोक्ख] जिसमें किसी प्रकार की मैल, खोट, या मिलावट आदि न हो। जो शुद्ध और उत्तम हो। २. जो सच्चा और ईमानदार हो। खरा। ३ जिसकी धार तेज हो। पैना। धारदार। ४ मनोहर। सुंदर। ५ स्वादिष्ट।

—संज्ञा पुं० उबाले या भूने हुए बैंगन, आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर तैयार किया हुआ सालन। भरता।

चोगा—संज्ञा पुं० [तु०] पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा।

चोगान—संज्ञा पुं० दे० "चौगान"।

चोचला—संज्ञा पुं० [अनु०] १ नाज-नखरा। २ हाव भाव।

चोज—संज्ञा पुं० [?] १ वह चमत्कारपूर्ण उक्ति जिससे लोगों का मनोविनोद हो। सुभाषित। सूक्ति। उ०—करि प्रगट दुरे के बीच राखिए यों आखर की चोज। जेहि विधि मरहट्टबधू राखति है विच कंचुकी

उरोज ।—छदार्णव । २. हँसीठट्ठा, विशेषत व्यंग्यपूर्ण उपहास ।

चोट—संज्ञा स्त्री० [सं० √चुट्=काटना] १. एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ पतन या टक्कर । आघात । प्रहार ।

मुहा०—चोट खाना=ऊपर आघात लेना ।

२. शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव । घाव । जख्म ।

यौ०—चोट चपेट=घाव । जख्म ।

३ किसी को मारने के लिये हथियार आदि चलाने की क्रिया । वार । आक्रमण । ४. किसी हिंसक पशु का आक्रमण । हमला । ५ हृदय पर का आघात । मानसिक व्यथा । ठेस । ६ किसी के अनिष्ट के लिये चली हुई चाल । ७ कटाक्ष । बौछार । ताना । ८ विश्वासघात । धोखा । दगा । ६ बार । दफा । मरतबा ।

चोटहा†—वि० [हिं० चोट+हा (प्रत्य०)] चोट खाया हुआ । चुटैल ।

चोटा—संज्ञा पुं० [हिं० चोआ] राव का पसेव जो छानने से निकलता है । चोआ ।

चोटार†—वि० [हिं० चोट+आर (प्रत्य०)] चोट खाया हुआ । चुटैल ।

चोटारना†—क्रि० अ० [हिं० चोट] चोट करना ।

चोटियाना—[हिं० चोट से ना० धा०] चोट लगाना ।

क्रि० स० [हिं० चोट से ना० धा०] १ चोटी पकड़ना । २ वश में करना ।

चोटी—संज्ञा स्त्री० [सं० चूड़ा] १. सिर पर पीछे की ओर कुछ थोड़े से बड़े बाल जिन्हें प्राय हिंदू नहीं कटाते । शिखा । चुंदी ।

मुहा०—चोटी दबना=बेबस होना । लाचार होना । (किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना=किसी प्रकार के दबाव में होना ।

२ एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल । ३ सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं । ४ जूड़े में पहनने का एक आभूषण । ५ कुछ पक्षियों के सिर के वे पर जो ऊपर उठे रहते हैं । कलगी । ६ सबसे ऊपर का उठा हुआ भाग । शिखर, जैसे—पहाड़ की चोटी, मकान की चोटी ।

मुहा०—चोटी का=सर्वोत्तम ।

चोटीपोटी†—वि० स्त्री० [देश०] १ खुशामद से भरी हुई (बात) । २ झूठी या बनावटी (बात) । उ०—चतुराई अंग अग भरी है पूरन ज्ञान न बुद्धि की मोटी । हम सों सदा दुरावति सो यह बात कहत मुख चोटी पोटी ।—सूर० ।

चोटैल—दे० चुटैल ।

चोट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० चोर] [स्त्री० चोट्टी] वह जो चोरी करता हो । चोर ।

चोड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तरीय वस्त्र । २ चोल नामक प्राचीन देश ।

चोदक—वि० [सं०] प्रेरणा करनेवाला ।

चोदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो । विधिवाक्य । २ प्रेरणा । ३ योग आदि के संबंध का प्रयत्न ।

‡क्रि० स०—स्त्रीप्रसंग करना । संभोग करना ।

चोपⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० चाव] १. गहरी चाह । इच्छा । ख्वाहिश । २ चाव । शौक । रुचि । ३ उत्साह । उमंग । उ०—किए बहुत उपचार मैं सखि कल पलक परै न । पीत बसन को चोप तें रहौ लगाए नैन ।—रससारांश । ४ बढ़ावा ।

चोपनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० चोप] किसी वस्तु पर मोहित हो जाना । मुग्ध होना ।

चोपीⓅ—वि० [हिं० चोप] १. इच्छा रखनेवाला । २ उत्साही ।

चोब—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा । २. नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी । ३ सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा । ४ छड़ी । सोटा ।

चोबचीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक काष्ठौषधि जो एक लता की जड़ है ।

चोबदार—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है । असाबरदार । २. प्रतीहार । द्वारपाल ।

चोर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चुराने या चोरी करनेवाला । तस्कर । २ ऊपर से अच्छे हुए घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है । ३ वह छोटी संधि या छेद जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय । ४ खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं । ५ चोरक (गंधद्रव्य) ।

मुहा०—मन में चोर पैठना=मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना ।

वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले ।

चोरकट—संज्ञा पुं० [हिं० चोर+कट=काटनेवाला] चोर । उचक्का ।

चोरटा—संज्ञा पुं० दे० "चोट्टा" ।

चोरदंत—संज्ञा पुं० [हिं० चोर+दंत] वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है ।

चोरदरवाजा—संज्ञा पुं० [हिं० चोर+फा० दरवाजा] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार ।

चोरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधाहुली या शंखाहुली ।

चोरमहल—संज्ञा पुं० [हिं० चोर+महल] वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं ।

चोरमिहीचनी†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर+मीचना=बंद करना] आँखमिचौनी का खेल ।

चोराचोरीⓅ†—क्रि० वि० [हिं० चोर+चोरी] छिपे छिपे । चुपके चुपके ।

चोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर] १. छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम । चुराने की क्रिया । २. चुराने का भाव । ३ चोली ।

चोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम । २ उक्त देश का निवासी । ३ स्त्रियों के पहनने की चोली । ४ कुरते के ढंग का एक पहनावा । चोला । ५. कवच । जिरहबक्तर ।

चोलकी—संज्ञा पुं० [सं० चोलकिन्] १ बाँस का कल्ला । २ नारंगी का पेड़ । ३ हाथ की कलाई । ४ करील का पेड़ ।

चोलना—संज्ञा पुं० दे० "चोला" ।

चोला—संज्ञा पुं० [सं० चोल] १ एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला ढाला कुरता जिसे प्राय साधु, फकीर पहनते हैं । २ एक रस्म जिसमें नए जनमे हुए बालक को पहले पहल कपड़े पहनाए जाते हैं । ३. वह कपड़ा जो पहले पहल बच्चे को पहनाया जाता है । ४. शरीर । बदन । तन ।

मुहा०—चोला छोड़ना=मरना । प्राण त्यागना । चोला बदलना=एक शरीर का परित्याग करके दूसरा शरीर धारण करना (साधु) ।

चोली—संज्ञा स्त्री० [सं० चोल] अँगिया की तरह का स्त्रियों का पहिनावा ।

मुहा०—चोली दामन का साथ = बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।
चोवा—संज्ञा पुं० [हिं०] एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ।
चोषण—संज्ञा पुं० [सं०] चूसना।
चोष्य—वि० [सं०] जो चूसने के योग्य हो।
चौंक—संज्ञा स्त्री० [सं० चमत्कृत प्रा० चमक्क] चौंकने की क्रिया या भाव।
चौंकना—क्रि० अ० [हिं० चौंक] १ आश्चर्य, डर या पीड़ा से अचानक हिल डुल उठना या काँपना। झिझकना। २. भौचक्का होना। चकित होना। ३ चौकन्ना होना। ४ सोते से अचानक जाग उठना। ५ भय या आशंका से हिचकना। भड़कना।
चौंकाना—क्रि० स० [हिं० चौंकना का प्रे० रूप] किसी को चौंकने में प्रवृत्त करना। भड़काना।
चौंध—संज्ञा स्त्री० [सं०√चक् = चमकना] चकाचौंध। तिलमिलाहट।
चौंधना(पु)—क्रि० अ० [हिं० चौंध] इस प्रकार चमकना कि चकाचौंध उत्पन्न हो। चमकना। कौंधना।
चौंधियाना—क्रि० अ० [हिं० चौंध] १. बहुत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना। चकाचौंध होना। २ आँखों से सुझाई न पड़ना।
चौंधी—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"। उ०—चितवत मोहिं लगी चौंधी सी जानौं न कौन कहाँ तें धौं आए।—गीता०।
चौंर—संज्ञा पुं० दे० "चँवर"।
चौंराना(पु)—क्रि० स० [हिं० चौंर] १ चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ देना।
चौंरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौंर] १ काठ की डाँड़ी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है। २ चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। ३ सफेद पूँछवाली गाय।
चौ—वि० [सं० चतु] चार (संख्या)। (केवल यौगिक में), जैसे, चौपहल, चौमासा।
संज्ञा पुं० मोती तौलने का एक मान।
चौआ—संज्ञा पुं० दे० "चौवा"।
चौआना(पु)—क्रि० अ० [हिं० चौंकना] १. चकपकाना। चकित होना। २. चौकन्ना होना।
चौक—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क] १ चौकोर भूमि। चौखूँटी खुली जमीन। २. घर के बीच का कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूँटा खुला स्थान। आँगन। सहन। ३. चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४ मंगल अवसरों पर पूजन के लिये आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ५ शहर के बीच का बड़ा बाजार। ६ चौराहा। चौमुहानी। ७ चौसर खेलने का कपड़ा। बिसात। ८. सामने के चार दाँतों की पंक्ति। ९ चार चार का समूह। उ०—पुनि सोरहो सिंगार जस चारिहु चौक कुलीन। दीरघ चारि चारि लघु, चारि सुभर चौ खीन।—पदमावत।
चौकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+कड़ा] कान में पहनने की बालियाँ जिनमें दो दो मोती हों।
चौकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार +सं० कला = अंग] १. हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ जाता है। चौफाल। कुदान। छलाँग। कुलाँच।
मुहा०—चौकड़ी भूल जाना = बुद्धि का, काम न करना। सिटपिटा जाना। घबरा जाना।
२ चार आदमियों का गुट्ट। मंडली।
यौ०—चंडाल चौकड़ी = उपद्रवियों की मंडली।
३. एक प्रकार का गहना। ४ चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५. पलथी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ी] चार घोड़ों की गाड़ी।
चौकन्ना—वि० [हिं० चौ = चारों ओर+कान] १ सावधान। होशियार। चौकस। सजग। २ चौंका हुआ। आशंकित।
चौकल—संज्ञा पुं० [सं०] चार मात्राओं का समूह। इसके पाँच भेद हैं (ऽऽ, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ।।, ।।।।)
चौकस—वि० [हिं० चौ = चार+कस = कसा हुआ] १ सावधान। सचेत। होशियार। २. ठीक। दुरुस्त। पूरा।
चौकसाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० 'चौकसी'।
चौकसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौकस] सावधानी। होशियारी। खबरदारी।
चौका—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्क] १ पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २ काठ या पत्थर का पाटा जिसपर रोटी बेलते हैं। चकला। ३ सामने के चार दाँतों की पंक्ति। उ०—नैक हँसौंही बानि तजि लख्यौ परतु मुहुँ नीठि। चौका-चमकनि चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि॥—बिहारी०। ४. सिर का एक गहना। सीसफूल। ५ वह लिपा पुता स्थान जहाँ हिंदू रसोई बनाते या खाते हैं। ६ मिट्टी या गोबर का लेप जो सफाई के लिये किसी स्थान पर किया जाय।
मुहा०—चौका लगाना = (१) किसी स्थान को गोबर या मिट्टी से लीपना। (२) सत्यानाश करना।
७ एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह, जैसे—मोतियों का चौका। ८ ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौकिया सोहागा—संज्ञा पुं० [हिं० चौकी+सोहागा] छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।
चौकी—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्की] चौकोर आसन जिसमें चार पाए लगे हों। छोटा तख्त। २ कुरसी। ३ मंदिर में मंडप के खंभों के बीच का स्थान जिसमें से होकर मंडप में प्रवेश करते हैं। ४. पड़ाव। ठहरने की जगह। टिकान। अड्डा। ५ वह स्थान जहाँ आसपास की रक्षा के लिये थोड़े से सिपाही आदि रहते हों। ६ चुंगी वसूली का स्थान। पहरा। खबरदारी। रखवाली। ८ वह भेंट या पूजा जो किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई जाती है। ९ गले में पहनने का एक गहना। पटरी। १०. रोटी बेलने का छोटा चकला। ११. जादू। टोना। १२. तेलियों के कोल्हू में लगी हुई एक लकड़ी। १३ गले में पहनने का एक गहना जिसमें चौकोर पटरी होती है।
चौकीदार—संज्ञा पुं० [हिं० चौकी+फा० दार] १. पहरा देनेवाला। २. गोड़ैत।
चौकीदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौकीदार] १ पहरा देने का काम। रखवाली। खबरदारी। २. चौकीदार का पद। ३ वह चंदा या कर जो चौकीदार रखने के लिये लिया जाय।
चौकोना—वि० दे० "चौकोर"।
चौकोर—वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चार कोने हों। चौखूँटा। चतुष्कोण।
चौखट—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार+काठ] १. लकड़ी का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं। २ देहली। डेहरी।

मुहा०—चौखट लाँघना=घर के अंदर या बाहर जाना।

चौखटा—संज्ञा पुं० [हिं० चौखट] चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है। फ्रेम।

चौखानि—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+खानि=जाति] अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

चौखूँट—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+खूँट] १ चारों दिशाएँ। २ भूमंडल।

क्रि० वि० चारों ओर।

चौखूँटा—वि० दे० "चौकोर"।

चौगड्डा—संज्ञा पु० दे० "चौराहा"।

चौगान—संज्ञा पु० [फा०] १. गोल्फ से मिलता जुलता एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। उ०—श्री मोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचन में रच्यौ रुचिर मैदान।—सूर०। २ चौगान खेलने का मैदान। ३ चौगान खेलने की लकड़ी जो आगे की ओर मुड़ी या झुकी होती है। उ०—लै चौगान बड़ा करि आगे प्रभु आए जब बाहर। सूरश्याम पूछत सब ग्वालन खेलैंगे केहि ठाहर।—सूर०। ४ नगाड़ा बजाने की लकड़ी। ५ युद्धभूमि।

चौगिर्द—क्रि० वि० [हिं० चौ+फा० गिर्द=तरफ] चारों ओर। चारों तरफ।

चौगुना—वि० [सं० चतुर्गुण] [स्त्री० चौगुनी] चार बार और उतना ही। चतुर्गुण।

चौगोड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+गोड=पैर] एक प्रकार की ऊँची चौकी।

चौगोशिया—वि० [फा०] चार कोनेवाला।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी।

संज्ञा पु० तुरकी घोड़ा।

चौघड़—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+दाढ़ ?] किनारे का वह चौड़ा चिपटा दाँत जो आहार कूचने या चबाने के काम में आता है। चौभर।

चौघड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १ पान, इलायची रखने का डिब्बा जिसमें चार खाने बने होते हैं। २ चार खानों का बरतन जिसमें मसाला आदि रखते हैं। ३ पत्ते की वह खोंगी जिसमें चार बीड़े पान हों।

चौघरा—वि० [देश०] घोड़ों की एक चाल। चौफाल। पोइया। सरपट।

चौघोड़ी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ा] चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।

चौचंद(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चौथ+चंद] कलंकसूचक अपवाद। बदनामी की चर्चा। निंदा। शोर करना।

चौचंदहाई(पु)—वि० स्त्री० [हिं० चौचंद+हाई (प्रत्य०)] बदनामी करनेवाली।

चौड़ा—वि० [सं० चिपिट] [स्त्री० चौड़ी] चकला। चौड़ाईवाला।

चौड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौड़ा+ई (प्रत्य०)] किसी चौकोर चीज में लंबाई के अतिरिक्त (और उससे कम) फैलाव या विस्तार। चौड़ापन।

चौड़ान—संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई"।

चौडोल, चौडोला—संज्ञा पु० [हिं० चंडोल] दे० "चंडोल"। उ०—आसपास बाजत चौडोला। दुंदुभि, झाँझ, तूर, डफ, ढोला।—पदमावत।

चौतनियाँ—संज्ञा स्त्री० दे० "चौतनी"।

चौतनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+तनी=बंद] बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं। उ०—करत सिंगार चारयो भैया मिलि शोभा बरनि न जाई। चित्र विचित्र सुभग चौतनियाँ इंद्रधनुष छबि छाई।—सूर०।

चौतरा—संज्ञा पु० दे० "चबूतरा"।

चौतही—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+तह] खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा।

चौताल—संज्ञा पु० [हिं० चौ+ताल] १ मृदंग का एक ताल। २ एक प्रकार का गीत जो होली में गाया जाता है।

चौतुका—वि० [हिं० चौ+तुक] जिसमें चार तुक हों।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों की तुक मिली होती है।

चौथ—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर्थी] १ पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।

मुहा०—चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चंद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है।

२ चतुर्थांश। चौथाई भाग। ३ मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था।

(पु) वि० चौथा।

चौथापन(पु)—संज्ञा पुं [हिं० चौथा+पन] जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।

चौथा—वि० [सं० चतुर्थ] [स्त्री० चौथी] जिसके पूर्व तीन और हों। जो संख्या या क्रम में चार के स्थान पर पड़े।

चौथाई—संज्ञा पुं० [हिं० चौथा+ई (प्रत्य०)] चौथा भाग। चतुर्थांश। चहारुम।

चौथिया—संज्ञा पुं० [हिं० चौथा+इया (प्रत्य०)] १ वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे। २ चौथाई का हकदार।

चौथी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौथा] १ विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें विवाह में बंधे वर कन्या के हाथ के कंकन खोले जाते हैं। २ फसल की वह बाँट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है।

चौदंता—वि० [हिं० चौ+दाँत] १ चार दाँतोंवाला। २ उद्दंड। बदमाश।

चौदस—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर्दशी] पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी।

चौदह—वि० [सं० चतुर्दश] जो गिनती में दस और चार हो।

संज्ञा पुं० दस और चार के जोड़ की संख्या। १४।

चौदाँत(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+दाँत] दो हाथियों की लड़ाई। हाथियों की मुठभेड़।

चौधराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौधरी] १. चौधरी का काम। २ चौधरी का पद।

चौधरी—संज्ञा पुं० [सं० चतुर+धर] किसी समाज या मंडली का मुखिया जिसका निर्णय उस समाजवाले मानते हैं। प्रधान।

चौधारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+धारी] चारखाना (कपड़ा)। उ०—पेमचा डरिया औ चौधारी। साम, सेत पीयर, हरियारी।—पदमावत।

चौप(पु)—संज्ञा पु० दे० "चोप"। उ०—तुम्र प्रसाद देख्यो भरि नैन। कही सुनी मनभावति बैन। कब परिहै मोहन गल बाँह। चौंप ईठि इतनी मन माँह।—हृदयार्णव।

चौपई—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १५ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक लघु और उसके पहले गुरु वर्ण रहता है, जैसे—यहै कहत सब वेद पुरान। शरणागत वत्सल भगवान॥

चौपट—वि० [हिं० चौ=चहुँ+सं० पट] चारो ओर से खुला हुआ। अरक्षित।

वि० नष्टभ्रष्ट। तबाह। बरबाद।

यौ०—चौपट चरण=जिसके कहीं पहुँचते ही सब कुछ नष्टभ्रष्ट हो जाय। चौपटा।

चौपटा—वि० [हिं० चौपट+आ (प्रत्य०)] चौपट करनेवाला।

चौपड़—संज्ञा स्त्री० दे० "चौसर"।
चौपत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+परत] कपड़े की तह या घड़ी।
चौपतरना, चौपताना—क्रि० स० [हिं० चौपत से ना० धा०] कपड़े की तह लगाना।
चौपतिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+पत्ती] १ एक प्रकार की घास। २. एक साग।
चौपथ—संज्ञा पुं० [स० चतुष्पथ] चौराहा।
चौपद(पु)†—संज्ञा पु० दे० "चौपाया"।
चौपदा—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पद] एक प्रकार का छंद जिसमें चार पद या चरण होते हैं।
चौपहल—वि० [हिं० चौ+फा० पहलू] जिसके चार पहल या पार्श्व हों। वर्गात्मक।
चौपाई—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १ १६ मात्राओं का एक छंद। इसमें गुरु लघु या चौकलों का नियम नहीं है। सम के पीछे सम और विषम के पीछे विषम कल रखे जाते हैं। अंत में जगण या तगण नहीं रखा जाता। त्रिकल के बाद समकल नहीं होते। सम-सम प्रयोग उचित माना जाता है; जैसे—'गुरु पद-रज-मृदु-म-जुल अ-जन'। इसमें विषम विषम और सम सम का प्रयोग भी देखा जाता है, जैसे—नित्य-भजिय-तजि-मन-कुटि-ला-ई। विषम विषम सम विषम विषम सम भी प्रयुक्त होते हैं, जैसे—'कहहु-राम-कै-कथा-सुहा-ई। कभी कभी दो विषमों को मिल कर एक सम माना जाता है, जैसे—'बं-दौं-राम-नाम-रघु-वर-को। तुलसीदासजी के मानस का प्रधान छंद चौपाई है। कभी कभी कविगण ऊपर के नियमों में आवश्यकतानुसार हेर फेर भी कर दिया करते हैं, जैसे—'दहै-हमा-रि ब-टी-सेव-का-ई।' चौपाइयाँ कई प्रकार की होती हैं। वर्णवृत्तों में इनके अलग अलग नाम हैं। †२ चारपाई।
चौपाया—संज्ञा पु० [सं० चतुष्पाद] चार पैरोंवाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु।
चौपाल—संज्ञा पु० [हिं० चौ+वार] १ बैठने उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो, पर चारों ओर खुला हो। २ बैठक। ३ दालान। ४ एक प्रकार की पालकी।
चौपुरा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+पुरवट] वह कूआँ जिसपर चारों ओर चार पुरवट या मोट एक साथ चल सकें।
चौपैया—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पदी] १ एक प्रकार का छंद। दे० "चौपाई"। † २ चारपाई। खाट।
चौफला—वि० [हिं० चौ+फल] चार फलों वाला (चाकू आदि)।
चौफेर—क्रि० वि० [हिं० चौ+फेरा] चारों तरफ।
चौबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+बंद] एक प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। बगलबंदी।
चौबंसा—संज्ञा पुं० [देश०] एक वर्णवृत्त।
चौबगला—संज्ञा पु० [हिं० चौ+बगल] कुरते, अंगे इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग।
वि० चारों ओर का।
चौबाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+बाई=हवा] १. चारों ओर से बहनेवाली हवा। २ अफवाह। किंवदंती। उड़ती खबर।
चौबारा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+बार] १ कोठे के ऊपर की खुली कोठरी। बंगला। बालाखाना। २ खुली हुई बैठक।
क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+बार=दफा] चौथी दफा। चौथी बार।
चौबे—संज्ञा पुं० [स० चतुर्वेदी] [स्त्री० चौबाइन] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। चतुर्वेदी।
चौबोला—संज्ञा पुं० [हिं० चौबोल] १५ मात्राओं का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में क्रम से लघु गुरु हों, जैसे—सत समागम संतत सजौ। शरणागत है प्रभु को भजौ॥
चौमड़—संज्ञा स्त्री० दे० "चौपड़"।
चौमंजिला—वि० [हिं० चौ=चार+फा० मंजिल] चार मरातिब या खंडोंवाला (मकान आदि)।
चौमसिया—वि० [हिं० चौमासा+इया (प्रत्य०)] वर्षा के चार महीनों में होनेवाला।
संज्ञा पु० [हिं० चार+माशा] चार माशे का बाट।
चौमार्ग—संज्ञा पु० दे० "चौराहा"।
चौमासा—संज्ञा पु० [स० चातुर्मास्य] १. वर्षा काल के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन। चातुर्मास। २ वर्षा ऋतु से सबंधित कविता।
चौमुख—क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] चारों ओर। चारों तरफ।
चौमुखा—वि० [हिं० चौ=चार+मुख] [स्त्री० चौमुखी] चारों ओर (चार) मुँहवाला।
चौमुहानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+फा० मुहाना] चौराहा। चौरास्ता। चतुष्पथ।
चौमेखा—चार मेखोंवाला।
संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का दंड या सजा।
चौरंग—संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार+रंग=प्रकार] तलवार का एक हाथ।
वि० तलवार के वार से कटा हुआ।
चौरंगा—वि० [हिं० चौ+रंग] [स्त्री० चौरंगी] चार रंगों का। जिसमें चार रंग हों।
चौर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूसरों की वस्तु चुरानेवाला। चोर। २ एक गंधद्रव्य।
चौरस—वि० [हिं० चौ=चार+(एक) रस=समान] १ जो ऊँचा नीचा न हो। समतल। बराबर। २ चौपहल। वर्गात्मक।
संज्ञा पु० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक तगण और दूसरा यगण होता है तथा कुल ६ वर्ण होते हैं; जैसे—तू यों किमि आली। घूमै मतवाली॥ पूछै निशि मध्या। राधा तनु मध्या॥
चौरसाना—क्रि० स० [हिं० चौरस से ना० धा०] चौरस करना। समतल बनाना।
चौरस्ता, चौरहर—संज्ञा पु० दे० "चौराहा"।
चौरा—संज्ञा पुं० [स० चत्वर] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १ चबूतरा। वेदी। २ किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि का वह स्थान जहाँ वेदी या चबूतरा बना रहता है। समाधि। स्तूप। † ३ चौपाल। चौबारा। ४. लोबिया। बोड़ा। अरवा। रवाँस।
चौराई—संज्ञा स्त्री० दे० "चौलाई"।
चौरासी—वि० [स० चतुरशीति] अस्सी से चार अधिक।
संज्ञा पुं० १ अस्सी से चार अधिक की सख्या। ८४। २ चौरासी लक्ष योनि।
मुहा०—चौरासी में पड़ना या भरमना=अनेक योनियों में जन्म लेना और दुःख भोगना। पुन. पुनः जन्मना और मरना।
३ नाचते समय पैर में बाँधने का धुँघरू।
चौराहा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+राह=रास्ता] चौरस्ता। चौमुहानी।
चौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौरा] छोटा चबूतरा।
चौरेठा—संज्ञा पुं० [हिं० चावर+पीठा] पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
चौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] चोरी।

चौलसंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] मुंडन-संस्कार।
चौलाई—सं० स्त्री० [सं० तण्डुलीय ?] एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।
चौलुक्य†—संज्ञा पुं० दे० "चालुक्य"।
चौवर, चौवा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार] १ हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. अँगूठे को छोड़ हाथ की बाकी उँगलियों की पंक्ति में लपेटा हुआ तागा। ३. चार अँगुल की माप। ४. तास का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
† संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"।
चौसर—संज्ञा पुं० [सं० चतुस्सारि] १ एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़। नर्द-बाजी। २ इस खेल की बिसात।
संज्ञा पुं० [चतुरंसक] चार लड़ों का हार।
चौहट—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+हाट] वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक। चौमुहानी। चौराहा। उ०—चौहट हाट समान वेद चहुँ जानिए। विविध भाँति की वस्तु बिकत तहँ मानिए।—विश्रामसागर।
चौहट्ट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "चौहट्टा"।
चौहट्टा—संज्ञा पुं० दे० [हिं० चौ=चार+हाट] १ वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। २ चौमुहानी। चौरस्ता।
चौहद्दी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+फा० हद] चारों ओर की सीमा।
चौहरा—वि० [हिं० चौ=चार+हरा] १ जिसमें चार फेरे या तहें हों। चार परत-वाला। † २. चौगुना। जो चार बार हो।
चौहान—संज्ञा पुं० [प्रा० चाहुआण] क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा। (दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज इसी शाखा के थे।)
चौहै—क्रि० वि० [सं० चतुर्धा ?] चारों ओर।
च्यंता—संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता"। उ०—च्यंता तौ हरि नाँव की, और न चिंता दास।—कबीर०।
च्यवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का चूना, झरना या टपकना। २ एक वैदिक ऋषि जिनके विषय में कहा जाता है कि अश्विनीकुमारों ने उन्हें युवा बना दिया था।
च्यवनप्राश—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।
च्युत—वि० [वि०] १ गिरा हुआ। झड़ा हुआ। २ भ्रष्ट। ३ अपने स्थान से हटा हुआ। ४ विमुख। पराङ्मुख।
च्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झड़ना। गिरना। २ गति। उपयुक्त स्थान से हटना। ३ चूक। कर्त्तव्यविमुखता।

छ

छ—हिंदी वर्णमाला का सातवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
छंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।
छंगा—वि० [हिं० छ+उँगली] जिसके किसी हाथ या पैर में छः उँगलियाँ हों। छँगुर।
छँगुनियाँ, छँगुली(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।
छँछौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाछ+बरी] एक पकवान जो छाछ में बनाया जाता है।
छँटना—क्रि० अ० [सं० छिन्न] १ कटकर अलग होना। छिन्न होना। २ दूर होना। ३ समूह से अलग होना। ४ चुनकर अलग कर लिया जाना।
मुहा०—छँटा हुआ=(१) चुना हुआ। (२) चालाक। चतुर। धूर्त।
५. साफ होना। मैल निकलना। ६ क्षीण होना। दुबला होना।
छँटवाना—क्रि० स० [हिं० छाँटना का प्रे० रूप] १. कटवाना। २. चुनवाना। ३ छिलवाना।
छँटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ छाँट+आई (प्रत्य०)] छाँटने का काम, भाव या मजदूरी।
छँटैल—वि० [हिं०√ छाँट+ऐल (प्रत्य०)] १. छँटा हुआ। २. धूर्त या चालाक।
छँड़ना(पु)—क्रि० स० [हिं० छोड़ना] १. छोड़ना। त्यागना। २ अन्न को ओखली में डालकर कूटना। छाँटना। उ०—सुबल सुदामा श्रीदामा सँग सब मिलि भोजन रुचि सो खात। ग्वालन कर ते कौर छोड़ावत मुख लै मेलि सराहत जात।—सूर०।
छँड़ाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० छुड़ाना] छीनना। छुड़ा कर ले लेना।
छंद—संज्ञा पुं० [सं० छंदस्] १ वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है। २ वेद। ३ वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। पद्य। ४ वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्यवस्था। पद्यबंध। ५ वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ६ अभिलाषा। इच्छा। ७ स्वेच्छाचार। (पु) ८ बंधन। गाँठ। ९ जाल। संघात। समूह। १० कपट। छल। उ०—जोगी सबै छंद अस खेला। तू भिखारि तेहि माहिं अकेला।—पदमावत०। कहा कहति तू बात अयानी। वाके छंद भेद को जानै मीन कबहुँ धौं पीवत पानी।—सूर०।
यौ०—छलछंद=कपट। धोखेबाजी। ११ चाल। युक्ति। १२. रंग ढंग। आकार। चेष्टा। १३ अभिप्राय। मतलब।
संज्ञा पुं० [सं० छंदक] एक आभूषण जो हाथ में पहना जाता है।
छंदक—वि० [सं०] १ रक्षक। २ छली। संज्ञा पुं० १ श्रीकृष्णचंद्र। २ बुद्धदेव का सारथी। ३ छल।
छंदोबद्ध—वि० [सं०] पद्यबद्ध। जो छंदों में हो।
छंदोभंग—संज्ञा पुं० [सं०] छंदरचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।
छः—वि० [सं० षष्, प्रा० छ] गिनती में पाँच से एक अधिक।
संज्ञा पुं० १ वह संख्या जो पाँच से एक अधिक हो। २ इस संख्या का सूचक अंक।
छ—संज्ञा पुं० [सं०] १ काटना। २ ढाँकना। आच्छादन। ३. घर। ४ खंड। टुकड़ा।

छकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शकट] बोझ लादने की गाड़ी । सग्गड़ । लढ़ी । ठेला ।

छकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छ+कड़ी] १. छ का समूह । २ वह पालकी जिसे छ कहार उठाते हों । ३ छ. घोड़ों की गाड़ी ।

छकना—क्रि० अ० [सं० चकन] [संज्ञा छाक] १. खा पीकर अघाना । तृप्त होना । २ मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना ।

क्रि० अ० [स० चक्र=भ्रात] १ चकराना । अचंभे में आना । २ दिक होना ।

छकल—संज्ञा पुं० [हिं० छ+कल] छ मात्राएँ । उ०—दुकण तिकल चौकल पकल, छकल निरखि प्रस्तार । क्रम तें बरनत 'दास' तहँ, वृत्ति छद विस्तार ।—छदार्णव ।

छकाछक—वि० [हिं०√छक] १ छाया हुआ । २ परिपूर्ण । भरा हुआ । ३. उन्मत्त । नशे में चूर ।

छकाना—क्रि० स० [हिं० छकना का स० रूप] १ खिला पिलाकर तृप्त करना । २ मद्य आदि से उन्मत्त करना ।

क्रि० स० [सं० चक्र=भ्रांत] १. अचंभे में डालना । २. दिक करना ।

छकीला—वि० [हिं०√छक+ईला (प्रत्य०)] १ छका हुआ । तृप्त । २ मस्त । मत्त ।

छक्का—संज्ञा पुं० [सं० षटक] १ छ का समूह या वह वस्तु जो छ अवयवों से बनी हो । २ षट्दर्शन । छ शास्त्र । ३ जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी फेंकने से छ कौड़ियाँ चित्त पड़ें ।

मुहा०—छक्का-पजा=चालबाजी । छक्का पजा भूलना=युक्ति काम न करना । बुद्धि काम न करना ।

४ जुआ । ५ वह ताश जिसमें छ. बूटियाँ हों । ६ होश हवास । सुध बुध ।

मुहा०—छक्के छूटना=१. होशहवास जाता रहना । बुद्धि का काम न करना । २ हिम्मत हारना । साहस छूटना ।

छगड़ा(u)—संज्ञा पुं० [सं० छागल] बकरा ।

छगन—संज्ञा पुं० [?] छोटा बच्चा । प्रिय बालक । उ०—गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलत हैं दोउ छगन मगन ।—सूर० ।

वि० बच्चों के लिये एक प्यार का शब्द ।

छगुनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी+उँगली] कनिष्ठिका । कानी उँगली ।

छच्छिआ, छछिया—संज्ञा स्त्री० [सं० छच्छिका या छाछिका] छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र ।

छछिहारी—वि० [हिं० छाछ+हारी] छाछ विलोनेवाली । उ०—मकड़ी घरि माषी छछिहारी । मास पखारि चील्ह रखवारी ।—कबीर० ।

छछूँदर—संज्ञा पुं० [स० छुच्छुदर] १ चूहे की जाति का एक जंतु जो घरों की नालियों आदि गदी जगहों में रहता है । इसके शरीर से दुर्गंध आती है । २ एक प्रकार का यंत्र या तावीज । ३. एक आतिशबाजी ।

मुहा०—छछूँदर छोड़ना=ऐसी बात कहना जिससे लोगों में हलचल मच जाय । आग लगाना ।

मुहा०—छछूँदर के सिर में चमेली का तेल=कोई बेमेल बात । अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज की प्राप्ति । उ०—(१) अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल । छछूँदर के सिर में चमेली का तेल । (२) सो कुवरी कुच कोर चढ़े ज्यों चमेलि फुलेल छछुँदर के सिर ।

छजना—क्रि० अ० [√सज्ज्] १ शोभा देना । सजना । अच्छा लगना । २ उपयुक्त जान पड़ना । ठीक जँचना ।

छज्जा—संज्ञा पुं० [सं० √छद्] १ छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है । ओलती । २ कोठे या पाटन का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है । उ०—छज्जनि तें छूटति पिचकारी । रँगि गई बाखरि महल अटारी ।—सूर० ।

छटकना—क्रि० अ० [सं० √छृद्] । १ किसी वस्तु का दाव या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना । सटकना । २ दूर रहना । अलग अलग फिरना । ३ वश में से निकल जाना । ४ कूदना ।

छटकाना—क्रि० स० [हिं० छटकना का स० रूप] १ दाव या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना । २ झटका देकर पकड़ या बंधन से छुड़ाना । उ०—रिसि करि खीझि खीझि लट झटकति श्याम भुजनि छटकाए दीन्ही ।—सूर० । ३ पकड़ या दवाव में रहनेवाली वस्तु को वलपूर्वक अलग करना ।

छटपट—संज्ञा पुं० [अनु०] छटपटाने की क्रिया ।

†वि० चचल । चपल । नटखट ।

छटपटाना—क्रि० अ० [अनु०] बंधन या पीड़ा के कारण हाथ पैर फटकारना । तड़फड़ाना । २ बेचैन होना । व्याकुल होना । ३ किसी वस्तु के लिये व्याकुल होना ।

छटपटी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घबराहट । बेचैनी । २ आकुलता । गहरी उत्कठा ।

छटाँक—संज्ञा स्त्री० [हिं० छ+टाँक ?] एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है ।

छटा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ दीप्ति । प्रकाश । २ शोभा । सौंदर्य । ३ बिजली ।

मुहा०—छटा हुआ=चतुर । बदमाश ।

छठ—संज्ञा स्त्री० [स० षष्ठी] पक्ष की छठी तिथि ।

छठा—वि० [सं० षष्ठ] [स्त्री० छठी] जो क्रम में पाँचवें और सातवें के बीच में हो । पाँचवें के बाद का ।

छठी—संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] १ जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार । २ जन्म का छठा दिन ।

मुहा०—छठी का दूध याद आना=शेखी भूल जाना । बहुत हैरानी या कष्ट अनुभव होना ।

छड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] धातु या लकड़ी आदि का लंबा, पतला, बड़ा टुकड़ा ।

छड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० छड़] पैर में पहनने का गहना ।

वि० [हिं० √छाँड़ ?] अकेला । एकाएकी ।

छड़िया—संज्ञा पु० [हिं० छड़ी+इया (प्रत्य०)] दरबान ।

छड़ी—सं० स्त्री० [हिं० छड़] १ सीधी पतली लकड़ी । पतली लाठी । २ झडी जिसे मुसलमान पीरों की मजार पर चढ़ाते हैं ।

छड़ीदार—संज्ञा पुं० [हिं० छड़ी+फा० दार (प्रत्य०) द्वारपाल । दरबान । द्वाररक्षक ।

छत—संज्ञा स्त्री० [सं० छत्र] १ घर की दीवारों के ऊपर चूने, कंकड़ से बनाया हुआ फर्श । पाटन । २ ऊपर का खुला हुआ कोठा । ३ छत के ऊपर तानने की चादर । चाँदनी ।

संज्ञा पुं० [स० क्षत] घाव । जख्म । उ०—सुनि मृदु वचन भूप हिय सोकू । ससि कर छुअत विकल जिमि कोकू ।—सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ।—मानस ।

(u)क्रि० वि० [सं० सत] होते हुए । रहते हुए । आछत । उ०—गनती गनिवे तैं

रहे छतहू अछत समान। अलि अब ए तिथि औम लौं परे रही तन प्रान।—बिहारी०।

छतगीर, छतगीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छत +फा० गीर] ऊपर तानी हुई चाँदनी।

छतज—वि० [सं० क्षत+ज] लाल। रक्त वर्ण। उ०—छतज नयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला।—मानस।

छतनाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० छाता] पत्तों का बना हुआ छाता।

छतनार†—वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] छाते की तरह फैला हुआ। दूर तक फैला हुआ। विस्तृत (पेड़)।

छतरी—संज्ञा स्त्री० [सं० छत्र] १ छाता। २ एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता जिसके सहारे आजकल सैनिक लोग हवाई जहाजों से जमीन पर उतरते हैं।

यौ०—छतरी फौज=छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना।

३ मंडप। ४. समाधि के स्थान पर बना हुआ छज्जेदार मडप। ५ कबूतरों के बैठने के लिये बाँस की फट्टियों का टट्टर। ६ खुमी। ७ डोली के ऊपर की छत। ८ बहली के ऊपर की छत।

छतिया†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "छाती"। उ०—सुनहु श्याम तुमकों ससि डरपत है कहत ए सरन तुम्हारी। सूरश्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतिया महतारी।—सूर०।

छतियाना—क्रि० स० [हिं० छाती से ना० धा०] १ छाती के पास ले जाना। २ बंदूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना।

छतिवन—संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्णी] एक पेड़। सप्तपर्णी।

छतीसा—वि० [हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १ चतुर। सयाना। २ धूर्त।

छत्तर‡—संज्ञा पुं० १ दे० "छत्र"। २ दे० "सत्र"।

छत्ता—संज्ञा पुं० [सं० छत्र] † १. छाता। छतरी। २ पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो। ३ मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर। ४ छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु। छतनारी चीज। चकत्ता। ५ कमल का बीजकोश।

छत्तीस—वि० [सं० षट्+त्रिंश] १ तीस और छ। ३६ की संख्या। २. विमुख। उदासीन।

छत्तीसी—वि० [हिं० छत्तीस] १ छलछंद में कुशल। २ छिनाल।

छत्तेदार—वि० [हिं० छत्ता+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसपर पटाव या छत हो। २. मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

छत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छाता। छतरी। २ राजाओं का रुपहला या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।

यौ०—छत्रछाँह, छत्रछाया=रक्षा। शरण।

३ खुमी। भूफोड़। कुकुरमुत्ता।

छत्रक—संज्ञा पुं० (सं०) १ खुमी। कुकुरमुत्ता। उ०—तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।—मानस। २. तालमखाने की जाति का एक पौधा। ३. मंदिर। मंडप। देवमंदिर। ४ शहद का छत्ता।

छत्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो।

छत्रधारी—वि० [सं० छत्रधारिन्] १ छत्र धारण करनेवाला। २ छत्रधारी राजा। ३. राजा।

छत्रनास—संज्ञा पुं० [सं० छत्र+नाश] क्षत्रियों का संहार। छत्रभंग। उ०—बावन है दर्दै है नृसिंह प्रहलादै राख्यो, कौनो है द्विजेस जाने छिति छत्रनास है।—शृंगार०।

छत्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

छत्रपनⓅ—वि० [सं० क्षत्रिय+पन] क्षत्रियत्व।

छत्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों में अधम। उ०—छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई॥—मानस।

छत्रभंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का नाश। सुचारु शासन का विनाश। अराजकता। २ ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है।

छत्री—वि० [सं० छत्रिन्] छत्रयुक्त।

संज्ञा पुं० ‡ दे० "क्षत्रिय"।

छद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढक लेनेवाली वस्तु। आवरण, जैसे—रदच्छद। २ खोल। ३ छाल। ४ पक्ष। चिड़ियों का पंख। ५ पत्ता।

छदन—संज्ञा पुं० दे० "छद"।

छदाम—संज्ञा पुं० [हिं० छ +दाम] पैसे का चौथाई भाग।

छद्म—संज्ञा पुं० [सं० छद्मन्] १ छिपाव। गोपन। २. ब्याज। बहाना। हीला। ३. छल। कपट, जैसे—छद्मवेश।

छद्मवेश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० छद्मवेशी] बदला हुआ वेश। कृत्रिम वेश।

छद्मी—वि० [सं० छद्मिन्] [स्त्री० छद्मिनी] १. बनावटी वेश धारण करनेवाला। २ छली। कपटी।

छन—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

छनक—संज्ञा पुं० [अनु०] छन छन करने का शब्द। झनझनाहट। झनकार।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ छनकने की क्रिया या भाव। २ किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया। भड़क।

Ⓟसंज्ञा पुं० [हिं० छन+एक] एक क्षण।

छनकमनक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ गहनों की झंकार। २ सजधज। ३ ठसक। ४ दे० "छगनमगन"।

छनकना—क्रि० अ० [हिं० छनक] १. किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन छन शब्द करके उड़ जाना। २ Ⓟझनकार करना। बजना। ३ किसी बात से एकाएक चौंकना या भाग जाना। एकबारगी दूर हटना। भड़कना।

क्रि० अ० [अनु०] चौकन्ना होकर भागना।

छनकाना—क्रि० स० [हिं० छनकना का स० रूप] छन छन शब्द करना।

क्रि० स० चौंकाना। चौकन्ना करना। भड़काना।

छनछनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। २. खौलते हुए घी, तेल आदि में किसी गीली वस्तु के पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। ३. झनझनाना। झनकार होना। ४ चिढ़ चिढ़ाना। चिढ़ पड़ना।

क्रि० स० १ छन छन का शब्द उत्पन्न करना। २ झनकार करना।

छनछबिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षण+छवि] बिजली।

छनदाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षणदा"। उ०—तनु तनु करे करेज कों अतनु कसाई ल्याइ। छनदा छन छन दाहती लोनो लेह लगाइ।—रससाराश।

छनना—क्रि० अ० [सं० क्षरण] १ किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल सीठी आदि ऊपर रह

जाय। छलनी से साफ होना। छाना जाना। २ किसी नशे का पिया जाना।

मुहा०—गहरी छनना = खूब मेल-जोल होना। गाढ़ी मैत्री होना।

३. लटाई होना। ४ बहुत से छेदों से युक्त होना। छलनी हो जाना। ५. विंध जाना। अनेक स्थानों पर चोट खाना। ६ छानवीन होना। निर्णय होना। ७ कड़ाह में से पूरी, पकवान आदि निकलना।

छनरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षण+रुचि] बिजली। उ०—सालू रँग सँग लसति सुतन रुचि छनरुचि सरि चमकति निसिमुख में।—छंदार्णव।

छनाना—क्रि० स० [हिं० छानना का प्रे० रूप] किसी दूसरे से छानने का काम कराना। भाँग पिलाना।

छनिकⓅ—वि० दे० "क्षणिक"।

संज्ञा पुं० [हिं० छन+एक] क्षण भर।

छन्न—संज्ञा पुं० [अनु०] १. किसी तपी हुई चीज पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द। २ झनकार। ठनकार।

वि०—[सं०] छिपा हुआ। ढका हुआ। अदृश्य। लुप्त।

छन्ना—संज्ञा पुं० [हिं० छानना] वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय। साफी।

छप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पानी में किसी वस्तु के एकबारगी जोर से गिरने का शब्द। २ पानी के छींटों के जोर से पड़ने का शब्द। ३ पानी पर पजे आदि के पटकने से उत्पन्न शब्द।

छपका—संज्ञा पुं० [हिं०√चपक] सिर में पहनने का एक गहना।

संज्ञा पुं० [अनु०] १ पानी का भरपूर छींटा। २ पानी में हाथ पैर मारने की क्रिया।

छपकना—क्रि० स० [छप से अनु०] १ किसी तेज हथियार से किसी पदार्थ को एक ही वार में काट डालना। २ पतली लचीली छड़ी से मारना। ३ किसी घात में छिप रहना।

छपटना—क्रि० अ० [हिं० चिपटना] किसी वस्तु से लगना या सटना। चिपकना। चिपटना।

छपछप—संज्ञा पुं० [अनु०] पानी पर प्रहार से उत्पन्न शब्द।

वि०—ऊपर ही ऊपर का (आघात, वार आदि)। हलका।

छपछपाना—क्रि० अ० [अनु०] पानी पर कोई वस्तु पटककर छपछप शब्द करना।

क्रि० स० [अनु०] पानी में छपछप शब्द उत्पन्न करना।

छपद—संज्ञा पुं० [सं० षट्पद] भौंरा। उ०—उलटि तहाँ पग धारिए जासों मन मान्यौ। छपद कंज तजि बेल सों लटि प्रेम न जान्यौ—सूर०।

छपन†—वि० [हिं० छिपना] गुप्त। गायब।

संज्ञा पुं० [पुं० क्षपण] नाश। संहार।

वि० विनाशक। संहार करनेवाला।

छपना—क्रि० अ० [हिं० चपना=दवना] १. छापा जाना। चिह्न या दाव पड़ना। २ चिह्नित होना। अंकित होना। ३. यत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना। ४ शीतला का टीका लगना।

†क्रि० अ० दे० "छिपना"।

छपरखट, छपरखाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर+खाट] मसहरीदार पलग।

छपरबंद—वि० दे० "छप्परबंद"।

छपरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर] झोंपड़ी।

छपवाना—क्रि० स० दे० "छपाना"।

छपवैया—संज्ञा पुं० [हिं०√छाप+वैया (प्रत्य०)] १ छापनेवाला। छपवानेवाला। २ मुद्रित करनेवाला।

छपाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा"।

छपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छप +आई (प्रत्य०)]१ छापने का काम। मुद्रण। अंकन। २ छापने का ढग। ३ छापने की मजदूरी।

छपाकर—संज्ञा पुं० दे० "क्षपाकर"।

छपाका—संज्ञा पुं० [अनु०] १ पानी पर किसी वस्तु के जोर से पड़ने का शब्द। २ जोर से उछाला हुआ पानी का छींटा।

छपाचर—वि० [सं० क्षपाकर] १ निशाचर। राक्षस। २ चद्रमा।

छपाना—क्रि० स० [हिं० "छापना" का प्रे० रूप] छापने का काम दूसरे से कराना।

Ⓟक्रि० स० दे० "छिपाना"।

छपानाथ—संज्ञा पुं० दे० "क्षपानाथ"।

छप्पय—संज्ञा पुं० [सं० षट्पद] एक मात्रिक छंद जिसमें छ चरण होते हैं एव कुल १४८ मात्राएँ होती हैं। इसके पहले चार चरणों में चौबीस मात्राओंवाले रोला के चार चरण होते हैं जिनके बाद छब्बीस मात्राओं के उल्लाला के दो चरण रखे जाते हैं। श्री जगन्नाथप्रसाद "भानु" ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "छंदप्रभाकर" में छप्पय के ७१ भेदों को इसी छंद में इस प्रकार गिनाया है—

"अजय विजय बल कर्ण वीर वेताल विहकर। मर्कट हरिहर ब्रह्म इंद्र चदन जु शुभकर। खानसिंह शार्दूल कच्छ कोकिल खर कुंजर। मदन मत्स्य ताटक शेष सारंग पयोधर। शुभ कमल कंद वारन शलभ भवन अजगम सर सरस। गणि समर सु सारस मेरु कहि मकर अली सिद्धिहि सरस। बुद्धि सुकरतल और सु कमलाकार धवल वर। मलय सुध्रुव गनि कनक कृष्ण रंजन मेघा भर। गिद्ध गरुड़ शशि सूर्य शल्य पुनि नवल मनोहर। गगन रत्न नर हीर अमर शेखर शुभ गोहर। जानिए सुकुसुमाकर पतिहिं दीप शख बसु शब्द मुनि। छप्पय सुभेद शशि मुनि वरन गुरु लघु घट वढ रीति गुनि॥"

जिस छप्पय में २८ मात्राओं के चरणों-वाले उल्लाला के दो पद जोड़े जाते हैं उसकी कुल मात्राएँ १५२ होती हैं। नाभादास जी के छप्पय प्रसिद्ध हैं।

छप्पर—संज्ञा पुं० [हिं० छोपना] १. फूस आदि को छाजन जो मकान के ऊपर छाई जाती है। छाजन। छान। २ झोंपड़ी।

मुहा०—छप्पर पर रखना=छोड़ देना। चर्चा न करना। जिक्र न करना। छप्पर फाड़कर देना=अनायास देना। अकस्मात् देना।

३ छोटा ताल या गड्ढा। पोखर।

छप्परबंद—वि० [हिं० छप्पर+फा० बंद] १ जो छप्पर या झोंपड़ा वनाकर रहता हो। २ छप्पर छाने या वनानेवाला।

छबड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] टोकरा। डला। झावा।

छबतखतीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० छवि+अ० तक्तीय] शरीर की सुंदर वनावट।

छबि—संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।

छबिमान—वि० दे० "छबीला"।

छबीला—वि० [हिं० छवि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छबीली] शोभायुक्त। सुंदर।

छबीली—वि० हिं० [छबीला] छविवाली। उ०—अनु रे छबीली तो छविलागी। नैन गुलाल कत सँग जागी।—पदमावत।

छबुंदा—संज्ञा पुं० [हिं० छ +बूंद] एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

छम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ घुँघरू बजने का शब्द । २. पानी बरसने का शब्द ।
(पु)संज्ञा पुं० दे० "क्षम" ।
छमकना—क्रि० अ० [हिं० छम+क (प्रत्य०)] १ घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना डोलना । २ गहनों की झनकार करना । ३ इतराना ।
छमछम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ नूपुर, पायल घुँघरू आदि बजने का शब्द । २ पानी बरसने का शब्द ।
क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ ।
छमछमाना—क्रि० अ० स० [अनु०] १ छमछम शब्द करना । २ छमछम शब्द करके चलना ।
छमत—संज्ञा पुं० [हिं० छ +सं० मत] छ दर्शनों के मत । उ०—छमत विमत, न पुरान मत, एक मत नेति नेति नेति नित निगम करत ।—विनय० ।
छमना†—क्रि० [स०√क्षम] क्षमा करना ।
छमसी—दे० "छमासी" ।
छमा, छमाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा" ।
छमासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छ+मास] मृत्यु के छ महीने बाद होनेवाला श्राद्ध । अर्धवार्षिक श्राद्ध ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० छ +माशा] १ छ माशे की तौल । २ छ. माशे का बटखरा ।
छमाछमि—क्रि० वि० [अनु०] लगातार छमछम शब्द के साथ ।
छमासील—वि० दे० "क्षमाशील" । उ०—छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ।—मानस ।
छमुख—संज्ञा पुं० [हिं० छ +मुख] षडानन ।
छमैया—वि० [हिं० छमा+ऐया (प्रत्य०)] दे० "क्षमाशील" । उ०—जहाँ हित, स्वामि, न संग सखा, वनिता सुत बंधु न, मापु न मैया । कान्ह गिरा मन के जन के अपराध सबै छल छाँडि छमैया ।—कविता० ।
छय(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "क्षय" ।
छयना(पु)—क्रि० अ० [हिं० छय] क्षय को प्राप्त होना । छीजना । नष्ट होना ।
छर—संज्ञा पुं० दे० "छल" ।
संज्ञा पुं० दे० "क्षर" ।
मुहा०—छर जाना=भूत इत्यादि से डर जाना ।
छरकना(पु)—क्रि० अ० दे० "छलकना" ।
छरछंद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "छलछंद" ।
छरछर—संज्ञा पुं० [हिं० छर] कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द । २ पतली लचीली छड़ी से मारने का शब्द । सटसट । उ०—सुन री मैया मेरो भैया कितनो गोरस नास्यो । जब रज सों कर गाढ़ो बाँधे छर छर मारी साटी ।—सूर० ।
छरछराना—क्रि० अ० [सं० क्षार] [संज्ञा छरछराहट] नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में उत्पन्न होने-वाली दुःखद अनुभूति ।
छरना—क्रि० अ० [स० क्षरण] १ चूना । टपकना । २ चकचकाना । चुचुवाना । ३ अत्यधिक भयभीत होना । भय से पागल होना (भूत प्रेत आदि के) । ४. दूर होना । न रहना । उ०—अब हरि मुरली अधर धरत । खग मोहे, मृगयूथ भुलाने, निरखि मदन छवि छरत ।—सूर० ।
†(पु) क्रि० स० [हिं० छलना] १ छलना । धोखा देना । ठगना । २ मोहित करना ।
छरभार(पु)†—संज्ञा पुं० [?+भार] १ प्रबंध या कार्य का बोझ । कार्यभार । २ झंझट । बखेड़ा ।
छरहरा—वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी] १ इकहरे बदन का । हलके शरीर का । २ फुरतीला । चुस्त ।
छरा—संज्ञा पुं० [स० शर] १ छड़ा । २ लर । लड़ी । ३ रस्सी । ४ नारा । इजारबंद । नीवी ।
छरिंदा†—वि० दे० "छरीदा" ।
छरिया—संज्ञा पुं० [हिं० छड़ी] छड़ीदार । चोबदार ।
छरी†(पु)—संज्ञा स्त्री०, वि० १ दे० "छड़ी"। २ दे० "छली"
छरीदा—वि० [अ० जरीद.] १ अकेला । २ जिसके पास बोझ या असबाब न हो (यात्री) ।
छरीला—संज्ञा पुं० [सं० शैलेय] काई की तरह का एक पौधा जिसमें केसर या फूल नहीं लगते । पथरफूल । बुढ़ना ।
छरोर—संज्ञा पुं० [स०√क्षुर] चमड़े का छिलना । खरौंच । उ०—पैहौं छछोर जौ पातन को फटिहैं पट क्यों हूँ तौं हौ न डरैहौं ।—शृंगार० ।
छरोरा†—संज्ञा पुं० दे० "खरौंच" ।
छर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] वमन । कै करना ।
छर्दि—संज्ञा स्त्री० [स०] वमन । कै । उलटी ।
छर्रा—संज्ञा पुं० [अनु० छरछर] १. छोटी कंकड़ी । २ लोहे या सीसे के छोटे छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाए जाते हैं ।
छलंग—संज्ञा पुं० दे० "छलाँग" ।
छल—संज्ञा पु० [स०] १ वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिये किया जाता है । २ व्याज । मिस । बहाना । ३ धूर्तता । वंचना । ठगपन । ४ कपट । धोखा ।
छलक, छलकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० छल-कना] छलकने की क्रिया या भाव । किसी बरतन से द्रव पदार्थ के अंश का रह रह कर उछलते हुए बाहर गिरना ।
छलकना—क्रि० अ० [सं०√छल्] १. किसी तरल चीज का बरतन से उछलकर बाहर गिरना । २ उमड़ना ।
छलकाना—क्रि० स० [हिं० छलकना का स० रूप] किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला डुलाकर बाहर उछालना ।
छलकारी—वि० [स० छल+कारिन्] छल करनेवाला । धोखा देनेवाला । उ०—होइ कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि विधि हरि आनौं नृपनारी ।—मानस ।
छलछंद—संज्ञा पुं० [हिं० छल+छंद] [वि० छलछंदी] कपट का जाल । चालबाजी ।
छलछलाना—क्रि० अ० [अनु०]१ छल छल शब्द होना । २ पानी आदि थोडा थोडा करके गिरना । ३ जल से पूर्ण होना ।
छलछिद्र—संज्ञा पुं० [स०] कपट व्यवहार । धूर्तता । धोखेबाजी ।
छलना—क्रि० स० [स० छलन] धोखा देना । भुलावे में डालना । प्रतारित करना ।
संज्ञा स्त्री० [स० छल] धोखा ।
छलनी—संज्ञा स्त्री० [स० चालनी] आटा चालने का बरतन । चलनी ।
मुहा०—छलनी हो जाना=किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना । कलेजा छलनी होना=दुःख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना ।
छलहाई(पु)†—वि० स्त्री० [सं० छल+हाई (प्रत्य०)] छली । कपटी । चालबाज ।
छलाँग—संज्ञा स्त्री० [?] कुदान । फलाँग । चौकड़ी ।
छला(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "छल्ला" ।
छलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० छल+आई (प्रत्य०)] छल का भाव । कपट ।
छलाना—क्रि० स० [हिं० छलना का प्रे० रूप] धोखा दिलाना । प्रतारित कराना ।

छलावा—संज्ञा पुं० [हिं० छल +आवा (प्रत्य०)] १. भूत प्रेत आदि की छाया जो दिखाई पड़ते ही अदृश्य हो जाया करती है। २ वह प्रकाश या लुक जो दलदलों के किनारे या जंगलों में बिखरी हुई हड्डियों के भीतर छिपे भास्वर या फासफोरस के जल उठने से दिखाई पड़ता और बुझते ही गायब हो जाता है। अगियाबैताल। उल्कामुख प्रेत। ३ चपल। चंचल। शोख। ४. इंद्रजाल। जादू।

छलिया, छली—वि० [सं० छलिन्] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।

छल्ला—संज्ञा पुं० [सं० छल्ली = लता] १ सोने, चाँदी आदि के तार की सादी अँगूठी। २ कोई मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।

छल्लेदार—वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।

छवना†—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छवनी] १ बच्चा। २ सूअर का बच्चा। ३. किसी पशु का बच्चा।

छवाⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शावक] किसी पशु का बच्चा। बछड़ा। उ०—तैं रनकेहरि के हरि के बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से। —हनु०।

संज्ञा पुं० [देश०] एँड़ी। उ०—जितन चढ़ो उरजनि अचल, कटि कटि-केहरि वेस। श्रुति-परसन तिय-दृग चले छवा-छुवन कों केस।—रससाराश।

छवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छा+वाई (प्रत्य०)] १ छाने का काम या भाव। २ छाने की मजदूरी।

छवाना—क्रि० स० [हिं० छाना का प्रे० रूप] छाने का काम दूसरे से कराना।

छवि—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० छबीला] १ शोभा। सौंदर्य। २ कांति। प्रभा।

छहरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० क्षरण] छितराना।

छहरानाⓅ—क्रि० अ० [सं० क्षरण] १ छितराना। बिखेरना। चारों ओर फैलना। २ फहराना। हवा में उड़ना।

क्रि० स० बिखराना। छितराना।

छहरीला†—वि० [हिं० छरहरा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छहरीली]। छितरानेवाला। बिखरनेवाला।

छहियाँ†—संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

छाँक—संज्ञा पुं० [फा० चाक] खंड। टुकड़ा। भाग।

छाँगना—क्रि० स० [सं० छिन्न+करण] डाल टहनी आदि काटकर अलग करना।

छाँगुर—संज्ञा पुं० [हिं० छ +अंगुल] वह मनुष्य जिसके पंजे में छ उँगलियाँ हों।

छाँछ—संज्ञा स्त्री० [सं० छच्छिका] दे० "छाछ"।

छाँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँटना] १ छाँटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढंग। २ कतरन। ३ अलग की हुई निकम्मी वस्तु।

†संज्ञा स्त्री० [सं० छर्दि] वमन। कै।

छाँट-छिड़का—संज्ञा पुं० [हिं० छींटा+छिड़काव] बहुत हलकी और थोड़ी वर्षा।

छाँटना—क्रि० स० [सं० √छिद् के 'छिनत्ति' "छिंते" आदि रूपों से] १ छिन्न करना। काटकर अलग करना। २ किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिये काटना या कतरना। ३ अनाज में से कन या भूसी कूट-फटकारकर अलग करना। ४ लेने के लिये चुनना या निकालने के लिये पृथक् करना। ५ दूर करना। हटाना। ६ साफ करना। ७ किसी वस्तु का कुछ अंश निकालकर उसे छोटा या संक्षिप्त करना। ८ अलग या दूर रखना। ९ अनावश्यक पांडित्य दिखाना।

छाँटा—संज्ञा पुं० [हिं० √छाँट] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २ किसी को छल से अलग करना।

मुहा०—छाँटा देना = किसी छल से साथ या मंडली से अलग करना।

छाँड़नाⓅ†—क्रि० स० दे० "छोड़ना"।

छाँद—संज्ञा स्त्री० [सं० छंद = बंधन] चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी। नोई।

छाँदना—क्रि० स० [सं० छंदन] १ रस्सी आदि से बाँधना। जकड़ना। कसना। २ घोड़े या गधे के पिछले पैरों को एक दूसरे से सटाकर बाँध देना।

छाँदा—संज्ञा पुं० [हिं० √छाँद] १. वह भोजन जो ज्योनार या रसोईघर आदि से अपने घर लाया जाय। परोसा। २ हिस्सा। भाग। ३ कड़ाह प्रसाद।

छांदोग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सामवेद का एक ब्राह्मण। २ छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

छाँव—संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

छाँवड़ाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छाँवड़ी, छौंड़ी] १ जानवर का बच्चा। छौना। २ छोटा बच्चा। बालक।

छाँह—संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] १. वह स्थान जहाँ आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़ती हो। छाया। साया। २. ऊपर से छाया हुआ स्थान। शरण। सरक्षा। ३ छाया। परछाईं। ४ बचाव या निर्वाह का स्थान।

मुहा०—छाँह न छूने देना = पास न फटकने देना। निकट तक न आने देना। छाँह बचाना = दूर दूर रहना। पास न जाना।

५ प्रतिबिंब। ६ भूतप्रेत आदि का प्रभाव।

छाँहगीर—संज्ञा पुं० [हिं० छाँह+फा० गीर] १ राजछत्र। २ दर्पण। आईना।

छाउँⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

छाक—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छक ?] १ तृप्ति। इच्छापूर्ति। २ वह भोजन जो काम करनेवाले दोपहर को करते हैं। दुपहरिया। उ०—बलदाऊ देखियत दूरि तें आवनि छाक पठाई मेरी मैया।—श्रीकृष्णगीता०। ३ नशा। मस्ती।

छाकनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० छकना] १ खा-पीकर तृप्त होना। अघाना। अफरना। २ नशा पीकर मस्त होना।

क्रि० अ० [हिं० छकना] हैरान होना।

छाग—संज्ञा पुं० [सं०] बकरा।

छागल—संज्ञा पुं० [सं०] १ बकरा। २ बकरे की खाल की बनी हुई चीज।

संज्ञा स्त्री० [हिं० साँकल] पैर का एक गहना। झाँझन।

छाछ, छाछी—संज्ञा स्त्री० [सं० छच्छिका] वह पनीला दही या दूध जिसका घी या मक्खन निकाल लिया गया हो। मट्ठा। मही। उ०—छाछी को ललात जेते राम-नाम के प्रसाद, खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है।—कविता०।

छाज—संज्ञा पुं० [सं० छाद] १ अनाज फटकने का सींक या बाँस की खपचियों का बना पात्र। सूप। २ छाजन। छप्पर। ३ छज्जा।

संज्ञा पुं० [हिं० √छज] १ छजने की क्रिया या भाव। २ सजावट। सज्जा। साज।

छाजन—संज्ञा पुं० [सं० छादन] आच्छादन। वस्त्र। कपड़ा।

यौ०—भोजन छाजन = खाना कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० १ छप्पर। छान। खपरैल। २ छाने का काम या ढग। छपाई।

छाजना—क्रि० अ० [सं० छादन] [वि० छाजित] १ शोभा देना। अच्छा लगना। भला लगना। फबना। २ सुशोभित होना।

छाजा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "छज्जा"।

छात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "छाता"।

छाता—संज्ञा पु० [सं० छत्र] १ मेंह, धूप आदि से बचने के लिये काम में लाया जानेवाला आच्छादन जो लोहे, बाँस आदि की तीलियों पर कपड़ा या पत्ता चढ़ाकर बनाया जाता है। २ इसी प्रकार का बड़ा आच्छादन। बड़ी छतरी।

२ दे० "छतरी"। ३ खुमी। ४ चौड़ी छाती। ५ वक्षस्थल की चौड़ाई का नाप।

छाती—संज्ञा स्त्री० [सं० छादिन्] १ हड्डी की ठठरियों का पञ्जा जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है। सीना। वक्ष स्थल। २ स्तन। कुच।

मुहा०—छाती पत्थर की करना = भारी दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। छाती पर मूँग या कोदो दलना = किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। छाती पर पत्थर रखना = दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। छाती पर साँप लोटना या फिरना = (१) दुःख से कलेजा दहल जाना। मानसिक-व्यथा होना। (२) ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना। जलन होना। छाती पीटना = दुःख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। छाती फटना = दुःख से हृदय व्यथित होना। अत्यंत संताप होना। छाती से लगाना = आलिंगन करना। गले लगाना। वज्र की छाती = ऐसा कठोर हृदय जो दुःख सह सके। सहिष्णु हृदय।

२ कलेजा। हृदय। मन। जी।

मुहा०—छाती जलना = (१) अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन मालूम होना। (२) शोक से हृदय व्यथित होना। संताप होना। (३) डाह होना। जलन होना। छाती जुड़ाना = दे० "छाती ठंढी करना"। छाती ठंढी करना = चित्त शांत और प्रफुल्ल करना। मन की अभिलाषा पूर्ण करना। छाती धड़कना = खटके या डर से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना। जी दहलना।

३ स्तन। कुच। ४ हिम्मत। साहस।

छात्र—संज्ञा पु० [सं०] शिष्य। चेला। विद्यार्थी। पढ़नेवाला। सीखनेवाला।

छात्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास के लिये सहायतार्थ मिला करता है। वजीफा।

छात्रालय—संज्ञा पुं० [सं०] विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस।

छाद्मिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो भेष बदले हो। २ मक्कार। ढोंगी। ३ बहुरूपिया।

छादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० छादित] १ छाने या ढकने का काम। २. वह जिससे छाया या ढका जाय। आवरण। आच्छादन। ३ छिपाव। ४ वस्त्र।

छान—संज्ञा स्त्री० [सं० छादन] छप्पर।

छानना—क्रि० स० [सं० चालन] १ चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसमें उसका कूड़ा-करकट निकल जाय। २ छाँटना। बिलगाना। ३ जाँचना। पड़ताल-लना। ४ ढूँढना। अनुसंधान करना। तलाश करना। ५ भेदकर पार करना। ६ नशा पीना।

क्रि० स० दे० "छादना"।

छानबीन—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छान + √बीन] १ पूर्ण अनुसंधान या अन्वेषण। जाँच पड़ताल। गहरी खोज। २ पूर्ण विवेचना। विस्तृत विचार।

छाना—क्रि० स० [सं० छादन] १ किसी वस्तु पर कोई दूसरी वस्तु इस प्रकार फैलाना जिसमें वह पूरी ढक जाय। आच्छादित करना। २ पानी, धूप से बचाव के लिये किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना। ३ बिछाना। फैलाना। ४ शरण में लेना।

क्रि० अ० १ फैलना। पसरना। बिछ जाना। २ डेरा डालना। रहना।

छानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] घास-फूस का छाजन।

छाप—संज्ञा स्त्री० [सं० √चप्] १. वह चिह्न जो छापने में पड़ता है। २ मुहर का चिह्न। मुद्रा। ३ शंख चक्र आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से अंकित कराते हैं। मुद्रा। ४ वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ रहता है। ठप्पा। ५ कवियों का उपनाम।

छापना—क्रि० स० [हिं० छाप] १ स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। २. किसी साँचे को दबाकर, उसपर के खुदे या उभरे हुए चिह्नों की आकृति चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना। मुद्रित करना। अंकित करना। ३ कागज आदि को छापे की कल में दबाकर उसपर अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रित करना।

छापा—संज्ञा पुं० [हिं० छाप] साँचा जिसपर गीली स्याही आदि पोतकर उस-पर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा। २ मुहर। मुद्रा। ३ ठप्पे या मुहर से दबाकर डाला हुआ चिह्न या अक्षर। ४ पंजे का वह चिह्न जो शुभ अवसरों पर हलदी आदि से छापकर (दीवार, कपड़े आदि पर) डाला जाता है। ५ दुश्मन पर अचानक किया जाने-वाला हमला। ६. रात में सोते हुए या बेखबर लोगों पर सहसा आक्रमण। ७ किसी अवैधानिक कार्यवाही या वस्तु को पकड़ने के लिये पुलिस द्वारा एकाएक किया जानेवाला हमला।

छापाखाना—संज्ञा पुं० [हिं० छापा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ पुस्तक आदि छापी जाती है। मुद्रणालय। प्रेस।

छाबड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह दौरी आदि जिसमें खाने पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं। खोंचा। छावा।

छाबड़ीवाला—संज्ञा पुं० [हिं० छाबड़ी + वाला (प्रत्य०)] वह जो छाबड़ी या खोंचे में रखकर खाने पीने की चीजें बेचता हो।

छाम—वि० दे० "क्षाम"। उ०—सौंधरध मग है लख्यो हरितन-ज्योति रसाल। भई छाम परिभाव तें तेहि छवि में परि बाल। —रससाराश।

छामोदरी(पु)—वि० स्त्री० दे० "क्षामोदरी"। उ०—हिय हजार महिला भरी वहै अमानि न स्याम। करति जाति छामोदरी देह छाम तें छाम। —रससारांश।

छायल—संज्ञा पुं० [हिं० छाना] १ स्त्रियों का एक पहनावा। २ एक प्रकार की कुरती। उ०—पुनि बहु चीर आन सब छोरी। सारी कंचुकि लहर पटोरी। फुँदिया और कस-निया राती। छायल बंद लाए गुजराती। —पदमावत। ३ छपा हुआ वस्त्र।

छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उजाले की रुकावट से होनेवाला अँधेरा या साया। २ किसी वस्तु के कारण पड़नेवाली परछाँई। ३ जहाँ धूप की पहुँच न हो। छाँह साया। ४ अंधकार। किसी वस्तु का प्रतिबिंब या अक्स। ६. किसी वस्तु अथवा बात का सामान्य या क्षीण आभास। ७ अनुकरण। नकल। ८ चित्र का कम प्रकाश या अपेक्षाकृत हलके रंगवाला भाग। ९ चेहरे की कांति या रंग। १० कांति। दीप्ति। ११ भूतप्रेत का प्रभाव। १२ शरण। रक्षा। १३ सूर्य की पत्नी संज्ञा। १४ आर्या छंद का एक भेद।

छायाग्राहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसने समुद्र फाँदते हुए हनुमान जी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था।

छायादान—संज्ञा पुं० [सं०] घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाईं देखकर दिया जानेवाला दान।

छायापथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाशगंगा। २ देवपथ।

छायापुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि में बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है।

छायावाद—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदी में प्रधानतया सन् १९१८ से १९३६ तक प्राप्त होनेवाली भावुकता और कल्पना प्रधान एक स्वच्छंद काव्यप्रवृत्ति। "रहस्यवाद" उक्त काव्य प्रवृत्ति की ही एक विशिष्ट धारा है जिसमें अज्ञेय के प्रति जिज्ञासा मुख्य है।

छायावादी—वि० [सं०] १ छायावाद के सिद्धांत पर कविता करनेवाला कवि। २ छायावाद का पक्षपाती।

छार—संज्ञा पुं० [सं० क्षार] १ जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से धुली हुई धातुओं की राख का नमक। क्षार। २ खारी नमक। ३ खारी पदार्थ। ४ भस्म। राख। खाक।

यौ०—छार खार करना = नष्टभ्रष्ट करना।

५ धूल। गर्द। रेणु।

छाल—संज्ञा स्त्री० [सं० छल्लि या प्रा० छल्ली] पेड़ों के ऊपर का कड़ा छिलका। वल्कल।

छालटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाल+टी (प्रत्य०)] छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।

छालना—क्रि० स० [सं० चालन] १. छानना। २ छलनी की तरह छिद्रमय करना।

† क्रि० स० [सं० √चल्] धोना।

छाला—संज्ञा स्त्री० [सं० छाल] छाल या चमड़ा। जिल्द। जैसे—मृगछाला।

संज्ञा पुं० [सं० क्षार] किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप रहता है। फफोला।

छालित(पु)—वि० [सं० क्षालित] धोया हुआ।

छालिया, छाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाला+ई, इया (प्रत्य०)] सुपारी।

छावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] १ पड़ाव। डेरा। २ सेना के ठहरने का स्थान। सैनिकों की बस्ती।

छावरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "छौना"।

छावा—संज्ञा पुं० [सं० शावक] १ बच्चा। २ पुत्र। बेटा। ३ जवान हाथी।

छाहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० छाया] छाया। उ०—छाहन्ते छाहर भावहि बाहर, गालिम गएए ण पारीआ।

छिउँकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिउटी] १ एक प्रकार की छोटी चींटी। २. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। ३ लकड़ी उठाने के काम में आनेवाला एक औजार।

छिकना—क्रि० अ० [हिं० छेंकना] छेंका या घेरा जाना।

छिछ(पु)—संज्ञा स्त्री० [प्रा० छिछोली] छींटा। धार।

छिडाना—क्रि० स० [हिं० छीनना] जबरदस्ती ले लेना। छीनना। उ०—स्याम सखन सों कहेउ टेर दै घेरौ सब अब जाय। बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटकी लेहु छिंडाय। —सूर०।

छि—अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द।

छिउला—संज्ञा पुं० [सं० क्षुप] छोटा पेड़। पौधा।

छिकनी—संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] नकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती।

छिगुनियाँ—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्रांगुलि] दे० "छिगुनी"।

छिगुनी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र+अँगुली] सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका। उ०—गोरी छिगुनी नख अरुन छला स्याम छवि देर। लहत मुकति रति छिनक यह नैन त्रिवेनी सेइ। —बिहारी०।

छिच्छ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "छिछ"।

छिछकारना†—क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

छिछड़ा—संज्ञा पुं० दे० "छीछड़ा"।

छिछला—वि० [हिं० छूछा+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० छिछली] पानी की सतह जो गहरी न हो। उथला। जो गभीर न हो।

छिछोरपन, छिछोरापन—संज्ञा पुं० [हिं० छिछोरा] छिछोरा होने का भाव। क्षुद्रता। ओछापन। नीचता।

छिछोरा—वि० [हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी] क्षुद्र। ओछा।

छिजाना—क्रि० स० [हिं० छीजना का प्रे० रूप] छीजने का काम कराना।

† क्रि० अ० दे० "छीजना"।

छिटकना—क्रि० अ० [सं० क्षिप्त] १ इधर उधर फैलना। चारों ओर बिखरना। २ प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलना।

छिटकाना—क्रि० स० [हिं० छिटकना का स० रूप] चारों ओर फैलाना। बिखराना।

छिटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्तिका] छींट। छींटा।

छिड़कना—क्रि० स० [हिं० छींटा+करना] १ द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैलकर इधर उधर पड़ें। २ भिगोने, तर करने, सुगंधित करने या रँगने आदि के लिये किसी वस्तु पर जल, इत्र, रंग आदि बिखराना। ३ न्योछावर करना, जैसे—जान छिड़कना। (स्त्रियों का प्रयोग)।

छिड़कवाना—क्रि० स० [हिं० छिड़कना का प्रे० रूप] छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

छिड़का—संज्ञा पुं० दे० "छिड़काव"।

छिड़काई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छिड़क+आई (प्रत्य०)] १ छिड़कने की क्रिया या भाव। छिड़काव। २ छिड़कने की मजदूरी।

छिड़काव—संज्ञा पुं० [हिं० √छिड़क+आव (प्रत्य०)] पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

छिड़ना—क्रि० अ० [हिं० छेड़ना] आरंभ होना। शुरू होना। चल पड़ना।

छितनी—संज्ञा स्त्री० [?] छोटी टोकरी

छितरानी—क्रि० अ० [सं० √छो के 'छ्यति' रूप से या 'छित' से ?] खटों या कणों का

गिरकर इधर उधर फैलना । तितर वितर होना । विखरना ।

क्रि० स० १ खडों या कणों को गिराकर इधर उधर फैलाना । विखराना । छींटना । २ दूर दूर करना । विरल करना ।

छिति(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति" ।

छितिज—सज्ञा पुं० दे० "क्षितिज" ।

छितिपाल(पु)—सज्ञा पुं० [स० क्षिति+पाल] राजा ।

छितिराउ—सज्ञा पुं० [सं० क्षिति+राज] भूपति । राजा । उ०—ज्यों ज्यों पिय पगनत सुनति आसमुद्र छितिराउ । त्यों त्यों गर्वीले दृगनि प्रिया लखति निज पाउ । —रससाराश ।

छितीस(पु)—सज्ञा पु० [क्षितीश] राजा ।

छिदना—क्रि० अ० [स० छेदन] १ छेद से युक्त होना । सुराखदार होना । २ घायल होना । जख्मी होना । ३ चुभना ।

छिदाना—क्रि० स० [हिं० छेदना का प्रे० रूप] १ छेद कराना । २ चुभवाना । धँसवाना ।

छिद्र—सज्ञा पुं० [स०] [वि० छिद्रित] १ छेद । सूराख । २ गड्ढा । विवर । विल । ३ अवकाश । जगह । ४ दोप । त्रुटि । ५ नौ की सख्या ।

छिद्रान्वेषण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० छिद्रान्वेषी] दोप ढूँढना । खुचुर निकालना ।

छिद्रान्वेषी—वि० [सं० छिद्रान्वेषिन्] पराया दोप ढूँढनेवाला ।

छिन(पु)—सज्ञा पुं० दे० "क्षण" ।

छिनकु(पु)—क्रि० वि० [हिं० छिन+एक] एक क्षण । दम भर । थोडी देर ।

छिनकना—क्रि० स० [हिं० छिडकना] नाक का मल जोर से साँस वाहर करके निकालना । सिनकना ।

छिनछवि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० क्षण+छवि] विजली ।

छिनना—क्रि० अ० [स०√चि के 'चिणति' आदि रूपों से] छीन लिया जाना । हरण होना ।

छिनभग(पु)—वि० दे० "क्षणभगुर" ।

छिनरा—वि० दे० [प्रा० छिण्णाल=जार, उपपति] परस्त्रीगामी पुरुप । लपट । वृपल ।

छिनवाना—क्रि० स० [हिं० छीनना का प्रे० रूप] छीनने का काम दूसरे से कराना ।

छिनाना—क्रि० स० दे० "छिनवाना" ।

† क्रि० स० छीनना । हरण करना ।

छिनाल—वि० [छिण्णाली] व्यभिचारिणी । कुलटा ।

छिनाला—सज्ञा पुं० [हिं० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास । व्यभिचार ।

छिन्न—वि० [सं०] जो कटकर अलग हो गया हो । खडित ।

छिन्नभिन्न—वि० [स०] १ कटाकुटा । खडित । टूटा फूटा । २ नष्टभ्रष्ट । ३ अस्तव्यस्त । तितर वितर ।

छिन्नमस्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] तांत्रिकों की एक देवी जो महाविद्याओं में छठी है ।

छिपकली—सज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्रगिलि ?] एक सरीसृप या जतु जो दीवारों आदि पर प्राय दिखाई पडता है । पल्ली । गृहगोधिका । विस्तुइया ।

छिपना—क्रि० अ० [स० क्षपण=गोपन] ओट में होना । ऐसी स्थिति में होना जहाँ से दिखाई न पड़े ।

छिपाना—क्रि० [स० क्षपण=गुप्त रखना] [सज्ञा छिपाव] १ आवरण या ओट में करना । दृष्टि से ओझल करना । २. प्रकट न करना । गुप्त रखना ।

छिपाव—सज्ञा पुं० [हिं० √छिप+आव (प्रत्य०)] छिपाने का भाव । गोपन । दुराव ।

छिप्र(पु)—क्रि० वि० दे० "क्षिप्र" ।

छिमा(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा" ।

छिया—सज्ञा स्त्री० [स० क्षिया] १ घृणित वस्तु । घिनौनी चीज । २ मल । गलीज ।

मुहा०—छिया छरद करना=छी छी करना । घृणित समझना ।

वि० मैला । मलिन । घृणित ।

सज्ञा स्त्री० [हिं० वच्चिया] छोकरी । लडकी ।

छिरकना—क्रि० स० दे० "छिडकना" । उ०—एकादशी एक सखि आई डारयो सुभग अवीर । एक हाथ पीतावर पकरयो छिरकत कुकुम नीर ।—सूर० ।

छिरेटा—सज्ञा पु० [सं० छिलिहिंड] एक प्रकार की छोटी वेल । पातालगारुडी ।

छिलका—सज्ञा पुं० [हिं० छाल] एक परत की खोल जो फलों आदि पर होती है ।

छिलना—क्रि० अ० [हिं० छीलना] १ छिलके का अलग होना । २ ऊपरी चमड़े का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना ।

छिवना(पु)—क्रि० अ० [सं०√छुप्] स्पर्श करना ।

छिहानी†—सज्ञा स्त्री० [?] मरघट । श्मशान ।

छींक—सज्ञा स्त्री० [स० छिक्का] नाक में चुनचुनाहट या खुजलाहट होने पर शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का तेज प्रवाह ।

छींकना—क्रि० अ० [स० छिक्कन] छींक लेना ।

छींका—सज्ञा पुं० [स० शिक्या] १. रस्सी या तार आदि का जाल जो छत में या ऊँचे स्थान पर खाने पीने की चीजें रखने के लिये लटकाया जाता है । छिकहर । २ जालीदार खिड़की या झरोखा । ३ बैलों के मुँह पर चढ़ाया जानेवाला रस्सियों का जाल । ४. झूले का पुल ।

छींट—सज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्त] १ महीन वूँद । जलकण । सीकर । २ वह कपड़ा जिसपर रंगविरग के वेल वूटे छपे हों ।

छींटना—क्रि० स० दे० "छितराना" ।

छींटा—संज्ञा पुं० [सं० क्षिप्त, प्रा० छिप्त] १ द्रव पदार्थ की विखरी या छिटकी हुई वूँद । जलकण । सीकर । २ हलकी वृष्टि । ३ पड़ी हुई वूँद का चिह्न । ४. छोटा दाग । ५ हाथ से विखेरकर वीज वोना । ६ मदक या चडू की एक मात्रा । ७ व्यग्यपूर्ण उक्ति ।

छी—अव्य० [सं० छि] घृणासूचक शब्द ।

मुहा०—छी छी करना=घिनाना । अरुचि या घृणा प्रकट करना ।

छीका—सज्ञा पुं० [स० शिक्य] दे० छींका ।

छीछड़ा—सज्ञा पुं० [सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] मांस का तुच्छ और निकम्मा टुकडा ।

छीछालेदर—सज्ञा स्त्री० [हि० छी छी] फजीहत । दुर्दशा ।

छीज—सज्ञा स्त्री० [हिं० सं० क्षय] घाटा । कमी ।

छीजना—क्रि० अ० [हिं० छीज] क्षीण होना । घटना । कम होना ।

छीटि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० क्षति] १ हानि । घाटा । २ बुराई ।

छीती छान—वि० [स० क्षति+छिन्न] तितर वितर ।

छीन—वि० दे० "क्षीण" ।

छीनना—क्रि० स० [सं० √छिद् के 'छिनत्ति' 'छिंते' रूप से] १ दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना । झपटना । हरण करना ।

२ काटकर अलग करना। ३ चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना। कूटना। रेहना।

छीना झपटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √छीन+झपट] एक दूसरे के हाथ से छीन-झपटकर किसी वस्तु को ले लेने का प्रयत्न।

छीनाा—क्रि० स० दे० "छूना"।

छीप—वि० [सं० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।

संज्ञा स्त्री० [हिं० छाप] १. छाप। चिह्न। दाग। २ सेहुआँ नामक चर्म रोग जिसमें चमड़े की ऊपरी तह छिलकर छोटे बड़े दाग पड़ जाते हैं जो दो प्रकार के होते हैं, एक में खुजली होती है और दूसरे में नहीं।

छीपी—संज्ञा पुं० [हिं० छीप] [स्त्री० छीपिन] कपड़े पर बेलबूटे या छींट छापनेवाला।

छीवर—संज्ञा स्त्री० [हिं० छीप] मोटी छींट। वह कपड़ा जिसपर बेलबूटे हों।

छीमी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] १ फली। २ गाय का स्तन।

छीर—संज्ञा पुं० दे० "क्षीर"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० छोर] कपड़े का वह किनारा जहाँ लंबाई समाप्त हो। छोर। किनारा।

छीरज—संज्ञा पुं० [सं० क्षीरज] १ दही। मक्खन। २ चद्रमा।

छीरप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० क्षीरप] दूध पीता बच्चा।

छीलना—क्रि० अ० [सं० छल्लि या प्रा० छल्ली] १ छिलका या छाल उतारना। २ जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना। ३ गले के भीतर चुनचुनाहट या खुजली उत्पन्न करना, जैसे, सूरन से गला छिल गया।

छीलर—संज्ञा पुं० [हिं० छिछला] छिछला गड्ढा। तलैया। उ०—हरि सागर जिनि बीसरै, छीलर देखि अनत।—कबीर०।

छुँगना(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।

छुँगली(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।

छुआना—क्रि० स० [हिं० छूना का प्रे० रूप] स्पर्श करना। छुलाना।

छुआछूत—संज्ञा स्त्री० [सं० छुप्ताछुप्त] कुछ व्यक्तियों को उनकी जाति, पेशे अथवा धर्म आदि के कारण स्पर्शयोग्य न समझने का विचार। छूतछात का विचार।

छुईमुई—संज्ञा स्त्री० [सं०√छुद्+√मृ] एक प्रकार का पौधा और लता जिसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही मुरझा जाती हैं। लज्जालु। लज्जावती। लजाधुर।

छुगुना—संज्ञा पुं० दे० "घुँघरू"।

छुच्छा—वि० दे० "छूछा"।

छुच्छी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छूछा] १. पतली पोली नली। २ नाक की कील। लौंग।

छुच्छू—वि० [सं० तुच्छ] तुच्छ। तिरस्कार-योग्य।

क्रि० प्र०—बनाना।

छुछ-मछली—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्म, हिं० छूछम+मछली] अंडे से फूटा हुआ मेंढक का बच्चा जिसका रूप मछली का सा होता है।

छुछुंदरि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "छछूँदर"। उ०—धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी॥—मानस।

छुट(पु)—अव्य० [हिं० √छूट] छोड़कर। सिवाय। अतिरिक्त।

छुटकाना(पु)—क्रि० स० [हिं० √छूट] १ छोड़ना। अलग करना। २ साथ न लेना। ३ मुक्त करना। छुटकारा देना। उ०—लागि पुकार तुरत छुटकायो काट्यो बंधन वाको।—सूर०।

छुटकारा—संज्ञा पुं० [हिं० छुटकाना] १ बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति। रिहाई। २ आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा। निस्तार। ३ किसी काम या कार्यभार से मुक्ति।

छुटना(पु)—क्रि० अ० दे० "छूटना"।

छुटपन—संज्ञा पुं० [हिं० छोटा+पन (प्रत्य०)] १ छोटाई। लघुता। २ बचपन। लड़कपन।

छुटाना—क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छुट्टा—वि० [हिं०√छूट] [स्त्री० छुट्टी] १ जो बँधा न हो। २ एकाकी। अकेला।

यौ०—छुट्टा पान—बिना लगा पान। छुट्टे हाथ=खाली हाथ।

३ जिसके साथ कुछ माल असबाब न हो।

छुट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छूट] १ छुटकारा। मुक्ति। रिहाई। २ काम से खाली वक्त। अवकाश। फुरसत। ३ काम बंद रहने का दिन। तातील। ४ चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा।

छुड़वाना—क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाना—क्रि० स० [हिं० छोड़ना] १ बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक् करना। २ दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३ पुती हुई वस्तु को दूर करना। ४ रेल या डाक द्वारा आए हुए सामान को महसूल आदि चुकाकर अपने अधिकार में करना। ५ कार्य या नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ६ किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर कराना। ७ (किसी व्यक्ति को) बंधन, दंड या दायित्व से मुक्त कराना। जेल या हवालात से छुड़ाना। ८ मवेशियों को काँजी हाउस से छुड़ाना।

['छोड़ना' का प्रे० रूप] छोड़ने का काम कराना।

छुत्(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुत्] भूख।

छुतिहा—वि० [हिं० छूत+हा (प्रत्य०)] १ छूतवाला। जो छूने योग्य न हो। अस्पृश्य। २ आर्तवकाल की स्त्री। ३ कलंकित। दूषित।

संज्ञा पुं० [?] वह नमक जो नोनी मिट्टी से निकाला जाता है। शोरे का नमक।

छुद्धित—वि० [सं० क्षुधित] भूखा। उ०—खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत। खोजत व्याकुल सरित सर जल बिनु भएउ अचेत।—मानस।

छुद्र—संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"।

छुद्रावलि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्रघंटिका"।

छुधा—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।

छुधावंत—वि० [सं० क्षुधावत् के कर्ता बहु० क्षुधावत से] भूखा। क्षुधित। उ०—आए कीस काल के प्रेरे। छुधावंत सब निसिचर मेरे।—मानस०।

छुधित—वि० [सं० क्षुधित] भूखा। उ०—भरत दीख वन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू।—मानस।

छुप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "क्षुप"।

छुपना—क्रि० अ० दे० "छिपना"।

छुभित(पु)—वि० [सं० क्षुभित] १ विचलित। चंचलचित्त। २ घबराया हुआ। उ०—चलत कटकु दिग्सिंधुर डिगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं।—मानस।

छुभिराना(पु)—क्रि० अ० [हिं० छोभ से ना० धा०] क्षुब्ध होना। चंचल होना।

छुरधार(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरधार] छुरे की धार । पतली पैनी धार ।

छुरा—सज्ञा पु० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १ बेंट में लगे हुए लबे धारदार लोहे के टुकड़े का एक हथियार जो मारने, भोंकने या काटने के काम आता है । बड़ा फलदार चाकू । २ वह बेंट में लगा लोहे का छोटा हथियार जिससे नाई बाल मूँड़ते हैं । उस्तरा ।

छुरित—सज्ञा पुं० [स०] १ लास्य नृत्य का एक भेद । २ बिजली की चमक ।

छुरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० छुरा] १ चीजें काटने या चीरने फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार । चाकू । २ आक्रमण करने का एक धारदार हथियार ।

छुलछुलाना—क्रि० अ० [अनु०] १. थोड़ा थोड़ा करके गिरना या बहना । २ थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करना । ३ इतराना ।

छुलाना—क्रि० स० [हिं० छूना का प्रे० रूप] स्पर्श कराना । छुआना ।

छुवाना†—क्रि० स० दे० "छुलाना" ।

छुहना(पु)—क्रि० अ० [हिं० छुवना] १ छू जाना । २ रँग जाना । लिपना । ३ सफेदी करना ।

क्रि० स० दे० "छूना"

छुहारा—सज्ञा पु० [स० क्षुध+हार] १ एक प्रकार का खजूर । खुरमा । २ पिंडखजूर ।

छूँछा—वि० [स० तुच्छ] [स्त्री० छूँछी] १ खाली । रीता । रिक्त । जैसे—छूँछा घड़ा । उ०—पैठे सखनि सहित घर सूने माखन दधि सब खाई । छूँछी छाँड़ि मटुकिया दधि की हँसि सब बाहर आई ।—सूर० । २ जिसमें कुछ तत्व न हो । निःसार । ३ निर्धन । गरीब ।

छू—सज्ञा पु० [अनु०] मत्र पढकर फूँक मारने का शब्द ।

मुहा०—छू मतर होना=चटपट दूर होना । गायब होना । जाता रहना ।

छूछा—वि० दे० "छूँछा" ।

छूट—सज्ञा स्त्री० [सं०√छुट्] १ छूटने का भाव । छुटकारा । मुक्ति । २ अवकाश । फुरसत । ३ बाकी रुपया छोड़ देना । छुड़ौती । ४ सामान्य कर या दातव्य आदि में कमी । ५ किसी कार्य से सबध रखनेवाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव । ६ वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय । ७ पारिश्रमिक या मूल्य लेने में की जानेवाली रिआयत । ८. स्वतत्रता । आजादी । ९ गालीगलौज ।

छूटना—क्रि० अ० [स०√छुट्] १ बँधी, फँसी या पकड़ी, हुई वस्तु का अलग होना । दूर होना ।

मुहा०—शरीर छूटना=मृत्यु होना । २ किसी बाँधने या पकड़नेवाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना, जैसे बधन छूटना । ३ किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग या दूर होना । ४ बधन से मुक्त होना । छुटकारा होना । ५ प्रस्थान करना । रवाना होना । ६ दूर पड़ जाना । वियुक्त होना । बिछुड़ना, जैसे—घर छूटना, भाई-बधु छूटना । ७ पीछे रह जाना । ८ किसी अस्त्र का चल पड़ना या छूटना, जैसे—गोली, तीर आदि । ९ बराबर होती रहनेवाली बात का बद होना । न रह जाना ।

मुहा०—नाड़ी छूटना=नाड़ी का चलना बद हो जाना ।

१० किसी नियम या परपरा का भग होना, जैसे—व्रत छूटना । ११ किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना, जैसे—रक्त की धार । १२ रस रसकर (पानी) निकलना, जैसे—कुछ तरकारियों में से पकाते वक्त बहुत पानी छूटता है । १३ ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले, जैसे—फव्वारा छूटना । १४ शेष रहना । बाकी रहना । १५ किसी काम का या उसके किसी अग का भूल मे न किया जाना, जैसे—लिखने में अक्षर छूटना । भूल या प्रमाद से किसी वस्तु का न लिया जाना या रह जाना, जैसे—रेल पर छाता छूट जाना । १६ किसी कार्य से हटाया जाना । बरखास्त होना । १७ रोजी या जीविका का न रह जाना, जैसे—नौकरी छूटना । १८ पशुओं का अपनी मादा से सयोग करना ।

छूत—सज्ञा स्त्री० [स० √छुप्, छुप्त, प्रा० छुत्त] १ छूने का भाव । ससर्ग । छुवाव । २ गदी, अशुचि या रोगसचारक वस्तु का स्पर्श । अस्पृश्य का ससर्ग ।

यौ०—छूत का रोग=(१) वह रोग जो किसी रोगी से छू जाने से हो । (२) अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण । (३) किसी मनहूस आदमी या भूतप्रेत की छाया । भूत आदि लगने का बुरा प्रभाव ।

मुहा०—छूत उतारना या झाड़ना=मनहूस आदमी या, भूतप्रेत की छाया को झाड़ फूँक आदि से दूर करना ।

यौ०—छूत का रोग=वह रोग जो किसी रोगी को छू जाने से हो । सक्रामक रोग ।

छूना—क्रि० अ० [स० √छुप्] किसी वस्तु से लगना, सटना । स्पर्श होना ।

क्रि० स० १ किसी वस्तु से अपना कोई अग लगाना, सटाना । स्पर्श करना ।

मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना ।

२ हाथ बढ़ाकर उँगलियों के ससर्ग में लाना । हाथ लगाना । †३ दान के लिये किसी वस्तु को स्पर्श करना । ४ दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना । उन्नति की समान श्रेणी में पहुँचना । ६ बहुत कम काम में लाना । ७ पोतना ।

छेंकना—क्रि० स० [स० छेद ?] १ आच्छादित करना । स्थान घेरना । जगह लेना । २ रोकना । जाने न देना । ३ लकीरों से घेरना । ४ काटना । मिटाना ।

छेक—सज्ञा पुं० [हिं० छेद] १ छेद । सूराख । उ०—सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक । लागत ही में मिल गया, पड़या कलेजे छेक ।—कबीर० । २ कटाव । विभाग ।

छेकानुप्रास—सज्ञा पु० [स०] वह अनुप्रास जिसमें व्यजनों का सादृश्य एक ही बार उसी क्रम से हो । उ०—मद मंद चलि अलिन को ।

छेकापह्नुति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खडन किया जाता है । उ०—सीसी कर न सिरात है करत अधर छत पीर । कहा मिल्यो नागर पिया ? नहि, सखि सिसिर समीर । यहाँ नायिका के अधर पर क्षत देखकर सखी अपना अनुमान प्रकट करती है कि क्या नायक मिला था । इस पर नायिका उसका अनुमान यह कहकर खडित करती है कि "नहीं, शिशिर की हवा लगती है" ।

छेकोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वह लोकोक्ति जो अर्थांतरगभित हो अर्थात् जिससे अन्य अर्थ की भी ध्वनि निकले, जैसे, जानत सखे भुजग ही जग में चरण भुजग।

छेटा†—सज्ञा स्त्री० [स० छिद्र] बाधा ।

छेड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेदना] १ छू या खोद-खादकर तंग करने की क्रिया । २. हँसी-ठठोली करके कुढ़ाने का काम । चुटकी । ३ चिढ़ानेवाली बात । ४ रगड़ा । झगड़ा । ५ कोई काम आरंभ करना । उठाना । शुरू करना, जैसे—काम छेड़ना, बात छेड़ना आदि ।

छेड़ना—क्रि० स० [हिं० छेदना] १ हँसाने चिढ़ाने आदि के लिये किसी को उँगली आदि से छूना, दबाना, कोंचना । २ उत्तेजित करना या तंग करना । ३. हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना । चुटकी लेना । ४. छू या खोद-खादकर भड़काना या तंग करना । ५ कोई बात या कार्य आरंभ करना । उठाना । ६ बजाने के लिये बाजे में हाथ लगाना । ७ नश्तर से फोड़ा चीरना ।

छेड़वाना—क्रि० स० [हिं० 'छेड़ना' का प्रे० रूप] छेड़ने का काम दूसरे से कराना ।

छेता†—संज्ञा पुं० [सं० छेदन] दे० "छेदन" ।

छेत्र(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "क्षेत्र" ।

छेद—संज्ञा सं० [सं०] १. छेदन । काटने का काम । २ नाश । ध्वस । ३ छेदन करनेवाला । ४ गणित में भाजक । § ५ पशुपक्षियों को एक ही बार में काटने का तरीका । झटका । उ०—कतहु बाँग कतहु बेद, कतहु मिसमिल कतहु छेद ।

संज्ञा पुं० [सं० छिद्र] १ सूराख । छिद्र । रंध्र । २ बिल । दरज । खोखला । विवर । ३ दोष । दूषण । ऐब ।

छेदक—वि० [सं०] १ छेदने या काटनेवाला । २ नाश करनेवाला । ३ विभाजक ।

छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ काटकर अलग करने का काम । चीरफाड़ । २ नाश । ध्वंस । ३ काटने या छेदने का अस्त्र । ४ रुकावट । ५. छिद्र ।

छेदना—क्रि० स० [सं० छेदन] १ कुछ चुभाकर किसी वस्तु को छिद्रयुक्त करना । बेधना । भेदना । २. क्षत करना । घाव करना । † ३ काटना । छिन्न करना ।

छेना—संज्ञा पुं० [सं० छेदन] १ खटाई से फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो । फटे दूध का खोया । पनीर । † २ कंडा । उपला ।

क्रि० स० १ छिनगाना । कुल्हाड़ी आदि से काटना या घाव करना ।

छेनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] लोहे का वह औजार जिससे पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते हैं । टाँकी ।

छेम(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम" ।

छेमकरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमकरी" ।

छेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी । उ०—हाथी छोरो, घोरा छोरो, महिष वृषभ छोरो, छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागि रे ।—कविता० ।

छेली—संज्ञा स्त्री० दे० "छेरी" ।

छेव—संज्ञा पुं० [सं० छेद] १ जख्म । घाव ।

मुहा०—छलछेव = कपट व्यवहार । छलछिद्र । उ०—जानति नहीं कहाँ ते सीखे चोरी के छलछेव ।—सूर० ।

† २ आनेवाली आपत्ति । होनहार । दुःख । ३ किसी दुष्कर्म या क्रूर ग्रह आदि के प्रभाव से होनेवाला अनिष्ट ।

संज्ञा स्त्री० दे० "टेव" ।

छेवना(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी ।

क्रि० स० [सं० छेदन] १ काटना । छिन्न करना । २ चिह्न लगाना ।

(पु)क्रि० स० [सं० क्षेपण] १ फेंकना । २ डालना । ऊपर टालना ।

छेवर†—संज्ञा पुं० [हिं० छेवना] १. छाल । वक्कल । २ छिलका । ३ चमड़ा । त्वचा ।

छेवरा—संज्ञा पुं० "छेवर" ।

छेह(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० छेव] १ दे० "छेव" । २ खंडन । नाश ।

वि० १ टुकड़े टुकड़े किया हुआ । २ न्यून । कम ।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "खेह" ।

छेहर†—संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] छाया । साया ।

छै†—वि० दे० "छ" ।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय" ।

छैना(पु)—क्रि० अ० [सं० क्षय] १ क्षीण होना । छीजना २ नष्ट होना ।

छैया†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० छवना] बच्चा । उ०—कहति मल्हाइ लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया ।—गीता० ।

छैल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "छैला" । उ०—तैं रनकेहरि केहरि के बिदले अरिकुंजर छैल छवा से ।—हनु० ।

छैल चिकनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० छैला +चिकनियाँ] शौकीन । बनाठना आदमी ।

छैलछबीला—संज्ञा पुं० [हिं० छैल +छबीला] १ सजावजा और युवा पुरुष । बाँका । २ छरीला नाम का पौधा ।

छैला—संज्ञा पुं० [सं० छवि+इल्ल ? (प्रत्य०)] सुंदर और बना ठना आदमी । सजीला । बाँका । शौकीन ।

छोंड़ा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० क्ष्वेड] दही मथने की मथानी ।

छो—संज्ञा पुं० [सं० क्षोभ, हिं० छोह] १ छोह । प्रेम । प्रीति । २ दया । कृपा । ३ क्रोधजनित दुःख । क्षोभ । कोप । गुस्सा ।

छोई—संज्ञा स्त्री० [?] १ दे० "खोई" । २ निस्सार वस्तु ।

छोकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोकड़ी] १ लड़का । बालक । २ अनुभव-शून्य या अपरिपक्व बुद्धि का युवक (तिरस्कार में) । लौंडा ।

छोकड़ापन—संज्ञा पुं० [हिं० छोकड़ा+पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन । २ छिछोरापन ।

छोकरा†—संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा" ।

छोटा—वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० छोटी] १ जो विस्तार में कम हो । डील डौल में कम । २ जो अवस्था में कम हो । थोड़ी उम्र का । ३ जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो । ४ तुच्छ । सामान्य । ५ ओछा । क्षुद्र ।

यौ०—छोटामोटा = (१) साधारण, जैसे—छोटी मोटी बात । (२) छोटा, जैसे—छोटा मोटा घर ।

छोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटा+ई (प्रत्य०)] १ छोटापन । लघुता । २ नीचता ।

छोटापन—संज्ञा पुं० [हिं० छोटा+पन (प्रत्य०)] १ छोटा होने का भाव । छोटाई । लघुता । २ बचपन । लड़कपन । ३ क्षुद्रता । ओछापन ।

छोटी इलायची—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी+इलायची] सफेद या गुजराती इलायची ।

छोटी हाजिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी +हाजिरी] यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा ।

छोड़ना—क्रि० स० [सं० छोरण] १ पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना । २ किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना (क्रि० अ०) । ३ बंधन आदि से मुक्त करना । छुटकारा देना । ४. अपराध क्षमा करना । मुआफ करना । ५ न ग्रहण करना । न लेना । ६ प्राप्य धन न लेना । देना मुआफ करना । ७ परित्याग करना । पास न रखना । ८ पड़ा रहने देना । न उठाना या लेना । साथ न लेना । ९ प्रस्थान कराना । चलाना ।

मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना =किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिये उसके पीछे किसी को लगा देना।

१० चलाना या फेंकना। क्षेपण करना। ११ किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। १२ हाथ में लिए हुए कार्य को त्याग देना। १३ किसी रोग या व्याधि का दूर होना। १४ वेग के साथ बाहर निकालना। १५ ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १६ बचाना। शेष रखना।

मुहा०—छोड़कर=अतिरिक्त। सिवाय।

१७ किसी कार्य को या उसके किसी अंग को भूल से न करना। १८ ऊपर से गिराना।

छोड़वाना—क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना—क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छोना—संज्ञा पुं० [सं० शावक] बच्चा। लड़का। उ०—छोनी में न छाँड्यो छप्यो छोनिप को छोना छोटो, छोनिप छपन बाँको बिरुद कहतु हौं।—कविता०।

छोनिपⓊ—संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप"।

छोनिप छौना—संज्ञा पुं० [हिं० छोनिप+छौना] राजकुमार। उ०—हेरि हेरि सब मारिहौं धरी परसधर टेक। छपेहुँ न बँचिहैं छोनि पर छोनिप छौना एक।—रससाराश।

छोनीⓊ—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"।

छोप—संज्ञा पुं० [सं० क्षेप] १. गाढ़ी या गीली वस्तु की मोटी तह। मोटा लेप। २ लेप चढ़ाने का कार्य। ३. आघात। वार। प्रहार। ४ छिपाव। बचाव।

छोपना—क्रि० स० [हिं० छुपाना] १ गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर फैलाना। गाढ़ा लेप करना। २ गीली मिट्टी आदि का लौंदा ऊपर रखना या फैलाना। गिलावा लगाना। थोपना। ३ दबाकर चढ़ बैठना। धर दबाना। ग्रसना। ‡४ आच्छादित करना। ढँकना। छेंकना। †५ किसी बुरी बात को छिपाना। परदा डालना। †६ वार या आघात से बचाना।

छोभ—संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।

छोभनाⓊ—क्रि० अ० [हिं० छोभ] करुणा शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना। क्षुब्ध होना।

छोभितⓊ—वि० दे० "क्षोभित"।

छोमⓊ—वि० [सं० क्षोम] १ चिकना। २ कोमल।

छोर—संज्ञा पुं० [हिं० छोड़ना] १ आयत-विस्तार की सीमा। किनारा जहाँ किसी वस्तु की लंबाई का अंत हो। चौड़ाई का हाशिया।

यौ०—ओरछोर=आदि-अंत।

२ विस्तार की सीमा। हद। ३ नोक। कोर। कोना।

छोरा†—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोरी] छोकड़ा। लड़का।

छोरा-छोरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोरना] १ छीन खसोट। छीना छीनी। २ झगड़ा। बखेड़ा। झंझट।

छोरना†—क्रि० स० [सं० छोरण] १ बँधन आदि अलग करना। खोलना। २ बंधन से मुक्त करना। ३ हरण करना। छीनना।

छोलदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोल+फा० दार] छोटा खेमा। छोटा तंबू।

छोलना†—क्रि० स० [हिं० छाल] छीलना।

छोला—संज्ञा पुं० [हिं०√छोल+आ (प्रत्य०)] १ ईख को काटने और छीलने-वाला पुरुष। २ एक प्रकार का चना।

छोह—संज्ञा पुं० [हिं० क्षोभ] १. ममता। प्रेम। स्नेह। २. दया। अनुग्रह। कृपा।

छोहनाⓊ—क्रि अ० [हिं० छोह] १ विच-लित, चंचल या क्षुब्ध होना। २. प्रेम या दया करना।

छोहरा†Ⓤ—संज्ञा पुं० दे० "छोरा"। उ०—कहाँ तात मात, भ्रात, भगिनि भामिनी, भाभी, ढोटे छोटे छोहरा अभागे भौर भागि रे।—कविता०।

छोहानाⓊ—क्रि० अ० [हिं० छोह] १ मुहब्बत करना। प्रेम दिखाना। २ अनु-ग्रह करना। दया करना।

छोहिनीⓊ—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

छोहीⓊ†—वि० [हिं० छोह] ममता रखने-वाला। प्रेमी। स्नेही। अनुरागी।

छौंक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बघार। तड़का।

छौंकना—क्रि० स० [हिं० छौंक] १ बासने के लिये हींग, मिरचा आदि से मिले हुए कड़कड़ाते घी को दाल आदि में डालना। बघारना। २ मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिये डालना। तड़का देना।

छौंचना†—क्रि० अ० [सं० चतुष्क] जान-वर का कूदना या झपटना।

छौंड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० चुडा] अनाज रखने का गड्ढा। खत्ता।

संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छौंड़ी] लड़का। बच्चा।

छौना—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छौनी] पशु का बच्चा, जैसे—मृगछौना। उ०—किलकत निरखि बिलोल खेलौना। मनहुँ बिनोद लरत छबि छौना।—गीता०।

छौरⓊ—संज्ञा पुं० दे० "क्षौर"।

छौलदारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा खेमा। छोटा तंबू।

छौवानाⓊ—क्रि० स० दे० "छुआना"।

ज

ज—हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है।

जंग—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० जंगी] लड़ाई। युद्ध। समर।

संज्ञा पुं० [फा०] लोहे का मोरचा।

जंगम—वि० [सं०] १ चलने फिरनेवाला। चर। २ जो एक स्थल से दूसरे स्थल पर लाया जा सके, जैसे—जंगम संपत्ति। ३ दाक्षिणात्य लिंगायत शैव संप्रदाय के गुरु।

जंगल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० जंगली] १ वन। अरण्य। २ बंजर। ३ उजाड़ स्थान। ४ निर्जन स्थान। ५ जनशून्य भूमि। रेगिस्तान।

मुहा०—जंगल में मंगल = सुनसान स्थान में चहल पहल।

जँगला—संज्ञा पुं० [पुर्त० जेंगिला] १ खिड़की, दरवाजे, बरामदे आदि में लगी

हुई लोहे की छड़ों की पंक्ति। कटहरा। बाड़। २. चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हो।

जंगली—वि० [हिं० जंगल] १ जंगल में मिलने या होनेवाला। जंगल संबंधी। २. बिना बोए या लगाए उगनेवाला पौधा। ३. जंगल में रहनेवाला। कबीला।

जंगार—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० जंगारी] १ ताँबे का कसाव। तूतिया। २ एक रंग जो ताँबे का कसाव है।

जंगारी—वि० [फा० जंगार] नीले रंग का।

जंगाल—संज्ञा पुं० दे० "जंगार"।

जंगी—वि० [फा०] १ लड़ाई से संबंध रखनेवाला; जैसे—जंगी जहाज। २. फौजी। सैनिक। सेना संबंधी। ३ बड़ा। बहुत बड़ा। दीर्घकाय। ४ वीर। लड़ाका।

जंघा—संज्ञा स्त्री० [सं० जंघ] १ जाँघ। रान। ऊरु। २ कैंची का दस्ता।

जँचना—क्रि० अ० [हिं० जाँचना] १ जाँचा जाना। देखा भाला जाना। २ जाँच में पूरा उतरना। उचित या अच्छा ठहरना। ३. जान पड़ना। प्रतीत होना।

जँचा—वि० [हिं० जँचना] १ जाँचा हुआ। सुपरीक्षित। २ अव्यर्थ। अचूक।

जंजलⓅ†—वि० [पुं० जर्जर] पुराना और कमजोर। बेकाम।

जंजाल—संज्ञा पुं० [हिं० जग+जाल] १ प्रपंच। झमट। बखेड़ा। २. बंधन। फँसाव। उलझन। उ०—हृदय की कबहुँ न पीर घटी। दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी।—सूर०। ३ पानी का भँवर। ४ एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक। ५ बड़े मुँह की तोप। ६ बड़ा जाल।

जंजालिया—संज्ञा पुं० [हिं० जंजाल+इया (प्रत्य०)] जंजाली। झगड़ालू।

जंजाली—वि० [हिं० जंजाल] झगड़ालू। बखेड़िया। फसादी।

जंजीर—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० जंजीरी] १ साँकल। सिकड़ी। कड़ियों की लड़ी। २ बेड़ी। ३ किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी।

जंतर—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १ कल। औजार। यंत्र। २ तांत्रिक यंत्र। ३ प्राय चौकोर या लंबा तावीज जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। ४ गले में पहनने का एक गहना। कठुला।

जंतर मंतर—संज्ञा पुं० [हिं० यंत्र+मंत्र] १ यंत्र मंत्र। टोना टोटका। जादू टोना। २. मानमंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं। आकाश-लोचन। वेधशाला।

जंतरी—संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्र] १ छोटा जंता जिससे सोनार तार बढ़ाते हैं। २ पत्रा। तिथिपत्र। ३. जादूगर। भानमती। ४ बाजा बजानेवाला।

जँतसर—संज्ञा पुं० [हिं० जाँता] वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।

जँतसार—संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्रशाला] जाँता गाड़ने का स्थान।

जंता—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० जंती, जंतरी] १ यंत्र। कल, जैसे—जंताघर। २. तार खींचने का औजार।

वि० [सं० यंतृ=यंता] दंड देनेवाला। यंत्रणा देनेवाला। उ०—साकिनी-डाकिनी-पूतना-प्रेत-बैताल-भूत-प्रथम-जंता।—विनय०। शासन करनेवाला।

जंती—संज्ञा स्त्री० [हिं० जंता] छोटा जंता। जंतरी।

†संज्ञा स्त्री० [सं० जनयित्री] माता। माँ।

जंतु—संज्ञा पुं० [सं०] जन्म लेनेवाला जीव। प्राणी। जानवर।

यौ०—जीवजंतु=प्राणी। जानवर।

जंतुघ्न—वि० [सं०] जंतुनाशक। कृमिघ्न।

जंत्र—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १ यंत्र। कल। औजार। २ तांत्रिक यंत्र। ३ ताला।

जंत्रनाⓅ—क्रि० स० [हिं० जंत्र] ताले के भीतर बंद करना। जकड़बंद करना।

संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

जंत्रनाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

जंत्रमंत्र—संज्ञा पुं० दे० "जंतरमंतर"।

जंत्रित—सं० [सं० यंत्रित] १. दे० "यंत्रित"। २ बंद। बँधा हुआ।

जंत्री—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] बाजा।

संज्ञा पुं० [सं० यंत्रिन्] बाजा बजाने वाला व्यक्ति।

वि० यंत्रित करनेवाला। जकड़बंद कर देनेवाला।

जंद—संज्ञा पुं० [फा० जंद] १ पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ जिसकी भाषा वैदिक भाषा से बहुत समानता रखती है। २ वह भाषा जिसमें पारसियों का धर्म-ग्रंथ है।

जंदरा—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] यंत्र। कल। २ जाँता। †३ ताला।

जंपनाⓅ—क्रि० स० [सं० जल्पन] बोलना। कहना।

जंबक—संज्ञा पुं० दे० "जंबुक"। उ०—ऐसा एक अचंभा देखा, जंबक करै केहरि सूँ लेखा।—कबीर०।

जंबाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कीचड़। पंक। २ सेवार। शैवाल। ३ काई। ४ केवड़ा।

जंबीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ जँबीरी नीबू। २ मरुवा। ३ बनतुलसी।

जंबीरी नीबू—संज्ञा पुं० [सं० जंबीर] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जंबु—संज्ञा पुं० [सं०] जामुन। उ०—नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला।—मानस।

जंबुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा जामुन। फरेंदा। २ केवड़ा। ३ शृगाल। गीदड़।

जंबुद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक जिसके नौ खंडों या वर्षों में से एक भारतवर्ष है।

जंबुमत्—संज्ञा पुं० दे० 'जाम्बवान्'।

जंबू—संज्ञा पुं० [सं०] १ जामुन। २ काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर।

जंबूर—संज्ञा पुं० [फा०] १. जंबूरा। जमुरका। २ तोप की चर्ख। ३ पुरानी छोटी तोप जो प्राय ऊँटों पर लादी जाती थी। जंबूरक।

जंबूरक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ छोटी तोप। २ तोप की चर्ख। ३ भँवरकली।

जंबूरची—संज्ञा पुं० [फा०] १ तोपची। तुपकची। २ सिपाही।

जंबूरा—संज्ञा पुं० [फा० जंबूर+भौंरा] १ चर्ख जिसपर तोप चढ़ाई जाती है। २ भँवरकड़ी। भँवरकली। ३ सुनारों का बारीक काम करने का एक औजार।

जंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ दाढ़। चौभड़। २. जबड़ा। ३ एक दैत्य। ४ जँबीरी नीबू। ५ जँभाई।

जँभाई—संज्ञा स्त्री० [सं० जृंभा] दे० "जम्हाई"।

जँभाना—क्रि० अ० [सं० जृंभण] जँभाई लेना।

जंभारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ अग्नि। ३. वज्र। ४ विष्णु।

ज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मृत्युंजय। २ जन्म। ३ पिता। ४ विष्णु। ५ छंद-शास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अंत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु होता है (।ऽ।)।

वि० १ वेगवान् । तेज । २. जीतनेवाला ।

प्रत्य०—उत्पन्न । जात । जैसे—देशज ।

जई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जौ] १ जौ की जाति का एक अन्न । २ जौ का छोटा अंकुर जो मंगलद्रव्य के रूप में ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते हैं । ३ अंकुर । ४ उन फलों की बतिया जिनमें बतिया के साथ फूल भी रहता है, जैसे—कुम्हड़े की जई ।

(पु)वि० दे० "जयी" ।

जईफ—वि० [अ०] बुड्ढा । वृद्ध ।

जईफी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बुढ़ापा ।

जऊ—क्रि० वि० [?] यद्यपि । उ०—न अघानी जऊ सिगरी निसि 'दासजू' काम कलानि कियो कलमें ।—शृंगार० ।

जकंद(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० जगंद] छलाँग । चौकड़ी । उछाल ।

जकंदना—क्रि० अ० [हिं० जकंद] १ कूदना । उछलना । २ टूट पड़ना ।

जक—संज्ञा पुं० [सं० यक्ष] १ धनरक्षक भूतप्रेत । यक्ष । २ कंजूस आदमी ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० झक] [वि० झक्की] १ जिद्द । हठ । अड़ । उ०—मोहि प्रभु तुम सों होड़ परी । पतित समूहनि उद्धरिबे को तुम जिय जक पकड़ी ।—सूर० । २ धुन । रट । उ०—जदपि नाहिं नाहीं बदन लगी जक जाति । तदपि भौंह हाँसीभरिनु हाँसीयै ठहराति ।—बिहारी०

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हार । पराजय । २ हानि । घाटा । ३ पराभव । लज्जा ।

जकड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० जकड़ना] जकड़ने की क्रिया या भाव । कसकर बाँधने या पकड़ने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—जकड़बंद करना=(१) खूब कसकर बाँधना । (२) पूरी तरह अपने अधिकार में करना ।

जकड़ना—क्रि० स० [सं० युक्त+करण] कसकर बाँधना । कड़ा बाँधना । कसकर पकड़ना ।

† क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने डुलने के योग्य न रह जाना ।

जकना(पु)—क्रि० अ० [हिं० जक या चक] १ भौंचक्का होना । चकपकाना । २ झक में बोलना ।

जकात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दान । खैरात । २ कर । महसूल ।

जकित(पु)—वि० [हिं० चकित] चकित । विस्मित । स्तंभित । उ०—सूरदास प्रभु बदन विलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ।—सूर० ।

जक्तगुरु—संज्ञा पुं० दे० "जगद्गुरु" । उ०—जक्तगुरु जग की जननी जगदीस भरे सुख देत असीस कों ।—शृंगार० ।

जखम—संज्ञा पुं० [फा० जख्म] १ क्षत । घाव । २ मानसिक दुःख या आघात ।

मुहा०—जखम ताजा या हरा हो आना=बीते हुए कष्ट का फिर लौट या याद आना ।

जखमी—वि० [फा० जख्मी] जिसे जखम लगा हो । घायल ।

जखीरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो । कोष । खजाना । २ संग्रह । ढेर । समूह । ३ वह स्थान जहाँ तरह तरह के पौधे और बीज बिकते हों ।

जग—संज्ञा पुं० [सं० जगत] १ संसार । विश्व । दुनिया । २ संसार के लोग । जनसमुदाय । लोक ।

† (पु) संज्ञा पुं० दे० "यज्ञ" ।

जगजगा†—वि० [हिं० जगजगाना] चमकीला । प्रकाशित । जो जगमगाता हो । उ०—'दास' पगपग दूनो देहदुति दगदग, जगजग ह्वै रही कपूरधूरि-सारी पर । —शृंगार० ।

जगजगाना†—क्रि० अ० [हिं० जगजग] चमकना । जगमगाना ।

जगजोनि—संज्ञा पुं० दे० "जगद्योनि" ।

जगड्वाल—संज्ञा पुं० [सं०] आडंबर । व्यर्थ का आयोजन ।

जगण—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अंत के लघु होते हैं, जैसे—महेश ।

जगत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्व । संसार । २ वायु । ३ महादेव । ४ जंगम ।

जगत—संज्ञा स्त्री० [सं० जगति=घर की कुर्सी] कुएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा ।

संज्ञा पुं० दे० "जगत्" ।

जगतसेठ—संज्ञा पुं० [सं० जगत्+श्रेष्ठ] बहुत बड़ा धनी या महाजन ।

जगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संसार । भुवन । २ पृथ्वी । ३ एक वैदिक छंद ।

जगत्प्रान—संज्ञा पुं० [सं० जगत्प्राण] हवा । पवन । उ०—जगत्प्रान त्यों डोलिहैं मद ही मद । कवै चैतु ऐहै चिदानंद को कंद ।—छंदार्णव ।

जगदंब, जगदंबा—संज्ञा स्त्री० दे० "जगदंबिका" ।

जगदंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जगत की माता । २ दुर्गा ।

जगदाधार—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर । उ०—जगदाधार सेष किमि उठइ चले खिसिआई ।—मानस । २ वायु । हवा ।

जगदीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ परमेश्वर । २ विष्णु । जगन्नाथ ।

जगदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर ।

जगदीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती ।

जगद्गुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ परमेश्वर । २ शिव । ३ नारद । ४ अत्यंत पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष । ५ शंकराचार्य की गद्दी पर बैठनेवालों की एक उपाधि ।

जगद्धाता—संज्ञा पुं० [सं० जगद्धातृ] [स्त्री० जगद्धात्री] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महादेव ।

जगद्धात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ सरस्वती ।

जगद्योनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ विष्णु । ३ ब्रह्मा । ४ परमेश्वर । ५ पृथ्वी ।

जगद्वंद्य—वि० [सं०] जिसकी वंदना सारा संसार करे । संसार में पूज्य या श्रेष्ठ ।

जगना—क्रि० अ० [सं० जागरण] १ नींद त्यागना । नींद से उठना । जागना । २ सचेत या सावधान होना । ३ देवी देवता या भूतप्रेत आदि का प्रभाव दिखाई देना । ४ उत्तेजित होना । ५ (आग का) जलना । ६ जगमगाना । चमकना ।

जगन्नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ जगत का नाथ । ईश्वर । २ विष्णु । ३ विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है ।

जगन्नियंता—संज्ञा पुं० [सं० जगन्नियंतृ] जगत का नियंता । परमात्मा । ईश्वर ।

जगन्माता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

जगन्मोहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ महामाया ।

जगबंद(पु)—वि० दे० "जगद्वंद्य" ।

जगमग, जगमगा—वि० [अनु०] १ प्रकाशित । जिसपर प्रकाश पड़ता हो । २. चमकीला । चमकदार ।

जगमगाना—क्रि०अ० [हिं० जगमग] प्रकाश से

चमकना। जगमग होना। झलकना। दमकना।

जगमगाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० जगमग+आहट (प्रत्य०)] जगमगाने का भाव। चमक।

जगर मगर—वि० दे० "जगमग"।

जगवाना—क्रि० स० [हिं० जगाना का प्रे० रूप] जगाने का काम दूसरे से कराना।

जगह—संज्ञा स्त्री० [फा० जायगाह] १. वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। स्थान। स्थल। २. मौका। स्थल। अवसर। ३ पद। ओहदा। नौकरी। ४ समाई। गुंजायश।

जगात†—संज्ञा पुं० [अ० जकात] १ दान। खैरात। २ महसूल। कर।

जगाती†—संज्ञा पुं० [हिं० जगात+ई (प्रत्य०)] १ वह जो कर वसूल करे। २ कर उगाहने का काम।

जगाना—क्रि० स० [हिं० जागना या जगना का प्रे० रूप] १ नींद त्यागने के लिये प्रेरणा करना। नींद से उठाना। २ चेत में लाना। होश दिलाना। बोध कराना। †३ फिर से ठीक स्थिति में लाना। †४ आग को तेज करना। सुलगाना। †५. यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना, जैसे—मंत्र जगाना।

जगार†—संज्ञा स्त्री० [सं० जागृति] जागरण। जाग उठना।

जगीला†—वि० [हिं० √जाग+ईला (प्रत्य०)] जागने के कारण अलसाया हुआ। उनींदा। उ०—दुरति दुराए ते न रति बलि कुंकुम उर मैन। प्रगट कहैं पति रतजगे जगी जगीले नैन।—श्रृं० सत०।

जग्यउपनीत—संज्ञा पुं० दे० "यज्ञोपवीत"।

जघन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कटि के नीचे आगे का भाग। पेड़ू। २ नितंब। चूतड़।

जघनचपला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामुकी स्त्री। २ कुलटा। ३ आर्या छंद का एक भेद।

जघन्य—वि० [सं०] १ अंतिम। चरम। २ गर्हित। त्याज्य। अत्यंत बुरा। ३ नीच। निकृष्ट।

संज्ञा पुं० १ शूद्र। २ नीच जाति। ३ पीठ का वह भाग जो पुट्ठे के पास होता है।

जचना—क्रि० अ० दे० "जँचना"।

जच्चा—संज्ञा स्त्री० [फा० जच्च] प्रसूता स्त्री। वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो।

यौ०—जच्चाखाना = सूतिकागृह। सौरी।

जच्छ†—संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

जच्छपति—संज्ञा पुं० दे० "यक्षपति"। उ०—अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे। रच्छक कोटि जच्छपति केरे।—मानस।

जच्छेस—संज्ञा पुं० दे० "यक्षेश्वर"। उ०—तीरथपति अंकुर-सरूप, यच्छेस रच्छ तेहि। मरकतमय साखा, सुपत्र मंजरिय लच्छ जेहि।—कविता०।

जज—संज्ञा पुं० [अँ०] न्यायाधीश।

जजमान—संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।

जजिया—संज्ञा पुं० [अ०] १ दंड। २ एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्यकाल में अन्य धर्मवालों पर लगता था।

जजी—संज्ञा स्त्री० [अ० जज] १. जज का पद या काम। २ जज की कचहरी।

जजीरा—संज्ञा पुं० [फा०] टापू। द्वीप।

जज्जल—वि० [सं० जर्जर] दुबल। कमजोर। उ०—जुध्ध विरुध्धित उध्धत क्रुध्धित वीर बली दसकंधर धावै। कज्जल भूधर से तनु जज्जल बोलत राम कहाँ करि दावै।—रससाराश।

जटना—क्रि० स० [सं० जटन?] धोखा देकर कुछ लेना। ठगना।

(पु) क्रि० स० [सं० जटन] जड़ना।

जटल—संज्ञा स्त्री० [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ बात। गप्प। बकवास।

जटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आपस में उलझे या गुँथे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते हैं। २ जड़ के पतले पतले सूत। झकरा। ३ एक साथ बहुत से रेशे आदि। ४. शाखा। ५ जटामासी। ६ जूट। पाट। ७ कौंछ। केवाँच। ८ वेद-पाठ का एक भेद।

जटाजूट—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लंबे बालों का समूह। २ शिव की जटा।

जटाधर—संज्ञा पुं० [सं०] जटाधारी। शिव। महादेव।

जटाधारी—वि० [सं०] जो जटा रखे हो।

संज्ञा पुं० १ शिव। महादेव। २ मरसे की जाति का एक पौधा। मुर्गकेश।

जटाना—क्रि० स० [हिं० जटना का प्रे० रूप] जटने का काम दूसरे से कराना।

क्रि० अ० ठगा जाना।

जटामासी—संज्ञा स्त्री० [सं० जटामासी] एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है। बालछड़। बालूचर।

जटायु—संज्ञा पुं० [सं०] १. रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २ गुग्गुल।

जटित—वि० [सं०] जड़ा हुआ।

जटिल—वि० [सं०] १ जटावाला। जटाधारी। उ०—जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल देख।—मानस। २ अत्यंत कठिन। दुरूह। दुर्बोध। ३ क्रूर। दुष्ट।

जटिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जटिल होने का भाव। २ दुरूहता पेचीलापन।

जटी§—संज्ञा पुं० दे० "यती"। उ०—ब्राह्मण के यज्ञोपवीत चांडाल हृदय लूल, वेश्यान्हि करी पयोधर जटीक हृदय चूर।

जठर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेट। कुक्षि। २ एक उदर रोग। ३ शरीर।

वि० १ वृद्ध। बूढ़ा। २ कठिन।

जठराग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जड़—वि० [सं० जड] १ जिसमें चेतनता न हो। अचेतन। २. चेष्टाहीन। स्तब्ध। ३ नासमझ। मूर्ख। ४ ठिठुरा हुआ। अकड़ा हुआ। ५ शीतल। ठंढा। ६ गूँगा। मूक। ७ बहरा। ८ जिसके मन में मोह हो।

संज्ञा स्त्री० [सं० जटा] १. वृक्षों और पौधों का वह भाग जो जमीन के अंदर दबा रहता है और जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार पहुँचता है। मूल। सोर। २ नींव। बुनियाद, जैसे—यही सारे झगड़ों की जड़ है।

मुहा०—जड़ उखाड़ना या खोदना = (१) ऐसा नष्ट करना जिसमें फिर अपनी पूर्व स्थिति तक न पहुँच सके। (२) बुराई करना। अहित करना। जड़ जमाना = दृढ़ या स्थायी होना। जड़ पकड़ना = जमना। दृढ़ होना।

(३) हेतु। कारण। सबब, जैसे—यही सारे झगड़ों की जड़ है। ४ आधार।

जड़काला—संज्ञा पुं० [सं० जड+काल] जाड़े का समय शीतकाल। उ०—लागेउ माघ, परै अब पाला। विरह काल भएउ जड़काला।—पद्मावत।

जड़ता—संज्ञा स्त्री० [सं० जडता] १ जड़ होने का भाव या दशा। २ अचेतनता। ३ मूर्खता। बेवकूफी। ४ साहित्यदर्पण के अनुसार एक संचारी भाव जो किसी घटना के होने पर चित्त के विवेकशून्य होने

की दशा में होता है। ५ स्तब्धता। अचलता।

जड़ताई—संज्ञा स्त्री० [सं० जडता] १. मूर्खता। नासमझी। २ अचेतनता।

जड़त्व—संज्ञा पुं० [स० जडत्व] १ चेतनता का विपरीत भाव। अचेतनता। स्वय हिल-डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव या स्थिति। चेष्टाहीनता। २. अज्ञता। मूर्खता।

जड़ना—क्रि० स० [स० जटन] १ एक चीज को दूसरी चीज में बैठाना। पच्ची करना। २ एक चीज को दूसरी चीज में ठोंककर बैठाना, जैसे—नाल जड़ना। ३ प्रहार करना। ४ चुगली खाना या कान भरना।

जड़भरत—संज्ञा पुं० [स०] अंगिरसगोत्री एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़वाना—क्रि० स० [हिं० जड़ना का प्रे० रूप] जड़ने का काम दूसरे से कराना।

जड़हन—संज्ञा पुं० [हिं० जड़+हन= गाड़ना] वह धान जिसके पौधे एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह बैठाए जाते हैं। शालि।

जड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़+आई (प्रत्य०)] १ जड़ने का काम या भाव। २ जड़ने की मजदूरी।

जड़ाऊ—वि० [हिं०√जड़+आऊ (प्रत्य०)] जिसपर नग या रत्न आदि जड़े हों।

जड़ाना—क्रि० स० दे० "जड़वाना"।
‡ क्रि० अ० [हिं० जाड़ा से ना० धा०] शीत लगना।

जड़ाव—संज्ञा पुं० [हिं०√जड़+आव (प्रत्य०)] १ जड़ने का काम या भाव। २ जड़ाऊ काम।

जड़ावर—संज्ञा पुं० [हिं० जाड़ा] जाड़े में पहनने के कपड़े। गरम कपड़े।

जड़ित(पु)—वि० [सं० जटित] १ जड़ा हुआ। २ जिसमें नग आदि जड़े हों। ३ अच्छी तरह बँधा या जकड़ा हुआ।

जड़िमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ता।

जड़िया—संज्ञा पुं० [हिं०√जड़+इया (प्रत्य०)] नगों के जड़ने का काम करनेवाला।

जड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़] वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय। बिरई।
यौ०—जड़ीबूटी=जंगली औषधि।

जड़ीभूत—वि० [स०] जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो। सुन्न। संज्ञारहित।

जड़ुआ—वि० दे० "जड़ाऊ"।

जड़ैया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० जाड़ा+ऐया (प्रत्य०)] जूड़ी का बुखार।

जत†(पु)—वि० [स० इयत] जितना। जिस मात्रा का। उ०—जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि। बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।—मानस।

जतन(पु)†—संज्ञा पुं० [स० यतन] दे० "यत्न"।

जतनी—संज्ञा पुं० [हिं०जतन+ई (प्रत्य०)] १ यत्न करनेवाला। २ चतुर। चालाक।

जतलाना—क्रि० स० दे० "जताना"।

जताना—क्रि० स० [स० ज्ञात] १ ज्ञात कराना। बतलाना। २ पहले से सूचना देना।

जति—वि० [स० जित] जीतनेवाला। उ०—चरन पीठ उन्नत नत-पालक, गूढ़ गुलुफ, जघा कदली जति।—गीता०।
संज्ञा पुं० दे० "यति"। उ०—स्वान खग जति न्याउ देख्यो आपु बैठि प्रवीन।—गीता०।

जती—संज्ञा पुं० दे० "यती"।

जतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष का निर्यास। गोंद। २ लाख। लाह। ३ शिलाजीत।

जतुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाख। लाह। २. हींग। ३ शरीर के चमड़े पर का दाग जो जन्म से ही होता है। लच्छन।

जतुका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ पहाड़ी नामक लता। २ चमगादड़। ३ लाख। लाह।

जतुगृह—संज्ञा पुं० [स०] १ घास, फूस, लाख आदि शीघ्र जलनेवाले पदार्थों को मिलाकर बने लेप से पलस्तर किया हुआ घर। २ दुर्योधन द्वारा पांडवों को कुंती सहित जलाकर भस्म करने के लिये वारणावत में बनवाया हुआ इस प्रकार का लाख का घर। लाक्षागृह। ३. कुटी। मड़ई।

जतेक†(पु)—क्रि० वि० [हिं० जितना+एक] जितना। जिस मात्रा का।

जत्था—संज्ञा पुं० [स० यूथ] १ बहुत से प्राणियों का समूह। गरोह। २ वर्ग। फिरका।

जत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "हँसली १"। उ०—यज्ञोपवीत पुनीत विराजत गूढ़ जत्रु बनि पीन अंस तति।—गीता०।

जथा(पु)—क्रि० वि० दे० "यथा"।
संज्ञा पुं० दे० "जत्था"।
संज्ञा स्त्री० [स० ग्रंथ] पूँजी। धन।

जथारथ—अव्य० दे० "यथार्थ"। उ०—विरति विवेक विनय विग्याना। बोध जथारथ वेद पुराना।—मानस।

जदा†—क्रि० वि० [सं० यदा] जब। जब कभी।
अव्य० [स० यदि] यदि। अगर।

जदपि—क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।

जदवार—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "निर्विषी।"

जदु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यदु"।

जदुपति(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यदुपति"। उ०—कोऊ कोरिक संग्रहौ कोऊ लाख हजार। मो संपति जदुपति सदा विपति विदारनहार।—विहारी०।

जदुपुर—संज्ञा पुं० [सं० यदु+पुर] मथुरा-नगरी।

जदुराई, जदुराज—संज्ञा पुं० [स० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जद्द(पु)—वि० [अ० ज्याद] ज्यादा।
वि० प्रचंड। प्रबल।

जद्दपि†(पु)—क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

जद्दबद्द—संज्ञा पुं० [स० यद्वाद] बुरा भला कहना।

जद्दच्छा—[स० यदृच्छा] दे० "यदृच्छा। उ०—उपालंभ शिक्षा स्तुति विनय जद्दच्छा उक्ति। विरह निवेदन जुत सुकवि बरनत हैं बहु जुक्ति।—शृंगार०।

जन—संज्ञा पुं० [स०] १ मनुष्य (समूह) २ प्रजा ३। सामान्य व्यक्ति। जनता में एक साधारण मनुष्य। सर्व साधारण। ४ अनुयायी। अनुचर। दास। उ०—हरि अर्जुन निज जन जान। लै गए तहाँ न जहँ शशि भान—सूर०। ५ समूह। समुदाय। ६ भवन। ७ मजदूरी। ८ सात लोकों में से पाँचवाँ लोक। महर्लोक के ऊपर का लोक।

जनउ§—संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ"। उ०—फोट-चाट जनउ तोड उपर चढावए चाह घोर।

जनक—संज्ञा पुं० [स०] १ जन्मदाता। उत्पादक। २ पिता। बाप। ३ मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि। ४ सीता के पिता।

जनकजा—संज्ञा स्त्री० [स०] महाराज जनक की पुत्री। सीता।

जनकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] 'जनक' होने का भाव।
जनकनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
जनकपुर—संज्ञा पुं० [सं०] मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जनकांगजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
जनकौर—संज्ञा पुं० [सं० जनक+पुर] १ जनकपुर। २. जनक राजा के भाईबंधु।
जनखा—वि० [फा० जनक] १ जिसके हावभाव आदि औरतों के से हों। २ हीजड़ा। नपुंसक।
जनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जनसमूह। सर्वसाधारण। समाज। २ मनुष्य जाति। मानव समुदाय।
जनत्राता—संज्ञा पुं० [सं० जन+त्रातृ] ईश्वर, जो भक्तों की रक्षा करता है। उ०—भए काल वस जब पितु माता। मइ बन गएउँ भजन जनत्राता।—मानस।
जनन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्ति। उद्भव। २ जन्म। ३ आविर्भाव। ४ तंत्र के अनुसार मंत्रों के दस संस्कारों में से पहला। ५ यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार। ६ वंश। कुल। वंशानुक्रम। ७ पिता। ८ परमेश्वर। निर्माता ९ निर्माण। बनाना। १० निमित्त होना।
जनना—क्रि० स० [सं० जनन] १ जन्म देना। पैदा करना। २ ब्याना।
जननि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "जननी"।
जननी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पन्न करनेवाली। २ माता। माँ। ३ कुटकी। ४ अलता। ५ जनी नाम का गंधद्रव्य।
जननेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भग। योनि। २ लिंग। शिश्न।
जनपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ आबाद देश। उ०—बरषत सुमन, बधाव नगर नभ, हरष न जात बखानी। ज्यों हुलास रनिवास नरेसहि त्यों जनपद रजधानी।—गीता०। २ जिला। बस्ती। गाँव। ३ समाज। राष्ट्र। ४. राज्य। साम्राज्य।
जनप्रिय—वि० [सं०] सबसे प्रेम रखनेवाला। सर्वप्रिय।
जनम—संज्ञा पुं० दे० "जन्म"।
जनमघूँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जनम+घूँटी] वह घूँटी जो बच्चों को जन्म समय से दो तीन वर्ष तक पिलाई जाती है।
मुहा०—(किसी बात का) जनमघूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात की) आदत पड़ना।
जनमना—क्रि० अ० [हिं० जनम] पैदा होना। जन्म लेना।
जनमसँघाती†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० जनम+सँघाती] १. वह जिसका साथ जन्म से ही हो। २ वह जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमाना—क्रि० स० [हिं० जनम] १. जनमने का काम कराना। प्रसव कराना २ पैदा करना। उत्पन्न करना।
जनमेजय—संज्ञा पुं० दे० "जन्मेजय"।
जनयिता—संज्ञा पुं० [सं० जनयितृ] पैदा करनेवाला। पिता।
जनयित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैदा करनेवाली। माता।
जनरल—संज्ञा पुं० [अँ० जेनरल] फौज का सेनापति।
वि० साधारण। आम। स्वाभाविक।
जनरव—संज्ञा पुं० [सं०] १ किंवदंती। अफवाह। २ लोकनिंदा। बदनामी। ३ कोलाहल। शोर।
जनलोक—संज्ञा पुं० [सं०] सात लोकों में से एक।
जनवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई"।
जनवाना—क्रि० स० [हिं० जनना का प्रे० रूप] प्रसव कराना। बच्चा जनवाना।
† क्रि० स० [हिं० जानना] जानकारी दिलवाना। सूचित कराना।
जनवास—संज्ञा पुं० [सं० जन+वास] १ सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। २ बरात या दूल्हे के ठहरने का स्थान। ३ सभा। समाज।
जनवासा—संज्ञा पुं० [सं० जन्य+वास] बरात या दूल्हे के ठहरने का स्थान। उ०—अति सुंदर दीन्हे जनवासा। जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा।—मानस।
जनश्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अफवाह। किंवदंती। लोगों में फैली अप्रामाणिक बात।
जनसंख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तादाद। आबादी की कुल संख्या।
जनस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्यों का निवासस्थान। १ दंडकारण्य का एक प्रदेश।
जनहरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त जिसमें ३० लघु के बाद १ गुरु, कुल ३१ वर्णों का प्रत्येक चरण होता है, जैसे—यदुपति जय जय नर नरहरि जय जय कमल नयन जय गिरधर ये। जगपति हरि जय जय गुरु जग जय जय मनसिज जय जय मनहर ये॥
जनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √जन+आई (प्रत्य०)] १ जनानेवाली। दाई। २ जनाने की मजदूरी।
जनाउ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "जनाव"।
जनाजा—संज्ञा पुं० [अ०] १ शव। लाश। २ अरथी या वह संदूक जिसमें रखकर लाश को रखकर गाड़ने, जलाने आदि के लिये जाते हैं।
जनानखाना—संज्ञा पुं० [फा०] मकान या महल का वह हिस्सा जिसमें पुरुष नहीं जाते, केवल स्त्रियाँ ही रहती हैं। स्त्रियों के रहने का स्थान। अंतःपुर।
जनाना—क्रि० स० दे० "जताना"।
क्रि० स० [हिं० जनना] उत्पन्न कराना। जनन का काम करना।
वि० [फा०] [स्त्री० जनानी] १ स्त्रियों का। स्त्रीसंबंधी। २ हीजड़ा। ३ निर्बल। डरपोक।
संज्ञा पुं० १ जनखा। मेहरा। २ अंतःपुर। जनानखाना। ३ पत्नी। जोरू।
जनानापन—संज्ञा पुं० [फा० जनाना+पन (प्रत्य०)] १ स्त्रीत्व। २ स्त्री जैसे हाव-भाव। नामर्दी। ३ स्त्रैणता।
जनाब—संज्ञा पुं० [अ०] बड़ों के लिये आदरसूचक शब्द। महाशय।
जनार्दन—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
जनाव†—संज्ञा पुं० [हिं० जन+आव (प्रत्य०)] जनाने की क्रिया या भाव। सूचना। इत्तला। उ०—चलत न काहुहि कियो जनाव। हरि प्यारी सों बाढ्यो भाव।—सूर०।
जनावर†—संज्ञा पुं० दे० "जानवर"।
जनाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्मशाला। सराय। २ घर। मकान।
जनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २ नारी। स्त्री। ३ माता। ४ जनी नामक गंधद्रव्य। ५ भार्या। पत्नी। ६ जन्मभूमि।
(पु)†अव्य० मत। नहीं। न।
जनित—वि० [सं०] [स्त्री० जनिता] उत्पन्न। जन्मा हुआ।
जनिता—संज्ञा पुं० [सं० जनितृ] [स्त्री० जनित्री] १ उत्पन्न करनेवाला। २ पिता।
जनित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैदा करनेवाली माता। माँ।
जनियाँ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० जानि] प्रियतमा। प्रिया। प्रेयसी।

जनी—संज्ञा स्त्री० [सं० जन] १. स्त्री । २ दासी । अनुचरी । उ०—भीतरि ऐबो सुनाइ जनी तव लौं लहि जाति धनी बकसी सुनि ।—शृंगार० । ३ माता । ४. कन्या । पुत्री । ५ एक गंधद्रव्य ।

वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई ।

जनु—क्रि० वि० [हिं० √जान] मानो (उत्प्रेक्षावाचक) ।

जनून—संज्ञा पुं० [अ०] पागलपन । उन्माद ।

जनूनी—संज्ञा पुं० [अ० जनून] पागल ।

जनेऊ—संज्ञा पुं० [सं० यज्ञ] १ यज्ञोपवीत । यज्ञसूत्र । २ यज्ञोपवीत संस्कार ।

जनेत—संज्ञा स्त्री० [सं० जन्य+हिं० एत (प्रत्य०)] वरयात्रा । बरात ।

जनेव—संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ" ।

जनैया—वि० [हिं० जन+ऐया (प्रत्य०)] जाननेवाला । जानकार । उ०—बदले को बदलो लै जाहु । उनकी एक हमारी दोइ तुम बड़े जनैया आहु ।—सूर० ।

जनौ—क्रि० वि० [हिं० जानो] मानो । गोया ।

जन्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ गर्भ से बाहर आना । उत्पत्ति । पैदाइश ।

मुहा०—जन्म लेना=पैदा होना ।

२ अस्तित्व में आना । आविर्भाव । ३ जीवन । जिंदगी ।

मुहा०—जन्म हारना=(१) व्यर्थ जन्म खोना । खोना । (२) दूसरे का दास होकर रहना ।

४ आयु । जीवनकाल, जैसे-जन्म भर ।

जन्मकुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० जन्म+कुंडली] वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति दिन, तिथि, संवत् आदि का पता चले । जन्मपत्र (फलित ज्योतिष) ।

जन्मतिथि—संज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन" ।

जन्मदिन—संज्ञा पुं० [सं०] जन्म का दिन । । वर्षगाँठ ।

जन्मना—क्रि० अ० [सं० जन्म से हिं० ना० धा०] १ जन्म लेना । पैदा होना । २ अस्तित्व में आना ।

जन्मपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मपत्री । जन्मकुंडली ।

जन्मपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, वार, तिथि, संवत् आदि का ब्योरा रहता है ।

जन्मभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो ।

जन्मसिद्ध—वि० [सं०] जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो । जन्म मात्र से प्राप्त ।

जन्मस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मभूमि ।

जन्मांतर—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरा जन्म ।

जन्मा—संज्ञा पुं० [सं० जन्मन्] वह जिसका जन्म हो (समास के अंत में), जैसे शर-जन्मा । नेत्रजन्मा ।

वि० जो पैदा हुआ हो । उत्पन्न ।

जन्माना—क्रि० स० [हिं० जन्मना का स० रूप) उत्पन्न करना । जन्म देना ।

जन्माष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ । कृष्ण जन्म-दिन ।

जन्मेजय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ अर्जुन के पौत्र और प्राचीन हस्तिनापुर के राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था ।

जन्मोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी के जन्म का उत्सव । २ किसी महापुरुष के जन्म की तिथि पर मनाया जानेवाला महोत्सव, दान, जप, पूजा, पाठ आदि ।

जन्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जन्या] १ साधारण मनुष्य । जन-साधारण । २ किंवदंती । अफवाह । खबर । ३. राष्ट्र । किसी एक देश के वासी । ४ लड़ाई । युद्ध । ५ पुत्र । बेटा । ६ पिता । ७ जन्म । ८ बाजार । हाट । ९ दूल्हे का साथी (छोटा भाई) बच्चा आदि ।

वि० १ जनसंबंधी । २ किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला । ३ राष्ट्रीय । जातीय । ४ जो उत्पन्न हुआ हो । उद्भूत ।

जन्हु—संज्ञा पुं० दे० "जह्नु" ।

जप—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी मंत्र या वाक्य को बार बार धीरे धीरे या मन ही मन में दुहराना । २ पूजा आदि में मंत्र की संख्यापूर्वक मूक या मंद स्वर में आवृत्ति । मौन या धीमी आवृत्ति ।

जपतप—संज्ञा पुं० [सं० जप+तप] संध्या, पूजा, जप और पाठ आदि । पूजापाठ ।

जपना—क्रि० स० [सं० जपन] १ किसी नाम, मंत्र या स्तोत्र आदि का मंद स्वर में बारंबार उच्चारण । धीमी आवृत्ति । २ संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बार बार मंद उच्चारण से आवृत्ति करना । ३ † खा जाना । ले लेना ।

जपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जपना] १ माला । २ गोमुखी । गुप्ती । ३. वह वस्तु जिसके सहारे जप किया जाय ।

जपनीय—वि० [सं०] जप करने योग्य ।

जपमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह माला जिससे लेकर लोग जप करते हैं ।

जपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवा । अड़हुल ।

संज्ञा पुं० [सं० जापक] जपनेवाला ।

जपिया, जपी—वि० [सं० जप] जप करनेवाला ।

जप्त—वि० दे० "जब्त" ।

जफा—संज्ञा स्त्री० [फा०] सख्ती । जुल्म ।

जफील—संज्ञा स्त्री० [अ० जफीर] [क्रि० जफीलना] १ सीटी का शब्द । २ वह जिससे सीटी बजाई जाय । सीटी ।

जब—क्रि० वि० [सं० यावत्] जिस समय । जिस वक्त ।

मुहा०—जब जब=जिस जिस समय । जब कभी । जब तब=कभी कभी । जब देखो तब=सदा । सर्वदा । हमेशा ।

जबड़ा—संज्ञा पुं० [सं० जंभ] मुँह में दोनों ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाढ़ें जड़ी रहती हैं । कल्ला ।

जबर—वि० [फा० जबर] १ बलवान् । बली । ताकतवर । २ दृढ़ । मजबूत ।

जबरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जबर] अन्याय । अत्याचार । सख्ती । ज्यादती ।

जबरदस्त—वि० [फा०] [संज्ञा जबरदस्ती] १ बलवान् । बली । शक्तिवाला । २ दृढ़ । मजबूत ।

जबरदस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] अत्याचार । सीनाजोरी । जियादती । अन्याय ।

क्रि० वि० बलपूर्वक । दबाव डालकर ।

जबरन—क्रि० वि० [अ० जब्रन्] बलात् । जबरदस्ती । बलपूर्वक ।

जबरा—वि० [हिं० जबर] बलवान् । बली ।

संज्ञा पुं० [अं० जेब्रा] घोड़े और गधे के मध्य का एक बहुत सुंदर जानवर जिसके चमड़े पर रंगीन धारियाँ पड़ी रहती हैं ।

जबह—संज्ञा पुं० [अ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया । हिंसा । वध ।

जबहा—संज्ञा पुं० [हिं० जीव] जीवट । साहस ।

जबान—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जीभ । जिह्वा ।

मुहा०—जबान खींचना=धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिये कठोर दंड देना। जबान पकड़ना=बोलने न देना। कहने से रोकना। जबान पर आना=मुँह से निकलना। जबान में लगाम न होना=सोच समझकर बोलने के अयोग्य होना। जबान हिलाना=मुँह से शब्द निकालना। दबी जबान से बोलना या कहना=अस्पष्ट रूप से बोलना। साफ साफ न कहना।

यौ०—बर जबान=कंठस्थ। उपस्थित। बेजबान=बहुत सीधा।

बदजबान=गुस्ताख। अशिष्ट भाषी। २ बात। बोल। ३ प्रतिज्ञा। वादा। कौल। ४ भाषा। बोलचाल।

जबानदराज—वि० [फा०] [संज्ञा जबानदराजी] धृष्टता पूर्वक अनुचित बातें करनेवाला। अशिष्टवादी।

जबानबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी घटना के संबंध में लिखा जानेवाला इजहार या गवाही जिसके बाद कहनेवाला अपने वक्तव्य को फिर तोड़ मरोड़ या बदल नहीं सकता। किसी को अपनी बात में परिवर्तन करने के अवसर का अभाव। २. मौन। चुप्पी।

जबानी—वि० [फा० जबान] १. जो केवल जबान से कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। २ जो लिखित न हो। मौखिक। मुँह से कहा हुआ।

जबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यकाम जाबाल (जाबालि) ऋषि की माता।

जबून—वि० [तु०] बुरा। खराब।

जब्त—संज्ञा पुं० [अ०] अधिकारी या राज्य द्वारा दंडस्वरूप किसी की संपत्ति का हरण, जैसे रियासत जब्त होना। २. सहन।

जब्ती—संज्ञा स्त्री० [अ० जब्त] जब्त होने की क्रिया।

जब्र—संज्ञा पु० [अ०] ज्यादती। सख्ती।

जब्रन, जब्रिया—क्रि० वि० दे० "जबरन"।

जभी—क्रि० वि० [हि० जब+ही (प्रत्य०)] १ जिस समय ही। २ ज्योंही।

जम—संज्ञा पुं० दे० "यम"।

जमकात,जमकातर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० यम+कातर] पानी का भँवर।

संज्ञा स्त्री० [सं० यम+कत्तरी] १ यम का छुरा या खाँड़ा। जम की तलवार। उ०—बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जम केरी।—पदमावत। २ खाँड़ा।

जमघट—संज्ञा पुं० दे० "यमघट"।

संज्ञा पुं० [अ० जमा+सं० घट्ट] मनुष्यों की भीड़। ठट्ट। जमावड़ा।

जमज—वि० दे० "यमज"।

जमजाई—संज्ञा स्त्री० [सं० यमजाया] मृत्यु

जमडाढ़—संज्ञा स्त्री० [सं० यम+हिं० डाढ़] कटारी की तरह का एक हथियार।

जमदग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो भृगु के वंशज भार्गव ऋचीक के पुत्र और परशुराम के पिता थे।

जमधर—संज्ञा पु० दे० "जमडाढ़"।

जमधरि—संज्ञा पुं० दे० "जमधार"। उ०—श्रुति-पुरान बधु-सम्मत चाँचरि चरित मुरारि। करि विचार भव तरिय, परिय न कबहुँ जमधारि।—विनय०।

जमन(पु)—संज्ञा पु० दे० "यवन"।

जमना—क्रि० अ० [सं० यमन्] १. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना, जैसे—बरफ जमना। २. दृढ़तापूर्वक बैठना। अच्छी तरह स्थित होना। ३ स्थिर होना। निश्चल होना। ४ एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५ हाथ से होनेवाले काम का पूरा पूरा अभ्यास होना। ६ बहुत से आदमियों के सामने होनेवाले किसी काम का उत्तमता से होना, जैसे—गाना जमना। खेल जमना। ७ किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना।

क्रि० अ० [हिं० जन्मना (प्रत्य०)] उगना। उपजना। उत्पन्न होना।

संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना"।

जमनका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० यवनिका] १ यवनिका। परदा। २ काई। ३ मैल।

जमराज—संज्ञा पु० दे० "यमराज"।

जमवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० जमना] लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कुआँ बनाने में भगाड में रखा जाता है।

जमवार(पु)—संज्ञा पु० [सं० यमद्वार] यम का द्वार।

जमा—वि० [अ०] १ संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २ सब मिलाकर। ३ जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मूलधन। पूँजी। २ धन। रुपया पैसा। ३ भूमिकर। मालगुजारी। लगान। ४. जोड़ (गणित)।

जमाई—संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] दामाद। जँवाई। जामाता।

संज्ञा स्त्री० [हिं०√जम+आई (प्रत्य०)] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

जमाखर्च—संज्ञा पु० [फा० जमा+खर्च] आय और व्यय।

जमात—संज्ञा स्त्री० [अ० जमाअत] १ मनुष्यों का समूह। गरोह या जत्था। २ कक्षा। श्रेणी। दर्जा।

जमाति—संज्ञा स्त्री० दे० "जमात"। उ०—पाँच जना की जमाति चलावै, तास गुरू मैं चेला।—कबीर०।

जमादार—संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा जमादारी] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।

जमानत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिखाकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। जामिनी।

जमानतनामा—संज्ञा पुं० [अ० जमानत+फा० नामा] वह कागज जो जमानत करते समय लिखा जाता है।

जमाना—क्रि० स० [हिं० "जमना" का स० रूप] १ जमने में सहायक होना। किसी तरह पदार्थ को गाढ़ा या ठोस बनाना। २ किसी पदार्थ को दृढ़तापूर्वक बैठाना। ३. जड़ मजबूत करना। ४ अच्छी प्रकार चलने योग्य बनाना, जैसे व्यापार जमाना, स्कूल जमाना। ४ हाथ से होनेवाले काम का अभ्यास करना, जैसे—अभी तो वे हाथ जमा रहे हैं। ५ प्रहार करना। चोट लगाना, जैसे—हथौड़ा जमाना। थप्पड़ जमाना।

संज्ञा पु० [फा०] १ समय। काल। वक्त। २ बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३ प्रताप या सौभाग्य का समय। ४ दुनिया। संसार। जगत।

मुहा०—जमाना देखा होना=अनुभवी होना।

जमानासाज—वि० [फा०] [संज्ञा जमानासाजी] जो लोगों का रंगढंग देखकर व्यवहार करता हो।

जमाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पटवारी का एक कागज जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।

जमामार—वि० [हिं० जमा+√मार] दूसरों का धन दबा रखनेवाला या ले लेनेवाला।

जमालगोटा—संज्ञा पुं० [सं० जयपाल] एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है। जयपाल। दंतीफल।

जमाव—संज्ञा पुं० [हिं०√जम + आव (प्रत्य०)] १ जमाने का भाव। २ जमने का भाव।

जमावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√जम+आवट (प्रत्य०)] जमने का भाव।

जमावड़ा—संज्ञा पुं० [अ० जमा+हिं० आवड़ा (प्रत्य०)] एकत्र होना। बहुत से लोगों का समूह। भीड़।

जमीकंद—संज्ञा पुं० [फा० जमीन+कंद] सूरन। ओल।

जमींदार—संज्ञा पुं० [फा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी। अँगरेजी राज्य-काल में जमीन का मालिक जो किसानों को लगान पर जमीन देता था।

जमींदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जमींदार की वह जमीन जिसका वह मालिक हो। २ जमींदार का पद। ३ जमींदार का पेशा या कार्य।

जमींदोज—वि० [फा०] जो तोड़-फोड़कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो। विनष्ट।

जमी—वि० [सं० यम] संयम करनेवाला। संयमी। उ०—असन पान सुचि अमिअ अमी से। देखि लोग सकुचात जमी से। —मानस।

जमीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पृथ्वी (ग्रह)। २ पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिसपर लोग रहते हैं। भूमि। धरती।

मुहा०—जमीन आसमान एक करना=(१) अत्यधिक दौड़धूप करना। (२) हलचल मचा देना। जमीन आसमान का फरक=बहुत अधिक अंतर। बहुत बड़ा फरक। जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना =बहुत डींग हाँकना। जमीन चूमना=मुँह के बल गिरना। जमीन देखना=(१) गिर पड़ना। पटका जाना। (२) नीचा देखना। जमीन पर पाँव या पैर न रखना= बहुत गर्व करना। जमीन में गड़ जाना= बहुत अधिक लज्जित होना।

३ मिट्टी। ४ कपड़े आदि की वह सतह जिसपर बेलबूटे आदि बने हों। ५ वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय। ६ चित्र लिखने के लिये मसाले से तैयार की हुई सतह। ७ डौल। भूमिका। आयोजन।

मुहा०—जमीन बाँधना=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिये सतह तैयार करना।

जमुकना†—क्रि० अ० [?] पास पास होना। सटना।

जमुरंद—संज्ञा पुं० [फा०] पन्ना (रत्न)।

जमुहाना†—क्रि० अ० दे० "जँभाना"।

जमूरक, जमूरा†—संज्ञा पुं० [फा० जंबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमूड़ा—एक प्रकार की सँड़सी।

जमोग†—सं० पुं० [अ० जमा+सं० योग] जमोगने की क्रिया या भाव।

जमोगना†—क्रि० स० [हिं० जमोग] १ हिसाब किताब की जाँच करना। २ स्वयं उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिये दूसरे को भार सौंपना। सरेखना। ३ तसदीक कराना। ४ बात की जाँच कराना।

जमौआ—वि० [हिं० जमा+औआ (प्रत्य०)] जमाकर बनाया हुआ, जैसे—जमौआ कंबल।

जम्मभूमि⑤—सं० स्त्री० दे० "जन्मभूमि"। उ०—जननि पाळे पन्नविअ, जन्मभूमि को मोह छोड्डिअ, धनि छोड्डिअ।

जम्हाना—क्रि० अ० दे० "जँभाना"।

जम्हाई—संज्ञा स्त्री० [सं० जंभा] पूरा मुँह खोलकर, श्वास लेने तथा छोड़ने की एक सहज क्रिया जो निद्रा या आलस्य के कारण होती है। उबासी।

जयंत—वि० [सं०] [स्त्री जयंती] १ विजयी। २ बहुरूपिया।

संज्ञा पुं० [सं०] १ रुद्र। २ इंद्र के पुत्र उपेंद्र का नाम। ३ स्कंद। कार्तिकेय।

जयंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ध्वजा। पताका। २ हलदी। ३ दुर्गा। ४ पार्वती। ५ किसी की जन्मतिथि पर होनेवाला उत्सव। वर्षगाँठ का उत्सव। ६ एक बड़ा पेड़। जैत या जैंता। ७ बैजंती का पौधा। ८ जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को भेंट करते हैं। जई।

वि० [सं०] जय करनेवाली। विजयिनी।

जय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव। जीत।

मुहा०—जय मनाना=विजय की कामना करना। समृद्धि चाहना।

२ विष्णु के एक पार्षद का नाम। ३ महाभारत का पूर्वनाम। ४. जयंती। जैंत का पेड़। ५ लाभ। ६ अयन।

जयकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपाई। छंद।

जयजयकार—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी की जय मनाने का घोष।

जयजीव⑤—संज्ञा पुं० [सं० जय+जीव] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जिओ।

जयति—अव्य० [सं०] जय हो।

जयद्रथ—संज्ञा पुं० [सं०] सिंधुसौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयना⑤†—क्रि० अ० [सं० जयन] जीतना।

जयपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है। विजयपत्र।

जयपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमालगोटा। २ विष्णु। ३. राजा।

जयमंगल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह हाथी जिसपर राजा विजय करने के उपरांत सवार होकर निकले। २ राजा की सवारी का हाथी। ३ ताल के साठ भेदों में से एक।

जयमार, जयमारा—संज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल"। उ०—का कहँ दैउ ऐस जिउ दीन्हा। जेइ जयमार जीति रन लीन्हा।—पदमावत।

जयमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० जयमाला] १ वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय। २ वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी।

जयसील—वि० [सं० जयशील] विजयी। जयशाली। उ०—मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं। कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं। —मानस।

जयस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा।

जया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ पार्वती। ३ हरी दूब। ४ अरणी वृक्ष। ५ जैंत का पेड़। ६ हरीतकी। हड़। ७ पताका। ध्वजा। ८ गुटहल का फूल।

वि० जय दिलानेवाली। जयकारिणी।

जयी—वि० [सं० जयिन्] विजयी। जयशील।

जर⑤—संज्ञा पुं० [सं० जरा] वृद्धावस्था।

†संज्ञा पुं० [हिं० ज्वर] दे० 'ज्वर'।

संज्ञा पुं० [फा० जर] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। दौलत। रुपया।

संज्ञा स्त्री० दे० "जड़"।

जरकटी—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

जरकस, जरकसी(पु)—वि० [फा० जरकश] जिसपर सोने के तार आदि लगे हों। उ०—अब झकि झाँकि झमकि झुकी उझकि झरोखे ऐन। कसे कंचुकी जरकसी लसी बसी ही नैन।—शृं० सत०।

जरखेज—वि० [फा०] [संज्ञा जरखेजी] उपजाऊ। उर्वरा (जमीन)।

जरठ—वि० [सं०] १ कर्कश। कठिन। २ वृद्ध। बुड्ढा। ३ जीर्ण। पुराना।

जरतार(पु)—संज्ञा पुं० [फा० जर+हिं० तार] सोने या चाँदी आदि का तार। जरी।

जरतारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जरतार] जरी के काम से युक्त साड़ी उ०—पहिरत रावरे धरत यह लाल सारी, जोति जरतारी हूँ सों अधिक सोहाई है। शृंगार०।

जरतुश्त- संज्ञा पुं० दे० "जरदुश्त"।

जरद्—वि० [सं०] [स्त्री० जरता] १ बुड्ढा। वृद्ध। २ पुराना। बहुत दिनों का।

जरत्कारु—संज्ञा पुं० [सं०] या यावर गोत्र के एक ऋषि जिनका विवाह वासुकि नाग की भगिनी से हुआ था।

जरत्कारु—संज्ञा स्त्री० [सं०] वासुकी नाग की बहन और जरत्कारु ऋषि की पत्नी।

जरद—वि० [फा० जर्द] पीला। पीत।

जरदा—संज्ञा पुं० [फा०] १ चावलों का एक व्यंजन। २ पान में खाने की सुगंधित सुरती। ३ पीले रंग का घोड़ा।

जरदालू—संज्ञा पुं० [फा०] खूबानी।

जरदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पीलापन। २ अंडे के भीतर का पीला चेप।

जरदुश्त—संज्ञा पुं० [फा०] फारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।

जरदोज—संज्ञा पुं० [फा०] जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे सितारे आदि से की जाती है।

जरन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।

जरनल—संज्ञा पुं० [अ०] विविध संस्थाओं या विभागों के विशेष दैनिक या सामयिक पत्र।

जरना(पु)—क्रि० अ० दे० "जलना"।

क्रि० स० दे० "जड़ना"।

जरनि जरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"। उ०—राम नाम के जपे जाय जियकी जरनि।—विनय०।

जरनैल—संज्ञा पुं० दे० "जनरल"।

जरब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आघात। चोट।

मुहा०—जरब देना=चोट लगाना। पीटना। २ गुणा (गणित)।

जरबाफ—संज्ञा पुं० [फा०] सोने के तारों से कपड़े पर बेलबूटे बनानेवाला।

जरबाफी—वि० [फा० जरबाफ] जिसपर कलाबत्तू का काम बना हो।

संज्ञा स्त्री० जरदोजी।

जरबफ्त—संज्ञा पुं० [फा०] वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेलबूटे हों।

जरबीला(पु)—वि० [फा० जरब+ईला (प्रत्य०)] भड़कीला और सुंदर।

जरमन—संज्ञा पुं० [अ०] योरप के जरमनी नामक देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० जरमनी की भाषा।

वि० जरमनी देश का।

जरमन सिलवर—संज्ञा पुं० [अँ०] एक प्रसिद्ध सफेद और चमकीली धातु जो जस्ते, ताँबे और निकल के संयोग से बनती है।

जरर—संज्ञा पुं० [अ०] १ हानि। नुकसान। क्षति। २ आघात। चोट।

जरांकुश—संज्ञा पुं० [सं० यज्ञ+कुश] मूँज के प्रकार की एक सुगंधित घास।

जरवारा(पु)—वि० [फा० जर+हिं० वाला (प्रत्य०)] धनी। संपन्न।

जरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।

जरा—वि० [अ० जर्रा] थोड़ा। कम।

क्रि० वि० थोड़ा। कम।

जराअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जरा-अती] जराअत पेशा। खेतीबारी।

जराग्रस्त—वि० [सं०] बुड्ढा। वृद्ध।

जराना(पु)—क्रि० स० दे० "जलाना"।

जरायु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह झिल्ली जिसमें बच्चा लिपटा हुआ उत्पन्न होता है। २ गर्भाशय।

जरायुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। पिंडज का एक भेद।

जराव(पु)†—वि० दे० "जड़ाऊ"। उ०—पुनि अभरन बहु काढ़ा, अनवन मोति जराव। हेरि फेरि निति पहिरै, जब जैसे मन भाव।—पद्मावत।

जरासंध—संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।

जरिया(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जड़िया"।

वि० [हिं० √जर+इया (प्रत्य०)] जो जलाकर बनाया गया हो, जैसे—जरिया नमक।

संज्ञा पुं० [अ०] १ संबंध। लगाव। द्वार। २ हेतु। कारण। सबब। ३ साधन। सिलसिला।

जरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २. सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

जरीब—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।

जरीबाना†—संज्ञा पुं० दे० "जुरमाना"।

जरूर—क्रि० वि० [अ०] अवश्य। निःसंदेह।

जरूरत—स्त्री० [अ०] आवश्यकता। प्रयोजन।

जरूरी—वि० [फा०] १ जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय। २ जो अवश्य होना चाहिए। आवश्यक।

जरौटा(पु)—वि० [हिं० √जड़ + औट (प्रत्य०)] जड़ाऊ।

जर्क बर्क—वि० [फा०] तड़क भड़कवाला। भड़कीला। चमकीला। भड़कदार।

जर्जर—वि० [सं०] १ जीर्ण। जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो। २ टूटा-फूटा। खंडित। ३ वृद्ध। बुड्ढा।

जर्जरित—वि० दे० "जर्जर"।

जर्द—वि० [फा०] पीला। पीत।

जर्दा—संज्ञा पुं० दे० "जरदा"।

जर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पीलापन।

जर्नल—संज्ञा पुं० दे० "जरनल"।

जर्रा—संज्ञा पुं० [अ०] १. अणु। २ बहुत छोटा टुकड़ा या खंड।

जर्राह—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा जर्राही] चीरफाड़ के द्वारा चिकित्सा करनेवाला। शस्त्रचिकित्सक।

जलधर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जिसका वध विष्णु ने उसकी स्त्री को धोखा देकर किया था।

संज्ञा पुं० दे० "जलोदर"।

जल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी। २. उशीर। खस। ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र। ४ सुगंधबाला। नेत्रबाला।

जलअलि—सज्ञा पुं० [सं० जल+अलि] एक काला कीटा जो पानी पर तैरा करता है। पैरौवा। भौंतुवा।

जलकर—सज्ञा पुं० [हिं० जल + कर १ जलाशयों की उपज। ताल में होनेवाला पदार्थ, जैसे—मछली, सिंघाड़ा आदि। २ नदी, नाला, तालाव या समुद्र के पानी का पीने के अतिरिक्त उपभोग करनेवाले से लिया जानेवाला कर, जैसे—मछली मारने वाले, सिंघाडा आदि बोनेवाले, नदी पार करनेवाले आदि से।

जलकल—सज्ञा ह [स० जल+हिं० कल] १ पानी दे ला कल। २ नगर में पानी की व्यवस्था करनेवाला विभाग। ३ आग बुझानेवाला कल।

जलक्रीड़ा—सज्ञा स०] वह क्रीटा जो नदी, जलाशय में की जाय। जलविहार।

जलखावा†—सज्ञा पु० दे० "जलपान"।

जलघड़ी—सज्ञा स्त्री० [सं० जल+हिं० घड़ी] समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी जिसके भर कर डूब जाने पर एक प्रहर या एक घटा माना जाता था।

जलचर—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० जलचरी] पानी में रहनेवाले जतु।

जलचरी—सज्ञा स्त्री० [स०] मछली। उ०—हमते भली जलचरी बपुरी अपनो नेम निवाह्यो। जलते विछुरि तुरत तनु त्याग्यो तउ कुल जल को चाह्यो।—सूर०।

[सं० जलचर+हिं० ई (प्रत्य०)] जलचर होने की क्रिया या भाव।

जलचादर—सज्ञा स्त्री० [स० जल+हिं० चादर] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह।

जलचारी—सज्ञा पुं० दे० "जलचर"

जलज—वि० [सं०] जो जल में उत्पन्न हो।

सज्ञा पुं० [स०] १ कमल। २ शख। ३. मछली। ४ जलजंतु। ५ मोती।

जलजला—सज्ञा पुं० [फा०] भूकप।

जलजा—सज्ञा स्त्री० [सं० जल+जा] लक्ष्मी। उ०—कोऊ कहै करहाट के तत में कोक परागन में उनमानी। ढूँढ्ढु री मकरद के बुद में 'दास' कहै जलजा गुन ज्ञानी। —शृंगार०।

जलजात—वि० दे० "जलज"।

सज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल।

जलजान—सज्ञा पुं० [स० जलयान] जहाज। उ०—वारिधार की बरत की बूड़त की जलजान। विरह-मृतक-सजीवनी पठई पति पतियान।—रससारांश।

जलडमरूमध्य—सज्ञा पु० [स० जल+डमरु (के आकार का) +मध्य] दो वडे समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र (भूगोल)।

जलतरंग—सज्ञा पु० [स० जल+तरंग] एक वाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर दो लकड़ियों से वजाया जाता है।

जलत्रास—सज्ञा पु० [सं०] वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटने पर जल देखने से उत्पन्न होता है। (अं० हाइड्रोफोबिया) जलातंक।

जलथभ—सज्ञा पुं० दे० "जलस्तभ"।

जलद—वि० [स०] जल देनेवाला।

सज्ञा पु० [सं०] १ मेघ। बादल। २ मोथा। ३ कपूर।

जलदस्यु—सज्ञा पु० [सं०] समुद्री डाकू। समुद्री लुटेरा।

जलदागम—सज्ञा पु० (स०) १ वर्षा ऋतु का आगमन या आरभ। २ आकाश में बादलों का घिरना।

जलदाता—वि० [सं० जल+दातृ] ऋषियों और पितरों को मत्रपूर्वक जल प्रदान करके सतुष्ट करनेवाला। उ०—सवत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ। —मानस।

जलधर—सज्ञा पु० [स०] १ बादल। २ मुस्ता। ३ समुद्र।

जलधरमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बादलों का समूह। २ बारह अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, सगण और मगण हों तथा चौथे वर्ण पर यति और बारहवें पर विराम हो, जैसे—मो भासे मो, छलि हरि दीन्हों जोगा। ठानो ऊधो, उन कुबजा सों भोगा॥

जलधरी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। जलहरी।

जलधारा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पानी का प्रवाह। पानी की धार। २ जलधारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या।

सज्ञा पुं० बादल। मेघ।

जलधि—सज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र। २ एक अर्ब। २ महापद्म। ३ (अमेरिका में) १००००००००० की सख्या और ब्रिटेन में १०००००००००००० की सख्या।

जलन—सज्ञा स्त्री० [हिं० जलना] १ जलने की पीड़ा या दुख। दाह। २. बहुत अधिक ईर्ष्या। डाह।

जलना—क्रि० अ० [स० ज्वलन] १ दग्ध होना। बलना।

मुहा०—जलती आग में कूदना = जानबूझकर विपत्ति में फँसना। २ आँच के कारण भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना। ३ आँच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित होना। झुलसना।

मुहा०—जले पर नमक छिड़कना = किसी दुखी या व्यथित मनुष्य को और दुख देना।

४ ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना।

मुहा०—जली कटी या जली भुनी बात = लगती हुई बात। कटु बात जो द्वेष, डाह या क्रोध आदि के कारण कही जाय। जल भुनकर राख, खाक, कोयला या कवाव होना = ईर्ष्या और क्रोध में बुरी तरह होना। जलना भुनना = कुढ़ना।

जलनिधि—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।

जलप—सज्ञा पुं० [स० जल्प] ध्वनि। चीत्कार। उ०—काल की कुमारी सी सहेली हितकारी लगै, गीत रसवारी मानो गारी की जलप है।—शृंगार०।

जलपक्षी—सज्ञा पु० [सं० जलपक्षिन्] वह पक्षी जो मुख्यत जल में रहता हो।

जलपना—क्रि० अ० [स० जल्पन] लबी चौड़ी बातें करना। बकवाद करना।

जलपाटल—सज्ञा पु० [स० जल+पटल] काजल।

जलपान—सज्ञा पु० [सं०] थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जलपीपल—सज्ञा स्त्री० [सं० जलपिपली] पीपल के आकार की एक प्रकार की औषधि।

जलप्रपात—सज्ञा पुं० [सं०] किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना। झरना। प्रपात।

जलप्रवाह—सज्ञा पु० [सं०] १ पानी का बहाव। २ नदी में शव आदि को बहा देने की क्रिया।

जलप्लावन—सज्ञा पुं० [सं०] १ पानी की बाढ़ जिससे आसपास की भूमि जल में डूब जाय। २ जल से होनेवाला प्रलय

या संहार। ३ एक प्रकार का प्रलय जब समस्त पृथ्वी जलमग्न हो जाती है।

जलबेत—संज्ञा पुं० [सं० जल+वेत्र] जलाशयों के किनारे जमनेवाला वेत।

जलभँवरा—संज्ञा पुं० [सं० जल + हिं० भँवरा] एक काला कीड़ा जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है। भौंतुवा।

जलमानुष—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जलमानुषी] परीरू नामक कल्पित जलजंतु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के समान बतलाया जाता है।

जलयान—संज्ञा पुं० [सं०] वह सवारी जो जल में काम आती हो, जैसे—नाव, जहाज आदि।

जलराशि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

जलरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

जलवर्त—संज्ञा पुं० दे० "जलावर्त्त"।

जलवाना—क्रि० स० [हिं० जलाना का प्रे० रूप] जलाने का काम दूसरे से कराना।

जलशायी—संज्ञा पुं० [सं० जलशायिन्] विष्णु।

जलसा—संज्ञा पुं० [अ०] १ आनंद या उत्सव मनाने के लिये बहुत से लोगों का एक स्थान पर एकत्र होना। २ सभा, समिति आदि का बड़ा अधिवेशन।

जलसिंह—संज्ञा पुं० [सं० जल+सिंह] सील की तरह का एक समुद्री जंतु।

जलसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र में जहाजों पर लड़नेवाली फौज।

जलस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक भौतिक घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर पानी का एक मोटा स्तंभ सा बन जाता है। सूँड़ी।

जलस्तंभन—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रादि से जल की गति रोकना। पानी बाँधना।

जलहर—वि० [सं० जलधर] समुद्र।
संज्ञा पुं० [सं० जलधर] जलाशय। उ०—वे जलहर हम मीन बापुरी कैसे जियहिं किनारे। हम चातक चकोर श्यामघन बदन सुधानिधि प्यारे।—सूर०।

जलहरण—संज्ञा पुं० [सं०] बत्तीस अक्षरों का वह दंडक वृत्त जिसके अंत में दो लघु होते हैं। उ०—भरत सदा ही पूजे पादुका उतै सनेम, इतै राम सिय बंधु सहित सिधारे वन। सूपनखा कै कुरूप मारे खल झुंड घने, हरी दससीस सीता राघव विकल मन। इसमें १६ वें वर्ण पर यति और अंत में विराम होता है। अंतिम गुरु वर्ण भी लघु ही माना जाता है।

जलहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० जलधरी] १ अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। २ मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है।

जलांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत को दी जानेवाली जल की अंजलि।

जलाक—संज्ञा पुं० [हिं० जलना] १. पेट की ज्वाला। २. लू।

जलाजल—संज्ञा पुं० [हिं० झलाझल] गोटे आदि की झालर। झलाझल।

जलाटीन—संज्ञा पुं० दे० "जिलाटिन"।

जलातंक—संज्ञा पुं० दे० "जलत्रास"।

जलातन—वि० [हिं० जला+तन] १. क्रोधी। बिगड़ैल। २ ईर्ष्यालु। डाही।

जलाद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद"।

जलाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण।

जलाना—क्रि० स० [हिं० जलना का स० रूप] १ आग लगाना। प्रज्वलित करना। भस्म करना। २ किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप में करना। ३ आँच के द्वारा विकृत या पीड़ित करना। झुलसाना। ४ किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा—संज्ञा पुं० [हिं० √जल+आपा (प्रत्य०)] डाह या ईर्ष्या की जलन।

जलावन—संज्ञा पुं० [हिं० √जल+आवन (प्रत्य०)] १ ईंधन। २ किसी वस्तु का वह अंश जो तपाए या जलाए जाने पर जल जाता है। जलता।

जलावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी का भँवर। नाल। २ एक प्रकार का मेघ।

जलाशय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ पानी एकत्र हो, जैसे—तालाब, नदी।

जलाहल—वि० [हिं० जलाजल] जलमय।

जलील—वि० [अ०] १ तुच्छ। नीच। २ जिसने नीचा देखा हो। अपमानित।

जलूस—संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से लोगों का समारोह से किसी सवारी या प्रदर्शन के साथ प्रस्थान। उत्सवयात्रा।

जलेचर—वि० दे० "जलचर"।

जलेबी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जलाव ?] १ एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है और खमीर उठाए हुए पतले मैदे से बनाई जाती है। २ गोल घेरा। कुंडली। लपेट। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी।

जलेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २ समुद्र। ३ जलाधिप।

जलोदर—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होने से पेट फूल जाता है।

जलौका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जोंक।

जल्द—क्रि० वि० [अ०] [संज्ञा जल्दी] १ शीघ्र। चटपट। २ तेजी से।

जल्दी—संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता। फुरती।
†क्रि० वि० दे० "जल्द"।

जल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। कहना। २ बकवाद। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

जल्पक—वि० [सं०] बकवादी। वाचाल।

जल्पन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बकवाद। प्रलाप। व्यर्थ की बात। २ डींग।

जल्पना—क्रि० अ० [सं० जल्पन] बकवाद करना। डींग मारना।

जल्लाद—संज्ञा पुं० [अ०] १ प्राणदंड पाए हुए अपराधियों का वध करने पर नियुक्त पुरुष। घातक। वधिक। २ क्रूर व्यक्ति।

जवनिका—संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।

जवाँमर्द—वि० [फा०] [संज्ञा जवाँमर्दी] शूरवीर। बहादुर।

जव—संज्ञा पुं० दे० "जौ"।

जवा—संज्ञा स्त्री० दे० "जपा"।
†संज्ञा पुं० [सं० यव] लहसुन का दाना।

जवाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० √जा+वाई (प्रत्य०)] जाने की क्रिया या भाव। गमन।

जवाखार—संज्ञा पुं० [सं० यवक्षार] एक नमक जो जौ के क्षार से बनता है।

जवादि—संज्ञा पुं० [अ० जब्बाद] एक सुगंधित द्रव्य जो गंधबिलाव के शरीर से निकलता है। गौरासार।

जवान—वि० [फा०] १ युवा। तरुण। २ वीर। बहादुर।
†संज्ञा पुं० १ सिपाही। योद्धा। २ वीर पुरुष।

जवानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजवायन।
संज्ञा स्त्री० [फा०] यौवन। तरुणाई।
मुहा०—जवानी उतरना या ढलना = उमर ढलना। बुढ़ापा आना। जवानी चढ़ना = (१) यौवन का आगमन होना। (२) मदमत्त होना।

जवाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी प्रश्न या बात के समाधान के लिये कही हुई बात। उत्तर। २ बदला। ३ मुकाबले की

चीज। जोड़। ४ नौकरी छूटने की आज्ञा। ५ मनाही। इकार।
जवाबदार—वि० दे० "जवाबदेह"।
जवाबदेह—वि० [फा०] [संज्ञा जवाबदेही] १ उत्तरदाता। २ जिम्मेदार। उत्तरदायी।
जवाबी—वि० [फा०] १ जवाब का। जिसका जवाब देना हो। २ बदले में।
जवाबी पोस्टकार्ड—एक साथ लगे दो पोस्टकार्ड जिनमें एक जवाब के लिये भेजा जाता है।
जवार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जवाल"।
जवारा—संज्ञा पुं० [हिं० जौ+आरा (प्रत्य०)] जौ के हरे अंकुर। जई।
जवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जौ + आरी (प्रत्य०)] जौ छुहारे और मोतियों आदि से गुँथा हुआ हार।
जवाल—संज्ञा पुं० [अ० जवाल] १ अवनति। उतार। घटाव। २ जंजाल। आफत।
जवास, जवासा—संज्ञा पुं० [सं० यवासक] एक प्रकार का कँटीला पौधा जिसके पत्ते सूख जाते हैं।
जवाहरी—संज्ञा पुं० दे० "जौहरी"।
जवाहर—संज्ञा पुं० [अ०] रत्न। मणि।
यौ० —जवाहर-जैकट=सदरी।
जवाहिर—संज्ञा पुं० दे० "जवाहर"।
जवैया†—वि० [हिं० √जा+वैया (प्रत्य०)] जानेवाला। गमनशील।
जशन—संज्ञा पुं० [फा०] १ उत्सव। जलसा। २ आनंद। हर्ष। ३. नाचगाना।
जष्टमुष्ट—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि-मुष्टि] लाठी और मुक्का।
जस(पु)‡—क्रि० वि० [सं० यादृश] जैसा।
† संज्ञा पुं० दे० "यश"।
जसन—संज्ञा पुं० दे० "जशन"। उ०—बिस से बसन लागैं आगि से असन जारैं, जोन्ह को जसन कला मानहु कलप है। —शृंगार०।
जसोदा—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
जसोवै(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"
जस्ता—संज्ञा पुं० [सं० जसद] खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।
जस्स(पु)—सर्व० [सं० यस्य] जिसकी। उ०—सो पुरिसओ जस्सु मानो सो परिसओ जस्स अज्जने सत्ति।
जहँ—क्रि० वि० दे० "जहाँ"।
जहकना, जहँकाना†—क्रि० अ० [हिं० जहना] १. घाटा उठाना। २ धोखे में आना।
जहंदम—संज्ञा पुं० दे० "जहन्नुम"। उ०—जगत जहंदम राचिया झूठे कुल की लाज। तन बिनसैं कुल बिनसिहै, गह्यौ न राम जिहाज। —कबीर०।
जहतिया†—संज्ञा पुं० [हिं० जगात ?] जगात या लगान वसूल करनेवाला। उ०—काया ग्राम मसाहत करि कै जमा बाँधि ठहरावै। मन्मथ करै कैद अपनी में जान जहतिया लावै। —सूर०।
जहत्स्वार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षण जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को त्याग कर उपलक्षण मात्र रह जाते हैं, जैसे, गंगा में घर है।
जहदजहल्लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्षण का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई भावों में से केवल प्रसंगानुकूल भाव ही ग्रहण किया जाता है।
जहदना—क्रि० अ० [हिं० जहदा] १ कीचड़ होना। २ थक जाना।
जहदा—संज्ञा पुं० [?] दलदल।
जहदम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जहन्नुम"।
जहना(पु)†—क्रि० अ० [सं० जहन] १. त्यागना। छोड़ना। २ नाश करना।
जहन्नुम—संज्ञा पुं० [अ०] १ नरक। २ वह स्थान जहाँ बहुत अधिक दुःख या कष्ट हो।
मुहा०—जहन्नुम में जाय=चूल्हे में जाय। हमसे कोई संबंध नहीं।
जहमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति। मुसीबत। आफत। २ झंझट। बखेड़ा।
जहर—संज्ञा स्त्री० [अ० जह्र] १ विष। गरल।
मुहा०—जहर उगलना=मर्मभेदी या कटु बात कहना। जहर का घूँट पीना=किसी अनुचित या असह्य बात को देखकर क्रोध को मन से दबा रखना। जहर का बुझाया हुआ=बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। जहर की पुड़िया=बड़ा उपद्रवी या अनर्थ करनेवाला।
२. अप्रिय बात या काम।
मुहा०—जहर करना या कर देना=बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। जहर लगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना।
वि० १ घातक। मार डालनेवाला। २ बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।
जहरबाद—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत भयंकर और विषैला फोड़ा।
जहरमोहरा—संज्ञा पुं० [फा० जह्रमुहरा] १ एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २ हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।
जहरी, जहरीला—वि० [हिं० जहर+ईला (प्रत्य०)] जिसमें जहर हो। विषैला।
जहल्लक्षणा—संज्ञा स्त्री० दे० "जहत्स्वार्था"।
जहाँ—क्रि० वि० [सं० यत्र] १ जिस स्थान पर। जिस जगह। २ जैसे ही।
मुहा०—जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ=(१) इतस्ततः। इधर उधर। (२) सब जगह। सब स्थानों पर।
संज्ञा पुं० [फा०] जहान। संसार।
जहाँगीरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २ एक प्रकार की चूड़ी।
जहाँपनाह—संज्ञा पुं० [फा०] संसार का रक्षक (बादशाहों का संबोधन)।
जहाज—संज्ञा पुं० [अ०] समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।
मुहा०—जहाज का कौवा, काग या पक्षी=दे० "जहाजी कौवा"।
जहाजी—वि० [अ०] जहाज से संबंध रखनेवाला।
यौ०—जहाजी कौआ=(१) वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उसपर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़ उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है। (२) ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो।
जहान—संज्ञा पुं० [फा०] संसार। लोक। जगत।
जहालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान।
जहिया(पु)†—क्रि० वि० [सं० यदा] जिस समय। जब।
जहीं(पु)†—अव्य० [सं० यत्र] जहाँ ही। जिस स्थान पर।
अव्य० दे० "ज्यों ही"।
जहीन—वि० [अ०] १ बुद्धिमान्। समझदार। २ धारणा शक्तिवाला।
जहूर—संज्ञा पुं० [अ०] प्रकाश।
जह्नु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ एक राजर्षि। पुराणों के अनुसार जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

जह्नु तनया, जह्नु नंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा। भागीरथी।

जाँग—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

जाँगड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] भाट। बंदी।

जाँगर—संज्ञा पुं० [हिं० जान या जाँघ] शरीर का बल। बूता।

संज्ञा पुं० [सं० जांगल] १. सूखा तृण या चारा। २ सुनसान स्थान। खाली स्थान। उ०—नगर कुबेर को सुमेरु की बराबरी, बिरंचि बुद्धि को बिलास लंक निरमान भो। ईसहिं चढ़ाय सीस बीस बाहु बीर तहाँ, रावन सो राजा रजतेज को निधान भो॥ तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौंज संपदा, सकेलि चाकि राखी रासि, जाँगर जहान भो। तीसरे उपास बनवास सिंधु पास सो, समाज महाराजजू को एक दिन दान भो॥ —कविता०।

जागल—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीतर। २ मांस। ३. सूखा देश।

वि० जंगल संबंधी। जंगली।

जागलू—वि० [जांगलिन्] गँवार। जंगली।

जाँघ—संज्ञा स्त्री० [सं० जंघ] घुटने और कमर के बीच का भाग। ऊरु।

जाँघिया—संज्ञा पुं० [हिं० जाँघ+इया (प्रत्य०)] पायजामे की तरह का घुटने तक का एक पहनावा। काछा।

जाँघिल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः पानी के किनारे रहती है।

वि० [हिं० जाँघ + इल (प्रत्य०)] जिसका पैर चलने में लच खाता हो।

जाँच—संज्ञा स्त्री० [हिं० जाँचना] १ जाँचने की क्रिया या भाव। परीक्षा। परख। २ गवेषणा।

यौ०—जाँच पड़ताल = तहकीकात। छानबीन।

जाँचकⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "जाँचक"।

जाँचना—क्रि० स० [सं० याचन] १ सत्यासत्य आदि का अनुसंधान करना। परीक्षा करना। †२ प्रार्थना करना। माँगना। उ०—जिन जाँच्यो जाइ रस नँदराय ढरे। मानों बरसत मास अषाढ़ दादुर मोर ररे। —सूर०।

जाँजराⓟ†—वि० दे० "जाजरा"।

जाँझⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० झंझा] वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जाँत, जाँता—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँतपट—संज्ञा पुं० [हिं० जाँत+पाट] चक्की के पाट। उ०—धरती सरग जाँतपट दोऊ। जो तेहि बिच जिउ राख न कोऊ। —पद्मावत।

जांतव—वि० [सं०] १. जंतुसंबंधी। जीवजंतुओं का। २ जीवजंतुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला।

जांबⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।

जांबवंत—संज्ञा पुं० दे० "जाबवान्"।

जांबवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जाबवान् की कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था।

जांबवान्—संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव का मंत्री एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था।

जांबुवान्—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान"।

जाँवतⓟ—अव्य० दे० "यावत"।

जाँवरⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० जाना] गमन। जाना।

जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। माँ। २. देवरानी। देवर की स्त्री।

वि० स्त्री० उत्पन्न। संभूत।

ⓟ† सर्व० [हिं० जो] जिस। उ०—'दास' जा दरप को दरप कंदरप को है, दरपन सम ठानै कैसे बात सति होइ। —शृंगार०।

वि० [फा०] मुनासिब। उचित।

जाइⓟ—वि० [हिं० जाना] व्यर्थ। वृथा।

वि० [फा०] उचित। वाजिब।

जाई—संज्ञा [सं० जा] बेटी। पुत्री।

जाउनिⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "जामुन"।

जाउरि—संज्ञा स्त्री० [?] दूध में पकाया हुआ चावल। खीर। उ०—पनि जाउरि पछियाउरि आई। घिरित खाँड़ कै बनी मिठाई। —पद्मावत।

जाकⓟ—संज्ञा पुं० [सं० यक्ष] यक्ष।

जाकड़—संज्ञा पुं० [हिं० जाकर] माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा। पक्का का उलटा।

जाकेट—संज्ञा स्त्री० [अँ० जैकेट] १ एक प्रकार की अँगरेजी कुरती या सदरी।

जाखिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

जाग—संज्ञा पुं० [सं० यज्ञ] यज्ञ। मख। उ०—तप कीन्हें से देहैं आग। ता सेती तुम कीजो जाग। —सूर०।

‡संज्ञा स्त्री० [हिं० जगह] जगह। स्थान।

संज्ञा स्त्री० [सं० जागर] जागने की क्रिया या भाव। जागरण।

जागती जोत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √जाग+सं० ज्योति] १. किसी देवता, विशेषत. देवी, की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार। २. चिराग। दीपक।

जागना—क्रि० अ० [सं० जागरण] १ सोकर उठना। नींद त्यागना। २. निद्रारहित रहना। जाग्रत अवस्था में होना। ३ सजग होना। सावधान होना। ४ उदित होना। चमक उठना।

मुहा०—जागता = (१) प्रत्यक्ष। साक्षात्। (२) प्रकाशित। भासमान।

५ समृद्ध होना। बढ़-चढ़कर होना। ६ प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। जोर-शोर से उठना। ७. प्रज्वलित होना। जलना।

जागबलिकⓟ—संज्ञा पुं० दे० "याज्ञवल्क्य"।

जागर, जागरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रा का अभाव। जागना। २ किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात जागना। उ०—बासर ध्यान करत सब बीत्यो। निशि-जागरन करन मन भीत्यो। —सूर०।

जागरित—संज्ञा पुं० [सं०] १ नींद का न होना। जागरण। २ वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।

जागरूक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो जाग्रत अवस्था में हो। २. रखवाला। पहरेदार।

जागरूप—वि० [सं० जागर+रूप] जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

जागर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जागरण। जाग्रति। २ चेतनता।

जागीⓟ—संज्ञा पुं० [सं० यज्ञ] भाट।

जागीर—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० जागीरी] राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश।

जागीरदार—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक। २. सामंत।

जाग्रत—वि० [सं०] १. जो जागता हो। २ वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान हो।

जाग्रति—संज्ञा स्त्री० [सं० जागर्ति] जागरण। जागने की क्रिया।

जाचक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० याचक] १. माँगनेवाला। २ भीख माँगनेवाला। भिखमंगा।

जाचकता(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० जाचक+ता (प्रत्य०)] १. माँगने का भाव। २ भीख माँगने की क्रिया। भिखमंगी।

जाचना(पु)—क्रि० स० [सं० याचन] माँगना।

जाजरो, जाजरौ(पु)—वि० [सं० जर्जर] जर्जर। जीर्ण। उ०—जुगिया न्याइ मरै मरि जाइ। घर जाजरी बलीडौ टेढौ, ओलती डर राइ।—कबीर०।

जाजिम—संज्ञा स्त्री० [तु० जाजम] १ बिछाने की छपी हुई चादर या फर्श। २. गलीचा। कालीन।

जाज्वल्य—वि० [सं०] प्रज्वलित। प्रकाशयुक्त।

जाज्वल्यमान—वि० [सं०] १. प्रज्वलित। दीप्तिमान। २. तेजस्वी। तेजवान्।

जाट—संज्ञा पुं० [?] भारतवर्ष की एक हिंदू जाति जो सिंध, पूर्वी पंजाब, राजपूताना तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैली हुई है।

(पु)वि० गँवार। उजड्ड।

जाठ—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि] १ वह बड़ा लट्ठा जो पत्थर के कोल्हू की कूँडी के बीच पड़ा रहता है।

जाठर—वि० [सं०] १ जठर संबंधी। २ जठर से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० २ जठर। पेट। ३ भूख।

जाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० जाड्य] १ वह ऋतु जिसमें बहुत ठढक पड़ती है। शीतकाल। २ सरदी। शीत। पाला। ठढ।

जाड्य—संज्ञा पुं० [सं०] जड़ता।

जात—संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २ पुत्र। बेटा। ३. जीव। प्राणी।

वि० १ उत्पन्न। जन्मा हुआ, जैसे—जलजात, नवजात। २ व्यक्त। प्रकट। ३ प्रशस्त। अच्छा।

संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

संज्ञा स्त्री० [अ० जात] शरीर। देह।

जातक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बच्चा। उ०—तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नयन सु खजन-जातक से।—कविता०। २ भिक्षुक। ३. भिक्षु। ४ फलित ज्योतिष का एक भेद। ५. वे बौद्ध कथाएँ जिनमें महात्मा बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें हैं।

जातकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जातना, जातनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "यातना"।

जात पाँत—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति+पंक्ति] जाति। बिरादरी।

जातरूप—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण। उ०—लागत विमल गात रूपन को आभरन, आभा बढ़ि जात जातरूप तें सवाई है।—रससाराश।

जातवेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २ रवि। ३. परमेश्वर।

जाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री।

वि० स्त्री० उत्पन्न।

जाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंदुओं में समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्मानुसार किया गया था, पर पीछे से जन्मानुसार हो गया। रोटी बेटी का संबंध रखनेवाला हिंदू समाज का एक विभाग। २. देश, भाषा, संस्कृति आदि के विचार से मनुष्य समाज का विभाग, जैसे—अँगरेज जाति, जर्मन जाति आदि। ३. कौम। ४ वह विभाग जो आकृति नस्ल आदि की समानता के विचार से किया जाय। कोटि। वर्ग, जैसे—मनुष्य जाति, पशु जाति, अच्छी जाति का आम, अच्छी जाति का घोड़ा। ५ जन्म। पैदाइश। ६ वर्ण। ७. कुल। वंश। ८ गोत्र। ९ मात्रिक छंद।

जातिच्युत—वि० [सं०] जाति से गिरा या निकाला हुआ। जातिबहिष्कृत।

जातिपाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति+हिं० पाँति (पंक्ति)] जाति या पंक्ति। वर्ण और उसके उपविभाग। उ०—जाति पाँति उन सब हम नाहीं। हम निर्गुण सब गुण उन पाहीं।—सूर०।

जाती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमेली की जाति का एक फूल। जाही। जाई। २ छोटा आँवला। ३. मालती। ४ जायफल।

जाती—वि० [अ० जात] १ व्यक्तिगत। २ अपना। निज का।

जातीय—वि० [सं०] जातिसंबंधी।

जातीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जाति या वर्ण विशेष को महत्व देने का भाव। २ जाति की ममता या अभिमान। ३. राष्ट्रीयता। कौमियत।

जातुधान—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

जात्रा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "यात्रा"।

जादव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

जादवपति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० यादवपति] श्रीकृष्णचंद्र।

जादसपति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० यादसांपति] जलजंतुओं का स्वामी, वरुण।

जादा(पु)—वि० दे० "ज्यादा"।

वि० [फा० जाद] [स्त्री० जादी] उत्पन्न। जन्मा हुआ। (यौ० के अंत में, जैसे—शाहजादा)

जादू—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों। इंद्रजाल। २ वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। ३ टोना। टोटका। ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।

जादूगर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० जादूगरनी] वह जो जादू करता हो।

जादूगरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] जादू करने की क्रिया। जादूगर का काम।

जादौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

जादौराय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० यादव+राज] श्रीकृष्णचंद्र।

जान—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञान] १ ज्ञान। जानकारी। २ खयाल। अनुमान।

यौ०—जानपहचान=परिचय।

वि० सुजान। जानकार। चतुर। उ०—प्रभु की देखौ एक सुभाय। अति गंभीर, उदार, उदधि, सरि जान सिरोमनि राय।—सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "यान"। उ०—आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान। कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान।—मानस।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ प्राण। जीव। प्राणवायु। दम।

मुहा०—जान के लाले पड़ना=प्राण बचना कठिन दिखाई देना। जी पर आ बनना। जान को जान न समझना=अत्यंत अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना=तंग करना। बारबार घेरकर दिक करना। जान छुड़ाना या बचाना=(१) प्राण बचाना। (२) किसी झंझट से छुटकारा करना। संकट टालना। (किसी पर) जान जाना=किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। जान जोखों=प्राणहानि की आशंका। प्राण जाने का

डर। जान निकलना=(१) प्राण निकलना। मरना। (२) भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना=प्राणों को संकट में डालना। जान को जोखों में डालना। जान में जान आना=ढाढ़स बँधना। चित्त की घबराहट या भय दूर होना। जान पर आ बनना=प्राणों पर संकट होना। जान से जाना=प्राण खोना। मरना।

२ बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। दम। ३ सार। तत्व। ४. अच्छा या सुंदर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।

मुहा०—जान आना=शोभा बढ़ना। ओप बढ़ना।

जानकार—वि० [हिं० √जान + कार (प्रत्य०)] [संज्ञा जानकारी] १ जाननेवाला। अभिज्ञ। २ विज्ञ। चतुर।

जानकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जनक की पुत्री, सीता।

जानकी-जानि—संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र।

जानकी-जीवन—संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र।

जानकीनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीराम।

जानदार—वि० [फा०] १ जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी। २ जीवट या हिम्मतवाला।

संज्ञा पुं० प्राणी।

जाननहार(पु)—वि० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला।

जानना—क्रि० स० [हिं० जान] १ ज्ञान प्राप्त करना। अभिज्ञ होना। मालूम करना। २ सूचना पाना। खबर रखना। ३ अनुमान करना। सोचना।

जानपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ जनपद-संबंधी वस्तु। २. जनपद का निवासी। लोक। मनुष्य। ३. देश। ४ मालगुजारी।

वि० जनपद संबंधी। जनपद का।

जानपना(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] बुद्धिमत्ता। चतुराई।

जानपनी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] बुद्धिमानी। चतुराई। उ०—दय दान दया नहिं जानपनी। जड़ता परवंचकताऽतिघनी।—मानस।

जानमनि(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० जान+मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बड़ा ज्ञानी पुरुष। उ०—कहूँ हासरस पाइकै दोषांकुस अनुमानि। दौषौ गुन ह्वै जात है कहैं जानमनि जानि।—रससारांश।

जानराय—संज्ञा पुं० [हिं० जान+राय] जानकारों में श्रेष्ठ। बड़ा बुद्धिमान्।

जानवर—संज्ञा पुं० [फा०] १. पशु। जंतु। २ प्राणी। जीव।

वि० मूर्ख। जड़।

जानशीन—वि० [फा०] १. दूसरे के स्थान या पद पर बैठनेवाला। २ उत्तराधिकारी।

जानहार(पु)—वि० दे० "जाननहार"।

जानहु(पु)†—अव्य० [हिं० √जान] मानो।

जाना—क्रि० अ० [सं० यान=जाना] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने या पहुँचने के लिये हिलना डोलना या चेष्टा करना। गमन करना। बढ़ना। २ हटना। प्रस्थान करना।

मुहा०—जाने दो=क्षमा करो। माफ करो। चर्चा छोड़ो। प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना=किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना।

३. अलग होना। दूर होना। ४. हाथ या अधिकार से निकलना। हानि होना। ५ खो जाना। गायब होना। गुम होना। ६ बीतना। गुजरना। ७ नष्ट होना।

मुहा०—गया घर=दुर्दशाप्राप्त घराना। गया बीता=(१) दुर्दशाप्राप्त। (२) निकृष्ट। ८ बहना। जारी होना।

(पु)†क्रि० स० [सं० जनन] उत्पन्न करना। जन्म देना। पैदा करना। उ०—मोसों कहत मोल को लीनो तोहि कत जसुदा जायो।—सूर०।

जानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। भार्या।

(पु)वि० [सं० ज्ञानी] जानकार।

जानिब—संज्ञा स्त्री० [अ०] तरफ। ओर।

यौ०—जानिबदार=पक्षपाती।

जानी—वि० [फा०] जान से संबंध रखनेवाला।

यौ०—जानी दुश्मन=जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त=दिली दोस्त।

संज्ञा स्त्री० [फा० जान] प्राणप्यारी।

जानु—संज्ञा पुं० [सं०] घुटना।

संज्ञा पुं० [फा० जानू] जाँघ। रान।

जानुपाणि—क्रि० वि० [सं०] घुटरुवों। पैयाँ पैयाँ। घुटनों और हाथों के बल (जैसे बच्चे चलते हैं)।

जानू—संज्ञा पुं० [फा०] जंघा। जाँघ।

जानो†—अव्य० [हिं० √जान] मानो। जैसे।

जाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. जपने की क्रिया। जप। २. जपने की थैली या माला।

जापक—संज्ञा पुं० [सं०] जप करनेवाला। उ०—चलि ऐसे आतुर कहूँ नहिये जाइ यर्कत। भए नए जापक न ये करिहैं जप को अंत।—रससारांश।

जापा—संज्ञा पुं० [सं० जनन ?] सौरी। प्रसूतिकागृह।

जापी—संज्ञा पुं० दे० "जापक"।

जाप्य—संज्ञा पुं० [सं०] जप करने योग्य। आराध्यदेव। उ०—सिद्धि साधक साध्य, वाच्य वाचक रूप, मंत्रजापक जाप्य, सृष्टि स्रष्टा।—विनय०।

जाफा†—संज्ञा पुं० [अ० जाफ] १. बेहोशी। २ घुमरी। ३. मूर्च्छा। थकावट।

जाफत—संज्ञा स्त्री० [अ० जियाफत] भोज। दावत।

जाफरान—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० जाफरानी] केसर।

जाबाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जिनकी माता का नाम जाबाला था।

जाबालि—संज्ञा पुं० [सं०] कश्यपवंशीय एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु थे।

जाबिर—वि० [फा०] जब्र या ज्यादती करनेवाला। अत्याचारी।

जाब्ता—संज्ञा पुं० [अ०] नियम। कायदा। व्यवस्था। कानून।

यौ०—जाब्ता दीवानी=सर्व साधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से संबंध रखनेवाला कानून। जाब्ता फौजदारी=दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला कानून।

जाम—संज्ञा पुं० [सं० याम] पहर। प्रहर। ७॥ घड़ी या तीन घंटे का समय। उ०—जानि जाम जामिनि गई, पिय आगम अनुमानि। झपि नैननि तिय सैन मिस बिदा करी सखियानि।—रससारांश।

संज्ञा पुं० [फा०] प्याला। कटोरा।

संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।

जामगी—संज्ञा पुं० [?] बंदूक या तोप का पलीता।

जामदानी—संज्ञा स्त्री० [फा० जामःदानी] एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।

जामन—संज्ञा पुं० [हिं० जमाना] दही बनाने के लिये दूध में डाला जानेवाला दही या खट्टा पदार्थ।

जामना—क्रि० अ० दे० "जमना"।

जामनी—वि० दे० "यावनी"।

जामवंत—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।

जामा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पहनावा। कपड़ा। वस्त्र। २ चुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा।

मुहा०—जामे से बाहर होना = आपे से बाहर होना। अत्यंत क्रोध करना।

जामाता—संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] दामाद।

जामिकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० यामिक] पहरुआ। पहरा देनेवाला। रक्षक। उ०—चरनपीठ करुनानिधान के जनु जुग जामिक प्रजापानि के।—मानस।

जामिन, जामिनदार—संज्ञा पुं० [अ०] जमानत करनेवाला। जिम्मेदार। प्रतिभू।

जामिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "यामिनी"।

संज्ञा स्त्री० दे० "जमानत"।

जामीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "जमीन"।

जामुन—संज्ञा पुं० [सं० जंबु] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या बहुत काले होते हैं और खाए जाते हैं।

जामुनी—वि० [हिं० जामुन] जामुन के रंग का। बैंगनी या काला।

जामेवार—संज्ञा पुं० [फा० जामा+वार] १ एक प्रकार का दुशाला जिसकी सारी जमीन पर बूटे रहते हैं। २ इसी प्रकार की छींट।

जायँ—वि० दे० "जाय"।

जायⓅ†—अव्य० [फा० जा] वृथा। निष्फल।

वि० उचित। वाजिब। ठीक।

जायका—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० जायकेदार] खानेपीने की चीजों का मजा। स्वाद।

जायज—वि० [अ०] उचित। मुनासिब।

जायजा—संज्ञा पुं० [अ०] १. जाँच-पड़ताल। २ हाजिरी। गिनती।

जायदाद—संज्ञा स्त्री० [फा०] भूमि, धन या सामान आदि जिसपर किसी का अधिकार हो। संपत्ति।

जायनमाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] छोटी दरी या बिछौना जिसपर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

जायपत्री—संज्ञा स्त्री० दे० "जावित्री"।

जायफल—संज्ञा पुं० [सं० जातीफल] अखरोट की तरह का पर उससे छोटा एक सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषध और मसाले आदि में होता है।

जायल—वि० [अ०] विनष्ट। बरबाद।

जायस—संज्ञा पुं० [?] रायबरेली जिले का एक प्राचीन नगर।

जायसी—वि० [हिं० जायस] जायस नगर का रहनेवाला।

संज्ञा पुं० पद्मावत और अखरावट के रचयिता अवधी के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी।

जाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाहिता स्त्री। पत्नी। जोरू। २. उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद।

वि० [फा०] खराब। नष्ट।

जार—संज्ञा पुं० [सं०] पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला। पुरुष। उपपति। यार। आशना। उ०—जार-मिलन सों बचि रहै ताहि कहत कवि लोइ। कोऊ असाध्या परकिया अधम सुकीया कोइ। —रससारांश।

वि० मारने या नाश करनेवाला।

जारक—वि० [सं०] जलानेवाला। उ०—तजि कै दुखगंज हजारक जारक। कत सोवत भूमि भटारक टारक। —छंदार्णव।

जारकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] व्यभिचार।

जारज—संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्त्री की वह संतान जो उसके उपपति से उत्पन्न हुई हो।

जारज योग—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक योग जिससे यह सिद्धांत निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के जार या उपपति के वीर्य से उत्पन्न है।

जारण—संज्ञा पुं० [सं०] जलाना। भस्म करना।

जारन†—संज्ञा पुं० [सं० जारण] १ ईंधन। २ जलाने की क्रिया या भाव।

जारना†—क्रि० स० दे० "जलाना"।

जारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री। बदचलन औरत।

जारी—वि० [अ०] १ चलता हुआ। प्रचलित। निरंतर होता हुआ। २ बहता हुआ। प्रवाहित।

संज्ञा स्त्री० [सं० जार+हिं० ई (प्रत्य०)] परस्त्रीगमन। छिनाला।

जालंधर—संज्ञा पुं० दे० "जलधर"।

जालंधरी विद्या—संज्ञा स्त्री० [हिं० जालंधरी+सं० विद्या] मायिक विद्या। माया। इंद्रजाल।

जालंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] झरोखे की जाली।

जाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों को पकड़ने में होता है। २. एक में ओतप्रोत, बुने या गुँथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह। ३ मकड़ी का जाला। ४ इंद्रजाल। ५. किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति। ६. समूह। ७ एक प्रकार की तोप।

संज्ञा पुं० [अ० जअल, मि० सं० जाल] फरेब। धोखा। झूठी कार्रवाई।

जालक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जाल। २. कली। ३ समूह। ४. झरोखा। खिड़की। ५. घोंसला।

जालदार—वि० [सं० जाल+फा० दार] जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों।

जालनाⓅ—क्रि० स० दे० "जलाना"।

जालरंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] झरोखा।

जालसाज—संज्ञा पुं० [अ० जअल+फा० साज] वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे।

जालसाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जालसाज] फरेब या जाल करने का काम। दगाबाजी।

जाला—संज्ञा पुं० [सं० जाल] १ मकड़ी का बनाया हुआ पतले तारों का वह जाल जिसमें वह मक्खियों और कीड़े मकोड़ों को फँसाती है। २ आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है। ३ वह जाल जिसमें घास, भूसा आदि बाँधे जाते हैं। ५. पानी रखने का एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा बरतन।

‡Ⓟ संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वाला"।

जालिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मछुवा। केवट। २. बहेलिया। जाल फैलानेवाला।

जालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जाली। २ समूह। दल। ३. कवच। ४. मकड़ी। ५ जोंक।

जालिम—वि० [अ०] जुल्म करनेवाला। निर्दयी। क्रूर।

जालिया—वि० दे० "जालसाज"।

जाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० जाल] १ लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर आदि में बना हुआ बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। २ कसीदे का एक प्रकार का काम। भरना। ३. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें केवल बहुत से छोटे छोटे छेद ही होते हैं। ४ कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का तंतु-समूह।

वि० [अ० जअल] नकली।

जावकⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० यावक] लाह से बना हुआ पैरों में लगाने का लाल रंग।

अलता। महावर। उ०—लोचन सुरंग भाल जावक को रंग मन, सुषमा उमग अरुनोदै अवदात की।—श्रृंगार०।
जावत(पु)—अव्य० दे० "यावत"।
जावन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जामन"।
जावर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की खीर।
जावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो औषध के काम में आता है।
जाषनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
जाषरी—संज्ञा स्त्री० [यक्षिणी ?] नटिनी। उ०—गीति गरुवि जाषरी मत्त भए मतरुफ गावइ।
जासु(पु)—वि० [सं० यस्य] जिसका। उ०—पहिरत पाइ जासु सितलाई। सखि तनु होत कप अधिकाई।—छंदार्णव।
जासूस—संज्ञा पुं० [अ०] गुप्त रूप से किसी बात, विशेषत अपराध आदि का पता लगानेवाला। भेदिया। गुप्तचर।
जासूसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जासूस] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। जासूस का काम करना।
जाहिर—वि० [अ०] १ जो सबके सामने हो। प्रकट। प्रकाशित। खुला हुआ। २ विदित। जाना हुआ।
जाहिरदारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो।
जाहिरा—क्रि० वि० [अ०] देखने में। प्रकट रूप में। प्रत्यक्ष में।
जाहिरी—वि० [अ०] जो जाहिर हो। प्रकट।
जाहिल—वि० [अ०] १ मूर्ख। अज्ञान। नासमझ। गँवार। २ अनपढ़। विद्याहीन।
जाही—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति] चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल।
जाह्नवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जह्नु ऋषि से उत्पन्न गंगा।
जिंक—संज्ञा पुं० [अं०] १ जस्ता। २ जस्ते का खार।
जिंगनी, जिंगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिगिन का पेड़।
जिंद—संज्ञा पुं० [अ०] भूत। प्रेत। जिन।
संज्ञा पुं० दे० "जद"।
जिंदगानी—संज्ञा स्त्री० दे० "जिंदगी"।
जिंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीवन। २ जीवनकाल। आयु। ३ उत्साह। सजीवता।
मुहा०—जिंदगी के दिन पूरे करना या भरना=(१) दिन काटना। जीवन बिताना। (२) मरने को होना। आसन्न-मृत्यु होना।
जिंदा—वि० [फा०] जीवित। जीता हुआ।
जिंदादिल—वि० [फा०] [संज्ञा जिंदादिली] खुशमिजाज। १. उत्साहयुक्त। २ प्रसन्न-चित्त। खुशमिजाज। ३ हँसोड़। दिल्लगी बाज।
जिंवाना—क्रि० स० दे० "जिमाना"।
जिंस—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. प्रकार। किस्म। भाँति। २. चीज। वस्तु। द्रव्य। ३ सामग्री। सामान। ४. अनाज। गल्ला। रसद।
जिंसवार—संज्ञा पुं० [फा०] पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।
जिअनमूरि—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन+मूल] जीवन देनेवाली जड़ी। सजीवनी बूटी। उ०—जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ। दीप बाति नहिं टारन कहऊँ।—मानस।
जिआना(पु)—क्रि० स० दे० "जिलाना"।
जिउ—संज्ञा पुं० दे० "जीव"।
जिउका—संज्ञा स्त्री० दे० "जीविका"।
जिउकिया—संज्ञा पुं० [हिं० जीविका] १ जीविका करनेवाला। रोजगारी। २ पहाड़ी लोग जो जगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।
जिउतत—संज्ञा पुं० [सं० जीव+तन्त्र] १ मन के अनुकूल बात। २. मन की बात। उ०—जैति नारि हँसि पूछहिं अमिय-बचन जिउ-तत। रस उतरा, विष चढ़ि रहा, ना ओहि तत न मत।—पदमावत।
जिउतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० जीमूत (वाहन)] दे० "जिताष्टमी"।
जिकिर—संज्ञा पुं० दे० "जिक्र"। उ०—सिंहिनी औ मृगिनी की ता ढिग जिकिर कहा, बारहू मुरारहू तें खीनी चित धरि तूँ।—श्रृंगार०।
जिक्र—संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। प्रसग।
जिगर—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० यकृत] [वि० जिगरी] १ यकृत। २ कलेजा। ३ चित्त। मन। जीव। ४ साहस। हिम्मत। ५ गूदा। सत्त। सार।
जिगरा—संज्ञा पुं० [हिं० जिगर] साहस। हिम्मत। जीवट।
जिगरी—वि० [फा०] १ दिली। भीतरी। २ अत्यत घनिष्ट। अभिन्नहृदय।
जिगीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीतने की इच्छा। २ उद्योग। प्रयत्न।
जिच, जिच्च—संज्ञा स्त्री० [?] १. बेबसी। तंगी। मजबूरी। २. शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो। ३ विवाद की वह अवस्था जिसमें दोनों पक्ष अपनी बात पर अड़े हों और समझौते का मार्ग दिखाई न दे रहा हो। गतिरोध।
वि० विवश। मजबूर। तंग।
जिजिया—संज्ञा पुं० दे० "जजिया"।
जिज्ञासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जानने की इच्छा। ज्ञान प्राप्त करने की कामना। २. पूछताछ। प्रश्न। तहकीकात।
जिज्ञासु—वि० [सं०] १. जानने की इच्छा रखनेवाला। जो जिज्ञासा करे। खोजी। २ मुमुक्षु।
जित्—वि० [सं०] जीतनेवाला। जेता।
जित—वि० [सं०] १ जीता हुआ। २. वश में किया हुआ।
वि० दे० "जित्"।
(पु)क्रि० वि० [सं० यत्र] १. जिधर। जिस ओर। २ जहाँ। उ०—जित न्हानथली निज राधे करी तित कान्ह कियो अपनो खरको।—श्रृंगार०।
जितक(पु)—वि०, क्रि० वि० दे० "जितना"।
जितना—वि० [सं० यति (प्रत्य०)] [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा का। जिस परिमाण का।
क्रि० वि० जिस मात्रा में। जिस परिमाण में।
जितवना(पु)—क्रि० स० दे० "जताना"।
जितवाना—क्रि० स० दे० "जिताना"।
जितवार—वि० [हिं० √जीत + वार (प्रत्य०)] जीतनेवाला।
जितवैया—वि० [हिं० √जीत+वैया (प्र० प्रत्य०)] जीतनेवाला।
जितात्मा—वि० दे० "जितेंद्रिय"।
जिताना—क्रि० स० [हिं० जीतना का प्रे० रूप] जीतने में सहायता करना।
जिताष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपुत्रा, मृत-पुत्रा और पुत्रवती हिंदू स्त्रियों का पुत्रजन्म और उसके दीर्घ जीवन के लिये आश्विन कृष्ण अष्टमी को किया जानेवाला व्रत और उपासना। जिउतिया।
जिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीत।
जितेंद्रिय—वि० [सं०] १ जिसने अपनी

इंद्रियों को वश में कर लिया हो। २. सम वृत्तिवाला। शांत।

जितेⓅ—वि० बहु० [सं० यति] जितने। (संख्यासूचक)।

जितैⓅ—क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर। जिस ओर।

जितैया—वि० [हिं० √जीत+ऐया (प्रत्य०)] जीतनेवाला।

जितोⓅ†—वि० [सं० यति] जितना (परिमाणसूचक)।

क्रि० वि० जिस मात्रा में। जितना।

जित्वर—वि० [सं०] [स्त्री० जित्वरी] जेता। विजयी।

जिद—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जिद्दी] १. हठ। अड़। दुराग्रह। २ वैर। शत्रुता।

जिद्दी—वि० [फा०] १. जिद करनेवाला। हठी। २ दूसरे की बात न माननेवाला। दुराग्रही।

जिधर—क्रि० वि० [सं० यत्र, प्रा० जत्थ] जिस ओर। जहाँ।

जिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जैनों के तीर्थंकर। २ बुद्ध। ३. विष्णु। ४ सूर्य।

वि० सर्व० [सं० यानि] "जिस" का बहु०।

संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान भूत या प्रेतात्मा।

मुहा०—जिन सवार होना=गुस्से में आपा खोना।

जिना—संज्ञा पुं० [अ०] व्यभिचार।

जिनाकर—वि० [फा०] [संज्ञा जिनकारी] व्यभिचारी।

जिनि†—अव्य० [हिं० जनि] मत। नहीं।

जिनिस—संज्ञा स्त्री० दे० "जिंस"।

जिन्ह†Ⓟ—सर्व० दे० "जिन"।

जिबह—संज्ञा पु० दे० "जबह"।

जिब्भा, जिम्याⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।

जिमनास्टिक—संज्ञा पुं० [अँ०] एक प्रकार की अँगरेजी कसरत। अँगरेजी व्यायाम।

जिमाना—क्रि० स० [सं० जेमन] खाना खिलाना। भोजन कराना।

जिमिⓅ—क्रि० वि० [प्रा० जेम, जिवँ] जिस प्रकार से। जैसे। यथा। ज्यों।

जिम्मा—संज्ञा पुं० [अ०] किसी बात के करने या कराने का भार ग्रहण करना।

मुहा०—किसी के जिम्मे रुपया आना, निकलना या होना=किसी के ऊपर रुपया ऋण स्वरूप होना। देना ठहरना।

२ सपुर्दगी। देखरेख। सरचा।

जिम्मादार—संज्ञा पुं० दे० "जिम्मावार"।

जिम्मावार—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो किसी बात के लिये जिम्मा ले। जवाबदेह। उत्तरदाता।

जिम्मावारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जिम्मावार] १. किसी बात के करने या किए जाने का भार। उत्तरदायित्व। जवाबदेही। २ सपुर्दगी। संरक्षा।

जिम्मेवार—संज्ञा पुं० दे० "जिम्मावार"।

जिय†—संज्ञा पुं० [सं० जीव] मन। चित्त।

जियन—संज्ञा पुं० [हिं० जीवन] जीवन।

जियवधा—संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद"।

जियराⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० जिय+रा (प्रत्य०)] जीव। हृदय।

जियान—संज्ञा पुं० [अ०] घाटा। टोटा। नुकसान।

जियाना†Ⓟ—क्रि० स० [हिं० जीना का स० रूप] १ जिलाना। जीवित रखना। २ पालना।

जियाफत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आतिथ्य। मेहमानदारी। २ भोज। दावत।

जियारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दर्शन। २ तीर्थयात्रा।

मुहा०—जियारत लगना = भीड़ लगना।

जियारी†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० जिय] १ जीवन। जिंदगी। २ जीविका। ३ हृदय की दृढ़ता। जीवट। जिगरा।

जिरगा—संज्ञा पुं० [फा०] १ झुंड। गरोह। २ मंडली। दल।

जिरह—संज्ञा स्त्री० [अ० जुरह] १ ऐसी पूछताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिये की जाय। बहस। दलील।

संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म। बकतर।

यौ०—जिरहपोश=जो बकतर पहने हो। कवचधारी।

जिरही—वि० [हिं० जिरह] जो जिरह पहने हो। कवचधारी।

जिराअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] खेतीबारी। कृषि।

जिराअती—वि० [फा०] कृषि संबंधी।

जिरियान—संज्ञा पुं० [?] मेहस्राव। प्रमेह।

जिराफा—संज्ञा पुं० दे० "जुराफा"।

जिला—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ चमक दमक। पालिश।

मुहा०—जिला देना=माँजकर तथा रोगन आदि चढ़ाकर चमकाना। सिकली करना।

यौ०—जिलाकार=सिकलीगर। सान धरनेवाला।

२. माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य।

जिला—संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रांत। प्रदेश। २. भारतवर्ष में किसी प्रांत का वह भाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के प्रबंध में हो। ३. किसी इलाके का छोटा विभाग या अंश। (अँ० डिसट्रिक्ट)।

जिलटीन—दे०—जेलाटिन।

जिलादार—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह अफसर जिसे जमींदार अपने इलाके के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिये नियत करता था। २ वह अफसर जो नहर, अफीम आदि संबंधी किसी हलके में काम करने के लिये नियत हो।

जिलाना—क्रि० स० [हिं० जीना का स० रूप] १. जीवन देना। जिंदा करना। जीवित करना। †२ पालना। पोसना। ३. मरने से बचाना। प्राणरक्षा करना।

जिलासाज—संज्ञा पुं० [फा०] हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला। सिकलीगर। सान धरनेवाला।

जिलाहⓅ—संज्ञा पुं० [अ० जल्लाद] अत्याचारी।

जिलेदार—संज्ञा पुं० दे० "जिलादार"।

जिल्द—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १ खाल। चमड़ा। खलड़ी। २ ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३ वह पुट्ठा या दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। ४ पुस्तक की एक प्रति। ५. पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला या बँधा हो। भाग। खंड।

जिल्दबंद—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्दबंदी—संज्ञा स्त्री० [अ० जिल्द+फा० बंद] जिल्द बाँधने का काम। जिल्द बँधाई।

जिल्दगर—संज्ञा पुं० [अ० जिल्द+गर] दे० "जिल्दसाज"।

जिल्दसाज—संज्ञा पुं० दे० "जिल्दबंद"।

जिल्दसाजी—संज्ञा स्त्री० [अ० जिल्द + फा० साजी] दे० "जिल्दबंदी"।

जिल्लत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनादर। अपमान। तिरस्कार। बेइज्जती।

मुहा०—जिल्लत उठाना या पाना = (१) अपमानित होना। (२) तुच्छ ठहरना।

२. दुर्गति। दुर्दशा। हीन दशा।

जिवाँ—संज्ञा पुं० दे० "जीव"।

जिआना—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

जिवारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० जिवाने + हारी (प्रत्य०)] जिलानेवाली।

जिष्णु—वि० [सं०] सदा जीतनेवाला। संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ कृष्ण। ३ इंद्र। ४ सूर्य। ५ अर्जुन।

जिस—वि० [सं० 'यद्' का 'यस्य' रूप] 'जो' का वह रूप जो विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है, जैसे—जिस पुरुष ने।

सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता—संज्ञा पुं० १. दे० "जस्ता"। २ दे० "दस्ता"।

जिस्म—संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।

जिस्मानी—वि० [फा०] शारीरिक।

जिह(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० जद, स० ज्या] धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।

जिहन—संज्ञा पुं० [अ०] समझ। बुद्धि।

मुहा०—जिहन खुलना = बुद्धि का विकास होना। जिहन लड़ाना = खूब सोचना।

जिहनदार—वि० [अ० जिहन + फा० दार] समझदार। तीव्र बुद्धिवाला।

जिहाद—संज्ञा पुं० [अ०] मजहबी लड़ाई। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्माव-लंबियों से अपने धर्म की रक्षा आदि के लिये करें।

जिहि—सर्व० [सं० यद् ?] १. जिसको। उ०—जिहि कहियत सृ गाररस ताको जुगल बिभाव।—शृंगार०। २ जिसका। उ०—इक नारी सों प्रेम जिहि सो अनुकूल बिचारि। —शृंगार०। ३. जिसने। उ०—संभु सों क्यों कहियै जिहि ब्याहो है पारबती औ सती तिय दोऊ। —शृंगार०।

जिह्म—वि० [सं०] वक्र। टेढ़ा।

जिह्मग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो टेढ़ा या तिरछा चलता हो। २. सर्प। साँप।

जिह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीभ। जबान।

जिह्वाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] जबान की नोक।

मुहा०—जिह्वाग्र करना = कठस्थ करना। जबानी याद करना।

जिह्वामूल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० जिह्वामूलीय] जीभ की जड़ या पिछला स्थान।

जिह्वामूलीय—संज्ञा पुं० [सं०] वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो।

जींगनाँ—संज्ञा पुं० [स० ज्योतिरिंगण ?] जुगनू।

जी—संज्ञा पुं० [स० जीव] १ मन। दिल। तबीयत। चित्त।

मुहा० = जी अच्छा होना = चित्त स्वस्थ होना। नीरोग होना। किसी पर जी आना = किसी से प्रेम होना। जी उच-टना = चित्त न लगना। मन हटना। जी उड़ जाना = भय, आशका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना = (१) हिम्मत करना। साहस करना। (२) इच्छा होना। जी का बुखार निकलना = क्रोध, शोक, दु ख आदि के वेग को रो-कलपकर या बक-झककर शात करना। (किसी के) जी को जी समझना = किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना = मन फिर जाना या विरक्त होना। घृणा होना। जी खोलकर = (१) बिना किसी सकोच के। बेधड़क। (२) जितना जी चाहे। यथेष्ट। जी चलाना = जी चाहना। इच्छा होना। जी चुराना = हीलाहवाली करना। किसी काम से भागना। जी छोटा करना = (१) मन उदास करना। (२) उदारता छोड़ना। कंजूसी करना। जी टँगा रहना या होना = चित्त में ध्यान या चिंता रहना। चित्त चिंतित रहना। जी डूबना = चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। जी दुखना = चित्त को कष्ट पहुँचाना। जी देना = (१) मरना। (२) अत्यत प्रेम करना। जी धँसा जाना = दे० "जी बैठा जाना"। जी धड़कना = भय या आशंका से चित्त स्थिर न रहना। कलेजा धक धक करना। जी निढाल होना = चित्त का स्थिर न रहना। चित्त ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना = प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी पर खेलना = जान को आफत में डालना। जान पर जोखों उठाना। जी बहलना = चित्त का आनंदपूर्वक लीन होना। मनोरंजन होना। जी बिगड़ना = जी मचलाना। कै करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना = किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना। किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना। जी भरना (क्रि० अ०) = चित्त सतुष्ट होना। तृप्ति होना। जी भरना (क्रि० स०) = दूसरे का संदेह दूर करना। खटका मिटाना। जी भरकर = मनमाना। यथेष्ट। जी भर आना = चित्त में दुख या करुणा का उद्रेक होना। दु ख या दया उमड़ना। जी मचलाना या मतलाना = उलटी या कै करने की इच्छा होना। वमन करने को जी चाहना। जी में आना = चित्त में विचार उत्पन्न होना। जी चाहना। जी में जी आना = ढाढ़स होना। आत्मविश्वास होना। (किसी का) जी रखना = मन रखना। इच्छा पूरी करना। प्रसन्न करना। संतुष्ट करना। जी लगना = मन का किसी विषय में योग देना। चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से) जी लगना = किसी से प्रेम होना। जी से = जी लगाकर। ध्यान देकर। जी से उतर जाना = दृष्टि से गिर जाना। भला न जँचना।

२ प्राण। उ०—मींचौ बाँधी जाके ही। नाहीं बाँच्यो ताको जी।—छदार्णव।

मुहा०—जी से जाना = मर जाना।

३. हिम्मत। दम। जीवट। ४ सकल्प। विचार।

अव्य० [स० आर्य्य ?] एक सम्मानसूचक शब्द जो किसी के नाम के अत में लगाया जाता है, अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त आदरयुक्त प्रतिसंबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।

जीअ, जीउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जी", "जीव"।

जीअन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जीवन"।

जीगन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"।

जीजा—संज्ञा पुं० [हिं० जीजी] बड़ी बहिन का पति। बड़ा बहनोई।

जीजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दीदी] बड़ी बहिन।

जीत—संज्ञा स्त्री० [स० जिति] १ युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता। जय। विजय। फतह। २ किसी ऐसे कार्य में सफलता जिसमें दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों।

जीतना—क्रि० स० [हिं० जीत] १ युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना । विजय प्राप्त करना । २ किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें दो या अधिक व्यक्ति प्रयत्न में हों ।

जीता—वि० [सं० जीवित] १. जीवित । जो मरा न हो । २. तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ ।

जीन(पु)—वि० [सं० जीर्ण] १. जर्जर । कटा फटा । २. वृद्ध । बुड्ढा ।

संज्ञा पुं० [फा०] १ घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी । चारजामा । काठी । उ०—रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । बरन बरन बर बाजि बिराजे ।—मानस ।

२ पलान । कजावा । ३ एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा ।

जीनपोश—संज्ञा पुं० [फा०] जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा ।

जीनसवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े पर जीन रखकर चढ़ने का कार्य ।

जीना—क्रि० अ० [स० जीवन] १ जीवित रहना । जिंदा रहना ।

मुहा०—जीता जागता=जीवित और सचेत । भला चगा । जीती मक्खी निगलना=जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना । जीते जी मर जाना=जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना । जीना भारी हो जाना=जीवन का आनद जाता रहना ।

२ प्रसन्न होना । प्रफुल्ल होना ।

संज्ञा पुं० [फा० जीन] सीढ़ी ।

जीनी(पु)—वि० दे० "झीनी" ।

जीभ—संज्ञा स्त्री० [सं० जिह्वा] १ लंबे चिपटे मासपिंडवाला मुँह के भीतर का वह अंग या अवयव जो निगलने, स्वाद लेने और (मनुष्यों में) बोलने के काम आता है । जबान । जिह्वा । रसना ।

मुहा०—जीभ चलना=भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिये जीभ का हिलना डुलना । चटोरेपन की इच्छा होना । जीभ चलाना =(१) बहुत बोलना । (२) अनुचित या अनधिकार बातें करना । जीभ निकालना=जीभ खींचना । जीभ उखाड़ लेना । जीभ पकड़ना=बोलने न देना । बोलने से रोकना । जीभ बंद करना=बोलना बद करना । चुप रहना । जीभ लड़ना = बकबक करना । बहुत बोलना । जीभ हिलाना=मुँह से कुछ बोलना । छोटी जीभ=गलशुंडी । किसी की जीभ के नीचे जीभ होना=किसी का अपनी कही हुई बात बदल जाना ।

२ जीभ के आकार की कोई वस्तु, जैसे—निब ।

जीभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जीभ] १. धातु की बनी पतली धनुषाकार या सीधी वस्तु जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं । २ निब । ३ छोटी जीभ । गलशुंडी ।

जीमना—क्रि० स० [सं० जेमन] भोजन करना ।

जीमूत—संज्ञा पुं० [स०] १. पर्वत । २ बादल । ३ इंद्र । ४ सूर्य । ५ शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम । ६ एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं । यह प्रचित के अंतर्गत है ।

जीमूतवाहन—संज्ञा पुं० [स०] १. इंद्र । २ महाराज शालिवाहन का पुत्र ।

जीय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जी" । उ०—राम समान कह्यो चहै जीय पै माया की सीय लिए रहै सोक ।—शृंगार० ।

जीयट—संज्ञा पुं० दे० "जीवट" ।

जीयति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवित] जीवन ।

जीयदान—संज्ञा पुं० [सं० जीवदान] प्राणदान । जीवनदान । प्राणरक्षा ।

जीर—संज्ञा पुं० [स०] १ जीरा । २ फूल का जीरा । केसर । ३ खड्ग । तलवार ।

(पु) संज्ञा पुं० [फा० जिरह] जिरह । कवच ।

(पु) वि० [स० जीर्ण] जीर्ण । पुराना ।

जीरण(पु)—वि० दे० "जीर्ण" ।

जीरन—वि० दे० "जीर्ण" ।

जीरना(पु)—क्रि० अ० [स० जीर्ण] १. जीर्ण होना । २ कुम्हलाना । ३ फटना ।

जीरा—संज्ञा पुं० [स० जीरक] १ दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगधित छोटे फलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं । इसके दो मुख्य भेद हैं—सफेद और काला । २ जीरे के आकार के छोटे, महीन, लबे बीज । ३ फूलों का केसर ।

जीरी—संज्ञा पुं० [हिं० जीरा] एक प्रकार का अगहनी धान जो कई वर्षों तक रह सकता है ।

जीर्ण—वि० [सं०] १ बुढ़ापे से जर्जर । २. टूटा फूटा और पुराना । फटा पुराना । बहुत दिनों का ।

यौ०—जीर्ण शीर्ण=फटा पुराना ।

३ पेट में अच्छी तरह पचा हुआ ।

जीर्णज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जिसे रहते बारह दिन से अधिक हो गए हों । पुराना बुखार ।

जीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुरानापन । २ बुढ़ापा । बुढ़ाई ।

जीर्णोद्धार—संज्ञा पुं० [सं०] फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार । पुराने मकान, मंदिर, कुएँ आदि की मरम्मत । पुन सस्कार । मरम्मत ।

जीला(पु)—वि० [सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १ झीना । पतला । २. महीन ।

जीवत—वि० [सं०] जीता जागता । सजीव ।

जीवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं । २ एक लता जिसके फूलों में मीठा मधु या मकरंद होता है । ३. एक प्रकार की बढ़िया पीली हड़ । ४. बाँदा । ५ गुडूची ।

जीव—संज्ञा पुं० [स०] १. प्राणियों का चेतन तत्व । जीवात्मा । आत्मा । २ प्राण । जीवनतत्व । जान । ३ प्राणी । जीवधारी ।

यौ०—जीवजंतु=(१) प्राणी । (२) मनुष्य के अतिरिक्त जीवधारी पशु-पक्षी, कीड़े मकोड़े आदि ।

जीवक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राण धारण करनेवाला । प्राणवत । २ क्षपणक । भिक्षुक । ३ साँप पकड़नेवाला । सँपेरा । ४ सेवक । ५ ब्याज लेकर जीविका करनेवाला । सूदखोर । ६ पीतसाल वृक्ष । ७ अष्टवर्ग के अतर्गत एक जड़ी या पौधा ।

जीवट—संज्ञा पुं० [सं० जीव+तत्व] हृदय की दृढ़ता । जिगरा । साहस । हिम्मत ।

जीवदान—संज्ञा पुं० [सं०] अपने वश में आए हुए शत्रु या अपराधी को न मारने या छोड़ देने का कार्य । प्राणदान । प्राणरक्षा ।

जीवधन—संज्ञा पुं० [स०] १ जीवों और पशुओं के रूप में सपत्ति । २ जीवनधन । अति प्रिय व्यक्ति ।

जीवधारी—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणी । जीवजतु ।

जीवन—संज्ञा पुं० [स०] [वि० जीवित] १ जन्म और मृत्यु के बीच का काल ।

जिंदगी। २. जीवित रहने का भाव। प्राण-धारण। ३. जीवित रखनेवाली वस्तु। ४. परमप्रिय। प्यारा। ५ जीविका। ६. पानी ७. वायु।

जीवनचरित—संज्ञा पुं० [स०] जीवन में किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। जिंदगी का हाल। जीवनी।

जीवनधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। २. प्राणप्रिय। प्राणाधार।

जीवनबूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन+हिं० बूटी] एक पौधा या बूटी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला सकती है। सजीवनी।

जीवनमूरि—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन+मूल] १. जीवनबूटी। २ अत्यंत प्रिय वस्तु।

जीवनवृत्त—संज्ञा पुं० दे० "जीवनचरित"।

जीवना†(पु)—क्रि० अ० दे० "जीना"।

जीवनी—संज्ञा स्त्री० [जीवन+हि० ई० (प्रत्य०)] जीवन भर का वृत्तांत। जीवनचरित।
 संज्ञा स्त्री० जीवन। जिंदगी।
 वि० जीवन देनेवाली।

जीवनोपाय—संज्ञा पुं० [स०] जीविका।

जीवन्मुक्त—वि० [सं०] जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सासारिक मायाबंधन से छूट गया हो। वीतराग।

जीवन्मृत—वि० [सं०] जीवित रहते हुए भी मुरदा। जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

जीवप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मा।

जीवबंद(पु)—वि० दे० "जीवबंधु"।

जीवबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] गुल दुपहरिया। बंधूक।

जीवयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीवजंतु।

जीवरा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० जीव] जीव। प्राण।

जीवरि†—संज्ञा पु० [स० जीव या हिं० जीवनी] जीवन। प्राणधारण की शक्ति।

जीवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] भूलोक। पृथ्वी।

जीवहत्या, जीवहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राणियों का वध। २ प्राणियों के वध का दोष।

जीवांतक—वि० [सं०] जीव की हत्या करनेवाला। प्राणघातक।

जीवाजून†—संज्ञा पुं० [सं० जीवयोनि] पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।

जीवाणु—संज्ञा पुं० [स०] जीवयुक्त अणु। जीव का सबसे छोटा रूप (अं० प्रोटोप्लाज्म)।

जीवात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारणस्वरूप पदार्थ। जीव। आत्मा। प्रत्यगात्मा।

जीवानुज—संज्ञा पुं० [सं०] गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वंश में हुए हैं।

जीविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यापार जिससे जीवन निर्वाह हो। जीवनोपाय। रोजी। वृत्ति।

जीवित—वि० [सं०] जीता हुआ। जिंदा। प्राणवान्।

जीवितेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीता जागता और प्रत्यक्ष ईश्वर। २ स्वामी। पति। ३. यमराज।

जीवी—वि० [सं० जीविन्] १ जीनेवाला। प्राणधारी। २. जीविका करनेवाला, जैसे—श्रमजीवी। दीर्घजीवी।

जीवेश—संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।

जीह, जीहा, जीहि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "जीभ"।

जुंबिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति। हरकत। हिलना डुलना।
 मुहा०—जुंबिश खाना = हिलना-डोलना।

जु(पु)—वि०, क्रि० वि० दे० "जो"।

जुआँ—संज्ञा स्त्री० दे० "जूँ"।

जुआ—संज्ञा पुं० [सं० युग] गाड़ी के आगे वह जड़ी हुई लकड़ी जो बैलों के कंधों पर रहती है। †२ जुआठा। ३ चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है।
 संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] रुपए पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल।

जुआचोर—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ+चोर] धोखेबाज। ठग। वंचक।

जुआठा—संज्ञा पुं० दे० "जुआ"।

जुआरी—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ] जुआ खेलनेवाला।

जुई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूँ] छोटी जूँ।

जुकाम—संज्ञा पुं०[अ०] सरदी से होनेवाली एक बीमारी जिसमें नाक बहती है तथा सिर में भारीपन और हरारत रहती है। सरदी।
 मुहा०—मेंढकी को जुकाम होना = छोटे मनुष्य का बड़ों के समान चेष्टा करना।

जुग—संज्ञा पुं० [सं० युग] १. युग। २ जोड़ा। युग्म। ३. चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही कोठे में इकट्ठा होना। ४ पुश्त। पीढ़ी।
 प्र०—जुग जुग जियो = लंबी आयु भोगो।

जुगजुगाना—क्रि० अ० [हिं० जगना] १ मंद ज्योति से चमकना। टिमटिमाना। २ अवनत दशा से कुछ उन्नत दशा को प्राप्त होना। उभरना।

जुगत—संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १ युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २ व्यवहारकुशलता। चतुराई। हथकंडा।

जुगती—संज्ञा पुं० [हिं० जुगत] युक्ति निकालने या खोजनेवाला। चतुर। चालाक।
 संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

जुगनी—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।

जुगनू—संज्ञा पुं० [हिं० जुगजुगाना] १ एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग रह रहकर चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।

जुगम(पु)—वि० दे० "युग्म"।

जुगल—वि० दे० "युगल"।

जुगवना—क्रि० स० [हिं० जोगवना] संचित रखना। एकत्र करना।

जुगाना†—क्रि० स० दे० "जुगवना"।

जुगार†—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगाली"।

जुगालना—क्रि० अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का पागुर करना।

जुगाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० √जुगाल+ई (प्रत्य०)] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकालकर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।

जुगुत, जुगुति—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।
 उ०—साँझ समैं बीथिन मैं ठानी दृगमीचनी भोराई, तिन राधे कों जुगुति कै निखोटि खोटि।—शृंगार०।

जुगुप्सा—संज्ञा स्त्री० [स०] [वि० जुगुप्सित] १ निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।

जुज—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० युज्] १ टुकड़ा। भाग। हिस्सा। अंग। २ कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।

जुज्झ(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।

जुझवाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० जूझना का प्रे० रूप] लड़ा देना।

जुझाऊ—वि० [हिं० √जूझ+आऊ(प्रत्य०)] १ जूझने की ओर प्रवृत्त करनेवाला। "युद्ध

के लिये उत्तेजित करनेवाला। उ०—दीख निषाद नाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू।—मानस। २. लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध संबंधी।

जुझार†पु—वि० [हिं० जुझ+आर (प्रत्य०)] १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।

जुट—संज्ञा स्त्री० [सं०√जुट् या√जुड्] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।

जुटना—क्रि० अ० [सं०√जुट् या√जुड्] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरों के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। ५ कार्य में दृढ़ता से लगना या सम्मिलित होना। ६. मिलना।

जुटली—वि० [सं० जूट] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।

जुटाना—क्रि० स० [हिं० जुटना का स० रूप] जुटने में प्रवृत्त करना।

जुटाव—संज्ञा पुं० [हिं०√जुट+आव (प्रत्य०)] १ जुटने की क्रिया या भाव। २ जमावड़ा।

जुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिखा। चुंदी। २. गुच्छा। लट।

जुट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√जुट] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। अँटिया। जूरी। २ सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी।

वि० जुटी या मिली हुई।

जुठारना—क्रि० स० [हिं० जूठा से ना० धा०] खाने पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा—संज्ञा पुं० [हिं० जूठा+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।

जुड़ना—क्रि० अ० [सं०√जुट् या√जुड्] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. संभोग करना। प्रसंग करना। †३ इकट्ठा होना। ४. एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। ५ प्राप्त होना। मिलना। ६ ठंढा होना। ७ दे० "जुतना"।

जुड़पित्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़+पित्त] एक रोग जिसमें शरीर में बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बड़ी खुजली और जलन रहती है।

जुड़वाँ—वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ से दो एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल, जैसे—जुड़वाँ बच्चे।

संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।

जुड़वाना†—क्रि० स० [हिं० जुड़ना ?] १ ठंढा करना। २. शांत करना। सुखी करना।

क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।

जुड़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।

जुड़ाना†—क्रि० अ० [हिं० जुड़ना ?] १ ठंढा होना। २ शांत होना। तृप्त होना।

क्रि० स० १. ठंढा करना। २. शांत और संतुष्ट करना। तृप्त करना।

जुड़ावना†—क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।

जुडीशल—वि० [अं०] न्याय संबधी।

जुतपु—वि० दे० "युक्त"।

जुतना—क्रि० अ० [हिं० युक्त] १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना। नधना। २ किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना। ३ हल से जोता जाना।

जुतवाना—क्रि० स० [हिं० जोतना का प्रे० रूप] दूसरे से जोतने का काम कराना।

जुताई—संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।

जुतियाना—क्रि० स० [हिं० जूता से ना० धा०] १. जूता मारना। जूते लगाना। २ अत्यंत निरादर करना।

जुत्थपु—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

जुदा—वि० [फा०] १. पृथक्। अलग। २ भिन्न। निराला।

जुदाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव। बिछोह। वियोग।

जुद्धपु—संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।

जुन्हरी—संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल ?] ज्वार (अन्न)।

जुन्हाई—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोण्ह] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चंद्रमा।

जुन्हैया†—संज्ञा स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जुपना†—क्रि० अ० [हिं० जुड़ना ?] (चिराग का) बुझना।

जुबली—संज्ञा स्त्री० [अं०] उत्सव। खुशी। किसी बड़ी घटना का स्मारक महोत्सव। जयंती।

यौ०—सिलवर जुबली [अं०]= किसी घटना का पचीसवाँ वार्षिक उत्सव। रजत जयंती। गोल्डेन जुबली [अं०]= किसी घटना का पचासवाँ वार्षिक उत्सव। स्वर्ण जयंती। डायमंड जुबली [अं०]= किसी घटना का साठवाँ वार्षिक उत्सव। हीरक जयंती।

जुबान—संज्ञा स्त्री० दे० "जबान"।

जुमला—वि० [फा०] सब। कुल।

संज्ञा पुं० पूरा वाक्य।

जुमा—संज्ञा पुं० [अ०] शुक्रवार।

जुमिल—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

जुमेरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] बृहस्पतिवार।

जुरपु—संज्ञा पुं० [सं० ज्वर] बुखार। ज्वर। उ०—कुल, करतूति भूति, कीरति, सरूप गुन, जोवन जरत जुर, परै न कल कहीं।—कविता०।

जुरअत—संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस। हिम्मत।

जुरकनापु—क्रि० स० [?] जलना। फुँकना। भस्म होना।

जुरझुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वर या जूर्ति+हिं० झरझराना] १. ज्वरांश। हरारत। २ ज्वर के आदि की कँपकँपी।

जुरनापु†—क्रि० स० दे० "जुड़ना"।

जुरमाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े। अर्थदंड।

जुरापु—संज्ञा स्त्री० दे० "जरा"।

जुरानापु—क्रि० अ० दे० "जुड़ाना"।

क्रि० स० दे० "जोड़ना"

जुराफा—संज्ञा पुं० [अ० जुराफा] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगे और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती हैं तथा चमड़ा धब्बेदार होता है। (कुछ हिंदी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है।)

जुर्म—संज्ञा पुं० [अ०] वह कार्य जिसके लिये दंड का विधान राजनियम में हो। अपराध।

जुर्रा—संज्ञा पुं० [फा०] नर बाज।

जुर्राब—संज्ञा स्त्री० [तु०] मोजा। पायतावा।

जुल—संज्ञा पुं० [सं० छल ?] धोखा। दम।

जुलाईपु—वि० [हिं० जुल+आई (प्रत्य०)] धोखा देनेवाला। धूर्त।

संज्ञा स्त्री० [अं०] जून के बाद आनेवाला अँगरेजी वर्ष का महीना।

जुलाब—संज्ञा पुं० [फा०] १. रेचन। दस्त। २ रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।

जुलाहा—संज्ञा पुं० [फा० जौलाह] १. कपड़ा बुननेवाला। ततुवाय। २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।

जुल्फ—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ला।

जुल्फी—संज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ"।

जुल्म—संज्ञा पुं० [अ०] अत्याचार। अन्याय।

मुहा०—जुलम टूटना=आफत आ पड़ना। जुल्म ढाना=(१) अत्याचार करना। (२) कोई अद्भुत काम करना।

जुलूस—संज्ञा पुं० दे० "जलूस"।

जुलोक—संज्ञा पुं० [सं० द्युलोक] स्वर्ग। देवलोक।

जुल्लाब—संज्ञा पुं० दे० "जुलाब"।

जुवा—वि० [सं० युवा (युवन्)] जवान। तरुण। उ०—जुवा सुंदरी गुन भरी तीनि नायिका लेखि।—शृंगार०।

संज्ञा स्त्री० [सं० युवा (अवस्था)] यौवन। जवानी। उ०—बालकता में जुवा म[illegible]ी दल कोमल ज्यों जुगुनू के उजेरे।—शृंगार०।

जुवा[illegible]—संज्ञा स्त्री० [हिं० ज्वार] एक प्रकार का अन्न। ज्वार। उ०—बारहिं मुक्ता रतन राजमहिषी पुर सुमुखि समान। [illegible] नगर निछावरि मनिगन जनु जवारि जव धान।—गीता०।

जुस्तजू—संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।

जुहाना†—क्रि० स० [सं० यूथ ?] १ एकत्र करना। जुटाना। संचित करना। २ इमारत के काम में पत्थर आदि यथास्थान बैठाना। ३ चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिये आकृतियों को यथास्थान बैठाना। संयोजन।

जुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० जुहराण] १ क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम। सलाम। २ पुकार। आवाहन।

जुहारना—क्रि० स० [सं० जुहार] १ सहायता माँगना। २ एहसान लेना।

जुही—संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।

जूँ—संज्ञा स्त्री० [सं० यूका] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है।

मुहा०—कानों पर जूँ रेंगना=स्थिति का ज्ञान होना। होश होना।

जू—अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदरसूचक शब्द जो व्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है। जी।

जूआ—संज्ञा पुं० [सं० युग] १. दे० "जुआ"।

संज्ञा पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] दे० "जुआ"।

जूजू—संज्ञा पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ। माऊँ।

जूझⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० युद्ध] लड़ाई।

जूझना|Ⓟ—क्रि० अ० [हिं० जूझ] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।

जूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा। ३. एक प्रकार का रेशेवाला पौधा जिसके रेशे से बोरे बनते हैं।

जूठन—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्युष्ट] १ वह खानेपीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।

जूठा—वि० [सं० जुष्ट] [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] १ किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २ जिसे किसी ने भोगकर अपवित्र कर दिया हो। भुक्त।

संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।

जूड़ा—संज्ञा पुं० [सं० जूट] १. स्त्रियों द्वारा सिर के बालों को एक साथ लपेटकर बाँधी हुई गाँठ। २ चोटी। कलगी। ३ मूँज आदि का पूला। ४ घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी।

जूड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जुर] वह ज्वर जिसके आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है।

जूता—संज्ञा पुं० [सं० युक्त] चमड़े आदि का बना हुआ वह पहनावा जिसे लोग सर्दी, गरमी या काँटे आदि से बचने के लिये पैरों में पहनते हैं। जोड़ा। पादत्राण। उपानह।

मुहा०—(किसी का) जूता उठाना=(१) किसी का दासत्व करना। (२) खुशामद करना। चापलूसी करना। जूता उछलना या चलना = मारपीट होना। झगड़ा होना। जूता खाना=(१) जूतों की मार खाना। (२) बुरा भला सुनना। तिरस्कृत होना। जूते से खबर लेना या बात करना=जूते से मारना। जूतों दाल बँटना=आपस में लड़ाई झगड़ा होना।

जूताखोर—वि० [हिं० जूता+फा० खोर] जो मार या गाली की कुछ परवाह न करे। निर्लज्ज। बेहया।

जूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूता] १. स्त्रियों का जूता। २. छोटा जूता। कम कीमत का जूता।

मुहा०—जूतियाँ चटखाते फिरना=मारा मारा फिरना।

जूती पैजार—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूती+फा० पैजार] १ जूतों की मारपीट। २. लड़ाई। दंगा।

जूथⓅ—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

जून†—संज्ञा पुं० [सं० द्यून] समय। काल।

संज्ञा पुं० [सं० जूर्ण] तृण। घास।

संज्ञा पुं० [अं०] मई के बाद का अँगरेजी वर्ष का छठा महीना।

जूनियर—वि० [अं०] कालक्रम से बाद का। छोटा; जैसे, जूनियर हाई स्कूल। जूनियर कर्मचारी।

जूप—संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] १ जुआ। द्यूत। २ विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू परस्पर जुआ खेलते हैं। पासा।

जूमनाⓅ†—क्रि० अ० [अ० जमा] इकट्ठा होना। जुटना। एकत्र होना।

जूरⓅ—संज्ञा पुं० [हिं०√जुड़] जोड़। संचय।

जूरनाⓅ—क्रि० स० दे० "जोड़ना"।

जूरा—संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा"।

जूरी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√जुर] १ घास या पत्तों का छोटा पूला। जुट्टी। २ सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३ एक प्रकार का पकवान।

संज्ञा पुं० [अं० जूरी] पंच जो जज के साथ बैठकर मुकदमा सुनते और राय देते हैं।

जूलाई—संज्ञा स्त्री० दे० "जुलाई"।

जूस—संज्ञा पुं० [सं० जूष] १ पकी हुई दाल का पानी, परवल आदि का रसा या अन्य हलका पदार्थ जो लंबी बीमारी के उपवास के बाद रोगी को खिलाया जाता है। पथ्य। २ उबाली हुई चीज का रस। रसा।

संज्ञा पुं० [फा० जुफ्त, सं० युक्त] युग्म संख्या। सम संख्या; जैसे, दो, चार, दस, बीस, सौ आदि।

जूस ताक—संज्ञा पुं० [हिं० जूस+फा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमें कौड़ी, इमली के बीज आदि हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जूस हैं या ताक। इस प्रकार का बच्चों का खेल।

जूसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूस] वह गाढ़ा लसीला रस जो ईख के पकते हुए रस में से छूटता है। खाँड का पसेव। चोटा।

जूह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

जूहर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

जूही—संज्ञा स्त्री० [सं० यूथी] १ एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा। इसके फूल चमेली से मिलते जुलते पर छोटे होते हैं। २ एक प्रकार की आतिशबाजी।

जृंभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जृंभा] [वि० जृंभक] १ जँभाई। २ आलस्य।

जृंभक—वि० [सं०] जँभाई लेनेवाला।

संज्ञा पुं० १ रुद्रगणों में से एक। २. एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते या सो जाते थे।

जृंभण—संज्ञा पुं० [सं०] जँभाई लेना। जँभाई।

जृंभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जँभाई। २ आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता।

जेंगना|—संज्ञा पुं० दे० "जुगनूँ"।

जेंना—क्रि० स० दे० "जेंवना"।

जेंवन—संज्ञा पुं० [हिं० जेंवना] भोजन।

जेंवना—क्रि० स० [सं० जेमन] खाना।

जेंवरी—संज्ञा स्त्री० दे० "जेवड़ी"। उ०—सोवत सपने सहै संसृति-संताप, रे। बूड़ो मृगवारि, खायो जेंवरी को साँप रे।—विनय०।

जेंवाना|—क्रि० स० [हिं० जेंवना का प्रे० रूप] खिलाना।

जे(पु)|—सर्व० [सं० ये] 'जो' का बहुवचन।

जेइ, जेउ, जेऊ(पु)|—सर्व० दे० 'जो'।

जेटी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ता या उतरता है।

जेठS—वि० [सं० ज्येष्ठ] अग्रज। बड़ा।

जेठ—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ] १ ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो वैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है। ज्येष्ठ। २ [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई भसुर।

वि० अग्रज। बड़ा।

जेठरा|—वि० दे० "जेठ"।

जेठा—वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १. अग्रज। बड़ा। २ सबसे अच्छा।

जेठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ+आई (प्रत्य०)] बड़ाई। जेठापन।

जेठानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ+आनी (प्रत्य०)] जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेठांस, जेठांसी—संज्ञा पुं० [ज्येष्ठांश] (संपत्ति में) बड़े भाई का हिस्सा।

जेठी—वि० [हिं० जेठ+ई (प्रत्य०)] जेठ संबंधी। जेठ का।

जेठीमधु—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी।

जेठौत, जेठौता|—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ+पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।

सं० पुं० [सं० ज्येष्ठ+तात] पति का बड़ा भाई।

जेठौती—संज्ञा स्त्री० [ज्येष्ठताति] संपत्ति में बड़े भाई का हिस्सा।

जेता—संज्ञा पुं० [सं० जेतृ] १. जीतनेवाला। विजयी। २ विष्णु।

वि० दे० "जितना"।

जेतिक(पु)|—क्रि० वि० [सं० यति, प्रा० जेत्तिअ] जितना।

जेतिग—क्रि० वि० दे० 'जेतिक'।

जेते(पु)|—वि० [सं० यति, प्रा० जेत्तिअ] जितने।

जेतो(पु)|—क्रि० वि० [सं० यति, प्रा० जेत्तिअ] जितना।

जेब—संज्ञा पुं० [फा०] पहनने के कपड़ों के बगल में या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं। खीसा। खरीता। (अँ०) पाकेट।

संज्ञा स्त्री० [फा० जेब] शोभा। सौंदर्य।

जेबकट—संज्ञा पुं० [फा० जेब+हिं० √काट] वह जो दूसरों का रुपया पैसा लेने के लिये उनकी जेब काटता हो। जेबकतरा। गिरहकट।

जेबखर्च—संज्ञा पुं० [फा०] वह धन जो किसी को निज के खर्च के लिये मिले।

जेबघड़ी—संज्ञा स्त्री० [फा० जेब+घड़ी] छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है। (अँ०) पाकेट वाच।

जेबी—वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके। २ जिसका आकार प्रकार नियमित या साधारण से बहुत छोटा हो। बहुत छोटा।

जेय—वि० [सं०] जीतने योग्य।

जेर—संज्ञा स्त्री० देश० वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है। आँवल।

वि० [फा० जेर] [संज्ञा जेरबारी] १. परास्त। पराजित। २ जो बहुत तंग किया जाय।

जेरपाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों की जूती।

जेरबार—वि० [फा०] १. जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। २ जिसकी बहुत हानि हुई हो।

जेरबारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना। तंगी। २ हैरानी। परेशानी।

जेरी—संज्ञा स्त्री० [?] १ दे० "जेर"। २. वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिये रखते हैं।

जेल—संज्ञा पुं० [अँ०] वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी निश्चित समय के लिये रखे जाते हैं। कारागार। बंदीगृह।

संज्ञा पुं० [फा० जेर] जंजाल। हैरानी या परेशानी का काम।

जेलखाना—संज्ञा पुं० [अँ० जेल+फा० खाना] कारागार।

जेलाटिन, जेलाटीन—संज्ञा पुं० [अँ०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकलता है।

जेवड़ा—संज्ञा पुं० दे० "जेवड़ी"। उ०—सापित सण का जेवड़ा भींगा सूँ कठठाइ। दोइ अषिर गुरु बाहिरा, बाँध्या जमपुरि जाइ।—कबीर०।

जेवड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

जेवना—क्रि० स० दे० "जीमना"।

जेवनार—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेवना] १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २ रसोई। भोजन।

जेवर—संज्ञा पुं० [फा०] गहना। आभूषण।

जेवरी—संज्ञा स्त्री० दे० "जेवड़ी"।

जेह—संज्ञा स्त्री० [फा० जिह=चिल्ला] १. कमान की डोरी में वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध में निशाना रहता है। चिल्ला। २ दीवार में नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभड़ा हुआ लेप।

जेहन—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० जहीन] बुद्धि। धारणाशक्ति। समझ।

जेहर|—संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब (जेबर)।

जेहल—संज्ञा पुं० दे० "जेल"।

जेहलखाना†—संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहिⓅ—सर्व० [सं० यस्] १ जिसको। उ०—जेहि सुमिरत सिधि होइ। गणनायक करिवर वदन। —मानस। २ जिससे। ३. जिसने। उ०—बंदौं आदि एक करतारू। जेहि जिउ दीन्हँ कीन्हँ संसारू॥ —पद्मावत।
जै—संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।
† वि० [सं० यति] जितने। जिस कदर। जितनी संख्या में।
जैजैकार—संज्ञा स्त्री० दे० "जय जयकार"।
जैत†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० जयति] विजय।
संज्ञा पुं० [सं० जयती] अगस्त की तरह का एक पेड़।
जैतपत्रⓅ—संज्ञा पुं० [सं० जयति+पत्र] जयपत्र।
जैतवारⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० जैत+वार] जीतनेवाला। विजयी। विजेता।
जैतून—संज्ञा पुं० [अ०] एक ऊँचा सदा-बहार पेड़ जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थीं। इसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं। इसका तेल भी होता है जो खाने और मालिश के काम आता है।
जैत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजेता। विजयी। २. पारा।
जैन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारत का एक प्राचीन धार्मिक सम्प्रदाय या मत जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टिकर्ता नहीं माना जाता। इसके प्रवर्तक महावीर स्वामी का जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुआ था। २. जैन मत को माननेवाला। जैनी।
जैनी—संज्ञा पुं० [हिं० जैन] जैन-मताव-लंबी।
जैबु†Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० जेंवना] भोजन।
जैबो†—क्रि० अ० दे० "जाना"।
जैमाल—संज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल"।
जैमिनि—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्व मीमांसा (कर्मकांड) के वैदिक मंत्रों के सग्रहकर्ता एक वैदिक ऋषि जो व्यास जी से पहले हो गए हैं। २. व्यास जी के चार प्रधान शिष्यों में से एक।
जैयद—वि० [अ० जद्=दादा] १ बड़ा भारी। बहुत बड़ा। २ बहुत धनी।
जैल—संज्ञा पुं० [अ०] १ नीचे का भाग। २. पंक्ति। सफ। ३. इलाका।

जैलदार—संज्ञा पुं० [अ० जैल+फा० दार] वह सरकारी ओहदेदार जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो।
जैसा—वि० [सं० यादृश] [-स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। जिस रूप रंग या गुण का।
मुहा०—जैसा चाहिए=उपयुक्त। जैसे का तैसा=ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। जैसे को तैसा=जोड़ का तोड़। सवाल का जवाब।
२. जितना। जिस परिमाण या मात्रा का। (केवल विशेषण के साथ) † ३. समान। सदृश। तुल्य।
क्रि० वि० जितना। जिस परिमाण में।
जैसे—क्रि० वि० [हिं० जैसा] जिस प्रकार से। जिस ढंग से।
मुहा०—जैसे तैसे = किसी प्रकार। बड़ी कठिनता से।
जैसो†—वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।
जौंⓅ—क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
जोंक—संज्ञा स्त्री० [सं० जलौका] १ पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है। २ वह मनुष्य जो अपना काम निका-लने के लिये बेतरह पीछे पड़ जाय।
जोंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोंक] १ लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को जोड़ता है। २. दे० "जोंक"।
जोंधरी—संज्ञा स्त्री० [सं० जूर्ण] छोटी ज्वार।
जोंधैया—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना] चाँदनी। चन्द्रिका।
जो—सर्व० [सं० य] एक संबंधवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है, जैसे—जो घोड़ा आपने भेजा था, वह मर गया।
Ⓟअव्य० [सं० यद्] यदि। अगर।
जोअनाⓅ†—क्रि० स० दे० "जोवना"।
जोइⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० जाया] जोरू। पत्नी। स्त्री।
† सर्व० दे० "जो"।
जोइसीⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
जोउ—सर्व० दे० "जो"।
जोखना—क्रि० स० [सं०√जुष्=जाँचना] १ तौलना। वजन करना। २ जाँचना।
जोखा—संज्ञा पुं० [हिं०√जोख] लेखा। हिसाब।

जोखिताⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "जोषिता"।
जोखिम—संज्ञा स्त्री० [?] १. भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशंका अथवा संभावना। झोंका।
मुहा०—जोखिम उठाना या सहना= ऐसा काम करना जिसमें भारी अनिष्ट की आशंका हो। जान जोखिम होना=मरने का भय होना।
२. वह पदार्थ जिसके कारण भारी विपत्ति आने की संभावना हो।
जोखों—संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।
जोगंधर—संज्ञा पुं० [सं० यौगधर ?] एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।
जोग—संज्ञा पुं० दे० "योग"।
अव्य० [सं० योग्य] को। के निकट। के वास्ते। (पु० गद्य)
जोगड़ा—संज्ञा [हिं० जोग+ड़ा (प्रत्य०)] बना हुआ योगी। पाखंडी।
जोगवना—क्रि० स० [हिं० जोग] १. यत्न से रखना। रक्षित रखना। २. संचित करना। एकत्र करना। ३ लिहाज रखना। आदर करना। ४. जाने देना। ख्याल न करना। ५ पूरा करना।
जोगानल—संज्ञा स्त्री० [सं० योगानल] योग से उत्पन्न आग।
जोगिंदⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "जोगींद्र"।
जोगिन—संज्ञा स्त्री० [सं० योगिनी] १ योग साधनेवाली स्त्री। २. जोगी की स्त्री। ३ साधुनी। ४ पिशाचिनी।
जोगिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी"।
जोगिया—वि० [हिं० जोगी+इया (प्रत्य०)] १ जोगी संबंधी। जोगी का। २ गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक।
जोगींद्रⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० योगींद्र] १ बड़ा योगी। योगिराज। २ शिव।
जोगी—संज्ञा पुं० [सं० योगी] १. वह जो योग करता हो। योगी। २ एक प्रकार के भिक्षुक जो सारंगी पर गाते फिरते हैं।
जोगीड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० जोगी+ड़ा (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का रंगीन या चलता गाना। २. गानेबजानेवालों का एक छोटा समाज।
जोगेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० योगेश्वर] १. श्रीकृष्ण। २ शिव। ३ सिद्ध योगी।
जोजनⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "योजन"।
जोटⓅ—संज्ञा पुं० [सं०√जुड ?] १. जोड़ी। २. साथी। ३ प्रतिपक्षी।

जोटा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० योटक, √जुड् ?] जोड़ा। युग। उ०—ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा। —मानस।

जोटिंग—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

जोटी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोट] १. जोड़ी। युग्मक। २. बराबरी का। समान। ३ प्रतिपक्षी।

जोड़—संज्ञा पुं० [सं० √जुड्] १ कई संख्याओं का योग। जोड़ने की क्रिया। २ मीजान। वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। ठीक। टोटल। ३. वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हों। ४. वह टुकड़ा जो किसी चीज में जोड़ा जाय। ५. वह चिह्न जो दो चीजों के एक में मिलने के कारण संधिस्थान पर पड़ता है। गाँठ। ७. मेलमिलाप। ८. एक ही तरह की अथवा साथ साथ काम में आनेवाली दो चीजें। जोड़ा। ९. बराबरी। समानता। मेल। १०. वह जो बराबरी का हो। जोड़ा। ११. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। १२ छल। दाँव।

यौ०—जोड़तोड़=(१) दाँव पेंच। छल-कपट। (२) विशेष युक्ति। ढंग।

जोड़ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़+ती (प्रत्य०)] गणित में कई संख्याओं का योग। जोड़।

जोड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़] वह पदार्थ जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है। जावन। जामन।

जोड़ना—क्रि० स० [सं०√जुड्=बाँधना] १. दो वस्तुओं को किसी उपाय से एक करना। दो चीजों को मजबूती से एक करना। २. किसी टूटी हुई चीज के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३ द्रव्य या सामग्री को क्रम से रखना या लगाना। ४. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ५ कई संख्याओं का योगफल निकालना। ६ वाक्यों या पदों आदि की योजना करना। ७. प्रज्वलित करना। जलाना। ८ संबंध स्थापित करना।

जोड़वाँ—वि० [हिं० जोड़ा+वाँ (प्रत्य०)] वे दो बच्चे जो एक ही गर्भ से साथ उत्पन्न हुए हों। यमज। जुड़वाँ।

जोड़वाना—क्रि० स० [हिं० जोड़ना का प्रे० रूप] जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

जोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० जोड़] [स्त्री० जोड़ी] १. साथ साथ काम में आनेवाले दो समान पदार्थ। २ एक ही सी दो चीजें। ३ जूते। उपानह। ४ पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ५ पति-पत्नी। नर और मादा। ६. वह जो बराबरी का हो। जोड़।

जोड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़+आई (प्रत्य०)] १ वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव। २ जोड़ने की मजदूरी।

जोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ा] १ दे० "जोड़ा"। २. दो घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी। ३ गाड़ी में साथ जोते जानेवाले दो बैल या दो घोड़े। ४. दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते हैं। ५ मँजीरा।

जोत—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोतना] १ चमड़े का तसमा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जानेवाले जानवरों के गले में और दूसरा उस चीज में बँधा रहता है जिसमें वे जोते जाते हैं। २ वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते रहते हैं। ३ काश्त। खेती। ४. भूमि जिसे एक काश्तकार जोत-कर काम में लाता है।

† संज्ञा स्त्री० दे० "ज्योति"।

जोतना—क्रि० स० [सं० (√युज्) योजन] १. गाड़ी, कोल्हू आदि को चलाने के लिये उसके आगे बैल, घोड़े आदि पशु बाँधना। २ किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना। ३. खेती के लिये हल चलाना। ४. बोने के योग्य बनाना।

जोता—संज्ञा पुं० [हिं० जोत] १ जुआठे में बँधी हुई वह पतली रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २ बहुत बड़ी शहतीर। ३ वह जो हल जोतता हो।

जोताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोत+आई (प्रत्य०)] १ जोतने का काम या भाव। २. जोतने की मजदूरी।

जोति, जोती—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योति] १ घी का दीआ जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। २ दे० "ज्योति"।

(पु)† संज्ञा स्त्री० [हिं० जोत] जोतने बोने योग्य भूमि।

जोतिक(पु)†—क्रि० वि० [?] जैसा।

जोतिलिंग—संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिर्लिंग"। उ०—जोतिलिंग कथा मुनि जाको अंत पाए, बिनु, आए विधि हरि हारि सोइ हाल भई है। —गीता०।

जोधा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "योद्धा"।

जोनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "योनि"।

जोन्ह, जोन्हाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।

जोपै(पु)—प्रत्य० [हिं० जो+पै] १. यदि। अगर। २. यद्यपि। अगरचे।

जोफ—संज्ञा पुं० [अ०] १. बुढ़ापा। वृद्धा-वस्था। २. निर्बलता। कमजोरी।

जोबन—संज्ञा पुं० [सं० यौवन] १. युवा होने का भाव। यौवन। २. सुंदरता। खूबसूरती। ३. रौनक। बहार।

जोबनाढ्या—वि० [सं० यौवन+आढ्या] यौवन से भरपूर। उ०—इच्छाचारी, सधन सदन की, जोबनाढ्या अरोगा। भर्ताहीना, परमछविवती, धूर्तनारी-सजोगा।—छंदा-र्णव।

जोम—संज्ञा पुं० [अ०] १. उमंग। उत्साह। २. जोश। आवेश। ३ अभिमान।

जोय(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० जाया] जोरू। स्त्री।

सर्व० पुं० [यस्] जो। जिस।

जोयना(पु)†—क्रि० स० [सं० ज्योतिस्, प्रा० जोइ] बालना। जलाना।

क्रि० स० दे० "जोवना"।

जोयसी(पु)†—संज्ञा पु० दे० "ज्योतिषी"।

जोर—संज्ञा पुं० [फा०] १ बल। शक्ति। २. प्रबलता। तेजी। बढ़ती। उ०—दिन परिहै चिनगी चुनैं विरह-विकलता जोर। पाइ पियूष मयूखपी पी गरि निसा चकोर। —रससारांश।

मुहा०—(किसी बात पर) जोर देना=किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्वपूर्ण बतलाना। (किसी बात के लिये) जोर देना=किसी बात के लिये आग्रह करना। जोर मारना या लगाना=(१) बल का प्रयोग करना। (२) बहुत प्रयत्न करना।

यौ०—जोर जुल्म = (१) अत्याचार। (२) प्रबलता। तेजी। बढ़ती।

मुहा०—जोरों पर होना=(१) पूरे बल पर होना। बहुत तेज होना। (२) खूब उन्नत होना।

३ वश। अधिकार। काबू। ४. वेग। आवेश। झोंक।

मुहा०—जोरों पर = बड़े वेग से। तेजी से।

५ भरोसा। आसरा। सहारा।

मुहा०—किसी के जोर पर कूदना=किसी को अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना।

६ परिश्रम। मेहनत। ७ व्यायाम।

जोरदार—वि० [फा०] जिसमें बहुत जोर हो। जोरवाला।

जोरना†—क्रि० स० दे० "जोड़ना"।

जोरशोर—संज्ञा पुं० [फा०] बहुत अधिक जोर।

जोरा—संज्ञा पुं० [सं० जोड़] १. जोड़ा। २. तोले भर राँगे और तोले भर चाँदी के योग से दो तोले चाँदी बनाने की क्रिया या स्थिति (रसायनी)। उ०—कै जो पार हरतार करीजै। गंधक देखि अबहिं जिउ दीजै। तुम्ह जोरा कै सूर मयंकू। पुनि बिछोहि सो लीन्ह कलंकू। —पदमावत।

जोराजोरी†(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० जोर] जबरदस्ती।
क्रि० वि० जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जोरावर—वि० [फा०] [संज्ञा जोरावरी] बलवान्। ताकतवर।

जोरावरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोरावर] जबरदस्ती। बलप्रयोग। उ०—इत जोरी जोरावरी सों न जुरै न जरे पर लोन लगाइयै जू। —शृंगार०।

जोरी†(पु)—संज्ञा स्त्री० पुं० "जोड़ी"।
संज्ञा स्त्री० [फा० जोर] जबरदस्ती।

जोरू—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ा] स्त्री। पत्नी।

जोलाहल†(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाला] ज्वाला। अग्नि। आग।

जोली†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ी] बराबरी।

जोवना(पु)—क्रि० स० [सं० जुष्टन् ?] १. जोहना। देखना। २ ढूँढ़ना तलाश करना। ३. आसरा देखना।

जोश—संज्ञा पुं० [फा०] १. आँच या गरमी के कारण उबलना। उफान। उबाल।
मुहा०—जोश खाना = उबलना। उफनना। जोश देना = पानी के साथ उबालना।
२ चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। उत्तेजना।
मुहा०—खून का जोश = प्रेम का वह वेग जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिये हो।
३ उत्साह। उमंग।

जोशन—संज्ञा पुं० [फा०] भुजाओं पर पहनने का गहना। २. जिरह बकतर। कवच।

जोशाँदा—संज्ञा पुं० [फा०] पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि। क्वाथ। काढ़ा। गुलबनफशा, गावजबाँ आदि का काढ़ा।

जोशी—संज्ञा पुं० दे० "जोषी"।

जोशीला—वि० [फा० जोश + हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेगपूर्ण।

जोष—संज्ञा स्त्री० [सं० योषा] स्त्री। नारी।
संज्ञा स्त्री० दे० "जोख"।

जोषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी। उ०—जदपि जोषिता अन अधिकारी। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी। —मानस।

जोषी—संज्ञा पुं० [सं० ज्योतिषी] १ गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २ ज्योतिषी। गणक (क्व०)।

जोह†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोहना] १ खोज। तलाश। २ इंतजार। प्रतीक्षा। ३ कृपादृष्टि।

जोहन†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोहना] १ देखने या जोहने की क्रिया। २. तलाश। ३ प्रतीक्षा। इंतजार।

जोहना—क्रि० स० [सं० जुष्टन् ?] १ देखना। ताकना। २ ढूँढ़ना। पता लगाना। ३ प्रतीक्षा करना।

जोहार—संज्ञा स्त्री० [सं० जुषण = सेवन] अभिवादन। वंदन। प्रणाम।
संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

जोहारना†—क्रि० अ० [हिं० जोहार से ना० धा०] जोहार या अभिवादन करना।

जौं†—अव्य० [सं० यदि] यदि। जो।
क्रि० वि० दे० "ज्यों"।

जौंरा भौंरा—संज्ञा पुं० [हिं० भुइँधर, भुइँहरा] किले या महलों का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना आदि रहता है।
संज्ञा पुं० [हिं० जोड़ा + भौंरा] दो बालकों का जोड़ा।

जौरे†—क्रि० वि० [फा० जवार] पास। निकट।

जौ—संज्ञा पुं० [सं० यव] १ गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजों में है। २ एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों से टोकरे, झाबे आदि बनते हैं। ३ छ राई (खरदल) के बराबर एक तौल।
† अव्य० [सं० यद्] यदि। अगर।
(पु) † क्रि० वि० जब।

जौख—संज्ञा पुं० [तु० जूक] १. झुंड। जत्था। २. फौज। सेना। ३. पक्षियों की श्रेणी।

जौजा—संज्ञा स्त्री० [अ० जौजः] जोरू। पत्नी।

जौधिक—संज्ञा पुं० [सं० यौधिक] तलवार या खड्ग के ३२ हाथों में से एक।

जौन†(पु)—सर्व० [सं० य] जो।
वि० जो।
संज्ञा पुं० दे० "यवन"।

जौपै(पु)†—अव्य० [हिं० जौ + पै] अगर। यदि।

जौवति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "युवती"।

जौहर—संज्ञा पुं० [फा० गौहर का अरबी रूप] १. रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २ सार वस्तु। सारांश। तत्व। ३ हथियार की ओप। विशेषता। उत्तमता। खूबी।
संज्ञा पुं० [हिं० जीव + हर] १. ईसा की १३ वीं सदी से १५ वीं सदी तक अफगान बादशाहों में दूसरों की स्त्रियों को छीनने की प्रवृत्ति के कारण प्रचलित राजपूतों की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ के घिर जाने पर अपनी हार निश्चित देखकर लड़ने योग्य समस्त वीर अपनी माताओं, बहनों, स्त्रियों और पुत्रवधुओं आदि स्त्री वर्ग को दहकती हुई चिता के सुपुर्द करके फाटक खोल देते थे और स्वयं शत्रु का संहार करते हुए वीरगति लाभ करते थे। २ वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिये बनाई जाती है। ३. आत्महत्या।

जौहरी—संज्ञा पुं० [फा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला। रत्नविक्रेता। २ किसी वस्तु के गुणदोष की पहचान रखनेवाला। पारखी। जँचवैया।

ज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। २. ज्ञान। बोध। ३. ज्ञानी। जाननेवाला, जैसे, शास्त्रज्ञ। ४. ब्रह्मा। ५ बुध ग्रह।

ज्ञप्त—वि० [सं०] जाना हुआ।

ज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जानकारी। २ बुद्धि।

ज्ञात—वि० [सं०] जाना हुआ। विदित।

ज्ञातयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्ध नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।

ज्ञातव्य—वि० [सं०] जो जाना जा सके। ज्ञेय। बोधगम्य।

ज्ञाता—वि० [सं० ज्ञातृ, ज्ञाता] [स्त्री० ज्ञात्री] जाननेवाला। ज्ञान रखनेवाला। जानकार। ज्ञानी।

ज्ञाति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती। २ भाई बंधु।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

ज्ञातृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] जानकारी।

ज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तुओं और विषयों का बोध। जानकारी। प्रतीति।
मुहा०—ज्ञान छाँटना=अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिये लंबी चौड़ी बातें करना।
२ यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्वज्ञान।

ज्ञानकांड—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर, जीव, आत्म और अनात्म तत्व, सृष्टि, ब्रह्म, विश्वविधान और प्रलय, इह लोक और परलोक तथा जन्म और मृत्यु आदि तात्विक बातों की चारो वेदों में बिखरी हुई गंभीर विवेचनाओं का महर्षि बादरायण व्यास द्वारा किया हुआ संग्रह। उत्तर-मीमांसा। २. कर्मकांड के अतिरिक्त वैदिक प्रवचन।

ज्ञानगम्य—संज्ञा पुं० [सं०] जो जाना जा जा सके। ज्ञेय।

ज्ञानगोचर—वि० दे० "ज्ञानगम्य"।

ज्ञानयोग—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन।

ज्ञानवान्—वि० [सं०] ज्ञानी।

ज्ञानवृद्ध—वि० [सं०] जिसकी जानकारी अधिक हो।

ज्ञानी—वि० [सं० ज्ञानिन्] १ जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। जानकार। २ आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है, यथा—आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा।

ज्ञापक—वि० [सं०] जतानेवाला। सूचक। बतलानेवाला।

ज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य।

ज्ञापित—वि० [सं०] जताया हुआ। सूचित।

ज्ञेय—वि० [सं०] १ जो जानने योग्य हो। २ जो जाना जा सके।

ज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धनुष की डोरी। २ चाप के किन्हीं दो बिंदुओं को मिलानेवाली सीधी रेखा (गणित)। ३ पृथ्वी।

ज्यादती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार। जुल्म। ३. जबरदस्ती।

ज्यादा—वि० [फा०] अधिक। बहुत।

ज्यान(पु)—संज्ञा पुं० [फा० जियान] हानि। नुकसान।

ज्याना(पु)—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

ज्याफत—संज्ञा स्त्री० [अ० जियाफत] १ दावत। भोज। २. मेहमानी। आतिथ्य।

ज्यामिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गणित जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, तल आदि का ज्ञान होता है। क्षेत्रगणित। रेखागणित।

ज्यारना†(पु)—क्रि० अ० दे० "जिलाना"।

ज्यारी—वि० [हिं० जिवारी] जिलानेवाली। जीवनदायिनी। उ०—मोर को आवनि कुंजविहारी की मेरी तौ 'दासजू' ज्यारी जिया की।—शृंगार०।

ज्यावना†(पु)—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

ज्यूँ†—अव्य० दे० "ज्यों"।

ज्येष्ठ—वि० [सं०] १. बड़ा। जेठा। २ वृद्ध। बड़ा बूढ़ा। श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० १ जेठ का महीना। २ परमेश्वर। ३. पति का बड़ा भाई।

ज्येष्ठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्येष्ठ होने का भाव। बड़ाई। २ श्रेष्ठता।

ज्येष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सबसे बड़ी पत्नी। २. वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा पति को अधिक प्यारी हो। ३ मध्यमा उँगली। ४ अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से बना और कुंडल के आकार का है। ५. छिपकली।
वि० स्त्री० बड़ी।

ज्यों(पु)—क्रि० वि० [अप० जिम] १ जिस प्रकार। जैसे। जिस ढंग से।
मुहा०—ज्यों का त्यों=ठीक वैसा ही। ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार।
२ जिस क्षण। जैसे ही।
मुहा०—ज्यों ज्यों=(१) जिस क्रम से। (२) जिस मात्रा से। जितना।
अव्य० मानों। जैसे।

ज्योति:शिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषम वर्णवृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं।

ज्योति—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योतिस्] १ प्रकाश। उजाला। द्युति। २ लपट। लौ। ३ अग्नि। ४. सूर्य। ५. नक्षत्र। ६. आँख की पुतली के मध्य का बिंदु। ७. दृष्टि। ८. विष्णु। ९. परमात्मा।

ज्योतिक—संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।

ज्योतित—वि० [सं० ज्योति] ज्योति से भरा हुआ। प्रकाशमान। उजला।

ज्योतिमय—वि० [स्त्री० ज्योतिमयी] दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिमान—वि० दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिरिंगण—संज्ञा पुं० [सं०] जुगनू।

ज्योतिर्मय—वि० [सं०] प्रकाशमय। जगमगाता हुआ।

ज्योतिर्मान—वि० दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिर्लिंग—संज्ञा [सं०] १. भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं। २ महादेव। शिव।

ज्योतिर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष।

ज्योतिश्चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों और राशियों का मंडल।

ज्योतिष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों के ६ अंगों में गिनी जानेवाली वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। नक्षत्र विद्या। २ ग्रहों और नक्षत्रों के प्राणियों पर पड़नेवाले प्रभाव का ज्ञान करानेवाला शास्त्र। फलित (ज्योतिष)। ३. अस्त्रों का एक संहार या रोक।

ज्योतिषी—संज्ञा पुं० [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य। ज्योतिर्विद्। दैवज्ञ। गणक।

ज्योतिष्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २. मेथी। ३ चित्रक वृक्ष। चीता। ४. गनियारी।

ज्योतिष्टोम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसे अग्निष्टोम नामक यज्ञ का प्रारंभिक भाग माना जाता है।

ज्योतिष्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रसमूह।

ज्योतिष्मती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालकँगनी। २ रात्रि।

ज्योतिष्मान्—वि० [सं०] प्रकाशयुक्त।
संज्ञा पुं० सूर्य।

ज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २ चाँदनी रात।

ज्योनार—संज्ञा स्त्री० [सं० जेमन=खाना] १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. भोज। दावत। ज्याफत।

ज्योरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा=प्रत्यंचा] रस्सी।

ज्योहत, ज्योहरⓅ†—संज्ञा पु० [स० जीव+हत] आत्महत्या। जौहर।

ज्यौं—अव्य० [सं० यदि] जो। यदि।
सज्ञा पुं० दे० "जी"।
Ⓟ सज्ञा पुं० [सं० जीव] आत्मा।

ज्यौतिष—वि० [सं०] ज्योतिष सबंधी।

ज्वर—संज्ञा पुं० [स०] शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे। ताप। बुखार।

ज्वरांकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्वर की एक औषध। २ एक सुगधित घास।

ज्वरा—सज्ञा पुं० [सं० जरा] मृत्यु की भगिनी बुढ़ापे की अधिष्ठात्री कालकन्या।

ज्वलत—वि० [स०] १. प्रकाशमान्। दीप्त। २. अत्यत स्पष्ट।

ज्वलन—सज्ञा पुं० [सं०] १ जलने का कार्य या भाव। जलन। दाह। २ अग्नि। आग। ३. लपट। ज्वाला।

ज्वलित—वि० [स०] १.—जला हुआ। २ चमकता या झलकता हुआ। उज्वल।

ज्वान†—वि० दे० "जवान"।

ज्वार—संज्ञा स्त्री० [?] १. एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने मोटे अनाजों में गिने जाते हैं। जोन्हरी। जुडी। २ समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव। लहर की उठान। भाटा का उलटा।
सज्ञा पुं० दे० "ज्वाल"।

ज्वारभाटा—सज्ञा पुं० [हिं० ज्वार+भाटा] समुद्र के जल का चढाव उतार या लहर का बढ़ना और घटना जो चद्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है। इसके चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं।

ज्वारी—वि० [हिं० जुआरी] जूआ खेलनेवाला। जुआरी।

ज्वाल—सज्ञा पुं० [सं०] लौ। लपट।
Ⓟ सज्ञा स्त्री० दे० "ज्वाला"।

ज्वाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १. अग्निशिखा। लपट। २. विष आदि की गरमी। ३. गरमी। ताप। जलन।

ज्वालादेवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] शारदा-पीठ में स्थित एक देवी। इनका 'स्थान काँगड़ा जिले में है। कथा प्रसिद्ध है कि अति प्राचीन काल में यहाँ से भूगर्भ की ज्वाला निकलती थी।

ज्वालामुखी पर्वत—सज्ञा पुं० [सं०] वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय समय पर निकला करते हैं।

झ

झ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारणस्थान तालू है।

झाईं—संज्ञा स्त्री० [छाया ?] आँखों के सामने छा जानेवाला अँधेरा। चक्कर। उ०—भरतहि देखि मातु उठि धाई। मुरछित अवनि परी झईं आई। —मानस।

झकना—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झंकार—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. झनझनाहट का शब्द। झनकार। २ झींगुर आदि छोटे जानवरों के बोलने का शब्द।

झंकारना—क्रि० स० [स० झंकार] "झनझन" शब्द उत्पन्न करना।
क्रि० अ० झनझन शब्द होना।

झंकृत—वि० [सं०] जिसमें झनकार हुई हो।

झंकृति—सज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।

झंखना—क्रि० अ० [प्रा०√झंख] दे० "झींखना"।

झंखाड़—सज्ञा पुं० [हिं० झाड़ का अनु०] १ घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा। २ वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों। ३. व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।

झँगा—सज्ञा पुं० दे० "झगा"। उ०—चिकुरारी मनोहर पीत झँगा पहिरें मनि-आँगन में विहरें।—रससारांश। नवनील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिए।—कविता०।

झँगुलीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"। उ०—उठि कह्यो भोर भयो झँगुली दै, मुदित महरि लखि आतुरताई। विहँसी ग्वालि जानि तुलसी प्रभु सकुचि लगे जननी उर धाई॥—श्रीकृष्णगीता०।

झंझट—संज्ञा स्त्री०, पुं० [अनु०] १. व्यर्थ का झगड़ा। टंटा। बखेड़ा। प्रपच। २ कठिनाई। परेशानी।

झंझनाना—क्रि अ० [अनु०] झनझन शब्द होना। झकारना।
क्रि० स० झनझन शब्द करना।

झंझर—सज्ञा स्त्री० दे० "झज्झर"।

झँझरा—दे० [अनु०] [स्त्री० झँझरी] जिसमें बहुत से छोटे छोटे छेद हों

झँझरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० झर झर से अनु०] १. किसी चीज में बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह। जाली। २ दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की। उ०—आहट पाइ रहै ठहराइ न डीठि डोलाइ सकै झँझरी सों। —रससारांश।

झंझा—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २. तेज आँधी। तूफान।

झंझानिल, झंझावात—संज्ञा पुं० दे० "झंझा"।

झंझी—संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।

झँझोड़ना—क्रि० स० [सं० झर्झन] १. किसी चीज को बहुत वेग और झटके के साथ हिलाना जिसमें वह टूट फूट जाय या नष्ट हो जाय। झकझोरना। २. किसी जानवर का अपने से छोटे जानवर को मार डालने के लिये दाँतों से पकड़कर खूब झटका देना। ३ पानी आदि से भरे बरतन को इसी प्रकार वेग से हिलाना।

झंडा—सज्ञा पुं० [सं० जयत] [स्त्री० अल्पा० झडी] तिकोने या चौकोर कपड़े का टुकड़ा जिसका एक सिरा लकड़ी आदि के डडों में लगा रहता है और जिसका व्यवहार अपनी राजनीतिक स्वतत्रता या अधिकार सूचित करने, कोई चिह्न प्रकट करने, सकेत करने और उत्सव आदि सूचित करने के लिये होता है। पताका। निशान। फरहरा। ध्वजा।

मुहा०—झडा खड़ा करना=(१) सैनिक आदि एकत्र करने के लिये झडा स्थापित

करके संकेत करना । (२) आडंबर करना ।
झंडा गाड़ना या फहराना=(१) किसी स्थान, विशेषत. नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसके चिह्नस्वरूप झंडा स्थापित करना । (२) पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमाना ।

२. ज्वार, बाजरे आदि पौधों के ऊपर का नरफूल । जीरा ।

झंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झंडा] छोटा झंडा ।

झँडूला—वि० [हिं० झंडा+ऊला (प्रत्य०)] १ जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों । जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो (बालक) । २ मुंडन संस्कार से पहले का या गर्भ का (बाल) । ३. घनी पत्तियोंवाला । सघन (वृक्ष) ।

झंप—संज्ञा पुं० [सं०] १. उछाल । फलाँग । २. झपट ।

मुहा०—झंप देना=कूदना ।

संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों के गले का एक आभूषण ।

झँपकना, झपना—क्रि० अ० [सं० झंप] १. छिपना । आड़ में होना । २. उछलना । कूदना । लपकना । ३. टूट पड़ना । एकदम से आ पड़ना । ४. झेंपना । लज्जित होना ।

झँपरी—संज्ञा स्त्री० [झाँपना = ढकना] पालकी को ढाँकने की खोली । ओहार ।

झपान—संज्ञा पुं० [सं० झंप] पहाड़ी सवारी के लिये एक प्रकार की खटोली । झप्पान ।

झंपित(पु)—वि० [सं० झंप] ढका या छिपाया हुआ ।

झँपोला—संज्ञा पुं० [हिं० झाँपा+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री०, अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] छोटा झाँपा या झाबा । छाबड़ा ।

झंब—संज्ञा पुं० [देश०] गुच्छा ।

झँवकार(पु)†—वि० [हिं० झाँवला+काला] झाँवले रंग का । काला ।

झँवराना—क्रि० अ० [हिं० झाँवर से ना० धा०] १ कुछ काला पड़ना । २ कुम्हलाना । फीका पड़ना ।

झँवा—संज्ञा पुं० दे० "झाँवा" ।

झँवाना—क्रि० अ० [हिं० झाँवा से ना० धा०] १. झाँवे के रंग का हो जाना । कुछ काला पड़ जाना । २. घट जाना । ४. कुम्हलाना । मुरझाना । ५. झाँवे से रगड़ा जाना ।

क्रि० स० १. झाँवे के रंग का कर देना । कुछ काला कर देना । २ आग ठंढी करना । ३ घटाना । ४. कुम्हला देना । मुरझा देना । ५. झाँवे से रगड़ना या रगड़वाना ।

झँसना—क्रि० स० [स०√झष्] १ किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना । २. सिर या तलुए आदि में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बार बार रगड़ना ।

झ—संज्ञा पुं० [स०] १. झझावात । वर्षा मिली हुई तेज आँधी । २. बृहस्पति । ३. दैत्यराज । ४ ध्वनि ।

झई—संज्ञा स्त्री० दे० "झाई" ।

झउआ†—संज्ञा पुं० दे० "झाबा" ।

झक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सनक । खब्त । धुन ।

संज्ञा स्त्री० दे० "झख" ।

वि० चमकीला । साफ ।

झकझक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ की हुज्जत । फजूल तकरार । २ बकबक ।

झकझका—वि० [अनु०] चमकीला ।

झकझकाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० झकझका+आहट (प्रत्य०)] चमक ।

झकझेलना—क्रि० स० दे० "झकझोरना" ।

झकझोर—संज्ञा पुं० [अनु०] झकझोरने की क्रिया या भाव । झटका ।

वि० झोंकेदार । तेज ।

झकझोरना—क्रि० स० [अनु०] किसी चीज को पकड़कर खूब हिलाना । झटका देना ।

झकझोरा—संज्ञा पुं० [अनु०] झटका ।

झकझोलना—क्रि० स० दे० "झकझोरना" ।

(पु)क्रि० अ० [हिं० झकझोरना] झकझोरा जाना । जोर से हिलना डुलना ।

झकना†—क्रि० अ० [हिं० झक] १ बकवाद करना । व्यर्थ की बातें करना । २. क्रोध में आकर अनुचित वचन कहना ।

झका(पु)—वि० [हिं० झक] चमकीला । साफ ।

झकाझक—वि० [अनु०] खूब साफ और चमकता हुआ । झलाझल । उज्वल ।

झकुराना†—क्रि० अ० [हिं० झकोरा] झूमना ।

क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना ।

झकोर(पु)†—संज्ञा पुं० [अनु०] १. हवा का झोंका । २. झटका । झोंका ।

झकोरना—क्रि० अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना ।

झकोरा—संज्ञा पुं० [अनु०] हवा का झोंका ।

झकोल(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "झकोर" ।

झक्क—वि० [अ०] साफ और चमकता हुआ ।

संज्ञा स्त्री० दे० "झक" ।

झक्कड़—संज्ञा पुं० [अनु०] तेज आँधी ।

वि० दे० "झक्की" ।

झक्की—वि० [हिं० झक] १ बहुत बकबक करनेवाला । २. जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने । सनकी ।

झखना(पु)†—क्रि० अ० दे० "झींखना" ।

झख—संज्ञा स्त्री० [हिं० झखना] झींखने का भाव या क्रिया ।

संज्ञा स्त्री० [सं० झष्] मछली ।

मुहा०—झख मारना=(१) व्यर्थ समय नष्ट करना । (२) अपनी मिट्टी खराब करना ।

झखना(पु)—क्रि० अ० दे० "झींखना" ।

झखी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० झषी] मछली ।

झगड़ना—क्रि० अ० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर विवाद करना । झगड़ा करना ।

झगड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० झकझक से अनु०] मनुष्यों में होनेवाली कहा सुनी । लड़ाई । हुज्जत । तकरार ।

झगड़ालू—वि० [हिं० झगड़ा+आलू (प्रत्य०)] जो बात बात में झगड़ा करता हो । कलहप्रिय ।

झगड़ी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू" ।

झगर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया ।

झगरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा" ।

झगराऊ(पु)†—वि० दे० "झगड़ालू" ।

झगरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू" ।

झगला(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "झगा" ।

झगा—संज्ञा पुं० [?] छोटे बच्चों के पहनने का कुछ ढीला कुरता ।

झगुली†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा" । उ०—पीत झीन झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥ —मानस ।

झज्झर—संज्ञा पुं० [देश०] कुछ चौड़े मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन ।

झंझी—संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।

झझक—संज्ञा स्त्री० [हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। भड़क। २. कुछ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव। झुँझलाहट। ३ रह रहकर निकलनेवाली अप्रिय गंध। ४. रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

झझकन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झझक"।

झझकना—क्रि० अ० [अनु०] १. भय की आशंका से अकस्मात रुक जाना। अचानक डरकर ठिठकना। बिदकना। खिझलाना। २ चौंक पड़ना।

झझकाना—क्रि० स० [हिं० झझकना का प्रे० रूप] १. भय की आशंका कराके किसी काम से रोक देना। भड़काना। २. चौंका देना।

झझकारना—क्रि० स० [अनु०] [संज्ञा झझकार] १. डपटना। डाँटना। २. दुरदुराना। झटकारना। ३ तुच्छ समझना।

झट—क्रि० वि० [सं० झटिति] तुरत। उसी समय।

झटकना—क्रि० स० [हिं० झट] १. किसी चीज को झोंके से हिलाना जिसमें उसपर पड़ी हुई दूसरी चीज गिर पड़े। झटका देना। २. जोर से हिलाना। झोंका देना।

मुहा०—झटककर=झोंके से। तेजी से।

३. चालाकी से या जबरदस्ती किसी की चीज लेना। ऐंठना। हथियाना।

क्रि० अ० रोग या दुःख से क्षीण होना।

झटका—संज्ञा पुं० [हिं० √झटक] १. झटकने क्रिया। हलका धक्का। झोंका। २ झटके का भाव। ३. पशुवध का वह प्रकार जिसमें पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला जाता है। ४ आपत्ति, रोग या शोक आदि का आघात।

झटकारना—क्रि० स० दे० "झटकना"।

झटपट—अव्य० [हिं० झट+अनु० पट] अति शीघ्र। तुरंत। फौरन।

झटिति(पु)—क्रि० वि० [सं०] झट। चटपट।

झड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़ना] १ तेज हवा के साथ होनेवाली लगातार वर्षा। उ०—माझी! साहस है खे लोगे! जर्जर तरी भरी पथिकों से, झड़ में क्या खे लोगे? —स्कंदगुप्त। २. दे० "झड़ी"।

झड़कना(पु)—क्रि० स० दे० "झिड़कना"।

झड़झड़ाना—क्रि० स० १. दे० "झिड़कना"। २. दे० "झझोड़ना"।

झड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़ना] १. झड़ी हुई चीज। २. झड़ने की क्रिया या भाव।

झड़ना—क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. किसी चीज से टूटकर गिरना; जैसे—पेड़ से पत्तों का झड़ना। २. अधिक मान या संख्या में गिरना। ३. झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. मुठभेड़। लड़ाई। २ क्रोध। गुस्सा। ३. आवेश।

झड़पना—क्रि० अ० [अनु०] १. आक्रमण करना। वेग से किसी पर गिरना। २. लड़ना। झगड़ना। ३. जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना। झटकना।

झड़बेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़+बेर] जंगली बेर।

झड़वाना—क्रि० स० [हिं० झाड़ना का प्रे० रूप] १. झाड़ने का काम दूसरे से कराना। २. प्रेतबाधा, रोग आदि के दूर होने के लिये मंत्र पढ़कर फुँकवाना।

झड़ाका—संज्ञा पुं० [अनु० ?] मुठभेड़। झड़प।

क्रि० वि० झट से। चटपट।

झड़ाझड़—क्रि० वि० [अनु०] लगातार।

झड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झड़] १. लगातार झड़ने की क्रिया। २ छोटी बूँदों की लगातार वर्षा। ३ लगातार बहुत सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना। ४ ताले के भीतर का खटका।

झन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातु के टुकड़ों के बजने की ध्वनि।

झनक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] झनझन शब्द। झनकार।

झनकना—क्रि० अ० [अनु०] १. झनकार का शब्द करना। २. क्रोध आदि में हाथ पैर पटकना। ३. दे० "झीखना"।

झनकवात—संज्ञा स्त्री० [हिं० झनक+वात] एक प्रकार का वायुरोग।

झनकार—संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।

झनझनाना—क्रि० अ० [अनु०] झनझन शब्द होना।

क्रि० स० झनझन शब्द उत्पन्न करना।

झनस—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पुराना बाजा।

झनाझन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] झंकार। झनझन शब्द।

क्रि० वि० झनझन शब्द सहित।

झनिया—वि० दे० "झीना"।

झन्नाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] झनकार। झनझनाहट।

झप—क्रि० वि० [सं० झंप] जल्दी से। तुरत।

झपक—संज्ञा स्त्री० [सं० झप] १. पलक गिरने भर का समय। बहुत थोड़ा समय। २. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद। झपकी।

झपका—संज्ञा पुं० [सं० झंप] हवा का झोंका।

झपकना—क्रि० अ० [हिं० झपक] १. पलक का गिरना। २. झपकी लेना। ऊँघना। ३. झपटना। ४ झेंपना।

झपकाना—क्रि० स० [हिं० झपकना] पलकों को बार बार बंद करना।

झपकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झपक] १. हलकी नींद। २ आँख झपकने की क्रिया। ३. धोखा। चकमा। बहकावा।

झपकौंहा(पु)—वि० [हिं० झपक+औंहा (प्रत्य०)] [स्त्री० झपकौंही] १. नींद से भरा हुआ (नेत्र)। झपकता हुआ। २. मस्त। नशे में चूर।

झपट—संज्ञा स्त्री० [सं० झप] झपटने की क्रिया या भाव।

झपटना—क्रि० अ० [सं० झप] किसी चीज को लेने या आक्रमण करने के लिये वेग से उस ओर बढ़ना। टूटना। लपकना।

झपटान—संज्ञा स्त्री० [हिं० झपट+आन (प्रत्य०)] झपटने की क्रिया या भाव। झपट।

झपटाना—क्रि० स० [हिं० झपटना का प्रे० रूप] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।

झपटानी—संज्ञा पुं० [हिं० झपटान] एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज।

झपट्टा—संज्ञा पुं० दे० "झपट"।

झपताल—संज्ञा पुं० [देश०] संगीत में एक ताल।

झपना—क्रि० अ० [सं० झप] १. (पलकों का) गिरना। २ आँखें झपकना। ३. झुकना। ४. झेंपना।

झपलैया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झपोला"।

झपवाना—क्रि० स० झपना का प्रे० रूप।

झपस—संज्ञा स्त्री० [हिं० झपसना] १ गुंजान होने का भाव। २. घनी हरियाली।

झपसना—क्रि० अ० [हिं० झँपना=ढकना] लता या पेड़ की डालियों का खूब घना होकर फैलना।

झपाका—संज्ञा पुं० [हिं० झप] शीघ्रता।
क्रि० वि० झप से। जल्दी।

झपाटा—संज्ञा पुं० [हिं० झपट] चपेट। आक्रमण।

झपाना—क्रि० स० [हिं० झपना] १ मूँदना। बंद करना (आँखों या पलकों का)। २ झुकाना।

झपित—वि० [हिं० √झप] १. झपा हुआ। मुँदा हुआ। २. जिसमें नींद भरी हो। उनींदा (नेत्र)। ३ लज्जित। लज्जायुक्त।

झपेट—संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"।

झपेटना—क्रि० स० [हिं० झपट] आक्रमण करके दबा लेना। दबोचना। छोप लेना।

झपेटा—संज्ञा पुं० [हिं० झपट] १. चपेट। झपट। २. भूतप्रेतादिकृत बाधा या आक्रमण।

झप्पान—संज्ञा पुं० दे० "झपान"।

झबरा—वि० [अनु०] [स्त्री० झबरी] जिसके बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बाल हों।

झबरीला—वि० [हिं० झबरा+ईला] कुछ बड़ा, चारों तरफ बिखरा और घुमावदार (केशसमूह)।

झबरैरा(पु)—वि० दे० "झबरीला"।

झबा—संज्ञा पुं० दे० "झब्बा"।

झबार, झबारि—संज्ञा स्त्री० [अनु०] टंटा। बखेड़ा। झगड़ा।

झबिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० झब्बा] १. छोटा झब्बा। छोटा फुँदना। २ सोने चाँदी की छोटी छोटी कटोरी जो बाजूबंद, हुँवेल, झुमके आदि गहने में पिरोई रहती है।

झबूकना—क्रि० अ० [अनु०] चमकना। झलकना। चौंकना।

झब्बा—संज्ञा पुं० [अनु०] १ तारों का गुच्छा जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिये लटकाया जाता है। २. एक में लगी हुई छोटी चीजों का समूह। गुच्छा।

झमक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चमक का अनुकरण। २ प्रकाश। उजेला। ३. झमझम शब्द। ४ नखरे की चाल। ठसक की चाल।

झमकना—क्रि० अ० [हिं० झमक] १ रह रहकर चमकना। दमकना। २ झपकना। छाना। ३ झमझम शब्द होना। झनकार होना। ४. लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना। ५. झमक दिखलाना। ६. झमझम शब्द करना।

झमकाना—क्रि० स० [हिं० झमकना का स० रूप] १. चमकाना। चमक पैदा करना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।

झमकारा—वि० [हिं० झमझम] झमझमकर बरसनेवाला (बादल)।

झमकीला—वि० [हिं० झमक+ईला (प्रत्य०)] १ चमकीला। २. चंचल।

झमझम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घुँघरुओं आदि के बजने का झमझम शब्द। छमछम। २ पानी बरसने का शब्द।
वि० जो खूब चमके। चमकता हुआ।
क्रि० वि० १ झमझम शब्द के साथ। २ चमक दमक के साथ। झमाझम।

झमझमाना—क्रि० अ० [हिं० झमझम] १ झमझम शब्द होना या करना। चमचमाना। चमकना।

झमना—क्रि० अ० [अनु०] झुकना। दबना।

झमा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "झाँवाँ"।

झमाका—संज्ञा पुं० [अनु०] १ पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २ ठसक। नखरा।

झमाझम—क्रि० वि० [अनु०] १ उज्ज्वल कांति के सहित। दमक के साथ। २ झमझम शब्द सहित।

झमाट—संज्ञा पुं० [अनु०] झुरमुट।

झमाना—क्रि० अ० [अनु०] छाना। घेरना।
क्रि० अ० दे० "झँवाना"।

झमार—संज्ञा पुं० [?] वर्षा का झोंका।

झमेला—संज्ञा पुं० [अनु० झाँव झाँव] १ बखेड़ा। झंझट। २ भीड़भाड़।

झमेलिया—संज्ञा पुं० [हिं० झमेला+इया (प्रत्य०)] झमेला करनेवाला। झगड़ालू।

झर—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पानी गिरने का स्थान। निर्झर। २ झरना। सोता। चश्मा। ३. समूह। ४ तेजी। वेग। ५ झड़ी। लगातार वृष्टि। उ०—गाँसी गाँसी नेह की निसानी झरनेह की रही न सुधि तेह की न देह की न गेह की।—शृंगार०। ६ (पु) ताप।

झरक(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

झरकना(पु)—क्रि० अ० १ दे० "झलकना" २ दे० "झिड़कना"।

झरझर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल के गिरने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।

झरझराना—क्रि० स० [हिं० झरझर] १. झरझर शब्द के साथ गिराना। २. दे० "झड़झड़ाना"।
क्रि० अ० झरझर शब्द के साथ जलना।

झरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. झरने की क्रिया। २. वह जो कुछ झरकर निकला हो। ३ दे० "झड़न"।

झरना(पु)—क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से सोते का गिरना।
संज्ञा पुं० [सं० झर] ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जलप्रवाह। सोता। चश्मा।
संज्ञा पुं० [सं० क्षरण] १ एक प्रकार की चलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। २ लंबी डाँड़ी की छेददार चिपटी करछी। पौना।
वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला। जो झरता हो।

झरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झरन"।

झरनी—वि० [हिं० झरन] झारनेवाली। गिरानेवाली।

झरप(पु)—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेजी। ३ चाँड़। टेक। ४ चिक। चिलमन। परदा। ५ दे० "झड़प"।

झरपना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] १. झोंका देना। बौछार मारना। २ दे० "झड़पना।"

झरसना(पु)—क्रि० अ० दे० "झुलसना"।

झरहरना—क्रि० अ० [अनु०] झरझर शब्द करना।

झरहरा—वि० दे० "झँझरा"।

झरहराना—क्रि० अ० [हिं० झरहरना] हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।
क्रि० स० झटकना। झाड़ना।

झराझर—क्रि० वि० [हिं० झरझर] १. झरझर शब्द सहित। २. लगातार। बराबर। ३ वेग सहित।

झरिफ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० झरप] चिलमन। चिक। आड़। परदा।

झरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झर] १ पानी का झरना। स्रोत। चश्मा। २ वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी में जाकर सौदा बेचनेवालों से प्रतिदिन लिया जाता है। ३. दे० "झड़ी"।

झरोखा—संज्ञा पुं० [अनु० झरझर+गौख] खिड़की। गवाक्ष।

झल—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाल] १. दाह। जलन। आँच। उ०—झल ऊठी झोली जली, खपरा फूटिम फूटि। जोगी था सो रमि गया, आसणि रही बिभूति। —कबीर०। २. किसी विषय की उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३. क्रोध। गुस्सा। ४ समूह।

झलक—संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लिका] १. चमक। दमक। आभा। २ आकृति का आभास। प्रतिबिंब। ३. वह प्रधान रंगत या आभा जो किसी समूचे चित्र में व्याप्त हो।

झलकदार—वि० [हिं० झलक+फा० दार] चमकीला।

झलकना—क्रि० अ० [सं० झल्लिका] १ चमकना। दमकना। २ कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।

झलकनिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

झलका—संज्ञा पुं० [सं०√ज्वल्=जलना] शरीर में पड़ा हुआ छाला। फफोला। उ०—झलका झलकत पायन्ह कैसें। पंकज-कोस ओसकन जैसें। —मानस।

झलकाना—क्रि० स० [हिं० झलकना का स० रूप] १ चमकाना। दमकाना। २ दरसाना। कुछ आभास देना।

झलझल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलक] चमक। दमक।

क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ।

झलझलाना—क्रि० अ० [हिं० झलझल] चमकना।

क्रि० स० चमकाना। चमचमाना।

झलझलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलझल+आहट (प्रत्य०)] चमक। दमक।

झलना—क्रि० स० [प्रा०√झलहल ?] हवा करने के लिये कोई चीज हिलाना।

क्रि० अ० १ इधर उधर हिलना। † २ शेखी बघारना। डींग हाँकना। ३ "झालना" का अ० रूप। झाला जाना। ४ दे० "झेलना"।

झलमल—संज्ञा पुं० [√ज्वल्=जलना] १ अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। २. चमक दमक।

क्रि० वि० दे० "झलझल"।

झलमला—वि० [हिं० झलमल] १ हलकी चमकवाला। २ रुक रुक कर चमकनेवाला।

झलमलाना—क्रि० अ० [हिं० झलमल] १ रह रहकर चमकना। चमचमाना। २ निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना।

क्रि० स० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना डुलाना।

झलरा†—संज्ञा पुं० [हिं० झालर] एक प्रकार का पकवान जिसे झालर भी कहते हैं।

झलरानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० झालर] फैलकर छाना।

झलवाना—क्रि० स० [हिं० झलना का प्रे० रूप] झलने या झालने का काम दूसरे से कराना।

झलाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० झड़] १ हलकी वर्षा। २ झालर, तोरण या बदनवार आदि। ३ पखा। बेना। ४ समूह।

झलाझल—वि० [अनु०] खूब चमचमाता हुआ। चमाचम।

झलाझली—वि० [अनु०] चमकदार।

संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।

झलाबोर—संज्ञा पुं० [हिं० झलमल] १ कलाबत्तू का बना हुआ साड़ी आदि का चौड़ा अंचल। २ कारचोबी।

वि० चमकीला। चमकदार।

झलामल†—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलमल] चमक। दमक।

वि० चमकीला।

झल्ल—संज्ञा स्त्री० [देश०] पागलपन।

झल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। मजीरा। जोड़ी।

झल्ला—संज्ञा पुं० [देश०] १ बड़ा टोकरा। २ वर्षा। वृष्टि। ३ बौछार।

वि०† [हिं० झल्लाना] १ पागल। २ बेवकूफ।

झल्लाना—क्रि० अ० [हिं० झर्रा] चिढ़ना खिजलाना। झुँझलाना।

क्रि० स० चिढ़ाना। खिझाना।

झवा—संज्ञा पुं० दे० "झावा"।

झष—संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्स्य। मछली। २ मकर। मगर। ३ ताप। गरमी। ४ वन। ५ मीन राशि। ६ दे० "झख"।

झषकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] झषकेतन। कामदेव।

झसना—क्रि० स० दे० "झँसना"।

झहननाⓅ—क्रि० अ० [अनु०] १ झन्नाटे या सन्नाटे में आना। २. (रोएँ का) खड़ा होना। ३ झुनझुन शब्द होना।

झहनाना—क्रि० स० [हिं० झहनना का स० रूप] झनकार करना।

झहरनाⓅ—क्रि० अ० [अनु०] १. झरने का सा या झरझर शब्द करना। २ शिथिल पड़ना। ढीला होना।

क्रि० स० झिड़कना। झल्लाना।

झहराना—क्रि० अ० [हिं० झहरना] १ शिथिल होकर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २ झल्लाना। खिजलाना। ३ हिलाना।

झाँई—संज्ञा स्त्री० [सं० छाया ?] १. परछाईं। छाया। झलक। २. अधकार। अँधेरा। ३ धोखा। छल।

मुहा०—झाँई बताना=धोखा देना।

४ प्रतिरवन। प्रतिध्वनि। ५ एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्तविकार से मनुष्यों के शरीर पर पड़ जाते हैं।

झाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० अध्यक्ष ?] झाँकने की क्रिया या भाव।

झाँकना—क्रि० अ० [सं० अध्यक्ष ?] १ ओट, आड़, खिड़की, छिद्र आदि से देखना। २ इधर उधर झुककर देखना।

झाँकनीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँकी"।

झाँका—संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

झाँकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√झाँक] १ झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। अवलोकन। २ दृश्य। ३ झरोखा।

झाँख—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन जिसके बड़े बड़े सींग होते हैं। बारहसिंगा।

झाँखना†Ⓟ—क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झाँखर—संज्ञा पुं० दे० "झखाड़"। उ०—झाँखर जहाँ सो छाड़हु पथा। हिलगि मकोइ न फारहु कथा। —पद्मावत।

झाँगला—वि० [देश०] ढीला ढाला (कपड़ा)।

झाँगा†—संज्ञा पुं० १ दे० "झगा"। २ झमेला। बखेड़ा। झंझट।

झाँझ—संज्ञा स्त्री० [झनझन से अनु०] १. मँजीरे की तरह के काँसे के ढले हुए दो बड़े गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जिन्हें भजन, कीर्तन, पूजन आदि के समय बजाते हैं। झाल। २ क्रोध। गुस्सा। ३ पाजीपन। शरारत। ४ शोर। ५ दे० "झाँझन"।

झाँझड़ीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँझन"।

झाँझन—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँझ] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैंजनी। पायल।

झाँझरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँझन] १. झाँझन। पैंजनी। २ छलनी।
वि० १ पुराना। जर्जर। २. बहुत से छेदोंवाला।

झाँझरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँझर] १ झाँझ बाजा। झाल। २ झाँझन नामक गहना।

झाँझिया—संज्ञा पुं० [हिं० झाँझ+इया (प्रत्य०) वह जो झाँझ बजाता हो।

झाँप—संज्ञा स्त्री० [सं०√झप्, प्रा०√झप] १. वह जिससे कोई चीज ढाँकी जाय। २ नींद। झपकी। ३ पर्दा। चिक।
संज्ञा पुं० [सं० झप] उछल कूद।

झाँपना—क्रि० स० [स० झंपन, प्रा०√ झंप] पकड़कर दबा लेना। छोप लेना।

झाँपना—क्रि० स० [सं०√झप्, प्रा√झप] १. ढाँकना। आड़ में करना। २ झेंपना। लजाना। शरमाना।

झाँपी—संज्ञा स्त्री० [सं०√झंप्] १ ढाँकने की टोकरी। २ मूँज की पिटारी।

झाँवना—क्रि० स० [हिं० झाँवाँ] झावें से रगडकर (हाथ पैर आदि) धोना।

झाँवर—वि० [स० झामर ?] १. झाँवें के रंग का। कुछ काला। २ मलिन। ३ मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४ शिथिल। मंद। सुस्त।

झाँवरी—वि० [हिं० झाँवा+री (प्रत्य०)] झाँवे के रंग की। उ०—धरे हिए में साँवरी मूरति सनी सनेह। कहै अमल तें रावरी भई झाँवरी देह। —रससाराश।

झाँवली—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँव=छाया] १. झलक। २ आँख की कनखी।

झाँवाँ—संज्ञा पु० [सं० झामक ?] जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

झाँसना—क्रि० स० [स० झप्] धोखा देना। ठगना।

झाँसा—संज्ञा पु० [सं०√झप्] बहकाने की क्रिया। धोखाधड़ी। दम बुत्ता।
यौ० —झाँसापट्टी=धोखाधड़ी।

झा—संज्ञा पु० [सं० उपाध्याय] मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाईं—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँईं"।

झाऊ—संज्ञा पु० [स० झाबुक] एक प्रकार का छोटा झाड़ जो नदियों के किनारे होता है।

झाग—संज्ञा पुं० [सं० झगझगायमान (झग-झग ?)] पानी या किसी तरल पदार्थ आदि का फेन। गाज।

झागड़(पु)—संज्ञा पु० दे० "झगड़ा"।

झाड़—संज्ञा पुं० [सं० झाट] १. वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या जमीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर खूब छितराई हुई हों। २. झाड़ के आकार का वह रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया या जमीन पर बैठकी की तरह रखा जाता है।
यौ०—झाड़ फानूस=शीशे के झाड़, हँडिया और गिलास आदि।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १ झाड़ने की क्रिया। २ फटकार। डाँट डपट। ३ मत्र से झाड़ने की क्रिया।
यौ०—झाड़ फूँक=मंत्रोपचार।

झाड़खंड—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़+खंड] जंगल। वन।

झाड़झंखाड़—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़+झंखाड़] १ काँटेदार झाड़ियों का समूह। २ निकम्मी चीजें।

झाड़दार—वि० [हिं० झाड़+फा० दार] १. सघन। घना। २ कँटीला। काँटेदार।

झाड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १ वह जो झाड़ने पर निकले। २ वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय।

झाड़ना—क्रि० स० [स० क्षर या क्षारण] १ निकालना। दूर करना। हटाना। छुड़ाना। साफ करना। २. अपनी योग्यता दिखलाने के लिये गढ़ गढ़कर बातें करना। ३ झकझोरना। लथेड़ना।
क्रि० स० [सं० क्षरण] १ किसी चीज पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ करने के लिये उसको उठाकर झटका देना। झटकारना। फटकारना। २ झटके से किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीज गिराना या हटाना। ३ बल या युक्तिपूर्वक किसी से धन ऐंठना। झटकना। ४ रोग या प्रेत-बाधा आदि दूर करने के लिये किसी को मत्र आदि से फूँकना। ५ फटकारना। डाँटना।

झाड़फूँक—संज्ञा स्त्री० [हिं०√झाड़+√ फूँक] भूतप्रेत आदि की बाधाओं अथवा रोगों को दूर करने के लिये मत्र आदि पढ़-कर झाड़ना फूँकना।

झाड़बुहार—संज्ञा स्त्री० [हिं०√झाड़+ बुहार] झाड़ना और बुहारना। सफाई।

झाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं०√झाड़] १. झाड़ फूँक। २. तलाशी। ३ मल। गुह। मैला। पाखाना। टट्टी।

झाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़] १ छोटा झाड़। पौधा। २ छोटे पेड़ों का समूह।

झाड़ू—संज्ञा पुं० [हिं०√झाड़] १. लंबी सींकों आदि का समूह जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं। कूँचा। बुहारी। सोहनी। समार्जनी।
मुहा०—झाड़ू फिरना=कुछ न रहना। झाड़ू मारना=घृणा या निरादर करना।
२. पुच्छल तारा। केतु।

झाड़ूबरदार—वि० [हिं० झाड़ू+फा० बरदार] झाड़ू देनेवाला। चमार। फर्राश।

झापड़—संज्ञा पु० [सं० चपट] थप्पड़। तमाचा।

झाबदार—वि० [?] परिपूर्ण। भरा पूरा।

झाबर—संज्ञा पु० दे० "झाबा"।

झाबा—संज्ञा पु० [हिं०√झाँप] १ टोकरा। खाँचा २ दे० "झब्बा"।

झामा(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] १. झब्बा। गुच्छा। २ घुड़की। डाँट। डपट। ३ धोखा। छल।

झामर—संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।

झामरा(पु)—वि० [हिं० झाँवला] १ श्यामल। २. मैला। मलिन।

झारि—संज्ञा स्त्री० दे० "झार"।

झासी—संज्ञा पुं० [हिं० झाँसा] धोखेबाज।

झायँ झायँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झनकार। झन् झन् शब्द। २ वह शब्द जो किसी सुनसान स्थान में हो। हवा का शब्द। ३ निरर्थक शोरगुल।

झावँ झावँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बक-वाद। बकबक। २ हुज्जत। तकरार।

झार—वि० [स० ?] १. एकमात्र। निपट। केवल। २ कुल। सब। समस्त।
संज्ञा पुं० समूह। झुंड।
संज्ञा स्त्री० [सं० झला=सूर्य का ताप] १ दाह। जलन। २. ईर्ष्या। डाह। ३ ज्वाला। लपट। आँच। ४ झाल। चरपरापन।

झारखंड—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़+खंड] १ एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से होता हुआ जगन्नाथपुरी तक चला गया है। २ दे० "झाड़खंड"।

झारना—क्रि० स० [सं० क्षर] १ बाल साफ करने के लिये कंघी करना। २ छाँटना। अलग करना। ३. दे० "झाड़ना"।
संज्ञा स्त्री० दे० "झार"। उ०—और दगध का कहौं अपारा। सती सो जरै कठिन अस झारा। —पदमावत।

झारा—संज्ञा पुं० [हिं० √झार] १. सूप। २ झरना। ३. दे० "झाड़ा"।

झारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झर] एक प्रकार का लबोतरा टोंटीदार जलपात्र।
संज्ञा स्त्री० [?] समूह। समुदाय। उ०—धेनु रूप धरि हृदय बिचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी। —मानस।

झाल—संज्ञा पुं० [सं० झल्लक] झाँझ नामक बाजा।
संज्ञा पुं० [देश०] झालने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाला] १. चरपराहट। तीतापन। तीक्ष्णता। २. तरंग। लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।
वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "झार"।

झालना—क्रि० स० [?] १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २ पीने की चीजों को ठंढा करने के लिये बरफ या शोरे में रखना।

झालर—संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिये बनाया या लगाया हुआ वह हाशिया जो लटकता रहता है। २ झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज। ३ झाँझ।
संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पकवान जिसे झलरा भी कहते हैं।

झालरना—क्रि० अ० दे० "झलराना"।

झाला—संज्ञा पुं० [अनु०] १. सितार या बीन बजाते समय बीच में पैदा की जानेवाली एक प्रकार की सुंदर झकार। २ इस प्रकार की झकार के साथ बजाया जानेवाला टुकड़ा। ३. राजपूतों की एक शाखा।

झाली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।

झिंगवा—संज्ञा स्त्री० [सं० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली।

झिंगुली(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

झिंचिया—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बहुत से छोटे छोटे छेदोंवाला वह घड़ा जिसे भीतर दीआ बालकर कुआर के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।

झिझिया—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० "झिंचिया"।

झिंझोटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक रागिनी।

झिझक—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. हिचक। किसी काम के करने में होनेवाला संकोच। २. पसोपेश।

झिझकना—क्रि० अ० दे० "झझकाना"।

झिझकारना—क्रि० स० १ दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।

झिटका†—संज्ञा पुं० दे० "झटका"।

झिड़कना—क्रि० स० (अनु०) १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २ अलग फेंक देना। झटकना।

झिड़की—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झिड़क] वह बात जो झिड़ककर कही जाय। डाँट। फटकार।

झिनवा—संज्ञा पुं० [देश०] महीन चावल का धान।

झिपना—क्रि० अ० दे० "झेंपना"।

झिपाना—क्रि० स० [हिं० झेंपना का स० रूप] लज्जित करना। शरमिंदा करना।

झिरझिर—क्रि० वि० [अनु०] १ मंद मंद। धीरे धीरे।

झिरझिरा—वि० [सं० जर्जरित] झँझरा। झीना। पतला। बारीक (कपड़ा)।

झिरना(पु)—क्रि० अ० दे० "झरना"।

झिरहरा†—वि० दे० "झँझरा"।

झिराना—क्रि० अ० दे० "झुराना"।

झिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झर] १ छोटा छेद जिसमें से कोई चीज निकल जाय। २ पानी का छोटा सोता। ३ पाला। तुषार।

झिलँगा—संज्ञा पुं० [हिं० झीना+अंग] ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
संज्ञा पुं० दे० "झींगा"।

झिलना—क्रि० अ० [?] १ झेला जाना। सहा जाना। २. बलपूर्वक प्रवेश करना। धँसना। घुसना। ३ तृप्त होना। अघा जाना। ४ मग्न होना। तल्लीन होना।

झिलम—संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिली] लोहे का झँझरीदार पहनावा जो लड़ाई में सिर और मुँह पर पहना जाता था। टोप। खोद।

झिलमिल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हिलता हुआ प्रकाश। २ रह रहकर प्रकाश के घटने बढ़ने की क्रिया। ३ एक प्रकार का बढ़िया बारीक और मुलायम कपड़ा। ४ युद्ध में पहनने का लोहे का कवच। झिलम।
वि० रह रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला—वि० [अनु० १] जो गफ या गाढ़ा न हो। झँझरा। झीना। २ चमकता हुआ। ३. जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना—क्रि० अ० [हिं० झिलमिल] [भाव० झिलमिलाहट] १. रह रहकर चमकना। २. प्रकाश का हिलना।
क्रि० स० १ कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि वह रह रहकर चमके। २. हिलाना।

झिलमिली—संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिल] १ बहुत सी आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों आदि में प्रकाश या वायु आने के लिये जड़ा रहता है। खड़खड़िया। २ चिक। चिलमन।

झिलाना—क्रि० स० [हिं० झेलना का प्रे० रूप] दूसरे को झेलने के लिये बाध्य करना।

झिल्लड़—वि० [हिं० झिल्ली] पतला और झँझरा। गफ का उलटा (कपड़ा)।

झिल्ली—संज्ञा पुं० [सं०] झींगुर।
संज्ञा स्त्री० [सं० चैल] ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े।

झींकना—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झींका—संज्ञा पुं० [देश०] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।

झींख—संज्ञा स्त्री० [प्रा०√झख=संतप्त होना] झींखने का भाव। कुढ़न।

झींखना—क्रि० अ० [हिं० झींख] १ पछताना और कुढ़ना। खीजना। २ दुखड़ा रोना। विपत्ति का हाल सुनाना।
संज्ञा पुं० १ झींखने की क्रिया या भाव २ दुःख का वर्णन। दुखड़ा।

झींगा—संज्ञा पुं० [सं० चिंगट] १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार का धान।

झींगुर—संज्ञा पुं० [झिरिका या झिरीक] एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में रहता है। इसकी आवाज बहुत तेज झीं झीं होती है। झुरझुरा। जजीरा। झिल्ली।

झींना—वि० दे० "झीना"।

झींसी—संज्ञा स्त्री० [अनु० या हिं० झीना] छोटी छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार।

झीखना—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झीना—वि० [सं० जीर्ण, प्रा० झीण] [स्त्री० झीनी] १ बहुत महीन। बारीक। पतला। २ जिसमें बहुत से छेद हों। झँझरा। ३ दुबला। दुर्बल।

झील—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] बड़ा प्राकृतिक जलाशय। बहुत बड़ा तालाब। ताल। सर।

झीलर—संज्ञा पुं० [हिं० झील] छोटी झील।

झीवर—संज्ञा पुं० [सं० धीवर] मल्लाह।

झुँझलाना—क्रि० अ० [अनु०] [भाव० झुँझलाहट] खिजलाना। किटकिटाना। चिड़चिड़ाना।

झुंड—संज्ञा पुं० [सं० यूथ] बहुत से मनुष्यों या पशुओं आदि का समूह। वृंद। गरोह।

झुकना—क्रि० अ० [?] १ ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नवना।

मुहा०—झुकझुक पड़ना = नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना।

२ किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर नत होना। ३ किसी खड़े या सीधे पदार्थ का किसी ओर मुड़ना। ४. प्रवृत्त होना। दत्तचित्त होना। ५ पक्षपात करना। ६ नम्र होना। विनीत होना। ७ हार मानना। क्रुद्ध होना। रिसाना। ८. झपट पड़ना (सेना आदि के लिये)। ६. मर जाना, जैसे—उसके तीन लड़के माता में झुक गए।

झुकमुख†—संज्ञा पुं० दे० "झुटपुटा"।

झुकराना—क्रि० अ० [हिं० झोंका] १ झोंका खाना। २ झुलसना।

झुकवाना—क्रि० स० [हिं० झुकना का प्रे० रूप] झुकाने का काम दूसरे से कराना।

झुकाना—क्रि० स० [हिं० झुकना का स० रूप] १. किसी खड़ी चीज के ऊपरी भाग को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। २ किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर नत करना। ३ प्रवृत्त करना। रुजू करना। लगा देना (मनुष्यों के लिये)। ४. नम्र करना। विनीत बनाना।

झुकामुखी—संज्ञा स्त्री० दे० "झुटपुटा"।

झुकाव—संज्ञा पुं० [हिं० √झुक+आव (प्रत्य०)] १ किसी ओर झुकने, प्रवृत्त होने या ढलने की क्रिया या भाव। २ ढाल। उतार। ३ मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।

झुग्गी—संज्ञा स्त्री० [देश०] झोपड़ी। कुटिया।

झुगिया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झुग्गी"।

झुटपुटा—संज्ञा पुं० [अनु०] ऐसा समय जब कुछ अंधकार और कुछ प्रकाश हो। झुकमुख।

झुटुँग—वि० [सं० झुट ?] जिसके खड़े खड़े और बिखरे हुए बाल हों। झोंटेवाला।

झुठकाना—क्रि० स० [हिं० झूठ] झूठी बात कहकर विश्वास दिलाना। भ्रम में डालना। धोखा देना।

झुठलाना—क्रि० स० [हिं० झूठ+लाना (प्रत्य०)] १ झूठा ठहराना। झूठा बनाना। २ झूठ कहकर धोखा देना।

झुठाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूठ+आई (प्रत्य०)] झूठ का भाव। झूठापन। असत्यता।

झुठाना—क्रि० स० [हिं० झूठ से ना० धा०] झूठा ठहराना।

झुनक—संज्ञा पुं० [अनु०] नूपुर का शब्द।

झुनकना—क्रि० अ० [अनु०] झुनझुन शब्द करना।

झुनकारा†—वि० [हिं० झीना] [स्त्री० झुनकारी] पतला। महीन। बारीक।

झुनझुन—संज्ञा पुं० [अनु०] नूपुर आदि के बजने का शब्द।

झुनझुना—संज्ञा पुं० [हिं० झुनझुन से अनु०] एक प्रकार का खिलौना जो हिलने से बजता है। घुनघुना।

झुनझुनाना—क्रि० अ० [हिं० झुनझुन] झुन झुन शब्द होना।

क्रि० स० झुन झुन शब्द उत्पन्न करना।

झुनझुनियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुनझुन] १ पैर में पहनने का एक आभूषण। २ बेड़ी। ३ निगड़। ४ सनई का पौधा।

झुनझुनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] १ हाथ या पैर (विशेषत. तलवों, पंजों और हथेलियों) के बहुत देर तक एक ही प्रकार दबे या तने रहने से रुके हुए रक्त की रुकावट दूर होते ही पुन स्वतंत्र संचार के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट। २ एक प्रकार का रोग जिसमें ऐसी सनसनाहट होती है।

झुपरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "झोपड़ी"।

झुबझुबी—संज्ञा स्त्री० [देश०] कान में पहनने का एक गहना।

झुमका—संज्ञा पुं० [हिं० झूमक] छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक लटकनेवाला गहना।

झुमरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. काठ की मुँगरी। २ गच पीटने का एक औजार।

झुमाना—क्रि० स० [हिं० झूमना का स० रूप] किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।

झुरझुरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. कँपकँपी। २ थोड़ी थोड़ी ठढक।

झुरना—क्रि० अ० [प्रा० √झुर] १ सूखना। दे० "झुराना"। २ बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना। ३. अधिक चिंता, रोग या परिश्रम आदि के कारण दुर्बल होना। घुलना।

झुरमुट—संज्ञा पुं० [सं० झुट = झाड़ी] १ एक ही में मिले हुए या पास पास के झाड़ या क्षुप। २ बहुत से लोगों का समूह। गरोह। ३ चादर आदि से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरवाना—क्रि० स० [हिं० झुरना का प्रे० रूप] सुखाने का काम दूसरे से कराना।

झुरसना(पु)†—क्रि० अ० दे० "झुलसना"।

झुराना†—क्रि० स० [हिं० झुरना का स० रूप] सुखाना।

क्रि० अ० [हिं० झुरना] १ सूखना। २. दुःख या भय से घबरा जाना। ३. दुबला होना।

झुरावन†—संज्ञा पुं० [हिं० झुराना] सूखने के कारण किसी वस्तु में कम होनेवाला अंश।

झुर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झुर] (शरीर के चमड़े आदि की) सिकुड़न। शिकन।

झुलना†—संज्ञा पुं० दे० "झूला"।

वि० [हिं० झूलना] झूलनेवाला।

झुलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] १ तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं। नाक में पहनने का कोई लटकनेवाला आभूषण। २ दे० "झूमर"।

झुलमुला†—वि० दे० "झिलमिल"।

झुलस—संज्ञा स्त्री० दे० "झुलसन"।

झुलसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुलसना] १. गरमी या आँच से पड़नेवाली चमड़े की सिकुड़न और कालापन। अधजली अवस्था। २ शरीर झुलसनेवाली गरमी।

झुलसना—क्रि० अ० [सं० √ज्वल्+अंश] १ ऊपरी भाग का इस प्रकार अंशत जल जाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २ अधिक गरमी के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूखकर काला पड़ जाना।

क्रि० स० १. ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार अशत जलाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को सुखाकर अधजला कर देना।

झुलसवाना—क्रि० स० [हिं० झुलसना का प्रे० रूप] झुलसने का काम दूसरे से कराना।

झुलसाना—क्रि० स० १. दे० "झुलसना"। २ दे० "झुलसवाना"।

झुलाना—क्रि० स० [हिं० झूलना का प्रे०] १. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज देने या कोई काम करने के लिये बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना।

झुल्ला—संज्ञा पुं० [देश०] स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का कुरता।

झुलावना(पु)†—क्रि० स० दे० "झुलाना"।

झुहिरना†—क्रि० अ० [?] लदना। लादा जाना।

झूँक(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।

संज्ञा स्त्री० दे० "झोंक"।

झूँकना†—क्रि० स० १. दे० "झोंकना"। २ दे० "झखना"। ३ दे० "झूकना"।

झूँखना(पु)†—क्रि० अ० दे० "झोंखना"।

झूँझल—संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।

झूँसना†—क्रि० अ० और स० दे० "झुलसना"।

झूँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूट+काँटा] छोटी झाड़ी।

झूकना(पु)—क्रि० अ० [हिं० झोंकना] गिरना। झोंका जाना।

झूँका(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।

झूझना(पु)—क्रि० अ० दे० "जूझना"। उ०—काम क्रोध सूँ झूझणाँ चौंडे माँड्या खेत।—कबीर०।

झूठ—संज्ञा पुं० [सं० जुष्ट ? प्रा० झुट्ट] वह बात जो यथार्थ न हो। असत्य। सच का उलटा। उ०—झूठइ लेना झूठइ देना झूठइ भोजन झूठ चबेना।—मानस।

मुहा०—झूठ सच कहना या लगाना = झूठी निंदा करना। शिकायत करना।

झूठमूठ—क्रि० वि० [हिं० झूठ+मूठ (अनु०)] बिना किसी वास्तविक आधार के। यों ही। व्यर्थ। अकारण।

झूठा—वि० [हिं० झूठ] १ जो सत्य न हो। मिथ्या। असत्य। २ झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३ जो केवल रूपरंग आदि में असल चीज के समान हो, पर गुण आदि में नहीं। नकली। ४ जो (पुरजा या अंग आदि) बिगड़ जाने के कारण ठीक ठीक काम न दे सके।

वि० दे० "जूठा"।

झूठों—क्रि० वि० [हिं० झूठा] १ झूठमूठ। यों ही। २ नाममात्र के लिये।

झूना†—वि० दे० "झीना"।

झूम—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूमना] १ झूमने की क्रिया या भाव। २ ऊँघ। झपकी।

झूमक—संज्ञा पुं० [हिं०√झूम+क (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का गीत जो होली के दिनों में स्त्रियाँ झूमझूमकर एक घेरे में नाचती हुई गाती हैं। झूमर। झूमकरा। २. इस गीत के साथ होनेवाला नृत्य। ३ झूमर नामक पूरबी गीत। ४ गुच्छा। ५ चाँदी, सोने आदि के छोटे झुमकों या मोतियों आदि के गुच्छों की वह कतार जो साड़ी आदि में सिर पर पड़नेवाले भाग में लगी रहती है। ६ दे० "झुमका"।

झूमकसाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूमक+साड़ी] वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों।

झूमका—संज्ञा पुं० १. दे० "झुमका"। २. दे० "झूमक"।

झूमड़—संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।

झूमड़ झामड़—संज्ञा पुं० [हिं० झूमड़] ढकोसला। झूठा प्रपंच।

झूमना—क्रि० अ० [सं० झप] १ वारवार आगे पीछे, नीचे ऊपर या इधर उधर हिलना। झोंके खाना।

मुहा०—बादल झूमना = बादलों का एकत्र होकर झुकना।

२ सिर और धड़ को बार बार आगे-पीछे और इधर उधर हिलाना (मस्ती, प्रसन्नता, नींद या नशे में)।

झूमर—संज्ञा पुं० [हिं० झूमना] १ सिर में पहनने का एक प्रकार का गहना। २ कान में पहनने का झुमका। ३ झूमक नाम का गीत। इस गीत के साथ होनेवाला नाच। ५ बहुत से लोगों का साथ मिलकर गोल घेरे में घूम घूमकर नाचना। ६ झूमरा नामक ताल। ७ एक प्रकार का काठ का खिलौना।

झूर†—वि० [हिं० चूर] सूखा। खुश्क।

वि० [हिं० झूठ] १ खाली। २ व्यर्थ।

संज्ञा स्त्री० १ जलन। दाह। २. दुःख।

झूरना†—क्रि० स० [प्रा०√झूर] याद करना। उ०—किंगरी गहे बजावै झूरै। भोर साँझ सिंगी निति पूरै।—पदमावत।

झूरा†—वि० [हिं० झूर] १ सूखा। खुश्क। २. खाली।

संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव। अवर्षण। २. न्यूनता। कमी।

झूरे†—क्रि० वि० [हिं० झूर] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। झूठमूठ।

वि० दे० "झूर"।

झूल—संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] १ वह कपड़ा जो शोभा के लिये पालकी या चौपायों पर डाला जाता है। २ वह कपड़ा जो पहनने पर भद्दा जान पड़े (व्यंग्य)। (पु) ३ दे० "झूला"।

झूलन—संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] वर्षा ऋतु का एक उत्सव जिसमें मूर्तियों को झूले पर बैठाकर झुलाते हैं। हिंडोला।

झूलना—क्रि० अ० [सं० दोलन] १. किसी लटकी हुई वस्तु के सहारे नीचे की ओर लटककर वार वार आगे पीछे या इधर उधर होना। लटककर वार वार इधर उधर हिलना। २ झूले पर बैठकर पेंग लेना। ३ किसी कार्य के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना।

वि० झूलनेवाला। जो झूलता हो।

संज्ञा पुं० १ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं। प्रथम झूलना। उ०—यदुवंश प्रभु, तारण तरण, करुणायतन, भगवान। जिय जानि यह, पछिताय फिर, क्यों रहत हौ, अनजान॥ इस छंद में ७वीं, १४वीं और २१वीं मात्राओं पर यति और अंत में विराम होता है। २ इस छंद का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ और अंत में यगण होता है तथा १०वीं, २०वीं, और ३०वीं मात्राओं पर यति और अंत में विराम होता है। उ०—सिद्धि और ऋद्धि सुख, खानि धन धान्य की, दानि शुभगागना, सुत निकेतू। भुक्ति-मुक्ति प्रदे वाणि महारानि प्रणत ईश्वरी कहैं, शरण दे तू॥—छंदार्णव। ३ हिंडोला। झूला।

झूलरि—संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला—संज्ञा पुं० [सं० दोला] १ पेड़ की डाल या छत आदि में लटकाई हुई मजबूत रस्सी आदि से बँधी पटरी जिसपर बैठकर

झूलते हैं। हिंडोला। २. बड़े रस्सों, जंजीरों या तारों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल। ३ वह विस्तर जिसके दोनों सिरे रस्सियों में बाँधकर दोनों ओर दो ऊँची खूटियों आदि में बाँध दिए गए हों। ४. देहाती स्त्रियों का ढीला ढाला कुरता। ५. झोंका। झटका।

झेंपना, झेपना—क्रि० अ० [हिं० झिपना] शरमाना। लजाना। लज्जित होना।

झेर(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० देर] १ विलंब। देर। २ बखेड़ा। झगड़ा।

झेरना(पु)†—क्रि० स० [हिं० झेलना] झेलना।

क्रि० स० [हिं० छेड़ना] शुरू करना।

झेरा—संज्ञा पुं० [?] झमट। बखेड़ा।

झेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झेलना] १ तैरने आदि में हाथ पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या हिलोरा। ३. झेलने की क्रिया या भाव।

संज्ञा स्त्री० विलंब। देर।

झेलना—क्रि० स० [ज्वलन ?] १ ऊपर लेना। सहना। बरदाश्त करना। २ तैरने में हाथ पैर से पानी हटाना। ३. पानी में पैठना। हेलना। ४. ठेलना। ढकेलना। †५. पचाना। हजम करना। ६. ग्रहण करना। मानना। ७ क्रीड़ा करना।

झोंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० √झुक] १ झुकाव। प्रवृत्ति। २ बोझ। भार। ३ प्रचंड गति। वेग। तेजी। रव। ४ किसी काम का धूमधाम से उठान ५. ठाट। सजावट। ६ पानी का हिलोरा। ७. दे० "झोंका"।

झोंकना—क्रि० स० [हिं० झोंक] १ किसी वस्तु को आग में फेंकना। २ अचानक ढकेलना। ३ अत्यधिक मात्रा या परिमाण में डालना या फेंकना।

मुहा०—भाड़ झोंकना = तुच्छ काम करना। ४. जबरदस्ती आगे की ओर बढ़ाना। ढकेलना। ठेलना। अंधाधुंध खर्च करना। ५ आपत्ति, खतरा, दुःख या भय के स्थान में कर देना। बुरी जगह ठेलना। ६ बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना। ७ बिना विचारे दोष आदि मढ़ना। ८ अपनी ही बातें कहते जाना या दलीलें सुनाते रहना और दूसरे पक्ष की कुछ न सुनना।

झोंकवाना—क्रि० स० [हिं० झोंकना का प्रे० रूप] झोंकने का काम दूसरे से कराना।

झोंका—संज्ञा पुं० [हिं० झोंक] १ झटका। धक्का। रेला। झपट्टा। २. हवा का झटका या धक्का। ३ हवा का बहाव। झकोरा। ४. पानी का हिलोरा। ५ इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया। ६. ठाठ। सजावट।

झोंकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंक+आई (प्रत्य०)] झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंक] १ उत्तरदायित्व। जवाबदेही। २. अनिष्ट या हानि की आशंका। जोखों। जोखिम।

झोंझ—संज्ञा पुं० [देश०] १. खोता। घोंसला। २ कुछ पक्षियों (जैसे ढेंक, गीध) के गले की थैली या लटकता हुआ मांस। ३ खुजली। सुरसुराहट।

झोंझल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुँझलाना] झुँझलाहट। क्रोध। कुढ़न।

झोंटा—संज्ञा पुं० [सं० झुट] बड़े बड़े बालों का समूह। २ पतली लंबी वस्तुओं का वह समूह जो एक बार हाथ में आ सके। जुट्टा।

संज्ञा पुं० [हिं० झोंका] वह धक्का जो झूले को इधर उधर हिलाने के लिये दिया जाता है। झोंका। पेंग।

झोंटी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "झोंटा"।

झोंपड़ा—संज्ञा पुं० [प्रा० झुपड़] [स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी] वह बहुत छोटा सा घर जो गाँवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर और घासफूस से छाकर बना लेते हैं। कुटी। पर्णशाला।

मुहा०—अंधा झोंपड़ा = पेट। उदर।

झोंपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंपड़ा] छोटा झोंपड़ा। कुटिया।

झोंपा—संज्ञा पुं० [हिं० झब्बा] झब्बा। गुच्छा।

झोटिंग—वि० [हिं० झुट] जिसके सिर पर बड़े बड़े और खड़े बाल हों। झोंटेवाला।

संज्ञा पुं० भूतप्रेत या पिशाच आदि।

‡**झोर**—संज्ञा पुं० [?] दे० "झोल"। संज्ञा स्त्री० दे० "झोली"।

झोरई†—वि० [हिं० झोल] रसेदार (तरकारी)।

झोरना†—क्रि० स० [सं० दोलन] १ झटका देकर हिलाना या कँपाना। २ किसी चीज को इस प्रकार झटका देकर हिलाना जिसमें उसके साथ लगी हुई दूसरी चीजें गिर पड़ें। ३ इकट्ठा करना। एकत्र करना। ४ किसी को किसी बात पर अत्यधिक बुरा भला कहना या समझना। ५ बहुत अधिक भोजन करना।

झोरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोली] १ झोली। २. पेट। झोझर। ओझर। ३. एक प्रकार की रोटी।

झोल—संज्ञा पुं० [हिं० झालि] १. तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। कढ़ी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई। ३. माँड। पीच। ४. धातु पर का मुलम्मा।

संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] १ पहने या ताने हुए कपड़ों आदि का अंश जो ढीला होने के कारण लटक जाता है। २. इस प्रकार झूलने या लटकने का भाव या क्रिया। तनाव या कसाव का उलटा। ३. आँचल। ४ परदा। ओट। आड़।

वि० १ जो कसा या तना न हो।

संज्ञा पुं० १. गलती। भूल। २ त्रुटि। कमी।

संज्ञा पुं० [हिं० झिल्ली] १ वह झिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे रहते हैं। २ गर्भ।

संज्ञा पुं० [सं० ज्वाल] १. राख। भस्म। खाक। उ०—तुम बिनु कापै धनि हिया, तन तिनउर भा डोल। तेहि पर बिरह जराइकै चहै उड़ावा झोल।—पदमावत। २. दाह। जलन।

झोलदार—वि० [हिं० झोल+फा० दार] १. जिसमें रसा हो। २ जिसपर गिलट या मुलम्मा किया हो। ३ झोल संबंधी। ४ ढीलाढाला।

झोला†—संज्ञा पुं० [हिं० √झूल] झोंका। झकोरा। हिलोर।

संज्ञा पुं० [प्रा० झोलिआ] [स्त्री०, अल्पा० झोली] १ कपड़े की बड़ी झोली या थैली। २ ढीलाढाला गिलाफ। खोली। ३ साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ४. वात का एक रोग जिसमें कोई अंग ढीला पड़कर बेकाम हो जाता है। लकवा। उ०—टपटप बूँद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला।—पदमावत। ५ पेड़ों का पाला, लू आदि के कारण एकबारगी कुम्हला जाने या सूख जाने का रोग। ६ झटका। आघात। धक्का। ७ बाधा। आपत्ति। ८ संकेत। इशारा।

झोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोला] १ कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। धोकरी। २. घास बाँधने का जाल। ३ मोट।

चरसा। पुर। ४. वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज ओसाया जाता है। ५ सफरी बिस्तर जो चारों कोनों पर लगी हुई रस्सियों द्वारा खंभों में बाँधकर फैलाया जाता है। ६. कुश्ती का एक पेंच। बँवरा।

संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाल] राख। भस्म।

मुहा०—झोली बुझाना=सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।

झौंकट—संज्ञा पुं० दे० "झकट"।

झौंद—संज्ञा पुं० [हिं० झोंझ] पेट। उदर।

झौंरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० झुंट] [हिं० झूमर] १. झुंड। समूह। २. फूलों, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा। ३. एक प्रकार का गहना। झब्बा। ४. पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। झापस। कुंज।

झौंरना—क्रि० अ० [अनु०] १ गूँजना। गुंजारना। २. दे० 'झौरना"।

झौंरा†—संज्ञा पुं० [सं० झुंट] झुंड।

झौंरानाⓅ—क्रि० अ० [हिं० झौंरना] इधर उधर हिलना। झूमना।

क्रि० अ० [हिं० झाँवरा] १ हलके काले रंग का हो जाना। काला पड़ जाना। २ मुरझाना। कुम्हलाना।

झौंसना—क्रि० स० दे० "झुलसना"।

झौर—संज्ञा पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. हुज्जत। तकरार। झोरा। विवाद। २. डाँट-फटकार। कहासुनी।

झौरना—क्रि० स० [हिं० झपटना] छोप लेना।

झौवा‡—संज्ञा पुं० [हिं० झावा] रहठे की बनी हुई छोटी दौरी। खँचिया।

झौहाना—क्रि० अ० [अनु०] १. गुर्राना। २ जोर से चिड़चिड़ाना। ३. बुरी तरह डाँटना या डपटना। जोर जोर से चिल्लाते हुए डाँटना।

ञ

ञ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारणस्थान तालु और नासिका है।

ट

ट—हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहिला वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

टंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार माशे की एक तौल। २ एक प्राचीन सिक्का। ३ २१¾ रत्ती की मोती की तौल। ४ पत्थर गढ़ने का औजार। टाँकी। छेनी। ५ कुल्हाड़ी। फरसा। ६. कुदाल। ७ तलवार। ८ टाँग। ९ क्रोध। १० अभिमान। ११. सुहागा। १२ कोप।

संज्ञा पुं० [अं० टैंक] एक प्रकार की बख्तरदार गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी रहती हैं।

टंकण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुहागा। २ सिक्कों की ढलाई। ३. धातु की चीज में टाँके से जोड़ लगाने का कार्य। ४ हाथ से दबाकर अक्षरों का छापना। टाइप करना। ५. घोड़े की एक जाति। ६ एक प्राचीन देश जो कदाचित् दक्षिण में था।

टँकना—क्रि० अ० [सं० टंकण] १ टाँका जाना। २ सीकर अटकाया जाना। सिलना। ३. रेती के दाँतों का नुकीला होना। ४ लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ५. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना। रेता जाना। कुटना।

टँकवाना—क्रि० स० दे० "टँकाना"।

टंकशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] टकसाल। सिक्के ढालने की जगह।

टंका—संज्ञा पुं० [सं० टंक] १ एक तोले की तौल। २ ताँबे का एक पुराना सिक्का।

टँकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√टाँक+आई (प्रत्य०)] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टँकाना—क्रि० स० [हिं० टाँकना का प्रे० रूप] १ टाँकों से जुड़वाना या सिलवाना। २ सिलाकर लगवाना। ३ (सिल, जाँता, चक्की आदि को) खुरदुरा कराना। कुटाना। ४ सिक्कों का परखना।

टंकार—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टन टन शब्द जो किसी कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से होता है। २ वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी खींचकर छोड़ देने से होता है। ३ धातुखंड पर आघात लगने का शब्द। ठनाका। झनकार।

टंकारना—क्रि० स० [सं० टंकार] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना। चिल्ला खींचकर बजाना।

टंकी—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुंड या बड़ा बरतन। टाँका।

टंकोर—संज्ञा पुं० दे० "टंकार"।

टंकोरना—क्रि० स० दे० "टंकारना"।

टँकौरी—[सं० टंक] सोना चाँदी आदि तौलने की छोटी तराजू।

टंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ टाँगा। २ कुल्हाड़ी। ३ कुदाली। ४ सुहागा।

टँगड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग"।

टँगना—क्रि० अ० [सं० टंगण] १. किसी वस्तु का किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार अटकना कि उसका प्राय सब भाग नीचे की ओर गया हो। लटकना। २. फाँसी पर चढ़ना या लटकना। ३ बीच में पड़ा रहना। अनिश्चय में रहना। ४ उत्कंठा या आशा में लटकना।

संज्ञा पुं० वह रस्सी जिसपर कपड़े आदि टाँगे या रखे जाते हैं। अलगनी।

टंगा—संज्ञा पुं० [सं० टंग] दे० "टाँगा"।

टँगारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० टंग] कुल्हाड़ी।

टंच‡—वि० [सं० चंड] १. सूम। कंजूस। कृपण। २ कठोरहृदय। निष्ठुर।

वि० [हिं० टिचन] १ तैयार। मुस्तैद। २ ‡ तृप्त। संतुष्ट।

टंट घंट—संज्ञा पुं० [अनु० टनटन+घंट] १ घड़ीघंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच। आडंबर। २. काठकबाड़।

टंटा—संज्ञा पुं० [अनु० टन टन] १. लंबी चौड़ी प्रक्रिया। आडंबर। खटराग। २. उपद्रव। दंगा। फसाद। ३ झगड़ा।

टंडल, टंडैल—संज्ञा पुं० [अँ० टिंटल (१६-९८ ई० से) मि० मलयालम=टंडल, तेलगू=टंडेलू तथा लश्करी हिंदी=टंडैल] १. लश्करों के जहाजों या अस्त्रशस्त्र के गोदामों में नियुक्त बहुत छोटा अफसर। २ सार्वजनिक काम करनेवाले मजदूरों का मुखिया। मेठ। मजदूरों का सरदार।

टँड़िया—संज्ञा स्त्री० [ताड़] अनंत के आकार का एक प्रकार का गहना जो बाहों में पहना जाता है।

ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. नारियल का खोपड़ा। २ वामन। ३ चौथाई भाग। ४ शब्द।

टई—संज्ञा स्त्री० दे० "टही"।

टक—संज्ञा स्त्री० [सं० त्राटक ?] १ ऐसा ताकना जिसमें बड़ी देर तक पलक न गिरे। २ स्थिर दृष्टि। निर्निमेष दृष्टि।

मुहा०—टक बाँधना—स्थिर दृष्टि से देखना। टक टक देखना=बिना पलक गिराए लगातार कुछ काल तक देखते रहना। टक लगाना=आसरा देखते रहना।

टकटका(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० टक] [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि। टकटकी।

वि० स्थिर या बँधी हुई (दृष्टि)।

टकटकाना†—क्रि० स० [हिं० टक] १ एकटक ताकना। स्थिर दृष्टि से देखना। २ टकटक शब्द उत्पन्न करना। ३ निष्फल प्रयास करना।

टकटकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टक] ऐसी दृष्टि जिसमें देर तक पलक न गिरे। अनिमेष या स्थिर दृष्टि। गड़ी हुई नजर।

मुहा०—टकटकी बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना।

टकटोना, टकटोरना—क्रि० स० [सं० त्वक्+तोलन] १ टटोलना। २ ढूँढ़ना।

टकटोलना—क्रि० स० दे० "टटोलना"]

टकटोहन—संज्ञा पुं० [हिं० टकटोना] टटोलकर देखने की क्रिया।

टकटोहना(पु)—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टकराना—क्रि० अ० [हिं० टक्कर] १ जोर से भिड़ना। धक्का या ठोकर लेना। २ मारामारा फिरना। डाँवाडोल घूमना।

क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर जोर से मारना। जोर से भिड़ाना। पटकना।

टकसाल—संज्ञा स्त्री० [सं० टंकशाला] १. वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं। २ निर्माणगृह। ३. प्रयोगशाला।

मुहा०—टकसाल बाहर=(१) (सिक्का) जिसका चलन न हो। (२) (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय।

४ जँची या प्रामाणिक वस्तु।

टकसाली—वि० [हिं० टकसाल] १. टकसाल संबंधी। २ खरा। चोखा। ३ अधिकारियों या विज्ञों द्वारा माना हुआ। शिष्टों द्वारा प्रयुक्त या गृहीत। सर्वसंमत। ४ जँचा हुआ।

संज्ञा पुं० टकसाल का अधिकारी।

टका—संज्ञा पुं० [सं० टंकक] १ चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २ ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसे के बराबर होता था। अधन्ना। दो पैसे।

मुहा०—टका सा जवाब देना=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। टका पास न होना=धनहीन होना। टका सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना। खिसिया जाना। टके गज की चाल=मोटी चाल। थोड़े खर्च में निर्वाह। टके सेर भाजी टके सेर खाजा=अंधेर। अंधाधुंध। अराजकता।

३. धन। द्रव्य। रुपयापैसा। ४ तीन तोले की तौल (वैद्यक)।

टकासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टका] टके या दो पैसे प्रति रुपए का सूद।

टकाही—वि० स्त्री० [हिं० टका] नीच और दुश्चरित्रा (स्त्री)।

टकी—संज्ञा स्त्री० दे० "टकटकी"।

टकुआ—संज्ञा पुं० [सं० तर्कुक] चरखे का तकला जिसपर सूत काता जाता है।

टकैत—वि० [हिं० टका+ऐत (प्रत्य०)] धनी। संपन्न।

टकोर—संज्ञा स्त्री० [सं० टंकार] १ हलकी चोट। प्रहार। आघात। ठेस। थपेड़। २ नगाड़े पर का आघात। ३. डंके या नगाड़े की आवाज। ४ धनुष की डोरी खींचने का शब्द। टंकार। ५. दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाने की क्रिया। सेंक। ६ झाल। परपराहट।

टकोरना—क्रि० स० [हिं० टकोर] १ हलका आघात पहुँचाना। २ डंके आदि पर चोट लगाना। दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाना। सेंकना।

टकोरी—संज्ञा स्त्री० [सं० टंकार] आघात। चोट।

टकौरी—संज्ञा स्त्री० दे० "टँकौरी"।

टक्कर—संज्ञा स्त्री० [प्रा०] १ वह आघात जो दो वस्तुओं के वेग के साथ एक दूसरे से भिड़ने से लगता है। ठोकर।

मुहा०—टक्कर खाना=(१) किसी कड़ी वस्तु के साथ इतने वेग से भिड़ना या छू जाना कि गहरा आघात पहुँचे। (२) मारा मारा फिरना।

२ मुकाबिला। मुठभेड़। लड़ाई।

मुहा०—टक्कर का=बराबरी का। जोड़ का तोड़। समान। तुल्य। टक्कर खाना=(१) मुकाबिला करना। भिड़ना। (२) समान होना। तुल्य होना। टक्कर लेना=वार सहना। चोट सहना।

३ जोर से सिर मारने का धक्का।

मुहा०—टक्कर मारना=ऐसा प्रयत्न करना जिसका फल शीघ्र दिखाई न दे। माथा मारना। टक्कर लड़ाना=दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ाना।

४. घाटा। हानि। नुकसान।

टखना—संज्ञा पुं० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

टग(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० 'टक"।

टगण—संज्ञा पुं० [सं०] छः मात्राओं का एक गण (छंद शास्त्र)।

टघरना†—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टचटच—क्रि० वि० [हिं० टचना] धाँय धाँय। धक धक (आग की लपट का शब्द)।

टटका—वि० [सं० तत्काल] १ तुरंत का प्रस्तुत। हाल का। ताजा। २ नया। कोरा।

टटल बटल†—वि० [अनु०] अंडबंड। ऊटपटाँग।

टटिया—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थात्री] बाँस की फट्टियों, घास फूस और सरकंडों से बनाया गया वह ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये द्वार, बरामदे या खिड़कियों पर लगाया जाता है। टट्टी। टट्टर।

टटीबा—संज्ञा पुं० [अनु०] घिरनी। चक्कर।

टटोना, टटोरना†—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टटोल—संज्ञा स्त्री० [हिं० टटोलना] टटोलने का भाव या क्रिया।

टटोलना—क्रि० स० [स० त्वक्+तोलन] १. मालूम करने के लिये उँगलियों से छूना या दबाना। गूढ़ स्पर्श करना। २ ढूँढ़ने या पता लगाने के लिये इधर उधर हाथ रखना। ३. बातों ही बातों में किसी के हृदय का भाव जानना। थाह लेना। थहाना। ४ जाँच करना। परखना।

टटोहनाⓅ—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टट्टर—सञ्ञा पुं० [प्रा० टट्टइआ=परदा] बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये दरवाजे आदि में लगाया जाता है।

टट्टी—सञ्ञा स्त्री० [सं० तटी या स्थात्री] १ बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिये बनाई हुई दीवार।

मुहा०—टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना=(१) किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना। (२) छिपाकर बुरा काम करना। धोखे की टट्टी=ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें।

२ चिक। चिलमन। ३ पतली दीवार। ४. पाखाना। ५ बाँस की फट्टियों आदि की दीवार और छाजन जिसपर बेलें चढ़ाई जाती हैं। ६ खस की सीकों की बनी पतली दीवार या परदा जिसे गरमियों में दरवाजे पर लगाते हैं और ठंढा रखने के लिये पानी से भिगोते रहते हैं।

टट्टू—संञा पुं० [अनु०] छोटे कद का घोड़ा। टाँगन।

मुहा०—भाड़े का टट्टू=रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी।

टन—सञ्ञा स्त्री० [अनु०] किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द। टनकार।

टनकना—क्रि० अ० [अनु० टन] १ टन टन बजना। २ धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना।

टनटन—सञ्ञा स्त्री० [अनु०] घंटे का शब्द।

टनटनाना—क्रि० स० [हिं० टनाटन] धातुखंड पर आघात करके 'टनटन' शब्द निकालना।

क्रि० अ० टनटन बजना।

टनमन—सञ्ञा पुं० दे० "टोना"।

वि० दे० "टनमना"।

टनमना—वि० [सं० तन्मनस्] जिसकी तबीअत हरी हो। स्वस्थ। चंगा। प्रसन्न। खुश। "अनमना" का उलटा।

टनाका†—सञ्ञा पुं० [अनु० टन] घंटा बजने का शब्द।

वि० बहुत कड़ी (धूप)।

टनाटन—संञा स्त्री० [अनु०] लगातार टनटन शब्द। लगातार घंटा बजने की ध्वनि।

टप—स० पुं० [हिं० टोप] १ खुली गाड़ियों में लगा हुआ ओहार या सायबान। कलदरा। २ लटकानेवाले लप के ऊपर की छतरी।

सञ्ञा पुं० [अँ० टब] नाँद के आकार का पानी रखने का खुला बरतन। टाँका।

सञ्ञा पुं० [अँ० टाप=कान के आभूषणों का कान में फँसाया जानेवाला भाग] कान में पहनने का फूल।

सञ्ञा स्त्री० [अनु०] बूँदबूँद टपकने का शब्द। उ० परत श्रम बूँद टप टपकि आनन वाल भई बेहाल रति मोह भारी।—सूर०। २ किसी वस्तु के एकबारगी ऊपर से गिर पड़ने का शब्द।

टपक—सञ्ञा स्त्री० [हिं० टपकना] १ टपकने का भाव। २ बूँद बूँद गिरने का शब्द। ३ रुक रुककर होनेवाला दर्द।

टपकना—क्रि० अ० [अनु० टप टप] १ बूँद बूँद गिरना। चूना। रिसना। २ फल का पेड़ से गिरना। ३. ऊपर से सहसा नीचे आना। ४ अधिकता से कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ५ फोड़ा, घाव आदि का रह रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका—सञ्ञा पुं० [हिं०√टपक] १ बूँद बूँद गिरने का भाव। २ टपकी हुई वस्तु। रसाव। ३ पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४ रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस।

टपका टपकी—सञ्ञा स्त्री० [हिं० टपक+अनु०] १ बूँदा बूँदी। मेंह की हलकी झड़ी। फुहार। २ फलों का लगातार गिरना।

टपकाना—क्रि० स० [हिं० टपकना का स० रूप] १ बूँद बूँद करके गिराना। चुआना। भबके से अर्क खींचना। चुआना।

टपना—क्रि० अ० [हिं० तपना] १. बिना कुछ खाए पिए पड़ा रहना। २ व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३ लाँघना। कूदना।

टपरना—क्रि० स० [अनु० टप] १ टाँकी की चोट से पत्थर की सतह खुरदुरी करना। २ जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा थोड़ा खोदना या तोड़ना।

टपाटप—क्रि० वि० [अनु०] १. लगातार टपटप शब्द के साथ या बूँद बूँद करके (गिरना)। २ एक एक करके। शीघ्रता से।

टपाना—क्रि० अ० [हिं० तपाना] १. बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना। २ व्यर्थ आसरे में रखना।

क्रि० स० [हिं० टपना का प्रे०] फँदाना।

टप्पर†—सञ्ञा पु० दे० "छप्पर"।

टप्पा—सञ्ञा पु० [हिं० टाप] १. उछल उछलकर जाती हुई वस्तु की बीच बीच की टिकान। २ उतनी दूरी जितनी दूरी पर कोई फेंकी हुई वस्तु जाकर पड़े। ३ उछाल। कूद। फलाँग। ४ नियत दूरी। मुकर्रर फासला। ५. दो स्थानों के बीच में पड़नेवाले मैदान। ६ जमीन का छोटा हिस्सा। ७ अंतर। बीच। फर्क। ८. एक प्रकार का चलता गाना।

टब—सञ्ञा पु० [अँ०] पानी रखने के लिये नाँद के आकार का खुला हुआ बड़ा बरतन।

सञ्ञा पु० [हिं० टप] एक प्रकार का लप।

टमटम—सञ्ञा स्त्री० [अँ० टैंडम] दो ऊँचे ऊँचे पहियों की खुली हलकी घोड़ागाड़ी।

टमटी—सञ्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बरतन।

टमाटर—सञ्ञा पुं० [अँ० टोमैटो] एक प्रकार का खट्टा गोला और छोटा विलायती बैगन।

टर—सञ्ञा स्त्री० [अनु०] १ कर्कश या कर्णकटु शब्द। कड़वी बोली।

मुहा०—टर टर करना या लगाना=ढिठाई से बोलते जाना। जवानदराजी करना।

२ मेढक की बोली। ३. अविनीत वचन और चेष्टा। ऐंठ। अकड़। ४ हठ। जिद।

टरकना—क्रि० अ० [हिं० टरना] १ खिसकना। २ टल जाना। हट जाना।

टरकाना—क्रि० स० [हिं० टरकना का स० रूप] १ हटाना। खिसकाना। २ टाल देना। चलता करना। धता बताना।

टरकुल—वि० [हिं० टर १+कुल (प्रत्य०)] बहुत ही मामूली और निकम्मा।

टरटराना—क्रि० अ० [हिं० टर] १ बक बक करना। २ ढिठाई या अशिष्टता से बोलना।

टरना—क्रि० अ० दे० "टलना"।
(पु) क्रि० स० टालना। हटाना।

टरनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० टरना] टरने का भाव या ढंग।

टर्रा—वि० [अनु० टर टर] १ अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देनेवाला। टर्रानेवाला। २. धृष्ट। कटुवादी।

टर्राना—क्रि० अ० [अनु० टर] अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना। अशिष्टता या धृष्टता करना।

टर्रापन—संज्ञा पुं० [हिं० टर्रा+पन (प्रत्य०)] बातचीत में अविनीत भाव। कटुवादिता।

टलना—क्रि० अ० [सं० टलन] १ हटना। खिसकना। सरकना।

मुहा०—अपनी बात से टलना=प्रतिज्ञा न पूरी करना। मुकरना।

२. मिटना। न रह जाना। ३. (किसी कार्य के लिये) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना। स्थगित होना। ४ (किसी बात का) अन्यथा होना। ठीक न ठहरना। ५ (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना। उल्लंघित होना। ६. समय व्यतीत होना। बीतना।

टलहा—वि० [देश०] खोटा। खराब।

टलाटली—संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटोल"।

टल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिल्लेनवीसी"।

टवाई—संज्ञा स्त्री० [सं० अटन=घूमना] व्यर्थ घूमना। आवारगी।

टस—संज्ञा स्त्री० [सं० टसत् ?] किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द।

मुहा०—टस से मस न होना=(१) किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना। (२) कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना।

टसक—संज्ञा स्त्री० [हिं० टस] रह रहकर उठनेवाली पीड़ा। कसक। टीस। चसक।

टसकना—क्रि० अ० [हिं० टसक] १ अपनी जगह से हटना। खिसकना। २ रह रहकर दर्द करना। टीस मारना। ३ हृदय में कहने सुनने का प्रभाव अनुभव करना। बात मानने को तैयार होना।

टसकाना—क्रि० स० [हिं० टसकना का स० रूप] हटाना। खिसकाना। सरकाना।

टसर—संज्ञा पुं० [सं० तसर, प्रा० टसर] एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।

टसुआ—संज्ञा पुं० [हिं० अँसुआ] आँसू।

टहकना—क्रि० अ० [अनु०] १. रह रहकर दर्द करना। २ पिघलना।

टहना—संज्ञा पुं० [सं० तनु ?] वृक्ष की डाल।

टहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टहना] वृक्ष की पतली शाखा। डाली।

टहल—संज्ञा स्त्री० [हिं० टहलना] १. सेवा। शुश्रूषा। खिदमत। उ०—नीच टहल गृह कै सब करिहौं। पद-पंकज बिलोकि भव तरिहौं॥ —मानस।

यौ०—टहल टई या टहल टकोर=सेवा। उ०—कलि करनी बरनिए कहाँ लौं करत फिरत बिनु टहलटई है। ता पर दाँत पीसि कर मीजत, को जानै चित कहा ठई है॥ —विनय०।

२ नौकरी चाकरी। कामधंधा।

टहलना—क्रि० अ० [सं० तल+चलन] १. धीरे धीरे चलना। मंद गति से चलना।

मुहा०—टहल जाना=खिसक जाना।

२. स्वास्थ्य के लिये या जी बहलाने के लिये धीरे धीरे चलना या घूमना। सैर करना। हवा खाना।

टहलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टहल] १ टहल करनेवाली दासी। मजदूरनी। २ चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी।

टहलाना—क्रि० स० [हिं० टहलना का स० रूप] १. धीरे धीरे चलाना। २ सैर कराना। घुमाना। फिराना। दूर करना।

टहलुआ—संज्ञा पुं० [हिं० टहल+उआ (प्रत्य०)] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक। खिदमतगार।

टहलू—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।

टही—संज्ञा स्त्री० [हिं० टोह] मतलब निकालने की बात। प्रयोजनसिद्धि का ढंग। जोड़तोड़।

टहोका—संज्ञा पुं० [हिं० ठोकर] हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

मुहा०—टहोका देना = झटकना। ढकेलना। टहोका खाना=धक्का खाना। ठोकर सहना।

टाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] १ तीन या चार माशे की एक तौल (जौहरी)। २ कूत। अंदाज। आँक।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] १ लिखावट। लिखन। उ०—छती नेहु कागर हियै भई लखाइ न टाँकु। विरह-तचैं उघर्यौ सु अब सेहुँड़ कैसो आँकु॥—बिहारी०।

२. कलम की नोक।

टाँकना—क्रि० स० [सं० टंकन] १ एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना। २. सिलाई के द्वारा जोड़ना। सीना। ३. मीकर अटकाना। ४ सिल, चक्की आदि को टाँकी से गड्ढे करके खुरदुरा करना। कूटना। रेहना। ५. रेती तेज करना। ६ स्मरण रखने के लिये लिखना। दर्ज करना। बही आदि में लिखना या चढ़ाना। † ७ लिखकर पेश करना। दाखिल करना। ८. चट कर जाना। उड़ा जाना। खाना। ९. अनुचित रूप से ले लेना। मार लेना।

टाँका—संज्ञा पुं० [हिं० √टाँक] १ वह जिसके द्वारा दो चीजें (प्राय कपड़े या धातु की) जोड़ी जाती हों। २ धातु की चादर आदि का जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा। ३ सिलाई। सीवन। ४. टँकी हुई चकती। थिगली। चिप्पी। ५ शरीर पर के घाव की सिलाई। ६ धातुओं को जोड़ने का मसाला।

संज्ञा पुं० [सं० टंक] [स्त्री० अल्पा० टाँकी] पत्थर काटने की चौड़ी छेनी।

संज्ञा पुं० [सं० टंक] १. पानी इकट्ठा रखने का छोटा सा कुंड। हौज। चहबच्चा। २ पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल। उ०—आगे सगुन सगुनियै ताका। दहिने माछ रूप के टाँका।—पदमावत।

टाँकी—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] १. पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी। २ काटकर बनाया हुआ छेद। पानी रखने का छोटा हौज। ३. छोटा तराजू। उ०—पाँहण टाँकि न तौलिए हाडि न कीजै वेह। माया राता माँनवी, तिन सूँ किसा सनेह।—कबीर०।

संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] छोटा टाँका।

टाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] शरीर का वह निचला भाग जिससे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। जीवों के चलने का अवयव। पैर। पाँव।

मुहा०—टाँग अड़ाना=(१) बिना अधिकार के किसी काम में योग देना। फजूल दखल देना। (२) विघ्न डालना। टाँग तले से (या टाँग के नीचे से) निकलना=हार मानना। परास्त होना। टाँग पसारकर सोना=निश्चिंत सोना।

टाँगन—संज्ञा पुं० [सं० तुरंगम] छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना—क्रि० स० [हिं० टँगना का स० रूप] १ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से इस प्रकार बाँधना या उसपर ठहराना कि उसका सब या बहुत सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। अँटकाना। २. फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा—संज्ञा पुं० [सं० टंग] बड़ी कुल्हाड़ी।

संज्ञा पुं० [हिं० टँगना] एक प्रकार की गाड़ी जिसका ढाँचा पीछे की ओर कुछ झुका रहता है।

टाँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँगा] कुल्हाड़ी।

टाँच—संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकी] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या वचन। भाँजी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँका] १ टाँका। सिलाई। डोभ। उ०—देह-जीव-जोग के सखा मृषा टाँचन टाँचो। किए बिचार सार कदली ज्यों मनि कनक सग लघु लसत बीच बिच काँचो॥ —विनय०। २. टँकी हुई चकती। थिगली।

टाँचना—क्रि० स० [हिं० टाँच] १ टाँकना। डोभ लगाना। २ काटना। तराशना।

टाँटा—संज्ञा पुं० [हिं० टट्टी] खोपड़ी। कपाल।

टाँठ, टाँठा—वि० [अनु० ठनठन] १. करारा। कड़ा। कठोर। २ दृढ़। बली।

टाँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाणु] १. लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिसपर चीज असबाब रखते हैं। परछत्ती। २. मचान जिसपर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं।

संज्ञा स्त्री० [सं० ताड़] बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टँड़िया।

टाँड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० टाँड ?] १ अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं। काफिला। बरदी। २ बिक्री के माल का खेप। ३ बनजारों का झुंड। ४. कुटुंब। परिवार।

टाँड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

टाँण—संज्ञा स्त्री० [सं० ताड ?] "टाँड"। उ०—चारी टाँण सलोनी टूटी। बाहू कँगन कलाई टूटी। —पदमावत।

टाँय टाँय—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. कर्कश शब्द। टें टें। २. बकवाद।

मुहा०—टाँय टाँय फिस=बकवाद बहुत या काम का आरंभ बड़े धूमधाम और जोर से, पर फल कुछ भी नहीं।

टाइटिल—संज्ञा पुं० [अं०] १. पुस्तक का आवरणपृष्ठ। मुखपृष्ठ। २ मुखपृष्ठ पर छपा हुआ नाम आदि का विवरण; जैसे, गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरितमानस। ३. उपाधि। खिताब। पदवी।

टाइप—संज्ञा पुं० [अं०] छापने के लिये उलटकर खुदे सीसे के ढले अक्षर।

टाइपराइटर—संज्ञा पुं० [अं०] एक कल जिसकी कुंजिया उँगलियों द्वारा दबाकर कागज पर अक्षर छापे जाते हैं। टंकणयंत्र।

टाइम—संज्ञा पुं० [अं०] समय। वक्त।

यौ०—टाइम पीस=एक प्रकार की घड़ी।

टाइम टेबुल—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह सारणी जिसमें भिन्न भिन्न कार्यों का समय लिखा रहता है। कार्यानुक्रमणी। २. वह पुस्तक जिसमें रेलगाड़ियों के पहुँचने और छूटने का समय रहता है।

टाट—संज्ञा पुं० [हिं० टाटर] १ सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा।

मुहा०—टाट में पाट की बखिया=चीज तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बढ़िया और बहुमूल्य। बेमेल का साज।

२. बिरादरी या उसका अंग। ३. महाजनी गद्दी।

टाटर—संज्ञा पुं० [सं० स्थातृ=जो खड़ा हो।] १. टट्टर। टट्टी। २ सिर की हड्डी। खोपड़ी। कपाल।

टाटिक, टाटीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी"। उ०—सूरदास प्रभु कहा निहारौं मानत रंक त्रास टाटी को। —सूर०।

टाड़—संज्ञा स्त्री० दे० "टाँड़"। उ०—बाहु टाड़ कर कंकन बाजूबंद पते पर हौ तौकी। —सूर०।

टान—संज्ञा स्त्री० [सं० तान] १ तनाव। खिंचाव। २ एक बार में छापी जानेवाली पूरी सामग्री।

टानना—क्रि० स० १ दे० "तानना"। २ एक दौर में छापना।

टाप—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १ घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग जो जमीन पर पड़ता है। सुम। खुर। §उ० —जन्हि करो माथे सूर्य्य रथ वहल पर्य (ट) न्त सात घोला करो भट्ठाइसओ टाप बाज।

२ घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३. मछली पकड़ने का झाबा। ४. मुरगियों के बंद करने का झाबा। ५. कान में पहनने का एक अलंकार।

टापना—क्रि० अ० [हिं० टाप] १. घोड़ों का पैर पटकना। २ किसी वस्तु के लिये इधर उधर हैरान फिरना। किसी वस्तु की प्रतीक्षा करते रह जाना और उसका प्राप्त न होना। ३. उछलना। कूदना।

क्रि० स० कूदना। फाँदना।

क्रि० अ० दे० "टपना"।

टापा—संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १ उजाड़ मैदान। २. उछाल। ३. किसी वस्तु को ढकने या बंद करने का टोकरा। झाबा।

टापू—संज्ञा पुं० [हिं० टापा या टप्पा] १. स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप। † २ टप्पा। टापा।

टाबर†—संज्ञा पुं० [पंजाबी टब्बर] १. बालक। लड़का। २ परिवार।

टामक†—संज्ञा पुं० [अनु०] डिमडिमा।

टामन—संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।

टारना†—क्रि० स० दे० "टालना"।

टाल—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टाल] १. ऊँचा ढेर। भारी राशि। अटाला। गंज। २. लकड़ी, भूसे आदि की दूकान।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टालना] टालने का भाव।

संज्ञा पुं० [सं० टार] स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला। कुटना। भड़ुआ।

टालटूल—संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।

टालना—क्रि० स० [हिं० टलना का स० रूप] १ हटाना। खिसकाना। सरकाना। २. दूर करना। भगा देना। ३. मिटाना। न रहने देना। ४ किसी कार्य के लिये दूसरा समय स्थिर करना। स्थगित करना। ५ समय बिताना। ६ (आदेश या अनुरोध) न मानना। ७. बहाना करके पीछा छुड़ाना। हीला हवाली करना। उपेक्षा या उल्लंघन करना। ८. झूठा वादा करना। ९ धता बताना। टरकाना। १०. पलटना। फेरना। ११ इधर उधर हिलाना। गति देना।

टालमटूल—संज्ञा स्त्री० [हिं० √टाल+अनु०] बहाना।

टाली—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी। २. चंचल, जवान गाय या बछिया जो तीन वर्ष से

कम हो और बहुत चचल हो। उ०—पाई पाई है भैया कुंज वृंद में टाली। अब के अपनी हटकी चरावहु जैहै हटकी घाली।—सूर०।

टावर—संज्ञा पुं० [अं०] मीनार।

यौ०—क्लाक टावर=घंटाघर।

टाहली†—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।

टिंड—संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] एक बेल जिसके गोल फलों की तरकारी होती है।

टिकट—संज्ञा पुं० [अं०] १ कागज या पतली दफ्ती का वह मूल्य अंकित किया हुआ टुकड़ा जिसे खरीदनेवाले को सवारी, खेल तमाशा, सरकस, पुल, प्रदर्शनी, सिनेमा, थिएटर आदि के उपयोग की सुविधा होती है।

२ ‡ डाक, तार और कर विभाग द्वारा मूल्यांकित किया हुआ एक ओर चित्रित तथा दूसरी ओर गोंद या वैसी ही चिपकनेवाली चीज लगा हुआ कागज का टुकड़ा जिसे खरीदकर चिपकानेवाले को यथाविहित सेवा (डाक तार में) और सुविधा (विधान में) प्राप्त होती है। (अं० स्टांप)।

३. २०) से अधिक धन के आदान के लिये दी जानेवाली रसीद पर लगाया जानेवाला कर-विभाग का ऐसा ही कागज का टुकड़ा। रसीदी टिकट।

४. [अं० टैक्स] कर। महसूल।

टिकटिकी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।

टिकठी—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ] १. तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेत या कोड़े लगाए जाते हैं या उनके गले में फाँसी का फंदा लगाया जाता है। २ तिपाई। ३ वह रत्थी जिसपर शव ले जाते हैं।

टिकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २ आँच पर सेंकी हुई रोटी। बाटी। अंगाकड़ी।

टिकना—क्रि० अ० [सं० स्थित] १ कुछ काल तक के लिये रहना। ठहरना। २ घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३ कुछ दिनों तक काम देना। ४ स्थित रहना। अड़ा रहना।

टिकरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १ एक प्रकार का नमकीन पकवान। २ टिकिया।

टिकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया। २ स्त्रियों के शृंगार की (विशेषत माथे पर लगाने की) पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी। सितारा। चमकी। बेंदी।

टिकस—संज्ञा पुं० [अं० टैक्स] दे० "टिकट"।

टिकाई†—संज्ञा पुं० [हिं०√टिक+आई (प्रत्य०)] युवराज।

संज्ञा स्त्री० [हिं०√टिक+आई (प्रत्य०)] टिकने का भाव।

टिकाऊ—वि० [हिं०√टिक+आऊ (प्रत्य०)] टिकने या कुछ दिनों तक काम देनेवाला। मजबूत। अधिक दिनों तक काम देनेवाला। स्थायी।

टिकान—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पड़ाव। चट्टी।

टिकाना—क्रि० स० [हिं० टिकना का स० रूप] १. रहने के लिये जगह देना। २ ठहराना। †३ बोझ उठाने में सहायता देना।

टिकाव—संज्ञा पुं० [हिं०√टिक+आव (प्रत्य०)] १ स्थिति। ठहराव। २ स्थिरता। स्थायित्व। ३ ठहरने की जगह। पड़ाव।

टिकिया—संज्ञा स्त्री० [सं० वटिका] १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा; जैसे, दवा की टिकिया। आलू की टिकिया। २ बिंदी। बेंदी। ३ कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिसमे चिलम पर आग सुलगाते हैं। ४ उक्त आकार की एक गोल मिठाई।

टिकुली—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

टिकैत—संज्ञा पुं० [हिं० टीका+ऐत (प्रत्य०)] १ राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २ अधिष्ठाता। ३ सरदार।

टिकोरा†—संज्ञा पुं० [सं० वटिका, हिं० टिकिया] आम का छोटा और कच्चा फल।

टिक्कड़—संज्ञा पुं० [हिं० टिकिया] १. बड़ी टिकिया। २ सेंकी हुई छोटी मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी। अंगाकड़ी।

टिक्का—संज्ञा पुं० दे० "टीका"।

टिक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २. अंगाकड़ी। बाटी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टीका] १. माथे पर की बिंदी। २. ताश की बूटी।

टिघलना—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिचन—वि० [अं० अटेंशन] १ तैयार। प्रस्तुत। दुरुस्त। २. उद्यत। मुस्तैद। ३. सावधान।

टिटकारना—क्रि० स० [अनु०] [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' करकर हाँकना।

टिटिह, टिटिहा—संज्ञा पुं० [सं० टिट्टिभ] टिटिहरी चिड़िया का नर।

टिटिहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० टिट्टिभ, हिं० टिटिह] पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया। कुररी।

टिट्टिभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० टिट्टिभी] १. टिटिहरी। कुररी। २. टिड्डी।

टिड्डा—संज्ञा पुं० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का हरे रंग का परदार कीड़ा।

टिड्डी—संज्ञा स्त्री० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो लाखों की संख्या में बहुत बड़ा दल बाँधकर चलता और पेड़-पौधों को बड़ी हानि पहुँचाता है।

टिढ़बिढ़ंगा—वि० [हिं० टेढ़ा+सं० वक्र] टेढ़ामेढ़ा।

टिपका(५)†—संज्ञा पुं० [हिं०√टपक] बूँद।

टिपकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीप] ईंटों की जोड़ की खाली जगह में सिमेंट या सुरखी भरना। गहरी रेखा बनाना।

टिप टिप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।

टिपवाना—क्रि० स० [हिं० टीपना का प्रे० रूप] टीपने का काम दूसरे से कराना।

टिपारा—संज्ञा पुं० [हिं० तीन+फा० पार = टुकड़ा] मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी वाक्य या प्रसग का विस्तार के साथ अर्थ सूचित करनेवाला विवरण। २. टीका। व्याख्या।

टिप्पन—संज्ञा पुं० [सं० टिप्पण] १ टीका। व्याख्या। २. जन्मकुंडली। जन्मपत्री।

टिप्पनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "टिप्पणी"।

टिफिन—संज्ञा पुं० [अं०] दोपहर का भोजन।

यौ०—टिफिन कैरियर=कटोरदान।

टिमटिमाना—क्रि० अ० [सं० स्तिमित ?] १ (दीपक का) मंद मंद जलना। क्षीण प्रकाश देना। २ बुझने पर हो होकर जलना। झिलमिलाना। ३. मरने के निकट होना। ४. तारों का जगमगाना।

टिमाक—संज्ञा वि० [देश०] बनाव सिंगार।

टिर—संज्ञा स्त्री० दे० "टर"।

टिरफिस—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिर+फिस] बात न मानने की ढिठाई। चीं चपड़। विरोध।

टिर्राना—क्रि० अ० दे० "टर्राना"।

टिल्ला—संज्ञा पु० [हिं० ठेलना] धक्का।

टिल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिल्ला+फा० नवीसी] १. निठल्लापन। २. हीला-हवाली। बहाना। ३. कुटनपन।

टिसुआ†—संज्ञा पुं० [सं० अश्रु] आँसू।

टिहुनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० घुट, हिं० घुटना] १ घुटना। २ कोहनी।

टिहूक†—संज्ञा स्त्री० [देश०] चौंकने की क्रिया या भाव। चौंक। झझक।

टींड़सी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टींड़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

टीक—संज्ञा स्त्री० [सं० तिलक] १ गले में पहनने का गहना। २ माथे पर पहनने का गहना।

टीकना—क्रि० स० [हिं० टीका से ना० धा०] १ टीका या तिलक लगाना। २. चिह्न या रेखा बनाना।

टीका—संज्ञा पुं० [सं० तिलक प्रा० टिक्क] १. वह चिह्न जो चंदन, रोली, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर उपासना के सांप्रदायिक संकेत या शोभा के लिये लगाया जाता है। तिलक। २ विवाह स्थिर होने की एक रीति जिसमें कन्यापक्ष के लोग वर के माथे में तिलक लगाते और वर को द्रव्य देते हैं। तिलक। ३ दोनों भौंहों के बीच माथे का मध्य भाग। ४ (किसी समुदाय का) शिरोमणि। श्रेष्ठ पुरुष। ५ राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने का कृत्य। राजतिलक। ६. राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज। ७ आधिपत्य का चिह्न। ८. एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं। ९ धब्बा। दाग। चिह्न। १० किसी रोग से बचाने के लिये मुख्यत उस रोग के चेप या रस से बनी दवा किसी के शरीर में सूइयों से चुभाकर प्रविष्ट करने की क्रिया।

संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी पद या ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ। व्याख्या।

टीकाकार—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।

टीन—संज्ञा पुं० [अं० टिन] १ राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर। २ इस चद्दर का बना डिब्बा। ३ राँगा।

टीप—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीपना] १ दबाने या ठोकने की क्रिया या भाव। दबाव। दाब। २ टिपकारी। ३ गच कूटने का काम। ४ टंकार। घोर शब्द। ५ गाने में जोर की तान। ६ स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। टाँक लेने का काम। ७ दस्तावेज। ८ जन्मपत्री। कुंडली।

टीपटाप—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीप] १ बनाव-सिंगार। २ आडंबर।

टीपन—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीपना] जन्म-पत्री।

टीपना—क्रि० स० [सं० टेपन] १ दबाना। चाँपना। मसकना। २ धीरे धीरे ठोकना। ३. चित्र बनाने से पहले उसकी रेखाएँ खींचना। रेखाकर्म। खतकशी। ३ जोड़ का खाली स्थान भरना।

क्रि० स० [सं० टिप्पनी] लिखना। टाँकना।

टीबा—संज्ञा पु० दे० "टीला"।

टीमटाम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बनाव-सिंगार। आडंबर।

टीला—संज्ञा पुं० [सं० अष्ठीला] १ पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग। ढूह। भीटा। २ मिट्टी का ऊँचा ढेर। धुस। ३. पहाड़ी।

टीस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] रह रहकर उठनेवाला दर्द। कसक। चसक।

टीसना—क्रि० अ० [हिं० टीस] रह रहकर दर्द उठना। कसक होना।

टुंटा, टुंडा—वि० [सं० टुंड] [स्त्री० टुंडी] १ जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो। ठूँठा। २ जिसका हाथ कट गया हो। लूला। लुंजा।

टुइयाँ—संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जाति का तोता।

वि० ठिगना। नाटा। बौना।

टुक—वि० [सं० स्तोक] थोड़ा। जरा।

टुकड़गदा—संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा+फा० गदा] भिखारी। मँगता।

वि० १ तुच्छ। २ दरिद्र। कंगाल।

टुकड़गदाई—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़गदा"।

संज्ञा स्त्री० टुकड़ा माँगने का काम।

टुकड़तोड़—संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा+√तोड़] दूसरे का दिया हुआ टुकड़ा खाकर रहनेवाला आदमी।

टुकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १ किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २ चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश।

मुहा०—(दूसरे का) टुकड़ा तोड़ना = दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। टुकड़ा माँगना = भीख माँगना। टुकड़ा सा जवाब देना = झट और स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १. छोटा टुकड़ा। खंड। २ समुदाय। मंडली। दल। जत्था। ३ सेना का एक अंश।

टुचा—वि० [सं० तुच्छ] तुच्छ। ओछा।

टुटपुँजिया—वि० [हिं० टूटी+पूँजी] जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी या संपत्ति हो।

टुटरूँ—संज्ञा पु० [अनु०] छोटी पंडुकी।

टुटरूँटूँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द।

वि० १ अकेला। २. दुबला पतला।

टुनगा†—संज्ञा पु० [सं० तनु+अग्र] [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।

टुनटुन—संज्ञा पु० [सं०] "टुनटुन" शब्द।

टुनटुना—संज्ञा पुं० [हिंदी टुनटुन] [स्त्री० टुनटुनी] एक छोटा बाजा या घंटी। झुन-झुना। घुनघुना।

टुनटुनाना—क्रि० अ० [सं० टुनटुनायमान] १ "टुनटुन" शब्द करना। २ अस्पष्ट और मंद बोलना। ३ धीरे धीरे बजना। ४ गूँजना। ५ टूटेफूटे शब्द निकालना। ६ बेकाम इधर उधर घूमना।

टुनिहाई—संज्ञा स्त्री० दे० "टोनहाई"।

उ०—टुनिहाई सब टोल में रही जु सौति कहाय। सुतैं ऐंचि त्यौं आपु त्यौं करी अदोखिल आइ॥ —बिहारी०।

टुपकना, टुमकना†—क्रि० अ० [अनु०] १. धीरे से काटना या डंक मारना। २. कटु या व्यंग्यपूर्ण बात कहना। ३ चुगली खाना।

टुर्रा—संज्ञा पुं० [सं० तुवर] डली। रवा। कण।

टूगना—क्रि० स० [हिं० टुनगा] थोड़ा सा काटकर खाना।

टूँड़—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँड़ी] १ कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २ जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव। सींग।

टूँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १ छोटा टूँड। २ ढोंढी। नाभि। ३. किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक†—संज्ञा पुं० [सं० स्तोक] टुकड़ा।

टूकर†—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।

टूका†—संज्ञा पुं० [हिं० टूक] १ टुकड़ा। खंड। २ रोटी का चौथाई भाग। ३ भिक्षा। भीख।

टूट†—संज्ञा स्त्री० [सं०√त्रुट् सं० त्रुटि] १ खंड। टूटन। टुकड़ा। २ टूटने का भाव। ३ लिखावट में वह भूल से छूटा हुआ शब्द या वाक्य जो पीछे से किनारे पर लिखते हैं। ४ भूल। त्रुटि।

†संज्ञा पुं० टोटा। घाटा।

टूटना—क्रि० अ० [सं०√त्रुट्] १ टुकड़े टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २ किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३ पृथक् होना। अलग होना। ४ संबंध छूटना। लगाव न रह जाना। ५ लगातार चलनेवाली वस्तु का रुक जाना। सिलसिला बंद होना। ६ चलता न रहना। बंद हो जाना। ७ दुर्बल होना। क्षीण होना ८ धनहीन होना। ९ घाटा होना। १० किसी ओर एकबारगी वेग से आ जाना। ११ एकबारगी बहुत सा आ पड़ना। पिल पड़ना।

मुहा०—टूट टूटकर बरसना=मूसलधार बरसना।

१२ एकबारगी धावा करना। १३ अनायास कहीं से आ जाना। १४ युद्ध में किले का ले लिया जाना। १५ शरीर में ऐंठन या तनाव लिए हुए पीड़ा होना। १६ आकाश से चमकते हुए पृथ्वी पर गिरना।

मुहा०—तारा टूटना=आकाश में चक्कर काटनेवाले नक्षत्रों के टुकड़ों का पृथ्वी पर गिरते समय वायुमंडल की रगड़ से चमक उठना।

१७ उत्साह न रह जाना, जैसे, दिल टूटना।

टूटा—वि० [हिं०√टूट] १ खंडित। भग्न।

मुहा०—टूटी फूटी बात या बोली=(१) असंबद्ध वाक्य। (२) अस्पष्ट वाक्य।

२ लँगड़ा या लूला (व्यक्ति)। ३. दुबला या कमजोर। ४ निर्धन।

संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

टूठनाⓅ—क्रि० अ० [सं० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] संतुष्ट होना।

टूठनिⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० टूठना] संतोष। तुष्टि।

टूम—संज्ञा स्त्री० [अनु० टुनटुन ?] १ गहना। आभूषण।

मुहा०—टूमटाम=(१) गहना पाती। वस्त्राभूषण। (२) बनाव सिंगार।

२ ताना। व्यंग्य।

टूमना†—क्रि० स० [अनु०] १ धक्का देना। झटका देना। २ ताना मारना।

टूरनामेंट—संज्ञा पुं० [अं०] खेलों की प्रतियोगिता।

टें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] तोते की बोली।

मुहा०—टें टें=व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत। टें होना या बोलना=चटपट मर जाना।

टेंगना, टेंगरा—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] एक प्रकार की मछली।

टेंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० तट+ऐंठ] धोती की वह मंडलाकार ऐंठन जो कमर पर पड़ती है। मुर्री।

संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १ कपास का ढोंढ़ा। २ दे० "टेंटर"।

टेंटर—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] रोग या चोट के कारण आँख के ढेले पर का उभरा हुआ मांस। ढेंढर।

टेंटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेंट] करील। उ०—सूर कहौ कैसे रुचि मानै टेंटी के फल खारे।—सूर०

संज्ञा पुं० [अनु० टेंटें] व्यर्थ झगड़ा करनेवाला। हुज्जती। चंचल।

टेंटुवा—संज्ञा पुं० [देश०] १. गला। २ अँगूठा।

टेंटें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २ व्यर्थ की बकवाद।

टेंडा†—वि० [?] चंचल। शरारती।

टेंडसी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टेउकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

टेक—संज्ञा स्त्री० [हिं०√टिक या प्रा० टेक्कर=स्थल] १ वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिये नीचे से लगाई जाती है चाँड़। थूनी। थम। २ ढासना। सहारा। ३ आश्रय। अवलंब। ४ बैठने का स्थान। ५ ऊँचा टीला। ६. मन में ठानी हुई बात। हठ। जिद। ७ प्रण। प्रतिज्ञा। उ०—सुपथ कै कहा कहौं? विदित है जी की प्रभु प्रवीन को। तिहुँ काल, तिहूँ लोक में, एक टेक रावरी तुलसी से मनमलीन को॥ —विनय०।

मुहा०—टेक निभना या रहना=प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक पकड़ना या गहना=हठ करना।

८ बान। आदत। ९ गीत का पहला पद। स्थायी।

टेकना—क्रि० स० [हिं० टेक] १ सहारे के लिये किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना। सहारा लेना। ढासना लेना। २ ठहराना या रखना।

मुहा०—माथा टेकना=प्रणाम करना।

३ सहारे के लिये पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। उ०—गृह गृह गृह द्वार फिरयौ तुमको प्रभु छाँड़ै। अंध अंध टेकि चलै क्यों न परै गाड़े?—सूर०। †Ⓟ ४ हठ करना। दृढ़ निश्चय या प्रण करना। अड़ना। उ०—सो गोसाइँ विधि गति जेहि छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी॥ —मानस। ५ बीच में रोकना या पकड़ना।

टेकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकनी] वह चीज जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिये लगाई जाय।

टेकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक या प्रा० टेक्कर=स्थल] १. टीला। ऊँचा धुस। २ छोटी पहाड़ी।

टेकरा—संज्ञा पुं० [हिं० टेक या प्रा० टेक्कर] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] टीला। छोटी पहाड़ी।

टेकला†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] धुन। रट।

टेका—संज्ञा पुं० [हिं० टेक] दे० "टेक।"

टेकान—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकाना] १ गिरनेवाली छत आदि को सँभालने के लिये उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी। टेक। चाँड़। २ वह चबूतरा जिसपर बोझ ढोनेवाले बोझ अड़ाकर सुस्ताते हैं।

टेकाना—क्रि० स० [हिं० टेकना] १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिये थामना।

२ उठने बैठने में सहायता के लिये पकड़ना। ३. दे देना। हाथ से उठाकर देना।

टेकी—संज्ञा पुं० [हिं० टेक] १ प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २ हठी। जिद्दी।

टेकुआ†—संज्ञा पुं० [सं० तर्कुक] चरखे का तकला।

टेकुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकुआ] १ सूत कातने या रस्सी बटने का तकला। २ चमारों का सूआ जिससे वे तागा खींचते हैं।

टेघरना†—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टेटका—संज्ञा पुं० [सं० ताटक] कान का एक गहना।

† वि० दे० "टेढ़ा"।

टेढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेढ़ा] टेढ़ापन। वक्रता। उ०—टेढ़ जानि सका सब काहू। वक्र चंद्र महँ ग्रसै न राहू॥—मानस।

†वि० दे० "टेढ़ा"।

टेढ़बिड़गा—वि० [हिं० टेढ़ा+बेढंगा] टेढ़ामेढ़ा।

टेढ़ा—वि० [सं० तिरस्=टेढ़ा] [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर उधर झुका या घूमा हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। मुड़ा या झुका हुआ। २ जो समानांतर न गया हो। तिरछा। ३ कठिन। मुश्किल। पेचीला।

मुहा०—टेढ़ी खीर=मुश्किल काम।

४ उद्धत। उजड्ड। दुःशील।

मुहा०—टेढ़ा पड़ना या होना=(१) उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। (२) अकड़ना। इतराना। टेढ़ी सीधी सुनाना= भला बुरा कहना।

टेढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन"।

टेढ़ापन—संज्ञा पुं० [हिं० टेढ़ा+पन (प्रत्य०)] टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़े—क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव फिराव के साथ। तिरछे।

मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना या टेढ़ेमेढ़े चलना=इतराना।

टेना—क्रि० स० [हिं० टेवना] १ हथियार को तेज करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना। २ मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।

टेनिस—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का अँगरेजी खेल जो बीच में जाल टाँगकर रबर के पोले गेंद और जालदार बल्ले से खेला जाता है।

टेबुल—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी। मेज। २ सारणी, जैसे, टाइमटेबुल।

टेम—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीप-शिखा। दिए की लौ। लपट।

टेर—संज्ञा स्त्री० [सं० तार] १ गाने में ऊँचा स्वर। तान। टीप। २ बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक। उ०—टेर लखन सुनि विकल जानकी अति आतुर उठि धाई।—सूर०।

टेरना—क्रि० स० [हिं० टेर] १ ऊँचे स्वर से गाना। २ पुकारना। जोर से गाना।

क्रि० स० [सं० तीरण=तै करना] तै करना। बिताना। पूरा करना।

टेलिग्राफ—संज्ञा पुं० [अं०] वह तार या यंत्र जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।

टेलिग्राम—संज्ञा पुं० [अं०] तार से भेजी हुई खबर।

टेलिप्रिंटर—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का यंत्र जिससे तार द्वारा आए हुए समाचार टाइपराइटर पर छपते हैं।

टेलिफोन—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह तार या यंत्र जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है। २ इस प्रकार कहने और सुनने का यंत्र।

टेलिविजन—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का रेडियो यंत्र जिसकी सहायता से शब्दों के साथ वक्ता और दृश्य आदि भी सिनेमा की भाँति दिखाई देते हैं।

टेव—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान। उ०—तुम तो टेव जानतिहि ह्वैहौ तऊ मोहि कहि आवै। प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतहिं माखन रोटी भावै।—सूर०।

टेवना†—क्रि० स० दे० "टेना"।

टेवा—संज्ञा पुं० [सं० टिप्पन] १ जन्मपत्री। जन्मकुंडली। २ लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है।

टेवैया†—संज्ञा पुं० [हिं० √टेव+ऐया] टेनेवाला। चोखा करनेवाला।

टेसू—संज्ञा पुं० [सं० किंशुक ?] १ पलाश। ढाक। २ एक उत्सव जिसमें विजयादशमी के दिन बहुत से लड़के गाते हुए घूमते हैं।

टैंक—संज्ञा पुं० [अं०] १ तालाब। २ पानी रखने का हौज या खजाना। ३ लड़ाई में काम आनेवाली लोहे की एक बंदी गाड़ी जिसमें तोपें लगी रहती हैं।

टैक्स—संज्ञा पुं० [अं०] कर। महसूल।

यौ०—इन्कम टैक्स = आमदनी पर लगनेवाला कर। आयकर।

टैयाँ†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी। चित्ती।

टोंक—संज्ञा स्त्री० [सं० स्तोक] १ छेक। रोक। विघ्न। २ किसी काम के प्रारंभ में पूछताछ या रुकावट। निषेध। बाधा।

टोंका†—संज्ञा पुं० [सं० स्तोक=थोड़ा] १ सिरा। किनारा। २ नोक। कोना।

टोंचना—क्रि० स० [सं० टंकन] चुभाना।

टोंटा—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिये बरतन में लगी हुई नली। तुलतुली।

टोक†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्तोक] १ टोकने की क्रिया या भाव।

यौ०—टोक टाक=प्रश्न आदि द्वारा बाधा। रोक टोक=मनाही। निषेध। बाधा

२. बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।

टोकणी—संज्ञा स्त्री० [प्रा० टोक्कण] एक प्रकार का हंडा। टोकनी। उ०—कबीर तहा टोकणी लीए फिरै सुभाइ। रामनाम चीन्हैं नहीं, पीतलि ही कै चाइ।—कबीर०।

टोकना—क्रि० स० [हिं० टोक] १ किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछताछ करना। २ नजर लगाना।

संज्ञा पुं० [प्रा० टोक्कण] [स्त्री० टोकनी] १ टोकरा। डला। २ एक प्रकार का हंडा।

टोकरा—संज्ञा पुं० [हिं० टोकना] [स्त्री० टोकरी] बाँस की फट्टियों या पतली टहनियों का गोल और गहरा बरतन। छाबड़ा। डला। झाबा। खाँचा।

टोकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टोकरा] १ छोटा टोकरा। † २ देगची। बटलोई।

टोकारा—संज्ञा पुं० [हिं० टोक] वह बात जो किसी को कुछ चिताने या स्मरण दिलाने के लिये कही जाय।

टोटक—संज्ञा पुं० [सं० त्रोटक ?] दे० "टोटका"। उ०—अगुन अलायकु आलसी जानि अधम अनेरो। स्वारथ के साथिन तज्यो तिजरा कोसो टोटक औचट उलटि न हेरो॥ —विनय०।

टोटका—संज्ञा पुं० [सं० त्रोटक] कोई बाधा या कष्ट दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिये किसी दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जानेवाला प्रयोग। टोना। यंत्रमंत्र। लटका।

मुहा०—टोटका करने आना=आकर तुरत चला जाना।

टोटकेहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० टोटका+हाई (प्रत्य०)] टोटका, टोना या जादू करनेवाली स्त्री।

टोटा—संज्ञा पुं० [सं० √त्रुट् ?] १ बचा या कटा हुआ टुकड़ा। २ कारतूस।

संज्ञा पु० [हिं० √टूट] १ घाटा। हानि। २ कमी। अभाव।

टोड़(पु)ं—संज्ञा पुं० [हिं० तोंद] बड़ा पेट। मोटा उदर।

टोड़िक(पु)ं—संज्ञा पु० [हिं० टोड़+इक प्रत्य०)] तोंदवाला। पेटू।

टोडिस(पु)—संज्ञा पु० [?] शरारती।

टोडी—संज्ञा पु० [अं०] १ नीच और तुच्छ वृत्ति का मनुष्य। कमीना और खुशामदी। अधम पुरुष।

यौ०—टोडी बचा=सरकारी अफ़सरों का खुशामदी।

टोड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रोटकी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

टोनहा—वि० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनही] टोना या जादू करनेवाला।

टोनहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० टोना+हाई (प्रत्य०)] १. टोना। जादू। झाड़फूँक।

टोनहाया—संज्ञा पुं० [हिं० टोना+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० टोनहाई] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य।

टोना—संज्ञा पुं० [सं० तंत्र] १ मंत्रतंत्र का प्रयोग। जादू। टोटका। २ विवाह का एक प्रकार का गीत।

संज्ञा पुं० [देश०] एक शिकारी चिड़िया।

क्रि० स० [सं० ?] हाथ से टटोलना। छूना।

टोप—संज्ञा पु० [हिं० तोपना=ढाँकना] १ बड़ी टोपी। २ लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। खोद। कूँड़। ३ खोल। गिलाफ।

संज्ञा पु० [अनु० टप] बूँद। क़तरा।

टोपा—संज्ञा पुं० [हिं० टोप] १. बहुत बड़ी टोपी। असाधारण आकार प्रकार की टोपी। २ टोपी के लिये व्यंग्य या निंदा-सूचक शब्द।

†संज्ञा पु० [हिं० √तोप] १ टोकरा। २ टाँका। डोभ।

टोपी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √तोप] १. सिर पर का पहनावा। २ राजमुकुट। ताज। ३ इस आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु। ४ ढीपी। पुश्त। ५ इस आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग लगती है। बंदूक का पड़ाका। ६ वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।

यौ०—गाँधी टोपी=खद्दर की उस ढंग की किश्तीनुमा टोपी जैसी अपने अफ्रीका के प्रवासकाल में (सन् १९१३ से १९२० तक) जूलू और बोअर जातियों द्वारा किए अंगरेजों के प्रति विद्रोह में पीड़ितों की निःस्वार्थ सेवा करने के दिनों में गाँधी जी लगाया करते थे।

तुर्की टोपी=१९१८ ई० के पहले तुर्की में प्रचलित लालरंग के फेल्ट की वह ऊँची और गोल टोपी जिसके ऊपर चुंदी के समान काले धागों का गुच्छा लटकता रहता था। द्वितीय महायुद्ध के बाद (सन् १९१८ में) मुस्तफा कमाल पाशा ने अन्य सुधारों के साथ इसका पहनना भी निषिद्ध कर दिया जिससे यह तुर्की का पहनावा नहीं रह गई।

टोभ—संज्ञा पुं० [हिं० डोभ] टाँका। टोपा।

टोर†—संज्ञा स्त्री० [देश०] कटारी। कटार।

टोरना†—क्रि० स० [सं० √त्रुट्] तोड़ना।

मुहा०—आँख टोरना=लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।

टोरा—संज्ञा पुं० [सं० तुवर] १. अरहर का छिलके सहित खड़ा दाना। २ रवा। दाना।

टोल—संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १ मंडली। जत्था। झुंड। उ०—अपने अपने टोल कहत व्रजवासी आई। भाव भक्ति लै चली सुदपति आई।—सूर०। २ चटसार। पाठशाला।

संज्ञा पुं० [अं०] नगरपालिका, निगम, निकाय, मंडल, मंडली या अधिकारी आदि द्वारा किसी विशेष सुविधा के लिये (अथवा यात्रियों आदि पर) लगाया और वसूल किया जानेवाला स्थानीय महसूल।

टोला—संज्ञा पु० [सं० प्रतोली=घेरा, बाड़ा] [स्त्री० टोलिका] १ किसी बड़ी बस्ती का एक भाग। मुहल्ला। २ पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।

टोली—संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १ छोटा मुहल्ला। बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। झुंड। जत्था। मंडली। ३ पत्थर की चौकोर पटिया। सिल। ४ एक प्रकार का बाँस। नाल।

टोवना†—क्रि० स० दे० "टोना"।

टोह—संज्ञा स्त्री० [?] १. टटोल। खोज। ढूँढ। २ खबर। देखभाल।

टोही—संज्ञा स्त्री० [हिं० टोह] पता लगानेवाला। ढूँढनेवाला। खबर लेनेवाला।

टौरना—क्रि० स० [हिं० टेरना ?] जाँच करना। परखना। थाह लेना। पता लगाना।

ट्रंक—संज्ञा पु० [अं०] कपड़े आदि रखने का लोहे का संदूक। पेटी।

ट्राम—संज्ञा स्त्री० [अं०] बड़े नगरों में सड़क पर बिजली से चलनेवाली एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसका मार्ग रेल की लाइनों की तरह दो पटरियों का होता है।

ठ

ठ—हिंदी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठ—वि० [सं० स्थाणु] ठूँठा (पेड़)।

ठठार—वि० [हिं० ठठ] खाली। रीता।

ठंढ, ठंढ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्तब्ध, प्रा० ठड्ढ] शीत। सरदी।

ठंडक, ठंढक—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा] १ शीत। सरदी। जाड़ा। २ ताप या जलन की कमी। तरी। ३ संतोष। तृप्ति। प्रसन्नता। तसल्ली। ४ किसी उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शांति।

ठंडा, ठंढा—वि० [सं० स्तब्ध, प्रा० ठड्ढ] [स्त्री० ठंढी] १ सर्द। शीतल।

मुहा०—ठंढी साँस=दुःख से भरी साँस। शोकोच्छ्वास। आह।

२ जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत।

मुहा०—ठंढा करना=(१) क्रोध शांत करना। (२) ढारस देकर शोक कम करना। तसल्ली देना।

४ धीर। शांत। गंभीर। ५ जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन। ६. जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। विरोध न करनेवाला।

मुहा०—ठंढे ठंढे=बिना विरोध या प्रतिवाद किए। चुपचाप।

७. तृप्त। प्रसन्न। खुश।

मुहा०—ठंढे ठंढे=हँसी खुशी से। ठंढा रखना=आराम चैन से रखना।

८ निश्चेष्ट। जड़। ६ मृत। मरा हुआ।

मुहा०—ठंढा होना=मर जाना। ताजिया ठंढा करना=ताजिया दफन करना। (किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंढा करना=फेंकना या तोड़ना फोड़ना।

ठंडाई, ठंढाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा+आई (प्रत्य०)] १ वह दवा या मसाला जिसमे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। २ पिसी हुई भाँग।

ठंढ—स्त्री० दे० "ठंड"।

ठंढक—स्त्री० दे० "ठंडक"।

ठंढा—वि० दे० "ठंडा"।

ठंढई—स्त्री० दे० "ठंडाई"।

ठंढाई—स्त्री० दे० "ठंडाई"।

ठ—संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। २ महाध्वनि। ३ चंद्रमंडल। ४ शून्य।

ठई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिति?] स्थिति।

ठक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द।

वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौंचक्का। स्तंभित। स्तब्ध।

ठकठक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बखेड़ा। टंटा। झंझट। तकरार।

ठकठकाना—क्रि० स० [हिं० ठकठक] १ ठकठक शब्द करना। खटखटाना। २ ठोंकना पीटना।

ठकठकिया—वि० [अनु० ठकठक] तकरार करनेवाला। हुज्जती। बखेड़िया।

ठकुरसुहाती—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+सुहाना] १. लल्लोचप्पो। खुशामद। चापलूसी। उ०—हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती। नाहिं त मौन रहब दिन राती॥ —मानस। २ आश्रयदाता को प्रसन्न करने के लिये कही जानेवाली झूठी सच्ची बात। मिथ्या प्रशंसा।

ठकुराइन—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १ ठाकुर की स्त्री। स्वामिनी। मालकिन। २ क्षत्रिय की स्त्री। क्षत्राणी। ३ नाई की स्त्री।

ठकुराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+आई (प्रत्य०)]१ सरदारी। प्रधानता। उ०—अब तुलसी गिरिधर बिनु गोकुल कौन करिहि ठकुराई। —श्रीकृष्णगीता०। २ ठाकुर का अधिकार। ३ वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। रियासत। ४ बड़प्पन। महत्व। बड़ाई। उ०—हरि के जन की अति ठकुराई। महाराज ऋषिराज राज हूँ देखत रहे लजाई। —सूर०।

ठकुरानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १ ठाकुर या सरदार की स्त्री। २ रानी। ३ मालकिन। स्वामिनी।

ठकुराय—संज्ञा पुं० [हिं० ठाकुर] क्षत्रियों का एक भेद।

ठकुरायत—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+आयत (प्रत्य०)] १. आधिपत्य। प्रभुत्व। उ०—ठकुरायत गिरिधर जू की साँची। कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीनि लोक मँह माँची। —सूर०। २ वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधीन हो। रियासत।

ठकोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक+ औरी] अड्डे के आकार की सहारा देने की वह लकड़ी जो साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं। बैरागिन। जोगिन।

ठक्कर—संज्ञा स्त्री० दे० "टक्कर"।

संज्ञा पु०—[सं० ठक्कुर] गुजरातियों की एक जाति या वंशोपाधि।

ठग—संज्ञा पु० [सं० स्थग] [स्त्री ठगनी, ठगिन] १ वह लुटेरा जो छल और धूर्तता से माल लूटता हो। २ छली। धूर्त। धोखेबाज।

ठगई—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

ठगण—संज्ञा पुं० [सं०] ५ मात्राओं का एक गण (छंद शास्त्र)।

ठगना—क्रि० स० [हिं० ठग] १ धोखा देकर माल लूटना। २. धोखा देना। छल करना।

मुहा०—ठगा सा=आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का। उ०—करत कछु नाहीं आजु बनी। हरि आए हौं रही ठगी सी जैसे चित्र धनी। —सूर०।

३. सौदा बेचने में बेईमानी करना।

†क्रि० अ० १ धोखा खाना। प्रतारित होना। २ चक्कर में आना। चकित होना। दंग रहना।

ठगनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १ ठग की स्त्री। २ ठगनेवाली स्त्री। ३ कुटनी।

ठगपना—संज्ञा पु० [हिं० ठग+पना (प्रत्य०)] १ ठगने का भाव या काम। २. धूर्तता। छल। चालाकी।

ठगमूरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग+मूरि] वह नशीली जड़ीबूटी जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटने के लिये खिलाते या सुँघाते थे।

मुहा०—ठगमूरी खाना=मतवाला होना। उ०—काहू तोहि ठगौरी लाई। बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरी खाई। —सूर०।

ठगमोदक—संज्ञा पुं० दे० "ठगलाड़ू"। उ०—चलत चितै मुसकाय कै मृदु बचन सुनाए। तेही ठगमोदक भए, मन धीर न, हरि तन छूट्यो छिटकाए।—सूर०।

ठगलाड़ू—संज्ञा पु० [हिं० ठग+लड्डू] ठगों का लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी। उ०—खाइ ठगलाड़ू, तत मत बुधि खोइ। भा धौराहर बनखंड, ना हँसी आव, न रोइ। —पद्मावत।

मुहा०—ठगलाड़ू खाना = मतवाला होना। बेसुध होना।

ठगवाहा†—संज्ञा पुं० दे० "ठग"।

ठगवाना—क्रि० स० [हिं० ठगना का प्रे० रूप] दूसरे से धोखा दिलवाना।

ठगविद्या—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग+सं० विद्या] धूर्तता। धोखेबाजी।

ठगाना†—क्रि० अ० [हिं० ठगना] धोखे में आकर हानि सहना। ठगा जाना।

ठगाही†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

ठगिन, ठगिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १ धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। लुटेरिन। २ ठग की स्त्री।

वि०—धोखा देनेवाली।

ठगिया—संज्ञा पु० दे० "ठग"।

ठगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १ धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। २ धूर्तता। धोखेबाजी।

ठगोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग+बौरी] १. १ सुध बुध भुलानेवाली शक्ति। २ टोना। जादू। उ०—दसन चमक अधरन अरुनाई देखत परी ठगोरी। —सूर०।

ठगौरी—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगोरी २" उ०—कित्हि रहि गोरी कौं दई दई ठगौरी टारि। —रससारांश।

ठट—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। झुंड। २ बनाव। रचना। सजावट।

ठटकीला—वि० [हिं० ठाट+कीला ?] सजा हुआ। ठाठदार।

ठटना—क्रि० स० [हिं० ठाट] १ ठहराना। निश्चित करना। उ०—होत सु जो रघुनाथ ठटी। पचि पचि रहे सिद्ध, साधक, मुनि तऊ बढ़ी न घटी। —सूर०। २ सजाना। सज्जित करना।

क्रि० अ० १ खड़ा रहना। अड़ना। डटना। २ सजना। सुसज्जित होना।

क्रि० स० [हिं० ठाट] आरंभ करना (राग)।

ठटनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठटना] बनाव। रचना। उ०—नाभि भँवर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी। —सूर०।

ठटरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] १ हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपंजर। २ घास भूसा आदि बाँधने का जाल। खरिया। ३ किसी वस्तु का ढाँचा। ठट्टर। ४ मुरदा उठाने की रथी। अरथी।

ठट्ठा|—संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] बनाव। रचना।

संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठट्टाई(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० ठट] ठट्ठ। समूह। झुंड। उ०—इम रहहि गणता बिरुद भणता, भट्टा ठट्टा पेष्पीआ।

ठट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठटरी। पंजर।

ठट्ठ—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] दे० "ठट"।

ठट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० अट्टहास] हँसी। दिल्लगी।

यौ०—ठट्ठेबाज=दिल्लगीबाज।

मुहा०—ठट्ठा उड़ाना=उपहास करना।

ठठ—संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठठई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्ठा"।

ठठकना|(पु)—क्रि० अ० [सं० स्थेष्ट+करण] १ एकबारगी रुक या ठहर जाना। ठिठकना। २ स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना।

ठठना—क्रि० अ० दे० "ठटना"।

ठठरी|—संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

ठठाना—क्रि० स० [अनु० ठक ठक मारना]। पीटना। तड़तड़ाना।

क्रि० अ० [सं० अट्टहास] जोर से हँसना।

ठठिरिन|—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] ठठेरे की स्त्री।

ठठेरमंजारिका—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा+सं० मार्जारिका] ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे।

ठठेरा—संज्ञा पुं० [प्रा० ट्ठार] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] बर्तन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलाई=जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली=ठठेरे की बिल्ली जैसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके या न घबराय।

ठठेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] १ ठठेरे की स्त्री। २ ठठेरे का काम।

यौ०—ठठेरी बाजार=कसेरों का बाजार।

ठठोल—संज्ञा पुं० [हिं० ठट्ठा+ओल (प्रत्य०)] १ दिल्लगीबाज। मसखरा। २. दे० "ठठोली"।

ठठोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठट्ठा+ओली (प्रत्य०)] हँसी। दिल्लगी।

ठडा|—वि० [सं० स्थातृ] खड़ा। दंडायमान।

ठढ़ा|—वि० [सं० स्थातृ] दे० "ठडा"।

ठन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक—संज्ञा स्त्री० [अनु० ठन ठन] १ चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २ टीस। कसक। रह रहकर होनेवाली पीड़ा।

ठनकना—क्रि० अ० [अनु० ठनठन] १ ठनठन शब्द करना। २ टीस मारना। कसकना।

मुहा०—माथा ठनकना=(१) गहरा खटका पैदा होना। सचेत होना। (२) सिर में रुक रुककर दर्द होना।

ठनकाना—क्रि० स० [हिं० ठनकना का सं० रूप] किसी धातुखंड या चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

ठनकार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठनठन शब्द। सुरीली आवाज।

ठनगन—संज्ञा पुं० [हिं० ठनना] मंगल के अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।

ठनठन—संज्ञा स्त्री० [?] 'ठनठन' ध्वनि। किसी धातु के बजने का शब्द।

ठनठन गोपाल—संज्ञा पुं० [अनु० ठनठन+गोपाल] १ छूँछी और निःसार वस्तु। २ निर्धन मनुष्य। ३ द्रव्याभाव। रुपए पैसे की कमी।

ठनठनाना—क्रि० स० [अनु०] ठनठन शब्द निकालना। बजाना।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।

ठनना—क्रि० अ० [हिं० ठानना] १. (किसी कार्य का) तत्परता के साथ आरंभ होना। अनुष्ठित होना। छिड़ना। २ (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३ ठहरना। लगना। जमना। ४ उद्यत होना। मुस्तैद होना।

ठनाका—संज्ञा पुं० [अनु०] ठन ठन शब्द। ठनकार।

ठनाठन—क्रि० वि० [अनु० ठन ठन] ठन ठन शब्द के साथ।

ठपका|—संज्ञा पुं० [देश०] धक्का। ठेस।

ठप्पा—संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १ लकड़ी, धातु आदि का खंड जिसपर कोई आकृति या बेलबूटे आदि इस प्रकार खुदे हों कि उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियाँ उभर आवें या बन जायँ। साँचा। २ साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेलबूटा आदि। छाप। नक्श। ३ एक प्रकार का गोटा।

ठमक—संज्ञा स्त्री० [सं० √स्तंभ] १ चलते चलते ठहर जाने का भाव। रुकावट। २ चलने की ठसक। लचक।

ठमकना—क्रि० अ० [हिं० ठमक] १ चलते चलते ठहर जाना। ठिठकना। रुकना। २ ठसक के साथ रुक रुककर या हावभाव दिखाते हुए चलना।

ठमकाना, ठमकारना—क्रि० स० [हिं० ठमकना] चलते चलते रोकना। ठहराना।

ठयना—क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ दृढ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना।

उ०—दासी सहस प्रगट तहँ भई। इंद्रलोक रचना ऋषि ठई।—सूर०। २ कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३ मन में ठहराना। निश्चित करना।

क्रि० अ० दे० "ठनना"।

क्रि० स० [स० स्थापन] १. स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. लगाना। प्रयुक्त करना।

क्रि० अ० १. स्थित होना। बैठना। जमना। २ प्रयुक्त होना। लगना।

ठरना—क्रि० अ० [स० स्तब्ध] १ सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २ बहुत अधिक ठंढ पड़ना।

ठर्रा—सज्ञा पु० [हिं० ठडा] १ बहुत मोटा सूत। २ बड़ी अधपकी ईंट। ३. महुए की निकृष्ट शराब।

ठलुवा—सज्ञा पु० [स०√टल्] बेकार। आवारा।

ठवना—क्रि० स० दे० "ठवनि"।

ठवनि—स० स्त्री० [स० स्थापन] दे० "ठवनी"। उ०—ठाढ़ भए उठि सहज सुभाए। ठवनि जुवा मृगराज लजाए।—मानस।

ठवनी—सज्ञा स्त्री० [स० स्थापन] १ बैठक। स्थिति। २. बैठने या खड़े होने का ढग। आसन। मुद्रा। तौरतरीका। तर्ज।

ठस—वि० [सं० स्थास्नु] १ ठोस। कड़ा। २ जिसकी बुनावट घनी हो। गफ। ३ दृढ़। मजबूत। ४. भारी। वजनी। ५ सुस्त। आलसी। ६ (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७ कृपण। कजूस।

ठसक—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] १ गर्वीली चेष्टा। नखरा। ऐंठ। अकड़। २ दर्प। शान। उ०—कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की।—भूषण०।

ठसकदार—वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १ घमडी। अभिमानी। २ शानदार। तड़क भड़कवाला। ऐंठ अकड़वाला।

ठसका—सज्ञा पुं० [अनु०] १ सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। २. ठोकर। धक्का।

ठसाठस—क्रि० वि० [हिं० ठस] १ ठूसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच। भरपूर।

ठस्सा—सज्ञा पुं० [देश०] १ अभिमानपूर्ण हाव भाव। ठसक। ऐंठ। अकड़। २ घमड। अहकार। ३ ठाटबाट। शान।

ठहना—क्रि० अ० [अनु०] १. घोड़ों का हिनहिनाना। २ घनघनाना। घटे का बजना।

† क्रि० अ० [स० सस्था] बनाना। सँवारना।

(पु) क्रि० स० बचाना। रक्षा करना।

ठहर†—सज्ञा पु० [स० स्थल] १ स्थान। जगह। २ रसोई का स्थान। चौका। लिपाई पोताई।

ठहरना—क्रि० अ० [स० स्थैर्य] १ चलना बद करना। रुकना। थमना। २ डेरा डालना। टिकना। ३ एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना।

मुहा०—मन ठहरना = चित्त की आकुलता दूर होना।

४ नीचे न गिरना। अड़ा रहना, स्थित रहना। ५. नष्ट न होना। बना रहना। ६ कुछ दिन काम देने लायक रहना। चलना। ७ घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८. धीरज रखना। ९ प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १० निश्चित होना। पक्का होना। ११ गर्भ रहना।

मुहा०—किसी बात का ठहरना = किसी बात का सकल्प होना। ठहरा = है, जैसे, वह अपने सबधी ठहरे।

ठहराई—सज्ञा स्त्री० [हिं०√ठहर+आई (प्रत्य०)] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ कब्जा। अधिकार।

ठहराना—क्रि० स० [हिं० ठहरना का स० रूप] १ चलने से रोकना। गति बद करना। २ डेरा देना। टिकाना। ३ अड़ाना। टिकाना। ४ इधर उधर न जाने देना। स्थिर करना। ५ किसी होते हुए काम को रोकना। ६ पक्का करना। तै करना।

ठहराव—सज्ञा पु० [हिं०√ठहर+आव (प्रत्य०)] १ ठहरने का भाव। स्थिरता २ निश्चय। निर्धारण।

ठहरौनी—सज्ञा स्त्री० [हिं०√ठहर+औनी (प्रत्य०)] विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन देन का करार।

ठहाका†—सज्ञा पु० [अनु०] जोर की हँसी। अट्टहास।

ठहियाँ†—सज्ञा स्त्री० दे० "ठाँव"।

ठा—सज्ञा स्त्री०, पु० दे० "ठाँव"।

ठाँई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठाँव] १ स्थान। जगह। २ तई। प्रति। ३ समीप। पास। निकट।

ठाँउँ—सज्ञा पुं० स्त्री० दे० "ठाँयँ"।

ठाँठ—वि० [अनु० ठन ठन] १ जो सूखकर बिना रस का हो गया हो। नीरस। २ (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।

ठायँ—सज्ञा पु०, स्त्री० [स० स्थान] १. स्थान। जगह। समीप। निकट। पास।

सज्ञा पु० [अनु०] बदूक छूटने का शब्द।

ठायँ ठायँ—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ बदूक छूटने का शब्द। † २ झगड़ा।

ठाँव—सज्ञा पु०, स्त्री० [स० स्थान, प्रा० ठाम, अप० ठाउँ] स्थान। जगह। ठिकाना।

मुहा०—ठावँ कुठावँ = (१) हर जगह। अच्छी या बुरी किसी भी जगह। सब जगह। (२) अवसर का विचार न करके। (३) उचित या अनुचित समझे बिना। (४) स्थान और समय के औचित्य और अनौचित्य का ध्यान न रखकर।

ठाँसना—क्रि० स० [सं० स्थास्नु] १ जोर से घुसाना या भरना। २ रोकना। मना करना।

क्रि० अ० ठन ठन शब्द के साथ खाँसना।

ठाकुर—सज्ञा पुं० [स० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १ देवता। देवमूर्ति। २. ईश्वर। भगवान्। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ किसी प्रदेश का अधिपति। नायक। सरदार। ५ जमींदार। ६ क्षत्रियों की उपाधि। ७ मालिक। स्वामी। ८ नाइयों की उपाधि। ९ बगाली ब्राह्मणों की उपाधि।

ठाकुरद्वारा—सज्ञा पु० [हिं० ठाकुर+द्वार] मदिर। देवालय। देवस्थान।

ठाकुरबाड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+बाड़ी] देवालय। मदिर।

ठाकुरसेवा—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+स० सेवा] १ देवता का पूजन। २. मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई सपत्ति।

ठाकुरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १ स्वामित्व। आधिपत्य। शासन। २ दे० "ठकुराई"।

ठाट—सज्ञा पुं० [सं० स्थातृ] १ लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। २ मूल अंगों की योजना जिनके आधार पर शेष रचना होती है। ढाँचा। ढड्ढा। पजर। ३ वेशविन्यास। शृगार। सजावट।

क्रि० प्र० ठाट ठटना=ठाट बनाना। सजना।

मुहा०—ठाट बदलना=(१) वेश बदलना। (२) झूठमूठ अधिकार या बड़प्पन जताना। रग बाँधना।

४. आडंबर। ऊपरी तड़क भड़क। दिखावट। ५ ढग। शैली। प्रकार। तर्ज। ६ आयोजन। तैयारी। ७ सामान। सामग्री। ८ युक्ति। ढग। उपाय।

संज्ञा पु० [हिं० ठाट] [स्त्री० ठाटी] १ समूह। झुंड। †२ बहुतायत। अधिकता।

ठाटना(पु)†—क्रि० स० [हिं० ठाट] १ निर्मित करना। रचना। बनाना। उ०—महतारी को कह्यो न मानत कपट चतुरई ठाटी।—सूर०। २ अनुष्ठान या आयोजन करना। ठानना। ३ सजाना। सँवारना। खपरैल के नीचे रखे जानेवाले ठट्टर को बाँधना।

ठाटबाट—संज्ञा पु० [हिं० ठाट] १ सजावट। सजधज। २ तड़क भड़क। आडंबर।

ठाटर—संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १ ठाट। टट्टर। टट्टी। २ ठठरी। पजर। ३ ढाँचा। ४ कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ५ ठाटबाट। बनाव। सिंगार। सजावट। खपरैल के नीचे की टट्टी।

ठाटी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठट। समूह।

ठाठ—संज्ञा पुं० दे० "ठाट"।

ठाढ़ा†(पु)—वि० [पु० स्थातृ] १ खड़ा। दंडायमान। २. समूचा। साबित। ३ उत्पन्न। पैदा।

मुहा०—ठाढ़ा देना=ठहराना। ठिकाना।

वि० हट्टा कट्टा। हृष्ट पुष्ट।

ठाढ़ेश्वरी—संज्ञा पु० [हिं० ठाढ़ा+ईश्वरी] एक प्रकार के साधु जो दिन रात खड़े ही रहते हैं।

ठादर†—संज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा। मुठभेड़। उ०—देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्र सों ठादर।—सूर०।

ठान—संज्ञा स्त्री० [सं० अनुष्ठान] १ कार्य का आयोजन। काम का छिड़ना। अनुष्ठान। २ छेड़ा हुआ काम। ३ दृढ़ निश्चय। पक्का इरादा। ४ अदाज। चेष्टा। मुद्रा। उ०—ठान सों लागी चलै दुति दूनी बढ़ी मुख की सुषमा सरसान सों।—रससारांश।

ठानना†—क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ (कार्य) तत्परता के साथ आरंभ करना। अनुष्ठित करना। छेड़ना। २ पक्का करना। ठहराना।

ठाना†(पु)—क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ ठानना। २ निश्चित करना। पक्का करना। ३ स्थापित करना। रखना।

ठाम†(पु)—संज्ञा पु०, स्त्री० [स० स्थामन्] १ स्थान। जगह। २ सचालन का ढग। ठवनि। मुद्रा।

ठार—संज्ञा पुं० [स० स्तब्ध प्रा० ठड्ढ] १ गहरा जाड़ा। गहरी सरदी। २ पाला। हिम।

ठाला—संज्ञा पु० [हिं० निठल्ला] १ रोजगार का न रहना। बेकारी। २ आमदनी का न होना।

वि० जिसे कुछ कामधंधा न हो। निठल्ला।

ठाली—वि० [हिं० निठल्ला] जिसे कुछ काम धंधा न हो। निठल्ला। बेकाम। खाली। उ०—क्यों हूँ कछू कारज उठाइ लेति मेरो घरी, पहर कौं अलीतौ हौं ठाली होन पावती।—शृंगार०।

ठावना(पु)—क्रि० स० दे० "ठाना"।

ठाहर†—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १ स्थान। जगह। २ रहने या टिकने का स्थान। डेरा।

ठिगना—वि० [हिं० हेठ+अग] [स्त्री० ठिंगनी] छोटे डील का। नाटा।

ठिकठैन(पु)—सं० पुं० [हिं० ठीक+ठयना] ठाटबाट। उ०—आज कछू औरै भए, छए नए ठिकठैन। चित के हित के चुगल ए नित के होहिं न नैन।—विहारी०।

ठिकना†—क्रि० अ० दे० "ठहरना"।

ठिकरा†—संज्ञा पु० दे० "ठीकरा"।

ठिकाना—संज्ञा पुं० [हिं० टिकान] १ स्थान। जगह। ठौर। २ रहने या ठहरने की जगह। निवासस्थान। ३ निर्वाह या आश्रय का स्थान।

मुहा०—ठिकाने आना=(१) अपने स्थान पर पहुँचना। (२) बहुत सोच विचार के उपरांत यथार्थ बात करना या समझना। ठिकाने की बात=(१) ठीक या प्रामाणिक बात। (२) समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना=(१) ठीक जगह पर पहुँचाना। (२) नष्ट कर देना। न रहने देना। (३) मार डालना।

४ निश्चित अस्तित्व। दृढ़ स्थिति। स्थिरता। ठहराव। ५, प्रबंध। आयोजन। बंदोबस्त। ६ पारावार। अंत। हद। ७ (कुछ रियासतों में) जागीर।

†क्रि० स० [हिं० ठिकना का स० रूप] १ ठहराना। २ अपने पास रखना (बाजारू)।

ठिकानेदार—संज्ञा पु० [हिं० ठिकाना+फा० दार] वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना (जागीर) मिला हो।

ठिठकना—क्रि० अ० [सं० स्थित ?] १. चलते चलते एकबारगी रुक जाना। २ स्तंभित होना। ठक रह जाना।

ठिठरना—क्रि० अ० [हिं० ठिरना] सरदी मे ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिठुरना†—क्रि० अ० दे० "ठिठरना"।

ठिनकना—क्रि० अ० [अनु०] बच्चों का बीच में रुक रुककर रोना।

ठिर—संज्ञा स्त्री० [स० स्तब्ध, प्रा० ठड्ढ] गहरी सरदी।

ठिरना—क्रि० स० [हिं० ठिर] सरदी से ठिठुरना।

क्रि० अ० बहुत जाड़ा पड़ना।

ठिलना—क्रि० अ० [हिं० ठेलना] १ ठेला जाना। ढकेला जाना। २ बलपूर्वक बढ़ना। घुसना। धँसना।

ठिलाठिल†—क्रि० वि० [हिं०√ठिल] एक पर एक गिरते हुए। धक्कमधक्का करते हुए।

ठिलिया—संज्ञा स्त्री० [स० स्थाली] छोटा घड़ा। गगरी।

ठिलुआ—वि० [हिं० निठल्ला] निठल्ला। निकम्मा।

ठिल्ला†—संज्ञा पुं० [हिं० ठिलिया] [स्त्री० अल्पा० ठिलिया, ठिल्ली] गगरी। घड़ा।

ठिहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ठहर] ठहराव। निश्चय। इकरार।

ठीक—वि० [हिं० ठिकाना ?] १ जैसा हो, वैसा। सच। यथार्थ। तात्विक। यथातथ्य। २ प्रामाणिक। ३ उपयुक्त। उचित। मुनासिब। योग्य। ४. शुद्ध। सही। ५ दुरुस्त। अच्छा। ६ जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ७ सीधा। सुष्ठु। ८ जिसमें कुछ फर्क न पड़े। निर्दिष्ट। ९ ठहराया हुआ। निश्चित। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे। उचित रीति से।

संज्ञा पुं० १ पक्की बात। निश्चय। ठिकाना।

मुहा०—ठीक देना=मन में पक्का करना।

२. स्थिर प्रबंध। पक्का आयोजन। ठहराव। ३. जोड़। योग।

ठीकठाक—संज्ञा पुं० [हिं० ठीक] १ निश्चित प्रबंध। बंदोबस्त। आयोजन। २ निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

वि० अच्छी तरह दुरुस्त। प्रस्तुत।

ठीकरा—संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा] [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] १. मिट्टी के बरतन का छोटा फूटा टुकड़ा। सिटकी। २ पुराना या टूटाफूटा बरतन। ३. भीख माँगने का बरतन। भिक्षापात्र।

ठीकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठीकरा] १ मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। २ तुच्छ वस्तु।

ठीका—संज्ञा पुं० [हिं० ठीक] १. कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। २ आय-साधन को कुछ काल के लिये इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके अपने लिये निर्धारित अंश निकालकर बराबर मालिक को देता जाय। इजारा। पट्टा।

ठीकेदार—संज्ञा पुं० [हिं० ठीका+फा० दार] ठीका लेनेवाला।

ठीलना—क्रि० स० दे० "ठेलना"। उ०—मैं तो भूलि ज्ञान की आयो गयउ तुम्हारे ठीले।—सूर०।

ठीवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ष्ठीवन] थूक। खखार।

ठीहँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] घोड़ों की हिनहिनाहट।

ठीहा—संज्ञा पुं० [सं०√स्था] जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का वह कुंदा जिसपर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. बैठने के लिये कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान। गद्दी। ४. हद। सीमा।

ठुंठ—संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु, प्रा० ठुठ] १. सूखा हुआ पेड़। २. कटे हुए हाथवाला जीव। लूला।

ठुकना—क्रि० अ० [अनु०] १. ताड़ित होना। ठोका जाना। पिटना। २ धँसना। गड़ना। ३. मार खाना। मारा जाना। ४ हानि होना। नुकसान होना। ५. पैर में बेड़ी पड़ना। कैद होना। ६. ऊपर आना या आ पड़ना। जिम्मे होना। लगना; जैसे—जुर्माना ठुकना।

ठुकराना—क्रि० स० [हिं० ठोकर से ना० धा०] १. ठोकर मारना। पैर के पंजे से मारना। जूते के अग्र भाग से धक्का देना। २. तुच्छ समझकर दूर हटाना। ३. तिरस्कार करना।

ठुकवाना—क्रि० स० [हिं० ठोकना का प्रे० रूप] ठोकने का काम कराना। पिटवाना।

ठुड्डी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुड] चेहरे में होंठ के नीचे का भाग। चिबुक। ठोढ़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ठड़ी] वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठोढ़ी। ठुर्री।

ठुनकना—क्रि० अ० (अनु०) १ बच्चों का रह रहकर रोने का सा शब्द निकालना। २. रोने का नखरा करना। ३ किसी वस्तु के लिये रह रहकर रोना (बच्चों का)।

ठुमक—वि० [अनु०] जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं। ठसक भरी (चाल)।

ठुमकना—क्रि० अ० [अनु०] १ बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए या कूदते हुए चलना। २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजें।

ठुमका—वि० [अनु०] नाटा। ठिगना।

ठुमकी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठिठक। रुकावट। २ छोटी खरी पूरी।

वि० स्त्री० नाटी। छोटे डील की।

ठुमरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।

ठुर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठड़ा=खड़ा] वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।

ठुसना—क्रि० अ० [हिं० ठूँसना] कस कर भरा जाना।

ठुसाना—क्रि० स० [हिं० ठूसना का प्रे० रूप] १ कसकर भरवाना। २ पेट भर खिलाना (अशिष्ट)।

ठूँग—संज्ञा स्त्री० [सं० तुड] १. चोंच। ठोर। २ चोंच से मारने की क्रिया।

ठूँठ—संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु, प्रा० ठुठ] १ वह पेड़ जिसकी डाल, पत्तियाँ आदि कट गई हों। सूखा पेड़। २. कटा हुआ हाथ। ठुंठ।

ठूँठा—वि० [सं० स्थाणु] १. बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। सूखा (पेड़)। २. बिना हाथ का। लूला।

ठूँसना—क्रि० स० [हिं० ठस] १ खूब कसकर भरना। २. दबा दबाकर घुसाना। ३ बहुत अधिक खाना (व्यंग्य)।

ठेंगना—वि० [हिं० हेठ+अंग] [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का। ठिगना।

ठेंगा—संज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १. अँगूठा। ठोसा। २ सोंटा। डंडा।

मुहा०—ठेंगा दिखाना=धोखा देना। विफल करना।

ठेंठी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ कान की मैल। २ मूँदने के लिये लगाई हुई रुई आदि की डाट। ३. डाट। काग।

ठेंपी—संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।

ठेक—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] १ टेक। चाँड़। २ पच्चड़। ३ पेंदा। तल। ४ घोड़ों की एक चाल। ५ छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना—क्रि० स० [हिं० टिकना, टेक] १ सहारा लेना। आश्रय लेना। टेकना। २ टिकना। ठहरना। रहना।

ठेका—संज्ञा पुं० [हिं० टेक] १. सहारे की वस्तु। ठेक। २ ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३ तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय। ४ तबले में बायाँ। डुग्गी। ५ ठोकर। धक्का।

संज्ञा पुं० दे० "ठीका"।

ठेकाई—संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़ों की छपाई में काले हाशिए की छपाई।

ठेकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] टेक। सहारा।

ठेगना(पु)—क्रि० स० [हिं० टेकना] १ टेकना। सहारा लेना। २ रोकना। मना करना।

ठेघा—संज्ञा पुं० [हिं० टेक] टेक। चाँड़। टिकाव। ठहराव। उ०—विरह-बजागि बीच को ठेघा? धूम सो उठा साम भए मेघा।—पदमावत।

ठेठ—वि० [देश०] १ निपट। निरा। बिलकुल। २ जिसमें कुछ मेलजोल न हो। खालिस। ३ निर्मल। निर्लिप्त। ४ आरंभ। शुरू।

संज्ञा स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने पढ़ने की शिष्ट भाषा के शब्दों का मेल न हो। सीधीसादी बोली।

ठेपी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बोतल की डाट। काग।

ठेलना—क्रि० स० [हिं० टलना ?] धक्का देकर आगे बढ़ाना । रेलना । ढकेलना ।

ठेला—सज्ञा पुं० [हिं०√ठेल] १. धक्का । आघात । टक्कर । २. एक प्रकार की सामान ढोने की गाड़ी जिसे कुछ आदमी हाथों से ठेल या ढकेलकर चलाते हैं । ३. भीड़-भाड़ । धक्कमधक्का ।

ठेलाठेल—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठेलना] बड़ी भीड़ । धक्कमधक्का । आदमियों का एक दूसरे से रगड़ खाते हुए आगे बढ़ना ।

ठेलुवा—सज्ञा पुं० दे० "ठलुआ" ।

ठेस—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] आघात । चोट ।

ठैन†(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० स्थान] जगह । स्थान । उ०—क्रीड़त सघन कुंज वृंदावन बसीवट जमुना की ठैन । —सूर० ।

ठोंक—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठोंकना] १ ठोंकने की क्रिया या भाव । प्रहार । आघात । २ आखेट में हाँका करनेवालों का शिकार को किसी सीमित क्षेत्र में घेर रखने के लिये चारों ओर ऐसे छिपे व्यक्ति बैठाना जो जानवर को घेरा तोड़कर भागता देखकर पत्थर आदि से किसी वृक्ष या कड़ी वस्तु को ठोंकते हैं जिससे डरकर वह पशु सीधा मचान की ओर लौट जाता है । रोक ।

ठोंकना—क्रि० स० [अनु० ठकठक] १. जोर से चोट मारना । प्रहार करना । पीटना । २ मारना पीटना । ३ चोट लगाकर धँसाना । गाड़ना । ४ (नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना । दायर करना । ५ काठ में डालना । बेड़ियों से जकड़ना । ६ दंड, जुर्माना आदि करना । ७ हथेली से आघात पहुँचाना । थपथपाना । हाथ से मारकर बजाना ।

मुहा०—ठोंकना बजाना = जाँचना । परखना । ठोंक बजाकर = (१) अच्छी तरह देख भालकर । जाँच पड़ताल करके । (२) सबको सूचित करके । घोषित करके । किसी से भी न छिपाकर । सबको बताकर ।

ठोंग—सज्ञा स्त्री० [सं० तुड] १. चोंच या उसकी मार । २ उँगली की ठोकर ।

ठोंगा—संज्ञा पु० [देश०] कागज का बना हुआ एक थैला जिसमें व्यापारी ग्राहकों को सामान देते हैं ।

ठो†—अव्य० [हिं० ठौर] एक शब्द जो सख्यावाचक शब्दों के आगे लगाया जाता है । सख्या । अदद (पूरबी) ।

ठोकर—सज्ञा स्त्री० [हिं० ठोकना] १ आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगे । ठेस ।

मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाना = (१) किसी भूल के कारण दु ख सहना । (२) धोखे में आना । चूक जाना । (३) दुर्गति सहना । कष्ट सहना । ठोकर लेना = ठोकर खाना ।

२ वह पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो । ३. वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पंजे से किया जाय । ४. कड़ा आघात । धक्का । ५ जूते का अगला भाग ।

ठोठरा†—वि० [हिं० ठूँठ] खाली । पोपला ।

ठोड़ी—सज्ञा स्त्री० [स० तुड] होंठ के नीचे का गोलाई लिए उभरा भाग । ठुड्डी । चिबुक । दाढ़ी ।

ठोढ़ी—सज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी" ।

ठोर—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पकवान ।

† संज्ञा पुं० [स० तुड] चोंच । चचु ।

ठोली—सज्ञा स्त्री० दे० "ठठोली" ।—(मुख्यत. "बोली" के बाद)

सज्ञा स्त्री० [देश०] दुश्चरित्र या रखेली स्त्री ।

ठोस—वि० [हिं० ठस] १ जो पोला या खोखला न हो । २ दृढ । मजबूत ।

सज्ञा पु० [देश०] कुढ़न । डाह । उ०—इक हरि के दरसन बिनु मरियत अरु कुबजा के ठोसनि । —सूर ।

ठोसा—सज्ञा पुं० दे० "ठेंगा" ।

ठोहना(पु)†—क्रि० स० [हिं० ढूँढ़ना] पता लगाना । खोजना ।

ठौनि(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "ठवनि" ।

ठौर—सज्ञा पु० [हिं० ठाँव] १ जगह । स्थान ।

मुहा०—ठौर कुठौर = (१) बुरे ठिकाने । अनुपयुक्त स्थान पर । (२) बेमौका । बिना अवसर । ठौर न आना = समीप न आना । ठौर रखना = मार डालना । ठौर रहना = (१) जहाँ का तहाँ पड़ रहना । (२) मर जाना ।

२ मौका । अवसर ।

ड

ड—हिंदी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है ।

डंक—सज्ञा पुं० [स० दश] १ बिच्छू, भिड, मधुमक्खी आदि कीड़ों में पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं । २ डंक मारा हुआ स्थान । ३. कलम की जीभ । निब ।

डंकना—क्रि० अ० [अनु०] भयानक शब्द करना । गरजना ।

डंका—सज्ञा पुं० [सं० ढक्का] एक प्रकार का नगाड़ा ।

मुहा०—डंके की चोट कहना = खुल्लमखुल्ला कहना । सबको सुनाकर कहना ।

डंकिनी—सज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी" ।

डंकिनी बदोबस्त—सज्ञा पुं० [अं० डंकन (व्यक्ति का नाम) + ई (प्रत्य०)+ बदोबस्त] ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से नियुक्त भारत के द्वितीय गवर्नर जेनरल लार्ड कार्नवालिस के निर्देश पर डंकन साहब द्वारा निष्पन्न उत्तर भारत में बंगाल से उत्तर प्रदेश के मिरजापुर जिले के दक्षिणी भाग तक तथा दक्षिण भारत में फैले तत्कालीन कंपनी के शासन के अधीन भारत के भूभाग में खेत से वसूल होनेवाले राजस्व का वह सनातन विधान या बंदोबस्त जो बाद में बढ़ाया या घटाया न जा सके । (अं० परमानेंट सेट्लमेंट)

डँकौरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० डंक+औरी] भिड़ । बर्रे । ततैया । हड्डा ।

डंगर—सज्ञा पुं० [देश०] १ चौपाया । †२ दुबला पतला, क्षीणकाय या निर्बल व्यक्ति ।

डँगरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० डँगरा] लंबी ककड़ी ।

सज्ञा स्त्री० [हिं० डाँगर] चुड़ैल । डाइन ।

डँगवारा—संज्ञा पुं० [हिं० डंगर] किसानों की पारस्परिक हल बैल आदि की सहायता। जिता।

डेंगू ज्वर—संज्ञा पुं० [अं० डेंगू] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डँटैया—संज्ञा पुं० [हिं० डाँट+ऐया (प्रत्य०)] डाँटनेवाला। घुड़कनेवाला। धमकानेवाला। उ०—साँसति घोर पुकारत आरत, कौन सुनै चहुँ ओर डटैया।—कविता०।

डंठा—संज्ञा पुं० दे० "डंडा"।

डंठल—संज्ञा पुं० [सं० दंड] छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० दंड] टठल।

डंड—संज्ञा पुं० [सं० दंड] १ डंडा। सोंटा। २ बाहुदंट। बाँह। ३ दोनों हाथों और पैरों के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक भारतीय कसरत।

मुहा०—डंड पेलना=खूब दंड करना। ४. दंड। सजा। ५ अर्थदंड। जुरमाना। ६ घाटा। हानि। नुकसान। ७ घड़ी। दंड। उ०—चारिहु-चक्र फिरौं मैं, डँड न रहौं थिर मोर। होइके भसम पौन सँग (धावौं) जहाँ परान-अधार।—पद्मावत।

डंडपेल—संज्ञा पुं० [हिं० डंड+पेलना] १ कसरती। पहलवान। २ बलवान् (आदमी)।

डंडवत—संज्ञा स्त्री० दे० "दंडवत"।

डँड़वार, डँड़वारा—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+वार] [स्त्री० अल्पा० डँड़वारी] वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिये उठाई जाय।

डँड़वी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० दंड] दंड या राजकर देनेवाला। करद।

डंडा—संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. लकड़ी का सीधा लंबा टुकड़ा जिसका मुख्य प्रयोग मारने या बचाने में होता है। २ मोटी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३ चारदीवारी। डाँड़। डँड़वारा।

डंडाकरन(पु)—संज्ञा पु० दे० "दंडकवन"।

डंडा डोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डंडा+डोली] लड़कों का खेल।

डँड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँड़ी=रेखा] १ वह साड़ी जिसके बीच में गोट टाँककर लकीरें बनी हों। छड़ीदार साड़ी। उ०—नखसिख सजि सिंगार ब्रज युवती तन डँड़िया कुसुमे बोरी—सूर०। २ गेहूँ के पौधे की सींक जिसमें बाल रहती है।

संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+इया (प्रत्य०)] कर उगाहनेवाला।

डंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डंडा] १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २ हाथ में रहनेवाली वस्तु का वह लंबा पतला भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३ तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़े बाँधे जाते हैं। डाँडी। ४. लंबा डंठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ५ आरसी नाम के गहने का वह छल्ला जो उँगली में पड़ा रहता है। ६ झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी। ७ दंड धारण करनेवाला संन्यासी। दंडी।

(पु) [सं० द्वंद्व] चुगलखोर।

मुहा०—डंडी मारना=कम सौदा तौलना।

डंडीमार—वि० [हिं० डंडी+√मार] कम सौदा तौलनेवाला।

डँडूल—संज्ञा स्त्री० [प्रा०√डंडुल्ल=घूमना, चक्कर लगाना] १ वात्याचक्र। बवंडर। तूफान। आँधी। २ द्वंद्व। उ०—कर मेती माला जपै हिरदै वहै डँडूल। पग तौ पाला मैं गिल्या, भाजण लागी सूल।—कबीर०।

डँडोरना—क्रि० स० [प्रा०√ढुंढुल्ल] ढूँढना। हिलोर कर ढूँढना। उलट पलटकर खोजना। उ०—अब कै जब हम दरस पावैं देहिं लाख करोर। हरि सो हीरा खोइकै हम रहीं समुद डँडोर।—सूर०

डंबर—संज्ञा पुं० [सं०] १ आडंबर। ढकोसला। २ विस्तार। ३ एक प्रकार का चँदवा। चंदरछत। ४ शोभा। छटा। सजावट। बनावट। उ०—तापर सँवारयो सेत अंबर को डंबर, सिधारी स्याम-मनिधि निहारी काहू न जनी।—शृंगार०।

यौ०—मेघडंबर=(१) बड़ा शामियाना। (२) दलबादल। अंबर-डंबर=वह लाली जो संध्या के समय आकाश में दिखाई पड़ती है।

डँवरु, डँवरू—संज्ञा पु० दे० "डमरू"। उ०—चँवर घंट औ डँवरू हाथा। गौरी पारवती धनि साथा।—पद्मावत।

डँवरुआ—संज्ञा पुं० [सं० डमरु] वात का एक रोग। गठिया।

डवाँडोल—वि० दे० "डाँवाडोल"।

डंस—संज्ञा पुं० [सं० दंश] १ एक प्रकार का बड़ा जंगली मच्छर। डाँस। २ वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।

डक—संज्ञा पुं० [अं० डॉक] १. एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २ एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ३. बंदरगाह का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरता है।

डकरना, डकराना—क्रि० अ० [अनु०] साँड़, बैल या भैंसे का बोलना।

डकार—संज्ञा पुं० [अनु०] १. भोजन करने के पश्चात् पेट में भरी वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार।

मुहा०—डकार न लेना=किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।

२ बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।

डकारना—क्रि० अ० [हिं० डकार] १. पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। २ किसी का माल ले लेना। हजम करना। पचा जाना। ३ बाघ, सिंह आदि का गरजना। दहाड़ना।

डकैत—संज्ञा पुं० [हिं० डाका+ऐत (प्रत्य०)] डाका मारनेवाला। डाकू। लुटेरा।

डकैती—संज्ञा स्त्री० [हिं० डकैत] डाका मारने का काम। छापा।

डग—संज्ञा पुं० [हिं०√डाँक] १. एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम।

मुहा०—डग देना=चलने में आगे की ओर पैर रखना। डग भरना या मारना=कदम बढ़ाना। लंबे पैर बढ़ाना।

२ साधारणत चलने में पड़े हुए एक के बाद दूसरे पैर के बीच की दूरी।

डगडगाना—क्रि० अ० [अनु०] इधर उधर हिलना। डगमगाना। काँपना। अस्थिर रहना। चंचल होना।

डगडोलना—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डगडोर—वि० दे० "डाँवाँडोल"।

डगण—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना(पु)—क्रि० अ० [हिं० डग] १ हिलना। ठसकना। खिसकना। जगह छोड़ना। २ चूकना। भूल करना। डिगना। ३ डगमगाना। लटखड़ाना।

डगमग—वि० [अनु०] १ लड़खड़ाता हुआ। २ विचलित। अस्थिर।

डगमगाना—क्रि० अ० [हिं० डगमग] १ डगमग होना। कभी इस बल, कभी उस बल झुकना। थरथराना। लड़खड़ाना। २ विचलित होना। दृढ़ न रहना। अनिश्चय रखना।

क्रि० स० किसी को डगमग होने में प्रवृत्त करना।

डगर—संज्ञा स्त्री० [हिं० डग] मार्ग। रास्ता। उ०—सेरन कैसी पौरुष बातें किमि करि कहहु डगर बिच बरनी। —छंदार्णव।

डगरना⑤†—क्रि० अ० [हिं० डगर] १ चलना। रास्ता लेना। २. लुढ़कना।

डगरा†—संज्ञा पुं० [हिं० डगर] रास्ता। मार्ग।

संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की पतली फट्टियों का बना छिछला बर्तन। डलरा। छाबड़ा।

डगा†—संज्ञा पुं० [हिं० डागा] नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब। डागा।

डगाना—क्रि० स० दे० "डिगाना"।

डटना—क्रि० अ० [हिं० ठाढ़] १ जमकर खड़ा होना। अड़ना। ठहरा रहना। २ लग जाना। छू जाना। ३ दृढ़ता से प्रवृत्त होना। ४. शोभित होना। उदा०—लटकि लटकि लटकतु चलतु डटतु मुकुट की छाँह। चटक भरयौ नटु मिलि गयौ अटक भटक वट माँह॥ —बिहारी०।

डटाना—क्रि० स० [हिं० डटना का स० रूप] १ एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना। सटाना। भिड़ाना। २ जोर से भिड़ाना। ३ जमाना। खड़ा करना।

डट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० डाट] १ हुक्के का नैचा। २ टाट। काग। ३ बड़ी मेख।

डढ़ार⑤†—वि० [हिं० डाढ़ी+वार (प्रत्य०)] १ बड़ी दाढ़ीवाला। २ वीर। बहादुर। ३ साहसी।

डढ़न⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] जलन।

डढ़ना⑤—क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलना।

डढ़ार, डढ़ारा—वि० [हिं० डाट+वार (प्रत्य०)] १ वह जिसके डाढे हों। २ वह जिसके दाढ़ी हो।

डढ़ियल—वि० [हिं० दाढ़ी] दाढ़ीवाला। जिसके बड़ी दाढ़ी हो।

डड्ढना⑤—क्रि० स० [हिं० डढ़न] जलाना।

डढ्योरा⑤—वि० [हिं० डड्ढार] दाढ़ीवाला।

डपट—संज्ञा स्त्री० [सं० दर्प] डाँट। झिड़की। घुड़की।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रपट] घोड़े की तेज चाल।

डपटना—क्रि० स० [हिं० डपट] क्रोध में जोर से बोलना। डाँटना।

क्रि० स० [हिं० रपटना] तेजी से जाना।

डपोरसंख—संज्ञा पुं० [सं० √डप्=इकट्ठा करना√+शंख] १ जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके। डींग मारनेवाला। लंबी चौड़ी हाँकनेवाला। २ बड़े डीलडौल का, पर मूर्ख।

डफ—संज्ञा पुं० [अ० दफ] १. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा जो प्राय होली में बजाया जाता है। डफला। उ०—बाजहिं मृदंग डफ ताल बेनु। —गीता०। २ लावनीबाजों का बाजा। चंग।

डफला—संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

डफली—संज्ञा स्त्री० [अ० दफ] छोटा डफ। खँजरी।

मुहा०—अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग=जितने लोग, उतने मत।

ड़फार†—संज्ञा स्त्री० [हिं० डफ] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिग्घाड़।

डफारना†—क्रि० अ० [हिं० डफार] जोर से रोना या चिल्लाना। दहाड़ मारना। उ०—जाइ बिहंगम समुद डफारा। जरे मच्छ पानी भा खारा।—पद्मावत।

डफालची, डफाली—संज्ञा पुं० [हिं० डफला] डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

डफोरना†—क्रि० अ० [हिं० डफारना] हाँक देना। ललकारना। उ०—तुलसी त्रिकूट चढि कहत डफोरि कै।—कविता०।

डब्ब—संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] जेब। थैला।

डबकना—क्रि० अ० [हिं० टपकना] पीड़ा करना। टपकना। टीस मारना।

डबकौंहाँ—वि० [हिं०√डबक + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० डबकौंहीं] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ।

डबडबाना—क्रि० अ० [हिं०√डबक] आँसू से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।

डबरा—संज्ञा पुं० [सं० दभ्र] [स्त्री० डबरी] १ छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे। कुंड। हौज। पोखरी। २ भूखंड। भूभाग।

डबल—वि० [अं०] १ दोहरा। द्वंद्व। दूना। २ बहुत बड़ा या भारी।

संज्ञा पुं० अँगरेजी जमाने का पैसा।

डबलरोटी—संज्ञा स्त्री० [अं० डबल+हिं० रोटी] पावरोटी। सटाए हुए या खमीरी आटे की फुलाई हुई मोटी रोटी।

डबी⑤—संज्ञा स्त्री० दे० "डब्बी"।

डबोना—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डब्बा—संज्ञा पुं० [सं० डिंब] १. ढकनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेलगाड़ी में की एक गाड़ी।

डब्बू—संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] व्यंजन परोसने का एक प्रकार का कटोरा।

डभकना†—क्रि० अ० [अनु० डभ-डभ] १. पानी में डूबना उतराना। चुभकी लेना। २. आँखों में जल भर आना। आँख डबडबाना।

डभकारी—वि० दे० "डभकौंहाँ"। उ०—लाइ टकी क्यों बिलोकि रही अँसुवानि रुके अखियाँ डभकारी। —रससारांश।

डभकौंहाँ—वि० [हिं०√डभक + औहाँ (प्रत्य०)] अश्रुपूर्ण (नेत्र)।

डभकौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√डभक+औरी (प्रत्य०)] उरद की पीठी की बरी। डुभकी।

डमरू—संज्ञा पुं० [सं० डमरु] १. चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता और दोनों सिरों की ओर बराबर गोलाई लिए चौड़ा होता जाता है। यह बीच में लटकने वाली घुंडी या गाँठ को हिलाकर बजाया जाता है। २ इस आकार की कोई वस्तु। ३ ३२ लघु वर्णों का एक दंडक वृत्त, जैसे—जलज नयन करचरन, हरन अघ सरन सकल, चर अचर, खचर तर। चहत छनक जय लहत, कहत यह हर हर हर, हर हर हर हर हर॥ इसमें ११वें, २२वें और २७वें वर्ण पर यति तथा अंत में विराम होता है।

डमरूमध्य—संज्ञा पुं० [सं० डमरु+मध्य] १ धरती या समुद्र का वह तंग या पतला भाग जो स्थल या जल के दो बड़े खंडों को मिलाता है।

यौ०—जल-डमरूमध्य=जल का वह तंग या पतला भाग जो समुद्र के दो बड़े बड़े भागों को मिलाता है। स्थल-डमरूमध्य=भूमि का वह पतला भाग जो पृथ्वी के दो बड़े हिस्सों को मिलाता है।

डमरूयंत्र—संज्ञा पुं० [सं० डमरु+यंत्र] एक प्रकार का यंत्र या पात्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर आदि उड़ाए जाते हैं।

डयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उड़ान। २. पंख।

डयना—संज्ञा पुं० [सं० डयन] पंख । डैना ।

डर—संज्ञा पुं० [सं० दर] १ वह मनोवेग जो किसी अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है । भय । त्रास । खौफ । २. अनिष्ट की संभावना का अनुमान । आशंका । अंदेशा ।

डरना—क्रि० अ० [हिं० डर] १ अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना । भयभीत होना । २ आशंका करना ।

डरपना†—क्रि० अ० दे० "डरना" । उ०—डरपहिं धीर गहन सुधि आए । —मानस० ।

डरपाना†—क्रि० स० दे० "डराना" । उ०—डरपावै गहि स्वल्प सपेला ।—मानस० ।

डरपोक—वि० [हिं० डर+√पोंक ?] बहुत डरनेवाला । भीरु । कायर ।

डरवाना—क्रि० स० दे० "डराना" ।

डरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "डला" ।

डराबरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "डर" ।

डराना—क्रि० स० [हिं० डरना का स० रूप] डर दिखाना । भयभीत करना ।

डरारी(पु)—वि० [हिं० डर+आरी (प्रत्य०)] डरावनी ।

डरावना—वि० [हिं० डर+आवना (प्रत्य०)] जिससे डर लगे । भयानक । भयंकर ।

डरावा—संज्ञा पुं० [हिं० डर+आवा(प्रत्य०)] १ डराने के लिये कही हुई बात । २ वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिये बँधी रहती और खटखट शब्द करती है । खटखटा । धड़का । ३ रात में जानवरों को डराकर भगाने के लिये खेतों में खड़ा किया जानेवाला ढाँचा या आकार ।

डरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "डाल" ।

संज्ञा पुं० [हिं० टोरिया] टोरिया नाम का सूती कपड़ा । उ०—पेमच्छा डरिया औ चौधारी । साम, सेत, पीयर, हरियारी । —पद्मावत ।

डरीला†—वि० [हिं० डार+ईला (प्रत्य०)] डारवाला । शाखायुक्त । टहनीदार ।

डरैला†—वि० [हिं० डर+ऐला (प्रत्य०)] डरावना ।

डल—संज्ञा पुं० [हिं० डला] टुकड़ा । खंड ।

संज्ञा स्त्री० [सं० तल्ल] झील । काश्मीर की एक झील ।

डलना—क्रि० अ० [हिं० डालना] डाला जाना । पड़ना । छोड़ा जाना ।

डलवाना—क्रि० स० [हिं० 'डालना' का प्रे० रूप] डालने का काम दूसरे से कराना ।

डला—संज्ञा पुं० [सं० दल] [स्त्री० डली] १. टुकड़ा । खंड (नमक, मिसरी आदि का) । २. ढेला ।

संज्ञा पुं० [सं० डलक] [स्त्री० डलिया] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियों से बना हुआ बरतन । टोकरा । दौरा ।

डलिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० डला+इया (प्रत्य०)] छोटा डला या टोकरा । दौरी ।

डली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १ छोटा टुकड़ा (नमक, मिसरी आदि का) । २ छोटा ढेला । ३ सुपारी ।

संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया" ।

डसन—संज्ञा स्त्री० [सं० दशन] डसने की क्रिया, भाव या ढंग ।

डसना—क्रि० स० [सं० दशन] १ विषवाले जंतुओं का दाँत से काटना । उ०—भव भुअंग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हरि लेत ।—दोहा० २ डंक मारना । ३ मच्छरों आदि का सूँड धँसाकर काटना ।

डसाना—क्रि० स० [हिं० डसना का प्रे०रूप] डसने का काम दूसरे से कराना । डसवाना ।

क्रि० स०[सं० दर्भ+आसन] बिछाना । फैलाना । उ०—गुह सँवारि साथरी डसाई । —मानस० । रामकृपा भवनिसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ।—विनय० ॥

डहकना—क्रि० स० [हिं० डाका] १ छल करना । धोखा देना । ठगना । जटना । भक्ति विराग ज्ञान साधन कहि बहु विधि डहकत लोग फिरौं ।—विनय० । २ ललचाकर न देना ।

क्रि० अ० [हिं० दहाड़, धाड़] १ बिलखना । विलाप करना । उ०—कालवदन ते राखि लीनो इंद्र गर्व जे खोइ । गोपिन सब ऊधो आगे डहकि दीनो रोइ । —सूर० । २ दहाड़ मारना । उ०—इक दिन कंस असुर इक प्रेरा । आवा धरि वपु विरषभ केरा । डहकत फिरत उड़ावत छारा । पकरि सींग तुरतै प्रभु मारा ।—विश्रामसागर ।

(पु) क्रि० अ० [देश०] छितराना । फैलाना ।

डहकाना—क्रि० अ० [हिं० डहकना] खोना । गँवाना । नष्ट करना ।

क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ खोना । ठगा जाना । उ०—अजहुँ विषय कहँ जतन करत जद्यपि बहु विधि डहकायो । —विनय० ॥

क्रि० स० १ धोखे से किसी की चीज ले लेना । ठगना । जटना । २ कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना । ललचाना ।

डहडह—वि० दे० "डहडहा" । उ०—लहलह लता डहडह तरु-डारैं गहगह, भयो गगन कै आयौ कौन बरिहै ।—शृंगार० ।

डहडहा—वि० [अनु०] [स्त्री० डहडही] १ जो सूखा या मुरझाया न हो । हरा भरा । ताजा । २ प्रसन्न । आनंदित । ३ तुरत का । ताजा ।

डहडहाट(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० डहडहा] १ हरापन । ताजगी । २ प्रफुल्लता । आनंद ।

डहडहाना—क्रि० अ० [हिं० डहडहा] १ पेड़, पौधे का हराभरा या ताजा होना । उ०—दूर डहकत श्रवन शोभा जलज युग डहडहत ।—सूर० । २ प्रसन्न होना । आनंदित होना ।

डहन—संज्ञा पुं० [सं० डयन] पर । पख ।

संज्ञा पुं० [सं० दहन] जलन ।

डहना—क्रि० अ० [सं० दहन] १ जलना । भस्म होना । २ द्वेष करना । बुरा मानना ।

क्रि० स० १ जलाना । भस्म करना । २. संतप्त करना । दुःख पहुँचाना ।

डहर†—संज्ञा स्त्री० [हिं० डगर] १ रास्ता । मार्ग । पथ । २ आकाशगंगा ।

डहरना—क्रि० अ० [हिं० डहर] चलना ।

डहराना†—क्रि० स० [हिं० डहरना का प्रे० रूप] चलाना । दौड़ना । फिराना । उ०—कोऊ निरखि रही भाल चंदन एक चित लाई । कोऊ निरखि बिथुरी भृकुटि पर नैन डहराई ।—सूर० ।

डहार—संज्ञा पुं० [हिं० डाह] १ डाहने या तंग करनेवाला । २ ईर्ष्या द्वेष । ३ संताप । उ०—कायर क्रूर कुपूत कलि घर घर सहत डहार ।—दोहा० ।

डाँक—संज्ञा स्त्री० [हिं० दमक] ताँबे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर जिसे नगीनों के नीचे बैठाते हैं ।

संज्ञा स्त्री० दे०—"डाक" ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] कै । वमन ।

संज्ञा पुं० १ दे० "टका" । २ दे० "डंक" ।

डाँकना†—क्रि० स० [सं०√तक् ?] १ कूदकर पार करना । फाँदना । २ वमन करना । कै करना ।

डाँग—संज्ञा पुं० [देश०] १ जंगल । २ डंका ।

संज्ञा स्त्री० बड़ा डंडा। लठ।

डाँगर—वि० [देश०] १ गाय, भैंस आदि पशु। चौपाया। २ एक नीच जाति।

वि० १. बहुत दुबला पतला। २ मूर्ख। ३. निर्बल। अशक्त। ४ भाग्यहीन।

डाँट—संज्ञा स्त्री० [सं० दांत=रोका हुआ, शासित] १ घुड़की। डपट। २ झिड़की। फटकार। ३ शासन। ४ दबाव।

डाँटना—क्रि० स० [हिं० डाँट] १ डराने के लिये क्रोधपूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना। २ उच्च स्वर में निषेध करना।

डाँठा—संज्ञा पुं० [सं० दंड] डंठल।

डाँड़—संज्ञा पुं० [सं० दंड] १ सीधी लकड़ी। डंडा। २. गदका। ३ नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. सीधी लकीर। ५ दूर तक गई हुई ऊँची तंग जमीन। ऊँची मेंड़। ६ छोटा भीटा या टीला। ७ सीमा। हद। ८. अर्थदंड। जुरमाना। ९. नुकसान का बदला। हरजाना।

डाँड़ना—क्रि० अ० [हिं० डाँड़] अर्थदंड देना। जुरमाना करना। उ०—केसरी कुमार सो अदंड कैसो डाँड़िगो।—कविता०।

डाँड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़] १ छड़। डंडा। २ गतका। ३ नाव खेने का डाँड़। ४ हद। सीमा। मेंड़।

डाँड़ मेंड़, डाँड़ा मेंड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+मेंड़] १ परस्पर अत्यंत सामीप्य। लगाव। २ अनबन। झगड़ा।

डाँड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँड़] १ लंबी पतली लकड़ी। २ लंबा हत्था या दस्ता। ३ तराजू की डंडी। ४ पतली शाखा। टहनी। ५ हिंडोले में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है। ६ सीधी लकीर। रेखा। ७. लीक। मर्यादा। ८. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। ९ डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की पहाड़ी सवारी। झप्पान।

डाँड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+ई (प्रत्य०)] १. डाँड़ खेनेवाला आदमी। २. दे० "डाँड़ी"।

डाँवरा—संज्ञा पुं० [सं० डिंब ?] [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँवाडोल—वि० [हिं०√डोल] १ एक स्थिति में न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर। उ०—पावक, पवन, पानी, भानु, हिमवान, जम, काल, लोकपाल मेरे डर डाँवाँडोल हैं।—कविता०। २ अव्यवस्थित (चित्त)। संदेह से भरा हुआ (मन)।

डाँस—संज्ञा पुं० [सं० दंश] १ बड़ा मच्छड़। दंश। २ एक प्रकार की मक्खी।

डाइन—संज्ञा स्त्री० [सं० डाकिनी] १. भूतनी। चुड़ैल। २ वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हों। टोनहाई। ३ कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक—संज्ञा पुं० [हिं० डाँकना] १. सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें एक एक टिकान पर बराबर जानवर आदि बदले जाते हों।

मुहा०—डाक बैठाना या लगाना=शीघ्र यात्रा के लिये स्थान स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना।

यौ०—डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े या हरकारे बदले जायँ।

२ चिट्ठी, पत्रपत्रिकाएँ, पारसल, मनीआर्डर, वी०पी० आदि पहुँचाने का सरकारी प्रबंध। ३. चिट्ठी, पत्रपत्रिकाएँ पारसल, बी० पी०, मनीआर्डर आदि का वितरण या बाँटा जाना।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।

संज्ञा पुं० [बँग०] नीलाम की बोली।

डाकखाना—संज्ञा पुं० [हिं० डाक+फा० खाना] वह सरकारी दफ्तर जहाँ चिट्ठी पत्री पत्रपत्रिकाएँ पारसल मनीआर्डर, आदि भेजने और बाँटने की व्यवस्था की जाती है।

डाकगाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डाक+गाड़ी] डाक ले जानेवाली रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है। २ बहुत तेज चलनेवाली रेलगाड़ी।

डाकघर—सं० पुं० दे० "डाकखाना"।

डाकना—क्रि० अ० [हिं० डाक] कै करना।

क्रि० स० [हिं० डाँकना] फाँदना। लाँघना। कूदना।

डाक बँगला—[हिं० डाक+बँगला] वह मकान जो सरकार या किसी विशेष विभाग (जैसे, नहर, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आदि) की ओर से दौरा करनेवाले अफसरों या भ्रमण करनेवाले लोगों के अस्थायी रूप से ठहरने के लिये बना हो।

डाक्टर—संज्ञा पुं० [अं०] १ विश्वविद्यालय से किसी विषय की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करनेवाला विद्वान् या पंडित। २ वह जिसे अँगरेजी (एलोपैथी) चिकित्सा करने की योग्यता और अधिकार प्राप्त हो।

डाक्टरी—संज्ञा स्त्री० [अं० डाक्टर] डाक्टर का काम, पद या पदवी।

वि० डाक्टर संबंधी। डाक्टर का।

डाका—संज्ञा पुं० [हिं० टाकना या सं० दस्यु] माल असबाव जबरदस्ती छीनने के लिये दल बाँधकर धावा। बटमारी।

डाकाजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डाका+फा० जनी] डाका मारने का काम। डकैती। बटमारी।

डाकिन—संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।

डाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पिशाची जो काली के गणों में है। २ डाइन। चुड़ैल।

डाकू—संज्ञा पुं० [हिं० डाका] डाका डालनेवाला। लुटेरा।

डाकोर—संज्ञा पुं० [सं० ठक्कुर] ठाकुर। विष्णु भगवान् (गुजरात)।

डाख—संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

डागल—संज्ञा पुं० [बुंदेलखंडी, डाँगर] पहाड़ी रास्ता। उ०—डागल ऊपरि दौड़णाँ, सुख नींदड़ी न सोइ। पुनै पाये चौंहड़े, ओछी ठौर न खोइ।—कबीर।

डागा—संज्ञा पुं० [सं० दंडक] नगाड़ा बजाने का डंडा। चोब।

डागुर—संज्ञा दे० [देश०] जाटों की एक जाति।

डाट—संज्ञा स्त्री० [सं० दांत=दबाया या रोका हुआ, शासित] १ वह वस्तु जो बोझ को ठहराने या वस्तु को खड़ी रखने के लिये लगाई जाय। टेक। चाँड़। २. छेद बंद करने की वस्तु। ३ बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंठी। काग। गट्टा। ४ मेहराब को रोक रखने के लिये ईंटों आदि की भरती।

संज्ञा पुं० दे० "डाँट"।

डाटना—क्रि० स० [हिं० डाट] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना। भिड़ाकर ठेलना। २ टेकना। चाँड़ लगाना। ३ छेद या मुँह बंद करना। ठेंठी लगाना। ४ कसकर या ठूँसकर भरना। ५ खूब पेट भर खाना। कसकर खाना। उ०—अगनित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे। मनसा करि प्रभुहि अर्पि भोजन को डाटे।—सूर०। ६ ठाट से कपड़ा गहना आदि पहनना। ७ मिलाना। भिड़ाना। ८. दे० "डाँटना।"

डाढ़—संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।

डाढ़ना(पु)—क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना।

डाढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] १. दावानल।

वन की आग । २. आग । ३. ताप । दाह । जलन ।

डाढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डाढ़] १. ओठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग । ठोड़ी । ठुड्डी । चिबुक २. ठुड्डी और कनपटी पर के बाल । दाढ़ी ।

डाबर—संज्ञा पुं० [सं० दभ्र] १ नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे । गड्ढा । २. झील । समुद्र । ३. गड़ही । पोखरी । तलैया । सुरसर सुभग बनज बनचारी । डाबर जोग कि हंसकुमारी ।—मानस० । ४. हाथ धोने का पात्र । चिलमची । ५ मैला (पानी) । उ०—भूमि परत भा डाबर पानी । जिमि जीवहिं माया लपटानी । —मानस ।

डाबा—संज्ञा पुं० दे० "डब्बा" ।

डाभ—संज्ञा पुं० [सं० दर्भ] १ एक प्रकार का पवित्र और मुलायम कुश जो यज्ञादि में काम आता है । २. कुश । ३. आम की मंजरी या बौर । ४ कच्चा नारियल ।

डामर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिवकथित माना जानेवाला तंत्रशास्त्र जिसके योग, शिव, दुर्गा, सारस्वत, ब्राह्म और गांधर्व ६ भेद हैं । २ हलचल । धूम । ३. आडंबर । ठाटबाट । ४. चमत्कार ।

संज्ञा पुं० [देश०] १ ताल वृक्ष का गोंद । राल । २. अलकतरा । ३ कहरुवा नामक गोंद । ४ एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है ।

डामल—संज्ञा स्त्री० [अ० दायमुल हब्स] १ उम्र भर के लिये कैद । २ 'देशनिकाला' का दंड ।

डायँ डायँ—क्रि० वि० [अनु०] व्यर्थ इधर से उधर (घूमना) ।

डायन—संज्ञा स्त्री० [सं० डाकिनी] दे० "डाइन" ।

डायरी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ रोजनामचा । दैनिकी । प्रतिदिन की स्मरणीय बातों की पुस्तिका । २ दैनिक विवरण ।

डारⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "डाल" ।

संज्ञा स्त्री० [?. डलक] डलिया । चंगेर ।

संज्ञा स्त्री० [?] पशुओं या पक्षियों का झुंड ।

डारनाⓅ—क्रि० स० दे० "डालना" ।

डाल—संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] १ पेड़ के धड़ का वह निकला हुआ हिस्सा जिसमें पत्तियाँ और कल्ले होते हैं । शाखा । शाख । २ फानूस जलाने के लिये दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी । ३. तलवार का फल ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १ डलिया । चँगेरी । २ कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है ।

डालना—क्रि० स० [प्रा०√ढाल] १. नीचे गिराना । छोड़ना । फेंकना ।

मुहा०—डाल रखना=(१) रख छोड़ना । (२) रोक रखना । देर लगाना । भुलाना । लटकाना ।

२ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना । छोड़ना ३ रखना या मिलाना । ४ प्रविष्ट करना । घुसाना । ५ खोज खबर न लेना । भुला देना । ६ अंकित करना । चिह्नित करना । ७ फैलाकर रखना । ८ शरीर पर धारण करना । पहनना । ९ जिम्मे करना । भार देना । १०. गर्भपात करना (चौपायों के लिये) । ११ कै करना । उल्टी करना । १२ (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना । १३. लगाना । उपयोग करना । १४. घटित करना । मचाना । १५ बिछाना ।

डाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १ डलिया । चँगेरी । २ फल, फूल मेवे जो डलिया में सजाकर किसी के पास भेंट भेजे जाते हैं । उपहार । भेंट ।

संज्ञा स्त्री० दे० "डाल" ।

डाव—संज्ञा पुं० दे० "दाँव" । उ०—ना गुर मिल्या न सिष भया, लालच खेल्या डाव । दून्यूँ बूड़े धार मैं, चढ़ि पाथर की नाव । —कबीर० ।

डावरा—संज्ञा पुं० [सं० डिंब] लड़का । बेटा । उ०—सोई बाँह गही जो गही समीर डावरे ।—हनु० ।

डावरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डावरा] लड़की । उ०—तिहारे वियोग तें घोस विभावरी बावरी सी भई डावरी डोलै ।—शृंगार० ।

डासन—संज्ञा पुं० [हिं० डाभ+आसन] बिछावन । बिछौना । बिस्तर । उ०—लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । शिश्नोदर पर जमपुर त्रासन ।—मानस० ।

डासना†—क्रि० स० [हिं० डासन] बिछाना । ढालना । फैलाना । उ०—डासत ही गई बीति निसा सब, कबहुँ न नाथ ! नींद भरि सोयो ।—विनय० ।

Ⓟ†—क्रि० स० [हिं० डसना] डसना ।

डासनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डासन] १. चारपाई । २ आसनी ।

डाह—संज्ञा स्त्री० [सं० दाह] जलन । ईर्ष्या । द्वेष ।

डाहना—क्रि० स० [सं० दाहन] जलाना । सताना । तंग करना । उ०—काहे को मोहि डाहन आए रैनि देत सुख वाको । —सूर० ।

डाही—वि० [हिं० डाह+ई (प्रत्य०)] डाह या ईर्ष्या करनेवाला ।

डाहुक—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी ।

डिंगर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोटा आदमी । २ दुष्ट । बदमाश । ३ दास । गुलाम ।

संज्ञा पुं० [देश०] वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँध दिया जाता है ।

डिंगल—वि० [सं० डिंगर] नीच । दूषित ।

संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं ।

डिंड्सी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंडसी" ।

डिंडिम—संज्ञा पुं० [सं०] डुगडुगी । डुग्गी । डमरू ।

डिंब—संज्ञा पुं० [सं०] १ बावेला । भयध्वनि । २ दंगा । लड़ाई । ३ अंडा । ४. फेफड़ा । ५ प्लीहा । पिलही । ६. कीड़े का छोटा बच्चा ।

डिंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा बच्चा । २ मूर्ख ।

†संज्ञा पुं० [सं० दंभ] १ आडंबर । पाखंड । २ अभिमान । घमंड ।

डिक्टेटर—संज्ञा पुं० [अँ०] प्रजा की इच्छाओं की अपेक्षा न रखकर मनमाने ढंग से शासन करनेवाला शासक (प्रायः असामान्य स्थिति या विशेष अवधि के लिये)। विशेषतः किसी प्रजातंत्र को दबाकर या उसके बाद अधिकार प्राप्त करनेवाला शासक । अधिनायक ।

डिगना—क्रि० अ० [सं० टिक] १ हिलना । हटना । खिसकना । २ उचित स्थान या स्थिति से हटना । ३ वचन, मर्यादा, चरित्र, आदि से च्युत होना ।

डिगरी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ विश्व-

विद्यालय की परीक्षा की पदवी। २ अंश। कला। ताप की एक माप।

संज्ञा स्त्री० [अं० डिक्री] दीवानी अदालत का फैसला। न्यायालय का निर्णय।

डिगरीदार—वि० [हिं० डिगरी+फा० दार] वह जिसके पक्ष में डिगरी या फैसला हो।

डिगलाना—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डिगाना—क्रि० स० [हिं० डिगना का स० रूप] १ जगह से टालना। सरकाना। खिसकाना। २ बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना।

डिग्गी—संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] तालाब।

†संज्ञा स्त्री० [देश०] हिम्मत। साहस।

डिजाइन—संज्ञा पुं० [अं०] १ ढंग। तरह। नमूना। तर्ज। २ कल्पित चित्र। ३ बनावट।

डिटेक्टिव—संज्ञा पुं० [अं०] जासूस। रहस्यपूर्ण या छिपी हुई बातों या मनुष्यों का पता लगानेवाला। गुप्तचर।

डिठार, डिठियार†—वि० [सं० दृष्टि, हिं० डीठ=नजर] जिसे सुझाई दे।

डिठौना—संज्ञा पुं० [हिं० डीठ+औना (प्रत्य०)] छोटे बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिये माथे पर लगाया जानेवाला काजल का टीका।

डिढ़—वि० दे० "दृढ़"।

डिढ्या†—संज्ञा स्त्री० [देश०] अत्यंत लालच। लालसा। कामना। तृष्णा। लोभ।

डिनर—संज्ञा पुं० [अं०] १ रात का भोजन। २ सामूहिक भोज।

डिप्लोमा—संज्ञा पुं० [अं०] वह लिखित प्रमाणपत्र जो किसी को विशेष योग्यता आदि प्राप्त करने पर मिलता है।

डिबिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा ढक्कनदार बरतन। छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा—संज्ञा पुं० [सं० डिंब ?] १ एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। संपुट। २ रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३. बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पसली।

डिभगना—क्रि० स० [देश०] मोहित करना। छलना। टहकना।

डिम—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक और चार ही संधियाँ होती हैं तथा माया, इंद्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश होता है। इसमें देवता, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच आदि १६ उद्धत नायक होते हैं।

डिमडिमी—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा। उ०—डिमडिमी पटह ढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चँगतार।—सूर०।

डिल्ला—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है, जैसे—सीख हमारी जो हिय लावहु। जन्ममरण के फंद नसावहु। २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लना। तिलना, जैसे—ससि बाल खरो। शिव भाल धरो। अमरा हरखैं। तिलका निरखैं।

संज्ञा पुं० [हिं० टीला] बैलों के कंधे पर उठा हुआ कूबड़। कुब्जा। ककुत्थ।

डिसमिस—वि० [अं०] १ अस्वीकृत। खारिज। नामंजूर। २ नौकरी से बरखास्त।

डींग—संज्ञा स्त्री० [सं० डीन] शेखी। सिट्ट। बढ़ी चढ़ी बातें।

डीठ—संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १ आँख। दृष्टि। नजर। निगाह। २ देखने की शक्ति। ३ सूझबूझ।

डीठनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० डीठ] दिखाई देना। दृष्टि में आना।

क्रि० स० १ दिखाना। नजर लगाना।

डीठबंध—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टिबंध] १ नजरबंदी। इंद्रजाल। २ इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डीठिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "डीठ १"। उ०—आड़ी डीठि निहारि दवलि दाढी थुक वाहइ।

डीन—संज्ञा स्त्री० [सं०] पक्षियों की उड़ान।

संज्ञा पुं० [अं०] विश्वविद्यालय में किसी विभाग का अध्यक्ष।

डीबुआ†—संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

डीमडाम—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंब] १ ऐंठ। तपाक। ठसक। २ ठाटबाट।

डील—संज्ञा पुं० [हिं० टीला] १ प्राणियों के शरीर की ऊँचाई। कद। उठान।

यौ०—डीलडौल=(१) देह की लंबाई चौड़ाई। (२) शरीर का ढाँचा। आकार। काठी।

२. शरीर। जिस्म। देह। ३ व्यक्ति। प्राणी। मनुष्य।

डीह—संज्ञा पुं० [फा० देह] १. आबादी। बस्ती। २. किसी वंश या जाति का आदि निवासस्थान। ३. उजड़े हुए गाँव का टीला। ४ ग्रामदेवता।

डुंग†—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १ ढेर। अटाला। २ टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंगर†—संज्ञा पुं० दे० "डुंग"।

डुंड†—संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु] १. पेड़ों की सूखी डाल। ठूँठ। २ डंका।

डुक—संज्ञा पुं० [देश०] घूँसा। मुक्का।

डुगडुगी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डौंगी। डुग्गी।

डुग्गी—संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

डुपटना†—क्रि० स० [हिं० दो+पट] (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

डुपट्टा—संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।

डुबकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी] अंदर डूबकर चलनेवाली नाव। पनडुब्बी। (अं० सबमेरीन।)

डुबकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√डूब] १ पानी में डूबना। डुब्बी। गोता। बुड़की। २ पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना—क्रि० स० [हिं० डूबना का स० रूप] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोता देना। २ चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—नाम डुबाना=नाम को कलंकित करना। मर्यादा खोना। लुटिया डुबाना=महत्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना।

डुबाव—संज्ञा पुं० [हिं०√डूब+आव (प्रत्य०)] पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना†—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डुब्बा—संज्ञा पुं० दे० "पनडुब्बा"।

डुब्बी—संज्ञा स्त्री० १ दे० "डुबकी"। २ दे० "पनडुब्बी"।

डुभकौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की बिना तली बरी। उ०—खँडरा बचका औ डुभकौरी। बरी एकोतर सौ, कोहड़ौरी।—पदमावत।

डुलनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "डोलना"।

डुलाना—क्रि० स० [हिं० डोलना का स० रूप] १ गति में लाना। हिलाना। चलाना। २ हटाना। भगाना। ३. फिराना। घुमाना। टहलाना।

डूँगर, डूँगरि—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १ टीला। भीटा। डूह। २ छोटी पहाड़ी। उ०—कबीर यहु मन कत गया जो मन होता कालिह। डूँगरि बूठा मेह ज्यूँ, गया निबाँणाँ चालि।—कबीर०।

डूँगा—वि० [मि० पं० डुगा=गहरा] उ०—तीरथ करि करि जग मुवा, डूँघे पाँणी न्हाइ। राँमहि राँम जपतड़ा, काल घसीट्याँ जाइ। —कबीर०।

डूबना—क्रि० अ० [प्रा० बुड्डण] १ पानी या और किसी द्रव पदार्थ के भीतर समाना। गोता खाना।

मुहा०—डूब मरना=शरम के मारे मुँह न दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना=दे० "डूब मरना"। डूबना उतराना=चिंता में पड़ जाना। जी डूबना=(१) चित्त व्याकुल होना। (२) बेहोशी होना।

२ सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३. चौपट होना। बरबाद होना।

मुहा०—नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट होना।

४ किसी व्यवसाय में लगा हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना। ५ चिंतन में मग्न होना। ६ लीन होना। तन्मय होना। लिप्त होना।

डेंड़सी—संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।

डेउढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० देहली] १. ड्योढ़ी। २ टिंडसी।

डेक—संज्ञा पुं० [अं०] १. समुद्री जहाजों की वह खुली जगह जहाँ उसमें काम करनेवाले छोटे दर्जे के लोग और कम किराया देनेवाले यात्री रहते हैं। यह जहाज के ऊपरी, बीच के या नीचे के किसी भी हिस्से में एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैली रहती है। २. चकरम नाम का कपड़ा।

डेड़हा†—संज्ञा पुं० [सं० डुडुभ] पानी का साँप।

डेढ़—वि० [सं० अध्यर्द्ध] एक पूरा और उसका आधा। जो गिनती में १½ हो।

मुहा०—डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना=खरेपन या अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना=अपनी राय सबसे अलग रखना।

डेढ़ा—वि० दे० "डेवढ़ा"।

संज्ञा पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है, जैसे, दस का डेढ़ा पद्रह और पद्रह का साढ़े बाईस।

डेबरी—संज्ञा स्त्री० दे० "ढिबरी"।

डेमरेज—संज्ञा पुं० [अं०] बदरगाह या रेलवे स्टेशन पर नियमित समय से अधिक देर तक बिना छुड़ाए पड़े रह जानेवाले माल के लिये माल छुड़ानेवाले द्वारा दिया जानेवाला धन। हरजाना।

डेरा—संज्ञा पुं० [हिं० ठहरना] १. थोड़े दिनों के लिये रहना। टिकान। पड़ाव। उ०—करम वचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि के उर डेरा।—मानस०। २ ठहरने का सामान। तंबू, खेमा, कनात। ३. डेरे के लिये बिस्तर, रसद आदि।

मुहा०—डेरा डालना=सामान के साथ टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना=टिकान होना। छावनी पड़ना। उ०—भरि चौरासी कोस पर गोपन के डेरा।—सूर०।

४ ठहरने का स्थान। ५ छावनी। खेमा। तंबू। शामियाना। ६ नाचने गानेवालों का दल। मंडली। गोल। ७ मकान। घर।

Ⓟ†वि० [सं० डहर?] बायाँ। सव्य। उ०—सूर स्याम सुमुख रति मानत गए मग बिसरि दाहिने डेरे।—सूर०।

डेराना†—क्रि० अ० दे० "डरना" उ०—(१) जब सिय कानन देखि डेराई। (२) तुम्हें पूछहु मैं कहत डेराऊँ।—मानस०।

डेरी—संज्ञा स्त्री० [अं० डेयरी] वह स्थान जहाँ दूध और मक्खन आदि के लिये गौएँ और भैंसें रखी जाती हों।

डेल—संज्ञा पुं० [सं० डुडुल] उल्लू पक्षी।

संज्ञा पुं० [सं० दल] रोड़ा। ढेला। उ०—नाहिन रास रसिक रस चाख्यो, तातें डेल सौं डारो।—श्रीकृष्णगीता०।

संज्ञा पुं० पक्षियों को बंद करने का डला।

डेला—संज्ञा पुं० [सं० दल] आँख का सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। कोया। रोड़ा।

डेली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] डलिया। बाँस की झाँपी।

[अं०] दैनिक।

डेवढ़ा†—वि० [हिं० डेवढ़ा] ढेढगुना। डेवढ़ा।

संज्ञा पुं० सिलसिला। क्रम। तार।

डेवढ़ा—वि०, संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ा"।

डेवढ़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।

डेहरी—संज्ञा स्त्री० दे० "देहलीज"।

डैनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "डैना"। उ०—गरजै गगन पखि जब बोला। डोलै समुद डैन जब डोला।—पदमावत।

डैनाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० डयन] चिड़ियों का पख। पक्ष। पर। बाजू।

डोंगर—संज्ञा पुं० [सं० तुग] [स्त्री० अल्पा० डोंगरी] पहाड़ी। टीला। उ०—चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डांगर डाँग।—श्रीकृष्णगीता०।

डोंगा—संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] १ बिना पाल की नाव। २. (पाल से चलनेवाली) बड़ी नाव।

मुहा०—डोंगा बूड़ना=नाश होना, बरबाद होना। डोंगा बोर देना=खराब कर देना, नष्ट कर देना।

डोंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोंगा] छोटी नाव।

डोंडा—संज्ञा पुं० [सं० तुड] १ बड़ी इलायची। २ टोटा। कारतूस।

डोंड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुड] १. पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २ उभरा हुआ मुँह। टोंटी।

डोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोकी] काठ की डाँड़ी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं।

डोकरा—संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर] [स्त्री० डोकरी] १ अशक्त और वृद्ध मनुष्य। †२. पिता।

डोकिया, डोकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोका] काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं।

डोडो—संज्ञा पुं० [अं०] बत्तख के आकार-प्रकार की एक प्राचीन चिड़िया जो मारिशस टापू में पाई जाती थी और अब विनष्ट है।

डोब, डोबा—संज्ञा पु० [हिं० डूबना] डुबाने का भाव। गोता। डुबकी।

डोम—संज्ञा पु० [सं० डम] [स्त्री० डोमिन, डोमनी] १ एक जाति जो बाँस की दौरी, सूप आदि बनाती है। वाल्मीक। हरिजनों का एक वर्ग जिनका काम श्मशान पर शव को आग देना, सूप, डले आदि बेचना है। २ ढाढी। मिरासी।

डोमकौआ—संज्ञा पु० [हिं० द्रोणकाक] बड़ा और बहुत काला कौआ।

डोमड़ा—संज्ञा पुं० दे० "डोम"।

डोमनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १ डोम जाति की स्त्री। २ ढाढी या मिरासी की स्त्री।

डोमिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १. डोम

जाति की स्त्री। २ ढाढी, मिरासियों की स्त्री।

डोर—संज्ञा स्त्री० [सं०] डोरा। मोटा तागा।

मुहा०—डोर पर लगाना=प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना। ढब पर लाना।

डोरा—संज्ञा पुं० [सं० डोरक] १ रूई, रेशम आदि को वटकर बनाया हुआ लंबा और पतला खंड। मोटा सूत या तागा। धागा। २ धारी। लकीर। ३ आँखों की महीन लाल नसें जो नशे या उमंग की दशा में दिखाई पड़ती हैं। ४ तलवार की धार। ५ तपे घी की धार। ६ एक प्रकार की करछी। पली। ७ स्नेहसूत्र। प्रेम का बंधन।

मुहा—डोरा डालना=प्रेमसूत्र में बद्ध करना। परचाना।

८ वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे। ९ काजल या सुरमे की रेखा।

डोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० डोरा] १ वह कपड़ा जिसमें कुछ सूत की लंबी धारियाँ बनी हों। २ एक प्रकार का बगला।

डोरियाना†—क्रि० स० [हिं० डोर से ना० धा०] १ पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना। एक रस्सी से बाँधना। २ समेटना। इकट्ठा करना। उ०—कोतल संग जाहिं डोरिआए।—मानस०।

डोरिहारⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० डोरी+हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा।

डोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोरा] १ रस्सी। रज्जु। २ पाश। बंधन।

मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना=देख-रेख कम करना। चौकसी कम करना।

३ डाँड़ीदार कटोरा या कलछा। ४ डोरा।

डोरेⓅ—क्रि० वि० [हिं० डोर] साथ लिए हुए। साथ साथ। संग संग।

डोल—संज्ञा पुं० [सं० दोल] १ लोहे का गोल बरतन। २ हिंडोला। झूला। उ०—सघन कुंज में डोल बनायो झूलत हैं प्यारी।—सूर०। ३ डोली। पालकी। ४ हलचल।

वि० [हिं० डोलना] चंचल।

डोलची—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोल] छोटा डोल।

डोलडाल—संज्ञा पुं० [हिं० डोलना] १ चलना फिरना। टहलना। २ पाखाने जाना।

डोलना—क्रि० स० [सं० दोलन] १ चलाय-मान होना। गति में होना। २ चलना। फिरना। टहलना। ३ हटना। दूर होना। ४ (चित्त) विचलित होना। डिगना।

डोला—संज्ञा पुं० [सं० दोला प्रा० डोला] [स्त्री० डोली] १ स्त्रियों के बैठने की बंद सवारी जिसे कहार कंधों से ढोते हैं। मियाना। पालकी।

मुहा०—डोला देना=(१) किसी राजा या सरदार को भेंट में अपनी बेटी देना। (२) अपनी बेटी को वर के घर ले जाकर ब्याहना।

२ झूले का झोंका। पेंग।

डोलाना—क्रि० स० [हिं० डोलना का स० रूप] १ हिलाना। चलाना। १ दूर करना। भगाना। हटाना।

डोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोला] एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधों पर लेकर चलते हैं।

डोही—संज्ञा स्त्री० दे० "डोई"।

डौंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] १ ढिंढोरा। डुगडुगिया।

मुहा०—डौंडी देना=(१) मुनादी करना। (२) सबसे कहते फिरना। डौंडी बजना=(१) घोषणा होना (२) जय-जयकार होना। (३) यश फैलना।

२ घोषणा। मुनादी।

डौंरू—संज्ञा पुं० दे० "डमरू"।

डौआ—संज्ञा पुं० [देश०] काठ का चमचा उ०—लकड़ी डौआ करछुली सरस काज अनुहारि।—दोहा०।

डौल—संज्ञा पुं० [हिं० डोल ?] १ ढाँचा। ढट्ढा।

मुहा०—डौल पर लाना=काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना।

२ बनावट का ढंग। रचनाप्रकार। ढब। ३ तरह। प्रकार। ४ युक्ति। उपाय।

मुहा०—डौल पर लाना=अभीष्ट साधन के अनुकूल करना। डौल बाँधना या लगाना=उपाय करना। युक्ति बैठाना।

५ रंगढंग। लक्षण। सामान।

डौलियाना†—क्रि० स० [हिं० डौल से० ना० धा०] १ प्रयोजनसिद्धि के अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २ गढ़कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा—वि० [हिं० डेढ़] किसी पदार्थ से उसका आधा और ज्यादा। डेढ़गुना।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

ड्योढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० देहली] १ फाटक। चौखट। दरवाजा। †२. चौखट के नीचे का भाग। ३ वह बाहरी कोठरी जो मकान में घुसने के पहले पड़ती है। पौरी।

ड्योढ़ीदार—संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान"।

ड्योढ़ीवान—संज्ञा पुं० [हिं० ड्योढ़ी+वान (प्रत्य०)] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार। द्वारपाल। दरवान।

ड्रम—संज्ञा पुं० [अं०] लोहे का कंडाल के आकार का पीपा जिसमें कोई तरल पदार्थ भरकर कहीं भेजा या रखा जाता है।

ड्राइवर—संज्ञा पुं० [अं०] गाड़ी हाँकने या चलानेवाला। चालक।

ड्राम—संज्ञा पुं० [अं०] एक अंगरेजी तौल जो दो माशे के लगभग होती है।

ड्रामा—संज्ञा पुं० [अं०] नाटक। रूपक।

ड्रेस—संज्ञा पुं०, स्त्री० [अं०] पहनने के कपड़े। पोशाक। लिबास।

ढ

ढ—हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवर्ग का चौथा अक्षर।

ढँकना—क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढँसⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

ढंग—संज्ञा पुं० [सं० तंग (तगन)] १ प्रणाली। शैली। ढब। रीति। २ प्रकार। तरह। किस्म। ३ रचना। बनावट। गढ़न। ४ युक्ति। उपाय। उचित रास्ता।

मुहा०—ढंग पर चढ़ना=अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। ढंग पर लाना=अभिप्रायसाधन के अनुकूल करना या उचित रास्ते पर लाना।

५ चाल ढाल। आचरण। व्यवहार। ६ बहाना। हीला। पाखंड। ७ लक्षण। आभास।

यौ०—रंगढंग = लक्षण।

८ दशा। अवस्था। स्थिति।

ढगलाना(पु)—क्रि० स० [हिं० ढाल] लुढ़काना।

ढंगी—वि० [हिं० ढंग] चालबाज। चतुर। चालाक।

ढँढोर—संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ] आग की लपट। ज्वाला। लौ।

ढँढोरची—संज्ञा पुं० [हिं० ढँढोरा] ढँढोरा या मुनादी फेरनेवाला।

ढँढोरना†—क्रि० स० दे० "ढूँढना"।

ढँढोरा—संज्ञा पुं० [हिं०√ढँढोर] १ घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २ वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मनादी।

ढँढोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० ढँढोरा+इया (प्रत्य०)] ढँढोरा पीटने या मुनादी करने-वाला।

ढँपना—क्रि० अ० दे० "ढकना"।

ढ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा ढोल। २ कुत्ता। ३ ध्वनि। नाद।

ढई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढहना = गिरना] किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।

ढकन—संज्ञा पुं० [सं० ढक् = छिपाना] [स्त्री०, अल्पा० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना।

क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढकनिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "ढकनी"।

ढकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकना] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

ढका(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] बड़ा ढोल।

(पु)संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। टक्कर।

ढकिल(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकेलना] वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।

ढकेलना—क्रि० स० [हिं० धक्का] १ धक्के से गिराना। ठेलकर आगे की ओर गिराना २ धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।

ढकोसना—क्रि० स० [अनु० ढकढक] एक-बारगी बहुत सा पीना।

ढकोसला—संज्ञा पुं० [हिं० ढग+सं० कौशल] मतलब साधने का ढंग। आडंबर। पाखंड।

ढक्कन—संज्ञा पुं० [सं०] ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल।

ढगण—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक गण जो ३ मात्राओं का होता है।

ढचर—संज्ञा पुं० [हिं० ढाँचा] १ टटा। बखेड़ा। २ आडंबर। ढकोसला।

ढड्ढा—वि० [देश०] बहुत बड़ा और बेढंगा।

संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १ ढाँचा। २ झूठा ठाटबाट। आडंबर।

ढनमनाना†—क्रि० अ० [अनु०] १ लुढ़कना। २. बिना प्रयोजन इधर उधर घूमना। ३ निष्फल प्रयत्न करना।

ढपना—संज्ञा पुं० [हिं० ढाँपना] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

ढप्पू—वि० [देश०] बहुत बड़ा। ढड्ढा।

ढफ†—संज्ञा पुं० दे० "डफ"। उ०—रुज मुरज ढफ ताल बाँसुरी झालर की झंकार। —सूर०।

ढब—संज्ञा पुं० [सं० (वैदिक) धव = गति] १ ढंग। रीति। तरीका। २ प्रकार। तरह। किस्म। ३ बनावट। गढ़न। ४ अभियुक्ति। उपाय। तदबीर।

मुहा०—ढब पर चढना = किसी का ऐसी अवस्था में होना जिसमे कुछ मतलब निकले। ढब पर लगाना या लाना = किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो।

५ प्रकृति। आदत। बान।

ढयना—क्रि० अ० [सं० ध्वसन] दीवार, मकान कगार आदि का गिरना। ध्वस्त होना।

ढरक—संज्ञा स्त्री० दे० "ढलक"।

ढरकना†—क्रि० अ० [हिं० ढरक] १ पानी आदि द्रव पदार्थ का नीचे गिरना। ढलना। २ नीचे की ओर जाना। अस्त होना। उ०—परसत भोजन प्रातहि ते सब। रवि माथे ते ढरकि गयो अब। —सूर०।

मुहा०—दिन ढरकना = सूर्यास्त होना। दिन डूबना।

ढरका—संज्ञा पुं० [हिं०√ढरक] बाँस की नली जिससे चौपायों के गले में दवा उतारते हैं।

ढरकाना†—क्रि० स० [हिं० ढरकना का स० रूप] पानी आदि को आधार से नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

ढरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ढरक] जुलाहों का एक औजार जिससे वे बाने का सूत फेंकते हैं।

ढरकौंवा†—संज्ञा पुं० [हिं०√ढरक+औवा (प्रत्य०)] ढलनेवाला।

ढरना†(पु)—क्रि० अ० दे० "ढना"।

ढरनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरना] दे० "ढरनी"।

ढरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरना] १ गिरने या पड़ने की क्रिया। पतन। २ हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३ चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४ करुणा। दयाशीलता। कृपालुता।

ढरहरना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० ढरना] खसकना। सरकना। ढलना। झुकना। उ०—दीनदयाल गोपाल गोपपति गाव गुण आवत ढिग ढरहरि।—सूर०।

ढरहरी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] पकौड़ी। उ०—रायभोग लिय भात पसाई। मूँग ढरहरी हींग लगाई।—सूर०।

ढराना—क्रि० स० १ दे० "ढलाना"। २ दे० "ढरकाना"।

ढरारा—वि० [हिं० ढार] [स्त्री० ढरारी] १ गिरकर बह जानेवाला। २ लुढ़कनेवाला ३ शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

ढर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० ढरना] १ कार्य करने का ढंग या रास्ता। २ शैली। तरीका। ३ युक्ति। उपाय। तदबीर। ४. आचरण-पद्धति। चालचलन। ५ आदत।

ढलक—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ढल+क(प्रत्य०)] ढलकाव। उतराई।

ढलकना—क्रि० अ० [हिं० ढलक] १ द्रव पदार्थ का आधार से नीचे गिर पड़ना। ढलना। २ लुढ़कना।

ढलका—संज्ञा पुं० [हिं०√ढलक] वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।

ढलकाना—क्रि० स० [हिं० ढलकना का स० रूप] १ द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना। २ लुढ़काना।

ढलना—क्रि० अ० [प्रा०√ढल] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना। २ सूर्य या चंद्रमा का क्षितिज की ओर जाना। अस्त होना। ३. दिन, ऐश्वर्य, तेज, प्रताप आदि की उत्कर्ष से विनाश की ओर गति।

मुहा०—दिन ढलना = सध्या होना। सूरज या चाँद ढलना = सूर्य या चद्रमा का अस्त होना।

२ बीतना। गुजरना। ३ उँडेला जाना। ४. लुढ़कना। ५ लहर खाकर इधर उधर डोलना। लहराना। ६ किसी ओर आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ७. प्रसन्न होना। रीझना। ८. साँचे में ढालकर बनाया जाना। ढाला जाना।

मुहा०—साँचे में ढला = बहुत सु दर।

ढलवाँ—वि० [हिं० ढालना] जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो। (वर्तन आदि)

वि० दे० "ढालवाँ"।

ढलवाना—क्रि० स० [हिं० ढालना का प्रे० रूप] ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ढल+आई (प्रत्य०)] १ ढालने का भाव या काम। २ ढालने की मजदूरी।

ढलाना—क्रि० स० दे० "ढलवाना"।

ढलैत—सज्ञा पुं० [हिं० ढाल+ऐत (प्रत्य०)] ढाल लेकर चलनेवाला सिपाही। उ०—गाढ़े ठाढ़े उरज ढलैत नखघाइ लेत, ढाहै ढिग करन-सँजीगो वीर वर है।—शृगार०।

ढवरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [?] धुन। डोरी। लौ। लगन। रट। उ०—सूरदास गोपी बड़भागी। हरि दरसन की ढवरी लागी।—सूर०।

ढहना—क्रि० अ० [स० ध्वसन] १ मकान आदि का गिर पड़ना। ध्वस्त होना। हाथी का गिरना या झपटना। २ नष्ट होना। मिट जाना।

ढहरि†—सज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"। उ०—सूर प्रभु कर सेज टेकत कबहूँ टेकत ढहरि।—सूर०।

सज्ञा स्त्री० [देश०] मिट्टी का मटका।

ढहवाना—क्रि० स० [हिं० ढहाना का प्रे० रूप] ढहाने का काम कराना। गिरवाना।

ढहाना—क्रि० स० [स० ध्वसन] दीवार, मकान आदि गिरवाना। ध्वस्त कराना।

ढाँकना—क्रि० स० [सं० ढक्क] १ ऊपर से कोई वस्तु फैला या टालकर (किसी वस्तु को) ओट में करना। २ इस प्रकार ऊपर फैलाना कि नीचे की वस्तु छिप जाय।

ढाँख—सज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

ढाँचा—सज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १ किसी चीज की बनावट का मौलिक आधार। वह मूल या सहारा जिसपर किसी वस्तु का सारा विस्तार टिका हो, जैसे शरीर के लिये हड्डियों का सघटन। ठाट। ठट्ठर। टौल। २ पजर। ठठरी। ३ गढ़न। बनावट। ४ इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। ५ प्रकार। भाँति। तरह।

ढाँपना—क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढाँसना—क्रि० अ० [अनु०] सूखी खाँसी खाँसना।

ढाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढाँसना] सूखी खाँसी।

ढाई—वि० [स० अर्धद्वय, हिं० अढ़ाई] दो और आधा।

ढाक—संज्ञा पुं० [स० आषाढ] पलाश का पेड़। छिउला। छीउल।

मुहा०—ढाक के तीन पात = सदा एक सा।

सज्ञा पुं० [स० ढक्का] लड़ाई का ढोल।

ढाका पाटन—सज्ञा पु० [ढाका+हिं० पाटन] एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

ढाटा, ढाठा—सज्ञा पु० [देश०] १ डाढ़ी पर बाँधने की पट्टी। २ घाव, टूटी हड्डी वगैरह बाँधने की खपची।

मुहा०—ढाठा देना = गला दबाकर मार डालना।

ढाड़—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिग्घाड़। गरज। दहाड़ (बाघ, सिंह आदि की)। २. चिल्लाहट।

मुहा०—ढाड मारना = चिल्लाकर रोना।

ढाढ़ना†—क्रि० स० दे० "दाढना"।

ढाढ़स—संज्ञा पुं० [सं० दृढ] १ धैर्य। आश्वासन। तसल्ली। २ दृढता। साहस। हिम्मत।

ढाढ़ी—सज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० ढाढ़िनि] एक प्रकार के मुसलमान गवैए जो प्राय जन्मोत्सव के अवसर पर लोगों के यहाँ जाकर बधाई आदि के गीत गाते हैं। उ०—ढाढी और ढाढ़िनि गावैं हरि के ठाढ़े बजावैं हरषि असीस देत मस्तक नवाइकै।—सूर०।

ढाबर—वि० [?] मिट्टी मिला हुआ। मटमैला। गँदला (पानी)।

ढाबा—सज्ञा पु० [देश०] १ छोटी अटारी। २ ओलती। ३ रोटी, दाल आदि बिकने का स्थान। होटल।

ढामक—सज्ञा पुं० [अनु०] ढोल आदि का शब्द।

ढार(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० धार] १ ढाल। उतार। २, पथ। मार्ग। प्रणाली। ३ प्रकार। ढग। बनावट। उ०—दृग थिरकौंहैं अधखुलैं देह थकौंहैं ढार। सुरति सुखित सी देखियति दुखित गरभ कैं भार।—विहारी०।

ढारना—क्रि० स० दे० "ढालना"।

ढारस—सज्ञा पुं० दे० "ढाढ़स"।

ढाल—सज्ञा स्त्री० [सं०] तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र या धातु की फरी। चर्म। आड़। फलक।

सज्ञा स्त्री० [सं० धार ?] १. वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो। उतार। २ ढग। प्रकार। तरीका।

ढालना—क्रि० स० [प्रा०√ढाल ?] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ को गिराना। उँडेलना। २ शराब पीना। ३ बेचना। ४ ताना छोड़ना। व्यग्य बोलना। ५ पिघली हुई वस्तु या धातु को साँचे में जमा कर रूप देना।

ढालवाँ—वि० [हिं० ढाल] [स्त्री० ढालवीं] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो। ढालू।

ढालुवा—वि० ढला हुआ।

ढालू—वि० दे० "ढालवाँ"।

ढास†—सज्ञा पुं० [सं० दस्यु] लुटेरा। डाकू।

ढासना—सज्ञा पुं० [सं० धारण+आसन] १ वह ऊँची वस्तु जिसपर बैठने में पीठ टिक सके। सहारा। टेक। २. तकिया।

ढाहना†—क्रि० स० दे० "ढाना"। उ०—वृच्छ बन काटि महलात ढाहन लाग्यो नगर के द्वार दीनो गिराई।—सूर०।

ढिंढोरना—क्रि० स० [प्रा० √ढंढुल = घूमना, ढूँढ़ना] १ मथना। विलोड़ना। २ हाथ डालकर ढूँढ़ना। खोजना। उ०—भूलि गई माखन की चोरी। खात रहे घर सकल ढिढोरी—विश्रामसागर।

ढिंढोरा—सज्ञा पुं० [?] १ वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। डुगडुगिया। २ वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा।

मुहा०—ढिंढोरा पीटना = खूब प्रचार करना।

ढिग—क्रि० वि० [सं० दिक्] पास। निकट। उ०—रति ऐसी रभा सी सची

सी मिलि ताल भर मजु सुर मजुघोषा ऐसी ढिग गावती।—रससारांश।

संज्ञा स्त्री० १ पास। सामीप्य। २ तट। किनारा। छोर। ३ कपड़े का किनारा। कोर।

ढिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीठ+आई (प्रत्य०)] १. गुरुजनों के समक्ष व्यवहार की अनुचित स्वच्छंदता। धृष्टता। गुस्ताखी। २ निर्लज्जता। ३ अनुचित साहस। उ०—जदपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई।—विनय०।

ढिबरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बी] वह डिबिया जिसके मुँह में बत्ती डालकर मिट्टी का तेल जलाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ढपना] कसे जानेवाले पेंच के सिरे पर का लोहे का छल्ला।

ढिमका—सर्व० [हिं० अमका का अनु० ?] [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फलाँ। फलाना।

ढिलढिल, ढिलमिल—वि० [हिं० ढीला] दे० ढिलढिला।"

ढिलढिला—वि० [हिं० ढीला] १ ढीला-ढाला। २. पानी की तरह पतला। तरल।

ढिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला+आई (प्रत्य०)] १. ढीला होने का भाव। २. शिथिलता। सुस्ती। ३ देरी। विलंव। ४ ढीला करने की क्रिया या भाव।

ढिलाना—क्रि० स० [हिं० ढीलना का प्रे० रूप] १. ढीलने का काम कराना। २ ढीला कराना।

(पु)† क्रि० स० ढीला कराना।

ढिल्लड़—वि० [हिं० ढीला] सुस्त। आलसी।

ढिसरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० ध्वसन] १. फिसल पड़ना। सरक पड़ना। २ प्रवृत्त होना। झुकना।

ढींगर†—संज्ञा पुं० [सं० डिंगर] १ हट्टा-कट्टा आदमी। २ उपपति।

ढींचा†—संज्ञा पुं० [देश०] कूबड़।

ढींढ, ढींढा†—संज्ञा पुं० [सं० ढुंढि=लंबोदर गणेश] १. निकला हुआ पेट। तोंद। २ गर्भ। हमल।

ढीट—संज्ञा स्त्री० [देश०] रेखा। लकीर।

ढीठ—वि० [सं० धृष्ट] १ बड़ों का सकोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। शोख। बेअदब। २ अनुचित साहस करनेवाला। निडर। उ०—ऐसे ढीठ भए हैं कान्हा दधि गिराय मटकी सब फोरी।—सूर०। ३ साहसी। हिम्मतवर।

ढीठक—वि० दे० "ढीठ"।

ढीठता(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "ढिठाई"।

ढीठ्यो—संज्ञा पुं० दे० "ढीठ"।

ढीमा†—संज्ञा पुं० [देश०] १ पत्थर का बड़ा टुकड़ा वा ढोंका। २ मिट्टी की पिंडी।

ढील—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला] १ शिथिलता। अतत्परता। सुस्ती। २ बधन को ढीला करने का भाव। तनाव या कसावट का भाव। उ०—त्यों त्यों नीच चढ़त सिर ऊपर ज्यों ज्यों सील बस ढील दई है। विनय०।

†संज्ञा पुं० बालों का कीड़ा। जूँ।

ढीलना—क्रि० स० [हिं० ढील] १ कसा या तना हुआ न रखना। ढीला करना। २ बधनमुक्त करना। छोड़ देना। उ०—तापै सूर बछरुवन ढीलत बन बन फिरत बहे।—सूर०। ३ (रस्सी आदि) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

ढीला—वि० [सं० शिथिल, प्रा० सिढिल, ढिल्ल] १ जो कसा या तना हुआ न हो। चुस्त का उलटा। २ जो दृढ़ता से बँधा या लगा हुआ न हो। ३. जो कसकर पकड़े हुए न हो। ४ खुला हुआ। ५ जो गाढ़ा न हो। बहुत गीला। पतला। ६ जो अपने सकल्प पर अड़ा न रहे। ७ धीमा। शात। नरम। ८ मद। सुस्त। आलसी। शिथिल।

मुहा०—ढीली आँख=मदभरी चितवन।

ढीलापन—संज्ञा पु० [हिं० ढीला+पन (प्रत्य०)] ढीला होने का भाव। शिथिलता।

ढुंढा†—संज्ञा पुं० [हिं० ढूँढ़ना] उचक्का। ठग। उ०—चोर ढुंढ बटपार अन्याई अपमारगी कहावै जे।—सूर०।

ढुंढपाणि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० दंडपाणि] १ शिव के एक गण। २ दडपाणि। भैरव। ३ दड लेकर चलनेवाला। सिपाही।

ढुँढवाना—क्रि० स० [हिं० ढूँढ़ना का प्रे० रूप] ढूँढ़ने का काम कराना। तलाश करवाना। पता लगवाना। खोजवाना।

ढुंढा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिरण्यकश्यप की बहिन और भक्त प्रह्लाद की बुआ जिसे आग से न जलने का बरदान मिला था। भाई की आज्ञा से बालक प्रह्लाद को गोद में लेकर दहकती हुई आग में बैठ जाने पर ईश्वरीय लीला से प्रह्लाद की जगह वह स्वय जलकर राख हो गई।

ढुंढिराज—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

ढुंढी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बाँह। मुस्क।

मुहा०—ढुंढियाँ चढ़ाना=मुस्कें बाँधना।

ढुकना—क्रि० अ० [देश०] १ घुसना। प्रवेश करना। २ एकबारगी धावा करना। टूट पड़ना। ३ कोई बात सुनने या देखने के लिये आड़ में छिपना।

ढुटौना—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

ढुनमुनिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढनमनाना] लुढ़कने की क्रिया या भाव।

ढुरकना†—क्रि० अ० [हिं० ढुरना] १ फिसलकर गिरना। लुढ़कना। २ झुकना।

ढुरना—क्रि० अ० [हिं० ढरना] १ गिरकर बहना। ढुरकना। लुढ़कना। २ कभी इधर कभी उधर होना। डगमगाना। ३. सूत या रस्सी के रूप की वस्तु का इधर-उधर हिलना। लहराना। उ०—जोबन मदमाती इतराती बेनी ढुरत कटि पै छबि बाढ़ी।—सूर०। ४ लुढ़कना। फिसल पड़ना। ५. प्रवृत्त होना। झुकना। ६. अनुकूल होना। प्रसन्न होना।

ढुरहुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] १. लुढ़कने की क्रिया या भाव। २ पगडंडी।

ढुराना—क्रि० स० [हिं० ढुरना का स० रूप] १ गिराकर बहाना। ढुरकाना। ढुलकाना। उ०—पलक न लावति रहत ध्यान धरि बारंबार ढुरावति पानी।—सूर०। २ इधर उधर हिलाना। ठहराना। ३ लुढ़काना।

ढुर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] पहाड़ों पर या जंगलों में मवेशियों या आदमियों के आने जाने के कारण दबी हुई घास से पहचाना जानेवाला मार्ग। पगडंडी।

ढुलकना—क्रि० स० [हिं० ढुरकना] ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढ़कना।

ढुलकाना—क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

ढुलना—क्रि० अ० [हिं० ढुरना] १ ढरकर बहना। लुढ़काना। २ प्रवृत्त होना। ३ प्रसन्न होना। कृपालु होना। ४ इधर से उधर होना। इधर उधर डोलना। उ०—ढुलति ग्रीव लटकति नकबेसरि, मद मद गति आवै।—सूर०।

ढुलवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ढुल+वाई (प्रत्य०)] १ ढोने का काम, भाव या

मजदूरी। २ ढुलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना—क्रि० स० [हिं० ढोना का प्रे० रूप] ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाना—क्रि० स० [हिं० ढुलाना का स० रूप] १ गिराकर बहाना। ढरकाना। ढालना। २ नीचे टालना। गिराना। उ०—स्यदन खंडि, महारथ खंडौं कपिध्वज सहित ढुलाऊँ।—सू०। ३ लुढ़काना। ढँगलाना। ४ प्रवृत्त करना। झुकाना। ५ अनुकूल करना। प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६ इधर उधर ढुलाना। ७ चलाना। फिराना। उ०—सूर श्याम श्यामावश कीनो ज्यों सँग छाँह ढुलावै हो।—सूर०। ८ फेरना। पोतना।

क्रि० स० [हिं० ढोना का प्रे० रूप] ढोने का काम कराना।

ढुल्ला—स० पुं० [हिं० ढोल] दे० "ढोला"। उ०—दरमरि दमसि विपक्ख मारु ढिल्ली महँ ढुल्ला।—हम्मीररासो।

ढूँढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढूँढ़ना] खोज। तलाश।

ढूँढ़ना—क्रि० स० [सं० ढुंढन] खोजना। तलाश करना।

ढूसर—संज्ञा पुं० दे० "भार्गव"।

ढूह, ढूहा†—संज्ञा पुं० [सं० स्तूप] १ ढेर। अटाला। २ टीला। भीटा। भूमि या मिट्टी का जमीन से उठा हुआ हिस्सा।

ढेंक—संज्ञा स्त्री० [सं० ढेंक] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया। उ०—कूजत पिक मानहुँ गज माते। ढेंक महोख ऊँट बेसराते।—मानस०।

ढेंकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक (चिड़िया) ?] १ सिंचाई के लिये कुँए से पानी निकालने का एक यंत्र। २ धान कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। धन कुट्टी। ढेंकी। ३ कलाबाजी। कलैया।

ढेंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक ?] १ अनाज कूटने की ढेंकली। २ कुएँ से पानी निकालने का यंत्र।

ढेंढ़†—संज्ञा पुं० [देश०] १ कौवा। २ एक जाति। ३ मूर्ख। मूढ़।

संज्ञा पुं० [सं० तुंड] कपास आदि। का डोंडा। ढोंढ।

ढेंढर—संज्ञा पुं० [हिं० ढेंढ] आँख के टेले का निकला हुआ विकृत मांस। टेंटर।

ढेपुनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंप] १ पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है। ढेंप। २ दाने की तरह उभरी हुई नोक। ठोंठ। ३ कुचाग्र।

ढेबुक†—संज्ञा पुं० [देश०] ढेबुआ। पैसा। उ०—यथा ढेबुक मुद्रा जग माहीं। है नव एक पदिक सम नाहीं।—विश्रामसागर।

ढेबुआ†—संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

ढेमनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धीवरी (धीवर जाति की स्त्री)] रखी हुई स्त्री। रखेली। उपपत्नी।

ढेर—संज्ञा पुं० [हिं० धरना ?] नीचे ऊपर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि। अटाला। अंबार। पुंज।

मुहा०—ढेर करना=मार डालना। ढेर हो रहना या जाना=(१) गिरकर मर जाना। (२) थककर चूर हो जाना।

† वि० बहुत अधिक। ज्यादा।

ढेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेर] ढेर। राशि। उ०—नेकु धका दैहै ढैहै ढेलन की ढेरी सी।—कविता०।

ढेलⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ढेला"।

ढेलवाँस—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेल+सं० पाश] रस्सी का वह फंदा जिसमें ढेला फेंकते हैं। गोफना।

ढेला—संज्ञा पुं० [सं० दल] १ ईंट, कंकड़, पत्थर या मिट्टी आदि का टुकड़ा। चक्का। २ टुकड़ा। खंड। ३ एक प्रकार का धान।

ढेला चौथ—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेला+चौथ] भादों सुदी चौथ। प्रवाद है कि इस दिन चंद्रमा देखने से कलंक लगता है जिसका निवारण गालियाँ सुनने पर हो जाता है। अतः इस दिन दूसरों के घरों पर ढेले फेंके जाते हैं जिससे गालियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।

ढैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढाई] १ ढाई सेर तौलने का बटखरा। २ ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोंग—संज्ञा पुं० [हिं० ढंग] ढकोसला। पाखंड। बनावट। छल।

ढोंगबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंग+फा० बाजी] पाखंड। आडंबर।

ढोंगी—वि० [हिं० ढोंग] ढोंग रचनेवाला। पाखंडी। ढकोसलेबाज।

ढोंढ़—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] १ कपास, पोस्ते आदि का डोंडा। २ कली।

ढोंढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंढ] नाभि।

ढोटा—संज्ञा पुं० [सं० दुहितृ=लड़की] [स्त्री० ढोटी] १ पुत्र। बेटा। उ०—ये दोऊ दशरथ के ढोटा। बाल मरालन्ह के कल जोटा॥—मानस०। २. लड़का।

ढोटौना†—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

ढोना—क्रि० स० [प्रा० ढोअय=उपस्थित किया हुआ।] १ बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. उठा ले जाना। ३. निर्वाह करना।

ढोर—संज्ञा पुं० [हिं० ढुरना] गाय, बैल, भैंस आदि पालतू पशु। चौपाया। मवेशी।

ढोरनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० ढारना] १. ढरकाना। ढालना। २. लुढ़काना। ३ साथ लगना। ४. इधर उधर ढुलाना।

ढोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ढोर+ई (प्रत्य०)] १ ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २ रट। धुन। लौ। लगन।

ढोल—संज्ञा पुं० [प्रा० ढोल्ल] १. एक प्रकार का बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है और बीच में पोला रहता है।

मुहा०—ढोल पीटना या बजाना=चारों ओर कहते या जताते फिरना।

२ कान का परदा।

ढोलक, ढोलकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोल+क (प्रत्य०)] छोटा ढोल।

ढोलकिया—वि० [हिं० ढोलक + इया (प्रत्य०)] ढोलक बजानेवाला।

ढोलना—संज्ञा पुं० [हिं० ढोल] १ ढोलक के आकार का छोटा जंतर। २ ढोलक के आकार का पत्थर का बहुत बड़ा और वजनी बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।

†क्रि० स० [सं० दोलन] १ ढरकाना। ढालना। २ ढुलाना।

ढोलनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दोलन] बच्चों का झूला। पालना। उ०—अगर चंदन को पालनो गढ़ई गुर ढार सुढार। लै आयो गढ़ि ढोलनी बिसकर्मा सो सुत भार।—सूर०।

ढोला—संज्ञा पुं० [हिं० ढोल] १ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। २ हद का निशान। ३ पिंड। शरीर। देह। ४ एक प्रकार का गीत।

Ⓟबड़ा ढोल जो मध्यकाल में युद्ध में बजाया जाता था। उ०—ढोला मारिअ ढिल्लि महँ मुच्छिउ मेच्छ सरीर।—हम्मीररासो।

संज्ञा पुं० [सं० दुर्लभ] दूल्हा। प्रियतम

ढोलिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोलिया] ढोल बजानेवाली स्त्री। ढफालिन।

ढोलिया—संज्ञा पुं० [हिं० ढोल+इया (प्रत्य०)] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।

ढोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोल] २०० पानों की गड्डी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठोली] हँसी। ठठोली। उ०—सूर प्रभु की नारि राधिका नागरी चरचि लीनो मोहिं करति ढोली।—सूर०।

ढोव—संज्ञा पुं० [हिं० ढोवना] वह पदार्थ जो मंगल के अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर। उ०—लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भाँति-भाँति भरि भार।—कविता०।

ढोवा—संज्ञा पुं० [हिं० ढोना] १ ढोने की क्रिया या भाव। २ लूट। ३ दे० "ढोव"।

ढोहना(पु)—क्रि० स० १ दे० "ढोना"। २ दे० "ढूँढना"।

ढौकन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंट। उपहार। २ घूस।

ढौंचा—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध+हिं० चार] साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना—क्रि० अ० [हिं० धौंस] आनंदध्वनि करना।

ढौरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० ढुलना] डोलना। झूमना।

ढौरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [देश०] रट। धुन। उ०—रसिक सिरमौर ढौरि लगावत गावत राधा राधा नाम।—सूर०।

संज्ञा पुं० ढंग। विधि।

ण

ण—हिंदी वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है।

ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्ध। २ आभूषण। ३ निर्णय। ४ ज्ञान। ५ शिव। ६ दान। ७ दे० "णगण"।

णगण—संज्ञा पुं० [सं०] दो मात्राओं का गण (छंद शास्त्र)। विशेष—वर्णवृत्तों में प्रत्येक गण ३ वर्णों का माना जाता है और यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण नाम से कुल आठ ही गण होते हैं। इसके विपरीत छंदों की मात्रिक गणना में टगण, ठगण, डगण, ढगण और णगण ये ही पाँच गण माने जाते हैं जिनकी मात्राओं की संख्या क्रम से ६, ५, ४, ३ और २ है।

त

त—हिंदी वर्णमाला का १६वाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारणस्थान दाँत है।

त—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाव २। पुण्य।

तँई—प्रत्य० दे० "तईं"।

तंक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भय। डर। आतंक। २ प्रिय वियोग से होनेवाला दुःख। ३ टाँकी। छेनी।

तंग—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ों की जीन कसने का तस्मा। कसन। कसाव।

वि० १ कसा। दृढ़। कड़ा। २ दिक। विकल। हैरान। परेशान। ३ सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ४ चुस्त। छोटा।

मुहा०—तंग आना या होना=घबरा जाना। दुःखी होना। परेशान होना। तंग करना=सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना=धनहीन होना।

तंगदस्त—वि० [फा०] [संज्ञा तंगदस्ती] १ कंजूस। २ गरीब।

तंगहाल—वि० [फा०] १ निर्धन। गरीब। २ विपद्ग्रस्त।

तंगा—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का पेड़। २ अधन्ना। डबल पैसा।

तंगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तंग या सँकरा होने का भाव। संकीर्णता। संकोच। २ दुःख। तकलीफ। ३ निर्धनता। गरीबी। ४ कमी।

तंजेब—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

तंड—संज्ञा पुं० [सं० ताडव] नृत्य। नाच।

तंडक—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंजन पक्षी। २ फेन। ३ पूरी तैयारी। ४ समासबहुला रचना। ५ घर का सीधा और खड़ा खंभा।

तंडव—संज्ञा पुं० दे० "तांडव"।

तंडुल—संज्ञा पुं० [सं०] चावल।

तंत(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तंतु"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरंत] आतुरता।

संज्ञा पुं० दे० "तत्व"।

संज्ञा पुं० [सं० तंत्र] १ वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों जैसे, सितार या सारंगी। २ क्रिया। ३ तर्क। शास्त्र। ४ इच्छा। कामना। ५ दे० "तंत्र"।

वि० जो तौल में ठीक हो।

तंतघट—संज्ञा पुं० [सं० तंत्र+घट] टीमटाम। आडंबर। टंट घंट।

तंतमंत—संज्ञा पुं० दे० "तंत्रमंत्र"।

तंतरी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० तंत्री] वह जो तारवाले बाजे बजाता हो।

तंतु—संज्ञा पुं० [सं० तंतु] १ सूत। डोरा। तागा। २ ताँत। ३ विस्तार। फैलाव। ४ वंशपरंपरा। ५ संतान। ६ यज्ञ की परंपरा। ७ मकड़ी का जाला। ८ ग्राह।

तंतुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल की डंठल। मृणाल। २ कमल की जड़। भसींड़।

तंतुवादक—संज्ञा पुं० [सं०] बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला। तंत्री।

तंतुवाय—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े बुननेवाला। ताँती। जुलाहा।

तंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. तंतु। ताँत। २ सूत। ३ चरखा। ४. जुलाहा। ५ कपड़ा। वस्त्र। ६ कुटुंब का भरणपोषण। ७. निश्चित सिद्धांत। ८. प्रमाण। ९ औषध। दवा। १० झाड़ने फूँकने का मंत्र। ११ हिंदुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिवप्रणीत माना और गुप्त रखा जाता है। १२ कार्य। १३ कारण। १४ राज-कर्मचारी। १५ राज्य का प्रबंध या शासन प्रणाली। जैसे प्रजातंत्र, राजतंत्र, गणतंत्र आदि। १६ सेना। फौज। १७ धन। संपत्ति। १८ अधीनता। परवश्यता। १९. कुल। खानदान। २०. लक्षण। मुख्य अंग। पहचान। गुण। २१ नमूना। ढाँचा। २२ जादू टोने आदि के सिद्धांतों का उपदेश देनेवाले ग्रंथ जो प्राय शिव और दुर्गा के संवाद के रूप में लिखे मिलते हैं। इनमें मुख्यत सृष्टि, प्रलय, देवी देवताओं की उपासना, अभीष्ट और हर प्रकार की दैवी शक्तियों का उपार्जन और समाधि द्वारा चार प्रकार की मुक्तियों की प्राप्ति आदि पाँच विषयों का विवेचन रहता है।

तंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

तंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. गुरुच। ३ शरीर की नस। ४ रस्सी। ५ वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। तंत्र, वीणा, सितार, सरोद, सारंगी आदि।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बाजा बजाता हो। २ वह जो गाता हो। गवैया। उ०—तंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति। दुविधा दुंदुभि है निसिवासर उपजावति विपरीति।—सूर०।

तंदरा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "तंद्रा"।

तंदुरुस्त—वि० [फा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। नीरोग। स्वस्थ।

तंदुरुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ नीरोग होने की अवस्था या भाव। २ स्वास्थ्य।

तंदुल(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तंदुल"।

तंदूर—संज्ञा पुं० [फा० तनूर] भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बड़ा गोल पात्र या चूल्हा।

तँदूरी—वि० [हिं० तंदूर] तंदूर में बना हुआ।

तंदेही—संज्ञा स्त्री० [फा० तनदिही] १. परिश्रम। मेहनत। २ प्रयत्न। कोशिश। ३. चेतावनी। ताकीद।

तंद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ कुछ सो जाय। ऊँघाई। ऊँघ। आलस्य। २ हलकी बेहोशी।

तंद्रालस—संज्ञा पुं० [सं० तंद्रा+आलस्य] तंद्रा या ऊँघने के कारण होनेवाला आलस्य।

तंद्रालु—वि० [सं०] जिसे तंद्रा आती हो।

तंबा—संज्ञा पुं० [फा० तबान] चौड़ी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा।

तंबाकू—संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।

तँबिया—संज्ञा पुं० [हिं० ताँबा+इया (प्रत्य०)] ताँबे या और किसी चीज का बना हुआ छोटा तसला।

तँबियाना—क्रि० अ० [हिं० ताँबा] १. ताँबे के रंग का होना। २ ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना।

तंबीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नसीहत। शिक्षा। २ ताकीद।

तंबू—संज्ञा पुं० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ घर। खेमा। डेरा। शिविर। शामियाना।

तंबूर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का छोटा ढोल।

तंबूरची—संज्ञा पुं० [फा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] तंबूर बजानेवाला।

तंबूरा—संज्ञा पुं० [हिं० तानपूरा] बीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

तंबूल(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।

तंबोल—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १ दे० "तांबूल"। २ दे० "तमोल"।

तँबोली—संज्ञा पुं० [हिं० तंबोल] वह जो पान बेचता हो। बरई।

तंभ, तंभन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] रस सिद्धांत में स्तंभ नामक अनुभाव या सात्विक भाव (अलंकार शास्त्र)।

त—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाव। २ पुण्य। ३ चोर। ४ झूठ। ५ दुम। ६. गोद। ७ म्लेच्छ। ८. गर्भ। ९. रत्न। १० युद्ध।

(पु)† क्रि० वि० [सं० तद्] तो। उ०—हमहुँ कहब अब ठकुरसोहाती। नाहिं त मौन रहब दिन राती॥ —मानस०।

तअज्जुब—संज्ञा पुं० [अ०] आश्चर्य। विस्मय। अचंभा।

तअल्लुक—संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से मौजों की जमींदारी। बड़ा इलाका।

तअल्लुकदार—संज्ञा पुं० [अ०] इलाकेदार। तअल्लुके का मालिक।

तअल्लुकदारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] तअल्लुकदार का पद या भाव।

तअल्लुक—संज्ञा पुं० [अ०] संबंध।

तअल्लुका—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

तअस्सुब—संज्ञा पुं० [अ०] धर्म या जाति-संबंधी पक्षपात।

तइसा†—वि० दे० "वैसा"।

तइँ(पु)—प्रत्य० [हिं० तें(पु)] से।

प्रत्य० [प्रा० हुतो ?] प्रति। को। से।

अव्य० [सं० तावत्] लिये। वास्ते।

तई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का अल्पा०स्त्री०] थाली के आकार की छिछली कड़ाही।

वि० [सं० तप्त] तपी। जली। उ०—दीनदयालु दुरित दुख दुनी दुसह तिहुँ ताप तई है। —विनय०।

तउ(पु)†—अव्य० [सं० तत] १. दे० "तब"। तब भी। तिस पर भी। उ०—एहु सब भा इन्ह आँखिन्ह आगे। तउ न तजा तनु जीव अभागे। —मानस०। २ दे० "त्यों"।

तऊ(पु)†—अव्य० [हिं० तब+ऊ (प्रत्य०)] तो भी। तथापि। तिस पर भी। उ०—है अभिमान तऊ मन में, जन भाषिहै दूसरे दीनन पाहीं। —कविता०।

तक—अव्य० [सं० अंत+क] एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पर्यंत।

संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।

तकदमा—संज्ञा पुं० [अ० तखमीना] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय। तखमीना। अंदाजा।

तकदीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत।

तकदीरवर—वि० [अ० तकदीर+फा० वर] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। किस्मतवाला।

तकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] ताकने की क्रिया या भाव। देखना। दृष्टि।

तकना(५)†—क्रि० अ० [हिं० ताकना] १ देखना। निहारना। अवलोकन करना। उ०—देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती। —मानस। २ शरण लेना। पनाह लेना।

संज्ञा पुं० [हिं० ताकना] बहुत ताकनेवाला।

तकमा†—संज्ञा पुं० १. दे० "तमगा"। २ दे० "तुकमा"।

तकमील—संज्ञा स्त्री० [अ०] पूरा होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।

तकरार—संज्ञा स्त्री० [अ०] हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।

तकरीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वक्तृता। भाषण। २. बहस। दलील। जिरह। ३ बातचीत।

तकला—संज्ञा पुं० [सं० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई जिसपर सूत लिपटता जाता है। टेकुआ। २ रस्सी बनाने की टिकुरी।

तकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा सा तकला लगा रहता है।

तकलीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २ विपत्ति। मुसीबत।

तकल्लुफ—संज्ञा पुं० [अ०] १. केवल शिष्टाचारवश कष्ट उठाकर कोई काम करना। शिष्टाचार। २ औपचारिक व्यवहार। बनावट।

तकसीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। बाँट। २ गणित में वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागों में बाँटी जाय। भाग।

तकसीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] अपराध। कसूर।

तकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√ताक+आई (प्रत्य०)] १ ताकने की क्रिया या भाव। २ रखवाली।

तकाजा—संज्ञा पुं० [अ०] १ ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार या विश्वास हो। तगादा। २ ऐसा काम करने के लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। ३ पावना माँगना। ४ उत्तेजना। प्रेरणा।

तकाना—क्रि० स० [हिं० ताकना का प्रे० रूप] दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकावी—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो गरीब खेतिहरों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये कर्ज दिया जाय।

तकिया—संज्ञा पुं० [फा०] १ कपड़े का वह थैला जिसमें रुई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २ पत्थर की वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिये लगाई जाती है। मुतक्का। ३. विश्राम करने का स्थान। ४ आश्रय। सहारा। आसरा। ५ वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फकीर रहता हो।

तकिया कलाम—संज्ञा पुं० दे० "सखुन-तकिया"।

तकुआ—संज्ञा पुं० दे० "तकला"।

तक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ मट्ठा। छाछ।

तक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामचंद्र के भाई भरत के बड़े पुत्र। २ एक नाग का नाम।

तक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाताल के आठ नागों में से एक जिसने कुंतीपुत्र अर्जुन के पौत्र परीक्षित को काटा था। २ आजकल के विद्वानों के अनुसार भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति। इनका जातीय चिह्न सर्प था। ३. साँप। सर्प। ४ विश्वकर्मा। ५ सूत्रधार। ६. एक संकर जाति। ७ बढ़ई।

तक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] लकड़ी, पत्थर आदि गढकर मूर्तियाँ बनाना।

तक्षशिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरी जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। प्राचीन गांधार और वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी नगर के पास जमीन की खोदाई में मिले इस नगर के ध्वंसावशेषों से इसके इतिहास की अनेक बातों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है। अपने उत्कर्षकाल में यह नगर शिक्षा के लिये सारे विश्व में प्रसिद्ध था और सुदूर देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन के लिये आया करते थे। कहा जाता है कि कुंतीपुत्र अर्जुन के प्रपौत्र जनमेजय ने यहीं सर्पयज्ञ किया था।

तखफीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] कमी। न्यूनता।

तखमीनन्—क्रि० वि० [अ०] अंदाज से। अनुमानत।

तखमीना—संज्ञा पुं० [अ०] अंदाज। अनुमान। अटकल।

तख्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। राजगद्दी। २ तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।

तख्तताऊस—संज्ञा पुं० [फा० तख्त+अ० ताऊस] बहुमूल्य रत्नों से जड़ा हुआ मोर के आकार का वह प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

तख्तनशीन—वि० [फा०] जो राज-सिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़। गद्दीनशीन।

तख्तपोश—संज्ञा पुं० [फा०] १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ चौकी।

तख्तबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तख्तों की बनी हुई दीवार।

तख्ता—संज्ञा पुं० [फा० तख्त] १ लकड़ी का लंबा चौड़ा और चौकोर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला।

मुहा०—तख्ता उलटना = बना बनाया काम बिगड़ना। बरबाद हो जाना। तख्ता हो जाना = अकड़ जाना। पटरे के समान सपाट होना।

२ लकड़ी की बड़ी चौकी। तख्त। ३ अरथी। टिखटी। ४ कागज का ताव। ५ बाग की क्यारी।

तख्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्ता। २ काठ की पटरी जिस-पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।

तगड़ा—वि० [हिं० तन+कड़ा] [स्त्री० तगड़ी] १ सबल। बलवान्। मजबूत। २ अच्छा और बड़ा। हृष्टपुष्ट। मोटा ताजा।

तगड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "तागड़ी"। वि० [हिं० तगड़ा] मोटी। स्वस्थ। हृष्टपुष्ट।

तगण—संज्ञा पुं० [सं०] तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघुवर्ण होता है (पिंगल)।

तगदमा—दे० "तकदमा"।

तगना—क्रि० अ० [हिं० तागना] तागा जाना।

तगमा—संज्ञा पुं० दे० "तमगा"।

तगर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती है और औषध के काम में आती है।

तगला—संज्ञा पुं० दे० "तकला"।

तगा(५)†—संज्ञा पुं० दे० "तागा"।

तगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तागा+आई (प्रत्य०)] तागने का काम, भाव या मजदूरी।

तगादा—संज्ञा पुं० दे० "तकाजा"।

तगार, तगारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ ओखली गाड़ने का गड्ढा। २ चूना, गारा इत्यादि ढोने का तसला। ३. वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय। ४ वह पक्का गड्ढा जिसमें जूसी आदि रखी जाय।

तगीरⓟ—संज्ञा पुं० [अ० तगय्युर] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।

तगीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तगीर] परिवर्तन।

तचना†—क्रि० अ० दे० "तपना"। उ०—मानों विधि अब उलटि रची री। जानत नहीं सखी काहे ते वही न तेज तची री। —सूर०।

तचा†—संज्ञा स्त्री० [सं० त्वचा] चमड़ा। खाल।

तचाना—क्रि० स० [हिं० तपाना] १ तपाना। तप्त करना। जलाना। गरम करना। २ संतप्त या दुःखी करना।

तचित—वि० [हिं० तचना] १ संतप्त। दुःखी। २ तप्त। प्रज्वलित।

तच्छकⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तक्षक"।

तच्छिनⓟ—क्रि० वि० [सं० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।

तज—संज्ञा पुं० [सं० त्वच्] १ दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़। गरममसाले में पड़नेवाला तेजपत्ता इसका पत्ता और तेज (लकड़ी) इसकी छाल है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में आती है।

तजकिरा—संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। जिक्र।

तजनⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० त्यजन] छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग।

संज्ञा पुं० [सं० तजीन] कोड़ा। चाबुक।

तजना—क्रि० स० [सं० त्यजन] त्यागना। छोड़ना।

तजरबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय। अनुभव। अनुभूति। २ वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जाय।

तजरबाकार—संज्ञा पुं० [अ० तजरबा+फा० कार] जिसने तजरबा किया हो। अनुभवी व्यक्ति।

तजवीज—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संमति। राय। २ फैसला। निर्णय। ३ ख्याल। अनुमान। विचार।

यौ०—तजवीजसानी=अभियोग की फिर से होनेवाली सुनवाई। पुनर्विचार। ४ बंदोबस्त।

तज्जन्य—वि० [सं०] उससे उत्पन्न।

तज्जनित—वि० [सं०] उससे उत्पन्न।

तज्ञ—वि० [सं०] १ तत्व का जाननेवाला। तत्वज्ञ। २ ज्ञानी।

तटंक—संज्ञा पुं० दे० "ताटंक"।

तट—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीर। किनारा। कूल। २ क्षेत्र। खेत। ३. प्रदेश।

क्रि० वि० समीप। पास। निकट।

तटका—वि० [सं० तत्काल?] दे० "टटका"।

तटनीⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० तटिनी] (तटवाली) नदी। सरिता। दरिया।

तटस्थ—वि० [सं०] १ तट या किनारे पर रहनेवाला। २ निकट रहनेवाला। ३ अलग रहनेवाला जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष। मध्यस्थ।

तटिनी, तटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

तड़—संज्ञा पुं० [सं० तट] एक ही जाति या समाज में होनेवाला विभाग। पक्ष।

संज्ञा पुं० [अनु०] १. कोई चीज पटकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २ आमदनी की सूरत (दलाल)।

तड़क—संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़कना] १ तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण किसी चीज पर पड़ा हुआ चिह्न।

तड़कना—क्रि० अ० [अनु० तड़] १ 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। कड़कना। २ किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३ आँच पाकर फटने या टूटने की आवाज होना। ४. जोर का शब्द करना। ५ बिगड़ना। झुँझलाना। ६ उछलना। कूदना।

तड़क भड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठाट-बाट।

तड़का—संज्ञा पुं० [हिं० तड़कना] १ सवेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।

तड़काना—क्रि० स० [हिं० तड़कना का स० रूप] १ इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २ जोर का शब्द उत्पन्न करना।

तड़कीला†—वि० [हिं० तड़क+ईला (प्रत्य०)] १ चमकीला। भड़कीला। २ तड़कनेवाला।

यौ०—तड़कीला भड़कीला=चमक दमकवाला।

तड़क्का†—क्रि० वि० दे० "तड़ाका"।

तड़तड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] तड़ तड़ शब्द होना।

क्रि० स० तड़ तड़ शब्द उत्पन्न करना।

तड़प—संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़पना] १ तड़पने की क्रिया या भाव। २ चमक। भड़क।

तड़पना—क्रि० अ० [अनु०] १. अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना। छटपटाना। तलमलाना। २. बहुत अधिक दुःखी होना। ३. घोर शब्द करना। गरजना।

तड़पाना—क्रि० स० [हिं० तड़पना का स० रूप] दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त करना।

तड़फना—क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तड़बंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़+फा० बंदी] समाज या बिरादरी में अलग अलग तड़ या विभाग बनना।

तड़ाक—संज्ञा स्त्री० [सं० तड़ाका] तड़ाके का शब्द।

क्रि० वि० 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित। २ जल्दी से। चटपट। तुरत।

यौ०—तड़ाक पड़ाक=चटपट। तुरत।

तड़ाका—संज्ञा पुं० [अनु०] "तड़" शब्द।

क्रि० वि० चटपट।

तड़ाग—संज्ञा पुं० [सं० तडाग] पद्मादि-युक्त सर। तालाब। सरोवर। ताल। पुष्कर। उ०—बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हरखे बंधु समेत। परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत॥ —मानस०।

तड़ागना—क्रि० अ० [अनु०] १ डींग हाँकना। २ हाथ पैर हिलाना। प्रयत्न करना।

तड़ातड़—क्रि० वि० [अनु०] १ इस प्रकार जिसमें तड़ तड़ शब्द हो। २. झटपट। शीघ्रता से।

तड़ातड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. शीघ्रता। जल्दीबाजी। उतावलापन। २ व्यग्रता। व्याकुलता। बेकली।

तड़ाना—क्रि० स० [हिं० ताड़ना का प्रे० रूप] किसी दूसरे को ताड़ने में प्रवृत्त करना। भँपाना।

तड़ावा—संज्ञा पुं० [हिं० तड़ाना] १ ऊपरी तड़क भड़क। २ धोखा। छल।

तड़ित—संज्ञा स्त्री० [सं० तड़ित] बिजली।

तड़िता—संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।

तड़ी—संज्ञा स्त्री० [तड से अनु०] १. चपत । धौल । २ धोखा । छल (दलाल)। ३ बहाना। हीला।

तड़ीत(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।

तत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वही या वह। ब्रह्म। परमात्मा, जैसे, "तत्वमसि" एक वैदिक महावाक्य जिसका अर्थ है 'हे जीव! तू वही है' अर्थात् वही ब्रह्म तू भी है। २. वायु। हवा।

सर्व० उस। जैसे—तत्काल। तत्क्षण।

तत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २ विस्तार। ३. पिता। ४ पुत्र। ५ वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों, जैसे—सारंगी, सितार आदि।

(पु)†—वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम।

(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तत्व"।

ततकार—संज्ञा पुं० दे० "तत्ताथेई"।

ततखन(पु)—क्रि० वि० दे० "तत्क्षण"।

तताथेई—संज्ञा स्त्री० [अनु०] नृत्य का शब्द। नाच के बोल।

ततबाउ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ततुवाय"।

ततबीर(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "तदवीर"।

ततसार(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० तप्तशाला] आँच देने या तपाने की जगह।

तताई†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० तत्ता] गरमी। उ०—सारी है आई तताई सिंधाई कहाँ मरिबे में कहा रह्यो बाकी।—शृंगार०।

ततारना—क्रि० स० [हिं० तत्ता] १ गरम जल से धोना। २ ततेरा देकर धोना।

तति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्रेणी। पंक्ति। ताँता। २. समूह। ३ विस्तार।

तुवाऊ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ततुवाय"।

ततैया—संज्ञा स्त्री० [सं० तिक्त] बर्रें। भिड़।

ततोधिक—वि० [सं० ततोऽधिक] १ उससे बढ़कर। २ उससे अधिक।

तत्काल—क्रि० वि० [सं०] तुरत। फौरन। उसी समय।

तत्कालिक—वि० दे० "तात्कालिक"।

तत्कालीन—वि० [सं०] उस समय का।

तत्क्षण—क्रि० वि० [सं०] उसी समय। तुरंत। फौरन।

तत्त(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तत्व"।

तत्ता(पु)—वि० [सं० तप्त] गरम। उष्ण।

तत्ताथेई—संज्ञा स्त्री० दे० "तताथेई"।

तत्ता-थंबा—संज्ञा पुं० [हिं० तत्ता+थामना] दे० "तत्तो थंबो"।

तत्तो थंबो—संज्ञा पुं० [हिं० तत्ता=गरम +थामना] १ दम दिलासा। बहलावा। प्रोत्साहन। २ लड़ते हुए आदमियों को समझाकर शांत करना। बीच बचाव।

तत्थ†—वि० [सं० तत्व] मुख्य। प्रधान। संज्ञा पुं० १. शक्ति। बल। ताकत।

तत्पर—वि० [सं०] [संज्ञा तत्परता] १ उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २ निपुण। ३. चतुर। होशियार। प्रवीण।

तत्परता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सन्नद्धता। मुस्तैदी। २. दक्षता। निपुणता। ३. होशियारी। प्रवीणता।

तत्पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २ एक रुद्र का नाम। ३ एक प्रकार का समास जिसमें पहले पद में कर्ता कारक की विभक्ति को छोड़कर दूसरे कारकों की विभक्ति लुप्त हो और पिछले पद का अर्थ प्रधान हो, जैसे—जलचर।

तत्र—क्रि० वि० [सं०] उस जगह। वहाँ।

तत्रभवान्—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीनकाल में सम्मान के लिये व्यक्तियों के नामों के पहले प्रयुक्त पद। माननीय। पूज्य, जैसे, तत्रभवान् काश्यप।

तत्रापि—अव्य० [सं०] १ वहाँ भी। उस जगह भी। २ उसपर भी। तथापि।

तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. वास्तविक स्थिति। यथार्थता। असलियत। २ जगत् का मूल कारण। सांख्य शास्त्र के अनुसार सृष्टि के २५ मौलिक उपादानों (कारणों) या तत्वों में से कोई। ये इस प्रकार हैं—पुरुष, प्रकृति, महत्तत्व (बुद्धि), अहंकार, चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वक्, वाक्, पाणि, वायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पातंजल दर्शन के अनुसार तत्व छब्बीस हैं, पच्चीस सांख्यवाले और छब्बीसवाँ ईश्वर भी। ३ पंचभूत। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। ४ परमात्मा। ब्रह्म। ५. सार वस्तु। सारांश। ६ वह भौतिक सार पदार्थ जिसका साधारण रासायनिक प्रक्रिया से उससे भिन्न पदार्थों में विश्लेषण न किया जा सके [अं० एलीमेंट] (रसायन)। ये मोटे रूप से धातु और धात्वेतर (धातुओं के अतिरिक्त) दो वर्गों में विभाजित हैं। अधिक परिचित तत्वों में हाइड्रोजन, कार्बन, सोना, चाँदी आदि हैं। आजकल इनकी संख्या बानवे मानी जाती है। ७. रहस्य। भेद। उ०—तत्व प्रेमकर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा॥ —मानस।

तत्वज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. तत्व जाननेवाला। रहस्य का ज्ञाता। तत्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २ दार्शनिक।

तत्वज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्मज्ञान। दार्शनिक पहुँच।

तत्वज्ञानी—संज्ञा पुं० दे० "तत्वज्ञ"।

तत्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तत्व होने का भाव या गुण। २ यथार्थता।

तत्वदर्शी—संज्ञा पुं० दे० "तत्वज्ञ"।

तत्वदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञानचक्षु। दिव्यदृष्टि। दार्शनिक सूझ या पहुँच।

तत्ववाद—संज्ञा पुं० [सं०] दर्शन शास्त्र संबंधी विचार। दार्शनिक विचार या सिद्धांत।

तत्ववादी—संज्ञा पुं० [सं०] १ तत्ववाद का ज्ञाता और समर्थक। २ यथार्थ और स्पष्ट बात करनेवाला।

तत्वविद्—संज्ञा पुं० [सं०] तत्ववेत्ता।

तत्वविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दर्शनशास्त्र।

तत्ववेत्ता—संज्ञा पुं० [सं०] १ तत्वज्ञ। २ दार्शनिक। दर्शनशास्त्र का ज्ञाता।

तत्वशास्त्र—संज्ञा पुं० दे० "दर्शनशास्त्र"।

तत्वावधान—संज्ञा पुं० [सं०] जाँच-पड़ताल। देखरेख। निरीक्षण।

तत्सम—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत या अन्य किसी भाषा में प्रयुक्त शब्द या उसका कोई रूप जो उसकी परवर्ती या अन्य किसी विदेशी भाषा में ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया गया हो; जैसे—दया, माया, सिनेमा आदि। किसी भाषा का शुद्ध शब्द।

तत्सामयिक—वि० [सं०] उस समय का। उसके समय का।

तथा—अव्य० [सं०] १ और। २ इसी तरह। ऐसे ही। उसी तरह। वैसे ही।

यौ०—तथास्तु=ऐसा ही हो। वैसा ही हो। एवमस्तु।

तथाकथित—वि० [सं०] बिना किसी प्रमाण के कही जानेवाली (बात या कहा जानेवाला व्यक्ति)। आरोपित (व्यक्ति, बात या घटना)।

तथाकथ्य—वि० दे० "तथाकथित"।

तथागत—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध।

तथापि—अव्य० [सं०] तो भी। तब भी।

तथैव—अव्य० [सं०] वैसा ही। उसी प्रकार।

तथोक्त—वि० दे० "तथाकथित"।

तथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सचाई। यथार्थ। वास्तविकता।

वि० [सं०] सच। यथार्थ। असल। वास्तविक।

तद्—वि० [सं०] वह। (यौगिक में)।

†क्रि० वि० [सं० तदा] उस समय। तब।

तदंतर, तदनंतर—क्रि० वि० [सं०] उसके पीछे। उसके बाद। उसके उपरांत।

तदनु—क्रि० वि० [सं०] १ उसके पीछे। तदनंतर। उसके बाद। २ उसी तरह। वैसा ही।

तदनुरूप—वि० [सं०] उसी के रूप का। उसी के समान।

तदनुसार—वि० [सं०] उसके मुताबिक। उसके अनुकूल। उसी के ढंग का।

तदपि—अव्य० [सं०] तो भी। तथापि। तब भी।

तदबीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] अभीष्ट सिद्ध करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब।

तदा—क्रि० वि० [सं०] उस समय। तब।

तदाकार—वि० [सं०] १ वैसा ही। उसी आकार का। तद्रूप। २ तन्मय।

तदारुक—संज्ञा पुं० [अ०] १ भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच। २ दुर्घटना को रोकने के लिये पहले से किया हुआ प्रबंध। पेशबंदी। ३ सजा। दंड।

तदीय—सर्व० [सं०] [संज्ञा तदीयता] उससे संबंध रखनेवाला। उसका।

तदुपरांत—क्रि० वि० [सं०] उसके पीछे। उसके बाद।

तद्गत—वि० [सं०] १. उससे संबंध रखनेवाला। २ उसके अंतर्गत। उसमें व्याप्त।

तद्गुण—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है (अलंकार शास्त्र)।

तद्धित—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं, जैसे—'मित्र' से 'मित्रता'।

तद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत या अन्य किसी भाषा का वह शब्द जिसका रूप परवर्ती या अन्य किसी भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप; जैसे—'अश्रु' का 'आँसू'। किसी भाषा के शुद्ध रूप से बिगड़कर बना हुआ शब्द, जैसे—'लैंटर्न' से 'लालटेन'।

तद्यपि—अव्य० [सं० तथापि] तथापि। तो भी।

तद्रूप—वि० [सं०] समान। सदृश। उसी रूप का।

तद्रूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सादृश्य। समानता।

तद्वत्—वि० [सं०] उसी के जैसा। उसके समान। ज्यों का त्यों। वैसा ही।

तन—संज्ञा पुं० [सं० तनु] शरीर। देह। गात।

मुहा०—तन को लगना=(१) हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। (२) (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना=ध्यान देना। मन लगाना। तन मन मारना=इंद्रियों को वश में रखना। आत्मनिग्रह करना।

क्रि० वि० तरफ। ओर। उ०—मृदु मुसुकाइ हिमकर तन हेरत हीं कहिबे कों दौरि परयो प्यारे नंदनंद कों।—रससारांश।

ⓟवि० दे० "तनिक"।

तनक—वि० [सं० तनु] थोड़ा। अल्प। छोटा।

तनकीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जाँच। तहकीकात। २ अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का स्थिर करना जिनका फैसला होना जरूरी हो (अं० इशू)।

तनखाह—संज्ञा स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन। तलब।

तनगनाⓟ†—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

तनजेब—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

तनज्जुल—वि० [अ०] उन्नत का उलटा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ। पद या प्रतिष्ठा में नीचे उतारा या घटाया हुआ।

तनज्जुली—संज्ञा स्त्री० [फा०] अवनति।

तनतनहा—वि० [हिं० तन+फा० तनहा] अकेला।

तनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√तान + आई (प्रत्य०)] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाउ—वि० दे० "तनाव"।

तनतनाना—क्रि० अ० [अ० तनतन] १ शान दिखाना। २ क्रोध करना।

तनत्राण—संज्ञा पुं० दे० "तनुत्राण"।

तनधर—संज्ञा पुं० दे० "तनुधारी"।

तनना—क्रि० अ० [सं० तन या तनु] १ खिंचाव या खुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का कड़ा होना या बढ़ना। २ अकड़कर सीधा खड़ा होना। ३ कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना। ऐंठना।

तनपात—संज्ञा पुं० दे० "तनुपात"।

तनपोषक—संज्ञा पुं० [सं०] जो केवल अपने ही शरीर या स्वार्थ का ध्यान रखे। स्वार्थी।

तनमय—वि० दे० "तन्मय"।

तनय—संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।

तनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेटी। पुत्री।

तनराग—संज्ञा पुं० दे० "तनुराग"।

तनरुहⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।

तनवाना—क्रि० स० [हिं० तानना का प्रे० रूप] तानने का काम दूसरे से कराना। तनाना।

तनसुख—संज्ञा पुं० [हिं० तन+सुख] एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।

तनहा—वि० [फा०] जिसके संग कोई न हो। अकेला। एकाकी।

क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तनहा होने की दशा या भाव। अकेलापन। २ एकांत।

तना—संज्ञा पुं० [फा०] वृक्ष का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह मुख्य भाग जिसमें डालियाँ निकलती हैं। पेड़ का धड़। मदल।

क्रि० वि० [हिं० तन] ओर। तरफ।

तनाकुⓟ†—क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनाजा—संज्ञा पुं० [अ०] १ बखेड़ा। झगड़ा। २ शत्रुता। बैर।

तनाना—क्रि० स० दे० "तनवाना"।

तनाव†—संज्ञा स्त्री० [अ० तिनाब] खेमे की रस्सी।

संज्ञा पुं० [हिं०√तन+आव (प्रत्य०)] १ तनने का भाव या क्रिया। २ रस्सी। डोरी।

तनि, तनिक—वि० [सं० तनु=अल्प] १ थोड़ा। कम। २ छोटा।

क्रि० वि० जरा। टुक।

तनिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर का दुबलापन। कृशता। तनुत्व।

तनिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० तनी] १ लँगोटी। कौपीन। २ कछनी। जाँघिया। ३. चोली।

तनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तानना] १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिये लगाया जाता है। बद। बंधन। उ०—कंचुकि ते कुचकलस प्रगट ह्वै टूटि न तरक तनी।—सूर०। २ दे० "तनिया"।
†क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनीनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० तनी] बंधन। बद।
उ०—बसन लपेटि तन गाढ़ी के तनीनि तनि, सोनचिरिया सी बनी सोई पिय संग में।—शृंगार०।

तनु—वि० [सं०] १ दुबलापतला। २ थोड़ा। कम। ३. कोमल। नाजुक। ४. सुंदर। बढ़िया।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर। देह। बदन। २ चमड़ा। खाल। ३. स्त्री। औरत।

तनुकⓅ†—क्रि० वि० दे० "तनिक"।
संज्ञा पुं० दे० "तनु"।

तनुज—संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।

तनुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़की। बेटी।

तनुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लघुता। छोटाई। २ दुर्बलता। दुबलापन। कृशता।

तनुत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बखतर।

तनुधारी—वि० [सं०] शरीर धारण करनेवाला। देहधारी।

तनुमध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौरस नाम का वर्णवृत्त।
वि० [सं०] पतले मध्य भागवाली। पतली कमरवाली।

तनुराग—संज्ञा पुं० [सं०] केसर, चंदन आदि मिला सुगंधित उबटन। बटना।

तनुरूह, तनुरुह—संज्ञा पुं० [सं० तनूरुह] १ रोआँ। रोम। २ बाल।

तनूजⓅ—संज्ञा पुं० दे० "तनुज"।

तनूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० तनुजा] लड़की। बेटी।

तनेन, तनेना—वि० [हिं० √तन+एन (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १ खिंचा हुआ। टेढ़ा। तिरछा। २ क्रुद्ध। नाराज।

तनैⓅ—संज्ञा पुं० दे० "तनय"।

तनैयाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० तनया] बेटी।

तनोजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० तनुज] १ रोम। लोम। रोआँ। २ लड़का। बेटा।

तनोरुह—संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।

तन्नाना—क्रि० अ० [हिं० तनना] अकड़ना। ऐंठना। अकड़ दिखाना।

तन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० तनिका] वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते हैं। जोती।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरनी"।

तन्मय—वि० [सं०] [स्त्री० तन्मयी] जो किसी काम में बहुत मग्न हो। लवलीन। लगा हुआ। दत्तचित्त।

तन्मयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिप्तता। एकाग्रता। लीनता। लगन।

तन्मात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतना ही या उसी मात्रा का पदार्थ। वही वस्तु। २ सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। ये संख्या में पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

तन्मात्रा—संज्ञा स्त्री० दे० "तन्मात्र"।

तन्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।

तन्वंग—वि० [सं० तनु+अंग] [स्त्री० तन्वंगी] १. दुबले पतले अंगोंवाला। २ सुकुमार शरीरवाला।

तन्वंगी—वि० [सं०] १ दुबली पतली। २. कोमलांगी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुबली। पतली स्त्री। २ कोमलांगी स्त्री। ३ सुंदर स्त्री।

तन्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
वि० दुबली या कोमल अंगोंवाली।

तप—संज्ञा पुं० [सं० तपस्] १ शरीर को तपाने या कष्ट देनेवाले वे कार्य जो चित्त को विषयों से हटाने के लिये किए जायँ। तपस्या। २ शरीर या इंद्रिय को वश में रखने का धर्म या कर्म। साधना। ३ नियम। ४ अग्नि।
संज्ञा पुं० [सं०] १ ताप। गरमी। २ ग्रीष्म ऋतु। ३ बुखार। ज्वर।

तपकनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० टपकना] १ धड़कना। उछलना। २ चमकना। ३. दे० "टपकना"।

तपती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य और छाया की कन्या जिसके संवरण के गर्भ से कुरु हुए थे। २ ताप्ती नदी।

तपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ तपने की क्रिया या भाव। ताप। जलन। आँच। दाह। २ सूर्य। रवि। ३ सूर्यकांत मणि। ४ ग्रीष्म। गरमी। ५ एक प्रकार की अग्नि। ६ धूप। ७ वह क्रिया या हाव भाव आदि जो नायक के वियोग में नायिका करे या दिखलावे।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तपना] ताप। गरमी।

तपना—क्रि० अ० [सं० तपन] १ अधिक गरमी आदि के कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २ संतप्त होना। कष्ट सहना। ३ गरमी या ताप फैलाना। ४ प्रभुत्व या प्रताप दिखलाना। आतंक फैलाना। ५ तपस्या करना। तप करना। ६ बुरे कामों में अंधाधुंध खर्च करना।

तपनिⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।

तपनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० तपना] १ वह स्थान जहाँ बैठकर आग तापते हों। कौड़ा। अलाव। २ तपस्या। तप।

तपरितु—संज्ञा स्त्री० [सं० तप+ऋतु] गरमी का मौसिम।

तपश्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "तपश्चर्या"।

तपश्चर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तपस्या।

तपस—संज्ञा सं० दे० "तपस्या"।

तपसा—संज्ञा स्त्री० [सं० तपस्या] १ तपस्या। तप। २ ताप्ती नदी।

तपसाली—संज्ञा पुं० [सं० तपःशालिन्] तपस्वी।

तपसी—संज्ञा पुं० [सं० तपस्वी] तपस्वी। तपस्या करनेवाला।

तपस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तप। २ व्रतचर्या। ३ कठिन साधना।

तपस्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तपस्वी होने की अवस्था या भाव।

तपस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तपस्या करनेवाली स्त्री। २ तपस्वी की स्त्री। ३ पतिव्रता या सती स्त्री।

तपस्वी—संज्ञा पुं० [सं० तपस्विन्] [स्त्री० तपस्विनी] १ वह जो तप करता हो। तपस्या करनेवाला। २ दीन। ३. दया करने योग्य।

तपा—संज्ञा पुं० [हिं० तप] १ तपस्वी। २ तपाया हुआ द्रव्य या पदार्थ। ३ बड़े अनुभववाला व्यक्ति। वह व्यक्ति जिसने बहुत कुछ देख, सुन या भोग लिया हो।

तपाक—संज्ञा पुं० [फा०] १ आवेश। जोश। ताव। उत्साह। २ वेग। तेजी।

तपाना—क्रि० स० [हिं० तपना का स० रूप] १ गरम करना। तप्त करना। २ दुःख देना। ३ चाँदी सोने आदि को आग में डालकर परखना। ४ दुःख, प्रलोभन या कष्ट में डालकर किसी व्यक्ति को आजमाना। परीक्षा लेना।

तपावंत—संज्ञा पुं० [हिं० तप+वत (प्रत्य०)] वह जो तपस्या करता हो। तपस्वी।

तपित(पु)†—वि० [सं०] तपा हुआ। गरम।

तपिया—संज्ञा पुं० दे० "तपस्वी"।

तपिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] गरमी। तपन।

तपी—संज्ञा पुं० [हिं० तप] तपस्वी।

तपेदिक—संज्ञा पुं० [फा० तप+अ० दिक] राजयक्ष्मा। क्षय रोग।

तपेला—संज्ञा पुं० [हिं० पतीला] वह पात्र जिसमें किसी वस्तु को रखकर गरम किया जाय।

तपोधन—संज्ञा पुं० [सं०] तपस्या ही जिसका धन हो। बड़ा तपस्वी।

तपोबल—संज्ञा पुं० [सं०] तप का प्रभाव या शक्ति।

तपोभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तप करने का स्थान। तपोवन।

तपोलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक। सत्यलोक के नीचे का तथा जनलोक के ऊपर का लोक।

तपोवन—संज्ञा पुं० [सं०] तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य वन।

तपोवृद्ध—वि० [सं०] जो तपस्या में श्रेष्ठ हो। तपस्या में बढ़ा चढ़ा।

तप्त—वि० [सं०] १ तपाया या तपा हुआ। गरम। उष्ण। २ दुःखित। पीड़ित।

तप्तकुंड—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राकृतिक जलधारा जिसका पानी गरम हो। गरम पानी का सोता।

तप्तकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्त स्वरूप किया जाता है। इसमें तीन दिन तप्त दूध, तीन दिन तप्त घी और तीन दिन तप्त वायु पर रहना पड़ता था (मनु०)।

तप्तमाष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबंध में किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी। इसमें लोहे या ताँबे के बरतन में घी या तेल खौलाया जाता था और परीक्षार्थी उस खौलते हुए तेल या घी में अपनी उँगली डालता था। यदि उसकी उँगली में छाले आदि नहीं पड़ते थे तो उसे सच्चा समझा जाता था।

तप्तमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शंखचक्रादि के छापे जो तपाकर वैष्णव लोग अपने अंगों पर दाग लेते हैं। दागकर शरीर पर उभारी हुई मुद्रा।

तफ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तप"।

तफरीक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विभाग। बँटवारा। २ अंतर। फरक। ३ गणित में घटाने की क्रिया। बाकी।

तफरीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनबहलाव। दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। २ खुशी। प्रसन्नता। ३ हवाखोरी। सैर।

तफसील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्तार। विस्तृत वर्णन। २ टीका। तशरीह। ३ कैफियत। ब्योरा।

तब—अव्य० [सं० तदा] १ उस समय। उस वक्त। २ इस कारण। इस वजह से।

तबक—संज्ञा पुं० [अ०] १ आकाश के वे खंड जो पृथ्वी के ऊपर और नीचे माने जाते हैं। लोक। तल। २ परत। तह। ३. चाँदी, सोने के पत्तरों को बेलकर या पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक। ४ चौड़ी और छिछली थाली।

तबकगर—संज्ञा पुं० [अ० तबक+फा० गर] सोने, चाँदी के तबक बनानेवाला। तबकिया।

तबका—संज्ञा पुं० [अ० तबक] १ खंड। विभाग। हिस्सा। २ तह। परत। ३ लोक। तल। ४ आदमियों का गरोह। समुदाय।

तबकिया—संज्ञा पुं० दे० "तबकगर"।

तबदील—वि० [अ०] [संज्ञा तबदीली] जो बदला गया हो। परिवर्तित।

तबर—संज्ञा पुं० [फा०] १ कुल्हाड़ी। २ कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।

तबल—संज्ञा पुं० [अ० तबल] १ बड़ा ढोल। २ नगाड़ा। डंका।

तबलची—संज्ञा पुं० [अ० तबल] वह जो तबला बजाता हो। तबलिया।

तबला—संज्ञा पुं० [अ० तबल] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा। यह बाजा एक अन्य बाजे के साथ बजाया जाता है जिसे "बायाँ," "ठेका" या "डुग्गी" कहते हैं।

तबलिया—संज्ञा पुं० दे० "तबलची"।

तबलीग—संज्ञा पुं० [अ०] दूसरों को अपने धर्म में मिलाना।

तबादला—संज्ञा पुं० [अ०] १ बदला जाना। परिवर्तन। २. किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। बदली।

तबाशीर—संज्ञा पुं० [सं० तवक्षीर (त्वक्-क्षीर) ?] बंसलोचन।

तबाह—वि० [फा०] [संज्ञा तबाही] जो बिलकुल खराब हो गया हो। नष्ट। बरबाद।

तबाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।

तबीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ चित्त। मन। जी।

मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना = किसी से प्रेम होना। आशिक होना। तबीअत फड़क उठना = चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। तबीअत फिर जाना = मन हट जाना। तबीअत भरना = तसल्ली होना। तबीअत लगना (१) मन में अनुराग उत्पन्न होना। (२) ध्यान लगा रहना। मन बहलना।

२ बुद्धि। समझ। ज्ञान।

तबीअतदार—वि० [अ० तबीअत+फा० दार] १ भावुक। रसिक। सहृदय। २ समझदार।

तबीब—संज्ञा पुं० [अ०] वैद्य। हकीम।

तबेला—संज्ञा पुं० दे० "तवेला"।

तब्बर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "टावर"।

तभी—अव्य० [हिं० तब+ही] १ उसी समय। उसी वक्त। उसी घड़ी। २ इसी कारण। इसी वजह से।

तमंचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटी बंदूक। पिस्तौल। २ वह लंबा पत्थर जो दरवाजों की बगल में लगाया जाता है।

तम—संज्ञा पुं० [सं० तमस्] १ अंधकार। अँधेरा। २ राहु। ३ वराह। सूअर। ४ पाप। ५ क्रोध। ६ अज्ञान। ७ कालिख। कालिमा। ८ नरक। ९ मोह। १० सांख्य में प्रकृति का तीसरा गुण जिससे काम, क्रोध और हिंसा आदि उत्पन्न होते हैं।

प्रत्य० [सं० तमप्] एक प्रत्यय जो तुलना के लिये विशेषण के अंत में लगकर "सबसे बढ़कर" का अर्थ देता है, जैसे—श्रेष्ठतम।

तमक—संज्ञा पुं० [हिं० तमकना] १ जोश। उद्वेग। २ तेजी। तीव्रता। ३ क्रोध का आवेश। ताव।
तमकना—क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध का आवेश दिखलाना। उ०—अंजन भास तजत तमकत तकि तानत दरसन डीठि। हारेहु नहिं हटत अमित बल बदन पयोधि पईठ।—सूर०। २ दे० "तमतमाना"।
तमगा—संज्ञा पुं० [तु०] पदक।
तमचर—संज्ञा पुं० [सं० तमीचर] १. राक्षस। निशाचर। २ उल्लू।
तमचुर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० ताम्रचूड़] मुर्गा। कुक्कुट। उ०—सुनि तमचुर को सोर घोष की बागरी। नवसत साजि सिंगार चलीं नवनागरी।—सूर०।
तमचोर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तमचुर"।
तमच्छन्न—वि० दे० "तमाच्छन्न"।
तमतमाना—क्रि० अ० [सं० ताम्र] धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।
तमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तम का भाव। २ अँधेरा। अंधकार।
तमन्ना—संज्ञा स्त्री० [अ०] ख्वाहिश। इच्छा। मनोकामना।
तमयी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० तम+मयी] रात।
तमस—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। २ अज्ञान। ३. पाप। ४ तमसा नदी। टौंस।
तमसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] टौंस नदी।
तमस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।
तमस्वी—वि० [सं० तमस्विन्] अंधकार-पूर्ण।
तमस्सुक—संज्ञा पुं० [अ०] वह कागज जो ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण स्वरूप लिखकर महाजन को देता है। ऋणपत्र। दस्तावेज।
तमहीद—संज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।
तमा—संज्ञा पुं० [सं० तमस्] राहु।
(पु)संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि। रजनी।
संज्ञा स्त्री० [अ० तमअ] लोभ।
तमाकू—संज्ञा पुं० [स्पे० टुबैको] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते सूँघे, पिए और खाए जाते हैं। २ इसके पत्तों का व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नशे के लिये करते हैं। सुरती। ३ इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुंह से धुँआ खींचते हैं।
तमाखू†—संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।
तमाचा—संज्ञा पुं० [फा० तबानच] हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार। थप्पड़। झापड़।
तमाच्छन्न—वि० [सं०] तम या अंधकार से घिरा हुआ।
तमाच्छादित—वि० दे० "तमाच्छन्न"।
तमादी—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात की मुद्दत या मियाद गुजर जाना। किसी काम का नियमित समय बीत जाना।
तमाम—वि० [अ०] १ पूरा। संपूर्ण। कुल। २ समाप्त। खतम।
मुहा०—काम तमाम होना=प्राण निकल जाना।
तमामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।
तमारि—संज्ञा पुं० [सं० तमस्+अरि] सूर्य।
संज्ञा स्त्री० दे० "तँवार"।
तमाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र के किनारे होनेवाला एक बहुत ऊँचा सुंदर सदाबहार वृक्ष जिसकी पत्तियाँ चौड़ी और कालापन लिए लाल होती हैं। २ तेजपत्ता। ३ काले खैर का वृक्ष। ४ वरुण वृक्ष। ५ एक प्रकार की तलवार।
तमाशबीन—संज्ञा पुं० [अ० तमाश + फा० बीन] १ तमाशा देखनेवाला। २. वेश्यागामी। ऐयाश।
तमाशा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २ अद्भुत व्यापार। अनोखी बात।
तमाशाई—संज्ञा पुं० [अ०] तमाशा देखनेवाला।
तमिस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंधकार। अँधेरा। २ क्रोध। गुस्सा।
वि० [स्त्री० तमिस्रा] अंधकारपूर्ण।
तमिस्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।
तमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। उ०—जीति लियो मखतूल के तार तमी-तम सार दुरेफकुमार सों—शृंगार०।
तमीचर—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।
तमीज—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ भले और बुरे को पहचानने की शक्ति। विवेक। २ पहचान। ३ ज्ञान। बुद्धि। ४ अदब। कायदा।
तमीपति, तमीश—संज्ञा पुं० [सं० तमी+पति, ईश] चंद्रमा।
तमोगुण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति के तीन गुणों या धर्मों में से एक जिसके लक्षण अज्ञान, आलस्य, दंभ, दर्प आदि हैं। यह तीनों में निकृष्ट गुण माना जाता है क्योंकि इसकी अधोमुखी गति आत्मा को अध पतन की ओर ले जाती है।
तमोगुणी—वि० [सं०] जिसकी वृत्ति में तमोगुण हो। अधम वृत्तिवाला।
तमोघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ चंद्रमा। ३ सूर्य। ४ बुद्ध। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ ज्ञान। ८. दीपक। दीआ।
वि० जिससे अँधेरा दूर हो।
तमोमय—वि० [सं०] १ अंधकार से भरा हुआ। २ तमोगुण युक्त। ३. अज्ञानी। ४ क्रोधी।
तमोर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] पान। उ०—दाहिने अतर और अँमर तमोर लीन्हे, सामुहे लपेटे लाज भोजन के थार गहें।—छंदार्णव।
तमोरा—संज्ञा पुं० [हिं० तमोर] दे० "तांबूल"। उ०—अधर अधर सों भीज तमोरा। अलकाउर मुरि मुरि गा तोरा।—पदमावत।
तमोरी(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।
तमोल(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १. पान का बीड़ा। २ दे० "तंबोल"। उ०—बेंदी भाल तँबोल मुँह, सीस सिलसिले बार। दृग आँजे, राजे खरी एई सहज सिंगार।—बिहारी०।
तमोली—संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।
तमोहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४ ज्ञान।
वि० [सं०] १ अंधकार दूर करनेवाला। २ अज्ञान दूर करनेवाला।
तय—वि० [अ०] १ पूरा किया हुआ। निबटाया हुआ। समाप्त। २ निश्चित। ठहराया हुआ। मुकर्रर। ३ निबटाया हुआ। निर्णीत। फैसल।
तयना(पु)†—क्रि० अ० दे० "तपना"।
तयार†(पु)—वि० दे० "तैयार"।
तरंग—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पानी की लहर। हिलोर। मौज। २ संगीत में स्वरों का चढ़ाव उतार। स्वरलहरी। ३ चित्त की उमंग। मन की मौज।
तरंगवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
तरंगायित—वि० [सं०] १ जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २ तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहरदार।

तरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी ।
वि० स्त्री० तरंगवाली ।

तरंगित—वि० [सं०] जिसमें तरंगें उठ रही हों । हिलोर मारता या लहराता हुआ । नीचे ऊपर उठता हुआ ।

तरंगी—वि० [सं० तरंगिन्] [स्त्री० तरंगिणी] १ तरंगयुक्त । जिसमें लहर हो । २ मनमौजी ।

तरंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाव । नौका । उड़प । २ मछली मारने की डोरी में लगी हुई छोटी सी लकड़ी । ३ नाव खेने का डाँड़ा । बल्ला ।

तर—वि० [फा०] १ भीगा हुआ । आर्द्र । गीला । २ शीतल । ठंढा । ३ जो सूखा न हो । हरा । ४ मालदार ।
†क्रि० वि० [सं० तल] तले । नीचे ।
प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो तुलना के लिये गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण में) सूचित करता है, जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर ।

तरई†—संज्ञा स्त्री० [सं० तारक] नक्षत्र । सितारा ।

तरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़कना] दे० "तड़क" ।
संज्ञा पुं० [सं० तर्क] १ सोचविचार । उधेड़बुन । ऊहापोह । २ जिरह । दलील । ३ सुंदर उक्ति । चतुराई का वचन । चोज की बात । उ०—प्यारी को मुख धोइ कै पट पोंछि सँवारयो । तरक बात बहुतइ कही कछु सुधि न सँभारयो ।—सूर० ।
संज्ञा स्त्री० [सं० तर=पथ ?] वह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरंभ का शब्द सूचित करने के लिये लिखा जाता है ।

तरकना†Ⓟ—क्रि० अ० दे० "तड़कना" ।
क्रि० अ० [सं० तर्क] तर्क करना । सोच विचार करना ।
क्रि० अ० [अनु०] उछलना । कूदना ।

तरकश—संज्ञा पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा । भाथा । तूणीर ।

तरकशी—संज्ञा स्त्री० [फा० तर्कश] छोटा तरकस । तूणीर ।

तरका—संज्ञा पुं० [अ०] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले ।

तरकारी—संज्ञा स्त्री० [फा० तर =सब्जी+कारी] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, डंठल, फल आदि पकाकर खाने के काम आते हैं । भाजी । सब्जी । २. खाने के लिये पकाया हुआ फल,फूल, पत्ता आदि । शाक । भाजी । ३ खाने योग्य मांस (प०) ।

तरकी—संज्ञा स्त्री० [सं० ताडंक] कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना ।

तरकीब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ युक्ति । उपाय । ढंग । ढब । २ रचनाप्रणाली । ३. मिलान । बनावट । रचना ।

तरकुली—संज्ञा स्त्री० दे० "तरकी" ।

तरक्की—संज्ञा स्त्री० [अ०] पद, प्रतिष्ठा, आय आदि की वृद्धि । उन्नति । बढ़ती ।

तरखा†—संज्ञा पुं० [सं० तरंग] जल का तेज बहाव । तीव्र प्रवाह ।

तरखान—संज्ञा पुं० [सं० तक्षण] बढ़ई ।

तरछानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० तिरछा] तिरछी आँख से इशारा करना । इंगित करना ।

तरजना—क्रि० अ० [सं० तर्जन] १. तर्जन करना । ताड़न करना । टोंटना । डपटना । २ भला बुरा कहना । बिगड़ना ।

तरजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "तर्जनी" ।
संज्ञा स्त्री० [सं० तर्जन] भय । डर । उ०—अहो रे ! विहंगम बनवासी । तेरे बोल तरजनी बाढ़ति श्रवन सुनत नींदऊ नासी ।—सूर० ।

तरजीला—वि० [सं० तर्जन] १ क्रोधपूर्ण । २ उग्र । प्रचंड ।

तरजीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी को औरों से अच्छा समझना या प्रधानता देना ।

तरजुमा—संज्ञा पुं० [अ०] अनुवाद । भाषांतर । उल्था ।

तरजौंहाँ—वि० दे० "तरजीला" ।

तरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ तरना । तैरना । २ पार जाना । ३ तारनेवाला । पार लगानेवाला ।

तरणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य । २ नाव । ३ निस्तार । उद्धार ।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी" ।

तरणिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या । यमुना । २ एक वर्णवृत्त जिसमें एक नगण और अंत्य गुरु कुल चार वर्ण होते हैं । उ०—नगपनी । बरनती । शिव कही । सुख लही ॥ इसे मती छंद भी कहते हैं ।

तरणितनूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री । यमुना ।

तरणिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का पुत्र । २ यम । ३ शनि । ४. कर्ण ।

तरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौका । नाव ।

तरतरानाⓅ—क्रि० अ० [अनु०] १ तड़ तड़ शब्द करना । तड़तड़ाना । २ घी आदि तरल पदार्थ से बिलकुल तर होना ।

तरतीब—संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना । क्रम । सिलसिला ।

तरद्दुद—संज्ञा पुं० [अ०] १ सोच । फिक्र । अंदेशा । चिंता । खटका । २. मुश्किल । कठिनाई । परेशानी ।

तरनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "तरण" ।
संज्ञा पुं० दे० "तरौना" ।

तरनतार—संज्ञा पुं० [सं० तरण] निस्तार । मोक्ष । मुक्ति ।

तरनतारन—संज्ञा पुं० [सं० तरण+हिं० तारना] १ उद्धार । निस्तार । मोक्ष । २ भवसागर से पार करनेवाला ।

तरना—क्रि० स० [सं० तरण] पार करना ।
क्रि० अ० मुक्त होना । सद्गति प्राप्त करना ।
Ⓟक्रि० अ० दे० "तलना"

तरनि—संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि" ।

तरनिजाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "तरणिजा" ।

तरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० तरणि] १ नाव । नौका । उ०—जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ।—मानस । २ मिठाई का थाल वा खोंचा रखने का छोटा मोढ़ा । तन्नी ।
संज्ञा पुं० [सं० तरणि] सूर्य । उ०—करि पितु क्रिया वेद जेहि बरनी । भे पुनीत पातक तम तरनी ।—मानस ।

तरपत—संज्ञा पुं० [सं० तृप्ति] १ सुबीता । २ आराम । चैन ।

तरपन—संज्ञा पुं० [सं० तर्पण] देवताओं, ऋषियों और पितरों की तृप्ति के लिये नित्य स्नान करके समुचित मंत्र पढ़ते हुए उन्हें जल देना ।

तरपना—क्रि० अ० दे० "तड़पना" ।

तरपर—क्रि० वि० [हिं० तर+पर] १ नीचे ऊपर । २ एक के पीछे दूसरा ।

तरपीलाⓅ—वि० [हिं० √तरप+ईला (प्रत्य०)] चमकदार ।

तरफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ओर। दिशा। अलंग। २. किनारा। पार्श्व। बगल। ३ पक्ष। पासदारी।

तरफदार—वि० [अ० तरफ+फा० दार] [संज्ञा तरफदारी] पक्ष में रहनेवाला। पक्षपाती। हिमायती।

तरफराना—क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।

तरबतर—वि० [फा०] भीगा हुआ। आर्द्र। गीला।

तरबूज—संज्ञा पुं० [फा० तर्बुज] १. एक प्रकार की बेल। २. इस बेल के बड़े गोल फल जो खाए जाते हैं।

तरबोना(पु)—क्रि० अ० [हिं० तर] तर करना। भिगोना।

तरमीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन। रद्दोबदल। सुधार।

तरराना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] मरोड़ना। ऐंठना।

तरल—वि० [सं०] १ हिलता डोलता। चलायमान। चंचल। २ क्षणभंगुर। ३ बहनेवाला। द्रव। ४. चमकीला। ५. कोमल। मद।

तरलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंचलता। २ द्रवत्व।

तरलनयन—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमें एक के बाद दूसरे के क्रम से चार नगण होते हैं। उ०—तरल नयन, नवल युवति। मुहरि दरस, अमिय पिवति। इसमें छठे वर्ण पर यति और १२वें पर विराम होता है।

तरलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० तरल+हिं० आई (प्रत्य०)] १. चंचलता। चपलता। २ द्रवत्व।

तरवन—संज्ञा पुं० [हिं० ताड़+√बन] १ कान में पहनने की तरकी। २ कर्ण-फूल।

तरवरिया(पु)—वि० [हिं० तलवार] तलवार चलानेवाला।

तरवा—संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।

तरवार—संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"।

संज्ञा पुं० दे० "तरवर"।

तरस—संज्ञा पुं० [सं० त्रस] करुणा। दया। रहम।

मुहा०—(किसी पर) तरस खाना=दयार्द्र होना। दया करना। रहम करना।

तरसना—क्रि० अ० [सं० तर्षण] १. (किसी वस्तु को) न पाकर बेचैन रहना। सतृष्ण होना। २. लालच करना। ललचाना।

क्रि० स० [सं० त्रासन] १. त्रस्त करना। कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। २ भयभीत करना। डराना।

तरसाना—क्रि० स० [हिं० तरसना का स० रूप] १. कोई वस्तु न देकर उसके लिये बेचैन करना। २. व्यर्थ ललचाना।

तरसौहाँ(पु)—वि० [हिं०√तरस+औहाँ (प्रत्य०)] तरसनेवाला।

तरह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रकार। भाँति। किसिम २ आलंकारिक रचना-प्रकार। ढाँचा। डौल। बनावट। रूपरंग। ३. ढब। तर्ज। प्रणाली। रीति। ढंग। ४ युक्ति। उपाय। ५. बचाव। भुलावा।

मुहा०—तरह देना=खयाल न करना। बचा जाना। जाने देना।

६ हाल। दशा। अवस्था।

तरहटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तलहटी] १. नीची भूमि। २ पहाड़ की तराई।

तरहदार—वि० [फा०] [संज्ञा तरहदारी] १ सुंदर बनावट का। २ शौकीन।

तरहर,† **तरहरी**, **तरहारि**†—क्रि० वि० [हिं० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे। उ०—जम-करि-मुँह-तरहरि पर्यौ इहिं धरहरि चित लाउ। विषय-तृषा परिहरि अजौं नरहरि के गुन गाउ।—बिहारी०।

वि० १ नीचे का। २ निकृष्ट। बुरा।

तरहुँड(पु)—क्रि० वि० दे० "तरहर"।

तरहेल†—वि० [हिं० तर+हेल (प्रत्य०)] १ अधीन। निम्नस्थ। २ वश में आया हुआ। पराजित। उ०—तौ चौपर खेलौं करि हिया। जौ तरहेल होइ सौतिया।—पदमावत।

तराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तर—नीचे] १ पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान। २ पहाड़ की घाटी।

तराजू—संज्ञा पुं० [फा०] सीधी डाँड़ी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं। तुला। तकड़ी। किसी वस्तु को तौलने का यंत्र। काँटा।

तराटक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "त्राटिका"।

तराना—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का चलता गाना।

तराप(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बंदूक, तोप आदि का 'तड़ाक' शब्द।

तरापा†—संज्ञा पुं० [अनु०] हाहाकार। कुहराम। त्राहि त्राहि।

तराबोर—वि० [फा० तर+हिं० बोरना] खूब भीगा हुआ। शराबोर।

तरामर(पु)—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ जल्दी जल्दी होनेवाली कारवाई। २ घूस।

तरामीरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

तरायल—वि० [हिं० तर] नीचे का। निम्नस्थ।

तरायला—वि० [सं० तरल] १ तरल। २ चपल। चंचल।

तरारा—संज्ञा पुं० [?] १. उछाल। छलाँग। कुलाँच। २ पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे।

तरावट—संज्ञा स्त्री० [फा० तर+आवट (प्रत्य०)] १ गीलापन। नमी। २ ठढक। शीतलता। ३ शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि। ४ स्निग्ध भोजन।

तराश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काटने का ढंग या भाव। काट। २ काट छाँट। बनावट। रचना प्रकार। ३ ढंग। तर्ज।

तराशना—क्रि० स० [फा०] काटना। कतरना।

तरासना(पु)—क्रि० स० [सं० त्रासन] त्रास या कष्ट देना। भय दिखाना। दुःख देना।

तराहीं(पु)—क्रि० वि० [हिं० तर+आहीं (प्रत्य०)] नीचे।

तरिको†—संज्ञा पुं० [सं० ताडंक] कान का एक गहना। तरकी। तरौना। उ०—तैं कत तोर्‌यो हार नौसरि को मोती बगरि रहे सब बन मैं गयो कान को तरिको।—सूर०।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० तड़ित] बिजली।

तरिता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तड़िता"।

तरियाना†—क्रि० स० [हिं० तरे=नीचे] १. नीचे कर देना। तह में बैठा देना। २. ढाँकना। छिपाना।

क्रि० अ० तले बैठ जाना। तह में जमना।

तरिवन—संज्ञा पुं० [हिं० तखन] १ कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।

तरिवर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरिहँत†—क्रि० वि० [हिं० तर+हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।

तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाव। नौका।

संज्ञा स्त्री० [फा० तर] १. गीलापन। आर्द्रता। २ ठढक। शीतलता। ३. वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। ४ तराई। तरहटी।

ⓟसंज्ञा स्त्री० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। तरीवन। कर्णफूल।

तरीका—संज्ञा पुं० [अ०] १ ढग। विधि। रीति। २ चाल। व्यवहार। ३ उपाय। तदबीर।

तरीवन—संज्ञा पुं० [हिं० तरिवन] कान में पहनने का गहना। कर्णफूल। उ०—कानक कनक तरीवन, बेसरि सोहइ हो। गजमुकुता कर हार कठमनि मोहइ हो। —रामलला०।

तरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष। पेड़। २ एक प्रकार का चीड़।

तरुण—वि० [सं०] [स्त्री० तरुणी] १ युवा। जवान। २ नया। नूतन।

तरुणाईⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+हिं० आई (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।

तरुणानाⓟ—क्रि० अ० [सं० तरुण से हिं० ना० धा०] जवानी पर आना। जवान होना।

तरुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती। जवान स्त्री।

तरुनⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "तरुण"।

तरुनई, तरुनाईⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण, हिं० तरुन+आई (प्रत्य०)] तरुणावस्था। जवानी।

तरुनापाⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तरुनाई।" उ०—बालापन में खेलन खोयो तरुनापै गरवानो। —सूर०।

तरुबाँहीⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० तरु+हिं० बाँह] पेड़ की भुजा। शाखा। डाल।

तरेंदा—संज्ञा पुं० [सं० तरंड] पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा। उ०—विष तरेंदा जेइ गहा पार भए तेहि साथ। ते पै बूड़े बाउर भेंड़-पूँछि जिन्ह हाथ। —पदमावत।

तरेंⓟ†—क्रि० वि० [सं० तले] नीचे। तले।

तरेटी—संज्ञा स्त्री० दे० "तराई"।

तरेरना—क्रि० स० [सं० तर्ज+हिं० हेरना] दृष्टि से असमति या असतोष प्रकट करना। क्रोधपूर्वक देखना। आँखें चढ़ाकर देखना।

तरैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० तारा+ऐया (प्रत्य०)] तारा। नक्षत्र। सितारा।

वि० [हिं० √तर+ऐया (प्रत्य०)] १ तरनेवाला। २ तारनेवाला।

तरोई—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तरोवरⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरौंछ—संज्ञा स्त्री० दे० "तलछट"।

तरौंसⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० तर+औंस (प्रत्य०)] तट। तीर। किनारा। उ०—स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा-तीरु। अँसुवनु करति तरौंस कौ खिनकु खरौ हौं नीरु। —विहारी०।

तरौना—संज्ञा पुं० [सं० ताटक] १ कान में पहनने का एक गहना। तरकी। ताटक। २ कर्णफूल। उ०—लसत सेत सारी ढक्यो तरल तरौना कान। —विहारी०।

तर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्व को कारणोपपत्ति या अनुमान द्वारा निश्चित करने का सिद्धात। दार्शनिक विवेचन द्वारा प्राप्त ज्ञान। हेतुपूर्ण युक्ति। विवेचना। दलील। अनुमान। २ चमत्कारपूर्ण उक्ति। चुहल या चोज की बात। ३ व्यग्य। ताना। उ०—ते सब तर्क बोलिहैं मोकों तासों बहुत डेराऊँ। —सूर०।

संज्ञा पुं० [अ०] त्याग। छोड़ना।

तर्कनाⓟ†—क्रि० अ० [सं० तर्क से हिं० ना० धा०] तर्क करना।

तर्कवितर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊहापोह। सोच-विचार। २. वादविवाद। बहस।

तर्कश—संज्ञा पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।

तर्कशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्कसंगत विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खटनमटन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २ न्यायशास्त्र।

तर्काभास—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा तर्क जो ठीक न हो। कुतर्क।

तर्की—संज्ञा पुं० [सं० तर्किन्] [स्त्री० तर्किनी] तर्क करनेवाला।

तर्कु—संज्ञा पुं० [सं०] तकला। टेकुआ।

तर्क्य—वि० [सं०] जिसपर कुछ सोच-विचार करना आवश्यक हो। विचार्य। चिंत्य।

तर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रकार। किस्म। तरह। २ रीति। शैली। ढग। ढब। ३ रचनाप्रकार। बनावट।

तर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तर्जित] १ धमकाने का कार्य। भयप्रदर्शन। २ क्रोध। ३ फटकार। डाँटडपट।

यौ०—तर्जन गर्जन = क्रोध प्रदर्शन। डाँट डपट।

तर्जना—क्रि० अ० [सं०] डाँटना। धमकाना। डपटना।

तर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं० तर्जनी] अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली।

तर्जुमा—संज्ञा पुं० [अ०] भाषातर। उल्था। अनुवाद।

तर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १ तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। २ कर्मकाड की एक क्रिया जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिये नित्य स्नान करके मंत्र पढ़ते हुए हाथ या अरघे से पानी देते हैं।

तरयौनाⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तरौना"।

तल—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे का भाग। २. पेंदा। तला। ३ जल के नीचे की भूमि। ४ वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। ५. पैर का तलवा। ६ हथेली। ७ किसी वस्तु का बाहरी फैलाव। पृष्ठ देश। सतह। ८ घर की छत। पाटन। ९ सप्त पातालों में से पहला।

तलकⓟ†—अव्य० [हिं० तक] तक। पर्यंत।

तलकर—संज्ञा पुं० [हिं० ताल+कर] वह महसूल या देय धन जो जमींदार ताल से उत्पन्न वस्तुओं पर लगाता था और जो अब सरकार द्वारा वसूल किया जाता है।

तलगृह—संज्ञा पुं० [सं० तल+गृह] तहखाना।

तलघर—संज्ञा पुं० [सं० तलगृह] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भुइँधरा। तहखाना।

तलछट—संज्ञा स्त्री० [हिं० तल+छँटना] द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। तलौंछ।

तलना—क्रि० स० [?] कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

तलपⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तल्प"।

तलपट—वि० [देश०] बरबाद। चौपट।

संज्ञा पुं० [सं० तुल्य+पट] किसी व्यवसाय में हुए हानि लाभ का चिट्ठा।

तलफ—वि० [अ०] [संज्ञा तलफी] नष्ट। बरबाद।

तलफना—क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तलब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश। २ चाह। पाने की इच्छा। ३ आवश्यकता। माँग। ४ बुलावा। बुलाहट। ५ तनखाह। वेतन।

तलबगार—वि० [फा०] चाहनेवाला।

तलबाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिये अदालत में दाखिल किया जाता है।

तलबी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुलाहट। २ माँग।

तलबेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० तलफना] घोर उत्कंठा। आतुरता। बेचैनी। छटपटी। उ०—परी अलबेली हिए खरी तलबेली तके, हरी हरी बेली बकै व्याकुल हरी हरी। —रससारांश।

तलमलाना—क्रि० अ० दे० "तिलमलाना"।

तलव—संज्ञा पुं० [सं०] गाने बजानेवाला। संगीतज्ञ। गवैया।

तलवकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] तलवकारों की क्रिया या कार्यपद्धति।

तलवकार—संज्ञा पुं० [सं०] सामवेद की एक शाखा जिसमें मंत्रों के स्वरों के आरोहावरोह की विवेचना की गई है।

तलवकारोपनिषद्—संज्ञा पुं० [सं०] जैमिनेय उपनिषद्। केनोपनिषद्।

तलव ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] जैमिनेय ब्राह्मण। कर्मकाड विषयक ब्राह्मण।

तलवा—संज्ञा पुं० [सं० तल] एँड़ी और पंजों के बीच में पैर के नीचे की ओर का मांसल भाग जो खड़े होने या चलने पर जमीन से सटा रहता है। पादतल।

मुहा०—तलवा खुजलाना=तलवे में खुजली होना जिसे भावी यात्रा का शकुन या पूर्वसंकेत समझा जाता है। तलवे चाटना या सहलाना=बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना=चलते चलते शिथिल हो जाना। तलवे धो धोकर पीना=अत्यंत सेवा शुश्रूषा करना। तलवों से आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना।

तलवार—संज्ञा स्त्री० [सं० तरवारि] लोहे का एक लंबा धारदार हथियार। खड्ग। असि। कृपाण।

मुहा०—तलवार का खेत=लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। तलवार का घाट=तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है। तलवार का पानी=तलवार की आभा या दमक। तलवारों की छाँह में=ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हो। रणक्षेत्र में। तलवार के घाट उतारना=तलवार से सिर काटकर प्राण हर लेना। तलवार सौंचना=आघात करने के लिये म्यान से तलवार बाहर करना। तलवार सौंतना=वार करने के लिये तलवार खींचना।

तलहटी—संज्ञा स्त्री० [सं० तल+घट्ट] पहाड़ के नीचे की भूमि। तराई।

तला—संज्ञा पुं० [सं० तल] १ किसी वस्तु के नीचे की सतह। पेंदा। २ जूते के नीचे का चमड़ा। तल्ला।

तलाई—संज्ञा स्त्री० दे० "तलैया"।

तलाक—संज्ञा पुं० [अ०] पति पत्नी का विधानपूर्वक दांपत्यत्याग। स्त्री पुरुष का पारस्परिक पति पत्नी-संबंध का वैधानिक परित्याग।

तलातल—संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में से एक।

तलामली(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तलबेली"।

तलाव—संज्ञा पुं० [सं० तल्ल] ताल। तालाब।

तलाश—संज्ञा स्त्री० [तु०] १ खोज। ढूँढ़ ढाँढ़। अन्वेषण। अनुसंधान। २ आवश्यकता। चाह।

तलाशना†—क्रि० स० [फा० तलाश से हिं० ना० धा०] ढूँढ़ना। खोजना।

तलाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु अथवा छिपे हुए व्यक्ति को पाने के लिये देखभाल। २ पुलिस द्वारा इस प्रकार की खोज।

मुहा०—तलाशी लेना=गुम या छिपाई हुई वस्तु अथवा छिपे व्यक्ति को निकालने के लिये संदिग्ध मनुष्य के घरबार आदि की देखभाल करना।

तली—संज्ञा स्त्री० [सं० तल] १. नीचे की सतह। पेंदी। २ तलछट। तलौंछ। † ३ हाथ या पैर की हथेली या तलवा।

तले—क्रि० वि० [सं० तले] नीचे। ऊपर का उलटा।

मुहा०—तले ऊपर=(१) एक के ऊपर दूसरा। (२) उलट पुलट किया हुआ। गड्डमड्ड। तले ऊपर के=ऐसे दो जिनमें से एक दूसरे के उपरांत हुआ हो।

तलैटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तलहटी] १ पेंदी। २ पहाड़ के नीचे की भूमि। तलहटी।

तलैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल+ऐया (प्रत्य०)] छोटा ताल।

तलौंछ—संज्ञा स्त्री० [सं० तल=नीचे] नीचे जमी हुई मैल आदि। तलछट।

तल्ख—वि० [फा०] [संज्ञा तल्खी] १ कड़ुआ। कटु। २ बुरे स्वाद का।

तल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. शय्या। पलँग। सेज। २. अट्टालिका। अटारी। ३. पत्नी।

तल्ला—संज्ञा पुं० [सं० तल] १. तले की परत। अस्तर। भितल्ला। २ ढिग। पास। सामीप्य। ३ मकानों की ऊँचाई के हिसाब से खंड। मरातिब। ४. जूते के नीचे का भाग।

तल्लीन—वि० [सं०] [संज्ञा तल्लीनता] किसी विषय में लीन। निमग्न।

तव—सर्व० [सं०] तुम्हारा।

तवक्षीर—संज्ञा पुं० [सं० त्वक्+क्षीर, मि० फा० तवाशीर] तीखुर।

तवज्जह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ध्यान। रुख। २ कृपादृष्टि।

तवना(पु)—क्रि० अ० [सं० तपन] १ तपना। गरम होना। २ ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३ प्रताप फैलाना। तेज पसारना। ४ गुस्से से लाल होना। क्रुद्ध होना। उ०—महादेव बैठि रहि गए। दसा देखि कै तेहि दुख तए—सूर०।

तवा—संज्ञा पुं० [हिं० तवना=जलना] [स्त्री०, अल्पा० तवी, तौनी] १ लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिसपर रोटी सेंकते हैं।

मुहा०—तवे की बूँद=(१) क्षणस्थायी। देर तक न टिकनेवाला। (२) जिससे कुछ भी तृप्ति न हो। बहुत थोड़ा या कम।

२ मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं।

तवाजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आदर। मान। आवभगत। २ मेहमानदारी। दावत।

तवायफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] वेश्या। रंडी।

तवारा—संज्ञा पुं० [सं० ताप, हिं० ताव] जलन। दाह। ताप।

तवारीख—संज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास। पुरातत्व।

तवालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बखेड़ा। झंझट। २ लंबाई। दीर्घत्व। ३ अधिकता। अधिकाई।

तवेला—संज्ञा पुं० [अ० तवेल] अश्वशाला। घुड़साल। अस्तबल।

तशखीश—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ठहराव। निश्चय। २ मर्ज की पहचान। रोग का निदान।

तशरीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] बुजुर्गी । इज्जत । महत्व । बड़प्पन ।

मुहा०—तशरीफ रखना=विराजना । बैठना (आदर) । तशरीफ लाना= पदार्पण करना । आना (आदर) ।

तश्त—संज्ञा पुं० [फा०] बड़ा थाल ।

तश्तरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] थाली के आकार का छिछला, हलका और छोटा बरतन । रिकाबी ।

तष्टा—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० तष्टी] १ छील छालकर गढ़नेवाला । २. विश्वकर्मा । ३ बढ़ई ।

संज्ञा पुं० [फा० तश्त] ताँबे की छोटी तश्तरी ।

तस—वि० [सं० तादृश] तैसा । वैसा ।

क्रि० वि० तैसा । वैसा ।

तसकीन—संज्ञा स्त्री० [अ०] तसल्ली । ढारस । सांत्वना ।

तसदीक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सचाई की परीक्षा या निश्चय । प्रमाणों के द्वारा पुष्टि । समर्थन । २ साक्ष्य । गवाही । ३ सचाई ।

तसदीहⓅ†—संज्ञा स्त्री० [अ० तसदीअ] १ सिर का दर्द । २ तकलीफ । दुःख ।

तसबीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] सुमिरनी । जपमाला (मुसल०) ।

तसमा—संज्ञा पुं० [फा०] चमड़े का चौड़ा फीता ।

तसला—संज्ञा पुं० [फा० तश्त] [स्त्री० तसली] कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन ।

तसलीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सलाम । प्रणाम । २ किसी बात की स्वीकृति । हामी ।

तसल्ली—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ढारस । सांत्वना । आश्वासन । इतमीनान । २ शांति । धैर्य । धीरज ।

तसवीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं की आकृति जो रंग आदि के द्वारा कागज, पटरी आदि पर बनी हो । चित्र ।

वि० चित्र सा सुंदर । मनोहर ।

तसू—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+शूक] इमारती गज का २४ वाँ अंश जो १। इंच के लगभग होता है ।

तस्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर । २ चोर नामक गंधद्रव्य । ३ ५१ लंबे और सफेद केतुओं में से कोई ।

तस्करता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोरी ।

तस्करी—संज्ञा स्त्री० [सं० तस्कर] १ चोरी । २. चोर की स्त्री । ३ चोर स्त्री ।

तस्फिया—संज्ञा पुं० [अ०] फैसला । निर्णय ।

तस्मात्—अव्य० [सं०] उसके कारण । उसकी वजह से ।

तस्य—सर्व० [सं०] उसका ।

तस्सू—संज्ञा पुं० दे० "तसू" ।

तहँ तहँवा†—क्रि० वि० दे० "तहाँ" ।

तह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो । परत ।

मुहा०—तह करना या लगाना= किसी फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना । तह कर रखो=रहने दो । नहीं चाहिए । तह तोड़ना=(१) झगड़ा निबटाना । (२) कुएँ का सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे । (किसी चीज की) तह देना=(१) हलकी परत चढ़ाना । (२) हलका रंग चढ़ाना ।

२ किसी वस्तु के नीचे का विस्तार । तल । पेंदा ।

मुहा०—तह की बात=छिपी हुई बात । गुप्त रहस्य । (किसी बात की) तह तक पहुँचना=यथार्थ रहस्य जान लेना । असली बात समझ जाना ।

३ पानी के नीचे की जमीन । तल । थाह । ४ महीन पटल । वरक । झिल्ली ।

तहकीक—संज्ञा स्त्री० दे० "तहकीकात" ।

तहकीकात—संज्ञा स्त्री० [अ० तहकीक का बहु०] किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातों की खोज । अनुसंधान । जाँच । पड़-ताल । छानबीन ।

तहखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो । भुइँ-धरा । तलगृह ।

तहजीब—संज्ञा स्त्री० [अ०] सभ्यता । शिष्टता ।

तहदरज—वि० [फा०] (कपड़ा) जिसकी तह तक न खुली हो । बिलकुल नया ।

तहनाⓅ—क्रि० अ० दे० "तपना" ।

तहपेंच—संज्ञा पुं० [फा०] १. पगड़ी के नीचे का कपड़ा । २ भेद । रहस्य ।

तहबाजारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बाजार या सट्टी में सौदा बेचनेवालों से लिया जाने-वाला महसूल ।

तहमत—संज्ञा स्त्री० [फा० तहमद] कमर में लपेटा हुआ कपड़ा या अँगोछा । लुंगी । अँचला ।

तहरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पेठे की बरी मिली हुई चावल की खिचड़ी । २. मटर की खिचड़ी ।

तहरीक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गति देना । २. उसकाना । ३. आंदोलन । ४. प्रस्ताव ।

तहरीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखावट । लेख । २ लेखशैली । ३. लिखी हुई बात । ४. लिखा हुआ प्रमाणपत्र । ५. लिखने की उजरत । लिखाई ।

तहरीरी—वि० [फा०] लिखा हुआ । लिखित ।

तहलका—संज्ञा पुं० [अ०] १. मौत । मृत्यु । २ बरबादी । नाश । ३ खलबली । धूम । हलचल । विप्लव । उथलपुथल ।

तहवील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुपुर्दगी । २ अमानत । धरोहर । ३. खजाना । जमा ।

तहवीलदार—संज्ञा पुं० [अ० तहवील+ फा० दार] कोषाध्यक्ष । खजानची ।

तहसनहस—वि० [देश०] बरबाद । नष्ट-भ्रष्ट ।

तहसील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया । वसूली । उगाही । २. वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो । ३ तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी । ४ तहसील के अनुसार बँटा हुआ देश का हिस्सा । जिले का छोटा भाग ।

तहसीलदार—संज्ञा पुं० [अ० तहसील+ फा० दार] १ कर वसूल करनेवाला । २. वह अफसर जो राजस्व या कर वसूल करता और माल तथा फौजदारी के छोटे मुकदमों का फैसला करता है ।

तहसीलदारी—संज्ञा स्त्री० [अ० तहसील+ फा० दार+ई] १ तहसीलदार का पद, अधिकार या क्षेत्र । २ तहसीलदार की कचहरी ।

तहसीलना—क्रि० स० [अ० तहसील से ना० धा०] उगाहना । वसूल करना (कर, लगान, चंदा आदि) ।

तहाँ—क्रि० वि० [सं० तद्+स्थान] उस स्थान पर । उस जगह । वहाँ ।

तहाना—क्रि० स० [फा० तह] तह करना । लपेटना ।

तहियाँ, तहिया†—क्रि० वि० [सं० तदाहि] १ तब। उस समय। उस दिन। उस रोज।
तहिआना†—क्रि० स० दे० "तहाना"।
तहीं†—क्रि० वि० [हिं० तहाँ] उसी जगह। उसी स्थान पर। वहीं।
ता—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जिसे विशेषण और संज्ञा शब्दों के अंत में जोड़ने से भाववाचक संज्ञा बनती है, जैसे—दुष्ट से दुष्टता, स्थूल से स्थूलता, मनुष्य से मनुष्यता, पशु से पशुता।

अव्य० [फा०] तक। पर्यंत।

(पु)†—सर्व० [सं० तद्] उस।

(पु)†—वि० उस।

ताँई—क्रि० वि० दे० "ताईं"।
ताँगा—संज्ञा पुं० दे० "टाँगा"।
तांडव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का नृत्य। २. शिव और उनके गणों का उछल-कूद से भरा हुआ नृत्य जो प्राय कल्पांत में होता है। संहार नृत्य (शिव का)। ३ पुरुष का नृत्य। (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं।) ४. वह नाच जिसमें बहुत उछल कूद हो। उद्धत नृत्य।
ताँत—संज्ञा स्त्री० [सं० तंतु] १. पशुओं की लंबी नसों को बटकर बनाया हुआ सूत। २. धनुष की डोरी। ३. डोरी। सूत। ४. सारंगी आदि का तार। ५. जुलाहों की राछ।
ताँता—संज्ञा पुं० [सं० तति=श्रेणी] अटूट पंक्ति। कतार।

मुहा०—ताँता लगना=एक पर एक बराबर चला चलना।

ताँति†—संज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।
ताँती—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँता] १ पंक्ति। कतार। २. बाल बच्चे। औलाद।

संज्ञा पुं० जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

तांत्रिक—वि० [सं०] [स्त्री० तांत्रिका] तंत्र संबंधी।

संज्ञा पुं० तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। यंत्र मंत्र आदि करनेवाला।

ताँबा—संज्ञा पुं० [सं० ताम्र] लाल रंग की प्रसिद्ध धातु जो चाँदी के बाद बिजली और गरमी की सबसे अच्छी संवाहक (अँ० कंडक्टर) होती है यह पीटने से बढ़ सकती है और इसका तार भी खींचा जा सकता है।
ताँबिया—संज्ञा स्त्री० दे० "ताँबी"।
ताँबी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँबा] १. चौड़े मुँह का ताँबे का एक छोटा बरतन। २. ताँबे की करछी।
तांबूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सादा पान। २. कत्था, चूना, सुपारी आदि डालकर बनाया हुआ पान का बीड़ा। २ सुपारी।
तासना†—क्रि० स० [सं० त्रासन] १. डाँटना। धमकाना। आँख दिखाना। २. दुःखी करना। सताना।
ताई—अव्य० [सं० तावत् या फा० ता] १ तक। पर्यंत। २. पास। तक। समीप। निकट। ३ (किसी के) प्रति। समक्ष। लक्ष्य करके। ४. लिये। वास्ते। निमित्त।

वि० दे० "तई"।

ताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताऊ] बाप के बड़े भाई की स्त्री। जेठी चाची।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

ताईद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुमोदन। समर्थन। पुष्टि। २ पक्षपात। तरफदारी।
ताऊ—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा। ताया।

मुहा०—बछिया का ताऊ=मूर्ख।

ताऊन—संज्ञा पुं० [अ०] प्लेग नामक छूत का घातक और संक्रामक रोग जिसमें गिल्टियों के सूजने और दर्द करने के साथ ज्वर होता है जो मृत्यु तक बढ़ता ही जाता है। यह रोग चूहों में पैदा होने वाले एक विशेष प्रकार के कीड़े (अँ० फ्ली) के काटने से होता है।
ताऊस—संज्ञा पुं० [अ०] १ मोर। मयूर।

यौ०—तख्त ताऊस=शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नजटित राजसिंहासन जो मोर के आकार का था।

२ सारंगी से मिलता जुलता एक बाजा।

ताक—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] १ ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २ स्थिर दृष्टि। टकटकी। ३ अवसर की प्रतीक्षा। मौका देखते रहना। घात। फिराक।

मुहा०—ताक में रहना=मौका देखते रहना। ताक रखना या लगाना=घात में रहना। मौका देखते रहना।

४. खोज। तलाश।

ताक—संज्ञा पुं० [अ०] १ चीज वस्तु रखने के लिये दीवार में बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान। आला। ताखा।

मुहा०—ताक पर धरना या रखना=पड़ा रहने देना। काम में न लाना।

वि० १ जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम, जैसे—तीन, पाँच।

२ जिसके जोड़ का दूसरा कोई न हो। अद्वितीय। अनुपम।

ताक झाँक—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना+झाँकना] १. रह रहकर बार बार देखने की क्रिया। २. छिपकर देखने की क्रिया।
ताकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जोर। बल। शक्ति। २ सामर्थ्य।
ताकतवर—वि० [फा०] १ बलवान्। बलिष्ठ। शक्तिमान। सामर्थ्यवान्।
ताकना—क्रि० स० [सं० तर्कण] १. देखना। अवलोकन करना। २ सोचना। विचारना। अनुमान करना। ३ ध्यान करना। मनन करना। स्मरण करना। ४ ताड़ना। समझ जाना। ५. पहले से सोचकर स्थिर करना। तजवीज करना। ६ रखना। रखवाली करना।
ताका—वि० [हिं० √ताक] तिरछा ताकने वाला। भेंगा।
ताकि†—अव्य० [फा०] जिसमें। इसलिये कि। जिससे।
ताकीद—संज्ञा स्त्री० [अ०] जोर के साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध। खूब चेताकर कही हुई बात। चेतावनी। सहेजना।
ताख—संज्ञा पुं० [अ० ताक] दे० "ताक"।
ताखा—संज्ञा पुं० [अ० ताक] १ कपड़े का लपेटा हुआ थान। २ किसी वस्तु के रखने का दीवार में स्थान। ३ सड़क, पुल आदि के नीचे बना हुआ पानी बहने का रास्ता। ४ नदी, नाला, नहर आदि का पानी बहने के लिये बना हुआ इस प्रकार का मार्ग।
ताग—संज्ञा पुं० [हिं० तागना] तागने की की क्रिया या भाव।

संज्ञा पुं० दे० "तागा"।

तागड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताग+कड़ी] १. कमर में पहनने का एक गहना। करधनी। किंकिणी। २ कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र। करगता।
तागना—क्रि० स० [हिं० तागा से ना० धा०] दूर दूर पर मोटी सिलाई करना। टोभ या लगर डालना।

तागपाट—संज्ञा पुं० [हिं० तागा+पाट=रेशम] १ विवाह में वर पक्ष द्वारा कन्या के लिये दिए जानेवाले कपड़े लत्ते। २ एक प्रकार का गहना जो रेशम के तागे में सोने के तीन जंतर डालकर बनाया जाता है और विवाह में काम आता है।

मुहा०—ताग पाट डालना=विवाह में गणेशपूजन आदि के बाद वर के बड़े भाई (वधू के जेठ) का वधू को तागपाट पहनाना।

तागा—संज्ञा पुं० [सं० तार्कव] १ रूई, रेशम आदि का वह अंश जो बटने से लंबी रेखा के रूप में निकलता है। डोरा। धागा। २ वह कर या महसूल जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगे।

ताज—संज्ञा पुं० [अ०] १ बादशाह का राजमुकुट। २ कलगी। तुर्रा। ३ मोर, मुर्गे आदि के सिर की चोटी। शिखा। ४ दीवार की कँगनी या छज्जा। ५ मकान के सिरे पर शोभा के लिये बनाई हुई बुर्जी। ६ गंजीफे के एक रंग का नाम। ७ दे० ताजमहल।

ताजक—संज्ञा पुं० [फा०] एक ईरानी जाति जो विलोचिस्तान में "देहवार" कहलाती है।

ताजगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताजापन। हरापन। २ प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३ नयापन।

ताजदार—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।

ताजन—संज्ञा पुं० [फा० ताजियाना] कोड़ा। चाबुक।

ताजपोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव। राज्यारोहण समारोह। राजतिलक।

ताजमहल—संज्ञा पुं० [अ०] आगरे में बादशाह शाहजहाँ का बनवाया हुआ अपनी बेगम मुमताज महल का अद्भुत मकबरा या समाधि जो दुनिया के सात आश्चर्यों में माना जाता है।

ताजा—वि० [फा०] [स्त्री० ताजी] १ जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा भरा। २ (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३ जो थका माँदा न हो। स्वस्थ। प्रफुल्ल।

यौ०—मोटा ताजा=हृष्टपुष्ट।

४ तुरंत का बना। सद्य प्रस्तुत। ५ जो व्यवहार के लिये अभी निकाला गया हो। जो बहुत दिनों का न हो। नया।

ताजिया—संज्ञा पुं० [अ०] बाँस की कमचियों आदि का मकबरे के आकार का मंडप जिसमें इमाम हुसेन की कब्र होती है। मुहर्रम में शिया मुसलमान इसकी आराधना करते और अंतिम दिन इमाम के मरने का शोक मनाने के लिये जलूस बनाकर छाती पीटते हुए इसे लेकर घुमाते और कर्बला की याद में दफन करते हैं।

ताजियाना—संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा।

ताजी—वि० [फा०] अरब का।

संज्ञा पुं० [फा०] १ अरब का घोड़ा। २ शिकारी कुत्ता।

ताजीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बड़े के सामने उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। बड़ों के प्रति आदरभाव का प्रदर्शन। सम्मान प्रदर्शन। २ मध्यकाल में किसी सरदार या वीर को राजा की ओर से दरबार में दिया जानेवाला आदर। ३ किसी सरदार के सम्मान में दी हुई जागीर।

ताजीमी सरदार—संज्ञा पुं० [फा० ताजीम+अ० सरदार] १ वह सरदार जिसके आने पर राजा या बादशाह उठकर खड़े हो जाँय या जिसे कुछ आगे बढ़कर लें। दरबार में विशेष प्रतिष्ठाप्राप्त सरदार। २ सम्मान में राजा की ओर से जागीर प्राप्त सरदार।

ताजीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० ताजीरी] दंड।

ताजीरात—संज्ञा पुं० [अ०] दंड संबंधी कानूनों का संग्रह।

ताजीरी—वि० [अ०] दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ, जैसे—ताजीरी पुलिस। ताजीरी कर।

ताटंक—सं० पुं० [सं०] १ कान में पहनने का करनफूल। तरकी। २ छप्पय के २८ वें भेद का नाम। ३ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में मगण होता है।

ताडंक—संज्ञा पुं० [सं०] कान की तरकी। करनफूल।

ताड़—संज्ञा पुं० [सं०] १ शाखारहित एक बहुत ऊँचा और पतला पेड़ जो खंभे के रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। इससे एक पेय निकाला जाता है जो 'ताड़ी' कहलाता है (विशेष दे० ताड़ी)। २ ताड़न। प्रहार। ३ शब्द। ध्वनि। ४ अनाज के डंठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्टी। ५ हाथ का एक गहना।

ताड़का—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे श्रीरामचंद्र ने मारा था।

ताड़न—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार। प्रहार। आघात। २ डाँट डपट। घुड़की। ३. शासन। दंड।

ताड़ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रहार। मार। २ डाँट डपट। शासन। दंड। धमकी। ३. उत्पीड़न। कष्ट।

क्रि० स० १ मारना। पीटना। २ डाँटना डपटना।

क्रि० स० [सं० तर्कण] १ किसी ऐसी बात को जान लेना जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भाँपना। लख लेना। २ मारपीटकर भगाना। हटा देना।

ताड़ित—वि० [सं०] १ जिसपर प्रहार पड़ा हो। २. जो डाँटा गया हो। ३ दंडित ४ मारकर भगाया हुआ।

ताड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताड़] ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ सफेद नशीला रस जो पीने के काम आता है और पौष्टिक होता है। सूर्योदय के बाद इसमें सड़न उत्पन्न होने से नशीलापन आ जाता है जिससे इसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √ताड़] ध्यान। समाधि।

तात—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिता। बाप। उ०—कालकलि-पाप-संताप-संकुल-सदा प्रनत तुलसीदास-तात-माता।—विनय०। २ पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३ स्नेह का एक शब्द या संबोधन जो भाई, बंधु, इष्ट, मित्र तथा छोटे के लिये व्यवहृत होता है। उ०—तात जनकतनया येह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई।—मानस।

†वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

ताता†—वि० [सं० तप्त] [स्त्री० ताती] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

तातायेई—संज्ञा स्त्री० [अनु०] नाचने में पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

तातार—संज्ञा पुं० [फा०] मध्यकालीन मध्य एशिया का एक देश जो हिंदुस्तान और फारस के उत्तर में कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर तक था।

तातारी—वि० [फा०] तातार देश सबंधी। तातार देश का।

सज्ञा पुं० तातार देश का निवासी।

तातील—संज्ञा स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन। छुट्टी।

तात्कालिक—वि० [सं०] तत्काल या तुरत का। तत्काल संबंधी।

तात्पर्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ अर्थ। आशय। मतलब। अभिप्राय। २ तत्परता।

तात्त्विक—वि० [सं०] १. तत्व संबंधी। २ तत्वज्ञानयुक्त। ३ यथार्थ। सारवान्।

ताथेई—सज्ञा स्त्री० दे० "तताथेई"।

तादात्म्य—सज्ञा पुं० [सं०] एक वस्तु का दूसरी में मिल जाना। वही या वैसा ही हो जाना, जैसे, पानी का दूध के साथ तादात्म्य हो जाता है।

तादाद—सज्ञा स्त्री० [अ०] संख्या। गिनती। अदद।

तादृश—वि० [सं०] [स्त्री० तादृशी] उसके समान। वैसा।

ताधा—सज्ञा स्त्री० दे० "तताथेई"। उ०—भृकुटी धनुप नैन सर साधे वदन विकास अगाधा। चचल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा।—सूर०

तान—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तानने का भाव या क्रिया। खींच। फैलाव। विस्तार। २ अनेक विभाग करके सुर का खींचना। लय का विस्तार। आलाप।

मुहा०—तान उड़ाना=गीत गाना। किसी पर तान तोड़ना=किसी पर आक्षेप करना।

३ ऐसा पदार्थ जिसका बोध इंद्रियों आदि को हो। ज्ञान का विषय।

तानना—क्रि० स० [सं० तान] १ फैलाने के लिये जोर से खींचना।

मुहा०—तानकर=बलपूर्वक। जोर से।

२ किसी सिमटी या लिपटी हुई वस्तु को खींचकर फैलाना।

मुहा०—तानकर सोना=(१) आराम से सोना। (२) निश्चित रहना।

३ परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बाँधना। ४ एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक खींचकर बाँधना। ५ मारने के लिये हाथ या कोई हथियार उठाना। ६ किसी को हानि पहुँचाने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित कर देना। ७ कैदखाने भेजना।

तानपूरा—सज्ञा पुं० [सं० तान+हिं० पूरा] सितार के आकार का एक बाजा। तंबूरा।

तानबाना†—सज्ञा पु० दे० "तानाबाना"।

तानसेन—सज्ञा पुं० अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा गवैया जो ब्राह्मण से मुसलमान हो गया था।

ताना—सज्ञा पुं० [स० तान] १ कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २ दरी या कालीन बुनने का करघा।

क्रि० स० [हिं० तावना] १ ताव देना। तपाना। गरम करना। २ पिघलाना। ३. तपाकर परीक्षा करना (सोना आदि धातु)। ४ जाँचना। आजमाना।

† क्रि० स० [हिं० तवा] गीली मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना। ढकना।

सज्ञा पुं० [अ०] आक्षेपवाक्य। बोलीठोली। व्यंग्य।

तानापाही—सज्ञा स्त्री० [हिं० ताना+पाई] बार बार आना जाना।

तानाबाना—सज्ञा पुं० [हिं० ताना+बाना] कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।

तानारीरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० ता+अनु० री री] साधारण गाना। राग। अलाप।

तानाशाह—सज्ञा पु० [फा०] वह जो अपने अधिकारों का बहुत मनमाना उपयोग करे। स्वेच्छाचारी शासक। जुल्म करनेवाला बादशाह। निरंकुश राजा।

तानाशाही—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अधिकारों का मनमाना उपयोग। स्वेच्छाचारिता। निरंकुशता। २ वह राज्यव्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो। अधिनायकतंत्र।

तानी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० √तान+ई (प्रत्य०)] १ कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २ तनी। बंद। उ०—कचुकि चूर, चूर भइ तानी। टूटे हार, मोति छहरानी।—पदमावत।

ताप—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, भाप बनने आदि में देखा जाता है और जिसका अनुभव अग्नि, सूर्य की किरण आदि के रूप में होता है। उष्णता। गरमी। २ आँच। लपट। ३ ज्वर। बुखार। ४ कष्ट। दुःख। पीड़ा। ताप तीन प्रकार का माना गया है—(१) दैहिक अर्थात् देह संबंधी, जैसे, बीमारी, (२) दैविक अर्थात् देवता (संयोग ?) से प्राप्त, जैसे अकाल मृत्यु, भूकंप, वज्रपात आदि और (३) भौतिक अर्थात् प्राणियों से मिलनेवाला, जैसे, चोरी, डाका, अग्निकांड, युद्ध, टिड्डियों का आक्रमण आदि। उ०—दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि व्यापा॥—मानस। इन्हें क्रम से आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ताप भी कहते हैं। ५ मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख। सताप।

तापक—सज्ञा पु० [स०] १ ताप उत्पन्न करनेवाला। २ रजोगुण। ३ ज्वर।

तापचालक—वि० [स०] जिसमें ताप या बिजली एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकती हो, जैसे धातु (अं० कंडक्टर)।

तापचालकता—सज्ञा स्त्री० [स०] पदार्थों का वह गुण जिससे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता हो।

तापतिल्ली—सज्ञा स्त्री० [हिं० ताप+तिल्ली] पिलही बढ़ने का रोग जिसमें तिल्ली या प्लीहा के बढ़ने के साथ ज्वर और उससे उत्पन्न अनेक शारीरिक शिकायतें प्रकट हो जाती हैं। प्लीहा रोग।

तापती—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या तापी। २ एक पवित्र नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

तापत्रय—सज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

दे० "ताप ४"।

तापन—सज्ञा पु० [सं०] १ ताप देनेवाला २ सूर्य। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४ सूर्यकांत मणि। ५ मदार। ६ एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीड़ा होती है (तंत्र)।

तापना—क्रि० स० [स० तापन] १ आग की आँच से गरमी प्राप्त करना। आग सेंकना। २ धूप में गरमी प्राप्त करना। धूप सेकना।

क्रि० स० १ गरम करने के लिये जलाना। २ नष्ट करना। फूँकना। व्यर्थ खर्च करना (धन)। ⓟ ३ तपाना। भस्म करना।

तापमान यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] उष्णता की मात्रा मापने का यंत्र (अँ० थरमामीटर)।
तापस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० तापसी] १ तप करनेवाला। तपस्वी। २ तेजपत्ता।
तापसत—संज्ञा पुं० [सं०] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट।
तापसद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "तापसतरु"।
तापसवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "तापसतरु"।
तापसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तपस्या करनेवाली स्त्री। २ तपस्वी की स्त्री।
तापस्वेद—संज्ञा पुं० (सं०) उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना।
तापा—संज्ञा पुं० [हिं० तोपना ?] मुर्गी का दरबा।
तापिच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] तमाल वृक्ष।
तापित—वि० [सं०] १ जो तपाया गया हो। २ तप्त। गरम। ३. दुःखित। पीड़ित।
तापी—वि० [सं० तापिन्] १ ताप देनेवाला। २ जिसमें ताप हो।
संज्ञा पुं० बुद्धदेव।
संज्ञा स्त्री० १ सूर्य की एक कन्या। २ तापती नदी। ३ यमुना नदी।
तापेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। उ०—नमो पातु तापेंद्र देव प्रतीच। नमो गे रवि रक्ष रत्नेंदुदीच।—विश्रामसागर।
ताप्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।
ताफ़ता—संज्ञा पुं० दे० "ताप्ता"। उ०—छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग। दीपति देह दुहूनु मिलि दिपति ताफ़ता रंग।—बिहारी०।
ताब—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ ताप। गरमी। २. चमक। आभा। दीप्ति। ३. शक्ति। सामर्थ्य। ४ मन को वश में रखने की शक्ति। धैर्य।
ताबड़तोड़—क्रि० वि० [अनु०] अखंडित क्रम से। लगातार। बराबर।
ताबा—वि० दे० "ताबे"।
ताबूत—संज्ञा पुं० [अ०] वह संदूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने को ले जाते हैं।
ताबे—वि० [अ० ताबअ] १ वशीभूत। अधीन। मातहत। आज्ञाकारी (करना या होना के साथ)। २ आज्ञानुवर्ती। हुक्म का पाबंद।
ताबेदार—वि० [अ० ताबअ+फ़ा० दार] [संज्ञा ताबेदारी] आज्ञाकारी। हुक्म का पाबंद। सेवक। दास। (विशेष—अरबी व्युत्पत्ति के अनुसार यह शब्द अशुद्ध है क्योंकि मूल भाषा में 'ताबअ' स्वयं विशेषण है।)
ताम—संज्ञा पुं० [सं०] १ दोष। विकार। २ व्याकुलता। बेचैनी। उ०—मिट्यो काम तनु ताम तुरत ही रिझई मदन गोपाल।—सूर०। ३ दुःख। क्लेश। उ०—देखत पय पीवत बलराम। तातो लगत डारि तुम दीनो दावानल पीवत नहिं ताम।—सूर०।
वि० १. भीषण। डरावना। भयंकर। २ व्याकुल। हैरान।
संज्ञा पुं० [सं० तामस] १ क्रोध। रोष। गुस्सा। उ०—सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि दूरि करहु मन तामहि।—सूर०। २ अंधकार। अँधेरा। उ०—जननि कहति उठहु श्याम, विगत जानि रजनि ताम, सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैवे।—सूर०।
तामचीनी—संज्ञा [सं० ताम्र+हिं० चीनी] लोहे का बरतन जिसपर पक्की रंगीन कलई रहती है।
तामजान—संज्ञा पुं० [हिं०√थाम+सं० यान] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी। नालकी।
तामड़ा—वि० [सं० ताम्र] ताँबे के रंग का। ललाई लिए हुए भूरा। एक प्रकार की ईंट जो बहुत पक्की होती है।
तामरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ सोना। ३ ताँबा। ४ धतूरा। ५ एक नगण, दो जगण और एक यगण का एक वर्णवृत्त। उ०—निज जय हेतु करौं रघुबीरा। तव नुति मोरि हरौ भव पीरा॥
तामलूक—संज्ञा पुं० [सं० ताम्रलिप्त] बंग देश का एक भूभाग जो मेदिनीपुर जिले में है। ताम्रलिप्त।
तामलेट—संज्ञा पुं० [अँ० टंबलर] लोहे का गिलास या बरतन जिसपर रोगन या लुक फेरा रहता है।
तामस—वि० [सं०] [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त।
संज्ञा पुं० १ सर्प। साँप। २ खल। ३ उल्लू। ४ क्रोध। गुस्सा। उ०—कहु तोकों कैसे आवत है शिशु पै तामस एत? —सूर०। ५. अंधकार। अँधेरा। ६. अज्ञान। मोह। ७ तमोगुण।
तामसी—वि० स्त्री० [सं०] १. तमोगुणवाली। २ राक्षसी। आसुरी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँधेरी रात। २. महाकाली। ३ एक प्रकार की माया या विद्या।
तामिल—संज्ञा पुं० [देश०] १. दक्षिण भारत की एक जाति। २ इस जाति की भाषा। ३. इस जाति का प्रदेश।
तामिस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अँधेरा। एक नरक। २ क्रोध। ३ द्वेष। ४ एक अविद्या का नाम।
तामीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] [बहु० तामीरात] इमारत बनाने का काम।
तामील, तामीली—संज्ञा स्त्री० [अ०] (आज्ञा का) पालन।
तामोर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ताँबूल"।
ताम्र—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा।
ताम्रचूड़—संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।
ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिसपर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखे जाते थे। २. ताँबे की चद्दर।
ताम्रपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बावली। तालाब। २ मदरास की एक छोटी नदी।
ताम्रयुग—संज्ञा पुं० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब वह पहले पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। यह युग प्रस्तरयुग और लौहयुग के बीच में माना जाता है।
ताम्रलिप्त—संज्ञा पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तामलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।
ताय(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० ताप] १ ताप। गरमी। २ जलन। ३ धूप।
सर्व० दे० "ताहि"।
तायदाद‡—संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।
तायफा—संज्ञा पुं०, स्त्री० [फ़ा०] १ वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २ वेश्या।
तायना(पु)†—क्रि० स० [सं० तापन] तपाना।
ताया—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।
तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ रूपा। चाँदी। २ तपी हुई धातु को पीट और खींचकर

बनाया हुआ तागा। धातुतंतु। धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा विजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है (अं० टेलिग्राफ)। ४. तार से आई हुई खबर। ५. सूत। तागा।

मुहा०—तार तार करना = नोचकर सूत सूत अलग करना।

६ बराबर चलता हुआ क्रम। अखड परपरा। सिलसिला।

मुहा०—तार बँधना = किसी काम का बराबर चला चलना। सिलसिला जारी होना।

७. ब्योंत। सुबीता। व्यवस्था। मौका। अवसर। सुयोग।

मुहा०—तार जमना, बैठना या बँधना = ब्योंत होना। कार्यसिद्धि का सुबीता होना।

†८ ठीक माप। ९ कार्यसिद्धि का उपाय। युक्ति। ढब। १० प्रणव। ओंकार। ११ संगीत में एक सप्तक। १२ अठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

(पु)संज्ञा पुं० [म० ताल] १ ताल। मजीरा। २ करताल नामक वाजा।

संज्ञा पु० [सं० तल] तल। सतह।

(पु)संज्ञा पुं० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। ताटक। तरौना।

वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

तारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३ आँख की पुतली। ४ एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था। दे० "तारकासुर"। ५ राम या शिव का षडक्षर मत्र। 'ओं रामाय नम' मत्र। 'ओं नम शिवाय' मंत्र। ६ वह जो पार उतारे। तारनेवाला। ७. भवसागर से पार करनेवाला। ८ एक वर्णवृत्त जिसमें ४ सगण और अत्य गुरु कुल १३ अक्षर होते हैं। उ०—ससि सीस गरे नरमाल पुरारी। सुनिए ससिनाथ! कारचोबी पुकार हमारी।

तारकश—संज्ञा पुं० [हिं० तार+फा० कश] [कार्य—तारकशी] धातु का तार खींचनेवाला।

तारका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नक्षत्र। तारा। २ आँख की पुतली। ३ नाराच नामक छद। ४. बालि की स्त्री तारा।

संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़का"।

तारकाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] तारकासुर का बड़ा लड़का। यह उन तीन भाइयों में से एक था जो तीन पुर (त्रिपुर) वसाकर रहते थे।

तारकासुर—संज्ञा पुं० [स०] एक असुर जिसको मारने के लिये शिव को पार्वती से विवाह करके कार्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था।

तारकूट—संज्ञा पु० [स० तार+कूट] चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेश—संज्ञा पु० [सं० तारक+ईश] चद्रमा।

तारकेश्वर—संज्ञा पु० [स०] शिव।

तारकोल—संज्ञा पुं० दे० "अलकतरा"।

तारघर—संज्ञा पु० [हिं० तार+घर] वह स्थान या सरकारी दफ्तर जहाँ तार द्वारा खबरें भेजी और मँगाई जाती हैं।

तारघाट—संज्ञा पुं० [हिं० तार+घात] मतलव निकलने का सुबीता। व्यवस्था। आयोजन।

तारण—संज्ञा पुं० [स०] १ पार उतारने का काम। २. उद्धार। निस्तार। ३ उद्धार करनेवाला। तारनेवाला। ४ विष्णु।

तारतम्य—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तारतम्यिक] १ एक दूसरे से कमीवेशी का हिसाव। न्यूनाधिक्य। २ कमीवेशी के हिसाव से तरतीव। ३ गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तार तोड़—संज्ञा पुं० [हिं० तार+तोड़] कारचोबी का काम।

तारन—संज्ञा पुं० दे० "तारण"।

तारना—क्रि० स० [स० तारण] १ पार लगाना। पार करना। २ ससार के क्लेश आदि से छुड़ाना। सद्गति देना।

तारपीन—संज्ञा पुं० [अं० टरपेंटाइन] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्राय औषध के काम में आता और शरीर में दर्द के स्थान पर मला जाता है।

तारबर्की—संज्ञा पुं० [हिं० तार+फा० बर्क] विजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार।

तारल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ तरल या प्रवाहशील होने का धर्म। द्रवत्व। २ चंचलता।

तारा—संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। सितारा।

मुहा०—तारे गिनना = चिंता या आसरे में बेचैनी से रात काटना। तारा टूटना = रात के अँधेरे में आकाश में अनत काल से घूमनेवाले नक्षत्रों के टुकड़ों का पृथ्वी की आकर्षणशक्ति से खिंचकर जमीन पर गिरते समय (वायुमडल से रगड़ खाकर) चमकना। उल्कापात होना। तारा डूबना = शुक्र (ग्रह) का अस्त होना। तारे तोड़ लाना = कोई बहुत ही कठिन या चालाकी का काम करना। तारों की छाँह = बड़े सवेरे। तड़के।

२ आँख की पुतली। ३ सितारा। भाग्य। किस्मत।

संज्ञा स्त्री० [स०] १ दस महाविद्याओं में से एक। २ बौद्ध-तांत्रिकों की एक देवी। ३ बृहस्पति की स्त्री जिसे चद्रमा ने उसके इच्छानुसार रख लिया था और जिससे बुध उत्पन्न हुए थे। ४ वालि की स्त्री और सुषेण की कन्या जो अहल्या, मदोदरी, कुती और द्रौपदी को मिलाकर पचकन्याओं में मानी जाती है।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "ताला"।

ताराग्रह—संज्ञा पु० [सं०] नक्षत्रों के समान रात के अँधेरे में आकाश में चमकनेवाला ग्रह। मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह।

ताराज—संज्ञा पुं० [फा०] १ लूटपाट। २ नाश। ध्वस। वरवादी।

ताराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। २ शिव। ३ बृहस्पति। ४ वालि। ५ सुग्रीव।

ताराधीश—संज्ञा पु० दे० "ताराधिप"।

तारापथ—संज्ञा पुं० [स०] आकाश।

तारामडल—संज्ञा पुं० [सं०] १ नक्षत्रों का समूह या घेरा। २ तारा बूटी की छपाईवाला एक वस्त्र। उ०—तारामँडल पहिरि भल चोला। भरे सीस सब नखत अमोला। —पदमावत।

तारिका(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तारका"। उ०—तारिका दुरानी, तमचुर वोले श्रवन भनक परि ललिता के तान की। —सूर०।

तारिणी—वि० स्त्री० [स०] तारनेवाली। उद्धार करनेवाली।

संज्ञा स्त्री० तारा देवी (तत्रशास्त्र)।

तारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "ताली"।

(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी"।

तारीक—वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. स्याह। काला। २ धुँधला। अँधेरा।

तारीख—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक अथवा १२ बजे रात से दूसरे बारह बजे रात तक के समय को एक मानकर की जानेवाली (पाक्षिक या) मासिक कालगणना। तिथि। दिन। २ काल-निर्धारण-विधि। ३. नियत तिथि। किसी काम के लिये ठहराया हुआ दिन।

मुहा०—तारीख टालना = तारीख मुकर्रर करना। दिन नियत करना।

तारीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बखान। प्रशंसा। श्लाघा। बड़ाई। २ विशेषता। गुण। सिफत। ३ लक्षण। परिभाषा। ४ वर्णन। विवरण।

तारुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] जवानी।

तारेश—संज्ञा पुं० [हिं० तारा+ईश] चंद्रमा।

तार्किक—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २ तत्ववेत्ता। दार्शनिक।

ताल—संज्ञा पुं० [सं०] १ करतल। हथेली। २ वह शब्द जो दोनों हथेलियों को एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न होता है। करतलध्वनि। ताली। ३ नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया की परिभाषा।

मुहा०—बेताल=(१) जिसका ताल ठिकाने से न हो। (२) अवसर या बिना अवसर।

४ जंघा या बाहु पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ शब्द। (कुश्ती)।

मुहा०—ताल ठोंकना = लड़ने के लिये ललकारना।

५ मँजीरा। झाँझ। ६ चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। ७ हरताल। ८ ताड़ का पेड़ या फल। ९ खजूर का पेड़। १० ताला। ११ तलवार की मूठ। १२ पिंगल में ढगण या तीन मात्राओं के गण का दूसरा भेद।

संज्ञा पुं० [सं० तल्ल] तालाब।

तालक(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

तालकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीष्म। २ बलराम।

तालजंघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश और जाति। २ इस देश का निवासी। ३ ताड़ के समान लंबी टाँगों-वाला व्यक्ति। ४ एक दानव।

तालध्वज—संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु"।

तालपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ। २ कपूर कचरी। ३ तालमूली। मुसली।

ताल बेताल—संज्ञा पुं० [सं० ताल+बेताल] दो देवता या यक्ष। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था।

तालमखाना—संज्ञा पुं० [हिं० ताल+मखान] १ भारत में प्रायः सर्वत्र पाया जानेवाला एक काँटेदार पौधा जो दलदल में होता है। इसके बीज, जड़, पेड़ आदि सब दवा के काम आते हैं एवं वैद्यक और यूनानी दोनों चिकित्साप्रणालियों में प्रयुक्त हैं। यह मूत्रकारक, बलकारक और जननेंद्रिय संबंधी रोगों के लिये उपकारक माना जाता है। २ दे० "मखाना"।

तालमिस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं० ताल+हिं० मिश्री] ताड़ या खजूर के रस से बनाई हुई मिश्री।

तालमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुसली।

तालमेल—संज्ञा पुं० [हिं० ताल+मेल] १ ताल सुर का मिलान। २ उपयुक्त योजना। ठीक ठीक संयोग। ३ उपयुक्त अवसर।

तालरस—संज्ञा पुं० [सं०] ताड़ के पेड़ का मद्य। ताड़ी। उ०—तालरस बलराम चाख्यो मन भयो आनंद। गोपसुत सब टेरि लीन्हे सुधि भई नँदनंद।—सूर०।

तालवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ताड़ के पेड़ों का जंगल। २ ब्रज का एक वन। उ०—सखा कहन लागे हरि सों तब। चलौ तालवन कौं जैए अब।—सूर०।

तालव्य—वि० [सं०] १. तालु संबंधी। २ तालु और जीभ की सहायता से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श (पाणिनि)।

ताला—संज्ञा पुं० [सं० तालक] १ लोहे, पीतल आदि का यंत्र जो कुंजी की सहायता से बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में फँसा देने से बिना कुंजी के नहीं खुल सकता।

मुहा०—ताला तोड़ना = किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिये उसके ताले को तोड़ना।

२ वह लोहे का तवा जो योद्धा लोग छाती पर पहनते थे।

तालाकुंजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताला+कुंजी] १ किवाड़, संदूक आदि बंद करने का यंत्र। २ लड़कों का एक खेल।

तालाब—संज्ञा पुं० [हिं० ताल+फा० आब] जलाशय। सरोवर। पोखरा।

तालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ताली। कुंजी। २. नत्थी या तागा जिससे तालपत्र या कागज बँधे हों। ३ सूची। फेहरिस्त। ४ अनुक्रमणिका। ५ तालमूली। मुसली।

तालिब—संज्ञा पुं० [अ०] १. तलब करने वाला। ढूँढनेवाला। तलाश करनेवाला। २ चाहनेवाला। ३ जिज्ञासु।

तालिबइल्म—संज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।

तालिम(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० तल्प] बिस्तर (डिंगल)।

ताली—संज्ञा स्त्री० [सं० ?] १ धातु की वह कील जिससे ताला खोला और बंद किया जाता है। कुंजी। चाबी। २ ताड़ी। ताड़ का मद्य। ३ तालमूली। मुसली। ४ पाठ्य पुस्तकों की विस्तृत व्याख्या। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में कुल ३ वर्ण होते हैं, जैसे—(१) माधो ने, दी तारी। गोपों की, है नारी॥ (मगण)। (२) भावत, मंदर। राजत, कंदर॥ (भगण)। (३) नवन, भजन। कमल, नयन॥ (नगण)। ६ मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईंट।

संज्ञा स्त्री० [सं० ताल] १ हथेली। गदोरी। हथोड़ी। थपोड़ी। २ दोनों फैली हुई हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया।

मुहा०—ताली पीटना या बजाना = (१) खुशी, समर्थन, प्रोत्साहन, या प्रशंसा प्रकट करने के लिये थपोड़ी पीटना॥ (२) हँसी उड़ाना। उपहास करना। (३) अँधेरे में जीवजंतुओं को भगाने के लिये हथोड़ी बजाना। (४) आराधना और जप में विहित रीति से ताली बजाना। (५) भूत, प्रेत आदि को भगाने के लिये तंत्रशास्त्र में बताए ढंग से ताली पीटना।

३ दोनों हथेलियों को फैलाकर एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न शब्द। करतल-ध्वनि।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया। गड़ही।

तालीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] अभ्यासार्थ उपदेश। शिक्षा।

तालीशपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ तमाल या तेजपात की जाति का एक पेड़। २ भूआँवला की जाति का एक पौधा। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम आती हैं और

पाचक, तिक्त, उष्ण, श्वास-कास-कफ-वायु-नाशक तथा अरुचि मंदाग्नि-गुल्म और क्षय रोग को दूर करनेवाली मानी जाती है। पनियाँ आँवला।

तालु—संज्ञा पुं० [सं०] तालू।

तालूका—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक:"।

तालू—संज्ञा पुं० [सं० तालु] १. रीढ़वाले प्राणियों के मुँह के भीतर की ऊपरी छत। जिह्वा के ऊपर की स्थिति जिसके एक ओर ऊपर के दाँत और दूसरी ओर मुँह की नली और कौआ या छोटी जीभ होती है।

मुहा०—तालू में दाँत जमना=अदृष्ट आना। बुरे दिन आना। तालू से जीभ न लगना=चुपचाप न रहा जाना। बके जाना।

२ खोपड़ी के नीचे का भाग। दिमाग। ३. घोड़ों का एक ऐब।

तालेवर—वि० [अ० ताल +वर] धनी।

ताल्लुक—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

ताव—संज्ञा पुं० [सं० ताप] १ वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय।

मुहा०—(किसी वस्तु में) ताव आना=जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। ताव खाना=आँच पर गरम होना=ताव देना=आँच पर रखना। गरम करना। मूँछों पर ताव देना=पराक्रम, बल आदि के घमंड में मूँछों पर हाथ फेरना।

२ अभिमान या अधिकार की भावना से प्रेरित क्रोध या आवेश। आवेग। उद्वेग।

मुहा०—ताव दिखाना=अभिमान मिला हुआ क्रोध प्रकट करना। ताव में आना=अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग में होना।

३ शेखी की झोंक। ४ ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन हो।

मुहा०—ताव चढ़ना=प्रबल इच्छा होना।

संज्ञा पुं० [फा० ता] कागज का तख्ता।

तावड़ा, तावड़ो†—संज्ञा पुं० [सं० ताप] दे० "तावरी"।

तावत्—क्रि० वि० [सं०] १ उतनी देर तक। तब तक। २ उतनी दूर तक। वहाँ तक। "यावत्" का संबंधपूरक।

तावनाⓅ†—क्रि० स० [सं० तापन] १ तपाना। गरम करना। २ जलाना। ३ दुःख पहुँचाना।

ताव भाव—संज्ञा पुं० [हिं० ताव+भाव] उपयुक्त अवसर। मौका। परिस्थिति।

तावरी—संज्ञा स्त्री० [सं० ताप] १. ताप। दाह। जलन। २. धूप। घाम। ३ बुखार। ज्वर। हरारत। ४ गरमी से आया हुआ चक्कर। मूर्च्छा।

तावरोⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० ताव] १ ताप। दाह। जलन। २ सूर्य की गरमी। धूप। घाम। उ०—मैं जमुनाजल भरि धूर आवति मोको लागी तावरो।—सूर०।

तावा†—संज्ञा पुं० दे० "तवा"।

तावान—संज्ञा पुं० [फा०] वह चीज जो नुकसान भरने के लिये दी या ली जाय। दंड। डाँट। क्षतिपूरक।

तावीज—संज्ञा पुं० [अ० तअवीज] १ यंत्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २. धातु का चौकोर या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

ताश—संज्ञा पुं० [अ० तास] १ एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा। जरबफ्त। २ खेलने के लिये मोटे और चिकने कागज के बावन चौखूँटे टुकड़े जिनपर प्राय लाल और काले रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। ये १३-१३ पत्रों के चार वर्गों (हुक्म, चिड़ी, पान और ईंट) में विभाजित रहते हैं। ३ छोटी दफ्ती जिसपर मीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा—संज्ञा पुं० [अ० तास] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा जो गले में लटकाकर दो पतली लकड़ियों से बजाया जाता है। तासा।

संज्ञा पुं० दे० "ताश"।

तासीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] असर। प्रभाव।

तासुⓅ—सर्व० [हिं० ता] उसका।

तासूँ†—सर्व० दे० "तासों"।

तासों†Ⓟ—सर्व० [हिं० ता+सों] उससे।

तास्सुब—संज्ञा पुं० [अ०] १ धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन। २ पक्षपात।

ताहम—अव्य० [फा०] तो भी।

ताहिⓅ†—सर्व० [हिं० ता+हि (प्रत्य०)] उसको। उसे।

ताहीं†—अव्य० दे० "ताईं"। "तई"।

तिंतिड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।

तिआ—संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।

तिआह†—संज्ञा पुं० [सं० त्रिविवाह] १ तीसरा विवाह। २ वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।

तिकड़म—संज्ञा पुं० [सं० त्रिक्रम ?] [कर्ता तिकड़मी] युक्ति। तरकीब। चाल।

तिकड़मी—संज्ञा पुं० [हिं० तिकड़म] वह जो तिकड़म लड़ाना जानता हो। चाल चलनेवाला। चालबाज।

तिकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० तीन+कड़ा] एक साथ बुनी हुई तीन धोतियाँ।

तिकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+कड़ी] १ तीन कड़ियोंवाला। २. चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।

तिकोनⓅ—वि० दे० "तिकोना"।

तिकोना—वि० [सं० त्रिकोण] जिसमें तीन कोने हों। तीन कोनों का।

संज्ञा पुं० समोसा नाम का पकवान।

तिकोनिया—वि० दे० "तिकोना"।

तिक्का†—संज्ञा पुं० [सं० त्रिक=पुट्ठा, रान, कूल्हा] मांस की बोटी। लोथ।

मुहा०—तिक्का बोटी करना=टुकड़े टुकड़े करना। धज्जी धज्जी अलग करना।

तिक्की—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिक] गंजीफे या ताश का वह पत्ता जिसपर तीन बूटियाँ हों।

तिक्खⓅ—वि० [सं० तीक्ष्ण] १ तीखा। चोखा। तेज। २ तीव्र बुद्धि। चालाक।

तिक्त—वि० [सं०] जिसका स्वाद नीम या चिरायते आदि का सा हो। तीता। कड़ुआ।

तिक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिताई। कड़ुआपन।

तिच्छⓅ†—वि० [सं० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण। तेज। २ चोखा। पैना।

तिच्छताⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० तीक्ष्णता] तेजी। तीखापन।

तिखटीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।

तिखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीखा] तीखापन।

तिखारना†—क्रि० अ० [सं० त्रि+हिं० आखर] कोई बात पक्की रखने के लिये कम से कम तीन बार कहना या कहलाना।

तिखूँटा—वि० [हिं० तीन+खूँट] जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।

तिगⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "त्रिक"।

तिगुना—वि० [सं० त्रिगुण] संख्या, परिमाण या नाप में तीन बार। तीन गुना।

तिग्म—वि० [सं०] तीक्ष्ण। तेज।

संज्ञा पुं० १. वज्र। २ पिप्पली।

तिग्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता।
तिच्छ(पु)—वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिच्छन(पु)—वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिजरा—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+ज्वर] दे० "तिजारी"। उ०—स्वारथ के साथिन तज्यो तिजरा कोसो टोटक, औचट उलटि न हेरो। —विनय०।
तिजहरा(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+पहर] तीसरा पहर। दोपहर के बाद के ३ घंटों का समय।
तिजारा†—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+ज्वर] दे० "तिजारी"।
तिजारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।
तिजारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिजार] हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर। शीतज्वर।
तिजोरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह लोहे का भारी और मजबूत संदूक या छोटी आलमारी जिसमें रुपए आदि रखे जाते हैं (अँ० "सेफ")।
तिड्डी—संज्ञा स्त्री० दे० "तिक्की"।
तिड्डी†—वि० [सं० टिट्टिभ, हिं० टिड्डी ?] गायब। रफूचक्कर।
मुहा०—तिड़ी करना=गायब करना। चुरा लेना। तिड़ी होना=गायब होना। भाग जाना।
तिड़ी बिड़ी†—वि० [देश०] तितर बितर। छितराया हुआ। इधर उधर।
तित(पु)—क्रि० वि० [सं० तत्र] १ तहाँ। वहाँ। २ उधर। उस ओर।
तितना†—क्रि० वि० दे० "उतना"।
तितर बितर—वि० [हिं० तिधर+अनु०] १ जो एकत्र न हो। छितराया हुआ। बिखरा हुआ। इधर उधर फैला हुआ। २ क्रमहीन। अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त। बेतरतीब।
तितली—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीतर] १ एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा या फतिंगा जो प्रायः फूलों पर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है। २ एक प्रकार की घास। तित्तिर।
तितलौकी†—संज्ञा स्त्री० [सं० तिक्तालाबुक ?] कडुतुंबी। कड़वा। कद्दू।
तितारा—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+हिं० तार] सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं।
वि० जिसमें तीन तार हों।
तितिंबा—संज्ञा पुं० [अ० तितिम्म] १. ढकोसला। २ शेष। ३ पुस्तक का परिशिष्ट। उपसंहार। ४. (कानून) किसी दस्तावेज, वसीयतनामा, इकरारनामा आदि का पूरक या सुधारक अंश (अँ० करेक्शन डीड)।
तितिक्षु—वि० [सं०] सहनशील।
तितिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २ क्षमा। शांति।
तितिक्षु—वि० [सं०] क्षमाशील।
तितिम्मा—संज्ञा पुं० [अ०] १ बचा हुआ भाग। २ परिशिष्ट। उपसंहार। ३. (कानून) किसी दस्तावेज, वसीयतनामा, इकरारनामा आदि का पूरक या सुधारक अंश। (अँ० करेक्शन डीड)।
तिते(पु)†—वि० [सं० तति] उतने।
तितेक(पु)†—वि० [हिं० तितो+एक] उतना।
तितै(पु)—क्रि० वि० [हिं० तीतो+ऐ (प्रत्य०)] १ वहाँ या वहीं। २ उधर।
तितो(पु)†—वि०, क्रि० वि० [सं० तति] उतना।
तित्तिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीतर (पक्षी)। २ तितली (घास)।
तित्तिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ काले धब्बोंवाला तीतर पक्षी। २ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३ यास्क मुनि के शिष्य और कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के आदि उपदेशक। कहा जाता है कि जब याज्ञवल्क्य ऋषि ने गुरु के अनुशासन से अपने पढ़े हुए यजुर्वेद को वमन कर दिया तब वैशंपायन के शिष्यों ने तीतर बनकर उसे निगल लिया। इन्हीं शिष्यों द्वारा उपदिष्ट होने से यह शाखा तैत्तिरीय कहलाई।
तिथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समय की चंद्रमा की गति के अनुसार गणना में प्रत्येक २४ घंटे को एक मानकर की जानेवाली १५ तक की अनुक्रमिक संख्या जो क्रम से प्रथमा (आद्या) या प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और (कृष्ण पक्ष में) अमावस्या या (शुक्ल पक्ष में) पूर्णिमा कहलाती है। किसी पक्ष के १५ दिनों की क्रमिक संख्या। मिति। तारीख। २ पंद्रह की संख्या।
तिथिक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न आना (ज्यो०)।
तिथिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पंचांग। जंत्री। पत्रा।
तिदरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+फा० दर] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।
तिधर†—क्रि० वि० दे० "उधर"।
तिधारा—संज्ञा पुं० [सं० त्रिधारा] बिना पत्तों का एक प्रकार का थूहर (सेंहुड़) वृक्ष।
तिन†—सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु०।
संज्ञा पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण। उ०—बिमल अँगौछे पोंछि भूपन सुधारि सिर, आँगुरिन फोरि तिन तोरि तोरि डारतो।—रससारांश।
तिनउर—संज्ञा पुं० [सं० तृणकूट ?] तिनके का समूह। उ०—तुम बिनु काँपै धनि हिया, तन तिनउर भा डोल। तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल।—पदमावत।
तिनकना—क्रि० अ० [अनु०] चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना। झुँझलाना। क्रुद्ध होना।
तिनका—संज्ञा पुं० [सं० तृण] सूखी घास या डाँठी का टुकड़ा। तृण।
मुहा०—तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना=क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना=(१) संबंध तोड़ना। (२) बलैया लेना। तिनके का सहारा=थोड़ा सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना=छोटी बात को बड़ी कर टालना।
तिनगना—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।
तिनगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान। उ०—पेठा पाक जलेबी पेरा। गोंद-पाग तिनगरी गिंदौरा—सूर०।
तिनपहला—वि० [हिं० तीन+पहल] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।
तिनिश—संज्ञा पुं० [सं०] शीशम की जाति का एक पेड़। तिनास। तिनसुना।
तिनुका(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।
तिन्ना—संज्ञा पुं० [सं० तीर्णा] १ एक मगण और अंत्य गुरु, कुल चार अक्षरों का एक वर्णवृत्त। उ०—माँगै कन्या, माता धन्या। बोल्यो कसा, नासौ बसा॥ इसे कन्या और तीर्णा भी कहते हैं। २. रोटी के साथ खाने की रसेदार वस्तु। ३. तिन्नी धान।

तिन्नी—संज्ञा स्त्री० [स० तृण (धान्य ?)] एक प्रकार का जंगली धान जो तालों में होता है।

संज्ञा स्त्री० [देश०] नीवी । फुफुँदी ।

तिन्ह†—सर्व० दे० "तिन" ।

तिपति—(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति" ।

तिपल्ला—वि० [हिं० तीन+पल्ला] १ जिसमें तीन पल्ले हों। २ जिसमें तीन तागे हों ।

तिपाई—संज्ञा स्त्री० [स० त्रिपाद, मि० अँ० ट्रिपाड] तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी । टिकठी। तिगोड़िया । स्टूल ।

तिपाड़—संज्ञा पुं० [हिं० तीन+पाड़] १ जो तीन पाट जोड़कर बना हो । २ जिसमें तीन पल्ले हों। उ०—दच्छिण चीर तिपाड़ को लहँगा। पहिरि विविध पट मोलन महँगा ।—सूर० ।

तिबारा—वि० [हिं० तीन+बार] तीसरी बार ।

संज्ञा पुं० तीन बार खींचा हुआ मद्य ।

संज्ञा पुं० [हिं० तीन+बार=दरवाजा] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

तिबासी—वि० [हिं० तीन+बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ) ।

तिब्ब—संज्ञा स्त्री० [अ०] यूनानी चिकित्साशास्त्र ।

तिब्बत—संज्ञा पुं० [स० त्रि+भोट] एक प्राचीन देश जो हिमालय के उत्तर में है और वर्तमान चीन देश का एक अंग है। भोट देश ।

तिब्बती—वि० [हिं० तिब्बत] भोट देशी । तिब्बत का । तिब्बत में उत्पन्न ।

संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा ।

संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला ।

तिमंजिला—वि० [हिं० तीन+अ० मंजिल] [स्त्री० तिमंजिली] तीन खंडों का । तीन मरातिब का ।

तिमिंगिल—संज्ञा पुं० [स०] १ समुद्र में रहनेवाला मत्स्य के आकार का एक बड़ा जंतु । २. एक द्वीप का नाम। ३ उस द्वीप का निवासी।

तिमि—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र में रहनेवाला मछली के आकार का एक बड़ा जंतु । २. समुद्र। ३. रतौंधी नामक रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता ।

(पु)अव्य० [प्रा० तिम] उस प्रकार । वैसे ।

तिमिर—संज्ञा पुं० [स०] १ अंधकार । अँधेरा । २ आँखों से धुँधला दिखाई पड़ना, रात को न दिखाई पड़ना आदि आँखों के दोष ।

तिमिरहर—संज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य । २ दीपक ।

तिमिरारि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

तिमिरारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० तिमिराली] अंधकार का समूह । घोर अँधेरा ।

(पु) संज्ञा पुं० दे० "तिमिरारि" ।

तिमिरावलि—संज्ञा स्त्री० [स० अंधकार का समूह । गाढ़ अंधकार ।

तिमुहानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के तीन मार्ग हों। तिरमुहानी ।

तिय(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० स्त्री०] १ स्त्री । औरत । २ पत्नी । जोरू ।

तियला—संज्ञा पुं० [हिं० तिय+ला (प्रत्य०)] स्त्रियों का एक पहनावा ।

तिया—संज्ञा पुं० [स० तृ] तिक्की । तिड्डी ।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "तिय" ।

तिरकना—क्रि० अ० [?] १ बाल सफेद होना । २ दे० "तड़कना" ।

तिरकुटा—संज्ञा पुं० [सं० त्रिकटु] सोंठ, मिर्च, पीपल इन तीन कटु औषधियों का समूह ।

तिरखा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा" ।

तिरखित(पु)—वि० दे० "तृषित" ।

तिरखूँटा—वि० [सं० त्रि+हिं० खूँट] जिसमें तीन खूँट या कोने हों । तिरकोना ।

तिरग—संज्ञा पुं० [स०] त्रि=तीन+र=रगण+ग=गुरु (वर्ण)] तीन रगण (SIS) और एक गुरु (वर्ण) । उ०—सत्रह मत्ता छंद में, धारी त्रिजयो नीक । वाला तिरग पचीससै चौरासी दै ठीक । —छंदार्णव ।

तिरछई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन ।

तिरछा—वि० [स० तिरश्चीन] १ जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर उधर हटकर गया हो । टेढ़ा । जो सीधा न हो । २ कटु या अप्रिय ।

यौ०—बाँका तिरछा=छबीला ।

मुहा०—तिरछी चितवन या नजर=बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर दृष्टि । तिरछी बात या वचन=कटु वाक्य । अप्रिय शब्द ।

३ एक प्रकार का रेशम का कपड़ा ।

तिरछाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन । टेढ़ापन ।

तिरछाना—क्रि० अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना ।

तिरछापन—संज्ञा पुं० [हिं० तिरछा+पन] तिरछा होने का भाव ।

तिरछौहाँ—वि० [हिं० तिरछा+औहाँ] जो कुछ तिरछापन लिए हो, जैसे—तिरछौहीं डीठ ।

तिरछौहें—क्रि वि० [हिं० तिरछौहाँ] तिरछेपन के साथ । वक्रता से ।

तिरना—क्रि० अ० [स० तरण] १ पानी में न डूबकर सतह के ऊपर रहना । उतराना । २ तैरना । पैरना । ३ पार होना । ४ तरना । मुक्त होना ।

तिरनी—संज्ञा स्त्री० [?] १ घाघरा बाँधने की डोरी । नीबी । तिन्नी । फुबती । २ स्त्रियों के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है ।

तिरप—संज्ञा [सं० त्रि] नृत्य में एक प्रकार की गति । त्रिसा । तिहाई । उ०—तिरप लेति चपला सी चमकति झमकति भूषण अंग । या छवि पर उपमा कहुँ नाहीं निरपत विवस अनंग । —सूर० ।

तिरपट†—वि० [देश०] १. तिरछा । टेढ़ा । २ मुश्किल । कठिन । ३ बेढब । उलटा सीधा ।

तिरपाई—संज्ञा स्त्री० [स० त्रिपाद+मि० अँ० ट्रिपॉड] तीन पायों की ऊँची चौकी । स्टूल ।

तिरपाल—संज्ञा पुं० [सं० त्रि (=तेहरा=मोटा ?)+पाल (=बचानेवाला)] फूस या सरकंडे के लंबे पूले जो छाजन में खपड़ों के नीचे दिए जाते हैं । मुट्ठा ।

संज्ञा पुं० रोगन चढ़ा हुआ कैनवस या टाट ।

तिरपित(पु)†—वि० दे० "तृप्त" ।

तिरपौलिया—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+हिं० पोल] १ वह स्थान जहाँ तीन ऐसे बराबर और बड़े फाटक हों जिनसे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें । २. किसी नगर या बाजार के मध्य का ऐसा स्थान ।

तिरफला—संज्ञा पुं० दे० "त्रिफला" ।

तिरबेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी" ।

तिरमिरा—संज्ञा पुं० [सं० तिमिर] १. दुर्बलता के कारण होनेवाला दृष्टि का वह दोष जिसमें कभी अँधेरा और कभी अनेक

प्रकार के रंग या तारे दिखाई पड़ते हैं। २ तेज रोशनी या चमक में नजर का न ठहरना। चकाचौंध।

तिरमिराना—क्रि० अ० [हिं० तिरमिरा] १ तेज रोशनी या चमक के सामने आँखों का झपना। चौंधना। चौंधियाना। २ छटपटाना। व्याकुल होना। बेचैन होना।

तिरलोक†—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।

तिरशूल†—संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल"।

तिरस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तिरस्कृत] १ अनादर। अपमान। २ भर्त्सना। फटकार। ३. अनादरपूर्वक त्याग।

तिरस्कृत—वि० [सं०] [स्त्री० तिरस्कृता] १ जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। २ अनादरपूर्वक त्यागा हुआ। ३ परदे में छिपा हुआ।

तिरहुत—संज्ञा पुं० [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश जिसके अंतर्गत आजकल मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले हैं।

तिरहुतिया—वि० [हिं० तिरहुत] तिरहुत का।

संज्ञा पुं० तिरहुत का रहनेवाला।

संज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।

तिराना—क्रि० स० [हिं० तिरना] १ पानी के ऊपर ठहराना या चलाना। तैराना। २ पार करना। ३. उबारना। निस्तार करना। ४ भयभीत करना।

तिराहा—संज्ञा पुं० [हिं० तीन+फा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमुहानी।

तिरी†—वि० दे० "तिर्यक्"।

तिरिन†Ⓟ—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

तिरिया—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री०] स्त्री। औरत।

यौ०—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों की चालाकी या कौशल।

तिरीछाⓅ†—वि० दे० "तिरछा"।

तिरेंदा—संज्ञा पुं० [सं० तरंड] १ समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टानें होती हैं। २ मछली मारने की बंसी की लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है। तरेंदा।

तिरोधान—संज्ञा पुं० [सं०] अंतर्धान।

तिरोभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतर्धान। अदर्शन। २ गोपन। छिपाव।

तिरोभूत, तिरोहित—वि० [सं०] छिपा हुआ। अंतर्हित। गायब।

तिरौंछा†—वि० दे० "तिरछा"। उ०—कठिन बचन सुनि श्रवन जानकी सकी न बचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जलधार।—सूर०।

तिर्यक्—वि० [सं०] तिरछा। टेढ़ा।

संज्ञा पुं० पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्यक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तिरछापन। टेढ़ापन। २ पशुता। जड़ता।

तिर्यग्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २. पशु, पक्षी आदि छोटी योनियों की प्राप्ति। ३ उलटी चाल। अध पतन। अधोगति।

तिर्यग्योनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पशु, पक्षी आदि जीवों की योनि। मनुष्य योनि से नीचे की योनि।

तिलंगा—संज्ञा पुं० [सं० तैलंग] अँगरेजी फौज का देशी सिपाही।

संज्ञा पुं० [हिं० तीन+लंग] एक प्रकार का कनकौवा।

तिलंगाना—संज्ञा पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश।

तिलंगी—वि० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+लंग] एक प्रकार की पतंग।

तिल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है। इन्हें भूनकर गुड़ या शक्कर में पागकर पट्टी, लड्डू आदि बनाते हैं। सफेद तिल से रेवड़ी नामक मिठाई बनाई जाती है। तिल दो प्रकार का होता है—सफेद और काला। हिंदुओं के धर्मशास्त्रों में काला तिल बहुत पवित्र माना गया है और देवताओं और पितरों के सब कामों में आता है। २ बहुत छोटा टुकड़ा।

मुहा०—तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात। तिल का ताड़ करना=किसी छोटी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल तिल=थोड़ा थोड़ा। तिल धरने की जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर=जरा सा। थोड़ा सा।

२ काले रंग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। ३ काली बिंदी के आकार का गोदना। ४ आँख की पुतली के बीचोबीच का वह मध्य बिंदु जिससे दिखाई पड़ता है।

तिलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चिह्न जो चंदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर सांप्रदायिक संकेत या शोभा के लिये लगाते हैं। टीका। २ राज्याभिषेक। राजगद्दी। राजतिलक। ३ विवाह स्थिर करने की एक रीति या क्रिया। टीका। ४. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीक। ५ शिरोमणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ६ पुंनाग की जाति का एक सुंदर पेड़। ७ घोड़े का एक भेद। ८ तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। क्लोम। ९. किसी ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका। भाष्य। १० वर्तमान भारतीय राजनीति के प्रधान प्रवर्तकों में से एक—लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।

संज्ञा पुं० [तु० तिरलीक] १. एक प्रकार का जनाना कुरता। २. खिलअत।

तिलकना—क्रि० अ० [हिं० तड़कना] १. गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर दरकना या फटना। २. फिसलना।

तिलकमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंदन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छापा जो भक्त लोग लगाते हैं।

तिलकहरू—दे० "तिलकहार"।

तिलकहार—संज्ञा पुं० [हिं० तिलक+हार] वे लोग जो कन्यापक्ष से वर को तिलक चढ़ाने के लिये भेजे जाते हैं।

तिलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमें कुल दो सगण होते हैं। उ०—ससिवाल खरो। शिव माल धरो। भ्रमरा हरखे। तिलका निरखे॥ तिल्ला। तिलना। तिल्लना।

तिलकुट—संज्ञा पुं० [सं० तिल+√कुट्] कूटे हुए तिल जो खाँड़ की चाशनी में पगे हों।

तिलचटा—संज्ञा पुं० [हिं० तिल+√चाट] एक प्रकार का झींगुर जो गंदी, टूटी और अँधेरी जगहों में रहता है। चपड़ा।

तिलचावला—वि० [हिं० तिल+चावल] काला और सफेद मिला।

तिलचावली—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिल+चावल] तिल और चावल की खिचड़ी।

तिलछनाⓅ—क्रि० अ० [सं० तिर्यक्] विकल रहना। छटपटाना। बेचैन रहना।

तिलड़ा—वि० [हिं० तीन+लड़] जिसमें तीन लड़ें हों।

तिलड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+लड़ी] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में जुगनी होती है।

तिलदानी—सज्ञा स्त्री० [हिं० तिल्ला+सं० आधान] वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं।

तिलपट्टी—सज्ञा स्त्री० [हिं० तिल+पट्टी] खाँड में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।

तिलपपड़ी—सज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी"।

तिलपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ तिल का फूल। २ व्याघ्रनख। बघनखी।

तिलभुग्गा—सज्ञा पु० दे० "तिलकुट"।

तिलमिल—सज्ञा स्त्री० [हिं० तिरमिर] चकाचौंध। तिरमिराहट।

तिलमिलाना—क्रि० अ० दे० "तिरमिराना"।

तिलवा—सज्ञा पु० [हिं० तिल] तिलों का लड्डू।

तिलस्म—सज्ञा पु० [अ०] १. जादू। इद्रजाल। २. अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात। चमत्कार।

तिलस्मी—वि० [हिं० तिलस्म] तिलस्म-सबधी।

तिलहन—सज्ञा पुं० [हिं० तेल+धान्य] वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

तिलाजलि—सज्ञा स्त्री० [सं० तिल+अजलि] दे० "तिलाजली।"

तिलाजली—सज्ञा स्त्री० [सं० तिल+अजलि] १ मृतक संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं। २ पितरों को मत्रपूर्वक दी हुई तिलमिश्रित जल की अजलि।

मुहा०—तिलाजली देना = बिलकुल त्याग देना। जरा भी सबध न रखना।

तिलाक—सज्ञा पुं० [अ० तलाक] पति-पत्नी के नाते का टूटना। विवाह-विच्छेद।

तिली†—सज्ञा स्त्री० १ दे० "तिल"। २ दे० "तिल्ली"।

तिलेदानी—संज्ञा स्त्री० दे० "तिलदानी"।

तिलेगू—सज्ञा स्त्री० दे० "तैलगू"।

तिलोक—सज्ञा पु० दे० "त्रिलोक"।

तिलोकपति—सज्ञा पुं० [सं० त्रिलोकपति] विष्णु।

तिलोकी—सज्ञा पु० [सं० त्रिलोकी] इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छद जो प्लवगम तथा चांद्रायण के योग से बनता है। ऊपर के नियम से चौपाई में ५ मात्राएँ बढ़ा देने से भी ये तीनों छंद (प्लवगम, चाद्रायण और तिलोकी) बन जाते हैं। तिलोकी के अत में हरिगीतिका के दो पद रखने से अमृतकुंडली छद बनता है, जैसे—दुर्गा सों अस भाखि कृष्ण आतुर भए। चाहि षडानन और बैन बोलत भए॥ अश रूप ते वत्स, धरातल जावहु। जांबवती सुत होय, देव सुख पावहु॥ करि अश सुर समुदाय उर हरखाय भूमि चलें सबै। अवतार मानव धारिवसुधा भार मैं हरिहैं सबै।

तिलोचन—सज्ञा पुं० दे० "त्रिलोचन"।

तिलोत्तमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार स्वर्ग की एक परम रूपवती अप्सरा जिसे ब्रह्मा ने ससार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल (थोड़ा थोड़ा अंश) लेकर बनाया था। पुराणों के अनुसार सुद और उपसुद नामक दो भाई (राक्षस) ये जिनके अत्याचारों से ऊबकर ब्रह्मा जी ने तिलोत्तमा को बनाया था। तिलोत्तमा को देखते ही दोनों मोहित हो गए और उसे पाने के लिये आपस में कट मरे।

तिलोदक—सज्ञा पुं० दे० "तिलांजली"।

तिलौरी—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ तेलिया मैना। २ दे० "तिलौरी"।

तिलौंछना—क्रि० स० [हिं० तेल+औंछना] थोड़ा तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा—वि० [हिं० तिल+औंछा] जिसमें तेल का सा स्वाद या रग हो।

तिलौरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० तिल+बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो।

तिल्ला—सज्ञा पु० [अ० तिला] १ कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २ दुपट्टे या साड़ी आदि का वह अचल जिसमें कलाबत्तू आदि का काम किया हो।

सज्ञा पुं० दे० "तिलका" (वर्णवृत्त)।

तिल्लाना—सज्ञा पुं० दे० "तराना"

तिल्ली—सज्ञा स्त्री० [?] पेट के भीतर का पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाँई ओर होता है। इसका सबध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिलही।

सज्ञा स्त्री० [सं० तिल] तिल नाम का अन्न।

तिवाड़ी, तिवारी—सज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी"।

तिवास‡—सज्ञा पुं० [सं० त्रिवासर] तीन दिन।

तिशना—सज्ञा पुं० [फा० तशनीय] ताना। मेहना। व्यग्य वचन।

ⓟ संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिष्ठनाⓟ—क्रि० अ० [सं० तिष्ठ ति (√स्था)] ठहरना।

तिष्पनⓟ—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिस†—सर्व० [सं० तस्मिन्] 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

मुहा०—तिसपर = इतना होने पर। ऐसी अवस्था में। इसके ऊपर।

तिसनाⓟ—सज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिसरायत—सज्ञा स्त्री० [हिं० तीसरा+आयत (प्रत्य०)] तीसरा या गैर होने का भाव।

तिसरैत—सज्ञा पु० [हिं० तीसरा+ऐत (प्रत्य०)] १ झगड़ा करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। मध्यस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसानाⓟ—क्रि० अ० [सं० तृषा] प्यासा होना।

तिहरा—वि० दे० "तेहरा"।

तिहराना—क्रि० स० [हिं० तेहरा] दो बार करके एक बार फिर और करना। तीन आवृत्ति करना।

तिहवार—सज्ञा पुं० दे० "त्यौहार"।

तिहाई—सज्ञा स्त्री० [सं० त्रि+भाग] तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयाश।

सज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसल।

तिहायत—सज्ञा पुं० दे० "तिसरैत"।

तिहारा, तिहारोⓟ†—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तिहाव†—सज्ञा पुं० [हिं० तेह] १ क्रोध। कोप। २ बिगाड़। झगड़ा।

तिहिं—सर्व० दे० "तेहि"।

तिहूँ†—वि० [हिं० तीन] तीनों।

तिहैया—सज्ञा पुं० [हिं० तिहाई] १ तीसरा भाग। तृतीयाश। २ तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।

तीⓟ—सज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री। औरत। २ जोरू। पत्नी। ३ मनहरण छंद। अमरावली। नलिनी। १५ वर्णों का एक छंद जिसमें ५ सगण होते हैं। उ०—ससि सों सु सखी रघुनंदन को बदना। लखिके पुलकीं मिथिलापुर की ललना॥

तीक्षण, तीक्षनⓟ—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीक्ष्ण—वि० [स०] १ तेज नोक या धारवाला। २ तेज। प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४ जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। कड़ुआ। ५. जो सुनने में अप्रिय हो। कर्णकटु। ६ जो सहन न हो। असह्य।

तीक्ष्णता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेजी। उग्रता। २ तीखापन। कड़ुवाहट।

तीक्ष्णदृष्टि—वि० [स०] जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्मदृष्टि।

तीक्ष्णधार—संज्ञा पु० [स०] खड्ग।
वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।

तीक्ष्णबुद्धि—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो। बुद्धिमान्।

तीख(पु)†—वि० दे० "तीखा"।

तीखन(पु)†—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीखा—वि० [स० तीक्ष्ण] १ जिसकी धार या नोक बहुत तेज हो। तीक्ष्ण। २ तेज। तीव्र। प्रखर। ३ उग्र। प्रचंड। ४ जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो। ५ जिसका स्वाद बहुत तेज या चरपरा हो। ६ जो सुनने में अप्रिय हो। ७ चोखा। बढ़िया।

तीखुर—सज्ञा पु० [सं० तवक्षीर] हलदी की जाति का एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ के चूर्ण का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि बनाने में होता है।

तीछन, तीछा(पु)†—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीज—सज्ञा स्त्री० [सं० तृतीया] १ पक्ष की तीसरी तिथि। २ भादों सुदी (शुक्ल पक्ष) तीज जिस दिन हिंदू स्त्रियाँ पति के कल्याणार्थ निर्जल व्रत करती हैं।
विशेष० दे० "हरतालिका"।

तीजा—वि० [हिं० तीन] [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय। (मुसलमानों में मनाया जानेवाला) किसी की मृत्यु का तीसरा दिन।

तीत(पु)†—वि० दे० "तीता"।

तीतर—सज्ञा पुं० [स० तित्तिर] एक प्रसिद्ध चचल और तेज दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।

तीता—वि० [सं० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त, जैसे—मिर्च। २ कड़ुआ। कटु।

तीतुरी(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।

तीतुल(पु)—सज्ञा पु० दे० "तीतर"।

तीन—वि० [सं० त्रीणि] जो दो और एक हो।
सज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।

मुहा०—तीन पाँच करना=घुमाव-फिराव या हुज्जत की बात करना।

सज्ञा पु० सरयूपारी ब्राह्मणों में तीन उत्तम गोत्रों का एक वर्ग।

मुहा०—तीन तेरह करना=तितर बितर करना। अलग अलग करना। न तीन में, न तेरह में=जो किसी गिनती में न हो। जिसे कोई पूछता न हो।

तीनि(पु)†—सज्ञा पु० और वि० दे० "तीन"।

तीमारदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] रोगियों की सेवाशुश्रूषा का काम। परिचर्या।

तीय(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० स्त्री] स्त्री। औरत।

तीया(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "तीय"।
सज्ञा पुं० दे० "तिक्की" या "तिड़ी" (ताश का खेल)।

तीरंदाज—सज्ञा पुं० [फा०] १ तीर चलानेवाला। निशाना लगानेवाला। २ वीर। बहादुर।

तीरंदाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तीर चलाने की विद्या या क्रिया। २ बहादुरी। ३ निपुणता।

तीर—सज्ञा पुं० [स०] १ नदी का किनारा। कूल। तट। २ पास। निकट। समीप।
सज्ञा पु० [फा०] बाण। शर।

मुहा०—तीर चलाना या फेंकना=युक्ति भिड़ाना। रगडग लगाना। तीर मारना=आजमाना।

तीरथ—सज्ञा पु० दे० "तीर्थ"।

तीरमुक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] तिरहुत देश।

तीरवर्ती—वि० [स०] १ तट या किनारे पर रहनेवाला। २ पास रहनेवाला। पड़ोसी।

तीरस्थ—सज्ञा पु० [स०] १ नदी के तीर पर पहुँचा या पहुँचाया हुआ व्यक्ति या पदार्थ। किनारे लगा हुआ व्यक्ति या वस्तु। २ अंत पर पहुँचा हुआ व्यक्ति। मरणासन्न व्यक्ति।

तीरा(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "तीर"।

तीर्णा—संज्ञा स्त्री० [स० तीर्णा] एक वर्णवृत्त। दे० "तिन्ना"।

तीर्थंकर—सज्ञा पुं० [स०] जैनियों के उपास्य देव जो सब देवताओं से श्रेष्ठ तथा सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं। इनकी सख्या २४ है।

तीर्थ—सज्ञा पुं० [स०] १ वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिये जाते हों, जैसे, हिंदुओं के लिये काशी, हरिद्वार, द्वारिका आदि अथवा मुसलमानों के लिये मक्का, मदीना आदि। २ कोई पवित्र स्थान। ३. हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान, जैसे, दाहिने हाथ का ऊपरी भाग ब्रह्मतीर्थ, अँगूठे और तर्जनी का मध्यभाग पितृतीर्थ, कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग प्राजापत्य तीर्थ और उँगलियों का अगला भाग देवतीर्थ माना जाता है। इन तीर्थों से क्रमश आचमन, पिंडदान, पितृकार्य और देवकार्य किया जाता है। ४ शास्त्र। ५ यज्ञ। ६ स्थान। स्थल। ७. उपाय। ८ अवसर। ९ अवतार। १० उपाध्याय। गुरु। ११ दर्शन। १२ ब्राह्मण। १३ अग्नि। १४ सन्यासियों की एक उपाधि। १५ तारनेवाला। १६ ईश्वर। १७. मातापिता।

तीर्थपति—सज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज"।

तीर्थयात्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नानादि के लिये जाना। तीर्थाटन।

तीर्थराज—सज्ञा पुं० [स०] प्रयाग।

तीर्थराजी—सज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।

तीर्थाटन—सज्ञा पु० [सं०] तीर्थयात्रा।

तीर्थिक—सज्ञा पुं० [स०] १ तीर्थ का ब्राह्मण, पंडा। २. बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण। (बौद्ध) ३ तीर्थंकर।

तीली—सज्ञा स्त्री० [फा० तीर] १ बड़ा तिनका। सींक। २ धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार। ३ पटवों का वह औजार जिससे वे रेशम लपेटते हैं। ४ तीलियों की वह कूँची जिससे जुलाहे सूत साफ करते हैं।

तीव्र—वि० [स०] १ अतिशय। अत्यंत। २ तीक्ष्ण। तेज। ३ बहुत गरम। ४ नितांत। बेहद। ५ कटु। कड़ुवा। ६ न सहने योग्य। असह्य। ७ प्रचंड। ८ तीखा। ९ वेगयुक्त। द्रुतगामी। १० कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा हुआ (स्वर) (सगीत)।

तीव्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] तीव्र होने का भाव। तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।

तीस—वि० [सं० त्रिंश] दस का तिगुना। बीस और दस।

यौ०—तीसों दिन या तीस दिन=

सदा। हमेशा। तीसमारखाँ=बड़ा बहादुर (व्यंग्य)।

संज्ञा पुं० दस की तिगुना संख्या। ३०

तीसरा†—वि० दे० "तीसरा"।

संज्ञा पुं० [हिं० तीसरा] खेत की तीसरी जुताई।

तीसरा—वि० [हिं० तीन] १ क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। तृतीय। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई संबंध न हो। गैर।

तीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तीस] फल आदि गिनने का तीस गाहियों (गाही=५) अर्थात् एक सौ पचास का एक मान।

संज्ञा पुं० दे० "तिहाई"।

तुंग—वि० [सं०] १. उन्नत। ऊँचा। २ उग्र। प्रचंड। ३ प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. पुन्नाग वृक्ष। २ पर्वत। पहाड़। ३ नारियल। ४ कमल का केसर। ५ शिव। ६ दो नगण और दो अंत्य गुरु का एक वर्णवृत्त। उ०—न नग गुनहु तुगा। गुनहरि नर पुगा। नर तन कर चगा। नित लह सतमगा॥ इसे तुरगम छंद भी कहते हैं।

तुंगतनी—वि० [सं० तुग+स्तन] ऊँचे स्तनोंवाली। उन्नतपयोधरा। उ०—अपनी तनुछाँह सों तुगतनी तनु छैल छबीले सों छ्वै चलती।—शृंगार०।

तुंगता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऊँचाई।

तुंगनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंगबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक। उत्थितहस्त।

तुंगभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अड़ियल हाथी (मो० वि०)। २ मतवाला हाथी (श० कल्प०)।

तुंगभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

तुंगारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जंगल।

तुंगारन्न(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तुंगारण्य"।

तुंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुँह। २ चचु। चोंच। ३ निकला हुआ मुँह। थूथन। ४ शुड। सूँड़। ५ तलवार का अगला हिस्सा। ६ शिव। महादेव। ७ अन्न की बालियों का टूँड़ या नोक। ढोंढी।

तुंडि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुँह। २ चोंच। ३ नाभि।

तुंडी—वि० [सं० तुण्डिन्] मुँह, चोंच, थूथन या सूँड़वाला।

संज्ञा पुं० गणेश।

संज्ञा स्त्री० नाभि। ढोंढी।

तुंद—संज्ञा पुं० [सं०] पेट। उदर। तोंद।

वि० [फा०] तेज। प्रचंड। घोर।

तुंदिल—वि० [सं०] तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

तुंदी—वि० [सं०] दे० "तुंदिल"।

तुँदैला—वि० [सं० तुंदिल] तोंद या बड़े पेटवाला।

तुँबड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "तूँबड़ी"।

तुंबर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुंबा—संज्ञा पुं० दे० "तूँबा"।

तुंबुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनिया। २ एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। ३ एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं और संगीत में परम प्रवीण माने जाते हैं। इन्होंने ब्रह्मा से संगीत सीखा था। ये विष्णु के बड़े भक्त माने गए हैं। तुंबुरु वीणा (तानपूरा या तंबूरा) इन्हीं का आविष्कार माना जाता है।

तुअ(पु)†—सर्व दे० "तव"। उ०—सुवरस-वरनि सुहाग सों सनी बनी तुअ देह।—रससाराश।

तुअना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० चूना] १ चूना। टपकना। २. खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३ गर्भपात होना।

तुहूँ—सर्व० [त्वया ('युष्मद्' करण, एकवचन में), अप० तइँ] दे० "तू"। उ०—अबहिं वारि तुहूँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला।—पदमावत।

तुक—संज्ञा स्त्री० [हिं० टूक] १ किसी पद्य या गीत का कोई खंड या कड़ी। २ पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर-मैत्री। अंत्यानुप्रास। काफिया। ३ ध्वनि-साम्य। ४ मेल। जोड़।

मुहा०—तुक जोड़ना=भद्दी कविता करना।

तुकबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुक+फा० बंदी] १ केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। २ भद्दी कविता जिसमें काव्य के रस, भाव, व्यंजना आदि गुण न हों।

तुकमा—संज्ञा पुं० [फा०] घुडी फँसाने का फंदा। मुद्धी।

तुकांत—संज्ञा पुं० [हिं० तुक+सं० अंत] पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया।

तुका—संज्ञा पुं० दे० "तुक्का"।

तुकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० तू+सं० कार] 'तू' का प्रयोग जो अपमानजनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन। 'तू' शब्द का प्रयोग।

मुहा०—तू तुकार करना=अशिष्ट शब्दों से संबोधन करना।

तुकारना—क्रि० स० [हिं० तुकार] तू तू करके बुलाना या बोलना। अशिष्ट संबोधन करना। उ०—वारौं हौं कर जिन हरि को वदन छुवारी। वारौं वह रसना जिन बोल्यो तुकारी।—सूर०।

तुक्कल—संज्ञा स्त्री० [फा० तुका] बड़ी पतंग।

तुक्का—संज्ञा पुं० [फा० तुका] १. वह तीर जिसमें गाँसी की जगह घुडी सी बनी होती है। २ टीला। पहाड़ी। ३. सीधी खड़ी वस्तु।

तुख—संज्ञा पुं० [सं० तुष] १ भूसी। छिलका। २ अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखार—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का प्राचीन नाम। यह संभवत हिमालय के उत्तर पश्चिम में था। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। २. इस देश का निवासी। ३ इस देश का घोड़ा।

संज्ञा पुं० [अ०] बीज।

तुख्म—संज्ञा पुं० [अ०] बीज।

तुच्छ—वि० [सं०] १ हीन। क्षुद्र। नाचीज। २ ओछा। नीच। ३ अल्प। थोड़ा।

तुच्छता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हीनता। नीचता। २ ओछापन। क्षुद्रता। ३ अल्पता।

तुच्छत्व—संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।

तुच्छातितुच्छ—वि० [सं०] छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।

तुजुक—संज्ञा पुं० [तु०] १ शोभा। शान। २ कानून। नियम। ३ आत्मचरित्र। आत्मकथा या कहानी।

तुझ—सर्व० [सं० तुभ्यम्, अप० तुज्झ] कर्ता और संबंध के अतिरिक्त अन्य विभक्तियों में "तू" का रूप।

तुझे—सर्व० [हिं० तुझ] 'तू' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। तुझको।

तुट(पु)—वि० [सं० त्रुटि] लेशमात्र। जरा सा।

तुट्टना(पु)—क्रि० स० [स० तुष्ट] तुष्ट करना। प्रसन्न करना। राजी करना।

क्रि० अ० तुष्ट होना। प्रसन्न होना। राजी होना।

तुड़वाना—क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तुड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुड़ाना] १ तुड़ाने की क्रिया या भाव। २ तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़ाना—क्रि० स० [हिं० तोड़ना का प्रे० रूप] १ तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. अलग करना। संबंध न रखना। ३ बड़े सिक्के को बराबर मूल्य के कई छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

तुतरा(पु)†—वि० दे० "तोतला"। उ०—मनमोहन की तुतरी बोलन मुनिमन हरत सुहँसि मुसकनियाँ। —सूर०।

तुतराना(पु)†—क्रि० अ० दे० "तुतलाना"। उ०—श्रवणन नहिं उपकंठ रहत है अब बोलत तुतरात री—सूर०।

तुतरौहाँ(पु)†—वि० दे० "तोतला"।

तुतलाना—क्रि० अ० [अनु०] शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक रुककर टूटेफूटे शब्द बोलना।

तुत्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. तूतिया। २ नील।

तुदन—संज्ञा पुं० [स०] १ व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २ व्यथा। पीड़ा। उ०—कृपादृष्टि करि तुदन मिटावा। सुमन माल पहिराय पठावा।—विश्रामसागर।

तुन—संज्ञा पुं० [स० तुन्न] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।

तुनक—वि० [फा०] १. दुर्बल। २ नाजुक। कोमल।

यौ०—तुनक मिजाज=छोटी छोटी बात पर बिगड़ने या रूठनेवाला। चिड़चिड़ा।

तुनीर—संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तुपक—संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १ छोटी तोप। २. बंदूक। कड़ाबीन।

तुफंग—संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १ हवाई बंदूक। २. वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुफैल—संज्ञा पुं० [अ०] १ साधन। कारण। २ कृपा। अनुग्रह।

तुभना(पु)—क्रि० अ० [सं० स्तोभन] स्तब्ध रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना। उ०—टरति न टारे यह छवि मन में चुभी। स्याम सघन पीतांबर दामिनि, अँखियाँ चातक है जाय तुभी।—सूर०।

तुम—सर्व० [स० त्वम्] १. 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। २ वक्ता की ओर से श्रोता के लिये (विशेषतः बड़ों के द्वारा छोटों के लिये) एकवचन तथा बहुवचन में प्रयुक्त शब्द, जैसे, राम ने लक्ष्मण से कहा, "भाई! तुम अयोध्या में रहकर माता, पिता, गुरुजनों और प्रजा की सेवा करो"। बहुवचन में इस शब्द के साथ बहुधा 'सब' या 'लोग' जोड़ दिया जाता है; जैसे, कृष्ण ने पांडवों से कहा, "अब तुम लोग आँख मूँदकर युद्ध की तैयारी करो"। ३ ईश्वर या घनिष्ठ व्यक्ति के संबोधन में एकवचन में प्रयुक्त सर्वनाम, जैसे, "प्रभु जी! तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।"

तुम तड़ाक†—संज्ञा पुं० दे० "तू-तड़ाक"।

तुमड़ी—संज्ञा स्त्री० [स० तुंबिनी] १ छोटा तूँबा। तुंबी। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा। महुवर।

तुमरा—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तुमरू—संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुमल(पु)—संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल"।

तुमुर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "तुमुल"।

तुमुल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का कोलाहल या धूम। शोरगुल। हल्ला। लड़ाई की हलचल। हड़कंप। २ सेना की गहरी मुठभेड़। भिड़ंत।

वि० [स०] १ कोलाहल से भरा हुआ। २ घमासान।

तुम्हँ—सर्व० दे० "तुम"।

तुम्हारा—सर्व० [हिं० तुम्ह] 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

तुम्हें—सर्व० [हिं० तुम्ह] "तुम" का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

तुरंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोड़ा। २. चित्त। ३ सात की संख्या।

तुरंगक—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी तोरई।

तुरंगम—संज्ञा पुं० [स०] १ घोड़ा। २ चित्त। ३ दो नगण और दो अंत्य गुरु का एक वृत्त। तुंग। तुंगा। उ०—ननग गुनहु तुंगा। गुन हरि नरपुंगा। नर तन करि चंगा। नित लहु सतसंगा।

तुरंज—संज्ञा संज्ञा पुं० [फा०] १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू। खट्टी।

तुरंजबीन—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २ नीबू के रस का शरबत।

तुरंत—क्रि० वि० [सं० तुर] जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फौरन।

तुरई—संज्ञा स्त्री० [स० तुर?] एक बेल जिसके लंबे फलों पर गहरी धारियाँ या नालियाँ पड़ी रहती हैं। इनकी तरकारी बनाई जाती है।

तुरक—संज्ञा पुं० दे० "तुर्क"।

तुरकटा—संज्ञा पुं० [फा० तुर्क+हिं० टा (प्रत्य०)] मुसलमान (तिरस्कार)।

तुरकाना—संज्ञा पुं० [फा० तुर्क] [स्त्री० तुरकानी] १ तुरकों का सा। २ तुर्कों का देश या बस्ती।

तुरकिन—संज्ञा स्त्री० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति की स्त्री। †२ मुसलमान की स्त्री।

तुरकी—वि० [फा०] तुर्कों के देश का। संज्ञा स्त्री० [फा०] तुर्कों की भाषा।

तुरक्क(पु)—संज्ञा पुं० [सं० तुरुष्क] दे० "तुर्क"। उ०—लज्जाइअ निअ मनहि मन, अस तुरक्क असलान गुएणइ।

तुरग—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० तुरगी] १ घोड़ा। २ चित्त।

तुरत—अव्य० [सं० तुर] शीघ्र। चटपट।

तुरप—संज्ञा पुं० [अं० ट्रंप] १ ताश के खेल में किसी बाँट में वह रंग या उसका पत्ता जो उस बाजी में अन्य रंगों को जीत लेता है। २ इस रंग का पत्ता।

मुहा०—तुरप लगाना = जीतने के लिये तुरप का पत्ता चलना।

तुरपन—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई।

तुरपना—क्रि० स० [हिं० तुरपन] तुरपन की सिलाई करना। लुढ़ियाना।

तुरय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।

तुरही—संज्ञा स्त्री० [सं० तूर] फूँककर बजाने का एक बाजा जो मुँह की ओर पतला और पीछे की ओर चौड़ा होता है।

तुरा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"।

स्त्री० पुं० [स० तुरग] घोड़ा।

तुराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० तूलिका] गद्दा। तोशक उ०—नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई।—मानस।

तुराना(पु)—क्रि० अ० [सं० तुर] घबराना। आतुर होना।

क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तुरावती—वि० स्त्री० [सं० त्वरावती] वेगवाली। झोंक के साथ बहनेवाली।

तुरिया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"।

तुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुरगी] घोड़ी। उ०—जोबन तुरी हाथ गहि लीजिय। जहाँ जाइ तहँ जाइ न दीजिय।—पद्मावत।

तुरीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ब्रह्ममय होने की दशा। स्थूल शरीर के धर्मों से परे की अवस्था। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों स्थितियों से भिन्न एक चौथी अंतर्दशा। ब्रह्मावस्था। २ अज्ञान से दूर शुद्ध चैतन्य। ब्रह्म। ३ मूलाधार से उठनेवाली वाक् (वाणी) शक्ति की चौथी अवस्था जब वह मुंह में आकर जिह्वा, तालु, ओठ और दाँतों के सहयोग से उच्चरित होती है। इन अवस्थाओं को क्रम से परा (मूलाधार से उठी), पश्यंती (हृदयस्थिता), मध्यमा, (हृदय से ऊपर उठनेवाली) और वैखरी (उच्चार्यमाणा) या बोली कहते हैं।

तुरुकिनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० तुरुष्क] तुर्क जाति की स्त्री। उ०—चरप नाच तुरुकिनी आन किछु काहु न भावइ।

तुरुष्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ तुर्क जाति। तुर्की या तुर्किस्तान का रहनेवाला (मनुष्य)। २ तुर्कों का देश। तुर्की या तुर्किस्तान। ३ तुर्किस्तान का घोड़ा।

तुरुही—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरही"।

तुर्क—संज्ञा पुं० [सं० तुरुष्क] १. तुर्की और तुर्किस्तान का निवासी।

तुर्कमान—संज्ञा पुं० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति का मनुष्य। २ तुर्की घोड़ा।

तुर्की—वि० [फा० तुर्क] तुर्कों के देश का। तुर्की या तुर्किस्तान का।

संज्ञा स्त्री० १ प० तुर्किस्तान की भाषा। २ तुर्किस्तान का घोड़ा। ३ तुर्कों की सी ऐंठ। अकड़। गर्व।

तुर्रा—संज्ञा पुं० [अ०] १ घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो। काकुल। २ पर या फुँदना जो पगड़ी में लगाया या खोंसा जाता है। कलगी। गोशवारा।

मुहा०—तुर्रा यह कि=उसपर भी इतना और। सबके बाद इतना यह भी।

३ फूलों की लड़ियों का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ४. टोपी आदि में लगा हुआ फुँदना। ५. पक्षियों के सिर पर निकले हुए परों का गुच्छा। चोटी। शिखा ६ कोड़ा। चाबुक।

वि० [फा०] अनोखा। अद्भुत।

तुर्वसु—संज्ञा पुं० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र।

तुर्श—वि० [फा०] खट्टा। अम्ल।

तुर्शी—संज्ञा स्त्री० [फा०] खटाई। अम्लता।

तुल(पु)—वि० दे० "तुल्य"।

तुलना—क्रि० अ० [सं०√तुल्] १ तौला जाना। तराजू पर वजन अंदाजा जाना। २. तौल या मान में बराबर उतरना। तुल्य होना। ३ आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार के बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर को झुका न हो, जैसे, बाइसिकिल पर तुलकर बैठना। ४ किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे। सधना। ५. नियमित होना। बँधना। बँधे हुए मान का अभ्यास होना। ६ गाड़ी के पहिए का ओंगा जाना (अं० लुब्रिकेशन)। ७ उद्यत होना। उतारू होना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरी से घट बढ होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २ सादृश्य। समता। ३ उपमा।

तुलनात्मक—वि० [सं०] जिसमें और काम के साथ साथ तुलना भी हो।

तुलवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल+वाई (प्रत्य०)] १ तौलने की मजदूरी। २. पहिए को ओंगने की मजदूरी।

तुलवाना—क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे० रूप] [संज्ञा तुलवाई] १ तौल कराना। वजन कराना। २ गाड़ी के पहिए की धुरी में घी, तेल आदि चिकनी चीजें दिलाना। ओंगवाना (अं० लुब्रिकेट)।

तुलसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जो वायु और पद्म पुराणों के अनुसार समुद्रमंथन से निकला था। इसकी दो जातियाँ पाई जाती हैं—(१) शुक्ल और (२) कृष्ण। कृष्ण तुलसी को हिंदू बहुत पवित्र मानते हैं और अपने घरों में लगाते हैं। वैष्णव इसकी पूजा करते हैं और विष्णु को इसकी पत्तियाँ चढ़ाते हैं। वैद्यक में तुलसी कटु, तिक्त, उष्ण, पित्तकारक, जठराग्निवर्धक, रक्तशोधक, कुष्ठघ्न, कफवातनाशक और पसलियों का दर्द दूर करनेवाली मानी जाती है। इसे ज्वरघ्न भी माना गया है और ज्वर दूर करने के लिये लोग इसका काढ़ा पीते हैं।

तुलसीदल—संज्ञा पुं० [सं०] तुलसी के पौधे की पत्ती।

तुलसीदास—संज्ञा पुं० [सं० तुलसी+दास] ईसा की १६वीं सदी में उत्तर प्रदेश में जन्म लेनेवाले राम के अनन्य भक्त, दार्शनिक और कवि जिनके रचे ग्रंथों में दोहे चौपाइयों में लिखा रामचरितमानस अवधी (भाषा) का महाकाव्य और हिंदी का सबसे अधिक जनप्रिय तथा व्यापक लोककाव्य है।

तुलसीपत्र संज्ञा पुं० [सं०] तुलसी की पत्ती।

तुलसीवन—संज्ञा पुं० [सं० तुलसी+वन] वृंदावन। उ०—आज बने तुलसीवन में रमि रास मनोहर नंदकिशोर।—शृंगार०।

तुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सादृश्य। तुलना। मिलान। २ गुरुत्व नापने का यंत्र। तराजू। काँटा। ३ मान। तौल। ४. ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि जिसका आकार तराजू लिए हुए मनुष्य का सा माना जाता है।

तुलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] रूई से भरा दोहरा कपड़ा जो ओढ़ने के काम में आता है। दुलाई। उ०—तपन-तेज, तपु-ताप तपि अतुल तुलाई माँह। सिसिर-सीतु क्यौंहुँ न कटै बिनु लपटैं तिय नाँह।—बिहारी०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल + आई (प्रत्य०)] १ तौलने का काम या भाव। २ तौलने की मजदूरी।

तुलादान—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दान जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर धन, अन्न या अन्य कोई पदार्थ दान किया जाता है।

तुलाधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. तुला राशि। २ तराजू की डोर जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं। ३ बनिया। वणिक्। ४ काशी का एक प्राचीन बनिया जिसने महर्षि जाजलि को ज्ञान दिया था। ५ काशीनिवासी एक व्याध जो सदा मातापिता की सेवा में तत्पर रहता था जिसके कारण वह सर्वज्ञ हो गया था। इसने कृतबोध नामक व्यक्ति को देखते ही उसका पूर्ववृत्तांत बता दिया था। इसपर उस व्यक्ति ने भी मातापिता की सेवा का व्रत ले लिया था।

वि० तुला को धारण करनेवाला।

तुलाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० तुलना] १ आ पहुँचना। समीप आना। निकट आना। उ०—अपनो काल आपु ही बोल्यो इनको मीचु तुलानी।—सूर०। २. बराबर होना। पूरा उतरना।

क्रि० स० [हिं० तुलना] गाड़ी के पहियों की धुरी में चिकना दिलाना।

तुलापरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अभियुक्तों की एक दिव्य परीक्षा जिसमें किसी अभियुक्त को दो बार तौलते थे और दोनों बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे।

तुलायंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] तराजू।

तुल्य—वि० [सं०] १. समान। बराबर। २ सदृश।

तुल्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बराबरी। समता। २ सादृश्य।

तुल्ययोगिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलकार जिसमें केवल प्रस्तुतों अथवा केवल अप्रस्तुतों का अर्थात् अकेले उपमेयों का या अकेले उपमानों का एक ही साधारण धर्म कहा जाता है। दीपक में उपमेय और उपमान दोनों का साधारण धर्म एक रहता है किंतु यहाँ उपमानों और उपमेयों का अलग अलग साधारण धर्म बतलाया जाता है। उ०—(१) अपने अँग के जानि कै जोवन नृपति प्रवीन। रतन, मन, नैन, नितंब को बड़ो इजाफा कीन। यहाँ स्तन, मन आदि उपमेयों का 'इजाफा' कहा गया है जो सबके सब उपमेय या प्रस्तुत हैं, (२) लखि तेरी सुकुमारता एरी! या जग माहिं। कमल, गुलाब कठोर से किहिं को भासत नाहिं। यहाँ कमल और गुलाब दोनों उपमानों का एक ही साधारण धर्म 'कठोरता' कहा गया है।

तुव—सर्व० दे० "तव"।

तुवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कसैला रस। २ अरहर।

तुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्न का छिलका। भूसी। २ अंडे का छिलका।

तुषानल—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूसी या घासफूस की आग। २ ऐसी आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिये की जाती है।

तुषार—संज्ञा पुं० [सं०] १ हवा में मिली भाप जो सरदी से जमकर गिरती है। पाला। २. हिम। बरफ। ३. हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४ तुषार देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी।

वि० छूने में बरफ की तरह ठंढा।

तुष्ट—वि० [सं०] १. तोषप्राप्त। तृप्त। २ राजी। प्रसन्न। खुश।

तुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] संतोष।

तुष्टना(पु)—क्रि० अ० [सं० तुष्ट] १ प्रसन्न होना। २. तृप्त होना। उ०—अपर कर्म तुष्टत चिरकाला। प्रेम ते प्रगट होत ततकाला।—विश्रामसागर।

तुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संतोष। तृप्ति। २ प्रसन्नता। विशेष-सांख्य शास्त्र में नौ प्रकार की तुष्टियाँ मानी गई हैं, चार आंतरिक और पाँच बाह्य। चार आंतरिक तुष्टियाँ ये हैं—(१) प्रकृति सगुण है या निर्गुण इसके निर्णय के साथ यह विश्वास (और तज्जन्य संतोष) कि सभी तत्व प्रकृति के कार्य हैं (प्रकृताख्य तुष्टि)। (२) तत्वों के फेर में न पड़कर सन्यास को मोक्ष के लिये ग्रहण करने से उत्पन्न संतोष (उपादान तुष्टि)। (३) समय आने पर तत्वज्ञान अपने आप हो जायगा, इस धारणा से उत्पन्न संतोष। (कालाख्य तुष्टि)। और (४) भाग्य में होगा तो मोक्ष अपने आप हो जायगा यह संतोष (भाग्य तुष्टि)। इन चारों को आध्यात्मिक तुष्टि भी कहते हैं। इनके अतिरिक्त शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध से उत्पन्न तुष्टि या संतोष को बाह्य तुष्टि कहते हैं। ३ कंस के आठ भाइयों में से एक।

तुसी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुष] अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। उ०—ऐसी को ठाली बैठी है तोसों मूँड़ पिरावै। झूठी बात तुसी सी बिनु कन फटकत हाथ न आवै।—सूर०।

तुहारा—सर्व० [प्रा०] दे० "तुम्हारा"।

तुहिं—सर्व० [प्रा० तुह] तुझको।

तुहिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाला। कुहरा। तुषार। २ हिम। बरफ। ३ चाँदनी। ४. शीतलता। ठंढक।

तुहिनांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

तुहिनाचल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

तूँ—सर्व० दे० "तू"।

तूँबा—संज्ञा पुं० [सं० तुंबक] १ कडुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २. सूखे कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्राय साधुसंत इस्तेमाल करते हैं। कमंडल। तुंबा।

यौ०—तूँबा फेरी = इधर की चीज उधर करना। एक की चीज दूसरे को देना। हेराफेरी।

तूँबी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तूँबा] १ कडुआ गोल कद्दू। २ सूखे कद्दू का खोखला करके बनाया हुआ बरतन।

तू—सर्व० [सं० त्वम्] मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम; जैसे तू यहाँ से चला जा। यह शब्द ईश्वर के लिये प्रयुक्त होता है। मनुष्य के लिये अशिष्ट या अपमानसूचक समझा जाता है।

मुहा०—तू-तड़ाक, तू पुकार, या तू तू मैं मैं करना = अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।

तूख—संज्ञा पुं० [सं० तुष] तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।

तूटना(पु)—क्रि० अ० दे० "टूटना"।

तूठना(पु)—क्रि० अ० [सं० तुष्ट] संतुष्ट होना। तृप्त होना। २ प्रसन्न होना।

तूण—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीर रखने का चोंगा। तरकश। २ चामर नामक वर्णवृत्त जिसमें रगण, जगण, रगण, जगण और अंत्य रगण के क्रम से कुल १५ अक्षर होते हैं। उ०—रोज रोज राधिका सखीन संग आइकै। खेल रास कान्हँ संग चित्त हर्ष लाइकै। बाँसुरी समान बोल सप्त ग्वाल गाइकै। कृष्ण हीं रिझावहीं सुचामरै डुलाइकै। इसे तूण और सोमवल्लरी छंद भी कहते हैं।

तूणीर—संज्ञा पुं० [सं०] तूण। तरकश।

तूत—संज्ञा पुं० [फा०] मझोले आकार का एक पेड़ जिसके गोल दानेदार छोटे लच्छे के आकार के फल खाने में स्वादिष्ट और मीठे होते हैं। शहतूत।

तू-तड़ाक—संज्ञा स्त्री० [हिं० तू+तड़ाक (अनु०)] १ अशिष्ट शब्द। २ गाली-गलौज़।

तूतिया—संज्ञा पुं० दे० "नीला थोथा"।

तूती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ छोटी जाति का तोता। २ कनेरी नाम की छोटी सुंदर चिड़िया। ३ मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत मधुर बोलती है। मैना।

मुहा०—किसी की तूती बोलना = किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है = (१) भीड़भाड़ या शोरगुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। (२) बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता।

४ मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।

तूदा—संज्ञा पुं० [फा०] १ राशि। ढेर। २. सीमा का चिह्न। हदबंदी। ३ मिट्टी का वह टीला जिसपर निशाना लगाना सीखा जाता है।

तून—संज्ञा पुं० [सं० तुन्नक] १ तुन का पेड़। २ तूल नाम का लाल कपड़ा।

संज्ञा पुं० दे० "तूण"।

तूना—क्रि० अ० दे० "तुमना"।

तूनीर—संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तूफान—संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे और अँधेरा छा जाय। लँगड़ी आँधी। २ डुबानेवाली बाढ़। समुद्री आँधी। ३ आपत्ति। आफत। उत्पात। ४. हल्ला गुल्ला। ५. झगड़ा बखेड़ा। दगा फसाद। ६ झूठा दोषारोपण। तोहमत।

तूफानी—वि० [फा०] १ बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फसादी। २ झूठा कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड।

तूमड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तूँबी] १ तूँबी। २ तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।

तूमतड़ाक—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूमधड़ाका] १ तड़क भड़क। शान शौकत। २ ठसक। बनावट। आडंबर।

तूमना—क्रि० स० [?] १ रुई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना। उधेड़ना। २. धज्जी धज्जी करना। ३ हाथ से मसलना।

तूमार—संज्ञा पुं० [अ०] बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

तूर—संज्ञा पुं० [सं० तूर (तूर्य)] १ नगाड़ा। २ तुरही।

तूरज(पु)—संज्ञा पु० दे० "तूर्य"।

तूरण, तूरन—क्रि० वि० दे० "तूर्ण" उ०—बनी लाल मनभावती पहुँची मेरे धाम। अब तुमहूँ तूरन चलौ पूरन करिए काम।—रससाराश।

तूरना†—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

(पु)†संज्ञा पुं० [सं० तूर] तुरही।

तूरा—संज्ञा पुं० दे० "तुरही"। उ०—जे मन लागै एक सूँ, तौ निरवाल्या जाइ। तूरा दुइ मुखि बाजणाँ, न्याइ तमाचे खाइ। —कबीर०।

तूरान—संज्ञा पुं० [फा०] वर्तमान ईरान (देश) के उत्तरपूर्व का मध्य एशिया का भूभाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवासस्थान था।

तूरानी—वि० [फा०] तूरान देश का।

संज्ञा पु० तूरान देश का निवासी।

तूर्ण—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।

तूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। २ शहतूत। ३ कपास, मदार, सेमर आदि के डोंड़े के भीतर का घूआ। रूई। उ०—व्याकुल फिरत भवन बन जहँ तहँ तूल आक उधराइ।—सूर०।

संज्ञा पुं० [हिं० तून] १ चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २ गहरा लाल रंग।

(पु)वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।

संज्ञा पुं० [अ०] लंबाई। विस्तार।

मुहा०—तूल खींचना या पकड़ना = किसी बात का बहुत बढ़ जाना।

यौ०—तूलकलाम = (१) लंबी चौड़ी बातें। (२) कहा सुनी। तूल तवील = लंबा चौड़ा।

तूलना—क्रि० स० [हिं० तुलना] पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।

तूलमतूल—क्रि० वि० [अनु० तूल] आमने-सामने।

तूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपास।

तूलिका, तूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची।

तूष्णी—वि० [सं० तूष्णीम्] मौन। चुप।

संज्ञा स्त्री० मौन। खामोशी। चुप्पी।

तूस—संज्ञा पु० [सं० तुष] भूसी। भूसा।

संज्ञा पु० [तिब्बती थोश] १ एक प्रकार का बहुत उत्तम, बारीक और मुलायम ऊन जिससे दुशाले, शाल आदि बनते हैं। पशम। पशमीना। २ तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल, ओढ़ना, चादर या नमदा।

यौ०—शाहतूस = तूस का बना हुआ बहुत नफीस और गरम ओढ़ना या दोहरी चादर।

तूसदान—संज्ञा पु० [पुर्त० कारटूशा + दान] कारतूस।

तूसना(पु)—क्रि० स० [सं० तुष्ट] १ संतुष्ट करना। तृप्त करना। २ प्रसन्न करना।

क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।

तृखा—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

तृजग(पु)—वि० दे० "तिर्यक्"।

तृण—संज्ञा पु० [सं०] १ वह उद्भिद् जिसकी पेड़ी में छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियों के भीतर केवल लंबाई के बल नसें होती हैं, जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास।

मुहा०—तृण गहना या पकड़ना = हीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना। तृण गहाना या पकड़ाना = विनीत करना। वशीभूत करना। उ०—कहो तो ताको तृण गहाय कै जीवत पायन पारौं।—सूर०। (किसी वस्तु पर) तृण टूटना = किसी वस्तु का इतना सुंदर होना कि उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना पड़े। तृणवत् = अत्यंत तुच्छ। कुछ भी नहीं। तृण तोड़ना = (१) किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना। (२) संबंध तोड़ना। उ०—भुजा छुड़ाइ तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो।—सूर०।

तृणधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ तिन्नी का चावल। मुन्यन्न। २ सावाँ, कोदो आदि मोटे अन्न।

तृणमय—वि० [सं०] घास का बना हुआ।

तृणशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चटाई।

तृणारणि न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम में उसे संपन्न करने की स्वतंत्र शक्ति रखनेवाले परस्पर निरपेक्ष कारणों के एकत्र होने की व्यवस्था, जैसे—अग्नि उत्पादन में तृण और अरणी का संयोग। किसी काम को अलग अलग स्वतंत्र रूप से करने की योग्यता रखनेवाले कारणों का निरपेक्ष मेल। २. कई साधक कारणों में से किसी एक का कार्य संपादन करना।

तृणावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवात। बवंडर। २ एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था।

तृतीय—वि० [सं०] तीसरा।

तृतीयांश—संज्ञा पुं० [सं०] तीसरा भाग।

तृतीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २ संस्कृत व्याकरण में करण कारक या तीसरी विभक्ति।

तृन(पु)—संज्ञा पु० दे० "तृण"।

तृपति†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।

तृपित†(पु)—वि० दे० "तृप्त"।

तृप्त—वि० [सं०] १ जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। तुष्ट। अघाया हुआ। २. प्रसन्न। खुश।

तृप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इच्छा पूरी

होने से प्राप्त शाति और आनद। सतोष। २ प्रसन्नता। खुशी।

तृषा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्यास। २ इच्छा। अभिलाषा। ३. लोभ। लालच।

तृषावंत—वि० [सं० तृषावत् के 'तृषावत-' रूप से] प्यासा।

तृषित—वि० [सं०] १ प्यासा। २ अभिलाषी। इच्छुक।

तृष्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राप्ति के लिये आकुल करनेवाली इच्छा। लोभ। लालच। २ प्यास।

तें(पु)†—प्रत्य० [स० तस् (प्रत्य०)] १. से। द्वारा। २ से (अधिक)। ३. (किसी काल या स्थान) से।

तेंद—सज्ञा पुं० [स० तिन्दु] दे० "तेंदू"।

तेंदु—सज्ञा पु० [स० तिन्दु] दे० "तेंदू"।

तेंदुआ—सज्ञा पुं० [देश०] दक्षिणी एशिया और अफ्रीका में पाया जानेवाला खूँखार और मासाहारी जानवर जिसके चमड़े पर मटमैले और भूरे रग के धब्बे या चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। इसकी बहुत सी जातियाँ है।

तेंदू—सज्ञा पु० [सं० तिंदुका] १. मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकड़ी आबनूस के नाम से बिकती है। २. इस पेड़ का फल, जो खाया जाता है।

ते—अव्य० दे० "तें"। उ०—सूरदास अक्रूर कृपा ते सही विपति तन गाढ़ी। —सूर०।

†सर्व० [स० ते] वे। वे लोग।

तेउ—सर्व० [स० तेऽपि ?] वे भी। वे लोग भी।

सज्ञा पुं० दे० "तेज"।

तेऊ—सर्व० [सं० तेऽपि ?] वे भी। वे लोग भी।

तेखना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० तेहा] बिगड़ना। क्रुद्ध होना। नाराज होना। उ०—हनुमान या कौन बलाय बसी कछु पूछे ते ना तुम तेखियो री।—हनुमन्नाटक।

तेग—सज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार। खड्ग। उ०—जो रनसूर तेग तजि देवै। तो हमहू तुमरो मत लेवैं।—विश्रामसागर।

तेगा—संज्ञा पुं० [अ० तेग] १ खाँडा। खड्ग (अस्त्र)। २ दरवाजे को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बद करने की क्रिया।

तेज—संज्ञा पुं० [सं० तेजस्] १. दीप्ति। कांति। चमक। आभा। ज्योति। प्रकाश। २ पराक्रम। जोर। बल। ३. वीर्य। ४. सार भाग। तत्व। ५ ताप। गरमी। ६ पित्त। ७ सोना। ८. उग्रता। प्रचडता। ९ प्रताप। रोब दाब। १० सत्व गुण से उत्पन्न लिंग शरीर। ११. पाँच महाभूतों में से तीसरे (अग्नि) का गुण, स्वभाव या धर्म। १२. अग्नि।

तेज—वि० [फा०] १, तीक्ष्ण धार का। जिसकी धार पैनी हो। २ चलने में शीघ्रगामी। ३ चटपट काम करनेवाला। फुरतीला। ४ तीक्ष्ण। तीखा। झालदार। ५ महँगा। ६ उग्र। प्रचड। ७ चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला। ८ जिसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण हो।

तेजना(पु)—क्रि० स० दे० "तजना"।

तेजपत्ता—सज्ञा पुं० [सं० तेज+पत्र] दारचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

तेजपत्र—सज्ञा पु० दे० "तेजपत्ता"।

तेजपात—सज्ञा पु० दे० "तेजपत्ता"।

तेजमान, तेजवत—वि० दे० "तेजवान्"।

तेजवान्—वि० [स० तेजोवान्] १ जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २ वीर्यवान्। ३ बली। ताकतवाला। ४ चमकीला।

तेजस्—सज्ञा पुं० दे० "तेज"।

तेजसी(पु)—वि० [हिं० तेजस्वी] तेजयुक्त।

तेजस्विता—सज्ञा स्त्री० [स०] तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्वी—वि० [स० तेजस्विन्] १. कांतिमान्। तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। २ प्रतापी। प्रभावशाली।

तेजाब—सज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का तरल अथवा रवेदार रासायनिक द्रव्य जो प्राय खट्टा होता है। अम्ल। विशेष—सभी अम्लों में उद्जन (अँ० हाइड्रोजन) अनिवार्य रूप से रहता है। इसके स्थान पर किसी अम्ल में किसी धातु (खनिज) का रासायनिक समिश्रण होने पर क्षार (अँ० साल्ट) बनता है।

तेजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तेज होने का भाव। २ तीव्रता। प्रबलता ३ उग्रता। प्रचडता। ४ शीघ्रता। जल्दी। ५. महँगी। मदी का उलटा।

तेजोमंडल—सज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। और चद्रमा के चारों ओर का मडल। छटामडल। २ देवीदेवताओं, अवतारों और महापुरुषों के मुखमडल के चारों ओर दिखाई जानेवाली तेजोराशि। प्रभामडल।

तेजोमय—वि० [स०] बहुत आभा, काति या ज्योतिवाला। दीप्तिमान।

तेजोहत—वि० [सं०] जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

तेतना†—वि० दे० "तितना"।

तेता†—वि० पुं० [सं० तावद्] [स्त्री० तेती] उतना। उसी कदर। उसी प्रमाण का। उ०—जेती संपति कृपन कै, तेती सूमति जोर। बढ़त जात ज्यौं ज्यौं उरज, त्यौं त्यौं होत कठोर।—बिहारी०।

तेतिक(पु)†—वि० [हिं० तेता] उतना।

तेतो(पु)†—वि० दे० "तेता"।

तेरस—सज्ञा स्त्री० [सं० त्रयोदश] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरह—वि० [स० त्रयोदश] दश और तीन।

सज्ञा पुं० दस और तीन का जोड़।

मुहा०—तेरह बाईस करना = इधर उधर की बातें करना। बहाना करना।

तेरहीं—सज्ञा स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जब ब्राह्मण-भोजन कराके दाह करनेवाला और उसके निकट सगोत्री, सबधी और घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेरा—सर्व० [स० तव] [स्त्री० तेरी] (तुच्छता या छोटेपन के अर्थ में) मध्यम पुरुष, एकवचन, सबंधकारक सर्वनाम। "तू" का सबंधकारक रूप।

मुहा०—तेरी सी = तेरे लाभ वा मतलब की बात। तेरे अनुकूल बात।

तेरुस—सज्ञा पुं० दे० "त्यौरुस"।

सज्ञा स्त्री० दे० "तेरस"।

तेरे†—अव्य० [हिं० ते] से। उ०—तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरे। जनकसुतहिं लावहु ढिग मेरे।—विश्रामसागर। यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे। भेंटि भेंटि पूँछें प्रभु हेरे।—विश्रामसागर।

तेरो(पु)—सर्व० दे० "तेरा"।

तेलंगा(ऽ)—सज्ञा पुं० दे० "तैलग"। उ०—तलगा बगा चोल कलिंगा राआ पुत्ते मडीआ।

तेल—सज्ञा पुं० [सं० तैल] १ वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से अथवा जमीन के भीतर से निकाला जाता है चिकना। रोगन। जीवजतुओं और पशुपक्षियों की चरबी, जैसे मछली का तेल, बाघ की चरबी

आदि। २ विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें वर और वधू को हल्दी और दूब मिला हुआ तेल लगाया जाता है।

मुहा०—तेल चढ़ना या चढ़ना = विवाह से पहले तेल की रस्म पूरी होना।

तेलगू—संज्ञा पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश की भाषा।

तेलहन—संज्ञा पुं० [सं० तैल+धान्य] वे बीज जिनसे तेल निकलता है; जैसे, सरसों अलसी, रेंड़ी आदि।

तेलहा†—वि० पुं० [हिं० तेल] १ तेलयुक्त। जिसमें तेल हो। २ तेल में पकाया हुआ। ३ तेल संबंधी।

तेला—संज्ञा पुं० [?] तीन दिनरात का उपवास।

तेलिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० तेली का स्त्री०] १ तेल निकालने और बेचनेवाले की पत्नी। तेली जाति की स्त्री। २ एक बरसाती कीड़ा जिसके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।

तेलिया—वि० [हिं० तेल] १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के से रंगवाला। ३. तेली का या तेली संबंधी।

संज्ञा पुं० १. काला, चिकना और चमकीला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३ एक प्रकार का बबूल। ४ सींगिया नामक विष।

तेलियाकंद—संज्ञा पुं० [सं० तैलकंद] एक प्रकार का कंद। यह जहाँ होता है वहाँ की भूमि तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेलियाकुमैत—संज्ञा पुं० [हिं० तेलिया+कुमैत] घोड़े का एक रंग जो अधिक काला या कुमैत होता है।

तेलियापखान—संज्ञा पुं० [हिं० तेलिया+सं० पाषाण] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।

तेलिया सुरंग—संज्ञा पुं० दे० "तेलिया-कुमैत"।

तेली—संज्ञा पुं० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलिन] हिंदुओं की एक जाति जो सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करती है।

मुहा०—तेली का बैल = हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।

तेवन†—संज्ञा पुं० [सं० अतेवन] १ नजरबाग। पाईं बाग। २ उपवन। आमोद प्रमोद और क्रीड़ा का स्थान या वन। उद्यान। ३ क्रीड़ा।

तेवर—संज्ञा पुं० [हिं० त्रिकुटी] १ कुपित दृष्टि। क्रोध भरी चितवन।

मुहा०—तेवर चढ़ना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो। तेवर बदलना या बिगड़ना = (१) बेमुरौवत हो जाना। (२) खफा हो जाना।

२ भौंह। भृकुटी।

तेवाना(पु)†—क्रि० अ० [देश०] सोचना। चिंता करना।

तेह(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० तेखना] १. क्रोध। गुस्सा। २ अहंकार। घमंड। ताव। उ०—सोभा सहज सुभाय की नवता सील सनेह। ते तिय के माधुर्ज है जानत त्यौंरन तेह।—रससाराश। ३ तेजी। प्रचंडता।

तेहरा—वि० पुं० [हिं० तीन+हरा] १ तीन परत किया हुआ। तीन लपेट का। २ जो एक साथ तीन तीन हों। ३. जो तीसरी बार किया गया हो। ४ तिगुना (क्व०)।

तेहराना—क्रि० स० [हिं० तेहरा से ना० धा०] किसी काम को (बिलकुल ठीक करने के लिये) तीसरी बार करना।

तेहवार—संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।

तेहा—संज्ञा पुं० [हिं० तेह] १ क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। शेखी। घमंड।

तेहि(पु)†—सर्व० [सं० ते] उसको। उसे।

तेहीं—संज्ञा पुं० [हिं० तेह+ई (प्रत्य०)] १ गुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २ अभिमानी। घमंडी। ३ दे० "तेहि"।

तैं(पु)—क्रि० वि० [हिं० ते] से।

सर्व० [सं० त्वम्] १ तू। (पु) २ तूने।

तै†—क्रि० वि० [सं० तत्] उतना। उस कदर। उस मात्रा का।

संज्ञा पुं० [अ०] १ निपटारा। फैसला। निश्चय।

यौ०—तै तमाम = अंत। समाप्ति। फैसला।

२ पूर्ति। पूरा करना।

वि० १ जिसका निपटारा या फैसला हो चुका हो। २ जो पूरा हो चुका हो।

तैजस—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोई चमकीला पदार्थ। २. घी। ३ पराक्रमी। ४ भगवान्। ५ वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ६. राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार।

वि० [सं०] तेज से उत्पन्न। तेज संबंधी।

तैत्तिर—संज्ञा पुं० [सं०] तीतर।

तैत्तिरि—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक ऋषि जो वैशंपायन के बड़े भाई थे।

तैत्तिरीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक, जो तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २. तित्तिरिप्रोक्त कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएँ। पुराणों में यह कथा मिलती है कि एक बार ब्रह्महत्या करके वैशंपायन ने उसके प्रायश्चित्त के लिये अपने शिष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा दी। उसे न मानने पर याज्ञवल्क्य से उन्होंने अपना शिष्यत्व छोड़ देने को कहा। इसपर याज्ञवल्क्य ने उनसे पढ़ा हुआ समस्त ज्ञान उगल दिया जिसे उनके अन्य साथियों ने तीतर बनकर चुग लिया। वही समस्त ज्ञान तैत्तिरीय कहलाया। इस शाखा का उपनिषद्।

तैत्तिरीयारण्यक—संज्ञा पुं० [सं०] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिये उपदेश है।

तैनात—वि० [अ० तअय्युन का बहु० तअय्युनात] [संज्ञा तैनाती] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। मुकर्रर। नियत। नियुक्त।

तैयार—वि० [अ०] १ जो काम में आने के लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो। दुरुस्त। ठीक। लैस।

मुहा०—हाथ तैयार होना = कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।

२. उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३. प्रस्तुत। उपस्थित। मौजूद। ४ हृष्टपुष्ट। मोटाताजा।

तैयारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तैयार+ई (प्रत्य०)] १ तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३ शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४ प्रबंध आदि के संबंध की धूमधाम। ५. सजावट।

तैयौं†—क्रि० वि० दे० "तक"।

तैरना—क्रि० अ० [सं० तरण] १. पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २ हाथ पैर या और कोई अंग हिलाकर पानी पर चलना। पैरना। तरना।

तैराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √तैर+आई (प्रत्य०)] तैरने की क्रिया या भाव।

तैराक—वि० [हिं०√तैर+आक (प्रत्य०)] जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।

तैराना—क्रि० स० [हिं० तैरना का प्रे० रूप] १. दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २ घुसाना। धँसाना।

तैलंग—सज्ञा पुं० [स० त्रिकलिंग] दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश जिसकी देश-भाषा तेलगू कहलाती है।

तैलंगी—सज्ञा पु० [हिं० तैलग+ई (प्रत्य०)] तैलग प्रदेश का रहनेवाला। संज्ञा स्त्री० तैलग देश की भाषा। तेलगू।

तैल—सज्ञा पुं० [स०] तेल। चिकना।

तैलकार—सज्ञा पुं० दे० "तेली"।

तैलचित्र—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का चित्र जो प्राय मोटे कपड़े या कागज पर तेल मिले हुए रगों से बनाया जाता है और बहुत टिकाऊ होता है।

तैलत्व—सज्ञा पु० [स०] तेल का भाव या गुण।

तैलाक्त—वि० [स०] जिसमें तेल लगा हो। तेल में भीगा हुआ। तेल मे तर।

तैलाभ्यग—संज्ञा पु० [सं०] शरीर में तेल मलने की क्रिया। तेल की मालिश।

तैश—सज्ञा पुं० [अ०] आवेश। जोश। क्रोध। ताव।

तैसा—वि० [स० तादृश] उस प्रकार का। ("वैसा" का पुराना रूप।)

तैसे—क्रि० वि० दे० "वैसे"।

तोँ(पु)†—क्रि० वि० दे० "त्यों"।

तोँअर(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "तोमर"।

तोँद—सज्ञा स्त्री० [स० तुद] पेट का आगे का बढ़ा हुआ भाग। पेट का फुलाव।

तोँदल—वि० [सं० तुदिल] जिसका पेट आगे बढ़ा हो। तोंदवाला।

तो(पु)—सर्व० [सं० तव] तेरा।

अव्य० [सं० तद्] उस दशा में। तब। (प्राय. "यदि" के साथ)। तब भी। तथापि।

अव्य० [स० तु] १ एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिये अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है, जैसे—यही तो मैं भी कहता हूँ, वही तो समझना है, आदि।

(पु)†सर्व० [सं० तव] तू का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है। तुझ। (ब्रज०), जैसे—जो तोकूँ काँटा बुवै ताहि बोउ तू फूल। तोकों फूल के फूल हैं वाको है तिरसूल।

क्रि० अ० [हिं० हतो=था] था। (क्व०)

तोइ(पु)†—सज्ञा पु० [स० तोय] पानी। जल।

तोई—सज्ञा स्त्री० [देश०] मगजी। गोट।

तोका†—सर्व० [हिं० तो+फा०का (प्रत्य०)] १. तुमको। २. तुम्हारा। ३ तुम्हारे लिये। उ०—पुनि यह बात सुनी सिवलोका। करसि बियाह धरम है तोका।—पद्मावत।

तोकूँ, तोकों—सर्वनाम [हिं० तो+कूँ, को] १ तुमको। २ तुम्हारे लिये।

तोख(पु)†—संज्ञा पु० दे० "तोप"।

तोटक—सज्ञा पुं० [स०] एक वर्णवृत्त। जिसमें चार सगणों के क्रम से कुल १२ अक्षर होते हैं। उ०—जय राम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे। भव तारण दारण सिंह प्रभो। गुण सागर नागर नाथ विभो।

तोटका—सज्ञा पुं० दे० "टोटका"।

तोड़—सज्ञा पुं० [हिं० तोड़ना] १ तोड़ने की क्रिया या भाव, जैसे—तोड़ फोड़। २ नदी आदि के जल का तेज बहाव। ३. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिये किया हुआ दाँव या पेंच। काट। ४ किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकारक। मारक। ५ बार। दफा। झोंक। ६ मोड़। जोड़।

यौ०—तोड़दार कुर्सी या मेज=वह कुर्सी या मेज जो मोड़ी जा सके।

तोड़क—वि० [हिं०√तोड़+क (प्रत्य०)] तोड़नेवाला।

तोड़ना—क्रि० स० [स०√तुड् या तोडन] १ आघात या झटके से किसी पदार्थ के खड करना। टुकड़े करना। २ किसी वस्तु के अग का अथवा उसमें लगी हुई किसी दूसरी वस्तु को किसी प्रकार अलग करना। ३ किसी वस्तु का कोई अग किसी प्रकार खडित, भग्न या बेकाम करना। ४ खेत में हल जोतना। ५ सेंध लगाना। ६ क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना। कम करना। ७ किसी सघटन, व्यवस्था या कार्यक्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा नष्ट कर देना। ८ निश्चय के विरुद्ध आचरण करना अथवा नियम का उल्लघन करना। ९. मिटा देना। बना न रहने देना।

तोडर—संज्ञा पुं० दे० "तोड़ा"।

तोड़वाना—क्रि० स० दे० "तुड़वाना"।

तोड़ा—सज्ञा पुं० [प्रा० तोवट्ट=कान का आभूषण विशेष, कमल की कर्णिका] १ सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जजीर या सिकड़ी जो हाथों या गले में पहनी जाती है। २ रुपए रखने की टाट आदि की थैली जिसमें १०००) आते हैं।

मुहा०—तोड़े उलटना या गिनना=बहुत सा द्रव्य होना।

३ नदी का किनारा। तट। ४ नदी के संगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। ५ घाटा। घटी। टोटा। कमी। ६ नाच का एक टुकड़ा।

सज्ञा पुं० [स० तुड या हिं० टोंटा] नारियल की जटा की वह रस्सी जिससे पुरानी चाल की तोड़ेदार बदूक छोड़ी जाती थी। पलीता।

यौ०—तोड़ेदार बदूक=वह बदूक जो तोड़ा या पलीता दागकर छोड़ी जाय।

सज्ञा पुं० [देश०] वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है।

तोण(पु)†—सज्ञा पु० [सं० तूण] तरकश। बाण रखने का थैला।

तोत†—सज्ञा पुं० [फा० तोद.] ढेर। समूह।

तोतई—वि० [हिं० तोता+ई (प्रत्य०)] तोते के रग का। धानी।

तोतक—सज्ञा पुं० [हिं० तोता ?] पपीहा।

तोतराना(पु)—क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

तोतला—वि० [हिं० तुतलाना] १ वह जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। २ जो स्पष्ट उच्चारण न कर सके।

तोता—सज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रग हरा और चोंच लाल होती है। यह आदमियों की बोली की बहुत अच्छी तरह नकल करता है जिसके लिये इसे लोग पालते हैं। कीर। सुआ। सुग्गा।

मुहा०—हाथों के तोते उड़ जाना=बहुत घबरा जाना। सिटपिटा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना=बहुत बेमुरौवत होना। तोता पालना=किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान बूझकर बढ़ाना।

२ बदूक का घोड़ा।

तोताचश्म—संज्ञा पुं० [फा०] तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला। बेमुरौवत।

तोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाबुक, कोड़ा, चमोटी आदि। तोत्र। २ व्यथा। पीड़ा।

तोदरी—संज्ञा पुं० [फा०] फारस में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़ जिसके बीज औषध के काम में आते हैं।

तोप—संज्ञा स्त्री० [तु०] एक प्रकार का लोहे का नलीदार बहुत बड़ा अस्त्र जो प्राय दो या चार पहियों की गाड़ी से एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाया जाता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय बारूद की शक्ति से शत्रुओं पर चलाए जाते हैं।

मुहा०—तोप कीलना=तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी उतारना=किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के तोप में बारूद भरकर आग लगाकर शब्द करना।

तोपखाना—संज्ञा पुं० [अ० तोप+फा० खाना] १ वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुछ सामान रहता हो। २ युद्ध के लिये सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह। ३. तोप चलानेवाले सैनिकों का दल।

तोपची—संज्ञा पुं० [अ० तोप+ची (प्रत्य०)] तोप चलानेवाला। गोलदाज।

तोपना†—क्रि० स० [प्रा० तुप्प ?] ढाँकना।

तोपा—संज्ञा पुं० [हिं०√तुरपा] एक टाँके में की हुई सिलाई।

तोफा†—वि०, संज्ञा पुं० दे० "तोहफा"।

तोबड़ा—संज्ञा पुं० [फा० तोबरा] चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाते हैं।

मुहा०—तोबड़ा चढ़ाना=बोलने से रोकना।

तोबा—संज्ञा स्त्री० [अ० तौब] १ किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ प्रतिज्ञा। २ पश्चात्ताप। प्रायश्चित्त।

मुहा०—तोबा तिल्ला करना या मचाना =रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बुलवाना=पूर्ण रूप से परास्त करना।

तोम—संज्ञा पुं० [सं० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। बर्छा। भ.ला। २ एक प्रकार का छंद जिसका लक्षण प्राचीन ग्रंथों में 'सज जाहि तोमर जान' मिलता है। किंतु तुलसीदास जी ने तोमर को शुद्ध मात्रिक छंद माना है जिसमें कुल १२ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु का क्रम रहता है। उ०—तब चले बाण कराल। फुंकरत जनु बहु ब्याल। कोप्यो समर श्रीराम। चल विशिख निशित निकाम। ३ एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५ राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।

तोय—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

तोयधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। २ मोथा।

तोयधार—संज्ञा पुं० [सं०] पानी की धारा।

तोयधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "तोयधार"।

तोयधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

तोयनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

तोरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "तोड़"।

Ⓟ†—वि० दे० "तेरा"।

तोरई—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तोरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर या नगर का बाहरी फाटक। २ पत्तियों आदि की वे मालाएँ जो सजावट के लिये खंभों और दीवारों में लटकाई जाती हैं। बंदनवार।

तोरनⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "तोरण"।

तोरना—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

तोराⓅ†—सर्व० दे० "तेरा"।

तोरानाⓅ†—क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तोरावान्Ⓟ†—वि० [सं० त्वरावत] [स्त्री० तोरावती] वेगवान्। तेज।

तोरी—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

सर्व० स्त्री० [हिं० तोरा का स्त्री०] तेरी। तुम्हारी।

तोली—संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।

अ० दे० "तुल"।

तोलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ तौलने की क्रिया। २ उठाने की क्रिया।

तोलना—क्रि० स० दे० "तौलना"।

तोला—संज्ञा पुं० [सं० तोलक] १ बारह माशे की तौल। २ इस तौल का बाट।

तोशक—संज्ञा स्त्री० [तु०] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशदान—संज्ञा पुं० [फा० तोश दान] १ वह थैली आदि जिसमें मार्ग के लिये जलपान या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। २ चमड़े की वह थैली जिसमें सिपाहियों का कारतूस रहता है।

तोशा—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिये अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २ साधारण खाने-पीने की चीज।

तोशाखाना—संज्ञा पुं० [तु० तोशक+फा० खाना] वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हैं।

तोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अघाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। आनंद।

वि० अल्प। थोड़ा। (अनेकार्थ०)।

तोषक—वि० [सं०] संतुष्ट करनेवाला।

तोषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. तृप्ति। संतोष। २ संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषनⓅ—क्रि० स० [सं० तोष] संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषनाⓅ—क्रि० स० [सं० तोष] संतुष्ट करना। तृप्त करना।

क्रि० अ० संतुष्ट होना। तृप्त होना।

तोषल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २ मूसल।

तोषित—वि० [सं०] जिसका तोष हो गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "तोष"।

तोसलⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "तोषल"।

तोसाⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "तोशा"।

तोसागारⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "तोशाखाना"।

तोहफगी—संज्ञा स्त्री० [अ० तोहफा] उत्तमता। अच्छापन। उम्दगी।

तोहफा—संज्ञा पुं० [अ०] सौगात। उपहार। भेंट।

तोहमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वृथा लगाया हुआ दोष। झूठा कलंक।

तोहरा†—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तोहि—सर्व० [हिं० तो+हि (प्रत्य०)] तुमको तुझे।

तौंकना—क्रि० अ० दे० "तौंसना"।
तौंस†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताव+ऊमस] वह प्यास जो धूप या ताव खा जाने के कारण लगे और जल्दी न बुझे।
तौंसना—क्रि० अ० [हिं० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी से संतप्त होना।
तौंसा—संज्ञा पुं० [हिं० ताव+ऊमस] अधिक ताप। कड़ी गरमी। लपट।
तौ†(पु)—क्रि० वि० दे० "तो"।
क्रि० अ० [हिं० हती] था।
तौक—संज्ञा पुं० [अ०] १ हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना। २. इसी आकार की बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। ३ इसी आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदि के गले में होता है। हँसुली। ४ पट्टा। चपरास। ५. कोई गोल घेरा या पदार्थ।
तौन†—सर्व० [सं० ते] वह। जो।
तौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।
तौफीक—संज्ञा स्त्री० [अ०] श्रद्धा। २ सामर्थ्य। शक्ति।
तौया—संज्ञा स्त्री० दे० "तोवा"।
तौर—संज्ञा पुं० [अ०] १. चालढाल। चालचलन।
यौ०—तौरतरीका = चालचलन।
२. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। ढंग। प्रकार। भाँति। तरह।
तौरात—संज्ञा पुं० दे० "तौरेत"।
तौरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँवरि] घुमेर। घुमरी। चक्कर।
तौरेत—संज्ञा पुं० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्मग्रंथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था।
तौल—संज्ञा पुं० [सं०] १ तराजू। २. तुलाराशि।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण। भार का मान। वजन। २ तौलने की क्रिया या भाव।
तौलना—क्रि० स० [सं० तोलन] १ किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण जानने के लिये उसे तराजू या काँटे आदि पर रखना। वजन करना। जोखना २ किसी अस्त्र आदि को चलाने के लिये हाथ को इस प्रकार ठीक करना कि वह अस्त्र अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। साधना। उ०—लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भए मोर भौंह धनुष शर कटाक्ष सुरति व्याध तौलै री।—सूर०। ३. तारतम्य जानना। मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। ओंगना।
तौलवाना†—क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे० रूप] तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।
तौला—संज्ञा पुं० [हिं० तौल] १ अनाज तौलनेवाला मनुष्य। बया। २ तंबिया।
तौलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल+आई (प्रत्य०)] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
तौलाना—क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे० रूप] तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिया—संज्ञा स्त्री०, [अँ० टॉवेल] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†—क्रि० अ० [हिं० तौंस] गरमी से बहुत व्याकुल होना। जलना।
क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना। जलाना।
तौहीन—संज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।
तौहीनी†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।
त्यक्त—वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।
त्यजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० त्यजनीय] छोड़ने का काम। त्याग।
त्याग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। उत्सर्ग। २ किसी को छोड़ने अथवा किसी से दूर रहने या होने की क्रिया। ३ संबंध या लगाव न रखने की क्रिया। ४ खेद, ग्लानि, विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों (जैसे, पद, प्रतिष्ठा, नौकरी, कामधंधा, व्यवसाय, व्यापार, गृह, कुटुंब, धन, संपत्ति आदि) और पदार्थों को छोड़ने की क्रिया। ५ ब्याह के समय दिया जानेवाला दान। ६ अपनी इच्छा से किसी को कुछ देकर या किसी के लिये कोई बड़ा काम करके स्वयं कष्ट उठाने की क्रिया। ७. परोपकार। दान।
त्यागना—क्रि० स० [सं० त्याग] छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना। संबंध विच्छेद करना।
त्यागपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। २. इस्तीफा।
त्यागी—वि० [सं० त्यागिन्] स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।
त्याजना(पु)†—क्रि० स० दे० "त्यागना"।
त्याज्य—वि० [सं०] त्यागने योग्य।
त्यार†—वि० दे० "तैयार"।
त्यूँ†—क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यों—क्रि० वि० [सं० तद्+एवम्] १ उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २. उसी समय। तत्काल।
अ० तरफ। ओर।
त्योरस†—संज्ञा पुं० [हिं० ति (तीन) +बरस] १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।
त्योराना(पु)—क्रि० अ० [हिं० त्योरी] सिर घूमना।
त्योरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० त्रिकुटी] अवलोकन। चितवन। दृष्टि। निगाह।
मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध झलके। आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना = त्योरी चढ़ना।
त्योरूस†—संज्ञा पुं० दे० "त्योरस"।
त्योहार—संज्ञा पुं० [सं० तिथि+वार] वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। पर्व।
त्योहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष्य में छोटों, लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है।
त्यौं—क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यौनार—संज्ञा पुं० [हिं० तेवर] ढंग। तर्ज। उ०—रही गुही बेनी, लखे गुहिबे के त्यौनार। लागे नीर चुचान, जे नीठि सुकाए बार।—बिहारी०।
त्यौर—संज्ञा पुं० दे० "त्योरी"। उ०—अधर मधुरता, कठिनता-कुच तीछनता-त्यौर। रस-कवित्त-परिपक्वता जानै रसिक न और।—रससारांश।
त्रपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० त्रपावान्] १ लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३. कीर्ति। यश।
वि० [सं०] लज्जित। शरमिंदा।
त्रय—वि० [सं०] १ तीन। २ तीसरा।
त्रयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तीन वस्तुओं का समूह या एकता। तिगुड्ड। तिगड्डा।

त्रिपुट। २. ऋक्, यजु और साम वेद। ३. ऋक्, साम और यजुर्वेद में प्रतिपादित धर्म। ४ एक शब्द जिसे किसी दूसरे शब्द के अंत में जोड़ने से उसी कोटि की तीन वस्तुओं या विषयों का बोध होता है, जैसे, (१) वेदत्रयी=अथर्व के अतिरिक्त तीनों वेद। (२) लोकत्रयी=स्वर्ग, मृत्युलोक और पाताल। (३) देवत्रयी=ब्रह्मा, विष्णु और शिव। (४) वर्णत्रयी=ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। (५) कालत्रयी=भूत, भविष्य और वर्तमान (६) बृहत् त्रयी=तीन बड़े काव्यों या वस्तुओं का समूह। (७) लघुत्रयी=तीन छोटे काव्यों या वस्तुओं का समूह।

त्रयीतनु—संज्ञा पुं० [सं०] तीन वेदों रूपी शरीरवाला। सूर्य।

त्रयीधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों वेदों में विहित धर्म। कर्मकांड आदि। वैदिक धर्म।

त्रयीमय—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों वेदों को धारण करनेवाला। सूर्य।

त्रयीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों वेदों का मुँह। ब्राह्मण।

त्रयोदशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रष्टा—संज्ञा पुं० दे० "तष्टा"।

त्रसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भय। डर। २ उद्वेग।

त्रसना(पु)†—क्रि० अ० [सं० त्रसन] भय से काँप उठना। डरना। खौफ खाना।

त्रसरेणु—संज्ञा पुं० [सं०] वह चमकता हुआ कण जो छेद में से आती हुई धूप में नाचता या घूमता दिखाई देता है। सूक्ष्म कण।

त्रसाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० त्रसना का स० रूप] डराना। धमकाना। भय दिखाना। उ०—सूरश्याम बाँधे ऊखल गहि माता डरत न अतिहि त्रसायो।—सूर०।

त्रसित(पु)—वि० [सं० त्रस्त] १. भयभीत। डरा हुआ। २. पीड़ित। सताया हुआ।

त्रस्त—वि० [सं०] १. भयभीत। डरा हुआ। २ जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। ३ घबराया हुआ। व्याकुल।

त्राटक—संज्ञा पुं० दे० "त्राटिका"।

त्राटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग की एक मुद्रा।

त्राण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० त्रातक] १ रक्षा। बचाव। हिफाजत। २ रक्षा का साधन। ३ कवच।

यौ०—पादत्राण=जूता। शिरस्त्राण=पगड़ी। टोपी। हैट। फौजी टोप।

त्राता—संज्ञा पुं० [सं०] रक्षक। बचानेवाला।

त्रातार—संज्ञा पुं० [सं० त्रातृ के "त्रातार" रूप से] दे० "त्राता"।

त्रायमाण—संज्ञा पुं० [सं०] बनफशे की तरह की एक लता।

वि० १. रक्षक। रक्षा करनेवाला। २. रक्षित होता हुआ। ३. रक्षा करता हुआ।

त्रास—संज्ञा पुं० [सं०] १. डर। भय। २. कष्ट। तकलीफ।

त्रासक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० त्रासिका] १ डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २. निवारक। दूर करनेवाला।

त्रासना(पु)†—क्रि० स० [सं० त्रासन] डराना। भय दिखाना। त्रास देना। उ०—काहे को कलह नाध्यो दारुण दाँवरि बाँध्यो कठिन लकुट लै त्रास्यो मेरो भैया?—सूर०।

त्रासमान—वि० [सं० त्रास+हिं० मान] भयार्त। त्रस्त। भीत। उ०—जोगी जती आव जो कोई। सुनतहिं त्रासमान भा सोई।—पद्मावत।

त्रासित—वि० दे० "त्रस्त"।

त्राहि—अव्य० [सं० संस्कृत 'त्रै' धातु के मध्यम पुरुष का एकवचन] बचाओ। रक्षा करो। उ०—दारुण तप जब कियो राजसुत तब काँप्यो सुरलोक। त्राहि त्राहि हरि सों सब भाष्यो दूर करो सब शोक।—सूर०।

त्रि—वि० [सं०] तीन, जैसे, त्रिकाल, त्रिमूर्ति, त्रिलोक आदि।

त्रिकंटक—वि० [सं०] जिसमें तीन काँटे हों।

त्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीन का समूह। २ रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३ कमर। ४ त्रिफला। ५ त्रिकुटा।

त्रिककुद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्रिकूट पर्वत। २ विष्णु।

वि० जिसके तीन शृंग हों।

त्रिकटु, त्रिकटुक—संज्ञा पुं० [सं०] सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीन कटु वस्तुओं का योग या मेल।

त्रिकल—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन मात्राओं का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद जिसके आदि में त्रिकल के बाद त्रिकल रहता है।

वि० जिसमें तीन कलाएँ हों।

त्रिकांड—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन भाग या हिस्सोंवाला। २. कोश। निरुक्त। ३. बाण। तीर।

वि० जिसमें तीन कांड हों।

त्रिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीनों समय—भूत, वर्तमान और भविष्य। २. तीनों समय—प्रात, मध्याह्न और सायं।

त्रिकालज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. (विशेषत ऋषियों और मुनियों के लिये) भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों को जाननेवाला। सर्वज्ञ। २. दैवज्ञ। फलित ज्योतिष से भूत और भविष्य बतानेवाला। ३ सामुद्रिक।

त्रिकालदर्शक—वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।

त्रिकालदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० त्रिकालदर्शिन्] तीनों कालों की बातों को जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।

त्रिकुटा—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोंठ, मिर्च और पीपल (छोटी) का मेल। २. दवा के लिये बना हुआ इनका चूर्ण।

त्रिकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकूट] १. दोनों भौंहों के बीच के ऊपर का स्थान। उ०—पूरक, कुंभक, रेचक करहू। उलटि ध्यान त्रिकुटी को धरहू। —विश्रामसागर। २. इस स्थान पर जमाई दृष्टि।

त्रिकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. वह पर्वत जिसपर रावण की लंका बसी हुई मानी जाती थी। ३. एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। ४ योग में बताए हुए शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक। ६. एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। वामन पुराण के अनुसार यह क्षीरसागर को चीरकर अपने आप निकला है। इसकी तीन सबसे ऊँची चोटियों में से एक सोने की, दूसरी चाँदी की और तीसरी बर्फ से ढकी रहती है और वैदूर्य तथा नील मणियों से चमकती रहती है। इसपर चंद्रमा, सिद्ध, देवर्षि, विद्याधर, गंधर्व और किंनर आदि विहार करते हैं।

त्रिकोण—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज। २ तीन कोनेवाली वस्तु।

त्रिकोणमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] गणित-शास्त्र का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग, विस्तार आदि का मान निकालने की रीति बतलाई जाती है।

त्रिखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

त्रिगर्त—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और काँगड़ा आदि नगर हैं।

त्रिगुण—संज्ञा पुं० [सं०] सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह।

त्रिगुणातीत—वि० [सं०] १. सत्वरज और तम तीनों गुणों से परे। २. अनासक्त। आत्मवान्। ३. निर्गुण ब्रह्म।

वि० [सं०] तीनगुना। तिगुना।

त्रिगुणात्मक—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] सत्व, रज और तम गुणों से युक्त।

त्रिजग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० तिर्यक्] पशु-पक्षी तथा कीड़ेमकोड़े। तिर्यक्।

संज्ञा पुं० [सं० त्रिजगत्] तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

त्रिजट—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिजटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की बहन जो अशोकवाटिका में जानकी जी के पास रहा करती थी और उनसे समवेदना रखती थी।

त्रिजामा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि।

त्रिज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा। अर्द्ध व्यास।

त्रिण(पु)—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

त्रिदंड—संज्ञा पुं० [सं०] सन्यास आश्रम के चिह्नस्वरूप धारण किया जानेवाला बाँस का वह पतला डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी (चार अंगुल की) लकड़ियाँ बँधी रहती हैं जिन्हें वाग्दंड, कायदंड और मनोदंड का प्रतीक माना जाता है।

त्रिदंडी—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिदंडधारी सन्यासी।

त्रिदल—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीन फाँकों-वाला। २ बिल्वपत्र।

त्रिदश—संज्ञा पुं० [सं०] भूत, भविष्य और वर्तमान अथवा बचपन, जवानी और बुढ़ापा तीनों अवस्थाओं में एक सा रहनेवाला। देवता। उ०—निरखत बरखत कुसुम त्रिदश जन सूर सुमति मन फूल।—सूर०।

त्रिदशालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का निवासस्थान। स्वर्ग। २ सुमेरु पर्वत।

त्रिदिनस्पृश—संज्ञा पुं० [सं०] वह तिथि जिसका थोड़ा बहुत अंश लगातार बीतनेवाले तीन दिनों में पड़ता हो। अवम दिन या त्र्याह का एक भेद।

त्रिदिव—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २. आकाश।

त्रिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

त्रिदोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. वात, पित्त और कफ। २ सन्निपात रोग। ३. काम, क्रोध और लोभ।

त्रिदोषना(पु)—क्रि० अ० [सं० त्रिदोष] १. तीनों दोषों के कोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।

त्रिधा—क्रि० वि० [सं०] तीन तरह से। तीन रूपों में।

वि० [सं०] तीन तरह का। तीन रूपों का।

त्रिधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तीन धार वाला सेंहुड़। तिधार। २. गंगा।

त्रिन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

त्रिनयन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश (स्वर्ग), मृत्युलोक और पाताल (नरक) रूपी तीनों रास्ते। त्रिमार्ग। २. कर्म, ज्ञान और उपासना नामक जीवन में आत्म-लाभ के तीनों मार्ग।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग, नरक और मृत्युलोक तीनों में बहने-वाली (नदी)। गंगा।

त्रिपद—संज्ञा पुं० [सं०, मि० अँ० ट्रिपॉड] १ तिपाई। २ त्रिभुज। ३ वह जिसके तीन पद हों।

त्रिपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वैदिक छंद का एक भेद। २ दे० त्रिपदी"।

त्रिपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हंसपदी लता। २. तिपाई। ३ गायत्री नामक वैदिक छंद जिसके तीन ही चरण होते हैं।

त्रिपाठी—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपाठिन्] १ तीन वेदों को पढ़ने या जाननेवाला पुरुष। त्रिवेदी। २ ब्राह्मणों की एक जाति। तिवारी।

त्रिपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जो उनकी मृत्यु के उपरांत उनके शिष्यों और अनुयायियों ने समय समय पर किया है और जिसे बौद्ध अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। यह तीन भागों में, जिन्हें पिटक कहते हैं, विभक्त है। ये इस प्रकार हैं—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभिधर्मपिटक।

त्रिपिताना†—क्रि० अ० [सं० तृप्त से ना० धा०] तृप्त होना। अघा जाना उ०—जैसे तृषावंत जल अँचवत बहु तो पुनि ठहरात। यह आतुर छवि लै उर धारति नेकु नहीं त्रिपितात।—सूर०।

क्रि० स० तृप्त या संतुष्ट करना।

त्रिपुंड—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपुंड्र] शाक्तों और शैवों का भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का मस्तक पर लगाया जानेवाला तिलक या रचना जिसके बिना शक्ति और शिव की पूजा बेकार मानी जाती है।

त्रिपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाणासुर का एक नाम। २ तीनों लोक। ३. चँदेरी नगर। ४ वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिये बनवाए थे।

त्रिपुरदहन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामाख्या देवी की एक मूर्ति। २ पूर्व बंगाल का एक प्राचीन हिस्सा। ३ बंगाल का एक पुराना राज्य।

त्रिपुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

त्रिपुरासुर—संज्ञा पुं० दे० "त्रिपुर" १।

त्रिफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह। २ इनका दवा के लिये बनाया हुआ चूर्ण या अर्क।

त्रिबली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है।

त्रिबेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

त्रिभंग—वि० [सं०] १ जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों। २ तीन जगह मुड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें जानु, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है।

त्रिभंगी—वि० [सं०] त्रिभंग मुद्रावाला तीन मोड़ या तोड़वाला। तीन जगह से मुड़ा हुआ। तिरछा।

संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं और १०,८,८,६ मात्राओं पर यति होती है, जैसे, परसत पदपावन, शोक नसावन,

प्रकट भई तपपुंज सही। २ गणात्मक दडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ६ नगण, २ सगण, मगण, मगण, सगण और अंत में एक गुरु होता है, अर्थात् कुल ३४ अक्षर होते हैं; जैसे—सजल जलद तनु लसत बिमल तनु श्रमकण त्यों झलको उमगो है बुद मनो है।

त्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह भूतल जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो। २ तीन भुजाओंवाली वस्तु।

त्रिभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

त्रिमात्रिक—वि० [सं०] १ जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत। २ तीन मात्राओंवाला छंद।

त्रिमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव। २. सूर्य।

त्रिय, त्रिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] औरत।

यौ०—त्रियाचरित्र=स्त्रियों का छल-कपट जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।

त्रियामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।

त्रियुग—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ सत्ययुग, त्रेता और द्वापर ये तीनों युग।

त्रिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोक।

त्रिलोकनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ राम। ३ कृष्ण। ४, शिव।

त्रिलोकपति—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोकनाथ"।

त्रिलोकी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"।

त्रिलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्रिवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीन का गोल या समुदाय। २. अर्थ. धर्म और काम। ३ त्रिफला। ४ त्रिकुटा। ५. सृष्टि, स्थिति और क्षय या प्रलय। ६ सत्व, रज और तम। ७ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। ८ भूत-भविष्य-वर्तमान।

त्रिविध—वि० [सं०] तीन प्रकार का।

क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से।

त्रिवृत्करण—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीन तत्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग अलग तीन भागों में विभक्त करने की एक विशिष्ट प्रक्रिया।

त्रिवेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तीन नदियों का संगम। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगमस्थान जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगम-स्थान (हठयोग)।

त्रिवेद—संज्ञा पुं० [सं०] ऋक्, यजु और साम ये तीनों वेद।

त्रिवेदी—संज्ञा पुं० [सं० त्रिवेदिन्] १. ऋक्, यजु और साम इन तीनों वेदों को जाननेवाला २ ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी। तिवारी।

त्रिशंकु—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिल्ली। २ पतंग। टिड्डी। ३ पपीहा। ४ जुगनूँ। ५. एक पहाड़। ६ अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा। इन्होंने सदेह स्वर्ग जाने के लिये वसिष्ठ से यज्ञ करने को कहा। उनके इनकार करने पर ये दक्षिण चले गए। वहाँ वसिष्ठ के तपस्वी पुत्र ने अपने पिता के विरुद्ध इनका हठ देखकर इन्हें शाप दिया जिससे ये चांडाल हो गए। अब ये विश्वामित्र से मिले। वे यज्ञ कराने को तैयार हो गए किंतु उसमें किसी देवता ने भाग नहीं लिया। इसपर क्रुद्ध होकर विश्वामित्र ने अपने तपोबल से त्रिशंकु को स्वर्ग की ओर भेज दिया। यह देखकर इंद्र ने उन्हें औंधे मुँह नीचे गिरा दिया। अब राजा त्रिशंकु "बचाइए बचाइए" चिल्लाते हुए पृथ्वी पर गिरने लगे। इसपर विश्वामित्र ने "ठहरो, ठहरो" कहकर उन्हें वहीं रोक दिया और नई सृष्टि रचने के लिये दूसरे सप्तर्षिमंडल और नक्षत्र बना डाले जो आज तक अधोमुख त्रिशंकु की परिक्रमा करते माने जाते हैं। ७ एक नक्षत्र जिसे उक्त त्रिशंकु बतलाया जाता है।

त्रिशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इच्छा, ज्ञान और क्रियारूपी तीनों दैवी शक्तियाँ। २. काली, तारा और त्रिपुरा ये तीनों देवियाँ (तंत्र)। ३ प्रभाव, उत्साह और मंत्र ये तीनों शक्तियाँ (राजनीति)। महत्तत्व। ४. गायत्री।

त्रिशिर—संज्ञा पुं० [सं० त्रिशिरस्] १ रावण का एक भाई। २ कुबेर।

वि० जिसके तीन सिर हों।

त्रिशूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (विशेषत महादेव जी का अस्त्र)। २ दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

त्रिषित(पु)—वि० दे० "तृषित"।

त्रिष्टुभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। इंद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा आदि छंद इसी के विकास हैं।

त्रिसंगम—संज्ञा पुं० [सं०] तीन नदियों का संगम। त्रिवेणी। फगुनियाँ।

त्रिसंध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रात, मध्याह्न और सायं ये तीनों संधिकाल। २ सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहनेवाली तिथि जो बहुत शुभ मानी जाती है।

त्रिसंध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रात मध्याह्न और सायं ये तीनों सध्याएँ।

त्रिस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी, गया और प्रयाग ये तीन तीर्थस्थान जिन्हें बहुत पवित्र माना जाता है।

त्रिस्रोता—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिस्रोतस्] तीन सोतों या धाराओंवाली (नदी)। गंगा।

त्रुटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टूट। अपूर्णता। २ कमी। कसर। न्यूनता। ३ अभाव। ४ भूल। चूक। ५. वचनभंग।

त्रुटित—वि० [सं०] १ कटा या टूटा हुआ। २ आहत। घायल।

त्रुटी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रुटि"।

त्रेतायुग—संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का माना जाता है।

त्रै—वि० [सं० त्रय] तीन। (द्विगु समास के पूर्वपद के रूप में विशेषत प्रयुक्त) जैसे—त्रैगुण्य, त्रैमातुर, त्रैमासिक, त्रैविद्य आदि।

त्रैकालिक—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों कालों में या सदा होनेवाला।

त्रैगुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] सत्व, रज और तम तीनों गुणों का धर्म या भाव।

त्रैमातुर—संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण जिनसे कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा तीनों माता प्रसन्न रहा करती थीं।

त्रैमासिक—वि० [सं०] १. हर तीसरे महीने होनेवाला। जो हर तीसरे महीने हो। २ प्रति तीसरे महीने प्रकाशित होनेवाला (पत्र या पत्रिका)।

त्रैराशिक—संज्ञा पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है (अं० 'रूल आफ् थ्री')।

त्रैलोक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग, मर्त्यलोक और पाताल ये तीनों लोक। २ २१ मात्राओं का छंद।

त्रैवर्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णों के लोग।

त्रैवार्षिक—वि० [सं०] जो हर तीसरे वर्ष हो। तीन वर्ष संबंधी।

त्रोटक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं। यह शृंगाररस प्रधान होता है और इसका नायक कोई दिव्य मनुष्य होता है।

त्रोण—संज्ञा पुं० [सं०] तूणीर। तरकश।

त्र्यंबक—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्र्यंबका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

त्वक्—संज्ञा पुं० [सं०] १. छिलका। छाल। २. त्वचा। चमड़ा। खाल। ३ पाँच ज्ञानेंद्रियों में से स्पर्श से ज्ञान करानेवाली इंद्रिय जो सारे शरीर को ढके रहती है। त्वगिंद्रिय।

त्वचकना(पु)—क्रि० अ० [सं० त्वचा] वृद्धावस्था में शरीर का चमड़ा झूलना। झुर्रियाँ पड़ना। सिकुड़ना।

त्वचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर पर का चमड़ा। २. छाल। वल्कल। ३ साँप की केंचुली।

त्वदीय—सर्व० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

त्वरालेखन—एक प्रकार के लेखन की क्रिया जिसमें अक्षरों के स्थान पर चिह्नों द्वारा शीघ्रता से लिखा जाता है। शीघ्रलिपि। संकेतलिपि।

त्वरावान्—वि० [सं० त्वरावत्] १ शीघ्रता करनेवाला। जल्दबाज। २ वेगवान्।

त्वरित—क्रि० वि० [सं०] तेजी से। जल्दी से। वेगपूर्वक।

वि० [सं०] शीघ्र। तेज। वेगयुक्त।

त्वरितगति—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, एक जगण, फिर एक नगण और अंत्य गुरु कुल १० वर्ण होते हैं। उ०—त्वरितगती, हरिहर की। प्रभु यश तें, गति टरकी॥ अमृतगति।

त्वष्टा—संज्ञा पुं० [सं० त्वष्टृ] १ विष्णु। २. महादेव। शिव। ३. एक प्रजापति का नाम। ४ विश्वकर्मा। ५ ग्यारहवें आदित्य ६ एक वैदिक देवता।

त्वेष—संज्ञा पुं० [सं० त्वेषस्] १. दीप्ति। चमक। जगमगाहट। २. उत्साह। उमंग। ३ मन का आवेग। आवेश।

थ

थ—हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन और तवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दाँत है।

थंडिल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्थंडिल] १. यज्ञ की वेदी। २ परिष्कृत भूमि। ३ भूशय्या।

थंब, थंभ—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] [स्त्री० थंबी] १. खंभा। स्तंभ। २ सहारा। टेक।

थंभन—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभन] १. रुकावट। ठहराव। २. दे० "स्तंभन"।

थँमना‡—क्रि० अ० दे० "थमना"।

थमित(पु)—वि० [सं० स्तमित] १ रुका या ठहरा हुआ। २ अपनी जगह से न हटनेवाला। अचल। स्थिर। ३. भय या आश्चर्य से निश्चल। ठक। पथराया हुआ।

थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षण। २. मंगल। भय। ३. पर्वत। ४ भक्षण। आहार।

थक—संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "थाक"।

थकन—संज्ञा स्त्री० दे० "थकान"।

थकना—क्रि० अ० [सं० स्था+√कृ] १ परिश्रम करते करते शिथिल होना। क्लांत होना। २ ऊब जाना। हैरान हो जाना। ३ बुढ़ापे से अशक्त होना। ४ ढीला होना या रुक जाना। चलता न रहना। ५ मोहित होना। मुग्ध होना।

थकान—संज्ञा स्त्री० [हिं० √थक+आन (प्रत्य०)] थकने का भाव। थकावट। शिथिलता। क्लांति। श्रांति।

थकाना—क्रि० स० [हिं० थकना का स०] श्रांत या शिथिल बनाना। परिश्रम से अशक्त बनाना।

थकामाँदा—वि० [हिं० थका+माँदा] परिश्रम करते करते अशक्त। श्रांत। श्रमित।

थकावट, थकाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √थक +आवट, आहट (प्रत्य०)] थकने का भाव। शिथिलता।

थकित—वि० [हिं० √थक] १ थका हुआ। श्रांत। शिथिल। २. मोहित। मुग्ध। उ०—मिलिहि किमि मोर। तकत ससि चोर। थकित सो बिसेषि। वदनछबि देखि। —छंदार्णव।

थकौहाँ‡—वि० [हिं० √थक + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० थकौहीं] कुछ थका हुआ। थकामाँदा सा। शिथिल। उ०—दृग थिरकौहैं अधखुलैं, देह थकौहैं ढार। सुरत सुखित सी देखियति, दुखित गरभ कैं भार॥—बिहारी०।

थक्का—संज्ञा पुं० [सं० स्था+कृ] [स्त्री० थक्की, थकिया] गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। जमा हुआ कतरा या टुकड़ा, जैसे—दही का थक्का। खून का थक्का।

थगित—वि० [हिं० थकित] १ ठहरा हुआ। रुका हुआ। शिथिल। ढीला। २ मंद।

थति‡(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।

थन—संज्ञा पुं० [सं० स्तन] १. गाय, भैंस, बकरी इत्यादि मादा चौपायों की वह थैली जैसा अंग जिसमें दूध जमा होता है। २. इस अंग का छीमी या फली के आकार का लटकता हुआ प्रत्यंग। चूची।

थनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्तन] स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। गलथना।

थनेला—संज्ञा पुं० [हिं० थन+एला (प्रत्य०)] थन पर होनेवाला फोड़ा।

थनैत—संज्ञा पुं० [हिं० थान+ऐत] १. गाँव का मुखिया। २ जमींदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करनेवाला।

थनैल—संज्ञा पुं० [हिं० थन+ऐल] दे० "थनेला"।

थपक—संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

थपकना—क्रि० स० [अनु० थप थप] १. प्यार से या आराम पहुँचाने के लिये किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। २ धीरे धीरे ठोंकना। ३ पुचकारना या दमदिलासा देना।

थपका(पु)—संज्ञा पुं० दे० "थक्का"।

थपकाना—क्रि० स० [हिं० थपकना का प्रे० रूप] १. थपकने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "थपकना"।

थपकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√थपक] १. किसी के शरीर पर (प्यार से आराम पहुँचाने के लिये) हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया हुआ आघात। २ हाथ से धीरे धीरे ठोकने की क्रिया।

थपड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "थपोड़ी"।

थपथपाना—क्रि० स० [अनु०] मंद आघात करना। धीरे धीरे ठोंकना। 'थपथप' शब्द-पूर्वक मारना।

थपथपी—संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

थपनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्थापना] ठहरने या जमाने का काम। स्थापन।

थपनाⓅ—क्रि० स० [सं० स्थापना] स्थापित करना। बैठाना। जमाना।

क्रि० अ० स्थापित होना। जमना।

थपेड़ना—क्रि० स० [हिं० थपेड़ा से ना० धा०] १ थपेड़ा लगाना। थप्पड़ मारना। २ रुक रुककर तीव्र आघात करना। झटका देना। धक्के मारना। ३ झोंके लगाना। लहर मारना (जल का)। ४. झकझोरना (हवा का)।

थपेड़ा—संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १ थप्पड़। २. आघात। धक्का। टक्कर। ३ झोंका। झटका। तरंगाघात।

थपोड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु० थप] दोनों हथेलियों को टकराकर ध्वनि उत्पन्न करना। करतलध्वनि। ताली।

थप्पड़—संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १. हथेली से किया हुआ आघात। तमाचा। झापड़। २ आघात। धक्का।

थमⓅ—संज्ञा पुं० दे० "स्तंभ"।

थमकारीⓅ—वि० [सं० स्तंभन] स्तंभन करनेवाला। रोकनेवाला। उ०—मन बुधि चित अहंकार दसेंद्रिय प्रेरक थमकारी।—सूर०।

थमना—क्रि० अ० [सं० स्तंभन] १. चलता न रहना। रुकना। ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना। ३ धीरज धरना। सब्र करना। ठहर रहना।

थर—संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर] तह। परत।

संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १ दे० "थल"। २ बाघ की माँद।

थरकनाⓅ—क्रि० अ० [अनु० थर थर] डर से काँपना। थर्राना।

थरकौहाँ—वि० [हिं० √ थरक + औहाँ (प्रत्य०)] काँपता या हिलाता हुआ।

थरथर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] डर से काँपने की मुद्रा। प्रकंप।

क्रि० वि० काँपने की मुद्रा से। प्रकंप के साथ।

थरथराना—क्रि० अ० [अनु० थरथर] १. डर के मारे काँपना। प्रकंपित होना। २ अत्यधिक काँपना।

थरथराहट, थरथरी—संज्ञा स्त्री० [अनु० थर थर] कँपकपी।

थरसनाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० त्रसना] त्रस्त होना। भयभीत होना।

थरमामीटर—संज्ञा पुं० [अं०] शरीर का ताप नापने का यंत्र। तापमापक यंत्र।

थरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थली] १. शेरों आदि की माँद। २. गुफा।

थरुⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्थल] जगह। स्थान।

थर्राना—क्रि० अ० [अनु० थर थर] १ डर के मारे काँपना। दहलना। २. भय से रोमांचित होना।

थल—संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १ स्थान। जगह। ठिकाना। २ वह जमीन जिस-पर पानी न हो। सूखी धरती। ३. थल का मार्ग। ४. वह स्थान जहाँ बहुत सी रेत पड़ गई हो। भूड़। थली। रेगिस्तान। ५ बाघ की माँद। चुर।

मुहा०—थल बैठना या थल से बैठना (१) आराम से बैठना। (२) स्थिर होकर बैठना। शांत भाव से बैठना।

थलकना- क्रि० अ० [सं० स्थूल] १ झोल पड़ने के कारण ऊपर नीचे हिलना। २. मोटाई या ढीलेपन के कारण शरीर के मांस का हिलने डोलने में हिलना।

थलचर—संज्ञा पुं० [सं० स्थलचर] पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।

थलथल—वि० [सं० स्थूल] मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

थलथलाना—क्रि० अ० [हिं० थलथल] मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।

थलपति—संज्ञा पुं० [सं० स्थल+पति] राजा।

थलरुहⓅ—वि० [सं० स्थलरुह] १ धरती पर उत्पन्न होनेवाला। २. वनस्पति।

थली—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का थल। ३. ठहरने या बैठने की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान।

थवई—संज्ञा पुं० [सं० स्थपति] मकान बनानेवाला कारीगर। राज।

थसरनाⓅ—क्रि० अ० [?] शिथिल होना।

थहनाⓅ—क्रि० स० [हिं० थाह] थाह लेना। थहाना।

थहराना—क्रि० अ० [अनु० थर थर] काँपना।

थहाना—क्रि० स० [हिं० थाह से ना० धा०] १ गहराई आदि का पता लगाना। थाह लेना। उ०—सूर कहाँ ऐसो को त्रिभुवन आवै सिंधु थहाई।—सूर०। २ किसी की विद्या, बुद्धि या भीतरी अभिप्राय आदि का पता लगाना। अंदाज करना।

थाँग—संज्ञा स्त्री० [हिं० थान] १ चोरों या डाकुओं का गुप्त स्थान। २ खोज। पता। सुराग।

थाँगी—संज्ञा पुं० [हिं० थाँग+ई (प्रत्य०)] १ चोरी का माल मोल लेने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों को चोरी के लिये ठिकाने आदि का पता देनेवाला मनुष्य। ३ जासूस। भेदिया। ४ चोरों के गोल का सरदार।

थाँवला—संज्ञा पुं० [सं० स्थल] वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो। थाला। आलबाल।

था—क्रि० अ० [सं०√स्था] 'है' शब्द का भूतकालिक रूप। रहा।

थाई—वि० [सं० स्थायी] दे० स्थायी भाव उ०—एक एक प्रतिरसन में उपजै हिए बिकार। ताको थाई नाम है बरनत बुद्धि उदार।—रससारांश।

थाक—संज्ञा पुं० [सं०√स्था] १ गाँव की सीमा। २ ढेर। समूह। राशि।

†संज्ञा सं० [हिं०√थक] थकावट।

थाकना—क्रि० अ० दे० "थकना"।

थातⓅ—वि० [सं० स्थाता] जो बैठा या ठहरा हो। स्थित। उ०—द्वै पिक बिंब बत्तीस वज्रकन एक जलज पर थात।—सूर०।

थाति—संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १ स्थिरता। ठहराव। टिकान। रहन। २. दे० "थाती"।

थाती—संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १. समय पर काम आने के लिये रखी हुई वस्तु। २

जमा। पूँजी। गथ। ३. धरोहर। अमानत।

थान—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १. जगह। ठौर। ठिकाना। २ डेरा। निवासस्थान। ३. किसी देवी या देवता का स्थान। ४ वह स्थान जहाँ घोड़े या चौपाए बाँधे जायँ। ५. कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई बँधी हुई होती है। ६ संख्या। अदद।

थानक—संज्ञा पुं० [सं० स्थानक] १. स्थान। जगह। २. नगर। ३. आँवला। आलवाल। ४. फेन। बबूला।

थाना—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १ टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. वह स्थान जहाँ अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी। ३. बाँसों का समूह। बाँस की कोठी।

थानुसुत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु+सुत] १. गणेश जी। २ कार्तिकेय।

थानेदार—संज्ञा पुं० [हिं० थाना+फा० दार] थाने का प्रधान अफ़सर।

थानैत—संज्ञा पुं० [हिं० थान+ऐत (प्रत्य०)] १ किसी चौकी या अड्डे का मालिक। २ किसी स्थान का देवता। ग्रामदेवता।

थाप—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १ तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थपकी। ठोंक। २ थप्पड़। तमाचा। ३ निशान। छाप। ४ स्थिति। जमाव। ५. प्रतिष्ठा। मर्यादा। धाक। ६ मान। कदर। प्रमाण। ७ पंचायत। ८ शपथ। सौगंध। कसम।

थापन—संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १ स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। २ किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

थापना—क्रि० स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना। जमाना। बैठाना। २. किसी गीली सामग्री को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना, जैसे—उपले थापना, ईंटें थापना आदि।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापना] १ स्थापन। प्रतिष्ठा। २. नवरात्र में दुर्गापूजा के लिये घटस्थापना।

थापर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "थप्पड़"।

थापा—संज्ञा पुं० [हिं० थाप] १ हाथ की हथेली तथा पंजे का छापा (हलदी, रंग आदि से)। २ खलिहान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चौकी। ३. वह साँचा जिसमें रंग आदि पोतकर कोई चिह्न अंकित किया जाय। छापा। ४ ढेर। राशि।

थापी—संज्ञा स्त्री० [हिं० थापी] वह चिपटी मुँगरी जिससे राज या कारीगर गच पीटते हैं।

थाम—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] १. खंभा। स्तंभ। २. मस्तूल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० थामना] थामने की क्रिया या ढंग। पकड़। रोक।

थामना—क्रि० स० [सं० स्तंभन] १. किसी चलती हुई वस्तु को रोकना। गति या वेग अवरुद्ध करना। २ गिरने, पड़ने या लुढ़कने आदि न देना। ३ ग्रहण करना। हाथ में लेना। पकड़ना। ४ सहारा देना। मदद देना। सँभालना। ५. अपने ऊपर कार्य का भार लेना।

थायी(पु)—वि० दे० "स्थायी"।

थारो(पु)†—वि० तुम्हारा। [हिं० तिहारो]

थाल—संज्ञा पुं० [हिं० थाली] बड़ी थाली।

थाला—संज्ञा पुं० [सं० स्थल, हिं० थल] वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है। थावँला। आलवाल।

थाली—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाली] विभिन्न धातुओं का वह बड़ा गोलाकार और छिछला बरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है। बड़ी तश्तरी।

मुहा०—थाली का बैंगन = लाभ और हानि के विचार से सदा पक्ष बदलता रहनेवाला। अवसरवादी।

थावर(पु)—वि० दे० "स्थावर"।

थावस—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थेयस] स्थिरता। धीरज।

थाह—संज्ञा स्त्री० [सं० स्ताघ] १ धरती का वह तल जिसपर पानी हो। गहराई का अंत या हद। २ कम गहरा पानी जिसका अंदाज मिल सके। ३. गहराई का पता। गहराई का अंदाज। ४ अंत। पार। सीमा। हद। ५. कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है, इसका पता।

थाहना—क्रि० स० [हिं० थाह से ना० धा०] थाह लेना। अंदाज लेना। पता लगाना।

थाहरा†(पु)—वि० [हिं० थाह] १ जिसमें जल गहरा न हो। छिछला। २. जिसका पता या अंदाज हो।

थियेटर—संज्ञा पुं० [अं०] १ रंगभूमि। २. नाटक। अभिनय।

थिगली—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकली] वह टुकड़ा जो किसी फटे हुए कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिये लगाया जाय। चकती। पैवंद।

मुहा०—बादल में थिगली लगाना = असंभव काम करना।

थित(पु)—वि० [सं० स्थित] १. ठहरा हुआ। २. स्थापित। रखा। हुआ।

थिति—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिति] १ ठहराव। स्थायित्व। उ०—देव चतुरभुज चरनन्ह परिये। याहि बनक मम हिय थिति करिये।—छंदार्णव। २. ठहरने का स्थान। ३ रहाइश। रहन। ४. बने रहने का भाव। रक्षा। ५. अवस्था। दशा।

थियासोफ़ी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. ब्रह्म विद्या। २ सब धर्मों का समन्वय करनेवाला संप्रदाय।

थिर—वि० [सं० स्थिर] १ स्थिर। ठहरा हुआ। अचल। न हिलने डोलनेवाला। २ शांत। धीर। ३. स्थायी। दृढ़। टिकाऊ।

थिरक—संज्ञा पुं० [हिं० थिरकना] नृत्य में चरणों की चंचल गति।

थिरकना—क्रि० अ० [सं० अस्थिर+करण] १. नाचने में पैरों को क्षण क्षण पर उठाना और रखना। २. अंग मटकाकर नाचना।

थिरकौहाँ—वि० [हिं० थिरक + औहाँ (प्रत्य०)] थिरकनेवाला।

थिरजीह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्थिरजिह्व] मछली।

थिरता, थिरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरता] १. ठहराव। अचलत्व। २ स्थायित्व। ३ शांति। धीरता।

थिरथानी—वि० [सं० स्थिर+स्थान] एक जगह जमकर रहनेवाला।

थिरना—क्रि० अ० [सं० स्थिर] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना डोलना बंद होना। २ जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना। ३ मैल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना। निथरना। साफ होना।

थिरा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना—क्रि० स० [हिं० थिरना] १ क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। २ जल को स्थिर करके उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना। ३ किसी वस्तु को जल में घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे बैठाकर साफ करना। निथारना।

†क्रि० अ० दे० "थिरना"।

थीताⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्थित] १. स्थिरता। शांति। २ कल। चैन।

थीतीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिति] दृढ़ता। स्थिरता। धैर्य। उ०—पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती। टेकु पियास, बाँधु मन थीती।—पद्मावत।

थीर, थीराⓅ—वि० दे० "थिर"। उ०—उलथहिं मानिक, मोती, हीरा। दरब देखि मन होइ न थीरा।—पद्मावत।

थुकाना—क्रि० स० [हिं० थूकना का प्रे० रूप] १ थूकने की क्रिया दूसरे से कराना। २ मुँह में ली हुई वस्तु को गिरवाना। उगलवाना। ३ थुड़ी थुड़ी कराना। निंदा कराना।

थुक्का फजीहत—संज्ञा स्त्री० [हिं० थूक+अ० फजीहत] १ निंदा और तिरस्कार। थुड़ी थुड़ी। २ लड़ाई झगड़ा।

थुड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु० थू थू] घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द। धिक्कार। लानत।

मुहा०—थुड़ी थुड़ी करना = धिक्कारना।

थुथकार—संज्ञा स्त्री० [स० थुत्कार] थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।

थुथकारना—क्रि० स० [हिं० थुथकार] थुड़ी थुड़ी करना। अत्यधिक घृणा प्रकट करना।

थुन्नी—संज्ञा स्त्री० दे० "थूनी"।

थुरहथा—वि० [हिं० थोड़ा+हाथ] [स्त्री० थुरहथी] १ जिसके हाथ छोटे हों। उ०—कन दैबो सौंप्यो ससुर बहू थुरहथी जानि। रूप रहचटै लगि लग्यौ माँगन सबु जगु आनि।—बिहारी०। जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २ किफायत करनेवाला।

थुलमा—संज्ञा पुं० [देश०] हिमालय के ठंढे प्रदेशों में बनने और प्रयुक्त होनेवाला जमाए हुए बहुत मुलायम और बारीक ऊन का एक प्रकार का बढ़िया पहाड़ी कंबल।

थुलिका—संज्ञा स्त्री० [स० स्थूल] स्थूल। मोटी। उ०—चक्क भ दुजदुज सगनहि थुलिका। ननगननग है पहरनकलिका।—छंदार्णव।

थू—अव्य० [अनु०] १ थूकने का शब्द। २ घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द। धिक्। छि।

मुहा०—थू थू करना = धिक्कारना।

थूक—संज्ञा पुं० [अनु० थू थू] वह गाढा और कुछ कुछ लसीला रस जो मुँह के भीतर जीभ तथा मांस की झिल्लियों से छूटता है। ष्ठीवन। खखार। लार।

मुहा०—थूकों सत्तू सानना = बहुत थोड़ी सामग्री लगाकर बड़ा कार्य पूरा करने चलना।

थूकना—क्रि० अ० [हिं० थूक] १ मुँह से थूक निकालना या फेंकना।

मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना = अत्यंत तुच्छ समझकर ध्यान तक न देना। थूककर चाटना = (१) कहकर मुकर जाना। (२) किसी को दी हुई वस्तु को लौटा लेना।

क्रि० स० १ मुँह में ली हुई वस्तु को गिराना। उगलना।

मुहा०—थूक देना = तिरस्कार कर देना।

२ बुरा कहना। धिक्कारना। निंदा करना।

थूथन—संज्ञा पु० [देश०] लंबा निकला हुआ मुँह, जैसे, सूअर या ऊँट का।

थून—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूणा] थूनी। चाँड़।

थूनी—संज्ञा स्त्री० [स० स्थूणा] १ खंभा। स्तंभ। थम। २ वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय। चाँड़।

थूरना—क्रि० स० [स० थुर्वण] १ कूटना दलित करना। चूरचूर करना २। मारना। पीटना। ३ ठूँसना। कसकर भरना।

थूलⓅ—वि० [स० स्थूल] १ मोटा। भारी। २ भद्दा।

थूला—वि० [सं० स्थूल] [स्त्री० थूली] मोटा। मोटा ताजा।

थूवा—संज्ञा पुं० [स० स्तूप] १ ढूह। २ पिंडा। लोंदा। ३. सीमासूचक स्तूप।

थूहर—संज्ञा पु० [सं० स्थूल] एक छोटा पेड़ जिसमें गाँठों पर से डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं इसका दूध विषैला होता है और औषध के काम में आता है। सेंहुड़।

थेईथेई—वि० [अनु०] थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल। उ०—लाग मान थेई थेई करि उघटत ताल मृदंग गँभीर।—सूर०।

थेगली—संज्ञा स्त्री० दे० "थिगली"।

थेथर—वि० [देश०] १ लस्त पस्त। थका हुआ। २ परेशान। हैरान।

थेथरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० थेथर] १ निर्लज्जता और उद्दंडता से भरी बात। २ लज्जाजनक व्यवहार।

थैला—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० थैली] १ कपड़े आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद की जा सके। बड़ा बटुआ, बड़ा कीसा। २ रुपयों से भरा हुआ थैला। तोड़ा।

थैली—संज्ञा स्त्री० [हिं० थैला] १ छोटा थैला। कोश। कीसा। बटुआ। २ रुपयों से भरी हुई थैली। तोड़ा।

मुहा०—थैली खोलना = थैली में से निकालकर रुपया देना।

थोक—संज्ञा पु० [स० स्तोमक] १ ढेर। राशि। २ समूह। झुंड।

मुहा०—थोक करना = इकट्ठा करना। जमा करना।

३ इकट्ठा बेचने की चीज। 'खुदरा' का उलटा। ४ इकट्ठी वस्तु। कुल।

थोड़ा—वि० [स० स्तोक] [स्त्री० थोड़ी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो। न्यून। अल्प। कम। जरा सा।

यौ०—थोड़ा बहुत = (१) कुछ कुछ। किसी कदर। (२) कम या अधिक। कुछ न कुछ।

क्रि० वि० अल्प परिमाण या मात्रा में। जरा। तनिक।

मुहा०—थोड़ा (थोड़े) ही = बिल्कुल नहीं। एकदम नहीं। जोरदार निषेध या निराकरण, जैसे—वह गया थोड़े ही (= वह एकदम नहीं गया)। यह रोग थोड़े ही है जो अच्छा हो जाय, यह तो उसका काल है।

थोथरा—वि० दे० "थोथा"। उ०—जप तप दीसै थोथरा, तीरथ व्रत बेसास। सूवै सैंबल सेविया, यौं जग चल्या निरास।—कबीर०।

थोथा—वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १ जिसके भीतर कुछ सार न हो। खोखला। खाली। पोला। २ जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। गुठला। ३ व्यर्थ का। निकम्मा।

थोपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० थोपना] चपत। धौल।

यौ०—गनेस थोपड़ी या गणेश थोपड़ी=(१) घुटे हुए सिर पर लगाई हुई चपत। (२) सिर पर खुली हथेली की मार। (३) बच्चों का एक खेल जिसमें 'चोर' होनेवाले बच्चे की आँखें बंद कराके अन्य बच्चे उसे चपत लगाते हैं। सबसे पहले चपत लगानेवाला बच्चा 'चोर' द्वारा पहचान लिए जाने पर 'चोर' हो जाता है।

थोपना—क्रि० स० [स० स्थापन] १. किसी पर गीली वस्तु का लोंदा डाल देना, जमा देना या चिपका देना। छोपना। २ मोटा लेप चढ़ाना ३ मत्थे मढ़ना। लगाना। झूठा आरोप करना। ४ आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना। ५. दे० "छोपना"।

थोबड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] जानवरों का थूथन।

थोर, थोरा(पु)†—वि० "थोड़ा"।

थोरिक(पु)†—वि० [हिं० थोड़ा] थोड़ा। तनिक। अत्यल्प। उ०—एहि घाट ते थोरिक दूरि अहै कटि लौं जल थाह देखाइहौं जू।—तुलसी०।

थोल(पु)—वि० [सं० स्तोक] दे० "थोड़ा"। उ०—काहु कापल काहु पोल, काहु ममल देल थोल।

थौंसना, थौंस जाना—क्रि० अ० [?] अधिक थक जाना।

थौंद(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "तोंद"।

थ्यावस†—संज्ञा पुं० [सं० स्थेयस्] १ स्थिरता। ठहराव। २ धीरता। धैर्य।

द

द—हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है। दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से उच्चारण होने के कारण इसका उच्चारणस्थान दाँत माना जाता है।

दंग—वि० [फा०] विस्मित। चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध।

संज्ञा पुं० १. घबराहट। भय। डर। उ०—जब रथ साजि चढ़ौं रण समुख जीय न आनो दंग। राघव सेन समेत सँघारौं करौं रुधिरमय अंग।—सूर०। २ दे० "दंगा"।

दंगई—वि० [हिं० दंगा+ई (प्रत्य०)] १ दंगा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २ प्रचंड। उग्र।

दंगल—संज्ञा पुं० [फा०] १ पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बदकर हो और जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिले। २ अखाड़ा। मल्लयुद्ध का स्थान। ३ जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४ †प्रतिद्वंद्विता, जैसे—कजली का दंगल। ५ बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

वि० बहुत बड़ा। भारी।

दंगली—वि० [फा० दंगल] १ दंगल-संबंधी। २. बहुत बड़ा।

दंगा—संज्ञा पुं० [फा० दंगल] १ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २ गुलगपाड़ा। हुल्लड़। शोरगुल। ३ मारकाट। मारपीट, जैसे—भारतीय हिंदू-मुसलिम दंगे।

दंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ डंडा। सोंटा। लाठी। स्मृतियों में वर्णित आश्रम और वर्ण के अनुसार दंड धारण करने की व्यवस्था। २ डंडे के आकार की कोई वस्तु, जैसे, भुजदंड, मेरुदंड। ३ एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजों के बल औंधे होकर की जाती है। ४ भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दंडवत। ५ किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई जानेवाली पीड़ा या हानि। सजा। तदारुक। ६ अर्थदंड। जुरमाना। डाँड़।

मुहा०—दंड भरना=(१) जुरमाना देना। (२) दूसरे के नुकसान को पूरा करना। दंड भोगना या भुगतना=सजा अपने ऊपर लेना। दंड सहना=नुकसान उठाना। घाटा सहना।

७ दमन। शासन। वश। शमन। ८ ध्वजा या पताका का बाँस। ९ तराजू की डंडी। डाँड़ी। १० किसी वस्तु (जैसे-करछी, चम्मच आदि) की डंडी। ११ लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२ (मरने के बाद कर्म के अनुसार दंड देनेवाले) यम। १३ ६० पल का काल। २४ मिनट का समय। घड़ी।

दंडक—संज्ञा पुं० [सं०] १ डंडा। २ दंड देनेवाला। शासक। ३ वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४ दंडक नामक जंगल जिसमें वनवास के समय श्रीरामचंद्र जी बहुत दिनों तक टिके थे।

दंडकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

दंडकारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था और जिसमें श्रीरामचंद्र जी ने बहुत दिनों तक निवास किया था।

दंडदास—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमराज। २ शासनकर्ता। ३ संन्यासी। ४ सिपाही।

दंडधार—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमराज। २ राजा।

दंडन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] दंड देने की क्रिया। शासन। निग्रह।

दंडना—क्रि० स० [सं० दंडन] दंड देना। शासित करना। सजा देना।

दंडनायक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। २ दंडविधान करनेवाला राजा या हाकिम। ३ यम। ४ कालभैरव।

दंडनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दंड देने का सिद्धांत और प्रक्रिया। २ दंड देने का कानून। दंडविधान।

दंडनीय—वि० [सं०] [स्त्री० दंडनीया] दंड पाने योग्य।

दंडपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमराज। २ भैरव की एक मूर्ति।
दंडप्रणाम—संज्ञा पुं० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।
दंडवत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर दंड के समान लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।
दंडविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था। सजा का कानून।
दंडायमान—वि० [सं०] डंडे की तरह सीधा खड़ा। खड़ा।
दंडालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ न्यायालय। २ वह स्थान जहाँ दंड दिया जाय। ३ एक छंद जिसमें प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं और १०वीं और १८वीं मात्रा पर यति तथा अंत में विराम रहता है। इसके किसी चौकल में जगण नहीं रखा जाता और पदांत में मगण रहता है। उ०—भावहिं के भूखे, विषयनि रूखे, भक्तहिं तारत शीघ्र हरी। शबरी के जूठे, बेर अनूठे, खात प्रशंसा बहुत करी॥ दंडकला।
दंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत में गुरु लघुवर्ण होते हैं। इसे रत्यका, गंडका और वृत्त छंद भी कहते हैं। उ०—रोज रोज राज गैल तें लिए गोपाल ग्वाल तीन सात। वायु सेवनार्थ प्रात बाग जात आव लै सुफूल पात॥ लायकै धरैं सबै सुफूल पात मोदयुक्त मातु हात। धन्य मानि मातु बाल-वृत्त देखि हर्ष रोम रोम गात॥
दंडित—वि० पुं० [सं०] जिसे दंड मिला हो। सजायाफ्ता। सजा पाया हुआ।
दंडी—संज्ञा पुं० [सं० दंडिन्] १ दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २ यमराज। ३ राजा। ४. द्वारपाल। ५ वह सन्यासी जो दंड और कमंडल धारण करे। ६ जिन देव। ७ शिव। महादेव। ८ संस्कृत के पदलालित्य के लिये प्रसिद्ध कवि जिनके बनाए हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—'दशकुमार-चरित' और 'काव्यादर्श'।
दंड्य—वि० [सं०] दंड पाने योग्य।
दंत—संज्ञा पुं० [सं०] १ दाँत। २ ३२ की संख्या।
दंतकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों किंतु जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो। सुनी सुनाई या परंपरागत बात। किंवदंती। जनश्रुति।
दंतच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] ओष्ठ। ओंठ।
दंतधावन—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाँत धोने या साफ करने का काम। दातुन करने की क्रिया। २ दतौन। दातून। मंजन।
दंतबीज—संज्ञा पुं० [सं०] अनार।
दंतमूलीय—वि० [सं०] दंतमूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। तवर्ग, ल और स अक्षर।
दँतार†—वि० [हिं० दाँत+आर (प्रत्य०)] बड़े दाँतोंवाला।
दँतिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत+इया (प्रत्य०)] छोटे छोटे दाँत।
दँतियाना—क्रि० स० [हिं० दाँत से ना० धा०] १ दाँतों से काटना या नोचना। २ एक किनारे खड़ा करना या पंक्तिबद्ध सजाना। ३ दबाना। ढकेलकर एक कोने में करना। दँतेरना।
दंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडी की जाति का एक पेड़। यह दो प्रकार की होती है—लघुदंती और वृहद्दंती।
दँतुरिया†ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "दँतिया"।
दँतुला—वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली] बड़े बड़े दाँतोंवाला।
दँतेरना—क्रि० स० दे० "दँतियाना"।
दंतोष्ठ्य—वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो। ऐसा वर्ण "व" है।
दंत्य—वि० [सं०] १ दंत संबंधी। २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। त, थ, द, ध, न, ल और स अक्षर।
दंद—संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।
संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] १ लड़ाई झगड़ा। उपद्रव। २ शोरगुल।
दंदन—वि० [सं० द्वंद्व] [स्त्री० दंदनी] दमन करनेवाला।
दंदाना—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति (कंघी या आरे आदि की)।
क्रि० अ० [हिं० दंद] गरम होना।
दंदानेदार—वि० [फा०] जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कँगूरों की पंक्ति हो।
दंदी—वि० [हिं० दंद] झगड़ालू। उपद्रवी।
दंपति, दंपती—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री पुरुष का जोड़ा। पति पत्नी का जोड़ा।
दंपाⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० दमक] बिजली।
दंभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंभी] १ महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। मिथ्या और अधर्म से उत्पन्न वृत्ति (भागवत, महाभारत आदि)। पाखंड। २ झूठी ठसक। अभिमान। घमंड।
दंभानⓟ—संज्ञा पुं० दे० "दंभ"।
दंभी—वि० [सं० दंभिन्] [स्त्री० दंभिनी] १ पाखंडी। ढकोसलेबाज। २. अभिमानी। घमंडी।
दंभोलि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रास्त्र। वज्र। उ०—मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछिनी लाल गजमाल सोहै।—सूर०।
दँवरी—संज्ञा स्त्री० [सं० दमन? हिं० दाँवना] अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये बैलों से रौंदवाने का काम।
दँवारिⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दंतक्षत। २ दाँत काटने की क्रिया। दशन। ३ दाँत। ४. विषैले जंतुओं का डंक। ५ डाँस नामक विषैली मक्खी।
दंशक—संज्ञा पुं० [सं०] दाँत से काटनेवाला।
दंशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १ दाँत से काटना। २ डसना। ३ वर्म। बकतर।
दंशनाⓟ—क्रि० स० [सं० दंशन] १ दाँत से काटना। २. डसना।
दंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] दाँत।
दंसⓟ—संज्ञा पुं० दे० "दंश"।
द—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। २ दाँत। ३ देनेवाला (यौगिक में), जैसे, करद।
संज्ञा स्त्री० १ भार्या। स्त्री। २ रक्षा। ३ खंडन।
दइत—संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दई—संज्ञा दे० [सं० दैव] १ ईश्वर। विधाता।
मुहा०—दई का घाला=ईश्वर का मारा हुआ। अभागा। कमबख्त। दई दई=हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार)। उ०—दीरघ साँस न लेहु दुख, सुख साईंहिं न भूलि। दई दई

क्यौं करतु है, दई दई सु कबूलि ॥ —बिहारी०।

२ दैव संयोग। अदृष्ट। प्रारब्ध।

दईमारा—वि० [हिं० दई+√मार] [स्त्री० दईमारी] जिसपर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त। उ०—दूध दही नहिं लेव, री! कहि कहि पचि हारी। कहति, सूर कोऊ घर नाहीं, कहाँ गई दइमारी?—सूर०।

दकन—संज्ञा पुं० [सं० दक्षिण] दक्षिणी भारत।

दकनी—संज्ञा पुं० [हिं० दकन+ई(प्रत्य०)] दक्षिणी भारत का निवासी।

वि० दक्षिण भारत का।

संज्ञा स्त्री० १ दक्षिण भारत की भाषा। २ दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिंदी का पुराना नाम।

दकियानूस—संज्ञा पुं० [अ०] १ बहुत पुरानी विचारधाराओं का पोषक। प्राचीनता का पुजारी। अंध परंपरा को माननेवाला।

दकियानूसी—वि० [अ०] बहुत पुराना।

दकीका—संज्ञा पुं० [अ०] १ कोई बारीक बात। २ युक्ति। उपाय। तरकीब।

मुहा०—कोई दकीका बाकी न रखना =कोई उपाय बाकी न रखना। सब उपाय कर चुकना।

३ क्षण। लहमा।

दक्खिन—संज्ञा पुं० [सं० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १ वह दिशा जो सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिने हाथ की ओर पड़ती है। उत्तर के सामने की दिशा। २ भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।

दक्खिनी—वि० [हिं० दक्खिन] १ दक्खिन का। २ जो दक्षिण के देश का हो।

संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।

दक्ष—वि० [सं०] १ निपुण। कुशल। चतुर। होशियार। २ दक्षिण। दाहिना।

संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा के दाहिने अँगूठे से उत्पन्न सातवें प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं। पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थीं। २ अत्रि ऋषि। ३ महेश्वर।

दक्षकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापति की सोलह कन्याओं में से एक जो रुद्र की पहली पत्नी थीं। (गरुड़ पुराण) सती।

दक्षता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। योग्यता। कुशलता।

दक्षिण—वि० [सं०] १. शरीर का वह पार्श्व या अंग जो उत्तर की ओर मुँह करके खड़े होने से पूर्व की ओर हो। बायाँ का उलटा। दाहिना। अपसव्य। २ इस प्रकार प्रवृत्त जिससे किसी का कार्य सिद्ध हो। अनुकूल। ३. उस ओर का जिधर उदीयमान सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिना हाथ पड़े। ४ निपुण। दक्ष। चतुर।

संज्ञा पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २ वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। ३. प्रदक्षिणा। ४ तंत्रोक्त एक आचार या मार्ग।

दक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दक्षिण दिशा। २ वह द्रव्य या धन जो किसी दान, धर्म, शुभ कार्य, पाठ, जप, होम, कथा, भोजन, अध्यापन आदि करने के उपलक्ष में ब्राह्मणों को दिया जाय। ३ वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। ४ पुरस्कार। भेंट। ५ वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो।

दक्षिणापथ—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।

दक्षिणायन—वि० [सं०] भूमध्य रेखा से दक्षिण का, जैसे, दक्षिणायन सूर्य।

संज्ञा पुं० १. सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २ छः महीने का वह समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर मकर रेखा तक बढ़ता रहता है।

दक्षिणावर्त—वि० [सं०] जो दाहिनी ओर को घूमा हुआ हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।

वि० दक्षिण देश का।

दक्षिणीय—वि० [सं०] १ दक्षिण का। २ जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखमा—संज्ञा पुं० [?] वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल—संज्ञा पुं० [अ०] १ अधिकार। कब्जा। २ हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३ पहुँच। प्रवेश।

दखलदिहानी—संज्ञा स्त्री० [अ० दखल+फा० दिहानी] अदालत से दखल दिलाने की क्रिया।

दखिन—संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण"।

दखिनहा†—वि० [हिं० दक्खिन + हा (प्रत्य०)] दक्षिण का। दक्षिणी।

दखील—वि० [अ०] जिसका दखल या कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार—संज्ञा पुं० [अ० दखील+फा० कार] [भाव० दखीलकारी] वह असामी जिसने किसी खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रखा हो।

दगड़—संज्ञा पुं० [?] लड़ाई में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल।

दगदग—वि० [सं० दग्ध ?] चमकीला। चमाचम। उ०—'दाम' पगपग दुनो देहदुति दगदग, जगजग ह्वै रही कपूरधूरि सारी पर।—शृंगार०।

संज्ञा पुं० १ आशंका। २ अनिश्चय। संदेह।

दगदगा—संज्ञा पुं० [अ०] १ डर। भय। २ संदेह। ३ एक प्रकार की कंदील।

दगदगाना—क्रि० अ० [हिं० दगना] दगदमाना। चमकना।

क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

दगदगी—संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

दगध†—संज्ञा पुं० दे० "दाह"।

वि० दे० "दग्ध"।

दगधना(पु)—क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलना।

क्रि० स० १ जलाना। २ दुःख देना। ३ ठगना। उ०—बैसनों भया तो का भया, बूझा नहीं बिबेक। छापा तिलक बनाइ करि, दगध्या लोक अनेक।—कबीर०।

दगना—क्रि० अ० [सं० दग्ध] १ (बंदूक या तोप आदि का) छूटना। चलना। २ जलना। झुलस जाना। ३ दागा जाना। 'दागना' का अकर्मक। ४ प्रसिद्ध होना। मशहूर होना।

क्रि० स० दे० "दागना"।

दगर, दगरो†—संज्ञा पुं० [?] १ देर। विलंब। उ०—सब कोउ जात मधुपुरी बेचन कोने दियो दिखावहु कगरो। अंचल ऐंचि ऐंचि राखत हौ जान देहु अब होत है दगरो।—सूर०। २ डगर। रास्ता।

दगल—संज्ञा पुं० दे० "दगला"। उ०—सौंर सुपेती मंदिर राती। दगल चीर पहिरहिं बहु भाँती।—पदमावत।

दगला—संज्ञा पुं० [?] मोटे वस्त्र का बना हुआ या रूईदार अँगरखा। भारी लबादा।

दगवाना—क्रि० स० [हिं० दागना का प्रे० रूप] दागने का काम दूसरे से कराना।

दगहा—वि० [हिं० दाग+हा (प्रत्य०)] जिसमें दाग हो।

वि० [हिं० दाह = प्रेतकर्म + हा (प्रत्य०)] जिसने प्रेतक्रिया की हो। दाहकर्म करनेवाला।

वि० [हिं० दाग+हा (प्रत्य०)] जो दागा हुआ हो। दग्ध किया हुआ।

दगा—संज्ञा स्त्री० [अ०] छलकपट। धोखा।

दगादार—वि० दे० "दगाबाज"।

दगाबाज—वि० [फा०] धोखा देनेवाला। छली। कपटी।

दगाबाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] छल। कपट।

दगैल—वि० [अ० दाग+ऐल (प्रत्य०)] १ दागदार। जिसमें दाग हो। २ जिसमें कुछ खोट या दोष हो। ३ दुष्ट। खोटा।

संज्ञा पुं० [अ० दगा+हिं० ऐल (प्रत्य०)] दगाबाज या छली व्यक्ति।

दग्ध—वि० [सं०] १ जला या जलाया हुआ। २ दुःखित। जिसे कष्ट पहुँचा हो।

दग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पश्चिम दिशा। २ विशिष्ट राशियों से युक्त विशिष्ट तिथियाँ (अशुभ)।

दग्धाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जिनका छंद के आरंभ में रखना वर्जित है।

दग्धितⓅ—वि० दे० "दग्ध"।

दचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० दचकना] दचकने की क्रिया या भाव। लचक।

दचकना—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा दचका] १ ठोकर या धक्का खाना। २ दब जाना। ३ झटका खाना। ४ नत होना। लचकना। झुक जाना। ५. नीचे ऊपर होना।

क्रि० स० १ ठोकर या धक्का लगाना। २ दबाना। ३ झटका देना। ४ झुकाना। नत करना। लचाना। लचकाना।

दचका—संज्ञा पुं० "दचक"।

दचना—क्रि० अ० [अनु०] गिरना। पड़ना। उ०—गगन उड़ाई गयो लै श्यामहि आइ धरनि पर आप दच्यो री।—सूर०।

दच्छ—संज्ञा पुं० दे० "दक्ष"।

दच्छकुमारीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष+कुमारी] दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।

दच्छना—संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

दच्छसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष+सुता] दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन—वि० दे० "दक्षिण"। उ०—दच्छिन पिय, ह्वै बाम बस, बिसराई तिय, आन। एकै बासरि कैं बिरह लागी बरष बिहान। —बिहारी०।

दड़नाⓅ—क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलाना।

दढ़ियल—वि० [हिं० दाढ़ी+इयल (प्रत्य०)] दाढ़ीवाला। जो दाढ़ी रखे हो।

दतवन—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।

दतिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत का अल्पा० स्त्री०] छोटा। दाँत।

दतुअन, दतुवन—संज्ञा स्त्री० [सं० दंतधावन?] १ नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दातुन। २ दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।

दतौन—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ दत्तात्रेय। २ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। दान। ४ दत्तक।

यौ०—दत्तविधान = दत्तक पुत्र लेना।

वि० दिया हुआ।

दत्तक—संज्ञा पुं० [सं०] औरस पुत्र के अभाव में शास्त्रीय विधि से स्वीकार कर लिया गया या बनाया गया पुत्र। गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना।

दत्तचित्त—वि० [सं०] जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।

दत्तात्मा—संज्ञा पुं० [सं० दत्तात्मन्] वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।

दत्तात्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि अत्रि की साध्वी स्त्री अनुसूया के गर्भ से उत्पन्न एक प्राचीन ऋषि जिनके बारे में पुराणों में लिखा है कि विष्णु के अवतार थे। कथा प्रसिद्ध है कि एक बार अनुसूया ने देवताओं से वर माँगा था कि ब्रह्मा विष्णु और शिव उसके पुत्र हों। तदनुसार, ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, शिव के अंश से दुर्वासा और विष्णु के अंश से दत्तात्रेय का जन्म हुआ।

दत्तोपनिषद्—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

ददा—संज्ञा पुं० "दादा"।

ददिऔरा—संज्ञा पुं० दे० "ददिहाल"।

ददिया ससुर—संज्ञा पुं० [हिं० दादा+ससुर] [स्त्री० ददिया+सास] पत्नी या पति का दादा। श्वशुर का पिता।

ददिहाल—संज्ञा पुं० [हिं० दादा+आलय] १ दादा का कुल। २ दादा का घर।

ददोरा—संज्ञा पुं० [हिं० दाद] मच्छड़, बर्रे आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर होनेवाली चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन। चकत्ता।

दद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "दाद"।

दधाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दधि"।

दधसारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दधिसार"।

दधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ खटाई डालकर जमाया हुआ दूध। दही। २. वस्त्र। कपड़ा।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० उदधि] समुद्र। सागर।

दधिकाँदो—संज्ञा पुं० [सं० दधि+हिं० काँदो=कीचड़] जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव जिसमें लोग हलदी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं। उ०—यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरि सो पूत। करहु ललन की आरती री अरु दधिकाँदो सूत।—सूर०।

दधिजात—संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन। उ०—देखो मैं दधिसुत में दधिजात। —सूर०।

संज्ञा पुं० [सं० उदधि+जात] चंद्रमा।

दधिसुत—संज्ञा पुं० [सं० उदधिसुत] १ कमल। २ मुक्ता। मोती। ३ चंद्रमा। ४ जालंधर दैत्य। उ०—विष्णु वचन चपला प्रतिहारा। तेहि ते आपुन दधिसुत मारा।—विश्रामसागर। ५ विष। जहर। उ०—नहिं विभूति दधिसुत न कंठ दह मृगमद चंदन चरचित तन।—सूर०।

संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन। नवनीत।

दधिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० उदधिसुता] सीप। उ०—दधिसुता सुत अवलि ऊपर इंद्र आयुध जानि।—सूर०।

दधीचि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि जो यास्क (निरुक्त) के मत से अथर्वा के

और ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार शुक्राचार्य के पुत्र थे। एक और पुराण में इन्हें अथर्वा और कर्दम ऋषि की कन्या शांति का पुत्र लिखा है। वेदों के अनुसार इंद्र ने इन्हें प्रवर्ग्य विद्या (वेदों का ज्ञान) और मधु विद्या (संजीवनी विद्या) सिखलाई थी। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिये दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगी। दधीचि ने प्रार्थना स्वीकार कर अपने प्राण त्याग दिए। देवताओं ने इनकी हड्डियों से वज्र और अन्यान्य अस्त्र बनाकर वृत्र का वध किया।

दनदनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ दनदन शब्द करना। २ जल्दी करना। ३ आनंद करना।

दनादन—क्रि० वि० [अनु०] १ दनदन शब्द के साथ। २ जल्दी जल्दी।

दनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए थे जो सब के सब दानव कहलाए।

दनुज—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० दनुजता, दनुजत्व] दानव। असुर। राक्षस।

दनुजदलनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

दनुजराय—संज्ञा पुं० [सं० दनुज+हिं० राय] दानवों के राजा हिरण्यकशिपु, रावण, कंस, आदि।

दनुजेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "दनुज राय"।

दन्न—संज्ञा पुं० [अनु०] "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।

दपटना—क्रि० अ० [हिं० डाँटना के साथ अनु०] [संज्ञा दपट] डाँटना। घुड़कना।

दपु(ु)—संज्ञा पुं० [सं० दर्प] दर्प। शेखी। उ०—सात दिवस गोवर्द्धन राख्यो इंद्र गयो दपु छोंड़ि।—सूर०।

दपेट—संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।

दफतर—संज्ञा पुं० दे० "दफ्तर"।

दफती—संज्ञा स्त्री० [अ० दफ्तीन] कागज के कई तख्तों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।

दफन—संज्ञा पुं० [अ०] किसी चीज को, विशेषतः मुरदे को, जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफनाना—क्रि० स० [अ० दफन से हिं० ना० धा०] जमीन में दबाना। गाड़ना।

दफा—संज्ञा स्त्री० [अ० दफअ] १ बार। बेर। २ किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो। धारा। अनुच्छेद।

मुहा०—दफा लगाना = अभियुक्त पर किसी दफा के नियम को घटाना।

वि० [अ० दफअ] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफादार—संज्ञा पुं० [अ० दफअ = समूह+फा० दार] फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफीना—संज्ञा पुं० [अ०] गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफ्तर—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ किसी कारखाने, कंपनी, संस्था या व्यवसायी आदि का लिखापढ़ी, लेनदेन और व्यवस्था आदि का कार्य होता हो। कार्यालय। (अँ०) आफिस। २ लंबी चौड़ी चिट्ठी। ३. सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

दफ्तरी—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह कर्मचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २ किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्दबंद।

दबंग—वि० [हिं० √दब+अंग (प्रत्य०) ?] १ किसी से न दबनेवाला। २ प्रभावशाली। दबाववाला। रोबवाला।

दबक—संज्ञा स्त्री० [हिं० दबकना] १ दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २ सिकुड़न।

दबकगर—संज्ञा पुं० [हिं० दबक+गर (प्रत्य०)] दबका (तार) बनानेवाला। दबकैया।

दबकना—क्रि० अ० [हिं० दबाना] १ भय के कारण किसी चीज की आड़ में, नीचे या तंग स्थान में छिपना या सिमटना। २ लुकना। आड़ में होना।

क्रि० स० [हिं० दबाना] धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।

दबका—संज्ञा पुं० [हिं० दबकना = तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला तार।

दबकाना—क्रि० स० [हिं० दबकना का स० रूप] छिपाना। आड़ में करना।

दबकैया—संज्ञा पुं० दे० "दबकगर"।

दबगर—संज्ञा पुं० [देश ?] १ ढाल बनानेवाला। २ चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।

दबदबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ रोबदाब। प्रभुत्व। २ आतंक।

दबना—क्रि० अ० [सं० दमन] १ भार के नीचे आना। बोझ के नीचे पड़ना। २ ऐसी अवस्था में होना जिसमें किसी ओर से बहुत जोर पड़े। ३. किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना। पीछे हटना। ४ दबाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिये विवश होना। ५ किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ६ किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना या आगे न बढ़ पाना। ७ उभड़ न सकना। शांत रहना। ८. अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ९ ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। १०. धीमा पड़ना। मंद पड़ना। फीका होना।

मुहा०—दबी जबान से कहना = डर या संकोच के कारण धीरे से कहना।

११. संकोच करना। झेंपना।

दबवाना—क्रि० स० [हिं० दबाना का प्रे० रूप] दबाने का काम दूसरे में कराना।

दबाना—क्रि० स० [सं० दमन] [संज्ञा दाब, दबाव] १ ऊपर से भार रखना (जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँस जाय अथवा इधर उधर हट न सके)। २ किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना। ३ पीछे हटाना। ४ जमीन के नीचे गाड़ना। दफन करना। ५ किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। जोर डालकर विवश करना। ६ दूसरे को मंद या मात कर देना। ७ किसी बात को उठने या फैलने न देना। छिपाना। पर्दा डालना। ८ दमन करना। शांत करना। ९. किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना। १० झोंक के साथ बढ़कर किसी चीज को पकड़ लेना। ११ ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय, दीन या विवश हो जाय।

दबाव—संज्ञा पुं० [हिं० √दब+आव (प्रत्य०)] १ दबाने की क्रिया। चाँप। २ दबाने का भाव। चाँप। ३ रोब।

दबीज—वि० [फा०] जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। संगीन। भारी। मजबूत। दृढ़।

दबैल—वि० [हिं० दाब+ऐल (प्रत्य०)] १ जिसपर किसी का प्रभाव या दबाव

हो। २. जो बहुत दबता या डरता हो। दब्बू। ३ सबसे दबनेवाला।

दबोचना—क्रि० स० [हिं० दबाना] १ किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २ छिपाना।

दबोरना(पु)—क्रि० स० [हिं० दबाना] अपने सामने ठहरने न देना। दबाना।

दमकना(पु)—क्रि० अ० दे० "दमकना"।

दम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह दंड जो दमन करने के लिये दिया जाता है। सजा। २ इंद्रियों को वश में रखना और बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३ दबाव। ४ पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ५ बुद्ध। ६. विष्णु। ७ घर। ८ कीचड़।

संज्ञा पुं० [फा०] १ साँस। श्वास।

मुहा०—दम अटकना या उखड़ना = साँस रुकना, विशेषत मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना = (१) चुप रह जाना। (२) साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना = हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोंटकर मारना = (१) गला दबाकर मारना। (२) बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना = अंतिम साँस लेना। दम फूलना = (१) अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। (२) दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना = (१) किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। (२) परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना = (१) विश्राम करना। सुस्ताना। (२) बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। दम लेना = विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना = (१) श्वास की गति को रोकना। (२) चुप होना। मौन रहना।

२ नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया। कश।

मुहा०—दम मारना या लगाना = गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना। कश लगाना।

३ साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ४ उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल।

मुहा०—दम के दम = क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम = बहुत थोड़ी थोड़ी देर पर। जल्दी जल्दी।

५. प्राण। जान। जी।

मुहा०—दम खुश्क होना = दे० "दम सूखना"। दम नाक में या नाक में दम आना = बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना = मृत्यु होना। मरना। दम सूखना = बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना।

६ वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। जीवनी शक्ति। ७ व्यक्तित्व।

मुहा०—(किसी का) दम गनीमत होना = (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना।

८ खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। ६ धोखा। छल। फरेब।

यौ०—दम झाँसा = छल कपट। दम-दिलासा, दम पट्टी या दम बुत्ता = वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय। झूठी आशा।

मुहा०—दम देना = बहकाना। धोखा देना।

१० तलवार या छुरी आदि की धार।

दमक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक का अनु०] १ चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा। २ मंद मंद गरमी या आँच।

दमकना—क्रि० अ० [हिं० चमकना का अनु०] चमकना। चमचमाना।

दमकल—संज्ञा स्त्री० [हिं० दम+कल] १ वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंके से फेंका जा सके। पंप। २ आग बुझाने का यंत्र। ३ वह यंत्र जिसकी सहायता से कुएँ से पानी निकालते हैं। ४ दे० "दम-कला"।

दमकला—संज्ञा पुं० [हिं० दम+कल] १ वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफिलों में गुलाबजल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। २ दे० "दमकल"। ३ दे० "दमचूल्हा"।

दमखम—संज्ञा पुं० [फा०] १ दृढ़ता। मजबूती। २ जीवनी शक्ति। ३ मूर्ति की सुंदर और सुडौल गढ़न। ४ चित्र की वे गोलाई लिए लगातार चलनेवाली रेखाएँ जिनसे वह चित्र जानदार मालूम होता है। ५ तलवार की धार और उसका झुकाव।

दमचूल्हा—संज्ञा पुं० [हिं० दम+चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का चूल्हा जिसमें कोयला जलता है। अँगीठी। दमकला।

दमड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० द्रविण = धन] पैसे का आठवाँ भाग।

मुहा०—दमड़ी का पूत = बहुत ही तुच्छ। नगण्य। दमड़ी के तीन होना = बहुत सस्ता होना। कौड़ियों के मोल होना।

दमदमा—संज्ञा पुं० [फा०] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

दमदार—वि० [फा०] १ जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ट हो। २. दृढ़। मजबूत। ३. जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ४ जिसकी धार तेज़ हो। चोखा।

दमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दबाने या रोकने की क्रिया। २ दंड। सजा। ३ इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४ उपद्रव, विरोध आदि को बलपूर्वक दबाना। ५ विष्णु। ६ महादेव। शिव। ७ एक ऋषि का नाम।

संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"। उ०—दमनहिं नलहिं जो हंस मेरावा। तुम्ह हीरामन नावँ कहावा।—पदमावत।

दमनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तीन नगण और लघु गुरु कुल ११ वर्ण होते हैं। उ०—हृदय जवन भवन करी। अघन सघन दमन करी॥ २. दौना नामक पौधा।

दमनशील—वि० [सं०] १ जिसकी प्रकृति दमन करने की हो। दमन करनेवाला। २. इंद्रियों को वश में रखनेवाला।

दमनीय—वि० [सं०] १. दमन करने योग्य। २ दबाया जाने लायक। ३ बिना दबाए नष्ट हो जानेवाला या काम न देनेवाला।

दमबाज—वि० [फा० दम+बाज] १ दम देनेवाला। २ फुसलानेवाला।

दमयंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा नल की स्त्री जो प्राचीन विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या थी।

दमा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है। साँस।

दमाद—संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] कन्या का पति। जँवाई। जामाता।

दमानक—संज्ञा स्त्री० [देश०] तोपों की बाढ़।

दमामा—संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका।

दमारि(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० दावानल] जंगल की आग। वन की आग।

दमावती—संज्ञा स्त्री० दे० 'दमयंती'। उ०—भा बिछोह जस नलहि दमावति। मैना मूँदि छपी पदमावति।—पदमावत।

दमैया(पु)†—वि० [सं०√दम्+हिं० ऐया (प्रत्य०)] दमन करनेवाला। दबानेवाला।

दयंत‡—संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।

दया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मन का वह दुःखपूर्ण वेग जो किसी को दूसरे का कष्ट दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम। २. दक्षप्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी।

दयादृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] करुणा या अनुग्रह का भाव। मेहरबानी की नजर।

दयानत—संज्ञा स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा। ईमान।

दयानतदार—वि० [अ० दयानत+फा० दार] ईमानदार। सच्चा।

दयाना(पु)—क्रि० अ० [सं० दया से हिं० ना० धा०] दयालु होना। कृपालु होना।

दयानिधान—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें बहुत अधिक दया हो। बहुत दयालु।

दयानिधि—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० दयानिधिता] १ बहुत दयालु पुरुष। २ ईश्वर।

दयापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दया के योग्य हो।

दयापर—संज्ञा पुं० [सं०] दयापरायण। दयालु।

दयामय—संज्ञा पुं० [सं०] १ दया से पूर्ण। दयालु। २ ईश्वर।

दयार—संज्ञा पुं० [अ०] प्रांत। प्रदेश।

दयार्द्र—वि० [सं०] [भाव० दयार्द्रता] दयापूर्ण। दयालु। दया से भरा हुआ।

दयाल—वि० दे० "दयालु"।

दयालु—वि० [सं०] दया करनेवाला। कृपालु।

दयालुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दयालु होने का भाव।

दयावंत—वि० दे० "दयालु"।

दयावना(पु)—वि० पुं० [हिं० दया+आवना] [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य। दीन।

दयावान्—वि० [सं०] [स्त्री० दयावती] जिसके चित्त में दया हो। दयालु।

दयाशील—वि० [सं०] दयालु।

दयासागर—संज्ञा पुं० [सं०] जिसके चित्त में बहुत दया हो। जिसकी दया का अंत न हो।

दयित—वि० [सं०] [स्त्री० दयिता] प्रिय। प्यारा।

दर—संज्ञा पुं० [सं०] १ फाड़ने की क्रिया। विदारण। २ गड्ढा। दरार। ३ गुफा। कंदरा। ४ डर। भय। ५ शंख।

संज्ञा पुं० [सं० दल] समूह। दल।

संज्ञा पुं० [फा०] १ द्वार। दरवाजा। उ०—माया नटिनि लकुटि कर लीने कोटिक नाच नचावै। दर दर लोभ लागि लै डोलनि नाना स्वाँग करावै।—सूर०। ३ देहली। ४ मकान के अंदर का विभाग। ५ मकान की मंजिल। खंड।

मुहा०—दर दर मारा फिरना = दुर्दशाग्रस्त होकर घूमना।

संज्ञा स्त्री० १. भाव। निर्ख। २. प्रमाण। ठीकठिकाना। ३ कदर। प्रतिष्ठा।

संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] ईख। ऊख।

दरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० दरकना] १ फटने या दरार पड़ने की क्रिया या भाव। २ दराज। दरज। संधि।

वि० [सं०] डरपोक। कायर।

दरकना—क्रि० अ० [सं० √दृ=फाड़ना] दाब पड़ने से फटना। चिरना।

दरका—संज्ञा पुं० [हिं० दरक] १. शिगाफ। दरार। २ वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना—क्रि० स० [हिं० दरकना का स० रूप] फाड़ना।

क्रि० अ० फटना। उ०—पुलकित अँग अँगिया दरकानी उर आनँद अचल फहरात—सूर०।

दरकार—संज्ञा स्त्री० [फा०] आवश्यकता। जरूरत।

दरकारी—वि० [फा०] आवश्यक। अपेक्षित। जरूरी।

दरकिनार—क्रि० वि० [फा०] अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

दरकूच—क्रि० वि० [फा०] बराबर यात्रा करता हुआ। मंजिल दर मंजिल।

दरखत(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दरख्त"।

दरखास्त—संज्ञा स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १ किसी बात के लिये प्रार्थना। निवेदन। २ प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

दरख्त—संज्ञा पुं० [फा०] पेड़। वृक्ष।

दरगह, दरिगह—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "दरगाह"। कबीर मन मानिक भया, सुमिरन माहीं नाहि। पाछौ पछैगा सासनौं, जम की दरगह माहि। —कबीर०।

मुहा०—किसी के दरगह पड़ना = किसी के पीछे पड़ना। किसी को लगातार बहुत तंग करना।

दरगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौखट। देहरी। २ दरबार। कचहरी। ३ किसी सिद्ध पुरुष का समाधिस्थान। मकबरा।

दरगुजर—वि० [फा०] १ अलग। वंचित। २ मुआफ। क्षमाप्राप्त। जान बूझकर छोड़ा या भुलाया हुआ।

दरज—संज्ञा स्त्री० [सं० दर=दरार] शिगाफ। दराज। दरार।

दरजन—संज्ञा पुं० दे० "दर्जन"।

दरजा—संज्ञा पुं० दे० "दर्जा"।

दरजी—संज्ञा पुं० दे० "दर्जी"।

दरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दलने या पीसने की क्रिया। २ ध्वंस। विनाश।

दरद—संज्ञा पुं० [फा० दर्द] १. पीड़ा। व्यथा। २ दया। करुणा। उ०—माई नेकहु न दरद करति हिलकनि हरि रोवै। —सूर०।

संज्ञा पुं० १ काश्मीर और हिंदुकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २ एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवंश आदि में है। ३ ईंगुर। शिंगरफ।

दर दर—क्रि० वि० [फा० दर] द्वार द्वार। स्थान स्थान पर। उ०—माया नटिनि लकुटि कर लीने कोटिक नाच नचावै। दर दर लोभ लागि लै डोलै नाना स्वाँग करावै। —सूर०।

दरदरा—वि० [सं० दरण=दलना] [स्त्री० दरदरी] जिसके कण स्थूल हों। जिसके रवे महीन न हों, मोटे हों।

दरदराना—क्रि० स० [सं० दरण] इस प्रकार पीसना या रगड़ना कि मोटे मोटे रवे या टुकड़े हो जायँ। थोड़ा पीसना।

दरदवंत, दरदवंद—पुं० [फा० दर्दमंद] १. सहानुभूति रखनेवाला। कृपालु। दयालु। २ जिसको पीड़ा हो। पीड़ित। दुखी।

दरद—संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द"।

दरनⓅ—वि०, संज्ञा पुं० दे० "दलन"।

दरना†—क्रि० स० [सं० दरण] १ दरदरा दलना। मोटा चूर्ण करना। २ नष्ट करना।

दरपⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "दर्प"।

दरपनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दर्पण"।

दरपनाⓅ—क्रि० अ० [सं० दर्प] १. ताव में आना। क्रोध करना। २. घमंड करना।

दरपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दरपन] मुँह देखने का छोटा शीशा।

दरपेश—क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने। उपस्थित।

दरबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अलग-अलग दर या विभाग बनाना। २ चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

दरब—संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] धन। दौलत।

दरबर—क्रि० वि० [प्रा० दव्वड] १ शीघ्र। जल्द। उ०—दरबर दासनि को दोष दुख दूरि करै भाल पर रेखा बाल-दोषाकर रेखिए।—रससारांश। २ दे० "दरदरा"।

दरबा—संज्ञा पुं० [फा० दर] १ कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक। २. बहुत छोटा और अँधेरा कमरा।

दरबान—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० द्वारवान] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

दरबार—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दरबारी] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के साथ बैठते हैं। २ राजाओं का शासकों के समान के साथ बैठकर राजनीतिक निर्णय, घोषणा और विचारविमर्श आदि करने का स्थान। ३ राजसभा। ४ सभाभवन।

मुहा०—दरबार खुलना = दरबार में जाने की आज्ञा मिलना। दरबार बंद होना = दरबार में जाने की रोक होना।

५ महाराज। राजा-(रजवाड़ों में)। ६ दरवाजा। द्वार।

दरबार आम—संज्ञा पुं० [फा० दरबार + आम] १ अकबर बादशाह की सामाजिक बैठक। २ उसके लिये बना हुआ प्रासाद। ३. सामान्य मनुष्यों और जनसाधारण के साथ बैठना। ४ उसके लिये नियत कक्ष।

दरबार खास—१ जनता के विशिष्ट लोगों और मंत्रियों आदि के साथ बैठने के लिये अकबर बादशाह का बनवाया हुआ प्रासाद। २ ऐसी बैठक।

दरबारदारीⓅ—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी को प्रसन्न करने के हेतु उसके यहाँ बार बार जाकर बैठना और मीठी मीठी बातें करना। २. खुशामद। चापलूसी।

दरबार विलासीⓅ—संज्ञा पुं० [फा० दरबार + सं० विलासी] द्वारपाल। दरबान।

दरबारी—संज्ञा पुं० [फा०] दरबार में बैठनेवाला।

वि० १. दरबार का। दरबार के योग्य। २. बढ़िया। नफीस।

दरबी—संज्ञा स्त्री० [सं० दर्वी] कलछी।

दरभ—संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"।

संज्ञा पुं० [?] बदर।

दरमा—संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की चटाई।

दरमान—संज्ञा पुं० [फा०] औषध। दवा।

दरमाहा—संज्ञा पुं० [फा०] मासिक वेतन।

दरमियान—संज्ञा पुं० [फा०] मध्य। बीच।

क्रि० वि० बीच में। मध्य में।

दरमियानी—वि० [फा०] बीच का मध्यस्थ।

संज्ञा पुं० [फा०] दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।

दररनाⓅ—क्रि० स० दे० "दरेरना"।

दरवाजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ द्वार। मुहाना। २ किवाड़। कपाट।

दरवी—संज्ञा स्त्री० [सं० दर्वी] १ कलछी। पौनी। २ साँप का फन।

यौ०—दरवीकर = साँप।

दरवेश—संज्ञा पुं० [फा०] १ फकीर। साधु। २ भिखारी।

दरशन—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

दरशनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दर्शन] दर्पण। शीशा।

दरशनी हुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० दर्शन हिं० हुंडी] वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति बहुत कम दिनों की हो।

दरशाना—क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।

दरस—संज्ञा पुं० [सं० दर्शन] १. दर्शन। दीदार। देखादेखी। २ भेंट। मुलाकात। ३. रूप। छवि। सुंदरता।

दरसन—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

दरसनाⓅ—क्रि० अ० [सं० दर्शन] दिखाई पड़ना। देखने में आना।

क्रि० स० [सं० दर्शन] देखना। लखना।

दरसनिया—संज्ञा पुं० [सं० दर्शन] वह जो शीतला आदि की शांति की पूजा कराता हो। शांतिवाचक।

दरसाना—क्रि० स० [सं० दर्शन] १. दिखाना। दृष्टिगोचर कराना। २ प्रकट करना। स्पष्ट करना। समझाना।

Ⓟ†—क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

दरसावना—क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दराज—वि० [फा०] बड़ा। भारी। दीर्घ।

क्रि० वि० [फा०] बहुत। अधिक।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दरार] दरज। दरार।

संज्ञा स्त्री० [अँ० ड्राअर] मेज में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।

दरार—संज्ञा स्त्री० [सं० दर] वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ। दरज।

दरारना—क्रि० अ० [हिं० दरार से ना० धा०] फटना। विदीर्ण होना।

दरारा—संज्ञा पुं० [हिं० दरना] दरेरा। धक्का।

दरिंदा—संज्ञा पुं० [फा०] फाड़ खानेवाला जंतु। मांसभक्षक वनजंतु।

दरिद्र—वि० [सं०] [स्त्री० दरिद्रा] जिसके पास धन न हो। निर्धन। कंगाल।

दरिद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कंगाली। निर्धनता। गरीबी।

दरिद्र नारायण—संज्ञा पुं० [सं०] दरिद्रों और दीनदुखियों के रूप में प्रकट नारायण की प्रत्यक्ष मूर्ति।

दरिद्री—वि० दे० "दरिद्र"।

दरिया—संज्ञा पुं० [फा०] १ नदी। २. समुद्र। सिंधु।
मुहा०—दरिया को कूजे में बंद करना =थोड़े कथन में बहुत सा आशय व्यक्त करना।
३ "दरियादासी" नामक निर्गुण सप्रदाय के प्रवर्तक संत।

दरियाई—वि० [फा०] १. नदी संबंधी। २. नदी के निकट का। ३ समुद्र सबधी।
संज्ञा स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार की रेशमी पतली साटन।

दरियाई घोड़ा—संज्ञा पुं० [फा० दरियाई+हिं० घोड़ा] गैंडे की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है। (अँ०—हिपोपोटैमस)।

दरियाई नारियल—संज्ञा पुं० [फा० दरियाई+हिं० नारियल] एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े को सन्यासी या फकीर पात्र के समान इस्तेमाल करते हैं।

दरियादासी—संज्ञा पुं० [फा० दरिया+हिं० दासी] निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक संत ने चलाया था।

दरियादिल—वि० [फा०] [संज्ञा दरियादिली] उदार। दानी।

दरियाफ्त—वि० [फा०] जिसका पता लगा हो। ज्ञात। मालूम।

दरियाबरार—संज्ञा पुं० [फा०] वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले। गंगबरार।

दरियाबुर्द—संज्ञा पुं० [फा०] वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।

दरियाव—संज्ञा पुं० दे० "दरिया"।

दरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुफा। खोह। २. पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर ?] मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना। शतरंजी।
संज्ञा स्त्री० [फा० दर] द्वार। उ०—साधे रहै जिय राधे रसीली दृगाधे निहारै न काहू दरी सों। —रससारांश।

दरीखाना—संज्ञा पुं० [फा० दर+खाना] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।

दरीचा—संज्ञा पुं० [फा०] १. खिड़की। झरोखा। २ खिड़की के पास बैठने की जगह।

दरीची—संज्ञा स्त्री० [फा० दरीचा] छोटा दरीचा। उ०—दौरि दरीची के सामुहैं ह्वै दृग जोरि सो मोहन में हँसि जाती। —शृंगार०।

दरीबा—संज्ञा पुं० [?] पान का बाजार।

दरेग—संज्ञा पुं० [अ० दरेग] कमी। कसर।

दरेरना—क्रि० स० [सं० दरण] १ रगड़ना। पीसना। २ रगड़ते हुए धक्का देना।

दरेरा—संज्ञा पुं० [सं० दरण] १. रगड़ा। धक्का। २. बहाव का जोर। तोड़।

दरेस—संज्ञा स्त्री० [अँ० ड्रेस] १. एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा। २ पोशाक।
वि० तैयार। बना बनाया।

दरेसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दरेस] समतल या दुरुस्त करना (सड़क फर्श, छत, दीवाल आदि)।

दरैया—संज्ञा पुं० [सं० दरण] १ दलने वाला। २ घातक। विनाशक।

दरोग—संज्ञा पुं० [अ०] झूठ। असत्य।

दरोगहलफी—संज्ञा स्त्री० [अ०] (सच बोलने की) कसम खाकर भी झूठ बोलना।

दरोगा—संज्ञा पुं० [तु० दारोगा] दे० "दारोगा"।

दर्ज—संज्ञा स्त्री० दे० "दरज"।
वि० [फा०] लिखा हुआ। अंकित।

दर्जन—संज्ञा पुं० [अँ० डजन] बारह का समूह। इकट्ठी बारह वस्तुएँ।

दर्जा—संज्ञा पुं० [अ०] ऊँचाई निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २ पढ़ाई के क्रम में ऊँचा नीचा स्थान। ३ पद। ओहदा। ४ किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर नीचे के क्रम से हो। खंड।
क्रि० वि० गुणित। गुना।

दर्जी—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० दर्जिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २ कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।

दर्द—संज्ञा पुं० [फा०] १ पीड़ा। व्यथा। २ दुःख। तकलीफ। ३ करुणा। दया।
मुहा०—दर्द खाना =दया करना।
४ हाथ से निकल जाने का कष्ट।

दर्दनाक—वि० [फा०] १ कष्टकर। दुःखदायी। २ दयनीय।

दर्दमंद—वि० [फा०] [संज्ञा दर्दमंदी] १ पीड़ित। दुःखी। २ दयावान्।

दर्दी—पुं० दे० "दर्दमंद"।

दर्दुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेढक। २. बादल। ३. अभ्रक। अबरक।

दद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दाद नामक रोग।

दर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐश्वर्य, पद या प्रतिष्ठा का घमंड। लक्ष्मी और अधर्म से उत्पन्न वृत्ति (भागवत, महाभारत आदि)। अहंकार। मिथ्या अभिमान। गर्व। २. अहंकार के कारण किसी के प्रति कोप। मान। ३ उद्दंडता। अक्खड़पन। ४ आतंक। रोब।

दर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह देखने का शीशा। आइना। आरसी।

दर्पित—वि० [सं०] १. दर्प या अभिमान से भरा हुआ। अभिमानी। २ उद्दंड। अक्खड़। ३ जिसपर आतंक छाया हो।

दर्पी—संज्ञा पुं० [सं० दर्पिन्] दर्प से भरा हुआ। अभिमानी। घमंडी।

दर्ब(र्बु)—संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] १ द्रव्य। धन। २ धातु (सोना, चाँदी इत्यादि)।

दर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कोमल और पवित्र कुश। डाभ। २ कुश। ३ कुशासन।

दर्भासन—संज्ञा पुं० [सं०] कुश का बना हुआ बिछावन। कुशासन।

दर्रा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। घाटी। २ दरार। शिगाफ।

दर्राना—क्रि० अ० [अनु० दड़ दड़] धड़धड़ाना। बेधड़क चला जाना।

दर्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुष्ट मनुष्य। २ राक्षस। ३ पंजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति। ४. इस जाति का प्रदेश।

दर्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ करछी। चमचा। २ साँप का फन।

दर्वीकर—संज्ञा पुं० [सं०] फनवाला साँप।

दर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्शन। २ चंद्रदर्शन पर किया जानेवाला यज्ञ। ३ द्वितीया तिथि। ४ वह यज्ञ या कृत्य जो अमावास्या के दिन हो।

दर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्शन करनेवाला। देखनेवाला। द्रष्टा। २ दिखानेवाला।

दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह बोध जो दृष्टि के द्वारा हो। साक्षात्कार। अवलोकन। २ भेंट। मुलाकात। ३ जीव और सृष्टि के संबंध का वास्तविक निरूपण। आत्म और अनात्म तत्वों का ज्ञान। तत्वज्ञान।

तात्विक विवेचन के सिद्धांत। ब्रह्मविद्या। ४. प्राचीन ब्रह्मविद्या या तात्विक विवेक की छः प्रणालियों में से कोई। ये प्रणालियाँ—(१) जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा, (२) बादरायण का उत्तरमीमांसा, (३) गौतम का न्याय, (४) कणाद का वैशेषिक, (५) कपिल का सांख्य और (६) पतंजलि का योग है। ५ नेत्र। आँख। ६ स्वप्न। ७ बुद्धि। ८ धर्म। ९ दर्पण।

दर्शनशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "दर्शन ४"।

दर्शनी हुंडी—संज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुंडी"।

दर्शनीय—वि० [सं०] [स्त्री० दर्शनीया] १. देखने योग्य। देखने लायक। २ सुंदर। मनोहर।

दर्शाना—क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दर्शी—वि० [सं० दर्शिन्] देखनेवाला।

दल—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु, मुख्यत अन्न या फल, फूल आदि के दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावत जुड़े हुए हों, पर दबाव द्वारा अलग किए जा सकें, जैसे, दाल के दो दल। खंड। भाग। २ पौधों का पत्ता। पत्र। ३ तमालपत्र। ४ फूल की पखड़ी। ५. परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई। ६ समूह। झुंड। गरोह। ७ मंडली। गुट्ट। ८ सेना। फौज। ९ भेदन। कटाव। जुदाई। अलहदगी।

दलक—संज्ञा स्त्री० [अ० दलक] गुदड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] १ आघात से उत्पन्न कंप। घबराहट। धमक। २. रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

दलकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० दलक] १ दलकने की क्रिया या भाव। २ आघात।

दलकना—क्रि० अ० [हिं० दलक] १ फट जाना। दरार खाना। चिर जाना। २ थर्राना। काँपना। ३ चौंकना। ४ उद्विग्न हो उठना।

क्रि० स० [सं० दलन] डराना। भयभीत कर देना।

दलगंजन—वि० [सं०] विपक्ष के दल को नष्ट करनेवाला। भारी वीर।

दलगीर—वि० [सं०√दल्+फा० गीर] ठसकवाली। तपाकवाली। उ०—व्यंगि बचन धीरा कहै प्रगट रिसाह अधीर। तीजा मध्या दुहुँ मिलित बोलैं है दलगीर। —रससारांश।

दलदल—संज्ञा स्त्री० [सं० दलाढ्य] १. कीचड़। पाँक। चहला। २ वह गीली जमीन जिसमें पैर नीचे को धँसता हो।

मुहा०—दलदल में फँसना=(१) ऐसी मुश्किल या दिक्कत में पड़ना जिससे जल्दी छुटकारा न हो सके। (२) जल्दी खतम या तै न होना। खटाई में पड़ना।

दलदला—वि० [हिं० दलदल] [स्त्री० दलदली] जिसमें दलदल हो। दलदलवाला।

दलदार—वि० [हिं० दल+फा० दार] जिसकी परत, दल या तह मोटी हो।

दलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दलित] १ संहार। २ पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। ३ फटकर अलग होने की क्रिया या दशा। पार्थक्य।

वि० संहार या नाश करनेवाला (यौ० के अंत में)।

दलना—क्रि० स० [सं० दलन] १. रगड़ या पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। २ रौंदना। कुचलना। ३. दबाना। मसलना। मींड़ना। ४ चक्की में डालकर अनाज आदि के दानों को दो दालों या कई टुकड़ों में करना। ५ नष्ट करना। ध्वस्त करना। ६ झटके से खंडित करना। तोड़ना।

दलनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० दलना] दलने की क्रिया या ढंग।

दलनीय—वि० [सं०] [स्त्री० दलनीया] दलन करने योग्य।

दलपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. दल का नायक। मुखिया। अगुआ। सरदार। २ सेनापति।

दलबल—संज्ञा पुं० [सं०] लावलश्कर। फौज। सहायकों का जत्था।

दलबादल—संज्ञा पुं० [हिं० दल+बादल] १ बादलों का समूह। २ बहुत अधिक साज सामान या साथी। ३ भारी सेना। ४ बहुत बड़ा शामियाना।

दलमलना—क्रि० स० [हिं० दलना+मलना] १ मसल डालना। मींड़ डालना। उ०—यों दलमलियतु, निरदई, दई, कुसुम सौ गातु। कर धरि देखौ, धरधरा उर कौ अजौं न जातु।—बिहारी०। २ रौंदना। कुचलना। ३. नष्ट करना।

दलवाना—क्रि० स० [हिं० दलना का प्रे० रूप] दलने का काम दूसरे से करवाना।

दलवाल(प)—संज्ञा पुं० [सं० दलपाल] सेनापति।

दलवैया—वि० [हिं०√दल+वैया (प्रत्य०)] १. दलन या नाश करनेवाला। २ दलने या चूर्ण करनेवाला।

दलहन—संज्ञा पुं० [हिं० दाल+अन्न] वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।

दलान—संज्ञा पुं० दे० "दालान"।

दलाल—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा दलाली] १ कुछ धन लेकर दूसरों की चीजों का क्रयविक्रय करानेवाला। वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। मध्यस्थ। २. कुटना।

दलाली—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दलाल का काम। २ क्रयविक्रय कराने के लिये मिलनेवाला धन। दलाल को मिलनेवाला द्रव्य।

दलित—वि० [सं०] [स्त्री० दलिता] १ मसला हुआ। मर्दित। २ दबाया, रौंदा या कुचला हुआ। ३ खंडित। ४ विनष्ट किया हुआ।

दलिया—संज्ञा पुं० [हिं०√दल+इया (प्रत्य०)] दलकर कई टुकड़े किया हुआ अनाज (विशेषत. गेहूँ)।

दली—वि० [सं० दल] १ दलवाला। २. पत्रोंवाला।

दलील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तर्क। युक्ति। २ बहस। वादविवाद।

दलेल—संज्ञा स्त्री० [अं० ड्रिल] सिपाहियों की वह कवायद जो सजा की तरह पर हो।

दवँगरा—संज्ञा पुं० [सं० दव+अंगार ?] वर्षा के आरंभ में होनेवाली झड़ी।

दव—संज्ञा पुं० [सं०] वन। जंगल।

संज्ञा स्त्री० १ वह आग जो वन में आपसे आप लग जाती है। दावाग्नि। दवारि। दावानल। २ अग्नि। आग। उ०—आज अयोध्या जल नहिं अचवौं ना मुख देखौं माई। सूरदास राघव के बिछुरे मरौं भवन दव लाई। —सूर०। उ०—बिधि कैकयी किरातिनि कीन्ही। जेहि दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्हीं। —मानस।

दवन(प)—संज्ञा पुं० [सं० दमन] नाश।

संज्ञा पुं० [सं० दमनक] दौना पौधा।

दवना(प)—संज्ञा पुं० दे० "दौना"।

क्रि० स० [सं० दव] जलना।

दवनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दमन] फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। दँवरी। मिसाई।

दवरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।

दवा—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २ रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३. दुरुस्त करने या ठीक रास्ते पर लाने की तदबीर। ४ मिटाने का उपाय।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १ वनमें लगनेवाली आग। वनाग्नि। उ०—विरह दवा को जरत बुझावा?। जेहिं लागै सो सौंहैं धावा।—पदमावत। २ अग्नि। आग।

दवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "दवा"।

दवाखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जगह जहाँ दवा मिलती हो। २ औषधालय।

दवागिन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।

दवाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन में लगनेवाली आग। दावानल।

दवात—संज्ञा स्त्री० [अ० दावात] लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

दवानल—संज्ञा पुं० [सं०] दवाग्नि।

दवामी—वि० [अ०] जो चिरकाल तक के लिये हो। स्थायी जैसे, दवामी बंदोबस्त।

दवामी बंदोबस्त—संज्ञा पुं० [फा०] जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी मालगुजारी एक ही बार सदा के लिये मुकर्रर हो।

दवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० दवाग्नि] दवाग्नि।

दशकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

दशकंठजहा—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

दशकंधर—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

दशक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस वस्तुओं का समूह। २ सन्, संवत आदि की गणना में दस वर्षों को एक मानकर जोड़ी जानेवाली संख्या। प्रत्येक दस वर्षों की अवधि।

दशगात्र—संज्ञा पुं० [सं०] मृतकसंबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है।

दशग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] दस ग्रीवावाला। रावण।

दशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दाँत। २ कवच।

दशना—वि० स्त्री० [सं०] दशन या दाँतोंवाली।

दशनाम—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों के दस भेद जो ये हैं—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती भारती और पुरी।

दशनामी—संज्ञा पुं० [हिं० दश+नाम] अद्वैतवादी सन्यासियों में शंकराचार्य के शिष्यों का एक वर्ग।

दशनावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दाँतों की पंक्ति।

दशमलव—संज्ञा पुं० [सं०] वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो (गणित)।

दशमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि। २ आश्विन के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि, जिस दिन श्रीराम ने रावण को मारा था। विजयादशमी। ३. ९० वर्ष के ऊपर की अवस्था या आयु।

दशमुख—संज्ञा पुं० [सं०] दस मुखोंवाला। रावण।

दशमूल—संज्ञा पुं० [सं०] दस विशिष्ट औषधीय पेड़ों की छाल या जड़ (वैद्यक)।

दशरथ—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशीय राजा और श्रीरामचंद्र जी के पिता।

दशशीश(पु)—संज्ञा पुं० [सं० दशशीर्ष] दस सिरोंवाला रावण।

दशहरा—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २. क्वार शुक्ला दशमी तिथि या विजया दशमी जिस दिन श्रीराम ने रावण को मारा था।

दशांग—संज्ञा पुं० [सं०] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंध-द्रव्यों के मेल से बनता है।

दशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अवस्था। स्थिति। प्रकार। हालत। २. मनुष्य के जीवन की अवस्था। ३ साहित्य में रस के अंतर्गत विरही की अवस्था। ४ फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत भोगकाल।

दशानन—संज्ञा पुं० [सं०] दस मुँहवाला। रावण।

दशार्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. विंध्य पर्वत के पूर्वदक्षिण में स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३. तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र।

दशार्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धसान नदी जो विंध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।

दशाश्वमेध—संज्ञा पुं० [सं०] १. दस अश्वमेध यज्ञों का क्रम या समवाय। काशी के अंतर्गत एक घाट। २. प्रयाग के अंतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट जहाँ से यात्री जल भरते हैं।

दशार्ह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन यदुवंशी क्षत्रियों के प्रतापी राजा क्रोष्टा के वंशज वृष्णि के पौत्र। महाराज धृष्ट के मझले बेटे।

दशाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. दस दिन। २. मृतक संस्कार का दसवाँ दिन।

दस—वि० [सं० दश] १. जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। नौ और एक। पाँच का दूना। २. कई। बहुत से।

संज्ञा पुं० पाँच की दूनी संख्या।

दसखत‡—संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।

दसन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दशन"।

दसना—क्रि० अ० [हिं० डासना] बिछाया जाना। बिछना। फैलना।

क्रि० स० बिछाना। बिस्तर फैलाना।

संज्ञा पुं० बिछौना। बिस्तर।

दसमाथ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० दस+माथ] दस माथे या मस्तकवाला। रावण।

दसमी—संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी"।

दसवाँ—वि० [हिं० दस] गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला।

संज्ञा पुं० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

दसा—संज्ञा स्त्री० दे० "दशा"।

दसाना‡—क्रि० स० [?] बिछाना।

दसारन—संज्ञा पुं० दे० "दशार्ण"।

दसी—संज्ञा स्त्री० [सं० दशा] १. कपड़े के छोर पर का सूत। छोर। २. थान का आँचल।

दसौंधी—संज्ञा पुं० [सं० दास+बंदी=भाट] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट। उ०—राजा रहा दिष्टि कै औंधी। रहि न सका तब भाँट दसौंधी।—पदमावत।

दस्तंदाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप।

दस्त—संज्ञा पुं० [फा०] १. पतला पायखाना। विरेचन। २. हाथ।

दस्तक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ से खटखट शब्द उत्पन्न करने या खटखटाने की क्रिया। २. बुलाने के लिये दरवाजे की कुंडी खटखटाने की क्रिया। ३. मालगुजारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४ माल आदि ले जाने का परवाना। ५. कर। महसूल।

दस्तकार—संज्ञा पुं० [फा०] हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी।

दस्तकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

दस्तखत—संज्ञा पुं० [फा०] अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।

दस्तगीर—वि० [फा०] [संज्ञा दस्तगीरी] सहायक। मददगार।

दस्तदराज—वि० [फा०] [संज्ञा दस्तदराजी] १. जल्दी मार बैठनेवाला। २ उचक्का। हाथलपक।

दस्तबरदार—वि० [फा०] [संज्ञा दस्तबरदारी] जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले।

दस्तयाब—वि० [फा०] हस्तगत। प्राप्त।

दस्तरखान—संज्ञा पुं० [फा०] वह चादर, जिसपर खाना रखा जाता है (मुसल०)।

दस्ता—संज्ञा पुं० [फा० दस्त] १ वह जो हाथ में आवे या रहे। २ किसी औजार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। ३ फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ४ पुलिस या फौज के सिपाहियों का छोटा दल या टोली। गारद।। ५. किसी वस्तु का उतना गट्ठा या पूला जितना हाथ में आ सके। ६ कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।

दस्ताना—संज्ञा पुं० [फा० दस्तान.] पंजे और हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा। हस्तावरण।

दस्तावर—वि० [फा०] जिससे दस्त आवे। विरेचक।

दस्तावेज—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह कागज जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बातें उनके हस्ताक्षर के सहित लिखी हों। व्यवहार संबंधी लेख।

दस्ती—वि० [फा० दस्त=हाथ] १ हाथ का। जो हाथ से ले जाया जाय या भेजा जाय, जैसे, दस्ती चिट्ठी।

संज्ञा स्त्री० १ हाथ में लेकर चलने की बत्ती। मशाल। २ छोटी मूठ। छोटा बेंट। ३. छोटा कलमदान। ४ हाथ का रूमाल।

दस्तूर—संज्ञा पुं० [फा०] १ रीत। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। उ०—मुग्धा दुहुँ बयसंधि मिलि मध्या जोवन पूर। प्रौढ़ा सिगरी जानई प्रीतिभाव दस्तूर।—रससारांश। २ नियम। कायदा। विधि। ३ पारसियों का पुरोहित जो उनका कर्मकांड कराता है।

दस्तूरी—संज्ञा स्त्री० [फा० दस्तूर] वह द्रव्य जो धनिकों के नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक के तौर पर पाते हैं।

दस्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १. लुटेरा। डाकू। २. चोर। ३ असुर। ४. अनार्य। म्लेच्छ। ५ दास।

दस्युज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दस्युजा] दस्यु की संतान। नीच।

दस्युता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लुटेरापन। डकैती। २ चोरी। ३.दुष्टता। क्रूर स्वभाव।

दस्युवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डकैती। लुटेरापन। २. चोरी।

दह—संज्ञा पुं० [सं० ह्रद] १ नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो। पाल। उ०—लै वसुदेव धँसे दह सामुहिं तिहूँ लोक उजियारे हो।—सूर०। २ कुंड। हौज।

संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] ज्वाला। लपट।

दहक—संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] १ आग दहकने की क्रिया। धधक। दाह। २ ज्वाला। लपट।

दहकना—क्रि० अ० [सं० दहन] १ लौ के साथ जलना। धधकना। भड़कना। २ शरीर का गरम होना। तपना।

दहकान—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दहकानी, भाव० दहकानियत] गँवार। देहाती।

दहकाना—क्रि० स० [हिं० दहकना का स० रूप] १ ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे। २. धधकाना। ३ भड़काना। क्रोध दिलाना।

दहकानी—वि० [फा०] देहाती। गँवार।

दहड़ दहड़—क्रि० वि० [सं० दहन या अनु०] लपट फेंकते हुए। धायँ धायँ।

दहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दहनीय, दह्यमान] १ जलने की क्रिया या भाव। दाह। २ अग्नि। आग। ३ कृत्तिका नक्षत्र। ४ तीन की संख्या। ५. एक रुद्र।

दहना—क्रि० अ० [सं० दहन] १ जलना। बलना। भस्म होना। २. क्रोध से संतप्त होना। कुढ़ना।

क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। कुढ़ाना।

क्रि० अ० [हिं० दह] धँसना। नीचे बैठना।

वि० दे० "दहिना"।

दहनि†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दहना] जलने की क्रिया। जलन।

दहपट—वि० [फा० दह=दस+हिं० पट=समतल] १ ढाया हुआ। ध्वस्त। चौपट। नष्ट। उ०—सूरदास प्रभु रघुपति आए दहपट भइ लंका।—सूर०। २ रौंदा हुआ। कुचला हुआ। दलित।

दहपटना—क्रि० स० [हिं० दहपट] १. ध्वस्त करना। चौपट करना। नष्ट करना। २. रौंदना। कुचलना।

दहर—संज्ञा पुं० [सं० ह्रद] १ नदी में गहरा स्थान। दह। उ०—अति अजगरी करत मोहन फटकि गेंडुरी दहर।—सूर०। २ कुंड। हौज।

दहरना(पु)—क्रि० अ० दे० "दहलना"।

क्रि० स० दे० "दहलाना"। उ०—सूर प्रभु आय गोकुल प्रगट भए संतन दै हरख, दुष्ट जन मन दहर के।—सूर०।

दहरौरा—संज्ञा पुं० [हिं० दही+बड़ा] १. दही में पड़ा हुआ बड़ा। २. एक प्रकार का गुलगुला।

दहल—संज्ञा स्त्री० [हिं० दहलना] डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया। अत्यंत भीत होना।

दहलना—क्रि० अ० [सं० दर=डर+हिं० हिलना] १ डर से एकबारगी काँप उठना। भय से स्तंभित होना। २ हिलना। काँपना (दीवार, मकान, जंगल आदि का)।

दहला—संज्ञा पुं० [फा० दह=दस] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।

†संज्ञा पुं० [सं० थल] थाला। थाँवला।

दहलाना—क्रि० स० [हिं० दहलना का स० रूप] डर से कँपाना। भयभीत करना।

दहलीज—संज्ञा स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट की नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

दहशत—संज्ञा स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहा—संज्ञा पुं० [फा० दह] १ मुहर्रम का महीना। २ मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३ ताजिया।

दहाई—संज्ञा स्त्री० [फा० दह=दस, मि० सं० दश] १ दस का मान या भाव। २ अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिसपर लिखा अंक दसगुना माना जाता है, जैसे, २५ में २ का मान २० है।

दहाड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. शेर आदि की गरज। २ जोर से चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्तनाद। ३ युद्ध आदि में वीरों का गर्जन या ललकार।

मुहा०—दहाड़ मारना, या दहाड़ मारकर रोना=चिल्ला चिल्लाकर रोना।

दहाड़ना—क्रि० अ० [अनु०] १ शेर आदि का घोर शब्द करना। गरजना। २ चिल्लाकर रोना। ३ युद्ध आदि में वीरों का गरजना या ललकारना।

दहाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ चौड़ा मुँह। द्वार। २ वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३. मोरी।

क्रि० अ० १ हिसाब लगाना। २ अंदाज करना। अनुमान करना।

दहिना—वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री०+ दाहिनी] शरीर के दो पार्श्वों में से वह पार्श्व जो उत्तरमुख होने पर पूर्व की ओर रहता है और जिसमें प्राय अधिक बल होता है। बायाँ का उलटा। अपसव्य।

दहिनावर्त्त—वि० दे० "दक्षिणावर्त"।

दहिने—क्रि० वि० [हिं० दहिना] दहिनी ओर को।

यौ०—दहिने होना=अनुकूल होना। प्रसन्न होना। दहिने बाएँ=इधर उधर। दोनों ओर।

दही—संज्ञा पुं० [सं० दधि] खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

मुहा०—दही दही करना=किसी चीज को मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना।

दहुⓅ—अव्य० [सं० अथवा] १. अथवा। या। किंवा। २ स्यात्। कदाचित्।

दहेंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दही+हंडी] दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज—संज्ञा पुं० [अ० जहेज] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्यापक्ष की ओर से वरपक्ष को दिया जाता है। दायजा। यौतुक।

दहेला—वि० [हिं० √दह+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २. संतप्त। दुखी।

वि० [हिं० दहलना] [स्त्री० दहेली] भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।

दह्योⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दही"।

दाँ—संज्ञा पुं० [सं० दाच् (प्रत्य०)] जैसे, एक दाँ। दफा। बार। बारी।

संज्ञा पुं० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला। जानकार।

दाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० द्रांक्ष] दहाड़। गरज।

दाँकनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० दाँक] गरजना। दहाड़ना।

दाँग—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छः रत्ती की तौल। २ दिशा। तरफ। ओर।

संज्ञा पुं० [हिं० डंका] नगाड़ा। डंका।

संज्ञा पुं० [हिं० डूँगर] टीला। छोटी पहाड़ी।

दाँजा—संज्ञा स्त्री० [?] बराबरी। समता। जोड़। तुलना।

दाँडना—क्रि० स० [सं० दंड] १ दंड या सजा देना। २ जुरमाना करना।

दाँत—संज्ञा पुं० [सं० दंत] १ अंकुर के रूप में निकली हुई हड्डी जो जीवों के मुँह, तालू, गले या पेट में होती है और आहार चबाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, जमीन खोदने इत्यादि के काम में आती है। दंत। रद। दशन।

मुहा०—दाँतों उँगली काटना=दे० "दाँत तले उँगली दबाना"। दाँत काटी रोटी=अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। गहरी दोस्ती। दाँत खट्टे करना=(१) खूब हैरान करना। (२) प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में परास्त करना। पस्त करना। दाँत चबाना=क्रोध से दाँत पीसना। कोप प्रकट करना। उ०—दाँत चबात चले मधुपुर तें धाम हमारे को।—सूर०। दाँत तले उँगली दबाना=(१) अचरज में आना। चकित होना। दंग रहना। (२) खेद प्रकट करना। अफसोस करना। दाँत तोड़ना=परास्त करना। हैरान करना। दाँत पीसना=(क्रोध में) दाँत पर दाँत रखकर हिलाना। दाँत किटकिटाना या दाँत बजना=सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना और शब्द होना। दाँत बैठ जाना=दाँत की ऊपर नीचेवाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। दाँतों पसीना आना=कठिन परिश्रम पड़ना। दाँतों में तिनका लेना=दया के लिये बहुत विनती करना। हा हा खाना। (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना=(१) लेने की गहरी चाह रखना। (२) बैर लेने का विचार रखना। (३) अवसर की प्रतीक्षा या ताक में रहना। (किसी के) तालू में दाँत जमना=बुरे दिन आना। शामत आना।

२ दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दंदाना। दाँता।

दांत—वि० [सं०] १ दबाया हुआ। दमन किया हुआ।

२ इंद्रियों को जीत चुका हुआ। जितेंद्रिय। निगृहीत। संयमी। ३. दाँत का। दाँत संबंधी। ४. दाँतों से बना हुआ।

दाँता—संज्ञा पुं० [हिं० दाँत] दाँत के आकार का कँगूरा। रवा। दंदाना।

दाँताकिटकिट—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत+ किटकिट (अनु०)] १ कहासुनी। झगड़ा। २. गालीगलौज।

दांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रियनिग्रह। इंद्रियों का दमन। २ अधीनता। ३. विनय। नम्रता।

दाँती—संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] १ हँसिया जिससे घास या फसल काटते हैं। २ काली मिड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। २ दो पहाड़ के बीच की सँकरी जगह। दर्रा।

दाँना—क्रि० स० [सं० दमन] पकी फसल के डंठलों को बैलों से दाना अलग करने के लिये रौंदवाना।

दांपत्य—वि० [सं०] पतिपत्नी संबंधी। स्त्रीपुरुष का सा।

संज्ञा पुं० स्त्रीपुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।

दांभिक—वि० [सं०] १ पाखंडी। आडंबर रचनेवाला। धोखेबाज। २ अहंकारी। घमंडी।

दाँय—संज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।

दाँव—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

दाँवनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] दामिनी नाम का सिर का गहना।

दाँवरी—संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। डोरी।

संज्ञा स्त्री० [सं० दव] दावाग्नि। विरहाग्नि। उ०—भाँवरी दै गयो रावरी पौरि में भावतो भोर तें केतिक दाँव री। दाँवरी पै न मिटै उर की बिनु तेरे मिले करै कोटि उपाव री।—रससाराश।

दाइ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।

दाइज, दाइजा—संज्ञा पुं० दे० "दायजा"।

दाई—वि० स्त्री० [हिं० दायाँ] दाहिनी।

संज्ञा स्त्री० [सं० दाच् (प्रत्य०), हिं० दाँ (प्रत्य०)] बारी। दफा। बार। उ०—तब नहिं जानेहु पीर पराई। अब कस रोवहु आपनि दाई।—विश्रामसागर।

दाई—संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री, मि० फा० दाय] दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। २ बच्चे की देखरेख रखनेवाली दासी। ३. बच्चा जनानेवाली स्त्री।

मुहा०—दाई से पेट छिपाना=जाननेवाले से कोई बात छिपाना।

(पु)वि० दे० "दायी"।

दाउँ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

दाउ—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

दाऊ—संज्ञा पुं० [सं० तात] १ बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई बलदेव। ३ पिता।

दाऊदखानी—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का चावल। २ उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ। दाऊदी गेहूँ।

दाऊदी—संज्ञा पुं० [अ० दाऊद] एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।

दाएँ—क्रि० वि० [हिं० दायाँ] दाहिनी ओर को।

मुहा०—दाएँ होना=अनुकूल या प्रसन्न होना।

दाक्षायण—वि० [सं०] १ दक्ष से उत्पन्न। २ दक्ष का। दक्ष संबंधी।

दाक्षायणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दक्ष की कन्या। २ अश्विनी आदि नक्षत्र। ३ दुर्गा। ४ कश्यप की स्त्री, अदिति।

दाक्षिणात्य—वि० [सं०] दक्खिनी। दक्षिण का।

संज्ञा पुं० १ भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण में पड़ता है। २. दक्षिण देश का निवासी।

दाक्षिण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुकूलता। प्रसन्नता। २. कुशलता। निपुणता। ३ उदारता। ४ शिष्टता। सुशीलता। ५. दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ६ नाटक में वाक्य या चेष्टा द्वारा किसी उदासीन या अप्रसन्न चित्त को प्रसन्न करना।

वि० १. दक्षिण का। दक्षिण संबंधी। २ दक्षिणा संबंधी।

दाख—संज्ञा स्त्री० [सं० द्राक्षा] १ अंगूर। २ मुनक्का। ३ किशमिश।

दाखिल—वि० [फा०] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ।

मुहा०—दाखिल करना=भर देना। जमा करना।

२. शरीक। मिला हुआ। ३. पहुँचा हुआ।

दाखिल खारिज—संज्ञा पुं० [फा०] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उसपर दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिल दफ्तर—वि० [फा०] दफ्तर में इस प्रकार रखा हुआ (कागज) जिसपर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला—संज्ञा पुं० [फा०] १ प्रवेश। पैठ। प्रविष्टि। भरती। २ संस्था आदि में प्रविष्ट या सम्मिलित किए जाने का कार्य।

दाग—संज्ञा पुं० [सं० दग्ध] १ जलाने का काम। दाह। २. मुर्दा जलाने की क्रिया।

मुहा०—दाग देना=मुरदे का अग्नि-संस्कार आदि क्रियाकर्म करना।

३ जलन। दाह। उ०—उर मानिक की उरबसी डटत घटतु दृग-दागु। छलकतु बाहिर भरि मनौ तिय हिय कौ अनुरागु।—बिहारी०। ४ जलन का चिह्न।

संज्ञा पुं० [फा० दाग] [वि० दागी] १. धब्बा। चित्ती।

मुहा०—सफेद दाग=एक प्रकार का कोढ़ जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। श्वेतकुष्ठ। चरक। फूल।

२ निशान। चिह्न। अंक। ३ फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ४ जलने का चिह्न। ५ कलंक। ऐब। दोष। लांछन।

दागदार—वि० [फा०] जिसपर दाग या धब्बा लगा हो।

दागना—क्रि० स० [फा० दाग से हिं० ना० धा०] १ जलाना। दग्ध करना। २ तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३ धातु के तपे हुए साँचे को छुलाकर अंग पर उसका चिह्न डालना। तप्त मुद्रा से अंकित करना। ४ फोड़े आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना जिससे वह जल या सूख जाय। ५. भरी हुई बंदूक में बत्ती देना। तोप, बंदूक आदि छोड़ना। ६ मृतक के निमित्त मौत के बारहवें दिन किसी साँड़ को दागकर स्वच्छंद घूमने के लिये छोड़ देना। वृषोत्सर्ग करना (कर्मकांड)।

क्रि० स० [फा० दाग] रंग आदि से चिह्न या दाग लगाना। अंकित करना। उ०—कबहुँक बैठि अंश भुज धरिकै पीक कपोलनि दागे।—सूर०।

दागबेल—संज्ञा स्त्री० [फा० दाग+हिं० बेलि] भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाए हुए चिह्न जो सड़क बनाने, नींव खोदने आदि के लिये डाले जाते हैं।

दागी—वि० [फा० दाग] १ जिसपर दाग या धब्बा हो। २. जिसपर सड़ने का चिह्न हो। ३ कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४ जिसको सजा मिल चुकी हो।

दाघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ताप। उ०—कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग, बाघ। जगतु तपोबन सौ कियो दीरघ दाघ निदाघ।—बिहारी०। २. दाह। जलन।

दाजन(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दाझन"।

दाजना(पु)—क्रि० अ० [सं० दग्ध या दाहन] १ जलना। २. ईर्ष्या करना। डाह करना।

क्रि० स० जलाना।

दाझणाँ—क्रि० अ० दे० "दाझना"। उ०—कै बिरहणि कूँ मींच दे, कै आपा दिखलाइ। आठ पहर का दाझणाँ, मौपै सह्या न जाइ।—कबीर०।

दाझन(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] जलन।

दाझना(पु)—क्रि० अ० [सं० दाहन] जलना। संतप्त होना।

क्रि० स० जलाना।

दाटना(पु)—क्रि० स० दे० "डाँटना"।

दाड़िम—संज्ञा पुं० [सं०] अनार।

दाढ़—संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा या दाढ़क] जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत। चौभड़। चौमर।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. भीषण शब्द। गरज। दहाड़। २ चिल्लाहट।

मुहा०—दाद मारकर रोना = खूब चिल्लाकर रोना।

दादनाⓅ—क्रि० स० [सं० दाहन] १ जलाना। आग में भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःखी करना।

दाढ़ा†—संज्ञा पुं० दे० "दाद"।

संज्ञा पुं० [सं० दह या हिं० दाढ़] १. वन की आग। दावानल। २ आग। अग्नि। ३. दाह। जलन।

दाढ़ी—संज्ञा स्त्री० [दाढिका] १ चिबुक। २ ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। श्मश्रु। दे० "डाढ़ी"।

दाढ़ीजार—संज्ञा पुं० [हिं० दाढ़ी+जारना] एक गाली, जिसे स्त्रियाँ कुपित होने पर पुरुषों को देती हैं। उ०—अनेक बार मैं कही बुझायहू बिभीषण। न मानि दादिजार को कुठार वंश तीक्ष्णं।—विश्रामसागर।

दातⓅ—संज्ञा पुं० [सं० दातव्य] दान।

संज्ञा पुं० दे० "दाँता"।

दातव्य—वि० [सं०] देने योग्य।

संज्ञा पुं० १ देने का काम। दान। २ दानशीलता। उदारता।

दाता—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो दान दे। दानशील। २. देनेवाला।

दातार—संज्ञा पुं० [सं० दाता का बहु० दातार] दाता। देनेवाला।

दातीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] देनेवाली। उ०—पलित केश कफ कंठ विरोध्यो कल न परै दिन राती। माया मोह न छाँडै तृष्णा ए दोऊ दुखदाती।—सूर०।

दातुन—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दातुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दातृत्व"।

दातृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दानशीलता। देने की प्रवृत्ति।

दातौन—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दात्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १. पपीहा। चातक। २ मेघ। बादल।

दात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० [सं०] हँसिया। दाँती।

दाद—संज्ञा पुं० [सं० दद्रु] एक चर्मरोग जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बहुत खुजली होती है। दिनाई।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ इंसाफ। न्याय। २. प्रोत्साहन। ३ प्रशंसा। शाबाशी।

मुहा०—दाद चाहना = किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना = (१) न्याय करना। (२) प्रशंसा करना। सराहना।

दादनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह रकम जिसे चुकाना हो। २ वह रकम जो किसी काम के लिये पेशगी दी जाय। अगता।

दादरा—संज्ञा पुं० [?] १ एक प्रकार का चलता गाना। २ दो अर्द्धमात्राओं का एक ताल।

दादा—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० दादी] १ पितामह। पिता का पिता। आजा। २ बड़ा भाई। ३ बड़े बूढ़ों के लिये आदर-सूचक शब्द।

अव्य० भय, आश्चय या संतोषसूचक शब्द।

दादिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [फा० दाद] न्याय। इंसाफ।

दादी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दादा] पिता की माता। पितामह की स्त्री।

संज्ञा पुं० [फा० दाद] दाद चाहनेवाला। न्याय का प्रार्थी। फरयादी।

दादुⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० दद्रु] दाद। दिनाई।

दादुरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० दर्दुर] मेढक।

दादू†—संज्ञा पुं० [अनु० दादा] १ दादा के लिये संबोधन या प्यार का शब्द। २ 'भाई' आदि के समान एक साधारण संबोधन। ३ बड़ों द्वारा प्रयुक्त छोटों के लिये प्रेमसूचक शब्द। ४ अकबर के शासन-काल में अहमदाबाद में पैदा हुए एक संत जो जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनके नाम पर दादू पंथ चला।

दादूदयाल—संज्ञा पुं० दे० "दादू"।

दादूपंथी—संज्ञा पुं० [हिं० दादू+पंथी] दादूदयाल के पंथ का अनुयायी।

दाधⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] जलन। दाह।

दाधनाⓅ—क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना। भस्म करना।

दान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देने का कार्य। २ धर्मार्थ श्रद्धावश या दयापूर्वक दूसरे को धन देने का कार्य। खैरात। ३ वह वस्तु जो दान में दी जाय। ४ कर। महसूल। चुंगी। उ०—तुम समरथ की बाम कहा काहू को करिहौ। चोरी जाति बेंचि-दान सब दिन को भरिहौ।—सूर०। ५. (राजनीति) कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध कार्य साधन की नीति। ६ हाथी का मद। उ०—वक्रतुंड कुंडलित सुंड नगवलित पांडुरद। अलिघुमड-मडलित दानमहित सुगंधमद।—रससारांश। ७. छेदन। ८. शुद्धि।

दानधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] दान देने का धर्म। दानपुण्य।

दानपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।

दानपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो दान पाने के उपयुक्त हो।

दानलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २ वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दानवी] कश्यप के 'दनु' नाम की पत्नी से उत्पन्न पुत्र। असुर। राक्षस।

दानवारि—संज्ञा पुं० [सं० दान+वारि] हाथी का मद।

दानवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दानव की स्त्री। २ दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

वि० [सं० दानवीय] दानवों का। दानव संबंधी।

दानवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दान देने से न हटे। अत्यंत दानी।

दानवेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] राजा बलि।

दानशील—वि० [सं०] [संज्ञा दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।

दाना—संज्ञा पुं० [फा० दान] १ अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। कन।

मुहा०—दाने दाने को तरसना = भोजन के लिये कुछ न पाना। दाने दाने को मुहताज = अत्यंत दरिद्र।

२ अनाज। अन्न। ३ सूखा भुना हुआ अन्न। चबेना। चर्वण। ४. कोई छोटा बीज जो बाल, फली या गुच्छे में लगे। ५ फल या उसका बीज। ६. कोई छोटी गोल वस्तु, जैसे—मोती का दाना। घुँघरू का दाना। ७ माला की गुरिया। मनका। अदद। ८ रवा। कण। कणिका। ९ किसी सतह पर के छोटे छोटे उभार जो टटोलने से अलग अलग मालूम हों। १०. छोटी गोल वस्तुओं के लिये संख्या के स्थान पर आनेवाला शब्द।

वि० [फा० दाना] बुद्धिमान्। अक्लमंद। उ०—प्यारी तेरे दंतन अनारी-दाना कहि कहि, दाना ह्वैके कवि क्यों अनारी कहवाइहैं।—शृंगार०।

दानाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] अक्लमदी। बुद्धिमानी।

दानाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करनेवाला सबसे बड़ा कर्मचारी।

दानापानी—संज्ञा पुं० [फा० दाना+हिं० पानी] १ खानपान। अन्नजल।

मुहा०—दानापानी छोड़ना=अन्न-जल ग्रहण न करना। उपवास करना।

२ भरणपोषण का आयोजन। जीविका। ३. रहने का संयोग।

दानी—वि० [सं० दानिन्] [स्त्री० दानिनी] जो दान करे। उदार।

संज्ञा पुं० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता।

संज्ञा पुं० [सं० दानीय] १. कर संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहनेवाला। २ दान लेनेवाला।

दानेदार—वि० [फा०] जिसमें दाने या रवे हों। रवादार।

दानौⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दानव"।

दाप—संज्ञा पुं० [सं० दर्प, प्रा० दप्प] १ अहंकार। घमंड। अभिमान। २ शक्ति। बल। जोर। ३. उत्साह। उमंग। ४ रोब। दबदबा। आतंक। ५. क्रोध। ६. जलन। ताप। उ०—दियो क्रोध करि शिवहि सराप। वरी कृपा जु मिटै यह दाप। —सूर०।

दापक—संज्ञा पुं० [सं० दर्पक] दबानेवाला।

दापनाⓅ—क्रि० स० [हिं० दाप] १. दबाना। २ मना करना। रोकना।

दाब—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाप] १ दबने या दबाने का भाव। २ किसी वस्तु का वह जोर जो नीचे की वस्तु पर पड़े। भार। बोझ। ३ आतंक। रोब। आधिपत्य। शासन।

दाबदार—वि० [हिं० दाब+फा० दार] आतंक रखनेवाला। रोबदार।

दाबना—क्रि० स० दे० "दबाना"।

दाबा—संज्ञा पुं० [हिं० दाबना] कलम लगाने के लिये पौधे की टहनी मिट्टी में गाड़ना।

दाभ—संज्ञा पुं० [सं० दर्भ] कुश। डाभ।

दाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ रस्सी। रज्जु। २ माला। हार। लड़ी। उ०—कहुँ क्रीड़त कहुँ दाम बनावत कहूँ करत शृंगार। —सूर०। ३. समूह। राशि। ४. लोक। विश्व।

संज्ञा पुं० [फा० मिलाओ सं०] जाल। फंदा। पाश। उ०—लोचन चोर बाँधि श्याम। जात ही उन तुरत पकरे कुटिल ललकनि दाम। —सूर०।

संज्ञा पुं० [हिं० दमड़ी] १ पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग।

मुहा०—दाम दाम भर देना=कौड़ी कौड़ी चुका देना। कुछ (ऋण) बाकी न रखना।

२. वह धन जो किसी वस्तु के बदले में बेचनेवाले को दिया जाय। मूल्य। कीमत।

मुहा०—दाम खड़ा करना=कीमत वसूल करना। दाम चुकाना=(१) मूल्य दे देना। (२) कीमत ठहराना। मोलभाव तै करना। दाम भरना=नुकसानी देना। डाँड़ देना।

३ धन। रुपयापैसा। ४ सिक्का। रुपया।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अंधेर करना।

५ राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं। दाननीति।

दामन—संज्ञा पुं० [फा०] १. अंगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। २ पहाड़ों के नीचे की भूमि।

दामनगीर—वि० [फा०] १ दामन या पल्ला पकड़नेवाला। पीछे पड़नेवाला। उ०—आपनो पिंड पोषिबे कारण कोटि सहस जिय मारे। इन पापिन ते क्यों उबरोगे दामनगीर तिहारे?—सूर०। २ दावादार।

दामरी—संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।

दामाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दावा] दावानल।

दामाद—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० जामातृ] पुत्री का पति। जँवाई। जामाता।

दामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत। २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। बेंदी। बिंदिया। दावँनी।

दामी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाम] कर। मालगुजारी।

वि० मूल्यवान्। कीमती।

दामोदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २ विष्णु। ३ एक जैन तीर्थंकर।

दायँⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

संज्ञा स्त्री० [?] बराबरी। दे० "दाँज"।

दाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को देने के लिये हो। २ दायजे, दान आदि में दिया जानेवाला धन। ३. वह पैतृक या संबंधी का धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। ४ हक। हिस्सा। भाग। अंश। ५. दान।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "दाव"।

दायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता।

दायज, दायजा—संज्ञा पुं० [सं० दाय] वह धन जो विवाह में वरपक्ष को दिया जाय। यौतुक। दहेज। उ०—कहुँ सुत ब्याह कहूँ कन्या को देत दायजो राई। —सूर०।

दायभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पैतृक धन का विभाग। २ बापदादे या संबंधी की संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या संबंधियों में बाँटे जाने की स्मृतियों और धर्मशास्त्रों में वर्णित व्यवस्था जो हिंदू धर्मशास्त्र का एक प्रधान विषय है। याज्ञवल्क्य और मनु के द्वारा उपदिष्ट दो मुख्य स्मृतियों के आधार पर इसके दो प्रधान भेद या रूप हैं—मिताक्षरा और दायभाग।

दायम—क्रि० वि० [अ०] सदा। हमेशा।

दायमी—वि० [अ०] सदा बना रहनेवाला। स्थायी।

दायमुलहब्स—संज्ञा पुं० [अ०] जीवन भर के लिये कैद। कालेपानी की सजा।

दायर—वि० [फा०] १ फिरता या चलता हुआ। २ चलता। जारी। ३ उपस्थित।

मुहा०—दायर करना=मामले, मुकदमे वगैरह को चलाने के लिये पेश करना।

दायरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २ वृत्त। ३ कक्षा।

दायाँ—वि० [हिं० दाहिना] पूरब की ओर मुख करके खड़े होने पर शरीर का वह आधा भाग जो दक्षिण की ओर हो।

शरीर का वह अंग जो प्राय अधिक प्रयुक्त और वलवान् होता है। दाहिना।

दायाⓟ†—संज्ञा स्त्री० दे० "दया"।

सज्ञा स्त्री० [फा०] दाई।

दायाद—वि० [सं०] [स्त्री० दायादा] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे किसी की जायदाद में हिस्सा मिले।

सज्ञा पुं० १. वह जिसका सवध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २ पुत्र पौत्र आदि। ३ सपिंड। कुटुवी।

दायित्व—सज्ञा पुं० [सं०] १. देनदार होने का भाव। २ जिम्मेदारी। जवाबदेही।

दायी—वि० [स० दायिन्] [स्त्री० दायिनी] देनेवाला, जैसे—सुखदायी। वरदायी।

दार—सज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या।

ⓟसज्ञा पुं० दे० "दारू"।

प्रत्य० [फा०] रखनेवाला।

दारक—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दारिका] १ बच्चा। लड़का। २. पुत्र। बेटा।

दारकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] किसी को पत्नी बनाने की क्रिया। विवाह।

दारचीनी—सज्ञा स्त्री० [सं० दारु+चीन (देश०)] १ एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है। २ इस पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

दारण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० दारित] १ चीरने फाड़ने का काम। चीरफाड़। २ चीरने फाड़ने का औजार। ३ फोड़ा आदि चीरने का काम।

दारनाⓟ—क्रि० स० [सं० दारण] १ फाड़ना। विदीर्ण करना। २ नष्ट करना।

दारपरिग्रह—सज्ञा पुं० [सं०] किसी को पत्नी के रूप में स्वीकार करने का काम। विवाह।

दारमदार—सज्ञा पुं० [फा०] १ आश्रय। ठहराव। सहारा। २ किसी कार्य का किसी पर अवलंबित रहना।

दारा—सज्ञा स्त्री० [सं० दारा के आधार पर] पत्नी। भार्या। पाणिगृहीता।

दारिⓟ†—सज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।

दारिउँ ⓟ—सज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

दारिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालिका। कन्या। २ बेटी। पुत्री। उ०—ए दारिका परिचारिका करि पालिबी करुनामई।—मानस।

दारिगहⓟ—सज्ञा पुं० दे० "दरगाह"।

दारिदⓟ—सज्ञा पुं० [स० दारिद्र्य] दरिद्रता। अकिंचनता।

दारिद्रⓟ—सज्ञा पुं० दे० "दारिद्र्य"।

दारिद्र्य—सज्ञा पु० [स०] दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी। मुफलिसी।

दारिमⓟ—सज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

दारी—संज्ञा स्त्री० [स०] पैर के तलवों का एक रोग जिसमें चमड़ा कड़ा होकर जगह जगह फट जाता है और खून फेंकता है। बेवाई। खरुआ।

सज्ञा स्त्री० [सं० दारिका] वह लौंडी जो लड़ाई में जीतकर लाई गई हो। दासी।

दारीजार—सज्ञा पुं० [हिं० दारी+सं० जार] १ लौंडी का पति (गाली)। २ दासीपुत्र। गुलाम।

दारु—सज्ञा पुं० [स०] १. काठ। लकड़ी। २. देवदार। ३. बढ़ई। ४ कारीगर।

दारुक—सज्ञा पुं० [स०] १ देवदारु। २ श्रीकृष्ण के सारथी का नाम।

दारुजोषितⓟ—सज्ञा स्त्री० दे० "दारु योषित"।

दारुण—वि० [सं०] १ भयकर। भीषण। घोर। २ कठिन। प्रचड। विकट।

सज्ञा पुं० १ चीते का पेड़। २ भयानक रस। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ एक नरक का नाम। उ०—अठवाँ दारुण नरक है जेहि देखत भय होय।—विश्रामसागर। ६ राक्षस।

दारुनⓟ—वि० दे० "दारुण"।

दारुपुत्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] कठपुतली।

दारुयोषित—सज्ञा स्त्री० [सं०] कठपुतली।

दारुसार—सज्ञा पुं० [सं०] चदन।

दारुहलदी—सज्ञा स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] आल की जाति का एक सदाबहार झाड़ जिसकी जड़ और डठल दवा के काम में आते हैं।

दारू—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दवा। औषध। २ मद्य। शराब। ३ बारूद।

दारौंⓟ—सज्ञा पुं० दे० "दारयो"।

दारोगा—सज्ञा पुं० [फा०] १. प्रबंध या निगरानी करनेवाला अधिकारी, जैसे, दारोगा जेल, दारोगा चुगी, दारोगा जगल आदि। २ पुलिस का वह अफसर जो किसी थाने का अधिकारी हो। थानेदार।

दार्‌योⓟ—सज्ञा पुं० [सं० दाड़िम] अनार।

दार्व—सज्ञा पुं० [स०] आधुनिक काश्मीर का एक प्राचीन हिस्सा।

दार्शनिक—वि० [सं०] १. दर्शन जाननेवाला। तत्वज्ञानी। २ दर्शनशास्त्र सबधी।

दाल—सज्ञा स्त्री० [सं० दालि] १ दली हुई अरहर, मूँग, चना, मटर, उड़द आदि जिसे सालन की तरह खाते हैं। २ मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ दला अन्न जो रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना = (किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल दलिया = रूखा-सूखा भोजन। गरीबों का सा खाना। दाल में कुछ काला होना = कुछ खटके या सदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दालरोटी = सादा खाना। सामान्य भोजन। दालरोटी चलना = जीविका निर्वाह होना। जूतियों दाल बँटना = आपस में खूब लड़ाई झगड़ा होना।

३ दाल के आकार की कोई वस्तु। ४ चेचक, फोड़े, फुसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरड।

दालचीनी—सज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।

दालमोठ—सज्ञा स्त्री० [हिं० दाल+मोठ = एक कदन्न] घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल।

दालान—सज्ञा पुं० [फा०] मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो। बरामदा।

दालिद—सज्ञा पु० दे० "दारिद्र्य"। उ०—राम जपत दालिद भला, टूटी घर की छाँनि। ऊँचे मदिर जालि दे, जहाँ भगति न सारंगपानि।—कबीर०।

दालिम—सज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

दावँ—सज्ञा पुं० [सं० प्रत्य० दा (दाच्), जैसे एकदा] १ बार। दफा। मरतबा। २. किसी बात का समय जो कई आदमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से आवे। बारी। पारी। ३ उपयुक्त समय। अनुकूल सयोग। अवसर। मौका।

मुहा०—दावँ करना = घात लगाना। दावँ चूकना = अवसर को हाथ से जाने देना। घात में बैठना। दावँ लगना = अनु-

कूल संयोग मिलना। मौका मिलना। दाँव लेना = बदला लेना।

४. कार्यसाधन की युक्ति। उपाय। चाल।

मुहा०—दाँव पर चढ़ना = इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले।

५ कुश्ती या लड़ाई जीतने के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेच। बंद। ६ कार्यसाधन की कुटिल युक्ति। छल। कपट। ७ खेल में प्रत्येक खिलाड़ी के खेलने का समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी। चाल।

मुहा०—दाँव पर रखना या लगाना = रुपया पैसा या कोई वस्तु बाजी पर लगाना।

८ पासे, जुए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो।

मुहा०—दाँव देना = खेल में हारने पर नियत दंड भोगना या परिश्रम करना। (लड़कों का खेल)।

†९. स्थान। ठौर। जगह।

दावँना—क्रि० स० [सं० दमन] दाना और भूसा अलग करने के लिये कटी हुई फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

दावँनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। बेंदी।

दावँरी—संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।

दाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन। जंगल। २ वन की आग। ३ आग। अग्नि। ४ जलन। ताप।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हथियार।

दावत—संज्ञा स्त्री० [अ० दअवत] १. ज्योनार। भोज। २ खाने का बुलावा। निमंत्रण। ३. सामाजिक भोज। सहभोज।

दावन—संज्ञा पुं० [सं० दमन] १ दमन। नाश। उ०—जातुधान दावन, परावन को दुर्ग भयो, महामीनबास तिमितोमनि को थल भो।—हनु०। २. हँसिया। ३ एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखड़ी।

दावना—क्रि० स० दे० "दावँना"।

क्रि० स० [हिं० दावन] दमन करना।

दावनी—संज्ञा स्त्री० दे० "दावँनी"।

दावा—संज्ञा स्त्री० [सं० दाव] वन में लगनेवाली आग जो पेड़ों की डालियों के एक दूसरी से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है।

संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य। किसी चीज पर स्वत्व या अधिकार प्रकाशन। २. स्वत्व। हक। अधिकार। ३. किसी जायदाद या रुपए पैसे के लिये चलाया हुआ मुकदमा। ४ नालिश। अभियोग। ५ जोर। दबाव। ६ कोई बात कहने में वह साहस जो उसकी यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। दृढ़ता। ७. दृढ़तापूर्वक कथन।

दावागीर—संज्ञा पुं० [अ० दावा+फा० गीर] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

दावाग्नि—संज्ञा स्त्री० दे० "दावानल"।

दावात—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

दावादार—संज्ञा पुं० [अ० दावा+फा० दार] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

दावानल—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। दावा।

दावनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] १ बिजली। २ दावनी नामक गहना।

दाशरथि—संज्ञा पुं० [सं०] दशरथ के चार पुत्र। श्रीरामचंद्र आदि।

दाशार्ह—संज्ञा पुं० [सं०] १ दशार्ह से उत्पन्न यादव। दशार्ह की संतान। २ कृष्ण। ३ दशार्ह की संतानों का प्रदेश।

दास—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] १ वह जो अपने को दूसरे की सेवा के लिये समर्पित कर दे। मनुस्मृति में सात प्रकार के और याज्ञवल्क्य, नारद आदि स्मृतियों में पंद्रह प्रकार के दास कहे गए हैं। २ शूद्र। ३ धीवर। ४ एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के आगे लगाई जाती है। ५ किसी प्रकार की वृत्ति लेकर काम करनेवाला। नौकर। चाकर। सेवक। गुलाम। ६. दस्यु। ७ वृत्रासुर।

†Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "डासन"।

दासता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दास का कर्म। दासत्व। सेवावृत्ति। गुलामी।

दासत्व—संज्ञा पुं० दे० "दासता"।

दासन—संज्ञा पुं० दे० "डासन"।

दासपन—संज्ञा पुं० दे० "दासता"।

दासा—संज्ञा पुं० [?] १. दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिसपर चीज वस्तु भी रखी जा सके। २ आँगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ चबूतरा। ३ उसपर रखी हुई लकड़ी या पत्थर की मोटी पटिया। वह लकड़ी या पत्थर जो दरवाजे पर ऊपर का बोझ सम्हालने के लिये दीवार के आरपार रहता है। ४. लकड़ी या पत्थर का लंबाचौड़ा और मोटा टुकड़ा। शिलाखंड।

दासानुदास—संज्ञा सं० [सं०] सेवक का सेवक। अत्यंत तुच्छ सेवक (नम्रता सूचक)।

दासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी। लौंडी।

दासीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी की रखेली या दासी से उत्पन्न पुत्र। २ हस्तिनापुर के राजा विचित्रवीर्य की दासी का पुत्र। विदुर।

दासेय—वि० [सं०] [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न। गुलामजादा।

दास्तान—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वृत्तांत। हाल। २ कथा। किस्सा। ३ वर्णन।

दास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दासत्व। दासता। दासपन। सेवा। २ भक्ति के नौ भेदों में से एक जिसमें उपासक उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उनका दास समझते हैं।

दाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलाने की क्रिया या भाव। भस्मीकरण। २ शव जलाने की क्रिया। मुर्दा फूँकने का कर्म। ३. जलन। ताप। ४ एक रोग जिसमें शरीर में जलन मालूम होती है, प्यास लगती है और कंठ सूखता है। ५ शोक। संताप। अत्यंत पीड़ा या दुःख। ६ डाह। ईर्ष्या।

दाहक—वि० [सं०] जलानेवाला।

संज्ञा पुं० १. चित्रक वृक्ष। २ अग्नि।

दाहकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलने या जलाने की क्रिया, भाव या गुण।

दाहकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] मुर्दे का अग्नि संस्कार। मुर्दा फूँकने का कार्य।

दाहक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "दाहकर्म"।

दाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलाने का काम। २ जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

दाहना—क्रि० स० [सं० दाह] १. गरम

करना। जलाना २ कष्ट देना। दुःख पहुँचाना।
वि० दे० "दाहिना"।
दाहिन†, **दाहिना**—वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १. शरीर के उस आधे भाग का जो पूर्व की ओर मुँह करके खड़े होने पर दक्षिण की ओर पड़े। उस पार्श्व का जिसके अंगों की मांसपेशियों में प्रायः अधिक बल होता है और जो बहुधा अधिक प्रयुक्त भी होता है। 'बायाँ' का उलटा। अपसव्य।
मुहा०—दाहिनी देना=दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। दाहिनी लाना=प्रदक्षिणा करना। (किसी का) दाहिना हाथ होना=बड़ा भारी सहायक होना।
२ उधर पड़नेवाला जिधर दाहिना भाग हो। ३. अनुकूल। प्रसन्न। उ०—बार बार बिनवौं नँदलाला। मोपै दाहिन होहु कृपाला।—सूर०
दाहिनावर्त(पु)—वि० दे० "दक्षिणावर्त"।
दाहिने—क्रि० वि० [हिं० दाहिना] उस तरफ जिस तरफ दाहिना भाग हो। दाहिने हाथ की दिशा में।
दाही—वि० [सं० दाहिन्] [स्त्री० दाहिनी] जलानेवाला भस्म करनेवाला।
दिंड—सज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का नाच।
दिंडी—संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं और ६ और १० पर विराम होता है। उ०—कथा बोलूँ हे मधुर सुधा धारा। होय श्रृंगारा करुण रस धारा।
दिअना(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दिअली—सज्ञा स्त्री० [हिं० दीया का स्त्री०, अल्पा०] १ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। २ दे० "दिउली"।
दिआ—संज्ञा पु० दे० "दीया"।
दिआना—क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिउली†—सज्ञा स्त्री० [हिं० दिअली] १. सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। दाल। २ दे० "दिअली"। ३. मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका। सेहरा। चोई।
दिक्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। ओर। तरफ।
दिक—वि० [अ०] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग। २ अस्वस्थ। बीमार ['तबीयत' शब्द के साथ]।
संज्ञा पुं० क्षय रोग। तपेदिक।
दिकदाह—सज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।
दिक्क—वि०, संज्ञा पुं० दे० "दिक"।
दिक्कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दिक का भाव। परेशानी। तकलीफ। तंगी। कष्ट। २ कठिनता। मुश्किल।
दिक्कन्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा-रूपी कन्या। दसों दिशाएँ जो पुराणों में ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं।
दिक्करी—सज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।
दिक्कांता—सज्ञा स्त्री० [सं०] दिक्कन्या।
दिक्कुंजर—सज्ञा पुं० वह काल्पनिक हाथी जिसपर दिशाएँ खड़ी हैं।
दिक्पाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार दसों दिशाओं का पालन करनेवाले दस देवता जिनके नाम पूर्वादि दिशाओं के क्रम से "इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति (या नैर्ऋत), वरुण, वायु, कुबेर, ईश, (शिरोर्ध्व दिशा के) ब्रह्मा और (पैर के नीचे की दिशा के) अनंत हैं। इनमें पहले आठ अधिक प्रसिद्ध हैं। २ दे० "दिगपाल"।
दिक्शूल—सज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास होता है जिसे दिक्शूल कहते हैं। जिस दिन जिस दिशा में दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ माना जाता है। निम्नलिखित दिशाओं और वारों में दिक्शूल माना जाता है—
पश्चिम की ओर शुक्र और रविवार को, उत्तर की ओर मंगल और बुधवार को, पूर्व की ओर शनि और सोमवार को तथा दक्षिण की ओर बृहस्पतिवार को।
दिक्साधन—सज्ञा पुं० [सं०] वह उपाय या विधि जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।
दिक्सुंदरी—सज्ञा स्त्री० दे० "दिक्-कन्या"।
दिखना†—क्रि० अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने में आना।
दिखराना(पु)—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।
दिखरावना(पु)—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।
दिखरावनी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] दिखाने का भाव या क्रिया।
दिखलवाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. वह धन जो नवोढा का मुहँ देखने के बदले में दिया जाय। २. दे० "दिखलाई"।
दिखलवाना—क्रि० स० [हिं० दिखलाना का प्रे० रूप] दिखलाने का काम दूसरे से कराना।
दिखलाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. दिखलवाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो नवविवाहिता का मुख देखने के बदले में दिया जाय।
दिखलाना—क्रि० स० [हिं० देखना का प्रे० रूप] १. दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगोचर कराना। दिखाना। २ अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना। समझाना।
दिखहार(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० √देख+हार (प्रत्य०)] देखनेवाला।
दिखाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० √देख+आई (प्रत्य०)] १ देखने या दिखाने का काम। २ वह धन जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाय।
दिखाऊ†—वि० [हिं० √देख+आऊ (प्रत्य०)] १. देखने योग्य हो पर काम में न आ सके। २ दिखौआ। बनावटी। ३. निःसार।
दिखादिखी—संज्ञा स्त्री० दे० "देखा देखी"।
दिखाना—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।
दिखाव—संज्ञा पुं० [हिं० √देख+आव (प्रत्य०)] १. देखने का भाव या क्रिया। २ दृश्य। नजारा।
दिखावट—सज्ञा स्त्री० [√देख+आवट] १ दिखाने का भाव या क्रिया। २ आडंबर। बाहरी टीमटाम।
दिखावटी—वि० दे० "दिखौआ"।
दिखावा—सज्ञा पुं० [हिं० √देख+आवा (प्रत्य०)] ऊपरी तड़क भड़क। आडंबर। बनावट।
दिखैया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० √देख+ऐया (प्रत्य०)] दिखलाने या देखनेवाला।
दिखौआ—सज्ञा [हिं० √देख + औआ (प्रत्य०)] वह जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। बनावटी। असार। अतात्विक।
दिगंगना—सज्ञा स्त्री० [सं०] दिशारूपिणी स्त्री। दसों दिशाएँ।
दिगंत—सज्ञा पुं० [सं०] १. दिशा का छोर। दिशा का अंत। २. आकाश का छोर। क्षितिज। ३. सब दिशाएँ।

संज्ञा पुं० [सं० दृग्+अंत] आँख का कोना।

दिगंतर—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का स्थान।

दिगंबर—वि० [सं०] दिशाओं से ही ढका हुआ या दिशाओं को ही वस्त्र बनाए हुए। नंगा।

संज्ञा पुं० १ नंगा रहनेवाला जैन यति। दिगंबर यति। क्षपणक। २ शिव। ३. अंधकार। तम। ४ जैनियों की एक शाखा।

दिगंबरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगापन। नग्नता।

दिगंश—संज्ञा पुं० [सं०] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अंश।

दिगंश यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगंश जाना जाय।

दिगपाल—संज्ञा पुं० [सं० दिक्पाल] १ दे० "दिग्गज"। २ २४ मात्राओं का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में दो गुरु वर्ण रहते हैं। उ०—सविता विराज दोई, दिगपाल छंद सोई। सो बुद्धिमत प्राणी, जो रामशरण होई॥ ३ उर्दू "रेख्ता" छंद। उ०—क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें।

दिग्—संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्"।

दिग्गज—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिये स्थापित हैं। पूर्वादि दिशाओं के क्रम से इनके नाम "ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम और सुप्रतीक" हैं।

वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

दिग्घ(पु)†—वि० [सं० दीर्घ] १ लंबा। २ बड़ा।

दिग्दंति(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिग्दर्शक यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिसमें लगी हुई दोमुखी सुई उत्तर और दक्षिण दिशाएँ बतलाती है। कुतुबनुमा।

दिग्दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो कुछ उदाहरण स्वरूप दिखलाया जाय। नमूना। स्थूल प्रदर्शन। २ नमूना दिखाने का काम। ३ अभिज्ञता। जानकारी।

दिग्दाह—संज्ञा पुं० [सं०] एक विशेष प्रकार का उत्पात या दैवी घटना जिसमें सूर्यास्त के बहुत देर बाद तक दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पड़ती हैं। बृहत्संहिता के अनुसार यह अशुभसूचक लक्षण माना जाता है। इसका रंग पीला या अग्निवर्ण होने से राजा और राष्ट्र का विनाश, रक्तवर्ण होने से कृषिनाश आदि की आशंका रहती है। दिशाओं के अनुसार पूर्व में दिग्दाह होने से शासक वर्ग का क्षय, दक्षिण में होने से वाणिज्य व्यवसाय की हानि पश्चिम में कृषि की क्षति और उत्तर में शिक्षित और शिष्ट समाज का अकल्याण सूचित होता है।

दिग्देवता—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्पट—संज्ञा पुं० [सं० दिक्पट] १ दिशा-रूपी वस्त्र। २ नंगा। दिगंबर।

दिग्पाल—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्पति—वि० पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्भ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] दिशासंबंधी भ्रम या भूल। दिशाओं के ज्ञान का अभाव।

दिग्मंडल—संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं का समूह। संपूर्ण दिशाएँ।

दिग्राज—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्वस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ नंगा रहने-वाला जैन यति।

दिग्वास—संज्ञा पुं० दे० "दिग्वस्त्र"।

दिग्विजय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपनी सेना सहित राजाओं का वीरता दिखलाने और महत्व स्थापित करने के लिये देश-देशांतरों में जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना। २ अपने गुण, विद्या या बुद्धि आदि के द्वारा देश देशांतरों में अपना महत्व स्थापित करना। ३ देश देशांतरों के रहनेवाले को जीतना।

दिग्विजयी, दिग्विजेता—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो।

दिग्विभाग—संज्ञा पुं० [सं०] दिशा। ओर।

दिग्व्यापी—वि० [सं०] [स्त्री० दिग्व्यापिनी] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिग्शूल—संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।

दिङ्नाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिग्गज। २ एक बौद्ध नैयायिक और आचार्य। मल्लिनाथ के अनुसार महाकवि कालिदास के एक समकालीन कवि और प्रतिद्वंद्वी।

दिङ्मंडल—संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं का समूह।

दिच्छित(पु)†—संज्ञा पुं०, वि० दे० "दीक्षित"।

दिजराज(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "द्विजराज"।

दिट्ठि—संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] दे० "दृष्टि"।

दिठवन—संज्ञा स्त्री० दे० "देवोत्थान"।

दिठादिठी—संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी"।

दिठाना—क्रि० अ० [हिं० दीठ से ना० धा०] बुरी दृष्टि लगना।

क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।

दिठौना†—संज्ञा पुं० [हिं० दीठ=दृष्टि+औना (प्रत्य०)] काजल की वह बिंदी जो बालकों को नजर से बचाने के लिये उनके माथे पर लगाई जाती है।

दिढ़(पु)†—वि० दे० "दृढ़"।

दिढ़ाना(पु)†—क्रि० स० [सं० दृढ़ से हिं० ना० धा०] १. पक्का करना। मजबूत करना। २ निश्चित करना।

दिढ़ाव(पु)—सं० पुं० दे० "दृढ़ता"।

दिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषि की एक स्त्री जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यों की माता थी।

दितिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य। राक्षस।

दिदार—संज्ञा पुं० दे० "दीदार"।

दिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय।

मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन, रात को रात न जानना या समझना=अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन चढ़ना=सूर्योदय होना। दिन छिपना या डूबना=संध्या होना। दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना। दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े=बिलकुल दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना। खूब उन्नति पर होना। दिन निकलना=सूर्योदय होना।

यौ०—दिन रात=सदा। हर वक्त।

२ उतना समय जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूमती है। आठ पहर या चौबीस घंटे का समय। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

मुहा०—दिन दिन या दिन पर दिन =नित्य प्रति। सदा। हर रोज।

३ समय। काल। वक्त।

मुहा०—दिन काटना या पूरे करना =निर्वाह करना। समय बिताना। दिन बिगड़ना=बुरे दिन होना।

४. नियत या उपयुक्त काल। निश्चित या उचित समय।

मुहा०—दिन धरना=दिन निश्चित करना।

५. वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो; जैसे—गर्भ के दिन, बुरे दिन।

मुहा०—दिन चढ़ना=(१) किसी स्त्री का गर्भवती होना। (२) सूर्योदय के बाद समय बीतना। दिन फिरना=बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन काटना।

क्रि० वि० सदा। हमेशा।

दिनअर, दिनिअरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दिनकर"। उ०—अनु, धनि तू निसिअर निसि माहीं। हैं दिनिअर जेहिकै तू छाहीं। —पदमावत।

दिनकंतⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० दिन+हिं० कंत (कात)] सूर्य।

दिनकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिनचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन भर का कामधंधा। दिन भर का कर्तव्य कर्म।

दिनदानीⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० दिन+दानी] १ प्रति दिन दान करनेवाला। खूब दान देनेवाला। २ गरीबपरवर।

दिननाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिनपति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिनपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र या पत्रसमूह जिसमें वार, तिथियाँ और तारीखें आदि दी रहती हैं। अँ० कैलेंडर। पर्चांग।

दिनमणि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। रवि।

दिनमान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।

दिनराइⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।

दिनराज—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिनांत—संज्ञा पुं० [सं० दिनांत] दिन का अंत। संध्या।

दिनांध—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे दिन को न सूझे। २ उल्लू। ३. चमगादड़।

दिनाइ†—संज्ञा पुं० [देश०] दाद नामक रोग।

दिनाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दिन+हिं० √आई] कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही समय में मृत्यु हो जाय। उ०—काके सिर पढ़ि मंत्र दियो हम कहाँ हमारे पास दिनाई। —सूर०।

दिनारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दीनार"।

दिनियरⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० दिनकर] सूर्य।

दिनी—वि० [सं० दिन+हिं० ई (प्रत्य०)] बहुत दिनों का। पुराना। प्राचीन। उ०—भली बुद्धि तेरे जिय उपजी। ज्यों ज्यों दिनी भई त्यों निपजी। —सूर०।

दिनेर—संज्ञा पुं० [सं० दिनकर] सूर्य।

दिनेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. दिन के अधिपति ग्रह।

दिनौंधी—संज्ञा स्त्री० [सं० दिन+अंध+हिं० ई (प्रत्य०)] एक रोग जिसमें दिन के समय सूर्य की तेज किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है। रतौंधी का उलटा।

दिपतिⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।

दिपनाⓅ—क्रि० अ० [सं० दीप्ति] प्रकाशमान होना। चमकना।

दिपाना—क्रि० अ० दे० "दिपना"।

दियⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।

दिमाक—संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।

दिमाग—संज्ञा पुं० [अ०] १ विचार, कामना, भावना, चेतना, स्मरण आदि शक्तियों का अवयव। २. मस्तिष्क। भेजा।

मुहा०—दिमाग खाना या चाटना=व्यर्थ की बातें कहना। बहुत बकवाद करना। दिमाग खाली करना=ऐसा काम करना जिससे मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो। मगजपच्ची करना। दिमाग चढ़ना या आसमान पर होना=बहुत अधिक घमंड होना।

२ मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ।

मुहा०—दिमाग लड़ाना=बहुत सोच-विचार करना। खूब सोचना।

३ अभिमान। घमंड। शेखी।

दिमागचट—वि० [हिं० दिमाग+√चाट] बक बककर सिर खानेवाला। बकवादी।

दिमागदार—वि० [अ० दिमाग+फा० दार (प्रत्य०).] १. जिसकी बौद्धिक शक्ति अच्छी हो। बुद्धिमान। बहुत समझदार। २ अभिमानी। घमंडी।

दिमागी—वि० दे० १ "दिमागदार"।

२ दिमाग संबंधी।

दिमातⓅ†—संज्ञा पुं०, वि० [सं० द्विमातृ] दो माताओंवाला। वह जिसकी दो माताएँ हों।

वि०, संज्ञा पुं० [सं० द्विमात्रा] वह जिसमें दो मात्राएँ हों। दो मात्राओंवाला। द्विकल।

दिमानाⓅ†—वि० दे० "दीवाना"।

दियना†—संज्ञा पुं० दे० "दीआ"।

क्रि० अ० [सं० दीप्त] चमकना।

दियरा—संज्ञा पुं० [हिं० दीआ+रा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का पकवान। २. वह लुक जो शिकारी हिरनों को आकर्षित करने के लिये जलाते हैं। ३. दे० "दीया"।

दिया—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दियारा—संज्ञा पुं० [फा० दयार=प्रदेश] १ नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार। खादर। दरियावरार। २ प्रदेश। प्रांत।

दियासलाई—संज्ञा स्त्री० दे० "दीयासलाई"।

दिरदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

दिरम—संज्ञा पुं० [अ० दरहम] १. मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का। दिरहम। २ साढ़े तीन माशे की एक तौल।

दिरमान†—संज्ञा पुं० [फा० दरमान.] चिकित्सा। इलाज।

दिरमानी—संज्ञा पुं० [फा० दरमान+ई (प्रत्य०)] इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

दिरानी—संज्ञा स्त्री० दे० "देवरानी"।

दिरिसⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "दृश्य"।

दिल—संज्ञा पुं० [फा०] १ छाती के बाएँ ओर का वह पोला या भीतरी अवयव जो निरंतर क्रियाशील रहकर शरीर में रक्तसंचार को नियमित रखता है। साधारण दिल लगभग ५ इंच लंबा और ३॥ इंच चौड़ा होता है और इसमें चार खाने होते हैं। कलेजा। हृदय। २ भावों का अवयव (विशेषत प्रेम का)। मन। चित्त। जी।

मुहा०—दिल कड़ा करना=हिम्मत बाँधना। साहस करना। दिल का कँवल खिलना=चित्त प्रसन्न होना। मन में आनंद होना। दिल का गवाही देना=मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का विश्वास होना। दिल का बादशाह=(१) बहुत बड़ा उदार। (२) मनमौजी। लहरी। दिल के फफोले फोड़ना=भली बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना। दिल जमना=(१) किसी काम में चित्त लगना। ध्यान या जी लगना (२) संतुष्ट होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना=मन में

शांति, संतोष या धैर्य होना। चित्त स्थिर होना। दिल देना=आशिक होना। प्रेम करना। दिल बुझना=चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक आना=सद्भाव में अंतर पड़ना। मनमुटाव होना। दिल से=(१) जी लगाकर। अच्छी तरह। ध्यान देकर। (२) अपने मन से। अपनी इच्छा से। दिल से दूर करना=भुला देना। विस्मरण करना। ध्यान छोड़ देना। दिल ही दिल में=चुपके चुपके। मन ही मन। (देखिए "जी" और "कलेजा" के मुहावरे।)

३. साहस। दम। ४ प्रवृत्ति। इच्छा।

दिलगीर—वि० [फा०] [संज्ञा दिलगीरी] १ उदास। २ दुःखी।

दिलचला—वि० [फा० दिल+हिं०√चल] १ साहसी। हिम्मतवाला। दिलेर। २ वीर। बहादुर।

दिलचस्प—वि० [फा०] [संज्ञा दिलचस्पी] जिसमें जी लगे। मनोहर। चित्ताकर्षक।

दिलजमई—संज्ञा स्त्री० [फा० दिल+अ० जमअ+हिं० ई (प्रत्य०)] इतमीनान। तसल्ली।

• **दिलजला**—वि० [फा० दिल+हिं०√जल] जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो।

दिलजोई—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी का मन रखने के लिये उसे प्रसन्न करना।

दिलदार—वि० [फा०] [संज्ञा दिलदारी] १ उदार। दाता। २ रसिक। ३ प्रेमी। प्रिय।

दिलफेंक—संज्ञा पुं० [दिल+√फेंक] जिसका हृदय वश में न हो। जो सरलता से प्रेमपाश में फँस जाय।

दिलबर—वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।

दिलबस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी बात में दिल लगाना। मनोरंजन।

दिलरुबा—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा। २ एक वाद्ययंत्र।

दिलवाना—क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिलशिकन—वि० [फा०] [संज्ञा दिलशिकनी] दुःखी या निराश करके दिल तोड़नेवाला।

दिलहा—संज्ञा पुं० १. दे० "दिल्ली"। २. जोड़दार किवाड़ों का वह भाग जो बीच में होता है।

दिलाना—क्रि० स० [हिं० देना का प्रे० रूप] दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।

दिलावर—वि० [फा०] [संज्ञा दिलावरी] १ शूर। बहादुर। २ उत्साही। साहसी।

दिलासा—संज्ञा पुं० [फा० दिल+हिं० आसा] तसल्ली। ढारस। आश्वासन। धैर्य।

यौ०—दमदिलासा=(१) तसल्ली। धैर्य। (२) दम बुत्ता=धोखा। फरेब।

दिली—वि० [फा० दिल+ई (प्रत्य०)] १. हृदय या दिल संबंधी। हार्दिक। २ अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्नहृदय। जिगरी।

दिलीप—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन अयोध्या के सूर्यवंशी राजा दिलीप प्रथम जो सगर के परपोते और भगीरथ के पिता थे (वाल्मीकि और हरिवंश)। २ अयोध्या के प्राचीन सूर्यवंशी राजा दिलीप द्वितीय जो रघु के पिता और श्रीरामचंद्र जी के वृद्धप्रपितामह थे (हरिवंश और लिंग पुराण)। महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध काव्य रघुवंश में इन्हीं का वर्णन किया है।

दिलेर—वि० [फा०] [संज्ञा दिलेरी] १, बहादुर। शूर। वीर। २ साहसी।

दिल्लगी—संज्ञा स्त्री० [फा० दिल+हिं० लगना] १ दिल लगाने की क्रिया या भाव। २. केवल विनोद या हँसने हँसाने की बात। ठट्ठा। ठठोली। मजाक। मखौल। परिहास।

मुहा०—किसी बात की दिल्लगी उड़ाना=(किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिये (उसे) हँसी में उड़ा देना। उपहास करना।

दिल्लगीबाज—संज्ञा पुं० [हिं० दिल्लगी+फा० बाज] हँसी दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।

दिल्ला—संज्ञा पुं० [देश०] किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखटा जो शोभा के लिये बना या जड़ दिया जाता है। आईना।

दिल्लीवाल—संज्ञा पुं० [दिल्ली+वाला] एक प्रकार का जूता। सलेमशाही।

दिव—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० दिवता] १. स्वर्ग। २. आकाश। ३ वन। ४ दिन।

दिवराज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

दिवलाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] दिन। रोज।

दिवसअंधⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दिवांध"।

दिवसमुख—संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल। सवेरा।

दिवस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिवांध—वि० [सं०] १. जिसे दिन में न सूझे। जिसे दिनौंधी हो।

संज्ञा पुं० १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू। ३. चमगादड़।

दिवा—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। दिवस। २ बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—भा सत गौरि गुसाँइन को वर राम धनू दुइ खंड कियो। मालिनि को जयमाल गुह्यो हरि के हिय जानकि मेलि दियो॥ रावण की उतरी मदिरा चुपचाप पयान जु लंक कियो। राम वरी सिय मोद भरी नभ में सुर जै जयकार कियो। मालिनी। उमा। मदिरा।

दिवाकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

दिवान—संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

दिवाना†—संज्ञा पुं० दे० "दीवाना"।

Ⓟ† क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिवाभिसारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० दिवा+अभिसारिका] वह नायिका जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिये संकेतस्थान में जाय।

दिवाल—वि० [हिं०√दे+वाल (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला।

†संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

दिवाला—संज्ञा पुं० [हिं० दिया+√बाल=जलाना] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय। टाट उलटना।

मुहा०—दिवाला निकालना=दिवाला होना। दिवाला मारना=(१) दिवालिया बन जाना। (२) यथेष्ट धन बचाकर अपने आपको ऋण चुकाने में असमर्थ घोषित करना।

२ किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना। एकांत अभाव।

दिवालिया—वि० [हिं० दिवाला+इया (प्रत्य०)] १ ऋण चुकाने में असमर्थ। २ दिवाला निकालनेवाला व्यक्ति।

दिवाली—संज्ञा स्त्री० दे० 'दीवाली'।

दिवि—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश। उ०—महि तें मह्हरि अबीर उड़ावैं। दिवि तें देवि सुमन बरसावैं।—छंदार्णव।

दिवैया—वि० [हिं० √दे+वैया (प्रत्य०)] देनेवाला । जो देता हो ।

दिवोदास—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र जो काशी के राजा थे। ये धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं।

दिवोल्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन के समय आकाश से गिरता हुआ दिखाई देनेवाला पिंड या उल्का।

दिवौका—संज्ञा पुं० [सं० दिवौकस्] १ वह जो स्वर्ग में रहता हो। २ देवता।

दिव्य—वि० [सं०] [स्त्री० दिव्या] १ स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २. आकाश से संबंध रखनेवाला। ३ दैवी। अलौकिक। ४ प्रकाशमान। चमकीला। ५ बहुत सुंदर। बहुत स्वच्छ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ यव। जौ। २ तत्ववेत्ता। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४. आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। ५. तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो ; जैसे—इंद्र, राम। ६ व्यवहार या न्यायालय में प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था। ये परीक्षाएँ नौ प्रकार की होती थीं—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, फूल तथा धर्मज। ७. (विशेषत देवताओं आदि की) शपथ। सौगंध। कसम।

दिव्यचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० दिव्यचक्षुस्] १. अलौकिक वस्तुओं को देखने की शक्तिवाली (आँखें)। २ प्रज्ञाचक्षु। ज्ञानचक्षु। ३. अंधा। ४. चश्मा। ऐनक। ५ बंदर।

दिव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिव्य का भाव। २. देवभाव। ३. सुंदरता।

दिव्यदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त, परोक्ष अथवा अंतरिक्ष पदार्थ दिखाई दे। २ ज्ञानदृष्टि। प्रज्ञाचक्षु।

दिव्यरथ—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का विमान।

दिव्यसूरि—संज्ञा पुं० [सं०] रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये हैं—कासार, भूत, महद, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कवींद्र, रामानुज और गोदा देवा या मधुकर कवि।

दिव्यांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देववधू। २ अप्सरा।

दिव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका, जैसे—पार्वती, सीता आदि।

दिव्यादिव्य—संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमें देवताओं के भी गुण हों, जैसे—नल, अभिमन्यु।

दिव्यादिव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों, जैसे—दमयंती, पद्मिनी आदि।

दिव्यास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का दिया हुआ हथियार। २ मंत्रों द्वारा चलनेवाला हथियार। ३ अद्भुत या अलौकिक हथियार।

दिव्योदक—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का जल। निर्मल पानी।

दिश्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। दिक्।

दिशा—संज्ञा स्त्री० [सं० दिश्] १ नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार। ओर। तरफ। २ क्षितिज वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से किसी एक विभाग की ओर का विस्तार। ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण भी होता है। इनके नाम क्रम से अग्नि, नैर्ऋत या निर्ऋति, वायु और ईश के नाम पर रखे गए हैं। इनके सिवा एक दिशा ऊर्ध्व या सिर के ऊपर की ओर और दूसरी अध या पैर के नीचे की ओर भी मानी जाती है। एक के पालक या देवता ब्रह्मा और दूसरी के अनंत माने जाते हैं। ३ दस की संख्या।

दिशादाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

दिशाभ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना। दिक्भ्रम। दिशाओं के ज्ञान का अभाव।

दिशाशूल—संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।

दिशि—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिश्य—वि० [सं०] दिशासंबंधी।

दिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाग्य। २ उपदेश। ३ दारु हलदी। ४ काल।

दिष्टबंधक—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टि+बंधक] वह रेहन जिसमें चीज पर रुपए देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे एवं वह इतना ही देखता रहे कि ऋण अदा होने तक जिस चीज पर ऋण लिया गया है वह ज्यों की त्यों बनी है।

दिष्टि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसंतर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० देशांतर] देशांतर। विदेश। परदेश।

क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिस(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसना(पु)†—क्रि० अ० दे० "दिखना"।

दिसा—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

†संज्ञा स्त्री० [सं० दिशा = ओर] मलत्याग। पैखाना। झाड़ा फिरना।

दिसावर—संज्ञा पुं० [सं० देशांतर] दूसरा देश। परदेश। विदेश।

दिसावरी—वि० [हिं० दिसावर+ई (प्रत्य०)] विदेश से आया हुआ। बाहरी (माल)।

दिसि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसिटि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसिदुरद(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिसिनायक(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिराज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसैया(पु)†—वि० [हिं० √दिस+ऐया (प्रत्य०)] १ देखनेवाला। २ दिखानेवाला।

दिस्टा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिस्टिबंध—संज्ञा पुं० [दृष्टिबंधन] नजरबंदी। जादू। इंद्रजाल।

दिस्ता—संज्ञा पुं० दे० "दस्ता"।

दिहंदा—वि० [फा०] दाता। देनेवाला। (मुख्यत यौगिक रूप में प्रयुक्त, जैसे, नादिहंद = न देनेवाला)।

दिहकान—संज्ञा पुं० दे० "दहकान"।

दिहा—संज्ञा पुं० दे० "दिहाड़ा"।

दिहाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० दिवस, प्रा० दिअह+ड़ा (प्रत्य०)] दिन। दिवस।

संज्ञा पुं० [?] दुर्गत। बुरी हालत।

दिहात—संज्ञा पुं० दे० "देहात"।

दीआ—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दीक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] दीक्षा देनेवाला गुरु। २ शिक्षक।

दीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया।

दीक्षांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अवभृथ यज्ञ जो किसी यज्ञ के समाप्त हो जाने पर उसकी त्रुटि आदि के दोष की शांति के

लिये किया जाय। २. विद्यालयों और विश्व-विद्यालयों आदि का प्रमाणपत्र देने का उत्सव (अं० कान्वोकेशन)।

दीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुरु या आचार्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश। मंत्र की शिक्षा जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। २ उपनयन संस्कार जिसमें आचार्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। ३ वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे। गुरुमंत्र। ४ सोमयागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान। यजन।

दीक्षागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रोपदेष्टा गुरु।

दीक्षित—वि० [सं०] १ जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र लिया हो। २ जिसने सोमयागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा।

दीखना—क्रि० अ० [सं० √दृश्] दिखाई देना। देखने में आना। दृष्टिगोचर होना।

दीघी—संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] बावली। पोखरा। तालाब।

दीच्छा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।

दीठ—संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १ देखने की वृत्ति या शक्ति। दृष्टि। २ टक। दृक्पात। नजर। निगाह। (मुहावरे के लिये दे० "दृष्टि" के मुहावरे।)

३ आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४ अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नजर।

मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना = मंत्र के द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ खा जाना = किसी की बुरी दृष्टि के सामने पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना = नजर उतारने के लिये राई नोन या कपड़ा जलाना।

५ देखने के लिये खुली हुई आँख। ६. देखभाल। देखरेख। निगरानी। ७ परख। पहचान। तमीज। ८ कृपादृष्टि। मिहरबानी की नजर। ९ आशा की दृष्टि। उम्मीद। १० विचार। संकल्प।

दीठबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दीठबंध] इंद्रजाल की ऐसी माया जिससे लोगों को और का और दिखाई दे। नजरबंदी। जादू।

दीठवंत—वि० [हिं० दीठ+वंत] १. जिसे दिखाई दे। देखनेवाला। दृष्टिसंपन्न। २ अच्छी सूझ बूझ का। ३ दूरदर्शी।

दीठिमेरावा—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टि+मिलाप] परस्पर दर्शन। आँखें चार होना। उ०—पदमावति पुनि पूजै आवा। होइ है एहि मिस दीठिमेरावा।—पदमावत।

दीदा—संज्ञा पुं० [फा० दीद:] १ दृष्टि। नजर। २. आँख। नेत्र।

मुहा०—दीदा लगना = जी लगना। ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना = निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना = क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना = अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।

३ अनुचित साहस। ढिठाई।

दीदार—संज्ञा पुं० [फा०] दर्शन। देखादेखी।

दीदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दादा = बड़ा भाई] बड़ी बहिन।

दीधिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. प्रकाश। ३ उँगली।

दीन—वि० [सं०] [स्त्री० दीना] १. दयनीय। करुण। २ दुःखित। कातर। अधीर। संतप्त। ३ दरिद्र। गरीब। निर्धन। ४ जिसका मन मरा हुआ हो। ५ दुःख या भय से अधीनता प्रकट करनेवाला। ६ नम्र। विनीत। ७ हतोत्साह। निरुत्साह।

संज्ञा पुं० [अ०] मत। मजहब।

दीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दरिद्रता। गरीबी। २ नम्रता। विनीत भाव।

दीनताई(पु)—संज्ञा स्त्री० "दीनता"।

दीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दीनता।

दीनदयालु—वि० [सं०] दीनों पर दया करनेवाला।

संज्ञा पुं० ईश्वर।

दीनदार—वि० [अ० दीन+फा० दार] [संज्ञा दीनदारी] अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।

दीनदुनिया—संज्ञा स्त्री० [अ० दीन+दुनिया] यह लोक और परलोक।

दीनबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुखियों का सहायक। २ ईश्वर।

दीनानाथ—संज्ञा पुं० [सं० दीन+नाथ] १ दीनों का स्वामी या रक्षक। २ ईश्वर।

दीनार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्णमुद्रा। मोहर। २ स्वर्णभूषण। सोने का गहना। ३ निष्क की तौल।

दीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीया। चिराग। २ दस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में तीन ह्रस्व, एक दीर्घ और अंत्य ह्रस्व मात्राओं का क्रम रहता है (।।।ऽ।)। उ०—धातृ सह दस दीप, रखहु चरण समीप। तिहुँलोक अवनीप, दशरत्थ कुलदीप ॥

संज्ञा पुं० दे० "द्वीप"।

दीपक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग।

यौ०—कुलदीपक = वंश को उजाला करनेवाला। वंश की प्रतिष्ठा या शान बढ़ानेवाला। २ एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय या उपमेय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय या उपमेय न हो अर्थात् उपमान हो) दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। जैसे, "सोहत भूपति दान सों, फल फूलन आराम।" यहाँ 'भूपति' (प्रस्तुत) और 'आराम' (अप्रस्तुत) दोनों का धर्म एक ही 'सोहत' कहा गया है। इसी प्रकार "ऋषिहिं देखि हरपै हियो, राम देखि कुम्हिलाय। धनुष देखि डरपै महा चिंता चित्त डुलाय।" यहाँ 'हरपै', 'कुम्हिलाय', 'डरपै' आदि क्रियाओं का कर्ता एक ही 'हियो' कहा गया है। तुल्य योगिता में कई प्रस्तुतों या कई अप्रस्तुतों का एक ही धर्म कहा जाता है (अलग अलग) लेकिन दीपक में प्रस्तुतों और अप्रस्तुतों दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है। ३ १५ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, तगण नगण, तगण और यगण रहता है तथा १०वें वर्ण पर यति और अंत में विराम होता है। उ०—सतत काया मन वच सों, देवि मनावैं। स्वामिहिं सेवैं अति हित सों, वांछित पावैं। ३ (संगीत में) छः रागों में से दूसरा राग। ४ केसर। कुंकुम।

वि० [सं०] [स्त्री० दीपिका] १ प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २ शरीर में पाचन की अग्नि को तेज करनेवाला। ३ शरीर में वेग या उमंग लानेवाला। उत्तेजक।

दीपकमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक

भगण, एक मगण, एक जगण और अंत्य गुरु, कुल १० वर्ण होते हैं। उ०—भामज गोकन्या सखी बरी। देखत हैं खडा धनू करी। मडप के नीचे भरी अली। दीपक माला सी लसै लली। २ दीपक अलकार का एक भेद। इसे मालादीपक भी कहते हैं।

दीपकवृक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह बड़ा दीवट जिसमें दीए रखने के लिये कई शाखाएँ हों। २ झाड़।

दीपकावृत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] दीपक अलकार का एक भेद। इसे आवृत्तिदीपक भी कहते हैं।

दीपत, दीपतिⓅ—सज्ञा स्त्री० [स० दीप्ति] १ कांति। चमक। प्रभा। २ शोभा। ३. कीर्ति।

दीपतिवंत—वि० [सं० दीप्तिवत] देदीप्यमान। दीप्तिमय। उ०—प्रफुलित निर्मल दीपतिवत तूँ आनन चौसनिस्यौ इक टेक। —शृंगार०।

दीपदान—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी देवता के सामने दीपक जलाकर रखना जो पूजन का एक अग समझा जाता है। २. एक कृत्य जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का संकल्प कराया जाता है (कर्मकाड)।

दीपध्वज—सज्ञा पुं० [स०] काजल।

दीपन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १ प्रकाश के लिये जलाने का काम। प्रकाशन। २ भूख को उभारना या तेज करना। ३. आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन।

वि० दीपन करनेवाला। जठराग्निवर्द्धक।

सज्ञा पुं० मत्र के उन दस सस्कारों में से एक जिनके बिना मत्र सिद्ध नहीं होता।

दीपनाⓅ—क्रि० अ० [स० दीपन] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना।

क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

दीपमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जलते हुए दीपों की पक्ति। २ दीपदान या आरती के लिये जलाई हुई वत्तियों का समूह।

दीपमालिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीपदान, आरती या शोभा के लिये सजाई हुई दीयों की पंक्ति। २ दीवाली।

दीपमाला—सज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

दीपशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] दीए की टेम। चिराग की लौ। प्रदीपज्वाला।

दीपावलि—सज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।

दीपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा दीया।

वि० स्त्री० (१) उजाला फैलानेवाली। (२) प्रदीप्त करनेवाली।

दीपित—वि० [स०] १ प्रकाशित। प्रज्वलित। २ चमकता या जगमगाता हुआ। ३ उत्तेजित।

दीपोत्सव—सज्ञा पुं० [सं०] दीवाली।

दीप्त—वि० [सं०] १. प्रज्वलित। जलता हुआ। २. जगमगाता हुआ। चमकीला।

दीप्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रकाश। उजाला। रोशनी। २ प्रभा। आभा। चमक। द्युति। ३ कांति। शोभा। छवि। ४ ज्ञान का प्रकाश।

दीप्तिमान्—वि० [सं० दीप्तिमत] [स्त्री० दीप्तिमती] १. दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २ कांतियुक्त। शोभायुक्त।

दीप्य—वि० [स०] १ जो जलाया जाने को हो। २ जो जलाने योग्य हो।

दीप्यमान—वि० [स०] चमकता हुआ।

दीबोⓅ—सज्ञा पु० दे० "देना"।

दीमक—सज्ञा स्त्री० [फा०] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज आदि को चाटकर खोखला और नष्ट कर देता है। वल्मीक।

दीयट—सज्ञा पुं० दे० "दीवट"।

दीया—सज्ञा पुं० [सं० दीपक] १ उजाले के लिये घी या तेल से जलनेवाली वत्ती का पात्र। चिराग। दीपक। उ०—धनि जीवन औ ताकर हीया। ऊँच जगत महँ जाकर दीया। —पदमावत।

मुहा०—दीया ठढा करना = दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठंढा होना = किसी के मरने से कुल में अधकार छा जाना। दीया बढ़ाना = दीया बुझाना। दीया वत्ती करना = रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना = चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना। बड़ी छानबीन से खोजना।

२ [स्त्री०, अल्पा० दिवली, दियली] वत्ती जलाने का छोटा कसोरा।

दीयासलाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० दीया + सलाई] लकड़ी की छोटी सलाई या सींक जिसके एक सिरे पर गधक का मिश्रण लगा रहता है जो रगड़ने से जल उठता है।

दीरघⓅ—वि० दे० "दीर्घ"।

दीर्घ—वि० [सं०] १ आयत। लबा। २ बड़ा (देश और काल दोनों के लिये)।

सज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा, जैसे—आ, ई, ऊ।

दीर्घकाय—वि० [स०] बड़े डीलडौल का।

दीर्घजीवी—वि० [स० दीर्घजीविन्] जो बहुत दिनों तक जीए। बहुत काल तक जीनेवाला।

दीर्घतमा—सज्ञा पुं० [सं० दीर्घतमस्] उतथ्य के पुत्र एक ऋषि जो बृहस्पति के शाप से जन्मांध पैदा हुए थे। इन्होंने किसी स्त्री के लिये पति के परित्याग को पातक ठहराया था।

दीर्घदर्शिता—सज्ञा स्त्री० [स०] परिणाम आदि का विचार करनेवाली बुद्धि। दूरदर्शिता।

दीर्घदर्शी—वि० [सं० दीर्घदर्शिन्] दूर तक की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।

दीर्घदृष्टि—वि० दे० "दीर्घदर्शी"।

सज्ञा स्त्री० दे० "दीर्घदर्शिता"।

दीर्घनिद्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।

दीर्घनिःश्वास—सज्ञा पुं० [स०] लबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है।

दीर्घबाहु—वि० [सं०] जिसकी भुजाएँ लबी हों। बड़ी बड़ी भुजाओंवाला।

दीर्घलोचन—वि० [स०] बड़ी आँखोंवाला।

दीर्घश्रुत—वि० [स०] १ जो दूर तक सुनाई पड़े। २ जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।

दीर्घसूत्र—वि० दे० "दीर्घसूत्री"।

दीर्घसूत्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रत्येक कार्य में विलब करने का स्वभाव।

दीर्घसूत्री—वि० [स० दीर्घसूत्रिन्] हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।

दीर्घस्वर—सज्ञा पुं० [स०] द्विमात्रिक स्वर।

दीर्घायु—वि० [स०] बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरजीवी।

सज्ञा पुं० बड़ी उम्र। लबी जिंदगी।

दीर्घिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाब।

दीर्ण—वि० [स०] १ फटा हुआ। विदीर्ण। २ टूटा हुआ। भग्न।

दीवट—सज्ञा स्त्री० [सं० दीपस्थ] पीतल, लकड़ी आदि का दीपक का आधार। दीपकाधार। चिरागदान।

दीवा—सज्ञा पु० [स० दीपक] दीया।

दीवान—सज्ञा पुं० [अ०] १ राजा या बादशाह के बैठने की जगह। दरबार। राजसभा। कचहरी। २ राज्य का प्रबंध करनेवाला। मत्री। वजीर। प्रधान। ३. गजलों का सग्रह।

दीवानआम—सज्ञा पुं० [अ०] १ ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से साधारण लोग मिल सकते हों। २ वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो। ३ अकबर बादशाह का बनवाया हुआ साधारण दरबार के लिये प्रासाद।

दीवानखाना—सज्ञा पुं० [फा०] घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं। बैठक।

दीवानखास—सज्ञा पुं० [फा०+अ०] १ ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मत्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। खास दरबार। २ वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो। ३ इसके लिये अकबर बादशाह का बनवाया हुआ प्रासाद।

दीवाना—वि० [फा०] [स्त्री० दीवानी] पागल। उन्मत्त।

दीवानापन—सज्ञा पुं० [फा० दीवाना+पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। विक्षिप्तता।

दीवानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दीवान का पद। २ वह न्यायालय जो सपत्ति सबंधी वादों (मुकदमों) पर विचार और निर्णय करे।

वि० स्त्री० पगली।

दीवार—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं। भीत। २ किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो।

दीवारगीर—सज्ञा पुं० [फा०] दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाल—सज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

दीवाली—सज्ञा स्त्री० [स० दीपावली] कार्तिक की अमावास्या को होनेवाला एक पर्व जिसमें संध्या के समय घर में भीतर बाहर बहुत से दीपक जलाकर पक्तियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस पर्व में लोग जूआ भी खेलते हैं।

दीसना—क्रि० अ० [स० √दृश्=देखना] दिखाई पड़ना। दृष्टिगोचर होना।

दीहⓅ—वि० [सं० दीर्घ] लंबा। बड़ा।

दुंद—सज्ञा पुं० [सं० द्वद्व] १. दो मनुष्यों के बीच होनेवाला युद्ध या झगड़ा। २. उत्पात। उपद्रव। ३. जोड़ा। युग्म।

सज्ञा पुं० [सं० दुदुभि] नगाड़ा।

दुंदुभ—सज्ञा पुं० [सं०] नगाड़ा। धौंसा।

दुदुभि—सज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २ विप। ३ एक राक्षस जिसे वालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था।

सज्ञा स्त्री० [सं०] नगाड़ा। धौंसा।

दुंदुभी—सज्ञा स्त्री० दे० "दुदुभि"।

दुदुहⓅ—सज्ञा पुं० [सं० डुडुभ] पानी का साँप। डेड़हा।

दुंबा—सज्ञा पुं० [फा० दुंबाल] एक प्रकार का मेढ़ा जिसकी दुम गोल और घने मुलायम बालों के कारण भारी होती है।

दुकतⓅ—सज्ञा पु० दे० "दुष्यत"।

दुःख—सज्ञा पुं० [स०] १. मन को कष्ट देनेवाली अवस्था। सुख का विपरीत भाव। तकलीफ। कष्ट। क्लेश। (साख्य में दुःख तीन प्रकार के माने गए हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।)

मुहा०—दुःख उठाना, पाना या भोगना=कष्ट सहना। तकलीफ सहना। दुःख देना या पहुँचाना=कष्ट पहुँचाना। दुःख बँटाना=सहानुभूति करना। कष्ट या सकट के समय साथ देना। दुःख भरना=कष्ट या सकट के दिन काटना।

२ सकट। आपत्ति। विपत्ति। ३ मानसिक कष्ट। खेद। रंज। ४ पीड़ा। व्यथा। दर्द। ५ व्याधि। रोग। बीमारी।

दुःखकर—सज्ञा पुं० दे० "दुःखद"।

दुःखद—वि० [स०] दुःख पहुँचानेवाला। (प्राय अचेतन के लिये), जैसे—दुःखद समाचार।

दुःखदाता—वि० [सं०] दुःख या कष्ट देनेवाला (प्राय चेतन के लिये)।

दुःखदायक—वि० [सं०] [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला।

दुःखदायी—वि० दे० "दुःखदायक"।

दुःखप्रद—सज्ञा पु० [स०] दुःख देनेवाला (प्राय अचेतन के लिये) जैसे, पृस में चद्रग्रहण दुःखप्रद होता है।

दुःखमय—वि० [सं०] क्लेश से भरा हुआ। दुःखपूर्ण।

दुःखवाद—सज्ञा पु० [स०] वह सिद्धात जिसमें ससार और उसकी सब बातें सदा दुःखमय मानी जाती हैं।

दुःखवादी—सज्ञा पुं० [स०] वह जो दुःखवाद पर विश्वास करता हो।

दुःखांत—वि० [सं०] १. जिसके अत में दुःख हो। २ जिसके अत में दुःख का वर्णन हो, जैसे, दुःखात नाटक।

सज्ञा पुं० १ दुःख का अत। क्लेश की समाप्ति। २ दुःख की पराकाष्ठा।

दुःखित—वि० [सं०] जिसे कष्ट या तकलीफ हो। पीड़ित। क्लेशित।

दुःखिनी—वि० स्त्री० [सं०] जिसपर दुःख पड़ा हो। दुखिया।

दुःखी—वि० [स० दुःखिन्] [स्त्री० दुःखिनी] जिसे दुःख हो। जो कष्ट में हो।

दुःशला—सज्ञा स्त्री० [स०] गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही था।

दुःशासन—वि० [सं०] जिसपर शासन करना कठिन हो।

सज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यत क्रूर स्वभाव का था। दुर्योधन से जूए में युधिष्ठिर के द्रौपदी को हार जाने पर यही उसे बाल पकड़कर घसीटता हुआ धृतराष्ट्र की सभा में लाया था और इसी ने दुर्योधन की आज्ञा से नंगी करने के लिये उसके वस्त्र खीचे थे।

दुःशील—वि० [सं०] बुरे स्वभाव का।

दुःशीलता—सज्ञा स्त्री० [स०] दुष्टता। दुर्व्यवहार।

दुःसंधान—सज्ञा पुं० [स०] केशवदास के अनुसार काव्य में एक रस, जो उस स्थल पर होता है, जहाँ एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल। एक तो मेल की बात करता है, दूसरा बिगाड़ की।

दुःसह—वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो। जो कष्ट से सहा जाय।

दुःसाध्य—वि० [स०] १ जिसका करना कठिन हो। जो आसानी से न साधा जा सके। २ जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाहस—सज्ञा पु० [सं०] १ ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या बुरा हो। व्यर्थ का साहस। २ ऐसी बात करने की हिम्मत जो अच्छी न समझी जाती हो या हो न सकती हो। अनुचित या अस्वाभाविक साहस। ३ ढिठाई। धृष्टता।

दुःसाहसी—वि० [सं०] दुःसाहस करनेवाला।

दुःस्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।

दुःस्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा स्वभाव। दुःशीलता। बदमिजाजी।

वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।

दु—वि० [सं० द्वि, हिं० दो] "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास में प्रयुक्त होता है, जैसे—दुविधा, दुचित्तता।

दुअन—संज्ञा पुं० दे० "दुवन"।

दुअन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+आना] दो आने का सिक्का।

दुआ—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रार्थना। विनती (ईश्वर से)। २ याचना। दरखास्त।

मुहा०—दुआ माँगना = प्रार्थना करना।

३ आशीर्वाद। असीस।

मुहा०—दुआ लगना = आशीर्वाद का फलीभूत होना।

दुआदसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "द्वादश"।

दुआबा—संज्ञा पुं० [फा०] १. दो नदियों के बीच का प्रदेश। २ गंगा और यमुना के बीच की भूमि।

दुआर†—संज्ञा पुं० [सं० द्वार] द्वार।

दुआरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुआर] छोटा दरवाजा।

दुआल—संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] १ चमड़ा। २ चमड़े का तसमा। ३. रिकाब का तसमा।

दुआली—संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] चमड़े का वह तसमा जिससे खरादे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।

दुई†—वि० दे० "दो"।

दुइज†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] पाख की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज।

संज्ञा पुं० [सं० द्विजराज] १. दूज का चाँद।

दुई—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो] अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी। द्वैत।

दुऊⓅ—वि० दे० "दोनों"।

दुकड़हा†—वि० [हिं० दुकड़ा+हा (प्रत्य०)] नीच।

दुकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० द्विक्+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १ एक साथ या एक में लगी दो चीजें। जोड़ा। २ वह जिसमें कोई वस्तु दो दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। २. एक पैसे का चौथाई भाग।

दुकड़ी—वि० स्त्री० [हिं० दुकड़ा] जिसमें कोई वस्तु दो दो हों।

संज्ञा स्त्री० १ चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो बाध या सुतली एक साथ बुनी जाती हैं। २ दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता। दुक्की। ३ दो घोड़ों की बग्घी।

दुकनाⓅ—क्रि० अ० [देश०] लुकना। छिपना।

दुकान—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ बेचने के लिये चीजें रखी हों और ग्राहक खरीदते हों। सौदा बिकने का मकान। हट्ट। हट्टी।

मुहा०—दुकान उठाना = (१) कारबार बंद करके दुकान छोड़ देना। (२) दुकान बंद करना। दुकान बढ़ाना = दुकान बंद करना। दुकान लगाना = (१) दुकान का असबाब फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिये रखना। (२) बहुत सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर रख देना। (३) आडंबर करना।

दुकानदार—संज्ञा पुं० [फा०] १ दुकानवाला। दुकान का स्वामी। दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला। २ वह जिसने आय के लिये कोई ढोंग रच रखा हो। आडंबर करनेवाला।

दुकानदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दुकान या बिक्री बट्टे का काम। दुकान पर माल बेचने का काम। २ ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम। ३ दुकान पर होनेवाली बिक्री की आय।

दुकाल—संज्ञा पुं० [सं० दुष्काल] अन्नकष्ट का समय। अकाल। दुर्भिक्ष।

दुकूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा। क्षौम वस्त्र। २ महीन कपड़ा। बारीक कपड़ा। ३ वस्त्र। कपड़ा।

दुकूलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

दुकेला—[हिं० दुक्का+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकेली]। जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो।

यौ०—अकेला दुकेला = जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हों।

दुकेले—क्रि० वि० [हिं० दुकेला] किसी के साथ। दूसरे आदमी को साथ लिए हुए।

दुक्कड़—संज्ञा पुं० [हिं० दो+कूँड़] १. तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २ एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।

दुक्का—वि० [सं० द्विक्] [स्त्री० दुक्की] १ जो एक साथ दो हों। जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।

यौ०—इक्का दुक्का = अकेला दुकेला।

२. जो जोड़े में हो। जो एक ही साथ दो हों (वस्तु)।

संज्ञा पुं० दे० "दुक्की"।

दुक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुक्का] ताश का वह पत्ता जिसपर दो बूटियाँ बनी हों।

दुखंडा—वि० [हिं० दो+खंड] जिसमें दो खंड हों। दो मरातिब का। दो तल्ला।

दुखतⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुख—संज्ञा पुं० दे० "दुःख"।

दुखड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० दुख+ड़ा (प्रत्य०)] १ वह कथा जिसमें किसी के कष्ट या शोक का वर्णन हो। तकलीफ का हाल। दुःख या तकलीफ का बयान।

मुहा०—दुखड़ा रोना = अपने दुःख का वृत्तांत कहना।

२ कष्ट। विपत्ति। मुसीबत।

दुखदंद—संज्ञा पुं० दे० "दुखदुंद" उ०—छन महँ सकल निशाचर मारे। हरे सकल दुखदंद हमारे। —सूर०।

दुखद—वि० दे० "दुःखद"।

दुखदाई, दुखदानि—वि० दे० "दुःखदायी"।

दुखदुंद—संज्ञा पुं० [सं० दुःखद्वंद्व] दुःख का उपद्रव। दुःख और आपत्ति।

दुखना—क्रि० अ० [सं० दुःख] (किसी अंग का) पीड़ित होना। दर्द करना। पीड़ा युक्त होना।

दुखराⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुखड़ा"।

दुखवना†—क्रि० स० दे० "दुखाना"।

दुखहाया—वि० दे० "दुःखित"।

दुखाना—क्रि० स० [सं० दुःख] १ पीड़ा देना। कष्ट पहुँचाना। व्यथित करना।

मुहा०—जी दुखाना = मानसिक कष्ट पहुँचाना। मन में दुःख उत्पन्न करना।

२ किसी के मर्मस्थान या पके घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो।

दुखारा—वि० [हिं० दुख+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखारी] दुखी। पीड़ित।

दुखारीⓅ—वि० दे० "दुखारा"।
दुखितⓅ—वि० दे० "दु खित"।
दुखिया—वि० [हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] जिसे किसी प्रकार का दु ख या कष्ट हो। दुखी।
दुखियारा—वि० [हिं० दुखिया] [स्त्री० दुखियारी] १ जिसे किसी बात का दु ख हो। दुखिया। २ रोगी।
दुखी—वि० [सं० दु खित, दुखी] १ जिसे दु ख हो। जो कष्ट या दु ख में हो। २ जिसके चित्त में खेद उत्पन्न हुआ हो। जिसके दिल में रंज हो। ३ रोगी। बीमार।
दुखीला†—वि० [हिं० दुख+ईला (प्रत्य०)] दु ख अनुभव करनेवाला। दु खपूर्ण।
दुखौहाँⓅ—वि० [हिं० दुख+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखौहीं] दु खदायी। दु ख देनेवाला।
दुगछा—सज्ञा स्त्री० [?] ग्लानि। घृणा।
दुगई—संज्ञा स्त्री० [देश०] ओसारा। बरामदा।
दुगड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+गाड़=गड्ढा] १. दुनाली बदूक। २ दोहरी गोली।
दुगदुगी—सज्ञा स्त्री० [अनु० धुकधुक] १ वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचोबीच होता है। धुकधुकी। २ गले में पहनने का एक गहना।
दुगना—वि० [स० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] किसी वस्तु से उतना ही और अधिक, जितना कि वह हो। द्विगुण। दूना।
दुगासरा—सज्ञा पुं० [सं० दुर्ग+आश्रय] किसी दुर्ग के नीचे या चारों ओर बसा हुआ गाँव।
दुगुणⓅ—वि० दे० "द्विगुण"।
दुगुनⓅ†—वि० दे० "दुगना"।
दुग्गⓅ—सज्ञा पुं० दे० "दुर्ग"।
दुग्ध—वि० [सं०] १ दुहा हुआ। २ भरा हुआ।

सज्ञा पुं० दूध।
दुग्धी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दुधिया नाम की घास। दुद्धी।

वि० [दुग्धिन्] दूधवाला। जिसमें दूध हो।
दुघड़िया—वि० [हिं० दो+घड़ी] दो घड़ी का। कामचलाऊ, जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।
दुघड़िया मुहूर्त—सज्ञा पुं० [हिं० दो+घड़ी +सं० मुहूर्त] दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। द्विघटिका मुहूर्त। कामचलाऊ मुहूर्त। (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है और इसमें वार आदि का विचार नहीं होता।)
दुघरी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० दो+घड़ी] दुघड़िया मुहूर्त।
दुचद—वि० [फा० दोचद] दूना। दुगना।
दुचारी—संज्ञा पुं० [सं० दुराचार ?] दुराचरण। कुचाल। उ०—जिहि काम कों कैवर कारी लगै सो दुचारी कों 'दास जू' क्यों डरिहै।—शृगार०।
दुचितⓅ—वि० [हिं० दो+चित्त] १ जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। द्विविधायुक्त। अस्थिरचित्त २ चिंतित। फिक्रमद।
दुचितई, दुचिताईⓅ—सज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १ चित्त की अस्थिरता। दुविधा। सदेह। उ०—यों दुचिताई में प्रेम सनै न बनैगी कछू रसरीति सुहातें।—शृगार०। २ खटका। चिंता। आशका। ३ व्यग्रता। घबराहट।
दुचिता—वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० दुचित्ती] [सज्ञा दुचित्तापन] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। जो दुविधा में हो। अस्थिरचित्त। २ संदेह में पड़ा हुआ। ३ जिसके चित्त में खटका हो। चिंतित।
दुजⓅ—सज्ञा पुं० दे० "द्विज"।
दुजन्माⓅ—सज्ञा पुं० दे० "द्विजन्मा"।
दुजपतिⓅ—सज्ञा पुं० दे० द्विजपति'।
दुजानू—क्रि० वि० [हिं० दो+फा० जानू] दोनों घुटनों के बल। घुटने टेककर (बैठना)।
दुजायगी—सज्ञा स्त्री० दे० "दुई"।
दुजीहⓅ—सज्ञा पु० दे० "द्विजिह्व"।
दुजेश—सज्ञा पुं० दे० "द्विजेश"।
दुज्जनⓈ—सज्ञा पुं० [स० दुर्जन] दे० "दुर्जन"। उ०—बालचद विज्जावइ भासा। दुहु नहिं लग्गइ दुज्जन हासा॥
दुटूक—वि० [हिं० दो+टूक] दो टुकड़ों में किया हुआ। खडित। उ०—तिय हिय सही दुटूक है तुम्हैं चाहि सुखधाम। रही एक में लाज भरि दूजे में भरि काम।—रससाराश।

मुहा०—दुटूक बात=थोड़े में कही हुई साफ बात। बिना घुमाव फिराव की स्पष्ट बात। खरी बात।
दुड़बड़ी†—सज्ञा स्त्री० [प्रा० दडि=एक बाजा] एक प्रकार का बाजा। उ०—ढोल दमामा दुड़बड़ी, सहनाई सँगि भेरि। औसर चल्या बजाइ करि, है कोइ राखै फेरि।—कबीर०।
दुड़ी—सज्ञा स्त्री० दे० "दुक्की"।
दुत—अव्य० [अनु०] १ एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। दूर हो। २. घृणा, अस्वीकृति या तिरस्कारसूचक शब्द।
दुतकार—सज्ञा स्त्री० [अनु० दुत+कार] वचन द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। धिक्कार। फटकार।
दुतकारना—क्रि० स० [हिं० दुतकार] १. दुत दुत शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना। २. तिरस्कृत करना। धिक्कारना।
दुतर्फा—वि० [हिं० दो+अ० तरफ] [स्त्री० दुतर्फी] दोनों ओर का। जो दोनों ओर हो।
दुतारा—सज्ञा पुं० [हिं० दो+तार] एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं।
दुति—सज्ञा स्त्री० दे० "द्युति"।
दुतिमानⓅ—वि० दे० द्युतिमान"।
दुतियⓅ—वि० दे० "द्वितीय"।
दुतिया—सज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।
दुतिवंतⓅ—वि० [हिं० दुति + वत (प्रत्य०)] १. आभायुक्त। चमकीला। २ सुदर।
दुतीयⓅ—वि० दे० "द्वितीय"।
दुतीयाⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।
दुदल—सज्ञा पुं० [स० द्विदल] १ दाल। २. एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। कानफूल। बरन।
दुदलाना†—क्रि० स० दे० 'दुतकारना'।
दुदामी—सज्ञा स्त्री० [हिं० दो+दाम] एक प्रकार का पुराना सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।
दुदिला—वि० [हिं० दो+फा० दिल] १ दुविधा में पड़ा हुआ। दुचित्ता। २ खटके में पड़ा हुआ। चिंतित। व्यग्र। घबराया हुआ।
दुद्धी—सज्ञा स्त्री० [सं० दुग्धी] १ जमीन पर फैलनेवाली एक घास जिसके डंठलों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं। इसका व्यवहार औषध में होता है। २ थूहर की जाति का एक छोटा पौधा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध] १. सफेद या खड़िया मिट्टी। २ सारिवा लता। ३ जगली नील।

दुधमुखⓅ†—वि० [हिं० दूध+मुख] १ दूधपीता। दूधमुहाँ। बच्चा। २. नासमझ। नादान।

दुधमुहाँ—वि० दे० "दूधमुहाँ"।

दुधहाँडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध+हाँडी] मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

दुधाँडी—संज्ञा स्त्री० दे० "दुधहाँडी"।

दुधार—वि० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] १ दूध देनेवाली। जो दूध देती हो, जैसे—*दुधार गाय। २. जिसमें दूध हो। दूधवाला।* दूध देनेवाला (वृक्ष, फल आदि)।

वि०, संज्ञा पु० दे० "दुधारा"।

दुधारा—वि० [हिं० दो+धार] (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो, जैसे दुधारा खाँडा।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का चौड़ा खाँड़ा या तलवार जिसके दोनों ओर तेज धार होती है।

दुधारी—वि० स्त्री० [हिं० दुधार+ई (प्रत्य०)] दूध देनेवाली। जो दूध देती हो।

वि० स्त्री० [हिं० दो+धार] जिसमें दोनों ओर धार हो, जैसे—दुधारी तलवार।

दुधारू†—वि० दे० "दुधार"।

दुधिया—वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १ दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २ जिसमें दूध होता है। ३ दूध की तरह सफेद। सफेद रंग का।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुग्धिका] १ दुद्धी नाम की घास। २ एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३ खड़िया मिट्टी। ४ कलियारी की जाति का एक विष।

दुधिया पत्थर—संज्ञा पुं० [हिं० दुधिया+पत्थर] १ एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले, खिलौने आदि बनते हैं। २ एक प्रकार का नग या रत्न।

दुधिया विष—संज्ञा पु० [हिं० दुधिया+विष] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुंदर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है। तेलिया विष। मीठा जहर।

दुधैल—वि० स्त्री० [हिं० दूध+ऐल (प्रत्य०)] बहुत दूध देनेवाली। दुधार।

दुनरना, दुनवनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० दो+नवना=झुकना] लचकर प्राय दोहरा हो जाना।

क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।

दुनाली—वि० स्त्री० [हिं० दो+नाल] दो नलोंवाली, जैसे, दुनाली बदूक।

संज्ञा स्त्री० वह बदूक जिसमें दो दो गोलियाँ एक साथ भरी जायँ। दुनाली बदूक।

दुनिया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ससार। जगत।

यौ०—दीन दुनिया=लोक परलोक।

मुहा०—दुनिया के परदे पर=सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना=सासारिक अनुभव होना। विषयों का अनुभव होना। दुनिया की बातों और वस्तुओं का सच्चा ज्ञान होना। दुनिया भर का=बहुत अधिक।

२ ससार का जंजाल। जगत का प्रपंच।

दुनियाई—वि० [अ० दुनिया+हिं० ई (प्रत्य०)] सांसारिक।

संज्ञा स्त्री० ससार।

दुनियादार—संज्ञा पुं० [फा०] सासारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ।

वि० १ ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २ व्यवहारकुशल।

दुनियादारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दुनिया का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो। स्वार्थसाधन। ३ बनावटी व्यवहार।

दुनियासाज—वि० [फा०] [संज्ञा दुनियासाजी] १ ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थसाधक। २ चापलूस।

दुनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ० दुनिया] ससार।

दुपटा†Ⓟ—संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।

दुपट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+पाट] [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] १ ओढ़ने का वह कपड़ा जो दो पाटों को जोड़कर बना हो। दो पाट की चद्दर। चादर।

मुहा०—दुपट्टा तानकर सोना=निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना।

२ कंधे या गले पर डालने का लबा कपड़ा।

दुपटी†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"

दुपद—संज्ञा पुं० वि० दे० "द्विपद"।

दुपहर—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दुपहरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुपहर] १ मध्याह्न का समय। दोपहर। २ एक छोटा पौधा जो फूलों के लिये लगाया जाता है।

दुपहरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।

दुफसली—वि० [हिं० दो+अ० फस्ल] वह बीज जो रबी और खरीफ दोनों में हो।

वि० स्त्री० दुविधा की। अनिश्चित (बात)।

दुबधा—संज्ञा स्त्री० [सं० द्विविधा] १ दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता। २ संशय। संदेह। ३ असमंजस। आगापीछा। पसोपेश। ४ खटका। चिंता।

दुबरा†—वि० दे० "दुबला"।

दुबरानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० दुबरा से ना० धा०] दुबला होना। शरीर से क्षीण होना।

दुबला—वि० [सं० दुर्बल] [स्त्री० दुबली] १ जिसका बदन हलका और पतला हो। क्षीण शरीर का। कृश। २ अशक्त।

दुबलापन—संज्ञा पुं० [हिं० दुबला+पन] कृशता। क्षीणता।

दुबारा—क्रि० वि० दे० "दोबारा"।

दुबाला—वि० दे० "दोबाला"।

दुबिदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "द्विविद"।

दुबिध, दुबिधाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुबे—संज्ञा पु० [सं० द्विवेद] [स्त्री० दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद। दूबे। द्विवेदी।

दुभाखी—संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

दुभाषिया—संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषी] भिन्न भाषा भाषियों को एक दूसरे की बात जबानी अनुवाद करके सुनानेवाला।

दुमंजिला—वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब का। दोखंडा।

दुम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पूँछ। पुच्छ।

मुहा०—दुम दबाकर भागना=डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। डर के मारे झटपट भाग खड़ा होना। दुम

हिलाना=(१) कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। (२) चापलूसी करना।

२ पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३ पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी। पिछलग्गू। ४ किसी काम का अंतिम अंश। पुछल्ला।

दुमची—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दवा रहता है।

दुमदार—वि० [फा०] १ पूँछवाला। २ जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।

दुमन, दुमना—वि० [हिं० दो+मन] दुःखी। चिंतित। अस्थिर। व्यग्र।

दुमाता—वि० [सं० दुर्माता] १ बुरी माता। २ सौतेली माँ।

दुमाहा—वि० [हिं० दो+माह] हर दो महीने पर पूरा होनेवाला। द्वैमासिक (वेतन आदि)।

दुमुहाँ—वि० दे० "दोमुहाँ"।

दुरंगा—वि० [हिं० दो+रंग] [स्त्री० दुरंगी] १ दो रंगों का। जिसमें दो रंग हों। २ दो तरह का। ३ दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी—वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"।

संज्ञा स्त्री० कुछ इस पक्ष का, कुछ उस पक्ष का अवलंबन, जैसे, दुरंगी चाल।

दुरंत—वि० [सं०] १ जिसका अंत जल्दी न मिले। अपार। बहुत भारी। २ दुर्गम। दुस्तर। कठिन। ३ घोर। प्रचंड। भीषण। ४ जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ। ५ दुष्ट। खल।

दुरंधा(पु)—वि० [सं० द्विरंध्र] १ दो छिद्रोंवाला। २ आरपार छेदा हुआ।

दुर्—अव्य० या उप० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१ बुराई, जैसे—दुरात्मा। दुर्जन। दुर्दशा। दुर्गुण। २ अभाव या कमी, जैसे—दुरतिक्रम। दुर्बल। ३ कठिनता, जैसे—दुर्गम। दुर्बोध। दुर्दांत। दुर्योधन। दुर्लभ।

दुर—अव्य [हिं० दूर] एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये होता है और जिसका अर्थ है "दूर हो"।

मुहा०—दुर दुर करना=तिरस्कारपूर्वक हटाना। कुत्ते की तरह भगाना।

संज्ञा पुं० [फा०] १ मोती। मुक्ता। २ मोती का वह लटकन जो नाक में पहना जाता है। लोलक। ३ छोटी बाली।

दुरजन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दुर्जन"।

दुरजोधन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

दुरतिक्रम—वि० [सं०] १ जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके। २ प्रबल। ३. जिसका पार पाना कठिन हो। अपार।

दुरत्यय—वि० [सं०] [स्त्री० दुरत्यया] १ जिसे पार करना बहुत कठिन हो। २. दुस्तर। कठिन। ३ दुर्दमनीय।

दुरथल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० दु+स्थल] बुरी जगह।

दुरद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

दुरदाम(पु)—वि० [सं० दुर्दम] कष्टसाध्य।

दुरदाल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदुराना—क्रि० स० [हिं० दुर दुर] तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान के साथ भगाना।

दुरदृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्भाग्य। बदकिस्मती।

दुरनां(पु)—क्रि० अ० [हिं० दूर] १ आँखों के आगे से दूर होना। आड़ में जाना। २ न दिखलाई पड़ना। छिपना। ओझल होना।

दुरपदी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।

दुरभिसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह। साजिश।

दुरभेव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० दुर्भाव या दुर्भेद] बुरा भाव। मनमुटाव। मनोमालिन्य।

दुरमुस—संज्ञा पुं० [सं० दुर् (प्रत्य०) +√मृश्=कूटना] गदा के आकार का उपकरण जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।

दुरलभ(पु)—वि० दे० "दुर्लभ"।

दुरवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी दशा। खराब हालत। २ दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा। हीन दशा।

दुराउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दुराव"।

दुरागमन—संज्ञा पुं० दे० "द्विरागमन"।

दुराग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराग्रही] १ किसी बात पर बुरे ढंग से अड़ना। हठ। जिद। अनुचित बात पर अड़ना। २ अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उसपर स्थिर रहने का काम।

दुराचरण—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा चालचलन। खोटा व्यवहार।

दुराचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण। बुरा चालचलन।

दुराज—संज्ञा पुं० [सं० दुर+राज्य] बुरा राज्य। बुरा शासन।

संज्ञा पुं० [हिं० दो+राज्य] १ एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य का शासन। उ०—जोग विरह के बीच परम दुख मरियत है यहि दुसह दुराजै।—सूर०। दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यों न बढ़ै दुखदंदु। अधिक अँधेरो जग करत मिलि मावस रवि चंदु॥ बिहारी०। २ वह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो।

दुराजी—वि० [सं० दुराज्य] दो राजाओं का।

दुरात्मा—वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्टात्मा। नीचाशय। खोटा। बुरे काम करनेवाला।

दुरादुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुराना=छिपना] छिपाव। गोपन।

मुहा०—दुरादुरी करके=छिपे छिपे।

दुराधर्ष—वि० [सं०] जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचंड। प्रबल।

दुराना—क्रि० अ० [हिं० दूर] १ दूर होना। हटना। टलना। भागना। २ छिपना।

क्रि० स० १ दूर करना। हटाना। २ छोड़ना। त्यागना। ३ छिपाना। गुप्त रखना। उ०—तुम तो तीन लोक के ठाकुर तुम तें कहा दुराइए।—सूर०।

दुरारूढ़—वि० [सं० दु+आरूढ़] १ कठिन। क्लिष्ट। २ जिसपर चढ़ना या पहुँचना कठिन हो। ३ जो जल्दी समझ में न आए।

दुरालभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जवासा। धमासा। हिंगुवा। २ कपास।

दुराव—संज्ञा पुं० [हिं० दुराना] १. अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव। छिपाव। भेदभाव। २ कपट। छल।

दुराशय—संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट आशय। बुरी नीयत।

वि० जिसका आशय बुरा हो। खोटा।

दुराशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो। व्यर्थ की आशा। उ०—दिन दिन अधिक दुराशा लागी सकल लोक भरमायो।—सूर०।

दुरासा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दुराशा"।

दुरित—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। पातक। २. उपपातक। छोटा पाप।

वि० [स्त्री० दुरिता] पापी । पातकी । अघी ।

दुरियाना†—क्रि० स० [हिं० दूर] अपमानपूर्वक दूर करना । तिरस्कार के साथ हटाना ।

दुरुखा—वि० [हिं० दो+फा० रुख] १. जिसके दोनों ओर मुँह हों। २ जिसके दोनों ओर कोई चिह्न या विशेषता हो। ३ जिसके दोनों ओर दो रंग हों।

दुरुपयोग—संज्ञा पु० [सं०] किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना। बुरा उपयोग । अनुचित इस्तेमाल ।

दुरुस्त—वि० [फा०] १ जो अच्छी दशा में हो। जो टूटा फूटा या बिगड़ा न हो। ठीक । २ जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३ उचित । मुनासिब । ४ यथार्थ ।

दुरुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुधार । संशोधन ।

दुरूह—वि० [सं०] [संज्ञा दुरूहता] जल्दी समझ में न आने योग्य। गूढ़। कठिन। दुर्बोध ।

दुरेफ—संज्ञा पुं० दे० "द्विरेफ"। उ०—मुरल मुख छवि पत्र शाखा दृग दुरेफ चल्यो। —सूर०।

दुर्कुलⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुष्कुल"।

दुर्गंध—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी गंध या महक। बदबू। कुवास। आमगंध।

दुर्ग—वि० [सं०] जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम।

संज्ञा पुं० १. पत्थर आदि की चौड़ी और पुष्ट दीवारों से घिरा हुआ वह रहने का स्थान जिसके भीतर राजा, सरदार और सेना के सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। किला। २ एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।

दुर्गत—वि० [सं०] १ जिसकी बुरी गति हुई हो। दुर्दशाग्रस्त। २ दरिद्र।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।

दुर्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी गति। दुर्दशा । बुरा हाल । जिल्लत। २. वह दुर्दशा जो परलोक में हो। नरक भोग।

दुर्गपाल—संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का रक्षक। किलेदार।

दुर्गम—वि० [सं०] [संज्ञा दुर्गमता] १ जहाँ जाना कठिन हो। औघट। २. जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. दुस्तर। कठिन। विकट।

संज्ञा पुं० १ गढ़। दुर्ग। किला। २ विष्णु। ३ वन। ४ संकट का स्थान।

दुर्गरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] किलेदार।

दुर्गा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणों के अनुसार अनेक दैत्यों का नाश करनेवाली, पाप, भय, दुःख आदि से रक्षा कर अभिलषित फल देनेवाली देवी। दुर्ग नामक दैत्य को मारनेवाली देवी (देवी पुराण)। २ आदि शक्ति। देवी। वैदिक काल में यह अंबिका देवी के रूप में स्मरण की जाती थीं और रुद्र की बहन मानी जाती थीं (शुक्ल यजुर्वेदस्थ वाजसनेय संहिता और तैत्तिरीय ब्राह्मण)। देवी भागवत के अनुसार ये विष्णु की भार्या थीं जो दक्ष प्रजापति की कन्या सती के रूप में प्रकट हुई थीं। इन्होंने तप करके शिव को पति रूप में प्राप्त किया। इनका अनेक असुरों का मारना प्रसिद्ध है। ३ हिमवान् और मेनका की कन्या काली या पार्वती जो शिव को ब्याही थी। कार्तिकेय और गणेश की माता। गौरी, काली, रौद्री, भवानी, चंडी अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम और रूप हैं। ४ नील का पौधा। ५ अपराजिता। कौवाठोंठी। ६ श्यामापक्षी। ७ एक संकर रागिनी।

दुर्गाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का प्रधान। किलेदार।

दुर्गुण—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा गुण। दोष। ऐब। बुराई।

दुर्गोत्सव—संज्ञा पु० [सं०] दुर्गापूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।

दुर्घट—वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो। कष्टसाध्य।

दुर्घटना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। अशुभ घटना। २ बुरा संयोग। वारदात। २. विपद। आफत।

दुर्जन—संज्ञा पु० [सं०] दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल।

दुर्जनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।

दुर्जय—वि० [सं०] जिसे जीतना बहुत कठिन हो। जो जल्दी जीता न जा सके।

दुर्जेय—वि० दे० "दुर्जय"।

दुर्ज्ञेय—वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दम—वि० दे० "दुर्दमनीय"।

दुर्दमनीय—वि० [सं०] १ जिसको वश में करना बहुत कठिन हो। जो जल्दी कब्जे में न आए। २ प्रचंड। प्रबल। उद्दंड।

दुर्दम्य—वि० दे० "दुर्दमनीय"।

दुर्दरⓅ—वि० दे० "दुर्द्धर"।

दुर्दशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी दशा। मंद अवस्था। दुर्गति। खराब हालत।

दुर्दांत—वि० [सं०] १. जिसे दबाना बहुत कठिन हो। दुर्दमनीय। उद्दंड। २ प्रचंड। प्रबल।

दुर्दिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा दिन। २ ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन। ३. दुर्दशा, दुःख और कष्ट का समय।

दुर्दैव—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २ दिनों का बुरा फेर।

दुर्द्धर—वि० [सं०] १ जिसे कठिनता से पकड़ सकें। २ उद्दंड। प्रबल। प्रचंड। ३ जो कठिनता से समझ में आवे।

दुर्द्धर्ष—वि० [सं०] १ जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड। उग्र। उद्दंड।

दुर्नाम—संज्ञा पुं० [सं० दुर्नामन्] १ बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २ गाली। बुरा वचन। कुवाच्य। ३ बवासीर। ४. सीप।

दुर्निवार—वि० दे० "दुर्निवार्य"।

दुर्निवार्य—वि० [सं०] १ जिसका निवारण करना कठिन हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २ जो जल्दी हटाया न जा सके। ३ जिसका होना निश्चित हो। ४ जो टाला न जा सके।

दुर्नीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुनीति। कुचाल। अन्याय। अयुक्त आचरण।

दुर्बल—वि० [सं०] १. जिसमें बल न हो। कमजोर। अशक्त। २ दुबला पतला।

दुर्बलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बल की कमी। कमजोरी। २ कृशता। दुबलापन।

दुर्बोध—वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।

दुर्भाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] मंद भाग्य। बुरा अदृष्ट। खोटी किस्मत।

दुर्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा भाव। २ द्वेष। मनमुटाव। मनोमालिन्य।

दुर्भावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी भावना। २ खटका। चिंता। अंदेशा आशंका।

दुर्भिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल।

दुर्भिच्छ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष"।

दुर्भेद—वि० [सं०] १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २ जिसे जल्दी पार न कर सकें।

दुर्भेद्य—वि० दे० "दुर्भेद"।

दुर्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। कुमति।

वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। कमअक्ल। २ खल। दुष्ट।

दुर्मद—वि० [सं०] १ घमंडी। २. मदमत्त।

दुर्मल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है। इसमें कैशिकी और भारती वृत्तियाँ होती हैं, गर्भ-संधि नहीं होती।

दुर्मिल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। इसके किसी चौकल में जगण नहीं रखा जाता। उ०—दस बसु मनु कलसों, गुरु द्वैपद सों, जन दुर्मिल सवहीं भायो। जय जय रघुनंदन, असुर निकंदन, को नहिं जस तुम्हरो गायो। २. एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं। उ०—सवसों करि नेह भजो रघुनंदन राजत हीरन माल हिये। नवनील बपू कल पीत झँगा झलकैं अलकैं घुँघुरारी लिये॥

दुर्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २ राम की सेना का एक बंदर। ३. रामचंद्र जी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था।

वि० [स्त्री० दुर्मुखी] १ जिसका मुख बुरा हो। २ कटुभाषी। अप्रियवादी। बदजबान। ३ जिसके मुँह से निकली बुरी बात खाली न जाय। अनिष्टमुख।

दुर्योधन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन हस्तिनापुर के कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में सबसे बड़ा जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत विद्वेष रखता था। इसके साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों सहित १२ वर्ष तक बनवास और एक वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया जिसके कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।

दुर्रा—संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा। चाबुक।

दुर्रानी—संज्ञा पुं० [फा०] अफगानों की एक जाति।

दुर्लंघ्य—वि० [सं०] जिसे लाँघ सकना कठिन हो।

दुर्लक्ष्य—वि० [सं०] जो कठिनता से दिखाई पड़े। जो प्राय अदृश्य हो।

दुर्लक्ष्यी—वि० दे० "दुर्लक्ष्य"।

दुर्लभ—वि० [सं०] [संज्ञा दुर्लभता] १ जिसे पाना सहज न हो। दुष्प्राप्य। २ अनोखा। बहुत बढ़िया। ३ प्रिय।

दुर्वचन—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्वाक्य। गाली।

दुर्वह—वि० [सं०] जिसका वहन करना कठिन हो। जो निभाया न जा सके।

दुर्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ निंदा। गाली। २ स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।

दुर्वासा—संज्ञा पुं० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो शंकर के अंश से उत्पन्न अनसूया और अत्रि के पुत्र थे। ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्विनीत—वि० [सं०] अविनीत। अशिष्ट। उद्धत। अक्खड़। धृष्ट।

दुर्विपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा परिणाम। २ बुरा संयोग। दुर्घटना।

दुर्वृत्त—वि० [सं०] [संज्ञा दुर्वृत्ति] दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्व्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुप्रबंध। बदइंतजाम।

दुर्व्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा व्यवहार। बुरा बर्ताव। २ दुष्ट आचरण

दुर्व्यसन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो। बुरी लत। बुरी हालत। खराब आदत। कुटेव।

दुर्व्यसनी—वि० [सं०] बुरी लतवाला।

दुलकना—क्रि० अ०, स० दे० "दुलखना"।

दुलकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना ?] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।

दुलखना—क्रि० स० [हिं० दो+लक्षण] बार बार कहना या बतलाना।

क्रि० अ० कहकर मुकरना।

दुलड़ा—वि० [हिं० दो+लड़] दो लड़ों वाला (हार, आभूषण आदि)।

दुलड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लड़] दो लड़ों की माला।

दुलत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लात] गधे, घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह मादा खच्चर जिसे इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुसलमानों के पैगंबर मुहम्मद साहब को भेंट में दिया था। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसकी नकल निकालते हैं। २ मुहर्रम के आठवें और नवें दिन अब्बास और हुसैन के नाम से निकाला जानेवाला बिना सवार का घोड़ा।

दुलना—क्रि० अ० दे० "डुलना"।

दुलभ(पु)—वि० दे० "दुर्लभ"।

दुलरा(पु)—वि० १ दे० "दुलारा"। २ दो लड़ों का।

दुलराना(पु)†—क्रि० स० [हिं० दुलारना] बच्चों को बहलाकर प्यार करना। लाड़ करना। उ०—अब लागी मोको दुलरावन प्रेम करति हरि ऐसी हौ। सुनहु सूर तुमरे छिन छिन मति बड़ी प्रेम की गैसी हो॥ —सूर०।

क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना। आंतरिक प्रेम को चेष्टाओं में प्रकट करना।

दुलरी—संज्ञा स्त्री० १ दे० "दुलड़ी"। २ दे० "दुलारी"।

दुलहन—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुलहा] नव-विवाहिता वधू। नई ब्याही स्त्री।

दुलहा—संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।

दुलहिया, दुलही†—संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"। उ०—देह दुलहिया की बढ़ै ज्यौं ज्यौं जोबन जोति। त्यौं त्यौं लखि सौत्यैं सबै बदन मलिन दुति होति।—बिहारी०।

दुलहेटा—संज्ञा पुं० [प्रा० दुल्लह+हिं० बेटा] १ लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का। २ दुलहा।

दुलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने का दोहरा हलका कपड़ा जिसके भीतर थोड़ी रूई भरी हो।

दुलाना(पु)—क्रि० स० दे० "डुलाना"।

दुलार—संज्ञा पुं० [हिं० दुलारना] १ प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के

कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़ प्यार। २. आवश्यकता से अधिक प्रेम। प्रेमातिशय्य। ३ सिर चढ़ाना।

दुलारना—क्रि० स० [सं० दुर्लालन] १. प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना, जैसे, शरीर पर हाथ फेरना, चूमना, विलक्षण संबोधनों से पुकारना आदि। लाड़ करना। २. आवश्यकता से अधिक प्यार करना।

दुलारा—वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़ प्यार हो। लाड़ला। अत्यधिक प्यारा।

दुलारी—वि० स्त्री० [हिं० दुलारा] जिसका बहुत दुलार या लाड़ प्यार हो। लाड़ली।

संज्ञा स्त्री० लाड़ली बेटी। प्रिय कन्या। उ०—सखियन सँग भूलति वृषभानु की दुलारी। —सूर०।

दुलीचा, दुलैंचा—संज्ञा पुं० दे० "गलीचा"।

दुलोही—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार।

दुल्लभⓅ—वि० दे० "दुर्लभ"।

दुव—वि० [सं० द्वि के द्वौ रूप से] दो।

दुवन—संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १ खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २ शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३. राक्षस। दैत्य।

दुवाज—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादसⓅ†—वि० दे० "द्वादश"।

दुवादस बानीⓅ—वि० [सं० द्वादश=सूर्य+वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा (विशेषत सोने के लिये)।

दुवार†—संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।

दुवाल—संज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।

दुवाली—संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिये घोंटने का औजार। घोंटा।

संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।

दुविधा†—संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुवोⓅ†—वि० [हिं० दुव=दो] दोनों।

दुश्वार—वि० [फा०] [संज्ञा दुश्वारी] १. कठिन। दुरूह। मुश्किल। २ दुःसह।

दुशाला—संज्ञा पुं० [सं० द्विशाट ? फा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर बेलें बनी रहती हैं।

दुशासनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।

दुश्चरित—वि० [सं०] १ बुरे आचरण का। बदचलन। २ कठिन।

संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।

दुश्चरित्र—वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।

संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।

दुश्चिंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी या विकट चिंता।

दुश्चेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।

दुश्मन—संज्ञा पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।

दुष्कर—वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।

दुष्कर्म—संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

दुष्कर्मा—वि० [सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।

दुष्कर्मी—वि० [सं० दुष्कर्म+ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।

दुष्काल—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा वक्त। कुसमय। २ दुर्भिक्ष। अकाल।

दुष्कीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बदनामी। अपयश।

दुष्ट—वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] १ जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोषग्रस्त। २ पित्त आदि दोष से युक्त। ३ दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।

दुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्जनता। २ बदमाशी। पाजीपन। ३ दोष। ऐब। बुराई।

दुष्टपना—संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।

दुष्टाचार—संज्ञा पुं० [सं०] कुचाल। कुकर्म।

दुष्टात्मा—वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।

दुष्प्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी प्रवृत्ति।

वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुष्प्राप्य—वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्मंत—संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुष्यंत—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन हस्तिनापुर के पुरुवंशी राजा ऐलि के पुत्र जिन्होंने महर्षि कण्व द्वारा पाली, (मेनका अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न), विश्वामित्र की कन्या शकुंतला से ऋषि के आश्रम में ही गांधर्व विवाह किया था। इन्हीं दुष्यंत और शकुंतला के गर्भ से चक्रवर्ती सम्राट् भरत का जन्म हुआ। कुछ लोगों के अनुसार इन्हीं भरत से इस देश का नाम भारत या भारतवर्ष पड़ा।

दुसरानाⓅ—क्रि० स० दे० "दोहराना"।

दुसरिहाⓅ†—वि० [हिं० दूसर+हा (प्रत्य०)] १ साथी। संगी। उ०—कह्यो कि मृत्युलोक के माहीं। तुम्हरा कोई दुसरिहा नाहीं। —विश्रामसागर। २ प्रतिद्वंद्वी।

दुसहⓅ—वि० [सं० दुःसह] १ जो सहा न जाय। असह्य। २ कठिन। कठोर।

दुसही†—वि० [हिं० दुसह+ई (प्रत्य०)] १ जो कठिनता से सह सके। २ ईर्ष्यालु। द्वेषी।

दुसाखा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+शाखा] एक प्रकार का शमादान जिसमें दो कनखे निकले होते हैं।

दुसाध—संज्ञा पुं० [?] हिंदुओं में एक जाति जो सूअर पालती है।

दुसार, दुसाल—संज्ञा पुं० [हिं० दो+सालना] आरपार किया हुआ छेद। उ०—लागत कुटिल कटाच्छ सर क्यों न होहिं बेहाल। कढ़त जि हियहिं दुसाल करि, तऊ रहत नटसाल॥ —बिहारी०।

क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।

दुसासनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।

दुसूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+सूत] दोहरे सूत की बनी हुई चादर। एक प्रकार की मोटी चादर।

दुसेजा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+सेज] बड़ी खाट। पलंग।

दुस्तर—वि० [सं०] [संज्ञा दुस्तरता] १ जिसे पार करना कठिन हो। २ विकट। कठिन।

दुस्सह—वि० दे० "दुःसह"।

दुहता—संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती।

दुहत्था—वि० [हिं० दो+हाथ] [स्त्री० दुहत्थी] १ दोनों हाथों से किया हुआ। २ दो मूठों या दस्तोंवाला।

दुहना—क्रि० स० [सं० दोहन] १. स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। २ निचोड़ना। तत्व या सार खींचना, जैसे—पाछे पृथु को रूप हरि लीन्हें नाना रस दुहि काढे। तापर रचना रची विधाता बहुविधि पललन बाढे। —सूर०।

मुहा०—दुह लेना=(१) सार खींच लेना। (२) धन हर लेना। लूटना।

दुहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दोहनी] वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है। दोहनी।

दुहरा—वि० पु० दे० "दोहरा"।

दुहाई—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वि+आह्वाय] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, जो चारों ओर दी जाय। मुनादी। घोषणा। उ०—सब तन जोबन अमीर की दुहाई फिरी, रही लरिकाई अदि अचल मवास सी। —रससाराश।

मुहा०—(किसी की) दुहाई फिरना=(१) राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके नाम की घोषणा होना। उ०—बैठे राम राजसिंहासन जग में फिरी दुहाई। निर्भय राजा राम को कहियत सुरनर मुनि सुखदाई। —सूर० (२) प्रताप का डंका पिटना।

२. शपथ। कसम। सौगंध। ३ बचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।

मुहा०—दुहाई देना=अपने बचाव के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना। सहायता के लिये पुकार।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √दुह+आई] १ गाय, भैंस, बकरी आदि को दुहने का काम। २ दुहने की मजदूरी।

दुहाग—संज्ञा पुं० [सं० दुर्भाग्य] १ दुर्भाग्य। २ वैधव्य। रँड़ापा।

दुहागिन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहागी] सुहागिन का उलटा। विधवा।

दुहागिल—वि० [हिं० दुहाग] १ अभागा। २. अनाथ। ३ सूना।

दुहागी†—वि० [सं० दुर्भागिन्] [स्त्री० दुहागिन] दुर्भागी। अभागा। बदकिस्मत।

दुहाना—क्रि० स० [हिं० दुहना का प्रे० रूप] दुहने का काम दूसरे से कराना।

दुहावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहाना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।

दुहिता—संज्ञा स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या। लड़की।

दुहिनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० द्रुहण] ब्रह्मा।

दुहुँघाँⓅ†—संज्ञा पुं० [?] दोनों ओर।

दुहेला—वि० [सं० दुर्हेल] [स्त्री० दुहेली] १. दुःखदायी। दुःसाध्य। कठिन। २ दुःखी।

संज्ञा पुं० १ विकट या दुःखदायक कार्य। २ कठिन खेल। उ०—अबहिं बारि तुई पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला। —पदमावत।

दुहोतराⓅ—वि० [सं० द्वि+उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर।

दुह्य—वि० [सं०] [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य।

दूँदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दुंद"।

दूँदनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० दुंद] लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना।

दूँदिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "दुंद"।

दूइज†—संज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।

दूकⓅ—वि० [सं० द्वैक] दो एक। कुछ।

दूकान—संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।

दूखना†Ⓟ—क्रि० स० [सं० दूषण] दोष लगाना। ऐब लगाना।

क्रि० अ० दे० "दुखना"।

दूज—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।

मुहा०—दूज का चाँद होना=बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना। कम दर्शन देना।

दूजाⓅ†—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

दूत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दूती] १ वह जो संदेश पहुँचाने या किसी विशेष कार्य के लिये कहीं भेजा जाय। चर। बसीठ। २ अन्य देश में स्थायी या अस्थायी रूप से रहकर अपने राजा या राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करनेवाला व्यक्ति। राजदूत। ३ प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य।

दूतकर्म—संज्ञा पु० [सं०] सँदेसा या खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।

दूतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूतत्व। दूत का काम।

दूतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम।

दूतपन—संज्ञा पुं० दे० "दूतत्व"।

दूतमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम के लिये भेजे हुए दूतों का समूह या दल।

दूतरⓅ†—वि० दे० "दुस्तर"।

दूतावास—संज्ञा पुं० [सं० दूत+आवास] किसी देश में दूसरे देश के राजदूत और उससे संबद्ध व्यक्तियों आदि के रहने की जगह।

दूतिका, दूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। संचारिका। सारिका।

दूत्य—संज्ञा पुं० दे० "दौत्य"।

दूध—संज्ञा पु० [सं० दुग्ध] १ सफेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की प्रसूता के स्तनों में रहता है और जिससे उनके नवजात बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। पय। दुग्ध।

मुहा०—दूध उतरना=छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना=ठीक ठीक न्याय करना। असलियत का निर्णय करना। उ०—हम जानतहिं वह उघारि परैगी दूध दूध पानी सो पानी। —सूर०। दूध का सा उबाल=शीघ्र शांत हो जानेवाला मनोवेग। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना=किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ या अनावश्यक समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=बहुत छोटा रहना या बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और संतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। दूध पीता बच्चा=गोद का बच्चा। दूध फटना=खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना। दूध बिगड़ना। (स्तनों में) दूध भर आना=बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।

२ अनाज के हरे बीजों का रस। ३. वह सफेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों या डंठलों को तोड़ने पर निकलता है।

दूधपिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध+पिलाना] १ दूध पिलानेवाली दाई। २ ब्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है। ३ वह धन या नेग जो माता को इस क्रिया के बदले में मिलता है।

दूधपूत—संज्ञा पुं० [हिं० दूध+पूत] धन और संतति। उ०—दूध पूत की छाँड़ी आस। गोधन भरता करे निरास। साँचे हित हरि मों कियो। —सूर०।

दूधफेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "फेनी"।

दूधभाई—संज्ञा पुं० [हिं० दूध+भाई] [स्त्री० दूध+बहन] ऐसे बालक जो एक ही स्त्री का स्तन पीकर पले हों पर भिन्न-भिन्न मातापिता से उत्पन्न हों। धाभाई।

दूधमुँहा—वि० [हिं० दूध+मुँह] जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा। बहुत कम उम्र का।

दूधमुख—वि० [हिं० दूध+सं० मुख] छोटा बच्चा। बालक। दूधमुँहा।

दूधिया—वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २ दूध के रंग का। सफेद।

संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २ एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती है।

दून—संज्ञा स्त्री० [हिं० दूना] १. दूने का भाव।

मुहा०—दून की लेना या हाँकना=बहुत बढ़ चढ़कर बातें करना। डींग मारना। दून की सूझना=बहुत बड़ी या असंभव बात का ध्यान में आना।

२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।

संज्ञा पुं० [देश०] तराई। घाटी।

दूनराⓅ—वि० [सं० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दूना—वि० [सं० द्विगुण] दुगना। दो बार उतना ही।

दूनौंⓅ†—वि० दे० "दोनों"।

दूब—संज्ञा स्त्री० [सं० दूर्वा] एक बहुत प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है, हरी, सफेद और गाँडर।

वि० दे० "गाँडर"।

दूबदू—क्रि० वि० [हिं० दो या फा० रूबरू] आमने सामने। मुकाबले में।

दूबराⓅ†—वि० दे० "दुबला"।

दूबा†—संज्ञा स्त्री० दे० "दूब"।

दूबे—संज्ञा पुं० [सं० द्विवेद] ब्राह्मणों की एक शाखा। द्विवेदी।

दूभर—वि० [सं० दुर्भर] कठिन। मुश्किल।

दूमना†Ⓟ—क्रि० अ० [सं० द्रुम] हिलना। डोलना।

दूरंदेश—वि० [फा०] [संज्ञा दूरंदेशी] दूर तक की बात विचारनेवाला। दूरदर्शी।

दूर—क्रि० वि० [सं०] देश, काल या संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा।

मुहा०—दूर करना=(१) अलग करना। जुदा करना। (२) न रहने देना। मिटाना। दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=(१) हट जाना। अलग हो जाना। (२) मिट जाना। नष्ट होना। दूर की बात=(१) बारीक बात। (२) कठिन बात। (३) बहुत आगे चलकर आनेवाली बात। दूर की सूझ=बड़ी सूक्ष्म बात।

वि० जो दूर या फासले पर हो।

दूरता—संज्ञा स्त्री० दे० "दूरत्व"।

दूरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक—वि० [सं०] दूर तक देखने-वाला।

दूरदर्शक यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दूरबीन।

दूरदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने का गुण। दूरदेशी।

दूरदर्शी—वि० [सं०] बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला। अग्रशोची। दूरदेश।

दूरबीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक यंत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरवर्ती—वि० [सं०] दूर का। जो दूर हो।

दूरवीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] दूरबीन।

दूरस्थ—वि० [सं०] दूर का।

दूरागत—वि० [सं०] दूर से आया हुआ।

दूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० दूर+हिं० ई (प्रत्य०)] दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। दूरत्व। अंतर। फासला।

दूरीकृत—वि० [सं०] दूर किया हुआ।

दूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूब नाम की घास।

दूलनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दोलन"।

दूलह—संज्ञा पुं० [सं० दुर्लभ] १ दुलहा। वर। नौशा। २ पति। स्वामी।

दूलितⓅ—वि० दे० "दोलित"।

दूल्हा—संज्ञा पुं० दे० "दूलह"।

दूषक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी पर दोषारोपण करे। २ दोष उत्पन्न करने-वाला पदार्थ।

दूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दोष। ऐब। बुराई। अवगुण। २ दोष लगाने की क्रिया या भाव। ऐब लगाना। ३ एक राक्षस जो खर और रावण का भाई था।

दूषणीय—वि० [सं०] दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।

दूषनाⓅ†—क्रि० स० [सं० दूषण] दोष लगाना। कलंकित करना।

दूषित—वि० [सं०] जिसमें दोष हो। खराब। बुरा। दोषयुक्त।

दूष्य—वि० [सं०] १ दोष लगाने योग्य। जिसमें दोष लगाया जा सके। २ निंदनीय निंदा करने योग्य। ३ तुच्छ।

दूसना—क्रि० स० दे० "दूषना"।

दूसरⓅ†—वि० दे० "दूसरा"।

दूसरा—वि० [हिं० दो] १. जो क्रम में दो के स्थान पर हो। पहले के बाद का। द्वितीय। २ जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो। अन्य। अपर।

दूहना—क्रि० स० दे० "दुहना"।

दूहाⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "दोहा"।

दृक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छेद। बिल। सुराख। २. (समास में) देखने या जानने की शक्ति। ईक्षण। दर्शन। ३. आँख। नेत्र।

दृक् क्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टिपात।

दृक्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।

दृक्पात—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टिपात।

दृक्शक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देखने की शक्ति। आँखों की शक्ति। २ प्रकाश रूप। चैतन्य। ३. आत्मा।

दृगचल—संज्ञा पुं० [सं०] पलक।

दृगंबु—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँखों से निकलनेवाला जल। २ आँसू।

दृगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० दृश्, समास में दृक्] १ आँख।

मुहा०—दृग डालना या देना=देखना।

२ देखने की शक्ति। दृष्टि। ३ दो की संख्या।

दृगमिचाव—संज्ञा पुं० [हिं० दृग+मिचाव] आँखमिचौली का खेल।

दृगोचर—वि० [सं०] जो आँख से दिखाई दे।

दृढ़—वि० [सं०] १ पुष्ट। मजबूत। कड़ा। ठोस। २ जो विचलित न हो। अटल। ३ निश्चित। ध्रुव। पक्का। स्थिर। ४. बलवान। हृष्टपुष्ट। ५ जो खूब कसकर

बँधा या मिला हो। प्रगाढ़। ६ निडर। ढीठ। कड़े दिल का।

दृढ़चेता—वि० [सं० दृढ़चेतस्] पक्के विचारोंवाला। दृढ़निश्चय।

दृढ़ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २ मजबूती। ३ स्थिरता।

दृढ़त्व—संज्ञा पुं० [सं०] दृढ़ता।

दृढ़पद—संज्ञा पुं० [सं०] तेईस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—अबहुँ सुमिरि हरिनाम शुभ, काल जात बीता। हाथ जोरि विनती करौं, नहिं जात रीता॥ उपमान।

दृढ़प्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।

दृढ़ांग—वि० [सं०] जिसके अंग दृढ़ हों। कड़े बदन का। हृष्टपुष्ट।

दृढ़ाई(पु)—संज्ञा स्त्री० "दृढ़ता"।

दृढ़ाना—क्रि० स० [सं० दृढ़ से हिं० ना० धा०] दृढ़ करना। पक्का या मजबूत करना।

क्रि० अ० १. कड़ा, पुष्ट या मजबूत होना। २. स्थिर या पक्का होना।

दृप्त—वि० [सं०] १ उग्र। प्रचंड। २ प्रज्वलित। ३. तेजयुक्त। ४. अभिमानी।

दृश्—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दृश्य] १. देखना। दर्शन। २ दिखानेवाला। प्रदर्शक। ३ देखनेवाला।

संज्ञा स्त्री० १ दृष्टि। २ आँख। ३ दो की संख्या। ४. ज्ञान।

दृशद्वती—संज्ञा स्त्री० दे० "दृषद्वती"।

दृश्य—वि० [सं०] १. जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। दृग्गोचर। २. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३. मनोरम। सुंदर। ४ जानने योग्य। ज्ञेय।

संज्ञा पुं० १ वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो। देखने की वस्तु। २ तमाशा। ३ वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। रूपक। ४ ज्ञात या दी हुई संख्या (गणित)।

दृश्यमान—वि० [सं०] १. जो दिखाई पड़ रहा हो। २ चमकीला। ३ सुंदर।

दृषद्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऋग्वेद में वर्णित वर्तमान पंजाब की एक नदी का प्राचीन नाम। २ विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम।

दृष्ट—वि० [सं०] १ देखा हुआ। २ जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३ लौकिक और गोचर। प्रत्यक्ष।

संज्ञा पुं० १. दर्शन। २ साक्षात्कार। ३ प्रत्यक्ष प्रमाण (सांख्य)।

दृष्टकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहेली। २ वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाय।

दृष्टमान(पु)—वि० [सं० दृश्यमान] प्रकट।

दृष्टवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जो प्रत्यक्ष को ही मानता है।

दृष्टांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म आदि समझाने के लिये समान धर्मवाली किसी प्रसिद्ध या ज्ञात वस्तु या व्यापार का कथन। उदाहरण। मिसाल। २ एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब-भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है। उ०—दुसह दुराज प्रजानि को क्यों न करे अति दंद। अधिक अँधेरो जग करत मिलि मावस रविचंद। यहाँ उपमेय 'दुराज' में अधिक दंद या अँधेर का होना और उसी के अनुसार उपमान रविचंद मिलन में अधिक अँधेरे का होना वर्णित है। प्रतिवस्तूपमा से इस अलंकार में शब्दभेद से एक ही धर्म का कथन होता है पर इसमें धर्म भिन्न भिन्न (जैसे, दंद होना और अँधेरा होना) होते हैं। ३ न्याय शास्त्र के १६ पदार्थों में से एक। ४ शास्त्र। ५. मरण।

दृष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो। देखते ही समझ में आ जानेवाले अर्थ का शब्द। २ वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।

दृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देखने की वृत्ति या शक्ति। आँख की ज्योति। २. आँख की पुतली के किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति। अवलोकन। नजर। निगाह। ३. आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४ देखने के लिये खुली हुई आँख।

मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना = देखादेखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना = आँख मिलाना। साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना = दे० "दृष्टि जोड़ना"। दृष्टि रखना = देखरेख में रखना।

५ परख। पहचान। तमीज। ६ कृपा-दृष्टि। हित का ध्यान। मिहरबानी की नजर। ७ आशा की दृष्टि। आस। उम्मीद। ८. ध्यान। विचार। सोचने विचारने का ढंग। ९. उद्देश्य। अभिप्राय।

दृष्टिकूट—संज्ञा पुं० दे० "दृष्टकूट"।

दृष्टिकोण—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टि+कोण; अँग्रेजी के "ऐंगल ऑव् विजन" की नकल पर] विचार करने का ढंग। विचार। किसी विषय पर निश्चित सिद्धांत।

दृष्टिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र में दृश्य जगत् के समान ही किसी वस्तु के आकार प्रकार, दूरी और सामीप्य आदि का दिखाई देना। स्वाभाविक चित्रण।

दृष्टिगत—वि० [सं०] जो [illegible] पड़ता हो।

दृष्टिगोचर—वि० [सं०] नेत्रेंद्रिय जिसका बोध हो। जो देखने में आ सके।

दृष्टिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि का फैलाव। नजर की पहुँच।

दृष्टिपरंपरा—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टिक्रम"।

दृष्टिपात—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना।

दृष्टिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीठबंदी। इंद्रजाल। माया। जादू। २ हाथ की सफाई या चालाकी। हस्तलाघव।

दृष्टिवंत—वि० [सं० दृष्टि+वंत (प्रत्य०)] १ दृष्टिवाला। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्।

दृष्टिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।

दे—संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। देवी। उ०—यह छवि सूरदास सदा रहै बानी। नँदनंदन राजा राधिका दे रानी। —सूर०।

देई—संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] १. देवी। २ स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। ३ लड़की।

देउर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० देवगृह] मंदिर। देहुरा। उ०—धोभाउरि धाने मदिरा सौंध, देउर भाँगि मसीद बाँध।

देख—संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया या भाव, जैसे—देखरेख, देखभाल।

देखन(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया, भाव या ढंग।

देखनहारा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० देखन+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना—क्रि० स० [सं० दृश्] १ किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूपरंग आदि का नेत्रों द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना।

मुहा०—देखना सुनना = जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में=(१) बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। (२) रूपरंग में। देखते देखते = (१) आँखों के सामने। (२) तुरत। फौरन। चटपट। देखते रह जाना = हक्का बक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा = (१) फिर विचार किया जायगा। (२) पीछे जो कुछ करना होगा, किया जायगा।

२ पढ़ना। बाँचना। ३ जाँच करना। मुआयना करना। ४ ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगना। ५ परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ६ निगरानी रखना। ताकते रहना। ७ समझना। सोचना। विचारना। ८ अनुभव करना। भोगना। ९ गुण, दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँचना। १० ठीक करना। ११ उपाय करना। प्रतिकार करना, जैसे—उन्हें जो जी में आए करने दो, हम देख लेंगे।

देखभाल—संज्ञा स्त्री० [हिं०√देख+√भाल] १. जाँच पड़ताल। निरीक्षण। निगरानी। २ देखादेखी। साक्षात्कार।

देखराना(पु)†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देखरावना(पु)†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देखरेख—संज्ञा स्त्री० [हिं०√देख+सं० प्रेक्षण] देखभाल। निरीक्षण। निगरानी।

देखाऊ—वि० दे० "दिखाऊ"।

देखादेखी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√देख] आँखों से देखने की दशा या भाव। दर्शन। साक्षात्कार।

क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

देखना(पु)†—क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देखाभाली—संज्ञा स्त्री० दे० "देख भाल"।

देखाव—संज्ञा पुं० [हिं०√देख+आव (प्रत्य०)] १ दृष्टि की सीमा। नजर की पहुँच। २ ठाटबाट। तड़क भड़क।

देखावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√देख+आवट (प्रत्य०)] १ रूपरंग दिखाने की क्रिया या भाव। २ ठाटबाट। तड़क भड़क।

देखावटी—वि० [हिं० देखावट+ई (प्रत्य०)] बनावटी। असत्य। जिसमें तथ्य न हो।

देखावना—क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देग—संज्ञा पुं० [फा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

देगचा—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री०, अल्पा० देगची] छोटा देग।

देगची—संज्ञा स्त्री० [फा०] बहुत छोटा देग।

देदीप्यमान—वि० [सं०] अत्यंत प्रकाशयुक्त। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

देन—संज्ञा स्त्री० [हिं० देना] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २ दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।

देनदार—संज्ञा पुं० [हिं० देन+फा० दार] ऋणी। कर्जदार।

देनलेन—संज्ञा पुं० [हिं० देना+लेना] लेने और देने का व्यवहार। ब्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार।

देनहारा(पु)†—वि० [हिं० देना+हारा (प्रत्य०)] देनेवाला।

देना—क्रि० स० [सं० दान] १ अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २ सौंपना। हवाले करना। ३ हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४ रखना, लगाना या डालना, जैसे—सिर पर टोपी देना, जोड़ में पच्चड़ देना, तरकारी में नमक देना, पेंसिल से लकीर देना। ५ मारना। प्रहार करना, जैसे—थप्पड़ देना, चाँटा देना। ६ अनुभव कराना। भोगाना, जैसे—कष्ट देना, दुख देना। ७—उत्पन्न करना। निकालना, जैसे यह गाय खूब दूध देती है। बकरी ने दो बच्चे दिए। ८ बंद करना। ९ भिड़ाना, जैसे—किवाड़ देना, बोतल में डाट देना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी सकर्मक क्रियाओं के साथ संयो० क्रि० के रूप में होता है, जैसे—कर देना, गिरा देना।)

संज्ञा पुं० उधार लिया हुआ रुपया। कर्ज।

देमान‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

देय—वि० [सं०] देने योग्य। दातव्य।

देयासी†—वि० [?] [स्त्री० देयासिन्] झाड़ फूँक करनेवाला। ओझा।

देर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय। अतिकाल। विलंब। २ समय। वक्त।

देरी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।

देवँक—संज्ञा स्त्री० दे० "दीमक"।

देव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवी] १ देवता। सुर। २ पूज्य व्यक्ति। ३ ब्राह्मणों, राजाओं तथा बड़ों के लिये एक आदरसूचक शब्द।

संज्ञा पुं० [फा०] दैत्य। राक्षस।

देवऋण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लिये कर्तव्य। यज्ञादि कर्म।

देवऋषि—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लोक में रहनेवाले ऋषि नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि।

देवकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की पुत्री। देवी।

देवकार्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।

देवकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता।

देवकीनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

देवगज—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत।

देवगण—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का समूह। देवताओं का वर्ग। देवता लोग। २ देवता का अनुचर।

देवगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने के बाद उत्तम गति। स्वर्गलाभ।

देवगिरि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २ दक्षिण का एक प्राचीन नगर जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।

देवगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

देवठान—संज्ञा पुं० [सं० देवोत्थान] कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् चार महीने सोकर उठते हैं। दिठवन।

देवतर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र पढ़ते हुए ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले लेकर पानी देना।

देवता—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग में रहनेवाला जरा-मृत्यु-विहीन प्राणी। सुर।

देवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] देवता होने का भाव या धर्म। जरा मृत्यु विहीनता।

देवदत्त—वि० [सं०] देवता का दिया हुआ। २ देवता के निमित्त किया हुआ।

संज्ञा पुं० १ देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २ शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। ३ अर्जुन के शंख का नाम।

देवदार—संज्ञा पुं० [सं० देवदारु] एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़। इसकी अनेक जातियाँ संसार के अनेक स्थानों में पाई जाती हैं। इससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है।

देवदाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता जो देखने में तुरई की बेल से मिलती जुलती होती है। घघरबेल। बंदाल।

देवदासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्तकी। २ वेश्या।

देवदूत—संज्ञा पुं० [सं०] जो परमात्मा या किसी देवता का संदेशवाहक हो। पैगंबर। वसीठ। फरिश्ता।

देवदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का देवता। २ महादेव। ३ विष्णु। ४. ब्रह्मा। ५ गणेश।

देवधुनि, देवधुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी। उ०—देव मुनीन को चित्त रमावन पावन देवधुनी जल जानो। —शृंगार०।

देवनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा। २ सरस्वती और दृषद्वती नामक दो वैदिक नदियाँ।

देवनागरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी नैपाली आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

देवपथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

देवपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की नगरी। अमरावती।

देवभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कृत भाषा।

देवभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग।

देवमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो। देवालय।

देवमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] परमेश्वर की माया जो अविद्या के रूप में जीवों को बंधन में डालती है।

देवमुनि—संज्ञा पुं० [सं०] नारद ऋषि।

देवयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।

देवयान—संज्ञा पुं० [सं०] उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के बाद जीवात्मा के ब्रह्मलोक जाने के लिये दो मार्गों में से एक। २ मुक्ति के लिये देवताओं की उपासना का मार्ग।

देवयानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्राचार्य की कन्या जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी, पीछे राजा ययाति के साथ विवाह होने पर इसके यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र हुए।

देवयुग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्ययुग।

देवयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवों की सृष्टि जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं, जैसे—अप्सरा, किंनर, गंधर्व, गुह्यक, सिद्ध, भूत, पिशाच आदि।

देवर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवरानी] १ पति का छोटा भाई। २ पति का भाई।

देवरा—संज्ञा पुं० [सं० देव] [स्त्री० देवरी] छोटा मोटा देवता।

देवराज—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के राजा। इंद्र।

देवराज्य—संज्ञा [सं०] स्वर्ग।

देवरानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० देवर] देवर की स्त्री। पति के छोटे भाई की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [हिं० देव+रानी] देवराज इंद्र की पत्नी, शची। इंद्राणी।

देवराय—संज्ञा पुं० दे० "देवराज"।

देवर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो ऋषियों में देवता माने जाते हैं।

देवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करे। पुजारी। पंडा। २. धार्मिक पुरुष। ३ नारद मुनि। ४ एक स्मृतिकार।

संज्ञा पुं० [सं० देवालय] देवालय। देवमंदिर। उ०—मोको कहाँ ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में। ना मैं देवल ना मैं मसजिद ना काबे कैलास में। —कबीर०।

देवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देववधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवता की स्त्री। २ देवी। ३ अप्सरा।

देववाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संस्कृत भाषा। २ किसी अदृश्य देवता का वचन जो अंतरिक्ष में सुनाई पड़े। आकाशवाणी। उ०—दाँव बलराम को देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे। देववाणी भई जीत भई राम की ताहु पै मूढ़ नाहीं सँभारे। —सूर०।

देवव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] भीष्म पितामह।

देवशुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवलोक की कुतिया, सरमा। विशेष दे० "सरमा"।

देवसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं का समाज। देवताओं की सभा। २ राजसभा। ३ वह सभा जिसे मय ने युधिष्ठिर के लिये बनाया था। सुधर्मा।

देवसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की सेना। २ प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। ये मातृकाओं में श्रेष्ठ मानी जाती हैं और स्कंदपत्नी के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। इन्हें नवजात शिशुओं का पालन करनेवाली देवी माना जाता है। षष्ठी देवी।

देवस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के रहने की जगह। २ देवालय। मंदिर।

देवहर—संज्ञा पुं० [सं० देवगृह] मंदिर। उ०—जिन्ह घर कंता ऋतु भली, आव बसंत सो नित्त। सुख भरि आवहिं देवहरै दुःख न जानैं कित्त। —पदमावत।

देवहूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। सांख्यशास्त्र के कर्ता कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

देवांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २ अप्सरा।

देवा†—वि० [हिं० देना] १ देनेवाला, जैसे—पानी देवा। † २ देनदार। ऋणी। परमात्मा।

देवान†—संज्ञा पुं० [फा० दीवान] १ दरबार। कचहरी। राजसभा। २. अमात्य। मंत्री। वजीर। ३ प्रबंधकर्ता।

देवानांप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं को प्रिय। २ बकरा। ३ मूर्ख।

देवापि—संज्ञा पुं० [सं०] हस्तिनापुर के प्राचीन पुरुवंशी राजा प्रतीप के पुत्र और शांतनु के बड़े भाई जिन्होंने राज्य त्यागकर प्रव्रज्या और वनवास ग्रहण किया था।

देवायतन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देवारी—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

देवार्पण—संज्ञा पुं० [सं०] देवता के

निमित्त किसी वस्तु का दान। देवता को चढ़ाया हुआ धन, धान्य आदि।

देवाल†—वि० [हिं० देना] देनेवाला। दाता।
संज्ञा पुं० दे० "दीवार" उ०—हेरत घातैं फिरै चहुधा तैं ओनात है वातैं देवाल तरी सौं।—रससारांश।

देवालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति रखी जाय। मंदिर।

देवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवता की स्त्री। देवपत्नी। २ दुर्गा। ३ वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो। पटरानी। ४ ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि। ५. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री। ६ स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द।

देवीपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।

देवीभागवत—संज्ञा पुं० [सं०] एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में करते हैं। श्रीमद्भागवत के समान इस पुराण में भी बारह स्कंध और १८००० श्लोक हैं।

देवेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

देवेश—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

देवैया†—वि० [हिं० √ दे+वैया (प्रत्य०)] देनेवाला।

देवोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।

देवोत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को होता है।

देवोद्यान—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के बगीचे जो चार हैं—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र।

देवोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद जिसमें रोगी पवित्र रहता, सुगंधित फूलों की माला पहनता और संस्कृत बोलता है।

देश—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिशाओं का विस्तार जिसके भीतर सब कुछ है। दिक्। दृश्य जगत्। २. पृथ्वी का वह भाग जो राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र सत्ता रखता हो। राष्ट्र। ३. स्थान। जगह। ४ शरीर का कोई भाग। अंग। जैसे, स्कंध देश, कटि देश। ५. एक राग।

देशज—वि० [सं०] देश में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० वह शब्द जो न संस्कृत हो न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से उत्पन्न हो गया हो।

देशनिकाला—संज्ञा पुं० [हिं० देश+निकाला] देश से निकाल दिए जाने का दंड।

देशभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देशविशेष की भाषा, जैसे—बँगला, मराठी, गुजराती, आदि।

देशांतर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्य देश। विदेश। परदेश। २ भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। लबांश।

देशाटन—संज्ञा पुं० [सं०] भिन्न भिन्न देशों की यात्रा। देशभ्रमण।

देशी—वि० [सं० देशीय] १ देश का। देश संबंधी। २ स्वदेश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

देशीय—वि० दे० "देशी"।

देश्य—वि० [सं०] देश संबंधी। देशी। देश का। देश में उत्पन्न।

देस—संज्ञा पुं० दे० "देश"।

देसरा—संज्ञा पुं० [हिं० देस+रा (प्रत्य०)] दे० "देश"। उ०—नहिं पावस ओहि देसरा, नहिं हेवंत बसंत। ना कोकिल न पपीहरा, जेहि सुनि आवै कंत।—पदमावत।

देसवाल—वि० [हिं० देश+वाला (प्रत्य०)] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं।

देसावर—संज्ञा पुं० [सं० देश+अपर] अन्य देश। विदेश। परदेस। देशांतर।

देसिलऽ—वि० दे० "देशी"। उ०—देसिल बअना सब जन मिट्ठा, त तैसन जंपओ अवहट्ठा।

देसी—वि० [सं० देशीय] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं।

देह—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० देही] १ शरीर। तन। बदन।
वि० दे० "शरीर"।
मुहा०—देह छूटना=जीवन समाप्त होना। मृत्यु होना। देह छोड़ना=मरना। देह धरना=शरीर धारण करना। जन्म लेना।
२ शरीर का कोई अंग, ३ जीवन। जिंदगी।
संज्ञा पुं० [फा०] गाँव। खेड़ा। मौजा।

देहकान—संज्ञा पुं० दे० "दहकान"।

देहत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देहधारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीररक्षा। जीवनरक्षा। २. जन्म।

देहधारी—संज्ञा पुं० [सं० देहधारिन्] शरीर धारण करनेवाला। शरीरी।

देहपात—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देहयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर का खान पान आदि व्यवहार। २ जीवन-निर्वाह। ३ मृत्यु।

देहरा—संज्ञा पुं० [सं० देवगृह] देवालय।
संज्ञा पुं० [हिं० देह] मनुष्य का शरीर।

देहरी†ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।

देहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है। दहलीज। २ भारत की राजधानी दिल्ली।

देहलीदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] १. देहली पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है।
यौ०—देहलीदीपक न्याय=देहली पर रखे हुए दोनों ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक के समान दोनों ओर लगनेवाली बात।
२ एक अर्थालंकार जिसमें किसी मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है। उ०—है नरसिंह महामनुजाद हन्यो प्रहलाद को संकट भारी। दास विभीषणै लंक दई निज रंक सुदामा को संपति भारी। द्रौपदी चीर बढ़ायो जहान में पांडव के यश की उजियारी। गर्विन के खनि गर्व बहावत दीनन के दुख श्री गिरधारी। उक्त सवैये के प्रत्येक चरण में यह अलंकार है। 'हन्यो', 'दई', 'बढ़ायो', और 'बहावत' शब्दों का अर्थ दोनों ओर लगता है।

देहवंत—वि० [सं० देहवान् के बहु० से] जिसके देह हो। जो तनुधारी हो।
संज्ञा पुं० व्यक्ति। प्राणी। शरीरी।

देहवान्—वि० [सं०] शरीरधारी।

देहांत—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देहात—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० देहाती] गाँव। गँवई। ग्राम।

देहाती—वि० [फा० देहात] १ गाँव का। २ गाँव में रहनेवाला। ग्रामीण। ३ गँवार।

देहात्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत। २. भौतिकवाद।

देही—संज्ञा पुं० [स० देहिन्] १ आत्मा। २ शरीरधारी। प्राणी।

संज्ञा स्त्री० दे० "देह"।

देहुरा—संज्ञा पुं० दे० "देहरा"। उ०—नींव बिहूणाँ देहुरा, देह बिहूणाँ देव। कबीर तहाँ बिलंबिया, करे अलख की सेव। —कबीर०।

दैं(पु)—अव्य० [अनु०] से, जैसे—चपाक दैं।

दैउ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दैव"।

दैत्य—संज्ञा पुं० [स०] १. कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम की स्त्री से पैदा हुए थे। असुर। राक्षस। २. लंबे डील या असाधारण बल का मनुष्य। भयकर मनुष्य। ३ अति करनेवाला आदमी; जैसे—वह खाने में दैत्य है।

दैत्यगुरु—संज्ञा पुं० [स०] शुक्राचार्य।

दैत्यारि—संज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ इंद्र।

दैनंदिन—वि० [स०] नित्य का।

क्रि० वि० १ प्रति दिन। रोज रोज। २ दिनों दिन।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रलय।

दैनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दैनदिन] जो प्रति दिन लिखी जाय। जिसमें प्रति दिन के कार्य या घटनाएँ दर्ज की जायँ। रोजनामचा। (अँ०) डायरी।

दैन—वि० [हिं० देना] देनेवाला। दायक (यौगिक में)।

दैनिक—वि० [सं०] १ प्रति दिन का। रोज रोज का। २ जो रोज रोज हो। नित्य होनेवाला। ३ जो एक दिन में हो। ४ दिन सबधी। ५ प्रतिदिन प्रकाशित होनेवाला (समाचारपत्र आदि)।

दैनिकी—संज्ञा स्त्री० [सं० दैनिक] दैनदिनी। (अँ०) डायरी। प्रति दिन लिखी जानेवाली वह सादी पुस्तिका जिसमें प्रतिदिन के काम या हाल लिखे जायँ।

दैन्य—संज्ञा पुं० [स०] १ दीनता। विनीत भाव। गर्व या अहकार के प्रतिकूल भाव। २. काव्य के सचारी भावों में से एक जिसमें दुःख आदि से चित्त गिर जाता है। कातरता।

दैयत†—संज्ञा पुं० [सं० दैत्य] दैत्य। राक्षस। दानव। उ०—आपन ही रँग रच्यो साँवरो शुक ज्यौं बैठि पढ़ावै। दासी हुती असुर दैयत की अब कुलवधू कहावै। —सूर०।

दैया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० दई] दई। दैव।

मुहा०—दैयन कै=दई दई करके। किसी प्रकार। कठिनता से।

अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दई! हे परमेश्वर!

दैर्घ्य—संज्ञा पुं० [स०] दीर्घता। लबाई।

दैव—वि० [सं०] [वि० दैवी] १ देवता-सबधी। २ देवता के द्वारा होनेवाला। ३ देवता को अर्पित।

संज्ञा पुं० १ प्रारब्ध। अदृष्ट। भाग्य। २ होनेवाली बात। होनी। ३ विधाता। ईश्वर। ४ आकाश। आसमान।

मुहा०—†दैव बरसना=पानी बरसना।

दैवगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ईश्वरीय बात। दैवी घटना। २ भाग्य। प्रारब्ध।

दैवज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी। गणक। भविष्य को जानने और बतानेवाला।

दैवत—वि० [स०] देवता सबधी।

संज्ञा पुं० १ देवता की प्रतिमा आदि। २ देवता।

दैवयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सयोग। इत्तिफाक।

दैववश, दैववशात्—क्रि० वि० [स०] सयोग से। दैवयोग से। अकस्मात्। इत्तिफाक से।

दैववाणी—संज्ञा स्त्री० [स०] १. आकाशवाणी। २ सस्कृत।

दैववादी—संज्ञा पुं० [स०] १ भाग्य के भरोसे रहनेवाला। २ आलसी। निरुद्योगी।

दैवविवाह—संज्ञा पु० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या देता है।

दैवागत—वि० [सं०] दैवी। आकस्मिक। इत्तिफाकिया। सहसा होनेवाला।

दैवात्—क्रि० वि० [स०] अकस्मात्। दैवयोग से। इत्तिफाक से।

दैविक—वि० [स०] १ देवता सबधी। देवताओं का। २ देवताओं का किया हुआ।

दैवी—वि० [सं०] १ देवता सबधिनी। २ देवताओं की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या सयोग से होनेवाली। ३ आकस्मिक। ४. सात्विक।

दैवीगति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. ईश्वर की की हुई बात। २ भावी। होनहार। अदृष्ट।

दैहिक—वि० [स०] १. देह सबधी। शारीरिक। २ देह से उत्पन्न।

दोंचना†—क्रि० स० [हिं० दोचन] दबाव में डालना।

दो—वि० [स० द्वि के द्वौ रूप से] एक और एक।

मुहा०—दो एक या दो चार=कुछ। थोड़े। दो चार होना=भेंट होना। मुलाकात होना। आँखें दो चार होना=सामना होना। दो दिन का=बहुत ही थोड़े समय का।

दोआतशा—वि० [फा०] जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।

दोआब, दोआबा—संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो। २ गंगा और यमुना के बीच की भूमि।

दोइ†—संज्ञा पुं०, वि० दे० "दो"।

दोउ, दोऊ(पु)†—वि० [हिं० दो] दोनों।

दोख(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

दोखना(पु)†—क्रि० स० [हिं० दोख से ना० धा०] दोष लगाना। ऐब लगाना।

दोखी(पु)†—संज्ञा पु० दे० "दोषी"।

दोगला—संज्ञा पु० [फा० दोगल] [स्त्री० दोगली] १ वह मनुष्य जो अपनी माता के उपपति (विवाहित पति के अतिरिक्त पुरुष) से उत्पन्न हुआ हो। जारज। २ वह जीव जिसके माता पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों। ३ वर्णसकर।

दोगा—संज्ञा पु० [हिं० दुक्का] १ एक प्रकार का लिहाफ का कपड़ा। २ पानी में घोला हुआ चूना जिससे सफेदी की जाती है।

दोचंद—वि० [फा०] दुगना। दूना।

दोच—संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोच] १ दुबधा। असमंजस। २ कष्ट। दुःख। उ०—मनहिं यह परतीत आई दूर हरिहौ दोच। सूर प्रभु हिलि मिलि रहौंगी लाज डारौं मोच। —सूर०। ३ दबाव। दबाए जाने का भाव।

दोचन—संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोचन] १ दुबधा। असमंजस। २ दबाव। ३ कष्ट। दुःख। उ०—भवन यौंहि भाटी सो लागत मरत सोच ही सोचन। ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जियदोचन। —सूर०।

दोचना—क्रि० स० [हिं० दोचन] कोई काम करने के लिये बहुत ज़ोर देना। दबाव डालना।

दोचित्ता—वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो। उद्विग्नचित्त।

दोचित्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+चित्त] "दोचित्ता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।

दोज†—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।

दोजख—संज्ञा पुं० [फा०] मुसलमानों के धर्म के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।

दोजखी—वि० [फा०] १. दोजख संबंधी। दोजख का। २ बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।

दोजानू—क्रि० वि० [फा०] घुटनों के बल घुटने टेककर (बैठना)।

दोतरफा—वि० [फा०] दोनों तरफ का। दोनों ओर संबधी।

क्रि० वि० दोनों तरफ। दोनों ओर।

दोतला, दोतल्ला—वि० [हिं० दो+तल] दो खंड का। दोमंजिला, जैसे—दोतल्ला मकान।

दोतही—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+तह] एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर।

दोतारा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+तार] एकतारे की तरह का एक प्रकार का बाजा जिसमें दो तार लगे हों।

दोदना†—क्रि० स० [हिं० दो (दोहराना)] प्रत्यक्ष कही हुई बात से इनकार करना। प्रत्यक्ष बात से मुकरना। अपनी ही कही हुई बात को झूठी ठहराना।

दोदिला—वि० दे० "दोचित्ता"।

दोधक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। बंधु।

दोधारा—वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनों ओर धार या बाढ़ हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर।

दोन—संज्ञा पुं० [सं० द्रोणि] दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन।

संज्ञा पुं० [हिं० दो+नद] १ दो नदियों के बीच की जमीन। दोआबा। २ दो नदियों का संगम स्थान। ३. दो वस्तुओं की संधि या मेल।

दोनला—वि० पुं० [हिं० दो+नाल] [स्त्री० दोनली] जिसमें दो नाल हों, जैसे—दोनली बंदूक।

दोना—संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० दोनी] *पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का* छोटा, गहरा पात्र।

दोनिया, दोनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दोना का स्त्री०, अल्पा०] छोटा दोना।

दोनों—वि० [हिं० दो+नों (प्रत्य०)] ऐसे विशिष्ट दो (मनुष्य या पदार्थ) जिनका पहले वर्णन हो चुका हो और जिनमें से कोई छोड़ा न जा सकता हो। एक और दूसरा। उभय।

दोपलिया†—वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।

दोपल्ली—वि० [हिं० दो+पल्ला+ई (प्रत्य०)] दो पल्लेवाला। जिसमें दो पल्ले हों।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।

दोपहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+पहर] दिन के दो पहरों (छ घंटों) के बीतने का समय। वह समय जब सूर्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न काल

दोपहरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दोपीठा—वि० [हिं० दो+पीठ] दोनों ओर समान रंग रूप का। दोरुखा। सामने और पीछे दोनों ओर एक ही प्रकार के रूप-रंगवाला।

दोफसली—वि० [हिं० दो+अ० फसल] १ दोनों फसलों के संबंध का। दो फसलों में होनेवाला (अन्न, फल आदि)। २ जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य, जैसे—दोफसली बात।

दोबल—संज्ञा पुं० [?] दोष। अपराध।

दोबा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "दुबधा"।

दोबारा—क्रि० वि० [फा०] एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

दोबाला—वि० [फा०] *दुगना। दूना।*

दोमाथिया—संज्ञा पुं० दे० "दुमाथिया"।

दोमंजिला—वि० [फा०] जिसमें दो खंड या दो मंजिलें हों। (मकान)

दोमहला—वि० दे० "दोमंजिला"।

दोमुँहा—वि० [हिं० दो+मुँह] १ जिसके दो मुँह हों। २ दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटी।

दोमुँहा साँप—संज्ञा पुं० [हिं० दो+मुँह +साँप] १ एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २ कुटिल। कपटी।

दोय(पु)†—वि०, संज्ञा पुं० १ दे० "दो"। २. दे० "दोनों"।

दोयम—वि० [फा०] १ दूसरा। द्वितीय। २. मध्यम।

दोरंगा—वि० [हिं० दो+रंग] १ दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २. जो दोनों ओर लग या चल सके।

दोरंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+रंग+ई (प्रत्य०)] १ दोरंगे या दोमुँहे होने का भाव। २ छल। कपट। ३ दो तरफ लगनेवाली चाल या बात।

दोरदंड(पु)†—वि० दे० "दुर्दंड"।

दोरसा—वि० [हिं० दो+रस] दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हों।

यौ०—दोरसे दिन = गर्भावस्था के दिन।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीने का तमाकू।

दोराहा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+राह] वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

दोरुखा—वि० [फा०] १ जिसके दोनों ओर समान रंग या बेलबूटे हों। २ जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

दोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ झूला। हिंडोल। २ डोली। चंडोल।

दोला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंडोला। झूला। २ डोली या चंडोल।

दोलायंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यों का एक यंत्र जिसकी सहायता से वे औषधियों के अर्क उतारते हैं।

दोलायमान—वि० [सं०] हिलता हुआ। झूलता हुआ। झूमता हुआ।

दोलित—वि० [सं०] [स्त्री० दोलिता] *हिलता या झूलता हुआ।*

दोशाखा—संज्ञा पुं० [फा०] शमादान या दीवारगीर जिसमें दो बत्तियाँ हों।

दोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरापन। खराबी। अवगुण। ऐब। नुक्स।

मुहा०—दोष निकालना = अवगुण खोजना। दोष का पता लगाना। दोष लगाना = किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है।

२ लगाया हुआ अपराध। अभियोग। लांछन। कलंक।

यौ०—दोषारोपण = दोष देना या लगाना।

३ अपराध। कसूर। जुर्म। ४ पाप। पातक। ५. शरीर में के वात, पित्त और कफ़ जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती हैं। ६. वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले या बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। अतिव्याप्ति (न्याय)। ७ साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण या प्रभाव में कमी हो जाती है। यह पाँच प्रकार का होता है—पददोष, पदांश दोष, वाक्यदोष, अर्थदोष और रसदोष। ८ प्रदोष।

संज्ञा पुं० [सं० द्वेष] द्वेष। शत्रुता।

दोषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दोष का भाव।

दोषन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० दूषण] दोष। दूषण। अपराध।

दोषना(पु)†—क्रि० स० [सं० दूषण] दोष लगाना। अपराध लगाना।

दोषाकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा। उ०—दरबर दासनि को दोष दुख दूरि करै, भाल पर रेखा बाल दोषाकर रेखिए। —रससारांश।

दोषारोपण—संज्ञा पुं० [सं० दोष+आरोपण] किसी पर कोई दोष लगाना।

दोषित(पु)—वि० दे० "दूषित"।

दोषिनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दोषी] १. अपराधिनी। २ पाप करनेवाली स्त्री। ३ दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

दोषी—संज्ञा पुं० [सं० दोषिन्] १ अपराधी। कसूरवार। २ पापी। ३ मुजरिम। अभियुक्त। ४ जिसमें दोष हो। ५ दुष्ट स्वभाववाला।

दोस(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

दोसदारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० दोस्तदारी] मित्रता। दोस्ती।

दोसरी(पु)—वि० दे० "दूसरी"।

दोसाला†—वि० [हिं० दो+साल=वर्ष] दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

दोसूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+सूती] दोतही या दोसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर। दोहरे सूत से बिना हुआ कपड़ा।

दोस्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ दोस्ती मित्रता। २ मित्रता का व्यवहार।

वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मित्रता। स्नेह।

दोह(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।

दोहग—संज्ञा पुं० दे० "दोहाग"।

दोहगा†—संज्ञा स्त्री० [सं० दुर्भगा] रखनी। सुरैतिन। उपपत्नी।

दोहता—संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती। नवासा।

दोहत्थड़—संज्ञा पुं० [हिं० दो+हाथ] दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।

दोहत्था—क्रि० वि० [हिं० दो+हाथ] दोनों हाथों से। दोनों हाथों के द्वारा।

वि० जो दोनों हाथों से हो।

दोहद—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गर्भवाली स्त्री की इच्छा। उकौना। २ गर्भवती स्त्री को मतली इत्यादि। ३ गर्भावस्था। ४. गर्भ का चिह्न। ५ गर्भ। ६ एक प्राचीन कविप्रौढोक्ति जिसके अनुसार सुंदर स्त्री के स्पर्श से प्रियगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, चरणाघात से अशोक, दृष्टिपात से तिलक, मधुर गान से आम और नाचने से कचनार फूलते हैं।

दोहदवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री।

दोहन—संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय, बकरी भैंस इत्यादि के स्तनों से दूध निकालना। दुहना। २ दोहनी।

दोहना(पु)—क्रि० स० [सं० दूषण] १ दोष लगाना। २. तुच्छ ठहराना।

दोहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिट्टी का वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं। २ दूध दुहने का काम।

दोहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+घड़ी=तह] एक प्रकार की चादरें जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

दोहरना—क्रि० अ० [हिं० दोहरा] १ दो बार होना। दूसरी आवृत्ति होना। २ दोहरा होना। दो परतों का किया जाना।

क्रि० स० दोहरा करना।

दोहरा—वि० पुं० [हिं० दो+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १ दो परत या तह का। २ दुगना।

संज्ञा पुं० १ एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े (तबोली)। २. दोहा नाम का छंद।

दोहराना—क्रि० स० [हिं० दोहरा] १ किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। †२ किसी कपड़े या कागज आदि को दो तहें करना। दोहरा करना।

दोहा—संज्ञा पुं० [हिं० दो+हा? (प्रत्य०)] एक प्रसिद्ध हिंदी छंद। इसके पहले तथा तीसरे चरण में १३-१३ मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं। उ०—विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीति। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति। इसी को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

दोहाई—संज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।

दोहाक, दोहाग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० दौर्भाग्य] दुर्भाग्य। बदकिस्मती। अभाग्य।

दोहागा†—संज्ञा पुं० [हिं० दोहाग] [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

दोहिता†—संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] बेटी का बेटा। नाती।

दोही—संज्ञा पुं० [हिं० दोहा] दोहे की तरह का एक छंद जो चार चरणों का होने पर भी दो ही पंक्तियों में लिखा जाता है। इसके पहले और तीसरे चरण में पंद्रह पंद्रह मात्राएँ होती हैं और दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह। इसके अंत में एक लघु होना चाहिए। उ०—बिरद सुमिरि सुधि करत नित हौं, हरि तुव चरन निहार। यह भव जलनिधि ते मुहिं तुरत, कब प्रभु करिहहु पार।

संज्ञा पुं० [सं० दोहिन्] १ दूध दुहनेवाला। २ ग्वाला।

दोह्य—वि० [सं०] दुहने योग्य।

दौं(पु)—अव्य० १ दे० "धौं"। २ दे० "द्वै"।

संज्ञा पुं० [सं० दव] दे० "दव"। उ०—हिरदा भीतरि दौं बलै, धूवाँ न प्रगट होइ। जाके लागी सो लखै, कै जिहि लाई सोइ।—कबीर०।

दौंकना(पु)—क्रि० अ० दे० "दमकना"।

दौंचना(पु)†—क्रि० स० [हिं० दबोचना] १. दबाव डालकर लेना। २ लेने के लिये अड़ना।

दौंरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौंना या दाँवना] १ बैलों का झुंड जो कटी हुई फसल के

डंठलों पर दाना झाड़ने के लिये फिराया जाता है। २ वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। ३ फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। ४ झुंड।

दौⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १ आग। जंगल की आग। २ संताप। ताप। जलन।

दौड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १ दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। धावा।

मुहा०—दौड़ मारना या लगाना= (१) वेग के साथ जाना। (२) दूर तक पहुँचना। लंबी यात्रा करना।

२ वेगपूर्वक आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ३ उद्योग में इधर उधर फिरने की क्रिया। किसी काम के लिये कहीं बार बार आना जाना। कोशिश में हैरान होना, जैसे—वह नौकरी के लिये बहुत दौड़ा पर न मिली। ४ द्रुत गति। वेग।

मुहा०—मन की दौड़=चित्त की सूझ। कल्पना।

५. गति की सीमा। पहुँच। ६ उद्योग की सीमा। प्रयत्नों की पहुँच। ७ बुद्धि की गति। अक्ल की पहुँच। ८ फैलाव। विस्तार। आयाम। ९ सिपाहियों का दल जो अपराधियों को एकबारगी कहीं पकड़ने के लिये जाय।

दौड़धूप—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़+धूप] परिश्रम। प्रयत्न। कोशिश।

दौड़ना—क्रि० अ० [सं० √द्रु] १ बहुत तेजी से चलना। वेग से जाना।

मुहा०—चढ़ दौड़ना=चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड़ दौड़कर आना= जल्दी जल्दी या बार बार आना।

२ सहसा प्रवृत्त होना। झुक पड़ना। ३ किसी प्रयत्न में इधर उधर फिरना। ४ फैलना। व्याप्त होना। छा जाना; जैसे—चेहरे पर लाली दौड़ना, खून दौड़ना, आदि।

दौड़ादौड़—क्रि० वि० [हिं० दौड़+दौड़] [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए। अविश्रांत। बेतहाशा।

संज्ञा स्त्री० दे० दौड़ादौड़ी।

दौड़ादौड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ादौड़] १. दौड़धूप। २ बहुत से लोगों के साथ इधर उधर दौड़ने की क्रिया। ३ आतुरता। हड़बड़ी।

दौड़ान—संज्ञा स्त्री० [हिं०√दौड़+आन (प्रत्य०)] १ दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। २ वेग। झोंक। ३ सिलसिला।

दौड़ाना—क्रि० स० [हिं० दौड़ना का सकर्मक रूप] १ दौड़ने की क्रिया कराना। जल्दी जल्दी चलाना। २ बार बार आने जाने के लिये कहना या विवश करना। ३ किसी वस्तु को एक जगह से खींचकर दूसरी जगह ले जाना। ४ फैलाना। पोतना। ५. चलाना, जैसे—कलम दौड़ाना।

दौत्यⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम।

दौनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "दमन"।

दौना—संज्ञा पुं० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियों में तेज सुगंध आती है।

संज्ञा पुं० दे० "दोना"।

Ⓟक्रि० स० [सं० दमन] दमन करना।

दौनागिरि—संज्ञा पुं० दे० "द्रोणगिरि"।

दौर—संज्ञा पुं० [अ०] १ चक्कर। भ्रमण। फेरा। २ दिनों का फेर। कालचक्र। ३ अभ्युदय काल। बढ़ती का समय।

यौ०—दौरदौरा = प्रधानता। प्रबलता।

४ प्रताप। प्रभाव। हुकूमत। ५. बारी। पारी।

मुहा०—दौर चलना=शराब के प्याले का बारी बारी से सबके सामने लाया जाना।

६ बार। दफा। ७ दे० "दौरा"।

दौरनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "दौड़ना"।

दौरा—संज्ञा पुं० [अ० दौर] १ चक्कर। भ्रमण। २ इधर उधर जाने या घूमने की क्रिया। फेरा। गश्त। ३ अफसर का इलाके में जाँच पड़ताल के लिये घूमना।

मुहा०—(असामी या मुकदमा) दौरा सुपुर्द करना=(असामी या मुकदमे को) फैसले के लिये सेशन जज के पास भेजना।

४ सामयिक आगमन। फेरा। ५ किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय समय पर होता हो। आवर्तन, जैसे—मिरगी का दौरा, पागलपन का दौरा।

†संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० दौरी] बाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा।

दौरात्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुरात्मा का भाव। दुर्जनता। २ दुष्टता।

दौरान—संज्ञा पुं० [फा०] १ दौरा। चक्र। २ दिनों का फेर। ३. फेरा। पारी।

दौराना†Ⓟ—क्रि० स० दे० "दौड़ाना"।

दौरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौरा] बाँस या मूँज की छोटी टोकरी। चँगेरी। डलिया।

दौर्जन्य—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्जनता।

दौर्बल्य—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्बलता।

दौर्भाग्य—संज्ञा पुं० दे० "दुर्भाग्य"।

दौर्मनस्य—संज्ञा पुं० [सं०] "दुर्मनस्" होने का भाव। दुर्जनता।

दौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] दूरी।

दौलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।

दौलतखाना—संज्ञा पुं० [फा०] निवास-स्थान। घर (आदरार्थ)।

दौलतमंद—वि० [फा०] धनी। संपन्न।

दौवारिक—संज्ञा पुं० [सं०] द्वारपाल।

दौहित्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दौहित्री] लड़की का लड़का। नाती।

ध्याना, ध्यावनाⓅ—क्रि० स० दे० "दिलाना"।

द्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। २. आकाश। ३ स्वर्ग। ४. अग्नि। ५ सूर्यलोक।

द्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीप्ति। कांति। चमक। आभा। २ शोभा। छवि। ३ लावण्य। ४ रश्मि। किरण।

द्युतिमंत—वि० दे० "द्युतिमान्"।

द्युतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० द्युति+मा (प्रत्य०)] प्रकाश। तेज।

द्युतिमान्—वि० [सं० द्युतिमत्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो।

द्युमणि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

द्युमत्सेन—संज्ञा पुं० [सं०] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे।

द्युलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्गलोक।

द्यूत—संज्ञा पुं० [सं०] वह खेल जिसमें दाँव बदकर हार जीत की जाय। जुआ।

द्योढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० देहली ?] ड्योढ़ी। उ०—मौन तें रूठत भामी भोंडी भोंडी बातें कहै लौंडी कै कनौड़ी जोड़ै द्योढी ही के जात लौं।—शृंगार०।

द्योतक—वि० [सं०] १ प्रकाश करनेवाला। प्रकाशक। २ बतलानेवाला।

द्योतन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्योतित] १ दर्शन। २ प्रकाशित करने या जलाने का काम। ३. दिखाने का काम।

द्योहराⓅ—संज्ञा पुं० दे० "देवधरा"।

द्यौसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० दिवस] दिन।

द्रम्म—संज्ञा पुं० [सं०, मि० फा० दिरम] सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा (लीलावती)।

द्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्रवण। २. बहाव। ३. पलायन। दौड़। ४. वेग। ५ आसव। ६ रस। ७ द्रवत्व।

वि० १. पानी की तरह पतला। तरल। २ गीला। ३. पिघला हुआ।

द्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १ चरण। बहाव। २ पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। ३. चित्त के कोमल होने की वृत्ति। ४ गमन गति।

द्रवणशील—वि० [सं०] जो पिघलता या पसीजता हो।

द्रवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्रवत्व।

द्रवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पानी की तरह पतला होने या बहने का भाव।

द्रवना(पु)—क्रि० अ० [सं० द्रवण] १ प्रवाहित होना। बहना। २ पिघलना। ३ पसीजना। दयार्द्र होना।

द्रविड़—संज्ञा पुं० [देश० ?] १ दक्षिण भारत का एक भाग। २ इस भाग का रहनेवाला। ३ दक्षिणी ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत पाँच विभाग हैं—आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र। पंचद्रविड़। ४ दक्षिण भारत में बसी हुई एक प्राचीन जाति।

द्रवित—वि० दे० "द्रवीभूत"।

द्रवीभूत—वि० [सं०] १ जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो। २. पिघला हुआ। ३ दयार्द्र। पसीजा हुआ।

द्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्तु। पदार्थ। चीज। २ वह मूल पदार्थ जिसमें केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायि कारण हो। वैशेषिक में द्रव्य नौ कहे गए हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश काल, दिक, आत्मा और मन। वास्तव में द्रव्य उस मूल तत्व को कहते हैं जिसमें और कोई द्रव्य न मिला हो। साख्य के अनुसार द्रव्यों की कुल संख्या ३१ है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जल और वायु आदि कई और मूल द्रव्यों के योग से बने हैं। उनके अनुसार आज तक ज्ञात द्रव्यों की सख्या ९२ है जो भविष्य में ज्ञान के विस्तार के साथ घट बढ सकती है। इन्हीं ९२ स्वतंत्र तत्वों या द्रव्यों के योग से सारे पदार्थ बने हैं। ३. सामग्री। सामान। ४ धन। दौलत।

द्रव्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] द्रव्य का भाव।

द्रव्यवान्—वि० [सं० द्रव्यवत्] [स्त्री० द्रव्यवती] धनवान्। धनी।

द्रष्टव्य—वि० [सं०] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो दिखाया जानेवाला हो।

द्रष्टा—वि० [सं०] १ देखनेवाला। २ साक्षात् करनेवाला। ३ दर्शक। प्रकाशक।

संज्ञा पुं० १ पुरुष (सांख्य)। २. आत्मा।

द्राक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दाख। अंगूर।

द्राघिमा—संज्ञा पुं० [सं० द्राघिमन्] १ दीर्घता। लंबाई। २ अक्षांश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व-पश्चिम को मानी गई हैं।

द्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १ चरण। २ बहने या पसीजने की क्रिया। ३ गमन।

द्रावक—वि० [सं०] [स्त्री० द्राविका] १ ठोस चीज को तरल करनेवाला। २. गलानेवाला। ३. पिघलानेवाला। ४. बहानेवाला। ५. हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। करुणा उत्पन्न करनेवाला।

द्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।

द्राविड़—वि० [सं०] [स्त्री० द्राविड़ी] द्रविड़ प्रदेशवासी। द्रविड़ों से सबद्ध।

द्राविड़ी—वि० [सं०] द्रविड़ संबंधी। द्रविड़ों का।

मुहा०—द्राविड़ी प्राणायाम = कोई सीधी बात घुमाव फिराव के साथ करना।

द्रुत—वि० [सं०] १ शीघ्रगामी। तेज। २ भागा हुआ। ३ द्रवीभूत। गला हुआ।

संज्ञा पुं० १. वृक्ष। २ ताल की एक मात्रा का आधा। बिंदु। व्यजन। ३ वह लय जो मध्यम से कुछ तेज हो। दून।

द्रुतगामी—वि० [सं० द्रुतगामिन्] [स्त्री० द्रुतगामिनी] शीघ्रगामी। तेज चलनेवाला।

द्रुतपद—संज्ञा पुं० [सं०] बारह अक्षरों का एक छंद जिनमें चौथा, ग्यारहवाँ और बारहवाँ अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं।

द्रुतमध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्द्धसमवृत्ति जिसके प्रथम और तृतीय पाद में ३ भगण और २ गुरु होते हैं, तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में १ नगण २ जगण और १ भगण होता है। उ०—रामहिं सेवहु रामहिं गाओ। तन मन दै नित सीस नवाओ। जन्म अनेकन के अघ जारे हरि हरि गा निज जन्म सुधारो।

द्रुतविलंबित—संज्ञा पुं० [सं०] एक व[र्ण]वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक न[गण] दो भगण और एक रगण होता है। सु दर[...] उ०—भज न जो सखि बालमुकुंद रे[...] जग न सोहत यद्यपि सुंदरी।

द्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ द्रव। गति।

द्रुपद—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत काल[...] पांचाल राज्य के राजा और द्रौपदी [...] पिता। धृष्टद्युम्न और शिखंडी दोनों इ[...] पुत्र थे। कौरवों के विरुद्ध पांडवों की [...] से लड़कर इन्होंने (पुत्रों के सहित) म[हा]भारत युद्ध में वीरगति पाई थी।

द्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष।

द्रुमिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक [...] जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्रा[एँ] होती हैं। इसके प्रत्येक चरण के अंत [में] गुरु होता है तथा १० और १८ मात्रा [पर] यति होती है। उ०—उत्तरु यह दैकै दूत प[...] असदखान यह रोस भरयौ। बोल्यो [...] बीरन कुल के धीरन, जिन न चरन [...] उलटि धरयो। तुम करो तयारी सब [...] बारी, मैं दिल यह इतकाद करयौ। सुभ[...] तो लरना देर न करना आहह साह [...] काज करयो।

द्रुह्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन आ[र्यों] का एक वश या जनसमूह। २ शर्मिष्ठा [के] गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ [पुत्र] जिसने ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीक[ार] किया था।

द्रोण—संज्ञा पुं० [सं०] १ लकड़ी [का] एक बरतन जिसमें वैदिक काल में सो[म] रखा जाता था। २ जल आदि रखने [का] लकड़ी का बरतन। कठवत। ३ चा[र] आढक या १६ सेर की एक प्राचीन माप[।] ४ पत्तों का दोना। ५ नाव। डोंगा। [६] अरणी की लकड़ी। ७ लकड़ी का रथ[।] ८ डोम कौवा। बड़ा कौवा। ९. द्रोणगि[रि] नाम का पहाड़। १० दे० "द्रोणाचार्य"।

द्रोणकाक—संज्ञा पुं० [सं०] डोम कौवा[।]

द्रोणगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्व[त] जिसे वाल्मीकीय रामायण में क्षीरोद समु[द्र में] लिखा है।

द्रोणाचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभार[त] काल के प्रसिद्ध ब्राह्मण महारथी जो भरद्वा[ज] ऋषि के पुत्र थे। शरद्वान् की कन्या औ[र]

कृपाचार्य की भगिनी कृपी के साथ इनका विवाह हुआ था जिससे अश्वत्थामा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। इनसे कौरव पांडव ने अस्त्रशिक्षा पाई थी।

द्रोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डोंगी। २ छोटा दोना। ३ काठ का प्याला। कठवत। डोकिया। ४. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ५ दर्रा। ६ द्रोण की स्त्री। कृपी। ७ एक परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था।

द्रोन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "द्रोण"।

द्रोह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० द्रोही] दूसरे का अहितचिंतन। वैर। द्वेष।

द्रोही—वि० [सं० द्रोहिन्] [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करनेवाला। बुराई चाहनेवाला।

द्रौपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा जो पाँचों पांडवों को ब्याही गई थी।

द्वंद—संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] १ युग्म। मिथुन। जोड़ा। २ जोड़। प्रतिद्वंद्वी। ३ दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। द्वंद्वयुद्ध। मल्लयुद्ध। ४ झगड़ा। कलह। बखेड़ा। ५ दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा, जैसे—रागद्वेष, दुःखसुख इत्यादि। ६ उलझन। झंझट। जंजाल। ७ कष्ट। दुःख। उ०—गोलि लीन्हों कदम के तर इहाँ आवहु नारि। प्रगट भए तहाँ सबनि को हरि काम द्वंद निवारि।—सूर०। ८ उपद्रव। झगड़ा। ऊधम। ९ दुबधा। संशय।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुंदुभि] दुंदुमी।

द्वंदर(पु)—वि० [सं० द्वंद्वालु] झगड़ालू।

द्वंद्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। युग्म। जोड़ा। २ स्त्री-पुरुष या नरमादा का जोड़ा। ३ दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। ४ गुप्त बात। रहस्य। ५ दो आदमियों की लड़ाई। ६ झगड़ा। बखेड़ा। कलह। ७ एक प्रकार का समास जिसमें मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है, जैसे—रोटीदाल पकाओ।

द्वंद्वयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जो दो पुरुषों के बीच हो। कुश्ती।

द्वय—वि० [सं०] दो।

द्वयता—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वय+ता (प्रत्य०)] १ दो का भाव। द्वैत। २ अपनेपन और परायेपन का भाव। भेदभाव। दुजायगी।

द्वाआ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "दुआ"। उ०—द्वाआ दे दरवेस पाव नहि गारि पारि जा।

द्वादश—वि० [सं०] १ जो संख्या में दस और दो हो। बारह। २ बारहवाँ।

संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।

द्वादशबानी—संज्ञा पुं० दे० "बारह बानी"।

द्वादशाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं। (वह मंत्र यह है—"ओं नमो भगवते वासुदेवाय"।)

द्वादशाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ बारह दिनों का समुदाय। २ वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने से बारहवें दिन हो।

द्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।

द्वादसबानी(पु)—वि० दे० "बारहबानी"।

द्वापर—संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से तीसरा युग। पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है।

द्वार—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर में आने-जाने के लिये दीवार में खुला हुआ स्थान। दरवाजा। २ किसी घिरे हुए या रुकावट के स्थान से निकलने की जगह। मुख। मुहाना, जैसे—गंगाद्वार। ३ इंद्रियों के मार्ग या छेद, जैसे—आँख, कान, नाक। ४. उपाय। साधन। जरिया।

द्वारका—संज्ञा स्त्री० [सं०] काठियावाड़-गुजरात की एक प्राचीन नगरी। यह सात पुरियों में से एक है। कुशस्थली। द्वारावती।

द्वारकाधीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वारका के मालिक। श्रीकृष्ण। २. कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है।

द्वारकानाथ—संज्ञा पुं० दे० "द्वारकाधीश"।

द्वारचार—संज्ञा पुं० दे० "द्वारपूजा"।

द्वारपटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दरवाजे पर टाँगने का परदा।

द्वारपाल—संज्ञा पुं० [सं०] दरवाजे पर रक्षा के लिये नियुक्त व्यक्ति। दरवान।

द्वारपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वार+पूजा] विवाह का वह कृत्य जिसमें कन्यावाले के द्वार पर बारात के साथ वर के स्वागत के लिये पूजन आदि किए जाते हैं।

द्वारवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।

द्वारसमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पुराना नगर जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी।

द्वारा—संज्ञा पुं० [सं० द्वार] १. द्वार। दरवाजा। फाटक। २. मार्ग। राह।

अव्य० [सं०] जरिए से। साधन से।

द्वारावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।

द्वारिका—संज्ञा स्त्री० दे० "द्वारका"।

द्वारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वार+हिं० ई (प्रत्य०)] छोटा द्वार। दरवाजा।

संज्ञा पुं० दे० "द्वारपाल"।

द्वि—वि० [सं०] दो।

द्विक—वि० [सं०] १. जिसमें दो अवयव हों। २ दोहरा।

द्विकर्मक—वि० [सं०] (क्रिया) जिसके दो कर्म हों।

द्विकल—संज्ञा पुं० [हिं० द्वि+कला] छंद शास्त्र में दो मात्राओं का समूह। दो मात्राओं का शब्द। दीर्घ अक्षर। दो मात्राओं का अक्षर।

द्विगु—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक हो। (पाणिनि व्याकरण)।

द्विगुण—वि० [सं०] दुगना। दूना।

द्विगुणित—वि० [सं०] १ दो से गुणा किया हुआ। २ दूना। दुगना।

द्विज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका जन्म दोबारा हुआ हो।

संज्ञा पुं० [सं०] १ अंडज प्राणी। २ पक्षी ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। ४ ब्राह्मण। ५ चंद्रमा। ६ दाँत।

द्विजन्मा—वि० [सं० द्विजन्मन्] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।

संज्ञा पुं० द्विज।

द्विजपति, द्विजराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण। २ चंद्र। ३ कपूर। ४ गरुड़।

द्विजाति—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत धारण करके वेदाध्ययन का अधिकार है। द्विज। २ ब्राह्मण। ३ अंडज। ४ पक्षी। ५ दाँत।

द्विजिह्व—वि० [सं०] १ जिसके दो जीभ हों। २. चुगलखोर। ३ खल। दुष्ट।

संज्ञा पुं० साँप।

द्विजेंद्र, द्विजेश—संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।

द्वितिया(पु)—वि० [सं० द्वितीया] दूसरा।

द्वितीय—वि० [सं०] [स्त्री० द्वितीया] दूसरा।

द्वितीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

द्वित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो का भाव। २ दोहरा होने का भाव।

द्विदल—वि० [सं०] १ जिसमें दो दल या पिंड हों। २ जिसमें दो पटल हों।

संज्ञा पुं० वह अन्न जिसमें दो दल हों। दाल।

द्विधा—क्रि० वि० [सं०] १ दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो खंडों या टुकड़ों में।

द्विपद—वि० [सं०] दो पैरोंवाला।

संज्ञा पुं० मनुष्य।

द्विपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों। २ दो पदों का गीत। ३ एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोठों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं।

द्विपाद—वि० [सं०] १ दो पैरोंवाला। (पशु) २. जिसमें दो पद या चरण हों।

द्विबाहु—वि० [सं०] दो बाँहों या हाथों-वाला। मनुष्य।

द्विभाषी—संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषिन्] [स्त्री० द्विभाषिणी] दे० "दुभाषिया"।

द्विमुखी—वि० स्त्री० [सं०] दो मुँहवाली।

संज्ञा स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

द्विरद—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

वि० [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोंवाला।

द्विरसन—वि० [सं०] [स्त्री० द्विरसना] १ दो जबानोंवाला। द्विजिह्व। २ कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला।

संज्ञा पुं० [स्त्री० द्विरसना] साँप।

द्विरागमन—संज्ञा पुं० [सं०] वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दोंगा।

द्विरुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो बार कथन। पुनरुक्ति।

द्विरेफ—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

द्विविद—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक बंदर जो रामचंद्र की सेना का एक सेनापति था। २. विष्णुपुराण आदि के अनुसार एक बंदर। यह नरकासुर का मित्र था। इसे बलदेव जी ने मारा था।

द्विविध—वि० [सं०] दो प्रकार का।

क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विविधा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० द्विविध] दुबधा। अनिश्चय।

द्विवेदी—संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदिन्] ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विशिर—वि० [सं० द्वि+शिर] दो सिरों-वाला। जिसके दो सिर हों।

मुहा०—कौन द्विशिर है ?=किसके फालतू सिर है ? किसे अपने मरने का भय नहीं है ?

द्विष, द्विषत्—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।

द्वींद्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जंतु जिसके दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। टापू। जजीरा। (बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप और छोटे छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुंज या द्वीपमाला कहते हैं।) २. पुराणानुसार पृथ्वी के सात (कहीं कहीं नौ) बड़े विभाग जिनके नाम ये हैं—जंबुद्वीप, प्लक्ष या गोमेद, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। शत्रुता। वैर।

द्वेषी—वि० [सं० द्वेषिन्] [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वेष्टा—वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै(पु)†—वि० [सं० द्वय] दो। दोनों।

द्वैज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] द्वितीया। दूज।

द्वैत—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो का भाव। युग्म। युगल। २ अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर। भेदभाव। ३ दुबधा। भ्रम। ४ अज्ञान।

द्वैतवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जीव (आत्मा) और ईश्वर (ब्रह्म या परमात्मा) एक न माने जाकर अलग अलग या भिन्न माने जाते हैं। शंकराचार्य के अद्वैतवाद को छोड़कर शेष सभी दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २. वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

द्वैतवादी—वि० [सं० द्वैतवादिन्] [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विरोध। २ राजनीति के षड्गुणों में से एक जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३ आधुनिक राजनीति में वह शासनप्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों।

द्वैपायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंगा के एक टापू में पैदा हुए व्यास जी जिन्होंने महाभारत और पुराणों की रचना की। २ एक ह्रद या ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन भागकर छिपा था।

द्वैमातुर—वि० [सं०] जिसकी दो माँ हों।

संज्ञा पुं० १. गणेश। २ जरासंध।

द्वौ(पु)—वि० [हिं० दो+ऊ, दोउ] दोनों।

वि० दे० "दव"।

ध

ध—हिंदी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंतमूल है।

धंध—संज्ञा पुं० दे० धंधा। उ० नेहि धंधा जाकर मन लागै सपनेहु सूझ सो धंध। तेहि कारन तपसी तप साधहिं, करहिं पेम मन बंध।—पदमावत।

धंधक—संज्ञा पुं० [हिं०] धंधा १ कामधंधे का आडंबर। जंजाल। बखेड़ा। २ सांसारिक बंधन। मायाजाल। ढँढरच। ढोंग।

धंधकधोरी—संज्ञा पुं० [हिं० धंधक+धोरी] हर घड़ी दुनिया के धंधे में जुटा रहने-वाला। सांसारिक बंधनों में फँसा हुआ व्यक्ति। मायाग्रस्त मनुष्य। उ०—तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमधुज धंधकधोरी।—मानस।

धंधरक—संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

धँधला—संज्ञा पुं० [हिं० धंधा] १ कपट का आडंबर। झूठा ढोंग। छलछंद। २ हीला। बहाना।

धँधलाना—क्रि० अ० [हिं० धँधला से नां० धा०] छल छंद करना। ढंग रचना।

धंधा—संज्ञा पुं० [सं० धन+√धा=पुष्ट करना ?] १ धन या जीविका के लिये उद्योग। कामकाज। २ उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

धँधार—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूआँधार] ज्वाला। लपट। उ०—कंथा जरै, आगि जनु लाई। विरह धँधार जरत न बुझाई।—पदमावत।

धँधारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धंधा] गोरखधंधा। भूलभुलैया।

धँधोर—संज्ञा पुं० [हिं० धँधार] १ होलिका। होली। २ आग की लपट। ज्वाला।

धँवना(पु)—क्रि० स० दे० "धौंकना"।

धँसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १ कीचड़, दलदल आदि में धँसने की क्रिया या ढंग। २. ध्यान में डूबने की क्रिया या अवस्था। ३ घुसने या पैठने का ढंग। ४ गति। चाल।

धँसना—क्रि० अ० [सं० दशन] १ किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर दाव पाकर घुसना। गड़ना।

मुहा०—जी या मन में धँसना=चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना। मन में जमना। जँचना।

२ अपने लिये जगह करते हुए घुसना।

(पु)†३ नीचे की ओर धीरे धीरे जाना। नीचे खसकना। उतरना। उ०—गति पहिचानि धँसी मदिर तें, सूर, तिया अभिराम।—सूर०। तल या सतह का दवाव आदि के कारण अधिक नीचे हो जाना। ५. किसी खड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना। बैठ जाना। गड़ना। चुभना। ६ विचार, ध्यान या चिंता में डूबना।

(पु)क्रि० अ० [सं० ध्वसन] नष्ट होना।

धँसान—संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया या ढंग। २ दलदल।

धँसाना—क्रि० स० [हिं० धँसना का स०रूप] १. नरम चीज में घुसाना। गड़ाना। चुभाना। २ पैठाना। प्रवेश कराना। ३ तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

धँसाव—संज्ञा पुं० दे० "धँसान"।

धक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द।

मुहा—जी धकधक करना=भय या उद्वेग से जी धड़कना। जी धक हो जाना=(१) डर से जी दहल जाना। (२) चौंक उठना।

२ उमंग। उद्वेग। चोप।

क्रि० वि० अचानक। एकबारगी।

संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जूँ।

धकधकाना—क्रि० अ० [अनु० धक] १ भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना। उ०—धकधकात जिय बहुत सँभारै। क्यौं मारौं सो विचारै।—सूर०। †२ (आग का) दहकना। भभकना। ३ तेजी या जल्दी करना।

धकधकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० धक] १ जी धक धक करने की क्रिया या भाव। जी की धड़कन। उ०—आवत देख्यो विप्र जोरि कर रुक्मिनि धाई। कहा कहै जो आनि हिए धकधकी लगाई।—सूर०। २ गले और छाती के बीच का गड्ढा जिसमें स्पदन मालूम होता है। धुकधुकी। दुगदुगी।

मुहा०—धुकधुकी धड़कना=अकस्मात आशका या खटका होना। छाती धड़कना।

धकना—क्रि० अ० [हिं दहकना] १ सुलगना। जलना। २ तपना।

धकपक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धकधकी।

क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।

धकपकाना—क्रि० अ० [अनु० धक] जी में दहलना। दहशत खाना। डरना।

धकपेल(पु)—संज्ञा स्त्री० [अनु० धक+पेलना] १. धक्कमधक्का। रेलपेल। २ आतिशय्य। आधिक्य। बाहुल्य।

धका†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।

धकाना†—क्रि० स० [हिं० दहकाना] दहकाना। सुलगाना।

धकारा†—संज्ञा पुं० [अनु० धक] आशका। खटका। उ०—तुम तो लीला करत सुरन मन परो धकारो।—सूर०।

धकियाना†—क्रि० स० [हिं० धक्का से ना० धा०] धक्का देना। ढकेलना।

धकेलना—क्रि० स० दे० "ढकेलना"।

धकैत—वि० [हिं० धक्का+ऐत (प्रत्य०)] धक्कमधक्का करनेवाला।

धक्कमधक्का—संज्ञा पुं० [हिं० धक्का] १ बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों या टकराते हों।

धक्का—संज्ञा पुं० [सं०√धक्क् = नष्ट करना या हिं० धमक] १ एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेगयुक्त स्पर्श जिससे एक या दोनों पर एकबारगी भारी दवाव पड़ जाय। टक्कर। रेला। झोंका। २ ढकेलने की क्रिया। झोंका। चपेट। ३ ऐसी भारी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों। कसमकस। ४ शोक या दुःख का आघात। संताप। ५ विपत्ति। आफत। ६ हानि। टोटा। नुकसान।

धक्कामुक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को ढकेले और घूसों से मारे। मुठभेड़। मार-पीट।

धगड़ा—संज्ञा पुं० [सं० धव=पति ?] [स्त्री० धगड़ी] यार। उपपति।

धगधागना(पु)†—क्रि० अ० [अनु०] धकधकाना। धड़कना (छाती या जी का)। उ०—जब राजा तेहि मारन लाग्यो। देवी काली मन धगधाग्यो।—सूर०।

धगरी—वि० हिं० [धगड़ा=पति या यार] १ पति की दुलारी। २ कुलटा। छिनाल। व्यभिचारिणी। उ०—जननी के खीझत हरि रोए झूठहिं मोहिं लगावति धगरी।—सूर०।

धगा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "धागा"। उ०—सूरजदास काँच अरु कंचन एकहि धगा पिरोयो।—सूर०।

धजका—संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। झटका।

धज—संज्ञा स्त्री० [ध्वज] १ सजाव। बनाव। सुदर रचना।

यौ०—सजधज = तैयारी। साज-सामान।

२ मोहित करनेवाली चाल। सुदर ढंग। ३ बैठने उठने का ढब। ठवन। ४ ठसक। नखरा। ५ रूपरग। शोभा।

धजा—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धजीला—वि० [हिं० धज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] सजीला। तरहदार। सुदर।

धज्जी—संज्ञा स्त्री० [सं० धटी] १ कपड़े, कागज आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी। २ लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।

मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना = (१) टुकड़े करना। विदीर्ण करना। (२) ...ी की) खूब दुर्गति करना।
—वि० [हिं० धड़+अंग] नगा। ...का केवल यौगिक प्रयोग होता है, —नगधड़ग)।
-संज्ञा पुं० [सं० धर] १. शरीर का मध्यमाग जिसके अतर्गत छाती, पीठ पेट होते हैं। २ पेड़ का वह सबसे ...कड़ा भाग जिससे निकलकर डालियाँ उधर फैली रहती हैं। पेड़ी। तना।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो ...ी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से ...है।
—संज्ञा स्त्री० [अनु० धड़] १. दिल ...लने या उछलने की क्रिया। हृदय का ...न। २ हृदय के स्पंदन का शब्द। ...। तपाक। ३ भय, आशंका आदि के ...ण हृदय का अधिक स्पंदन। जी धक करने की क्रिया। ४. आशंका। खटका। ...ा। भय। ५ सकोच।
यौ०—बेधड़क = विना किसी सकोच
...न—संज्ञा स्त्री० [हिं० धड़क] हृदय स्पंदन। दिल का धक धक करना।
...ना—क्रि० अ० [हिं० धड़क] १. ...य का स्पंदन करना। दिल का उछलना धक धक करना।
मुहा०—छाती, जी या दिल धड़...ा = भय या आशका से हृदय का जोर ...से और जल्दी जल्दी चलना।
२ किसी भारी वस्तु के गिरने का सा ...धड़ शब्द होना।
...ा—संज्ञा पुं० [अनु० धड़] १. दिल धड़कन। २ दिल धड़कने का शब्द। खटका। अंदेशा। भय। ४ पयाल का ...ला या डडे पर रखी हुई काली हाँडी ...दि जिसे चिड़ियों को डराने के लिये ...ों में रखते हैं। धोखा। ५. हृद्रोग जिसमें ...य के धड़कन को ऊपर से देखा जा ...ता है।
...ाना—क्रि० स० [हिं० धड़कना का ...रूप] १ दिल में धड़क पैदा करना। धकधक कराना। २ जी दहलाना। ...ाना। ३ धड़धड़ शब्द उत्पन्न कराना।
...ड़ाना—क्रि० अ० [अनु० धड़धड़] धड़ शब्द करना। भारी चीज के गिरने पड़ने की सी आवाज करना। जल्दी या तेजी करना।

मुहा०—धड़धड़ाता हुआ = (१) धड़ धड़ शब्द और वेग के साथ। (२) बिना किसी प्रकार के खटके, रुकावट या सकोच के। बेधड़क।

धड़ल्ला—संज्ञा पुं० [अनु० धड़] धड़ाका।

मुहा०—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ = (१) बिना किसी रुकावट के। झोंक से। (२) बिना किसी प्रकार के भय या सकोच के। बेधड़क।

धड़ा—संज्ञा पुं० [सं० घट] १ किसी बँधी हुई तौल का वह बोझ जिसे तराजू के एक पलड़े पर रखकर दूसरे पलड़े पर उसी के बराबर चीज तौलते हैं। बाट। बटखरा।

मुहा०—धड़ा करना = कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। धड़ा बाँधना = (१) दे० "धड़ा करना"। (२) दोषारोपण करना। कलंक लगाना।

२. चार सेर की एक तौल। ३. तराजू।

धड़ाका—संज्ञा पुं० [अनु० धड़] 'धड़' 'धड़' शब्द। धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

मुहा०—धड़ाके से = जल्दी से। चटपट।

धड़ाधड़—क्रि० वि० [अनु० धड़] १ लगातार 'धड़' 'धड़' शब्द के साथ। २ लगातार। बराबर। जल्दी जल्दी।

धड़ाबदी—संज्ञा स्त्री० दे० "धड़ेबदी"।

धड़ाम—संज्ञा पुं० [अनु० धड़] ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० धटिका, धटी] १ चार या पाँच सेर की एक तौल।

मुहा०—धड़ी भरना = वजन करना।

२ पाँच सौ रुपए की रकम। ३. रेखा। लकीर। ४ वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है।

धड़ेबदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धड़ा+बद] १ तौल में धड़ा बाँधना। २ युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल बराबर करना।

धत्—अव्य० [अनु०] दुतकारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत—संज्ञा स्त्री० [?] खराब आदत। कुटेव। लत।

धतकारना—क्रि० स० [अनु० धत] १. दुतकारना। दुरदुराना। २. लानत मलामत करना। धिक्कारना।

धता—वि० [अनु० धत] जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलता। हटा हुआ।

मुहा०—धता करना या बताना = चलता करना। हटाना। भगाना। टालना। धता होना = चलता होना। चल देना।

धतूर—संज्ञा पुं० [सं०] नरसिंहा नाम का बाजा। तुरही। सिंहा। उ०—दसएँ मास मोहन भए मेरे आँगन बाजे धतूर। —सूर०।

धतूरा—संज्ञा पुं० [सं० धत्तूर] दो तीन हाथ ऊँचा एक पौधा। इसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

मुहा०—धतूरा खाए फिरना = उन्मत्त के समान घूमना। उ०—सूरदास प्रभु दरसन कारन मानहुँ फिरत धतूरा खाए। —सूर०।

धत्ता—संज्ञा पुं० [?] एक मात्रिक छंद जो दो ही पंक्तियों में लिखा जाने के कारण द्विपदी धत्ता कहा जाता है। इसके विषम चरणों में १८ तथा सम में १३ मात्राएँ होती हैं और अत में तीन लघु होते हैं। चारों पद मिलकर ६२ मात्राएँ हो जाती हैं। उ०—कृष्णमुरारी कुंजबिहारी पद, भजु जन मन रजन करन। ध्यावो बनवारी जन दुखहारी, जिहि नित जप गजन मदन॥

धत्तानंद—संज्ञा पुं० [?] एक छंद जिसकी प्रत्येक पक्ति में ३१ मात्राएँ और अत में तीन लघु होते हैं। यह दो ही पंक्तियों में लिखा जाता है। उ०—जय कदिय कुल कस, बलि विध्वस, केशिय-बक-दानव दरन। सो हरि दीनदयाल, भक्त कृपाल, कवि सुखदेव कृपाकरन॥

धधक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की भभक। २ आँच। लपट। लौ। ३. सताप।

धधकना—क्रि० अ० [हिं० धधक] आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भड़कना।

धधकाना—क्रि० स० [हिं० धधकना का स० रूप] आग दहकाना। प्रज्वलित करना।

धधाना—क्रि० अ० दे० "धधकना"।

धनंजय—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। उ०—प्रफुलित निरखि पलासवन परिहरि मानिनि मान। तेरे हेत मनोज खलु लियो धनजय बान। —रससारांश। २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४ अर्जुन वृक्ष। ५ विष्णु। ६ शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक।

धन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुपया पैसा, जमीन जायदाद इत्यादि। सपत्ति। द्रव्य। दौलत। २ किसी व्यक्ति के अधीन चौपायों का झुंड। गाय, भैंस आदि। गोधन। ३ स्नेहपात्र। अत्यत प्रिय व्यक्ति। जीवन सर्वस्व। ४ गणित में जोड़ी जानेवाली सख्या या जोड़ का चिह्न। ऋण या क्षय का उलटा। ५ मूल। पूँजी।

ⓟसंज्ञा स्त्री० [सं० धनिका] युवती स्त्री। वधू।

‡ वि० दे० "धन्य"।

धनक—संज्ञा पुं० [सं० धनु] १. धनुष। कमान। २. एक प्रकार की ओढ़नी।

धनकुबेर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यत धनी।

धनतेरस—संज्ञा स्त्री० [सं० धन+हिं० तेरस] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।

धनद—वि० [सं०] धन देनेवाला। दाता।

संज्ञा पुं० १ कुबेर। २ धनपति वायु।

धनधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] धन और अन्न आदि। सामाग्री और सपत्ति।

धनधाम—संज्ञा पुं० [सं०] रुपया पैसा और घरबार।

धनधारी—संज्ञा पुं० [सं० धन+धारी] १. कुबेर। २ बहुत बड़ा अमीर।

धनपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुबेर। २ धनवान्। सपन्न। अमीर।

धनवंत—वि० दे० "धनवान्"।

धनवान्—वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] जिसके पास धन हो। धनी। दौलतमद।

धनहटाऽ—संज्ञा पुं० [सं० धान्य+हट्ट] धान्यहाट। अनाज की मडी। उ०—प्रचुर पौरजन पद सम्हार सम्हीन्न, धन्नहटा, सोनहटा, पनहटा, पक्वानहटा मच्छहटा करेओ सुख रव कथा कहन्ते।

धनहीन—वि० [सं०] निर्धन। दरिद्र।

धनाⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका, हिं० धनिया=युवती] युवती। वधू। (गीत या कविता)

धनाढ्य—वि० [सं०] धनवान्। अमीर।

धनाश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

धनासी—संज्ञा स्त्री० दे० "धनाश्री"।

धनिⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका] युवती। वधू।

वि० दे० "धन्य"।

धनिक—वि० [सं०] धनी।

संज्ञा पुं० १ धनी मनुष्य। २. पति।

धनिया—संज्ञा पुं० [सं० धन्याक] एक छोटा पौधा जिसके सुगधित फल मसाले के काम में आते हैं।

ⓟसंज्ञा स्त्री० [सं० धनिका] युवती स्त्री।

धनिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

धनी—वि० [सं० धनिन्] १. जिसके पास धन हो।

यौ०—धनी धोरी=(१) धन और मर्यादावाला (२) मालिक या रक्षक।

मुहा०—बात का धनी=बात का सच्चा।

२ जिसके पास कोई गुण आदि हो।

संज्ञा पुं० १ धनवान् पुरुष। मालदार आदमी। २. वह जिसके अधिकार में कोई हो। अधिपति। मालिक। स्वामी। ३ पति। शौहर।

संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री। वधू।

धनु—संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।

धनुआ—संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्, धन्वा] १ धनुष्। कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।

धनुई—संज्ञा स्त्री० [सं० धनु+ई (प्रत्य०)] छोटा धनुस्।

धनुक—संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस्"।

२ दे० "इंद्रधनुष"।

धनुकबाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायुरोग जिसमें शरीर का कोई अंग मुड़कर धन्वाकार या टेढ़ा हो जाता है।

धनुर्द्धर—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष धारण करनेवाला पुरुष। कमनैत। तीरंदाज।

धनुर्द्धारी—संज्ञा पुं० दे० "धनुर्धर"।

धनुर्यज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें धनुष का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा होती थी।

धनुर्वात—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "धनुकबाई"।

धनुर्विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुष चलाने की विद्या। तीरंदाजी।

धनुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] यजुर्वेद का वह अंश जिसमें धनुष और बाणों के विभिन्न प्रयोगों का विवरण है। यह एक उपवेद माना जाता है।

धनुष—संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।

धनुस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ फलदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है। कमान। २ ज्योतिष में धनु राशि। ३. एक लग्न। ४ चार हाथ की एक माप।

धनुहाईⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० धनु+हिं० हाई (प्रत्य०)] धनुस् की लड़ाई।

धनुही—संज्ञा स्त्री० [सं० धनु+हिं० ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने की कमान। उ०—बहु धनुही तोरी लरिकाई। कबहुँ न अस रिस कीन्हि गोसाई —मानस।

धनेस—संज्ञा पुं० [सं० धनस् ?] बगुले के आकार की एक चिड़िया।

धन्नाⓟ—वि० दे० "धन्य"।

धन्नासेठ—संज्ञा पुं० [हिं० धन+सेठ] बहुत बड़ा धनी आदमी। प्रसिद्ध धनाढ्य।

धन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० (गो) धन ?] १ गायों और बैलों की एक जाति। २ घोड़े की एक जाति।

धन्य—वि० [सं०] [स्त्री० धन्या] प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। पुण्यवान्। सुकृती। श्लाघ्य।

धन्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में कृतज्ञतासूचक शब्द। शुक्रिया। २. साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा।

धन्वतरी—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्रमथन के समय हाथ में अमृत लिए हुए समुद्र से निकले थे। २ धन्व के पुत्र और काशी के राजा दिवोदास जो धन्वतरि संहिता नामक आयुर्वेद के ग्रंथ के रचयिता और प्रसिद्ध चिकित्सक थे। ३ विक्रमादित्य के सभा-पंडित जो नवरत्नों में एक माने जाते हैं।

धन्वा—संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्] १ धनुस्। कमान। २ जलहीन देश। मरुभूमि।

धन्वाकार—वि० [सं०] धनुस् या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।

धन्वी—वि० [सं० धन्विन्] धनुर्धर। कमनैत।

धप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।

संज्ञा पुं० धौल। थप्पड़। तमाचा।

धपना—क्रि० अ० [सं० धावन या हिं० धाप] १ जोर से चलना। दौड़ना। २. झपटना। लपकना। उ०—शीला नाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइ हो। —सूर०। ३ मारना। पीटना।

धप्पा—संज्ञा पुं० [अनु० धप] १. थप्पड़। तमाचा। २ घाटा। नुकसान।

धपि—अ० [?] शीघ्रता से। जल्दी से।

धब्बा—संज्ञा पुं० [देश०] १. किसी सतह के ऊपर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे। दाग। निशान। २ कलंक।

मुहा०—नाम में धब्बा लगाना = कीर्ति को मिटानेवाला काम करना।

धम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

धमक—संज्ञा स्त्री० [अनु० धम] १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २ पैर रखने की आवाज या आहट। ३. आघात आदि से उत्पन्न कंप या विचलन। ४ आघात। चोट।

धमकना—क्रि० अ० [हिं० धमक] १ 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना।

मुहा०—आ धमकना = अचानक आ पहुँचना।

२ दर्द करना। व्यथित होना (सिर)।

क्रि० स० चट करना। खा जाना।

धमकाना—क्रि० स० [हिं० धमक] १ डराना। भय दिखाना। २ डाँटना। घुड़कना।

धमकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धमक] १ दंड देने या अनिष्ट करने का वह विचार जो भय दिखाने के लिये प्रकट किया जाय। त्रास दिखाने की क्रिया। २ घुड़की। डाँटडपट।

मुहा०—धमकी में आना = किसी के डराने से कोई काम कर बैठना।

धमगजर—संज्ञा पुं० [देश०] उपद्रव।

धमधमाना—क्रि० अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द करना।

धमधूसर—वि० [देश०] १ मोटा और भद्दा। २ मोटे शरीर और मोटी बुद्धिवाला। उ०—कलिकाल बिचार अचार हरो, नहिं सूझै कछू धमधूसर को। —कविता०।

धमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर के भीतर रक्तसंचार की छोटी या बड़ी नली। नस। नाड़ी।

धमाकना(पु)—क्रि० अ० दे० "धमकना"।

धमाका—संज्ञा पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २ बंदूक के छूटने का शब्द। ३. आघात। धक्का। ४ पथरकला बंदूक। ५ हाथी पर लादने की तोप।

धमाचौकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु० धम + हिं० चौकड़ी] १. उछलकूद। उपद्रव। ऊधम। २. धींगाधींगी। मारपीट।

धमाधम—क्रि० वि० [अनु० धम] १ लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २ शब्दों के साथ लगातार कई प्रहार।

संज्ञा स्त्री० १. कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धम धम शब्द। २. मारपीट।

धमार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ उछल कूद। उपद्रव। उत्पात। धमाचौकड़ी। २ नटों की उछल कूद। कलाबाजी। ३ विशेष प्रकार के साधुओं को दहकती आग पर कूदने की क्रिया।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत।

धमारिया—संज्ञा पुं० [हिं० धमार + इया (प्रत्य०)] धमार गानेवाला।

धमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धमार] १ उपद्रव। उत्पात। २ होली की क्रीड़ा।

वि० उपद्रवी।

धरंता(पु)†—वि० [हिं० धरता] पकड़नेवाला।

धर—वि० [सं०] १ धारण करनेवाला। ऊपर लेनेवाला। सँभालनेवाला। २ ग्रहण करनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। २ कच्छप जो पृथ्वी को ऊपर उठाए है। ३ विष्णु। ४ श्रीकृष्ण। ५. पृथ्वी। ६ शरीर। उ०—लाल अधर में को सुधा मधुर किए बिनु पान। कहा अधर में लेत ही धर में रहत न प्रान। —रससारांश।

संज्ञा स्त्री० [हिं धरना] धरने या पकड़ने की क्रिया।

यौ०—धरपकड़ = भागते हुए आदमियों को पकड़ने का व्यापार। गिरफ्तारी।

धरका(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।

धरकना—क्रि० अ० दे० "धड़कना"।

धरण—संज्ञा पुं० दे० "धारण"।

धरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

धरणिधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी को धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४ विष्णु। ५ शिव। ६. शेषनाग।

धरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। आधार।

धरणीसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।

धरता—संज्ञा पुं० [वैदिक धर्त्तृ] १ किसी का रुपया धरनेवाला। देनदार। ऋणी। कर्जदार। २. कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला। धारण करनेवाला।

यौ०—करता धरता = सब कुछ करनेवाला।

धरती—संज्ञा स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी। जमीन। २ संसार। दुनिया।

धरधर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

संज्ञा स्त्री० दे० "धड़ धड़"।

धरधरा(पु)†—संज्ञा पुं० [अनु०] धड़कन।

धरधराना(पु)†—क्रि० अ० दे० "धड़धड़ाना"।

धरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] १ धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २ हठ। अड़। टेक। ३ वह लंबा लट्ठा जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिये आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके। कड़ी। धरनी। ४ वह नस जो गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़े रहती है। गर्भाशय का आधार। ५ गर्भाशय। ६ टेक। हठ।

संज्ञा पुं० दे० "धरना"।

†संज्ञा स्त्री० [सं० धरणि] धरती। जमीन।

धरनहार(पु)—वि० [हिं० धरना + हार (प्रत्य०)] धारण करनेवाला। उ०—धरनी धरनहार, भंजन भुवनहार, अवतार साहसी सहसफन के। —विनय०।

धरना—क्रि० स० [सं० धरण = धारण करना, सँभालना] १ रखना। ठहराना। स्थापित करना। स्थित करना। २. निश्चित करना, जैसे, नाम धरना। ३ पास या रक्षा में रखना।

मुहा०—धरा रह जाना = काम न आना।

४ धारण करना। देह पर रखना। पहनना। ५ आरोपित करना। मढ़ना।

मुहा०—नाम धरना = बदनाम करना। कलंकित करना। नाम धराना = बदनाम होना या बदनाम कराना।

६ अवलंबन करना। अंगीकार करना। ७. हाथ में लेना। पकड़ना। थामना। ग्रहण करना।

मुहा०—धर-पकड़कर = जबरदस्ती। ८. पल्ला पकड़ना। आश्रय ग्रहण करना। ९. किसी फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या छू जाना। १०. किसी स्त्री को रखना। रखेली की को तरह रखना। ११ गिरवी रखना। रेहन रखना। बंधक रखना।

संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिये अड़कर बैठना और जब तक काम न हो वहाँ से न हटना; जैसे—किसी के दरवाजे पर धरना देना।

धरनी—सज्ञा स्त्री० दे० "धरणी"।

सज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] हठ। टेक। उ०—तुलसी अब राम को दास कहाइ हिए धरु चातक की धरनी।—कविता०।

धरनीधनि—सज्ञा पुं० [सं० धरणी+धनिन्] नृपति। राजा। उ०—राजत राजसमाज जुगल रघुकुल मनि। मनहुँ सरदबिधु उभय नखत धरनीधनि।—जा० मं०।

धरनीधर—सज्ञा पुं० [सं० धरणीधर] पहाड़। पर्वत। उ०—तुलसी जिन्हैं धाए धुकै धरनीधर, धौर धकानि सों मेरु हले हैं।—कविता०।

धरम(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।

धरमध्वज—सज्ञा पुं० दे० "धर्मध्वज"। उ०—तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी।—मानस०।

धरवाना—क्रि० स० [हिं० धरना का प्रे० रूप] धरने का काम दूसरे से कराना।

धरषना(पु)—क्रि० स० [सं० धर्षण] दबाना। मर्दन करना।

धरसना—क्रि० अ० [सं० धर्षण] १ दब जाना। २ डर जाना। सहम जाना।

क्रि० स० १ दबाना। २ अपमानित करना।

धरसनी(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "धर्षणी"।

धरहर, धरहरि‡—सज्ञा स्त्री० [हिं०√धर +हर (प्रत्य०)] १. गिरफ्तारी। धर-पकड़। २. लड़नेवालों को धर पकड़कर लड़ाई बंद करने का कार्य। बीचबिचाव। उ०—ललित अहि-सिसु निकर मनहुँ ससि सन समर, लरत धरहरि करत रुचिर जनु जुग फनी।—गीता०। ३. बचाव। रक्षा। ४ धीरज। उ०—सनु सक्यौ, बीत्यौ, बयौ कह्यौ लई उखारि। हरी हरी अरहर अजौं, धरि धरहरि जिय नारि। बिहारी०। उ०—जब जम जाल पसार परैगो हरि बिनु कौन करैगो धरहरि।—सूर०।

धरहरना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] धड़ धड़ शब्द करना। धड़धड़ाना।

धरहरा—सज्ञा पुं० [धवलगृह] खंभे की तरह बहुत ऊँचा मकान का भाग जिसपर चढ़ने के लिये भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों। धौरहर। मीनार।

धरहरिया‡—सज्ञा पुं० [हिं० धरहरि] बीचबिचाव करानेवाला। रक्षक।

धरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। जमीन। २ संसार। दुनिया। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और गुरु होता है। उ०—राधा कही। बाधा टरै। श्यामा कही। कामा सरै।

धराऊ—वि० [हिं०√धर+आऊ (प्रत्य०)] १ जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरों पर निकाला जाय। बहुमूल्य। २ बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना।

धराक(पु)‡—सज्ञा पुं० दे० "धड़ाक"।

धरातल—सज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वी। धरती। २. केवल लंबाई चौड़ाई का गुणनफल जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। सतह। ३ लंबाई और चौड़ाई का गुणन फल। क्षेत्रफल। ऊपरी विस्तार।

धराधर—सज्ञा पुं० [सं०] १ शेषनाग। २ पर्वत। उ०—डगे दिग्‌कुंजर, कमठ कौल कलमले, डोले धराधर-धारि, धराधर धरपा।—कविता०। ३ विष्णु।

धराधरन(पु)—सज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

धराधार—सज्ञा पुं० [सं०] "शेषनाग"।

धराधीश—सज्ञा पुं० [सं०] "राजा"।

धराना—क्रि० स० [हिं० 'धरना' का प्रे० रूप] १ पकड़ाना। थमाना। २ स्थिर करना। ठहराना। निश्चित कराना। मुकर्रर कराना।

धरापुत्र—सज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।

धराशायी—वि० [सं० धराशायिन्] [स्त्री० धराशायिनी] १ जमीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ। २. भूमि पर गिरकर मरा हुआ। ३. परास्त।

धरासुर‡—सज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण। उ०—सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखा कर कटि कस्यो। भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो।—मानस।

धराहर—सज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।

धरित्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।

धरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० धरा] चार सेर की एक तौल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] रखेली स्त्री।

सज्ञा स्त्री० [हिं० ढार] कान में पहनने का एक गहना।

धरेजा—सज्ञा पुं० [हिं० धरना] किसी स्त्री को पत्नी की तरह रखना।

सज्ञा स्त्री० दे० "धरेल"।

धरेल, धरेली—सज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] उपपत्नी। रखेली।

धरेश—सज्ञा पुं० [सं०] राजा।

धरैया‡—सज्ञा पुं० [हिं०√धर+ऐया (प्रत्य०)] धरनेवाला। पकड़नेवाला।

धरोहर—सज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] माँगने पर रखनेवाले को लौटाने के लिये रखी हुई वस्तु या द्रव्य। थाती। अमानत।

धर्ता—सज्ञा पुं० [सं० धर्तृ] १. धारण करनेवाला। २ कोई काम ऊपर लेनेवाला।

यौ०—कर्ता धर्ता = जिसे सब कुछ करने धरने का अधिकार हो।

धर्म—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति की वह नित्यवृत्ति, गुण या लक्षण जो उससे कभी अलग न हो, जैसे आग का धर्म दाह है। प्रकृति। स्वभाव। २ अलंकार शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो, जैसे—'कमल के ऐसे कोमल और लाल चरण'। इस उदाहरण में कोमलता और ललाई दोनों के साधारण धर्म हैं। ३ वह कृत्य, आचरण, व्यवहार या विधान जिसका फल शुभ (स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति आदि) बताया गया हो। ४ किसी जाति, कुल, वर्ग पद इत्यादि के लिये उचित ठहराया हुआ व्यवसाय या व्यवहार। कर्तव्य। फर्ज, जैसे—ब्राह्मण का धर्म, पुत्र का धर्म। ५ कल्याणकारी कर्म। सुकृति। सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्कर्म।

मुहा०—धर्म कमाना = धर्म करके उस का फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना = (१) धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट करना। (२) स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। धर्म लगती कहना = ठीक ठीक कहना। सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना = सत्य सत्य कहना।

६ किसी आचार्य या महात्मा द्वारा प्रवर्तित ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में

विशेष रूप का विश्वास और आराधना की विशेष प्रणाली। उपासना भेद। मत। संप्रदाय। पंथ। मजहब। ७. नीति। न्यायव्यवस्था। कायदा। कानून, जैसे—हिंदू धर्मशास्त्र। ८ विवेक। ईमान।

धर्मकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म या विधान जिसका करना किसी धर्मग्रंथ में आवश्यक ठहराया गया हो।

धर्मक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म का स्थान। पुण्य कमाने की जगह। २ कुरुक्षेत्र। ३. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिये कर्मभूमि माना गया है।

धर्मग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें किसी जनसमाज के आचार, व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।

धर्मघड़ी—संज्ञा स्त्री [सं० धर्म+हिं० घड़ी] बड़ी घड़ी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें।

धर्मचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म का समूह। २ बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था।

धर्मचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म का आचरण

धर्मचारी—वि० [सं० धर्मचारिन्] [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म का आचरण करनेवाला।

धर्मच्युत—वि० [सं०] [संज्ञा धर्मच्युति] अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।

धर्मज्ञ—वि० [सं०] धर्म जाननेवाला। धर्मपुत्र युधिष्ठिर।

धर्मण—क्रि० वि० [सं०] १ धामिन साँप। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ एक प्रकार का पक्षी।

धर्मतः—अव्य० [सं०] धर्म का ध्यान रखते हुए। धर्म के विचार से।

धर्मधक्का—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म+हिं० धक्का] १. वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिये सहनी पड़े। २ व्यर्थ का कष्ट।

धर्मध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पाखंडी। उ०—तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी॥ —मानस। २ मिथिला के एक राजा जो कुशध्वज के बेटे और अमृतध्वज तथा कृतध्वज के पिता थे। ये सन्यासधर्म और मोक्षधर्म के जाननेवाले परम महाज्ञानी थे।

धर्मध्वजी—संज्ञा पुं० [सं० धर्मध्वजिन्] पाखंडी।

धर्मनिष्ठ—वि० [सं०] धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक। धर्मपरायण।

धर्मनिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म में आस्था। धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।

धर्मपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो। विवाहिता स्त्री।

धर्मपुस्तक—संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म + पुस्तक] वह पुस्तक जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का मुख्य ग्रंथ।

धर्मबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म अधर्म का विवेक। भले बुरे का विचार।

धर्मभीरु—वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। जो अधर्म करने से डरे। पाप से डरनेवाला।

धर्मयुग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्ययुग।

धर्मयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह युद्ध जिसमें कोई भी नैतिक नियम तोड़ा न जाय। २ ईसाइयों, मुसलमानों आदि द्वारा विधर्मियों से किया जानेवाला युद्ध।

धर्मरक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] योग (यवन) देशीय एक बौद्ध धर्मोपदेशक या स्थविर जिसे महाराज अशोक ने अपरांतक (बलोचिस्तान) देश में उपदेश देने भेजा था।

धर्मराइⓅ—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

धर्मराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म का पालन करनेवाला राजा। २ युधिष्ठिर। ३ यमराज। ४ न्यायाधीश। न्यायकर्ता।

धर्मरायⓅ—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

धर्मलुप्ता उपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाई जानेवाली विशेषता का कथन न हो, जैसे—कुंद इंदु समदेह, उमारमन करुनायतन। जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।

धर्मवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्म करने में साहसी हो।

धर्मव्याध—संज्ञा पुं० [सं०] एक तपस्वी वेदज्ञ ब्राह्मण जो अनजान में किसी ऋषि पर तीर चलाने के अपराध में अभिशप्त होकर व्याध हुआ था और गृहस्थाश्रम में रहकर, माता पिता की सेवा, सत्य, अहिंसा, अतिथिसत्कार के साथ अपने वंश के परंपरागत धर्म का पालन करता हुआ जीवन निर्वाह करता था। इसने अपने चरित्र और उपदेश से 'कौशिक नामक एक तपस्वी ब्राह्मण का भ्रम और अंधविश्वास दूर किया था।

धर्मशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के टिकने के लिये धर्मार्थ बना हो। २ अन्नसत्र।

धर्मशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें नीति और सदाचार संबंधी नियम हों। धार्मिक विषयों पर लिखा हुआ ग्रंथ।

धर्मशास्त्री—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित।

धर्मशील—वि० [सं०] [संज्ञा धर्मशीलता] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।

धर्मसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यायालय। कचहरी। अदालत।

धर्मसारीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "धर्मशाला"। उ०—राजा इक पंडित पौरि तुम्हारी।......हूँठ पैंड दे वसुधा हमको तहाँ रचौं धर्मसारी। —सूर०।

धर्मांध—वि० [सं०] [भाव० धर्मांधता] जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो। धर्म के नाम पर बुरे से बुरे काम करनेवाला।

धर्मांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

धर्मा—वि० [सं०] धर्मवाला। स्वभाववाला। (इस शब्द का प्रयोग अब प्रायः यौगिक में होता है; जैसे—समानधर्मा।) उ०—महिष मत्सर क्रूर, लोभ सूकर रूप, फेरु छल, दंभ मार्जारधर्मा। —विनय०।

धर्माचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।

धर्मात्मा—वि० [सं० धर्मात्मन्] धर्मशील। धार्मिक।

धर्माधिकरण—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायालय।

धर्माधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म-अधर्म की व्यवस्था करनेवाला। विचारक। न्यायाधीश। २ वह जो किसी राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबंध करता है। दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष—संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।

धर्मार्थ—क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से। परोपकार के लिये।

धर्मावतार—संज्ञा पुं० [सं०] १. साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा। २ न्यायाधीश। ३. युधिष्ठिर।

धर्मासन—संज्ञा पुं० [सं०] वह आसन, कुर्सी या चौकी जिसपर न्यायाधीश बैठता है।

धर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
वि० धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ—वि० [सं०] धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्मी—वि० [सं० धर्म्मिन्] [स्त्री० धर्म्मिणी] १ जिसमें धर्म या गुण हो। २. धार्मिक। पुण्यात्मा। ३ मत या धर्म को माननेवाला।
संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। गुण या धर्म का आश्रय। २. धर्मात्मा मनुष्य।

धर्मोपदेशक—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म का उपदेश देनेवाला।

धर्ष—संज्ञा पुं० दे० "धर्षण"।

धर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्षण करे।

धर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० धर्षणीय, धर्षित] १ अनादर। अपमान। २. दबोचना। आक्रमण। ३. दबाने या दमन करने का कार्य। ४ असहनशीलता।

धर्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। अपमान। हतक। २ दबाने या हराने का कार्य। ३. सतीत्वहरण।

धर्षी—वि० [सं० धर्षिन्] [स्त्री० धर्षिणी] १ धर्षण करनेवाला। २ आक्रमण करनेवाला। दबोचनेवाला। ३ हरानेवाला। ४ नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।

धव—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक जंगली पेड़ जिसके कई अंगों का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २ पति। स्वामी, जैसे—माधव। ३. पुरुष। मर्द।

धवनी—संज्ञा स्त्री० [सं० धमनी] दे० "धौंकनी"।
†(पु) वि० [सं० धवल] सफेद। उजला।

धवरा†—वि० [सं० धवल] [स्त्री० धवरी] उजला। सफेद।

धवरी—वि० स्त्री० [हिं० धवरा] सफेद।
संज्ञा स्त्री० सफेद रंग की गाय।

धवल—वि० [सं०] १ श्वेत। उजला। सफेद। २ निर्मल। †झकाझक। ३ सुंदर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का ४५वाँ भेद।

धवलगिरि—संज्ञा पुं० दे० 'धवलागिरि'।

धवलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी।

धवलना—क्रि० स० [सं० धवल] उज्वल करना। चमकाना। प्रकाशित करना।

धवला—वि० स्त्री० [सं०] सफेद। उजली।
संज्ञा स्त्री० सफेद गाय।

धवलाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल+हिं० आई (प्रत्य०)] सफेदी। उजलापन।

धवलागिरि—संज्ञा पुं० [सं० धवल+गिरि] हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी।

धवलित—वि० [सं०] १ सफेद। २ उज्वल।

धवलिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० 'धवलिमन्' का कर्ता०, एक व०] १. सफेदी। २ उज्वलता।

धवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गाय।

धवाना—क्रि० स० [हिं० धाना का प्रे० रूप] दौड़ाना। उ०—तिनके काज अहीर पठाए। विलम करहु जिनि तुरत धवाए। —सूर०।

धस—संज्ञा पुं० [हिं० धँसना=पैठना] जल आदि में प्रवेश। डुबकी। गोता।

धसक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है। २. सूखी खाँसी। ढसक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धसकना] १. डाह। ईर्ष्या २ धसकने की क्रिया या भाव।

धसकना—क्रि० अ० [हिं० धँसना] १ नीचे को धँसना या दब जाना। बैठ जाना। २ डाह करना। ईर्ष्या करना। ३ डरना।

धसना(पु)—क्रि० अ० [सं० ध्वसन] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।
†क्रि० अ० दे० "धँसना"।

धसनि—संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि"।

धसमसाना(पु)†—क्रि० अ० दे० "धँसना"।

धसान—संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान"।
संज्ञा स्त्री० [सं० दशार्ण] पूरबी मालवा और बुंदेलखंड की एक छोटी नदी।

धाँगड़—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक अनार्य जंगली जाति। २ एक जाति जो कुएँ और तालाब खोदने का काम करती है।

धाँधना—क्रि० स० [देश०] १ बंद करना। मेड़ना। २ बहुत अधिक खा लेना।

धाँधल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ऊधम। उपद्रव। नटखटी। २ फरेब। धोखा। दगा। ३. बहुत अधिक जल्दी।

धाँधलपन—संज्ञा पुं० [हिं० धाँधल+पन (प्रत्य०)] १ पाजीपन। शरारत। २ धोखेबाजी। दगाबाजी।

धाँधली—[हिं० धाँधल+ई (प्रत्य०)] १. उपद्रवी। शरीर। पाजी। नटखट। २. धोखेबाज। दगाबाज।
संज्ञा स्त्री० १. स्वेच्छाचारिता। मनमानी। अनीति। २. बहुत अधिक जल्दी। धाँधल।

धाँस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सूखे तबाकू या मिर्च आदि की तेज गंध।

धाँसना—क्रि० अ० [अनु०] पशुओं का खाँसना।

धा—वि० [सं०] धारण करनेवाला। धारक।
प्रत्य० तरह। भाँति। प्रकार; जैसे—नवधा भक्ति।
संज्ञा पुं० [सं० धैवत] संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।
संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।

धाई(पु)—संज्ञा स्त्री० १ दे० "दाई"। २ दे० "धव"।

धाउ—संज्ञा पुं० [सं० धाव] नाच का एक भेद।

धाऊ†—संज्ञा पुं० [सं० धावन] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिये दौड़ाया जाय। हरकारा।

धाक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ रोब। आतंक।
मुहा०—धाक बँधना=रोब या दबदबा होना। आतंक छाना। धाक बाँधना=रोब जमाना।
२ प्रसिद्धि। शोहरत। शोर। उ०—सूरदास प्रभु खात ग्वाल सँग ब्रह्मलोक यह धाक। —सूर०।

धाकना—क्रि० अ० [हिं० धाक से ना० धा०] धाक जमाना। रोब जमाना।

धागा†—संज्ञा पुं० [हिं० तागा] बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।

धाड़†—संज्ञा स्त्री० १ दे० "दाढ़"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "ढाढ़"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धार] १ डाकुओं का आक्रमण। २ जत्था। झुंड। गरोह।

धात—संज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।

धातकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धव का फूल।

धाता—संज्ञा पुं० [सं० धातृ] १ ब्रह्मा। उ०—रामहिं भजहिं तात सिव धाता। नर पावँ कै केतिक बाता। —मानस। २ विष्णु। ३ शिव। महादेव। ४. ४९ वायुओं में से एक। ५ शेषनाग। ६ १२ सूर्यों में से एक। ७ ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ८ विधाता। विधि। ९ टगण के आठवें भेद की संज्ञा।

वि० १. पालनेवाला। पालक। २ रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।

धातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत का संचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप में खींचने से खंडित न हो। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और राँगा। २ शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। वैद्यक में शरीरस्थ सात अस्थियाँ मानी गई हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, धातुएँ, मज्जा और शुक्र। ३ बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बंद करके स्थापित करते थे। ४ शुक्र। वीर्य।

संज्ञा पुं० १ भूत। तत्व। २ शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं, जैसे—संस्कृत में भू, कृ, धृ, इत्यादि।

धातुपुष्ट—वि० [सं०] (ओषधि) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढ़े।

धातुमर्म—संज्ञा पुं० [सं०] कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओं में है।

धातुराग—संज्ञा पुं० [सं०] गेरू। उ०—सिय अँग लिखैं धातुराग, सुमननि भूषन-विभाग, तिलक करनि का कहौं कलानिधान की।—गीता०।

धातुवर्द्धक—वि० [सं०] वीर्य को बढ़ानेवाला। जिससे वीर्य बढ़े।

धातुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग अलग करते हैं। २ रसायन बनाने का काम। ३. ताँबे से सोना बनाना। कीमियागरी। उ०—धातुवाद, निरुपाधि वर, सद्गुरु लाभ, सुमीत। देवदास कलिकाल में पोथिन दुरे सुमीत।—दोहा०।

धात्र—संज्ञा पुं० [सं०] पात्र। बरतन।

ⓟवि० [सं० धातृ] पालने या रक्षा करनेवाला।

धात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। माँ। २ वह स्त्री जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन पालन करे। धाय। दाई। ३ गायत्री स्वरूपिणी भगवती। ४ गंगा। ५ आँवला। ६ भूमि। पृथ्वी। ७ गाय। ८ आर्या छंद का एक भेद जिसमें १६ गुरु और १६ लघु मात्राएँ होती हैं।

धात्रीविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़का जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।

धात्वर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] धातु से निकलनेवाला (किसी शब्द का) अर्थ। मूल और पहला अर्थ।

धाधि—संज्ञा स्त्री० [हिं० धधकना] ज्वाला।

धान—संज्ञा पुं० [सं० धान्य] तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अन्नों में है। इन्हीं बीजों को कूटकर उनका छिलका निकालने से चावल बनते हैं। शालि। व्रीहि।

ⓟसंज्ञा पुं० दे० "धान्य"।

धानक—संज्ञा पुं० [सं० धानुष्क] १ धनुष चलानेवाला। धनुर्द्धारी। तीरंदाज। कमनैत। २. रूई धुननेवाला। धुनिया। ३ पूरब की एक पहाड़ी जाति।

धानकी—संज्ञा पुं० [हिं० धानुक] धनुर्द्धर।

धानपान—वि० [हिं० धान पान] दुबला-पतला। नाजुक।

धानमाली—संज्ञा पुं० [सं०] किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धानाⓟ†—क्रि० अ० [सं० धावन] १ तेजी से चलना। दौड़ना। भागना। २ कोशिश करना। प्रयत्न करना।

धानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जो धारण करे। वह जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २ स्थान। जगह; जैसे—राजधानी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० धान+ई (प्रत्य०)] धान की पत्ती के रंग का सा हलका हरा रंग।

वि० हलके हरे रंग का।

संज्ञा स्त्री० [सं० धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ।

संज्ञा स्त्री० ⓟ† दे० "धान्य"।

धानुक—संज्ञा पुं० दे० "धानक"।

धान्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार तिल का एक परिमाण या तौल। २ धनिया। ३ छिलके समेत चावल। धान। ४ अन्न मात्र। ५ एक प्राचीन अस्त्र।

धाप—संज्ञा पुं० [हिं० टप्पा] १ दूरी की एक नाप जो प्रायः एक मील की और कहीं दो मील की मानी जाती है। २ लंबा-चौड़ा मैदान। ३ खेत की नाप।

संज्ञा स्त्री० [हिं० धापना] तृप्ति। संतोष।

धावनाⓟ—क्रि० अ० [सं० तर्पण] संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। जी भरना। उ०—लंपट धूत पूत दमरी को विषय जाप को जापी। भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कबहुँ न मनसा धापी।—सूर०।

क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना।

क्रि० अ० [सं० धावन] दौड़ना। भागना। उ०—द्रुमन चढ़े सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन। जनि धायहुँ बलि चरन मनोहर कठिन काँट मग ऐन।—सूर०।

धावा—संज्ञा पुं० [देश०] १ छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २ वह स्थान जहाँ पर कच्ची या पक्की रसोई (मोल) मिलती हो।

धाभाई—संज्ञा पुं० [हिं० धा=धाय+भाई] ऐसे बालक जिनमें से एक तो धाय का पुत्र हो और दूसरे ने उस धाय का केवल दूध पीया हो। दूधभाई।

धाम—संज्ञा पुं० [सं० धामन्] १ घर। मकान। २ देह। शरीर। ३ बागडोर। लगाम। ४. शोभा। ५ प्रभाव। ६. देवस्थान या पुण्यस्थान, जैसे—चारों धाम आदि। ७ जन्म। ८ विष्णु। ९. ज्योति। १०. ब्रह्म। ११ स्वर्ग।

धामकधूमक—संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।

धामदा—वि० [सं० धाम+दा] स्वर्ग देनेवाली। वैकुंठ देनेवाली। उ०—रामधामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त विदित अति पावनि।—मानस।

धामिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० धाना=दौड़ना] एक प्रकार का बहुत लंबा और तेज दौड़नेवाला साँप।

धायँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी पदार्थ के जोर से गिरने या तोप, बंदूक आदि छूटने का शब्द।

धाय—संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री] वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन पोषण करने के लिये नियुक्त हो। धात्री। दाई।

संज्ञा पुं० [सं० धातकी] धव का पेड़।

धार—संज्ञा पुं० [सं०] १ जोर से पानी बरसना। जोर की वर्षा। २. इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल जो वैद्यक और डाक्टरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। कर्ज। ४. प्रांत। प्रदेश।

संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १ द्रव पदार्थ की गतिपरंपरा । पानी आदि के गिरने या बहने का तार। अखंड प्रवाह।

मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दुहना। धार मारना=पेशाब करना।

२ पानी का सोता। चश्मा। ३ किसी काटनेवाले हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं। बाढ़।

मुहा०—धार बाँधना=यंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।

४ किनारा। सिरा। छोर। ५ सेना। फौज। उ०—कहिअ कहा कहि जाइ न बाता। जम कर धार किधौं बरिआता।—मानस। ६ किसी प्रकार का धावा, आक्रमण या हल्ला। ७ ओर। तरफ। दिशा। उ०—महरि पैठत सदन भीतर छींक बाँई धार।—सूर०।

धारक—वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। २ रोकनेवाला। ३ ऋण लेनेवाला।

धारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। २ पहनना। ३ सेवन करना। खाना या पीना। ४ अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५ ऋण लेना। उधार लेना।

धारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धारण करने की क्रिया या भाव। २ वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अक्ल। समझ। ३ दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। ४ मर्यादा। ५ याद। स्मृति। ६ योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

धारणीय—वि० [सं०] [स्त्री० धारणीया] धारण करने योग्य।

धारनाⓅ—क्रि० स० [सं० धारण] १ धारण करना। अपने ऊपर लेना। २ ऋण करना। उधार लेना।

क्रि० स० दे० "ढारना"।

धारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घोड़े की चाल। घोड़े का चलना। २ पानी आदि का बहाव या गिराव। अखंड प्रवाह। धार। ३ लगातार गिरता या बहता हुआ कोई पदार्थ। ४. पानी का झरना। सोता। चश्मा। ५. (विचार या चिंतन आदि की) पद्धति या क्रम, जैसे, विचारधारा। ६ काटनेवाले हथियार का तेज सिरा। तलवार। बाढ़। धार। ७ दफा (कानून)। ८ प्राचीन काल की एक नगरी का नाम जो दक्षिण देश में थी। ९. लकीर। रेखा। १० मालवा की प्राचीन राजधानी।

धाराधर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

धारायंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिचकारी। २ फुहारा।

धारावाहिक, धारावाही—वि० [सं०] धारा के रूप में बिना रोक टोक बढ़ने या चलनेवाला। बराबर कुछ समय तक क्रम से चलनेवाला, जैसे—धारावाहिक भाषण।

धारासभा—संज्ञा स्त्री० दे० "व्यवस्थापिका सभा।

धारिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १ दे० "धार"। २ समूह। झुंड। ३ एक वर्णवृत्त। ४ सेना। उ०—वाटिका उजारि, अच्छधारि मारि, जारि गढ, भानुकुलभानु को प्रतापभानु भानु सो।—कविता०।

धारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरणी। पृथ्वी।

वि० स्त्री० धारण करनेवाली।

धारिनि—वि० स्त्री० दे० "धारिणी"। —जग संभव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला वपु धारिनि।—मानस।

धारी—वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी] धारण करनेवाला। जो धारण करे, जैसे, शस्त्रधारी।

संज्ञा पुं० धारि नामक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण और एक लघु होता है, जैसे—री लखी न। जात कौन। वस्त्र हारि। मौन धारि।

संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] लकीर। २ सेना। फौज। ३ समूह। झुंड।

धारीदार—वि० [हिं० धारी+फा० दार] जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों।

धारोष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] थन से निकला हुआ ताजा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है।

धार्तराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के वंशज।

धार्मिक—वि० [सं०] १ धर्मशील। धर्मात्मा। पुण्यात्मा। २ धर्म संबंधी।

धार्मिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] धार्मिक होने का भाव। धर्मशीलता।

धार्य—वि० [सं०] धारण करने के योग्य।

धावक—संज्ञा पुं० [सं०] हरकारा।

धावन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत जल्दी या दौड़कर जाना। २. चिट्ठी या संदेशा पहुँचानेवाला। दूत। हरकारा। उ०—द्विविद करी कोप हरि पुरी आयो। नृप सुदच्छिना जस्यो जरी वाराणसी धाय धावन जबहिं यह सुनायो।—सूर०। उ०—जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन।—मानस। ३ धोने या साफ करने का काम। ४ वह चीज जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

धावनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० धावन=गमन] जल्दी जल्दी जाना। दौड़ना। भागना।

धावनिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० धावन=गमन] १ जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव। दौड़। उ०—वा पट पीत की फहरान। कर धरि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरति यह बान।—सूर०। २ धावा। चढ़ाई। उ०—सिंधु पार परे सब आनंद सो भरे कवि गाजे शंख बाजे अब लंका पर धावनी।—हनुमन्नाटक।

धावरीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल] सफेद गाय। धौरी।

वि० सफेद। उज्वल।

धावा—संज्ञा पुं० [सं० धावन] १ शत्रु से लड़ने के लिये दलबल सहित तैयार होकर जाना। आक्रमण। हमला। चढ़ाई। २ जल्दी जल्दी जाना। दौड़।

मुहा०—धावा मारना=कहीं पहुँचने के लिये जल्दी जल्दी चलना।

धावित—वि० [सं०] दौड़ता या भागता हुआ।

धाहⓅ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़। उ०—देखे नंद चले घर आवत। पैठत पौरि छींक भइ बाँई रोइ दाहिने धाह सुनावत।—सूर०।

धाहीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"। उ०—तस्य देवान धृष्टबुधि नामा। रही आइ धाही तेहि धामा।—विश्रामसागर।

धिंग—संज्ञा स्त्री० [सं० दृढांग या धींगाधींगी अनु०] धींगाधींगी। ऊधम। उपद्रव।

धिंगा†—संज्ञा पुं० [सं० दृढांग] १ बदमाश। शरीर। २ बेशर्म। निर्लज्ज।

धिंगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० धिंग+आई (प्रत्य०)] १ शरारत। ऊधम। बदमाशी। उ०—जानि बूझि इन करी धिंगाई। मेरी बलि पर्वतहि चढ़ाई।—सूर०। २. बेशर्मी।

धिंगाना—क्रि० स० [हिं० धिंग से ना० धा०] धींगाधींगी करना। उपद्रव या ऊधम मचाना।

धेआ—संज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।

धिआन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ध्यान"।

धिआना†(पु)—क्रि० स० दे० "ध्यावना"।

धिक्—अव्य० [सं०] १. तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक एक शब्द। लानत। २ निंदा। शिकायत।

धिक—अव्य० [सं० धिक्] धिक्। लानत।

धिकना†—क्रि० अ० [सं० दग्ध] गरम होना। तप्त होना।

धिकाना†—क्रि० स० [सं० दग्ध या हिं० दहकना] खूब गरम करना। तपाना।

धिक्कार—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरस्कार, अनादर या घृणाव्यंजक शब्द। लानत।

धिक्कारना—क्रि० स० [सं० धिक्] "धिक् धिक्" करना या धिक्कार व्यक्त करना। तिरस्कार करना। लानत मलामत करना। फटकारना।

धिग(पु)—अव्य० दे० "धिक्"। उ०—निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुबीर बिहीना।—मानस।

धिय, धिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] १. कन्या। बेटी। २. लड़की। बालिका।

धिरकार†—संज्ञा स्त्री० दे० "धिक्कार"।

धिरवाना(पु)†—क्रि स० [सं० धर्षण] धमकाना। उ०—मुख झगरति आनद उर धिरवति है घर जाहु।—सूर०।

धिराना(पु)†—क्रि० स० [हिं० धिरवना] डराना। धमकाना। भय दिखाना। उ०—जाति पाँति सो कहा अजगरी यहि कहि सुतहिं धिरावति।—सूर०।

क्रि० अ० [सं० धीर] १. धीमा होना। मद पड़ना। २ धैर्य धारण करना।

धींग—संज्ञा पुं० [हिं० धिंग] हट्टाकट्टा। दृढ़ांग मनुष्य। उ०—धींगरी धींग चाचरि करें मोहिं बुलावत साखि।—सूर०।

वि० १ मजबूत। जोरावर। २. शरीर। बदमाश। कुमार्गी। पापी। उ०—केवट पाषान जातुधान कपि भालु तारे, अपनायो तुलसी सो धींग धमधूसरो।—कविता०।

धींगड़ा†—वि० [हिं० धींग [स्त्री० धींगड़ी] १. पाजी। बदमाश। दुष्ट। २ हट्टाकट्टा। हृष्टपुष्ट। वर्णसंकर। दोगला।

धींगड़ा†—वि० दे० "धींगड़"।

धींगरा—वि० दे० "धींगड़"।

धींगरी†—संज्ञा स्त्री० [धींगरा] उपद्रव या पाजीपन करनेवाली स्त्री। उ०—धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीन्हीं।—सूर०।

धींगा—संज्ञा पुं० [हिं० धींग] शरीर। बदमाश। उपद्रवी। पाजी।

धींगाधींगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धींग] १ जबरदस्ती। २ शरारत। बदमाशी।

धींगामुश्ती—संज्ञा स्त्री० दे० "धींगाधींगी"।

धींद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे किसी बात का ज्ञान हो, जैसे—मन, आँख, कान। ज्ञानेंद्रिय।

धींवर—संज्ञा पुं० दे० "धीमर"।

धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। अक्ल। २ मन। ३ कर्म।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] लड़की। बेटी।

धीजना—क्रि० स० [सं० √धृ, धार्य, धैर्य] १. ग्रहण करना। स्वीकार करना। अंगीकार करना। २. धीरज धरना। धैर्ययुक्त होना। ३ प्रसन्न या सतुष्ट होना। ४ स्थिर होना।

धीम(पु)†—वि० दे० "धीमा"।

धीमर—संज्ञा पुं० दे० "धीवर"।

धीमा—वि० [सं० मध्यम] [स्त्री० धीमी] १ धीरे चलनेवाला। जो आहिस्ता चले। २ जो अधिक प्रचड, तीव्र या उग्र न हो। हलका। ३ कुछ नीचा और साधारण से कम (स्वर)। ४ जिसकी तेजी कम हो गई हो।

धीमान्—संज्ञा पुं० [सं० धीमत्] [स्त्री० धीमती] १ बृहस्पति। २ बुद्धिमान्।

धीया†—संज्ञा स्त्री० दे० 'धी"।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] पुत्री। लड़की। बेटी। उ०—'लागि लागि आगि,' भागि भागि चले जहाँ तहाँ, धीय को न माय, बाप पूत न सँभारहीं।—कविता०।

धीया—संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] लड़की।

धीर—वि० [सं०] १ जिसमें धैर्य हो। सब्रवाला। दृढ़ और शांत चित्तवाला। २ बलवान्। ताकतवर। ३. विनीत। नम्र। ४ गंभीर। ५ मनोहर। सुदर। ६ मंद। धीमा।

(पु)†संज्ञा पुं० [सं० धैर्य] १ धैर्य। धीरज। ढारस। २ सतोष। सब्र।

धीरक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धैर्य"।

धीरजा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धैर्य"।

धीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। धैर्य। उ०—सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी।—मानस। २. स्थिरता। सतोष। सब्र।

धीरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० धीर] धैर्य धारण करना। धीरज धरना।

क्रि० स० धैर्य धारण कराना। धीरज धराना।

धीरललित—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो सदा खूब बना ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।

धीरशांत—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।

धीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यग्य से कोप प्रकाशित करे।

वि० [सं० धीर] मद। धीमा।

संज्ञा पुं० [सं० धैर्य] धीरज। धैर्य।

धीराधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जतलावे।

धीरे—क्रि० वि० [हिं० धीर] १ आहिस्ते से। धीमी गति से। २ इस प्रकार जिसमें कोई सुन या देख न सके। चुपके।

धीरोदात्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह नायक जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो, जैसे—रामचद्र, युधिष्ठिर आदि। २ वीररसप्रधान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो बहुत प्रचड और चंचल हो और सदा अपने ही गुणों का बखान किया करे।

धीवर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० धीवरी] एक जाति जो प्राय मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुवा। मल्लाह।

धुँकार—संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि+कार] जोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट।

धुँगार—संज्ञा स्त्री० [सं० धूम्र+आधार] बघार। तड़का। छौंक।

धुँगारना—क्रि० स० [हिं० धुँगार] बघारना। छौंकना। तड़का देना।

धुँजा†—वि० [हिं० धुध] धुँधली। मद दृष्टि। उ०—सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को मग जोवत अँखियाँ भई धुँजै।—सूर०।

धुँद—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।

धुंध—संज्ञा स्त्री० [सं० धूम+अंध] १ वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल या भाप के कारण हो। २ हवा में उड़ती हुई धूल। ३ आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।

धुंधकार—संज्ञा पुं० [हिं० धुँकार] १. धुंकार। गरज। गड़गड़ाहट। २ अंधकार।

धुंधमार—संज्ञा पुं० दे० "धुँधुमार"।

धुंधर†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] १. हवा में उड़ती हुई धूल। २ अँधेरा। तारीकी।

धुँधराना—क्रि० अ० दे० "धुँधलाना"।

धुँधला—वि० [हिं० धुंध+ला] १. कुछ कुछ काला। धूएँ के रंग का। २. जो साफ दिखाई न दे। अस्पष्ट। ३. कुछ कुछ अँधेरा।

धुँधलाई—संज्ञा स्त्री० दे० "धुँधलापन"।

धुँधलाना—क्रि० अ० [हिं० धुँधला] धुँधला होना।

क्रि० स० धुँधला करना।

धुँधलापन—संज्ञा पुं० [हिं० धुँधला+पन (प्रत्य०)] १ धुँधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव।

धुँधाना—क्रि० अ० [हिं० धुंध] १ बिना लपट के धूआँ देकर जलना। उ०—हौं बिरहा की लकड़ी, समझि समझि धूँधाउँ। छूटि पढ़ौं या विरह तैं, जे सारी ही जलि जाऊँ। —कबीर०।

धुंधु—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था। यह जब साँस लेता था तब उसके साथ धूआँ और अंगारे निकलते थे और भूकंप होता था।

धुंधुकार—संज्ञा पुं० [हिं० धुंध+कार] १ अंधकार। अँधेरा। २ धुँधलापन। ३. नगाड़े का शब्द। धुंकार।

धुंधुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा त्रिशंकु का पुत्र। २ कुवलयाश्व, जिसने धुंधुमार को मारा था।

धुंधुरिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] गर्द-गुबार या धूएँ के कारण होनेवाला अँधेरा।

धुंधुरित—वि० [हिं० धुंधुर] १ धुँधला किया हुआ। धूमिल। २ दृष्टिहीन। धुँधली दृष्टिवाला।

धुँधुवानाⓅ†—क्रि० अ० [सं० धूम्र, हिं० धूआँ] धूआँ देना। धुआँ दे देकर जलना।

धुँधेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधुरि"।

धुअⓅ—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

धुआँ—संज्ञा पुं० [सं० धूम्र] १. जलती हुई चीजों से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है। धूम।

मुहा०—धुएँ का धौरहर=थोड़े ही काल में नष्ट होनेवाली वस्तु या आयोजन। धुएँ के बादल उड़ाना=भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना=बढ़ बढ़कर बातें कहना।

२ घटाटोप उमड़ती हुई वस्तु। भारी समूह। ३ धज्जी। नाश। उ०—धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखा रावन प्रेरा। —मानस।

धुआँकश—संज्ञा पुं० [हिं० धुआँ+फा० कश] भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अगिनबोट। स्टीमर।

धुआँधार—वि० [हिं० धुआँ+धार] १ धुएँ से भरा। धूममय। २ गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ३ काला। स्याह। ४ बड़े जोर का। प्रचंड। घोर, जैसे—धुआँधार वर्षा, धुआँधार घटा, धुआँधार नशा।

क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से, जैसे—धुआँधार बरसना।

धुआँना—क्रि० अ० [हिं० धुआँ से ना० धा०] अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना (पकवान आदि)।

धुआँयध—वि० [हिं० धुआँ+सं० गंध] धुएँ की तरह महकनेवाला।

संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार। धूम।

धुआँस—संज्ञा स्त्री० दे० "धुवाँस"।

धुकड़पुकड़—संज्ञा पुं० [अनु०] १. भय आदि से होनेवाली चित्त की अस्थिरता। घबराहट। २ आगापीछा। पसोपेश।

धुकधुकी—संज्ञा स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १ कलेजे की धड़कन। कंप। २ डर। भय। खौफ। ३ कलेजा। हृदय। ४ पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। ५ पदिक या जुगनू नामक गहना।

धुकनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० झुकना] १. नीचे की ओर ढलना। झुकना। नवना। उ०—डगमगात गिरि परत पहन पर भुज भ्राज नँदलाल। जनु श्रीधर श्री धरत अधोमुख धुकत धरनि मानो नमि बाल॥ —सूर०। २ गिर पड़ना। उ०—लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि जु परी धरि धरणी। —सूर०। ३. झपटना। टूट पड़ना।

धुकान†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धमकाना] घोर शब्द। गड़गड़ाहट का शब्द।

धुकाना†Ⓟ—क्रि० स०[हिं० धुकना का प्रे० रूप] १. झुकाना। नवाना। २ गिराना। ढकेलना। ३ पछाड़ना। पटकना।

संज्ञा [सं० धूम+करण] धूनी।

धुकार, धुकारी—संज्ञा स्त्री० [धु से अनु०] नगाड़े का शब्द।

धुक्कनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "धुकना"।

धुज, धुजाⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"। उ०—तोरन कलस चँवर धुज विविध बनाइन्हि। हाट पटोरन्हि छाय, सफल तरु लाइन्हि। —पा० म०।

धुजिनीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वजा] सेना। फौज।

धुड़ंगाⓅ†—वि० [हिं० धूर+अंगी] [स्त्री० धुड़ंगी] १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो। २ जिसपर धूल लगी हो।

धुतकार—संज्ञा स्त्री० दे० "दुतकार"।

धुताईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।

धुताराⓅ—वि० दे० "धूर्त"।

धुधुकार—संज्ञा स्त्री० [धुधु से अनु०] १ धू धू शब्द का शोर। २. घोर शब्द। गरज।

धुधुकारी—संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।

धुन—संज्ञा स्त्री० [हिं० धुनना] १. बिना आगा पीछा सोचे कोई काम करते रहने की प्रवृत्ति। लगन।

यौ०—धुन का पक्का=वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े। धुनी।

२ मन की तरंग। मौज। ३ सोच। विचार। चिंता। खयाल।

संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि] १ गीत गाने की तर्ज। २ दे० "ध्वनि"।

धुनकना—क्रि० स० दे० "धुनना"।

धुनकी—संज्ञा स्त्री० [सं० धनुस्] १ धुनियों का वह धनुष के आकार का औजार जिससे वे रूई धुनते हैं। पिंजा। फटका। २ लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धुनना—क्रि० स० [हिं० धुनकी] १. धुनकी से रूई साफ करना जिसमें उसके बिनौले निकल जायँ। २ खूब मारना पीटना। ३ बारबार कहना। कहते ही जाना। ४ कोई काम बिना रुके बराबर करना।

धुनवाना—क्रि० स० [हिं० धुनना का प्रे० रूप] धुनने का काम दूसरे से कराना।

धुनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० १. "ध्वनि"। उ०—धुनि अवरेब कवित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाँती। —मानस। २. दे० "धुनी"।

धुनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० धुनना] वह जो रूई धुनने का काम करता हो। बेहना।

धुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
वि० [हिं० धुन] मन लगाकर काम करनेवाला।

धुपना†—क्रि० अ० दे० "धुलना"।

धुमिला—वि० दे० "धूमिल"।

धुमिलाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० धूमिल] धूमिल होना। काला पड़ना।

धुरधर—वि० [सं० धुरधर=भार उठानेवाला] [संज्ञा धुरधरता] १ जो सब में बड़ा, भारी या बली हो। २. श्रेष्ठ। प्रधान। प्रवीण। ३. उच्च गुणों से युक्त। ४. धुरी धारण करनेवाला। आधार। उ०—सकल द्विजन्ह मिलि नाएउ माथा। धरम धुरधर रघुकुल नाथा। —मानस।

धुर—संज्ञा पुं० [सं० धुर्] १ गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २. शीर्ष या प्रधान स्थान। ३. भार। बोझ। ४. आरंभ। शुरू। उ०—धुर ही ते खोटो खायो है लिए फिरत सिर भारी। —सूर०। ५. जमीन की एक माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होती है। बिस्वासी।
अव्य० [सं० धुर] १. बिलकुल ठीक। सटीक। सीधे। २ अत्यत। एकदम दूर। बिलकुल दूर।
मुहा०—धुर सिर से = बिलकुल शुरू से।
वि० [सं० ध्रुव] पक्का। दृढ़।

धुरजटी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटी"।

धुरधनि—वि० [हिं० धुर+धनी] श्रेष्ठ। प्रधान। उ०—गुननिधान हिमवान धरनिधर धुरधनि। मैना तासु घरनि घर त्रिभुवन तियमनि। —पा० मं०।

धुरना(पु)†—क्रि० स० [सं० धूर्वण] १. पीटना। मारना। २. बजाना। उ०—पहुँचे जाय राजगिरि द्वारे धुरे निशान सुदेश। —सूर०।

धुरपद—संज्ञा पुं० दे० 'ध्रुपद"।

धुरवा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० धुर्+वाह] बादल। मेघ।

धुरा—संज्ञा पुं० [सं० धुर] [संज्ञा स्त्री०, अल्पा० धुरी] वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिसपर वह घूमता है। अक्ष।

धुरियाना†—क्रि० स० [हिं० धूर से ना० धा०] १ किसी वस्तु पर धूल डालना। २. किसी ऐब को युक्ति से छिपा देना।
क्रि० अ० १. किसी चीज का धूल से ढका जाना। २. ऐब का छिपाया जाना।

धुरिया मल्लार—संज्ञा पुं० [देश० धुरिया+मल्लार] मल्लार।

धुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धुरा] गाड़ी का अक्ष।

धुरीण—वि० [सं०] १. बोझ सँभालनेवाला। २ मुख्य। प्रधान। ३ धुरंधर।

धुरीन—वि० दे० "धुरीण २"। उ०—नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन विषय रस रूखे। —मानस।

धुरीराष्ट्र—संज्ञा पुं० [हिं० धुरी+सं० राष्ट्र] समान राजनीतिक लक्ष्य से परिचालित राष्ट्र। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व विश्वविजय के लिये संघटित इटली, जर्मनी और जापान का गुट।

धुरेटना(पु)†—क्रि० स० [हिं० धूर+लपेटना] धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० धूर] किसी चीज का अत्यत छोटा भाग। कण। जर्रा। धुआ।
मुहा०—धुर्रें उड़ाना=(१) किसी वस्तु के अत्यत छोटे छोटे टुकड़े कर डालना। (२) छिन्न भिन्न कर डालना। (३) बहुत अधिक मारना। नष्ट करना। (४) किसी के विचारों का बुरी तरह खंडन करना।

धुलना—क्रि० अ० [हिं० धोना का अ० रूप] पानी की सहायता से साफ या स्वच्छ किया जाना। धोया जाना।

धुलवाना—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] १ धोने का काम या भाव। २ धोने की मजदूरी।

धुलाना—क्रि० स० [सं० धवल] धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।

धुलेंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूल+उड़ाना] हिंदुओं का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर अबीर गुलाल डालते हैं।

धुव(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

धुवाँ—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

धुवाँस—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूर+माश वा धूमसी] धुली हुई उरद का आटा जिससे पापड़, कचौड़ी आदि बनती है।

धुवाना(पु)—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुस्स—संज्ञा पुं० [सं० ध्वंस] १. मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।

धुस्सा—संज्ञा पुं० [सं० धूस ?] मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।

धूँध—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"। उ०—धूम धूँध छाई घर अवर चमकत बिच बिच जाल। —सूर०।

धूँधर(पु)—वि० दे० "धुँधला"।

धू(पु)—वि० [सं० ध्रुव] स्थिर। अचल।
संज्ञा पुं० १. ध्रुवतारा। २ राजा उत्तानपाद का पुत्र जो भगवान् का भक्त था। ३. धुरी।

धूआँ—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

धूई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूआँ] धूनी।

धूकना(पु)—क्रि० अ० दे० "ढुकना"।

धूजट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० धूर्जटि] शिव। महादेव।

धूजना—क्रि० अ० [सं० √धू=हिलना, काँपना ?] १. हिलना। २. काँपना।

धूत—वि० [सं०] १ हिलाया या कँपाया हुआ। कपित। २. जो धमकाया गया हो। ३ त्यक्त। छोड़ा हुआ। ४. सब तरफ से रुका या घिरा हुआ।
†(पु)वि० [सं० धूर्त] धूर्त। दगाबाज। उ०—धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ। —कविता०।

धूतना(पु)—क्रि० स० [हिं० धूर्त] धूर्तता करना। धोखा देना। ठगना। उ०—तुलसी सखी जो राम सों, दुखी सो निज करतूति। करम वचन मन ठीक जेहि तेहि न सकै कलि धूति। —दोहा०।

धूतपाप—वि० [सं०] पाप को मिटानेवाला। पापघ्न।

धूताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।

धूती—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक चिड़िया।

धूतुक, धूतू—संज्ञा पुं० [अनु०] तुरही।

धूधू—संज्ञा पुं० [अनु०] आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

धूनना(पु)—क्रि० स० [हिं० धूनी] किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना।
क्रि० स० दे० "धुनना"।

धूना—संज्ञा पुं० [हिं० धूनी] १ एक प्रकार का बड़ा पेड़। इसका गोंद धूप

की तरह जलाया जाता है। २ वह सुगंधित वस्तु जो आग में जलाई जाय।

धूनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूईं] १. गुग्गुल, लोबान आदि गंधद्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ।

मुहा०—धूनी देना=गंध मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।

२. साधुओं के तापने की आग।

मुहा०—धूनी जगाना या लगाना=(१) साधुओं का अपने सामने आग जलाना। (२) शरीर तपाना। तप करना। (३) साधु होना। विरक्त होना। धूनी रमाना=(१) सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना। (२) तप करना। साधु या विरक्त हो जाना।

धूप—संज्ञा पुं० [सं०] देवपूजन में या सुगंध के लिये गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। सुगंधित धूम।

संज्ञा स्त्री० १ गंधद्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है, जैसे—कस्तूरी, अगर की लकड़ी। २. कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई कृत्रिम धूप। ३. सूर्य का प्रकाश और ताप। तेज। चमक। घाम।

मुहा०—धूप खाना=ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े। धूप चढ़ना या निकलना=सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना। दिन चढ़ना। धूप दिखाना=धूप में रखना। धूप लगने देना। धूप में बाल या चूड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत सा भाग बिता देना।

धूपघड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+घड़ी] एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। इसमें एक गोल चक्कर के बीच एक कील होती है। धूप में उसी कील की परछाँही से समय जाना जाता है।

धूपछाँह—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+छाँह] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा।

धूपदान—संज्ञा पुं० [धूप+आधान] धूप या गंधद्रव्य जलाने का डिब्बा। अगियारी।

धूपदानी—संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान"।

धूपना(पु)†—क्रि० अ० [सं० धूपन] धूप देना। गंधद्रव्य जलाना।

क्रि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना। सुगंधित धुएँ से बासना।

क्रि० अ० [सं०√धू=काँपना, हिलना] दौड़ना। हैरान होना, जैसे—दौड़ना-धूपना।

धूपवत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+बत्ती] मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूपित—वि० [सं०] १. धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ। २ थका हुआ। शिथिल।

धूम—संज्ञा पुं० [सं०] १ धुआँ। २ अजीर्ण या अपच में उठनेवाली डकार। ३ धूमकेतु। ४ उल्कापात।

संज्ञा स्त्री० [सं० धूम=धुआँ] १ बहुत से लोगों के इकट्ठे होने और शोरगुल करने आदि का व्यापार। रेलपेल। हलचल। आंदोलन। २ उपद्रव। उत्पात। ऊधम।

मुहा०—धूम डालना=ऊधम करना।

३. ठाटबाट। समारोह। भारी आयोजन। ४ कोलाहल। हल्ला। शोर। ५. जनरव। शोहरत। प्रसिद्धि।

धूमकधैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम] उछल-कूद और हल्लागुल्ला। उपद्रव। उत्पात।

धूमकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. केतुग्रह। पुच्छल तारा। उ०—कैधों व्योम वीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु, वीररस वीर तरवारि सी उधारी है। —कविता०। २ अग्नि। ३. शिव।

धूमधड़क्का—संज्ञा पुं० दे० "धूमधाम"।

धूमधड़ाका—संज्ञा पुं० [हिं० धूम+धड़ाका] दे० "धूमधाम"।

धूमधाम—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम+धाम (अनु०)] भारी तैयारी। ठाटबाट। समारोह।

धूमध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] आग। उ०—शूल-सायक-पिनाकासिकर सत्रुवन-दहन इव धूमध्वज, वृषभ-यान। —विनय०।

धूमपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ तमाकू, चुरुट आदि पीने का कार्य। २ विशेष प्रकार का धुआँ जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है।

धूमपोत—संज्ञा पुं० [सं०] धुआँकश। स्टीमर।

धूमर(पु)†—वि० दे० "धूमल"।

धूमल, धूमला—वि० [सं० धूमल] [स्त्री० धूमली] १ धुएँ के रंग का। ललाई लिए काला। २ जो चटकीला न हो। धुँधला। ३ जिसकी कांति मंद हो।

धूमावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से एक। भयंकर रूप और मलिन वेश की एक देवी (तंत्रसार)।

धूमिल(पु)†—वि० [सं० धूमल] १. धुएँ के रंग का। २ धुँधला। उ०—मुख अरविंद धार मिलि सोभित धूमिल नील अगाध। मनहु बाल रवि रस समीर संकित तिमिर कूट है आध। —सूर०।

धूम्र—वि० [सं०] धुएँ के रंग का।

संज्ञा पुं० १. ललाई लिए काला रंग। २ शिलारस नाम का गंधद्रव्य। ३. एक असुर। ४. शिव। महादेव। ५ मेढ़ा।

धूम्रवर्ण—वि० [सं०] धुएँ के रंग का।

धूर(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।

धूरजटी†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि"।

धूरत(पु)†—वि० दे० "धूर्त"।

धूरधान—संज्ञा पुं० [हिं० धूर+सं० आधान] धूल की राशि। गर्द का ढेर।

धूरधानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूरधान] १ गर्द की ढेरी। धूल की राशि। २. ध्वंस। विनाश। ३. पथरकला। बंदूक।

धूरा—संज्ञा पुं० [हिं० धूर] १ धूल। गर्द। २ चूर्ण। बुकनी। चूरा।

मुहा०—धूरा करना या देना=शीत से अंग सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना।

धूरि—(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।

धूर्जटि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

धूर्त—वि० [सं०] १. छली। चालबाज। मायावी। २ धोखा देनेवाला। वंचक।

संज्ञा पुं० १. साहित्य में शठ नायक का एक भेद। २ दाँवपेंच या छल करनेवाला व्यक्ति। ३. विट् लवण। ४ लोहे की मैल। ५ धतूरा।

धूर्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चालबाजी। वंचकता। ठगपना। चालाकी।

धूल—संज्ञा स्त्री० [सं० धूलि] १ मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर। रेणु। रज। गर्द।

मुहा०—(कहीं) धूल उड़ना=(१) बरबादी होना। तबाही आना। (२) सन्नाटा होना। रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=(१) दोषों और त्रुटियों का उधेड़ा जाना। बदनामी होना। (२) उपहास होना। दिल्लगी उड़ना। किसी की धूल उड़ाना=(१) बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। (२) उपहास करना। हँसी करना। धूल की रस्सी बटना=(१) अनहोनी बात के पीछे

पड़ना। (२) केवल धूर्तता से काम निकालना। धूल चाटना=(१) बहुत विनती करना। (२) अत्यंत नम्रता दिखाना। (किसी बात पर) धूल डालना=(१) फैलने न देना। दबाना। (२) ध्यान न देना। धूल फाँकना=मारा मारा फिरना। धूल में मिलना=नष्ट होना। चौपट होना। पैर की धूल=अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति। सिर पर धूल डालना=पछताना। सिर धुनना।

२ धूल के समान तुच्छ वस्तु।

मुहा॰—धूल समझना=अत्यंत तुच्छ समझना। किसी गिनती में न लाना।

धूला—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ धूल] टुकड़ा। खंड।

धूलि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] धूल। गर्द।

धूवाँ—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धुआँ"।

धूसर—वि॰ [सं॰] १ धूल के रंग का। खाकी। मटमैला। २. धूल लगा हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो। धूल से भरा। उ॰—धूसर धूरि धुटुरुवन रेंगनि बोलनि बचन रसाल की। —सूर॰।

यौ॰—धूलधूसर=धूल से भरा हुआ।

धूसरा—वि॰ दे॰ "धूसर"।

धूसरित—वि॰ [सं॰] जो धूल से मटमैला हुआ हो। २. धूल से भरा हुआ।

धूसला(पु)—वि॰ दे॰ "धूसर"।

धृक, धृग(पु)—अव्य॰ दे॰ "धिक्"। उ॰—तुमहि बिना मन धृक अरु धृक घर। तुमहि बिना धृक धृक माता पितु धृक धृक कुल की कान लाज डर। —सूर॰।

धृत—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ धृता] १ धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित।

धृतराष्ट्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वह जिसका राज्य दृढ़ हो। शक्तिशाली राजा। २ महाभारत काल के हस्तिनापुर के जन्मांध राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र थे। पांडु इनके छोटे भाई और पांडव भतीजे थे।

धृति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ धरने या पकड़ने की क्रिया। धारण। २. स्थिर रहने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३ मन की दृढ़ता। धैर्य। धीरता। उ॰—तोष मरुत तब छमा जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै। ४. सोलह मातृकाओं में से एक। ५ अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। ६. दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी।

धृती—वि॰ [सं॰ धृतिन्] धीर। धैर्यवान्।

धृष्ट—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ धृष्टा] १. संकोच या लज्जा न करनेवाला। निर्लज्ज। बेहया। २ ढीठ। गुस्ताख। उद्धत।

धृष्टता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ अनुचित साहस। ढिठाई। गुस्ताखी। २ निर्लज्जता। बेहयाई।

धृष्टद्युम्न—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध में जब द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर बेहोश हो गए तब इसी ने उनका सिर काटा था।

धृष्णु—वि॰ [सं॰] १. धृष्ट। ढीठ। २. साहसी।

धृष्य—वि॰ [सं॰] धर्षण योग्य। धर्षणीय।

धेन—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "धेनु"।

धेनु—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ गाय। २ वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हों। सवत्सा गौ।

धेनुक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक राक्षस जिसे बलदेव जी ने मारा था।

धेनुमति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ धेनुमती] गोमती (नदी)। उ॰—पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा॥ —मानस।

धेनुमुख—संज्ञा पुं॰ [सं॰] गोमुख नामक बाजा। नरसिंहा।

धेय—वि॰ [सं॰] १ धारण करने योग्य। धार्य। २ पोषण करने योग्य। पोष्य।

धेर—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक अनार्य जाति। इस जाति के लोग गाँव के बाहर रहते और मरे हुए चौपायों का मांस खाते हैं।

धेरिया, धेरी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ दुहिता] लड़की। बेटी।

धेलचा†, धेला—संज्ञा पुं॰ दे॰ "अधेला"।

धेली†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ अधेल] अठन्नी।

धैताल†—वि॰ [?] १ चपल। चंचल। २. उजड्ड। उद्धत।

धैना—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ धरना या धंधा] १ टेव। आदत। स्वभाव। २ कामधंधा।

धैर्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ संकट, बाधा आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता। धीरता। धीरज। २ उतावली या आतुर न होने का भाव। सब्र। ३ चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धैवत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जो पंचम के बाद का है।

धोंधा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ ढुंढि=गणेश ?] १. लोंदा। बेडौल पिंड। २. भद्दा।

मुहा॰—मिट्टी का धोंधा=(१) मूर्ख। नासमझ। जड़। (२) निकम्मा। आलसी।

धोआउरि(पु)—वि॰ [सं॰ धौत (√धाव्) प्रा॰ धोअ] धुला हुआ। उ॰—धोआउरि धाने मदिरा साँध, देउर भाँगि मसीद बाँध।

धोई—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ धौत (√धाव्), प्रा॰ धोइअ] छिलका निकाली हुई उरद या मूँग की दाल।

(पु)संज्ञा पुं॰ [हिं॰ धवई] राजगीर। धवई।

धोकड़—वि॰ [देश॰] हट्टाकट्टा। मुस्टंडा।

धोका—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धोखा"।

धोखा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ धूक=धूर्त, शठ+ता] १ मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन में मिथ्या प्रतीति उत्पन्न हो। भुलावा। छल। दगा। २ धूर्तता, चालाकी, झूठ बात आदि से उत्पन्न मिथ्या प्रतीति। डाला हुआ भ्रम। भुलावा।

मुहा॰—धोखा खाना=ठगा जाना। प्रतारित होना। धोखा देना=(१) भ्रम में डालना। छलना। (२) अकस्मात् मरकर या नष्ट होकर दुःख पहुँचाना।

३ भ्रम। भ्रांति। भूल।

मुहा॰—धोखा खाना=भ्रम में पड़ना।

४ भ्रम में डालनेवाली वस्तु। माया।

मुहा॰—धोखे की टट्टी=(१) वह पर्दा या टट्टी जिसकी ओट में छिपकर शिकारी शिकार खेलते हैं। (२) भ्रम में डालनेवाली चीज या व्यवहार। (३) दिखाऊ चीज। धोखा खड़ा करना या रचना=भ्रम में डालने के लिये आडंबर करना।

५ जानकारी का अभाव। अज्ञान।

मुहा॰—धोखे में या धोखे से=जान-बूझकर नहीं। भूल से।

६ अनिष्ट की संभावना। जोखों।

मुहा॰—धोखा उठाना=भ्रम में पड़कर हानि या कष्ट उठाना।

७ अन्यथा होने की संभावना। संशय।

मुहा॰—धोखा पड़ना=जैसा समझा या कहा जाय, उसके विरुद्ध होना। अन्यथा होना।

८. भूल। चूक। प्रमाद। त्रुटि।

मुहा०—धोखा लगना = त्रुटि होना। कमी होना। धोखा लगाना = कसर करना। ९ वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिये खेत में खड़ा करते हैं। बिजूखा। मुचकाक। १० रस्सी लगी हुई लकड़ी जो फलदार पेड़ों पर इसलिये बाँधी जाती है कि रस्सी खींचने से खटखट शब्द हो और चिड़ियाँ दूर रहें। खटखटा। ११ बेसन का एक पकवान।

धोखेबाज—वि० [हिं० धोखा + फा० बाज] धोखा देनेवाला। छली। कपटी। धूर्त।

धोखेबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धोखेबाज] छल। कपट। धूर्तता।

धोटा—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

धोती—संज्ञा स्त्री० [सं० धटी] वह कपड़ा जो कटि से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर (स्त्रियों का प्रायः सर्वांग) ढकने के लिये कमर में लपेटकर पहना जाता है।

मुहा०—धोती खराब होना = अनजान में पाखाना होना। धोती ढीली करना = डर जाना। भयभीत होना। डरकर भागना।

संज्ञा स्त्री० [सं० धौती] १. योग की एक क्रिया। दे० "धौती"। २. कपड़े की वह धज्जी जिसे हठयोग की "धौति" क्रिया में मुँह से निगलते हैं।

धोना—क्रि० स० [सं० धावन, प्रा० धोअण] १ पानी से साफ करना। प्रक्षालित करना। पखारना।

मुहा०—(किसी वस्तु से) हाथ धोना = खो देना। गँवा देना। वंचित रहना। हाथ धोकर पीछे पड़ना = सब छोड़कर पीछे लग जाना या बुरी तरह तंग करना।

२. दूर करना। हटाना। मिटाना।

मुहा०—धो बहाना = न रहने देना।

धोप†(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] तलवार। खड्ग। उ०—एक हाथ धोप है सौं कोप यह जनावत है एक सीय हाथ पर ठोंक्यो एक भाल सौं। —हनुमन्नाटक।

धोव—संज्ञा पुं० [सं० धौत (√धाव्), प्रा० √धोव] धोए जाने की क्रिया। धुलावट।

धोबिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० धोबी] १ धोबी जाति की स्त्री। २ एक जलपक्षी।

धोबी—संज्ञा पुं० [हिं० धोव + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० धोबिन] वह जो मैले कपड़ों को धो और साफ करके अपनी जीविका चलाता हो। कपड़ा धोनेवाला। रजक।

मुहा०—धोबी का कुत्ता = व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा आदमी।

धोम—संज्ञा पुं० [सं० धूम्र] धूम्र। धूआँ।

धोर—संज्ञा पुं० [सं० धर = किनारा] १ पास। निकटता। २ किनारा। बाढ़।

धोरी—संज्ञा पुं० [सं० धौरेय] १. धुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बैल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। उ०—तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी। —मानस। ४. श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी। उ०—कुँवरि कुँवरि सब मंगल मूरति; नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी। —गीता०।

धोरे(पु)—क्रि० वि० [सं० धर] पास। निकट। उ०—सौंहैं तिहारी हौं भागि न जाउँगी आई हौं लाल तिहारेई धोरे। केलि कौ रैनि परी है घरीक गई करि जाहु दई के निहोरे। —शृंगार०।

धोवती—संज्ञा स्त्री० [सं० धटी] धोती।

धोवन—संज्ञा स्त्री० [सं० धावन, प्रा० धोवण] १. धोने का भाव। पछारने की क्रिया। २ वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।

धोवना(पु)†—क्रि० स० दे० "धोना"।

धोवा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० धोना] १ धोवन। २ जल। अर्क।

धोवाना(पु)—क्रि० स० [हिं० धोना का प्रे० रूप] धुलाना।

क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।

धौं(पु)†—अव्य० [हिं० दँव, दहुँ] १ एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले लगाया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संशय का भाव अधिक होता है। न जाने। मालूम नहीं। उ०—कलानिधान सकल गुन आगर गुरु धौं कहा पढ़ाए। —सूर०। २ प्रश्न के रूप में आनेवाले दो विकल्प या संदेहसूचक वाक्यों में से दूसरे या दोनों के पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा। उ०—सुनत सुदामा जात मनहिं मन चीन्हैंगे धौं नाहीं। —सूर०। ३. एक शब्द जिसका प्रयोग जोर देने के लिये ऐसे प्रश्नों के पहले 'तो' या 'भला' के अर्थ में होता है जिनका उत्तर काकु से 'नहीं' होता है। ४ किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न वाक्य का आरंभसूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ५. विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिये आनेवाला एक शब्द।

धौंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १. आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोंका। २. गरमी की लपट। ताप। लू।

धौंकना—क्रि० स० [सं० √धम् = धौंकना] १ आग पर, उसे दहकाने के लिये, भाथी या पंखे आदि से हवा का झोंका पहुँचाना। २ ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३ दंड आदि लगाना।

धौंकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १. बाँस या धातु की नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं। फुँकनी। २. भाथी।

धौंका†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंक] लू।

धौंकिया—संज्ञा पुं० [हिं० धौंक + इया (प्रत्य०)] १ भाथी चलानेवाला। आग फूँकनेवाला। २. एक प्रकार के व्यापारी जो भाथी आदि लिए घूमते और टूटे फूटे बरतनों की मरम्मत करते हैं।

धौंकी—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।

धौंज—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंजना] १ दौड़-धूप। २. घबराहट। उद्विग्नता। ३ चिंता। फिक्र।

धौंजन—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"।

धौंजना†—क्रि० स० [सं० ध्वजन] दौड़ना धूपना। दौड़ धूप करना।

क्रि० स० १ पैरों से रौंदना। २ रौंद-कर या मल-दलकर तह बिगाड़ना (कपड़े आदि की), जैसे, बिस्तर धौंजना।

धौंताल—वि० [हिं० धुन + ताल] १ जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २ शरारती। ३. फुरतीला। चुस्त। चालाक। ४ साहसी। दृढ़। ५ हट्टा कट्टा। गजबूत। हैकड़। ६ निपुण। पटु।

धौंर—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल] एक प्रकार की सफेद ईख।

धौंस—संज्ञा स्त्री० [सं० √दश्] १ धमकी। घुड़की। डाँट। डपट। २ धाक। अधिकार। रोबदाब। ३ झाँसापट्टी। भुलावा। धोखा। छल।

धौंसना—क्रि० स० [सं० ध्वसन] १. दबाना। दमन करना। २ धमकी या घुड़की देना। डराना। उ०—ब्रजनारी बटपारिन हैं सब चुगली आपुहि जाय लगायो। राजा बड़े बात यह समझी तुमको हमपै धौंसि पठायो। —सूर०। ३ मारना-पीटना।

धौंसपट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंस+पट्टी] भुलावा। झाँसापट्टी। दमदिलासा।

धौंसर(पु)—वि० दे० "धूसर"।

धौंसा—संज्ञा पुं० [हिं०√धौंस] १. बड़ा नगाड़ा। डंका। २. सामर्थ्य। शक्ति।

धौंसिया—संज्ञा पुं० [हिं०√धौंस+इया (प्रत्य०)] १. धौंस से काम चलानेवाला। २. झाँसापट्टी देनेवाला। ३. नगाड़ा बजानेवाला।

धौ—संज्ञा पुं० दे० "धव"।

धौज—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"। उ०—एक कादै सौंज, एक धौज करै कहा ह्वैहै, पोच भई महा सोच सुभट समाज के।—कविता०।

धौत—वि० [सं०] १ धोया हुआ। साफ। २ उजला। सफेद। ३. नहाया हुआ। उ०—मणिमय आँगन नदराय को बाल-गोपाल तहाँ करैं रँगना। गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलत हैं दोउ छगने मँगना। धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मानि यशोदा लेत उछँगना।—सूर०।

संज्ञा पुं० रूपा। चाँदी।

धौति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध। २. हठयोग की एक क्रिया जो शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिये की जाती है। ३ आँतें साफ करने की योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं; फिर पानी पीकर उसे धीरे धीरे बाहर निकालते हैं।

धौम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि जो देवल के भाई और पांडवों के पुरोहित थे। २ एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बड़े शिव-भक्त थे। ३ एक ऋषि जो तारा रूप में पश्चिम दिशा में स्थित हैं।

धौरहर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "धौलहर"। उ०—धीरे धौरहर पर अमल प्रजक धरि, दूरि लौं बगारि दीन्हो चाँदनी सुछंद कों।—रससाराश।

धौरा—वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौरी] १. श्वेत। सफेद। उजला। २. सफेद रंग का बैल। ३. धौ का पेड़। ४ एक प्रकार का पडुक।

धौराहर—संज्ञा पुं० दे० "धौलहर"। उ०—जीवन जन्म सपनों सो समुझि देखि अल्प-मन माहीं। बादर छाँह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाहीं।—सूर०।

धौरिय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० धौरेय] बैल।

धौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौरा] १. सफेद रंग की गाय। कपिला। २. एक प्रकार की चिड़िया।

धौरे—क्रि० वि० दे० "धोरे"।

धौल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चाँटा। थप्पड़। २ नुकसान। हानि। टोटा।

(पु)वि० [सं० धवल] १ उजला। सफेद। २ ऊँचा। उ०—धौल अटा लखि नील उपेस दियो छिटकाई छटा छबिजालहि। तापर पूरो सुगंध अतूल को दै गई मालिनी फूल के मालहि।—शृंगार०।

मुहा०—धौल धूर्त=गहरा धूर्त।

संज्ञा पुं० [हिं धौराहर] धरहरा। धौराहर। उ०—कटक बनाए वेश राम ही को जायो पापी मेरो मन धुआँ को सो धौल नभ छायो है।—हनुमन्नाटक।

धौलधक्का—संज्ञा पुं० [हिं० धौल+धक्का] आघात। चपेट।

धौल धप्पड़—संज्ञा पुं० [हिं० धौल+धप्पा] १ धौल या थप्पड़ की मारपीट। धक्का मुक्का। २. उपद्रव। ऊधम।

धौलधप्पा—संज्ञा पुं०। दे० "धौल-धप्पड़"।

धौलहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० धवलगृह] १ महल। प्रासाद। उ०—ऊँचा मदर धौलहर, माटी चित्री पौलि। एक राम के नाँव बिन, जम पड़ैगा रौलि।—कबीर०। २ ऊँची अटारी। बुर्ज।

धौला—वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौलि] सफेद। उजला। श्वेत।

संज्ञा पुं० १ धौ का पेड़। धौरा। २ सफेद बैल।

धौलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौल+आई (प्रत्य०)] सफेदी। उजलापन।

धौलागिरि—संज्ञा पुं० दे० "धवलगिरि"।

ध्यात—वि० [सं०] विचारा हुआ। ध्यान किया हुआ। चिंतित।

ध्याता—वि० [सं० ध्यातृ] [स्त्री० ध्यात्री] १ ध्यान करनेवाला। २ विचार करनेवाला।

ध्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव। मानसिक प्रत्यक्ष।

मुहा०—ध्यान में डूबना या मग्न होना=किसी बात को इस प्रकार मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। ध्यान धरना=मन में स्थापित करना। (किसी के) ध्यान में लगना=किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना।

२. सोचविचार। चिंतन। मनन। ३ भावना। प्रत्यय। विचार। खयाल।

मुहा०—ध्यान आना=विचार उत्पन्न होना। ध्यान बँधना=लगातार खयाल बना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर खयाल बना रहना।

४. चित्त की ग्रहण वृत्ति। चित्त। मन।

मुहा०—ध्यान में न लाना=(१) चिंता न करना। परवाह न करना। (२) न विचारना।

५ चेतन की प्रवृत्ति। चेत। खयाल।

मुहा०—ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। विचार स्थिर होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=खयाल कराना, या जताना। चेताना। सुझाना। ध्यान देना=(अपना) चित्त प्रवृत्त करना। गौर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन में स्थान कर लेना। चित्त से न हटना। ध्यान बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। खयाल इधर उधर होना। ध्यान बँधना=किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना।

६. बोध करनेवाली वृत्ति। समझ। बुद्धि। ७. धारणा। स्मृति। याद।

मुहा०—ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना=स्मरण कराना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान रखना=याद रखना। ध्यान से उतरना=भूलना।

८ चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया। यह योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है।

मुहा०—ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर उधर हो जाना। ध्यान करना=ईश्वर, किसी आराध्य या अभीष्ट आदि के चिंतन में चित्त को एकाग्र करके बैठना। चिंतन आदि के लिये चित्त को एकाग्र करना।

ध्यानना(पु)—क्रि० स० [सं० ध्यान से हिं० ना० धा०] ध्यान करना।

ध्यानयोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।
ध्याना(पु)—क्रि० स० [स० ध्यान] १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। सुमरना।
ध्यानि, ध्यानी—वि० [स० ध्यानिन्] १ ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २. ध्यान करनेवाला।
ध्येय—वि० [स०] १. ध्यान करने योग्य। २ जिसका ध्यान किया जाय।
ध्रुपद—संज्ञा पुं० [सं० ध्रुवक+पद] एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यशादि का वर्णन गाया जाता है। एक राग।
ध्रुव—वि० [सं०] १ सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला। स्थिर। अचल। २ सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३. निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का। उ०—चलत मार अस हृदय विचारा। शिव विरोध ध्रुव मरन हमारा। —मानस।
संज्ञा पुं० १ ध्रुव तारा। २ पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद और उनकी पत्नी सुनीति के एक पुत्र जो प्रसिद्ध तपस्वी हुए हैं और जिन्हें आकाश में तारे के रूप में स्थित माना जाता है। ३ भूगोल विद्या में पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी दोनों छिरे जहाँ समस्त देशांतर रेखाएँ केंद्रित होती हैं। ४ रगण का अठारहवाँ भेद जिसमें क्रमश. एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं।
५. आकाश। ६ शकु। कील। ७ पर्वत। ८ खंभा। थून। ६. वट। बरगद। १० आठ वस्तुओं में से एक। ११ ध्रुपद। १२. विष्णु।
ध्रुवता—संज्ञा स्त्री० [स०] १. स्थिरता। अचलता। २ दृढ़ता। पक्कापन। ३ निश्चय।
ध्रुवतारा—संज्ञा पुं० [सं० ध्रुव+तारक, हिं० तारा] वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर उधर नहीं होता। पुराणों के अनुसार यह राजा उत्तानपाद का पहला पुत्र ध्रुव माना जाता है।
ध्रुवदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सप्तर्षि-मडल। २ कुतुबनुमा।
ध्रुवदर्शन—संज्ञा पुं० [स०] विवाह के संस्कार के अतर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधू को ध्रुवतारा दिखाया जाता है।
ध्रुवलोक—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।
ध्वंस—संज्ञा पुं० [स०] विनाश। नाश।
ध्वंसक—वि० [स०] नाश करनेवाला।
ध्वंसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ध्वसनीय, ध्वसित, ध्वस्त] १ नाश करने की क्रिया। २ नाश होने का भाव। क्षय। विनाश।
ध्वंसावशेष—संज्ञा पुं० [स०] किसी चीज के टूटफूट जाने पर बचा हुआ अंश। खँडहर।
ध्वंसी—वि० [स० ध्वसिन्] [स्त्री० ध्वसिनी] नाश करनेवाला। विनाशक।
ध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्न। निशान। २ वह लबा वा ऊँचा डंडा जिसके सिरे पर कोई चिह्न बना रहता है, या पताका बँधी रहती है। निशान। झंडा।
ध्वजभंग—संज्ञा पुं० [स०] नपुसकता।
ध्वजा—संज्ञा स्त्री० [स० ध्वज] १ पताका। झंडा। निशान। २. छंद.शास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।
ध्वजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना का एक भेद जिसका परिमाण कुछ लोग वाहिनी का दूना मानते हैं।
ध्वजी—वि० [सं० ध्वजिन्] [स्त्री० ध्वजिनी] १ ध्वजवाला। जो ध्वजा लिए हो। २. चिह्नवाला। चिह्नयुक्त।
ध्वनि—संज्ञा स्त्री० [स०] १. वह विषय जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद। आवाज। २. शब्द का स्फोट। आवाज की गूँज। लय। ३ वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक सुदर और मर्मस्पर्शी हो। ४ आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।
ध्वनित—वि० [सं०] [स्त्री० ध्वनिता] १. शब्दित। २. व्यजित। प्रकट किया हुआ। ३. बजाया हुआ। वादित।
ध्वन्य—संज्ञा पुं० [स०] व्यंग्यार्थ।
ध्वन्यात्मक—वि० [स०] १. ध्वनिस्वरूप या ध्वनिमय। २. (काव्य) जिसमें व्यग्य प्रधान हो।
ध्वन्यार्थ—संज्ञा पुं० [स० ध्वन्यर्थ] वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यजना से हो।
ध्वस्त—वि० [सं०] १ च्युत। गिरा पड़ा। २ खडित। टूटा फूटा। भग्न। ३ नष्ट। भ्रष्ट। ४ परास्त। पराजित।
ध्वांत—संज्ञा पुं० [सं०] अंधकार। अँधेरा।
ध्वांतचर—संज्ञा पुं० [स०] राक्षस।

न

न—वर्णमाला का बीसवाँ व्यजन। इसका उच्चारणस्थान दाँत और नाक है।
नंग—संज्ञा पुं० [हिं० नंगा] १. नग्नता। नगापन। नंगे होने का भाव। २ गुप्त अंग।
वि० बदमाश और बेहया। लुच्चा।
नंगधड़ंग—वि० [हिं० नंगा+धड़ंग (अनु०)] बिलकुल नगा। दिगबर। विवस्त्र।
नंगमुनंगा—वि० दे० "नंग धड़ंग"।
नंगा—वि० [स० नग्न] १. जो कोई कपड़ा न पहने हो। दिगंबर। विवस्त्र। वस्त्रहीन।
यौ०—अलिफ नंगा या मादरजाद नंगा = बिलकुल नंगा।
२. निर्लज्ज। बेहया। ३. लुच्चा। पाजी। ४ जो किसी तरह ढँका न हो। खुला हुआ; जैसे—नंगे पैर, नंगे सिर, नंगी तलवार आदि।
नंगाझोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० नंगा +झोर] किसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर अथवा योंही अच्छी तरह तरह देखना जिसमें उसकी छिपाई हुई चीज का पता लग जाय। कपड़ों की तलाशी।
नंगाबुच्चा, नंगाबूचा—वि० [हिं० नंगा+बूचा = खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। बहुत दरिद्र।
नंगा लुच्चा—वि० [हिं० नंगा+लुच्चा] नीच और दुष्ट। बदमाश।
नँगियाना—क्रि० स० [हिं० नंगा से ना०

धा०] १. नंगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. सब कुछ छीन लेना।

नँग्यानां(पु)—क्रि० स० दे० "नंगियाना"।

नंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। हर्ष। २. लड़का। बेटा। पुत्र। ३. परमेश्वर। ४ पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ५ विष्णु। ६. चार प्रकार की बाँसुरियों में से एक। ७. पिंगल में ढगण के दूसरे भेद का नाम जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। यशोदा के पति और गोकुल के गोपों के मुखिया। (वसुदेव ने मथुरा के कंस के कारावास में पैदा होते ही भगवान् कृष्ण को पालन पोषण के लिये उन्हीं के यहाँ पहुँचा दिया था।) ९. महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई।

नंदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहे थे।

वि० १. आनंददायक। २ कुलपालक। ३ संतोष देनेवाला।

नंदकिशोर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदकी—संज्ञा स्त्री० [सं० नंदकिन्] विष्णु।

नंदकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदगाँव—संज्ञा पुं० [सं० नंद+ग्राम] वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद गोप रहते थे।

नंदग्राम—संज्ञा पुं० [सं० नंद+ग्राम] १ नंदीग्राम। २. अयोध्या नगरी के समीप का एक गाँव जहाँ राम के वनवासकाल में भरत ने तपस्वियों की तरह जीवन बिताया था। नंदिग्राम।

नंदनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नंद की वह कन्या जिसे श्रीकृष्ण की जगह रखकर कंस को दिखलाने के लिये वसुदेव मथुरा उठा लाए थे। कंस ने देखते ही उसे जमीन पर पटक दिया था। इससे वह ज्योतिर्मय रूप धारण कर कंस से यह कहती हुई कि तेरा काल गोकुल में सुरक्षित है, आकाशमार्ग से विंध्याचल पहुँची जहाँ अब तक विंध्यवासिनी के नाम से पूजी जाती है। योगमाया।

नंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में है। २ लड़का। बेटा; जैसे—नंदनंदन। ३. एक प्रकार का विष। ४. महादेव। शिव। ५ विष्णु। ६ एक प्रकार का अस्त्र। ७ मेघ। बादल। ८ एक वर्णवृत्त।

वि० आनंददायक। प्रसन्न करनेवाला, जैसे—रघुनंदन।

नंदनवन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र की वाटिका।

नंदना(पु)—क्रि० अ० [सं० नंद] आनंदित होना।

संज्ञा स्त्री० [सं० नंद=बेटा] लड़की। बेटी।

नंदनी—संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी"।

नंदरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० नंद+हिं० रानी] नंद की स्त्री, यशोदा।

नंदलाल—संज्ञा पुं० [सं० नंद+हिं० लाल=बेटा] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २. गौरी। ३ एक प्रकार की कामधेनु। ४ एक मातृका या बालग्रह। ५. संपत्ति। संपदा। सुख। समृद्धि, ६. पति की बहन। ननद। ७. बरवै छंद का एक नाम। ८. प्रसन्नता। आनंद। ९ किसी पक्ष की पहली, छठी और ग्यारहवीं तिथि जो शुभ मानी जाती है (वराहमिहिरकृत बृहत्संहिता)।

वि० १ आनंद देनेवाली। २. शुभ।

नंदि—संज्ञा पुं० [सं०] १ आनंद। २ वह जो आनंदमय हो। ३ परमेश्वर। ४ शिव का द्वारपाल बैल। नंदिकेश्वर।

नंदिकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव के द्वारपाल बैल का नाम। २ एक उपपुराण जिसे नंदिपुराण भी कहते हैं।

नंदिघोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुन का रथ। २ बंदीजनों की घोषणा।

नंदित—वि० [सं०] आनंदित। सुखी।

(पु)वि० [हिं० नादना] बजता हुआ।

नंदिन(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० नंद=बेटा] लड़की।

नंदिनि†—वि० [सं०] आनंद देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी।"

नंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आनंददायिनी कन्या। पुत्री। बेटी। उ०—दास तुलसी समय वदति मयनंदिनी, मंदमति कंत! सुनु मत म्हाको।—कविता०। २ रेणुका नामक गंधद्रव्य। ३ उमा। ४ गंगा। ५ पति की बहन। ननद। ६ दुर्गा। ७ तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, दो सगण और अंत्य गुरु रहता है। उ०—सजि सी (सीता) सिंगार कलहंस गती सी। चलि आइ राम छबि मंडप दीसी॥ कलहंस। सिंहनाद। सिंहनी। कुटजा। ८. वसिष्ठ की कामधेनु गाय जो सुरभि की कन्या थी। (राजा दिलीप ने वशिष्ठ की सलाह से इसी की आराधना करके रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था।) ९. पत्नी। स्त्री। जोरू।

वि०—आनंद देनेवाली। प्रसन्न करनेवाली।

नंदिवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २ पुत्र। बेटा। ३ मित्र। दोस्त। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का विमान।

वि० आनंद बढ़ानेवाला।

नंदी—संज्ञा पुं० [सं० नंदिन्] १. शिव का द्वारपाल, बैल। २. शिव के एक प्रकार के गण। ३ शिव के नाम पर दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल (कर्मकांड)। ४ वह बैल जिसके शरीर पर गाँठें हों। ऐसा बैल खेती के काम के लिये अच्छा नहीं होता।

५ नाटक में नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति। ६ धव का पेड़। ७. बरगद का पेड़। ८. विष्णु।

वि० आनंदयुक्त। जो प्रसन्न हो।

नंदीगण—संज्ञा पुं० [हिं० नंदी+गण] १ शिव के द्वारपाल, बैल। २ दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल। साँड़ (कर्मकांड)।

नंदीमुख—संज्ञा पुं० दे० "नांदीमुख"। उ० नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह। हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह। मानस।

नंदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. शिव का एक गण।

नंदेऊ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नंदोई"।

नंदोई—संज्ञा पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।

नंबर—संज्ञा पुं० [अं०] १ गिनती। गणना। संख्या। अदद। २ सामयिक पत्र की कोई संख्या। अंक। ३ कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज।

नंबरदार—संज्ञा पुं० [अं० नंबर+फा० दार] (जमींदारी उन्मूलन के पहले) गाँव से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देनेवाला बड़ा किसान या जमींदार।

नंबरवार—क्रि० वि० [अं० नंबर+फा०

बार] सिलसिलेवार । एक एक करके । क्रमश ।
नंबरी—वि० [अं० नंबर+हिं० ई (प्रत्य०)] १. नंबरवाला । जिसपर नबर लगा हो । २. प्रसिद्ध । मशहूर; जैसे, नंबरी बदमाश ।
नंबरी गज—संज्ञा पुं० दे० "नबर (३)" ।
नंबरी सेर—संज्ञा पुं० [हिं० नंबरी+सेर] तौलने का सेर जो अँगरेजी रुपयों से ८० भर का होता है ।
नंस(पु)—वि० [सं० नाश] नष्ट । बरबाद ।
न—संज्ञा पुं० [स०] १ उपमा । २. रत्न । ३ सोना । ४. बुद्ध । ५ बंध ।
अव्य० १ निषेधवाचक शब्द । नहीं । मत । २ या नहीं, जैसे—तुम वहाँ आओगे न ?
नई(पु)—वि० [सं० नय] नीतिज्ञ ।
वि० स्त्री० [सं० नव] 'नया' का स्त्री० रूप ।
(पु)†संज्ञा स्त्री० दे० "नदी" ।
नउँजी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लीची] लीची नामक फल ।
नउ(पु)†—वि० १ दे० "नव" । २. दे० "नौ" ।
नउआ†—संज्ञा पुं० दे० "नाऊ" ।
नउका(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "नौका" ।
नउज(पु)—अव्य० दे० "नौज" ।
नउत(पु)†—वि० [स० अवनत] नीचे की ओर झुका हुआ ।
नउनिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाउन+इया (प्रत्य०)] नाई की स्त्री । नाइन । उ०—नैन विसाल नउनिया भौं चमकावइ हो । देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो । —रामलला० ।
नउलि(पु)†—वि० [सं० नवल] नया ।
नएर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नगर" । उ०—मारंत राए रण रोल परु मेइनि हाहासद हुअ ।
नओढ़(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "नवोढ़ा" ।
नककटा—वि० [हिं० नाक+कटा] [स्त्री० नककटी] १ जिसकी नाक कटी हो । २ जिसकी बहुत दुर्दशा, अप्रतिष्ठा या बदनामी हुई हो । ३ निर्लज्ज । बेहया ।
नकघिसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+घिसना] १. जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया । २ बहुत अधिक दीनता । आजिजी ।
नकचढ़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+चढ़ा] [स्त्री० नकचढ़ी] चिड़चिड़ा । बदमिजाज ।
नकछिकनी—संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं ।
नकटा—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+कटा] [स्त्री० नकटी] १. वह जिसकी नाक कट गई हो । २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं ।
वि० १. जिसकी नाक कटी हो । २. निर्लज्ज । अपना समान या प्रतिष्ठा खोनेवाला ।
नकटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+कटी] नाक से निकलने वाली मैल जो कफ के समान होती है ।
नकतोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+तोड़= गति] अभिमानपूर्वक नाक-भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात कहना ।
नकद—संज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो । रुपया पैसा ।
वि० १. (रुपया) जो तैयार हो । (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके ।
मुहा०—नव नकद न तेरह उधार= तुरंत मिलनेवाली थोड़ी वस्तु भी भविष्य में होनेवाले अधिक लाभ से बढ़कर है ।
२. खास । ३. बढ़िया । उम्दा । अच्छा ।
क्रि० वि० तुरंत दिए हुए रुपए के बदले में । 'उधार' का उलटा ।
नकदी—संज्ञा स्त्री० दे० "नकद" ।
नकना(पु)†—क्रि० स० [हिं० नाकना] १ उल्लंघन करना । लाँघना । डाँकना । फाँदना । २ चलना । ३ त्यागना ।
क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना । हैरान होना । ऊब जाना ।
क्रि० स० नाक में दम करना ।
नकफूल—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+फूल] नाक में पहनने का लौंग या कील ।
नकब—संज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद । सेंध ।
नकबानी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बानी] नाक में दम । हैरानी ।
नकबेसर—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बेसर] नाक में पहनने की छोटी नथ ।
नकमोती—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+मोती] नाक में पहनने की मोती । लटकन ।
नकल—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह जो किसी दूसरे के ढंग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो । अनुकृति । कापी । २. एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य । अनुकरण । ३ लेख आदि की अक्षरश. प्रतिलिपि । कापी । ४. किसी के वेश, हावभाव या बातचीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण । स्वाँग । ५. अद्भुत और हास्यजनक आकृति । ६. हास्यरस की कोई छोटीमोटी कहानी । चुटकुला ।
नकलनवीस—संज्ञा पुं० [अं० नकल+फा० नवीस] वह आदमी, विशेषत अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नकल करना होता है ।
नकल बही—संज्ञा स्त्री० [हिं० नकल+बही] वह बही जिसपर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है ।
नकली—वि० [अं०] १. जो नकल करके बनाया गया हो । कृत्रिम । बनावटी । २. खोटा । जाली । झूठा ।
नकवानी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "नकबानी" । उ०—जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुख की नहीं निसानी । तिन रंकन को नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ।—विनय० ।
नकश—संज्ञा पुं० [अ० नक्श] १. दे० "नक्श" । २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ ।
नकशा—संज्ञा पुं० दे० "नक्शा" ।
नकसीर—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+ सं० क्षीर=जल] आप से आप नाक से रक्त बहना ।
मुहा०—नकसीर भी न फूटना=जरा भी तकलीफ या नुकसान न होना ।
नकाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना । बहुत परेशान होना ।
क्रि० स० [हिं० नकियाना] नाक में दम करना । बहुत परेशान करना ।
नकाब—संज्ञा पुं० [अ०] १. चेहरा छिपाने या ढकने का कपड़ा (मुसलमान) ।
यौ०—नकाबपोश=नकाब से चेहरा ढके हुए ।
२ साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढँका रहता है । घूँघट ।
नकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य । नहीं । २ इनकार । अस्वीकृति । ३ "न" अक्षर ।
नकारना—क्रि० अ० [सं० नकार से हिं० ना० धा०] इनकार करना । अस्वीकृत करना ।

नकारा—वि० [फा० नाकारः] जो किसी काम का न हो। खराब। निकम्मा।

नकाशना—क्रि० स० [अ० नक्काशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र, फूल, पत्ती आदि बनाना।

नकाशी—संज्ञा स्त्री० दे० "नक्काशी"।

नकियाना—क्रि० अ० [हिं० नाक से ना० धा०] १. शब्दों का अनुनासिकवत उच्चारण करना। नाक से बोलना। २. बहुत दुःखी या हैरान होना।

क्रि० स० बहुत परेशान या तंग करना।

नकीब—संज्ञा पुं० [अ०] १ चारण। बंदीजन। भाट। उ०—घनधावन, बग-पाँति पटोसिर, बैरख-तड़ित सोहाई। बोलत पिक नकीब, गरजनि मिस मानहुँ फिरति दोहाई। श्रीकृष्ण गीता०। २. कड़खा गानेवाला पुरुष। कड़खैत।

नकुल—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेवला नामक जंतु। २. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो अश्विनीकुमार द्वारा माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३ बेटा। पुत्र।

नकेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+एल (प्रत्य०)] ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है। मुहरा।

मुहा०—किसी की नकेल हाथ में होना = किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।

नक्का—संज्ञा पुं० [हिं० नाक] सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।

नक्कारखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना।

मुहा०—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है = बड़े बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।

नक्कारची—संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा बजानेवाला।

नक्कारा—संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका। नौबत। दुदुभी।

नक्काल—संज्ञा पुं० [अ०] १. अनुकरण करनेवाला। नकल करनेवाला। २ भाँड़।

नक्काश—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो नक्काशी करता हो।

नक्काशी—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशीदार] १. धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. वे बेलबूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।

नक्की—वि० [देश०] १. पक्का। दृढ़। २. ठीक।

नक्कीमूठ—संज्ञा पुं० [हिं० नक्की+मूठ] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल।

नक्कू—वि० [हिं० नाक] १ जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। ३. सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला। ४. उपहासास्पद। मजाक का पात्र।

नक्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिलकुल सध्या का समय। २ रात। ३. एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४. शिव।

नक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक नामक जलजंतु। २. मगर। ३. घड़ियाल। कुंभीर। ४ नाक। नासिका।

नक्रिम—संज्ञा पुं० [सं० नक्र+हिं० इम (प्रत्य०)] नाक। उ०—सुभ्र बुलाक मुक्त-द्युति कै छबि तिहुँ पुर की। 'दास' सुवसपत्र यह कैसो नक्रिम सुर की। —छंदार्णव।

नक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "नकल"।

नक्श—वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।

मुहा०—मन में नक्श करना या कराना = किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना।

संज्ञा पुं० [अ०] १. तसवीर। चित्र। २ खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३ मोहर। छाप।

मुहा०—नक्श बैठना = अधिकार जमना।

४ वह यंत्र जो रोगों आदि को दूर करने के लिये कागज आदि पर लिखकर बाँह या गले में पहनाया जाता है। तावीज। ५ जादू। टोना। ६ दे० "नक्शा (२)"।

नक्शा—संज्ञा पुं० [अ०] १ रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश। चित्र। प्रति-मूर्ति। तसवीर। २ आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३ किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४. धरातल या कागज आदि पर किसी निश्चित अनुपात से बनाया गया पृथ्वी या खगोल के किसी भाग का प्राकृतिक, राजनीतिक अथवा अन्य विशेषता का चित्र। ५. किसी नगर की बनावट या मकान, सड़क आदि का किसी निश्चित अनुपात से बनाया गया रेखाचित्र। ६. चालढाल। तर्ज। ढंग। ७ अवस्था। दशा। ८. ढाँचा। ठप्पा।

नक्शानवीस—संज्ञा पुं० [अ० नक्शा+फा० नवीस] नक्शा लिखने या बनानेवाला।

नक्शाबंद—संज्ञा पुं० [अ०+फा०] वह जो साड़ियों आदि के बेलबूटों के नक्शे या तर्जें तैयार करता है।

नक्शी—वि० [अ० नक्श+ई (प्रत्य०)] जिसपर बेलबूटे बने हों। नक्काशीदार।

नक्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. चद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का वह समूह जिसका पहचान के लिये आकार निर्दिष्ट करके नाम रखा गया हो। ये सब २७ नक्षत्रों में विभक्त हैं। २ तारा। सितारा।

नक्षत्रनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

नक्षत्रपथ—संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रराज—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

नक्षत्रलोक—स्त्री० पुं० [सं०] पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तारा टूटना। उल्कापात होना।

नक्षत्री—संज्ञा पुं० [सं० नक्षत्रिन्] चंद्रमा।

वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्।

नख—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ या पैर का नाखून। २ नाखून के आकार का एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य जो घोंघे की जाति के एक जीव के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। ३ खंड। टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० [फा० नख] गुड्डी उड़ाने के लिये पतला रेशमी या सूती तागा। डोर।

नखक्षत—संज्ञा पुं० [सं०] वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण स्तन आदि पर बना हो (कामशास्त्र)।

नखच्छत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।

नखछद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"। उ०—उर नखछद रदछदनि में रदछद, देखि देखि प्यारे कौं झुकति झझकारती। —रससाराश।

नखछोलिया(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नख-क्षत"।

नखजल—संज्ञा पुं० [सं० नख+जल]

नखों से निकला जल। गंगा जो विष्णु के पैर के अँगूठे के नख से निकली है।

नखत, नखतर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नखतराज, नखतेस—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रमा"।

नखना—क्रि० अ० [हिं० नाखना] उल्लंघन होना। डाँका जाना।

क्रि० स० उल्लंघन करना। पार करना।

क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना।

नखबान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नख] नाखून।

नखरा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिये हो। चोचला। नाज। २ चंचलता। चुलबुलापन।

नखराविल्ला—संज्ञा पुं० [फ़ा० नखरा + हिं० तिल्ला (?)] नखरा। चोचला।

नखरीला†—वि० [फ़ा० नखरा + ईला (प्रत्य०)] नखरा करनेवाला।

नखरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नखक्षत। नाखून का दाग। २ बादलों की माता मानी जानेवाली कश्यप ऋषि की एक पत्नी। उ०—दारा ते तृणवृक्ष जौन लागत पर काजै। नखरेखा सुत मेघ कोटि छप्पन उपराजै।—विश्रामसागर।

नखरेबाज—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नखरेबाजी] जो बहुत नखरा करे। नखरा करनेवाला।

नखरौट—संज्ञा स्त्री० दे० 'नखक्षत'।

नखविंदु—संज्ञा पुं० [सं०] वह गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून के ऊपर मेहँदी या महावर से बनाती हैं।

नखशिख—संज्ञा पुं० [सं०] १ नख से लेकर शिखा तक के सब अंग। शरीर के नीचे से ऊपर तक के सब अंग। सर्वांग। उ०—हसत देखि नखसिख रिस व्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी।—मानस।

मुहा०—नखशिख से = सिर से पैर तक।

२ शरीर के सब अंगों का वर्णन।

नखसिख—संज्ञा पुं० [सं० नखशिख] दे० "नखशिख"।

नखांक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नख नामक गंधद्रव्य। २. नाखून गड़ने का चिह्न।

नखायुध—संज्ञा पुं० [सं०] १. शेर, चीता आदि नखों से फाड़नेवाले जानवर। २ सिंह।

नखास—संज्ञा पुं० [अ० नख्खास] वह बाजार जिसमें पशु, विशेषत. घोड़े, बिकते हैं।

नखियाना(पु)†—क्रि० स० [सं० नख] नाखून गड़ाना।

नखी—संज्ञा पुं० [सं० नखिन्] १. शेर। २ चीता। ३. वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।

नखेद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निषेध"।

नखोटना(पु)†—क्रि० स० [सं० नख + हिं० खोंटना] नाखून से खरोंचना या नोचना।

नग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २ पेड़। वृक्ष। ३ सात की संख्या। ४ सर्प। साँप। ५. सूर्य।

संज्ञा पुं० [फ़ा० नगीना, सं० नग] १ नगीना। २. रत्न। मणि। उ०—सोमासिंधु-संभव से नीके नीके नग हैं। मातपितु-भाग-वस गए परि फँग हैं।—गीता०। ३ अदद। संख्या।

नगज—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

वि० जो पहाड़ से उत्पन्न हो।

नगजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

नगण—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में तीन लघु अक्षरों का एक वर्णिक गण।

नगण्य—वि० [सं०] [संज्ञा नगण्यता] बहुत ही साधारण या गया बीता। तुच्छ।

नगदंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री।

नगद—संज्ञा पुं० दे० "नकद"।

नगधर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र जिन्होंने गोवर्धन पहाड़ उठाया था। उ०—हीअ घर देव पर बंदे जस रटै नाउँ खगासन, नगधर सीतानाथ कौलपानि।—छंदार्णव।

नगधरन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नगधर"।

नगनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

नगन(पु)†—वि० [सं० नग्न] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। उ०—जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल वेष। अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख।—मानस।

नगनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० नगानिका ?] क्रीडावृत्ति, जिसमें एक यगण और एक गुरु होता है। उ०—उगै चारो। हरी तारो॥ करौ क्रीडा। रखौ व्रीडा॥

नगनी—संज्ञा स्त्री० [सं० नग्ना] १ कन्या। पुत्री। बेटी। उ०—ऋषि तनया कह्यो मोहि विवाहि। कच कह्यो तू गुरु नगनी आहि।—सूर०। २. नंगी स्त्री।

नगपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २ चंद्रमा। ३. शिव। ४. सुमेरु।

नगफँग—वि० [?] बदमाश। नंगा। उ०—हौ भले नगफँग परे गढ़ीवै, अब ए गढ़ति महरि-मुख जोए।—श्रीकृष्णगीता०।

नगफनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० नागफनी] कान में पहना जानेवाला एक गहना। नागफनी। उ०—विकट भृकुटि सुखमानिधि आनन कल कपोल काननि नगफनियाँ। भाल तिलक मसिबिंदु बिराजत, सोहति सीस लाल चौतनियाँ।—गीता०।

नगवलित—वि० [सं० नग + वलित] रत्नजटित। उ०—वक्रतुंड कुंडलित सुंड नगवलित पाडुरद। अलिघुमंड-मंडलित दानमंडित सुगंध मद।—रससाराश।

नगर—संज्ञा पुं० [सं०] गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मनुष्यों की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशों के लोग रहते हों। शहर। उ०—जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं।—मानस।

नगरकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह गाना, बजाना या कीर्तन जो नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर हो। २ ईश्वर का सामूहिक यशगान, जप और भजन।

नगरनारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

नगरपाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका काम नगर में शांति और सुव्यवस्था रखना तथा उसकी रक्षा करना हो।

नगरपालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० नगर + पालिका] १ स्वायत्त शासन करनेवाला नगर। २ ऐसा शासन करनेवाली स्थानीय संस्था।

नगरवासी—संज्ञा पुं० [सं०] शहर में रहनेवाला। पुरवासी।

नगरहार—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक नगर जो वर्तमान जलालाबाद के निकट बसा था।

नगराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० नगर + हिं० आई० (प्रत्य०)] १ पौरत्व। शहरातीपन। २ चतुराई। चालाकी।

नगराध्यक्ष—संज्ञा पुं० दे० "नगरपाल"।

नगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नगर। शहर।

संज्ञा पुं० [सं० नगरिन्] शहर में रहनेवाला।

नगस्वरूपिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक जगण, एक रगण, एक लघु और अंत्य गुरु अथवा क्रम से चार बार लघु गुरु वर्ण (कुल ८ वर्ण) होते हैं। उ०—(१) जरा लगाय चित्त हीं। भजौ जु नंद नंद हीं॥ (२) नमामि भक्तवत्सलम्। कृपालु शील कोमलम्॥ भजामि ते पदांबुजम् अकामिनां स्वधामदम्॥ प्रमाणी। प्रमाणिका।

नगाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।

नगाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।

नगारा—संज्ञा पुं० [फा०] डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।

नगारि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

नगी—संज्ञा स्त्री० [सं० नग=पर्वत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. रत्न। मणि। नगीना। नग। २ पार्वती। ३ पहाड़ी स्त्री।

नगीच†—क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

नगीना—संज्ञा स्त्री० [फा०] रत्न। मणि।

नगीनासाज—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नगेंद्र, नगेश—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वतराज हिमालय।

नगेसरिⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

नग्न—वि० [सं०] १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। २ जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।

नग्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगा होने का भाव।

नग्मा—संज्ञा पुं० दे० "नगमा"।

नग्रⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "नगर"।

नघना—क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना।

नघाना—क्रि० स० [सं० लंघन] लँघाना।

नचनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० नाचना] नाचना।

वि० १. नाचनेवाला। २. बराबर इधर उधर घूमनेवाला।

नचनिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाचना] नाच। नृत्य।

नचनिया†—संज्ञा पुं० [हिं० नाचना+इया (प्रत्य०)] नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला।

नचनी—वि० स्त्री० [हिं० नाचना] १ नाचनेवाली। २ इधर उधर घूमती रहनेवाली।

नचवैया—संज्ञा पुं० [हिं० नाच+वैया (प्रत्य०)] नाचने या नचानेवाली।

नचाना—क्रि० स० [हिं० नाचना का प्रे०] १ दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना। नृत्य कराना। २ किसी को बार बार उठने बैठने या और कोई काम करने के लिये तंग करना। हैरान करना। ३ व्यर्थ इधर उधर दौड़ाना।

मुहा०—नाच नचाना=घूमने फिरने या और कोई काम करने के लिये विवश करके तंग करना। हैरान करना।

४ इधर उधर घुमाना या हिलाना।

मुहा०—आँखें (या नैन) नचाना=चंचलतापूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर उधर घुमाना।

नचिकेता—संज्ञा पुं० [सं० नचिकेतस्] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २ अग्नि।

नचीला—वि० [हिं० नाच+ईला (प्रत्य०)] १ जो नाचता या इधर उधर घूमता रहे। २ चंचल।

नचौहाँⓅ†—वि० [हिं० नाच+औहाँ (प्रत्य०)] जो सदा नाचता या इधर उधर घूमता रहे। चंचल। अस्थिर।

नच्यंतⓅ—वि० [सं० निश्चिन्त] दे० "निश्चिंत"। उ०—काल सिहाणै यौं खड़ा, जागि पियारे म्यंत। राम सनेही बाहिरा, तूँ क्यूँ सोवै नच्यंत॥—कबीर०।

नछत्र—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नछत्रीⓅ†—वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्। भाग्यशाली।

नजदीक—वि० [फा०] [संज्ञा, वि० नजदीकी] निकट। पास। करीब। समीप।

नजम—संज्ञा स्त्री० [अ० नज्म] पद्य। गद्य या नस्र का उलटा।

नजर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दृष्टि। निगाह।

मुहा०—नजर आना=दिखाई देना। दिखाई पड़ना। नजर पर चढ़ना=पसंद आ जाना। भला मालूम होना। नजर पड़ना=दिखाई देना। नजर फिरना=(१) क्रुद्ध होना। (२) सहानुभूति न रखना। नजर बाँधना=जादू या मंत्र आदि के जोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिखाना। नजर में तौलना=देखकर किसी के गुण दोष आदि की परीक्षा करना।

२ कृपादृष्टि। मेहरबानी से देखना। ३ निगरानी। देखरेख। ४. ध्यान। खयाल। ५ परख। पहचान। ६ दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुंदर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है।

मुहा०—नजर उतारना=बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नजर लगना=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेंट। उपहार। २ किसी बड़े व्यक्ति को दी जानेवाली भेंट। ३ मिलने के समय हाथ या रुमाल पर नकदी रखकर किसी राजा या अधिकारी के सामने उपस्थित करना। ४. घूस देना।

नजरनाⓅ—क्रि० अ० [अ० नजर से हिं० ना० धा०] १ देखना। २. नजर लगाना।

नजरबंद—वि० [अ० नजर+फा० बंद] जो किसी बंद स्थान में कड़ी निगरानी में रखा जाय और निश्चित स्थान और सीमा से बाहर आ जा न सके।

संज्ञा पुं० जादू या इंद्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय में साधारण विश्वास है कि वह लोगों की नजर बाँधकर किया जाता है।

नजरबंदी—संज्ञा स्त्री० [अ० नजर+फा० बंदी] १ राज्य की ओर से वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति निगरानी में रखा जाता है और नियत स्थान या सीमा से बाहर नहीं जा सकता। २ नजरबंद होने की दशा। ३ जादूगरी। बाजीगरी।

नजरबाग—संज्ञा पुं० [अ०] महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने (या चारों ओर) का बाग।

नजरहाया—वि० [अ० नजर+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० नजरहाई] नजर लगानेवाला।

नजरानाⓅ—क्रि० स० [हिं० नजर से] १ उपहारस्वरूप देना। २ नजर लगाना।

नजराना—क्रि० अ० [हिं० नजर] नजर लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना।

क्रि० स० १ नजर लगाना। २ उपहार देना।

संज्ञा पुं० [अ०] राजा या अधिकारी के सामने रखा जानेवाला उपहार। धन आदि की भेंट।

नजरिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "नजर"।

नजला—संज्ञा पुं० [अ०] १ एक रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकारयुक्त पानी ढलकर भिन्न भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। २. जुकाम। सरदी।

नजाकत—संज्ञा स्त्री० [फा०] नाजुक होने का भाव। सुकुमारता। कोमलता।

नजात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुक्ति। मोक्ष। २ छुटकारा। रिहाई।

नजारा—संज्ञा पुं० [अ०] १. दृश्य। २. दृष्टि। नजर। ३ प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नजिकानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० नजीक से ना० धा०] निकट पहुँचना। नजदीक पहुँचना। पास पहुँचना। [illegible]—मरण अवस्था जब नजिकाई। ईश स[illegible] के मन् यह आई।—सूर०।

नजीक†—क्रि० वि० [फा० नजदीक] निकट।

नजीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] उदाहरण। दृष्टांत।

नजूम—संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिष विद्या।

नजूमी—संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिषी।

नजूल—संज्ञा पुं० [अ०] शहर की वह जमीन जो सरकार के अधिकार में हो।

नट—संज्ञा पुं० [सं०] १. दृश्यकाव्य का अभिनय करनेवाला मनुष्य। वह जो नाट्य करता हो। २. नाचनेवाला। ३. एक संकर जाति। ४. एक जाति जो प्राय गा बजाकर और खेलतमाशे करके जीवननिर्वाह करती है। ५ संपूर्ण जाति का एक राग।

नटई†—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गला। गरदन। २ गले की घंटी। घाँटी।

नटखट—वि० [हिं० नट+अनु० खट] १ ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। शरीर। २ चालाक। धूर्त। मक्कार।

नटखटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नटखट] बदमाशी। शरारत। पाजीपन।

नटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नट का भाव।

नटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नृत्य। नाचना। २. नाट्य करना।

नटना—क्रि० अ० [सं० नट] १ नाट्य करना। २ नाचना। नृत्य करना। ३ कहकर बदल जाना। इनकार करना। मुकरना। उ०—भौंहनु त्रासति, मुँह नटति, आँखिनु सौं लपटाति।—विहारी।

क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना।

क्रि० अ० नष्ट होना।

नटनागर—संज्ञा पुं० [हिं० नट+नागर] नृत्यकला में प्रवीण व्यक्ति। नटराज। उ०—नटनागर हो जू सही सबही अँगुरी के इसारे नचावत हौ। पै दई हमहूँ विधि थोरी घनी बुधिईकाहैं को बातें बनावत हौ।—शृंगार०।

नटनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग।

नटनिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० नटन] नृत्य। उ०—झुकनि झाँकनि, छाँह सो किलकनि, नटनि, हठि लरनि। तोतरी बोलनि, विलोकनि मोहनी मन हरनि।—गीता०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० नटना] इनकार।

नटनी—संज्ञा स्त्री० [सं० नट+नी (प्रत्य०)] १. नट की स्त्री। २ नट जाति की स्त्री।

नटराज—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

नटवनाⓅ—क्रि० स० [सं० नट से हिं० ना० धा०] नाट्य करना। अभिनय करना। उ०—एक ग्वालि नटवति बहु लीला एक कर्म गुन गावति।—सूर०।

नटवर—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाट्यकला में प्रवीण मनुष्य। २ श्रीकृष्ण।

वि० बहुत चतुर। चालाक।

नटसारⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "नाट्यशाला"।

नटसारीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० नट] नट का काम।

नटसाल—संज्ञा स्त्री० [?] १ काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। उ०—सालति है नटसाल सी क्यौंहू निकसति नाँहि। मनमथ नेजा नोक सी खुभी खुभी जिय माँहि॥—विहारी०। २ वाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाय। ३ कसक। पीड़ा।

नटिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० नट] नट की स्त्री।

नटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नट जाति की स्त्री। २ नाचनेवाली स्त्री। नर्तकी। ३. अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

नटुआ, नटुवा†—संज्ञा पुं० १ दे० "नट"। २ दे० "नटई"।

नटेश, नटेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

ननटैा†—संज्ञा स्त्री० दे० "नटई।" उ०—जबै जमराज रजायसु तें मोहि लै चलिहै भट बाँधि नटैया। तात न मात न स्वामि सखा सत बधु विसाल बिपत्ति बँटैया।—कविता०।

नठनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।

क्रि० स० नष्ट करना।

नढ़ना†—क्रि० स० [हिं० नाधना] १ गूँथना। पिरोना। २. बाँधना। कसना।

नत—वि० [सं०] १. झुका हुआ। २ मध्याह्न के बाद अस्ताचल की ओर झुकनेवाले रवि की छाया से निकाला हुआ (समय)।

नतपाल—संज्ञा पुं० [सं० नत+पाल] शरणागत का पालन करनेवाला। प्रणतपाल। उ०—टूकनि को घरघर डोलत कंगाल बोलि, बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।—हनु०।

नतरुⓅ†—क्रि० वि० दे० "नतरु"।

नतरुⓅ—क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो। अन्यथा।

नतरुक—क्रि० वि० दे० "नतरु"। उ०—कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन बखानु। नतरुक कत इन बिय लगत उपजतु बिरह-कृसानु।—विहारी०।

नतांश—संज्ञा पुं० [सं०] १ मध्याह्नकालीन सूर्य की छाया के आधार पर निकाला हुआ समयचक्र। २. ग्रहों की स्थिति निश्चित करनेवाला वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत रेखा पर लंब होता है।

नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। उतार। २ नमस्कार। प्रणाम। उ०—पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि। चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि।—मानस। ३ विनय। विनती। ४. नम्रता। खाकसारी।

नतिनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाती का स्त्री० रूप] लड़की की लड़की। नातिन।

नतीजा—संज्ञा पुं० [फा०] परिणाम। फल।

नतु—क्रि० वि० [सं० न+तु] नहीं तो।

नतुवा—अव्य० [सं० न+तु+वा] नहीं तो क्या?

नतैत†—संज्ञा पुं० [हिं० नाता+ऐत (प्रत्य०)] संबंधी। रिश्तेदार। नातेदार।

नतैती—संज्ञा स्त्री० [हिं० नतैत] रिश्तेदारी। संबंध।

नत्थ†—संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नत्थी—संज्ञा स्त्री० [सं० नाथ=बैल के नथनों में पिरोई रस्सी] १ कागज या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एकसाथ मिलाकर

सबको एक ही में बाँधना या फँसाना। २. इस प्रकार नाथे हुए कई कागज आदि। मिसिल। (अं० फाइल)।
नथ—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] बाली की तरह का नाक का एक गहना।
नथना—संज्ञा पुं० [सं० नस्ता] १. नाक का अगला भाग।
मुहा०—नथना फुलाना=क्रोध करना।
२. नाक का छेद।
क्रि० अ० [हिं० नाथना का अ० रूप] १ किसी के साथ नत्थी होना। एक सूत्र में बंधना। २ छिदना। छेदा जाना।
नथनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नथ] १ नाक में पहनने की छोटी नथ। २ बुलाक।
नथिया, नथुनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।
नद—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुल्लिंगवाची हो; जैसे, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सोन आदि।
नदनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० नदना=शब्द करना] १ पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बँधाना। २. बजना। शब्द करना।
नदराज—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
नदानⓅ†—वि० दे० "नादान"।
नदारद—वि० [फा०] १ जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त। २ निःशेष। समाप्त। खतम।
नदियाⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।
नदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जल का वह प्राकृतिक प्रवाह जो किसी पर्वत, स्रोत या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से बहता हुआ प्राय. बारहो महीने चलता रहता हो। दरिया।
मुहा०—नदी नाव संयोग=ऐसी भेंट-मुलाकात जो कभी इत्तिफाक से हो जाय।
२ किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।
नदीगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वह गड्ढा या तल जिसमें से होकर नदी का पानी बहता है।
नदीश—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
नद्दनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "नदना"।
नद्दीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।
नद्ध—वि० [सं०] बँधा हुआ। बद्ध।
नधना—क्रि० अ० [सं० नद्ध] १ बैल, घोड़े आदि का उस वस्तु के साथ जुड़ना या बँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो। जुतना। २ जुड़ना। सबद्ध होना। ३ काम का ठनना।
ननँद—संज्ञा स्त्री० दे० "ननद"।
ननकारनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० न+करना] अस्वीकार करना। मजूर न करना।
ननद—संज्ञा स्त्री० [सं० ननन्दृ] पति की बहिन।
ननदोई—संज्ञा पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।
ननसार—संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।
ननिऔरा†—संज्ञा पुं० दे० "ननिहाल"।
ननिया ससुर—संज्ञा पुं० [हिं० नानी+इया (प्रत्य०)+हिं० ससुर] [स्त्री० ननिया सास] स्त्री या पति का नाना।
ननिहाल—संज्ञा पुं० [हिं० नाना+आलय] नाना का घर। ननसार।
नन्हा—वि० [सं०√न्यंच्] [स्त्री० नन्ही] छोटा।
नन्हाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १ छोटापन। छोटाई। २ अप्रतिष्ठा। हेठी।
नन्हैयाⓅ†—वि० दे० "नन्हा"।
नपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप+आई (प्रत्य०)] नापने का काम, भाव या मजदूरी।
नपाकⓅ†—वि० [फा० नापाक] अपवित्र।
नपुंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पुरुष जिसमें कामेच्छा और कामोत्तेजना न हो। नामर्द। २. क्लीव। ३ हिजड़ा।
नपुंसकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नपुंसक होने का भाव। २ नामर्दी। हिजड़ापन।
नपुंसकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नामर्दी। क्लीवत्व।
नपुआ†—संज्ञा पुं० [हिं० नाप+उआ (प्रत्य०)] वह बरतन जिससे कोई चीज नापी जाय।
नपुत्रीⓅ†—वि० दे० "निपुत्री"।
नप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नप्त्री] नाती या पोता।
नफर—संज्ञा पुं० [फा०] १ दास। सेवक। २ व्यक्ति, जैसे—दस नफर मजदूर।
नफरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] घिन। घृणा।
नफरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम। २. मजदूरी का दिन।
नफा—संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। फायदा।
नफासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] नफीस होने का भाव। उम्दापन।
नफीरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तुरही।
नफीस—वि० [अ०] १. उमदा। बढ़िया। २ साफ। स्वच्छ। ३. सुंदर।
नबी—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर। रसूल।
नबेड़ना—क्रि० स० [सं० निवृत्त] १. निपटाना। तै करना (झगड़ा आदि)। समाप्त करना। २. चुनना। दे० "निबेरना"।
नबेड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नबेड़ना] फैसला। न्याय। निपटारा।
नब्ज—संज्ञा स्त्री० [अ०] हाथ की वह रक्तवहा नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है। नाड़ी।
मुहा०—नब्ज चलना=नाड़ी में गति होना। नब्ज छूटना=नाड़ी की गति या प्राण न रह जाना।
नब्बे—वि० [सं० नवति] जो गिनती में ८० और १० हो।
संज्ञा पुं० ८० और १० के जोड़ की सख्या। ९०।
नभ—संज्ञा पुं० [सं० नभस्] १ पंच तत्व में से एक। आकाश। आसमान। गगन। व्योम। २ खाली जगह। ३ शून्य। सुन्ना। सिफर। ४. सावन या भादों का महीना। ५ आश्रय। आधार। ६ पास। निकट। नजदीक। ७ शिव। ८ जल। ९ मेघ। बादल। १० वर्षा।
नभगामी—संज्ञा पुं० [सं० नभोगामिन्] १ चद्रमा (डिं०)। २ पक्षी। ३ देवता। ४ सूर्य। ५ तारा।
नभचर—संज्ञा पुं० दे० "नभश्चर"।
नभधुजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० नभध्वज] मेघ।
नभश्चर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। २. बादल। ३ हवा। ४. देवता. गंधर्व और ग्रह आदि।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।
नभस्थित—वि० [सं०] आकाश में स्थित।
नभोमणि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
नभोवाणी—संज्ञा स्त्री० दे० "रेडियो"।

नम—वि० [फा०] [संज्ञा नमी] भीगा हुआ। गीला। तर। आर्द्र।

संज्ञा पुं० [सं० नमस्] १. नमस्कार। २. त्याग। ३ अन्न। ४ वज्र। ५ यज्ञ।

नमक—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिसका व्यवहार भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न करने के लिये थोड़े मान में होता है। लवण। नोन।

मुहा०—नमक अदा करना=अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। (किसी का) नमक खाना=(किसी के द्वारा) पालित होना। (किसी का) दिया खाना। नमक मिर्च मिलाना या लगाना=किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। नमक फूटकर निकलना=नमकहरामी की सजा मिलना। कृतघ्नता का दंड मिलना। कटे पर नमक छिड़कना=किसी दुःखी को और भी दुःख देना।

२ लावण्य। सलोनापन। आकर्षण।

नमकख्वार—वि० [फा०] नमक खानेवाला। पालित होनेवाला।

नमकसार—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।

नमकहराम—संज्ञा पुं० [फा० नमक+अ० हराम] [संज्ञा नमकहरामी] वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे। कृतघ्न।

नमकहलाल—संज्ञा पुं० [फा० नमक+अ० हलाल] [संज्ञा नमकहलाली] वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य धर्मपूर्वक करे। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।

नमकीन—वि० फा०] १ जिसमें नमक का सा स्वाद हो। २ जिसमें नमक पड़ा हो। ३. सुंदर। खूबसूरत। मनोहर।

संज्ञा पु० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।

नमदा—संज्ञा पु० [फा०] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।

नमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नमनीय, नमित] १. प्रणाम। नमस्कार। २ झुकाव।

नमना(पु)†—क्रि० अ० [सं० नमन] १ झुकना। २ प्रणाम करना। नमस्कार करना।

नमनीय—वि० [सं०] १. जिसे नमस्कार किया जाय। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। नमस्करणीय। २. जो झुक सके। ३. जो झुकाया जा सके।

नमस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] झुककर अभिवादन करना। प्रणाम।

नमस्कारना(पु)—क्रि० स० [सं० नमस्कार से हिं० ना० धा०] नमस्कार करना।

नमस्ते—[सं० नम+ते=आपको] संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ है 'आपको नमस्कार है।'

नमाज—संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वरप्रार्थना।

नमाजगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] मस्जिद में वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाती है।

नमाजी—संज्ञा पुं० [फा०] १ नमाज पढ़नेवाला। २ वह वस्त्र जिसपर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है।

नमाना(पु)†—क्रि० स० [सं० नमन] १ झुकाना। २ दबाकर अपने अधीन करना।

नमित—वि० [सं०] झुका हुआ। उ०—बैठि नमित मुख सोचति सीता। रूप रासि पति पेमु पुनीता।—मानस।

नमिस—संज्ञा स्त्री० [फा० नमिश्क] विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।

नमी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गीलापन। आर्द्रता।

नमुचि—संज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २ विप्रचित्ति का पुत्र एक दानव जिसे इंद्र ने मारा था। ३ कश्यप ऋषि और दनु का पुत्र एक दैत्य जो शुंभ और निशुंभ से का तीसरा भाई था (वामन पुराण)।

नमूना—संज्ञा पु० [फा०] १ अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ वह थोड़ा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ का गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिये होता है। बानगी। ढाँचा। ठाठ। खाका।

नम्र—वि० [सं०] १. विनीत। जिसमें नम्रता हो। २ झुका हुआ।

नम्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नम्र होने का भाव। विनय।

नय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीति। उ०—सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी।—मानस। २. नम्रता।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० नद] नदी।

नयकारी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नृत्यकारी] १ नाचनेवालों का मुखिया। २ नाचनेवाला। नचनिया।

नयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्षु। नेत्र। आँख। २ ले जाना।

नयनगोचर—वि० [सं०] जो आँखों के सामने हो। समक्ष। आँखों से दिखाई देनेवाला।

नयनपट—संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पलक।

नयनवंत—वि० [सं० नयन+हिं० वंत] आँखवाला। देखने की शक्ति रखनेवाला। उ०—नयनवंत रघुबरहिं बिलोकी। पाइ जनम फल होहिं बिसोकी।—मानस।

नयना(पु)†—क्रि० अ० [सं० नमन] १. नम्र होना। २ झुकना। लटकना।

(पु)क्रि० स० घटाना। नीचा करना।

†संज्ञा पुं० [सं० नयन] आँख। नेत्र। उ०—मेरे नयना विरह की बेलि बई।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [सं०] (प्राय समास में) आँखवाली; जैसे—कमलनयना।

नयनागर—वि० [सं०] नीतिज्ञ।

नयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।

वि० स्त्री० (प्राय समास में) आँखवाली, जैसे—मृगनयनी।

नयनू—संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] १ मक्खन। २ एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

नयपाल—वि० [सं० नय+पाल] नीति का पालन करनेवाला। नीति का रक्षक। उ०—खग मृग मीत पुनीत किय, बनहुँ राम नयपाल। कुमति। बालि दसकंठ घर सुहृद बंधु कियो काल।—दोहा०।

नयर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नगर] नगर।

नयशील—वि० [सं०] १. नीतिज्ञ। २ विनीत।

नया—वि० [सं० नव] १ जो थोड़े समय से बना, चला, निकला या आविष्कृत हुआ हो। जो पुराना न हो। जो वर्तमान काल में या उसके बहुत निकट बना या उत्पन्न हुआ हो। नवीन। हाल का। नूतन।

मुहा०—नया करना=कोई नया फल या अनाज, मौसिम में पहले पहल खाना। नया पुराना करना=(१) पुराना हिसाब साफ करके नया हिसाब चलाना (महाजनी) (२)। पुराने को हटाकर उसके स्थान पर नया करना या रखना।

२ जो थोड़े समय से मालूम हुआ हो या सामने आया हो। ३ जो पहले था, उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। ४

जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। ५. जिसका आरंभ बहुत हाल में हुआ हो। ६. नौसिखुआ। अनुभवरहित।

यौ०—नया नवेला = नवयुवक। नौजवान।

नयापन—संज्ञा पुं० [हिं० नया+पन (प्रत्य०)] नया होने का भाव। नवीनता। नूतनत्व।

नर—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० नरता] १. पुरुष। मर्द। आदमी। २ एक देवयोनि। ३ दे० "नरनारायण"। ४ श्रेष्ठ या बड़ा। ५. दोहे का एक भेद जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ६. छप्पय का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३ लघु होते हैं। ७ विष्णु। ८ शिव। ९. अर्जुन। १० वह खूँटी जो छाया जानने के लिये खड़े बल गाड़ी जाती है। शंकु। ११ सेवक।

वि० जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो। मादा का उलटा।

संज्ञा पुं० [हिं० नल] पानी का नल।

नरई—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गेहूँ की बाल का डंठल। २ एक तरह की घास।

नरकंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नरकान्त] राजा।

नरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिये भेजी जाती है। जहन्नुम। २ बहुत ही गंदा स्थान। ३ वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा हो। ४ दे० "नरकासुर।"

नरकगामी—वि० [सं०] नरक में जानेवाला।

नरक चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता है।

नरकचूर—संज्ञा पुं० दे० "कचूर"।

नरकट—संज्ञा पुं० [सं० नल] बेंत की तरह का पोले डंठल का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डंठल कलम, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।

नरकासुर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु के वराहावतार और पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक प्रतापी असुर जिसने त्रेता युग में इंद्र को जीतकर अतुल ऐश्वर्य भोगा था। यह प्राग्ज्योतिष का राजा था। भगदत्त, महाशीर्ष, मदवान् और सुमाली चारों इसी के बेटे थे। श्रीकृष्ण ने प्राग्ज्योतिष पर चढ़ाई करके इससे घोर युद्ध किया और अंत में सुदर्शन चक्र से विष्णु ने इसका सिर धड़ से अलग कर दिया (कालिकापुराण)।

नरकी—वि० दे० "नारकी"।

नरकेसरी—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का हिरण्यकश्यप को मारनेवाला नर और सिंह का मिलाजुला रूप। नृसिंह।

नरकेहरी—संज्ञा पुं० दे० "नरकेसरी"।

नरगिस—संज्ञा स्त्री० [फा०] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफेद रंग का फूल लगता है, जिसमें गोल काला धब्बा होता है। इसके फूल का इत्र बहुत अच्छा बनता है। फारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।

नरजा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० नरजी] छोटी तराजू।

नरजी†—संज्ञा पुं० [?] तौलनेवाला।

स्त्री० छोटी तराजू।

नरतक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नर्तक"।

नरतात—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

नरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नर होने का भाव। नरता।

नरद—संज्ञा स्त्री० [फा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी।

संज्ञा स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि। नाद।

नरदन—संज्ञा स्त्री० [सं० नर्दन=नाद] नाद करना। गरजना।

नरदमा, नरदा—संज्ञा पुं० [फा० नाबदान] मैले पानी का नल।

नरदारा—संज्ञा पुं० [सं० नर+सं० दारा] १. हिजड़ा। नपुसक। २ डरपोक। कायर।

नरदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। नृपति। २ ब्राह्मण।

नरनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

नरनायक—संज्ञा पुं० [सं० नर+नायक] राजा। नृप। उ०—जनक नाम तेहि नगर बसै नरनायक। सब गुन अवधि, न दूसर पटतर लायक।—जा० मं०।

नरनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। २. अर्जुन और कृष्ण।

नरनारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नर (अर्जुन) की स्त्री। द्रौपदी। पांचाली।

नरनाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नरनाथ] राजा।

नरनाहर—संज्ञा पुं० [सं० नर+हिं० नाहर] नृसिंह भगवान्।

नरपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

नरपाल—संज्ञा पुं० [सं० नृपाल] राजा।

नरपिशाच—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य होकर भी पिशाचों का सा काम करनेवाला व्यक्ति। अत्यंत क्रूर मनुष्य।

नरबदा—संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मदा"।

नरभक्षी—संज्ञा पुं० [सं० नरभक्षिन्] मनुष्यों को खानेवाला। राक्षस।

नरम—वि० [फा० नर्म] १ मुलायम। कोमल। मृदु। २ लचकदार। लचीला। ३ तेज का उलटा। मंदा। ४ धीमा। मद्धिम। ५ सुस्त। आलसी। ६ जल्दी पचनेवाला। लघुपाक। ७ जिसमें पौरुष का अभाव या कमी हो।

नरमा—संज्ञा स्त्री० [हिं० नरम] १ एक प्रकार की कपास। मनवा। देवकपास। राम कपास। २ सेमर की रूई। ३ कान के नीचे का भाग। लौल। ४ एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।

नरमाना—क्रि० स० [हिं० नरम से ना० धा०] १. नरम करना। मुलायम करना। २. शांत करना। धीमा करना।

क्रि० अ० १. नरम होना। मुलायम होना। २ शांत होना। ठंढा होना।

नरमी—संज्ञा स्त्री० [फा० नर्म] नरम होने का भाव। मुलायमियत। कोमलता।

नरमेध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी।

नरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] संसार।

नरवइ—संज्ञा पुं० [सं० नर+वर] राजा। मनुष्यों में श्रेष्ठ व्यक्ति। उ०—भयउ न होइहि, है न, जनक सम नरवइ। सीय सुता भै जासु सकल मंगलमइ। जा० मं०।

नरवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "नरई"।

नरवाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर ले चलते हों, जैसे पालकी आदि।

नरवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "नरवाह"। २ कुबेर।

नरसल—संज्ञा पुं० दे० "नरकट"।

नरसिंह—संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।

नरसिंघा—संज्ञा पुं० [हिं० नर=बड़ा+सिंघा=सींग का बना बाजा] तुरही की तरह का एक प्रकार का नल के आकार का ताँबे का बड़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।

नरसिंह—संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।
नरसों—क्रि० वि० दे० "अतरसों"।
नरहरी—संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह भगवान् जो विष्णु के दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं।
नरहरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है। उ०—रिपु हन्यो दीन सुख भारी, दुखहरी। सुर जय जय जयति उचारी, शुभकरी॥
नरांतक—संज्ञा पुं० [सं०] रावण का एक पुत्र जिसे अंगद ने मारा था।
नराच—संज्ञा पुं० [सं० नाराच, नराच] १ तीर। बाण। शर। २ पंच चामर या नागराज नामक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत्य गुरु होता है अर्थात् क्रम से आठ लघुगुरु वर्ण होते हैं। उ०—जु रोज रोज गोपतीय कृष्ण संग धावतीं। सु गीत नाथ पाँव सों लगाय चित्त गावतीं॥
नराचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ८ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक तगण, एक रगण, एक लघु और अंत्य गुरु होता है। उ०—तोरी लगै नराचिका। मोरी कहै भवाधिका। मारीच यही ठान ली। है कांचनी मृगा छली॥ कुछ लोग इसे वितान छंद का एक भेद बताते हैं किंतु वितान वृत्त में एक सगण के बाद एक भगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—सुभ गंगा जल तेरो। सुखदाता जन केरो॥
नराज—वि० दे० "नाराज"।
नराजना(पु)—क्रि० स० [फा० नाराज] अप्रसन्न करना। नाराज करना।
क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना।
नराट्(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० नरराट्] राजा।
नराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
नरिंद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० नरेंद्र] राजा।
नरियर†—संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।
नरिया†—संज्ञा पुं० [हिं० नाली] एक प्रकार का अर्द्धवृत्ताकार मिट्टी का लंबा खपड़ा।
नरियाना†—क्रि० अ० [अ० नआरह्] जोर से चिल्लाना।
नरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सिझाया हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा। २ ढरकी के भीतर की नली जिसपर तार लपेटा रहता है। नार (बुनाई)। ३ एक घास।
†संज्ञा स्त्री० [सं० नलिका] नली। नाली।
संज्ञा स्त्री० [सं० नर] स्त्री। नारी।
नरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा। नृप। नरेश। २ वह जो साँप बिच्छू आदि के काटने का इलाज करे। विषवैद्य। ३ २८ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं। कभी कभी अंत में एक लघु और एक गुरु अथवा दोनों लघु भी होते हैं। उ०—(अ) सादर सुनिए सादर गुनिए, मधुर कथा रघुबर की।
(ब) सार यही नर जन्म लहे को, हरि पद प्रीति निरंतर।
(स) धनि बृंदावन धनि बंसीवट धनि सब गोपी ग्वाला। धनि जमुनातट जहाँ मुदितमन, रास कियो नँदलाला। इसे ललितपद और दोवै छंद भी कहते हैं।
४ २१ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक भगण, एक रगण, दो नगण, दो जगण और एक यगण होता है तथा १३वें वर्ण पर यति और २१ वें पर विराम रहता है। उ०—भक्तन में जु भक्त दृढ ध्रुव सम, इष्ट टरै नहिं टारे। देविन में जु देवि सिय सम नहिं, सत्य पतिव्रत धारे॥
नरेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारियल की खोपड़ी। २ नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।
नरेश—संज्ञा पुं० [सं०] राजा। नृप।
नरोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।
नर्क(पु)—स्त्री० पुं० दे० "नरक"।
नर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नर्तकी] १ नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। उ०—दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज। जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज। —मानस। २. नरकट। ३ चारण। वंदीजन। ४ एक जाति। ५ महादेव।
नर्तकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाचनेवाली।
नर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] नृत्य। नाच।
नर्तना(पु)—क्रि० अ० [सं० नर्तन] नाचना।
नर्तित—वि० [सं०] नचाया हुआ। नचाया जाता हुआ।
नर्द—संज्ञा स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी।
नर्दन—संज्ञा स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि।
नर्म—संज्ञा पुं० [सं० नर्मन्] १. परिहास। हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २ हँसीठट्ठा करनेवाला सखा।
वि० दे० "नरम"।
नर्मद—संज्ञा पुं० [सं०] मसखरा। भाँड़।
नर्मदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्यप्रदेश की एक नदी जो विंध्यपर्वतमाला की अमरकंटक नामक चोटी से निकलकर भड़ौच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है। यह भारत की सात पवित्र नदियों में गिनी जाती है।
नर्मदेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] नर्मदा नदी के जल में लुढ़कने से बने हुए चिकने अंडाकार पत्थर के टुकड़े जो शिवलिंग मानकर पूजे जाते हैं।
नर्मद्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक (नाट्य)।
नर्मसचिव—संज्ञा पुं० [सं०] विदूषक।
नल—संज्ञा पुं० [सं०] १. नरकट। २. पद्म। कमल। ३. निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र। विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयंती के साथ इनका विवाह हुआ था। ये द्यूतविद्या, अश्वसंचालन, पाकशास्त्र और गणितशास्त्र में अपने समय में अद्वितीय थे। ४ राम की सेना का एक बंदर जो विश्वकर्मा का पुत्र और नील का भाई था। इन दोनों भाइयों को वरदान था कि इनके छुए पत्थर पानी में न डूबेंगे। अत रामचंद्र जी के वानरसेना सहित लंका पहुँचने के लिये इन्होंने समुद्र पर पुल बाँधा था।
संज्ञा पुं० [सं० नाल] १ पोली लंबी चीज। २ धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लंबा खंड। ३ वह मार्ग जिसमें से होकर गंदगी और मैला आदि बहता हो। पनाला। ४ पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नली।
नलकूबर—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के पुत्र (पुराण)। अपने भाई मणिग्रीव के साथ ये नारद के शाप से नंद के आँगन में यमलार्जुन (अर्जुन के दो पेड़) हुए थे। श्रीकृष्ण ने इन्हें स्पर्श करके शापमुक्त किया था।
नलसेतु—संज्ञा पुं० [सं०] रामेश्वर के निकट का समुद्र पर बँधा हुआ वह पुल जो रामचंद्र ने नल, नील आदि से बनवाया था।
नला—संज्ञा पुं० [हिं० नल] १ पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नल। २. हाथ या पैर की नली के आकार की लंबी हड्डी।

नलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नल के आकार की कोई वस्तु। चोंगा। नली। २ मूँगे के आकार का एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ३. प्राचीन काल का एक अस्त्र। नाल। ४ तरकश जिसमें तीर रखते हैं।

नलिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। उ०—अलकैं कुटिल, ललित लटकन भ्रू, नील नलिन दोउ नयन सुहाए। —गीता०। २. जल। ३ सारस। ४. नीली कुमुदिनी।

नलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। कमल। २. वह देश जहाँ कमल अधिकता से होते हों। ३. पुराणानुसार गंगा की एक धारा का नाम। ४ नलिका नामक गंध-द्रव्य। ५ नदी। ६ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच सगण होते हैं। उ०—ससि सों सु सखी रघुनंदन को वदना। लखिके पुलकीं मिथिलापुर की ललना॥ मनहरण। भ्रमरावली।

नलिनीरुह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मृणाल। कमल की नाल। २. ब्रह्मा।

नली—संज्ञा स्त्री० [हिं० नल का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा या पतला नल। छोटा चोंगा। २ नल के आकार की भीतर से पोली हड्डी जिसमें मज्जा होती है। ३. घुटने से नीचे का भाग। पैर की पिंडली। ४. बंदूक की नली जिसमें होकर गोली गुजरती है।

नलुआ—संज्ञा पुं० [हिं० नल = गला] छोटा नल या चोंगा।

नव—वि० [सं०] [संज्ञा नवता] जो पुराना न हो। हाल का। नया। नवीन। नूतन।

वि० [सं० नवम्] नौ। आठ और एक। ९।

नवक—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही तरह के नौ का समूह।

नवका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० नौका] नाव।

नवकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है।

नवखंड—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नौ खंड—भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य।

नवग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] (फलित ज्योतिष) सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।

नवछावरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "न्यौछावर"।

नवजात—वि० [सं०] जो अभी पैदा हुआ हो।

नवतन†(पु)—वि० [सं० नवीन] नया।

नवदुर्गा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है, यथा—शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवधा भक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति, यथा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, और आत्मनिवेदन।

नवन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नमन"।

नवना(पु)†—क्रि० अ० [सं० नमन] १ झुकना। २ नम्र होना।

नवनि†(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० नमन] १ झुकने की क्रिया या भाव। २. नम्रता। दीनता।

नवनीत—संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन।

नवपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपई या जयकरी छंद जिसमें १५ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु होता है। उ०—यहि कहत सब वेद पुरान। शरणागत वत्सल भगवान॥

नवम—वि० [सं०] जो गिनती में नौ के स्थान पर हो। नवाँ।

नवमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमेली। २ नेवारी।

नवमालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नगण, जगण, भगण और यगण का एक वर्णवृत्त। उ०—निज भय छाँड़ि चीन्ह, हनु लीजे। अहि महि नाथ आजु, बलि दीजे॥ नव मालिनी। २ नेवारी का फूल।

नवमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] २. चांद्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नवयुवक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नवयुवती] नौजवान। तरुण।

नवयुवा—संज्ञा पुं० दे० "नवयुवक"।

नवयौवना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवन का आरंभ हो। नौजवान औरत।

नवरंग—वि० [सं० नव + हिं० रंग] १ सुंदर। रूपवान्। उ०—सूरदास प्रभु भरि चीतत छिनु। हरि नवरंग कुरंग पीव मिनु। —सूर०। २ नए ढंग का। नवेला। उ०—नाउति बोलहु महावर वेग। लाख टका भरु झूमक सारी देहु दाई को नेग। —सूर०। ३. (पु)औरंगजेब बादशाह, जैसे—सौरंग है शिवराज बली जिन नवरंग में रंग एक न राख्यो। —भूषण०।

नवरंगी—वि० [हिं० नवरंग + ई (प्रत्य०)] १ नित्य नए आनंद करनेवाला। २. हँसमुख। खुशमिजाज।

नवरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न या जवाहिर। २ राजा विक्रमादित्य की प्रसिद्ध सभा के नौ पंडित—धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। ३ गले में पहनने का नौ रत्नों का हार। ४ बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन की सभा के ९ प्रसिद्ध विद्वान्।

नवरस—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य के शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत नामक ९ रस।

नवरात्र—संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें हिंदू लोग नवदुर्गा का व्रत, घटस्थापन तथा पूजन आदि करते हैं।

नवल—वि० [सं० नव + ल] [स्त्री० नवला] १ नवीन। नया। उ०—चले हरखि रघुनायक पासा। पूछत कहत नवल इतिहासा॥ —मानस। २ सुंदर। अनोखा। अद्वितीय। बेजोड़। उ०—मुख मीठे मानस मलिन, कोकिल मोर चकोर। सुजस धवल, चातक नवल! रह्यो भुवन भरि तोर। —दोहा०। ३ जवान। युवा। ४. उज्वल।

नवल अनंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक (केशव)।

नवलकिशोर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

नवलबधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक (केशव)।

नवला—संज्ञा स्त्री० [सं० नव + हिं० ला (प्रत्य०)] युवती। उ०—का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि? चाँद सरग पर सोहत याही अनुहारि। —बरवै०।

नवशिक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २ वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नव + सत = सप्त] नव और सात, सोलह शृंगार। उ०—सो समै देखि सुहावनो नवसत सँवारि

सँवारि। गुन-रूप जोवन-सौंव-सुंदरि चलीं कुडनि झारि। —गीता०।

वि० सोलह। षोडश।

नवसस—संज्ञा पुं० [सं०] १ नौ और सात सोलह। १ सोलह शृंगार।

नवसर—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सं० स्रक] नौ लड़ का हार।

वि० [मं० नव+वत्सर] नवयुवक।

नवससि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया या दूज का चाँद। नया चाँद।

नवसात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नवसत"।

नवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√नव+आई (प्रत्य०)] विनीत होने का भाव।

†(पु) वि० नया। नवीन।

नवागत—संज्ञा [सं०] नया आया हुआ।

नवाज—वि० [फा०] कृपा करनेवाला।

नवाजना†(पु)—क्रि० स० [फा० नवाज से हिं० ना० धा०] कृपा करना। दया दिखलाना।

नवाजिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया।

नवाड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार की छोटी नाव। २. नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की क्रीड़ा। नावर।

नवाना—क्रि० स० [हिं० नवना का स०] १ झुकाना। २ विनीत करना।

नवान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी फसल का नया अनाज। २ एक प्रकार का श्राद्ध।

नवाब—संज्ञा पुं० [अ० नव्वाब] १ मुगल सम्राटों की ओर से प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किसी रियासत या राज्य का मुसलमान शासक। छोटे मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिकों के नाम के साथ लगाई जानेवाली उपाधि। ३ राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो भारतीय मुसलमान अमीरों को अँगरेजी सरकार की ओर से मिलती थी। ४ शान और शौकत या विलासिता में रहनेवाला व्यक्ति।

वि० बहुत शानशौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला।

नवाबी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नवाब+ई (प्रत्य०)] १ नवाब का पद। २ नवाब का काम। ३ नवाब होने की दशा। ४ नवाबों का राजत्वकाल। ५. नवाबों की सी हुकूमत। ६ बहुत अधिक अमीरी या शान शौकत।

नवासा—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।

संज्ञा पुं० [सं० नवाशीति] अस्सी और नौ की संख्या। ८९।

नवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. नव दिनों का क्रम या समूह। २ रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।

नवाहा—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "नवाह"।

नवीन—वि० [सं०] [स्त्री० नवीना] १. हाल का। ताजा। नया। नूतन। २ विचित्र। अपूर्व। ३ नवयुवक। जवान।

नवीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नवीन या नया होने का भाव। नूतनता। नयापन।

नवीस—संज्ञा पुं० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।

नवीसी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद—संज्ञा पुं० [सं० निवेदन] १ निमंत्रणपत्र।

नवेला—वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १ नवीन। नया। उ०—विरह साल पर साल नवेला। विरह काल पर काल दुहेला। —पदमावत। २ तरुण। जवान।

नवोढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नवविवाहिता स्त्री। वधू। २ नवयौवना। युवती स्त्री। ३ साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।

नव्य—वि० [सं०] [संज्ञा नव्यता] नया। नूतन। नवीन।

नशना(पु)—क्रि० अ० [सं० नाश से हिं० ना० धा०] नष्ट होना।

नशा—संज्ञा पुं० [फा० या अ० ?] १ वह अवस्था जो शराब, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है।

मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना = किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना = नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना = अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना = किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

२. वह चीज जिससे नशा हो। मादक द्रव्य।

यौ०—नशापानी = मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशे का सामान।

३ धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदि का घमंड। अभिमान। मद। गर्व।

मुहा०—नशा उतारना = घमंड दूर करना।

नशाखोर—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नशे का सेवन करता हो। नशेबाज।

नशाना(पु)—क्रि० स० [सं० नाश] नष्ट करना।

नशावन(पु)†—वि० [सं० नाश] नाश करनेवाला।

नशीन—वि० [फा०] बैठनेवाला, जैसे-तख्त या गद्दीनशीन।

नशीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला—वि० [फा० नशा+ईला (प्रत्य)] १ नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २. जिसपर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें = वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।

नशोहर†—वि० [सं० नाश+ओहर] नाशक।

नश्तर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़ा आदि चीरने में होता है।

नश्वर—वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो। नाश होनेवाला।

नश्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नश्वर का भाव।

नष(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नख"।

नषत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट—वि० [सं०] जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद हो गया हो। २. जो अदृश्य हो। जो दिखाई न दे। ३ अधम। नीच। ४ निष्फल। व्यर्थ।

नष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नष्ट होने का भाव। २. वाहियातपन। दुराचारिता।

नष्टबुद्धि—वि० [सं०] मूर्ख। मूढ़।

नष्टभ्रष्ट—वि० [सं०] जो बिलकुल टूट फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। रंडी। २. व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसंक(पु)†—वि० [सं० निःशंक] निर्भय।

नस—संज्ञा स्त्री० [सं० स्नायु] १ शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो मांसपेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों

या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ता है। जैसे, घोड़ानस। कोई शरीरतंतु या रक्तवाहिनी नली (साधारण बोलचाल)।

मुहा०—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना=खिंचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर उधर हो जाना या बल खा जाना। नस नस में=सारे शरीर में। सर्वांग में। नस नस फड़क उठना=बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

२. तंतु या तंतुजाल जो शरीर के किसी अंग के संवेदन को मस्तिष्क या मेरुदंड या स्नायुकेंद्र तक पहुँचाते हैं।

३ वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच बीच में होते हैं।

नसतरंग—संज्ञा पुं० [हिं० नस+तरंग] शहनाई के आकार का पीतल का एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसतालीक—संज्ञा पुं० [अ०] १ फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुंदर होते हैं। 'घसीट' या 'शिकस्त' का उलटा। २ वह जिसका रंगढंग बहुत अच्छा और सुंदर हो।

नसनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० नशन] १ नष्ट होना। बरबाद होना। २ बिगड़ जाना।

क्रि० अ० [हिं० नटना] भागना। दौड़ना।

नसल—संज्ञा स्त्री० [अ०] वंश। जाति।

नसवार—संज्ञा स्त्री० [हिं० नास+वार (प्रत्य०)] सूँघने के लिये तमाकू के पीसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

नसानाⓅ†—क्रि० अ० [सं० नाश] १. नष्ट हो जाना। २ बिगड़ जाना।

नसावना‡—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीतⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "नसीहत"।

नसीनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।

नसीब—संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर—वि० [अ०] भाग्यवान्।

नसीबा†—संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।

नसीहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उपदेश। शिक्षा। सीख। २. अच्छी सम्मति।

नसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी। निःश्रेणी

नस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. नास। सुँघनी। २ वह दवा या चूर्ण आदि जिसे नाक के रास्ते दिमाग में चढ़ाते हैं।

नस्वरⓅ†—वि० दे० "नश्वर"।

नहँ‡—संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

नहछू—संज्ञा पुं० [सं० नख+क्षौर] विवाह की एक रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसमें मेहँदी आदि लगाई जाती है। उ०—कौसल्या की जेठि दीन्ह अनुसासन हो। नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो।—रामलला०।

नहन—संज्ञा पुं० [देश०] पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

नहनाⓅ—क्रि० स० [हिं० नाधना] नाधना। काम में लगाना। जोतना।

नहर—संज्ञा स्त्री० [फा०] यातायात या सिंचाई आदि के लिये बनाया गया जल-मार्ग।

नहरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० नख+हरणी] हज्जामों का एक औजार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

नहरुआ—संज्ञा पुं० [देश०] एक रोग जिसमें घाव में से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे धीरे निकलता है।

नहला—संज्ञा पुं० [हिं० नौ] ताश का वह पत्ता जिसपर नौ बूटियाँ होती हैं।

नहलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नहलाना] नहाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहलाना—क्रि० स० [हिं० नहाना का स० रूप] दूसरे को स्नान कराना। नह-वाना।

नहवाना—क्रि० स० दे० "नहलाना"।

नहसुत—क्रि० स० [सं० नख+क्षुत] नख की रेखा। नाखून का निशान।

नहान—संज्ञा पुं० [सं० स्नान] १ नहाने की क्रिया। २. स्नान का पर्व।

नहाना—क्रि० अ० [सं० स्नान] १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना। स्नान करना।

मुहा०—दूधों नहाना पूतों फलना=धन और परिवार से पूर्ण होना (आशी-र्वाद)।

२ किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का आप्लुत हो जाना। बिलकुल तर हो जाना। ३ रजोधर्म से निवृत्त होनेपर स्त्री का स्नान करना।

नहार—वि० [फा०, मि० सं० निराहार] जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो। बासी-मुँह।

नहारी—संज्ञा स्त्री० [फा० नहार] जल-पान।

नहारू—संज्ञा पुं० [हिं० नाहरू] दे० "नाहरू"। उ०—फिर पछतैहसि अंत अभागी। मारसि गाय नहारू लागी।—मानस।

नहिंⓅ—अव्य० दे० "नहीं"।

नहीं—अव्य० [सं० नास्ति (न+अस्ति), प्रा० णत्थि] एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है।

मुहा०—नहीं तो=उस दशा में जब कि यह बात न हो। नहीं सही=यदि ऐसा न हो तो कोई परवा या हानि नहीं।

नहुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋग्वेद के अनुसार मनु के पुत्र और अयोध्या के राजा। २ (ऋग्वेद और महाभारत) आयु या आयुस् के पुत्र और ययाति के पिता जो इंद्र होने पर अगस्त्य के शाप से अजगर हो गए थे। ३ अंबरीष के पुत्र और नाभाग के पिता। ४ एक नाग का नाम। ५ विष्णु।

नहूसत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनहूस होने का भाव। उदासीनता। खिन्नता। मनहूसी। २ अशुभ लक्षण।

नाँउँ—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाँगा—वि० दे० "नंगा"।

संज्ञा पुं० [हिं० नंगा] एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं। नागा।

नाँघनाⓅ†—क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना। इस पार से उस पार उछलकर जाना। डाँकना। उ०—कहे कटु बचन, रेख नाँघी मैं तात छमा सो कीजै। देखि बधिक-बस राजमरालिनि लषन लाल छिनि लीजै।—गीता०।

नाँठनाⓅ—क्रि० अ० [सं० नष्ट]-नष्ट होना।

नाँद—संज्ञा स्त्री० [?] मिट्टी का वह बड़ा और चौड़ा बरतन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है। हौदी।

नाँदनाⓅ—क्रि० अ० [सं० नाद] १ शब्द करना। शोर करना। २. छींकना।

क्रि० अ० [सं० नंदन] १ आनंदित होना। २ दीपक का बुझने के पहले भभकना। उ०—नैक न जानि परति, यौं

परयौ विरह तनु छामु। उठति दियैं लौं नाँदि हरि लियैं तिहारौ नामु।—विहारी०।

नांदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभ्युदय। समृद्धि। आनंद। २ देवस्तुति। वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिसका सूत्रधार नाटक आरंभ करने के पहले पाठ करता है। मंगलाचरण (नाट्यशास्त्र)।

नांदीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध। २. अभ्युदय के लिये किया जानेवाला पैत्रिक श्राद्ध।

नांदीमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त। उ०—हिय महँ धरिके, ध्यान शृंगी ऋषी को मुदित मन कियो, श्राद्ध नांदीमुखी को।

नाँयँ(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

अव्य० दे० "नहीं"।

नाँव—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाँह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नाथ] स्वामी।

ना—अव्य० [सं०] नहीं। न। उ०—पात भरी सहरी, सकल सुत बारे बारे, केवट की जाति कछु वेद ना पढ़ाइहौं।—कविता०।

नाअर—संज्ञा पुं० [सं० नागर] नागर। उ०—ओ परमेसर हरसिर सोहइ, ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ।

नाइक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नायक"।

नाइत्तिफाकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मेल का अभाव। फूट। मतभेद। विरोध।

नाइन—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] १ बाल बनानेवाली (नाई) जाति की स्त्री। २ नाई की स्त्री।

नाइब(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नायब"।

नाईं—संज्ञा स्त्री० [सं० न्याय] समान दशा।

वि० स्त्री० समान। सदृश। तुल्य। उ०—सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गुसाईं। नहिं आदरेहु भगति की नाईं।—मानस।

नाई—संज्ञा पुं० [सं० नापित] १ बाल बनानेवाली जाति। २. इस जाति का पुरुष। नाऊ। हज्जाम।

वि० दे० "नाईं"। उ०—राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।—कविता०।

नाउँ‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाउ(पु)‡—संज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।

नाउन‡—संज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।

नाउम्मेद—वि० [फा०] निराश। हताश।

नाउम्मेदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] निराशा।

नाऊ‡—संज्ञा पुं० दे० "नाई"।

नाकंद—वि० [फा० ना+कंद] बिना निकाला हुआ (घोड़ा आदि)। अल्हड़। अशिक्षित। बिना सिखाया हुआ।

नाक—संज्ञा स्त्री० [सं० नक्र] १ ओठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। नासा। नासिका।

यौ०—नाक घिसनी=विनती और गिड़गिड़ाहट।

मुहा०—नाक कटना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। नाक-कान काटना=कड़ा दंड देना। (किसी की) नाक का बाल=सदा साथ रहनेवाला घनिष्ठ मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना=क्रोध आना। त्योरी चढ़ना। नाकों चने चबवाना=खूब तंग करना। हैरान करना। नाक तक खाना=बहुत अधिक खाना। नाक पर गुस्सा होना=बात बात पर गुस्सा होना। चिड़चिड़ा स्वभाव होना। नाक भौं चढ़ाना या नाक भौं सिकोड़ना=(१) अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। (२) घिनाना और चिढ़ना। नापसंद करना। नाक में दम करना या नाक में दम लाना=खूब तंग करना। बहुत हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=बहुत गिड़गिड़ाना और विनती करना। मिन्नत करना। नाकों आना=हैरान हो जाना। बहुत तंग होना। नाक सिकोड़ना=अरुचि या घृणा प्रकट करना। घिनाना।

२ मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा।

मुहा०—नाक सिनकना=जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

३ प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४ प्रतिष्ठा। इज्जत। मान।

मुहा०—नाक रख लेना=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।

संज्ञा पुं० [सं० नक्र] मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु।

संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। उ०—महि पातालु नाक जसु व्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा।—मानस। २ अंतरिक्ष। आकाश। ३ अस्त्र का एक आघात।

नाकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+ड़ा (प्रत्य०)] एक रोग जिसमें नाक पक जाती है।

नाकदर—वि० [फा० ना+अ० क़द्र] [संज्ञा नाकदरी] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो।

नाकना(पु)‡—क्रि० स० [सं० लंघन ?] १ लाँघना। उल्लंघन करना। २. बढ़ जाना। मात कर देना।

नाकप—संज्ञा पुं० [सं० नाक+प] इंद्र। उ०—रीझनि नाकप रीझि करै, तुलसी जग जो जुरै जाचक जोरो।—कविता०।

नाकबुद्धि—वि० [हिं० नाक+बुद्धि] क्षुद्र बुद्धिवाला। ओछी समझ का। उ०—अपनो पेट दियौ तै उनको नाकबुद्धि तिय सबै कहै री। सूर श्याम ऐसे हैं, माई, उनको बिनु अभिमान लहै री।—सूर०

नाका—संज्ञा पुं० [हिं० नाकना] १ रास्ते आदि का छोर। प्रवेशद्वार। मुहाना। २ गली या रास्ते का आरंभ स्थान। ३. नगर, दुर्ग आदि का प्रवेशद्वार। फाटक।

मुहा०—नाका छेंकना या बाँधना=आनेजाने का मार्ग रोकना।

४ वह प्रधान स्थान जहाँ निगरानी रखने, या महसूल आदि वसूल करने के लिये सिपाही तैनात हों। ५ सूई का छेद।

नाकाबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाका+फा० बंदी] किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट। किसी स्थान में आने जाने के सब रास्तों का घेरा या रोक।

नाकाबिल—वि० [फा०] अयोग्य। नालायक।

नाकाम—वि० [फा०] [संज्ञा नाकामी] १ विफल मनोरथ। २ निराश।

नाकिस—वि० [अ०] बुरा। खराब।

नाकुली—संज्ञा स्त्री० [सं० नकुल] एक प्रकार का कंद जो सर्प के विष को दूर करता है।

नाकेदार—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+फा० दार (प्रत्य०)] १ नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही। २ वह अफसर जो आने जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिये तैनात हो।

वि० जिसमें नाका या छेद हो।

नाकेबंदी—संज्ञा स्त्री० दे० "नाकाबंदी"।

नाकेस—संज्ञा पुं० [सं० नाक+ईश] इंद्र। उ०—नाकेसदुर्लभ भोग लोग करहिं न मन विषयनि हरे।—गीता०।

नाक्षत्र—वि० [सं०] नक्षत्र संबंधी।

नाखना(पु)‡—क्रि० स० [सं० नष्ट] १

नाश करना। नष्ट कर देना। उ०—जे नखचद्र भजन खल नाखत रमा हृदय जेहि परसत।—सूर०। २. फेंकना। गिराना।

क्रि० स० [हिं० नाकना] उल्लंघन करना। उ०—पाछे ते सीय हरी विधि मर्याद राखी। जो पै दशकध बलो रेख क्यों न नाखी ?—सूर०।

नाखुना—संज्ञा पुं० [फा०] आँख का एक रोग जिसमें एक लाल झिल्ली सी आँख की सफेदी में पैदा होती है।

नाखुश—वि० [फा०] [संज्ञा नाखुशी] अप्रसन्न। नाराज।

नाखून—संज्ञा पुं० [फा० नाखुन] १ उँगलियों के छोर को ढकनेवाली चिपटे किनारे या नोक की तरह निकली हुई सींग की तरह कड़ी वस्तु। नख। नहँ। २ चौपायों की टाप या खुर का बढ़ा हुआ किनारा।

नाग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नागिन] १ सर्प। साँप।

मुहा०—नाग से खेलना=ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो। २ कद्रु से उत्पन्न कश्यप ऋषि की संतान जिनका स्थान पाताल माना गया है। ३ एक देश का नाम जो हिमालय के उस पार था। ४ इस देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा मानी जाती है। उ०—जय जय भगीरथनंदिनि, मुनिचय-चकोरिचंदिनि, नर-नाग-विबुधवंदिनि, जय जह्नु बालिका।—विनय०। ५ एक पर्वत। (महाभारत) ६ हाथी। उ०—मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। ससि केसरी गगन वन चारी।—मानस। ७ राँगा। ८ सीसा (धातु)। ९ नागकेसर। १० पुन्नाग। ११ पान। तांबूल। १२ नागवायु। १३ बादल। १४. आठ की संख्या। १५ दुष्ट या क्रूर मनुष्य। १६ वर्तमान आसाम प्रदेश के उत्तरपूर्व के जंगलों में बसनेवाली एक जाति। १७ इस जाति का व्यक्ति। नागा।

नागअरि—संज्ञा पुं० [सं० नाग+अरि] सिंह। उ०—वैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नागअरि भागू।—मानस।

नागकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुदर मानी जाती है।

नागकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] एक सीधा सदाबहार पेड़। इसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं। नागचंपा।

नागफाग(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० नाग+फाग] अफीम।

नागदमन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० नागदौन।

नागदौन—संज्ञा पुं० [सं० नागदमन] छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास साँप नहीं आते।

नागनग—संज्ञा पुं० [सं० नाग+नग] गजमुक्ता।

नागना(पु)—क्रि० अ० [हिं० नागा] नागा करना। अंतर डालना।

नागपंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सावन सुदी पंचमी, जब हिंदू लोग नाग की पूजा करते हैं। २ नागपंचमी का त्योहार।

नागपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पों का राजा वासुकि। २ हाथियों का राजा ऐरावत।

नागपाश, नागपास—संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे। उ०—तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ।—मानस।

नागफनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाग+फन] १ थूहर की जाति का एक पौधा जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं। २ कान में पहनने का एक गहना। ३ सिंघे के आकार का बाजा जिसका प्रचार नैपाल में है। ४ नागे साधुओं का कौपीन।

नागफाँस—संज्ञा स्त्री० दे० "नागपाश"।

नागबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगेरन।

नागबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की बेल। बान।

नागर—वि० [सं०] [स्त्री० नागरी] १ नगर सबधी। २ नगर में रहनेवाला।

संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य। उ०—गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर।—मानस। २ चतुर आदमी। सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। ३ देवर। ४ गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति।

नागरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागरिकता। शहरातीपन। २ नगर का रीति-व्यवहार। सभ्यता। उ०—सबै हँसत करतार दै नागरता कै नावँ। गयौ गरबु गुन को सरबु गए गँवारैं गावँ।—बिहारी०। ३ चतुराई।

नागरबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० नागरबली] पान।

नागरमुस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरमोथा।

नागरमोथा—संज्ञा पुं० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है।

नागराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ शेषनाग। २ वासुकि ३. ऐरावत। उ०—नागराज निजबल बिचारि हिय हारि चरन चित दीन। आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत बिलंब न कीन।—विनय०। ४. 'पंचामर' या 'नाराच' छंद।

नागरि—संज्ञा स्त्री० दे० "नागरी२"। उ०—तुलसिदास स्वामिनि अति नागरि, नट नागरमनि नंदललाउ।—श्रीकृष्ण-गीता०।

नागरिक—वि० [सं०] १ नगर संबंधी। नगर का। २ नगर में रहनेवाला। शहराती। ३ चतुर। सभ्य। ४ किसी देश का राजनीतिक अधिकारसंपन्न निवासी।

नागरिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरिक के अधिकारों से संपन्न होने की अवस्था।

नागरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगर की रहनेवाली स्त्री। २ चतुर स्त्री। प्रवीण स्त्री। ३ भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, नेपाली, मराठी और हिंदी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं। देवनागरी।

नागलली—संज्ञा स्त्री० दे० "नागकन्या"। उ०—बैठी मलीन अली अवली कि सरोज कलीन सों ह्वै बिफली है। संभु गली बिछुरी ही चली किधौं नागलली अनुरागरली है।—शृंगार०।

नागलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पाताल।

नागवंश—संज्ञा पुं० [सं०] शक जाति की एक शाखा जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और सिंहल द्वीप में था।

नागवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पान।

नागवार—वि० [फा०] १ असह्य। २. जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

नागा—स्त्री० पुं० [सं० नग्न] १ नंगे रहनेवाले शैव साधुओं का संप्रदाय। २. इस संप्रदाय का साधु।

संज्ञा पुं० [सं० नाग] १ आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति। २ आसाम में वह पहाड़ जिसके आसपास नागा जाति की बस्ती है।

संज्ञा पुं० [तु० नाना] किसी निरंतर या

नियत समय पर होनेवाली बात का किसी दिन या किसी नियत अवसर पर न होना। अंतर। बीच। अनुपस्थिति।

नागार्जुन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन बौद्ध विद्वान् और उपदेशक जो बोधिसत्व की कोटि के माने जाते हैं और माध्यमिक शाखा के प्रवर्तक थे।

नागाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड़। २. मयूर। ३ सिंह।

नागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाग] १ नाग की स्त्री। साँप की मादा। २ रोयों की लंबी भौंरी जो पीठ पर होती है (अशुभ)।

नागेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा सर्प। २. शेष, वासुकि आदि नाग। ३ ऐरावत। उ०—लोल अति मत्तनागेंद्र-पचानन, भक्त-हित-हरन-संसार-भार। —विनय०।

नागेसरⓟ—संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

नागौर—संज्ञा पुं० [हिं० नव+नगर] मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर और जिला जहाँ की गाएँ बहुत दूध देती हैं तथा बछड़े बहुत अच्छे बैल होते हैं।

नागौरी—वि० [हिं० नागौर] नागौर का अच्छी जाति का (बैल, बछड़ा आदि)।

वि० स्त्री० नागौर की अच्छी जाति की (गाय)।

नाच—संज्ञा पुं० [सं० नृत्य] १ हृदयोल्लास के अनुरूप अथवा संगीत के मेल में ताल स्वर के अनुसार हावभावयुक्त अंगविक्षेप या अवयवों का संचालन।

मुहा०—नाच काछना=नाचने के लिये तैयार होना। नाच नचाना=(१) जैसा चाहना, वैसा काम कराना। उ०—जो कछु कुबजा के मन भावै सोई नाच नचावै। —सूर०। (२) दिक करना।

२ नृत्य। नाट्य। ३ क्रीड़ा। खेल। ४. कृत्य। कर्म।

नाचकूद—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाच+कूद] १. नाच तमाशा। २. आयोजन। प्रयत्न। ३ गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग। ४ क्रोध से उछलना कूदना।

नाचघर—संज्ञा पुं० [हिं० नाच+घर] वह स्थान जहाँ नाच हो। नृत्यशाला।

नाचना—क्रि० अ० [सं० नर्तन] १ चित्त की उमंग के अनुरूप उछलना, कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएँ करना। २. संगीत के मेल में तालस्वर के अनुसार हावभावपूर्वक कूदना, फिरना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएँ करना। थिरकना। ३. भ्रमण करना। चक्कर मारना। इधर उधर घूमना।

मुहा०—सिर पर नाचना=(१) घेरना। ग्रसना। (२) पास आना। निकट आना। आँख के सामने नाचना=अंत-करण में प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना। मन में चित्र के समान उपस्थित रहना।

४ इधर उधर फिरना। स्थिर न रहना। दौड़ना। घूमना। उ०—जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु। मन काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु॥ —बिहारी०। ५ थर्राना। काँपना। ६ क्रोध में आकर उछलना कूदना। बिगड़ना।

नाचमहल—संज्ञा पुं० दे० "नाचघर"।

नाचरंग—संज्ञा पुं० [हिं० नाच+रंग] आमोदप्रमोद। जलसा।

नाचार—वि० [फा०] [संज्ञा नाचारी] विवश। लाचार।

नाचीज—वि० [फा०] तुच्छ। पोच। नगण्य।

नाज—संज्ञा पुं० [हिं० अनाज] १. अन्न। अनाज। २ खाद्य द्रव्य। भोज्य सामग्री।

संज्ञा पुं० [फा०] १. नखरा। चोचला।

मुहा०—नाज उठाना=चोचला सहना।

२. घमंड। गर्व।

यौ०—नाज अदा, नाज नखरा=(१) हाव भाव। (२) चटक मटक। बनाव सिंगार।

नाजनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुंदरी स्त्री।

नाजबरदार—संज्ञा पुं० [फा०] नाज या नखरे झेलनेवाला।

नाजबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] नाज उठाना। चोचले सहना।

नाजायज—वि० [अ०] जो जायज न हो। जो नियमविरुद्ध हो। अनुचित।

नाजिम—वि० [अ०] प्रबंधकर्ता।

संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी राज्य-काल में वह प्रधान कर्मचारी जिसपर किसी देश के प्रबंध का भार रहता था।

नाजिर—संज्ञा दे० [अ०] १ निरीक्षक। देखभाल करनेवाला। २ लेखकों का अफसर। ३ छोटे कर्मचारियों और दैनिक उपयोग की सामग्रियों की देखभाल और नियंत्रण करनेवाला अफसर (कचहरियों में)। ४. ख्वाजा। महलसरा। ५. वेश्याओं का दलाल।

नाजिल—वि० [अ०] ऊपर से उतरनेवाला।

नाजी—संज्ञा पुं० [जर्मन] १ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८) के बाद प्रचलित जर्मनी का वह राजनीतिक दल जिसने हिटलर के नेतृत्व में सन् १९३९ में विश्व भर में जर्मन प्रभुत्व की स्थापना के लिये द्वितीय महायुद्ध छेड़ा और उसके अंत में १९४५ में स्वयं भी विच्छिन्न हो गया। २. इस दल का सदस्य।

नाजुक—वि० [फा०] १. कोमल। सुकुमार। २ पतला। महीन। बारीक। ३. सूक्ष्म। गूढ़। ४ जरा से झटके या धक्के से टूटफूट जानेवाला। कमजोर।

यौ०—नाजुक मिजाज=जो थोड़ा सा कष्ट भी न सह सके।

५ जिसमें हानि या अनिष्ट की आशंका हो। जोखों का।

नाजो—वि० स्त्री० [हिं० नाज] १ दुलारी। २. प्रियतमा। ३. नाजनी।

नाञोⓟ—संज्ञा पुं० दे० "नाम"। उ०—भोगाइ राजा क वड्डि नाओ।

नाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच। २ नकल। स्वाँग। उ०—कान्ह कान्ह कै टेरत तब धौं अब कैसे जिय मानत। यह ब्योहार आजु लौं है ब्रज कपट नाट छल ठानत। —सूर०। ३ एक देश जो कर्नाटक के पास था। ४ यहाँ का निवासी।

नाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १. रंगशाला में अभिनेताओं के द्वारा आकृति, हावभाव, वेश और वचन आदि के अनुकरण द्वारा किसी के जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। २ वह ग्रंथ जिसमें कोई कथानक या चरित्र इस प्रकार दिखाया गया हो। दृश्य काव्य। ड्रामा (अँ०)। रूपक के दस शास्त्रीय भेदों में से एक। २ दिखावटी कार्य। आडंबर।

नाटककार—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक का रचयिता।

नाटकशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो।

नाटकावतार—संज्ञा पुं० [सं०] किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय। 'उत्तररामचरित' में इस प्रकार का अभिनय दिखाया गया है।

नाटकिया, नाटकी—वि० [हिं० नाटक] नाटक का अभिनय करनेवाला।

नाटकीय—वि० [सं०] नाटक संबंधी।

नाटना—क्रि० अ० [सं० नाट्य=वहाना] प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना। निकल जाना। हट जाना।

क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना। उ०—जो कोउ धरी धरोहरि नाटै। अरु पच्छिन के पर जो काटै।—विश्रामसागर।

नाटा—वि० [सं० नत=नीचा] [स्त्री० नाटी] जिसका डील ऊँचा न हो। छोटे कद का।

संज्ञा पुं० [स्त्री० नाटी] छोटे डील की गाय या बैल। उ०—सिगरोइ दूध पियो मेरे मोहन बलिहि देहु नहिं बाँटी। सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहो लाल की नाटी।—सूर०।

नाटिक—संज्ञा पुं० [सं० नर्तक] नर्तक। नाचनेवाला। उ०—कहै कबीर नट नाटिक थाके, मदला कौन बजावै। गए पषनियाँ उफरी बाजी, को काहू के आवै।—कबीर०।

नाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमें चार अंक होते हैं। इसकी कथा कल्पित होती है तथा स्त्री पात्र अधिक होते हैं।

नाट्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नटों का काम। नृत्य, गीत और वाद्य। २ स्वाँग के द्वारा चरित्रप्रदर्शन। अभिनय। ३ स्वाँग।

नाट्यकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक करनेवाला। नट। २ नाटक लिखनेवाला।

नाट्यमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] नाट्यशाला।

नाट्यरासक—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही अंक का एक प्रकार का उपरूपक दृश्य-काव्य।

नाट्यशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अभिनय किया जाय।

नाट्यशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २. भरत मुनि कृत इस विद्या का एक प्राचीन ग्रंथ।

नाट्यालंकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह विशेष अलंकार जिसके आने से नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता।

नाट्योक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे विशेष विशेष संबोधन शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिये नाटकों में आते हैं, जैसे—ब्राह्मण के लिये आर्य।

नाठ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नष्ट] १. नाश। ध्वंस। २. अभाव। अनस्तित्व। ३. वह जायदाद जिसका कोई वारिस न हो।

मुहा०—नाठ पर बैठना=किसी लावारिस माल का अधिकारी होना।

नाठना(पु)—क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना। ध्वस्त करना।

क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना। उ०—मुनि अति विकल मोह मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी।—मानस।

क्रि अ० [हिं० नाटना] भागना। हटना। उ०—कोटि पापी इक पासंग मेरे अजामिल कौन बेचारो। नाठ्यो धर्म नाम सुनि मेरो नरक दियो हठि तारो।—सूर०।

नाठा—संज्ञा पुं० [सं० नष्ट] वह जिसका कोई वारिस न हो। लावारिस।

नाड़—संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] ग्रीवा। गर्दन।

नाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० नाडी] १ सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा और पुरुष पैजामा आदि बाँधते हैं। इजारबंद। नीवी। २ लाल या पीला रँगा हुआ गंडेदार सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।

नाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नली। २ साधारणतः शरीर के भीतर की वे नालियाँ जिनमें होकर रक्त बहता है। धमनी।

मुहा०—नाड़ी चलना=कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना। नाड़ी छूट जाना=(१) नाड़ी का न चलना। (२) प्राण न रह जाना। मृत्यु हो जाना। (३) मूर्च्छा आना। बेहोशी आना। नाड़ी देखना=कलाई की नाड़ी दबाकर रोगी की अवस्था का पता लगाना।

३. हठयोग के अनुसार ज्ञानग्राहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वास-वाहिनी नालियाँ। ४ व्रणरंध्र। नासूर का छेद। ५ बंदूक की नली। ६. काल का एक मान जो छ क्षण या आधे मुहूर्त का होता है।

नाड़ीचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] नाभिदेश में स्थित वह अंडाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ शरीर भर में फैली हैं (हठयोग)।

नाड़ीमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवत रेखा।

नाड़ीवलय—संज्ञा पुं० [सं०] काल वा समय निश्चित करने का एक यंत्र।

नाता—संज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति] १. नातेदार। संबंधी। २. नाता। संबंध।

नातरफदार—वि० [हिं० ना+फा० तरफदार] [भाव० नातरफदारी] जो किसी एक पक्ष की तरफ न हो। तटस्थ।

नातरु(पु)—अव्य० [हिं० न+तो+अरु] और नहीं तो। अन्यथा। उ०—कोऊ खवावै तौ कछु खाहीं। नातरु बैठे ही रहि जाहीं।—सूर०।

नातवाँ—वि० [फा०] [संज्ञा नातवानी] कमजोर। दुर्बल।

नाता—संज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति] १ दो या कई मनुष्यों के बीच वह लगाव जो एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होता है। ज्ञाति संबंध। रिश्ता। २ संबंध। लगाव। उ०—सूरदास सिय राम लखन बन कहा अवध सों नाता।—सूर०।

नाताकत—वि० [फा० ना+अ० ताकत] जिसे ताकत या बल न हो। निर्बल। कमजोर।

नाती—संज्ञा पुं० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी, नातिन] लड़की या लड़के का लड़का। बेटी या बेटे का बेटा।

नाते—क्रि० वि० [हिं० नाता] १ संबंध से। २ हेतु। वास्ते। लिये। उ०—दूध दही के नाते बनवत बातें बहुत गोपाल। गदि गदि छीलत कहा रावरे लूटत हौ ब्रजबाल।—सूर०।

नातेदार—वि० [हिं० नाता+फा० दार] [संज्ञा नातेदारी] संबंधी। रिश्तेदार। सगा।

नात्सी—संज्ञा पुं० दे० "नाजी"।

नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रभु। स्वामी। अधिपति। मालिक। २ पति। ३ वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश में करने के लिये डाल देते हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] १. नाथने की क्रिया या भाव। २ जानवरों की नकेल।

नाथद्वारा—संज्ञा पुं० [सं० नाथद्वार] उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का वह प्रसिद्ध स्थान जहाँ औरंगजेब बादशाह के मंदिर और मूर्ति तोड़ने के लिये पहुँचने पर मथुरा से हटाकर श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित की गई है।

नाथना—क्रि० स० [हिं० नाथ] १ बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें इसलिये

रस्सी डालना जिसमें वे वश में रहें। नकेल डालना। उ०—काली नाग नाथि हरि लाए सुरभी ग्वाल जिवाए।—सूर०। २. किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३ नत्थी करना। ४ लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश का गुण। निर्गुण ब्रह्म का आकाशगत सर्वप्रथम सगुण रूप (दर्शन)। २. शब्द-ब्रह्म। ३ ध्वनि। आवाज। ४ वर्णों का अव्यक्त रूप। अर्धमात्रा। परा। ५ वर्णों के स्पष्ट उच्चारण के आभ्यतर और बाह्य प्रयत्नों में दूसरा जिसमें कंठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर और न संकुचित करके वायु निकालनी पड़ती है। ६. अर्ध मंडलाकार सानुनासिक स्वर जिसका योगियों के विभिन्न प्रतीकों में प्रयोग होता है (योग), (संगीत)।

यौ०—नादविद्या = संगीत शास्त्र।

नादनाⓅ—क्रि० स० [सं० नदन] बजाना।

क्रि० अ० १. बजना। शब्द करना। २. चिल्लाना। गरजना।

क्रि० अ० [सं० नदन] लहकना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना।

नादर—संज्ञा पुं० [सं० न+आदर] अनादर। उ०—किलकिंचित बहु भाव छिए अंगनि मोट्टाइत। केलिकलह कुट्टमित कपट-नादर बिबोक चित।—रससाराश।

नादली—संज्ञा स्त्री० [अ० नाद+अली] १ संग यशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिसे हृदय की रोगबाधा दूर करने के लिये यंत्र की तरह पहनते हैं। २ ।हौलदिली।

नादान—वि० [फा०] [संज्ञा नादानी] नासमझ। अनजान। मूर्ख।

नादार—वि० [फा०] [संज्ञा नादारी] निर्धन।

नादित—वि० [सं०] जिसमें नाद या शब्द होता हो। शब्दित।

नादिम—वि० [अ०] लज्जित।

नादिया—संज्ञा पुं० [सं० नंदी] १ नंदी। २ वह बैल जिसे लेकर जोगी भीख माँगते हैं।

नादिर—वि० [फा०] अद्भुत। अनोखा।

नादिरशाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] फारस का क्रूर और प्रतापी बादशाह जिसने सन् १७३९ ई० में मुहम्मदशाह बादशाह के शासनकाल में दिल्ली को बुरी तरह लूटा पाटा और नगरवासियों की हत्या कराई।

नादिरशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नादिरशाह के अत्याचारों के ढग का अत्याचार या ज्यादती। भारी अंधेर या अत्याचार। २. मनमाना जुल्म।

वि० बहुत कठोर और उग्र।

नादिहंद—वि० [फा०] न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो। जो ऋण न चुका सके।

नादी—वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १ शब्द करनेवाला। २ बजनेवाला।

नाधना—क्रि० स० [सं० नद्ध] १ रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल, घोड़े आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना होता है। जोतना। २ जोड़ना। सबद्ध करना। ३ गूँथना। गुहना। ४ आरभ करना। ठानना। उ०—मेरी कही न मानत राधे। ये अपनी मति समुझत नाहीं कुमति कहा पन नाधे।—सूर०। ५ अरुचिकर काम में लगाना। ६ कठिन परिश्रम में लगाए रहना।

नानक—संज्ञा पुं० वर्तमान पश्चिमी पजाब (पाकिस्तान) के लाहौर नगर के पास नानकाना साहब नामक स्थान में सन् १४६९ ई० में पैदा हुए एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख सप्रदाय के आदिगुरु थे।

नानकपथी—संज्ञा पुं० [हिं० नानक+पथ] गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

नानकशाही—वि० [हिं० नानकशाह] १. गुरु नानक से सबध रखनेवाला। २ नानकशाह का शिष्य या अनुयायी। सिख।

नानकीन—संज्ञा पुं० [चीनी नानकिङ] एक प्रकार का सूती कपड़ा।

नानखताई—संज्ञा स्त्री० [फा०] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

नानबाई—संज्ञा पुं० [फा० नानबा, नानवाफ] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।

नाना—वि० [सं०] १ अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। २ अनेक। बहुत।

संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता। मातामह।

†क्रि० स० [सं० नमन] १ झुकाना। नम्र करना। २ नीचा करना। ३ डालना। ४ घुसाना। प्रविष्ट करना।

संज्ञा पुं० [अ०] पुदीना।

यौ०—अर्क नाना = सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क।

नानिहाल—संज्ञा पुं० [हिं० नानी+आल (आलय)] नाना नानी का स्थान या घर।

नानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।

मुहा०—नानी याद आना या मर जाना = संकट या विपत्ति से बुरी तरह घबरा जाना। होश उड़ना।

नानुकर—संज्ञा पुं० [हिं० न+न+करना] नाहीं। इनकार।

नान्ह—वि० [सं० न्यंच] १. छोटा। लघु। २. नीच। क्षुद्र। ३. पतला। महीन। उ०—अपजस जोग कि जानकी मनिचोरी की कान्ह ? तुलसी लोग रिझाइबो करषि कातिबो नान्ह।—दोहा०।

मुहा०—नान्ह कातना = (१) बहुत बारीक काम करना (२) कठिन या दुष्कर कार्य करना।

नान्हा†Ⓟ संज्ञा पुं० दे० "नानक"।

नान्हरिया†Ⓟ—वि० [हिं० नान्ह] छोटा। नन्हा। उ०—मेरो नान्हरिया गोपाल बेगि बड़ो किन होहि। यहि मुख मधुरे बयन हँसि कबहूँ जननि कहोगे मोहि।—सूर०।

नान्हा†Ⓟ—वि० दे० "नन्हा"।

नाप—संज्ञा स्त्री० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि जिसका निश्चय किसी निर्दिष्ट लबाई के साथ मिलाने से किया जाय। परिमाण। माप। २ किसी वस्तु की लबाई, चौड़ाई आदि कितनी है,इसको ठीक ठीक स्थिर करने के लिये की जानेवाली क्रिया। नापने का काम। ३ वह निर्दिष्ट लबाई या वजन जिसे एक मानकर किसी वस्तु का विस्तार या वजन कितना है, यह स्थिर किया जाता है। मान। ४. नापने की वस्तु।

नापजोख, नापतौल—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप+जोख या तौलने की क्रिया] १. परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय।

नापना—क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई कितनी, गहराई या वजन क्या है, यह निश्चित करना। मापना।

मुहा०—सिर नापना = सिर काटना। २ कोई वस्तु कितनी है इसका पता लगाना; जैसे—दूध नापना, शराब नापना।

नापसंद—वि० [फा०] १. जो पसद न हो। जो अच्छा न लगे। २. अप्रिय।

नापाक—वि० [फा०] [संज्ञा नापाकी] १. अशुद्ध। अपवित्र। २. मैला कुचैला।

नापायदार—वि० [फा०] [संज्ञा नापायदारी] जो मजबूत या टिकाऊ न हो। कमजोर।

नापास—वि० [हिं० ना+अं० पास] जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण। असफल।

नापित—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सिर के बाल मूँड़ने या काटने आदि का काम करता हो। नाई। नाऊ। हज्जाम।

नापैद—वि० [फा० ना+पैदा] १. जो पैदा न हुआ हो। २. विनष्ट। ३. अप्राप्य।

नाफा—संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान—संज्ञा पुं० [फा० नाव=नाली+दान=पात्र] वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है। पनाला। नरदा

नाबालिग—वि० [ना+अ० बालिग] [संज्ञा नाबालिगी] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्राप्तवयस्क। कम उम्र।

नाबूद—वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।

नाभ—संज्ञा स्त्री० [सं० नाभि] १. नाभि। ढोंढी। धुन्नी। २ शिव का एक नाम। ३. एक सूर्यवंशी राजा जो भगीरथ के पुत्र थे (भागवत)। ४. अस्त्रों का एक संहार।

नाभा—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम नारायणदास था। कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण भारत में उत्पन्न हुए थे। ये जन्मांध कहे जाते हैं। अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था। नाभादास।

नाभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनु वैवस्वत के बेटे (महाभारत) और हरिवंश और अंबरीश के पिता (हरिवंश)। २ वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। ३. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कारूप वंश के एक राजा।

नाभि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पहिए का मध्य भाग। नाह। २. जरायुज जीवों के बीचोबीच वह भाग जिससे (मनुष्यों में जन्म के बाद काटा जानेवाला) जरायुनाल जुड़ा रहता है। ढोंढी। धुन्नी। तुन्नी। सुंदी। ३ कस्तूरी।

संज्ञा पुं० १. प्रधान राजा। २. प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३. गोत्र। ४ क्षत्रिय।

नामंजूर—वि० [फा० ना+अ० मंजूर] [संज्ञा नामंजूरी] जो मंजूर न हो। जो माना न गया हो। अस्वीकृत। अग्राह्य।

नाम—संज्ञा पुं० [सं० नामन्] [वि० नामी] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो। संज्ञा। आख्या। अभिधान।

मुहा०—नाम उछालना=बदनामी कराना। चारों ओर निंदा कराना। नाम उठ जाना=चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। (किसी बात का) नाम करना=कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिये थोड़ा सा करना। नाम का=(१) नामधारी। (२) कहने सुनने भर को, काम के लिये नहीं। नाम के लिये या नाम को=(१) कहने सुनने भर के लिये। थोड़ा सा। (२) काम के लिये नहीं। नाम चढ़ना=किसी नामावली में नाम लिखा जाना। नाम चलना=(१) लोगों में नाम का स्मरण बना रहना। यादगार बनी रहना। (२) वंश का क्रम चलता रहना। नाम जपना=(१) बारबार नाम लेना। (२) ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (किसी का) नाम धरना=(१) बदनाम करना। दोष लगाना। दोष निकालना। ऐब बताना। नाम धराना=(१) नामकरण कराना। (२) बदनामी कराना। निंदा कराना। नाम न लेना=दूर रहना। बचना। नाम निकल जाना=किसी बात के लिये मशहूर या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर=किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। किसी के नाम पड़ना=किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के) नाम पर मरना या मिटना=किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में खपना। (किसी के) नाम पर बैठना=किसी के भरोसे संतोष करके निष्क्रिय रहना। (किसी का) नाम बद करना=बदनामी करना। कलंक लगाना। नाम बाकी रहना=(१) मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। (२) केवल नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। नाम बिकना=नाम मशहूर होने से कदर होना। नाम मिटना=(१) नाम न रहना। स्मारक या कीर्ति का लोप होना। (२) नाम तक शेष न रहना। एकदम अभाव हो जाना। नाम मात्र=नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (कोई) नाम रखना=नाम निश्चित करना। नामकरण करना। नाम रहना=प्रतिष्ठा या सम्मान बना रहना। मर्यादा न मिटना। नाम लगाना=किसी दोष या अपराध के सबब में नाम लेना। दोष मढ़ना। अपराध लगाना। (किसी के) नाम लिखना=किसी के जिम्मे देय स्वरूप में लिखना या टाँकना। (किसी का) नाम लेकर=(१) किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके। नाम के प्रभाव से। (२) (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके। नाम लेना=(१) नाम का उच्चारण करना। नाम कहना। (२) नाम जपना। नाम स्मरण करना। (३) गुण गाना। प्रशंसा करना। (४) चर्चा करना। जिक्र करना। नाम व निशान=पता। खोज। (किसी) नाम से=शब्द द्वारा निर्दिष्ट होकर या करके। (किसी के) नाम से=(१) चर्चा से। जिक्र से। (२) (किसी का) संबंध बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। (३) (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिये। नाम से काँपना=नाम सुनते ही डर जाना। बहुत भय मानना। नाम होना=(१) दोष मढ़ा जाना। कलंक लगना। (२) नाम प्रसिद्ध होना।

२ प्रसिद्धि। ख्याति। यश। कीर्ति।

मुहा०—नाम कमाना या करना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम को मरना=सुयश के लिये अथक प्रयत्न करना। नाम जगाना=उज्ज्वल कीर्ति फैलाना। नाम डुबाना=यश और कीर्ति का नाश करना। नाम डूबना=यश और कीर्ति का नाश होना। नाम पर धब्बा लगाना=यश पर लांछन लगाना। बदनामी करना। नाम पाना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम रह जाना=कीर्ति की चर्चा रहना। यश बना रहना।

नामक—वि० [सं० नामिक] नाम से प्रसिद्धि। नाम धारण करनेवाला। नाम वाला।

नामकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम रखने का काम। २ हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

नामकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] नामकरण।

नामकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नामजद—वि० [फ़ा०] १ जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

नामजदगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी काम या चुनाव आदि में किसी का नाम निश्चित किया जाना (अँ० नामिनेशन)।

नामदार—वि० दे० "नामवर"।

नामदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसिद्ध कृष्णभक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है। ये वामदेव जी के नाती (दौहित्र) थे। २ महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

नामधराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाम+धराना] बदनामी। निंदा। अपकीर्ति।

नामधाम—संज्ञा पुं० [हिं० नाम+धाम] नाम और पता। पता ठिकाना।

नामधारी—वि० [सं०] नामक। नामवाला। नाम का।

नामधेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाम। निदर्शक शब्द। २ नामकरण।

वि० नामवाला। नाम का।

नामनिशान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] चिह्न। पता।

नामपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह पट्ट जिसपर किसी व्यक्ति या संस्था आदि का नाम लिखा हो। (अँ०) साइनबोर्ड।

नामबोला—संज्ञा पुं० [हिं० नाम+बोलना] भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

नामर्द—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नामर्दी] १ नपुंसक। क्लीव। २ डरपोक। कायर।

नामलेवा—संज्ञा पुं० [हिं० नाम+लेना] १ नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २ उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।

नामवर—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नामवरी] जिसका बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

नामशेष—वि० [सं०] १ जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। गत। मरा हुआ।

नामांकित—वि० [सं०] जिसपर नाम लिखा या खुदा हो।

नामांतर—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

नामाकूल—वि० [फ़ा० ना+अ० माकूल] १. अयोग्य। नालायक। २ अयुक्त। अनुचित।

नामालुम—वि० [फ़ा०+अ०] १ बिना जाना हुआ। अज्ञात। २. अपरिचित। ३. अप्रसिद्ध।

नामावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामों की पंक्ति। नामों की सूची। २. वह कपड़ा जिसपर चारों ओर भगवान या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी।

नामी—वि० [हिं० नाम+ई (प्रत्य०) अथवा सं० नामिन्] १. नामधारी। नामवाला। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

नामुनासिब—वि० [फ़ा० ना+फ़ा० मुनासिब] अनुचित।

नामुमकिन—वि० [फ़ा० ना+अ० मुमकिन] असंभव।

नामूसी—संज्ञा स्त्री० [अ० नामूस=इज्जत] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।

नाम्ना—वि० [सं०] [स्त्री० नाम्नी] नाम से। नामवाला।

नायँⓅ—संज्ञा पुं० दे० "नाम"। अव्य० दे० "नहीं"।

नायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १ लोगों को अपने कहे पर चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। सरदार। २ अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ पुरुष। जननायक। ४ (अलंकार शास्त्र) काव्य या नाट्य के किसी रस का पुरुष आलंबन या साधक। वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य, उपन्यास, कथा, आख्यायिका या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। ५. संगीत कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६ एक सगण और दो अंत्यलघु का एक वर्णवृत्त। उ०—तुलसी चल। यमुना थल। जहँ गायक। यदुनायक।

नायका—संज्ञा स्त्री० [सं० नायिका] Ⓟ १ दे० "नायिका"। २ वेश्या की माँ। ३. कुटनी। दूती।

नायन—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।

नायब—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीब। मुख्तार। २ सहायक। सहकारी।

नायाब—वि० [फ़ा०] १. जो जल्दी न मिले। अप्राप्य। २. बहुत बढ़िया।

नायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. (अलंकार शास्त्र) शृंगार रस का स्त्री आलंबन या साधिका। वह स्त्री जिसका चरित्र किसी काव्य, उपन्यास, कथा, आख्यायिका या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। रूप गुणवती सुरीला स्त्री।

नारंग—संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।

नारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० नारंग, अ० नारंज] १. नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। पीलापन लिए हुए लाल रंग।

वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।

नार—संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा।

मुहा०—नार नवाना या नीचा करना=(१) गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। (२) लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना। उ०—समुझि निज अपराध करनी नार नावति नीचि। बहुत दिन तें बरति हैं कै आँखि दीजै सींचि।—सूर०।

२. जुलाहों की ढरकी। नाल।

†संज्ञा पुं० १ आँवल नाल। दे० "नाल"। २ नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४ सूत की वह डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५ जुआ जोड़ने की रस्सी या तस्मा।

‡संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारकी—वि० [सं० नारकिन्] नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी। उ०—पाव नारकी हरिपदु जैसें। इन्हकर दरसनु हम कहँ तैसें।—मानस।

नारद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋग्वेद के अनुसार कण्व या कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। २ एक देवर्षि जो बहुधा पर्वत के साथ रखे गए हैं और देवताओं और मनुष्यों के बीच दूत के रूप में माने गए हैं (महाभारत)। ३ एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र कहे जाते और १० प्रजापतियों में गिने जाते हैं (मनुस्मृति)। ये बहुत बड़े हरिभक्त प्रसिद्ध हैं। लोक में नारद को कलहप्रिय और झगड़ा करानेवाला भी माना जाता है। प्रबंधकाव्यों में नारद को देवगंधर्व, गंधर्वराज या केवल गंधर्व लिखा गया है। सत्ययुग से लेकर द्वापर तक नारद की बराबर चर्चा देखकर आजकल के विद्वानों का मत है कि नारद किसी एक व्यक्ति का नाम न होकर

किसी वंश, गुरुपरंपरा या साधुओं के सम्प्रदाय का नाम रहा होगा। नारद का बनाया भक्तिसूत्र भक्ति का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। ये वीणा के आविष्कारक माने जाते हैं। २ विश्वामित्र के एक पुत्र। ३. एक प्रजापति। ४. झगड़ा करानेवाला आदमी।

नारदपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अठारह महापुराणों में से एक। इसमें तीर्थों और व्रतों का माहात्म्य है। २ बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण।

नारदी—संज्ञा स्त्री० [सं० नारद+ई (प्रत्य०)] धूर्तता। चालाकी। चालबाजी। उ०—मोरेहु मन अस आव मिलिहि वर बाउर"। लखि नारद-नारदी उमहिं सुख भा उर।—पा० मं०।

नारदीय—वि० [सं०] नारद संबंधी। नारद का।

नारना—क्रि० स [सं० ज्ञान] थाह लगाना। भाँपना। ताड़ना। उ०—मोहू ते ये चतुर कहावति ये मन ही मन मोको नारति। ऐसे वचन कहेंगी इनपै चतुराई इनकी मैं झारति।—सूर०।

नारवेवार—संज्ञा पुं० [हिं० नार+सं० विवार=फैलाव] नाल और खेड़ी आदि। नारापोटी।

नारसिंह—संज्ञा पुं० [सं०] १ नरसिंह रूपधारी विष्णु। २. एक तंत्र का नाम।

वि० ३ एक उपपुराण।

वि० नृसिंह संबंधी।

नारा—संज्ञा पुं० [सं० नाल] १. इजारबंद। नीबी। दे० "नाड़ा"। २ लाल रँगा सूत जो पूजन में देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुम सूत्र। ३ हलके जुए में बँधी हुई रस्सी। ४ दे० "नाला"।

संज्ञा पुं० [अ० नअ्‌र.] बँधा बँधाया शब्द या शब्दसमूह जो लोगों को प्रेरित या उत्तेजित करने के लिये जोर जोर से दोहराया जाता है, जैसे—इनकलाब जिंदाबाद या हर हर महादेव।

नाराच—संज्ञा पुं० [सं०] १. लोहे का बाण। २. दुर्दिन। ऐसा दिन जिसमें बादल घिरा हो, अंधड़ चले तथा इसी प्रकार के और उपद्रव हों। ३ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक लघु और एक गुरु के क्रम से कुल २४ मात्राएँ होती हैं। इसे पंचचामर, नाराच और नागराज भी कहते हैं। उ०—जु रोज रोज गोपतीय कृष्ण संग धावतीं। सुगीत नाथ पावँ सों लगाय चित्त गावतीं। २४ मात्राओं का मात्रिक छंद भी माना जाता है। ४ प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और चार रगण का एक वर्णवृत्त। उ०—न नर चतुर भूल तू, ध्याय ले केशवै निर्भरा। भजत जिनहिं शंकर इंद्र, ब्रह्मादि हू निर्जरा। इसे महामालिका छंद भी कहते हैं।

नाराज—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नाराजगी, नाराजी] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नारायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भगवान् का क्षीरसागर में शेषनाग पर सोया हुआ रूप। विष्णु। २ मनुस्मृति के अनुसार सृष्टि के पहले का ईश्वर का स्वरूप जिससे ब्रह्मा और उनकी सारी रचना विकसित हुई। पूस का महीना। ३ 'अ' अक्षर का नाम। ४. कृष्ण यजुर्वेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५ एक अस्त्र।

नारायणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। लक्ष्मी। ३ गंगा। ४ श्रीकृष्ण की सेना का नाम जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था।

नारायणीय—वि० [सं०] नारायण संबंधी।

नाराशंस—वि० [सं०] जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो। स्तुति संबंधी।

संज्ञा पुं० १ वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा है। प्रशस्ति। २. वह चमचा जिसमें पितरों को सोमपान दिया जाता है। ३. पितर।

नाराशंसी—संज्ञा स्त्री० दे० "नाराशंस"।

नारि—संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारिकेल—संज्ञा पुं० [सं०] नारियल।

नारिदानⓅ—संज्ञा पुं० दे० "नाबदान"।

नारियल—संज्ञा पुं० [सं० नारिकेल] १ खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के ऊपर काठ की तरह एक बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है जिसके भीतर पानी और सफेद गिरी होती है जो खाने में मीठी होती है और मिठाई आदि बनाने और तेल निकालने के काम आती है। २ नारियल का हुक्का।

नारियली—संज्ञा स्त्री० [हिं० नारियल] १ नारियल का खोपड़ा। २ नारियल का हुक्का।

नारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। औरत। २ तीन गुरु वर्णों का एक वर्णवृत्त। उ०—माधो ने, दी तारी। गोपों की, है नारी॥ इसे तारी या ताली छंद भी कहते हैं।

Ⓟसंज्ञा स्त्री० १. दे० "नाड़ी"। २ दे० "नाली"।

नारीत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्रीत्व। औरतपन।

नारू—संज्ञा पुं० [देश०] १. जूँ। ढील। २ नहरुआ नामक रोग।

नालंद—संज्ञा पुं० बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्खिन था। यहाँ दूर दूर से विद्यार्थी पढ़ने के लिये आते थे।

नाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। डाँड़ी। उ०—कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं।—मानस। २ पौधे का डंठल। कांड। ३ गेहूँ, जौ आदि की वह पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४ नली। नल। ५ बंदूक की नली। ६. सुनारों की फुँकनी। ७ जुलाहों की नली। छूँछा।

संज्ञा पुं० १ रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। आँवलनाल। उल्वनाल। नारा। २ लिंग। ३ हरताल। ४ जल बहने का स्थान।

संज्ञा पुं० [अ०] १ लोहे का वह अर्द्धचंद्राकार खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एँड़ी के नीचे रगड़ से बचाने के लिये जड़ते हैं। २ तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढ़ी होती है। ३ कुँडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचोबीच पकड़कर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। इसे अभ्यास के लिये कसरत करनेवाले उठाते हैं। ३ लकड़ी का वह चक्कर जिसे नीचे डालकर कूएँ की जुड़ाई की जाती है। ५ वह रुपया जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है।

नालकटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाल+कटाई] तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम या उसकी मजदूरी।

नालकी—संज्ञा स्त्री० [सं० नाल=डंडा] इधर उधर से खुली पालकी जिसपर एक मिहराबदार छाजन होती है।

नालबंद—संज्ञा पुं० [अ० नाल+फा० बंद] जूते की एँड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला ।
विo—जिसमें नाल बँधी हो । नाल-युक्त ।
नाला—संज्ञा पुं० [सं० नार] [स्त्री० अल्पा० नाली] १ बरसाती पानी बहने का दूर-तक गया हुआ गहरा और कम चौड़ा प्राकृतिक रास्ता । जलप्रणाली । २ उक्त मार्ग से बहता हुआ जल । जल-प्रवाह । ३. दे० "नाड़ी" ।
नालायक—वि० [फा०+अ०] [संज्ञा नालायकी] अयोग्य । निकम्मा । मूर्ख ।
नालि(पु)—अव्य० [देश० ? मि० प० नाल] साथ । उ०—विरहिणी थी तौ क्यूँ रही जली न पिव के नालि । —कबीर० ।
नालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी नाल या डंठल । २ नाली । ३ एक प्रकार का गंधद्रव्य ।
नालिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के द्वारा पहुँचे हुए नुकसान या कष्ट का न्याया-लय में या ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो । अभि-योग । फरियाद ।
नाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाला] १ जल बहने का पतला मार्ग । जलप्रवाह । २. गलीज आदि बहने का मार्ग । मोरी । ३ कोई गहरी लकीर । ४ घोड़े की पीठ का गड्ढा । ५ बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा । ढरका ।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाड़ी । धमनी । रक्त आदि बहने की नली । २ करेमू का साग । ३ घड़ी । ४ कमल ।
नावँ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।
नाव—संज्ञा स्त्री० [सं० नौ के नाव रूप से] लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर चलनेवाली सवारी । नौका । किश्ती ।
नावक—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का छोटा बाण । २ मधुमक्खी का डंक ।
संज्ञा पुं० [सं० नाविक] केवट । मल्लाह ।
नावना†—क्रि० स० [सं० नामन] १. झुकाना । नवाना । २ डालना । फेंकना । गिराना । उ०—माखन तनक आपने कर ले तनक मदन मैं नावत । —सूर० । ३ प्रविष्ट करना । घुसाना ।
नावर, नावरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] १ नाव । नौका । २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं । उ०—बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं । —मानस ।
नावाकिफ—वि० [फा० ना+अ० वाकिफ] अपरिचित । अनजान ।
नाविक—संज्ञा पुं० [सं०] मल्लाह । केवट ।
नाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ न रह जाना । लोप । ध्वंस । बरबादी । २ गायब होना ।
नाशक—वि० [सं०] १. नाश करनेवाला । ध्वंस करनेवाला २. मारनेवाला । वध करनेवाला । ३. दूर करनेवाला ।
नाशकारी—वि० [सं० नाशकारिन्] नाशक । विनाशक ।
नाशन—संज्ञा पुं० [सं०] नाश करना ।
वि० [स्त्री० नाशिनी] नाश करने-वाला ।
नाशना(पु)—क्रि० स० दे० "नासना" ।
नाशपाती—संज्ञा स्त्री० [तु०] मझोले डीलडौल का एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं ।
नाशमय—वि० [सं० नाश+मय] [स्त्री० नाशमयी] नश्वर । नाशवान् ।
नाशवान्—वि० [सं०] नश्वर । अनित्य । मिटनेवाला ।
नाशी—वि० [सं० नाशिन्] [स्त्री० नाशिनी] १ नाश करनेवाला । नाशक । २ नश्वर ।
नाश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] जलपान ।
नास—संज्ञा स्त्री० [सं० नासा] १. वह औषध जो नाक से सूँघी जाय । २. सुँघनी ।
नासदान—संज्ञा पुं० [हिं० नास+दान (सं० आधान)] सुँघनी रखने की डिबिया ।
नासना(पु)—क्रि० स० [सं० नाशन] १ नष्ट करना । बरबाद करना । २ मार डालना ।
नासमझ—वि० [हिं० ना+समझ] [संज्ञा नासमझी] जिसे समझ न हो । निर्बुद्धि । बेवकूफ ।
नासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० नास्य] १ नासिका । नाक । उ०—नासा मोरि, नचाइजे करी कका की सौंह । काँटे सी कसकै ति हिय गड़ी कँटीली भौंह । —बिहारी० । २ नाक का छेद । नथना ।
नासापुट—संज्ञा पुं० [सं०] नथना ।
नासिक—संज्ञा पुं० [सं०] महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है ।
संज्ञा स्त्री० [सं० नासिका] नाक । उ०—नासिक सुभग कृपा परिपूरन, तरुन अरुन राजीव विलोचन । —गीता० ।
नासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाक । नासा ।
नासी(पु)—वि० दे० "नाशी" ।
नासीर—संज्ञा पुं० [अ०] सेना का अग्रभाग ।
नासूर—संज्ञा पुं० [अ०] घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ वह छेद जिससे बहुत दिनों तक बराबर मवाद निकला करता है और घाव जल्दी भर नहीं पाता । नाड़ीव्रण ।
नास्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने ।
नास्तिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नास्तिक होने का भाव । ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि ।
नास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं० न+अस्ति+वाद] नास्तिकों का तर्क या मत ।
नास्य—वि० [सं०] नाक संबंधी ।
संज्ञा नासिका ।
नाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नाथ" । उ०—वीर पुरुस कइ जम्मिअइ नाह न जपइ नाम ।
नाहक—क्रि० वि० [फा० ना+अ० हक] वृथा । व्यर्थ । बेफायदा । बेमतलब ।
नाह नूह(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० ना+नाहीं] नहीं नहीं शब्द । इनकार ।
नाहर—संज्ञा पुं० [सं० नखरायुध] १. सिंह । शेर । २ बाघ । उ०—उर नाहर के नख संजुत चारु मयूरसिखानि के हार लसैं । —रससाराश ।
संज्ञा पुं० दे० टेसू का फूल ।
नाहरू—संज्ञा पुं० [देश०] नारू नाम का रोग । नहरुवा ।
संज्ञा पुं० दे० "नाहर" ।
नाहिनै(पु)—वाक्य [हिं० नाहीं] नहीं है ।
नाहीं—अव्य० दे० "नहीं" ।
नाहु—संज्ञा पुं० दे० "नाथ" । उ०—तू जस चाँद सुरुज तोर नाहु । —पद्मावत ।
निंद(पु)—क्रि० वि० दे० "नित्य" ।
निंद(पु)—वि० दे० "निंद्य" ।
निंदक—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा करनेवाला । उ०—सिय निंदक अघ ओघ नसाए । लोक विसोक बनाइ बसाए । —मानस ।

निंदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य] निंदा करने का काम।
निंदनाⓅ—क्रि० स० [सं० निंदन] निंदा करना। बदनाम करना। उ०—हरि सबके मन यह उपजाई। सुरपति निंदत गिरिहिं बड़ाई।—सूर०।
निंदनीय—वि० [सं०] १ निंदा करने योग्य। २. बुरा। गर्ह्य।
निंदरना—क्रि० स० दे० "निंदना"।
निंदरियाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० निद्रा] नींद। निद्रा। उ०—मेरे लाल को आवै निंदरिया काहे न आय सुआवै।—सूर०।
निंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन। बुराई का वर्णन। अपवाद। २ अपकीर्ति। बदनामी। कुख्याति।
निंदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० निराई] निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
निंदासा—वि० [हिं० नींद+आसा (प्रत्य०)] जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।
निंदास्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा के बहाने स्तुति। व्याजस्तुति।
निंदित—वि० [सं०] [स्त्री० निंदिता] जिसकी लोग निंदा करते हों। दूषित। बुरा।
निंदिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० नींद] नींद।
निंद्य—वि० [सं०] १ निंदा करने योग्य। निंदनीय। २ दूषित। बुरा।
निंब—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीम का पेड़।
निंबकौरी—संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली"। उ०—काहू गही केरा कै घौरी। काहू हाथ परी निंबकौरी।—पदमावत।
निंबार्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैष्णवों के एक संप्रदाय के प्रवर्तक निंबादित्य नामक आचार्य २ इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।
निंबू—संज्ञा पुं० [सं०] नीबू।
निः—अव्य० [सं० निस्] अभाव का द्योतक एक उपसर्ग।
निःशंक—वि० [सं०] १ जिसे डर न हो। निडर। निर्भय। २ जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो।
निःशब्द—वि० [सं०] शब्दरहित। जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।
निःशेष—वि० [सं०] १ जिसका कोई अंश रह न गया हो। समूचा। सब। २ समाप्त।
निःश्रेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी।
निःश्रेयस—वि० [सं०] १ मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। ३ भक्ति। ४. विज्ञान।
निःश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणवायु का नाक से निकलना। नाक से निकाली हुई वायु। साँस।
निःसंकोच—क्रि० वि० [सं०] बिना संकोच के। बेधड़क।
निःसंग—वि० [सं०] १. बिना मेल या लगाव का। २. निर्लिप्त। ३ जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो। संग रहित। ४ जिसके साथ कोई न हो। अकेला।
निःसंतान—वि० [सं०] जिसके संतान न हो। निपूता या निपूती।
निःसंदेह—वि० [सं०] संदेह रहित। जिसे या जिसमें कुछ संदेह न हो।
अव्य० १ बिना किसी संदेह के। २ इसमें कोई संदेह नहीं। ठीक है। बेशक।
निःसंशय—वि० [सं०] संदेह रहित।
निःसत्त्व—वि० [सं०] जिसमें कुछ असलियत, तत्व या सार न हो।
निःसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकालना। २ निकलने का रास्ता। निकास। ३ निर्वाण। ४. मरण।
निःसीम—वि० [सं०] १ जिसकी सीमा न हो। बेहद। २ बहुत बड़ा या अधिक।
निःसृत—वि० [सं०] निकला हुआ।
निःस्पंद—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन न हो। निश्चल।
निःस्पृह—वि० [सं०] १. इच्छारहित। जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो। २. जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो। निर्लोभ।
निःस्वन—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। निःशब्द।
संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।
निःस्वार्थ—वि० [सं०] १ जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो। २ (कोई बात) जो अपने अर्थसाधन के निमित्त न हो।
नि—अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह, जैसे, निकर। अधोभाव, जैसे, निपतित। अत्यंत, जैसे, निगृहीत। आदेश, जैसे निदेश।
संज्ञा पुं० निषाद स्वर का संकेत। (संगीत)
निअरⓅ—अव्य० [सं० निकट] निकट। पास। समीप।
वि० समान। तुल्य।
निअराना—क्रि० स० [हिं० निअर] निकट जाना। समीप पहुँचना।
क्रि० अ० निकट आना। पास होना।
निआउⓅ—संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
निआनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० निदान] परिणाम। अंत।
अव्य० अंत में। आखिर। उ०—जो निआन तन होइहि छारा। माटिहि पोखि मरै को मारा—पदमावत।
निआमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य वस्तु।
निआर्थीⓅ—वि० [हिं० न+अर्थ] निर्धन। गरीब।
निकंटकⓅ—वि० दे० "निष्कंटक"।
निकंदन—संज्ञा पुं० [सं० नि+कंदन= नाश, वध, या कृतन] नाश। विनाश। वि० नष्ट करनेवाला। मिटानेवाला। उ०—मंगल-मूरति मारुतनंदन। सकल अमंगल-मल-निकंदन।—विनय०।
निकंदनाⓅ—क्रि० स० [सं० निकंदन] नष्ट करना। उ०—तीरथ त सबै बेलड़ी, सब जग मेल्या छाइ। कबीर मूल निकंदिया कौण हलाहल खाइ॥—कबीर०।
निकंदिनि—वि० [हिं० निकंदन] नाश करनेवाली। उ०—असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु विबुध कुलहित गिरि-नंदिनि।—मानस।
निकट—वि० [सं०] १ पास का। समीप का। २ संबंध जिससे विशेष अंतर न हो; जैसे, निकट संबंधी।
क्रि० वि० पास। समीप। नजदीक।
मुहा०—किसी के निकट=(१) किसी से, जैसे, किसी के निकट कुछ माँगना। (२) किसी के लेखे में। किसी की समझ में, जैसे, तुम्हारे निकट यह काम कुछ भी नहीं।
निकटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समीपता। सामीप्य।
निकटवर्ती—वि० [सं० निकटवर्तिन्] [स्त्री० निकटवर्तिनी] पासवाला। समीपस्थ।
निकटस्थ—वि० [सं०] १ पास का। २. संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो।
निकम्मा—वि० [सं० निष्कर्म्म] [स्त्री० निकम्मी] १ जो कोई कामधंधा न करे। २ जो किसी काम का न हो। बेगरज। बुरा। बेकाम।
निकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। २ राशि। ढेर। ३. निधि।
संज्ञा पुं० [अं० (या डच ?)] निकर-

नीकर्स के संक्षिप्त रूप 'निकर्स' से] एक प्रकार का अँगरेजी जाँघिया। घुटने तक का पायजामा।

निकरना(पु)—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकर्मा—वि० [सं० निष्कर्मा] आलसी। अकर्मण्य।

निकलंक—वि० [सं० निष्कलंक] दोषरहित। उ०—भावती भौंह के मंदनि 'दास' भले यह भारती मोसों गई कहि। कीन्हो चह्यो निकलंक मयंक जबै करतार विचार हिये गहि।—शृंगार०।

निकलंकी—संज्ञा पुं० [सं० निष्कलंक] विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।

निकल—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है और धातुओं के मिश्रण में काम आती है।

निकलना—क्रि० अ० [हिं० निकालना] १ भीतर से बाहर आना। निर्गत होना।

मुहा०—निकल जाना=(१) चला जाना। आगे बढ़ जाना। (२) न रह जाना। नष्ट हो जाना। (३) घट जाना। कम हो जाना। (४) न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना= किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़कर चली जाना।

२. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज का अलग होना। ३ पार होना। एक ओर से दूसरी ओर चला जाना।

मुहा०—निकल चलना=वित्त से बाहर काम करना। इतराना। अति करना।

४ किसी श्रेणी आदि के पार होना। उत्तीर्ण होना। ५ गमन करना। जाना। गुजरना। ६ उदय होना। ७ प्रादुर्भूत होना। उत्पन्न होना। ८ उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ९ किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १० निश्चित होना। ठहराया जाना। ११ स्पष्ट होना। प्रकट होना। १२ छिड़ना। आरंभ होना। १३ सिद्ध होना। सरना। १४ हल होना। किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। १५. फैलाव होना। १६. प्रचलित होना। १७. छूटना। मुक्त होना। १८ आविष्कृत होना। १९ शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। २० अपने को बचा जाना। बच जाना। २१. कहकर नहीं करना। मुकरना। नटना। २२ खपना। बिकना। २३ प्रस्तुत होकर सर्वसाधारण के सामने आना। प्रकाशित होना। २४ हिसाब किताब होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना। २५. फटकर अलग होना। उचड़ना। २६ जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २७ व्यतीत होना। बीतना। गुजरना। २८ घोड़े, बैल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना।

निकलवाना—क्रि० स० [हिं० निकालना का प्रे० रूप] निकालने का काम दूसरे से कराना।

निकष—संज्ञा पुं० [सं०] १. कसौटी का पत्थर। २ तलवार की म्यान।

निकसना(पु)†—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकाई(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निकाय"। संज्ञा स्त्री० [हिं० नीक] १ भलाई। २. अच्छापन। राम निकाई रावरी, है सबही को नीक। जो यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसीक।—मानस। उ०—छाँड़ि छिति-पाल जो परीछित भए कृपालु, भलो खल को निकाई सों नसाई है।—कविता०। ३ खूबसूरती। सुंदरता। उ०—'दास' कहै रंभा सुरनायक-सदनवारी, नेकहूँ न तुली एकी अंग की निकाई कों।—शृंगार०।

निकाज—वि० [हिं० नि+काज] बेकाम। निकम्मा। उ०—तुलसी तृन जल-कूल को निरधन, निपट निकाज। कै राखै कै संग चलै, बाँह गहे की लाज।—दोहा०।

निकाना—क्रि० स० दे० "निराना"।

निकाम—वि० [हिं० नि+काम] १ निकम्मा। उ०—भागत अभाग, अनुरागत विराग, भाग जागत,-आलसि तुलसी हू से निकाम को।—कविता०। २ बुरा। खराब।

क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।

(पु)वि० १ दे० "निष्काम"।

(पु)वि० [?] प्रचुर। बहुत अधिक। अत्यंत। उ०—(१) निकाम श्याम सुंदर। भवांबु नाथ मंदर।—मानस। (२) कोपेउ समर श्रीराम। चले विसिख निसित निकाम।

निकाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। उ०—कुमुख अकंपन कुलिसर। धूमकेतु अतिकाय। एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय।—मानस। २ ढेर। राशि। ३ घर। ४. परमात्मा। ५ किसी विशिष्ट कार्य के लिये स्थापित कतिपय साधिकार व्यक्तियों का संघ या समुदाय। (अं० बाडी)

निकारना(पु)†—क्रि० सं० दे० "निकालना"।

निकालना—क्रि० स० [सं० निष्कार ?] १. भीतर से बाहर लाना। निर्गत करना। २ मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज को अलग करना। ३ पार करना। अतिक्रमण कराना। ४. गमन कराना। ले जाना। ५. किसी ओर को बढ़ा हुआ करना। ६. निश्चित करना। ठहराना। ७. उपस्थित करना। मौजूद करना। ८. खोलना। स्पष्ट करना। ९ छेड़ना। आरंभ करना। चलाना। १० सबके सामने लाना। देख में करना। ११ अलग करना। पृथक् करना। १२ घटाना। कम करना। १३. छुड़ाना। मुक्त करना। १४ नौकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १५ दूर करना। हटाना। १६ बेचना। खपाना। १७ सिद्ध करना। प्राप्त करना। १८ निर्वाह करना। चलाना। १९. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। २० जारी करना। फैलाना। २१. आविष्कृत करना। ईजाद करना। २२ बचाव करना। निस्तार करना। उद्धार करना। २३ प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २४. रकम जिम्मे ठहराना। ऊपर ऋण या देना निश्चित करना। २५. ढूँढ़कर पाना। बरामद करना। २६ घोड़े, बैल आदि को सवारी लेकर चलना या गाड़ी आदि खींचना सिखाना। शिक्षा देना। २७. सुई से बेलबूटे बनाना।

निकाला—संज्ञा पुं० [हिं० √निकाल] १. निकालने का काम। २ किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन, जैसे—देशनिकाला।

निकास—संज्ञा पुं० [हिं० निकसना] १ निकलने की क्रिया या भाव। २ निकालने की क्रिया या भाव। ३. निकलने के लिये खुला स्थान या छेद। ४. द्वार। दरवाजा। ५ बाहर का खुला स्थान। मैदान। उ०—खेलन चले कुँवर कन्हाई। कहत घोष निकास जइए तहाँ खेलें धाइ।—सूर०। ६ उद्गम। मूल स्थान। ७. वंश का मूल। ८ रक्षा का उपाय। छुटकारे की तदबीर। ९ निर्वाह का ढंग। ढर्रा। वसीला। सिलसिला। १०. प्राप्ति का ढंग। आमदनी

का रास्ता। ११. आय। आमदनी। निकासी।
नकासना—क्रि० स० दे० "निकालना"।
निकासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० निकास] १. निकलने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। रवानगी। २. वह धन जो सरकारी कर आदि देने के बाद बच रहे। लाभ। मुनाफा। ३. आय। आमदनी। ४. बिक्री के लिये माल की रवानगी। लदाई। भरती। ५. बिक्री। खपत। ६. चुंगी। ७ रवन्ना।
निकाह—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी शास्त्रीय पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।
निकियाना—क्रि० स० [देश०] १ नोचकर धज्जी धज्जी अलग करना। २ चमड़े पर से पख या बाल नोचकर अलग करना।
निकिष्ट(पु)†—वि० दे० "निकृष्ट"।
निकुंज—संज्ञा पुं० [सं०] लतागृह। ऐसा स्थान जो घनी लताओं आदि से घिरा हो।
निकुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंद और उपसुंद का पिता, प्रह्लाद का पुत्र और कुंभ नामक दानव का भाई। २. कुंभकर्ण का एक पुत्र। यह रावण का मंत्री था। २. एक विश्वेदेव। ३. महादेव का एक गण।
निकृष्ट—वि० [सं०] बुरा। अधम। नीच।
निकृष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुराई। अधमता। नीचता। मंदता।
निकेत, निकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। उ०—जाइ न बरनि रामबन चितवत चित हरि लेत। ललित-लता-द्रुम-सकुल मनहुँ मनोज-निकेत।—गीता०। २. स्थान। जगह।
निकैया—संज्ञा पुं० [हिं० नीक+ऐया] शोभा। सुंदरता। उ०—सुंदर तनु सिसु-बसन बिभूषन नखसिख निरखि निकैया। दलि तृन, प्रान निछावरि करि करि लैहैं मातु बलैया।—गीता०।
निक्षिप्त—वि० [सं०] १ फेंका हुआ। २ छोड़ा हुआ। त्यक्त।
निक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव। २ चलाने की क्रिया या भाव। ३ छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग। ४. पोंछने की क्रिया या भाव। ५. धरोहर। अमानत। थाती।
निक्षेपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. फेंकना। डालना। २. छोड़ना। चलाना। ३. त्यागना।
निखंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।
निखंड—वि० [सं० निस्+खंड] ठीक मध्य में। न थोड़ा इधर न उधर। सटीक। ठीक।
निखट्ट—वि० [हिं० उप० नि=नहीं+खटना=कमाना] १. जो कुछ कमाई न करे। इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला। २. निकम्मा। आलसी।
निखट्टू—वि० १. जिससे कोई कामधंधा न हो सके। निकम्मा। २ अपनी कुचाल के कारण कहीं न टिकनेवाला। इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला।
निखरक(पु)—अ० [हिं० नि=नहीं+खरक=खटका] बेखटका। निश्चिततया।
निखरना—क्रि० अ० [सं० निक्षरण=छँटना] १ मैल छँटकर साफ होना। निर्मल होना। २ रग खुलना।
निखरवाना—क्रि० स० [हिं० निखारना] साफ करना। धुलवाना।
निखरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √निखर+ई (प्रत्य०)] पक्की या घी की पकी हुई रसोई। घृतपक्व। सखरी का उलटा।
निखर्व—वि० [सं०] दस हजार करोड़।
संज्ञा पुं० दस हजार करोड़ की सख्या या अंक।
निखवख(पु)—वि० [सं० न्यक्ष=सारा, सब] बिलकुल। सब और बाकी कुछ नहीं। उ०—तेहि अर्थ लगायो पोति बहायो निखवख रामै राम लिख्यो।—विश्राम-सागर।
निखाद—संज्ञा पुं० दे० "निषाद"।
निखार—संज्ञा पुं० [हिं० निखरना] १ निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २. शृंगार।
निखारना—क्रि० स० [हिं० निखरना का स० रूप] १. साफ करना। २. पवित्र करना।
निखालिस†—वि० [हिं० नि+अ० खालिस] विशुद्ध। जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।
निखिल—वि० [सं०] सपूर्ण। सब।
निखुटना—क्रि० अ० [?] खतम होना।
निखेध(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निषेध"।
निखेधना(पु)—क्रि० स० [सं० निषेध] मना करना।
निखोट—वि० [हिं० उप० नि+खोट] १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। उ०—नामओट लेत ही निखोट होत खोटे खल, चोट बिनु मोट पाइ भयो न निहाल को।—कविता०। २. साफ। स्पष्ट या खुला हुआ।
क्रि० वि० बिना संकोच के। बेधड़क।
निखोटना—क्रि० स० [हिं० नख] नाखून से तोड़ना या काटना।
निगंदना—क्रि० स० [फा० निगंद:=बखिया] रजाई, दुलाई आदि रूई भरे कपड़ों में तागा डालना।
निगंध(पु)—वि० [सं० निर्गंध] गंध-हीन।
निगड़—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथी के पैर बाँधने की जंजीर। आँदू। २. बेड़ी। उ०—बाँधो हौं करम जड़ गरम गूढ़ निगड़, सुनत दुसह हौं तो साँसति सहत हौं।—विनय०।
निगद, निगदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निगदित] भाषण। कथन।
निगम—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्ग। पथ। २. वेद। ३. हाट। बाजार। ४. मेला। ५ रोजगार। व्यापार। ६. व्यापारियों का सघ। ७. निश्चय। राजाज्ञा, नीति या विधान द्वारा एक व्यक्ति के समान काम करनेवाला किसी नगर, बस्ती, स्थान आदि का प्रबंध करनेवाला व्यक्ति-समूह या सघ (अं० कारपोरेशन)।
निगमन—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक। साबित की जानेवाली बात साबित हो गई, यह जताने के लिये दलील आदि के पीछे उस बात को फिर कहना। नतीजा।
निगमागम—संज्ञा पुं० [सं०] वेदशास्त्र।
निगर—वि०, संज्ञा पुं० दे० "निकर"।
निगरा—संज्ञा पुं० (ऊख का) रस जिसमें पानी न मिला हो।
निगरानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] देखरेख। निरीक्षण।
निगरु(पु)—वि० [सं० नि+गुरु] हलका। जो भारी या वजनी न हो।
निगलना—क्रि० स० [सं० निगरण] १. लील जाना। गले के नीचे उतार लेना। २. दूसरे का धन आदि मार बैठना। हड़पना।
निगहवान—संज्ञा पुं० [फा०] रक्षक। प्रतिपालक।
निगहवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रक्षा। प्रतिपालन।

निगालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण और लघु गुरु होते हैं। इसे 'प्रमाणिका' और 'नागस्वरूपिणी' भी कहते हैं; जैसे—प्रभात भो, सुहाव भो। हली छली, जगे बली। तिहीं घरी, उठे हरी। न देरहू, कछू करी।

निगाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० निगाल] हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं।

निगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दृष्टि। नजर २. देखने की क्रिया या ढंग। चितवन। तकाई। ३ कृपादृष्टि। मेहरबानी। ४. ध्यान। विचार। ५. परख। पहचान। ६. चौकसी।

निगिम(पु)—वि० [सं० निगुह्य] जिसका बहुत लोभ हो। बहुत प्यारा।

निगुण(पु)—वि० दे० "निर्गुण"।

निगुनी(पु)—वि० [हिं० उप० नि+गुनी] जो गुणी न हो। गुणरहित। उ०—गुनी गुनी सब कोइ कहत निगुनी गुनी न होत। सुन्यो कहूँ तरु अर्क ते अर्क समान उदोत।—बिहारी०।

निगुरा—वि० [हिं० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो। अदीक्षित।

निगूढ़, निगूढ़ा—वि० [सं०] अत्यंत गुप्त। रहस्यमय। उ०—माया विवस भए मुनि मूढ़ा। समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा।—मानस।

निगृहीत—वि० [सं०] १ धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २ जिसपर आक्रमण किया गया हो। आक्रमित। आक्रांत। पीड़ित। ४. दंडित।

निगोड़ा—वि० [हिं० निगुरा] [स्त्री० निगोड़ी] १. जिसके ऊपर कोई बड़ा न हो। २ जिसके आगेपीछे कोई न हो। अभागा। ३. दुष्ट। बुरा। नीच। कमीना।

निगोड़ी—वि० स्त्री० [निगोड़ा का स्त्री० रूप] दे० "निगोड़ा २"। उ०—भजन मंजन करें ठगौरी का पचि मरें निगोड़ी।—कबीर०।

निग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। अवरोध। २. दमन। ३. चिकित्सा। रोकने का उपाय। ४ दंड। ५ पीड़न। सताना। ६. बंधन। उ०—मित्र विभीषन जेहि बिधि भाई। सागर निग्रह कथा सुनाई।—मानस। ७. भर्त्सना। डाँट। फटकार। ८. सीमा। हद।

निग्रहना(पु)—क्रि० स० [सं० निग्रहण] १. पकड़ना। २. रोकना। उ०—कंस केश निग्रहौं भूमि को भार उतारौं।—सूर०। ३. दंड देना।

निग्रहस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] वादविवाद या शास्त्रार्थ में वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करनेवालों में से कोई उलटीपुलटी या नासमझी की बात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ बंद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान है। न्याय में ऐसे निग्रह-स्थान २२ कहे गए हैं।

निग्रही—वि० [सं० निग्रहिन्] १. रोकनेवाला। दबानेवाला। २. दंड देनेवाला।

निघंटु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्दसंग्रह मात्र।

निघटना(पु)—क्रि० अ० दे० 'घटना'।

निघरघट—वि० [हिं० नि=नहीं+घर घाट] १. जिसका कहीं घरघाट न हो। जिसे कहीं ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।

मुहा०—निघरघट देना=बेहयाई से झूठी सफाई देना। उ०—दुरे न निघरघटौ दिए ये रावरी कुचाल। विष सी लागति है बुरी हँसी खिसी की लाल।—बिहारी०।

निघरा—वि० [हिं० नि+घर] जिसके घरबार न हो। निगोड़ा (गाली)।

निचय—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। उ०—यथा रघुनाथसायक निसाचर-चमू-निचय-निर्दलन-पटु बेग भारी।—विनय०। २ निश्चय। ३. संचय।

निचल(पु)—वि० दे० "निश्चल"।

निचला—वि० [हिं० नीचा+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० निचली] नीचे का। नीचेवाला।

वि० [सं० निश्चल] स्थिर। शांत।

निचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नीचा+आई (प्रत्य०)] १ नीचा होने का भाव। नीचापन। २. नीचे की ओर दूरी या विस्तार। ३. कमीनापन।

निचान—संज्ञा स्त्री० [हिं० नीचा] १. नीचापन। २. ढाल। ढालुआँपन। ढुलान।

निचिंत—वि० [सं० निश्चिंत] चिंतारहित। बेफिक्र। सुचित।

निचीत(पु)—वि० दे० "निचिंत"।

निचुड़ना—क्रि० अ० [सं० उप० नि+च्यवन=चूना] १. रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। गरना। २. छूटकर चूना। गरना। ३. रस या सारहीन होना। ४. शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना।

निचै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निचय"।

निचोड़—संज्ञा पुं० [हिं० निचोड़ना] १ निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि। २. सार। सत। ३ सारांश। खुलासा।

निचोड़ना—क्रि० स० [हिं० निचुड़ना] १ गीली या रसभरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस टपकाना। गारना। २. किसी वस्तु का सारभाग निकाल लेना। ३ सर्वस्व हरण कर लेना।

निचोना(पु)†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोर—संज्ञा पुं० दे० "निचोड़"। उ०—नील-पीत-नीरज-कनक मरकत घन-दामिनि बरन तनु रूप के निचोर हैं।—गीता०।

निचोरना(पु)†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोल—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों की ओढ़नी या चादर। उ०—स्वच्छ भाग अनुराग सहित इंदिरा अधिक ललिताई। हेमलता जनु तरु तमाल ढिग नील निचोल ओढ़ाई।—विनय०।

निचोवना(पु)†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचौहाँ—वि० [हिं० नीचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० निचौहीं] नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित। उ०—सखिन मध्य करि दीठि निचौहीं राधा सकुच भरी।—सूर०।

निचौहैं—क्रि० वि० [हिं० निचौहाँ] नीचे की ओर।

निछक्का—संज्ञा पुं० [सं० निस+चक्र=मंडली] निराला। एकांत। निर्जन। स्थान।

निछत्र—वि० [सं० निश्छत्र] १. छत्रहीन। बिना छत्र का। २ बिना राजचिह्न का।

वि० [सं० नि+क्षत्र] क्षत्रियों से हीन। क्षत्रियों से रहित। उ०—मारयो मुनि बिनही अपराधहिं कामधेनु लै आऊ। इकइस बार निछत्र तब कीन्हीं तहाँ न देखे राऊ।—सूर०।

निछनियाँ†—क्रि० वि० दे० "निछान"।

उ०—यशुमति दौरि लए हरि कनियाँ। आजु गयो मेरो गाय चरावन हौं बलि गई निछनियाँ।—सूर०।

निछलⓟ—वि० [सं० निश्छल] छलहीन।

निछान†—वि० [हिं० उप० नि+छानना] खालिस। विशुद्ध।

क्रि० वि० एकदम। बिलकुल।

निछावर—संज्ञा स्त्री० [सं० न्यासावर्त। मि० अ० निसार] १. एक उपचार या टोटका जिसमें किसी की रक्षा के लिये कोई वस्तु उसके सिर या सारे अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या भूमि पर डाल देते हैं। उत्सर्ग। वारफेरा। उतारा।

मुहा०—(किसी का) किसी पर निछावर होना=किसी के लिये मर जाना।

२. वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय। ३. इनाम। नेग।

निछोह, निछोही—निछोही वि० [हिं० उप० नि+छोह] १. जिसे छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय। उ०—तू कोकिल-नैनी जग मोहा। केह ब्याधा होइ गहा निछोहा?—पदमावत।

निज—वि० [सं०] १. अपना। स्वकीय।

मुहा०—निज का=खास अपना।

२. खास। मुख्य। प्रधान। ३. ठीक। सही। सच्चा। यथार्थ।

अव्य० १. निश्चय। ठीक ठीक। २. स्वयमेव। खुद बखुद। उ०—उद्बुद्धा उद्बोधिता द्वै परकिया बिसेखि। निज रीझै सुपुरुष निरखि उद्बुद्धा सो लेखि।—शृंगार०।

मुहा०—निज करके=(१) निश्चय। अवश्य। (२) खासकर। विशेष करके। मुख्यत।

निजकाना†—क्रि० अ० [फा० नजदीक] निकट पहुँचना। समीप आना। उ०—थाने थाने हनुमान अंगद सयाने रहो, जाने निजकाने दिन रावण मरण के।—हनु-मन्नाटक।

निजत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनापन। २ मौलिकता।

निजाअ—संज्ञा पुं० [अ०] १ झगड़ा। तकरार। २ शत्रुता। बैर।

निजाई—वि० [अ०] जिसके संबंध में कोई झगड़ा हो।

निजानंद—वि० [सं० निज+आनंद] अपने में ही आनंद लेनेवाला। स्वात्मानंद स्वरूप। उ०—नेति नेति जेहिं वेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा।—मानस।

निजाम—संज्ञा पुं० [अ०] १. बंदोबस्त। इंतजाम। व्यवस्था। २. हैदराबाद के नवाबों की पदवी या खिताब।

निजी—वि० [सं० निज] निज का। अपना। व्यक्तिगत।

निजू†—वि० दे० "निजी"।

निजोर†ⓟ—वि० [हिं० नि+फा० जोर] निर्बल।

निझरना—क्रि० अ० [हिं० उप०नि+झरना] १. अच्छी तरह झड़ जाना। २ लगी हुई वस्तु के झड़ जाने से खाली हो जाना। ३. सार वस्तु से रहित हो जाना। खुक्ख हो जाना। ४. अपने को निर्दोष प्रमाणित करना। सफाई देना।

निझोल—संज्ञा पुं० [?] हाथी।

निझ्झल—संज्ञा पुं० [हिं० निझोल] हाथी उ०—बीसहु हथ्थ अतथ्थहिलुक्कित झोसहि मुक्ति सैल ज्यु आवै। निझ्झल कज्जल-संजुत मिट्ठिकै मालुक पिट्ठिकै भूमि गिरावै।—रससारांश।

निटोल—संज्ञा पुं० [हिं० उप०नि+टोला] मुहल्ला। पुरा। बस्ती। उ०—अब न कौनो चूक करिहै यह हमारे बोल। किंकरिनि लाज धरि अब सुबस करो निटोल।—सूर०।

निट्टिⓟ—क्रि वि० दे० "नीठि"।

निठल्ला—वि० [हिं० उप० नि=नहीं+टहल=काम] १. जिसके पास कोई कामधंधा न हो। खाली। २ बेरोजगार। बेकार।

निठल्लू—वि० दे० "निठल्ला"।

निठाला—संज्ञा पुं० [हिं० नि+टहल=काम] १. ऐसा समय जब कोई कामधंधा न हो। खाली वक्त। २. वह वक्त या हालत जिसमें कुछ आमदनी न हो।

निठुर—वि० [सं० निष्ठुर] जो पराया कष्ट न समझे। निर्दय। क्रूर।

निठुरईⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठुरताⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० निष्ठुरता] निर्दयता। क्रूरता। हृदय की कठोरता।

निठुराईⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठौर—संज्ञा पुं० [हिं० नि+ठौर] १. बुरी जगह। कुठाँव। २. बुरा दाँव। बुरी दशा।

निडर—वि० [हिं० उप० नि+डर] १. जिसे डर न हो। निःशंक। निर्भय। २. साहसी। हिम्मतवाला। ३. ढीठ। धृष्ट।

निडरपन, निडरपना—संज्ञा पुं० [हिं० निडर+पन (प्रत्य०)] निर्भयता।

निडेⓟ—क्रि० वि० [सं० निकट] निकट। पास।

निढाल—वि० [हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ] १. शिथिल। थका माँदा। अशक्त। २ सुस्त। उत्साहहीन।

नेढिलⓟ—वि० [हिं० नि+ढीला] १ कसा या तना हुआ। २. कड़ा।

नितंत—क्रि० वि० दे० "नितांत"।

नितंब—संज्ञा पुं० [सं०] १ जाँघों की हड्डियों के ऊपर कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़ (विशेषत. स्त्रियों का)। २ स्कंध। कंधा। ३. पहाड़ का निचला हिस्सा या तलहटी।

नितंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर नितंबोंवाली स्त्री। सुंदरी।

नित—अव्य० [सं०] १. प्रतिदिन। रोज।

यौ०—नित नित=प्रतिदिन। रोज रोज। नित नया=सब दिन नया रहने-वाला।

२ सदा। सर्वदा। हमेशा।

नितल—संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में से एक।

नितांत—वि० [सं०] १. बिल्कुल। सर्वथा। एकदम।

निति†ⓟ—अव्य० दे० "नित"। १. बहुत अधिक। उ०—तब और की ओर निहारिबे कों जु करौ निति मेरी दोहाइयै जू।—शृंगार०।

नित्य—वि० [सं०] १ जो सब दिन रहे। शाश्वत। अविनाशी। त्रिकालव्यापी। २. प्रतिदिन का। रोज का।

अव्य० १. प्रति दिन। रोजरोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नित्यकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रति दिन का काम। २ वह धर्मसंबंधी कर्म जिसका प्रतिदिन करना आवश्यक ठहराया गया हो। नित्य की क्रिया।

नित्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य कर्म।

नित्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य होने का भाव। अनश्वरता।

नित्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नित्यता।

नित्यनियम—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिदिन का बँधा हुआ व्यापार। रोज का कायदा।

नित्यनैमित्तिक कर्म—संज्ञा पुं० [सं०] पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

नित्यप्रति—अव्य० [सं०] हर रोज।

नित्यशः—अव्य० [सं०] १. प्रति दिन। रोज बरोज। २. सदा। सर्वदा।

नित्यसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह अयुक्त खंडन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है, अत. धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ।

निथंभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नि+स्तंभ] खंभा।

निथरना—क्रि० अ० [हिं० नि+थरना] १. पानी या और किसी पतली चीज का स्थिर होना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना। ३. छनकर साफ होना।

निथार—संज्ञा पुं० [हिं० निथारना] १. घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। २. पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज। ३. छनकर बैठी हुई वस्तु।

निथारना—क्रि० स० [हिं० निथरना का स० रूप] १. पानी या और किसी पतली चीज को स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना। ३. छानकर साफ करना।

निदई(पु)—वि० दे० "निर्दय"।

निदरना(पु)—क्रि० स० [सं० निरादर] १. निरादर करना। अपमान करना। बेइज्जती करना। २ तिरस्कार करना। त्याग करना। ३. मात करना। बढ़कर निकलना।

निदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकट करने दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य। २. उदाहरण। दृष्टांत।

निदर्शना—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है। उ०—(क) कहाँ सूर्य को वंश अरु कहाँ मोरि मति छुद्र। मैं हूड़े सौं मोहवश चाहत तर्यो समुद्र। (ख) लघु उन्नत पद प्राप्त है तुरतहि लहत निपात। गिरि ते काँकर ब त वस गिरत कहत यह बात।

निदलन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्दलन"।

निदहना(पु)—क्रि० स० [सं० निदहन] जलाना।

निदाघ—सज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ताप। २. धूप। घाम। ३ ग्रीष्मकाल। गरमी। उ०—कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग, बाघ। जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ दाघ निदाघ।—बिहारी०।

निदान—संज्ञा पुं० [सं०] १. आदि कारण। २. कारण। उ०—कालहू के काल, महाभूतन के महाभूत, कर्म हू के करम निदान के निदान हौ।—कविता०। ३. रोगनिर्णय। रोगलक्षण। रोग की पहचान। ४. अंत। अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६. शुद्धि।

अव्य० अंत में। आखिर। उ०—तुलसी गुसाईं भयो, भौंड़े दिन भूलि गयो। ताको फल पावत निदान परिपाक हौं।—हनु०।

वि० अंतिम या निम्न श्रेणी का। निकृष्ट।

निदारुण—वि० [सं०] १ कठिन। घोर। भयानक। २ दु.सह। ३ निर्दय।

निदाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निदाघ"।

निदिध्यासन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रवण और मनन से प्राप्त ज्ञान का फिर फिर स्मरण। पढ़ी या सीखी हुई बात को बार बार ध्यान में लाना। पुन पुन. चिंतन।

निदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शासन। २. आज्ञा। हुक्म। ३ कथन। ४. पास।

निदेस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निदेश"। उ०—प्रीति को बधिक, रसरीति को अधिक, नीति निपुन, विवेक है निदेस देस काल को।—कविता०।

निदोष(पु)—वि० दे० "निर्दोष"।

निद्धि—संज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।

निद्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपसहारक अस्त्र।

निद्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की (साधारणत रात में) कुछ घंटों तक होनेवाली वह दशा या अवस्था जिसमें स्नायविक क्रियाएँ रुकी रहती हैं, आँखें बंद रहती हैं, मांसपेशियाँ ढीली पड़ जाती हैं और चेतना प्राय लुप्त रहती है। नींद। स्वप्न। सुप्ति।

निद्राण—वि० [सं०] सुप्त। सोया हुआ। निद्रित। सोता हुआ। उ०—हृदयगिरि-कन्दरानिद्राण पितृवैरिकेशरी जागु।

निद्रायमान—वि० [सं०] जो नींद में हो।

निद्रालु—वि० [सं०] निद्राशील। सोनेवाला।

निद्रित—वि० [सं०] सोया हुआ।

निधड़क—क्रि० वि० [हिं० नि=नहीं+धड़क] १. बेरोक। बिना किसी रुकावट के। २. बिना आगा पीछा किए। ३. बेखटके।

निधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश। उ०—भीषम-द्रोन-करनादि-पालित कालदृक सुयोधन-चमू-निधन हेतू।—विनय०। २. मरण। उ०—चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा।—मानस। ३ कुल। खानदान। ४. कुल का अधिपति। ५. विष्णु।

वि० धनहीन। निर्धन। दरिद्र।

निधनी—वि० [हिं० नि+धनी] निर्धन। उ०—जैसे निधनी धनहिं पाए हरख दिन अरु राति।—सूर०।

निधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. आधार। आश्रय। २. निधि। ३. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु लीन हो। लयस्थान।

निधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खजाना। गड़ा हुआ खजाना। उ०—सकल सौंदर्य-निधि, विपुल-गुण धाम विधि-वेद बुध शंभु सेवित अमानम्।—विनय०। २ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व। उ०—जेहि गाए सिधि होय परम निधि पाइय हो। कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो।—रामलला०। ३. वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिये अलग जमा कर दिया जाय। ४ समुद्र। ५ आधार। घर, जैसे, गुणनिधि। ६ विष्णु। ७ शिव। ८ नौ की संख्या।

निधिनाथ, निधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] निधियों के स्वामी, कुबेर।

निनरा—वि० [सं० नि+निकट, प्रा० निनिअड़] न्यारा। अलग। जुदा। दूर। उ०—मानहु विवर गए चलि कारे तजि केंचुरी भए निनरेरी।—सूर०।

निनरुआ—वि० [हिं० निनरा] [स्त्री० निनरुई] एकमात्र पुत्र।

निनाद—सज्ञा पुं० [स०] [वि० निनादित] शब्द। आवाज।

निनादना(पु)—क्रि० अ० [सं० निनाद] निनाद या शब्द करना।

निनादी—वि० [सं० निनादिन्] [स्त्री० निनादिनी] शब्द करनेवाला।

निनान(पु)—सज्ञा पुं० [सं० निदान] १. अंत। २. लक्षण।

क्रि० वि० अंत में। आखिर।

वि० १. परले सिरे का। बिल्कुल। एकदम। २. बुरा। निकृष्ट।

निनारा—वि० [सं० नि+निकट] १. अलग। जुदा। पृथक्। भिन्न। २. दूर। हटा हुआ। ३. निराला।

निनारे—वि० [हिं० न्यारा] विलक्षण। विचित्र। उ०—ऐसोई जौ हिरदै कै निरदै निनारे हौ तो, काहे को सिधारे रत प्यारे परवीन जू।—शृंगार०।

दे० "निनारा १." उ०—बान कृपान समान लगत उर, विहरत छिन छिन होत निनारे।—श्री कृष्णगीता०।

निनावाँ—संज्ञा पुं० [हिं० नन्हा ?] मुँह के भीतरी भागों में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने जिनमें छरछराहट होती है।

निनौना—क्रि० स० [हिं० नवना = झुकना] नीचे करना। झुकाना। नवाना।

निन्नानबे—वि० [सं० नवनवति] नब्बे और नौ।

संज्ञा पुं० नब्बे और नौ की संख्या। ९९।

मुहा०—निन्नानबे के फेर में आना या पड़ना = धन बढ़ाने की धुन में होना।

निन्यारा(पु)—वि० दे० "निनारा"।

निपंग(पु)—वि० [सं० नि+पंगु] जिसके हाथ पैर टूटे हों। अपाहिज। निकम्मा।

निपजना(पु)†—क्रि० अ० [सं० निष्पद] १ उपजना। उत्पन्न होना। उगना। २ बढ़ना। पुष्ट होना। उ०—भली बुद्धि तेरे जिय उपजी ज्यों ज्यों दिन भई त्यों त्यों निपजी।—सूर०। पकना। ३ बनना।

निपजी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० √निपज+ई (प्रत्य०)] १ लाभ। मुनाफा। २ उपज।

निपट—अव्य० [हिं० नि+पट] १. सरासर। एकदम। बिल्कुल। उ०—बिबरन भयेउ निपट नर पालू। दामिनि हनेउ मनहु तरु तालू।—मानस०। २ निरा। विशुद्ध। केवल। एकमात्र। उ०—भीर बाँह पीर की निपट राखी महावीर कौन के सँकोच, तुलसी के सोच भारी है।—हनु०।

निपटना—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निपतन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निपतित] अधःपतन। गिरना। गिराव।

निपत्र—वि० [सं० निष्पत्र] पत्रहीन। ठूँठा।

निपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. पतन। गिराव। पात। २ अधःपतन। ३. विनाश। उ०—और न कुछ देखै तन श्यामहि ताको करौ निपातु। तू जो करै बात सोइ साँची कहा करौं तोहि मातु।—सूर०। ४. मृत्यु। क्षय। नाश। ५. वह शब्द जो व्याकरण के नियमों के अनुसार न बना हो।

वि० [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्तों का।

निपातन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निपातित] १. गिराने का कार्य। २ नाश। ३. वध करने का कार्य।

निपातना(पु)—क्रि० स० [हिं० निपातन] १ नीचे गिराना। २ नष्ट करना। काटकर गिराना। ३ मार गिराना। वध करना।

निपाती—वि० [सं० निपातिन्] १. गिरानेवाला। फेंकनेवाला। २. मारनेवाला।

संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

(पु)वि० [हिं० नि+पाती] बिना पत्ते का।

निपीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री० निपीड़ित, वि० निपीड़क] १ पीड़ित करना। तकलीफ देना। २. मलना दलना। ३ पेरना।

निपीड़ना(पु)—क्रि० स० [सं० निपीड़न] १ कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना। २. पेरना। ३ दबाना। मलना दलना।

निपुण—वि० [सं०] दक्ष। कुशल। प्रवीण।

निपुणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षता। कुशलता। प्रवीणता।

निपुणाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपुत्री—वि० [हिं० नि+पुत्री] निपूता। निःसंतान। उ०—जो नर ब्राह्मण हत्या कीन्हा। जन्म निपुत्री तेहि जग चीन्हा।—विश्रामसागर।

निपुन(पु)—वि० दे० "निपुण"।

निपुनई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपूत, निपूता(पु)†—[हिं० नि+पूत] [स्त्री० निपूती] अपुत्र। पुत्रहीन।

निपेटी—संज्ञा पुं० [हिं० नि+पेटी] भुक्खड़। भूखा।

निफन(पु)—वि० [सं० निष्पन्न] पूर्ण। पूरा।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह। उ०—जोते बिनु, बए बिनु, निफन निराए बिनु, सुकृत-सुखेत सुख-सालि फूल फरिगे।—गीता०।

निफरना—क्रि० अ० [हिं० निफारना] चुभकर या धँसकर आर पार होना।

क्रि० अ० [सं० नि+स्फुट] खुलना। उद्घाटित होना। साफ होना।

निफल(पु)—वि० [सं० निष्फल] बिना फल का। निष्फल। विफल। निरर्थक। उ०—निफल होहिं रावन सर कैसे। खल के सकल मनोरथ जैसे।—मानस।

निफाक—संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। द्रोह। वैर। २. फूट। बिगाड़। अनबन।

निफोट—वि० [सं० नि+स्फुट] स्पष्ट। साफ साफ। उ०—कै मिलि कर मेरो कह्यो कै कर मेरो घात। पाछे बचन सँभारियो कहौं निफोट्क बात।—हनुमन्नाटक।

निबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो। ३. लिखित प्रबंध। किसी विषय पर (मुख्यतः गद्य में) साहित्यिक और रोचक गुंफन। लेख। ४. गीत। ५. प्रबंध। रचना। उ०—स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति।—मानस।

निबंधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निबद्ध] १ बंधन। २. व्यवस्था। नियम। बखेज। ३ कर्तव्य। ४ हेतु। कारण।

निबकौरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नीम+कौड़ी] १. नीम का फल। २ नीम का बीज।

निबटना—क्रि० अ० [सं० निवर्तन] [संज्ञा निबटेरा, निबटाव] १ निवृत्त होना। छुट्टी पाना। फुरसत पाना। २ समाप्त होना। पूरा होना। ३ निर्णीत होना। तै होना। ४ चुकना। खतम होना। ५. शौच आदि से निवृत्त होना।

निबटाना—क्रि० स० [हिं० निबटना] १. पूरा करना। समाप्त करना। खतम करना। २ चुकाना। बेबाक करना। ३. तै करना। ४ निर्णय करना। फैसला करना।

निबटाव—संज्ञा पुं० दे० "निबटेरा"।

निबटेरा—संज्ञा पुं० [हिं० √निबट+एरा (प्रत्य०)] १ निबटने का भाव या क्रिया। छुट्टी। २ समाप्ति। ३. फैसला। निश्चय।

निबड़ना(पु)—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निबद्ध—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २.

ग्रथित हुआ। ३ बैठाया या जड़ा हुआ। ४. निरुद्ध। रुका हुआ।

निबरा(पु)—वि० दे० "निर्बल"।

निबरना—क्रि० अ० [सं० निवृत्त] १. मुक्त होना। उद्धार पाना। पार होना। उ०—कब लौं, कहौ पूजि निबरैंगे बचिहैं बैर हमारे?—सूर०। २. छुट्टी पाना। फुरसत पाना। निबटना। चुकना। उ०—सूरदास बिनती कहा बिनवै दोषनि देह भरी। आपन बिरद सँभारौगे तौ यामै सब निबरी।—सूर०। ३ (काम) पूरा होना। समाप्त होना। ४. बँधी या लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। फैसल होना। ५. एक में मिलीजुली वस्तुओं का अलग होना। बिलग होना। उ०—नैना भए पराए चेरे। नंदलाल के रँग गए रँगि अब नाहीं बस मेरे। जद्यपि जतन किए जुगवति हौं स्यामल शोभा घेरे। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निबरत नाहिं निबेरे।—सूर०। ६. उलझन दूर होना। सुलझना। ७. दूर होना। जाता रहना। खतम होना। उ०—अब नीके कै समुझि परी। जिन लगी हती बहुत उर आसा सोउ बात निबरी।—सूर०। ८. निर्णय होना।

निबल(पु)—वि० [सं० निर्बल] [संज्ञा निबलाई] दुर्बल।

निबह—संज्ञा पुं० [सं० निवह] समूह। झुंड।

निबहना—क्रि० अ० [सं० निर्वहन] १. निभना। निर्वाह होना। बराबर चला चलना। संबंध लगातार बना रहना। २. पार पाना। छुट्टी पाना। उ०—मेरे हठ क्यों निबहन पैहो? अब तो रोकि सबनि को राख्यो कैसे कै तुम जैहो?—सूर०। ३. निरंतर व्यवहार होना। पालन होना। ४ पूरा होना। सपरना।

†**निबहुर**—संज्ञा पुं० [हिं० नि+बहुरना] जहाँ से कोई न लौटे। यमद्वार।

†**निबहुरा**—वि० [हिं० नि+बहुरना] जो चला जाय और न लौटे (गाली)।

निबाह—संज्ञा पुं० [सं० निर्वाह] १. निबाहने की क्रिया या भाव। रहन। गुजारा। उ०—नाम महाराज के निबाह नीको कीजै उर, सबही सोहात, मैं न लोगनि सोहात हौं।—कविता०। २ किसी बात के अनुसार निरंतर व्यवहार। संबंध या परंपरा की रक्षा। ३. पूरा करने का कार्य। पालन। ४. छुटकारे का ढंग। बचाव का रास्ता।

निबाहना—क्रि० स० [सं० निर्वाहन] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. पालन करना। चरितार्थ करना। ३. बराबर करते जाना। सपराना।

निबिड़—वि० दे० "निविड़"। उ०—कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग। बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि पाइ कुसंग सुसंग।—मानस।

निबुआ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नीबू"।

निबुकना(पु)—क्रि० अ० [सं० निर्मुक्त] १. छुटकारा पाना। बंधन से निकलना। उ०—दीठि निसेनी चढ़ि चल्यौ ललचि सुचित मुख गोर। चिबुक गड़ारे खेत मैं निबुकि गिरयौ चितचोर।—शृं० सत०। छूटना। २. बंधन खुलना। ३. पार होना। निकल जाना।

निबेड़ना—क्रि० स० [सं० निवृत्त] १. (बंधन आदि) छुड़ाना। उन्मुक्त करना। २ बिलगाना। छाँटना। चुनना। ३. उलझन दूर करना। सुलझाना। ४. निर्णय करना। फैसल करना। ५ दूर करना। अलग करना। ६ पूरा करना। निबटाना।

निबेड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० निबेड़ना] १ छुटकारा। मुक्ति। २ बचाव। उद्धार। ३. बिलगाव। छाँट। चुनाव। ४. सुलझाने की क्रिया या भाव। ५. त्याग। ६. निबटेरा। समाप्ति। ७. निर्णय। फैसला।

निबेरना—क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।

निबेरा—संज्ञा पुं० दे० "निबेड़"।

निबेहना(पु)—क्रि० स० दे० "निबेरना"।

निबौरी, निबौली—संज्ञा स्त्री० [सं० निंब+वर्तुल] निंबकौरी। नीम का फल।

निभ—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश। प्रभा।
वि० तुल्य। समान। उ०—छतज नयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला।—मानस।

निभना—क्रि० अ० [हिं० निबहना] १. निर्वाह होना। संबंध लगातार बना रहना। २. पार पाना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। ३ जारी रहना। लगातार बना रहना। ४ गुजारा होना। रहायस होना। ५ पूरा होना। सपरना। भुगतना। ६ पालन होना। चरितार्थ होना।

निभरम(पु)—वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमें कोई शंका न हो। भ्रमरहित।
क्रि० वि० बेखटके। बेधड़क।

निभरोसी(पु)†—वि० [हिं० नि=नहीं+भरोसा] १. जिसे कोई भरोसा न रह गया हो। निराश। हताश। २. जिसे किसी का आसरा भरोसा न हो। निराश्रय।

निभाउँ(पु)—वि० [हिं० (उप०) नि+सं० भाव] भावरहित। जिसमें कोई भाव या मनोवेग न हो।

निभागा—वि० [हिं० नि+भाग्य] अभागा।

निभाना—क्रि० स० [हिं० निबाहना] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. चरितार्थ करना। पालन करना। ३. बराबर करते जाना। चलाना। भुगताना।

निभाव—संज्ञा पुं० दे० "निबाह"।

निभृत—वि० [सं०] १. निर्जन। एकांत। २. गुप्त। छिपा हुआ। बंद किया हुआ। ३. निश्चल। स्थिर। ४. रखा हुआ। ५. नम्र। विनीत। ६ शांत। धीर। ७ मरा हुआ। पूर्ण।

निभ्रांत(पु)—वि० दे० "निर्भ्रांत"।

निमंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निमंत्रित] १. किसी कार्य के लिये नियत समय पर आने का अनुरोध करना। बुलावा। आह्वान। २ खाने का बुलावा। न्यौता।

निमंत्रणपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र (लिखा या छपा हुआ कागज का टुकड़ा) जिसके द्वारा किसी को किसी विशेष कार्य या अवसर के लिये बुलाया जाय।

निमंत्रना(पु)—क्रि० स० [सं० निमंत्रण] न्योता देना।

निमंत्रित—वि० [सं०] जिसे न्योता दिया गया हो। आहूत। बुलाया हुआ।

निमक†—संज्ञा पुं० दे० "नमक"।

निमकी—संज्ञा स्त्री० [फा० नमक] १. नीबू का अचार। २. मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "निंबौली"।

निमगारना(पु)—क्रि० अ० [?] उत्पन्न करना। पैदा करना।

निमग्न—वि० [सं०] [स्त्री० निमग्नता] १. डूबा हुआ। मग्न। २ तन्मय।

निमज्जन—संज्ञा पुं० [सं०] डूबकर किया जानेवाला स्नान। अवगाहन। उ०—पूजहि सिवहि, समय तिहुँ करहि निमज्जन। देखि प्रेम व्रतु नेमु सराहहिं सज्जन।—पा० म०।

निमज्जना(पु)—क्रि० अ० [सं० निमज्जन]

डूबना। गोता लगाना। अवगाहन करना।

निमज्जित—वि० [सं०] [स्त्री० निमज्जिता] १. डूबा हुआ। मग्न। २. स्नात। नहाया हुआ।

निमटना—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निमता(पु)—वि० [हिं० नि+माता] जो उन्मत्त न हो।

निमर्म—वि० [सं० नि+मर्म] जिसमें मर्म या प्रेम न हो। ममरहित। क्रूर। निर्दय।

निमाज—संज्ञा स्त्री० दे० "नमाज"।
वि० दे० "नवाज"।

निमान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० निम्न] १. नीचा स्थान। गड्ढा। २ जलाशय।

निमान—वि० [सं० निम्न] [स्त्री० निमानी] १ नीचा। ढालुआ। नीचे की ओर गया हुआ। २ नम्र। विनीत। ३. दब्बू। ४ मनचाही करनेवाला।

निमि—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २ राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह वंश चला। वशिष्ट के शाप से शरीर नष्ट हो जाने पर इन्होंने प्राणिमात्र की पलकों का आश्रय लिया जिससे उनकी आँखें बंद होने और खुलने लगीं (पुराण)। ३ आँखों का मिचना। पलक गिरना। निमेष। पलक। उ०—निमि तजेउ सुरतियनि मृग फिरत बनहिं बन। हुअ हरुअ मदन सर थिर न रहत खग है। —छंदार्णव।

निमिख—संज्ञा पुं० दे० "निमिष"।

निमित्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ हेतु। कारण। २ चिह्न। लक्षण। ३. उद्देश्य। ४. साधक उपकरण।

निमित्तक—वि० [सं०] किसी हेतु से होनेवाला। जनित। उत्पन्न।

निमित्त कारण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने (न्याय)। विशेष दे० "कारण"।

निमिराज(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक।

निमिष—संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमिस—संज्ञा स्त्री० दे० "नमिस"।

निमीलन—वि० [सं०] [वि० निमीलित] १. बंद करना। मूँदना। २ सिकोड़ना।

निमूद—वि० [हिं० मुदना] मुँदा हुआ। बंद।

निमेख—संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमेट—वि० [हिं० नि+मिटना] न मिटनेवाला। अमिट। उ०—कहा कहौं हौं ओहि सौं जेइ दुख कीन्ह निमेट। तेहि दिन आगि करै वह (बाहर) जेहि दिन होइ सो भेंट। —पदमावत।

निमेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पलक का गिरना। आँख का झपकना। २ पलक मारने भर का समय। पल। क्षण।

निमोना—संज्ञा पुं० [सं० नवान्न] चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ रसेदार नमकीन व्यंजन। उ०—बहुत मिरिच दै कियो निमोना। बेसन के दस बीसक दोना। —सूर०।

निम्न—वि० [सं०] नीचा।

निम्नगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

निम्नोक्त—वि० [सं०] नीचे कहा हुआ।

नियंता—संज्ञा पुं० [सं० नियंतृ] [स्त्री० नियंत्री] १ नियम बाँधनेवाला। नियामक। व्यवस्था करनेवाला। उ०—नित्य निर्मुक्त संयुक्तगुन निर्गुनानत भगवत नियामक नियंता। विश्व-पोषन-भरन विश्वकारन-करन, सरन तुलसीदास-त्रास-हता। —विनय०। २. कार्य को चलानेवाला। ३ नियम पर चलानेवाला। शासक।

नियंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।

नियंत्रित—वि० [सं०] नियम से बँधा हुआ। कायदे का पाबंद। प्रतिबद्ध।

नियत—वि० [सं०] १. नियम द्वारा स्थिर। बँधा हुआ। परिमित। २ ठीक किया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। स्थिर। ३ नियोजित। स्थापित। तैनात।
संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नियताप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में अन्य उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फलप्राप्ति का निश्चय।

नियति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नियत होने का भाव। बंधेज। २ स्थिरता। मुकर्ररी। ३. भाग्य। दैव। अदृष्ट। संयोग। ४. बँधी हुई बात। अवश्य होनेवाली बात। ५ पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम।

नियम—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधि या निश्चय के अनुकूल प्रतिबंध जिसे पुराणों में धर्म और धैर्य का पुत्र बताया गया है, कायदा। पद्धति। २ बँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ३. ठहराई हुई रीति। विधि। व्यवस्था। कानून। जाब्ता। ४. अनुशासन। नियंत्रण। ५. शर्त। ६. संकल्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७ योग के आठ अंगों में से एक जिसमें शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान किया जाता है। ८. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय, अर्थात् उसका होना एक ही स्थान पर बतलाया जाय। ९. विष्णु। १०. महादेव।

नियमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य। कायदा बाँधना। २ शासन। निग्रह।

नियमबद्ध—वि० [सं०] नियमों से बँधा हुआ। कायदे का पाबंद।

नियमित—वि० [सं०] [संज्ञा नियमितता] १. बँधा हुआ। क्रमबद्ध। २ कायदे या कानून के मुताबिक। नियमबद्ध।

नियरा†—अव्य० [सं० निकट] समीप। पास।

नियराई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नियर+आई (प्रत्य०)] निकटता। सामीप्य।

नियराना†—क्रि० अ० [हिं० नियर+आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नजदीक आना।

नियाई(पु)—वि० दे० "न्यायी"।

नियाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. इच्छा। २ दीनता। ३ बड़ों का प्रसाद। ४. मृतक के उद्देश्य में दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन। ५. बड़ों में होनेवाली भेंट।

नियान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० निदान] परिणाम। नतीजा। फल।
अव्य० अंत में। आखिर।

नियामक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नियामिका] १. नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। ३. नियंत्रण रखनेवाला। ४. मारनेवाला।

नियामत—संज्ञा स्त्री० [अ० नेअमत] १. अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २. स्वादिष्ट भोजन। उत्तम व्यंजन। ३. धन दौलत।

नियार—संज्ञा पुं० [हिं० न्यारा ?] १. जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा-कतवार। २ उसमें से निकलनेवाला माल।

नियारा†—वि० [सं० निर्निकट] अलग। दूर।

नियारिया—संज्ञा पुं० [हिं० नियार] १. सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा करकट आदि में से माल निकालनेवाला। २. चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे(पु)†—अव्य० दे० "न्यारे"।
नियाव†—संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
नियुक्त—वि० [सं०] १. नियोजित। लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। २ तत्पर किया हुआ। प्रेरित। ३. स्थिर किया हुआ।
नियुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुकर्ररी। तैनाती।
नियुत—वि० [सं०] १ एक लाख। लक्ष। २. दस लाख।
नियुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] बाहुयुद्ध। कुश्ती।
नियोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० नियोक्तृ] १. नियोजित करनेवाला। २ स्थिर या मुकर्रर करनेवाला।
नियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. नियोजित करने का कार्य। तैनाती। मुकर्ररी। २. प्रेरणा। ३. अवधारण। ४ कार्यभार का समर्पण। उत्तरदायित्व। कर्त्तव्यभार। ५. आर्यों की एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार कोई निःसंतान स्त्री पति के न रहने पर (मर जाने पर) अथवा उससे संतान न होने पर अपने देवर, पति के और किसी गोत्रज वा पुरोहित से संतान उत्पन्न करा सकती थी। मनु आदि स्मृति-कारों ने कलियुग में इस प्रथा का निषेध कर दिया है। महाभारत के समय हस्तिना-पुर के राजा विचित्रवीर्य के मरने पर सत्य-वती के पुत्र व्यास जी के द्वारा इसी प्रथा के अनुसार धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर पैदा किए गए थे। ६ आज्ञा। उ०—गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग, निगम नियोग ते सो केलिहीं छरो सो है। —विनय०।
नियोजक—संज्ञा पुं० [सं०] काम में लगाने वाला। मुकर्रर करनेवाला।
नियोजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियो-जित, नियोज्य, नियुक्ति] किसी काम में लगाना। तैनात या मुकर्रर करना।
निरंकार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निराकार"।
निरंकुश—वि० [सं०] [स्त्री० निरंकुशा, संज्ञा निरंकुशता] १ जिसके लिये कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो। बिना डर का। २. स्वेच्छाचारी।
निरंग—वि० [सं०] १ अंगरहित। २. केवल। खाली। जिसमें और कुछ न हो। जिसमें अंगों का विभाजन न हो; जैसे, निरंग रूपक (अलंकार)।
संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद। वि० [हिं० उप० नि=नहीं+रंग] १. बेरंग। बदरंग। विवर्ण। उ०—स्वेद थकी पुलकित जकी कंपित तनु कँपि मीत। अधर निरंग चकी बसन बदल्यो हेत प्रतीत। —रससाराश। २. उदास। बेरौनक। श्रीहत।
निरंजन—वि० [सं०] १ अंजनरहित। बिना काजल का; जैसे, निरंजन नेत्र। २ कल्मषशून्य। दोषरहित। ३. माया से निर्लिप्त। निर्विकार (ईश्वर का एक विशेषण)। उ०—व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन विगत विनोद। सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद। —मानस।
संज्ञा पुं० परमात्मा।
निरंतर—वि० [सं०] १ अंतररहित। जो बराबर चला गया हो। अविच्छिन्न। २. निविड़। घना। गझिन। ३ लगातार या बराबर होनेवाला। ४. सदा रहनेवाला। अविचल। स्थायी।
क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।
निरंतरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निरंतर या लगातार होनेवाला भाव। अविच्छिन्नता।
निरंध—वि० [सं०] १ भारी अंधा। २. महामूर्ख। ३ बहुत अँधेरा।
निरंबु—वि० [सं० निर्+अंबु] बिना पानी का। निर्जल। उ०—व्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहे जलु काहु न लीन्हा। —मानस।
निरंभ—वि० [सं० निरंभस्] १ निर्जल। २ बिना पानी पिए रह जानेवाला।
निरंश—वि० [सं०] १ जिसे उसका भाग न मिला हो। २ बिना अक्षांश का।
निरंस—वि० दे० "निरंश १। उ०—शेष सहस फन नाथि ज्यों सुरपति करे निरंस। अग्निपान कियो साँवरो कहा बापुरो कंस। —सूर०।
निरकार(पु)—वि० दे० "निराकार"।
निरकेवल†—वि० [सं० निस्+केवल] १ खालिस। बिना मेल का। २ स्वच्छ।
निरक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] भूमध्य रेखा के आसपास के देश जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं (कोई किसी से छोटा या बड़ा नहीं होता)।
निरखन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निरीक्षण"।
निरक्षर—वि० [सं०] १ अक्षरशून्य। २ अनपढ़। मूर्ख।
निरक्ष रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भूमध्य रेखा जिसके बाद ही अक्षांश प्रारंभ होते हैं। २. भूमध्य रेखा पर स्थित भूभाग। ३. नाड़ीमंडल। निरक्षवृत्त। क्रांतिवृत्त।
निरखना(पु)—क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना। ताकना। अवलोकन करना।
निरग—संज्ञा पुं० दे० "नृग"।
निरगुन(पु)—वि० दे० "निर्गुण"।
निरचू—वि० [सं० निश्चित] जिसे फुरसत मिल गई हो। निश्चित। खाली।
निरच्छ(पु)—वि० [सं० निरक्षि] अंधा।
निरच्छर—वि० दे० "निरक्षर"। उ०—विप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार स० वृपली स्वामी। —मानस।
निरजर—वि० [हिं० नि+सं० जरा] जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।
निरजोस, निरजोसु—संज्ञा पुं० [सं० निर्यास] १ निचोड़। उ०—राम तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहिं। यह निरजोसु दोसु बिधि बामहिं। —मानस। २. निर्णय। उ०—मोद मंगल-मूल अति अनुकूल निज निरजोसु। रामनाम-प्रभाव सुनि तुलसिहुँ परम सतोसु। —विनय०।
निरजोसी—वि० [हिं० निरजोस] १. निचोड़ निकालनेवाला। २. निर्णय करनेवाला।
निरझर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।
निरत—वि० [सं०] किसी काम में लगा हुआ। तत्पर। लीन। मशगूल।
(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निरतना(पु)—क्रि० स० [सं० नर्त्तन] नाचना।
निरतिशय—वि० [सं०] हद दरजे का। सबसे बढ़कर।
निरत्थ—वि० [सं० निरर्थक] दे० "निरर्थ" उ०—मिथ्या, मोघ, मृषा, अनृत, वितथ, अलीक, निरत्थ। ऐसे पिय सों झूठ बलि, क्यों बोलिए अकत्थ। —नंददास०।
निरदई(पु)—*वि० दे० "निर्दय"।*
निरदहन—वि० [सं० निर्दहन] खूब जलानेवाला। निश्चयपूर्वक जलानेवाला। उ०—गहन-दहन-निरदहन लंक, निःसंक, बंकभुव। जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव। —हनु०।
निरदै(पु)—वि० दे० "निर्दय"। उ०—ऐसोई जौ हिरदै के निरदै निनारे हौ तौ, काहे को सिधारे उत प्यारे परबीन जू। —शृंगार०।
निरघातु—वि० [सं० निर्धातु] शक्तिहीन। उ०—धातु कमाय सिखे तैं जोगी। अब

कस भा निरधातु बियोगी ।—पदमावत ।

निरधार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्धार"। वि० [सं० निर्धारण] ठहराया हुआ। निश्चित।

निरधारना—क्रि० स० [सं० निर्धारण] १ निश्चय करना। स्थिर करना। २ मन में धारण करना। समझना।

निरनउ—संज्ञा पुं० दे० "निर्णय"। उ०—चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरतु प्रान प्रिय भे सबही के।—मानस।

निरनुनासिक—वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के संबंध से न हो। जो अनुनासिक न हो। अननुनासिक अक्षर (व्याकरण)।

निरन्न—वि० [सं०] १ अन्नरहित। २. निराहार। जो अन्न न खाए हो।

निरन्ना—वि० [सं० निरन्न] निराहार।

निरपना(पु)—वि० [सं० निर+हिं०अपना] १ जो अपना न हो। उ०—जानकी-रमन मेरे, रावरे बदन फेरे, ठाउँ न समाउँ कहाँ सकल निरपने।—कविता०। २. बेगाना। गैर।

निरपराध—वि० [सं०] अपराधरहित। बेकसूर। निर्दोष।

क्रि वि० बिना कोई कसूर किए।

निरपराधी(पु)—वि० दे० "निरपराध"।

निरपवाद—वि० [सं०] जिसमें कोई अपवाद या दोष न हो। निर्दोष।

निरपेक्ष—वि० [सं०] [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। बेपरवाह। २ जो किसी पर निर्भर न हो। स्वतंत्र। ३ अलग। तटस्थ।

निरबंसी—वि० [सं० निर्वंश] जिसे वंश या संतान न हो। जिसके वंश या कुल में कोई दूसरा न हो।

निरबल(पु)—वि० दे० "निर्बल"।

निरबहना(पु)—क्रि० अ० दे० "निभना"।

निरबेद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० निर्वेद] १ वैराग्य। विराग। विरक्ति। २ ताप। ३ खिन्नता। उदासी।

निरबेरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निबेरा"।

निरभिमान—वि० [सं०] जिसे अभिमान न हो। अहंकारशून्य।

निरभिलाष—वि० [सं०] अभिलाषा-रहित।

निरभै—वि० दे० "निर्भय"। उ०—विचरत निरभै भगत तिहारे। तुमसे प्रभु जिनके रखवारे। —नंददास०।

निरभ्र—वि० [सं०] बिना बादल का।

निरमना(पु)—क्रि० स० [सं० निर्माण] निर्माण करना। बनाना।

निरमर, निरमल(पु)—वि० दे० "निर्मल"।

निरमान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्माण"।

निरमाना(पु)—क्रि० स० [सं० निर्माण] बनाना। तैयार करना। रचना।

निरमायल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य"।

निरमूलना(पु)—क्रि० स० [सं० निर्मूलन] १ निर्मूल करना। २ नष्ट करना।

निरमोल, निरमोलक(पु)—वि० [सं० निर्+मूल्य, मूल्यक] १ अनमोल। अमूल्य। २ बहुत बढ़िया।

निरमोलिका—वि० [सं० निर्+मूल्यक] दे० "निरमोल"। उ०—जीव अछित जो बन गया, कछु किया ना नीका। यहु हीरा निरमोलिका कौड़ी पर बीका ॥ —कबीर०।

निरमोलिस—वि० [हिं० निरमोल] अमूल्य। अनमोल। उ०—कबीर अब तो ऐसा भया निरमोलिस निज नाँउ। पहली काच कथीर था फिरता ठाँवै ठाँउँ ॥—कबीर०।

निरमोली—वि० दे० "निरमोल १"। उ०—पहरावति झकझोरि, बेसरि निरमोली है। नंददास०।

निरमोही(पु)—वि० दे० "निर्मोही"।

निरय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नरक। उ०—जातें निरय-निकाय निरंतर सोइ इन्ह तोहिं सिखायों। तुव हित होइ करै भवबंधन, सो मगु तोहिं न बतायो। —विनय०। २ दुर्गति। दुर्दशा।

निरयण—संज्ञा पुं० [सं०] अयनरहित गणना। ज्योतिष में गणना की एक रीति।

निरर्थ—वि० दे० "निरर्थक"। उ०—वह खुला न द्वार दिवस बीता, हो गई निरर्थ सकल गीता। —गीतिका।

निरर्थक—वि० [सं०] १ अर्थशून्य। बे-मानी। २ न्याय में एक निग्रह स्थान। ३ बिना मतलब का। व्यर्थ। ४ निष्फल।

निरलेप—वि० दे० "निर्लेप"। उ०—जे बिरंचि निरलेप उपाए। पदुमपत्र जिमि जग जल जाए। —मानस।

निरवच्छिन्न—वि० [सं०] जिसका क्रम न टूटा हो। सिलसिलेवार। अटूट।

निरवद्य—वि० [सं०] निंदा या दोष से रहित।

निरवध—वि० [सं० निरवधि] दे० "निर-वधि"। उ०—निरवध-नेह, अवधि अति प्रगटी मूरति सब सुखदाई।—नंददास०।

निरवधि—वि० [सं०] जिसकी कोई अवधि न हो। उ०—निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरतसम जानि। कहिअ सुमेरु कि सेर सम कवि-कुल-मति सकुचानि। —मानस।

क्रि० वि० लगातार। निरंतर।

निरवयव—वि० [सं०] जिसमें अंगप्रत्यंग भेद न हो। निराकार।

निरवलंब—वि० [सं०] १ अवलंबहीन। आधाररहित। बिना सहारे। २ निराश्रय। जिसका कोई सहायक न हो।

निरवार—संज्ञा पुं० [हिं० निरवारना] १ निस्तार। छुटकारा। बचाव। उ०—यही सोच सब परि रहे कहूँ नहीं निरवार। ब्रज भीतर नँद भवन में घर घर यही विचार। —सूर०। २ छुड़ाने या सुलझाने का काम। ३ निबटेरा।

निरवारना(पु)—क्रि० स० [सं० निवारण] १ टालना। रोकनेवाली वस्तु को हटाना। २ मुक्त करना। छुड़ाना। उ०—ये सुकुमार बहुत दुख पाए सुत कुबेर के तारौं। सूर-दास प्रभु कहत मनहिं मन करबंधन निरवारौं।—सूर०। ३ छोड़ना। त्यागना। ४. गाँठ आदि छुड़ाना। सुलझाना। ५ निर्णय करना। तै करना।

निरवाह—‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह"।

निरवाहक—वि० [सं० निर्वाहक] निर्वाह करनेवाला। रक्षा करनेवाला। उ०—गई-बहोर, ओर निरवाहक, साजक बिगरे साज के। सबरी सुखद, गीध गतिदायक, समन-सोक कपिराज के। —गीता०।

निरशन—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन न करना। लंघन। उपवास।

निरसंक(पु)‡—वि० दे० "निःशंक"।

निरसंचय—वि० [सं० निःसंचय] संचय रहित। बिना कुछ बचाकर रखा हुआ। सब कुछ। सर्वस्व। उ०—इक प्रियव्रतधारी परउपकारी नित गुरुआज्ञा-अनुसारी। निरसंचय दाता सब रसज्ञाता सदा साधु-संगति प्यारी। —छंदार्णव।

निरस—वि० [सं० नीरस] १ जिसमें रस न हो। रसहीन। उ०—निरस भूरुह सरस फूलत फलत अति अधिकाइ। कंद मूल अनेक अंकुर स्वाद सुधा लजाइ। —गीता०। २ विरक्त। अनुरक्तिरहित।

उ०—जयति सीतेस-सेवासरस विषयरस-निरस, निरुपाधि धुरधर्मधारी। —विनय०।

निरसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निरसनीय, निरस्य] १. फेंकना। दूर करना। हटाना। २. खारिज करना। रद्द करना। ३. निराकरण। परिहार। ४. निकालना। ५ नाश। ६ वध।

निरस्त्र—वि० [सं०] अस्त्रहीन। बिना हथियार का।

निरहंकार—वि० [सं०] अभिमानरहित।

निरहेतु(पु)—वि० दे० "निर्हेतु"।

निरा—वि० [सं० निरालय] [स्त्री० निरी] १. विशुद्ध। बिना मेल का। खालिस। २. जिसके साथ और कुछ न हो। केवल। ३. निपट। नितांत। एकदम। बिलकुल।

निराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० निराना] १ फसल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि खोदकर या उखाड़कर अलग फेंकने का काम। फसल को बढ़ने के लिये खेत की सफाई। २ निराने की मजदूरी।

निराकरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निराकरणीय, निराकृत] १. छाँटना। अलग करना। २. हटाना। दूर करना। ३. मिटाना। रद करना। ४ शमन। निवारण। परिहार। ५. खंडन। युक्ति या दलील को काटने का काम।

निराकांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० निराकांक्षी] आकांक्षा या कामना का अभाव।

निराकार—वि० [सं०] जिसका कोई आकार न हो। जिसके आकार की भावना न हो।

संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २. आकाश।

निराकुल—वि० [सं०] १ जो आकुल न हो। जो घबराया न हो। २ बहुत व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।

निराखर(पु)†—वि० [सं० निरक्षर] १ जिसमें अक्षर न हो। बिना अक्षर का। २ मौन। चुप। ३ अपढ़। मूढ़।

निराचार—वि० [सं० नि+आचार] आचाररहित। आचारभ्रष्ट। उ०—निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी। कलिजुग सोइ ज्ञानी वैरागी।—मानस।

निराट—वि० [हिं० निराल ?] एकमात्र। निरा। बिलकुल। निपट।

निरादर—संज्ञा पुं० [सं०] आदर का अभाव। अपमान। बेइज्जती।

निराधार—वि० [सं०] १. जिसे सहारा न हो या जो सहारे पर न हो। २. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। ३. अयुक्त। मिथ्या। झूठ। ४. जिसे या जिसमें जीविका आदि का सहारा न हो। निरवलंब। ४ जो बिना अन्नजल आदि के हो।

निरानंद—वि० [सं०] आनंदरहित। जिसमें आनंद न हो।

संज्ञा पुं० आनंद का अभाव। दुःख।

निराना—क्रि० स० [सं० निराकरण] फसल के पौधों के आसपास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके। नींदना। निकाना। उ०—जोते बिनु, बए बिनु, निफन निराए बिनु। सुकृत-सुखेत सुख-सालि फूलि फरिगे।—गीता०।

निरापद—वि० [सं०] १. जिसे कोई आफत या डर न हो। सुरक्षित। २ जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो। ३. जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।

निरापन, निरापने—वि० [सं० निः+हिं० आपन=अपना] जो अपना न हो। पराया। बेगाना। उ०—सब दुख आपने, निरापने सकल सुख, जौलों जन भयो न बजाइ राजाराम को।—कविता०।

निरापुन(पु)—वि० दे० "निरापन"।

निरामय—वि० [सं०] नीरोग। तंदुरुस्त। उ०—शांत निरपेक्ष निर्मम निरामय अगुन शब्द-ब्रह्मैक पर-ब्रह्मज्ञानी।—विनय०।

निरामिष—वि० [सं०] १ जिसमें मांस न मिला हो। २ जो मांस न खाय। उ०—वायस पलिअहि अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा।—मानस।

निरारा—वि० [हिं० निराला] अलग। पृथक्।

निरारी—वि० [हिं० निरारा] निराली। विचित्र। उ०—बिगरी सेवक की सदा साहबहि सुधारी। तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निरारी।—विनय०।

निरालंब—वि० [सं०] १ बिना आलंब या सहारे का। निराकार। २ निराश्रय।

निरालस्य—वि० [सं०] जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चुस्त।

निराला—संज्ञा पुं० [सं० निरालय] [स्त्री० निराली] एकांत स्थान। ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो।

वि० १. विलक्षण। सब से भिन्न। अद्भुत। अजीब। २ अनूठा। अपूर्व। अद्वितीय। बहुत बढ़िया। ३. जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन।

निरावना†—क्रि० स० दे० "निराना"।

निरावलंब—वि० [सं०] बिना सहारे का।

निरावृत्त—वि० [सं०] बिना आवरण के।

निराश—वि० [हिं० निर+आशा] आशाहीन। जिसे आशा न हो। नाउम्मीद।

निराशा—संज्ञा स्त्री० [हिं० निर् (उप०)+सं० आशा] नाउम्मेदी।

निराशावाद—संज्ञा पुं० [हिं० निराशा+सं० वाद] [वि० निराशावादी] वह वाद या सिद्धांत जिसमें किसी बात के परिणाम में नैराश्य ही प्रधान रहता हो।

निराशी(पु)—वि० [सं० निराश] १. हताश। नाउम्मीद। २. उदासीन। विरक्त।

निराश्रय—वि० [सं०] १ आश्रयरहित। बिना सहारे का। २ असहाय। अशरण।

निरास(पु)—वि० दे० "निराश"।

निरासी(पु)—वि० [सं० निराश] १ दे० "निराशी"। २ उदास। बेरौनक। उ०—सूर श्याम बिनु यह बन सूनो शशि बिनु रैन निरासी।—सूर०।

निराहार—वि० [सं०] १ आहाररहित। जो बिना भोजन के हो। २ जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय—वि० [सं०] १ इंद्रियशून्य। जिसे कोई इंद्रिय न हो। २. मानसिक। काल्पनिक भावना का।

निरिच्छना(पु)—क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना।

निरीक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १. देखनेवाला। २ देख रेख करनेवाला।

निरीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निरीक्षित निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] १. देखना। दर्शन। २ देखरेख। निगरानी। ३ देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन।

निरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देखना।

निरीश्वर—वि० [सं०] जिसमें ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित।

संज्ञा पुं० दे० "निरीश्वरवादी"।

निरीश्वरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि कोई ईश्वर नहीं है। नास्तिकता।

निरीश्वरवादी—वि० [सं०] जो ईश्वर का अस्तित्व न माने। नास्तिक।

निरीस—वि० [सं० निर्+ईश] नास्तिक। ईश्वर की सत्ता में अविश्वास करनेवाला। उ०—क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी।—मानस।

निरीह—वि० [सं०] [भाव० निरीहता] १ इच्छारहित। उ०—प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी। ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी।—मानस। २. चेष्टारहित। ३. उदासीन। ४. सीधासादा। बेचारा। निर्दोष।

निरुआर†—संज्ञा पुं० दे० "निरुवार"।

निरुक्त—वि० [सं०] १. निश्चय रूप से कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। २. नियुक्त। ठहराया हुआ।

संज्ञा पुं० छ वेदांगों में से एक जिसमें यास्क मुनि कृत वैदिक शब्दों की व्याख्या है। निघंटु की व्याख्या। वेद का चौथा अंग।

निरुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो। २. एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परंतु वह अर्थ सयुक्तिक हो।

निरुजⓅ—वि० दे० "नीरुज"। उ०—मारिए तौ अनायास कासीवास खास फल, ज्याइए तौ कृपा करि निरुज सरीर हौं।—कविता०।

निरुत्तर—वि० [सं०] १. जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २ जो उत्तर न दे सके। ३ चुप। शांत। उ०—बंधु-बधू-रत कहि कियो बचन निरुत्तर बालि। तुलसी प्रभु सुग्रीव की चितइ न कछू कुचालि।—दोहा०।

निरुत्साह—वि० [सं०] उत्साहहीन।

निरुद्देश्य—वि० [सं०] जिसका कोई उद्देश्य न हो। लक्ष्यविहीन।

क्रि० वि० बिना किसी उद्देश्य के।

निरुद्ध—वि० [सं०] रुका या बँधा हुआ।

संज्ञा पुं० योग में चित्त की वह अवस्था जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है।

निरुद्यम—वि० [सं०] [संज्ञा निरुद्यमता] जिसके पास कोई उद्यम न हो। उद्योगरहित। बेकाम।

निरुद्यमी—संज्ञा पुं० [सं० निरुद्यमिन्] जो उद्यम न करता हो। बेकार। निकम्मा।

निरुद्योग—वि० [सं०] उद्योगरहित।

निरुपद्रव—वि० [सं०] जिसमें कोई उपद्रव न हो।

निरुपद्रवी—संज्ञा पुं० [सं० निरुपद्रविन्] जो उपद्रव न करे। शांत।

निरुपम—वि० [सं०] [स्त्री० निरुपमा] जिसकी उपमा न हो। उपमारहित। बेजोड़।

निरुपयोगी—वि० [सं०] जो उपयोग में न आ सके। व्यर्थ। निरर्थक।

निरुपाधि—वि० [सं०] १. उपाधिरहित। बाधारहित। २. मायारहित। उ०—गृध्र-शबरी, भक्तिविवश करुणासिंधु, चरित-निरुपाधि, त्रिविधार्ति-हर्ता।—विनय०।

संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।

निरुपाय—वि० [सं०] १. जो कुछ उपाय न कर सके। २ जिसका कोई उपाय न हो।

निरुवरनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० निवारण] कठिनता आदि का दूर होना। सुलझना।

निरुवार†—संज्ञा पुं० [सं० निवारण] १ छुड़ाने का काम। मोचन। २ छुटकारा। बचाव। ३ सुलझाने का काम। ४. तै करना। निबटाना। ५ निर्णय। फैसला। उ०—कहौ जाय करैं युद्ध विचार। साँच झूठ होयहै निरुवार।—सूर०।

निरुवारनाⓅ—क्रि० स० [हिं० निरुवार से ना० धा०] १. छुड़ाना। मुक्त करना। २ सुलझाना। उलझन मिटाना। ३. तै करना। निबटाना। ४. निर्णय करना। फैसला करना।

निरूढ़—वि० [सं०] १ प्रसिद्ध। प्रचलित। विख्यात (शब्द या अर्थ)। २ अविवाहित। कुँआरा।

निरूढ़लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का रूढ़ अर्थ ग्रहण किया जाता है, जैसे, लाल पगड़ी आते ही सब छँट गए, अथवा 'भाले पिल पड़े।'

निरूढ़ा—संज्ञा स्त्री० दे० "निरूढ़लक्षणा"।

निरूप—वि० [हिं० नि+रूप] १ रूपरहित। निराकार। उ०—मोहन माँग्यो अपनो रूप। यहि ब्रज बसत अँचै तुम बैठी ता बिन वहाँ निरूप।—सूर०। २ कुरूप। बदशकल।

निरूपक—वि० [सं०] [स्त्री० निरूपिका, निरूपिणी] किसी विषय का निरूपण करनेवाला।

निरूपण—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकाश। २ किसी विषय का विवेचनापूर्वक निर्णय। विचार। ३ निदर्शन।

निरूपन—संज्ञा पुं० दे० "निरूपण २"। उ०—भगति निरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना।—मानस।

निरूपनाⓅ—क्रि० स० [सं० निरूपण] निर्णय करना। ठहराना। निश्चित करना।

निरूपित—वि० [सं०] जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो।

निरूप्य—वि० [सं०] १. निरूपण या निर्णय करने के योग्य। २. जिसका निरूपण होने को हो।

निरेखनाⓅ—क्रि० स० दे० "निरखना"। उ०—न टरैं मनमोहनैं चाहि रहैं सब सौतैं सकानी निरेखियो री।—हनुमन्नाटक।

निरैⓅ—संज्ञा पुं० [सं० निरय] १. नरक। २ दुर्गति। दुर्दशा।

निरैठा†Ⓟ—संज्ञा पुं० [?] मस्त। मौजी।

निरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। अवरोध। रुकावट। बंधन। निग्रह। २ घेरा। घेर लेना। ३. नाश।

निरोधक—वि० [सं०] रोकनेवाला।

निरोधी—वि० दे० "निरोधक"।

निर्ख—संज्ञा पुं० [फा०] भाव। दर।

निर्खनामा—संज्ञा पुं० [फा०] वह पत्र जिसपर सब चीजों का निर्ख या भाव लिखा हो।

निर्खबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

निर्गंध—वि० [सं०] [संज्ञा निर्गंधता] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। गंधहीन।

निर्गत—वि० [सं०] निकला हुआ। बाहर आया हुआ।

निर्गता—वि० स्त्री० दे० "निर्गत"। उ०—नख निर्गता मुनि वंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी।—मानस।

निर्गम—संज्ञा पुं० [सं०] निकास।

निर्गमना—क्रि० अ० [सं० निर्गमन] निकलना।

निर्गुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। सँभालू। सिंदुवार।

निर्गुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुण या विशेषणरहित अवस्था। २ परमेश्वर।

वि० [सं०] [संज्ञा निर्गुणता] १. जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से रहित हो। जिसमें कोई गुण न हो। बुरा।

निर्गुणिया—वि० [सं० निर्गुण + हिं० इया (प्रत्य०)] वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।

निर्गुणी—वि० [सं० निर्गुण] जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख।

निघंट—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द या ग्रंथ-सूची।

निर्घात—संज्ञा पुं० [सं०] १ तेज हवा चलने का शब्द। २ बिजली की कड़क। ३ एक प्रकार का अस्त्र।

निर्घिन(पु)—वि० दे० "निर्घृण"।

निर्घृण—वि० [सं०] १ जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २ अति नीच। निंदित। ३ निर्दय।

निर्घोष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्घोषित] शब्द। आवाज।

वि० [सं०] शब्दरहित।

निर्छल(पु)†—वि० दे० "निश्छल"।

निर्जन—वि० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो। सुनसान। एकांत।

निर्जर—संज्ञा पुं० [सं० निर्जर जो जीर्ण न हो] १ बुढापा-विहीन प्राणी। २ देवता।

वि० जरारहित। तरुण। उ०—अक्षर, निर्जर, दुर्धर्ष, अमर, जगतारण भारत के उर के राजपूत।—तुलसीदास।

निर्जल—वि० [सं०] १. विना जल का। २ जिसमें जल पीने का विधान न हो।

निर्जला एकादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जेठ सुदी एकादशी तिथि, जिस दिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं।

निर्जीव—वि० [सं०] १ जीवरहित। बेजान। मृतक। २ अशक्त या उत्साह-हीन।

निर्झर—संज्ञा पुं० [सं०] पानी का झरना। सोता। चश्मा।

निर्झरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

निर्णय—संज्ञा पुं० [सं०] १ औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक ठहराना। निश्चय। २. वादी और प्रतिवादी की बातों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना। फैसला। निबटारा। ३ अनेक में से एक का पक्ष स्थिर करना।

निर्णयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निर्णायक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्णीत—वि० [सं०] निर्णय किया हुआ। जिसका निर्णय हो चुका हो।

नि[र्त](पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।

निर्तक(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नर्तक"।

निर्तना(पु)†—क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।

निर्दंभ—वि० [सं०] १. जिसे दंभ या अभिमान न हो। उ०—सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।—मानस। २ आडंबररहित।

निर्दई(पु)†—वि० दे० "निर्दय"।

निर्दय—वि० [सं०] निष्ठुर। बेरहम।

निर्दयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दय होने की क्रिया या भाव। बेरहमी। निष्ठुरता।

निर्दयपन—संज्ञा पुं० दे० "निर्दयता।

निर्दयी(पु)†—वि० दे० "निर्दय"।

निर्दल—वि० [सं०] १ जिसमें दल या पत्र न हों। २. जो किसी दल का न हो।

निर्दहना(पु)†—क्रि० स० [सं० दहन] जलाना।

निर्दिष्ट—वि० [सं०] १ जिसका निर्देश हो चुका हो। २ बतलाया या नियत किया हुआ। ठहराया हुआ।

निर्दूषण(पु)†—वि० दे० "निर्दोष"।

निर्देश—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ को बतलाना। २ ठहराना या निश्चित करना। ३ आज्ञा। हुक्म। ४ कथन। ५ उल्लेख। जिक्र। ६ वर्णन। ७ ऐसा उल्लेख जिसकी सहायता से विशेष ज्ञातव्य बातों का पता चल सके। ८ नाम।

निर्दोष—वि० [सं०] १ जिसमें कोई दोष न हो। बेऐब। बेदाग। २ बेकसूर।

निर्दोषता—संज्ञा स्त्री० [सं० निर्दोष+ता (प्रत्य०)] निर्दोष होने की क्रिया या भाव।

निर्दोषी—वि० दे० "निर्दोष"।

निर्द्वंद—वि० दे० "निर्द्वंद्व"।

निर्द्वंद्व—वि० [सं०] १ जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। २. जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि [द्वंद्वों] से रहित या परे हो। ३ स्वच्छंद।

निर्धंधा—वि० [सं० निर्+हिं० धंधा] जिसके हाथ में काम धंधा न हो। बेरोज-गार।

निर्धन—वि० [सं०] धनहीन। गरीब।

निर्धनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गरीबी।

निर्धार—संज्ञा पुं० दे० "निर्धारण"।

निर्धारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० निर्धारिका, निर्धारिणी] वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो।

निर्धारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराना या निश्चित करना। २ निश्चय। निर्णय। ३ न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों में से गुण या कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना।

निर्धारना—क्रि० स० [सं० निर्धारण] निश्चित करना। निर्धारित करना। ठहराना।

निर्धारित—वि० [सं०] निश्चित किया हुआ।

निर्निमेष—क्रि० वि० [सं०] बिना पलक झपकाए। एकटक।

वि० १ जो पलक न गिरावे। २ जिसमें पलक न गिरे।

निर्बंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। २ जिद। हठ। ३ आग्रह।

निर्बल—वि० [सं०] बलहीन। कमजोर।

निर्बलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमजोरी। दुर्बल।

निर्बहना—क्रि० अ० [सं० निर्वहन] १ पार होना। उ०—जौ निर्विघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परमपद लहई।—मानस। अलग होना। दूर होना। २. क्रम का चलना। निभना। पालन होना।

निर्बाध—वि० [सं०] जिसमें कोई बाधा न हो। बाधारहित।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की बाधा के।

निर्बाधित—वि० दे० "निर्बाध"।

निर्बुद्धि—वि० [सं०] बेवकूफ। मूर्ख।

निर्बोध—वि० [सं०] जिसे अच्छे बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।

निर्भय—वि० [सं०] जिसे कोई डर न हो। निडर। बेखौफ।

निर्भयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निडरपन। निडर होने का भाव या अवस्था।

निर्भर—वि० [सं०] १ अवलंबित। आश्रित। मुनहसर। २ पूर्ण। भरा हुआ। उ०—तन पुलक निर्भर प्रेमपूरन नयन मुख पंकज दिए। —मानस। ३ युक्त। मिला हुआ। ४ (निर+भर = बिना भरा) खाली।

निर्भीक—वि० [सं०] बेडर। निडर।

निर्भीकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्भीक होने की क्रिया या भाव।

निर्भ्रम—वि० [सं०] भ्रमरहित। शंका-रहित।

क्रि० वि० निधड़क। बेखटके।

निर्भ्रांत—वि० [सं०] १ भ्रमरहित । जिसमें कोई संदेह न हो । २ जिसको कोई भ्रम न हो ।

निर्मत्सर—वि० [सं० निर् + मत्सर] मत्सररहित । ईर्ष्याहीन । उ०—अखिल-जीववत्सल निर्मत्सर चरन-कमल-अनुरागी । —विनय० ।

निर्मद—वि० [सं० निर्+मद] मदहीन । बिना घमंड का । उ०—द्विजनि कौं क्रिया गर्व सब हरथौ । चाहत इंद्रहिं निर्मद करथौ । —नंददास० ।

निर्मना(पु)†—क्रि० स० दे० "निर्माना" ।

निर्मम—वि० [सं०] १. जिसे ममता न हो । निर्मोही । २ जिसको कोई वासना न हो । निष्काम ।

निर्ममता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्मम होने की अवस्था या भाव ।

निर्मर्म—वि० [सं०] जिसमें भेद, छिपाव या रहस्य न हो । मर्मरहित ।

निर्मल—वि० [सं०] १ मलरहित । साफ । स्वच्छ । २. पापरहित । शुद्ध । पवित्र । ३. निर्दोष । कलंकहीन ।

निर्मलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफाई । स्वच्छता । २. निष्कलंकता । ३. शुद्धता ।

निर्मला—संज्ञा पुं० [सं० निर्मल] नानकपंथी एक साधु संप्रदाय ।

निर्मली—संज्ञा स्त्री० [सं० निर्मल] १. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, जिसके पके हुए बीजों का औषध रूप में तथा गँदला पानी साफ करने के लिये व्यवहार होता है । चाकसू । २ रीठे का वृक्ष या फल ।

निर्माण—संज्ञा पुं० [सं०] १. रचना । बनावट । २ बनाने का काम ।

निर्माता—संज्ञा पुं० [सं०] निर्माण करनेवाला । बनानेवाला । जो बनावे ।

निर्मात्रिक—वि० [सं०] बिना मात्रा का ।

निर्मान—वि० [हिं० नि+मान] बेहद । अपार ।

संज्ञा पुं० दे० "निर्माण" ।

निर्माना(पु)—क्रि० स० [सं० निर्माण] बनाना । रचना । उत्पन्न करना । उ०—ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो । ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो । —सूर० ।

निर्मायल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य" ।

निर्माल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो । २ शिव जी को चढ़ा हुआ पदार्थ जिसे गृहस्थ ग्रहण नहीं करते ।

निर्मित—वि० [सं०] बनाया हुआ । रचित ।

निर्मुक्त—वि० [सं० नि +मुक्त] आवागमन के बंधन से मुक्त । उ०—नित्य निर्मुक्त संयुक्त गुन निर्गुनानंत भगवंत नियामक नियंता । —विनय० ।

निर्मूल—वि० [सं० निर्+मूल] १ जिसमें जड़ न हो । बिना जड़ का । २. जड़ से उखाड़ा हुआ । ३. बेबुनियाद । बेजड़ । ४ सर्वथा नष्ट ।

क्रि० वि० समूल । मूल सहित । अपने कारण और कार्य दोनों के साथ । उ०—तुलसीदास जग आपु सहित जब लगि निर्मूल न जाई । तब लगि कोटि कलप उपाय करि मरिय तरिय नहिं भाई ॥ —विनय० ।

मुहा०—निर्मूल होना = जड़ के साथ नष्ट होना । कारण और कार्य दोनों का नष्ट हो जाना । इस प्रकार नष्ट होना कि कोई चिह्न न बचे ।

निर्मूलन—संज्ञा पुं० [हिं० निर्मूल] जड़ से उखाड़ने की क्रिया । विनाश ।

निर्मूलिनी—वि० स्त्री० [सं० निर्मूल] जड़ से उखाड़नेवाली । नाश करनेवाली । उ०—हरति सब आरती आरति राम की । दहति दुख दोष निर्मूलिनी काम की । —विनय० ।

निर्मोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप की केंचुली । २ शरीर के ऊपर की खाल । ३ आकाश ।

निर्मोल(पु)†—वि० [सं० निर्+हिं० मोल] जिसका मूल्य बहुत अधिक हो या जिसके मूल्य का अनुमान न हो सके । अमूल्य । उ०—नैना लोभहिं लोभ भरे । जोइ देखैं सोइ सोइ निर्मोलै कर लै तहाँ धरे । —सूर० ।

निर्मोह—वि० [सं०] जिसके मन में मोह या ममता न हो ।

निर्मोहिनी—वि० स्त्री० [हिं० निर्मोही+इनी (प्रत्य०)] जिसके चित्त में ममता या दया न हो । निर्दय ।

निर्मोही—वि० [सं० निर्मोह] जिसके हृदय में मोह या ममता न हो । निर्दय ।

निर्यात—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो कहीं से बाहर निकले । २ देश से बाहर जाने की क्रिया या जानेवाला माल ।

निर्यातन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बदला चुकाना । २ प्रतीकार । ३ मार डालना ।

निर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्षों या पौधों में से आप से आप अथवा उनका तना आदि चीरने से निकलनेवाला रस । २ गोंद । ३. बहना या झरना । क्षरण ।

निर्युक्ति—संज्ञा पुं० [सं०] महात्माओं के निर्युक्तिक वचन जो सूत्र के लिये कहे गए हों ।

निर्लज्ज—वि० [सं०] बेशर्म । बेहया ।

निर्लज्जता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेशर्मी । बेहयाई । निर्लज्ज होने का भाव ।

निर्लिप्त—वि० [सं०] १ जो किसी विषय में आसक्त न हो । २ जो लिप्त न हो ।

निर्लेप—वि० दे० "निर्लिप्त" ।

निर्लोभ—वि० [सं०] जिसे लोभ न हो ।

निर्वंश—वि० [सं०] [संज्ञा निर्वंशता] जिसका वंश नष्ट हो गया हो ।

निर्वचन—संज्ञा पुं० [सं०] निश्चित रूप से कोई बात कहना । निरूपण ।

वि० चुप । मौन । निर्वाक् ।

निर्वसन—वि० [सं०] [स्त्री० निर्वसना] नग्न । नंगा ।

निर्वहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ निबाह । गुजर । निर्वाह । २. समाप्ति ।

निर्बहना(पु)†—क्रि० अ० [सं० निर्वहन] परंपरा का पालन होना । निभना । चलना ।

निर्वाक्—वि० [सं०] मौन । चुप ।

निर्वाचक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो निर्वाचन करे या चुने । चुननेवाला ।

निर्वाचन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम के के लिये बहुतों में से एक या अधिक को चुनना । चुनाव ।

निर्वाचन क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना राजनीतिक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो ।

निर्वाचित—वि० [सं०] चुना हुआ ।

निर्वाण—वि० [सं०] १ बुझा हुआ (दीपक अग्नि आदि) । २ अस्त । डूबा हुआ । ३ शांत । धीमा पड़ा हुआ । ४ मृत ।

संज्ञा पुं० १ बुझना । ठंढा होना । २. समाप्ति । न रह जाना । ३ अस्त । गमन । डूबना । ४ शांति । ५ मुक्ति ।

निर्वापण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्वापित, निर्वाप्य] १ अंत । समाप्ति । २ विनाश । ३ आग का बुझना । ४ दान ।

निर्वासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो

निर्वासन करता हो। २. देशनिकाला देनेवाला।

निर्वासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। वध। २. गाँव, शहर या देश आदि से दंड स्वरूप बाहर निकाल देना। देशनिकाला। ३. निकालना।

निर्वासित—वि० [सं०] जिसे देश निकाला मिला हो। अपने निवास स्थान से निकाला हुआ।

निर्वाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी क्रम या परंपरा का चला चलना। गुजारा। निबाह। २ किसी बात के अनुसार बराबर आचरण पालन। ३ समाप्ति। पूरा होना।

निर्वाहना(पु)—क्रि० अ० [सं० निर्वाह से हिं० ना० धा०] निर्वाह करना।

निर्विकल्प—वि० [सं०] १ जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों आदि से रहित हो। २ स्थिर। निश्चित।

निर्विकल्प समाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता।

निर्विकार—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो।

निर्विघ्न—वि० [सं०] विघ्नबाधारहित।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के।

निर्विरोध—वि० [सं०] जिसमें कोई विरोध या बाधा न हो।

क्रि० वि० बिना किसी विरोध या रुकावट के।

निर्विवाद—वि० [सं०] जिसमें कोई मतभेद या वितर्क न हो। बिना झगड़े का।

निर्विशेष—संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा। परब्रह्म।

निर्विषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक घास जिसकी जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिये होता है। जदवार।

निर्बीज—वि० [सं०] १ बीजरहित। जिसमें बीज न हो। २ जो कारण से रहित हो।

निर्वीर्य—वि० [सं०] वीर्यहीन। बल या तेजरहित। कमजोर। निस्तेज।

निर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना अपमान। २. खेद। दुःख। ३ वैराग्य।

निर्वेदी—संज्ञा पुं० [सं० निर+वेदी] वेद से परे, ब्रह्म।

निर्वैर—वि० [सं०] वैर या द्वेष से रहित।

निर्व्यलीक—वि० [सं०] निष्कपट। उ०—शंकर-हृदि पुंडरीक निसि बस हरि चचरीक, निर्व्यलीक मानस-गृह सतत रहे छाई।—गीता०।

निर्व्याज—वि० [सं०] १. निष्कपट। छल-रहित। २. बाधारहित।

निर्हेतु—वि० [सं०] जिसमें कोई हेतु या कारण न हो।

निर्हेतुक—वि० [सं०] कारणरहित। अकारण।

निलजई—संज्ञा स्त्री० दे० "निर्लज्जता"। उ०—जदपि करत रतिराज तेहि निदरि निदरि सब काज। तदपि रहत तिय के हिए किए निलजई लाज।—रससाराश।

निलज्ज|—वि० दे० "निर्लज्ज"।

निलजता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० निर्लज्जता] निर्लज्जता। बेशर्मी। बेहयाई।

निलज्जी(पु)|—वि० स्त्री० [हिं० निलज्ज] निर्लज्जा। बेशर्म। बेहया (स्त्री)।

निलय—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान। घर। २ स्थान। जगह।

निलयकारी—वि० [सं० निलय+कारी] घर बनानेवाला। उ०—यस्यांघ्रिपाथोज भज शंभु सनकादि सुक शेष मुनिवृंद अलि निलयकारी।—विनय०।

निलहा—वि० [हिं० नील] १ नील नामक पौधे की खेती या व्यवसाय से संबंध रखनेवाला। नीलवाला, जैसे निलहा गोरा। २ नील संबंधी।

निलै—संज्ञा पुं० दे० "निलय"। उ०—ऐसे में सूने सखी के निलै चलि सोवै सभागन बाग भली अब।—शृंगार०।

निवछरा(पु)—वि० [देश०] ऐसा समय जिसमें बहुत कामकाज न हो।

निवछावर—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

निवसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाँव। २ घर। ३ वस्त्र।

निवसना—क्रि० अ० [सं०] रहना। निवास करना।

निवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। यूथ। २ सात वायुओं में से एक वायु। ३ अग्नि की सात जीभों में से कोई।

निवाई—वि० [सं० नव] १. नवीन नया। २ अनोखा। विलक्षण। उ०—पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई। हरी देखि यह रूप निवाई।—सूर०।

निवाज—वि० दे० "नवाज"। उ०—तू गरीब को निवाज, हौं गरीब तेरे। बारक कहिए कृपालु! तुलसिदास मेरे।—विनय०।

निवाजना(पु)|—क्रि० स० दे० "नवाजना"।

निवाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "नवाड़ा"।

निवार—संज्ञा स्त्री० [फा० नवार] बहुत मोटे सूत की बनी हुई चौड़ी मजबूत पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार।

संज्ञा पुं० [सं० नीवार] तिन्नी धान।

निवारक—वि० [सं०] १ रोकनेवाला। रोधक। २ दूर करनेवाला। मिटानेवाला। उ०—जाऊँ कहाँ, को विपति-निवारक भवतारक जग माहीं।—विनय०।

निवारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोकने की क्रिया। २ हटाने या दूर करने की क्रिया। ३. निवृत्ति। छुटकारा।

निवारना(पु)—क्रि० स० [सं० निवारण] १. रोकना। दूर करना। हटाना। २. काटना। बिताना। उ०—धाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलिकुंज। जमुना तीर तमाल-तरु-मिलित मालती कुंज।—बिहारी०। ३. निषेध करना। मना करना।

निवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली या नेमाली] १ जूही की जाति का एक फैलनेवाला झाड़ या पौधा। २. इस पौधे का फूल।

निवाला—संज्ञा पुं० [फा०] कौर। ग्रास। लुकमा।

निवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने की क्रिया या भाव। २ रहने का स्थान। घर। मकान।

निवासस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। २ घर। मकान।

निवासिप—संज्ञा पुं० दे० "निवासी"।

निवासी—संज्ञा पुं० [सं० निवासिन्] [स्त्री० निवासिनी] रहनेवाला। बसनेवाला। वासी।

निविड़—वि० [सं०] १. घना। घनघोर। २. गहरा।

निविष्ट—वि० [सं०] १ जिसका चित्त एकाग्र हो। २ एकाग्र। ३ लपेटा हुआ।

४. घुसा या घुसाया हुआ। ५. बाँधा हुआ।

निवृत—संज्ञा पुं० [सं०] दूर होना। मिटना। खत्म होना। नष्ट होना। उ०—निसि गृह मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहिं होई।—विनय०।

निवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। प्रवृत्ति का उलटा। २. मोक्ष।

निवेद(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य"।

निवेदक—संज्ञा पुं० [सं०] निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।

निवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २. समर्पण।

निवेदना(पु)†—क्रि० स० [हिं० निवेदन] १. विनती करना। प्रार्थना करना। २. कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना। नैवेद्य चढ़ाना। ३ अर्पित करना।

निवेदित—वि० [सं०] १ अर्पित किया हुआ। २. निवेदन किया हुआ।

निवेरना(पु)†—क्रि० स० दे० "निबटाना"।

निवेरा(पु)—वि० [हिं० निबेरना] १. चुना हुआ। छाँटा हुआ। उ०—आजु भई कैसी गति तेरी ब्रज में चतुर निवेरी।—सूर०। २. नवीन। अनोखा। उ०—मैं कहु आजु निवेरी आई ? बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की कीजै पहुनाई।—सूर०।

निवेश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निवेशित] १. विवाह। २. डेरा। खेमा। ३. प्रवेश। ४ घर। ५. ठहराया या रखा जाना। स्थापन।

निशंक—वि० [सं० नि शंक] जिसे किसी बात की शंका या भय न हो। निर्भय। निडर।

निशंग—संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।

निश—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निशांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. रात्रि का अंत। २ प्रभात। तड़का।

निशांध—वि० [सं०] १. जिसे रात को न सूझे। २ उल्लू। ३. चमगादड़।

निशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिन का अभाव। रात्रि। रजनी। २ हरिद्रा। हलदी। ३. दारुहरिद्रा।

निशाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। चाँद। २ कुक्कुट। मुरगा।

निशाखातिर—संज्ञा स्त्री०-[अ० खातिर+फा० निशाँ (खातिरनिशाँ)] तसल्ली। दिलजमई।

निशाचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. रात को चलने या व्यवहार करनेवाला। राक्षस। २. श्रृगाल। गीदड़। ३. उल्लू। ४. सर्प। ५. चक्रवाक। ६. भूत। पिशाच। ७ चोर।

निशाचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राक्षसी। २ कुलटा। ३ अभिसारिका।

निशाधीश—संज्ञा पुं० दे० "निशापति"।

निशान—संज्ञा पुं० [फा०] १. लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय। चिह्न। पहचान। २ किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ चिह्न। ३. शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वाभाविक या कृत्रिम चिह्न, दाग या धब्बा। ४. वह चिह्न जो अपढ़ आदमी अपने (हाथ के अँगूठे से) हस्ताक्षर के बदले में किसी कागज आदि पर बनाता है। ५ वह लक्षण या चिह्न जिससे किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिले।

यौ०—नाम निशान=(१) किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। (२) अस्तित्व का लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश।

६. पता। ठिकाना।

मुहा०—निशान देना=असामी को सम्मन आदि तामील करने के लिये पहचनवाना।

७ समुद्र में या पहाड़ों आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगों को मार्ग आदि दिखाने के लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। ८ दे० "लक्षण"। ९ दे० "निशाना"। १०. दे० "निशानी"। ११ ध्वजा। पताका। झंडा।

मुहा०—किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना=(१) किसी काम में अगुआ या नेता बनकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना, जैसे, बगावत का निशान खड़ा करना। (२) आंदोलन करना।

निशानची—संज्ञा पुं० [फा० निशान+ची (प्रत्य०)] वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे झंडा लेकर चलता हो। निशान-बरदार।

निशानदेही—संज्ञा स्त्री० [फा० निशान+हिं० देना या फा० देह=देना] असामी को सम्मन आदि की तामील के लिये पहचनवाने की क्रिया।

निशापति—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

निशाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जिसपर लक्ष्य करके किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय। लक्ष्य। २. किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना।

मुहा०—निशाना बाँधना=वार करने के लिये अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना=लक्ष्य स्थिर करके अस्त्र आदि का वार करना।

३ वह जिसपर लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या बात कही जाय।

निशानाथ—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

निशानी—संज्ञा [फा०] १. स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। यादगार। स्मृतिचिह्न। २. वह चिह्न जिससे कोई चीज पहचानी जाय। निशान।

निशामणि—संज्ञा [सं०] चंद्रमा।

निशामुख—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या। सायकाल।

निशास्ता—संज्ञा पुं० [फा०] १. गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और जमाया हुआ सत या गूदा। २. माड़ी। कलफ।

निशि—संज्ञा स्त्री० [सं० निश के अधिकरण एकवचन के रूप से] रात। रात्रि।

निशिकर—संज्ञा पुं० [हिं० निशि+सं० कर] चंद्रमा।

निशिचर—संज्ञा पुं० दे० 'निशाचर'।

निशिचरराज(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० निशिचर+सं० राज] निशाचरों का राजा। रावण, विभीषण आदि।

निशिचरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० निशिचर] निशाचर की स्त्री। राक्षस की पत्नी। उ०—दिव्य-देवी-वेष देखि निशिचरी जनु विडंबित करी विश्वबाधा।—विनय०।

निशिचारी—संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

निशित—वि० [सं०] चोखा। तेज। संज्ञा पुं० लोंदा।

निशिनाथ—संज्ञा पुं० दे० "निशानाथ"।

निशिपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ एक छंद। जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, जगण, सगण, नगण और रगण होते हैं। उ०—भोज मुनि राघव कवींद्र कुल को नई। काव्य रचना विपुल वित्त तिहिं दै दई॥

निशिवासर(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] १. रातदिन। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

निशीथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. रात का मध्य। आधीरात। २ रात।

निशीथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि। रात।

निशुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वध। २. हिंसा। ३ एक असुर जो शुंभ का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।

निशुंभमर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निशुंभ का मर्दन करनेवाली। दुर्गा।

निश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसी धारणा जिसमें कोई संदेह न हो। निःसंशय ज्ञान। २ विश्वास। यकीन। ३ निर्णय। ४ पक्का विचार। दृढ़ संकल्प।

निश्चयात्मक—वि० [सं० जो बिलकुल निश्चित हो। ठीक ठीक। असंदिग्ध।

निश्चल—वि० [सं०] [स्त्री० निश्चला] १ जो अपने स्थान से न हटे। अचल। अटल। २ स्थिर।

निश्चलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चल होने का भाव। स्थिरता। दृढ़ता।

निश्चिंत—वि० [सं०] जिसे कोई चिंता या फिक्र न हो। चितारहित। बेफिक्र।

निश्चिंतई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "निश्चिंतता"।

निश्चिंतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चिंत होने का भाव। बेफिक्री।

निश्चित—वि० [सं०] १ जिसके संबंध में निश्चय हो। तै किया हुआ। निर्णीत। २ जिसमें कोई फेरबदल न हो सके। दृढ़। पक्का।

निश्चेतन—वि० [सं०] १ चेतनाविहीन। संज्ञाशून्य। २ बेसुध। बेहोश। ३ जड़।

निश्चेष्ट—वि० [सं०] १. चेष्टारहित। स्थिर। २ अचेत। बेहोश। ३ स्थिर। निष्कप।

निश्चै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।

निश्छल—वि० [सं०] छलरहित। सीधा।

निश्रेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीढ़ी। जीना। २. मुक्ति।

निश्रेयस—संज्ञा पुं० [सं० निःश्रेयस] १ मोक्ष। २. दुःख का अभाव। ३ कल्याण।

निश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] नाक या मुँह के बाहर निकलनेवाला श्वास।

निश्शंक—वि० [सं०] १ निडर। निर्भय। २. संदेहरहित। जिसमें शंका न हो।

निश्शेष—वि० [सं०] जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी अवशिष्ट न हो।

निषंग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निषंगी] १. तूण। तूणीर। तरकश। उ०—पाइ मातु-पितु-आयसु गुरु पाँयन परे। कटि निषंग पट पीत, करनि सर धनु धरे। —जा० मं०। २ खड्ग।

निषध—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार। एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है। २ हरिवंश के अनुसार रामचंद्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम। ३ पुराणानुसार दक्षिण भारत के एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो विंध्याचल पर्वत पर था। महाराज नल यहीं के राजा थे।

निषाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत पुरानी अनार्य जाति जो भारत में आर्य जाति के उत्थान से पहले निवास करती थी। २ भारत का एक प्राचीन प्रदेश जो संभवतः शृंगवेरपुर के चारों ओर था। ३ संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी—संज्ञा पुं० [सं० निषादिन्] हाथीवान। महावत।

निषिद्ध—वि० [सं०] १. जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिये मनाही हो। २ खराब। बुरा। दूषित। उ०—पावक परत निषिद्ध लाकरी होति अनल जग जानी।—श्रीकृष्ण गीता०।

निषेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्जन। मनाही। न करने का आदेश। २. बाधा। रुकावट।

निषेधक—संज्ञा पुं० [सं०] मना करनेवाला।

निषेधाभास—संज्ञा पुं० [सं०] आक्षेप नामक अलंकार का एक भेद। उ०—(१) रे खल! तेरे चरित ये कहिहौं सबहिं सुनाय। अथवा कहिबो हतकथा उचित न मोहिं जनाय। (२) चंदन, चंद्रक, चंद्रिका, चंद-साल मनिहार। हौं न कहौं सब होय ये ताको दाहनहार।

निषेधित—वि० दे० "निषिद्ध"।

निषेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० नि+सेवा] सेवा। उ० कोह गमनी तजि सौंहन, दौहन, भोजन, सेवा। अंजन, मंजन, चंदन, द्विजपति-देव निषेवा।—नंददास०।

निष्कंटक—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि न हो। बिना खटके का। निर्विघ्न।

निष्कंप—वि० [सं०] जो काँपता या हिलता न हो। स्थिर।

निष्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का या मोहर, जिसका मान भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न था। २. प्राचीन काल की चाँदी की एक तौल जो चार सुवर्ण के बराबर थी। ३. वैद्यक में चार माशे की तौल। टंक। ४ सुवर्ण। ५. हीरा।

निष्कपट—वि० [सं०] निश्छल। छलरहित। सीधा। सरल।

निष्कपटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्कपट होने का भाव। सरलता। सीधापन।

निष्करुण—वि० [सं०] जिसमें करुणा न हो। करुणारहित।

निष्कर्म—वि० [सं० निष्कर्मन्] अकर्मा। जो कामों में लिप्त न हो।

निष्कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चय। २. खुलासा। तत्व। ३. निचोड़। सार।

निष्कलंक—वि० [सं०] निर्दोष। बेऐब।

निष्काम—वि० [सं०] [संज्ञा निष्कामता] १. (वह मनुष्य) जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो। २. (वह काम) जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय। ३. प्रयत्नों के फल का मोह छोड़कर किया हुआ (काम)।

निष्कारण—वि० [सं०] १. बिना कारण। बेसबब। २ व्यर्थ। वृथा।

निष्कासन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निष्कासित] निकालना। बाहर करना।

निष्कृत—वि० [सं०] [संज्ञा निष्कृति] १ निकला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।

निष्केवल—वि० [सं० निः+केवल] विशुद्ध। एकमात्र। अकेला। अनन्य। उ०—उमा जोग जग दान तप नाना व्रत मख नेम। रामकृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम।—मानस।

निष्क्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निष्क्रांत] १ बाहर निकलना। २ एक संस्कार जिसमें जब बालक चार महीने का होता है, तब उसे घर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है।

निष्क्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ के बदले में दिया जानेवाला धन। २ बदला। विनिमय। ३ वेतन। तनखाह। ४ बिक्री।

निष्क्रांत—वि० [सं०] [भा० निष्क्रांति] १ निकला या निकाला हुआ। २ छूटा हुआ। मुक्त।

निष्क्रिय—वि० [सं०] जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट।

यौ०—निष्क्रिय प्रतिरोध=किसी अनुचित कार्य या आज्ञा का वह विरोध जिसमें विरोध करनेवाला उचित काम करता रहता है और दंड की परवा नहीं करता। बदला लेने के लिये कुछ न करके किया जानेवाला विरोध (अत्याचार, अपराध, अनौचित्य आदि का)।

निष्क्रियता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ—वि० [सं०] १ स्थित। ठहरा हुआ। २. तत्पर। लगा हुआ; जैसे, कर्तव्यनिष्ठ। ३. जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो, जैसे, स्वामिनिष्ठ।

निष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिति। अवस्था। ठहराव। २ निर्वाह। ३. चित्त का जमना। ४ विश्वास। निश्चय। ५ धर्म, गुरु या बड़े आदि के प्रति श्रद्धाभक्ति। पूज्य बुद्धि। ६ नाश। ७ ज्ञान की वह चरमावस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है।

निष्ठावान्—वि० [सं० निष्ठावत्] जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।

निष्ठीवन—संज्ञा पुं० [सं०] थूक।

निष्ठुर—वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा] १ कठिन। कड़ा। सख्त। २ क्रूर। बेरहम।

निष्ठुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कड़ाई। सख्ती। कठोरता। २ निर्दयता। क्रूरता।

निष्णा, निष्णात—वि० [सं०] किसी बात का पूरा पंडित। विज्ञ। निपुण।

निष्पंद—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो।

निष्पक्ष—वि० [सं०] [संज्ञा निष्पक्षता] जो किसी के पक्ष में न हो। पक्षपात-रहित।

निष्पत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूर्णता। समाप्ति। २ सिद्धि। परिपाक। ३ निर्वाह। ४ मीमांसा। ५ निश्चय। निर्धारण।

निष्पन्न—वि० [सं०] जो समाप्त या पूरा हो चुका हो। सिद्ध।

निष्पाप—वि० [सं०] जो पाप से दूर हो। पापरहित।

निष्पीडन—संज्ञा पुं० [सं०] निचोड़ना। दबाना। गारना।

निष्प्रभ—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य।

निष्प्रयोजन—वि० [सं०] १ जिसमें कोई मतलब न हो। स्वार्थशून्य। २. व्यर्थ।

क्रि० वि० १. विना अर्थ या मतलब के। २. व्यर्थ। फजूल।

निष्प्राण—वि० [सं०] प्राणरहित। मृत। मुरदा।

निष्प्रेही(पु)—वि० [सं० निस्पृह] निस्पृह।

निष्फल—वि० [सं०] जिसका कोई फल न हो। व्यर्थ। निरर्थक। बेफायदा।

निसंक—वि० दे० "निश्शंक"।

निसंग—वि० दे० "निस्संग"।

निसँठ—वि० [हिं० नि+सँठ=पूँजी] गरीब।

निसंबर—[सं० नि+संबल] संबल रहित। साधनविहीन। विना किसी सामग्री या उपकरण के। भोजन आदि से वंचित। उ०—सुमिरु सनेह सों तू नाम रामराय को। संबर निसंबर को सखा असहाय को। —विनय०।

निसंबल—वि० दे० "निस्संबल"। उ०—पंगु अंध निरगुनी निसंबल जो न लहै जाँचे जलो। सो निबह्यो नीक जो जनमि जग राम-राजमारग चलो।—गीता०।

निसंस(पु)†—वि० [सं० नृशंस] क्रूर। निर्दय। बेरहम।

वि० [हिं० नि+साँस] मुरदा सा। मृतकवत्।

निससना(पु)—क्रि० अ० [सं०] निःश्वास लेना।

निस(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसक—वि० [सं० निःशक्त] अशक्त। कमजोर। दुर्बल। उ०—कहै यहै श्रुति सुभ्रत्यौ, यहै सयाने लोग। तीन दबावत निसकहीं, पातक, राजा, रोग।—बिहारी०।

निसकर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निशाकर"।

निसत(पु)†—वि० [सं० निःसत्य] असत्य। मिथ्या। उ०—जो जानै सत आपुहि जारा। निसत हिये सत करै न पारा।—पद्मावत।

निसतरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। छुटकारा पाना।

निसतारना—क्रि० स० [सं० निस्तार से हिं० ना० धा०] निस्तार करना। मुक्त करना।

निसद्योस(पु)†—क्रि० वि० [सं० निशि+दिवस] १ रात दिन। २ नित्य। सदा।

निसनेहा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "निःस्नेह"।

निस्प्रेही—वि० दे० "निस्पृह"। उ०—चतुराई हरि नाँ मिलै ए बातों की बात। एक निसप्रेही निरधार का गाहक गोपीनाथ॥—कबीर०।

निसबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध। लगाव। ताल्लुक। २. मँगनी। विवाह संबंध की बात। ३ तुलना। मुकाबला।

निसयाना(पु)—वि० [हिं० नि+सयाना] जिसके होश हवास ठिकाने न हों।

निसयानी(पु)—वि० स्त्री० दे० "निसयाना"। उ०—जनहुँ माति निसयानी बसी। अति बेसँभार फूल जनु अरसी। —पद्मावत।

निसरना(पु)—क्रि० अ० [सं० निःसरण] निकलना। बाहर होना।

निसरावन—संज्ञा पुं० [सं० निस्सारण] ब्राह्मण को दिया जानेवाला असिद्ध अन्न। सीधा।

निसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वभाव। प्रकृति। २ रूप। आकृति। ३. दान। ४ सृष्टि।

निसवादला(पु)—वि० [सं० निःस्वाद] स्वादरहित। जिसमें कोई स्वाद न हो। बेस्वाद।

निसवादिल(पु)—वि० दे० "निसवादला"। उ०—ल्यायो कछू फल मीठो विचारिकै दूरि तें दौरे सबै ललचाने। हाथ लै चाखिकै राखि दयो निसवादिल बोलि सबै अलगाने।—रससारांश।

निसवासर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० निशि-वासर] रात और दिन।

क्रि० वि० नित्य। सदा। हमेशा।

निसस(पु)†—वि० [सं० निःश्वास] श्वासरहित। अचेत। बेहोश।

निसहाय—वि० दे० "निस्सहाय"।

निसाँक(पु)—वि० दे० "निःशंक"।

निसाँस, निसाँसा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० नि+श्वास] ठंढी साँस। लंबी साँस।

वि० बेदम। मृतकप्राय।

निसाँसी—वि० स्त्री० दे० "निसाँस"। उ०—अब हौं मरौं निसाँसी, हिए न आवै साँस। रोगिया की को चालै, बैदहि जहाँ उपास?—पद्मावत।

निसा—संज्ञा स्त्री० [निशाखातिर?] संतोष। उ०—'दास' निसा लौं निसा करिए दिन बूड़त ब्यौंत हजार करौंगी। —शृंगार०।

मुहा०—निसा भर=जी भर के।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसान—संज्ञा पुं० [फा० निशान]

दे० "निशान"। २. नगाड़ा। धौंसा। उ०—मंगल गान निसान नभ, नगर मुदित नर नारि। भूप-सुकृत-सुरतरु निरखि-फरे चारु फल चारि। —रामाज्ञाप्रश्न।

निसानन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० निशानन] निशामुख। संध्या का समय। प्रदोष-काल।

निसाफ़(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "इनसाफ"।

निसार—संज्ञा पुं० [अ०] निछावर। सदका।

(पु)†वि० दे० "निस्सार"।

निसारना†—क्रि० स० दे० "निकालना"।

निसास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० नि श्वास] गहरी या ठंढी साँस।

वि० [हिं० नि.+साँस] विगतश्वास। बेदम। निष्प्राण।

निसासी(पु)—वि० [सं० नि श्वास] जिसका श्वास न चलता हो। बेदम।

निसि—संज्ञा स्त्री० [सं० निश के अधिकरण कारक के रूप 'निशि' से] १ दे० "निशि"। २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और अंत्य लघु होता है। उ०—भूल तज। शूलि भज॥ सर्व दिसि। धौस निसि॥

निसिअर—संज्ञा पुं० [हिं० निसि+सं० कर] चंद्रमा। उ०—अनु, धनि तू निसिअर निसि माहाँ। हौं दिनिअर जेहिकै तू छाहाँ। —पदमावत।

निसिकर—संज्ञा पुं० दे० "निशिकर"।

निसिचर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

निसिचारी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

निसिदिन(पु)—क्रि० वि० [सं० निशिदिन] १. रातदिन। आठों पहर। २ सदा। सर्वदा।

निसिनाथमुखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० निशिनाथ+मुखी] चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाली। उ०—साथ निसिनाथमुखी पाथनाथ-नंदिनी सी। तुलसी विलोक चित लाइ लेत संग है। —कवित्ता०।

निसि निसि—संज्ञा स्त्री० [सं० निशि निशि] मद्ध रात्रि। निशीथ। आधी रात।

निसियर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० निशिकर] चंद्रमा।

निसिवासर(पु)—क्रि० वि० [सं० निशि+वासर] १ रातदिन। २ सदा। सर्वदा। नित्य।

नसीठी—वि० [सं० नि+हिं० सीठी] निःसार। नीरस। थोथा।

निसु(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसुका(पु)—वि० [सं० नि+स्वक] १. गरीब। २ निगोड़ा।

निसूदन—संज्ञा पुं० [सं०] हिंसा। वध।

निसृष्ट—वि० [सं०] १. छोड़ा हुआ। २ मध्यस्थ। ३. भेजा हुआ। प्रेरित। ४ दिया हुआ। दत्त।

निसृष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो दोनों पक्षों का अभिप्राय अच्छी तरह समझकर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर दे देता और कार्य सिद्ध कर लेता है।

निसेनिका†—संज्ञा स्त्री० [सं० निश्रयणी] दे० "निसेनी"। उ०—नाभी सर त्रिबली निसेनिका, रोम-राजि सैवल छवि पावति। —गीता०।

निसेनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० नि श्रेणी] सीढ़ी।

निसेष(पु)—वि० दे० "नि शेष।

निसेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० निशेश] चंद्रमा।

निसैनी—संज्ञा स्त्री० [सं० निश्रयणी] दे० "निसेनी"।

निसोग(पु)†—वि० [सं० नि शोक] जिसे कोई शोक या चिंता न हो।

निसोच(पु)—वि० [सं० निःशोच] चिंता-रहित। बेफिक्र।

निसोत—वि० [सं० नि सयुक्त] १ जिसमें और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा। उ०—कृपा सुधा जलदान माँगिबो कहौं सो साँच निसोतो। स्वाति-सनेह-सलिल सुख चाहत चित-चातक को पोतो। —विनय०। २ निष्कपट। बिना छल या छद्म के। उ०—रीझत राम सनेह निसोते। को जग मद मलिन मति मोते॥ —मानस।

निसोथ—संज्ञा स्त्री० [सं० निसृता] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डठल अच्छे रेचक समझे जाते हैं।

निसोधु(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नि+सोध या सुध] १ सुध। खबर। २ सँदेसा।

निस्केवल—वि० [सं० नि+केवल] एकमात्र। अकेला। अनन्य। शुद्ध। निर्मल। खालिस।

निस्तंद्र—वि० [सं० नि+तंद्र] १ जिसे तंद्रा या आलस्य न हो। २ जागा हुआ। जाग्रत।

निस्तत्व—वि० [सं०] जिसमें कोई तत्व न हो। निस्सार।

निस्तब्ध—वि० [सं०] १ जो हिलता डोलता न हो। २. जड़वत्। निश्चेष्ट।

निस्तब्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध होने का भाव। खामोशी। २ सन्नाटा।

निस्तरंग—वि० [सं०] जिसमें तरंग या लहर न हो। शांत।

निस्तर—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार" उ०—जरै देहु, दुख जरौं अपारा। निस्तर पाइ जाउँ एक बारा। —पदमावत।

निस्तरण—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।

निस्तरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। मुक्त होना। छूट जाना।

(पु)क्रि० स० निस्तार करना। मुक्त करना।

निस्तल—वि० [सं०] [भा० निस्तलता] १ जिसका तल न हो। २. जिसके तल की थाह न हो। बहुत गहरा। ३. गोल। वृत्ताकार। ४. नीचा। निम्न।

निस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ पार होने का भाव। २ छुटकारा। मोक्ष। उद्धार। उ०—सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार। गुनौ बहुत कलियुग कर बिनु प्रयास निस्तार। —मानस।

निस्तारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. निस्तार करना। बचाना। छुड़ाना। २ पार करना।

निस्तारन(पु)—वि० दे० "निस्तारण"।

निस्तारना†(पु)—क्रि० स० [सं० निस्तार+ना (प्रत्य०)] छुड़ाना। मुक्त करना। उद्धार करना।

निस्तारा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।

निस्तीर्ण—वि० [सं०] १ जो तै या पार कर चुका हो। २. छूटा हुआ। मुक्त।

निस्तेज—वि० [सं० निस्तेजस्] तेजरहित। जिसमें तेज न हो। अप्रभ। मलिन।

निस्पंद—वि० [सं०] [भा० निस्पंदता] १ जो हिलता डोलता न हो। स्थिर। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध।

निस्पृह—वि० [सं०] [संज्ञा निस्पृहता] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लालच या कामना आदि से रहित। निर्लेप। असंग।

निस्फ़—वि० [अ०] अर्द्ध। आधा।

निस्वन—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।

निस्संकोच—वि० [सं०] संकोचरहित। जिसमें संकोच या लज्जा न हो। बेधड़क। बिना किसी हिचक या हिचकिचाहट का।

निस्संग—वि० [सं०] १ जो किसी से कोई

संबंध न रखता हो। २. विषयविकार से रहित। ३. निर्जन। एकांत। ४. अकेला।

निस्संतान—वि० [सं०] जिसे कोई संतान न हो। संततिरहित।

निस्संदेह—क्रि० वि० [सं०] अवश्य। जरूर। बेशक।

वि० जिसमें संदेह न हो।

निस्संबल—वि० [सं०] जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।

निस्सत्व—वि० [सं०] जिसमें कुछ भी सत्व न हो। असार।

निस्सरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलने की क्रिया या भाव। २. निकलने का मार्ग।

निस्सहाय—वि० [सं०] जिसका कोई सहायक न हो। असहाय।

निस्सार—वि० [सं०] १. साररहित। २. जिसमें कोई काम की वस्तु न हो।

निस्सीम—वि० [सं०] १ जिसका वार पार न हो। असीम। अपार। २. बहुत अधिक।

निस्सृत—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

निस्स्नेह—वि० [सं०] जिसमें स्नेह या प्रेम न हो। निर्दय।

संज्ञा पुं० स्नेह या प्रेम का अभाव।

निस्स्वार्थ—वि० [सं०] जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो। स्वार्थरहित।

निहंग, निहंगम—वि० [सं० निःसंग] १. एकाकी। अकेला। २. स्त्री आदि से संबंध न रखनेवाला (साधु)। ३. नंगा। ४ बेशरम।

निहंग लाडला—वि० [हिं० निहंग+लाडला] जो मातापिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।

निहंता—वि० [सं० निहंतु] [स्त्री० निहंत्री] १ नाश करनेवाला। २. प्राण लेनेवाला। ३. महाक्रूर।

निहकर्म—संज्ञा पुं० [सं० निष्कर्म] दे० निष्कर्म"।

निहकामⓟ†—वि० दे० निष्काम"।

निहचयⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"। उ०—तब आतमा निहकर्म है निर्गुन ब्रह्म समाय। सुनौ भजनागरी।—नंददास०।

निहचलⓟ†—वि० दे० "निश्चल"। उ०—अनुरागिन को चित्त जो तिनसै निहचल प्रीति। तौं सुकियन की गति लहै संकुलत की रीति।—शृंगार०।

निहचीतⓟ—वि० दे० "निश्चिंत"।

निहडर—वि० [सं० नि.+हिं० डर] दे० "निडर"। उ०—कोउ इक अबर को गिरिवर कर धर बोलत तब। निहडर हहि तर रही गोप गोपी गाइन सब।—नंददास०।

निहत—वि० [सं०] १. नष्ट। २ जो मार डाला गया हो। ३. फेंका हुआ।

निहत्था—वि० [हिं० नि+हाथ] १ जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २. खाली हाथ। निर्धन। गरीब।

निहननाⓟ†—क्रि० स० [सं० निहनन] मारना। मार डालना।

निहननी—वि० स्त्री० [सं० नि+√हन्] नाश करनेवाली। समाप्त करनेवाली। उ०—निज जन को बिना भजनहू, कलेस हननी, बिथा निहननी। जय जय श्री हिमाद्रितनया महेसघरनी गनेसजननी। —छंदार्णव।

निहपापⓟ—वि० दे० "निष्पाप"।

निहफलⓟ—वि० दे० "निष्फल"।

निहाई—संज्ञा स्त्री० [सं० निघात, मि० फा० निहाली] सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औजार जिसपर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

निहाउⓟ—संज्ञा पुं० दे० "निहाई"।

निहायत—वि० [अ०] अत्यंत। बहुत। बेहद।

निहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुहरा। पाला। उ०—अहिभूषन, दूषन-रिपु-सेवक, देव देव त्रिपुरारी। मोह-निहार-दिवाकर सकर, सरन-सोक-भयहारी।—विनय०। २. ओस। ३. हिम। बरफ।

निहारना—क्रि० स० [सं० निभालन= देखना] ध्यानपूर्वक देखना। देखना। ताकना।

निहाल—वि० [फा०] जो सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्णकाम। उ०—सेवा बिनु, गुन-बिहीन दीनता सुनाए। जे जे तैं निहाल किए फूले फिरत पाए।—विनय०।

निहालना—क्रि० स० दे० "निहारना"।

निहाली—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गद्दा। तोशक। २ निहाई।

निहित—वि० [सं०] १. स्थापित। २. अंदर रखा हुआ। ३. छिपा हुआ।

निहुरना†—क्रि० अ० [हिं० नि+होरन ?] झुकना। नवना।

निहुराई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√निहुर+आई (प्रत्य०)] निहुरने या झुकने की क्रिया।

ⓟ संज्ञा स्त्री० दे० "निष्ठुरता"।

निहुराना—क्रि० स० [हिं० निहुरना का प्रे०] झुकाना। नवाना।

निहोर—संज्ञा पुं० [?] अनुग्रह। एहसान। उ०—पिता बधे पर मारत मोहीं। राखा राम निहोर न ओही।—मानस।

निहोरना—क्रि० स० [सं० मनोहार ?] १ मनाना। मनौती करना। उ०—ग्वालिन चली जमुना बहोरि। बाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि।—सूर०। २ प्रार्थना या विनय करना। ३. कृतज्ञ होना।

निहोरा†—संज्ञा पुं० [सं० मनोहार] १. विनती। प्रार्थना। उ०—चितै रघुनाथ बदन की ओर। रघुपति सो अब नेम हमारो विधि सों करति निहोर।—सूर०। २. मनौती। खुशामद। ३. अनुग्रह। एहसान। कृतज्ञता। उ०—बोले रामहिं देइ निहोरा। बचौं विचारि बंधु लघु तोरा।—मानस। ४. भरोसा। आसरा।

क्रि० वि० १ कारण से। बदौलत। द्वारा। २ के लिये। वास्ते। निमित्त।

नींद—संज्ञा स्त्री० [सं० निद्रा] जीवन की एक नित्यप्रति (विशेषत. रात में) होनेवाली अवस्था जिसमें चेतन क्रियाएँ रुकी रहती हैं और शरीर तथा अंतःकरण विश्राम करते हैं। सोने की अवस्था। निद्रा। स्वप्न।

मुहा०—नींद उचटना=नींद का दूर होना। नींद खुलना या टूटना=नींद का छूट जाना। जाग पड़ना। नींद पड़ना=नींद आना। निद्रा की अवस्था होना। नींद भर सोना=जितनी इच्छा हो उतना सोना। इच्छा भर सोना। नींद लेना=सोना। नींद सचरना=नींद आना हराम होना=सोना छूट जाना।

नींदड़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "नींद"।

नींदनाⓟ—क्रि० अ० [हिं० नींद] नींद लेना। सोना।

क्रि० स० दे० "निराना"।

नीक, नीकाⓟ—वि० [सं० न्यक्त] [स्त्री० नीकी] १. अच्छा। सुंदर। भला। §उ०—बकवार, साकम बोध पोषरि नीक नीक निकेतना।

संज्ञा पुं० १. अच्छाई। उत्तमता। २.

ठीक। यथार्थ। उ०—कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका। —मानस।

नीके—क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह। उ०—हरि की भक्ति करो सुत नीके जो चाहो सुख पायो। —सूर०।

नीकैं—क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह। उ०—माँग भरी मोतिन सों, पटियाँ नीकैं पारी। —नंददास०।

नीच—वि० [सं०] १ जाति, गुण, कर्म, संस्कार, स्वभाव या और किसी बात में घटकर या न्यून। क्षुद्र। २. अधम। बुरा। निकृष्ट। तुच्छ। हेठा।

यौ०—नीच ऊँच = (१) अच्छा बुरा। (२) बुराई भलाई। गुण अवगुण (३) अच्छा और बुरा परिणाम। हानि लाभ। ४. सुख दुःख।

नीचगामी—वि० [सं० नीचगामिन्] [स्त्री० नीचगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. ओछा।

नीचता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीचे होने का भाव। २. अधमता। क्षुद्रता। कमीनापन।

नीचा—वि० [सं० नीच] [स्त्री० नीची] १ जो कुछ उतार या गहराई पर हो। गहरा। ऊँचा का उलटा। निम्न।

यौ०—नीचा ऊँचा = कहीं गहरा और कहीं उठा हुआ। जो समतल न हो। ऊबड़ खाबड़।

२ ऊँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम। जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो। ३. जो ऊपर से जमीन की ओर दूर तक आया हो। अधिक लटका हुआ। ४ झुका हुआ। नत। ५ जो तीव्र या जोर का न हो। धीमा। मध्यम। ६. जो जाति, पद गुण इत्यादि में न्यून या घटकर हो। ओछा। क्षुद्र। बुरा।

मुहा०—नीचा ऊँचा = (१) भला-बुरा। (२) भलाई बुराई। गुण अवगुण। अच्छा और बुरा परिणाम। हानि लाभ। (३) संपद विपद। सुख दुःख। नीचा खाना = (१) तुच्छ बनना। अपमानित होना। (२) हारना। परास्त होना। (३) लज्जित होना। झेंपना। नीचा दिखना = (१) तुच्छ बनना। अपमानित होना। (२) हारना। परास्त होना। (३) लज्जित होना। झेंपना। नीचा दिखाना = (१) तुच्छ बनाना। अपमानित करना। (२) मानभंग करना। शेखी झाड़ना। (३) परास्त करना। हराना। (४) लज्जित करना। नीचा देखना = दे० "नीचा खाना"। नीची दृष्टि करना = लज्जा से सिर झुकाना। सामने न ताकना।

नीचाशय—वि० [सं०] [संज्ञा नीचाशयता] बुरे आदर्शोंवाला। क्षुद्र। ओछा।

नीचू†—क्रि० वि० दे० "नीचे"।

संज्ञा स्त्री० दे० "लीची"।

नीचे—क्रि० वि० [हिं० नीचा] १ नीचे की ओर। अधोभाग में। ऊपर का उलटा।

मुहा०—नीचे ऊपर = (१) एक पर एक। तले ऊपर। (२) उलट पलट। अस्तव्यस्त। अव्यवस्थित। नीचे गिरना = (१) प्रतिष्ठा खोना। मानमर्यादा गँवाना (२) पतित होना। अवनत दशा को प्राप्त होना। ऊपर से नीचे तक = (१) सब भागों में। सर्वत्र। (२) सर्वांग में। सिर से पैर तक।

२. घटकर। कम। न्यून। ३ अधीनता में।

नीजनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० निर्जन] निर्जन स्थान।

नीझरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० निर्झर] निर्झर। झरना। सोता। उ०—नैनाँ नीझर लाइया, रहट वहै निस जाय। पपीहा ज्यूं पिव पिव करौं कबरु मिलहुगे राम।—कबीर०।

नीठ—क्रि० वि० दे० "नीठि"।

नीठि—संज्ञा स्त्री० [सं० अनिष्टि] अरुचि। अनिच्छा।

क्रि० वि० १ ज्यों त्यों करके। किसी न किसी प्रकार। २ मुश्किल से। कठिनता से। उ०—करके मीड़े कुसुम लौं गई बिरह कुम्हिलाइ। सदा समीपिनि सखिनु हूँ नीठि पिछानी जाइ।—बिहारी०।

नीठोⓅ—वि० [सं० अनिष्ट] अनिष्ट। अप्रिय।

नीड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिड़ियों का घोंसला। २ ठहरने या रहने का स्थान।

नीड़ज—संज्ञा पुं० [सं०] चिड़िया। पक्षी।

नीत—वि० [सं०] १ लाया हुआ। पहुँचाया हुआ। २ स्थापित। ३. प्राप्त। ४ गृहीत। अदा किया हुआ। उ०—किधौं मंद गरजनि जलधर की, पगनूपुर रव नीत।—सूर०।

नीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ले जाने या ले चलने की क्रिया, भाव या ढंग। २ जीवन के लिये या किसी विशेष कार्य के लिये समाज द्वारा स्वीकृत आधारभूत व्यावहारिक सिद्धांत। ३. व्यवहार की रीति। आचारपद्धति। ४ व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे। उ०—नीति निपुन जिन्हकइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्हकर मनु टीका।—मानस। ५. लोक या समाज के कल्याण के लिये उचित ठहराया हुआ आचारव्यवहार। सामाजिक व्यवहार। सदाचार। अच्छी चाल। नय। ५ राजा और प्रजा की रक्षा के लिये निर्धारित व्यवस्था। राजविद्या। राजनीति। ७ राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति। शासक और शासित की व्यवहारपद्धति। ८. किसी कार्य की सिद्धि के लिये चली जानेवाली चाल। युक्ति। उपाय। हिकमत ९ आध्यात्मिक आचरण के सिद्धांत या नियम।

नीतिज्ञ—वि० [सं०] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान्—वि० [सं० नीतिमत] [स्त्री० नीतिमती] नीतिपरायण। सदाचारी।

नीतिवादी—संज्ञा पुं० [सं० वह जो सब काम नीति शास्त्र के अनुसार करना चाहता हो।

नीतिविज्ञान—संज्ञा पुं० दे० "नीतिशास्त्र"।

नीतिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों। २. वह शास्त्र जिसमें मनुष्यसमाज के हित के लिये आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो।

नींदनाⓅ—क्रि० स० [सं० निंदन] निंदा करना। उ०—सोवत सपनें स्यामघनु हिलि मिलि हरत वियोगु। तबहीं टरि कितहूँ गई, नींदौ नींदनु जोगु।—बिहारी०।

नीधना†Ⓟ—वि० [सं०] निर्धन] दरिद्र।

नीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ कदंब। २. गुलदुपहरिया। ३ पहाड़ का निचला भाग।

नीपनाⓅ—क्रि० स० दे० "लीपना"।

नीबी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवि" १ और "२"। उ०—गति भारी भई विधि कीबी कहा कसि बाँधत हूँ कटिनीबी ढहै। —शृंगार०।

नीबू—संज्ञा पुं० [सं० निंबूक] मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है। नीबू दो प्रकार के होते हैं—(१) खट्टे और (२) मीठे। मीठे नीबू कई प्रकार के होते हैं। खट्टे नीबू के मुख्य भेद ये हैं-कागजी, जबीरी, बिजौरा, चकोतरा।

मुहा०—नीबू निचोड़=भारी कंजूस।

नीम—संज्ञा पुं० [सं० निंब] पत्ती झाड़ने-वाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है।

वि० [फा०] आधा। अर्ध।

नीमन†—वि० [सं० निर्मल] १ नीरोग। चंगा। उ०—जानि लेहु हरि इतने ही में कहा करै नीमन को वैद।—सूर०। २ दुरुस्त। ठीक। ३ अखंडित। बढ़िया। अच्छा।

नीमरजा—वि० [फा०] १ थोड़ी बहुत रजामंदी। २ कुछ तोष या प्रसन्नता।

नीमा—संज्ञा पुं० [फा०] एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।

नीमावत—संज्ञा पुं० [हिं० नीम] निंबा-र्काचार्य का अनुयायी वैष्णव।

नीमास्तीन—संज्ञा स्त्री० [फा० नीम+आस्तीन] आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।

नीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आंतरिक लक्ष्य। उद्देश्य। आशय। संकल्प। इच्छा। मंशा।

मुहा०—नीयत डिगना या बद होना=अच्छा या उचित संकल्प दृढ़ न रहना। बुरा संकल्प होना। नीयत बदल जाना=(१) संकल्प या विचार और का और होना। इरादा दूसरा हो जाना। (२) बुरा विचार होना। अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना। नीयत बाँधना=संकल्प करना। इरादा करना। नीयत भरना=जी भरना। इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क आना=बेईमानी या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना= इच्छा बनी रहना। जी ललचाया करना।

नीर—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० नीरता] १ पानी। जल।

मुहा०—नीर ढलना=मरते समय आँख से आँसू बहना। किसी की आँख का नीर ढल जाना=निर्लज्ज या बेहया हो जाना।

२ कोई द्रव पदार्थ या रस। ३ फफोले आदि के भीतर का चेप या रस।

यौ०—नयननीर=आँसू।

नीरज—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल में उत्पन्न वस्तु। २ कमल। ३ मोती। मुक्ता।

नीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] "नीर" का भाव। पानीपन।

नीरद—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

वि० [सं० नि+रद] बे दाँत का। अदंत।

नीरधर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

नीरधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

नीरनिधि—संज्ञा पुं० [सं० नीर+निधि] १. समुद्र। २ बादल। उ०—नील सरोरुह नील मनि नील नीरनिधि स्याम। लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम। —मानस।

नीरव—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। २ जो कुछ न बोलता हो। चुप। मौन।

नीरवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निःशब्द या चुप होने का भाव। चुप्पी। सन्नाटा।

नीरस—वि० [सं०] १ जिसमें रस या गीलापन न हो। रसहीन। २ सूखा। शुष्क। ३ जिसमें कोई स्वाद या मजा न हो। फीका। जिसमें कोई आनंद या मनो-रंजन न हो। ४ जिसमें मन न लगे।

नीराजन—संज्ञा पुं० [सं० नीराजन] १ देवता की आरती। दीपदान। आरती। २ हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम।

नीरा(पु)—क्रि० वि० [हिं० नियर] पास। समीप।

संज्ञा स्त्री० [सं० नीर] १ ताड़ या खजूर का सूर्योदय के पहले तक टपका हुआ नशा उत्पन्न होने के पूर्व का (अप्राप्त-मदरस) रस। २ ताड़ी।

संज्ञा पुं० दे० "नीर"।

नीराजना(पु)—क्रि० अ० [सं० नीराजन] आरती करना।

नीरुज—वि० दे० "नीरोग"।

नीरे(पु)—क्रि० वि० दे० "नियरे"। उ०—दूजे कोप्यो वासों भारी। नीरे नाहीं सू गी धारी। परी क्यों जीवैगी बाला। चौंहा नचै विद्युन्माला। —छंदार्णव।

नीरोग—वि० [सं०] जिसे रोग न हो। स्वस्थ। चंगा। तंदुरुस्त।

नील—वि० [सं०] नीले रंग का।

संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है। २. नीला रंग। गहरा आसमानी रंग।

मुहा०—नील का टीका लगाना= कलंक लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई फिरवा देना=आँखें फुड़वा डालना। अंधा कर देना।

३ चोट का नीले या काले रंग का दाग जो शरीर पर पड़ जाता है। ४. लांछन। कलंक। ५ राम की सेना का एक बंदर। ६ इलावृत्त खंड का एक पर्वत। ७ नव निधियों में से एक। ८ नीलाम। ९ एक वर्णवृत्त जिसमें पाँच भगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—भाशिव आनन गौरि जबै मन लाय लखी। लै गइ ज्यों सुठि भूषण साजि वितान सखी॥ १० सौ अरब की संख्या।

नीलकंज—संज्ञा पुं० [सं० नील+कंज] इंदीवर। नील कमल। उ०—स्याम तन सुंदर स्वरूप उपमा कों देहूँ, लागत न नीलकंज नीरद तमाल हैं।—रससारांश।

नीलकंठ—वि० [सं०] जिसका कंठ नीला हो।

संज्ञा पुं० १ महादेव। २ एक प्रकार की चिड़िया जिसके कंठ और डैने नीले होते हैं। चाप पक्षी। ३ मोर। मयूर। ४ गौरा या चटक नाम का पक्षी।

नीलकांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पहाड़ी चिड़िया। २ विष्णु। ३ नीलम मणि।

नीलक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णुक्रांता लता जिसमें बड़े बड़े नीले फूल लगते हैं।

नीलगाय—संज्ञा स्त्री० [सं० नील+हिं० गाय] नीलापन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। गवय।

नीलचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ जगन्नाथ जी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र। २ ३० अक्षरों का एक दंडकवृत्त। उ०—जानि कै समै भुआल रामराज साज साजि ता समै अकाज काज कैकई जु कीन। भूपतें हराय बैन राम सीय बंधु युक्त बोल के पठाय वेगि काननै सु दीन।

नीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीलापन।

नीलम—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं०

नीलमणि] नीलमणि। नीले रंग का रत्न। इंद्रनील।
नीलमणि—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।
नीलमोर—संज्ञा पुं० [सं० नील+मोर] कुररी नामक पक्षी।
नीललोहित—वि० [सं०] नीलापन लिए लाल। बैंगनी।
संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।
नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु होते हैं। उ०—राउर के सम है वह वालौ, जीतति है दुतिवत जहाँ लौ। जो गिरिदुर्गनि माहँ बसै जु, ना भुज चदन हार असै जु।
नीलांजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीला सुरमा। २ तूतिया। नीला थोथा।
नीलांबर—संज्ञा पुं० [सं०] नीले रंग का कपड़ा (विशेषत रेशमी)।
वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला।
नीलांबुज—संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।
नीला—वि० [सं० नील] आकाश के रंग का। नील के रंग का।
मुहा०—नीला पीला होना=क्रोध दिखाना। क्रुद्ध होना। बिगड़ना। चेहरा नीला पड़ जाना=(१) आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा, खेद, विषाद, ग्लानि आदि मनोभावों का प्रकट होना। (२) सजीवता के लक्षण नष्ट होना।
नीलाथोथा—संज्ञा पुं० [सं० नील तुत्थ] ताँबे का नीला क्षार या लवण। तूतिया।
नीलाम—संज्ञा पुं० [पुर्त० लीलाम] बिक्री का एक ढंग जिसमें कोई संपत्ति या वस्तु खरीदने के लिये उपस्थित लोगों में सबसे अधिक दाम लगानेवाले के हाथ बेच दी जाती है।
नीलावती—संज्ञा स्त्री० [सं० नीलवती] एक प्रकार का चावल।
नीलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीलबरी। २ नीली निर्गुंडी। नीले सम्हालू का वृक्ष। ३ आँख तिलमिलाने का रोग। ४ मुख पर का एक रोग जिसमें सरसों के बराबर छोटे छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं। झाँई।
नीलिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० नीलिमन्] १ नीलापन। २ श्यामता। स्याही।
नीली घोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नीली+घोड़ी] नाचे के साथ सिली हुई कागज की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। इसे पहनकर डफाली भीख माँगने निकलते हैं।
नीलोत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।
नीलोफर—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० नीलोत्पल] १ नील कमल। २ कुई। कुमुद।
नीवँ—संज्ञा स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १ घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जुड़ाई आरंभ होती है।
मुहा०—नींव देना=गड्ढा खोदकर दीवार खड़ी करने के लिये स्थान बनाना। (किसी बात की) नीवँ देना=कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना।
२ दीवार की जड़ या आधार। मूलभित्ति।
मुहा०—नीवँ जमाना, डालना या देना=दीवार उठाने के लिये नीवँ के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नीवँ जमाना या डालना=*आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। स्थापित करना।* (किसी वस्तु या बात की) नीवँ पड़ना=(१) घर की दीवार का आधार खड़ा होना। (२) सूत्रपात होना। जड़ खड़ी होना या जमना।
३ जड़। मूल। स्थिति। आधार।
मुहा०—नीवँ खोदना=मूलोच्छेद करना। जड़ मिटाना या नष्ट करना।
नीव—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।
नीवि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या यों ही बाँधती हैं। २ सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। कटिवस्त्र-बंध। फुँफुदी। ३ साड़ी। धोती।
नीवी—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।
नीसक(पु)—वि० [सं० निःशक्त] कमजोर।
नीसानी—*संज्ञा स्त्री०* [?] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।
नीहाँ—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।
नीहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुहरा। २ पाला। हिम। तुषार। बर्फ।
नीहारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० नीहार] आकाश में धूएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई पड़ता है।
नुकता—संज्ञा पुं० [अ० नुक्त.] बिंदु। बिंदी।
संज्ञा पुं० [अ० नुकत.] १. चुटकुला। फबती। लगती हुई उक्ति। २ ऐब।
नुकताचीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] छिद्रान्वेषण। दोष निकालने का काम।
नुकती—संज्ञा स्त्री० [फा० नखुदी] एक प्रकार की मिठाई। बेसन की महीन बुँदिया।
नुकना(पु)—क्रि० अ० दे० 'लुकना'।
नुकरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. चाँदी। २. घोड़ों का सफेद रंग।
वि० सफेद रंग का (घोड़ा)।
नुकसान—संज्ञा पुं० [अ०] १ कमी। घटी। ह्रास। छीज। २ हानि। घाटा। क्षति।
मुहा०—नुकसान उठाना=हानि सहना। क्षतिग्रस्त होना। नुकसान पहुँचाना=हानि करना। क्षतिग्रस्त करना। नुकसान भरना=हानि की पूर्ति करना। घाटा पूरा करना।
३ दोष। अवगुण। विकार।
मुहा०—(किसी को) नुकसान करना=दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना।
नुकसानदेह—वि० [अ० नुकसान+फा० देह] नुकसान पहुँचानेवाला। हानिकर।
नुकीला—वि० [हिं० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १ नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। २. बाँका। तिरछा।
नुक्कड़—संज्ञा पुं० [हिं० नोक] १ नोक। पतला सिरा। २ सिरा। छोर। अंत। ३ निकला हुआ कोना। सड़क का छोर।
नुक्स—संज्ञा पुं० [अ०] १ दोष। ऐब। खराबी। बुराई। त्रुटि। कसर।
नुचना—क्रि० अ० [सं० लुंचन] १. नोचा जाना। खिंचकर उखड़ना। उखड़ना। २ खरोंचा जाना। नाखून आदि से छिलना।
नुचवाना—क्रि० स० [हिं० नोचना का प्रे० रूप] नोचने का काम दूसरे से कराना।
नुत्फा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वीर्य। शुक्र। २ संतति। औलाद।
नुनखरा, नुनखारा—वि० [हिं० नून+खारा] स्वाद में नमक का सा खारा। नमकीन।

नुनना—क्रि० स० [सं० लवन लून] लुनना। खेत काटना।

नुनाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लुनाई] लावण्य। सुंदरता। सलोनापन।

नुनेरा—संज्ञा पुं० [हिं० नून+एरा (प्रत्य०)] १. नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। २ लोनिया। नोनिया।

नुमाइंदा—संज्ञा पुं० [फा०] प्रतिनिधि।

नुमाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दिखावट। दिखावा। प्रदर्शन। २ नाना प्रकार की वस्तुओं को लोगों को दिखाने के लिये एक जगह रखना। ३. तड़क भड़क। ठाटबाट। सजधज। कुतूहल और परिचय के लिये एक स्थान पर दिखाया जाना। प्रदर्शनी।

नुमाइशी—वि० [फा० नुमाइश] जो केवल दिखावट के लिये हो, किसी प्रयोजन का न हो। दिखाऊ। दिखौवा।

नुसखा—संज्ञा पुं० [अ०] १ लिखा हुआ कागज। २. कागज का वह चिट जिसपर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवनविधि लिखते हैं।

नूत—वि० [सं० नूतन] १ नया। नूतन। उ०—तोमर तुमर पत्त सर, धुज चिरु चिह्न चिराल। पवन प्रलय पट आदि लघु, त्रिकल नूत की माल। —छंदार्णव। २ अनोखा। अनूठा।

नूतन—वि० [सं०] १ नया। नवीन। २ हाल का। ताजा। ३ अनोखा।

नूतनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नूतन का भाव। नवीनता। नयापन।

नून—संज्ञा पुं० [?] १ आल। २ आल की जाति की एक लता।

†संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक।

मुहा०—नून-तेल = गृहस्थी का सामान।

(पु)वि० दे० "न्यून"।

नूनताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "न्यूनता"।

नूपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पैजनी। २ घुंघरू। उ०— कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं। चाल बिलोकि काम गज लाजहिं। —मानस। ३ नगण के पहले भेद का नाम।

नूका—संज्ञा पुं० [?] १४ मात्राओं का एक छंद। कज्जल। उ०—खल मल परी दुग्ग मकार। दल बल दपट देखि अपार। कल बल करत नर अरु नार। छल बल कोट ओट निहार।

नूर—संज्ञा पुं० [अ०] १ ज्योति। प्रकाश।

मुहा०—नूर का तड़का = प्रात काल। नूर बरसना = प्रभा का अधिकता से प्रकट होना।

२. श्री। कांति। शोभा।

नूरा†—वि० [अ० नूर] नूरवाला। तेजस्वी।

नूह—संज्ञा पुं० [अ०] (यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार) एक पैगंबर जिनके समय में जलप्रलय हुआ था। एक भारी नाँव में शरण लेकर उन्होंने अपनी और संसार के अनेक जीव जंतुओं की रक्षा की थी (पुरानी इंजील)।

नृ—संज्ञा पुं० [सं०] नर। मनुष्य। उ०—भस्म सर्वांग, अर्द्धांग शैलात्मजा, व्याल-नृकपाल-माला विराजै। —विनय०।

नृकेशरी—संज्ञा पुं० [सं० नृकेशरिन्] १ नृसिंह अवतार। २ श्रेष्ठ पुरुष।

नृकेहरि—संज्ञा पुं० [सं० नृकेसरिन्] दे० "नृसिंह १"। उ०—'राम कहाँ' 'सब ठौंठ हैं' 'खंभ में ?' 'हाँ' सुनि हाँक नृकेहरि जागे। —कविता०।

नृतक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नर्तक"।

नृतना(पु)—क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।

नृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथपाँव और अंगप्रत्यंग हिलाने, उछलने कूदने आदि का व्यापार। नाच। नर्तन।

नृत्यकी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "नर्तकी"।

नृत्यशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाचघर।

नृदेव, नृदेवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा। २ ब्राह्मण।

नृप—संज्ञा पुं० [सं०] नरपति।

नृपति, नृपाल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा। उ०—भवधनु दलि जानकी बिवाही भए बिहाल नृपाल त्रपा हैं। —गीता०।

नृमणि—संज्ञा पुं० [सं०] श्रेष्ठ पुरुष।

नृमेध—संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ जिसमें मनुष्य की आहुति दी जाय। नरमेध यज्ञ।

नृयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] नर मात्र को संतुष्ट करने का व्रत जो पंचयज्ञों में माना गया है और जिसका करना गृहस्थ मात्र का कर्तव्य है। अतिथिपूजा। अभ्यागत का सत्कार।

नृशंस—वि० [सं०] १ क्रूर। निर्दय। बेरहम। २ अपकारी। अत्याचारी। जालिम।

नृशंसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दयता। बेरहमी।

नृसिंह—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंहरूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। २. श्रेष्ठ पुरुष।

नृहरि—संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह।

ने†—प्रत्य० [सं० प्रत्यय टा = एण] सकर्मक भूतकालिक क्रिया के साथ प्राय प्रयुक्त होनेवाली विभक्ति, जैसे—राम ने रावण को मारा।

नेई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "नींव"। उ०—अवध उजारि कीन्हि कैकेई। दीन्हिसि अचल बिपति कै नेई। —मानस।

नेक—वि० [फा०] १. भला। उत्तम। २ शिष्ट। सज्जन।

(पु)†वि० [हिं० न+एक] थोड़ा। तनिक।

क्रि० वि० थोड़ा। जरा। तनिक। उ०—मुनि सुर नर नाग असुर साहिब तौ घनेरे। पै तौलौं जौ लौं रावरे न नेकु नयन फेरे। —विनय०।

नेकचलन—वि० [फा० नेक+हिं० चलन] [संज्ञा नेकचलनी] अच्छे चालचलन का। सदाचारी। सच्चरित्र।

नेकनाम—वि० [फा०] [संज्ञा नेकनामी] जिसका अच्छा नाम हो। यशस्वी।

नेकनीयत—वि० [फा० नेक+अ० नीयत] [संज्ञा नेकनीयती] १ अच्छे संकल्प का। शुभ संकल्पवाला। २ उत्तम विचार का।

नेकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ भलाई। उत्तम व्यवहार। २ सज्जनता। भलमनसाहत।

यौ०—नेकी बदी = भलाई बुराई। पाप पुण्य। नेकी और पूछ पूछ ? = किसी का उपकार करने में उससे पूछने की क्या आवश्यकता ?

३ उपकार। हित।

नेकु(पु)†—वि०, क्रि० वि० दे० "नेक"।

नेग—संज्ञा पुं० [सं० नैयमिक] १ विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ उपहार दिए जाने का लौकिक नियम। २ वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है। उ०—नेगु माँगि मुनिनायक लीन्हा। आसिरबाद बहुत बिधि दीन्हा। —मानस।

नेगचार—संज्ञा पुं० [हिं० नेग+चाल] दे० "नेग"। उ०—नेगचारु कहँ नागरि गहरु लगावहिं। निरखि निरखि आनद सुलोचनि पावहिं।—जा० म०।

नेगजोग—संज्ञा पुं० [हिं० नेग+जोग] विवाह आदि मगल अवसरों पर सबंधियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।

नेगटी(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० नेग+टी (प्रत्य०)] नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगम—संज्ञा पुं० दे० "निगम"।

नेगी—संज्ञा पुं० [हिं० नेग] नेग पानेवाला। नेग पाने का हकदार।

नेगीजोगी—संज्ञा पुं० [हिं० नेगजोग] नेग पानेवाले। नेगी, जैसे—नाई, बारी।

नेछावर‡—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नेजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ भाला। बरछा। २ साँग। निशान।

नेजाबरदार—संज्ञा पुं० [फा०] भाला या राजाओं का निशान लेकर चलनेवाला।

नेजाल‡(पु)—संज्ञा पुं० [फा० नेजा] भाला।

नेठना(पु)—क्रि० अ० दे० "नाठना"।

नेड़ी(पु)—क्रि० वि० दे० "नेड़े"। उ०—कबीरमाया डाकणों, सब किस ही कौं खाइ। दाँत उपाड़ों पापणों, जे सतौं नेड़ी जाइ।—कबीर०।

नेड़े†—क्रि० वि० [स० निकट] निकट। पास।

नेत—संज्ञा पुं० [स० नियति] १ ठहराव। निर्धारण। उ०—आजु न जान देहुँ री ग्वालिन बहुत दिनन को नेत।—सूर०। २ निश्चय। सकल्प। इरादा। ३ व्यवस्था। प्रबध। आयोजन।

संज्ञा पु० [स० नेत्र] मथानी की रस्सी। उ०—को उठि प्रात होत ले माखन को कर नेत गहै?—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की चादर।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना। उ०—कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटक कहुँ नेत।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नेतक—संज्ञा पुं० [देश०] चुँदरी। चूनर।

नेता—संज्ञा पु० [सं० नेतृ] [स्त्री० नेत्री] १. अगुआ। नायक। सरदार। २ स्वामी। मालिक। ३ काम चलानेवाला। निर्वाहक।

संज्ञा पुं० [स० नेत्र] मथानी की रस्सी।

नेतागिरी—संज्ञा स्त्री० दे० "नेतृत्व"।

नेति—[स०] एक संस्कृत वाक्य (न इति) जिसका अर्थ है "यही नहीं" अर्थात् "इतना ही नहीं है"। सारद सेस महेस विधि, आगम निगम पुरान। उ०—नेति नेति कहि जासु गुन, करहिं निरंतर गान।—मानस।

नेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० नेता] वह रस्सी जो मथानी में लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है।

संज्ञा स्त्री० हठयोग की वह क्रिया जिससे डोरा नाक में डालकर मुँह से निकालते हैं।

नेतीधौती—संज्ञा स्त्री० [सं० नेत्र, हिं० नेती+स० धौति] हठयोग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डाल कर आँतें साफ करते हैं। धौति।

नेतृत्व—संज्ञा पुं० [स०] नेता होने का भाव, कार्य या पद। नायकत्व। सरदारी।

नेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँख। २ मथानी की रस्सी। ३ एक प्रकार का वस्त्र। ४ वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ५ रथ। ६ दो की संख्या का सूचक शब्द।

नेत्रजल—संज्ञा पुं० [सं०] आँसू।

नेत्रबाला—संज्ञा पु० दे० "सुगधबाला"।

नेत्रमंडल—संज्ञा पुं० [स०] आँख का घेरा। आँख का डेला।

नेत्रस्राव—संज्ञा पु० [सं०] आँखों से पानी बहना।

नेत्राभिष्यंद—संज्ञा पुं० [स०] आँख आने का रोग।

नेनुआ, नेनुवा—संज्ञा पु० [?] एक भाजी या तरकारी। घियातरोई।

नेपचून—संज्ञा पुं० [अं०] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला। सौरमंडल के सबसे दूरवाले ग्रहों में से एक जिसका पता हरशेल ने लगाया था। इसे हरशेल भी कहते हैं।

नेपथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नृत्य, अभिनय आदि में रगमच से न दिखाई देनेवाला परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट वेश सजते हैं। वेशस्थान।

नेपाल—संज्ञा पुं० [देश०] हिंदुस्तान के उत्तर में हिमालय की गोद में बसा हुआ एक स्वतंत्र देश।

नेपाली—वि० [हिं० नेपाल] १ नेपाल में रहने या होनेवाला। २ नेपालसबधी।

नेपुरा(पु)—संज्ञा पु० दे० "नूपुर"।

नेफा—संज्ञा पुं० [फा०] पायजामे या लहँगे के घेरे में इजारबद पिरोने का स्थान।

नेब(पु)—संज्ञा पुं० [फा० नायब] १. सहायक। कार्य में सहायता देनेवाला। २ मंत्री। उ०—कहुँ विनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहिं कौसिलाँ देव। भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु राम के नेब।—मानस।

नेम—संज्ञा पुं० [सं० नियम] १. नियम। कायदा। बधेज। उ०—जननि जनक सिय-राम प्रेम के॥ बीज सकल व्रत धरम नेम के॥—मानस। २ बँधी हुई बात। ऐसी बात जो टलती न हो, बराबर होती हो। ३ रीति। दस्तूर। ४ धर्म की दृष्टि से कुछ नित्य या नैमित्तिक क्रियाओं का पालन। यम नियम आदि का कठोर अभ्यास। पूजहिं सिवहि, समय तिहुँ करहिं निमज्जन। देखि प्रेम व्रतु नेमु सराहहिं सज्जन।—पा० म०।

यौ०—नेमधरम = पूजापाठ, व्रत आदि।

नेमत—संज्ञा स्त्री० दे० "नियामत"।

नेमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पहिए का घेरा या चक्कर। चक्रपरिधि। २ कुएँ की जगत। ३ कुएँ की जमवट। ४ प्रांतभाग।

संज्ञा पुं० १ नेमिनाथ नामक जैनियों के एक तीर्थंकर। २ वज्र।

नेमी—वि० [स० नियम] १. नियम का पालन करनेवाला। २ धर्म की दृष्टि से, पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला। सयमी।

नेरा†—अ० दे० "नियर"।

नेरी—क्रि० वि० दे० "नेरे"। उ०—पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी।—मानस।

नेरे, नेरो†—क्रि० वि० [हिं० नियर] निकट। पास। उ०—पाइ सोहागिन को तनु छाड़िकै भूलिकै और के आइहैं नेरे।—शृंगार०।

नेरयौ—वि० [स० निकट] निकट। उ०—सहज नृसस कस पुनि प्रेरयौ। गोए बस-अवतसहि नेरयौ।—नददास०।

नेव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नेब"।

नेवग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "नेग"।

नेवछावरि—संज्ञा स्त्री० दे० "न्योछावर"। उ०—तुलसी नेवछावरि करत मातु अति प्रेममगन मन, सजल सुलोचना कोए।—गीता०।

नेवज—संज्ञा पुं० [स० नैवेद्य] खाने पीने की चीज जो देवता को चढ़ाई जाय। भोग।

उ०—बहुत भाँति सब करे पकवाने। नेवज करि धरि साँझ बिहाने। —सूर०।

नेवतना—क्रि० स० [निमत्रण] निमंत्रित करना। नेवता भेजना।

नेवता—सज्ञा पुं० दे० "न्योता"।

नेवर—संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।

†वि० [सं० न+वर=अच्छा] बुरा।

सज्ञा स्त्री० घोड़ों, बैलों आदि के पैर की रगड़।

नेवरना—क्रि० अ० [सं० निवारण] १. निवारण या दूर होना। उ०—मुनि जोगी के अमर जो करनी। नेवरी बिथा विरह के मरनी।—पदमावत। २. समाप्त होना।

नेवला—सज्ञा पुं० [सं० नकुल] एक मांसाहारी पिंडज छोटा जतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है। साँप को मारने के लिये यह प्रसिद्ध है।

नेवाज—वि० दे० "निवाज"।

नेवारना(पु)—क्रि० स० दे० "निवारना"।

नेवारी—सज्ञा स्त्री० [स० नेपाली ?] जूही की जाति का एक पौधा जिसमें सफेद रंग के छोटे छोटे फूल लगते हैं। वनमल्लिका।

नेवाला—संज्ञा पुं० [फा० निवाला] दे० "निवाला"। उ०—पहिल नेवाला खाइ जाइ मुहु भीतर जबही।

नेसुक(पु)†—वि० [हिं० नेकु] तनिक। जरा।

क्रि० वि० थोड़ा सा। जरा सा। तनिक। उ०—तोतन कब के हेरैं आली नेसुक तकि तैं। निश्चल अँखिया सोहैं मानो खजन चकितैं।—छंदार्णव।

नेस्त—वि० [फा०] जो न हो।

यौ०—नेस्त नाबूद=नष्ट भ्रष्ट।

नेस्ती—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ न होना। अनस्तित्व। २. आलस्य। काहिली। ३. नाश।

नेह—संज्ञा पुं० [स० स्नेह] १ स्नेह। प्रेम। प्रीति। २ चिकना। तेल या घी।

नेही(पु)—वि० [हिं० नेह+ई (प्रत्य०)] स्नेह करनेवाला। प्रेमी।

नै—सज्ञा स्त्री० दे० "नय"।

सज्ञा स्त्री० [स० नदी] नदी। उ०—अरे रे बाहहि कान्ह नाव (छोटि) डगमग कुगति न देहि। तै इथ नै सतारि दै जो चाहहि सो लेहि।—छंदार्णव।

सज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाँस की नली। २. हुक्के की निगाली। ३. बाँसुरी।

नैऋत(पु)—वि०, सज्ञा पुं० दे० "नैऋत्य"।

नैक, नैकु—वि० दे० "नेक", "नेकु"।

नैकट्य—सज्ञा पुं० [सं०] निकटता।

नैगम—वि० [सं०] १ निगम सबधी। २. जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो, जैसे—उपनिषद्।

सज्ञा पुं० १. उपनिषद् भाग। २ नीति।

नैचा—सज्ञा पुं० [फा०] हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं।

नैचाबंद—सज्ञा पुं० [फा०] वह जो हुक्के का नैचा बनाता हो।

नैट(पु)—अ० [?] सुअवसर। अच्छा मौका।

नैतिक—वि० [स०] [सज्ञा नैतिकता] १ नीतिसबंधी। २. आध्यात्मिक। ३. समाजविहित।

नैन, नैनि(पु)—सज्ञा पु० दे० "नयन"। उ०—सुनति वचन तत्काल, लहैती नैनि उघारे।—नंददास०।

सज्ञा पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैनसुख—सज्ञा पुं० [हिं० नैन+सुख] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।

नैनू—सज्ञा पुं० [हिं० नैन=आँख] एक प्रकार का उभरे हुए बेलबूटे का कपड़ा।

†सज्ञा पुं० [स० नवनीत] मक्खन।

नैपाल—सज्ञा पुं० दे० "नेपाल"।

नैपाली—वि० [हिं० नैपाल] १. नैपाल देश का। २. नैपाल में रहने या होनेवाला।

सज्ञा पुं० नैपाल का रहनेवाला आदमी।

नैपुण्य—सज्ञा पुं० [सं०] निपुणता। चतुराई। होशियारी। दक्षता। कमाल।

नैम—सज्ञा स्त्री० [सं० नियम] दे० "नियम ३"। उ०—रूसिबे को नैम नित प्यारी तुम लीनों, ताही के कारन हम सखी भेष कीनों।—नददास०।

नैमित्तिक—वि० [स०] जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो। सहेतुक। विशेष—यज्ञ आदि कर्म जो किसी निमित्त से किए जाते हैं नैमित्तिक कहलाते हैं, जैसे, पुत्र प्राप्ति के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ। इसी प्रकार पापशांति के लिये जो दान दिया जाता है वह नैमित्तिक दान कहलाता है।

नैमिषारण्य—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वन जो ऋषियों की कुटियों और अनेक सभाओं के कारण एक तीर्थस्थान माना जाता है। नीमखार।

नैया(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] नाव।

नैयायिक—वि० [सं०] न्यायशास्त्र का जाननेवाला। न्यायवेत्ता।

नैरंतर्य—सज्ञा पुं० दे० "निरतरता"।

नैर(पु)—सज्ञा पुं० [स० नगर] १. शहर। २ देश। जनपद।

नैराश्य—सज्ञा पुं० [सं०] निराशा का भाव। नाउम्मेदी।

नैऋत—वि० [स०] नैऋति सबंधी।

सज्ञा पुं० १ राक्षस। २ पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।

नैऋति—सज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।

नैर्मल्य—सज्ञा पुं० [स०] निर्मलता।

नैवेद्य—सज्ञा पुं० [सं०] वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय। देव-बलि। भोग।

नैश—वि० [सं०] निशा संबंधी। रात का।

नैषध—वि० [सं०] निषध देश संबंधी। निषध देश का।

सज्ञा पुं० १ नल जो निषध देश के राजा थे। २ श्रीहर्षरचित एक सस्कृत काव्य।

नैष्ठिक—वि० [सं०] [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान्। निष्ठायुक्त।

नैसर्गिक—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। स्वभावसिद्ध। कुदरती।

नैसा(पु)—वि० [सं० अनिष्ट, हिं० अनैसा] बुरा। खराब। उ०—सूरदास प्रभु के गुण ऐसे। भक्तन भल दुष्टन को नैसे।—सूर०।

नैसिक, नैसुक—वि० [?] थोड़ा। तनिक। उ०—दूरि ही तें नैसुक नजरि-मार पावत हीं, लचकि लचकि जात जी में ध्यान करि तूँ।—शृंगार०।

नैहर—सज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति, प्रा० णाइ+सं० गृह, प्रा० हर] किसी स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर। उ०—नैहर जनमु भरब बरु जाई। जिअत न करबि सवति सेवकाई।—मानस।

नोइनी, नोई—सज्ञा स्त्री० [हिं० नोवना] वह रस्सी जो गौ दुहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है।

नोक—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० नुकीली] १. उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र भाग। २. किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। ३ निकला हुआ कोना।

नोकझोंक—संज्ञा स्त्री० [फा० नोक+हिं० झोंक] १. परस्पर होनेवाली झड़प। आक्षेप। २ चुभनेवाली बात। ताना। ३ छेड़छाड़। ४ आतंक। तपाक। ५ बनाव सिंगार। ठाट बाट।

नोकदार—वि० [फा०] १. जिसमें नोक हो। २ चुभनेवाला। पैना। ३. चित्त में चुभनेवाला। ४ शानदार।

नोकना—क्रि० स० [?] ललचना ? उ०—चितै रही राधा हरि को मुख। उतहि श्याम एकटक प्यारी छवि अंग अंग अवलोकत। रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत। —सूर०।

नोकाझोंकी—संज्ञा स्त्री० दे० "नोकझोंक"।

नोखा†—वि० दे० "अनोखा"।

नोच—संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचना] १ नोचने की क्रिया या भाव। २ छीनना। लूट।

नोच खसोट—संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचं+खसोट] नोचने खसोटने की क्रिया या भाव। छीनाझपटी। लूट।

नोचना—क्रि० स० [सं० लुंचन] १ जमी या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना। उखाड़ना। २. नख आदि से विदीर्ण करना। ३ दुःखी और हैरान करके माँगना या लेना।

नोचू—वि० [हिं० नोच+ऊ (प्रत्य०)] नोचने खसोटने या छीनने झपटनेवाला।

नोट—संज्ञा पुं० [अं०] १ टाँकने या लिखने का काम। ध्यान रहने के लिये लिख लेने का काम। २ लिखा हुआ परचा। पत्र। चिट्ठी। ३ आशय या अर्थ प्रकट करनेवाला लेख। टिप्पणी। ४ पहले सरकार और अब उसकी ओर से स्थापित (रिजर्व) बैंक द्वारा भिन्न भिन्न धनराशियों के लिये जारी किया हुआ कागजी सिक्का।

नोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २ बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। पैना। औंगी।

नोन†—संज्ञा पुं० दे० "नमक"।

नोनचा—संज्ञा पुं० [हिं० नोन] १. नमक मिली हुई आम की फाँकें। २. नमकीन अचार।

नोनहरामी—वि० दे० "नमकहराम"।

नोना—संज्ञा पुं० [सं० लवण] [स्त्री० नोनी] १ नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की जमीन में लगा मिलता है। २ लोनी मिट्टी।

†३ शरीफा। सीताफल।

‡वि० [स्त्री० नोनी] १ नमक मिला। खारा। २ लावण्यमय। सलोना। सुंदर।

क्रि० स० दे० "नोवना"।

नोना चमारी—संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।

नोनिया—संज्ञा पुं० [हिं० नोना+इया (प्रत्य०)] लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० नोन] लोनिया। अमलोनी।

नोनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० लवण] १ लोनी मिट्टी। २. लोनिया। अमलोनी का पौधा।

नोनो(पु)—वि० दे० "नोना"।

नोर, नोल(पु)—वि० दे० "नवल"।

नोवना†—क्रि० स० [सं० नद्ध] दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना। उ०—बछरा छोरि खरिक को दीनो आप कान्ह तन सुध बिसराई। नोवत वृषभ निकसि गैया गइ हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई।—सूर०।

नोहर†—वि० [सं० न+उप+लभ्य] १ अलभ्य। दुर्लभ। जल्दी न मिलनेवाला। २ अनोखा। अद्भुत।

नौ—वि० [सं० नव] एक कम दस। आठ से एक अधिक।

संज्ञा पुं० नौ की संख्या। ९।

मुहा०—नौ दो ग्यारह होना=देखते देखते गायब हो जाना। चल देना।

वि० [सं० नव] नया। नवीन। उ०—ठाढ़े हैं नौ द्रुम डार गहे, धनु काँधे धरे, कर सायक लै।—कविता०।

नौकर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नौकरानी] १ भृत्य। चाकर। टहलुआ। खिदमतगार। २ कोई काम करने के लिये वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।

नौकरशाही—संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर+शाही] वह शासनप्रणाली जिसमें वास्तविक राजसत्ता बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।

नौकराना—संज्ञा पुं० [हिं० नौकर] नौकरों को मिलनेवाली दस्तूरी या उपहार।

नौकरानी—संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर+आनी (प्रत्य०)] घर का कामधंधा करनेवाली स्त्री। दासी। मजदूरनी।

नौकरी—संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर+ई (प्रत्य०)] १. नौकर का काम। सेवा। टहल। २ कोई काम जिसके लिये तनख्वाह मिलती हो। ३. काम के लिये मिलनेवाली तनख्वाह।

नौकरीपेशा—संज्ञा पुं० [फा०] जिसकी जीविका नौकरी हो।

नौका—संज्ञा स्त्री० [सं०] [नौ+का] नाव। किश्ती।

नौगर, नौगिरही(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "नौग्रही"।

नौग्रही—संज्ञा स्त्री० [हिं० नौ+ग्रह] हाथ में पहनने का एक गहना।

नौछावर†—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नौज, नौजि—अव्य० [अ नौज] १ ऐसा न हो। ईश्वर न करे। उ०—नगर कोट घर बाहर सूना। नौजि होइ घर पुरुषविहूना।—पदमावत। २ न हो। न सही। (बेपरवाही) (स्त्री)।

नौजवान—वि० [फा०] नवयुवक। उठती जवानी का।

नौजा—संज्ञा पुं० [फा० लौज] १ बादाम। २ चिलगोजा।

नौजी—संज्ञा स्त्री० दे० "न्योजी"।

नौतन(पु)—वि० दे० "नूतन"।

नौतम(पु)—वि० [सं० नवतम] १ अत्यंत नवीन। बिल्कुल नया। २ ताजा।

संज्ञा पुं० [हिं० नवना] नम्रता। विनय।

नौता—संज्ञा पुं० दे० "न्यौता"।

नौती—वि० स्त्री० [हिं० नौता] नूतन। ताजी। उ०—करहिं जो किंगरी लेइ बैरागी। नौती होइ बिरह कै आगी।—पदमावत।

नौधा(पु)—वि० दे० "नवधा"।

नौनगा—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+नग] बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।

नौना—क्रि० अ० दे० "नवना"।

नौबढ़—वि० [सं० नया+हिं०√बढ] जिसे हीन दशा से अच्छी दशा में आए

थोड़े ही दिन हुए हों। हाल में बढ़ा हुआ।

नौबत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बारी। पारी। २ गति। दशा। हालत। ३. उपस्थित दशा। सयोग। ४ वैभव या मगलसूचक वाद्य, विशेषत शहनाई और नगाड़ा जो देवमदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है। ५. दुर्दशा। शामत।

मुहा०—नौबत झड़ना = नौबत बजना। नौबत बजना=(१) आनद-उत्सव होना। (२) प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।

नौबतखाना—संज्ञा पुं० [फा०] फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।

नौबती—संज्ञा पुं० [फा० नौबत+ई (प्रत्य०)] १. नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २ फाटक पर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३ बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४. बड़ा खेमा या तबू।

नौबतीदार—संज्ञा पुं० दे० "नौबती"।

नौमिⓅ—क्रि० स० [स० नमामि] एक वाक्य जिसका अर्थ है "मैं नमस्कार करता हूँ"।

नौमी—संज्ञा स्त्री० [स० नवमी] पक्ष की नवीं तिथि। नवमी।

नौरंगⓅ—संज्ञा पुं० औरग (=औरगजेब) का रूपांतर। उ०—तमक तें लाल मुख सिवा कौ निरखि भयो, स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे॥ —भूषण ग्रंथावली।

नौरंगी†—संज्ञा स्त्री० दे० "नारगी"।

नौरतन—संज्ञा पुं० दे० 'नवरत्न"।

संज्ञा पुं० [सं० नवरत्न] नौनगा गहना।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौरोज—संज्ञा पुं० [फा०] १ (पारसियों में) नए वर्ष का पहला दिन जब बड़ा आनद उत्सव मनाया जाता है। २ त्योहार।

नौलⓅ—वि० दे० "नवल"। उ०—धौल अटा लखि नौल उपेस दियो छिटकाइ छटा छविजालहिं। —शृंगार०।

नौलखा—वि० [हिं० नौ+लाख] जिसका मूल्य नौ लाख रुपए हो। जड़ाऊ और बहुमूल्य, जैसे—नौलखा हार।

नौशा—संज्ञा पुं० [फा०] दूल्हा। वर।

नौसत—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सात] सोलहो शृंगार। सिंगार। उ०—नौसत साजे चली गोपिका गिरवर पूजा हेत। —सर०।

नौसर—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सर] १. धूर्तता। चालबाजी। २ जालसाजी।

नौसरा—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सर] नौ लड़ों का हार।

नौसरिया—वि० [हिं० नौसर] १ धूर्त। चालबाज। २ जालसाज।

नौसादर—संज्ञा पुं० [फा० नौशादर] एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक।

नौसिखिया, नौसिखुआ—वि० [सं० नव-शिक्षित] जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो दक्ष या कुशल न हुआ हो।

नौसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलसेना। जल में लड़नेवाली सेना।

नौहंद—संज्ञा पुं० [सं० नव=नया+हिं० हाँड़ी] मिट्टी की नई हाँड़ी।

न्यग्रोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ वट वृक्ष। बरगद। २ शमी वृक्ष। ३. बाहु। ४ विष्णु। ५ महादेव।

न्यस्त—वि० [स०] १ रखा हुआ। धरा हुआ। २ स्थापित। बैठाया या जमाया हुआ। ३ चुनकर सजाया हुआ। ४ डाला हुआ। फेंका हुआ। ५ त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६ अमानत। रखा हुआ।

न्याउ†—संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

न्यातिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञाति] जाति। उ०—मधुकर कहा कारे की न्याति? ज्यों जल मीन कमल मधुपन को छिन नहिं प्रीति खटाति —सूर०।

न्यान—अव्य० [सं० निदान ?] अंत में। निदान। उ०—निजमुख चतुराई करै सठता ठहरै न्यान। व्यभिचारी कपटी महा नायक शठ पहचान। —शृंगार०।

न्यानाⓅ†—वि० [स० अज्ञान] अनजान। नासमझ।

न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ उचित बात। नियम के अनुकूल बात। हक बात। इंसाफ। २ किसी मामले मुकदमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३ निर्णय। निबटारा। फैसला। ४ वह शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिये विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। यह छः दर्शनों में है और इसके प्रवर्तक गौतम ऋषि कहे जाते हैं। ५ ऐसा दृष्टांत वाक्य जिसका व्यवहार लोक में कोई प्रसग आ पड़ने पर होता है और जो किसी उपस्थित बात पर घटता है। कहावत, जैसे—काक-तालीय न्याय, काकाक्षिगोलक न्याय, घुणाक्षर न्याय, आदि।

न्यायकर्ता—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय या फैसला करनेवाला हाकिम।

न्यायत.—क्रि० वि० [स०] १ न्याय से। ईमान से। २ ठीक ठीक।।

न्यायपरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय-शीलता। न्यायी होने का भाव।

न्यायवान्—संज्ञा पुं० [स० न्यायवत] [स्त्री० न्यायवती] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

न्यायसभा—संज्ञा पुं० दे० "न्यायालय"।

न्यायाधीश—संज्ञा स्त्री० [स०] मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। न्याय-कर्ता। जज।

न्यायालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जगह जहाँ मुकदमों का फैसला होता हो। अदालत। कचहरी। इजलास।

न्यायी—संज्ञा पुं० [स० न्यायिन्] न्याय पर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करने-वाला।

न्याय्य—वि० [स०] न्यायसंगत। उचित।

न्यारा—वि० [सं० निराकृत] [स्त्री० न्यारी] १ अलग। पृथक्। जुदा। २ और ही। अन्य। भिन्न। ३ जो पास न हो। दूर। ४ निराला। अनोखा। विलक्षण।

न्यारिया—संज्ञा पु० [हिं० न्यारा] सुनारों के नियार (राख इत्यादि) को धोकर सोना-चाँदी एकत्र करनेवाला।

न्यारी—वि० स्त्री० [हिं० न्यारा] १ अनोखी। निराली। उ०—मध्यम छवि न्यारी प्यारी विलसै प्रजक पर भारती निहारि हारी उपमा न पावती।—रस-सारांश। २ पृथक्। अलग। उ०—आपने आपने भौन गए न दुहून की चातुरी जात कही है। ज्यों मिसिहो मिसिकै रिसिकै गृहलोग सों न्यारी ह्वै प्यारी रही है।—रससारांश।

न्यारे—क्रि० वि० [हिं० न्यारा] १. अलग। २ पास नहीं। दूर।

न्याव—संज्ञा पुं० [सं० न्याय] १ नियम। नीति। आचरणपद्धति। उ०—ऊधो ताको न्याव है जाहि न सूझै नैन।—सूर०। २ उचित पक्ष। वाजिब बात। ३ विवेक। ४ इंसाफ। न्याय।

न्यास—संज्ञा पु० [स०] [वि० न्यस्त] १ स्थापन। रखना। २ धरोहर। थाती।

पंचवान—संज्ञा पुं० दे० "पचवाण २"। उ०—कह तुलसिदास सुनु सिव सुजान। उर वसि प्रपच रचै पचवान। —विनय०।
पचभर्तारी—सज्ञा स्त्री० [स० पच+भर्तार] पाँच पतियोंवाली। द्रौपदी।
पंचभूत—सज्ञा पु० दे० "पचतत्व"।
पचम—वि० [स०] [स्त्री० पंचमी] १. पाँचवाँ। २ रुचिर। सुदर। ३ दक्ष। निपुण।
सज्ञा पुं० [स०] १ सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर। यह स्वर कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २. एक राग जो छ प्रधान रागों में तीसरा है।
पंचमकार—सज्ञा पुं० [स०] (वाममार्ग) मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन नामक म से प्रारभ होनेवाले पाँच साधन।
पंचमहापातक—सज्ञा पुं० [सं०] पाँच बड़े पाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का ससर्ग (मनुस्मृति)।
पंचमहायज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] स्मृतियों के अनुसार पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिये आवश्यक है। ये कृत्य हैं—१. अध्यापन और संध्यावदन। २. पितृतर्पण या पितृयज्ञ। ३ होम या देवयज्ञ। ४. बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ। ५ अतिथिपूजन (नृयज्ञ या मनुष्ययज्ञ)।
पंचमहाव्रत—सज्ञा पुं० [सं०] अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (किसी से कुछ न लेना) का कठोरता से पालन (योग०)।
पंचमी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २ द्रौपदी। ३ (व्याकरण) अपादान कारक।
पंचमुख—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच मुँहवाला। शिव। शंकर। उ०—पचमुख छमुख भृगु-मुख्य भट, असुर सुर सर्व सरि समरत्थ सूरो। —हनु०।
पंचमुखी—वि० [स० पचमुखिन्] पाँच मुखवाला। शिव।
पंचमूल—सज्ञा पुं० [स०] (वैद्यक) एक पाचन औषध जो पाँच ओषधियों की जड़ से बनती है।
पंचमेल—वि० [हिं० पाँच+मेल या मिलाना] १ जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हों। २ जिसमें सब प्रकार की चीजें मिली हों।
पचरंग, पँचरंगा—वि० [हिं० पाँच+रग] १ पाँच रंगों का। २. अनेक रंगों का।
पचरत्न—सज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रकार के रत्न-सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।
पंचराशिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है (गणित)।
पँचलड़ा—वि० [हिं० पाँच+लड़] पाँच लड़ों का, जैसे—पँचलड़ा हार।
पँचलड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+लड़ी] गले में पहनने की पाँच लड़ों की माला।
पंचलरा—वि० दे० "पँचलड़ा"।
संज्ञा पुं० पाँच लड़ों का हार। उ०—कचन-पचलरा गजमोतीहरा मनिलाल की माल सोहाई। कै तिय तेरे गरे में परी तिहुँ लोक की आइकै सु दरताई। —शृ गार०।
पचलवण—सज्ञा पुं० [स०] (वैद्यक) पाँच प्रकार के लवण—काँच, सेंधा, सामुद्र, विट और सोंचर।
पंचवटी—स्त्री० स्त्री० [सं०] रामायण के अनुसार दडकारण्य के अतर्गत नासिक के पास एक स्थान जहाँ रामचद्र जी वनवास में रहे थे। सीताहरण यहीं हुआ था।
पँचवाँसा—संज्ञा पु० [हिं० पाँच+मास] एक रीति जो गर्भ रहने से पाँचवें महीने में की जाती है।
पचवाण—सज्ञा पुं० [स०] १. कामदेव के पाँच वाण जिनके नाम ये हैं—उन्मादन, तापन, शोषण, स्तमन और समोहन। कामदेव के पाँच पुष्पवाणों के नाम ये हैं—अरविंद, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। २ कामदेव।
पंचवान—सज्ञा पुं० [?] राजपूतों की एक जाति।
पचशब्द—सज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच मगल-सूचक बाजे जो मगलकार्यों में बजाए जाते हैं—तत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही। २ व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोश और महाकवियों के प्रयोग। ३ पाँच प्रकार की ध्वनि—वेदध्वनि, वंदी-ध्वनि, जयध्वनि, शखध्वनि और निशान-ध्वनि।
पचशर—सज्ञा पुं० [स०] १ कामदेव के पाँच वाण। २ कामदेव।
पचशिख—सज्ञा पुं० [सं०] १ सिंघा बाजा। २ एक मुनि जो कपिल के पुत्र थे।
पचसबद—सज्ञा पुं० दे० "पचशब्द"। उ०—पचसबद धुनि मगल गाना। पट पावड़े परहिं विधि नाना। —मानस।
पचसूना—सज्ञा स्त्री० [सं०] मनु के अनुसार ये पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती हैं—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना।
पंचहजारी—संज्ञा पुं० दे० "पंजहजारी"।
पंचांग—सज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच अग या पाँच अगों से युक्त वस्तु। २ ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र जिसमें किसी सवत् के वार, तिथि, नक्षत्र योग और करण ब्योरेवार दिए गए हों। पत्रा। ३ वृक्ष के पाँच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)। ४ प्रणाम का एक भेद जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँख देवता की ओर करके मुँह से प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है।
पंचाक्षर—वि० [स०] जिसमें पाँच अक्षर हों।
सज्ञा पुं० १ प्रतिष्ठा नामक वृत्ति। २ शिव का एक मत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ओं नम शिवाय। ३. विष्णु का एक मत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ओं विष्णवे नम।
पचाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. अन्वाहार्य-पचन या दक्षिण गार्हपत्य, आहवनीय, आवसत्य और सभ्य नाम की पाँच पवित्र अग्नियाँ। २. शरीर में छिपी पाँच तरह की अदृश्य अग्नियाँ। ३ छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। ४ एक प्रकार का तप जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर (सूर्य को पाँचवीं अग्नि मानकर) दिन भर धूप में बैठा रहता है।
वि० १. पंचाग्नि विद्या जाननेवाला। २ पचाग्नि तापनेवाला।
पचानन—वि० [सं०] जिसके पाँच मुँह हों।
सज्ञा पुं० १ शिव। २ सिंह। उ०—जथा मत्त गज जूथ महुँ पचानन चलि जाइ। राम प्रताप सुमिरि मन वैठ सभा सिरु नाइ। —मानस।
पचामृत—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का दिव्य पेय जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर बनाया जाता है और प्राय नारायण (राम, कृष्ण, सत्यनारायण) आदि की मूर्ति के स्नान के काम आता है।
पंचायत—सज्ञा स्त्री० [सं० पचायतन] १.

किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिये चुने हुए लोगों का मंडल। पंचों की बैठक या सभा। कमेटी। समिति। २. एक साथ बहुत से लोगों की बकवाद या गप शप।

मुहा०—पंचायत जोड़ना=(१) बहुत से लोगों का एकत्र होकर किसी मामले या झगड़े पर विचार करना। (२) भीड़ लगाना।

पंचायतन—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच देवताओं की मूर्तियों का समूह, जैसे, रामपंचायतन।

पंचायती—वि० [हिं० पंचायत] १. पंचायत का किया हुआ। पंचायत का। २ पंचायत-संबंधी। ३. बहुत से लोगों का मिला जुला। साझे का। ४ सब लोगों का। सामूहिक।

पंचाल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़ और चंबल नदी के बीच गंगा के दोनों ओर के प्रदेश का पुराना नाम। महाभारत काल में द्रुपद यहाँ के राजा थे। २ [स्त्री० पंचाली] पंचाल देशवासी। ३. पंचाल देश का राजा। ४. महादेव। शिव। ५ एक प्रकार का छंद जिसमें एक ही तगण होता है। उ०—नू छाँड़। पंचाल। ये सर्व। जंजाल।

पंचालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुतली। गुड़िया। २. नटी। नर्तकी।

पंचाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुतली। गुड़िया। २ द्रौपदी। ३ एक गीत।

पंचाशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।

पंचीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] पंचभूतों के विभाजन या सम्मिश्रण की एक प्रक्रिया (वेदांत)।

पंछा—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+छाला] १ स्राव जो प्राणियों के शरीर से या पेड़ पौधों के अंगों से निकलता है। २ छाले आदि के भीतर भरा हुआ पानी।

वि० पानी मिला हुआ।

पंछाला—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+छाला] १ फफोला। २ फफोले का पानी।

पंछी—संज्ञा पुं० [सं० पक्षी] चिड़िया। पक्षी।

पंजर—संज्ञा पुं० [सं०] १ हड्डियों का ठट्ठर या ढाँचा जिसपर शरीर खड़ा रहता है और जो रक्त, मांस, मज्जा, स्नायु आदि अनेक अंगों का सहारा रहता है। ठटरी। अस्थिसमुच्चय। कंकाल। २ ऊपरी धड़ (छाती) का हड्डियों का घेरा। पार्श्व, वक्षस्थल आदि की अस्थिपंक्ति। ३ शरीर। देह। ४. पिंजड़ा। उ०—प्रनतारति भंजन जनरंजन सरनागत पबि-पंजर नाउँ। कीजै दास दास तुलसी अब कृपासिंधु बिनु मोल बिकाउँ। —विनय०।

पँजरना(पु)—क्रि० अ० दे० "पजरना"।

पंजहजारी—संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि और मनसब (गुजारे के लिये पाँच हजार रुपए वार्षिक आय की जागीर) जो मुसलमान बादशाहों (विशेषत अकबर आदि मुगल बादशाहों) के समय में सरदारों और दरबारियों को उनकी विशेष सेवाओं या बहादुरी के लिये मिलती थी।

पंजा—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० पंचक] १ हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह।

मुहा०—पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना=हाथ धोकर पीछे पड़ना। जीजान से लगना या तत्पर होना। पंजे में=(१) पकड़ में। मुट्ठी में। ग्रहण में। (२) अधिकार में। वश में।

२. पंजा लड़ाने की कसरत या बल-परीक्षा। ३ उँगलियों के सहित हथेली का संपुट। चंगुल। ४ पाँच का समूह। गाही। ५ जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। ६ मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे या निशान की तरह ताजिए के साथ लेकर चलते हैं। ७ ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों।

मुहा०—छक्का पंजा=दाँव पेंच। चाल-बाजी।

पंजाब—संज्ञा पुं० [फा०], [वि० पंजाबी] (स्वतंत्रता पूर्व) भारत के उत्तर पश्चिम का एक प्रसिद्ध प्रदेश जो १९४७ की स्वतंत्रता से पूर्वी या भारतीय और पश्चिमी या पाकिस्तानी नाम के दो टुकड़ों में विभक्त हो गया है। २ प्राचीन पंचनद।

पंजाबी—वि० [फा०] पंजाब का।

संज्ञा पुं० [स्त्री० पंजाबिन] पंजाब निवासी।

पंजारा—संज्ञा पुं० [सं० पंजिकार] धुनिया।

पंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंचांग। २ बही। ३ रजिस्टर।

पँजीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+जीरा] आटे को घी में भूनकर चीनी और मेवे मिलाकर बनाया हुआ एक मिष्टान्न।

पँजेरा—संज्ञा पुं० [हिं० पाँजना] बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

पंडल—वि० [सं० पांडुर] पांडु वर्ण का। पीला।

संज्ञा पुं० [सं० पिंड] पिंड। शरीर।

पँड़वा—संज्ञा पुं० [?] भैंस का बच्चा।

पंडा—संज्ञा पुं० [सं० पंडित, प्रा० पंडिअ] [स्त्री० पंडाइन] किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी। पुजारी।

पंडाल—संज्ञा पुं० [?] किसी सभा के अधिवेशन के लिये बनाया हुआ मंडप।

पंडित—वि० [सं०] [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १ विद्वान्। शास्त्रज्ञ। ज्ञानी। २ कुशल। प्रवीण। चतुर। ३ शुद्ध संस्कृतज्ञ।

संज्ञा पुं० १ शास्त्रज्ञ। २. ब्राह्मण। ३ हिंदुओं का धार्मिक कर्मकांड करानेवाला व्यक्ति। ४ शिक्षक। अध्यापक।

पंडिताई—संज्ञा स्त्री० [सं० पंडित+हिं० आई (प्रत्य०)] विद्वत्ता। पांडित्य।

पंडिताऊ—वि० [सं० पंडित+हिं० आऊ (प्रत्य०)] प्राचीन संस्कृत के पंडितों के ढंग का। कोरे संस्कृतज्ञ का सा, जैसे, पंडिताऊ हिंदी।

पंडितानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंडित+आनी (प्रत्य०)] १ पंडित की स्त्री। २ ब्राह्मणी।

पंडु—वि० [सं०] १ पीलापन लिए हुए मटमैला। २. श्वेत। सफेद। ३. पीला।

पंडुक—संज्ञा पुं० [सं० पांडु] [स्त्री० पंडुकी] कपोत या कबूतर की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी। पिंडुक। पेंडकी। फाख्ता।

पंडुर—संज्ञा पुं० [देश०] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

पँतीजना—क्रि० स० [सं० पिंजन] रूई ओटना। पींजना।

पँतीजी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजन] रूई धुनने की धुनकी।

पँत्यारी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पंक्ति"।

पंथ—संज्ञा पुं० [सं० पथ] १. मार्ग। रास्ता। राह। २ आचारपद्धति। चाल। रीति।

मुहा०—पंथ गहना=(१) रास्ता पकड़ना। चलना। उ०—बिछुरत प्रान

३. अर्पण। त्याग। ४. संन्यास। ५. देवता के भिन्न भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उनपर विशेष वर्णों का स्थापन (तंत्र)।

न्यून—वि० [सं०] १. कम। थोड़ा। अल्प। २. घटकर। नीचा।

न्यूनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। २. हीनता।

न्यौछावर—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

न्योजी—संज्ञा स्त्री० [?] १ लीची नामक फल। २. चिलगोजा। नेजा। उ०—कोइ नारँग कोइ झाड़ चिरौंजी। कोइ कटहर, बड़हर, कोइ न्योजी।—पद्मावत।

न्योतना—क्रि० स० [हिं० न्योता से ना० धा०] आनंद उत्सव आदि में संमिलित होने के लिये बंधुबांधव आदि को बुलाना। निमंत्रित करना। न्योता देना।

न्योतहरी—संज्ञा पुं० [हिं० न्योता] निमंत्रित। न्योते में आया हुआ व्यक्ति।

न्योता—संज्ञा पुं० [सं० निमंत्रण] १. निमंत्रण। आनंद उत्सव आदि में संमिलित होने के लिये बंधुबांधव आदि का आह्वान। बुलावा। २. वह भोजन जो दूसरे को अपने यहाँ कराया जाय या दूसरे के यहाँ (उसकी प्रार्थना पर) किया जाय। दावत। ३. वह भेंट या धन जो इष्टमित्र या संबंधी इत्यादि के यहाँ किसी शुभ या अशुभ कार्य के समय भेजा जाता है।

न्योला—संज्ञा पुं० दे० "नेवला"।

न्योली—संज्ञा स्त्री० [सं० नली] हठयोग की एक क्रिया जिसमें पेट की नलियों को पानी से साफ करते हैं।

न्हैनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "नोइनी"।

न्हाना†(पु)—क्रि० अ० दे० "नहाना"।

प

प—हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओठ से होता है।

पंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कीचड़। कीच। २. पानी के साथ मिला हुआ (मिट्टी, धूलि, गोबर आदि) पोतने योग्य पदार्थ। ३ लेप, जैसे—केसर, कुंकुम, चंदन आदि।

पंकज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पंकजयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पंकजराग—संज्ञा पुं० [सं०] पद्मराग मणि।

पंकजवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० पंकज+वाटिका] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें क्रम से एक भगण, एक नगण, दो जगण और अंत्य लघु होता है। उ०—भानुज जल महँ आय परै जब। कंज अवलि विकसैं सर में तब॥ एकावली। इसे कंज अवलि, पंकज अवलि, और पंकावली भी कहते हैं।

पंकजात—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पंकजासन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पंकरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। उ०—अब रघुपति पद पंकरुह हिश्रँ धरि पाय प्रसाद। कहौं जुगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संवाद।—मानस।

पंकिल—वि० [सं०] [स्त्री० पंकिला] १. जिसमें कीचड़ हो। २ मलिन। मैला।

पंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐसा समूह जिसमें बहुत से प्राणी या बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरे के उपरांत एक सीध में स्थित हों। श्रेणी। कतार। पाँती। २. रेखा। ३ सतर। ४ कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी। ५. भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी। ६. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद जो पाँच पादों में विभक्त रहता है। ७ एक वर्णवृत्त।

पंक्तिपावन—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है।

पंक्तिबद्ध—वि० [सं०] श्रेणीबद्ध। कतार में बँधा या रखा हुआ।

पंख—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] वह अंग या अवयव जिससे चिड़ियाँ, कीड़े मकोड़े, आदि उड़ते हैं। पर। डैना। उ०—काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥—मानस।

पंख—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पर। डैना।

मुहा०—पंख जमना=(१) न रहने का लक्षण उत्पन्न होना। (२) बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंगढंग दिखाई पड़ना। (३) प्राण खोने का लक्षण दिखाई देना। शामत आना। पंख लगना=पक्षी के समान वेगवान होना।

पँख—संज्ञा पुं० दे० "पंख"। उ०—हम पँख पाइ पींजरन्हि तरसत अधिक अभाग हमारो।—गीता०।

पँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।

पंखा—संज्ञा पुं० [हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पंखी] वह वस्तु जिसे हिलाकर हवा का झोंका किसी ओर ले जाते हैं। बेना।

पंखा कुली—संज्ञा पुं० [हिं० पंखा+कुली] वह कुली या मजदूर जो पंखा खींचता हो।

पंखापोश—संज्ञा पुं० [हिं० पंखा+फा० पोश] पंखे के ऊपर का गिलाफ।

पंखी—संज्ञा पुं० [हिं० पंख] १ पक्षी। चिड़िया। २. पाँखी। फतिंगा। ३ पंख। पर। ४ एक प्रकार की ऊनी चादर।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पंख] छोटा पंखा।

पँखुड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] कंधे और बाँह का जोड़। पखौरा।

पँखुड़ी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंख] फूल का दल। पँखड़ी।

पंग—वि० [सं० पंगु] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमक।

पँग—संज्ञा पुं० [सं० उपाङ्ग] दे० "उपंग?"। उ०—सखि पँग, आवज, मुरबीन, अनाघात गति बाजहीं।—नंददास०।

पंगत, पंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १ पाँती। पंक्ति। २ भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति। ३. भोज। ४. समाज। सभा।

पंगा—वि० [सं० पंगु] [स्त्री० पंगी] १ लँगड़ा। २ स्तब्ध। बेकाम।

पंगु—वि० [सं०] जो पैर से चल न सकता हो। लँगड़ा। उ०—मूक होइ बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन। जासु कृपा सो दयालु द्रवौ सकल कलिमल दहन॥—मानस।

संज्ञा पुं० [सं०] १. शनैश्चर। २. एक वातरोग जो मनुष्य की जाँघों में होता है। इसमें रोगी चल फिर नहीं सकता।

पंगुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्णिक छंदों का एक दोष जो लघु के स्थान में गुरु या गुरु के स्थान में लघु वर्ण आ जाने से होता है।

पंगुल—वि० [सं० पंगु] पंगु। लँगड़ा।

पंच—वि० [सं०] जो संख्या में चार से एक अधिक हो। पाँच। उ०—पंच दसानि

को दीपक सो कर कामिनि को लखि 'दास' प्रबीने —शृंगार०।

संज्ञा पुं० १. पाँच की संख्या या अंक। २. समुदाय। समाज। उ०—छार तें सँवारि कै पहार हू तें भारी कियो, गारो भयो पंच में पुनीत पच्छ पाइकै। —कविता०। ३. जनता। लोक। उ०—यहाँ बचै को बावरी कान्ह नाम कहि रंच। चरचि चरचि चरननि बिना रचै पंच परिपंच। —रससारांश।

मुहा०—पंच की भीख=सर्वसाधारण की कृपा। सबका आशीर्वाद। पंच की दुहाई=सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर=दस आदमियों का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है।

४ पाँच या अधिक आदमियों का समाज जो किसी झगड़े या मामले को निपटाने के लिये एकत्र हो। न्याय करनेवाली सभा। ५. निर्णायक।

मुहा०—(किसी को) पंच मानना या बदना=झगड़ा निपटाने के लिदे किसी को निर्णायक नियत करना।

५. वह जो फौजदारी के दौरे के मुकदमे में दौरा जज की अदालत में फैसले में जज की सहायता के लिये नियत हो।

पंचक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच का समूह। पाँच का संग्रह। २ वह जिसके पाँच अवयव या भाग हों। ३. धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी नए कार्य का आरंभ निषिद्ध है। पचखा (फलित)। ४ शकुनशास्त्र। ५ पंचायत। ६ दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य का समूह।

पंचकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं० पंच+कन्या] (पुराणानुसार) अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ, विवाह आदि करने पर भी जिनका कौमार्य अखंडित माना जाता है।

पंचकल्याण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफेद हों और शेष शरीर लाल या काला हो।

पंचकवल—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी, और कौए आदि के लिये अलग निकाल दिया जाता है। अग्राशन।

पंचकोण—वि० [सं०] जिसमें पाँच कोने हों।

पंचकोश—संज्ञा पुं० [सं०] उपनिषद् और वेदांत के अनुसार शरीर संघटित करनेवाले अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, और आनंदमय नाम के पाँच कोश या स्तर।

पंचकोस—संज्ञा पुं० [सं० पंचक्रोश] [संज्ञा पंचकोसी] पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि। उ०—मनिकर्निका वदन-ससि सुंदर, सुरसरि सुखसुषमासी। स्वारथ परमारथ-परिपूरन पंचकोस महिमासी।—विनय०।

पंचकोसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचकोस] काशी की परिक्रमा।

पंचक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] पंचकोस। काशी।

पंचगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच नदियों का समूह—गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा। पंचनद।

संज्ञा पुं० वर्तमान वाराणसी के अंतर्गत एक तीर्थ और घाट।

पंचगव्य—संज्ञा पुं० [सं०] गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, जो बहुत पवित्र माने जाते हैं और प्रायश्चित्त आदि में खिलाए जाते हैं।

पंचगौड़—संज्ञा पुं० [सं०] देशभेद के अनुसार विंध्य के उत्तर में बसनेवाले ब्राह्मणों की सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल नामक पाँच शाखाएँ।

पंचचामर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "नाराच" छंद।

पंचजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच या पाँच प्रकार के जनों का समूह। २ गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। ३ मनुष्य या मनुष्य जाति। ४ राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

पंचजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पांचजन्य"।

पंचतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंचभूत।

पंचतन्मात्र—संज्ञा पुं० [सं०] (सांख्य) आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी नामक पाँच महाभूतों के क्रम से शब्द, स्पर्श रूप, रस और गंध नामक पाँच गुण।

पंचतन्मात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० पंचतन्मात्र] दे० "पंचतन्मात्र"।

पंचतपा—संज्ञा पुं० [सं० पंचतपस्] चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तप करनेवाला। पंचाग्नि तापनेवाला।

पंचता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाँच का भाव। २ मृत्यु। विनाश।

पंचतिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] (आयुर्वेद) गिलोय (गुरुच), कंटकारि (भटकटैया) सोंठ, कुट और चिरायता (चक्रदत्त) नाम की पाँच कड़ वी ओषधियों का समूह।

पंचतोलिया—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+तोला?] एक प्रकार का झीना महीन कपड़ा। उ०—सहज सेत पँचतोरिया पहिरत अति छवि होति। जलचादर के दीप लौं जगमगाति तन जोति।—बिहारी०।

पंचत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच का भाव। २. मृत्यु। मरण। मौत।

पंचदेव—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के पाँच प्रधान उपास्य देवता आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी।

पंचद्रविड़—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्याचल के दक्षिण में बसे ब्राह्मणों की पाँच शाखाएँ—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

पंचनद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पंजाब की सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम नामक पाँच बड़ी नदियाँ जो सिंधु नद में मिलती हैं। २ पंजाब प्रदेश। ३ दे० "पंचगंगा"।

पंचनाथ—संज्ञा पुं० [सं० पंच+नाथ] बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनामा—संज्ञा पुं० [हिं० पंच+फा० नामा] वह कागज जिसपर पंच लोगों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंचपरमेष्ठी—संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्र के अनुसार अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, इन पाँच का समूह।

पंचपल्लव—संज्ञा पुं० [सं०] आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल इन पाँच वृक्षों के पल्लव।

पंचपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिलास के आकार का चौड़े मुँह का एक बरतन जो पूजा में काम आता है। २. पार्वण श्राद्ध।

पंचपीरिया—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+फा० पीर] मुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला।

पंचप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान नामक पाँच प्रकार की वायु।

पयान करेंगे रहौ आज पुनि पथ गही।—सूर०। (२) चाल पकड़ना। आचरण ग्रहण करना। पंथ दिखाना=(१) रास्ता बताना। २ उपदेश देना। पथ देखना या निहारना=प्रतीक्षा करना। इंतजार करना। पंथ में या पंथ पर पाँव देना=(१) चलना। (२) आचरण-ग्रहण करना। पथ पर लगना=(१) रास्ते पर होना। (२) चाल ग्रहण करना। किसी के पंथ लगना=(१) किसी के पीछे होना। अनुयायी होना। (२) किसी के पीछे पड़ना। बरावर तग करना। पथ सेना=वाट जोहना। आसरा देखना।

३ धर्ममार्ग। सप्रदाय। मत, जैसे, सिक्ख पथ, गोरख पथ, नाथ पंथ, कवीर पथ आदि।

पंथकी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पथिक] राही। पथिक। मुसाफिर।

पंयान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पथ] मार्ग। उ०—एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पथाना।—मानस।

पंथि—संज्ञा पुं० दे० "पथी १"। उ०—राम-लपन सिय पथि की कथा पृथुल, प्रेम विथकीं कहति सुमुखि सबै हैं।—गीता०।

पथिक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पथिक"।

पथी—संज्ञा पुं० [सं० पथिन्] १ राही। बटोही। पथिक। २ किसी सप्रदाय या पंथ का अनुयायी, जैसे, कबीरपथी, गोरखपंथी, नानकपथी, दादूपथी आदि।

पंद—संज्ञा स्त्री० [फा०] शिक्षा। उपदेश।

पदरह—वि० [स० पचदश] दस और पाँच।

संज्ञा पुं० दस और पाँच की सूचक संख्या। १५।

पप—संज्ञा पुं० [अं० पप] १. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है। २ एक प्रकार का जूता।

पंपड़—वि० [देश०] धूर्त। वचक। ठग।

पंपड़बाज—वि० [देश० पपड़+फा० वाज] दे० "पंपड़"।

पंपड़वाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंपड़वाज+ई (प्रत्य०)] धूर्तता। प्रवचना।

पपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी और उसी से लगा हुआ एक ताल और नगर जो त्रेतायुग में वानरों के राजा बालि की राजधानी थी (वाल्मीकि रामायण)।

पपाल—वि० [हिं० पाप ?] १. पापी। २ दुष्ट।

पंपासर—संज्ञा पुं० दे० "पंपा"।

पँवर—संज्ञा पुं० [?] सामान। सामग्री।

पँवरना†—क्रि० अ० [स० प्लवन] १. तैरना। २ थाह लेना। पता लगाना।

पँवरि—संज्ञा स्त्री० [स० पुर=घर] प्रवेशद्वार या गृह। फाटक। ड्योढ़ी। उ०—पहिलिहि पँवरि सुसामध भा सुखदायक। इत विधि उत हिमवान सरिस सब लायक।—पा० म०।

पँवरिया—संज्ञा पुं० [हिं० पँवरी, पौरि] १ द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २ मंगल अवसर पर द्वार पर बैठकर मगल गीत गानेवाला याचक।

पँवरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"। संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] खड़ाऊँ। पाँवरी।

पँवाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० प्रवाद] १ लबी-चौड़ी कथा जिसे सुनते सुनते जी ऊबे। दास्तान। २ यश। कीर्ति। ३ व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई बात। बढ़ाई हुई बात। ४ एक प्रकार का गीत।

पँवार—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

पँवारना†—क्रि० स० [स० प्रवारण] हटाना। दूर करना। फेंकना।

पँवारो—संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा २"। उ०—बीर बड़ो विरुदैत वली, अजहूँ जग जागत जासु पँवारो। सो हनुमान हनी मुठिका, गिरिगो गिरिराज ज्यों गाज को मारो।—कविता०।

पंसारी—संज्ञा पुं० [स० पण्यशाली] मसाले और जड़ीबूटी बेचनेवाला दूकानदार।

पंसासार—संज्ञा पुं० [स० पाशक+सं० सारि=गोटी] पासे का खेल। उ०—अनिरुद्ध जी और राजकन्या निद्रा से चौंक पंसासार खेलने लगे।—प्रेमसागर।

पसेरी—संज्ञा स्त्री०। [हिं० पाँच+सेर] पाँच सेर की तौल या बाट।

पइठना(पु)—क्रि० अ० दे० "पैठना"।

पइता—संज्ञा पुं० [?] एक छद जिसे पाइता पादताली, पवित्रा और प्रथिता भी कहते हैं। इसमें क्रम से एक मगण, एक भगण और एक सगण होता है। उ०—मो भासै है जग सपना। साँचौ एकै सिय रमना। बुद्धी जाकी अस जगती। पाई ताने रुचिर गती।

पइसना†—क्रि० अ० दे० "पैठना"।

पइसार†—संज्ञा पुं० [हिं० √पइस] पैठ। प्रवेश। उ०—पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार। अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार।—मानस।

पउँरि, पउरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि"।

पकड़—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १. पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २. पकड़ने का ढंग। ३. लड़ाई में एक एक बार आकर परस्पर गुथना। भिड़त। हाथापाई। ४. दोष, भूल आदि ढूँढ़ निकालने की क्रिया या भाव।

पकड़ धकड़—संज्ञा स्त्री० दे० "धरपकड़"।

पकड़ना—क्रि० स० [स० प्रकृष्ट] १. किसी वस्तु को इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके। धरना। थामना। ग्रहण करना। २. काबू में करना। गिरफ्तार करना। ३ कुछ करने से रोक रखना। ठहराना। ४ ढूँढ़ निकालना। पता लगाना। ५ रोकना। टोकना। ६ दौड़ने, चलने या और किसी बात में बढ़े हुए के बराबर हो जाना। ७ सहारा देना। किसी फैलनेवाली वस्तु में लगकर उससे सचरित या प्रभावित होना; जैसे, फूस का आग पकड़ना। कपड़े का रग पकड़ना। ८ अपने स्वभाव या वृत्ति के अतर्गत करना; जैसे, चाल पकड़ना, ढग पकड़ना। ९ आक्रांत करना। ग्रसना। घेरना। जैसे, सर्दी पकड़ना, रोग पकड़ना।

पकड़वाना—क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे० रूप] पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

पकड़ाना—क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे०] १ पकड़ने का काम कराना। २. किसी को ग्रहण कराना।

पकना—क्रि० अ० [स० पक्व] १ फल या अनाज आदि का पुष्ट होकर खाने या काटकर सुरक्षित रखने के योग्य होना। पूरी अवस्था को प्राप्त होना।

मुहा०—बाल पकना=(बुढ़ापे के कारण) बाल सफेद होना।

२. आँच खाकर गलना या प्रयोग के योग्य होना। सिद्ध होना। सीझना।

मुहा०—कलेजा पकना=जी जलना।

३ फोड़े आदि में मवाद आना। पीब से भरना। ४ पक्का होना।

पकरना†(पु)—क्रि० स० दे० "पकड़ना"।

पकवान—संज्ञा पुं० [सं० पक्वान्न] घी में

तलकर बनाई हुई खाने की वस्तु। जैसे, पूरी, मिठाई आदि।

पकवाना—क्रि० स० [हिं० पकाना का प्रे०] पकाने का काम दूसरे से कराना।

पका—वि० [सं० पक्व] १. जो (फल अनाज आदि) पुष्ट अवस्था को प्राप्त होकर खाने या काटकर सुरक्षित रखने के योग्य हो। 'कच्चा' का उलटा। २. उबाला हुआ (पानी आदि तरल पदार्थ)। ३ आँच या ताप द्वारा गलाकर इस्तेमाल के योग्य तैयार किया हुआ (भोजन या द्रवणशील कोई मसाला आदि)।

पकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पकाना] १. पकाने की क्रिया या भाव। २ पकाने की मजदूरी।

पकाना—क्रि० स० [हिं० पकना] १. फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २ आँच या गरमी के द्वारा गलाना या तैयार करना। रींधना। सिझाना। ३ फोड़े, फुंसी, घाव आदि में पीब या मवाद उत्पन्न करना। ४ पक्का करना।

पकावन—संज्ञा पुं० दे० "पकवान"।

पकौड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पका+हिं० औड़ा (प्रत्य०) मि० हथौड़ा ?] [स्त्री०, अल्पा० पकौड़ी] घी या तेल में पकाकर फुलाई हुई बेसन या पीठी की बड़ी।

पक्का—वि० [सं० पक्व] [स्त्री० पक्की] १. दृढ़। मजबूत। टिकाऊ। २ स्थिर। दृढ़। न टलनेवाला। निश्चित। ३ प्रमाणों से पुष्ट। प्रामाणिक। नपा तुला।

मुहा०—पक्का कागज=वह कागज जिसपर लिखी हुई बात कानून से दृढ़ समझी जाती है।

४ जिसकी नाप तौल प्रामाणिक हो। जैसे, पक्का पाँच सेर। ५ जो अभ्यस्त या निपुण व्यक्ति के द्वारा बना हो, जैसे, पक्के अक्षर। ६ तजरुबेकार। निपुण। ७. जो किसी काम को करते करते पक्का हो गया या मँज गया हो, जैसे, पक्का हाथ। ८ अनाज या फल जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया हो। ९ पका हुआ। जिसमें पूर्णता आ गई हो। पूरा। १० जो अपनी बाद या प्रौढ़ता को पहुँच गया हो। पुष्ट। ११. साफ और दुरुस्त। तैयार। १२ जो आँच पर कड़ा या मजबूत हो गया हो। १३ आँच पर पका हुआ।

मुहा०—पक्का खाना या पक्की रसोई=घी में पका भोजन। पक्का पानी=(१) औटाया हुआ पानी। (२) स्वास्थ्यकर जल। १४. न छूटनेवाला, जैसे पक्का रंग। १५ शास्त्रीय, जैसे पक्का गाना।

पक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० पक्का] पक्की रसोई। पूरी, कचौड़ी, मिठाई आदि।

पक्खर(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"। उ०—लक्ख में पक्खर तिक्खन तेज जे सूर समाज में गाज गने हैं।—कविता०।

वि० [सं० पक्व] पक्का। पुख्ता।

पक्व—वि० [सं०] १ पका हुआ। २. पक्का। ३ परिपुष्ट। दृढ़।

पक्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पक्कापन।

पक्वान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ पका हुआ अन्न। २. घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाकर बनाई हुई खाने की चीज।

पक्वाशय—संज्ञा पुं० [सं०] पेट में वह स्थान जहाँ अन्न जाता है और यकृत् तथा क्लोमग्रंथियों से आए हुए रस से मिलकर पचता है।

पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी विशेष स्थिति से दाहिने और बाएँ पड़नेवाले भाग। ओर। पार्श्व। तरफ। २ किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक। पहलू। ३. वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो। सिद्धांत या विषय।

मुहा०—पक्ष गिरना=मत का युक्तियों द्वारा सिद्ध न हो सकना।

४ अनुकूल मत या प्रवृत्ति। ५. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से किसी के अनुकूल स्थिति।

मुहा०—(किसी का) पक्ष करना= दे० "पक्षपात करना"। (किसी का) पक्ष लेना=(१) (झगड़े में) किसी की ओर होना। सहायक होना। (२) पक्षपात करना। तरफदारी करना।

६ निमित्त। लगाव। संबंध। ७ वह वस्तु जिसमें साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं, जैसे—"पर्वत वह्निमान् है"। यहाँ पर्वत पक्ष है जिसमें साध्य वह्निमान् की प्रतिज्ञा की गई है (न्याय)। ८ फौज। सेना। बल। ९ सहायकों या सवर्गों का दल। १० सहायक। सखा। साथी। ११ वादियों प्रतिवादियों के अलग अलग समूह। १२ चांद्र मास के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभाग। पाख। १३ चिड़ियों का डैना। पंख। पर। उ०—मोर के पक्ष को मुकुट आला। कंठ में सोहती मुक्तमाला।—छंदार्णव। १४ शरपक्ष। तीर में लगा हुआ पर। १५ गृह। घर।

पक्षपात—संज्ञा पुं० [सं०] बिना उचित अनुचित के विचार के किसी के अनुकूल प्रवृत्ति या स्थिति। तरफदारी।

पक्षपाती—संज्ञा पुं० [सं०] तरफदार।

पक्षाघात—संज्ञा पुं० [सं०] अर्धांग रोग जिसमें शरीर के दाहिने या बाएँ किसी पार्श्व के सब अंग क्रियाहीन हो जाते हैं। आधे अंग का लकवा। फालिज।

पक्षिराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड़। २ जटायु। ३ एक प्रकार का धान।

पक्षी—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिड़िया। २. तरफदार।

पक्ष्म—संज्ञा पुं० [सं०] आँख की बरौनी।

पक्ष्मल—वि० [सं०] बड़ी बरौनियों वाला। उ०—फिर लिए मूँद, वे पल पक्ष्मल—इंदीवर के से कोश विमल।—तुलसीदास।

पक्ष्मिल—वि० [सं०] जिसमें बरौनी हो।

पखंडी—संज्ञा पुं० [हिं० पाखंडी] १. पाखंडी। २. वह जो कठपुतलियाँ नचाता हो।

पख—संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष] १ ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। तुर्रा। २ ऊपर से बढ़ाई हुई बात। बाधक नियम। अड़ंगा। ३. झगड़ा। बखेड़ा। ४ दोष। त्रुटि।

पखड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों का रंगीन पटल जो खिलने के पहले परागकेसर को चारों ओर से बंद किए रहता है और खिलने पर फैल जाता है। पुष्पदल।

पखराना—क्रि स० [हिं० पखारना का प्रे० रूप] धुलवाना। पखारने का काम कराना।

पखरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाखर"। २ दे० "पखड़ी"।

पखरैत—संज्ञा पुं० [हिं० पाखर+ऐत (प्रत्य०)] वह घोड़ा, बैल या हाथी जिसपर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखवाड़ा—संज्ञा पु० दे० "पखवारा"।

पखवारा—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष+वार] १ महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक। २ पंद्रह दिन का काल। उ०—परखेसु मोहिं एक पखवारा। नहिं आवौं तब जानेसु मारा।—मानस।

पखाउज—संज्ञा स्त्री० दे० "पखावज"। उ०—बाजहिं ताल पखाउज बीना। नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना।—मानस।

पखान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"। उ०—रही डोलिबे बोलिबे खानपान की चाल। मूरति भई पखान की वह अवला अब लाल। —रससारांश।

पखाना—संज्ञा पुं० [सं० उपाख्यान] कहावत। कहनूत। कथा। मसल।

†संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।

पखारना—क्रि० अ० [सं० प्रक्षालन] पानी से धोकर साफ करना। धोना। उ०—पाँव पखारि निकट बैठारे समाचार सब बूझे। —सूर०।

पखाल—संज्ञा स्त्री० [सं० पय=पानी+हिं० खाल] १ चमड़े की बड़ी मशक जिसमें पानी भरा जाता है। २ धौंकनी।

पखाली—संज्ञा पुं० [हिं० पखाल+ई (प्रत्य०)] पखाल या मशक से पानी भरनेवाला। माशकी। भिश्ती।

पखावज—संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष+वाद्य] एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है।

पखावजी—संज्ञा पुं० [हिं० पखावज+ई (प्रत्य०)] पखावज बजानेवाला।

पखी, पखीरी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।

पखुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।

पखेरू—संज्ञा पुं० [सं० पक्षालु] पक्षी। चिड़िया। उ०—विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे ? ससा स्यार औ वन के पखेरू धिक धिक सबन करे। —सूर०।

पखौटा—संज्ञा पुं० [हिं० पख] १. डैना। पर। २ मछली का पर।

पग—संज्ञा पुं० [सं० पदक] १ पैर। पाँव। २ चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया की समाप्ति। डग। फाल।

पगडंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पग+डंडी] खेत, जंगल या मैदान में पैदल चलने का तंग रास्ता।

पगड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पटक] १ वह लंबा कपड़ा जो सिर पर लपेटकर बाँधा जाता है। पाग। चीरा। साफा। उष्णीष।

मुहा०—(किसी से) पगड़ी अटकना=बराबरी होना। मुकाबला होना। पगड़ी उछालना=(१) बेइज्जती करना। दुर्दशा करना। (२) उपहास करना। हँसी उड़ाना। पगड़ी उतारना=(१) मान या प्रतिष्ठा भंग करना। बेइज्जती करना। (२) वस्त्रमोचन करना। ठगना। लूटना। (किसी की) पगड़ी बँधना=(१) उत्तराधिकार मिलना। वरासत मिलना। (२) उच्च पद या स्थान प्राप्त होना। (३) प्रतिष्ठा मिलना। सम्मान प्राप्त होना। (किसी के साथ) पगड़ी बदलना=भाई-चारे का नाता जोड़ना। मैत्री करना।

२ मकान या दुकान का किराएदार की ओर से दिया गया नजराना। भेंट। एक प्रकार की रिश्वत।

पगतरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पग+तल] जूता। उ०—तुलसी जाके बदन तें, धोखेउ निकसत राम। ताके पग की पगतरी, मेरे तनु को चाम। —वैराग्य०।

पगदासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पग+दासी] १. जूता। २. खड़ाऊँ।

पगना—क्रि० अ० [सं० पाक] १. शरबत या शीरे में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट और घुस जाय। २ रस आदि के साथ ओतप्रोत होना। सनना। ३. किसी के प्रेम में डूबना।

पगनियाँ†—संज्ञा स्त्री० [सं० पग] जूती।

पगरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० पग+रा (प्रत्य०)] पग। डग। कदम। उ०—सूर सनेह ग्वारि मन अटको छाँड़िहु दिए परत नहीं पगरो। परम मगन ह्वै रही चितै मुख सबहिं ते भाग याहि को अगरो। —सूर०।

संज्ञा पुं० [फा० पगाह] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। सवेरा। तड़का।

पगला—वि० पुं० दे० "पागल"।

पगहा†—संज्ञा पुं० [सं० प्रग्रह] [स्त्री० पगही] वह रस्सी जिससे पशु बाँधा जाता है। गिराँव। पघा।

पगा†—संज्ञा पुं० [हिं० पाग] दुपट्टा। पटका। उ०—झँगा पगा अरु पाग पिछौरी ढाढ़िन को पहिराए। —सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "पघा"। उ०—तृण दशानन लै मिलु दसकंधर कंठहिं मेलि पगा। —सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "पगरा"।

पगाना—क्रि० स० [सं० पक्व या पाक] १ पागने का काम करना। २. अनुरक्त करना। मगन करना।

पगार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्राकार] चहार-दीवारी। उ०—धीर न कोउ धरै बलबीर चढ़्यो बृजनीर पहार पगारनि। —शृंगार०।

संज्ञा पुं० [हिं० पग+गारना] १. पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा। २. ऐसी वस्तु जिसे पैरों से कुचल सकें। ३ वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें।

संज्ञा पुं० [?] वेतन। तनख्वाह।

पगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। भोर। तड़का।

पगिआना(पु)†—क्रि० स० दे० "पगाना"।

पगिया(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"। उ०—लसत अँगूली झीनी दामिनी की छबि छीनी, सुंदर बदन, सिर पगिया जरकसी। —गीता०।

पगुराना†—क्रि० अ० [हिं० पागुर से ना० धा०] १. पागुर या जुगाली करना। २. हजम करना।

पघा—संज्ञा पुं० [सं० प्रग्रह] ढोरों को बाँधने की मोटी रस्सी। पगहा।

पचकना—क्रि० अ० दे० "पिचकना"।

पचकल्यान—संज्ञा पुं० दे० "पंचकल्याण"।

पचखा†—संज्ञा पुं० दे० "पंचक"।

पचगुना—वि० [सं० पंचगुण] पाँच बार अधिक। पाँच गुना।

पचड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच (प्रपंच)+डा (प्रत्य०)] १. झंझट। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच। २ एक प्रकार का गीत जिसे प्राय ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३ लावनी के ढंग का एक गीत।

पचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पचाने की क्रिया या भाव। पाक। २. पकने की क्रिया या भाव। ३ अग्नि।

पचना—क्रि० अ० [सं० पचन] १ खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होना। हजम होना। २ क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार अपने हाथ में आ जाना कि फिर वापस न हो सके। आत्मसात हो जाना। ४. ऐसा परिश्रम होना जिससे शरीर क्षीण हो। बहुत हैरान होना। उ०—ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि, पेट ही को पचत बेंचत बेटा बेटकी। —कविता०।

मुहा०—पच मरना=किसी काम के लिये बहुत अधिक परिश्रम करना। हैरान होना।

५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में पूर्ण रूप से लीन होना। खपना। समा जाना।

पचपन—वि० [सं० पंचपंचाशत्] पचास और पाँच।

संज्ञा पुं० पचास और पाँच की सूचक संख्या। ५५।

पचपनसाला—पचपन साल की अवस्था। भारत में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण करने की अवस्था।

पचमेल—वि० दे० "पँचमेल"।

पचरंग—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+रंग] चौक पूरने की सामग्री—मेहँदी का चूरा, अबीर, बुक्का, हल्दी और सुरवारी के बीज।

पचरंगा—वि० [हिं० पाँच+रंग] [स्त्री० पचरंगी] १ जिसमें पाँच भिन्न भिन्न रंग हों। २ कई रंगों से रंजित।

संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।

पचलड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+लड़ी] माला की तरह का पाँच लड़ों का एक आभूषण।

पचलोना—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+लोन (लवण)] १ जिसमें पाँच प्रकार के नमक मिले हों। २ दे० "पचलवण"।

पचवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच] एक प्रकार की देशी शराब।

पचहरा—वि० [हिं० पाँच+हरा] पाँच परतों या तहोंवाला।

पचाना—क्रि० स० [हिं० पचना का स० रूप] १ पकाना। आँच पर गलाना। २ जीर्ण करना। हजम करना। ३ समाप्त, नष्ट या क्षय करना। ४ पराए माल को अपना कर लेना। आत्मसात् कर जाना। ५ अत्यधिक परिश्रम लेकर या क्लेश देकर शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ६ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने आपमें पूर्ण रूप से लीन कर लेना। खपाना। मिला लेना।

पचारना†—क्रि० स० [स० प्रचारण] ललकारना। उ०—जौ रन हमहिं पचारै कोऊ। लरहिं सुखेन कालु किन होऊ। —मानस।

पचास—वि० [सं० पचाशत] चालीस और दस।

संज्ञा पुं० चालीस और दस की संख्या।

पचासा—संज्ञा पु० [हिं० पचास] १ एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह। २ पचास वर्षों की आयु या अवस्था।

पचित—वि० [सं० पनित=पचा हुआ] पच्ची किया हुआ। जड़ा या बैठाया हुआ। उ०—हरी लाल प्रवाल पिरोजा पगति बहुमणि पचित पचावनो। —सूर०।

पचीस—वि० [सं० पचविंशति] पाँच और बीस।

संज्ञा पुं० पाँच और बीस की संख्या या अंक। २५।

पचीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पचीस] १. एक ही प्रकार की २५ वस्तुओं का समूह। २. किसी की आयु के पहले २५ वर्ष। ३ एक विशेष गणना जिसका सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ का माना जाता है। ४ एक प्रकार का खेल जो चौसर की बिसात पर पासे के बदले सात कौड़ियों से खेला जाता है।

पचोतरसो—संज्ञा पु० [सं० पचोत्तरशत] एक सौ पाँच की संख्या का अंक। १०५।

पचौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पचना] पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन पचता है।

पचौर, पचौली†—संज्ञा पुं० [हिं० पच] गाँव का मुखिया। सरदार। पच।

पचौवर—वि० [हिं० पाँच+स० आवर्त] पाँच तह या परत किया हुआ। पचहरा।

पच्चड़, पच्चर—संज्ञा पुं० [सं० पचित या पच्ची] लकड़ी की वह गुल्ली जिसे लकड़ी की बनी चीजों में साल या जोड़ को कसने के लिये ठोंकते हैं। काठ का पैबंद।

पच्ची—संज्ञा स्त्री० [सं० पचित] १ ऐसा जड़ाव जिसमें जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय। २ किसी धातुनिर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।

मुहा०—(किसी में) पच्ची हो जाना = बिलकुल मिल जाना। लीन हो जाना।

पच्चीकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पच्ची+फा० कारी] पच्ची करने की क्रिया या भाव।

पच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पक्ष"।

पच्छताई(पु)—संज्ञा स्त्री०दे० "पक्षपात"।

पच्छधर—वि० [सं० पक्षधर] १ पख धारण करनेवाला। २ पक्षपात करनेवाला। उ०—तनु विचित्र, कायर वचन, अहि अहार, मन घोर। तुलसी हरि भए पच्छधर, ताते कह सब मोर। —दोहा०।

पच्छिम—संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम"।

पच्छी—संज्ञा पु० [स्त्री० पच्छिनी] दे० "पक्षी"।

पछड़ना—क्रि० अ० [हिं० पीछा] १ लड़ने में पटका जाना। २ दे० "पिछड़ना"।

पछताना(पु)—क्रि० अ० [हिं० पछतावा] किसी किए हुए अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से दुखी होना। पश्चात्ताप करना।

पछतानि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा"।

पछतावा†—संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

पछतावना—क्रि० अ० दे० "पछताना"।

पछतावा—संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्ताप] पश्चात्ताप।

पछना—क्रि० अ० [हिं० पाछना] पाछा जाना।

संज्ञा पुं० १. वह अस्त्र जिससे कोई चीज पाछी जाय। २ फसद।

पछमन(पु)—क्रि० वि० [हिं० पीछा] पीछे।

पछलगा—वि० दे० "पिछलगा"।

पछलत्त—संज्ञा स्त्री० दे० 'पिछलत्ती'।

पछलना—संज्ञा पुं० दे० "पिछलना"।

पछवाँ—वि० [स० पश्चिम] पच्छिम का।

पछाँह—संज्ञा पुं० [सं० पश्चिम] पश्चिम की ओर का देश।

पछाँहिया, पछाँही—वि० [हिं० पछाँह+इया (प्रत्य०)] पछाँह का। पश्चिमी प्रदेश का।

पछाड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] अचेत होकर गिरना। मूर्च्छित होकर गिरना।

मुहा०—पछाड़ खाना = खड़े खड़े अचानक बेसुध होकर गिर पड़ना। अचेत होकर गिरना।

पछाड़ना—क्रि० स० [हिं० पछाड़] १ कुश्ती या लड़ाई में पटकना। गिराना। २ हराना। परास्त करना।

क्रि० स० [स० प्रक्षालन] धोने के लिये कपड़े को जोर से पटकना।

पछानना(पु)—क्रि० स० दे० "पहचानना"।

पछारना(पु)—क्रि० स० दे० "पछाड़ना"।

पछावरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का सिखरन या शरबत। २ छाछ का बना एक पेय पदार्थ।

पछाहीं—वि० [हिं० पछाहँ] पछाहँ का।

पछिआना†—क्रि० स० [हिं० पीछे+आना] १ पीछे पीछे चलना। २ पीछा करना।

पछिताव—संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

पछु—वि० [स० पक्ष] १. पक्ष। २. पक्ष लेनेवाला। सहायता करनेवाला। उ०—सहि न सक्यौ सो कठिन विधाता वहो पछु आजुहि भान्यौ। —गीता०।

पछुवाँ—वि० [हिं० पच्छिम] पच्छिम की (हवा)।

पछेली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछे+एली (प्रत्य०)] [पुं० पछेला] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।

पछोड़ना†—क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दानों को) साफ करना। फटकना। उ०—कहो कौन पै कढ़ै कनूका भुस की रास पछोरे।—सूर०।

मुहा०—फटकना पछोड़ना = खूब देखना भालना। उ०—सूर जहाँ लौं श्याम-गात हैं देखे फटकि पछोरी।—सूर०।

पछोरन—क्रि० स० दे० "पछोड़ना"। उ०—ठाली ग्वालि जानि पठए, अलि, कह्यो है पछोरन छूछो।—श्रीकृष्ण गीता०।

संज्ञा पुं० साफ करने से निकला हुआ कूड़ा करकट या अन्न के बेकाम दाने आदि।

पछ्यावरि†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सिखरन या शरबत।

पजरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] जलना। दहकना। उ०—पजरि पजरि तनु अधिक दहत है सुनत तिहारे बैन।—सूर०।

पजारनाⓅ—क्रि० स० [हिं० पजरना] जलाना।

पजावा—संज्ञा पुं० [फा० पजाव] आवाँ। ईंट पकाने का भट्ठा।

पजोखा†—संज्ञा पुं० [?] मातमपुरसी।

पज्जⓅ—संज्ञा पुं० [सं० पद्य] शूद्र।

पज्झटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० पद्धटिका] १६ मात्राओं का एक छंद जिसके पदांत में गुरु वर्ण होता है। उ०—वसु गुरु रस जन है पज्झटिका। व्यर्थ न खोवहु एकहु घटिका॥

पटंबरⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० पाट+अंबर] रेशमी कपड़ा। कौपेय।

पट—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। कपड़ा। २ कोई आड़ करनेवाली वस्तु। पर्दा। चिक। उ०—बाहर के पट देइ कै भीतर के पट खोल।—कबीर०। ३ किसी धातु आदि का वह चिपटा टुकड़ा या पट्टी जिसपर कोई चित्र या लेख खुदा हो। ४ कागज का वह टुकड़ा जिसपर चित्र खींचा या उतारा जाय। चित्रपट। ५ वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मंदिरों से दर्शनप्राप्त यात्रियों को मिलता है। ६ छप्पर। छान। ७ कपास।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १ दरवाजा।

मुहा०—पट उघड़ना या खुलना = मंदिर का दरवाजा इसलिये खुलना कि लोग दर्शन करें।

२ पालकी के दरवाजे जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं। ३. सिंहासन। ४. चिपटी और चौरस भूमि।

वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो। चित का उलटा। औंधा।

मुहा०—पट पड़ना = मंद पड़ना। न चलना, जैसे—रोजगार पट पड़ना।

क्रि० वि० चट का अनुकरण। तुरत।

पटइन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवा] पटवा जाति की स्त्री।

पटकनⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने की क्रिया या भाव। २ चपत। तमाचा। ३ छोटा डंडा। छड़ी।

पटकना—क्रि स० [सं० पतन+करण] १ किसी वस्तु या व्यक्ति को झटके के साथ नीचे की ओर गिराना। २ किसी वस्तु या व्यक्ति को उठाकर कुछ ऊँचाई से जोर के साथ जमीन पर फेंकना। दे मारना। उ०—लाँवी लूम लसत लपेटि पटकत भट, देखौ देखौ, लखन लरनि हनुमान की।—कविता०।

मुहा०—(किसी पर) पटकना = कोई ऐसा काम किसी के सुपुर्द करना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो। सिर पटकना = (१) बार बार असफल प्रयत्न करना (२) किसी काम के लिये बहुत अधिक आजिजी दिखाना।

२ कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना।

†क्रि० अ० १ सूजन बैठना या पचकना। २ पट शब्द के साथ किसी चीज का दरक या फट जाना।

पटकनिया, पटकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव। पछाड़। लोटनिया।

पटका—संज्ञा पुं० [सं० पट्टक] वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बाँधी जाय। कमरबंद। कमरपेच।

पटकान—संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।

पटकार—संज्ञा पुं० [सं०] जुलाहा।

पटझोलⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० पट+झोल] अंचल। आँचल।

पटतरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट+तल] १. समता। बराबरी। समानता। २. उपमा। तशबीह। उ०—एरी पिकबैनी 'दास' पटतर हेरै जब जब इन तेरे अधरन मधुराई को।—शृंगार०।

पटतरना—क्रि० अ० [हिं० पटतर] उपमा देना। उ०—कहहु काहि पटतरिय गौरि गुनरूपहि।—पा० म०।

पटतारना—क्रि० स० [हिं० पटा+तारना = अंदाजना] खाँड़े, भाले आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिये पकड़ना या खींचना। सँभालना। उ०—याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहैं प्रहारा हो। रथ ते उतरि केस गहि राजा कियो खड्ग परतारा हो।—सूर०।

क्रि० स० [हिं० पटतर] ऊँची नीची जमीन को चौरस करना। पहतारना।

पटधारी—वि० पुं० [सं०] जो कपड़ा पहने हो।

पटना—क्रि० स० [हिं० पट = जमीन की सतह के बराबर] १ किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। समतल होना। २. किसी स्थान में किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उससे शून्य स्थान न दिखाई पड़े। परिपूर्ण होना। ३ मकान, कूएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना। ४ † सींचा जाना। सेराब होना। ५ दो मनुष्यों के विचार या स्वभाव में समानता होना। मन मिलना। बनना। हेलमेल होना। ६ लेनदेन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तों आदि पर सहमत हो जाना। तै हो जाना। ७ (ऋण) चुकना। पूरा पूरा अदा हो जाना।

संज्ञा पुं० दे० "पाटलिपुत्र"।

पटनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटना = तै होना] वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो।

पटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु० पट] हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति।

क्रि वि० बराबर पटपट ध्वनि करता हुआ, जैसे—बूँदों का पटपट पड़ना।

पटपटाना—क्रि० अ० [हिं० पटकना] १ भूखप्यास या सरदी गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। २ किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना।

क्रि० स० १ 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २ खेद करना। शोक करना।

पटपर—वि० [हिं० पट+अनु० पर] समतल। बराबर। चौरस। हमवार।

संज्ञा पुं० १. नदी के आसपास का

वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्राय पानी में डूबी रहती है। २. अत्यत उजाड़ स्थान।

पटबंधक—संज्ञा पुं० [हिं०√पट+सं० बधक] एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई सपत्ति के लाभ में से सूद रहित मूलधन अदा होने पर रेहन रखी हुई सपत्ति लौटा देता है।

पटबिजना, पटबीजना—संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"। उ०—पटबिजना तहँ अधिक सतावै। छटनि तें उछटि चिनग जनु आवै। —नंददास०।

पटमजरी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी।

पटमंडप—संज्ञा पुं० [स०] तबू। खेमा।

पटरा—संज्ञा पुं० [सं० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १ काठ का लबा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। पल्ला।

मुहा०—पटरा कर देना=(१) मार काटकर फैला देना या बिछा देना। (२) चौपट कर देना।

२ धोबी का पाट। ३ हेंगा। पाटा।

पटरानी—संज्ञा स्त्री० [स० पट्ट+रानी] वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो। मुख्य रानी। पट्टमहिषी।

पटरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटरा] १ काठ का पतला लबा और चौकोर तख्ता। छोटा पटरा।

†वि० चौरस। समतल। बराबर।

मुहा०—पटरी जमना या बैठना=मन मिलना। मेल होना। पटना।

२ लिखने की तख्ती। पटिया। ३. बैठने का छोटा पीढ़ा या चौकी। ४ सड़क या नहर के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिये होता है। ५ बगीचे में क्यारियों के इधर उधर के पतले पतले रास्ते। ६. लोहे की मजबूत लबी पट्टी जिसपर रेलगाड़ी चलती है। रेल की लाइन। ७ सुनहरे या रुपहले तारों से बना हुआ वह फीता जिसे कपड़े की कोर पर लगाते हैं। ८ हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी।

पटल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आवरण। पर्दा। उ०—सुनि मृदु वचन गूढ़ रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के।—मानस। २ छप्पर। छान। छत। ३ परत। तह। तबक। ४ पहल। पार्श्व। ५ आँख की बनावट की तहें। आँख के पर्दे। ६ लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा। पटरा। तख्ता। ७. पुस्तक का भाग या अश विशेष। परिच्छेद। ८. तिलक। टीका। ९ समूह। ढेर। अंबार। उ०—शिरसि संकुलित कल कूट पिंगल जल-पटल शतकोटि—विद्युच्छटाभं—विनय०।

पटलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पटल का भाव या धर्म। २ अधिकता।

पटवा—संज्ञा पुं० [सं० पाट+वा (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] १ रेशम या सूत में गहने गुथनेवाला। पटहार। २. पटसन। पाट।

पटवाना—क्रि० स० [हिं० पाटना का प्रे० रूप] पटने या पाटने का काम दूसरे से कराना।

पटवारगरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवारी+फा० गरी] पटवारी का काम या पद।

पटवारी—संज्ञा पुं० [स० पट्ट+हिं० वार] गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब किताब रखनेवाला छोटा सरकारी कर्मचारी। लेखपाल।

संज्ञा स्त्री० [स० पट+हिं० वारी (प्रत्य०)] कपड़े पहनानेवाली दासी।

पटवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिविर। तबू। २ वह वस्तु जिससे वस्त्र सुगधित किया जाय। ३ लहँगा।

पटसन—संज्ञा पु० [स० पाट+हिं० सन] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाए जाते हैं। २ पटसन के रेशे। पाट। जूट।

पटहा—संज्ञा पुं० [सं०] दुदुभी। नगाड़ा।

पटहार, पटहारा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पटहारिन] दे० "पटवा"।

पटा—संज्ञा पु० [स० पट] लोहे की वह पट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० पट्] पीढ़ा। पटरा।

मुहा०—पटाफेर=विवाह की एक रस्म जिसमें वर वधू आपस में आसन बदलते हैं। पटा बाँधना=पटरानी बनना। उ०—चौदह सहस तिया में तोको पटा बँधाऊँ आज।—सूर०।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० पट्ट] अधिकार-पत्र। सनद। पट्टा।

Ⓟसंज्ञा पुं० [हिं० पटना] १. लेनदेन। क्रयविक्रय। सौदा। २ चौड़ी लकीर। धारी। ३ दे० "पट्टा"।

पटाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटाना] पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाक—[अनु०] किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द; जैसे—वह पटाक से गिरा।

पटाका—संज्ञा पुं० [हिं० पट (अनु०)] १ पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली आतशबाजी। ३. कोड़े या पटाके की आवाज। ४ तमाचा। थप्पड़।

पटाना—क्रि० स० [हिं० पट=समतल] १ पाटने का काम कराना। २ छत को पीटकर बराबर कराना। ३. पाटन बनवाना। छत बनवाना। ४. ऋण चुका देना। ५ मूल्य तै कर लेना। ६ राजी करना।

†क्रि० अ० शात होकर बैठना।

पटापट—क्रि० वि० [अनु० पट] १ लगातार बार बार 'पट' 'पट' ध्वनि के साथ। २ तेजी से।

संज्ञा स्त्री० निरतर "पटपट" शब्द की आवृत्ति।

पटापटी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूलपत्ते बने हों।

पटाव—संज्ञा पुं० [हिं०√पाट+आव (प्रत्य०)] १ पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन।

पटासन—संज्ञा पुं० [स०] बैठने के लिये कपड़े का बना आसन।

पटिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका] १ पत्थर का प्राय. चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा। फलक। २. खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। ३ लिखने की पट्टी। तख्ती। ४ हेंगा। पाटा। †५. माँग। पट्टी।

पटीⓅ—संज्ञा स्त्री० [स० पट] १ Ⓟकपड़े का पतला लबा टुकड़ा। पट्टी। २. पटका। कमरबद। ३ नाटक का पर्दा।

पटीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का चदन। २ खैर का वृक्ष। ३ वटवृक्ष।

पटीलना—क्रि० अ० [हिं० पटाना ?] १ किसी को उलटी सीधी बातें समझा-बुझाकर अपने अनुकूल करना। ढग पर लाना। २ अर्जित करना। कमाना। ३ ठगना। छलना। ४ सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना।

पटु—वि० [स०] १. प्रवीण। निपुण। कुशल। दक्ष। उ०—पाप-ताप-तिमिर-तुहिन-

विघटन पटु, सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को। —हनु०। २. चतुर। चालाक। होशियार। ३. अत्यंत कठोर हृदयवाला। ४ तंदुरुस्त। स्वस्थ। ५ तीक्ष्ण। तीखा। तेज। उ०—गर्भ के अर्भक काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको। —कविता०। ६ उग्र। प्रचंड।

पटुआ—संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।

पटुका—संज्ञा पुं० [सं० पट्टिका] १ दे० "पटका"। २ चादर।

पटुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटु होने का भाव। निपुणता। होशियारी।

पटुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पटुता।

पटुली—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्ट] १ काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। उ०—डाँड़ी कनक कुंकुम-तिलक रेखैं सी मनसिज-माल। पटुली पदिक रति-हृदय जनु कलधौत-कोमल-माल। —गीता०। २ चौकी। पीढ़ी।

पटुवा—संज्ञा पुं० [सं० पाट] १ पटसन। जूट। २. करेमू।

पट्टका(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पटका"।

पटेबाज—संज्ञा पुं० [हिं० पटा+फा० बाज] १ पटा खेलनेवाला। पटे से लड़नेवाला। पटैत। २ व्यभिचारी और धूर्त।

पटेर—संज्ञा पुं० [सं० पट्टेरक] पानी में होनेवाली एक घास। गोंदपटेर।

पटेल—संज्ञा पुं० [हिं० पट्टा+वाला] १ गाँव का नंबरदार या मुखिया (गुजरात मध्य प्रदेश आदि में)। २ सौराष्ट्र में हिंदुओं की एक उपजाति।

पटेला—संज्ञा पुं० [हिं० पाटना] [स्त्री० अल्पा० पटेली] १ वह नाव जिसका मध्य भाग पटा हो। २ दे० "पटेर"। ३ हेंगा। ४ सिल। पटिया।

पटैत—संज्ञा पुं० दे० "पटेबाज"।

पटैला—संज्ञा पुं० [हिं० पटरा] १ किवाड़ बंद करने का डंडा। ब्योंड़ा। २ दे० "पटेला"।

पटो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] अधिकार-पत्र। सनद। उ०—राज सुरेश पचासक को, बिधि के कर को जो पटो लिख पाए। पूत, सपूत, पुनीत प्रिया निज सुंदरता रति को मदनाए। —कविता०।

पटोर—संज्ञा पुं० [सं० पटोल] १ पटोल। परवल। २ एक रेशमी कपड़ा। उ०—तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सुहावनि टाट पटोरे। —मानस।

पटोरी—संज्ञा स्त्री० [सं० पाट+हिं० ओरी (प्रत्य०)] रेशमी साड़ी या धोती।

पटोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २ परवल।

पटौतन—संज्ञा पुं० [हिं० पटना] ऋण आदि का परिशोध। कर्ज चुकना।

पटौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटना] पटने या पटाने की क्रिया या भाव।

पटौहाँ†—संज्ञा पुं० [हिं० √पट+औहाँ (प्रत्य०)] १ पटा हुआ स्थान। २. पट-बंधक।

पट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पट्टी। तख्ती। लिखने की पटिया। २. ताँबे आदि धातुओं की वह चिपटी पट्टी जिसपर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ३. किसी वस्तु का चिपटा या चौरस तल या भाग। ४ शिला। पटिया। ५ पीढ़ा। पाटा। ६. वह भूमि संबंधी अधिकारपत्र जो भूमिस्वामी की ओर से असामी को दिया जाता है। पट्टा। ७ ढाल। ८ पगड़ी। ९ दुपट्टा। १० नगर। ११ चौराहा। १२ राजसिंहासन। १३ रेशम। १४. पटसन।

वि० [सं०] मुख्य। प्रधान।

वि० अनु० दे० "पट"।

पट्टक—संज्ञा पुं० दे० "पट्ट" संज्ञा पुं०।

पट्टदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटरानी।

पट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] नगर।

पट्टमहिषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटरानी।

पट्टा—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १ किसी स्थावर संपत्ति, विशेषत भूमि के, उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को दिया जाय। २ कोई अधिकारपत्र। सनद। ३ चमड़े या बनात आदि की बद्धी जो कुत्तों, बिल्लियों के गले में पहनाई जाती है। ४ पीढ़ा। ५ पुरुषों के सिर के बाल जो पीछे की ओर गिरे और बराबर कटे होते हैं। ६ चपरास। ७ चमड़े का कमरबंद। पट्टी। ८ एक प्रकार की तलवार।

पट्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी तख्ती। पटिया। २ कपड़े की छोटी पट्टी।

पट्टी—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका] १ लकड़ी की वह चौरस और चिपटी पटरी जिसपर आरंभिक छात्रों को लिखना सिखाया जाता है। पाटी। पटिया। तख्ती। २ पाठ। सबक। ३ उपदेश। शिक्षा। सिखावन।

मुहा०—पट्टी में आना=किसी के चकमे या बहकावे में आना। पट्टी पढ़ाना। बहकाना। अनुचित सीख देना।

४ वह शिक्षा जो बुरी नियत से दी जाय। बहकावा। भुलावा। ५ लकड़ी की वह बल्ली जो खाट के ढाँचे को लंबाई में लगाई जाती है। पाटी। ६ धातु, कागज या कपड़े की धज्जी। ७ लकड़ी की लंबी बल्ली जो छत या छाजन के ठाठ में लगाई जाती है। ८ सन की बनी हुई धज्जियाँ जिनके जोड़ने से ठाठ तैयार होते हैं। ९ कपड़े की कोर या किनारी। १० एक प्रकार की मिठाई। ११ ऊन या मोटे कपड़े की धज्जी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिये टाँगों में बाँधते हैं। १२ पंक्ति। पाँती। कतार। १३ माँग के दोनों ओर के, कंघी से खूब बैठाए हुए, बाल जो पट्टी से दिखाई पड़ते हैं। पाटी। पटिया। १४ किसी वस्तु या संपत्ति (विशेषत भूमि, मकान आदि) का भाग। हिस्सा। भाग। विभाग। पत्ती। १५ (पु)वह अतिरिक्त कर जो किसी विशेष प्रयोजन के लिये असामियों पर लगता। नेग। अबवाब।

पट्टीदार—संज्ञा पुं० [हिं० पट्टी+फा० दार] १ वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति (विशेषत भूमि, मकान आदि) में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २ बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पट्टीदार] १ पट्टी या बहुत से हिस्से होना। २ पट्टीदार होने का भाव।

मुहा०—पट्टीदारी करना=(१) किसी के बराबर अधिकार जताना। (२) बराबरी करना।

३ वह भूस्वामित्व जो बहुत से मालिक होने पर भी अविभक्त संपत्ति समझी जाती हो। भाई चारा।

पट्टू—संज्ञा पुं० [हिं० पट्टी] हाथ का बुना एक ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है और बहुत गरम माना जाता है।

पट्टमान(पु)—वि० [सं० पठ्यमान] पढ़ने योग्य।

पट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पठिया] १ जवान। तरुण। पाठा। २ कुश्तीबाज। लड़का। ३ ऐसा पत्ता जो लंबा, दलदार या मोटा हो, जैसे, घीकुँवार का पट्ठा। ४ मोटा कागज। ५ मांसपेशियों को एक दूसरी से

और हड्डियों के साथ बाँधे रखनेवाले तंतु। मोटी नस। स्नायु।

मुहा०—पट्ठा चढ़ना=किसी नस का तन जाना। नस पर नस चढ़ना।

६ एक प्रकार का चौड़ा गोटा। ७. पेड़ के नीचे कमर और जाँघ के जोड़ का वह स्थान जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं।

पट्ठी—संज्ञा स्त्री० दे० "पठिया"।

पठन—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ना।

पठनीय—वि० [सं०] पढ़ने योग्य।

पठनेटा—संज्ञा पुं० [हिं० पठान+एटा=बेटा (प्रत्य०)] पठान का लड़का।

पठवना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रस्थान] भेजना।

पठवाना(पु)—क्रि० स० [हिं० पठाना का प्रे०] भेजने का काम दूसरे से कराना। भिजवाना।

पठान—संज्ञा पुं० [पश्तो० पुख़्ताना] अफ़गानिस्तान और पश्चिम पाकिस्तान के बीच बसी हुई एक मुसलमान जाति जो वीरता, कठोरता आदि के लिये प्रसिद्ध है।

पठाना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रस्थान] भेजना।

पठानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पठान] १. पठान जाति की स्त्री। २. पठान की स्त्री। ३. पठान होने का भाव। ४ शूरता, वीरता, कठोरता आदि गुण। पठानपन।

वि० [हिं० पठान] पठानों का।

पठानी लोध—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका लोध्र] एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और और फूल औषध के काम में आते है।

पठावन†—संज्ञा पुं० [हिं० पठाना] दूत।

पठावनि, पठावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पठाना] १ किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिये भेजना। २ इस प्रकार भेजने की मजदूरी। ३. भेजना। पहुँचाना। उ०—तेई पायँ पाइकै चढाइ नाव धोए बिनु, ख्वैहौं न पठावनी कै ह्वैहौं न हँसाइ कै? —कविता०।

पठित—वि० [सं०] १ पढ़ा हुआ (ग्रंथ)। जिसे पढ़ चुके हों। अधीत। २ पढ़ा-लिखा। शिक्षित, जैसे, सुपठित व्यक्ति, पठित समाज (यह अर्थ शुद्ध व्याकरण की दृष्टि से ठीक नहीं है)।

पठिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० पट्ठा=इया (प्रत्य०)] जवान और तगड़ी स्त्री।

पठौनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी"।

पठ्यमान(पु)—वि० [सं० पाठ्य+मान (प्रत्य०)] पढ़ा जाने के योग्य। सुपाठ्य।

पड़छती, पड़छत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० पटच्छदि] १ भीत की रक्षा के लिये लगाया जानेवाला छप्पर या टट्टी। २ कमरे आदि के बीच की पाटन जिसपर चीज असबाब रखते हैं। टाँड़।

पड़त(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता"।

पड़ता—संज्ञा पुं० [हिं० पड़ना] १ कम से कम लाभ के साथ किसी वस्तु की खरीद या तैयारी का दाम। कम से कम मुनाफे के साथ सर्फे की कीमत। लागत और न्यूनतम लाभ।

मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना=लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना। खर्च और मुनाफा निकल आना। पड़ता फैलाना या बैठाना=किसी चीज के तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए समुचित लाभ जोड़कर उसका भाव निश्चित करना।

†२ दर। शरह। ३ भू-कर की दर। लगान की शरह। ४. सामान्य दर। औसत।

पड़ताल—संज्ञा स्त्री० [सं० परितोलन] १. पड़तालना क्रिया का भाव। किसी वस्तु की सूक्ष्म छानबीन। जाँच। अनुसधान। २. गाँव अथवा शहर के द्वारा खेतों की एक प्रकार की जाँच। ३. पैमायश।

पड़तालना—क्रि स० [हिं० पड़ताल से ना० धा० (प्रत्य०)] पड़ताल करना। जाँचना।

पड़ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] १ वह भूमि जिसपर कुछ काल से खेती न की गई हो। २ वह खेत जो पैदावार बढ़ाने के लिये एक या दो साल तक जोता या बोया नहीं जाता।

मुहा०—पड़ती उठना = पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। पड़ता छोड़ना=किसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा शक्ति बढ़े।

पड़ना—क्रि० अ० [सं० पतन] १ प्राय ऊँचे स्थान से नीचे आना। गिरना। पतित होना। २ (दुःखद घटना) घटित होना; जैसे—मुसीबत पड़ना।

मुहा०—(किसी पर) पड़ना=विपत्ति या मुसीबत आना। संकट या कठिनाई प्राप्त होना।

३ विश्राम के लिये सोना या लेटना। आराम करना।

मुहा०—पड़े रहना या पड़ा रहना=बिना कुछ काम किए लेटे रहना। निकम्मा रहना। बेकार रहना। ४. बीमार होना। खाट पर पड़ना। ५ बिछाया जाना। फैलाया जाना। ६ ठहरना। टिकना। ७ पहुँचना या पहुँचाया जाना। दाखिल होना प्रविष्ट होना। ८ हस्तक्षेप करना। दखल देना।

मुहा०—पड़ा होना=(१) एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना। एक ही जगह बने रहना। (२) रखा रहना। धरा रहना। (३) बाकी रहना। शेष रहना।

९ मिलना। प्राप्त होना। १०. पड़ता खाना। ११. आय, प्राप्ति आदि का औसत होना। पड़ता होना। १२. रास्ते में मिलना। मार्ग में मिलना। १३ उत्पन्न होना। पैदा होना। १४ स्थित होना। १५ संयोगवश होना। उपस्थित होना। १६ जाँच या विचार करने पर ठहरना। पाया जाना। १७. देशातर या अवस्थांतर होना। १८ अत्यंत इच्छा होना। धन होना।

मुहा०—क्या पड़ी है=क्या मतलब है। क्या चाहता है।

पड़पड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] १. पड़पड़ शब्द होना। २ अत्यंत कड़वे पदार्थ के भक्षण या स्पर्श से जीभ पर किंचित दुःखद तीक्ष्ण अनुभूति होना। चरपराना।

पड़पोता—संज्ञा पुं० [सं० प्रपौत्र] [स्त्री० पड़पोती] पुत्र का पोता।

पड़वा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ] प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।

पड़ाना—क्रि० स० [हिं० पड़ना का स० रूप] गिराना। झुकाना।

पड़ापड़—क्रि० वि० वर्षा होने, जूते पड़ने या थप्पड़ लगने के शब्द के साथ।

पड़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० √पड़+आव (प्रत्य०)] १ यात्रीसमूह का यात्रा के बीच में अवस्थान। लश्कर या काफिले के उतरने या रुकने की जगह। २ वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।

पड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० पँड़वा, पड़वा] भैंस का मादा बच्चा।

पड़िवा—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़वा"।

पड़ोस—संज्ञा पुं० [स० प्रतिवेश या प्रतिवास] १. किसी के घर के आसपास के घर।

यौ०—पास पड़ोस = समीपवर्ती मुहल्ला या स्थान।

मुहा०—पड़ोस करना = पड़ोस में बसना।

२. किसी स्थान के आसपास के स्थान। ३. आस पास रहनेवाले व्यक्ति।

पड़ोसी—संज्ञा पुं० [हिं० पड़ोस+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० पड़ोसिन] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो। पड़ोस में रहनेवाला।

यौ०—अड़ोसी पड़ोसी = पास पड़ोस का रहनेवाला।

पढ़ंत—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पढ़+अंत (प्रत्य०)] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २. पढ़ने का ढंग या अंदाज। ३. मंत्र। जादू।

पढ़ंता—वि० [हिं० पढंत+आ (प्रत्य०)] पढ़नेवाला।

पढ़त—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पढ+त (प्रत्य०)] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। २. मंत्र।

पढ़ना—क्रि० स० [सं० पठन] १. किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात समझ में आ जाय। २ किसी लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना। बाँचना। ३ उच्चारण करना। मध्यम या धीमे स्वर से कहना। ४. स्मरण रखने के लिये किसी विषय का बार बार उच्चारण करना। रटना। ५ मंत्र फूँकना। जादू करना। ६ तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्द उच्चारण करना। ७ विद्या पढ़ना। शिक्षा प्राप्त करना। अध्ययन करना।

यौ०—पढ़ना लिखना = शिक्षा पाना। पढ़ना पढ़ाना। पढ़ा लिखा = शिक्षित।

पढ़वाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़वाना] पढ़वाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

पढ़वाना—क्रि० स० [हिं० पढ़ना तथा पढ़ाना का प्रे० रूप] १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना। बँचवाना। २ किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना।

पढ़वैया—वि० [हिं०√पढ़+वैया (प्रत्य०)] पढ़ने पढ़ानेवाला।

पढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं√पढ़+आई (प्रत्य०)] १ पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। अध्ययन। पठन। २ पढ़ने का भाव। ३. पढ़ाने का काम। अध्यापन। पाठन। पढ़ौनी। ४. पढ़ाने का भाव। ५. पढ़ाने का ढंग। अध्यापन शैली। ६. पढ़ाने का शुल्क।

पढ़ाना—क्रि० स० [हिं० पढ़ना का प्रे० रूप] १. शिक्षा देना। अध्यापन करना। २ कोई कला या हुनर सिखाना। उ०—परमचतुर जिन कीन्हें मोहन अल्प वयस ही थोरी। बारे ते जेहि यहै पढ़ायो बुधि-बल-कल विधि चोरी। —सूर०। ३ तोते, मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखाना। ४ सिखाना। समझाना।

पढ़िनाⓅ—संज्ञा पु० [स० पाठीन] एक प्रकार की बिना सेहरे की बड़ी मछली जो तालाब और समुद्र सभी स्थानों में पाई जाती है। पहिना।

पढ़ैया—संज्ञा पुं० [हिं०√पढ़ + ऐया (प्रत्य०)] पढ़नेवाला।

पण—संज्ञा पु० [सं०] १ कोई कार्य जिसमें बाजी बदी गई हो। जूआ। द्यूत। २ प्रतिज्ञा। शर्त। ३ वस्तु जिसके देने का करार या शर्त हो, जैसे, किराया। ४. मोल। कीमत। मूल्य। ५ फीस। शुल्क। ६ धन संपत्ति। जायदाद। ७. क्रय विक्रय की वस्तु। सौदा। ८ व्यवहार। व्यापार। व्यवसाय। ९ स्तुति। प्रशंसा। १० प्रचीन काल का ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति किया जाता था। ११ प्राचीन काल की एक विशेष नाप।

पणव—संज्ञा पु० [स०] १ छोटा नगाड़ा या ढोल। २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक मगण, एक नगण, एक भगण और अंत में एक गुरु होता है। प्रत्येक चरण में १६, १६ मात्राएँ होने के कारण यह चौपाई के अंतर्गत आता है। उ०—मानौ योग कथित तैं मोरा। जीतोगे अर्जुन जी कोरा।

पण्य—वि० [स०] १. खरीदने या बेचने योग्य। २ प्रशंसा करने योग्य।

संज्ञा पुं० १. सौदा। माल। २ व्यापार। रोजगार। ३ बाजार। ४ दूकान।

पण्यभूमि—संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ माल या सौदा जमा किया जाता हो। कोठी। गोदाम। गोला।

पण्यवीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाजार। क्रयविक्रय का स्थान।

पण्यशाला—संज्ञा स्त्री० [स०] १. दूकान। २ बाजार।

पतंग—संज्ञा पु० [स०] १. उड़नेवाला जीव या कीड़ा। २ फतिंगा। भुनगा। उ०—दीपशिखा सम युवति तन, मन जनि होसि पतंग। —दोहा०। ३ शलभ। टिड्डी ४ सूर्य। उ०—उदित उदय गिरि मंच पर, रघुबर बाल पतंग। —मानस। ५ चिड़िया। उ०—पाहन पसू पतंग कोल भील निशिचर, काँच तें कृपानिधान किए सुबरन। —विनय०। ६ एक प्रकार का धान। जड़हन। ७ जल महुआ। ८ गेंद। ९ शरीर। १० नाव।

संज्ञा पु० [स० पत्रंग] एक प्रकार का बड़ा। वृक्ष इसकी लकड़ी से बहुत बढ़िया लाल रंग निकलता है।

संज्ञा स्त्री० [सं० पतंग = उड़नेवाली] हवा में ऊपर उड़ाने का पतले कागज का एक ढाँचा जो बाँस की तीलियों पर मढ़कर बनाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।

पतंगबाज—संज्ञा पुं० [हिं० पतंग+फा० बाज] वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो।

पतंगबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पतंगबाज] पतंग उड़ाने की कला, क्रिया या भाव।

पतंगमⓅ—संज्ञा पुं० [स० पतंग] १ पक्षी। २. फतिंगा।

पतंगसुत—संज्ञा पुं० [स०] अश्विनीकुमार।

पतंगा—संज्ञा पु० [स० पतंग] १ पतंग। कोई उड़नेवाला कीड़ा मकोड़ा। २. एक कीड़ा जो घासों अथवा वृक्ष की पत्तियों पर होता है। फतिंगा। ३ चिनगारी।

पतंचिका—संज्ञा स्त्री० [स०] धनुष की डोरी। कमान की ताँत। चिल्ला।

पतंजलि—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जिन्होंने योगसूत्रों की रचना की। २ एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने अष्टाध्यायी या पाणिनिकृत व्याकरण के सूत्रों और कत्यायन-कृत उनके वार्तिक पर 'महाभाष्य' नामक विशाल व्याख्या की रचना की थी।

पतⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० पति] १ पति। खसम। २ मालिक। स्वामी।

संज्ञा स्त्री० [प्रतिष्ठा ?] १. कानि। लज्जा। आबरू। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।

यौ०—पत पानी = लज्जा। आबरू।

मुहा०—पत उतारना या लेना = बेइज्जती करना। पत रखना = इज्जत बचाना।

पतई—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. पत्ती। पत्ता। २ लज्जा। मान

पतझड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० पत = पत्ता + √ झड़] १ वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। २ अवनतिकाल।

पतझर—संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।

पतझार†—संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।

पतत्प्रकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक प्रकार का रसदोष जिसमें किसी प्रसग या वर्णन का प्रभाव उत्तरोत्तर कम होता जाता है।

पतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। गिरना। २ बैठना या डूबना। ३ अवनति। अधोगति। जवाल। तबाही। ४ नाश। मृत्यु। ५ पाप। पातक। ६ जातिच्युति। जाति से बहिष्कृत होना। ७ उड़ान। उड़ना।

पतनशील—वि० [सं०] जो बिना गिरे न रह सके। गिरनेवाला।

पतनाⓅ—क्रि० अ० [सं० पतन] गिरना।

पतनीय—वि० [सं०] गिरनेवाला।

पतनोन्मुख—वि० [सं०] जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो। जिसका पतन, अधोगति या विनाश निकट आ गया हो।

पत पानी—संज्ञा पुं० [हिं० पत + पानी] १ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। २ लाज। आबरू।

पतरⓅ†—वि० [सं० पत्र] १ पतला। कृश। २ पत्ता। पर्ण। ३ पत्तल।

पतरा†—वि० दे० "पतला"।

पतरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।

पतला—वि० [सं० पात्रट] [स्त्री० पतली] १ जिसका घेरा, लपेट अथवा चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। २ जिसकी देह का घेरा कम हो। जो स्थूल या मोटा न हो। कृश। ३ जिसका दल मोटा न हो। झीना। हलका। ४ गाढ़े का उलटा। अधिक तरल। ५ अशक्त। असमर्थ।

मुहा०—पतला पड़ना = दुर्दशाग्रस्त होना। पतला हाल = दुःख और कष्ट की अवस्था।

पतलापन—संज्ञा पुं० [हिं० पतला + पन (प्रत्य०)] पतला होने का भाव।

पतलून—संज्ञा पुं० [अं० पैंटलून] वह पाजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है। अँगरेजी पाजामा।

पतलो—संज्ञा स्त्री० [देश०] सरकंडा। सरपत।

पतवरा†—क्रि० वि० [सं० पंक्ति] पंक्तिवार। पंक्तिक्रम से। बराबर बराबर।

पतवार, पतवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० पात्रपाल] नाव का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसके द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है। कन्हर। कर्ण।

पता—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यय] १ किसी का स्थान या ठिकाना सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सकें या उस तक कुछ भेज सकें।

यौ०—पता ठिकाना = किसी वस्तु का स्थान और उसका परिचय।

२ चिट्ठी आदि पर लिखा हुआ पानेवाले का पूरा ठिकाना। ३ खोज। अनुसंधान। टोह।

यौ०—पता निशान = (१) वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। (२) अस्तित्वसूचक चिह्न। नामनिशान।

३ अभिज्ञता। जानकारी। खबर। ४ गूढ़ तत्व। रहस्य। भेद।

मुहा०—पते की या पते की बात (१) भेद प्रकट करनेवाली बात। रहस्य खोलनेवाला कथन। (२) बात की बात।

पताई—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।

पताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लकड़ी आदि के डंडे के एक सिरे पर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा। झंडा। झंडी। फरहरा।

मुहा०—(किसी स्थान में अथवा किसी स्थान पर) पताका उड़ना = (१) अधिकार होना। राज्य होना। (२) सर्वप्रधान होना। सबमें श्रेष्ठ माना जाना। (किसी वस्तु की) पताका उड़ना = प्रसिद्धि होना। धूम होना। पताका उड़ाना = अधिकार करना। विजयी होना। पताका गिरना = हार होना। पराजय होना। विजय की पताका = विजयसूचक पताका।

२. वह डंडा जिसमें पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ३. नाटक में वह स्थल जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे के संबंध में कोई बात कहे। ४. पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु लघु वर्ण के छंद का स्थान जाना जाय। ५. सौभाग्य। ६. दस खर्व की संख्या।

पताकास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में वह स्थान जहाँ पताका हो। दे० "पताका" ३।

पताकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना।

पतारⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० पाताल] १ दे० "पाताल"। २. जंगल। सघन वन।

पताल—संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पताल आँवला—संज्ञा पुं० [सं० पाताल आमलकी] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा या क्षुप।

पताल कुम्हड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पताल + कुम्हड़ा] एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी गाँठों से शकरकंद की तरह कंद फूटते हैं।

पतासा—संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

पतिंग—संज्ञा पुं० [सं० पतंग] पतंग। फतिंगा।

पतिंवरा—वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा (स्त्री)।

पति—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पत्नी] १ स्त्री के लिये वह पुरुष जिससे उसका विवाह हुआ हो। दूल्हा। शौहर। २ मालिक। स्वामी। अधिपति। ३ मर्यादा। प्रतिष्ठा। उ०—अब पति राखि लेहु भगवान—सूर०। उ०—कलकी है राखे रहैं हिंदूपति पति देत, म्लेच्छ हति मोच्छगति 'दास' ताको दास है।—शृंगार०। ४ शिव या ईश्वर।

पतिआना†—क्रि० स० [सं० प्रत्यय, प्रा० पत्तिआव] विश्वास या एतबार करना।

पतिआरⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० पतिआना] १ विश्वास। साख। एतबार। २ विश्वसनीय।

पतिकामा—वि० स्त्री० [सं०] पति की कामना रखनेवाली स्त्री।

पतित—वि० [सं०] [स्त्री० पतिता] १ गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २ आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। नीतिभ्रष्ट। उ०—अधम आरत दीन पतित

पातक-पीन, सकृत नतमात्र कहे पाहि पाता। —विनय०। ३ महापापी। अति पातकी। उ०—जद्यपि मैं अपराधभवन, दुखसमन मुरारे। तुलसीदास कहँ आस इहै बहु पतित उधारे। —विनय०। ४ जाति से निकाला हुआ। समाजबहिष्कृत। ५ अत्यंत मलीन। महा अपावन। ६ अति नीच। अधम।

पतितउधारन(पु)—वि० [सं० पतित+हिं० उधारना] जो पतित का उद्धार करे।

संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।

पतितता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतित होने का भाव। २ नीचता।

पतितपावन—वि० [सं०] [स्त्री० पतित-पावनी] पतित को पवित्र करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. सगुण ईश्वर।

पतितेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पतित+ईश] पतितों का मुखिया या सरदार। बहुत बड़ा पतित।

पतित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। २. पति होने का भाव।

पतिदेवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री। पतिदेवा। उ०—पतिदेवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख। महिमा अमित न सकहिं कहि, सहस सारदा सेष।—मानस।

पतिदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री। पतिव्रता।

पतिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।

पतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्रिका] चिट्ठी। खत। उ०—कैसी री कागद ल्याई? नई पतिया है दई वृषभानकुमारी।—शृंगार०।

पतियाना†—क्रि० स० [हिं० पतिआना] विश्वास करना। भरोसा करना।

पतियारा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पतियाना] पतियाने का भाव। विश्वास। एतबार।

पतिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती—वि० स्त्री० [सं० पति+वती (प्रत्य०)] सधवा। सौभाग्यवती (स्त्री)।

पतिव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पति में (स्त्री की) अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता—वि० [सं०] पति में अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली। सती। साध्वी (स्त्री)।

पतीजन, पतीजना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रत्यय, प्रा० पत्तिज्ज] पतिआना। एतबार करना। उ०—तब देवकी दीन ह्वै भाष्यो नृप को नाहिं पतीजै।—सूर०।

पतीतना—क्रि० अ० [सं० प्रतीति] विश्वास करना। सच मानना।

पतीनना—क्रि० अ० [हिं० पतीजना] विश्वास करना। सच मानना। यकीन करना। उ०—देवै गर्भ भई है कन्या। राइ न बात पतीनी हो।—सूर०।

पतील, पतीला—वि० दे० "पतला"।

पतीली—संज्ञा स्त्री० [सं० पातिली=हाँड़ी] की एक प्रकार की बटलोई।

पतुकी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पतीली"।

पतुरिया—संज्ञा स्त्री० [सं० पातिली] १. वेश्या। नाचने गाने का व्यवसाय करनेवाली। २ व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल स्त्री।

पतोखा—संज्ञा पुं० [हिं० पत्ता] [अल्पा० पतोखी] पत्ते का बना पात्र। दोना।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

पतोखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पतोखा] १ एक पत्ते का दोना। छोटा दोना। २ पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी।

पतोह, पतोहू†—संज्ञा स्त्री० [सं० पुत्रवधू] बेटे की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पर्ण।

पतौवा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पतौआ"। उ०—आक के पतौवा चारि फूल है धतूरे के, दीन्हें हैहैं बारक पुरारि पर डारि कै।—कविता०।

पत्तन—संज्ञा पुं० [सं०] नगर। शहर।

पत्तर—संज्ञा पुं० [सं० पत्र] धातु का ऐसा चिपटा लंबा टुकड़ा जो पीटकर तैयार किया गया हो। धातु की चादर।

पत्तल—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र+ल] १ पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ एक पात्र जो खाने के लिये थाली का काम देता है।

मुहा०—एक पत्तल में खानेवाले=परस्पर रोटी बेटी का व्यवहार करनेवाले। किसी की पत्तल में खाना=किसी के साथ खानपान का संबंध रखना। जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना=जिससे लाभ उठाना, उसी की हानि करना। कृतघ्नता करना।

२ पत्तल में परसी हुई भोजनसामग्री। ३ एक आदमी के खाने भर भोजन सामग्री।

पत्ता—संज्ञा पुं० [सं० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १ पेड़ या पौधे के शरीर का वह प्रायः हरे रंग का फैला हुआ अवयव जो कांड या टहनी से निकलता है। पलास। पत्रक। पर्ण।

मुहा०—पत्ता खड़कना=कुछ खटका या आशंका होना। आहट मिलना। पत्ता तोड़कर भागना=बेतहाशा भागना। सिर पर पैर रखकर भागना। पत्ता न हिलना=हवा का बिलकुल बंद होना। उमस होना। पत्ता हो जाना=तेजी से दौड़कर क्षण मात्र में दृष्टि से ओझल हो जाना। उड़न छू हो जाना।

२. कान में पहनने का एक गहना। ३ मोटे कागज का गोल या चौकोर खंड।

पत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २. शूरवीर पुरुष। योद्धा। बहादुर। ३ प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल होते थे। किसी किसी के मत से पैदलों की संख्या ५५ होती थी।

पत्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। २ उपर्युक्त विभाग का अफसर।

वि० पैदल चलनेवाला।

पत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्ता+ई (प्रत्य०)] १. छोटा पत्ता। २. भाग। हिस्सा। साझे का अंश। ३. फूल की पँखड़ी। दल। ४ भाँग। ५ पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ टुकड़ा। पट्टी। †६ सफेद पान के कोमल छोटे पत्तों का बीड़ा। †७ जर्दे का छोटा टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० [?] राजपूतों की एक जाति।

पत्तीदार—संज्ञा पुं० [हिं० पत्ती+फा० दार] साझीदार। हिस्सेदार।

पत्य(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।

पत्थर—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तर] [वि० पथरीली, क्रि० पथराना] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या खंड। भूद्रव्य का कड़ा पिंड।

मुहा०—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=वह हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियों का स्थान न हो। बहुत कठोरहृदय पत्थर का दिल

या पत्थर की छाती=अडिग हिम्मतवाला दिल। मजबूत दिल। पक्की तबीयत। पत्थर की लकीर=सदा बनी रहनेवाली (वस्तु)। न मिटनेवाली (वस्तु)। पत्थर चटाना=पत्थर पर घिसकर धार तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे संकट में फँस जाना जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो। बुरी तरह फँस जाना। पत्थर तले से हाथ निकालना=संकट या मुसीबत से छूटना। पत्थर पर दूब जमना=अनहोनी बात या असंभव काम होना। पत्थर पसीजना या पिघलना=अत्यंत कठोर चित्त में नरमी या कृपण के मन में दानेच्छा आदि होना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असंभव बात के लिये प्रयत्न करना।

२. सड़क की नाप सूचित करनेवाला पत्थर। मील का पत्थर। ३. ओला। बिनौली। वर्षोपल।

मुहा०—पत्थर पड़ना = चौपट हो जाना। नष्टभ्रष्ट हो जाना। पत्थर पानी=आँधीपानी। तूफान। पत्थर होना=(१) स्तमित होना। निष्कंप होना। (२) पत्थर के समान स्थिर या जड़ हो जाना। (३) संज्ञाहीन होना। (४) जम जाना।

४. रत्न। जवाहिर। हीरा, लाल, पन्ना आदि। ५. पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा टूटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु। ६ कुछ नहीं। बिलकुल नहीं। खाक (तिरस्कार के साथ अभाव का सूचक)।

पत्थरकला—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर+कल] पुरानी चाल की बंदूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था। तोड़ेदार या पलीतेदार बंदूक।

पत्थरचटा—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर+हिं० √चाट] १ एक प्रकार की घास। २. एक प्रकार का साँप। ३. एक प्रकार की मछली। ४. एक प्रकार का कीड़ा। ५. कंजूस। मक्खीचूस।

पत्थरफूल—संज्ञा पुं० [पत्थर+फूल] छरीला। शैलाख्य।

पत्थरफोड़—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर+√फोड़] पत्थरों की संधि में होनेवाली एक वनस्पति।

पत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की विधि से ब्याही स्त्री। भार्या। वधू। सहधर्मिणी।

पत्नीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम।

पत्य—संज्ञा पुं० [सं०] पति होने का भाव।

पत्याना(पु)†—क्रि० स० दे० "पतिआना"।

पत्यारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] पंक्ति।

पत्यारो—संज्ञा पुं० दे० "पतिआर"। विश्वास। प्रतीति। उ०—तेह की बातें कहौ तुम एती पै मो मन होत न नेक पत्यारो। पूस को भान हवाई कृसान सो मूढ़ को ज्ञान सो मान तिहारो। —शृंगार०।

पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वृक्ष का पत्ता। पत्ती। दल। पर्ण। उ०—हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल। रचना देखि विचित्र अति मनु विरंचि कर भूल। —मानस। २ वह वस्तु जिसपर कुछ लिखा हो। लिखा हुआ कागज। दस्तावेज। ३. चिट्ठीपत्री। खत। उ०—तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाए। सजि सजि सेन भूप सब धाए। —मानस। ४ समाचारपत्र। खबर का कागज। अखबार। ५. पुस्तक या लेख का एक पन्ना। पृष्ठ। सफा। पत्रा। ६. वह कागज या ताम्रपत्र आदि जिसपर किसी विशेष कार्य के प्रमाण स्वरूप कुछ लिखा गया हो, जैसे, दानपत्र, प्रतिज्ञापत्र आदि। उ०—कपि सेवाबस भए कनौड़े, कह्यो, पवनसुत आउ। देबे को न कछू रिनियाँ हौं, धनिक तू पत्र लिखाउ। —विनय०। ७ वसीका। पट्टा। अभिलेख। ८. धातु की चद्दर। वरक। ९. तीर या पक्षी के पंख। पक्ष। १० किसी विशिष्ट विषय, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान या सूचना आदि के लिये नियमित समय पर होनेवाला अर्धसाप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक या त्रैमासिक प्रकाशन।

पत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय की छोटी पुस्तिका या कुछ बड़ा सूचनापत्र।

पत्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] समाचारपत्र का संपादक। पत्रों में लिखकर जीविका चलानेवाला।

पत्रकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जिसमें पत्तों का काढ़ा पीकर रहा जाता है।

पत्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री। फल-फूल। २ लघु उपहार।

पत्रभंग—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र या रेखाएँ जो सौंदर्यवृद्धि के लिये भाल, कपोल आदि पर बनाई जाती हैं।

पत्रवाह, पत्रवाहक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्र ले जानेवाला। चिट्ठीरसाँ। हरकारा।

पत्रव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] चिट्ठी लिख भेजने और प्राप्त करने का क्रम। लिखा-पढ़ी। खतकिताबत। पत्राचार। पत्रालाप।

पत्रा—संज्ञा पुं० [सं० पत्र] १ तिथिपत्र। जंत्री। पचांग। उ०—पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर के चहुँ पास। नितप्रति पून्यौई रहै आनन-ओप-उजास।—बिहारी०। २. पन्ना। वर्क। पृष्ठ।

पत्राचार—संज्ञा पुं० [सं०] पत्रव्यवहार। खतकिताबत।

पत्रावली—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्रभंग"।

पत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई सामयिक पत्र या पुस्तक। समाचारपत्र। २ कोई छोटा लेख या लिपि। ३ चिट्ठी। खत। ४ विविध विषयों पर नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला पत्र, जैसें—मासिक पत्रिका, त्रैमासिक पत्रिका आदि।

पत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चिट्ठी। खत। उ०—महि पत्री करि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ। तुलसी गनपति सों तदपि, महिमा लिखी न जाइ। —वैराग्य०। २ कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका; जैसे—जन्मपत्री, लग्नपत्री।

वि० [सं० पत्रिन्] जिसमें पत्ते हों।

संज्ञा पुं० १ वाण। तीर। २ पक्षी। चिड़िया। ३ श्येन। बाज। ४ वृक्ष। पेड़।

पथ—संज्ञा पुं० [सं० पथिन् के 'पथ' रूप से] १ मार्ग। रास्ता। राह। २. व्यवहार आदि की रीति।

संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।

पथगामी—संज्ञा पुं० [सं० पथगामिन्] पथिक। रास्ता चलनेवाला।

पथदर्शक, पथप्रदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] मार्गदर्शक। रास्ता दिखानेवाला।

पथरकला—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर या पथरी+कल] एक प्रकार की बंदूक या कड़ाबीन जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके चलाई जाती थी।

पथरचटा—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर+√चाट] पाषाणभेद या पखानभेद नाम की ओषधि। एक प्रकार का कीड़ा।

पथराना—क्रि० अ० [हिं० पत्थर से ना० धा०] १ सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २ ताजगी न रहना। नीरस और कठोर हो जाना। ३ स्तब्ध हो जाना।

सजीव न रहना। जड़ हो जाना, जैसे—आँखें पथराना।

पथरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्थर+ई (प्रत्य०)] १ कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। २. एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर जैसे छोटे-बड़े टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण पेशाब उतरने में बाधा और असह्य वेदना आदि अनेक शारीरिक शिकायतें पैदा हो जाती हैं। ३ चकमक पत्थर। ४ पत्थर का वह टुकड़ा जिसपर रगड़कर उस्तरे आदि की धार तेज करते हैं। सिल्ली। ५ कुरुड पत्थर जिससे औजार तेज करने की सान बनाते हैं।

पथरीला—वि० [हिं० पत्थर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त, जैसे पथरीली जमीन।

पथरौटा—संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का कटोरा।

पथिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पथिका] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफिर।

पथी—संज्ञा पुं० [सं०] पथिन्] यात्री। पथिक।

पथु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पथेरा—संज्ञा पुं० [हिं० √पाथ+एरा (प्रत्य०)] १ पाथने का काम करनेवाला। २. कुम्हार।

पथौरा—संज्ञा पुं० [हिं० √पाथ+औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कंडे पाथे जाते हैं।

पथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हल्का और जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभदायक हो। उपयुक्त आहार।

मुहा०—पथ्य से रहना=संयम से रहना।

२ हित। मंगल। कल्याण।

पथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का भेद।

पद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर। पाँव। २ पैर का निशान। ३ योग्यता के अनुसार नियत स्थान। दर्जा। ४ विभक्ति-प्रत्यय-युक्त शब्द। सार्थक शब्द या शब्दसमूह। ५ किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश। श्लोकपाद। ६. ईश्वर-भक्ति-संबंधी गीत। भजन। ७ मोक्ष। निर्वाण। ८ पुराणानुसार दान के लिये जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह। ९ व्यवसाय। काम। १०. त्राण। रक्षा। ११. चिह्न। निशान। १२ प्रदेश। स्थान। १३. वस्तु। चीज। १४. उपाधि।

पदई—संज्ञा स्त्री० [सं० पदवी] दे० "पदवी"। उ०—छीर नीर निरवारि पिवै जो। इहि मग प्रभु पदई पावै सो। —नंददास०।

पदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूजन आदि के लिये किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। २ सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ सिक्के की तरह का गोल या अन्य आकार का टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अच्छा कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तमगा।

पदग—वि० [सं०] पैदल चलनेवाला। प्यादा।

पदचतुरर्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] विषम वृत्तों का एक भेद। जिसके प्रथम चरण में ८, दूसरे में १२, तीसरे में १६ और चौथे में २० वर्ण होते हैं। इसमें गुरु लघु का नियम नहीं होता। इसके अपीड़, प्रत्यापीड़, मंजरी, लवली, और अमृतधारा ये पाँच अवांतर भेद होते हैं।

पदचर—संज्ञा पुं० [सं०] पैदल। प्यादा।

पदचार—संज्ञा पुं० दे० "पदचारण"।

पदचारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैदल चलना। २ टहलना।

पदचारी—संज्ञा पुं० [सं० पद+चारिन्] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला।

संज्ञा स्त्री० दे० "पदचारण"।

पदचिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] चलने से भूमि आदि पर पैरों का पड़नेवाला चिह्न।

पदच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] संधि और समासयुक्त वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया।

पदच्युत—वि० [सं०] [संज्ञा पदच्युति] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो।

पदतल—संज्ञा पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पदत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] जूता।

पददलित—वि० [सं०] १ पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। २ जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पदन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर रखना। चलना। गमन करना। उ०—मृदु पदन्यास मंद मलयानिल विगलत शीश निचोल। —सूर०। २. पैर रखने की एक मुद्रा। ३ चलन। ढंग। ४ पद रचने का काम।

पदम—संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

संज्ञा पुं० [सं० पद्मकाष्ठ] बादाम की जाति का एक जंगली पेड़। पद्माख।

पदमिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी"।

पदमैत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० पद+मैत्री] सरसता लाने के लिये किसी कविता में शब्द (ध्वनि) या अक्षर की आवृत्ति, जैसे, मल्लिकान मंजुल मलिंद मतवारे मिले मंद मंद मारुत मुहीम मनसा की है।

पदयोजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कविता के लिये पदों का जोड़ना।

पदरिपु—संज्ञा पुं० [सं० पद+रिपु] काँटा। कंटक। उ०—पदरिपु पर अटक्यो आतुर ज्यों उलटत पलट मरी। —सूर०।

पदवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह प्रतिष्ठा या मानसूचक पद जो राज्य अथवा किसी संस्था आदि की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। खिताब। २ ओहदा। दरजा। ३ पथ। रास्ता। ४ पद्धति। परिपाटी। तरीका।

पदाक्रांत—वि० [सं०] पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

पदाति, पदातिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २ पैदल सिपाही। उ०—चली तमीचर अनी अपारा। बहु गज रथ पदाति असवारा। —मानस। ३ नौकर। सेवक।

पदादिका—संज्ञा पुं० [सं० पदातिक] पैदल सेना। उ०—रसना मंत्री दसन जन तोष पोष निज काज। प्रभुकर सेन पदादिका बालक राजसमाज। —दोहा०।

पदाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी पद पर नियुक्त हो। ओहदेदार। अफसर।

पदाना—क्रि० स० [हिं० पादना का प्रे० रूप] बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।

पदार—संज्ञा पुं० [सं०] पैरों की धूल।

पदार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पद का अर्थ। शब्द का विषय। वह जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। २ वह जो भौतिक तत्वों से बना हो। वह जिसका रूप या आकार हो। चीज। वस्तु। ३ उन विषयों में से कोई विषय जिनका किसी दर्शन में प्रतिपादन हो और जिनके संबंध में माना जाता हो कि उनके ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। ४

पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वैद्यक में रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति।

पदार्थवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता हो और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न होता हो।

पदार्थविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। विज्ञानशास्त्र।

पदार्थविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "पदार्थ-विज्ञान"।

पदार्पण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया (आदरार्थक)।

पदावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाक्यों की श्रेणी। २ भजनों का संग्रह। ३ पद या शब्दसमूह।

पदिक—संज्ञा पुं० [सं०] पैदल सेना।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० पदक] १ गले में पहनने का जुगनू नाम का गहना। २ हीरा। उ०—"दास' आसपास बहु भाँतिन विराजै धरे, पन्ना पोखराज मोती मानिक पदिक लाल।—शृंगार०।

यौ०—पदिकहार = रत्नहार। मणि-माल।

पदी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पद] पैदल। प्यादा।

पदुम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

पदुमराग—संज्ञा पुं० [सं० पद्मराग] पद्म-राग मणि। उ०—नाकमोती निंदक पदुम-रागरानि कों, खुलित ललित मिलि अधर-ललाई है।—शृंगार०।

पदुमिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी"।

पद्धटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "पज्झ-टिका।"

पद्धति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढंग। तरीका। २ कार्यप्रणाली। विधि। विधान। ३ रीति। रस्म। रवाज। ४ कर्म या संस्कारविधि की पोथी। ५ वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ या तात्पर्य समझा जाय। सोलह मात्राओं का वह छंद जिसके पदांत में एक जगण होता है। उ०—श्री कृष्णचंद अरविंद नैन, धरि अधर बजावत मधुर बैन। गण ग्वाल संग आगे सुधेनु, वन तें ब्रज आवत मोद देन॥

पद्धरी—संज्ञा पुं० दे० "पद्धटिका"।

पद्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल का फूल या पौधा। २ सामुद्रिक के अनुसार पैर में का कमल से मिलते जुलते आकार का एक विशेष चिह्न जो भाग्यसूचक माना जाता है। ३ विष्णु का एक आयुध। ४ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ५ गणित में सोलहवें स्थान की संख्या। सौ नील। ६ पुराणानुसार जंबू द्वीप के दक्षिणपश्चिम का एक देश। ७ एक पुराण का नाम। ८ एक वर्णवृत्त ९ पद्म या पद्माख वृक्ष। १० पुराणानुसार एक नरक का नाम। ११ शरीर पर पड़े हुए सफेद दाग।

पद्मकंद—संज्ञा पुं० [सं०] कमल की जड़। मुरार। भिस्सा। भसींड़।

पद्मज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल से उत्पन्न। ब्रह्मा।

पद्मनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी नाभि से कमल निकला हो। विष्णु।

पद्मपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके हाथ में कमल हो। विष्णु या ब्रह्मा। २ अवलोकितेश्वर नामक बोधिसत्व। ३ सूर्य।

पद्मबंध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं जिससे पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

पद्मयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी उत्पत्ति कमल से हो। ब्रह्मा।

पद्मराग—संज्ञा पुं० [सं०] मानिक। लाल।

पद्मबीज—संज्ञा पुं० [सं०] कमलगट्टा।

पद्मव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिये सेना रखने की कमल के आकार की एक स्थिति।

पद्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ भादों सुदी एकादशी तिथि।

पद्माकर—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्माख—संज्ञा पुं० दे० "पदम"।

पद्मालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका निवास कमल हो। ब्रह्मा।

पद्मालया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमल में रहनेवाली। लक्ष्मी।

पद्मावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक मात्रिक छंद। २ अपने समय की लोक-प्रचलित कथा के अनुसार महाकवि जायसी रचित पदमावत महाकाव्य के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिसमे चित्तौर के राजा रतनसेन ब्याहे थे। ३ पटना नगर का प्राचीन नाम। ४ पन्ना नगर का प्राचीन नाम। ५ उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम। ६ मनसादेवी। ७ कश्यप ऋषि की कन्या और जरत्कारु मुनि की पत्नी। ८ जयदेव कवि की स्त्री। ९ एक नदी का नाम।

पद्मासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। २ ब्रह्मा। ३ शिव।

पद्मिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलिनी। छोटा कमल।

यौ०—पद्मिनीवल्लभ = सूर्य।

२ कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। ३. लक्ष्मी। ४ वह तालाव या जलाशय जिसमें कमल हों।

पद्मेशय—संज्ञा पुं० [सं०] पद्मों पर सोने-वाले, विष्णु।

पद्य—वि० [सं०] १ जिसका संबंध पैरों से हो। २ जिसमें कविता के पद या चरण हों। छंदोमय।

संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के नियमों के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का चार चरणोंवाला छंद। कविता। गद्य का उलटा।

पद्यात्मक—वि० [सं०] जो छंदबद्ध हो।

पधरना—क्रि० अ० [हिं० पधारना] किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

पधराना—क्रि० स० [हिं० पधारना] १ आदरपूर्वक ले जाना। इज्जत से बैठाना। २ प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना।

पधरावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पधराना] १ किसी देवता की स्थापना। २ किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया। पधराने की क्रिया।

पधारना—क्रि० अ० [हिं० पग+धारना] १ पदार्पण करना। आ पहुँचना। आना (बड़ों के लिये आदरार्थ)। २ जाना। चला जाना। चलना (बड़ों के लिये आदरार्थ)।

क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना। पध-राना।

पन—संज्ञा पुं० [सं० पण] प्रतिज्ञा। संकल्प।

संज्ञा पुं० [सं० पर्वन् = विशेष अवस्था] २५, २५ वर्षों के क्रम से किसी व्यक्ति की

आयु के चार भागों में से कोई। उ०—पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथे पन जेहिं अजसु न होई॥ —मानस।

प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं; जैसे, लड़कपन, बचपन, छिछोरापन।

पनकपड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+कपड़ा] वह गीला कपड़ा जो शरीर के किसी अंग के कटने या उसमें चोट लगने पर बाँधा जाता है।

पनकाल—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+अकाल] अतिवृष्टि के कारण होनेवाला अकाल।

पनग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पन्नग] [स्त्री० पनगिन, पनगनि] साँप।

पनघट—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+घाट] वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों।

पनच—संज्ञा स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष का रोदा या डोरी। प्रत्यंचा।

पनचक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+चक्की] पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनडब्बा—संज्ञा स्त्री० [हिं० पान+डब्बा] [स्त्री० अल्पा० पनडब्बी] पानदान।

पनडुब्बा—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+डूबना] १. पानी में गोता लगानेवाला। गोताखोर। २. वह पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। ३. मुरगाबी। ४. एक प्रकार का कल्पित भूत।

पनडुब्बी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+डूबना] एक प्रकार की नाव जो प्राय पानी के अंदर डूबकर चलती है (अं० सबमेरीन)।

पनपना—क्रि० अ० [सं०√पूर्ण=हरा होना] १. हरामरा होना या फलना-फूलना। २. बीज से निकलना या नए पत्ते आदि फेंकना। ३ फिर से तंदुरुस्त होना।

पनबट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० पान+बट्टा (डिब्बा)] पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा—संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रणव"।

[सं० पणव] एक प्रकार का ढोल। उ०—फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना। —मानस।

पनवाड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० पान+वाला] पान बेचनेवाला। तमोली।

पनवारा—संज्ञा पुं० [हिं० पान+वारा (प्रत्य०)] १. पत्तों की बनी हुई पत्तल। उ०—आदर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सवारे। —मानस। २ एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

पनस—संज्ञा पुं० [सं०] कटहल का वृक्ष या फल।

पनसाखा—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+शाखा] एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।

पनसारी—संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

पनसाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+शाला] वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण को पानी पिलाया जाता हो। पौसरा।

संज्ञा स्त्री० पानी की गहराई नापने का उपकरण।

पनसुइया—संज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+सूई] एक प्रकार की छोटी नाव।

पनसेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पसेरी"।

पनह(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पनाह"।

पनहरा—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] वह जो पानी भरने का काम करता हो। पनभरा।

पनहा—संज्ञा पुं० [सं० परिणाह] १ कपड़े या दीवार आदि की चौड़ाई। घेरा। दायरा। २ गूढ़ आशय या तात्पर्य। मर्म। भेद।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० पणि] चोरी का पता लगानेवाला।

पनहारा—संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनहियाभद्र—संज्ञा पुं० [हिं० पनही+भद्र=मुंडन‡] वह जिसके सिर पर अधिक जूते पड़ने से बाल उड़ गए हों।

पनही‡—संज्ञा स्त्री० [सं० उपानह] जूता।

पना—संज्ञा पुं० [सं० प्रपानक या पानीय] आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का पेय। प्रपानक। पन्ना।

पनाती—संज्ञा पुं० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनारि—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रणाली] नाली। उ०—दई पनारि खुलाइ, सरिता ज्यौं बीथिन गयो। —नंददास०।

पनाला—संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

पनासना‡—क्रि० स० [सं० पानाशन] पोषण करना। परवरिश करना।

पनाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शत्रु, संकट या कष्ट से बचाव या रक्षा पाने की क्रिया या भाव। त्राण। बचाव।

मुहा०—(किसी से) पनाह माँगना=कष्ट या पीड़ा से भयभीत होकर किसी से बहुत बचने की इच्छा करना।

२ रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़।

पनिच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पनच"। उ०—पै बिनु पनिच बिनु कर की कसीस बिनु, चलत इसारे यह जिनको प्रमान हैं। —रससारांश।

पनिया—वि० दे० "पनिहा"।

पनियाना‡—क्रि० अ० [हिं० पानी से ना० धा०] पानी देना। सींचना।

पनियासोत‡—वि० [हिं० पानी+सोत] तालाब, खाई आदि) जिसमें पानी का सोता निकला हो। अत्यंत गहरा।

पनिहा—वि० [हिं० पानी+हा (प्रत्य०)] १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। ३ पानी संबंधी।

संज्ञा पुं० भेदिया। जासूस।

पनिहार—संज्ञा पुं० [स्त्री० पनिहारिन] दे० "पनहार"।

पनी‡(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पण] प्रण करनेवाला। प्रतिज्ञा करनेवाला। उ०—सोइ पद पाय बिभीषन भो भवभूषन दलि दूषन अनी। बाँहपगार उदारसिरोमनि नतपालक पावन पनी। —गीता०।

पनीर—संज्ञा पुं० [फा०] १ फाड़कर जमाया हुआ दूध। छेना। २ वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पनीरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ फूलपत्तों के वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिये उगाए गए हों। फूलपत्तों के बेहन। २ वह क्यारी जिसमें पनीरी जमाई गई हो। बेहन की क्यारी।

पनीला—वि० [हिं० पानी+ईला (प्रत्य०)] पानी मिला हुआ। जलयुक्त।

पनुआँ—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+उआँ (प्रत्य०)] वह शरबत जो गुड़ के कड़ाहे से पाग निकालने के पश्चात् उसे धोकर तैयार किया जाता है।

पनैला—संज्ञा पुं० [हिं० पनीला=एक प्रकार का सन] एक प्रकार का गाढ़ा चिकना और चमकीला कपड़ा। परमटा।

वि० [हिं० पानी] १ जिसमें पानी मिला हो। २. जो पानी में रहता या होता हो।

पन्न—वि० [सं०] १ गिरा हुआ। पड़ा हुआ; जैसे, शरणापन्न। २ नष्ट। गत।

पन्नग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पन्नगी] १. सर्प । साँप । २. पद्माख ।

(पु) [हिं० पन्ना] पन्ना । मरकत ।

पन्नगपति—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग ।

पन्नगारि—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़ ।

पन्ना—संज्ञा पुं० [सं० पन्ना ?] फिरोजे की जाति का, हरे रंग का एक रत्न । मरकत ।

संज्ञा पुं० [सं० पर्ण ?] पृष्ठ । वरक । पत्र ।

पन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पन्ना=पत्रा] १ राँगे या पीतल के कागज की तरह पतले पत्तर जिन्हें शोभा के लिये अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं । २. सोने या चाँदी के पानी में रँगा हुआ कागज या चमड़ा ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पना] एक भोज्य पदार्थ ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] (१) बारूद की एक तौल जो आध सेर के बराबर होती है । (२) एक लंबी घास जिसे प्राय छप्पर छाने के काम में लाते हैं ।

पन्नीसाज—संज्ञा पुं० [हिं० पन्नी+फा० साज] पन्नी बनाने का काम करनेवाला ।

पन्हाना†—क्रि० अ० दे० "पिन्हाना" ।

क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना" । २. दे० "पहनाना" ।

पन्हैयाँ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पनही" ।

पपड़—संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] [स्त्री० अल्पा० पपड़ी] १ लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका । २ रोटी का छिलका ।

पपड़िया—वि० [हिं० पपड़ी+इया (प्रत्य०)] पपड़ी संबंधी । जिसमें पपड़ी हो । पपड़ी-वाला, जैसे—पपड़िया कत्था ।

पपड़ियाना—क्रि० अ० [हिं०पपड़ी से ना० धा०] १ किसी चीज की परत का सूखकर सिकुड़ जाना । २ इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय ।

पपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ का अल्पा०] किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़कर जगह जगह से चिटक गई हो । २ मवाद के सूख जाने से घाव के ऊपर बना हुआ आवरण या परत । खुरंड । ३ सोहनपपड़ी नामक मिठाई ।

पपड़ीला—वि० [हिं० पपड़ी+ईला (प्रत्य०)] जिसपर पपड़ी जमी हो । पपड़ीदार ।

पपीता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके फल खाए जाते हैं । पपैया । अंड खरबूजा ।

पपीलिका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पिपीलिका] चिँउँटी । चींटी ।

पपीहरा—संज्ञा पुं० दे० "पपीहा" ।

पपीहा—संज्ञा पुं० [देश०] एक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है । चातक ।

पपैया—संज्ञा पुं० दे० "पपीहा" । उ०—दादुर, मोर, पपैया बोलत फूले फूल द्रुम बाग । —नंददास० ।

पपोटा—संज्ञा पुं० [सं० प्र+पट] आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा । पलक । दृगंचल ।

पपोरना†—क्रि० स० [देश०] बाँहें ऐंठना और उनका भराव या पुष्टता देखना (बलाभिमान का सूचक) ।

पवारना—क्रि० स० दे० "पँवारना" ।

पब्बय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पर्वत] पहाड़ ।

पविरु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पवि] वज्र ।

पब्बै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पब्बय" । उ०—डिगति उर्वि अति गुर्वि, सर्व पब्बै समुद्र सर । ब्याल बधिर तेहि काल, विकल दिगपाल चराचर ।—कविता० ।

पब्लिक—संज्ञा स्त्री० [अँ०] जनसाधारण । जनता । आम लोग ।

वि० जनसाधारण का । सार्वजनिक ।

पमाँवना†—क्रि० अ० दे० "पमाना" । उ०—कायर बहुत पमाँवही बहकि न बोलै सूर । काम पड़्या ही जाणिए किसके मुख परि नूर ।—कबीर० ।

पमाना(पु)—क्रि० अ० [?] डींग हाँकना ।

पमार(पु)—संज्ञा पुं० "परमार" ।

पय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पयस्] १ दूध । २ जल । पानी । ३ अन्न ।

पयद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पयोद" ।

पयधि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पयोधि" ।

पयनिधि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पयोनिधि" ।

पयस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूध देनेवाली गाय । २ बकरी । ३. नदी ।

पयस्वी—वि० [सं० पयस्विन्] [स्त्री० पयस्विनी] पानीवाला । जिसमें जल हो ।

पयहारी—संज्ञा पुं० [सं० पयस्+आहारी] दूध पीकर रह जानेवाला तपस्वी या साधु ।

पयान—संज्ञा पुं० [सं० प्रयाण] गमन । जाना ।

पयार, पयाल—संज्ञा पुं० [सं० पलाल] धान, कोदो आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड़ लिए गए हों । पुराल । पुआल । उ०—धान को गाँव पयार ते जानौ ज्ञान-विषय रस भोरे । —सूर० ।

मुहा०—पयाल गाहना, झाड़ना या पीटना=व्यर्थ मिहनत या सेवा करना ।

पयोज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल ।

पयोद—संज्ञा पुं० [सं०] बादल । मेघ ।

पयोधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तन । दैअहि लागि कहौ तुलसी प्रभु, अजहुँ न तजत पयोधर पीवो । —श्रीकृष्णगीता० । २ बादल । ३. नागरमोथा । ४ कसेरू । ५ तालाब । तड़ाग । ६ गाय का अयन । ७ पर्वत । पहाड़ । ८ दोहा छंद का ११ वाँ भेद । ९ छप्पय छंद का २७ वाँ भेद ।

पयोधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । उ०—नाथ समुझि मन करिअ बिचारू । राम वियोग पयोधि अपारू ॥

पयोनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । उ०—जौ छबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छपु सोई । —मानस ।

परच—अव्य० [सं०] १. और भी । २. तो भी । परंतु । लेकिन ।

परंतप—वि० [सं०] १. वैरियों को दुःख देनेवाला । २ जितेंद्रिय ।

परंतु—अव्य [सं० पर+तु] पर । तो भी । किंतु । लेकिन । मगर ।

परंपरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक के पीछे दूसरा, ऐसी अटूट शृंखला या क्रम (विशेषत काल या घटनाओं आदि का) । अनुक्रम । पूर्वापर क्रम । २. वंशपरंपरा । संतति । औलाद । ३ बराबर चली आती हुई रीति । प्रथा ।

परंपरागत—वि० [सं०] परंपरा से चला आता हुआ । अनादि काल से होता आनेवाला ।

पर—वि० [सं०] १ अपने को छोड़कर शेष । गैर । दूसरा । अन्य । उ०—वचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर । जाहु न निज पर सूझ मोहि भयेउँ कालबस बीर ॥ —मानस । २ पराया । दूसरे का । उ०—पर अकाज लगि तनु परिहरहीं । जिमि हिमउपल कृषी दलि गरहीं ॥ —मानस । ३ भिन्न । जुदा । अतिरिक्त । ४ पीछे का । बाद का । ५. दूर । अलग । तटस्थ । उ०—तपन तीछन तरुन, तीव्रतापघ्न-तपरूप तनुभूप तमपर तपस्वी ।—विनय० । ६ सबके ऊपर । श्रेष्ठ । उ०—ब्रह्म व्यापक

अकल सकल पर परम हित ज्ञानगोतीत गुणवृत्तिहर्ता ।—विनय० । ७ प्रवृत्त । लीन । तत्पर (समास में) । उ०—वारि-चरवपुधर, भक्तनिस्तारपर, धरनि कृत नाव, महिमाति गुर्वी ।—विनय० ।

प्रत्य० [सं० उपरि] सप्तमी या अधि-करण का चिह्न, जैसे—उसपर । तुमपर । उ०—होउ महेस मोहि पर अनुकूला । करहु कथा मुद-मगल-मूला ।—मानस ।

अव्य० [सं० परम्] १ पश्चात । पीछे । बाद । उ०—एतेहु पर करिहहिं ते असंका । मोहिं ते अधिक जे जड़मति रंका । —मानस । २ परतु । किंतु । लेकिन । तो भी ।

सज्ञा पु० [फा०] चिड़ियों का डैना और उसपर के हुए या रोएँ । पख । पत्त ।

मुहा०—पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना । अशक्त हो जाना । पर जमना=(१) पर निकलना । (२) जो पहले सीधासादा रहा हो, उसे शरारत सूझना । (कहीं जाते हुए) पर जलना=(१) हिम्मत न होना । साहस न होना । (२) गति न होना । पहुँच न होना । पर न मारना=पैर न रख सकना । जा न सकना ।

परई—सज्ञा स्त्री० [सं० पारी=कटोरा, प्याला] दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन ।

परकटाⓅ—वि० [फा० पर+हिं० कटना] जिसके पर या पखे कटे हों ।

परकनाⓅ†—क्रि० अ० हिं० [परचना] १ परचना । हिलना । मिलना । २ धड़क खुलना । अभ्यास पड़ना । चसका लगना ।

परकसनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० परकासना] १ प्रकाशित होना । चमकना । जगमगाना । २ प्रकट होना ।

परकाजी—वि० [हिं० पर+काज] परोपकारी ।

परकाना†—क्रि० स० [हिं० परकना का स० रूप] १ परचाना । हिलाना मिलाना । २ चसका लगाना ।

परकार—संज्ञा पु० [फा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार ।

Ⓟ† सज्ञा पुं० दे० "प्रकार" ।

परकारना—क्रि० स० [हिं० परकार से ना० धा०] १ परकार से वृत्त बनाना । २. चारों ओर फेरना ।

परकाल—सज्ञा पुं० दे० "परकार" ।

परकाला—सज्ञा पुं० [सं० प्राकार या प्रकोष्ठ] १. सीढ़ी । जीना । २ चौखट । देहलीज ।

सज्ञा पुं० [फा० परगाल] १ टुकड़ा । खंड । २ शीशे का टुकड़ा । ३ चिनगारी ।

मुहा०—आफत का परकाला=गजब करनेवाला । प्रचड या भयकर मनुष्य ।

परकास—सज्ञा पुं० दे० "प्रकाश" ।

परकासनाⓅ—क्रि० स० [स० प्रकाशन] १ प्रकाशित करना । २ प्रकट करना ।

परकासिकⓅ—वि० [स० प्रकाशक] दे० "प्रकाशक" । उ०—सबन के नैन प्रान परकासिक ताके ढिग रच्यौं चखोड़ा छाजै, छबि कही न जाई । —नददास० ।

परकितिⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रकृति" ।

परकीय—वि० [सं०] पराया । दूसरे का ।

परकीया—सज्ञा स्त्री० [स०] पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीतिमबध रखनेवाली स्त्री । नायिका ।

परकोटा—सज्ञा पु० [सं० परिकोट] १ किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिये चारों ओर उठाई हुई दीवार । २ पानी आदि की रोक के लिये खड़ा किया हुआ धुस । बाँध । चह ।

परख—सज्ञा स्त्री० [स० परीक्षा] १ गुण-दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देख-भाल । जाँच । परीक्षा । २ गुणदोष का ठीक पता लगानेवाली दृष्टि । पहचान ।

परखना—क्रि० स० [स० परीक्षण] १ गुणदोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना भालना । परीक्षा करना । जाँच करना । भयो न तिलक तिहूँ लोक तुलसी सो मद, निंदै सब साधु, सुनि मानौं न सकोचु हौं । जानत न जोग हिय हानि मानौं जानकीस काहे को परेखो पातकी प्रपची पोचु हौं ॥ —कविता० । २ भला और बुरा पहचानना । उ०—प्रेम परखि रघुबीर सरासन भजेउ । जनु मृगराज किसोर महागल गजेउ ॥ —जानकीमगल ।

क्रि० स० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना । इतजार करना । आसरा देखना । उ०—परखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तब जानेहु मारा ॥ —मानस ।

परखवैया—सज्ञा पुं० [हिं० परख+वैया (प्रत्य०)] परखनेवाला । जाँचनेवाला ।

परखाना—क्रि० स० [हिं० 'परखना' का प्रे० रूप] १ परखने का काम दूसरे से कराना । परीक्षा कराना । जँचवाना । २. सहेजवाना । सँभलवाना ।

परखैया—सज्ञा पुं० दे० "परखवैया" ।

परग—सज्ञा पुं० [स० पदक] पग । कदम ।

परगटनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० प्रगट] प्रकट होना । खुलना । जाहिर होना ।

क्रि० स० प्रकट या जाहिर करना ।

परगन—सज्ञा पुं० दे० "परगना" । उ०—ब्रज परगन सरदार महरि तू ताकी करत नन्हाई । —सूर० ।

परगना—सज्ञा पु० [फा०] वह भूभाग जिसके अतर्गत बहुत से ग्राम हों । जिले का भाग ।

परगसनाⓅ—क्रि० अ० [स० प्रकाशन] प्रकाशित होना । प्रकट होना ।

परगाछा—सज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा+ गाछ=पेड़] एक प्रकार के पौधे जो प्राय गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उगते हैं ।

परगासⓅ—सज्ञा पुं० दे० "प्रकाश" ।

परघटⓅ†—वि० दे० "प्रकट" ।

परचडⓅ—वि० दे० "प्रचड" ।

परचतⓅ†—सज्ञा स्त्री० [स० परिचित] जान पहचान । जानकारी । उ०—कब लगि फिरिहै दीन भयो । सुरत सरित भ्रम भँवर पर्यो तन मन परचत न लह्यो । —सूर० ।

परचना—क्रि० अ० [सं० परिचयन] १ हिलना मिलना । घनिष्ठता प्राप्त करना । २ चसका लगना । धड़क खुलना ।

परचा—सज्ञा पुं० [फा०] १ कागज का टुकड़ा । चिट । कागज । पत्र । २ पुरजा । खत । चिट्ठी । ३ परीक्षा में आनेवाला प्रश्नपत्र ।

सज्ञा पु० [परिचय] १ परिचय । जानकारी । २ परख । परीक्षा । जाँच । ३ प्रमाण । सबूत ।

परचाना—क्रि० स० [हिं० परचना का स० रूप] १ हिलाना मिलाना । आकर्षित करना । २ धड़क खोलना । चसका लगाना । टेव डालना ।

क्रि० स० [प्रज्वलन] जलाना ।

परचारⓅ—सज्ञा पुं० दे० "प्रचार" ।

परचारनाⓅ—क्रि० स० दे० "प्रचारना" ।

परचून—सज्ञा पु० [स० पर+चूर्ण] आटा, दाल मसाला आदि भोजन का समान ।

परचूनी—सज्ञा पुं० [हिं० परचून] आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया । मोदी ।

परछत्ती—सज्ञा स्त्री० [सं० परि+छत] १.

घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन जिसपर सामान रखते हैं। टाँड। पाटा। २. फूस आदि की छाजन।

परछन—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रार्चन] विवाह की एक रीति जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्यापक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करती तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना—क्रि० स० [हिं० परछन] परछन करना।

परछाईं—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १ किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया जो प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ती है। छायाकृति।

मुहा०—परछाईं से डरना या भागना = (१) बहुत डरना। अत्यंत भयभीत होना। (२) पास तक आने से डरना।

२. जल, दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पदार्थ का पूरा प्रतिरूप। प्रतिबिंब। अक्स।

परछालना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

परजंक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

परज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पराजिका] एक संकर रागिनी।

वि० [सं०] परजात। दूसरे से उत्पन्न।

परजन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "परिजन"।

परजन्य(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पर्जन्य"।

परजरना, परज्वलना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] १ जलना। दहकना। सुलगना। २. क्रुद्ध होना। कुढ़ना। उ०—सुनत वचन रावन परजरा। जरत महानल जनु घृत परा। —मानस। ३ डाह करना।

परजलना(पु)—क्रि० अ० दे० "परजरना"।

परजा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रजा] १ प्रजा। रैयत। २ आश्रित जन। कामधंधा करनेवाला। ३. किसी के अधीन या अवलंब पर रहनेवाला।

परजात—संज्ञा स्त्री० [सं० पर+जाति] दूसरी जाति।

वि० दूसरी जाति का।

परजाता—संज्ञा पुं० [सं० पारिजात] मझोले आकार का एक पेड़ जिसमें गुच्छों में सुगंधित फूल लगते हैं। पारिजात।

परजाय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पर्याय"।

परजौट—संज्ञा पुं० [हिं० परजा+औट (प्रत्य०)] घर बनाने के लिये सालाना लगान पर जमीन लेने देने का नियम।

परणना(पु)—क्रि० स० [सं० परिणयन] ब्याहना। विवाह करना।

परतंचा—संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।

परतंत्र—वि० [सं०] पराधीन। परवश।

परतंत्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पराधीनता।

परतः—अव्य० [सं० परतस्] १ दूसरे से। अन्य से। २ पश्चात्। पीछे। ३ परे। आगे।

परत—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १ मोटाई का फैलाव जो किसी सतह के ऊपर हो। स्तर। तह। २ लपेटी जा सकनेवाली फैलाव की वस्तुओं (जैसे—कागज, कपड़ा, चमड़ा आदि) का इस प्रकार का मोड़ जिससे उनके भिन्न भिन्न भाग ऊपर नीचे हो जायँ। ३. कपड़े, कागज आदि के ऊपर नीचे चिपकाए या जोड़े गए भाग।

परतच्छ(पु)—वि० दे० "प्रत्यक्ष"।

परतल—संज्ञा पुं० [सं० पट=वस्त्र+तल=नीचे] लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा या गोनी।

परतला—संज्ञा पुं० [सं० परितल्] चमड़े या मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जो कंधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है और जिसमें तलवार या चपरास आदि लटकाई जाती है।

परता—संज्ञा पुं० दे० "पड़ता"।

परताप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रताप"।

परतिंचा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।

परतिग्या(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

परती—संज्ञा स्त्री० [हिं० परना=पड़ना] वह खेत या जमीन जो बिना जोते छोड़ दी गई हो।

परतीत(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।

परतेजना(पु)—क्रि० स० [सं० परित्यजन] परित्याग करना। छोड़ना। उ०—जैसे उन मोकों परतेजी कबहूँ फिरि न निहारत हैं।—सूर०।

परत्र—क्रि० वि० [सं०] १ और जगह। २ परलोक।

परत्व—संज्ञा पुं० [सं०] परायापन। पहले या पूर्व होने का भाव।

परथन†—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

परद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "परदा"।

परदच्छिना(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिणा"।

परदनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ धोती। २ दान दक्षिणा।

परदा—संज्ञा पुं० [फा०] १ आड़ करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। पट।

मुहा०—परदा उठाना या खोलना = छिपी बात प्रकट करना। भेद खोलना। (किसी का) परदा रखना = किसी की बुराई आदि लोगों पर प्रकट न होने देना। किसी की प्रतिष्ठा बनी रहने देना। उ०—मधुकर जाहि कहो सुन मेरो। पीत वसन तन श्याम जानि कै राखत परदा तेरो।—सूर०। परदा डालना = छिपाना। प्रकट न होने देना। आँख पर परदा पड़ना = सुझाई न देना। ढँका परदा = (१) छिपा हुआ दोष या कलंक। बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा। बुद्धि पर परदा पड़ना = बुद्धि मंद होना।

२ आड़ करनेवाली कोई वस्तु। व्यवधान। ३ लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति। आड़। ओट। छिपाव।

मुहा०—परदा रखना = (१) परदे के भीतर रहना। सामने न होना। (२) छिपाव रखना। दुराव रखना। परदा होना = (१) स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम होना (२) छिपाव होना। दुराव होना। परदे में रखना = (१) (स्त्रियों को) घर के भीतर रखना, बाहर लोगों के सामने न होने देना। (२) छिपा रखना। प्रकट न होने देना।

४ स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल। ५. वह दीवार जो विभाग करने या ओट करने के लिये उठाई जाय। ६ तह। परत। तल। ७. वह झिल्ली या चमड़ा आदि जो कहीं पर आड़ या व्यवधान के रूप में हो। ८ प्रतिष्ठा। मर्यादा। उ०—सेवक को परदा फटै, तू समरथ सी ले। अधिक आपु तें आपने सुनि मान सही ले॥ —विनय०।

परदाज—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० परदाजी] १ सजाना। २. चित्र आदि के चारों ओर बेलबूटे बनाना। ३ चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिये बहुत पास पास महीन बिंदु लगाना।

परदादा—संज्ञा पुं० [सं० प्र०+हिं० दादा] [स्त्री० परदादी] प्रपितामह। दादा का बाप।

परदानशीन—वि० [फा०] परदे में रहने-वाली । असूर्यपश्या । पुरवासिनी (स्त्री)।
परदुम्न(पु)—संज्ञा पुं० दे० 'प्रद्युम्न'।
परदेश—संज्ञा पुं० [सं०] विदेश । दूसरा देश । पराया स्थान । पराया शहर ।
परदेशी—वि० [सं०] विदेशी । दूसरे स्थान या देश का । अन्य देशनिवासी ।
परदोस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रदोष"।
परधान(पु)—वि० दे० "प्रधान"।
संज्ञा पु० दे० "परिधान"। उ०—उर मणिमाला, पहिराय सब विचित्र ठए। दान मान परधान पूरण काम किए।—सूर०।
परधाम—संज्ञा पु० [सं०] वैकुंठ धाम।
परन—संज्ञा पुं० [सं० प्रण] प्रतिज्ञा । टेक ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत। उ०—राखौं हटकि उतै को धावै उनकी वैसियै परत परी री ! —सूर०।
(पु)संज्ञा पुं० दे० "पर्ण"।
परनसाल—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्णशाला] झोपड़ी। पर्णकुटी। उ०—खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल। नाथ साथ सुर सदन सम परनसाल सुखमूल। —मानस।
परना(पु)†—क्रि० अ० दे० "पड़ना"।
परनाना—संज्ञा पु० [सं० पर+हिं० नाना] [स्त्री० परनानी] नाना का बाप।
परनाम—संज्ञा पु० दे० "प्रणाम"। उ०—कलि के कबिन्ह करौं परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥ —मानस।
परनाला—संज्ञा पुं० [सं० प्रणाल] [स्त्री० अल्पा० परनाली] पानी बहने का रास्ता। पनाला। नाबदान। मोरी।
परनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत। टेव। उ०—सूरदास तैसहि ये लोचन का धौं परनि परी सी। —सूर०।
परनौत(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० परनवना] प्रणाम।
परपंच(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच"।
परपंचक(पु)—वि० दे० "परपंची"।
परपंची(पु)†—वि० [सं० प्रपंच] १ बखेड़िया। फसादी। २. धूर्त। मायावी। उ०—सब दल होहु हुस्यार चलहु अब घेरहिं जाई। परपची है कान्ह कछू मति करै ढिठाई। सूर०।
परपट—संज्ञा पुं० [हिं० पर+सं० पट=चादर] चौरस मैदान। समतल भूमि।
परपरा—वि० [अनु०] १. जो परपराता हो। २ पर पर शब्द के साथ टूटनेवाला।
परपराना—क्रि० अ० [देश०] मिर्च आदि कड़वी चीजों का जीभ या किसी अंग में विशेष प्रकार का उग्र सवेदन उत्पन्न करना। चुनचुनाना।
परपार—संज्ञा पुं० [सं०] उस ओर का तट। दूसरी तरफ का किनारा।
परपीड़क—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला।
परपीरक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० परपीड़क] पराई पीड़ा को समझनेवाला। उ०—मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक।—सूर०।
परपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों के लिये अपने पति के अतिरिक्त कोई और पुरुष।
परपूठना(पु)—क्रि० स० [सं० परिपुष्ट] परिपुष्ट या पक्का करना।
परपूठा(पु)—वि० [सं० परिपुष्ट] पक्का।
परपोता—संज्ञा पु० [सं० प्रपौत्र] पोते का बेटा। पुत्र के पुत्र का पुत्र।
परफुल्ल(पु)—वि० दे० "प्रफुल्ल"।
परब—संज्ञा पुं० दे० "पर्व"।
परबत—संज्ञा पुं० दे० "पर्वत"।
परबल(पु)—वि० दे० "प्रबल"।
परबस—वि० [हिं० पर+वश] दूसरे के वश में पड़ा हुआ। परतंत्र।
परबसताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० परवश्यता] पराधीनता। परतन्त्रता।
परबाल—संज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ] आँख की पलक पर का वह फालतू बाल जिसके कारण बहुत पीड़ा होती है।
(पु)संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल"।
परबीन(पु)—वि० दे० "प्रवीण"।
परबेस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश"।
परबोध—संज्ञा पुं० दे० "प्रबोध"।
परबोधना(पु)—क्रि० स० [हिं० 'परबोध' से ना० धा०] १ जगाना। २ ज्ञानोपदेश करना। ३ दिलासा देना। तसल्ली देना। उ०—पुनि यह कहा मोहिं परबोधत धरनि गिरो मुरमैया।—सूर०।
परब्रह्म—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म जो जगत से परे है। निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म। सच्चिदानंद।
परभाउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।
परभात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रभात"।
परभाव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"। उ०—यह सब कलियुग को परभाव जो नृप के मन भयो कुठाव।—सूर०।
परम—वि० [सं०] [स्त्री० परमा] १. सबसे बढ़ा चढ़ा। अत्यंत। अत्यधिक। २. जो बढ़-चढ़कर हो। उत्कृष्ट। चरम। ३ प्रधान। मुख्य। ४ आद्य। आदिम। मौलिक।
संज्ञा पुं० १ शिव। २ विष्णु।
परमगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।
परमटा—संज्ञा पु० दे० "पनैला"।
परम तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] मूल तत्व जिससे सपूर्ण विश्व का विकास हुआ है।
परम धाम—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
परम पद—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।
परम पुरुष—संज्ञा पु० [सं०] परमात्मा।
परम भट्टारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० परम भट्टारिका] एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।
परमल—संज्ञा पुं० [सं० परिमल] ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना।
परमहंस—संज्ञा पुं० [सं०] १. सन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो। २ परमात्मा।
परमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। छवि। (अमरकोष के "सुषमा परमा शोभा" का भ्रामक अनुकरण)।
परमाणु—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसके फिर और विभाग नहीं हो सकते। अत्यंत सूक्ष्म अणु।
परमाणुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय और वैशेषिक का यह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत की सृष्टि हुई है।
परमात्मा—संज्ञा पुं० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।
परमानंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्म के अनुभव का सुख। ब्रह्मानंद। २. आनंद-स्वरूप ब्रह्म।
परमान†—संज्ञा पुं० [सं० प्रमाण] १ प्रमाण। सबूत। २ यथार्थ बात। सत्य बात। ३ सीमा। अवधि। हद।
परमानना(पु)—क्रि० स० [हिं० परमान से ना० धा०] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २ स्वीकार करना।
परमायु—संज्ञा स्त्री० [सं० परमायुस्] अधिक से अधिक आयु। जीवित काल की

सीमा जो १०० अथवा १२० वर्ष मानी है।
परमार—संज्ञा पुं० [सं० पर=शत्रु+हिं० √मार] राजपूतों का एक कुल जो अग्निकुल के अंतर्गत है। पँवार।
परमारथ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "परमार्थ"।
परमार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ परम अर्थ। श्रेष्ठतम वस्तु। वास्तविक सत्ता। नाम रूपादि से परे यथार्थ तत्व। ३. ज्ञान। ४ मोक्ष। ५ सत्य। ६ धर्म।
परमार्थवादी—संज्ञा पुं० [सं० परमार्थवादिन्] ज्ञानी। वेदांती। तत्वज्ञ।
परमार्थी—वि० [सं० परमार्थिन्] १. यथार्थ तत्व को ढूँढ़नेवाला। तत्व जिज्ञासु। २. मोक्ष चाहनेवाला। मुमुक्षु।
परमिति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पर+मिति] चरम सीमा या मर्यादा।
परमुख(पु)—वि० [सं० पराङ्मुख या पर+मुख] १ विमुख। पीछे फिरा हुआ। २. जो प्रतिकूल आचरण करे।
परमेश, परमेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार का कर्ता और परिचालक सगुण ब्रह्म। २ विष्णु। ३. शिव।
परमेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
परमेष्ट—वि० [सं०] चतुर्मुख ब्रह्मा। प्रजापति (शुक्ल यजुर्वेद)।
परमेष्ठी—संज्ञा पुं० [सं० परमेष्ठिन्] १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २ विष्णु। ३ शिव। ४ जैनियों के एक देवता या जिन का नाम। ५ विराट् पुरुष। ६ शालिग्राम। ७ चाक्षुष मनु।
परमेसर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "परमेश्वर"।
परमोक—संज्ञा पुं० [परम+ओक] १ परम धाम। वैकुंठ। २ मोक्ष। स्वच्छंदता।
परमोद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।
परमोदना(पु)†—क्रि० स० [सं० प्रमोदन] १ दे० "परबोधना"। २ मीठी मीठी बातें करके अपनी तरफ मिलाना।
परयंक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।
परलउ, परलय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलय] सृष्टि का नाश या अंत। प्रलय।
परला—वि० [सं० पर=उधर+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] उस ओर का। उधर का।

मुहा०—परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का। अत्यंत। बहुत अधिक।

परलै(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रलय"।
परलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है, जैसे, स्वर्ग, वैकुंठ आदि।

यौ०—परलोकवासी=मृत। मरा हुआ।

मुहा०—परलोक सिधारना=(१) मरना। (२) मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।

परलोकगमन—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु।
परवर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पटोल] दे० "परवल"।

वि० [फा०] (यौगिक शब्दों में) पालन करनेवाला। पालनेवाला।

परवरदिगार—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।
परवरिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण।
परवल—संज्ञा पुं० [सं० पटोल] एक लता जिसके चार पाँच अंगुल लंबे और दोनों सिरों की ओर पतले या नुकीले गूदेदार फलों की तरकारी होती है। परवल की तरकारी पथ्य मानी जाती है और ज्वर के रोगियों को दी जाती है। इसकी जड़ विरेचक तथा पत्ते तिक्त और पित्तनाशक माने जाते हैं।
परवश—वि० [सं०] [भाव० परवशता] पराधीन।
परवश्य—वि० [सं०] [भाव० परवशता] दे० "परवश"।
परवस्ती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश।"
परवा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा] पक्ष की पहली तिथि। पड़वा। परिवा।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चिंता। खटका। आशंका। २. ध्यान। खयाल। ३ आसरा।

परवाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।
परवान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। उ०—राम गए अजहूँ हौं जीवत समुझत हिय अकुलान। तुलसिदास तनु तजि रघुपति हिय कियो प्रेम परवान। —गीता०। २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३ सीमा। मिति। अवधि। हद।
परवानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] इजाजत। आज्ञा। अनुमति।
परवानना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रमाण] ठीक समझना।
परवाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. आज्ञापत्र। २ फतिंगा। पखी। पतंग। ३. भरी चूना आदि नापने का एक मान या पात्र।
परवाल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल"।
परवाय—संज्ञा पुं० [?] आच्छादन।
परवाह—संज्ञा स्त्री० दे० "परवा"।

†संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

परवी—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] पर्वकाल।
परवीन(पु)—वि० दे० "प्रवीण"।
परवेख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० परिवेश] हलकी बदली के समय दिखाई पड़नेवाला चंद्रमा के चारों ओर का घेरा। चाँद की अथाई। मंडल।
परवेश(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश"।
परश—संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर।

संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] स्पर्श। छूना।

परशु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की कुल्हाड़ी जो लड़ाई में काम आती थी। तबर। भलुआ। फरसा।
परशुराम—संज्ञा पुं० [सं०] जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया था।
परसंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रसंग"।
परसंसा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"।
परस—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] छूना। स्पर्श।

संज्ञा पुं० [सं० परश] पारस पत्थर।

परसन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्शन] १ छूना। छूने का काम। २. छूने का भाव।

वि० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न। खुश। उ०—तबहिं असीस दई परसन ह्वै सफल होहु तव कामा।—सूर०।

परसना(पु)—क्रि० स० [सं० स्पर्शन] १. छूना। स्पर्श करना। उ०—गौतम-तिय-गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि।—दोहा०। २ स्पर्श करना।

क्रि० स० [सं० परिवेषण] परोसना।

परसन्न(पु)—वि० दे० "प्रसन्न"।
परस पखान—संज्ञा पुं० दे० "पारस"।
परसा—संज्ञा पुं० [हिं० परसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन। पत्तल। परोसा।
परसाद(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "प्रसाद"।
परसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० परसना का स० रूप] छुलाना। उ०—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै।—सूर०।

क्रि० स० [हिं० परसना का प्रे० रूप] भोजन सामने रखवाना। परसवाना।

उ०—महर गोप सबही मिल बैठे पनवारे परसाने।—सूर०।

परसाल—अव्य० [सं० पर+फा० साल] १ गत वर्ष। पिछले साल। २. आगामी वर्ष।

परसिद्ध(पु)—वि० दे० "प्रसिद्ध"।

परसु(पु)—सज्ञा पुं० दे० "परशु"।

परसूत(पु)†—वि०, सज्ञा पु० दे० "प्रसूत"।

परसेद(पु)—सज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद"।

परसों—अव्य० [स० परश्व] १ गत दिन से ठीक पहले का दिन। बीते हुए कल से एक दिन पहले। २. आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोतम(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "पुरुषोत्तम"।

परसौंहाँ—वि० [हिं० परस+औहाँ (प्रत्य०)] छूनेवाला।

परस्पर—क्रि० वि० [स०] एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्परोपमा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

परहरना(पु)—क्रि० स० [सं० परि+हरण] त्यागना।

परहार†—सज्ञा पुं० १ दे० "प्रहार"। २ दे० "परिहार"।

परहेज—सज्ञा पुं० [फा०] १ स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना। खाने पीने आदि का संयम। २ दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेजगार—वि० [फा०] [सज्ञा परहेजगारी] १. परहेज करनेवाला। सयमी। २ दोषों से दूर रहनेवाला। बुराइयों से बचनेवाला।

परहेलना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रहेलन] निरादर करना। तिरस्कार करना।

परौंठा—संज्ञा पुं० [स० पर्यस्त ?] घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती। परौठा।

परा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी। २ वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। उपनिषद् विद्या।

सज्ञा पुं० [?] पंक्ति। कतार।

पराकाष्ठा—सज्ञा स्त्री० [सं०] चरम सीमा। सीमांत। हद। अंत।

पराक्रम—सज्ञा पुं० [स०] [वि० पराक्रमी] १. बल। २ शक्ति। पुरुषार्थ। उद्योग।

पराक्रमी—वि० [स० पराक्रमिन्] १ बलवान्। बलिष्ठ। २ बहादुर। ३ उद्योगी।

पराग—सज्ञा पु० [स०] १ वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है। पुष्परज। २ धूलि। रज। ३ एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। ४ चंदन। ५ उपराग।

परागकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] फूलों के बीच में वे पतले लंबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

परागना(पु)—क्रि० अ० [सं० उपराग] अनुरक्त होना। उ०—प्रीति नदी महँ पाँव न बोरयो दृष्टि न रूप परागी। सूरदास अबला हम भोरी गुर चींटी ज्यों पागी। —सूर०।

पराङ्मुख—वि० [स०] १ मुँह फेरे हुए। विमुख। २ जो ध्यान न दे। उदासीन। ३ विरुद्ध।

पराजय—सज्ञा स्त्री० [स०] विजय का उलटा। हार। शिकस्त।

पराजित—वि० [स०] परास्त। हारा हुआ। विजित।

परात—सज्ञा स्त्री० [सं० पात्र] थाली के आकार का एक बड़ा बरतन।

परात्पर—वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ।

सज्ञा पुं० १ परमात्मा। २ विष्णु।

पराधीन—वि० [स०] जो दूसरे के अधीन हो। परतंत्र। परवश। उ०—कत विधि सृजी नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहु सुखु नाहीं॥ —मानस।

पराधीनता—सज्ञा स्त्री० [स०] परतन्त्रता। दूसरे की अधीनता। गुलामी।

परान—संज्ञा पु० दे० "प्राण"।

पराना(पु)†—क्रि० अ० [स० पलायन] भागना। उ०—नयनन मिलत लई कर गहि के फाल्गुन चले पराय। सुनि बलदेव क्रोध अति बाढ़ेउ कृष्ण शांत कियो आय। —सूर०।

परान्न—संज्ञा पुं० [सं०] पराया अन्न या धान्य। दूसरे का दिया हुआ भोजन।

पराभव—सज्ञा पुं० [सं०] १ पराजय। हार। २ तिरस्कार। मानध्वंस। ३ विनाश।

पराभूत—वि० [सं०] १ पराजित। हारा हुआ। २ ध्वस्त। नष्ट।

परामर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. सलाह। मन्त्रणा। २ युक्ति। ३ विवेचन, विचार। ४ पकड़ना। खींचना।

परायण—वि० [स०] [भाव० परायणता] [स्त्री० परायणा] १ गत। गया हुआ। २ प्रवृत्त। लगा हुआ, जैसे—धर्मपरायण, नीतिपरायण।

परायन—वि० दे० "परायण २"। उ०—काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन। —मानस।

पराया—वि० पुं० [सं० पर] [स्त्री० पराई] १ दूसरे का। अन्य का। उ०—तोहिं कौन मति रावन आई। आज कालि दिन चार पाँच में लंका होत पराई। —सूर०। २ जो आत्मीय न हो। गैर। बिराना।

परार(पु)—वि० दे० "पराया"।

परारध(पु)—सज्ञा पुं० दे० "परार्द्ध"।

परारब्ध—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध"।

परार्थ—वि० [स०] [संज्ञा परार्थता] दूसरे का काम। दूसरे का उपकार।

वि० जो दूसरे के लिये हो। पर-निमित्तक।

परार्द्ध—सज्ञा पु० [सं०] १ एक शंख की संख्या। (१०००००००००००००००००) २ ब्रह्मा की आयु का आधा काल।

परालब्ध—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध।

परावधि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स०] पराकाष्ठा। सीमा। हद।

परावन—संज्ञा पुं० [सं० पलायन] एक साथ बहुत से लोगों का भागना। भगदड़। पलायन। उ०—फिरत लोग जहँ तहँ बिललाने। को है अपने कौन बिराने। ग्वाल गए जे धेनु चरावन। तिन्हैं परयो बन माँझ परावन।—सूर०।

सज्ञा पुं० [हिं० पड़ाव] गाँव के लोगों का घर के बाहर पूजा और उत्सव आदि के लिये डेरा डालकर टिकना।

परावर्तन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० परावर्तित, परावृत्त] पलटना। लौटना। पीछे फिरना।

परावह—सज्ञा पु० [स०] वायु के सात भेदों में से एक।

परावा—सज्ञा पुं० दे० "पराया"।

परावृत्त—वि० [सं०] [सज्ञा परावृत्ति] १ लौटा या लौटाया हुआ। २. बदला हुआ। परिवर्तित। ३. भागा हुआ।

पराशर—संज्ञा पुं० [सं०] १ महर्षि वशिष्ठ के बेटे शक्ति के पुत्र। वेदव्यास के पिता। २. एक प्रसिद्ध स्मृतिकार। ३ एक गोत्र।

परासⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "पलाश"।

परास्त—वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २ विजित। ध्वस्त।

परास्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पराजय। हार।

पराह्न—वि० [सं०] अपराह्न। दोपहर के बाद का समय। तीसरा पहर।

परि—उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की वृद्धि होती है—चारों ओर, जैसे-परिक्रमा। अच्छी तरह; जैसे—परिपूर्ण। अतिशय-जैसे, परिवर्द्धन। परिच्छन्न। पूर्णता, जैसे—परित्याग। परिताप। परिपक्व। तिरस्कार, जैसे—परिभव। आदि।

परिकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कटिबंध। कमरबंद। फेंटा। उ०—मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतर चाप रुचिर सर साँधा॥ —मानस। २. समारंभ। तैयारी। ३. अनुयायियों का दल। अनुचर वर्ग। ४ समूह। ५. परिवार। ६ पलँग। ७ एक अर्थालंकार जिसमें अभिप्राययुक्त विशेषणों के साथ विशेष्य आता है, जैसे—हिमकरबदनी तिय निरखि पियदृग शीतल होत।

परिकरमाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

परिकरांकुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग विशेष अभिप्राय लिए हुए होता है। उ०—वामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्राणेश। प्यारी कहत लजात नहिं पावस चलत विदेश॥

परिक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन बहलाने के लिये घूमना। टहलना। २ परिक्रमा।

परिक्रमा—संज्ञा स्त्री० [सं० परिक्रम] १ चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २ किसी देवता, मंदिर, तीर्थ देवस्थान या तुलसी, अश्वत्थ आदि के चारों ओर श्रद्धापूर्वक घूमना। ३ किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।

परिक्षा—संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परिक्षित—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परिखन—वि० [हिं० परिखना] रखवाली करनेवाला। रक्षक।

परिखना†—क्रि० स० दे० "परखना"। क्रि० अ० [सं० प्रतीक्षा] १ आसरा देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली करना।

परिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खंदक। खाई।

परिख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

परिगणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य] गणना करना। गिनना।

परिगणित—वि० [सं०] १ गिना हुआ। २ राजकीय सूची में दर्ज या गिनाया हुआ। सूचीबद्ध। अनुसूचित (अँ० शेड्यूल्ड)।

परिगत—वि० [सं०] १ बीता हुआ। गत। २. मरा हुआ। मृत। ३ भूला हुआ। विस्मृत। ४ जाना हुआ। ज्ञात।

परिगह—संज्ञा पुं० [सं० परिग्रह] संगी-साथी या आश्रित जन।

परिगृहीत—वि० [सं०] १ मंजूर किया हुआ। स्वीकृत। २ ग्रहण किया हुआ। लिया हुआ। ३. मिला हुआ। प्राप्त।

परिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिग्राह्य] १. प्रतिग्रह। दान लेना। २ पाना। ३ धनादि का संग्रह। ४ आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना। ५ विवाह। ६ पत्नी। भार्या। ७ परिवार।

परिघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्गला। अगडी। २ भाला। बर्छी। उ०—सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा।—मानस। ३ घोड़ा। ४ फाटक। ५ घर। ६ तीर। ७ बाधा। प्रतिबंध।

परिघोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. तेज या भारी आवाज। २ बादल का गरजना।

परिचनाⓅ—क्रि० अ० दे० "परचना"।

परिचय—संज्ञा पुं० [सं०] १ जानकारी। ज्ञान। अभिज्ञता। २ प्रमाण। लक्षण। ३ किसी व्यक्ति के नामधाम या गुणकर्म आदि के संबंध की जानकारी। ४ जान पहचान।

परिचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवक। खिदमतगार। २ रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचरजाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "परिचर्या"।

परिचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी। सेविका।

परिचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवा। टहल। २ रोगी की सेवाशुश्रूषा।

परिचायक—संज्ञा पुं० [सं०] १. परिचय या जान पहचान करानेवाला। २ सूचित करनेवाला। सूचक।

परिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवा। टहल। २ टहलने या घूमने फिरने का स्थान।

परिचारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवक। नौकर। २ रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवा करना। खिदमत करना। २ संग करना या रहना।

परिचारनाⓅ—क्रि० स० [सं० परिचारण] सेवा करना। खिदमत करना।

परिचारिक—संज्ञा पुं० [सं०] सेवक।

परिचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

परिचालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चलानेवाला। चलने के लिये प्रेरित करनेवाला। २. किसी काम को जारी रखने तथा आगे बढ़ानेवाला। संचालक। ३. गति देनेवाला। हिलानेवाला।

परिचालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिचालित] १ चलने के लिये प्रेरित करना। चलाना। २ कार्यक्रम को जारी रखना। ३ हिलाना। गति देना।

परिचालित—वि० [सं०] १. चलाया हुआ। २ बराबर जारी रखा हुआ। ३ हिलाया हुआ।

परिचित—वि० [सं०] १ जानाबूझा। ज्ञात। मालूम किया हुआ, जैसे—वह उसका परिचित स्थान है या वह सबका परिचित व्यक्ति है। जानकारी रखनेवाला, जैसे—वह दिल्ली से खूब परिचित है। अभिज्ञ। वाकिफ। ३ जान पहचान रखनेवाला। मुलाकाती।

परिचिति—संज्ञा स्त्री० दे० "परिचय"।

परिचो†—संज्ञा पुं० दे० "परिचय"।

परिच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढकने का कपड़ा। आच्छादन। पट। २ पहनावा। पोशाक। ३ राजचिह्न। ४ राजा का अनुचर। ५ परिवार। कुटुंब।

परिच्छन्न—वि० [सं०] १ ढका हुआ। छिपा हुआ। २ जो कपड़े पहने हो। वस्त्रयुक्त। ३ साफ किया हुआ।

परिच्छाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परिच्छिन्न—वि० [सं०] १. सीमायुक्त। परिमित। मर्यादित। २ विभक्त।

परिच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ खड या टुकड़े करना। अलग करना। विभाजन। २ ग्रंथ का कोई स्वतंत्र विभाग। अध्याय। प्रकरण।

परिछन—संज्ञा पुं० दे० "परछन"। उ०—निगम नीति कुलरीति करि अरघ पाँवड़े देत। वधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत।—मानस।

परिछाहीं—संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं"।

परिजंकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

परिजन—संज्ञा पुं० १ [सं०] आश्रित या पोष्य वर्ग; जैसे—पुत्र, कलत्र, सेवक आदि। परिवार। २ सदा साथ रहनेवाले सेवक।

परिज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञान।

परिज्ञात—वि० [सं०] जाना हुआ।

परिज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण ज्ञान।

परिणत—वि० [सं०] [संज्ञा परिणति] १. बदला हुआ। रूपांतरित। २. पका हुआ। पका। ३ पचा हुआ। ४ झुका हुआ। ५ प्रौढ़। पुष्ट। कच्चा का उलटा (बुद्धि या वय)।

परिणति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बदलना। रूपांतर। होना। २ पकना या पचना। परिपाक। ३. प्रौढ़ता। पुष्टि। ४. अंत।

परिणय—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याह। विवाह।

परिणयन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याहना। विवाह करना।

परिणाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ बदलने का भाव या कार्य। बदलना। रूपांतरप्राप्ति। २ स्वाभाविक रीति से रूपपरिवर्तन या अवस्थांतरप्राप्ति (सांख्य)। ३. विकृति। विकार। रूपांतर। ४ एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति (योग)। ५ एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) का प्रकृत (उपमेय) से एकरूप होकर कोई कार्य करना कहा जाता है; जैसे—"करकमलन धनु सायक फेरत" अथवा "हरे हरे पद कमल तें फूलन बीनति बाल। इन उदाहरणों में 'कर' द्वारा होनेवाले कार्य कररूपी कमलों से कराए गए हैं। ६ विकास। वृद्धि। परिपुष्टि। ७ समाप्त होना। बीतना। ८ नतीजा। फल।

परिणामदर्शी—वि० [सं० परिणामदर्शिन्] परिणाम या फल को सोचकर कार्य करनेवाला। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी।

परिणामदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति।

परिणामवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य मत जिसमें जगत् की उत्पत्ति, नाश आदि नित्य परिणाम के रूप में माने जाते हैं।

परिणामी—वि० [सं० परिणामिन्] [स्त्री० परिणामिनी] जो बराबर बदलता रहे।

परिणीत—वि० [सं०] १. जिसका ब्याह हो चुका हो। विवाहित। २ समाप्त। पूर्ण।

परितच्छⓅ—संज्ञा पुं० दे० "प्रत्यक्ष"।

परितप्त—वि० [सं०] १. तपा हुआ। उत्तप्त। २ जिसे दुःख पहुँचा हो। ३ पछतानेवाला।

परिताप—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। आँच। ताव। २ दुःख। क्लेश। पीड़ा। ३. संताप। रंज। ४. पश्चात्ताप। पछतावा।

परितापी—वि० [सं० परितापिन्] १ जिसको परिताप हो। दुःखित या व्यथित। २ पीड़ा देनेवाला। सतानेवाला।

परितुष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा परितुष्टि] १. खूब संतुष्ट। २ प्रसन्न। खुश।

परितृप्त—वि० [सं०] [संज्ञा परितृप्ति] जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो। भली भाँति तृप्त।

परितोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ संतोष। तृप्ति। २ प्रसन्नता। खुशी।

परितोसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "परितोष"।

परित्यक्त—वि० [सं०] [स्त्री० परित्यक्ता] छोड़ा, फेंका या दूर किया हुआ।

परित्याग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परित्यागी] निकालना। अलग कर देना। छोड़ना।

परित्यागनाⓅ—क्रि० स० [सं० परित्याग से हिं० ना० धा०] छोड़ देना। त्यागना।

परित्याज्य—वि० [सं०] छोड़ने या त्यागने योग्य।

परित्राण—संज्ञा पुं० [सं०] बचाव। हिफाजत। रक्षा।

परित्राता—संज्ञा पुं० [सं० परित्रातृ] परित्राण या रक्षा करनेवाला।

परिध—संज्ञा पुं० दे० "परिधि"।

परिदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूम घूमकर देखना। २ निरीक्षण। मुआयना।

परिदाह—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक मानसिक कष्ट।

परिधनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० परिधान] नीचे पहनने का कपड़ा। धोती आदि। उ०—स्याम तामरस दाम सरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं॥—मानस।

परिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। पोशाक। कपड़ा। उ०—नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।—कामायनी। २. शरीर को कपड़े वल्कल आदि से ढकने या लपेटने की क्रिया।

परिधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जिसके समस्त बिंदु केंद्रबिंदु से समान दूरी पर हों। घेरा। २. सूर्य, चंद्र आदि के चारों ओर देख पड़नेवाला घेरा। परिवेश। मंडल। ३ चारों ओर की सीमा। ४. बाड़ा, रूँधान या चहारदीवारी। ५. नियत या नियमित मार्ग। कक्षा। ६. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक। ७. क्षितिज।

परिधेय—वि० [सं०] पहनने योग्य। संज्ञा पुं० वस्त्र। कपड़ा।

परिनयⓅ—संज्ञा पुं० दे० "परिणय"।

परिनिर्वाण—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण निर्वाण। पूर्ण मोक्ष।

परिन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो। २ नाटक में मुख्य कथा की मूलभूत घटना की संकेत से सूचना करना।

परिपक्व—वि० [सं०] [संज्ञा परिपक्वता] १ अच्छी तरह पका हुआ। पूर्ण पक्व। २ जो बिलकुल हजम हो गया हो। ३. पूर्ण विकसित। प्रौढ़। ४. बहुदर्शी। तजुर्बेकार। ५ निपुण। कुशल। प्रवीण।

परिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय का सूचनापत्र।

परिपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पकना या पकाया जाना। २. पचना। ३ प्रौढ़ता। पूर्णता। ४ बहुदर्शिता। ५. कुशलता। निपुणता।

परिपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्रम। श्रेणी। सिलसिला। २ प्रणाली। शैली। ढंग। चाल। ३. पद्धति। रीति। उ०—तव भुजबल महिमा उदघाटी। प्रकटी धनु बिघटन परिपाटी॥—मानस। ४ अंकगणित।

परिपार—संज्ञा पुं० [सं० पालि] मर्यादा।

परिपालन—संज्ञा सं० [सं०] [वि० परिपाल्य, परिपालित] १. रक्षा करना। बचाना। २ रक्षा। बचाव।

परिपालना—संज्ञा स्त्री० दे० "परिपालन"।

परिपालित—वि० [सं०] १. जिसका परिपालन किया गया हो। २. पाला पोसा हुआ।

परिपुष्ट—वि० [सं०] १. जिसका पोषण भली भाँति किया गया हो। २. पूर्ण पुष्ट।

परिपूत—वि० [सं०] १ पवित्र। २ साफ किया हुआ। विशुद्ध। ३. छाँटा हुआ (अन्न)।

परिपूरक—वि० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला। भर देनेवाला।

परिपूरन—वि० [सं० परिपूर्ण] १ खूब भरा हुआ। पूर्ण। उ०—रूप सील बय बम राम परिपूरन। समुझि कठिन पन आपन लाग बिसूरन। —जा० म०। २ सतुष्ट। तृप्त। उ०—कुसल प्रश्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हें। —मानस। ३ समाप्त किया हुआ।

परिपूर्ण—वि० [सं०] [वि० परिपूरित] [संज्ञा परिपूर्णता] १ खूब भरा हुआ। २ पूर्ण तृप्त। अघाया हुआ। ३ समाप्त किया हुआ।

परिपोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिपुष्ट] १ पालन। परवरिश। २ पोषण। पुष्टि।

परिप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ तैरना। २. बाढ़। ३ अत्याचार। जुल्म। ४. नाव।

परिप्लावित—वि० दे० "परिप्लुत"।

परिप्लुत—वि० [सं०] १. प्लावित। डूबा हुआ। २ गीला। भीगा हुआ। आर्द्र।

परिप्लुष्ट—वि० [सं०] जला हुआ। भुना हुआ।

परिप्लोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलन। दाह। २ जलना। भुनना। ३ शरीर के भीतर की गरमी।

परिबृंहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ समृद्धि। बढ़ती। तरक्की। २ किसी मुख्य ग्रथ का पूरक ग्रथ। ३ परिशिष्ट।

परिभव—संज्ञा पुं० [सं०] अनादर। तिरस्कार। अपमान।

परिभाव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "परिभव"।

परिभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिंता। सोच। फिक्र। २ विचार। ध्यान। साहित्य में वह वाक्य या पद जिससे कुतूहल या उत्सुकता सूचित अथवा उत्पन्न हो (अलंकार शास्त्र)।

परिभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्पष्ट कथन। संशयरहित कथन या बात। २. किसी शब्द की विशेषता और व्याप्ति निश्चित करनेवाला निरूपण। सामान्य रूपनिर्धारण करनेवाला लक्षण। तारीफ। ३ किसी वस्तु के वास्तविक स्वभाव और गुण का निर्देश या किसी शब्द का अर्थकथन। ४. ऐसे निर्देश की पदसघटना। ५ ऐसा शब्द जो किसी शास्त्र, व्यवसाय या वर्ग आदि में किसी निर्दिष्ट अर्थ या भाव का संकेत मान लिया गया हो, जैसे, गणित की परिभाषा, लोहारों की परिभाषा आदि। ६ ऐसी बोलचाल जिसमें वक्ता अपना आशय पारिभाषिक शब्दों में प्रकट करे। ७. निंदा। बदनामी। शिकायत।

परिभाषित—वि० [सं०] १. जो अच्छी तरह कहा गया हो। २. (वह शब्द) जिसकी परिभाषा की गई हो।

परिभू—संज्ञा पुं० [सं०] (यह शब्द ईश्वर का विशेषण है।) १ व्याप्त रहनेवाला। घेरे रहनेवाला। अपने में लिए रहनेवाला। २ प्रभु। नियामक। ईश्वर। ३. परिचालक।

परिभूत—वि० [सं०] १. हारा या हराया हुआ। पराजित। २ अपमानित।

परिभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सजावट। शृंगार। २ वह शांति या संधि जो किसी प्रदेश या भूखंड का राजस्व देकर स्थापित की जाय (कामदकीय नीति)।

परिभूषित—वि० [सं०] सजाया हुआ।

परिभ्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ घूमना। चक्कर खाना। २ परिधि। घेरा। ३. टहलना। ४ पर्यटन। ५ भटकना।

परिभ्रष्ट—वि० [सं०] १ गिरा हुआ। पतित। च्युत। २ भागा हुआ। पलायित।

परिमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] चक्कर। घेरा।

परिमल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिमलित] १ सुवास। उत्तम गंध। खुशबू। २ मलना। उबटना। ३ मैथुन। सभोग। ४ पंडितों की सभा या गोष्ठी।

परिमाण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिमित, परिमेय] १ वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। नाप। तौल। मात्रा। २ वैशेषिक के अनुसार द्रव्यों के संख्यादि पाँच गुणों में से एक।

परिमार्जक—संज्ञा पुं० [सं०] धोने या माँजनेवाला। परिशोधक। परिष्कारक।

परिमार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिमार्जित, परिमृज्य, परिमृष्ट] १ धोने या माँजने का कार्य। २ परिशोधन। परिष्करण।

परिमार्जित—वि० [सं०] १. धोया या माँजा हुआ। २ साफ किया हुआ।

परिमित—वि० [सं०] १ जिसकी नाप-तौल की गई हो या मालूम हो। सीमा, सख्या आदि से बद्ध। नपातुला। २. न अधिक न कम। उचित परिमाण में। ३. कम। थोड़ा।

परिमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाप, तौल आदि। २ सीमा। मर्यादा। उ०—कोपे सोच न पोचकर, करिय निहोरन काज। तुलसी परिमिति प्रीति की, रीति राम के राज॥ —दोहा०। इज्जत। संमान। उ०—परिमित गए लाज तुम ही को हसिनि ब्याहि काग लै जाइ। —सूर०।

परिमेय—वि० [सं०] १. जो नापा या तौला जा सके। २ ससीम। संकुचित। ३ जिसे नापना या तौलना हो।

परिमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २. परित्याग। छोड़ना।

परिमोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुक्त करना या होना। २ परित्याग करना।

परियंक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

परियत(पु)—अव्य० दे० "पर्यंत"।

परिया—संज्ञा पुं० [तामिल परैयान] दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति।

परिरंभ, परिरंभण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिरभ्य, परिरंभी] गले या छाती से लगाकर मिलना। आलिंगन।

परिरभना—क्रि० स० [सं० परिरंभ से हिं० ना० धा०] आलिंगन करना। गले लगाना। उ०—तुव तन परिमल परसि जव गवनत धीर समीर। ताकहुँ बहु सनमान करि परिरभत बलबीर।—नददास०।

परिलेख—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखाएँ हों। ढाँचा। खाका। २ चित्र। तसवीर। ३. कूँची या कलम जिससे रेखा या चित्र खींचा जाय। ४ उल्लेख। वर्णन।

परिलेखन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना। २. चित्र अंकित करना। ३ वर्णन या उल्लेख करना।

परिलेखना—क्रि० स [सं० परिलेखन] समझना। मानना। ख्याल करना। उ०—औ जेइ समुद प्रेम कर देखा। तेइ यह समुद बुंद परिलेखा।—पदमावत।

परिवश—संज्ञा पुं० [सं०] धोखा। छल। प्रतारणा।

परिवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष। के पाँच विशेष संवत्सरों में से एक। २ एक पूरा वर्ष या साल।

परिवदन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के दोष का वर्णन। निंदा।

परिवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवर्जनीय] १ त्याग। छोड़ना। २. दूर रहना। वचना। अलग रहना।

परिवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ फेरा। घुमाव। चक्कर। २ बदला। विनिमय। ३. जो बदले में लिया या दिया जाय। अदल बदल। ४ किसी काल या युग का अंत। ५ (ग्रंथ का) परिच्छेद। अध्याय। ६. स्वरसाधन की एक प्रणाली (संगीत)।

परिवर्तक—वि० [सं०] १. घूमने, फिरने या चक्कर खानेवाला। २ घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। उलटने पलटनेवाला। ३ बदलनेवाला। विनिमयकर्ता। ४. जो बदला जा सके।

परिवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १ घुमाव। फेरा। चक्कर। आवर्तन। २ दो वस्तुओं का परस्पर अदल बदल। विनिमय। तबादला। हेर फेर। ३. जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय। ४ एक रूप छोड़कर दूसरा रूप धारण करना। ५ रूपांतर। तब्दीली। दशांतर। ६ किसी काल या युग की समाप्ति।

परिवर्तित—वि० [सं०] १ बदला हुआ। रूपांतरित। २ जो बदले में मिला हो।

परिवर्ती—वि० [सं० परिवर्तिनी] १ परिवर्तनशील। बार बार बदलनेवाला। २ बदला करनेवाला। ३ जो बराबर घूमे।

परिवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवर्धित] संख्या, परिमाण, विस्तार, गुण आदि में किसी वस्तु की खूब वृद्धि करना या होना। परिवृद्धि। बढ़ती।

परिवर्द्धित—वि० [सं०] बढ़ा या बढ़ाया हुआ।

परिवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ सात पवनों में से छठा पवन जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वह प्रात काल पवन के ऊपर रहता है और आकाशगंगा को बहाता तथा शुक्रतारे को घुमाता है। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

परिवा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ] किसी पक्ष की पहली तिथि। अमावास्या या पूर्णिमा के बाद की तिथि। पड़िवा। उ०—परिवा प्रथम प्रेम बिनु राम मिलन अति दूरि। जद्यपि निकट हृदय निज रहे सकल भरि पूरि।—विनय०।

परिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. निंदा। अपवाद। बुराई। २. झूठी शिकायत। (मनुस्मृति) ३ वीणा या सितार बजाने का लोहे के तारों का छल्ला। मिजराव।

परिवादी—वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

परिवार—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही कुल में उत्पन्न मनुष्यों का समुदाय। कुटुंब। कुनबा। खानदान। कुल। २ किसी व्यक्ति को घेरे हुए चलनेवाले लोग। अनुगामियों का वर्ग। ३. स्वजनों या आत्मीयों का समुदाय। परिजन वर्ग। ४ किसी पर आश्रित व्यक्तियों का समूह। ५ एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह। उ०—अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू॥—मानस। ६ तलवार की खोली। म्यान। ७ ढकनेवाली चीज। आवरण। ढकना।

परिवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहरना। टिकना। २. घर। मकान। ३. सुगंध।

परिवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँध, मेंड़ या दीवार के ऊपर से पानी का बहाव। २. फालतू पानी निकलने का मार्ग।

परिविद्ध—वि० [सं०] १ अच्छी तरह घुसा या घुसाया हुआ। २ सब ओर या सब प्रकार से बिंधा हुआ।

परिविष्ट—वि० [सं०] १ घेरा हुआ। २ परोसा हुआ (भोजन)।

परिवीत—वि० [सं०] १. घिरा हुआ। २ ढका या छिपाया हुआ।

परिवृत—वि० [सं०] ढका, छिपाया या घिरा हुआ। वेष्टित। आवृत।

परिवृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु। वेष्टन।

परिवृत्त—वि० [सं०] १ घुमाया हुआ। उलटा पलटा हुआ। २ घेरा हुआ। वेष्टित। ३ समाप्त।

परिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घुमाव। चक्कर। गरदिश। २ घेरा। वेष्टन। ३ विनिमय। बदला। ४ समाप्ति। अंत। ५ ऐसा शब्दपरिवर्तन जिसमें अर्थ में कोई अंतर न आने पावे, जैसे—'कमललोचन' के 'कमल' अथवा 'लोचन' को पद्म या नयन से बदलना (व्याकरण)।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् लेन-देन या अदलबदल का कथन होता है। उ०—(१) मन मानिक दीन्हों तुम्हें लीन्हीं बिरह बलाय। (२) तीनि मूठी भरि नाज देकर अनाज आपु लीन्हीं जदुपति जू सों राज तीनों लोक को।

परिवृद्ध—वि० [सं०] खूब पुष्ट या बढ़ा हुआ। परिवर्धित।

परिवृद्धि—संज्ञा स्त्री० दे० "परिवर्द्धन"।

परिवेद—संज्ञा पुं० [सं०] पूरा ज्ञान। सम्यक् ज्ञान।

परिवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूरा ज्ञान। सम्यक् ज्ञान। २ विचरण। ३. लाभ। ४ विद्यमानता। ५ बहस। ६. भारी दुःख या कष्ट। ७ बड़े भाई के पहले छोटे भाई का ब्याह होना।

परिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] घेरा।

परिवेष, परिवेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य] १ (खाना) परसना। परोसना। २. घेरा। परिधि। वेष्टन। ३ सूर्य या चंद्र आदि के चारों ओर का मंडल। ४ परकोटा। कोट। शहरपनाह।

परिवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टित] १ चारों ओर से घेरना या वेष्टित करना। २ आच्छादन। आवरण। ३ परिधि। घेरा। दायरा।

परिव्रज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इधर उधर भ्रमण। २ तपस्या। ३ भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।

परिव्राज, परिव्राजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संयासी जो सदा भ्रमण करता रहे। २ संन्यासी। यती। परमहंस।

परिव्राट्—संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।

परिशिष्ट—वि० [सं०] बचा हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जो यथास्थान न दिया जा सका हो और जिसके बिना वह अपूर्ण रह जाता हो। २ किसी पुस्तक के अंत में जोड़ा हुआ वह अंश जिसमें ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसे समझने में सहायता मिले अथवा उसकी उपयोगिता या महत्व बढ़े। पूरक अंश। जमीमा।

परिशीलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशीलित] १ विषय को खूब सोचते और

समझते हुए पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन। २ स्पर्श।

परिशेष—वि० [सं०] बचा हुआ। अवशिष्ट।
संज्ञा पुं० १ जो कुछ बच रहा हो। २ परिशिष्ट। ३ समाप्ति। अंत।

परिशोध, परिशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १ पूरी सफाई। पूर्ण शुद्धि। २ ऋण या कर्ज की बेबाकी। चुकता।

परिश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ उद्यम। आयास। २ श्रम। मेहनत। मशक्कत। ३ थकावट। श्रांति। माँदगी।

परिश्रमी—वि० [सं० परिश्रमिन्] जो बहुत श्रम करे। उद्यमी। मेहनती।

परिश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ आश्रय। पनाह की जगह। २ सभा। परिषद्।

परिश्रांत—वि० [सं०] थका हुआ।

परिश्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] थकावट। क्लांति। माँदगी।

परिश्रुत—वि० [सं०] विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर।

परिषत्—संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्"।

परिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की वह सभा जिसे राजा समय समय पर राजनीति, धर्मशास्त्र आदि किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिये बुलाता था और जिसका निर्णय सर्वमान्य होता था। २ सभा। मजलिस। ३ समूह। समाज। भीड़।

परिषद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सवारी या जलूस में चलनेवाले वे अनुचर जो स्वामी को घेरकर चलते हैं। पारिषद। २ सदस्य। सभासद। ३ मुसाहब। दरबारी। ४ दे० "परिषद्"।

परिष्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ संस्कार। शुद्धि। सफाई। २ स्वच्छता। निर्मलता। ३ गहना। जेवर। ४ शोभा। ५ सजावट सिंगार।

परिष्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध करना। शोधन। २ माँजना धोना। ३ सँवारना। सजाना।

परिष्कृत—वि० [सं०] १ साफ या शुद्ध किया हुआ। २ माँजा या धोया हुआ। हुआ। ३ सँवारा या सजाया हुआ।

परिसंख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गणना। गिनती। २. एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के सदृश दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से काटने के अभिप्राय से कही जाय। यह दो प्रकार का होता है—प्रश्नपूर्वक और बिना प्रश्न का। उ०—(१) सेव्य कहा? तट सुरसरित, कहा ध्येय? हरिपाद। करन उचित कह धर्म नित, चित तजि सकल विषाद॥ यहाँ प्रश्नों के उत्तर से स्त्री आदि सेव्य नहीं यह व्यंग्य से सूचित है। (२) इतनोई स्वारथ बड़ो लहि नरतनु जग माहिं। भक्ति अनन्य गोविंदपद लखहि चराचर ताहि।

परिसर—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी स्थान के आसपास की जमीन। २. किसी घर के निकट का खुला मैदान। ३ पड़ोस। ४ स्थिति। ५ मृत्यु। ६ नस।
वि० लगा हुआ। मिला हुआ। जुटा या सटा हुआ। बगल का।

परिसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिक्रिया। परिक्रमण। घेरा। २ घूमना फिरना। ३ किसी की खोज में जाना। ४ साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक में किसी का किसी की खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना। ५ सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठों में से एक। ६ सर्पों की एक जाति।

परिसेवना, परिसेवा—संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।

परिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हों। २ वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों (विशेषत स्त्रियों) का जमघट हो।

परिस्पंद—संज्ञा पुं० [सं०] कंपन। स्पंदन।

परिस्पर्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन, बल, विद्या, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा। प्रतिस्पर्धा। प्रतियोगिता। लागडाट।

परिस्फुट—वि० [सं०] १ बिलकुल प्रकट या खुला हुआ। २ व्यक्त। प्रकाशित। प्रकट। ३ खूब खिला हुआ। पूर्ण विकसित।

परिस्यंद—संज्ञा पुं० [सं०] झरना। क्षरण, जैसे, हाथी के मस्तक से मद का परिस्यंद।

परिहँसⓟ—संज्ञा पुं० [सं० परिहास?] ईर्ष्या। डाह। जलन। उ०—(१) परिहँस पियर भए तेहि बसा। (२) परिहँस मरसि कि कौनिउ लाजा। आपन जीउ देसि केहि काजा॥—पदमावत।

परिहत—वि० [सं०] १. मृत। मरा या मारा हुआ। २. हल की मुठिया या हत्था।

परिहरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिहरणीय, परिहर्तव्य, परिहृत] १. जबरदस्ती ले लेना। छीन लेना। २ परित्याग। छोड़ना। तजना। ३ दोष, अनिष्टादि का उपचार या उपाय करना। निवारण। निराकरण।

परिहरनाⓟ—क्रि० स० [सं० परिहरण] त्यागना। छोड़ना। तज देना। उ०—बिछुरत दीन दयाल, प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ।—मानस।

परिहसⓟ—संज्ञा पुं० [सं० परिहास] १ परिहास। हँसी। दिल्लगी।
संज्ञा पुं० रंज। खेद। दुःख।

परिहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षति। कमी। घटती।

परिहार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिहारक] १ दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण। २ दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। ३ परित्याग। तजने या त्यागने का कार्य। ४ पशुओं के चरने के लिये परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरहा। ५ लड़ाई में जीता हुआ धनादि। ६. कर या लगान की माफी। छूट। ७ खंडन। तरदीद। ८ नाटक में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना (साहित्यदर्पण)। ९ तिरस्कार। १० उपेक्षा।
संज्ञा पुं० [सं०] राजपूतों का एक वंश जो अग्निकुल के अंतर्गत माना जाता है। इस वंश के राजपूत आजकल अधिकतर बुंदेलखंड, अवध आदि प्रदेशों में पाए जाते हैं।

परिहारनाⓟ—क्रि० स० [सं० प्रहार] प्रहार करना। चलाना (शस्त्र)।

परिहारक—वि० [सं०] परिहार करनेवाला। निवारक।

परिहारी—संज्ञा पुं० [सं० परिहारिन्] निवारण, त्याग, दोषक्षालन, हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य—वि० [सं०] १ जिसका परिहार किया जा सके। जिससे बचा जा सके। जो दूर किया जा सके। २ जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो।

परिहास—संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसी। दिल्लगी। मजाक। २ क्रीड़ा। खेल।

परिहित—वि० [सं०] १. चारों ओर से छिपाया हुआ। ढँका हुआ। २. पहना

हुआ। (वस्त्र)। ऊपर डाला हुआ (कपड़ा)।

परिहीण—वि० [सं०] १ अत्यंत हीन। दीनहीन। २ त्यागा हुआ। फेंका, ढकेला या निकाला हुआ।

परिहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाश। क्षय। ध्वंस।

परी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ। २ परी सी सुंदर स्त्री। परम सुंदरी। अत्यंत रूपवती।

परीक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० परीक्षिका] परीक्षा करने या लेनेवाला। इम्तहान करने या लेनेवाला। परखने या जाँचनेवाला।

परीक्षण—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षा"।

परीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जानें जायँ। इम्तहान। २ गुण, दोष आदि जानने के लिये अच्छी तरह से देखने भालने का कार्य। समालोचना। समीक्षा। ३ अनुभवार्थ प्रयोग। ४ निरीक्षण। जाँच पड़ताल। ५ वह विधान जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का निश्चय करते थे।

परीक्षित—वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।

संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडुकुल के एक प्रसिद्ध राजा। इन्हीं के राज्यकाल में द्वापर का अंत और कलियुग का आरंभ होना माना जाता है।

परीक्ष्य—वि० [सं०] परीक्षा करने या लेने योग्य।

परीखनाⓅ—क्रि० स० दे० "परखना"।

परीच्छित—क्रि० वि० [सं० परीक्षित] अवश्य ही। निश्चित रूप से। उ०—मारग मारि, महीसुर मारि, कुमारग कोटिक कै धन लीयो। सकरकोप सों पाप को दाम परीच्छित जाहिगो जारिकै हीयो।—कविता०।

परीछतⓅ—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परीछा—संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परीछितⓅ—क्रि० वि० [सं० परीक्षित] दे० "परीच्छित।"

परीजाद—वि० [फा०] अत्यंत सुंदर। अत्यंत रूपवान्।

परीतⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेत। उ०—कीन्हेसि राकस भूत परीता। कीन्हेसि भोकस देव दईता।—पद्मावत।

परीशान—वि० दे० "परेशान"।

परीषह—संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्रों के अनुसार त्याग या सहन। ये २२ प्रकार के कहे गए हैं।

परुखⓅ—वि० दे० "परुष"।

परुखाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० परुख+आई (प्रत्य०)] परुषता। कठोरता।

परुष—वि० [सं०] [स्त्री० परुषा] १ कठोर। कड़ा। रूखा। कर्कश। सख्त। २ बुरा लगनेवाला (शब्द, वचन, आदि)। ३. निष्ठुर। निर्दय। बेरहम।

परुषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कठोरता। कड़ाई। २ (वचन या शब्द की) कर्कशता। ३ निर्दयता।

परुषत्व—संज्ञा पुं० [सं०] परुषता।

परुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य में वह वृत्ति, रीति या शब्दयोजना की प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्त, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आए हों। इस वृत्ति में वीर, रौद्र और भयानक रसों की कविता करने से रस का अच्छा परिपाक होता है। उ०—(१) सुभट ठट्ट धन घट्टसम मर्दहिं रच्छन तुच्छ। (२) मुंड कटत, कहुँ रुंड नटत, कहुँ झुंड पटत घन। २ रावी नदी।

परूष, परूषक—संज्ञा पुं० [सं०] फालसा।

परे—अव्य० [सं० पर] १. उस ओर। उधर। २ बाहर। अलग। ३ ऊपर। बढ़कर। ४ बाद। पीछे।

मुहा०—परे बैठाना† = मात करना। बाजी लेना। तुच्छ या छोटा साबित करना।

परेई—संज्ञा स्त्री० [हिं० परेवा] १ पंडुकी। फाखता। २. मादा कबूतर।

परेखना—क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] १ परखना। जाँचना। उ०—जानत न जोग हिय हानि मानौं, जानकीस। काहे को परेखो पातकी प्रपंची पोचु हौं।—कविता०। २ आसरा देखना। प्रतीक्षा करना।

परेखाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० परीक्षा] १ परीक्षा। जाँच। २. विश्वास। प्रतीति। उ०—समुझि सो प्रीति की रीति स्याम की सोइ बावरि जो परेखो उर आने।—श्रीकृष्ण-गीतावली। ३. पछतावा। अफसोस। खेद।

परेग—संज्ञा स्त्री० [अं० पेग] छोटा काँटा। कील।

परेड—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ वह मैदान जहाँ सैनिकों को युद्ध की शिक्षा दी जाती है। २. सैनिक शिक्षा। कवायद। ३ प्रदर्शन।

परेत—संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।

परेता—संज्ञा पुं० [सं० परित] १. जुलाहों का एक औजार जिसपर वे सूत लपेटते हैं। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन।

परेरा†—संज्ञा पुं० [सं० पर = दूर, ऊँचा + हिं० एर (प्रत्य०)] आकाश। आसमान।

परेवा—संज्ञा पुं० [सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १ पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फाखता। २ कबूतर। उ०—हरिल भई पथ मैं सेवा। अब तोहि पठवौं कौन परेवा।—पद्मावत। ३ तेज उड़नेवाला पक्षी। ४ तेज चलनेवाला पत्रवाहक। चिट्ठीरसाँ। हरकारा।

परेश—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा।

परेशान—वि० [फा०] व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न। तंग। आजिज।

परेशानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] व्याकुलता। उद्विग्नता। व्यग्रता। आजिजी।

परेस—संज्ञा पुं० [सं० परेश] ईश्वर। परमात्मा। उ०—राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥—मानस।

परोंⓅ†—क्रि० वि० दे० "परसों"।

परोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुपस्थिति। अभाव। गैरहाजिरी। २ परम ज्ञानी।

वि० [सं०] १ जो देख न पड़े। अप्रत्यक्ष। अलक्षित। अनुपस्थित। २. गुप्त। छिपा हुआ।

परोजन—संज्ञा पुं० दे० "प्रयोजन"।

परोना—क्रि० स० दे० "पिरोना"।

परोपकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह काम जिससे दूसरों का भला हो। दूसरे के हित का काम।

परोपकारी—संज्ञा पुं० [सं० परोपकारिन्] दूसरों की भलाई करनेवाला।

परोरना†—क्रि० स० [?] मंत्र पढ़कर फूँकना। अभिमंत्रित करना; जैसे—पानी परोरकर पिलाने से शीघ्र ही गर्भमोचन होता है।

परोरा—संज्ञा पुं० [सं० पटोल] दे० "परवल"।

परोल—संज्ञा पुं० [अं० पेरोल] १ सजा की मीयाद के पूर्व विशेष शर्तों पर कैदी को छोड़ना। २ सैनिकों का संकेत का शब्द जिसके बोलने से पहरे के सिपाही बोलनेवाले को आने या जाने से नहीं रोकते (सेना)।

मुहा०—परोल मिलाना = भेदिया बनाना। अपनी तरफ मिलाना।

परोस—संज्ञा पुं० [प्रतिवेश या प्रतिवास, प्रा० पडिवेस या पडिवास] दे० "पड़ोस"।

परोसना†—क्रि० स० दे० "परसना"।

परोसा†—संज्ञा पुं० [हिं० परोसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो थाल या पत्तल पर लगाकर कहीं भेजा जाता है।

परोसी—संज्ञा पुं० दे० "पड़ोसी"।

परोसैया—संज्ञा पुं० [हिं०√परोस+ऐया (प्रत्य०)] वह जो भोजन परसता हो।

परोहन—संज्ञा पुं० [सं० प्ररोहण] वह जिस-पर कोई सवार हो, या कोई चीज लादी जाय, जैसे—घोड़ा, बैल, रथ, गाड़ी आदि।

पर्कटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाकर वृक्ष।

पर्जंक(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

पर्जन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. बादल। मेघ। २ विष्णु। ३. इंद्र।

पर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्ता। २ पंख। ३ पान। ४. पलाश वृक्ष।

पर्णकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवल पत्तों की बनी हुई कुटी। पर्णशाला। झोपड़ी।

पर्णशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "पर्णकुटी"।

पर्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्ते बेचनेवाला।

पर्णी—संज्ञा पुं० [सं० पर्णिन्] १ वृक्ष। पेड़। २ तेजपत्ता। ३ पिठवन। ४ शाल-पर्णी। सीसम।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ।

पर्त—संज्ञा स्त्री० दे० "परत"।

पर्दा—संज्ञा पुं० दे० "परदा"।

पर्पट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पित्तपापड़ा। २ पापड़।

पर्पटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौराष्ट्र देश की मिट्टी। गोपीचंदन। २ पानड़ी। ३ पपड़ी। ४ स्वर्णपर्पटी नामक औषध।

पर्पटी रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे और गंधक को भँगरैया के रस में खरल करके ताँबे और लोहे की भस्म मिलाकर बनाया जाता है।

पर्यंक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलँग। २ योग का एक आसन। ३. वीरासन का एक भेद।

पर्यंत—अव्य० [सं०] तक। लौं।

संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतिम सीमा। २ समीप। पास। ३ पार्श्व। बगल।

पर्यटन—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रमण। घूमना फिरना।

पर्यवसान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पर्यवसित] १ अंत। समाप्ति। २ अंतर्भाव शामिल हो जाना। ३ ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पर्यवेक्षित] अच्छी तरह देखना। निरीक्षण।

पर्यसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पर्यस्त] १ दूर करना। हटाना। २ फेंकना। ३. नष्ट करना।

पर्यस्तापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें वस्तु का गुण गोपन करके उस गुण का किसी दूसरे में आरोपित किया जाना वर्णन किया जाय, जैसे, नहीं शक्र सुरपति अहै, सुरपति नंदकुमार। रत्नाकर सागर न है, मथुरा नगर बजार॥

पर्याकुल—वि० [सं०] अत्यधिक व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।

पर्याप्त—वि० [सं०] १ पूरा। काफी। यथेष्ट। २ प्राप्त। मिला हुआ। ३ समर्थ। ४ परिमित।

संज्ञा पुं० १. तृप्ति। संतोष। २. शक्ति। सामर्थ्य। ३ योग्यता। ४ यथेष्टता। ५ प्रचुरता।

पर्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही भाषा में किसी शब्द के अर्थ में प्रयुक्त दूसरा शब्द। समानार्थवाची शब्द, जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल' है। २ क्रम। सिल-सिला। ३. वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो, जैसे, (क) हालाहल तोहि नित नए किन सिखए ये ऐन। हिय अबुधि हर गर लग्यो बसत अबै खलबैन॥ (ख) हुती देह में लरिकई, बहुरि तरुनई जोर। बिरधाई आई अबै, भजत न नंद-किसोर॥

पर्यायोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शब्दा-लंकार जिसमें कोई बात साफ न कहकर घुमाव फिराव से कही जाय, अथवा जिसमें किसी सुंदर बहाने से कार्यसाधन किए जाने का वर्णन हो, जैसे, (क) लोभ लगे हरि रूप के करी साँट जुरि जाय। हौं इन बेची बीच ही लोयन बुरी बलाय॥ यहाँ कृष्ण के प्रेम में फँसना न कहकर आँखों का कृष्ण के हाथ बेचना कहा गया है। (ख) भ्रमर कोकिल माल रसाल पै। करत मंजुल सब्द रसाल हैं। वनप्रभा वह देखन जात हौं। तुम दोऊ तब लौं इत ही रहौ॥ यहाँ नायक नायिका को एकांत में छोड़कर सखी एक सुंदर बहाने से खिसक जाती है।

पर्यालोचन—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह देख भाल। समीक्षा।

पर्यालोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी जाँच पड़ताल। समीक्षा।

पर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ पतन। २ वध। ३ नाश।

पर्यासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को घेरकर बैठना। २ किसी के चारों ओर घूमना।

पर्युपासक—संज्ञा पुं० [सं०] सेवक। दास।

पर्युपासन—संज्ञा पुं० [सं०] सेवा।

पर्व—संज्ञा पुं० [सं० पर्वन्] १ धर्म, पुण्य-कार्य अथवा उत्सव आदि करने का समय। पुण्यकाल। पुराणों में अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमा और संक्रांति के दिन पर्व कहे गए हैं। २ चातुर्मास्य। ३ प्रति-पदा से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक का समय। पक्ष। ४. दिन। ५. क्षण। ६ अवसर। मौका। ७ उत्सव। ८ वह स्थान जहाँ दो चीजें (विशेषत अंग) जुड़े हों। संधिस्थान। जोड़, जैसे, कुहनी, अथवा गन्ने की गाँठ। ९. भाग। टुकड़ा। हिस्सा। अंश। खंड, जैसे, उँगली के पोर (पर्व), महाभारत के अठारह पर्व। १०. सूर्य या चंद्रमा का ग्रहण।

पर्वकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह समय जब कोई पर्व हो। पुण्यकाल। २ चंद्रमा का क्षयकाल, जैसे, कृष्ण पक्ष की अमावास्या आदि तिथियाँ।

पर्वणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूर्णिमा। २ एक रोग जिसमें आँख की संधि में जलन और सूजन होती है (सुश्रुत)।

पर्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमीन की सतह का खूब ऊँचा उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो मिट्टी मिश्रित या शुद्ध पत्थर होता है। पहाड़। २ किसी चीज का बहुत ऊँचा ढेर। ३. पुराणानुसार एक देवर्षि जो नारद

के परम मित्र थे। ४. वृक्ष। पेड़। ५. एक प्रकार का साग। ६. दशनामी संप्रदाय के एक प्रकार के सन्यासी।

पर्वतनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

पर्वतराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा पहाड़। २ हिमालय पर्वत।

पर्वतारि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र जिन्होंने पुराणों के अनुसार पर्वतों के पंख काटे थे।

पर्वतास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकते ही शत्रु की सेना पर बड़े बड़े पत्थर बरसने लगते थे, अथवा अपनी सेना के चारो ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे जिससे शत्रु का प्रभजनास्त्र विफल हो जाता था।

पर्वती—वि० दे० "पर्वतीय"।

पर्वतीय—वि० [सं०] १. पहाड़ी। पहाड़ संबंधी। २. पहाड़ पर रहने, होने या बसनेवाला।

पर्वतेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

पर्वर—संज्ञा पुं० दे० "परवल"।

वि० दे० "परवर"।

पर्वरिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन पोषण। पालना पोसना।

पर्वसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूर्णिमा अथवा अमावास्या और प्रतिपदा के बीच का समय। २. सूर्य अथवा चंद्रमा को ग्रहण लगने का समय। ३ घुटने पर का जोड़।

पर्वाह—संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।

संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

पर्विणी—संज्ञा स्त्री० सं० "पर्व"।

पर्वेश—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार कालभेद से सूर्य या चंद्रग्रहण के समय के अधिपति देवता। बृहत्संहिता में ब्रह्मा, इंद्र, कुबेर, वरुण, अग्नि यम और चंद्रमा ये सात देवता क्रम से छ छः महीने के ग्रहण के अधिपति हुआ करते हैं। भिन्न भिन्न पर्वेश के समय ग्रहण होने का भिन्न भिन्न फल होता है।

पर्हेज—संज्ञा पुं० [फा०] १. रोग आदि के समय स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचनेवाली वस्तु का त्याग। २. बचना। अलग रहना। दूर रहना।

पर्लंका†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पर+लंका] लंका से भी दूर का देश। बहुत दूर का स्थान। उ०—(१) चारिहु पवन झकोरै आगी। लंका दाहि पर्लंका लागी॥—पद्मावत।

पलंग—संज्ञा पुं० [सं० पल्यंक] [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] अच्छी और बड़ी चारपाई। पर्यंक।

मुहा०—पलंग तोड़ना=(१) बिना कोई काम किए सोया या पड़ा रहना। (२) कुछ काम न करते हुए समय काटना।

पलंगपोश†—संज्ञा पुं० [हिं० पलग+फा० पोश] पलग पर बिछाने की चादर।

पलँगिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलग। खटिया।

पल—संज्ञा पुं० [सं०] १ समय का एक प्राचीन विभाग जो २।५ मिनट या २४ सेकंड के बराबर होता है। घड़ी या दंड का ६०वाँ भाग। २ चार कर्ष की एक तौल। ३ मांस। उ०—मोह-वन कलिमल-पल-पीन जिय, साधु गाय विप्रन के भय सो नेवारिहैं।—कविता०। ४ धान का पयाल। उ०—सुधा, सुनाज, कुनाज, पल, आम, असन सम जानि। सुप्रभु प्रजाहित लेहि कर सामादिक अनुमानि।—दोहा०। ५. धोखेबाजी। प्रतारणा। ६ चाल। गति। ७ तराजू। तुला। ८. मूर्ख।

संज्ञा पुं० [सं० पलक] १. पलक। दृगंचल। उ०—राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछाहीं। यातें सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं।—कविता०।

मुहा०—पल मारते या पल मारने में=बहुत ही जल्दी। आँख झपकते। तुरत।

२ समय का अत्यत छोटा विभाग। क्षण। लहजा। उ०—पल पल के उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके। भिदो न कुलिसहुँ तें कठोर चित कबहुँ प्रेम सियपीके।—विनय०।

मुहा०—पल के पल में=बहुत ही अल्पकाल में। क्षण भर में।

पलक—संज्ञा स्त्री० [सं० पल+क] १. क्षण। पल। लहमा। उ०—पुर नर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती।—मानस। २ आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। पपोटा तथा बरौनी।

मुहा०—पलक झपकते=अत्यत अल्प समय में। बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिये पलक बिछाना=किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक भाँजना=पलक गिराना या हिलाना। पलक मारना=(१) आँखों से संकेत या इशारा करना। (२) पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना=(१) आँखें मुँदना। पलक झपकना। (२) नींद आना। झपकी लगना। पलक से पलक न लगना=(१) टकटकी बँधी रहना। (२) नींद न आना।

पलकदरिया†—वि० [हिं० पलक+फा० दरिया] बहुत बड़ा दानी। अति उदार।

पलकनेवाज†—वि० [हिं० पलक+फा० नवाज] छन में निहाल करनेवाला। बड़ा दानी। पलकदरिया।

पलकाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० पल्यक] [स्त्री० पलकी] पलंग। चारपाई। उ०—अजिर प्रभा तेहि श्याम को पलका पौढ़ायो। आप चली गृह काज को तहँ नद बुलायो।—सूर०।

पलचर—संज्ञा पुं० [सं० पल+चर] एक उपदेवता जिसके बारे में राजपूतों की कथाओं में प्रसिद्ध है कि यह युद्ध में मरे हुए लोगों का रक्त पीकर आनद से नाचता कूदता है।

पलटन—संज्ञा स्त्री० [अँ० प्लैटून] १. अँगरेजी पैदल सेना की एक छोटी टुकड़ी या टोली। २ दल। समुदाय। झुंड।

पलटना—क्रि० अ० [सं० प्रलोठन] १. उलट जाना। २ अवस्था या दशा बदलना। परिवर्त्तन होना। कायापलट हो जाना। किसी दशा की ठीक उलटी या विरुद्ध दशा उपस्थित होना। ३. अच्छी से बुरी या बुरी से अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। ४. अच्छी दशा प्राप्त होना। ५ मुड़ना। पीछे फिरना। ६ लौटना। वापस होना।

क्रि० स० १ किसी की स्थिति को उलटना। औंधाना। २. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। काया पलट देना। उलटे को सीधा या सीधे को उलटा करना। ३. फेरना। बार बार उलटना। उ०—उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी।—मानस ४. बदलना। एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। उ०—मृगनैनी दृग की फरक उर उछाह तन-फूल। बिनहीं प्रियआगम उमगि पलटन लगी दुकूल।—बिहारी०। ५. बदले में लेना। बदला करना। उ०—नर तनु पाइ विषय मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं।—मानस। ६ एक बात से मुकरकर दूसरी कहना। Ⓟ७ लौटाना। फेरना। वापस करना। उ०—फिरि फिरि

नृपति चलावत बात। कहो सुमत कहो तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे बन जात।—सूर०। ८. एक पात्र से दूसरे में करना।

पलटनिया—संज्ञा पुं० [हिं० पलटन+इया (प्रत्य०)] पलटन में काम करनेवाला। सिपाही। सैनिक।

पलटा—संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] १. घूमने, उलटने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।

मुहा०—पलटा खाना = दशा या स्थिति का उलट जाना।

२. बदला। प्रतिफल। ३. गाने में जल्दी जल्दी थोड़े से स्वरों पर चक्कर लगाना या ऊँचे स्वर तक पहुँच कर सफाई से फिर नीचे स्वरों की तरफ मुड़ना। ४ नाव चलानेवाले के बैठने की पटरी। ५ कुश्ती का एक पेंच। ६ धातु की गोलाकार खुरचनी जिससे बटलोही से भात निकाला जाता है और कड़ाही में पूरी, तरकारी आदि पलटी जाती है।

पलटाना—क्रि० स० [हिं० पलटना का स० रूप] १. लौटाना। फेरना। वापस करना २ बदलना।

पलटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलटना] १. पलटे या पलटे जाने की क्रिया या भाव। २. बदली। तबादला।

पलटे†—क्रि० वि० [हिं० पलटा] बदले में। एवज में। प्रतिफल स्वरूप।

पलड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० पटल] १ तराजू का पल्ला। तुलापट। २ पक्ष, जैसे, उसका पलड़ा भारी है।

पलथी†—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्य्यस्त, प्रा० पल्लत्थ] वह आसन जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबा कर बैठते हैं। स्वस्तिकासन। पालथी।

पलना—क्रि० अ० [सं० पालन] ['पालना' का अ० रूप] १. परवरिश पाना। पाला पोसा जाना। २ खा-पीकर हृष्टपुष्ट होना। तैयार होना।

Ⓟ†संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

पलनाना†Ⓟ—क्रि० स० [हिं० पल्ना = जीन+ना (प्रत्य०)] घोड़े पर जीन कसकर उसे चलने के लिये तैयार करना। उ०—गहर जनि लावहु गोकुल जाइ। अपनोई रथ तुरत मँगायो, दियो तुरत पलनाइ॥ —सूर०।

पलवाⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] १ अँजुली। चुल्लू। २ ईख के ऊपर का नीरस भाग जिसमें पास पास गाँठें होती हैं। कौंचा। ३ ईख के गाड़े जो बोने के लिये पाल में लगाए जाते हैं। ४ हिसार (पंजाब) के आसपास उगनेवाली एक घास जिसे भैंस बड़े चाव से खाती है।

पलवाना—क्रि० स० [हिं० पालना का प्रे० रूप] किसी से पालन कराना।

पलवैया—संज्ञा पुं० [हिं० √पाल+वैया (प्रत्य०)] पालन करनेवाला। पालक।

पलस्तर—संज्ञा पुं० [अँ० प्लास्टर] दीवार आदि पर किया जानेवाला मिट्टी, सिमेंट, चूने आदि के गारे का लेप। लेट।

मुहा०—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना = बहुत परेशान होना। नसें ढीली हो जाना। पलस्तर करना = (१) बराबर करना। चिकना करना। पोतना। (२) नष्ट करना। बिगाड़ना। ध्वस्त करना। (३) अच्छी तरह मारना या पीटना। पलस्तर ढीला करना = तंग करना। बहुत परेशान करना।

पलहनाⓅ—क्रि० अ० [सं० पल्लव] पल्लवित होना। पल्लव फूटना। पनपना। लहलहाना। उ०—प्रीति बेल ऐसे तन डाढ़ा। पलहत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा॥ —पदमावत।

पलहाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] कोमल पत्ते। कोंपल। उ०—पियर पात दुख झरे निपाते। सुख पलहा उपने होय राते॥ —पदमावत।

पलांडु—संज्ञा पुं० [सं०] प्याज।

पला—संज्ञा पुं० [सं० पल] पल। निमिष।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० पटल] १. तराजू का पलड़ा। पल्ला। २ पल्ला। आँचल। ३ पार्श्व। किनारा।

पलाद—संज्ञा पुं० [सं०] मांस खानेवाला। राक्षस।

पलान—संज्ञा पुं० [सं० पल्याण] वह गद्दी या चारजामा जो जानवरों की पीठ पर माल लादने या चढ़ने के लिये कसा जाता है। उ०—बर्षा गयो अगस्त्य की डीठी। परे पलान तुरंगन पीठी॥ —पदमावत।

पलाननाⓅ—क्रि० स० [हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १ घोड़े आदि पर पलान कसना। २ चढ़ाई की तैयारी करना। उ०—अब मोहिं कछू समुझि न परै भई काहे को काल पलानत हैं। —हनुमन्नाटक।

पलानाⓅ†—क्रि० अ० [सं० पलायन] भागना। पलायन करना।

क्रि० स० पलायन कराना। भगाना। उ०—जरासंध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो। ताको पल कछू नहिं मान्यो मथुरा में चलि आयो। —सूर०।

पलानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलान] १. छप्पर। २. दे० "पलायन"। ३. एक अलंकार जिसे स्त्रियाँ पैर में पंजे के ऊपर पहनती हैं।

पलान्न—संज्ञा पुं० [सं०] चावल और मांस के मेल से बना हुआ भोजन। पुलाव।

पलायक—संज्ञा पुं० [सं०] भागनेवाला। भग्गू।

पलायन—संज्ञा पुं० [सं०] भागने की क्रिया या भाव। भागना।

पलायमान—वि० [सं०] भागता हुआ।

पलायित—वि० [सं०] भागा हुआ।

पलाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलास। ढाक। टेसू। २ पत्र। पत्ता। ३ राक्षस। ४ कचूर। ५ मगध प्रदेश।

वि० १. मांसाहारी। २ निर्दय। ३. हरा।

पलाशी—वि० [सं० पलाशिन्] १ मांसाहारी। २ पत्रविशिष्ट। पत्रयुक्त।

संज्ञा पुं० राक्षस।

पलास—संज्ञा पुं० [सं० पलाश] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष जो तीन रूपों में पाया जाता है—वृक्ष रूप में, क्षुप रूप में और लता रूप में। इसके पत्ते सीकों में निकलते हैं और और एक में तीन तीन होते हैं। इसका फूल छोटा, अर्धचंद्राकार और गहरे लाल रंग का होता है, इसके फूल को प्राय टेसू कहते हैं। किंशुक। ढाक। टेसू। केसू। २ गीध की जाति का एक मांसाहारी। पक्षी।

संज्ञा पुं० [अँ० प्लायर्स] एक प्रकार की सँड़सी। पिलास।

संज्ञा पुं० [अँ० स्लाइस] दो भागों को जोड़नेवाली गाँठ।

पलिकाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पलका"।

पलिक्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहली बार गाभिन हुई गाय।

वि० पके बालोंवाली स्त्री। बुड्ढी स्त्री (वैदिक)।

पलित—वि० [सं०] [स्त्री० पलिता] १ वृद्ध। बुड्ढा। २ पका हुआ या सफेद (बाल)।

संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का उजला होना। बाल पकना। २. ताप। गरमी।

पली—संज्ञा स्त्री० [सं० पलिघ] तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण।

मुहा०—पली पली जोड़ना = थोड़ा थोड़ा करके संचय या संग्रह करना।

पलीता—संज्ञा पुं० [फा० फतील.] [स्त्री० अल्पा० पलीती] १ बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिसपर कोई यंत्र लिखा हो। इस बत्ती की धूनी प्रेतग्रस्त लोगों को दी जाती है। २ रेशों आदि को बटकर बनाई हुई वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। उ०—जलधि कामना बारिदास भरि तड़ित पलीता देत। गर्जन औ तर्जन मनो जो पहरक में गढ लेत॥ —सूर०। ३. कपड़े की वह बत्ती जिसे पनशाखे पर रखकर जलाते हैं।

वि० १. बहुत क्रुद्ध। आगबबूला। २ तेज दौड़ने या भागनेवाला। द्रुतगामी।

पलीद—वि० [फा०] १ अपवित्र। गंदा। २ घृणास्पद। ३. नीच। दुष्ट।

संज्ञा पुं० [हिं० पलीत] भूत। प्रेत।

पलुआ†—वि० [हिं० √पल + उआ (प्रत्य०)] पालतू। पाला हुआ।

पलुहनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० पल्लव] पल्लवित होना। हरा भरा होना। उ०—(१) मोर होत तब पलुह सरीरू। पाय घुमरहा सीतल नीरू॥ —पदमावत। (२) पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर ऋतु पाई॥ —मानस।

पलुहानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० पलुहना का स० रूप] पल्लवित करना। हरा भरा करना। उ०—जस भुइँ दहि असाढ पलुहाई। परहि बूँद औ सौंध बसाई॥ —पदमावत।

पलेड़नाⓅ†—क्रि० स० [सं० प्रेरण] ढकेलना। धक्का देना। उ०—तू अलि कहा परयो केहि पैंड़े? या आदर पर अजहूँ बैठो टरत न सूर पलेड़े। —सूर०।

पलेथन—संज्ञा पुं० [सं० परिस्तरण] १ वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय लोई पर लपेटते हैं। परथन।

मुहा०—पलेथन निकलना = (१) खूब मार पड़ना या खाना। (२) परेशान होना। तंग होना। पलेथन निकालना = (१) खूब मारना। कचूमर निकालना। (२) बुरा हाल करना।

२ किसी हानि या अपकार के पश्चात् उसी के संबंध से होनेवाला अनावश्यक व्यय, जैसे, माल तो चोरी गया ही, तहकीकात कराने में १००) और पलेथन लगा।

पलोटना—क्रि० स० [स० प्रलोठन] १. पैर दबाना। उ०—तीन लोक नारी को कहियत जो दुर्लभ बलबीर। कमला हू नित पायँ पलोटत हम तो हैं आभीर॥ —सूर०। २ दे० "पलटना"।

क्रि० अ० [हिं० पलटना] कष्ट से लोटना पोटना। तड़फड़ाना।

पलोथन—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

पलोवनाⓅ—क्रि० स० [स० पलोठन] १. पैर दबाना। पैर मलना। उ०—चरणकमल नित रमा पलोवै। चाहत नेक नैन भरि जोवै।—सूर०। २ सेवा करना। प्रसन्न करने का यत्न करना। उ०—प्रथमै चरण कमल को ध्यावै। तासु महातम मन में लावै॥ लक्ष्मी इनको सदा पलोवै। बारंबार प्रीति को जोवै॥ —सूर०।

पलोसनाⓅ—क्रि० स० [हिं० परसना] १ धोना। २ मीठी मीठी बातें करके ढंग पर लाना।

पल्टा—संज्ञा पुं० दे० "पलटा"।

पल्लव—संज्ञा पुं० [स०] १. नए निकले हुए कोमल पत्तों का समूह या गुच्छा। कोंपल। कल्ला। किसलय। २. उँगली (प्राय 'हाथ' के वाचक शब्दों के साथ समास होने पर), जैसे, करपल्लव, पाणिपल्लव। उ०—मुरली तऊ गोपालहिं भावति। सुनु री सखी जदपि नँदनदहिं नाना भाँति नचावति। आपुन पौढ़ि अधर सज्जा पर करपल्लव सों पद पलुटावति। —सूर०। उ०—हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूग फल मंगल मूला॥—मानस। ३ हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण। ४ विस्तार। ५ बल। ६ पह्लव प्रदेश। ७ इस प्रदेश का निवासी। ८. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक था। ९ आल का रंग।

पल्लवग्राही—वि० [सं०] केवल ऊपर ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला। पूरा ज्ञान न रखनेवाला। रहस्य न जाननेवाला।

पल्लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। २. किसी बात या विषय का विस्तार करना।

पल्लवनाⓅ—क्रि० अ० [सं० पल्लव + ना (प्रत्य०)] पल्लवित होना। पत्ते फेंकना। पनपना।

पल्लविम्र—वि० [सं० पल्लवित] दे० "पल्लवित"। उ०—पल्लविम्र, कुसुमिम्र, फलिम्र उपवग चूअचम्पक सोहिम्रा।

पल्लवित—वि० [सं०] [स्त्री० पल्लविता] १. जिसमें नए नए पत्ते हों। २ हरा भरा। ३ लंबा चौड़ा। ४ जिसके रोंगटे खड़े हों। उ०—कहि प्रनामु कछु कहन लिय, सिय भइ सिथिल सनेह। थकित वचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह॥ —मानस।

पल्ला—क्रि० वि० [स० पर या पार] दूर।

संज्ञा पुं० दूरी।

संज्ञा पुं० [?] १ कपड़े का छोर। आँचल। दामन।

मुहा०—पल्ला छूटना = पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना = किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना = प्राप्त होना। मिलना। किसी के पल्ले बाँधना = (१) जिम्मे किया जाना। (२) ब्याहना। (तिरस्कार)।

२ दूरी, जैसे, उनका घर यहाँ से पल्ले पर है। ३ † पास। अधिकार में, जैसे, उसके पल्ले क्या है? ४. तरफ।

संज्ञा पुं० [स० पटल] १. दुपल्ली टोपी के दो भागों में से एक। २. किवाड़। पटल। ३ पहल। ४ तीन मन का बोझ। ५. चद्दर। ६ रजाई या दुलाई के ऊपर का कपड़ा। ७ धोती का एक फर्द। ८ पेड़ के तने से चीरकर अलग किया हुआ लकड़ी का लंबा चौड़ा और मोटा टुकड़ा जिसको चीरकर खिड़कियाँ और दरवाजे आदि बनाए जाते हैं। ९ वह चद्दर या गोन जिसमें अन्न बाँधकर ले जाते हैं।

संज्ञा पुं० [स० पल] तराजू में एक ओर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।

मुहा०—पल्ला झुकना या भारी होना = पक्ष बलवान् होना।

संज्ञा पुं० [स० फल] कैंची के दो भागों में से एक भाग।

वि० दे० "परला"।

पल्ली—संज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटा गाँव। पुरवा। टोला। खेड़ा। २ कुटी। ३ छिपकली।

यौ०—पल्ली ओर = दूसरी ओर।

पल्लू†—संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला] १. आँचल। छोर। दामन। २ चौड़ी गोट। पठा।

पल्ले†(पु)—वि० १. दे० "परलय"। २ दे० "पल्ला"।

पल्लेदार—संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला+फा० दार] १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. गल्ला तौलनेवाला आदमी। बया।

पल्लेदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पल्लेदार+ई (प्रत्य०)] पल्लेदार का काम।

पल्लौ†—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] पल्लव।

संज्ञा पुं० वह चद्दर या गोन जिसमें अनाज बाँधते हैं। पल्ला।

पल्वल—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा तालाब या गड्ढा।

पवंगा†—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का छंद। उ०—दूजे दिन दरबार सुजान सुनाइ कै। देखत ही गनसूर महा सुख पाइ कै॥ खिलवति करी नवाब जनाइ वकील सौं। वसलति बूझन काज सुजान सुसील सौं॥

पवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। वायु के अधिष्ठाता देवता। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक भगण, एक तगण, एक नगण और एक सगण होता है। उ०—श्री बजरंगी, नित सिय पिय के। द्वार खड़े हैं, हरि रस पिय के॥

मुहा०—पवन का भूसा होना=उड़ जाना। कुछ न रहना। उ०—माधो जू सुनिए ब्रज ब्योहार। मेरो कह्यो पवन को भुस भयो गावत नंदकुमार। —सूर०।

२ कुम्हार का आँवाँ। ३ जल। पानी। ४ श्वास। साँस। ५ प्राणवायु।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "पावन"।

पवनअस्त्र—संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"।

पवनकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवनचक्की—संज्ञा स्त्री० [सं० पवन+हिं० चक्की] वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो। हवाचक्की।

पवनचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] ववंडर।

पवनतनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २ भीमसेन।

पवनपति—संज्ञा पुं० [सं०] वायु के अधिष्ठाता देवता। उ०—अखिल ब्रह्मांडपति, तिहु भुवनपति नीरपति, पवनपति अगम बानी। —सूर०।

पवनपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिषियों की एक क्रिया जिसके अनुसार अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य कहते है।

पवनपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवनबाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लगे।

पवनवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

पवनसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवनाश—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

पवनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

पवनाशी—संज्ञा पुं० [सं० पवनाशिन्] १ वह जो हवा पीकर रहता हो। २ साँप।

पवनास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौराणिक अस्त्र जिसके चलाने से तेज हवा चलने लगती थी।

पवनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना=प्राप्त करना] गाँवों में रहनेवाली वह छोटी जाति की गरीब प्रजा जो अपने निर्वाह के लिये ऊँची जाति के समृद्ध गाँववालों से नियमित रूप से कुछ पाती है, जैसे—नाऊ, बारी, धोबी।

संज्ञा स्त्री० दे० "पौना"।

पवमान—संज्ञा पुं० [सं०] १. पवन। वायु। हवा। २ पाहुने कृसानु पवमान लौं परोसो हनुमान सनमानि कै जेंवाए चित चाव सौं। —कविता०। उ०—(१) नीरवता सी शिला चरण से, टकराता फिरता पवमान। —कामायनी। २ गार्हपत्य अग्नि।

वि० पवित्र करनेवाला।

पवर, पवरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।

पवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] देवनागरी वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म ये पाँच अक्षर हैं।

पवाँर—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

पवाँरना†—क्रि० स० [सं० प्रवारण] फेंकना। गिराना।

पवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] १ एक पैर का जूता। २ चक्की का एक पाट।

पवाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा"।

पवाना†—क्रि० स० [हिं० पाना (भोजन करना) का सकर्मक रूप] खिलाना। भोजन कराना।

पवार—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद।

पवि—संज्ञा पुं० [सं०] १. वज्र। २ बिजली। गाज। ३. वाक्य। ४. सेहुँड़। ५ रास्ता (डिंगल)।

पविताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पवित्रता"।

पवित्तर†—वि० दे० "पवित्र"।

पवित्र—वि० [सं०] जो गंदा, मैला या खराब न हो। शुद्ध। निर्मल। साफ़।

संज्ञा पुं० [सं०] १ मेह। बारिश। वर्षा। २ कुशा। ३ ताँबा। ४ जल। ५. दूध। ६. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ७ घी। ८ शहद। ९ कुशा की बनी हुई पवित्री जिसे श्राद्धादि में उँगलियों में पहनते हैं। १० विष्णु। ११ महादेव।

पवित्रता—संज्ञा पुं० [सं०] पवित्र या शुद्ध होने का भाव। स्वच्छता। सफाई।

पवित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी। २ हल्दी। ३ पीपल। ४ रेशमी माला जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है।

पवित्रात्मा—वि० [सं० पवित्रात्मन्] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध अतःकरणवाला।

पवित्रित—वि० [सं०] शुद्ध या निर्मल किया हुआ।

पवित्री—संज्ञा स्त्री० [सं० पवित्र] कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के काम करते समय अनामिका में पहना जाता है।

पशम—संज्ञा स्त्री० [फा० पश्म] १. बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २ गुप्तांगों पर के बाल। झाँट। ३ बहुत ही तुच्छ वस्तु।

पशमीना—संज्ञा पुं० [फा०] १ पशम। २. पशम का बना हुआ कपड़ा।

पशु—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार पैरों का प्राणी जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो, जैसे—कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि। चौपाया। ३ जीव मात्र। प्राणी (शैव दर्शन), जैसे पशुपति। ४ जड़। मूर्ख। अज्ञानी। ५ देवता। ६ यज्ञ।

पशुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पशु का भाव। २. जानवरपन। जड़ता। मूर्खता और औद्धत्य।

पशुत्व—संज्ञा पुं० दे० "पशुता"।

पशुधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं का सा आचरण। मनुष्य के लिये निंद्य व्यवहार।

पशुपतास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव का शूलास्त्र।

७. पहरे में रहने की स्थिति। हिरासत। हवालात। नजरबंदी।

मुहा०—पहरे में देना या रखना = हिरासत में देना। हवालात भेजना। पहरे में होना = हिरासत में होना। नजरबंद होना।

(पु)† ८ समय। युग। जमाना।

संज्ञा पुं० [हिं० पाँव+रा, पौरा] पैर रखने का फल। आ जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव। पौर, जैसे, बहू का पहरा अच्छा नहीं है, जब से आई है एक न एक आफत लगी रहती (स्त्रियों में)।

पहराइत(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरेदार।

पहराना†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पहरावन—संज्ञा पुं० [हिं० पहराना] १ पहनावा। पोशाक। २ दे० "पहरावनी"।

पहरावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहरावन] १ वह पोशाक जो कोई व्यक्ति किसी पर प्रसन्न होकर उसको दे। २ किसी बड़े द्वारा छोटे को दिया हुआ पहनावा। खिलअत।

पहरी—संज्ञा पुं० [सं० प्रहरी] पहरेदार। चौकीदार। रक्षक। पहरा देनेवाला।

पहरुआ, पहरू†—संज्ञा पुं० दे० "पहरेदार"।

पहरेदार—संज्ञा पुं० [हिं० पहरा+दार (प्रत्य०)] पहरा देनेवाला। चौकीदार। रक्षक।

पहल—संज्ञा पुं० [फा० पहलू, मि० सं० पटल] १ किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोरों अथवा कोनों के बीच की समतल भूमि। बगल। पहलू। बाजू। तरफ। २ धुनी हुई रूई या ऊन की मोटी और कुछ कड़ी तह। जमी हुई रूई अथवा ऊन। ३ रजाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रूई जो दबने के कारण कड़ी हो जाती है। (पु) ४ तह। परत।

संज्ञा पुं० [हिं० पहला] किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ। छेड़, जैसे, इस मामले में पहल तो तुमने ही की है, उनका क्या दोष ?

पहलदार—वि० [हिं० पहल+फा० दार] जिसमें पहल हों। पहलूदार।

पहलवान—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा पहलवानी] १ कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष। कुश्तीबाज। मल्ल। २ बलवान् और डीलडौलवाला।

पहलवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।

पहलवी—संज्ञा पुं० दे० "पह्लवी"।

पहला—वि० [सं० प्रथम] [स्त्री० पहली] जो क्रम के विचार से आदि में हो। आरंभ का। प्रथम।

पहलू—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० पहलूदार] १ बगल और कमर के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं। पार्श्व। पाँजर। २ दायाँ अथवा बायाँ भाग। पार्श्व भाग। बाजू। बगल। ३ करवट। दल। दिशा। तरफ। ४ किसी वस्तु के पृष्ठदेश पर का समतल कटाव। पहल। ५. गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग। पक्ष।

पहले—अव्य० [हिं० पहला] १ आरंभ में। सर्वप्रथम। आदि में। शुरू में। २. देशक्रम में प्रथम। स्थिति में पूर्व। ३ आगे। पेश्तर। बीते समय में। पूर्व काल में।

पहले पहल—अव्य० [हिं० पहले] पहली बार। सबसे पहले। सर्वप्रथम।

पहलौठा—वि० [हिं० पहल+औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न (लड़का)।

पहलौठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहलौठा] पहले पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।

पहाँटना—क्रि० स० [?] तेज करना।

पहाऊँ—संज्ञा पुं० [सं० प्रभात] सबेरे। उ०—मैं यह सोच बिसूरि बिसूरि करौं बिनती प्रभु साँझ पहाऊँ। तीनिहूँ लोक के नाथ समथ्थ हौ मैं ही अकेलो अनाथ कहाऊँ।—रससारांश।

पहाड़—संज्ञा पुं० [सं० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १ पत्थर, चूने, मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो और पृथ्वीतल से निरंतर ऊपर उठा हुआ हो। पर्वत। गिरि।

मुहा०—पहाड़ उठाना = भारी काम सिर पर लेना। पहाड़ कटना = बड़ा भारी और कठिन काम हो जाना। पहाड़ काटना = असंभव काम कर डालना। पहाड़ टूटना या टूट पड़ना = अचानक कोई भारी आपत्ति आ पड़ना। महान् संकट उपस्थित होना। पहाड़ से टक्कर लेना = जबरदस्त से मुकाबिला करना।

२. बहुत भारी ढेर। ऊँची राशि। ३. बहुत भारी चीज। ४ वह जिसको समाप्त या शेष न कर सकें। ५. अति कठिन कार्य। दुष्कर काम।

पहाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तार] किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची या नकशा। गुणनसूची।

पहाड़ी—वि० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १ जो पहाड़ पर रहता या होता हो। २. जिसका संबंध पहाड़ से हो।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १ छोटा पहाड़। २. पहाड़ के लोगों की गाने की एक धुन।

पहार, पहारू†—संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरेदार।

पहिचान—संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहिचानि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहित, पहिती(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रहित ?] पकी हुई दाल।

पहिनना—क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहियाँ(पु)†—अव्य० दे० "पहँ"।

पहिया—संज्ञा पुं० [सं० परिधि ?] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी या कल भी चलती है। चक्का। चक्र। चक्कर।

पहिरना†—क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहिरावनी—संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।

पहिल†—वि० [सं० प्रथम] दे० "पहिला"। उ०—जनि पंचशर करो पहिल प्रताप।

पहिला—वि० [हिं० पहला] [स्त्री० पहिली] १ दे० "पहला"। २. प्रथम प्रसूता। पहले पहल ब्याई हुई।

पहिले—अव्य० दे० "पहले"।

पहीति(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "पहिती"।

पहुँच—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभूत प्रा० √पहुच] १ किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति। २ किसी स्थान तक लगातार फैलाव। ३ गुजर। पैठ। प्रवेश। रसाई। ४ पहुँचने की सूचना। रसीद। ५ किसी विषय को समझने या ग्रहण करने की शक्ति। पकड़। दौड़। ६. अभिज्ञता की सीमा। परिचय। प्रवेश। दखल।

पहुँचना—क्रि० अ० [सं० प्रभूत] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना।

मुहा०—पहुँचा हुआ = ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ। सिद्ध। २. किसी स्थान तक लगातार फैलना। ३ एक हालत से दूसरी हालत में जाना। ४ घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। ५ किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ६. समझने में समर्थ होना।

मुहा०—पहुँचनेवाला = जानकार। भेद या रहस्य जानने में समर्थ। पहुँचा हुआ = (१) जिसे सब कुछ मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला। (२) दक्ष। निपुण। उस्ताद।

७. आई अथवा भेजी हुई चीज किसी को मिलना। प्राप्त होना। मिलना। ८. अनुभव में आना। अनुभूत होना। ९ समकक्ष होना। तुल्य होना।

पहुँचा—संज्ञा पुं० [सं० प्रकोष्ठ ?] हाथ की कुहनी के नीचे का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबंध।

पहुँचाना—क्रि० स० [हिं० पहुँचना का सकर्मक रूप] १ किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर प्राप्त या प्रस्तुत कराना। घुसाना। उपस्थित कराना। ले जाना। २ किसी के साथ इसलिये जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना। ४ प्रविष्ट कराना। ५. कोई चीज लाकर या ले जाकर किसी को प्राप्त कराना। ६ अनुभव कराना। ७ समान बना देना।

पहुँची—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक आभूषण। २ युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुतनाⓊ—क्रि० अ० [सं० प्रभूत प्रा० पहूत्त] पहुँचना। उपस्थित होना। उ०—मैं अकेला ए दोइ जणाँ छेती नाहीं काइ। जे जम आगे ऊबरों तो जुरा पहूँती आइ ॥ —कबीर०।

पहुⓊ—संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

पहुड़ना—क्रि० अ० दे० "पौढ़ना"।

पहुना†—संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

पहुनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुना + ई (प्रत्य०)] १ पाहुना होने का भाव। अतिथि रूप में कहीं जाना या आना। २ अतिथिसत्कार। मेहमानदारी।

पहुपⓊ†—संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

पहुमी—संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

पहुला—संज्ञा पुं० [सं० प्रफुल्ला] कुमुदिनी।

पहेली—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़े और बहुत सोच विचार के बाद असल या ठीक वस्तु या विषय पर घटाया जा सके। बुझौवल। २. घुमाव फिराव की बात। समस्या।

मुहा०—पहेली बुझाना = अपने मतलब को घुमा फिराकर कहना। चक्करदार बात करना।

पह्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति। प्राय प्राचीन पारसी या ईरानी। २ एक प्राचीन देश जो पह्लव जाति का निवासस्थान था। वर्तमान पारस या ईरान का अधिकांश।

पह्लवी—संज्ञा स्त्री० [सं० पह्लव] अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की भाषा।

पाँ, पाँइⓊ—संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव। उ०—मैं पाँ परौं कहै जगदंबा। तुम गृह गवनहु भएउ बिलंबा ॥ —मानस।

पाँइताⓊ—संज्ञा पुं० दे० "पाँयता"।

पाँईबाग—संज्ञा पुं० [फा०] महलों के चारों ओर का छोटा बाग जिसमें राजमहल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

पाँउⓊ†—संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव। पैर।

पाँक—संज्ञा पुं० [सं० पंक] कीचड़। पंक।

पाँख†—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पंख। पर।

संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों की पँखड़ी। पुष्पदल।

पाँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँखीⓊ†—संज्ञा स्त्री० [सं० पक्षी] १ पतिंगा। २ पक्षी। चिड़िया।

पाँखुरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँगा, पाँगा नोन—संज्ञा पुं० [सं० पंक] समुद्री नोन।

पाँच—वि० [सं० पंच] जो गिनती में चार और एक हो।

यौ०—दस पाँच = कुछ लोग। उ०—बाल सखा सुनि हिय हरखाहीं। मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥ —मानस।

मुहा०—पाँचों उँगलियाँ घी में होना = सब तरह का लाभ या आराम होना। खूब बन आना। पाँचों सवारों में नाम लिखाना = औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनाना।

संज्ञा पुं० [सं० पंच] १. पाँच की संख्या या अंक। ५। २. कई एक आदमी। बहुत से लोग। उ०—मोरि बात सब बिधिहिं बनाई। प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥ —मानस। ३ जाति या समाज के मुखिया लोग। पंच। उ०—(१) बिनय-पत्रिका दीन की, बापु ! आपु ही बाँचो। हिए हेरि तुलसी लिखी सो सुभाय सही करि बहुरि पूछिए पाँचो ॥ —विनय०। (२) मुनिवर तुम्हरे बचन मेरु महि डोलहिं। तदपि उचित आचरत पाँच भल बोलहिं ॥ —जानकी०।

पाँचइँ—संज्ञा स्त्री० [सं० पंचमी] पंचमी तिथि। उ०—पाँचइँ पाँच परस, रस, शब्द गंध अरु रूप। इन्हकर कहा न कीजिए बहुरि परब भवकूप ॥ —विनय०।

पांचजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कृष्ण के बजाने का शंख जिसे उन्होंने पाचजन्य नामक असुर को मारकर लिया था। २. विष्णु के शंख का नाम। ३. अग्नि।

पांचभौतिक—संज्ञा पुं० [सं०] पाँचों भूतों या तत्वों से बना हुआ शरीर।

पांचाल—संज्ञा पुं० दे० "पंचाल"।

वि० [सं०] १. पंचाल प्रदेश का रहनेवाला। २ पंचाल प्रदेश संबंधी।

पांचाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पांडवों की स्त्री द्रौपदी। २ गुड़िया। कपड़े की पुतली। ३ साहित्य में एक प्रकार की रीति या वाक्य-रचना-प्रणाली जिसमें बड़े बड़े पाँच छ समासों से युक्त और कांतिपूर्ण पदावली होती है। इसका व्यवहार सुकुमार और मधुर वर्णन में होता है। कुछ लोग गौड़ी और वैदर्भी वृत्तियों के मेल को भी पांचाली कहते हैं। ४ स्वर साधना की एक प्रणाली।

पाँचैं†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचमी] किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। पंचमी। उ०—जय संवत फागुन, सुदि पाँचै, गुरु दिनु। अस्विनि बिरचेउँ मंगल, सुनि सुख छिनु छिनु ॥ —पार्वतीमंगल।

पाँजना—क्रि० स० [सं० प्रणद्ध] धातु के टुकड़ों को टाँके लगाकर जोड़ना। झालना। टाँका लगाना।

पाँजर—संज्ञा पुं० [सं० पंजर] १ बगल और कमर के बीच का वह भाग जिसमें

पशुपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ जीवों का मालिक शिव। महादेव। २. अग्नि। ३ ओषधि।

पशुपाल—संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं को पालनेवाला। पशुओं का रक्षक।

पशुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ पशुत्व। जानवरपन। २ तंत्र में मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक।

पशुराज—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

पश्चात्—अव्य०. [सं०] पीछे। पीछे से। बाद। फिर। अनंतर।

पश्चात्ताप—संज्ञा पुं० [सं०] किए हुए अनुचित या न कर पानेवाले उचित काम पर मानसिक दुःख या चिंता। अनुताप। अफसोस। पछतावा।

पश्चात्तापी—संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्तापिन्] पछतानेवाला।

पश्चानुताप—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप।

पश्चिम—संज्ञा पुं० [सं०] वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम।

वि०—१. जो पीछे से उत्पन्न हुआ हो। २ अंतिम।

पश्चिमवाहिनी—वि० [सं०] पश्चिम की ओर बहनेवाली (नदी आदि)।

पश्चिम सागर—संज्ञा पुं० [सं०] यूरप-अफ्रीका और अमेरिका के बीच का समुद्र। ऐटलांटिक महासागर।

पश्चिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पच्छिम दिशा।

पश्चिमाचल—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसकी आड़ में सूर्य का छिपना कहा जाता है। अस्ताचल।

पश्चिमी—वि० [सं०] १ पश्चिम की ओर का। २. पश्चिम संबंधी। पश्चिम का।

पश्चिमोत्तर—वि० [सं०] पश्चिम और उत्तर के बीच का।

संज्ञा पुं० पश्चिम और उत्तर का कोना। वायुकोण।

पश्तो—संज्ञा स्त्री० [देश०] भारत की आर्य भाषाओं में से एक देशी भाषा जो वर्तमान पाकिस्तान (प्राक्स्वातंत्र्य भारत) के पश्चिमोत्तर सीमाप्रदेश से अफगानिस्तान तक बोली जाती है। इसमें फारसी के शब्द बहुत हैं।

पश्म—संज्ञा स्त्री० दे० "पशम"।

पश्मीना—संज्ञा पुं० दे० "पशमीना"।

पश्यंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाद की दूसरी अवस्था या स्वरूप जब वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है।

पश्यतोहर—संज्ञा पुं० [सं० वह] जो आँखों के सामने से चीज चुरा ले; जैसे, सुनार आदि।

पश्वाचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पश्वाचारी] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्पपूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन। तंत्रसाधना के दिव्य, वीर और पशु तीन रूपों में से कलियुग में केवल अंतिम रूप ही विहित है। इसमें साधक को नित्य स्नान, संध्या, पूजन, श्राद्ध और विप्रकर्म करना चाहिए, सब को समान भाव से देखना चाहिए, किसी का अन्न न लेना चाहिए, सदा सत्य बोलना चाहिए, मधमांस का व्यवहार न करना चाहिए, आदि, आदि। वैदिकाचार।

पष(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. पक्ष। डैना। २ तरफ। ओर। ३. पक्ष। पाख।

पषनियाँ—संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षिन्] देखनेवाला। तमाशबीन। उ०—कहै कबीर नट नाटिक थाके मदला कौन बजावै। गए पषनियाँ उझरी बाजी को काहू के आवै।—कबीर०।

पषा—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] दाढ़ी। श्मश्रु।

पषाण—संज्ञा पुं० [सं० पाषाण]।

पषान—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पषारना(पु)†—क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

पसंगा†—संज्ञा पुं० [फा० पासंग] वह बोझ जिसे तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये हलके पल्ले में बाँध या रख देते हैं। पासंग।

वि० बहुत ही थोड़ा या कम।

मुहा०—पसंगा भी न होना = कुछ भी न होना। बहुत ही तुच्छ होना।

पसंती(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पश्यंती"। उ०—बानिहु चारि भाँति की करी। परा पसंती मध्य वैखरी।—विश्रामसागर।

पसंद—वि० [फा०] रुचि के अनुकूल। मनोनीत। जो अच्छा लगे।

संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति। अभिरुचि।

पससाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रशंसा] दे० "प्रशंसा"। उ०—जइ सुरसा होसइ मकु भाना, जो बुज्झिह सो करिह पससा।

पसनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] अन्न प्राशन नामक संस्कार जिसमें नवजात शिशु को पहले पहल अन्न खिलाया जाता है।

पसर—संज्ञा पुं० [सं० प्रसर] गहरी की हुई हथेली। करतलपुट। आधी अंजली।

†संज्ञा पुं० [सं० प्रसर] विस्तार। फैलाव।

पसरना—क्रि० अ० [सं० प्रसरण] १. आगे की ओर बढ़ना। फैलना। २. विस्तृत होना। बढ़ना। ३. पैर फैलाकर लेटना।

पसरहट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० पसारी+हाट] वह बाजार जिसमें पसारियों आदि की दूकानें हों।

पसराना—क्रि० स० [सं० प्रसारण] दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना।

पसरौहाँ†—वि० [हिं० √पसर+औहाँ (प्रत्य०)] जो पसरता हो। फैलानेवाला।

पसली—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्शुका] मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती पर के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी।

मुहा०—पसली फड़कना या फड़क उठना = मन में उत्साह होना। जोश आना। हड्डी पसली तोड़ना = बहुत मारना-पीटना।

पसाउ†(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रसाद] प्रसाद। प्रसन्नता। कृपा।

पसाना—क्रि० स० [सं० प्रस्रावण] १. भात में से माँड़ निकालना। २ पसेव निकालना या गिराना।

†(पु)क्रि० अ० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न होना।

पसार—संज्ञा पुं० [सं० प्रसार] १ पसरने की क्रिया या भाव। प्रसार। फैलाव। २. विस्तार। लंबाई चौड़ाई।

पसारना—क्रि० स० [सं० प्रसारण] आगे की ओर बढ़ाना। फैलाना।

पसारा—संज्ञा पुं० दे० "पसार"।

पसारी—संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

पसाव—संज्ञा पुं० [हिं० पसाना] पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ। माँड़। पीच।

पसावन—संज्ञा पुं० दे० "पसाव"।

पसाहन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रसाधन] अंगराग।

पसिंजर—संज्ञा पुं० [अं० पैसेंजर] रेल या जहाज आदि का यात्री।

संज्ञा स्त्री० मुसाफिरों के लिये वह गाड़ी जो हर स्टेशन पर ठहरती चलती है।

पसितⓅ—वि० [सं० √पस्] बँधा हुआ। बाँधा हुआ।

पसीजना—क्रि० अ० [सं० प्र+√स्विद्] १. घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंश का रस रसकर बाहर निकलना। रसना, जैसे, पत्थर से पानी पसीजना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। दयार्द्र होना; जैसे, आप लाख बातें बनाइए, पर वे कभी न पसीजेंगे।

पसीना—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्वेदन] वह जल जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर स्तनपायियों के चमड़े से निकलने लगता है। प्रस्वेद। स्वेद। श्रमवारि।

मुहा०—पसीने की कमाई=परिश्रमपूर्वक कमाया हुआ धन। पसीने पसीने होना=पसीने से तर होना।

पसुरीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पसू—संज्ञा पुं० दे० "पशु"। उ०—पुच्छ बिहूना पसू होय।

पसूज—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह सिलाई जिसमें सीधे तोपे भरे जाते हैं।

पसूजना—क्रि० स० [देश०] सीना। सिलाई करना।

पसेउ†—संज्ञा पुं० दे० "पसेव"।

पसेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)] पाँच सेर का बाट। पंसेरी।

पसेव—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्राव] १. किसी चीज में से रसकर निकला हुआ जल। २. पसीना।

पसोपेश—संज्ञा पुं० [फा० पस व पेश] १ आगा पीछा। सोच विचार। हिचक। दुबिधा। २ हानि लाभ। भला बुरा। ऊँच नीच। परिणाम, जैसे, इस काम का सब पसोपेश सोच लो तब इसमें हाथ लगाओ।

पस्त—वि० [फा०] १ हारा हुआ। २ थका हुआ। ३ दबा हुआ।

पस्तकद—वि० [फा०] नाटा। बौना।

पस्तहिम्मत—वि० [फा०] भीरु। डरपोक। कायर।

पस्सी बबूल—संज्ञा पुं० [पस्सी ? +हिं० बबूल] एक प्रकार का पहाड़ी बबूल।

पहँⓅ—अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। पास। २. से।

पहँसुल—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रह=झुका हुआ+शूल] हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औजार।

पहⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

पहचनवाना—क्रि० स० [हिं० पहचानना का प्रे० रूप] पहचानने का काम कराना।

पहचान—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रत्यभिज्ञान] १. पहचानने की क्रिया या भाव। २ किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया या भाव। ३ लक्षण। निशानी। ४ पहचानने की शक्ति या वृत्ति। भेद या अंतर समझने की शक्ति। विवेक। तमीज, जैसे, खरे खोटे की पहचान होना। ५ जान पहचान। परिचय, जैसे, हमारी उनकी पहचान बिलकुल नहीं है।

पहचानना—क्रि० स० [हिं० पहचान] १. देखते ही जान लेना कि यह कौन व्यक्ति, या क्या वस्तु है। चीन्हना। २ किसी वस्तु के रूपरंग या शक्लसूरत से परिचित होना। ३ अंतर समझना या करना। बिलगाना, जैसे, असल और नकल को पहचानना जरा टेढ़ा काम है। ४. योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना, जैसे, इतने दिनों तक साथ रहने पर भी वह उन्हें पहचान न पाया।

पहटना†—क्रि० स० [सं० प्रखेट] पीछा करना। खदेड़ना।

क्रिया स० [देश०] धार को रगड़कर तेज करना। पैना करना।

पहनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पाहन"। उ०—अबकी घड़ी चिनग तेहि छूटे। जरहिं पहार पहन सब फूटे॥ —पदमावत।

पहनना—क्रि० स० [सं० परिधान] शरीर पर धारण करना। परिधान करना (कपड़े या गहने के लिये)।

पहनवाना—क्रि० स० [हिं० पहनना का प्रे० रूप] किसी और के द्वारा किसी को कुछ पहनाना।

पहनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √पहन+आई (प्रत्य०)] १ पहनने की क्रिया या भाव। २ पहनाने की मजदूरी या उजरत।

पहनाना—क्रि० स० [हिं० पहनना का स० रूप] किसी को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।

पहनावा—संज्ञा पुं० [हिं० √पहन+आवा (प्रत्य०)] १ पहनने के कपड़े। परिच्छद। परिधेय। पोशाक, जैसे, धोती, कुर्ता, टोपी, मोजा, जूता आदि। २ सिर से पैर तक के शरीर के किसी अंग के ऊपर पहनने के सब कपड़े। पाँचों कपड़े। सिरोपाव। ३. विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में पहने जानेवाले कपड़े; जैसे, दरबारी पहनावा, फ़ौजी पहनावा, ब्याह का पहनावा, चीनियों का पहनावा, काबुलियों का पहनावा आदि। ४. कपड़े पहनने का ढंग या चाल।

पहपट—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। २. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। ३. झगड़ा फसाद। ४ बदनामी या अपवाद का शोर। ५. छल। धोखा। फरेब।

पहपटबाज—संज्ञा पुं० [हिं० पहपट +फा० बाज] [संज्ञा पहपटबाजी] १. शरारती। झगड़ालू। २. ठग। धोखेबाज।

पहपटहाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहपट+हाई (प्रत्य०)] झगड़ा कराने या लगानेवाली (स्त्री)।

पहर—संज्ञा पुं० [सं० प्रहर] १. एक दिन का चतुर्थांश। तीन घंटे का समय। २. समय। जमाना। युग।

पहरना†—क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहरवा—संज्ञा पुं० दे० "पहरेदार"। उ०—पच पहरवा सोइ गए हैं बसतैं जागए लागी। जरा मरण ब्यापै कुछ नाहीं, गगन मंडल लै लागी। —कबीर०।

पहरा—संज्ञा पुं० [हिं० पहर] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये एक या अधिक आदमियों के द्वारा यह देखभाल कि वह वस्तु या व्यक्ति निर्दिष्ट स्थान से हटने या भागने न पावे। रक्षकनियुक्ति। रक्षा अथवा निगहबानी का कार्य या प्रबंध। चौकी। निगहबानी।

मुहा०—पहरा बदलना=नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना। रक्षक बदलना। पहरा बैठना=किसी वस्तु या व्यक्ति के आसपास रक्षक बैठाया जाना।

२ निर्दिष्ट स्थान में किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा का कार्य। रखवाली।

मुहा०—पहरा देना = रखवाली करना।

३ उतना समय जितने में एक रक्षक अथवा रक्षकदल को रक्षाकार्य करना पड़ता है। तैनाती। नियुक्ति। ४ वे रक्षक या चौकीदार जो एक समय में काम कर रहे हों। रक्षकदल। गारद। ५ चौकीदार का गश्त या फेरा। ६. चौकीदार की आवाज।

पसलियाँ होती हैं। २. पसली। ३. पार्श्व। पास। बगल।

पाँजी—संज्ञा स्त्री० [सं० पाद्य या पदाति ?] नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें।

पाँझ—वि० दे० "पाँजी"।

पांडर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद रंग। २ कुंद वृक्ष और उसका फूल। ३ एक जाति का पक्षी।

पांडव—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। २ एक प्राचीन प्रदेश जो वितस्ता (झेलम) नदी के तीर पर था। ३. इस प्रदेश के निवासी।

पांडवनगर—संज्ञा पुं० [सं०] दिल्ली।

पांडित्य—संज्ञा पुं० [सं०] पंडित होने का भाव। विद्वत्ता। पंडिताई।

पांडु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पांडुफली। परवली। २. परमल। ३ कुछ लाली लिए पीला रंग। ४. सफेद हाथी। ५. सफेद रंग ६ पीला रंग। ७ एक रोग का नाम जिसमें यकृतविकार के कारण रक्त के दूषित हो जाने से शरीर पीले रंग का हो जाता है। इस रोग में तंद्रा, पीड़ा, शूल, आलस्य, खाँसी, श्वास, अरुचि, अंगशोथ और कंप होता है। प्राचीन काल के एक राजा जो पांडवों के पिता और जन्म से ही पांडुरोगी या पीले रंग के थे।

वि० १. पीला। २ श्वेत। सफेद।

पांडुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। २ पांडुत्व। पीलापन। ३ सफेदी।

पांडुर—वि० [सं०] [भाव० पांडुरता] १. पीला। २ सफेद।

पांडुरंग—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु का एक अवतार। २ एक प्रकार का साग जो तिक्त, लघु और कृमि तथा कफनाशक होता है।

संज्ञा पुं० [सं०] १. धौ का पेड़। २ कबूतर। ३. बगला। ४ सफेद खड़िया। ५ कामला रोग। ६ सफेद कोढ़।

पांडुलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी प्रति। २ लेख आदि का वह पहला रूप जो घटाने बढ़ाने या काटने छाँटने आदि के लिये तैयार किया जाय। मसौदा।

पांडुलेख—संज्ञा पुं० दे० "पांडुलिपि"।

पाँड़े—संज्ञा पुं० [सं० पंडित] १. सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुजराती आदि ब्राह्मणों की एक शाखा। २ कायस्थों की एक शाखा। ३. पंडित। विद्वान्। ४. शृगाल। गीदड़।

पांडेय—संज्ञा पुं० दे० "पाँड़े"।

पाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १. कतार। पंगत। २ समूह। अवली। ३. एक साथ भोजन करनेवाले बिरादरी के लोग। उ०—मेरे जाति पाँति, न चहौं काहू की जाति पाँति, मेरे कोऊ काम को, न हौं काहू के काम को।—कविता०।

पांथ—वि० [सं०] १. पथिक। २ वियोगी। विरही।

पांथनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] सराय। चट्टी।

पांथशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सराय। चट्टी। धर्मशाला।

पाँयँⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० पाद] चरण। पैर।

पाँयँचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पाखानों आदि में बना हुआ वह स्थान जिसपर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिये बैठते हैं। २ पायजामे की मोहरी जिससे पैर ढका जाता है।

पाँयँता—संज्ञा पुं० [हिं० पाँय+तल] पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग जिसकी ओर पैर किए जाते हैं। पैताना।

पाँवरⓅ†—वि० दे० "पामर"।

पाँवरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव+री (प्रत्य०)] १ दे० "पाँवड़ी"। २ सोपान। सीढ़ी। ३ पैर रखने का स्थान। ४ जूता। खड़ाऊँ। उ०—प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही। सादर भरत सीस धरि लीन्ही॥—मानस।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पौरि] १ पौरी। ड्योढ़ी। २ बैठक। दालान।

पांशव—संज्ञा पुं० [सं०] रेह का नमक।

पांशु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूलि। रज। २ बालू। ३ गोबर की खाद। ४ रज। ५. एक प्रकार का कपूर।

पांशुज—संज्ञा पुं० [सं०] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पांशुल—वि० [सं०] [स्त्री० पांशुला] १ लपट। व्यभिचारी। २ मलिन। मैला जिसपर गर्द या धूलि पड़ी हो।

पांशुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा। व्यभिचारिणी।

पाँस—संज्ञा स्त्री० [सं० पांशु] १ सड़ी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिये उनमें डाली जाती हैं। खाद। २ किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर। ३. शराब उतारा हुआ महुआ।

पाँसना†—क्रि० स० [हिं० पाँस से ना० धा०] खेत में खाद देना।

पाँसा—संज्ञा पुं० [सं० पाशक] हाथीदाँत या हड्डी का चारपाँच अंगुल लंबे बत्ती के आकार का चौपहल टुकड़ा जिससे चौसर खेलते हैं और जिसके प्रत्येक पहल पर बिंदु बने रहते हैं। उ०—कौरव पाँसा कपट बनाए। धर्मपुत्र को जुआ खेलाए॥—सूर०।

मुहा०—पाँसा उलटना = किसी प्रयत्न का उलटा फल होना।

पांसु—संज्ञा स्त्री० दे० "पांशु"।

पाँसुरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"। उ०—'दास' अब नीके ऊमि मरति उसाँसु री, सुवाँसुरी की धुनि प्रति पाँसुरी में वेह की।—शृंगार०।

पाँहीⓅ†—क्रि० वि० [हिं० पँह] निकट। पास। समीप।

पा—संज्ञा पुं० [सं० पाद, मि० फा० पा] पैर। पाँव। उ०—पा पकरो वेनी तजो घरमैं करिए आजु। भोर होत मन भावतो भलो भूलि सुभ काजु॥—रससाराश।

पाइⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पाद"।

पाइकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पायक"।

पाइतरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० पादस्थली] पलंग का वह भाग जहाँ सोनेवाले के पैर रहते हैं। पैताना।

पाइमाल—वि० [फा० पामाल] पददलित। कुचला हुआ। विपन्न। उ०—तुलसी गरब तजि, मिलिवे को साज सजि, देहि सिय, न तौ पिय ! पाइमाल जाहिगो।—कविता०।

पाइलⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।

पाई—संज्ञा स्त्री० [सं० पाद, हिं० पाय] १ एक ही घेरे में नाचने या चलने की क्रिया। मंडल। घूमना। २ एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। ३ एक पैसा (क्व०)। ४ वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से इकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है, जैसे, ४।, अर्थात् सवा चार। ५ दीर्घ आकारसूचक मात्रा। पूर्ण विराम सूचित करनेवाली खड़ी रेखा। ६ बेंत आदि का ताने के सूत को फैलाकर माँजने के

लिये बनाया हुआ जुलाहों का एक खास प्रकार का ढाँचा। टिकठी। अड्डा।

मुहा०—पाई करना = पाई पर फैले हुए ताने को कूँची से माँजना।

७ घोड़ों की वह बीमारी जिसमें उनके पैर सूज जाते हैं और वे चल नहीं पाते। ८. आभूषण रखने की पिटारी। ९. छापे के घिसे हुए रद्दी टाइप (<सं०?)।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पापा = पाप, कीड़ा] एक छोटा लंबा कीड़ा जो धान को खराब कर देता है।

पाईता—संज्ञा पुं० [?] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक मगण, एक भगण, और एक सगण होता है।

पाउँ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।

पाउ—संज्ञा पुं० [सं० पाद।] पैर। उ०—ज्यों ज्यों गर्वीले दृगनि प्रिया लखति निज पाउ। —रससारांश।

पाउडर—संज्ञा पुं० [अँ०] १. चूर्ण। बुकनी। २. चेहरे या शरीर पर लगाने का चूर्ण।

पाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पकाने की क्रिया। राँधना। २. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३ रसोई। पकवान। ४. वह औषध जो चासनी में मिलाकर बनाई जाय। ५ खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पचन। ६ वह खीर जो श्राद्ध में पिंडदान के लिये पकाई जाती है। ७. एक राक्षस जिसे इंद्र ने मारा था।

वि० [फा०] १ पवित्र। शुद्ध। २ पापरहित। निर्मल। निर्दोष। ३ समाप्त।

मुहा०—झगड़ा पाक करना = (१) किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। (२) झगड़ा तै करना। बाधा दूर करना। (३) मार डालना।

पाकट—संज्ञा स्त्री० [अँ० पाकेट्] जेब। खीसा। थैली।

मुहा०—पाकट गरम करना = (१) घूस लेना। (२) घूस देना। पाकट गरम होना = पास में काफी धन होना।

संज्ञा पुं० दे० "पैकेट"।

पाकटमार—संज्ञा पुं० [अँ० पॉकेट् + हिं० मार] दूसरे की जेब काटकर पैसे चुराने वाला। जेबकट। गिरहकट।

पाकठ†—वि० [हिं० पकना] १ पका हुआ। २ तजरबेकार। ३ बली। मजबूत।

पाकड़—संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

पाकदामन—वि० [फा०] [संज्ञा पाकदामनी] सच्चरित्रा। सदाचारिणी। सती। साध्वी। पतिव्रता।

पाकना†—क्रि० अ० दे० "पकना"।

पाकयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पाकयाज्ञिक] १ वृषोत्सर्ग और गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २ पंच महायज्ञों में महायज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव, होम, बलि कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि भोजन।

पाकर—संज्ञा पुं० [सं० पर्कटी] एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पंचवटी में माना जाता है। इसकी छाया बहुत घनी होती है। इसकी छाल से बारीक और मुलायम सूत निकलते हैं। नरम फलों को प्रायः जंगली और देहाती लोग खाते हैं। पाखर। पलखन।

पाकरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पाकर"।

पाकशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोई बनाने का घर। बावरचीखाना।

पाकशासन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पाकस्थली—संज्ञा स्त्री० दे० "पक्वाशय"।

पाका†—वि० दे० "पक्का"।

पाकागार—संज्ञा पुं० [सं०] रसोईघर।

पाकिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० पाकिस्तानी] अँग्रेजों के अधीन भारतवर्ष के बलूचिस्तान, पूर्वी बंगाल, उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेश, पश्चिमी पंजाब और सिंध को मिलाकर १९४७ ई० में बनाया हुआ मुसलमान बहुमत का एक स्वतंत्र राज्य जिसका क्षेत्रफल ३, ६५, ९०७ वर्गमील है।

पाकेट—संज्ञा पुं० [अँ०] जेब। खीसा।

पाक्य—वि० [सं०] पचने योग्य।

पाक्षिक—वि० [सं०] १. पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। २ पक्षपाती। तरफदार। ३ दो मात्राओं का (छंद)।

पाखंड—संज्ञा पुं० [सं० पाषंड] १ वेदविरुद्ध आचार। २ ढोंग। आडंबर। ढकोसला। उ०—कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड। दहन राम-गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड॥ —मानस। ३ छल। धोखा। उ०—जब कीन्ह तेहि पाखंड। भए प्रकट जतु प्रचंड॥ —मानस। ४ नीचता। शरारत।

मुहा०—पाखंड फैलाना = किसी को ठगने के लिये उपाय रचना। मकर फैलाना।

पाखंडी—वि० [सं० पाषंडिन्] १ वेदविरुद्ध आचार करनेवाला। २ बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। बगुलाभगत। ३. धोखेबाज। धूर्त।

पाख—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १ पंद्रह दिन। पखवाड़ा। उ०—भयेउ पाख दिनु सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहिसन आजू॥ —मानस। २. मकान की चौड़ाई की दीवारों के वे भाग जो लंबाई की दीवारों से त्रिकोण के आकार में अधिक ऊँचे होते हैं और जिनपर 'बँड़ेर' रखते हैं। ३ पख। पर।

पाखर—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रक्षर] १ लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है। चारआईना। २. राल चढ़ाया हुआ टाट या उससे बनी पोशाक।

संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

पाखा—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १ कोना। छोर। २ दे० "पाख" (२)।

पाखान(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पाखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ मलत्याग किया जाय। २. मल। गू। गलीज। पुरीष।

पाग—संज्ञा स्त्री० [हिं० पग] पगड़ी। उ०—सैन-उत्तर सैननि दियो गन्यो न भीर बिसाल। बाल सुधारयो बेंदुली पाग छुवत लखि लाल॥ —रससारांश।

संज्ञा पुं० [सं० पाक] १. दे० "पाक"। २ वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३ चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। उ०—बालधी फिरावै बार बार झहरावै, झरैं बूँदिया सी, लंक पघिलाइ पाग पागिहै। —कविता० ४ वह दवा या पुष्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय।

पागना—क्रि० स० [हिं० 'पाग' से ना० धा०] १ मीठी चाशनी में सानना या लपेटना। २ डुबाना। तर करना। रंगना। अनुरंजित करना। उ०—का कियो जोग अजामिल जू, गनिका कबहीं मति पेम पगाई॥ —कविता०।

क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।

पागल—वि० [?] [स्त्री० पगली, पागलिनी] १ जिसका दिमाग ठीक न हो। बावला। सिड़ी। विक्षिप्त। २ क्रोध शोक वा प्रेम आदि के वेग के कारण जिसकी भला बुरा सोचने की शक्ति नष्ट हो गई हो। जिसके होश हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर। ३. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ। नादान।

पागलखाना—संज्ञा पुं० [हिं० पागल+फा० खान] वह स्थान जहाँ पागलों रखे जाते हैं और उनका इलाज किया जाता है।

पागलपन—संज्ञा पुं० [हिं० पागल+पन+(प्रत्य०)] १. वह मानसिक रोग जिससे मनुष्य की बुद्धि और इच्छाशक्ति आदि में अनेक प्रकार के विकार होते हैं। उन्माद। विक्षिप्तता। चित्तविभ्रम। २. मूर्खता।

पागुर—संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।

पाचक—वि० [सं०] पचाने या पकानेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १. वह औषध जो पाचनशक्ति को बढ़ाने के लिये खाई जाती है। २. [स्त्री० पाचिका] रसोइया। बावर्ची। ३ पाँच प्रकार के पित्तों में से एक। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।

पाचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पचाना या पकाना। २. खाए हुए आहार का पेट में जाकर शरीर के धातुओं के रूप में परिवर्तन। ३. वह औषधि जो पेट में पड़े आम अथवा अपक्व आहार को पचावे। ४ प्रायश्चित। ५. खट्टा रस। ६. अग्नि।

वि० पचानेवाला। हाजिम।

पाचनशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की वह शक्ति जो भोजन को पचावे। हाजमा।

पाचना(पु)—क्रि० स० [सं० पाचन] अच्छी तरह पकाना। परिपक्व करना।

पाचनीय—वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पाच्य।

पाचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईदारिन। रसोई बनानेवाली।

पाच्छाही—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाच्य—वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पचनीय।

पाछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाछना] १ जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मारकर किया हुआ हलका घाव। २ पोस्ते के डोंढे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफीम निकलती है। ३ किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिये लगाया हुआ चीरा।

†संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्] पीछा। पिछला भाग।

क्रि० वि० पीछे। उ०—ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं, चितयउँ पाछ उड़ात। जुग अंगुल कर बीच सब, राम भुजहिं मोहि तात।—मानस।

पाछना—क्रि० स० [हिं० पंछा] छुरे या नहरनी आदि से रक्त, पंछा या रस निकालने के लिये हलका चीरा लगाना। चीरना। उ०—सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पाछि जनु माहुर देई।—मानस—।

पाछल—वि० दे० "पिछला"।

पाछा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पीछा"।

पाछिल(पु)—वि० दे० "पिछला"। उ०—पाछिल दुखु अस हृदय न व्यापा। जस यह भएउ महा परितापा।—मानस।

पाछी, पाछे(पु)—क्रि० वि० दे० "पीछे"। उ०—आगे राम अनुज पुनि पाछें। मुनि वर बेष बना अति काछें।—मानस।

पाज—संज्ञा पुं० [सं० पाजस्य] पाँजर।

उ०—निरखि छबि फूलत हैं ब्रजराज। उत जसुदा इत आपु परस्पर आड़े रहे कर पाज।—सूर०।

संज्ञा पुं० (?) १. पंक्ति। कतार। २ दीवार। बाँध।

पाजामा—संज्ञा पुं० [फा०] पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

मुहा०—पाजामे के बाहर होना=अपना संतुलन खोना। संयम खोना। आपे के बाहर होना। मर्यादा भंग करना।

पाजी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पदाति] १. पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २ रक्षक। चौकीदार।

वि० [सं० पाय्य] दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन—संज्ञा पुं० [हिं० पाजी+पन (प्रत्य०)] दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

पाजेब—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है। मंजीर। नूपुर।

पाटंबर—संज्ञा पुं० [सं०] रेशमी वस्त्र। उ०—पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर। कृमि पालै सबु कोइ परम अपावन प्रान सम।—मानस।

पाट—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १ रेशम। उ०—चामर चरम बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जाती।—मानस। २ बटा हुआ रेशम। नख। ३ रेशम के कीड़े का एक भेद। ४ पटसन के रेशे। ५ राज्यासन। सिंहासन। गद्दी। ६ चौड़ाई। फैलाव। ७ पल्ला। पीढ़ा। ८. वह शिला जिसपर धोबी कपड़ा धोता है। ९. शिला। पटिया। १०. चक्की के एक ओर का भाग। ११ कोल्हू हाँकनेवाले के बैठने का चिपटा शहतीर। १२. पैर रखकर पानी भरने के लिये रखी हुई कुएँ पर की लकड़ी।

पाटन—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. वह जो पाटकर बनाया जाय। ३ मकान की पहली मंजिल से ऊपर की मंजिलें। ४. सर्प का विष उतारने का एक मंत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है।

पाटना—क्रि० स० [हिं० पाट] १. किसी गहराई को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना। छत बनाना। ३ सींचना।

पाटमहिषी—संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटरानी—संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाडर या पाढर का पेड़।

पाटला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाडर का वृक्ष। उ०—संसार महुँ पूरुष त्रिबिध पाटल, रसाल, पनस समा।—मानस। २ लाल लोध। ३. दुर्गा का एक रूप। ४ गुलाब। उ०—बधूको बिंबो, कमल तिल त्यू, पाटला औ चँबेलो। चंपा, कस्मीरो, बरिहि बिच औं, फूलिहै एक बेली।—छंदार्णव।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया सोना।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जो इस समय भी बिहार की राजधानी है। पटना।

पाटली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाडर। २. पांडुफली। ३ पटने की अधिष्ठात्री देवी। ४ गाधि की पुत्री जिसके अनुरोध से प्राचीन पाटलीपुत्र नगर बसाया गया था।

पाटव—संज्ञा पुं० [सं०] १. पटुता। कुशलता। २ दृढ़ता। मजबूती। ३. आरोग्य।

पाटवी—वि० [हिं० पाट] १ पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २ रेशमी। कौषेय (वस्त्र)।

पाटसन—संज्ञा पुं० दे० "पटसन"।

पाटा—संज्ञा पुं० [हिं० पाट] १ लकड़ी का

पीढ़ा। २. दो दीवारों के बीच सामान रखने के लिये बनाया हुआ स्थान।

पाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २ गणनादि का क्रम। जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति। उ०—मानों सिंगार की पाटी मनोभव सींचत है अनुराग की धार सों।—शृंगारनिर्णय।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पाट] १. लकड़ी की वह पट्टी जिसपर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २ पाठ। सबक।

मुहा०—पाटी पढ़ना=पाठ पढ़ना। शिक्षा पाना। उ०—तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला मन लेत हौ देत छटाँक नहीं।—घनानंद०।

३. माँग के दोनों ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। पटिया। उ०—(१) मुँहली पाटी पारन चाहैं नकटी पहिरै बेसर।—सूर०। (२) पाटी दुहूँ बिच माँग की लाली बिराजि रही यों प्रभा-विसतार हों।—शृंगारनिर्णय। ४. चारपाई के ढाँचे में लबाई की ओर की पट्टी। ५. चटाई। ६ शिला। चट्टान। ७ खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग।

पाटीर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन। उ०—'दास' कहै बुद्धि थकै धीर की। देखि प्रभा अद्भुत पाटीर की।—छंदार्णव।

पाठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २ किसी पुस्तक, विशेषत धर्मपुस्तक, को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया या भाव। ३ वह जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। ४ उतना अंश जो एक बार पढ़ा जाय। सबक। सथा।

मुहा०—पाठ पढ़ाना=अपने मतलब के लिये किसी को बहकाना। पट्टी पढ़ाना। उलटा पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा देना। बहका देना।

५ किसी ग्रंथ का खंड। परिच्छेद। अध्याय। ६. किसी पुस्तक या ग्रंथ में शब्दों या वाक्यों का क्रम या योजना।

पाठक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पढ़नेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक। ३ धर्मोपदेशक। ४ गौड़, सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग।

पाठदोष—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ने का वह ढंग जो निंद्य और वर्जित है, जैसे कठोर स्वर से, विकृत या सानुनासिक या ठहर ठहर कर, अव्यक्त और अस्पष्ट उच्चारण के साथ गाते या सिर आदि अंगों को हिलाते हुए पढ़ना आदि।

पाठन—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ाने की क्रिया या भाव। पढ़ाना। अध्यापन।

पाठना(पु)—क्रि० स० दे० "पढ़ाना"।

पाठभेद—संज्ञा पुं० दे० "पाठांतर"।

पाठशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ पढ़ाया जाय। मदरसा। विद्यालय। चटसाल।

पाठांतर—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। दूसरा पाठ। पाठभेद। २ पाठांतर होने का भाव। पाठ का भेद। पाठभिन्नता।

पाठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाढ़ नाम की लता। यह दो प्रकार की होती है, छोटी और बड़ी। इसका अनेक रोगों की दवा के रूप में व्यापक प्रयोग होता है।

संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १ जवान और परिपुष्ट। हृष्टपुष्ट। मोटा तगड़ा पट्ठा। २ जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठालय—संज्ञा पुं० [सं०] पाठशाला।

पाठावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाठों का समूह। २ पाठों की पुस्तक।

पाठी—संज्ञा पुं० [सं० पाठिन्] १ पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला, जैसे, वेदपाठी। २ चीता। चित्रक वृक्ष।

पाठीन—संज्ञा पुं० [सं०] मछली विशेष। पहिना। उ०—मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने।—मानस।

पाठ्य—वि० [सं०] १ पढ़ने योग्य। पठनीय। २ जो पढ़ाया जाय।

पाड़—संज्ञा पुं० [हिं० पाठ] १ धोती आदि का किनारा। २ मचान। पायठ। ३ वह जाली जो कुएँ के मुँह पर रहती है। कटकर। चह। ४ बाँध। पुश्ता। ५ वह तख्ता जिसपर खड़ा करके फाँसी दी जाती है। तिकठी।

पाडर—संज्ञा स्त्री० [सं० पाटल] पाटल नामक वृक्ष। उ०—जहाँ निवारी सेवती मिलि भूमक हो। बहु पाडर बिपुल गँभीर मिलि भूमक हो।—सूर०।

पाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पट्टन] पुरवा। महल्ला। टोला।

संज्ञा पुं० [देश०] भैंस का नर बच्चा। पड़वा।

पाढ़—स्त्री० पुं० [सं० पाटा] १. पाटा। २ वह मचान जिसपर फसल की रखवाली के लिये खेतवाला बैठता है।

पाढ़त(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. जो कुछ पढ़ा जाय। २ मंत्र। जादू। उ०—भाई कुमोदिनी चित्तौर चढ़ी। जोहन मोहन पाढ़त पढ़ी॥—पदमावत। ३ पढ़ने की क्रिया या भाव।

पाढर, पाढल—संज्ञा पुं० [सं० पाटल] पाडर का पेड़।

पाढ़ा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।

संज्ञा स्त्री० दे० "पाठा"।

पाढ़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ सूत की लच्छी। २ यात्रियों को पार करनेवाली नाव।

पाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दावँ। २. व्यापार। ३ हाथ। ४ प्रशसा।

पाणि—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ। कर।

पाणिग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २ विवाह। ब्याह।

पाणिग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिग्रहण करनेवाला। पति।

पाणिज—संज्ञा पुं० [सं०] १ उँगली। २ नख। नाखून।

पाणिनि—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन गाधार (पेशावर) के शालातुर नामक गाँव के एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से प्राय. चार सौ वर्ष पूर्व हुए थे। इनके पितामह का नाम देवल और माता का दाक्षी था। इनके बनाए व्याकरण के ग्रंथों में अष्टाध्यायी सब से महत्वपूर्ण है। अन्य कृतियाँ धातुपाठ गणपाठ, लिंगानुशासन और शिक्षासूत्र हैं। ये सस्कृत के सबसे बड़े और प्रसिद्ध वैयाकरण हैं।

पाणिनीय—वि० [सं०] १ पाणिनिकृत (ग्रंथ आदि)। २ पाणिनि का कहा हुआ। ३ पाणिनि सबधी। ४ पाणिनि को माननेवाला।

पाणिनीय दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण जिसके 'स्फोट'

सिद्धांत के कारण "सर्वदर्शनसंग्रह" कार ने उसे दर्शन माना है।

पाणिपीड़न—सज्ञा पुं० [सं०] १. पाणिग्रहण। विवाह। २ क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।

पाणी—सज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पातंजल—वि० [सं०] पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य)।
सज्ञा पुं० १ पतजलि कृत योगसूत्र। २. पतजलिप्रणीत महाभाष्य (व्याकरण)। ३ पातंजल योग साधनेवाला।

पातंजल दर्शन—सज्ञा पुं० [सं०] योगदर्शन।

पातंजल भाष्य—सज्ञा पुं० [सं०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ।

पातंजल सूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] योगसूत्र।

पातंजलीय—वि० [सं०] दे० "पातजल"।

पात—सज्ञा पुं० [सं०] १ गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २. नाश। ध्वस। मृत्यु। ३ पड़ना। जा लगना। ४ खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांतिवृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं। ५. राहु।
⑨सज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पत्र।

पातक—सज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जिसके करने से नरक जाना पड़े। नीचे गिरानेवाला काम। पाप। गुनाह। उ०—नहिं असत्य सम पातकपुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥

पातकी—वि० [सं० पातकिन्] पातक करनेवाला। पापी। कुकर्मी। उ०—राम बिरोधी हृदय तें प्रकट कीन्ह विधि मोहि। मो समान को पातकी बादि कहौं कछु तोहि॥ —मानस।

पातन—सज्ञा पुं० [सं०] गिराने की क्रिया।

पातर⑨†—सज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] पत्तल।
सज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या। रंडी। पातुर।
⑨†—वि० [सं० पात्रट = पतला] १ पतला। सूक्ष्म। २ क्षीण। बारीक।
⑨†—वि० [हिं० पतला] १. दुर्बल शरीर का। पतला। २ नीचकुल का। अप्रतिष्ठित।

पातल—सज्ञा स्त्री० दे० "पातर"।

पातव्य—वि० [सं०] १. रक्षा करने योग्य। २. पीने योग्य।

पातशाह—सज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाता⑨—सज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पर्ण। उ०—ए महि परहिं डाँसि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता॥—मानस।
सज्ञा पुं० [सं० पातृ] रक्षक। बचानेवाला। उ०—अधम आरत दीन, पतित पातक पीन, सकृत नतमात्र कहे पाहि पाता। —विनय०।

पाताखत—सज्ञा पुं० [हिं० पात + आखत] १ पत्र और अक्षत। तुच्छ या थोड़ी वस्तु। २ पूजा की स्वल्प सामग्री। तुच्छ भेंट। उ०—सेवा सुमिरन पूजिबो ,पाताखत थोरे। दइ जग जहँ लगि सपदा सुख गजरथ घोरे॥ —विनय०।

पातावा—सज्ञा पुं० दे० "पायतावा।"

पातार⑨—सज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पाताल—सज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। उ०—अघट-घटना-सुघट, सुघट-विघटन-विकट, भूमि पाताल-जल-गगन-गंता। —विनय०। २ पृथ्वी से नीचे के लोक। अधोलोक। नागलोक। ३ विवर। गुफा। बिल। ४ बड़वानल। छंद शास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छंद की सख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है।

पातालयंत्र—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कड़ी ओषधियाँ पिघलाई जाती हैं या उनका तेल बनाया जाता है।

पाति†—सज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १ पत्ती। दल। २. चिट्ठी। खत।

पातित्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ पतित होने का भाव। गिरावट। २ अध पतन।

पातिव्रत, पातिव्रत्य—सज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रता होने का भाव। सतीत्व।

पातिसाहि—सज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाती⑨—सज्ञा स्त्री० [सं० पत्री] १. चिट्ठी। पत्र। उ०—सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। —मानस। २ वृक्ष के पत्ते।
सज्ञा स्त्री० [हिं० पति] इज्जत। प्रतिष्ठा। उ०—ह्याँ ऊधो काहे को आए कौन सी अटक परी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस विनु सब पाती उघरी॥ —सूर०।

पातुर†—सज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या।

पात्र—सज्ञा पुं० [सं०] १. जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। भाजन। २ वह जो किसी विषय का अधिकारी हो, जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४ अभिनेता। नट। ५. पत्ता। पत्र।

पात्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पात्र होने का भाव। योग्यता।

पात्रत्व—सज्ञा पुं० दे० "पात्रता"।

पात्रदुष्ट रस—सज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के मत से एक प्रकार का रसदोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है, रचना में उसके विरुद्ध कह जाता है। परस्पर विरोधी या बेमेल उक्ति। ऊटपटाँग बातें। उ०—कपट कृपानी मानी, प्रेम रस लपटानी, माननि को गंगा जी को पानी सम जानिए। स्वारथ निधानी परमारथ की रजधानी, काम की कहानी केशोदास जग मानिए।

पात्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा बरतन।
सज्ञा पुं० [सं० पात्रिन्] १ पात्रवाला व्यक्ति। वह जिसके पास बरतन हो। २. जिसके पास सुयोग्य व्यक्ति हों।

पात्रीय—वि० [सं०] पात्रसबधी। पात्र का।

पाथ—सज्ञा पुं० [सं० पाथस्] १ जल। उ०—सुखसाधन हरिविमुख वृथा, जैसे श्रमफल घृतहित मथे पाथ।—विनय०। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४. अन्न। ५. आकाश। ६. वायु।
सज्ञा पुं० [सं० पथ] मार्ग। राह।

पाथना—क्रि० स० [सं० प्रथन] १ सुडौल करना। गढना। बनाना। २. थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पटरी बनाना, जैसे, उपले पाथना, ईंट पाथना। ३ पीटना। ठोंकना। मारना।

पाथनिधि—सज्ञा पुं० दे० "पाथोधि"।

पाथनाथ—सज्ञा पुं० [सं० पाथ + नाथ] समुद्र। उ०—सोई रघुनाथ कपिसाथ पाथनाथ बाँधि, आए नाथ! भागे तें खिरिरि खेह खाहिगो।—कविता०।

पाथप्रदनाथ—सज्ञा पुं० [सं० पाथ + प्रद + नाथ] प्रलय के बादल। उ०—कोपि दसकध तब प्रलय पयोद बोले, रावन रजाइ धाइ आए जूथ जोरिकै। कह्यो लकपति "लक बरत बुताओ वेगि, बानर बहाइ मारौ महाबारि बोरिकै।" "भले नाथ!" नाइ माथ चले पाथप्रदनाथ,

बरसै मुसलधार बार बार घोरिकै।—कविता०।

पाथर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पत्थर"।

पाथेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ रास्ते का कलेवा। २ पथिक का राहखर्च। सबल। राहखर्च।

पाथोज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। उ०—पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो।—मानस।

पाथोद—संज्ञा पुं० [सं०] बादल। उ०—पाथोदगात सरोजमुख राजीव आयत लोचनं।—मानस।

पाथोधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। उ०—सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा।—मानस।

पाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. चरण। पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। ३ चौथा भाग। चौथाई। ४ पुस्तक का विशेष अंश। ५. वृक्ष का मूल। ६ नीचे का भाग। तल। ७ बड़े पर्वत के समीप में छोटा पर्वत। ८. चलना। गमन।

संज्ञा पुं० [सं० पर्द] वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले। अपान वायु। अधोवायु।

पादक—वि० [सं०] चलनेवाला। २. चौथाई। चतुर्थांश।

पादग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] पैर छूकर प्रणाम करना।

पादज—वि० [सं०] पैर से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० शूद्र।

पादटीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो। (अं०) फुटनोट।

पादतल—संज्ञा पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पादत्र, पादत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] १ खड़ाऊँ। २ जूता।

पादना—क्रि० अ० [हिं० पाद] वायु छोड़ना। अपान वायु का त्याग करना।

पादन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ चलना। पैर रखना। २ नाचना।

पादप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष। पेड़। २. बैठने का पीढ़ा।

पादपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] पीढ़ा।

पादपूरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना। २ वह अक्षर या शब्द जो किसी पद को पूरा करने के लिये उसमें रखा जाय।

पादप्रक्षालन—संज्ञा पुं० [सं०] पैर धोना।

पादप्रणाम—संज्ञा पुं० [सं०] साष्टांग दंडवत। पाँव पड़ना।

पादप्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] लात मारना। ठोकर मारना।

पादरक्ष, पादरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे पैरों की रक्षा हो, जैसे, जूता।

पादरी—संज्ञा पुं० [पुर्त० पेड्रे] ईसाई धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म अत्येष्टि आदि संस्कार और उपासना कराता है।

पादवंदन—संज्ञा पुं० [सं०] पैर पकड़कर प्रणाम करना।

पादशाह—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पादशुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चरण-सेवा। २. पैर दबाना।

पादहीन—वि० [सं०] १. जिसके तीन ही चरण हों। २ जिसके चरण न हों।

पादाकुलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसके प्रत्येक पद में चार चौकल हों, जैसे—'चौकल चार जहाँ पर आनो। छंद सु पादाकुलक बखानो ॥' —छंद प्रभाकर। चौपाई और पादाकुलक में अंतर यह है कि प्रथम में प्रत्येक चरण में चार चार चौकल रहना आवश्यक नहीं है किंतु दूसरे में है। इस प्रकार जिस चौपाई के चारो चरणों में चार चार चौकल हों उसे पादाकुलक कह सकते हैं; जैसे—गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन-अमिय दृग-दोष विभंजन ॥ जहाँ ऐसा न हो वहाँ शुद्ध चौपाई होती है; जैसे—सोह रघुबर सोह लछिमन सीता। देखि सती अति भई सभीता ॥ चौपाई की १६ मात्राओं में लघु गुरु या चौकलों के क्रम का बंधन नहीं रहता। पादाकुलक के पद्धरि, अरिल्ल, डिल्ला, उपचित्रा, पज्झटिका, सिंह, मत्त-समक, विश्लोक, चित्रा और वानवासिका ये ६ मुख्य भेद हैं।

पादाक्रांत—वि० [सं०] पददलित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।

पादाति, पादातिक—संज्ञा पुं० [सं०] पैदल सिपाही। प्यादा।

पादारघ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पाद्यार्घ"।

पादी—संज्ञा पुं० [सं० पादिन्] १ पैर वाला जीव। २. चरणवाला छंद। ३ पैरवाला जलजंतु, जैसे, मगर, घड़ियाल। ४ पैरवाला जल और स्थल दोनों पर रहनेवाला जंतु, जैसे, गोह। ५ किसी संपत्ति की चौथाई का हकदार।

पादीय—वि० [सं०] पदवाला। मर्यादा-वाला; जैसे, कुमारपादीय।

पादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खड़ाऊँ। २ जूता। उ०—सिंहासन पर पूजि पादुका बारहिं बार जोहारे। —गीता०।

पादोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २. चरणामृत। उ०—अति आदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥ —मानस।

पाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ।

पाद्यक—संज्ञा पुं० [सं०] पाद्य देने का एक भेद।

पाद्यार्घ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २. पूजा की सामग्री। ३ पूजा में भेंट या नजर।

पाधा—संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] १. आचार्य। उपाध्याय। २. पंडित।

पान—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे घूँट घूँट करके उतारना। पीना। उ०—मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक। पालै पोषै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक। —दोहा०। २. मद्यपान। शराब पीना। उ०—संग जती, तें कुमंत्र तें राजा। मान तें ज्ञान पान तें लाजा ॥ —मानस। ३ पीने का पदार्थ। पेय द्रव्य। उ०—औषध मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल नाना ॥ —मानस। ४ मद्य। उ०—पान, पकवान, विधि नाना को सधानो, सीधो, विविध विधान धान बरत बखारहीं। —कविता०। ५ पानी। उ०—सीस दीन मैं अगमन प्रेम पान सिर मेलि। अब सो प्रीति निबाहउ चलो सिद्ध है पद्मावत। ६ कटोरा। प्याला

(पु)संज्ञा पुं० [सं० प्राण]

संज्ञा पुं० [सं० पर्ण] १ एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते कत्था, सुपारी आदि रखकर बनाकर खाते हैं। तांबूलवल्ली

यौ०—जलपान=(१) (२) कलेवा। विषपान=[illegible] मद्यपान=शराब पीना। धूम =बीड़ी, सिगरेट, सिगार,

पीना। स्तनपान=दुग्धपान। अधरपान =अधरों का गाढ़ चुंबन।

मुहा०—(बीड़ा) पान उठाना=कुछ करने की प्रतिज्ञा करना। पान कमाना=पान को उलटना पुलटना और सड़े अंश या पत्तों को अलग करना। पान खिलाना=मँगनी करना। सगाई करना। वर कन्या के ब्याह के लिये दोनों पक्षों का वचनबद्ध होना। पान चीरना=ऐसे काम करना जिनसे कोई लाभ न हो। पान देना=कोई साहसपूर्ण काम करने के लिये किसी को वचनबद्ध करना। पान देना=दे० "बीड़ा देना"। पानपत्ता=(१) लगा या बना हुआ पान। (२) तुच्छ पूजा या भेंट। पान फूल। पान फूल=(१) सामान्य उपहार या भेंट। (२) अत्यंत कोमल वस्तु। पान बनाना=(१) पान में चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। (२) पान लगाना। पान लेना=दे० "बीड़ा लेना"। उ०—नृपति के लै पान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहूँ पास धाऊँ।—सूर०।

३ पान के आकार की कोई चीज। ४ ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक।

Ⓟ संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पानगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सभा या मंडली जो शराब पीने के लिये बैठी हो।

पानड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पान+ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार की सुगंधित पत्ती।

पानदान—संज्ञा पुं० [हिं० पान+फा० दान (प्रत्य०)] वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है। पनडब्बा।

पानरा—संज्ञा पुं० दे० "पनारा"।

पानही—संज्ञा स्त्री० दे० "पनही"। इतनी जिय लालसा दास के कहत पान ही गहिहौ।—विनय०।

पाना—क्रि० स० [सं० प्रापण] १ अपने पास या अधिकार में करना। उपलब्ध करना। प्राप्त करना। हासिल करना। २ भला या बुरा परिणाम भोगना। ३ दी या खोई हुई चीज वापस मिलना। ४ पता पाना। भेद पाना। समझना। ५ कुछ सुन या जान लेना। ६ देखना। साक्षात् करना। ७ अनुभव करना। भोगना। उठाना। ८. समर्थ होना। सकना। (संयोज्य क्रिया में) ९. पास तक पहुँचना। १० किसी बात में किसी के बराबर पहुँचना। बराबर होना। ११. भोजन करना। खाना। उ०—तेहि छन तहँ शिशु पावत देखा। पलना निकट गई तहँ पेखा।—विश्रामसागर। १२. पाने का हक। पावना। प्राप्तव्य। १३ जानना। समझना। अनुभव करना। उ०—करुनामय रघुनाथ गोसाईं। बेगि पाइअहि पीर पराई।—मानस।

वि० जिसे पाने का हक हो। प्राप्तव्य। पावना।

पानागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों।

पानात्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जो बहुत मद्य पीने से होता है। इसमें हृदय में दाह और पीड़ा होती है, मुँह पीला पड़कर सूख जाता है। रोगी को मूर्च्छा आती है, वह अंड बंड बकता है और उसके मुँह से झाग गिरने लगती है।

पानि—संज्ञा पुं० [सं० पाणि] हाथ। उ०—जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि। बंदौं सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि।—मानस।

Ⓟ संज्ञा पुं० दे० "पानी"। उ०—केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा।—मानस।

पानिग्रहणⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पाणिग्रहण"। उ०—पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हिय हरषे तब सकल सुरेसा।—मानस।

पानिप—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+प (प्रत्य०)] १ ओप। द्युति। कांति। २. चमक। आब। 'दास' को तौ ज्यों ज्यों प्रभु पानिप चढ़ैहौ त्यों त्यों पानिप चढ़ैहौ बेस राबरे के बाने में (यहाँ दूसरे 'पानिप' का अर्थ)।—रससाराश। ३ प्रतिष्ठा। ४ शोभा। सौंदर्य। उ०—आवै जित पानिप समूह सरसात नित मानै जल जात सुतौ न्याय ही कुमति होइ।—शृंगारनिर्णय। ५ पानी। उ०—नेहउपजावन अतूल तिल फूल कैधौं पानिप सरोवरी की उरमी उतंग है।—शृंगारनिर्णय।

पानी—संज्ञा पुं० [सं० पानीय] १ अम्लजन और उद्जन (अं० आक्सिजन-हाईड्रोजन) के परमाणुओं के योग से बना हुआ गंध और स्वादरहित पारदर्शक तरल द्रव्य जो ताप से भाप और शीत से हिम हो जाता है। २. नदी, तालाब, कुआँ, समुद्र, झरना, वर्षा, आँसू, पसीना, थूक, पेशाब, उदक धातुओं आदि में मिलनेवाला ऐसा तरल पदार्थ। अंबु। तोय। जल। उदक।

मुहा०—पानी आना=(१) पानी का रस रसकर एकत्र होना। (२) कूएँ तालाब में पानी का सोता खुलना। (३) घाव, आँख, नाक आदि में पानी भर आना। या उनसे पानी गिरना। पानी उठाना=(१) पानी सोखना; जैसे, मुलायम आटा खूब पानी उठाता है। (२) पानी औटाना। पानी काटना=(१) पानी का बाँध काट देना। (२) एक नाली से दूसरी में पानी ले जाना। (३) तैरते समय हाथ से पानी को हटाना। पानी चीरना। पानी का बताशा या बुलबुला=क्षणभंगुर वस्तु। पानी की तरह बहाना=अंधाधुंध खर्च करना। उड़ाना या लुटाना। पानी के मोल=बहुत सस्ता। पानी टूटना=कुएँ, ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके। पानी देना=(१) पानी से भरना। सींचना। (२) पितरों के नाम अंजलि में लेकर पानी गिराना। तर्पण करना। पानी पढ़ना=मंत्र पढ़कर पानी फूँकना। पानी परोरना=पानी पढ़ना या फूँकना। पानी पानी होना=लज्जित होना। लज्जा से कट जाना। पानी फूँकना=मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना। (किसी पर) पानी फेरना या फेर देना=चौपट कर देना। मटियामेट कर देना। (किसी के सामने) पानी भरना=(किसी से तुलना में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना। फीका पड़ना। पानी भरी खाल=अनित्य या क्षणभंगुर शरीर। पानी में आग लगाना=जहाँ झगड़ा होना असंभव हो, वहाँ झगड़ा करा देना। पानी में फेंकना या बहाना=नष्ट करना। बरबाद करना। सूखे पानी में डूबना=भ्रम में पड़ना। धोखा खाना। मुँह में पानी आना या छूटना=(१) स्वाद लेने का गहरा लालच होना। (२) गहरा लोभ होना।

२. वह पानी का सा पदार्थ जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले। ३ मेह। वर्षा। वृष्टि। ४. पानी जैसी पतली वस्तु। ५ किसी वस्तु का सार अंश जो जल के रूप में हो। रस। अर्क। जूस। ६ चमक। आब। कांति। छवि। ७ धारदार हथियारों के लोहे का वह हलका स्याह रंग जिससे उसकी उत्तमता की पहचान

होती है। आब। जौहर। ८ मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू।

मुहा०—पानी उतारना=अपमानित करना। इज्जत उतारना। पानी जाना= प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना।

९ वर्ष। साल; जैसे, पाँच पानी का सूअर। १०. मुलम्मा। ११. मरदानगी। जीवट। हिम्मत। १२. पशुओं की वशागत विशेषता या कुलीनता। १३ पानी की तरह ठढा पदार्थ।

मुहा०—पानी करना या कर देना= किसी के चित्त को ठढा कर देना। किसी का गुस्सा उतार देना।

१४. पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। १५ लड़ाई या द्वंद्वयुद्ध। १६. बार। बेर। दफा। १७. जलवायु। आबहवा।

मुहा०—पानी लगना=स्थान विशेष के जलवायु के कारण स्वास्थ्य बिगड़ना या रोग होना।

Ⓟसज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पानीदार—वि० [हिं० पानी+फा० दार (प्रत्य०)] १ आबदार। चमकदार। २ इज्जतदार। माननीय। ३ जीवटवाला। मरदाना। साहसी। स्वात्माभिमानी।

पानीदेवा—वि० [हिं० पानी+देवा= देनेवाला] तर्पण या पिंडदान करनेवाला। वशज।

पानीफल—सज्ञा पुं० [हिं० पानी+सं० फल] सिंघाड़ा।

पानीय—संज्ञा पुं० [सं०] जल।

वि० १ पीने योग्य। जो पीया जा सके। २ रक्षा करने योग्य। रक्षा सबंधी।

पानूसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।

पानौरा—संज्ञा पुं० [हिं० पान+बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्योⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पाना"।

पाप—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो। धर्म या पुण्य का उलटा। बुरा काम। गुनाह। अघ। पातक।

मुहा०—पाप उदय होना=संचित पाप का फल मिलना। पिछले जन्मों के पाप का बदला मिलना। पाप कटना=पाप का नाश होना। पाप कमाना या बटोरना= पाप कर्म करना। पाप लगना=पाप होना दोष होना।

२. अपराध। कसूर। जुर्म। ३ वध। हत्या। ४. पापबुद्धि। बुरी नीयत। बुराई। ५. अनिष्ट। अहित। खराबी। ६. झंझट। जजाल।

मुहा०—पाप कटना = झगड़ा दूर होना। जंजाल छूटना। पाप मोल लेना= जान बूझकर किसी बखेड़े के काम में फँसना। Ⓟपाप पड़ना=मुश्किल पड़ जाना। कठिन हो जाना।

७ पापग्रह। अशुभ ग्रह।

पापकर्म—सज्ञा पुं० [सं०] वह काम जिसके करने में पाप हो।

पापकर्मा—वि० दे० "पापी"।

पापगण—सज्ञा पुं० [स०] छद शास्त्र के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद।

पापग्रह—सज्ञा पुं० [सं०] शनि, राहु, केतु, ये अशुभ फल देनेवाले ग्रह (फलित)।

पापघ्न—वि० [सं०] जिससे पाप नष्ट हो।

संज्ञा पुं० [सं०] तिल।

पापाचारी—वि० [सं० पापचारिन्] [स्त्री० पापचारिणी] पापी। पाप करनेवाला।

पापड़—सज्ञा पुं० [सं० पर्पट] उर्द अथवा मूँग की धोई के बेसन आदि से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती जो तेल में तलकर या आग में भूनकर खाई जाती है।

मुहा०—पापड़ बेलना=(१) बड़ी मिहनत करना, जैसे, आपसे किसने कहा था कि इस काम में इतने पापड़ बेलें? (२) कठिनाई या दु ख से दिन काटना। बहुत से पापड़ बेलना=बहुत तरह के काम कर चुकना, जैसे, उसने बहुत से पापड़ बेले हैं।

वि०—१ बारीक। पतला। कागज सा। २ सूखा। शुष्क।

पापड़ा—सज्ञा पुं० [स० पर्पट] १. एक पेड़ जिसकी लकड़ी से कंघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं। २ दे० "पित्त-पापड़ा"।

पापड़ाखार—सज्ञा पुं० [स० पर्पटक्षार] केले के पेड़ का क्षार।

पापदृष्टि—वि० [स०] १ जिसकी दृष्टि पापमय हो। २ जिसकी दृष्टि पड़ने से हानि पहुँचे।

पापनाशक, पापनाशन—सज्ञा पुं० [सं०] १ पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी। २ प्रायश्चित्त। ३. विष्णु। ४ शिव।

पापयोनि—सज्ञा स्त्री० [सं०] पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के अतिरिक्त अन्य-पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की-योनि।

पापर—दे० "पापड़"। उ०—फेनी पापर भूँजे भए अनेक प्रकार। भइ जाउर भिजयावर सीझी सब ज्योनार॥ —पदमावत।

पापरोग—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह रोग जो कोई विशेष पाप करने से होता है। धर्मशास्त्रानुसार कुष्ठ, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतकुष्ठ, मूकता, उन्माद, अपस्मार, अंधत्व, काणत्व आदि रोग पापरोग माने गए हैं। २. वसत रोग। छोटी माता।

पापलोक—संज्ञा पुं० [सं०] नरक।

पापहर—वि० पुं० [सं०] पापनाशक।

पापाचार—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० पापाचारी] पाप का आचरण। दुराचार।

पापात्मा—वि० [सं० पापात्मन्] पाप में अनुरक्त। पापी। दुष्टात्मा।

पापिष्ठ—वि० [सं०] बहुत बड़ा पापी।

पापी—वि० [सं० पापिन्] [स्त्री० पापिनी] १ पाप करनेवाला। अघी। पातकी। २. क्रूर। निर्दय। नृशंस। परपीड़क।

पापीयस—वि० [स०] [स्त्री० पापीयसी] पापी। पातकी।

पापोश—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जूता। २ पाँव पोछने के लिये नारियल, तार आदि का बुना हुआ टुकड़ा।

पाबंद—वि० [फा०] [सज्ञा स्त्री० पाबंदी] १ बँधा हुआ। बद्ध। पराधीन। कैद। २. किसी बात, नियम, आज्ञा, वचन आदि का नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला। ३. किसी नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिये नियमतः या न्यायतः विवश।

सज्ञा पुं० १. घोड़े की पिछाड़ी। २. नौकर। सेवक।

पाबंदी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पाबंद होने का भाव। बद्धता। अधीनता। २ मजबूरी लाचारी। ३ किसी का नियमित अनुसरण।

पामड़ा—सज्ञा पुं० दे० "पाँवड़ा"।

पामर—वि० [सं०] [सज्ञा पामरता] १ खल। दुष्ट। कमीना। २ पापी। अधम। ३ नीच कुल या वश में उत्पन्न। ४. मूर्ख। निर्बुद्धि।

पामरी—सज्ञा स्त्री० [सं० प्रावार] दुपट्टा। उपरना। उ०—ओढ़े पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल। मौहैं काँट कँटीलियाँ सिर कीन्हीं बिन मोल॥ —सूर०।

संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ी"।

पामाल—वि० [फा० पा+माल=रौंदना] [संज्ञा पामाली] १ तबाह। बरबाद। चौपट। २. पैर से मला या रौंदा हुआ। पददलित।

पायँ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पावँ"। उ०—दडक पुहुमि पायँ परसि पुनीत भई, उकठे विटप लागे फूलन फरन। —विनय०।

पायँजेहरि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पाजेब"।

पायँता—संज्ञा पुं० [हिं० पायँ+सं० स्थान] पलँग या चारपाई का वह भाग जिधर पैर रहता है। सिरहाने का उलटा। पैताना।

पायँती—संज्ञा स्त्री० दे० "पायँता"।

पायदाज—संज्ञा पुं० [फा०] पैर पोंछने का बिछावन।

पाय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पाद] पैर। पाँव।

पायक—संज्ञा पुं० [सं० पादातिक,पायिका] १ धावन। दूत। हरकारा। उ०—हैं दस-सीस मनुज रघुनायक। जाके हनूमान से पायक॥ —मानस। २ दास। सेवक। अनुचर। ३. पैदल सिपाही।

वि० [सं० प्रापक] पानेवाला। उ०—मातुवचन सुनि स्रवत नयन जल, कछु सुभाउ जनु नरतनु पायक। —गीता०।

पायतख्त—संज्ञा पुं० [फा०] राजधानी।

पायतन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पायँता"।

पायताबा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पैर का एक पहनावा जिससे उँगलियों से लेकर पूरी या आधी टाँगें ढकी रहती हैं। मोजा। जुर्राब। २ जूते के भीतर तले के बराबर बिछा हुआ चमड़े आदि का टुकड़ा। सुखतला।

पायदार—वि० [फा०] [संज्ञा पायदारी] बहुत दिनों तक टिकनेवाला। टिकाऊ। दृढ़। मजबूत।

पायमाल—वि० दे० "पायमाल"।

पायरा—संज्ञा पुं० [हिं० पाय+रा] घोड़े की जीन के दोनों ओर सवार के पैर रखने के लिये तसमे में लगा हुआ लटकनेवाला लोहे का आधार। रकाब।

पायल—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाय+ल (प्रत्य०)] १ पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना जिसमें घुँघरू लगे रहते हैं। नूपुर। पाजेब। २. तेज चलनेवाली हथनी। ३ वह बच्चा जिसके पैर जन्म के समय पहले बाहर हों। ४. बाँस की सीढ़ी।

पायस—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूध में पकाया हुआ चावल आदि। खीर। २ सरल निर्यास। सलई का गोंद।

पायसा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० पायस या परोसा] ज्यौनार।

संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पड़ोस।

पाया—संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. पलँग, चौकी आदि में खड़े डंडे या खंभे के आकार का वह भाग जिसके सहारे उसका ढाँचा ऊपर ठहरा रहता है। गोड़ा। पावा। २ खंभा। स्तंभ। ३ पद। दरजा। ओहदा। ४. सीढ़ी। जीना।

पायाब—वि० [फा०] [संज्ञा पायाबी] इतना कम गहरा (जल) जो पैदल चलकर पार किया जा सके।

पायी—वि० [सं० पायिन्] पीनेवाला।

पायु—संज्ञा पुं० [सं०] १ मलद्वार। गुदा। २ भरद्वाज ऋषि के एक पुत्र का नाम।

पारंगत—वि० [सं०] [स्त्री० पारंगता] १ पार गया हुआ। २ पूर्ण पंडित। पूरा जानकार।

पारंपरीण—वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ। परंपरागत।

पारंपर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ परंपरा का भाव। २ परंपराक्रम। ३. वंशपरंपरा। ४ परंपरा से चली आती हुई रीति।

पार—संज्ञा पुं० [सं०] १. नदी, झील आदि जलाशयों के आमने सामने के दोनों किनारों में उस किनारे से भिन्न किनारा जहाँ (या जिसकी ओर) अपनी स्थिति हो। दूसरी ओर का किनारा।

यौ०—आर पार=(१) यह किनारा और वह किनारा। (२) इस किनारे से उस किनारे तक।

मुहा०—पार उतारना=(१) किसी काम से छुट्टी पाना (२) सिद्धि या सफलता प्राप्त करना। (३) समाप्त करना। ठिकाने लगाना। मार डालना। (नदी आदि) पार करना=(१) जल आदि का मार्ग तै करना। (२) पूरा करना। समाप्ति पर पहुँचाना। (३) निबाहना। बिताना। पार लगना=नदी आदि के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी से पार लगना=पूरा हो सकना। हो सकना। पार लगाना=(१) किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना। (२) कष्ट या दुःख से बाहर करना। उद्धार करना (३) पूरा करना। खतम करना। पार होना=(१) किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। (२) किसी काम को पूरा कर चुकना।

२. सामनेवाला दूसरा पार्श्व। दूसरी ओर। दूसरी तरफ। उ०—बैठेउ सभा खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई।—मानस। ३ छोर। अंत। अखीर। हद। परिमिति।

मुहा०—पार पाना=अंत तक पहुँचना। समाप्ति तक पहुँचना। (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। जीतना।

अव्य० परे। आगे। दूर। उ०—विप्र, धेनु, सुर, संत हित लीन्ह मनुज अवतार। निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार। —मानस।

पारई†—संज्ञा स्त्री० १ दे० "पारा"। २ परई। सकोरा। मिट्टी का प्याला। उ०—मनि भाजन मधु, पारई पूरन अमी निहारि। का छाँड़िय का संग्रहिय कहहु विवेक विचारि।—दोहा०।

पारख(पु)†—संज्ञा स्त्री० १ दे० "पारिख"। २. दे० "परख"। ३. दे० "पारखी"।

पारखद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

पारखी—संज्ञा पुं० [हिं० पारख+ई (प्रत्य०)] १. वह जिसे परख या पहचान हो। २ परखनेवाला। परीक्षक। उ०—सोइ पंडित सोइ पारखी सोई संत सुजान। —वैराग्य०।

पारग—वि० [सं०] १ पार जानेवाला। २ काम को पूरा करनेवाला। समर्थ। ३ पूरा जानकार।

पारचा—संज्ञा पुं० [फा०] १. टुकड़ा। खंड। धज्जी (विशेषत कपड़े, कागज आदि की)। २ कपड़ा। पट। वस्त्र। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. पहनावा। पोशाक।

पारजात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पारिजात"।

पारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। २ तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३ मेघ। बादल। ४ समाप्ति।

पारतंत्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] परतंत्रता। दासता। पराधीनता।

पारत्रिक—वि० दे० "पारलौकिक"।

पारथ—संज्ञा पुं० दे० "पार्थ"।

पारथिव—संज्ञा पुं० दे० "पार्थिव"। उ०—तब मज्जन करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा।—मानस।

पारद—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। २. मनुस्मृति, महाभारत आदि के अनुसार पश्चिम का एक देश और वहाँ का निवासी। ३ इस देश में रहनेवाली एक जाति।

पारदर्शक—वि० [सं०] जिसमें आर पार दिखाई पड़े; जैसे शीशा पारदर्शक पदार्थ है।

पारदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी—वि० [सं० पारदर्शिन्] [स्त्री० पारदर्शिनी] १. उस पार तक देखनेवाला। २ दूरदर्शी। चतुर। बुद्धिमान्। ३ जो पूरा पूरा देख चुका हो।

पारधी—संज्ञा पुं० [सं० परिधान] १ टट्टी आदि की ओट से पशुपक्षियों को पकड़ने या मारनेवाला। बहेलिया। व्याध। २ शिकारी। ३. हत्यारा।

पारन—संज्ञा पुं० दे० "पारण"।

पारना—क्रि० स० [हिं० परना (पड़ना) का स० रूप] १ डालना। गिराना। २ २ जमीन पर लंबा डालना। ३. लेटाना। ४. कुश्ती या लड़ाई में गिराना। पछाड़ना। ५ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में रखने, ठहराने या मिलाने के लिये उसमें गिराना या रखना। ६ रखना। उ०—मन न धरत मेरो कह्यो तू आपने समान। अहे परनि परि प्रेम की परहथ पारि न प्रान।—बिहारी०।

यौ०—पिंडा पारना = पिंडदान करना। उ०—जाय बनारस जार्‍यो कया। पार्‍यो पिंड नहायो गया।—पद्मावत।

७. किसी के अंतर्गत करना। शामिल करना। उ०—जे दिन गए तुमहिं बिनु देखे। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे।—मानस। ८ शरीर पर धारण करना। पहनाना। ९ बुरी बात घटित करना। उत्पात मचाना। उ०—औरै भाँति भएऽब ए चौसरु, चंदनु चंदु। पति-बिनु अति पारतु बिपति मारतु मारुतु मंदु।—बिहारी०। १० साँचे आदि में डालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना, जैसे, ईंट, खपड़ा या काजल पारना।

(पु)†क्रि० अ० [हिं० पार लगना] सकना। समर्थ होना। उ०—प्रभु सनमुख कछु कहै न पारइ। पुनि पुनि चरन सरोज निहारइ।—मानस।

(पु)†क्रि० स० दे० "पालना"।

पारमार्थिक—वि० [सं०] १. परमार्थ संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो। जिससे पारलौकिक सुख मिले। २ सदा ज्यों का त्यों रहनेवाला। वास्तविक। जो परिणामी या परिवर्तनशील न हो। नामरूप से परे शुद्ध सत्य।

पारलौकिक—वि० [सं०] १ परलोक-संबंधी। २ परलोक में शुभ फल देनेवाला।

पारवश्य—संज्ञा पुं० [सं०] परवशता।

पारशव—संज्ञा पुं० [सं०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न व्यक्ति या जाति (याज्ञवल्क्य०)। ३ लोहा। ४ एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।

पारषद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

पारस—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] १ एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुलाया जाय तो सोना हो जाता है। स्पर्शमणि। २ अत्यंत लाभदायक और उपयोगी वस्तु, जैसे, तुम्हारे हाथ अच्छा पारस लग गया है। ३ वह जो दूसरे को अपने समान कर ले।

वि० १ पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २ चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। ३ जो दूसरे को भी अपने ही समान कर ले। उ०—पारस जोनि लिलाटहि ओती। दिरिट जो करै होइ तेहि जोती॥—पद्मावत।

संज्ञा पुं० [हिं० परसना] १ खाने के लिये लगाया हुआ भोजन। परसा हुआ खाना। २ पत्तल जिसमें खाने के लिये पकवान, मिठाई आदि हो। परोसा।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पास। निकट। उ०—भृकुटी कुटिल निकट नैनन के चपल होत यहि भाँति। मनहुँ तामरस पारस खेलत बाल भृंग की पाँति॥—सूर०।

संज्ञा पुं० [सं० पलाश] बादाम या खुबानी की जाति का एक मझोला पेड़ जो ढाक के समान जान पड़ता है। गीदड़ ढाक।

संज्ञा पुं० [पारस्य] प्राचीन कांबोज और वाह्लीक तथा वर्तमान अफगानिस्तान के पश्चिम का देश जिसकी किसी समय दुनिया में धाक थी और जो सभ्यता और शिष्टाचार के लिये प्रसिद्ध था।

पारसनाथ—संज्ञा पुं० दे० "पार्श्वनाथ"।

पारसव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पारशव"।

पारसा—वि० [फा०] [संज्ञा पारसाई] धर्मनिष्ठ। सदाचारी।

पारसी—वि० [फा० पारस] पारस देश का। पारस देश संबंधी।

संज्ञा पुं० १ पारस देश का रहनेवाला आदमी। २ हिंदुस्तान में बंबई और गुजरात की ओर हजारों वर्ष से बसे हुए वे पारस देश के निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारस छोड़कर यहाँ आए थे।

पारसीक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पारस देश। २ पारस देश का निवासी। ३ पारस देश का घोड़ा।

पारस्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का प्राचीन नाम। २ एक गृह्यसूत्रकार मुनि।

पारस्परिक—वि० [सं०] [भाव० पारस्परिकता] परस्पर होनेवाला। आपस का।

पारस्य—संज्ञा पुं० [सं०] पारस देश।

पारा—संज्ञा पुं० [सं० पारद] चाँदी की तरह सफेद और चमकीली एक धातु जो साधारण गरमी या सरदी में द्रव अवस्था में रहती है।

मुहा०—पारा पिलाना = किसी वस्तु को इतना भारी करना मानों उसमें पारा भरा हो।

संज्ञा पुं० [सं० पारि = प्याला] दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन। परई।

संज्ञा पुं० [फा० पार] १. टुकड़ा। २ वह छोटी दीवार जो केवल पत्थरों के टुकड़े एक दूसरे पर रखकर बनाई गई हो।

पारायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूरा करने का कार्य। समाप्ति। २ समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।

पारायणिक—संज्ञा [सं०] १ पाठ करनेवाला आद्योपांत पढ़नेवाला। २ छात्र।

पारावत—संज्ञा पुं० [सं०] १ परेवा। पंडुक। २ कबूतर। कपोत। ३. बंदर। ४ गिरि। पर्वत।

पारावार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सीमा। हद। दोनों तट। २. आर पार। ३ समुद्र।

पाराशर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पराशर का पुत्र या वंशज। २ व्यास।

वि० १ पराशर संबंधी। २ पराशर का बनाया हुआ।
पाराशरी—संज्ञा पुं० [सं० पाराशरिन्] व्यास के भिक्षुसूत्र का अध्ययन करनेवाला। संन्यासी। चतुर्थाश्रमी।
पारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० पार] १ हद। सीमा। २ ओर। तरफ। दिशा। देश। ३. जलाशय का तट।
संज्ञा पुं० [सं०] मद्य पीने का पात्र। प्याला।
पारिख(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "परख"।
पारिजात—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देववृक्ष जो स्वर्गलोक में इंद्र के नंदनकानन में है। यह समुद्रमंथन के समय निकला था। २ परजाता। हरसिंगार। ३. कोविदार। कचनार। ४ पारिभद्र। फरहद। ५. ऐरावत के कुल का एक हाथी। ६ एक पहाड़। ७ एक मुनि।
पारिजातक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पारिजात"।
पारितोषिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन या वस्तु जो किसी पर परितुष्ट या प्रसन्न होकर उसे दी जाय। इनाम।
वि० संतुष्ट या प्रसन्न करनेवाला।
पारिपंथिक—संज्ञा पुं० [सं०] बटपार। डाकू। चोर। लुटेरा।
पारिपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] सप्तकुल पर्वतों में से एक जो विंध्य के अंतर्गत है।
पारिपार्श्व—संज्ञा पुं० [सं०] पारिषद। अनुचर। अरदली।
पारिपार्श्विक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पास खड़ा रहनेवाला। सेवक। पारिषद। अरदली। २ नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है।
पारिप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञों में कहा जानेवाला एक आख्यान (शतपथ ब्राह्मण)। २ नाव। जहाज। ३ एक तीर्थ (महाभारत)।
पारिभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ फरहद का पेड़। २ देवदार। ३ सलई का वृक्ष। कुट।
पारिभद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पारिभद्र"।
पारिभाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिभू या जामिन होने का भाव। २ कुट नाम की ओषधि।
पारिभाषिक—वि० [सं०] जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय; जैसे, पारिभाषिक शब्द। किसी के गुण, धर्म, स्वभाव आदि के ठीक ठीक विवरण से संबंध रखनेवाला।
पारियात्र—संज्ञा पुं० दे० "पारिपात्र"।
पारिव्राज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. परिव्राजक का कर्म या भाव। २ पीपल की एक जाति।
पारिषद—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिषद् में बैठनेवाला। सभासद। सभ्य। २ अनुयायिवर्ग। गण, जैसे, शिव के पारिषद, विष्णु के पारिषद।
पारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बार, बारी] किसी बात का अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो। बारी। ओसरी।
पारुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वचन की कठोरता। बात का कड़वापन। २ इंद्र का वन।
पार्क—संज्ञा पुं० [अं०] नगर का सार्वजनिक उपवन। उद्यान। बाग।
पार्टी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. दल। पक्ष। मंडली। २ वह संमिलन जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है।
पार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा। पृथ्वीपति। २ कुंती (पृथा) के युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन नामक तीन पुत्रों में से कोई। ३ अर्जुन। ४ अर्जुन वृक्ष।
पार्थक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथक् होने का भाव। भेद। २ जुदाई। वियोग।
पार्थव—संज्ञा पुं० [सं०] पृथु (मोटा) होने का भाव। भारीपन। विशालता। स्थूलता।
पार्थिव—वि० [सं०] १ पृथिवीसंबंधी। २ पृथिवी से उत्पन्न। मिट्टी आदि का बना हुआ, जैसे, पार्थिव शरीर। ३ राजा के योग्य। राजसी।
संज्ञा पुं० मिट्टी का शिवलिंग जिसके पूजन का बड़ा फल माना जाता है।
पार्थिवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ (पृथ्वी से उत्पन्न) सीता। २ उमा। पार्वती।
पार्थ्यो—संज्ञा पुं० वि० दे० 'पार्थिव'।
पार्वण—संज्ञा पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय, जैसे, अमावस्या या ग्रहण आदि के दिन किया जानेवाला श्राद्ध।
पार्वत—वि० [सं०] १ पर्वत संबंधी। २ पर्वत पर होनेवाला।
पार्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती है। शिवा। भवानी। उमा। गिरिजा। गौरी। २. गोपीचंदन।
पार्वतीय—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ का। पहाड़ी।
वि० पर्वत पर रहनेवाला।
पार्वतेय—वि० [सं०] पर्वत पर होनेवाला।
पार्श्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. छाती के दाहिने या बाएँ का भाग। बगल। २ अगल बगल की जगह। पास। निकटता। समीपता।
यौ०—पार्श्ववर्ती = साथी या मुसाहिब।
पार्श्वग—वि० [सं०] अनेक प्रकार के कुटिल उपाय रचकर धन कमानेवाला। चालबाजी के सहारे अपनी बढ़ती चाहनेवाला।
संज्ञा पुं० सहचर।
पार्श्वनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के तेईसवें तीर्थंकर जो वाराणसी के इक्ष्वाकुवंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
पार्श्ववर्ती—संज्ञा पुं० [सं० पार्श्ववर्तिन्] [स्त्री० पार्श्ववर्तिनी] १ पास रहनेवाला। मुसाहब।
पार्श्वस्थ—वि० [सं०] पास खड़ा रहनेवाला।
संज्ञा पुं० अभिनय के नटों में से एक।
पार्श्विक—वि० [सं०] १. बगलवाला। पार्श्वसंबंधी। २ अन्याय से रुपया कमाने की फिक्र में रहनेवाला।
पार्षद—संज्ञा पुं० [सं०] १ पास रहनेवाला सेवक। पारिषद। २ मुसाहब। मंत्री।
पार्सल—संज्ञा पुं० अं०] १ पुलिंदा। पैकेट। २ डाक, वायुयान या रेल से रवाना करने के लिये बँधा हुआ पुलिंदा, गठरी, पैकेट या बंडल।
मुहा०—पार्सल करना = बाँधकर या लपेटकर डाक, वायुयान या रेल द्वारा भेजना। पार्सल लगाना = गठरी या पुलिंदे को रेल, वायुयान या डाक द्वारा बाहर भेजने के लिये देना।
पालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पालक शाक। पालकी। २ बाज पक्षी। ३ एक रत्न जो काला, हरा और लाल होता है।
पालग—संज्ञा पुं० दे० "पलग"।
पाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पालनकर्ता।

पालक। २. चीते का पेड़। ३. पीकदान। ४. बंगाल का एक प्रसिद्ध राजवंश जिसने साढ़े तीन सौ वर्ष तक बंग और मगध में राज्य किया था।

संज्ञा पुं० [हिं० पालना] १. फलों को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिये पत्तों बिछाकर रखने की विधि।

संज्ञा पुं० [सं० पट या पाट] १ वह लंबा चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिये तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव को ढकेले। २ तंबू। शामियाना। चँदोवा। ३ गाड़ी या पालकी आदि ढाँकने का कपड़ा। ओहार।

संज्ञा स्त्री० [सं० पालि] १ पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा। मेड़। २ ऊँचा किनारा। कगार। भीटा। उ०—खेलत मानसरोवर गईं। जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं॥—पदमावत। ३ कुएँ के भीतर की दीवार गिर जाने की अवस्था।

संज्ञा पुं० [?] कबूतरों का जोड़ा खाना। कपोतमैथुन।

पालउ—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] १ पत्ता। पत्ती। २. कोमल और नया पत्ता। उ०—पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा॥ —मानस।

पालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पालनकर्ता। उ०—समन पाप संताप सोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के॥ —मानस। २ अश्वरक्षक। साईस। ३ पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र।

संज्ञा पुं० [सं० पालक्य] एक प्रकार का साग।

संज्ञा पुं० [हिं० पलंग] पलंग। पर्यंक।

पालकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पल्यंक] एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी कंधे पर लेकर चलते हैं और जिसमें आदमी आराम से लेट सकता है। म्याना। खड़खड़िया। शिविका। वह डोली। उ०—बिलखि निषाद नाथु अगुआई। मातु पालकी सकल चलाईं —मानस।

पालकीगाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पालकी + गाड़ी] वह (विशेषत घोड़े से खींची जानेवाली) गाड़ी जिसपर पालकी के समान छत हो।

पालट—संज्ञा पुं० [सं० पालन] दत्तक पुत्र।

संज्ञा स्त्री० [देश०] पटेबाजी की एक चोट का नाम।

पालतू—वि० [सं० पालना] १ पाला हुआ। पोसा हुआ। २. पाला जानेवाला।

पालथी—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्यस्त] बैठने का वह ढंग जिसमें दोनों जंघाएँ दोनों ओर फैलाकर जमीन पर रखी जाती हैं और घुटनों से दोनों टाँगें मोड़कर बायाँ पैर दाहिनी जंघा पर और दाहिना बाईं पर टिका दिया जाता है।

पालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १ भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवनरक्षा। भरण पोषण। परवरिश। उ०—जग संभव पालन लयकारिनि। निज इच्छा लीलावपु धारिनि॥—मानस। २. अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह। पूरा करना। भंग न करना। न टालना।

पालना—क्रि० स० [सं० पालन] १ भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवनरक्षा करना। भरणपोषण करना। परवरिश करना। उ०—जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की।—मानस। २ पशुपक्षी आदि को रखना। ३ भंग न करना। न टालना। पूरा करना। उ०—(१) अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बयन। ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति अयन।—मानस। (२) लरिकाइहिं ते रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी।—मानस।

संज्ञा पुं० [सं० पल्यंक] एक प्रकार का झूला या हिंडोला। पिंगूरा। गहवारा। उ०—झूलत राम पालने सोहैं। भूरि भाग जननी जन मोहैं।—गीता०।

पालनीय—वि० [सं०] पालन करने योग्य। पाल्य।

पालव—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] १ पल्लव। पत्ता। २ कोमल पत्ता।

पाला—संज्ञा पुं० [सं० प्रालेय] १ वायु और भूमि की अत्यधिक शीतलता के कारण जमकर पृथ्वी पर गिरी हुई भाप की सफेद तह। तुषार।

मुहा०—पाला मार जाना = पौधे या फसल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना।

२ हिम। बर्फ। ३ ठंढ। सरदी।

संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला] व्यवहार करने का संयोग। वास्ता। साबिका।

मुहा०—(किसी से) पाला पड़ना = व्यवहार करने का संयोग होना। वास्ता पड़ना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना = वश में होना। काबू में आना। पकड़ में आना। उ०—आजु करौं खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले।—मानस।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट, हिं० पाड़ा] १. प्रधान स्थान। सदर मुकाम। २ सीमा निर्दिष्ट करने के लिये मिट्टी की उठाई हुई मेड़ या छोटा भीटा। धुस। ३. अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्राय कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है। डेहरी। ४ कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह। अखाड़ा।

संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] झड़बेरी की पत्तियाँ जो राजपूताने आदि में चारे के काम आती हैं।

पालागन—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव + लगना] प्रणाम। दंडवत्। नमस्कार।

पालि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कान के पुट के नीचे का मुलायम चमड़ा या लौ। २. कोना। ३. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ४. किनारा। ५. सीमा। हद। ६ मेड़। बाँध। ७ करार। कगार। भीटा। ८. अंक। गोद। ९ परिधि। १०. चिह्न। ११ पुल। ढूह। १२ देग। बटलोई। १३ एक प्रस्थ के बराबर का एक पुराना माप। १४ गुरुकुल में छात्रों को दिया जानेवाला नियमित भोजन। १५. जूँ। चीलर।

पालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली। उ०—रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चह अचल नेम, देहि ह्वै प्रसन्न, पाहि प्रणतपालिका।—विनय०।

पालित—वि० [सं०] [स्त्री० पालिता] पाला हुआ। रक्षित।

पालिनी—वि० स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

पालिश—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ चिकनाई और चमक। ओप। २ रोगन या मसाला जिसके लगाने से चिकनाई और चमक आ जाय।

पालिसी—संज्ञा स्त्री० [अं०] नीति। कार्य साधन का ढंग।

पाली—वि० [सं० पालिन्] [स्त्री० पालिनी]

१. पालन करनेवाला। पोषण करनेवाला। २. रखनेवाला। रक्षा करनेवाला।

सज्ञा स्त्री० [सं० पालि=पंक्ति] एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं, और जिसका पठनपाठन स्याम, बरमा, सिंहल आदि देशों में उसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारतवर्ष में सस्कृत का। बौद्धों के त्रिपिटक नामक धर्मग्रंथ इसी भाषा में लिखे गए हैं।

३ खेलकूद, पढ़ाई आदि के विभाजित भाग।

पालू—वि० [हिं० पालना] पालतू।

पाल्य—वि० [सं०] पालन के योग्य।

पावँ—सज्ञा पुं० [स० पाद] वह अंग जिससे चलते हैं। पैर।

मुहा०—(किसी काम या बात में) पावँ अड़ाना=किसी बात में व्यर्थ संमिलित होना। फजूल दखल देना। पावँ उखड़ जाना=ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। लड़ाई में न ठहरना। पावँ उठाना=(१) चलने के लिये कदम बढ़ाना। (२)जल्दी जल्दी पैर आगे रखना। पाँव कट जाना=आने जाने की शक्ति या योग्यता न रहना। पाँव का खटका=पैर रखने की आहट। चलने का शब्द। पाँव गाड़ना=(१) पैर जमाना। जमकर खड़ा रहना। (२) लड़ाई में स्थिर रहना। पाँव घिसना=चलते चलते पैर थकना। पाँव जमाना=(१) पैर ठहरना। स्थिर भाव से खड़ा होना। (२) दृढ़ता रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। पाँव डिगना=स्थिर न रहना। विचलित होना। पाँव तले की मिट्टी निकल जाना=(किसी भयंकर बात को सुनकर) स्तब्ध सा हो जाना। होश उड़ जाना। ठक हो जाना। पाँव तोड़ना=(१) बहुत चलकर पैर थकाना। (२) बहुत दौड़ धूप करना। इधर उधर बहुत हैरान होना। घोर प्रयत्न करना। पाँव तोड़कर बैठना=(१) कहीं न जाना। अचल होना। स्थिर हो जाना। (२) हारकर बैठना। किसी के पाँव धरना=(१) पैर छूकर प्रणाम करना। (२) दीनता से विनय करना। हा हा खाना। बुरे पंथ पर पाँव धरना=बुरे काम में प्रवृत्त होना। पाँव धो धोकर पीना=बहुत अधिक आदर संमान करना। पाँव पकड़ना=(१) विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। उ०—जानति जो न श्याम ऐहैं पुनि पाँव पकरि घर राखती।—सूर०। (२) पैर छूना। बड़ी दीनता और विनय करना। हा हा खाना (३) पैर छूकर नमस्कार करना। पाँव पखारना=पैर धोना। पाँव पड़ना=(१) पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत करना। (२) अत्यंत दीनता से विनय करना। पाँव पर गिरना=दे० "पाँव पड़ना"। पाव पसारना=(१) पैर फैलाना। (२) आराम से पड़ना या सोना। (३) मरना। (४) आडंबर बढ़ाना। ठाटबाट करना। पाँव पाँव चलना=पैरों से चलना। पैदल चलना। पाँव पीटना=(१) बेचैनी से पैर पटकना। (२) घोर प्रयत्न करना। हैरान होना। पाँव पूजना=(१) बड़ा आदर सत्कार करना। बहुत पूज्य मानना। (२) विवाह में कन्यादान के समय कन्याकुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। पाँव फूँक फूँक कर रखना=बहुत बचाकर काम करना। बहुत सावधानी से चलना। पाँव फैलाना=(१) अधिक पाने के लिये हाथ बढ़ाना। मुँह बाना। पाकर भी अधिक का लोभ करना। (२) बच्चों की तरह अड़ना। जिद करना। मचलाना। पाँव बढ़ाना=(१) चलने में पैर आगे रखना। (२) अधिक बढ़ना। अतिक्रमण करना। पाँव बाहर निकालना=(१) ऐसी चाल चलना जो अपने से ऊँचे पद और वित्त के लोगों को शोभा दे। इतराकर चलना। (२) बेकहा होना। स्वेच्छाचारी होना। पाँव भर जाना=थकावट से पैर में बोझ सा मालूम होना। पैर थकना। पाँव भारी होना=गर्भ रहना। हमल होना। पाँव रोपना=प्रण करना। प्रतिज्ञा करना। पाँव लगना=(१) प्रणाम करना (२) विनती करना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना=(१) बराबर अपने पास रखना। पास से अलग न होने देना। (२) बड़ी चौकसी रखना। पावँ सो जाना=(१) पैर सुन्न हो जाना। स्तब्ध हो जाना। (२) पैर झन्ना उठना। (किसी के) पावँ न होना=ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। धरती पर पाँव न रखना=(१) बहुत घमंड करना। (२) फूले अंग न समाना।

पावँड़ा—सज्ञा पुं० [हिं० पावँ+ड़ा (प्रत्य०)] वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाता है। पायंदाज। उ०—परत पाँवड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवनु कियो भूपा॥—मानस।

पावँड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पावँ+ड़ी (प्रत्य०)] १ पादत्राण। खड़ाऊँ। २. जूता।

पावँरⓅ—वि० [सं० पामर] १. तुच्छ। खल। नीच। दुष्ट। उ०—छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहि पावँर जाना॥—मानस। २. मूर्ख। निर्बुद्धि। उ०—छूँछो मसक पवन पानी ज्यों तैसोई जनम विकारी हो। पाखँड धर्म करत हैं पावँर नाहिन चलत तुम्हारी हो॥—सूर०

सज्ञा पुं० दे० "पावँड़ा"।

सज्ञा स्त्री० दे० "पावँड़ी।

सज्ञा पुं० [अँ०] शक्ति।

पाव—सज्ञा पुं० [स० पाद] १ चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान। पासा खेलने का वह दाँव जिसे पौबारह कहते हैं।

पावक—सज्ञा पुं० [स०] १. अग्नि। आग। तेज। ताप। २. सदाचार। ३ अग्निमथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४. वरुण। ५ सूर्य।

वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

पावकमणि—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा।

पावकुलक—सज्ञा पुं० [सं० पादाकुलक] दे० "पादाकुलक"।

पावती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना] रुपए पाने का सूचक पत्र। रसीद।

पावदान—सज्ञा पुं० [हिं० पाँव+दान (प्रत्य०)] १ पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु। २ इक्के, गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिसपर पैर रखकर चढ़ते हैं।

पावन—वि० [स०] [स्त्री० पावनी] १. पवित्र करनेवाला। २ पवित्र। शुद्ध। पाक। उ०—मागध सूत बंदि गन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक॥—मानस।

सज्ञा पुं० १ अग्नि। २ प्रायश्चित्त। शुद्धि। ३ जल। ४. गोबर। ५ रुद्राक्ष। ६ व्यास का एक नाम। ७ विष्णु। ८ सिद्ध पुरुष।

पावनता—सज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्रता।

पावनत्व—सज्ञा पुं० [सं०] पवित्रता।

पावनाⓅ—क्रि० स० [स० प्रापण] १

पाना। प्राप्त करना। उ०—जाना राम सती दुखु पावा। निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा॥ —मानस। २ अनुभव करना। जानना। समझना। उ०—करुनामय रघुनाथ गोसाईं। बेगि पाइअहिं पीर पराईं॥ —मानस। ३. भोजन करना। उ०—तेहि छन तहँ शिशु पावत देखा। पलना निकट गई तहँ पेखा॥ —विश्रामसागर। ४. दे० "पाना"।

संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक। लहना। २ वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

पावली—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाव=चौथाई +ली (प्रत्य०)] एक रुपए का चौथाई सिक्का।

पावस†—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रावृष] वर्षाकाल। बरसात। उ०—सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय। निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय॥ —गीता०।

पावा†—संज्ञा पु० दे० "पाया"।

संज्ञा पु० [देश०] गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम और गंगा के उत्तर में है। यहाँ बुद्ध भगवान् कुछ दिन ठहरे थे। यहाँ वालों ने भी बुद्ध के शरीर के कुछ अंशों पर एक स्तूप बनाया था। यह गाँव गोरखपुर नगर से बीस कोस उत्तरपश्चिम में गडक नदी से ६ कोस पर है।

पाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३ बधन। फँसानेवाली वस्तु।

पाशक—संज्ञा पुं० [स०] पासा। चौपड़।

पाशकेरली—संज्ञा स्त्री० [स० पाश+केरल (देश०)] ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है। प्राचीन यूनान, फारस आदि पश्चिमी देशों में इसका बड़ा प्रचार था। वहाँ से केरल होता हुआ यह भारत आया जान पड़ता है।

पाशधर—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण देवता।

पाशव—वि० [स०] १ पशु संबधी। पशुओं का। २ पशुओं जैसा।

पाशवता—संज्ञा स्त्री० दे० "पशुता"।

पाशहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. वरुण देवता। २ शतभिष नक्षत्र।

पाशा—संज्ञा पुं० [तु० फा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि; जैसे, कमाल पाशा।

पाशी—संज्ञा पु० [सं०] १. पाशवाला देवता। वरुण। २ व्याध। बहेलिया। ३ यमराज। ४. अपराधियों को फाँसी का फंदा पहनानेवाला चांडाल।

पाशुपत—वि० [स०] १. पशुपति संबधी। शिव संबधी। २ पशुपति का।

संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। शैवों का एक भेद। २ शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्ववेद का एक उपनिषद्। ४. अगस्त का फूल।

पाशुपत दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम्प्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन संग्रह में है। नकुलीश पाशुपत दर्शन।

पाशुपतास्त्र—संज्ञा पुं० [स०] शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचड था।

पाश्चात्य—वि० [स०] १ पीछे का। पिछला। २ पश्चिम दिशा का। पश्चिम में रहनेवाला। पश्चिमी।

पाश्चात्यीकरण—संज्ञा पुं० [स० पाश्चात्य +करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना। पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पाषंड—संज्ञा पुं० [स०] १ वेदविरुद्ध आचरण। झूठा मत। २ लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूपरंग बनाना। ढोंग। ३ माया। छल। कपट। उ०—तब रघुबीर पचारे, धाए कीस, पचड। कपि दल प्रबल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पाषंड॥ —मानस।

पाषंडी—वि० [स० पाषण्डिन्] १ वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।

पाषर—संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

पाषाण—संज्ञा पुं० [स०] पत्थर। प्रस्तर।

वि० [स्त्री० पाषाणी] निर्दय। हृदयहीन।

पाषाण चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [स०] अग्रहायण शुक्ला चतुर्दशी। अगहन सुदी चौदस। इस तिथि को स्त्रियाँ गौरी का पूजन करके रात को पाषाण (पत्थर के ढोकों) के आकार की बड़ियाँ बनाकर खाती है।

पाषाणभेद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिये बगीचों में लगाया जाता है। पखानभेद। पथरचट।

पाषाणी—वि० स्त्री० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली।

पाषाणीय—वि० [सं०] पत्थर का।

पासंग—संज्ञा पुं० [फा०] १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसगा। उ०—अजहुँ अधिक आदर यहि द्वारे, पतित पुनीत होत नहिं केते। मेरे पासगहु न पूजिहैं, ह्वै गए, हैं, होने खल जेते॥ —विनय०।

मुहा०—(किसी का) पासंग भी न होना=किसी के मुकाबिले में बहुत कम होना।

२ तराजू की डाँड़ी बराबर न होना।

पास—संज्ञा पु० [सं० पार्श्व] १ बगल। ओर। तरफ। उ०—बेंत पानि रछक चहुँ पासा। चले सकल मन करत हुलासा॥ —मानस। २ सामीप्य। निकटता। समीपता। उ०—जलचर बृंद जाल अंतरगत होत सिमिटि इक पासा। —विनय०। ३ अधिकार। कब्जा। रक्षा। पल्ला (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ)।

अव्य० १ निकट। समीप। नजदीक।

यौ०—आस पास=(१) अगल बगल। समीप। (२) लगभग। करीब।

मुहा०—(किसी के) पास बैठना=संगत में रहना। पास फटकना=निकट जाना।

२ अधिकार में। कब्जे में। रक्षा में। पल्ले। ३ निकट जाकर, सबोधन करके। किसी के प्रति। किसी से। उ०—माँगत है प्रभु पास दास यह बार बार कर जोरी। —सूर०।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "पाश"।

Ⓟसंज्ञा पु० दे० "पासा"।

वि० [अं०] (१) पार किया हुआ। ते किया हुआ, जैसे, ट्रेन स्टेशन पास कर गई। २ परीक्षा आदि में सफल। उत्तीर्ण। ३ स्वीकृत। मजूर, जैसे, सभा ने प्रस्ताव पास कर दिया। ४ जारी। चलता। प्रचलित।

संज्ञा पुं० [अं०] वह कागज जिसमें किसी के कहीं बेरोकटोक आने जाने की इजाजत हो।

पासना—क्रि० अ० [सं० पयस] इस अवस्था में होना कि थनों में दूध उतर आवे। थनों में दूध आना, जैसे, भैंस देर में पासती है (ग्वाले)।

पासनी—संज्ञा स्त्री० [स० प्राशन] बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।

पासवान—संज्ञा पुं० [फा०] १ चौकीदार। पहरेदार। २ रक्षक। रखवाला।

संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। रखेली। रखनी (राजपूताना)।

पासवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चौकी-दारी। २ रक्षा। हिफाजत।

पास बुक—संज्ञा पुं० [अं०] बैंक और डाकखाने से रुपए जमा करनेवालों को दी जानेवाली वह किताब जिसमें जमा की हुई या निकाली गई रकम दर्ज रहती है।

पासमान(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पास+मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।

पासवर्ती(पु)—वि० दे० "पार्श्ववर्ती"।

पासा—संज्ञा पुं० [स० पाशक, प्रा० पासा] १. हाथीदाँत या हड्डी के छ-पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।

मुहा०—(किसी का) पासा पड़ना = भाग्य अनुकूल होना। किसमत जोर करना। पासा पलटना = (१) अच्छे से मंद भाग्य होना। दिन का फेर होना। (२) युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना। पासा फेंकना = (१) अनुकूल या प्रतिकूल-दाँव निश्चित करने के लिये पासे का गिराना। (२) भाग्य की परीक्षा करना। किस्मत आजमाना।

२ वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३ मोटी बत्ती के आकार में लाई हुई वस्तु। कामी। गुल्ली, जैसे—सोने के पासे। ४ पीतल या काँसे का चौकूटा लंबा ठप्पा जिसमें छोटे छोटे गोल गड्ढे बने होते हैं। घुँघरू या गोल घुंडी बनाने में सुनार सोने के पत्तर को इसी पर रखकर ठोंकते हैं जिससे वह कटोरी के आकार का गहरा हो जाता है।

पासि, पासिक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पाश] १. फंदा। २. बंधन।

पासी—संज्ञा पुं० [सं० पाशिन्] १ जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया। २ एक जाति जो ताड़ी चुवाने का व्यवसाय करती है।

संज्ञा स्त्री० [स० पाश, हिं० पास+ई (प्रत्य०)] १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २ घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

पासुरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पाहँ—अव्य० [सं० पार्श्व] १ निकट। समीप। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहन(पु)—संज्ञा पुं० [स० पाषाण, प्रा० पाहाण] पत्थर। प्रस्तर। उ०—पाहन ते हरि कठिन कियो हिय कहत न कछु बनि आई। —सूर०।

पाहरू(पु)—संज्ञा पु० [हिं० पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार। चौकसी करनेवाला। उ०—नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट। लोचन निज पद-यंत्रिका प्रान जाहिं केहि बाट।—दोहा०।

पाहाण(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पाहन"।

पाहिं(पु)—अव्य० [स० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहि—[सं० क्रि०] एक सस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' या "बचाओ"। उ०—रघुपति पद परम प्रेम, तुलसी चह अचल नेम देहि ह्वै प्रसन्न, पाहि प्रणतपालिका। —विनय०।

पाहीं(पु)—अव्य० दे० "पाहिं"। उ०—राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं॥ —मानस।

पाही—क्रि० स० दे० "पाहि"। उ०—पठवा तुरत राम पहि ताही। कहेसि पुकारि प्रणत हित पाही॥ —मानस।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पाह] वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो।

पाहुँच—संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच"।

पाहुन—संज्ञा पु० [स० प्राघुणक] दे० "पाहुना"। उ०—मुनिहि सोचु पाहुन बड़ नेवता। तसि पूजा चाहिअ जस देवता। —मानस।

पाहुना—संज्ञा पुं० [सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी] १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत उ०—प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने॥ —मानस। २. दामाद। जामाता।

पाहुनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाहुना] १ स्त्री अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

पाहुर—संज्ञा पुं० [स० प्राभृत] १ भेंट। नजर। २ सौगात।

पिंग—वि० [सं०] १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३ सुँघनी रंग का।

पिंगल—वि० [सं०] १ पीला। पीत। २ भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३ भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का।

संज्ञा पुं० १ एक प्राचीन मुनि जो छंद शास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं। २ छंद शास्त्र। ३ साठ संवत्सरों में से एक। ४ एक निधि का नाम। ५ बंदर। कपि। ६ अग्नि। ७ पीतल। ८ उल्लू पक्षी।

पिंगला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हठयोग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम। ३ गोरोचन। ४. शीशम का पेड़। ५ राजनीति। ६ दक्षिण के दिग्गज की स्त्री। ७ भागवत के अनुसार विदेह नगर की वह वेश्या जिसने संसार से विरक्त होकर भगवान् की भक्ति द्वारा मुक्ति पाई थी। इसकी कथा महाभारत में भी वर्णित है। उ०—गज पिंगला अजामिल से खल गनै धौं कवन? तुलसिदास प्रभु केहि न दीन्हि गति जानकीरवन॥ —विनय०।

पिंगपांग—संज्ञा पु० [अं०] एक प्रकार का अँग्रेजी खेल जो मेज पर छोटा सा जाल टाँगकर छोटे से गेंद और छोटे से बल्ले या थापी से खेला जाता है।

पिंजड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा"।

पिंजर—वि० [स०] १ पीला। पीतवर्ण का। २ भूरापन लिए लाल रंग का।

संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा। २ शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। पंजर। कंकाल। ३ सोना। ४ भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

पिंजरा—संज्ञा पुं० [स० पंजर] लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।

पिंजरापोल—संज्ञा पुं० [हिं० पिंजरा+पोल = फाटक] वह स्थान जहाँ पालने के लिये गाय, बैल आदि चौपाए रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

पिंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोलमटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४ पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। उ०—कहहु कौन सुर सिला तारि पुनि केवट मीत कियो। कौन गीध अधम को पितु ज्यों निज कर पिंड दियो॥ —गीता०। ५ भोजन। आहार। ६ शरीर। देह। ७ नक्षत्र। ग्रह।

मुहा०—पिंड छोड़ना = साथ न लगा रहना या संबंध न रखना। तंग न करना। पिंड पड़ना = पीछे पड़ना।

पिंडखजूर—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंडखर्जूर] एक प्रकार का खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडज—संज्ञा पुं० [सं०] सब अंगों के बन जाने पर गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु, जैसे—मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली।

पिंडदान—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिंडरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पिंडरोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २ कोढ़।

पिंडरोगी—वि० [सं०] रुग्ण शरीर का।

पिंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।

मुहा०—पिंडली हिलना = पैर थर्राना। भय से कँपकँपी होना।

पिंडवाही—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का कपड़ा।

पिंडा—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पिंडी] १ ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २ गोलमटोल टुकड़ा। लुगदा। ३ मधु, तिल्ली मिली हुई खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।

मुहा०—पिंडा पानी देना = श्राद्ध और तर्पण करना।

४ शरीर। देह।

मुहा०—पिंडा फीका होना = जी अच्छा न होना। तबियत खराब होना। पिंडा धोना = स्नान करना। नहाना।

५ स्त्रियों की गुप्तेंद्रिय। धरन।

पिंडारी—संज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट मार करने लगी और मुसलमान हो गई।

पिंडालू—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड+आलू] १ एक प्रकार का शकरकंद। सुथनी। पिंडिया। २ एक प्रकार का शफतालू या रतालू।

पिंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा पिंड। पिंडी। २ छोटा ढेला या लोंदा। ३ पिंडली। ४. वह पिंडी जिसपर देवमूर्ति स्थापित की जाती है। वेदी।

पिंडिया—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंडिक] १ गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा। लंबोतरी पिंडी। २ गुड़ की लंबोतरी भेली। मुट्ठी। ३ लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।

पिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा ढेला या लोंदा। लुगदी। २. गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकड़ा। ३ घीया। कद्दू। ४ पिंडखजूर। ५ वेदी जिसपर बलिदान किया जाता है। ६ सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

पिंडुरी, पिंडुलीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पिंशन—संज्ञा स्त्री० दे० "पेनशन"।

पिअ—वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

पिअना†—क्रि० स० दे० "पीना"।

मुहा०—पित्त उबलना या खौलना = दे० "पित्ता उबलना या खौलना"। पित्त गरम होना = शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना। पित्त डालना = कै करना। वमन करना।

पिअर†—वि० [सं० पीत] पीला। उ०—पिअर उपरना काखा सोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती॥ —मानस।

पिअराईⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० पीत] पीलापन।

पिअरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीली] हल्दी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह के समय में वर या वधू को पहनाई जाती है, या स्त्रियाँ गंगा जी को चढ़ाती हैं।

वि० स्त्री० दे० "पीली"।

पिआरा—वि० [सं० प्रिय] प्यारा। उ०—रामहिं केवल प्रेम पिआरा। जानि लेहु जो जाननिहारा॥ —मानस।

पिआस—संज्ञा स्त्री० [सं० पिपासा] प्यास। उ०—अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनो मलहारी॥ —मानस।

पिउ—संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] पति। खाविंद।

पिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पिकी] [भाव० पिकता] कोयल।

पिघलना—क्रि० अ० [सं० प्र+गलन] १ गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २ चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिघलाना—क्रि० स० [हिं० पिघलना का प्रे० रूप] १. किसी चीज को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।

पिचकना—क्रि० अ० [सं० पिच्च = दबना] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।

पिचकवाना—क्रि० स० [हिं० 'पिचकाना' का प्रे० रूप] पिचकाने का काम दूसरे से कराना। किसी दूसरे को पिचकाने में प्रवृत्त करना।

पिचकाना—क्रि० स० [हिं० पिचकना का स० रूप] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

पिचकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिचकना] एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को जोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

मुहा०—पिचकारी छूटना या निकलना = किसी स्थान से तरल पदार्थ का बहुत वेग से बाहर निकलना, जैसे—सिर से लहू की पिचकारी छूटना।

पिचकीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।

पिचपिचा—वि० [अनु०] १ लसदार। चिपचिपा। २ दबा हुआ और गुलगुला।

पिचपिचाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिचपिचा+आहट (प्रत्य०)] पिचपिचा होने की स्थिति या दशा।

पिचुक्का†—संज्ञा पुं० [हिं० पिचकाना] १ पिचकारी। २ गोलगप्पा।

पिचोतरसो†—संज्ञा पुं० [सं० पंचोत्तरशत] एक सौ पाँच की संख्या। सौ और पाँच।

पिच्चित—वि० [सं० पिच्च = दबना, पिचकना] पिचका हुआ। दबा हुआ।

पिच्ची—वि० दे० "पिच्चित"।

पिच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पशु की पूँछ। लांगूल। २ मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। ३ मोर की चोटी। चूड़ा।

पिच्छल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोचरस। २ [illegible]। ३ शीशम।

वि० जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। चिकना। उ०—ले घट श्लथ लखती पथ पिच्छल, तू गहरी। —गीतिका।

वि० दे० "पिछला"।

पेच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मोचरस। २ सुपारी। ३ शीशम। ४ नारंगी। ५. निर्मली। ६. आकाशबेल। ७. भात या चावल का माँड़।

पेच्छिल—वि० [सं०] [स्त्री० पिच्छिली] १. गीला और चिकना। २ फिसलनेवाला। जिसपर पड़ने से पैर रपटे या फिसले। ३ चूड़ायुक्त (पक्षी)। ४ खट्टा, कोमल, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ)। ५ लसोड़ा। ६ स्निग्ध, सरस व्यंजन (कढ़ी, दाल आदि)।

पेछड़ना—क्रि० अ० [हिं० पिछाड़ी] पीछे रह जाना। साथ साथ, बराबर या आगे न रहना।

पिछलगा—संज्ञा पुं० [हिं० पीछे+लगना] १ वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले। अधीन। आश्रित। २ वह मनुष्य जो अपने स्वतंत्र विचार न रखता हो बल्कि सदा किसी दूसरे के विचारों या सिद्धांतों के अनुसार काम करे। ३ अनुवर्ती। अनुगामी। शिष्य। ४. सेवक। नौकर।

पिछलगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने का भाव। अनुयायी होना। अनुगमन करना।

पिछलग्गू—संज्ञा पुं० दे० "पिछलगा"।

पिछलत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा+लात] घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना।

पिछलना—क्रि० अ० [हिं० पीछा] पीछे की ओर हटना या मुड़ना।

पिछला—वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। "अगला" का उलटा। २ बाद का। अनंतर का। पहला का उलटा। ३ अंत की ओर का।

मुहा०—पिछला पहर=दो पहर या आधी रात के बाद का समय। पिछली रात=रात्रि का उत्तर काल। रात में आधी रात के बाद का समय।

४. बीता हुआ। गत। पुराना। गुजरा हुआ। ५. गत बातों में से अंतिम।

संज्ञा पुं० १. पिछले दिन पढ़ा हुआ पाठ। एक दिन पहले पढ़ा हुआ पाठ। २. वह खाना जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग कुछ रात रहते खाते हैं। सहरी।

पिछवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] पीछे की ओर लटकाने का परदा।

पिछवाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पीछा+वाड़ा (प्रत्य०)] १ किसी मकान का पीछे का भाग। घर का पृष्ठ भाग। २ घर के पीछे का स्थान या जमीन।

पिछवारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पिछवाड़ा"।

पिछाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] १. पिछला भाग। पीछे का हिस्सा। २ वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं।

पिछान—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहचान] दे० "पहचान"।

पिछानना—क्रि० स० दे० "पहचानना"। उ०—छला परोसिनि हाथ तैं छलु करि, लियौ, पिछानि। पियहिं दिखायौ लखि बिलखि, रिससूचक मुसकानि॥ —बिहारी०।

पिछारी—संज्ञा स्त्री० दे० "पिछाड़ी"।

पिछेलना—क्रि० स० [हिं० पीछे] १. धक्का देकर पीछे हटाना। २ पीछे छोड़ना।

पिछौंहैंⓅ†—क्रि० वि० [हिं० पीछा+औंहाँ (प्रत्य०)] पीछे की ओर। पीछे की ओर से।

पिछौरा†—संज्ञा पुं० [सं० पक्षपट] [स्त्री० पिछौरी] पुरुषों के ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटत—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पीट+अंत (प्रत्य०)] पीटने की क्रिया या भाव। मार पीट।

पिटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिटारा। २ फुड़िया। फुंसी। ३ आभूषण जो ध्वजा में लगाया जाता है। ४. किसी ग्रंथ का एक भाग। ग्रंथविभाग। खंड। हिस्सा, जैसे, त्रिपिटक=तीन भागोंवाला बौद्ध ग्रंथ।

पिटना—क्रि० अ० [हिं० पीटना] १ मार खाना। ठोंका जाना। २ बजना। आघात पाकर आवाज करना।

†संज्ञा पुं० [हिं० पीटना] चूने आदि की छत पीटने का औजार। थापी।

पिटरीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "पिटारी"।

पिटवाना—क्रि० स० [हिं० पीटना का प्रे० रूप] पीटने का काम दूसरे से कराना।

पिटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पीट+आई (प्रत्य०)] १. पीटने का काम या भाव। २. प्रहार। मार। ३. पीटने की मजदूरी।

पिटारा—संज्ञा पुं० [सं० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र। वह झाँपा जिसका घेरा गोल, तल चिपटा और ढक्कन ढालुवाँ गोल अथवा बीच में उठा हुआ होता है।

पिटारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिटारा का स्त्री० और अल्पा०] १ छोटा पिटारा। झाँपी। २ पान रखने का बरतन। पानदान।

मुहा०—पिटारी का खर्च=(१) वह धन जो स्त्रियों को पान के खर्च के लिये दिया जाय। पानदान का खर्च। (२) वह धन जो किसी स्त्री को व्यभिचार से प्राप्त हो।

पिट्टस—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] शोक या दुःख से छाती पीटने की क्रिया (स्त्री०)।

मुहा०—पिट्टस पड़ना या मचना=शोक या दुःख में छाती पीटा जाना। रोना धोना होना; जैसे, यह खबर सुनते ही वहाँ पिट्टस पड़ गई।

पिट्टू—वि० [हिं० पीटना] मार खाने का अभ्यस्त। अक्सर पीटा जानेवाला।

पिट्ठी—संज्ञा स्त्री० दे० "पीठी"।

पिट्ठू—संज्ञा पुं० [हिं० पीठ+ऊ (प्रत्य०)] १ पीछे चलनेवाला। अनुयायी (तिरस्कार)। २. सहायक। मददगार। हिमायती। ३ किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में वह स्वयं खेलता है।

पिठवन—संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठपर्णी] एक प्रसिद्ध लता जो औषध के काम आती है। पिठौनी। पृष्ठिपर्णी।

पिठौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिट्ठी+औरी (प्रत्य०)] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पिढ़ई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीढ़ा+ई (प्रत्य०)] १. छोटा पीढ़ा या पाटा। २ वह ढाँचा जिसपर छोटा यंत्र रखा जाता है, जैसे, रहँट का।

पिढ़ी†—संज्ञा स्त्री० [सं० पीठिका] १. मचिया। २ दे० "पीढ़ी"।

पितंबर—संज्ञा पुं० दे० "पीतांबर"।

पितपापड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवनपापड़ा।

पितर—संज्ञा पुं० [सं० पितृ के बहु० व० 'पितरः' से] मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर श्राद्ध या जलदान किया जाता है।

पितरपति—संज्ञा पुं० [हिं० पितर+सं० पति] यमराज।

पितराइँध†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीतल+गंध] खाद्य वस्तु के स्वाद और गंध में वह विकार जो पीतल के बरतन में अधिक समय तक रखे रहने से उत्पन्न हो जाता है। पीतल का कसाव।

पितराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीतल+आई (प्रत्य०)] पीतल का कसाव। पितराइँध।

पिता—संज्ञा पुं० [सं० पितृ का कर्ता०] १ वह पुरुष जिसके वीर्य से जन्म हो। उ०—(१) पिता जनक जग विदित प्रभाऊ। ससुर सुरेश सखा रघुराऊ।—मानस। (२) पिता मंदमति निंदत तेही। दच्छ शुक्र संभव यह देही।—मानस। २ उत्पन्न करनेवाला। बनानेवाला। ईश्वर। ३ पालन पोषण करनेवाला। बाप। जनक।

पितामह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता। दादा। २ भीष्म। ३ ब्रह्मा। ४ शिव।

पितिया—संज्ञा पुं० [सं० पितृव्य] [स्त्री० पितियानी] चाचा।

पितिया ससुर†—संज्ञा पुं० [हिं० पितिया+ससुर] पति का चाचा। पत्नी का चाचा। चचिया ससुर।

पितिया सास†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पितिया+सास] स्त्री या पति की चाची। ससुर के भाई की स्त्री। चचिया सास।

पितु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिता"। उ०—तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरे। विनती करौं तात कर जोरे।—मानस।

पितृ—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "पिता"। २ किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, परदादा आदि। ३ किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो।

पितृऋण—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के तीन जन्मजात ऋणों में से एक। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।

पितृकर्म—संज्ञा पुं० [सं० पितृकर्मन्] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरों के उद्देश्य से होते हैं।

पितृकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] श्राद्ध आदि कर्म।

पितृकुल—संज्ञा पुं० [सं०] बाप, दादा या उनके भाई-बंधुओं आदि का कुल। पिता के गोत्र के लोग।

पितृकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] पितृकर्म। श्राद्ध आदि कार्य।

पितृगृह—संज्ञा पुं० [सं०] बाप का घर। नैहर। मायका (स्त्रियों के लिये)।

पितृतर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान। तर्पण।

पितृतिथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमावस्या तिथि जो पितरों को बहुत प्रिय है।

पितृतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. गया, वाराणसी, प्रयाग आदि २२२ तीर्थ। २ अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।

पितृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पिता या पितृ होने का भाव।

पितृदान—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला दान।

पितृदाय—संज्ञा पुं० [सं०] पिता से प्राप्त धन या संपत्ति। बपौती।

पितृदिन—संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या का दिन।

पितृपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। २ पिता के संबंधी। पितृकुल।

पितृपति—संज्ञा पुं० [सं०] यमराज।

पितृपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ पितरों का लोक। २ पितृत्व।

पितृपैतामह—वि० [सं०] बाप दादों का।

पितृप्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पिता की माता। दादी। २ संध्या।

पितृप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ भँगरा। भृंगराज। २ अगस्त का वृक्ष।

पितृमेध—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के अत्येष्टि कर्म का एक भेद जिसमें अग्निदान और दस पिंडदान आदि संमिलित थे और जो श्राद्ध से भिन्न होता था।

पितृयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] पितृतर्पण।

पितृयाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपनिषदों के अनुसार मृत्यु के अनंतर जीवात्मा के चंद्रलोक होते हुए पितृलोक में जाने का मार्ग। २ मोक्ष के लिये पितरों को प्रसन्न करने का मार्ग। ३ पितृलोक जाने का मार्ग। छांदोग्य उपनिषद् पितृलोक को चंद्रलोक से ऊपर बताता है।

पितृलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का लोक जो चंद्रलोक के ऊपर है (छांदोग्योपनिषद्)। चंद्रलोक के ऊपर वह स्थान जहाँ पितृगण रहते हैं।

पितृवन—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान।

पितृव्य—संज्ञा पुं० [सं०] चचा। चाचा।

पित्त—संज्ञा पुं० [सं०] यकृत द्वारा बनाया जानेवाला वह भूरापन लिए पीला रस जो पाचनक्रिया में सहायक होता है।

पित्तघ्न—वि० [सं०] पित्तनाशक।

पित्तज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो। पैत्तिक ज्वर।

पित्तपापड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पितपापड़ा"।

पित्तप्रकृति—वि० [सं०] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।

पित्तप्रकोपी—वि० [सं० पित्तप्रकोपिन्] (वस्तु) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो।

पित्तल—वि० [सं० पित्त] जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी (द्रव्य)।

संज्ञा पुं० १ भोजपत्र। २ हरताल। ३ पीतल धातु।

पित्ता—संज्ञा पुं० [सं० पित्त] १ जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय।

मुहा०—पित्ता उबलना या खौलना = बड़ा क्रोध आना। मिजाज भड़क उठना। पित्ता निकलना †=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=(१) क्रोध दबाना। जब्त करना। (२) कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना।

२ हिम्मत। साहस। हौसला।

पित्ताशय—संज्ञा पुं० [सं०] पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।

पित्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० पित्त+ई] १ एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २ लाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी। गरमी दाना।

†‡ संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।

पित्र्य—वि० [सं०] पितृ संबंधी।

पिथौरा—संज्ञा पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान।

पिदड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

पिद्दा—संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।

पिद्दी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बया की जाति की एक सुंदर छोटी चिड़िया। २ बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।

पिधान, पिधानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आवरण। पर्दा। गिलाफ। २ ढक्कन। ढकना। ३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़।

पिनकना—क्रि० अ० [हिं० पीनक से ना० धा०] १ अफीम के नशे में सिर का झुक पड़ना। पीनक लेना। २. नींद में आगे को झुकना। ऊँघना।

पिनपिन†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ बच्चों का अनुनासिक और अस्पष्ट स्वर में ठहर ठहरकर रोने का शब्द। रोगी या दुर्बल बच्चे के रोने का शब्द। २ रोने की धीमी और अनुनासिक आवाज।

पिनपिनहाँ—संज्ञा पुं० [हिं० पिनपिन+हाँ (प्रत्य०)] पिनपिन करनेवाला बच्चा। हर समय रोनेवाला बच्चा।

पिनपिनाना†—क्रि० अ० [हिं० पिनपिन] १. रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. धीमे स्वर में रुक रुककर रोना। रोगी अथवा कमजोर बच्चे का रोना।

पिनाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिवजी का वह धनुष जिसे श्री रामचंद्र जी ने जनकपुर में तोड़ा था। अजगव। उ०—बान जातुधानपति भूपदीप सातहुँ के, लोकप विलोकत पिनाक भूमि लई है। —गीता०। २ धनुष। ३ त्रिशूल।

मुहा०—पिनाक होना=(किसी काम का) अत्यंत कठिन होना। दुष्कर या असाध्य होना।

पिनाकी—संज्ञा पुं० [सं० पिनाकिन्] शिव। उ०—दसन धरि धरनि चिक्करत दिग्गज कमठ, सेष संकुचित, संकित पिनाकी। —कविता०

पिन्नी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिठाई, जो आटे या किसी दूसरे अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

पिन्हाना†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पिपरमिंट—संज्ञा पुं० [अं०] १ पुदीने की तरह का एक पौधा। २ इस पौधे का प्रसिद्ध सत्त जो दवा के काम आता है।

पिपरामूल—संज्ञा पुं० [सं० पिप्पलीमूल] पीपल की जड़।

पिपराही†—संज्ञा पुं० [हिं० पीपर+आही (प्रत्य०)] पीपल का वन। पीपल का जंगल।

पिपासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पिपासित] १. तृषा। प्यास। २. लालच। लोभ।

पिपासित—वि० [सं०] तृषित। प्यासा।

पिपासु—वि० [सं०] १. तृषित। प्यासा। २ उग्र इच्छा रखनेवाला। लालची।

पिपीलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] च्यूँटी।

पिप्पल—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल। अश्वत्थ।

पिप्पलाद—संज्ञा पुं० [सं०] अथर्ववेद की एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि।

पिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीपल।

पिप्पलीमूल—संज्ञा पुं० [सं०] पिपरामूल।

पिय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] पति। स्वामी। उ०—बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी। खंजन मंजु तिरीछे नैननि। निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सैननि।—मानस।

पियराई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीयर+आई (प्रत्य०)] पीलापन। जर्दी।

पियराना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० पियरा] पीला पड़ना। पीला होना।

पियरी†—वि० स्त्री० दे० "पीली"। उ०—पियरी झीनी झँगुली साँवरे सरीर खुली, बालक दामिनि ओढ़ी मानो बारे बारिधर। —गीता०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पियर] १ पीली रँगी हुई धोती। पियरी। २ पीलापन।

पियल्ला†—संज्ञा पुं० [हिं० पीना] १ दूध पीनेवाला बच्चा। २ पीले रंग की मीठी बोली बोलनेवाली एक चिड़िया जो मैना से छोटी होती है। पियरोला। पिलक।

पिया(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

पियाज†—संज्ञा पुं० दे० "प्याज।"

पियाजी†—वि० दे० "प्याजी।"

पियादा†—संज्ञा पुं० दे० "प्यादा।"

पियाना†—क्रिया स० दे० "पिलाना।"

पियाबाँसा—संज्ञा पुं० दे० "कटसरैया"।

पियार—संज्ञा पुं० [सं० पियाल] मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है।

†वि० दे० "प्यारा"।

†संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।

पियारा—वि० दे० "प्यारा"।

पियाल—संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी का पेड़। दे० "पियार"।

पियाला—संज्ञा पुं० दे० "प्याला"।

पियास—संज्ञा स्त्री० दे० "प्यास।" उ०—तुलसीदास प्रभु बिनु पियास मरै पसु जद्यपि है निकट सुरसरि तीर।—विनय०।

पियासा—वि० दे० "प्यासा।" उ०—सब साधन फल कूप सरित सर-सागर सलिल निरासा। राम-नाम-रति स्वाति सुधा सुभ-सीकर प्रेम-पियासा।

पियासाल—संज्ञा पुं० [सं० पीतसाल, प्रियसालक] बड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।

पियूख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।

पिरकी†—संज्ञा स्त्री० [सं० पिड़क] फोड़िया। फुंसी।

पिरथी†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

पिराई†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।

पिराक—संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान। गोझा। गोझिया।

पिराना†(पु)—क्रि० अ० [सं० पीड़न] १ पीड़ित होना। दर्द करना। दुखना। २. पीड़ा अनुभव करना। दुःख समझना।

पिरारा†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिंडारा"।

पिरीतम†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।

पिरीता(पु)—वि० [सं० प्रीत] प्रिय। प्यारा।

पिरोजा—संज्ञा पुं० दे० "फीरोजा"। उ०—मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चीर कोरि पचि रचे सरोजा। —मानस।

पिरोना—क्रि० स० [सं० प्रोत] १ छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना। गूथना। पोहना। २ तागे आदि को छेद में डालना।

पिरोहना(पु)—क्रि० अ० दे० "पिरोना"।

पिलकना(पु)—क्रि० स० [सं० √पिल=फेंकना, भेजना, प्रेरित करना] १ गिराना। २ लुढ़काना। ढकेलना।

पिलकुआँ—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का देशी जूता।

पिलना—क्रि० अ० [सं० √पिल्=फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना] १ किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। २ एकबारगी प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३ पेरा जाना। तेल निकालने के लिये दबाया जाना।

पिलपिला—वि० [अनु०] भीतर से गीला और नरम।

पिलपिलाना—क्रि० स० [हिं० पिलपिला] रसदार या गूदेदार वस्तु जिसको दवाने से रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।

पिलवाना—क्रि० स० [हिं० "पिलाना" का प्रे० रूप] पिलाने का काम दूसरे से कराना।

क्रि० स० [हिं० पेलना का प्रे० रूप] पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना। पेरवाना।

पिलाना—क्रि० स० [हिं० पीना] १ पीने का काम कराना। पान कराना। २ पीने को देना। ३ भीतर भरना।

पिल्ला—संज्ञा पुं० [दे०] कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू—संज्ञा पुं० [सं० पीलू=कृमि] एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है। ढोला।

पिव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

पिवाना†—क्रि० स० दे० "पिलाना"।

पिशाच—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पिशाचिनी, पिशाची] यक्षों और राक्षसों आदि से हीन कोटि की एक देवयोनि। भूत।

पिशाचचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिव जी के समान श्मशान सेवन।

पिशाचवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सिहोर का का पेड़। शाखोट वृक्ष।

पिशित—संज्ञा पुं० [सं०] मांस। गोश्त।

पिशुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक की दूसरे से बुराई करके भेद डालनेवाला। इधर की उधर लगानेवाला। चुगलखोर। २ केसर। ३ कौआ।

पिष्ट—वि० [सं०] पिसा हुआ।

पिष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिट्ठी। पीठी। पिट्ठी। २ कचौरी या पूआ। रोट। ३ एक नेत्ररोग। फूला। फूली। ४ एक प्रकार का अस्थिभंग (सुश्रुत)।

पिष्टपेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिसे हुए को पीसना। २ कही हुई बात को फिर फिर कहना।

पिसनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना+(प्रत्य०)] वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।

पिसना—क्रि० अ० [हिं० पीसना] १ दाब या रगड़ से सूक्ष्म टुकड़ों में बँटना। चूर्ण होना। चूर होकर धूल सा हो जाना। २. पिसकर तैयार होना। ३ दब जाना। कुचला जाना। ४ घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना, जैसे, एक दुष्ट के कारण न जाने कितने निरपराध पिस गए। ५. थककर बेदम होना।

पिसवाज(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पेशवाज"।

पिसवाना—क्रि० स० [हिं० पीसना का प्रे० रूप] पीसने का काम दूसरे से कराना।

पिसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पीस+आई (प्रत्य०)] १. पीसने की क्रिया या भाव। २ पीसने का काम या व्यवसाय। ३ पीसने की मजदूरी। ४ अत्यंत अधिक श्रम। कड़ी मिहनत।

पिसाच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिशाच"। उ०—मरम वचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर। लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥ —मानस।

पिसान†—संज्ञा पुं० [हिं० (पिसना) पिसा+अन्न] गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा आदि अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। आटा।

पिसाना—क्रि० स० [हिं० पीसना का प्रे० रूप] पीसने का काम दूसरे से कराना।

†क्रि० अ० दे० "पिसना"।

पिसुन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पिशुन] दे० "पिशुन"। उ०—बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं॥ —मानस।

पिसानी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना] १ पीसने का काम। २ कठिन काम।

पिस्तई—वि० [फा० पिस्त] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरा।

पिस्ता—संज्ञा पुं० [फा० पिस्त] एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।

पिस्तौल—संज्ञा स्त्री० [अँ० पिस्टल] तमंचा। छोटी बंदूक।

पिस्सू—संज्ञा पुं० [फा० पश्श] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है। कुटकी।

पिहकना—क्रि० अ० [अनु०] कोयल, पपीहे, मोर आदि कोमल कंठवाले पक्षियों का बोलना।

पिहानी—संज्ञा स्त्री० [पिधानी] ढक्कन। पर्दा। आवरण। उ०—रुचै माँगनेहि माँगिबो, तुलसी दानिहि दानु। आलस अनख न आचरज, प्रेम पिहानी जानु। —दोहा०।

पिहित—वि० [सं०] छिपा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का भाव जानकर क्रिया द्वारा उस पर अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय। उ०—गैर मिसिल ठाढ़ो शिवा, अंतरजामी नाम। प्रकट करी रिस साह को सरजा करि न सलाम॥ यहाँ औरंगजेब की उपेक्षा ताड़कर शिवाजी ने उसे सलाम नहीं किया जिससे उनका क्रोध व्यंजित है।

पींजना—क्रि० स० [सं० पिंजन] रूई धुनना।

पींजरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिंजड़ा"।

पींड†—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १ शरीर। देह। पिंड। २ वृक्ष का धड़। तना। पेड़ी। ३ गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडी। ४ दे० "पीढ़"। ५ पिंडखजूर।

पींडुरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

संज्ञा स्त्री० [अनु] पपीहे की बोली।

पीक—संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] चबाए हुए पान के बीड़े का या गिलौरी का थूक से मिला हुआ रस।

पीकदान—संज्ञा पुं० [हिं० पीक+फा० दान] एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमें पान की पीक थूकी जाती है। उगालदान।

पीकना—क्रि० अ० [सं० पिक] पिहकना। पपीहे, मोर या कोयल आदि मधुर कंठवाले पक्षियों का बोलना।

पीका†—संज्ञा पुं० [देश०] नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।

मुहा०—पीका फूटना = पनपना। पल्लवित होना।

पीच—संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] माँड़।

पीछा—संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्] १ किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग। पश्चात् भाग। पुश्त। "आगा" का उलटा।

मुहा०—पीछा दिखाना=(१) भागना। पीठ दिखाना। (२) दे० "पीछा देना"। पीछा देना=किसी काम में पहले साथ देकर फिर किनारा करना। पीछे हट जाना।

२ किसी घटना के बाद का समय। ३ पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना।

मुहा०—पीछा करना=(१) किसी के पीछे पीछे जाना या घूमा करना। हर समय साथ या समीप बने रहना। (२) किसी बात के लिये किसी को तंग या दिक करना। गले पड़ना। (३) किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिये उसके पीछे पीछे चलना। खदेड़ना। पीछा छुड़ाना=(१) पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुड़ाना। (२) अप्रिय या इच्छा-विरुद्ध संबंध का अंत करना। पीछा छूटना=(१) पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना। पिंड छूटना। जान छूटना। (२) अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना। पीछा छोड़ना=(१) तंग न करना। परेशान न करना। (२) जिस बात में बहुत देर से लगे हों उसे छोड़ देना। पीछा पकड़ना या लेना=आश्रय का आकांक्षी बनना। सहारा बनाना।

पीछू(पु†—क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पीछे—अव्य० [हिं० पीछा] १ पीठ की ओर। आगे या सामने का उलटा। पश्चात्।

मुहा०—(किसी के) पीछे चलना=(१) किसी विषय में किसी को पथदर्शक, नेता या गुरु मानना। (२) अनुकरण करना। नकल करना। (किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना=किसी का पीछा करने के लिये किसी को भेजना। (धन) पीछे डालना=आगे के लिये बटोरना। संचय करना। (किसी काम के) पीछे पड़ना=किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिये अविराम उद्योग करना। (किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना=(१) कोई काम करने के लिये किसी से बारबार कहना। घेरना। तंग करना। (२) मौका या संधि ढूँढ ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना। पीछे लगना=(१) पीछे घूमना। पीछा करना। (२) दुःखजनक वस्तु का साथ हो जाना। (अपने) पीछे लगाना=(१) आश्रय देना। साथ रख लेना। (२) अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना। (किसी और के) पीछे लगाना=(१) अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना। मढ़ देना। (२) भेद लेने या निगाह रखने के लिये किसी को साथ कर देना।

२. पीछे की ओर कुछ दूर पर।

मुहा०—पीछे छूटना, पड़ना या होना=(१) किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा कम या घटकर होना। पिछड़ा होना। (२) किसी विषय में किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिससे किसी समय बराबरी रही हो। पिछड़ जाना। (किसी को) पीछे छोड़ना=(१) किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना। (२) किसी विषय में किसी से आगे निकल जाना।

३ पश्चात्। उपरांत। अनंतर। ४. अंत में। आखिर में (क्व०)। ५ किसी की अनुपस्थिति या अभाव में। पीठ पीछे। ६ मर जाने पर। ७ लिये। वास्ते। ८ कारण। निमित्त। बदौलत।

पीटना—क्रि० स० [सं० पीडन] १ चोट पहुँचाना। मारना।

मुहा०—छाती पीटना=दुःख या शोक प्रकट करने के लिये छाती पर हाथ से आघात करना। किसी व्यक्ति को या के लिये पीटना=किसी के मरने पर छाती पीटना। मातम करना।

२ चोट से चिपटा या चौड़ा करना। ३ मारना। प्रहार करना। ठोंकना। ४ भले या बुरे प्रकार से कर डालना। ५ किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना। फटकार लेना।

संज्ञा पुं० १ मृत्युशोक। मातम। २. मुसीबत। आफत।

पीठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पीठिका] १ लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन। पीढ़ा। चौकी। उ०—पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा॥—मानस। २ विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन। ३ किसी मूर्ति के नीचे का आधारपिंड। ४ किसी वस्तु के रहने की जगह। अधिष्ठान, जैसे, विद्यापीठ, शारदापीठ आदि। ५ सिंहासन। राजासन। तख्त। ६ पवित्र स्थान। वेदी। देवपीठ। उ०—जोग जप जाग को विराग को पुनीत पीठ, रागिन पै सीठि, डीठि बाहरी निहारिहैं।—कविता०। ७ वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है। भिन्न भिन्न पुराणों में इनकी संख्या ५१, ५३, ७७ या १०८ कही गई है। ८ प्रदेश। प्रांत। ९ बैठने का एक आसन। १० वृत्त के किसी अंश का पूरक।

संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] १ पेट के दूसरी ओर का भाग जो मनुष्य में पीछे की ओर पशुओं, पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर पड़ता है। पृष्ठ। पुश्त।

मुहा०—पीठ का=दे० "पीठ पर का"। पीठ का कच्चा=देखने में हृष्टपुष्ट और सुंदर किंतु सवारी के लिये अयोग्य। (घोड़ा) पीठ का सच्चा=(घोड़ा) जिसमें अच्छी चाल हो। सवारी में आराम देनेवाला। पीठ की=दे० "पीठ पर की"। पीठ खाली होना=सहायकहीन होना। पीठ चारपाई से लग जाना=बीमारी के कारण अत्यंत दुबला और कमजोर हो जाना। पीठ ठोंकना=(१) किसी कार्य की प्रशंसा करना। शाबाशी देना। (२) हिम्मत बढ़ाना। प्रोत्साहित करना। पीठ तोड़ना=हिम्मत तोड़ना। हताश करना। कमर तोड़ना। पीठ दिखाना=युद्ध या मुकाबिले से भाग जाना। पीछा दिखाना। पीठ दिखाकर जाना=स्नेह तोड़कर या ममता छोड़कर जाना। पीठ देना=(१) विदा होना। रुखसत होना। (२) विमुख होना। मुँह मोड़ना। (३) भाग जाना। पीठ दिखाना। (४) लेटना। आराम करना। पीठ पर=एक ही माता की संतानों में से किसी विशेष के जन्म के बाद, जैसे, इस लड़के की पीठ पर उसे फिर कोई संतान नहीं हुई। पीठ पर का=जन्म क्रम में अपने सहोदर के अनंतर का। पीठ पर खाना=भागते हुए मार खाना। पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० "पीठ ठोंकना"। पीठ पर होना=मदद पर होना। हिमायत पर होना। पीठ पीछे=किसी के पीछे। अनुपस्थिति में। परोक्ष में। पीठ फेरना=(१) विदा होना। चला जाना। (२) भाग जाना। पीठ दिखाना। (३) मुँह फेर लेना। उ०—तुलसी जाके होयगी अंतर बाहिर दीठि। सो कि कृपालुहि देइगो केवट पालहिं पीठि।—दोहा०। (४) अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (किसी की) पीठ लगना=कुश्ती में हार खाना। पटका जाना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना=पीठ पर घाव हो जाना। पीठ पक जाना। (चारपाई आदि से) पीठ लगना=(१) लेटना। सोना। पड़ना। आराम करना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगाना=इस प्रकार कसना या

लादना कि पीठ पर घाव हो जाय। पीठ पर घाव कर देना।

२. किसी वस्तु की बनावट के पीछे का भाग। पृष्ठ भाग।

पीठक—संज्ञा पुं० [सं०] पीढ़ा।

पीठकेलि—संज्ञा पु० [सं०] पीठमर्द नायक।

पीठगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वह गड्ढा जो मूर्ति को जमाने के लिये पीठ (आसन) पर खोदकर बनाया जाता है।

पीठदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] आधार शक्ति। आदि देवता।

पीठनाⓅ—क्रि० स० दे० "पीसना"।

पीठमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. नायक के चार सखाओं में से एक जो वचनचातुरी से नायिका का मानमोचन करने में समर्थ हो। २. वह नायक जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके।

पीठविवर—संज्ञा पुं० [स०] दे० "पीठगर्भ"

पीठस्थान—संज्ञा पुं० दे० 'पीठ(७)'

पीठा—संज्ञा पु० दे० "पीढ़ा"। उ०—आवत पीठा बैठन दीन्हों कुशल बूभि अति निकट बुलाई। —सूर०।

संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान। यह आटे की लोइयों में चने या उरद की पीठी भरकर बनाया जाता है। पीठी में नमक मसाला देकर लोइयों में भरते हैं और फिर लोई का मुँह बद कर एक बरतन में पानी के साथ आग पर चढ़ाकर पकाते हैं। पूरब में इसे फरा या फारा भी कहते हैं।

पीठिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "पीठ"।

पीठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आधार (मूर्ति, खभे आदि का)। २. आसन। ३ छोटा पीढ़ा। ४ परिच्छेद। अश। अध्याय।

पीठीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल (विशेषत उरद या मूँग की)।

पीड़—संज्ञा स्त्री० [सं० आपीड़] सिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण। उ०—करधर कै धरमैर ससी री। कै स्रक् सीपज की बगपंगति, कै मयूर की पीड़ सखी री॥ —सूर०।

संज्ञा स्त्री०—दे० "पीड़ा"।

पीड़क—वि० [सं०] १ पीड़ा देनेवाला। दु खदायी। २ सतानेवाला।

पीड़न—संज्ञा पुं० [स०] [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १ दबाना। चापना। २. पेरना। पेलना। ३. दु ख देना। यंत्रणा पहुँचाना। ४. अत्याचार करना। ५ भली भाँति पकड़ना। दबोचना। ६ उच्छेद। नाश। ७ आक्रमण करके किसी देश को बर्बाद करना। ८ सूर्य चंद्र का ग्रहण। ९ तिरोभाव। लोप।

पीड़ा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ शारीरिक या मानसिक कष्ट। वेदना। व्यथा। तकलीफ। दर्द। २ रोग। व्याधि।

पीड़ित—वि० [सं०] १ पीड़ायुक्त। दु.खित। क्लेशयुक्त। सताया हुआ। २. रोगी। बीमार। ३. दबाया हुआ। ४ नष्ट किया हुआ।

पींडुरीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पीढ़ा†—संज्ञा पुं० [सं० पीठक] चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा। पीठ। पीठक।

पीढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पीठिका] १ किसी विशेष कुल की परपरा में किसी विशेष व्यक्ति की सतति का क्रमागत स्थान। कुलपरपरा में किसी विशेष व्यक्ति से आरभ करके बाप, दादे, परदादे, आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के क्रम से पहला, दूसरा आदि कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी का संतति समुदाय। ३ किसी विशेष समय में वर्ग विशेष के व्यक्ति की समष्टि। सतति। सतान। नस्ल।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० पीढ़ा] छोटा पीढ़ा।

पीतⓅ—वि० [सं०] [स्त्री० पीता] १. पीला। पीतवर्ण युक्त। उ०—दिव्य भूषन बसन, पीत उपवीत, लिए ध्यान कल्यान भाजनन को भा। —विनय०। २ भूरा। कपिलवर्ण।

वि० [स० (सं०√पा)] पिया हुआ।

संज्ञा पुं० [स०] १ पीला रग। २ भूरा रग। ३ हरताल। ४ हरिचंदन। ५. कुसुम। ६ पुखराज। ७ मूँगा।

पीतक—संज्ञा पुं० [स०] १ हरताल। २ केशर। ३ अगर। ४ पीतल। ५ पीला चदन। ६ शहद।

वि० पीला। पीले रग का।

पीतकंद—संज्ञा पुं० [सं०] गाजर।

पीतचंदन—संज्ञा पुं० [स०] द्रविड़देशीय पीले रग का चदन। हरिचंदन।

पीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीत का भाव। पीलापन। जर्दी।

पीतत्व—संज्ञा पुं० दे० "पीतता"।

पीतधातुⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० पीत+धातु] रामरज। गोपीचदन।

पीतपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. कनेर। २ घिया तरोई। ३ पीले फूल की कटसरैया। ४ चपा।

पीतफेन—संज्ञा पुं० [सं०] रीठा। अरिष्टक वृक्ष।

पीतमⓅ—वि० दे० "प्रियतम"।

संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।

पीतमणि—संज्ञा पुं० [स०] पुखराज।

पीतर†—संज्ञा पुं० दे० "पीतल"।

पीतल—संज्ञा पुं० [सं० पित्तल] एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो अधिकतर ताँबे और जस्ते के सयोग से बनती है, यद्यपि कभी कभी इसमें राँगे और सीसे का भी कुछ अंश मिलाया जाता है। यह ताँबे से मजबूत होती है। इसका व्यवहार बरतन, मूर्तियाँ, कलपुर्जे और बाजा बनाने में होता है।

पीतवास—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वि०—पीले वस्त्रवाला। जो पीला कपड़ा पहने हो।

पीतशाल—संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार।

पीतसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीतचंदन। हरिचदन। २ सफेद चंदन। मलयागिर चदन। ३ गोमेद मणि। ४. शिलारस। ५ अंकोल। ३.। ६ विजयसार।

पीतस्फटिक—संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज।

पीतांबर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीला कपड़ा। २ मरदानी रेशमी धोती जिसे लोग पूजापाठ आदि के समय पहनते हैं। ३ श्रीकृष्ण।

पीताभ—वि० [स०] जिसमें से पीली आभा निकलती हो। पीला। पीतवर्ण।

संज्ञा पुं० पीला चदन। पीतचंदन।

पीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीना। पान (वैदिक)। २ गति।

संज्ञा पुं० १ घोड़ा। २ सूँड।

पीदड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

पीन—वि० [सं०] १. स्थूल। मोटा। उ०—विहरहिं वन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सव। जल ज्यों दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम॥ —मानस। २ पुष्ट। प्रवृद्ध। उ०—विसद किसोर पीन सु दर वपु स्याम सुरुचि अधिकाई। —विनय०। ३. सपन्न। भरा पूरा। उ०—नित नव राम पेम प्रन

पीना। बढ़त धरम दलु मनु न मलीना॥ —मानस।

संज्ञा पुं० मोटापन। स्थूलता।

पीनक—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिनकना] १. अफीम के नशे की हालत में अफीमची का आगे की ओर झुक झुक पड़ना। २ ऊँघना।

पीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोटाई। उ०—नाहिंन विराग, जोग, जाग भाग तुलसी के दया-दान-दूबरे हौं, पाप ही की पीनता॥ —कविता०।

पीनस—संज्ञा पुं० [सं०] नाक का एक रोग जिसमें उसकी घ्राणशक्ति नष्ट हो जाती है।

संज्ञा स्त्री० [फा० फीनस] पालकी।

पीना—क्रि० सं० [सं० पान] १. तरल वस्तु को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना। घूँटना। पान करना। २. किसी बात को दवा देना। उपेक्षा करना। ३ क्रोध या उत्तेजना न प्रकट करना। सह जाना। ४ किसी मनोविकार को भीतर ही भीतर दवा देना। मारना। ५ किसी मनोविकार का कुछ भी अनुभव न करना। ६ शराव पीना। ७ हुक्के, चुरट आदि का धुआँ भीतर खींचना। धूम्रपान करना। ८ सोखना। शोषण करना। जज्ब करना, जैसे, (क) यह जूता इतना तेल पिएगा, यह कौन जानता था! (ख) मिट्टी का वरतन सारा घी पी गया।

संज्ञा पुं० [सं० पीडन ?] निःसार खाद्य। खली। उ०—देखे नरनारि कहैं, साग खाइ जाए माइ, बाहु पीन पाँवरनि पीना खाइ पोखे हैं। —गीता०।

पीनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पोस्त, तीसी या तिल आदि की खली।

पीप—संज्ञा स्त्री० [सं० पूय] फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ। पीब। मवाद।

पीपर—संज्ञा पुं० दे० "पीपल"। उ०—अस मन गुनइ राउ नहिं बोला। पीपर पात सरिस मनु डोला॥ —मानस।

पीपरपर्न(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पीपल+पर्न=पत्ता] कान में पहनने का एक आभूषण।

पीपरामूल—संज्ञा पुं० [सं० पिप्पल+मूल] दे० "पीपलामूल"।

पीपल—संज्ञा पुं० [सं० पिप्पल] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।

संज्ञा स्त्री० [सं० पिप्पली] एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि हैं।

पीपलामूल—संज्ञा पुं० [सं० पिप्पलीमूल] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल लता की जड़ है।

पीपा—संज्ञा पुं० [?] बड़े ढोल के आकार का या चौकोर काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।

पीब—संज्ञा स्त्री० दे० "पीप"।

पीय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पिय"। उ०—मेरे भले को गोसाईं पोच को न सोच संक, हौं किए कहौं सौंह साँचों सीय पीय की।—विनय०।

पीयर(पु)—वि० दे० "पीला"।

पीयूख—संज्ञा स्त्री० दे० "पीयूष"।

पीयूष(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] १ अमृत। सुधा। २ दूध। ३ उस गाय का दूध जिसे ब्याए सात दिन से अधिक न हुआ हो।

पीयूषभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

पीयूषवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २. कपूर। ३ प्रत्येक चरण में १९ मात्राओं-वाला एक मात्रिक छंद जिसमें दसवीं मात्रा पर यति और चरणांत में विराम होता है। उ०—यह सकल संसार सपने तूल है। साँच नाहीं मीत, भारी भूल है। यति का नियम न रहने पर इसी छंद को आनंद-वर्धक भी कहते हैं। आनंदवर्धक में अंतिम गुरु की जगह दो लघु भी आ सकते हैं। उ०—घोर कलियुग में नहीं कुछ सार है। राम ही का नाम इक आधार है।

पीर—संज्ञा स्त्री० [सं० पीड़ा] १ पीड़ा। दुःख। दर्द। उ०—पैसिउ पीर बिहँसि तेहिं गोई। चोर नारि जिमि प्रगट न रोई। —मानस। २ सहानुभूति। हमदर्दी। दया। करुणा। उ०—स्वारथ के साथी, मेरे हाथ सों न लेवा देई, काहू तो न पीर रघुवीर दीन जन की।—विनय०।

वि० [फा०] [संज्ञा पीरी] १ महात्मा। सिद्ध। २ वृद्ध। बूढ़ा। बड़ा। बुजुर्ग।

पीरक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पीड़क"।

पीरजादा—पुं० [फा० पीर+जाद] किसी पीर या धर्मगुरु की संतान।

पीरना(पु)—क्रि० स० दे० "पेरना"।

पीरमुरशिद—संज्ञा पुं० [फा०] गुरु, महात्मा, पूजनीय अथवा अपने से दरजे में बहुत बड़ा।

पीरा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा"।

वि० दे० "पीला"।

पीरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २ चेला मूड़ने का धंधा या पेशा। गुरुवाई। ३ इजारा। ठेका। हुकूमत।

पील—संज्ञा पुं० [फा०] १. हाथी। गज। हस्ति। उ०—पील-उद्धरन सीलसिंधु ढील देखियत तुलसी पै चाहत गलानि ही गरन।—विनय०। २ शतरंज का तिरछा चलने और मरने या मारनेवाला एक मोहरा। फील। ऊँट।

संज्ञा पुं० [हिं० पीलू] एक कीड़ा।

संज्ञा पुं० [सं०] एक फलदार पेड़।

पीलपाल(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पीलवान"।

पीलपावँ—संज्ञा पुं० [फा० फीलपा] एक प्रसिद्ध रोग। फीलपा। श्लीपद।

पीलवान—संज्ञा पुं० दे० "पीलवान।"

पीलवान—संज्ञा पुं० दे० "फीलवान"।

पीलसाज—संज्ञा पुं० [फा० फतीलसोज] दीया जलाने की दीयट। चिरागदान।

पीला—वि० [सं० पीत] [स्त्री० पीली] १ हल्दी, सोने या केसर के रंग का (पदार्थ)। जर्द। २ कांतिहीन। निस्तेज।

मुहा०—पीला पड़ना या होना=(१) बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना। (२) भय से चेहरे पर सफेदी आना।

संज्ञा पुं० हल्दी या सोने के रंग से मिलता जुलता एक प्रकार का रंग।

पीली फटना—पौ फटना। तड़का होना।

मुहा०—सवेरा होना।

संज्ञा पुं० [फा० पील] शतरंज का एक मोहरा। दे० "पील।"

पीलापन—संज्ञा पुं० [हिं० पीला+पन (प्रत्य०)] पीला होने का भाव। पीतता। जर्दी।

पीलिया—संज्ञा पुं० [हिं० पीला] कमल रोग जिसमें आँखें और शरीर पीला हो जाता है।

पीली चिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [पीली+चिट्ठी] विवाह का निमंत्रण जिसपर प्रायः केसर आदि छिड़का रहता है।

पीलु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक फलदार वृक्ष। पीलू। २ फूल। पुष्प। ३. परमाणु। ४. हाथी। ५ हड्डी का टुकड़ा। अस्थिखंड। ६ तालवृक्ष का तना। ७. बाण। ८. कृमि। ९. चने का साग। १०. सरपत या सरकंडे का फूल। ११. किंकिरात वृक्ष या लाल कटसरैया। १२. अखरोट का पेड़ या फल। १३. हथेली।

पीलू—संज्ञा पुं० [सं० पीलु] १. एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २ वे सफेद लंबे कीड़े जो सड़ने पर फलों आदि में पड़ जाते हैं।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग जो दिन के तीसरे पहर में गाया जाता है। इसमें गांधार और ऋषभ का मेल होता है और सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

पीव—वि० [सं० पीवन] स्थूल। मोटा। पुष्ट।

पीवना(ु)—क्रि० स० दे० "पीना"।

पीवर—वि० [सं०] [स्त्री० पीवरा] [संज्ञा पीवरता] १. मोटा। स्थूल। उ०—कोल कराल दसन छवि गाई। तनु बिसाल पीवर अधिकाई॥—मानस। २ भारी। गुरु।

पीवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सतावर। २ सरिवन। ३ युवती स्त्री। ४. गाय।

पीवस—वि० [सं०] मोटा ताजा। स्थूल (वैदिक)।

पीवां—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल। पानी।
† वि० [सं० पीवर] मोटा। स्थूल।

पीविष्ट—वि० [सं०] बेहद मोटा। अति स्थूल।

पीसना—क्रि० स० [सं० पेषण] १ किसी वस्तु को रगड़कर या दबाव पहुँचाकर आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना। २ किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़कर बारीक करना। ३ कुचल देना। दबाकर भुरकुस कर देना।

मुहा०—किसी आदमी को पीसना = बहुत भारी अपकार करना या हानि पहुँचाना। नष्टप्राय कर देना। चौपट कर देना।

४ कड़ी मिहनत करना। जान लड़ाना।

संज्ञा पुं० १ पीसी जानेवाली वस्तु। २ उतनी वस्तु जो किसी एक आदमी को पीसने को दी जाय। ३ किसी एक आदमी के हिस्से या जिम्मे का काम। किसी एक आदमी के लिये अलग किया हुआ काम (व्यंग्य में)।

मुहा०—पीसना पीसना = लगातार परिश्रम करते रहना।

पीहर—संज्ञा पुं० [सं० पितृ + गृह, हिं० घर] स्त्रियों का मायका। स्त्रियों के माता पिता का घर। मैका। नैहर।

पुंख—संज्ञा पुं० [सं०] बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते थे।

पुंग—संज्ञा पुं० [सं०] समूह।

पुंगफल—संज्ञा पुं० दे० "पुंगीफल"।

पुंगल—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा।

पुंगव—संज्ञा पुं० [सं०] बैल। वृष।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम (शब्दों के अंत में लगने से)। उ०—व्यास आदि कविपुंगव नाना। जिन्ह सादर हरिचरित बखाना॥ —मानस।

पुंगीफल—संज्ञा पुं० दे० "पूँगीफल"।

पुँछल्ला—संज्ञा पुं० दे० "पुछल्ला"।

पुँछार(ु)†—संज्ञा पुं० [हिं० पूँछ] मयूर। मोर। उ०—जानि पुँछार जो भय बनवासू। रोवँ रोवँ परि फाँद न आँसू॥ —पदमावत।

पुँछाला—संज्ञा पुं० दे० "पुछल्ला"।

पुंज—संज्ञा पुं० [सं०] समूह। ढेर।

पुंजश—अव्य० [सं०] ढेर का ढेर। बहुत सा।

पुंजा†—संज्ञा पुं० [सं० पुंज] १ गुच्छा। समूह। २ पूला। गट्ठा।

पुंजी(ु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पूँजी"।

पुंड—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन, केसर आदि पोतकर मस्तक या शरीर पर बनाया हुआ चिह्न। तिलक। टीका।

पुंडरी—संज्ञा पुं० [सं० पुंडरिन्] एक पौधा जिसका रस आँख के रोगों में लाभ पहुँचाता है। स्थलपद्म।

पुंडरीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत कमल। २ कमल। ३ रेशम का कीड़ा। ४ शेर। बाघ। ५ तिलक। ६ सफेद रंग का हाथी। ७ श्वेतकुष्ठ। सफेद कोढ़। ८ अग्निकोण के दिग्गज का नाम। ९ अग्नि। आग। १० बाण। शर (अनेकार्थ)। ११ आकाश (अनेकार्थ)।

पुंडरीकाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।

पुंड्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गन्ना। पौंढ़ा। २. श्वेत कमल। ३ तिलक। टीका। ५. भारत के एक भाग का प्राचीन नाम।

पुंड्रवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।

पुंलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष का चिह्न। २ शिश्न। ३ पुरुषवाचक शब्द (व्या०)।

पुंश्चली—वि० स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी। कुलटा। छिनाल।

पुंश्चलीय—संज्ञा पुं० [सं०] कुलटा या वेश्या का पुत्र।

पुंस(ु)†—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष। मर्द।

पुंसवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से दूसरा जो गर्भिणी को पुत्र प्रसव कराने के अभिप्राय से गर्भाधान से तीसरे महीने होता है। २. दुग्ध। दूध। ३. वैष्णवों का एक व्रत।

पुंसवान्—वि० [सं० पुंसवत्] [स्त्री० पुंसवती] पुत्रवाला।

पुंसत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुषत्व। २. पुरुष की स्त्री-सहवास की शक्ति। ३ शुक्र। वीर्य।

पुआ—संज्ञा पुं० [सं० पूप] मीठे रस में सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।

पुआल—संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

पुकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुकारना] १ किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। हाँक। टेर। २ रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट। दुहाई। उ०—देखि निबिड़ तम दसहु दिसि, कपिदल भयउ खभार। एकहि एकु न देखई, जहँ तहँ करहिं पुकार। ३ ललकार। चुनौती। ४. प्रतिकार के लिये चिल्लाहट। फरियाद। नालिश। ५ गहरी माँग।

पुकारना—क्रि० स० [सं० प्र + √क्रुश् = पुकारना] १ नाम लेकर बुलाना। टेरना। आवाज लगाना। उ०—राम राम सिय लषनु पुकारी। परेउ धरनितल ब्याकुल भारी।—मानस। २. नाम का उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना। ३ चिल्लाकर कहना। घोषित करना। उ०—तुलसी सुमिरत राम सुलभ फल चारि। वेद पुरान पुकारत, कहत पुरारि।—बरवै०। ४ चिल्लाकर माँगना। ५. रक्षा के लिये चिल्लाना। गोहार लगाना। ६ फरियाद करना। नालिश करना। ७ ललकारना। चुनौती देना। उ०—अर्ध राति पुरद्वारा

पुकारा। बाली रिपुबल सहै न पारा।—मानस।
पुक्कश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पुक्कस"।
पुक्कष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पुक्कस"।
पुक्कस—संज्ञा पुं० [सं०] १. चांडाल। २. अधम। नीच।
पुख—संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।
पुखता—वि० दे० "पुख्ता।
पुखर—संज्ञा पुं० [सं० पुष्कर] तालाब।
पुखराज—संज्ञा पुं० [सं० पुष्पराग] एक प्रकार का पीला या हलका नीलापन या हरापन लिए हुए पीला रत्न।
पुख्य—संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।
पुख्ता—वि० [फा० पुख्त.] [संज्ञा पुख्तगी] पक्का। दृढ़। मजबूत।
पुगना—क्रि० अ० दे० "पुजना"।
पुगाना—क्रि० स० [हिं० पुजाना] १ पूरा करना; जैसे, मिति पुगाना, रुपया पुगाना। २ बच्चों के गोली के खेल में गड्ढे में गोली डालना। पिलाना।
पुचकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] दे० "पुचकारी"।
पुचकारना—क्रि० स० [अनु० पुच=से+हिं० कार+ना (प्रत्य०)] चूमने का सा शब्द निकालकर प्यार जताना। चुमकारना।
पुचकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] प्यार जताने के लिये ओठों से निकाला हुआ चूमने का सा शब्द। चुमकार।
पुचरस—संज्ञा पुं० [देश०] कई धातुओं का मेल। ऐसी धातु जिसमें मिलावट हो।
पुचारा—संज्ञा पुं० [अनु० पुचपुच—भीगे कपड़े को निचोड़ने का शब्द या पुतारा] किसी पर पानी से तर कपड़ा फेरने की क्रिया। भीगे कपड़े से पोंछने का काम। २. पतला लेप करने का काम। ३ पोता। हलका लेप। ४ वह गीला कपड़ा जिससे पोतते या पुचारा देते हैं। ५ लेप करने या पोतने के लिये पानी में घोली हुई कोई वस्तु। ६ दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उसपर गीला कपड़ा फेरने की क्रिया। ७ प्रसन्न करनेवाले वचन। ८. झूठी प्रशंसा। चापलूसी। खुशामद। ९. उत्साह बढ़ानेवाला वचन। बढ़ावा।
पुच्छ—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुम। पूँछ। २. किसी वस्तु का पिछला भाग।
पुच्छल—वि० [हिं० पुच्छ] दुमदार। पूँछदार।
यौ०—पुच्छल तारा=दे० "केतु"।
पुछल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० पूँछ+ला (प्रत्य०)] १. बड़ी पूँछ। लंबी दुम। २ पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु। ३ बराबर पीछे लगा रहनेवाला। साथ न छोड़नेवाला। ४. साथ में लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी उतनी आवश्यकता न हो। ५ पिछलग्गू। चापलूस। आश्रित।
पुछवैया—वि० [हिं० √पूछ+वैया (प्रत्य०)] १. पूछनेवाला। २ खोज खबर लेनेवाला।
पुछार—संज्ञा पुं० [हिं० √पूछ+आर (प्रत्य०)] आदर करनेवाला। पूछनेवाला।
पुछैया—संज्ञा पुं० [हिं० √पूछ+ऐया (प्रत्य०)] पूछनेवाला। खोज खबर लेनेवाला। ध्यान देनेवाला।
पुजंता—वि० [हिं० √पूज+अंता (प्रत्य०)] पूजा करनेवाला। पूजक।
पुजना—क्रि० अ० [हिं० पूजना] १. पूजा जाना। आराधना का विषय होना। २. संमानित होना।
पुजवना—क्रि० स० [हिं० पूजना] १ पुजाना। भरना। २ पूरा करना। ३ सफल करना।
पुजवाना—क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे० रूप] १. पूजन कराना। पूजा करने में प्रवृत्त करना। २ अपनी पूजा कराना। ३. अपनी सेवा या समान कराना।
पुजाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √पूज+आई (प्रत्य०)] पूजने का भाव, क्रिया या पुरस्कार।
पुजाना—क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे० रूप] १. पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना। २. अपनी पूजा प्रतिष्ठा कराना। भेंट चढ़वाना। ३ धन वसूल कराना।
क्रि० स० [हिं० पूजना=पूरा होना] १. भर देना। २ पूरा करना। पूर्ति करना। सफल करना।
पुजापा—संज्ञा पुं० [सं० पूजा+प्राप्त] देवपूजन की सामग्री। पूजा का सामान।
पुजारी—संज्ञा पुं० [सं० पूजा+कारी] देवमूर्ति की पूजा करनेवाला।
पुजेरी—संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"। उ०—आप देव आप ही पुजेरी। आपुहि भोजन जेंवत देरी॥ सूर०।
पुजैया—संज्ञा पुं० [हिं० √पूज+ऐया (प्रत्य०)] पूजा करनेवाला।
संज्ञा पुं० [हिं० पूजना=भरना] पूरा करनेवाला। भरनेवाला।
संज्ञा स्त्री० दे० "पुजाई"।
पुट—संज्ञा पुं० [अनु०] १ किसी वस्तु से तर करने या उसका हलका मेल करने के लिये डाला हुआ छींटा। हलका छिड़काव। २. रंग या हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग या और किसी पतली चीज में डुबाना। बोरना। उ०—ज्यों बिन पुट पट गहत न रँग को, रँग न रसै परै।—सूर०। ३ बहुत हलका मेल। भावना। अल्प मिश्रण।
संज्ञा पुं० [सं०] १ आच्छादन। ढाँकनेवाली वस्तु। उ०—झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।—कविता०। २ गोल गहरा पात्र। कटोरा। उ०—जल पुट आनि धरो आँगन में मोहन निकट तौ लीजै।—सूर०। ३ दोने के आकार की वस्तु। ४ औषध पकाने का मुँहबंद बरतन। ५ दो बराबर बरतनों को मुँह मिलाकर जोड़ने से बना हुआ बंद घेरा। संपुट। ६ घोड़े की टाप। ७. अंतपट। अँतरौटा। ८ रंध्र। छिद्र। उ०—नाथ तवानन ससि श्रवत, कथा सुधा रघुवीर। स्रवन पुटन्हि मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर॥—मानस। दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त।
पुटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटक] पोटला। गठरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पटपटाना=मरना] १. आकस्मिक मृत्यु। २ दैवी आपत्ति। आफत।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पुट=हलका मेल] बेसन या आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिये मिलाते हैं। आलन।
पुटपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्ते के दोने में रखकर औषध पकाने का विधान (वैद्यक)। उ०—जातुधान बुट, पुटपाक लंक जातरूप रतन जतन जारि कियो है मृगांक सो।—कविता०। २. मुँहबंद बरतन में दवा रखकर उसे गड्ढे के भीतर पकाने का विधान।
पुटरी, पुटली—संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"।
पुटास—संज्ञा पुं० दे० "पोटाश"।

पुटियाना—क्रि० स० [?] फुसलाना।

पुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुट] १ छोटा दोना। छोटा कटोरा। उ०—भरि भरि परनपुटीं रुचि रूरीं। कंद मूल फल अंकुर जूरीं॥ —मानस। २ खाली स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३ पुड़िया ४. कौपीन। लँगोटी।

पुटीन—संज्ञा पुं० [अं० पुटी] किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के छेद आदि भरने में काम आनेवाला एक मसाला।

पुट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट या पृष्ठ] १ चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २ चौपायों का, विशेषत. घोड़ों का, चूतड़। ३. घोड़ों की संख्या के लिये शब्द। ४ किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

पुठवार—क्रि० वि० [हिं० पुट्ठा] पीछे। बगल में।

पुठवाल—संज्ञा पुं० [हिं० पुट्ठा+वाला] १. चोरों के दल का वह बलिष्ठ आदमी जो सेंध के मुँह पर पहरे के लिये खड़ा रहता है। २ मददगार। पृष्ठरक्षक।

पुड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़ी, पुड़िया] बड़ी पुड़िया या बंडल।

पुड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटिका] १ मोड़ या लपेटकर संपुट के आकार का किया हुआ कागज जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। २ पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा। ३ आधार-स्थान। खान। भंडार। घर।

पुढ़ाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रौढ़ता"॥

पुण्य—वि० [सं०] पवित्र। शुभ। अच्छा। भला। धर्मविहित, जैसे, पुण्यकार्य।

संज्ञा पुं० १ वह कर्म जिसका फल शुभ हो। धर्म का कार्य। २ शुभ कर्म का संचय, जैसे, दीनों को दान देना बड़े पुण्य का कार्य है।

पुण्यकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान पुण्य करने का समय। २ पवित्र समय।

पुण्यक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो। तीर्थ।

पुण्यजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्मात्मा। सज्जन।

पुण्यभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्यावर्त।

पुण्यवान्—वि० [सं० पुण्यवत] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।

पुण्यश्लोक—वि० [सं०] [स्त्री० पुण्य श्लोका] जिसका जीवनवृत्तांत पवित्र और शिक्षाप्रद हो। पवित्र यश या कीर्तिवाला।

पुण्यस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थस्थान।

पुण्याई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुण्य+आई (प्रत्य०)] पुण्य का फल या प्रभाव।

पुण्यात्मा—वि० [सं० पुण्यात्मन्] जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। धर्मात्मा।

पुण्याह—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुभ दिन। २. खुशी का दिन।

पुण्याहवाचन—संज्ञा पुं० [सं०] देवकार्य के अनुष्ठान के पहले यजमान के मंगल के लिये 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।

पुतना—क्रि० अ० [हिं० पोतना] पोता जाना। पुताई होना।

पुतरिका(पु)—संज्ञा स्त्री० "पुत्तलिका"।

पुतरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुतरी] दे० "पुतला"।

पुतरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पुतरी", "पुतली"।

पुतला—संज्ञा पुं० [सं० पुत्रक] [स्त्री० पुतली] लकड़ी, मिट्टी, कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का वह आकार या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) आदि के लिये हो।

मुहा०—किसी का पुतला बाँधना = किसी की निंदा करते फिरना। बदनामी करना (पुराने समय में भाट जिसके यहाँ कुछ नहीं पाते थे उसके नाम का एक पुतला बाँस से बाँधकर घूमते और कंजूस कहकर गालियाँ देते थे)।

पुतली—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुतला] १ लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) आदि के लिये हो। गुड़िया। २ आँख के बीच का काला भाग।

मुहा०—पुतली फिर जाना = आँखें पथरा जाना। नेत्र स्तब्ध होना (मरण-चिह्न)।

३ कपड़ा बुनने की कल या मशीन।

यौ०—पुतलीघर = कल कारखाना, विशेषत कपड़ा बुनने का कारखाना।

पुताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √पोत+आई (प्रत्य०)] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुतारा—संज्ञा पुं० दे० "पुचारा"।

पुत्त(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुत्र"।

पुत्तरी(पु)‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।

पुत्तलक—संज्ञा स्त्री० [सं०] [स्त्री० पुत्तलिका] पुतली।

पुत्तलिका, पुतली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुतली। २ गुड़िया।

पुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुत्री] लड़का। बेटा।

पुत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा बेटा। लड़का। बच्चा (प्रायः प्यार में प्रयुक्त)। २. गुड्डा। कठपुतली। ३ टिड्डा। ४ एक प्रकार का चूहा जिसके काटने से बड़ी पीड़ा और सूजन होती है। ५ दौने का पौधा।

पुत्रजीव—संज्ञा पुं० [सं०] इंगुदी से मिलता जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।

पुत्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती (स्त्री)।

पुत्रवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्र की स्त्री।

पुत्रवान्—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० पुत्रवती] जिसके पुत्र हो।

पुत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लड़की। बेटी। २ पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। ३ गुड़िया। मूर्ति। पुतली। ४. आँख की पुतली। ५ स्त्री का चित्र।

पुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। बेटी।

पुत्रेष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।

पुदीना(पु)—संज्ञा पुं० [फा० पोदीन] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होती है। इससे लोग चटनी आदि बनाते हैं।

पुदगल—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्पर्श, रस और वर्णवाला पदार्थ। रूपवान् जड़ पदार्थ (जैन)। २ शरीर। देह (बौद्ध)। ३. परमाणु। ४. आत्मा।

वि० सुंदर। प्रिय।

पुन—अव्य० [सं० पुनर] १ फिर। दोबारा। दूसरी बार। २ उपरांत। पीछे। अनंतर।

पुनः पुनः—क्रि० वि० [सं०] बारबार।

पुन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

पुनना—क्रि० स० [हिं० पूरना] बुरा भला कहना। उघटना। बखानना। बुराई खोल खोलकर कहना (स्त्रियों में प्रयुक्त)।

पुनरपि—क्रि० वि० [सं०] फिर भी।

पुनरवसु(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "पुनर्वसु"।

पुनरागमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ फिर से आना। दोबारा आना। २ फिर जन्म लेना।

पुनरावर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [कर्ता पुनरावर्ती] १. बार बार लौटकर आना। २. बार बार ससार में जन्म लेना।

पुनरावृत्त—वि० [सं०] १. फिर से घूमा हुआ। फिर से घूमकर आया हुआ। २. दोहराया हुआ। फिर से किया या कहा हुआ।

पुनरावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरावृत्त] १. फिर से घूमना। फिर से घूमकर आना। २. किए हुए काम को फिर करना। दोहराना। ३ एक बार पढ़कर फिर पढ़ना।

पुनरुक्त—वि० [सं०] १. फिर से कहा हुआ। २. जो फिर कहा गया हो।

पुनरुक्तिवदाभास—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े, परंतु यथार्थ में न हो। उ०—वदनीय केहिके नहीं वे कविंद मतिमान। स्वर्ग गए हू काव्यरस जिनको जगत जहान॥ इसमें 'जगत' और 'जहान' में पुनरुक्ति जान पड़ती है, पर 'जगत' का अर्थ 'जगता' है।

पुनरुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] एक बार कही हुई बात को फिर कहना। कहे हुए वचन को फिर कहना (साहित्यिक रचना में यह एक दोष माना जाता है)।

पुनरुज्जीवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना।

पुनरुत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ फिर से उठना। २ पतन होने के बाद फिर से उठना या उन्नति करना।

पुनर्जन्म—संज्ञा पुं० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति। एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण।

पुनर्जीवन—संज्ञा पुं० १. दे० "पुनरुज्जीवन"। २ पुनर्जन्म।

पुनर्नवता—संज्ञा पुं० १ फिर से नया होना। २ जलपान।

पुनर्नवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ चौलाई की पत्तियों के समान गोल होती हैं और जो फूलों के रंग के भेद से से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील। गदहपुरना।

पुनर्भव—संज्ञा पुं० [सं०] १ फिर होना। पुनर्जन्म। २ नाखून। ३ रक्तपुनर्नवा।
वि० फिर से पैदा हुआ। पुनर्जन्मा।

पुनर्भू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो।

पुनर्वसु—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र। २ विष्णु। ३ शिव। ४ कात्यायन मुनि। ५. एक लोक।

पुनवासी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी"।

पुनि†Ⓟ—क्रि० वि० [सं० पुनर्] १. फिर से। दोबारा। उ०—पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहि बहुरि पठाई। —मानस। २ बाद। पीछे। अनतर। पश्चात। उ०—गई न निज पर बुद्धि, सुद्ध ह्वै रहे न राम लय लाए। तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताए। —विनय०।

पुनीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० पुण्य] पुण्यात्मा। उ०—सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥ —मानस।
संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण] पूर्णिमा। पूनो।
क्रि० वि० [सं० पुनर्] पुन। फिर। उ०—मानस वचन काय किए पाप सति भाय, राम को कहात दास दगाबाज पुनि सो। —कविता०।

पुनीत—वि० [सं०] [स्त्री० पुनीता] पवित्र।

पुन्न—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

पुन्नाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुलतान चपा। २ श्वेत कमल। ३ जायफल।

पुन्य—संज्ञा पुं० [सं० पुण्य] दे० "पुण्य"। उ०—दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥ —मानस।

पुन्यता, पुन्यताईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० पुण्य+ता, ताई (प्रत्य०)] १ धर्मशीलता। २ पवित्रता।

पुपली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोपला] बाँस की पतली पोली नली।

पुमान्—संज्ञा पुं० [सं०] मर्द। नर।

पुरजय—वि० [सं०] (शत्रु के) पुर को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० एक सूर्यवंशी राजा। काकुत्स्थ।
यौ०—परपुरजय=शत्रु के नगर को जीतनेवाला।

पुरदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुर, नगर या घर को तोड़नेवाला। २. इंद्र (जिसने दानवों का नगर तोड़ा था)। ३. विष्णु। ४ चोर (घर फोड़नेवाला)।

पुरंदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गगा। जाह्नवी।

पुरंध्री—संज्ञा स्त्री० [सं० पुरध्री] १ पत्नी। भार्या। स्त्री। २. बालबच्चोंवाली स्त्री।

पुरः—अव्य० [सं० पुरस्] १. आगे। २ पहले।

पुरःसर—वि० [सं०] १ अग्रगंता। अगुआ। २ सगी। साथी। ३. समन्वित। सहित।

पुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरी] १ वह बड़ी बस्ती जहाँ बहुत से लोग रहते हों और ग्रामों और बस्तियों के लोग अपने काम से आया जाया करें। नगर। शहर। कसबा। २ आगार। घर।
यौ०—अंत पुर=जनानखाना।
३ कोठा। अटारी। ४. लोक। भुवन। ५. नक्षत्र। पुज। राशि। ६. देह। शरीर। ७ दुर्ग। किला। गढ़। ८. एक राक्षस। त्रिपुर। उ०—मयन महन पुरदहन गहन जानि आनि कै सबै को सारु धनुष गढ़ायो है। —कविता०।
वि० [अ०] पूर्ण। भरा हुआ।
संज्ञा पुं० [देश०] कूएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल। चरसा।

पुरइनⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटकिनी] १ कमल का पत्ता। २ कमल। उ०—पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मजु मनि सीप सुहाई॥ —मानस।

पुरइया†—संज्ञा पुं० [देश०] १ तकली। २ बुनाई में कातना।

पुरखा—संज्ञा पुं० [सं० पुरुष] [स्त्री० पुरुखिन] १. पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप, दादा, परदादा आदि।
मुहा०—पुरखे तर जाना=पूर्व पुरुषों को (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या फल होना।
२ घर का बड़ा बूढ़ा।

पुरचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकार] १ चुमकार। पुचकार। २ बढ़ावा। प्रोत्साहन ३ प्रेरणा। उसकावा। ४ समर्थन। हिमायत।

पुरजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ टुकड़ा। खंड।

मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना=खंड खंड करना। टूक टूक करना।

२ कतरन। धज्जी। कटा टुकड़ा। कत्तल। ३ अवयव। अग। अंश। भाग। ४ किसी काम या प्रमाण के लिये लिखा हुआ कागज का टुकड़ा। ५ दवा का लिखित नुस्खा।

यौ०—चलता पुरजा = चालाक आदमी।

पुरट—सज्ञा पुं० [स०] स्वर्ण। सोना। उ०—धवल धाम मनि पुरट पट्ट सुघटित नाना भाँति। सिय निवास सुदर सदनु सोभा किमि कहि जाति॥—मानस।

पुरत—अव्य० [सं०] आगे।

पुरद्वार—संज्ञा पुं० [स०] नगरद्वार। शहरपनाह का फाटक।

पुरत्राण(पु)—सज्ञा पुं० [स०] शहरपनाह। प्राकार। कोट। परकोटा।

पुरवला, पुरखुला—वि० [स० पूर्व+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पुरवली, पुरखुली] १. पूर्व का। पहले का। २ पूर्वजन्म का।

पुरवा—संज्ञा पु० [सं० पूर्वा फाल्गुनि] पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र जो भाद्रपद शुक्ल पक्ष में लगता है। उ०—धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सींचेन्हि नाहाँ। पुरवा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भई तस झूरी।—पदमावत।

पुरविया—वि० [हिं० पूरब] [स्त्री० पुरविनी] पूर्वदेश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूरब का।

पुरवी—वि० दे० "पूरबी"।

पुरवट—संज्ञा पुं० [स० पूर] चमड़े का बहुत बड़ा डोल जिसे कुएँ में डालकर बैलों की सहायता से सिंचाई के लिये पानी खींचते हैं। चरसा। मोट।

पुरवना(पु)—क्रि० स० [हिं० पूरना] १. पूरना। भरना। पुजाना। २ पूरा करना।

मुहा०—साथ पुरवना=साथ देना।

क्रि० अ० १ पूरा होना। २ यथेष्ट होना। ३ उपयोग के योग्य होना।

पुरवा—सज्ञा पुं० [सं० पुर+हिं० वा (प्रत्य०)] छोटा गाँव। पुरा। खेड़ा।

सज्ञा पुं० [सं० पूर्व+वात] पूर्व दिशा से चलनेवाला वायु।

संज्ञा पुं० [स० पुटक] मिट्टी का कुल्हड़।

पुरवाई, पुरवैया—सज्ञा स्त्री० [सं० पूर्व+वायु] वह वायु जो पूर्व से चलती है।

पुरवाना—क्रि० स० [हिं० 'पुराना' का प्रे० रूप] पूरा कराना।

पुरश्चरण—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २ किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये नियमपूर्वक जपना। प्रयोग।

पुरषा—सज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरसा—सज्ञा पुं० [स० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस्कार—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० पुरस्कृत] १ आगे करने की क्रिया। २ आदर। पूजा। ३ पारितोषिक। उपहार। इनाम। ४ प्रधानता। ५ स्वीकार।

पुरस्कृत—वि० [सं०] १ आगे किया हुआ। २ आदृत। पूजित। ३ स्वीकृत। ४ जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।

पुरस्सर—वि० दे० "पुरःसर"।

पुरहूत(पु)—सज्ञा पुं० "पुरुहूत"।

पुरांगना—सज्ञा स्त्री० [स०] नगर में रहनेवाली स्त्री। नगरनिवासिनी।

पुरांतक—सज्ञा पुं० [स०] शिव।

पुरा—अव्य० [स०] १ पुराने समय में।

वि० प्राचीन। पुराना।

सज्ञा पुं० [स० पुर] गाँव। बस्ती।

पुराकल्प—सज्ञा पुं० [स०] १ पूर्वकल्प। पहले का कल्प। २ प्राचीन काल। ३ एक प्रकार का अर्थवाद जिसमें प्राचीन काल का इतिहास कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

पुराकृत—वि० [सं०] १ पूर्वकाल में किया हुआ। २ पूर्व-जन्म में किया हुआ। उ०—यह सबहु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि।—मानस।

पुराण—वि० [स०] पुरातन। प्राचीन।

सज्ञा पुं० १ सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों, राजाओं, महापुरुषों आदि के ऐसे वृत्तांत जो पुरुष परंपरा से चले आते हों। २. हिंदुओं के धर्मसबधी आख्यानग्रथ जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों तथा राजाओं आदि के वृत्तांत रहते हैं। ये अठारह हैं जिनके नाम विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वाराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड, ब्रह्मांड और भविष्य हैं। (विष्णु पुराण) पुराण के पाँच लक्षण कहे गए हैं—सर्ग, प्रतिसर्ग (अर्थात् सृष्टि और फिर सृष्टि), वंश, मन्वतर और वशानुचरित। ३. अठारह की सख्या। ४ शिव। ५ कार्षापण।

पुराणपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

पुरातत्व—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल-सबधी विद्या। प्रत्नशास्त्र।

पुरातन—वि० [स०] प्राचीन। पुराना। उ०—कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी।—मानस।

सज्ञा पुं० विष्णु।

पुरातनता—सज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीनता। पुरानापन।

पुरान—वि० दे० "पुराना"।

सज्ञा पु० दे० "पुराण"। उ०—दसरत्थ के दानि सिरोमनिराय, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।—कविता०।

पुराना—वि० [स० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १ जिसे उत्पन्न हुए या बने बहुत काल हो गया हो। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। उ०—राम ब्रह्म व्यापक जगजाना। परमानद परेस पुराना।—मानस। २ जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। उ०—छुअतहि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना।—मानस। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। परिपक्व।

मुहा०—पुराना खुर्राट=(१) बूढ़ा। (२) बहुत दिनों का अनुभवी। किसी बात में पक्का। पुरानी खोपड़ी=दे० "पुराना खुर्राट"। पुराना घाघ=बहुत बड़ा चालाक।

४ अगले समय का। प्राचीन। अतीत। ५ बहुत काल या समय का। ६ जिसका चलन अब न हो।

क्रि० स० [हिं० पूरना का प्रे० रूप] १ पूरा करना। पुजवाना। भराना। २. पालन कराना। अनुकूल कराना। ३ पूरा करना। भरना। ४ पालन करना। अनुसरण करना।

पुरारि—सज्ञा पुं० [सं०] पुर या त्रिपुर राक्षस का शत्रु। शिव। उ०—सोइ पुरारि कोदड कठोरा। राजसमाज आज जेइ तोरा।—मानस।

पुराल(पु)—सज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

रावृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] पुराना वृत्तांत। पुराना हाल। इतिहास।

,रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुरी। २ नदी।

संज्ञा पुं० दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

पुरिखा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूरना] वह नरी जिसपर जुलाहे बाने को बुनने के पहले फैलाते हैं।

संज्ञा स्त्री० दे० "पुड़िया"।

पुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगरी। शहर। २ जगन्नाथपुरी। पुरुषोत्तम धाम।

पुरीष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा। मल। गू। उ०—सोनित पुरीष जो मूत्र मल कृमि कर्दमावृत सोवहीं। कोमल सरीर, गँभीर बेदन, सीस धुनि धुनि रोवहीं।—विनय०।

पुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवलोक। २ दैत्य। ३ पराग। ४. शरीर। ५ एक प्राचीन राजा जो नहुष के पौत्र और ययाति के पुत्र थे। इन्होंने अपने पिता ययाति को बुढ़ौती के बदले अपना यौवन दिया था।

पुरुख(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "पुरुष"।

पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य। आदमी। उ०—लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं। २ नर। उ०—अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामय।—मानस। ३ सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्ता और असंग चेतन पदार्थ। आत्मा। ४ विष्णु। पुराण पुरुष। उ०—पुरुषप्रसिद्ध प्रकासनिधि, प्रगट परावर नाथ। रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ, कहि सिव नायउ माथ।—मानस। ५ सूर्य। ६ जीव। ७. शिव। ८ व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद वाचक (कहनेवाले) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिये अथवा किसी तीसरे या अन्य के लिये। इन्हें क्रम से उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष कहते हैं जैसे—'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'वह' अन्य पुरुष और 'तुम' मध्यम पुरुष। ९ मनुष्य का शरीर या आत्मा। १० पूर्वज। उ०—सो सठ कोटिक पुरुष समेता। बसहिं कलप सत नरकनिकेता।—मानस। ११. पति। स्वामी।

पुरुषत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष होने का भाव। पुंसत्व। मरदानगी।

पुरुषपुर—संज्ञा पुं० [सं०] गांधार की प्राचीन राजधानी। आजकल का पेशावर।

पुरुषमेध—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक यज्ञ जिसमें नरबलि की जाती थी।

पुरुषवार—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष शास्त्रानुसार रवि, मंगल, बृहस्पति और शनिवार।

पुरुषसूक्त—संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त जो "सहस्रशीर्षा" से आरंभ होता है और विश्वात्मा का पुरुष के समान निरूपण करता है।

पुरुषानुक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] पुरखों की चली आती हुई परंपरा।

पुरुषायित बंध—संज्ञा पुं० [सं०] कामशास्त्र के अनुसार विपरीत रति का एक ढंग।

पुरुषारथ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ"। उ०—मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु॥ —मानस।

पुरुषार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष के उद्योग का विषय। पुराणों के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ हैं। २. पौरुष। उद्यम। पराक्रम। ३ शक्ति। सामर्थ्य। बल।

पुरुषार्थी—वि० [सं० पुरुषार्थिन्] १ पुरुषार्थ करनेवाला। २. उद्योगी। ३ परिश्रमी। ४ बली।

पुरुषोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पुरुष जो शत्रु, मित्र आदि से उदासीन हो। श्रेष्ठ पुरुष। २ विष्णु। ३ जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है। ४ कृष्णचंद्र। ५ ईश्वर। नारायण। ६ मलमास। अधिक मास।

पुरुषोत्तम मास—संज्ञा पुं० [सं०] मलमास। अधिक मास।

पुरुहूत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पुरूरवा—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है। पुराणों के अनुसार बृहस्पति की स्त्री तारा और चंद्रमा के संयोग से बुध हुए। बुध का विवाह इला से हुआ। इसी इला के गर्भ से पुरूरवा का जन्म हुआ जो बड़े रूपवान्, बुद्धिमान्, और पराक्रमी थे। पुरूरवा की राजधानी (प्रतिष्ठानपुर) प्रयाग में गंगा के किनारे थी। २. विश्वेदेव।

पुरैन, पुरैनी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २ कमल।

पुरोगामी—वि० [सं० पुरोगामिन्] [स्त्री० पुरोगामिनी] अग्रगामी।

पुरोडाश—संज्ञा पुं० [सं०] १. यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये कपाल में पकाई जाती थी। उ०—बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा। —मानस। २. हवि जो यज्ञ से बच रहे। ३. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय। यज्ञभाग। ४ सोमरस। ५ वे मंत्र जिनका पुरोडास बनाते समय पाठ किया जाता है।

पुरोधा—संज्ञा पुं० [सं० पुरोधस्] पुरोहित। उ०—समय समाज धरम अविरोधा। बोले तब रघुबंसपुरोधा॥ —मानस।

पुरोभागी—वि० [सं० पुरोभागिन्] [स्त्री० पुरोभागिनी] १ अग्र भागवाला। २ दोषदर्शी। गुणों को छोड़ केवल दोषों की ओर ध्यान देनेवाला। छिद्रान्वेषी।

पुरोहित—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरोहितानी] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए। कर्मकांड करानेवाला।

पुरोहिताई—संज्ञा स्त्री० [सं० पुरोहित+हिं० आई (प्रत्य०)] पुरोहित का काम।

पुरौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुरवट"।

पुरौती†—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्ति"।

पुर्जा—संज्ञा पुं० दे० "पुरजा"।

पुर्तगाल—संज्ञा पुं० [अँ०] योरप के दक्षिण पश्चिम कोने का एक छोटा देश।

पुर्तगाली—वि० [हिं० पुर्तगाल] १ पुर्तगाल संबंधी। २ पुर्तगाल का रहनेवाला।

पुर्तगीज—वि० [अँ०] पुर्तगाली।

पुल—संज्ञा पुं० [फा०] नदी, जलाशय आदि के आरपार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय। सेतु।

मुहा०—किसी बात का पुल बाँधना = झड़ी बाँधना। बहुत अधिकता कर देना। अतिशय करना। पुल टूटना = बहुतायत होना। अधिकता होना। अटाला या जमघट लगना।

पुलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोंगटे खड़े होना। रोमांच। उ०—सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा॥

—मानस। २ एक प्रकार का रत्न। याकून। महताब।

पुलकना—क्रि० अ० [सं० पुलक से, हिं० ना० धा०] पुलकित होना। प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना। गद्गद होना। उ०—सब सिसु यहि मिस प्रेम बस, परसि मनोहर गात। तनु पुलकहिं अति हरषु हिय, देखि देखि दोउ भ्रात।—मानस।

पुलकाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुलक+आई (प्रत्य०)] पुलकित होने का भाव। गद्गद होना।

पुलकालि, पुलकावलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलकावलि। हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली। उ०— पुरजन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता।—मानस।

पुलकित—वि० [सं०] प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों। गद्गद। उ०—बार बार मुख चुंबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता।—मानस।

पुलकी—वि० [सं० पुलकित] रोमांचयुक्त। हर्ष या प्रेम में गद्गद होनेवाला।

पुलट†—संज्ञा स्त्री० दे० "पलट"।

पुलटिस—संज्ञा स्त्री० [अं० पोल्टिस] फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उसपर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप।

पुलपुला†—वि० दे० "पुलपुला"।

पुलपुला—वि० [अनु०] जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबाने से धँसे।

पुलपुलाना—क्रि० स० [हिं० पुलपुला] १ किसी मुलायम चीज को दबाना। २ मुँह में लेकर दबाना। चूसना।

पुलस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पुलस्त्य"। उ०—उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती।—मानस।

पुलस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है। ये ब्रह्मा के मानसपुत्रों में थे और विश्रवा के पिता तथा कुबेर और रावण, कुंभकर्ण और विभीषण के पितामह थे। उ०—उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप। तदपि महीसुर स्राप बस भए सकल अघरूप।—मानस। २ शिव।

पुलह—संज्ञा पुं० [सं०] १ सप्तर्षियों में एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानसपुत्र और प्रजापति थे। २ शिव।

पुलहना(पु)—क्रि० अ० दे० "पलुहना"।

पुलाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कदन्न। अँकरा। २. उबाला हुआ चावल। भात। ३. भात का माँड़। पीच। ४ पुलाव।

पुलाव—संज्ञा पुं० [सं० पुलाक, मि० फा० पुलाव] एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मांसोदन। २ चावल के साथ मटर, पिस्ता आदि मिलाकर बनाया हुआ एक नमकीन व्यंजन।

पुलिंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २. वह देश जहाँ पुलिंद जाति बसती थी।

पुलिंदा—संज्ञा पुं० [हिं० पूला] लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा। गड्डी। बंडल।

पुलिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी के भीतर से हाल की निकली हुई जमीन। चर। २ तट। किनारा।

पुलिस—संज्ञा स्त्री० [सं० पुरुष, अं० पुलिस] १ प्रजा की जान और माल की हिफाजत के लिये मुकर्रर सिपाहियों या अफसरों का दल।

पुल्हिरौरा†—संज्ञा पुं० [देश०] एक पकवान।

पुलोमजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलोम नामक दैत्य की कन्या जिसके पिता को मारकर इंद्र ने उसे ब्याहा था। इंद्राणी। शची।

पुलोमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] च्यवन ऋषि की माता और भृगु की पत्नी जो वैश्वानर नामक दैत्य की कन्या थी।

पुवा†—संज्ञा पुं० दे० "मालपूवा"। उ०—पुवा, सोहारी, मोदक, भारी। गूँझा, रस मूँझा, दधि न्यारी।—नंददास०।

पुवार†—संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

पुश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पृष्ठ। पीठ। पीछा। २ वंशपरंपरा में कोई एक स्थान। पिता, पितामह, प्रपितामह आदि या पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि का पूर्वापर स्थान। पीढ़ी।

यौ०—पुश्त दर पुश्त = वंशपरंपरा में। पुश्तहा पुश्त = कई पीढ़ियों तक।

पुश्तक—संज्ञा स्त्री० [फा० पुश्त] १. घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से लात मारना। २ लत्ती।

पुश्तनामा—संज्ञा पुं० [फा०] वंशावली। पीढ़ीनामा। कुरसीनामा।

पुश्ता—संज्ञा पुं० [फा० पुश्त] १ पानी की रोक या मजबूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुवाँ टीला। २. बाँध। ऊँची मेंड़। ३ किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा। पुट्ठा।

पुश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ टेक। सहारा। आश्रय। थाम। २ सहायता। पृष्ठरक्षा। मदद। ३. पक्ष। तरफदारी। ४ बड़ा तकिया। गावतकिया।

पुश्तैन—संज्ञा स्त्री० [फा० पुश्त] पुरुष-परंपरा। वंशपरंपरा। पीढ़ी दर पीढ़ी।

पुश्तैनी—वि० [फा० पुश्त] १. जो कई पुश्तों से चला आता हो। दादा, परदादा के समय का पुराना। २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

पुषित—वि० [सं०] १ पोषण किया हुआ। पाला पोसा हुआ। २ वर्द्धित।

पुष्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २. जलाशय। ३ जल। ४ वाण। तीर। ५. पुष्करमूल। ६ सूर्य। ७. एक दिग्गज। ८ करछी का कटोरा। ९ हाथी की सूँड़ का अगला भाग। १० आकाश। ११. सर्प। १२. युद्ध। १३. भाग। अंश। १४. सारस पक्षी। १५ विष्णु। १६. शिव। १७ बुद्ध। १८ पुराणों में कहे गए सात द्वीपों में से एक। १९ एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।

पुष्करमूल—संज्ञा पुं० [सं०] एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती।

पुष्करिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा तालाब।

पुष्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार ग्रास की भिक्षा। २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान। ३. राम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक। ४ शिव।

वि० १ बहुत। अधिक। ढेर सा। प्रचुर। २ भरा पूरा। परिपूर्ण। उ०—फिर हुई अदृश्य शक्ति पुष्कल उस तन से।—तुलसी०। ३ श्रेष्ठ। ४. उपस्थित। ५. पवित्र।

पुष्ट—वि० [सं०] १ पोषण किया हुआ। पाला हुआ। २. तैयार। मोटाताजा। बलिष्ठ। उ०—सुगद पुष्ट उन्नत कृकाटिका कवु कठ सोभा मन मानति।—गीता०। ३ मोटाताजा करनेवाला। बलवर्द्धक। ४. दृढ़। मजबूत। पक्का।

पुष्टई—संज्ञा स्त्री० [सं० पुष्ट+हिं० ई

(प्रत्य०)] बलवीर्यवर्द्धक औषध। ताकत की दवा।

पुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजबूती। पोढ़ापन। दृढ़ता।

पुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पोषण। २. मोटा-ताजापन। बलिष्ठता। ३ वृद्धि। संतति। की बढ़ती। ४. दृढ़ता। मजबूती। ५ बात का समर्थन। पक्कापन।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक—वि० [सं०] पुष्टि करनेवाला। बलवीर्यकारक।

पुष्टिमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ सम्प्रदाय। वल्लभाचार्य के मतानुकूल वैष्णव भक्ति-मार्ग।

पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ पौधों का फूल। २. ऋतुमती स्त्री का रज। ३. आँख का एक रोग। फूली। ४. कुवेर का विमान। पुष्पक। ५ मांस (वाममार्गी)।

पुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल। २ कुवेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुवेर को दे दिया था। उ०—लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हँसि करि कृपासिंधु तव भाखा॥ —मानस। ३ आँख का एक रोग। फूला। फूली।

पुष्पकीट—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल का कीड़ा। २ भौंरा।

पुष्पगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जुही।

पुष्पदंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायुकोण का दिग्गज। २. शिव का अनुचर एक गंधर्व।

पुष्पधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० पुष्पधन्वन्] फूलों के धनुषवाला देवता। कामदेव।

पुष्पध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] फूलों की ध्वजावाला देवता। कामदेव। पुष्पकेतु।

पुष्पपुर—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) का एक नाम।

पुष्पबाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्पमित्र—संज्ञा पुं० दे० "पुष्यमित्र"।

पुष्पराज—संज्ञा पुं० [सं० पुष्परजस्] पराग। फूलों की धूल।

पुष्पराग—संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज।

पुष्परेणु—संज्ञा पुं० [सं०] पराग।

पुष्पवती—वि० स्त्री० [सं०] १ फूलवाली। फूली हुई। २ रजोवती। रजस्वला। ऋतुमती।

पुष्पवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] फुलवारी। फूलों का बगीचा। उद्यान।

पुष्पवाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्पवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों की वर्षा। ऊपर से फूल गिरना या गिराना।

पुष्पशर—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्पहास—संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलों का खिलना। २. विष्णु।

पुष्पांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों से भरी अंजलि। अंजलि भरकर फूल जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाए जायँ।

पुष्पागम—संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।

पुष्पायुध—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्याय के अंत में वह वाक्य जिसमें कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है। यह प्रायः 'इति श्री' से आरंभ होता है और इसमें ग्रंथ, ग्रंथकार और रचनाकाल आदि का उल्लेख रहता है।

पुष्पित—वि० [सं०] पुष्पों से युक्त। फूला हुआ।

पुष्पिताग्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्द्ध-समवृत्त जिसके पहले और तीसरे चरण में दो नगण, एक रगण और एक यगण तथा दूसरे और चौथे चरण में एक नगण, दो जगण, एक रगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—प्रभु सम नहिं अन्य कोइ दाता। सुधन जु ध्यावत तीन लोक त्राता॥ सकल असत कामना बिहाई। हरि नित सेवहु मित्त चित लाई॥

पुष्पेषु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्पोद्यान—संज्ञा पुं० [सं०] फुलवारी। पुष्पवाटिका।

पुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुष्टि। पोषण। २. मूल या सार वस्तु। ३ २७ नक्षत्रों में से आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति वाण की सी है। सिध्य। तिष्य। ४ पूस का महीना।

पुष्यनेत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह रात जिसमें पुष्य नक्षत्र ही बराबर बना रहे।

पुष्यमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] मौर्यों के पीछे मगध में शुंग वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।

पुष्यरथ—संज्ञा पुं० [सं०] घूमने फिरने या उत्सव आदि में निकलने का रथ जो युद्ध में काम नहीं देता। क्रीड़ारथ।

पुसकर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।

पुसाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० पोसना] १ पूरा पड़ना। बन पड़ना। २. अच्छा लगना। शोभा देना।

पुस्त(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "पुश्त"।

पुस्तक—संज्ञा स्त्री० [सं०] [स्त्री० अल्पा० पुस्तिका] पोथी। किताब।

पुस्तकाकार—वि० [सं०] पोथी के रूप का। पुस्तक के आकार का।

पुस्तकालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।

पुस्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पुस्तक।

पुहकर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।

पुहना—क्रि० अ० [हिं० पोहना का अ० रूप] पोहा जाना। पिरोया या गूँथा जाना।

पुहप, पुहुप—संज्ञा पुं० [सं० पुष्प] फूल। उ०—अतिसय पुहुप क माल राम उर सोहइ हो। तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहइ हो॥ —रामलला०।

§**पुहवी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

पुहुमि—संज्ञा स्त्री० [सं० पृथिवी, प्रा० पहुवी] पृथ्वी। भूमि। उ०—तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥ —मानस।

पुहुमी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पृथिवी, प्रा० पहुवी] पृथ्वी। भूमि। उ०—चरग चग गत चातकहि नेम प्रेम की पीर। तुलसी परवस हाड़ पर परिहै पुहुमी नीर॥ —दोहा०।

पुहरेनु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पुष्परेणु] पराग।

पुहुपराग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पुखराज"।

पुहुवी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पृथिवी] भूमि।

पूँगरा—संज्ञा पुं० [सं० पोगंड] पाँच से दस वर्ष तक की अवस्थावाला बालक। उ०—कबीर पूँगरा राम अलह का सब गुरु पीर हमारे। —कबीर०।

पूँगी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बाँसुरी।

पूँछ—संज्ञा स्त्री० [सं० पुच्छ] १ जंतुओं, पक्षियों कीड़ों आदि के शरीर में सबसे अंतिम या पिछला भाग। पुच्छ। लांगूल। दुम। २ किसी पदार्थ के पीछे का भाग। पिछलग्गू। पुछल्ला।

पूँजी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुंज] १ संचित धन। संपत्ति। जमा। २ वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। ३ धन। रुपया पैसा। ४. किसी विषय में किसी की योग्यता। ५. समूह। ढेर।

मुहा०—पूँजी खोना या गँवाना = व्यापार में इतना घाटा उठाना कि लाभ

के स्थान में पूँजी से देना पड़े। भारी घाटा या क्षति उठाना।

पूँजीदार—संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+फा० दार] पूँजीपति।

पूँजीदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूँजी+फा० दारी] ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूँजीदारों की प्रधानता और महत्व हो। पूँजीवाद।

वि० [हिं० पूँजीदार] पूँजीदारों से संबंधित। पूँजीवादी।

पूँजीपति—संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+सं० पति] वह जिसके पास पूँजी हो या जो उद्योग या व्यवसाय में पूँजी लगावे। पूँजीदार।

पूँजीवाद—संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+सं० वाद] १ उत्पादन में लगनेवाले धन पर व्यक्तियों का निजी अधिकार, प्रभाव या उसकी व्यवस्था (वर्तमान राजनीति)। २ व्यक्तिगत पूँजी का प्रभुत्व। समाजवाद का उलटा।

पूँजीवादी—संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+सं० वादिन्] वह जो पूँजीवाद के सिद्धांत मानता हो।

वि० [हिं० पूँजीवाद] पूँजीवाद से संबंधित। उसी प्रकार की व्यवस्थावाला।

पूँठा—संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूआ—संज्ञा पुं० [सं० पूप, अपूप] एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी में छानी जाती है। मालपूआ।

पूखन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पोषण"।

पूग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपारी का पेड़ या फल। २ ढेरा। ३ छंद। ४ समूह। ढेर। ५ किसी विशेष कार्य के लिये बना हुआ संघ। (अं०) कंपनी।

पूगना—क्रि० अ० [हिं० पूजना] पूरा होना। पूजना।

पूगी—संज्ञा स्त्री० [सं० पूग] सुपारी।

पूगीफल—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी।

पूछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूछना] १. पूछने का भाव। जिज्ञासा। २. खोज। चाह। जरूरत। तलब। ३ आदर। इज्जत।

संज्ञा स्त्री० [सं० पुच्छ] दे० "पूँछ"। उ०—पूछ मों प्रेम, बिरोध सींग सों, यहि विचार हित हानी। —श्रीकृष्णगीता०।

पूछताछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० √पूछ+अनु० ताछ] किसी बात का पता लगाने के लिये लोगों से प्रश्न करना या पूछना। जिज्ञासा।

पूछना—क्रि० स० [सं० पृच्छण] १ कुछ जानने के लिये किसी से प्रश्न करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। २. सहायता करने की इच्छा से किसी का हाल जानने की चेष्टा करना। खोजखबर लेना। ३ किसी के प्रति सत्कार का भाव प्रकट करना।

मुहा०—बात न पूछना=(१) तुच्छ जानकर ध्यान न देना। (२) आदर न करना।

४. आदर करना। गुण या मूल्य जानना। ५ ध्यान देना। टोकना।

पूछपाछ—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ"।

पूछरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूँछ] १ दुम। पूँछ। २. पीछे का भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ"।

पूछि—संज्ञा स्त्री० [सं० पुच्छ] दे० "पूँछ"। उ०—कपि कै ममता पूछि पर सबहि कह्यो समुझाइ। तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाई॥ —मानस।

पूजक—संज्ञा पुं० [सं०] पूजा करनेवाला। उ०—बड़े बिबुधदरबार में भूमि भूप-दरबार। जापक पूजक पेखियत, सहत निरादर भार। —दोहा०।

पूजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूजक पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य] १ पूजा की क्रिया। देवता की सेवा और वंदना। अर्चना। आराधना। २ आदर। सम्मान।

पूजना—क्रि० स० [सं० पूजन] १. देवी देवता को प्रसन्न करने के लिये कोई अनुष्ठान या कर्म करना। अर्चना करना। आराधन करना। उ०—पूजहिं माधव पद जलजाता। परसि अखयबटु हरषहिं गाता॥ —मानस। २ आदरसत्कार करना। ३. सिर झुकाना। सम्मान करना। ४ घूस देना। रिशवत देना।

क्रि० अ० [सं० पूर्य] १ पूरा होना। उ०—दस दिसि देखत सगुन सुभ, पूजहि मन अभिलाष। —दोहा०। २ भरना। ३ (किसी की) तुलना में आना या बराबरी को पहुँचना। उ०—स्यंदन, गयद, बाजिराजि, भले भले भट, धन धाम निकर, करनि हू न पूजै कै। —कविता०। ४. गहराई का भरना या बराबर हो जाना। ५. पटना। चुकता होना। ६. बीतना। समाप्त होना।

(पु) क्रि० स० (किसी वस्तु की कमी को) पूरा करना। उ०—अजहुँ अधिक आदर यहि द्वारे पतित पुनीत होत नहिं केते। मेरे पासगहु न पूजिहैं, ह्वै गए, हैं, होने खल जेते॥ —विनय०।

पूजनीय—वि० [सं०] १. पूजने योग्य। अर्चनीय। २. आदरणीय। सम्मान योग्य। उ०—पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें। —मानस।

पूजमान—वि० दे० "पूज्य"।

पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ईश्वर या देवी देवता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाला कार्य। अर्चना। आराधन। उ०—सो करउ अधारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा। —मानस। २. वह धार्मिक कृत्य जो जल, फूल आदि चढ़ाकर या किसी देवीदेवता पर उसके निमित्त रखकर किया जाता है। आराधन। अर्चा। उ०—करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा॥ —मानस। ३ आदरसत्कार। खातिर। उ०—चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा॥ ४ किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ देना। ५ दंड। ताड़ना।

पूजार्ह—वि० [सं०] पूज्य।

पूजित—वि० [सं०] [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित। उ०—असुभ भेष भूषन धरे भच्छाभच्छ जे खाहिं। तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूजित कलिजुग माहिं॥ —मानस।

पूज्य—वि० [सं०] [स्त्री० पूज्या] १ पूजा के योग्य। पूजनीय। उ०—अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद धन दारिद दवारि के॥ —मानस। २ आदर के योग्य।

पूज्यपाद—वि० [सं०] जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यंत पूज्य। अत्यंत मान्य।

पूठि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पूआ"।

पूड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।

पूत—वि० [सं०] [संज्ञा पूतता] पवित्र। शुद्ध। उ०—यत्र संमत अति पूत जल सुरसरी दर्शनादेव अपहरति पापं। —विनय०।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य । २. शख । ३. सफेद कुश । ४ पलास । ५ तिल । ६. वृक्ष ।

संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] बेटा । पुत्र । उ०—परउँ कूप तुअ वचन पर सकौं पूत पति त्यागि । कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥ —मानस ।

पूतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी और जिसे कृष्ण ने मार डाला था । उ०—पूतना पिसाच प्रेत डाकिनि साकिनि समेत भूत ग्रह बेताल खग मृगालि-जालिका । —विनय० । २. एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग ।

पूतनारि—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

पूतरो—संज्ञा पुं० दे० "पुतला" । उ०—हौं अब लौं करतूति तिहारिय चितवत हु तो न रावरे चेते । अब तुलसी पूतरो बाँधिहै सहि न जात मोपै परिहास एते ॥ —विनय० ।

संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] बेटा । पुत्र ।

पूतरी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुत्तलिका] पुत्तलिका । पुतली । उ०—ज्योति सौं चित्र की पूतरी काढ़ी कि ठाढ़ी मनोजहि की अबला सी । —शृंगार० ।

पूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पवित्रता । शुचिता । २ दुर्गंध । बदबू ।

पूती—संज्ञा स्त्री० [सं० पोत=गट्ठा] १ वह जड़ जो गाँठ के रूप में हो । २ लहसुन की गाँठ ।

पून—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य" ।

संज्ञा पुं० दे० "पूर्ण"

पूनिउँ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पूनो" ।

पूनी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजिका] धुनी हुई रूई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिये तैयार की जाती है ।

पूनें, पूनो(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णिमा" ।

पून्यो(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पूनो" । उ०—आली, सावन की पून्यो हरियारी, हरी भूमि, सोहत पिय सँग झूलौंगी नवल हिंडोरै । —नंददास० ।

पूप—संज्ञा पुं० [सं०] पूआ । मालपूआ । उ०—किलकत मोहिं धरन जब धावहिं । चलौं भागि तब पूप देखावहिं ।—मानस ।

पूय—संज्ञा पुं० [सं०] पीप । मवाद । उ०—विष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा । बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ।—मानस ।

पूर—वि० [सं० पूर्ण] १. समूचा । संपूर्ण । पूरा । अखंडित । उ० सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर बिधु बाढ़ै जोई ।—मानस । २. भरा हुआ । परिपूर्ण । उ०—कलधैयूर पूर-कंचन-मनि, पहुँची मंजु कंजकर सोहति ।—गीता० । ३. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं ।

पूरक—वि० [सं०] पूरा करनेवाला ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणायाम विधि के तीन भागों में से पहला जिसमें श्वास को नाक से खींचते हुए भीतर की ओर ले जाते हैं । २ बिजौरा नीबू । ३. वे दस पिंड जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जाते हैं । ४ वह अंक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है । गुणक अंक ।

पूरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूरणीय] १ भरने की क्रिया । २ समाप्त या तमाम करना । ३ अंकों का गुणा करना । अंकगुणन । ४. पूरक पिंड । दशाह पिंड । ५ मेह । वृष्टि । ६ समुद्र ।

वि० [सं०] पूरक । पूरा करनेवाला ।

पूरन(पु)—वि० दे० "पूर्ण" । उ०—जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।—मानस ।

पूरन परब(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरनपूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण+हिं० पूरी] एक प्रकार की मीठी कचौरी ।

पूरनमासी—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरना—क्रि० स० [सं० पूरण] १. कमी या त्रुटि को पूरा करना । पूर्ति करना । २ आच्छादित करना । ढाँकना । ३ (मनोरथ) सफल करना । सिद्ध करना । ४ मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देवताओं के पूजन आदि के लिये चौखूँटे क्षेत्र आदि बनाना । चौक बनाना । ५ बटना, जैसे, तागा पूरना । ६. फूँकना । बजाना ।

क्रि० अ० पूर्ण होना । भर जाना ।

पूरब—संज्ञा पुं० [सं० पूर्व] वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है । पूर्व । प्राची ।

(पु) वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व" ।

पूरबला(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पूरबला] १ पुराना जमाना । २ पूर्वजन्म ।

पूरबला(पु)—वि० पुं० [सं० पूर्व+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १ प्राचीन काल का । पुराना । २. पहले जन्म का ।

पूर्बो—वि० दे० "पूर्बी" ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा ।

पूरा—वि० पुं० [सं० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १ जो खाली न हो । भरा । परिपूर्ण । २ समूचा । समग्र । समस्त । ३. जिसमें कोई कमी या कसर न हो । पूर्ण । कामिल । ४. भरपूर । यथेच्छ । काफी । बहुत ।

मुहा०—किसी बात का पूरा=(१) जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या प्रचुर हो, जैसे, विद्या का पूरा या बल का पूरा । (२) पक्का । अटल, जैसे, बात का पूरा होना । किसी का पूरा पड़ना=कार्य पूर्ण हो जाना । सामग्री न घटना । (पु) पूरा पाना=कार्य की सिद्धि तक पहुँचना । प्रयत्न या उद्देश्य की सिद्धि में सफल होना ।

५ संपन्न । पूर्ण संपादित । कृत ।

मुहा०—(कोई काम) पूरा उतरना=अच्छी तरह होना । जैसा चाहिए, वैसा ही होना । बात पूरी उतरना=ठीक निकलना । सत्य ठहरना । दिन पूरे करना=समय बिताना । किसी प्रकार कालक्षेप करना । (दिन) पूरे होना=अंतिम समय निकट आना ।

६ तुष्ट । पूर्ण ।

पूरित—वि० [सं०] [स्त्री० पूरिता] १ भरा हुआ । परिपूर्ण । २. तृप्त । ३ गुणा किया हुआ । गुणित ।

पूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० पूलिका] १. एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी में छान लेते हैं । २ मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा ।

पूरुष—संज्ञा पुं० [वै० सं०] पुरुष । मनुष्य । नर । उ०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा । संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा । —मानस ।

पूर्ण—वि० [सं०] १ पूरा । भरा हुआ । परिपूर्ण । २ समूचा । अखंडित । सकल । ३. भरपूर । यथेष्ट । काफी । ४. जिसे कोई इच्छा या अपेक्षा न हो । अभावशून्य । ५ जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो । परितृप्त । ६. भरपूर । यथेष्ट । काफी । ७. सिद्ध ।

सफल। ८ जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

पूर्णकाम—वि० [सं०] १ जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हों।

पूर्णचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्णिमा का चंद्रमा।

पूर्णतया, पूर्णतः—क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से। पूर्णरूप से।

पूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण का भाव। पूर्ण होना।

पूर्णप्रज्ञ—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि में कोई कसर न हो। पूर्ण ज्ञानी।

संज्ञा पुं० पूर्णप्रज्ञ दर्शन के कर्ता मध्वाचार्य।

पूर्णप्रज्ञ दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांतसूत्र के आधार पर मध्वाचार्य का बनाया हुआ दर्शन।

पूर्णमासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास की अंतिम तिथि, जिसमें चंद्रमा अपनी सारी कलाओं से पूर्ण होता है। पूर्णिमा।

पूर्णविराम—संज्ञा पुं० [सं०] लिपिप्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है।

पूर्णायु—संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्णायुस] १. पूरी आयु। २. सौ वर्ष की आयु।

वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला।

पूर्णावतार—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

पूर्णाहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। २ किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पूर्णोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग—अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—प्रकट रूप से प्रस्तुत हों, जैसे, इंद्र सो उदार है नरेंद्र मारवाड़ को। इसमें 'मारवाड़ को नरेंद्र' उपमेय, 'इंद्र' उपमान, 'सो' वाचक और 'उदार' धर्म चारों प्रत्यक्ष हैं।

पूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ पालन। २ परोपकार के लिये खोदने या निर्माण करने का कार्य। बावली, देवगृह, आराम (बगीचा), सड़क आदि बनाने का काम।

वि० १ पूरित। २ ढका हुआ।

पूर्तविभाग—संज्ञा पुं० [सं० पूर्त+विभाग] वह सरकारी महकमा जिसका काम सड़क, पुल आदि बनवाना है। तामीर का महकमा।

पूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूरा करने या भरने का भाव या क्रिया। पूरण। २. किसी काम में जो वस्तु चाहिए, उसकी कमी को पूरा करने की क्रिया। ३. किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। ४ पूर्णता। पूरापन। ५ वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ६ गुणा करने का भाव। गुणन।

पूर्वी—वि० दे० "पूर्वी"।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा जो विहार प्रांत में गाया जाता है।

पूर्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है। पश्चिम के सामने की दिशा।

वि० [सं०] १ पहले का। २ आगे का। अगला। ३ पुराना। ४ पिछला।

क्रि० वि० पहले। पेश्तर।

पूर्वक—क्रि० वि० [सं०] साथ। सहित।

पूर्वकालिक—वि० [सं०] १ जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल में हुआ हो। २. पूर्वकालीन। पूर्वकाल संबंधी।

पूर्वकालिक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो, जैसे, 'वह ऐसा करके गया' में 'करके' पूर्वकालिक क्रिया है।

पूर्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा भाई। अग्रज। २ बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्वपुरुष। पुरखा।

पूर्वजन्म—संज्ञा पुं० [सं० पूर्वजन्मन्] वर्तमान से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २ कृष्ण पक्ष। ३ मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षी—संज्ञा पुं० [सं० पूर्वपक्षिन्] १ वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २. वह जो दावा दायर करे।

पूर्वफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

पूर्वभाद्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वमीमांसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का जैमिनिकृत वह वैदिक दर्शन जिसमें वेदों की कर्मकांड संबंधी बातों का निर्णय किया गया है।

पूर्वरंग—संज्ञा पुं० [सं०] वह संगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिये होती है।

पूर्वराग—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है। प्रथमानुराग। पूर्वानुराग।

पूर्वरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह आकार जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २ किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो। आगमसूचक लक्षण। आसार।

पूर्ववत्—क्रि० वि० [सं०] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।

संज्ञा पुं० किसी कार्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय।

पूर्ववर्ती—वि० [सं० पूर्ववर्तिन्] पहले का। जो पहले हो या रह चुका हो।

पूर्ववृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] इतिहास।

पूर्वानुराग—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है। पूर्वराग।

पूर्वापर—क्रि० वि० [सं०] आगे पीछे।

वि० आगे का और पीछे का। अगला और पिछला।

पूर्वापर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वार्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पहला आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वाषाढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में बीसवाँ नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं।

पूर्वाह्न—संज्ञा पुं० [सं०] सबेरे से दुपहर तक का समय।

पूर्वी—वि० [सं० पूर्वीय] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का।

संज्ञा पुं० १ पूरब में होनेवाला एक प्रकार का चावल। २ एक प्रकार का

दादरा जो बिहार प्रांत में गाया जाता है। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

पूर्वोक्त—वि० [सं०] पहले कहा हुआ। जिसका जिक्र पहले आ चुका हो।

पूला—संज्ञा पुं० [सं० पूलक] [स्त्री० अल्पा० पूली] मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

पूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २. पुराणानुसार बारह आदित्यों में से एक। ३. एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्य के रूप में और कहीं पशुओं के पोषक के रूप में वर्णित है।

पूषन—संज्ञा पुं० दे० "पूषण" (१)। उ०—कुंभकरन हन्यो रन राम, दल्यो दसकंधर, कंधर तोरे। पूषन-वंश-विभूषन-पूषन तेज प्रताप गरे अरि ओरे। —कविता०।

पूषा—संज्ञा पुं० दे० "पूषण"।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दाहिने कान की एक नाड़ी। २. पृथ्वी।

पूस—संज्ञा पुं० [सं० पौष] वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है। पौष।

पृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] असवरग नाम का एक गंधद्रव्य जिसका व्यवहार औषधों में भी होता है।

पृच्छक—वि० [सं०] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। उ०—प्रश्न जु कृष्णकथा की जहाँ। वक्ता, श्रोता, पृच्छक तहाँ। —नंददास०। २. जिज्ञासु।

पृतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना का एक विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। २ सेना। फौज। ३ युद्ध।

पृथक्—वि० [सं०] [संज्ञा पृथक्ता] भिन्न। अलग। जुदा।

पृथकता—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथक्ता"।

पृथक्करण—संज्ञा पुं० [सं०] अलग करने का काम।

पृथक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।

पृथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंतिभोज की कन्या कुंती का एक नाम।

पृथिवी—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

पृथु—वि० [सं०] १ चौड़ा। विस्तृत। २. बड़ा। महान्। ३ अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्रवीण।

संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २ विष्णु। ३ शिव। ४ एक विश्वेदेव। ५. राजा वेणु के पुत्र का नाम जिन्हें वेणु की मृत्यु के बाद ऋषियों ने उनके शव से उत्पन्न किया था।

वि० जिसकी कीर्ति बहुत अधिक हो।

पृथुता—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथु होने का भाव। २ विस्तार। फैलाव।

पृथुराज—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथु"। उ०—पुनि प्रनवौं पृथुराज समाना। पर अघ सुनै सहसदस काना॥ —मानस।

पृथुल—वि० [सं०] [संज्ञा पृथुला] १. स्थूल। बड़ा। २. विशाल। ३ विस्तृत।

पृथ्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौरजगत का वह ग्रह जिसपर हम सब लोग रहते हैं। अवनी। इला। २ पंच भूतों या तत्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गंध है। ३. पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जो मिट्टी और पत्थर आदि का है और जिसपर हम सब लोग चलते फिरते हैं। भूमि। जमीन। धरती। (मुहा० के लिये दे० "जमीन") ४ मिट्टी। ५ सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें ८, ९, पर यति और अंत में लघु-गुरु होते हैं। उ०—जु राम छवि ककणँ, निरखि आरसी संजुता। लगाय हिय सों घरी, कर न दूर पृथ्वी सुता।

पृथ्वीतल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमीन की सतह। वह धरातल जिसपर हम लोग चलते फिरते हैं। २ संसार। दुनिया।

पृथ्वीनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

पृश्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चितले रंग की गाय। चितकबरी गाय। २. पिठवन। ३ सुतप नामक राजा की रानी का नाम। ४. रश्मि। किरण।

पृष्ट—वि० [सं०] पूछा हुआ।

पृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीठ। २. पीछे का भाग। पीछा। ३. किसी वस्तु का ऊपरी तल। ४ पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। ५ पुस्तक का पन्ना। पन्ना।

पृष्ठपोषक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक। मददगार।

पृष्ठभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीठ। पुश्त। २ पिछला हिस्सा।

पृष्ठभूमि—संज्ञा स्त्री० दे० "पृष्ठिका"।

पृष्ठवंश—संज्ञा पुं० [सं०] रीढ़।

पृष्ठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पिछला भाग। २ मूर्ति, चित्र, विवरण आदि में वह सबसे पीछे का भाग जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। पृष्ठभूमि। (अँ० बैकग्राउंड)

पेंग—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटेंग] झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना।

मुहा०—पेंग मारना = झूले पर झूलते समय उसपर इस प्रकार जोर लगाना जिसमें उसका वेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक झूले।

पेंच—संज्ञा पुं० दे० "पेच"।

पेंडुकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पंडुक] १ पडुक पक्षी। फाखता। २ सुनारों की फुँकनी।

संज्ञा स्त्री० दे० "गुझिया"।

पेंदा—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरती हो। तला।

पेउसी—संज्ञा स्त्री० [सं० पीयूष] १. दे० "पेवस"। २ एक प्रकार का पकवान। इंदर।

पेखक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षक] देखनेवाला। उ०—व्योम बिमाननि बिबुध बिलोकत खेलक पेखक छाँह छए। सहित समाज सराहि दसरथहिं बरषत निज तरु कुसुम चए। —गीता०।

पेखन—संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षण] खेल। नाटक। उ०—पेखन देखनहार सु साहेब पेखनिया यह काछु महा है। बानर लौं नर लोगनि को बहु नाच नचावत सोई सदा है। —रससारांश।

पेखना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] देखना। उ०—सब कोउ राम पेम मय पेखा। भए अलेख सोच बस लेखा॥ —मानस।

पेच—संज्ञा पुं० [फा०] १ घुमाव। लपेट। चक्कर। २ उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३ चालाकी। चालबाजी। धूर्तता। ४ पगड़ी की लपेट। ५ कल। यंत्र मशीन। मशीन का पुरजा।

मुहा०—पेच घुमाना = ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के विचार बदल जायँ।

७. वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियाँ या चूड़ियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। (अँ०) स्क्रू। ८ इस प्रकार की चूड़ियाँ या गड़ारियाँ। ९ पतंग लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। १०. कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। ११ युक्ति। तरकीब। १२ एक प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगड़ी में

सामने की ओर खोंसा या लगाया जाता है। सिरपेच। १३. एक प्रकार का आभूषण जो कानों में पहना जाता है। गोशपेच।

पेचक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी। २ जूँ। ३. बादल। ४. पलंग।

पेचकश—संज्ञा पुं० [फा०] १. बढ़इयों और लोहारों आदि का वह औजार जिससे वे लोग पेच जड़ते अथवा निकालते हैं। २. वह घुमावदार काँटा जिससे बोतल का काग निकाला जाता है।

पेच ताब—संज्ञा पुं० [फा०] वह गुस्सा जो मन ही मन में रहे और निकाला न जा सके।

पेचदार—वि० [फा०] १ जिसमें कोई पेच या कल हो। २. जिसमें कोई उलझाव हो। दे० "पेचीला"।

पेचवान—संज्ञा पुं० [फा०] १. बड़ी सटक जो फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाई जाती है। २ बड़ा हुक्का।

पेचा‡—संज्ञा पुं० [सं० पेचक] [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।

पेचिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है। मरोड़।

पेचीदा—वि० [फा०] [संज्ञा पेचीदगी] १. जिसमें पेच हो। पेचदार। २. जो टेढ़ा मेढ़ा और कठिन हो। मुश्किल।

पेचीला—वि० दे० "पेचीदा"।

पेज—संज्ञा स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसौंधी।

संज्ञा पुं० [अं०] पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना। वरक। सफहा।

पेट—संज्ञा पुं० [सं० पेट=थैला] १ शरीर में थैले के आकार का वह निचला भाग जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है। उदर।

मुहा०—पेट काटना=जान बूझकर कम खाना जिसमें कुछ बचत हो जाय। पेट का धंधा=पेट पालने का पेशा या रोजगार। पेट का पानी न पचना=रहा न जाना। रह न सकना। पेट का हलका=क्षुद्र प्रकृति का। ओछे स्वभाव का। पेट की आग=भूख। पेट की बात=गुप्त भेद। भेद की बात। पेट खलाना=(१) अत्यंत दीनता दिखलाना। उ०—तब लौं उबैने पायँ फिरत पेटै खलाय, बाए मुहँ सहत पराभौ देस देस को।—कविता०। (२) भूखे होने का संकेत। करना। पेट चलना=दस्त होना। बारबार पाखाना होना। पेट जलना=अत्यंत भूख लगना। † पेट देना=अपने मन की बात बतलाना। उ०—अपनो पेट दियो तैं उनको नाकबुद्धि तिय सबै कहै री।—सूर०। पेट पानी होना=पतले दस्त होना। पेट पालना=जीवननिर्वाह करना। पेट फूलना=(१) किसी बात के लिये बहुत अधिक उत्सुक होना। (२) बहुत अधिक हँसने के कारण पेट में हवा भर जाना। (३) पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट मारकर मर जाना=आत्मघात करना। पेट में खलबली पड़ना=चिंता या घबराहट होना। पेट में दाढ़ी होना=बचपन ही में बहुत चतुर होना। पेट में डालना=खा जाना। पेट में पाँव होना=अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज होना। (कोई वस्तु) पेट में होना=गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना=(१) कुमार्ग में लगना। (२) बहुत इतराना।

२ पेट के अंदर की वह थैली जिसमें खाद्य पदार्थ रहता और पचता है। आमाशय। पचौनी। ओझर। ३ छाती से नीचे कमर तक फैला हुआ शरीर का भाग। ४ गर्भ। हमल।

मुहा०—पेट गदराना=गर्भ के लक्षण प्रगट होना। पेट गिरना=गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। हमल रहना। पेटवाली=गर्भवती। पेट से होना=गर्भवती होना।

५ अंतःकरण। मन। दिल।

मुहा०—पेट में घुसना या पैठना=रहस्य जानने के लिये मेल बढ़ाना। पेट में होना=मन में होना। ज्ञान में होना।

६ पोली वस्तु के बीच का या भीतरी भाग। ७ गुंजाइश। समाई। ८. रोजी। जीविका। ९ आहार। भोजन, जैसे, पेट की चिंता पशु, पक्षी तक को है।

पेटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिटारा। मंजूषा। उ०—गजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सुनि भूमि भूधर लरखरे। रघुबीर जस-मुकुता बिपुल सब भुवन पटु पेटक भरे।—जा० म०। २. समूह। ढेर।

पेटकैयाँ‡—क्रि० वि० [हिं० पेट+कैयाँ (प्रत्य०)] पेट के बल।

पेटा—संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ का मध्यम भाग। बीच का हिस्सा। २ तफसील। ब्योरा। पूरा विवरण। ३. सीमा। हद। ४. घेरा। वृत्त।

पेटागि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० पेट+अग्नि] पेट की आग। भूख। उ०—जाति के सुजाति के कुजाति के पेटागि बस, खाए टूक सबके विदित बात दुनी सों।—कविता०।

पेटारा—संज्ञा पुं० दे० "पिटारा"।

पेटार्थी, पेटार्थू—वि० [सं० पेट+अर्थिन्] जो पेट भरने को ही सब कुछ समझता हो। भुक्खड़। पेटू।

पेटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संदूक। पेटी। २ छोटी पिटारी।

पेटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पेटिका] १. सदूकची। छोटा संदूक। २ छाती और पेड़ू के बीच का स्थान।

मुहा०—पेटी पड़ना=तोंद निकलना।

३ कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। ४ चपरास। ५. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छुरा आदि रखते हैं।

पेटू—वि० [हिं० पेट] जो बहुत अधिक खाता हो। भुक्खड़।

पेटेंट—संज्ञा पुं० [अं०] १ किसी आविष्कार की सरकारी रजिस्ट्री जिससे आविष्कारक ही अपने आविष्कार को बना, बेच या इस्तेमाल करके आर्थिक लाभ उठाता है। किसी दूसरे को उसकी नकल करके लाभ उठाने का अधिकार नहीं रहता। यह रजिस्ट्री नए यंत्रों, मशीनों, औषधियों आदि के लिये होती है। २. इस प्रकार रजिस्ट्री हो चुका पदार्थ या आविष्कार।

पेट्रोल—संज्ञा पुं० [अं०] मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसके जलने से मोटरें, वायुयान आदि चलते हैं।

संज्ञा पुं० [अं० पैट्रोल] १ रक्षा या निरीक्षण के लिये पुलिस या सैनिकों का घूम घूमकर पहरा देना। २. वह सिपाही जो इस प्रकार पहरा देता हो।

पेठा—संज्ञा पुं० [देश०] सफेद कुम्हड़ा।

पेड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पिंड ?] १ खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। गुँधे हुए आटे की लोई।

ड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] १ पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा। ४ पुराने पौधे के पान। ५. बढ़ कर जो प्रति वृक्ष पर लगाया जाय।

ड़ू—संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १ नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २ गर्भाशय।

न्शन—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो किसी व्यक्ति या (उसपर आश्रित) परिवार के लोगों को उसकी पिछली सेवाओं के बदले में या सेवाकाल पूर्ण होने पर मिलती है।

न्सिल—संज्ञा स्त्री० [अं०] काठ या धातु में बंद काले लाल आदि कई रंगों के सीसे की नोकदार लेखनी।

न्हाना†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।

क्रि० अ० [सं० पय स्रवन] दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना। उ०—तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥ —मानस।

पेपर—संज्ञा पुं० [अं०] १ कागज। २ समाचारपत्र।

पेम(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"। उ०—भरत धन्य तुम्ह जगु जसु जयऊ। कहि अस पेमु मगन मुनि भयऊ॥ —मानस।

पेमचा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। उ०—पेमचा डोरिया औ चौधारी। साम, सेत, पीयर, हरियारी। —पदमावत।

पेय—वि० [सं०] पीने योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] १ पीने की वस्तु। २ जल। पानी। ३. दूध।

पेरना—क्रि० स० [सं० पीड़न] १ किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। उ०—मूल्यो सूल कर्म कोल्हुन तिल ज्यों बहु बारन पेरो। —विनय०। २ कष्ट देना। बहुत सताना। ३ किसी काम में बहुत देर लगाना।

क्रि० स० [सं० प्रेरण] १. प्रेरणा करना। चलाना। २ भेजना पठाना।

पेलना—क्रि० स० [सं० प्रेरणा] १ दबाकर भीतर घुसाना। धँसाना। दबाना। २ ढकेलना। धक्का देना। उ०—भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं। —कविता०। ३. टाल देना। अवज्ञा करना। उ०—मोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ राम रजाइ। —मानस। ४. त्यागना। हटाना। फेंकना। ५. ज़बरदस्ती करना। बलप्रयोग करना। उ०—ढकनि ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि। —कविता०। ६ प्रविष्ट करना। घुसेड़ना। ७ दे० "पेरना"।

क्रि० स० [सं० प्रेरण] आक्रमण करने के लिये सामने छोड़ना। आगे बढ़ाना।

पेला—संज्ञा पुं० [हिं० पेलना] १ पेलने की क्रिया या भाव। २ तकरार। झगड़ा। उ०—कहा कहत तुमसों मैं ग्वारिनि। लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवन को ऐ नोखी बनजारिनि? पेला करति देत नहिं नीके तुम हो बड़ी बँजारिनि। सूरदास ऐसो गथ जाके ताके बुद्धि पसारिनि॥ —सूर०। ३ अपराध। कसूर। ४ आक्रमण। धावा। चढ़ाई।

पेवँ†—संज्ञा पुं० [सं० प्रेम] प्रेम। स्नेह। उ०—दीन्हीं मुदित गिरिराज जे गिरिजहिं पियारी पेवँ की। —पार्वती०।

पेवस—संज्ञा पुं० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई गाय या भैंस का दूध जो रंग में कुछ पीला और हानिकारक होता है।

पेश—क्रि० वि० [फा०] सामने। आगे। समक्ष।

मुहा०—पेश आना=(१) बर्ताव करना। व्यवहार करना। (२) घटित होना। सामने आना। पेश करना=(१) सामने रखना। दिखलाना। (२) भेंट करना। नजर करना। पेश जाना या चलना=वश चलना। जोर चलना। पेश पाना=जीतना। कृतकार्य होना।

पेशकश—संज्ञा पुं० [फा०] १ भेंट। नजर। २ सौगात। उपहार।

पेशकार—संज्ञा पुं० [फा०] न्यायालय में हाकिम के सामने कागजपत्र पेश करनेवाला कर्मचारी।

पेशखेमा—संज्ञा पुं० [फा०] १ फौज का वह सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २ फौज का अगला हिस्सा। हरावल। ३ किसी बात या घटना का पूर्वलक्षण।

पेशगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन जो किसी वस्तु के लिये या किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय। अगौड़ी। अगाऊ। अग्रिम।

पेशतर—क्रि० वि० [फा०] पहले। पूर्व।

पेशबंदी—संज्ञा [फा०] १. पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति। तरकीब। २ छल। धोखा।

पेशराज—संज्ञा पुं० [फा० पेश+हिं० राज=मकान बनानेवाला, मि० वै० पेश=कारीगर। पत्थर ढोकर राज तक पहुँचाने वाला मजदूर।

पेशवा—संज्ञा पुं० [फा०] १. महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि। २ अग्रगण्य। सरदार। नेता।

पेशवाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी माननीय पुरुष के आने पर कुछ दूर आगे चलकर उसका स्वागत करना। अगवानी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पेशवा+ई (प्रत्य०)] १ पेशवाओं की शासन काल। २ पेशवा का पद या कार्य।

पेशवाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] वेश्याओं या नर्तकियों का वह घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं।

पेशा—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह कार्य जो जीविका उपार्जित करने के लिये किया जाय। कार्य। उद्यम। व्यवसाय।

मुहा०—पेशा कमाना या करना=वेश्यावृत्ति करना।

पेशानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ललाट। माथा। २ किस्मत। भाग्य। प्रारब्ध। ३ ऊपरी या आगे का भाग।

पेशाब—संज्ञा पुं० [फा०] मूत। मूत्र।

मुहा०—पेशाब करना=(१) मूतना। (२) अत्यंत तुच्छ समझना। (किसी के) पेशाब की राह बहा देना=रंडीबाजी में खर्च कर देना। पेशाब निकल पड़ना=इतना डर जाना कि पेशाब निकल पड़े। पेशाब का या पेशाब से चिराग जलना=अत्यंत प्रतापी होना।

पेशाबखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ लोग मूत्रत्याग करते हों। मूत्रालय।

पेशावर—संज्ञा पुं० [फा०] किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी।

पेशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हाकिम के सामने किसी मुकद्दमे के पेश होने की क्रिया। मुकद्दमे की सुनवाई। २ सामने होने की क्रिया या भाव।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वज्र। २ तलवार की म्यान। ३ चमड़े की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है। ४ शरीर के भीतर मांस की गुल्थी या गाँठ।

पेशीनगोई—संज्ञा स्त्री० [फा०] भविष्य

की बातें कहना। होने या आनेवाली बातें बतलाना। भविष्यवाणी।

पेश्तर—क्रि० वि० [फा०] पहले। पूर्व।

पेषण—संज्ञा पुं० [सं०] पीसना।

पेषना—क्रि० स० दे० "पेखना"।

पेस(पु)—क्रि० वि० दे० "पेश"।

पेसखेमा—संज्ञा पुं० दे० "पेशखेमा"। उ०—करिया बधायो लाल सैसव सिधायो आयो, व...तन पेसखेमा मैनमहिपाल को। —रससाराश।

पेहँटा—संज्ञा पुं० [देश०] कचरी नाम की लता का फल। कचरी।

पैं(पु)—अव्य० [हिं० पास, पहँ] पास। निकट।

पैंजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ+अनु० झन, झन ?] बजनेवाला एक गहना जो पैर में पहना जाता है।

पैंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० पण्यस्थान] १ हाट। बाजार। उ०—लेना हो सो लेइ ले उठी जात है पैंठ। —कबीर०। २ दुकान। उ०—ऊधो मज में पैंठ करी। —सूर०। ३ वह दिन जिस दिन हाट लगती हो।

पैंठौर†—संज्ञा पुं० [हिं० पैंठ+ठौर] दुकान।

पैंड़—संज्ञा पुं० [सं०√पैय्=चलना, जाना ?] १ डग। कदम। उ०—तीन पैंड धरती हौं पाऊँ परनकुटी इक छाऊँ। —सूर०। २ पथ। मार्ग। रास्ता।

पैंड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पैंड़] १ रास्ता।
मुहा०—पैंड़े परना=पीछे पड़ना। बार बार तंग करना।
२ घुड़साल। अस्तबल। ३ प्रणाली।

पैंत(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० पणकृत] दाँव। बाजी। उ०—काँचे बारह परा जो पाँसा। पाकै पैंत परी तनु रामा। —पदमावत।

पैंती—संज्ञा स्त्री० [सं० पवित्री] कुश का छल्ला जो श्राद्धादि कर्म करते समय उँगली में पहनते हैं। पवित्री।

पै(पु)†—अव्य० [सं० पर] १ पर। परंतु। लेकिन। उ०—बरजत बार बार हैं तुमको पै तुम नेक न मानौ। —सूर०। २ निश्चय। अवश्य। जरूर। उ०—सुख पाइहैं कान सुने बतियाँ कल आपुस में कछु पै कहिहैं। —कविता०। ३ पीछे। अनंतर। बाद। उ०—कमल भानु देखे पै हँसा। —पदमावत।

यौ०—जो पै=यदि। अगर। उ०—जो पै रहनि राम सो नाहीं। तौ नर खर, कूकर, सूकर से जाय जियत जग माहीं। —विनय०। तो पै=तो। फिर। उस अवस्था में।

अव्य० [हिं० पहँ] १ पास। समीप। निकट। उ०—परतिज्ञा राखी मनमोहन फिर ता पै पठयो। —सूर०। २ प्रति। ओर। तरफ। उ०—सरसीरुह लोचन मोचत नीर, चितै रघुनायक सीय पै हैं। —कविता०।

प्रत्य० [सं० उपरि] अधिकरणसूचक एक विभक्ति। पर। ऊपर।

प्रत्य० [सं० पक्ष ?] करणसूचक विभक्ति। से। द्वारा। उ०—दीनदयाल कृपालु कृपानिधि कापै कह्यो परै। —विनय०।

संज्ञा स्त्री० [सं० आपत्ति] दोष। ऐब। नुक्स।

संज्ञा पुं० दे० "पय"।

संज्ञा स्त्री० "घोड़ानस"।

संज्ञा पुं० [सं० पद] पैर। उ०—पै बिन पनिच बिन कर की कसीस बिन चलत इसारे यह जिनको प्रमान है। —शृंगार०।

पैकरमा(पु)‡—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

पैकार—संज्ञा पुं० [फा०] छोटा व्यापारी। फेरीवाला। फुटकर सौदा बेचनेवाला।

पैकेट—संज्ञा पुं० [अँ०] पुलिंदा। मुट्ठा। छोटी गठरी।

पैखाना—संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।

पैग—संज्ञा स्त्री० दे० "पेंग"।

पैगंबर—संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्यों के पास ईश्वर का संदेशा लेकर आनेवाला, जैसे, ईसा, मुहम्मद।

पैगाम—संज्ञा पुं० [फा०] संदेश। संदेसा।

पैज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १ प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। हठ। उ०—पैज करि कही हरि तोहिं उबारौं। —सूर०। २ प्रतिद्वंद्विता। होड़। उ०—पैज परे प्रह्लादहु को प्रगटे प्रभु पाहन तें न हिए तें। —कविता०।

पैजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "पैंजनी"।

पैजा—संज्ञा पुं० [सं० पाद, हिं० पाय+सं० जट्, हिं० जड़] लोहे का कड़ा जो किवाड़ के छेद में इसलिये पहनाया रहता है जिसमें किवाड़ उतर न सके। पायना।

पैजामा—संज्ञा पुं० दे० "पायजामा"।

पैजार—संज्ञा स्त्री० [फा०] जूता। जोड़ा।
यौ०—जूती पैजार=(१) जूते से मारपीट। जूते चलना। (२) लड़ाई-झगड़ा।

पैठ—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रविष्टि] १ घुसने का भाव। प्रवेश। दखल। २. गति। पहुँच।

पैठना—क्रि० अ० [हिं० पैठ] घुसना। प्रविष्ट होना। प्रवेश करना। उ०—अति लघुरूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥ —मानस।

पैठाना—क्रि० स० [हिं० पैठना का स० रूप] प्रवेश कराना। घुसाना। भीतर ले जाना।

पैठार†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पैठ+आर (प्रत्य०)] १ पैठ। प्रवेश। उ०—असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा॥ —मानस। २ फाटक। दरवाजा।

पैठारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पैठार] १ पैठ। प्रवेश। २ गति। पहुँच।

पैड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०√पैय्=चलना, जाना ?] १ कुएँ से पानी खींचनेवाले बैलों के चलने के लिये बना हुआ ढालुआ रास्ता। ३ जलाशय से सिंचाई के लिये पानी ढालने के लिये बना हुआ स्थान। पौदर।

पैंतरा—संज्ञा पुं० [सं० पदांतर] तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम फिरकर पैर रखने की मुद्रा। वार करने का ठाट। पटा।

पैताना—संज्ञा पुं० दे० "पायँता"।

पैतृक—वि० [सं०] पितृ संबंधी। पुश्तैनी। पुरखों का।

पैत्रिक—वि० दे० "पैतृक"।

पैदल—वि० [सं० पादतल] जो पाँवों से चले। पैरों से चलनेवाला।
क्रि० वि० पावँ पावँ चलना। पादचारण। पैदल सिपाही। पदाति।

पैदा—वि० [फा०] १ उत्पन्न। जन्मा हुआ। प्रसूत। २ प्रकट। आविर्भूत। घटित। ३ प्राप्त। अर्जित। कमाया हुआ।
‡संज्ञा स्त्री० आय। आमदनी। लाभ।

पैदाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] उत्पत्ति। जन्म।

पैदाइशी—वि० [फा०] १ जन्म का। जब से जन्म हुआ, तभी का। २. स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पैदावार—संज्ञा स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो खेत में बोने से प्राप्त हो। उपज। फसल।
पैन—वि० [स० पैण ?] दे० "पैना"। उ०—ज्यों कुलीन सुचि सुमति वियोगिनि सनमुख सहै विरहसर पैन। —गीता०।
पैना—वि० [स० पैण] [स्त्री० पैनी] १ जिसकी धार बहुत पतली या काटनेवाली हो। धारदार। तेज। उ०—जो कोइ कोप भरै मुख बैना। सन्मुख हते गिरा शर पैना ॥ —वैराग्य०। २ तीक्ष्ण, कुशाग्र; जैसे—पैनी बुद्धि।
  संज्ञा पुं० १ हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी। २ लोहे का नुकीला छड़।
पैनी—वि० स्त्री० दे० "पैना"। उ०—कुलगुरु तिय के मधुर वचन सुनि जनकजुवति मति-पैनी। —गीता०।
पैमाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] मापने की क्रिया या भाव। माप। नाप जोख।
पैमाना—संज्ञा पुं० [फा०] मापने का औजार या साधन। मानदण्ड।
पैमाल(पु)‡—वि० दे० "पामाल"।
पैयाँ‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ] पावँ। पैर।
पैया—संज्ञा पुं० [सं० पाय्य = निकृष्ट] १. बिना सत का अनाज का दाना। खोखला दाना। २ खुक्ख। दीन हीन।
पैर—संज्ञा पुं० [स० पद+दण्ड प्रा० पयदण्ड, अप० पयँड] १ वह अंग जिससे प्राणी चलते फिरते हैं। २ धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न। ३ खलियान।
पैरगाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर+गाड़ी] वह दो पहिए की हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर दबाने से चलती है; जैसे, बाइसिकिल ट्राइसिकिल।
पैरना—क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना। उ०—सील-सुधा के अगार, सुखमा के पारावार, पावत न पैरि पार, पैरि पैरि थाके हैं। —गीता०।
पैरवी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पक्ष का मण्डन। पक्ष लेना। २ मुकदमे में पक्ष समर्थन के लिये किया जानेवाला प्रयत्न। मुकदमे की देखरेख। ३ कोशिश। दौड़-धूप।
पैरवीकार—संज्ञा पुं० [फा०] पैरवी करनेवाला।
परा—संज्ञा पुं० [हिं० पैर] १ पड़े हुए चरण। पौरा। २ किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिये लकड़ियों के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता। ३. एक प्रकार का कड़ा जो पैर में पहना जाता है।
  संज्ञा पुं० [अँ०] किसी गद्य लेख का वह छोटा अंश जिसमें एक विचारधारा हो।
पैराई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√पैर+आई (प्रत्य०)] पैरने या तैरने की क्रिया या भाव।
पैराक—संज्ञा पुं० [हिं०√पैर+आक (प्रत्य०)] तैरनेवाला। तैराक।
पैराव—संज्ञा पुं० [हिं० √पैर+आव (प्रत्य०)] इतना पानी जिसे केवल तैरकर ही पार कर सकें। डुबाव।
पैराशूट—संज्ञा पुं० [अं०] किसी बहुत ऊँचे स्थान या हवाई जहाज से पृथ्वी पर सुरक्षित उतरने के लिये बनाया हुआ छाते की आकार का एक यंत्रविशेष।
पैरी‡—संज्ञा स्त्री० १ दे० "पीढ़ी"। २ दे० "पैड़ी"।
पैरेखना(पु)‡—क्रि० स० दे० "परेखना"।
पैरोकार—संज्ञा पुं० दे० "पैरवीकार"।
पैलगी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ+लगना] प्रणाम। अभिनंदन। पालागन।
पैला‡—संज्ञा पुं० [स० पातिली] [स्त्री० अल्पा० पैली] मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध, दही ढकते हैं। बड़ी पैली।
पैबंद—संज्ञा पुं० [फा०] १ कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा। चकती। थिगली। जोड़। २ किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड की टहनी में जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय।
पैबंदी—वि० [फा०] पैबंद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि)।
पैवस्त—वि० [फा० पैवस्त] (द्रव पदार्थ) जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। सोखा हुआ। समाया हुआ।
पैशाच—वि० [सं०] १ पिशाच संबंधी। २ पिशाच देश का।
पैशाच विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो।
पैशाचिक—वि० [स०] १ पिशाचों का। राक्षसी। २ घोर। वीभत्स।
पैशाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
पैशुन्य—संज्ञा पुं० [सं०] चुगुलखोरी।
पैसना‡(पु)—क्रि० अ० [स० प्रविश] घुसना। पैठना। प्रवेश करना।
पैसरा—संज्ञा पुं० [स० परिश्रम] १. झंझट। बखेड़ा। २ प्रयत्न। व्यापार।
पैसा—संज्ञा पुं० [सं० पाद या पणांश] १ ताँबे का वह सिक्का जो रुपए का चौसठवाँ हिस्सा होता है। २ धन।
  यौ०—नया पैसा = भारत सरकार द्वारा १९५७ से जारी किया गया ताँबे का वह सिक्का जो रुपए का सौवाँ हिस्सा होता है।
  मुहा०—पैसा उठना = धन खर्च होना। पैसा उठाना = फजूलखर्चा करना। पैसा कमाना = धन उपार्जित करना। पैसा डूबना = लगा हुआ रुपया नष्ट होना। घाटा होना। पैसा ढो ले जाना = सब धन खींच लेना। व्यापार आदि से किसी देश का धन दूसरे देश में ले जाना। पैसा धोकर उठाना = किसी देवता की पूजा को मनौती करके पैसा निकालकर अलग रखना।
पैसार‡—संज्ञा पुं० [हिं० पैसना] पैठ। प्रवेश।
पैसिंजर—संज्ञा पुं० [अं०] मुसाफिर। यात्री।
  यौ०—पैसिंजर गाड़ी = मुसाफिरों को ले जानेवाली रेलगाड़ी।
पैहारी—वि० [स० पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पोंकना‡—क्रि० अ० [अनु०] १ पतला पाखाना फिरना। २ बहुत डर जाना।
पोंका—संज्ञा पुं० [देश०] वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है। बोंका।
पोंगा—संज्ञा पुं० [स० पुटक] [स्त्री० अल्पा० पोंगी] १ बाँस या धातु की नली। चोंगा। २ पाँव की नली।
  वि० १ पोला। २ मूर्ख।
पोंछ‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पूँछ"।
पोंछन—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोंछना] लगी हुई वस्तु का वह बचा अंश जो पोंछने से निकले।
पोंछना—क्रि० स० [स० प्रोञ्छन] १ लगी हुई वस्तु को जोर से हाथ आदि

फेरकर उठाना या हटाना। काछना। २ रगड़कर साफ करना।

सज्ञा पु० [स्त्री० पोंछनी] पोंछने का कपड़ा।

पोश्रा—संज्ञा पुं० [स० पोतक] साँप का बच्चा।

पोश्राना—क्रि० स० [हिं० रैना का प्रे० रूप] पोने का काम दूसरे से कराना।

पोइया—संज्ञा स्त्री० [फा० पोय] घोड़े की दो दो पैर फेंकते हुए दौड़।

पोइस—संज्ञा स्त्री० [फा० पोय, हिं० पोइया] सरपट दौड़। उ०—काल यमन सों आनि बनै है देखि देखि मुख रोइस। सूर श्याम बिनु कौन छुडावै चले जाहु भाई पोइस।—सूर०।

अव्य० [फा० पोश] देखो। हटो। बचो।

पोई—संज्ञा स्त्री० [सं० पोदकी] एक लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।

संज्ञा स्त्री० [स० पोत] १ नरम कल्ला। अंकुर। २ ईख का कल्ला। ३ अन्न का कोमल पौधा। जई। ४ गन्ने का पोर।

पोख—संज्ञा पुं० दे० "पोस"।

पोखनाⓅ—क्रि० स० दे० "पोसना"। उ०—देखे नर नारि कहैं, साग खाइ जाए भाइ, बाहुपीन पाँवरनि पीना खाइ पोखे हैं।—गीता०।

पोखरा—संज्ञा पुं० [स० पुष्कर] [स्त्री० अल्पा० पोखरी] वह जलाशय जो खोदकर बनाया गया हो। तालाब।

पोखा—संज्ञा पु० [स० पोष] पोषण। उ०—तेहि कर होइ नाद सों पोखा। तब चारिहु कर होइ सँतोषा।—पद्मावत।

पोखराज—संज्ञा पु० दे० "पुखराज"।

पोगंड—संज्ञा पु० [स०] १ पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २ वह जिसका कोई अंग छोटा, बड़ा या अधिक हो।

पोच—वि० [फा० पूच] १ तुच्छ। क्षुद्र। निकृष्ट। उ०—'दासजू' लोचन पोच हमारे न सोच सकोच विधानन चाहैं।—शृंगार०। २ अशक्त। क्षीण। हीन।

पोचाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोच] निचाई। हेठापन। बुराई। उ०—जद्यपि मोतें, कै कुमातु तें, ह्वै आई अति पोची।—गीता०।

पोट—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गठरी। पोटली। बकुचा। २ ढेर। अंटाला।

पोटनाⓅ—क्रि० स० [सं० 'पेट' से हिं० ना० धा०] १. समेटना। बटोरना। २ फुसलाना। बात में लाना।

पोटरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"।

पोटली—संज्ञा स्त्री० [सं० पोटलिका] छोटी गठरी। छोटा बकुचा।

पोटा—संज्ञा पुं० [स० पोट] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १ पेट की थैली। उदराशय। २. कलेजा। साहस। सामर्थ्य। पित्ता। ३ समाई। औकात। बिसात। ४ आँख की पलक। ५. उँगली का छोर।

संज्ञा पुं० [सं० पोत] चिड़िया का बच्चा।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री, जैसे, दाढ़ीमूँछवाली स्त्री। २. दासी।

पोटास—संज्ञा पु० [अं०] पौधों या खनिज पदार्थों से प्राप्त वह क्षार जो औषध और शिल्प में काम आता है।

पोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोटा] कलेजा।

पोढ़—वि० [स० प्रौढ] पुष्ट। उ०—मान न करसि, पोढ़ करु लाडू। मान करत रिस मानै चाँडू।—पद्मावत।

पोढ़ा—वि० [स० प्रौढ] [स्त्री० पोढ़ी] १ पुष्ट। दृढ़। मजबूत। २ कड़ा। कठिन। कठोर।

पोढ़ाना†—क्रि० अ० [हिं० पोढा] १ दृढ़ होना। मजबूत होना। २. पक्का पड़ना।

क्रि० स० दृढ करना। पक्का करना।

पोत—संज्ञा पुं० [स०] १ पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। उ०—रे कपिपोत न बोल सँभारी। मूढ़ न जानहि मोहि सुरारी।—मानस। २ छोटा पौधा। ३ गर्भस्थ पिंड जिसपर झिल्ली न चढ़ी हो। ४ कपड़े की बुनावट। ५ बड़ी नौका। नाव। जहाज। उ०—राम बिरह-सागर महँ, भरत मगन मन होत। बिप्ररूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत।—मानस।

संज्ञा स्त्री० [स० प्रोता, प्रा० पोता] १ माला या गुरिया का छोटा दाना। यह अनेक रंगों का होता है और कोदो के दाने के बराबर होता है। उ०—झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजै। काँच पोत गिर जाइ नद घर गयौ न पूजै।—सूर०। २ काँच की गुरिया।

संज्ञा पुं० [सं० प्रवृत्ति] १ ढंग। ढब। प्रवृत्ति। उ०—नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत। ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत।—बिहारी०। २. बारी। दाँव। पारी।

मुहा०—पोत पूरा करना=कमी पूरी करना। ज्यों त्यों करके किसी काम को पूरा करना। पोत पूरा होना=कमी पूरी होना। ज्यों त्यों करके किसी काम का पूरा होना।

संज्ञा पुं० [फा० फोता] जमीन का लगान।

संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] १ पोतने की क्रिया या भाव। पुताई। २ कपड़े का वह गुण जिससे वह पतला, मोटा या गफ आदि मालूम होता है।

पोतक—संज्ञा पु० [स०] १ पशु पक्षियों का बच्चा। २ छोटा बच्चा। शिशु। उ०—सुर सरि धार नाउँ मदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।—मानस।

पोतकी—संज्ञा स्त्री० [स०] पूतिका। पोई लता।

पोतड़ा—संज्ञा पु० [?] छोटे बच्चों के नीचे बिछाने का कपड़े का टुकड़ा।

पोतदार—संज्ञा पुं० [हिं० पोत+दार] १ खजानची। २ पारखी। खजाने में रुपया परखनेवाला।

पोतना—क्रि० स० [सं० पुस्त, प्रा० पुत्थ] १ गीली तह चढ़ाना। चुपड़ना। २ किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उसपर जम जाय। ३ मिट्टी, गोबर, चूने आदि से लीपना।

संज्ञा पु० वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जाय। पोता।

पोतला—संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] पराठा।

पोता—संज्ञा पुं० [सं० पौत्र] बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र।

संज्ञा पु० [फा० फोता] १ पोत। लगान। भूमिकर। २ अंडकोष।

संज्ञा पुं० दे० "पोटा"।

संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] १ पोतने का कपड़ा। २ घुली हुई मिट्टी जिसका लेप दीवार पर करते हैं। ३ मिट्टी के लेप पर गीले कपड़े का पुचारा जो भबके से अर्क उतारने में बरतन के ऊपर दिया जाता है। उ०—नैन नीर सों पोता किया। तस मद चुआ बरा जस दिया।—पद्मावत।

पोताई—संज्ञा स्त्री० दे० "पुताई"।

पोती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोता] पुत्र की पुत्री।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पोतना] पुतारा देने की क्रिया।

पोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूअर का थूँथन। २ वज्र। ३ नाव।

पोत्री—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर।

पोथा—संज्ञा पुं० [हिं० पोथी] १ कागजों की गड्डी। २ बड़ी पोथी। बड़ी पुस्तक।

पोथी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुस्तिका] पुस्तक। उ०—धातुवाद, निरुपाधि वर, सदगुरु-लाभ सुमीत। देव-दरस कलिकाल में पोथिन दुरे सभीत।—दोहा०।

पोदना—संज्ञा पुं० [अनु० फुदकना] १ एक छोटी चिड़िया। २ नाटा आदमी।
मुहा०—पोदना सा = बहुत छोटा सा। जरा सा।

पोद्दार—संज्ञा पुं० दे० "पोतदार"।

पोना—क्रि० स० [हिं० पूवा+ना (प्रत्य०)] १ गीले आटे की लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए रोटी के आकार में बढ़ाना। २ (रोटी) पकाना। उ०—सूर आँखि मजीठ कीनी निपट काँची पोय।—सूर०।
क्रि० स० [सं० प्रोत] पिरोना। गूथना। उ०—दिनकर कुलमनि निहारि, मगन ग्राम नारि, परसपर कहैं सखि! अनुराग ताग पोऊ।—गीता०।

पोप—संज्ञा पुं० [अं०] ईसाई धर्म के रोमन कैथोलिक संप्रदाय का सबसे बड़ा प्रधान या पुरोहित और संत पीटर का उत्तराधिकारी।

पोपला—वि० [हिं० पुलपुला] १ पचका और सिकुड़ा हुआ। २ जिसमें दाँत न हों। ३ जिसके मुँह में दाँत न हों।

पोपलाना—क्रि० अ० [हिं० पोपला] पोपला होना।

पोया—संज्ञा पुं० [सं० पोत] १ वृक्ष का नरम पौधा। २ बच्चा। ३ साँप का बच्चा।

पोर—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] १ उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है। २ उँगली का वह भाग जो दो गाँठों के बीच हो। ३ ईख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो। ४ रीढ़। पीठ।

पोल—संज्ञा पुं० [हिं० पोला] १ शून्य स्थान। अवकाश। खाली जगह। २ खोखलापन। सारहीनता।
मुहा०—(किसी की) पोल खुलना = छिपा हुआ दोष या बुराई प्रकट हो जाना। भंडा फूटना।
संज्ञा पुं० [सं० प्रतोली] १ फाटक। प्रवेशद्वार। २. आँगन। सहन।

पोलच, पोलचा—संज्ञा पुं० [हिं० पोल] १ वह परती भूमि जो पिछले वर्ष रबी बोने के पहले जोती गई हो। २ वह ऊसर या बंजर भूमि जिसे जुते या टूटे तीन वर्ष हो गए हों।

पोला—वि० [सं० पोल=फुलका] [स्त्री० पोली] १ जिसके भीतर खाली जगह हो। २ जो ठोस न हो। खोखला। निःसार। तत्वहीन। थुक्ख। ३ जो भीतर से कड़ा न हो। पुलपुला।

पोलिया—संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"।

पोलो—संज्ञा पुं० [अं०] घोड़े पर चढ़कर खेला जानेवाला चौगान।

पोशाक—संज्ञा स्त्री० [फा० पोश] पहनने के कपड़े। वस्त्र। परिधान। पहनावा।
मुहा०—पोशाक बढ़ाना = कपड़े उतारना।

पोशीदा—वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।

पोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पोषण। पुष्टि। उ०—रसना मंत्री, दसन जन, तोष पोष निजकाज। प्रभुकर सेन पदातिका, बालक राज समाज॥—दोहा०। २ अभ्युदय। उन्नति। ३ वृद्धि। बढ़ती। ४ धन। ५ तुष्टि। संतोष।

पोषक—वि० [सं०] १. पालक पालनेवाला। २. वर्द्धक। बढ़ानेवाला। उ०—सम प्रकास तम पाख दुहुँ नामभेद बिधि कीन्ह। ससि पोषक सोषक समुझि, जग जस अपजस दीन्ह॥—मानस। ३. सहायक।

पोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १ पालन। २ वर्द्धन। बढ़ती। ३ पुष्टि। ४ सहायता।

पोषन—संज्ञा पुं० दे० "पोषण"। उ०—विश्व-पोषन भरन, विश्व-कारन-करन, सरन तुलसीदास त्रासहंता।—विनय०।

पोषना—क्रि० स० [सं० पोषण] पालना। उ०—मुखिया मुख सों चाहिअइ, खान पान कहुँ एक। पालइ पोषइ सकल अँग, तुलसी सहित विवेक।—मानस।

पोषनिहारा—संज्ञा पुं० [सं० पोषण+हिं० हारा] पुष्ट करनेवाला। पालनेवाला। उ०—भानु,कमलकुल पोषनिहारा। बिनु जर जारि करइ सोइ छारा॥—मानस।

पोषित—वि० [सं०] पाला हुआ।

पोष्टा—वि० [सं० पोष्टृ] पालनेवाला।
संज्ञा पुं० कर्ज। करज।

पोष्य—वि० [सं०] [स्त्री० पोष्या] पालने योग्य। पालनीय।

पोष्यपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। बालक। २ दत्तक।

पोस—संज्ञा पुं० [सं० पोषण] पालनेवाले के साथ प्रेम या हेलमेल।

पोसन—संज्ञा पुं० [सं० पोषण] पालन। रक्षा। उ०—मथुरा हू तें गए, सखी री! अब हरि कारे कोसन। यह अचरज है अति मेरे जिय, यह छाँड़न वह पोसन।—सूर०।

पोसना—क्रि० स० [सं० पोषण] १ पालना या रक्षा करना। २ शरण आदि देकर अपनी रक्षा में रखना। ३ दे० "पोंछना"।

पोसाना—क्रिया अ० [सं०√पुष्=पोषण] १ पूरा पड़ना। २ पड़ता पड़ना।

पोसु—संज्ञा पुं० [सं० पोषक] पोषण करनेवाला। पालक। उ०—है प्रभु मेरोई सब दोसु। सीलसिंधु, कृपालु, नाथ, अनाथ-आरत-पोसु।—विनय०।

पोस्ट—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ जगह। स्थान। २ पद। ओहदा। ३ नौकरी। ४ डाकखाना।

पोस्ट आफिस—संज्ञा पुं० [अं०] डाकखाना।

पोस्टकार्ड—संज्ञा पुं० [अं०] डाकखाने से भेजा जानेवाला मोटे कागज का वह टुकड़ा जिसपर पत्र आदि लिखते हैं।

पोस्टमार्टम—संज्ञा पुं० [अं०] मृत्यु का कारण जानने के लिये शव की चीरफाड़।

पोस्टमास्टर—संज्ञा पुं० [अं०] किसी डाकखाने का प्रधान अधिकारी।

पोस्टमैन—संज्ञा पुं० [अं०] डाकिया। चिट्ठीरसाँ।

पोस्टर—संज्ञा पुं० [अं०] बहुत मोटे अक्षरों में छपा हुआ बड़ा विज्ञापन। इश्तहार।

पोस्टर इंक—संज्ञा पुं० [अं०] छापे की वह स्याही जो लकड़ी के अक्षर छापने में काम आती है।

पोस्टल गाइड—संज्ञा पुं० [अं०] वह पुस्तक जिसमें डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल, आदि भेजने के नियम तथा डाकघरों के नाम, विभागीय सूचनाएँ आदि रहती हैं।

पोस्टेज—संज्ञा स्त्री० [अं०] डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने का महसूल।

पोस्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ अफीम के पौधे का ढोंढा या ढोढ़। २ अफीम का पौधा। पोस्ता। ३ छिलका। बकला। ४ खाल। चमड़ा।

पोस्ता—संज्ञा पुं० [फा० पोस्त] एक पौधा जिसमें से अफीम निकलती है।

पोस्ती—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जो नशे के लिये पोस्ते के ढोंढे पीसकर पीता हो। २ आलसी आदमी।

पोस्तीन—संज्ञा पुं० [फा०] १ गरम और मुलायम रोएँवाले समूर आदि कुछ जानवरों की खाल का बना हुआ पहनावा। २ खाल का बना हुआ कोट जिसमें नीचे की ओर बाल होते हैं। ३ जिल्दबन्दी में काम आनेवाला चमड़ा। ४ जिल्दबदी में पुस्तक के आदि और अंत में लगाया जानेवाला वह गोटा, दोहरा कागज जिसका एक भाग दफ्ती पर चपकाया जाता है।

पोहना—क्रि० स० [सं० प्रोत] १ पिरोना। गूँथना। उ०—लटकनि लटक रहे मुख ऊपर पचरग मनि गन पोहेरी।—सूर०। २ छेदना। उ०—एक एक सिर सर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं। जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुतुद पोहहीं।—मानस। ३ लगाना। पोतना। उ०—पहिले पूतना कपट करि आई स्तननि विष पोहि।—सूर०। ४ जड़ना। घुसाना। धँसाना। उ०—भली करी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहिं। सूर श्याम यह प्राण पियारी उर में राखी पोहि।—सूर०। ५ पीसना। घिसना। ६ दे० "पोना"।

वि० [स्त्री० पोहनी] घुसनेवाला। भेदनेवाला।

पोहमीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

पोहा†—संज्ञा पुं० [सं० पशु] पशु। चौपाया।

पोहिया†—संज्ञा पुं० [हिं० पोहा+इया (प्रत्य०)] चरवाहा।

पौंचा—संज्ञा पुं० [सं० पौंड्रक] साढ़े पाँच का पहाड़ा।

पौंडा—संज्ञा पुं० [सं० पौंड्रक] एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ईख या गन्ना।

पौंड्र—वि० [सं०] १. पुंड्र देश का। २ पुंड्र देश का निवासी या राजा।

संज्ञा पुं० १ भीम के शंख का नाम। २ मोटा गन्ना। पौंडा। ३ पुंड्र देश (बिहार का एक भाग) के राजा का पुत्र जो मिथ्यावासुदेव कहलाया। ४ क्षत्रियों की एक शाखा।

पौंड्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मोटा गन्ना। पौंडा। २. एक जाति विशेष। पुंड्र। ३ पुंड्र देश का एक राजा जो जरासंध का संबंधी था और श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था। मिथ्यावासुदेव।

पौंढ़ना—क्रि० स० दे० "पौढ़ना"।

पौंरना†—क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना।

पौंरि—संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।

पौंरिया—संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"।

पौ—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रपा, प्रा० पवा] पौसाला। पौसला। प्याऊ।

संज्ञा स्त्री० [सं० पाद] किरण। प्रकाश की रेखा। ज्योति।

मुहा०—पौ फटना = सबेरे का उजाला दिखाई पड़ना। सवेरा होना।

संज्ञा पुं० [सं० पाद] १ पैर। २ जड़।

संज्ञा स्त्री० [सं० पद] पाँसे की एक चाल या दाँव।

मुहा०—पौ बारह होना = (१) जीत का दाँव पड़ना। (२) बन आना। लाभ का अवसर मिलना।

पौआ—संज्ञा पुं० दे० "पौवा"।

पौगंड—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौडर—संज्ञा पुं० [अं० पाउडर] १ चूर्ण। बुकनी। २ मुँह और शरीर पर मलने का सुगंधित या औषधीय चूर्ण। अंगराग।

पौढ़ना—क्रि० अ० दे० "तैरना"।

पौढ़ना—क्रि० अ० [सं० प्लवन] झूलना। आगे पीछे हिलना।

क्रि० अ० [सं० प्रलोठन ?] लेटना। सोना। उ०—पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता।—मानस।

पौढ़ाना—क्रि० स० [हिं० पौढ़ना का प्रे०] १ झुलाना। भुलाना। इधर से उधर हिलाना। २ लेटाना। उ०—एक बार जननी अन्हवाए। करि सिंगार पलना पौढ़ाए॥ —मानस। ३ सुलाना। उ०—चारो भ्रातन श्रमित जानि कै जननी तब पौढ़ाए। चापत चरण जननि अब अपनी कछुक मधुर स्वर गाए। —सूर०।

पौत्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।

पौद—संज्ञा स्त्री० [सं० पोत] १ छोटा पौधा। २. वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सके। ३. उपज। पीढ़ी।

संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ा"।

पौदर—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव+डालना] १ पैर का चिह्न। २ पगडंडी।

पौदा—संज्ञा पुं० दे० "पौधा"।

पौध—संज्ञा स्त्री० दे० "पौद"।

पौधा—संज्ञा पुं० [सं० पोत] १ नया निकलता हुआ पेड़। २ छोटा पेड़। क्षुप।

पौधि—संज्ञा स्त्री० दे० "पौद"।

पौन:पुनिक—वि० [सं०] पुनः पुनः या बार बार होनेवाला।

पौन—संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० पवन] १ हवा। उ०—पौन बारिवाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।—भूषण०। २ प्राण। जीवात्मा। ३ प्रेत। भूत।

मुहा०—पौन चलाना या मारना = जादू करना। टोना चलाना। पौन बिठाना = (किसी पर) भूत लगाना। किसी के पीछे प्रेत लगाना।

वि० [सं० पाद+ऊन] एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई।

संज्ञा पुं० ढगण का एक भेद।

पौनर्भव—वि० [सं०] पुनर्भू संबंधी।

संज्ञा पुं० १ पुनर्भू से उत्पन्न पुत्र। २ वह पति जिससे विधवा या पतिपरित्यक्ता का विवाह हो।

पौना—संज्ञा पुं० [सं० पाद+ऊन] पौन का पहाड़ा।

संज्ञा पुं० [हिं० पोना] काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी करछी।

पौनार—संज्ञा स्त्री० [सं० पद्मनाल] कमल के फूल की नाल या डंठल।

पौनारी—संज्ञा स्त्री० दे० "पौनार"। उ०—पहुँचहि छपी कवल पौनारी। जघ छपा कदली होइ बारी। —पदमावत।

पौनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पावना] नाई, बारी, धोबी आदि जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते हैं। उ०—चलीं पौनि सब गोहने फूल डार लै हाथ। विश्वनाथ कइ पूजा पदुमावति के साथ॥ —पदमावत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पौना] छोटा पौना।

पौने—वि० [हिं० पौन] किसी संख्या का तीन चौथाई (संख्यावाची शब्दों के साथ)।

मुहा०—पौने सोलह आना=बहुत सा। अधिकांश, जैसे, उनकी बातों में पौने सोलह आना झूठ है। पौने सोलह आने=प्राय.। अधिक अंश में, जैसे, तुम्हारी बात पौने सोलह आने ठीक निकली।

पौमान—संज्ञा पुं० [सं० पवमान] १ दे० "पवमान"। २. जलाशय।

पौर—वि० [सं०] पुर संबंधी। नगर का। संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।

पौरगीय—वि० [सं०] पूर्वजन्म संबंधी।

पौरजन—संज्ञा पुं० [सं०] नगर निवासी। नागरिक।

पौरव—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरु का वंशज। पुरु की संतति। २. उत्तरपूर्व का एक देश (महाभारत)।

पौरसख्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह मित्रता जो एक ही नगर या ग्राम में रहने से परस्पर होती है।

पौरस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतःपुर में रहनेवाली स्त्री। पुर या नगर की स्त्री।

पौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० पैर] आया हुआ कदम। पड़े हुए चरण। पैरा।

पौराण—वि० [सं०] १ पुराणों में कहा या लिखा हुआ। २ पुराणसंबंधी।

पौराणिक—वि० [सं०] [स्त्री० पौराणिकी] १ पुराणवेत्ता। २ पुराणपाठी। ३ पुराण संबंधी। ४ प्राचीन काल का।

संज्ञा पुं० अठारह मात्रा के छंदों की संज्ञा।

पौरि—संज्ञा स्त्री० दे० "पौरी"। उ०—भाँवरी दै गयो रावरी पौरि में भावती भोर तें केतिक दाँव री। —रससारांश।

पौरिया—संज्ञा पुं० [हिं० पौरि] द्वारपाल। दरवान। उ०—चल्यौ गयौ तहँ विप्र छिप्रगति कितहुँ न अटक्यौ। प्रभु जान ब्रह्मन्य, पौरिया पायनि लटक्यौ। —नंददास०।

पौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] घर के भीतर का वह भाग जो द्वार में प्रवेश करते ही पड़े और कुछ दूर तक लंबी कोठरी के रूप में चला गया हो। ड्योढ़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी। पैड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँवरि] खड़ाऊँ।

पौरुखⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पौरुष"।

पौरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष का भाव। पुरुषत्व। २ पुरुष का तत्व। पुरुषार्थ। ३ पराक्रम। साहस। ४. उद्योग। उद्यम।

वि० पुरुष संबंधी।

पौरुषेय—वि० [सं०] १. पुरुषसंबंधी। २ आदमी का किया हुआ। ३ आध्यात्मिक।

पौरुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुषत्व। २ साहस।

पौरोहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास—संज्ञा पुं० [सं०] एक याग जो पूर्णिमा के दिन होता था।

पौर्णमासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पौर्वापर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्वापर का भाव। आगे पीछे होने का क्रम। २ सिलसिला। क्रम।

पौर्विक—वि० [सं०] पूर्व में होनेवाला।

पौल—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] बड़ा दरवाजा। फाटक।

पौलनाⓅ—क्रि० स० [?] काटना।

पौलस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पौलस्त्यी] १ पुलस्त्य का पुत्र या उनके वंश का पुरुष। २ कुबेर। ३ रावण, कुंभकर्ण और विभीषण। ४ चंद्र।

पौला†—संज्ञा पुं० [हिं० पाव+ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की खड़ाऊँ जिसमें खूँटी की जगह छेद में बँधी रस्सी में पैर का अँगूठा फँसाया जाता है।

पौलिया—संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"।

पौली—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] पौरी। ड्योढ़ी।

पौलोम—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुलोमा ऋषि का अपत्य या संतान। २. कौशीतक उपनिषद के अनुसार दैत्यों की एक जाति का नाम।

पौलोमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्राणी २ भृगु महर्षि की पत्नी का नाम।

पौवा—संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. एक सेर का चौथाई भाग। २ वह बरतन जिसमें पाव भर पानी, दूध आदि आ जाय।

पौष—संज्ञा पुं० वह महीना जिसमें पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र में हो। पूस।

पौष्करिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा पोखरा। छोटा तालाब।

पौष्प—वि० [सं०] पुष्प संबंधी। फूल का।

संज्ञा पुं० १ फूलों से निकाला हुआ मद्य। २ पुष्परेणु। फूल की धूल। पराग।

पौष्टिक—वि० [सं०] पुष्टिकारक। बल-वीर्य-वर्धक।

पौसरा, पौसला—संज्ञा पुं० [सं० पयःशाला] वह स्थान जहाँ पर लोगों को पानी पिलाया जाता है। प्याऊ।

पौसेरा—संज्ञा पुं० [हिं० पाव+सेर] पाव सेर की तौल।

पौहारी—संज्ञा पुं० [सं० पयस्=दूध+आहार] वह जो केवल दूध ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय)।

प्यंडⓅ—संज्ञा पुं० दे० "पिंड"। उ०—प्यंड मध्य ब्रह्मंड कथै सब कोई, वाके आदि अरु अंत न होई। —कबीर०।

प्याऊ—संज्ञा पुं० [सं० प्रपा] पौसला। सबील।

प्याज—संज्ञा पुं० [फा०] गोल गाँठ के आकार का एक परतदार कंद। इसकी गंध बड़ी उग्र होती है। यह बड़ा पुष्ट माना जाता है और तरकारी या मसाले के काम में आता है। वैद्यक में इसे वीर्यवर्धक, पाचक, सारक, तीक्ष्ण, बल और रक्तवर्धक, बलकारक, मेधाजनक, आँखों के लिये हितकारी तथा जीर्णज्वर, गुल्म, श्वास, खाँसी, कृमि, वात और कुष्ठ आदि का नाशक माना गया है।

प्याजी—वि० [फा०] प्याज के रंग का। हलका गुलाबी।

प्यादा—संज्ञा पुं० [फा०] १ पदाति। पैदल। २ दूत। हरकारा।

प्यानाⓅ—क्रिया० स० दे० "पिलाना"। उ०—जे पय प्याइ पोखि कर पंकज बार बार चुचुकारे। —गीता०।

प्यार—संज्ञा पुं० [सं० प्रीति] १ प्रेम। चाह। स्नेह। मुहब्बत। २ प्रेम जताने की क्रिया।

प्यारा—वि० [सं० प्रिय] [स्त्री० प्यारी] १ जिसे प्यार करें। प्रेमपात्र। प्रिय। २ जो भला मालूम हो।

प्याला—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १ एक प्रकार का छोटा कटोरा। बेला। जाम। २ तोप या बंदूक आदि में वह गड्ढा जिसमें रंजक रखते हैं।

प्यावना†Ⓟ—क्रि० स० दे० "पिलाना"।

प्यावनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० प्यावना] पिलाने का कार्य। उ०—मैयन की वह गर लपटावनि। चूमनि मधुर पयोधर प्यावनि। —नंददास०।

प्यास—संज्ञा स्त्री० [सं० पिपासा] १. जल

पीने की इच्छा। तृषा। तृष्णा। पिपासा। २ प्रबल कामना।

प्यासा—वि० [सं० पिपासित] जिसे प्यास लगी हो। तृषित। पिपासायुक्त।

प्यून—संज्ञा पुं० [अं० पियन] प्यादा। सिपाही। चपरासी। हरकारा।

प्यूनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "पूनी"।

प्यो(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० पिय] पति। स्वामी। उ०—प्योमुख सामुहें राखिवे कों सखियाँ अँखियान को व्योत विताने।—शृंगार०।

प्योसर—संज्ञा पुं० [सं० पीयूष] हाल की व्याई हुई गौ का दूध। उ०—सब हेरि धरी है साठी। लै उपर उपर ते काढ़ी। अति प्योसर सरिस बनाई। तेहिं सोंठ मिरच रुचिताई।—सूर०।

प्योसार‡—संज्ञा पुं० [सं० पितृशाला] (स्त्री के लिये) पिता का गृह। पीहर। मायका। उ०—परत फिराय पयोनिधि भीतर सरिता उलट बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई।—सूर०।

प्यौर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] १ पति। स्वामी। २ प्रियतम।

प्रकंप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रकंपित] काँपना। कँपकँपी। थरथराहट।

प्रकंपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कँपकँपी। थरथराहट। २ तेज हवा। आँधी। तूफान।

प्रकंपमान—वि० [सं०] थरथराता हुआ। अत्यंत हिलता हुआ।

प्रकट—वि० [सं०] १ जो प्रत्यक्ष हुआ हो। जाहिर। २. उत्पन्न। आविर्भूत। ३ स्पष्ट। व्यक्त।

प्रकटना(पु)—क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रकटाना(पु)—क्रि० स० दे० "प्रगटाना"।

प्रकटित—वि० [सं०] प्रकट किया हुआ।

प्रकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसंग। विषय। २ चर्चा। वर्णन। ३ किसी ग्रंथ के छोटे छोटे भागों में से कोई भाग। अध्याय। ४ दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक का एक भेद।

प्रकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का गान। २ नाटक में प्रयोजनसिद्धि के पाँच साधनों में से एक। ३ वह कथावस्तु जो थोड़े काल तक चलकर रुक जाय।

प्रकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्कर्ष। उत्तमता। २ अधिकता। बहुतायत।

प्रकर्षक—वि० [सं०] उत्कर्ष करनेवाला।

प्रकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकर्ष। उत्कर्ष। २ अधिकता।

प्रकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कला (समय) का साठवाँ भाग।

प्रकल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चित या स्थिर करना।

प्रकल्पित—वि० [सं०] निश्चित। स्थिर।

प्रकांड—वि० [सं०] १ बहुत बड़ा। २ बहुत विस्तृत।

प्रकाम—वि० [सं०] १ प्रचुर। बहुत अधिक। २ यथेष्ट। काफी।

प्रकाम्य—वि० दे० "प्राकाम्य"।

प्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेद। किस्म। २ तरह। भाँति।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० प्राकार] परकोटा। घेरा।

प्रकारी—वि० [सं० प्रकार+हिं० ई (प्रत्य०)] प्रकार का। प्रकारवाला। उ०—सुंदर भोजन विविध प्रकारी। आनि धरे भरि कंचन थारी।—नंददास०।

प्रकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके द्वारा वस्तुओं का रूप नेत्रों को गोचर होता है। दीप्ति। आलोक। ज्योति। उजाला। अंधकार का उलटा। २ धूप। घाम। ३ विकाश। स्फुटन। अभिव्यक्ति। ४ प्रकट होना। गोचर होना। ५ प्रसिद्धि। ख्याति। ६ किसी ग्रंथ या पुस्तक का विभाग।

प्रकाशक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो प्रकाश करे। २ वह जो प्रकट करे। प्रसिद्ध करनेवाला। ३ पुस्तक, पत्रिका आदि को छपवाकर प्रचारित करनेवाला (अं० पब्लिशर)।

प्रकाशगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऊँची इमारत, विशेषतः समुद्र में बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश चारों ओर फैलता हो (अं० लाइटहाउस)।

प्रकाशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रकाश का भाव या धर्म।

प्रकाशधृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह धृष्ट नायक जो प्रकट रूप से धृष्टता करे।

प्रकाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ प्रकाशित करने का काम। ३ वे ग्रंथ आदि जो प्रकाशित किए जायँ। प्रकाशित पुस्तक पत्र आदि। ४ सूचना। विज्ञापन।

वि० [सं०] प्रकाश करनेवाला। चमकीला। दीप्तिमान।

प्रकाशमान—वि० [सं०] १ चमकता हुआ। चमकीला। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रकाशवान—वि० दे० "प्रकाशमान"।

प्रकाशवियोग—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार वह वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाशसंयोग—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार वह संयोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाशित—वि० [सं०] १ जिसपर या जिसमें प्रकाश हो। चमकता हुआ। २ प्रकट। ३ छपवाकर प्रकट किया हुआ। ४ सूचित। विज्ञापित।

प्रकाशी—संज्ञा पुं० [सं० प्रकाशिन्] वह जिसमें प्रकाश हो। चमकता हुआ।

प्रकाश्य—वि० [सं०] १ प्रकट करने योग्य।

क्रि० वि० प्रकट रूप से। स्पष्टतया। "स्वगत" का उलटा (नाटक)।

प्रकास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रकाश] १ दे० "प्रकाश १"। उ०—अब प्रभात प्रगट ज्ञान भानु के प्रकास, वासना सरोग मोह-द्वेष निविड़ तम टरे।—विनय०। २. प्रकट। व्यक्त। उ०—श्रोता सुमति सुसील सुचि कथारसिक हरिदास। पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास॥—मानस।

प्रकासना(पु)—क्रि० स० [हिं० 'प्रकास' से ना० धा०] प्रकट करना।

प्रकीर्ण—वि० [सं०] १ बिखरा हुआ। २ मिला हुआ। मिश्रित।

प्रकीर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसमें तरह तरह की चीजें मिली हों। फुटकर। २ वह अध्याय या प्रकरण जिसमें फुटकर बातें हों। ३ अध्याय। प्रकरण। ४ फुटकर आयव्यय की मद।

प्रकुपित—वि० [सं०] जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो।

प्रकृत—वि० [सं०] [संज्ञा प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. यथार्थ। असली। सच्चा। २ जिसमें किसी प्रकार का विकार न हुआ हो। ३ प्रसंगगत। प्रस्तुत। मौजूद।

संज्ञा पुं० श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतता—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकृत होने का भाव। २ यथार्थता। असलियत।

प्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूल या प्रधान गुण। तासीर। स्वभाव। २. प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव।

मिजाज। ३ वह मूल शक्ति जिससे अनेक रूपात्मक जगत का विकास हुआ है। कुदरत।

प्रकृति भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वभाव। २ संधि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से कोई विकार नहीं होता।

प्रकृति शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों, जैसे—पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि का विचार किया जाय।

प्रकृतिसिद्ध—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। नैसर्गिक।

प्रकृतिस्थ—वि० [सं०] १ जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २ स्वाभाविक।

प्रकृष्ट—वि० [सं०] १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ खिंचा हुआ। ३ जोता हुआ खेत।

प्रकोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत अधिक कोप। २ क्षोभ। उत्तेजना। ३ चंचलता। चपलता। ४ बीमारी का अधिक और तेज होना। ५ शरीर के वात, पित्त आदि का बिगड़ जाना जिससे रोग उत्पन्न होता है।

प्रकोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सदर फाटक के पास की कोठरी। २ बड़ा आँगन जिसके चारों ओर इमारत हो।

प्रक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रम। सिलसिला। २ उपक्रम।

प्रक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह घूमना। खूब भ्रमण करना। २ पार करना। ३ आरंभ करना। ४ आगे बढ़ना।

प्रक्रमभंग—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक दोष। किसी वर्णन में आरंभ किए हुए क्रम आदि का ठीक ठीक पालन न होना।

प्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पद्धति। युक्ति। तरीका। २ किसी वस्तु या कार्य को बनाने या पूर्ण करने के लिये की जाने वाली क्रमिक क्रियाएँ या कार्यों का सिलसिला (अँ० प्रोसेस)। ३ प्रकरण।

प्रच्छ(पु)—वि० [सं० पृच्छक] पूछनेवाला।

प्रक्षालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रक्षालित] जल से साफ करने की क्रिया। धोना।

प्रक्षालित—वि० [सं०] धोया हुआ।

प्रक्षिप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ फेंका हुआ। २ ऊपर से बढ़ाया हुआ। पीछे से मिलाया हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण—संज्ञा पुं० [सं०] १ फेंकना। डालना। २ छितराना। निखराना। ३ मिलाना। बढ़ाना।

प्रखर—वि० [सं०] [संज्ञा प्रखरता] १. तीक्ष्ण। प्रचंड। २ धारदार। पैना।

प्रखरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रखर होने का भाव।

प्रख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रख्यात होने का भाव। प्रसिद्धि। विख्याति।

प्रगट—वि० दे० "प्रकट"।

प्रगटना†—क्रि० अ० [सं० प्रकटन] प्रकट होना। सामने आना। जाहिर होना। उ०—प्रगटत दुरत करत छल भूरी। येहि विधि प्रभुहिं गयौ लै दूरी।—मानस।

प्रगटाना†—क्रि० स० [सं० प्रकटन] प्रकट करना। जाहिर करना।

प्रगत—वि० [सं०] १ मरा हुआ। मृत। २ छूटा हुआ।

प्रगति—संज्ञा स्त्री० [सं० प्र०+गति] १ आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। २ उन्नति या विकास। ३ सुधार।

प्रगतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह सिद्धांत जिसमें साहित्य को सामाजिक विकास का साधन माना जाता है। २ सामान्य जनजीवन को साहित्य में व्यक्त करने का सिद्धांत।

प्रगतिवादी—संज्ञा पुं० [सं० प्रगतिवादिन्] प्रगतिवाद का अनुयायी।

वि० १ प्रगतिवाद के सिद्धांत पर चलनेवाला। २ प्रगतिवाद संबंधी। ३ प्रगतिवाद के सिद्धांत पर आधारित।

प्रगतिशील—वि० [हिं० प्रगति+सं० शील] १ बराबर आगे बढ़नेवाला। उन्नतिशील। २ सुधारवादी। ३ जो प्रगतिवाद का अनुयायी हो। ४ प्रगतिवाद संबंधी। ५ प्रगतिवाद के सिद्धांत पर आधारित।

प्रगल्भ—वि० [सं०] [संज्ञा प्रगल्भता] १ उद्धत। ढीठ। बड़ड। २ आत्मविश्वास से पूर्ण। साहसी। अभिमानी। ३ प्रत्युत्पन्न मतिवाला। हाजिरजवाब। ४ चतुर। होशियार। प्रतिभाशाली। ५ निर्भय। निडर।

प्रगल्भता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रगल्भ होने का भाव या विशेषता।

प्रगल्भवचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या नायिका जो बातों ही बातों में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करे और उलाहना दे।

प्रगसना(पु)†—क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रगाढ़—[वि० सं०] १ बहुत अधिक। २ बहुत गाढ़ा या गहरा। ३ कड़ा। कठोर।

प्रग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग। धारण। २. लड़ाई की एक पकड़। ३ सूर्य या चंद्रमा के ग्रहण का प्रारंभ। ४ आदर। सत्कार। ५ अनुग्रह। ६ उद्धतता। ७. लगाम। बाग। ८ डोर। रस्सी। ९ किरण। १०. नेता। ११ उपग्रह। १२ बाँह। हाथ। १३ कैदी। १४ सोना। स्वर्ण। १५ विष्णु।

प्रघट(पु)—वि० दे० "प्रकट"।

प्रघटना(पु)—क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रघट्टक(पु)†—वि० [सं० प्रकट] प्रकट या प्रकाश करनेवाला। खोलनेवाला।

प्रघोर—वि० [सं० प्र+घोर] भयंकर। अत्यंत कठिन। बड़ा जबरदस्त। असह्य। उ०—देखि पवनसुत धायेउ बोलत बचन कठोर। आवत कपिहि हन्यो तेहि मुष्टि प्रहार प्रघोर।—मानस।

प्रचंड—वि० [सं०] [संज्ञा प्रचंडता] १ बहुत अधिक तीव्र। बहुत तेज। उग्र। प्रखर। २ भयंकर। ३ कठिन। कठोर। ४ दुःसह। असह्य। ५ बड़ा। भारी।

प्रचंडता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तेजी। प्रबलता। उग्रता। २ भयंकरता।

प्रचंडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। चंडी।

प्रचरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० प्रचार] प्रचारित होना। चलना। फैलना।

प्रचलन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रचार। रिवाज। चलन।

प्रचलित—वि० [सं०] जारी। चलता हुआ। जिसका चलन हो।

प्रचाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ से इकट्ठा करना। २ राशि। ढेर। ३ वृद्धि। आधिक्य।

प्रचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन। रवाज। २ प्रसिद्धि। ३ विज्ञापन (अँ० प्रोपेगेंडा)।

प्रचारक—वि० [सं०] [स्त्री० प्रचारिणी] प्रचार करनेवाला। फैलानेवाला।

प्रचारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फैलाना। २ छितराना। ३ चलाना।

प्रचारना(पु)†—क्रि० स० [प्रचार १ रण] प्रचार करना। फैलाना। २ सामना करने के लिये ललकारना। युद्ध के लिये आह्वान करना। उ०—पुनि रावन कपि हतेउ

प्रचारी। चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥ —मानस।

प्रचारित—वि० [सं०] प्रचार किया हुआ। फैलाया हुआ।

प्रचित—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका संग्रह किया गया हो। वह जो चुना गया हो। २ दंडक छंद का एक भेद।

प्रचुर—वि० [सं०] बहुत। अधिक।

प्रचुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रचुर होने का भाव। ज्यादती। अधिकता।

प्रचेता—संज्ञा पुं० [सं० प्रचेतस्] १ एक प्राचीन ऋषि। २ वरुण। ३ पुराणानुसार पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र जिन्होंने दस हजार वर्ष समुद्र में रहकर तपस्या करके विष्णु से प्रजासृष्टि का वर पाया था। दक्ष इन्हीं के पुत्र थे।

प्रचर्य—वि० [सं०] १ चयन करने योग्य। चुनने या संग्रह करने लायक। २ ग्रहण करने योग्य। ग्राह्य।

प्रचोदक—वि० [सं०] प्रेरणा करनेवाला। उत्तेजना देनेवाला।

प्रचोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेरणा। उत्तेजना। २ आज्ञा।

प्रचोदित—वि० [सं०] उत्तेजित। प्रेरित।

प्रच्छक—वि० [सं०] पूछनेवाला।

प्रच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] १ लपेटने का कपड़ा। बेठन। २ कंबल। ३ पोगा।

प्रच्छन्न—वि० [सं०] ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ।

प्रच्छादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रच्छादित] १ ढाँकना। २ छिपाना। ३ उत्तरीय वस्त्र।

प्रच्छाय—संज्ञा पुं० [सं०] घनी छाया।

प्रच्छालना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

प्रच्यवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षरण। झरना। बहना। रसना। २ गिरना।

प्रच्युत—वि० [सं०] गिरा हुआ। स्थान भ्रष्ट।

प्रच्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने स्थान से गिरने या हटने का भाव।

प्रजक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० पर्यंक] पलग। उ०—धौरे धौरहर पर अमल प्रजक धरि, दूरि लौं बगारि दीन्ह्यो चाँदनी सुछंद कौं। —रससारांश।

प्रजत(पु)†—अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रजनन—संज्ञा पुं० [सं०] १ संतान उत्पन्न करने का काम। २ जन्म। ३ दाई का काम। धात्री कर्म (सुश्रुत)।

प्रजरना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रत्य० प्र+ हिं० जरना] अच्छी तरह जलना।

प्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संतान। औलाद। २ वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो। रिआया। रैयत।

प्रजातंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा ही समय समय पर शासन के लिये अपने प्रतिनिधि चुन लेती है। २ प्रजा द्वारा अपने ऊपर शासन करने की वह रीति जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रजा ही शासक चुनती हैं। ३ प्रजा द्वारा चुने हुए लोगों से किया जानेवाला शासन।

प्रजातंत्री—वि० [सं०] १. प्रजातंत्र संबंधी। २. प्रजातंत्र के सिद्धांतों के अनुसार।

प्रजाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसको बालक उत्पन्न हुआ हो। प्रसूतिका। जच्चा।

प्रजापति—संज्ञा पुं० [सं०] १ सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला। सृष्टिकर्ता। २ ब्रह्मा के पुत्र और सृष्टिकर्ता देवता (वेद)। ३ पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के दस (कहीं कहीं २१ भी) पुत्रों में से कोई। इनके नाम मरीचि, अत्रि, अंगिरा पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद (अन्यत्र ब्रह्मा, सूर्य, मनु, दक्ष, भृगु, धर्म, यम, मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, परमेष्ठी, विवस्वान, सोम, कर्दम, क्रोध, अर्वाक और क्रीत) हैं। ४ पिता। बाप। ५ घर का मालिक या बड़ा। ६ दे० "प्राजापत्य"

प्रजारना(पु)†—क्रि० स० [सं० प्रत्य० प्र+हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना। उ०—देखे जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं "कानन उजार्यो अब नगर प्रजारी है।" —कविता०।

प्रजावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कई बच्चों की माता। २ गर्भवती। ३ बड़ी भौजाई।

प्रजावान्—वि० [सं०] [स्त्री० प्रजावती] जिसके आगे बालबच्चे हों।

प्रजासत्ता—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रजातंत्र"।

प्रजासत्तात्मक—वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें प्रजा या देश के प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राजसत्तात्मक' का उलटा।

प्रजासन—वि० [सं० प्रजाशन] प्रजा को खानेवाला। अत्याचारी। प्रजा को सतानेवाला। उ०—द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहिं मान निगम अनुसासन। —मानस।

प्रजित्—संज्ञा पुं० [सं०] जीतनेवाला। विजेता।

प्रजुरना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] १. प्रज्वलित होना। २ चमकना।

प्रजुलित(पु)—वि० दे० "प्रज्वलित"।

प्रजोग—संज्ञा पुं० दे० "प्रयोग"।

प्रज्झटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "पज्झटिका"।

प्रज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। जानकार।

प्रज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जताने का भाव। २ सूचना। विज्ञप्ति। ३ संकेत। इशारा।

प्रज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अंतर्दृष्टि। अंतर्ज्ञान। २ ज्ञान। ३ सरस्वती। ४ एकाग्रता।

प्रज्ञाचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० प्रज्ञा+चक्षुस्] १ अंतर्दृष्टिवाला। २ ज्ञानी। ३ धृतराष्ट्र। ४ अंधा (व्यंग्य)।

प्रज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १ चैतन्य। २ ज्ञान।

प्रज्वलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।

प्रज्वलित—संज्ञा [सं०] १ जलता हुआ या जला हुआ। धधकता हुआ या धधका हुआ। २ बहुत स्पष्ट।

प्रज्वलिया—संज्ञा पुं० दे० "प्रज्झटिका"।

प्रण—संज्ञा पुं० [सं० पण] किसी बात का अटल निश्चय। प्रतिज्ञा।

प्रणत—वि० [सं०] १ झुका हुआ। २ प्रणाम करता हुआ। ३ नम्र। दीन।

प्रणतपाल—संज्ञा पुं० [सं०] दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला। दीन-रक्षक।

प्रणति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रणाम। दंडवत। २ नम्रता। ३ विनती।

प्रणमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ झुकना। २ प्रणाम करना।

प्रणम्य—वि० [सं०] प्रणाम करने के योग्य।

प्रणय—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रीतियुक्त प्रार्थना। २ प्रेम। ३ विश्वास। भरोसा। ४ निर्वाण। मोक्ष।

प्रणयन—संज्ञा पुं० [सं०] रचना। बनाना।
प्रणयिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रियतमा। प्रेमिका। २ स्त्री। पत्नी।
प्रणयी—संज्ञा पुं० [सं० प्रणयिन्] [स्त्री० प्रणयिनी] १ प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।
प्रणव—संज्ञा पुं० [सं०] १. ओंकार। ओंकार मंत्र। २ परमेश्वर। ३ त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव)।
प्रणवना—क्रि० स० [सं० प्रणमन] प्रणाम करना। नमस्कार करना। उ०—पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना। पर अघ सुनै सहस दस काना॥ —मानस।
प्रणाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिवादन। नमस्कार। दंडवत। २ झुकना। नत होना।
प्रणायक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो मार्ग दिखलाता हो। नेता। २ सेनानायक।
प्रणाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रीति। चाल। प्रथा। २ ढंग। तरीका। कायदा। ३ पानी निकलने का मार्ग। ४ वह छोटा जलमार्ग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता हो। नहर। नाली। ५ बरतन में लगी हुई टोंटी।
प्रणाश—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश। बरबादी। २. मौत। मृत्यु।
प्रणिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ रखा जाना। २ प्रयत्न। ३ समाधि (योग)। ४ अत्यंत भक्ति। ५ ध्यान। चित्त की एकाग्रता।
प्रणिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रार्थना। निवेदन। २ मन की एकाग्रता। ३ तत्परता। ४ भेदिया। गुप्तचर।
प्रणिपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ चरणों पर गिरना। २ विनयपूर्वक समर्पण। ३. प्रणाम।
प्रणीत—वि० [सं०] १ रचित। बनाया हुआ। २. सुधारा हुआ। संशोधित। ३ भेजा हुआ। लाया हुआ। ४ मंत्र से संस्कृत।
 संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र से संस्कार किया हुआ जल या अग्नि।
प्रणेता—संज्ञा पुं० [सं० प्रणेतृ] [स्त्री० प्रणेत्री] रचयिता। बनानेवाला। कर्त्ता।
प्रतंचा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा"।
—च्छ(पु)—वि० दे० "प्रत्यक्ष"।
प्रतच्छि—वि० [सं० प्रत्यक्ष] प्रत्यक्ष। उ०—प्रतच्छि बिरह के सुनि अब लच्छिन। चकित होत तहँ बड़े विचच्छिन। —नंददास०।
प्रतति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लंबाई-चौड़ाई। विस्तार। २ लंबीचौड़ी और बड़ी लता।
प्रतन—वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।
प्रतनु—वि० [सं०] १ हलके या छोटे शरीरवाला। २. दुबला पतला। ३ सूक्ष्म।
प्रतप्त—वि० [सं०] तपा हुआ।
प्रतर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] १ काशी का एक प्रख्यात राजा जो राजा दिवोदास का पुत्र था। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ विष्णु।
प्रतल—संज्ञा पुं० [सं०] पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रताप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पौरुष। मरदानगी। वीरता। २ बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शांत रहें। तेज। इकबाल। प्रभुत्व। ३ ताप। गरमी।
प्रतापी—वि० [सं० प्रतापिन्] १. जिसका प्रताप हो। इकबालमंद। २. सतानेवाला।
प्रतारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वंचक। ठग। २ धूर्त। चालाक।
प्रतारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंचना। ठगी।
प्रतारित—वि० [सं०] जो ठगा गया हो। जिसे धोखा दिया गया हो।
प्रतिंचा—संज्ञा स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी। ज्या। चिल्ला।
प्रति—अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत, जैसे, प्रतिकूल। सामने, जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में, जैसे, प्रत्युपकार। हर एक। उ०—नित नूतन सब बाढ़त जाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई॥ —मानस। समान, जैसे, प्रतिनिधि। मुकाबले का, जैसे, प्रतिवादी।
 अव्य० १ सामने। मुकाबिले में। २ ओर। तरफ।
 संज्ञा स्त्री० [अं०] नकल। कापी (अं०)।
प्रतिउत्तर—संज्ञा पुं० दे० "प्रत्युत्तर"। उ०—वक्र उक्ति धनु वचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस। प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहु, काढ़त भट दससीस। —मानस।
प्रतिकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेश। भूषा। २ बदला। प्रतिकार। ३ किसी कार्य के फलस्वरूप होनेवाला कार्य। किसी काम के जवाब में किया जानेवाला काम। ४ शरीर की सजावट।
प्रतिकार—संज्ञा पुं० [सं०] बदला। जवाब।
प्रतिकूल—वि० [सं०] [संज्ञा प्रतिकूलता] जो अनुकूल न हो। खिलाफ। उलटा। विपरीत।
प्रतिकूलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिकूल होने का भाव या क्रिया। विरोध। विपरीतता।
प्रतिकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। तसवीर। चित्र। ३ प्रतिबिंब। छाया। ४ बदला। प्रतिकार।
प्रतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकूल कार्य। विपरीत आचार।
प्रतिक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिकार। बदला। २ एक ओर कोई क्रिया होने पर परिणाम स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया।
प्रतिक्रियावाद—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिक्रिया+वाद] सुधार या विकास के विपरीत जानेवाला सिद्धांत।
प्रतिगृहीत—वि० [सं०] जो ले लिया गया हो। गृहीत।
प्रतिगृहीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। धर्मपत्नी।
प्रतिग्या(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।
प्रतिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वीकार। ग्रहण। २. उस दान का लेना जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। ३ पकड़ना। अधिकार में लाना। ४ पाणिग्रहण। विवाह। ५ ग्रहण। उपराग। ६ स्वागत। ७ विरोध। ८ जवाब। उत्तर।
प्रतिग्रही—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रतिग्राही"।
प्रतिग्रहीता—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रतिग्राही"।
प्रतिग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रतिग्राही"।
प्रतिग्राही—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दान ले। उ०—तुलसी दान जो देत है जल में हाथ उठाय। प्रतिग्राही जीवै नहीं, दाता नरकै जाय। —दोहा०।
प्रतिघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर

किया जाय। २. टक्कर। ३. रुकावट। बाधा।

प्रतिघातक—वि० [सं०] प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिघातन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जान से मार डालना। हत्या। वध। २. बाधा। रुकावट।

प्रतिघाती—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिघातिन्] [स्त्री० प्रतिघातिनी] १ शत्रु। वैरी। दुश्मन। २ मुकाबला करनेवाला। ३. टक्कर मारनेवाला। ढकेलनेवाला।

प्रतिच्छवि—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिबिंब। परछाईं।

प्रतिच्छा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा"।

प्रतिच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परछाईं। २ चित्र। तसवीर। प्रतिबिंब।

प्रतिच्छायित—वि० [सं०] १ जिसकी परछाईं पड़ी हो। २ जिसपर किसी की परछाईं पड़ी हो।

प्रतिच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] बाधा। रुकावट।

प्रतिछाँईं, प्रतिछाँह—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया २"।

प्रतिछाया—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया"।

प्रतिज्ञांतर—संज्ञा पुं० [सं०] तर्क में एक निग्रहस्थान।

प्रतिज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई काम करने या न करने आदि के संबंध में दृढ़ निश्चय। प्रण। संकल्प। २ शपथ। सौगंध। कसम। ३ अभियोग। दावा। ४ न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञात—वि० [सं०] १. जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो। स्वीकृत। २ साध्य।

प्रतिज्ञापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर कोई प्रतिज्ञा या शर्त लिखी गई हो। इकरारनामा।

प्रतिज्ञाहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तर्क में एक प्रकार का निग्रहस्थान।

प्रतिज्ञेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो प्रतिज्ञा करने में समर्थ हो। २ स्तुति या प्रतिज्ञा करनेवाला।

प्रतितंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक सिद्धांत के विरुद्ध दूसरे सिद्धांत का शास्त्र। विरुद्ध शास्त्र।

प्रतिदत्त—वि० [सं०] १ लौटाया हुआ। २ बदले में दिया हुआ।

प्रतिदान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिदत्त] १. लौटाना। वापस करना। २. परिवर्तन। बदला। विनिमय।

प्रतिद्वंद्व—संज्ञा पुं० [सं०] बराबरीवालों का विरोध। टक्कर।

प्रतिद्वंद्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बराबर वालों की लड़ाई या विरोध।

प्रतिद्वंद्वी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिद्वंद्विन्] [भाव० प्रतिद्वंद्विता] मुकाबले का लड़नेवाला। विपक्षी। विरोधी। शत्रु।

प्रतिध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी बाधक पदार्थ से टकराकर लौटने के कारण अपनी उत्पत्ति के स्थान पर फिर से सुनाई पड़नेवाला शब्द। प्रतिशब्द। गूँज। २ शब्द से व्याप्त होना। गूँजना। ३ दूसरों के विचारों आदि का दोहराया जाना।

प्रतिध्वनित—वि० [सं०] प्रतिध्वनि से व्याप्त। गूँजा हुआ।

प्रतिना—संज्ञा स्त्री० दे० "पृतना"।

प्रतिनाद—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिध्वनि।

प्रतिनायक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटकों और काव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।

प्रतिनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० प्रतिनिधित्व] १ वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त हो। २. वह जिसके द्वारा किसी जाति या वर्ग के गुण स्वरूप आदि का अनुमान हो सके। ३ वह जो किसी दूसरे का काम दे। प्रतिमूर्ति। अनुकृति। स्थानापन्न।

प्रतिनिधित्व—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव।

प्रतिनिधि सत्तात्मक—वि० [सं०] (वह शासनप्रणाली) जिसमें प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राज सत्तात्मक' का उलटा।

प्रतिनिर्यातन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।

प्रतिपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रु। वैरी। २ प्रतिवादी। ३. समानता। ४ विरुद्ध दल। ५ दूसरे पक्ष की बात। विरुद्ध पक्ष।

प्रतिपक्षी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिपक्षिन्] विपक्षी। विरोधी। शत्रु।

प्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति। पाना। २ ज्ञान। ३ अनुमान। ४ देना। दान। ५ कार्यरूप में लाना। ६ प्रतिपादन। निरूपण। ७ जी में बैठाना। ८ मानना। स्वीकृति।

प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपद। परिवा।

प्रतिपन्न—वि० [सं०] १ अवगत। जाना हुआ। २ अंगीकृत। स्वीकृत। ३. प्रमाणित। ४ साधित। निश्चित। ५. भरापूरा। ६. शरणागत। ७ प्राप्त। ८ प्रचंड।

प्रतिपादक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रतिपादिका] १ प्रतिपादन करनेवाला। अच्छी तरह समझाने या कहनेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला। ३ निर्वाह करनेवाला।

प्रतिपादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिपादित] १ अच्छी तरह समझाना। प्रतिपत्ति। २ किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन। ३ प्रमाण। सबूत।

प्रतिपादित—वि० [सं०] १. जो अच्छी तरह कह या समझा दिया गया हो। २ निर्धारित। निरूपित। ३ प्रदत्त।

प्रतिपाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] जिसका प्रतिपादन किया जा सके। जिसका अच्छी तरह से ज्ञान कराया जा सके। उ०—जेहि महँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।—मानस।

प्रतिपार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिपाल"। उ०—ध्रुव जन, प्रह्लाद रटत, कुंती के कुँवर रटत द्रुपद सुता रटत नाथ, नाथन प्रतिपार री।—नंददास०।

प्रतिपाल, प्रतिपालक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रतिपालिका] १ पालन पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक। २ राजा।

प्रतिपारना(पु)—दे० "प्रतिपालना"।

प्रतिपालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिपालित] १ पालन करने की क्रिया या भाव। २ रक्षण। निर्वाह। तामील।

प्रतिपालना(पु)†—क्रि० स० [सं० प्रतिपालन] १ पालन करना। उ०—एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानौं कछु और कबारू।—मानस। २ रक्षा करना। बचाना। उ०—आपु गए अरु तिन्हहूँ घालहिं। जे कहुँ सन्मारग प्रतिपालहिं।—मानस। तामील करना। मानना। पूरा करना। उ०—प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं।—मानस।
संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिपालन"।

प्रतिफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिणाम। नतीजा। २ बदला। ३ प्रतिबिंब। छाया।

प्रतिफलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जो

किसी वस्तु का प्रतिबिंब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो।

प्रतिफलित—वि० [सं०] १. जिसे प्रतिफल या बदला मिला हो। २ प्रतिबिंबित।

प्रतिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिबद्ध] १ रोक। रुकावट। अटकाव। २ विघ्न। बाधा। ३ बंदोबस्त। प्रबंध।

प्रतिबंधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोकनेवाला। २. बाधा डालनेवाला।

प्रतिबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बंधु के समान हो।

प्रतिबद्ध—वि० [सं०] १. जिसमें कोई प्रतिबंध हो। २ बँधा हुआ। ३ बाधित। ४ नियंत्रित।

प्रतिबल—वि० [सं०] बल में समान।

प्रतिबिंब—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं। छाया। उ०—किलकत झुकि झाँकत प्रतिबिंबनि। देत परम सुख पितु अरु अंबनि।—गीता०। २. मूर्ति। प्रतिमा। ३. चित्र। तसवीर। ४ शीशा। दर्पण। उ०—हँसे हँसत, अनरसे अनरसत, प्रतिबिंबनि ज्यों झाँई।—गीता०। ५ झलक।

प्रतिबिंबवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है।

प्रतिबोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ जागरण। २ ज्ञान।

प्रतिभट—संज्ञा पुं० [सं० प्रति+भट] जोड़ का शूर। बराबरी या मुकाबिले का वीर। उ०—अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता।—मानस।

प्रतिभय—वि० [सं०] भयंकर।

संज्ञा पुं० भय। डर।

प्रतिभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूझबूझ। बुद्धि। समझ। २ वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है। असाधारण बुद्धिबल। ३ दीप्ति। चमक (क्व०)।

प्रतिभात—वि० [सं०] १ चमकता हुआ। प्रकाशित। प्रदीप्त। २ जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। ३ प्रतीत। ४ ज्ञात।

प्रतिभान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धि। समझ। २ चमक। प्रभा।

प्रतिभान्वित—वि० [सं०] प्रतिभावाला।

प्रतिभावान्—वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।

प्रतिभाशाली—वि० [सं०] दे० "प्रतिभावान्।"

प्रतिभू—संज्ञा पुं० [सं०] जमानत में पड़नेवाला। जामिन।

प्रतिमौ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिमा ?] शरीर का बल और तेज।

प्रतिम—अव्य० [सं०] समान। सदृश (यौगिक शब्दों के अंत में), जैसे, मेघप्रतिम।

प्रतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी की आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति। अनुकृति। २ मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति। ३ तस्वीर। चित्र। ४. प्रतिबिंब। छाया। ५ एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी और पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है; जैसे, हौं जीवित हौं जगत में अलि याही आधार। प्रानपिया उनिहार गह ननदी बदन अधार॥ इसमें विदेश गए पति के अभाव में उसकी बहन का उससे मिलता जुलता मुँह ही आधार बना है इसलिये प्रतिमा अलंकार है।

प्रतिमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ समानता। बराबरी। २ दृष्टांत। उदाहरण। नमूना। ३ प्रतिबिंब। परछाहीं।

प्रतिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक की पाँच अंगसंधियों में से एक। २ किसी वस्तु का पिछला भाग।

प्रतिमूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमा।

प्रतिमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्षप्राप्ति।

प्रतिमोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष की प्राप्ति।

प्रतिमोचन—संज्ञा पुं० [सं०] बंधन से छुटकारा। खोलना।

प्रतियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ विरुद्ध संयोग। २ शत्रुता। विरोध।

प्रतियोगिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिद्वंद्विता। होड़। चढ़ा ऊपरी। मुकाबला। विरोध।

प्रतियोगी—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतियोगिता या होड़ करनेवाला। २ हिस्सेदार। शरीक। ३ शत्रु। विरोधी। वैरी। ४ सहायक। मददगार। ५ बराबर का। जोड़ का।

प्रतियोद्धा—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। विरोधी। २ बराबर का लड़नेवाला।

प्रतिरुद्ध—वि० [सं०] १. अवरुद्ध। रुका हुआ। २. फँसा या अँटका हुआ।

प्रतिरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतिमा। मूर्ति। २ तसवीर। चित्र। ३. प्रतिनिधि।

प्रतिरोध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिरोधक] १ विरोध। २ रुकावट। रोक। बाधा।

प्रतिलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] हर एक लाभ या प्राप्ति। एक लाभ के बाद दूसरा। उ०—सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई। नित नूतन सब बाढ़त जाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई।—मानस।

प्रतिलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लेख की नकल। किसी लिखी हुई चीज की नकल।

प्रतिलोम—वि० [सं०] १ प्रतिकूल। विपरीत। २ जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। अनुलोम का उलटा। विलोम। ३ नीच।

प्रतिलोम विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

प्रतिवचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तर (जवाब)। २ प्रतिध्वनि।

प्रतिवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिवर्तित] १ चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना। २. लौट आना।

प्रतिवस्तूपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग अलग वाक्यों में किया जाय, जैसे, सोहत भानुप्रताप सों, लसत चाप सों शूर। यहाँ उपमान वाक्य (पूर्वार्ध में) 'सोहत' और उपमेय वाक्य (उत्तरार्ध में) "लसत" एक ही साधारण धर्म दो शब्दों से व्यक्त किया गया है।

प्रतिवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रतिवचन"।

प्रतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कथन जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिये हो। विरोध। खंडन। २ विवाद। बहस। ३ उत्तर। जवाब।

प्रतिवादी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवादिन्] १ प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २ वह जो वादी की बात का उत्तर दे। प्रतिपक्षी (अँ० डिफेंडेंट)।

प्रतिवास—संज्ञा पुं० [स०] १ पड़ोस। समीप का निवास। २ सुगंध। खुशबू।
प्रतिवासी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवासिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।
प्रतिविधान—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विधान के मुकाबिले में किया जानेवाला विधान। प्रतीकार।
प्रतिवेश—संज्ञा पुं० [स०] १ पड़ोस। २ पड़ोस का घर।
प्रतिवेशी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवेशिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।
प्रतिशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतिध्वनि। २ पर्यायवाची शब्द। समानार्थक शब्द।
प्रतिशोध—संज्ञा पुं० [स० प्रति+शोध] वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिये किया जाय। बदला।
प्रतिश्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ जुकाम। २ पीनस रोग।
प्रतिश्रुति—संज्ञा स्त्री० [स०] [वि० प्रतिश्रुत] १ प्रतिध्वनि। २ प्रतीक्षा। ३ मजूरी। स्वीकृति। रजामंदी।
प्रतिषेध—संज्ञा पुं० [स०] [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। खंडन। २ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अंतर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले, जैसे, सिय कंकन को छोरिबो धनुष तोरिबो नाहिं। यहाँ विशेष अर्थ है कि आप धनुष तोड़ने में वीर हो सकते हैं पर वह वीरता कंकण खोलने में काम न देगी।
प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ मानमर्यादा गौरव। २ आदर। इज्जत। ३ देवप्रतिमा की स्थापना। ४ कीर्ति। यश। ५ यज्ञ की समाप्ति। ६ व्रत का उद्यापन। ७ एक प्रकार का छंद। ८ चार वर्णों का वृत्त।
प्रतिष्ठान—संज्ञा पुं० [स०] १ स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना। बैठाना। २ देवमूर्ति की स्थापना। ३ जड़। मूल। ४ पदवी। ५ स्थान। जगह। ६ व्रत आदि की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। उद्यापन। ७ दे० "प्रतिष्ठापन"।
प्रतिष्ठानपुर—संज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन नगर जो गंगा यमुना के संगम पर वर्तमान भूसी नामक स्थान के आसपास था। कहते हैं कि चंद्रवंश के पहले राजा पुरुरवा की राजधानी यहीं थी। २ गोदावरी के तट का एक प्राचीन नगर जिसके बारे में कहा जाता है कि शालिवाहन की राजधानी यहीं थी।
प्रतिष्ठापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जानेवाला पत्र। सम्मानपत्र।
प्रतिष्ठापन—संज्ञा पुं० [स०] देवता आदि की मूर्ति की स्थापना।
प्रतिष्ठावान्—वि० [स०] दे० "प्रतिष्ठित"।
प्रतिष्ठित—वि० [स०] १ जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। आदरप्राप्त। इज्जतदार। २ जो स्थापित किया गया हो।
प्रतिसारण—संज्ञा पुं० [स०] १. दूर हटाना। अलग करना।
प्रतिसारणीय—वि० [सं०] हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाने के योग्य।
प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री० [स०] किसी काम में दूसरे की उन्नति देखकर स्वयं उससे अधिक उन्नत होने का उत्साह या उद्योग। होड़। चढ़ा ऊपरी।
प्रतिस्पर्द्धी—संज्ञा पुं० [स० प्रतिस्पर्द्धिन्] वह जो प्रतिस्पर्द्धा करे। मुकाबला या बराबरी करनेवाला।
प्रतिहत—वि० [सं०] १ अवरुद्ध। रुका हुआ। २ गिरा हुआ। ३ निराश ४ क्षीण। उ०—सो प्रगट तनु जर्जर जरावस व्याधि सूल सतावई। सिरकंप, इंद्रियशक्ति प्रतिहत वचन काहु न भावई। —विनय०। ५ जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। चोट खाया हुआ। नष्ट।
प्रतिहार—संज्ञा पुं० [स०] १ द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २ द्वार। दरवाजा। ३ प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। ४ चोबदार। नकीब।
प्रतिहारी—संज्ञा स्त्री० [स०] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। द्वाररक्षक।
प्रतिहिंसा—संज्ञा स्त्री० [स०] वैर चुकाना। बदला लेना।
प्रतीक—संज्ञा पुं० [स०] १ पता। चिह्न। निशान। २ आकृति। रूप। सूरत। ३ मुख। मुँह। ४ प्रतिरूप। स्थानापन्न वस्तु। ५ प्रतिमा। मूर्ति। ६ किसी शब्द, संख्या, नाम, गुण या सिद्धांत आदि का सूचक चिह्न। (अ० सिंबल)।
प्रतीकार—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकार। बदला। २ इलाज। चिकित्सा।
प्रतीकोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी विशेष पदार्थ में ब्रह्म की भावना करके उसे पूजना और यह मानना कि हम उसी ब्रह्म को पूज रहे हैं।
प्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।
प्रतीक्ष्य—वि० [स०] १. प्रतीक्षा करने योग्य। २ जिसकी प्रतीक्षा की जाय।
प्रतीघात—संज्ञा पुं० [स०] १ वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय। २ वह आघात जो एक आघात लगने पर आपसे आप उत्पन्न हो। टक्कर। ३. रुकावट। बाधा।
प्रतीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा।
प्रतीच्य—वि० [स०] पश्चिमी।
प्रतीत—वि० [स०] १ ज्ञात। विदित। जाना हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर। ३. प्रसन्न। खुश।
प्रतीति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. ज्ञान। जानकारी। २ निश्चय। विश्वास। उ०—प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहौं प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥ —मानस। ३ प्रसन्नता। आनंद। ४ प्रसिद्धि। ख्याति। ५ आदर।
प्रतीप—संज्ञा पुं० [स०] १ प्रतिकूल घटना। आशा के विरुद्ध फल। २ वह अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार वर्णन करते हैं, जैसे, (क) पायँन से गुललाला जयादल पुंज बँधूक प्रभा बिथरैहैं। मैथिली आनन से अरविंद कलाधर आरसी जानि परै हैं। (ख) पाहन जिय जनि गरब धरु हौं ही कठिन अपार। चित दुर्जन के देखिए तोसे लाख हजार। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. विमुख।
प्रतीयमान—वि० [सं०] १ जान पड़ता हुआ। २ ध्वनि या व्यंग्य द्वारा जाना जाता हुआ।
प्रतीहार—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहार"।
प्रतीहारी—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहारी"।
प्रतुद—संज्ञा पुं० [स०] वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।
प्रतोद—संज्ञा पुं० [स०] १ चाबुक। कोड़ा। २ अंकुश।
प्रतोली—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चौड़ी सड़क। शाहराह। २ गली। कूचा। ३. दुर्ग का वह द्वार जो नगर की ओर हो।

प्रत्न—वि० [सं०] पुराना । प्राचीन ।

प्रत्नतत्व—संज्ञा पुं० दे० "पुरातत्व" ।

प्रत्यंचा—संज्ञा स्त्री० [सं० पतचिका] धनुष की डोरी जिसमें लगाकर बाण छोड़ा जाता है । चिल्ला ।

प्रत्यक्ष—वि० [सं०] [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके । जो आँखों के सामने हो । २ जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके । परोक्ष का उलटा ।

संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक ।

क्रि० वि० आँखों के आगे । सामने ।

प्रत्यक्षदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षदर्शिन्] १ वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो । २ साक्षी । गवाह ।

प्रत्यक्षवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें केवल प्रत्यक्ष को ही प्रधान मानते हैं ।

प्रत्यक्षवादी—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने ।

प्रत्यक्षीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान करना या कराना । आँखों से दिखला देना । इंद्रिय द्वारा ज्ञान कराना ।

प्रत्यक्षीभूत—वि० [सं०] जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हुआ हो । जो प्रत्यक्ष हुआ हो ।

प्रत्यगात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] व्यापक ब्रह्म । परमेश्वर ।

प्रत्यग्र—वि० [सं०] नया । ताजा ।

प्रत्यनीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अहित का किया जाना वर्णन किया जाय , जैसे, (क) तो मुख छबि सों हारि जग भयो कलंक समेत । सरद इंदु अरबिंद मुख, अरबिंदन दुख देत ॥ (ख) अपने अँग के जानि कै यौवन नृपति प्रवीन । स्तन, मन, नैन, नितंब को बड़ो इजाफा कीन ॥ (ग) तैं जीत्यो निज रूप तें मदन बैर यह मान । बेधत तुव अनुरागिनी, इक सँग पाँचौ बान ॥ २ शत्रु । दुश्मन । ३ प्रतिपक्षी । विरोधी । ४ प्रतिवादी ।

प्रत्यपकार—संज्ञा पुं० [सं०] अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार ।

प्रत्यभिज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके सदृश किसी अन्य वस्तु को, फिर से देखने पर हो । स्मृति की सहायता से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान । २ वह अभेद ज्ञान जिसके अनुसार ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक ही माने जाते हैं ।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] माहेश्वर सम्प्रदाय का एक दर्शन जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर हैं और वही जड़ चेतन सबका कारण है । इस दर्शन में मुक्ति के लिये केवल इस प्रतिभिज्ञा या ज्ञान की आवश्यकता है कि ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक ही हैं और महेश्वर ही ज्ञाता और ज्ञान दोनों है । जीवात्मा में परमात्मा का प्रकाश होने पर भी जब तक यह ज्ञान न हो जाय कि ईश्वर के गुण मुझमें भी हैं तब तक मुक्ति नहीं हो सकती ।

प्रत्यभिज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] सदृश वस्तु को देखकर किसी देखी हुई वस्तु का स्मरण हो आना । स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान ।

प्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्वास । एतबार । २ प्रमाण । सबूत । ३ विचार । खयाल । ४ बुद्धि । समझ । ५ व्याख्या । शरह । ६ कारण । हेतु । ७ आवश्यकता । जरूरत । ८ प्रख्याति । प्रसिद्धि । लक्षण । ९ निर्णय । फैसला । १० समति । राय । ११ चिह्न । १२ वे नौ रीतियाँ जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या जानी जाय (छंद शास्त्र) । १३ व्याकरण में वह अक्षर या अक्षरसमूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से, लगाया जाय , जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है ।

प्रत्यवाय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रत्यवायी] १ कमी । ह्रास । २ उलटापन । विरोध । ३ प्रतीप । व्यवहार या आचरण । ४ विफलता । झुँझलाहट । ५ वह पाप या दुष्कर्म जो शास्त्रों में बताए नित्यकर्म के न करने से होता है । ६ उलटफेर । भारी परिवर्तन । ७ जो नहीं है उसका होना या जो है उसका विनाश (भगवद्गीता) ।

प्रत्याख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंडन । २ निराकरण । ३ निरादरपूर्वक लौटाना । ४ ग्रहण या मान्य न करना ।

प्रत्यागत—वि० [सं०] जो लौट आया हो ।

प्रत्यागमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लौट आना । वापसी । २. फिर से आना ।

प्रत्याघात—संज्ञा पुं० [सं०] चोट के बदले की चोट । टक्कर ।

प्रत्यालीढ़—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष चलाने वालों के बैठने का एक प्रकार । बायाँ पैर आगे बढ़ाकर और दाहिना पीछे खींचकर बैठने का ढंग ।

प्रत्यावर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] लौट आना ।

प्रत्याशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रत्याशित] आशा । उम्मेद ।

प्रत्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक अंग जिसमें इंद्रियों को विषयों से हटाकर चित्त का निरोध किया जाता है । इंद्रियनिग्रह ।

प्रत्युत—अव्य० [सं०] बल्कि । वरन् । इसके विरुद्ध ।

प्रत्युत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर । जवाब का जवाब ।

प्रत्युत्पन्न—वि० [सं०] १ किसी परिस्थिति के अनुसार तुरत उत्पन्न होनेवाला । तात्कालिक । २ उपस्थित । सदा प्रस्तुत । तत्पर ।

यौ०—प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले । तत्परबुद्धिवाला ।

प्रत्युपकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय ।

प्रत्यूष—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात । तड़का ।

प्रत्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] बाधा । विघ्न । उ०—कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन विवेक । होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक । —मानस ।

प्रत्येक—वि० [सं०] समूह अथवा बहुतों में से हर एक । अलग अलग ।

प्रथम—वि० [सं०] १ जो गिनती में सबसे पहले आवे । पहला । अव्वल । २ सर्वश्रेष्ठ । सबसे अच्छा ।

क्रि० वि० [सं०] पहले । पेश्तर । आगे ।

प्रथम कारक—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में "कर्ता" (कारक) ।

प्रथमत —क्रि० वि० [सं०] पहले से । सबसे पहले ।

प्रथम पुरुष—संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष" ।

प्रथमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा ।

शराव (तांत्रिक)। २ व्याकरण का कर्ता कारक।

प्रथमी—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रीति। रिवाज। चाल। प्रणाली। नियम।

प्रथित—वि० [सं०] [स्त्री० प्रथिता] १ प्रसिद्ध। मशहूर। २ लंबा चौड़ा। विस्तृत।

प्रथी—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथु—संज्ञा पुं० दे० "पृथु"।

प्रद—वि० [सं०] देनेवाला। जो दे। दाता (यौगिक में), जैसे, आनंदप्रद।

प्रदक्षिणा—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को दाहिनी ओर कर आदर या भक्ति से उसके चारों ओर घूमना। २ देवमूर्ति, मंदिर आदि के चारों ओर घूमना। ३ परिक्रमा। फेरी।

वि० [सं०] १ दाहिनी ओर स्थित। २ शुभ। अनुकूल। ३ समर्थ। योग्य।

प्रदच्छिणा—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण"।

प्रदच्छिन—(पु)संज्ञा पुं० [सं० प्रदक्षिण] प्रदक्षिण। परिक्रमा। उ०—भई प्रतीति भरे मुद भारी। देहिं प्रदच्छिन नर अरु नारी।—नंददास०।

प्रदच्छिना—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रदक्षिणा] दे० "प्रदक्षिणा"। उ०—सिय सुधि सब कही नख सिख निरखि निरखि दोउ भाइ। दै दै प्रदच्छिना करति प्रनाम न प्रेम अघाइ॥—गीता०।

प्रदत्त—वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदर्शिका] १ दिखानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २ दर्शक। ३ गुरु।

प्रदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिखलाने का काम। २ दिखावा। आडंबर। ३ दे० "प्रदर्शनी"।

प्रदर्शनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीजें लोगों को दिखाने के लिये रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदर्शित—वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

प्रदाता—वि० [सं० प्रदातृ] दाता। देनेवाला।

प्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देने की क्रिया। २ दान। बखशिश। ३ विवाह। शादी।

प्रदायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

प्रदायी—संज्ञा पुं० दे० "प्रदायक"।

प्रदाह—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

प्रदीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीपक। चिराग। २ रोशनी। प्रकाश।

प्रदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

प्रदीपति(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीप्ति"।

प्रदीपन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उजाला करना। २ उज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्त—वि० [सं०] १ जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्। १ उज्वल। चमकीला।

प्रदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोशनी। प्रकाश। २ चमक। आभा।

प्रदुमन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।

प्रदेय—वि० [सं०] प्रदान करने के योग्य।

प्रदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शासन की सुविधा के लिये किए जानेवाले राजनीतिक विभाजन के अनुसार किसी देश के भागों में से कोई प्रांत। सूबा। राज्य। २ स्थान। जगह। मुकाम। ३ अंग। अवयव, जैसे, कंठप्रदेश, हृदयप्रदेश आदि।

प्रदोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ संध्याकाल। सूर्य के अस्त होने का समय। २ सायंकाल का हलका अँधेरा। ३ त्रयोदशी का व्रत जिसमें दिन भर उपवास करके संध्या समय शिव का पूजन करने के बाद भोजन करते हैं। ४ बड़ा दोष। भारी अपराध।

प्रद्युम्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। कंदर्प। २ श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। आभा। चमक।

प्रद्योतन—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

प्रद्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुता।

प्रधर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपमान। २ बलात्कार। ३ आक्रमण।

प्रधर्षित—वि० [सं०] १ अपमानित। २ जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। ३ वह जिसपर आक्रमण किया गया हो।

प्रधान—वि० [सं०] १ मुख्य। खास। २. सर्वोच्च। श्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ मुखिया। सरदार। नेता। २. दृश्य जगत का मूल कारण। उपादान कारण। मूल प्रकृति। ३. सभापति। ४. किसी संस्था या विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी या अध्यक्ष।

प्रधानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य या पद।

प्रधानी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रधान+ई (प्रत्य०)] प्रधान का पद या कर्म।

प्रधूपित—वि० [सं०] १ प्रतप्त। तपाया हुआ। २ प्रज्वलित। ३ दीप्त। चमकता हुआ। ४ पीड़ित। सतप्त।

प्रध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। विनाश।

प्रन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "प्रण"।

प्रनति(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति"।

प्रनवना(पु)†—क्रि० स० दे० "प्रणमना"।

प्रनामी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० प्रणामिन्] प्रणाम करनेवाला। जो प्रणाम करे।

संज्ञा स्त्री० [सं० प्रणाम+हिं० ई (प्रत्य०)] वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।

प्रनिपात(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "प्रणिपात"।

प्रपंच—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुनिया का जंजाल। सांसारिक व्यवहारों का विस्तार। उ०—एहि जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंचु वियोगी॥—मानस। २ आडंबर। ढोंग। छल धोखा। उ०—रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई॥—मानस। ३ विस्तार। फैलाव। ४ झगड़ा। झमेला। बखेड़ा। झंझट। उ०—देहु कि लेहु अजस करि नाहीं। मोहिं न बहुत प्रपंच सुहाहीं॥—मानस। ५ संसार। सृष्टि। उ०—कहहिं वेद इतिहास पुराना। विधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥—मानस।

प्रपंची—वि० [सं० प्रपंचिन्] १ प्रपंच रचनेवाला। २ छली। कपटी। ढोंगी। उ०—दूरि कीजै द्वार तें लबार लालची प्रपंची, सुधा सो सलिल सूकरी ज्यों गहडोरिहौं।—विनय०।

प्रपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनन्य शरणागत होने की भावना। अनन्य भक्ति।

प्रपन्न—वि० [सं०] १ प्राप्त। आया हुआ। २ शरणागत। आश्रित।

प्रपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौसरा। प्याऊ।

प्रपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद के अध्यायों का एक अंश। २. वैदिक ग्रंथों का एक अंश।

प्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. एकबारगी नीचे गिरना। २ ऊँचे से गिरती हुई जलधारा। झरना। दरी। ३ पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो। खड़ा किनारा जहाँ से गिरने पर कोई वस्तु बीच में न रुक सके।

प्रपानक—संज्ञा पुं० [सं०] फलों के गूदे, रस आदि को पानी में घोलकर मिर्च, नमक, चीनी आदि देकर बनाई हुई पीने की वस्तु। पन्ना।

प्रपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।

प्रपीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।

प्रपुंज—संज्ञा पुं० [सं०] भारी झुंड।

प्रपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता। पौत्र।

प्रपूर्ण—वि० [सं०] [संज्ञा प्रपूर्णता] अच्छी तरह भरा हुआ।

प्रपौत्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपौत्री] परपोता। पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

प्रफुड़ना—क्रि० अ० दे० "प्रफुलना"।

प्रफुलनाⓅ—क्रि० अ० [सं० प्रफुल्ल] "फूलना"। खिलना।

प्रफुलाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रफुल्ल] १. कुमुदिनी। कुँई। २. कमलिनी। कमल।

प्रफुलितⓅ—वि० [हिं० प्रफुल्लित] १. खिला हुआ। कुसुमित। उ०—मुख देखत शोभा एक आवत मनो राजीव प्रकाश। अरुण आगमन देखि कै प्रफुलित भए हुलास।—सूर०। २ प्रफुल्ल। आनंदित।

प्रफुल्ल—वि० [सं०] १. खिला हुआ। २ जिसमें फूल लगे हों। ३ खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।

प्रफुल्लित—वि० [सं० प्रफुल्ल का अशुद्ध रूप] दे० "प्रफुल्ल"।

प्रबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंदोबस्त। इंतजाम। २. बंधन। योजना। ३ बँधा हुआ सिलसिला। ४ एक दूसरे से संबद्ध वाक्यरचना का विस्तार। ५ सिलसिलेवार गद्य या पद्य में की हुई रचना। ६ निबंध। लेख। ७ साहित्यिक रचना। ८ काव्य-रचना। उ०—जे प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बालकवि करहीं।—मानस। ९. विभाग। कांड। अध्याय। उ०—सप्त प्रबंध सुभग सोपाना। ज्ञान नयन निरखत मनमाना।—मानस।

प्रबंध कल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐसा प्रबंध जिसमें थोड़ी सी सत्यकथा में बहुत सी बातें ऊपर से मिलाई गई हों। २ प्रबंध रचना। संदर्भ रचना।

प्रबंधकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करनेवाली (समिति)।

प्रबरुⓅ—वि० [सं० प्रबल] प्रचंड। घनघोर। उ०—टूटै नग छूटै बान सिंजित बिरद बोलै, मर्मरन मारू बाजै बाजत प्रबरु है।—शृंगार०।

प्रबल—वि० [सं०] [स्त्री० प्रबला] १. बलवान्। प्रचंड उ०—प्रबल भुजदंड कोदंडधर, तूनवर विसिष, बलमप्रमेय।—विनय०। बहुत बली। २ जोर का। तेज। उग्र। उ०—कबहुँ प्रबल चल मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं। जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं।—मानस। ३ घोर। महान्। उ०—प्रबल अहंकार दुर्घट महीधर, महामोह-गिरिगुहा निबिड़ांधकार।—विनय०।

प्रबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत बलवती।

प्रबुद्ध—वि० [सं०] १ जागा हुआ। २ होश में आया हुआ। ३ पंडित। ज्ञानी। ४ खिला हुआ।

प्रबोध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रबोधक] १ जागना। नींद का टूटना। २ यथार्थ ज्ञान। पूर्ण बोध। ३. ढारस। तसल्ली। दिलासा। ४ चेतावनी।

प्रबोधक—वि० [सं०] जतानेवाला। बतलानेवाला। ज्ञान करानेवाला उ०—अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी।—मानस।

प्रबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जागरण। जागना। २ जगाना। नींद से उठाना। ३ यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४ जताना। ज्ञान देना। ५ सांत्वना।

प्रबोधनाⓅ—क्रि० स० [सं० प्रबोधन] १ जगाना। नींद से उठाना। २ सचेत करना। होशियार करना। ३ समझाना बुझाना। ४ सिखाना। पाठ पढ़ाना। पट्टी पढ़ाना। ५ ढारस देना। तसल्ली देना। उ०—जननी व्याकुल देखि प्रबोधत धीरज करि नीके जदुराई। सूरश्याम को नैकु नहीं डर जनि रोवै, तू जसुमति माई।—सूर०।

प्रबोधिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—वर देहु राम जन तोषकारिणी। सुनि एवमस्तु वद मंजुभाषिणी। सुनंदिनी। मंजुभाषिणी। कोमलालापिनी।

प्रबोधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवोत्थान या कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान सोकर उठते हैं।

प्रभंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रचंड वायु। आँधी। उ०—मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन।—मानस। २. तोड़फोड़। नाश।

प्रभंजनजाया—संज्ञा पुं० [सं० प्रभंजन+जात] वायु से पैदा हुआ व्यक्ति। हनूमान्। उ०—उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजनजाया।—मानस।

प्रभद्रक—संज्ञा पुं० दे० "प्रभद्रिका"।

प्रभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण और रगण रहता है। उ०—निज भुज राघवेंद्र दश शीश ढाइहैं। सुरन अभै किए तुसह औध जाइहैं।

प्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्तिकारण। २ उत्पत्तिस्थान। आकर। ३ जन्म। उत्पत्ति। ४ सृष्टि। संसार। ५ जल का निर्गम स्थान। वह स्थान जहाँ से कोई नदी आदि निकले। उद्गम। ६ पराक्रम। ७ साठ में से एक संवत्सर जब अधिक वृष्टि होती है।

प्रभविष्णु—वि० [सं०] [संज्ञा प्रभविष्णुता] १ प्रभावशाली। २ बलवान्। शक्तिशाली।

प्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकाश। आभा। चमक। २ सूर्य का बिंब। ३ सूर्य की एक पत्नी। ४ एक द्वादशाक्षर का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और दो रगण रहते हैं, जैसे—इत जहँ सियराम, वासा फनी। जग महँ महिमा जु, सोहै घनी॥ मंदाकिनी। चंचलाक्षिका।

प्रभाउⓅ—संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

प्रभाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ चंद्रमा। ३ अग्नि। ४ समुद्र। ५ मदार वृक्ष।

प्रभात—संज्ञा पुं० [सं०] सवेरा। तड़का। प्रात काल।

प्रभातफेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभात+हिं० फेरी] प्रचार आदि के लिये बहुत सवेरे दल बाँधकर आबादी का चक्कर लगाते हुए नारे लगाना तथा गीत गाना।

प्रभाती—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभात] १. एक प्रकार का गीत जो प्रात काल गाया जाता है। २. दातुन। दतधावन।

प्रभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्भव। प्रादुर्भाव। २ सामर्थ्य। शक्ति। ३ असर। उ०—सुकदेव कह्यो सुनो हो राव। जैसो है हरिभक्ति प्रभाव ॥ —सूर०। ४. महिमा। माहात्म्य। ५ इतना मान या अधिकार कि जो बात चाहे, कर या करा सके। साख या दबाव। ६. अत करण को प्रवृत्त करने का गुण। ७ प्रवृत्ति पर होनेवाला फल या परिणाम।

प्रभावक—वि० [सं०] प्रभाव करने या डालनेवाला।

प्रभावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य की पत्नी। २ प्रभाती राग या गीत। ३. शिव के एक गण की वीणा का नाम। तेरह अक्षरों का एक छंद; जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु होता है, जैसे—ती-मास जो, गुण सहिता प्रभावती। साध्वी महा, निज पिय को रिझावती ॥

वि० स्त्री० प्रभाववाली।

प्रभावान्वित—वि० [सं०] जिसपर प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।

प्रभावित—वि० [सं० प्रभाव] जिसपर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभास—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोमतीर्थ।

प्रभासना(पु)—क्रि० अ० [स० प्रभासन] भासित होना। दिखाई पड़ना।

प्रभु—सज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। भगवान। २ स्वामी। मालिक। पति। ३ अधिपति। शासक। नायक। अन्नदाता। ४ श्रेष्ठ पुरुषों का संबोधन। उ०—जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहिं पद पदुम पखारन कहहू ॥ —मानस।

प्रभुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बड़ाई। महत्व। उ०—सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहे बिनु रहा न कोई ॥ —मानस। २ हुकूमत। शासनाधिकार। उ०—नहिं अस कोउ जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥ —मानस। ३. वैभव। ४. साहिबी। मालिकपन।

प्रभुताई—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता"। उ०—विषयी जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोहबस होहिं जनाई ॥ —मानस।

प्रभुत्व—सज्ञा पुं० [सं०] प्रभुता।

प्रभू(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रभु"।

प्रभूत—वि० [सं०] १. प्रचुर। बहुत। २. उन्नत। ३ निकला हुआ। उत्पन्न।

सज्ञा पुं० पचभूत। तत्व।

प्रभृति—अव्य० [सं०] इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेद। विभिन्नता। अतर। २. फोड़कर निकलना।

प्रभेव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रभेद"।

प्रभ्रष्ट—वि० [सं०] १. गिरा हुआ। २ टूटा हुआ।

प्रमत्त—वि० [सं०] [संज्ञा प्रमत्तता] १. मस्त। नशे में चूर। २ पागल। बावला। ३. जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथन या पीड़ित करनेवाला। २ शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद।

प्रमथन—सज्ञा पुं० [सं०] १. मथना। २ दु ख पहुँचाना। ३. वध या नाश करना।

प्रमथनाथ—सज्ञा पुं० [सं०] शिव।

प्रमथित—वि० [सं०] खूब मथा हुआ।

संज्ञा पुं० मट्ठा जिसमें ऊपर से पानी न मिला हो।

प्रमद—सज्ञा पुं० [सं०] १ मतवालापन। २ हर्ष। आनंद।

वि० मत्त। मतवाला।

प्रमदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री। सु दर स्त्री।

प्रमन—वि० [सं० प्रमनस] प्रसन्न। खुश। उ०—कहता प्रति जड़ जगम जीवन। भूले थे अब तक बंधु, प्रमन? —तुलसीदास।

प्रमर्दन—सज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह मलना दलना। २. कुचलना। रौंदना।

सज्ञा पुं० १ विष्णु। २ एक दैत्य।

वि० खूब मर्दन करनेवाला।

प्रमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध बोध। यथार्थ ज्ञान। जैसी बात हो वैसा ही अनुभव (न्याय)। २ चेतना। ३ माप।

प्रमाण—संज्ञा पुं० [स०] १ वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। सबूत। २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। उ०—घन गर्जन दामिनि दमक, धुरवागन धावंत। आयो बरषाकाल अब, ह्वैहै बिरहिनि अंत। ३ सत्यता। सचाई। ४ निश्चय। प्रतीति। यकीन। ५. मर्यादा। मान। आदर। ६. प्रामाणिक बात या वस्तु। मानने की बात। ७ इयत्ता। हद। मान। ८. प्रमाणपत्र।

वि० १. प्रमाणित। चरितार्थ। ठीक घटता हुआ। २. माना जानेवाला। ठीक। ३ बड़ाई आदि में बराबर।

अव्य० पर्यंत। तक।

प्रमाणकोटि—सज्ञा स्त्री० [सं०] प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का वर्ग।

प्रमाणना—क्रि० स० दे० "प्रमानना"।

प्रमाणपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी बात के प्रमाणस्वरूप आधिकारिक पत्र या लेख (अं०) सर्टिफिकेट।

प्रमाणपुरुष—सज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके निर्णय को मानने के लिये दोनों पक्ष के लोग तैयार हों। पंच।

प्रमाणिक—वि० दे० "प्रामाणिक"।

प्रमाणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] 'नगस्वरूपिणी' वृत्त का दूसरा नाम। इसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण, एक लघु और एक गुरु रहता है। उ०—प्रमाणिका हिए गहौ। जुपार भौ लगा चहौ। इसको प्रमाणी भी कहते हैं। इसका दूना पंचचामर छंद कहलाता है।

प्रमाणित—वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध। साबित। निश्चित।

प्रमाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "प्रमाणिका।"

प्रमाता—सज्ञा पुं० [सं० 'प्रमातृ' का एक व० कर्ता] १ वह जिसे प्रमा का ज्ञान हो। २. ज्ञानकर्त्ता आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी।

सज्ञा स्त्री० [सं०] दादी। पिता की माता।

प्रमाद—सज्ञा पुं० [सं०] १ भूल। चूक। भ्रम। भ्रांति। २ अंत करण की दुर्बलता। ३ गफलत। लापरवाही। ४ समाधि के साधनों की भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना (योग)।

प्रमादी—वि० [सं० प्रमादिन्] [स्त्री०

प्रमादिनी] प्रमादयुक्त। भूलचूक करनेवाला। लापरवाह।

प्रमान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"। उ०—कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं।—मानस।

प्रमानना(पु)—क्रि० स० [हिं० प्रमान से ना० धा०] १ प्रमाण मानना। ठीक समझना। उ०—करौ उपाय बचौ जौ चाहौ मेरो बचन प्रमान्यो।—सूर०। २. प्रमाणित करना। साबित करना। उ०—बरष चारि दस बिपिन बसि, करि पितु-बचन प्रमान। आइ पाय पुनि देखिहौं, मनु जनि करसि मलान।—मानस। ३ ठहराना। स्थिर करना। निश्चित करना। उ०—जोगीश्वर बपु धरि हरि प्रगटे जोग समाधि प्रमान्यो। सूर०।

प्रमानी(पु)—वि० [सं० प्रामाणिक] मानने योग्य। प्रमाण योग्य। माननीय।

प्रमापन—संज्ञा पुं० [सं०] मारण। नाश।

प्रमापयिता—वि० [स०] १ घातक। नाशक। २ हानि पहुँचानेवाला।

प्रमायु—वि० [सं०] विनाशशील। नश्वर।

प्रमित—वि० [सं०] १ परिमित। २. निश्चित। ३. अल्प। थोड़ा।

प्रमिताक्षरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण और दो सगण होते हैं, जैसे—कहिहौं, सुधीर हँसि के तुमको। प्रमिताक्षरा तु पय दे हमको।

प्रमीलन—संज्ञा पुं० [सं०] निमीलन। मूँदना।

प्रमीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंद्रा। २ थकावट। शैथिल्य। ग्लानि।

प्रमुख—वि० [सं०] १ प्रथम। पहला। २. प्रधान। श्रेष्ठ। ३ मुख्य। खास। मान्य। प्रतिष्ठित।

अव्य० इत्यादि। वगैरह।

प्रमुद—वि० दे० "प्रमुदित"। उ०—सोचता कहाँ रे, किधर कूल। बहता तरंग का प्रमुद फूल?—तुलसीदास।

संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।

प्रमुदना—क्रि० अ० [सं० प्रमोद] प्रमुदित होना। प्रसन्न होना।

प्रमुदित—वि० [स०] हर्षित। प्रसन्न।

प्रमुदितवदना—संज्ञा स्त्री० [स०] बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और दो रगण होते हैं। उ०—न नर। रहत सेय मंदाकिनी। अघनिकर जु भेक, भू अंगिनी॥ मंदाकिनी। प्रभा।

प्रमेय—वि० [सं०] १. जो प्रमाण का विषय हो सके। जिसका बोध करा सकें। २. जिसका नाम बताया जा सके। जिसका अंदाज करा सकें। जिसका निर्धारण कर सकें।

संज्ञा पुं० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।

प्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें मूत्रमार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती हैं।

प्रमोद—संज्ञा पुं० [सं०] १ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २ सुख। ३ दे० "प्रमोदा"।

प्रमोदा—संज्ञा स्त्री० [स०] सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्रयंक—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

प्रयंत(पु)—अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रयतात्मा—वि० [सं०] सयत आत्मावाला। जितेंद्रिय। संयमी।

प्रयत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये की जानेवाली क्रिया प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २ प्राणियों की क्रिया। जीवों का व्यापार (न्याय)। ३ वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया (व्याकरण)।

प्रयत्नवान्—वि० [सं० प्रयत्नवत्] [स्त्री० प्रयत्नवती] प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयाग—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा जमुना के संगम पर है। इलाहाबाद। तीर्थराज।

प्रयागवाल—संज्ञा पुं० [सं० प्रयाग+हिं० वाला (प्रत्य०)] प्रयाग तीर्थ का पंडा।

प्रयाण—संज्ञा पुं० [सं०] यात्रा। युद्ध-यात्रा। गमन। प्रस्थान। चढ़ाई।

प्रयात—वि० [सं०] १ गया हुआ। २ मृत। मरा हुआ।

प्रयास—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २ श्रम। मेहनत।

प्रयुक्त—वि० [सं०] १ अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २. जो काम में लाया गया हो।

प्रयुत—संज्ञा पुं० [स०] दस लाख की संख्या।

प्रयोज्य—वि० [सं०] १. प्रयोग के योग्य। काम में लाने लायक। बरतने लायक। २. काम में लगाए जाने योग्य। नियुक्त करने योग्य। प्रेरित करने योग्य। ३. आचरण करने योग्य। कर्तव्य।

प्रयोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० प्रयोक्तृ] १ प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। २ नियोजित करनेवाला। ३ ऋण देनेवाला। महाजन। ४ सूत्रधार।

प्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम में लगना। आयोजन। साधन। अनुष्ठान। २. व्यवहार। इस्तेमाल। बरता जाना। ३ क्रिया का साधन। विधान। अमल। ४. मारण, मोहन, उच्चाटन, कीलन, विद्वेषण, कामनाशन, स्तंभन, वशीकरण, आकर्षण, वंदिमोचन, कामपूरण और वाक् प्रसारण आदि बारह तांत्रिक उपचार या साधन। ५ अभिनय। नाटक का खेल। स्वाँग भरना। ६ यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। ७ दृष्टांत। निदर्शन। ८ रोगी के विचार से औषधि की व्यवस्था। उपचार। ९ साम, दंड आदि राजनीतिक उपाय।

प्रयोगातिशय—संज्ञा पुं० [स०] नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें प्रयोग करते करते आप से आप दूसरे ही प्रकार का प्रयोग कौशल से हो जाता हुआ दिखाया जाय और उसी प्रयोग का आश्रय करके पात्र प्रवेश करें।

प्रयोगी—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रयोगकर्ता। इस्तेमाल करनेवाला। अनुष्ठान करनेवाला। २ काम में लगानेवाला। प्रेरक। ३ प्रदर्शक। ४ व्यवस्थापक।

प्रयोजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रयोगकर्ता। अनुष्ठान करनेवाला। २ काम में लगानेवाला। प्रेरक। ३. नियंता। व्यवस्था रखनेवाला। इंतजाम रखनेवाला।

प्रयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्य। काम। अर्थ। २ उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३ उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनवती लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे, जैसे, बहुत सी तलवारें मैदान में आ गईं। यहाँ प्रयोजन के कारण तलवार का अर्थ तलवारबंद सिपाही करना प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है (शब्दशक्ति)।

प्रयोजनीय—वि० [सं०] काम का। मतलब का।

प्रयोज्य—वि० [स०] प्रयोग के योग्य। काम में लाने लायक।

प्ररोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाह या रुचि उत्पन्न करना। २. उत्तेजना। बढ़ावा। ३. नाटक के अभिनय में प्रस्तावना के बीच में सूत्रधार नट आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा में कुछ कहना जिससे दर्शकों में रुचि उत्पन्न हो। ४. अभिनय के बीच आगे आनेवाली बात का रुचिकर रूप में कथन।

प्ररोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आरोह। चढ़ाव। २. उगना। जमना।

प्रलंब—वि० [सं०] १ नीचे की ओर तक लटकता हुआ। २ लंबा। ३. टँगा हुआ। टिका हुआ। ४. निकला हुआ।

प्रलंबन—संज्ञा पुं० [सं०] अवलंबन। सहारा।

प्रलंबी—वि० [सं प्रलंबिन्] [स्त्री० प्रलंबिनी] १. दूर तक लटकनेवाला। २ सहारा लेनेवाला।

प्रलपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलपित] १ बकवाद करना। बकना। २ कहना। कथन।

प्रलयंकर—वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

प्रलय—संज्ञा पुं० [सं०] १. जगत् का अपने मूल कारण या प्रकृति में लीन हो जाना। लय को प्राप्त होना। न रह जाना २. जगत् के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना। संसार का तिरोभाव। ३ साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्वस्मृति का लोप हो जाता है। ४. मूर्च्छा। बेहोशी।

प्रलयकर—वि० दे० "प्रलयंकर"।

प्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलापी] व्यर्थ की बकवाद। पागलों की सी बड़बड़। अंडबंड या अनाप शनाप बात।

प्रलेप—संज्ञा पुं० [सं०] अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप। पुल्टिस।

प्रलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने की क्रिया। पोतने का काम।

प्रलोभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलोभक] १ अत्यंत लोभ। २ लालच।

प्रलोभन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रलोभ"।

प्रवंचन—संज्ञा पुं० दे० "प्रवंचना"।

प्रवंचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रवंचक] छल। ठगपना। धूर्तता।

प्रवंचित—वि० [सं०] [स्त्री० प्रवंचिता] जो ठगा गया हो।

प्रवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० प्रवक्तृ] १ अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला। २ वेदादि का उपदेश देनेवाला। ३ अच्छी वक्तृता या व्याख्यान देनेवाला।

प्रवचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवचनीय] १ अच्छी तरह समझकर कहना। अर्थ खोलकर बताना। २ व्याख्या। ३. शास्त्रोपदेश। ४ वेदांग।

प्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० प्रवणता] १ क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल। उतार। २ चौराहा। ३ उदर। पेट।

वि० [भाव० प्रवणता] १ ढालुवाँ। जो क्रमशः नीचा होता गया हो। २ झुका हुआ। नत। ३ प्रवृत्त। रत। ४ नम्र। विनीत। ५ उदार। ६. व्यवहार में खरा। दक्ष। निपुण। ७. अनुकूल। मुवाफिक। ८. स्निग्ध। ९ लंबा।

प्रवत्स्यत्पतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवर—वि० [सं०] श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य। प्रधान।

संज्ञा पुं० १ किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष प्रवर्तक मुनि। २ संतति।

प्रवरललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, रगण और एक गुरु होता है। उ०—यमी नासै रागादिक सकल जंजाल भाई। यही ते घेरै ना प्रवरललिता ताहि जाई॥

प्रवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्यारंभ। ठानना। २ एक प्रकार के मेघ। ३ एक प्राचीन आभूषण।

प्रवर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम को चलानेवाला। संचालक। २ अनुष्ठान या प्रचार करनेवाला। आरंभ करनेवाला। जारी करनेवाला, जैसे, मतप्रवर्तक, धर्मप्रवर्तक। काम में लगानेवाला। प्रवृत्त करनेवाला। ३ उभारनेवाला। उसकानेवाला। ४. निकालनेवाला। ईजाद करनेवाला। ५ नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिए पात्र का प्रवेश हो। ७. न्याय करनेवाला। विचार करनेवाला। पंच।

प्रवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवर्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] १ कार्य आरंभ करना। ठानना। २ काम को चलाना। ३. प्रचार करना। जारी करना ४ उसकाना। उत्तेजना।

प्रवर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत अधिक वर्षा। बारिश। २. किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।

प्रवसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विदेश में जाना या रहना। २ बाहर जाना।

प्रवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ खूब बहाव। २ सात वायुओं में से एक वायु। ३ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

प्रवहमान—वि० [सं० प्रवहमत्] जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवात—संज्ञा पुं० [सं०] १ हवा का झोंका। तेज हवा। २ वह स्थान जहाँ खूब हवा हो। ३ ढाल। उतार।

वि० हवा से मिलता हुआ। झोंके खाता हुआ।

प्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बातचीत। २. जनश्रुति। जनरव। अफवाह। ३ झूठी बदनामी। अपवाद।

प्रवान(प)—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।

प्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] मूँगा। विद्रुम।

प्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २ विदेश।

प्रवासी—वि० [सं० प्रवासिन्] परदेश में रहनेवाला। परदेशी।

प्रवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलस्रोत। बहाव। २ बहता हुआ पानी। धारा। ३ काम का जारी रहना। ४ चलता हुआ क्रम। तार। सिलसिला। ५. झुकाव। प्रवृत्ति।

प्रवाहक—वि० [सं०] [स्त्री० प्रवाहिका] १ अच्छी तरह वहन करनेवाला। २ जोर से चलने या बहनेवाला।

प्रवाहित—वि० [सं०] [स्त्री० प्रवाहिता] १ बहता हुआ। २ बहाया हुआ। ३ ढोया हुआ।

प्रवाही—वि० [सं० प्रवाहिन्] [स्त्री० प्रवाहिनी] १ बहानेवाला। २ बहनेवाला। ३ तरल। द्रव।

प्रविष्ट—वि० [सं०] जिसका प्रवेश हुआ हो। घुसा हुआ।

प्रविसना—क्रि० अ० [सं० प्रविश] पैठना।

घुसना। उ०—प्रविसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।—मानस।

प्रवीण—वि० [सं०] [संज्ञा प्रवीणता] निपुण। कुशल। दक्ष। चतुर। होशियार।

प्रवीणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। चातुरी।

प्रवीर—वि० [सं०] भारी योद्धा। बहादुर। सुभट।

प्रवृत्त—वि० [सं०] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। लगा हुआ। रत। २. तत्पर। उद्यत। तैयार। ३. लगाया हुआ। नियुक्त।

प्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन का लगाव। लगन। वृत्ति। झुकाव। आसक्ति। २ प्रवाह। बहाव। लगाव ३. प्रवर्तन। काम का चलना। ४ सांसारिक विषयों का ग्रहण। निवृत्ति का उल्टा। ५ न्याय में एक यत्न विशेष।

प्रवृद्ध—वि० [सं०] १. खूब बढ़ा हुआ। २ प्रौढ़। खूब पक्का।

संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

प्रवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीतर जाना। घुसना। पैठना। २ गति। पहुँच। रसाई। ३. किसी विषय की जानकारी।

प्रवेशक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवेश करानेवाला। २ नाटकों में वह अंश जिसमें बीच की किसी घटना का परिचय केवल बातचीत से कराया जाता है।

प्रवेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ। २ प्रवेश के लिये दिया जानेवाला धन। दाखिला। प्रवेश करानेवाली योग्यता, परीक्षा आदि।

प्रव्रज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सन्यास।

प्रशंस(पु)—संज्ञा स्त्री० पुं० "प्रशंसा"।

वि० [सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक—वि० [सं०] १. प्रशंसा करनेवाला। २ खुशामदी।

प्रशंसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रशंसनीय प्रशंसित, प्रशंस्य] गुणकीर्तन। स्तुति। सराहना। तारीफ। बखान। बड़ाई।

प्रशंसना(पु)—क्रि० स० [सं० प्रशंसन] सराहना। गुणानुवाद करना। तारीफ करना।

प्रशंसनीय—वि० [सं०] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रशंसित] गुणवर्णन। स्तुति। बड़ाई। तारीफ।

प्रशंसित—वि० [सं०] [स्त्री० प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो।

प्रशंसोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा द्योतित की जाती है। उ०—जो शशि शिव सिर धरत है सो तव बदन समान।

प्रशस्य—वि० [सं०] प्रशंसनीय।

प्रशम—संज्ञा पुं० [सं०] १. शमन। उपशम। शांति। २. निवृत्ति। नाश। ध्वंस। ३. भागवत के अनुसार रंतिदेव के पुत्र का नाम।

प्रशमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शमन। शांति। २. नाशन। ध्वंस। ३. मारण। वध।

प्रशस्त—वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। सुंदर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। ३. भव्य। ४ विस्तीर्ण। लंबा चौड़ा।

प्रशस्तपाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन आचार्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ-धर्म-संग्रह नामक ग्रंथ है।

प्रशस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। स्तुति। २ राजा की ओर से एक प्रकार के आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे और जिनमें राजवंश और कीर्ति आदि का वर्णन होता था। ३ किसी की प्रशंसा में लिखा या खुदा हुआ काव्य अथवा लेख। ४. प्राचीन पुस्तकों के आदि और अंत की कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, कालादि का परिचय मिलता हो। ५. किसी पत्र के आदि में लिखा जानेवाला प्रशंसासूचक वाक्य। सरनामा।

प्रशस्य—वि० [सं०] १ प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। २ श्रेष्ठ। उत्तम।

प्रशांत—वि० [सं०] १. चंचलता रहित। स्थिर। २. शांत। निश्चल वृत्तिवाला।

संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच है।

प्रशांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रशांत या निश्चल होने का भाव। पूर्ण शांति।

प्रशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शाखा की शाखा। टहनी। पतली शाखा।

प्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल। २ पूछने की बात। ३. विचारणीय विषय। ४ एक उपनिषद्।

प्रश्नोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सवाल जवाब। प्रश्न और उत्तर। संवाद। २. वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रश्नोत्तर] किसी विषय के प्रश्नों और उनके उत्तरों का संग्रह।

प्रश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय स्थान। २ टेक। सहारा। आधार। नम्रता। शिष्टता।

प्रश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. घनिष्ठ संबंध। २. संधि होने में स्वरों का परस्पर मिल जाना।

प्रश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है।

प्रष्टव्य—वि० [सं०] १. पूछने योग्य। २ पूछने का। जिसे पूछना हो।

प्रष्टा—वि० [सं०] पूछने या प्रश्न करनेवाला। प्रश्नकर्ता।

प्रसंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। लगाव। संगति। संबंध। उ०—गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलै नीच जल संगा॥ —मानस। २ बातों का पारस्परिक संबंध। अर्थ की संगति, जैसे, अर्थ पूरा न जानने पर भी प्रसंग से अर्थ निकल आता है। ३ स्त्री-पुरुष-संयोग। मैथुन। ४ अनुरक्ति। लगन। ५. बात। वार्ता। विषय। उ०—(क) अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥ (ख) जस मानस जेहिं विधि भयउ, जग प्रचार जेहिं हेतु। अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु॥ —मानस। ६ अवसर। मौका। उ०—तब तें सुधि कछु नाहीं पाई। बिनु प्रसंग तहँ गयो न जाई॥ —सूर०। ७ हेतु। कारण। उ०—करिहहिं विप्र होम मख सेवा। तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा। —मानस। ८ विषयानुक्रम। प्रस्ताव। प्रकरण। ९. विस्तार। फैलाव। उ०—कर सरधनु कटि रुचिर निषंग। मनु मुकुतामनि मरकत गिरि पर लसत ललित रवि किरन प्रसंग। —गीता०। ११. भेद। रहस्य। राज। पोल। उ०—भले चल्यो मिलि जोन्ह-रँग पट भूषन दुति अंग। मुख न उघारै विधुवदनि जैहै उघरि प्रसंग। —रससारांश।

प्रसंसना(पु)—क्रि० स० दे० "प्रशंसना"।

प्रसक्त—वि० [सं०] १ संश्लिष्ट। लगा

हुआ। २. आसक्त। ३ जो बराबर लगा रहे। न छोड़नेवाला।

प्रसन्न—वि० [सं०] १. संतुष्ट। तुष्ट। २ खुश। हर्षित। प्रफुल्ल। ३. अनुकूल। ४ स्वच्छ। निर्मल।

‡वि० [फा० पसंद] मनोनीत। पसंद।

प्रसन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुष्टि। संतोष। २ प्रफुल्लता। हर्ष। आनंद। ३. कृपा।

प्रसन्नितⓅ‡—वि० दे० "प्रसन्न"।

प्रसरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १ आगे बढ़ना। खिसकना। सरकना। २. फैलना। फैलाव। ३. व्याप्ति। ४ विस्तार।

प्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। २ जन्म। उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।

प्रसवनाⓅ—क्रि० स० [सं० प्रसव से हिं० ना० धा०] उत्पन्न करना। जन्म देना।

प्रसवा, प्रसविनी—वि० स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जननेवाली।

प्रसाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनुग्रह। कृपा। मिहरबानी। २ काव्य का एक गुण। सरल एवं सुबोध काव्य या रचना। ३. वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। ४ वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। ५. देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६ ‡भोजन।

मुहा०—प्रसाद पाना = भोजन करना।

७ प्रसन्नता। ८ शब्दालंकार के अंतर्गत एक वृत्ति। कोमलावृत्ति। *‡ ९ दे० "प्रासाद"। १० निर्मलता। स्वच्छता। सफाई।

प्रसादनाⓅ—क्रि० स० [सं० प्रसादन] प्रसन्न करना।

प्रसादनीयⓅ—वि० [सं०] प्रसन्न करने योग्य।

प्रसादी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रसाद] १ देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ। २ नैवेद्य। ३ वह पदार्थ जो पूज्य और बड़े लोग छोटों को दें।

प्रसाधक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रसाधिका] १ वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे। साधनकर्ता। संपादक। २ सजावट का काम करनेवाला। ३. दूसरे के शरीर या अंगों का शृंगार करनेवाला। भूषक।

प्रसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अलंकार आदि। शृंगार। सजावट। बनावट। २ शृंगार की सामग्री। सजावट का सामान। ३ कार्य का संपादन। ४. कंघी से बाल झाड़ना।

प्रसाधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दासी जो रानियों का शृंगार करती हो।

प्रसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। पसार। २ संचार। प्रचार। ४ निर्गम। निकास।

प्रसारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसारित, प्रसार्य] १ फैलाना। २ बढ़ाना।

प्रसारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंधप्रसारिणी लता। २. लजालू। लाजवंती।

वि० स्त्री० प्रसार करनेवाली।

प्रसारित—वि० [सं०] फैलाया हुआ।

प्रसिद्ध—वि० [सं०] १ ख्यात। विख्यात। मशहूर। २ भूषित। अलंकृत।

प्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ख्याति। शोहरत। २ भूषा। बनावसिंगार।

प्रसुप्त—वि० [सं०] खूब सोया हुआ।

प्रसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाढ़ी नींद। नींद।

प्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] जननेवाली। उत्पन्न करनेवाली।

प्रसूत—वि० [सं०] [स्त्री० प्रसूता] १ उत्पन्न। संजात। पैदा। २ निकला हुआ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है। इसमें प्रसूता को ज्वर होता और दस्त आते हैं।

प्रसूता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।

प्रसूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसव। जनन। २ उद्भव। ३ कारण। प्रकृति।

प्रसूतिका—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।

प्रसून—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल। २ फल।

वि० [सं०] जात। पैदा। उत्पन्न।

प्रसृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रसृत] १ फैलाव। विस्तार। २ संतति। संतान।

प्रसेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेचन। सींचना। २ निचोड़। ३ छिड़काव। ४ एक असाध्य रोग। जिरियान (सुश्रुत)।

प्रसेदⓅ—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्वेद] पसीना। उ०—भक्ति हेतु यशुदा के आप चरण धरणि पर धरैया। जिनहिं चरण छलिबो बलि राजा नख प्रसेद गंगा जो बहैया।—सूर०।

प्रस्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर। २. डाभ या कुश का पूला। पत्ते आदि का बिछावन। ३. चौड़ी सतह। समतल। ४. प्रस्तार। ५ बिछावन।

प्रस्तरयुग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रस्तरयुगीन] पुरातत्व के अनुसार मनुष्य जाति के इतिहास में वह समय जब अस्त्रशस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के ही बनते थे। यह सभ्यता का बिलकुल आरंभिक काल था और इसमें लोगों को धातुओं का पता नहीं था।

प्रस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १. फैलाव। विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि। ३ परत। तह। ४ छंद:शास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से पहला जिससे छंदों के भेद की संख्याओं और रूपों का ज्ञान होता है। ५. घास व पत्तियों का बिछावन। ६ घास का वन।

प्रस्ताव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सभा के सामने उपस्थित मंतव्य। सभा-समाज में उठाई हुई बात। २ अवसर पर कही हुई बात। जिक्र। चर्चा। ३ प्रसंग। छिड़ी हुई बात। ४ प्राक्कथन। भूमिका। विषय-परिचय।

प्रस्तावक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रस्ताव करनेवाला। तजवीज करनेवाला।

प्रस्तावकर्ता—संज्ञा पुं० दे० "प्रस्तावक"।

प्रस्तावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आरंभ। २. प्राक्कथन। भूमिका। उपोद्घात। ३. नाटक में अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिये उठाया हुआ प्रसंग।

प्रस्तावित—वि० [सं०] जिसके लिये या जिसका प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्ताव्य—वि० [सं०] प्रस्ताव करने योग्य।

प्रस्तुत—वि० [सं०] ४ जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। ३ जो कहा गया हो। उक्त। कथित। १ उपस्थित। सामने आया हुआ। मौजूद। २ उद्यत। तैयार।

प्रस्तुतालंकार—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत के प्रति घटाया जाता है, जैसे, "क्यों अलि! मालति! छाँड़ि गयो कटीली

केतकी।" में प्रस्तुत भौंरे को सामने रखकर प्रस्तुत नायक के प्रति उपालंभ किया गया है।

प्रस्तोता—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तोतृ] वह सामवेदी ऋत्विक् जो यज्ञों में सबसे पहले सामगान का प्रारंभ करता है।

प्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। २. प्राचीन। काल का एक मान।

प्रस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। यात्रा। रवानगी। २ पहनने के कपड़े आदि जिसे लोग यात्रा के मुहूर्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा में किसी के घर या कहीं पर रखवा देते हैं। ३ विजय के लिये सेना या राजा की यात्रा। कूच।

प्रस्थानी—वि० [सं० प्रस्थान] जानेवाला।

प्रस्थानीय—वि० [सं०] प्रस्थान योग्य।

प्रस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य] १ प्रस्थान कराना। भेजना। २ प्रेरण। ३ प्रस्थापन।

प्रस्थित—वि० [सं०] १ ठहराया हुआ। टिका हुआ। २ दृढ़। ३ जो गया हो। गत।

प्रस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रस्थान। यात्रा।

प्रस्फुटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ फटना या खुलना। २ खिलना।

प्रस्फुटित—वि० [सं०] १ फूटा या खुला हुआ। २ खिला हुआ। विकसित। प्रफुल्ल।

प्रस्फुरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकलना। २ प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का इस प्रकार एकबारगी जोर से खुलना या फूटना कि उसके भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल पड़े, जैसे, ज्वालामुखी का प्रस्फोटन। २ फोड़ निकलना। ३ विकसित होना। खिलना। ४ ठोंकना। पीटना। ५. फटकना (अन्न आदि)। ६ सूप।

प्रस्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल आदि का टपक या गिरकर बहना। प्रस्राव। २ सोता। ३ प्रपात। झरना। निर्झर।

प्रस्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल आदि का टपकना या रसना। २ चूना। क्षरण। प्रस्रवण। ३ बहाव। ४. पेशाब।

प्रस्वन—संज्ञा पुं० [सं०] जोर का शब्द। ऊँचा स्वर।

प्रस्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

प्रह—संज्ञा पुं० दे० "प्रातःकाल"।

प्रहर—संज्ञा पुं० [सं०] दिनरात के आठ सम भागों में से एक भाग। पहर। ३ घंटे का समय।

प्रहरखना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित होना। आनंदित होना।

प्रहरणकलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, एक भगण, एक नगण और अंत में लघुगुरु होता है। उ०—अनल दहति ज्यों, छिन महँ दलिका। सुमिरण हरि त्यों, प्रहरणकलिका।

प्रहरी—वि० [सं० प्रहरिन्] १. पहरा देनेवाला। २ पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। घड़ियाली।

प्रहर्ता—वि० [सं० प्रहर्तृ] १ प्रहार करनेवाला। २ योद्धा।

प्रहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

प्रहर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आनंद। २ एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के अनायास किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है। उ०—प्राणपियारो मिल्यो सपने में भई तब नेसुक नींद निहोरे। कंत को आयबो त्यों ही जगाय सखी कह्यो बोलि पियूष निचोरे॥ यों मतिराम बढ्यो उर में सुख बाल के बालम सों दृग जोरे। ज्यों पट में अति ही चटकीलो चढ़ै रँग तीसरी बार के बोरे॥

प्रहर्षणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, नगण, जगण, रगण और अंत्य गुरु होता है, जैसे—वैसो ही विरचो रास हे कन्हाई। भावै जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्हाई॥

प्रहसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसी। दिल्लगी। परिहास। २ चुहल। खिल्ली। ३ हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्यमिश्र नाट्य जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहसित—वि० [सं०] १. हँसी से भरा हुआ। २. जिसकी हँसी उड़ाई जाय।

संज्ञा [सं०] १ जोर से हँसना। २ एक बुद्ध।

प्रहान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्रहाण] १ परित्याग। २ चित्त की एकाग्रता। ध्यान।

प्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] आघात। वार। चोट। मार।

प्रहारक—वि० [सं०] [स्त्री० प्रहारिका] प्रहार करनेवाला।

प्रहारना(पु)—क्रि० अ० [सं० प्रहार] १ मारना। आघात करना। उ०—दीन्हों गारि शैल तें भू पर पुनि जल भीतर डारयो। डारि अगिन में शत्रुन मारयो नाना भाँति प्रहारयो।—सूर०। २ मारने के लिये चलाना। उ०—वृत्रासुर पर वज्र प्रहारयो। तिन तिरसूल इंद्र पर मारयो॥—सूर०। ३ नष्ट करना। मिटाना।

प्रहारित(पु)—वि० [सं० प्रहार] जिसपर प्रहार हो। प्रताड़ित।

प्रहारी—वि० [सं० प्रहारिन्] [स्त्री० प्रहारिणी] १ मारनेवाला। प्रहार करनेवाला। २ चलानेवाला। छोड़नेवाला। ३. नाशक।

प्रहृत—वि० [सं०] १. फेंका हुआ। चलाया हुआ। २ उठाया या फैलाया हुआ। ३ मारा हुआ। पीटा या ठोंका हुआ।

प्रहृष्ट—वि० [सं०] अत्यंत प्रसन्न।

प्रहेलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रह्राद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रह्लाद"।

प्रह्लाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. आमोद। आनंद। २ एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

प्रांगण—संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बीच का खुला हुआ भाग। आँगन। सहन।

प्रांजल—वि० [सं०] १ सरल। सीधा। २ सच्चा। ३ बराबर। समान।

प्रांत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रांतिक] १. खंड। प्रदेश। सूबा। २ किनारा। छोर। ३ अंत। शेष। सीमा। ४. ओर। दिशा। तरफ।

प्रांतर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दो स्थानों के बीच का वह वह प्रदेश जिसमें जल या वृक्ष न हों। उजाड़। २ दो प्रदेशों के बीच का शून्य स्थान या दो गाँवों के बीच की भूमि। ३ जंगल। वन। ४ वृक्ष का खोखला अंश या कोटर।

प्रांतिक—वि० [सं०] किसी एक प्रांत से संबंध रखनेवाला।

प्रांतीय—वि० [सं०] दे० "प्रांतिक"।

प्रांतीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रांतीय होने का भाव। २ अपने प्रांत का विशेष पक्षपात या मोह।

प्राइमर—संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी भाषा या विषय की प्रारंभिक पाठ्य पुस्तक।

प्राइवेट—वि० [अं०] १ व्यक्तिगत। निजी। २ गुप्त। ३. गैर सरकारी।

प्राकाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों में से एक जिसे प्राप्त करनेवाले को इच्छित वस्तुएँ तुरत प्राप्त हो जाती हैं।

प्राकार—संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

प्राकृत—वि० [सं०] १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति संबंधी। २ स्वाभाविक। नैसर्गिक। ३. भौतिक। ४ सहज। ५ असंस्कृत। ६ सामान्य।

संज्ञा स्त्री० १ बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रांत में हो अथवा रहा हो। २ भारत की प्राचीन आर्यभाषाओं में से कोई जिसका प्रयोग संस्कृत नाटकों आदि में स्त्रियों, सेवकों और साधारण व्यक्तियों की बोलचाल में दिखाई पड़ता है।

प्राकृतिक—वि० [सं०] १. जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। कुदरती। २ प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३ स्वाभाविक। सहज। नैसर्गिक।

प्राकृतिक भूगोल—संज्ञा पुं० [सं०] भूगोल विद्या का वह अंग जिसमें पृथ्वी की वर्तमान स्थिति तथा भिन्न भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओं का वर्णन और विवेचन होता है।

प्राक्—वि० [सं०] पहले का। अगला।

संज्ञा पुं० पूर्व। पूरब।

प्राक्तन—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जो पहले किया जा चुका हो और आगे जिसका शुभ या अशुभ फल भोगना पड़े। भाग्य। प्रारब्ध।

प्राखर्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रखरता।

प्रागैतिहासिक—वि० [सं०] जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास के पूर्वकाल का।

प्राग्भार—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत के आगे का भाग। २ उत्कर्ष। उन्नति।

प्राग्ज्योतिष—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश जो वर्तमान आसाम में पड़ता है।

प्राग्ज्योतिषपुर—संज्ञा पुं० [सं०] प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी। आधुनिक गोहाटी।

प्राङ्मुख—वि० [सं०] जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।

प्राची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन—वि० [सं०] १ पिछले जमाने का। पुराना। २ वृद्ध। ३ पूरब का।

संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

प्राचीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

प्राचीर—संज्ञा पुं० [सं०] चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राचुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रचुर होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।

प्राचेतस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रचेतागण जो प्राचीन बर्हि के पुत्र थे और संख्या में दस माने गए हैं। २ वाल्मीकि ऋषि। ३ विष्णु। ४ दक्ष। ५ वरुण के पुत्र। ६ प्रचेता के वंशज।

प्राच्छित(पु)—संज्ञा पुं० दे० "प्रायश्चित्त"।

प्राच्य—वि० [सं०] १ पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। पूर्व का। २ पूर्वीय। पूर्व संबंधी। ३ पुराना। प्राचीन।

प्राच्यवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वैताली वृत्ति का एक भेद जिसके समपादों में चौथी और पाँचवीं मात्राएँ मिलकर गुरु हो जाती हैं। उ०—हरहर मन जाम आठहूँ। तज सबै भरम रे करो यही॥ तन मन धन दे लगा सबै। पाइही परम धाम ही सही॥

प्राजापत्य—वि० [सं०] १ प्रजापतिसंबंधी। २ प्रजापति से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा। इसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ धर्म का पालन करेंगे और फिर दोनों की पूजा करके वर को अलंकारयुक्त कन्या का दान करता है। २ यज्ञ। ३ बारह दिवसीय एक व्रत।

प्राज्ञ—वि० [सं०] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी] १ बुद्धिमान्। समझदार। चतुर। २ पंडित। विद्वान्। ३ मूर्ख।

प्राड्विवाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ न्याय करनेवाला। न्यायाधीश। २ वकील।

प्राण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। ३. श्वास। साँस। ४ काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके। ५ बल। शक्ति। ६ जीवन। जान।

मुहा०—प्राण उड़ जाना=(१) बहुत घबराहट हो जाना। हक्का बक्का हो जाना। (२) डर जाना। भयभीत होना। प्राण का गले तक आना=मरने पर होना। मरणासन्न होना। प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले आना=(१) मरने पर होना। (२) अत्यंत दुःख होना। बहुत अधिक कष्ट होना। प्राण खाना=बहुत तंग करना। बहुत सताना। प्राण जाना, छूटना या निकलना=जीवन का अंत होना। मरना। प्राण डालना=जीवन प्रदान करना। प्राण त्यागना, तजना या छोड़ना=मरना। प्राण देना=किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना=(१) किसी के किसी काम से बहुत दुःखी या रुष्ट होकर मरना। (२) किसी को बहुत अधिक चाहना। प्राणों से भी बढ़कर चाहना। प्राण निकलना=(१) मर जाना। मरना। (२) बहुत घबरा जाना। भयभीत होना। प्राण पयान होना=प्राण निकलना। प्राणों पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने का भय हो। प्राण या प्राणों पर बीतना=(१) जीवन संकट में पड़ना। (२) मर जाना। प्राणों में प्राण आना=घबराहट या भय कम होना। चित्त कुछ ठिकाने होना। प्राण रखना=(१) जिलाना। जीवन देना। (२) जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। प्राण लेना या हरना=मार डालना। प्राण हारना=(१) मर जाना। (२) साहस टूट जाना।

७ परम प्रिय। ८ ब्रह्मा। ९ विष्णु। १०. अग्नि। आग।

प्राणअधार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० प्राण+आधार] १ प्राणों के समान प्रिय व्यक्ति। बहुत प्रिय व्यक्ति। उ०—अपने ही गेह मधुपुरी आवन देवकी प्राणअधारा हो।—सूर०। २. पति। स्वामी।

प्राणघात—संज्ञा पुं० [सं०] हत्या। वध।

प्राणच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] हत्या। वध।

प्राणजीवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राणाधार। २ परम प्रिय व्यक्ति। उ०—आतुर है अब छाड़ि कोशलपुर प्राणजीवन कित चलन चाहो हो।—सूर०।

प्राणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राण का भाव। जीवन।

प्राणत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] मर जाना। आत्मघात।

प्राणदंड—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्युदंड। हत्या आदि गंभीर अपराधों के बदले में मौत की सजा।

प्राणद—वि० [सं०] १ जो प्राण दे। २. प्राणों की रक्षा करनेवाला।
प्राणदान—संज्ञा पुं० [सं०] किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।
प्राणघन—वि० [सं०] अत्यंत प्रिय।
प्राणधारी—वि० [सं० प्राणधारिन्] १ जीवित। प्राणयुक्त। २ जो साँस लेता हो। चेतन।
संज्ञा पुं० प्राणी। जंतु। जीव।
प्राणनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणनाथा] १ प्रिय व्यक्ति। प्यारा। प्रियतम। २. पति। स्वामी। ३ एक सप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य जो क्षत्रिय थे और औरंगजेब के समय में हुए थे।
प्राणनाथी—संज्ञा पुं० [सं० प्राणनाथ+हिं० ई (प्रत्य०)] १ प्राणनाथ के सप्रदाय का पुरुष। २ स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ सप्रदाय।
प्राणनाश—संज्ञा पुं० [स०] हत्या या मृत्यु।
प्राणपति—संज्ञा पुं० [स०] १. पति। स्वामी। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा। उ०—सूर श्रीगोपाल की छवि दृष्टि भरि भरि लेहिं। प्राणपति की निरखि शोभा पलक परन न देहिं।—सूर०।
प्राणप्यारा—संज्ञा पुं० [स० प्राण+हिं० प्यारा] [स्त्री० प्राणप्यारी] १ प्रियतम। अत्यत प्रिय व्यक्ति। उ०—प्रियपति वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है। दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है।—प्रियप्रवास। २ पति। स्वामी।
प्राणप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी नई मूर्ति को मदिर आदि में स्थापित करते समय मत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप।
प्राणप्रद—वि० [सं०] १ प्राणदाता। जो प्राण दे। २ स्वास्थ्यवर्धक।
प्राणप्रिय—वि० [सं०] [स्त्री० प्राणप्रिया] जो प्राण के समान प्रिय हो। प्रियतम।
प्राणमय—वि० [सं०] जिसमें प्राण हों। प्राणयुक्त।
प्राणमय कोश—संज्ञा पुं० [स०] वेदात के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा। यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है।
प्राणवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राणप्रिय। अत्यत प्रिय। २ स्वामी। पति।
प्राणवायु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राण। उ०—प्राणवायु पुनि आइ समावै। ताको इत उत पवन चलावै।—सूर०। २. जीव।
प्राणविज्ञान—संज्ञा पुं० दे० "प्राणिविद्या"।
प्राणशरीर—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है।
प्राणांत—संज्ञा पुं० [सं०] मरण। मृत्यु।
प्राणांतक—वि० [सं०] प्राण लेनेवाला। जान लेनेवाला। घातक।
प्राणाधार—वि० [सं०] प्राणों का आधार। अत्यत प्रिय। बहुत प्यारा।
संज्ञा पुं० पति। स्वामी।
प्राणाधिक—वि० [सं०] प्राणों से अधिक। अत्यत प्रिय।
प्राणायाम—संज्ञा पुं० [स०] योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा। श्वास और प्रश्वास की गति का विच्छेद या निरोध।
प्राणिद्यूत—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाजी जो मेढ़े, तीतर आदि जीवों की लड़ाई आदि पर लगाई जाय।
प्राणिविद्या—संज्ञा स्त्री० [स०] वह शास्त्र अथवा विद्या जिसमें जलचर, थलचर, नभचर सभी जीवधारियों का अध्ययन हो। प्राणिशास्त्र। प्राणविज्ञान।
प्राणी—वि० [सं० प्राणिन्] प्राणधारी। जीवधारी।
संज्ञा पुं० १ जतु। जीव। २ मनुष्य। व्यक्ति।
संज्ञा पुं० पुरुष या स्त्री।
प्राणेश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणेश्वरी] १ पति। स्वामी। २ बहुत प्यारा।
प्राणेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणेश्वरी] दे० "प्राणेश"।
प्रात—अव्य० [सं० प्रात] सवेरे। तड़के।
संज्ञा पुं० सवेरा। प्रातःकाल।
प्रातः—संज्ञा पुं० [स० प्रातर] सवेरा। प्रभात।
प्रातःकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जो प्रात काल किया जाता हो, जैसे—स्नान, शौच, आदि।
प्रातःकाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रातकालीन] १ रात के अंत में सूर्योदय के पूर्व का काल। यह तीन मुहूर्त का माना गया है। २. सबेरे का समय।
प्रातःस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] सबेरे के समय ईश्वर का भजन करना।
प्रातःस्मरणीय—वि० [सं०] जो प्रात काल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।
प्रातनाथ—संज्ञा पुं० [सं० प्रात+नाथ] सूर्य। उ०—कुमुदिनी फूली कुंद मूँदे भौर बाँधे बीच, प्रातनाथ बूझो मानों कालकूट खायो है।—हनुमन्नाटक।
प्रातिकूल्य—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिकूलता"।
प्रातिपदिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु, प्रत्यय और प्रत्ययांत न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो, जैसे, पेड़, अच्छा आदि।
प्रातिलोमिक—वि० [सं०] प्रतिलोम सबधी। प्रतिलोम का।
प्रातिवेशिक—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोसी।
प्राथमिक—वि० [स०] १. पहले का। प्रथम संबधी। २ आरभ का। प्रारभिक।
प्रादुर्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. आविर्भाव। प्रकट होना। २ उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत—वि० [स०] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। प्रकटित। २ उत्पन्न।
प्रादुर्भूतमनोभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार मध्या के चार भेदों में से एक।
प्रादेशिक—वि० [स०] प्रदेश सबधी। किसी एक प्रदेश का। प्रांतिक।
संज्ञा पुं० सामत। जमींदार या सरदार।
प्राधान्य—संज्ञा पुं० [स०] प्रधानता।
प्राध्यापक—संज्ञा पुं० [सं० प्र+अध्यापक] महाविद्यालय या कालेज का अध्यापक। प्रोफेसर।
प्रान—संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।
प्रापण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] १. प्राप्ति। मिलना। २. प्रेरण।
प्रापणीय—वि० [सं०] १ प्राप्त करने योग्य। २ पहुँचने योग्य।
प्रापत(पु)—वि० दे० "प्राप्त"। उ०—कौनहुँ भाँत जोग करि कोई। तुव पद पंकज प्रापत होई।—नददास०।
प्रापति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति"।
प्रापत्ति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० प्राप्ति] दे० प्राप्ति। उ०—सिसु कुमार पौगंड वलित अभिनय दिखराए। कमलनैन-प्रापत्ति उपाइ सब लोक सिखाए।—नददास०।
प्रापना(पु)—क्रि० स० [स० प्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
प्राप्त—वि० [सं०] १ पाया हुआ। जो मिला हो। २ समुपस्थित।

प्राप्तकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई काम करने योग्य समय। २. उपयुक्त काल। उचित समय। ३. मरणयोग्य काल।
वि० जिसका काल आ गया हो। जिसका समय हो गया हो।

प्राप्तबुद्धि—वि० [सं०] १ चतुर। २ बेहोशी के बाद होश में आया हुआ।

प्राप्तयौवन—वि० [सं०] जिसकी जवानी आ गई हो। जवान।

प्राप्तरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्वान्। पंडित। २ रूपवान्। सुंदर।

प्राप्तव्य—वि० दे० "प्राप्य"।

प्राप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपलब्धि। मिलना। २ पहुँच। ३ अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। ४ आय। ५ लाभ। फायदा। ६ नाटक का सुखद उपसंहार।

प्राप्तिसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह आपत्ति जो हेतु और साध्य को, ऐसी अवस्था में जब कि दोनों प्राप्य हों, अविशिष्ट बतलाकर की जाय, जैसे, पर्वत अग्निमान् हैं क्योंकि वह धूमवान् है। पर यह आक्षेप करना कि यदि अग्नि और धूम का साथ सर्वत्र रहता है तो साध्य और साधक में कोई अंतर नहीं। अत धूम अग्नि का वैसा ही साधक है जैसा अग्नि धूम का।

प्राप्य—वि० [सं०] १ पाने योग्य। प्राप्त करने योग्य। प्राप्तव्य। २ गम्य। ३ जो मिल सके। मिलने योग्य।

प्राबल्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रबलता।

प्रामाणिक—वि० [सं०] १ जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो। शास्त्रसिद्ध। २ माननीय। मानने योग्य। ३ ठीक। सत्य।

प्रामाण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रमाण का भाव। प्रमाणत्व। २ मान मर्यादा।

प्रामादिक—वि० [सं०] १ प्रमादजनित। २ दोषयुक्त।

प्रामाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पागलपन। २ अहसा।

प्रामिसरी नोट—संज्ञा पुं० [अं०] १ धन अदा करने के लिये किसी के द्वारा लिखा हुआ हस्ताक्षर और तिथिसहित वचनपत्र। २ सरकार द्वारा इस प्रकार प्रजा से लिए ऋण को चुकाने का वचनपत्र। सरकारी हुंडी।

प्राय—प्रत्य० [सं०] १ समान। तुल्य, जैसे, मृतप्राय। २. लगभग, जैसे, प्रायद्वीप।

प्राय—वि० [सं०] १ विशेषकर। बहुत। अक्सर। २ लगभग। करीब करीब।

प्रायद्वीप—संज्ञा पुं० [सं० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायश—क्रि० वि० [सं०] प्राय। बहुधा।

प्रायश्चित्त—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रायश्चित्तिक—वि० [सं०] १ प्रायश्चित्त के योग्य। २ प्रायश्चित्त संबंधी।

प्रायश्चित्ती—वि० [सं० प्रायश्चित्तिन्] १ प्रायश्चित्त के योग्य। २ प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायिक—वि० [सं०] प्राय होनेवाला।

प्रायोज्य—वि० [सं०] १ प्रयोग में आने वाला। जिससे काम निकलता हो। २. रोजमर्रा के काम की चीज; जैसे, पुस्तक, शस्त्र, औजार, आदि (धर्मशास्त्र)।

प्रायोद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "प्रायद्वीप"।

प्रायोगिक—वि० [सं०] १ प्रयोग संबंधी। २ प्रयोग के रूप में नित्य काम आनेवाला।

प्रारंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ आरंभ। शुरू। २ आदि।

प्रारंभिक—वि० [सं०] १ प्रारंभ का। २ आदिम। ३ प्राथमिक।
संज्ञा पुं० [सं०] १ भाग्य। किस्मत। २ तीन प्रकार के कर्मों में से वह जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो।
वि० [सं०] आरंभ किया हुआ।

प्रारब्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आरंभ। शुरू। २ हाथी के बाँधने की रस्सी।

प्रारब्धी—वि० [सं० प्रारब्धिन्] भाग्यवान्। किस्मतवाला।

प्रारूप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विधान अथवा नियम का प्रारंभिक रूप जो विचार करने के लिये उपस्थित किया जाय। मसविदा।

प्रार्थना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विनती। विनय। निवेदन। २ किसी से कुछ माँगना। याचना।
पुं० क्रि० सं० प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी।

प्रार्थनासमाज—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मसमाज की तरह का बंबई और उसके आसपास का एक एक नवीन समाज या संप्रदाय जिसके अनुयायी मूर्तिपूजा और जाति-पाँति आदि नहीं मानते।

प्रार्थनीय—वि० [सं०] प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थयितव्य—वि० [सं०] माँगने योग्य। प्रार्थना करने योग्य। याचनीय।

प्रार्थित—वि० [सं०] जिसके लिये प्रार्थना की गई हो।

प्रार्थी—वि० [सं० प्रार्थिन्] [स्त्री० प्रार्थिनी] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

प्रार्थ्य—वि० [सं०] प्रार्थना के योग्य। याचनीय।

प्रालब्ध—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध"।

प्रालेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिम। तुषार। २ बरफ।

प्रावरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चादर। उत्तरीय वस्त्र। उपरना। दुपट्टा। २ प्रच्छादन। ढक्कन।

प्रावार—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा। २ उत्तरीय। दुपट्टा।

प्रावृट—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु।

प्रावृष्—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रावृट। वर्षा।

प्रावृषिक—संज्ञा पुं० [सं०] मयूर। मोर।

प्रावृषेण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईति। २ कदंब। ३ भूमिकर की खरीफ की किस्त। ४ आधिक्य। प्रचुरता।

प्राश—संज्ञा पुं० दे० "प्राशन"।

प्राशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाना। भोजन। २ चखना, जैसे, अन्नप्राशन।

प्राशी—वि० [सं० प्राशिन्] [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करनेवाला। खानेवाला। भक्षक।

प्रासंगिक—वि० [सं०] १ प्रसंग संबंधी। प्रसंग का। २ प्रसंग द्वारा प्राप्त।

प्रास—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का बर्छा या भाला।

प्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] फेंकना।

प्रासाद—संज्ञा पुं० [सं०] लंबा चौड़ा, ऊँचा और कई भूमियों का पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन। महल।

प्रिंटर—संज्ञा पुं० [अं०] छापनेवाला। मुद्रक।

प्रिंटिंग—संज्ञा स्त्री० [अँ०] छपाई का काम। मुद्रण।

प्रिंटिंग इंक—संज्ञा स्त्री० [अँ०] छापने की स्याही।

प्रिंटिंग प्रेस—संज्ञा स्त्री० [अँ०] छापने की कल।

प्रिंटिंग मशीन—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ इंजिन या बिजली से चलनेवाली छापने की कल। यह हाथ या इंजिन दोनों से चलती है। २ केवल बिजली की शक्ति से प्रेरित छापे की कल।

प्रिंस—संज्ञा पुं० [अँ०] राजकुमार।

प्रिंसिपल—संज्ञा पुं० [अँ०] १ किसी विद्यालय का प्रधान अध्यापक। २. मूल-धन। पूँजी।

प्रियंगु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कँगनी नामक अन्न। २ राई। ३ पीपल।

प्रियंवद—वि० [सं०] [स्त्री० प्रियवदा] प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

प्रियंवदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, जगण और रगण क्रम से रहते हैं। उ०—सह ... जनकजा, प्रियवदा। जनहिं जो नित अ०, सुशर्मदा॥

प्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रिया] स्वामी। पति।

वि० १ जिससे प्रेम हो। प्यारा। २ मनोहर। सुंदर।

प्रियतम—वि० [सं०] [स्त्री० प्रियतमा] सबसे अधिक प्रिय।

संज्ञा पुं० स्वामी। पति।

प्रियदर्शन—वि० [सं०] [स्त्री० प्रियदर्शना] जो देखने में प्रिय लगे। सुंदर।

प्रियदर्शी—वि० [सं०] सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।

प्रियभाषी—वि० [सं० प्रियभाषिन्] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलनेवाला।

प्रियवर—वि० [सं०] अति प्रिय। सबसे प्यारा (पत्रों आदि में संबोधन)।

प्रियवादी—संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी"।

प्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारी। स्त्री। २ भार्या। पत्नी। जोरू। ३ प्रेमिका (स्त्री)। ४ एक वृत्त का नाम। मृगी। ५ सोलह मात्राओं का एक छंद।

प्रियाल—संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी।

प्रिवी काउंसिल—संज्ञा स्त्री० [अँ०] ब्रिटेन के बादशाह के वैयक्तिक सलाहकारों की सभा जहाँ अँगरेजी जमाने में भारत के मुकदमों आदि का अंतिम फैसला होता था।

प्रीत—वि० [सं०] प्रीतियुक्त।

ⓟसंज्ञा पुं० दे० "प्रीति"।

प्रीतम—संज्ञा पुं० [सं० प्रियतम] १ पति। भर्ता। स्वामी। २ प्यारा।

प्रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रेम। प्यार। २ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ३ संतोष। तृप्ति।

प्रीतिकर, प्रीतिकारक—वि० [सं०] प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।

प्रीतिपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] जिसके साथ प्रीति की जाय। प्रेमभाजन। प्रेमी।

प्रीतिभोज—संज्ञा पुं० [सं०] वह खानपान जिसमें मित्र, बंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों।

प्रीत्यर्थ—अव्य० [सं०] १. प्रीति के लिये। प्रसन्न करने के वास्ते। २ लिये। वास्ते।

प्रीमियम—संज्ञा पुं० [अँ०] बीमे की किस्त जिसे बीमा करानेवाला बीमा कंपनी को नियमानुसार देता रहता है।

प्रीमियर—संज्ञा पुं० [अँ०] प्रधान मंत्री।

प्रुष्ट—वि० [सं०] जला हुआ। दग्ध।

प्रूफ—संज्ञा पुं० [अँ०] १ प्रमाण। सबूत। २ छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती हैं। ३ प्रतिरोधक। किसी वस्तु का असर या प्रभाव रोकनेवाला पदार्थ; जैसे—वाटरप्रूफ, अर्थात् ऐसा पदार्थ जिसपर जल का प्रभाव न पड़ सके, फायर-प्रूफ अर्थात् जिसपर अग्नि का प्रभाव न पड़े।

प्रूम—संज्ञा पुं० [?] सीसे आदि का बना हुआ लट्टू के आकार का वह यंत्र जिसे समुद्र में डुबाकर उसकी गहराई नापते हैं।

प्रेंखण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह हिलना या झूलना। २ अठारह प्रकार के रूपकों में से एक।

प्रेक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] देखनेवाला। दर्शक।

प्रेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ देखने की क्रिया। २ आँख।

प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखना। २. नाच तमाशा देखना। ३. दृष्टि। निगाह। ४ प्रज्ञा। बुद्धि। ५ वृक्ष की शाखा।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान। मंत्रणागृह। २. नाट्यशाला।

प्रेत—संज्ञा पुं० [सं०] १. मरा हुआ मनुष्य। मृतक प्राणी। २ पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत प्राप्त होता है। ३ नरक में रहने वाला प्राणी। ४. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि।

प्रेतकर्म—संज्ञा पुं० [सं० प्रेतकर्मन्] हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म। प्रेतकार्य।

प्रेतकार्य—संज्ञा पुं० दे० "प्रेतकर्म"।

प्रेतगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्मशान। मरघट। २ कबरिस्तान।

प्रेतगेहⓟ—संज्ञा पुं० दे० "प्रेतगृह"।

प्रेतत्व—संज्ञा [सं०] प्रेत का भाव या धर्म-प्रेतता।

प्रेतदाह—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक को जलाने आदि का कार्य।

प्रेतदेह—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है।

प्रेतनी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रेत+हिं० नी (प्रत्य०)] भूतनी। चुड़ैल।

प्रेतयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि प्राप्त होती है।

प्रेतपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पितृपक्ष।

प्रेतपति—संज्ञा पुं० [सं०] यम।

प्रेतराज—संज्ञा पुं० [सं०] यम।

प्रेतलोक—संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर।

प्रेतविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का दाह आदि करना।

प्रेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पिशाची। २ भगवती कात्यायिनी।

प्रेताशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती।

प्रेताशौच—संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है।

प्रेती—संज्ञा पुं० [सं० प्रेत+हिं० ई (प्रत्य०)] प्रेत की उपासना करनेवाला। प्रेत-पूजक।

प्रेतोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

प्रेम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह भाव जिसके अनुसार किसी दृष्टि से अच्छी लगनेवाली किसी चीज या व्यक्ति को देखने, पाने, भोगने या सुरक्षित करने की इच्छा हो। स्नेह। मुहब्बत। अनुराग। प्रीति। २. पारस्परिक स्नेह जो बहुत रूप, गुण अथवा कामवासना के कारण होता है। ३. केशव के अनुसार एक अलंकार। ४ माया और लोभ।

प्रेमगर्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के अनुराग का अहंकार रखती हो।

प्रेमजल—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।

प्रेमपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे प्रेम किया जाय। माशूक।

प्रेमपुलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह रोमांच जो प्रेम के कारण होता है।

प्रेमवंत—वि० [सं० प्रेम+हिं० वत (प्रत्य०)] १. प्रेम से भरा हुआ। २. प्रेमी।

प्रेमवारि—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।

प्रेमा—संज्ञा पुं० [सं० प्रेमन्] १. स्नेह। २ इंद्र। ३ उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद।

प्रेमाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें प्रेम का वर्णन करने में ही उसमें बाधा पड़ती हुई दिखाई जाती है, जैसे, यदि नायक से नायिका कहे कि "हमारा मन तुम्हें छोड़ने को कभी नहीं करता, पर जब तुम उठकर जाना चाहते हो, तब वह तुमसे आगे ही चल पड़ता है।" यहाँ मन का पहले ही चल पड़ना "छोड़ने को कभी नहीं करता" का आक्षेप करता है।

प्रेमालाप—संज्ञा पुं० [सं०] वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो। मुहब्बत की बातचीत।

प्रेमालिंगन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेमपूर्वक गले लगाना। २ नायक नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिंगन।

प्रेमाश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं।

प्रेमिक—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमी"।

प्रेमी—संज्ञा पुं० [सं० प्रेमिन्] १. प्रेम करनेवाला। २ आशिक। आसक्त।

प्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी भाव का अंग होता है।

वि० प्रिय। प्यारा।

प्रेयसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमिका।

प्रेरक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरण—संज्ञा पुं० दे० "प्रेरणा"।

प्रेरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। २ दबाव। जोर।

प्रेरणार्थक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्ता के द्वारा हुआ है, जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।

प्रेरनाⓅ—क्रि० स० [सं० प्रेरणा] प्रवृत्त करना। प्रेरणा करना।

प्रेरित—वि० [सं०] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २. जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो। ३ ढकेला हुआ। धक्का दिया हुआ।

प्रेषक—संज्ञा पुं० [सं०] भेजनेवाला।

प्रेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रेषित] १ प्रेरणा करना। २. भेजना। रवाना करना।

प्रेष्ठ—वि० [सं०] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा।

प्रेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दास। सेवक। २ दूत। ३ धावन।

वि० प्रेषण करने योग्य।

प्रेस—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह कल जिससे कोई चीज दबाई या कसी जाय। पेंच। २ वह स्थान जहाँ छपाई होती है। छापाखाना। ३ छापने की कल। ४ समाचारपत्रों का वर्ग।

मुहा०—(किसी चीज का) प्रेस में होना=(किसी चीज की) छपाई जारी रहना। छपना।

प्रेस ऐक्ट—संज्ञा पुं० [अं०] छापेखाने में लगे हुए कर्मचारियों आदि के कर्तव्यों और अधिकारों का नियामक कानून।

प्रेसिडेंट—संज्ञा पुं० [अं०] १ सभापति। २ राष्ट्रपति। ३ अध्यक्ष।

प्रैप—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्लेश। दुःख। २. मर्दन। ३ पागलपन। ४ प्रेषण। भेजना।

प्रैष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दास। सेवक। दासता।

प्रोक्त—वि० [सं०] कहा हुआ कथित।

प्रोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी छिड़कना। २. पानी का छींटा।

प्रोग्राम—संज्ञा पुं० [अं०] कार्यक्रम। होनेवाले कार्यों की सिलसिलेवार सूची।

प्रोत—वि० [सं०] १ किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। घुला मिला। २ सींया या नाथा हुआ। ३. छिपा हुआ।

प्रोत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक उत्साह या उमंग।

प्रोत्साहक—वि० [सं०] उत्साह बढ़ानेवाला। हिम्मत बँधानेवाला।

प्रोत्साहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रोत्साहित] खूब उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।

प्रोत्साहित—वि० [सं०] (जिसका) उत्साह बढ़ाया गया हो। (जिसकी) हिम्मत खूब बँधाई गई हो।

प्रोथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोड़े की नाक के आगे का भाग। २. सूअर का थूथन। ३ कमर। ४ गड्ढा।

प्रोपोजल—संज्ञा पुं० [अं०] प्रस्ताव।

प्रोप्राइटर—संज्ञा पुं० [अं०] स्वामी। मालिक।

प्रोफेसर—संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी विषय का बड़ा विद्वान्। २ कालेज या महाविद्यालय का अध्यापक। प्राध्यापक।

प्रोफेसरी—संज्ञा स्त्री० [अं० प्रोफेसर+हिं० ई (प्रत्य०)] प्रोफेसर का कार्य या पद।

प्रोबेशन—संज्ञा पुं० [अं०] आजमाइश। परीक्षण।

प्रोबेशनरी—वि० [अं०] प्रोबेशन संबंधी। आजमाइशी। परीक्षार्थक।

प्रोमिसरी नोट—संज्ञा पुं० [अं०] दे० "प्रामिसरी नोट"।

प्रोमोशन—संज्ञा पुं० [अं०] १ तरक्की (कर्मचारी की)। २ दर्जा चढ़ना (विद्यार्थी का)।

प्रोष—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यधिक दुःख। संताप।

प्रोषित—वि० [सं०] जो विदेश में गया हो। प्रवासी।

प्रोषित नायक या पति—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।

प्रोषितपतिका (नायिका)—संज्ञा स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो अपने पति के

परदेश में होने के कारण दुखी हो। प्रवस्यत्प्रेयसी।

प्रोषितभर्तृका—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रोषितपतिका"।

प्रोषितभार्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी भार्या के विदेश जाने के कारण दुखी हो।

प्रौढ़—वि० [सं०] [स्त्री० प्रौढ़ा] १ अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २ जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३ पक्का। मजबूत। दृढ़। ४ गंभीर। गूढ़। ५. चतुर।

प्रौढ़ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।

प्रौढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अधिक वयसवाली स्त्री। २ साहित्य में वह नायिका जो कामकला आदि अच्छी तरह जानती हो। साधारणत ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली स्त्री।

प्रौढ़ा धीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा।

प्रौढ़ा अधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हों।

प्रौढ़ा धीराधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें धीराधीरा के गुण हों।

प्रौढ़ि—संज्ञा स्त्री० [सं०] धृष्टता। गर्वोक्ति। उ०—प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥—मानस।

प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें जिसके उत्कर्ष का जो हेतु नहीं है, वह हेतु कल्पित किया जाय। २ गूढ़ रचना।

प्लक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाकर वृक्ष। पिलखा। २ पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपों में से एक। ३ अश्वत्थ। पीपल।

प्लवंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वानर। बंदर। २ मृग। हिरन। ३. प्लक्ष। पाकर। ४. साठ संवत्सरों में से इकतालीसवाँ।

प्लवंगम—संज्ञा पुं० [सं०] २१ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, जैसे—पावन हरिजन, सग सदा मन दीजिए। रामकृष्ण गुण, ग्राम नाम रस भीजिए।

प्लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उछलना। कूदना। २ तैरना।

प्लविता—वि० [सं० प्लवितृ] [स्त्री० प्लवित्री] तैरनेवाला।

प्लांचेट—संज्ञा पुं० [अं०] पान के आकार की एक तख्ती जिससे मेस्मेरिज्मवाले प्रेतात्माओं से सवाल ज्वाब करते हैं।

प्लाट—संज्ञा पुं० [अं०] १. कथावस्तु। २. षड्यंत्र। ३ जमीन का बड़ा टुकड़ा।

प्लावन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाढ़। सैलाब। उ०—नीचे प्लावन की प्रलयधार, ध्वनि हर हर।—तुलसीदास। २ खूब अच्छी तरह धोना। ३ तैरना।

प्लावित—वि० [सं०] जो जल में डूब गया हो। पानी में डूबा हुआ।

प्लास्टर—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह लेप जो किसी अंग पर रोग या कष्ट हटाने के लिये किया जाय। औषधलेप। २ ईंटों आदि की दीवारों पर लगाने के लिये सुर्खी, चूना, सिमेंट-बालू आदि का गाढ़ा लेप। पलस्तर।

प्लीडर—संज्ञा पुं० [अं०] १. वकील। २ किसी की ओर से वादविवाद करनेवाला।

प्लीहा—संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"।

प्लुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ टेढ़ी चाल। उछाल। २ स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

प्लुतगति—वि० [सं०] जो कूद कूदकर चलता हो।

प्लेग—संज्ञा पुं० [अं०] १. महामारी। २ एक भीषण संक्रामक रोग। इसमें रोगी को बहुत तेज ज्वर होता है और जाँघ या बगल में गिलटी निकल आती है। रोगी ३-४ दिन में मर जाता है। यह रोग प्राय जाड़े में फैलता है। ताऊन।

प्लेट—संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी धातु का पत्तर या पीटा हुआ पतला टुकड़ा। चादर। २ छिछली थाली। तश्तरी। रिकाबी। ३ बाजी जीतनेवाले को दिया जानेवाला सोने चाँदी आदि का प्याला, तश्तरी या अन्य पात्र। ४. धातु का चौड़ा पत्तर जिसपर लेख आदि खुदा हो। ५ अपने ऊपर पड़नेवाली छाया को स्थायी रूप से ग्रहण करनेवाला फोटो खींचने का मसाला लगा हुआ शीशा।

प्लेटफार्म—संज्ञा पुं० [अं०] १ मंच। चबूतरा। २ वह बड़ा चबूतरा जो मुसाफिरों के रेल पर चढ़ने उतरने के लिये होता है।

प्लैटिनम—संज्ञा पुं० [अं०] चाँदी के रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु। यह प्राय सब धातुओं से भारी होती है और इसके पत्तर पीटे और तार खींचे जा सकते हैं। यह सामान्य आग से नहीं पिघल सकती बिजली अथवा कुछ रासायनिक क्रियाओं की सहायता से गलाई जाती है। इसमें कई इसपर तेजाब आदि का प्रभाव नहीं होता और न इसमें मोर्चा लगता है।

प्लोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ भक से जल जाना। २ दाह। जलन।

फ

फ—हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।

फंका(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० फाँकना] [स्त्री० फंकी] १ सूखे दाने या बुकनी आदि की उतनी मात्रा जितनी एक बार में फाँकी जा सके। २ कतरा। टुकड़ा।

फंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंका] १ फाँकने की दवा। २ उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँक] छोटी फाँक।

फंग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० बंध] १ बंधन। फंदा। उ०—यही ब्रज तुम हम नँदनंदन दूर कतहुँ नहिं जैहो। मेरे फंग कबहुँ तो परिहो मुजरा तबही देहों।—सूर०। २ राग। अनुराग। उ०—कोउ निरखति मुख कोउ निरखति अँग कोउ निरखति रँग और। रैनि कहूँ फँग पगे कन्हाई कहति सबै करि रौर।—सूर०।

फंद—संज्ञा पुं० [सं० बंध, हिं० फंदा] १. बंध। बंधन। उ०—सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कर्दम टारे। त्यागे भ्रम

फंद द्वंद निरखि के मुखारविंद सूरदास अति आनंद मेटे मदभारे।—सूर०। २ फंदा। जाल। फाँस। उ०—हरि-पद-कमल को मकरंद। मलिनमति मनमधुप परिहरि विषय-नीर-रस फद।—सूर०। ३ छल। धोखा। ४ रहस्य। मर्म। ५ दुख। कष्ट। ६ नथ की काँटी फँसाने का फंदा। गूँज।

फँदना(पु)—क्रि० अ० [सं० बधन या फदा] फंदे में पड़ना। फँसना। उ०—मोको निदि पर्वतहि वदत। चारी कपट पछि ज्यों कदत।—सूर०।

क्रि० स० [हिं० फाँदना] फाँदना। लाँघना।

फँदवार—वि० [हिं० फंदा] फंदा लगानेवाला।

फंदा—संज्ञा पु० [स० पाश या बध] १. रस्सी, तागे तार आदि का वह घेरा जो किसी जीव या वस्तु को फँसाने के लिये बनाया गया हो। फनी। फाँद। २ पाश। फाँस। जाल।

मुहा०—फंदा लगाना=(१) किसी को फँसाने के लिये जाल लगाना। (२) धोखा देना। फंदे में पड़ना=(१) धोखे में पड़ना। (२) किसी के वश में होना।

३ वंधन। ४ दुख। कष्ट।

फँदाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "फंदा"।

फँदाना—क्रि० स० [हिं० फँदना] फंदे में लाना। जाल में फँसाना। उ०—मेरे माई लोभी नैन भए। कहा करौं ये कह्यो न मानत बरजत ही जो गए। रहत न घूँघट ओट भवन में पलक कपाट दए। लिए फँदाइ विहगम मानों मदन ब्याध बिधए।—सूर०।

क्रि० स० [स० स्पंदन] फाँदने का काम दूसरे से कराना। कुदाना।

फँसौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँसी] फाँसी की रस्सी। २ जाल। फंदा।

फँफाना—क्रि० अ० [अनु०] १ शब्द-उच्चारण के समय जिह्वा का काँपना। हकलाना। २. आग पर खौलते दूध का फेन छोड़कर ऊपर उठाना।

फँसना—क्रि० स० [हिं० फाँस] १ वंधन या फंदे में पड़ना। २ अटकना। उलझना।

मुहा०—बुरा फँसना=आपत्ति में पड़ना।

फँसाना—क्रि० स० [हिं० फँसना का स० रूप] १ फंदे में लाना या अटकाना। बझाना। २ वशीभूत करना। अपनी चाल या वश में लाना। ३ अटकाना। उलझाना।

फँसिहारा—वि० [हिं० फाँस + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला। उ०—ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी। जोइ आवति सोइ सोइ कहि डारति जाति जनावति दै दै गारी। फँसिहारिन बटपारिनि हम भई आन भए सुधर्मा मारी।—सूर०।

फ—संज्ञा पु० [सं०] १. कटु वाक्य। रूखा वचन। २ फुत्कार। फुफकार। ३ निष्फल भाषण।

फक—वि० [सं० स्फटिक] १ स्वच्छ। सफेद। २ बदरंग। ३ स्तंभित।

मुहा०—रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना=घबरा जाना। चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

फकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फक्कड़+ई (प्रत्य०)] दुर्दशा। दुर्गति।

फकत—वि० [अ०] १ बस। अलम। पर्याप्त। २ केवल। सिर्फ।

फकीर—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी] १ भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २ साधु। संसारत्यागी। ३ निर्धन मनुष्य।

फकीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फकीर+ई] १ भिखमंगापन। २ साधुता। ३ निर्धनता।

फक्कड़—संज्ञा पुं० [सं० फक्किका] गाली-गलौज। गंदी बातें। २ सदा दरिद्र परंतु मस्त रहनेवाला। ३ वाहियात और उद्दंड आदमी।

फक्कड़बाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फक्कड़+फा० बाजी (प्रत्य०)] गंदी और वाहियात बातें बकना।

फक्किका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कूट प्रश्न। २ अनुचित व्यवहार। ३ धोखेबाजी।

फखर—संज्ञा पुं० [फा० फख] गौरव। गर्व।

फग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "फंग"।

फगुआ—संज्ञा पुं० [हिं० फागुन] १ होली। होलिकोत्सव का दिन। २ फागुन के महीने में लोगों का आमोद प्रमोद जो वसंत ऋतु के आगमन के उपलक्ष में माना जाता है। उ०—दीन्हें मारि असुर हरि ने तब दीन्हों देवन राज। एकन को फगुआ इंद्रासन एक पताल को साज।—सूर०। फाग।

मुहा०—फगुआ खेलना या मनाना=होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

३. फागुन में गाए जानेवाले अश्लील गीत। ४ फगुआ खेलने के उपलक्ष में दिया जानेवाला उपहार। उ०—ज्यों ज्यों पट झटकति हटति हँसति नचावति नैन। त्यों त्यों निपट उदार है फगुआ देत बनै न।—बिहारी०।

फगुनहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फागुन+हट (प्रत्य०)] फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फगुहारा—संज्ञा पुं० [हिं० फगुआ+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन] वह जो फाग खेलने या गाने के लिये होली में किसी के यहाँ जाय।

फजर—संज्ञा स्त्री० [अ०] सवेरा। प्रातःकाल।

फजल—संज्ञा पुं० [अ० फ़ज़्ल] अनुग्रह। कृपा।

फजीलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] उत्कृष्टता। श्रेष्ठता।

मुहा०—फजीलत की पगड़ी=विद्वत्ता सूचक पदक या चिह्न।

फजीहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति।

फजूल—वि० [अ०] जो किसी काम का न हो। व्यर्थ। निरर्थक।

फजूलखर्च—वि० [फा०] [संज्ञा फजूलखर्ची] अपव्ययी। बहुत खर्च करनेवाला।

फट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हलकी पतली चीज के हिलने या गिरने पड़ने का शब्द। २ एक तांत्रिक मंत्र। अस्त्रमंत्र।

फटक—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] बिल्लौर।

क्रि० वि० [अनु०] तत्क्षण। झट।

फटकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकना] वह भूसी जो अन्न को फटकने पर निकले।

फटकना—क्रि० स० [अनु० फट] १ हिलाकर फट फट शब्द करना। फटफटाना। २ पटकना। झटकना। उ०—नेक फटक्यो लात शब्द भयो आघात गिरयो भहरात शकटा सँहारयो। सूर प्रभु नंदलाल दनुज मार्‍यो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उबार्‍यो।—सूर०। ३ फेंकना। चलाना। मारना। उ०—असुर गजरूप है गदा मारै फटकि श्याम अंग लागि सो गिरै ऐसे।

बाल के हाथ ते कमल अमल नालयुत लागि गजराज तन गिरत जैसे। —सूर०। ४. सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना।

मुहा०—फटकना पछोरना =(१) सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। उ०—मूँग मसूर उरद चना दारी। कनक बरन धरि फटक पछारी। —सूर०। (२) अच्छी तरह जाँचना। परखना। उ०—आपुनि श्याम, श्याम अंतर मन श्याम काम के बोरे। तुम मधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे। —सूर०।

५ रूई आदि को फटके से धुनना।

क्रि० अ० [अनु०] १ जाना। पहुँचना। उ०—कृष्ण हैं, उद्धव हैं, पर ब्रजवासी उनके निकट फटकने नहीं पाते।—प्रेमसागर। २ दूर होना। अलग होना। ३ तड़फड़ाना। हाथपैर पटकना। ४ श्रम करना। हाथपैर हिलाना।

फटका—संज्ञा पुं० [अनु०] १ रूई धुनने की धुनकी। २ कोरी तुकबदी। रस और गुण से हीन कविता।

संज्ञा पु० दे० "फाटक"।

फटकाना—क्रि० स० [हिं० फटकना का स० रूप] १ अलग करना। फेंकना। उ०—मोको जुरि मारन जब धाई तबही दीनी गेंडुरि फटकाई। —सूर०। २. फटकने का काम दूसरे से कराना।

फटकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकारना] १. फटकारने की क्रिया या भाव। झिड़की। दुसकार। २ दे० "फिटकार"।

फटकारना—क्रि० स० [अनु०] १. (शस्त्र आदि) मारना। चलाना। २ बहुत सी चीजों को एक साथ झटका मारना जिसमें वे छितरा जायँ। ३ लेना। लाभ उठाना। ४. अच्छी तरह पटक पटककर धोना। ५ झटका देकर दूर फेंकना। उ०—काहू नहीं डरात कन्हाई बाट घाट धुम करत अचगरी। जमुनादह गेंडुरी फटकारी फोरी सब सिर की अब गगरी। —सूर०। ६ खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना।

फटना—क्रि० अ० [हिं० फाड़ना का अ० रूप] १. किसी पोली चीज में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीजें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगें।

मुहा०—छाती फटना = असह्य दुःख होना। बहुत अधिक दुःख पहुँचना। (किसी से) मन या चित्त फटना = विरक्ति होना। सबध रखने को जी न चाहना। फटे हाल = बहुत ही दुरवस्था में। बहुत अधिक गरीबी।

२. किसी वस्तु का कोई भाग बीच से अलग हो जाना। बीच से कटकर छिन्न भिन्न हो जाना। ३ अलग हो जाना। पृथक् हो जाना। ४. द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग अलग हो जायँ। ५ किसी बात का बहुत अधिक होना।

मुहा०—फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना।

६ बहुत अधिक पीड़ा होना।

फटफटाना—क्रि० स० [अनु०] १ व्यर्थ बकवाद करना। २ फटफट शब्द करना। फड़फड़ाना। ३. हाथ पैर मारना। प्रयास करना। ४. इधर उधर टक्कर मारना।

क्रि० अ० फट फट शब्द होना।

फटहा—वि० [हिं० फटना] १ फटा हुआ। २ गालीगलौज बकनेवाला।

फटा—संज्ञा पुं० [हिं० फटना] छिद्र। छेद।

मुहा०—किसी के फटे में पाँव देना = दूसरे की आपत्ति अपने ऊपर लेना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँप का फन। २ घमड। शेखी। ३ छल।

फटिक—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] १ बिल्लौर। स्फटिक। उ०—ज्यों गज फटिक शिला में देखत दसनन जाय अरत। जो तू सूर सुखहि चाहत है तो क्यों विषय परत। —सूर०। २ मरमर पत्थर। सगमरमर।

फट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० फटना] [स्त्री० फट्टी] बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा। फलटा।

संज्ञा पु० [सं० पट] टाट।

मुहा०—फट्टा लौटना या उलटना = दिवाला निकालना। टाट उलटना।

फड़—संज्ञा पुं० [सं० पण] १ जूए का दाँव जिसपर जुआरी बाजी लगाते हैं। दाँव। २. जूआखाना। जूए का अड्डा। ३ वह स्थान जहाँ बैठकर दूकानदार माल खरीदता या बेचता हो। ४ पक्ष। दल।

संज्ञा पुं० [सं० पटल या फल] १. वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ाई जाती है। चरख। २. गाड़ी का हरसा।

फड़क, फड़कन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कना—क्रि० अ० [अनु०] १. बार बार नीचे ऊपर या इधर उधर हिलना। फड़फड़ाना। उछलना।

मुहा०—फड़क उठना या जाना = आनंदित होना। प्रसन्न होना। मुग्ध होना। एकाएक भावावेश में आ जाना।

२ किसी अंग में अचानक स्फुरण होना। ३. हिलना डोलना। गति होना।

मुहा०—बोटी फड़कना = अत्यंत चचलता होना।

४. चंचल होना। किसी क्रिया के लिये उद्यत होना।

फड़काना—क्रि० स० [हिं० फड़कना का प्रे० रूप] दूसरे को फड़कने में प्रवृत्त करना।

फड़नवीस—संज्ञा पु० [फा० फर्दनवीस] मराठों के राजत्वकाल का एक राजपद।

फड़फड़ाना—क्रि० स० [अनु०] १ फड़फड़ शब्द करना। हिलाना; जैसे, पर फड़फड़ाना। २ दे० "फटफटाना"।

फड़बाज—संज्ञा पुं० [हिं० फड़+फा० बाज] वह जो लोगों को अपने यहाँ जूआ खेलाता हो।

फड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० फड़+इया (प्रत्य०)] १ खुदरा अन्न बेचनेवाला। २ फड़बाज।

फण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० फणा] १ साँप का फन। २ रस्सी का फदा। मुद्धी। ३ नाव का अगला ऊपरी भाग।

फणधर—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

फणिक—संज्ञा पुं० [सं० फणी] साँप। नाग। उ०—सखी री नदनदन देखु। धूलि धूसर जटा जुटली हरि किए हर भेखु॥ नील पाट पिरोइ मणि गर फणिक धोखे जाय। खुनखुना कर हँसत मोहन नचत डौंरु बजाय॥ —सूर०।

फणिपति—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फणिमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप की मणि।

फणींद्र—संज्ञा पु० [सं०] १ शेष। २ वासुकि। ३ बड़ा साँप।

फणी—संज्ञा पुं० [सं० फणिन्] साँप।

फणींश—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फतवा—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो उस धर्म के आचार्य या मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।

फतह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विजय। जीत। २ सफलता। कृतकार्यता।

फतहमद—वि० [अ० फतह+फा० मद] विजयी। विजेता।

फतिंगा—संज्ञा पुं० [सं० पतग] [स्त्री० फतिंगी] १. किसी प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा। २ पतिंगा। पतंग।

फतीलसोज—संज्ञा पुं० [फा०] १. धातु की दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर-नीचे बने होते हैं। चौमुखा। २ दीवट। चिरागदान।

फतीला—संज्ञा पुं० दे० "पलीता"।

फतूर—संज्ञा पुं० [अ०] १ विकार। दोष। २ हानि। नुकसान। ३ विघ्न। बाधा। ४ उपद्रव। खुराफात।

फतूरिया—वि० [अ० फतूर+हिं० इया (प्रत्य०)] खुराफात करनेवाला। उपद्रवी।

फतूही—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती। सदरी। २ लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फतेⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "फतह"। उ०—सामौं सेन, सयान की सबै साहि कैं साथ। बाहुबली जयसाहि जू, फते तिहारैं हाथ। —बिहारी०।

फतेह—संज्ञा स्त्री० [अ० फतह] विजय। जीत।

फदकना—क्रि० अ० [अनु०] १ फद फद शब्द करना। भात या रस आदि का पकते समय फद फद शब्द करके उछलना। खदबद करना। २ दे० "फुदकना"। उ०—फूले फदकत लै फरी पलकटाछ-करवार। करत बचावत विय-नयन पाइक घाव हजार।—बिहारी०।

फदफदाना—क्रि० अ० [अनु०] १ शरीर का फुंसियों आदि से भर जाना। २ वृक्ष का शाखाओं से भरना।

फन—संज्ञा पुं० [सं० फण] साँप का सिर उस समय जब वह अपनी गर्दन के दोनों ओर की नलियों में वायु भरकर उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है। फण।

संज्ञा पुं० [फा०] १ गुण। खूबी। २. विद्या। ३. दस्तकारी। ४ छलने का ढंग। मकर।

फनकना—क्रि० अ० [अनु०] हवा में सन सन करते हुए हिलना या चलना।

फनकार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फनफन शब्द।

फनगा†—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फनफनाना—क्रि० अ० [अनु०] १. फन फन शब्द उत्पन्न करना। २ चंचलता के कारण हिलना।

फना—संज्ञा स्त्री० [अ०] विनाश। नाश। बरबादी।

मुहा०—दम फना होना। मारे भय के जान सूखना। बहुत अधिक भयभीत होना।

फनानाⓅ—क्रि० स० [?] १. तैयार करना। २ तैयार कराना।

फनिंगⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० फणींद्र] साँप।

फनिंदⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनिⓅ—संज्ञा पुं० १ दे० "फणी"। उ०—मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुम्हहिं अधीना। —मानस। २ दे० "फण"।

फनिग—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फनिधर—संज्ञा पुं० [सं० फणिधर] साँप।

फनिराज—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनीⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फणी"।

फनीस—संज्ञा पुं० [सं० फणीश] शेषनाग। उ०—रामराज कर सुख सपदा। बरनि न सकै फनीस सारदा।—मानस।

फनूसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।

फन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० फण] लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज की जड़ में उसे कसने के लिये ठोंका जाता है। पच्चर।

फफूँटीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुबती] स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी।

संज्ञा स्त्री० [हिं०=(रूई का) फाहा] काई की तरह की, पर सफेद, तह जो बरसात में फल, लकड़ी आदि पर लगती है। भुकड़ी।

फफोला—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्फोट] चमड़े पर का पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है। छाला। झलका।

मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने दिल की जलन या क्रोध प्रकट करना।

फबती—संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] १. वह बात जो समय के अनुकूल हो। २. हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। व्यंग्य। चुटकी।

मुहा०—फबती उड़ाना=हँसी उड़ाना। फबती कहना=चुभती हुई पर हँसी की बात कहना।

फबन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] फबने का भाव। शोभा। छवि। सुंदरता।

फबना—क्रि० अ० [सं० प्रभवन] सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना। सोहना। उ०—फबि रही मोर चद्रिका माथे छबि की उठत तरग। मनहु अमरपति धनुष बिराजत नव जलधर के सग।—सूर०।

फबाना—क्रि० स० [हिं० फबना का स० रूप] ऐसी जगह लगाना जहाँ भला जान पड़े।

फबिⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

फबिता—संज्ञा स्त्री० [हिं० फबि+ता (प्रत्य०)] शोभा। उ०—फेरि न मेटि सक्यो सविता कर राखि लियो अति ही फबिता लहि।—शृंगार०।

फबीला—वि० [हिं० फबि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] जो फबता या भला जान पड़ता हो। शोभा देनेवाला। सुंदर।

फरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "फल"।

संज्ञा पुं० [?] १. सामना। मुकाबिला। २ बिछावन। बिछौना।

फरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १ फरकने की क्रिया या भाव। २. चचलता। फड़क। फुरती से उछलने कूदने की चेष्टा। उ०—मृगनैनी दृग की फरक, उर उछाह, तन फूल। बिन हीं पियआगम उमगि, पलटन लगी दुकूल।—बिहारी०।

संज्ञा पुं० [अ० फर्क] १ पार्थक्य। अलगाव। २ बीच का अंतर। दूरी।

मुहा०—फरक फरक होना='दूर हो' या 'राह छोड़ो' की आवाज होना। 'हटो बचो' होना।

३ भेद। अतर। ४ दुराव। परायापन। अन्यता। ५ कमी। कसर।

फरकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १.

फड़कने की क्रिया या भाव। दे० "फड़क"। २ फरक।

फरकनाⓅ†—क्रि० अ० [स० स्फुरण] १ दे० "फड़कना"। उ०—वायस गहगहात शुभ वाणी विमल पूर्व दिशि बोली। आजु मिलाओ श्याम मनोहर तू सुनु सखी राधिके भोली। कुच भुज अधर नयन फरकत हैं बिनहिं बात अचल ध्वज डोली।—सूर०। २ आप से आप बाहर आना। उमड़ना। ३. उड़ना।

फरका—संज्ञा पुं० [सं० फलक] १ वह छप्पर जो अलग छाकर बँडेर पर चढ़ाया जाता है। २ बँडेर के एक ओर की छाजन। पल्ला। ३ दरवाजे का टट्टर। उ०—सुनत मुरली अलिन धीर धरिकै। चली पितु मातु अपमान करिकै। लरत निकसी सबै तोरि फरिकै। भई आतुर वदन दरश हरि कै।—सूर०।

फरकाना—क्रि० स० [हिं० फरकना का स० रूप] १ फरकने के लिये प्रेरित करना। हिलाना। सचालित करना। उ०—तू काहे न वेगि सों आवै तोको कान्ह बुलावै। कबहूँ पलक हरि मूँदि लेत है कबहूँ अधर फरकावै।—सूर०। २ फड़फड़ाना।

क्रि० स० [हिं० फरक] अलग करना।

फरचा†—वि० [स० स्पृश्य] [क्रि० फरचाना] १ जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २ साफ सुथरा।

फरजद—संज्ञा पुं० [फा०] पुत्र। बेटा।

फरजी—संज्ञा पु० [फा०] शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं।

वि० नकली। बनावटी। कल्पित।

फरजीबद—संज्ञा पुं० [फा०] शतरंज के खेल में एक योग।

फरद—संज्ञा स्त्री० [अ० फर्द] १ लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज पर अलग लिखी गई हो। २ एक ही तरह के अथवा एक साथ काम में आनेवाले कपड़ों के जोड़े में से एक कपड़ा। पल्ला। ३ रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४. दो पद्यों की कविता।

वि० अनुपम। बेजोड़।

फरनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० फर] फलना।

फरफंद—संज्ञा पु० [हिं० फर+अनु० फंदा (जाल)] [वि० फरफंदी] १ दाँवपेंच। छल कपट। माया। २ नखरा। चोचला।

फरफंदी—वि० [हिं० फरफद+ई (प्रत्य०)] १ फरफद करनेवाला। छल कपट या दाँव पेंच करनेवाला। धूर्त। चालबाज। २ नखरेबाज।

फरफर—संज्ञा पुं० [अनु०] किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना—क्रि० स०, अ० दे० "फड़फड़ाना"।

फरफुंदाⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फरमाँबरदार—वि० [फा०] [संज्ञा फरमाँबरदारी] आज्ञाकारी। हुक्म माननेवाला।

फरमा—संज्ञा पुं० [अं० फ्रेम] १ लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिसपर रखकर चमार जूता बनाते हैं। कालबूत। २ वह साँचा जिसमें कोई चीज ढाली जाय।

संज्ञा पु० [अं० फार्म] कागज का पूरा ताव जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

फरमाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] आज्ञा, विशेषत वह आज्ञा जो कोई चीज लाने या बनाने आदि के लिये दी जाय।

फरमाइशी—वि० [फा०] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

फरमान—संज्ञा पुं० [फा०] राजकीय आज्ञापत्र। अनुशासनपत्र।

फरमाना—क्रि० स० [फा०] आज्ञा देना। कहना (आदरसूचक)।

फरराना†—क्रि० अ० दे० "फहराना"।

फरलांग—संज्ञा पु० [अं०] एक मील का आठवाँ भाग या २२० गज की दूरी।

फरवी—संज्ञा स्त्री० [स० स्फुरण] एक प्रकार का भूना हुआ चावल। मुरमुरा। लाई।

फरश—संज्ञा पु० [अ० फर्श] १ बैठने के लिये बिछाने का वस्त्र। बिछावन। २ धरातल। समतल भूमि। ३ पक्की बनी हुई जमीन। गच।

फरशबद—संज्ञा पु० दे० "फरश"।

फरशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] धातु का वह बरतन जिसपर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं। गुड़गुड़ी। २ इस प्रकार बना हुआ हुक्का।

फरसⓅ—संज्ञा पु० दे० "फरश"।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "फरसा"।

फरसा—संज्ञा पु० [स० परशु] १ पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी। २. फावड़ा।

फरहद—संज्ञा पुं० [सं० पारिभद्र] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

फरहना†—क्रि० अ० [अनु० फरफर] १ फरफराना। फरकना। २ फहराना।

फरहरा—संज्ञा पु० [हिं० फहराना] पताका। झंडा।

फरहरीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "फलहरी"।

फराकⓅ—संज्ञा पुं० [फा० फराख] मैदान।

वि० लंबा चौड़ा। विस्तृत।

संज्ञा स्त्री० [अं० फ्राक] स्त्रियों और बच्चों का एक पहनावा।

Ⓟवि० दे० "फराख"।

फराकत—वि० [फा० फराख] लंबा चौड़ा और समतल। विस्तृत।

वि० संज्ञा पुं० दे० "फरागत"।

फराख—वि० [फा०] लंबा चौड़ा।

फराखी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौड़ाई। विस्तार। २ आढ्यता। संपन्नता।

फरागत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ छुटकारा। छुट्टी। मुक्ति। २ निश्चितता। बेफिक्री। ३ मलत्याग। पाखाना फिरना।

फराज—वि० [फा० फराज] ऊँचा।

यौ०—नशे इफराज=१ ऊँचा नीचा २ भला बुरा।

फरानाⓅ—क्रि० स० दे० "फलाना"।

फरामोश—वि० [फा०] भूला हुआ। विस्मृत।

फरामोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] भूल जाना। विस्मृति।

फरार—वि० [अ०] भागा हुआ।

फरारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] भागने की क्रिया या भाव।

फरालना—क्रि० स० [हिं० फैलाना] फैलाना। पसारना।

फरासⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फर्राश"।

फरासीस—संज्ञा पुं० [फा०] १ फ्रांस देश। २ फ्रांस का रहनेवाला। ३ एक प्रकार की लाल छींट।

फरासीसी—वि० [हिं० फरासीस] १ फ्रांस का रहनेवाला। २ फ्रांस का।

फरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० फरना] वह लहँगा जो सामने की ओर से सिला नहीं रहता।

फरियाद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ से दुःख

बचाव आने के लिये पुकार। शिकायत। नालिश। २. बिनती। प्रार्थना।

फरियादी—वि० [फा०] फरियाद करनेवाला।

फरियाना—क्रि० स० [सं० फलीकरण] १. छाँटकर अलग करना। २. साफ करना ३ निबटाना। तै करना।

क्रि० अ० १. छँटकर अलग होना। २. साफ होना। ३. तै होना। निबटना। ४. समझ पड़ना।

फरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] १ ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो (मुसल०)। २ देवता।

फरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० फल] १. फाल। कुशी। २. गाड़ी का हरसा। फड़। ३ चमड़े की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं।

फरीक—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुकाबला करनेवाला। प्रतिद्वंद्वी। विरोधी। विपक्षी। २. दो पक्षों में से किसी पक्ष का मनुष्य।

यौ०—फरीक सानी = प्रतिवादी (कानून)।

फरुही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० फावड़ा] १ छोटा फावड़ा। २ लकड़ी का एक औजार जिससे क्यारी बनाने के लिये खेत की मिट्टी हटाई जाती है। ३. मथानी। ४. लाई।

संज्ञा स्त्री० दे० "फरवी"।

फरेंदा†—संज्ञा पुं० [सं० फलेंद्र] [स्त्री० फरेंदी] एक प्रकार का बढ़िया, बड़ा और गूदेदार जामुन।

फरेब—संज्ञा पुं० [फा०] छल। कपट। जाल। धोखा।

फरेबी—संज्ञा पुं० [फा०] कपटी। धोखेबाज।

फरेरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० फर+री (प्रत्य०)] जंगल के फल। जंगली मेवा।

फरो—वि० [फा०] दबा हुआ। तिरोहित; जैसे, झगड़ा फरो करना।

फरोख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] विक्रय। बिक्री।

फरोश—संज्ञा स्त्री० [फा०] [संज्ञा फरोशी] बेचनेवाला (यौ० के अंत में)।

फर्क—संज्ञा पुं० दे० "फरक"।

फर्जंद—संज्ञा पुं० [फा०] बेटा। पुत्र।

फर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. कर्तव्य कर्म। २. कल्पना। मान लेना।

फर्जी—वि० [फा०] १ कल्पित। माना हुआ। २ नाम मात्र का। सत्ताहीन।

संज्ञा पुं० दे० "फरजी"।

फर्द—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कागज या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. कागज का वह टुकड़ा जिसपर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची आदि लिखी गई हो। ३. रजाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चादर। पल्ला।

फर्राटा—संज्ञा पुं० [अनु०] १. वेग। तेजी। क्षिप्रता। २. दे० "खर्राटा"।

फर्राश—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फर्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २. नौकर। खिदमतगार।

फर्राशी—वि० [फा०] फर्श या फर्राश के कामों से संबंध रखनेवाला।

यौ०—फर्राशीपंखा = बड़ा पंखा जिससे फर्श भर हवा की जा सकती हो।

संज्ञा स्त्री० फर्राश का काम या पद।

फर्श—संज्ञा पुं० [अ०] १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फरश"।

फर्शी—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।

वि० फर्श संबंधी। फर्श का।

मुहा०—फर्शी सलाम = जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।

फलंकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फर्लांग"।

संज्ञा पुं० [फा० फलक] आकाश।

फल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीजकोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है। उ०—करहिं अहार साक फल कंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा॥ —मानस। २ लाभ। उ०—फल कारण सेवा करै निशिदिन जाँचै राम। कहै कबीर सेवक नहीं चहै चौगुनो दाम॥ —मानस। ३ प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। उ०—मज्जन फल पेखिय ततकाला। काक होहिं पिक बकौ मराला। —मानस। ४ धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्म का परिणाम जो सुख या दुख है। कर्मभोग। उ०—अकथ अलौकिक तीरथराऊ। देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ॥ —मानस। ५ गुण। प्रभाव। उ०—नाम प्रभाव जानु सिव नीके। कालकूट फल दीन्ह अमी के॥ —मानस। ६ शुभ कर्मों के परिणाम जो संख्या में चार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। उ०—रामनाम कामतरु देत फल चारि रे। कहत पुरान, बेद, पंडित, पुरारि रे॥ —विनय०। ७. प्रतिफल। बदला। प्रतीकार। उ०—एहिकर फल पावहुगे आगे। बानर भालु चपेटन लागे॥ —मानस। ८ बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाल। १०. फलक। ११ ढाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। उ०—सियराम सरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनन को जलु है। श्रुति रामकथा मुख राम को नाम हिए पुनि रामहिं को थलु है॥ मति रामहिं सों गति रामहिं सों रति राम सों रामहिं को बलु है। सबकी न कहै तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फलु है॥ —कवित्त०। १३ न्यायशास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है। १४ गणित की किसी क्रिया का परिणाम, जैसे, योगफल, गुणनफल, आदि। १५ त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति में प्रथम निष्पत्ति का द्वितीय पद। १६. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम जो सुख दुःख आदि के रूप में होता है। १७. पासे पर की बिंदी या चिह्न। १८ क्षेत्रफल। १९ मूल का ब्याज। सूद। २०. प्रयोजन। २१. जायफल। २२ कायफल।

फलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पटल। तख्ता। पट्टी। २ चादर। ३. वरक। तबक। ४. पत्र। वरक। पृष्ठ। ५ हथेली। ६ फल।

संज्ञा पुं० [अ०] १. आकाश। २. स्वर्ग।

फलकना—क्रि० अ० [अनु०] १. छलकना। उमगना। २. दे० "फरकना"।

फलकर—संज्ञा पुं० [सं० फल+कर] वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाय।

फलका—संज्ञा पुं० [सं० स्फोटक] फफोला। छाला। झलका।

फलतः—अव्य० [सं०] फलस्वरूप। परिणामतः। इसलिये। नतीजे में।

फलद—वि० [सं०] फल देनेवाला।

फलदान—संज्ञा पुं० [सं० फल+दान] हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति जिसके अनुसार कन्यापक्ष से वर के पिता या अभिभावक को किसी शुभ मुहूर्त में

रुपया, मिठाई, फूल, अन्नत आदि दिया जाता है। वररच्छा।

फलदार—वि० [हिं० फल+दार फा० (प्रत्य०)] १ जिसमें फल लगे हों। २ जिसमें फल लगें।

फलना—क्रि० अ० [स० फलन] १ फल से युक्त होना। फल लाना। २ फल देना। लाभदायक होना।

मुहा०—फलना फूलना=सुखी और सपन्न होना।

३ शरीर में छोटे छोटे दानों का निकल आना जिससे पीड़ा होती है।

फलयोग—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति या उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है।

फललक्षणा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लक्षणा।

फलवान्—वि० [स०] १ फलों से युक्त। २ सफल।

फलश्रुति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ अर्थवाद। वह वाक्य जिसमें किसी कर्म के फल का वर्णन होता है और जिसे सुनकर लोगों की उस कर्म को करने की प्रवृत्ति होती है; जैसे, अमुक यज्ञ करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, दान करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है, आदि। २ ऐसे वाक्य सुनना।

फलहरी—संज्ञा स्त्री० [स० फल+हिं० हरी (प्रत्य०)] १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २ फल। मेवा।

फलहार—संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"।

फलहारी—वि० [हिं० फलहार+ई (प्रत्य०)] जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, केवल फल से बना हो।

फलाँ—वि० [फा०] अमुक। फलाना।

फलाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलंघन] १ एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। उ०—सुनी सिंह भय मानि अवाज। नारि फलाँग चली वह भाज।—सूर०। २ वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना—क्रि० अ० [हिं० फलाँग से ना० धा०] एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

फलांश—संज्ञा पुं० [सं०] तात्पर्य। सारांश। भसल मतलब।

फलाकना(पु)—क्रि० स० दे० "फलागना"।

फलागम—संज्ञा पुं० [सं०] १ फल लगने की ऋतु या मौसिम। फल आने का काल। २ शरद् ऋतु।

फलादेश—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मकुंडली आदि देखकर ग्रहों आदि का फल कहना (ज्योतिष)।

फलाना—संज्ञा पुं० [अ० फलाँ+ना (प्रत्य०)] [स्त्री० फलानी] अमुक। कोई अनिश्चित।

† क्रि० स० [हिं० फलना का प्रेरणा० रूप] किसी को फलने में प्रवृत्त करना।

फलालीन, फलालेन—संज्ञा पुं० [अं० फ्लैनेल] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलार्थी—संज्ञा पुं० [सं० फलार्थिन्] वह जो फल की कामना करे। फलकामी।

फलाशी—वि० [स० फलाशिन्] फल खानेवाला।

फलाहार—संज्ञा पुं० [स०] केवल फल खाना। फलभोजन।

फलाहारी—संज्ञा पुं० [सं० फलाहारिन्] [स्त्री० फलाहारिणी] जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

वि० [हिं० फलाहार+ई (प्रत्य०)] फलाहार संबंधी। जो केवल फलों से बना हो।

फलित्र—वि० [सं० फलित] दे० 'फलित'। उ०—पल्लवित्र कुसुमित्र फलित्र उपवन चूअ चपक सोहिआ।

यौ०—फलित ज्योतिष=ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता है।

फलिन—संज्ञा पुं० [स०] १ वह वृक्ष जिसमें फल लगते हों। २ कटहल।

फली—संज्ञा स्त्री० [स० फल+हिं० ई (प्रत्य०)] छोटे पौधों में लगनेवाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं। छीमी।

फलीता—संज्ञा पुं० [अ० फतीला] १. वह आदि के रेशों से बटी हुई रस्सी जिसमें तोड़ेदार बदूक दागने के लिये आग लगाकर रखी जाती है। पलीता। २ बत्ती।

फलीभूत—वि० [सं०] फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।

फलेंदा—संज्ञा पुं० [सं० फलेंद्र] एक प्रकार का बढ़िया, बड़ा और गूदेदार जामुन। फरेंदा।

फसकड़ा—संज्ञा पुं० [अनु०] पलथी (तिरस्कार)।

फसल—संज्ञा स्त्री० [अ० फस्ल] १ ऋतु। मौसम। २ समय। काल। ३. शस्य। खेत की उपज। अन्न। पैदावार।

फसली—वि० [सं०] ऋतु का।

संज्ञा पुं० १ अकबर का चलाया हुआ एक संवत जो ईसवी संवत से ५८३ वर्ष कम होता है और सौर गणना पर चलता है। इसका प्रचार उत्तरी भारत में खेती बारी आदि के कामों में होता है। २ हैजा।

फसाद—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० फसादी] १ बिगाड़। विकार। २. बलवा। विद्रोह। ३. ऊधम। उपद्रव। ४ झगड़ा। लड़ाई।

फसादी—वि० [फा०] १ फसाद खड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २ झगड़ालू।

फस्द—संज्ञा स्त्री० [अ०] नस को छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

मुहा०—फस्द खुलवाना या लेना=(१) शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। (२) होश की दवा करना।

फहम—संज्ञा स्त्री० [अ०] ज्ञान। समझ।

फहरना—क्रि० अ० [स० प्रसरण] [फहराना का अकर्मक रूप] वायु में उड़ना।

फहरान—संज्ञा स्त्री० [हिं० फहराना] फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना—क्रि० स० [स० प्रसारण] कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।

क्रि० अ० हवा में रह रहकर हिलना या उड़ना। फहरना।

फहरानि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "फहरान"।

फहश—वि० [अ० फुहश] फूहड़। अश्लील।

फाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० फलक] १ किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। २ खंड। टुकड़ा।

फाँकना—क्रि० स० [हिं० फंकी] दाने या बुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना।

मुहा०—धूल फाँकना=दुर्दशा भोगना।

फाँग, फाँगी—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

फाँट—संज्ञा पुं० [देश०] काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना—क्रि॰ स॰ [हिं॰ फाँट] काढ़ा बनाना।

फाँद(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "फाँदा"।

फाँदा†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ फांद=पेट] दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फाँद—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ फाँदना] उछलने या फाँदने का भाव। उछाल।

संज्ञा स्त्री॰, पुं॰ [हिं॰ फंदा] फंदा। पाश।

फाँदना—क्रि॰ अ॰ [सं॰ फणन] एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।

क्रि॰ स॰ कूदकर लाँघना।

क्रि॰ स॰ [हिं॰ 'फंदा' से ना॰ धा॰] फंदे में फँसाना।

फाँफी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पर्पटी] १. बहुत महीन झिल्ली। २ माँड़ा। जाला (रोग)।

फाँस—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पाश] १. पाश। बंधन। फंदा। २. वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशुपक्षी फाँसते हैं।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पनस] १ बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में चुभ जाता है। २ पतली तीली या कमाची।

फाँसना—क्रि॰ स॰ [हिं॰ 'फाँस' से ना॰ धा॰] १ पाश में बाँधना। जाल में फँसाना। २ धोखा देकर अपने अधिकार में करना।

फाँसी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ फाँस] १ फँसाने का फंदा। पाश। २ वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से दम घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है।

मुहा॰—फाँसी चढ़ना=पाश द्वारा प्राणदंड पाना।

३ वह दंड जो अपराधी को फंदे के द्वारा मार कर दिया जाय।

मुहा॰—फाँसी देना=गले में फंदा डालकर मार डालना।

फाइल—संज्ञा स्त्री॰ [अं॰] १ कागजों आदि की नत्थी। २ कागजपत्रों का समूह। मिसिल।

फाउंड्री—संज्ञा स्त्री॰ [अं॰] वह कल या कारखाना जहाँ धातु की चीजें ढाली जाती हैं। ढालने का कारखाना, जैसे टाइप फाउंड्री।

फाका—संज्ञा पुं॰ [अ॰ फाक] उपवास।

फाकामस्त, फाकेमस्त—वि॰ [फा॰] जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

फाख्ता—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] पंडुक। धवँरखा।

फाग—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ फागुन] १. फागुन में होनेवाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २ वह गीत जो फाग के उत्सव में गाया जाता है।

फागुन—संज्ञा पुं॰ [सं॰ फाल्गुन] माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फाजिल—वि॰ [अ॰] १. आवश्यकता से अधिक। २. विद्वान्।

फाटक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ कपाट] १. बड़ा द्वार। बड़ा दरवाजा। तोरण। २† मवेशीखाना। काँजीहौस।

संज्ञा पुं॰ [हिं॰ फटकना] भूसी जो अनाज फटकने से बची हो। पछोड़न। फटकन।

फाटना—क्रि॰ अ॰ दे॰ "फटना"।

फाड़खाऊ—वि॰ [हिं॰√फाड़+खाना] फाड़ खानेवाला। हिंसक।

फाड़न—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ फाड़ना] कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

फाड़ना—क्रि॰ स॰ [सं॰ स्फाटन] १ चीरना। विदीर्ण करना। २. टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३ सीधे या जोड़ फैलाकर खोलना। ४ किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार-पदार्थ अलग-अलग हो जायँ।

फातिहा—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. प्रार्थना। २ वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय।

फानना—क्रि॰ स॰ [सं॰ फारण] धुनना। रूई फटकना।

† क्रि॰ स॰ [सं॰ उपायन] आरंभ करना। अनुष्ठान करना।

फानूस—संज्ञा पुं॰ [फा॰] १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २ एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

[अं॰ फरनेस] ईंटों को पकाने या धातुओं को गलाने की भट्ठी।

फाफर—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कूटू"।

फाब(पु)—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "फबन"।

फाबना(पु)†—क्रि॰ अ॰ दे॰ "फबना"।

फायदा—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. लाभ। नफा। प्राप्ति। २. प्रयोजनसिद्धि। मतलब पूरा होना। ३ अच्छा फल। भला परिणाम। ४ उत्तम प्रभाव। अच्छा असर।

फायदेमंद—वि॰ [फा॰] लाभदायक।

फार(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "फाल"।

फारखती—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ फारिग+खती] वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाकी।

फारना(पु)†—क्रि॰ स॰ दे॰ "फाड़ना"।

फारम—संज्ञा पुं॰ [अं॰ फार्म] १. दरखास्तों और रसीदों आदि के वे नमूने जिनमें यह लिखा रहता है कि कहाँ क्या लिखना चाहिए। २ दे॰ "फरमा"।

संज्ञा पुं॰ [अं॰ फार्म] जमीन का वह बड़ा टुकड़ा जिसमें बहुत से खेत होते हैं और जिनमें व्यवस्थित रूप से बड़े पैमाने पर खेती बारी होती है।

फारस—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पारस"।

फारसी—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] फारस देश की भाषा।

फारा†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ फाल] १. फाल। कतरा। कटी हुई फाँक। २ दे॰ "फाल"।

फारिग†—वि॰ [अ॰] १ जो कोई काम करके छुट्टी पा गया हो। २ मुक्त। स्वतंत्र।

फार्म—संज्ञा पुं॰ १ दे॰ "फारम"। २. दे॰ "फरमा"।

फाल—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] लोहे का चौकोर लंबा छड़ जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती है। कुस। कुसी।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ फलक] १ काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। २ कटी हुई सुपारी। छालिया।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ प्लव] १ डग। फलाँग।

मुहा॰—फाल बाँधना = उछलकर लाँघना।

२ कदम भर का फासला। पेंड़।

फालतू—वि॰ [हिं॰ फाल=टुकड़ा+तू (प्रत्य॰)] १ आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २ व्यर्थ। निकम्मा।

फालसई—वि॰ [फा॰ फालसा] फालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलका ऊदा।

फालसा—संज्ञा पुं० [फा० सं० परूषक] एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फालिज—संज्ञा पुं० [अ०] एक रोग जिसमें आधा अंग सुन्न हो जाता है। अर्धांग पक्षाघात। लकवा।

फालूदा—संज्ञा पुं० [फा०] पीने के लिये गेहूँ के सत्त से बनाई हुई एक चीज (मुसल०)।

फाल्गुन—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चांद्र मास जो माघ और चैत्र के बीच में पड़ता है। दे० "फागुन"। २. अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा—संज्ञा पुं० सं० फाल] [स्त्री० अल्पा० फावड़ी] मिट्टी खोदने और टालने का एक औजार। फरसा।

फाश—वि० [फा०] खुला। प्रकट।

फासला—संज्ञा पुं० [अ०] दूरी। अंतर।

फाहा—संज्ञा पुं० [सं० फाल] तेल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रूई। फाया।

फाहिशा—वि० स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।

फिकर, फिकिर—संज्ञा स्त्री० दे० "फिक्र"।

फिकरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. वाक्य। २ व्यंग्य। ३ झाँसा पट्टी।

मुहा०—फिकरा चलाना=धोखा देने के लिये कोई बात बनाकर कहना; जैसे, आप भी बैठे बैठे फिकरा चलाया करते हैं। फिकरा चलना=धोखा देने के लिये कही हुई बात का अभीष्ट फल होना। फिकरे सुनाना, ढालना या कहना=व्यंग्यपूर्ण बात कहना। बोली बोलना। आवाज कसना।

फिकैत—संज्ञा पुं० [हिं०√फेंक+ऐत (प्रत्य०)] वह जो फरी, गदका चलाता हो।

फिक्र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। सोच। खटका। २ ध्यान। विचार। ३. उपाय का विचार। यत्न। तदबीर।

फिक्रमंद—वि० [अ० फिक्र+फा० मंद] चिंतायुक्त।

फिचकुर—संज्ञा पुं० [सं० पिच्छ=लार] फेन जो मूर्छा या देहोशी आने पर मुँह से निकलता है। मुँह से निकला हुआ झाग।

फिट—अव्य० [अनु०] धिक्। छी। थुड़ी। [धिक्कारने का शब्द]।

वि० [अँ०] ठीक। उचित। उपयुक्त।

फिटकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिट+कार] १. धिक्कार। लानत। २. शाप। कोसना। बद्दुआ।

फिटकिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्फटिक] एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।

फिटन—संज्ञा स्त्री० [अँ०] चार पहिए की एक प्रकार की खुली गाड़ी जिसे एक या दो घोड़े खींचते हैं।

फिटाना—क्रि० स० [देश०] हटाना। दूर करना।

फिट्टा—वि० [हिं० फिट] फटकार खाया हुआ। अपमानित। श्रीहत।

मुहा०—फिट्टा मुँह=उतरा मुँह=उतरा या फीका पड़ा हुआ चेहरा।

फितना—संज्ञा पुं० [अ०] १ झगड़ा, दंगाफसाद या उत्पात करनेवाला। २. एक प्रकार का इत्र।

फितरती—वि० [अ०] फितरत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. चालाक। चतुर। २ फितूरी। मायावी। धोखेबाज।

फितूर—संज्ञा पुं० [अ० फुतूर] वि० फितूरी १ विकार। विपर्यय। खराबी। २ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।

फिदवी—वि० [अ० फिदाई से फा०] स्वामिभक्त। आज्ञाकारी।

संज्ञा पुं० [स्त्री० फिदविया] दास।

फिनिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है।

फिरंग—संज्ञा पुं० [अँ० फ्रांस] १ योरोप का एक देश। गोरों का मुल्क फिरंगिस्तान। २ गरमी। आतशक (रोग)।

फिरंगी—वि० [हिं० फिरंग] १ फिरंग देश में उत्पन्न। २ फिरंग देश में रहनेवाला। गोरा। ३ फिरंग देश का।

संज्ञा पुं० [हिं० फिरंग+ई (प्रत्य०)] १ योरोप का निवासी। २ अँगरेज।

संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।

फिरंट—वि० [अँ० फ्रंट] १ फिरा हुआ। विरुद्ध। खिलाफ। २. विरोध या लड़ाई पर उद्यत।

फिर—क्रि० वि० [हिं० फिरना] १. एक बार और। दोबारा। पुन।

यौ०—फिर फिर=बार बार। कई दफा। उ०—फिर फिर बूझति, कहि कहा, कह्यो साँवरे गात। कहा करत देखे, कहाँ; अली चली क्यों बात।—बिहारी०।

२. भविष्य में किसी समय। और वक्त। ३. पीछे। अनंतर। उपरांत। ४. तब। उस अवस्था में।

मुहा०—फिर क्या है! =तब क्या पूछना है! तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।

५ और चलकर। आगे और दूरी पर। ६ इसके अतिरिक्त।

फिरका—संज्ञा पुं० [अ०] १. जाति। २. जत्था। ३ पंथ। सम्प्रदाय।

फिरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिरना] १. वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २. लड़कों का एक गोल खिलौना जिसे वे नचाते हैं। फिरहरी। ३ चकई नाम का खिलौना। उ०—नई लगनि, कुल की सकुच बिकल भई अकुलाइ। दुहूँ ओर ऐंची फिरति, फिरकी लौं दिनु जाइ।—बिहारी०। ४ चमड़े का गोल टुकड़ा जो चरखे के तकवे में लगाया जाता है।

फिरगानाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फिरंगी"।

फिरता—संज्ञा पुं० [हिं० फिरना] [स्त्री० फिरती] १ वापसी २ अस्वीकार।

वि० वापस लौटाया हुआ।

फिरना—क्रि० अ० [हिं० फेरना का अ० रूप] १. इधर उधर चलना। भ्रमण करना। २. टहलना। विचरना। सैर करना। ३. चक्कर लगाना। बार बार फेरे खाना। ४. ऐंठा जाना। मरोड़ा जाना। ५ लौटना। वापस होना। उ०—अपने धाम फिरे तब दोऊ जानि भई कछु साँझ। करि दंडवत परसि पद ऋषि के बैठे उपवन माँझ।—सूर०। ६ सामना छोड़ना। दूसरी तरफ हो जाना। ७. मुड़ना।

मुहा०—किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना। जी फिरना=चित्त उचट जाना।

८ लड़ने या मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाना। ९. उलटा होना। विपरीत होना।

मुहा०—सिर फिरना = बुद्धि भ्रष्ट होना।

१० बात पर दृढ़ न रहना। ११ झुकना। टेढ़ा होना। १२ चारों ओर प्रचारित होना। घोषित होना। १३. किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना या चढ़ाया जाना।

फिरनी—संज्ञा स्त्री० दे० "फीरनी"

फिरवाना—क्रि० स० [हिं० 'फेरना' का प्रे० रूप] फेरने या फिराने का काम कराना।

फिराऊ—वि० [हिं०√फिर] १. फिरनेवाला। २ जाकड़। (माल) जो फेरा जा सके।

फिराक—संज्ञा पुं० [अ०] १ वियोग। बिछोह। २ चिंता। सोच। ३. खोज।

फिराना—क्रि० स० [हिं० फिरना का स० रूप] १ कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २. टहलाना। ३. चक्कर देना। बार बार फेरे खिलाना। ४ ऐंठना। मरोड़ना। उ०—मद गजराज द्वार पर ठाढ़ो हरि कह्यो नेकु बचाय। उन नहिं मान्यो सम्मुख आयो पकर्‌यो पूँछ फिराय। —सूर०। ५ लौटाना। पलटाना। उ०—तुम नारायण भक्त कहावत। काहे को तुम मोहिं फिरावत।—सूर०। ६ सामना एक ओर से दूसरी ओर करना। ७. दे० "फेरना"।

फिरार—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० फिरारी] भागना। भाग जाना।

फिरि(पु)—क्रि० वि० दे० "फिर"।

फिरियाद(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।

फिरकी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पिंडली (अंग)।

फिस—वि० [अनु०] कुछ नहीं (हास्य)।

मुहा०—टाँय टाँय फिस = थी तो बड़ी धूम, पर हुआ कुछ नहीं। फिस हो जाना = व्यर्थ हो जाना।

फिसड्डी—वि० [अनु० फिस] १ जिससे कुछ करते धरते न बने। २. जो काम में सबसे पीछे रहे। निकम्मा।

फिसलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिसलना] १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २. चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले।

फिसलना—क्रि० अ० [सं० प्र+सरण] १ चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। रपटना। २ प्रवृत्त होना। झुकना।

फिहरिस्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] तालिका। सूची।

फी—अव्य० [अ०] प्रति एक। हर एक।

फीका—वि० [सं० अपक्व] १ स्वादहीन। सीठा। नीरस। बेजायका। उ०—देह गेह सनेह अर्पण कमललोचन ध्यान। सूर उनको भजन देखत फीको लागत ज्ञान। —सूर०। २. जो चटकीला न हो। धूमिल। मलिन। उ०—चटक न छाँड़तु घटत हूँ सज्जन नेहु गँभीरु। फीको परै न बरु फटै, रँग्यो चोलरँग चीरु।—बिहारी०। ३. बिना तेज का। कांतिहीन। बेरौनक। ४. प्रभावहीन। व्यर्थ। निष्फल। उ०—नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि। तज्यो मनौ तारन बिरदु बारक बारनुबार।—बिहारी०।

फीता—संज्ञा पुं० [फा०] पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।

फीरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० फिरनी] एक प्रकार की खीर।

फीरोजा—संज्ञा पुं० [फा०] हरापन लिए नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फीरोजी—वि० [फा०] हरापन लिए नीला।

फील—संज्ञा पुं० [फा०] हाथी। उ०—फील रबाबी बलदु पखावज कौवा ताल बजावै।—कबीर०।

फीलखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।

फीलपा—संज्ञा पुं० [फा०] एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह मोटा हो जाता है।

फीलपाया—संज्ञा पुं० [फा०] १. खंभा। २ कमरकोट। कमरकल्ला।

फीलवान—संज्ञा पुं० [फा०] हाथीवान।

फीली—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] पिंडली।

फील्ड—संज्ञा पुं० [अं०] १ खेत। मैदान। २ खेलने का मैदान।

फीस—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ कर। शुल्क। २ मेहनताना। उजरत, जैसे, डाक्टर की फीस, स्कूल की फीस।

फुँकना—क्रि० अ० [हिं० फूँकना] १. फूँकने का अकर्मक रूप। २. जलना। भस्म होना। ३. नष्ट होना। बरबाद होना।

संज्ञा पुं० १ दे० "फुँकनी"। २. प्राणियों के शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है।

फुँकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूँकना] १. वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २. भाथी।

फुँकरना—क्रि० अ० [हिं० फुँकार से ना० धा०] फूत्कार छोड़ना। फूँ फूँ शब्द करना।

फुँकवाना, फुँकाना—क्रि० स० [हिं० 'फूँकना' का प्रे० रूप] फूँकने का काम दूसरे से कराना।

फुँकार—संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार"।

फुँदना—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+फंद] फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बनाते हैं। फुलरा। झब्बा। उ०—राखी नदलाल कर सोहै। पँचरंग पाट के फुँदना राजत देखत मन्मथ मोहै।—नंददास०।

फुँदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"।

फुँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंदा] फंदा। गाँठ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बिंदी] बिंदी। टीका।

फुँनिगा—संज्ञा पुं० [सं० फणिन् ?] साँप। उ०—है हरिजन सूँ जगत लरत है, फुँनिगा कैसे गरुड़ भषत है।—कबीर०।

फुँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० पनसिका] छोटी फोड़िया।

फुकना—क्रि० अ० दे० "फुँकना"।

फुचड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] कपड़े आदि की बनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुट—वि० [सं० स्फुट] १. जिसका जोड़ा न हो। एकाकी। अकेला। २. जो लगाव में न हो। पृथक्। अलग।

संज्ञा पुं० [अं०] लंबाई चौड़ाई नापने की एक माप जो १२ इंच या १६ जौ के बराबर होती है।

फुटकर—वि० [पुं० स्फुट+कर (प्रत्य०)] १. विषम। फुट। एकाकी। अकेला। २. अलग। पृथक्। ३ कई प्रकार का। कई मेल का। ४. थोड़ा थोड़ा। इकट्ठा नहीं। थोक का उलटा।

फुटकल—वि० दे० "फुटकर।"

फुटका—संज्ञा पुं० [सं० स्फोटक] फफोला।

फुटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटक] १. किसी वस्तु के जमे हुए कण जो पानी, दूध आदि में अलग अलग दिखाई पड़ते हैं। २. खून, पीब आदि का छींटा जो किसी वस्तु में दिखाई दे। ३ एक जाति की छोटी चिड़िया।

फुटेहरा—संज्ञा पुं० [हिं० √फूट+हरा (प्रत्य०)] मटर या चने का दाना जो भुनने से खिल गया हो।

फुट्ट—वि० दे० "फुट"।

फुट्टल—वि० [सं० स्फुट] जोड़े, झुंड या समूह से अलग।
वि० [हिं० फूटना] फूटे भाग्य का। अभागा।

फुट्टैल—वि० [सं० स्फुट, हिं० √फूट+ऐल (प्रत्य०)] १. झुंड या समूह से अलग। अकेला रहनेवाला। २ जिसका जोड़ा न हो। जो जोड़े से अलग हो (विशेषत जानवरों के लिये)।
वि० फूटे भाग्य का। अभागा। उ०—स्वारथ सब इंद्रिय समूह पर बिरहा धीर धरत। सूरदास घर घर की फुटेरी कैसे धीर धरत। —सूर०।

फुतकार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार"।

फुदकना—क्रि० अ० [अनु०] १. उछल-उछलकर कूदना। २ उमंग में आना।

फुदकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुदकना] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

फुनंग—संज्ञा स्त्री० दे० "फुनगी"।

फुनि†—अव्य० [सं० पुन:] पुन.। फिर।

फुनगी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुलक] वृक्ष या पौधे की शाखाओं का अग्रभाग। अंकुर।

फुप्फुस—संज्ञा स्त्री० [सं०] फेफड़ा।

फुफँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+फंद] लहँगे के इजारबंद या स्त्रियों की धोती कसने की डोरी की गाँठ। नीवी।

फुफकाना—क्रि० अ० दे० "फुफकारना"।

फुफकार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द। फुंकार।

फुफकारना—क्रि० अ० [हिं० फुफकार] साँप का मुँह से फूँक निकालना। फूत्कार करना।

फुफू(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "फूफी"।

फुफेरा—वि० [हिं० फूफा+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुफेरी] फूफा से उत्पन्न, जैसे, फुफेरा भाई।

फुर†—वि० [हिं० फुरना] सत्य। सच्चा।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] उड़ने में परों का शब्द।

फुरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वियोग। जुदाई।

फुरती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्फूर्ति] शीघ्रता। तेजी। उ०—लख्यो बलराम यह सुभट बक है कोऊ हल मुसल शस्त्र अपनो सँभारयो। द्विविद लै शाल को वृक्ष सम्मुख भयो फुरति करि राम तनु फेंकि मारयो।—सूर०।

फुरतीला—वि० [हिं० फुरती+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फुरतीली] जिसमें फुरती हो। तेज।

फुरना(पु)—क्रि० अ० [सं० स्फुरण] १ निकलना। उद्भूत होना। प्रकट होना। २ प्रकाशित होना। चमक उठना। उ०—आधी रात बीती सब सोए जिय जान आन राघसी प्रभंजनी प्रभाव सो जनायो है। बीजरी सी फुरी भाँति मुरी हाथ छुरी लोह चुरी डीठि जुरी देखि अंगद लजायो है।—हनुमन्नाटक। ३ फड़कना। फड़फड़ाना। उ०—अजहुँ अपराध न जानकी की भुज बाम फुरे मिलि लोचन सों।—हनुमन्नाटक। ४. उच्चरित होना। मुँह से शब्द निकालना। उ०—सूर सोच सुख करि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी। सिथिल गात मुख बचन फुरति नहिं ह्वै जो गई मति भोरी। —सूर०। ५. पूरा उतरना। सत्य ठहरना। ६ प्रभाव उत्पन्न करना। असर करना। लगना। उ०—फुरे न यत्र मंत्र नहिं लाग चले गुणी गुण हारे। प्रेम प्रीति की व्यथा तप्त तनु सो मोहिं डारति मारे। —सूर०। ७ सफल होना। सोचा हुआ परिणाम उत्पन्न करना।

फुरफुराना—क्रि० स० [अनु० फुरफुर] १. "फुर फुर" करना। उड़कर परों का शब्द करना। २. हवा में लहराना।
क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरफुरी—संज्ञा स्त्री० [अनु० फुरफुर] 'फुरफुर' शब्द होने या पंख फरफराने का भाव।

फुरमान—संज्ञा पुं० दे० "फरमान"।

फुरमाना†—क्रि० स० दे० "फरमाना"।

फुरसत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अवसर। समय। २ अवकाश। निवृत्ति। ३ रोग से मुक्ति। आराम।
मुहा०—फुरसत से=खाली वक्त में धीरे धीरे। बिना उतावली के।

फुरहरना†—क्रि० अ० [सं० स्फुरण] स्फुरित होना। निकलना। प्रादुर्भूत होना।

फुरहरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट। फड़कना। ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। फरफराहट। ४ कँपकँपी। शीत, भय, आनंद आदि के कारण शरीर में होनेवाला कंप या रोमांच। उ०—नहिं अन्हाइ, नहिं जाइ घर, चितु चिहुँट्यौ तकि तीर। परसि, फुरहरी लै फिरति बिहँसति, धँसति न नीर। —बिहारी०। ५ दे० "फुरेरी"।

फुराना(पु)—क्रि० स० [हिं० फुर] १. सच्चा ठहराना। ठीक उतारना। २. प्रमाणित करना।
क्रि० अ० दे० "फुरना"।

फुरेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुरफुराना] १. वह सींक जिसके सिरे पर हलकी रूई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लाई जाय। २ फाहा। ३ रोमांच-युक्त कंप।
मुहा०—फुरेरी लेना=(१) सरदी, भय आदि के कारण काँपना। थरथराना। (२) फड़फड़ाना। फड़कना। हिलना।

फुरो(पु)—वि० दे० "फुर"। उ०—पीठमर्द करै झूठ मान जो है फुरो। सो बिट जो अति कामकला बिच चातुरो। —रससारांश।

फुलका—संज्ञा पुं० [हिं० फूलना] १ फफोला। छाला। २ हलकी और पतली रोटी। चपाती।

फुलचुही—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+चूसना] काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

फुलझड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+झड़ी] १ एक प्रकार की आतशबाजी। २ उपद्रव खड़ा करनेवाली बात।

फुलरा—संज्ञा पुं० [हिं० फूल] फुँदना।

फुलवर—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+वार] एक प्रकार का रेशमी बूटी का कपड़ा।

फुलवाई(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"। उ०—इक दिन शुकसुता मन आई। देखौं जाय फूल फुलवाई। —सूर०।

फुलवार—वि० [सं० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न। उ०—जानहु जरत आगि जल परा। होइ फुलवार रहस हिय भरा। —पद्मावत।

फुलवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+वारी] १ पुष्पवाटिका। उद्यान। बगीचा। २. कागज के बने हुए फूल और वृक्षादि जो बरात के साथ निकाले जाते हैं।

फुलसुँघनी—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलचुही"।

फुलहारा—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुलहारी] माली।

फुलाना—क्रि० स० [हिं० फूलना का स० रूप] १. किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।

मुहा०—मुँह फुलाना या गाल फुलाना=मान करना। रूठना।

२. किसी को पुलकित या आनंदित कर देना। ३ किसी में गर्व उत्पन्न करना। ४ कुसुमित करना। फूलों से युक्त करना।

क्रि० अ० दे० "फूलना"।

फुलायल—संज्ञा पुं० दे० "फुलेल"। उ०—छोरहु जटा, फुलायल लेहू। झारहु केस, मुकुट सिर देहू।—पद्मावत।

फुलाव—संज्ञा पुं० [हिं० √फूल+आव (प्रत्य०)] फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

फुलिंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्फुलिंग] चिनगारी।

फुलिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+इया (प्रत्य०)] १ किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २ वह कील या काँटा जिसका सिरा फूल की तरह हो। ३. एक प्रकार का लौंग (गहना)।

फुलेल—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+तेल] फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल। उ०—उर धारी लटैं छूटी आनन पै, भीजी फुलेलन सों, आली हरि संग केलि।—सूर०।

फुलेहरा—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+हार] सूत, रेशम आदि के वंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाए जाते हैं।

फुलौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+बरी] मटर या चने आदि के बेसन की सादी पकौड़ी। उ०—पापर, बरी, फुलौरि, मुथौरी। कूरबरी, कचरी, पीठौरी।—सूर०।

फुल्ल—वि० [सं०] [संज्ञा फुल्लता] फूला हुआ। विकसित।

फुल्लदाम—संज्ञा पुं० [सं० फुल्लदामन्] उन्नीस वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण तगण, रगण, सगण, दो रगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—जाने भंज्यो है, शिव धनुष महा, जा नृपाली सभा में। जा कंठ मेली, विपुल यशयुता, जानकी फुल्लदामैं।

फुस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बहुत धीमी आवाज।

मुहा०—फुस से=बहुत धीरे से। अत्यंत मंद स्वर से।

फुसकारनाⓅ†—क्रि० अ० [अनु०] फूँक मारना। फूत्कार छोड़ना।

फुसफुसा—वि० [हिं० फूस या अनु० फुस] १. जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २ कमजोर। ३ मंदा। मद्धिम।

फुसफुसाना—क्रि० स० [अनु०] बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

फुसलाना—क्रि० स० [हिं० फिसलाना] अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।

फुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० फूत्कार] १ पानी का महीन छींटा। जलकण। २ महीन बूँदों की झड़ी। झींसी।

फुहारा—संज्ञा पुं० [हिं० फुहार] १ जल की वह टोंटी जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं।

फुही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"। उ०—सुर बरसत सुमन सुदेस मानो मेघ फुही। मुखमंडित रोरी रँग सेंदुर माँग छुही।—सूर०।

फूँक—संज्ञा स्त्री० [अनु० फू फू] १ मुँह को बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २ साँस। मुँह की हवा। ३. कश।

मुहा०—फूँक निकल जाना=प्राण निकल जाना।

३ मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी हुई वायु।

यौ०—झाड़फूँक=मंत्रतंत्र का उपचार।

फूँकना—क्रि० स० [हिं० फूँक] १ मुँह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।

मुहा०—फूँक फूँककर पैर रखना या चलना=बहुत सावधानी से कोई काम करना।

२ मंत्र पढ़कर किसी पर फूँक मारना। ३ शंख, बाँसुरी आदि मुँह से बजाए जानेवाले बाजों को फूँककर बजाना। ४ फूँककर प्रज्वलित करना। ५ जलाना। भस्म करना। उ०—ताको जननी की गति दीनी परम कृपाल गोपाल। दीन्हीं फूँकि काठ तन वाको मिलिकै सकल गुवाल।—सूर०। ६ फजूल खर्च कर देना। उड़ाना। ७ नष्ट करना।

यौ०—फूँकना तापना=व्यर्थ खर्च कर देना।

फूँका—संज्ञा पुं० [हिं० फूँक] १ फूँकने की क्रिया। भाथी या नली से आग फूँकना। २ बाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें योनि में लगाकर फूँकना जिससे गायों और भैंसों का सारा दूध बाहर निकल आवे। ३. बाँस आदि की वह नली जिससे फूँका मारा जाता है। ३ फफोला। फोका।

फूँद—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"।

फूँदाⓅ†—संज्ञा पुं० १. दे० "फुँदना"।

यौ०—फूँद फुँदारा=फुँदनेवाला।

२ फुफुंदी।

फूँदीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंद] फंदा। गाँठ। उ०—औरै विचार बढ़ो, बहुन्यो लखि आपनी भाँति की नीवी की फूँदी।—शृंगार०।

फूट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १ फूटने की क्रिया या भाव। २ बैर। विरोध। बिगाड़। ३ एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।

फूटन—संज्ञा स्त्री० हिं० फूटना] १ फूटकर अलग होनेवाला अंश। २ हड्डियों का दर्द।

फूटना—क्रि० अ० [सं० स्फुटन] १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २ ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके भीतर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो। ३. नष्ट होना। बिगड़ना।

मुहा०—फूटी आँखों न भाना=तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आँखों न देख सकना=बुरा मानना। जलना। कुढ़ना।

४ भीतर से झोंक के साथ बाहर आना। ५ शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट होना। ६ कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। ७ अंकुर, शाखा आदि का निकलना। ८ शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ९. बिखरना। फैलना। व्याप्त होना। १०. पक्ष छोड़ना। दूसरे पक्ष में हो जाना। ११ शब्द का मुँह से निकलना।

मुहा०—फूट फूटकर रोना=विलाप करना।

१२ व्यक्त होना। प्रकट होना। प्रकाशित होना। उ०—अंग अंग छवि फूटि

फदति सब निरखत पुर नर नारि। —सूर०। १३. गुप्त बात का प्रकट हो जाना। १४. बाँध, मेड़ आदि का टूट जाना। १५. जोड़ों में दर्द होना।

फूत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा—संज्ञा पुं० [स्त्री० फूफी] फूफी का पति। बाप का बहनोई।

फूफी—संज्ञा स्त्री० [स० पितृष्वसा] बाप की बहिन। बूआ।

फूल—संज्ञा पुं० [सं० फुल्ल] १. गर्भाधान-वाले पौधों में वह ग्रंथि जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है। और जिसे उद्भिदों की जननेंद्रिय कह सकते हैं। पुष्प। कुसुम। सुमन।

मुहा०—फूलों की सेज=(१) पलंग या शय्या जिसपर सजावट और कोमलता के लिये फूलों की पखड़ियाँ बिछी हों। (२) आनंद की सेज। फूल झड़ना=मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। फूल सा=अत्यंत सुकुमार, हलका या सुंदर। फूल सूँघकर रहना=बहुत कम खाना। (स्त्री० व्यंग्य) पान फूल सा=अत्यंत सुकुमार।

२. फूल के आकार के बेलबूटे या नक्काशी। ३. फूल के आकार का कोई गहना; जैसे, करनफूल। सीसफूल। ४. पीतल आदि की गोल गाँठ या घुंडी। फुलिया। ५. सफेद या लाल धब्बा जो कुष्ठ रोग के कारण शरीर पर पड़ जाता है। सफेद दाग। श्वेत कुष्ठ। ६ स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ७ वह हड्डी जो शव जलाने के पीछे बच रहती है (हिंदू)। ८. एक मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है।

संज्ञा स्त्री० [हिं० फूलना] १. फूलने की क्रिया या भाव। २ उत्साह। उमंग। ३ आनंद। प्रसन्नता।

फूलगोभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+गोभी] गोभी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है जो तरकारी के काम आता है।

फूलदान—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+दान (प्रत्य०)] गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का बरतन। गुलदान।

फूलदार—वि० [हिं० फूल+दार (प्रत्य०)] जिसपर फूलपत्ते और बेलबूटे बने हों।

फूलना—क्रि० अ० [सं० √फुल्ल] १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना। उ०—फूले फरै न बेत जदपि सुधा बरसहिं जलद। मूरख हृदय न चेत जौ गुरु मिलहिं बिरंचि सम। —मानस।

मुहा०—फूलना फलना=सुखी और संपन्न होना। उन्नति करना। उ०—फूलौ फरौ रहौ जहँ चाहै यही असीस हमारी। —सूर०। फूलना फालना=उल्लास में रहना। प्रसन्न होना।

२. फूल का संपुट खुलना जिससे उसकी पंखड़ियाँ फैल जायँ। विकसित होना। खिलना। उ०—फूले कुमुद केति उजियारे। मानहुँ उए गगन महँ तारे। —पद्मावत। ३. भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना। ४ शरीर के किसी भाग का सूजना। ५ मोटा होना। स्थूल होना। ६ गर्व करना। घमंड करना। इतराना। उ०—कबहुँक फूलि सभा में बैठ्यो मूछनि ताव दिखायो। —सूर०। ७ आनंदित होना। बहुत खुश होना। उ०—अति फूले दशरथ मनही मन कौशल्या सुख पायो। सौमित्रा कैकयि मन आनँद यह सबही सुत जायो। —सूर०।

मुहा०—फूलकर कुप्पा होना=अत्यंत प्रसन्नता या गर्व का अनुभव होना। फूला फूला फिरना=प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। उ०—जसुमति रानी देति बधाई भूखन रतन अपार। फूली फिरति रोहिणी मैया नखसिख किए सिंगार॥ —सूर०। फूले अंग न समाना=अत्यंत आनंदित होना। उ०—स्यामंतक मणि जांववती सह आए द्वारिकानाथ। अति आनंद कोलाहल घर घर फूले अंग न समात॥ —सूर०।

८ मुँह फुलाना। रूठना। मान करना।

फूलनि—संज्ञा स्त्री० [सं० √फुल्ल्] खिलना। प्रस्फुटन। उ०—इत यह ललित लतन की फूलनि। फूलि फूलि जमुना जल भूलनि। —नंददास०।

फूलमती—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+मती (प्रत्य०)] एक देवी का नाम जिसे राजा वेणु की कन्या और शीतला रोग के एक भेद की अधिष्ठात्री माना जाता है।

फूली—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल] वह सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस—संज्ञा पुं० [सं० तुष] १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। खर। तिनका।

फूहड़—वि० [सं० पव=गोबर+घट=गढ़ना] १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बेशऊर (प्राय. स्त्रियों के लिये)। २ बेढंगा। भद्दा।

फूही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फेंकना—क्रि० स० [सं० प्रेषण] १. झोंके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. एक स्थान से ले जाकर और स्थान पर डालना। ३. असावधानी या भूल से इधर उधर छोड़ना, गिराना या रखना। ४. तिरस्कार के साथ त्यागना। छोड़ना। ५ अपव्यय करना। फजूल खर्च करना।

फेंकरना[पु]—क्रि० अ० [अनु० फें फें+करना] १. गीदड़ का रोना या बोलना। उ०—कटु कुठाय करटा रटहिं, फेंकरहिं फेरु कुभाँति। नीच निसाचर मीचु बस, अनी मोहमद माति॥ —रामाश्व०। २ फूट फूट कर रोना। जोर जोर से या चिल्लाकर रोना।

फेंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। उ०—फेंट पीत पट, साँवरे कर पलास के पात। हँसत परस्पर ग्वाल सब बिमल बिमल दधि खात॥ सूर०। २ धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। उ०—खायबे को कछु भाभी दीनी श्रीपति मुख तें बोले। फेंट ऊपर ते अंजुलि तंदुल बल करि हरि जू खोले॥ —सूर०। ३. कमर में बाँधा हुआ कोई कपड़ा। पटुका। कमरबंद।

मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पावे। उ०—(१) अब लौं तौ तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट। तजौ बिरद कै मोहिं उधारौ सूर गही कसि फेंट॥ —सूर०। (२) छोटो नफा साधु की संगति मूल गाँठि से परखो। सूरदास बैकुंठ पैंठ में कोउ न फेंट पकरतो॥ —सूर०। फेंट कसना या बाँधना=कमर कसकर तैयार होना।

४ फेरा। लपेट। घुमाव।

संज्ञा स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव।

फेंटना—क्रि० स० [सं० पिष्ट] १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गड्डी के ताशों को उलट-पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना। ३ किसी बात को बार बार दुहराना।

फेंटा—संज्ञा पुं० [हिं० फेंट] १ दे० "फेंट"। उ०—तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना बिधि दै ताल। माया को कटि फेंटा बाँध्यो लोभ तिलक दियो भाल। —सूर०। २ छोटी पगड़ी। ३ अटेरन पर लपेटा हुआ सूत। सूत की बड़ी अटी।

फेकरना—क्रि० अ० [हिं० फेकारना] (सिर का) खुलना। नंगा होना। उ०—फेकरे मूँड चँवर जनु लाए। निकसि दाँत मुँह बाहर आए।—पदमावत।

क्रि० अ० दे० 'फेंकरना'।

फेकारना†—क्रि० स० [सं० अप्रखर = बिना भूल का] (सिर) खोलना या नंगा करना।

फेकैत—संज्ञा पुं० [हिं०√फेंक+ऐत (प्रत्य०)] १ वह जो फेंकता हो। २ पहलवान। ३ दे० "फिकैत"।

फेन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० फेनिल] पानी या किसी तरल पदार्थ के महीन महीन बुलबुलों का गठा हुआ समूह। झाग। उ०—महामोह-सरिता अपार महँ सतत फिरत बह्यो। श्रीहरिचरनकमल-नौका तजि फिरि फिरि फेन गह्यो।—विनय०।

फेनाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "फेन"।

फेनिल—वि० [सं०] फेन या झाग से भरा हुआ। झागदार।

फेनी—संज्ञा स्त्री० [सं० फेनिका] १ सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई। २. दे० "फेन"।

फेफड़ा—संज्ञा पुं० [सं० फुप्फुस+ड़ा (प्रत्य०)] वक्षस्थल के भीतर का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

फेफड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ी] फाके या गरमी में सूखे हुए होंठ पर का चमड़ा। पपड़ी।

फेफरी—संज्ञा स्त्री० दे० "फेफड़ी"। उ०—मधुरापुर में शोर परयो। गर्जत कस बेस सब साजे मुख को नीर हरयो। पीरी भयो, फेफरी अधरन हिरदय अतिहि डरयो। नद महर के सुत दोउ सुनिके नारिन हरख भरयो।—सूर०।

फेर—संज्ञा पुं० [हिं० फेरना] १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। उ०—ओहि क खंड जस परबत मेरू। मेरुहि लागि होइ अति फेरू।—पदमावत।

मुहा०—फेर खाना = सीधा न जाकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना।

२ मोड़। झुकाव। ३. परिवर्तन। उलट पलट। रद बदल।

मुहा०—दिनों का फेर = एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषत अच्छी से बुरी दशा की)। उ०—मरतु प्यास पिंजरा परयौ सुआ समै कैं फेर। आदरु दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर।—बिहारी०। कुफेर = बुरे दिन। बुरी दशा। सुफेर = (१) अच्छी दशा। (२) अच्छा अवसर। उ०—पेट न फूलत बिनु कहे कहत न लागत बेर। सुमति विचारे बोलिए समुझि कुफेर सुफेर।—दोहा०।

३ अतर। फर्क। भेद। ४ असमजस। उलझन। दुबधा। उ०—घट महँ बकत बकत भा मेरू। मिलहि न मिलहि परा तस फेरू।—पदमावत।

मुहा०—फेर में पड़ना = असमजस में होना।

५. भ्रम। संशय। धोखा। उ०—माला फेरत जुग गया गया न मन का फेर। कर का मनका छोड़के मन का मनका फेर। —कबीर०। ६ षट्चक्र। चालबाजी। ७ बखेड़ा। झंझट। उलझन।

मुहा०—निन्नानबे का फेर = निन्नानवे रुपए पाकर सौ रुपए पूरे करने की धुन। रुपया बढ़ाने का चसका।

८ युक्ति। उपाय। ढंग। ९. अदला बदला। एवज।

यौ०—हेर फेर = लेन देन। व्यवसाय।

११. हानि। टोटा। घाटा। १२. भूतप्रेत का प्रभाव। Ⓟ१३ ओर। दिशा। उ०—सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सब केर। प्रभु आगवन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर।—मानस।

Ⓟअव्य० फिर। पुन। एक बार और।

फेरना—क्रि० स० [सं० प्रेरण, प्रा० पेरन] १ एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। मोड़ना। २ पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। उ०—जे जे आए हुते यज्ञ में परिहैं तिनको फेरन।—सूर०। ३. जिसने दिया हो, उसी को फिर देना। लौटाना। वापस करना। उ०—दियौ सु सीस चढ़ाइ लै आछी भाँति अएरि। जापैं सुखु चाहतु लियौ ताके दुखहिं न फेरि।—बिहारी०। ४. जिसे दिया था उससे वापस लेना। लौटा लेना। ५ चारों ओर चलाना। चक्कर देना। घुमाना। उ०—कबीर माला काठ की कहि समझावै तोहि। मन न फिरावै आपणाँ, कहा फिरावै मोहि। —कबीर०। ६ ऐंठना। मरोड़ना। ७. रखकर इधर उधर स्पर्श कराना। ८. पोतना। तह चढ़ाना।

मुहा०—पानी फेरना = नष्ट करना।

९ उलट पलट या इधर उधर करना। १० पलटना। बदलना। और का और करना। विरुद्ध या भिन्न करना। उ०—सारद प्रेरि तासु मति फेरी। माँगेसि नींद मास षट केरी।—मानस। ११. चारों ओर सबके सामने ले जाना। घुमाना। उ०—फेरे पान फिरा सब कोई। लागा ब्याहचार सब होई। १२ प्रचारित करना। घोषित करना, जैसे, डौंड़ी फेरना। १३ घोड़े आदि को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना। उ०—फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना।—मानस।

फेरफार—संज्ञा पुं० [हिं० फेर] १ परिवर्तन। उलट फेर। २ अंतर। फर्क। ३. टालमटोल। बहाना। ४ घुमाव फिराव। पेच। चक्कर।

फेरवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फेर+वट (प्रत्य०)] १ फिरने का भाव। २ घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर।

फेरा—संज्ञा पुं० [हिं० फेरना] १. कीली के चारों ओर गमन। परिक्रमण। चक्कर। २ लपेटने में एक बार का घुमाव। लपेट। मोड़। बल। ३ बार बार आना जाना। उ०—भँवर जो सब फूलन का फेरा। बास न लेइ, मालतिहिं हेरा।—पदमावत। ४ घूमते फिरते आ जाना या जा पहुँचना। उ०—पींजर महँ जो परेवा घेरा। आप मजार कीन्ह तहँ फेरा।—पदमावत। ५ लौटकर फिर आना। पलटकर आना। उ०—कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों जाय बसेरो। आपुन ही या ब्रज के कारन करिहैं फिरि फिरि फेरो। —सूर०। ६ आवर्त। घेरा। मडल।

फेराफेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] क्रम-परिवर्तन। उलटफेर। इधर का उधर।

फेरि(पु)—अव्य० [हिं० फिर] फिर। पुन।

संज्ञा पुं० [हिं० फेर] अंतर। फर्क।

फेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] १ दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३ परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फकीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिये बराबर आना। ५ कई बार आना जाना। चक्कर।

फेरीवाला—संज्ञा पुं० [हिं० फेरी+वाला] घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेल—संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। काम।

वि० [अं०] १ जो परीक्षा में पूरा न उतरे। अनुत्तीर्ण। २ जो समय पर ठीक या पूरा काम न दे।

फेलो—संज्ञा पुं० [अं०] सभ्य। सदस्य। सभासद, जैसे, विश्वविद्यालय या रायल एशियाटिक सोसायटी का फेलो।

फेल्ट—संज्ञा पुं० [अं०] नमदा।

फेहरिस्त—संज्ञा स्त्री० दे० "फिहरिस्त"।

फेस—संज्ञा पुं० [अं०] १. मुँह। चेहरा। २. सामना। ३. टाइप का वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है। ४ घड़ी का सामने का भाग जिसपर सुई और अंक रहते हैं।

फैंटा—संज्ञा पु० दे० "फेंटा"। उ०—भाल विसाल रसाल, फैंटा सीस सुहावनी।—नंददास०।

फैंसी—वि० [अं०] अच्छी काटछाँट का। देखने में सुंदर। सजीला।

फैक्टरी—संज्ञा स्त्री० [अं०] कारखाना।

फैज—संज्ञा पुं० [अ०] १ उपकार। २ फायदा। ३ फल को पहुँचना।

मुहा०—अपने फैज को पहुँचना = अपने कर्म का उचित फल पाना।

फैदम—संज्ञा पुं० [अं०] गहराई की एक नाप जो ६ फुट की होती है। पुरसा।

फैन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "फेन"। उ०—दुग्ध फैन सम रमा मनो ऐन सुहाई।—नंददास०।

फैयाज—वि० [अ०] [संज्ञा फैयाजी] बहुत उदार और दानी।

फैर—संज्ञा स्त्री० [अं० फायर] बंदूक, तोप आदि आग्नेय हथियारों का दगना।

फैल(पु)†—संज्ञा पुं० [अ० फेल] १ काम। कार्य। २ क्रीड़ा। खेल। ३ नखरा।

फैलना—क्रि० अ० [सं० प्रसृत] १ कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। पसरना। अधिक बड़ा या लंबा चौड़ा होना। ३. मोटा होना। स्थूल होना। ४ संख्या बढ़ना। बढ़ती होना। वृद्धि होना। उ०—फलैं फूलैं फैलैं खल, सीदैं साधु पल पल, खाती दीपमालिका ठठाइयत सूप हैं।—कविता०। ५ छितराना। बिखरना। ६. तनकर किसी ओर बढ़ना। ७. प्रचार पाना। बहुतायत से मिलना। ८. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना। ९ आग्रह करना। हठ करना। जिद करना। १०. भाग का ठीक ठीक लग जाना।

फैलसूफ—वि० [यू० फिलसफ] फजूलखर्च।

फैलसूफी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फैलसूफ] फजूलखर्ची। अपव्यय।

फैलाना—क्रि० स० [हिं० फैलना का स० रूप] १ लगातार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २ विस्तृत करना। पसारना। विस्तार बढ़ाना। ३ व्यापक करना। छा देना। भर देना। ४. बिखेरना। अलग अलग दूर तक कर देना। ५ बढ़ती करना। वृद्धि करना। ६ तानकर किसी ओर बढ़ाना। ७ प्रचलित करना। जारी करना। ८. इधर उधर दूर तक पहुँचाना। ९ प्रसिद्ध करना। चारों ओर प्रकट करना। १० हिसाब किताब करना। लेखा लगाना। ११ गुणा भाग के ठीक होने की परीक्षा करना।

फैलाव—संज्ञा पुं० [हिं० फैलाना] १ विस्तार। प्रसार। २ प्रचार।

फैशन—संज्ञा पुं० [अं०] १ ढंग। चाल। तर्ज। २ रीति। प्रथा प्रचलन।

फैसला—संज्ञा पुं० [अ०] १ दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निबटेरा। २. किसी मुकदमे में अदालत की आखिरी राय।

फैसिज्म—संज्ञा पुं० [अं०] प्रथम विश्वयुद्ध के समय इटली में चलाया हुआ कम्यूनिज्म या समाजवाद का विरोधी और स्वदेशप्रेमी दल या उसके सिद्धांत जिसका परिणाम बेनिटो मुसोलिनी का डिक्टेटरशिप था।

फैसिस्ट—संज्ञा पुं० [अं०] १ फैसिज्म का अनुयायी। २ वह जो मनमामी करे और अपने सामने किसी की चलने न दे।

फोंक—संज्ञा पुं० [सं० पुंख] तीर के पीछे की नोक जिसके पास पर लगाए जाते हैं। उ०—परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उड़ि न सकत तेहि ठौं ते। मनहुँ मदन के है शर पाए फोंक बाहरी घाते।—सूर०।

फोंका—संज्ञा पुं० [सं० पुंख] १. लंबा पोला चोंगा। फोंफी। २ मटर आदि पोली डंठलवाले शस्यों की फुनगी। ३. दे० "फूका"।

फोंदा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "फुँदना"।

फोक—संज्ञा पुं० [हिं० फोकला] १. सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीठी। २. भूसी। तुष। ३. फीकी या नीरस चीज।

फोकट—वि० [हिं० फोक] जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ। उ०—जोरे नए नाते नेह फोकट फीके। देह के दाहक, गाहक जी के॥—विनय०।

मुहा०—फोकट का = (१) बिना परिश्रम का। (२) बिना मूल्य का। फोकट में = मुफ्त में। योंही।

फोकला†—संज्ञा पु० [सं० वल्कल] छिलका।

फोकस—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह बिंदु जहाँ प्रकाश की बिखरी हुई किरणें इकट्ठी हों। २ फोटो लेने के लिये लेंस द्वारा उस वस्तु की छाया को जिसका चित्र लेना है नियत स्थान पर स्थिर रूप से लाने की क्रिया।

फोका—वि० [हिं० फोकला] थोथा। निस्सार।

संज्ञा पुं० दे० "फोकला"।

फोट—संज्ञा पुं० दे० "स्फोट"।

फोटक(पु)—वि० दे० "फोकट"।

संज्ञा पु० [सं० स्फोटक] फोला। फफोला। उ०—फल तहँ यहै विरथ दुख भरै। खोटत हाथनि फोटक परै।—नंददास०।

फोटा—संज्ञा पुं० [सं० स्फोट] बिंदी। टीका।

फोटो—संज्ञा पुं० [अं०] चित्र उतारनेवाले कैमरे की सहायता से उतरा हुआ चित्र। छायाचित्र। २ प्रतिबिंब।

फोटोग्राफ—संज्ञा पुं० [अं०] फोटो। छायाचित्र।

फोटोग्राफर—स्त्री० पुं० [अं०] फोटो खींचनेवाला।

फोटोग्राफी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ प्रकाश की किरणों द्वारा रासायनिक पदार्थों की सहायता से आकृति या चित्र तैयार करने की क्रिया। २ प्रकाश की सहायता से चित्र उतारने की कला या युक्ति।

फोड़ना—क्रि० स० [सं० स्फोटन] १. खरी वस्तुओं को खंड खंड करना। भग्न करना। दरकाना। विदीर्ण करना। उ०—रोवहिं रानी तजै पराना। फोरहिं चुरी करहिं खरिहाना॥ —पदमावत। २. केवल आघात या दबाव से भेदन करना। उ०—सूर रही रस अधिक कहे नहिं गूलर को सो फल फोरे।—सूर०। ३. शरीर में ऐसा विकार उत्पन्न करना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ। ४ अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। ५. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ६. दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष में कर लेना। ७ भेदभाव उत्पन्न करना। ८. फूट डालकर अलग करना। ६. एकबारगी भेद खोलना।

फोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फोड़िया] वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष सचित होने से उत्पन्न होता है और जिसमें रक्त सड़कर पीब के रूप में हो जाता है। व्रण।

फोड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० फोड़ा] छोटा फोड़ा।

फोता—संज्ञा पुं० [फा०] १. भूमिकर। पोत। २. थैली। कोष। थैला। ३ अंडकोष।

फोतेदार—संज्ञा पुं० [फा०] १. खजांची। कोषाध्यक्ष। २. रोकड़िया।

फोनोग्राफ—संज्ञा पुं० [अं०] एक यंत्र जिसमें कही हुई बातें या गाए हुए गाने बाद में ज्यों के त्यों सुनाई देते हैं। ग्रामोफोन।

फोरना(पु)†—क्रि० स० दे० "फोड़ना"।

फौआरा—संज्ञा पुं० दे० "फुहारा"।

फौज—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ झुंड। जत्था। २. सेना। लशकर।

फौजदार—संज्ञा पुं० [फा०] सेनापति।

फौजदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लड़ाई-झगड़ा। मारपीट। २. वह अदालत जहाँ असामाजिक या अवैधानिक कामों को करनेवाले को राजदंड दिया जाता है।

फौजी—वि० [अ०] फौजसंबंधी। सैनिक।

फौत—वि० [अ०] मृत। गत। नष्ट।

फौती—संज्ञा स्त्री० [अ० फौत] मरने की वह सूचना जो सरकारी कागजों में लिखाई जाती है।

फौरन—क्रि० वि० [अ०] तुरंत। चटपट।

फौलाद—संज्ञा पुं० [फा० पोलाद] एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा। खेड़ी।

फौवारा—संज्ञा पुं० दे० "फुहारा"।

फ्रांसीसी—वि० [फ्रांस] १. फ्रांस देश का। २. फ्रांस देशवासी।

फ्राक—संज्ञा पुं० [अं०] स्त्रियों और बच्चों का एक प्रकार का कुरता।

फ्री—वि० [अं०] १. स्वतंत्र। २. मुक्त। कर या महसूल से छूटा हुआ।

फ्री ट्रेड—संज्ञा पुं० [अं०] वह वाणिज्य जिसमें माल के आने जाने पर किसी प्रकार का कर या महसूल न लिया जाय।

फ्रेंच—वि० [अं०] फ्रांस देश का। फ्रांसीसी।

संज्ञा स्त्री० फ्रांस देश की भाषा।

फ्रेम—संज्ञा पुं० [अं०] चौखटा जिसमें चित्र या दर्पण लगाए जाते हैं। चश्मे की कमानी।

फ्लूट—संज्ञा पुं० [अं०] बंसी की तरह का एक अँगरेजी बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।

ब

ब—हिंदी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह ओष्ठ्य वर्ण है।

बंक—वि० [सं० वक्र] १ टेढ़ा। तिरछा। २. पुरुषार्थी। विक्रमशाली। ३. दुर्गम। जिस तक पहुँच न हो सके। उ०—लंक से बंक महागढ़ दुर्गम ढाहिबे दाहिबे को कहरी है।—कविता०।

संज्ञा पुं० [अं० बैंक] वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

बंकट—वि० [सं० वंकटक] वक्र। टेढ़ा। उ०—ठठकति चलै मटकि मुँह मोरै बंकट भौंह मरोरै।—सूर०।

बंकता—संज्ञा स्त्री० [सं० वंकता] तिरछापन। टेढ़ापन।

बंकराज—संज्ञा पुं० [सं० वंकराज] एक प्रकार का सर्प।

बंका†—वि० [सं० वक्र] १. टेढ़ा। तिरछा। २ बाँका। ३ पराक्रमी।

बंकाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "बंकुरता"।

बँकारो—वि० [सं० वक्र] वक्र। तिरछा। उ०—नासा मोती जगमग जोती लोचन बंक बँकारो।—नंददास०।

बंकिम—वि० [सं०] टेढ़ा। तिरछा। बाँका।

बंकुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वक्र] टेढ़ापन। वक्रता। उ०—कहा जौ न जान्यौ जात अंकुर उरोजनि को, बंकुर न मान्यो जात लोचन बिसाल को।—रससाराश।

वि०—टेढ़ा। तिरछा। बाँका।

बंकुरता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रता] टेढ़ाई। टेढ़ापन।

बंकुस—वि० [सं० वक्र] वक्र। उ०—चल्यो मनमत्त हाथी, पदन-महावत साथी, चपला को अंकुस दै बंकुस चलायो।—नंददास०।

बंग—संज्ञा पुं० दे० "बंग"।

(पु)वि० [सं०] १ टेढ़ा। २. उद्दंड। ३ अभिमानी।

संज्ञा पुं० [फा० बाँग] बंग। उ०—हरिगुन गाइ बंग मैं दीन्हा, काम, क्रोध दोउ बिसमल कीन्हा।—कबीर०।

बँगला—वि० [हिं० बंगाल] बंगाल देश का। बंगाल सबधी।

संज्ञा पुं० १. वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों। २. वह छोटा हवादार कमरा जो प्राय. ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है। ३. बंगाल देश का पान।

संज्ञा स्त्री० बंगाल देश की भाषा।

बँगली—संज्ञा स्त्री० [सं० बंग] १. एक प्रकार का पान। २ एक प्रकार का गहना।

बंगाला†—संज्ञा पुं० [हिं० बंगाल] बंगाल प्रांत।

संज्ञा स्त्री० बंगालिका नाम की रागिनी जिसे मेघ राग की स्त्री मानते हैं।

बंगाली—संज्ञा पुं० [हिं० बंगाल+ई (प्रत्य०)] १. बंगाल देश का निवासी। २ संपूर्ण जाति का एक राग।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बंग] बंग देश की भाषा।

वि० बंगाल का। बंगाल संबंधी।

बंचक—संज्ञा पुं० [सं० वंचक] धूर्त। ठग। पाखंडी। उ०—लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजियत तेऊ॥ —मानस।

बंचकता, बंचकताई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] छल। धूर्तता चालबाजी।

बंचनता—संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] ठगी। छल। उ०—दम दान दया नहिं जान पनी। जड़ता पर बंचनताति घनी। —मानस।

बंचना—संज्ञा स्त्री० [सं० वंचना] ठगी।
(पु)†क्रि० स० [सं० वंचन] ठगना। छलना। उ०—बंचेहु मोहिं जौन धरि देहा। सोइ तनु धरहु स्राप मम एहा॥ —मानस।

बँचवाना—क्रि० स० [हिं० बाँचना का प्रे० रूप] पढ़वाना।

बंछना(पु)†—क्रि० स० [सं० वांछा] अभिलाषा करना। इच्छा करना। चाहना।

बंछित(पु)†—वि० दे० "वांछित"।

बंज†—सं० पुं० दे० "वनिज"।

बंजर—संज्ञा पुं० [सं० वन+उजड़] ऊसर।

बंजारा—संज्ञा पुं० दे० "बनजारा"।

बंजुल—संज्ञा पुं० [सं० वंजुल] १ अशोक वृक्ष। २ बेत।

बंझा—वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "बाँझ"।

बँटना—क्रि० अ० [सं० वितरण] १. विभाग होना। अलग अलग हिस्सा होना। २. कई व्यक्तियों को अलग अलग दिया जाना।

बंटवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना] बाँटने की मजदूरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना] पिसवाने की मजदूरी।

बँटवाना—क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटने का काम दूसरे से कराना। वितरण कराना।
क्रि० स० [सं० वर्तन] पिसवाना।

बँटवारा—संज्ञा पुं० [हिं० बाँटना] बाँटने की क्रिया। विभाग। तकसीम। विभाजन।

बंटा—संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बंटी] गोल या चौकोर छोटा डब्बा, जैसे, पान का बंटा, ठाकुर जी के भोग का बंटा।
वि०—छोटे कद या आकार का।

बँटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना] १. बाँटने का काम या भाव। २ खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है।

बंटाढार, बंटाधार—संज्ञा पुं० [देश०] सर्वनाश। बरबादी।

बँटाना—क्रि० स० [हिं० बाँटना] १ भाग या हिस्सा कराकर अपना अंश ले लेना। बँटवाना। २. दूसरे का बोझ हलका करने के लिये शामिल होना।

बँटावन(पु)†—वि० [हिं० बँटाना] बँटाने वाला। उ०—बोलत नहीं मौन कह साधी बिपति बँटावन बीर। —सूर०।

बँटैया—संज्ञा पुं० [हिं०√बाँट+ऐया (प्रत्य०)] हिस्सा लेनेवाला। बँटानेवाला। उ०—जबै जमराज रजायसु तें मोहिं लै चलिहैं भट बाँधि नटैया। तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु बिसाल बिपत्ति बँटैया॥ —कविता०

बंडल—संज्ञा पुं० [अं०] पुलिंदा। गड्डी।

बंडा—संज्ञा पुं० [हिं० बंटा] एक प्रकार का कच्चू या अरुई।

बंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँड़ा=कटा हुआ] १ फतुही। कुरती। २ बगलबंदी।
संज्ञा स्त्री० [सं० वरदंड] वह लकड़ी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।

बंद—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० बंध] १ वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २ पुश्ता। मेड़। बाँध। ३ शरीर के अंगों का कोई जोड़। ४ फीता। तनी। ५ कागज का लंबा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा। ६ बंधन। कैद।
वि० [फा०] १. जिसके चारों ओर कोई अवरोध हो। २ जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। ३ जो खुला न हो। ४ किवाड़, ढकना आदि जो ऐसी स्थिति में हो जिससे कोई वस्तु भीतर से बाहर न जा सके और बाहर की चीज अंदर न आ सके। ५ जिसका कार्य रुका हुआ या स्थगित हो। ६ रुका हुआ। थमा हुआ। ७ जो किसी तरह की कैद में हो।

बंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आदाब। प्रणाम। सलाम। २ भक्तिपूर्वक ईश्वर की वंदना। ३ सेवा। खिदमत।

बंदगोभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बंद+गोभी] करमकल्ला। पातगोभी।

बंदन—संज्ञा पुं० दे० "वंदन"।
संज्ञा पुं० [सं० वंदनीय=गोरोचन] १. रोचन। रोली। २ ईंगुर। सेंदुर। उ०—करि चंदन की खौरि दै बंदन बेंदी भाल। दरपन री दिन द्वैक तें दरपन देखति बाल। —रससारांश।

बंदनता—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनता] वंदनीयता। आदर या वंदना किए जाने की योग्यता।

बंदनमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनमाला] दे० "बंदनवार"। उ०—मुक्ता बंदनमालु जु लसैं। जनु आनंद भरे घर हँसैं। —नंददास०।

बंदनवार—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनमाला] फूलों या पत्तों की झालर जो मंगल सूचनार्थ दीवारों आदि में बाँधी जाती है। तोरण।

बंदना—संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"।
क्रि० स० [सं० वंदन] प्रणाम करना।

बंदनी(पु)—वि० दे० "वंदनीय"।

बंदनीमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनमाल] वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो। वनमाला।

बंदर—संज्ञा पुं० [सं० वानर] मनुष्य से मिलता जुलता एक प्रसिद्ध वृक्षारोही एवं स्तनपायी चौपाया जो बुद्धि में अन्य पशुओं से अधिक विकसित होता है। कपि। मर्कट। शाखामृग।
संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।
मुहा०—बंदरघुड़की या बंदरभभकी=ऐसी धमकी या डाँटडपट जो केवल डराने या धमकाने के लिये ही हो।
संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।

बंदरगाह—संज्ञा पुं० [फा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बंदवान—संज्ञा पुं० [सं० बंदी+वान] बंदीगृह का रक्षक। कैदखाने का अफसर।

बंदसाल†—संज्ञा पुं० [सं० बंदीशाला] कैदखाना। जेल।

बंदा—संज्ञा पुं० [फा०] १ सेवक। दास, जैसे—ये सब खुदा के बंदे हैं। २ शिष्ट या विनीत भाषा में उत्तम पुरुष, पुल्लिंग "मैं" के स्थान पर आनेवाला शब्द; जैसे, बंदा हाजिर है, कहिए, क्या हुक्म है।

बंदारु—वि० [सं० वंदारु] १. वंदनीय। २ पूजनीय। आदरणीय। उ०—बहुल वृंदारकावृंद-वंदारु-पद वंदि मंदारमालोरधारी। —विनय०।

बदाल—संज्ञा पुं० [?] देवदाली। घघरबेल।

बंदि—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदिन्] कैद। कारावास।

बंदिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० वंदनी] बंदी (आभूषण)।

बंदिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बाँधने की क्रिया या भाव। रोक। प्रतिबंध। २ प्रबंध। रचना। योजना। ३ षड्यंत्र।

बंदी—संज्ञा पुं० [सं०] एक जाति जो प्राचीन काल में राजाओं का कीर्तिगान करती थी। भाट। चारण।

संज्ञा स्त्री० [हिं० वंदनी] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

संज्ञा पुं० [फा०] कैदी।

बंदीखाना—संज्ञा पुं० [फा०] कैदखाना।

बंदीछोर(पु)—संज्ञा पुं० [फा० वंदी + हिं० छोर] कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीवान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वंदिन्] कैदी।

बंदूक—संज्ञा स्त्री० [अ०] नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें बारूद भरी गोली रखकर चलाई जाती है।

बंदूकची—संज्ञा पुं० [फा०] बंदूक चलानेवाला सिपाही।

बंदेरा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वंदी] [स्त्री० बँदेरी] १ वंदी। कैदी। २. सेवक। दास।

बंदोबस्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ प्रबंध। इंतजाम। २. खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम। ३ वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंधन। उ०—तासु दूत कि बंध तरु आवा। प्रभु कारज लगि आपु बँधावा॥ —मानस। २ गाँठ। गिरह। ३ कैद। उ०—कृपा कोप बध बंध गोसाईं। मोपर करिय दास की नाईं॥ —मानस। ४. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ५ कोकशास्त्र के अनुसार रति के १६ मुख्य आसनों में से कोई। उ०—चले धाय नव कुंज दौउ मिलि किसलय सेज बिराजे। परिरंभन सुख रास हास मृदु सुरति केलि सुख साजे। नाना बंध विविध रस क्रीड़ा खेलत स्याम अपार। —सूर०। ६ योगशास्त्र के अनुसार योगसाधन की कोई मुद्रा। ७ निबंध रचना। गद्य या पद्य लेख तैयार करना। ८. चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। ९. वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। बंद। १०. लगाव। फँसाव। उ०—बेधि रही जग वासना निरमल मेद सुगंध। तेहि अरधान भँवर सब लुबुधे तजहिं न बंध॥—पदमावत। ११ शरीर। १२. बंद। तनी। उ०—फरकन लागी भुजा बाम, कंचुकि बँध तरकन। —नंददास०।

बंधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के बदले में धनी के यहाँ रख दी जाय और ऋण अदा होने पर वापस ले ली जाय। रेहन। २ विनिमय। बदला करनेवाला। ३ बाँधनेवाला।

बंधकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यभिचारिणी। बदचलन औरत। २ वेश्या।

बंधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँधने की क्रिया। २ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। ३ वह जो किसी की स्वतंत्रता आदि में बाधक हो। प्रतिबंध। ४ वध। हत्या। ५ रस्सी। ६ कारागार। कैदखाना। ७ शरीर का संधिस्थान। जोड़।

बँधना—क्रि० अ० [सं० बंधन] १ बंधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। २ कैद होना। बंदी होना। ३ प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। ४. प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ५. ठीक होना। दुरुस्त होना। ६ क्रम निर्धारित होना। स्थिर होना। ७ प्रेमपाश में बद्ध होना। मुग्ध होना। उ०—नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल। अली कली ही सौं बँध्यौ, आगैं कौन हवाल। —बिहारी०।

संज्ञा पुं० [सं० बंधन] वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें। बाँधने का साधन।

बँधनि—संज्ञा स्त्री० [सं० बंधन, हिं० बँधना] १. बंधन। जिसमें कोई चीज बँधी हुई हो। २ उलझने या फँसानेवाली चीज।

बँधवाना—क्रि० स० [हिं० बाँधना का प्रे० रूप] बाँधने का काम दूसरे से कराना। २ देना आदि नियत कराना। मुकर्रर कराना। ३ कैद कराना। ४ (तालाव, कूआँ, पुल आदि) बनवाना। तैयार कराना।

बंधान—संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] १ लेन देन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। २ वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३ पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ४ ताल का सम (संगीत)। उ०—तुरग नचावहिं कुँवर बर अकनि मृदंग निसान। नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं न ताल बँधान॥ —मानस।

बंधाना—क्रि० स० [हिं० बंधन] धारण कराना; जैसे, धीरज बँधाना, हिम्मत बँधाना। २ दे० "बँधवाना"।

बंधी—संज्ञा पुं० [सं० बंधिन्] वह जो बँधा हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बँधना = नियत होना] वह कार्यक्रम जिसका नित्य होना निश्चित हो। बंधेज। बँधा हुआ क्रम।

बंधु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाई। भ्राता। २ सहायक। मददगार। ३ मित्र। दोस्त। ४. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु होते हैं। इसे दोधक भी कहते हैं। उ०—बाण न बात तुम्हैं कहि आवै। सोइ कहौ जिय तोहिं जो भावै॥ दोधक। ५ बंधूक पुष्प।

बँधुआ—संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] कैदी। बंदी।

बंधुक, बंधुजीव—संज्ञा पुं० [सं०] दुपहरिया का फूल। उ०—ललित ललाई के समान अनुमाने रंग, बिंबाफल बंधुजीव बिद्रुम बिचारे की। —शृंगार०।

बंधुता—संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

बंधुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधु होने का भाव। बंधुता। २ भाईचारा। ३ मित्रता। दोस्ती।

बंधुर—वि० [सं०] ऊँचा नीचा। उ०—बंधुर पथ, पंकिल सरि, कगार, झरने, झाड़ी कंटक, विहार पशु-खग का। —तुलसीदास।

बंधूक—संज्ञा पुं० [सं० बंधु] १. दे० "बंधुक"। २ दोधक नामक वृत्त। बंधु।

बंधेज—संज्ञा पुं० [सं० बंध + हिं० एज (प्रत्य०)] १ नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २ किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। ३ रुकावट। प्रतिबंध।

बंधोदय—संज्ञा पुं० [सं०] कर्मफल प्राप्ति का प्रवृत्तिकाल।

बंध्या—वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जो संतान न पैदा कर सके। बाँझ।

बंध्यापन—संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

बंध्यापुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज। असमव या अनहोनी बात।

बंपुलिस—संज्ञा स्त्री० [बं ?+अँ० पुलिस] मलत्याग के लिये म्यूनिसिपैलिटी आदि का बनवाया हुआ सब के इस्तेमाल में आनेवाला स्थान।

बंब—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बं ब शब्द। २. युद्धारंभ में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। हल्ला। उ०—कूदत कबंध के कदंब बंब सी करत धावत दिखावत हैं लाघव राघव बान के।—कवित्ता०। २. नगाड़ा। दुंदुभी। डंका।

संज्ञा पुं० दे० "बम"।

बंबा—संज्ञा पुं० [अँ० मंबा] १ नलकल। पानी की कल। पंप। २ सोता। स्रोत। ३ पानी बहाने का नल।

बँबाना—क्रि० अ० [अनु०] गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू—संज्ञा पुं० [मलाया० बैंबू=बाँस] चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बँभनाई—संज्ञा स्त्री० [सं० ब्राह्मण+हिं० आई (प्रत्य०)] ब्राह्मणत्व।

बंस—संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

बंसकार—संज्ञा पुं० [सं० वंश] बाँसुरी।

बँसरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० बंसी] १. मुरली। बाँसुरी। २. मछली फँसाने का काँटा। बंसी। उ०—मनु पीतम-मन-मीन गहन कों बँसरी दई लटकाई।—नंददास०।

बंसलोचन—संज्ञा पुं० [सं० वंशलोचन] बाँस का सार भाग जो उसके जल जाने पर सफेद रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। यह रंगपुर, मुर्शिदाबाद और सिलहट के लंबी पोरवाले बाँसों की गाँठों के भीतर में अक्सर मिलता है। बंसकपूर।

बँसवाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस] बाँसों का झुरमुट।

बंसी—संज्ञा स्त्री० [सं० वंशी] १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। वंशी। मुरली। २ मछली फँसाने का एक औजार। ३ विष्णु, कृष्ण और राम जी के चरणों का रेखाचिह्न।

बंसीधर—संज्ञा पुं० [सं० वंशीधर] श्रीकृष्ण।

बहंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० विहंगिका] भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर सामान रखने के लिये रस्सियों के बड़े बड़े छीके लटका दिए जाते हैं और बाँस को कंधे पर रखकर ले जाते हैं।

बँहोलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] आस्तीन।

ब—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २. सिंधु। ३. जल। ४ सुगंधि।

बइठना(पु)—क्रि० अ० दे० "बैठना"।

बउर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बौर" या "मौर"।

बउरा(पु)—वि० दे० "बावला"।

बक—संज्ञा पुं० [सं० बक] १. बगला। २. अगस्त्य नामक पुष्प का वृक्ष। ३ कुबेर। ४. बकासुर।

वि० बगले सा सफेद।

संज्ञा स्त्री० [बकना] प्रलाप। बकवाद।

बकतर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की जिरह या कवच जिसे योद्धा लड़ाई में पहनते हैं। सन्नाह।

बकता, बकतार(पु)—वि० दे० "वक्ता"।

बकध्यान—संज्ञा पुं० [सं० बकध्यान] ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो। बनावटी साधुभाव। पाखंडपूर्ण मुद्रा। उ०—रन तें भागि निलज गृह आवा। इहाँ आइ बकध्यान लगावा।—मानस।

बकध्यानी—संज्ञा पुं० [सं० बकध्यान+हिं० ई (प्रत्य०)] बकुलाभगत। पाखंडी।

बकना—क्रि० स० [सं० वचन] १ ऊटपटाँग बात कहना। व्यर्थ बहुत बोलना। २. प्रलाप करना। बड़बड़ाना।

बकबक—संज्ञा स्त्री० [हिं० बकना] बकने की क्रिया या भाव।

बकमौन—संज्ञा पुं० [सं० बक+मौन] दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।

वि० चुपचाप काम साधनेवाला।

बकरकसाव—संज्ञा पुं० [हिं० बकरी+अ० कस्साब=कसाई] बकरों का मांस बेचनेवाला पुरुष। चिक।

बकरना—क्रि० स० [हिं० बकना] १ आपसे आप बकना। बड़बड़ाना। उ०—यशोदा ऊखल बाँध्यो श्याम। दही मथत मुख तें कछु बकरति गारी दै दै नाम।—सूर०। २. अपना दोष या करतूत आपसे आप कहना। कबूल करना।

बकरम—संज्ञा पुं० [अँ०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो कपड़ों के भीतर कोई भाग कड़ा करने के लिये दिया जाता है।

बकरा—संज्ञा पुं० [सं० बर्कर] [स्त्री० बकरी] एक प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग तिकोने, गँठीले और ऐंठनदार तथा पीठ की ओर झुके होते हैं। पूँछ छोटी होती है, शरीर से एक प्रकार की गंध आती है और खुर फटे होते हैं। यह जुगाली करके खाता है। छाग।

बकलस—संज्ञा पुं० [अँ० बकल्स] एक प्रकार की विलायती अँकुसी जो किसी बंधन के दो छोरों को मिलाए रखने या कसने के काम में आती है। बकसुआ।

बकला—संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १. पेड़ की छाल। २. फल का छिलका। उ०—निगम-कल्पतरु को सु फल, बीज न बकला जाहि।—नंददास।

बकवाद—संज्ञा स्त्री० [फा० बकवास] व्यर्थ की बात। बकबक। सारहीन वार्ता। उ०—कहि कहि कपट संदेसन मधुकर कत बकवाद बढ़ावत। कारो कुटिल निठुर चित अंतर सूरदास कवि गावत।—सूर०।

बकवादी—वि० [हिं० बकवाद+ई (प्रत्य०)] बहुत बकबक करनेवाला। बक्की।

बकवास—संज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।

बकवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकध्यान लगानेवालों की वृत्ति।

वि० बकध्यान लगानेवाला।

बकस—संज्ञा पुं० [अँ० बाक्स] १ कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक। २ छोटा डिब्बा। खाना।

बकसना(पु)—क्रि० स० [फा० बख्श+हिं० ना] १ कृपापूर्वक देना। प्रदान करना। उ०—प्रभु बकसत गज बाजि बसन मनि, जय धुनि गगन निसान हए। पाइ सखा सेवक जाचक भरि जनम न दूसर द्वार गए।—गीता०। २. क्षमा करना। माफ करना। उ०—कन्हैया तू नहिं मोहिं डरात। सूरश्याम अब लौं तोहिं बकस्यो तेरी जानी घात।—सूर०।

बकसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० बकसना का प्रे० रूप] क्षमा कराना। माफ कराना। उ०—चूक परी मोतें मैं जानी मिलें श्याम बकसाऊँ री। हाहा करि दसनन तृण धरि धरि लोचन जलनि ढराऊँ री।—सूर०।

बकसी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बख्शी"।

बकसीस(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० बखशिश] १ दान । उ०—प्रेम समेत राय सब लीन्हा । भइ बकसीस जाचकन्ह दीन्हा ॥ —मानस । २ इनाम । पारितोषिक ।

बकसुआ—संज्ञा पुं० दे० "बकलस" ।

बकाउर—संज्ञा स्त्री० दे० "बकावली" ।

बकाना—क्रि० स० [हिं० बकना का प्रे० रूप] १. बकवक कराना । २ रटाना । कहलाना । उ०—गहे अँगुरिया तात की नँद चलन सिखावत । बार बार बकि श्याम सों कछु बोल बकावत । —सूर० ।

बकायन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़का+नीम ?] नीम की जाति का एक पेड़ जिसके फूल, फल छाल और पत्तियाँ औषध के काम आती हैं तथा लकड़ी से मेज, कुर्सी आदि बनाई जाती है । महानिंब ।

बकाया—संज्ञा पुं० [अ०] १. बचा हुआ । बाकी । २ बचत ।

बकारी—संज्ञा स्त्री० [सं० 'व' कार या वाक्य] मुँह से निकलनेवाला शब्द ।

मुहा०—बकारी फूटना = मुँह से आवाज निकलना ।

बकावर—संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली" ।

बकावली—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-बकावली" ।

बकासुर—संज्ञा पुं० [सं० बकासुर] एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

बकिनव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बकायन" ।

बकी—संज्ञा स्त्री० [सं० बकी] बकासुर की बहिन पूतना का एक नाम जो अपने स्तन में विष लगाकर कृष्ण को मारने गई थी ।

बकुचना(पु)—क्रि० अ० [सं० विकुंचन] सिमटना । सिकुड़ना । संकुचित होना ।

बकुचा—संज्ञा पुं० [हिं० बकुचना] [स्त्री० बकुची] छोटी गठरी । बकचा । उ०—जाही जूही बकुचन लावा । पुहुप सुदरसन लागु सुहावा । —पदमावत ।

बकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० वाकुची] एक पौधा जो औषध के काम में आता है ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बकुचा] छोटी गठरी ।

बकुचौहाँ‡—वि० [हिं० बकुचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बकुचौहीं] १ बकुचे की भाँति । २. तुच्छ । उ०—मधुकर ! कान्ह कहा ते न होहीं । राखी सचि कूबरी पीठ पर ये बातें बकुचौहीं ।

बकुरना(पु)—क्रि० स० दे० "बकरना" ।

बकुल—संज्ञा पुं० [सं०] मौलसिरी ।

बकुला‡—संज्ञा पुं० दे० "बगुला" ।

बकेन, बकेना‡—संज्ञा स्त्री० [सं० वष्कयणी] वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो । लवाई का उलटा ।

बकैयाँ—संज्ञा पुं० [सं० वक्र+हिं० ऐयाँ (प्रत्य०)] बच्चों का घुटनों के बल चलना ।

बकोट—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ठ] बकोटने की मुद्रा, मात्रा, क्रिया या भाव ।

बकोटना—क्रि० स० [हिं० बकोट] नाखूनों से नोचना । पंजा मारना । निकोटना ।

बकौरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-बकावली" ।

बक्कम—संज्ञा पुं० [अ० बक्कम] एक छोटा कँटीला वृक्ष । इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है । पतंग ।

बक्कल—संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १ छिलका । २ छाल ।

बक्काल—संज्ञा पुं० [अ०] वणिक् । बनिया ।

यौ०—बनिया बक्काल = छोटा मोटा रोजगारी (हीनतासूचक) ।

बक्की—वि० [हिं० बकना] बहुत बोलने या बकवक करनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान ।

बक्खर—संज्ञा पुं० दे० "बाखर" ।

बक्रिमा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रिमन्] दे० "वक्रता" । उ०—गति न मंद कछु भई सुहाई । नैनन नहिन बक्रिमा आई । —नंददास० ।

बक्स—संज्ञा पुं० दे० "बकस" ।

बखत—संज्ञा पुं० १ दे० "वक्त" । २ दे० "बख्त" ।

बखतर—संज्ञा पुं० दे० "बकतर" ।

बखर—संज्ञा पुं० १ दे० "बाखर" । २ दे० "बक्खर" ।

बखरा—संज्ञा पुं० [फा० बखर] १ भाग । हिस्सा । बाँट । २ दे० "बाखरा" ।

बखरी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० बखार] मिट्टी, ईंटों आदि का बना हुआ अच्छा मकान । (गाँव) ।

बखसीस(पु)‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बकसीस" । उ०—प्रफुलित ह्वैकै आनि दीन्हें जसोदा-रानी झीनिए झगुली तामें कंचन को तगा । नाचै फूल्यो अंगनाई सूर बखसीस पाई माथे को चढ़ाइ लीन्हों लाल को बगा । —सूर० ।

बखान—संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यान] १. वर्णन । कथन । उ०—बपु जगत काको नाउँ लीजै हो जदु जाति गोत न जानिए । गुणरूप कछु अनुहार नहिं कहि का बखान बखानिए । —सूर० । २. प्रशंसा । स्तुति । बड़ाई ।

बखानना—क्रि० स० [हिं० बखान से ना० धा०] १. वर्णन करना । कहना । २. प्रशंसा करना । सराहना । ३ गाली गलौज देना ।

बखार‡—संज्ञा पुं० [सं० प्राकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है ।

बखिया—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की बहुत पास पास की और मजबूत सिलाई ।

मुहा०—बखिया उधेड़ना = भेद या कलई खोलना । भंडा फोड़ना ।

बखियाना—क्रि० स० [हिं० बखिया से ना० धा०] किसी चीज पर बखिया की सिलाई करना ।

बखीर‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० खीर का अनु०] मीठे रस में उबाला हुआ चावल ।

बखील—वि० [अ०] कृपण । सूम ।

बखूबी—क्रि० वि० [फा०] १ अच्छे प्रकार से । भली भाँति । २ पूर्ण रूप से ।

बखेड़ा—संज्ञा [हिं० बखेरना] १. उलझाव । झंझट । उलझन । २ झगड़ा । टंटा । विवाद । ३ कठिनता । मुश्किल । ४ व्यर्थ । विस्तार । आडंबर ।

बखेड़िया—वि० [हिं० बखेड़ा+इया (प्रत्य०)] बखेड़ा करनेवाला । झगड़ालू ।

बखेरना—क्रि० स० [सं० विकिरण] चीजों का इधर उधर या दूर दूर फैलाना । छितराना; जैसे, खेत में बीज बखेरना । उ०—काटि दससीस भुज बीस सीस धरि रामयश दसो दिसि सौगुनों बखेरिहैं । —हनुमन्नाटक ।

बखोरना‡—क्रि० स० [हिं० बक्कुर] छेड़ना । टोकना । छेड़खानी करना ।

बख्त—संज्ञा पुं० [फा०] भाग्य । किस्मत ।

बख्तर—संज्ञा पुं० दे० "बकतर" ।

बख्शना—क्रि० स० [फा० बख्श] १ देना । प्रदान करना । २. त्यागना । छोड़ना । ३ क्षमा करना । माफ करना ।

बख्शवाना, बख्शाना—क्रि० स० [हिं० बख्शाना का प्रे० रूप] किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना।

बख्शिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ उदारता। २. दान। ३ क्षमा।

बग†—संज्ञा पुं० [सं० वक] बगुला।

बगई‡—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २ एक प्रकार की घास।

बगछुट, बगटुट—क्रि० वि० [हिं० बाग+छूटना या टूटना] सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से। उ०—वहाँ जो मेरे सामने कनौतियाँ उठाए गई थी, उसके पीछे मैंने घोड़ा बगछुट फेंका था। —रानी केतकी०।

बगदना†—क्रि० अ० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ना। खराब होना। २. भ्रम में पड़ना। ३ लुढकना। गिरना।

बगदर—संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़" (बुंदेल०)।

बगदहा(पु)‡—वि० [हिं० बगदना] [स्त्री० बगदही] चौंकने या बिगड़नेवाला। बिगड़ैल। उ०—द्रुम चढ़ि काहे न टेरौ कान्हा गइयाँ दूर गई। घेरे न घिरत तुम बिनु माधौ जू मिलत नहीं बगदई।—सूर०।

बगदाना†—क्रि० स० [हिं० बगदना का स० रूप] १. बिगाड़ना। खराब करना। २ ठीक रास्ते से हटाना। ३ भुलाना। भटकाना।

बगना(पु)†—क्रि० अ० [सं० वक] घूमना फिरना।

बगनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बगई (घास)।

बगमेल—संज्ञा पुं० [हिं० बाग+मेल] १. दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर बराबर चलना। २ बराबरी। समानता। तुलना।

क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ साथ।

बगर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० प्राकार] १ महल। प्रासाद। २ बड़ा मकान। घर। उ०—बाग के बगर अनुरागरली देखति ही सुषमा सलोनी सुमनावलि अछेह की।—शृंगा०। ३. कोठरी। कमरा। उ०—टटकी धोई धोवती, चटकीली मुखजोति। लसति रसोई कैं बगर, जगर मगर दुति होति।—बिहारी०। ४. सहन। आँगन। उ०—राम डर रावन के नगर डगर घर बगर बगर आजु कथा भाजि जान की।—हनुमन्नाटक। ५ वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बगार। घाटी। उ०—जसुमति तेरो बारो नान्हों अति अचगरो। दूध, दही, माखन लै डारि देत सगरो। भोर उठि नित्य प्रति मोसों करत है झगरो। ग्वाल बाल संग लिए सब घेरि रहै बगरो।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।

बगरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विकिरण] फैलना। बिखरना। छितराना। उ०—तनु पोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक ते जग मों बगरे।—मानस।

बगराना†—क्रि० स० [हिं० बगरना का स० रूप] फैलाना। छितराना। छिटकाना। उ०—ते दिन बिसरि गए ह्याँ आए। अति उन्मत्त मोह मद छाए फिरत केश बगराए।—सूर०।

क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना। उ०—कहाँ लौं बरनौं सुंदरताई। अति सुदेश मृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराई।—सूर०।

बगरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।

बगरूरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बगल—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा। काँख। २ छाती के दोनों किनारों का भाग। पार्श्व।

मुहा०—बगल में दबाना या धरना = अधिकार करना। ले लेना। बगलें बजाना = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना।

३. इधर उधर का भाग। किनारे का हिस्सा।

मुहा०—बगल गरम करना = सहवास करना। प्रसंग करना। बगलें झाँकना = (१) इधर उधर भागने का यत्न करना। बचाव का रास्ता ढूँढ़ना। (२) कुछ कहते न बनना। निरुत्तर होना।

४ कपड़े का वह टुकड़ा जो कुरते आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जाता है। ५ समीप का स्थान। पास की जगह।

बगलगंध—संज्ञा पुं० [हिं० बगल+सं० गंध] १ वह फोड़ा जो बगल में होता है। कखवार। २ एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगलबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बगल+बंद] एक प्रकार की मिरजई या कुरती।

बगला—संज्ञा पुं० [सं० बक+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है और पूँछ नाम मात्र की, बहुत छोटी, होती है।

मुहा०—बगला भगत = (१) धर्मध्वजी। (२) कपटी। धोखेबाज।

बगलामुखी—संज्ञा स्त्री० [देश०] तांत्रिकों की एक देवी।

बगलियाना—क्रि० अ० [हिं० बगल से ना० धा०] बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।

क्रि० स० १ अलग करना। २. बगल में लाना या करना।

बगली—वि० [हिं० बगल+ई (प्रत्य०)] १ बगल से संबंध रखनेवाला। बगल का। २ कुश्ती का एक दाँव।

मुहा०—बगली घूँसा = वह वार जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।

संज्ञा स्त्री० १ वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं। तिलादानी। २. कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है। बगल। ३ बकी। बगला नामक पक्षी की मादा।

बगलेंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बगला] एक प्रकार का पक्षी।

बगलौहाँ‡—वि० [हिं० बगल+औहाँ] [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना(पु)‡—क्रि० स० दे० "बख्शना"।

बगा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० बागा] जामा। बागा। उ०—नंद उदौ सुनि आयो हो वृषभानु को जगा।" नाचै फूल्यो आँगनाई सूर बखसीस पाई माथे को चढ़ाइ लीनो लाल को बगा।—सूर०।

(पु) संज्ञा पुं० [सं० वक] बगला।

बगाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० बगना का प्रे० रूप] टहलाना। सैर कराना। घुमाना। फिराना।

क्रि० अ० भागना। जल्दी जल्दी जाना।

बगार—संज्ञा पुं० [देश०] वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। घाटी।

बगारना—क्रि० स० [सं० विकिरण, हिं० बगरना। १ फैलाना। छिटकाना। बिखेरना। २ दे० "बगराना"।

बगावत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बागी होने का भाव। २ बलवा। ३. राजद्रोह।

बगिया(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० बाग+हिं० इया (प्रत्य०)] बगीचा। उपवन। छोटा बाग।

बगीचा—संज्ञा पुं० [फा० बागचा] [स्त्री० अल्पा० बगीची] वाटिका। छोटा बाग। उ०—शिरोमणि बागन बगीचन बनन बीच छुते रखवारे तहाँ पछी की न गति है। —हनुमन्नाटक।

बगुला—संज्ञा पुं० दे० "बगला"।

बगूला—संज्ञा पुं० [हिं० बाउ+गोला] वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है। बवडर। वातचक्र।

बगेदना†—क्रि० स० [हिं० बगदना] १ धक्का देकर गिराना या हटाना। भगाना। २ विचलित करना।

बगेरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। बघेरा। भरुही। भरद्वाज। उ०—धरी परेवा पडुक हारी। केहा कदरी अउर बगेरी। —पद्मावत।

बगैर—अव्य० [अ०] विना।

बग्गी, बग्घी—संज्ञा स्त्री० [अँ० बोगी] चार पहियों की पाटनदार एक या दो घोड़े की गाड़ी।

बघंबर—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्राम्बर] बाघ की खाल जिसपर साधू लोग बैठते हैं।

बघछाला—संज्ञा स्त्री० दे० "बघंबर"।

बघनख, बघनखा—संज्ञा पुं० [हिं० बाघ+हिं० नख=नाखून] [स्त्री० अल्पा० बघनहीं] १ एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नहँ के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। शेरपंजा। २ एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।

बघनखना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० बघनख] दे० "बघनखा २"। उ०—तनिक सी रज लागी निरखत्ति बड़भागी, कठ कठुला सोहै औ बघनखना। —नंददास०।

बघनहाँ—संज्ञा पुं० दे० "बघनखा"।

बघनहियाँ(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "बघनखा (२)"।

बघना(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बघनखा (२)"। उ०—आज गई हौं नंदभवन में कहा कहौं गृह चैनु री। सीप जैमाल श्याम उर सोहै बिच बघना छबि पावै री। —सूर०।

बघरूरा†—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बघार—संज्ञा पुं० [हिं० बघारना] वह मसाला जो बघारने समय घी में डाला जाय। तड़का। छौंक।

बघारना—क्रि० स० [सं० अवधारण=बघारण] १. छौंकना। दागना। तड़का देना। २ अपनी योग्यता से अधिक बोलना। बिना मौके या आवश्यकता से अधिक बोलना।

मुहा०—शेखी बघारना=बढ़ बढ़कर बातें करना।

बघूरा—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बघूली—संज्ञा स्त्री० [?] बघनखा। उ०—जटित बघूली छतियन लसै। द्वै द्वै चद कलनि कहुँ हँसै। —नंददास०।

बच(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वचस्] वचन। वाक्य। उ०—जौं मोरे मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया। —मानस।

संज्ञा स्त्री० [सं० वचा] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम आती हैं।

बचका—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

बचकाना†—वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० बचकानी] १ बच्चों के योग्य। २ बच्चों का सा।

बचत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बचना] १ बचने का भाव। बचाव। रक्षा। २. बचा हुआ अंश। शेष। ३ लाभ। मुनाफा।

बचन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वचन] १ वाणी वाक्। वचन। उ०—रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाहु बरु बचन न जाई॥ —मानस।

मुहा०—बचन डालना=माँगना। याचना करना। बचन तोड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा से विचलित होना। कहकर न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। वचनबद्ध करना। उ०—नंद यशोदा बचन बँधायो। ता कारण देही धरि आयो। —सूर०। बचन हारना=प्रतिज्ञाबद्ध होना। बात हारना।

बचना—क्रि० अ० [सं० वचन=न पाना] १ कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना। रक्षित होना। २ किसी बुरी बात से अलग रहना। ३ छूट जाना। रह जाना। ४ काम में आने पर शेष रह जाना। बाकी रहना। ५ दूर या अलग रहना।

क्रि० स० [सं० वचन] कहना। उ०—अबल प्रह्लाद बल देत मुख ही बचत दास ध्रुवचरण चित्त सीस नायो। पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो॥ —सूर०।

बचपन—संज्ञा पुं० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १ लड़कपन। २ बच्चा होने का भाव।

बचवैया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं०√बच+वैया (प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।

बचा†(पु)—संज्ञा पुं० [फा० बच्च, सं० वत्स] [स्त्री० बची] लड़का। बालक। उ०—तुलसी सब सूर सराहत हैं जग में बलसालि हैं बालिबचा। —कविता०

बचाना—क्रि० स० [हिं० बचना का स० रूप] १ आपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। २ प्रभावित न होने देना। अलग रखना। ३ खर्च न होने देना। बाकी रखना। ४ छिपाना। चुराना। ५ अलग रखना। दूर रखना। ६ तरह देना। छोड़ देना। उ०—विप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही। —मानस।

बचाव—संज्ञा पुं० [हिं०√बच+आव (प्रत्य०)] बचने का भाव। रक्षा। त्राण।

बचावन—संज्ञा पुं० [हिं० बचाना] बचाने का कार्य। उ०—दुरि, मुरि, भगन, बचावन छवि सों आवन, उलटन सोहै।—नंददास०।

बच्चा—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] १ किसी प्राणी का नवजात शिशु। २ लड़का। बालक।

मुहा०—बच्चों का खेल=सहज काम। बच्चा देना=प्रसव करना। गर्भ से उत्पन्न करना।

वि० १ अज्ञान। अनजान। २ छोटा या थोड़े दिनों का।

बच्चादान, बच्चादानी—संज्ञा पुं० [फा०] गर्भाशय।

बच्ची—संज्ञा स्त्री० [हिं० बच्चा?] १ पाजेब आदि का घुँघरू। २ छोटी लड़की। ३ होठ के नीचे बीच में जमा हुआ बाल। ४ छत या छाजन में बड़ी घोड़िया के नीचे लगाई जानेवाली छोटी घोड़िया।

बच्छ—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] १ बच्चा। बेटा। उ०—बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात। कबहिं बोलाइ लगाइ हिय, हरषि निरखिहउँ गात॥ —मानस। २. गाय का बच्चा। बछड़ा। उ०—गोपी,

गोप, गाइ, बच्छ जिते। घुरि गए सुदर भगनि तिते। —नंददास०।

बच्छल⑤†—वि० [सं० वत्सल] माता पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल। उ०—सुनि प्रभु वचन हरखि हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना। —मानस।

बच्छलता⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० वत्सलता] वात्सल्य। उ०—निपट श्रमित जननी कहुँ ग्लानि। निरवधि बच्छलता पहिचानि। —नंददास०।

बच्छस⑤†—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती।

बच्छा†—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] [स्त्री० बछिया] १ गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा।

बछ⑤†—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"। उ०—हरि जू मों कहियो हौ जैसे गोकुल आवैं। बाल बिलख मुख गो न चरति तृण बछ पय पियन न धावैं। —सूर०।

बछड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० बच्छ+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।

बछनाग—संज्ञा पुं० [सं० वत्सनाभ] एक स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है। सींगिया। तेलिया। मीठा विष।

बछरा⑤—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"। उ०—करि विचार छिन में हरि मारो सो बछरा भाज। ता पाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज। —सूर०।

बछरू†—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

बछल⑤†—वि० दे० "वत्सल"।

बछवा†—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

मुहा०—बछिया का ताऊ=बैल=महामूर्ख। जड़।

बछस्थल⑤—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्थल] दे० "वक्षस्थल"। उ०—जदपि बछस्थल रमति रमा रमनी वर कामिनि। —नंददास०।

बछेड़ा—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] घोड़े का बच्चा।

बछेरू—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

बजंत्री—संज्ञा पुं० [हिं० बाजा+अंत्री] बाजा बजानेवाला। बजनियाँ।

बजकना—क्रि० अ० दे० "बजबजाना"।

बजट—संज्ञा पुं० [अं०] आयव्यय का अनुमानपत्र। आयव्ययक।

बजड़ा—संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।

संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।

बजना—क्रि० अ० [हिं० बाजा] १ किसी प्रकार के आघात या बाजे आदि में से शब्द उत्पन्न होना। बोलना। २ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना या आघात होना कि शब्द उत्पन्न हो। प्रहार होना। उ०—लोलुप भ्रम गृहपसु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै। तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै। —विनय०। ३ शस्त्रों का चलना। ४ अड़ना। हठ करना। जिद करना। ५. प्रख्याति पाना। प्रसिद्ध होना।

संज्ञा पुं० [सं० वादन] वह जो बजता हो। बाजा।

वि० बजनेवाला।

बजनियाँ†—संज्ञा पुं० स्त्री० [हिं० बजाना+इया (प्रत्य०)] बाजा बजानेवाला।

बजनी—वि० [हिं० बजना] जो बजता हो।

संज्ञा स्त्री० हाथापाई। उठापटक। कुश्ती।

बजबजाना—क्रि० अ० [अनु०] १ तरल पदार्थ का सड़कर बुलबुले छोड़ना। २ छोटे कीड़ों या कृमियों का बहुत अधिक संख्या में रेंगना।

बजमारा⑤†—वि० [हिं० वज्र+मारा] [स्त्री० बजमारी] वज्र से मारा हुआ। जिसपर वज्र पड़ा हो (प्रायः स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त एक गाली या शाप)। ४ दुष्ट। उ०—(१) दान लेहु देहु जान काहे को कान्ह देत हौ गारी। जो कोऊ कह्यो करै री हठ याही मारग आवै बजमारी। —सूर०। (२) भरि भादौं की रैनि अँधियारी लहलहात बिजुरी बजमारी। —नंददास०।

बजरंग⑤—वि० [सं० वज्रांग] वज्र के समान दृढ़ शरीरवाला।

बजरंगबली—संज्ञा पुं० [सं० वज्रांग+बली] हनुमान। महावीर।

बजर⑤†—संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

बजरअंग⑤—संज्ञा पुं० [सं० वज्रांग] हनुमान। उ०—तेहि वज्रागि जरै हौ लागा। बजरअंग जरतहि उठि भागा। —पदमावत।

बजरबट्टू—संज्ञा पुं० [हिं वज+बट्टा] १ एक वृक्ष के फल का दाना या बीज जिसकी माला बच्चों को नजर से बचाने के लिये पहनाते हैं। २ एक लता जिसकी फलियाँ तरकारी का काम देती हैं।

बजरा—संज्ञा पुं० [सं० वज्रा] एक प्रकार की बड़ी और पटी हुई नाव।

संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।

बजरागि⑤—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बजरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्र] १. कंकड़ के छोटे टुकड़े। ककड़ी। २ ओला। ३. किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा। ४ दे० "बाजरा"।

बजवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बजवाना] बजवाने की मजदूरी।

बजवाना—क्रि० स० [हिं० बजाना का प्रे० रूप] किसी को बजाने में प्रवृत्त करना।

बजवैया†—वि० [हिं० बजाना] बजानेवाला। जो बजाता हो।

बजहाई⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रहता] एक प्रकार की गाली या तिरस्कार का शब्द। दुष्टता या बदमाशी। उ०—तुलइ न तोली गजइ न मापी पइजन सेर अढ़ाई। अढ़ाई मैं जे पाव घटै तौ, करकस करै बजहाई। —कबीर०।

बजा—वि० [फा०] उचित। ठीक।

मुहा०—बजा लाना=(१) पूरा करना। पालन करना। (२) करना।

बजागि⑤†—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्र+हिं० अगि] वज्र की आग। विद्युत।

बजाज—संज्ञा पुं० [अ० बज्जाज] [स्त्री० बजाजिन] कपड़े का व्यापारी। कपड़ा बेचनेवाला।

बजाजा—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ बजाजों की [illegible]नें हों।

बजाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] कपड़ा बेचने का व्यापार। बजाज का काम।

बजाना—क्रि० स० [हिं० बाजा] १ किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचाकर अथवा हवा का जोर पहुँचाकर उससे शब्द उत्पन्न करना। २ चोट पहुँचाकर आवाज निकालना।

मुहा०—बजाकर=डंका पीटकर। खुल्लमखुल्ला। ठोंकना बजाना=देख भालकर भली भाँति जाँचना।

३ किसी चीज से मारना। आघात पहुँचाना।

क्रि० स० पूरा करना।

बजाय—अव्य० [फा०] स्थान पर। बदले में।

बजार⑤†—संज्ञा पुं० दे० "बाजार"।

बजारी—वि० [हिं० बाजार+ई (प्रत्य०)] १ बाजार से संबंध रखनेवाला। बाजारू। २. साधारण। सामान्य।

बजूखा—संज्ञा पुं० दे० "बिजूखा"।

बंजर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

बझना(पु)†—क्रि० अ० [सं० बद्ध] १. बंधन में पड़ना। बँधना। उ०—चली प्रात ही गोपिका लै गोरस। बझे जाय खग वृंद ज्यों प्रिय छवि लटकनि लस।—सूर०। २ उलझना। फँसना। ३ हठ करना।

बझाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० बझना का सकर्मक रूप] बंधन में लाना। उलझाना। फँसाना। उ०—नाथ सों कौन विनती कहि सुनावों। नाम लगि लाय लासा ललित बचन कहि ब्याध ज्यों विषय विहंगन बझावौं।—विनय०।

बझाव—संज्ञा पुं० [हिं० बझना] फँसने की क्रिया या भाव। उलझाव। अटकाव। बंधन।

बझावट—संज्ञा स्त्री० दे० "बझाव"।

बझावना(पु)†—क्रि० स० पुं० दे० "बझाना"।

बट—संज्ञा पुं० [सं० बट] १. दे० "वट"। २ बड़ा नाम का पकवान। बरा। ३ गोला। गोल वस्तु। ४. बट्टा। लोढ़िया। ५. बाट। बटखरा। ६ रस्सी की ऐंठन। बटाई। बल।

संज्ञा पुं० [हिं० बाट] मार्ग। रास्ता।

बटई—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्तक] बटेर चिड़िया।

बटखरा—संज्ञा पुं० [सं० वटक] पत्थर, पीतल, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो वस्तुओं के तौलने के काम में आता है। बाट।

बटन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बटना] बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव। ऐंठन। बल।

संज्ञा पुं० [अं०] १ पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुंडी। २ किसी यंत्र का स्विच अथवा घुंडी जिसके दबाने आदि से वह चलता या बंद होता है।

बटना—क्रि० स० [सं० वट=बटना] कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमें वे मिलकर एक हो जायँ।

क्रि० अ० [हिं० बट्टा] सिल पर रखकर पीसा जाना। पिसना।

संज्ञा पुं० [सं० उद्वर्त्तन, प्रा० उव्वटन] सरसों, चिरौंजी आदि का लेप जो शरीर पर मला जाता है। उबटन।

बटपरा†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बटमार"।

बटपार—संज्ञा पुं० दे० "बटमार"। उ०—बिच बिच नदी खोह औ नारा। ठाँवहिं ठाँव बैठ बटपारा।—पदमावत।

बटमार—संज्ञा पुं० [हिं० बाट+मारना] मार्ग में मारकर छीन लेनेवाला। ठग। डाकू।

बटला—संज्ञा पुं० [सं० वर्तुल] बड़ी बटलोई। देग। देगचा।

बटली, बटलोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बटला] दाल, चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन। देग। देगची। पतीली।

बटवा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "बटुवा।" उ०—झोली पत्र विभूति न बटवा, अनहद बेन बजावै।—कबीर०।

बटवार—संज्ञा पुं० [हिं० बाट+वाला] १ पहरेदार। २. रास्ते का कर उगाहनेवाला।

बटा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटिया] १. गोल। वर्तुलाकार वस्तु। २ गेंद। ३ ढोंका। रोड़ा। ढेला। ४. बटोही। पथिक।

बटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √बट+आई (प्रत्य०)] बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

संज्ञा स्त्री० दे० "बँटाई"।

बटाऊ—संज्ञा पुं० [हिं० बाट+आऊ (प्रत्य०)] बाट चलनेवाला। पथिक। मुसाफिर। उ०—राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।—कविता०।

मुहा०—बटाऊ होना=चलता होना। चल देना।

बटाक†(पु)—वि० [हिं० बड़ा+क ?] बड़ा। ऊँचा।

बटाना†—क्रि० अ० [पू० हिं० पटाना=बंद होना] बंद हो जाना। जारी न रहना। उ०—सात दिवस जल बरषि बटान्यो। आवत चल्यो ब्रजहि अन्नावत॥—सूर०।

बटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० बटा=गोला] १ छोटा गोला। २. छोटा बट्टा। लोढ़िया।

बटी—संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १ गोली। २. बड़ा नाम का पकवान।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] वाटिका। उपवन।

बटुआ—संज्ञा पुं० दे० "बटुवा"।

बटुक—संज्ञा पुं० दे० "वटुक"।

बटुरना†—क्रि० अ० [सं० वर्तुल] १. सिमटना। सरककर थोड़े स्थान में होना। २. इकट्ठा होना। एकत्र होना।

बटुवा—संज्ञा पुं० [सं० वर्तुल] १. एक प्रकार की गोल थैली जिसके भीतर कई खाने होते हैं। २ बड़ी बटलोई या देग।

बटेर—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तक] लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया।

बटेरबाज—संज्ञा पुं० [हिं० बटेर+फा० बाज] बटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटोर—संज्ञा पुं० [हिं० बटोरना] १ बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना। जमावड़ा। २ वस्तुओं का ढेर।

बटोरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बटोरना] १. इधर उधर से झाड़ बटोरकर इकट्ठा किया हुआ ढेर। २ कूड़े करकट का ढेर।

बटोरना—क्रि० स० [हिं० बटुरना का स० रूप] १ बिखरी हुई वस्तुओं को समेटकर एक स्थान पर करना। समेटना। उ०—सुचि सुंदर सालि सकेलि सुवारि कै बीज बटोरत ऊसर को।—कविता०। २. चुनकर एकत्र करना। जुटाना। उ०—राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥—मानस।

बटोही—संज्ञा पुं० [हिं० बाट+वाह (प्रत्य०)] रास्ता चलनेवाला। पथिक। मुसाफिर। उ०—खग मृग मगन देखि छवि होहीं। लिए चोरि चित राम बटोही॥—मानस।

बट्ट—संज्ञा पुं० [हिं० बटा] १ बटा। गोला। २ गेंद।

बट्टा—संज्ञा पुं० [सं० वार्त्त, प्रा० वाट्ट=बनियाई] १. वह कमी जो व्यवहार या लेन देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है। २ दलाली। दस्तूरी। ३ खोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है।

मुहा०—बट्टा लगना=दाग या कलंक लगना।

४. टोटा। घाटा। नुकसान। हानि।

संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] १. कूटने या पीसने का पत्थर। लोढ़ा। २. पत्थर आदि का गोल टुकड़ा। ३. छोटा गोल डिब्बा।

बट्टाखाता—संज्ञा पुं० [हिं० बट्टा+खाता] डूबी हुई रकम का लेखा या वही।

बट्टाढाल—वि० [हिं० बट्टा+ढालना] खूब समतल और चिकना।

बट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बट्टा] १ छोटा बट्टा। गोल छोटा टुकड़ा। २ कूटने पीसने का पत्थर। लोढ़िया। ३ बड़ी टिकिया।

बट्टू—संज्ञा पुं० दे० "बजरबट्टू"।

संज्ञा पुं० [सं० वर्वट] बोड़ा। बजर-बट्टू। लोबिया।

बट्टेबाज—वि० [हिं० बट्टा+फा० बाज] [संज्ञा बट्टेबाजी] १ जादूगर। २ धूर्त। चालाक।

बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु० बड़बड़] बकवाद।

संज्ञा पुं० [सं० वट] बरगद का पेड़।

† वि० दे० "बड़ा"।

बड़क—संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़] १ डींग। शेखी। २ दे० "बड़"।

बड़प्पन—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा+पन] बड़ाई। श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव। महत्व।

बड़बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। प्रलाप।

बड़बड़ाना—क्रि० अ० [अनु० बड़बड़] १ बक बक करना। बकवाद करना। २ कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुड़बुड़ाना।

बड़बड़िया—वि० [हिं० बड़बड़] व्यर्थ की बातें करनेवाला। बकवादी।

बड़बेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "झड़बेरी"।

बड़बोल, बड़बोला—वि० [हिं० बड़ा+बोल] बढ बढ़कर बातें करनेवाला। सीटनेवाला।

बड़भाग—वि० [हिं० बड़ा+भाग्य] बड़े भाग्यवाला। भाग्यवान्। उ०—अहो अमरवर हो बड़भाग। मैं मेट्यौ जु रावरो जाग।—नंददास०।

बड़भागी—वि० [हिं० बड़भाग+ई (प्रत्य०)] बहुत भाग्यशाली। उ०—बड़भागी बनु अवध अभागी, जो रघुबंस तिलकु तुम्ह त्यागी।—मानस।

बड़रा(पु)—वि० [हिं० बड़ा] [स्त्री० बड़री] बड़ा। विशाल। उ०—विकटी भृकुटी बड़री अँखियाँ अनमोल कपोलन की छवि है।—कविता०।

बड़वाग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।

बड़वानल—संज्ञा पुं० दे० "बड़वाग्नि"।

बड़वार†—वि० दे० "बाढ़ा"।

बड़हन†—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ी+धान] एक प्रकार का धान।

वि० दे० "बड़ा"।

बड़हल—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा+फल] एक बड़ा पेड़ जिसके फल पकने पर अमरूद के बराबर गेरुए रंग के पर बड़े बेडौल होते हैं।

बड़हार—संज्ञा पुं० [हिं० बर+आहार] विवाह के पीछे बरातियों की पक्की ज्योनार।

बड़ा—वि० [सं० वर्द्धन] १ खूब लंबा चौड़ा। अधिक विस्तार का। विशाल। बृहत्। महान्।

मुहा०—बड़ा घर=कैदखाना। कारागार।

२ जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक वयस् का। ३ अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। मान, माप या वयस् का। ४ गुरु। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। ५ महत्व का। भारी। ६ बढ़कर। ज्यादा।

संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बड़ी] एक पकवान जो मसाला मिली हुई पीठी की गोल टिकियों को तलकर बनाया जाता है।

बड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ा+ई (प्रत्य०)] १ बड़े होने का भाव। परिमाण या विस्तार का आधिक्य। २ बड़प्पन। श्रेष्ठता। बुजुर्गी। ३ परिमाण या विस्तार। ४ महिमा। प्रशंसा। तारीफ।

मुहा०—बड़ाई देना=आदर करना। सम्मान करना। बड़ाई मारना=शेखी हाँकना।

बड़ा दिन—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा+दिन] २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है। इसी तिथि को ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

बड़ानी(पु)—वि० [हिं० बड़ा] बलवान्। बली। उ०—राजा परजा सम करि मारै ऐसो काल बड़ानी रे।—कबीर०।

बड़ी—वि० स्त्री० दे० "बड़ा"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ा] आलू, पेठा आदि मिली हुई पीठी की छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया। बरी। कुम्हड़ौरी।

बड़ी माता—संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ी+माता] शीतला। चेचक।

बड़ेरर—संज्ञा पुं० [देश०] बवंडर। चक्रवात।

बड़ेरा(पु)†—वि० [हिं० बड़ा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बड़ेरी] १. बड़ा। बृहत्। महान्। उ०—सुनु मन मूढ़ सिखावन मेरो। भ्रमत भ्रमित निसि दिवस गगन महँ, तहँ रिपु राहु बड़ेरो॥—विनय०। २. प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० [सं० वडभि] [स्त्री० अल्पा० बड़ेरी] छाजन में बीच की लकड़ी।

बड़ौना†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ापन] प्रशंसा।

बड्डी†—वि० [सं० बृहत्, प्रा० वड्ड] बड़ी। उ०—बड्डी रैनि तनक से दिना। क्यों भरिए पिय प्यारे बिना।—नंददास०।

संज्ञा स्त्री० एक खेल। दे० "कबड्डी"।

बढ़—संज्ञा स्त्री० दे० "बढ़ती"।

बढ़ई—संज्ञा पुं० [सं० वर्द्धकि प्रा० वड्ढइ] काठ को गढ़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √बढ+ती (प्रत्य०)] १ तौल या गिनती में अधिकता। मात्रा का आधिक्य। २ धन संपत्ति आदि का बढ़ना। उन्नति। समृद्धि।

बढ़ना—क्रि० अ० [सं० वर्द्धन] १ विस्तार या परिमाण में अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना, जैसे, पौधे का बढ़ना, बच्चे का बढ़ना, नदी का बढ़ना।

मुहा०—बात बढ़ना=(१) विवाद होना। (२) मामला टेढ़ा होना।

२ गिनती या नाप तौल में ज्यादा होना, जैसे, रुपए पैसे का बढ़ना, आमदनी बढ़ना। ३ मर्यादा, अधिकार, विद्या बुद्धि, सुख संपत्ति आदि में अधिक होना। तरक्की करना।

मुहा०—बढ़कर चलना=इतराना। घमंड करना।

४ किसी स्थान से आगे जाना। अग्रसर होना। चलना। ५ किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। ६ लाभ होना। मुनाफे में मिलना। ७ दूकान आदि का समेटा जाना। बंद होना। ८ चिराग का बुझाना।

क्रि० स० [हिं०] बढ़ाना। विस्तृत करना।

बढ़नी†—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्द्धनी] झाड़ू।

बढ़वन—वि० [सं० वर्द्धन] बढ़ानेवाला। उ०—सुनि देसांतर विरह विनोद। रसिक जनन मन बढ़वन मोद। —नंददास०।

बढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बढाना] १ बढ़ाने की क्रिया या भाव। २ बढ़ाने की मजदूरी।

बढ़ाना—क्रि० स० [हिं० बढ़ना का स० रूप] १. विस्तार या परिमाण में अधिक करना। विस्तृत करना। २ गिनती या नाप तौल आदि में ज्यादा करना। ३ फैलाना। लंबा करना। ४ अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना। ५ उन्नत करना। तरक्की देना। ६ आगे गमन कराना। चलाना। ७ सस्ता बेचना। ८ विस्तार करना। फैलाना। ६ दूकान आदि बंद करना। १० दीपक निर्वाण करना। चिराग बुझाना।

क्रि० अ० चुकना। समाप्त होना।

बढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं०√बढ़+आव (प्रत्य०)] बढ़ने की क्रिया या भाव।

बढ़ावा—संज्ञा पुं० [हिं० बढाव] १ किसी काम की ओर मन बढ़ानेवाली बात। प्रोत्साहन। उत्तेजना।

मुहा०—बढावे में आना = उत्तेजित होकर किसी टेढ़े काम में प्रवृत्त होना।

२ साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।

बढ़िया—वि० [हिं० बढ़ना] उत्तम। अच्छा।

बढ़या†—वि० [हिं० बढाना, बढना] १ बढ़ानेवाला। २ बढ़नेवाला।

†संज्ञा पुं० दे० "बढ़ई"। उ०—अति सुंदर पालनो गढ़ि ल्याव, रे बढ़ैया। —सूर०।

बढ़ोतरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाढ़+उत्तर] १ उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २ उन्नति।

बणिक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यापार, व्यवसाय करनेवाला। बनिया। सौदागर। २ बेचनेवाला। विक्रेता।

बणिज—संज्ञा पुं० दे० "वणिक्"।

बतकहाव—संज्ञा पुं० दे० "बतकही"।

बतकही—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात+कहना] १ बातचीत। वार्तालाप। उ०—करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान। मुख सरोज मकरंद छवि करत मधुप इव पान। —मानस। २ वादविवाद।

बतख—संज्ञा स्त्री० [अ० बत] हंस जाति का एक सफेद जलपक्षी।

बतचल—वि० [हिं० बात+चलाना] बकवादी। उ०—जानी जात सूर हम इनकी बतचल चंचल लोल। —सूर०।

बतबढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० बात+बढ़ाव] व्यर्थ बात बढ़ाना। झगड़ा बखेड़ा बढ़ाना। उ०—अब जनि बतबढ़ाव खल करई। सुनि मम वचन मान परिहरई। —मानस।

बतबार्ता(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] बेबात की बात। छेड़छाड़।

बतर(पु)—वि० दे० "बदतर"।

बतरस—संज्ञा पुं० [हिं० बात+रस] बातचीत का आनंद। वार्ता का मजा।

बतरान(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात] १ बातचीत। २ बोली।

बतराना†—क्रि० अ० [हिं० बात से ना० धा०] बातचीत करना। उ०—छिनकु छबीले लाल, वह नहिं जौ लगि बतराति। ऊख, महूख, पियूष की तौं लगि भूख न जाति। —बिहारी०।

बतरौहाँ(पु)†—वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरौहीं] बातचीत की ओर प्रवृत्त। वार्तालाप का इच्छुक।

बतलाना—क्रि० स० दे० "बताना"।

बताना—क्रि० स० [हिं० बात+ना (प्रत्य०)] १ कहना। अभिज्ञ करना। जताना। २ समझाना बुझाना। हृदयंगम कराना। ३ निर्देश करना। दिखाना। प्रदर्शित करना। ४ नाचने गाने में हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। भाव बताना। ५ ठीक करना। मार पीटकर दुरुस्त करना।

बताशा—संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

बतास†—संज्ञा स्त्री० [सं० वातास्‌ह] १. वात का रोग। गठिया। २ वायु। हवा।

बतासा—संज्ञा पुं० [हिं० बतास = हवा] १ एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है।

मुहा०—बतासे सा घुलना = (१) शीघ्र नष्ट होना (शाप)। (२) क्षीण और दुर्बल होना।

२ एक प्रकार की आतशबाजी। ३ बुलबुला। बुद्बुद।

बतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्तिका, प्रा० वत्तिया = वत्ती] छोटा, कोमल और कच्चा फल।

बतियाना†—क्रि० अ० [हिं० बात से ना० धा०] बातचीत करना।

बतियार—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात] बात चीत। उ०—सतसंगत की बतियारा। सो करत फिरत हुसियारा। —विश्राम-सागर।

बतीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "बत्तीसी"।

बतू—संज्ञा पुं० दे० "कलाबत्तू"।

बतौर—क्रि० वि० [अ०] १ तरह पर। रीति से। तरीके पर। २ सदृश। समान।

बतौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वात] मांस का उभड़ा हुआ अंश। गुम्मड़।

बत्तक—संज्ञा स्त्री० दे० "बतख"।

बत्तिस†—वि० दे० "बत्तीस"।

बत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्ति, प्रा० वत्ति] १ चिराग जलाने के लिये रूई या सूत का बटा हुआ लच्छा। २ मोमबत्ती। ३ दीपक। चिराग। रोशनी। प्रकाश। ४ फलीता। पलीता। ५ पतले छड़ या सलाई के आकार में लाई हुई कोई वस्तु। ६. फूस का पूला जो छाजन में लगाते हैं। मूठा। ७ कपड़े की वह लंबी धज्जी जो घाव में मवाद साफ करने के लिये भरते हैं।

बत्तीस—वि० [सं० द्वात्रिंशत्, प्रा० बत्तीसा] जो गिनती में तीस से दो ज्यादा हो।

संज्ञा पुं० तीस से दो अधिक की संख्या या अंक। ३२।

बत्तीसा—संज्ञा पुं० [हिं० बत्तीस] पुष्टई के बत्तीस मसालों का एक प्रकार का लड्डू।

बत्तीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बत्तीस] १ बत्तीस का समूह। २. मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति।

मुहा०—बत्तीसी झड़ पड़ना = सब दाँत गिर पड़ना। बत्तीसी दिखाना = दाँत दिखाना। हँसना। बत्तीसी बजना = जाड़े के कारण दाढ़ों का कँपना। गहरा जाड़ा लगना।

बथुआ—संज्ञा पुं० [सं० वास्तुक] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का साग खाते हैं।

बद—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ध्म = गिलटी] गोहिया। बाघी (रोग)।

वि० [फा०] १. बुरा। खराब। निकृष्ट। २ दुष्ट। खल। नीच।

संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्त] पलटा। बदला।

मुहा०—बद में=एवज में। बदले में। उ०—गुरुगृह जब हम वन को जात। तुरत हमारे बद में लकरी लावत सहि दुख गात। —सूर०।

बदअमली—संज्ञा स्त्री० [फा० बद+अ० अमल।] राज्य का कुप्रबंध। अशांति। हलचल।

बदइंतजामी—संज्ञा स्त्री० [अ० बद+फा० इंतजाम] कुप्रबंध। अव्यवस्था।

बदकार—वि० [फा०] १ कुकर्मी। २. व्यभिचारी।

बदकिस्मत—वि० [फा० बद+अ० किस्मत] बुरी किस्मत का। मंदभाग्य। अभागा।

बदखत—वि० [अ० बद+फा० खत] लिखने में जिसके अक्षर अच्छे न हों।

बदख्वाह—वि० [फा०] [संज्ञा बदख्वाही] बुरा चाहनेवाला। अशुभचिंतक।

बदगुमान—वि० [फा०] [संज्ञा बदगुमानी] संदेह की दृष्टि से देखनेवाला। बुरा संदेह करनेवाला।

बदगो—वि० [फा०] [संज्ञा बदगोई] १ बुरी बातें कहनेवाला। २ निंदक।

बदचलन—वि० [फा०] कुमार्गी। लंपट।

बदजबान—वि० [फा०] [संज्ञा बदजबानी] गाली गलौज बकनेवाला। कटुभाषी।

बदजात—वि० [फा० बद+अ० जात] खोटा। नीच। बुरी जाति या उत्पत्ति का।

बदतमीज—वि० [फा०] अशिष्ट। जो शिष्टाचार न जानता हो। गँवार। बेहूदा।

बदतर—वि० [फा०] और भी बुरा। किसी की अपेक्षा बुरा।

बददियानती—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेईमानी। दगा। विश्वासघात।

बददुआ—संज्ञा स्त्री० [फा०बद+अ० दुआ] शाप।

बदन—संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।

संज्ञा पुं० [सं० वदन] मुख। उ०—छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा। —मानस।

बदनसीब—वि० [फा० बद+अ० नसीब] अभागा।

बदनसीबी—संज्ञा स्त्री० [फा० बद+अ० नसीब] दुर्भाग्य।

बदना(पु)—क्रि० स० [सं० वदन] १ कहना। वर्णन करना। २ मान लेना। स्वीकार करना। ३. नियत करना। ठहराना। निश्चित करना। उ०—श्याम गए बदि अवधि सखी री। —सूर०।

मुहा०—बदा होना=भाग्य में लिखा होना। बदकर (कोई काम करना)=(१) जानबूझकर। पूरे हठ के साथ। (२) ललकारकर।

४ बाजी लगाना। शर्त लगाना। होड़ लगाना। ५ कुछ समझना। बड़ा या महत्व का मानना। गिनती में लाना। लेखे में लाना। उ०—बदत काहू नहीं निधरक निदर मोहिं न गनत। बार बार बुझाय हारी भौंह मो पै तनत। —सूर०।

बदनाम—वि० [फा०] जिसकी निंदा हो रही हो। कलंकित।

बदनामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लोकनिंदा। अपकीर्ति।

बदनीयत—वि० [फा० बद+अ० नीयत] १. बुरी नीयतवाला। २. बेईमान।

बदनीयती—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेईमानी। दगा।

बदनुमा—वि० [फा०] बदसूरत। कुरूप।

बदबख्त—वि० [फा०] अभागा।

बदपरहेज—वि० [फा०] [संज्ञा बदपरहेजी] जो ठीक तरह से परहेज न करे। कुपथ्य करनेवाला। खाने पीने आदि में संयम न रखनेवाला।

बदबू—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्गंध। बुरी गंध।

बदबूदार—वि० [फा०] दुर्गंधयुक्त।

बदमजा—वि० [फा०] १ बेस्वाद। २ आनंदरहित।

बदमस्त—वि० [फा०] [संज्ञा बदमस्ती] नशे में चूर। मत्त। उन्मत्त।

बदमाश—वि० [फा० बद+अ० मआश=जीविका] १. बुरे कर्म से जीविका करनेवाला। दुर्वृत्त। २. दुष्ट। पाजी। लुच्चा। ३ दुराचारी।

बदमाशी—संज्ञा स्त्री० [फा० बद+अ० मआश] १. दुष्कर्म। खोटाई। २. दुष्टता। पाजीपन। ३ व्यभिचार।

बदमिजाज—वि० [फा०] १ दु:स्वभाव। खोटी प्रकृति का। २. चिड़चिड़ा। जल्दी नाराज होनेवाला।

बदरंग—वि० [फा०] १ भद्दे रंग का। २ जिसका रंग बिगड़ गया हो। विवर्ण।

बदर—संज्ञा पुं० [सं०] बेर का पेड़ या फल। उ०—तुम्ह त्रिकालदरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा॥ —मानस।

क्रि० वि० [फा०] बाहर।

मुहा०—बदर निकालना=(१) जिम्मे रकम निकालना। (२) हिसाब में गड़बड़ रकम अलग करना।

संज्ञा पुं० दे० "बादर"। उ०—बदर बनैत चहूँ दिसि धाए। बूँद बान घन बरसत आए। —नंददास०।

बदरा‡—संज्ञा पुं० [हिं० बादर] बादल। मेघ।

बदराह—वि० [फा०] १. कुमार्गी। बुरी राह पर चलनेवाला। २ दुष्ट। बुरा।

बदरि—संज्ञा पुं० [सं०] बेर का पौधा या फल।

संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"। उ०—अरुन बदरि मैं दमकत दामिनि अकुर जैसी। —नंददास०।

बदरिकाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थविशेष जो हिमालय पर है। यहाँ नरनारायण तथा व्यास का आश्रम है।

बदरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।

बदरीनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।

बदरोब—वि० [फा० बद+अ० रोब] [संज्ञा बदरोबी] १ जिसका कुछ रोब न हो। २ तुच्छ। ३ भद्दा।

बदरौंह‡—वि० [फा० बद+रौ=चाल] कुमार्गी। बदचलन।

†संज्ञा पुं० [हिं० बादर+औंहँ (प्रत्य०)] बदली का आभास।

बदल—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक के स्थान पर दूसरा होना। परिवर्तन। हेरफेर। २. पलटा। एवज। प्रतिकार।

बदलना—क्रि० अ० [अ० बदल से हिं० ना० धा०] १ जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्तित होना। २ एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना।

क्रि० स० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। परिवर्तित करना। २ एक वस्तु के स्थान की पूर्ति दूसरी वस्तु से करना।

मुहा०—बात बदलना=पहले एक बात कहकर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना।

३. विनिमय करना।

बदलवाना—क्रि० स० [हिं० 'बदलना' का प्रे० रूप] बदलने का काम कराना।

बदला—संज्ञा पुं० [अ० बदल] १. परस्पर लेने और देने का व्यवहार। विनिमय। २. एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु। पलटा। एवज। ३. एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार। प्रतिशोध। पलटा। एवज। प्रतीकार।

मुहा०—बदला लेना=किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना। ४ किसी कर्म का परिणाम। नतीजा।

बदलाना—क्रि० स० दे० "बदलवाना"।

बदली—संज्ञा स्त्री० [हिं० बादल का अल्पा०] फैलकर छाया हुआ बादल। घनविस्तार।

संज्ञा स्त्री० [अ० बदल] १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। तबदीली। तबादला।

बदलौवल—संज्ञा स्त्री० [अ० बदल+औवल (प्रत्य०)] अदल बदल। हेर फेर।

बदशकल—वि० [फा०] भद्दा। कुरूप।

बदसलूक—वि० [फा०] बुरा व्यवहार करनेवाला। अशिष्ट।

बदसूरत—वि० [फा०] कुरूप। बेडौल।

बदस्तूर—क्रि० वि० [फा०] जैसा था या रहता है, वैसा ही। जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों।

बदहजमी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अपच। अजीर्ण

बदहवास—वि० [फा०] १ बेहोश। अचेत। २ व्याकुल। विकल। उद्विग्न।

बदा—वि० [हिं० बदना] भाग्य में लिखा हुआ।

बदान—संज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] बदे जाने की क्रिया या भाव। पहले से किसी बात का प्रतिज्ञापूर्वक स्थिर किया जाना।

बदाबदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] दो पक्षों की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ। लाग डाँट।

बदाम—संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

बदि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [स० वर्त] पलटा। बदला।

अव्य० १ बदले में। एवज में। २ लिये। वास्ते। खातिर।

बदी—संज्ञा स्त्री० [सं० वदि] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।

संज्ञा स्त्री० [फा०] बुराई। अपकार। अहित।

बदूख(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बदूक"।

बदैया(पु)—वि० [हिं० √बद+ऐया (प्रत्य०)] नियत करनेवाला। ठहरानेवाला। स्थिर करनेवाला। उ०—जानिकै सहेट गई कुंजन मिलन तुम्हैं, जान्यो न सहेट के बदैया ब्रजराज से।—शृंगार०।

बदौलत—क्रि० वि० [फा०] १ द्वारा। अवलंब से। कृपा से। २ कारण से।

बद्दर, बद्दला—संज्ञा पुं० दे० "बादल"।

बद्ध—वि० [स०] [संज्ञा बद्धता] १. बँधा हुआ। जो बाँधा गया हो। २ संसार के बंधन में पड़ा हुआ। जो मुक्त न हो। ३ जिसके लिये कोई रोक हो। ४. जो किसी हद हिसाब के भीतर रखा गया हो। ५. निर्धारित। ठहराया हुआ।

बद्धकोष्ठ—संज्ञा पुं० [स०] मल अच्छी तरह न निकलने का रोग। कब्ज। कब्जियत।

बद्धपरिकर—वि० [सं०] कमर बाँधे हुए। तैयार।

बद्धांजलि—वि० [स०] जो हाथ जोड़े हुए हो। करबद्ध।

बद्धी—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्धी] १ वह जिससे कुछ कसें या बाँधें। डोरी। रस्सी। तसमा। २ चार लड़ों का एक गहना।

बध—संज्ञा पुं० [स०] हनन। हत्या।

बधना—क्रि० स० [स० वध से हिं० ना० धा०] मार डालना। वध करना। हत्या करना।

संज्ञा पुं० [सं० वर्द्धन=मिट्टी का गडुआ] मुसलमानों का मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

बधकारी—वि० [सं० वध+कारिन्] वध करनेवाली। उ०—लिए फिरत विष जोग गाँठि प्रेमी बधकारी।—नंददास०।

बधाई—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्द्धन] १ वृद्धि। बढ़ती। २ मंगल अवसर का गाना बजाना। मंगलाचार। ३ आनंद। मंगल। उत्सव। ४ किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या सँदेसा। मुबारकबाद।

बधाना—क्रि० स० [हिं० 'बधना' का प्रे०] वध कराना। दूसरे से मरवाना।

बधाया—संज्ञा पुं० दे० "बधाई"।

बधावन, बधावना, बधावरा—संज्ञा पुं० दे० "बधावा"। उ०—जायो कुल मंगन, बधावनो बजायो सुनि, भयो परिताप पाप जननी जनक को। बारे तें ललात बिललात द्वार द्वार दीन, जानत हो चारि फल चारि ही चनक को।—कविता०।

बधावा—संज्ञा पुं० [हिं० बधाई] १ बधाई। २ वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट मित्रों के यहाँ से मंगल अवसरों पर आता है। ३ आनंद मंगल के अवसर का गाना बजाना। मंगलाचार। उ०—गए जाम जुग भूपति आवा। घर घर उत्सव बाज बधावा॥ —मानस।

बधिक—संज्ञा पुं० [स० वधक] [भाव० बधिकता] १ वध करनेवाला। हत्यारा। उ०—परी बधिक बस मनहु मराली। काह कीन्ह करतार कुचाली॥ —मानस। २ जल्लाद। ३ व्याध। बहेलिया। उ०—मुनिगन निकट बिहग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं॥ —मानस।

बधिया—संज्ञा पुं० [स० वध+हिं० इया (प्रत्य०)] वह बैल या पशु जो अंडकोश निकालकर षंढ कर दिया गया हो। खस्सी। आखता।

मुहा०—बधिया बैठना=बहुत हानि होना।

बधिर—संज्ञा पुं० [स०] जिसमें सुनने की शक्ति न हो। बहरा।

बधू—संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।

बधूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] १ पुत्र की स्त्री। पतोहू। उ०—सहित बधूटिन्ह कुअँर सब, तब आए पितु पास। —मानस। २. सुहागिन स्त्री। ३ नई आई हुई बहू।

बधूरा†—संज्ञा पुं० [हिं० बहुधूर] बगूला। बवंडर।

बधैया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बधाई"। उ०—पगनि कब चलिहौ चारौ भैया? भूपति पुन्य-पयोधि उमँग, घर घर आनंद बधैया॥ —गीता०।

बध्य—वि० [सं०] मार डालने के योग्य।

बन—संज्ञा पुं० [सं० वन] १ जंगल। कानन। अरण्य। उ०—होत प्रात मुनि बेष धरि जौं न रामु बन जाहिं। मोर मरनु राउर अजसु नृप समुझिअ मन माहिं॥ —मानस। २ समूह। उ०—सुजन सुतरु बन ऊख सम, खल टंकिका रुखान। परहित अनहित लागि सब, साँसति सहत

समान। —दोहा०। ३ जल। पानी। उ०—बाँध्यो वननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु वारीश। —मानस। ४ वगीचा। वाग। उ०—वासव वरुन विधि वन तें सुहावनो, दसानन को कानन वसत को सिंगार सो। ५ कपास का पौधा। उ०—सुनु सख्यौ, वीत्यौ वनौ, ऊखौ लई उखारि। हरी हरी अरहरि अजैं, धरि धरहरि जिय नारि॥ —विहारी०। ६ दे० "वन"।

वनकंडा—सज्ञा पुं० [हिं० वन+कंडा] जगल में चरनेवाले गाय बैलों के गोवर के आप से आप सूख जाने से वना हुआ कडा।

वनकⓟ†—सज्ञा स्त्री० [हिं० वनना] १ सजधज। सजावट। २ वाना। वेष। भेस।

वनकट—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस।

वनकटा—वि० [हिं० वन] जगली।

वनकर—सज्ञा पुं० [सं० वनकर] जगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि पर लिया जानेवाला कर।

वनखंड—सज्ञा पुं० [स० वनखंड] जगली प्रदेश।

वनखंडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० वन+खंड=टुकड़ा] १. वन का कोई भाग। २ छोटा सा वन।

सज्ञा पुं० वन में रहनेवाला। वनवासी।

वनगरी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

वनचर—सज्ञा पुं० [स० वनचर] १ जगल में रहनेवाला पशु। २ वन में रहनेवाला मनुष्य। ३ जगली या गँवार आदमी। ४ जल में रहनेवाला जीव।

वनचारी—वि० [स० वनचारिन्] १ वन में घूमनेवाला। २ वन में रहनेवाला।

वनज—सज्ञा पुं० [सं० वनज] १ कमल। २ जल में होनेवाला पदार्थ।

सज्ञा पुं० [स० वाणिज्य] वाणिज्य। व्यापार।

वनजनाⓟ—क्रि० अ० [हिं० वनज से ना० धा०] व्यापार या रोजगार करना।

वनजात—सज्ञा पुं० [सं० वनजात] कमल।

वनजारा—सज्ञा पुं० [हिं० वनिज+हारा] १ वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर वेचने के लिये एक देश से दूसरे देश को जाता है। टँड़ैया। वजारा। २ व्यापारी।

वनजीⓟ†—सज्ञा पुं० [सं० वाणिज्य] १ व्यापार। रोजगार। २ व्यापारी।

वनज्योत्स्ना—सज्ञा स्त्री० [सं० वनज्योत्स्ना] माधवी लता।

वनत—सज्ञा स्त्री० [हिं० वनना+त (प्रत्य०)] १ रचना। वनावट। २. अनुकूलता। सामजस्य। मेल।

वनताईⓟ†—सज्ञा स्त्री० [हिं० वन+ताई (प्रत्य०)] वन की सघनता या भयकरता।

वनतुलसी—सज्ञा स्त्री० [स० वन+तुलसी] ववई नाम का एक पौधा जिसकी पत्ती और मजरी तुलसी की सी होती है। ववई। ववँरी।

वनदⓟ—सज्ञा पु० [सं० वनद] वादल।

वनदाम—सज्ञा स्त्री० [स० वनदाम] वनमाला।

वनदेवी—सज्ञा स्त्री० [सं० वनदेवी] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

वनधातु—सज्ञा स्त्री० [सं०] गेरू या और कोई रगीन मिट्टी। उ०—वका विदारि चले व्रज को हरि। सखा सग आनद करत सव अग अग वनधातु चित्र करि। —सूर०।

वनना—क्रि० अ० [सं० वर्णन] १ तैयार होना। रचा जाना।

मुहा०—वना रहना=(१) जीता रहना। ससार में जीवित रहना। (२) उपस्थित रहना। मौजूद रहना। ठहरा रहना।

२ काम में आने के योग्य होना। ३ जैसा चाहिए, वैसा होना। ४ किसी एक पदार्थ का रूप परिवर्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। ५ किसी दूसरे प्रकार का भाव या सवध रखनेवाला हो जाना। ६ कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। ७ अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ८ वसूल होना। प्राप्त होना। ९. मरम्मत होना। दुरुस्त होना। १० सभव होना। हो सकना। ११ निभना। पटना। मित्रभाव होना। १२ अच्छा, सुदर या स्वादिष्ट होना। १३ सुयोग मिलना। सुअवसर मिलना। १४ स्वरूप धारण करना। १५ मूर्ख ठहरना। उपहासास्पद होना। १६ अपने आप को अधिक योग्य या गभीर प्रमाणित करना।

मुहा०—वनकर=अच्छी तरह। भली भाँति।

१७ सजना। सजावट करना।

वननिⓟ†—सज्ञा स्त्री० [हिं० वनना] १ वनावट। २ वनाव सिंगार।

वनपट—सज्ञा पुं० [सं० वन+पट] वृक्षों की छाल आदि से वनाया हुआ। कपड़ा।

वनपातीⓟ†—सज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।

वनफसा—सज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

वनवास—सज्ञा पुं० [स० वनवास] १. जगल में रहना। २ वन में वसने की अवस्था या क्रिया। ३ प्राचीन काल का देशनिकाले का दड।

वनवासी—सज्ञा पुं० [सं० वनवासिन्] १ वह जो वन में वसे। २ जगली।

वनवाहन—सज्ञा पु० [स० वनवाहन] नाव।

वनविलाव—सज्ञा पुं० [हिं० वन+विलाव=विल्ला] विल्ली की जाति का, पर उससे कुछ वड़ा, एक जगली जतु।

वनमानुस—सज्ञा पु० [हिं० वन+मानुष] १ मनुष्य से मिलता जुलता कोई जगली जतु, जैसे—गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि। २ जगली, असभ्य या गँवार आदमी (परिहास)।

वनमाला—सज्ञा स्त्री० [सं० वनमाला] १ तुलसी, कुद, मदार, परजाता और कमल इन पाँच चीजों की वनी हुई माला। २ गले से पैरों तक लटकनेवाली माला।

वनमाली—सज्ञा पुं० [सं० वनमाली] १ वनमाला धारण करनेवाला व्यक्ति। कृष्ण। उ०—कालीं नथि ल्यायो समुझि वा दिनवाली वात। आली वनमाली लखैं थरथरात मो गात। —रससारांश। ३ विष्णु। नारायण। ४ मेघ। वादल। ५. वह प्रदेश जिसमें घने वन हों।

वनर—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का अस्त्र।

वनरखा—सज्ञा पुं० [हिं० वन+रखना=रक्षा करना], १ जगल की रखवाली करनेवाला। वनरक्षक। २ वहेलियों की एक जाति।

बनरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"।

संज्ञा पुं० [हिं० बनना] १ वर। दूल्हा। २ विवाह के समय का एक प्रकार का गीत।

बनराज, बनराय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वनराज] १. सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़। ३ वृंदावन।

बनरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनरा का स्त्री०] नववधू। नई ब्याही हुई वधू।

बनरुह—संज्ञा पुं० [सं० वनरुह] १ जंगली पेड़। २ कमल।

बनवना(पु)†—क्रि० स० दे० "बनाना"।

बनवसन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वनवसन] वृक्षों की छाल का बना हुआ कपड़ा।

बनवाना—क्रि० स० [हिं० बनाना का प्रे० रूप] दूसरे को बनाने में प्रवृत्त करना।

बनवारी—संज्ञा पुं० [सं० वनमाली] श्रीकृष्ण।

बनस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्थली] जंगल का कोई भाग। वनखंड।

बनांतर—संज्ञा पुं० [सं० वन+अंतर] दूसरा वन। अन्य वन। उ०—विहरत अति आसक्त जु भए। गोधन निकसि बनांतर गए। —नंददास०।

बना—संज्ञा पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।

संज्ञा पुं० [?] 'दंडकला' नामक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८ और १४ मात्राओं पर यति और विराम के क्रम से कुल ३२ मात्राएँ होती हैं और अंत में सगण (।।ऽ) होता है। उ०—दस वसु विधा पै, विरती थापै, अंत सगण जन दंडकला। रघुनंदन ध्यावे, चित्त लगावे एक पला नहिं आध पला॥

बनाइ (य),—क्रि० वि० [हिं० बनाकर= अच्छी तरह] १ बिलकुल। अत्यंत। नितांत। २ भली भाँति। अच्छी तरह। उ०—हरि तासों कियो युद्ध बनाई। सब सुर मन में गए डराई। —सूर०।

बनाउरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "बाणा-वली"।

बनाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० वनाग्नि] दावानल।

बनात—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना—क्रि० स० [हिं० बनना का स० रूप] १. रूप या अस्तित्व देना। रचना। तैयार करना।

मुहा०—बनाकर=खूब अच्छी तरह। भली भाँति।

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३ ठीक दशा या रूप में लाना। ४ एक पदार्थ के रूप को बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना। ५ दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला कर देना। ६ कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ७ अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ८ उपार्जित करना। वसूल करना। प्राप्त करना। ९ मरम्मत करना। दोष दूर करके ठीक करना। १० मूर्ख ठहराना। उपहासास्पद करना।

बनाफर—संज्ञा पुं० [सं० वन्यफल] क्षत्रियों की एक जाति।

बनावत, बनावनत(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० बना (बनना)+अ+वनत] विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

बनाम—अव्य० [फा०] नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।

बनाय†—क्रि० वि० [हिं० बनाकर= अच्छी तरह] १. बिलकुल। २ अच्छी तरह से।

बनार—संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तरी सीमा पर था।

बनाव—संज्ञा पुं० [हिं० √बन+आव (प्रत्य०)] १ बनावट। रचना। २ शृंगार। सजावट। ३ तरकीब। युक्ति। तदबीर।

बनावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √बन+आवट (प्रत्य०)] १ बनने या बनाने का भाव। रचना। गढ़न। २ ऊपरी दिखावा। आडंबर।

बनावटी—वि० [हिं० बनावट] बनाया हुआ। नकली। कृत्रिम।

बनावनहारा—संज्ञा पुं० [हिं० बनाना+हारा (प्रत्य०)] १ बनानेवाला। रचयिता। २. वह जो बिगड़े हुए को बनावे।

बनावरि—संज्ञा स्त्री० [सं० बाणावलि] दे० "बनाउरि"।

बनासपती, बनासपाती—संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्पति] १ जड़ी बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २ घास, साग, पात इत्यादि। उ०—आनि बनासपतीं बन ते सब तीरथ के जल कुंभ भरे हैं। आम को मौर धरो तेहि ऊपर केसर सों लिखि पीत करे हैं।—हनुमन्नाटक। उ०—ऐसी परी नरम हरम बादसाहन की नासपाती खातीं ते बनास-पातीं खाती हैं।—भूषण०। ३ मूँगफली, बिनौले आदि से तैयार कर जमाया हुआ तेल।

बनि(पु)†—वि० [हिं० बनाना] समस्त। सब।

बनिक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० बानक] सजधज। उ०—अनिमिष दृग नखसिख बनिक रही गवारि निहारि। मुरि मुसुकानी नववधू मुखपर अंचल डारि।—रससाराश।

बनिज—संज्ञा पुं० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार। रोजगार। २ व्यापार की वस्तु। सौदा।

बनिजना(पु)†—क्रि० स० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार करना। खरीदना और बेचना। २ अपने अधीन कर लेना।

बनिजारिन, बनिजारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बंजारा] बनजारा जाति की स्त्री। उ०—लीन्हे फिरति रूप त्रिभुवन को ए नोखी बनिजारिन।—सूर०।

बनित†(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] बानक। वेष। साजबाज। उ०—चढ़ि यदुनंदन बनित बनाय कै। साजि बरात चले यादव चाय कै।—सूर०।

बनिता—संज्ञा स्त्री० [सं० वनिता]। १ स्त्री। औरत। २ भार्या। पत्नी।

बनिया—संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन, बनैनी] १ व्यापार करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। वैश्य। २ आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी।

बनियाइन—संज्ञा स्त्री० [अं० बेनियन] १ जुर्राब की बुनावट की कुरती या बंडी जो शरीर से चिपकी रहती है। गंजी। २ बनिया की स्त्री।

बनिस्बत—अव्य० [फा०] अपेक्षा। मुकाबले में।

बनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन] १ बनस्थली। वन का एक टुकड़ा। २ वाटिका। बाग।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बना] १ नववधू। दुलहिन। २ स्त्री। नायिका।

संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] बनिया।

बनीनी—संज्ञा स्त्री० दे० "बनैनी"।

बनीर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वानीर] बेंत।

बनेठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन+सं० यष्टि]

पटेबाजों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।

बनैनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया] बनिए की स्त्री। वैश्य स्त्री।

बनैला—वि० [हिं० बन+ऐला (प्रत्य०)] जंगली। वन्य।

बनोवास(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "वनवास"।

बनौकस—वि० [सं० वनौकस] वनवासी। जंगल के निवासी। उ०—ठौं ठौं द्रुमन नए मधु नए। निरखि वनौकस प्रमुदित भए।—नंददास०।

बनौटी—वि० [हिं० बन+औटी (प्रत्य०)] कपास के फूल का सा। कपासी। उ०—देखी सो न, जुही फिरति सोनजुही सैं अंग। दुति-लपटनु पटसेत हूँ करति बनौटी रंग।—बिहारी०।

बनौरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० वन=जल+ हिं० ओला] वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला। पत्थर।

बनौवा—वि० दे० "बनावटी"।

बन्हि—संज्ञा स्त्री० दे० "वह्नि"।

बप(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वप्तृ] बाप। पिता।

बपतिस्मा—संज्ञा पुं० [अं० बैप्टिज्म] यहूदियों का एक बड़ा पुराना धार्मिक संस्कार जिसके अनुसार व्यक्ति की शुद्धि के लिये उसपर जल छिड़का जाता है या उसको नहलाया जाता है। ईसाइयों में धार्मिक दीक्षा के समय यह संस्कार किया जाता है जिसके साथ प्रायः नामकरण भी होता है।

बपना(पु)†—क्रि० स० [सं० वपन] बीज बोना।

बपमार—वि० [हिं० बाप+मारना] १ वह जो अपने पिता की हत्या करे। पितृघाती। २ सब के साथ धोखा करनेवाला।

बपु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वपु] १ शरीर। देह। २ अवतार। ३ रूप।

बपुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।

बपुरा†—वि० [सं० वराक ?] बेचारा। गरीब।

बपौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाप+औती (प्रत्य०)] बाप से पाई हुई जायदाद।

बप्पा†—संज्ञा पुं० [हिं० बाप] पिता, बाप।

बफारा—संज्ञा पुं० [हिं० भाप+आरा (प्रत्य०)] औषधमिश्रित जल की भाप से रोगी अंग को सेंकना।

बफौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाफ=भाप+ बरी] भाप से पकी हुई बरी।

बबर—संज्ञा पुं० [फा०] बर्बरी देश का शेर। बड़ा शेर। सिंह।

बबा—संज्ञा पुं० दे० 'बाबा'।

बबुआ†—संज्ञा पुं० [हिं० बाबू] [स्त्री० बबुई] १. बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द (पूरब)। २ जमींदार। रईस। ३. मिट्टी का छोटा खिलौना।

बबूल—संज्ञा पुं० [सं० बब्बूर] मझोले कद का एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़।

बबूला—संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। २ दे० "बुलबुला"।

बभूत—संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूति"।

बम—संज्ञा पुं० [अं० बांब] जबरदस्त विस्फोटक या दाहक पदार्थ। धूआँ या गैस आदि से भरा हुआ गोला जो किसी शस्त्र से फेंके जाने, हाथों से रखे जाने या हवाई जहाज से गिराने के धक्के से अथवा उसमें लगाई हुई घड़ी में निर्धारित समय पर भड़कता है।

यौ०—बममार।

संज्ञा पुं० [अनु०] शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।

मुहा०—बम बोलना या बोल जाना= शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना। कुछ न रह जाना।

संज्ञा पुं० [कनाड़ी बबूवास] बग्गी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

बमकना—क्रि० अ० [अनु०] बहुत शेखी हाँकना। डींग हाँकना।

बमचख—संज्ञा स्त्री० [अनु० बम+ चीखना] १ शोरगुल। २. लड़ाई झगड़ा। बकवाद।

बमना(पु)†—क्रि० स० [सं० वमन] मुँह से उगलना। वमन करना। कै करना।

बमपुलिस—संज्ञा पुं० दे० "बपुलिस"।

बमबाज—संज्ञा पुं० [हिं० बम+फा० बाज] [भा० बमबाजी] शत्रुओं पर बम के गोले फेंकनेवाला।

बममार—वि० [हिं० बम+मारना] बम मारनेवाला।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा हवाई जहाज जिससे शत्रुओं पर बम के गोले फेंके जाते हैं।

बमीठा—संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।

बमुकाबला—क्रि० वि० [फा०] १. मुकाबले में। समक्ष। सामने। २ मुकाबले पर। विरुद्ध।

बमूजिब—क्रि० वि० [फा०] अनुसार। मुताबिक।

बम्हनी—संज्ञा स्त्री० [सं० ब्राह्मण, हिं० बाम्हन] १. छिपकिली की तरह पर जोंक सा पतला और आकार में प्रायः छिपकली का आधा एक जाति का कीड़ा जिसके शरीर पर कई रंगों की सुंदर धारियाँ होती हैं। २. आँख का एक रोग। बिलनी।

बयन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वचन] वाणी। बात। वचन। उ०—बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाव सों।—मानस।

बयना(पु)†—क्रि० स० [सं० वपन] बोना। बीज जमाना या लगाना।

क्रि० स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना।

संज्ञा पुं० दे० "बैना"।

बयनी(पु)†—वि० [हिं० बयन] बोलनेवाली। वाणीवाली उ०—जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिल बयनी।—मानस।

बयस—संज्ञा स्त्री० दे० "वय"। उ०—स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद विश्व चितचोरा।—मानस।

बयस, सिरोमनि(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वयसशिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

बया—संज्ञा पुं० [सं० वयन=बुनना] गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

संज्ञा पुं० [अ० बाय =बेचनेवाला। वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।

बयान—संज्ञा पुं० [फा०] १ बखान। वर्णन। जिक्र। २ हाल। विवरण। वृत्तांत।

बयाना—संज्ञा पुं० [अ० बै+फा० आना (प्रत्य०)] किसी काम के लिये या किसी चीज की खरीदारी के लिये दिए जानेवाले पुरस्कार का कुछ अंश जो बातचीत पक्की करने के लिये दिया जाय। पेशगी।

बयाबान—संज्ञा पुं० दे० "बियाबान"।

बयार, बयारि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] हवा उ०—बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहि ताति बयारि न मोही। —मानस।

बयारी—संज्ञा स्त्री० दे० १. "ब्यालू", २. "बयारि"। उ०—सानुकूल बह त्रिविध बयारी। सघट सवाल आव बर नारी। —मानस।

बयाला†—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य+आला] १. दीवार में का वह छेद जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके। २ ताख। आला। ३. गढ़ों में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।

बरगा—संज्ञा पुं० [देश०] वह पटिया या कड़ी जिससे छत पाटते हैं।

बर—संज्ञा पुं० [सं० वर] १. वह जिसका विवाह होता हो। दूल्हा। उ०—बर अनुहारि बरात न भाई। हँसी करैहहु पर पुर जाई।—मानस। २. आशीर्वादसूचक अटल बचन। उ०—एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा। —मानस। ३ देवता या बड़े से माँगा जानेवाला मनोरथ। उ०—(१) माँगु माँगु बरु भै नभबानी। परम गँभीर कृपामृत सानी।—मानस। (२) जौ अनाथ हित हमपर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू।—मानस। ४ देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ इच्छापूर्ति का आश्वासन या सिद्धि। उ०—(१) कश्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा।—मानस। (२) बर पाएहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब राजा। —मानस।

वि० श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम। उ०—जौं बरखै बर बारि बिचारू। होहिं कवित मुकुता मनि चारू।—मानस।

मुहा०—बर परना=श्रेष्ठ होना।

संज्ञा पुं० [सं० वल] बल। शक्ति। उ०—परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए।—मानस।

संज्ञा पुं० [?] व्यापार, व्यवसाय आदि का कोई विशेष अंग, जैसे—पीतल की चीजों में बरतनों का बर, मूर्तियों का बर, खिलौनों का बर।

संज्ञा पुं० [सं० वट] वट वृक्ष। बरगद।

संज्ञा पुं० [हिं० बल=सिकुड़न] रेखा। लकीर।

संज्ञा पुं० [?] किसी व्यापार या व्यवसाय की कोई विशेष शाखा।

मुहा०—बर खींचना=(१) किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। (२) जिद करना।

अव्य० [फा०] ऊपर।

मुहा०—बर आना या पाना=बढ़कर निकलना। मुकाबले में अच्छा ठहरना।

वि० १ बढ़ा चढ़ा। श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण (आशा कामना आदि के लिये), जैसे, मुराद बर आना।

(पु)अव्य० [सं० वरं] वरन्। बल्कि।

बरई†—संज्ञा पुं० [हिं० बाड़=क्यारी] [स्त्री० बरइन] १. पान पैदा करने या बेचनेवाला। तमोली।

बरकंदाज—संज्ञा पुं० [अ० बर+फा० कंदाज] १. वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो। २ तोड़ेदार बंदूक रखनेवाला सिपाही।

बरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी पदार्थ की बहुलता या अधिकता। बढ़ती। बहुतायत। कमी न पड़ना।

मुहा०—बरकत उठना=(१) बरकत न रह जाना। पूरा न पड़ना। (२) वैभव आदि की समाप्ति या अंत आने लगना। ह्रास का आरंभ होना।

२ लाभ। फायदा; जैसे, जैसी नीयत वैसी बरकत। ३. समाप्ति। अंत। ४ एक की संख्या (मंगल या वृद्धि की कामना से)। जैसे, बरकत, दो, तीन, चार, पाँच आदि। ५ धन दौलत। ६ प्रसाद। कृपा, जैसे, यह सब आपके कदमों की बरकत है कि आपके आते ही रोगी अच्छा हो गया।

बरकती—वि० [अ० बरकत+ई (प्रत्य०)] १. बरकतवाला। जिसमें बरकत हो। २. बरकत संबंधी। बरकत का।

बरकना†—क्रि० अ० [हिं० बरकाना] १ कोई बुरी बात न होने पाना। निवारण होना। २ हटना। दूर रहना।

बरकरार—वि० [फा० बर+अ० करार] १ कायम। स्थिर। २ उपस्थित। मौजूद।

बरकाज—संज्ञा पुं० [सं० वर+कार्य] विवाह।

बरकाना†—क्रि० अ० [सं० वारण, वारक] १ कोई बुरी बात न होने देना। निवारण करना। २ बहलाना। फुसलाना।

बरख(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वर्ष] बरस।

बरखना—क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बरखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरखास(पु)†—वि० दे० "बरखास्त"।

बरखास्त—वि० [फा०] १. (सभा आदि) जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. जो नौकरी से हटा या छुड़ा दिया गया हो। मौकूफ।

बरखिलाफ—क्रि० वि० [फा० बर+अ० खिलाफ] प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।

बरग(पु)—संज्ञा पुं० १. दे० "वर्ग"। २. दे० "वरक"।

बरगद—संज्ञा पुं० [सं० वट, हिं० बड़] पीपल की जाति का एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इसकी छाया बहुत घनी और ठंढी होती है। बड़ का पेड़।

बरछा—संज्ञा पुं० [सं० व्रश्चन=काटने वाला ?] [स्त्री० बरछी] भाला नामक हथियार।

बरछैत—संज्ञा पुं० [हिं० बरछा+ऐत (प्रत्य०)] बरछा चलानेवाला। भाला-बर्दार।

बरजन(पु)†—क्रि० अ० [सं० वर्जन] मना करना। रोकना। निषेध करना।

बरजनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्जन] १. मनाही। २. रुकावट। ३. रोक।

बरजबान—वि० [फा०] मुखाग्र। कंठस्थ।

बरजोर—वि० [हिं० बल+फा० जोर] १. प्रबल। बलवान्। जबरदस्त। २. अत्याचारी। बलप्रयोग करनेवाला।

क्रि० वि० जबरदस्ती। बलपूर्वक। उ०—मन कों और न भावतो छोडि भावतो और। नेकु नहीं बरजो रहै जाइ मिलै बरजोर। —रससारांश।

बरजोरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बरजोर] जबरदस्ती। बलप्रयोग।

क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

बरणना—क्रि० स० दे० "बरनना"।

बरत—संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बरना=बटना] १. रस्सी। २ नट की रस्सी जिसपर चढ़कर वह खेल करता है। उ०—डीठि बरत बाँधी अटनु, चढ़ि धावत न डरात। इतहिं उतहिं चित दुहुनु के नट लौं आवत जात॥ —बिहारी०।

बरतन—संज्ञा पुं० [सं० वर्तन] मिट्टी या धातु आदि की बनी वस्तु जिसमें बहुधा

खाने पीने की चीजें रखें या पकाएँ। पात्र। भाँड़। भाँड़ा।

वरतना—क्रि० अ० [सं० वर्तन] व्यवहार करना। वरताव करना।

क्रि० स० काम में लाना। व्यवहार में लाना। इस्तेमाल करना।

वरतरफ़—वि० [फ़ा० वर+अ० तरफ़] १ किनारे। अलग। एक ओर। २ नौकरी से छुड़ाया हुआ। मौकूफ़। वरखास्त।

वरताना—क्रि० स० [सं० वर्तन या वितरण] वितरण करना। बाँटना।

वरताव—संज्ञा पुं० [हिं०√वरत+आव (प्रत्य०)] वरतने का ढग। व्यवहार।

वरती—वि० [सं० व्रतिन्, हिं० व्रती] जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।

वरतोर†—सज्ञा पुं० दे० "वालतोड़"।

वरदाइⓅ—वि० [स० वर+दात्री] वर देनेवाली। उ०—अये गवरि! ईस्वरि सव लायक। महामाइ वरदाइ सुमायक। —नंददास०।

वरदाना—क्रि० स० [हिं० वरधा=वैल] गौ, वकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर पशुओं से सयोग कराना। जोड़ा खिलाना।

क्रि० अ० गौ, वकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर पशुओं से जोड़ा खाना।

वरदार—वि० [फ़ा०] १ वहन करनेवाला। ढोनेवाला। धारण करनेवाला, जैसे—वल्लम-वरदार। २ पालन करनेवाला। माननेवाला, जैसे, फरमाँवरदार।

वरदाश्त—सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सहन करने की क्रिया या भाव। सहन।

वरधमुतान—संज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।

वरधा—सज्ञा पुं० [सं० वलीवर्द] वैल।

वरधना—क्रि० स० अ० दे० "वरदाना"।

वरनⓅ—सज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

वरननⓅ†—सज्ञा पु० दे० "वर्णन"।

वरननाⓅ†—क्रि० स० [सं० वर्णन] वर्णन करना। वयान करना।

वरना—क्रि० स० [सं० वरण] १ वर या वधू के रूप में ग्रहण करना। व्याहना। उ०—मेरे ते अपसरा आइ ताको वरति भाजिहैं देखि अव गेह नारी।—सूर०। २ कोई काम करने के लिये किसी को चुनना या नियुक्त करना। ३. दान देना।

†क्रि० अ० दे० "वलना"। उ०—औंधाई सीसी, सु लखि विरह वरनि विललात। विच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ छुई न गात।—विहारी०।

वरनेत—सज्ञा स्त्री० [सं० वरण] विवाह की एक रीति।

वरपा—वि० [फ़ा०] खड़ा हुआ। उठा हुआ। मचा हुआ (झगड़े, आफ़त आदि में प्रयुक्त)।

वरफ़—सज्ञा स्त्री० दे० "वर्फ़"।

वरफ़ानी—वि० [फ़ा०] जिसमें या जिसपर वरफ़ हो।

वरफ़ी—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० वरफ़] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।

वरफ़ीला—वि० दे० "वरफ़ानी"।

वरवंडⓅ†—वि० [सं० वलवंत] १ वलवान्। ताकतवर। २ प्रतापशाली। ३ उद्धत। ४ प्रचंड। प्रखर।

वरवटⓅ—क्रि० वि० दे० "वरवस"।

वरवर†—सज्ञा स्त्री० [अनु०] वकवक।

सज्ञा पुं० दे० "वर्वर"।

वरवस—क्रि० वि० [सं० वल+वश] १. वलपूर्वक। जवरदस्ती। हठात्। २ व्यर्थ। फ़िजूल। उ०—खेलत में कोउ काको गुसैयाँ। हरि हारे जीते श्रीदामा वरवस ही क्यों करत रिसैयाँ।—सूर०।

वरवाद—वि० [फ़ा०] नष्ट। चौपट।

वरवादी—सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाश। तवाही।

वरमⓅ—सज्ञा पुं० [स० वर्म] जिरह वक्तर। कवच। शरीरत्राण। उ०—पहिर वरम, असि, चरम खरे सो सुभट विराजैं।—नददास०।

वरमा—सज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० वरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का, लोहे का एक प्रसिद्ध औजार। भारत के पूर्व का एक देश।

वरमी—सज्ञा पुं० [हिं० वरमा+ई (प्रत्य०)] १ वरमा देश का निवासी। २ छोटा वरमा। (औजार)।

संज्ञा स्त्री० वरमा देश की भाषा।

वि० वरमा सवधी। वरमा देश का।

व्रह्मा—सज्ञा पुं० १. दे० "ब्रह्मा"। २ दे० "वरमा"।

व्रह्मानाⓅ†—क्रि० [सं० ब्रह्म] (ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।

व्रह्मावⓅ†—सज्ञा पुं० [सं० ब्रह्म+हिं० आव (प्रत्य०)] १ ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मण का आशीर्वाद।

वरवट—सज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली" (रोग)

वरवा—सज्ञा पु० दे० "वरवै"।

वरवै—सज्ञा पुं० [देश०] १९ मात्राओं का एक छद जिसमें १२ और ७ मात्राओं पर यति और अत में जगण होता है। ध्रुव। कुरंग। उ०—मोतिन जरी किनरिया विथुरे वार।

वरषनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "वरसना"।

वरषाⓅ—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] १ पानी वरसना। वृष्टि। २ वर्षाकाल। वरसात।

वरषानाⓅ†—क्रि० स० दे० "वरसाना"।

वरषासनⓅ†—सज्ञा पुं० [सं० वर्षाशन] एक वर्ष की भोजन-सामग्री।

वरस—सज्ञा पु० [स० वर्ष] वारह महीनों या ३६५ दिनों का समूह। वर्ष। साल।

मुहा०—वरस दिन का दिन=ऐसा दिन (त्योहार या पर्व आदि) जो साल भर में एक ही वार आता हो।

वरसगाँठ—सज्ञा स्त्री० [हिं० वरस+गाँठ] वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। जन्मदिन। सालगिरह।

वरसना—क्रि० स० [सं० वर्षण] १ वर्षा का जल गिरना। मेह पड़ना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना, जैसे, फूल वरसना। ३ वहुत अधिक मात्रा में चारों ओर से प्राप्त होना, जैसे, रुपया वरसना।

मुहा०—वरस पड़ना=वहुत अधिक क्रुद्ध होकर डाँटने डपटने लगना।

४. वहुत अच्छी तरह झलकना। खूब प्रकट होना, जैसे, उसके चेहरे से शरारत वरसती है। ५ दाँए हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाया जाना।

वरसनि—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्षण] वरसना। खूब प्राप्त होना। उ०—कुचनि की परसनि, नीवी करसनि। सुखन की वरसनि मन की सरसनि।—नददास०।

वरसाइत†—सज्ञा स्त्री० [स० वट+सावित्री] जेठ वदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वटसावित्री का पूजन करती हैं।

वरसात—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] सावन भादों के दिन जव वर्षा होती है। वर्षाकाल। वर्षा ऋतु।

वरसाती—वि० [हिं० वरसात] वरसात का।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता। २ घर या बँगले के सामने वह स्थान जहाँ गाड़ी, मोटर इत्यादि खड़ी होती है। ३ एक प्रकार का आँख के नीचे का घाव जो प्राय. बरसात में होता है। ४ पैरों में होनेवाली एक प्रकार की फुंसियाँ जो बरसात में होती है। ५. चरस पक्षी।

बरसाना—क्रि० स० [हिं० बरसना का प्रे० रूप] १ वर्षा करना । वृष्टि करना। २ वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सा गिराना। ३ बहुत अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना। ४ दाँए हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाना। डाली देना।

बरसायत—संज्ञा स्त्री० दे० "बरसाइत"।

बरसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बरस+ई (प्रत्य०)] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध। बरसीं।

बरसीला—वि० [हिं०√बरस + ईला (प्रत्य०)] बरसनेवाला।

बरसौहाँ—वि० [हिं०√बरस + औहाँ (प्रत्य०)] बरसनेवाला।

बरहⓅ—संज्ञा पुं० [सं० बर्ह] पंख (विशेषत. मोर का)। उ०—बरहि-बरह धरि अमित कलनि करि, नचत अहीरन संगी बहुरंगी लाल त्रिभंगी। —छंदार्णव।

बरहा—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० बरही] खेतों में सिंचाई के लिये बनी हुई छोटी नाली।

संज्ञा पुं० [देश०] मोटा रस्सा।

संज्ञा पुं० [सं० बर्हि] मोर। मयूर।

बरहिⓅ—संज्ञा पुं० [सं० बर्हिन्] मोर। मयूर। उ०—बरहि-बरह धरि अमित कलनि करि, नचत अहीरन संगी बहुरंगी लाल त्रिभंगी। —छंदार्णव।

बरही—संज्ञा पुं० [सं० बर्हिन्] १ मयूर। मोर। २ साही नाम का जंतु। उ०—पुनि रात सर छाती महँ दीन्हे। बीसहु भुज बरही सम कीन्हें। —विश्रामसागर। ३ मुरगा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] १ प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती है।

संज्ञा स्त्री० [देश०] पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा।

२ जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।

बरहीपीड़Ⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० बर्हिपीड] मोर के परों का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट। उ०—बेणु बजाय बिलास कियो बन धौरी धेनु बुलावत। बरहीपीड़ दाम गुंजामपि अदभुत वेष बनावत। —सूर०।

बरहीमुखⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० बर्हिमुख] देवता।

बरहों—संज्ञा पुं० दे० "बरही"।

बरहांड—संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

बरह्मावना—क्रि० स० [सं० ब्रह्म+अपना] आशीर्वाद देना। असीस देना।

बरांडी—संज्ञा स्त्री० [अँ० ब्रांडी] एक प्रकार की विलायती शराब।

बरा—संज्ञा पुं० [सं० वटी] उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार का पक्वान्न। बड़ा। उ०—बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनियाँ। डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दनियाँ। —सूर०।

संज्ञा पुं० [?] भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। बहुँटा। टाँड़।

बराई—संज्ञा स्त्री० दे० "बड़ाई"।

बराक—संज्ञा पुं० [सं० वराक] १ शिव। २ युद्ध। लड़ाई।

वि० १ शोचनीय। २ नीच। अधम। ३ बापुरा। बेचारा।

बराकी—वि० स्त्री० [हिं० बराक] बेचारी। बपुरी। उ०—रमा उमा सी दासी जाकी। सुरपति रवनी कौन बराकी। —नंददास०।

बराट—संज्ञा स्त्री० [सं० वराटिका] कौड़ी।

बरात—संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] विवाह के लिये वर के साथ कन्या के पिता या अभिभावक के यहाँ जानेवाले लोगों का समूह। जनेत।

बराती—संज्ञा पुं० [हिं० बरात+ई (प्रत्य०)] बरात में वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

बराना—क्रि० अ० [सं० वारण] १ प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात न कहना। बचाना। टालना। २ जान बूझकर अलग करना। बचाना। उ०—सीय राम पद अंक बराए। लखनु चलहिं मगु दाहिन लाए। —मानस। ३ रक्षा करना। हिफाजत करना। उ०—हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई॥ —मानस।

क्रि० स० [सं० वरण] बहुत सी चीजों में से कुछ चीजें चुनना। छाँटना। उ०—यादव वीर बराइ बराई इक हलधर इक आपै ओर। —सूर०।

†क्रि० स० दे० "बालना" (जलाना)।

बराबर—वि० [फा० बर] १ मात्रा, गुण, विस्तार, आकार, मूल्य, मर्यादा आदि के विचार से समान। तुल्य। एक सा। २ जिसकी सतह ऊँची नीची न हो। समतल।

मुहा०—बराबर करना = समाप्त कर देना।

क्रि० वि० १ लगातार। निरंतर। २. एक ही पंक्ति में। एक साथ। ३. साथ। ४ सदा। हमेशा।

बराबरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बराबर+ई (प्रत्य०)] १ बराबर होने की क्रिया या भाव। समानता। तुल्यता। २ सादृश्य। ३ मुकाबला। सामना।

बरामद—वि० [फा०] १ बाहर या सामने आया हुआ। २ खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।

संज्ञा स्त्री० १ दियारा। गंगबरार। २ निकासी। आमदनी। उ०—बड़ो तुम्हार बरामद हूँ को लिखि कीनो है साफ। —सूर०।

बरामदा—संज्ञा पुं० [फा०] १ खंभों पर टिका हुआ किसी मकान का वह छाया हुआ भाग जो मुख्य इमारत से बाहर निकला रहता है। बारजा। २, दालान। ओसारा।

बराय—अव्य० [फा०] वास्ते। लिये।

बरायन—संज्ञा पुं० [सं० वर+आयन (प्रत्य०)] लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है। उ०—बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो। —रामलला०।

बरार—संज्ञा पुं० [फा०] कर। चंदा।

बरारी†—वि० [?] बड़ी। उ०—आसपास अमराय बरारी। जहँ लग फूल तिती फुलवारी। —नंददास०।

बराव—संज्ञा पुं० [हिं० बराना] 'बराना' का भाव। बचाव। परहेज।

बरास—संज्ञा पुं० [सं० पोतास ?] एक प्रकार का कपूर। भीमसेनी कपूर।

बराह—संज्ञा पुं० दे० "वराह"।

क्रि० वि० [फा०] १ के तौर पर, जैसे, बराह मेहरबानी। २ जरिए से।

बरि—संज्ञा पुं० [सं० बल] बल। उ०—ऊखल तनिक तिरीछौ करिकै। डारि दिए तरु तिन मधि बरिकै।—नंददास०।

बरिआत(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बरात"।

बरिवंड(पु)—वि० दे० "बरबंड"।

बरिया(पु)—वि० [सं० बलिन्] बलवान्।

सज्ञा स्त्री० [हिं० बारी] कम उम्र की स्त्री। नवयौवना।

बरियाई†—क्रि० वि० [सं० बलात्] बलपूर्वक। हठात्। जबर्दस्ती।

सज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।

बरियार†—वि० [हिं० बर+इयार (प्रत्य०)] बली। बलवान्। मजबूत।

बरियारा—सज्ञा पु० [सं० बला] एक छोटा झाड़दार छतनार पौधा। खिरेंटी। बीजबंध। बनमेथी।

बरिला†—सज्ञा पुं० [हिं० बड़ा, बरा] पकौड़ी या बड़े की तरह का एक पकवान।

बरिषा(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरियाइन(पु)—क्रि० वि० दे० "बरियाई"।

बरियाई†—क्रि० वि० [सं० बलात्] बलात्। जबर्दस्ती से।

†सज्ञा स्त्री० [हिं० बरियार] १. बलशालिता। २ जबर्दस्ती।

बरिस†—संज्ञा पुं० [स० वर्ष] वर्ष। साल।

बरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १ गोल टिकिया। बटी। २ उर्द या मूँग की पीठी के सुखाए हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।

वि० [फा०] मुक्त। छूटा हुआ।

(पु)†वि० दे० "बली"।

बरीस†—सज्ञा पुं० दे० "वर्ष"।

बरीसना—क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बरु†(पु)—अव्य० [सं० वर=श्रेष्ठ, भला] भले ही। चाहे। कुछ हर्ज नहीं।

संज्ञा पुं० दे० "वर"।

बरुआ†—सज्ञा पुं० [सं० बटुक] १ बटु। ब्रह्मचारी। २ ब्राह्मणकुमार। ३ उपनयन।

बरुक†—अव्य० दे० "बरु"।

बरुनी—सज्ञा स्त्री० [सं० वरण=ढाँकना] पलक के किनारे पर के बाल।

बरूथी—सज्ञा स्त्री० [सं० वरूथ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच में है।

बरेंडा—सज्ञा पुं० [सं० वरण्डक] १ लकड़ी का वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लंबाई के साथ धरन पर लकड़ी के बल रहता है। २ छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग।

बरे(पु)†—क्रि० वि० [सं० बल] १. जोर से। बलपूर्वक। २ जबरदस्ती से। ३ ऊँची आवाज से। ऊँचे स्वर से।

अव्य० [स० वर्त] १ पलटे में। २ वास्ते।

बरेखी—सज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह+रखना] स्त्रियों का भुजा पर पहनने का एक गहना।

सज्ञा स्त्री० [हिं० बर+देखना, बरदेखी] विवाह संबंध के लिये वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी। उ०—जौ तुम्हरे हथ हृदय विसेखी। रहि न जाय बिनु किए बरेखी।—मानस।

बरेठा—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० बरेठिन] धोबी।

बरेत†—संज्ञा स्त्री० [देश०] सन का मोटा रस्सा। नार।

बरेषी—संज्ञा स्त्री० दे० "बरेखी"।

बरोक—सज्ञा पुं० [हिं० बर+रोक] वह द्रव्य जो कन्यापक्ष से वरपक्ष को संबंध पक्का करने के लिये दिया जाता है। बरच्छा। फलदान। उ०—राजा कहइ गरब से हौं रे इंदर सिवलोक। के सरि मों से पावइ केसे करउँ बरोक।—पदमावत।

(पु)सज्ञा पुं० [सं० बलौक] सेना।

क्रि० वि० [सं० बलौक] बलपूर्वक।

बरोठा—संज्ञा पु० [सं० द्वार+कोष्ठ, हिं० बार+कोठा] १ ड्योढ़ी। पौरी। २ बैठक। दीवानखाना।

मुहा०—बरोठे का चार=द्वारपूजा।

बरोरु(पु)—वि० दे० "वरोरु"।

बरोह—सज्ञा स्त्री० [सं० वट+रोह= उगनेवाला] बरगद के पेड़ के ऊपर की डालियों से निकली हुई वह शाखा जो जमीन पर आकर जम जाती है। बरगद की जटा।

बरौठा†—सज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।

बरौनी†—सज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"।

बरौरी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ी, बरी] बड़ी या बरी नाम का पकवान।

बर्क—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिजली। विद्युत्।

वि० तेज। चालाक।

बर्ज—वि० दे० "वर्य"।

बर्जना—क्रि० स० दे० "बरजना"।

बर्णनी(पु)—क्रि० स० [हिं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।

बर्तन—संज्ञा पुं० १ दे० "बरतन"। २. दे० "वर्तन"।

बर्तना—क्रि० स० दे० "बरतना"।

बर्ताव—संज्ञा पुं० दे० "बरताव"।

बर्दाना(पु)—क्रि० अ० दे० "बरदाना"।

बर्न(पु)—सज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

बर्फ—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म कणों की तह जो वातावरण की ठढक के कारण जमीन पर गिरती है। २ बहुत अधिक ठढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी होता है। ३. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिये जल आदि ठढा करते हैं। ४. कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। ५ दे० "ओला"।

बर्फिस्तान—सज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ बर्फ ही बर्फ हो।

बर्फी—संज्ञा स्त्री० दे० "बरफी"।

बर्बर—सज्ञा पुं० [सं०] १ घुँघराले बाल। २ असभ्य मनुष्य। जगली आदमी। ३ भालों की झनकार।

वि० १ जगली। असभ्य। २. उद्दंड।

बर्बरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बनतुलसी। २ ईंगुर। ३ पीत चदन।

बर्राक—वि० [अ०] १ चमकीला। जगमगाता हुआ। २ तेज। तीव्र। ३ चतुर। चालाक। ४ बहुत उजला। धवला। सफेद। ५ पूर्ण रूप से अभ्यस्त।

बर्राना—क्रि० अ० [अनु० बर बर] १ व्यर्थ बोलना। फजूल बकना। २ नींद या बेहोशी में बकना।

बर्रे†—सज्ञा पुं० [स० वरवट] भिड़ नाम का कीड़ा। तितैया।

बलंद—वि० [फा०] [संज्ञा बलदी] ऊँचा।

बल—सज्ञा पुं० [सं०] १ शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। जोर। बूता। २ भार उठाने की शक्ति। सभार। ३ आश्रय। सहारा। ४ आसरा। भरोसा। बिर्ता। ५. सेना। फौज। ६ पार्श्व। पहलू।

सज्ञा पुं० [सं० बलि] १ ऐंठन।

मरोड़। २. फेरा। लपेट। ३ लहरदार घुमाव।

मुहा०—बल खाना=घुमाव के साथ टेढ़ा होना। कुंचित होना।

४ टेढ़ापन। कज। खम। ५ सिकुड़ना। शिकन। ६. लचक। झुकाव।

मुहा०—बल खाना=लचकना। उ०—बल खात दिग्गज कोल कूरम शेष सिर हालति मही।—विश्रामसागर।

७ कसर। कमी। अंतर।

मुहा०—बल खाना=घाटा सहना। हानि सहना। बल पड़ना=अंतर होना। फर्क रहना।

बलकट—वि० [?] पेशगी। अगाऊ।

बलकना—क्रि० अ० [अनु०] १ उबलना। खौलना। २ उमगना। जोश में होना। उ०—हँसि हँसि हेरति नवल तिय मद के मद उमदाति। बलकि बलकि बोलति वचन, ललकि ललकि लपटाति।—बिहारी०।

बलकल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बलकाना†—क्रि० स० [हिं० बलकना का स० रूप] १ उबालना। खौलाना। २ उभारना। उमगाना। उत्तेजित करना।

बलकारक—वि० [सं०] बलजनक।

बलगना—क्रि० अ० दे० "बलकना"।

बलगम—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० बलगमी] श्लेष्मा। कफ।

बलतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति या सेना आदि का प्रबंध। सैनिक व्यवस्था।

बलद—संज्ञा पुं० [सं०] बैल।

बलदाऊ—संज्ञा पुं० [सं० बलदेव या बल+हिं० दाऊ] बलदेव। बलराम। उ०—गए नगर देखन को मोहन बलदाऊ के साथ।—सूर०।

बलदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी के पुत्र थे।

बलना—क्रि० अ० [सं० वर्द्धन या ज्वलन] जलना। लपट फेंककर जलना। दहकना।

क्रि० स० [हिं० बल से ना० धा०] बल डालना। बटना।

बलबलाना—क्रि० अ० [अनु०] १ ऊँट का बोलना। २ व्यर्थ बकना।

बलबलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० बलबलाना] १ ऊँट की बोली। २ व्यर्थ अहंकार।

बलबीर(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० बल=बलराम+बीर=भाई] बलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] बलदेव जी।

बलभी—संज्ञा स्त्री० [सं० वलभि] मकान में सबसे ऊपरवाली कोठरी। चौबारा।

बलम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] प्रियतम। पति। नायक।

बलमीक—संज्ञा स्त्री० दे० "बाँबी"।

बलय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वलय"।

बलराम—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे।

बलवंड(पु)—वि० [सं० 'बलवान्' का बलवत. रूप] बली।

बलवंत—वि० [सं० बलवत्] बलवान्।

बलवत्ता—संज्ञा पुं० [सं०] बलवान होने का भाव। शक्तिसंपन्नता।

बलवा—संज्ञा पुं० [फा०] १ दंगा। हुल्लड़। खलबली। विप्लव। २ बगावत। विद्रोह।

बलवाई—संज्ञा पुं० [फा० बलवा+ई (प्रत्य०)] १ बलवा करनेवाला। विद्रोही। २. उपद्रवी।

बलवान्—वि० [सं०] [स्त्री० बलवती] १ मजबूत। ताकतवर। २ सामर्थ्यवान्।

बलशाली—वि० दे० "बलवान्"।

बलशील—वि० [सं०] बली। शक्तिवाला।

बलसूदन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

बला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बरियारा नामक क्षुप। २ वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। ३ पृथिवी। ४ लक्ष्मी।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति। विपत्ति। आफत। २ दुख। कष्ट। ३. भूत प्रेत या उसकी बाधा। ४ रोग। व्याधि।

मुहा०—बला का=घोर। अत्यंत। गजब का।

बलाइ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बलाय"।

बलाक—संज्ञा पुं० [सं०] बक। बगला।

बलाका—संज्ञा पुं० [सं०] १ बगली। २ बगलों की पंक्ति।

बलाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। २ सेना का अगला भाग।

वि० बलशाली। बली।

बलाढ्य—वि० [सं० बलवान्] बली।

बलात्—क्रि० वि० [सं०] १ बलपूर्वक। २ जबरदस्ती से। ३. हठात्। हठ से।

बलात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ जबरदस्ती कोई काम करना। २ किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।

बलाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

बलाय—संज्ञा स्त्री० दे० "बला"।

बलाह—संज्ञा पुं० [सं० वोल्लाह] बुलाह (घोड़ा)।

बलाहक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २ एक दैत्य। ३. एक नाग। ४ शाल्मलि द्वीप का एक पर्वत। ५ एक प्रकार का बगला।

बलि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मालगुजारी। कर। राजकर। २. उपहार। भेंट। ३. पूजा की सामग्री या उपकरण। ४ पंचमहायज्ञों में चौथा। भूतयज्ञ। ५ किसी देवता को उत्सर्ग किया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। ६ भक्ष्य। अन्न। खाने की वस्तु। उ०—आए भरत दीन ह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई। हम सेवक वा त्रिभुवन पति के सिंह को बलि कौवा को खाई?—सूर०। ७. चढ़ावा। नैवेद्य। भोग। उ०—पर्वत सहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र बहाई। मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनको करौं सजाई।—सूर०। ८ वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।

मुहा०—बलि चढ़ना=मारा जाना। बलि चढ़ाना=देवता के उद्देश्य से घात करना। बलि जाना=निछावर होना। बलिहारी जाना। उ०—कौशल्या आदिक महतारी आरति करति बनाय। वह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाय।—सूर०।

मुहा०—बलि जाऊँ या बलि=मैं तुम पर निछावर हूँ। उ०—ह्वै छिगुनी पहुँचौ गिलत अति दीनता दिखाइ। बलि बावन कौ ब्यौंतु सुनि को बलि तुम्हैं पत्याइ।—बिहारी०।

९ प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था।

संज्ञा स्त्री० [सं० बला=छोटी बहिन] सखी।

बलित(पु)—वि० [सं० बलि] १ बलिदान चढ़ाया हुआ। २ मारा हुआ। हत।

बलिदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना। २ बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना।

बलिदानी—वि० [सं० बलिदान] बलिदान संबंधी।

संज्ञा पुं० वह जो बलिदान करता हो।

वलिपशु—संज्ञा पुं० [हिं० वलि+पशु] वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।
वलिप्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] वलिदान।
वलिया—वि० [हिं० वल] वलवान्।
 संज्ञा पुं० वनारस के पूरव वनारस कमिश्नरी का एक जिला।
वलिवर्द—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँड़। २ वैल।
वलिवैश्वदेव—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच महायज्ञों में से चौथा। इसमें गृहस्थ पके हुए अन्न से एक एक ग्रास लेकर भिन्न भिन्न स्थानों पर रखता है।
वलिष्ठ—वि० [सं०] अधिक वलवान्।
वलिहारना(पु)—क्रि० स० [हिं० वलि+हारना] निछावर कर देना। कुर्वान कर देना।
वलिहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० वलि+√हार+ई (प्रत्य०)] प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना। निछावर। कुर्वान।
 मुहा०—वलिहारी जाना=निछावर होना। कुरवान जाना। वलैया लेना। वलिहारी लेना=वलैया लेना। प्रेम दिखाना। उ०—पहुँची जाय महरि मंदिर में करत कुलाहल भारी। दरसन करि जसुमति सुत को सब लेन लगीं वलिहारी।—सूर०।
वली—वि० [सं० वलिन्] बलवान्।
वलीता(पु)—संज्ञा पुं० दे० "पलीता"।
वलीमुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वलिमुख] वंदर।
वलीयस्—वि० [सं०] [स्त्री० वलीयसी] बहुत अधिक वलवान्।
वलु(पु)—अव्य० "वह"।
वलुआ—वि० [हिं० वालू] [स्त्री० वलुई] जिसमें वालू मिला हो। रेतीला।
वलूच—संज्ञा पुं० एक जाति जिसके नाम पर देश का नाम वलूचिस्तान पड़ा है।
वलूची—संज्ञा पुं० [देश०] वलूचिस्तान का निवासी।
वलूत—संज्ञा पुं० [अ०] माजूफल की जाति का एक पेड़।
वलैया—संज्ञा स्त्री० [अ० वला, हिं० वलाय] वला। वलाय।
 मुहा०—(किसी की) वलैया लेना=अर्थात् किसी का रोग, दुःख अपने ऊपर लेना। मंगलकामना करते हुए प्यार करना।
वल्कि—अव्य० [फा०] १ अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २ और अच्छा है। वेहतर है।
वल्लभ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वल्लभ"।
वल्लम—संज्ञा पुं० [सं० वल, हिं० वल्ला] १ छड़। वल्ला। २ सोंटा। डंडा। ३ वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे चोवदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं। ४ वरछा।
वल्लमटेर—संज्ञा पुं० [अं० वालंटियर] १ स्वेच्छापूर्वक सेना में भरती होनेवाला। २. स्वेच्छासेवक। स्वयंसेवक।
वल्लमवर्दार—संज्ञा पुं० [हिं० वल्लम+फा० वर्दार] वह जो सवारी या वरात के साथ वल्लम लेकर चलता है।
वल्ला—संज्ञा पुं० [सं० वल] [स्त्री० अल्पा० वल्ली] १. डंडे के आकार का लंबा मोटा टुकड़ा। शहतीर या डंडा। २ मोटा डंडा। दंड। ३ वह डंडा जिससे नाव खेते हैं। डाँड़ा। ४ गेंद मारने का लकड़ी का डंडा। (अं०) वैट।
वल्लि—संज्ञा स्त्री० दे० "वल्ली"। उ०—गह्वर तरु तमाल है तहाँ। प्रफुलित वल्लि मल्लिका जहाँ।—नंददास०।
वल्ली—संज्ञा स्त्री० [हिं० वल्ला] छोटा वल्ला।
 (पु)संज्ञा स्त्री० दे० "वल्ली"।
ववँड़ना—क्रि० अ० [सं० व्यावर्तन] इधर उधर घूमना। व्यर्थ फिरना। उ०—इत उत हौ तुम ववँड़त डोलत करत आपने जी को।—सूर०।
ववंडर—संज्ञा पुं० [सं० वायु+मंडल] १ चक्र की तरह घूमती हुई वायु। चक्रवात। वगूला। २ आँधी। तूफान।
ववंडा—संज्ञा पुं० दे० "ववंडर"।
ववघूरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ववंडर"।
ववन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वमन"।
ववना(पु)—क्रि० स० [सं० वपन] १ दे० "वोना"। २ छितराना। विखेरना।
 क्रि० अ० छितराना। विखरना। उ०—ऊधो! योग की गति सुनत मेरे अंग आगि वई।—सूर०।
 संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
ववरना—क्रि० अ० दे० "वौरना"।
ववासीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं। अर्श।
वसंत—संज्ञा पुं० दे० "वसंत"।
वसंती—वि० [हिं० वसंत] १. वसंत का। वसंतऋतु संबंधी। २ खुलते हुए पीले रंग का।
वसंदर—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] आग। उ०—कथा कहानी सुनि जिउ जरा। जानहुँ घीउ वसंदर परा।—पद्मावत।
वस—वि० [फा०] प्रयोजन के लिये पूरा। पर्याप्त। भरपूर। वहुत। काफी।
 अव्य० १. पर्याप्त। काफी। अलम्। २ सिर्फ। केवल। इतना मात्र।
 संज्ञा पुं० दे० "वश"।
वसति, वसती—संज्ञा स्त्री० दे० "वस्ती"।
वसना—क्रि० अ० [सं० वसन] १ स्थायी रूप से स्थित होना। निवास करना। रहना। २ निवासियों से भरा पूरा होना। आवाद होना।
 मुहा०—घर वसना=कुटुंब सहित सुखपूर्वक स्थिति होना। गृहस्थी का वनना। घर में वसना=सुखपूर्वक गृहस्थी में रहना।
 ३ टिकना। ठहरना। डेरा करना।
 मुहा०—मन में वसना=ध्यान में वना रहना। स्मृति में रहना। उ०—सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल। इहि वानक मो मन सदा वसौ, विहारी-लाल।—विहारी०।
 (पु)४ वैठना।
 क्रि० अ० [हिं० वासना] वासा जाना। सुगंधित होना। महक से भर जाना।
 संज्ञा पुं० [सं० वसन=कपड़ा] १ वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। वेष्टन। वेठन। २ थैली।
वसनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० वसना] रहन। निवास। वास।
वसर—संज्ञा पुं० [फा०] गुजर। निर्वाह।
वसवर्ती(पु)—वि० [सं० वशवर्त्तिन्] दे० "वशवर्त्ती"। उ०—नद जु कहत मेवगन जिते। मनवा के वसवर्ती तिते।—नंददास०।
वसवार—संज्ञा पुं० [हिं० वास] छौंक। वघार।
वसवास—संज्ञा पुं० [हिं०√वस+वास] १ निवास। रहना। उ०—जो तुम पुहुप पराग छाड़ि कै करौ ग्राम वसवास। तो

हम सूर यहौ करि देखैं निमिख न छाँडैं बास।—सूर०। २ रहने का ढग। स्थिति। ३ रहने का सुभीता। निवास के योग्य परिस्थिति। ठिकाना। उ०—अब बसवास नहीं लखौं यहि तुव ब्रज नगरी, आपु गयो चढ़ि कदम चीर लै चितवत रहि सिगरी। —सूर०।

बसह—संज्ञा पुं० [स० वृषभ] बैल। उ०—भमरा शिव रवि शशि चतुरानन हय गय बराह हस मृग जावत।—सूर०।

बसौंधा—वि० [हिं० वास] बसाया या बासा हुआ। सुगंधित।

बसा—सज्ञा स्त्री० दे० "वसा"।

सज्ञा स्त्री० [देश०] बर्रे। भिड़।

बसाना—क्रि० स० [हिं० बसना का स० रूप] १ बसने के लिये जगह देना। रहने को ठिकाना देना। २. जनपूर्ण करना। आबाद करना।

मुहा०—घर बसाना = गृहस्थी जमाना। सुखपूर्वक कुटुंब के साथ रहने का ठिकाना करना।

३ टिकाना। ठहराना।

(पु)क्रि० अ० १ बसना। ठहरना। रहना। २ दुर्गंध देना। बदबू करना।

क्रि० स० [सं० वेशन] १ बैठाना। २ रखना।

(पु)क्रि० अ० [हिं० वश] वश या जोर चलना।

क्रि० अ० [हिं० वास] वास देना। महकना।

बसि(पु)—सज्ञा पुं० दे० "वश"। उ०—ठाढ़े भए विवस बसि सबही काहु न रही सँभार।—नंददास०।

बसिऔरा—सज्ञा पुं० [हिं० बासी] १ वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं। २ बासी भोजन।

बसीकत, बसीगत—सज्ञा स्त्री० [हिं० बसना] १ बस्ती। आबादी। २ बसने का भाव या क्रिया। रहन।

बसीकर—वि० [स० वशीकर] वशीकर। वश में करनेवाला।

बसीकरन(पु)—सज्ञा पुं० दे० "वशीकरण"।

बसीठ—सज्ञा पुं० [सं० अवसृष्ट] सदेशा ले जानेवाला दूत। उ०—मोहन मखिनि डारि मोरी ते करि आए मुख प्रीति। अति शठ ढीठ बसीठ श्याम को हमें सुनावत गीत।—सूर०।

बसीठी—सज्ञा स्त्री० [हिं० बसीठ] सँदेशा भुगताने का काम। दूतत्व। उ०—मान में मनायो पीर विरह बुझायो, परदेश में बसीठी करि चीठी पहुँचाई है।—शृंगार०।

बसीता(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० बसना] १ निवास। २. निवास स्थान।

बसीना†(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० बसना] रहायश। रहन। उ०—इनही ते ब्रजवास बसीनो, हम सब अहिर जाति मतिहीनो। —सूर०।

बसुवास(पु)—सज्ञा पु० [हिं० बसवास] रहना। निवास। उ०—'दास' हास करै घने वकवस रे। तोहि ह्याँ बसुवास न उचित हस रे।—छदार्णव।

बसूला—सज्ञा पुं० [स० वासि + ल (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसूली] एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते और गढ़ते हैं।

बसेरा—वि० [हिं० √बस + एरा (प्रत्य०)] बसनेवाला। उ०—पै तूँ जंबूदीप बसेरा। किमि जानेसि कस सिंघल मोरा?। —पद्मावत।

सज्ञा पु० १ वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २ वह स्थान जहाँपर चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं।

मुहा०—बसेरा करना = (१) डेरा करना। निवास करना। ठहरना। उ०—बहुते को उद्यम परिहरै। निर्भय ठौर बसेरो करै।—सूर०। (२) घर बनाना। बस जाना। बसेरा लेना = निवास करना। रहना। उ०—अरी ग्वारि मैमत वचन बोलत जो अनेरो। कब हरि बालक भए गर्भ कब लियो बसेरो।—सूर०। बसेरा देना = आश्रय देना।

३ टिकने या बसने का भाव। रहना।

बसेरी(पु)—वि० [हिं० बसेरा] निवासी।

बसैया(पु)†—वि० [हिं० √ बस + ऐया (प्रत्य०)] बसनेवाला।

बसोबास—सज्ञा पुं० [हिं० वास + आवास] निवासस्थान। रहने की जगह।

बसौंधी—सज्ञा स्त्री० [हिं० वास + सौंधा] एक प्रकार की सुगधित और लच्छेदार रबड़ी।

बस्ता—सज्ञा पुं० [फा०] कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज, बही या पुस्तक आदि बाँधकर रखते हैं। बेठन।

बस्ती—सज्ञा स्त्री० [सं० वसति] १ बहुत से मनुष्यों का घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २. जनपद। एक प्रकार की यौगिक क्रिया।

बस्साना—क्रि० अ० [हिं० वास] दुर्गंध देना।

बहँगी—सज्ञा स्त्री० [सं० विहगिका] बोझ ले चलने के लिये तराजू के आकार का एक ढाँचा। काँवर।

बहकना—क्रि० अ० [हिं० बहना] १ भूलकर ठीक रास्ते से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्गभ्रष्ट होना। भटकना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। चूकना। ३ किसी की बात या भुलावे में आ जाना। ४. किसी बात में लग जाने के कारण शात होना। बहलना (बच्चों के लिये)। ५ आपे में न रहना। रस या मद में चूर होना।

मुहा०—बहकी बहकी बातें करना = (१) मदोन्मत्त की सी बातें करना। (२) बहुत बढ़ी चढ़ी बातें करना।

बहकाना—क्रि० स० [हिं० बहकना का स० रूप] १ ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना। रास्ता भुलवाना। भटकाना। २ ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर कर देना। लक्ष्यभ्रष्ट करना। ३ भुलावा देना। भरमाना। बातों से फुसलाना। उ०—नई रीति इन अबै चलाई। काहू इन्हें दियो बहकाई। —सूर०। ४ (बातों से) शात करना। बहलाना।

बहकावट—सज्ञा स्त्री० [हिं० बहकाना] बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० बहता + ल (प्रत्य०)] जल बहाने की नाली। बरहा।

बहन—सज्ञा स्त्री० दे० "बहिन"।

सज्ञा स्त्री० [हिं० बहना] बहने की क्रिया या भाव।

बहना—क्रि० अ० [स० वहन] १ द्रव वस्तुओं का किसी ओर चलना। प्रवाहित होना।

मुहा०—बहती गगा में हाथ धोना = किसी ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हों।

२ पानी की धारा में पड़कर जाना। ३ स्रवित होना। लगातार बूँद या धार के रूप में निकलकर चलना। ४ वायु का सचरित होना हवा। का चलना। ५ हट जाना। दूर होना।

उ०—सुक सनकादि सकल मन मोहे ध्यानिन ध्यान वह्यो।—सूर०। ६ ठीक लक्ष्य या स्थान से सरक जाना। फिसल जाना। ७. मारा मारा फिरना। ८. कुमार्गी होना। आवारा होना। विगड़ना। उ०—मातु पितु गुरु जननि जान्यो भली खोई महति। सूर प्रभु को ध्यान चित धरि अतिहि काहे वहति।—सूर०। ६. अधम या बुरा होना। १० गर्भपात होना। लड़ाना (चौपायों के लिये)। ११. वहुतायत से मिलना। सस्ता मिलना। १२ (रुपया आदि) डूब जाना। नष्ट हो जाना। १३ लादकर ले चलना। वहन करना। १४. खींचकर ले चलना (गाड़ी आदि)। १५. धारण करना। १६ उठना। चलना। १७ निर्वाह करना। निवाह करना।

वहनापा—सज्ञा पु० [हिं० वहिन+आपा (प्रत्य०)] वहिन का सवध।

वहनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० वह्नि] अग्नि। आग। उ०—तुम काह उडुराज अमृत मय तजि सुभाउ वरपत कत वहनी।—सूर०।

वहनु(पु)—सज्ञा पुं० [स० वहन] सवारी। वाहन।

वहनेली—सज्ञा स्त्री० [हिं० वहन+सहेली] वह जिसके साथ वहनपने का सवध स्थापित हो (स्त्रियों में)। मुँहवोली वहन।

वहनोई—सज्ञा पुं० [हिं० वहन] वहिन का पति।

वहनौता—सज्ञा पु० [हिं० वहन+पुत्र] भानजा।

वहवह(पु)—वि० [हिं०√वह या अनु०] चमाचम। उ०—सहसह समर की वहवह वीजु भई, तहँ तहँ तिय प्रान लीवे की खवरि है।—श्रृंगार०।

वहवहा(पु)—वि० [?] शरारत। नटखट-पना।

वहर—क्रि० वि० [फा०] वास्ते। लिये।

सज्ञा पुं० [अ० वह] १ समुद्र। २ छद।

(पु)क्रि० वि० दे० "वाहर"।

वहरा—वि० [स० वधिर] [स्त्री० वहरी] जो कान से सुन न सके या कम सुने।

वहराना—क्रि० स० [हिं० भुराना] १ ऐसी वात कहना या करना जिसमे दुःख की वात भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। उ०—मैं पठवत अपने लरिका को आवै मन वहराई।—सूर०। २ वहकाना। भुलाना। फुसलाना। उ०—उरहन देन ग्वालि जे आई। तिन्हैं जसोदा दियो वह-राई।—सूर०।

सज्ञा पुं० [हिं० वाहर] शहर या वस्ती का वाहरी भाग।

क्रि० स० दे० "वहरियाना"।

वहरियाना—क्रि० स० [हिं० वाहर से ना० धा०] १ वाहर की ओर करना। निकालना। २ अलग करना। जुदा करना।

क्रि० अ० १ वाहर की ओर होना। २ अलग होना। जुदा होना।

वहरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] वाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया। वाहरी।

वहल—सज्ञा स्त्री० दे० "वहली"।

वहलना—क्रि० अ० [हिं० वहलाना] २ झझट या दुःख की वात भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना। ३. मनोरजन होना। चित्त प्रसन्न होना।

वहलाना—क्रि० स० [फा० वहाल] १ झझट या दुःख की वात भुलवाकर चित्त दूसरी ओर ले जाना। २. मनोरजन करना। चित्त प्रसन्न करना। ३. भुलावा देना। वातों में लगाना। वहकाना।

वहलाव—सज्ञा पुं० [हिं०√वहल+आव (प्रत्य०)] वहलने की क्रिया या भाव। मनोरजन। प्रसन्नता।

वहली—सज्ञा स्त्री० [सं० वहन] रथ के आकार की वैलगाड़ी। खड़खड़िया।

वहल्ला†(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० वहलना] आनंद।

वहली—सज्ञा पु० [हिं० वाहरी ?] कुश्ती का एक दाँव।

वहस—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वाद। दलील। तर्क। खडन मडन की युक्ति। २ विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३ होड़। वाजी। वदावदी। उ०—मोहिं तुम्हैं वाढ़ी वहस, को जीतै जदुराज। अपनैं अपनैं विरद की दुहूँ निवाहन लाज।—विहारी०।

वहसना(पु)—क्रि० अ० [अ० वहस से हिं० ना० धा०] १ वहस करना। विवाद करना। तर्क वितर्क करना। २ शर्त लगाना।

वहादुर—वि० [फा०] [सज्ञा वहादुरी] १. उत्साही। साहसी। २ शूरवीर। पराक्रमी।

वहादुराना—वि० [फा०] वहादुरों का सा। वीरतापूर्ण।

वहाना—क्रि० स० [हिं० वहना का स० रूप] १ द्रव पदार्थों को निम्न तल की ओर छोड़ना या गमन कराना। प्रवाहित करना। २ पानी की धारा में डालना। प्रवाह के साथ छोड़ना। ३ लगातार बूँद या धार के रूप में छोड़ना। ढालना। लुढ़ाना। ४ वायु सचालित करना। हवा चलाना। ५. व्यर्थ व्यय करना। खोना। गँवाना। †६ फेंकना। डालना। ७. सस्ता वेचना।

क्रि० स० [हिं० वहना] वहाने का काम दूसरे से कराना।

सज्ञा पुं० [फा० वहान] १. किसी वात से वचने या मतलव निकालने के लिये झूठ वात कहना। मिस। हीला। २ उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ वात। ३ कहने सुनने के लिये एक कारण। निमित्त।

वहार—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. वसत ऋतु। २. मौज। आनद। ३ यौवन का विकास। जवानी का रग। ४. रमणीयता। सुहावनापन। रौनक। ५ विकास। प्रफुल्लता।

मुहा०—वहार पर आना=विकसित होना। पूर्ण शोभासंपन्न होना।

६ मजा। तमाशा। कौतुक।

वहाल—वि० [फा०] १ पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। २ भलाचगा। स्वस्थ। ३ प्रसन्न। खुश।

वहाला(पु)—सज्ञा पुं० दे० "वल्लभ"।

वहाली—संज्ञा स्त्री० [फा०] पुनर्नियुक्ति। फिर उसी जगह पर मुकर्ररी।

सज्ञा स्त्री० [वहलाना] वहाना। मिस।

वहाव—सज्ञा पुं० [हिं०√वह + आव (प्रत्य०)] १ वहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। २ वहता हुआ जल आदि।

वहि—अव्य० [स० वहिस्] वाहर।

वहिक्रम(पु)—सज्ञा पुं० [सं० वय क्रम] अवस्था। उम्र।

वहित्र—सज्ञा पुं० [सं० वहित्र] नाव।

वहिन—सज्ञा स्त्री० [स० भगिनी] माता की कन्या। भगिनी। वहना।

वहिनोला(पु)—सज्ञा पु० दे० "वहनापा"।

वहियाँ†(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "वाँह"। उ०—सूरदास हरि वोलि भगत को निर-वहत दै वहियाँ।—सूर०।

वहिरग—वि० [सं० वाहरी] वाहरवाला। 'अतरंग' का उलटा।

बहिराⓅ—वि० दे० "बहरा"।
बहिरतⓅ†—अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।
बहिर्गत—वि० [सं०] बाहर आया या निकला हुआ।
बहिर्जगत्—संज्ञा पुं० [सं०] बाहरी दृश्य या जगत्। मन के भीतर के जगत् का उलटा।
बहिर्भूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बस्ती से बाहरवाली भूमि।
बहिर्मुख—वि० [सं०] विमुख। विरुद्ध।
बहिर्लापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य-रचना में एक प्रकार की पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अंतर्लापिका का उलटा। उ०—अक्षर कौन विकल्प को, युवति बसति किहि अंग। बलि राजा कीने छल्यो, सुरपति के परसंग॥ यहाँ उत्तर क्रमशः वा, वाम और वामन है।
बहिश्त—संज्ञा पुं० [फा० बहिश्त] स्वर्ग।
बहिष्कार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. हटाना।
बहिष्कृत—वि० [सं०] बाहर किया हुआ। निकाला हुआ।
बही—संज्ञा स्त्री० [सं० बद्ध, हिं० बँधी ?] हिसाब किताब लिखने की पुस्तक।
बहीर—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १. भीड़। जनसमूह। २. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड़ जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं। फौज का लवाजमा। ३. सेना की सामग्री।
Ⓟ†अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।
बहुँटा—संज्ञा पुं० [हिं० बाँह] बाँह पर पहनने का एक गहना।
बहु—वि० [सं०] १. बहुत। अनेक। २. ज्यादा। अधिक।
संज्ञा स्त्री० दे० "बहू"।
बहुगुना—संज्ञा पुं० [हिं० बहु+गुण] चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।
बहुज्ञ—वि० [सं०] बहुत बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।
बहुज्ञता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुज्ञ होने का भाव या स्थिति। बहुत सी बातों की जानकारी। अच्छी जानकारी।
बहुग्यताⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "बहुज्ञता"। उ०—धिग बहुग्यता, धिग सब रूपै। विमुख जु कृष्ण अधोक्षज विषै।—नंददास०।
बहुँटनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहुँटा] बाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा बहुँटा। उ०—बहु नग लगे जराव की अँगिया भुजा बहुटनी वलय संग को।—सूर०।
बहुटाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० बहुँटा] बाजू। बाजूबंद। उ०—बाहँन्ह बहुटा टाँड सलोनी। डोलत बाहँ भाव गति लोनी।—पदमावत।
बहुत—वि० [सं० बहुतर] १. एक दो से अधिक। अनेक। २. जो मात्रा में अधिक हो। ३. यथेष्ट। बस। काफी।
मुहा०—बहुत अच्छा = स्वीकृति सूचक वाक्य। बहुत करके = (१) अधिकतर। ज्यादातर। बहुधा। प्राय। (२) अधिक संभव है। बीस बिस्वे। बहुत कुछ = कम नहीं। गिनती करने योग्य। बहुत खूब = (१) वाह। क्या कहना है। (२) बहुत अच्छा।
क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज्यादा।
बहुतकⓅ—वि० [हिं० बहुत+क (प्रत्य०)] बहुत से। बहुतेरे।
बहुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता।
वि० बहुत। अधिक।
बहुताइतⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "बहुतायत"। उ०—बहुताइत के रावरे प्रीति न डारो तोरि।—नंददास०।
बहुताई—संज्ञा स्त्री० दे० "बहुतायत"।
बहुतात, बहुतायत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहुत+आयत (प्रत्य०)] अधिकता। ज्यादती।
बहुतेरा—वि० [हिं० बहुत+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बहुतेरी] बहुत सा। अधिक।
क्रि० वि० बहुत प्रकार से।
बहुतेरे—वि० [हिं० बहुतेरा] संख्या में अधिक। बहुत से अनेक।
बहुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] अधिकता।
बहुदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत सी बातों की समझ। बहुज्ञता।
बहुदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० बहुदर्शिन्] जिसने बहुत कुछ देखा हो। जानकार। बहुज्ञ।
बहुधा—क्रि० वि० [सं०] १. अनेक प्रकार से। २. बहुत करके। प्राय। अकसर।
बहुबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] रावण। उ०—तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहित अस होइहि बहुबाहू।—मानस।
बहुभाषज्ञ—वि० [सं०] बहुत सी भाषाएँ जाननेवाला।
बहुभाषी—वि० [सं० बहुभाषिन्] बहुत बोलनेवाला। बकवादी।
बहुमत—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लोगों की अलग अलग राय। २. बहुत से लोगों की मिलकर एक राय। ३. वह जिनके मत या पक्ष में बहुत से लोग हों। जनता में बहुसंख्यकों की राय।
बहुमूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें रोगी को मूत्र बहुत उतरता है।
बहुमूल्य—वि० [सं०] अधिक मूल्य का। कीमती। दामी।
बहुरंग—वि० दे० "बहुरंगा"।
बहुरंगा—वि० [हिं० बहु+रंग] १. कई रंगों का। चित्रविचित्र। २. बहुरूपधारी।
बहुरंगी—वि० [हिं० बहुरंगा+ई (प्रत्य०)] १. बहुरूपिया। २. अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला।
बहुर—अव्य० [हिं० बहुरि] पुन। फिर। उ०—चपमाल सिसुपाल परस अलि बहुर न आए।—नंददास०।
बहुरना†—क्रि० अ० [सं० प्रघूर्णन] १. लौटना। वापस आना। २. फिर मिलना।
बहुरिⓅ†—क्रि० वि० [हिं० बहुरना] १. पुन। फिर। २. इसके उपरांत। पीछे।
बहुरिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] नई बहू।
बहुरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भौरना = भूनना] भुना हुआ खड़ा अन्न। चर्वण। चबेना।
बहुरूपिया—संज्ञा पुं० [हिं० बहु+रूप+इया (प्रत्य०)] वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलाता हो।
बहुल—वि० [सं०] अधिक। ज्यादा।
बहुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अधिकता। ज्यादती। २. फालतूपन। व्यर्थता।
बहुली—संज्ञा स्त्री० [सं० बहुला] इलायची। उ०—बूझा, मरुआ कुंद सों कहै गोद पसारी। बकुल बहुलि, वट, कदम पै ठाढ़ी ब्रजनारी।—सूर०।
बहुवचन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है।
बहुविद्य—वि० दे० "बहुज्ञ"।
बहुविवाह—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पुरुष का एक पत्नी के जीवित रहने पर अन्य स्त्रियों से विवाह करना।
बहुव्रीहि—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में छ प्रकार के समासों में से एक जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह एक अन्य पद का विशेषण होता है, जैसे, आरूढ़-वानर-वृक्ष = वह वृक्ष जिसपर बंदर बैठा हो।

बहुशः—वि० [सं०] बहुत । अधिक ।
बहुश्रुत—वि० [सं०] [भाव० बहुश्रुतत्व] जिसने अनेक विद्वानों से विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया हो । अनेक विषयों का जानकार । अनेक विषयों का ज्ञाता ।
बहुसंख्यक—वि० [सं०] १ गिनती में बहुत । अधिक । २. जो संख्या के विचार से औरों से अधिक हो ।
बहूँटा—संज्ञा पुं० [सं० बाहुस्थ] [स्त्री० अल्पा० बहूँटी] बाँह पर पहनने का एक गहना ।
बहू—संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] १. पुत्रवधू । पतोहू । २ पत्नी । स्त्री । ३ दुलहिन ।
बहूपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ, जैसे, हिम, हर, हीरा हंस सो जस तेरो जसवंत ।
बहेड़ा—संज्ञा पुं० [सं० विभीतक, प्रा० बहेडअ] एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं ।
बहेतू—वि० [हिं० √बह+एतू (प्रत्य०)] ईधर उधर मारा फिरनेवाला ।
बहेरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहराना] बहाना । हीला ।
बहेलिया—संज्ञा पुं० [सं० बध+हेला] पशुपक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला । व्याध । चिड़ीमार ।
बहोरⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० बहुरना] फेरा । वापसी । पलटा ।
क्रि० वि० दे० "बहोरि" ।
बहोरना†—क्रि० स० [हिं० बहुरना का स० रूप] लौटाना । वापस करना । फेरना ।
बहोरिⓅ†—अव्य० [हिं० बहोर] पुन । फिर ।
बाँ—संज्ञा पुं० [अनु०] गाय के बोलने का शब्द ।
†संज्ञा पुं० [हिं० बेर] बार । दफा । बेर ।
बाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० वक] १ भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण । २ एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है । ३ हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी । ४ कमान । धनुष । ५ एक प्रकार की छुरी ।
संज्ञा पुं० टेढ़ापन । वक्रता ।
वि० [सं० वक] १ टेढ़ा । घुमावदार । २ बाँका । तिरछा ।
बाँकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँक+ड़ी (प्रत्य०)] बादले और कलाबत्तू का बना हुआ एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता ।
बाँकडोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँक+डोरी] एक प्रकार का शस्त्र ।
बाँकना†—क्रि० स० [हिं० बाँक से ना० धा०] टेढ़ा करना ।
‡क्रि० अ० टेढ़ा होना ।
बाँकपन—संज्ञा पुं० [हिं० बाँका+पन (प्रत्य०)] १ टेढ़ापन । तिरछापन । २ छैलापन । अलबेलापन । ३. छवि । शोभा ।
बाँका—वि० [सं० वंक] १ सुंदर और बनाठना । छैला । २ टेढ़ा । तिरछा । ३ बहादुर । वीर ।
बाँकिया—संज्ञा पुं० [सं० वक=टेढ़ा] नरसिंहा नामक टेढ़ा बाजा ।
बाँकुर, बाँकुराⓅ†—वि० [हिं० बाँका] १. बाँका । टेढ़ा । २ पैना । पतली धार का । ३ कुशल । चतुर ।
बाँग—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पुकार । चिल्लाहट । २ वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज का समय बताने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है । अजान । ३ प्रातःकाल मुरगे के बोलने का शब्द ।
बाँगड़—संज्ञा पुं० [देश०] हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत । हरियाना ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँगड़] बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा । जाटू । हरियानी ।
बाँगड़ू—वि० [हिं० बाँगड़+ऊ (प्रत्य०)] मूर्ख । गँवार ।
बाँगर—संज्ञा पुं० [देश०] १. छकड़ा गाड़ी को फड़ के साथ लगाकर उसके ऊपर बाँधा जानेवाला बाँस । २ वह ऊँची भूमि जो बाढ़ से न डूबे । ३ अवध में पाए जानेवाले एक प्रकार के बैल ।
बाँगुर—संज्ञा पुं० [देश०] १ पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल । फंदा । २ एक मछली ।
बाँचना†—क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना । उ०—पिय पाती बिन ही लिखी बाँची बिरह बलाइ । —बिहारी० ।
क्रि० स० [हिं० बचाना] बचाना । छुड़ाना ।
Ⓟक्रि० अ० [हिं० बचना] १ रक्षित होना । बचना । २. शेष रहना । बाकी बचना ।
बाँछनाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वांछा से हिं० ना० धा०] इच्छा । आकांक्षा । उ०—यह बाँछना होइ क्यों पूरन दासी है बस मन रहिए । —सूर० ।
†क्रि० स० १. चाहना । इच्छा करना । उ०—महा मुक्ति कोऊ नहिं बाँछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहन मूरति की बलिहारी । —सूर० । २. चुनना । छाँटना ।
बांछाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वांछा] इच्छा ।
बांछितⓅ—वि० [सं० वांछित] अभिलषित । इच्छित । जिसकी इच्छा की जाय ।
बाँछी—संज्ञा पुं० [सं० वांछिन्] अभिलाषा करनेवाला । चाहनेवाला ।
बाँझ—संज्ञा स्त्री० [सं० वंध्या] वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो । बंध्या ।
बाँझपन, बाँझपना—संज्ञा पुं० [सं० बंध्या+पन (प्रत्य०)] बाँझ होने का भाव । बंध्यात्व ।
बाँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना] १. बाँटने की क्रिया या भाव । २. भाग ।
मुहा०—बाँटे पड़ना=हिस्से में आना ।
बाँटना—क्रि० स० [सं० वंटन] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना । २ हिस्सा लगाना । विभाग करना । ३. थोड़ा थोड़ा सबको देना । वितरण करना ।
बाँटा—संज्ञा पुं० [हिं० बाँटना] १. बाँटने की क्रिया या भाव । २ भाग । हिस्सा ।
बाँड़ा—वि० [देश०] १ बिना पूँछ का । २ असहाय । दीन ।
बाँदा†—संज्ञा पुं० [फा० बंदा] [स्त्री० बाँदी] सेवक । दास ।
बाँदर—संज्ञा पुं० [सं० वानर] बंदर ।
बाँदा—संज्ञा पुं० [सं० वंदाक] एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है ।
बाँदी—संज्ञा स्त्री० [फा० बंदा] लौंडी । दासी ।
मुहा०—बाँदी का बेटा या जना=(१) परम अधीन । अत्यंत आज्ञाकारी । (२) तुच्छ । हीन । (३) वर्णसंकर । दोगला ।
बाँदू—संज्ञा पुं० [सं० वंदी] बँधुवा । कैदी ।
बाँध—संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना=रोकना] नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स । बंद । रोक ।

बाँधना—क्रि० स० [सं० बंधन] १. कसने या जकड़ने के लिये किसी चीज के घेरे में लाकर गाँठ देना। २. कसने या जकड़ने के लिये रस्सी, कपड़ा आदि लपेटकर उसमें गाँठ लगाना। ३ कैद करना। पकड़कर बंद करना। ४. नियम, अधिकार, प्रतिज्ञा या शपथ आदि की सहायता से मर्यादित रखना। पाबंद करना। ५ मंत्र, तंत्र आदि की सहायता से शक्ति या गति आदि को रोकना। ६ प्रेमपाश में बद्ध करना। ७ नियत करना। मुकर्रर करना। ८ पानी का बहाव रोकने के लिये बाँध आदि बनाना। ९. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। १० मकान आदि बनाना। ११. किसी विषय का, वर्णन आदि के लिये, ढाँचा या स्थूल रूप तैयार करना। उपक्रम करना। योजना करना। बैठाना। बंदिश करना। मजमून बाँधना। १२ क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना। १३. मन में बैठाना। स्थिर करना। १४. किसी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना।

बाँधनीपौरिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँधना+पौरि] पशुओं के बाँधने का स्थान।

बाँधनूँ—संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना] १ पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। मसूबा। २. कोई बात होनेवाली मानकर पहले से ही उसके संबंध में तरह तरह के विचार। खयाली पुलाव। ३ झूठा दोष। तोहमत। कलंक। ४ मन से गढ़ी हुई बात। ५ कपड़े की रँगाई में वह बंधन जो रँगरेज चुनरी या लहरिएदार रँगाई आदि रँगने के लिये कपड़े में बाँधते हैं। ६ चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रँगा गया हो।

बांधव—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाई बंधु। २ नातेदार। रिश्तेदार। ३ मित्र। दोस्त।

बाँबी—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्मीक] १ दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का भीटा। बँबीठा। २ साँप का बिल।

बाँवनाⓅ†—क्रि० स० [?] रखना।

बाँस—संज्ञा पुं० [सं० वंश] १ तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और गाँठों के बीच का स्थान प्राय कुछ पोला होता है। इसकी छोटी बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं।

मुहा०—बाँस पर चढ़ना = बदनाम होना। बाँस पर चढ़ाना = (१) बदनाम करना। (२) बहुत बढ़ा देना। मिजाज बढ़ा देना। बहुत आदर करके धृष्ट या घमंडी बना देना। बाँसों उछलना = बहुत अधिक प्रसन्न होना।

२ एक नाप जो सवा तीन गज की होती है। लाठा। ३ नाव खेने की लग्गी। ४ पीठ के बीच की हड्डी। रीढ़। ५ बल्लम। भाला। बर्छा। उ०—अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं। फरसा बाँस सेल सम करहीं॥—मानस।

बाँसपूर—संज्ञा पुं० [हिं० बाँस+पूरना] एक प्रकार का महीन कपड़ा। उ०—चँदनौता औ खरदुक भारी। बाँसपूर झिलमिल कै सारी।—पदमावत।

बाँसली—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस+ली (प्रत्य०)] १ बाँसुरी। मुरली। २ जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

बाँसा†—संज्ञा पुं० [सं० वंश = रीढ़] नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के ऊपर बीचोबीच रहती है।

मुहा०—बाँसा फिर जाना = नाक का टेढ़ा हो जाना (जो मृत्युकाल समीप होने का चिह्न माना जाता है)।

संज्ञा पुं० [सं० वंश] पीठ की रीढ़।

बाँसुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस] बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। वंशी।

बाँह—संज्ञा स्त्री० [सं० बाहु] १ कंधे से कलाई तक का भाग। भुजा। बाहु। उ०—सुरपति बसइ बाँहबल जाकें। नरपति सकल रहहिं रुख ताकें।—मानस। २ कंधे से हथेली तक का भाग।

मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना = (१) किसी की सहायता करने के लिये हाथ बढ़ाना। सहारा देना। अपनाना। (२) विवाह करना। बाँह देना = सहारा देना।

यौ०—बाँहबोल = रक्षा करने या सहायता देने का वचन। उ०—बाँहबोल दै थापिए जो निज बरिआईं। बिन सेवा सों पालिए सेवक की नाईं॥—विनय०।

३ बल। शक्ति। ४ सहायक।

मुहा०—बाँह टूटना = सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना।

५. भरोसा। आसरा। सहारा। शरण। उ०—करम-कपीस बालि बली त्रास त्रस्यो हौं। चाहत अनाथ नाथ तेरी बाँह बस्यो हौं॥—विनय०। ६. एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ७ कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है। आस्तीन।

बा—संज्ञा पुं० [सं० वा = जल] जल। पानी।

संज्ञा पुं० [फा० बार] बार। दफा। मरतबा।

बाइⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] वायु। हवा। उ०—'दास' सुबास झकोरनि झोरत भौंर की बाइ बजाइ चली अब।—शृंगार०।

बाइगी—संज्ञा पुं० [हिं० बाई] स्त्री। उ०—कौन बाइगी सुनैं, ताहि किन मोंहि बतायौ।—नंददास०।

बाइबिल—संज्ञा स्त्री० [अँ०] यहूदियों और ईसाइयों की धर्मपुस्तक।

बाइसिकिल—संज्ञा स्त्री० [अँ०] दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है।

बाई—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] त्रिदोषों में से वातदोष। दे० "वात"।

मुहा०—बाई की झोंक = (१) वायु का प्रकोप। (२) आवेश। बाई चढ़ना = (१) वायु का प्रकोप होना। (२) घमंड आदि के कारण व्यर्थ की बातें करना। बाई पचना = (१) वायु का प्रकोप शांत होना। (२) घमंड टूटना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा, बाबी] १ स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। २ वेश्याओं के नाम के साथ लगाया जानेवाला शब्द। वेश्याओं के लिये प्रयुक्त शब्द।

बाईस—संज्ञा पुं० [सं० द्वाविंशति] बीस और दो की संख्या या अंक। २२।

वि० जो बीस और दो हो।

बाईसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाईस+ई (प्रत्य०)] बाईस वस्तुओं का समूह।

बाउ†—संज्ञा पुं० [सं० वायु] हवा। पवन।

बाउर†—वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बाउरी] १ बावला। पागल। २ सीधा सादा। ३ मूर्ख। अज्ञान। ४ गूँगा।

बाएँ—क्रि० वि० [हिं० बायाँ] बाईं ओर। बाईं तरफ। दाहिने का उलटा।

बाकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वाक्य] बात। वचन।

बाकचाल†—वि० [सं० वाक्+चलना] बहुत अधिक बोलनेवाला । बक्की । बातूनी ।
बाकनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० वाक्] बकना ।
बाकल†—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" ।
बाकला—संज्ञा पुं० [अ०] १ एक प्रकार की बड़ी मटर या मोठ । २ उबाला हुआ मोठ ।
बाकाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वाक्] वाणी ।
बाकी—वि० [अ०] जो बच रहा हो । अवशिष्ट । शेष ।
संज्ञा स्त्री० १. गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति । २. घटाने के पीछे बची हुई संख्या या मान ।
अव्य० लेकिन । मगर । परंतु ।
संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान ।
बाकुलⓅ—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" । उ०—बाकुल बसतर किता पहिरबा, का तप बनखंडि बासा ।—कबीर० ।
बाखरिⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "बाखरी" । उ०—जानति हौं गोरस को लेबो वाही बाखरि माँझ ।—सूर० ।
बाग—संज्ञा पुं० [अ०] उद्यान । उपवन । वाटिका ।
संज्ञा स्त्री० [सं० वल्गा] लगाम ।
मुहा०—बाग मोड़ना=किसी ओर प्रवृत्त करना । किसी ओर घुमाना । बाग बाग होना=प्रसन्न होना ।
बागड़Ⓟ—संज्ञा पुं० दे० "बाँगड़" । उ०—बागड़ देस लूवन का घर है तहाँ जिनि जाइ दाझन का डर है ।—कबीर० ।
बागडोर—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाग+डोर] लगाम ।
बागना†—क्रि० अ० [सं०√वक्=चलना] चलना । फिरना । घूमना । टहलना ।
‡क्रि० अ० [सं० वाक्] बोलना । Ⓟउ०—कहै कबीर जिय संसा नाहीं सबद अनाहद बागा ।—कबीर० ।
बागवान—संज्ञा पुं० [फा०] माली ।
बागवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] माली का काम ।
बागर—संज्ञा पुं० [देश०] नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं । उ०—अविगत गति जानी न परै । बागर तें सागर करि राखै चहुँ दिसि नीर भरै ।—सूर० ।
बागलⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० बक] बगला । बक ।
बागा—संज्ञा पुं० [फा० बाग] अंगे की तरह का पुराने समय का एक पहनावा । जामा ।
बागी—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे । राजद्रोही ।
बागीचा—संज्ञा पुं० [फा० बागच] छोटा बाग ।
बागुरⓅ—संज्ञा पुं० [?] जाल । फंदा ।
बागेसरी‡—संज्ञा स्त्री० [सं० वागीश्वरी] १ सरस्वती । २ एक प्रकार की रागिनी ।
बाघंबर—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] १ बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम में लाते हैं । २ एक प्रकार का कंबल ।
बाघ—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्र] शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु
बाघी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की गिलटी जो अधिकतर उपदंश के रोगियों की पेड़ू और जाँघ की संधि में होती है ।
बाचⓅ—वि० [सं० वाच्य] १. वर्णन करने के योग्य । २ सुंदर ।
बाचना‡—क्रि० अ० [हिं० बचना] बचना ।
क्रि० स० बचाना । सुरक्षित रखना ।
बाचा—संज्ञा स्त्री० [सं० वाचा] १ बोलने की शक्ति । २ वचन । बातचीत । वाक्य । ३ प्रतिज्ञा । प्रण । उ०—बोलौं रानि ! वचन सुनु साचा । पुरुष क बोल सपथ औ बाचा ।—पदमावत ।
बाचाबंधⓅ—वि० [सं० वाचा+बद्ध] जिसने किसी प्रकार का प्रण किया हो । प्रतिज्ञाबद्ध ।
बाछा—संज्ञा पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] १. गाय का बच्चा । बछड़ा । २ लड़का । बच्चा । उ०—मैं आवत हौं तुम्हरे पाछे भवन जाहु तुम मेरे बाछे ।—सूर० ।
बाज—संज्ञा पुं० [अ० बाज] १ एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी । २ तीर में लगा हुआ पर ।
प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है, जैसे—दगाबाज, कबूतरबाज, नशेबाज ।
वि० [फा०] वंचित । रहित ।
मुहा०—बाज आना=(१) खोना । रहित होना । (२) दूर होना । पास न जाना । बाज करना या रखना=रोकना । मना करना ।
वि० [अ० बअज] कोई कोई । कुछ । थोड़े कुछ । विशिष्ट ।
क्रि० वि० बगैर । बिना । उ०—(१) अब तेहि बाज राँक भा डोलौं । होय सार तो बरगी बोलौं ।—पदमावत । (२) दीनता दारिद दलै को कृपाबारिधि बाज । दानि दसरथ राय के तुम बानइत सिरताज ।—विनय० ।
संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा ।
संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] १ बाघ । बाजा । २ बजने या बाजे का शब्द ।
बाजदावा—संज्ञा पुं० [फा०] अपने अधिकारों, दावे या स्वत्व का त्याग ।
बाजनⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "बाजा" ।
बाजना—क्रि० अ० [हिं० बजना] १ बाजे आदि का बजना । २ लड़ना । झगड़ना । ३ प्रसिद्ध होना । पुकारा जाना । ४ लगना । आघात पहुँचना ।
बाजनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाजन] बजने का कार्य । उ०—पृथु कटि कल किंकिनि की बाजनि । विलुलित बर कबरी की राजनि ।—नंददास० ।
बाजरा—संज्ञा पुं० [सं० वर्जरी] एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालों के दानों की गिनती मोटे अन्नों में होती है । बाजड़ा ।
बाजा—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] कोई ऐसा यंत्र जो स्वर (विशेषत राग रागिनी) उत्पन्न करने अथवा ताल देने के लिये बजाया जाता हो । बजाने का यंत्र । वाद्य ।
यौ०—बाजा गाजा=अनेक प्रकार के बजते हुए बाजों का समूह ।
बाजाब्ता—क्रि० वि० [फा०] जाब्ते के साथ । नियमानुकूल ।
वि० जो नियमानुसार हो ।
बाजार—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की दूकानें हों । वह स्थान जहाँ सब तरह की चीजों की, अथवा एक ही तरह की चीज की बहुत सी दूकानें हों ।
मुहा०—बाजार करना=चीजें खरीदने के लिये बाजार जाना । बाजार गर्म होना=(१) बाजार में चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना । (२) खूब

काम चलना। बाज़ार तेज होना=(१) बाजार में किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना। (२) किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। (३) काम जोरों पर होना। खूब काम चलना। बाजार उतरना या मदा होना=(१) बाजार में किसी चीज की माँग कम होना। (२) दाम घटना। (३) कारबार कम चलना।

२. वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय या अवसर पर सब तरह की दूकानें लगती हों। हाट। पैंठ।

बाजारी—वि० [फा०] १ बाजार सबधी। बाजार का। २ मामूली। साधारण। ३ अशिष्ट।

बाजारू—वि० दे० "बाजारी"।

बाजि(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १ घोड़ा। २ बाण। ३ पक्षी। ४ अड़ूसा। वि० चलनेवाला।

बाजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ऐसी शर्त जिसमें हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो। शर्त। दावँ। बदान।

मुहा०—बाजी मारना=बाजी जीतना। दावँ जीतना। बाजी ले जाना=किसी बात में आगे बढ़ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।

२ आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त या दावँ लगा हो।

सज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

बाजीगर—संज्ञा पुं० [फा०] जादूगर।

बाजु—अव्य० [सं० वर्जन, मि० फा० बाज] १ बिना। बगैर। उ०—नख शिख सुभग श्याम घन तन को दरसन हरत बिथाजु। सूरदास मन रहत कौन बिधि बदन बिलोकनि बाजु।—सूर०।

बाजू—सज्ञा पुं० [फा० बाजू] १ भुजा। बाहु। बाँह। २ बाजूबंद नाम का गहना। ३ सेना का किसी ओर का एक पक्ष। ४ वह जो हर काम में बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५ पक्षी का डैना।

बाजूबद—सज्ञा पुं० [फा०] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। बाजू। बिजायठ। भुजबद।

बाजूबीर†—सज्ञा पुं० दे० "बाजूबद"।

बाझ(पु)—अव्य० [सं० वर्ज] बगैर। बिना।

बाझन(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० बझना=फँसना] १ बझने या फँसने का भाव। फँसावट। २. उलझन। पेंच। ३ झझट। बखेड़ा।

बाझना—क्रि० अ० दे० "बझना"।

बाझु(पु)—अव्य० दे० "बाझ"। उ०—जेहि बाझु न जीया जाई। जौ मिलै तौ घाल अघाई।—कबीर०।

बाट—सज्ञा पुं० [सं० वाट] मार्ग। रास्ता।

मुहा०—बाट करना=रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट जोहना या देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। बाट पड़ना=तग करना। पीछे पड़ना। डाका पड़ना। उ०—तरनिउँ मुनिघरनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥—मानस। ब ट पारना=डाका मारना।

सज्ञा पुं० [सं० वटक] १ बटखरा। २ पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाय। बट्टा। लोढ़ा।

बाटकी(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "बटलोई"।

बाटना—क्रि० स० [हिं० बट्टा या बाट से ना० धा०] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना। उ०—कुच विष बाटि लगाय कपट करि बालघातिनी परम सुहाई।—सूर०।

क्रि० स० दे० "बटना"।

बाटिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाग। फुलवारी। २ वह गध जिसमें कुसुम और गुच्छ गध मिला हो।

बाटी—सज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १ गोली। पिंड। २ अगारों या उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की रोटी। अँगाकड़ी। लिट्टी। उ०—दूध बरा उत्तम दधि बाटी दाल मसूरी की रुचिकारी।—सूर०।

सज्ञा स्त्री० [सं० वर्तुल, मि० हिं० बटुआ] चौड़ा और कम गहरा कटोरा।

बाड़(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।

बाड़व—संज्ञा पुं० [स०] बडवाग्नि। वि० बडवा सबधी।

बाड़वानल—सज्ञा पुं० दे० "बडवानल"।

बाड़ा—सज्ञा पुं० [स० वाट] १ चारों ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २ पशुशाला।

बाड़ी†—सज्ञा स्त्री० [सं० वारी] वाटिका।

बाढ़—सज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ना] १ बढ़ाव। वृद्धि। अधिकता। २ अधिक वर्षा आदि के कारण नदी या जलाशय के जल का बहुत अधिक मान में बढ़ना। जलप्लावन। सैलाब। ३ व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। ४ बदूक या तोप आदि का लगातार छूटना। ५. एक प्रकार का गहना।

मुहा०—बाढ़ दगना=तोप का लगातार छूटना।

सज्ञा स्त्री० [सं० वाट] [हिं० बारी] तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की धार। सान।

बाढ़ना(पु)†—क्रि० अ० दे० "बढ़ना"।

बाढ़ि, बाढ़ी(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।

बाढ़ीवान—वि० [हिं० बाढ़+वान] शस्त्रों आदि पर बाढ या सान रखनेवाला।

बाण—सज्ञा पुं० [सं०] १ तीर। सायक। शर। २. गाय का थन। ३ आग। ४. निशाना। लक्ष्य। ५ पाँच की सख्या। ६ शर का अगला भाग।

बाणासुर—संज्ञा पुं० [सं०] राजा बलि के सौ पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु था।

बाणिज्य—सज्ञा पुं० [स०] व्यापार। रोजगार। सौदागरी।

बात—सज्ञा स्त्री० [स० वार्ता] १. सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। वाणी।

मुहा०—बात उठाना=(१) कठोर वचन सहना। (२) बात मानना। बात उलटना=(१) कहे हुए वचन के उत्तर में उसके विरुद्ध बात कहना। (२) एक बार कुछ कहकर फिर दूसरी बार कुछ और कहना। बात कहते=तुरंत। झट। फौरन। बात काटना=(१) किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। (२) कथन का खडन करना। बात की बात में=झट। फौरन। तुरंत। बात खाली जाना=प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। बात गढ़ना=झूठ बात कहना। मिथ्या प्रसग की उद्भावना करना। उ०—झूठै कहत स्याम अँग सुंदर बातैं गढत बनाया।—सूर०। बात टलना=कथन का अन्यथा होना। बात टालना=(१) सुनी अनसुनी करना। (२) कही हुई बात पर न चलना। बात न पूछना=कुछ भी कदर न करना। (किसी की) बात पर जाना=(१) बात का खयाल करना। बात पर ध्यान देना। (२) कहने पर भरोसा करना। बात पी जाना=(१) बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। सुनी अनसुनी करना। (२) अनुचित या कठोर वचन सुनकर भी चुप हो रहना। जाने देना। बात पूछना=(१) खोज रखना। खबर लेना। (२) कदर करना। बात बढ़ना=बात

का विवाद के रूप में हो जाना। झगड़ा होना। बात बढ़ना=विवाद करना। झगड़ा करना। बातें बनाना=(१) झूठमूठ इधर उधर की बातें कहना। (२) बहाना करना। (३) खुशामद करना। बातों में उड़ाना=(१) (किसी विषय को) हँसी में टालना। (२) टालमटूल करना। बातों में लगाना=बातें कहकर उनमें लीन रखना।

२ चर्चा। जिक्र। प्रसंग।

मुहा०—बात उठाना=चर्चा चलाना। जिक्र करना। उ०—अब समझी मैं बात सबन की झूठे ही यह बात उठावति। —सूर०। बात चलना या छिड़ना=प्रसंग आना। चर्चा छिड़ना। बात निकालना=बात चलाना। बात पड़ना=चर्चा छिड़ना।

३ खबर। अफवाह। किंवदंती। प्रवाद।

मुहा०—बात उड़ना=चारों ओर चर्चा फैलना। उ०—झूठी ही यह बात उड़ी है राधा कान्ह कहत नर नारी। —सूर०। बात बढ़ना=चारों ओर चर्चा फैलना। उ०—जो हम सुनति रही सो नाहीं। ऐसी ही यह बात बढ़ानी। —सूर०।

४ माजरा। हाल। व्यवस्था।

मुहा०—बात का बतंगड़ करना=साधारण विषय या छोटे से मामले को व्यर्थ बहुत पेचीला या भारी बना देना। बात न पूछना=दशा पर ध्यान न देना। परवा न रखना। उ०—मीन वियोग न सहि सकै नीर न पूछै बात। —सूर०। बात बढ़ना=किसी प्रसंग या घटना का घोर रूप धारण करना। बात बनना=(१) काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। (२) अच्छी परिस्थिति होना। बोलबाला होना। बात बनाना या सँवारना=काम बनाना। कार्य सिद्ध करना। बात बात पर या बात बात में=प्रत्येक प्रसंग पर। हर काम में। बात बिगड़ना=काम चौपट होना। मामला खराब होना। विफलता होना।

५ घटित होनेवाली अवस्था। प्राप्त संयोग। परिस्थिति। ६ संदेश। सँदेसा। पैगाम। उ०—ऊधो हरि सों कहियो बात। —सूर०। ७ वार्तालाप। गपशप। वाग्विलास।

मुहा०—बातों बातों में=बातचीत करते हुए। कथोपकथन के बीच में।

८ कोई मामला तै करने के लिये उसके संबंध में चर्चा।

मुहा०—बात ठहरना=(१) विवाह संबंध स्थिर होना। (२) किसी प्रकार का निश्चय होना।

९ फँसाने या धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार।

मुहा०—बातों में आना या जाना=कथन या व्यवहार से धोखा खाना।

१०. झूठ या बनावटी कथन। मिस। बहाना। ११ वचन। प्रतिज्ञा। वादा।

मुहा०—बात का धनी, पक्का या पूरा=प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला। दृढ़प्रतिज्ञ। बात पक्की करना=(१) दृढ़ निश्चय करना। (२) प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना=वचन पूरा करना। प्रतिज्ञा का पालन करना। बात हारना=वचन देना।

१२ साख। प्रतीति। विश्वास।

मुहा०—(किसी की) बात जाना=बात का प्रमाण न रहना (लोगों को)। एतबार न रह जाना। बात खोना=साख बिगाड़ना। बात बनना=साख रहना। विश्वास रहना।

१३. मानमर्यादा। प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—बात खोना=प्रतिष्ठा नष्ट करना। इज्जत गँवाना। बात जाना=इज्जत न रह जाना। बात बनना=प्रतिष्ठा प्राप्त होना।

१४. अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध में कथन या वाक्य। १५. आदेश। उपदेश। सीख। नसीहत। १६ रहस्य। भेद। १७ तारीफ की बात। प्रशंसा का विषय। १८ चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। १९ गूढ़ अर्थ। अभिप्राय। मानी।

मुहा०—बात पाना=छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। गूढ़ार्थ जान जाना।

२० गुण या विशेषता। खूबी। २१ ढंग। ढब। तौर। २२. प्रश्न। सवाल। समस्या। २३ अभिप्राय। तात्पर्य। आशय। २४ कामना। इच्छा। चाह। २५ कथन का सार। तत्व। मर्म। २६ काम। कार्य। आचरण। व्यवहार। २७ संबंध। लगाव। तअल्लुक। २८. स्वभाव। गुण। प्रकृति। लक्षण। २९. वस्तु। पदार्थ। चीज। विषय। उ०—कितक बात यह धनुष रुद्र को सकल विश्व कर लैहौं। आज्ञा पाय देव रघुपति को छिनक मांझ हठि गैहौं।—सूर०। ३०. मूल्य। दाम। मोल। ३१. उचित पथ या उपाय। कर्तव्य।

संज्ञा पुं० दे० "बात"।

बातचीत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात+चिंतन] दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन। वार्तालाप।

बातमीज—वि० [फा० बा+अ० तमीज] शिष्ट। तमीजदार। उ०—कितनी बातमीज बाशऊर हसीन लड़की थी!—कायाकल्प।

बातफरोश—संज्ञा पुं० [हिं० बात+फा० फरोश] १ बात बनानेवाला। २. झूठमूठ इधर उधर की बातें कहनेवाला।

बाती†—संज्ञा स्त्री० दे० "बत्ती"।

बातुल—वि० [सं० वातुल] पागल। सनकी। उ०—बातुल भूत विबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन विचारे।—मानस।

बातूनिया, बातूनी—वि० [हिं० बात+ऊनी (प्रत्य०)] बहुत बातें करनेवाला। बकवादी।

बाथ†—संज्ञा पुं० [?] गोद। अंक।

संज्ञा पुं० [अँ०] स्नान।

यौ०—बाथरूम=शौच, स्नान आदि का कमरा।

बाद—संज्ञा पुं० [सं० वाद] १. बहस। तर्क। २ विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३ झकझक। तूलकलामी। ४ शर्त। बाजी।

मुहा०—बाद मेलना=बाजी लगाना।

अव्य० [सं० वाद] व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

अव्य० [अ०] अनंतर। पीछे।

वि० १ अलग किया या छोड़ा हुआ। २ दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय। ३ अतिरिक्त। सिवाय।

संज्ञा पुं० [फा०] बात। हवा।

बादना—क्रि० अ० [हिं० 'बाद' से ना० धा०] १ बकवाद करना। तर्कवितर्क करना। उ०—बादत बड़े सूर की नाई अबहिं लेत हौ प्रान तुम्हारे।—सूर०।

बादबान—संज्ञा पुं० [फा०] पाल।

बादर†(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वारिद] बादल। मेघ।

वि० [देश०] आनंदित। प्रसन्न।

बादरायण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास जिन्होंने वेदांतसूत्रों की रचना की है।

बादरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।

बादल—संज्ञा पुं० [सं० वारिद, हिं० बादर] पृथ्वी पर के जल से उठी हुई

वह भाप जो घनी होकर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूँदों के रूप में गिरती है। मेघ। घन।

मुहा०—बादल उठना या चढ़ना = बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना = मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल घिरना = मेघों का चारों ओर छाना। बादल छँटना = मेघों का खंड खंड होकर हट जाना।

बादला—संज्ञा पुं० [हिं० पतला ?] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार। कामदानी का तार।

बादशाह—संज्ञा पुं० [फा०] १ राजा। शासक। २ सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। ३ स्वतंत्र। मनमाना करनेवाला। ४ शतरंज का एक मुहरा। ५ ताश का एक पत्ता।

बादशाहत—संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। शासन।

बादशाहपसंद—संज्ञा पुं० [फा०] खश खशी रंग। दिलबहार हलका आसमानी रंग।

बादशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ राज्य। राज्याधिकार। २ शासन। हुकूमत। ३ मनमाना व्यवहार।

वि० बादशाह संबंधी।

बादहवाई—क्रि० वि० [फा० बाद+अ० हवा] योंही। व्यर्थ। फजूल।

वि० बे सिर पैर का। ऊटपटाँग।

बादाम—संज्ञा पुं० [फा०] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते हैं। उसका फल।

बादामी—वि० [फा० बादाम+हिं० ई (प्रत्य०)] १ बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिए लाल। २ बादाम के आकार का। अंडाकार।

संज्ञा पुं० १ एक प्रकार की छोटी डिबिया। २ किलकिला पक्षी। ३ बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि—अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। फजूल। उ०—साँवरी सूरति ही में बसाव री बावरी बीतत बादि बिभावरी। —रससाराश।

बादित⑤—[सं० वादन] बजाया हुआ।

बादी—वि० [फा०] १ वायु संबंधी। २ वायुविकार संबंधी। वायु या वात का विकार उत्पन्न करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० वातविकार। वायु का दोष।

बादीगर—संज्ञा पुं० दे० "बाजीगर"।

बादुर—संज्ञा पुं० [देश] चमगादड़।

बाध—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० बाधिका] १ बाधा। रुकावट। अड़चन। २ पीड़ा। कष्ट। ३ कठिनता। मुश्किल। ४ अर्थ की असंगति। व्याघात। ५ वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो (न्याय)।

†संज्ञा पुं० [सं० वर्ध्र] मूँज की रस्सी।

बाधक—वि० [सं०] १ रुकावट डालनेवाला। विघ्नकर्त्ता। २ दुःखदायी।

बाधकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाधा।

बाधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बाधित, बाधनीय, बाध्य] १ रुकावट या विघ्न डालना। २ कष्ट देना।

बाधना—क्रि० स० [सं० बाधन] बाधा डालना। रुकावट डालना। रोकना।

बाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विघ्न। रुकावट। रोक। अड़चन। २ संकट। कष्ट। ३ भय। डर। आशंका। उ०—आजु ही प्रात इक चरित देख्यौ नयो तबहि ते मोहिं यह भई बाधा। —सूर०।

बाधित—वि० [सं०] १ जो रोका गया हो। बाधायुक्त। २ जिसके साधन में रुकावट पड़ी हो। ३. जो तर्क से ठीक न हो। असंगत। ४ ग्रस्त। गृहीत। ५ दे० "बाधा"।

बाध्य—वि० [सं०] [भा० बाध्यता] १ जो रोका या दबाया जा सके। २ मजबूर होनेवाला।

बान—संज्ञा पुं० [सं० बाण] १ बाण। तीर। २ एक प्रकार की आतशबाजी। ३ समुद्र या नदी की ऊँची लहर।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १ बनावट। सजधज। वेशविन्यास। उ०—सकट की बान बनायो ऐसो। सुंदर अर्ध चंद होई जैसो। —नंददास०। २ आदत। अभ्यास।

संज्ञा पुं० [सं० वर्ण] आब। कांति। उ०—कनकहि बान चढ़ै जिमि दाहे। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहे। —मानस।

संज्ञा पुं० [सं० बाण] बाना (हथियार)।

संज्ञा पुं० [?] गोला।

बानइत—वि० दे० "बानैत"।

वि० [हिं० बाण] १. बाण चलानेवाला। उ०—रोपे रन रावन बुलाए बीर बानइत जानत जे रीति सब सुजुग समाज की। —कविता०। २ योद्धा। वीर। बहादुर। उ०—दीनता दारिद दलै को कृपावारिधि बाज। दानि दसरथ राय के तुम बानइत-सिरताज। —विनय०।

बानक—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्णक या हिं० बनाना] वेश। भेस। सजधज। मुद्रा।

बानगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बयाना] नमूना।

बानना⑤—क्रि० स० दे० १ "बनाना"। २ किसी बात का बाना ग्रहण करना। ३. ठानना। उपक्रम करना।

बानर—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"।

बानरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वानरेंद्र] सुग्रीव।

बाना—संज्ञा पुं० [हिं० बनाना, सं० वर्णक] १ पहनावा। पोशाक। वेशविन्यास। भेस। उ०—विविध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु नाना। —मानस। २ रीति। चाल। स्वभाव। उ०—शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक जोग जाप नहिं आऊँ हो। भक्तवत्सल बानो है मेरो बिरदहिं कहा लजाऊँ हो। —सूर०।

संज्ञा पुं० [सं० बाण] १ तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। २ साँग या भाले के आकार का एक हथियार। उ०—बाने फहराने घहराने घंटा गजन के नाहीं ठहराने राव राने देस देस के। —भूषण०।

संज्ञा पुं० [सं० वयन = बुनना] १ बुनावट। बुनन। बुनाई। २ कपड़े की बुनावट जो ताने में की जाती है। ३ कपड़े की बुनावट में वह तागा जो आड़े बल ताने में जाता है। भरनी। ४ महीन सूत जिससे पतंग उड़ाई जाती है।

क्रि० स० [सं० व्यापन] १ किसी सिकुड़ने और फैलनेवाले छेद को फैलाना, जैसे, मुँह बाना। उ०—व्यास नारि तबही मुख बायो। तब तनु तजि मुख माहिं समायो। —सूर०। २ बालों में कंघी करना।

मुहा०—(किसी वस्तु के लिये) मुँह बाना = लेने की इच्छा करना।

बानात—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का मोटा, चिकना, ऊनी कपड़ा। नतात।

बानावरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० बान+आवरी (फा० प्रत्य०)] बाण चलाने की विद्या।

बानि—संज्ञा स्त्री० [हिं० बान] १ बनावट। सजधज। उ०—बा पटपीत की फहरानि। कर धर चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरति वह बानि।—सूर०। २ टेव। आदत। उ०—पहले ही इन हनी पूतना बाँधे बलि सो दानि। सूपनखा ताड़का सँहारी श्याम सहज यह बानि।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण] चमक। आभा।

संज्ञा स्त्री० [सं० वाणी] वाणी। वचन।

बानिक—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्णक या हिं० बनना] वेश। भेस। सजधज। बनाव-सिंगार। मुद्रा।

बानिन, बानिनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया] बनिए की स्त्री। उ०—बानिनि चली सेंदुर दिए माँगा। कयथिनि चली समाईं न आँगा।—पदमावत।

बानिया—संज्ञा पुं० दे० "बनिया"।

बानी—संज्ञा स्त्री० [सं० वाणी] १. वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २ मनौती। प्रतिज्ञा। ३ सरस्वती। ४ साधु महात्मा का उपदेश, जैसे, कबीर की बानी। ५ बाना नामक हथियार। ६ गोला।

संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] बनिया। उ०—हाइ फँस्यो केहि हेत कहाँ तें धौं आइ बस्यो यह बावरो बानी।—शृंगार०।

संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण] दमक। आभा। उ०—उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी। चमकहिं मच्छ बीजु की बानी।—पदमावत।

संज्ञा पुं० [अ०] १ चलानेवाला। प्रवर्तक। २ बुनियाद डालनेवाला। जड़ जमानेवाला।

संज्ञा स्त्री० दे० "वाणिज्य"।

बानीर—संज्ञा पुं० दे० "वानीर"।

बानैत—संज्ञा पुं० [हिं० बाना+ऐत (प्रत्य०)] १ बाना फेरनेवाला। २ बाण चलानेवाला। तीरंदाज। ३ योद्धा। सैनिक। वीर। उ०—जहाँ बरन बादर बानैत अरु दामिनि करि करिवार। उड़त धूरि धुरवा धुर हींसत सूल सकल जलधार।—सूर०।

संज्ञा पुं० [हिं० बाना] बाना धारण करनेवाला।

बाप—संज्ञा पुं० [सं० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।

मुहा०—बाप दादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप माँ=रक्षक। पालन करनेवाला।

बापिका(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका"।

बापी—संज्ञा स्त्री० [सं० वापी] बावली। वापिका।

बापुरा—वि० [सं० बर्बर=तुच्छ] [स्त्री० बापुरी] १ जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। उ०—कहाँ तुम त्रिभुवनपति गोपाल। कहाँ बापुरो नर शिशुपाल।—सूर०। २ दीन। बेचारा।

बापू—संज्ञा पुं० १ दे० "बाप"। २ दे० "बाबू"। ३ महात्मा मोहनदास कर्मचंद जी गांधी के लिये प्रयुक्त श्रद्धाद्योतक शब्द।

बाफ†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाप"।

बाफता—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाब—संज्ञा पुं० [अ०] परिच्छेद। अध्याय।

बाबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संबंध। २ विषय।

बाबा—संज्ञा पुं० [तु०] १ पिता। उ०—बैठे सग बाबा के चारों भइया जेंवन लागे। दशरथ राय आपु जेंवत हैं अति आनँदरस पागे।—सूर०। २ पितामह। दादा। ३ साधु सन्यासियों के लिये आदरसूचक शब्द। ४ बूढ़ा पुरुष।

संज्ञा पुं० [अं०] लड़कों के लिये प्यार का शब्द।

बाबी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा] १ साधु स्त्री। सन्यासिन। २ लड़कियों के लिये प्यार का शब्द।

बाबुल—संज्ञा पुं० [हिं० बाबू] बाबू। पिता।

संज्ञा पुं० पश्चिमी एशिया का एक बहुत प्रसिद्ध प्राचीन नगर। बैबिलोन।

बाबू—संज्ञा पुं० [हिं० बाबा] १ राजा के नीचे उनके बंधुबांधवों या अन्य क्षत्रिय जमींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द। २ एक आदरसूचक शब्द। भलामानुस। †३ पिता का संबोधन। ४ क्लार्क। लिपिक।

बाबूना—संज्ञा पुं० [फा०] एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।

बाभन—संज्ञा पुं० दे० १. "ब्राह्मण"। २ दे० "भूमिहार"।

बाम—वि० दे० "वाम"।

संज्ञा पुं० [फा०] १ अटारी। कोठा। २ मकान के ऊपर की छत।

संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"।

बामा—संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"।

बायँ—वि० [सं० वाम] १ बायाँ। २ चूका हुआ। दाँव या लक्ष्य पर न बैठा हुआ।

मुहा०—बायँ देना=(१) बचा जाना। छोड़ना (२) तरह देना। कुछ ध्यान न देना।

३. फेरा देना। चक्कर देना।

बाय†(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] १ वायु। हवा। २ बाई। वात का कोप।

संज्ञा स्त्री० [सं० वापी] बावली। बेहर।

बायक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वाचक] १ कहनेवाला। बतलानेवाला। २ पढ़नेवाला। बाँचनेवाला। ३ दूत।

बायकाट—संज्ञा पुं० [अं०] सामाजिक या व्यावसायिक संबंधविच्छेद। सामाजिक या व्यावसायिक बहिष्कार। नाता तोड़ना।

बायन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वायन] १ वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष्य में इष्टमित्रों के यहाँ भेजते हैं। २ भेंट।

संज्ञा पुं० [अ० बयाना] बयाना। अगाऊ। पेशगी।

मुहा०—बायन देना=छेड़छाड़ करना।

बायबिडंग—संज्ञा पुं० [सं० विडंग] एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं।

बायवी—वि० [सं० वायवीय] १. वायव्य कोण या दिशा से आया हुआ। वायव्य दिशा का या उससे संबद्ध। २ बाहरी। अपरिचित। अजनबी। ३ नया आया हुआ।

बायलर—संज्ञा पुं० [अं०] भाप से चलने-वाले अंजन में लोहे आदि का बना हुआ वह कोठा जिसमें भाप तैयार करने के लिये पानी गरम किया जाता है।

बायला†—वि० [सं० वात] वायु या बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला। वातकारक।

बायस—संज्ञा पुं० [सं० वायस] कौआ।

बायस्कोप—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक यंत्र जिससे परदे पर चलते फिरते चित्र दिखाए जाते हैं। २ सिनेमा। चलचित्र।

बायाँ—वि० [सं० वाम] [स्त्री० बाई] १ किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख खड़े होने पर उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का उल्टा।

मुहा०—बायाँ देना=(१) किनारे से निकल जाना। बचा जाना। (२) जानबूझकर छोड़ना।

२ उलटा। ३ विरुद्ध। खिलाफ। अहित में प्रवृत्त।

संज्ञा पुं० वह तबला जो बाएँ हाथ से बजाया जाता है।

बायें—क्रि० वि० [हिं० बायाँ] १ बाई ओर। २. विपरीत। विरुद्ध।

मुहा०—बायें होना=(१) विरुद्ध होना। (२) अप्रसन्न होना।

बारंबार—क्रि० वि० [सं० वारंवार] बार बार। पुन पुन:। लगातार।

बार—संज्ञा पुं० [सं० वार] १. द्वार। दरवाजा। उ०—फिरि न बिसारी बिसरिहै किएँ कोरि उपचार। बीर सुनत कत बाँसुरी बार बार कढ़ि बार।—रससाराश। २ आश्रय स्थान। ठिकाना। उ०—रहा समाइ रूप वह नाऊँ। और न मिलै बार जहँ जाऊँ।—पदमावत। ३ दरबार।

संज्ञा पुं०—[सं० बाल्य] बाल्यावस्था। बचपन। लड़कपन। उ०—जायो कुल मगन बधावनो बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनक को। बारे तें ललात बिललात द्वार द्वार दीन जानत हौं चारि फल चारि ही चनक को।—कविता०।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काल। समय। उ०—इक भीजैं चहलैं परैं, बूड़ैं, बहैं हजार। किते न औगुन जग करै वै नै चढ़ती बार।—बिहारी०। २ दिन, जैसे—सोमवार। बुधवार। ३. देर। बेर। बिलंब। उ०—अबही और की और होत कछु लागै बारा। तातें मैं पाती लिखी तुम प्रान अधारा।—सूर०। ४ दफा। मरतबा। उ०—जहँ लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग। बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग।—मानस।

मुहा०—बार बार=फिर फिर। उ०—तुलसी मुदित मन पुर नर नारि जेते बार बार हेरैं मुख औध-मृगराज के।—कविता०।

संज्ञा पुं० [सं० वाट] १ घेरा या रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो। बाढ़। २ किनारा। छोर। ३ धार। बाढ़।

†संज्ञा पुं० १. दे० "बाल"। उ०—भरत नेह रूखे हिए हरत बिरह की हार। बरत नयन सीरे करत बर तरुनी के बार।—रससाराश। २ दे० "बाढ़"।

संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० भार] बोझ।

†वि० दे० "बाल" और "बाला"।

बारगह—संज्ञा स्त्री० [फा० बारगाह] १. ड्योढ़ी। २. डेरा। खेमा। तंबू। उ०—चित्तौर सौंप बारगह तानी। जहँ लग सुना सेन सुलतानी।—पदमावत।

बारजा—संज्ञा पुं० [हिं० बार=द्वार] १ मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाट कर बढ़ाया हुआ बरामदा। २ कोठा। अटारी। ३ बरामदा। ४ कमरे के आगे का छोटा दालान।

बारताⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "वार्ता"।

बारतियⓅसंज्ञा स्त्री० दे० "वारस्त्री"।

बारदाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ व्यापार की चीजों के रखने का बरतन या बेठन। २ फौज के खाने पीने का सामान। रसद। ३ अगड़खगड़, लोहालक्कड़ आदि का टूटाफूटा सामान।

बारदाराⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वार+दारा] वेश्या। उ०—सजे चूनरी नील नच्चति चद्राननी बारदारा। करै चंद्र क्रीडा मनो संग लै सर्वरी सर्व तारा।—छंदार्णव।

बारनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "वारण"।

बारना—क्रि० अ० [सं० वारण] निवारण करना। मना करना। रोकना।

क्रि० स० [हिं० बरना] बालना। जलाना। उ०—करि शृंगार सघन कुंजन में निसि दिन करत बिहार। नीराजन बहुबिधि बारति हैं ललितादिक ब्रजनार।—सूर०।

क्रि० स० दे० "वारना"।

बारवधूⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वारवधू] वेश्या। उ०—कहुँ गौदान करत कहुँ देते कहुँ कछु सुनत पुरान। कहुँ नर्तत सब बारवधू औ कहुँ गँधरब गुन गान।—सूर०।

बारबरदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो सामान ढोता हो। बोझ ढोनेवाला।

बारबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सामान ढोने का काम या मजदूरी।

बारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारमुख्या] वेश्या।

बारह—वि० [सं० द्वादश] [वि० बारहवाँ] जो सख्या में दश और दो हो।

मुहा०—बारह बाट करना या घालना=तितर बितर या छिन्न भिन्न करना। इधर उधर कर देना। बारह बाट जाना या होना=(१) तितर बितर होना। (२) नष्ट भ्रष्ट होना।

संज्ञा पुं० बारह की सख्या या अंक। १२।

बारहखड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वादश+अक्षरी] वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को, मात्रा के रूप में लगाकर, बोलते या लिखते हैं।

बारहदरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह+फा० दर] १ चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार या खंभे हों। २ खुली हुई हवादार बैठक।

बारहबान—संज्ञा पुं० [सं० द्वादशवर्ण] एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।

बारहबाना—वि० [सं० द्वादश (आदित्य) +वर्ण] १ सूर्य के समान दमकवाला। २ खरा। चोखा (सोने के लिये)। उ०—सूरदास प्रभु हम हैं खोटी तुम तो बारह बाने हो। —सूर०। विशेष—दे० "बारहबानी"।

बारहबानी—वि० [सं० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वगण] १ सूर्य के समान दमकवाला। २ खरा। चोखा (सोने के लिये)। ३ निर्दोष। सच्चा। ४ पूरा। पूर्ण। पक्का।

संज्ञा स्त्री० सूर्य की सी चमक।

बारहमासा—संज्ञा पुं० [हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो।

बारहमासी—वि० [हिं० बारह+मास] १ सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदाबहार। सदाफल। २ बारहों महीने होनेवाला। उ०—कुबजा कान्ह दोउ मिलि खेलैं बारहमासी फाग। —सूर०।

बारहवफात—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुहम्मद साहब के जीवन के वे अंतिम बारह दिन जिनमें वे बीमार थे।

बारहसिंगा—संज्ञा पुं० [हिं० बारह+सींग] हिरन की जाति का एक पशु जिसके नर के सींगों में अनेक शाखाएँ होती हैं।

बारहवाँ—वि० [हिं० बारह] [स्त्री० बारहवीं] जो स्थान या क्रम में ग्यारहवें के बाद हो।

बारहों—वि० दे० "बारहवाँ"।

बारहा—क्रि० वि० [फा० बार] बार बार। कई बार। अक्सर।

बारहो—संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] १ बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही। २ किसी व्यक्ति के मरने के दिन से बारहवाँ दिन द्वादशाह।

बारा—वि० [सं० बाल] बालक। जो सयाना न हो। जिसकी बाल्यावस्था हो।

संज्ञा पुं० बालक। लड़का।

बारात—संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] दे० "बरात"।

बारादरी—संज्ञा स्त्री० दे० "बारहदरी"।

बारानी—वि० [फा०] बरसाती।

संज्ञा स्त्री० १ वह भूमि जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २ वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये बरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो।

बारिक—संज्ञा पुं० [अँ० बैरेक] फौजी अफसरों और सिपाहियों के रहने के बँगलों या मकानों की श्रेणी। छावनी।

बारिⓅ—वि० [सं० बालिका] लड़की। कुमारी। उ०—फिरी बारि वृषमान की लखि न निकेत सुजान। बदनचद दिनचद भो सीतभानु वृषभानु। —रससारांश।

बारिगरⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० बारी+गर] हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।

बारिचर—संज्ञा पुं० [सं० वारिचर] मछली। जलचर। उ०—रसबाहिर बसी करी बारि बारिचर रंग। फरफराति भुव पर परी थरथराति सब अंग। —रससारांश।

बारिजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वारिज] कमल।

बारिधर—संज्ञा पुं० [सं० वारिधर] १ बादल। बारिद। मेघ। उ०—हृदय हरिनख अति बिराजत छवि न बरनी जाइ। मनो बालक बारिधर नवचद लई छपाइ।—सूर०। २ एक वर्णवृत्त।

बारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वर्षा। वृष्टि। २ वर्षा ऋतु।

बारी—संज्ञा स्त्री० [सं० वार] १ किनारा। तट। २ छोर पर का भाग। हाशिया। ३ बगीचे, खेत आदि के चारों ओर रोकने के लिये बनाया हुआ घेरा। बाढ़। ४ बरतन के मुँह का घेरा। औंठ। ५ पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़।

संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] १. वह स्थान जहाँ पेड़ लगाए गए हों। बगीचा। २ मेंड़ आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ३ घर। मकान। ४ खिड़की। झरोखा। ५ जहाजों के ठहरने का स्थान। बंदरगाह।

संज्ञा पुं० हिंदुओं की एक जाति जो पत्तल, दोने बनाती और हिंदू घरों के अन्य छोटे काम करती है।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] आगे पीछे के सिलसिले के मुताबिक आनेवाला मौका। अवसर। पारी।

मुहा०—बारी बारी से=कालक्रम में एक के पीछे एक की रीति से। बारी बँधना=आगे पीछे अलग अलग नियत समय होना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बार=छोटा] १. लड़की। कन्या। वह जो सयानी न हो। उ०—सो सोहति अस बैमकुमारी। हिम गिरिवर जनु हिमवत बारी।—नददास०। २ थोड़े वयस की स्त्री। नवयौवना।

†संज्ञा स्त्री० दे० "बाली"।

बारीक—वि० [फा०] [संज्ञा बारीकी] १ महीन। पतला। २ बहुत छोटा। सूक्ष्म। ३ जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों। ४ जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। ५ जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ में न आवे।

बारीकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ महीनपन। पतलापन। २ गुण। विशेषता। खूबी।

बारू†—संज्ञा पुं० दे० "बालू" उ०—"नददास" प्रभु निधि न रुकति री वा बारू की मेंड़।—नददास०।

बारूद—संज्ञा स्त्री० [तु० बारूत] १ एक प्रकार का ज्वलनशील चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती है। दारू। २ एक प्रकार का धान।

मुहा०—गोली बारूद = लड़ाई की सामग्री।

बारूदखाना—संज्ञा पुं० [हिं० बारूद+खाना] वह स्थान जहाँ गोले और बारूद आदि रहती है।

बारे—क्रि० वि० [फा०] अत को।

बारे में—अव्य० [फा० बार +हिं० में] प्रसग में। विषय में। सबध में।

बारो, बारौⓅ—संज्ञा पुं० [सं० बाल या बालक] लड़का। उ०—जहाँ यह जाइ तुम्हारो बारो। कवन भवन जहँ रहै अँध्यारो।—नददास०।

बारोठा—संज्ञा पुं० [सं० द्वार] ब्याह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर होती है। द्वारचार।

बारोमीटर—संज्ञा पुं० दे० "बैरोमीटर।"

बाल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० बाला] १ बालक। लड़का। २ नासमझ आदमी। ३ किसी पशु का बच्चा।

Ⓟसंज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।

वि० १ जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो। २ जिसे उगे या निकले हुए थोड़ा ही समय हुआ हो।

संज्ञा पुं० [सं०] सूत की सी वह वस्तु जो जतुओं के शरीर से निकलकर सिर और चमड़े के ऊपर बढ़ती रहती है और प्राय इतनी अधिक होती है कि उनसे चमड़ा ढक जाता है। लोम। रोम। केश।

मुहा०—बाल बाँका न होना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। बाल न बाँकना=बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसकना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। उ०—नित उठि यही मनावति देवन न्हात खसै जनि बार। —सूर०। (किसी काम में) बाल पकाना=(कोई काम करते करते) बुड्ढा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल बाल बचना=कोई आपत्ति पड़ने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [?] कुछ अनाजों के पौधों के डठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं।

संज्ञा पुं० [अँ०] एक प्रकार का विलायती नाच।

बालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लड़का। पुत्र। २ थोड़ी उम्र का बच्चा। शिशु।

३ अनजान आदमी। ४ हाथी या घोड़े का बच्चा।
बालकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़कपन।
बालकताई—संज्ञा स्त्री० [सं० बालकता+हिं० ई (प्रत्य०)] १ बाल्यावस्था। २ नासमझी।
बालकपन—संज्ञा पुं० [सं० बालक+हिं० पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २ लड़कपन। नासमझी।
बालकृष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] बाल्यावस्था के कृष्ण।
बालखिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्मा के रोएँ से उत्पन्न साठ हजार ऋषियों का एक समूह जिसका प्रत्येक ऋषि डील डौल में अँगूठे के बराबर है। ये सब के सब बड़े भारी तपस्वी और ऊर्ध्वरेता हैं।
बालखोरा—संज्ञा पुं० [फा०] सिर के बाल झड़ने का रोग।
बालगोविंद—संज्ञा पुं० दे० "बालकृष्ण"।
बालग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के प्राणघातक नौ ग्रह।
बालचर—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों को कार्यपटुता, चारित्र्य और लोकसेवा की शिक्षा देनेवाली संस्था का सदस्य।
बालचर्य—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुओं और बालकों की सेवा।
बालचर्या—संज्ञा स्त्री० दे० "बालचर्य"।
बालछड़—संज्ञा स्त्री० [देश०] जटामासी।
बालटी—संज्ञा स्त्री० [अँ० बकेट] एक प्रकार की डोलची जिसमें उठाने के लिये एक दस्ता रहता है।
बालतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के लालन पालन आदि की विद्या। कौमार-भृत्य। दायागिरी।
बालतोड़—संज्ञा पुं० [हिं० बाल+तोड़ना] बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।
बालधि—संज्ञा पुं० [सं०] दुम। पूँछ।
बालना—क्रि० स० [सं० ज्वलन] १ जलाना। २ रोशन करना। प्रज्वलित करना।
बालपन—संज्ञा पुं० [सं० बाल+पन (प्रत्य०)] १ बालक होने का भाव। २ लड़कपन।
बालबच्चे—संज्ञा पुं० [सं० बाल+हिं० बच्चा] लड़केवाले। संतान। औलाद।
बालविधवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई हो।
बालविवाह—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी अवस्था का विवाह।
बालबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालकों की सी बुद्धि। छोटी या थोड़ी अक्ल।
वि०—जिसकी बुद्धि बच्चों की सी हो। मंद बुद्धि।
बालबोध—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रारंभिक शिक्षा की पुस्तक।
वि०—जो बालकों की समझ में आसानी से आ जाय। सरल। सहज।
बाल ब्रह्मचारी—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो।
बालभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषत बालकृष्ण आदि की मूर्तियों के सामने प्रात काल रखा जाता है। २ जलपान। कलेवा। नाश्ता।
बालम—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] १ पति। स्वामी। २ प्रणयी। प्रेमी। जार।
बालमखीरा—संज्ञा पुं० [हिं० बालम+खीरा] एक प्रकार का बड़ा खीरा।
बालमुकुंद—संज्ञा पुं० [सं०] बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।
बाललीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालकों के खेल। बालकों की क्रीड़ा।
बालविधवा—वि० [सं०] दे० "बाल-विधवा"।
बालविधु—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।
बालसूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रात काल के उगते हुए सूर्य।
बाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जवान स्त्री। बारह तेरह वर्ष से सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २ पत्नी। भार्या। जोरू। ३. स्त्री। औरत। ४ दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ५ पुत्री। कन्या। ६ हाथ में पहनने का कड़ा। ७ कान में का गहना। ८ दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ९ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तीन रगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—श्याम को मात बोली रिसाई। गोपि कोई करी है ढिठाई।
वि० [फा०] जो ऊपर की ओर हो। ऊँचा।
मुहा०—बोलबाला रहना=सम्मान और आदर का सदा बढ़ा रहना।
वि० [हिं० बाल] जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निश्छल। सीधा। भोला।
यौ०—बाला भोला=बहुत ही सीधा सादा।
बालाई—संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।
वि० [फा०] १ ऊपरी। ऊपर का। २ वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।
बालाखाना—संज्ञा पुं० [फा०] कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।
बालापन—संज्ञा पुं० दे० "बालापन"।
बालाबर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का अँगरखा।
बालारोग—संज्ञा पुं० [सं० बाल=लोम+रोग] नहरुआ रोग।
बालार्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रात काल का सूर्य। २ कन्या राशि में स्थित सूर्य।
बालि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र के वीर्य से उत्पन्न किष्किंधा का वानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था। पंपा इसकी राजधानी थी।
बालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी लड़की। कन्या। २ पुत्री। बेटी।
बालिग—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो। जवान। प्राप्तवयस्क। नाबालिग का उलटा।
बालिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] तकिया।
वि० [सं०] अबोध। अज्ञान। नासमझ। मूर्ख।
बालिश्त—संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बाली—संज्ञा स्त्री० [सं० बालिका] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाल] जौ, गेहूँ आदि के पौधों की बाल।
संज्ञा पुं० दे० "बालि"।
बालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रेत। बालू।
बालू—संज्ञा पुं० [सं० बालुका] चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से बह आता है और नदियों के किनारों पर, अथवा ऊसर जमीन या रेगिस्तानों में पाया जाता है। रेणुका। रेत।
मुहा०—बालू की भीत=ऐसी वस्तु जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न हो।
बालूदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बालू+फा० दानी] एक प्रकार की झँझरीदार डिबिया।

जिसमें लोग बालू रखते हैं। इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं।

बालूसाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० बालू + शाही = अनुरूप] एक प्रकार की मिठाई।

बाल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाल का भाव। लड़कपन। बचपन। २ बालक होने की अवस्था।

वि० १. बालक का। २ बचपन का।

बाल्यावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राय सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।

बाव—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २ बाई। ३ अपान वायु। पाद।

बावड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "बावली"।

बावन—संज्ञा पुं० दे० "वामन"।

संज्ञा पुं० [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो की संख्या। ५२।

वि० पचास और दो।

मुहा०—बावन तोले पाव रत्ती = जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो। बिलकुल दुरुस्त। बावन वीर = बड़ा बहादुर और चालाक।

बावरⓟ†—वि० दे० "बावला"।

संज्ञा पुं० दे० "भामर"।

संज्ञा पुं० [फा०] यकीन। विश्वास।

बावरची—संज्ञा पुं० [फा०] भोजन पकानेवाला। रसोइया।

बावरचीखाना—संज्ञा पुं० [फा०] भोजन पकाने का स्थान। रसोईघर।

बावरा—वि० दे० "बावला"।

बावला—वि० [सं० वातुल, प्रा० वाउल] १ पागल। विक्षिप्त। सनकी। २ मूर्ख।

बावलापन—संज्ञा पुं० [हिं० बावला + पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। झक।

बावली—संज्ञा स्त्री० [सं० वाप + ड़ी या ली (प्रत्य०)] १. चौड़े मुँह का कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। २ छोटा गहरा तालाब।

बावाँⓟ†—वि० [सं० वाम] १ बाईं ओर का। २ प्रतिकूल। विरुद्ध।

बाशऊर—वि० [फा० बा + अ० शऊर] शऊरदार। व्यवहारनिपुण। गुणी। उ०—कितनी बातमीज, बाशऊर, हसीन लड़की थी। —कायाकल्प।

बाशिंदा—संज्ञा पुं० [फा०] निवासी।

बाष्प—संज्ञा पुं० [सं० वाष्प] १. भाप। २ लोहा। ३ अश्रु। आँसू।

बासंतिक—वि० [सं०] १ वसंत ऋतु संबंधी। २ वसंत ऋतु में होनेवाला।

बास—संज्ञा पुं० [सं० वास] १ रहने की क्रिया या भाव। निवास। २ रहने का स्थान। निवास स्थान। ३ एक छंद का नाम। ४ वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।

संज्ञा स्त्री० बू। गंध। महक।

संज्ञा स्त्री० [सं० वासना] वासना। इच्छा।

संज्ञा पुं० [सं० वसन] छोटा कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० वाशि] १. अग्नि। आग। २ एक प्रकार का वस्त्र। ३. तेज धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं।

बासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं० वासकसज्जा] दे० "वासकसज्जा"।

बासकसज्याⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० वासकसज्जा] दे० "वासकसज्जा"। उ०—छिन-छिन प्रीतम को मग जोहै। मुग्धा वासकसज्या सोहै। —नंददास०।

बासन—संज्ञा पुं० [सं० वासन] बरतन। भाँड़ा। उ०—यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई॥ —मानस।

बासना—संज्ञा स्त्री० १ दे० "वासना"। २ गंध। महक। बू। उ०—नासिक सबै बासना पाई। स्रवनहिं काह करत पहुनाई। —पद्मावत।

क्रि० स० [सं० वास] सुगंधित करना। महकाना। सुवासित करना।

बासमती—संज्ञा पुं० [हिं० बास = महक + मती (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान। इसका चावल सुगंध देता है।

बासर—संज्ञा पुं० [सं० वासर] १ दिन। २ सबेरा। प्रातःकाल। सुबह। ३ वह राग जो सबेरे गाया जाता है।

बासव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

बाससी—संज्ञा पुं० [सं० वासस्] कपड़ा।

बासा—संज्ञा पुं० [सं० वस] वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है।

संज्ञा पुं० दे० "बास"।

बासित—वि० [सं० वासित] गंधपूर्ण। वासित। उ०—तिनकी बासु बायु लै गयी। ता करि सब बन बासित भयी। —नंददास०।

बासी—वि० [सं० वास = गंध] १ देर का बना हुआ। जो ताजा न हो (खाद्य पदार्थ)। २. जो कुछ समय तक रखा रहा हो। ३ सूखा या कुम्हलाया हुआ।

मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना = (१) बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। (२) किसी बात का समय बिलकुल बीत जाने पर उसके संबंध में कोई वासना उत्पन्न होना।

बासुकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बास] सुगंधित फूलों की माला।

संज्ञा पुं० दे० "वासुकी"।

बासौंधी—संज्ञा स्त्री० दे० "बसौंधी"।

बाह—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाहना] १ बाहने की क्रिया या भाव। २ खेत की जोताई।

संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

बाहक—संज्ञा पुं० [सं० वाहक] १ सवार। २. वह जो कोई चीज ले जाता हो। ⓟ३ हाँकने या चलानेवाला।

बाहकीⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाहक + ई (प्रत्य०)] पालकी ले चलनेवाली स्त्री। कहारिन।

बाहना—क्रि० स० [सं० वहन] १ ढोना, लादना या चढ़ाकर ले आना। २ चलाना। फेंकना (हथियार)। ३ गाड़ी, घोड़े आदि को हाँकना। ४ धारण करना। लेना। पकड़ना। ५ बहना। प्रवाहित होना। ६ खेत जोतना। ७ बाल आदि कंघी की सहायता से एक तरफ करना।

बाहनीⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० वाहिनी] सेना।

बाहम—क्रि० वि० [फा०] आपस में।

बाहर—क्रि० वि० [सं० बाह्य] १ किसी निश्चित अथवा कल्पित सीमा या मर्यादा से हटकर, अलग या निकला हुआ। भीतर या अंदर का उलटा।

मुहा०—बाहर आना या होना = सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना = दूर करना। हटाना। बाहर बाहर = अलग या दूर से। बिना किसी को जताए।

२ किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में।

मुहा०—बाहर का = बेगाना। पराया। ३ प्रभाव, अधिकार या संबंध आदि से अलग। ४ बगैर। सिवा।

बाहरजामी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० बाह्य+यामी] ईश्वर के सगुण रूप—राम, कृष्ण इत्यादि।

बाहरी—वि० [हिं० बाहर+ई (प्रत्य०)] १ बाहर का। बाहरवाला। २ पराया। गैर। ३ जो आपस का न हो। अजनबी। ४ जो केवल बाहर से देखने भर को हो। ऊपरी।

बाहाँजोरी—क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोड़ना] भुजा से भुजा मिलाकर। हाथ से हाथ मिलाकर।

बाहिज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० बाह्यज] ऊपर से। देखने में। उ०—बाहिज नम्र देखि मोहि साईं। बिप्र पढाव पुत्र की नाईं।—मानस।

बाहिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।

बाहु—संज्ञा स्त्री० [सं० भुजा। बाँह।

बाहुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के सारथी बने थे। २ नकुल। ३ बाहु की पीड़ा। उ०—बाहुक सुबाहु नीच, लीचर मरीच मिलि, मुँह पीर केतुजा कुरोग जातुधान है।—हनु०।

बाहुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। २ क्षत्रिय।

बाहुत्राण(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।

बाहुबल—संज्ञा पुं० [सं०] पराक्रम। बहादुरी।

बाहुमूल—संज्ञा पुं० [सं०] कंधे और बाँह का जोड़।

बाहुयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] कुश्ती।

बाहुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुतायत। अधिकता। ज्यादती। २ व्यर्थता। फालतूपन।

बाहुहजार—संज्ञा पुं० दे० "सहस्रबाहु"।

बाह्य—वि० [सं०] बाहरी। बाहर का।
 संज्ञा पुं० [सं०] १ भार ढोनेवाला पशु। २ सवारी। यान।

बाह्लीक—संज्ञा पुं० [सं०] कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

बिंग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० व्यंग्य] १. वह चुभती हुई बात जिसका कुछ गूढ़ अर्थ हो। काकोक्ति। उ०—करत बिंग ते बिंग दूसरी जुक्त अलङ्कृत माँहीं। सूरदास ग्वालिन की बातें को कम समुझत हाँहीं।—सूर०।

बिंगि—संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य"। उ०—सापराध पिय कौं जब लहै। बिंगि कोप के वचननि कहै।—नंददास०।

बिंजन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

बिंद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १ पानी की बूँद। २ दोनों भौंहों के मध्य का स्थान। भ्रूमध्य। ३ वीर्य की बूँद। ४. बिंदी। माथे का गोल तिलक।

बिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृंदा] एक गोपी का नाम।
 संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। मुदा। उ०—मृगमद बिंदा तामें राजे। निरखत ताहि काम सत लाजे।—सूर०।

बिंदी—संज्ञा स्त्री० [सं० बिं०] १ सुन्ना। शून्य। सिफर। बिंदु। २ माथे पर का गोल और छोटा टीका। बिंदुली। ३ इस आकार का कोई चिह्न।

बिंदुका—संज्ञा पुं० दे० "बिंदी"।

बिंदुली—संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] बिंदी। टिकुली। उ०—चंदन बिंदुली भाल की भुज आप बनाए।—सूर०।

बिंध†—संज्ञा पुं० [सं० विंध्य] विंध्याचल पर्वत। उ०—बिंध न ईंधन पाइए, सायर जुरै न नीर। परै उपास कुबेर घर, जो बिपच्छ रघुबीर।—दोहा०।

बिंधना—क्रि० अ० [सं० वेधन] १ बींधा जाना। छेदा जाना। २ फँसना।

बिंब—संज्ञा पुं० [सं० बिंब] १ प्रतिबिंब। छाया। अक्स। २ कमंडलु। ३ प्रतिमूर्ति। ४ कुँदरू नामक फल। ५ सूर्य या चंद्रमा का मंडल। ६ कोई मंडल। ७ आभास। ८ एक प्रकार का छंद जिसके दो भेद हैं, पहला नौ और दूसरा उन्नीस वर्णों का। पहले के प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, एक सगण और एक यगण होता है, जैसे—इक इकन बार बारी। कह अधर बिंब बारी। दूसरे प्रकार के प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, तगण, नगण, सगण, दो तगण और अंत्य गुरु वर्ण रहता है तथा पाँचवें और बारहवें वर्ण पर यति और चरणांत में विराम होता है, जैसे—बाही सहारे, सकल असुर को, बाधा सबै टालती। बाही की दाया, जनमुख लहहीं, वही सदा पालती।
 संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।

बिंबा—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुँदरू। २ बिंब। प्रतिच्छाया। ३ चंद्रमा या सूर्य का मंडल।

बिंबित—वि० [सं० बिम्बित] जिसका बिंब या अक्स उतर रहा हो।

बिंबिसार—संज्ञा पुं० [सं०] मगध के एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

बि(पु)—वि० [सं० द्वि] दो। एक और एक।

बिअहुता†—वि० [सं० विवाहित] १ जिसके साथ विवाह संबंध हुआ हो। २ विवाह संबंधी। विवाह का।

बिआधि—संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।

बिआधु†—संज्ञा पुं० दे० "व्याध"।

बिआना—क्रि० स० [सं० व्ययन=अलग होना ?] बच्चा देना। जनना (पशुओं के संबंध में)।

बिआहना(पु)—क्रि० स० दे० "ब्याहना"।

बिकना—क्रि० अ० [सं० विक्रयण] मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना।
 मुहा०—किसी के हाथ बिकना=किसी का अनुचर, सेवक या दास होना।

बिकरम†—संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

बिकरार†—वि० [सं० विकराल] भयानक। डरावना। उ०—मुँह बाए जु परी बिकरार। तपत ताम्र से बगरे बार।—नंददास०।

बिकल†—वि० [सं० विकल] १ व्याकुल। घबराया हुआ। २ बेचैन।

बिकलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० विकल+हिं० आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। बेचैनी।

बिकलाना†—क्रि० अ० [सं० विकल] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। उ०—हरिमुख राधा राधा बानी। धरनी परे अचेत नहीं सुधि सखी देखि बिकलानी।—सूर०।
 क्रि० स० व्याकुल करना। बेचैन करना।

बिकली(पु)—वि० स्त्री० दे० "बिकल"। उ०—कहँ सेज कली बिकली वह होइ कहाँ तुम मोह रहौं गहि डारी।—शृंगार०।

बिकवाना—क्रि० स० [हिं० बिकना का प्रे० रूप] बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकसना—क्रि० अ० [सं० विकसन] १ खिलना। फूलना। २ बहुत प्रसन्न होना।

बिकसाना—क्रि० अ० दे० "बिकसना"। उ०—पाहन बीच कमल बिकसाहीं जल में अगिनि जरे।—सूर०।

विजलीघर—संज्ञा पुं० [हिं० विजली+घर] वह स्थान जहाँ से सारे नगर या आसपास के स्थानों को विजली पहुँचाई जाती हो।

विजहन—वि० [हिं० बीज+सं० हन] जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

विजाती—वि० [सं० विजातीय] १ दूसरी जाति का। और जाति या तरह का। २ जाति से निकाला हुआ। अजाती।

विजान(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वि+ज्ञान] अज्ञान। अनजान।

विजायठ—संज्ञा पुं० [सं० विजय] बाँह पर पहनने का बाजूबंद। अंगद। भुजबंद। बाजू। उ०—तैसो सब सुरभित बसन हिए को माल, कानन के कुंडल विजायठ भुजान के। —शृंगार०।

विजुरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विजली"।

विजूका, विजूखा†—संज्ञा पुं० [देश०] खेतों में पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकड़ी के ऊपर उलटा रखा हुई काली हाँड़ी।

विजोग(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "वियोग"।

विजोरा—वि० [सं० वि०+फा० जोर=ताकत] कमजोर। अशक्त। निर्बल।

विजोहना—क्रि० स० [हिं० जोवना] अच्छी तरह देखना।

विजोहा—संज्ञा पुं० दे० "विज्जूहा"।

विजौरा—संज्ञा पुं० [सं० बीजपूरक] नीबू की जाति का एक वृक्ष। इसके फल बड़े नारंगी के बराबर होते हैं।

विजौरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुम्हड़ौरी"।

विज्जु(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विजली"। उ०—विज्जु सी चमकि महताव सी दमकि उठै, उमगति हिय के हरष की उजेली सी। —शृंगार०।

विज्जुपात(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्पात] विजली गिरना। वज्रपात।

विज्जुल(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विज्जुल] त्वचा। छिलका।

संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत] विजली। दामिनी।

विज्जू—संज्ञा पुं० [?] बिल्ली के आकार प्रकार का एक जंगली जानवर। बीजू।

विज्जूहा—संज्ञा पुं० [?] एक वर्णिक वृत्त। विमोहा। विजोहा।

विझुकना(पु)—क्रि० अ० [हिं० झोंका] १ भड़कना २ डरना। भयभीत होना। ३. टेढ़ा होना। तनना।

विझुकाना(पु)—क्रि० स० [हिं० विझुकना का स० रूप] १. भड़काना। २ डराना।

बिट—संज्ञा पुं० [सं० विट्] १. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो। २. वैश्य। ३ नीच। खल।

बिटरना—क्रि० अ० [हिं० बिटारना का अ० रूप] १ घँघोला जाना। २. गदा होना।

बिटारना—क्रि० स० [सं० विलोडन] १ घँघोलना। २. गदा करना।

बिटिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।

विट्ठल—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। २. बंबई प्रांत में शोलापुर के अतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्ति जो देखने में बुद्ध की मूर्ति से मिलती जुलती है। जैनी इसे अपने तीर्थंकर की मूर्ति और हिंदू विष्णु भगवान् की मूर्ति बतलाते हैं।

बिठाना—क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बिडंब—संज्ञा पुं० [सं० विडंब] आडंबर।

बिडंबना(पु)—क्रि० अ० [सं० विडंबन] १ नकल। स्वरूप बनाना। २ उपहास। हँसी। निंदा।

बिड—संज्ञा पुं० दे० "विट्"।

बिड़ई†—संज्ञा स्त्री० दे० "ईडुरी"।

बिडर—वि० [हिं० बिडरना] छितराया हुआ। अलग अलग। दूर। विरल।

†वि० [हिं० बि=बिना+डर=भय] १ न डरनेवाला। निर्भय। २ ढीठ।

बिडरना—क्रि० अ० [सं० विट्] १ इधर उधर होना। तितर बितर होना। २ पशुओं का भयभीत होना। बिचकना। उ०—शिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले वाहन सब भागे।—मानस। ३ बरबाद होना। नष्ट होना।

बिडराना—क्रि० स० [हिं० बिडरना का स० रूप] १ इधर उधर या तितर बितर करना। २ भगाना। उ०—खाए फल दल मधु सबन रखवारे बिडराय।—विश्रामसागर।

बिडवना(पु)†—क्रि० स० [सं० विट्] तोड़ना। उ०—यद्यपि अलक भ्रज गहि बाँधे तऊ चपल गति न्यारे। घूँघट पट बागुर ज्यों बिडवत जतन करत शशि हारे। —सूर०।

बिडारना(पु)—क्रि० स० [हिं० बिडरना का स० रूप] भयभीत करके भगाना। उ०—कुमकरन कपि फौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर धारी।—मानस।

बिडाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिल्ली। बिलाव। २ बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३ दोहे का बीसवाँ भेद जिसमें तीन अक्षर गुरु और ४२ लघु होते हैं, जैसे, बिरद सुमिरि सुधि करत नित हरि तुव चरन निहार। यह भव जलनिधि तें तुरत कब प्रभु करिहहु पार।

बिडालवृत्तिक—वि० [सं०] १. लोभी। २ कपटी। ३ दंभी। ४ सबको धोखा देनेवाला और सबसे टेढ़ा रहनेवाला।

बिडौजा—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

बिढ़तो(पु)†—संज्ञा पुं० [स० वृद्ध] कमाई। नफा। लाभ। वृद्धि।

बिढ़वना(पु)†—क्रि० स० [सं० वृद्ध] १ कमाना। २ संचय करना। इकट्ठा करना। बढ़ाना। उ०—तात राउ नहिं सोचन जोगू। बिढ़इ सुकृत जस कीन्हेउ भोगू।—मानस।

बिढ़ाना(पु)†—क्रि० स० दे० "बिढ़वना"।

बित(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] १ धन। द्रव्य। उ०—लाल कहा तुमकों छतिलाभ हमैं चित चाय सों औ बित चाय सों।—रससारांश। २ सामर्थ्य। शक्ति। ३ कद। आकार।

बितत(पु)—वि० [सं० व्यतीत] बीता हुआ। उ०—'नंददास' लगे नैनि लाल सों, पलक ओट भएँ बितत जुग चारि।—नंददास०।

बितताना—क्रि० अ० [हिं० बिलखना] बिलखाना। व्याकुल होना। संतप्त होना। उ०—रोवरि महरि फिरति बिततानी। बार बार लै कंठ लगावति अतिहि शिथिल भई बानी।—सूर०।

क्रि० स० संतप्त करना। सताना।

बितना†—संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।

बितरना(पु)†—क्रि० स० [स० वितरण] बाँटना।

बितवना(पु)†—क्रि० स० दे० "बिताना"।

बितान—संज्ञा पुं० दे० "वितान"। उ०—'दास' रच्यो अपने ही बिलास कों मैन जू हाथन सों अपने हैं। कूल कलिंदजा के सुखमूल लतान के वृंद बितान तने हैं।—शृंगार०।

बिताना—क्रि० स० [सं० व्यतीत] (समय) व्यतीत करना। गुजारना। काटना।

बितावना(पु)†—क्रि० स० दे० "बिताना"।

बितीतना—क्रि० अ० [सं० व्यतीत] व्यतीत होना। गुजरना।
क्रि० स० बिताना। गुजारना।
बितुⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "बित्त"।
बित्त—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] १. धन। दौलत। २ हैसियत। औकात। ३ सामर्थ्य।
बित्ता—संज्ञा पुं० [?] हाथ की सब उँगलियों फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी। बालिश्त।
बित्यⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] धन। संपत्ति। उ०—अभिलाषा करी सदा ऐसनि का होय वित्य, सब ठौर दिन सब याही सेवा चरचानि। —छंदार्णव।
बिथकी—वि० [हिं० बिथकना] स्तब्ध। उ०—बाँह गही ठठकी सकी पकी छकी सी ऐंठि। चकी जकी बिथकी थकी तकी झुकी सी डीठि। —रससारांश।
बिथकना—क्रि० अ० [हिं० थकना] १. थकना। २ चकित होना। हैरान होना। ३ मोहित होना। उ०—सुर अमर ललना गण अमर बिथकी लोक बिसारी। —सूर०।
बिथरना, बिथुरना†—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] १ छितराना। बिखरना। २ अलग अलग होना। खिल जाना।
बिथाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"। उ०—बिथा बढ़े उपचारहू जिनके सहजै घाइ। कहत कियो तिन में दियो कज्जल जहर लगाइ। —रससारांश।
बिथार—संज्ञा पुं० [सं० विस्तार] फैलाव। विस्तार। उ०—तबई लगि बचन आगार। देह, गेह अरु नेह बिथार। —नंददास०।
बिथारना—क्रि० स० [सं० विस्तारण] छितराना। छिटकाना। बिखेरना उ०—रावणहिं मारौं पुर भली भाँति जारौं, भुंड मुंडन बिथारौं आज राम बल पाइकै। —हनुमन्नाटक।
बिथितⓅ—वि० दे० "व्यथित"।
बिथुरना—क्रि० अ० दे० "बिथरना"।
बिथुरित—वि० [हिं० बिथरना] बिखरा या छितराया हुआ।
बिथोरनाⓅ—क्रि० स० दे० "बिथराना"।
बिदकना—क्रि० अ० [सं० विदारण] १ फटना। चिरना। २ घायल होना। जख्मी होना। ३ भड़कना।
बिदकाना—क्रि० स० [हिं० बिदकना का स० रूप] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २ घायल करना। जख्मी करना। ३. भड़काना।
बिदर—संज्ञा पुं० [सं० विदर्भ] १. विदर्भ देश। बरार। २ एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है।
बिदरनⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० विदीर्ण] दरार। दरज। शिगाफ।
वि० फाड़नेवाला। चीरनेवाला।
बिदरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० विदीर्ण] फटना।
बिदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० विदर्भ] १ जस्ते और ताँबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमें बीच बीच में सोने या चाँदी के तारों से नक्काशी की हुई होती है। २ बिदर की धातु का बना हुआ सामान।
बिदा—संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १ प्रस्थान। गमन। रवानगी। रुखसत। २ जाने की आज्ञा। उ०—बिदा मातु सन आवौं माँगी। चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी॥ —मानस। ३. द्विरागमन। गौना।
बिदाई—संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १ बिदा होने की क्रिया या भाव। २ बिदा होने की आज्ञा। ३ वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय।
बिदारना†—क्रि० स० [सं० विदारण] १. चीरना। फाड़ना। २ नष्ट करना।
बिदारीकंद—संज्ञा पुं० [सं० विदारीकंद] एक प्रकार का लाल कंद। बिलाईकंद।
बिदीरनाⓅ—क्रि० स० [सं० विदीर्ण] फाड़ना।
बिदुरानाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विदुर= चतुर] मुस्कराना। धीरे धीरे हँसना।
बिदुरानीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिदुराना] मुस्कराहट। मुसक्यान।
बिदूषनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विदूषण] दोष लगाना। कलंक लगाना। बिगाड़ना।
बिदेश—संज्ञा पुं० [सं० विदेश] परदेश।
बिदोखⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० विद्वेष] बैर। वैमनस्य।
बिदोरना†—क्रि० अ० [सं० विदारण] (मुँह या दाँत) खोलकर दिखाना।
बिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ० विदअत] १. खराबी। बुराई। दोष। २. कष्ट। तकलीफ। ३ विपत्ति। आफत। ४. अत्याचार। जुल्म। ५. दुर्दशा।
बिद्रुम—संज्ञा पुं० दे० "विद्रुम"। उ०—बिलखि न हरि विद्रुम कहत तुव अधरन बिन जान। स्वाद न जानै तेहि लगै मिसिरी फटिक समान। —रससारांश।
बिधंसक—वि० [सं० विध्वंसक] दे० "विध्वंसक"। उ०—मतिभ्रंसक सब धर्म बिधंसक। निरदै महा बिरथ पशुहिंसक। —नंददास०।
बिधँसनाⓅ†—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नाश करना। विध्वंस करना। नष्ट करना।
बिध—संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] १ प्रकार। तरह। भाँति। २ ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० [सं० विधा=वृद्धि] जमाखर्च का हिसाब। आयव्यय का लेखा।
मुहा०—बिध मिलाना=यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं।
बिधना—संज्ञा पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा। विधि। विधाता।
क्रि० अ० दे० "बिंधना"।
बिधवपनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "वैधव्य"।
बिधवा—संज्ञा स्त्री० दे० "विधवा"।
बिधाँसनाⓅ†—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] विध्वंस करना। नष्ट करना। नाश करना।
बिधाईⓅ—संज्ञा पुं० [सं० विधायक] वह जो विधान करता हो। विधायक।
बिधात, बिधाता—संज्ञा पुं० [सं० विधाता] दे० "विधाता"। उ०—पाछै अद्भुत निरखि बिधात। चक्यौ थक्यौ जहँ फुरै न बात। —नंददास०।
बिधान—संज्ञा पुं० [सं० विधान] दे० "विधान"। उ०—दास कलानिधि कला कैयो कै देखायो पै न, पायो नेक छमि राधे बदनविधान की। —रससारांश।
बिधाना—क्रि० अ० दे० "बिंधाना"।
बिधानीⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० विधान] विधान करनेवाला। बनानेवाला। रचनेवाला।
बिधुंतुद—संज्ञा पुं० [सं० विधुंतुद] दे० "विधुंतुद"। उ०—द्विप जु दंत बिधुंतुद गाढ़े। ते क्यों हूक कढ़त नहिं काढ़े। —नंददास०।

क्रि० स० १. विकसित करना। खिलाना। २ प्रसन्न करना।

विकाऊ—वि० [हिं० √विक+आऊ (प्रत्य०)] जो विकने के लिये हो। विकनेवाला।

विकाना†—क्रि० अ० दे० "विकना"।

विकारⓅ—सज्ञा पुं० दे० "विकार"।

सज्ञा पु० [स० विकराल] विकट। भीषण।

विकारी†—वि० [स० विकार] १ जिसका रूप विगड़कर और का और हो गया हो। २ बुरा। हानिकारक। उ०—असुभ होइ जिनके सुमिरे तें वानर रीछ विकारी। वेदविदित पावन किए ते सब, महिमा नाथ तुम्हारी॥—विनय०।

सज्ञा स्त्री० [स० विकृत या वक्र] एक प्रकार की टेढी पाई जो अकों आदि के साथ सख्या या मान सूचित करने के लिये लगाते हैं, जैसे—S? = एक सेर, ।ↄ) = एक आना, इत्यादि।

विकासनाⓅ—क्रि० स० [स० विकासन] १ विकसित करना। २ (फूल आदि) खिलाना।

विकुठⓅ—सज्ञा पुं० "वैकुठ"।

विकूलⓅ—वि० [स० वि+कूल] प्रतिकूल। वाम। उ०—जौ तौ निपट विकूल विधाता। केते हते कस तुव ताता।—नददास०।

विक्खⓅ—सज्ञा पु० [स० विप] जहर।

विक्री—सज्ञा स्त्री० [सं० विक्रय] १ किसी पदार्थ के वेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २ वेचने से मिलनेवाला धन।

विक्रीकर—सज्ञा पु० [हिं० विक्री+सं० कर] माल की विक्री पर खरीदारों से लिया जानेवाला कर।

विख†—सज्ञा पुं० दे० "विप"।

विखम—वि० दे० "विपम"।

विखरना—क्रि० अ० [स० विकीर्ण] छितराना। तितर बितर हो जाना।

विखराना—क्रि० स० दे० "विखेरना"।

विखादⓅ—सज्ञा पु० दे० "विषाद"। उ०—परे विखाद जिय भारे, मिट गए ओज उचारे।—नददास०।

विखानⓅ—सज्ञा पु० दे० "विपाण"।

विखीला—वि० [सं० विप] जहरीला।

विखेरना—क्रि० स० [हिं० विखरना का स० रूप] इधर उधर फैलाना। छितराना।

विग†—सज्ञा पुं० दे० "वीग"।

विगड़ना—क्रि० अ० [स० विकृत] १. किसी पदार्थ के गुण या रूप आदि में विकार होना। खराब हो जाना। २. किसी पदार्थ के वनते समय उसमें कोई ऐसा विकार होना जिसमे वह ठीक न उतरे। ३ दुरवस्था को प्राप्त होना। खराव दशा में आना। ४ नीतिपथ से भ्रष्ट होना। वद-चलन होना। ५ क्रुद्ध होना। अप्रसन्नता प्रकट करना। ६ विरोधी होना। विद्रोह करना। ७ (पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से वाहर हो जाना। ८ परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ९ वेफायदा खर्च होना।

विगड़ेदिल—सज्ञा पु० [हिं० विगड़े (√विगड़)+फा० दिल] १ हर वात में लड़ने झगड़नेवाला। २ कुमार्ग पर चलने-वाला।

विगडैल—वि० [हिं० √विगड़+ऐल (प्रत्य०) या विगड़ेदिल] १ हर वात में विगड़ने या क्रोध करनेवाला। २ हठी। जिद्दी।

विगर†—क्रि० वि० दे० "वगैर"।

विगरना—क्रि० अ० दे० विगड़ना"।

विगराइल†—वि० दे० "विगड़ैल"।

विगसनाⓅ—क्रि० अ० दे० "विकसना"।

विगहा—सज्ञा पु० दे० "वीघा"।

विगाड़—सज्ञा पुं० [सं० विकार] १ विगड़ने की क्रिया या भाव। २ खरावी। दोप। ३ वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।

विगाड़ना—क्रि० स० [स० विकार] १ किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। २ किसी पदार्थ को वनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३ दुरवस्था को प्राप्त कराना। बुरी दशा में लाना। ४ नीति या कुमार्ग में लगाना। ५ सतीत्व नष्ट करना। ६ बुरी आदत लगाना। ७ वहकाना। ८ व्यर्थ व्यय करना।

विगाना†—वि० [फा० वेगाना] जिससे आपसदारी का कोई सवध न हो। पराया। गैर।

विगार†—सज्ञा पुं० दे० "विगाड़"।

विगारिⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "वेगार"।

विगारी—सज्ञा स्त्री० दे० "वेगारी"।

विगासⓅ†—सज्ञा पु० दे० "विकास"।

विगासना—क्रि० स० [हिं० विगास से ना० धा०] विकसित करना।

विगिरⓅ†—क्रि० वि० दे० "वगैर"।

विगुनⓅ†—वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुणरहित।

विगुर—वि० [सं० वि+गुरु] जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।

विगुरचिनⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "विगू-चन"।

विगुरदाⓅ†—सज्ञा पुं० [देश०] प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।

विगुलⓅ†—सज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी ढग की एक प्रकार की तुरही जो प्राय सैनिकों को एकत्र करने के लिये वजाई जाती है।

विगुलरⓅ†—सज्ञा पुं० [अं०]। फौज में विगुल वजानेवाला।

विगूचन—सज्ञा स्त्री० [स० विकुचन अथवा विवेचन] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ हो जाता है। असमजस। अड़चन। उ०—ऐसा भेद विगूचन भारी। वेद कतेव दीन अरु दुनियाँ, कौन पुरिष कौन नारी।—कवीर०। २ कठिनता। दिक्कत। उ०—सूरदास अव होत विगूचन, भजि लै सारंगपान।—सूर०।

विगूचना—क्रि० अ० [स० विकुचन] १ अड़चन या असमजस में पड़ना। २ दवाया जाना। पकड़ा जाना।

क्रि० स० [स० विकुचन] दवोचना। धर दवाना। छोप लेना।

विगोना—क्रि० स० [सं० विगोपन] १. नष्ट करना। विगाड़ना। उ०—सूर सनेह करै जो तुम सों सो पुनि आप विगोऊ।—सूर०। २ छिपाना। दुराना। ३ तग करना। दिक करना। ४ भ्रम में डालना। वहकाना। ५ विताना।

विग्गाहा—सज्ञा पुं० [स० विगाथा] आर्या छद का एक भेद। उद्गीति।

विग्रह—सज्ञा पुं० दे० "विग्रह"।

विघटना—क्रि० स० [स० विघटन] विनाश करना। विगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।

विघन—सज्ञा पु० दे० "विघ्न"। उ०—सकल कहहिं कव होइहि काली। विघन मनावहिं देव कुचाली।—मानस।

विघनहरनⓅ†—वि० [स० विघ्नहरण] विघ्न या वाधा को हटानेवाला।

सज्ञा पु० गणेश। गजानन।

विघार†—सज्ञा पुं० दे० "वाघ"।

विचⓅ†—क्रि० वि० दे० "वीच"।

बिचकना—क्रि० अ० [अनु०] १ मुँह का टेढ़ा होना। २. भड़कना। चौंकना।

बिचकाना—क्रि० स० [बिचकना का स० रूप] बिराना। चिढ़ाना (मुँह)। २. (मुँह को स्वाद बिगड़ने के कारण) टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना। ३ भड़काना। चौंकाना।

बिचच्छनⓅ†—वि० दे० "विचक्षण"।

बिचच्छिन—वि० दे० "विचक्षण"। उ०—मुग्धा में धीरादिक लच्छिन। प्रगट नहीं पै लखै बिचच्छिन।—नंददास०।

बिचरना—क्रि० अ० [सं० विचरण] १. इधर उधर घूमना। चलना फिरना। २ यात्रा करना। सफर करना।

बिचलना—क्रि० अ० [सं० विचलन] १ विचलित होना। इधर उधर हटना। २ हिम्मत हारना। ३. कहकर मुकरना।

बिचला—वि० [हिं० बीच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बिचली] जो बीच में हो। बीच का।

बिचलानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० बिचलना का स० रूप] १ विचलित करना। डिगाना। २ हिला देना। ३ तितर बितर करना।

बिचवई—संज्ञा पुं० दे० "बिचवान"।

बिचवान, बिचवानी—संज्ञा पुं० [हिं० बीच+वान] बीच बचाव करनेवाला। मध्यस्थ।

बिचपनⓅ—वि० दे० "विचक्षण"। उ०—कैसे नगरि करौं कुटवारी, चचल पुरिष बिचषन नारी।—कबीर०।

बिचहुत—संज्ञा पुं० [हिं० बीच] अंतर। फरक। दुबधा। संदेह।

बिचार—संज्ञा पुं० दे० 'विचार'।

बिचारनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विचारण] १ विचार करना। सोचना। गौर करना। २ पूछना। प्रश्न करना।

बिचारमान—वि० [हिं० बिचार+मान] १ विचार करनेवाला। २ विचारने के योग्य।

बिचारा—वि० दे० "बेचारा"।

बिचारीⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० विचारिन्] विचार करनेवाला। उ०—मारग छाँड़ि कुमारग सौं रत बुधि बिपरीति बिचारी हो।—सूर०।

बिचालⓅ—संज्ञा पुं० [सं० विचाल] १. अलग करना। २ अंतर। फर्क।

बिचि—क्रि० वि० दे० "बीच"। उ०—सो मुख ब्रज अवलोकन करै। तब जु आइ बिचि पलकैं परै।—नंददास०।

बिचेतⓅ†—वि० [सं० विचेतम्] १ मूर्च्छित। बेहोश। अचेत। २ बदहवास।

बिचौनी, बिचौहाँ—संज्ञा पुं० दे० "बिचवान"।

बिच्छित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शृंगार रस के ११ हावों में से एक जिसमें किंचित् शृंगार से ही पुरुष का मोहित कर लिया जाना वर्णन किया जाता है।

बिच्छी—संज्ञा स्त्री० दे० "बिच्छू"।

बिच्छू—संज्ञा पुं० [सं० वृश्चिक] १ एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर। इसके अंतिम भाग में एक जहरीला डंक होता है। २ एक प्रकार की जहरीली घास।

बिच्छेदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

बिच्छेपⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "विक्षेप"।

बिछना—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] बिछाना का अकर्मक रूप। बिछाया जाना।

बिछलन—क्रि० अ० दे० "फिसलन"।

बिछलना—क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

बिछवाना—क्रि० स० [हिं० बिछाना का प्रे० रूप] बिछाने का काम दूसरे से कराना।

बिछाना—क्रि० स० [सं० विस्तरण] १ (बिस्तर या कपड़े आदि को) जमीन पर उतनी दूर तक फैलाना, जितनी दूर तक फैल सके। २ किसी चीज को जमीन पर कुछ दूर तक फैला देना। बिखेरना। बिखराना। ३ (मार मारकर) जमीन पर गिरा या लेटा देना।

बिछायत—संज्ञा स्त्री० दे० "बिछौना"।

बिछावन†—संज्ञा पुं० दे० "बिछौना"।

बिछिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिच्छू+इया (प्रत्य०)] पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

बिछिप्तⓅ†—वि० दे० "विक्षिप्त"।

बिछुआ—संज्ञा पुं० [हिं० बिच्छू] १ पैर में पहनने का एक गहना। २ एक प्रकार की छुरी। ३ एक प्रकार की करधनी।

बिछुड़न†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिछुड़ना] बिछुड़ने या अलग होने का भाव। वियोग।

बिछुड़ना—क्रि० अ० [सं० विच्छेद] १. अलग होना। जुदा होना। २ प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना। वियोग होना।

बिछुरंताⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० √बिछुड़+अंता (प्रत्य०)] १ बिछुड़नेवाला। २. जो बिछुड़ गया हो।

बिछुरनⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "बिछुड़न"। उ०—मिलन होत कबहुँक छिनक बिछुरन होत सदाहि। तिहि अंतर के दुखन कों बिरह गुनौ मन माहि।—शृंगार०।

बिछुरनाⓅ—क्रि० अ० दे० "बिछुड़ना"।

बिछूनाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० बिछुड़ना] बिछुड़ा हुआ। जो बिछुड़ गया हो।

बिछेदⓅ—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

बिछोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० बिछुड़ना] १. बिछुड़ने की क्रिया या भाव। २ विरह।

बिछोय, बिछोह—संज्ञा पुं० [हिं० बिछुड़ना] बिछोड़ा। जुदाई। विरह। वियोग।

बिछौन—संज्ञा पुं० दे० "बिछौना"। उ०—जनु कोउ भूपति उतरयो आइ। छत्र तनाई बिछौन बिछाइ।—नंददास०।

बिछौना—संज्ञा पुं० [हिं० बिछाना] वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो। बिछावन। बिस्तर।

बिजनⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] छोटा पंखा। बेना।

वि० [सं० विजन] एकांत स्थान।

वि० जिसके साथ कोई न हो।

बिजयसार—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड़।

बिजली—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत] १. घर्षण, ताप और रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न होनेवाली एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है। विद्युत। २ आकाश में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो बादलों की रगड़ के कारण उत्पन्न होता है। चपला।

मुहा०—बिजली गिरना या पड़ना=बिजली का आकाश से पृथ्वी की ओर बड़े वेग से आना और मार्ग में पड़नेवाली चीजों को जलाकर नष्ट करना। बिजली कड़कना=बिजली के विसर्जन के कारण आकाश में बहुत जोर का शब्द होना।

३ आम की गुठली के अंदर की गिरी। ४ गले में पहनने का एक गहना। ५. कान में पहनने का एक गहना।

वि० १ बहुत अधिक चंचल या तेज। २ बहुत अधिक चमकनेवाला।

बिधुंसना(पु)—क्रि० स० [सं० विध्वसन] नष्ट करना ।

बिन(पु)†—अव्य० दे० "बिना" ।

बिनई(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "विनयी" ।

बिनउ(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनय" ।

बिनकार—वि० [हिं० बुनना] [संज्ञा बिनकारी] कपड़ा बुननेवाला । जुलाहा ।

बिनठना(पु)—क्रि० अ० [सं० विनष्ट] नष्ट होना ।

बिनति, बिनती—संज्ञा स्त्री० [सं० विनय] प्रार्थना । निवेदन । अर्ज ।

बिनन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिनना = चुनना] १ बिनने या चुनने की क्रिया या भाव । २ वह कूड़ाकर्कट आदि जो किसी चीज में से चुनकर निकाला जाय । चुनन ।

बिनना—क्रि० स० [सं० वीक्षण] १ छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना । चुनना । २. छाँट छाँटकर अलग करना ।
क्रि० स० दे० "बुनना" ।

बिनवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनेठी] पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल । पत्थर या धातु की गोली जिससे डोरा लगा होता है और जिसे चलाकर आक्रमण किया जाता है ।

बिनवना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विनय] विनय करना । मिन्नत करना । प्रार्थना करना ।

बिनवाना—क्रि० अ० [हिं० बीनना या बुनना का प्रे० रूप] बुनने या बीनने का काम दूसरे से कराना ।

बिनसना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना । बरबाद होना ।
क्रि० स० विनाश करना । नष्ट करना ।

बिनसाना(पु)—क्रि० स० [सं० विनाशन] विनाश करना । बिगाड़ डालना । नष्ट कर देना ।
क्रि० अ० विनष्ट होना ।

बिना—अव्य० [सं० विना] छोड़कर । बगैर ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] मूल आधार । कारण ।

बिनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिनना या बीनना] १ बीनने या चुनने की क्रिया या भाव । २ बुनने की क्रिया या भाव । बुनावट ।

बिनाती†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिनती" ।

बिनानी—वि० [सं० विज्ञानी] १. अज्ञानी । अनजान । उ०—रोवन लागे कृष्ण बिनानी । जसुमति आइ गई लै पानी ॥ —सूर० । २. विज्ञानी । उ०—भवन काज को गई नँदरानी । आँगन छाँड़ि श्याम बिनानी । —सूर० ।
संज्ञा स्त्री० [सं० विज्ञान] विशेष विचार । गौर । उ०—चितै रहे तब नंद युवति मुख मन मन करत बिनानी । —सूर० ।

बिनावट—संज्ञा स्त्री० दे० "बुनावट" ।

बिनास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विनाश" ।

बिनासना—क्रि० स० [सं० विनाशन] विनष्ट करना । संहार करना । बरबाद करना ।

बिनाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विनाश" ।

बिनिंद—वि० [सं० वि + निंद्य] अनिंद्य । उत्तम । उ०—इंदीवरवदन गोविंद गोपवृंदन में, इदुजुत नखत बिनिंद छवि पायो है । —रससारांश ।

बिनि, बिनु(पु)—अव्य० दे० "बिना" ।

बिनूठा(पु)†—वि० [हिं० अनूठा] अनोखा ।

बिनौरी—संज्ञा स्त्री० [?] ओले के छोटे टुकड़े ।

बिनै(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनय" ।

बिनौला—संज्ञा पुं० [?] कपास का बीज । बनौर कुकटी ।

बिपक्ख—संज्ञा पुं० [सं० विपक्ष] दे० "विपक्ष" ।

बिपच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विपक्ष] शत्रु ।
वि० १. अप्रसन्न । नाराज । २ प्रतिकूल । विमुख । विरुद्ध ।

बिपच्छी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विपक्षिन्] १ वह जो विपक्ष का हो । विरोधी । २ शत्रु । दुश्मन ।

बिपत, बिपद(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति" ।

बिप्र(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विप्र] ब्राह्मण ।

बिपरीति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विपरीत + हिं० ई (प्रत्य०)] विपरीत होने का भाव ।

बिफर(पु)†—वि० दे० विफल" ।

बिफरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विप्लवन] १ बागी होना । विद्रोही होना । २ बिगड़ उठना । नाराज होना ।

बिफलो—वि० [सं० विफल] असफल । उ०—बैठी मलीन अली अवली कि सरोज कलीन सों है विफलो है । —शृंगार० ।

बिबछना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विपक्ष] १ विरोधी होना । २. उलझना । फँसना ।

बिबरन(पु)—वि० [सं० विवर्ण] १ जिसका रंग खराब हो गया हो । बदरंग । २ जिसके मुख की कांति नष्ट हो गई हो ।
संज्ञा पुं० दे० "विवरण" ।

बिबस(पु)†—वि० [सं० विवश] १. मजबूर । बेबस । लाचार । २ परतंत्र । पराधीन ।
क्रि० वि० [सं० विवश] बेबस होकर ।

बिबसना(पु)—क्रि० अ० [हिं० बिबस से ना० धा०] विवश होना ।

बिबहार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार" ।

बिबाई—संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका] एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है ।

बिबाक(पु)—वि० दे० "बेबाक" ।

बिबि—वि० [सं० द्वि] दो ।

बिभात—संज्ञा पुं० [सं० विभात] प्रभात । सवेरा । उ०—मुख सों मुख उर सों उरज पिय गातनि सों गात । तज्यो न भावति भाव तिहि आवत भयो बिभात । —रससारांश ।

बिभाना(पु)—क्रि० अ० [सं० √विभा] चमकना ।

बिभावरी—संज्ञा स्त्री० दे० "विभावरी" । उ०—साँवरी सूरति ही में बसाव री बावरी बीतत वादि बिभावरी । —रससारांश ।

बिभीचारी(पु)—वि० दे० "व्यभिचारी" ।

बिभोर—वि० दे० "विभोर" ।

बिमन(पु)†—वि० [सं० विमनस्] १ जिसे बहुत दुःख हो । २ उदास । सुस्त ।
क्रि० वि० बिना मन के । अनमना होकर ।

बिमला—संज्ञा स्त्री० [सं० विमला] सरस्वती । उ०—कमला सी चेरी हैं घनेरी बैठीं आसपास, बिमला सी आगें दरपन दरसावती । —रससारांश ।

बिमानी(पु)—वि० [सं० वि + मान] मानरहित । निरभिमान ।

बिमोहना—क्रि० स० [सं० विमोहन] मोहित करना । लुभाना । मोहना ।
क्रि० अ० मोहित होना । लुभाना ।

बिय(पु)†—वि॰ [सं॰ द्वि] १. दो। युग्म। उ॰—बाल भरुन क्यों नयन बिय, दिय प्रसाद नखचंद। —काव्यनिर्णय। २ दूसरा।

(पु)†संज्ञा पुं॰ दे॰ "बीज"।

बियत—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वियत] आकाश। उ॰—जहँ जहँ जेहिं जागि जनम महि पताल बियत। तहँ तहँ तू विषय-सुखहिं चहत, लहत नियत॥ —विनय॰।

बिया†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बीज"।

वि॰ [सं॰ द्वि] दूसरा। अन्य। अपर।

बियाधा(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "व्याधा"।

बियाधि(पु)†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "व्याधि"।

बियान†—संज्ञा पुं॰ √ "ब्यान"।

बियापना(पु)†—क्रि॰ स॰ दे॰ "व्यापना"।

बियाबान—संज्ञा पुं॰ [फा॰] बहुत उजाड़ स्थान या जगल। सुनसान या निर्जन स्थान।

बियारी, बियालु(पु)†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ब्यालू"।

बियाह(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "विवाह"।

बियाहचार—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विवाह+आचार] ब्याह की रीति। उ॰—फिरा पान, बहुरा सब कोई। लाग बियाहचार सब होई। —पदमावत।

बियाहता†—वि॰ स्त्री॰ [सं॰ विवाहिता] ब्याही हुई।

बिरंग—वि॰ [सं॰ वि (प्रत्य॰)+हिं॰ रंग] १ कई रंगों का। २ विना रंग का।

बिरई†—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वीरुधि] १ छोटा बिरवा। २ जड़ीबूटी।

बिरकत(पु)—वि॰ [सं॰ विरक्त] दे॰ "विरक्त"। उ॰—बैरागी विरकत भला, गिरही चित्त उदार। —कबीर॰।

बिरचना(पु)—क्रि॰ स॰ दे॰ "विरचना"।

बिरछ, बिरछा†(पु)—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वृक्ष"।

बिरछिक(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वृश्चिक"।

बिरझना†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ विरुद्ध] झगड़ना।

बिरतंत(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वृत्तांत"।

बिरता—संज्ञा पुं॰ [देश॰] सामर्थ्य। बूता। शक्ति। उ॰—राजा साहब कहेंगे, फिर गए ही किस बिरते पर थे। —कायाकल्प।

बिरताना(पु)†—क्रि॰ स॰ [सं॰ वर्तन] बाँटना।

बिरथा†—वि॰ दे॰ "व्यर्थ"।

बिरद†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "विरद"।

बिरदैत—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ विरद+ऐत (प्रत्य॰)] बहुत अधिक प्रसिद्ध वीर या योद्धा।

वि॰ नामी। प्रसिद्ध।

बिरध—वि॰ दे॰ "वृद्ध"।

बिरधाई(पु)—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बिरध+आई (प्रत्य॰)] वृद्धावस्था।

बिरधापन—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बिरधाई"।

बिरमना†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ विरमण] १. ठहरना। रुकना। २ सुस्ताना। आराम करना। ३ मोहित होकर फँस रहना।

बिरमाना†—क्रि॰ स॰ [हिं॰ बिरमना का स॰ रूप] १ ठहराना। रोक रखना। २. मोहित करके फँसा रखना। ३. बिताना।

बिरला—वि॰ [सं॰ विरल] बहुतों में से कोई एकाध। इक्का दुक्का।

बिरवा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वीरुध्] वृक्ष। पेड़।

बिरह—संज्ञा पुं॰ दे॰ "विरह"।

बिरहा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विरह] एक प्रकार का लोकगीत जिसे प्रायः अहीर गाते हैं।

बिरहाना—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ विरह से ना॰ धा॰] विरह से पीड़ित होना।

बिरही—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विरहिन्] [स्त्री॰ विरहिन, बिरहिनी] वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह से दुःखित हो। विरही।

बिराजना—क्रि॰ अ॰ [सं॰ वि+√राज्] १ शोभित होना। २ बैठना।

बिरादर—संज्ञा पुं॰ [फा॰] भाई। भ्राता।

बिरादरी—संज्ञा पुं॰ [फा॰] १. भाई चारा। २ एक ही जाति के लोगों का समूह।

बिरान, बिराना(पु)—वि॰ दे॰ "बेगाना"।

बिराना†(पु)—क्रि॰ स॰ [सं॰ विरव=शब्द] किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना या उसके कहे हुए शब्द दुहराना। मुँह चिढ़ाना।

वि॰ दे॰ "बेगाना"।

बिरावना†—क्रि॰ स॰ दे॰ "बिराना"।

बिरिख(पु)†—संज्ञा पुं॰ १ दे॰ "वृष"। २ दे॰ "वृक्ष"।

बिरिछ(पु)†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वृक्ष"।

बिरियाँ—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बेला] समय।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वार] बार। दफा।

बिरी(पु)†—संज्ञा स्त्री॰ १ दे॰ "बाड़ी"। २ दे॰ "बीड़ा"।

बिरुझना†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ विरुद्ध] झगड़ना।

बिरुदैत—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बिरदैत"।

बिरुवाई—संज्ञा स्त्री॰ १. दे॰ "बुढ़ापा"। २ दे॰ "विरोध"।

बिरोग—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वियोग] १. वियोग। बिछोह। २. दुःख। चिंता।

बिरोजा—संज्ञा पुं॰ दे॰ "गंधाबिरोजा"।

बिरोधना†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ विरोध] विरोध करना। बैर करना। द्वेष करना।

बिरोलना(पु)—क्रि॰ स॰ दे॰ "बिलोरना"।

बिलंद—वि॰ [फा॰ बुलंद] १. ऊँचा। २ बड़ा। उ॰—विषम कहार मार मदमाते चलहिं न पाउँ बटोरा। मंद बिलंद अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे।—विनय॰। ३. जो विफल हो गया हो (व्यंग्य)। ४. विवेकरहित।

बिलंबना(पु)†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ बिलंबन] १ विलंब करना। देर करना। २ ठहरना। रुकना।

बिल—संज्ञा पुं॰ [सं॰ बिल] १ छेद। दरज। विवर। २ जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ जीवजंतुओं के रहने का स्थान।

संज्ञा पुं॰ [अं॰] १ किसी को हिसाब चुकता करने के लिये दिया जानेवाला वह पुरजा जिसमें प्राप्य मूल्य या पारिश्रमिक का पूरा ब्योरा लिखा रहता है। २. कानून का मसौदा जो विधान सभाओं या संसद् में स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय।

बिलकुल—क्रि॰ वि॰ [अ॰] १. पूरा पूरा। सब। २. आदि से अंत तक। निरा। निपट। ३ सब। पूरा पूरा।

बिलखना—क्रि॰ अ॰ [सं॰] [वि+√लक्ष] १. विलाप करना। रोना। २. दुःखी होना। ३. संकुचित होना। सिकुड़ जाना।

बिलखाना—क्रि॰ स॰ [बिलखना का सकर्मक रूप] १ रुलाना। २ दुखी करना।

क्रि॰ अ॰ सिकुड़ना। संकुचित होना।

बिलग—वि॰ [सं॰ वि+√लग् ?] अलग। पृथक्। जुदा। उ॰—विष्णु कहा अस बिहसि तब, बोलि सकल दिसिराज। बिलग बिलग होइ-चलहु सब निज निज सहित समाज।—मानस।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ वि+√लग् ?] १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २ द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज। उ॰—

अति आरत अति स्वारथी, अति दीन दुखारी। इनको बिलगु न मानिए बोलहिं न विचारी।—विनय०।

बिलगाना—क्रि० अ० [हिं० बिलग से ना० धा०] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना। उ०—विष्णु वचन सुनि सुर मुसुकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने।—मानस।

क्रि० स० १. अलग करना। पृथक् करना। दूर करना। उ०—ज्यों सकरा मिलै सिकता महँ बल ते न कोउ बिलगावै। अति रसज्ञ सूच्छम पिपीलिका बिनु प्रयास ही पावै।—विनय०। २ छाँटना। चुनना। उ०—भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष वेद बिलगाए।—मानस।

बिलच्छन—वि० दे० "विलक्षण"।

बिलछनाⓅ—क्रि० अ० [सं० वि√लक्ष्] लक्ष करना। ताड़ना।

बिलटी—संज्ञा स्त्री० [अँ० बिलेट] रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।

बिलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिल] काली भौंरी जो दीवारों पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। भ्रमरी।

संज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होने वाली एक छोटी फुंसी। गुहांजनी।

बिलपन—संज्ञा पुं० [सं० विलपन] विलाप। रोदन। उ०—हित-दुख विपति विभाव तें करुना बरनै लोक। भूमि लिखन बिलपन स्वसन अनुभव थाई सोक।—रससाराश।

बिलपनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विलपन] रोना।

बिलफेल—क्रि० वि० [अ०] इस समय।

बिलबिलाना—क्रि० अ० [अनु०] १ छोटे छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना। २ व्याकुल होकर बकना या रोना चिल्लाना।

बिलमⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "विलंब"।

बिलमनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विलंबन] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहर जाना। रुकना। ३ किसी के प्रेमपाश में फँसकर कहीं रुक रहना।

बिलमाना—क्रि० स० [हिं० बिलमना का स० रूप] प्रेम के कारण रोक या ठहरा रखना।

बिललाना—क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

बिलवाना†—क्रि० स० [सं० विलय] १. खो देना। नष्ट करना। २ दूसरे के द्वारा नष्ट कराना। बरबाद कराना। ३. छिपाना। ४. छिपवाना।

बिलसनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विलसन] शोभा देना। भला जान पड़ना।

क्रि० स० भोग करना। भोगना।

बिलसानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० बिलसना] १ भोग करना। बरतना। काम में लाना। २ दूसरे से भोगवाना।

बिलहरा—संज्ञा पुं० [हिं० बेल ?] बाँस की तीलियों का एक प्रकार का छोटा संपुट जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।

बिला—अव्य० [अ०] बिना। बगैर।

बिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १ बिल्ली। बिलारी। २. कुएँ में गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा। ३ किवाड़ बंद करने की एक प्रकार की सिटकिनी।

बिलाईकंद—संज्ञा पुं० दे० "विदारीकंद"।

बिलाना—क्रि० अ० [सं० विलयन] १ नष्ट होना। न रह जाना। २ अदृश्य होना।

बिलापनाⓅ—क्रि० अ० [सं० विलाप] विलाप करना।

बिलारी†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।

बिलारीकंद—संज्ञा पुं० दे० "विदारीकंद"।

बिलाव—संज्ञा पुं० [हिं० बिल्ली] बड़ी या नर बिल्ली।

बिलावल—संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

बिलासना—क्रि० स० [सं० विलसन] भोगना।

बिलुठनाⓅ—क्रि० अ० [सं० वि+लुठन] जमीन पर लेटना या लोट पोट होना।

बिलूरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "बिल्लौर"।

बिलेशय—संज्ञा पुं० [सं०] बिल में रहने-वाले चूहे, साँप आदि जानवर।

बिलैया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १ बिल्ली। २ कद्दूकश।

बिलोकनाⓅ—क्रि० स० [सं० विलोकन] १ देखना। २ जाँच करना। परीक्षा करना।

बिलोकनिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० विलोकन] १ देखने की क्रिया। २ दृष्टिपात। कटाक्ष।

बिलोचन—संज्ञा पुं० [सं० वि+लोचन] आँख।

बिलोड़नाⓅ—क्रि० स० [सं० विलोड़न] १ दूध आदि मथना। २ अस्त व्यस्त करना।

बिलोन—वि० [सं० वि०+लवण] १. बिना लवण का। २ कुरूप। बदसूरत।

बिलोना—क्रि० स० [सं० विलोड़न] १. दूध आदि मथना। किसी वस्तु विशेषत. पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना। २. ढालना। गिराना।

बिलोरनाⓅ—क्रि० स० [सं० विलोड़न] १. दे० "बिलोड़ना"। २ छिन्न भिन्न करना।

बिलोलना—क्रि० स० [सं० विलोलन] हिलाना।

बिलोवनाⓅ†—क्रि० स० दे० "बिलोना"।

बिल्मुक्ता—वि० [अ०] जो घट बढ़ न सके।

संज्ञा पुं० वह लगान जो घट बढ़ न सके।

बिल्ला—संज्ञा पुं० [सं० बिडाल] [स्त्री० बिल्ली] मार्जार। बिल्ली का नर।

संज्ञा पुं० [सं० पटल, हिं० पल्ला, बल्ला] चपरास की तरह की पीतल आदि की पट्टी जिसे पहचान के लिये खास खास काम करनेवाले (जैसे, चपरासी, कुली, लैसंसदार, खोंचेवाले आदि) बाँह पर या गले में धारण करते हैं।

बिल्लाना—क्रि० अ० [सं० विलाप] विकल होकर चिल्लाना। विलाप करना।

बिल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० बिड़ाल, हिं० बिलार] १ एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सबसे छोटा होता है। २ एक प्रकार की किवाड़ की सिटकिनी। बिलैया।

बिल्लौर—संज्ञा पुं० [सं० वैदूर्य, मि० फा० बिल्लूर] १ एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर। स्फटिक। २ बहुत स्वच्छ शीशा।

बिल्लौरी—वि० [हिं० बिल्लौर] बिल्लौर का।

बिवरना—क्रि० स० [सं० वि+√वृ] १ सुलझाना। एक में गुथी हुई वस्तुओं को अलग अलग करना। २. बँधे या गुथे हुए बालों को हाथ, कंघी आदि से अलग अलग करके साफ करना। बाल सुलझाना।

बिवराना—क्रि० स० [हिं० बिवरना का प्रे० रूप] १ बालों को खुलवाकर सुलझ-वाना। २ बाल सुलझाना।

बिवाई—संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका] पैरों की उँगलियों और तलवे फटने का रोग।

बिसंच(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वि+संचय] १. संचय का अभाव। वस्तुओं की सँभाल न रखना। बेपरवाई। २ कार्य की हानि। बाधा। ३ भय। डर।

बिसंभर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "विश्वंभर"।
(पु)†वि० [सं० उप० वि+हिं० सँभार] १ जिसे ठीक और व्यवस्थित न रख सकें। २. बेखबर। असावधान। बेहोश। उ०—तन सिंघल, मन चितउर बसा। जिव बिसँभर नागिनि जिमि डसा। —पद्मावत।

बिसभार†—वि० [सं० उप० वि०+हिं० सँभार] जिसे तन वदन की खबर न हो। बेखबर।

बिसमृत(पु)—वि० [सं० विस्खलित] स्खलित। च्युत। उ०—नगर में बगर बगर है गयो। देवकि गर्भ बिसमृत भयो। —नंददास०।

बिस—संज्ञा पुं० दे० "विष"।

बिसखपरा—संज्ञा पुं० [सं० विष+खर्पर] १ गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु। २ एक प्रकार की जगली बूटी।

बिसतरना(पु)—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] विस्तार करना। बढ़ाना। फैलाना।

बिसद(पु)—वि० दे० "विशद"।

बिसन(पु)—संज्ञा पुं० [व्यसन] व्यसन। शौक। उ०—बिसन हमारो तौ गयो है हरि संग हरि, जिन बिनु लागत सिंगार ज्यों अँगार हैं। —रससारांश।

बिसनी—वि० [सं० व्यसनी] १ जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो। शौकीन। २ छैला। चिकनिया। शौकीन।

बिसमउ†—संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।

बिसमरना(पु)—क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूल जाना।

बिसमिल—वि० [फा० बिस्मिल] घायल। जख्मी।

बिसमौ†—क्रि० वि० [सं० वि+समय] बिना समय के। असमय में। उ०—बिरह अगस्त जो बिसमौ उएऊ। सरवर हरष सूखि सब गएऊ। —पद्मावत।

बिसयक(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विषय] १ देश। प्रदेश। २ रियासत। राज्य।

बिसरना—क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूलना।

बिसरात†(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वेसर] खच्चर।

बिसराना—क्रि० स० [हिं० बिसरना] भूलना। विस्मृत करना। ध्यान में न रखना। उ०—थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि। तुमहूँ, कान्ह, मनो भए आजकालि के दानि। —बिहारी०।

बिसराम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।

बिसरामी(पु)—वि० [सं० विश्राम] १. विश्राम करनेवाला। सुख देनेवाला। सुखद।

बिसरावना(पु)†—क्रि० स० दे० "बिसराना"।

बिसवास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिसवासिनी—वि० स्त्री० [सं० विश्वासिन्] १ विश्वास करनेवाली। २ जिसपर विश्वास हो।
(पु)वि० स्त्री० [सं० अविश्वासिन्] १ जिसपर विश्वास न हो। २ विश्वासघातिनी।

बिसवासी—वि० [सं० विश्वासिन्] १ जो विश्वास करे। २ जिसपर विश्वास हो।
वि० [सं० अविश्वासिन्] जिसपर विश्वास न किया जा सके। बेएतबार। विश्वासघाती।

बिससना(पु)—क्रि० स० [सं० विश्वसन] विश्वास करना। एतबार करना।
क्रि० स० [सं० विशसन] १ वध करना। मारना। घात करना। २ शरीर काटना।

बिसहना(पु)†—क्रि० स० [हिं० बिसाह] १ मोल लेना। खरीदना। २ जान बूझकर अपने साथ लगाना।

बिसहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विषधर] सर्प।

बिसाँयँध—वि० [सं० वसा = चरबी+गंध] जिसमें सड़ी मछली की सी गंध हो।
संज्ञा स्त्री० सड़े मास की सी गंध।

बिसाख(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।

बिसात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ हैसियत। समाई। वित्त। औकात। २ जमा। पूँजी। ३ सामर्थ्य। हकीकत। स्थिति। ४ शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिसपर खाने बने होते हैं।

बिसातखाना—संज्ञा पुं० [हिं० बिसात+खाना] बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें।

बिसाती—संज्ञा पुं० [अ०] सुई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुओं को बेचनेवाला।

बिसाना—क्रि० अ० [सं० वश] वश चलना। बल चलना। काबू चलना।
†क्रि० अ० [हिं० बिस से ना० धा०] विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना।

[illegible]पारद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।

[illegible]ारना—क्रि० स० [हिं० बिसरना का रूप] [illegible] न रखना। [illegible] न रखना।

बिस[illegible](पु)—वि० [सं० विषालु] [स्त्री० बिस[illegible]] विष भरा। विषाक्त। विषैला।

बिसाली(पु)—वि० स्त्री० [सं० विशाल] विशाल। उ०—सो वह काली हरि बनमाली। काढ़ि दियौ करि कीर्ति बिसाली। —नंददास।

बिसास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिसासिन—संज्ञा स्त्री० [सं० अविश्वासिनी] (स्त्री) जिसपर विश्वास न किया जा सके।

बिसासी(पु)—वि० [सं० अविश्वासी] [स्त्री० बिसासिन] जिसपर विश्वास न किया जा सके। दगाबाज। छली। कपटी।

बिसाह—संज्ञा पुं० [सं० व्यवसाय] मोल लेने का काम। खरीद। क्रय।

बिसाहना—क्रि० स० [हिं० बिसाह से ना० धा०] १. खरीदना। मोल लेना। २ जान बूझकर अपने पीछे लगाना।
संज्ञा पुं० १. काम की चीज जिसे खरीदें। सौदा। २ मोल लेने की क्रिया। खरीद।

बिसाहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिसाहना] सौदा। वह वस्तु जो मोल ली जाय।

बिसाहा—संज्ञा पुं० दे० "बिसाहनी"।

बिसिख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विशिख"।

बिसियर(पु)—वि० [सं० विषधर] विषैला।

बिसूरना—क्रि० अ० [सं० विसूरण = शोक] १ खेद करना। मन में दुःख मानना। २. सिसक सिसककर रोना।
संज्ञा स्त्री० चिंता। फिक्र। सोच।

बिसेख(पु)—वि० दे० "विशेष"।

बिसेखना(पु)—क्रि० अ० [सं० विशेष] १. विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना। २ निर्णय करना। निश्चित करना। ३ विशेष रूप से होना या प्रतीत होना।

बिसेन—संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों की एक शाखा।

बिसेषकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० विशेषक] माथे पर लगाया जानेवाला तिलक। उ०—'दास' बिसेषक जत्र को पत्र कि जातें भयो बस भाइ हली को।—शृंगार०।

बिसेसⓅ—वि० दे० "विशेष"।

बिसेसरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर"।

बिसैसीⓅ—क्रि० वि० [सं० विशेष] दे० "विशेष"। उ०—नंददास जो जन दृढ़ करि चरन गहै, एक रसना कहा कहै विसैसी।—नंददास०।

बिस्कुट—संज्ञा पुं० [अं०] खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई हलकी टिकिया जो नमकीन या मीठी होती है और नाश्ते आदि में खाने के काम आती है।

बिस्तर—संज्ञा पुं० [फा०, सं० विस्तर] १ बिछौना। बिछावन। २ विस्तार। बढ़ाव। उ०—ते विस्तर सों मो सों कहौ। हे मुनि सत्तम अलस न गहौ।—नंददास०।

बिस्तरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] फैलना। इधर उधर बढ़ना।

क्रि० स० १ फैलाना। बढ़ाना। २. बढ़ाकर वर्णन करना।

बिस्तरा—संज्ञा पुं० दे० "बिस्तर"।

बिस्तारना—क्रि० स० [सं० विस्तारण] विस्तार करना। फैलाना।

बिस्तुइया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० विष+तूना=टपकना] छिपकली। गृहगोधा।

बिस्फुलिंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वि+स्फुलिंग] अग्निकण। स्फुलिंग। उ०—तुम तैं हम सब उपजत ऐसैं। अगिनि तैं बिस्फुलिंग गन जैसैं।—नंददास०।

बिस्मिल्लाह—[अ०] एक अरबी पद का पूर्वार्ध जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से। इसका प्रयोग मुसलमान लोग कोई कार्य आरंभ करते समय करते हैं।

बिस्वा—संज्ञा पुं० [हिं० बीसवाँ] एक बीघे का बीसवाँ भाग।

मुहा०—बीस बिस्वा = निश्चय। निस्संदेह।

बिस्वास—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिहंग—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

बिहंगीⓅ—वि० [हिं० बेढंगा] कुरूप। भद्दी शक्ल का।

बिहंडना—क्रि० स० [सं० विघटन, प्रा० विहडन] १ खंड खंड कर डालना। तोड़ना। २. नष्ट कर देना। मार डालना।

बिहँसना—क्रि० अ० [सं० विहसन] मुस्कराना।

बिहँसाना—क्रि० अ० [सं० विहसन] १. दे० "बिहँसना"। २. प्रफुल्ल होना (फूल का)।

क्रि० स० हँसाना। हर्षित करना।

बिहँसौंहाँ—वि० [सं० विहसन] हँसता हुआ।

बिहगⓅ—संज्ञा पुं० दे० "विहग"।

बिहद—वि० [फा० बेहद] असीम। परिमाण से बहुत अधिक।

बिहवल—वि० [सं० विह्वल] व्याकुल।

बिहरना—क्रि० अ० [सं० विहरण] घूमना फिरना। । सैर करना। भ्रमण करना।

Ⓟ†क्रि० स० [सं० विघटन] १ फूटना। विदीर्ण होना। २ टूटना-फूटना।

बिहराना†Ⓟ—क्रि० अ० [हिं० बिहरना] फटना।

बिहाग—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का राग।

बिहान—संज्ञा पुं० [सं० विभात या वि+अहन्] १ सवेरा। २ आनेवाला दूसरा दिन। कल।

बिहानाⓅ—क्रि० स० [सं० वि०+√हा=छोड़ना] छोड़ना। त्यागना।

क्रि० अ० व्यतीत होना। गुजरना। बीतना।

बिहारना—क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना। केलि या क्रीड़ा करना।

बिहारी—संज्ञा पुं० दे० "विहारी"।

बिहाल—वि० [फा० बेहाल] व्याकुल। बेचैन। उ०—राखैगो बहाल तौ है बदे हम वाके, औ बिहाल करि राखैगो तौ साहब हमारो है।—रससारांश।

बिहिश्त—संज्ञा पुं० [फा०] स्वर्ग।

बिही—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक पेड़ जिसके फल अमरूद से मिलते जुलते होते हैं।

बिहीदाना—संज्ञा पुं० [फा०] बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है।

बिहीन—वि० [सं० विहीन] रहित। बिना। उ०—बारि बिहीन मीन ज्यों व्याकुल त्यों मजनारि सबै।—सूर०।

बिहुरनाⓅ—क्रि० अ० दे० "बिछुरना"।

बिहून—वि० [हिं० विहीन] बिना। रहित।

बिहूनाⓅ—वि० दे० "बिहून"।

बिहोरना—क्रि० अ० [हिं० बिहरना] बिछुड़ना। उ०—सीता के बिहोरे रती राम में न रही बल दूने लछिमन मेघनाद ते क्यों जीतिहै।—हनुमन्नाटक।

बींड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० बींड़ी+आ (प्रत्य०)] १ टहनियों से बनाया हुआ लंबा नाल जो कच्चे कूएँ में इसलिये दिया जाता है कि उसका भगाड़ न गिरे। २ घास आदि की लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी। ३ बाँस आदि को बाँधकर बनाया हुआ बोझ।

बींद—संज्ञा पुं० [फा० खाविंद] दूल्हा। वर। उ०—सब जग सूता नींद भरि संत न आवै नींद। काल खड़ा सिर ऊपरै, ज्यूँ तोरणि आया बींद।—नंददास०।

बींदनाⓅ—क्रि० स० दे० "बींनना"।

क्रि० स० [?] अनुमान करना।

बींधनाⓅ—क्रि० अ० [सं० √विध्] फँसना। उलझना।

क्रि० स० विद्ध करना। छेदना। बेधना।

बीका†—वि० [सं० वक्र] टेढ़ा।

बीखाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वीखा] कदम। डग।

बीग†—संज्ञा पुं० [सं० वृक] [स्त्री० बीगिन] भेड़िया।

बीगना†—क्रि० स० [सं० विकीरण] १ छाँटना। छितराना। २ गिरना। फेंकना।

बीघा†—संज्ञा पुं० [सं० विग्रह] खेत नापने का बीस बिस्वे का एक वर्ग मान।

बीच†—संज्ञा पुं० [सं० √विच्=अलग करना] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य।

मुहा०—बीच खेत=खुले मैदान। सबके सामने। बीच बीच में=(१) थोड़ी थोड़ी देर में। (२) थोड़े थोड़े अंतर पर।

२ भेद। अंतर। फरक।

मुहा०—बीच करना=(१) लड़ने वालों को लड़ने से रोकने के लिये अलग अलग करना। (२) झगड़ा निबटाना। झगड़ा मिटाना। बीच पड़ना=(१) झगड़ा निबटाने के लिये पंच बनना। (२) मध्यस्थ होना। बीच पारना या डालना=(१) परिवर्तन करना। (२) विभेद या

पार्थक्य करना। बीच में पड़ना=(१) मध्यस्थ होना। (२) जिम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना=दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना=अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना=(ईश्वर आदि की) शपथ खाना। कसम खाना।

३ बीच का अंतर। अवकाश। ४. अवसर। मौका। अवकाश।

क्रि० वि० दरमियान। अंदर। में

संज्ञा स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।

बीचि—संज्ञा स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।

बीचुⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० बीच] १. अवसर। मौका। २. अंतर। फरक।

बीचोबीच—क्रि० वि० [हिं० बीच] बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछनाⓅ†—क्रि० स० [सं०√विच् या विचयन] चुनना। पसंद करके छाँटना।

बीछीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० वृश्चिक] बिच्छू।

बीछूⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "बिच्छू"। २. दे० "बिछुआ" (हथियार)।

बीज—संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है। बीया। तुख्म। दाना। २ प्रधान कारण। मूल प्रकृति। ३ जड़। मूल। ४ हेतु। कारण। ५ शुक्र। वीर्य। ६. कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्णसमुदाय या शब्द। ७. दे० "बीजगणित"। ८ अव्यक्त संख्यासूचक संकेत। ९ वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।

Ⓟसंज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूची। फिहरिस्त। २ वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३ किसी गड़े हुए धन की वह सूची जो उसके साथ रहती है। ४ बीज। ५ कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित—संज्ञा पुं० [सं०] गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।

बीजत्व—संज्ञा पुं० [सं०] बीज का भाव।

बीजदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।

बीजनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] बेना। पखा।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिजौरा नीबू। २. चकोतरा।

बीजबंद—संज्ञा पुं० [हिं० बीज+बाँधना] खिरैंटी या बरियारे के बीज। बला।

बीजमंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूलमंत्र। २ गुर।

बीजरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजा—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा। उ०—ऐ मन के गुण गुंथत जे पहिचानत जानकी और न बीजो। —हनुमन्नाटक।

बीजाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।

बीजी—संज्ञा स्त्री० [सं० बीज+हिं० ई (प्रत्य०)] १ गिरी। मींगी। २. गुठली।

बीजु, बिजुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत] दे० "बिजली"।

बीजू—वि० [सं० बीज+हिं० ऊ (प्रत्य०)] जो बीज बोने से उत्पन्न हो। कलमी का उलटा।

संज्ञा पुं० दे० "बिज्जु"।

बीझ, बीझाⓅ†—वि० [सं० विजन] निर्जन। एकांत।

बीझनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विद्ध] लिप्त होना। फँसना।

बीट—संज्ञा स्त्री० [सं० विट्] पक्षियों की विष्ठा। चिड़ियों का गुह।

बीड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए जो साधारणतः गुल्ली का आकार धारण कर लेते हैं।

बीड़ा—संज्ञा पुं० [सं० वीटक] पान की सादी गिलौरी। खीली। उ०—बीरा खाय चले खेलन को मिलि के चारों बीर। सखा संग सब मिले बरावर आए सरजू तीर। —सूर०।

मुहा०—बीड़ा उठाना=(१) कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। (२) उद्यत होना।

बीड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] १ दे० "बीड़ा"। २ पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरुट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं। ३. मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह में मलती हैं। ४ गड्डी। ५. दे० "बीड़"।

बीतना—क्रि० अ० [सं० व्यतीत] १. समय का विगत होना। वक्त कटना। गुजरना। उ०—कछु दिन पत्र भच्छ करि बीते कछु लीन्हों पानी। कछु दिन पवन कियो अनुप्रासन रोक्यो श्वास यह जानी॥ —सूर०। २ दूर होना। जाता रहना। छूट जाना। उ०—सब विधि सानुकूल लखि सीता। भै निसोच उर अपडर बीता॥ —मानस। ३ संघटित होना। घटना। पड़ना। उ०—मन वच क्रम पल ओट न भावत छिन युग बरस समाने। सूर श्याम के वश्य भए ये जेहि बीते सो जाने॥ —सूर०।

बीता†—संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।

बीथितⓅ†—वि० [सं० व्यथित] दुःखित।

बीधनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विद्ध] फँसना। २ रँगना।

क्रि० स० दे० "बींधना"।

बीन—संज्ञा स्त्री० [सं० वीणा] सितार की तरह का पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा। वीणा।

बीनकार—संज्ञा पुं० [हिं० बीन+फा० कार] वह जो बीन बजाता हो। बीन बजानेवाला।

बीनना†—क्रि० स० [सं० विनयन] १. छोटी छोटी चीजों को उठाना। चुनना। २ छाँटकर अलग करना। छाँटना।

क्रि० स० दे० "बींधना"।

क्रि० स० दे० "बुनना"।

बीफै—संज्ञा पुं० [सं० बृहस्पति] बृहस्पतिवार।

बीबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कुलवधू। कुलीन स्त्री। २. पत्नी। स्त्री।

बीभच्छⓅ—वि० दे० "बीभत्स"। उ०—थाई घिनै बिभाव जहँ घिनमै बरतु अस्वच्छ। बिरचि नींदि सुख मूँदिबो अनुभव रस बीभच्छ। —रससाराश।

बीभत्स—वि० [सं०] १ जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २ क्रूर। ३ पापी।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में सातवाँ। इसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।

बीमा—संज्ञा पुं० [फा० बीम=भय] १ किसी प्रकार की, विशेषतः आर्थिक, हानि पूरी करने की, जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है। २ वह पत्र या पारसल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।

बीमार—वि० [फा०] वह जिसे कोई बीमारी हुई हो। रोगग्रस्त। रोगी।

बीमारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रोग। व्याधि। २ झंझट। ३ बुरी आदत (बोलचाल)।

बीयⓅ†—वि० दे० "बीजा"।

बीयाⓅ†—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।
संज्ञा पुं० [सं० बीज] बीज। दाना।

बीर—वि० दे० "वीर"।
संज्ञा पुं० [सं० वीर] भाई। भ्राता।
संज्ञा स्त्री० १ सखी। सहेली। उ०—काहे कों कुबातनि सुनावति है मेरी बीर, ढरिगो तौ हौं ही भरि ल्यावति हौं जाइकै। —शृंगार०। २ कान का एक आभूषण। तरना। बीरी। ३ कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना। उ०—हाथ पहुँची बीर कंगन जरित मुँदरी भ्राजई। —सूर०। ४ पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

बीरउⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "बिरवा"।

बीरजⓅ—संज्ञा पुं० दे० "वीर्य"।

बीरन—संज्ञा पुं० [सं० वीर] भाई।

बीरबहूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० वीर+बहूटी] गहरे लाल रंग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीड़ा। इंद्रवधू।

बीराⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० बीड़ा] १ पान का बीड़ा। वि० दे० "बीड़ा"। २. वह फूल फल आदि जो देवता के प्रसाद स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है। उ०—कत अपनी परतीत नसावत मैं पायौ हरि हीरा। सूर पतित तबही लै उठिहै जब हँसि दैहै बीरा। —सूर०।

बीरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ी] १ पान का बीड़ा। उ०—तरिवन श्रवण नैन दोउ आँजति नासा बेसरि साजत। बीरा मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत। —सूर०। २ कान में पहनने का एक गहना। तरना।

बीरो†—संज्ञा पुं० [हिं० बिरवा] वृक्ष। पेड़।

बीर्ज—संज्ञा पुं० [सं० वीर्य] दे० "वीर्य"। उ०—हमरो ग्यान बीर्ज बल जिती। प्रभु तुम सम्यक जानहु तिती। —नंददास०।

बील—वि० [सं० बिल] पोला। खोखला।
संज्ञा पुं० नीची भूमि।
संज्ञा पुं० [?] मंत्र।

बीवी—संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।

बीस—वि० [सं० विंशति] १ जो संख्या में उन्नीस से एक अधिक हो।
मुहा०—बीस बिस्वे=अधिकसंभवत।
२. श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम। ३. बड़ा।
संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या या अंक। २०।

बीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बीस] १. बीस चीजों का समूह। कोड़ी। २ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई विभाग।

बीहⓅ—वि० [सं० विंशति] बीस।

बीहड़—वि० [सं० विकट] १ ऊँचा नीचा। विषम। ऊबड़ खाबड़। २ जो सरल या सम न हो। विकट।
वि० [सं० विलग] अलग। जुदा।

बुंद—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।

बुँदकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुंद+की (प्रत्य०)] १ छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।

बुँदवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] दे० "बूँद"। उ०—परन लगी नान्ही बुँदवारी। मोटे थोंभनि हू तें भारी। —नंददास०।

बुंदा—संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १ बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २ माथे पर लटकाने की टिकली।

बुँदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।

बुंदीदार—वि० [हिं० बूँदी+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।

बुँदेलखंड—संज्ञा पुं० [हिं० बुँदेला] उत्तर प्रदेश का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।

बुंदेलखंडी—वि० [हिं० बुंदेलखंड+ई (प्रत्य०)] बुँदेलखंड संबंधी। बुँदेलखंड का।
संज्ञा पुं० बुँदेलखंड का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।

बुँदेला—संज्ञा पुं० [हिं० बूँद+एला (प्रत्य०)] १ क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है। २ बुँदेलखंड का निवासी।

बुंदोरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद+ओरी (प्रत्य०)] बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

बुआ—संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।

बुक—संज्ञा स्त्री० [अं० बकरम] एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा।

बुकचा—संज्ञा पुं० [तु० बुकच] गठरी।

बुकची—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुकचा+ई (प्रत्य०)] १ छोटी गठरी। २ दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सुई, डोरा रखते हैं।

बुकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूकना+ई (प्रत्य०)] किसी चीज का महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुकवाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना] १ उबटन। २ बुका।

बुकुन†—संज्ञा पुं० [हिं० बुकना] १. बुकनी। २ किसी प्रकार का पाचक। चूर्ण। उ०—जलेबे अँदरसा बुकुने दधि चटनी चटकारी जू। —विश्रामसागर।

बुकस—संज्ञा पुं० [सं० बुक्का] भंगी। मेहतर।

बुक्का—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना, पीसना] अभ्रक का चूर्ण।

बुखार—संज्ञा पुं० [अ०] १. ज्वर। ताप। २ वाष्प। भाप। ३. शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।

बुजदिल—वि० [फा०] [संज्ञा बुजदिली] कायर। डरपोक।

बुजुर्ग—वि० [फा०] [संज्ञा बुजुर्गी] वृद्ध। बड़ा।
संज्ञा पुं० बापदादा। पूर्वज। पुरखा।

बुझनिहार†—वि० [सं० √बुध् हिं० बुझनि+हार (प्रत्य०)] बूझनेवाला। समझनेवाला। उ०—अवखर रस बुझनिहार नहि।

बुझना—क्रि० अ० [सं० √बुध्] १ तपी हुई या गरम चीज का पानी में पड़कर ठंढा होना। २ पानी या किसी गरम या तपाई हुई चीज से छौंका जाना। ३ पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंढा होना। ४ चित्त का आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना।

बुझाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुझाना] बुझने की क्रिया या भाव।

बुझाना—क्रि० स० [हिं० बुझना का स० रूप] १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना।

अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज को पानी में डालकर ठंढा करना।

मुहा०—जहर में बुझाना=छूरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में बुझाना जिसमें वह फल भी जहरीला हो जाय।

३ पानी को छौंकना। किसी चीज को तपाकर पानी में डालना। ४ पानी डालकर ठढा करना। ५ चित्त का आवेश या उत्साह आदि शांत करना।

क्रि० स० [हिं० बुझना का प्रे० रूप] १ बूझने का काम दूसरे से कराना। २ बोध कराना। समझाना। ३. संतोष देना।

बुट(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "बूटी"।

बुटना(पु)†—क्रि० अ० [?] भागना। हट जाना। उ०—राम सिया शिव सिंधु धरा अहिदेवन के दुखपुज बुटे।—हनुमन्नाटक।

बुड़की—सज्ञा स्त्री० [हिं० बुड़ना] डुबकी। गोता। उ०—करति स्नान सब प्रेम बुड़की देहि समुझि होई भजि तीर आवे।—सूर०।

बुड़ना†—क्रि० अ० दे० "बूड़ना"।

बुड़बुड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।

बुड़ाना(पु)†—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

बुड्डी—सज्ञा स्त्री० [हिं० बुड़ना] डुबकी। गोता।

बुड्ढा†—वि० [स० वृद्ध] [स्त्री० बुढ़िया] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।

बुढ़वा†—वि० दे० "बुड्ढा"।

बुढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुढ़ाना—क्रि० अ० [हिं० बूढ़ा+से ना० धा०] वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना। उ०—अब मैं जानी देह बुढ़ानी। सीस पाँव धर कह्यो न मानत तनु की दशा सिरानी।—सूर०।

बुढ़ापा—सज्ञा पुं० [हिं० बूढ़ा+पा (प्रत्य०)] वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था।

बुढ़िया—सज्ञा स्त्री० [स० वृद्धा] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाली स्त्री। वृद्धा।

यौ०—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।

बुढ़ौती†—सज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुत—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० बुद्ध] १ मूर्ति। प्रतिमा। पुतला। २ वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रियतम।

वि० मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला।

बुतना†—क्रि० अ० दे० "बुझना"।

बुतपरस्त—संज्ञा पुं० [फा०] [सज्ञा बुतपरस्ती] मूर्तिपूजक।

बुतशिकन—वि० [फा०] [संज्ञा बुतशिकनी] मूर्तियों को तोड़नेवाला। मूर्ति-पूजा का विरोधी।

बुताना†—क्रि० अ० दे० "बुझना"।

क्रि० स० दे० "बुझाना"।

बुताम—सज्ञा पुं० [अँ० बटन] १ बटन। २. घुडी।

बुत्ता—सज्ञा पुं० [देश०] १ धोखा। झाँसा। पट्टी। २ बहाना। हीला।

बुदबुद—सज्ञा पुं० [स०] बुलबुला। बुल्ला।

बुद्ध—वि० [सं०] १ जो जागा हुआ हो। जागरित। २ ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३ पडित। विद्वान्।

सज्ञा पुं०—बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी मायादेवी के गर्भ से नेपाल की तराई के लुबिनी नामक स्थान में हुआ था। सिद्धार्थ गौतम।

बुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विचार या निश्चय करने की शक्ति। अक्ल। समझ। २. उपजाति वृत्त का चौदहवाँ भेद। सिद्धि। ३ एक प्रकार का छंद। लक्ष्मी। ४ छप्पय का ४२ वाँ भेद।

बुद्धिजीवी—वि० [सं०] वह जो केवल बुद्धिबल से जीविका उपार्जन करता हो।

बुद्धिपर—वि० [स०] जिसतक बुद्धि न पहुँच सके।

बुद्धिमत्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्—वि० [सं०] वह जो बहुत समझदार हो। अक्लमद।

बुद्धिमानी—सज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

बुद्धिवत—वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुद्धिवाद—सज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धिसंगत बातें ही मानी जाती हैं।

बुद्धिशाली—वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुधंगड़—सज्ञा पुं० [हिं० बुद्धू] मूर्ख। बेवकूफ।

बुद्धिहीन—वि० [स०] मूर्ख। बेवकूफ।

बुध—सज्ञा पुं० [स०] १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य के सबसे अधिक समीप है। २ भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह। ३ देवता। ४ बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

बुधजामी—सज्ञा पुं० [सं० बुध+हिं० जन्म] बुध के पिता, चद्रमा।

बुधवान(पु)†—वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुधवार—सज्ञा पुं० [सं०] सप्ताह के सात वारों में से एक जो मगलवार के बाद और वृहस्पतिवार के पहले पड़ता है।

बुधि(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।

बुनकर—सज्ञा पुं० [हिं० बुनना] कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।

बुनत—सज्ञा स्त्री० [हिं०√बुन+त (प्रत्य०)] बुनने की क्रिया या भाव। बुनाई।

बुनना—क्रि० स० [स० वयन] १ जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना। २ बहुत से सीधे और बेड़े सूतों को मिलाकर उनको कुछ के ऊपर और कुछ के नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना।

बुनाई—सज्ञा स्त्री० [हिं०√बुन+आई (प्रत्य०)] १ बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २ बुनने की मजदूरी।

बुनावट—सज्ञा स्त्री० [हिं०√बुन+आवट (प्रत्य०)] बुनने में सूतों की मिलावट का ढग।

बुनिया—सज्ञा पुं० दे० "बुनकर"।

†संज्ञा स्त्री० दे० "बुँदिया"।

बुनियाद—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जड़। मूल। नींव। २ असलियत। वास्तविकता।

बुनियादी—वि० [फा०] १ बुनियाद या जड़ से सबंध रखनेवाला। २ मौलिक। मूलभूत। प्रारभिक।

बुबुकना—क्रि० अ० [(अनु०) सं० बुक्कन ?] जोर जोर से रोना। पुक्का फाड़ना। ढाढ़ मारना।

बुबुकारी—सज्ञा स्त्री० [(अनु०) सं० बुक्कार+हिं० ई (प्रत्य०)] पुक्का फाड़कर रोना। जोर जोर से रोना। उ०—जहाँ तहाँ बुडक बिलोकि बुबुकारी देत ज त

निकेत धाओ धाओ लागि आगि रे।—कविता०।

बुभुक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षुधा। भूख।

बुभुक्षित—वि० [सं०] भूखा। क्षुधित।

बुयाम—संज्ञा पुं० [अं० ?] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का गोल और ऊँचा बड़ा पात्र। जार।

बुरकना—क्रि० स० [अनु०] पिसी हुई या महीन चीज को किसी दूसरी चीज पर छिड़कना। भुरभुराना।

बुरका—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरा—वि० [सं० विरूप] जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब। निकृष्ट। मंदा।

मुहा०—बुरा मानना=द्वेष रखना। खार खाना।

यौ०—बुरा भला=(१) हानि लाभ। खराब और अच्छा। (२) गालीगलौज। लानत मलामत।

बुराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुरा+ई (प्रत्य०)] १ बुरा होने का भाव। बुरापन। खराबी। २ खोटापन। नीचता। ३. अवगुण। दोष। दुर्गुण। ४ शिकायत। निंदा।

बुरादा—संज्ञा पुं० [फा०] वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। लकड़ी का चूरा। कुनाई।

बुरुश—संज्ञा पुं० [अं० ब्रश] रँगने या सफाई करने के लिये खास तरह की बनी हुई कूँची।

बुर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १ किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है। गरगज। २. मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अंग। ३ गुंबद।

बुर्द—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। नफा। २ शर्त। होड़। बाजी। ३ शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है।

बुलंद—वि० [फा० बुलंद] [संज्ञा बुलंदी] १ भारी। बड़ा। २ ऊँचा।

बुलबुल—संज्ञा स्त्री० [अ०, फा०] एक प्रसिद्ध गानेवाली छोटी चिड़िया।

बुलबुला—संज्ञा पुं० [सं० बुद्बुद] पानी का बुल्ला। बुदबुदा।

बुलवाना—क्रि० स० [हिं० बुलाना का प्रे० रूप] बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक—संज्ञा पुं०, स्त्री० [तु०] वह लंबोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं। वह मोती या सोने का गहना जो नाक में स्त्रियाँ पहनती हैं। उ०—सुभ्र बुलाक मुक्तद्युति कै छबि तिहुँ पुर की।—छंदार्णव।

बुलाकी—संज्ञा पुं० [तु० बुलाक] घोड़े की एक जाति।

बुलाना—क्रि० स० [हिं० बोलना का स० रूप] १. आवाज देना। पुकारना। २. अपने पास आने के लिये कहना। ३ किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा—संज्ञा पुं० [हिं० बुलाना] बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह—संज्ञा पुं० [सं० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गर्दन और पूँछ के बाल पीले हों।

बुलौआ—संज्ञा पुं० दे० "बुलावा"।

बुल्ला—संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।

बुहारना—क्रि० स० [सं० बहुकरण] झाड़ू से जगह साफ करना। झाड़ना। उ०—द्वार बुहारत फिरत अष्ट सिद्धि। कौरेन सथिया चीतति नवनिधि।—सूर०।

बुहारी—संज्ञा स्त्री० [बहुकरी] झाड़ू। बढ़नी। सोहनी।

बूँद—संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] १ जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्राय छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है। कतरा। टोप।

मुहा०—बूँदें गिरना या पड़ना=धीमी वर्षा होना। बूँद भर=बहुत थोड़ा।

२ वीर्य। ३ एक प्रकार का कपड़ा।

बूँदाबाँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद+अनु० बाँद] हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद+ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की मिठाई। बुँदिया। २ वर्षा के जल की बूँद।

बू—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बास। गंध। महक। २ दुर्गंध। बदबू।

बूआ—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ पिता की बहन। फूफी। २ बड़ी बहन।

संज्ञा पुं० [हिं० बकोटा] कोई वस्तु उठाने के लिये हथेली को गहरी की हुई मुद्रा। चंगुल। बकोटा।

बूकना—क्रि० स० [देश०] १. महीन पीसना। पीसकर चूर्ण करना। २ गढ़कर बातें करना; जैसे—अँगरेजी बूकना।

बूका—संज्ञा पुं० १ दे० "गंगबरार। २ दे० "बुक्का"। उ०—उड़ि उड़ि केसर, बूका, बदन, अट गए अटा अटारी।—नंददास०।

बूकी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बुकनी"।

बूचड़—संज्ञा पुं० [अं० बुचर] कसाई।

बूचड़खाना—संज्ञा पुं० [हिं० बूचड़+फा० खाना] वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है। कसाईबाड़ा।

बूचा—वि० [सं०√बुस्=विभाग करना] १ जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। २ जिसके ऐसे अंग कट गए हों अथवा न हों, जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो।

बूजना—क्रि० स० [?] धोखा देना।

बूझ—संज्ञा स्त्री० [सं० बुद्धि] १ समझ। बुद्धि। अक्ल। ज्ञान। २. पहेली।

बूझन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "बूझ"।

बूझना—क्रि० स० [हिं० बूझ (बुद्धि)] १ समझना। जानना। २ पूछना।

बूट—संज्ञा पुं० [सं० विटप, हिं० बूटा] १. चने का हरा पौधा। २ चने का हरा दाना। ३ वृक्ष। पेड़। पौधा। उ०—सब सोच विमोचन चित्रकूट। कालिहरन करन कल्यान बूट।—विनय०।

बूटना(पु)—क्रि० अ० [?] भागना।

बूटनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहूटी] बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

बूटा—संज्ञा पुं० [सं० विटप] १ छोटा वृक्ष। पौधा। २ फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ों या दीवारों आदि पर बनाए जाते हैं। बड़ी बूटी।

बूटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूटा का स्त्री० रूप] १ वनस्पति। वनौषधि। जड़ी। २ भाँग। भंग। ३ फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर [illegible] हैं। छोटा बूटा। ४ खेलने के ताश के पत्तों पर बनी हुई टिक्की।

बूड़ना†—क्रि० स० [सं०√बुड्] १ डूबना। निमज्जित होना। २ लीन होना। निमग्न होना।

बूड़ा†—संज्ञा पुं० [हिं० बूड़ना] वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़।

बूढ़ा†—वि० दे० "बुड्ढा"। उ०—बूढ़ एक

कह सगुन विचारी। भरतहिं मिलिअ न होइहि रारी।—मानस।

संज्ञा पुं० [?] १ लाल रंग। २. वीरबहूटी। उ०—रस की सी रुख, ससिमुखी, हँसि हँसि बोलत बैन। गूढ़ मानु मन क्यों रहै, भए बूढ़ रँग नैन।—बिहारी०।

बूढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "बुड्ढा"। उ०—सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं विमूढ़ा।—मानस।

बूत—संज्ञा पुं० [सं० वृत्त] बूता। बल। उ०—को चढ़ि नाँघै समुद ए, है काकर अस बूत।—पद्मावत।

बूता—संज्ञा पुं० [हिं० वित्त] बल। शक्ति।

बूरना(पु)†—क्रि० अ० दे० "डूबना"।

बूरा—संज्ञा पुं० [हिं० भूरा] १. कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है। शक्कर। २. साफ की हुई चीनी। ३. सफूफ।

बृच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।

बृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कटाई। बरहटा। वनभंटा। २ विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। ३. उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ४ एक वैदिक वर्णवृत्त जिसके चरण में कुल नौ अक्षर होते हैं।

बृहत्—वि० [सं०] १. बड़ा। विशाल। २ दृढ़। बलिष्ठ। ३ उच्च। ऊँचा (स्वर आदि)।

बृहदारण्यक—संज्ञा पुं० [सं०] शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

बृहद्—वि० दे० "बृहत"।

बृहद्रथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ शतधन्वा के पुत्र का नाम ३ जरासंध के पिता का नाम।

बृहन्नल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम। २ बाहु।

बृहन्नला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञातवास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच गाना सिखाते थे।

बृहस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २ सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।

बेंच—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. लकड़ी, पत्थर, सिमेंट या लोहे आदि की एक प्रकार की चौकी जो चौड़ी कम और लंबी अधिक होती है। २. न्यायाधीश के बैठने का आसन या स्थान। न्याय करने में नियुक्त एक से अधिक मैजिस्ट्रेट या जज। ४. (विधानसभा या संसद् में) विशेष दलों के बैठने के लिये नियत स्थान या आसन।

बेंड़ना(पु)—क्रि० स० दे० "बेढ़ना"।

बेंग—संज्ञा पुं० [सं० भेक] मेंढक।

बेंट, बेंठ—संज्ञा स्त्री० [सं०√वेष्ट ?] औजारों में लगा हुआ काठ का दस्ता। मूठ।

बेंड़†—संज्ञा स्त्री० [सं०√वेष्ट ?] टेक। चाँड़।

बेंड़ा†—वि० [सं० वेल्लित या वेष्टित] १. आड़ा। तिरछा। २ कठिन। मुश्किल। टेढ़ा।

बेंत—संज्ञा पुं० [सं० वेतस्] १. एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती हैं। २. बेंत के डंठल की बनी हुई छड़ी।

मुहा०—बेंत की तरह काँपना=थर थर काँपना। बहुत अधिक डरना।

बेंदा—संज्ञा पुं० [सं० विंदु] १. माथे पर लगाने का गोल तिलक। टीका। उ०—नाना विध शृंगार बनाए बेंदा दीन्हों भाल।—सूर०। २ एक आभूषण। बेंदी। बिंदी। ३. बड़ी गोल टिकली।

बेंदी—संज्ञा स्त्री० [सं० विंदु, हिं० बिंदी] १ टिकली। बिंदी। २ शून्य। सुन्ना। उ०—कहत सबै, बेंदी दियें आँकु दसगुनो होतु। तिय लिलार बेंदी दियें अगिनितु बढ़त उदोतु॥—बिहारी०। ३ दावनी या बेंदी नाम का गहना।

बेंदुली—संज्ञा स्त्री० [सं० विंदु] टीका नामक गहना। उ०—लाल की बेंदुली लालरी की लरियाँ जुत आइ निछावरि कीने।—शृंगार०।

बेंवड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० बेंड़ा=आड़ा] बंद किवाड़ के पीछे लगाने की लकड़ी। अरगल। गज। ब्योंड़ा।

बेंवत—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्योंत"।

बे—अव्य० [फा० बे मि० सं०] बिना। बगैर, जैसे, बेगैरत, बेइज्जत।

अव्य० [हिं० हे] छोटों के लिये संबोधन (तिरस्कार)।

बेअंत(पु)†—क्रि० वि० [हिं० बे+सं० अंत] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।

बेअकल—वि० [फा० बे+अ० अक्ल] मूर्ख।

बेअदब—वि० [फा० बे+अ० अदब] [संज्ञा बेअदबी] जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे।

बेआब—वि० [फा० बे+अ० आब] १. जिसमें आब (चमक) न हो। २. तुच्छ।

बेआबरू—वि० [फा०] बेइज्जत।

बेइंसाफी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अन्याय।

बेइज्जत—वि० [फा० बे+अ० इज्जत] [संज्ञा बेइज्जती] १ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २ अपमानित।

बेइलि†—संज्ञा पुं० दे० "बेला"।

बेईमान—वि० [फा०] [संज्ञा बेईमानी] १ जिसे धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २ जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो। ३ अविश्वसनीय।

बेउज्र—वि० [फा० बे+अ० उज्र] जो आज्ञापालन करने में कोई आपत्ति न करे।

बेकदर—वि० [फा०] [संज्ञा बेकदरी] बेइज्जत। अप्रतिष्ठित।

बेकरार—वि० [फा०] [संज्ञा बेकरारी] जिसे शांति या चैन न हो। व्याकुल। विकल।

बेकल(पु)†—वि० [सं० विकल] व्याकुल।

बेकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेकल+ई (प्रत्य०)] १ घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २ गर्भाशय संबंधी एक रोग।

बेकस—संज्ञा पुं० [फा०] १ निःसहाय। निराश्रय। २ दरिद्र। दीन।

बेकसूर—वि० [फा० बे+अ० कसूर] जिसका कोई दोष या कसूर न हो। निरपराध।

बेकहा—वि० [हिं० बे+कहना] जो किसी का कहना न माने।

बेकाबू—वि० [फा० बे+अ० काबू] १. विवश। लाचार। २ जो किसी के वश में न हो।

बेकाम—वि० [फा० बे+हिं० काम] १ जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २ जो किसी काम में न आ सके।

बेकायदा—वि० [फा० बे+अ० कायदा] कायदे के खिलाफ। नियमविरुद्ध।

बेकार—वि० [फा०] [संज्ञा बेकारी] १ निकम्मा। निठल्ला। २ निरर्थक। व्यर्थ। ३. बिना कामकाज या उद्योगधंधे का। जीविका के साधन के बिना।

बेकार्योⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० बिकारी] बुलाने का शब्द, जैसे, अरे, हो आदि।

बेकुसूर—वि० [फा० बे+अ० कुसूर] जिसका कोई कसूर न हो। निरपराध।

बेखⓅ†—संज्ञा पु० [स० वेष] १ भेष। स्वरूप। २ स्वाँग। नकल।

बेखटके—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० खटका] बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमंजस के। निःसंकोच।

बेखतर—वि० [फा०] निर्भय। निडर।

बेखबर—वि० [फा०] [संज्ञा बेखबरी] १. अनजान। नावाकिफ। २ बेहोश। बेसुध।

बेग—संज्ञा पुं० दे० "वेग"।

संज्ञा पुं० [तु०] १ अमीर। सरदार। राजा। २ पति।

बेगम—संज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] १ रानी। अमीर की पत्नी। २ प्रतिष्ठित महिला। श्रीमती।

बेगर—वि० दे० "बेहर"।

क्रि० वि० दे० "बगैर"।

बेगरज—वि० [फा० बे+अ० गरज] जिसे कोई गरज या परवाह न हो।

बेगवती—संज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णार्ध समवृत्त जिसके विषम पादों में ३ सगण, एक गुरु और सम पादों में ३ भगण और २ गुरु होते हैं। उ०—गिरिजापति मो मन मायो। नारद शारद पार न पायो।

बेगाना—वि० [फा०] २ गैर। दूसरा। पराया। २. नावाकिफ। अनजान।

बेगार—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया हुआ काम। २ वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।

मुहा०—*बेगार टालना*=बिना चित्त लगाए कोई काम करना।

बेगारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी। २. पारिश्रमिक रहित काम। बेगार। उ०—कीनी सब लोक में तिमिर अधिकारी तिमिरारि को बेगारी लै मरावै नीर छनु छनु।—काव्यनिर्णय।

बेगिⓅ†—क्रि० वि० [स० वेग] १ जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २ चटपट। तुरंत।

बेगुनाह—वि० [फा०] [संज्ञा बेगुनाही] जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। बेकसूर। निर्दोष।

बेगैरत—वि० [फा०] [संज्ञा बेगैरती] निर्लज्ज। बेशरम।

बेचना—क्रि० स० [सं०√विच् ?, मि० लैटिन "विचस्" स० वेचा=भाड़ा, मजदूरी; प्रा० विच्च=बेचना] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। विक्रय करना।

मुहा०—*बेच खाना*=खो देना। गँवा देना। उ०—पुरुष केरी सबै सोहै कूबरी के काज। सूर प्रभु की कहा कहिए बेंचि खाई लाज।—सूर०।

बेचानाⓅ—क्रि० स० दे० "बिकवाना"।

बेचारा—वि० [फा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और निस्सहाय। गरीब। दीन।

बेचैन—वि० [फा०] [संज्ञा बेचैनी] जिसे चैन न पड़ता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।

बेजड़—वि० [फा० बे+हिं० जड़] जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।

बेजबान—वि० [फा०] १ जिसमें बातचीत करने की शक्ति न हो। गूँगा। मूक। २ दीन। गरीब।

बेजा—वि० [फा०] १ बेठिकाने। बेमौके। २ अनुचित। नामुनासिब। ३ खराब।

बेजान—वि० [फा०] १ मुरदा। मृतक। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। ४ निर्बल। कमजोर।

बेजाब्ता—वि० [फा० बे+अ० जाब्ता] कानून या नियम आदि के विरुद्ध।

बेजार—वि० [फा०] [संज्ञा बेजारी] १ नाराज। २ दुखी।

बेजोड़—वि० [फा० बे+हिं० जोड़] १ जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २ जिसकी समता न हो सके। अद्वितीय। निरुपम।

बेझनाⓅ—क्रि० स० दे० "बेधना"।

बेझाⓅ†—संज्ञा पुं० [स० वेध] निशाना। लक्ष्य।

बेटकीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेटा] बेटी। उ०—ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि, पेट ही को पचत बेंचत बेटा बेटकी।—कविता०।

बेटलाⓅ†—संज्ञा पु० दे० "बेटा"।

बेटा—संज्ञा पुं० [सं० वटु या प्रा० विट्ट] [स्त्री० बेटी] लड़का। पुत्र।

बेटौना†—संज्ञा पुं० दे० "बेटा"।

बेठन—संज्ञा पुं० [स० वेष्टन] वह कपड़ा जो किसी चीज को लपेटने के काम में आवे। बँधना।

बेठिकाने—वि० [फा० बे+हिं० ठिकाना] १ जो अपने उचित स्थान पर न हो। स्थानच्युत। २ ऊलजलूल। ३. व्यर्थ। निरर्थक।

बेढ़—संज्ञा पुं० [स०√वेष्ट् या वेला, मि० लैटिन "वेलम्"=आवरण, घेरा] १ वृक्ष के चारों ओर लगाई हुई बाड़। मेंड़। २ रुपया (दलाल)।

बेढ़ना—क्रि० स० दे० "बेढ़ना"।

बेड़ा—संज्ञा पुं० [स० वेड़ा] १ बड़े बड़े लट्ठों या तख्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिसपर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। तिरना।

मुहा०—*बेड़ा पार करना या लगना*=किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना *बेड़ा डूबना*=विपत्ति में पड़कर नाश होना।

२ बहुत सी नावों आदि का समूह।

बेड़िन, बेड़िनी—संज्ञा स्त्री० [?] नट जाति की वह स्त्री जो नाचती गाती हो।

बेड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १ लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों को इसलिये पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें। निगड़। उ०—पायन गाढ़ी बेड़ी परी। साँकर ग्रीव हाथ हथकड़ी॥—पदमावत। २ बाँस की एक प्रकार की टोकरी।

बेडौल—वि० [हिं० बे+डौल=रूप] १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २ "बेढंगा"।

बेढंगा—वि० [फा० बे+हिं० ढंग+आ (प्रत्य०)] [संज्ञा बेढंगापन] १ जिसका ढंग ठीक न हो। बुरे ढंगवाला। २ जो ठीक तरह से लगाया, रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३ भद्दा। कुरूप।

बेढंगापन—संज्ञा पुं० [हिं० बेढंगा+पन (प्रत्य०)] बेढंगा होने का भाव।

बेढ़—संज्ञा पुं० [स०√व्ली या √व्ली ?] नाश। बरबादी।

बेढ़ई—संज्ञा स्त्री० [सं०√विल्=ढकना छिपना या हिं० बेढ़ना] कचौड़ी।

बेढ़ना—क्रि० स० [सं० वेष्टन वेला=घेरा, मि० लैटिन वेलम्=आवरण, घेरा या सं० वेष्टन] १ वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी

रखा के लिये, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना। रूँधना। २. चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।

बेढब—वि० [हिं० बे+ढब] १ जिसका ढब अच्छा न हो। २. बेढंगा। भद्दा।

क्रि० वि० बुरी तरह से। बेतरह।

बेढ़ा—संज्ञा पुं० [सं० वलय] हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा (गहना)।

संज्ञा पुं० [सं० वेला या वेष्टक] घर के आसपास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हों।

बेणीफूल—संज्ञा पुं० [सं० वेणी+हिं०फूल] फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। सीसफूल।

बेतकल्लुफ—वि० [फा० बे+अ० तकल्लुफ] [संज्ञा बेतकल्लुफी] १ जिसे तकल्लुफ की कोई परवा न हो। जो अपने हृदय की बात साफ साफ कह दे।

क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार की तकल्लुफ के। २ बेधड़क। नि सकोच।

बेतकसीर—वि० [फा० बे+अ० तकसीर] निरपराध। निर्दोष।

बेतना—क्रि० अ० [सं० वित्त=ज्ञात, ख्यात] जान पड़ना।

बेतमीज—वि० [फा० बे+अ० तमीज] [संज्ञा बेतमीजी] जिसे शऊर या तमीज न हो। बेहूदा। उजड्ड।

बेतरह—क्रि० वि० [फा० बे+अ० तरह] १ बुरी तरह से। अनुचित रूप से। २ असाधारण रूप से।

वि० बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

बेतरीका—वि० क्रि० वि० [फा० बे+अ० तरीका] तरीके या नियम के विरुद्ध। अनुचित।

बेतहाशा—क्रि० वि० [फा० बे+अ० तहाशा] १ बहुत अधिक तेजी से। २ बहुत घबराकर। ३ बिना सोचे समझे।

बेताब—वि० [फा०] [संज्ञा बेताबी] १ दुर्बल। कमजोर। २ विकल। व्याकुल।

बेतार—वि० [हिं० बे+तार] बिना तार का। जिसमें तार न हो।

यौ०—बेतार का तार=विद्युत की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा जाता है।

बेताल—संज्ञा पुं० दे० "वेताल"।

संज्ञा पुं० [सं० वैतालिक] भाट। बंदी।

बेतुका—वि० [फा० बे+हिं० तुक] १ जिसमें सामंजस्य न हो। बेमेल। २ बेढंगा। बेढब।

बेतुका छंद—संज्ञा पुं० [हिं० बेतुका+सं० छंद] बिना तुक का छंद। अर्थात् प्रासहीन छंद।

बेदखल—वि० [फा०] जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो। अधिकारच्युत।

बेदखली—संज्ञा स्त्री० [फा०] संपत्ति पर से दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना।

बेदम—वि० [फा०] १ मृतक। मुरदा। २ मृतप्राय। अधमरा। ३ जर्जर। बोदा।

बेदमजनूँ—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष। इसकी छाल और फलों आदि का व्यवहार औषध में होता है।

बेदमुश्क—संज्ञा पुं० [फा०] एक वृक्ष जिसमें कोमल और सुगंधित फूल लगते हैं। इसकी सूखी टहनी की कलम बनाते हैं।

बेदर्द—वि० [फा०] [संज्ञा बेदर्दी] जो किसी की व्यथा को न समझे। कठोरहृदय। निर्दय।

बेदलैला—संज्ञा पुं० [फा०] एक पौधा जिसके फूल बहुत सुंदर होते हैं।

बेदाग—वि० [फा०] १. जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो। साफ। २ निर्दोष। शुद्ध। ३ निरपराध। बेकसूर।

बेदाना—संज्ञा पुं० [हिं० बिहीदाना] १ एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज। दारु-हल्दी। चित्रा।

वि० [हिं० बे (प्रत्य०)+फा० दाना=बुद्धिमान्] मूर्ख। बेवकूफ।

बेदाम—वि० [फा०] बिना दाम का। मुफ्त।

संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

बेदार—वि० [फा०] [संज्ञा बेदारी] १ जागा हुआ। जाग्रत। २ सावधान।

बेध—संज्ञा पुं० [सं० वेध] १ छेद। २ दे० "वेध"।

बेधड़क—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० धड़क] १ बिना किसी प्रकार के संकोच के। नि सकोच। २. बेखौफ। निडर होकर। ३ बिना आगा पीछा किए।

वि० १. जिसे किसी प्रकार का सकोच या खटका न हो। निर्द्वंद। २. निर्भय।

बेधना—क्रि० स० [सं० वेधन] नुकीली चीज की सहायता से छेद करना। छेदना। भेदना।

बेधर्म—वि० [सं० विधर्म] जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। धर्मच्युत।

बेधिया†—संज्ञा पुं० [हिं० √बेध+इया (प्रत्य०)] अंकुश।

बेधीर(पु)—वि० [फा० बे+हिं० धीर] अधीर।

बेन†—संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १ वंशी। मुरली। २ बाँसुरी। ३ सँपेरों के बजाने की तुमड़ी। महुवर। ४ बाँस।

बेनजीर—वि० [फा०] अनुपम। बेजोड़।

बेनसीब—वि० [फा० बे+अ० नसीब] अभागा। बदकिस्मत।

बेना†—संज्ञा पुं० [सं० वेणु] [स्त्री० अल्पा० बेनिया] १ बाँस का बना हुआ छोटा पंखा। २ खस। उशीर। उ०—कीन्हेसि अगर कस्तुरी बेना। कीन्हेसि भीमसेनि अरु चेना।—पदमावत। ३. बाँस।

संज्ञा पुं० [सं० वेणी] माथे पर बेंदी के बीच में पहना जानेवाला गहना।

बेनागा—क्रि० वि० [फा० बे+अ० नागा] निरंतर। लगातार।

बेनिमून(पु)—वि० [फा० बे+नमूना] अद्वितीय। अनुपम।

बेनिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेना] छोटा पखा। पंखी।

बेनी—संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] १ स्त्रियों की चोटी। उ०—कृस तनु सीस जटा एक बेनी। अपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी।—मानस। २ प्रयाग में गंगा और यमुना का संगम जहाँ पुरानी कथाओं के अनुसार माना जाता है कि सरस्वती भी अंतःसलिला होकर मिली है। त्रिवेणी। उ०—एहि विधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी।—मानस। ३ किवाड़ों के पल्ले में लगी हुई एक छोटी लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

बेनु—संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १ दे० "वेणु"। २ बंसी। मुरली। ३ बाँस।

बेपंत—वि० [सं० वेपत] वेपमान। कंपमान। उ०—सीतल सलिल कठ परजत। तहँ ठाढ़ी थरथर बेपत।—नंददास०।

बेपनाह—वि० [हिं० बे+फा० पनाह] जिससे किसी प्रकार रक्षा न हो सके। बहुत भीषण।

बेपरद—वि० [फा० बे+परदा] [संज्ञा बेपर्दगी] १ जिसके आगे कोई ओट न हो। अनावृत। २. नगा। नग्न।

बेपरवा, बेपरवाह—वि० [फा० बेपरवाह] [संज्ञा बेपरवाही] १ जिसे कोई परवा न हो। बेफिक्र। २ मनमौजी। ३ उदार।

बेपाइⓅ†—वि० [हिं० बे+सं० उपाय] जिसे घबराहट के कारण कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्का। उ०—कौहर सी एड़ीनु की लाली देखि सुभाइ। पाइ महावरु देइ को आप भई बेपाइ।—बिहारी०।

बेपीर—वि० [फा० बे+हिं० पीर=पीड़ा] १ दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २. निर्दय। बेरहम।

बेपेंदी—वि० [हिं० बे+पेंदी] जिसमें पेंदी न हो।

मुहा०—बेपेंदी का लोटा=किसी के जरा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी।

बेफायदा—वि०, क्रि० वि० [फा०] व्यर्थ। निरर्थक।

बेफिक्र—वि० [फा०] [संज्ञा बेफिक्री] जिसे कोई फिक्र न हो। निश्चिंत। बेपरवा।

बेबस—वि० [सं० विवश] १ जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २. पराधीन। परवश।

बेबसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेबस+ई (प्रत्य०)] १. बेबस होने का भाव। लाचारी। मजबूरी। विवशता। २. पराधीनता। परवशता।

बेबहा—वि० [फा०] बहुमूल्य।

बेबाक—वि० [फा०] चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ (ऋण)।

बेब्याहा—वि० [फा० बे+हिं० ब्याहा] [स्त्री० बेब्याही] अविवाहित। कुँआरा।

बेभाव—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० भाव] जिसकी कोई गिनती न हो। बेहद।

मुहा०—बेभाव की पड़ना=(१) बहुत अधिक मार पड़ना। (२) बहुत अधिक फटकार पड़ना।

बेमरम्मत—वि० [फा०] टूटा फूटा। बिना सुधरा। जिसकी मरम्मत न हुई हो। बिगड़ा हुआ।

बेमालूम—क्रि० वि० [फा०] बिना किसी को पता लगे।

वि० जो मालूम न पड़ता हो।

बेमिलावट—वि० [फा० बे+हिं० मिलावट] शुद्ध। खालिस। साफ। जिसमें मिलावट न हो।

बेमुनासिब—वि० [फा०] अनुचित।

बेमुरव्वत—वि० [फा०] [संज्ञा बेमुरव्वती] जिसमें मुरव्वत न हो। दुःशील। निःसंकोच। तोताचश्म।

बेमौका—वि० [फा०] जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो।

संज्ञा पुं० मौके का न होना।

बेमौसिम—वि० [फा०] १ मौसिम न होने पर भी होनेवाला। २ जिसका मौसिम न हो।

बेर—संज्ञा पुं० [सं० बदरी] १. एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। २. इस वृक्ष का फल। ३ समय। उ०—काँच काँच ही नग नगै, मोल तोल की बेर।—काव्यनिर्णय।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] १ बार। दफा। २ विलंब। देर।

बेरजरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर+झड़ी ?] झड़बेरी।

बेरवा—संज्ञा पुं० [?] कलाई में पहनने का सोने या चाँदी का कड़ा।

संज्ञा पुं० दे० "बेवरा"।

बेरस—वि० [फा० बे+ सं० रस] १ जिसमें रस का अभाव हो। रसरहित। २ जिसमें अच्छा स्वाद न हो। बुरे स्वादवाला। ३. जिसमें आनंद न हो। बेमजा।

बेरहम—वि० [फा० बेरहम] [संज्ञा बेरहमी] निर्दय। निठुर। दयाशून्य।

बेरा†—संज्ञा पुं० [सं० वेला] १ समय। वक्त। २ तड़का। प्रातःकाल।

बेराम—वि० दे० "बीमार"।

बेरियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर] समय। वक्त।

बेरी—संज्ञा स्त्री० १ दे० "बेर"। २ दे० "बेड़ी"।

बेरुख—वि० [फा०] [संज्ञा बेरुखी] १ जो समय पड़ने पर रुख (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २ नाराज। क्रुद्ध।

बेलंद†—वि० [फा० बलंद] १. ऊँचा। २. जो बुरी तरह विफलमनोरथ हुआ हो।

बेलंबⓅ†—संज्ञा पुं० "विलंब"।

बेल—संज्ञा पुं० [सं० बिल्व] एक कँटीला पेड़ जिसमें कड़े छिलके और मीठे गूदे के गोल फल लगते हैं। पत्ते शंकर की पूजा में काम आते हैं। श्रीफल।

संज्ञा स्त्री० [सं० वेल्लि] १ वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर की ओर उठकर नहीं बढ़ सकते। वल्ली। लता। लतर।

मुहा०—बेल मँढ़े चढ़ना=किसी कार्य का अंत तक ठीक ठीक पूरा उतरना।

२ संतान। वंश।

मुहा०—बेल बढ़ना=वंशवृद्धि होना।

३ कपड़े या दीवार आदि पर बनी हुई फूल पत्तियाँ आदि। ४ फीते आदि पर बनी हुई इसी प्रकार की फूल पत्तियाँ। ५ नाव खेने का डाँड़।

संज्ञा पुं० [फा० बेलच०] १ एक प्रकार की कुदाली। २ सड़क आदि बनाने में सीमा निर्धारित करने के लिये चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर।

Ⓟ†संज्ञा पुं० बेले का फूल।

बेलड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेल+ड़ी (प्रत्य०)] लता। उ०—कबीर कड़ई बेलड़ी कड़वा ही फल होइ।—कबीर०।

बेलचा—संज्ञा पुं० [फा०] कुदाल। कुदारी।

बेलज्जत—वि० [फा०] [संज्ञा बेलज्जती] जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो।

बेलदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह मजदूर जो फावड़ा चलाने का काम करता हो।

बेलन—संज्ञा पुं० [सं० वेल्लन] १. वह भारी, गोल और दृढ़ के आकार का खंड जिसे लुढ़काकर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़ पत्थर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं। रोलर। २ किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३ कोल्हू का जाठ। ४ रूई धुनने की मुठिया या हत्था। ५ दे० "बेलना"।

बेलना—संज्ञा पुं० [सं० वेल्लन] काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।

क्रि० स० १ रोटी, पूरी आदि की लोई को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से

बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। २. चौपट करना। नष्ट करना।
मुहा०—पापड़ बेलना = काम बिगाड़ना।
३. विनोद के लिये पानी के छींटे उड़ाना।
बेलपत्ती—संज्ञा स्त्री० दे० "बेलपत्र"।
बेलपत्र—संज्ञा पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल के वृक्ष की पत्तियाँ जो शिव जी पर चढ़ाई जाती हैं।
बेलरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बेल"।
बेलसना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विलसन] भोग करना। सुख लूटना।
बेलहरा†—संज्ञा पुं० [हिं० बेल = पान + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बेलहरी] लगे हुए पान रखने के लिये एक लंबोतरी पिटारी।
बेला—संज्ञा पुं० [सं० वेल्लक या मल्लिका ?] चमेली आदि की जाति का एक छोटा पौधा जिसमें सुगंधित सफेद फूल लगते हैं।
संज्ञा पुं० [सं० वेला] १ समय। वक्त। २ चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुलिहया जिससे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ३ कटोरा। उ०—बेला भरि हलधर को दीन्हों। पीवत पै बल स्तुति कीन्हों।—सूर०। ४ समुद्र का तट। उ०—बरनि न जाइ कहाँ लौं बरनौं प्रेम जलधि बेला बल बोरे।—सूर०।
बेलाग—वि० [फा० बे + हिं० लाग = लगावट] १ बिलकुल अलग। २ साफ। खरा।
बेली—संज्ञा पुं० [सं० √ वल् = साथ लगना] संगी। साथी।
बेलौस—वि० [हिं० बे + फा० लौस] १ सच्चा। खरा। २ बेमुरव्वत।
बेवकूफ—वि० [फा०] [संज्ञा बेवकूफी] मूर्ख। निर्बुद्धि। नासमझ।
बेवक्त—क्रि० वि० [फा०] कुसमय में।
बेवट†—संज्ञा स्त्री० [सं० विपत्ति ?] १ संकट। २ विवशता।
बेवपार(पु)†—संज्ञा पु० दे० "व्यापार"।
बेवफा—वि० [फा० बे + अ० वफा] [संज्ञा बेवफाई] १ जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे। २ बेमुरव्वत। दुःशील।
बेवरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरा] विवरण। उ०—कपिल कह्यो तोहि भक्ति सुनाऊँ। अरु ताको ब्योरो समझाऊँ।—सूर०।
बेवरेवार—वि० [हिं० बेवरा + वार (प्रत्य०)] तफसीलवार। विवरणसहित।
बेवसाय†—संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय"।
बेवहरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० व्यवहरण] व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना।
बेवहरिया(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार + इया (प्रत्य०)] लेनदेन करनेवाला। महाजन।
बेवा—संज्ञा स्त्री० [फा०] विधवा। राँड़।
बेवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "बिवाई"।
बेवान, बेवानू(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "विमान"। उ०—मैंझ पदमावति कर जो बेवानू। जनु परभात परै लखि भानू।—पदमावत।
बेशक—क्रि० वि० [फा० बे + अ० शक] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।
बेशकीमत, बेशकीमती—वि० [फा०] बहुमूल्य।
बेशरम—वि० [फा० बेशर्म] निर्लज्ज। बेहया। उ०—बाँह पकरि तू ल्याई काको अति बेशरम गँवारि। सूर स्याम मेरे आगे खेलत जोबनमद मतवारि।—सूर०।
बेशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अधिकता।
बेशुमार—वि० [फा०] अगणित। असंख्य।
बेश्म—संज्ञा पुं० [सं० वेश्म] घर। गृह। उ०—निज रहिबे हित बेश्म जो पूँछेउ सो मुनि लेहु।—विश्रामसागर०।
बेसंदर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि।
बेसँभर, बेसँभार(पु)†—वि० [फा० बे + हिं० सँभाल] बेहोश।
बेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वेष] भेस।
बेसन—संज्ञा पुं० [देश०] चने की दाल का आटा। रेहन।
बेसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसन] बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।
बेसबब—क्रि० वि० [फा०] अकारण।
बेसबरा—वि० [फा० बे + अ० सब्र] जिसे सब्र या संतोष न हो। अधीर।
बेसमझ—वि० [हिं० बे + समझ] [संज्ञा बेसमझी] नासमझ। मूर्ख।
बेसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ खच्चर। २ नाक में पहनने की नथ।
बेसरा—वि० [फा० बे + सरा = ठहरने का स्थान] जिसे ठहरने का स्थान न हो। आश्रयहीन।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
बेसवा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी।
बेसा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी। वारांगना। उ०—पुनि सिंगार हार धनि देसा। कइ सिंगार तहँ बइठी बेसा।—पदमावत।
संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
बेसारा(पु)†—वि० [हिं० बैठाना] १ बैठानेवाला। २ रखने या जमानेवाला। उ०—मातु भूमि पितु बीज बेसारा। काल निसान जीव तृण मारा।—विश्रामसागर।
बेसास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"। उ०—जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ व्रत बेसास।—कबीर०।
बेसाहना—क्रि० अ० [देश०] १ मोल लेना। खरीदना। २. जान बूझकर अपने पीछे लगाना (झगड़ा, विरोध आदि)।
बेसाहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसाहना] माल लेने की क्रिया।
बेसाहा†—संज्ञा पुं० [हिं० बेसाहना] खरीदी हुई चीज। सौदा। सामग्री।
बेसिक—संज्ञा वि० [अं०] प्रारंभिक।
बेसिक शिक्षा—प्रारंभिक शिक्षा।
बेसिलसिले—वि० [फा०] जिसमें कोई क्रम या सिलसिला न हो। अव्यवस्थित।
बेसुध—वि० [हिं० बे + सुध = होश] १ अचेत। बेहोश। २. बेखबर। बदहवास।
बेसुर, बेसुरा—वि० [हिं० बे + सुर = स्वर] १ जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो (संगीत)। २ बेमौका।
बेसूद—वि० [फा०] व्यर्थ। बेफायदा।
बेहंगम—वि० [सं० विहंगम] १ भद्दा। बेढंगा। २ बेढब। विकट।
बेहँसना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० हँसना] जोर से हँसना।
बेह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वेध] छेद। छिद्र। उ०—'दास' अब नीके कमि भरति उसाँसु री, सुबाँसुरी की धुनि प्रति पाँसुरी में बेह की।—शृंगार०।
बेहद—वि०, संज्ञा पुं० दे० "बीहड़"।
बेहतर—वि० [फा०] किसी के मुकाबिले में अच्छा। किसी से बढ़कर।
अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेहतर का भाव। अच्छापन। भलाई।
बेहद—वि० [फा०] १ असीम। अपरिमित। अपार। २ बहुत अधिक।

बेहना—संज्ञा पुं० [देश०] १ जुलाहों की एक जाति। २ धुनिया।

बेहवूदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] भलाई। बेहतरी।

बेहया—वि० [फा०] [संज्ञा बेहयाई] जिसे हया या लज्जा आदि बिलकुल न हो। निर्लज्ज। बेशर्म।

बेहर—वि० [फा० बे+सं० हर] अचर। स्थावर।

वि० [सं० विहृत] अलग। पृथक्। जुदा।

बेहरा—वि० [सं० विहृत] अलग। पृथक्। जुदा।

बेहराना—क्रि० अ० [सं० विहरण] फटना।

बेहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० विहृति] बहुत से लोगों से चंदे के रूप में माँगकर एकत्र किया हुआ धन।

बेहला—संज्ञा पुं० [अं० वायोलिन] सारंगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेजी बाजा। बेला।

बेहाल—वि० [फा० बे+अ० हाल] [संज्ञा बेहाली] व्याकुल। विकल। बेचैन।

बेहिसाब—क्रि० वि० [फा० बे+अ० हिसाब] बहुत अधिक। बहुत ज्यादा। बेहद।

बेहुनरा—वि० [फा० बे+हुनर] जिसे कोई हुनर न आता हो। मूर्ख।

बेहूदगी—संज्ञा स्त्री० दे० "बेहूदापन"।

बेहूदा—वि० [फा०] [संज्ञा बेहूदगी] १. जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो। बदतमीज। २ अशिष्टतापूर्ण।

बेहूदापन—संज्ञा पुं० [फा० बेहूदा+पन (प्रत्य०)] बेहूदगी। अशिष्टता। असभ्यता।

बेहूनⓅ—क्रि० वि० [सं० विहीन] बिना। बगैर।

बेहैफ—वि० [फा०] बेफिक्र। चिंता-रहित।

बेहोश—वि० [फा०] मूर्च्छित। बेसुध।

बेहोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मूर्च्छा। अचेतनता।

बैंक—संज्ञा पुं० [अं०] महाजनी लेन देन की बड़ी कोठी। बंक।

बैंगन—संज्ञा पुं० [सं० वंगण ?] एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है। भंटा।

बैंगनी, बैंजनी—वि० [हिं० बैंगन] जो ललाई लिए नीले रंग का हो।

बैंडⓅ—संज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी बाजे या उनके बजानेवालों का समूह।

बैंड़ाⓅ—वि० दे० "बेंड़ा"।

बैंत—संज्ञा पुं० दे० "बैत"।

संज्ञा स्त्री० दे० "बेंत"।

बै—संज्ञा स्त्री० [सं० वाय] १. बैसर। कंघी (जुलाहे)। २ दे० "बय"।

संज्ञा स्त्री० [अ०] बेचना। बिक्री।

बैकनाⓅ—क्रि० अ० दे० "बहकना"।

बैकल—वि० [सं० विकल] पागल। उन्मत्त। उ०—कहि दास कहा कहिए कल-रौहि जु बोलन बैकल बैन लग्यो।—काव्य-निर्णय।

बैकुंठ—संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ"।

बैजंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] १ एक प्रकार का पौधा जिसके फूल लाल होते और गुच्छों में लगते हैं। उ०—राजति उर बैजंती माल। चलत जु मत्त द्विरद की चाल।—नंददास०। २ विष्णु की माला।

बैजनाथ—संज्ञा पुं० दे० "वैद्यनाथ"।

बैजयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] बैजंती माला।

बैठक—संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १ बैठने का स्थान। २ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हों। चौपाल। अथाई। ३ बैठने का आसन। पीठ। ४. किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। आधार। पदस्तल। ५ बैठाई। जमावड़ा। ६ अधिवेशन। सभासदों का एकत्र होना। ७ बैठने की क्रिया या ढंग। ८ साथ उठना बैठना। संग। मेल। ९ दे० बैठकी।

बैठकबाज—वि० [हिं० बैठक+फा० बाज] [संज्ञा बैठकबाजी] बातें बनाकर काम निकालनेवाला। धूर्त। चालाक।

बैठका—संज्ञा पुं० [हिं० बैठक] वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों। बैठक।

बैठकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठक+ई (प्रत्य०)] १ बार बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। २ आसन। आधार। ३ धातु आदि का दीवट।

बैठन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १ बैठने की क्रिया, भाव, ढंग या दशा। २ बैठक। आसन।

बैठना—क्रि० अ० [सं० वेशन] १. स्थित होना। आसीन होना। आसन जमाना।

मुहा०—बैठे बैठाए=(१) अकारण। निरर्थक। (२) अचानक। एकाएक। बैठे बैठे। (१) निष्प्रयोजन। (२) अचानक। (३) अकारण। बैठते उठते=सदा। सब अवस्था में। हर दम।

२. किसी स्थान या अवकाश में ठीक रूप से जमना। ३ कैंडे पर आना। अभ्यस्त होना। ४ जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे आधार में जा लगना। ५ दबना या डूबना। ६ पचक जाना। धँसना। ७ (कारबार) चलता न रहना। बिगड़ना। ८ तौल में ठहरना या परता पड़ना। ९ लागत लगना। खर्च होना। १० लक्ष्य पर पड़ना। निशाने पर लगना। ११ पौधे का जमीन में गाड़ा जाना। लगना। १२ किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३ पक्षियों का अंडे सेना। १४ काम से खाली रहना। बेरोजगार रहना।

बैठवाना—क्रि० स० [हिं० बैठाना का प्रे० रूप] बैठने का काम दूसरे से कराना।

बैठाना—क्रि० स० [हिं० बैठना का स० रूप] १ स्थित करना। आसीन करना। उपविष्ट करना। २ आसन पर विराजने को कहना। ३ पद पर स्थापित करना। नियत करना। उ०—नरहरि हिरनकसिपु जब मारयो। अरु प्रह्लाद राज बैठायो।—सूर०। ४ ठीक जमाना। भड़ाना या टिकाना। ५ किसी काम को बार बार करके हाथ को अभ्यस्त करना। माँजना। ६ पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में ले जाकर जमाना। ७ धँसाना या डुबाना। ८ पचकाना या धँसाना। ९ (कारबार) चलता न रहने देना। बिगाड़ना। १० फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। लक्ष्य पर जमाना। ११ पौधे को पालने के लिये जमीन में गाड़ना। जमाना। १२ किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

बैठारना, बैठालनाⓅ—क्रि० स० दे० बैठाना। उ०—रत्नखचित सिंहासन धान्यो तेहिपर कृष्णहिं लै बैठान्यो।—सूर०।

बैढ़ना—क्रि० स० [हिं० बाड़ा, बेढ़ा] बंद करना। बेढ़ना (पशुओं को)।

बैत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पद्य। श्लोक।
बैतरनी—संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।
बैताल—संज्ञा पुं० दे० "वेताल"।
बैद—संज्ञा पुं० [सं० वैद्य] [स्त्री० बैदिन] चिकित्साशास्त्र जाननेवाला पुरुष। वैद्य। चिकित्सक।
बैदई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बैद+ई (प्रत्य०)] वैद्य विद्या। वैद्य का व्यवसाय। वैद्यक कर्म। उ०—'दास' बसौ सदा गोपन में यह अद्भुत बैदई कौने सिखाई। पाइ लिलार लगाइ लला तिय नैनन की लियो ऐंचि ललाई। —शृंगार०।
बैदगी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बैद] वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।
बैदाई—संज्ञा स्त्री० दे० "बैदगी"।
बैदेही—संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।
बैन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वचन] १ वचन। बात। उ०—विप्र आइ माला दये कहे कुशल के बैन। कुँवरि पत्यारो तब कियो जब देख्यो निज नैन। —सूर०।
मुहा०—बैन झरना=मुँह से बात निकलना। उ०—कब है दंत दूध के देखौं कब तुतरे मुख बैन झरे। —सूर०।
२ वेणु। बाँसुरी।
बैना—संज्ञा पुं० [सं० वायन] वह मिठाई आदि जो विवाहादि में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है। मिठाई आदि का उपहार।
(पु)क्रि० स० [सं० वपन] बोना।
बैपार—संज्ञा पुं० [सं० व्यापार] व्यवसाय।
बैपारी—संज्ञा पुं० [सं० व्यापारी] रोजगारी।
बैबर्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वैवर्ण्य] विवर्णता। वैवर्ण्य। उ०—स्तभ स्वेद रोमांच स्वरभंग कप बैबर्न। अश्रु प्रलै ये सात्वकी भाव के उदाहर्न। —शृंगार०।
बैयर(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वधूवर] औरत। स्त्री।
बैयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह > बहियाँ] बाहें। उ०—जसुदा गहति धाइ बैयाँ, मोहन करत नहियाँ नहियाँ "नंददास" बलि जाइ रे। —नंददास०।
बैया(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वाय] बै। बैसर।
क्रि० वि० [?] घुटनों के बल।
बैरंग—वि० [अँ० बेयरिंग] १ वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजनेवाले ने न दिया हो। २ विफल।

बैर—संज्ञा पुं० [सं० वैर] १ शत्रुता। विरोध। अदावत। दुश्मनी। २. वैमनस्य। द्वेष।
मुहा०—बैर काढ़ना या निकालना=बदला लेना। उ०—यह विधि सब नवीन पायो व्रज काढ़त बैर दुरासी। —सूर०। बैर ठानना=दुश्मनी मान लेना। दुर्भाव रखना आरंभ करना। उ०—सिर करि धाय कचुकी भारी अब तो मेरो नाँव भयो। कालि नहीं यहि मारग ऐहौ, ऐसो मोसों बैर ठयो। —सूर०। बैर पड़ना=शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। बैर बिसाहना या मोल लेना=किसी से दुश्मनी पैदा करना। बैर लेना=बदला लेना। कसर निकालना। उ०—लेहौं बैर पिता तेरे को, जैहै कहाँ पराई?—सूर०।
†संज्ञा पुं० [सं० बदरी] बेर का फल।
बैरक—संज्ञा पुं० [अँ० बैरेक] छावनी। बारिक।
बैरख—संज्ञा पुं० [तु० बैरक] सेना का झंडा। ध्वजा। पताका। निशान।
बैराग—संज्ञा पुं० दे० "वैराग्य"।
बैरागी—संज्ञा पुं० [सं० विरागी] [स्त्री० बैरागिन] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।
बैराना†—क्रि० अ० [हिं० वायु] वायु के प्रकोप से बिगड़ना।
बैरिस्टर—संज्ञा पुं० [अँ०] [भाव० बैरिस्टरी] विलायत से कानून की प्रयोगात्मक शिक्षाप्राप्त वकील।
बैरी—वि० [सं० वैरी] [स्त्री० बैरिन] १ बैर रखनेवाला। शत्रु। दुश्मन। २ विरोधी।
बैल—संज्ञा पुं० [सं० बलद] [स्त्री० गाय] १ एक चौपाया जिसकी मादा को गाय कहते हैं। यह हल में जोता जाता, बोझ ढोता और गाड़ियों को खींचता है। २ मूर्ख।
बैलमुतनी- संज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।
बैलून—संज्ञा पुं० [अँ०] १ गैस से भरा हुआ आसमान में उड़नेवाला शीशे का पोला गोला या नाशपाती के आकार का फूला हुआ लिफाफा जिसमें हवा नहीं घुस सकती। गुब्बारा। २ हवा से फुलाया जा सकनेवाला रबर का खिलौना।
बैसंदर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि। उ०—वा दिन बैसंदर चहूँ, बन में लगी अचान। जीवत क्यों व्रज बाचतो जौ ना पीवत कान। —काव्यनिर्णय।
बैस—संज्ञा स्त्री० [सं० वयस्] १. आयु। उम्र। २. यौवन। जवानी।
संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
बैसना(पु)†—क्रि० स० [सं० वेशन] बैठना।
बैसर—संज्ञा स्त्री० [हिं० बय] जुलाहों का एक औजार जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं। कघी। बय।
बैसवारा—संज्ञा पुं० [हिं० बैस+वारा (प्रत्य०)] [वि० बैसवारी] अवध का पश्चिमी प्रांत।
बैसाख—संज्ञा पुं० दे० "वैशाख"।
बैसाखी—संज्ञा स्त्री० [सं० विशाख] लँगड़ों की कंधे के नीचे बगल में दबाकर चलने की लाठी।
बैसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० बैसना] बैठाना।
बैसारना(पु)†—क्रि० स० दे० "बैठाना"।
बैसिक(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वैशिक] वेश्या से प्रीति करनेवाला नायक। उ०—निज तिय सों परतियन सों अरु गनिका सों प्रीति। पति उपपति बैसिक त्रिविध नायक कहै सुरीति। —रससारांश।
बैहर(पु)†—वि० [सं० वैर=भयानक] भयानक। क्रोधालु।
†(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] वायु।
बोंड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] बारूद में आग लगाने का पलीता।
बोंड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "बौंड़ी"।
बोआई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोना] १. बोने का काम। २ बोने की मजदूरी।
बोका†—संज्ञा पुं० [हिं० बकरा] बकरा।
बोज—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों का एक भेद।
बोजा—संज्ञा स्त्री० [फा० बोज] चावल से बना हुआ मद्य।
बोझ—संज्ञा [?] १ ऐसी राशि, गट्ठर या वस्तु जो उठाने या ले चलने में भारी जान पड़े। भार। २ भारीपन। गुरुत्व। वजन। ३ मुश्किल काम। कठिन बात। ४ किसी कार्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। ५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके संबंध में कोई ऐसी बात करनी हो जो कठिन जान पड़े। ६. उतना

ढेर जितना एक आदमी या पशु लादकर ले चल सके। गट्ठा।

बोझना—क्रि० स० [हिं० बोझ से ना० धा०] बोझ लादना।

बोझल, बोझिल—वि० [हिं० बोझ] वजनी। भारी। वजनदार। गुरु।

बोझा—संज्ञा पुं० दे० "बोझ"।

बोट—संज्ञा स्त्री० [अं०] नाव। नौका।

बोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोटा] मास का छोटा टुकड़ा।

मुहा०—बोटी बोटी काटना = शरीर को काटकर खंड खंड करना।

बोड़ना(पु)—क्रि० स० दे० "बोरना"।

बोड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार की पतली लंबी फली जिसकी तरकारी होती है। लोबिया। २ अजगर। ३. वह व्यक्ति जिसके दाँत टूट गए हों।

बोड़ी—संज्ञा स्त्री० [?] १ दमड़ी। दमड़ी कौड़ी। २ अति अल्प धन। ३. वह स्त्री जिसके दाँत टूट गए हों।

बोत—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

बोतल—संज्ञा स्त्री० [अं० बाटल्] काँच का लंबी गरदन का एक गहरा बरतन।

बोदरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] खसरा रोग।

बोदा—वि० [सं० अबोध] [भाव० बोदापन] १ मूर्ख। गावदी। २ सुस्त। मट्ठर। ३ जो दृढ़ या कड़ा न हो। फुसफुसा।

बोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्ञान। जानकारी। २ तसल्ली। धीरज। संतोष।

बोधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला। २ शृंगार रस के हावों में से एक हाव जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपने मन का भाव जताया जाता है।

बोधगम्य—वि० [सं०] समझ में आने योग्य।

बोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बोधनीय, बोध्य, बोधित] १ सचित करना। २ जगाना।

बोधना(पु)†—क्रि० स० [सं० बोधन] १ बोध देना। समझाना। २. ज्ञान देना।

बोधितरु, बोधिद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] बोध गया में स्थित पीपल का वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवान ने संबोधि (बुद्धत्व) प्राप्त की थी।

बोधिसत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।

बोना—क्रि० स० [सं० वपन] १. बीज को जमने के लिये जुते हुए खेत या भुरभुरी की हुई जमीन में छितराना। २ बिखराना।

(पु)क्रि० स० [हिं० बोरना] डुबाना।

बोबा†—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० बोबी] १ स्तन। थन। चूँची। २ घर का साजसामान। अंगड़खंगड़। ३ गट्ठर। गठरी।

बोय†—संज्ञा स्त्री० [फा० बू] गंध। बास।

बोर—संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] डुबाने की क्रिया। डुबाव।

बोरका†—संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] दावात।

संज्ञा पुं० दे० "बुरका"।

बोरना†—क्रि० स० [हिं० बूड़ना] १ जल या किसी और द्रव पदार्थ में निमग्न कर देना। डुबाना। २ कलंकित करना। बदनाम कर देना। ३ युक्त करना। योग देना या मिलाना। ४ घुले हुए रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरसी] अँगीठी।

बोरा—संज्ञा पुं० [सं० पुर = दाना या पत्र] टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं।

संज्ञा पुं० दे० "बोर"।

बोरिया—संज्ञा पुं० [फा०] चटाई। बिस्तर।

मुहा०—बोरिया बधना उठाना = चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

बोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोरा] टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो—संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] एक प्रकार का मोटा धान।

बोर्ड—संज्ञा पुं० [अं०] १ किसी स्थायी कार्य के लिये बनी हुई समिति। २ माल के मामलों का फैसला करनेवाली कमेटी। ३ कागज, काठ आदि की मोटी तख्ती। ४ नामपट्ट। साइनबोर्ड। ५ संघ या संगठन, जैसे जिला बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड, बोर्ड ऑव रेवेन्यू, मेडिकल बोर्ड आदि। ६ जहाज में ठहरने की जगह। ७. वह स्थान जहाँ निवास के साथ भोजन का भी प्रबंध हो।

बोर्डिंगहाउस—संज्ञा पुं० [अं०] विद्यार्थियों के रहने और खाने पीने का स्थान।

बोल—संज्ञा पुं० [हिं० बोलना] १. वचन। वाणी। २ ताना। व्यंग्य। लगती हुई बात। ३. बाजों का बँधा या गठा हुआ शब्द। ४. कथन या प्रतिज्ञा।

मुहा०—(किसी का) बोलबाला रहना या होना = (१) बात की साख बनी रहना। (२) मान मर्यादा का बना रहना।

५ गीत का टुकड़ा। अंतरा।

बोलचाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोल + चाल] १. बातचीत। कथनोपकथन। २ मेल-मिलाप। परस्पर सद्भाव। ३ छेड़छाड़। ४. चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।

बोलता—संज्ञा पुं० [हिं० बोलना] १ ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्व। आत्मा। २ जीवन तत्व। प्राण।

वि० खूब बोलनेवाला। वाचाल।

बोलती—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोलना] बोलने की शक्ति।

मुहा०—बोलती मारी जाना = मुँह से बात न निकलना।

बोलनहारा—संज्ञा पुं० [हिं० बोलना + हारा (प्रत्य०)] शुद्ध आत्मा। बोलता।

बोलना—क्रि० अ० [सं० √ब्रू] १ मुख से शब्द उच्चारण करना।

यौ०—बोलना चालना = बातचीत करना।

मुहा०—बोल जाना = (१) मर जाना (अशिष्ट)। (२) बाकी न रह जाना। चुक जाना। (३) व्यवहार के योग्य न रह जाना।

२ किसी चीज की आवाज निकालना।

क्रि० स० १ कुछ कहना। कथन करना। २ आज्ञा देकर कोई बात स्थिर करना। ठहराना। बदना। ३ रोकटोक करना। ४ छेड़छाड़ करना। (पु)† ५ आवाज देना। बुलाना। पुकारना। (पु)† ६ पास आने के लिये कहना या कहलाना।

मुहा०(पु)—बोलि पठाना = बुला भेजना।

बोलवाना—क्रि० स० दे० "बुलवाना"।
बोलसरी—संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"।
संज्ञा पुं० [?] १ एक प्रकार का घोड़ा।
बोलाचाली—संज्ञा स्त्री० दे० "बोलचाल"।
बोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोलना] १ मुँह से निकली हुई आवाज। वाणी। २ अर्थ-युक्त शब्द या वाक्य। वचन। बात। ३ नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ४. वह शब्दसमूह जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी अपने विचार प्रकट करने के लिये करते हैं। भाषा। ५ हँसी। दिल्लगी। ठठोली।
मुहा०—बोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना।
बोल्लाह—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।
बोल्शेविक—संज्ञा पुं० [अं०] १ रूस के पुराने सामाजिक प्रजातंत्रवादी संगठन में मार्क्स के समाजसंबंधी कार्यक्रम को तत्काल पूर्णतया लागू करने का समर्थन करनेवाला बहुसंख्यक गरम दल जिसने १९१७ ई० में रूसी शासन पर अपना अधिकार जमाया। २ इस दल का सदस्य।
बोल्शेविज्म—संज्ञा पुं० [अं०] बोल्शेविक दल के सिद्धांत या मत।
बोवना†—क्रि० स० दे० "बोना"।
बोवाना—क्रि० स० [हिं० बोना का प्रे० रूप] बोने का काम दूसरे से कराना।
बोह—संज्ञा स्त्री० [हिं० बोर] डुबकी। गोता।
बोहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० बोधन=जगाना] किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री।
बोहित(प)—संज्ञा पुं० [सं० बोहित्थ] बड़ी नाव।
बौंड़†—संज्ञा स्त्री० [सं० बोण्ठ=टहनी] १ टहनी जो दूर तक गई हो। २. लता।
बौंड़ना†—क्रि० अ० [हिं० बौंड़ से ना० धा०] लता की तरह बढ़ना। टहनी फेंकना।
बौंडर†—संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।
बौंड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बौंड़] १ पौधों या लताओं के कच्चे फल। ढेंढी। †२ फली। छीमी। ३ दमड़ी। छदाम।
बौआना†—क्रि० अ० [हिं० बाउ से ना० धा०] १. स्वप्नावस्था का प्रलाप। २ पागल या बाई चढ़े मनुष्य की भाँति अट सट बक उठना। बर्राना।
बौखल—वि० [हिं० बाउ] पागल। बदहवास।
बौखलाना—क्रि० अ० [हिं० बाउ+सं० स्खलन] कुछ कुछ सनक जाना। मन का संतुलन खो बैठना।
बौछाड़—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु+क्षरण] १ बूँदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े। झटास। २ वर्षा की बूँदों के के समान किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में गिरना या पड़ना। ३ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। झड़ी। ४ किसी के प्रति कहे हुए वाक्यों का तार। ५. ताना। कटाक्ष। बोलीठोली।
बौछार†—संज्ञा स्त्री० दे० "बौछाड़"।
बौड़ना(प)—क्रि० अ० दे० "बौरना"।
बौड़हा—वि० दे० "बावला"।
बौद्ध—वि० [सं०] गौतम बुद्ध द्वारा प्रचारित या उनसे संबद्ध।
संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी।
बौद्धधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म। गौतम बुद्ध का चलाया मत। इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान।
बौना—संज्ञा पुं० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी] अत्यंत ठिंगना या नाटा मनुष्य।
बौर†—संज्ञा पुं० [सं० मुकुल] आम की मंजरी। मौर।
बौरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बौराई] पागलपन। उ०—या विधि की वनिता, जौ विधना बनायो चाहै दास तौ समुझिए प्रकासै निज बौरई।—काव्यनिर्णय।
बौरना—क्रि० अ० [हिं० बौर से ना० धा०] आम के पेड़ में मंजरी निकलना। मौरना।
बौरहा†—वि० दे० "बावला"।
बौरा—वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बौरी] १ बावला। पागल। २ नादान। मूर्ख।
बौराई(प)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा+आई (प्रत्य०)] पागलपन।
बौराना†—क्रि० अ० [हिं० बौरा से ना० धा०] १ पागल हो जाना। सनक जाना। २. विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना।
क्रि० स० किसी को ऐसा कर देना कि वह भला बुरा न विचार सके।
बौराह(प)†—वि० [हिं० बौरा] बावला। पागल।
बौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा] बावली स्त्री।
बौलसिरी—संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।
ब्यतीतना(प)—क्रि० स० [सं० व्यतीत] १ गुजर जाना। बीत जाना। २ गुजराना। बिताना।
ब्यवहर†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] उधार।
ब्यवहरिया—संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] रुपए का लेनदेन करनेवाला। महाजन।
ब्यवहार—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] १ दे० "व्यवहार"। २ रुपए का लेनदेन। ३ रुपए के लेनदेन का संबंध। ४. सुख दुःख में परस्पर संमिलित होने का संबंध।
ब्यवहारी—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहारिन्] १ कार्यकर्ता। मामला करनेवाला। २ लेनदेन करनेवाला। व्यापारी।
ब्याउ—संज्ञा पुं० [सं० विवाह] दे० "ब्याह"। उ०—मैया तैं मुसकाइ कहत यौं नंददुलारौ, नाहिन करिहौं ब्याउ, करौ जिनि लाड़ हमारौ।—नंददास०।
ब्याज—संज्ञा पुं० [सं० व्याज] दे० "व्याज"।
संज्ञा पुं० [?] वृद्धि। सूद।
ब्याजू—वि० [हिं० ब्याज] ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन)।
ब्याना—क्रि० स० [?] जनना। उत्पन्न करना। गर्भ से निकालना।
ब्यापना(प)†—क्रि० अ० [सं० व्यापन] १ किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय। ओतप्रोत होना। २. चारों ओर जाना। फैलना। ३ घेरना। ग्रसना। ४. प्रभाव करना।
ब्यार—संज्ञा स्त्री० दे० "बयार"।
ब्यारी—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
ब्याल—संज्ञा पुं० [सं० व्याल] १ हाथी। उ०—दास कहूँ सामर्थ तें, एक अर्थ ठहरात। ब्याल वृक्ष तोरयो कहैं, कुंजर जान्यो जात।—काव्यनिर्णय।
२. दे० "व्याल"।
ब्याली—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याला] सर्पिणी।
वि० [सं० व्यालिन्] सर्प धारण करनेवाला।
ब्यालू—संज्ञा पुं० [सं० विहार ?] रात का भोजन। ब्यारी।

ब्याह—संज्ञा पुं० [सं० विवाह] वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पतिपत्नी का संबंध स्थापित होता है। विवाह। परिणय। दारपरिग्रह। पाणिग्रहण।

ब्याहता—वि० [सं० विवाहित] जिसके साथ विवाह हुआ हो।

ब्याहना—क्रि० स० [हिं० ब्याह से ना० धा०] [वि० ब्याहता] १. देश, काल और जाति की रीति के अनुसार पुरुष का किसी स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति बनाना। २ किसी का किसी के साथ विवाह संबंध कर देना।

ब्याहुला†—वि० [हिं० ब्याह] विवाह का।

ब्यूह—संज्ञा पुं० [सं० व्यूह] समूह। उ०—जानै नय जूह बलविधनि को ब्यूह, सील-सुषमा-समूह करुनायतन ठायो है। —रससारांश।

ब्योंचना—क्रि० अ० [सं० विकुंचन] झोंके से मुड़ जाने या टेढ़े हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।

ब्योंत—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यवस्था] १. व्यवस्था। मामला। माजरा। २. ढब। तरीका। साधन। प्रणाली। ३ युक्ति। उपाय। ४. आयोजन। उपक्रम। तैयारी। ५ संयोग। अवसर। नौबत। ६ प्रबंध। इंतजाम। व्यवस्था। ७ काम पूरा उतारने का हिसाब किताब। ८ साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ९ पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काटछाँट। तराश। किता।

ब्योंतना—क्रि० स० [हिं० ब्योंत से ना० धा०] कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना छाँटना।

ब्योंताना—क्रि० स० [हिं० ब्योंतना का प्रे० रूप] शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।

ब्योपार—संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।

ब्योरन—संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरना] बालों को सँवारने की क्रिया या ढंग।

ब्योरना—क्रि० स० [सं० विवरण] १ गुथे या उलझे हुए बालों आदि का सुलझाना। २ विवेकपूर्वक किसी समस्या को सुलझाना।

ब्योरा—संज्ञा पुं० [सं० विवरण] १ किसी घटना के अंतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण। तफसील।

यौ०—ब्योरेवार = विस्तार के साथ। २ किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। ३. वृत्त। वृत्तांत। हाल। समाचार। ४ अंतर। भेद। फरक।

ब्योहर—संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] लेन देन का व्यापार। रुपया ऋण देना।

ब्योहरिया—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपए के लेनदेन का व्यापार करनेवाला।

ब्योहार—संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।

ब्यौंत—संज्ञा पुं० [सं० व्यवस्था] व्यवस्था। उ०—छटा जनि जानौ तरु अटा औ दिवालनि में, ब्यौंत करि आछी विधि बाही सों मढ़ाई है। —रससारांश।

ब्यौहार—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० "व्यवहार"। उ०—प्रानप्रिया ही कर जु दै खत लै आप माल। ठयो नयो ब्यौहार यह राजराज ब्रजपाल। —रससारांश।

ब्रंद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वृंद"।

ब्रज—संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।

ब्रजना(पु)—क्रि० अ० [सं० व्रजन] चलना।

ब्रह्मंड(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

ब्रह्म—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] १ एकमात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का कारण और सत्, चित्, आनंद स्वरूप है। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ आत्मा। चैतन्य। ४ ब्राह्मण (विशेषत समस्त पदों में)। ५ ब्रह्मा (समास में)। ६ ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस। ७ वेद। ८ ज्ञान। विवेक। ९ एक की संख्या।

ब्रह्मगाँठ—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मग्रंथि"।

ब्रह्मग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ।

ब्रह्मघोष—संज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि।

ब्रह्मचर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ योग में एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। २ चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें पुरुष को स्त्रीसंभोग आदि व्यसनों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए।

ब्रह्मचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। २ दुर्गा। पार्वती। ३ सरस्वती।

ब्रह्मचारी—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मचारिन्] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] १. ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाला। २ ब्रह्मचर्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति। प्रथमाश्रमी।

ब्रह्मज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म या पारमार्थिक सत्ता का बोध।

ब्रह्मज्ञानी—वि० [सं० ब्रह्मज्ञानिन्] परमार्थ तत्व का बोध रखनेवाला।

ब्रह्मण्य—वि० [सं०] १. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला। २ ब्रह्म या ब्रह्मसंबंधी।

ब्रह्मत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का भाव। २ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदिन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक दिन जो १००० चतुर्युगों का माना जाता है।

ब्रह्मदोष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मदोषी] ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप।

ब्रह्मद्रोही—वि० [सं०] ब्राह्मणों से वैर रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मनिष्ठ—वि० [सं०] १ ब्राह्मणभक्त। २ ब्रह्मज्ञान संपन्न।

ब्रह्मपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मत्व। २. ब्राह्मणत्व। ३ मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा का पुत्र। २ नारद। ३. वशिष्ठ। ४ मनु। ५ मरीचि। ६ सनकादिक। ७. एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है।

ब्रह्मपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक। पुराणों में इसका नाम पहले आने से कुछ लोग इसे आदि पुराण भी कहते हैं।

ब्रह्मपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ब्राह्मणों की बस्ती। २ उन बहुत से मकानों का समूह जो राजा महाराजा ब्राह्मणों को दान करते हैं। ३ ब्रह्मलोक।

ब्रह्मभट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों का ज्ञाता। २ ब्रह्मविद्। ३ एक प्रकार के ब्राह्मण।

ब्रह्मभोज—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण-भोजन।

ब्रह्ममुहूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

ब्रह्मयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधिपूर्वक वेदाभ्यास। २ वेदाध्ययन। वेद पढ़ना।

ब्रह्मरंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिसमें होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मराक्षस—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो।
ब्रह्मरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है।
ब्रह्मरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] १६ अक्षरों का एक छंद। चंचला। चित्र।
ब्रह्मरेख—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मलेख"।
ब्रह्मलेख—संज्ञा पुं० [सं०] भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।
ब्रह्मर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। २ मोक्ष का एक भेद।
ब्रह्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद का पढ़ना पढ़ाना। वेदपाठ। २ अद्वैतवाद।
ब्रह्मवादी—वि० [सं० ब्रह्मवादिन्] [स्त्री० ब्रह्मवादिनी] वेदांती। अद्वैतवादी।
ब्रह्मविद्—वि० [सं०] १. ब्रह्म को जानने या समझनेवाला। २ वेदार्थज्ञाता।
ब्रह्मविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मतत्व का विवेचन करनेवाला शास्त्र। ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद् विद्या।
ब्रह्मवैवर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म के कारण हो, जैसे—जगत की। २. ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत। ३ श्रीकृष्ण। ४ अठारह पुराणों में से एक पुराण जो कृष्णभक्ति संबंधी है।
ब्रह्मसमाज—संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मसमाज"।
ब्रह्मसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ जनेऊ। यज्ञोपवीत। २ व्यासकृत शारीरक सूत्र।
ब्रह्महत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मणवध। ब्राह्मण को मार डालना (महापाप)।
ब्रह्मांड—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौदहों भुवनों का समूह। संपूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २. खोपड़ी। कपाल।
ब्रह्मा—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप। विधाता। पितामह। २ यज्ञ का एक ऋत्विक्।
ब्रह्माणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। २ सरस्वती।
ब्रह्मानंद—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद।
ब्रह्मावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।
ब्रह्मास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था।
ब्रात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "व्रात्य"।
ब्राह्म—वि० [सं०] ब्रह्म संबंधी।
संज्ञा पुं० विवाह का एक भेद।
ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ब्राह्मणी] १ चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके छ प्रधान कर्म अध्यापन, अध्ययन, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना है। गीता में इनकी जगह ९ गुण गिनाए गए हैं। २ उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। ३ मंत्र, आरण्यक और उपनिषद् के अतिरिक्त वेदों का शेष अंश। ४ विष्णु। ५ शिव।
ब्राह्मणत्व—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण का भाव, अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन।
ब्राह्मणभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मणों का भोजन। ब्राह्मणों को खिलाना।
ब्राह्मण्य—संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मणत्व"।
ब्राह्ममुहूर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।
ब्राह्मसमाज—संज्ञा पुं० [सं०] १९वीं सदी ई० के आदि में राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित समाज जिसका उद्देश्य वैदिक "ब्रह्म एक ही और अद्वितीय है" के आधार पर केवल ब्रह्म की उपासना को ग्राह्य मानकर अन्य देवी देवताओं की उपासना का विरोध न करके समाजसुधार करना था। इस समाज में ज्ञान के लिये जातिपाँति का भेद नहीं माना गया। "ॐ तत् सत्" इस समाज का मूल मंत्र है।
ब्राह्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ शिव की अष्टमातृकाओं में से एक। ३. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ४ एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।
ब्रिगेड—संज्ञा पुं० [अं०] १ सेना का एक समूह। २ सैनिक ढंग पर बना हुआ समूह।
ब्रिटिश—वि० [अं०] ग्रेट ब्रिटेन् या इंगलिस्तान से संबंध रखनेवाला। अँगरेजी।
ब्रीडना(पु)—क्रि० अ० [सं० व्रीडन] लज्जित होना। लजाना।
ब्लाउज—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की जनानी कुरती।
ब्लाक—संज्ञा पुं० [अं०] १ छापे के काम के लिये काठ, ताँबे या जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों आदि का ठप्पा। २ इमारतों का वह समूह जिसके बीच में खाली जगह न हो। ३ विभाग। अंश। टुकड़ा।
ब्लैक मार्केट—संज्ञा पुं० [अं०] सरकार द्वारा नियंत्रित वस्तुओं का अवैधानिक व्यवसाय। चोर बाजारी।

भ

भ—हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है।
भंकार(पु)—संज्ञा पुं० [अनु०] विकट शब्द।
भंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ तरंग। लहर। २ पराजय। हार। ३ खंड। टुकड़ा। ४. भेद। ५ कुटिलता। टेढ़ापन। ६ भय। ७ टूटने का भाव। विनाश। विध्वंस। ८ बाधा। अड़चन। रोक। ९ टेढ़ होने या झुकने का भाव।
संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।
भंगड़—वि० [हिं० भाँग+अड़ (प्रत्य०)] बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।
भंगना†—क्रि० अ० [हिं० भंग] १ टूटना। २ दबना। हार मानना।
क्रि० स० १ तोड़ना। २ दबाना।
भँगरा—संज्ञा पुं० [हिं० भाँग+रा (प्रत्य०)] भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम में आती है। भँगरैया। भंगराज।
भंगराज—संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] १ काले रंग की एक चिड़िया। २ दे० "भँगरा"।
भँगरैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "भँगरा"।

मगार—संज्ञा पुं० [सं० मग] १. वह गड्ढा जिसमें वर्षा का पानी समाता है। २. वह गड्ढा जो कूआँ बनाते समय खोदते हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० भाँग] घासफूस। कूड़ा।

मंगारिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मगार"। उ०—भीतर भरी मँगारि।—कबीर०।

भंगि, भंगिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन। कुटिलता। २ स्त्रियों का हावभाव। अंगनिवेश। अंदाज। ३ लहर। ४ प्रतिकृति।

भंगी—संज्ञा पुं० [सं० भगिन्] [स्त्री० भगिनी] १. भंगशील। नष्ट होनेवाला। २ भग करनेवाला। भंगकारी।
संज्ञा पुं० [सं० भक्ति] [स्त्री० भगिन] एक जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है।
वि० [हिं० भाँग] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर—वि० [सं०] १ भग होनेवाला। नाशवान्। २. कुटिल। टेढ़ा।

भंगू—वि० [सं० भंगुर] दे० "भंगुर।" उ०—राम विरह तजि तनु छन भंगू। भूप सोच कर कवनु प्रसगू।—मानस।

भँगेड़ी—वि० दे० "भंगड़"।

भँगेला—संज्ञा पुं० दे० "भँगरा"।

भंजक—वि० [सं०] [स्त्री० भंजिका] भंगकारी। तोड़नेवाला।

भंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़ना। भंग करना। उ०—नाहित कारि मुखभजन तोरा। लै जातेउँ सीतहिं वरजोरा।—मानस। २. भग। ध्वंस। ३ नाश।
वि० भंजक। तोड़नेवाला। उ०—जन-रजन भंजन सोक भय। गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं।—मानस।

भंजना—क्रि० अ० [सं० भजन] १. टुकड़े टुकड़े होना। टूटना। २ किसी बड़े सिक्के का छोटे छोटे सिक्कों से बदला जाना। भुनना।
क्रि० अ० [हिं० भाँजना] १ दवा जाना। २. कागज के तख्तों का कई परतों में मोड़ा जाना। भाँजा जाना।
Ⓟक्रि० स० [सं० भजना] तोड़ना।

भँजाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
संज्ञा स्त्री० भँजाने या भुनाने की मजदूरी।

भँजाना†—क्रि० स० [हिं० भँजना का स० रूप] १. भँजने का सकर्मक रूप। तुड़-वाना। २. बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मान के छोटे सिक्के लेना। भुनाना। ३. भाँजने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० स० [हिं० भाँजना] दूसरे को भाँजने के लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना।

भँटा†—संज्ञा पुं० [सं० वृंताक] बैंगन।

भंड—संज्ञा पुं० दे० "भाँड़"।
वि० [सं०] १. अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। २ धूर्त। पाखंडी।

भँड़ताल†—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़+ताल] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें तालियाँ पीटते हैं। भँड़तिल्ला।

भड़तिल्ला—संज्ञा पुं० दे० "भँड़ताल"।

भंडना—क्रि० स० [सं० भडन] १ हानि पहुँचाना। बिगाड़ना। २. तोड़ना। ३. नष्ट भ्रष्ट करना। ४ बदनाम करना।

भँड़फोड़†—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़ा+फोड़ना] १. मिट्टी के बर्तनों को गिराना या तोड़ना फोड़ना। २. मिट्टी के बर्तनों का टूटना फूटना। रहस्योद्घाटन। भडाफोड़।

भँड़भाँड़—संज्ञा पुं० [सं० भांडीर] एक कँटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम आती हैं। भड़भाँड़।

भडरिया—संज्ञा पुं० [हिं० भड्डरि] एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर जीवन निर्वाह करते हैं। भड्डर।
वि० १. पाखडी। २ धूर्त। मक्कार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडारा+इया (प्रत्य०)] दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।

भड़सार, भँड़साल†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँड़+शाला] वह गोदाम जहाँ अन्न इकठा किया जाता है। खत्ती। खत्ता।

भंडा—संज्ञा पुं० [सं० भांड] १ बर्तन। पात्र। भाँड़ा। २ भंडारा। ३. भेद।
मुहा०—भडा फूटना = भेद खुलना।

भँडाना—क्रि० स० [हिं० भांड] १. उछल कूद मचाना। उपद्रव करना। २ तोड़ना फोड़ना। नष्ट करना।

भंडार—संज्ञा पुं० [स० भडागार] १. कोष। खजाना। २ अन्नादि रखने का स्थान। कोठार। ३ पाकशाला। भंडारा। ४ पेट। उदर। ५. दे० "भंडारा"।

भंडारा—संज्ञा पुं० [हिं० भडार] १ दे० "भडार"। २ समूह। झुंड। ३ साधुओं का भोज। ४ पेट।

भंडारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ छोटी कोठरी। २ कोश। खजाना। उ०—कौरव पासा कपट बनाये। धर्मपुत्र को जुवा खेलाये। तिन हारी सब भूमि भँडारी। हारी बहुरि द्रौपदी नारी।—सूर०।
संज्ञा पुं० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ खजानची। कोषाध्यक्ष। २. तोशाखाने का दारोगा। भडारे का प्रधान अध्यक्ष। ३. रसोइया। रसोईदार।

भँडेरिया—संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"।

भँड़ौआ—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़+औआ (प्रत्य०)] १. भाँड़ों के गाने का गीत। ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने के योग्य न हो। २ हास्य आदि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।

भँती—वि० दे० "भाँति"। उ०—नंदभुवन की लीला जिती। मथुरा द्वारावति बहु भँती। नंददास०।

भँभाना—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

भँभीरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] लाल रंग का एक बरसाती पतिंगा। जुलाहा। उ०—बाट असूझ अथाह गँभीरी। जिउ बाउर, भा फिरै भँभीरी।—पदमावत।

भँभेरिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भँभरना] भय।

भँवनⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] घूमना। फिरना।

भँवना—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] १ घूमना। फिरना। २ चक्कर लगाना।

भँवर—संज्ञा पुं० [स० भ्रमर] १ भौंरा। २ बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है। ३ गड्ढा। गर्त। उ०—उरज भँवरी भँवर मानो मीन मणि की काँति। भृगुचरण हृदय चिह्न ये सब, जीव जल बहु भाँति।—सूर०।

भँवरकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर+कली] लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे उधर सहज में घूम सकती है।

भँवरजाल—संज्ञा पुं० [हिं० भँवर+जाल] सांसारिक झगड़े बखेड़े। भ्रमजाल।

भँवरभीख—संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर + भीख] वह भीख जो भौंरे के समान घूम फिरकर माँगी जाय।

भँवरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवरा] १. पानी का चक्कर। भँवर। २. जंतुओं के शरीर के ऊपर वह स्थान जहाँ के रोएँ और बाल एक केंद्र पर घूमे हुए होते (बालों का इस प्रकार का घुमाव स्थानभेद से शुभ अथवा अशुभ लक्षण माना जाता है।) उ०—उरज भँवरी भँवर मानों मीन मणि की कांति। भृगुचरण हृदय चिह्न ये सब जीव जल बहु भाँति।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवरना या भँवना] १. दे० "भाँवर"। २. बनियों का सौदा लेकर घूम घूमकर बेचना। ३. फेरी।

भँवाना—क्रि० स० [हिं० भँवना का स० रूप] १. घुमाना। चक्कर देना। २. भ्रम में डालना।

भँवारा—वि० [हिं० √भँव + आरा प्रत्य०)] भ्रमणशील। घूमनेवाला। फिरनेवाला। उ०—तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भँवारे। ता गुण स्याम अधिक छवि उपजत कमलनैन मणि पारे।—सूर०।

भँसना—क्रि० अ० [हिं० बहना] पानी में डाला या फेंका जाना।

भ—संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। २. ग्रह। ३. राशि। ४. शुक्राचार्य। ५ भ्रमर। भौंरा। ६. भूधर। पहाड़। ७ आति। ८ दे० "भगण"।

भइया—संज्ञा पुं० [हिं० भाई + इया (प्रत्य०)] १. भाई। २ बराबर वालों के लिये आदरसूचक शब्द।

भक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकति—संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"। उ०—बहु बिभूति हरि द्विज कौं दीनी। दया भकति यतनी सुभ कीनी।—नंददास०।

भकभकाना—क्रि० अ० [अनु०] १. भकभक शब्द करके जलना। २ चमकना।

भकमूर(पु)—वि० [?] मूढ़। मूर्ख। उजड्ड।

भकाऊँ—संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा।

भकुआ—वि० [सं० भेक] मूर्ख। मूढ़।

भकुआना—क्रि० अ० [हिं० भकुआ से ना० धा०] चकपका जाना। घबरा जाना।

क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।

भकूट—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के लिये शुभ मानी जानेवाली कुछ राशियाँ।

भकोसना—क्रि० स० [बुकस ?] जल्दी, भद्देपन या बेसब्री से खाना। निगलना।

भक्त—वि० [सं०] १. भागों में बाँटा हुआ। २. बाँटकर दिया हुआ। प्रदत्त। ३. अलग किया हुआ। ४. अनुयायी। ५. सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।

भक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति।

भक्तवत्सल—वि० [सं०] [संज्ञा भक्तवत्सलता] १. जो भक्तों पर कृपा करता हो। २ विष्णु।

भक्ताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भक्त + हिं० आई (प्रत्य०)] भक्ति।

भक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनेक भागों में विभक्त करना। बाँटना। २. भाग। विभाग। ३. अंग। अवयव। ४. विभाग करनेवाली रेखा। ५. सेवा शुश्रूषा। ६ पूजा। अर्चन। ७. श्रद्धा। ८ भक्तिसूत्र के अनुसार ईश्वर में अत्यंत अनुराग का होना। इसके नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। ९ एक वृत्त का नाम।

भक्तिसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ भक्ति पर बनाया हुआ सूत्र; जैसे, शांडिल्य के भक्तिसूत्र, नारद के भक्तिसूत्र। २ ऐसे सूत्रों का संग्रह या ग्रंथ।

भक्ष—संज्ञा पुं० दे० "भक्षण"। उ०—शबरी कटुक बेर तजि मीठे भाखि गोद भरि लाई। जूठे की कछु शंक न मानी भक्ष किये सतभाई।—सूर०।

भक्षक—वि० [सं०] [स्त्री० भक्षिका] खानेवाला। भोजन करनेवाला। खादक।

भक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १. भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना। २. भोजन।

भक्षना(पु)—क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना। उ०—छहूँ रसहूँ धरत आगे वहै गंध सुहाइ। और अहित अभच्छ भच्छति गिरा बरणि न जाइ।—सूर०।

भक्षित—वि० [सं०] खाया हुआ।

भक्षी—वि० [सं० भक्षिन्] [स्त्री० भक्षिणी] खानेवाला। भक्षक।

भक्ष्य—वि० [सं०] खाने के योग्य।

संज्ञा पुं० खाद्य। अन्न। आहार।

भख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भक्ष] आहार। भोजन। उ०—वेद, वेदांत, उपनिषद अरपै सो भख, मोक्ता नाहिं। गोपी ग्वालिन के मंडल में सो हँसि जूठन खाहिं।—सूर०।

भखना(पु)—क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना। भोजन करना।

भगंदर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा के किनारे होता है।

भग—संज्ञा पुं० [सं०] १. योनि। २. सूर्य। ३. बारह आदित्यों में से एक। ४. ऐश्वर्य। ५ सौभाग्य। ६ धन। ७. गुदा।

भगण—संज्ञा पुं० [सं०] १ खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है। २. छंदशास्त्रानुसार एक गण जिसमें आदि का एक वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं।

भगत—वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १ सेवक। उपासक। भक्ति करनेवाला। उ०—रामभगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।—मानस। २. वह साधु जो मांस आदि न खाता हो।

संज्ञा पुं० १ वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। २. दे० "भगतिया"। ३ होली में वह स्वाँग जो भगत का किया जाता है। ४. भूत प्रेत उतारनेवाला पुरुष। ओझा।

भगतबछल(पु)—वि० [सं० भक्त + वत्सल] दे० "भक्तवत्सल"। उ०—भगतबछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।—मानस।

भगतबछलता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भक्त + वत्सलता] भक्तवत्सल होने का भाव। उ०—राम अनुज मन की गति जानी। भगतबछलता हिय हुलसानी।—मानस।

भगति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

भगतिया—संज्ञा पुं० [हिं० भगत + इया (प्रत्य०)] [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति। इस जाति के लोग गाने बजाने का काम करते हैं और इनकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती और भगतिन कहलाती हैं।

भगती—संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

भगदड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० √भाग + दौड़] भागने की क्रिया या भाव।

भगदर—संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़"।

भगन(पु)—वि० दे० "भग्न"।

संज्ञा पुं० [हिं० भगना] भागने का कार्य या स्थिति । उ०—दुरि, मुरि, भगन, बचावन छबि सो भावन, उलटन सोहै ।—नंददास० ।

भगना†—क्रि० अ० दे० "भागना" ।

सज्ञा पुं० दे० "भानजा" ।

भगर(पु)†—सज्ञा पुं० [देश०] छल। फरेब ।

भगल—सज्ञा पुं० [देश०] १ छल । कपट । ढोंग । २. जादू । इंद्रजाल ।

भगली—सज्ञा पुं० [हिं० भगल+ई (प्रत्य०)] १ ढोंगी । छली । २. बाजीगर ।

भगवत(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० भगवत् के "भगवत." से] १ भगवान । ईश्वर । उ०—ब्रह्मनिरूपन धर्म विधि, बरनहिं तत्व विभाग । कहहिं भगति भगवत कै, संजुत ज्ञान विराग ।—मानस । २. विष्णु । उ०—सो अनन्य जाके असि, मति न टरइ हनुमत । मैं सेवक सचराचर, रूपस्वामि भगवंत ।—मानस ।

भगवती—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवी । २ गौरी । ३ सरस्वती । ४ दुर्गा ।

भगवत्—सज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर । परमेश्वर । २ विष्णु । ३ शिव ।

भगवदीन—सज्ञा पु० [स० भगवदीय] भगवद्भक्त । उ०—भगवदीन सग करि, बात उनकी लै सदाँ, सानिधि इहि देति भैई ।—नंददास० ।

भगवदीय—वि० [सं० भगवद्] १ भगवत सबंधी । २ भगवान् का भक्त ।

भगवद्गीता—सज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित अर्जुन और भगवान् कृष्ण के १८ अध्यायोंवाले वे प्रश्नोत्तर जिनमें भक्ति, ज्ञान, कर्म, उपासना, वैराग्य आदि का रहस्य समझाते हुए अर्जुन को कर्तव्य और अकर्तव्य का भेद समझाया गया जिससे प्रेरित होकर उन्होंने फेंके हुए धनुष बाण उठाकर लड़ना स्वीकार कर लिया ।

भगवान , भगवान्—वि० [सं० भगवत्] १ ऐश्वर्ययुक्त । २ पूज्य ।

सज्ञा पुं० १ ईश्वर । परमेश्वर । २ विष्णु । ३ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति ।

भगाड़—सज्ञा पुं० [सं० भगाल] कुएँ के सोते के ऊपर का चक्राकार खुला हुआ हिस्सा ।

भगाना—क्रि० स० [सं० व्रज] १. किसी को भागने में प्रवृत्त करना । दौड़ाना । २ हटाना । दूर करना ।

(पु) क्रि० अ० दे० "भागना" ।

भगिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] बहन ।

भगीरथ—सज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो राजा सगर के प्रपौत्र दिलीप के पुत्र थे। कपिल मुनि द्वारा भस्म किए हुए सगर के साठ हजार पुत्रों की सद्गति के लिये ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे ।

वि० [सं०] भगीरथ की तपस्या के समान भारी । बहुत बड़ा ।

भगोड़ा—वि० [हिं० √भाग + ओड़ा (प्रत्य०)] १ भागा हुआ । २. भागने वाला । कायर ।

भगोल—सज्ञा पुं० दे० "खगोल" ।

भगौती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती" ।

भगौहाँ—वि० [हिं० √ भाग + औहाँ (प्रत्य०)] १ भागने को उद्यत । २ कायर ।

वि० [हिं० भगवा] भगवा । गेरुआ ।

भग्गी†—सज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़" ।

भग्गुल(पु)†—वि० [हिं० भागना] १ रण से भागा हुआ । २ भगोड़ा । भग्गू ।

भग्गू†—वि० [हिं० √भाग+ऊ (प्रत्य०)] जो विपत्ति देखकर भागता हो । कायर ।

भग्न—वि० [स०] स्त्री० भग्ना] १ टूटा हुआ । २ हारा या हराया गया । पराजित ।

भग्नावशेष—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी टूटे फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश । खंडहर । २ किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े ।

भग्नाशा—वि० [स०] जिसकी आशा भग हो गई हो । निराश ।

भचक—सज्ञा स्त्री० [हिं० भचकना] चलते समय पैर का ठीक न पड़ना । लचककर चलने का भाव । लँगड़ापन ।

भचकना—क्रि० अ० [हिं० भौचक] आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना ।

क्रि० अ० [अनु० भच] चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने में लँगड़ापन मालूम हो ।

भचक्र—सज्ञा पुं० [स०] १ राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग । कक्षा । २ नक्षत्रों का समूह ।

भच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भक्ष्य" ।

भच्छना(पु)†—क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना ।

भछन—संज्ञा पुं० [सं० भक्षण] दे० "भक्षण" । उ०—जाके डर तहँ जात न कोई । तछिन भछन करि डारै सोई । —नंददास० ।

भजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बार बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना । स्मरण । जप । २. वह गीत जिसमें देवता आदि के गुणों का कीर्तन हो ।

भजना—क्रि० स० [सं० भजन] १. सेवा करना । २ आश्रय लेना । आश्रित होना । ३ देवता आदि का नाम रटना । जपना ।

क्रि० अ० [सं० व्रजन, पा० वजन] १. भागना । भाग जाना । २ पहुँचना । प्राप्त होना ।

भजनानंद—संज्ञा पुं० [सं० भजन+आनंद] भजन से मिलनेवाला आनंद ।

भजनानंदी—संज्ञा पुं० [हिं० भजनानंद+ई (प्रत्य०)] भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला ।

भजनी, भजनीक—सज्ञा पुं० [सं० भजन+हिं० ई, ईक (प्रत्य०)] भजन गानेवाला ।

भजाना—क्रि० अ० [हिं० भजना = दौड़ना] दौड़ना । भागना ।

क्रि० अ० [हिं० भजना का स० रूप] भगाना । दूर कर देना ।

भजियाउर†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाजी+चाउर (चावल)] चावल, दही, घीआ आदि एकसाथ पकाकर बनाया हुआ भोजन । उभ्भिया । भिजियाउर ।

भट—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध करनेवाला । योद्धा । २ सिपाही । सैनिक ।

भटकटाई, भटकटैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कटाई] एक छोटा और काँटेदार पौधा जो अक्सर दवा के काम आता है ।

भटकना—क्रि० अ० [सं० भ्रम ?] १ व्यर्थ इधर उधर घूमते फिरना । २. रास्ता भूल जाने के कारण इधर उधर घूमना । ३ भ्रम में पड़ना ।

भटकाना—क्रि० स० [हिं० भटकना का स० रूप] १ गलत रास्ता बताना । २ भ्रम में डालना ।

भटकैया(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० √भटक+ऐया (प्रत्य०)] १ भटकनेवाला । २ भटकानेवाला ।

भटकैया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० √भटक+ ऐया (प्रत्य०)] १. भटकनेवाला । २. भटकानेवाला ।
भटकौहाँ(पु)†—वि० [हिं० √भटक+औहाँ (प्रत्य०)] भटकानेवाला ।
भटनास—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की फलियाँ लगती हैं जिनके दानों की दाल बनती है।
भटभटी(पु)—संज्ञा स्त्री० [अनु०] देखते हुए भी न दिखाई पड़ना ।
भटभेरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० भट+भिड़ना] १. दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत। उ०—एक पिशाचिनि है यहि बीच चलो किन तात करो भटभेरो।—हनुमन्नाटक। २ धक्का। टक्कर। ठोकर। ३. ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय। उ०—गली अँधेरी, साँकरी भी भटभेरा आनि। परे पिछाने परसपर दोऊ परस पिछानि।—बिहारी०।
भटा†—संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।
भटू†—संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] स्त्रियों के संबोधन के लिये एक आदरसूचक शब्द। उ०—कहा मोहनि भाव दिखावै भटू कहिबे कछु होइ सो खोलि कहै।—शृंगार०।
भट्ट—संज्ञा पुं० [सं० भट] १. ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. भाट। ३ योद्धा। शूर।
भट्टारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भट्टारिका] १ ऋषि। २ पंडित। ३ सूर्य। ४ राजा। ५ देवता।
वि० माननीय। मान्य।
भट्टा—संज्ञा पुं० [सं० भ्राष्ट्र] १ बड़ी भट्ठी। २ ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।
भट्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] १ ईंटों आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा जिसपर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। २ वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है।
भठ—संज्ञा पुं० [?] गहरा गड्ढा या अंधा कुआँ। उ०—जो करि हम द्विज है मद भरे। गुरु कहाइ सठ भठ मैं परे।—
भठियारपन—संज्ञा पुं० [हिं० भठियारा+पन (प्रत्य०)] १ भठियारे का काम। २ भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।
भठियारा—संज्ञा पुं० [हिं० भट्+इयारा (प्रत्य०)] [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का प्रबंध करनेवाला या रक्षक।
भड़वा—संज्ञा पुं० [सं० विडंब] आडंबर। नकल। बनावट।
भड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. दिखाऊ चमक दमक। चमकीलापन। भड़कीला होने का भाव। २. भड़कने का भाव। सहम।
भड़कदार—वि० [हिं० भड़क+फा० दार] १. चमकीला। भड़कीला। २ रोबदार।
भड़कना—क्रि० अ० [भड़क (अनु०)] १. तेजी से जल उठना। २ झिझकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना (पशुओं के लिये)। ३ क्रुद्ध होना।
भड़काना—क्रि० स० [हिं० भड़कना का स० रूप] १ प्रज्वलित करना। जलाना। २ उत्तेजित करना। उभारना। ३. भयभीत कर देना। चमकाना (पशुओं के लिये)।
भड़कीला—वि० दे० "भड़कदार"।
भड़भड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ भड़भड़ शब्द जो प्राय आघातों से होता है। २. भीड़। धम्मड़। ३ व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत।
भड़भड़ाना—क्रि० स० [अनु०] भड़ भड़ शब्द करना।
भड़भड़िया—वि० [हिं० भड़भड़+इया (प्रत्य०)] बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला।
भड़भाँड़—संज्ञा पुं० [सं० भांडीर] एक कँटीला पौधा। सत्यानासी। घमोय।
भड़भूँजा—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़+भूँजना] एक जाति जो भाड़ में अन्न भूनती है।
भड़साई—संज्ञा स्त्री० दे० "भाड़"।
भड़ार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भंडार"।
भड़ास—संज्ञा स्त्री० [देश०] मन में छिपा हुआ असंतोष का क्रोध।
भड़िहाई(पु)†—क्रि० वि० [हिं० भड़िहा] चोरों की तरह। लुक छिप या दबकर।
भड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भड़काना] भूठा बढ़ावा।
भड़ुआ—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़] १ वह जो वेश्याओं की दलाली करता हो। २. सफरदाई।
भड़ेरिया—संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"।
भड़ैत—संज्ञा पुं० [हिं० भाड़ा+ऐत (प्रत्य०)] किराएदार।
भड्डर—संज्ञा पुं० [सं० भद्र] ब्राह्मणों में बहुत निम्न श्रेणी की एक जाति। भंडर।
भणना(पु)†—क्रि० अ० [सं० भणन] कहना।
भणित—वि० [सं०] कहा हुआ।
भतार†—संज्ञा पुं० [सं० भर्तार] पति। खसम।
भतीजा—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृज] [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।
भत्ता—संज्ञा पुं० [सं० भरण] किसी कर्मचारी या अन्य व्यक्ति को निर्धारित वेतन के अतिरिक्त यात्रा, प्रवास, भोजन, संतान, चिकित्सा, महँगाई आदि के लिये अथवा किसी विशेष कार्य के लिये दिया जानेवाला धन।
भथियान†—संज्ञा पुं० [?] स्त्री की गुह्येंद्रिय। भग।
भदंत—वि० [सं०] पूज्य। मान्य।
संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षु या साधु।
भदई—संज्ञा स्त्री० [हिं० भादों] वह फसल जो भादों में तैयार होती है।
भदावर—संज्ञा पुं० [सं० भद्रावर] एक प्रांत जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।
भदेस—वि० [सं० भद्र+देश ?] १ बुरा। असाधु। भद्दा। उ०—भनिति भदेस वस्तु भलि बरनी। रामकथा जग मंगल करनी।—मानस। २ अनुचित। अशोभन। उ०—विद्यमान आपुनु मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू।—मानस।
संज्ञा पुं० बुरा देश या स्थान।
भदेसिल†—वि० [हिं० भद्दा] भद्दा। भोंड़ा।
भदौंहा†—वि० [हिं० भादों] भादों मास में होनेवाला।
भदौरिया—वि० [हिं० भदावर + इया (प्रत्य०)] भदावर प्रांत का। भदावर संबंधी।
संज्ञा पुं० [हिं० भदावर] क्षत्रियों की एक जाति।
भद्दा—वि० पुं० [अनु० भद] [स्त्री भद्दी] जो देखने में मनोहर न हो। कुरूप।
भद्दापन—संज्ञा पुं० [हिं० भद्दा + पन (प्रत्य०)] भद्दा होने का भाव।
भद्र—वि० [सं०] १ सभ्य। सुशिक्षित। २ कल्याणकारी। ३ श्रेष्ठ। ४ साधु।

संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। २. उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। ३. सुमेरु पर्वत। ४ सोना। स्वर्ण।
संज्ञा पुं० [सं० भद्राकरण] सिर, दाढ़ी, मूछ आदि सबके बालों का मुंडन। उ०—लीन्हों हृदय लगाय सूर प्रभु पूछत भद्र भए क्यों भाई।—सूर०।

भद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। २ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, रगण, नगण, रगण, नगण, रगण, नगण, और अंत्य गुरु होता है। उ०—भावहि सों, कुभावऽनखसों, महालसहिंसों, अडोल मति सों। भद्रक है, पुरारि मुचि सों, दशानन-हिंसों, सुकुंम श्रुति सों।।

भद्रकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गादेवी की एक मूर्ति। २. कात्यायिनी।

भद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

भद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्ण जी को ब्याही थी। २. आकाशगंगा। ३. द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी तिथि। ४. गाय। ५. दुर्गा। ६ पिंगल में उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। ७. पृथ्वी। ८ सुभद्रा का एक नाम। ९. फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसके पृथ्वी पर रहने के समय किया जानेवाला कार्य एक दम नष्ट हो जाता है इसलिये वह अशुभ माना जाता है। किंतु उस योग के स्वर्ग में रहने के समय कार्यसिद्धि और पाताल में रहने के समय धनप्राप्ति होती है। १० बाधा (बोलचाल)।

भद्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मणियों से जड़ा हुआ राजसिंहासन जिसपर राज्याभिषेक होता है। २ योग का एक आसन।

भद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और रगण होता है। उ०—सत्य मान यह मात री। भद्रिका न यह बात री।।

भद्री—वि० [सं० भद्रिन्] भाग्यवान्।

भनक—संज्ञा स्त्री० [सं० भणन] १ धीमा शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।

भनकना(पु)—क्रि० स० [सं० भणन] कहना।

भनना(पु)—क्रि० स० [सं० भणन] कहना। उ०—मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई। सुकवि लखन मन की गति भनई।।—मानस।

भनभनाना—क्रि० अ० [अनु०] १. भनभन शब्द करना। गुंजारना। २. विरुद्ध भावना को मंद मंद कहना। बड़बड़ाना।

भनभनाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० भनभनाना + आहट (प्रत्य०)] भनभनाने का शब्द। गुंजार।

भनित(पु)—वि० दे० "भणित"।

भनैजी—संज्ञा स्त्री० [सं० भागिनेयी] भानजी। उ०—बोलि उठी देवकि छवि मई। मैया न डर मनैजी मई।—नंददास०।

भबका—संज्ञा पुं० [हिं० भाप] अर्क आदि उतारने या शराब चुआने का एक प्रकार का बड़े मुँह का बड़ा घड़ा जिसके ऊपरी भाग में एक लंबी नली लगी रहती है।

भविष(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भविष्य"। उ०—जब पिय प्रेम छपावती करि विदग्धता नाम। भूत भविष वतमान सो गुप्ता ताको नाम।—शृंगार०।

भभ्भड़—संज्ञा स्त्री० दे० "भम्भड़"।

भभक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भभकने की क्रिया या भाव।

भभकना—क्रि० अ० [अनु०] १ उबलना। २ गरमी पाकर किसी चीज का फूटना। ३ जोर से जलना। भड़कना।

भभकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भभक] घुड़की। झूठी धमकी।

भम्भड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] भीड़भाड़। अव्यवस्थित जनसमुदाय।

भभरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० भय] १. भयभीत होना। डरना। २ घबरा जाना। ३ भ्रम में पड़ना।

भभूका—संज्ञा पुं० [हिं० भभक] ज्वाला। लपट।

भभूत—संज्ञा स्त्री० [सं० विभूति] १. वह भस्म जो शिव जी लगाते थे। २. शिवमूर्ति के सामने जलनेवाली अग्नि की भस्म जिसे शिव के भक्त और उपासक अपने मस्तक और भुजाओं आदि पर लगाते हैं।

भमीरी—संज्ञा स्त्री० दे० "भँमीरी"।

भयंकर—वि० [सं०] [स्त्री० भयंकरी] जिसे देखने से भय लगता हो। डरावना। भयानक। भीषण।

भयंकरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भयंकर होने का भाव। डरावनापन। भीषणता।

भय—संज्ञा पुं० [सं०] एक दुःखद मनोविकार जो किसी आनेवाली आपत्ति या बुराई की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। खौफ।
मुहा०—भय खाना = डरना।
(पु)वि० दे० "हुआ"।

भयकर—वि० [सं०] [स्त्री० भयकरी] भयानक। भयंकर।

भयप्रद—वि० [सं०] दे० "भयानक"।

भयभीत—वि० [सं०] डरा हुआ।

भयवाद—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ + आदि] एक ही गोत्र या वंश के लोग। भाईबंद।

भयवारी—वि० [सं० भय + हिं० वारी = वाली] भयंकर। भयानक। उ०—नख है न अगराग कुंकुम न लाग्यो तन, रौद्र बीर भयवारी झलक रहस की।—शृंगार०।

भयहारी—वि० [सं० भयहारिन्] डर छुड़ानेवाला। डर दूर करनेवाला।

भया(पु)—वि० दे० "हुआ"।

भयातुर—वि० [सं०] [संज्ञा भयातुरता] भय से विकल। डरा और घबराया हुआ।

भयान(पु)—वि० [सं० भयानक] डरावना। भयानक। उ०—तुम बिना सोभा न ज्यों गृह बिना दीप भयान। श्वास उसास घट में अवध आशा प्रान।—सूर०।

भयानक—वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो। भीषण। भयंकर। डरावना।
संज्ञा पुं० साहित्य में नौ रसों में से एक जिसका स्थायी भाव भय है तथा जिसका अनुभव भयोत्पादक दृश्यों के वर्णन से होता है।

भयाना(पु)—क्रि० अ० [सं० भय से हिं० ना० धा०] डरना।
क्रि० स० भयभीत करना। डराना।

भयारी—वि० दे० "भयानक"।

भयावना—वि० [हिं० भय] डरावना।

भयावह—वि० [सं०] भयंकर। डरावना।

भरंत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रांति] संदेह।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया या भाव। भराई।

भर—वि० [हिं० भरना] कुल। पूरे। सब। उ०—अति कल्याण रघुनाथ गुसांई युग भर जात घड़ी।—सूर०।
(पु)क्रि० वि० [हिं० भार] बल से। द्वारा।

संज्ञा पुं० [सं० भार] भार। बोझ। वजन। २ पुष्टि। मोटाई।
संज्ञा पुं० [सं० भरत] एक जाति का पक्षी।
भरकना(पु)—क्रि० अ० दे० "भड़कना"।
भरका—संज्ञा पुं० [देश०] पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर डाकू छिपते हैं।
भरण—संज्ञा पुं० [सं०] पालन पोषण।
भरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र। तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण सी है।
वि० भरण या पालन करनेवाला।
भरत—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह मांडवी के साथ हुआ था। २ दे० "जड़भरत"। ३ शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न हस्तिनापुर के पुरुवंशी राजा दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ४ एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। ५ संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६. वह जो नाटकों में अभिनय करता हो। नट। ७ प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश जिसका उल्लेख बाल्मीकि रामायण में है।
संज्ञा पुं० [सं० भरद्वाज] लवा पक्षी का एक भेद।
संज्ञा पुं० [देश०] १ काँसा नामक धातु। कसकुट। २ ठठेरा।
भरतखंड—संज्ञा पुं० [सं०] राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड। भारतवर्ष। हिंदुस्तान।
भरता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन सालन जो भुने हुए बैंगन, आलू आदि को मसलकर बनाया जाता है। चोखा।
संज्ञा पुं० दे० "भर्ता"।
भरतार—संज्ञा पुं० [सं० भर्ता] पति। खसम।
भरती—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ भर + ती (प्रत्य०)] १ किसी चीज में भरे जाने का भाव। भरा जाना।
मुहा०—भरती करना = किसी। के बीच में रखना, लगाना या बैठाना। भरती का = बहुत ही साधारण या रद्दी।
२ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव।
भरत्थ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भरत"।
भरथरी—संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि"।
भरदूल—संज्ञा पुं० [सं० भरद्वाज] भरत पक्षी।
भरद्वाज—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि जो गोत्रप्रवर्त्तक और मंत्रकार थे। ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं। २ ऋषि के वंशज या गोत्रापत्य।
भरना—क्रि० स० [सं० भरण] १ खाली जगह को पूरा करने के लिये कोई चीज डालना। पूर्ण करना। २. उँडेलना। उलटना। डालना। ३ तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि डालना। ४ पद पर नियुक्त करना। रिक्त पद की पूर्ति करना। ५ ऋण का परिशोध या हानि की पूर्ति करना। चुकाना। देना।
मुहा०—(किसी का) घर भरना = (किसी को) खूब धन देना।
६ गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। ७ निर्वाह करना। निबाहना। ८ काटना। डसना। ९. सहना। झेलना। १०. सारे शरीर में लगाना। पोतना।
क्रि० अ० १. किसी रिक्त पात्र आदि का कोई और पदार्थ पड़ने के कारण पूर्ण होना। २ उँडेला या डाला जाना। ३ तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि का होना। ४ ऋण आदि का परिशोध होना। ५. मन में क्रोध होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ६. घाव में अंगूर आना। अच्छा होते समय घाव में दाने पड़ना। घाव का ठीक और बराबर होना। ७ किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। ८. शरीर का हृष्ट पुष्ट होना। ९ घोड़ी आदि का गर्भवती होना।
संज्ञा पुं० १ भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।
भरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भरण] पहनावा। पोशाक। कपड़े लत्ते।
भरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] करघे की ढरकी। नार।
संज्ञा स्त्री० [सं० भरणी] १. भरणी। २. नक्षत्र। ३. भरणी नक्षत्र में होनेवाली वर्षा, जिससे खेती का मरना बताया जाता है। उ०—रामकथा कलि पन्नग भरनी। पुनि विवेक पावक कहँ अरनी॥ —मानस।
संज्ञा स्त्री० [?] १. छछूँदर। २. मोरनी। ३. गारुड़ी मंत्र। ४. एक जंगली बूटी।
भरपाई—क्रि० वि० [हिं० √ भर + पाना]. पूर्ण रूप से। भली भाँति। उ०—आपुन वज्र समान भए हरि माला दुखित भई भरपाई।—सूर।
संज्ञा स्त्री० जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना।
भरपूर—वि० [हिं० भरा + पूरा] १. पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा पूरा। २. जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण।
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।
भरभराना—क्रि० अ० [अनु०] १. (रोआँ) खड़ा होना। २. घबराना।
भरभरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरभराना] आकुलता। उ०—दास ऐसी डर डरी मति है तहाँ ताकी, भरभरी लागी मन, थरथरी गात है।—काव्यनिर्णय।
भरभेंटा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० भर + भेंट] सामना। मुकाबला। मुठभेड़।
भरम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भ्रम] १ संशय। संदेह। धोखा। २ भेद। रहस्य।
मुहा०—भरम गँवाना = भेद खोलना।
भरमना(पु)—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] १ घूमना। चलना। फिरना। २ मारा मारा फिरना। भटकना। ३. धोखे में पड़ना।
संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रम] १ भूल। गलती। धोखा। भ्रांति। भ्रम।
भरमाना—क्रि० स० [हिं० भरमना का स० रूप] १ भ्रम में डालना। बहकाना। उ०—कोऊ निरखि रहीं चारु लोचन निमिष भरमाई। सूर प्रभु की निरखि सोभा कहत नहिं आई।—सूर। २ भटकाना। व्यर्थ इधर उधर घुमाना। उ०—माधो जी मोहि काहे की लाज। जन्म जन्म यों हीं भरमान्यो अभिमानी बेकाज।—सूर।
क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना। उ०—सूर श्याम छबि निरखि कै युवती भरमाहीं।—सूर।
भरमार—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ भर + मार = अधिकता] बहुत ज्यादती। अत्यंत अधिकता।
भरराना—क्रि० अ० [अनु०] १. भरर शब्द के साथ गिरना। भरराना। २ टूट पड़ना।

रवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरवाना] भरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रवाना—क्रि० स० [हिं० भरना का ०ि० रूप] भरने का काम दूसरे से कराना।

रसक—क्रि० वि० [हिं० भर=पूरा+सं० ाक्य] यथाशक्ति। जहाँ तक हो सके।

रसन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।

रसाई—संज्ञा पु० दे० "भाड़"।

रहरना—क्रि० अ० दे० "भरभराना"। ३०—जाको सुयश सुनत अरु गावत पाप ाद जैहैं भजि भरहरि।—सूर०।

राँति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रांति"।

राई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√भर+आई प्रत्य०)] भरने या भराने की क्रिया, भ व या मजदूरी।

राना—क्रि० स० दे० "भरवाना"।

राव—संज्ञा पुं० [हिं०√भर+आव प्रत्य०)] भरने का काम या भाव। भरत।

रित—वि० [सं०] [स्त्री० भरिता] भरा हुआ।

ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भर] दस माशे या क रुपए के बराबर एक तौल।

रु(पु)—संज्ञा पु० [सं० भर] बोझ। ाजन।

हुआ—संज्ञा पुं० दे० "भड़ुआ"।

हुाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० भारी+होना प्रत्य०)] घमंड करना। अभिमान करना। उ०—अब वे भरुहाने फिरैं कहुँ ाात न माई। सूरज प्रभु मुँह पाइ कै भए ोठ बजाई।—सूर०।

क्रि० स० [हिं० भ्रम] १ बहकाना। ोखा देना। उ०—तुम नंदमहर भरुहाए। ाता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहो कहाँ ते ए।—सूर०। २ उत्तेजित करना। ावा देना।

या†—वि० [सं० भरण] पालन करने ाला। पालक। रक्षक।

वि० [हिं० भरना] भरनेवाला।

ोस—संज्ञा पुं० दे० "भरोसा।" उ०— ोहि भरोस मोरे मन आवा। केहि न ुसंग बड़प्पनु पावा।—मानस।

ोसा—संज्ञा पुं० [सं० वर+आशा] १ ाश्रय। आसरा। २. सहारा। अवलंब। . भारा। उम्मेद। ४. दृढ़ विश्वास।

ं—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ सूर्य का तेज। ३. एक प्राचीन देश। ४ ज्योति। दीप्ति। चमक।

भर्ता—संज्ञा पुं० [सं० भर्तृ] १ अधिपति। स्वामी। २ मालिक। ागोविंद। ३ विष्णु।

भर्तार—संज्ञा पुं० [सं० भर्तृ के कर्ता के बहु-वचन "भर्तार" से] पति। स्वामी। उ०—काम अति तन दहत दीजै सूरश्याम भर्तार।—सूर०।

भर्तृहरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई और गंधर्वसेन के दासीपुत्र थे। पत्नी की दुश्चरित्रता से विरक्त होकर ये साधु हो गए थे। कहते हैं कि काशी में योगी होने के बाद इन्होंने कई ग्रंथों की रचना की थी। कुछ योगी या साधु आजकल भी अपने को इन्हीं के सम्प्रदाय का बतलाते हैं।

भर्त्सना—संज्ञा पु० [सं०] १. निंदा। शिकायत। २ डाँटडपट। फटकार।

भर्म(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भ्रम"।

भर्मन(पु)†—संज्ञा पु० दे० "भ्रमण"।

भर्रा—संज्ञा पुं० [अनु०] झाँसा। दमपट्टी।

भर्राना—क्रि० अ० [भर से अनु०] भर्र-भर्र शब्द होना।

भर्सन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।

भलका†—संज्ञा पुं० [हिं० फल ?] तीर का फल। गाँसी।

भलपति—संज्ञा पुं० [हिं० भाला+सं० पति] भाला रखनेवाला। नेजेबरदार।

भलमनसत—संज्ञा स्त्री० [सं० भद्र+मनुष्यता] भलेमानस होने का भाव। सज्जनता। शराफत।

भलमनसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भला+मानस+ई (प्रत्य०)] दे० "भलमनसत"।

भला—वि० [सं० भद्र, प्रा० भल्ल] १ अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २ सुसंस्कृत। शिष्ट। परिष्कृत।

यौ०—भला बुरा=(१) उलटी सीधी बात। अनुचित बात। (२) डाँट फटकार।

संज्ञा पुं० १ कल्याण। कुशल। भलाई। २. लाभ। नफा।

यौ०—भलाबुरा=हानि और लाभ।

अव्य० १ अच्छा। खैर। अस्तु। २ "नहीं" का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।

मुहा०—भले ही=ऐसा हुआ करे। इससे कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।

भलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० भला+ई (प्रत्य०)] १ भला होने का भाव। भलापन। २ उपकार। नेकी।

भले—क्रि० वि० [हिं० भला] भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।

अव्य० खूब। वाह।

भलेरा(पु)†—संज्ञा पु० दे० "भला"।

भलौ(पु)—क्रि० वि० [प्रा० भल्ल] भला। उ०—मारी भूख लगी है चलौ। भैया बहुत मानिहैं भलौ।—नंददास।

भल्लर—वि० [?] भद्दा। उ०—केवल लोक-प्रसिद्ध कौं, ग्राम्य कहैं कविराइ। वया झलै टुक गल्ल सुनि, भल्लर भल्लर भाइ।—काव्यनिर्णय।

भवंग, भवंगम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भवंत—वि० [सं० भवत के कर्ता के बहुवचन रूप "भवतः" से] आप लोगों का। आपका। उ०—अवलंब भवंत कथा जिन्हके। प्रिय संत अनंत कथा तिन्हके।—मानस।

भव—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्ति। जन्म। २. संसार। जगत्। उ०—निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करौं कथा भव सरिता तरनी।— मानस। ३. शिव। उ०—उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा।—मानस। ४. मेघ। बादल। ५ कुशल। ६ सत्ता ७ कामदेव। ८ जन्ममरण का दुःख। उ०—कमलनयन मकराकृत कुंडल देखत ही भव भागै।—सूर०।

वि० १ शुभ। २ उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [सं० भय] डर। भय।

भवजाल—संज्ञा पुं० [सं० भव+जाल] १. संसार का जाल या माया। २ झंझट। बखेड़ा।

भवदीय—सर्व० [सं०] [स्त्री० भवदीया] आपका।

भवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान। २ महल। ३ छप्पय का एक भेद।

संज्ञा पुं० [सं० भुवन] जगत्। संसार।

भवना(पु)†—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भवनी—संज्ञा स्त्री० [सं० भवन] भार्या। स्त्री।

भवबंधन—संज्ञा पुं० [सं०] संसार का झंझट। सांसारिक दुःख और कष्ट।

भवभंजन—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।

भवभय—संज्ञा पुं० [सं०] ससार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय।

भवभामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिव जी की भार्या। पार्वती।

भवभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सृष्टि।
संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध नाटककार।

भवभूष(पु)†—संज्ञा पुं० [सं०] संसार के भूषण।

भवमोचन—वि० [सं०] संसार के बधनों से छुड़ानेवाले (भगवान्)। उ०—होइहहिं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भवमोचन ॥—मानस।

भवविलास—संज्ञा पुं० [सं०] १ माया। २. ससार के सुख जो ज्ञान के अधकार से उदित होते हैं।

भवसंभव—वि० [सं०] सासारिक।

भवसागर—संज्ञा पुं० [सं०] संसार रूपी समुद्र। समुद्र के समान विस्तृत विश्व।

भवाँ†—क्रि० स० [स० भ्रमण] घुमाना। फिराना।

भवानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिव की पत्नी। दुर्गा। पार्वती।

भवाब्धि, भवार्णव—संज्ञा पुं० [सं०] ससार रूपी सागर।

भवितव्य—संज्ञा पु० [स०] होनहार।

भवितव्यता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ होनी। भावी। होनहार। २ भाग्य। किस्मत।

भविष्य—वि० [स०] वर्तमान काल के उपरात आनेवाला काल।

भविष्यगुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुप्त नायिका जो रति में प्रवृत्त होनेवाली हो किंतु पहले से उसे छिपाने का उद्योग करे। उ०—दैहौं सखी सिर तो कहे भाभी पै ऊख को खेत न देखन जैहौं। जैहौं तौ जीव डरावन देखिहौं बीचहि खेत के जाइ छपैहौं ॥ पैहौं छरोर जौ पातन को फटिहै पट क्यों हूँ तौ हौं न डरैहौं। रैहौं न मौन जौ गेह के रोप करैंगे तौ दोष मैं तेरोई दैहौं ॥

भविष्यत्—संज्ञा पुं० [स०] भविष्य।

भविष्यद्वक्ता—संज्ञा पु० [स०] १ भविष्य द्वाणी करनेवाला। २ ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी—संज्ञा स्त्री० [स०] भविष्य में होनेवाली बात का पहले से ही कहना।

भवीला(पु)†—वि० [स० भाव+हिं० ईला (प्रत्य०)] १ भावयुक्त। भावपूर्ण। २ बाँका तिरछा।

भवेश—संज्ञा पुं० [सं०] ससार के स्वामी। महादेव। शिव।

भवेस—संज्ञा पुं० दे० "भवेश"। उ०—तुलसी भरोसे न भवेस भोलानाथ को तौ कोटिक कलेस करौ मरौ छार छानि सो।—कविता०।

भव्य—वि० [सं०] १. देखने में विशाल और सुंदर। शानदार। २ शुभ। मगल-सूचक। ३. सत्य। सच्चा। ४ भविष्य में होनेवाला।

भव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भव्य होने का भाव।

भष(पु)—संज्ञा पु० [सं० भक्ष्य] भोजन। आहार। उ०—अति आतुर भष कारण धाई धरत फनन समाई।—सूर०।

भषना†—क्रि० स० [स० भक्षण] खाना। भोजन करना।

भसना†—क्रि० अ० [दे०] १ पानी के ऊपर तैरना। २ पानी में डूबना।

भसम—संज्ञा पुं० दे० "भस्म"।

भसमा—संज्ञा पुं० [फा० दरमा का अनु०] एक प्रकार का खिजाब।

भसान†—संज्ञा पुं० [दे० भसाना] दुर्गा, काली आदि की मूर्ति को नदी आदि में प्रवाहित करना।

भसाना†—क्रि० स० [दे०] १ किसी चीज को पानी में तैरने के लिये छोड़ना। २ पानी में डालना।

भसिंड—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० "भसींड"।

भसींड—संज्ञा स्त्री० [देश०] कमलनाल। मुरार। कमल की जड़।

भसुंड—संज्ञा पु० [स० भुशुंड] हाथी। गज।

भसुर—संज्ञा पुं० [हिं० ससुर का अनु०] पति का बड़ा भाई। जेठ।

भस्मत—वि० दे० "भस्म"।

भस्म—संज्ञा पुं० [स० भस्मन्] १. लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख। २ अग्निहोत्र में की राख जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा शरीर में लगाते हैं। ३ चिता की राख जिसे शिव जी अपने शरीर में लगाते है (पुराण)। ४ आयुर्वेद में धातुओं अथवा रत्नों को विशेष प्रकार से जलाकर बनाई हुई ओषधि।
वि० जो जलकर राख हो गया हो।

भस्मक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक रोग जिसमें भोजन तुरंत पच जाता है किंतु पाखाना नहीं होता और रोगी शीघ्र मर जाता है। २ अत्यधिक भूख।

भस्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भस्म होने का धर्म या भाव।

भस्मासुर—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वृकासुर नाम का एक प्रसिद्ध दैत्य जिसने तप करके शिव जी से वर पाया था कि वह जिसके सिर पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायगा। बाद में वह पार्वती पर मोहित होकर शिव जी को ही जलाने चला। यह देखकर श्रीकृष्ण ने युक्ति से उसका हाथ उसी के सिर पर रखवाकर उसे भस्म करा डाला।

भस्मीभूत—वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो।

भहराना—क्रि० अ० [अनु०] १ टूट पड़ना। २ एकाएक गिरना।

भाँउ—संज्ञा पुं० [स० भाव] अभिप्राय। उ०—जहाँ ठाँव होवै कर हँसा सो कह भाँउ।—पदमावत।

भाँउर—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँग—संज्ञा स्त्री० [स० भृंगा या भृंगी] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं। भंग। विजया। बूटी। पत्ती।
मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना = नशे की सी या पागलपन की बातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना = अत्यंत दरिद्र होना।

भाँज—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] १. भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। २ वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई।

भाँजना—क्रि० स० [सं० भजन] १. तह करना। मोड़ना। २ मुगदर आदि घुमाना (व्यायाम)।

भाँजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना = मोड़ना] वह बात जो किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिये कही जाय। चुगली।

भाँटा†—संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।

भांड—संज्ञा पुं० [स०] बरतन। भाँडा। पात्र।

भाँड़—संज्ञा पुं० [सं० भंड] १. विदूषक। मसखरा। २ एक प्रकार के पेशेवर जो महफिलों आदि में जाकर नाचते गाते और हास्यपूर्ण नकलें उतारते हैं। ३. बेहया आदमी। ४. सत्यानाश। बरबादी।
संज्ञा पुं० [सं० भाड] १ बरतन।

भाँड़ा ... २. भंडाफोड़। रहस्योद्घाटन। ३. उपद्रव। उत्पात।

भाँड़ना(पु)†—क्रि० अ० [सं० भण्डन] १. व्यर्थ इधर उधर घूमना। मारा मारा फिरना।
क्रि० स० १. किसी की बहुत बदनामी करते फिरना। २. नष्टभ्रष्ट करना। बिगाड़ना।

भाँड़ा—संज्ञा पुं० [सं० भाण्ड] बरतन।
मुहा०—भाँड़े में जी देना=किसी पर दिल लगा होना। उ०—कौतुक तुम्ह उत्तर देय हो भाँड़े। सो बोलै जा की जिव भाँड़े।—पदमावत। भाँड़े भरना=पश्चात्ताप करना।

भांडागार—संज्ञा पुं० [सं०] भंडार। कोश।

भांडागारिक—संज्ञा पुं० [सं०] भंडारी।

भांडार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीजें रखी जाती हों। भंडार। २. वह जिसमें एक ही तरह की बहुत सी चीजें पाई जाती हों। ३. खजाना। कोश।

भाँति, भांति—संज्ञा स्त्री० [सं० भेद] तरह। किस्म। प्रकार। रीति।

भाँपना†—क्रि० स० [?] १. ताड़ना। पहचानना। २. देखना (बाजारू)।

भाँय भाँय—संज्ञा पुं० [अनु०] नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में होनेवाला शब्द।

भाँवरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँवना†—क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. खरादना। कुनना। २. अच्छी तरह गढ़कर सुंदरतापूर्वक बनाना।

भाँवर—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं।
संज्ञा पुं० दे० "भौंरा"।

भाँसा†—संज्ञा स्त्री० [सं० √ भाष् ?] आवाज। शब्द।

भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छटा। ३. किरण। रश्मि। ४. बिजली। विद्युत।
(पु)†—अव्य० [हिं० भाइ या भाएँ] चाहे। यदि इच्छा हो। वा।

भाइ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. स्वभाव। भाव। ३. विचार।
† संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँति] १. भाँति। प्रकार। उ०—काकु बिसेषो बाक्य भरु, बाच्य विसेष गनाइ। अनसनिधि प्रस्ताव अरु देस काल की भाइ।—काव्यनिर्णय। २. चालढाल। ढंग।

भाइप(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।

भाई—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ] १. बंधु। सहोदर। भ्राता। भैया। २. किसी वंश की किसी एक पीढ़ी के किसी व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा पुरुष। जैसे—चचेरा या ममेरा भाई। ३. बराबरवाले के लिये एक प्रकार का संबोधन।

भाईचारा—संज्ञा पुं० [हिं० भाई+चारा (प्रत्य०)] भाई के समान परम मित्र होने का भाव।

भाईदूज—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई+दूज] यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।

भाईबंद—संज्ञा पुं० [हिं० भाई+बंधु] भाई और मित्र बंधु आदि।

भाईबिरादरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई+बिरादरी] जाति या समाज के लोग।

भाउ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. चित्तवृत्ति। विचार। २. भाव। ३. प्रेम।
संज्ञा पुं० [सं० भव] उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। २. भावना। ३. स्वभाव। ४. हालत। अवस्था। ५. महत्व। महिमा। ६. शक्ल। स्वरूप। ७. सत्ता। ८. वृत्ति। विचार। ९. भाई।

भाएँ(पु)†—क्रि० वि० [सं० भाव] समझ में। बुद्धि के अनुसार। उ०—सब ही अज्ञ के लोग चिकनिया मेरे भाएँ घास।—सूर०।

भाकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। भास्कर।

भाकसी—संज्ञा स्त्री० [सं० भस्त्री] भट्ठी। उ०—जेती करी अनभावती तूँ मनभावती तेती सजाइ कों पाई। भाकसी भौन भयो ससिसेखर मलै विष ज्यों सर सेज सुहाई।—रससाराश।

भाकुर—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की मछली। २. डौआ।
† वि० भद्दा और भयानक।

भाख(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भाषण"।

भाखना(पु)†—क्रि० स० [सं० भाषण] कहना।

भाखा†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"।

भाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिस्सा। खंड। अंश। २. पार्श्व। तरफ। ओर। ३. नसीब। भाग्य। किस्मत। ४. सौभाग्य। खुशनसीबी। ५. भाग्य का कल्पित स्थान; माथा। ललाट। ६. प्रातःकाल। ७. गणित में किसी राशि को अनेक भागों में बाँटने की क्रिया।

भागड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना] बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना।

भागत्याग—संज्ञा पुं० दे० "जहल्लक्षणा"।

भागदौड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाग+दौड़] १. भगदड़। भागड़। २. दौड़धूप।

भागधेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग्य। २. राजकर। ३. दायाद। सपिंड।

भागना—क्रि० अ० [सं० भाज्] १. किसी स्थान से हटने के लिये दौड़कर निकल जाना। पलायन करना।
मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना=बहुत तेजी से भागना।
२. टल जाना। हट जाना। कोई काम करने से बचना। पीछा छुड़ाना।

भागनेय—संज्ञा पुं० [सं०] भानजा।

भागफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।

भागवंत†—वि० दे० "भाग्यवान्"।

भागवत—संज्ञा पुं० [सं०] १. अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलकस्वरूप माना जाता है। श्रीमद्भागवत। २. देवी भागवत। ३. ईश्वर का भक्त। ४. १३ मात्राओं का एक छंद।
वि० भगवत संबंधी।

भागाभाग—संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़"।

भागिनेय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भागिनेयी] बहिन का लड़का। भानजा।

भागी—संज्ञा पुं० [सं० भागिन्] [स्त्री० भागिनी] १. हिस्सेदार। शरीक। २. अधिकारी। हकदार।
वि० [सं० भाग्य]—भाग्यवाला (यौ० के अंत में)।

भागीरथ—संज्ञा पुं० दे० "भगीरथ"। उ०—भागीरथ जब बहुत तप कियो तब गंगा जू दर्शन दियो।—सूर०।

भागीरथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी। जाह्नवी।

भाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अवश्यंभावी दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। २. तकदीर। किस्मत। नसीब।
वि० हिस्सा करने के लायक।
भाग्यवान्—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भाग्यवती। वह जिसका भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।
भाचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] क्रांतिवृत्त।
भाजक—वि० [सं०] विभाग करनेवाला।
संज्ञा पुं० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय। विभाजक (गणित)।
भाजन—संज्ञा पुं० (सं०) १ बरतन। २ आधार। ३. योग्य। पात्र।
भाजना(पु)—क्रि० अ० दे० "भागना"। उ०—और मल्ल मारे शल तो शल बहुत गये सब भाज। मल्ल युद्ध हरि करि गोपन सों लखि फूले ब्रजराज। —सूर०।
भाजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माँड़। पीच। २ तरकारी, साग आदि। उ०—तुम तो तीन लोक के ठाकुर तुम तो कहा दुराइय। हम तो प्रेम प्रीति के गाहक भाजी शाक चखाइय। —सूर०।
भाज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।
वि० विभाग करने के योग्य।
भाट—संज्ञा पुं० [सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १ राजाओं का यश वर्णन करनेवाला। चारण। वंदी। २ खुशामदी।
भाटक—संज्ञा पुं० [सं०] भाड़ा। किराया।
भाटा—संज्ञा पुं० [हिं० भाट] १. पानी का उतार की ओर जाना। २ समुद्र के चढ़ाव का उतरना। ज्वार का उलटा।
भाटयौ(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० भाट] भाट का काम। भटई। यशकीर्तन।
भाठी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"। उ०—उ०—काठी कै मनोरथ बिरह हिय भाठी कियो, पट कियो लपट अँगार कियो अंगु है। —रससाराश।
भाड़—संज्ञा पुं० [सं० भ्राष्ट्र] भड़भूजों की भट्ठी जिसमें वे अनाज भूनते हैं।
मुहा०—भाड़ झोंकना=तुच्छ या अयोग्य काम। भाड़ में झोंकना या डालना =(१) फेंकना। नष्ट करना। (२) जाने देना।
भाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० भाटक] किराया।
मुहा०—भाड़े का टट्टू=(१) जो स्थायी न हो। क्षणिक। (२) निकम्मा।

भाण—संज्ञा पुं० [सं०] १. हास्यरस का एक प्रकार का दृश्य काव्यरूपक जो एक अंक का होता है। २ व्याज। मिस।
भात—संज्ञा पुं० [सं० भक्त] १ पानी में उबाला हुआ चावल। पकाया हुआ चावल। उ०—परसेउ धार धरेउ मग चितवत वेगि चलो तुम लाल। भात सिरात तात दुख पावत क्यों न चलो ततकाल। —सूर०। २. विवाह की एक रस्म। इसमें कन्यावाला समधी को भात खिलाता है।
संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रभात। २ प्रकाश।
भाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। कांति। उ०—मनोहर है नैनन की भाति। मानहुँ दूरि करत बल अपने शरद कमल की भ्राति। —सूर०।
भाथा—संज्ञा पुं० [सं० भस्त्रा, पा० भत्था] १ तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी।
भाथी—संज्ञा पुं० [सं० भस्त्री] वह धौंकनी जिससे भट्ठी की आग सुलगाते हैं।
भादों—संज्ञा पुं० [सं० भाद्र, पा० भद्दो] सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना। भाद्र।
भाद्र, भाद्रपद—संज्ञा पुं० दे० "भादों"।
भाद्रपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र-पुज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।
भान—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। रोशनी। २ दीप्ति। चमक। ३ ज्ञान। ४ प्रतीति। आभास।
भानजा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भागिनेय, प्रा० भाइणेज्ज, भाइणिज्ज] [स्त्री० भानजी] बहिन का लड़का। भागिनेय।
भानना(पु)†—क्रि० स० [सं० भजन] १. तोड़ना। भग करना। उ०—आपुहि करता आपुहि हरता आपु जनावत आपुहि भाने। ऐसो सूरदास के स्वामी ते गोपिन के हाथ बिकाने। —सूर०।
२ नष्ट करना। मिटाना। ३ दूर करना। ४ काटना।
क्रि० स० [हिं० भान] समझना।
भानमती—संज्ञा स्त्री० [सं० भानुमती] जादूगरनी।
भानवी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भानवीया] जमुना।
भाना(पु)†—क्रि० अ० [सं० भान=ज्ञान] १ जान पड़ना। मालूम होना। उ०—मणि माणिक पाटवर देते लेत न बनत बहुत। हय गय सहन भँडार दिये सब फेरि भरे से भाति। जबहिं देत तब ही फेरि देखत संपति घर न समाति। —सूर०। २ अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।
क्रि० स० [सं० भा=प्रकाश] चमकाना।

भानु—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. विष्णु। ३ किरण। ४ राजा।
भानुज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भानुजा] १ यम। २. शनिश्चर। ३ कर्ण।
भानुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना (नदी)।
भानुतनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना (नदी)।
भानुमत्—वि० [सं०] प्रकाशमान्।
संज्ञा पुं० सूर्य।
भानुसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. यम। २. मनु। ३ शनिश्चर। ४ कर्ण।
भानुसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना (नदी)।
भाप, भाफ—संज्ञा स्त्री० [सं० वाष्प, पा० वप्प] ताप से धुएँ या हलके बादल की भाँफी के रूप में परिणत जल।
भाभर—संज्ञा पुं० [सं० वप्र] वह जंगल जो पहाड़ों के नीचे तराई में होते हैं।
भाभरा(पु)†—वि० [हिं० भा+भरना] लाल।
भाभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई] भौजाई। उ०—खइवे को कछु भाभी दीन्हीं श्रीपति श्रीमुख बोले। फेंट ऊपर तें अजुल तदुल बल करि हरि जू खोले। —सूर०।
भाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। ज्योति। २ सूर्य। ३ एक वर्णवृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और अत में तीन सगण होते हैं। उ०—लोग सुखी है रात दिना, सुमिरैं तुमहीं। माँगत तोसो दान यही, प्रभु दे हमहीं॥
(पु) संज्ञा स्त्री० [सं० भामा] स्त्री।
भामज—संज्ञा पुं० [सं० भाम+ज] १ सूर्य से उत्पन्न। सूर्यवंशी।
भामता(पु)—वि० दे० "भावता"।
भामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भाय†—संज्ञा पुं० [हिं० भाई] भाई।
(पु) संज्ञा पुं० [सं० भाव] १ अंतःकरण की वृत्ति। भाव। उ०—गोविंद प्रीति सबन

की मानत। जेहि जेहि भाय करी जिन सेवा अंतरगत की जानत। —सूर०। २ परिमाण। ३ दर। भाव। ४ भाँति। ढग।
भायप—सज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।
भाया—वि० [हिं० भाना] प्रिय। प्यारा।
भारंगी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा। इसकी पत्तियों का साग बनाकर खाते हैं। वँभनेटी। असवरग।
भार—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। २. बोझ। ३ वह बोझ जिसे बहँगी पर रखकर ले जाते हैं। ४ सँभाल। रक्षा। ५. किसी कर्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व।
मुहा०—भार उठाना = उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतरना = कर्तव्य के ऋण से मुक्त होना।
६ आश्रय। सहारा। ७ २० तुला या २०० पल का एक मान या तौल।
(पु)†सज्ञा पुं० दे० "भाड़"।
भारत—सज्ञा पुं० [स०] १ महाभारत का पूर्वरूप या मूल जो २४,००० श्लोकों का था। २ दे० भारतवर्ष"। ३ भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ४ लंबी कथा। ५ घोर युद्ध। भारी लड़ाई।
भारतखड—सज्ञा पुं० [स०] "भारतवर्ष"।
भारतवर्ष—सज्ञा पुं० [सं०] वह देश जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और थार रेगिस्तान के एक भूभाग से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। आर्यावर्त्त। हिंदुस्तान।
भारतवासी—सज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष का रहनेवाला। भारतीय।
भारती—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वचन। वाणी। २ सरस्वती। उ०—मध्य छवि न्यारी प्यारी बिलसै प्रजक पर, भारती निहारि हारी उपमा न पावती।—रस-सारांग। ३. एक वृत्ति जिसके द्वारा रौद्र और वीभत्स रस का वर्णन किया जाता है। ४ ब्राह्मी। ५ दशनामी सन्यासियों का एक भेद।
भारतीय—वि० [सं०][भाव० भारतीयता] भारत सबंधी।
संज्ञा पुं० भारत का निवासी।
भारथ(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० भारत] १ दे० "भारत"। २. युद्ध। सग्राम।
भारथी—संज्ञा पुं० [सं० भारत] सैनिक।
भारद्वाज—संज्ञा पुं० [स०] १ भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २ द्रोणाचार्य। ३. भरदूल पक्षी। ४ एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र है।
भारना(पु)†—क्रि० स० [स० भार से हिं० ना० धा०] १ बोझ लादना। भार डालना। २ दबाना।
भारवाह—वि० दे० "भारवाहक"।
भारवाहक—वि० [सं०] बोझ ढोनेवाला।
भारवाही—संज्ञा पुं० [सं० भारवाहिन्] [स्त्री० भारवाहिनी] भार या बोझ ढोनेवाला।
भारवि—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन कवि जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।
भारशिव—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन शैव सप्रदाय जिमके नियमों के अनुसार पापी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।
भारा†—वि० दे० "भारी"। उ०—जे पद पद्म सदाशिव के धन सिंधु सुता उतरे नहिं टारे। जे पद पद्म परसि अति पावन सुरसरि दरस कटत अघ भारे।—सूर०।
भाराक्रांता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।
भारावलंबकत्व—सज्ञा पुं० [स०] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।
भारी—वि० [हिं० भार] १ जिसमें बोझ हो। गुरु। बोझिल। २ कठिन। कराल। भीषण। ३ विशाल। बड़ा।
मुहा०—भारी भरकम = बड़ा और भारी।
४ अधिक। अत्यंत। बहुत। ५ असह्य। दूभर। ६ सूजा हुआ। फूला हुआ। ७ प्रबल। ८ गभीर। शांत।
भारीपन—सज्ञा पुं० [हिं० भारी + पन (प्रत्य०)] भारी होने का भाव। गुरुत्व।
भार्गव—सज्ञा पुं० [सं०] १ भृगु के वश में उत्पन्न पुरुष। २ परशुराम। ३ शुक्राचार्य। ४ मार्कंडेय। ५ एक उपपुराण का नाम। ६ जमदग्नि। ७ एक प्रसिद्ध व्यवसायी जाति। ढूसर।
वि० भृगु सबधी। भृगु का।
भार्गवेश—संज्ञा पुं० [सं० भार्गव + ईश] परशुराम।
भार्या—सज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी। जोरू। स्त्री।
भाल—सज्ञा पुं० [स०] कपाल। ललाट।
सज्ञा पुं० [हिं० भाला] १. भाला। वरछा। २ तीर का फल। गाँसी।
सज्ञा पुं० [सं० भल्लुक] रीछ। भालू। उ०—तहँ सिंह बहु श्वान वृक सर्प गीध अरु भाल।—विश्रामसागर।
भालचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। २ गणेश।
भालना—क्रि० स० [?] १ अच्छी तरह देखना। †२ ढूँढ़ना। तलाश करना।
भाललोचन—सज्ञा [स०] शिव।
भाला—संज्ञा पुं० [सं० भल्ल] बरछा। नेजा।
भालाबरदार—संज्ञा पु० [हिं० भाला + फा० बरदार] बरछा चलानेवाला। बरछैत।
भालि(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १ बरछी। साँग। २ शूल। काँटा।
भालिया—सज्ञा पुं० [देश०] वह अन्न जो हलवाहे को वेतन में दिया जाता है।
भाली—सज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १. भाले की गाँसी या नोक। उ०—जब वह सुरति होत उर अतर लागत काम बाण की भाली। —सूर०। २ शूल। काँटा। उ०—कहा री कहौं कछु कहत न बनि आवै लगी मरम की भाली री।—सूर०।
भालुक—सज्ञा पु० [सं०] भालू। रीछ।
भालुनाथ—सज्ञा पुं० दे० "जामवत"।
भालू—सज्ञा पुं० [सं० भल्लुक] एक घने रोएँवाला स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है। यह मांस भी खाता है और फल मूल आदि भी। मदारी इसे पकड़कर नाचना और खेल करना सिखाते है। रीछ।
भावंता(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० भाना] प्रेमपात्र। प्रिय। प्रीतम।
संज्ञा पुं० [सं० भावी] होनहार। भावी।
भाव—सज्ञा पुं० [सं०] १ सत्ता। अस्तित्व। अभाव का उलटा। २ मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति। विचार। खयाल। ३ अभिप्राय। तात्पर्य। मतलब। ४ मुख की आकृति या चेष्टा। ५ आत्मा। ६. जन्म। ७ चित्त। ८ पदार्थ। चीज। ९ प्रेम। मुहब्बत। १० कल्पना। ११. प्रकृति। स्वभाव। उ०—अनत तें आकरषि अनत बरषि देत, भानु कैसो भाव देख्यो तेरे चरनन में।—श्रृंगार०। १२ ढग। तरीका। १३. प्रकार। तरह। उ०—

अभिसारिका अनेक पुनि बरनत है कविराव। स्वकिया परकीयानि मिलि होत अनेकनि भाव।—शृंगार०। १४. दशा। अवस्था। हालत। १५. भावना। १६. विश्वास। भरोसा। १७. आदर। प्रतिष्ठा। १८ बिक्री आदि का हिसाब। दर। निर्ख।

मुहा०—भाव उतरना या गिरना=किसी चीज का दाम घट जाना। भाव चढ़ना=दाम बढ़ जाना।

१९. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति। २० नायक आदि को देखने के कारण अथवा और किसी प्रकार नायिका के मन में उत्पन्न होनेवाला विकार। २१ गीत के विषय के अनुसार शरीर या अंगों का संचालन।

मुहा०—भाव देना=आकृति आदि से अथवा अंग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना। उ०—श्याम को भाव दै गई राधा। नारि नागरि न काहु लख्यो कोऊ नहीं कान्ह कछु करत है बहुत अनुराधा।—सूर०।

२२. नाज। नखरा। चोचला।

भावइ(पु)†—अव्य० [हिं० भाना] जो चाहे। इच्छा हो तो।

भावक(पु)—क्रि० वि० [सं० भाव] किंचित्। थोड़ा सा। जरा सा। कुछ एक।

वि० [सं०] भाव से भरा। भावपूर्ण।

संज्ञा पुं० [सं०] १. भावना करनेवाला। २ भावसंयुक्त। ३. भक्त। प्रेमी।

भावगति—संज्ञा स्त्री० [सं० भाव+गति] इरादा। इच्छा। विचार।

भावगम्य—वि० [सं०] भक्ति भाव से जानने योग्य।

भावग्राह्य—वि० [सं०] भक्ति भाव से ग्रहण करने योग्य।

भावज—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की स्त्री। भाभी। भौजाई।

भावज्ञ—वि० [सं०] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।

भावता—वि० [हिं० भावना] [स्त्री० भावती] जो भला लगे। प्रिय। उ०—बाल विनोद भावती लीला अति पुनीत पुनि गायी हो।—सूर०।

संज्ञा पुं० प्रेमपात्र। प्रियतम।

भावताव—संज्ञा पुं० [सं० भाव+हिं० ताव (अनु०)] किसी चीज का मूल्य या भाव आदि। निर्ख। दर।

भावन(पु)†—वि० [हिं० भावना] अच्छा या प्रिय लगनेवाला। जो भला लगे।

भावना†—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यान। विचार। खयाल। उ०—जाकी रही भावना जैसी। हरि मूरति देखी तिन्ह तैसी।—मानस। २. चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है। ३. इच्छा। चाह। ४ साधारण विचार या कल्पना। ५ वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना जिसमें उस औषध में तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। पुट।

(पु)क्रि० अ० अच्छा लगना। पसंद आना।

वि० [हिं० भावना] प्रिय। प्यारा।

भावनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाना] जो कुछ जी में आवे। इच्छानुसार बात।

भावनीय—वि० [सं०] भावना करने योग्य।

भावप्रवण—वि० दे० "भावुक"।

भावभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० भाव+भक्ति] १ भक्तिभाव। २ आदर। सत्कार। उ०—नैन मूँदि कर जोरि बोलायो। भावभक्ति सों भोग लगायो।—सूर०।

भावली—संज्ञा स्त्री० [देश०] जमींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई।

भाववाचक—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो, जैसे—सज्जनता।

भाववाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। इसमें कारकचिह्न 'से' रहता है, जैसे, मुझसे बोला नहीं जाता।

भावसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है, जैसे—"दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू।" यहाँ हर्ष और विषाद की संधि है। (साधारणत यह अलंकार नहीं माना जाता क्योंकि इसका विषय रस से संबंध रखता है।)

भावशबलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कई भावों की संधि होती है।

भावाभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भावार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय। २. अभिप्राय। तात्पर्य।

भावालंकार—संज्ञा [पुं० सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भाविक—वि० [सं०] जाननेवाला। मर्मज्ञ।

संज्ञा पुं०—१ भावी। अनुमान। २ वह अलंकार जिसमें भूत और भावी बातें प्रत्यक्ष वर्तमान की भाँति वर्णन की गई हों।

भावित—वि० [सं०] १ जिसका ध्यान या विचार किया गया हो। जो सोचा गया हो। २ चिंतित। उद्विग्न। ३. जिसमें किसी पदार्थ की भावना या सुगंध दी गई हो। ४ शुद्ध किया हुआ। ५. जिसमें रस आदि की भावना दी गई हो। ६ भेंट किया हुआ। समर्पित।

भावी—संज्ञा स्त्री० [सं० भाविन्] १. भविष्यत् काल। आनेवाला समय। २ भविष्य में अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता। उ०—भावी काहू सों न टरै। कहँ वह राहु कहाँ वह रवि शशि आनि सँजोग परै।—सूर०। ३ भाग्य। तकदीर।

भावुक—वि० [सं०] १ भावना करनेवाला। सोचनेवाला। २ जिसपर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो। अत्यधिक संवेदनशील। ३ भावग्राही। सरस। ४ अच्छी बातें सोचनेवाला।

भावै†—अव्य० [हिं० भाना] चाहे।

भाव्य—वि० [सं०] चिंता करने या सोचने योग्य।

भाषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। बातचीत। कहना। २. व्याख्यान। वक्तृता।

भाषना(पु)†—क्रि० अ० [सं० भाषण] बोलना। कहना।

क्रि० अ० [सं० भक्षण] भोजन करना।

भाषांतर—संज्ञा पुं० [सं०] अनुवाद। उल्था।

भाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुख से उच्चरित होनेवाले परस्पर संबद्ध शब्दों और वाक्यों आदि का वह ध्वनिसमूह जिसके द्वारा मन का भाव बताया जाय। बोली। जबान। वाणी। २ किसी जनसमुदाय में प्रचलित बातचीत करने का विशेष ढंग या शब्दावली, जैसे—दलालों की भाषा, ठगों की भाषा। ३ पशुपक्षियों आदि के

मनोविकार सूचित करने की ध्वनियाँ; जैसे, बंदरों की भाषा। ४ आधुनिक हिंदी। ५ वाक्य। ६ वाणी। सरस्वती।

भाषाबद्ध—वि० [सं०] साधारण देशभाषा में लिखित।

भाषासम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार। काव्य में केवल ऐसे शब्दों की योजना जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों।

भाषित—वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

भाषी—संज्ञा पुं० [सं० भाषिन्] [स्त्री० भाषिणी] बोलनेवाला। कहनेवाला।

भाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत्रों की व्याख्या या टीका। २ किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या।

भाष्यकार—संज्ञा पुं० [सं०] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला। भाष्य बनानेवाला।

भास—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति। प्रकाश। चमक। २ मयूख। किरण। ३. इच्छा। ४ संस्कृत के एक नाटककार। ५. प्रतीति।

भासना—क्रि० अ० [सं० भास] १ प्रकाशित होना। चमकना। २ मालूम होना। प्रतीत होना। ३ देख पड़ना। ४ फँसना। लिप्त होना। उ०—अपने भुजदंडन कर गहिये बिरह सलिल में भासी। —सूर०।

Ⓟ†क्रि० अ० [सं० भाषण] कहना।

भासमान—वि० [सं०] जान पड़ता हुआ। भासता हुआ। दिखाई देता हुआ।

भासित—वि० [सं०] १ तेजोमय। चमकीला। प्रकाशित। २ कुछ कुछ प्रकट होनेवाला।

भास्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवर्ण। सोना। २ सूर्य। ३ अग्नि। आग। ४ वीर। ५ महादेव। शिव। ६ पत्थर पर चित्र और बेल बूटे आदि बनाना।

भास्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। २ सूर्य।

वि० दीप्तियुक्त। चमकदार। उ०—समाई उर-सर, मधुर विहार, कर बनी चिंतामणि भास्वर। —गीतिका।

भिंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० भृंग] १ भौंरा। २ बिलनी (कीड़ा)।

भिंगाना—क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिंजाना—क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० भिंडा] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिंदिपाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था।

भिक्खारिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "भिखारी"।

भिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ याचना। माँगना। २ दीनता दिखलाते हुए अपने उदरनिर्वाह के लिये माँगने का काम। भीख। ३ इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु। भीख।

भिक्षाटन—संज्ञा पुं० [सं०] भीख माँगने के लिये किया जानेवाला भ्रमण।

भिक्षापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।

भिक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीख माँगनेवाला। भिखारी। २. संन्यासी। [स्त्री० भिक्षुणी] ३ बौद्ध सन्यासी।

भिक्षुक—संज्ञा पुं० [सं०] भिखमंगा।

भिखमंगा—संज्ञा पुं० [हिं० भीख+माँगना] जो भीख माँगे। भिखारी। भिक्षुक।

भिखारिणी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भिखारी] वह स्त्री जो भिक्षा माँगे। भिखमंगिन।

भिखारिन—संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी"।

भिखारी—संज्ञा पुं० [हिं० भीख+आरी (प्रत्य०)] [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] भिक्षुक। भिखमंगा।

भिगाना—क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिगोना—क्रि० स० [सं० अभ्यंज] किसी चीज को पानी से तर करना। भिगोना।

भिच्छा—संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।

भिच्छु—संज्ञा पुं० दे० "भिक्षु"।

भिजवनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० भिजाना का प्रे० रूप] भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

भिजवाना—क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रे० रूप] किसी वस्तु या व्यक्ति को भेजने में प्रवृत्त करना।

भिजाना—क्रि० स० [सं० अभ्यंजन] भिगोना।

क्रि० स० दे० "भिजवाना"

भिजोनाⓅ†—क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिड़ंत—संज्ञा स्त्री० [हिं०√भिड़+अंत (प्रत्य०)] भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठभेड़।

भिड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० बरैं ?] बरैं। ततैया।

भिड़ना—क्रि० अ० [प्रा० भिडण] १ टक्कर खाना। टकराना। २. लड़ना। झगड़ना। लड़ाई करना। ३ सटना।

भितरिया—संज्ञा पुं० [हिं० भीतर+इया (प्रत्य०)] मंदिर के बिलकुल भीतरी भाग में रहनेवाला। पुजारी।

वि० भीतरी। अंदर का।

भितल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० भीतर+तल्ला] दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला। अस्तर।

वि० भीतर का। अंदर का।

भितानाⓅ†—क्रि० स० [सं० भीति] डरना। उ०—जानि कै जोर करौ परिनाम, तुम्हैं पछितैहौ, पै मैं न भितैहौं। —कविता०।

भित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीवार। २ डर। भय। भीति। ३. वह पदार्थ जिसपर चित्र बनाया जाय।

भित्तिचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

भिद—संज्ञा पुं० [सं०√भिद्] भेद। अंतर।

भिदना—क्रि० अ० [सं०√भिद्] १ पैवस्त होना। घुस जाना। २ छेदा जाना। ३ घायल होना।

भिदुर—संज्ञा पुं० [सं० भिदिर] वज्र।

भिनकना—क्रि० अ० [अनु०] १. भिन भिन शब्द करना (मक्खियों का)। २. घृणा उत्पन्न होना।

भिनभिनाना—क्रि० अ० [अनु०] भिन भिन शब्द करना।

भिनसार†—संज्ञा पुं० [सं० विनिशा] सबेरा।

भिन्न—वि० [सं०] १ अलग। पृथक्। जुदा। २ इतर। दूसरा। अन्य।

संज्ञा पुं० वह संख्या जो इकाई से कुछ कम हो (गणित)।

भिन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिन्न होने का भाव। अलगाव। भेद। अंतर।

भिन्नाना—क्रि० अ० [अनु०] (दुर्गंध आदि से) सिर चकराना।

भियनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० भीत] डरना।

भिरनाⓅ†—क्रि० स० दे० "भिड़ना"।

भिरिंगⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।

भिलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भील] भील जाति की स्त्री।

भिलावाँ—संज्ञा पुं० [सं० भल्लातक] एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम में आता है।
भिल्ल—संज्ञा पुं० दे० "भील"।
भिश्त(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "बिहिश्त"।
भिश्ती—संज्ञा पुं० [?] मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का। मशकी।
भिषक्, भिषज—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्य।
भींगना—क्रि० अ० दे० "भीगना"।
भींचना†—क्रि० स० [हिं० खींचना] १ खींचना। कसना। २ दे० "मींचना"।
भींजना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० भीगना] १. गीला होना। तर होना। भीगना। २ पुलकित या गद्गद् हो जाना। ३ मिलाप पैदा करना। ४ नहाना। ५ समा जाना।
भी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भय। डर।
अव्य० [हिं० ही] १ अवश्य। जरूर। २ अधिक। ज्यादा। ३ तक। लौं।
भीउँ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भीम] भीमसेन।
भीख—संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भीखन(पु)—वि० दे० "भीषण"।
भीखम(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीगना—क्रि० अ० [सं० अभ्यंजन] पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना।
मुहा०—भीगी बिल्ली होना=भय आदि से दब रहना। एकदम चुप रहना।
भीजना†—क्रि० अ० [सं० अभ्यंजन] १ दे० "भीगना"। २ भारी। अधिक। गंभीर। अधिकता। वृद्धि।
भीटा—संज्ञा पुं० [देश०] १ ऊँची या टीलेदार जमीन। २ वह बनाई हुई ऊँची जमीन जिसपर पान की खेती होती है।
भीड़—संज्ञा स्त्री० [प्रा० √भिड] १ आदमियों का जमाव। जनसमूह। ठठ।
मुहा०—भीड़ छँटना=भीड़ के लोगों का इधर उधर हो जाना। भीड़ न रह जाना।
२ संकट। आपत्ति। मुसीबत।
भीड़न(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ना] मलने, लगने या भरने की क्रिया।
भीड़ना(पु)†—क्रि० स० [प्रा० भिडण] १ मिलाना। लगाना। २ मलना।
भीड़भड़क्का—संज्ञा दे० स्त्री० "भीड़भाड़"।
भीड़भाड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़+भाड़ (अनु०)] मनुष्यों का जमाव। जनसमूह। भीड़।

भीड़ा†—वि० [हिं० भिड़ना] संकुचित। तंग।
भीड़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।
भीत—संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] १ दीवार।
मुहा०—भीत में दौड़ना=अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना=बे सिर पैर की बात करना।
२ विभाग करनेवाला परदा। ३ चटाई। ४. छत। गच।
वि० [सं०] [स्त्री० भीता] डरा हुआ।
भीतर—क्रि० वि० [सं० अभ्यंतर; प्रा० भित्तर] अंदर। में।
संज्ञा पुं० १ अंतःकरण। हृदय। २. रनिवास। जनानखाना।
भीतरी—वि० [हिं० भीतर+ई (प्रत्य०)] १ भीतरवाला। अंदर का। २. गुप्त।
भीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डर। भय। खौफ। २ कंप।
सं० स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार। उ०—शून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं तनु बिनु लिखा चितेरे।—विनय०।
भीतो(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० भित्त] दीवार।
संज्ञा स्त्री० [सं० भीति] डर। भय।
भीन(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० विहान] सवेरा।
भीनना—क्रि० अ० [हिं० भीगना] भर जाना। समा जाना। पैवस्त हो जाना।
भीनी—वि० स्त्री० [सं० भिन्न, हिं० भीनना] १ भीगी। सिक्त। उ०—लिखी बिरह के हाथ सुपाती अजहूँ ताती। रुकमिनी अँसुवन भीनी, पुनि हरि अँसुवन भीनी॥ २ भरी हुई। पैवस्त। ३ मंद मंद। मीठी मीठी।
भीम—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ महादेव की आठ मूर्तियों में से एक। ४ पाँचों पांडवों में से एक जो वायु के संयोग से कुंती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ये बहुत बड़े वीर और बलवान् थे। भीमसेन।
मुहा०—भीम के हाथी= भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी आकाश में फेंक दिए थे जो आज तक घूमते हैं)।
वि० १ भयानक। २ बहुत बड़ा।

भीमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भयकरता।
भीमराज—संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया।
भीमसेन—संज्ञा पुं० [सं०] युधिष्ठिर के छोटे भाई। भीम।
भीमसेनी एकादशी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीमसेनी+एकादशी] १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २ माघ शुक्ला एकादशी।
भीमसेनी कपूर—संज्ञा पुं० [हिं० भीमसेनी+कपूर] एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।
भीमाथली—संज्ञा पुं० [देश] घोड़ों की एक जाति।
भीर(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १. दे० "भीड़"। २ कष्ट। दुःख। तकलीफ। उ०—भीर बड़ीयै परै जिमि सोनो बनै न भेजावत राखत सूमै।—शृंगार०। ३ विपत्ति। आफत।
(पु)वि० [सं० भीरु] १ डरा हुआ। भयभीत। २ डरपोक। कायर।
भीरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० भीरु] डरना।
भीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीर] भीड़। गुट। समूह। उ—कहत कि सुनहु मिया की हो री। अवर खेल खेलहु बटि भीरी।—नंददास०।
भीरु—वि० [सं०] डरपोक। कायर।
भीरुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डरपोकपन। कायरता। बुजदिली। २ डर। भय।
भीरुताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।
भीरे(पु)†—क्रि० वि० [हिं० भिड़ना] समीप। नजदीक। पास।
भील—संज्ञा पुं० [सं० भिल] [स्त्री० भीलनी] एक जंगली जाति।
भीव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भीम] भीमसेन। उ०—कुंभकरन की खोपड़ी बूड़त बाँचा भीव।—पदमावत।
भीष(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भिक्षा] भीख।
भीषज(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० भिषज] वैद्य।
भीषण—वि० [सं०] १ देखने में बहुत भयानक। डरावना। २ उग्र या दुष्ट।
भीषणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भीषण होने का भाव। डरावनापन। भयकरता।
भीषन(पु)—वि० दे० "भीषण"।
भीषम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीष्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ राक्षस। ३. राजा शांतनु के आठवें पुत्र जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए

थे और आजन्म नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा करने के कारण भीष्म कहलाए। देवव्रत। गांगेय।

वि० १ भीषण। भयकर। २. कठोर। उग्र।

भीष्मक—संज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ देश के एक राजा जो कृष्ण की स्त्री रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्मपंचक—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पंचमी तक के पाँच दिन।

भीष्मपितामह—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भीषमⓅ—संज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भुँइ—संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथिवी। भूमि।

भुँइफोर—संज्ञा पुं० [हिं० भुइँ+फोड़ना] एक प्रकार की बरसाती खुभी। गरजुआ।

भुँइहरा—संज्ञा पुं० [हिं० भुइँ+घर] १ वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। २ तहखाना।

भुँकाना—क्रि० स० [सं०√बुक्क्=भूँकना] किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना।

भुंज—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन।

भुँजना†—क्रि० अ० दे० "भूनना"।

भुंडा—वि० [सं० रुंड का अनु०] १ बिना सींग का। २. दुष्ट। बदमाश।

भुअंगⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० भुजग] साँप।

भुअंगमⓅ—संज्ञा पुं० [सं० भुजगम] साँप।

भुअनⓅ—संज्ञा पु० दे० "भुवन"।

भुआरⓅ—संज्ञा पु० दे० "भुआल"। उ०—कहा रहै संसार, वाहन कहा कुबेर को। चाहे कहा भुआर, दास उतर दिय सरसजन। —काव्यनिर्णय।

भुआलⓅ—संज्ञा पु० [सं० भूपाल] राजा।

भुइँ—Ⓟसंज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] भूमि। पृथ्वी।

भुइँआँवला—संज्ञा पुं० [सं० भूम्यामलक] एक घास जो ओषधि के काम में आती है।

भुइँचाल, भुइँडोल—संज्ञा पुं० दे० "भूकप"।

भुइँपाल—संज्ञा पु० दे० "भूपाल"।

भुइँहार—संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार"।

भुकⓅ—संज्ञा पु० [सं० भुज्] १ भोजन। खाद्य। आहार। २ अग्नि। आग।

भुकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलनेवाली एक वनस्पति।

भुकराँद, भुकरायँध—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुकड़ी] सड़ने की दुर्गंध।

भुक्खड़—वि० [हिं० भूख+अड़ (प्रत्य०)] १ जिसे भूख लगी हो। भूखा। २ वह जो बहुत खाता हो। पेटू। ३. दरिद्र। कगाल।

भुक्त—वि० [सं०] १. जो खाया गया हो। भक्षित। २. भोगा हुआ। उपभुक्त।

भुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भोजन। आहार। २ लौकिक सुखभोग। ३. कब्जा।

भुखमरा—वि० [हिं० भूख+मरना] १. जो भूखों मरता हो। भुक्खड़। २ पेटू।

भुखाना†—क्रि० अ० [हिं० भूख से ना० धा०] भूख से पीड़ित होना। भूखा होना।

भुखालु—वि० दे० "भूखा"।

भुगतⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।

भुगतना—क्रि० स० [सं० भुक्ति] सहना। झेलना। भोगना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। निबटना। २ बीतना। चुकना।

भुगतान—संज्ञा पुं० [हिं० भुगतना] १ निपटारा। फैसला। २ मूल्य या देन चुकाना। बेबाकी। ३ देना। देन।

भुगताना—क्रि० स० [हिं० भुगतना का स० रूप] १ भुगतने का सकर्मक रूप। पूरा करना। संपादन करना। २ बिताना। लगाना। ३ चुकाना। बेबाक करना। ४ भुगतना का प्रेरणार्थक रूप। झेलना। भोग कराना। ५ दुःख देना।

भुगाना—क्रि० स० दे० "भोगनेवाला"।

भुगुतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।

भुच्च, भुच्चड़—वि० [हिं० भूत+चढ़ना] मूर्ख।

भुजग—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री भुजगिनी] १ साँप। २ किसी स्त्री का यार। जार।

भुजप्रयगात—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं। उ०—कहूँ शोभना दुदुभी दीह बाजैं। कहूँ भीम भकार कर्नाल साजैं। कहूँ सुंदरी वेनु वीना बजावैं। कहूँ किन्नरी किन्नरी लय सुनावैं।

भुजगविजृंभित—संज्ञा पुं० [सं०] २६ अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक रगण, एक सगण और अंत में लघु, गुरु हों। उ०—प्यारी भागी क्रीड़ा भीनो, निरखतहि गरुड़ तज ज्यों, भुजग विजृंभिता।

भुजंगसंगता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ९ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण और रगण हों। उ०—तट में भुजगभुगता। रँच रास मोदसगता।

भुजंगा—संज्ञा पुं० [हिं० भुजग] १ काले रँग का एक पक्षी। भुजैटा। २. दे० "भुजंग"।

भुजंगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपाल या गुपाल नामक छद का दूसरा नाम। इसके प्रत्येक चरण में अंत्य जगण सहित कुल १५ मात्राएँ होती हैं। उ०—आरत हरन सरन जन हेतु, सुलभ सकल अवर कुल केतु। २ साँपिन।

भुजंगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। नागिन। २. एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तीन यगण और अंत में लघु, गुरु रहता है। उ०—करेंगे कृपा शीघ्र गगाधरा। भुजगी कपाली त्रिशूलाधरा।

भुजंगेंद्र, भुजंगेश—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

भुज—संज्ञा पु० [सं०] १ बाहु। बाँह।

मुहा०—भुज में भरना=आलिंगन करना।

२ हाथ। ३. हाथी का सूँड़। ४ शाखा। डाली। ५ प्रांत। किनारा। ६ ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। ७ त्रिभुज का आधार। ८ समकोणों का पूरक कोण। ९ दो की सख्या का बोधक शब्द या सकेत।

भुजइलⓅ—संज्ञा पु० दे० "भुजंग"।

भुजग—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

भुजगनिसृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं जिनमें छठा, आठवाँ और नवाँ अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं।

भुजगशिशुभृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण के बाद एक मगण होता है। उ०—'तजि तव पितु ना, कोई।' भुजगशिशुसुता, रोई। भुजगशिशुसुता। सुता।

भुजदंड—संज्ञा पुं० [सं०] बाहुदंड।

भुजपातⓅ—संज्ञा पु० दे० "भोजपत्र"।

भुजपाश—संज्ञा पुं० [सं०] गलबाँही। गले में हाथ डालना।

भुजप्रतिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] सरल क्षेत्र की आमने सामने की भुजाएँ।

भुजबंद—संज्ञा पुं० [सं० भुजबंध] बाजूबंद।

भुजबाथⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० भुज+बाँधना] अँकवार।

भुजमूल—संज्ञा पुं० [सं०] १. खवा। पक्खा। मोढ़ा। २. काँख।

भुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ।

मुहा०—भुजा उठाना या टेकना=प्रतिज्ञा करना। उ०—बोले बंदी वचन वर सुनहु सकल महिपाल। ... विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ विसाल।—मानस।

भुजाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। कुकरी। खुखरी। २ छोटी बरछी।

भुजिया†—संज्ञा पुं० [हिं० भूजना=भुनना] १ उबाले हुए धान का चावल। २ सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुजैल—संज्ञा पुं० [सं० भुजग] भुजंगा पक्षी।

भुजौना‡—संज्ञा पुं० [हिं० भूजना] १ भुना हुआ अन्न। भूना। भूजा। भुजैना। २ भूनने या भुनाने की मजदूरी।

भुट्टा—संज्ञा पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्टो] १ मक्के की हरी बाल। २ जुआर या बाजरे की बाल। ३ गुच्छा। घौद।

भुठौर—संज्ञा पुं० [हिं० भूड़+ठौर] घोड़ों की एक जाति।

भुथरा—वि० [अनु०] (शस्त्र) जिसकी धार तेज न हो। कुंद।

भुथराई—संज्ञा स्त्री० दे० "भुथरापन"।

भुथरापन—संज्ञा पुं० [हिं० भुथरा+पन (प्रत्य०)] भुथरा, कुंठित या कुंद होने का भाव।

भुन—संज्ञा पुं० [अनु०] मक्खी आदि का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।

भुनगा—संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १ एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। २ कीड़ा। पतिंगा।

भुनना—क्रि० अ० [हिं० भूनना] भूनने का अकर्मक रूप। भूना जाना।

क्रि० अ० भुनाने का अकर्मक रूप।

भुनभुनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ भुन भुन शब्द करना। २ मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। बड़बड़ाना।

भुनवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "भुनाई"।

भुनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुनाना] भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुनाना—क्रि० स० [हिं० भूनना का प्रे० रूप] दूसरे को भुनने के लिये प्रेरित करना।

क्रि० स० [सं० भजन] बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।

भुविⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० भू] पृथ्वी। भूमि।

भुरकना—क्रि अ० [सं० भुरण] १ सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. भूलना।

क्रि० स० दे० "भुरभुराना"।

भुरकाना—क्रि० स० [हिं० भुरकना का स० रूप] १ भुरभुरा करना। २ छिड़कना। भुरभुराना। ३ भुलवाना। बहकाना।

भुरकुस—संज्ञा पुं० [हिं० भुरकना] चूर्ण।

मुहा०—भुरकुस निकलना=(१) चूर चूर होना। (२) इतनी मार खाना कि हड्डी पसली चूर चूर हो जाय। (३) नष्ट होना।

भुरता—संज्ञा पुं० [भुरकना या भुरभुरा] १ दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। २ चोखा या भरता नाम का सालन।

भुरभुरा—वि० [अनु०] [स्त्री० भुरभुरी] जिसके कण थोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायँ। बलुआ।

भुरभुराना—क्रि० स० [अनु०] १. (चूर्ण आदि) छिड़कना। भुरकना। २ भुरभुरा करना।

भुरवनाⓅ†—क्रि० स० [सं० भ्रमण] भुलवाना। भ्रम में डालना। फुसलाना। उ०—सूरदास प्रभु रसिक सिरोमणि भुरई राधिका भोरी।—सूर०।

भुरहरा—संज्ञा पुं० [हिं० भोर] सवेरा। तड़का।

भुराईⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भोरा+ई (प्रत्य०)] भोलापन।

संज्ञा पुं० [हिं० भूर] भूरापन।

भुरानाⓅ†—क्रि० स० दे० "भुरवना"। उ०—मैं अपनी सब गाइ चरैहौं। प्रात होत बल के सँग जैहौं तेरे कहे न भुरैहौं। सूर०।

क्रि० अ० दे० "भूलना"।

भुलक्कड़—वि० [हिं० भूलना] जो बराबर भूल जाता हो। जिसका स्वभाव भूलने का हो।

भुलवाना—क्रि० स० [हिं० भूलना का प्रे० रूप] १ भूलना का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २ दे० "भुलाना"।

भुलसना—क्रि० स० [हिं० भुलभुला] गरम राख में झुलसना।

भुलाना—क्रि० स० [हिं० भूलना] १. भूलने के लिये प्रेरित करना। भ्रम में डालना। २ भूलना। विस्मृत करना।

Ⓟ†क्रि० अ० १ भ्रम में पड़ना। २ भटकना। भरमना। राह भूलना। ३ भूल जाना। विस्मरण होना।

भुलावा—संज्ञा पुं० [हिं० भूलना] धोखा। छल। कैतव।

भुवंग—संज्ञा पुं० [सं० भुजग] साँप।

भुवंगम—संज्ञा पुं० [सं० भुजंगम] साँप। उ०—माई री मोहिं डस्यो भुवंगम कारो।—सूर०।

भुव:—संज्ञा पुं० [सं०] वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य के अंतर्गत है। अंतरिक्ष लोक।

भुव—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। उ०—पलिका तें पगु भुव धरै भुव तें पलिका माहिं। तुम बिनु नेकु न कल परै कलप रैन दिन जाहिं।—रससारांश।

Ⓟसंज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह। भ्रू। उ०—रमकन में गान करत सूघे सुर नंददास, भुव विलास, मद हास मदन-मद चुचात।—नंददास०।

भुवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जगत। २ जल। ३ जन। लोग। ४ लोक। पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भू, भुव, स्व, मह:, जन, तप और सत्य ये सात एक के बाद दूसरे के क्रम से पृथ्वी के ऊपर के लोक हैं और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात उसी क्रम से पृथ्वी के नीचे के लोक हैं। ५. चौदह की संख्या का द्योतक शब्द-संकेत। ६. सृष्टि।

भुवनकोश—संज्ञा पुं० [सं०] १. भूमंडल। पृथिवी। २ ब्रह्मांड।

भुवनपति, भुवपालⓅ—संज्ञा पुं० दे० "भूपाल"।

भुवभंग—संज्ञा पुं० [सं० भ्रूभंग] कटाक्ष।

भुवर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] सात लोकों में दूसरा लोक। अंतरिक्ष लोक।

भुवा—संज्ञा पुं० [हिं० घूआ] घूआ। रुई।

भुवारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "भुवाल"।

भुवाल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० भूपाल] राजा। उ०—यों दल काढे बलक तें, तें जयसिंह भुवाल। उदर अघासुर कै परै ज्यौं हरि गाइ गुवाल।—विहारी०।

भुवि— संज्ञा स्त्री० [स० भू] भूमि। पृथिवी।

भुशुंडी—संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडी"।

संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन अस्त्र।

भुस—संज्ञा पुं० [स० बुस] भूसा।

भुसी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] भूसी।

भूँकना—क्रि० अ० [सं० बुक्कन] १ भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना (कुत्तों का)। २ व्यर्थ बकना।

भूँचाल—संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भूँजना†—क्रि० स० [हिं० भूनना] १. दे० "भूनना"। २ दुख देना। सताना।

क्रि० स० [स० भोग] भोगना।

भूँजा†—संज्ञा पु० [हिं० भूनना] १ भूना हुआ। चबेना। २. भड़भूँजा।

भूँडोल—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भू—संज्ञा स्त्री० [स०] १. पृथ्वी। २ स्थान।

संज्ञा स्त्री० [स० भ्रू] भौंह। उ०—कीर नासा इंद्रधनु भू भँवर सी अलकावली। अधर विद्रुम वज्रकन दाड़िम किधौं दशनावली।—सूर०।

भूआ—संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "घूआ"।

भूई—संज्ञा स्त्री० [हिं० घूआ] रूई के समान मुलायम छोटा टुकड़ा।

भूकंप—संज्ञा पुं० [स०] पृथ्वी के भीतर की ज्वाला के परिवर्तन (न्यूनाधिक्य) से ऊपरी भाग का सहसा हिल उठना। भूचाल। भूडोल।

भूख—संज्ञा स्त्री० [स० बुभुक्षा] १ खाने की इच्छा। क्षुधा। २ आवश्यकता। जरूरत (व्यापारी)। ३ कामना।

भूखन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।

भूखना(पु)—क्रि० स० [स० भूषण] सजाना।

भूख हड़ताल—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूख+हड़ताल] किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा किसी माँग की पूर्ति के लिये किया जानेवाला अन्नत्याग।

भूखा—वि० पुं० [हिं० भूख] [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। चाहनेवाला। इच्छुक। ३ दरिद्र। गरीब।

भूगर्भ—संज्ञा पु० [सं०] १. पृथ्वी का भीतरी भाग। २ विष्णु।

भूगर्भशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्वों का बना है और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है।

भूगोल—संज्ञा पुं० [स०] १. पृथ्वी। २ जिस शास्त्र के द्वारा पृथ्वी के स्वरूप, उसके प्राकृतिक और राजनीतिक विभाग, जलवायु, उपज और आबादी आदि का ज्ञान होता है। ३ वह ग्रंथ जिसमें ऐसे विषयों आदि का वर्णन हो।

भूचर—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। महादेव। २ भूमि पर रहनेवाला प्राणी। ३ तंत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।

भूचरी—संज्ञा स्त्री० [स०] योग में समाधि अंग की एक मुद्रा।

भूचाल—संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भूटान—संज्ञा पु० [देश०] हिमालय की तलहटी का एक प्रदेश जो नेपाल और आसाम के बीच सिक्किम के पूर्व में है।

भूटानी—वि० [हिं० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान संबंधी।

संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोड़ा।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भूटिया बादाम—संज्ञा पुं० [हिं० भूटान+फा० बादाम] एक पहाड़ी वृक्ष। इस वृक्ष का फल खाया जाता है। कपासी।

भूडोल—संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भूत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। २. सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी।

यौ०—भूतदया = जड़ और चेतन सबके साथ की जानेवाली दया।

३. प्राणी। जीव। ४ सत्य। ५ बीता हुआ समय। ६ व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ७ पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। ८ मृत शरीर। शव। ९ मृत प्राणी की आत्मा। १० प्रेत। जिन। शैतान।

मुहा०—भूत चढ़ना या सवार होना = (१) बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। (२) बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई या पकवान = (१) वह पदार्थ जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। (२) सहज में मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।

वि० १. गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ। भूत काल। २ युक्त। मिला हुआ। ३ समान। सदृश। ४. जो हो चुका हो।

भूतगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भूत की गति। २ विलक्षण बात।

भूतत्व—संज्ञा पु० [स०] १. भूत होने का भाव। २ भूत का धर्म।

भूतत्वविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भशास्त्र"।

भूतनाथ—संज्ञा पुं० [स०] शिव।

भूतपूर्व—वि० [सं०] वर्तमान से पहले का। इससे पहले का।

भूतभावन—संज्ञा पुं० [स०] महादेव।

भूत भाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैशाची भाषा

भूत यज्ञ—संज्ञा पुं० [स०] पंचयज्ञ में से एक यज्ञ। भूतबलि। बलिवैश्व।

भूतल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वी का ऊपरी तल। २ संसार। दुनिया। ३ पाताल।

भूतवाद—संज्ञा पुं० दे० "पदार्थवाद"।

भूतांकुश—संज्ञा पुं० [स०] १ कश्यप ऋषि। २. गावजुबान।

भूतागति—संज्ञा स्त्री० दे० "भूतगति"।

भूतात्मा—संज्ञा पुं० [स० भूतात्मन्] १. शरीर। २ परमेश्वर। ३ शिव। ४ जीवात्मा।

भूतावेस(पु)—संज्ञा पुं० [स० भूतावेश] एक मानसिक स्थिति जब व्यक्ति प्रेतबाधा के कारण असाधारण व्यवहार करता है।

भूति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वैभव। ऐश्वर्य। धनसंपत्ति। राज्यश्री। उ०—धरमनीति उपदेसिय ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥ —मानस। २ भस्म। राख। उ०—भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी। —मानस। ३ उत्पत्ति। ४ वृद्धि। अधिकता। ५ अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।

भूतिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूत] १. भूत योनि में प्राप्त स्त्री। २ शाकिनी, डाकिनी।

भूतृण—संज्ञा पुं० [सं०] रूसा। घास।

भूतेश्वर—संज्ञा पुं० [स०] महादेव।

भूतोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] वह उन्माद जो भूतों या पिशाचों के प्रभाव के कारण हो।
भूदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
भूधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़। २ शेषनाग। ३ विष्णु। ४. राजा।
भून(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भ्रूण"।
भूनना—क्रि० स० [सं० भर्जन] १ आग पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। २ घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक आग में सेंकना या पकाना। ३ तलना। ४ बहुत अधिक कष्ट देना।
भूप, भूपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
भूपाल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
भूपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।
भूभल—संज्ञा स्त्री० [सं० भू+भूर्ज या अनु० ?] गरम राख या धूल। गरम रेत। ततूरी।
भूभुरि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"।
भूभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
भूमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।
भूमध्यसागर—संज्ञा पुं० [सं०] युरोप और अफ्रिका के बीच का समुद्र।
भूमा—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा।
 वि० बहुत अधिक।
भूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। जमीन।
 मुहा०—भूमि होना=पृथ्वी पर गिर पड़ना।
 २. जड़। बुनियाद। ४ देश। प्रदेश। प्रांत। ५ योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएँ जो क्रम क्रम से योगी को प्राप्त होती हैं। ६ क्षेत्र।
भूमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रचना। २ भेष बदलना। ३ किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुखबंध। दीबाचा। ३ वेदांत के अनुसार चित्त की ये पाँच अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ५ वह आधार जिसपर कोई दूसरी चीज खड़ी की जाय। पृष्ठभूमि। ३ अभिनय।
 संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी। जमीन।
भूमिज—वि० [सं०] भूमि से उत्पन्न।
भूमिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।
भूमिधर—संज्ञा पुं० [सं० भूमि+धर] किसान जिसे अपनी जमीन को बेचने, दान करने आदि का अधिकार हो।
भूमिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
भूमिया—संज्ञा पुं० [सं० भूमि+हिं० इया (प्रत्य०)] १. जमींदार। २. ग्रामदेवता।
भूमिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
भूमिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी।
भूमिहार—संज्ञा पुं० [सं०] बिहार और उत्तर प्रदेश में बसनेवाली एक हिंदू जाति।
भूय—अव्य० [सं० भूयस्] पुन'। फिर।
भूयसी—वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २ बारबार।
 संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विवाह आदि शुभकार्य होने पर सभी उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूयोभूय—क्रि० वि० [सं०] बारबार। उ०—शक्तिवाह उच्छृंखल, भूयोभूय मगल, उद्धत पदतल दलमल, बना विमल ज्ञान।—गीतिका।
भूर—वि० [सं० भूरि] बहुत अधिक।
 संज्ञा पुं० [हिं० भुरभुरा] बालू।
भूरज—संज्ञा पुं० [सं० भूर्ज] भोजपत्र।
 संज्ञा पुं० [सं० भू+रज] धूल। गर्द। मिट्टी।
भूरजपत्र—संज्ञा पुं० दे० "भोजपत्र"।
भूरपूर(पु)†—वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।
भूरसी दक्षिणा—संज्ञा स्त्री० दे० "भूयसी"।
भूरा—संज्ञा पुं० [सं० बभ्रु] १ मिट्टी का सा रंग। खाकी रंग। २ कच्ची चीनी। ३ चीनी।
 वि० मटमैले रंग का। खाकी।
भूरि—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० भूरिता] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ इंद्र। ५ स्वर्ण। सोना।
 वि० [सं०] १ अधिक। बहुत। २ भारी
भूरितेजस—संज्ञा पुं० [सं० भूरितेजस्] १ अग्नि। उ०—विगेश विश्वानर प्लवगं सुभूरितेजस सर्व जू। सुकुमार सु भगवान रुद्र हिरण्यगर्भ अखर्व जू।—विश्रामसागर। २ सोना।
भूर्जपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र।
भूल—संज्ञा स्त्री० [प्रा०√भुल्ल] १ भूलने का भाव। २ गलती। चूक। ३ कसूर। दोष। अपराध। ४ अशुद्धि। गलती। त्रुटि।
भूलक(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० भूल+क (प्रत्य०)] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।
भूलना—क्रि० स० [प्रा०√भुल्ल] १. विस्मरण करना। याद न रखना। २ गलती करना। ३ खो देना।
 क्रि० अ० १ विस्मृत होना। याद न रहना। २ चूकना। गलती होना। ३. आसक्त होना। लुभाना। ४ घमंड में होना। इतराना। ५ खो जाना।
 वि० भूलनेवाला, जैसे—भूलना स्वभाव।
भूलभूलैयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूल+भूल+ऐयाँ (प्रत्य०)] १ वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत जिसमें जा'कर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २. चकाबू। ३ बहुत घुमावफिराव की बात या घटना।
भूलोक—संज्ञा पुं० [सं०] संसार। जगत्।
भूवा—संज्ञा पुं० [हिं० घुआ] रूई।
 वि० उजला। सफेद।
भूशायी—वि० [सं० भूशायिन्] १ पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३ मृतक। मरा हुआ।
भूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अलंकार। गहना। जेवर। २ वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़ती हो।
भूषन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूषना(पु)†—क्रि० स० [सं० भूषण] भूषित करना। अलंकृत करना। सजाना।
भूषा—संज्ञा स्त्री० [सं० भूषण] १. गहना। जेवर। २ सजाने की क्रिया।
भूषित—वि० [सं०] १. गहना पहनाया हुआ। अलंकृत। २ सजाया हुआ। सँवारा हुआ।
भूसन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूसना(पु)—क्रि० अ० दे० "भूँकना"।
भूसा—संज्ञा पुं० [सं० बुस] गेहूँ जौ आदि के डंठल तथा बालों के छोटे छोटे टुकड़े जो पशुओं के खाने के काम आते हैं।
भूसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] १ भूसा। २ किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
भूसुर—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
भूहरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भुँइहरा"।
भृंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ भौंरा। २ एक प्रकार का कीड़ा। बिलनी जिसके बारे

में कहा जाता है कि वह किसी कीड़े को मिट्टी से ढककर उसपर बैठ जाता है और तब तक "भिन्न भिन्न" शब्द करता रहता है जब तक वह कीड़ा भी इसी की तरह नहीं हो जाता। उ०—भइ मति कीट भृंग की नाईं। जहँ तहँ मैं देखे रघुराई।—मानस।

भृंगराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा भौंरा २ भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। ३ काले रंग का एक पक्षी। भीमराज।

भृंगी—संज्ञा पुं० [सं० भृंगिन्] शिव जी का एक गण।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भौंरी। २ बिलनी।

भृकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भौंह।

भृगु—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मुनि। प्रसिद्ध है कि इन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी। २ परशुराम। ३ शुक्राचार्य। ४ शुक्रवार। ५ शिव। ६ पहाड़ का ऐसा किनारा जहाँ से गिरने पर बीच में कोई रोक न हो। खड़ा किनारा।

भृगुकच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक भड़ौच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।

भृगुनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।

भृगुमुख्य—संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।

भृगुरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था। उ०—माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर सोभित भृगु रेखा हो।—सूर०।

भृत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भृता] दास।

वि० [सं०] १ भरा हुआ। पूरित। २ पाला हुआ। पोषण किया हुआ।

भृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नौकरी। २ मजदूरी। ३ वेतन। तनखाह। ४. मूल्य। दाम। ५ भरना। ६ पालन करना।

भृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भृत्या] नौकर।

भृश—क्रि० वि० [सं०] बहुत। अधिक।

भेंगा—वि० [देश०] जिनकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी तिरछी रहती हों। ढेरा।

भेंट—संज्ञा स्त्री० [प्रा० √भिट्ट] १ मिलना। मुलाकात। २ उपहार। नजराना।

भेंटना(पु)†—क्रि० स० [प्रा० √भिट्ट्य] १ मुलाकात करना। २ गले लगाना।

भेवना—क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना।

भेद, भेउ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भेद] रहस्य।

भेक—संज्ञा पुं० दे० "मेंढक"।

भेख—संज्ञा पुं० दे० "वेष"।

भेखज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।

भेजना—क्रि० स० [सं० व्रजन्] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।

भेजवाना—क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रे० रूप] भेजने का काम दूसरे से कराना।

भेजा—संज्ञा पुं० [?] खोपड़ी के भीतर का गूदा। मग्ज।

भेड़—संज्ञा स्त्री० [सं० मेष] [पुं० भेड़ा] बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर।

मुहा०—भेड़ियाधसान=बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।

भेड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० भेड़] भेड़ जाति का नर। मेढा। मेष।

भेड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० भेड़] कुत्ते की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु।

भेड़िहर†—संज्ञा पुं० दे० "गड़ेरिया"।

भेड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"।

भेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेदने या छेदने की क्रिया। २ शत्रुपक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना। ३ भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। ४ मर्म। तात्पर्य। ५ फर्क। ६ प्रकार। किस्म।

भेदक—वि० [सं०] १ छेदनेवाला। २ रेचक। दस्तावर (वैद्यक)। ३ भेद करने या बतानेवाला।

भेदकातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें 'और' "और" शब्द द्वारा किसी वस्तु की 'अति' वर्णन की जाती है, जैसे—औरै कछु चितवनि चलनि औरै मृदु मुसकानि। औरै कछु सुख देति है सकै न बैन बखानि॥

भेदड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] रवड़ी। बसौंधी।

भेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० भेदनीय, भेद्य] भेदने की क्रिया। छेदना। वेधना।

भेदना—संज्ञा पुं० [सं० अंतर। बेधना। छेदना।

भेदभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अंतर। फरक।

भेदिया—संज्ञा पुं० [सं० भेद+हिं० इया (प्रत्य०)] १ जासूस। गुप्तचर। २ गुप्त रहस्य जाननेवाला।

भेदी—संज्ञा पुं० दे० "भेदिया"।

वि० [सं० भेदिन्] भेदन करनेवाला उ०—जे जन निपुन जथारथ वेदी। स्वारथ अरु परमारथ भेदी।—नंददास०।

भेदीसार—संज्ञा पुं० [सं०] बढ़इयों का छेदने का औजार। बरमा।

भेदू—वि० पुं० दे० "भेदिया"।

भेद्य—वि० [सं०] जो भेदा या छेदा जा सके।

भेन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहिन] बहिन।

भेना†—क्रि० स० दे० "भेवना"।

भेय—संज्ञा पुं० [सं० भेद] दे० "भेद" (३)। उ०—जौ कहहु कि हम अस दुर्ज्ञेय। पायौ परै न जाकौ भेय।—नंददास०।

भेरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "बेड़ा(पु)"। उ०—राम नाम लिखि भेरा बाँधौ, कहै उपदेस कबीरा।—कबीर०।

भेरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल या नगाड़ा। ढक्का। दुंदुभी।

भेरीकार—संज्ञा पुं० [सं० भेरी+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० भेरीकारी] भेरी बजानेवाला।

भेल—वि० [सं०] १ भीरु। डरपोक। २ मूर्ख। बेवकूफ।

भेला(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] १ भिड़त। २ भेंट। मुलाकात।

संज्ञा पुं० दे० "भिलावाँ"।

संज्ञा पुं० [?] बड़ा गोला या पिंड।

भेली†—संज्ञा स्त्री० [?] गुड़ या और किसी चीज की गोल बट्टी या पिंडी।

भेव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भेद] १ मर्म की बात। भेद। रहस्य। उ०—हमरें तौ हरिकुल के देव। तुम सब नीके जानत भेव।—नंददास०। २ बारी। पारी।

भेवना(पु)†—क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना।

भेष—संज्ञा पुं० दे० "वेष"।

भेषज—संज्ञा पुं० [सं०] औषध। दवा।

भेषना(पु)—क्रि० स० [हिं० भेष से ना० धा०] १ भेष बनाना। स्वाँग बनाना। २ पहनना।

भेस—संज्ञा पुं० [सं० वेष] १ बाहरी रूप रंग और पहनावा आदि। वेष। २ कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।

भेसज—संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।

भेसना(पु)†—क्रि० स० [हिं० भेस से ना० धा०] वेश धारण करना। वस्त्रादि पहनना। पहनना।

भैंस—संज्ञा स्त्री० [सं० महिष] १ गाय की जाति और आकार प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिये पालते हैं। २ एक प्रकार की मछली।

भैंसा—संज्ञा पुं० [हिं० भैंस] भैंस का नर।

भैंसासुर—संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर"।

भै(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भया"।

संज्ञा पुं० दे० "भय"। उ०—जाकी रचना वाके आगे। आँय बाँय सारे भै भागे। —नंददास०।

भैक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। २ भीख।

भैक्षचर्या, भैक्षवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिक्षा माँगने की क्रिया।

भैचक, भैचक्क(पु)†—वि० [हिं० भय+चक=चकित] चकपकाया हुआ। चकित।

भैजन(पु)—वि० [सं० भय+जनक] भयप्रद।

भैदा(पु)—वि० [सं० भय+दा (प्रत्य०)] भयप्रद।

भैन, भैना—संज्ञा स्त्री० [हिं० बहिन] बहिन।

भैने—संज्ञा पुं० भांजा।

भैयंस†—संज्ञा पुं० [हिं० भाई+सं० अंश] संपत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश।

भैया—संज्ञा पुं० [हिं० भाई] १ भाई। भ्राता। २ बराबरवालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द।

भैयाचारी—संज्ञा स्त्री० दे० "भाईचारा"।

भैयादूज—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृ द्वितीया] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाईदूज। हिंदुओं का एक त्योहार जिसमें बहनें भाइयों को टीका लगाती तथा मिठाई खिलाती हैं।

भैरव—वि० [सं०] १ देखने में भयंकर। भयानक। २ भीषण शब्दवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १ शंकर। महादेव। २ शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं। ३ एक राग जो छः रागों में से मुख्य है। ४ भयानक शब्द।

भैरवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्ति मानी जाती है। चामुंडा (तंत्र)। २. एक रागिनी जो सबेरे गाई जाती है।

भैरवीचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिये एकत्र होता है।

भैरवीयातना—संज्ञा स्त्री० [सं० भैरवी+यातना] पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरव जी देते हैं।

भैषज, भैषज्य—संज्ञा पुं० [सं०] औषध। दवा।

भैहा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भय, हिं० भै+सं० हत, हिं० हा] १ भयभीत। डरा हुआ। २ जिसपर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।

भोंकना—क्रि० स० [भक से अनु०] बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से धँसाना। घुसेड़ना।

भोंडा—वि० [हिं० भद्दा या भों से अनु०] [स्त्री० भोंडी] भद्दा। बदसूरत। कुरूप।

भोंडापन—संज्ञा पुं०] हिं० भोंडा+पन (प्रत्य०)] १ भद्दापन। २ बेहूदगी।

भोंदू—वि० [हिं० बुद्धू] बेवकूफ। मूर्ख।

भोंपा, भोंपू—संज्ञा पुं० [भों (अनु०)+पू (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाते हैं। २ कल कारखानों आदि की बहुत जोर से बजनेवाली सीटी। ३ मोटर, साइकिल आदि गाड़ियों में हाथ से दबाकर आवाज करने का एक रबर का बाजा।

भोया(पु)†—वि० [?] १ युक्त। सहित। २ डुबाया हुआ। भीगा हुआ।

भोंसले—संज्ञा पुं० [देश०] महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और रघुनाथराव आदि इसी कुल के थे।)

भो(पु)—क्रि० अ० [हिं० भया] भया। हुआ।

भोक्स(पु)†—वि० [हिं० भूख] भुक्खड़।

संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का राक्षस।

भोकार—संज्ञा स्त्री० [भो से अनु० +कार (प्रत्य०)] जोर जोर से रोना।

भोक्ता—वि० [सं० भोक्तृ] [संज्ञा भोक्तृत्व] १ भोजन करनेवाला। २ भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३ ऐयाश।

भोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। २ सुख। विलास। ३ दुःख। कष्ट। ४ स्त्री के साथ मैथुन। विषय। ५ धन। ६. पालन। ७ भक्षण। आहार करना। उ०—कहँ कपीस सुभ अंग, कहा उछरत बर बागन। कहा निसाचर-भोग, माह में दान कौन मन। —काव्यनिर्णय। ८ देह। ९ पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया या भोगा जाता है। प्रारब्ध। १० फल। अर्थ। ११ देवता आदि के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। १२. सूर्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने का समय।

भोगना—क्रि० अ० [सं० भोग से हिं० ना० धा०] १ सुख दुःख या शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव करना। भुगतना। २ सहन करना। सहना।

भोगबंधक—संज्ञा पुं० [सं० भोग्य+हिं० बंधक=रेहन] बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है। दृष्टबंधक का उलटा।

भोगली—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ नाक में पहनने का लौंग। २ टेंटका या तरकी नाम का कान में पहनने का गहना। ३. वह छोटी पतली पोली कील जो लौंग या कान के फूल आदि को अटकाने के लिये उसमें लगाई जाती है।

भोगवना(पु)—क्रि० अ० [सं० भोग] भोगना। उ०—सनि-कज्जल चख-झख-लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु। क्यों न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सबु देहु॥ —बिहारी०।

भोगवाना—क्रि० स० [हिं० भोगना का प्रे० रूप] दूसरे से भोग कराना।

भोगविलास—संज्ञा पुं० [सं०] आमोद-प्रमोद। सुख चैन।

भोगाना—क्रि० स० दे० "भोगवाना"।

भोगी—संज्ञा पुं० [सं० भोगिन्] [स्त्री० भोगिनी] भोगनेवाला।

वि० १ सुखी। २ इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। ३ भुगतनेवाला। ४ विषयासक्त। ५ आनंद करनेवाला। ६ साँप।

भोग्य—वि० [सं०] भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोग्यमान्—वि० [सं०] जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो, जैसे, भोग्यमान् नक्षत्र।

भोज—संज्ञा पुं० [सं० भोजन या भोज्य] १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना पीना। जेवनार। दावत। २. खाने की चीज।

संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। २. चंद्रवंशियों के एक वंश का नाम। ३ श्री कृष्ण के सखा एक ग्वाल का नाम। उ०—अर्जुन, भोज अरु सुबल श्रीदामा मधुमंगल इक ताक।—सूर०। ४ कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराजा रामभद्र देव के पुत्र थे। ५ मालवा के परमारवंशी एक राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् और कवि थे।

भोजक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोग करनेवाला। भोगी। २ ऐयाश। विलासी।

भोजदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ कान्यकुब्ज के महाराज भोज। २ दे० "भोज"।

भोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भक्षण करना। खाना। २ खाने की सामग्री।

भोजनखानीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "भोजनालय"।

भोजनभट्ट—संज्ञा पुं० [भोजन+भट्ट] बहुत अधिक खानेवाला।

भोजनशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईघर।

भोजनालय—संज्ञा पुं० [सं०] रसोईघर।

भोजपत्र—संज्ञा पुं० [सं० भूर्जपत्र] एक प्रकार का मँझोले आकार का वृक्ष और उसकी छाल जो प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने में बहुत काम आती थी।

भोजपुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भोजपुर+ई (प्रत्य०)] भोजपुर की बोली।

संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी।

वि० भोजपुर का। भोजपुर संबंधी।

भोजराज—संज्ञा पुं० दे० "भोज" (५)।

भोजविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० भोज+विद्या] इंद्रजाल। बाजीगरी।

भोजी—संज्ञा पुं० [हिं० भोज+ई (प्रत्य०)] खानेवाला।

भोजूⓅ—संज्ञा पुं० [सं० भोजन] भोजन। आहार।

भोज्य—संज्ञा पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ।

वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।

भोट—संज्ञा पुं० [सं० भोटंग] १ भूटान देश। २ एक प्रकार का बड़ा पत्थर।

भोटाⓅ—वि० दे० "भोला"।

भोटिया—संज्ञा पुं० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भोट या भूटान देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

वि० भूटान देश संबंधी। भूटान का।

भोटिया बादाम—संज्ञा पुं० [हिं० भोटिया+फा० बादाम] १ आलूबुखारा। २. मूँगफली।

भोडर, भोडल†—संज्ञा पुं० [देश०] १. अभ्रक। अबरक। उ०—पाइल पाइ लगी रहै, लगी अमेलिक लाल। भोडर हूँ की भासिहै बेंदी भामिनि भाल।—बिहारी०। २. अभ्रक का चूर। बुक्का।

भोथरा—वि० [अनु०] जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। कुंद।

भोनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० भीनना] १ भीनना। संचरित होना। २ लिप्त होना। लीन होना। ३ आसक्त होना।

भोपा—संज्ञा पुं० [भो से अनु०] १ एक प्रकार की तुरही। भोंपू। २ मूर्ख।

भोमिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "भूमि"। उ०—निरमल बूँद अकास की, पड़ गई भोमि विकार।—कबीर०।

भोर—संज्ञा पुं० [सं० विभावरी] तड़का। सबेरा। उ०—जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठ लगायो।—सूर०।

Ⓟ†संज्ञा पुं० [सं० भ्रम] धोखा। भ्रम। उ०—हँसत परस्पर आपु में चली जाहिं जिय भोर।—सूर०।

वि० चकित। स्तंभित। उ०—सूर प्रभु की निरखि सोभा भई तरुनी भोर।—सूर०।

Ⓟवि० [हिं० भोला] भोला। सीधा।

भोरनाⓅ—क्रि० स० दे० "भोराना"।

भोरा—Ⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "भोर"।

Ⓟ†वि० १ भोला। सीधा। सरल। २ बेवकूफ। मूर्ख।

भोराईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन"।

भोरानाⓅ—क्रि० स० [हिं० भोर से ना० धा०] भ्रम में डालना। बहकाना। उ०—सूरदास लोगन के भोरए काहे कान्ह अब होत पराए।—सूर०।

क्रि० अ० धोखे में आना।

भोरानाथⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० भोलानाथ] शिव।

भोरुⓅ—संज्ञा पुं० दे० "भोर"।

भोलनाⓅ—क्रि० स० [हिं० भुलाना] भुलावा देना। बहकाना।

भोला—वि० [हिं० भूलना] १. सीधा-सादा। सरल। २. मूर्ख। बेवकूफ।

भोलानाथ—संज्ञा पुं० [हिं० भोला+सं० नाथ] महादेव। शिव।

वि० (व्यक्ति के लिये) सीधासादा। सरल।

भोलापन—संज्ञा पुं० [हिं० भोला+पन (प्रत्य०)] १ सिधाई। सरलता। सादगी। २ नादानी। मूर्खता।

भोलाभाला—वि० [हिं० भोला+अनु० भाला] सीधासादा। सरल चित्त का।

भोहरा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँहरा] १. मुँहरा। २ खोह। गुफा।

भौं—संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह"।

भौंकना—क्रि० अ० [भौं भौं से अनु०] १ भौं भौं शब्द करना। कुत्तों का बोलना। भूँकना। २ बहुत बकवाद करना। निरर्थक बोलना।

भौंचाल†—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भौंतुवा—संज्ञा पुं० [हिं० भ्रमना=घूमना] १ काले रंग का एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में जलाशयों आदि में जल तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है। उ०—कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहिं कियो भौंतुवा भौंर को हौं।—विनय०। २ एक प्रकार का रोग जिसमें ज्वर के साथ शरीर का कोई अंग फूल जाता है। (अं०) फाइलेरिया। ३ तेली का बैल जो सबेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है।

वि०—घूमनेवाला। चक्कर काटनेवाला।

भौंर—संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] १ भौंरा। २. तेज बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त। नाँद। ३ मुश्की घोड़ा।

भौंरा—संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] [स्त्री० भँवरी] १ काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा जो देखने में बहुत दृढांग प्रतीत होता है। यह गुंजारता हुआ उड़ा करता है। और फूलों का रस पीता है। उ०—आपुहिं भौंरा आपुहिं फूल। आतम ज्ञान बिना जग भूल।—सूर०। २ बड़ी मधुमक्खी। सारंग। डंगर। ३ काली या लाल भिड़। ४ एक प्रकार का खिलौना। ५ हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें डोरी बँधी रहती है। ६ वह कुत्ता जो गड़रियों की भेड़ों की रखवाली करता है। ७ प्रेमी। रसिक।

संज्ञा पुं० [सं० भ्रमण] १ मकान के नीचे का घर। तहखाना। २ वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। खात। खत्ता।

भौंराना(पु)—क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. घुमाना। परिक्रमा करना। २ विवाह की भाँवर दिलाना।

क्रि० अ० घुमाना। चक्कर काटना।

भौंराला—वि० [हिं० भौंरा + आला (प्रत्य०)] घुँघराला या छल्लेदार (बाल)।

भौंरी—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १ पशुओं के शरीर में वालों के घुमाव से बना हुआ चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुणदोष का निर्णय होता है। २ विवाह के समय वर वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। भाँवर। ३ तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त। ४ अगाकड़ी। बाटी (पकवान)।

भौंह—सज्ञा स्त्री० [प्रा० भमुहा] आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।

मुहा०—भौंह चढ़ाना या तनना = (१) नाराज होना। क्रुद्ध होना। (२) त्यौरी चढ़ाना। बिगड़ना। भौंह जोहना = खुशामद करना।

भौंहरा(पु)—सज्ञा पुं० दे० "भुइँहरा"।

भौंही—सज्ञा स्त्री० [प्रा० भमुहा] दे० "भौंह। उ०—सोहवि अस कछु बाँकी मो भौंही। मन जाने कै पुनि हौंहीं।—नंददास०।

भौ(पु)—सज्ञा पुं० [सं० भव] ससार। जगत।

सज्ञा पुं० [स० भय] डर। खौफ। भय।

भौकन(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० भभकना] आग की लपट। ज्वाला।

भौगिया(पु)†—सज्ञा पुं० [स० भोग + हिं० इया (प्रत्य०)] ससार के सुखों को भोगनेवाला।

भौगोलिक—वि० [स०] भूगोल का।

भौचक—वि० [स० भय + चकित] हक्का बक्का। चकपकाया हुआ। स्तमित।

भौज(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "भौजाई"।

भौजल(पु)—सज्ञा पुं० दे० "भवजाल"।

भौजाई, भौजी—सज्ञा स्त्री० दे० "भावज"।

भौज्य—सज्ञा पुं० [स०] वह राज्य जो केवल सुखभोग के विचार से होता हो, प्रजापालन के विचार से नहीं।

भौतिक—वि० [सं०] [भाव० भौतिकता] १ पंचभूत संबंधी। २ पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३ शरीर सबधी। शरीर का। ४ भूतयोनि का।

भौतिकवाद—संज्ञा पुं० दे० "पदार्थ-वाद"।

भौतिक विद्या—संज्ञा स्त्री० [स०] भूतों, प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि—सज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की देव योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग् योनि और मनुष्य योनि, इन सबकी समष्टि।

भौन(पु)—सज्ञा पुं० [सं० भवन] घर। मकान।

भौना(पु)†—क्रि० अ० [स० भ्रमण] घूमना।

भौम—वि० [सं०] १ भूमि सबधी। भूमि का। २ भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न।

सज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

भौमवार—सज्ञा पुं० [सं०] मगलवार।

भौमिक—सज्ञा पुं० [स०] भूमि का मालिक।

वि० भूमि सबधी। भूमि का।

भौर(पु)—सज्ञा पुं० [स० भ्रमर] १ दे० "भौंरा"। २ घोड़ों का एक भेद। ३ दे० "भँवर"।

भौलिया—सज्ञा स्त्री० [सं० बहुला] एक प्रकार की छायादार नाव।

भौसा—सज्ञा पुं० [देश०] १ भीड़ भाड़। जनसमूह। २. हो हुल्लड़। गड़बड़।

भ्रंग(पु)—सज्ञा पुं० दे० "भृ ग"।

भ्रंश—सज्ञा पुं० [सं०] १ अध पतन। नीचे गिरना। २ नाश। ध्वस। ३ भागना।

वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रकुटि—सज्ञा स्त्री० [सं०] भृकुटी। भौंह।

भ्रम—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी चीज या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। धोखा। २ सशय। संदेह। शक। ३ एक प्रकार का रोग जिसमें चक्कर आता है। ४ मूर्च्छा। बेहोशी। ५ भ्रमण।

सज्ञा पुं० [सं० सभ्रम] मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।

भ्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ घूमना फिरना। विचरण। २ आना जाना। ३. यात्रा। सफर। ४ मडल। चक्कर। फेरी।

भ्रमना—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

क्रि० अ० [सं० भ्रम से हिं० ना० धा०] १ धोखा खाना। भूल करना। २. भटकना। भूलना।

भ्रमनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रमण"।

भ्रममूलक—वि० [सं०] जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भ्रमरी] १ भौंरा।

यौ०—भ्रमर गुफा = योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अदर का एक स्थान।

२ उद्धव का एक नाम।

यौ०—भ्रमरगीत = वह गीत या काव्य जिसमें उद्धव के प्रति व्रज की गोपियों का उपालभ हो।

३. दोहे का एक भेद जिसमें २२ गुरु और ४ लघु वर्ण होते हैं। उ०—सीता सीतानाथ को गावो आठो जाम। इच्छा पूरी जो करै औ देवै विश्राम। ४ छप्पय का तिरसठवाँ भेद जिसमें ८ गुरु, १३६ लघु, कुल १४४ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

भ्रमरविलसिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण और अंत में लघु गुरु होता है। उ०—फूलै बल्ली भ्रमरविलसिता। पावै शोभा अलि सह मुदिता॥

भ्रमरावली—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ भँवरों की श्रेणी। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ५ सगण होते हैं। उ०—ससि सों सु सखी रघुनदन को बदना। लखि के पुलकीं मिथिलापुर की ललना॥ तिनके सुख में दिश फूल रहीं दश हूँ। पुर में नलिनी विकसी जनु ओर चहूँ॥ मनहरण। नलिनी।

भ्रमवात—सज्ञा पुं० [सं०] आकाश का वह वायुमडल जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक—वि० [सं०] जिसमे अथवा जिसके सबध में भ्रम होता है। सदिग्ध।

भ्रमाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० भ्रमना का स० रूप] १ घुमाना। फिराना। २ बहकाना।

भ्रमित—वि० [स०] १ भ्रम में पड़ा हुआ। २ चक्कर खाता हुआ।

भ्रमी—वि० [सं० भ्रमिन्] १. जिसे भ्रम हुआ हो। २ चकित। भौंचक।

भ्रष्ट—वि० [सं०] १ गिरा हुआ। पतित। २ जो खराब हो गया हो। बहुत बिगड़ा हुआ। ३. दूषित। ४ बदचलन।

भ्रष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा। छिनाल।

भ्रांत—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

वि० [सं०] १ जिसे भ्रांति या भ्रम हुआ हो। भूला हुआ। २ व्याकुल। विकल। ३ उन्मत्त। ४ घुमाया हुआ।

भ्रांतापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें किसी भ्रांति को दूर करने के लिये सत्य वस्तु का वर्णन होता है।

भ्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भ्रम। धोखा। २ संदेह। शक। ३ भ्रमण। ४. पागलपन। ५ भँवरी। घुमेर। ६ भूल चूक। ७ मोह। प्रमाद। ८ एक प्रकार का काव्यालंकार। इसमें किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना वर्णित होता है, जैसे—अटारी पर नायिका को देखकर कहना—है! यह चंद्रमा कहाँ से निकल आया!

भ्राजना(पु)—क्रि० अ० [सं० भ्राजन] शोभा पाना। शोभायमान होना।

भ्राजमान(पु)—वि० [हिं० √भ्राज+मान (प्रत्य०)] शोभायमान।

भ्रात(पु)—संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"।

भ्राता—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ] सगा भाई।

भ्रातृजाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] भावज।

भ्रातृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] भाई होने का भाव या धर्म। भाईपन।

भ्रातृद्वितीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। यमद्वितीया। भाई दूज।

भ्रातृपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] भतीजा।

भ्रातृभाव—संज्ञा पुं० [सं०] भाई का सा प्रेम या संबंध। भाईचारा। भाईपन।

भ्रातृव्य—संज्ञा पुं० [सं०] भतीजा।

भ्रामक—वि० [सं०] १ भ्रम में डालनेवाला। बहकानेवाला। २ घुमानेवाला। चक्कर दिलानेवाला।

भ्रामर—संज्ञा पुं० [सं०] मधु। शहद। २ दोहे का दूसरा भेद।

वि० भ्रमर संबंधी। भ्रमर का।

भ्रुअ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भ्रू। भौंह। उ०—नाई ऐंठि तिय भ्रुव धनुष नवत न जतन अनेक। लाल जाइ कीजै सरल हृदय आँच की सेंक। —रससारांश।

भ्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] भौं। भौंह।

भ्रूण—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री का गर्भ। २ बालक की वह अवस्था जब वह गर्भ में रहता है।

भ्रूणहत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भ के बालक की हत्या।

भ्रूभंग—संज्ञा पुं० [सं०] त्योरी चढ़ाना।

भ्रूविक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ देखना। २ त्योरी चढ़ाना। नाराजगी दिखलाना।

भ्वहरना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० भय+हरन (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

म

म—हिंदी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारणस्थान होंठ और नासिका है।

मंकुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मुकुर] शीशा। आईना।

मंग—संज्ञा स्त्री० [हिं० माँग] स्त्रियों के सिर की माँग। उ०—झलमलात अति उज्वल जल की जोति, अवनि दिपत मानो सीस भरे मोती मंग। —नंददास०।

मंगत—संज्ञा पुं० दे० "मंगता"। उ०—मंगत जन परिपूरन भए। दारिदह के दारिद गए। —नंददास०।

मंगता—संज्ञा पुं० [हिं० √माँग + ता (प्रत्य०)] भिखमंगा। भिक्षुक।

मंगन—संज्ञा पुं० [हिं० माँगना] भिक्षुक।

मंगना(पु)—क्रि० स० दे० "माँगना"।

मंगनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना+ई (प्रत्य०)] १ माँगने की क्रिया या भाव। २ वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय तक काम लेने के उपरांत लौटा दिया जायगा। ३ इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ४ विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है।

मंगल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभीष्ट की सिद्धि। मनोकामना का पूर्ण होना। २ कल्याण। कुशल। भलाई। ३ सौर जगत का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले पहल पड़ता है और जो सूर्य से १४ करोड़ १५ लाख मील दूर है और किसी समय पृथ्वी का ही एक भाग था। भौम। कुज। ४ मंगलवार। ५ (अँ०) मैंगनीज नामक धातु।

मंगलकलश (घट)—संज्ञा पुं० [सं०] जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल अवसरों पर काम में लाया जाता है।

मंगलपाठ—संज्ञा पुं० दे० "मंगलाचरण"।

मंगलपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] वंदीजन।

मंगलवार—संज्ञा पुं० [सं०] वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है। भौमवार।

मंगलसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कलाई में बाँधा जाता है।

मंगलस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।

मंगला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

मंगलाचरण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी शुभ कार्य के आरंभ में उसकी निर्विघ्न समाप्ति के लिये की जानेवाली ईश्वरप्रार्थना या आशीर्वाद (श्लोक या पद आदि के रूप में)।

मंगलामुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंगल+मुखी] वेश्या। रंडी।

मंगलाष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] नव विवाहित पतिपत्नी को उनके भावी सुख और समृद्धि के लिये किसी ब्राह्मण द्वारा दिया जानेवाला आठ चरणों का आशीर्वाद।

मंगली—वि० [सं० मंगल (ग्रह)] जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह हो (अशुभ)।

मँगवाना—क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रे० रूप] १ माँगने का काम दूसरों से कराना। २ किसी को कोई चीज मोल

खरीदकर या किसी से माँगकर लाने में प्रवृत्त करना।

मँगाना—क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रे० रूप] १ दे० "मँगवाना"। २ मँगनी का संबंध कराना।

मँगेतर—वि० [हिं० माँग+एतर (प्रत्य०)] जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।

मंगोल—संज्ञा पुं० [मंगोलिया प्रदेश से] १ मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर बसनेवाली एक जाति। इस जाति के लोग अब चीन और साइबेरिया में फैले हुए हैं। मूलतः यह जाति भ्रमणशील है। ईसा की १३ वीं सदी में इसने चीन, ईरान और भारत में बड़े बड़े साम्राज्य स्थापित किए। भारत के मुगल सम्राट् इसी जाति के थे। २ इस जाति का मनुष्य।

मंच, मंचक—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाट। खटिया। २ छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३ ऊँचा बना हुआ मंडप जिसपर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय, जैसे, नाटक का रंगमंच।

मंछरⓅ—संज्ञा पुं० १ दे० "मत्सर"। २. दे० "मच्छर"।

मंछला—संज्ञा पुं० दे० "मत्स्य"। उ०—पार समंद में मंछला, केता बहि बहि जाँहि। —कबीर०।

मंजन—संज्ञा पुं० [सं० मज्जन] १ दाँत साफ करने का चूर्ण। २ स्नान।

मँजना—क्रि० अ० [हिं० माँजना] १ माँजा जाना। २ अभ्यास होना। मश्क होना।

मंजरित—वि० [सं० मंजरी] जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों या कोंपलों से युक्त।

मंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मंजरित] १ नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २ कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। ३ बेल। लता।

मँजाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मँजाना] मँजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मँजाना—क्रि० स० [हिं० माँजना] १ माँजने का काम दूसरे से कराना। २ दे० "माँजना"।

मँजार—संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।

मंजिल—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २ मकान का खंड। मरातिब।

मंजिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ।

मंजीर—संज्ञा पुं० [सं०] नूपुर। घुँघरू।

मंजु—वि० [सं०] [भाव० मंजुता] सुंदर। मनोहर।

मंजुघोष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य। मंजुश्री।

मंजुल—वि० [सं०] [स्त्री० मंजुला, भाव० मंजुलता] सुंदर। मनोहर।

मंजुश्री—संज्ञा पुं० दे० "मंजुघोष"।

मंजूर—वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।

मंजूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मंजूर+हिं० ई (प्रत्य०)] मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।

मंजूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २ पिंजड़ा।

मंझ—वि० [सं० मंद] मंद। मूढ़। अज्ञानी। उ०—कबीर लहरि समंद की मोती बिखरे आइ। बगुला मंझ न जानई, हंस चुणे चुण खाइ।—कबीर०।

मंझाⓅ†—वि० [सं० मध्य] मध्य का।

संज्ञा पुं० [सं० मंच] पलंग। खाट।

संज्ञा पुं० दे० "माँझा"।

मँझार†—क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।

मँझियार†—वि० [सं० मध्य] बीच का।

मंड—संज्ञा पुं० [सं०] भात का पानी। माँड़।

मँड़ई—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] झोंपड़ी।

मंडन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शृंगार करना। सजाना। सँवारना। उ०—मंडन सदरसन हँसी सघट्टन सुभ धर्म। मान प्रवर्जन पत्रिकादान सखिन के कर्म।—शृंगार०। २ प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना। 'खंडन' का उलटा।

मंडनाⓅ—क्रि० स० [सं० मंडन] १ भूषित करना। शृंगार करना। २ युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३ भरना। ४ रचना। बनाना।

क्रि० स० [मर्दन] दलित करना।

मंडप—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० मंडपिका, मंडपी] १ विश्रामस्थान। २ बारहदरी। ३ किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। ४ देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। ५ चँदोवा। शामियाना।

मंडरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मंडल"।

मँडरना—क्रि० अ० [सं० मंडल] मंडल बाँधकर छा जाना। चारों ओर से घेर लेना।

मँडराना—क्रि० अ० [सं० मंडल] १ किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। परिक्रमण करना। २ किसी के आसपास ही घूम फिरकर रहना।

मंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १. परिधि। चक्कर। गोलाई। वृत्त। २ गोल फैलाव। गोला। ३ चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। परिवेश। ४ क्षितिज। ५ समाज। समूह। समुदाय। ६ ग्रह के घूमने की कक्षा। ७ ऋग्वेद के १० मुख्य विभागों में से कोई। ८ किसी राज्य के उन बारह मित्र राज्यों का समूह जिनसे उसका राजनीतिक संबंध बना हो।

मंडलाकार—वि० [सं०] गोल।

मँडलाना—क्रि० अ० दे० "मँडराना"।

मंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] समूह। समाज।

संज्ञा पुं० [सं० मंडलिन्] १ वट-वृक्ष। २ बिल्ली। बिड़ाल। ३ सूर्य।

मंडलीक—संज्ञा पुं० [सं० मांडलिक] सामंत राजा।

मंडलेश्वर—संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"।

मँड़वा—संज्ञा पुं० [सं० मंडप] मंडप।

मँड़ार†—संज्ञा पुं० [सं० मंडल] झाबा। टलिया।

मंडित—वि० [सं०] १ सजाया हुआ। २ छाया हुआ। ३ भरा हुआ।

मंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] बहुत भारी बाजार जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों। बड़ा हाट।

मंडीआⓅ—वि० दे० "मंडित"।

मंडील—संज्ञा पुं० दे० "मंदील"।

मँडुआ—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का कदन्न।

मंडूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेंढक। २ एक ऋषि। ३ दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।

मंडूर—संज्ञा पुं० [सं०] लोहकीट। गलाए हुए लोहे की मैल। सिंघान।

मँडैयाⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मँड़ई"।

मंतⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० मंत्र] १ सलाह। २ मंत्र। उ०—रस उतरा विष चढ़ि रहा, ना ओहि तंत न मंत। —पदमावत।

यौ०—तंत मंत = उद्योग। प्रयत्न।

मंतव्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचार। मत।

मंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोप्य या रहस्य-

पूर्ण बात। सलाह। परामर्श। २ देवाधि-साधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो। ३. वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है। संहिता। ४ तंत्र में वे शब्द या वाक्य जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिये करने का विधान है।

यौ०—मंत्रयंत्र या यंत्रमंत्र=जादू-टोना।

मंत्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रगृह—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रणा करने का स्थान।

मंत्रणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परामर्श। सलाह। मशविरा। २ कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

मंत्रपूत—वि० [सं०] मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। जिसपर मंत्र पढ़कर फूँका गया हो।

मंत्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्रविद्या। भोजविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र।

मंत्रसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

मंत्रिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मंत्रणा देने-वाली स्त्री।

मंत्रित—वि० [सं०] मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

मंत्रिता—संज्ञा स्त्री० दे० "मंत्रित्व"।

मंत्रित्व—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्री का कार्य या पद। मंत्रिता। मंत्रीपन।

मंत्री—संज्ञा पुं० [सं० मंत्रिन्] [स्त्री० मंत्रिणी] १ परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २ सचिव। अमात्य। ३ किसी राज्य के शासन के विविध विभागों में से किसी एक या अधिक का शासक।

मंत्रेला†—संज्ञा पुं० [सं० मंत्र+हिं० एला (प्रत्य०)] मंत्रतंत्र जाननेवाला।

मंथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथना। बिलोना। २ हिलाना। ३ मर्दन। मलना। ४ मारना। ध्वस्त करना। ५ मथानी।

मंथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथना। बिलोना। २ तत्व के लिये किसी विषय पर बार बार मनन करना। ३ मथानी।

मंथर—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० मंथरता] १ मथानी। २ एक प्रकार का ज्वर। मंथज्वर।

वि० १. मट्ठर। मंद। सुस्त। २. जड़। मंदबुद्धि। ३ भारी। ४. नीच।

मंथरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोध्या के राजा दशरथ की रानी कैकेयी की एक दासी जिसके बहकाने पर कैकेयी ने रामचंद्र को वनवास और भरत को राज्य देने के लिये दशरथ से हठ किया था।

मंथान—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण होते हैं। उ०—वाणी कही मान। कीन्ही न सो कान। यद्यपि आनीन। रे बंदिकानीन॥ २ मथानी।

मंद—वि० [सं०] १ धीमा। सुस्त। २ ढीला। शिथिल। ३ आलसी। ४ मूर्ख। कुबुद्धि। ५ खल। दुष्ट। ६ बुरा। खराब। निंद्य। उ०—सुभग पर्संसद कत्व मधु दुज्जन बोलइ मंद।

मंदग—वि० [सं०] धीरे धीरे चलनेवाला।

मंदभाग्य—वि० [सं०] दुर्भाग्य। अभाग्य।

मंदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २ मंदार। ३ स्वर्ग। ४ दर्पण। आईना। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण होता है। उ०—मावत। मंदर॥ राजत। कंदर॥ ६ पहाड़। उ०—ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं। —भूषण०।

वि० मंद। धीमा।

संज्ञा पुं० [सं० मंदिर] मकान। महल। उ०—ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन-वारी ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं। —भूषण०।

मंदरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] मंदराचल।

मँदरा—वि० [सं० मंदर] नाटा। ठिगना।

संज्ञा पुं० [सं० मंडल] एक प्रकार का बाजा।

मंदा—वि० [सं० मंद] [स्त्री० मंदी] १. धीमा। २ जिसका दाम थोड़ा हो। सस्ता। ३ खराब। निकृष्ट। ४ ढीला। शिथिल।

मंदाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणा-नुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २ आकाशगंगा। ३ एक नदी जो चित्रकूट के पास है। पयस्विनी। ४ बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और दो रगण होते हैं। उ०—कृत जहँ सियराम, वासा फनी। जग महँ महिमा जु, सोहै घनी॥ इसे चंचलाचिका भी कहते हैं।

मंदाक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण, तगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—मोरी भक्ती, सुलभ तिहिंको, शुद्ध है बुद्धि जाकी। मंदाक्रांता, करत मुहिं को, धन्य है प्रीति ताकी।

मंदाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता। बदहजमी। अपच।

मंदार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग का एक देववृक्ष। २ आक। मदार। ३ स्वर्ग। ४ हाथी। ५ मंदराचल पर्वत।

मंदारमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

मंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वासस्थान। २ घर। मकान। ३ देवालय।

मंदिलⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "मंदिर।

मंदिलरा—संज्ञा पुं० दे० "मंदिर"।

मंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मंद] भाव का उतरना। महँगी का उलटा। सस्ती।

मंदील—संज्ञा पुं० [सं० मुंड ?] एक प्रकार का कामदार साफा।

मंदोदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रावण की पटरानी का नाम। यह मय की कन्या थी।

मँदोवैⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।

मंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंभीर ध्वनि। २ संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक।

वि० १ मनोहर। सुंदर। २ प्रसन्न। ३ गंभीर। ४. धीमा (शब्द आदि)।

मंशा—संज्ञा स्त्री० [अ० मि० सं० मनस्] १ इच्छा। चाहना। अभिरुचि। २ आशय। अभिप्राय। मतलब।

मंसब—संज्ञा पुं० [अ०] १ पद। स्थान। पदवी। २ काम। कर्तव्य। ३ अधिकार।

मंसबदार—संज्ञा पुं० [अ०+फा०] बादशाही जमाने के एक प्रकार के अधिकारी।

मंसा—संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा"।

मंसूख—वि० [अ०] खारिज किया हुआ। काटा हुआ। रद्द।

मंसूबा—संज्ञा पुं० दे० "मनसूबा"।

मँहगा—वि० दे० "महँगा"।

म—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. चंद्रमा। ३ ब्रह्मा। ४ यम। ५ मधुसूदन।

मई†—सर्व० दे० "मैं"।
मइका‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
मइमंत(पु)—वि० दे० "मैमंत"।
मइया—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृका] माँ। माता। उ०—भूखे आहि बलि गई मइया। घर चलिहै मेरो भलो कन्हइया।—नंददास०।
मकई†—संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार"। (अन्न)।
मकड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० मकड़ी] बड़ी मकड़ी।
मकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०मर्कटक] आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसकी सैकड़ों हजारों जातियाँ होती हैं।
मकतब—संज्ञा पुं० [अ०] छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मदरसा।
मकदूर—संज्ञा पुं० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।
मकना—संज्ञा पुं० दे० "मकुना"।
मकनातीस—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मकनातीसी] चुंबक पत्थर।
मकफूल—वि० [अ०] [भा० मकफूलियत] रेहन या बंधक रखा हुआ।
मकबरा—संज्ञा पुं० [अ०] वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो। रौजा। मजार।
मकबूल—वि० [अ०] १ जो कबूल किया गया हो। २ प्रिय।
मकरंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ७ जगण और अंत्य यगण कुल २४ वर्ण होते हैं। उ०—जु लोक यथामति वेद पढ़ें सह आगम औ दश आठ प्रमाने। बनै महि में शुक शारद शेष गणेश महा बुधिमत सगाने॥ माधवी। मंजरी। बाम। ३ फूल का केसर।
मकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। २ बारह राशियों में से दसवीं राशि। ३ फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह। ५ माघ मास। ६. मछली। उ०—श्रुतिमंडल कुंडल विवि मकर सुविलसत सदन सदाई।—सूर०। ७ छप्पय के उनतालीसवें भेद का नाम। ८ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ९ मकर की आकृति का कान का आभूषण।
संज्ञा पुं० [फा०] १. छल। कपट। फरेब। धोखा। २ नखरा।
मकरकुंडल—संज्ञा पुं० [सं०] मगर के आकार का कुंडल।
मकरकेतन, मकरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
मकरतार—संज्ञा पुं० [हिं० मुक्कैश] बादले का तार।
मकरध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। २ रससिंदूर। चंद्रोदय रस। ३. लौंग।
मकर संक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।
मकरा—संज्ञा पुं० [सं० वरक] मड़ुवा नामक अन्न।
संज्ञा पुं० [हिं० मकड़ा] एक प्रकार का कीड़ा।
मकराकृत—वि० [सं०] मकर या मछली के आकारवाला।
मकराक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] खर का पुत्र और रावण का भतीजा।
मकराज(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मिकराज"।
मकरालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
मकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मगर की मादा।
मकसद—संज्ञा पुं० [अ०] अभिप्राय। उद्देश्य।
मकान—संज्ञा पुं० [फा०] १ गृह। घर। २. निवासस्थान। रहने की जगह।
मकुंद—संज्ञा पुं० दे० "मुकुंद"।
मकु—अव्य० [सं० म] १ चाहे। उ०—मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमद भरतहिं भाई॥—मानस। २ बल्कि। उ०—पाउँ छुवइ मकु पावउँ एहि मिस लहरइ देहु।—पदमावत। ३ कदाचित्। क्या जानें। शायद। उ०—मकु यह खोज होइ निसि आई। तुरइ रोग हरि माँथइ जाई॥—पदमावत।
मकुना—संज्ञा पुं० [सं० मत्कुण या मत्कुण] वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।
मकुनी, मकुनी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। बेसनी रोटी।
मकूला—संज्ञा पुं० [अ०] १ कहावत। २ उक्ति। कथन।
मकोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मकोय] जंगली मकोय।
मकोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० कीड़ा का अनु०] कोई छोटा कीड़ा।
मकोय—संज्ञा स्त्री० [सं० काकमाता] १. एक क्षुप जो दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे छोटे फल लगते हैं। २ इस क्षुप का फल। ३ एक कँटीला पौधा या उसका फल। रसभरी।
मकोरना(पु)†—क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।
मक्का—संज्ञा पुं० [अ०] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थस्थान है।
संज्ञा पुं० [देश०] ज्वार। मकई।
मक्कार—वि० [अ०] [संज्ञा मक्कारी] फरेबी। कपटी। छली।
मक्खन—संज्ञा पुं० [सं० म्रक्षण] दूध का सार भाग जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और तपाने से घी हो जाता है। नवनीत। नैनूँ।
मुहा०—कलेजे पर मक्खन मला जाना = शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता होना।
मक्खी—संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १. एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है। मक्षिका।
मुहा०—जीती मक्खी निगलना = १ जान बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य करना जिसके कारण पीछे से हानि हो। दूध की मक्खी या माखी = एकदम त्याज्य। उ०—रेख खँचाइ कहउँ बलु भाखी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी।—मानस। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना = किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना = बिलकुल निकम्मा रहना।
२ मधुमक्खी। मुमाखी। ३ बंदूक के अगले भाग पर वह उभरा हुआ अंश जिससे निशाना साधा जाता है।
मक्खीचूस—संज्ञा पुं० [हिं० मक्खी + चूसना] बहुत अधिक कृपण। भारी कंजूस।
मक्र—संज्ञा पुं० [अ०] १ छल। धोखा। कपट। २ पाखंड। उ०—ऐसा मालूम हो रहा था कि वह मक्र किए पड़ी है, और देख रही है कि राजा साहब क्या करते हैं।—कायाकल्प।
मक्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मक्खी।
मख—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

मखजन—संज्ञा पुं० [अ०] खजाना। भंडार।

मखतूल—संज्ञा पुं० [सं० महातूल] काला रेशम।

मखतूली—वि० [हिं० मखतूल+ई (प्रत्य०)] काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मखदूम—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह जिसकी खिदमत या सेवा की जाय। मालिक। स्वामी। २ एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी या फकीर।

मखन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

मखनियां†—संज्ञा पुं० [हिं० मक्खन+इया (प्रत्य०)] मक्खन बनाने या बेचनेवाला।

वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखमल—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मखमली] एक प्रकार का बढ़िया, रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखलूक—संज्ञा स्त्री० [अ०] सृष्टि के प्राणी और जीव आदि।

मखशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञशाला।

मखाना—संज्ञा पुं० [सं० मखान्न] दे० "तालमखाना"।

मखी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

मखोना†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

मखौल—संज्ञा पुं० [देश०] हँसी। ठट्ठा।

मखौलिया—वि० [हिं० मखौल + इया (प्रत्य०)] दिल्लगीबाज।

मग—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता। राह।

संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। २ मगध देश। मगह।

मगज—संज्ञा पुं० [अ० मग्ज] १ दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—मगज खाना या चाटना = बकवाद तग करना। मगज खाली करना या पचाना = बहुत अधिक दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।

२ गिरी। मींगी। गूदा।

मगजपच्ची—संज्ञा स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] किसी काम के लिये बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।

मगजी—संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

मगण—संज्ञा पुं० [सं०] कविता के आठ गणों में से एक शुभ गण जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं। इसका देवता पृथ्वी है। इसे लक्ष्मीप्रद माना जाता है। २०—आमोदी, चालाकी, दीवानी आदि।

मगद, मगदल—संज्ञा पुं० [सं० मुग्द] मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।

मगदा—वि० [सं० मग+दा (प्रत्य०)] मार्गप्रदर्शक। रास्ता दिखलानेवाला।

मगदूर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मकदूर"।

मगध—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। कीकट। २ वंदीजन।

मगन—वि० [सं० मग्न] १. डूबा हुआ। समाया हुआ। २ प्रसन्न। ३ लीन।

मगना(पु)†—क्रि० अ० [सं० मग्न] १ लीन होना। तन्मय होना। २ डूबना।

मगर—संज्ञा पुं० [सं० मकर] १ घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु। २ मीन। मछली।

संज्ञा पुं० [सं० मग] अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है।

अव्य० लेकिन। परंतु। पर।

मगरमच्छ—संज्ञा पुं० [हिं० मगर+मच्छ] १ मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। २ बड़ी मछली।

मगरिब—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मगरिबी] पश्चिम दिशा।

मगरूर—वि० [अ०] घमंडी। अभिमानी।

मगरूरि(पु)—वि० स्त्री० [अ० मगरूर] गर्वीली। उ०—भूषित सभु स्वयंभु सिर, जिन्हके पग की धूरि। हठ करि पाँव भँवावती, तिन्हसों तिय मगरूरि।—छंदार्णव।

मगरूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मगरूर+ई (प्रत्य०)] घमंड। अभिमान।

मगह†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

मगहपति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासंध।

मगहय(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

मगहर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

मगही—वि० [सं० मगह+ई (प्रत्य०)] १ मगध संबंधी। मगध देश का। २ मगह में उत्पन्न।

मगु, मग्ग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।

मग्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १ मस्तिष्क। दिमाग। भेजा। २. गिरी। मींगी। गूदा।

मग्न—वि० [सं०] [स्त्री० मग्ना] १. डूबा हुआ। निमज्जित। २. तन्मय। लीन। लिप्त। ३ प्रसन्न। हर्षित। खुश। ४ नशे आदि में चूर।

मघवा—संज्ञा पुं० [सं० मघवन्] इंद्र।

मघवाप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रप्रस्थ।

मघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

मघोनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मघवन्] इंद्राणी।

मघौना—संज्ञा पुं० [सं० मेघ+वर्ण] नीले रंग का कपड़ा। उ०—चिकवा चीर मघौना लोने। मोति लाग औ छापे सोने।—पद्मावत।

मचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० मचकना] दबाव।

मचकना—क्रि० स० [मच मच से अनु०] किसी पदार्थ को इस प्रकार जोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले।

क्रि० अ० इस प्रकार दबना जिसमें मच मच शब्द हो। झटके से हिलना।

मचका—संज्ञा पुं० [हिं० मचकना] [स्त्री० मचकी] १ धक्का। २ झोंका। ३ पेंग।

मचना—क्रि० अ० [अनु०] १ किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोरगुल हो। २ छा जाना। फैलना।

क्रि० अ० दे० "मचकना"।

मचमचाना—क्रि० स० [अनु०] इस प्रकार दबाना कि मच मच शब्द हो।

मचलना—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा मचल] किसी चीज के लिये जिद बाँधना। हठ करना। अड़ना।

मचला—वि० [हिं० मचलना मि० पं० मचला] १ मचलनेवाला। २ जो बोलने के अवसर पर जान बूझकर चुप रहे।

मचलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √मचल+आई (प्रत्य०)] मचलने की क्रिया या भाव।

मचलाना—क्रि० अ० [अनु०] कै मालूम होना। जी मतलाना। ओकाई आना।

क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।

(पु)†क्रि० अ० दे० "मचलना"।

मचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मचलना] दे० "मिचली"।

मचान—संज्ञा स्त्री० [सं० मच+हिं० आन (प्रत्य०)] १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिसपर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २ मंच। कोई ऊँची बैठक।

मचाना—क्रि० स० [हिं० मचना का स० रूप] कोई ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो।

मचिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० मंचिका] छोटी चारपाई। पलँगड़ी। पीढ़ी। बैठने की चीज।

मचिलईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० मचलना] १. मचलने का भाव। २ मचलापन।

मच्छ—संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य, प्रा० मच्छ] १ बड़ी मछली। २. दोहे का सोलहवाँ भेद।

मच्छड़, मच्छर—संज्ञा पुं० [सं० मत्सर ?] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा। इसकी मादा काटती और डंक से रक्त चूसती है।

मच्छरताⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० मत्सर+ता (प्रत्य०)] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।

मच्छरदानी—संज्ञा स्त्री० दे० "मसहरी"।

मच्छी—संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।

मच्छोदरीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्योदरी] व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती।

मछरंगा—संज्ञा पुं० [हिं० मच्छ] एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिड़िया।

मछली—संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्य] १ जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं। मीन। २ मछली के आकार का कोई पदार्थ।

मछुआ, मछुवा—संज्ञा पुं० [हिं० मच्छ+उआ (प्रत्य०)] मछली मारनेवाला। मल्लाह।

मजकूर—वि० [अ०] जिसका जिक्र हुआ हो। उक्त।

संज्ञा पुं० लिखित विवरण।

मजकूरी—संज्ञा पुं० [फा०] समन तामील करनेवाला चपरासी।

मजदूर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १ बोझ ढोनेवाला। मजूरा। कुली। मोटिया। २ कल कारखानों में छोटा मोटा काम करनेवाला आदमी।

मजदूरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मजदूर का काम। २ बोझ ढोने या और कोई छोटा मोटा काम करने का पुरस्कार। ३ परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन। उजरत। पारिश्रमिक।

मजनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० मज्जन] १ डूबना। निमज्जित होना। २. अनुरक्त होना।

मजनूँ—संज्ञा पुं० [अ०] १ पागल। सिड़ी। बावला। २ अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला नाम की एक काली-कलूटी कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था। ३ आशिक। प्रेमी। आसक्त। ४ एक प्रकार का वृक्ष। बेद-मजनूँ।

मजबूत—वि० [अ०] [संज्ञा मजबूती] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २ बलवान्। सबल।

मजबूर—वि० [अ०] विवश। लाचार।

मजबूरन—क्रि० वि० [अ०] लाचारी की हालत में।

मजबूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मजबूर+ई (प्रत्य०)] असमर्थता। लाचारी। बेबसी।

मजमा—संज्ञा पुं० [अ०, मिलाइए वै० मज्मन] बहुत से लोगों का जमाव। भीड़। जमघट।

मजमूआ—संज्ञा पुं० [अ०] बहुत सी चीजों का समूह। संग्रह।

वि० एकत्र किया हुआ।

मजमूई—वि० [अ०] सामूहिक।

मजमून—संज्ञा पुं० [अ०] १ विषय, जिसपर कुछ कहा या लिखा जाय। २ लेख।

मजल†—संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।

मजलिस—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मजलिसी] १ सभा। समाज। जलसा। २ महफिल। नाचरंग का स्थान।

मजलूम—वि० [अ०] जिसपर जुल्म हो। सताया हुआ। पीड़ित।

मजहब—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मजहबी] धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।

मजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ स्वाद। लज्जत।

मुहा०—मजा चखाना = किए हुए अपराध का दंड देना।

२ आनंद। सुख। ३ दिल्लगी। हँसी।

मुहा०—मजा आ जाना = परिहास का साधन प्रस्तुत होना। दिल्लगी का सामान होना।

मजाक—संज्ञा पुं० [अ०] हँसी। ठट्ठा।

मजाकन—क्रि० वि० [अ०] मजाक या हँसी में।

मजाकिया—वि० [अ०] १ मजाक संबंधी। २ हँसोड़। ठठोल।

क्रि० वि० दे० "मजाकन"।

मजाज—संज्ञा पुं० [अ०] नियमानुसार मिला हुआ अधिकार।

मजाजी—वि० [अ०] १ नकली। २. सांसारिक। लौकिक।

मजार—संज्ञा पुं० [अ०] १ समाधि। मकबरा। २ कब्र।

संज्ञा पुं० [सं० मार्जार] बिलाव। बिल्ला। उ०—निरह मयूर, नाग वह नारी। तू मजार करु बेगि गोहारी। —पद्मावत।

मजारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मजार+ई (प्रत्य०)] बिल्ली। उ०—मजारी चखी मुक्ख जनुक लारी। —पृ० रासो।

मजाल—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सामर्थ्य। शक्ति। २ साहस। हिम्मत।

मजिलⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।

मजीठ—संज्ञा स्त्री० [सं० मंजिष्ठा] एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डठलों से लाल रंग निकलता है।

मजीठी—संज्ञा पुं० [हिं० मजीठ] मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।

मजीरⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० मंजरी] घौद। उ०—करि कुंभ कुंजर विटप भारी चमर चारु मजीर। चमू चंचल चलत नाहिंन रही है पुर तीर॥ —सूर०।

मजीरा—संज्ञा पुं० [सं० मंजीर] बजाने के लिये काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी। ताल।

मजूरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० मयूर] मोर।

संज्ञा पुं० दे० "मजदूर"।

मजूरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "मजदूरी"।

मजेजⓅ†—वि० [फा० मिजाज] अहंकार।

मजेदार—वि० [फा०] १ स्वादिष्ट। जायकेदार। २ अच्छा। बढ़िया। ३ जिसमें आनंद आता हो।

मज्जाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जा"।

मज्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मज्जित] स्नान। नहाना।

मज्जनाⓅ—क्रि० अ० [सं० मज्जन] १ गोता लगाना। नहाना। २. डूबना।

मज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नली की हड्डी के भीतर का गुदा।

मज्झ, मझ(पु)—क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच।

मझधार—संज्ञा स्त्री० [हिं० मझ+धार] १ नदी के मध्य की धारा। २ किसी काम का मध्य।

मझला—वि० [सं० मध्य] बीच का।

मझाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० मज्झ] प्रविष्ट करना। बीच में धँसाना।

क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।

मझार(पु)†—क्रि० वि० [हिं० मज्झ+आर (प्रत्य०)] बीच में। उ०—सुंदरि दिया बुझाइकै, सोवति सौध मझार। सुनत बाँसुरी कान्ह की, कढ़ी तोरिकै द्वार। —काव्यनिर्णय।

मझावना(पु)†—क्रि० अ०, स० दे० "मझाना"।

मझियाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० माझी से ना० धा०] नाव खेना। मल्लाही करना।

क्रि० अ० [हिं० मज्झ से ना० धा०] बीच से होकर निकलना।

मझियारा(पु)†—वि० [हिं० मज्झ+इयारा (प्रत्य०)] बीच का।

मझीला(पु)—वि० दे० "मझोला"।

मझु(पु)—सर्व० [सं० 'अस्मद्' का संबंध कारक एक व० 'मह्यम्'] १ मैं। २. मेरा। उ०§—सुअण पससइ कव्व मझु। दुज्जन बोलइ मंद।

मझोला—वि० [हिं० मझ+ओला (प्रत्य०)] १ मझला। बीच का। मध्य का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।

मझोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मझोला] एक प्रकार की बैलगाड़ी।

मटा†—संज्ञा पुं० [हिं० मटका] मटका। मटकी।

मटक—संज्ञा स्त्री० [सं०√मट्=चलना+क (प्रत्य०)] १ गति। चाल। २ मटकने की क्रिया या भाव।

मटकना—क्रि० अ० [सं०√मट्=चलना] १ अंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना। २ अंगों का इस प्रकार संचालन जिसमें कुछ लचक या नखरा जान पड़े। ३ हटना। लौटना। फिरना। ४ विचलित होना। हिलना।

मटकनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकना] १ दे० "मटक"। २. नाचना। नृत्य। ३ नखरा। मटक।

मटका—संज्ञा पुं० [हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०)] मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट। माट।

मटकाना—क्रि० स० [हिं० मटकना का स० रूप] नखरे के साथ अंगों का संचालन करना। चमकाना।

क्रि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।

मटकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका।

संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकने या मटकाने का भाव। मटक।

मटकीला—वि० [हिं० मटक+ईला (प्रत्य०)] मटकनेवाला। नखरे से हिलने डोलनेवाला।

मटकौअल—संज्ञा स्त्री० [हिं० मटक+औअल (प्रत्य०)] मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।

मटमैला—वि० [हिं० मिट्टी+मैल] मिट्टी के रंग का। खाकी। धूलिया।

मटर—संज्ञा पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी या छीबी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।

मटरगश्त—संज्ञा पुं० [हिं० मट्ठर=मंद+फा० गश्त] १ टहलना। २ सैरसपाटा।

मटिआना†—क्रि० स० [हिं० मिट्टी से ना० धा०] १ मिट्टी लगाकर माँजना। २. मिट्टी से ढाँकना।

मटियामसान—वि० [हिं० मटिया+मसान] गया बीता। नष्टप्राय।

मटियामेट—वि० दे० "मलियामेट"।

मटियाला, मटीला—वि० दे० "मटमैला"।

मटुक†—संज्ञा पु० दे० "मुकुट"।

मटुका—संज्ञा पुं० दे० "मटका"।

मटुकी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

मट्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।

मट्ठर†—वि० [सं० मठर ?] सुस्त। काहिल।

मट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० मंथन] मथा हुआ दही जिसमें से नैनूँ निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।

मट्ठी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

मठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ निवास स्थान। रहने की जगह। २ वह मकान जिसमें साधु आदि रहते हों। ३ देवालय। मंदिर। उ०—मठ विश्वनाथ को न वास ग्राम गोकुल को देवी को न देहरा न मंदिर गोपाल को। —भूषण०।

मठधारी—संज्ञा पुं० [सं० मठधारिन्] वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।

मठरी—संज्ञा स्त्री० दे० "मट्ठी"।

मठा—संज्ञा पुं० दे० "मट्ठा"।

मठाधीश—संज्ञा पुं० दे० "मठधारी"।

मठिया—संज्ञा स्त्री० [सं० मठिका] छोटी कुटी या मठ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ।

मठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ+ई (प्रत्य०)] १ छोटा मठ। २ मठ का महंत। मठधारी।

मठोठा†—संज्ञा पुं० [देश०] कुएँ की जगत।

मठोर—संज्ञा स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडपी] १ छोटा मंडप। २. कुटिया। पर्णशाला। उ०—प्रेम उमंडि रहे रसमंडित अंतर की मड़ई मिलि दोऊ। —शृंगार०।

मड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।

मड़वा—संज्ञा पुं० दे० "मंडप"।

मड़हट(पु)—संज्ञा पु० दे० "मरघट"। उ०—कबीर मरि मड़हट गया, तब कोई न बूझै सार। हरि आदर आगै लिया, ज्यूँ गउ बछ की लार। —कबीर०।

मड़ाड़†—संज्ञा पुं० [मंडार ?] छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।

मड़ुआ—संज्ञा पुं० [देश०] बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।

मड़ैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मड़ई"।

मढ़—वि० [हिं० मट्ठर] अड़कर बैठनेवाला।

संज्ञा पुं० [मठ] १ देवालय। मंदिर। उ०—एहि विधि खेलति सिंघलरानी। महादेव मढ़ जाइ तुलानी। २ घर। झोपड़ी। निवासस्थल। उ०—चंदि गढ़ मढ़ दृढ़ कोट के कँगूरे कोपि नेकु धका दैहैं ढैहैं ढेलन की ढेरी सी। —कविता०।

मढ़ना—क्रि० स० [सं० मंडन] १ आवेष्टित करना। चारों ओर लपेटना या चिपकाना। २ बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। ३ पुस्तकों आदि पर जिल्द आदि चढ़ाना। ४ मंदिर, मूर्ति, सींग, चोंच आदि

पर कोई धातु जड़ना। उ०—दूध भात की दोनी दैहौं सोने चोंच मढ़ैहौं। —गीता०। ५ किसी वस्तु का मुँह या छिद्र बंद करना। उ०—चित्र के नयन अरु गढ़े मे चरन कर, मढ़े से स्रवन नहिं सुनति पुकारे। —गीता०। ६. छिपना। समाना। उ०—कंचुकिहूँ में नहीं मढ़ती बढ़ती कुच की अब तौं भई दोगुनी। —शृंगारनिर्णय। ७ किसी के गले लगाना। थोपना।

†क्रि० अ० आरंभ होना। मचना।

मढ़वाना—क्रि० स० [हिं० मढ़ना का प्रे० रूप] मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√मढ़+आई (प्रत्य०)] मढ़ने का भाव, काम या मजदूरी।

मढ़ाना—क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।

मढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मढ़] १ छोटा मठ। २ कुटी। झोपड़ी। ३ छोटा घर।

मणि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

मणिगुण—संज्ञा पुं० [स०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और अंत्य सगण होता है। उ०—नचहु सुखद, यसुमति सुत सहिता। लहहु जनम, इह सखि सुख अमिता। इसमे छठे वर्ण पर यति होती है। शशिकला। शरभ। स्रक। चंद्रावती।

मणिगुणनिकर—संज्ञा पुं० [स०] मणिगुण नामक छंद का वह भेद जिसमें आठवें वर्ण पर यति हो।

मणिधर—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

मणिपुर—संज्ञा पुं० [स०] एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है (तंत्र)।

मणिमध्या—संज्ञा पुं० [सं०] १ नवाक्षरी वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण और सगण हो। उ०—भाम सुपूजा कारज जू। प्रात गई सीता सरजू॥ इसे मणिबंध और मणिमध्य भी कहते हैं। २ कलाई। गट्टा।

मणिमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बारह अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण यगण, तगण और यगण होते हैं। उ०—छाँड़ो सब जेने, हैं रे जगजाला। फेरौ हरि के नामों की मणिमाला॥ २ मणियों की माला।

मणी—संज्ञा पुं० [स० मणिन्] सर्प।

संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"।

मतंग, मतंगज—संज्ञा पुं० [स०] १ हाथी। २. बादल। ३ एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे।

मतंगी—संज्ञा पुं० [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार।

मत—संज्ञा पुं० [स०] १ निश्चित सिद्धांत। समति। राय।

मुहा०Ⓟ—मत उपाना = समति स्थिर करना। उ०—करुना लखि करुनानिधान ने मन यह मती उपायो।

२ धर्म। पथ। मजहब। सप्रदाय। ३ भाव। आशय। ४ चुनावों में प्रकट की जानेवाली इच्छा या राय (राजनीति)।

क्रि० वि० [सं० मा] न। नहीं (निषेध)।

वि० [सं० मत्त] दे० "मत्त"। उ०—जस कोउ मदिरा मत भस आही। तामैं भूत लगैं पुनि ताही।—नंददास०।

मतदान—संज्ञा पुं० [स० मत+दान] राजनीतिक या अन्य चुनावों में किसी पद के उम्मेदवारों में से किसी को विधिपूर्वक चुनने की क्रिया।

मतपत्र—संज्ञा पुं० [सं० मत+पत्र] वह कागज का टुकड़ा जिसके द्वारा मत प्रकट किया जाय।

मतनाⓅ—क्रि० अ० [सं० मत से हिं० ना० धा०] समति निश्चित करना। उ०—विनय करहिं जेते गढ़पती। का जिउ कीन्ह कौन मति मती।—पदमावत।

क्रि० अ० [सं० मत्त] मत्त होना।

मतभिन्नता—संज्ञा स्त्री० दे० "मतभेद"।

मतभेद—संज्ञा पुं० [सं०] दो व्यक्तियों या पक्षों के मत न मिलना।

मतरिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।

Ⓟवि० [सं० मंत्र] १ मंत्री। सलाहकार। २ मंत्र से प्रभावित। मंत्रित।

मतरुफ—संज्ञा पुं० [अ० मुतरिब] गवैया। गानेवाला। उ०—मत भए मतरुफ गावइ।

मतलब—संज्ञा पुं० [अ०] १ तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। २ अर्थ। मानी। ३ अपना हित। स्वार्थ। ४ उद्देश्य। विचार। ५ संबंध। वास्ता।

मतलबी—वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।

मतली—संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली"।

मतवार, मतवाराⓅ—वि० दे० "मतवाला"।

मतवाला—वि० पुं० [सं० मत्त+हिं० वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १ नशे आदि के कारण मस्त। मदमस्त। २. उन्मत्त। पागल।

संज्ञा पुं० १ वह भारी पत्थर जो किले या पहाड़ पर से नीचे के शत्रुओं को मारने के लिये लुढ़काया जाता है। २ एक प्रकार का गावदुमा खिलौना जिसके नीचे का भाग मिट्टी आदि भरी रहने से भारी होता है और जमीन पर सदा खड़ा ही रहता है।

मता†—संज्ञा पुं० दे० "मत"।

संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मताधिकार—संज्ञा पुं० [स०] मत या वोट देने का अधिकार।

मतानुयायी—संज्ञा पुं० [स०] किसी के मत को माननेवाला। मतावलंबी।

मतारी†—संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"।

मतावलंबी—संज्ञा पुं० [सं० मतावलंबिन्] किसी एक मत या सप्रदाय का अवलंबन करनेवाला।

मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। समझ। अक्ल। २ राय। सलाह। संमति।

Ⓟ†क्रि० वि० दे० "मत"।

अव्य० [स० मत] समान। सदृश।

मतिभ्रंसक—वि० [सं० मतिभ्रंशक] बुद्धिनाशक। उ०—मतिभ्रंसक सब धर्म विधंसक। निरदै महाबिरथ पशुहिंसक।—नंददास०।

मतिमत—वि० [स० मतिमत् के कर्ता बहु० मतिमत से] बुद्धिमान्। विचारशील। चतुर।

मतिमान—वि० [सं०] बुद्धिमान्।

मतिमाहⓅ—वि० दे० "मतिमान"।

मती—संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

क्रि० वि० दे० "मति"।

मतीरा—संज्ञा पुं० [स० मेट] तरबूज। कलिंदा।

मतीस—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

मतेईⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] विमाता। उ०—तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी, काय मन बानी हूँ न जानी कै मतेई है।—कविता०।

मतौ—संज्ञा पुं० [स० मत] परामर्श। उ०—मतौ कियौ मिलि इनहूँ कितहूँ भेद बतायौ।—नंददास०।

मत्कुण—संज्ञा पुं० [सं०] खटमल।

मत्त—वि० [सं०] १ मस्त। २ मतवाला। ३ उन्मत्त। पागल। ४ प्रसन्न। खुश।

(पु)†संज्ञा स्त्री० [सं० मात्रा] मात्रा। उ०—जानै गनागन की फ़ल मत्त बरन्न पथारनि कों करि जानै। —छदार्णव।

मत्तकाशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी स्त्री। उ०—श्यामा महिला भामिनी मत्तकाशिनी जान। —नंददास।

मत्तगयंद—संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं। आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाय चराय बिसारौं। मालती। इदव।

मत्तता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन।

मत्तताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मत्तता"।

मत्तमयूर—संज्ञा पुं० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, तगण, यगण, सगण और अंत में एक गुरु वर्ण होता है। उ०—माता ! यासों गा कछु जोगी छल कीन्हें। रोवै कान्हा, मानत री ना कछु दीन्हें॥ इसे माया भी कहते हैं।

मत्तमातंगलीलाकर—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ या अधिक रगण हों, जैसे—रानि ! धीरै धरौ आजु मार्‌यो खरो कंस को मत्तमातंग लीला।

मत्तसमक—संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई छंद का एक भेद जिसकी नवीं मात्रा लघु होती है। उ०—नित्य भजिय तजि मन कुटिलाई। राम भजे किहिं गति नहिं पाई॥

मत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दस अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, सगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—मत्ता है कै, हरि रस सानी। धावैं वसी, सुनत सयानी॥ २ मदिरा। शराब।

प्रत्य० भाववाचक प्रत्यय। पन, जैसे-बुद्धिमत्ता। नीतिमत्ता।

(पु)†संज्ञा स्त्री० दे० "मात्रा"।

मत्ताक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेईस अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण, एक तगण, चार नगण और अंत में क्रम से लघु गुरु होता है। उ०—यों रानी माधो की बानी, सुनत वह, निपट असत कहत री। ला जौरी ना मत्ता क्रीड़ा, गुरुजन सन, महत गत भय सिगरी॥

मत्था†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"।

मत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] १. डाह। हसद। जलन। २ क्रोध। गुस्सा।

मत्सरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाह। हसद।

मत्सरी—संज्ञा पुं० [सं० मत्सरिन्] मत्सरपूर्ण व्यक्ति।

मत्स्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मछली। २ प्राचीन विराट् देश का नाम। ३ छप्पय छंद के २३वें भेद का नाम। ४. विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।

मत्स्यगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।

मत्स्यपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अट्ठारह पुराणों में से एक।

मत्स्यावतार—संज्ञा पुं० दे० "मत्स्य" (४)।

मत्स्येंद्रनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध साधु और हठयोगी जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मथन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मथित] १ मथने का भाव या क्रिया। बिलोना। २ एक अस्त्र।

वि० मारनेवाला। नाशक।

मथना—क्रि० स० [सं० मथन] १. तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना। बिलोना। रिड़कना। उ०—का भा जोग कहानी कथें। निकसै घीव न बिनु दधि मथें। —पद्मावत। २ चलाकर मिलाना। उ०—मथि मृग मलय कपूर सबन के तिलक किए। कर मणिमाला पहिराए सबन विचित्र ठए॥ —सूर०। ३ अस्त व्यस्त करना। गड्डबड्ड करना। ४ नष्ट करना। ध्वंस करना। उ०—सेन सहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि। कस रे सठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुत मारि॥ —मानस। ५ घूम घूमकर पता लगाना। ६ किसी कार्य को बहुत अधिक बार करना।

संज्ञा पुं० मथानी। रई। उ०—काँवरि, मथना, माँट, अगनित गने न जात हैं। —नंददास०।

मथनियाँ(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी"।

मथनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] १ वह मटका जिसमें दही मथा जाता है। २ दे० "मथानी"। ३ मथने की क्रिया।

मथवाह(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० माथा+वाह (प्रत्य०)] महावत।

मथानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] काठ का एक प्रकार का दंड जिससे मथकर दही से मक्खन निकाला जाता है। उ०—मुदिता मथै विचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी॥ —मानस।

मुहा०—मथानी पड़ना या बहना = खलबली मचना।

मथाव—संज्ञा पुं० [हिं० √मथ+आव (प्रत्य०)] मथने की क्रिया या भाव।

मथित—वि० [सं०] मथा हुआ।

मथी—संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।

मथुरा—संज्ञा संज्ञा [सं० मधुपुर = मथुरा] पुराणानुसार सात मोक्ष देनेवाली पुरियों में से एक पुरी जो ब्रज में यमुना के किनारे पर है।

मथुरिया—वि० [सं० मथुरा+हिं० इया (प्रत्य०)] मथुरा से संबंध रखनेवाला। मथुरा का।

मथूल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मस्तूल"।

मथौरा—संज्ञा पुं० [हिं० मथना] एक प्रकार का भद्दा रंदा।

मथ्था†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"।

मदंध(पु)—वि० दे० "मदांध"। उ०—देखत मदंध दसकंध अधधुंध दल, बंधु सों बलकि बोल्यो राजाराम बरिबंड।—काव्यनिर्णय।

मद—संज्ञा पुं० [सं०] १ हर्ष। आनंद। २ वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है। दान। ३ वीर्य। ४ कस्तूरी। ५ मद्य। ६ मतवालापन। नशा। ७ उन्मत्तता। पागलपन। ८ गर्व। अहंकार। घमंड।

वि० मत्त। मतवाला। मस्त।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विभाग। सीगा। सरिश्ता। २ खाता।

मदक—संज्ञा स्त्री० [हिं० मद] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत से बनता है। इसे चिलम पर रखकर पीते हैं।

मदकची—वि० [हिं० मदक+ची (तु० प्रत्य०)] जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।

मदकल—वि० [सं०] मत्त। मतवाला।

मदगल—वि० [सं० मदकल] मत्त। मस्त।

संज्ञा पुं० दे० "मगदल"।

मदजल—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का मद।

मदद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सहायता। सहारा। २ मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं।

मददगार—वि० [फा०] मदद करनेवाला।

मदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। २. कामक्रीडा। ३ कामशास्त्र में वर्णित आलिंगन का एक ढंग। ४. मैनफल। ५ भ्रमर। ६ मैना पक्षी। सारिका। ७ प्रेम। ८. रूपमाला ८ जिसके प्रत्येक चरण में कुल २४ मात्राएँ होते हैं। इसमें १४वीं मात्रा पर यति और अंत में गुरु लघु का क्रम होता है। उ०—जातु हौं बन बादिही गल, बाँधिके बहु तंत्र। धामही किन जपत कामद, रामनाम सुमंत्र॥ ९ छप्पय का एक भेद।

मदनकदन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

मदनगोपाल—संज्ञा पुं० [हिं० मदन+गोपाल] श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।

मदनफल—संज्ञा पुं० [सं०] मैनफल।

मदनबान—संज्ञा पुं० [सं० मदन+बाण] एक प्रकार का बेला (फूल)।

मदनमनोरमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार सवैया का एक भेद। दुर्मिल।

मदनमनोहर—संज्ञा पुं० [सं०] दंडक का एक भेद। मनहर।

मदनमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल्लिका वृत्त का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण और अंत में गुरु लघु हो। उ०—रोज गौ लिए प्रभात। कानने गुपाल जात। ग्वाल चारि संगे धारि। मल्लिका रचैं सुधारि॥ इसे समानी छंद भी कहते हैं।

मदनमस्त—संज्ञा पुं० [सं० मदन+हिं० मस्त] चंपे की जाति एक प्रकार का फूल।

मदन महोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था।

मदनमोदक—संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद। सुंदरी (केशव)।

मदनमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र।

मदनललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण, मगण, नगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—वे बोले री, मदनललिता। खासी पतिरता। पैहै साँची, हरिकर सुतै, प्रद्युम्न भरता॥

मदनहरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चालीस मात्राओं का एक छंद जिसके आदि की दो मात्राएँ लघु और अंत की एक मात्रा गुरु होती है। उ०—अति कांति सदन, मुख, होतहिं सन्मुख, दास हिये सुख भूरि भरै, दुख दूरि करै। मदनहर। मदनगृह।

मदनोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] मदन महोत्सव।

मदमत्त—वि० [सं०] मस्त। मतवाला।

मदरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० मर्दल] मँडराना। आक्रमण। उ०—मज पर मदर करत हैं काम"। कहियो पथिक जाइ श्याम सों राखहिं आइ आपनो धाम।—सूर०।

मदरसा—संज्ञा पुं० [अ०] पाठशाला।

मदलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण सगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—मोसी गोप किशोरी। पैहौ ना हरि जोरी॥

मदांध—वि० [सं०] मदमत्त। मदोन्मत्त।

मदाखिलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दखल देना। २ दखल जमाना।

मदानिⓅ—वि० [सं० म=सुख+दानी] मंगलकारक।

मदार—संज्ञा पुं० [सं० मंदार] आक।

मदारी—संज्ञा पुं० [अ० मदार] १ बंदर, भालू नचानेवाले और लाग के तमाशे दिखानेवाले व्यक्ति। मदारिया। कलंदर। २ बाजीगर।

मदालसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विश्वावसु गंधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था। राजा शत्रुजित के पुत्र ऋतुध्वज ने इसे ब्याहा था। छल से मदालसा की मृत्यु पर ऋतुध्वज सदा चिंतित और शोकमग्न रहने लगा। उसकी यह दशा दूर करने के लिये उसके दो मित्रों ने अपने पिता नागराज अश्वतर को प्रेरित किया। नागराज ने शिव जी की तपस्या कर मदालसा के समान पुत्री पैदा करके ऋतुध्वज को प्रदान किया। यह मदालसा बड़ी विदुषी और ब्रह्मवादिनी थी (मार्कंडेयपुराण)।

मदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "मादा"।

मदिर—वि० [सं०] १ मत्तता उत्पन्न करनेवाला। मस्त करनेवाला। २ नशीला।

मदिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शराब। दारू। मद्य। २ बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—रावण की उतरी मदिरा चुपचाप पयान जु लंक कियो। राम वरी सिय मोदभरी नभ में सुर जै जयकार कियो॥ मालिनी। उमा। दिवा।

मदिराभ—वि० [सं०] १. मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २ मस्त। मतवाला।

मदिरालय—संज्ञा पुं० [सं० मदिरा+आलय] शराब की दूकान। कलवरिया।

मदिरालस—संज्ञा पुं० [सं० मदिरा+आलस] मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य। खुमारी।

मदीय—वि० [सं०] [स्त्री० मदीया] मेरा।

मदीला—वि० [हिं० मद] नशीला।

मदीयून—वि० [अ०] कर्जदार। ऋणी।

मदुकल—संज्ञा पुं० [?] दोहे का एक भेद।

मदोद्धत, मदोन्मत्त—वि० [सं०] मद में पागल। मदांध।

मदोवैⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मदोदरी"।

मद्दतⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ० मदद] सहायता।

संज्ञा स्त्री० [अ० मद] प्रशंसा। तारीफ।

मद्धिमⓅ†—वि० [सं०] १ मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २ मंदा।

मद्धे—अव्य० [सं० मध्ये] १ बीच में। में। २. विषय में। बाबत। संबंध में। ३. लेखे में। बाबत।

मद्य—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा। शराब।

मद्यप—वि० [सं०] मद पीनेवाला। शराबी।

मद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। २ पुराणानुसार रावी और झेलम नदियों के बीच का देश।

मध, मधिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मध्य"।

अव्य० [सं० मध्य] में। उ०—सहस अली लिएँ संग सुंदरी। उडुगन मधि राजत ज्यों चंदरी।—नंददास०।

मधिमⓅ—वि० दे० "मध्यम"।

मधु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शहद। २ मदिरा। शराब। ३ फूल का रस। मकरंद। ४ वसंत ऋतु। ५ चैत्रमास। ६ पानी। जल। ७ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। ८ दो लघु अक्षरों का एक छंद। ९ शिव। महादेव। १० मुलेठी। ११ अमृत।

वि० [सं०] १ मीठा। २ स्वादिष्ट।

मधुकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] कोयल।
मधुक—संज्ञा पुं० [सं०] महुआ।
मधुकर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मधुकरी] भौंरा। भ्रमर।
मधुकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० मधुकर] वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो। मधूकरी।
मधुकैटभ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था।
मधुकोष, मधुचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
मधुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ भौंरा। २ उद्धव।
मधुपति—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधुपर्क—संज्ञा पुं० [सं०] दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा नगरी।
मधुप्रमेह—संज्ञा पुं० दे० "मधुमेह"।
मधुवन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रज का एक वन।
मधुमार—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।
मधुमक्खी—संज्ञा स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है। मुमाखी।
मधुमक्षिका—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
मधुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक गुरु का एक वर्णवृत्त।
मधुमती भूमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग की एक अवस्था। तन्मयता।
मधुमाधवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वासंती या माधवी लता। २ एक प्रकार की रागिनी।
मधुमालती—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालती लता।
मधुमेह—संज्ञा पुं० [सं०] प्रमेह का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है।
मधुयष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुलेठी।
मधुर—वि० [सं०] १ जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २ जो सुनने में भला जान पड़े। ३ सुंदर। मनोरंजक। ४ जो क्लेशप्रद न हो। हलका।
मधुरईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मधुर होने का भाव। २ मिठास। ३ सौंदर्य। सुंदरता। ४. सुकुमारता। कोमलता।
मधुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर। मदुरा। मदूरा। २ मथुरा नगर।
मधुराईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुराज—संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुरानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० मधुर से ना० धा०] १ मीठा होना। २ सुंदर होना।
मधुरान्न—संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।
मधुरिपु—संज्ञा पुं० दे० "मधुसूदन"।
मधुरिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० मधुरिमन्] १ मिठास। मीठापन। २ सुंदरता। सौंदर्य।
मधुरीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० माधुर्य] सौंदर्य। मिठास।
मधुलिह—संज्ञा पुं० [सं० मधुलिक्] भ्रमर। भौंरा। उ०—मीन कमल के ढिग ही रहै। रूप रंग रस मधुलिह लहै।—नंददास०।
मधुवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २ किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।
मधुवामन—संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शहद से बनाई हुई चीनी।
मधुसख—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
मधुसूदन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधूक—संज्ञा पुं० [सं०] महुआ।
मधूकरी—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।
मध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २ कमर। कटि। ३ सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ४ अंतर। भेद। फरक।
मध्यगत—वि० [सं०] बीच का।
मध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्य का भाव।
मध्यतापिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।
मध्य देश—संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य-पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।
मध्यम—वि० [सं०] न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। मध्य का। बीच का।
संज्ञा पुं० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २ वह उपपति जो नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रगट करे।
मध्यमपदलोपी—संज्ञा पुं० [सं० मध्यम-पदलोपिन्] वह समास जिसमें पहले पद से दूसरे पद का संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है। लुप्तपद समास (व्या०)।
मध्यम पुरुष—सं० पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे बात की जाय (व्या०)।
मध्यमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीच की उँगली। २ वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।
मध्य युग—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय। २ योरोप के इतिहास में ईसवी छठी शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक का समय।
मध्ययुगीन—वि० [सं०] मध्ययुग का।
मध्यवर्ती—वि० [सं०] बीच का।
मध्यस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीच में पड़कर विवाद मिटानेवाला। २ तटस्थ।
मध्यस्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।
मध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान हो। २ तीन अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मध्यान्ह—संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।
मध्याह्न—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक दोपहर।
मध्ये—क्रि० वि० दे० "मद्धे"।
मध्वाचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य और माध्व या मध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्तक जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।
मन पूत—वि० [सं०] १ मनचाहा। २ मन को प्रसन्न करनेवाला।
मन शिल—संज्ञा पुं० [सं०] मैनसिल।
मन—संज्ञा पुं० [सं० मनस्] १ प्राणियों में वह शक्ति जिसमें उनमें वेदना, संकल्प, इच्छा और विचार आदि होते हैं। अंतःकरण। चित्त। २ अंतःकरण की चार वृत्तियों में से एक जिससे संकल्प विकल्प होता है।
यौ०—मन मन=मन ही मन। उ०—प्रिय हँग सोवत सोय न जाई। मनमन इमि सोचै सुखदाई।—नंददास०।
मुहा०—किसी से मन अटकना या उलझना=प्रीति होना। प्रेम होना।

मन टूटना=साहस छूटना। हताश होना। मन बढ़ना=साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। किसी का मन बूझना=किसी के मन की थाह लेना। मन हरा होना=चित्त प्रसन्न रहना। मन के लड्डू खाना=व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना=इच्छा होना। प्रवृत्ति होना। किसी का मन टटोलना=किसी के मन की थाह लेना। मन डोलना। (१) मन का चंचल होना। (२) लालच उत्पन्न होना। लोभ आना। मन देना=(१) जी लगाना। मन लगाना। (२) ध्यान देना। किसी पर मन धरना=ध्यान देना। मन लगाना। मन तोड़ना या हारना=साहस छोड़ना। मन फेरना=मन को किसी ओर से हटाना। मन बढ़ाना=साहस दिलाना। उत्साह बढ़ाना। मन में बसना=पसंद आना। अच्छा लगना। रुचना। मन बहलाना=खिन्न या दुःखी चित्त को किसी काम में लगाकर आनंदित करना। मन भरना=(१) निश्चय या विश्वास होना। (२) संतोष होना। मन भर जाना=(१) अघा जाना। तृप्ति होना। (२) अधिक प्रवृत्ति न रह जाना। मन माना=भला लगना। पसंद होना। रुचना। मन मानना=(१) संतोष होना। तसल्ली होना। (२) निश्चय होना। प्रतीत होना। (३) अच्छा लगना। पसंद आना। (४) स्नेह होना। अनुराग होना। मन में रखना=(१) गुप्त रखना। प्रकट न करना। (२) स्मरण रखना। मन में लाना=विचार करना। सोचना। मन मिलना=दो मनुष्यों की प्रकृति या प्रवृत्तियों का अनुकूल अथवा एक समान होना। मन मारना=(१) खिन्नचित्त होना। उदास होना। (२) इच्छा को दबाना। मन मैला करना=अप्रसन्न या असंतुष्ट होना। मन मोटा होना=विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना=प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना=किसी की इच्छा पूरी करना। मन लगना=(१) जी लगना। तबीयत लगना। (२) चित्तविनोद होना। मन लाना=⑤(१) मन लगाना। जी लगाना। (२) प्रेम करना। आसक्त होना। मन से उतरना=(१) मन में आदरभाव न रह जाना। (२) याद न रहना। विस्मृत होना। मन ही मन=हृदय में। चुपचाप।

३ इच्छा। इरादा। विचार।

मुहा०—मनमाना=अपने मन के अनुसार। यथेच्छ।

⑤संज्ञा पुं० [सं० मणि] १. मणि। बहुमूल्य पत्थर। २ चालीस सेर की एक तौल।

मनई†—संज्ञा पुं० [सं० मानव] मनुष्य। आदमी।

मनकना—क्रि० अ० [अनु०] हिलना डोलना।

मनकरा⑤—वि० [हिं० मणि+कर] चमकदार।

मनका—संज्ञा पुं० [सं० मणिका] पत्थर, लकड़ी आदि का वेधा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया।

संज्ञा पुं० [सं० मन्यका] गरदन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती है।

मुहा०—मनका ढलना या ढलकना=मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना—संज्ञा स्त्री० [हिं० मन+सं० कामना] इच्छा।

मनकूला—वि० स्त्री० [अ०] स्थिर या स्थावर का उलटा। चर।

यौ०—जायदाद मनकूला = चर संपत्ति। गैर मनकूला=स्थिर। स्थायी। स्थावर।

मनगढ़ंत—वि० [हिं० मन+√गढ़+अंत (प्रत्य०)] जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोलकल्पित।

संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।

मनचला—वि० [हिं० मन+√चल+आ (प्रत्य०)] १ धीर। निडर। २ साहसी। ३ रसिक।

मनचाहा—वि० [हिं० मन+चाहना] इच्छित।

मनचीतना—क्रि० स० [हिं० मन+चीतना] मन को अच्छा लगना।

मनचीता—वि० [हिं० मन+चेतना] [स्त्री० मनचीती] मनचाहा। मन में सोचा हुआ। उ०—घर डर बिसरयौ बढ़यौ उछाह। मनचीते हरि पायो नाह। —सूर०।

मनजात—संज्ञा पुं० [हिं० मन+सं० जात] कामदेव।

मनन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिंतन। सोचना। २ भली भाँति अध्ययन करना।

मननशील—वि० [सं० मनन+शील] विचारशील। विचारवान्।

मननाना—क्रि० अ० [अनु०] गुंजारना।

मनवांछित—वि० दे० "मनोवांछित"।

मनभाया—वि० [हिं० मन+भाना] [स्त्री० मनभाई] जो मन को भावे। मनोनुकूल।

मनभावता—वि० [हिं० मन+भाना] [स्त्री० मनभावती] १ जो भला लगता हो। २ प्रिय। प्यारा।

मनभावन—वि० [हिं० मन+भाना] मन को अच्छा लगनेवाला।

मनमत⑤†—वि० दे० "मैमत"।

मनमात—वि० [हिं० मन+मति] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मनमथ—संज्ञा पुं० दे० "मन्मथ"।

मनमानता—वि० दे० "मनमाना"।

मनमाना—वि० [हिं० मन+मानना] [स्त्री० मनमानी] १ जो मन को अच्छा लगे। २. मन के अनुकूल। पसंद। ३ यथेच्छ।

मनमुखी†—वि० [हिं० मन+सं० मुख] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मनमुटाव—संज्ञा पुं० [हिं० मन+मोटा] मन में भेद पड़ना। वैमनस्य होना।

मनमोदक—संज्ञा पुं० [हिं० मन+सं० मोदक] अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई हुई असंभव बात। मन का लड्डू।

मनमोहन—वि० [हिं० मन+सं० मोहन] [स्त्री० मनमोहिनी] १ मन को मोहनेवाला। चित्ताकर्षक। २ प्रिय। प्यारा।

संज्ञा पुं० १ श्रीकृष्ण। २. एक मात्रिक छंद।

मनमौजी—वि० [हिं० मन+मौज+ई (प्रत्य०)] मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला।

मनरंज⑤—वि० दे० "मनोरंजक"।

मनरंजन—वि०, संज्ञा पुं० दे० "मनो-रंजन"।

मनरोचन—वि० [हिं० मन+सं० रोचन] सुंदर।

मनरौन⑤—संज्ञा पुं० [सं० मनरमण] प्रियतम। उ०—मैंट्यो कहुँ मनरौन अली नहिं

री सखि राति की पौन सुहायो। —काव्य-निर्णय।

मनलाडू(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मनमोदक"।

मनवाना—क्रि० स० [हिं० मानना का प्रे० रूप] किसी को मनाने में प्रवृत्त करना।

क्रि० स० [हिं० मनाना] दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।

मनशा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। विचार। इरादा। २ तात्पर्य। मतलब।

मनसना(पु)—क्रि० स० [हिं० मानस से ना० धा० ?] १ इच्छा करना। इरादा करना। २ संकल्प करना। दृढ़ निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में जल लेकर संकल्प का मंत्र पढ़कर कोई चीज दान करना।

मनसब—संज्ञा पुं० [अ०] १ पद। स्थान। ओहदा। २. कर्म। काम। ३. अधिकार।

मनसबदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो किसी मनसब पर हो। ओहदेदार।

मनसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

संज्ञा स्त्री० [अ० मनशा] १ कामना। इच्छा। २. संकल्प। इरादा। ३ अभिलाषा। मनोरथ। ४ मन। ५ बुद्धि। ६ अभिप्राय। तात्पर्य।

वि० १ मन से उत्पन्न। २ मन का।

क्रि० वि० मन में से। मन के द्वारा।

मनसाकर—वि० [हिं० मनसा+√कर] मनोरथ पूरा करनेवाला।

मनसाना—क्रि० अ० [हिं० मनसा] उमंग में आना। तरंग में आना।

क्रि० स० [हिं० मनसना का प्रे० रूप] मनसने का काम दूसरे से कराना।

मनसायन†—वि० [हिं० मानस] १ वह स्थान जहाँ मनबहलाव के लिये कुछ लोग हों। २ मनोरम स्थान। गुलजार।

मनसिज—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

मनसूख—वि० [अ०] [संज्ञा मनसखी] १ जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो। प्रतिवर्तित। २ परित्यक्त। त्यागा हुआ।

मनसूबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ युक्ति। ढंग।

मुहा०—मनसूबा बाँधना = युक्ति सोचना।

२ इरादा। विचार।

मनस्क—संज्ञा पुं० [सं०] मन का अल्पार्थक रूप। इसका प्रयोग समस्त पदों में होता है, जैसे, अन्यमनस्क।

मनस्ताप—संज्ञा पुं० [सं०] १. मन पीड़ा। आंतरिक दुःख। २ पश्चात्ताप। पछतावा।

मनस्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।

मनस्वी—वि० [सं० मनस्विन्] [स्त्री० मनस्विनी] १ बुद्धिमान्। २ स्वेच्छाचारी।

मनहंस—संज्ञा पुं० [हिं० मन+सं० हंस] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मानसहंस।

मनहर—वि० दे० "मनोहर"।

संज्ञा पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।

मनहरण—संज्ञा पुं० [हिं० मन+हरण] १ मन हरने की क्रिया या भाव। २ पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। नलिनी। भ्रमरावली।

वि० मनोहर। सुंदर।

मनहार, मनहारि—वि० दे० "मनोहारी"।

मनहुँ(पु)—अव्य० [हिं० मानों] जैसे। यथा।

मनहूस—वि० [अ०] [भाव० मनहूसियत, मनहूसी] १ अशुभ। बुरा। २ अप्रियदर्शन। देखने में बेरौनक।

मना—वि० [अ०] १. जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। वर्जित। २ वारण किया हुआ। ३. अनुचित। नामुनासिब।

मनाक, मनाग—वि० [सं० मनाक] थोड़ा।

मनादी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुनादी"।

मनाना—क्रि० स० [हिं० मानना का प्रे० रूप] १ स्वीकार कराना। सकरवाना। २ रूठे हुए को प्रसन्न करना या करने का प्रयत्न करना। राजी करना। ३ देवता आदि से किसी काम के होने के लिये प्रार्थना करना। उ०—यह कहि कहि देवता मनावति। भोग सामग्री धरति उठावति। —सूर०। ४ प्रार्थना करना। स्तुति करना। उ०—करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्म *मुख पुनि पुनि देव मनाऊँ। जो तुम्हरे कर* सार न गहाऊँ गंगासुत न कहाऊँ। —सूर०।

मनावन†—संज्ञा पुं० [हिं० मनाना] रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम या भाव।

मनाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० मना] न करने की आज्ञा। रोक। अवरोध। निषेध।

मनिधर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मणिधर"।

मनिया—संज्ञा स्त्री० [सं० माणिक्य] १. *गुरिया। मनिका। दाना जो माला में* पिरोया हो। २ कंठी। माला। उ०—हौं करि रही कंठ में मनियाँ निर्गुन कहा *रसहि ते काज। सूरदास सरगुन मिलि* मोहन रोम रोम सुख साज। —सूर०।

मनियार†(पु)—वि० [हिं० मणि+आर (प्रत्य०)] १ उज्वल। चमकीला। २ दर्शनीय। शोभायुक्त। सुहावना।

संज्ञा पुं० दे० "मनिहार"।

मनियारा—*वि० [हिं० मनियार]* सुहावना। सुंदर। उ०—बरनौं काह देस मनियारा। जहँ अस नग उपना उजियारा। —पद्मावत।

मनिहार—संज्ञा पुं० [हिं० मणिकार] [स्त्री० मनिहारिन, मनिहारी] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।

मनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० मान] अहंकार।

संज्ञा स्त्री० १. दे० "मणि"। २. वीर्य।

मनीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धि।

मनीषि—वि० [सं०] १ पंडित। ज्ञानी। २ बुद्धिमान्। मेधावी। अक्लमंद।

मनु—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। यथा—स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इंद्र सावर्णि। २ विष्णु। ३ अंतःकरण। मन। ४. वैवस्वत मनु। ५ १४ की संख्या। ६ मनन।

(पु)अव्य० [हिं० मानना] मानों। जैसे। उ०—रतन जटित कंकण बाजूबंद नगन मुद्रिका सोहैं। डार डार मनु मदन विटप तरु विकच देखि मन मोहैं। —सूर०।

मनुआँ†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० मन+उआँ (प्रत्य०)] मन।

संज्ञा पुं० [हिं० मानव] मनुष्य।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास। नरमा।

मनुज—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मनुजता—संज्ञा स्त्री० दे० "मनुजत्व"।

मनुजत्व—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत।

मनुजाद—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य को खानेवाला। राक्षस। उ०—है नरसिंह महा मनुजाद हन्यो प्रह्लाद को संकट भारी।—काव्यनिर्णय।

मनुजोचित—वि० [सं०] जो मनुष्य के लिये उचित हो। मनुष्य के उपयुक्त।

मनुष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मनुष्य] १. मनुष्य। आदमी। २ पति। खाविंद।

मनुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धिबल की अधिकता के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। आदमी। नर।

मनुष्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मनुष्य का भाव। आदमीपन। २ दयाभाव। शील। ३ शिष्टता। तमीज।

मनुष्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यता।

मनुष्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] मर्त्यलोक।

मनुसाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मनुस+आई (प्रत्य०)] १. पुरुषार्थ। पराक्रम। बहादुरी। २ मनुष्यता। आदमीयत।

मनुस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो मनुप्रणीत है। मानव धर्मशास्त्र।

मनुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० मान+हिं० हरना] १ वह विनती जो किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिये की जाती है। मनौआ। खुशामद। उ०—तुम्हरे हेतु हरि लियो अवतार। अब तुम जाइ करो मनुहार।—सूर०। २. विनय। प्रार्थना। उ०—सबै करति मनुहारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवैं।—सूर०। ३ सत्कार। आदर। ४. शांति। तृप्ति।

मनुहारना(पु)†—क्रि० स० [हिं० मनुहार से ना० धा०] १ मनाना। खुशामद करना। २ विनय करना। प्रार्थना करना। ३ सत्कार करना। आदर करना।

मनौं†—अव्य० [हिं० मानना] मानो।

मनोकामना—संज्ञा स्त्री० [हिं० मन+सं० कामना] इच्छा। अभिलाषा।

मनोगत—वि० [सं०] जो मन में हो। दिली।

संज्ञा पुं० कामदेव। मदन।

मनोगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मन की गति। चित्तवृत्ति। २ इच्छा। ख्वाहिश।

मनोज—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन।

मनोजव—वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ वायु का एक पुत्र।

मनोज्ञ—वि० [सं०] [भाव० मनोज्ञता] मनोहर। सुंदर।

मनोदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] विवेक।

मनोनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] मन का निग्रह। मन को वश में रखना। मनोगुप्ति।

मनोनियोग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में मन लगाना।

मनोनीत—वि० [सं०] १ जो मन के अनुकूल हो। पसंद। २ चुना हुआ।

मनोभाव—संज्ञा पुं० [सं०] मन में उत्पन्न होनेवाला भाव।

मनोभिराम—वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

मनोभूत—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

मनोमय—वि० [सं०] १ मन से युक्त या पूर्ण। २ मानसिक। मन संबंधी।

मनोमय कोश—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती हैं (वेदांत)।

मनोमालिन्य—संज्ञा पुं० [सं०] मनमुटाव। रंजिश।

मनोयोग—संज्ञा पुं० [सं०] मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।

मनोरंजक—वि० [सं०] चित्त को प्रसन्न करनेवाला।

मनोरंजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मनोरंजक] मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। मनोविनोद। दिलबहलाव।

मनोरथ—संज्ञा पुं० [सं०] अभिलाषा।

मनोरम—वि० [सं०] [स्त्री० मनोरमा, भाव० मनोरमता] १ मनोहर। सुंदर। २ १४ मात्राओं का एक छंद जिसके आदि में दीर्घ और अंत में दीर्घ ह्रस्व, ह्रस्व या ह्रस्व, दीर्घ, दीर्घ होता है। उ०—कृष्ण गोसेवा करी नित। तादि सेवो जानिके हित। ३ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ मगण और दो लघु रहते हैं। उ०—ससि सीस लला अवलोक मनोरम। कमनीय कला छकि जात न को रम।

संज्ञा पुं० सखी छंद का एक भेद। इसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्राएँ होती हैं। इसके अंत में मगण या यगण रहता है। उ०—जानकीनाथै, भजो रे। और सब धंधा तजो रे। सार है जग में जु ये ही। को प्रभू सों जन सनेही।

मनोरमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोरोचन। २ सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ३ एक प्रकार का छंद। ४ चंद्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७ भेदों में से एक वर्णिक वृत्त। ५ दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, जगण, और अंत्य गुरु होता है। उ०—नर जु गावहीं, घरी घरी। सहित राधिका, हरी हरी। ६ केशव के अनुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में ४ सगण और अंत में २ लघु होते हैं। उ०—यह शासन पठये नृप कानन। ७ केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ भगण और २ गुरु होते हैं। ८ सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण और एक गुरु होता है। उ०—बीते कछु घोस ही में जहाँ।

मनोरा—संज्ञा पुं० [सं० मनोहर] दीवार पर गोबर से बनाए हुए चित्र जो दीवाली के पीछे बनाकर पूजे जाते हैं। झिंझिया।

यौ०—मनोरा झूमक=एक प्रकार का गीत।

मनोराज—संज्ञा पुं० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।

मनोवांछा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मनोवांछित] इच्छा। कामना।

मनोवांछित—वि० [सं०] इच्छित। मनमाँगा।

मनोविकार—संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है, जैसे—क्रोध, दया।

मनोविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।

मनोविश्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] इस बात का विश्लेषण या जाँच कि मनुष्य का मन किस समय किस प्रकार कार्य करता है।

मनोवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकार।

मनोवेग—संज्ञा पुं० [सं०] मनोविकार।

मनोवैज्ञानिक—वि० [सं०] मनोविज्ञान संबंधी।

मनोव्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] विचार।

मनोसर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मन] मनोविकार।

मनोहर—वि० [सं०] [संज्ञा मनोहरता] १ मन को आकर्षित करनेवाला। २ सुंदर।

संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद जिसके पहले ३ चरण १३, १३ के और अंतिम २८ मात्राओं का होता है, इस प्रकार कुल ६७ मात्राएँ होती हैं। उ०—कला तेरा भय चरणा, बहुरि सोरा रवि धरणा। मनोहर कुँवर कुँवरि हैं, बीसो बिसे जानकी लायक रामचंद्र ही वर हैं। कहीं कहीं १३, १३ मात्राओं के पाँच पद भी होते हैं। इसमें पहले पद का तुकांत दूसरे से और तीसरे का चौथे से मेल खाता है।

मनोहरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

मनोहरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मनोहरता"।

मनोहारी—वि० [स्त्री० मनोहारिणी, भाव० मनोहारिता] दे० "मनोहर"।

मनौती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मन्नत—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामनाविशेष की पूर्ति के लिये की जाती है। मानता। मनौती।

मुहा०—मन्नत उतारना या चढ़ाना = पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। मन्नत मानना = यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

मन्वंतर—संज्ञा पुं० [सं०] इकहत्तर चतुर्युगों का काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग।

मफरूर—वि० [अ०] [संज्ञा मफरूरी] भागा हुआ।

मम—सर्व० [सं० अहं का षष्ठी एकवचन रूप] मेरा या मेरी। उ०—महाराज तुम तो ही साध। मम कन्या ते भयो अपराध। —सूर०।

ममत—संज्ञा पुं० दे० "ममत्व"। उ०—रे पिय जहाँ ममत है तेरौ। यह लै अब का करिहै मेरौ। —नंददास०।

ममता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव। ममत्व। अपनापन। २ स्नेह। प्रेम। ३ वह स्नेह जो माता का पुत्र पर होता है। ४ मोह। लोभ।

ममत्व—संज्ञा पुं० दे० "ममता"।

ममरखी(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० मुबारक] बधाई।

ममाखी—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।

ममास(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मवास"।

ममिया—वि० [हिं० मामा] संबंध में मामा के स्थान का; जैसे—ममिया ससुर।

ममीरा—संज्ञा पुं० [अ० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की अपूर्व औषधि है।

ममोल—संज्ञा पुं० [?] खंजन। उ०—मैं मृग मीन ममोलन की छवि दास उन्हीं अँखियानि में देख्यो। —काव्यनिर्णय।

मम्म(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मर्म] मर्म।

मयंक—संज्ञा पुं० [सं० मृगांक] चंद्रमा।

मयंद—संज्ञा पुं० [सं० मृगेंद्र] सिंह। शेर।

मय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का नाम। २. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो बड़ा शिल्पी था। ३ अमेरिका देश के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन अधिवासी।

प्रत्य० [सं०] [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।

संज्ञा स्त्री०, अव्य० दे० "मैं"।

मयगल—संज्ञा पुं० [सं० मदकल] मस्त हाथी।

मयन—संज्ञा पुं० [सं० मदन] कामदेव।

मयमत, मयमत्त—वि० [सं० मदमत्त] मस्त। मदमत्त।

मयसुता—संज्ञा स्त्री० दे० "मदोदरी"।

मयस्सर—वि० [अ०] मिलता या मिला हुआ। प्राप्त। उपलब्ध। सुलभ।

मया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।

मयार—वि० [सं० माया] [स्त्री० मयारी] दयालु। कृपालु।

मयारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह डंडा या धरन जिसपर हिंडोले की रस्सी लटकती है।

मयारू—वि० [हिं० मयार] दयालु। उ०—रोवत बूढ़ि उठा ससारू। महादेव तब भएउ मयारू। —पदमावत।

मयूख—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। प्रकाश। ३ ज्वाला। ४ शंक्द। उ०—जो रस रूख मयूख पियूष सो हरि की बतियानि में देख्यो। —काव्यनिर्णय।

मयूखपी—वि० [सं० मयूख+पिब] किरणों को पीनेवाला। उ०—दिन परिहै चिनगी चुनें बिरह बिकलता जोर। पाइ पियूष मयूखपी पी भरि निसा चकोर। —रसमारांश।

मयूर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मयूरी] मोर।

मयूरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से ५ यगण के बाद मगण, यगण और भगण होता है।

मयूरसारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १० वर्णों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—है मयूरसारिणी कुवामा। त्यागिए न लेहु भूलि नामा॥

मरंद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मकरंद] मकरंद।

मरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरकना = दबाना] १. दबाकर संकेत करना। संकेत। इशारा। २ आकर्षण। खिंचाव। ३ दे० "मड़क"।

मरकज—वि० [अ०] [वि० मरकजी] केंद्र।

मरकट—संज्ञा पुं० दे० "मर्कट"।

मरकत—संज्ञा पुं० [सं०] पन्ना।

मरकना—क्रि० अ० [अनु०] १ दबाव के नीचे पड़कर टूटना। २ दे० "मुड़कना"।

मरकाना—क्रि० स० [हिं० मरकना] १. चूर करना। तोड़ना। २ दे० "मुड़काना"।

मरगज—वि० [हिं० मरगजा] मसला हुआ। मला दला। उ०—पुहुप सिंगार सँवार सब जोवन नवल बसंत। अरगज जिमि हिय लाइकै मरगज कीन्हेउ कंत। —पदमावत।

मरगजा(पु)†—वि० [हिं० √मल+√गींज] मला दला। मसला हुआ। गींजा हुआ। उ०—अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत ठाढ़े ठाढ़े हरि। —सूर०।

मरघट—संज्ञा पुं० [सं० मर+घट्ट] वह घाट या स्थान जहाँ मुर्दे फूँके जाते हैं। श्मशान।

मरज—संज्ञा पुं० [अ० मर्ज] १ रोग। बीमारी। २ बुरी लत। खराब आदत। कुटेव।

मरजाद, मरजादा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मर्यादा] १ सीमा। हद। उ०—सुंदरता

मरजाद भवानी। जाइ न कोटिन बदन बखानी॥ —मानस। २ प्रतिष्ठा। आदर। महत्व। उ०—यह जो अध बीस हू लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी। आइ श्रृगाल सिंह बलि माँगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी। —सूर०। ३ रीति। परिपाटी। नियम।

मरजिया—वि० [सं० मृत+जीवित] १ मरकर जीनेवाला। जो मरने से बचा हो। उ०—उस राजै रानी कंठ लाई। पिय मरजिया नारि जनु पाई॥ —पदमावत। २ जो मरने के समीप हो। मरणासन्न। उ०—पदमावति जो पावा पीऊ। जनु मरजिये परा तनु जीऊ॥ —पदमावत। ३ जो प्राण देने पर उतारू हो। ४ अधमरा। उ०—जहँ असं परी समुद नग दीया। तेहि किम जिया चहै मरजीया॥

संज्ञा पुं० समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला।

मरजी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ इच्छा। कामना। चाह। २ प्रसन्नता। खुशी। ३ आज्ञा। स्वीकृति।

मरजाया—वि०, संज्ञा पुं० दे० "मरजिया"।

मरजीवा—संज्ञा पुं० दे० "मरजिया"।

मरण—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

मरत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मृत्यु] मृत्यु।

मरतबा—संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। पदवी। २ बार। दफा।

मरद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मर्द"।

मरदई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मर्द+ई (प्रत्य०)] १ मनुष्यत्व। २ साहस। ३ वीरता।

मरदन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मर्दन"।

मरदना(पु)—क्रि० स० [सं० मर्दन] १ मसलना। मर्दन करना। मलना। २ ध्वस करना। ३ माँड़ना। गूँधना।

मरदनिया†—संज्ञा पुं० [हिं० मर्दना] शरीर में तेल मलनेवाला सेवक।

मरदानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वीरता। शूरता। शौर्य। २ साहस।

मरदाना—वि० [फा०] १ पुरुष सबधी। २ पुरुषों का सा। ३ वीरोचित।

मरदूद—वि० [अ०] १ तिरस्कृत। २ नीच।

मरना—क्रि० अ० [सं० मरण] १ प्राणियों या वनस्पतियों के शरीर में ऐसा विकार होना जिससे उनकी सब शारीरिक क्रियाएँ बंद हो जायँ। मृत्यु को प्राप्त होना। प्राणांत होना।

मुहा०—मरना जीना=शादी गमी। शुभाशुभ अवसर। सुख दु.ख।

२. बहुत अधिक कष्ट उठाना।

मुहा०—किसी पर मरना=लुब्ध होना। आसक्त होना। मर मिटना=(१) श्रम करते करते विनष्ट हो जाना। (२) किसी चीज की प्राप्ति के लिये बेहद परिश्रम करना। मरा जाना=व्याकुल होना। घबड़ाना।

३ मुरझाना। कुम्हलाना। सूखना। ४ लज्जा, सकोच आदि के कारण सिर न उठा सकना। ५. किसी काम का न रहना।

मुहा०—पानी मरना=(१) पानी का दीवार की नींव में सोखा जाना। (२) किसी के सिर कोई कलंक आना। (३) लज्जा का न रह जाना।

६ किसी वेग का शांत होना। दबना। ७ झनखना। पछताना। ८ हारना।

मरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरना] १. मृत्यु। मौत। २ वह कृत्य या शोक जो किसी के मरने पर उसके सबधियों का होता है। ३ कष्ट। हैरानी। उ०—सुनि जोगी कै अमर जो करनी। नेवरी बिथा बिरह कै मरनी। —पदमावत।

मरभुक्खा—वि० [हिं० √मर+भूखा] १. भुक्खड़। २ कगाल। दरिद्र।

मरम—संज्ञा पुं० दे० "मर्म"।

मरमर—संज्ञा पुं० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।

संज्ञा पुं० दे० "मर्मर"।

मरमराना—क्रि० अ० [अनु०] १ मरमर शब्द करना। २ अधिक दबाव पाकर लकड़ी आदि का मरमर शब्द करके दबना।

मरमी—वि० दे० "मर्मज्ञ"।

मरम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु के टूटे फूटे अंगों को ठीक करना। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार।

मरवाना—क्रि० स० [हिं० मारना का प्रे० रूप] किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना।

मरसा—संज्ञा पुं० [सं० मारिष] एक प्रकार का साग।

मरसिया—संज्ञा पुं० [अ०] १. उर्दू भाषा में शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु के सबध में बनाई जाती है। २ मरणशोक। रोना पीटना।

मरहट(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० मरघट] मसान।

(पु)†संज्ञा स्त्री० [देश०] मोठ।

मरहटा—संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र] १. मरहठा। २ उनतीस मात्राओं का एक मात्रिक छद जिसके अत में गुरु लघु का क्रम होता है और दसवीं तथा अठारहवीं मात्राओं पर यति और अत में विराम होता है। उ०—निरखत मदनहिं जिन, कदन कियो छिन, रतिहिं दियो वरदान। इसकी ११वीं और १९वीं मात्राओं पर यति रखने से मरहटा माधवी छद होता है। उ०—दम अवतारहिं धरे, अमय सुर करे, धरम किय थापना।

मरहठा—संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र], [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का रहनेवाला। महाराष्ट्र।

मरहठी—वि० [हिं० मरहठा] महाराष्ट्र या मरहठों से संबंध रखनेवाला। मरहठों का।

संज्ञा स्त्री० मरहठों की बोली। दे० "मराठी"।

मरहम—संज्ञा पुं० [अ०] ओषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता है।

मरहला—संज्ञा पुं० [अ०] १ टिकान। मंजिल। पड़ाव। २ मरातिब।

मुहा०—मरहला तय करना=झमेला निबटाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहूम—वि० [अ०] स्वर्गवासी। मृत।

मराठा—संज्ञा पुं० दे० "मरहठा"।

मरातिब—संज्ञा पुं० [अ०] १ दरजा। पद। २ उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। ३ मकान का खंड। तल्ला। ४ ध्वजा। झंडा।

मराना—क्रि० स० [हिं० मारना का प्रे० रूप] मारने के लिये प्रेरणा करना। मरवाना।

मरायल(पु)†—वि० [हिं० मार+आयल (प्रत्य०)] १ जो कई बार मार खा चुका हो। पीटा हुआ। २ नि सत्व। सत्वहीन। ३. निर्बल। निर्जीव।

संज्ञा पुं० घाटा। टोटा।

मराल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मराली] १. एक प्रकार का बत्तख। २. हंस। ३. घोड़ा। हाथी।

मरिंद(पु)—संज्ञा पुं० १. दे० "मलिंद"। २. दे० "मरंद"।

मरिच—संज्ञा पुं० [सं०] मिरिच। मिर्च।

मरियम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुमारी। २. ईसा मसीह की माता का नाम।

मरियल—वि० [हिं० √मर+इयल (प्रत्य०)] बहुत दुर्बल। कमजोर।

मरी—संज्ञा स्त्री० [सं० मारी] १. वह संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं। महामारी। २ शेर द्वारा मारा हुआ पशु या उसके बाँधने का स्थान।

मरीचि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि जिन्हें पुराणों में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियों में माना है। २ एक मरुत् का नाम। ३ एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किरण। २ प्रभा। कांति। ३ मरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृगतृष्णा। २ किरण।

मरीची—संज्ञा पुं० [सं० मरीचिन्] १ सूर्य। २ चंद्रमा।

मरीज—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मरीजी] रोगी। बीमार।

मरीना—संज्ञा पुं० [स्पेनी० मेरिनो] एक प्रकार का मुलायम पतला ऊनी कपड़ा।

मरु—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० मरुता] १ मरुस्थल। निर्जन स्थान। रेगिस्तान। २. मारवाड़ और उसके आसपास के प्रदेश का नाम।

मरुआ—संज्ञा पुं० [सं० मरुव] वनतुलसी या बबरी की जाति का एक पौधा।

संज्ञा पुं० [सं० मेरु] १ मकान की छाजन में सबसे ऊपर की बल्ली। बँडेर। २ वह लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है। उ०—कंचन के खंभ मयारि मरुआ डाँडी खचित हीरा बिच लाल प्रवाल। रेसम बुनाई नवरतन लाई पालनो लटकन बहुत पिरोजा लाल। —सूर०।

मरुत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देवगण का नाम। वेदों में इन्हें रुद्र और पृश्नि का पर पुराणों में कश्यप और दिति का पुत्र लिखा है। २. वायु। हवा। ३. प्राण। ४ दे० "मरुत्वान्"।

मरुतवान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मरुत्वान्"।

मरुत्वान्—संज्ञा पुं० [सं० मरुत्वत] १. इंद्र। २ देवताओं के एक गण जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। ३ हनुमान।

मरुथल—संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल"।

मरुद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] वह उपजाऊ और सजल हराभरा स्थान जो मरुस्थल में हो। नखलिस्तान।

मरुधर—संज्ञा पुं० [सं०] मारवाड़ देश। उ०—प्यासे दुपहर जेठ के फिरे सबै जलु सोधि। मरुधर पाइ मतीरु ही मारू कहत पयोधि। —बिहारी०।

मरुभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू का निर्जल मैदान। रेगिस्तान।

मरुरना(पु)—क्रि० अ० [हिं० मरोड़ना] 'मरोरना' का अकर्मक रूप। ऐंठना।

मरुस्थल—संज्ञा पुं० दे० "मरुभूमि"।

मरू(पु)—वि० [हिं० मरना] कठिन। दुरूह।

मुहा०—मरू करिके या मरू करि(पु) = ज्यों त्यों करके। बहुत मुश्किल से।

मरूरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मरोड़"।

मुहा०—मरूरा देना = बल देना। मरोड़ना। उ०—सुख के पवन परस्पर सुखवन् नाहे पानि पिय जूरो। बूझति जानि मन्मथ चिनगी फिरि मानो दियो मरूरो। —सूर०।

मरोड़—संज्ञा पुं० [हिं० मरोड़ना] १ मरोड़ने का भाव या क्रिया।

मुहा०—मरोड़ खाना = चक्कर खाना। मन में मरोड़ करना = कपट करना। मरोड़ की बात = घुमाव फिराव की बात।

२ घुमाव। ऐंठन। बल। ३ व्यथा। क्षोभ।

मुहा०—मरोड़ खाना = उलझन में पड़ना।

४ पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। ५ घमंड। गर्व। ६ क्रोध। गुस्सा।

मुहा०—मरोड़ गहना = क्रोध करना।

मरोड़ना—क्रि० स० [हिं० मोड़ना] १. बल डालना। ऐंठना।

मुहा०—अंग मरोड़ना = अँगड़ाई लेना। भौंह मरोड़ना या दृग (आदि) मरोड़ना = (१) आँख से इशारा करना या कनखी मारना। (२) नाक भौंह चढ़ाना। भौंह सिकोड़ना।

२. ऐंठकर नष्ट करना या मार डालना। ३ पीड़ा देना। दुःख देना। ४. मसलना।

मुहा०—हाथ मरोड़ना(पु) = पछताना।

मरोड़फली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़+फली] एक प्रकार की फली। मुर्रा। अवतरनी।

मरोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० मरोड़ना] १ ऐंठन। मरोड़। उमेठ। बल। २. पेट की वह पीड़ा जिसमें कुछ ऐंठन सी जान पड़ती हो।

मरोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] ऐंठन।

मुहा०—मरोड़ी करना = खींचातानी करना।

मरोरना—क्रि० स० [भाव० मरोर(पु)] दे० "मरोड़ना"।

मर्कट—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। बानर। २ मकड़ा। ३ दोहे के एक भेद का नाम। ४ छप्पय का आठवाँ भेद।

मर्कटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बानरी। बँदरी। २ मकड़ी। ३ छंद के नौ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।

मर्कत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मरकत"।

मर्तबान—संज्ञा पुं० [हिं० अमृतबान] रोगनी बर्तन जिसमें अचार, घी आदि रखा जाता है। अमृतबान।

मर्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य। २. भूलोक। ३ शरीर।

मर्त्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।

मर्द—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० मर्त और मर्त्य] १ मनुष्य। आदमी। २ साहसी पुरुष। पुरुषार्थी। ३ वीर पुरुष। योद्धा। ४ पुरुष। नर। ५ पति। भर्ता।

मर्दना(पु)—क्रि० स० [सं० मर्दन] १ मालिश करना। मलना। २ तोड़फोड़ डालना। ३. नाश करना। ४. कुचलना। रौंदना।

मर्दुम—संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्य। आदमी।

मर्दुमशुमारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। मनुष्यगणना। २ जनसंख्या। आबादी।

मर्दुमी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मरदानगी। पौरुष।

मर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। २ मसलना। हाथों से दबाना या रगड़ना। ३ तेल, उबटन आदि शरीर में लगाना। मलना। उ०—अंग अंग आभूषण साजति राजति अपने धाम। अति सुन्दर मर्दन अंग अंग ठनि वनि वनि भूषन मेषति।—सूर०। ४ द्वंद्व युद्ध में एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथों से घस्सा लगाना। घस्सा। ५ ध्वंस। नाश। ६ पीसना। घोटना। रगड़ना।

वि० [स्त्री० मर्दिनी] नाशक। संहार-कर्ता।

मर्दल—संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग की तरह का एक बाजा। इसका प्रचार बंगाल में है।

मर्दित—वि० [सं०] जो मर्दन किया गया हो।

मर्दूद—वि० दे० "मरदूद"।

मर्म—संज्ञा पुं० [सं० मर्मन्] १ स्वरूप। २ रहस्य। तत्व। भेद। ३ संधिस्थान। ४ प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।

मर्मज्ञ—वि० [सं०] [भाव० मर्मज्ञता] जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो। तत्वज्ञ। २. रहस्य जाननेवाला।

मर्मभेदक—वि० दे० "मर्मभेदी"।

मर्मभेदी—वि० [सं० मर्मभेदिन्] हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देने-वाला।

मर्मर—संज्ञा पुं० दे० "मरमर"।

संज्ञा पुं० [अनु०] पत्तों, डालियों आदि के हिलने से होनेवाली एक प्रकार की ध्वनि। उ०—यहाँ न पल्लव वन में मर्मर, यहाँ न मधु विहगों में गुंजन।—ग्राम्या।

मर्मरित—वि० [अनु० मर मर से] जिसमें मर मर शब्द होता हो।

मर्मवचन—संज्ञा पुं० [हिं० मर्म+सं० वचन] वह बात जिससे सुननेवाले को आंतरिक कष्ट हो।

मर्मवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] रहस्य की बात। भेद की या गूढ़ बात।

मर्मविद्—वि० [सं०] मर्मज्ञ।

मर्मस्पर्शी—वि० [सं० मर्मस्पर्शिन्] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी] [भाव० मर्मस्पर्शिता] मर्म पर प्रभाव डालनेवाला।

मर्मांतक—वि० [सं०] मन में चुभनेवाला। मर्मभेदक। हृदयस्पर्शी। उ०—मानव दुर्गति की गाथा से ओतप्रोत मर्मांतक। सदियों के अत्याचारों की सूची यह रोमांचक॥—ग्राम्या।

मर्मातिक—वि० दे० "मर्मांतक"।

मर्मी—वि० [हिं० मर्म] तत्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्याद—संज्ञा स्त्री० [सं० मर्यादा] १ दे० "मर्यादा"। २. रीति। रसम। प्रथा। ३ विवाह में बढ़हार। बढ़ार।

मर्यादा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीमा। हद। २. कूल। नदी का किनारा। ३ प्रतिज्ञा। मुआहिदा। करार। ४ नियम। ५ सदाचार। ६ मान। प्रतिष्ठा। ७ धर्म।

मर्यादित—वि० [सं०] १ जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। २ जो अपनी मर्यादा या सीमा के अंदर हो।

मर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्षणीय] १ क्षमा। माफी। २ रगड़। घर्षण।

वि० १ नाशक। २ दूर करनेवाली।

मलंग—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार के मुसलमान साधु। २ एक प्रकार का पक्षी।

मल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मैल। कीट। २ शरीर के अंगों से निकलनेवाली मैल या विकार। ३ विष्ठा। पुरीष। ४ दूषण। विकार। ५. पाप। ६ ऐब।

मलकना(पु)—क्रि० स० दे० "मचकना"।

क्रि० अ० दे० "मचकना"। उ०—झूमति चलि मदमत्त गयंद ज्यों, मलकन बाँह डुराइ।—नंददास०।

मलका—संज्ञा स्त्री० [अ० मलिक] बाद-शाह की पटरानी। महारानी।

मलकुलमौत—संज्ञा पुं० [अ०] जीवों के प्राण लेनेवाला देवदूत। यमराज।

मलखंभ—संज्ञा पुं० दे० "मलखम"।

मलखम—संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+हिं० खंभा] १ लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिसपर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते हैं। मालखम। २ वह कसरत जो मलखम पर की जाय।

मलखाना—संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+?] पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बसनेवाली राजपूतों की एक शाखा।

मलगजा(पु)—वि० [हिं० √मल+√गींज] मला दला हुआ। गींजा हुआ। मरगना।

संज्ञा पुं० बेसन में लपेटकर तेल या घी में तले हुए बैंगन के पतले टुकड़े।

मलगिरी—संज्ञा पुं० [हिं० मलयगिरि] एक प्रकार का हल्का कत्थई रंग।

मलता—वि० [हिं० मलना] घिसा हुआ (सिक्का)।

मलद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २. गुदा। पाखाने का स्थान।

मलना—क्रि० स० [सं० मलन] १ हाथ या किसी और चीज से दबाते हुए घिसना। मर्दन। मींजना। मसलना। उ०—हम उज्वल पख निर्मल अंग मलि मलि न्हाहिं। मुक्ति मुक्ता अवु के फल तिन्हें चुनि चुनि खाहिं।—सूर०।

मुहा०—दलना मलना=(१) चूर्ण करना। पीसकर टुकड़े टुकड़े करना (२) मसलना। घिसना। हाथ मलना=(३) पछताना। पश्चात्ताप करना। (४) क्रोध प्रकट करना।

२ मालिश करना। ३ मसलना। मींजना। ४ मरोड़ना। ऐंठना। ५ हाथ मे बार बार रगड़ना या दबाना।

मलवा—संज्ञा पुं० [हिं० मल ?] १ कूड़ा-करकट। कतवार। २ टूटी या गिराई हुई इमारत की ईंट, पत्थर और चूना आदि।

मलमल—संज्ञा स्त्री० [सं० मलमल्लक] एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।

मलमलाना—क्रि० स० [हिं० मलना] १. बार बार स्पर्श करना। २ बार बार खोलना और ढकना। ३ पुन पुन आलि-गन करना। उ०—नवल सुनि नवल पिया न्यौ नयो दरश दिखि तन मलमले प्राणपति पीय को अंग धरयो री। प्रीति की रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरी नैन चिबुक सी भोरा।—सूर०। ४ पश्चात्ताप करना।

मलमास—संज्ञा पुं० [सं०] वह अमान मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो। अधिक मास। पुरुषोत्तम। अधिमास।

मलय—संज्ञा पुं० [सं० मलय=पर्वत] १. पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व में है। २ मलाबार देश। ३ मलाबार देश के रहने-वाले मनुष्य। ४ सफेद चंदन। ५ नंदन वन। ६ छप्पय के एक भेद का नाम।

मलयगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है। २ मलय-गिरि में उत्पन्न चंदन। ३ हिमालय पर्वत का वह भाग जहाँ आसाम है।

मलयज—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।
वि० मलय पर्वत का।
मलयागिरि—संज्ञा पुं० दे० "मलयगिरि"।
मलयाचल—संज्ञा पुं० [सं०] मलय पर्वत।
मलयानिल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २. सुगंधित वायु। ३ वसंत काल की वायु।
मलयाली—वि० [ता० मलयालम] मलाबार देश का। मलाबार देश संबंधी।
संज्ञा स्त्री० मलाबार देश की भाषा।
मलयुग—संज्ञा पुं० दे० "कलियुग"।
मलराना(पु)—क्रि० स० दे० "मल्हाना"।
मलरुचि—वि० [सं०] दूषित रुचि का। पापी।
मलवाना—क्रि० स० [हिं० मलना का प्रे० रूप] मलने का काम दूसरे से कराना।
मलहम—संज्ञा पुं० दे० "मरहम"।
मलाई—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग। दूध की साढ़ी। २. सार। तत्व। रस।
संज्ञा स्त्री० [हिं० √मल+आई (प्रत्य०)] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मलाट—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा घटिया कागज जिसमें चीजें लपेटी जाती हैं।
मलान(पु)—वि० दे० "म्लान"।
मलानि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।
मलामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लानत। फटकार। दुतकार।
यौ०—लानत मलामत।
२ निकृष्ट या खराब अंश। गदगी।
मलार—संज्ञा पुं० [सं० मल्लार] एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।
मुहा०—मलार गाना=बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषत गाना।
मलाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। रंज। २. उदासीनता। उदासी।
मलाह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मल्लाह"।
मलिंग—संज्ञा पुं० दे० "मलंग"।
मलिंद—संज्ञा पुं० [सं० मिलिंद] भौंरा। उ०—छाक्यो महा मकरंद मलिंद खरयो किधौ मंजुल कंज किनारे।—शृंगार०।
मलिक—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मलिका] १ राजा। २. अधीश्वर।
मलिछ, मलिच्छ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मलिन—वि० [सं०] [स्त्री० मलिना, मलिनी] १. मलयुक्त। मैला। गँदला। २ दूषित। खराब। ३ मटमैला। धूमिल। बदरंग। उ०—मलिन भये रस माल सरोवर मुनिजन मानस हंस।—सूर०। ४. पापात्मा। पापी। ५ धीमा। फीका। ६ म्लान। उदासीन।
संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं।
मलिनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैलापन।
मलिनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलिनाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० मलिन] मैला होना।
मलिनी—वि० स्त्री० [सं० मलिन] मैली। गंदी। उ०—जीवननाथ सरूप लख्यो यह मैं मलिनी निज आँखिन धोइकै।—शृंगार०।
मलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० मल्लिका] १ तंग मुँह का मिट्टी का एक बर्तन। घेरा। २ चक्कर।
मलियामेट—संज्ञा पुं० [हिं० मलिया+मिटाना] सत्यानाश। तहस नहस।
मलीदा—संज्ञा पुं० [फा०] १. चूरमा। २ एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।
मलीन—वि० [सं० मलिन] १ मैला। अस्वच्छ। २ उदास। उ०—अति मलीन वृषभानु कुमारी। हरिश्रम जल अंतर तनु भींजे ता लालच न धुवावति सारी।—सूर०।
मलीनता—संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलूक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "अमलूक"।
वि० [देश०] सुंदर। मनोहर।
मलेच्छ—संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।
मलेरिया—संज्ञा पुं० [अं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।
मलै—संज्ञा पुं० [सं० मलय] मलय। चंदन। उ०—भावती भौन भयौ ससि सूर मलै विष ज्यों सर सेज सुहाई।—रससारांश।
मलैज—संज्ञा पुं० [सं० मलयज] चंदन। उ०—सीस जलायो मलैनहु तें यहि भीखमु जोन्ह न जान चलो।—काव्यनिर्णय।
मलोल—संज्ञा पुं० दे० "मलोला"।
मलोलना—क्रि० अ० [हिं० मलोला से ना० धा०] १. मन का दुखी होना। २. पछताना।
मलोला—संज्ञा पुं० [अ० मलूल या वलवला] १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।
मुहा०—मलोला या मलोले आना=दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना=मानसिक व्यथा सहना।
२ वह इच्छा जो मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे। अरमान।
मल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे, इसीलिये कुश्ती लड़नेवाले को भी मल्ल कहते हैं। २. पहलवान। ३. एक प्राचीन देश जो विराट देश के पास था। ४. दीपशिखा।
मल्लभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।
मल्लयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर द्वंद्व-युद्ध जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध। कुश्ती।
मल्लविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती की विद्या।
मल्लशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।
मल्लार—संज्ञा पुं० दे० "मलार"।
मल्लाह—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन] एक अंत्यज जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करती है। केवट। धीवर। माँझी।
मल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २ आठ अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण और अंत में गुरु लघु होता है। उ०—रोज गौ लिए प्रभात। काननै गुपाल जात॥ ग्वाल चारि संग धारि। मल्लिका रचै सुधारि॥ इसे समानी छंद भी कहते हैं। ३ ११ वर्णों का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण और अंत में लघु गुरु हो। उ०—हरि न मिले मन होय दुखी। फिरि फिरि हेरि रही सुमुखी॥ ४. २३ अक्षरोंवाले सवैया का वह भेद जिसके प्रत्येक चरण में ७ जगण और अंत में लघु गुरु हो। उ०—चलै कछु दूरि नमैं पग धूरि भले फल जन्म अनेक लहै। सिया सुमुखी हरि फेरि तिन्हैं बहु भाँतिन ते समुभाय कहैं॥ इसे सुमुखी और मानिनी भी कहते हैं।

मल्लिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध टीकाकार।

मल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। २ सवैया छंद का वह भेद जिसमें प्रत्येक चरण में ८ सगण और अंत में एक गुरु होता है। उ०—सवसों गहि पाणि मिले रघुनंदन भेंटि कियो सबको सुखभागी। जबहीं प्रभु पावँ धरे नगरी महँ ता छिन तें विपदा सब भागी। इसे सुंदरी और सुखदानी भी कहते हैं।

मल्लु—संज्ञा पुं० [सं०] बंदर। भालू।

मल्हाना, मल्हारना†—क्रि० स० [सं० मल्ह ?] चुमकारना। पुचकारना।

मवक्किल—संज्ञा पुं० [अ० मुवक्किल] मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी में काम करने के लिये वकील नियत करनेवाला पुरुष।

मवाजिब—संज्ञा पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ, जैसे, वेतन।

मवाजी—वि० [अ०] १ कुल। सब। २. प्राय. बराबर। लगभग।

मवाद—संज्ञा पुं० [अ०] १. पीब। २ मसाला। सामग्री।

मवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षा का स्थान। त्राणस्थल। आश्रय। शरण।

मुहा०—*मवास करना* = *निवास करना*।

२ किला। दुर्ग। गढ़। ३. वे पेड़ जो दुर्ग के प्राकार पर होते हैं। उ०—ज्हाँ तहाँ होरी जरै हरि होरी है। मनहुँ मवासे आगि लगी हरि होरी है।—सूर०।

मवासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मवास] छोटा गढ़।

संज्ञा पुं० १ गढ़पति। किलेदार। २ प्रधान। मुखिया। अधिनायक। उ०—गोरस चुराइ खाइ बदन दुराइ राखै मन न धरत वृन्दावन को मवासी। सूर स्याम तोहि घर सब जानै इहाँ को है तिहारी दासी।—सूर०।

मवेशी—संज्ञा पुं० [अ० मवाशी] पशु। ढोर।

मवेशीखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।

मशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मच्छड़। २ मसा नामक चर्मरोग।

संज्ञा स्त्री० [फा०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।

मशक्कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मेहनत। श्रम। परिश्रम। २ वह परिश्रम जो जेलखाने के कैदियों को करना पड़ता है।

मशगूल—वि० [अ०] काम में लगा हुआ।

मशरू—संज्ञा पुं० [अ० मशरूअ] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

मशविरा—संज्ञा पुं० [अ०] सलाह। परामर्श।

मशहूर—वि० [अ०] प्रख्यात। प्रसिद्ध।

मशाल—संज्ञा स्त्री० [अ०] डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती जिससे पुराने जमाने में प्रकाश का काम लिया लिया जाता था।

मुहा०—*मशाल लेकर या जलाकर ढूँढ़ना* = *अच्छी तरह ढूँढ़ना। बहुत ढूँढ़ना।*

मशालची—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मशालचिन] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।

मशीन—संज्ञा स्त्री० [अं० मेशीन] पेंचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु जिससे कुछ काम होता हो। कल। यंत्र।

मश्क—संज्ञा पुं० [अ०] अभ्यास।

मशीनगन—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह मशीन जो गोलियाँ चलाती है।

मष—संज्ञा पुं० दे० "मख"।

मषदूम§—संज्ञा पुं० [अ० मखदूम] एक प्रकार के मुसलमान फकीर।

मष्ट—वि० [सं० मष्ठ] १ संस्कारशून्य। जो भूल गया हो। २ उदासीन। मौन। चुप।

मुहा०—*मष्ट करना, धारना या मारना* = *चुप रहना। न बोलना।* उ०—*कहाँ मेरो कान्ह को तनक सी आँगुरी बड़े बड़े नखनि के चिह्न तेरे। मष्ट करु हँसे मेरे लोगु भँजनाग भुज कहाँ पाए तैं स्याम मेरे।*—सूर०।

मस(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० मसि] रोशनाई।

संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] मोछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।

मुहा०—*मसें भीगना* = *मूछों का निकलना आरंभ होना।*

मसक—संज्ञा पुं० [सं० मशक] मसा। मच्छड़।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] मसकने की क्रिया।

मसकत(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मशक्कत"।

मसकना—क्रि० स० [अनु०] १ कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २ इस प्रकार दबाना कि बीच में से फट जाय। ३ जोर से दबाना या मलना।

क्रि० अ० १ किसी पदार्थ का दबाव या खिंचाव आदि के कारण बीच में से फट जाना। २ चित्त का चिंतित होना।

मसकरा—संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

मसकला—संज्ञा पुं० [अ०] १ सिकलीगरों का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २ सैकल या सिकला करने की क्रिया।

मसकली—संज्ञा स्त्री० दे० "मसकला"।

मसका—संज्ञा पुं० [फा०] १ नवनीत। मक्खन। नैनूँ। २. ताजा निकला हुआ घी। ३ दही का पानी। ४ चूने की बरी का वह चूर्ण जो उसपर पानी छिड़कने से बने।

मसकीन(पु)†—वि० [अ० मिस्कीन] १ गरीब। दीन। बेचारा। २ साधु। ३ दरिद्र। ४ भोला। ५ सुशील।

मसखरा—संज्ञा पुं० [फा०] बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड़। ठट्ठेबाज।

मसखरापन—संज्ञा पुं० [फा० खरा+हिं० पन (प्रत्य०)] दिल्लगी। ठठोली। हँसी। ठट्ठा।

मसखरी—संज्ञा स्त्री० [फा० मसखरा+हिं० ई (प्रत्य०)] दिल्लगी। हँसी मजाक। उ०—जो बहु झूठ मसखरी जाना। कलिजुग सोई गुनवंत बखाना।—मानस।

मसखवा†—संज्ञा पुं० [हिं० मास+खाना] वह जो मांस खाता हो। मांसाहारी। उ०—बूड़हिं हस्ति घोर मानवा। चहुँ दिसि आय जुरे मसखवा।—पदमावत।

मसजिद—संज्ञा स्त्री० [फा० मस्जिद] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने तथा ईश्वरवंदना करने का स्थान या घर।

मसनद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बड़ा तकिया। गाव तकिया। २ अमीरों के बैठने की गद्दी। ३ राजगद्दी या सिंहासन।

मसनवी—संज्ञा स्त्री० [अ०] अरबी, उर्दू और फारसी पद्य का वह भेद जिसमें दो दो चरणों के अत्यानुप्रासों में मेल हो।

मसना†—क्रि० स० दे० "मसलना"।

मसमुदⓅ†—वि० [मस ? + मूँदना = बंद होना] कशमकश। ठेलमठेल। धक्कम-धक्का।

मसयाराⓅ†—संज्ञा पुं० [अ० मशअल] १. मशाल। २. मशालची।

मसरना—क्रि० स० दे० "मसलना"।

मसरफ—संज्ञा पुं० [अ०] व्यवहार में आना। काम में आना। उपयोग।

मसरूफ—वि० [अ०] काम में लगा हुआ।

मसल—संज्ञा स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।

मसलतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मसलहत"।

मसलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० मसलना] मसलने की क्रिया या भाव।

मसलन्—वि० [अ०] उदाहरणार्थ। यथा। जैसे।

मसलना—क्रि० स० [हिं० मलना] [भाव० मसलन] १ हाथ से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २ जोर से दबाना। ३ आटा गूँधना।

मसलहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] ऐसी गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके। अप्रकट शुभ हेतु।

मसला—संज्ञा पुं० [अ०] १ कहावत। लोकोक्ति। २ विचारणीय विषय।

मसवासी—संज्ञा पुं० [सं० मासवासी] वह साधु आदि जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे।

संज्ञा स्त्री० गणिका। वेश्या।

मसविदा—संज्ञा पुं० दे० "मसौदा"।

मसहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मसा + हरी] १ पलग के ऊपर और चारो ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिये होता है। मच्छरदानी। २ ऐसा पलग जिसमें मसहरी लग सके।

मसहारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।

मसा—संज्ञा पुं० [सं० मांसकील] १. शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मांस का छोटा दाना। २ बवासीर रोग में मांस का दाना।

संज्ञा पुं० [सं० मशक] मच्छड़।

मसान—संज्ञा पुं० [सं० श्मशान] १. मरघट।

मुहा०—मसान जगाना = तंत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान में बैठकर किसी शव के द्वारा प्रेतात्मा को सिद्ध करना।

२ भूत, पिशाच आदि। ३ रणभूमि।

मसाना—संज्ञा पुं० [अ०] पेट की वह थैली जिसमें पेशाब रहता है। मूत्राशय।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "मसान"।

मसानिया—संज्ञा पुं० [हिं० मसान + इया (प्रत्य०)] १. मसान पर रहनेवाला। २. डोम।

वि० मसान संबंधी।

मसानी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्मशानी] श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।

मसाल—संज्ञा पुं० दे० "मशाल"।

मसाला—संज्ञा पुं० [फा० मसालह] १ किसी वस्तु को इच्छित रूप देने में सहायक सामग्री, जैसे, (क) मकान बनाने के लिये सुर्खी, चूना आदि। (ख) रसोई बनाने के लिये नमक, मिर्च आदि। (ग) रसोई बनाने के लिये हल्दी, धनिया, मिर्च, जीरा आदि। (घ) ग्रंथ या लेख आदि लिखने के लिये दूसरे ग्रंथ आदि। २ ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह। ३ साधन। ४ तेल। ५. आतिशबाजी।

मसालेदार—वि० [अ० मसालह + फा० दार] जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो।

मसि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लिखने की स्याही। रोशनाई। उ०—परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं लिख लीन्ही॥ —मानस। २ काजल। ३ कालिख। उ०—तुलसी जे कीरति चहहिं पर की कीरति खोइ। तिनके मुहँ मसि लागिहै, मिटिहि न मरिहै धोइ। —दोहा०।

मसिदानी—संज्ञा स्त्री० [सं० मसि + फा० दानी] दावात। मसिपात्र।

मसिपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] दावात।

मसिबुंदा—संज्ञा पुं० दे० "मसिबिंदु"।

मसिमुख—वि० [सं०] १ जिसके मुँह में स्याही लगी हो। २ दुष्कर्म करनेवाला। पापी।

मसियरⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मसाल"। उ०—चहुँ दिसि मसियर नखत तराई। सूरुज चढ़ा चाँद के ताई। —पदमावत।

मसियाना—क्रि० अ० [?] भली भाँति भर जाना। पूरा हो जाना।

मसियाराⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मशालची"। उ०—सुक्र सुमता, ससि मसियारा। पौन करै निति बार बोहारा। —पदमावत।

मसिबिंदु—संज्ञा पुं० [सं०] काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिये बच्चों को लगाया जाता है। डिठौना।

मसी—संज्ञा स्त्री० दे० "मसि"।

मसीत, मसीदⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"। उ०—माँगि कै खैबो मसीद को सोइबो लैबे को एक न दैबे को दोऊ॥ —कविता०।

मसीना†—संज्ञा पुं० [देश०] मोटा अन्न।

मसीह, मसीहा—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मसीही] १. यहूदियों के प्राचीन धर्मग्रंथ के अनुसार पीड़ितों की रक्षा के लिये पृथ्वी पर आनेवाला देवदूत। २ बचानेवाला या उद्धार करनेवाला मनुष्य। ३ ईसा।

मसूⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरू] कठिनाई।

मुहा०—मसू करके = बहुत कठिनता से।

मसूड़ा—संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रु] मुँह के अंदर का वह कड़ा मांस जिसपर दाँत जमे होते हैं।

मसूर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न। मसूरी।

मसूरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मसूर की दाल। २ मसूर की बनी हुई बरी।

मसूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शीतला। माता। चेचक। २. छोटी माता। जिसमें सारे शरीर में लाल लाल छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं।

मसूरिया—संज्ञा स्त्री० दे० "मसूरी"।

मसूरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। चेचक। २ दे० "मसूर"।

मसूस, मसूसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० मसूसना] मन मसूसने का भाव। आंतरिक व्यथा। उ०—कीजै कहा चाव अपनी कत इहाँ मसूसन मरिए। —सूर०।

मसूसना—क्रि० अ० दे० "मसोसना"।

मसृण—वि० [सं०] चिकना और मुलायम।

मसेवरा†—संज्ञा पुं० [हिं० मास] मांस की बनी हुई खाने की चीजें।

मसोसना—क्रि० अ० [फा० अफसोस ?] १. किसी मनोवेग को रोकना। जब्त करना। २ मन ही मन रंज करना। कुढ़ना। ३ ऐंठना। मरोड़ना। ४ निचोड़ना।

मसोसा—संज्ञा पुं० [हिं० मसोसना] मन का दुःख।

मसौदा—संज्ञा पुं० [अ० मसविदा] १. काँट छाँट करने और साफ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख। खर्रा। मसविदा। २. उपाय। युक्ति। तरकीब।

मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना = कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।

मसौदेबाज—संज्ञा पुं० [अ० मसौदा + फा० बाज (प्रत्य०)] १ अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २ धूर्त। चालाक।

मस्करा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

मस्कला—संज्ञा पुं० दे० "मसकला"।

मस्त—वि० [फा०, मि० सं० मत्त] १ जो नशे आदि के कारण मत्त हो। मतवाला। मदोन्मत्त। २ सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला। ३ यौवन मद से भरा हुआ। ४ जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५ परम प्रसन्न। मग्न। आनंदित।

मस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] सिर।

मस्तगी—संज्ञा स्त्री० [अ० मस्तकी] एक प्रकार का बढ़िया गोंद।

मस्ताना—वि० [फा० मस्तान] १ मस्तों का सा। मस्तों की तरह का। २ मस्त।

क्रि० अ० [फा० मस्त] मस्त होना।

क्रि० स० मस्ती पर लाना। मस्त करना।

मस्तिष्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ मस्तक के अंदर का गूदा। भेजा। मगज। २. सिर का वह स्नायविक अवयव जिससे बुद्धि-व्यापार होते हैं। दिमाग।

मस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया या भाव। मस्ता। मतवालापन। २ बेफिक्री। ३ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है। मद। ४ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में से होता है।

मस्तूल—संज्ञा पुं० [पुर्त०] बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्सा—संज्ञा पुं० दे० "मसा"।

महँ†—अव्य० [सं० मध्य] में।

महँइ(पु)†—वि० [सं० महा] महान्। भारी।

अव्य० दे० "महँ"।

महँगा—वि० [सं० महार्घ] जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो। उ०—कारण अगर रहत है सगा। कारज अगर बिकत सो महँगा।—विश्रामसागर।

महँगाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "महँगी"।

महँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महँगा + ई (प्रत्य०)] १ महँगा होने का भाव। महँगापन। २ महँगा होने की अवस्था। ३ दुर्भिक्ष। अकाल। कहत।

महत—संज्ञा पुं० [सं० महत् = बड़ा] साधुमंडली या मठ का अधिष्ठाता।

वि० श्रेष्ठ। प्रधान। मुखिया।

महती—संज्ञा स्त्री० [हिं० महत + ई (प्रत्य०)] १ महत का भाव। २ महत का पद।

मह—अव्य० दे० "महँ"।

वि० [सं० महत्] १ महा। अति। बहुत। २ महत्। श्रेष्ठ। बड़ा।

महक—संज्ञा स्त्री० [?] गंध। बास।

महकना—क्रि० अ० [हिं० महक] गंध देना। बास देना।

महकमा—संज्ञा पुं० [अ०] किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग। सीगा। सरिश्ता।

महकान(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।

महकीला—वि० [हिं० महक] खुशबूदार।

महज—वि० [अ०] १ शुद्ध। खालिस। २ केवल। मात्र। सिर्फ।

महजिद†—संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।

महज्जन—संज्ञा पुं० [सं०] महापुरुष।

महत्—वि० [सं०] [स्त्री० महती] १ महान्। बृहत्। बड़ा। २ सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० १ प्रकृति का पहला विकार। महत्तत्व। २ ब्रह्म।

महत—संज्ञा पुं० दे० "महत्व"।

वि० दे० "महत्"।

महता—संज्ञा पुं० [सं० महत्] १. गाँव का मुखिया। महतो। २. मुहर्रिर। मुंशी।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] अभिमान।

महताब—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. दे० "महताबी"।

संज्ञा पुं० [फा०] चाँद। चंद्रमा। उ०—बिज्जु सी चमकि महताब सी दमकि उठै, उमगति हिय के हरष की उजेली सी।—शृंगार०।

महताबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मोटी बत्ती के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी। २ बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।

महतारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० माता] माँ। माता।

महति, महती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारद की वीणा का नाम। २ महिमा। महत्व। बड़ाई। उ०—मातु पितु गुरु जाति जान्यो भली खोई महति।—सूर०।

वि० स्त्री० बहुत बड़ी। महान्। बृहत्।

महतु(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० महत्त्व] महिमा। बड़ाई। महत्व। उ०—वृंदावन ब्रज को महतु कापै बरन्यो जाय।—सूर०।

महतो—संज्ञा पुं० [हिं० महता] १. कहार। २ प्रधान।

महत्तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य में प्रकृति का पहला कार्य या विकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है। बुद्धितत्व। उ०—प्रकृति, महत्तत्व, शब्दादि, गुन, देवता, व्योम, मरुदग्नि, अमलांबु उर्वी।—विनय०। २ जीवात्मा।

महत्तम—वि० [सं०] सबसे अधिक श्रेष्ठ।

महत्तर—वि० [सं०] दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।

महत्ता—संज्ञा स्त्री० दे० "महत्व"।

महत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ महत् का भाव। बड़ाई। गुरुता। २ श्रेष्ठता। उत्तमता।

महदूद—वि० [अ०] परिमित। सीमित।

महन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "मथन"।

महना(पु)†—क्रि० स० दे० "मथन"।

महनीय—वि० [सं० भाव० महनीयता] १. मान्य। पूज्य। २ महत्। महान्।

महनु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मथन] विनाशक।

महफिल—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मजलिस। सभा। समाज। जलसा। २ नाचगाना होने का स्थान।

महफूज—वि० [अ०] सुरक्षित।

महबूब—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० महबूबा] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रिय।

महमंत(पु)—वि० [सं० महा+मत्त] मस्त। मदमत्त।

महमद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।

महमह—क्रि० वि० [महकना] सुगंधि के साथ। खुशबू के साथ।

महमहा—वि० [हिं० महमह] सुगंधित।

महमहाना—क्रि० अ० [हिं० मह मह अथवा महकना] गमकना। सुगंधि देना।

महमा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "महिमा"।

महमेज—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते में एड़ी के पास लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घोड़े के सवार उसे एड़ लगाते हैं।

महम्मद—संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।

महर—संज्ञा पुं० [सं० महत्] [स्त्री० महरि] १ एक आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार विशेषतः भूस्वामियों आदि के संबंध में होता है (ब्रज)। उ०—महर विनय दोउ कर जोरे घृत मिष्टान पय बहुत मँगायो। —सूर०। २. एक प्रकार का पक्षी। ३ दे० "महरा"।
वि० [हिं० महक] महमहा। सुगंधित।

महरम—संज्ञा पुं० [अ०] १ मुसलमानों में किसी कन्या या स्त्री के लिये उसका कोई ऐसा बहुत पास का संबंधी जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। जैसे—पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि। २ भेद को जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. अँगिया की कटोरी। २ अँगिया।

महरा—संज्ञा पुं० [हिं० महता] [स्त्री० महरी] १ कहार। २ सरदार। नायक।

महराइ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० महाराज] दे० "महाराज"।

महराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० महर+आई (प्रत्य०)] प्रधानता। श्रेष्ठता।

महराज—संज्ञा पुं० दे० "महाराज"।

महराना—संज्ञा पुं० [हिं० महर+आना (प्रत्य०)] महरों के रहने का स्थान या महल्ला।

महराब—संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराब"।

महरि, महरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महर] १. एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के संबंध में होता है। २ मालकिन। घरवाली। ३ ग्वालिन नामक पक्षी। दहिंगल।

महरूम—वि० [अ०] जिसे न मिले। वंचित।

महरेटा—संज्ञा पुं० [हिं० महर+एटा (प्रत्य०)] १. महर का बेटा। २ श्री कृष्ण।

महरेटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महरेटा] श्री राधिका।

महर्घ—वि० दे० "महार्घ"।

महर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।

महर्षि—संज्ञा पुं० [सं० महा+ऋषि] बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि। ऋषीश्वर।

महल—संज्ञा पुं० [अ०] १. बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २ रनिवास। अंतःपुर। ३ बड़ा कमरा। ४. अवसर।

महलसरा—संज्ञा स्त्री० [अ०] अंतःपुर। रनिवास।

महल्ला—संज्ञा पुं० [अ० महाल] शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों।

महवट—संज्ञा पुं० [सं० माघ+वृष्टि] माघ की झड़ी। महावट। उ०—नैन चुवहिं जस महवट नीरू। तोहि बिनु अंग लाग सर चीरू। —पदमावत।

महसिल—संज्ञा पुं० [अ० मुहस्सिल] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

महसूस—वि० [अ०] जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनुभूत।

महाँ(पु)—अव्य० दे० "महँ"। उ०—प्रभु सत्य करी प्रह्लाद गिरा प्रकटे नरकेहरि खंभ महाँ। —कविता०।

महा—वि० [सं०] १ अत्यंत। बहुत अधिक। २ सर्वश्रेष्ठ। सबमें बढ़कर। ३ बहुत बड़ा। भारी।
संज्ञा पुं० [हिं० महना] मठा। छाछ।

महारंभ—वि० [सं० महा+रंभ] बहुत शोर।

महाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं०√मह+आई (प्रत्य०)] मथने का काम या मजदूरी।

महाउत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

महाउर—संज्ञा पुं० दे० "महावर"। उ०—भरी प्यारी कै लाल लागे देन महाउर पाय। —नंददास०।

महाकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्मकल्प।

महाकवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कवि जिसने किसी महाकाव्य की रचना की हो। २ उच्च कोटि का कवि।

महाकाय—वि० [सं०] जिसका शरीर बहुत बड़ा हो।
संज्ञा पुं० १ शिव का एक गण। २ हाथी।

महाकाल—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

महाकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाकाल (शिव) की पत्नी। २ दुर्गा की एक मूर्ति।

महाकाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृत दृश्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो।

महाखर्व—संज्ञा पुं० [सं०] सौ खर्व की संख्या या अंक।

महागौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

महाजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष। २ साधु। ३. धनवान्। दौलतमंद। ४ रुपए पैसे का लेनदेन करनेवाला। कोठीवाल। ५ बनिया। ६ भलामानुस।

महाजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महाजन+ई (प्रत्य०)] १ रुपए के लेने देने का व्यवसाय। कोठीवाली। २ एक लिपि जो महाजनों के यहाँ बहीखाता लिखने में काम आती है। मुड़िया।

महाजल—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। उ०—मलय तनु मिलि लसति सोभा महाजल गंभीर। निरखि लोचन भ्रमत पुनि पुनि धरत नहिं मन धीर। —सूर०।

महातत्व—संज्ञा पुं० दे० "महत्तत्व"। उ०—त्रिगुण तत्व ते महातत्व महातत्व तें अहंकार। मन इंद्रिय शब्दादि पंचौ ताते किए विस्तार। —सूर०।

महातम(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "माहात्म्य"।

महातल—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल । उ०—अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान । पाताल और रसातल मिलि सातों भुवन प्रमान । —सूर० ।

महात्मा—संज्ञा पुं० [सं० महात्मन्] १ वह जिसकी आत्मा या आशय बहुत उच्च हों । महानुभाव । २ बहुत बड़ा साधु या सन्यासी । महापुरुष ।

महादंडधारी—संज्ञा पुं० [सं०] यमराज ।

महादान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है, जैसे—तुला पुरुष, सोने की गाय या घोड़ा, भूमि, हाथी, रथ, कन्या आदि । २ वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है ।

महादेव—संज्ञा पुं० [सं०] शंकर । शिव ।

महादेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी ।

महाद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों, जैसे, एशिया, युरोप, अमरीका, अफ्रीका आदि ।

महाधन—वि० [सं०] १. बहुमूल्य । अधिक मूल्य का । २ बहुत धनी ।

महसूल—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी कार्य के लिये ले । कर । २ भाड़ा । किराया । ३ मालगुजारी । लगान ।

महसूली—वि० [हिं० महसूल] जिसपर महसूल लगता हो ।

महान्—वि० [सं०] १ बहुत बड़ा । विशाल । २ श्रेष्ठ ।

महानंद—संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था । महापद्मनंद ।

महानद—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा नद ।

महानवमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ल नवमी ।

महानस—संज्ञा पुं० [सं०] रसोई घर ।

महानाटक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के लक्षणों से युक्त दस अंकोंवाला नाटक ।

महानाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र जिसमें शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं ।

महानिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु । मरण ।

महानिधान—संज्ञा पुं० [सं०] बुभुक्षित धातुभेदी पारा जिसे "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं ।

महानिर्वाण—संज्ञा पुं० [सं०] परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत या बुद्ध हैं ।

महानिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आधी रात । २ कल्पांत या प्रलय की रात्रि ।

महानुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] कोई बड़ा और आदरणीय व्यक्ति । महापुरुष ।

महानुभावता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़प्पन ।

महापथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंबा और चौड़ा रास्ता । राजपथ । २ मृत्यु ।

महापद्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ नौ निधियों में से एक । २ सफेद कमल । ३ सौ पद्म की संख्या ।

महापातक—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच बहुत बड़े पाप—ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और इन चार पापों को करनेवाले का साथ या संसर्ग ।

महापातकी—संज्ञा पुं० [सं० महापातकिन्] १. वह जिसने महापातक किया हो । २ बहुत ही क्रूर और घृणास्पद कार्य करनेवाला ।

महापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह ब्राह्मण जो मृतक कृत्य का दान लेता हो । कट्टहा । २ निकृष्ट ब्राह्मण ।

महापुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १. नारायण । २ श्रेष्ठ पुरुष । महात्मा । महानुभाव । ३. दुष्ट । पाजी (व्यंग्य) ।

महाप्रभु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी । २ बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी । ३ ईश्वर ।

महाप्रलय—संज्ञा पुं० [सं०] वह काल, जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता । कल्पांत ।

महाप्रलै—संज्ञा पुं० [हिं० महाप्रलय] दे० "महाप्रलय" । उ०—महाप्रलै को जल वल लै गिरि पर बरस्यौ हरि । —नंददास० ।

महाप्रसाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर या देवताओं का प्रसाद । २ जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात । ३ मांस (व्यंग्य) । ४. अखाद्य पदार्थ (व्यंग्य) ।

महाप्रस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना । २ मरण । देहांत ।

महाप्राज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा पंडित । दिग्गज विद्वान् ।

महाप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राणवायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है । हिंदी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है ।

महाबल—वि० [सं०] अत्यंत बलवान् । उ०—मेघनाद से पुत्र महाबल कुंभकरण से भाई । —सूर० ।

महाबाहु—वि० [सं०] १ लंबी भुजावाला । २ बली । बलवान् ।

महाब्राह्मण—संज्ञा पुं० दे० "महापात्र" ।

महाभाग—वि० [सं०] भाग्यवान ।

महाभागवत—संज्ञा पुं० [सं०] १ २६ मात्राओं के छंद जिनमें शंकर, विष्णुपद, कामरूप, भूलना, गीतिका और गीता मुख्य हैं । २ मनु, सनकादि (सनक, सनंदन, सनत्कुमार), नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शंभु प्रभृत १२ महाभक्त । परमवैष्णव । ३ दे० "भागवत" (पुराण) ।

महाभारत—संज्ञा पुं० [सं०] १ संस्कृत भाषा में अठारह पर्वों का एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें सृष्टि के आदि से कौरव और पांडवों के युद्ध और स्वर्गारोहण तक का विस्तृत वर्णन है । २ कोई बहुत बड़ा ग्रंथ । ३ कौरवों और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध । ४ कोई बड़ा युद्ध । ५ झगड़ा । लड़ाई ।

महाभाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य ।

महाभूत—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंचतत्व ।

महामंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र । २ अच्छी सलाह ।

महामति—वि० [सं०] बड़ा बुद्धिमान् ।

महामना—वि० [सं० महामनस्] बहुत उच्च और उदार मनवाला । महानुभाव ।

महामहिम—वि० [सं०] १ जिसकी महिमा बहुत अधिक हो । २ राज्यपाल आदि के लिये प्रयुक्त होनेवाली एक उपाधि ।

महामहोपाध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुरुओं का गुरु । २ एक प्रकार की उपाधि

जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती थी।

महामांस—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोमांस। गाय का गोश्त। २ मनुष्य का मांस।

महामाई—संज्ञा स्त्री० [सं० महा+हिं० माई] १ दुर्गा। २ काली।

महामात्य—संज्ञा पुं० [सं०] महामंत्री।

महामाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकृति। २. दुर्गा। ३ गंगा। ४ छाया छंद का तेरहवाँ भेद।

महामारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संक्रामक रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें। वबा। मरी; जैसे—प्लेग, हैजा। आदि।

महामालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाराच छंद।

महामृत्युंजय—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

महामेदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का कंद।

महामोदकारी—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ यगण होते हैं। उ०—यही पूरवैगो सबै लालसा सो लला देवकी को। करै गाथ जाको महामोदकारी सबै काव्य नीको॥ मोहा चक्र।

महायु—वि० [सं० महा] महान्। बहुत।

महायज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले ५ कर्म—ब्रह्मयज्ञ या संध्यावंदन, देवयज्ञ या हवन, पितृयज्ञ या तर्पण भूतयज्ञ या बलि और नृयज्ञ या अतिथि सत्कार।

महायात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।

महायान—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के तीन प्रधान संप्रदायों में से एक जो चीन, जापान, तिब्बत, नेपाल आदि देशों में प्रचलित हुआ। इसमें तंत्र भी मिला हुआ है। जिस प्रकार शिव की कई शक्तियाँ हैं उसी प्रकार इसमें बुद्ध की भी अनेक शक्तियाँ या देवियाँ मानी गई हैं और उनकी उपासना होती है।

महायुग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारों युगों का समूह जिसे देवयुग या एक युग मानते हैं।

महायुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह बड़ा युद्ध जिसमें बहुत से बड़े बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों। विश्वयुद्ध।

महायौगिक—संज्ञा पुं० [सं०] २६ मात्राओं के छंद जिनमें चुलियाला, मरहट्टा, मरहट्टा माधवी, और धारा हैं।

महारंभ—वि० [सं०] जिसका आरंभ बड़े प्रयत्न से हो। बहुत बड़ा।

महारथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सके। भारी योद्धा।

महारथी—संज्ञा पुं० दे० "महारथ"।

महाराजा—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २ राजा। ३ ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये एक संबोधन।

महाराजाधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा राजा।

महाराज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महारानी।

महाराणा—संज्ञा पुं० [सं० महा+हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाप्रलय-वाली रात, जब कि ब्रह्मा का लय हो जाता है और महाकल्प होता है।

महारानी—संज्ञा स्त्री० [सं० महाराज्ञी] महाराज की रानी। बहुत बड़ी रानी।

महारावण—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

महारावल—संज्ञा पुं० [सं० महा+हिं० रावल] जैसलमेर, डूँगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २. इस प्रदेश के निवासी। ३. बहुत बड़ा राष्ट्र।

महाराष्ट्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्राकृत भाषा। २ दे० "मराठी"।

महारुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

महारोग—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा रोग, जैसे—दमा, भगंदर, पागलपन, कोढ़, यक्ष्मा आदि।

महारौरव—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक।

महार्घ—वि० [सं०] [संज्ञा महार्घता] १ बहुमूल्य। बड़े मोल का। २ महँगा।

महाल—संज्ञा पुं० [अ० महल का बहु०] १ मुहल्ला। टोला। पाड़ा। २ बंदोबस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३ भाग। पट्टी। हिस्सा।

महालक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी का एक रूप। २. नारायण की शक्ति जिसे कहीं कहीं दुर्गा या सरस्वती से अभिन्न माना गया है। ३ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३ रगण होते हैं। उ०—मोल बोले जु बोरे अमी। जानिए सो महालक्ष्मी॥

महालय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "पितृपक्ष"।

महालया—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावस्या। पितृविसर्जन की तिथि।

महावट—संज्ञा स्त्री० [सं० माघ या महा+वृष्टि] पूस माघ की वर्षा। जाड़े की झड़ी।

महावत—संज्ञा पुं० [सं० महामात्र] हाथी हाँकनेवाला। फीलवान। हाथीवान। उ०—द्वार कुवलया गज ठढ़ियावा। अयुत नाग बल तामें पावा। कहेसि महावत ते गोह-राई। प्रविशत तें डारे चँपवाई। —विश्राम सागर।

महावतारी—संज्ञा पुं० [सं० महावतारिन्] २५ मात्राओं के छंद जिनमें गगनांगना, मुक्तामणि, सुगीतिका, नाग और मदनाग प्रधान हैं।

महावर—संज्ञा पुं० [सं० महावर्ण ?] एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पाँवों को चित्रित कराती हैं। यावक।

महावरा—संज्ञा पुं० दे० "मुहावरा"।

महावरी—संज्ञा पुं० [हिं० महावर] महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।

महावारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगास्नान का एक योग।

महाविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र में मानी हुई ये दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। २ दुर्गा देवी।

महावीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान जी। २ गौतम बुद्ध। ३ जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर।

वि० बहुत बड़ा बहादुर या वीर।

महाव्याहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूः, भुवः और स्वः ये तीन ऊपर के लोकों का समूह।

महाव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद की एक रचना का नाम। २ बारह वर्षों तक चलनेवाला व्रत। ३ आश्विन की दुर्गापूजा।

वि० [स्त्री० महाव्रता] बहुत बड़ा व्रत करनेवाला।

महाशंख—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। सौ शंख।

महाशय—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च आशय-वाला व्यक्ति। महानुभाव। महात्मा। सज्जन।

महाश्मशान—संज्ञा पुं० [सं०] काशी नगरी।

महाश्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती। २ दुर्गा। ३ चीनी।

महासंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक की अंत्येष्टि क्रिया।

महासंस्कारी—संज्ञा पुं० [सं० महा-संस्कारिन्] सत्रह मात्राओं के छंद जिनमें राम और चंद्र मुख्य हैं।

महि(पु)—अव्य० दे० "महँ"।

संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

महिख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "महिष"।

महिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।

महिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण। उ०—पंडित ही गुनमंडित ही महिदेव तुम्हें सगुनौतियौ आवति।—काव्यनिर्णय।

महिधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। २ शेषनाग।

महिपाल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "महीपाल"।

महिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० महिमन्] १ महत्व। माहात्म्य। बड़ाई। गौरव। २ प्रभाव। प्रताप। ३. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे योगी अपनी महिमा अर्थात् शक्तियों या प्रभाव को इच्छानुसार बढ़ा सकता है।

महिमावान्—वि० [सं०] महिमा या गौरववाला।

महिम्न—संज्ञा पुं० [सं०] श्री पुष्पदंत का बनाया हुआ संस्कृत भाषा में शिव का एक स्तोत्र।

महियाँ(पु)†—अव्य० [सं० मध्य] में।

महियाउर†—संज्ञा पुं० [मही=मट्ठा+चाउर] मठे में पका हुआ चावल।

महिरावण—संज्ञा पुं० [सं० महि+रावण] एक राक्षस जो रावण का लड़का कहा जाता है। किंवदंती है कि यह पाताल में रहता था और युद्धभूमि से राम लक्ष्मण को वहीं उठा ले गया था। हनुमान जी इसे मारकर उन्हें वापस ले आए थे। यह बात वाल्मीकि रामायण और पुराणों में नहीं दी हुई है।

महिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भली स्त्री। २ स्त्री।

महिष—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महिषी] १. भैंसा। २ एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था।

महिषमर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

महिषासुर—संज्ञा पुं० [सं०] रंभ नामक राक्षस का पुत्र जिसकी आकृति भैंसे जैसी थी। इसे दुर्गा जी ने मारा था।

महिषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भैंस। २. रानी, विशेषत पटरानी। ३ सैरंध्री।

महिषेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. महिषासुर। २ यमराज।

महिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।

महिसुर—संज्ञा पुं० दे० "महीसुर"।

मही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २ मिट्टी। ३ देश। स्थान। ४. नदी। ५ एक की संख्या। ६ एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छंद। उ०—नहीं। सही। लगी। मही।

संज्ञा पुं० [हिं० महना] मठा। छाछ।

महीतल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी। संसार।

महीधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। २ शेषनाग। ३ एक वर्णिक वृत्त जिसमें लघु गुरु क्रम से १४ लघु और १४ गुरु हों। उ०—सदा सुमन धारिए नहीं कुमन मारिए लगाय चित्त सीख मानिए खरी।

महीन—वि० [सं० महा+क्षीण (सं० क्षीण)] १ जिसकी मोटाई बहुत कम हो। "मोटा" का उलटा। पतला। २ बारीक। झीना। ३ कोमल। धीमा। मंद (शब्द या स्वर)।

महीना—संज्ञा पुं० [सं० मास] १ काल का एक परिमाण जो प्राय तीस दिन का होता है। वर्ष का बारहवाँ हिस्सा। हिंदी में एक वर्ष के इन हिस्सों के नाम चैत, बैसाख, जेठ, असाढ़, सावन, भादों, कुआर (आसोज या आसों), कातिक, अगहन या मँगसर, पूस, माघ या माह, और फागुन। २ मासिक वेतन। दरमाहा। ३ वह स्वाभाविक यौन रक्तस्राव जो स्त्रियों को प्राय १२ वर्ष की अवस्था से ५० वर्ष की उम्र तक चांद्रमास के अनुसार हर ३० दिनों में एक बार होता है। मासिक धर्म। रजोधर्म।

महीप, महीपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

महीर—संज्ञा स्त्री० [हिं० मठा+खीर] १ मठे में पकाया हुआ चावल। २ तपाए हुए मक्खन की तलछट।

महीसुर—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।

महुँ(पु)—अव्य दे० "महँ"।

महुअर—संज्ञा पुं० [सं० मधुकर] १ एक प्रकार का बाजा। तुमड़ी। तूँबी। २ एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो महुअर बजाकर किया जाता है।

महुआ—संज्ञा पुं० [सं० मधूक, प्रा० महुआ] एक वृक्ष जो हिमालय की तराई तथा पंजाब को छोड़कर सारे भारत में तीन हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसका पेड़ ऊँचा और छतनार होता है और डालियाँ चारों ओर फैलती हैं। इसके फूल, फल, बीज, लकड़ी सभी काम में आते हैं। इसके फूलों से शराब भी खींची जाती है जिसे सरकार में माध्वी और गँवारू बोली में "ठर्रा" कहते हैं।

महुकम(पु)—वि० [अ० मुहकम] पक्का। दृढ़।

महुज्जल—वि० [सं० महत्+उज्ज्वल] अत्यंत उज्ज्वल। उ०—चंद सो आनन राजनो त्यों चाँदनी सो उतरीय महुज्जल।—काव्यनिर्णय।

महुरि—संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर१"। उ०—निरखे परम सुहावनी हो महुरि, बाँसुरी, चंग।—नंददास०।

महुर्छव(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "महोत्सव"।

महुवरि—संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर"।

महुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मधूक] १ महुआ। २ जेठी मधु। मुलेठी। ३ शहद।

महूम(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मुहिम"।

महूरत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त"।

महूष(पु)—संज्ञा पुं० दे० "महूख"।

महेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ इंद्र। ३ भारतवर्ष का एक पर्वत जो सात कुलपर्वतों में गिना जाता है।

महेंद्रवारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा इंद्रायण।

महेंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० महेन्द्र+हिं० ई (प्रत्य०)] इंद्र की स्त्री। इंद्राणी।

महेर†—सञ्ज्ञा पुं० दे० "महेरा"।

सञ्ज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा। बखेड़ा।

महेरा—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० महेर या मही] एक प्रकार का व्यंजन या खाद्य पदार्थ। मट्ठा।

महेरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० महेरा] उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमकमिर्च से खाते हैं।

वि० [हिं० महेर] अड़चन डालनेवाला।

महेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ ईश्वर।

महेशानी—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "महेशी।

महेशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० महेश] पार्वती।

महेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महेश्वरी] १ ईश्वर। २ परमेश्वर।

महेस(पु)—सञ्ज्ञा पुं० दे० "महेश"।

महोखा(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मधूक] एक पक्षी जो तेज दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।

महोगनी—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी, दृढ़ और टिकाऊ होती है और पालिश खूब पकड़ती है। यह पेड़ मध्य अमेरिका, मेक्सिको और भारत आदि में पाया जाता है।

महोच्छव(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० महोत्सव] बड़ा उत्सव। महोत्सव।

महोछा, महोछौ(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० महोत्सव] महोत्सव। उ०—नंद महोछौ नवल घन दरपैगो अनुराग।—नंददास०।

महोत्सव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बड़ा उत्सव।

महोदधि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

महोदय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महोदया] १ महाशय। २ स्वामी। ३ आधिपत्य। ४ स्वर्ग। ५ कान्यकुब्ज देश।

महोला(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [अ० मुहैल] १ हीला। बहाना। २ धोखा। चकमा।

महौघ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जल की तेज धारा। २ समुद्र की बाढ़। ३ तूफान।

मह्या, मह्यौ(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० मही] मठा। छाछ। उ०—मनि खँभ के निकट मथि दही। माखन सहित धर्यौ हो मही।—नंददास०।

माँ—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० अंबा या माता] १ जन्म देनेवाली माता। २ दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि देवियों के लिये प्रयुक्त शब्द।

यौ०—माँ जाया = सगा भाई। सहोदर।

† अव्य० [सं० मध्य] में।

माँखना(पु)†—क्रि० अ० दे० "माखना"।

माँखी(पु)†—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

माँग—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना] १ माँगने की क्रिया या भाव। २ बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिये होनेवाली आवश्यकता या चाह।

सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० मार्ग ?] सिर के बालों के बीच की रेखा जो बालों को विभक्त करके बनाई जाती है। सीमंत।

मुहा०—माँग कोख से सुखी रहना या जुड़ाना = स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना। माँग पट्टी करना = कंघी करना।

माँगटीका—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० माँग + टीका] स्त्रियों का माँग पर का एक गहना।

माँगन(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० माँगना] १ माँगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।

माँगना—क्रि० स० [सं० मार्गण = याचना] १ किसी से यह कहना कि तुम अमुक पदार्थ मुझे दो। याचना करना। २ कोई आकांक्षा पूरी करने के लिये कहना।

माँगफूल—सञ्ज्ञा पुं० दे० "माँगटीका"।

मांगलिक—वि० [सं०] [भाव० मांगलिकता] मंगल करनेवाला।

सञ्ज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र जो मंगलपाठ करता है।

मांगल्य—वि० [सं०] शुभ। मंगलकारक।

सञ्ज्ञा पुं० मंगल का भाव।

माँचना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० मचना] १ आरंभ होना। जारी होना। २ प्रसिद्ध होना।

माँचा†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मंच] [स्त्री० अल्पा० माँची] १ पलँग। खाट। मंझा। २ छोटी पीढ़ी। ३ मचान।

माँछी†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।

माँजना—क्रि० स० [सं० मज्जन] १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २ सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना। माँझा देना। ३ रगड़कर चमकाना।

क्रि० अ० अभ्यास करना। मश्क करना।

माँजर(पु)†—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "पंजर"।

माँजा—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिये मादक होता है।

माँझ(पु)†—अव्य० [सं० मध्य] में। भीतर।

(पु)†सञ्ज्ञा पुं० अंतर। फरक।

माँझा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मध्य] १ नदी में का टापू। २ एक प्रकार का आभूषण जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३ वृक्ष का तना। ४. वे पीले कपड़े जो वर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं।

सञ्ज्ञा पुं० [हिं० माँजना] पतंग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

सञ्ज्ञा पुं० दे० "मंझा"।

माँझिल(पु)†—क्रि० वि० [हिं० माँझ + इल (प्रत्य०)] बीच का।

माँझी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मध्य] १. नाव खेनेवाला। केवट। मल्लाह। २. झगड़ा या मामला तै करानेवाला।

माँट(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मट्टक] १ मटका। कुंडा। उ०—काँवरि, मथना, माट अगनित गने न जात हैं।—नंददास०। २ घर का ऊपरी भाग। अटारी।

माँठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मट्टक] मटका। कुंडा।

माँठा(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की चूड़ी। २ मट्ठी या मठरी नामक पकवान।

माँड़—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मंड] पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।

माँड़ना(पु)†—क्रि० स० [सं० मर्दन] १ मलना। सानना। गूँधना। २ पोतना। लेपन करना। ३ अन्न की बाल में से दाने झाड़ना। ४ मचाना। ५ चलना। ६ रौंदना। कुचलना।

क्रि० स० [सं० मंडन] सजाना बजाना।

सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० मंडन] मगजी। गोट।

मांड्या(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० मंडप] १ अतिथिशाला। २ विवाह का मंडप। मँडवा।

मांडलिक—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जो किसी मडल या प्रात को रक्षा करता या शासन करता हो। २ वह छोटा राजा जो किसी बड़े राजा को कर देता हो।
वि० मंडल संबंधी। मडल का।

माँडव—संज्ञा पुं० [सं० मण्डप] विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिए छाया हुआ मंडप।

मांडवी—संज्ञा स्त्री० [सं० माण्डवी] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को ब्याही थी।

मांडव्य—संज्ञा पुं० [स० माण्डव्य] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने यमराज को शाप दिया था कि तुम शूद्र हो जाओ।

माँड़ा—संज्ञा पुं० [स० मंड] आँख का एक रोग जिसमें उसके अंदर महीन झिल्ली सी पड़ जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० मंडप] मंडप। मँडवा।
संज्ञा पुं० [हिं० माँड़ना=गूँधना] १ मैदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। २. एक प्रकार की रोटी। परोंठा। उलटा।

माँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंड] १. भात का पसावन। पीच। माँड़। २ कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

मांडूक्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

माँढ़ाⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "माँडव"।

माँढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "माँडव"।

माँतⓟ—वि० [सं० मत्त] उन्मत्त। मस्त।
वि० [हिं० मातमद] वेरौनक। उदास।

माँतनाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० मात से ना० धा०] उन्मत्त होना। पागल होना।

माँताⓟ†—वि० [सं० मत्त] मतवाला।

मान्त्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो तंत्र मंत्र का काम करता हो।

माँद—वि० [सं० मंद] १ वेरौनक। उदास २ किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३ पराजित। हारा हुआ। मात।
संज्ञा स्त्री० [देश०] जंगली पशुओं के रहने का विवर। बिल। गुफा। चुर। खोह। २ मनुष्य के न रहने योग्य छोटी और अँधेरी कोठरी।

माँदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बीमारी। रोग।

माँदर—संज्ञा पुं० [हिं० मर्दल] मृदंग बाजे की एक किस्म। मर्दल।

माँदा—वि० [फा० माँद] १ थका हुआ। २ बचा हुआ। बाकी। ३. रोगी।

मांद्य—संज्ञा पुं० [सं०] मंद होने का भाव।

मांधाता—संज्ञा पुं० [सं० मांधातृ] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा।

माँपनाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० माँतना] नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।

माँयँ—अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। मध्य।

मांस—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। २. कुछ विशिष्ट पशुओं के शरीर का उक्त अंश। गोश्त।

मांसपेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर होनेवाला मांसपिंड।

मांसभक्षी, मांसभोजी—संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।

मांसल—वि० [स०] [संज्ञा मांसलता] १ मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण (अंग)। २ मोटा ताजा। पुष्ट।
संज्ञा पुं० काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण।

मांसाहारी—संज्ञा पुं० [सं० मांसाहारिन्] मांसभक्षी। मांस भोजन करनेवाला।

माँसुⓟ—संज्ञा सं० दे० "मांस"।

माँहⓟ†—अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। अंदर।

माँहाⓟ†—अव्य० दे० "माँह"।

माँहि, माँहींⓟ†—अव्य० दे० "माँह"।

मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ दुर्गा या काली। ३ माता। ४ दीप्ति। प्रकाश।

माइँ, माई—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] छोटा पूआ जिसमे विवाह में मातृपूजन किया जाता है।
मुहा—माइँन में थापना=पितरों के समान आदर करना।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] पुत्री। लड़की।

माइⓟ†—संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।

माइक—संज्ञा पुं० [अं० "माइक्रोफोन" का संक्षेप] वह यंत्र जिसके संमुख बोलने से दूर तक जोर से सुनाई देता है।

माइका—संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
संज्ञा पुं० [अं०] अभ्रक।

माई—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १ माता। माँ।
यौ०—माई का लाल=(१) उदार चित्तवाला व्यक्ति। (२) वीर। शूर। बली।
२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिये संबोधन।

माउललहम—संज्ञा पुं० [अ०] हिकमत में मांस का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टिकारक अरक।

माकूल—वि० [अ०] १ उचित। वाजिब। ठीक। २ लायक। योग्य। ३ अच्छा। बढ़िया। ४ जिसने वादविवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।

माक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शहद। २. सोनामक्खी। ३ रूपा मक्खी।

माखⓟ—संज्ञा पुं० [सं० मख] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। रिस। २ अभिमान। घमंड। ३. पछतावा। ४. अपने दोष को ढकना।

माखन—संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।
यौ०—माखनचोर=श्रीकृष्ण।

माखनाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० माख] अप्रसन्न होना। नाराज होना। क्रोध करना।

माखीⓟ†—संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १ मक्खी। २. सोनामक्खी।

मागध—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग विरुदावली का वर्णन करते हैं। भाट। २ जरासंध।
वि० [स० मगध] मगध देश का।

मागधी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।

माघ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २ संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३ उपर्युक्त कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्यग्रंथ।
संज्ञा पुं० [सं० माघ्य] कुंद का फूल।

माघी—संज्ञा स्त्री० [सं० माघ+हिं० ई (प्रत्य०)] माघ मास की पूर्णिमा।
वि० माघ का, जैसे—माघी मिर्च।

माचⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "मचान"।
उ०—जब यदुपति कुल कंसहिं मार्‌यो। तिहूँ भुवन भयो सोर पसार्‌यो। तुरत माच तें धरनि गिरायो। ऐसेहि भारत विलम न लायो।—सूर०।

माचनाⓟ†—क्रि० स० दे० "मचना"।

माचल(पु)†—वि० [हिं० मचलना] १ मचलनेवाला। जिद्दी। हठी। उ०—मश माचल मारिबे की सकुच नाहिन मोहिं। परयो हौं प्रण किए द्वारे लाज प्रण की तोहिं। —सूर०। २ मनचला।

माचा†—संज्ञा पुं० [सं० मंच] खाट की तरह की बैठने की पीढ़ी। बड़ी मचिया।

माची—संज्ञा स्त्री० [सं० मंच] छोटा माचा।

माछ†—संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।

माछर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़"।

संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।

माछरि—संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्य] दे० "मछली"। उ०—यह कबिलास इंद्र कर बासू। जहाँ न अन्न न माछरि माँसू। —पदमावत।

माछी†—संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।

माजरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ हाल। वृत्तांत। २ घटना। ३ रहस्य।

माजून—संज्ञा स्त्री० [अ०] औषध के रूप में काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह।

माजूफल—संज्ञा पुं० [फा० माजू+फल] माजू नामक झाड़ी का गोटा या गोंद जो ओषधि तथा रँगाई के काम में आता है।

माजूर—वि० [अ०] [संज्ञा माजूरी] १ जिसमें उज्र हो। २ असमर्थ। लाचार। उ०—ख्वाजा महमूद को भी खबर मिली। बेचारे आँखों से माजूर थे। मुश्किल से चल-फिर सकते थे। —कायाकल्प।

माट—संज्ञा पुं० [हिं० मटका] १ मिट्टी का वह बरतन जिसमें रँगरेज रंग बनाते हैं। मठोर। २ बड़ी मटकी।

माटा†—संज्ञा पुं० [हिं० मटा] एक प्रकार की लाल च्यूँटी।

माटी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिट्टी] १ दे० "मिट्टी"। २ शव। लाश। ३ शरीर। ४ पृथ्वी नामक तत्व। ५ धूल। रज।

माठ—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा] एक प्रकार की मिठाई।

माठर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य के एक पारिपार्श्वक जो यम माने जाते हैं। २ व्यास। ३ ब्राह्मण। ४ कलाल।

माड़ना(पु)†—क्रि० अ० [सं० मंडन] ठानना। मचाना। करना।

क्रि० स० [सं० मर्दन] १ मर्दित करना। भूषित करना। २ धारण करना। पहनना। ३ आदर करना। पूजना।

क्रि० स० दे० "माँड़ना"।

माढ़ा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मंडप] अटारी पर का चौबारा।

माढ़ी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मढ़ी"।

माणवक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २ विद्यार्थी। बटु। ३ निंदित या नीच आदमी।

माणिक—संज्ञा पुं० दे० "माणिक्य"।

माणिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग का एक रत्न। लाल। पद्मराग। चुन्नी।

वि० सर्वश्रेष्ठ। परम आदरणीय।

मातंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी। २ श्वपच। चांडाल। ३ एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। ४ अश्वत्थ।

मातंगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या (तंत्र)।

मात—संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।

संज्ञा स्त्री० [अ०] पराजय। हार।

वि० [अ०] पराजित।

(पु)वि० [सं० मत्त] मदमस्त। मतवाला।

मातदिल—वि० [अ० मोऽतदिल] जो गुण के विचार से न बहुत ठंढा हो, न बहुत गरम।

मातना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० मात से ना० धा०] मस्त होना। मदमत्त होना। नशे में हो जाना।

मातबर—वि० [अ० मोतबिर] विश्वसनीय।

मातबरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] विश्वसनीयता।

मातम—संज्ञा पुं० [अ०] वह रोना पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है। मरणशोक।

मातमपुर्सी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना।

मातमी—वि० [फा०] शोकसूचक।

मातलि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का सारथी।

मातलिसूत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

मातहत—वि० [अ०] [संज्ञा मातहती] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।

माता—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १ जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। २ कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। बड़ी स्त्री। ३ गौ। ४ भूमि। ५ लक्ष्मी। ६ शीतला। चेचक।

वि० [सं० मत्त] [स्त्री० माती] मतवाला।

मातामह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मातामही] माता का पिता। नाना।

मातु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] माता। माँ।

मातुल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मातुला, मातुलानी] १. माता का भाई। मामा। २ धतूरा। उ०—हैं मृणाल मातुल उभे द्वै कदली खंभ बिन पात। —सूर०।

मातुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मामा की स्त्री। मामी। २ भाँग।

मातुश्री—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ+श्री] माता जी।

मातृ—संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।

मातृक—वि० [सं०] माता संबंधी।

मातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाई। धाय। २. माता। जननी। ३ तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।

मातृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] 'माता' होने का भाव। माँपन।

मातृपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृपूजन] विवाह की एक रीति जिसमें पूर्वों से पितरों का पूजन किया जाता है। मातृकापूजन।

मातृभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए सीखता है। माँ से ग्रहण की हुई भाषा।

मातृष्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] माँ की बहन। मौसी।

मात्र—अव्य० [सं०] केवल। भर। सिर्फ।

मात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिमाण। मिकदार। २ एक बार खाने योग्य औषध। ३ उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कल। कला। ४ वह स्वरसूचक रेखा जो अक्षर के ऊपर नीचे या आगे पीछे लगाई जाती है।

मात्रासमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।

मात्रिक—वि० [सं०] १ मात्रा संबंधी। २ जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य—संज्ञा पुं० [सं०] ईर्ष्या। डाह।

माथ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"।

माथना(पु)—क्रि० स० दे० "मथना"।

माथा—संज्ञा पुं० [स० मस्तक] १. सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।

मुहा०—माथा ठनकना = पहले से ही किसी दुर्घटना या विपरीत बात के होने की आशंका होना। माथे चढ़ाना या धरना = शिरोधार्य करना। सादर स्वीकार करना। माथे पर बल पड़ना = आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। माथे मानना = सादर स्वीकार करना।

यौ०—माथापच्ची = बहुत अधिक बकना या समझाना। सिर खपाना।

२ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

माथुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २ ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। ३ कायस्थों की एक उपजाति।

माथे—क्रि० वि० [हिं० माथा] १ मस्तक पर। सिर पर। २. भरोसे। सहारे पर।

माद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मद"।

मादक—वि० [स०] नशा उत्पन्न करनेवाला। जिसमें नशा हो। नशीला।

मादकता—संज्ञा स्त्री० [स०] मादक होने का भाव। नशीलापन।

मादन—वि० [स०] १ मादक। २ मत्त करनेवाला।

संज्ञा पुं० कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

मादर—संज्ञा स्त्री० [फा०] माँ। माता।

संज्ञा पुं० [सं० मर्दल] एक प्रकार का मृदंग। उ०—बाजहिं ढोल दुंदुभी भेरी। मादर, तूर, झाँझ चहुँ फेरी।—पदमावत।

मादरजाद—वि० [फा०] १ जन्म का। पैदाइशी। २ सहोदर (भाई)। ३ बिलकुल नंगा। दिगंबर।

मादरिया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मादर"।

मादरी—वि० [फा०] मादर या माता से संबंध रखनेवाला। माता का, जैसे—मादरी जबान।

मादा—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा (जीवजंतु)।

माद्दा—संज्ञा पुं० [अ०] १ मूल तत्त्व। २ योग्यता। ३ मवाद। पीब।

माद्री—संज्ञा स्त्री० [स०] पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

माधव—संज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। नारायण। २ वैशाख मास। ३ वसंत ऋतु। ४ एक वृत्त। मुक्तहरा।

वि० [स्त्री० माधवी, माधविका] १ मधु संबंधी। २ मस्त करनेवाला।

माधविका—संज्ञा स्त्री० दे० "माधवी"।

माधवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं। २ सवैया छंद का एक भेद। ३. एक प्रकार की शराब। ४ तुलसी। ५ दुर्गा। ६ माधव की पत्नी।

माधुरई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० माधुरी] मधुरता।

माधुरता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।

माधुरया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "माधुरी"।

माधुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिठास। २ शोभा। सुंदरता। ३ मद्य। शराब।

माधुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मधुरता। २ सुंदरता। ३ मिठास। मीठापन। ४ पांचाली रीति के अंतर्गत काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

माधैया(पु)—संज्ञा पुं० दे० "माधव"।

माधो—संज्ञा पुं० [स० माधव] १ श्रीकृष्ण। २ श्रीरामचंद्र जी।

माध्यंदिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

माध्यम—वि० [सं०] मध्य का। बीचवाला।

संज्ञा स० १ कार्य सिद्धि का उपाय या साधन। २ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।

माध्यमिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्धों का एक भेद। २ मध्य देश।

माध्यस्थ—संज्ञा पुं० दे० "मध्यस्थ"।

माध्याकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचा करता है।

माध्व—संज्ञा पुं० [स०] वैष्णवों के चार मुख्य संप्रदायों में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

मान—संज्ञा पुं० [स०] १ माप, तौल या नाप आदि। परिमाण। मिकदार। २ वह साधन जिसके द्वारा कोई चीज नापी या तौली जाय। पैमाना। ३ अभिमान। शेखी।

मुहा०—मान मथना = गर्व चूर्ण करना।

४ प्रतिष्ठा। इज्जत। सम्मान।

मुहा०—मान रखना = प्रतिष्ठा करना।

यौ०—मान महत = आदर सत्कार। प्रतिष्ठा

५ मन का वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है (साहित्य)। उ०—विधि, विधि कौन करै, टरै नहीं परै हूँ पानु। चितै, कितै लै धर्यौ इतौ इतै तन मानु।—बिहारी०।

मुहा०—मान मनाना = रूठे हुए को मनाना। मान मारना = मान छोड़ देना।

६ सामर्थ्य। शक्ति।

मानकंद—संज्ञा पुं० [स० माणक] १ एक प्रकार का मीठा कंद। २ सालिब मिस्री।

मानक—संज्ञा पुं० [स० मान+क] किसी वस्तु का वह निश्चित रूप या माप जिसके अनुसार उस वर्ग की और चीजों के गुण दोष का माप होना हो। मानदंड।

मानकच्चू—संज्ञा पुं० दे० "मानकंद"।

मानक्रीडा—वि० स्त्री० [सं०] सूदन के अनुसार एक प्रकार का छंद।

मानगृह—संज्ञा पुं० [स०] कोपभवन। उ०—बैठी जाय एकांत भवन में जहाँ मानगृह चारु।—सूर०।

मानचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्थान का नकशा।

मानता—संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मानदंड—संज्ञा पुं० [सं० मान+दंड] वह निश्चित या स्थिर किया हुआ माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अंदाज लगाया जाय।

मानधन—वि० [सं०] जो अपने मान या इज्जत को ही धन समझता हो।

मानना—क्रि० अ० [सं० मानन] १. अंगीकार करना। फर्ज करना। समझना। ३ ध्यान में लाना। समझना। ४ ठीक मार्ग पर आना।

क्रि० स० १ स्वीकृत करना। मंजूर करना। २ किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। ३ पारगत समझना। उस्ताद समझना। ४. धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ५ देवता आदि को भेंट करने का प्रण

करना। मन्नत करना। ६ ध्यान में लाना। समझना।

माननीय—वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जो मान करने योग्य हो। पूजनीय।

मान परेखा—सज्ञा पुं० [?] आशा। भरोसा।

मानमंदिर—सज्ञा पुं० [सं०] १ कोपभवन। २. वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।

मानमनौती—सज्ञा स्त्री० [हिं० मान+मनौती] १ मन्नत। मन्नौती। १. रूठने और मानने की क्रिया।

मानमरोरⓅ†—सज्ञा स्त्री० दे० "मनमुटाव"।

मानमोचन—सज्ञा पुं० [सं०] रूठे हुए प्रिय को मनाना।

मानव—सज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य। आदमी। २. १४ मात्राओं के छंदों की सज्ञा।

मानवता—सज्ञा स्त्री० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत। आदमीपन।

मानवपन—सज्ञा पुं० दे० "मानवता"।

मानवशास्त्र—सज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मानव जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।

मानवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।

वि० [सं० मानवीय] मानव संबंधी।

मानवीय—वि० [सं०] मानव संबंधी।

मानवेंद्र—सज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। २ श्रेष्ठ पुरुष।

मानस—सज्ञा पुं० [सं०] [भाव० मानसता] १ मन। हृदय। २ मानसरोवर। ३. कामदेव। ४. संकल्प विकल्प। ५ मनुष्य। ६ दूत।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २ मन का विचारा हुआ।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

मानसपुत्र—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो।

मानसर—सज्ञा पु० दे० "मानसरोवर"।

मानसरोवर—सज्ञा पुं० [सं० मानस+सरोवर] हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

मानसशास्त्र—सज्ञा पुं० [सं०] मनोविज्ञान।

मानसहस—सज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त का नाम। मानहस। रणहंस।

मानसिक—वि० [सं०] १. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन सबंधी। मन का।

मानसी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। २. एक विद्या देवी।

वि० मन का। मन से उत्पन्न।

मानसून—सज्ञा पुं० [अं०] १ एक प्रकार की वायु जो भारतीय महासागर में अप्रैल से अक्तूबर मास तक बराबर दक्षिण पश्चिम के कोण से और अक्तूबर से अप्रैल तक उत्तर पूर्व के कोण से चलती है। अप्रैल से अक्तूबर तक जो हवा चलती है प्राय उसी के द्वारा भारत में वर्षा भी हुआ करती है। २ वह वायु जो महादेशों और महाद्वीपों तथा उनके आसपास के समुद्रों में पड़नेवाले वातावरण सबंधी पारस्परिक अतर के कारण उत्पन्न होती है और जो प्राय छ मास तक एक निश्चित दिशा में और छ मास तक उसकी विपरीत दिशा में बहती है।

मानहस—सज्ञा पुं० [सं०] मनहस वृत्त।

मानहानि—सज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज्जती। हतक इज्जत।

मानहुँⓅ—अव्य० दे० "मानो"।

माना—सज्ञा पुं० [इब०] एक प्रकार का मीठा निर्यास, जो रेचक भी होता है।

Ⓟ†क्रि० स० [सं० मान] १ नापना। तौलना। २. जाँचना।

†सज्ञा पुं० [सं० मान] अन्नादि नापने का पात्र जो लकड़ी, मिट्टी या धातु का बना होता है।

क्रि० अ० दे० "समाना" या "अमाना"।

मानिंद—वि० [फा०] समान। तुल्य। समानित।

मानिक—सज्ञा पुं० [सं० माणिक्य] लाल रंग की एक मणि। पद्मराग।

मानिकचंदी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मानिकचंद] साधारण छोटी सुपारी।

मानिक रेत—सज्ञा स्त्री० [हिं० मानिक+रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ करते हैं।

मानित—वि० [सं०] समानित। प्रतिष्ठित।

मानिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ गौरव। समान। २. अभिमान।

मानिनी—वि० स्त्री० [सं०] १ मानवती। गर्ववती। २ मान करनेवाली। रुष्टा।

सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।

मानी—वि० [सं० मानिन्] [स्त्री० मानिनी] १. अहकारी। घमडी। २. संमानित।

सज्ञा पुं० वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।

सज्ञा स्त्री० [अ०] अर्थ। मतलब तात्पर्य।

मानुखⓅ—सज्ञा पुं० दे० "मनुष्य"।

मानुष—वि० [सं०] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य का।

सज्ञा पु० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मानुषिक—वि० [सं०] मनुष्य का।

मानुषी—वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य सबंधी। उ०—दूरि जब लौं जरा रोगरु चलत इद्री भाई। आपनो कल्याण करि ले मानुषी तनु पाई।—सूर०।

मानुष्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य का धर्म या भाव। मनुष्यता। २ मनुष्य का शरीर।

मानुस—सज्ञा पुं० [सं० मानुष] मनुष्य।

माने—सज्ञा पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।

मानो—अव्य० [हिं० मानना] जैसे। गोया।

मान्य—वि० मानने योग्य। माननीय। २ पूजनीय। पूज्य।

मान्यता—सज्ञा [सं०] १. आदर्श। मान्य होने का भाव। स्वीकृति। २ प्रामाणिकता।

माप—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. मापने की क्रिया या भाव। नाप। २ वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मान।

मापक—सज्ञा पुं० [वि०] १ मान। माप। पैमाना। २ वह जिससे कुछ मापा जाय। ३ वह जो मापता हो।

मापना—क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना। उ०—कहि धौं शुक कहा धौं कीजै मापुन

भए भिखारी । जैजैकार भयो भुव मापत तीन पैंड भइ सारी । —सूर० । २ किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिये कोई क्रिया करना । नापना ।

क्रि० अ० [सं० मत्त] मतवाला होना ।

मापमान—संज्ञा पुं० दे० "मानदंड" ।

माफ़—वि० [अ०] जो क्षमा कर दिया गया हो । क्षमित ।

माफ़कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुकूलता । २ मेल । मैत्री ।

माफ़िक़—वि० [अ० मुआफ़िक़] १ अनुकूल । अनुसार । २ योग्य ।

माफ़ी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ क्षमा । २ वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ़ हो ।

यौ०—माफ़ीदार=वह जिसकी भूमि की मालगुजारी सरकार ने माफ़ की हो ।

मामⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० माम्] १ ममता । अहकार । २ शक्ति । अधिकार ।

मामता—संज्ञा स्त्री० [सं० ममता] १ अपनापन । आत्मीयता । २. प्रेम । मुहब्बत ।

मामलत, मामलतिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [अ० मुआमिलत] १ मामला । व्यवहार की बात । २. विवादास्पद विषय ।

मामला—संज्ञा पुं० [अ० मुआमिला] १ व्यापार । काम । धंधा । उद्यम । २ पारस्परिक व्यवहार । ३ व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय । ४. झगड़ा । विवाद । ५. मुकद्दमा ।

मामा—संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी] माता का भाई ।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ माता । माँ । २ रोटी पकानेवाली स्त्री । ३ नौकरानी ।

मामी—संज्ञा स्त्री० [सं० मा=निषेधार्थक] अपने दोष पर ध्यान न देना ।

मुहा०—मामी पीना=मुकर जाना ।

मामूल—संज्ञा पुं० [अ०] रीति । रिवाज ।

मामूली—वि० [अ०] १ नियमित । नियत । २ सामान्य । साधारण ।

मायⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १ माता । माँ । जननी । उ०—जसुमति माय लाल अपने को शुभ दिन डोल झुलायो । —सूर० । २ बड़ी या आदरणीय स्त्री ।

संज्ञा स्त्री० दे० "माया" ।

अव्य० [सं० मध्य] दे० "माहि" ।

मायक—संज्ञा पुं० दे० "मायावी" ।

वि० [सं० मायिक] मायामय । उ०—गत अभिमान न यह सुख लहै । देहादिक कों मायक कहै । —नंददास ।

मायका—संज्ञा पुं० [सं० मातृ] स्त्री के लिये उसके मातापिता का घर । नैहर । पीहर ।

मायनⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० मातृका+आनयन] १ वह दिन या तिथि जिसमें विवाहादि में मातृकापूजन और पितृनिमंत्रण होता है । २ उपर्युक्त दिन का कृत्य ।

मायनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "मायाविनी" ।

मायल—वि० [फ़ा०] १ झुका हुआ । रुजू । प्रवृत्त । २. मिश्रित । मिला हुआ (रंग) ।

माया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी । २ द्रव्य । धन । संपत्ति । दौलत । ३. अविद्या । अज्ञानता । भ्रम । ४ छल । कपट । धोखा । उ०—धरि कै कपट भेष भिक्षुक को दसकंधर तहँ आयो । हरि लीन्हीं छिन में माया करि अपने रथ बैठायो ।—सूर० । ५ सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण । प्रकृति । उ०—माया माहिं नित्य लै पावै । माया हरि पद माहिं समावै ।—सूर० । ६ ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है । ७. इंद्रजाल । जादू । ८ इंद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, तगण, यगण, सगण और अंत में गुरु, कुल ११ वर्ण हों । उ०—कोऊ बोली ता कहँ लै आव सयानी । माया यापै, डार दई री हम जानी । ६ एक वर्णवृत्त । १०. मय दानव की कन्या जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और सूपनखा पैदा हुए थे । ११ किसी देवता की कोई लीला, शक्ति या प्रेरणा । १२ दुर्गा । १३ बुद्धदेव (गौतम) की माता का नाम ।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० माता] माँ । जननी ।

Ⓟ†संज्ञा स्त्री० [हिं० ममता] १ किसी को अपना समझने का भाव । ममत्व । २ कृपा । दया । अनुग्रह ।

मायादेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध की माता का नाम ।

मायापात्र—वि० [सं०] धनवान् ।

मायावाद—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का श्रीशंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत ।

मायावादी—संज्ञा पुं० [सं० मायावादिन्] वह जो सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझे ।

मायाविनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छल या कपट करनेवाली स्त्री । ठगिनी ।

मायावी—संज्ञा पुं० [सं० मायाविन्] [स्त्री० मायाविनी] १ बहुत बड़ा चालाक । धोखेबाज । फरेबी । २ एक दानव जो मय या दुंदुभी नामक राक्षस का पुत्र था । उ०—मयसुत मायावी तेहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ ।—मानस । ३ परमात्मा । ४ जादूगर ।

मायास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र । कहते हैं कि इसका प्रयोग विश्वामित्र ने श्रीरामचंद्र जी को सिखाया था ।

मायिक—वि० [सं०] १ माया से बना हुआ । बनावटी । जाली । २. मायावी ।

मायूस—वि० [अ०] [संज्ञा मायूसी] निराश । नाउम्मेद ।

मार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव । २. विष । जहर । ३ धतूरा ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] १ मारने की क्रिया या भाव । २ आघात । चोट । ३ निशाना । ४ मारपीट ।

अव्य० [हिं० मारना] अत्यंत । बहुत ।

Ⓟ†संज्ञा स्त्री० [हिं० माला] माला ।

मारकंडेय—संज्ञा पुं० दे० "मार्कंडेय" ।

मारक—वि० [सं०] १ मार डालनेवाला । संहारक । २ किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला ।

मारका—संज्ञा पुं० [अं० मार्क] १ चिह्न । निशान । २ विशेषतासूचक चिह्न (व्यापार) ।

संज्ञा पुं० [अ०] १ युद्ध । लड़ाई । २ बहुत बड़ी या महत्वपूर्ण घटना ।

मारकाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √मार+काट] १ युद्ध । लड़ाई । जंग । २ मारने काटने का काम या भाव ।

मारकीन—संज्ञा पुं० [अ० मैनकीन] एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा ।

मारकेश—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहों का वह योग जो किसी मनुष्य के लिये घातक होता है (ज्योतिष)।

मारग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।

मुहा०—मारग मारना = रास्ते में पथिक को लूट लेना। मारग लगना = रास्ता लेना।

मारगन—संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] १ बाण। तीर। २ भिक्षुक। भिखमंगा।

मारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। २ एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य के लिये यह प्रयोग किया जाता है, वह मर जाता है।

मारतंड—संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड"।

मारतौल—संज्ञा पुं० [पुर्त० मोर्टली] एक प्रकार का हथौड़ा।

मारना—क्रि० स० [सं० मारण] १. वध करना। हनन करना। प्राण लेना। २ पीटना या आघात पहुँचाना। ३ जरब लगाना। ४ दुःख देना। सताना। ५ कुश्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना। ६ बंद कर देना। ७ शस्त्र आदि चलाना। फेंकना।

मुहा०—गोली मारना = (१) किसी पर बंदूक चलाना या छोड़ना। (२) जाने देना।

८ किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदि को रोकना। ९ नष्ट कर देना। न रहने देना। १० शिकार करना। आखेट करना। ११ गुप्त रखना। छिपाना। १२ चलाना। संचालित करना।

मुहा०—कुछ पढ़कर मारना = मंत्र से फूँककर कोई चीज किसी पर फेंकना। जादू या टोना मारना = जादू का प्रयोग करना। मंत्र मारना = जादू करना।

१३. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना। १४ बिना परिश्रम के बहुत अधिक धन, माल आदि प्राप्त करना। १५ विजय प्राप्त करना। जीतना। १६ अनुचित रूप से रख लेना। १७ बल या प्रभाव कम करना। १८ निर्जीव सा कर देना। १९ लगाना। देना।

मारपीट—संज्ञा स्त्री० [हिं० मार+√पीट] ऐसी लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ।

मारपेच—संज्ञा पुं० [हिं० मार+पेच] धूर्तता। चालबाजी।

मारफत—अव्य० [अ०] द्वारा। जरिए से।

मारवाड़—संज्ञा पुं० [हिं० मेवाड़] १. भारत के राजस्थान या राजपूताना राज्य का वह भाग जिसके उत्तर में बीकानेर, दक्षिण में कच्छ, पश्चिम में सिंध और पूर्व में उदयपुर और अजमेर हैं।

मारवाड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० मारवाड़+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० मारवाड़िन] मारवाड़ देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा।

वि० मारवाड़ देश का।

मारा(पु)—वि० [हिं० मारना] जो मार डाला गया हो। मारा हुआ। निहत।

मुहा०—मारा फिरना, मारा मारा फिरना = बुरी दशा में इधर उधर घूमना।

मारामार—क्रि० वि० [हिं० मारना] अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।

मारिच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मारीच"।

मारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] महामारी।

मारीच—संज्ञा पुं० [सं०] वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनकर रामचंद्र को धोखा दिया था।

मारुत—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

मारुति—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान। २ भीम।

मारू—संज्ञा पुं० [हिं० मारना] १ एक बाजा और राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है। २ बहुत बड़ा डंका या धौंसा। उ०—टूटै नग छूटै बान सिंजित बिरद बोले, मर्मरन मारू बाजै बाजत प्रबरू है। —शृंगार०।

संज्ञा पुं० [सं० मरुभूमि] मरुदेश-निवासी।

वि० [हिं० मारना] १ मारनेवाला। २ हृदयभेदक। कटीला।

मारे—अव्य० [हिं० मारना] वजह से।

मार्कंडेय—संज्ञा पुं० [सं०] मृकंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि ये अपने तपोबल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे।

मार्का—संज्ञा पुं० दे० "मारका"।

मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ रास्ता। पथ। २ अगहन का महीना। ३ मृगशिरा नक्षत्र।

मार्गण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्वेषण। ढूँढना। २ बाण।

मार्गन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] बाण।

मार्गशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अगहन मास। कार्तिक के बाद का महीना।

मार्गी—संज्ञा पुं० [सं० मार्गिन्] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री। बटोही।

मार्जन—संज्ञा पुं० दे० "मार्जना"।

मार्जना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मार्जनीय] १ सफाई। २. क्षमा। माफी।

मार्जनीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू।

मार्जार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।

मार्जित—वि० [सं०] साफ किया हुआ।

मार्तंड—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

मार्दव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अहंकार का त्याग। २ दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होना। ३ सरलता।

मार्फत—अव्य० [अ०] द्वारा। जरिए से।

मार्मिक—वि० [सं०] १ जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े। विशेष प्रभावशाली। २ मर्मज्ञ।

मार्मिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्मिक होने का भाव। २ पूर्ण अभिज्ञता। ३ संवेदनशीलता।

मार्शल ला—संज्ञा पुं० [अं०] १ फौजी कानून। २ फौजी कानूनों और अधिकारियों का शासन जो बहुत कठोर होता है।

माल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मल्ल] पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला।

†संज्ञा स्त्री० [सं० माला] १ माला। हार। २ वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में टेकुए को घुमाती है। ३ पंक्ति। पाँती। उ०—चकित चहूँ दिसि चहति, बिछुरि मनु मृगी माल तें। —नंदद स०।

संज्ञा पुं० [अ०] १ संपत्ति। धन।

मुहा०—माल चीरना या मारना = पराया धन हड़पना। दूसरे की संपत्ति दबा बैठना।

२ सामग्री। सामान। असबाब।

यौ०—माल टाल = धन संपत्ति। माल मता = माल असबाब।

३ क्रयविक्रय का पदार्थ। ४ वह धन जो कर में मिलता है। ५ फसल की

उपज। ६ उत्तम और सुस्वादु भोजन। ७ गणित में वर्ग का घात। वर्ग अंक। ८ वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो।

मालकँगनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० माला?+ कँगुनी] एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।

मालकोश—संज्ञा पुं० [स०] संपूर्ण जाति का एक राग। कौशिक राग। हनुमत ने इसे छ रागों के अंतर्गत माना है।

मालखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ माल असबाब रहता हो। भंडार। २ वह स्थान जहाँ सरकारी और प्रजा से अधिकृत माल रखा जाता है।

मालगाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० माल+ गाड़ी] रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है।

मालगुजार—संज्ञा पुं० [फा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष।

मालगुजारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह भूमिकर जो जमींदार से सरकार लेती है। २ लगान।

मालगोदाम—संज्ञा पुं० [हिं० माल+ गोदाम] स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।

मालती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है। २ छ अक्षरों का छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो जगण हों। उ०—प्रभू हिय धार। सुमालति हार॥ ३ बारह अक्षरों का छंद जिसके प्रत्येक चरण में नगण के बाद दो जगण और अंत में एक रगण कुल १२ अक्षर होते हैं। उ०—निज जर आयुहिं मूढ काटहीं। विमुख प्रभू रहि, जन्म नासहीं॥ ४ सवैया का मत्तगयंद नामक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत में दो गुरु वर्ण हों। उ०—या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं। आठहुँ सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाय चराय बिसारौं॥ ५ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ६ रात्रि। रात।

मालदार—वि० [फा०] धनी। संपन्न।

मालद्वीप—संज्ञा पुं० [सं० मलयद्वीप] भारतवर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज।

मालपूआ—संज्ञा पुं० [अ० माल+स० पूप] पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।

मालव—संज्ञा पुं० [सं०] १ मालवा देश। २ एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं। ३. मालव देशवासी या मालव का पुरुष।

वि० मालव देश संबंधी। मालवे का।

मालवा—संज्ञा पुं० [स० मालव] एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है।

मालवीय—वि० [सं०] १ मालवे का। २ मालव देश का निवासी।

माला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। अवली। २ फूलों का हार। गजरा।

मुहा०—माला फेरना = जपना। भजना।

३ समूह। झुंड। ४ दूब। ५ उप जाति छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और अंत में एक सगण हो। उ०—दहत चरण, रति सुहरि अनुपला। जिमि सित पच्छ, नित दहत शशिकला॥ इसे शशिकला और चंद्रावती भी कहते हैं।

मालादीपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें पूर्वकथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।

मालाधर—संज्ञा पुं० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, सगण, जगण, सगण, यगण, और अंत में लघु गुरु हों। उ०—फिरत हम साथ बधु, तुम्हरिहि चिंता भरे। विरह पल को गिनै जु, नित हाथ माला धरे॥

मालामाल—वि० [फा०] बहुत संपन्न।

मालिक—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मालिका] १ ईश्वर। अधिपति। २ स्वामी। ३ पति। शौहर।

मालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। २ माला। ३ मालिन।

मालिकाना—संज्ञा पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व। मिलकियत। स्वामित्व।

क्रि० वि० मालिक की तरह।

मालिकी—संज्ञा स्त्री० [फा० मालिक] १ मालिक होने का भाव। २. मालिक का स्वत्व।

मालिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ मालिन। २. चंपा नगरी का एक नाम। ३ स्कंद की सात माताओं में से एक। ४ गौरी। ५ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, एक मगण और अंत में दो यगण हों। उ०—जिनकर यह नेमा, मित्र में देखि पावौं। तिन छिन सब कामैं, छाँडिकै शीघ्र धावौं॥ ६ मदिरा नाम का वृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत्य गुरु हो। उ०—रावण की उतरी मदिरा चुपचाप पयान जु लंक कियो। इसे उमा और दिवा भी कहते हैं।

मालिन्य—संज्ञा पुं० [सं०] मलिनता। मैलापन।

मालियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कीमत। मूल्य। २. संपत्ति। ३ कीमती चीज।

मालिया—संज्ञा पुं० [अ० माल] जमीन का लगान। राजस्व। कर।

मालिवान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्।"

मालिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] मलने का भाव या क्रिया। मलाई। मर्दन।

माली—संज्ञा पुं० [स० मालिक] [स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] १. बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। २ एक छोटी जाति। इस जाति के लोग बागों में फूल और फल के वृक्ष लगाते हैं।

वि० [स० मालिन्] [स्त्री० मालिनी] जो माला धारण किए हो। माला पहने हुए।

संज्ञा पुं० १ एक राक्षस जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। २ राजीवगण नामक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ हो। उ०—तन सोहत सुमन, चर्चित चंदना। चरण-सरोज नित, कीजिय वंदना॥ इसका एक वर्णिक भेद भी होता है जिसमें तीन मगण और दो अंत्य गुरु कुल ११ वर्ण होते हैं। उ०—पावौ विश्रामा, धारे ही में भक्ती। भूलौ ना नेमा, तौ पावौगे शक्ती॥ इसमें यदि पाँचवें की जगह आठवें वर्ण पर यति हो तो श्रद्धा छंद होगा। उ०—माँ! मो में गंगा की श्रद्धा, बाढ़ैरी।

वि० [फा०] आर्थिक। धन संबंधी।

मालीदा—संज्ञा पुं० [फा] १ मलीदा। चूरमा। २ एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपड़ा।

मालूम—वि० [अ०] जाना हुआ। ज्ञात।

मालोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमान के भिन्न भिन्न धर्म होते हैं।

माल्य—संज्ञा पुं० [स०] १ फूल। २. माला।

मालयकोश—संज्ञा पुं० दे० "मालकोश"।
माल्यवंत—संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।
माल्यवान्—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २ एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था।
मावतⓟ†—संज्ञा पुं० दे० "महावत"।
मावली—संज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति का नाम।
मावसⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस"।
मावा—संज्ञा पुं० [सं० मृड] १ माँड़। पीच। २. सत्त। निष्कर्ष। ३ प्रकृति। ४. खोया।
माशकी—संज्ञा पुं० [फा० मशक] मशक में पानी भरनेवाला। भिश्ती।
माशा—संज्ञा पुं० [सं० माश] आठ रत्ती का एक बाट या मान।
 संज्ञा पुं० [हिं० माष=उड़द] एक रंग जो कालापन लिए हरा होता है।
 वि० कालापन लिए हरे रंग का।
माशूक—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० माशूका] प्रेमपात्र। प्रिय।
माष—संज्ञा पुं० [सं०] १ उड़द। २ माशा। ३ शरीर के ऊपर का काले रंग का मसा।
 ⓟसंज्ञा स्त्री० दे० "माख"।
माषपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली उड़द।
मास—संज्ञा पुं० [सं०] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बराबर या प्राय ३० दिनों का होता है। महीना।
 ⓟसंज्ञा पुं० दे० "मांस"।
मासनाⓟ†—क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिलना।
 क्रि० स० मिलाना।
मासांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. महीने का अंत। २ अमावस्या। ३. संक्रांति।
मासा—संज्ञा पुं० दे० "माशा"।
मासिक—वि० [सं०] १ मास संबंधी। महीने का। २ महीने में एक बार होनेवाला।
मासी—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] माँ की बहिन। मौसी।
मासूम—वि० [अ०] [संज्ञा मासूमियत] १ निरपराध। बेगुनाह। २ निरीह।
माहँⓟ—अव्य० [सं० मध्य] बीच। में।
माहⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० माघ] माघ मास।
 संज्ञा पुं० [सं० माष] माष। उड़द।
 संज्ञा पुं० [फा०] मास। महीना।
माहतⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] महत्व।
माहताब—संज्ञा पुं० [फा०] १ चंद्रमा। २ चाँदनी।
माहताबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दे० "महताबी"। २. एक प्रकार का कपड़ा।
माहनाⓟ—क्रि० अ० दे० "उमाहना"।
माहर—संज्ञा पुं० [सं० माहिर] इंद्रासन।
 वि० दे० "माहिर"।
माहली—संज्ञा पुं० [हिं० महल] १. अंतःपुर में जानेवाला सेवक। महली। खोजा। २ सेवक। दास।
माहवार—क्रि० वि० [फा०] प्रति मास।
 वि० हर महीने का। मासिक।
माहवारी—वि० [फा०] हर महीने का।
माहाँ†—अव्य० दे० "महँ"।
माहात्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. महिमा। गौरव। बड़ाई। २ आदर। मान।
माहिⓟ—अव्य० [सं० मध्य] १. भीतर। अंदर। २ अधिकरण कारक का चिह्न—'में' या 'पर'।
माहिर—वि० [अ०] निपुण। तत्वज्ञ। कुशल।
माहिलाⓟ†—संज्ञा पुं० [अ० मल्लाह] माँझी।
माहिष्मती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।
माहींⓟ—अव्य० दे० "माँहि"। उ०—सखि जब सर स्नानहिं लै जाहीं। फूले अमलनि कमलनि माहीं।—नंददास०।
माही—संज्ञा स्त्री० [फा०] मछली।
माही मरातिब—संज्ञा पुं० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।
माहुर—संज्ञा पुं० [सं० मधुर] विष। जहर।
माहेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र का नाम।
माहेश्वर—वि० [सं०] महेश्वर संबंधी।
 संज्ञा पुं० १ एक यज्ञ का नाम। २ एक उपपुराण का नाम। ३ पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४ शैव संप्रदाय का एक भेद। ५ एक अस्त्र।
माहेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. एक मातृका। ३. वैश्यों की एक जाति।
मिंडवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मेंड़] मेंड़। उ०—इंद्र के बरषत जल भरि भारी। टूटि फूटि गई सब मिंडवारी।—नंददास०।
मिंडाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √मींड़+आई (प्रत्य०)] १ मींड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। २. मींड़ने की मजदूरी। ३. देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जिससे छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।
मितⓟ—संज्ञा पुं० दे० "मित्र"।
मिकदार—संज्ञा स्त्री० [अ०] परिमाण। मात्रा।
मिचकना†—क्रि० अ० [हिं० मिचना] (आँखों का) बार बार खुलना और बंद होना।
मिचकाना†—क्रि० स० [हिं० मिचना] बार बार (आँखें) खोलना और बंद करना।
मिचकी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] छलाँग।
मिचना—क्रि० अ० [हिं० मींचना का अ० रूप०] (आँखों का) बंद होना।
मिचलाना—क्रि० अ० [हिं० मतलाना] कै आने को होना। मतली आना।
मिचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिचलाना] जी मिचलाने की क्रिया। मतली।
मिचौनी—संज्ञा स्त्री० दे० "आँखमिचौली"।
मिछाⓟ†—वि० दे० "मिथ्या"।
मिजराब—संज्ञा स्त्री० [अ०] तार का एक प्रकार का छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं। डंका। नाखुना।
मिजाज—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। तासीर। २ प्रवृत्ति। स्वभाव। प्रकृति। ३ शरीर या मन की दशा। तबीयत। दिल।
 मुहा०—मिजाज खराब होना=(१) मन में अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। (२) अस्वस्थता होना। मिजाज बिगाड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिजाज पाना=(१) किसी के स्वभाव से परिचित होना। (२) किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिजाज पूछना=यह पूछना कि आपका शरीर तो अच्छा है।
 ४ अभिमान। घमंड। शेखी।

मुहा०—मिजाज न मिलना = घमंड के कारण किसी से बात न करना।

मिजाजदार—वि० [अ० मिजाज+फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसे बहुत अभिमान हो। घमंडी।

मिजाजपुरसी—संज्ञा स्त्री० [अ० मिजाज+फ़ा० पुरसी] किसी का मिजाज या कुशल-समाचार पूछना।

मिजाज शरीफ ?—[अ०] आप अच्छे तो हैं ? आप सकुशल तो हैं ?

मिजाजी—वि० दे० "मिजाजदार"।

मिटना—क्रि० अ० [सं० मृष्ट] १ किसी अंकित चिह्न आदि का न रह जाना। २ खराब या नष्ट हो जाना। न रह जाना।

मिटाना—क्रि० स० [हिं० मिटना का स० रूप] १ रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना। २ नष्ट करना। ३ खराब करना।

मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ पृथ्वी। भूमि। जमीन। २ वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है। खाक। धूल।

मुहा०—मिट्टी करना = नष्ट करना। खराब करना। मिट्टी के मोल = बहुत सस्ता। मिट्टी डालना = (१) किसी बात को जाने देना। (२) किसी के दोष को छिपाना। मिट्टी देना = (१) मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी कब्र में तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। (२) कब्र में गाड़ना। मिट्टी में मिलाना = (१) नष्ट होना। चौपट होना। (२) मरना।

यौ०—मिट्टी का पुतला = मानव शरीर। मिट्टी खराबी = (१) दुर्दशा। (२) बरबादी। नाश।

३ राख। भस्म। ४ शरीर। बदन।

मुहा०—मिट्टी पलीद या बरबाद करना = दुर्दशा करना। खराबी करना।

५ शव। लाश। ६. शारीरिक गठन। बदन की बनावट। ७ चंदन की जमीन जो इत्र में दी जाती है।

मिट्टी का तेल—संज्ञा पुं० [हिं० मिट्टी+तेल] एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसका व्यवहार प्रायः दीपक आदि जलाने के लिये होता है।

मिट्ठू—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+ऊ (प्रत्य०)] १ मीठा बोलनेवाला। २. तोता।

वि० १ चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २ प्रिय बोलनेवाला।

मिट्ठाⓅ—वि० [सं० मिष्ट] मीठा। उ०—मिसिल बचना सब जन मिट्ठा।

मिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा] चुंबन। चूमा।

मिठ—वि० [हिं० मीठा] मीठा का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—मिठबोला।

मिठबोला—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+बोलना] १ मधुरभाषी। २ वह जो मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करता हो।

मिठलोना—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा = कम+नोन] थोड़े नमकवाला।

मिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा+आई (प्रत्य०)] १ मिठास। माधुरी। २ कोई मीठी खाने की चीज। ३ कोई अच्छा पदार्थ।

मिठाना—क्रि० अ० [हिं० मीठा से ना० धा०] मीठा होना।

मिठास—संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा+आस (प्रत्य०)] मीठा होने का भाव। मीठापन। माधुर्य।

मितंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० मितंगम] हाथी।

मित—वि० [सं०] १. जो सीमा के अंदर हो। परिमित। २ थोड़ा। कम।

मितभाषी—संज्ञा पुं० [सं० मितभाषिन्] कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितमति—वि० [सं०] थोड़ी बुद्धिवाला।

मितव्यय—संज्ञा पुं० [सं०] कम खर्च करना। किफायत।

मितव्ययता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कम खर्च करने का भाव।

मितव्ययी—संज्ञा पुं० [सं० मितव्ययिन्] वह जो कम खर्च करता हो।

मिताईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

मिताक्षरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वरकृत टीका।

मितार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करे।

मिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मान। परिमाण। २ सीमा। हद। ३ काल की अवधि।

मिती—संज्ञा स्त्री० [सं० मिति] १ देशी महीने की तिथि या तारीख।

मुहा०—मिती पुगना या पूजना = हुंडी का नियत समय पूरा होना।

२. दिन। दिवस।

मितीकाटा—संज्ञा पुं० [हिं० मिती+काटा] सूद जोड़ने का एक देशी सहज ढंग।

मित्तⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मित्र"। उ०—होत बहिक्रम भेद तें जिती नायिका मित्त। लच्छन सब क्रम तें कहौं लखि सुनौ दै चित्त। —रससाराश।

मित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक हो। बंधु। सखा। दोस्त। २ सूर्य का एक नाम। ३ बारह आदित्यों में से पहला। ४. पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला। ५ आर्यों के एक प्राचीन देवता। ६ भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उदुंबर और पांचाल आदि में था।

मित्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मित्र होने का भाव। दोस्ती। २ मित्र का धर्म।

मित्रत्व—संज्ञा पुं० दे० "मित्रता"।

मित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मित्र नामक देवता की स्त्री। २ शत्रुघ्न की माता सुमित्रा।

मित्राईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

मित्राक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] छंद के रूप में बना हुआ पद।

मित्रावरुण—संज्ञा पुं० [सं०] मित्र और वरुण नामक देवता।

मिथ—अव्य० [सं०] १ आपस में। २ एकांत में। गुप्त रूप से।

मिथिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।

मिथुन—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २ संयोग। समागम। ३ मेष आदि राशियों में से तीसरी राशि।

मिथ्या—वि० [सं०] असत्य। झूठ।

मिथ्याचार—संज्ञा पुं० [सं०] कपटपूर्ण व्यवहार।

मिथ्यात्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिथ्या होने का भाव। २ माया।

मिथ्याध्यवसिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें कोई एक असंभव या मिथ्या बात निश्चित करके कोई दूसरी बात कही जाती है।

मिथ्यापन—संज्ञा पुं० दे० "मिथ्यात्व"।

मिथ्यायोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जो रूप, रस या प्रकृति आदि के विरुद्ध हो (वैद्यक)।

मिथ्यावादी—संज्ञा पुं० [सं० मिथ्यावादिन्] [स्त्री० मिथ्यावादिनी] वह जो झूठ बोलता हो। झूठा।

मिथ्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना। स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भोजन।

मिनती|—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

मिनहा—वि० [अ०] जो काट या घटा लिया गया हो। मुजरा किया हुआ।

मिनमिन—क्रि० वि० [अनु०] मंद या अस्पष्ट स्वर में।

मिनमिनाना—क्रि० अ० [अनु०] धीमे स्वर में या नाक से बोलना।

मिनिस्टर—संज्ञा पुं० [अं०] १ केंद्रीय या प्रांतीय शासन के किसी विभाग का सर्वोच्च अधिकारी या शासक। २ एक प्रकार का पादरी या ईसाई धर्माधिकारी।

यौ०—प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मंत्री।

मिनिस्टरी—संज्ञा स्त्री० [अं० मिनिस्टर] मिनिस्टर का कार्य या पद।

मिन्नत—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना। निवेदन।

मिमियाई|—संज्ञा स्त्री० दे० "मोमियाई"।

मिमियाना—क्रि० अ० [सं०√मा के 'मिमीते' आदि रूपों से] भेड़ या बकरी का बोलना।

मियाँ—संज्ञा पुं० [फा०] १ स्वामी। मालिक। २ पति। खसम। ३. महाशय। [मुसल०] ४ मुसलमान।

मियाँ मिट्ठू—संज्ञा पुं० [हिं० मियाँ+मिट्ठू] १ मीठी बोली बोलनेवाला। मधुरभाषी।

मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना=अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना।

२ तोता। ३ मूर्ख। बेवकूफ।

मियाद—संज्ञा स्त्री० दे० "मीयाद"।

मियान—संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान"।

मियाना—वि० [फा०] मध्यम आकार का।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।

मिरगⓅ|—संज्ञा पुं० [सं० मृग] मृग। हिरन।

मिरगी—संज्ञा स्त्री० [सं० मृगी] एक प्रसिद्ध मानसिक रोग जिसमें रोगी प्रायः मूर्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।

मिरचा—संज्ञा पुं० [सं० मरिच] लाल मिर्च।

मिरज़ई—संज्ञा स्त्री० [फा० मिरजा] कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।

मिरजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. मीर या अमीर का लड़का। अमीरजादा। २. राजकुमार। कुँवर। ३. मुगलों की एक उपाधि।

मिरिगारन—संज्ञा पुं० [सं० मृग+अरण्य] जानवरों से भरा वन। उ०—होत पयान जाइ दिन केरा। मिरिगारन महँ भएउ बसेरा। —पदमावत।

मिरियासⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मीरास"।

मिर्च—संज्ञा स्त्री० [सं० मरिच] १ कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च लाल मिर्च आदि हैं। २ इस वर्ग की एक प्रसिद्ध तिक्त फली जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। लाल मिर्च। मिरचा। ३ एक *प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसका* व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। इसी तरह का सफेद दाना जो ठंडाई आदि में प्रयुक्त होता है। गोल मिर्च।

मिल—संज्ञा पुं० [अं०] कारखाना।

मिलक|—संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १ जमीन जायदाद। जमींदारी। २ जागीर।

मिलकनाⓅ—क्रि० स० [?] जलाना।

मिलकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलक+ई (प्रत्य०)] १ जमींदार। २ दौलतमंद। अमीर।

मिलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट। २. मिश्रण। मिलावट।

मिलनसार—वि० [सं० मिलन+हिं० सार (प्रत्य०)] [संज्ञा मिलनसारी] सद्व्यवहार रखनेवाला और सुशील। सबसे मेल जोल रखनेवाला।

मिलना—क्रि० स० [सं० मिलन] १ संमिलित होना। मिश्रित होना। २ दो भिन्न भिन्न पदार्थों का एक होना। ३. समूह या समुदाय के भीतर होना।

यौ०—मिला जुला=(१) संमिलित। (२) मिश्रित।

४ सटना। जुड़ना। चिपकना। ५ बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ६ आलिंगन करना। गले लगाना। ७ भेंट होना। मुलाकात होना। ८ मेल मिलाप होना। ९ लाभ होना। नफा होना। १० प्राप्त होना।

मिलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलना+ई (प्रत्य०)] विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।

मिलवन—क्रि० स० [मिलाना] पहुँचाना। चरने के लिये जानवरों के झुंड में छोड़ना। उ०—गैयाँ मिलवन मिस उठि भोर। गह-गौरी गवनी उहि ओर।—नंददास०।

मिलमालिक—संज्ञा पुं० कारखानों का चलानेवाला। पूँजीवाला।

मिलवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना] मिलाने की क्रिया, भाव, या मजदूरी।

मिलवाना—क्रि० स० [हिं० मिलाना का प्रे० रूप] मिलने का काम दूसरे से कराना।

संज्ञा स्त्री० १ मिलाने की क्रिया या भाव। २ विवाह की मिलनी नामक रस्म।

मिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√मिल+आई (प्रत्य०)] १ मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २ भेंट। मुलाकात। (जेल के कैदियों के साथ)।

मिलान—संज्ञा पुं० [हिं० मिलाना] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २ तुलना। मुकाबला। ३. ठीक होने की जाँच। ४ पड़ाव। उ०—ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई। तब हम कहब पुरुष भल सोई। —पदमावत।

मिलाना—क्रि० स० [सं० मिलन] १ मिश्रण करना। २ दो भिन्न भिन्न पदार्थों को एक करना। ३. संमिलित करना। एक करना। ४ सटाना। जोड़ना। चिपकाना। ५ तुलना करना। मुकाबला करना। ६ ठीक होने की जाँच करना। ७ भेंट या परिचय कराना। ८. सुलह या संधि कराना। ९. अपना भेदिया या साथी बनाना। साँटना। १० बजाने से पहले बाजों का सुर ठीक करना।

मिलाप—संज्ञा पुं० [हिं०√मिल+आप (प्रत्य०)] १ मिलने की क्रिया या भाव। २ मित्रता। ३ भेंट। मुलाकात।

मिलावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√मिल+आवट (प्रत्य०)] १ मिलाए जाने का भाव। २ बढ़िया चीज में घटिया चीज का मेल। खोट।

मिलिंद—संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।

मिलिकⓅ|—संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १ जमींदारी। मिल्कियत। २ जागीर।

मिलिटरी—वि० [अं०] १ सेना संबंधी। फौजी। २ फौज। सेना।

मिलित—वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

मिलौना†—क्रि० स० [हिं० मिलाना] १. दे० "मिलाना"। २. गौ का दूध दुहना।

मिलौनी—संज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई"।

मिल्कियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जमींदारी। २ जागीर। माफी। ३. धन संपत्ति। जायदाद। ४. वह धन संपत्ति जिसपर मालिकों का सा हक हो।

मिल्लत—संज्ञा स्त्री० [हिं०√मिल+त (प्रत्य०)] १ मेलजोल। घनिष्ठता। मिलाप। २ मिलनसारी।

संज्ञा स्त्री० [अ०] मजहब। संप्रदाय। पंथ।

मिशन—संज्ञा पुं० [अँ०] १ किसी विशिष्ट कार्य के लिये जाना या भेजा जाना। २. इस प्रकार भेजे जानेवाले व्यक्ति। ३ ईसाई धर्मप्रचारकों का निवासस्थान।

मिशनरी—संज्ञा पुं० [अँ०] १ ईसाई धर्मप्रचारक। २ सेवाभाव। लोकसेवा।

वि० मिशन संबंधी। मिशन का।

मिश्र—वि० [सं०] १ मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। संयुक्त। २ श्रेष्ठ। बड़ा। ३ जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकार की रकमों की संख्या हो (गणित)।

संज्ञा पुं० [सं०] सरयूपारीण, कान्यकुब्ज, शाकद्वीपी और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

मिश्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मिश्रणीय] १ दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। मेल। मिलावट। २ जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना (गणित)।

मिश्रित—वि० [सं०] एक में मिलाया हुआ।

मिष—संज्ञा पुं० [सं०] १ छल। कपट। २ बहाना। हीला। मिस। ३ ईर्ष्या। डाह।

मिष्ट—वि० [सं०] मीठा। मधुर।

मिष्टभाषी—संज्ञा पुं० [सं० मिष्टभाषिन्] वह जो मीठा बोलता हो। मधुरभाषी।

मिष्टान्न—संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।

मिस—संज्ञा पुं० [सं० मिष] १ बहाना। हीला। २ नकल। पाखंड।

संज्ञा स्त्री० [अं०] कुमारी।

मिसकीन—वि० [अ० मिसकीन] [संज्ञा मिसकीनी] १ बेचारा। दीन। २ गरीब।

मिसकीनताⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ० मिसकीन+हिं० ता (सं० प्रत्य०)] दीनता। गरीबी।

मिसनाⓅ—क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिश्रित होना। मिलना।

क्रि० अ० [हिं० मीसना का अ० रूप] मींजा या मला जाना। मीसा जाना।

मिसरा—संज्ञा पुं० [अ० मिसरअ] उर्दू या फारसी आदि की कविता का एक चरण। पद।

मिसरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मिस्र+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मिस्र देश का निवासी। २ मिस्र देश की भाषा। ३ दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

मिसल—संज्ञा स्त्री० [अ० मिसिल] सिक्खों के अनेक समूह जो अलग अलग नायकों की अधीनता में रणजीतसिंह के बाद स्वतंत्र हो गए थे, जैसे, रामगढ़िया मिसल, अहलूवालिया मिसल आदि।

मिसहा†—वि० [हिं० मिस] १. बहानेबाज। २ कपटी।

मिसाल—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उपमा। २ उदाहरण। नमूना। नजीर। ३ कहावत।

मिसिल—वि० दे० "मिसल"।

संज्ञा स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागजपत्र।

मिस्टर—संज्ञा पुं० [अँ०] साहब। श्रीमान। जनाब।

मिस्कोट—संज्ञा पुं० [अँ० मेस] १ भोजन। २ गुप्त परामर्श।

मिस्तर—संज्ञा पुं० [हिं० मिस्तरी ?] काठ का वह औजार जिसमें राज लोग छत पीटते हैं। पिटना।

संज्ञा पुं० [अ०] डोरे में लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये लिखे जानेवाले कागज के नीचे रख लिया जाता है।

संज्ञा पुं० दे० "मेहतर"।

मिस्तरी—संज्ञा पुं० [अँ० मास्टर] वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।

मिस्तरीखाना—संज्ञा पुं० [हिं० मिस्तरी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ लोहार, बढ़ई आदि काम करते हैं।

मिस्र—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रिका के उत्तरपूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।

मिस्री—संज्ञा स्त्री० दे० "मिसरी"।

मिस्ल—वि० [अ०] समान। तुल्य।

मिस्सा—संज्ञा पुं० [हिं० मिसना] कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।

मिस्सी—संज्ञा स्त्री० [फा० मिसी=तांबे का] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो माजूफल, लोहचून और तूतिए आदि से तैयार किया जाता है और जिसे बहुधा सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

मिहचनाⓅ—क्रि० स० दे० "मीचना"।

मिहानीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।

मिहिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २. आक का पौधा। ३ बादल। ४. चंद्रमा। ५ दे० "वराहमिहिर"।

मिहिरकुल—संज्ञा पुं० [फा० महगुल का सं० रूप] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाण (तुरमान) के पुत्र का नाम।

मिहीं—वि० दे० "महीन"।

मींगी—संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्ग=दाल] बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

मींजना†—क्रि० स० [हिं० मींडना] १. हाथों से मलना। मसलना। २ मर्दन करना।

मींड़—संज्ञा स्त्री० [सं० मीडम्] संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाय। गमक।

मींडकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मेंढक"।

मींडना†—क्रि० स० [हिं० माँडना] हाथों से मलना। मसलना।

मीआद—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी कार्य की समाप्ति आदि के लिये नियत समय। अवधि।

मीआदी—वि० [अ० मीआद+हिं० ई (प्रत्य०)] जिसके लिये कोई अवधि नियत हो।

मीच—संज्ञा स्त्री० दे० "मीचु"। उ०—जानति हौं बिधि मीच लिखी हरि वाकी तिहारे बिछोह के बानन। —शृंगार०।

मीचना—क्रि० स० [सं०√ मिष्=झपकना] (आँखें) बंद करना। मूँदना।

मीचुⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्यु] मृत्यु।

मीजान—संज्ञा स्त्री० [अ०] कुल संख्याओं का योग। जोड़ (गणित)।

मीठाⓅ—वि० [सं० मिष्ट] [स्त्री० मीठी] १ चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर।

मुहा०—मीठा होना = किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।

२. स्वादिष्ट। जायकेदार। ३ धीमा। सुस्त। ४ साधारण या मध्यम श्रेणी का। मामूली। ५ हलका। मद्धिम। मंद। ६. नामर्द। नपुंसक। ७ बहुत अधिक सीधा। ८ प्रिय। रुचिकर।

संज्ञा पुं० १ मिठाई २ गुड़।

मीठा जहर संज्ञा पुं० दे० "बछनाग"।

मीठा तेल—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+तेल] तिल का तेल

मीठा नीबू—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+नीबू] जबीरी नीबू चकोतरा।

मीठा पानी—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+पानी] नीबू का सत मिला हुआ पानी। लेमनेड।

मीठी छुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा+छुरी] १ वह जो देखने में मित्र, पर वास्तव में शत्रु हो। विश्वासघातक। २ पटा।

मीत—संज्ञा पुं० दे० "मित्र"।

मीन—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० मीनता] १ मछली। २ मेष आदि १२ राशियों में से अंतिम राशि।

मीनकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

मीना—संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। २ सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग बिरंग का काम। ३ शराब रखने का कंटर।

मीनाकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] [कर्ता मीनाकार] सोने या चाँदी पर होनेवाला रंगीन काम।

मीनार—संज्ञा स्त्री० [अ० मनार] वह इमारत जो प्राय गोलाकार चलती है और ऊपर की ओर बहुत अधिक ऊँचाई तक चली जाती है। स्तंभ। लाठ।

मीमांसक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी बात की मीमांसा करता हो। २ वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो।

मीमांसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुमान, तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात कैसी है। २ हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन जो पूर्वमीमांसा और उत्तर-मीमांसा कहलाते हैं। ३ जैमिनिकृत दर्शन जिसे पूर्वमीमांसा कहते हैं।

मीमांस्य—वि० [सं०] मीमांसा करने के योग्य।

मीयाद—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी कार्य के लिये नियत समय। अवधि।

मीयादी—वि० [अ०] जिसके लिये मीयाद निश्चित हो; जैसे—मीयादी हुंडी। मीयादी बुखार।

मीर—संज्ञा पुं० [फा०] १ सरदार। प्रधान। नेता। २ धार्मिक आचार्य। ३ सैयद जाति की उपाधि। ४ वह जो सबसे पहले कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम, कर डाले

मीरजा—संज्ञा पुं० दे० "मिरजा"।

मीरफर्श—संज्ञा पुं० [फा०] वे बड़े बड़े पत्थर आदि जो फर्शों आदि के कोनों पर मजबूती के लिये रखे जाते हैं।

मीरमजलिस—संज्ञा पुं० [फा०] सभापति।

मीरास—संज्ञा स्त्री० [अ०] तरका। बपौती।

मीरासी—संज्ञा पुं० [अ० मीरास+हिं० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान जो प्राय. गाने बजाने का काम या मसखरापन करते हैं।

मील—संज्ञा पुं० [अं० माइल] दूरी की एक नाप जो १७६० गज की होती है।

मीलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मीलनीय, मीलित] १ बंद करना। २ संकुचित करना।

मीलित—वि० [सं०] १. बंद किया हुआ। २ सिकोड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का अन्य वस्तु से, स्वाभाविक या आकस्मिक लक्षण के कारण व्यक्त न हो सकना या उसमें छिप जाना दिखाया जाय, जैसे—पँखुरी लगी गुलाब की गात न जानी जाय।

मुँगरा—संज्ञा पुं० [सं० मुग्दरी] [स्त्री० मुँगरी] हथौड़े के आकार का काठ का एक औजार।

संज्ञा पुं० [हिं० मोगरा] नमकीन बुँदिया।

मुँगौछी, मुँगौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग+बरी] मूँग की बनी हुई बरी।

मुँचनाⓅ—क्रि० स० [सं० मोचन] मुक्त करना।

मुंजारन—संज्ञा पुं० [सं० मुंजारण्य] मूँज वन। उ०—अब मुनि उनइसवों अध्याइ। स्याम राम मुंजारन जाइ।—नंददास०।

मुंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरदन के ऊपर का अंग। सिर। २ शुंभ का सेनापति एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. राहु ग्रह। ४ वृक्ष का ठूँठ। ५ कटा हुआ सिर।

वि० मुँड़ा हुआ। मुंडा।

मुंडचिरा—संज्ञा पुं० [हिं० मूड+√चीर+आ (प्रत्य०)] १ एक प्रकार के फकीर जो प्राय. अपना सिर, आँख या नाक आदि नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा माँगते हैं। २ वह जो लेनदेन में बहुत हुज्जत और हठ करे।

मुंडन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया। २ द्विजातियों के १६ संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है।

मुंडना—क्रि० अ० [सं० मुंडन] १. मूँड़ा जाना। सिर के बालों की सफाई होना। २. लुटना। ३. ठगा जाना।

मुंडमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है।

मुंडमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] (मुंडों की माला पहननेवाली) काली देवी।

मुंडमाली—संज्ञा पुं० [सं० मुंडमालिन्] (मुंडों की माला धारण करनेवाले) शिव जी।

मुंडा—संज्ञा पुं० [सं० मुंडी] [स्त्री० मुंडी] १ वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों। २ वह जो किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो। ३ वह पशु जिसके सींग होने चाहिए, पर न हों। ४ वह जिसके ऊपरी अथवा इधर उधर फैलनेवाले अंग न हों। ५ एक प्रकार की लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं होतीं। कोठीवाली। ६ एक प्रकार का जूता।

संज्ञा पुं० [देश०] छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति।

मुँड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √मूँड़+आई (प्रत्य०)] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मजदूरी।

मुँडासा—संज्ञा पुं० [सं० मुंड=सिर+ हिं० आसा (प्रत्य०)] सिर पर बाँधने का साफा।

मुँडिया—संज्ञा पुं० [हिं० √मूँड+इया (प्रत्य०)] साधु या योगी आदि का शिष्य। सन्यासी।

मुँडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ मूँड + ई (प्रत्य०)] १ वह स्त्री जिसका सिर मुँडा हो। २. विधवा। राँड़ (गाली)।
संज्ञा स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

मुँडेर—संज्ञा स्त्री० दे० "मुँडेरा"।

मुँडेरा—संज्ञा पुं० [हिं० मूँड=सिर+एरा (प्रत्य०)] गिरने से बचाव या ओट के लिये दीवार का वह ऊपरी उठा हुआ भाग जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।

मुंतजिम—वि० [अ०] इंतजाम करनेवाला। प्रबंधक।

मुंतजिर—वि० [अ०] जो इंतजार या प्रतीक्षा करे।

मुँदना—क्रि० अ० [सं० मुद्रण] १. खुली हुई वस्तु का ढक जाना। बंद होना। २ लुप्त होना। छिपना। ३ छेद, बिल आदि का बंद होना।

मुँदरा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँदरी] १. एक प्रकार का कुंडल जो जोगी लोग कान में पहनते हैं। २ कान का एक आभूषण।

मुँदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्रा] छल्ला। अँगूठी।

मुंशियाना—वि० [अ० मुंशी] मुंशियों का सा।

मुंशी—संज्ञा पुं० [अ०] १ निबंध या लेख आदि लिखनेवाला। मुहर्रिर। लेखक। २ कायस्थों की एक उपाधि।

मुंसरिम—संज्ञा पुं० [अ०] १. इंतजाम करनेवाला। २ कचहरी का वह कर्मचारी जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रखना रहता है।

मुंसिफ—संज्ञा पुं० [अ०] १ इंसाफ करनेवाला। २ दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।

मुंसिफी—संज्ञा स्त्री० [अ० मुंसिफ+ई (प्रत्य०)] १ न्याय करने का काम। २ मुंसिफ का काम या पद। ३ मुंसिफ की कचहरी।

मुँह—संज्ञा पुं० [सं० मुख] १ प्राणी का वह अंग जिसमे वह बोलता और भोजन करता है। मुख विवर। २. मनुष्य का मुख विवर।

मुहा०—मुँह आना=मुँह के अंदर छाले पड़ना और चेहरा सूजना (प्राय गरमी आदि रोगों में)। मुँह खराब करना=जबान से गंदी बातें कहना। मुँह खुलना=उद्दंडतापूर्वक बातें करने की आदत पड़ना। मुँह चलना=(१) भोजन होना। खाया जाना। (२) मुँह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना। मुँह चिढ़ाना=किसी की आकृति, हाव भाव या कथन की बहुत बिगाड़कर नकल करना। मुँह छूना [संज्ञा मुँहछुवाई]=नाम मात्र के लिये कहना। मन से नहीं बल्कि ऊपर से कहना। मुँह पर लाना=मुँह से कहना। वर्णन करना। मुँह पेट चलना=कै दस्त होना। हैजा होना। मुँह फाड़कर कहना=बेहया बनकर ज्बान पर लाना। मुँह बाँध कर बैठना=चुपचाप बैठना। कुछ न बोलना। मुँह भरना=रिश्वत देना। घूस देना। मुँह मीठा करना=(१) मिठाई खिलाना। (२) देकर प्रसन्न करना। मुँह में खून या लहू लगना=चसका पड़ना। चाह पड़ना। मुँह में जबान होना=कहने की सामर्थ्य होना। मुँह में पानी भर आना=कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिये ललचना। मुँह में लगाम न होना=जो मुँह में आवे, सो कह देना। (अपना) मुँह सीना=बोलने से रुकना। मुँह से बात न निकालना। बिलकुल चुप रहना। मुँह सूखना=प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। गले और जबान में काँटे पड़ना। मुँह से दूध टपकना=बहुत ही अनजान या बालक होना (परिहास)। मुँह से निकालना=कहना। उच्चारण करना। मुँह से फूल झड़ना=मुँह से बहुत ही सुंदर और प्रिय बातें निकलना।

३ मनुष्य अथवा किसी और जीव के सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, ठोढ़ी और गाल आदि अंग होते हैं। चेहरा।

मुहा०—अपना सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित होकर रह जाना। (अपना) मुँह काला करना=(१) व्यभिचार करना। (२) अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुँह काला करना=उपेक्षा से हटाना। त्यागना। मुँह की खाना=(१) बेइज्जत होना। दुर्दशा कराना। (२) मुँहतोड़ उत्तर सुनना। मुँह के बल गिरना=ठोकर खाना। धोखा खाना। मुँह छिपाना=लज्जा के मारे सामने न होना। (किसी का) मुँह ताकना=(१) किसी के मुँह की ओर, कुछ पाने आदि की आशा से देखना। (२) विवश या चकित होकर देखना। (३) सहायता की अपेक्षा रखना। मुँह ताकना=अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। मुँह दिखाना=सामने आना। मुँह देखकर बात कहना=खुशामद करना। (किसी का) मुँह देखना=(१) सामना करना। किसी के सामने जाना। (२) चकित होकर देखना। मुँह धो रखना=किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। मुँह पर=सामने। प्रत्यक्ष। मुँह पर बरसना=आकृति से प्रकट होना। चेहरे से जाहिर होना। मुँह फुलाना या फुलाकर बैठना=आकृति से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। मुँह फूकना=(१) मुँह में आग लगाना। मुँह झुलसना (स्त्री० गाली)। (२) दाहकर्म करना। (किसी के) मुँह लगना=(१) किसी के सामने बढ़ बढ़कर बातें करना। उद्दंड बनना। (२) जवाब सवाल करना। मुँह लगाना = सिर चढ़ाना। उद्दंड बनाना। मुँह सूखना=भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना।

४. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का विवर। ५ सूराख। छेद। छिद्र। ६ मुलाहजा। मुरव्वत। लिहाज।

मुहा०—मुँह देखे का=जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखौआ हो। मुँह पर जाना=किसी का ध्यान करना। लिहाज करना। मुँह मुलाहजे का=[illegible] पहचान का। परिचित। मुँह रखना=किसी का लिहाज रखना।

७ योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। ८. साहस। हिम्मत।

मुहा०—मुँह पड़ना=साहस होना।

९ ऊपर की सतह या किनारा।

मुहा०—मुँह तक आना या भरना=पूरी तरह से भर जाना। लबालब होना। [illegible]-टल भर जाना।

मुँहअखरी—वि० [हिं० मुँह+[illegible]] जबानी। शाब्दिक।

मुँहकाला—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+काला] १. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २. बदनामी।

मुँहचंग—संज्ञा पुं० दे० "मुरचंग"।
मुँहचोर—वि० [हिं० मुँह+चोर] जो किसी के सामने जाने में हिचकता हो।
मुँहछुट—वि० दे० "मुँहफट"।
मुँहजोर—वि० [हिं० मुँह+जोर] १ वह जो बहुत अधिक बोलता हो। बकवादी। २ दे० "मुँहफट"। ३ तेज। उद्दंड।
मुँहदिखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+दिखाना] १. (स्त्रियों में) नई वधू का मुँह देखने की रस्म जिसमें मुँह देखनेवाली स्त्रियाँ वधू को कुछ उपहार देती हैं। मुँह देखनी। २. वह धन जो मुँह देखने पर वधू को दिया जाय।
मुँहदेखा—वि० [हिं० मुँह+√देख+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० मुँहदेखी] १ केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार)। २ सामना होने पर सबका लिहाज करनेवाला।
मुँहनाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+नाल=नली] वह नली जो हुक्के की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।
मुँहपातरा—वि० [हिं० मुँह+पतला] १ बकवादी। २ मुँहफट।
मुँहफट—वि० [हिं० मुँह+√फट] ओछी या कटु बात कहने में संकोच न करनेवाला।
मुँहबोला—वि० [मुँह+√बोल+आ (प्रत्य०)] (संबंधी) जो वास्तविक न हो, केवल मुँह से कहकर बनाया गया हो।
मुँहभराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+√भर+आई (प्रत्य०)] १ मुँह भरने की क्रिया या भाव। २ रिश्वत। घूस।
मुँहमाँगा—वि० [हिं० मुँह+√माँग+आ (प्रत्य०)] अपने माँगने के अनुसार। मनोनुकूल
मुँहामुँह—क्रि० वि० [हिं० मुँह+मुँह] मुँह तक। लबालब। भरपूर।
मुँहासा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आसा (प्रत्य०)] मुँह पर के वे दाने या फुंसियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।
मुअज्जन—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो नमाज के समय अजान या बाँग देता हो।
मुअत्तल—वि० [अ०] [संज्ञा मुअत्तली] जो नौकरी से कुछ समय के लिये किसी आरोप की जाँच के लिये अलग कर दिया गया हो।
मुआफिक—वि० [अ०] [संज्ञा मुआफिकत] १ जो विरुद्ध न हो। अनुकूल। २ सदृश। समान। ३ मनोनुकूल।
मुआयना—संज्ञा पुं० [अ०] देखभाल करना। जाँचपड़ताल। निरीक्षण।
मुआवजा—संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला। पलटा। २. वह धन जो किसी कार्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले।
मुकटा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की रेशमी धोती।
मुकता—संज्ञा पुं० दे० "मुक्ता"।
वि० [हिं० (प्रत्य०) अ+मुकता=समाप्त होना] [स्त्री० मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।
मुकतावली—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्तावली"।
मुकति—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।
मुकदमा—संज्ञा पुं० [अ०] १ धन या अधिकार आदि से संबंध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का दो पक्षों के बीच का मामला जो विचार के लिये न्यायालय में जाय। अभियोग। २ दावा। नालिश।
मुकदमेबाज—संज्ञा पुं० [अ० मुकदमा+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाजी] वह जो प्राय मुकदमे लड़ा करता हो।
मुकद्दमा—संज्ञा पुं० दे० "मुकदमा"।
मुकद्दर—संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य।
मुकना—संज्ञा पुं० दे० "मकुना"।
Ⓟ†क्रि० अ० [सं० मुक्त] १ मुक्त होना। छूटना। २ खतम होना। चुकना।
मुकरना—क्रि० अ० [सं० मा=नहीं+करना] कोई बात कहकर उससे फिर जाना। नटना।
मुकरवाⓅ—वि०, संज्ञा पुं० [हिं० मुकरना] कोई बात कहकर उससे इनकार कर जानेवाला।
मुकरनी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुकरी"।
मुकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √मुकर+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार की कविता जिसमें कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है। कहमुकरी।
मुकर्रर—क्रि० वि० [अ०] दोबारा। फिर से।
वि० [अ०] [संज्ञा मुकर्ररी] १ जिसका इकरार किया गया हो। निश्चित। २ तैनात। नियुक्त।
मुकाबला—संज्ञा पुं० [अ०] १. आमना सामना। २. मुठभेड़। ३ बराबरी। समानता। ४ तुलना। ५ मिलान। ६. विरोध। लड़ाई।
मुकाबिल—क्रि० वि० [अ०] समक्ष। सामने।
संज्ञा पुं० १. प्रतिद्वंद्वी। २ शत्रु। दुश्मन।
मुकाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २ ठहरने की क्रिया। कूच का उलटा। विराम। ३. रहने का स्थान। ४ अवसर
मुकियाना—क्रि० स० [हिं० मुक्की से ना० धा०] १ मुक्कियों से बारबार आघात करना। २ घूँसे लगना।
मुकुंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, दो जगण और अंत में गुरु लघु हो। उ०—माया प्रपंच तजिके उरशांति धार। काया मनुष्य अपनी, अब तू सुधार॥
मुकुट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो प्राय राजा आदि धारण किया करते थे।
मुकुताⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मुक्ता"।
मुकुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शीशा। आईना। दर्पण। २. मौलसिरी। ३ कली।
मुकुल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कली। २. शरीर। ३ आत्मा। ४. एक प्रकार का छंद। ५ जमालगोटा।
मुकुलित—वि० [सं०] १ जिसमें कलियाँ आई हों। २ कुछ खिली हुई (कली)। ३ आधा खुला, आधा बंद। ४ झपकता हुआ (नेत्र)।
मुकेसⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मुक्कैश"।
मुक्का—संज्ञा पुं० [सं० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] बँधी मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय।
मुक्की—संज्ञा पुं० [हिं० मुक्का+ई (प्रत्य०)] १ मुक्का। घूँसा। २ वह लड़ाई जिसमें मुक्कों की मार हो। ३ मुट्ठियाँ बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे धीरे आघात मारना, जिससे शरीर की शिथिलता और पीड़ा दूर होती है।
मुक्केबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुक्का+बाजी (प्रत्य०)] मुक्कों की लड़ाई। घूँसेबाजी।
मुक्कैश—संज्ञा पुं० [अ०] १. बादला।

२. वह कपड़ा जिसपर कलाबत्तू आदि का काम हो।

मुक्त—वि० [सं०] १ जिसे मुक्ति मिल गई हो। २ जो बंधन से छूट गया हो। ३ चलने के लिये छूटा हुआ। फेंका हुआ।

मुक्तकंठ—वि० [सं०] १ चिल्लाकर बोलनेवाला। २ जिसे कहने में आगा पीछा न हो।

मुक्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले। फुटकर कविता। उद्भट। 'प्रबंध' का उलटा। २ एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था।

मुक्तता—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।

मुक्तव्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा व्यापार जिसमें किसी के लिये कोई रुकावट न हो।

मुक्तहस्त—वि० [सं०] [संज्ञा मुक्तहस्तता] जो खुले हाथों दान करता हो।

मुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोती।

मुक्ताफल—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

मुक्तावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोतियों की माला या लड़ी।

मुक्ताहल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "मुक्ताफल"।

मुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छुटकारा। २ आत्मा का मोक्ष।

मुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुँह। आनन। २ घर का द्वार। दरवाजा। ३ नाटक में एक प्रकार की संधि। ४ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५ आदि। आरंभ। ६ किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु।

वि० प्रधान। मुख्य।

मुखग्र—वि० दे० "मुखाग्र"। उ०—हजार कोटि सु होइ रसना एक एक मुखग्र। इंद्र भरव्विन जौं बसैं रसनानि मंडि समग्र।—छंदार्णव।

मुखचपला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

मुखचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या बिलकुल आरंभ में दिया हुआ चित्र।

मुखड़ा—संज्ञा पुं० [सं० मुख+हिं० ड़ा (प्रत्य०)] मुख। चेहरा। आनन।

मुखतार—संज्ञा पुं० [अ०] १ जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई कानूनी काम करने का अधिकार दिया हो। २ एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करनेवाला। ३ माल और फौजदारी के मुकदमों में इजलास में वैधानिक बहस करनेवाला।

मुखतारनामा—संज्ञा पुं० [अ० मुखतार+फा० नामा] वह वैधानिक अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई और बहस करने के लिये मुख्तार बनाया जाय।

मुखतारी—संज्ञा स्त्री० [अ० मुखतार+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मुखतार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा। २. प्रतिनिधित्व।

मुखन्नस—वि० [अ०] नपुंसक।

मुखपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ। पहला आवरण पृष्ठ।

मुखबंध—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।

मुखबिर—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह अभियुक्त जो अपराध स्वीकार कर सरकारी गवाह बन जाय और जिसे दंड से माफी मिल जाय। २. जासूस। गोइंदा।

मुखबिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुखबिर+ई (प्रत्य०)] खबर देने का काम। मुखबिर का काम।

मुखभेद(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मुठभेड़"।

मुखर—वि० [सं०] [स्त्री० मुखरा] १ जो अप्रिय बोलता हो। कटुभाषी। २ बकवादी। ३ बहुत बढ़-बढ़कर बोलनेवाला। ४ दे० "मुखरित"।

मुखरित—वि० [सं०] शब्दों या ध्वनियों से युक्त।

मुखशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुँह साफ करना। २ भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।

मुखस्थ—वि० दे० "मुखाग्र"।

मुखागर—वि० [सं० मुखाग्र] मौखिक। जबानी। उ०—कहत मुखागर बात के रहत बन्यो नहिं नेहु। जरत बाँचि आई ललन बाँचि पाति हौ लेहु।—रससाराश।

मुखाग्र—वि० [सं०] जो जबानी याद हो। कंठस्थ। बरजबान।

मुखातिब—संज्ञा पुं० [अ०] किसी से कुछ कहनेवाला। वक्ता।

मुहा०—(किसी की ओर) मुखातिब होना = किसी की ओर मुँह करके सुनना या बातें करना।

मुखापेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरों का मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।

मुखापेक्षी—संज्ञा पुं० [सं० मुखापेक्षिन्] वह जो दूसरों का मुँह ताकता हो। आश्रित।

मुखालिफ—वि० [अ०] [संज्ञा मुखालिफत] १ जो खिलाफ हो। विरोधी। २ शत्रु। दुश्मन। ३ प्रतिद्वंद्वी।

मुखिया—संज्ञा पुं० [सं० मुख्य+हिं० इया (प्रत्य०)] १ नेता। प्रधान। सरदार। २ वह जो किसी काम में सबसे आगे हो। अगुआ।

मुख्तलिफ—वि० [अ०] १ भिन्न। २. भिन्न भिन्न।

मुख्तसर—वि० [अ०] १ जो थोड़े में हो। संक्षिप्त। २ छोटा। ३ अल्प। थोड़ा।

मुख्य—वि० [सं०] [संज्ञा मुख्यता] सब में बड़ा। ऊपर या आगे रहनेवाला। प्रधान।

मुख्यतः—क्रि० वि० [सं०] मुख्य रूप से। खास तौर पर।

मुगदर—संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुँगरी जिसका प्राय जोड़ा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है। जोड़ी।

मुगल—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुगलानी] १ मंगोल देश का निवासी। २. तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था। ३ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

मुगलई—संज्ञा पुं०† [फा० मुगल+ई (प्रत्य०)] मुगलपन। अहंकार। वि०† मुगलों की तरह का। मुगलों का सा।

मुगलाई—वि० दे० "मुगलई"।

संज्ञा स्त्री० [फा० मुगल+हिं० आई (प्रत्य०)] मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुगलानी—संज्ञा स्त्री० [फा० मुगल हिं० आनी (प्रत्य०)] १ मुगल स्त्री। २. दासी। ३ कपड़े सीनेवाली।

मुगवन—संज्ञा पुं० [सं० वनमुद्ग] मोट।

मुगालता—संज्ञा पुं० [अ०] धोखा। छल।

मुग्घम—वि० [देश०] (बात) जो बहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जाय।

मुफ्ती—संज्ञा पुं० [अ०] धर्मशास्त्री (मुस०)।
वि० [अ० मुफ्त+हिं० ई० (प्रत्य०)] मुफ्त का।
मुबलिग—संज्ञा पुं० [अ०] धन की संख्या। रकम।
मुबारक—वि० [अ०] १ जिसके कारण बरकत हो। २ शुभ। मंगलप्रद। नेक।
मुबारकबाद—संज्ञा पुं० [अ० मुबारक+फा० बाद] कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"। बधाई। धन्यवाद।
मुबारकी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारक-बाद"।
मुब्तिला—वि० [अ०] संकट आदि में फँसा हुआ।
मुमकिन—वि० [अ०] संभव।
मुमानियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] मनाही।
मुमुक्षु—वि० [सं०] मुक्ति पाने का इच्छुक। जो मुक्ति की कामना करता हो।
ममुख—वि० [सं० मुमुक्षु] दे० "मुमुक्षु"। उ०—जैसे आदि पुरुष वह कोई। मुमुखन भनत सुन्यौ हम सोई।—नंददास०।
मुमूर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने की इच्छा।
मुमूर्षु—वि० [सं०] जो मरने के समीप हो।
मुयस्सर—वि० दे० "मयस्सर"।
वि० सूखा हुआ। शुष्क।
मुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेष्टन। बेठन। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।
अव्य० फिर। दोबारा।
मुरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुरकना] मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरकना—क्रि० अ० [हिं० मुड़ना] १. लचककर किसी ओर झुकना। मुड़ना। २. फिरना। घूमना। ३ लौटना। वापस होना। ४. किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीधा न हो। मोच खाना। ५ हिचकना। रुकना। ६ विनष्ट होना। चौपट होना।
मुरकाना—क्रि० स० [हिं० मुरकना का स० रूप] १. फेरना। घुमाना। २ लौटाना। वापस करना। ३. किसी अंग में मोच लाना। ४ नष्ट करना। चौपट करना।
मुरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुरकना] कान में पहनने की एक प्रकार की बाली।
मुरखाईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।
मुरगा—संज्ञा पुं० [फा० मुर्ग] [स्त्री० मुर्गी] एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगों का होता है। नर के सिर पर कलगी होती है। यह ब्राह्म मुहूर्त में बोलने के लिये प्रसिद्ध है।
मुरगाबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] जलपक्षियों की एक जाति।
मुरचंग—संज्ञा पुं० [हिं० मुँहचंग] मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।
मुरचा—संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।
मुरछना, मुरछानाⓅ—क्रि० अ० [सं० मूर्च्छन्] १ शिथिल होना। २. अचेत होना। उ०—तात मरन सुधि श्रवण कृपा-निधि धरणि परे मुरछाई। मोह मगन लोचन चल धारा विपति हृदय न समाई। —सूर०।
मुरछावंतⓅ—वि० [सं० मूर्च्छा+हिं० वंत (प्रत्य०)] मूर्छित। बेहोश। अचेत।
मुरछितⓅ—वि० दे० "मूर्च्छित"।
मुरज—संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग। पखावज। उ०—रुज मुरज डफ ताल बाँसुरी झालर की झंकार। —सूर०।
मुरझनाⓅ—क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।
मुरझाई—संज्ञा स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'। उ०—तब बिरहिन हिय कप जनावै। बीच बीच मुरझाई आवै। —नंददास०।
मुरझाना—क्रि० अ० [सं० "मूर्च्छन्"] १. फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। २. सुस्त या उदास होना।
मुरडा—संज्ञा पुं० [देश०] भूने हुए गरमा-गरम गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड़धानी।
मुरदर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरदा—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० मृतक] वह जो मर गया हो। मरा हुआ प्राणी। मृत।
वि० १. मरा हुआ। मृत। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३. मुरझाया हुआ।
मुरदार—वि० [फा०] १. मरा हुआ। मृत। २ अपवित्र। ३ बेदम। बेजान।
मुरदासख—संज्ञा पुं० [फा० मुरदा र संग] एक प्रकार की ओषधि जो फूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनती है।
मुरदासनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मुरदासख"।
मुरधर—संज्ञा पुं० [सं० मरुधरा] मारवाड़।
मुरनाⓅ—क्रि० अ० दे० "मुड़ना"। उ०—तुरत सुरत कैसैं दुरत, मुरत नैन जुरि नीठि। डौंड़ी दै गुन रावरे कहति कनौड़ी डीठि। —बिहारी०।
मुर परैना†—संज्ञा पुं० [हिं० मूड़=सिर+पारना=रखना] फेरी करके सौदा बेचने-वालों का बुकचा। उ०—ऊधो बेगि मधुबन जाहु। तहीं दीजै मुरपरैना नफो तुम कछु खाहु। जो नहीं ब्रज में बिकानो नगर नारी साहु। —सूर०।
मुरब्बा—संज्ञा पुं० [अ० मुरब्ब] चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।
मुरमुराना—क्रि० अ० [मुरमुर से अनु०] १ चूर चूर हो जाना। चुरमुर होना। २ मुर मुर शब्द करना।
मुररिपु—संज्ञा पुं० [सं०] मुरारि। श्रीकृष्ण।
मुररिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्री"।
मुरलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुरली। वंशी।
मुरलिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।
मुरली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी। वंशी। उ०—मुरली तऊ गोपालहिं भावति। सुनु री सखी यदपि नँदनंदहिं नाना भाँति नचावति। —सूर०।
मुरलीधर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरवा—संज्ञा पुं० [देश०] एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।
†संज्ञा पुं० दे० "मोर"।
मुरवीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० मौर्वी] धनुष की डोरी। चिल्ला।
मुरव्वत—संज्ञा स्त्री० दे० "मुरौवत"।
मुरशिद—संज्ञा पुं० [अ०] १ गुरु। पथदर्शक। २ पूज्य।
मुरसुत—संज्ञा पुं० [सं०] वत्सासुर।
मुरहा†—संज्ञा पुं० दे० "मुड़वारी"।
संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
†वि० [सं० मूल (नक्षत्र) + हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० मुरही] १ (बालक) जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो। २ अनाथ। यतीम। ३ नटखट। उपद्रवी।
मुरहारी—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य। एकांगी। मुरामासी। २. कथासरित्सागर के अनुसार उस स्त्री का नाम जिसके गर्भ से महापद्मनंद का पुत्र चंद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।

मुराड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] जलती लकड़ी।

मुराद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अभिलाषा।

मुहा०—मुराद पाना=मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना=मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।

२ अभिप्राय। आशय। मतलब।

मुरानाⓅ†—क्रि० स० [अनु० मुरमुर] मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना।

Ⓟ†क्रि० स० दे० "मोरना"।

मुरायठा—संज्ञा पुं० दे० "मुरेठा"।

मुरार—संज्ञा पुं० [सं० मृणाल] कमल की जड़। कमलनाल।

Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

मुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ डगण के तीसरे भेद (।ऽ।) की संज्ञा।

मुरारी—संज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

मुरारे—संज्ञा पुं० [सं०] हे मुरारि! (संबो०)।

मुरासा†—संज्ञा पुं० [हिं० मुरना] कर्णफूल। उ०—लसै मुरासा तियस्रवन यौं मुकतनु दुति पाइ। मानहु परस कपोल कै रहे स्वेदकन छाइ।—बिहारी०।

मुरीद—संज्ञा पुं० [अ०] १ शिष्य। चेला। २ अनुगामी। अनुयायी।

मुरुⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मुर"।

मुरुआ†—संज्ञा पुं० [देश०] एड़ी के ऊपर का घेरा। पैर का गट्ठा।

मुरुखⓅ†—वि० दे० "मूर्ख"।

मुरुछनाⓅ—क्रि० अ० दे० "मुरझाना"। संज्ञा स्त्री० दे० मूर्च्छना"।

मुरुझनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।

मुरेठा—संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़=सिर+एठा (प्रत्य०)] पगड़ी। साफा।

मुरेरना†—क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

मुरौवत—संज्ञा स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ शील। संकोच। लिहाज। २ भलमनसी।

मुर्ग—संज्ञा पुं० दे० "मुरगा"।

मुर्गकेश—संज्ञा पुं० [फा० मुर्ग+केश (चोटी)] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी।

मुर्दनी—संज्ञा स्त्री० [फा० मुर्दन=मरना] १ मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। २ शव के साथ उसकी अन्त्येष्टि क्रिया के लिये जाना।

मुर्दावली—संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्दनी"।

वि० मृतक के संबंध का। मुरदे का।

मुर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० मरोड़ या मुड़ना] १ मरोड़फली। २ पेट में ऐंठन होकर बारबार दस्त होना। मरोड़। ३ एक प्रकार की अधिक दूध देनेवाली भैंस।

मुर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] १ दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं। २ कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई ऐंठन या बल। ३. कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती।

मुर्रीदार—वि० [हिं० मुर्री+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें मुर्री पड़ी हो। ऐंठनदार।

मुलकनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० पुलकित ?] १. पुलकित होना। नेत्रों में हँसी प्रकट करना। उ०—सकुचि सरकि पिय निकट तैं, मुलकि कछुक तन तोरि। कर आँचर की ओट करि जमुहानी मुँह मोरि।—बिहारी। २ मचकना।

मुलकित—वि० [सं० पुलकित ?] मुस्कराता हुआ।

मुलकी—वि० [अ० मुल्क] १ शासन या व्यवस्था संबंधी। २ देशी। बिलायती का उलटा।

मुलजिम—वि० [अ०] जिसपर कोई अभियोग हो। अभियुक्त।

मुलतवी—वि० [अ० मुल्तवी] जिसका समय टाल दिया गया हो। स्थगित।

मुलतानी—वि० [हिं० मुलतान (नगर)+ई (प्रत्य०)] मुलतान का। मुलतान-संबंधी।

संज्ञा स्त्री० १ एक रागिनी। २ एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

मुलना†—संज्ञा पुं० [अ० मौलाना] मौलवी।

मुलमची—संज्ञा पुं० [अ० मुलम्मा+तु० ची (प्रत्य०)] गिलट करनेवाला। मुलम्मा-साज।

मुलम्मा—संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिलट। कलई।

यौ०—मुलम्मासाज=मुलम्मा चढ़ाने-वाला। मुलमची।

२ ऊपरी तड़क भड़क।

मुलहठी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुलेठी"।

मुलहा†—वि० [सं० मूल=नक्षत्र] १ जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो। २ उपद्रवी। शरारती।

मुलाँ†—संज्ञा पुं० [अ० मुल्ला] मौलवी।

मुलाकात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपस में मिलना। भेंट। मिलन। २ मेल मिलाप।

मुलाकाती—संज्ञा पुं० [अ० मुलाकात] १ वह जिससे जान पहचान हो। परिचित। २ मुलाकात करनेवाला।

यौ०—मुलाकाती कार्ड=वह कार्ड जो कोई मुलाकाती अपने आने की सूचना और परिचय देने के लिये भेजता है।

मुलाजिम—संज्ञा पुं० [अ०] नौकर। सेवक।

मुलाजिमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] नौकरी। सेवा।

मुलायम—वि० [अ०] १ सख्त का उलटा। जो कड़ा न हो। २ हलका। मद। धीमा। ३ नाजुक। सुकुमार। ४ जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो।

यौ०—मुलायम चारा=(१) वह जो सहज में दूसरों की बातों में आ जाय। (२) वह जो सहज में प्राप्त किया जा सके।

मुलायमियत—संज्ञा स्त्री० [अ० मुलायमत] १ मुलायम होने का भाव। नर्मी। २. नजाकत। सुकुमारता।

मुलायमी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत"।

मुलाहजा—संज्ञा पुं० [अ०] १ निरीक्षण। देखभाल। २ संकोच। ३ रिआयत।

मुलुक†—संज्ञा पुं० [अ० मुल्क] मुल्क। उ०—नव नागरितन मुलुक लहि जोबन आमिर जोर। घटि बढ़ि तैं बढ़ि घटि रकम करी और की और।—बिहारी०।

मुलुकाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मुल्क"।

मुलेठी—संज्ञा स्त्री० [सं० मूलयष्टी] घुँघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है। जेठी मधु। मुलट्ठी।

मुल्क—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुल्की] १ देश। २ प्रांत। प्रदेश। ३ संसार।

मुल्की—वि० [अ०] १ शासन संबंधी। २ राजनीतिक। ३ मुल्क या देश संबंधी।

मुल्लहा†—वि० [देश०] मूर्ख। बेवकूफ।

मुल्ला—संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।

मुवक्किल—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।

मुवनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० मृत] मरना।

मुग्ध—वि० [सं०] [संज्ञा मुग्धता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ । मूढ़ । २. सुंदर । खूबसूरत । ३ आसक्त । मोहित ।

मुग्धकर—वि० [सं०] [स्त्री० मुग्धकरी] मुग्ध करनेवाला । मोहक ।

मुग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो पर जिसमें कामचेष्टा न हो और मान में कोमल तथा बहुत अधिक लज्जावती हो ।

मुचकुंद—संज्ञा पुं० [सं० मुचकुंद] एक बड़ा पेड़ जिसमें सुगंधित फूल होते हैं ।

मुचना(पु)—क्रि० अ० [सं० मोचन] मोचन होना ।

मुचलका—संज्ञा पुं० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा और उसके भंग होने पर कुछ आर्थिक दंड देने का निश्चय हो ।

मुछंदर—संज्ञा पुं० [हिं० मूछ] १ जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों । २ कुरूप और मूर्ख ।

मुजरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह जो जारी किया गया हो । २ वह रकम जो किसी रकम में से काट ली गई हो । ३ किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना । अभिवादन । ४ वेश्या का बैठकर गाना ।

मुजरिम—संज्ञा पुं० [अ०] जिसपर अभियोग लगाया गया हो । अभियुक्त ।

मुजायका—संज्ञा पुं० [अ०] हर्ज । हानि ।

मुजावर—संज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान जो किसी रौजे पर रहकर वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो ।

मुझ—सर्व० [हिं० मुझे] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है, जैसे—मुझको, मुझसे, मुझमें, मुझपर आदि ।

मुझे—सर्व० [सं० मह्यम्] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है ।

मुटकना†—वि० [हिं० मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार में छोटा पर सुंदर ।

मुटका—संज्ञा पुं० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार की रेशमी धोती । मुकटा ।

मुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १ मोटापन । स्थूलता । २ पुष्टि । ३ अहंकार । घमंड । शेखी ।

मुटाना—क्रि० अ० [हिं० मोटा से ना० धा०] १ मोटा हो जाना । २. अहंकारी हो जाना ।

मुटासा—वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो ।

मुटिया—संज्ञा पुं० [हिं० मोट=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ ढोनेवाला । मजदूर ।

मुट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० मूठ] १. घास, फूस, तृण या डंठल का उतना पूला जितना एक हाथ की मुट्ठी में आ सके । २ चंगुल भर वस्तु । ३ पुलिंदा । ४ शस्त्र या यंत्र आदि की बेंट । दस्ता ।

मुट्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १ हाथ की वह मुद्रा जो उँगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है । बँधी हुई हथेली । २ उतनी वस्तु जितनी उपर्युक्त मुद्रा के समय हाथ में आ सके ।

मुहा०—मुट्ठी में = कब्जे में । अधिकार में । मुट्ठी गरम करना = रुपया देना । धन देना ।

३ बँधी हथेली के बराबर का विस्तार । ४ हाथों से किसी के अंगों को पकड़ पकड़कर दबाने की क्रिया जिससे शरीर की थकावट दूर होती है । चंपी ।

मुठभेड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूठ+भिड़ना] १ टक्कर । भिड़ंत । लड़ाई । २ भेंट । सामना ।

मुठिका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिक] १ मुट्ठी । २ घूँसा । मुक्का ।

मुठिया—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका] औजारों का दस्ता । बेंट ।

संज्ञा स्त्री० भिखमंगों को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया ।

मुठी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी" ।

मुडकना—क्रि० अ० दे० "मुरकना" ।

मुड़ना—क्रि० अ० [सं० मुरण] १ सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना । घुमाव लेना । २ किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना । ३ लकीर की तरह सीधे न जाकर घूमकर किसी ओर झुकना । ४ दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना । ५ पलटना । लौटना ।

क्रि० अ० दे० "मुंड़ना" ।

मुड़ला(पु)†—वि० [सं० मुंड] [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों । मुंडा ।

मुड़वाना—क्रि० स० [हिं० मूँड़ना का प्रे० रूप] किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना ।

क्रि० स० [हिं० मुड़ना का० प्रे० रूप] मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना ।

मुड़वारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँड़+वारी (प्रत्य०)] १. अटारी की दीवार का सिरा । मुँडेरा । २ सिरहाना ।

मुड़हर†—संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़+हर (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है ।

मुड़ाना—क्रि० स० दे० "मुंड़ाना" ।

मुड़िया†—संज्ञा पुं० [हिं० √मूड़+इया (प्रत्य०)] १ वह जिसका सिर मूँड़ा हुआ हो । उ०—यह निर्गुन लै तिनहि सुनावहु जे मुड़िया बसैं काशी ।—सूर० । २ एक लिपि ।

मुतअल्लिक—वि० [अ०] १ संबंध रखनेवाला । संबद्ध । २ सम्मिलित ।

क्रि० वि० संबंध में । विषय में ।

मुतक्का—संज्ञा पुं० [हिं० मुँड+टेक] १ कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीची दीवार । २ खंभा । ३ मीनार । लाट ।

मुतफन्नी—वि० [अ०] धूर्त । चालाक ।

मुतफर्रिक—वि० [अ०] [बहु० मुतफर्रकात] १ तरह तरह के । विभिन्न । २ खराब । बुरा ।

मुतबन्ना—संज्ञा पुं० [अ०] दत्तक पुत्र ।

मुतलक—क्रि० वि० [अ०] जरा भी । तनिक भी । रत्ती भर भी ।

वि० बिलकुल । निरा । निपट ।

मुतवज्जह—वि० [अ०] किसी ओर तवज्जह या ध्यान देनेवाला ।

मुतवफ्फी—वि० [अ०] स्वर्गवासी ।

मुतवल्ली—संज्ञा पुं० [अ०] धार्मिक संस्था की संपत्ति का रक्षक ।

मुतसद्दी—संज्ञा पुं० [अ०] १ लेखक । मुंशी । २ पेशकार । दीवान । ३ इंतजाम करनेवाला । प्रबंधकर्ता । ४. मुनीम ।

मुतसिरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती+सं० श्री] कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी ।

मुताबिक—क्रि० वि० [अ०] अनुसार ।

वि० अनुकूल ।

मुतालबा—संज्ञा पुं० [अ०] उतना धन जितना पाना वाजिब हो । बाकी रुपया ।

मुताह—संज्ञा पुं० [मुताअ] मुसलमानो मे एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुतिया—संज्ञा पुं० दे० 'मोती'।
मनु नव नील कमल दल तैं भल मुतिया झरही। — नददास०।

मुतिलाडू(प)†—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा(प)†—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+हार] कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद—संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनद।

मुदगर—संज्ञा पुं० दे० "मुगदर"।

मुदवत(प)—वि० [सं० मोद] प्रसन्न। खुश।

मुदर्रिस—संज्ञा पुं० [अ०] अध्यापक।

मुदा(प)†—अव्य० [अ० मुद्दआ=अभिप्राय] १ तात्पर्य यह कि। २ मगर। लेकिन।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनद।

मुदामी—वि० [फा०] जो सदा होता रहे।

मुदित—वि० [सं०] [स्त्री० मुदिता] प्रसन्न। खुश।

मुदिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परकीया के अन्तर्गत एक प्रकार की नायिका। २ हर्ष।

मुदिर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल। मेघ।

मुदीर(प)—संज्ञा पुं० दे० "मुदिर"।

मुद्ग—संज्ञा पुं० [सं०] मूँग नामक अन्न।

मुद्गर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "मुगदर"। २ प्राचीन काल का एक अस्त्र। अस्त्र।

मुद्गल—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

मुद्गा—संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्ग] मूँग। उ०—मुद्गा दाली, घृत की ब्याली। रस के कदर सु दर सालो।—नददास०।

मुद्दई—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १ दावा करनेवाला। दावादार। वादी। २ दुश्मन। वैरी। शत्रु।

मुद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] १ अवधि। २ बहुत दिन। अरसा।

मुद्दती—वि० [अ०] जिसकी कोई मुद्दत या अवधि निश्चित हो।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह—संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।

मुद्ध(प)†—वि० दे० "मुग्ध"।

मुद्धी—संज्ञा स्त्री० [देश०] रस्सी की वह गाँठ जिसके अदर से उसका दूसरा सिरा खिसक सके।

मुद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] छापनेवाला।

मुद्रण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी चीज पर अक्षर आदि अकित करना। छपाई।

मुद्रणालय—संज्ञा पुं० [सं०] छापाखाना।

मुद्रांकित—वि० [सं०] १ मोहर किया हुआ। २ जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हों (वैष्णव)।

मुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के नाम की छाप। मोहर। २ रुपया, अशरफी आदि। सिक्का। ३ अँगूठी। छाप। छल्ला। उ०—वनचर कौन देश तें आयो। कहँ वे राम कहाँ वे लछिमन क्यौं करि मुद्रा पायो।—सूर०। ४ टाइप से छपे हुए अक्षर। ५ गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्णभूषण। उ०—शृगी मुद्रा कनक खपर लै करिहौं जोगिन भेस।—सूर०। ६ हाथ, पाँव, आँख, मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति। ७ बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढग। ८ मुख की आकृति या चेष्टा। ९ विष्णु के आयुधों के चिह्न जो प्राय भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं या गरम लोहे से दगवाते हैं। छाप। १० हठयोग में विशेष अगविन्यास। ये मुद्राएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ११ वह अलकार जिसमें प्रकृति या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय नाम हों।

मुद्रातत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

मुद्रायंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छापने या मुद्रण करने का यत्र। छापे आदि की कल।

मुद्राविज्ञान—संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्व"।

मुद्राशास्त्र—संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्व"।

मुद्रिक—संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।

मुद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अँगूठी। २ कुश की बनी हुई अँगूठी जो पितृकार्य में अनामिका में पहनी जाती है। पवित्री। पैंती। ३ मुद्रा। सिक्का। रुपया।

मुद्रित—वि० [सं०] १ मुद्रण या अकित किया हुआ। छपा हुआ। २ मुँदा हुआ। बद। उ०—राजिव दल इदीवर सतदल कमल कुसेसै जाति। निशि मुद्रित प्रातहि वे विगसत वे विगसत दिन राति।—सूर०।

मुधा—क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ। वृथा।
वि० १ व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २. असत्य। मिथ्या। झूठ।
संज्ञा पुं० असत्य। मिथ्या।

मुनक्का—संज्ञा पुं० [अ० मि० सं० मृद्वीका] एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनगा—संज्ञा पुं० दे० "सहिजन"।

मुनहसर—वि० [अ०] निर्भर। आश्रित।

मुनादी—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर में हो। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफा—संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। नफा।

मुनारा†—संज्ञा पुं० दे० "मीनार"।

मुनासिब—वि० [अ०] उचित। वाजिब।

मुनासिबत—संज्ञा स्त्री० [अ० मनासिबत] १ सबंध। २ उपयुक्तता। ३ किसी चित्र में का दृष्टिक्रम।

मुनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति। २ तपस्वी। त्यागी। ३ सात की सख्या।

मुनियाँ—संज्ञा स्त्री० [देश०] लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनीब, मुनीम—संज्ञा पुं० [अ० मुनीब] १ मददगार। सहायक। २ साहूकारों का हिसाब किताब लिखनेवाला।

मुनीश, मुनीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुनियों में श्रेष्ठ। २ बुद्धदेव। ३ विष्णु।

मुन्ना, मुन्नू—संज्ञा पुं० [देश०] १ छोटों के लिये प्रेमसूचक शब्द। २ प्रिय। प्यारा।

मुफलिस—वि० [अ०] निर्धन। दरिद्र।

मुफस्सल—वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत।
संज्ञा पुं० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर तक के स्थान। देहात।

मुफ्त—वि० [अ०] जिसमें कुछ मूल्य न लगे। विना दाम का। सेंत का।
यौ०—मुफ्तखोर=वह व्यक्ति जो दूसरों के धन पर सुखभोग करे।
मुहा०—मुफ्त में=(१) विना मूल्य दिए या लिए। (२) व्यर्थ। बेफायदा।

मुफ्तखोर—वि० [अ० मुफ्त+फा० खोर] [भाव० मुफ्तखोरी] मुफ्त का माल खानेवाला।

मुवाना(पु)†—क्रि० स० [मुवना का स० रूप] हत्या करना । मार डालना ।

मुश्क—संज्ञा पुं० [फा०] १ कस्तूरी । मृगमद ।†। २ गंध । बू ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] कंधे और कोहनी के बीच का भाग । भुजा । बाँह ।

मुहा०—मुश्कें कसना या बाँधना = (अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना ।

मुश्कदाना—संज्ञा [फा०] एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है ।

मुश्कनाफा—संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है ।

मुश्कबिलाई—संज्ञा स्त्री० [फा० मुश्क + हिं० बिलाई = बिल्ली] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है । गंध बिलाव ।

मुश्किल—वि० [अ०] कठिन । दुष्कर ।

संज्ञा स्त्री० १. कठिनता । दिक्कत । २ मुसीबत । विपत्ति ।

मुश्की—वि० [फा०] १ कस्तूरी के रंग का । काला । श्याम । २ जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो ।

संज्ञा पुं० काले रंग का घोड़ा ।

मुश्त—संज्ञा पुं० [फा०] मुट्ठी ।

यौ०—एकमुश्त = एक साथ । एक ही बार (रुपयों के लेन देन में) ।

मुश्तबहा—वि० [अ०] जिसपर कोई शुबहा या शक हो । संदिग्ध ।

मुष—संज्ञा पुं० दे० "मुख" । उ०—नंदनंदन मुष तें आलि बीच परत मानों बज्र की सलकैं । —नंददास० ।

मुषुर(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० मुखर] गूँजने का शब्द । गुंजार ।

मुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुट्ठी । २ मुक्का । घूँसा । ३ चोरी । ४ दुर्भिक्ष । अकाल । ५ मुष्टिक । मल्ल । ६ मौन । चुप । उ०—संत मिलै कछु कहिए कहिए, मिलै असंत मुष्टि करि रहिए । —कबीर० ।

मुष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेव जी ने मारा था । २ मुक्का । घूँसा । ३ चार अंगुल का नाप । ४ मुट्ठी ।

मुष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुक्का । घूँसा । उ०—वृद्ध पषाण को जब उहाँ नाश भयो मुष्टिका युद्ध दोऊ प्रचारी । —सूर० । २ मुट्ठी ।

मुष्टियुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें मुक्कों से प्रहार हो । घूँसेबाजी ।

मुष्टियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं । २ छोटा और सहज उपाय ।

मुसकनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" । उ०—अटके नैन माधुरी मुसकनि अमृत बचन स्रवनन को भावत । —सूर० ।

मुसकनिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकान" । उ०—मनमोहन की तुतरी बोलन मुनि मन हरत सुहँस मुसकनियाँ । —सूर० ।

मुसकराना—क्रि० अ० [सं० स्मय + √कृ] बहुत ही मंद रूप से हँसना । मृदु हास ।

मुसकराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुसकराना + आहट (प्रत्य०)] मुसकराने की क्रिया या भाव । मंद हास ।

मुसकान—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुसकाना—क्रि० अ० दे० "मुसकराना" ।

मुसक्यान—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुसना—क्रि० अ० [सं० मुषण] मूसा जाना । चुराया जाना । (धन आदि) ।

मुसन्ना—संज्ञा पुं० [अ०] १ असल कागज की दूसरी नकल । २ रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है ।

मुसब्बर—संज्ञा पुं० [अ०] जमाया हुआ घीकुँवार का रस जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है ।

मुसमुद, मुसमुध(पु)†—वि० [देश०] ध्वस्त । नष्ट । बरबाद ।

संज्ञा पुं० नाश । ध्वंस । बरबादी ।

मुसम्मात—वि० स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] मुसम्मा शब्द का स्त्रीलिंग रूप । नाम्नी । नामधारिणी ।

संज्ञा स्त्री० स्त्री । औरत ।

मुसरा†—संज्ञा पुं० [हिं० मूसल] पेड़ की जड़ जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर उधर शाखाएँ न हों ।

मुसलधार—क्रि० वि० दे० "मूसलधार" ।

मुसलमान—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो । मुहम्मदी ।

मुसलमानी—वि० [फा०] मुसलमान संबंधी । मुसलमान का ।

संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है । सुन्नत ।

मुसल्लम—वि० [फा०] जिसके खंड न किए गए हों । साबुत । पूरा । अखंड ।

संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान" ।

मुसव्विर—संज्ञा पुं० [अ०] चित्रकार ।

मुसव्विरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] चित्रकारी ।

मुसहर—संज्ञा पुं० [हिं० मूस = चूहा + हर (प्रत्य०)] एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली पत्ते, पत्तल, जड़ी बूटी आदि बेचना है ।

मुसहिल—वि० [अ०] दस्तावर । रेचक ।

मुसाफिर—संज्ञा पुं० [अ०] यात्री । पथिक ।

मुसाफिरखाना—संज्ञा पुं० [अ० मुसाफिर + फा० खाना] १ यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान । २. धर्मशाला । सराय ।

मुसाफिरत, मुसाफिरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसाफिर होने की दशा । २. यात्रा । प्रवास ।

मुसाहब—संज्ञा पुं० [अ०] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती । सहवासी ।

मुसाहबी—संज्ञा स्त्री० [अ० मुसाहब + हिं० ई (प्रत्य०)] मुसाहब का पद या काम ।

मुसीबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तकलीफ । कष्ट । २ विपत्ति । संकट ।

मुसौवर—संज्ञा पुं० दे० "मुसव्विर" ।

मुस्कराना—क्रि० अ० दे० "मुसकराना" ।

मुस्की—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुस्क्यान(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुस्टंडा—वि० [सं० पुष्ट] १ मोटा ताजा । हृष्ट पुष्ट । २ बदमाश । गुंडा ।

मुस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] मोथा ।

मुस्तकिल—वि० [अ०] १ अटल । स्थिर । २ पक्का । मजबूत । दृढ़ ।

मुस्तगीस—संज्ञा पुं० [अ०] अभियोग उपस्थित करनेवाला । मुद्दई ।

मुस्तसना—वि० [अ०] १ अलग किया हुआ । छोड़ा हुआ । २ मुक्त । उन्मुक्त । बरी ।

मुस्तहक—वि० [अ०] १ जिसको हक हासिल हो । हकदार । २ पात्र । अधिकारी ।

मुस्तैद—वि० [अ० मुस्तअद] १ तत्पर । सन्नद्ध २ चालाक । तेज ।

मुस्तैदी—संज्ञा स्त्री० [अ० मुस्तअद + ई (प्रत्य०)] सन्नद्धता । तत्परता । २. फुरती ।

मुस्तौफी—संज्ञा पुं० [अ०] वह पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के हिसाब की जाँच पड़ताल करे। आय-व्यय-परीक्षक। उ०—वासिल बाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी। चित्रगुप्त होते मुस्तौफी शरण गहूँ मैं काकी। —सूर०।

मुहकम—वि० [अ०] दृढ़। पक्का। उ०—सूर पाप को गढ़ दृढ़ कीन्हो मुहकम लाइ किवारे। —सूर०।

मुहकमा—संज्ञा पुं० [अ०] सरिश्ता। विभाग। सीगा।

मुहताज—वि० [अ०] दे० "मोहताज"।

मुहब्बत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। प्यार। चाह। २ दोस्ती। मित्रता। ३ इश्क। लगन। लौ।

मुहम्मद—संज्ञा पुं० [अ०] अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने मुसलमानी धर्म का प्रवर्तन किया था।

मुहम्मदी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान।

मुहर—संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।

मुहरा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] १ सामने का भाग। आगा। सामना।

मुहा०—मुहरा लेना=मुकाबिला करना।

२ निशाना। ३ मुँह की आकृति। ४ शतरंज की कोई गोटी। ५ घोड़े का एक साज जो उसके मुँह पर रहता है। शतरंज के खेल की गोटियाँ।

मुहर्रम—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। यह महीना शोक का माना जाता है।

मुहर्रमी—वि० [अ० मुहर्रम+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मुहर्रम संबंधी। मुहर्रम का। २. शोकव्यंजक। ३ मनहूस।

मुहर्रिर—संज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुंशी। उ०—पाँच मुहर्रिर साथ करि दीने तिनकी बड़ी विपरीत। जिम्मे उनके, माँगै मोते यह तौ बड़ी अनीत। —सूर०।

मुहर्रिरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम। लिखने का काम।

मुहल्ला—संज्ञा पुं० दे० "महल्ला"।

मुहसिल—वि० [अ० मुहस्सिल] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

संज्ञा पुं० प्यादा। फौजदार।

मुहाफिज—वि० [अ०] हिफाजत करनेवाला। संरक्षक। रखवाला।

मुहाल—वि० [अ०] १ असंभव। नामुमकिन। २ कठिन। दुष्कर। दुःसाध्य।

संज्ञा पुं० १ दे० "महाल" २ दे० "महल्ला"।

मुहाला—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आला (प्रत्य०)] पीतल की वह चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है।

मुहावरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वह रूढ़ वाक्य या प्रयोग जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो। रोजमर्रा। बोलचाल। २ अभ्यास। आदत।

मुहासिन—संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब जाननेवाला। गणितज्ञ। २ हिसाब किताब रखनेवाला कर्मचारी। ३ आँकनेवाला। हिसाब लेनेवाला। उ०—सूर आप गुजरान मुहासिन लै जवाब पहुँचावै। —सूर०।

मुहासिबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ हिसाब। लेखा। उ०—सूरदास को यह मुहासिबा दस्तक कीजै माफ। —सूर०। २ पूछताछ।

मुहासिरा—संज्ञा पुं० [अ०] किले या शत्रुसेना को चारों ओर से घेरना। घेरा।

मुहासिल—संज्ञा पुं० [अ०] १ आय। आमदनी। २ लाभ। मुनाफा। नफा।

मुहिं(पु)—सर्व० दे० "मोहिं"।

मुहिम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कठिन या बड़ा काम। २ लड़ाई। युद्ध। ३. फौज की चढ़ाई। आक्रमण।

मुहीम(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मुहिम"।

मुहुँ†—संज्ञा पुं० दे० "मुँह"।

मुहु—अव्य० [सं०] बार बार।

मुहूरति—संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त"। उ०—ब्रह्म मुहूरति कुँअर कान्ह निज घर आए तब। —नंददास०।

मुहूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन रात का तीसवाँ भाग। २ निर्दिष्ट समय या काल। ३ फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय जिसपर कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्च्छित होने की प्रवृत्ति या अवस्था। जड़ता।

मुह्यमान्—वि० [सं०] १ मूर्च्छित। बेसुध। २ बहुत अधिक मोहित।

मूँग—संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० मुद्ग] एक अन्न जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग+फली] १ एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के लिये की जाती है। २ इस वृक्ष का फल। चिनिया बादाम।

मूँगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तोप।

मूँगा—संज्ञा पुं० [हिं० मूँग] समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है। प्रवाल। विद्रुम।

मूँगिया—वि० [हिं० मूँग+इया (प्रत्य०)] मूँग के रंग का। हरा।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का हरा रंग।

मूँछ—संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] ऊपरी ओठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।

मुहा०—मूँछ उखाड़ना=घमंड चूर करना। मूँछों पर ताव देना=अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछ नीची होना=(१) घमंड टूट जाना। (२) अप्रतिष्ठा होना। बेइज्जती होना।

मूँछी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज—संज्ञा स्त्री० [सं० मुंज] एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।

मूँठ—संज्ञा स्त्री० दे० "मूठ"।

मूँड़†—संज्ञा पुं० [सं० मुंड] सिर।

मुहा०—मूँड़ मारना=बहुत हैरान होना। बहुत कोशिश करना। मूँड़ मुँड़ाना=सन्यासी होना।

मूँड़न—संज्ञा पुं० [सं० मुंडन] चूड़ाकरण संस्कार। मुंडन।

मूँड़ना—क्रि० स० [सं० मुंडन] १ सिर के बाल बनाना। हजामत करना। २ धोखा देकर माल उड़ाना। ठगना। ३ चेला बनाना।

मूँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० मुंड] १ सिर। २ किसी वस्तु का गुँड़ के आकार का भाग।

मूँदना—क्रि० सं० [सं० मुद्रण ?] १ ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना। आच्छादित करना। ढाँकना। २ द्वार, मुँह आदि पर कोई वस्तु रखकर उसे बंद करना।

मूँदर—संज्ञा स्त्री० दे० "मुँदरी"।

मूक—वि० [सं०] १ गूँगा। अवाक्। २ विवश। लाचार।

मूकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गूँगापन।

मूकना(पु)†—क्रि० स० [सं० मुक्त] १ दूर करना। छोड़ना। त्यागना। बंधन से छुड़ाना।

मूका†—संज्ञा पुं० [सं० मूषा=गवाक्ष] छोटा गोल झरोखा। मोखा।
संज्ञा पुं० दे० "मुक्का"।

मूक्(पु)—वि० [सं० मूक] अपना दोष जानते हुए भी चुप रहनेवाला। मचला।

मूखना(पु)—क्रि० स० दे० "मूसना"।

मूचना(पु)—क्रि० स० दे० "मोचना"।

मूजी—संज्ञा पुं० [अ०] १ कष्ट पहुँचानेवाला। २ दुष्ट। खल।

मूझना(पु)†—क्रि० अ० [सं० मूर्च्छना] मूर्च्छित होना। बेसुध होना।

मूठ—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टि] १ मुष्टि। मुट्ठी। २ किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। ३ उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ४ एक प्रकार का जुआ। ५ जादू। टोना।
मुहा०—मूठ चलाना या मारना=जादू करना। उ०—पीठि दिए हीं, नैंक मुरि कर घूँघटपट्ट टारि। भरि गुलाल की मूठि सौं, गई मूठि सी मारि।—बिहारी०। मूठ लगना=जादू का असर होना।

मूठना(पु)—क्रि० अ० [सं० √मुण्ट्] नष्ट होना। उ०—दुह तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवन न मूठे।—सूर०।

मूठी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मूड़—संज्ञा पुं० दे० "मूँड़"।

मूढ़—वि० [सं०] १ मूर्ख। जड़बुद्धि। बेवकूफ। २ ठक। स्तब्ध। ३ जिसे आगा पीछा न सूझता हो। ठगमारा।

मूढ़गर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] गर्भ का बिगड़ना जिससे गर्भस्राव आदि होता है।

मूढ़ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्खता।

मूत—संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।

मूतना—क्रि० अ० [हिं० मूत] पेशाब करना।

मूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल। पेशाब। मूत।

मूत्रकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक रुककर होता है।

मूत्राघात—संज्ञा पुं० [सं०] पेशाब बंद होने का रोग। मूत्र का रुक जाना।

मूत्राशय—संज्ञा पुं० [सं०] नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना। फुकना।

मूना†—क्रि० अ० दे० "मुवना"।

मूर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २ जड़ी। ३ मूलधन। ४. मूल नक्षत्र।

मूरख(पु)†—वि० दे० "मूर्ख"।

मूरखताई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।

मूरचा—संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।

मूरछना(पु)—संज्ञा स्त्री० १ दे० "मूर्च्छना"। २ दे० मूर्च्छा।
क्रि० अ० मूर्च्छित या बेहोश होना।

मूरछा†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।

मूरत(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।

मूरतिवंत—वि० [मूर्ति+वंत (प्रत्य०)] मूर्तिमान्। देहधारी। सशरीर।

मूरध—संज्ञा पुं० दे० "मूर्द्धा"।

मूरि, मूरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २ जड़ी। बूटी।

मूरुख(पु)†—वि० दे० "मूर्ख"।

मूर्ख—वि० [सं०] बेवकूफ। अज्ञ। मूढ़।

मूर्खता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूढ़ता। नासमझी। बेवकूफी।

मूर्खत्व—संज्ञा पुं० दे० "मूर्खता"।

मूर्खिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० मूर्ख] मूढ़ा स्त्री।

मूर्च्छन—संज्ञा [सं०] १ संज्ञा लोप होना या करना। बेहोश करना। २ मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३ पारे का तीसरा संस्कार। ४ कामदेव का एक बाण।

मूर्च्छना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह।

मूर्च्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप। अचेत होना। बेहोशी।

मूर्छित, मूर्च्छित—वि० [सं०] [स्त्री० मूर्च्छिता] १ जिसे मूर्च्छा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २ मारा हुआ (पारा आदि धातुओं के लिये)।

मूर्त—वि० [सं०] १ जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।

मूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर। देह। २ आकृति। शकल। सूरत। ३ किसी के रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। प्रतिमा। विग्रह। ४ चित्र। तसवीर।

मूर्तिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूर्ति बनानेवाला। २ तसवीर बनानेवाला।

मूर्तित—वि० [सं०] १. मूर्ति के रूप में बनाया हुआ। २. दे० "मूर्ति"।

मूर्तिपूजक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।

मूर्तिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।

मूर्तिभंजक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो मूर्तियों को तोड़ता हो। बुतशिकन। २. मुसलमान।

मूर्तिमंत—वि० दे० "मूर्तिमान्"।

मूर्तिमान्—वि० [सं०] [स्त्री० मूर्तिमती] १. जो रूप धारण किए हो। सशरीर। २ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध—संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धकपारी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्द्धकर्णी"।

मूर्द्धकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छाया आदि के लिये सिर पर रखी हुई वस्तु।

मूर्द्धन्य—वि० [सं०] १ मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। २ मस्तक में स्थित। ३. श्रेष्ठ। उच्च कोटि का।

मूर्द्धन्य वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वे वर्ण जिनका उच्चारण संस्कृत व्याकरण में मूर्द्धा से माना गया है, यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, और ष।

मूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धाभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मूर्द्धाभिषिक्त] सिर पर अभिषेक या जलसिंचन।

मूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरोड़फली।

मूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है। जड़। २ खाने के योग्य मोटी जड़। कंद। ३ आदि। आरंभ। शुरू। ४ आदि कारण। उत्पत्ति का हेतु। ५ असल जमा या धन। पूँजी। ६ आरंभ का भाग। ७ नींव। बुनियाद। ८ ग्रंथकार का निज का वाक्य या लेख जिसपर टीका आदि की जाय। ९ उन्नीसवाँ नक्षत्र।
वि० [सं०] मुख्य। प्रधान।

मूलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूली। २ मूल स्वरूप।
वि० उत्पन्न करनेवाला। जनक।

मूलद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] आदिम द्रव्य या मूल जिससे और द्रव्य बने हों।

मूलद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] सदर फाटक।

मूलधन—संज्ञा पुं० [सं०] वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय। पूँजी।

मूलपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का आदि पुरुष जिससे वंश चला हो।

मूलभूत—वि० [सं०] किसी वस्तु के नितांत मूल या तत्व से संबंध रखनेवाला। असली।

मूलस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] थाला। आलवाल।

मूलस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाप दादा की जगह। पूर्वजों का स्थान। २ प्रधान स्थान। ३ मुलतान नगर।

मूलाधार—संज्ञा पुं० [सं०] मानव शरीर के भीतर के छ चक्रों में से एक (योग)।

मूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ी।

मूली—संज्ञा स्त्री० [सं० मूलक] १ एक पौधा जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती और खाई जाती है।

मुहा०—(किसी को) मूली गाजर समझना = अति तुच्छ समझना।

२ जड़ी बूटी। मूलिका।

मूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन। दाम। कीमत।

मूल्यवान्—वि० [सं०] जिसका दाम अधिक हो। बड़े दाम का। कीमती।

मूष, मूषक—संज्ञा पुं० [सं०] चूहा।

मूस—संज्ञा पुं० [सं० मूष] चूहा।

मूसदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूस + दानी (सं० आधान)] चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना—क्रि० स० [सं० मूषण] चुराकर ले जाना।

मूसर, मूसल—संज्ञा पुं० [सं० मुशल] १ धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २ एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे।

मूसलचंद—संज्ञा पुं० [हिं० मूसल] हट्टा-कट्टा पर निकम्मा मनुष्य।

मूसलधार—क्रि० वि० [हिं० मूसल + धार] मूसल के समान मोटे धार से (वृष्टि)।

मूसला—संज्ञा पुं० [हिं० मूसल] मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों। भकरा का उलटा।

मूसली—संज्ञा स्त्री० [सं० मुशली] एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मूसा—संज्ञा पुं० [सं० मूषक] चूहा।

संज्ञा पुं० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगंबर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था।

मूसाकानी—संज्ञा स्त्री० [सं० मूषाकर्णी] एक लता। इसके सब अंग औषधि के काम में आते हैं।

मृग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मृगी] १. पशुमात्र, विशेषत. वन्य पशु। जंगली जानवर। २ हिरन। ३ हाथियों की एक जाति। ४ मार्गशीर्ष। अगहन का महीना। ५. मृगशिरा नक्षत्र। ६ मकर राशि। ७ कस्तूरी का नाफा। ८ पुरुष के चार भेदों में से एक (कामशास्त्र)।

मृगचर्म—संज्ञा पुं० [सं०] हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है।

मृगछाला—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।

मृगजल—संज्ञा पुं० [सं०] मृगतृष्णा की लहरें।

मृगतृषा, मृगतृष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है। मृगमरीचिका।

मृगदाव—संज्ञा पुं० [सं० मृग + दाव = मृगों का वन] काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।

मृगधर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

मृगनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

मृगनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृगनैनी—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचनी"।

मृगमंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों की एक जाति।

मृगमद—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृगमरीचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृगतृष्णा।

मृगमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

मृगमेद—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृगया—संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। आखेट।

मृगरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृगलांछन—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

मृगलोचना—वि० स्त्री० [सं०] हरिण के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।

मृगलोचनी—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना"।

मृगवारि—संज्ञा पुं० [सं०] मृगतृष्णा का जल।

मृगशिरा—संज्ञा पुं० [सं० मृगशिरस्] सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।

मृगशीर्ष—संज्ञा पुं० दे० "मृगशिरा"।

मृगांक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ वैद्यक में एक प्रकार का रस।

मृगाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हरिण के से नेत्रोंवाली।

मृगाशन—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

मृगिनी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० मृग] हरिणी।

मृगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरिणी। हिरनी। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक ही रगण हो। उ०—री प्रिया। मान तू॥ मानना। ठान तू॥ प्रिय वृत्त। ३ कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है। ४ अपस्मार नामक रोग। ५ कस्तूरी।

मृगेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

मृगेक्षिणी—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगाक्षी"।

मृड—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव। उ०—मदन मथन मृड अंतरजामी। त्राता होहु जगत के स्वामी। —नंददास०।

मृडा, मृडानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

मृणाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल का डंठल। कमलनाल। २ कमल की जड़। मुरार। भसींड़।

मृणालिका—संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

मृणालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। २ वह स्थान जहाँ कमल हों।

मृणाली—संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

मृण्मय—वि० [सं०] [स्त्री० मृण्मयी] मिट्टी का।

मृण्मूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

मृत—वि० [सं०] [स्त्री० मृता] मरा हुआ। मुर्दा।

मृतक—संज्ञा पुं० [सं०] मरा हुआ प्राणी।

मृतक कर्म—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक पुरुष की गति के लिये किया जानेवाला कृत्य। प्रेतकर्म। अंत्येष्टि।

मृतकधूम—संज्ञा पुं० [सं०] राख। भस्म। उ०—जम्यो गाढ़ भर भर रुधिर ऊपर धूरि उड़ाय। जिमि अँगार रासीन्ह पर मृतक धूम रह छाय॥ —मानस।

मृतजीवनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है।

मृतसंजीवनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।

मृताशौच—संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी निकट संबंधी के मरने पर लगता है।

मृति—संज्ञा स्त्री० दे० "मृत्यु"।
मृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिट्टी। खाक।
मृत्युंजय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने मृत्यु को जीता हो। २ शिव का एक रूप।
मृत्यु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर से जीवात्मा का वियोग। प्राण छूटना। मरण। मौत। २ यमराज।
मृत्युलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमलोक। ‡२ मर्त्यलोक।
मृथाⓅ‡—क्रि० वि० १ दे० "वृथा"। २ दे० "मृषा"।
मृदंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।
मृदव—संज्ञा पुं० [सं०] गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन (नाट्यशास्त्र)।
मृदु—वि० [सं०] [स्त्री० मृद्वी] १ कोमल। मुलायम। नरम। २ जो सुनने में कर्कश या अप्रिय न हो। ३. सुकुमार। नाजुक। ४. धीमा। मंद।
मृदुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोमलता। मुलायमियत। २ धीमापन। मंदता।
मृदुत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।
मृदुल—वि० [सं०] [स्त्री० मृदुला] १ कोमल। नरम। २ कोमलहृदय। दयामय। कृपालु। ३. नाजुक। सुकुमार।
मृदुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृदुल, कोमल या सुकुमार होने का भाव।
मृदुलाई—संज्ञा स्त्री० दे० "मृदुलता"।
मृनालⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मृणाल"।
मृन्मय—वि० [सं०] मिट्टी का बना हुआ।
मृषा—अव्य० [सं०] झूठमूठ। व्यर्थ।
वि० असत्य। झूठ।
मृषात्व—संज्ञा पुं० [सं०] मिथ्यात्व।
मृषाभाषी—वि० [सं० मृषाभाषिन्] झूठ बोलनेवाला। झूठा।
मृष्ट—वि० [सं०] शोधित।
मृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोधन।
में—अव्य० [सं० मध्य] अधिकरण कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थानसूचक शब्द।
मेंगनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मींगी ?] छोटी गोलियों के आकार की विष्टा। लेंड़ी।
मेंड़—संज्ञा स्त्री० दे० "मेड़"।
मेंह—संज्ञा स्त्री० दे० "मेह"।
मेइनिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० मेदिनी] धरती। पृथ्वी।
मेकल—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक पर्वत है जहाँ से नर्मदा और सोन दो बड़ी नदियाँ निकली हैं।
मेख—संज्ञा पुं० दे० "मेष"।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील। खूँटी। २ कील। काँटा। ३ लकड़ी का पच्चड़।
मेखल—संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।
मेखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य भाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। २ करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३ मंडल। मँडरा। ४ डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। सामी। साम। ५ पर्वत का मध्य भाग। ६ कपड़े का वह टुकड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।
मेखली—संज्ञा स्त्री० [सं० मेखला] १, एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। २ करधनी। कटिबंध।
मेघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल। २ संगीत में छ रागों में से एक।
मेघडंबर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघगर्जन। २ बड़ा शामियाना। दलबादल।
मेघनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। देवराज।
मेघनाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ का गर्जन। २ वरुण। ३ रावण का पुत्र इंद्रजित। ४ मयूर। मोर।
मेघपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोड़ा। २ श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।
मेघमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बादलों की घटा। कादंबिनी।
मेघराज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
मेघवर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलयकाल के मेघों में से एक का नाम।
मेघवाईⓅ‡—संज्ञा स्त्री० [सं० मेघ+हिं० वाई (प्रत्य०)] बादलों की घटा।
मेघविस्फूर्जित—संज्ञा स्त्री० [सं०] १९ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, दो रगण और अंत्य गुरु हों। उ०—लखो गारी पौदा पुलकि लखिकै, मोबना नाम जाको। बनैले ज्यों केकी लहत सुनि कै, मेघविस्फूर्जिता को॥ इसे विस्मिता भी कहते हैं।
मेघा†—संज्ञा पुं० [सं० मेघ] मेढक।
मेघागम—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु का आरंभ।
मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित—वि० [सं०] बादलों से ढका या छाया हुआ।
मेघावरिⓅ‡—संज्ञा स्त्री० [सं० मेघावलि] बादलों की घटा।
मेचक—वि० [सं०] [भाव० मेचकता] १ काला। श्याम। २ अँधेरा।
संज्ञा पुं० १ धूआँ। २ बादल।
मेचकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कालापन।
मेचकताईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "मेचकता"।
मेच्छ—संज्ञा पुं० [सं० म्लेच्छ] दे० "म्लेच्छ।" उ०—ढोला मारिअ ढिल्लि महँ मुच्छिउ मेच्छ सरीर। —हम्मीररासो।
मेज—संज्ञा स्त्री० [फा०] लंबी चौड़ी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढ़ने के लिये रखी जाती है। (अ०) टेबुल।
मेजबान—संज्ञा पुं० [फा०] आतिथ्य करनेवाला। मेहमानदार।
मेजा†—संज्ञा पुं० [सं० मंडूक] मेढक। मंडूक। उ०—केवट हँसे सो सुनत गवेजा। समुद न जानु कुवाँ कर मेजा।—पद्मावत।
मेट—संज्ञा पुं० [अं०] मजदूरों का अफसर या सरदार। टंडैल। जमादार।
मेटकⓅ‡—संज्ञा पुं० [हिं० मेटना] नाशक। मिटानेवाला।
मेटनहाराⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० मेटना+हारा (प्रत्य०)] मिटानेवाला। दूर करनेवाला।
मेटना†—क्रि० स० दे० "मिटाना"।
मेटा†—संज्ञा पुं० दे० "मटका"।
वि० [हिं० √मेट+आ (प्रत्य०)] मिटानेवाला। उ०—धनमद अंध नंद को बेटा। सो भयो हमरे मख को मेटा। —नंददास।
मेटिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।
मेड़—संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति ?] १ मिट्टी डालकर बनाया हुआ खेत या जमीन का

घेरा । छोटा बाँध । २ दो खेतों के बीच में हद या सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता । ३ समान । गौरव ।

मेड़रा†—सज्ञा पुं० [सं० मडल, हिं० मँडरा] [स्त्री०, अल्पा० मेंडरी] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा ।

मेड़िया—संज्ञा स्त्री० [स० मडप] मढ़ी ।

मेढक—सज्ञा पुं० [स० मंडूक] एक जल-स्थल-चारी जतु जो एक बालिश्त तक लंबा होता है । मडूक । दर्दुर ।

मेढ़ा—स्त्री० पुं० [स० मेढ़=भैंस की तरह का] [स्त्री० मेढ़] सींगवाला एक चौपाया जो घने रोयों से ढका होता है ।

मेढ़ासिंगी—सज्ञा स्त्री० [सं० मेढ़्शृंगी] एक भाड़ीदार लता । इसकी जड़ ओषधि है ।

मेढ़ी†—सज्ञा स्त्री० [स० वेणी] तीन लड़ियों से गूँथी हुई चोटी ।

मेथी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं ।

मेथौरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मेथी+बरी] मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी ।

मेद—सज्ञा पुं० [स० मेदस्, मेद] १ शरीर के अंदर की वसा नामक धातु । चरबी । उ०—त्रेस मेद नख छाड जो ववै त्रिवेनी खेत । दास कहा कौतुक कहौं, सुफल चारि लुनि लेत ।—काव्यनिर्णय । २ मोटाई या चरबी बढ़ना । ३ कस्तूरी ।

मेदपाट—सज्ञा पुं० [स०] मेवाड़ देश ।

मेदा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध ओषधि ।

सज्ञा पुं० [अ०] पाकाशय । पेट ।

मेदिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी । धरती ।

मेदुर—वि० [स०] १ चिकना । स्निग्ध । २ मोटा या गाढ़ा ।

मेध—सज्ञा पुं० [स०] यज्ञ ।

मेधा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति । धारणावाली बुद्धि । २ षोडश मातृकाओं में से एक । ३ छप्पय छद का एक भेद ।

मेधावी—वि० [सं० मेधाविन्] [स्त्री० मेधाविनी] १ जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो । २ बुद्धिमान् । चतुर । ३ पडित । विद्वान् ।

मेध्य—वि० [सं०] १ यज्ञ सबधी । २ पवित्र ।

सज्ञा पुं० १ बकरी । २ जौ । ३. खैर ।

मेनका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्वर्ग की एक अप्सरा जिसके गर्भ से भरत की माता और दुष्यत की पत्नी शकुतला का जन्म हुआ था । २ उमा या पार्वती की माता ।

मेना—क्रि० स० [हिं० मोयन] पकवान में मोयन डालना ।

सज्ञा स्त्री० [सं० मेनका] पार्वती की माता, मेनका ।

मेम—सज्ञा स्त्री० [अं० मैडम का संक्षिप्त रूप] १ युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री । २ ताश का एक पत्ता । बीवी । रानी ।

मेमना—सज्ञा पुं० [अनु० में में] १ भेड का बच्चा । २. घोड़े की एक जाति ।

मेमार—सज्ञा पुं० [अ०] इमारत बनाने वाला । थवई । राजगीर ।

मेय—वि० [स०] जो नापा जा सके ।

मेयना†—क्रि० स० दे० "मेना" ।

मेर(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "मेल" ।

मेरवना—क्रि० स० [सं० मेलन] १ मिश्रित करना । मिलाना । २ संयोग कराना ।

मेरा—सर्व० [हिं० मे+रा] [स्त्री० मेरी] "मैं" के संबंधकारक का रूप । मदीय । मम ।

(पु)†सज्ञा पुं० दे० 'मेला" ।

सज्ञा पुं० [हिं० मेल] मेल । भेंट । उ०—जो ओहि तत सत्त सौं हेरा । गएउ हेराइ जो ओहि भा मेरा ।—पदमावत ।

मेराउ, मेराव†—सज्ञा पुं० [हिं० मेर=मेल] मेल । मिलाप । समागम ।

सज्ञा स्त्री० अहकार ।

मेरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मेरा] अहंभाव । हमता ।

मेरु—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है । सुमेरु । हेमाद्रि । २. जपमाला के बीच का सबसे बडा दाना । सुमेरु । ३ छद शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने कितने लघु गुरु के कितने छंद हो सकते हैं ।

मेरुदड—सज्ञा पुं० [सं०] १ रीढ़ । २ पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा ।

मेरे—सर्व० [हिं० मेरा] १ 'मेरा' का बहुवचन । २, 'मेरा' का वह रूप जो उसे संबधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है ।

मेल—सं० पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव । संयोग । समागम । मिलाप । २ एकता । सुलह । ३ मैत्री । मित्रता । दोस्ती । ४ उपयुक्तता । सगति ।

मुहा०—मेल खाना, बैठना या मिलना=(१) सगति का उपयुक्त होना । साथ निभना । (२) दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना ।

५ जोड़ । टक्कर । बराबरी । समता । ६ ढग । प्रकार । चाल । तरह । ७ मिश्रण । मिलावट ।

मेलक—सज्ञा पुं० [सं०] १ संग साथ । सहवास । २ मिलान । ३. समूह । मेल ।

वि० [हिं० मेल] मेल कराने या मिलानेवाला ।

मेलना(पु)†—क्रि० स० [हिं० मेल से ना० धा०] १ मिलाना । २ डालना । रखना । उ०—जे कर कनक कचोरा भरि भरि मेलत तेल फुलेल ।—सूर० । ३ पहनाना ।

क्रि० अ० इकट्ठा होना । एकत्र होना ।

मेला—सज्ञा पुं० [सं० मेलक] १ भीड़ भाड़ । २ देवदर्शन, उत्सव, तमाशे आदि के लिये बहुत से लोगों का जमावड़ा ।

मेलान—सज्ञा पुं० [हिं० मेलक] १ ठहराव । २ पड़ाव । डेरा ।

सज्ञा पुं० [अ० मैलान] १. प्रवृत्ति । झुकाव । २ अनुराग । चाह ।

मेलाना†—क्रि० स० दे० "मिलाना" ।

मेली—सज्ञा पुं० [हिं० मेल+ई (प्रत्य०)] मुलाकाती ।

वि० जल्दी हिल मिल जानेवाला ।

मेल्हना†—क्रि० अ० [?] १. छटपटाना । बेचैन होना । २ आनाकानी करके समय बिताना ।

मेव—सज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति । मेवाती ।

मेवा—सज्ञा सं० [फा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल ।

मेवाटी—सज्ञा स्त्री० [फा० मेवा+बाटी] एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं ।

मेवाड़—सज्ञा पुं० [देश०] राजस्थान का एक प्रसिद्ध मध्यकालीन राज्य जो भारतीय स्वतत्रता के लिये अफगान और मुगल

बादशाहों से बराबर युद्ध करता रहा। इसके शासक महाराणा कहलाते थे और राजधानी चित्तौर थी जो महाराणा प्रताप के बाद उदयपुर हो गई।

मेवात—संज्ञा पुं० [सं०] राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—संज्ञा पुं० [हिं० मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला।

मेवाफरोश—संज्ञा पुं० [फा०] मेवे बेचनेवाला।

मेवासाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० मवासा] १ किला। गढ़। २. रक्षा का स्थान। ३. घर।

मेवासी—संज्ञा पुं० [हिं० मेवासा] १ घर का मालिक। २ किले में रहनेवाला। ३ सुरक्षित और प्रबल।

मेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेड़। २ बारह राशियों में से एक।

Ⓟ**मुहा०**—मेष करना=आगा पीछा करना। उ०—मनो आए संग देखि ऐसे रंग, मनहिं मन परस्पर करत मेषैं। —सूर०।

मेषवृषण—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

मेषसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल (पर्व)।

मेस—संज्ञा पुं० [अं०] बहुत से लोगों की मिली जुली भोजनशाला।

मेसू—संज्ञा पुं० [देश०] बेसन की एक प्रकार की बरफी।

मेहँदी—संज्ञा स्त्री० [सं० मेन्धी] एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर शरीर पर लगाने से लाल रंग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ पैर में लगाती हैं।

मेह—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रस्राव। मूत्र। २ प्रमेह रोग।

संज्ञा पुं० [सं० मेघ] १ मेघ। बादल। उ०—गाँसी गाँसी नेह की बिसानी करमेह की रही न सुधि तेह की न देह की न गेह की। —शृंगार०। २. वर्षा। झड़ी। मेंह।

मेहतर—संज्ञा पुं० [फा० मिलाइए सं० महत्तर] [स्त्री० मेहतरानी] १ श्रेष्ठ व्यक्ति। बुजुर्ग। सरदार। २. भंगी। हलालखोर।

मेहनत—संज्ञा स्त्री० [अ०] श्रम। प्रयास।

मेहनताना—संज्ञा पुं० [अ० मेहनत+फा० आना] किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मेहनती—वि० [हिं० मेहनत] मेहनत करनेवाला। परिश्रमी।

मेहमान—संज्ञा पुं० [फा०] अतिथि। पाहुन।

मेहमानदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अतिथिसत्कार। आतिथ्य।

मेहमानी—संज्ञा स्त्री० [फा० मेहमान+ई (प्रत्य०)] १ आतिथ्य। अतिथिसत्कार। पहुनाई।

मुहा०—मेहमानी करना=खूब गत बनाना। मारना पीटना। दंड देना (व्यंग्य)।

‡२ मेहमान बनकर रहने का भाव।

मेहर—संज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया।

संज्ञा स्त्री० दे० "मेहरी"।

मेहरबान—वि० [फा०] कृपालु। दयालु।

मेहरबानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] दया। कृपा।

मेहरा—संज्ञा पुं० [हिं० मेहरी] स्त्रियों की सी चेष्टावाला। जनखा।

मेहराब—संज्ञा स्त्री० [अ०] द्वार के ऊपर का अर्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।

मेहरारू, मेहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० मेहना] १. स्त्री। औरत। २ पत्नी। जोरू।

मैं—सर्व० [सं० 'अस्मद्' का 'मया' रूप] सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता का रूप। स्वयं। खुद।

Ⓟअव्य० दे० "में"। उ०—अरुन बदरि मैं दमकति दामिनि अंकुर जैसी। —नंददास०।

मैंड—संज्ञा स्त्री० [हिं० मेंड़] १ सीमा। २ समान। गौरव। ३ दे० "मेंड़"। उ०—उमग्यो निधि ज्यों नवल नंद कौ, रुकत रावरी मैंड़। —नंददास०।

मै—अव्य० दे० "मय"।

संज्ञा स्त्री० [अ०] शराब। मद्य।

मैका—संज्ञा पुं० दे० "मायका"।

मैगल—संज्ञा पुं० [सं० मदकल] मस्त हाथी। उ०—माधव जू मन सबही विधि पोच। अति उन्मत्त निरंकुश मैगल चिंता रहित असोच। —सूर०।

वि० मस्त (हाथी के लिये)।

मैच—संज्ञा पुं० [अं०] खेल की प्रतियोगिता।

मैटर—संज्ञा पुं० [अं०] १. तत्व। २ साधन या सामग्री। ३ लेख या उसका वह अंश जो छपने को दिया जाय।

मैड़—संज्ञा स्त्री० दे० "मेड़"।

मैत्रायणि—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

मैत्रावरुणि—संज्ञा पुं० [सं०] मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मैत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] मित्रता। दोस्ती।

मैत्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बुद्ध जो अभी होनेवाले हैं। २ भागवत के अनुसार एक ऋषि। ३ सूर्य।

मैत्रेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २ अहल्या।

मैथिल—वि० [सं०] १ मिथिला प्रदेश का। मिथिला संबंधी।

संज्ञा पुं० मिथिला देश का निवासी।

मैथिली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता। २ मिथिला की बोली।

मैथुन—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रतिक्रीड़ा।

मैदा—संज्ञा पुं० [फा०] बहुत महीन आटा।

मैदान—संज्ञा पुं० [फा०] १ लंबा चौड़ा समतल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो। सपाट भूमि। १ वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। उ०—श्री मनमोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचन में रच्यौ रुचिर मैदान। —सूर०।

मुहा०—मैदान में आना=मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना=मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मैदान मारना=खेल, बाजी आदि में जीतना।

३ युद्धक्षेत्र। रणक्षेत्र।

मुहा०—मैदान करना=लड़ना। युद्ध करना। मैदान मारना=विजय प्राप्त करना।

मैन—संज्ञा पुं० [सं० मदन] १ कामदेव। मदन। २ मोम। उ०—पेमहिं माँह बिरह रस रसा। मैन के घर मधु अमृत बसा। —पद्मावत।

मैनफल—संज्ञा पुं० [सं० मदनफल] १ मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल जो अखरोट की तरह होता है और औषध के काम में आता है।

मैनमथⓅ—वि० [हिं० मैन] कामासक्त।

मैनसिल—संज्ञा स्त्री० [सं० मनःशिला] एक प्रकार की पीली धातु।

मैना—संज्ञा स्त्री० [सं० मदना] काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से

मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है। सारिका।

सज्ञा स्त्री० दे० "मेनका"।

सज्ञा पुं० [देश०] एक जाति जो राजपूताने में पाई जाती और "मीना" कहलाती है।

मैनाक—सज्ञा पुं० [सं०] १. एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। कहते हैं कि जब इद्र पर्वतों के पख काटने लगे तो यह समुद्र में छिप गया और तबसे वहीं है। २ हिमालय की एक ऊँची चोटी।

मैनावली—सज्ञा स्त्री० [स०] १२ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ तगण होते हैं। उ०—सारग नीके हरे लाल जो भाव। नीलेरु पीले लसै शुभ्र मो शाव।

मैगंत(पु)†—वि० [सं० मदमत्त] १ मदोन्मत्त। मतवाला। २ अहकारी। अभिमानी।

मैया—संज्ञा स्त्री० माता। माँ।

मैर†—सज्ञा स्त्री० [सं० मृदर, प्रा० मिअर=क्षणिक] साँप के विष की लहर।

मैल—सज्ञा स्त्री० [सं० मलिन] १. गर्द धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक दमक नष्ट हो जाती है। मल। गदगी।

मुहा०—हाथ पैर की मैल=तुच्छ वस्तु।

२ दोष। विकार।

मैलखोरा—वि० [हिं० मैल+फा० खोर] (रंग आदि) जिसपर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे।

मैला—वि० [स० मलिन, प्रा० मइल] १. जिसपर मैल जमी हो। मलिन। अस्वच्छ। २ विकारयुक्त। दूषित। ३ गंदा। दुर्गंधयुक्त।

सज्ञा पुं० गलीज। गू। कूड़ाकर्कट।

मैलाकुचैला—वि० [हिं० मैला+स०कुचैल =गदा वस्त्र] १ जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो। २. बहुत मैला। गदा।

मैलान—सज्ञा पुं० दे० "मैदान"।

मैलापन—सज्ञा पुं० [हिं० मैला+पन (प्रत्य०)] मलिनता। गदापन।

मों(पु)†—अव्य० दे० "मैं"।

सर्व० दे० "मो"।

मोंगरा—सज्ञा पु० १ दे० "मोगरा"। २ दे० "मुँगरा"।

मोंछ—सज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ"।

मोंढ़ा—सज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धा] १. बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन। २ कधा।

मो(पु)—सर्व [सं० 'अस्मद्' का 'मह्यम्' रूप] १ मेरा। २ अवधी और व्रजभाषा में "मैं" का वह रूप जो उसे कर्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक का चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

मोइ—सर्व० [हिं० मोहिं] दे० "मुझे"। उ०—मोह कुँवरि बैठारि, सखिन पै मोंटा धावै। —नददास०।

मोकना(पु)†—क्रि० स० [सं० मुक्त] १ छोड़ना। परित्याग करना। उ०—कपित खास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर। —सूर०। २ क्षिप्त करना। फेंकना।

मोकल(पु)†—वि० [सं० मुक्त] छूटा हुआ। जो बँधा न हो। आजाद। स्वच्छंद।

मोकला†—वि० [हिं० मोकल] १. अधिक चौड़ा। कुशादा। २ छूटा हुआ। स्वच्छंद।

मोक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ बंधन से छूट जाना। छुटकारा। २ शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। ३ मृत्यु। मौत।

मोक्षद—सज्ञा पुं० [स०] मोक्ष देनेवाला।

मोख(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

मोखा—सज्ञा पुं० [सं० मुख] बहुत छोटी खिड़की। झरोखा।

मोगरा—सज्ञा पुं० [स० मुद्गर] १ एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (पुष्प)। २ दे० "मोंगरा"।

मोगल—सज्ञा पु० दे० "मुगल"।

मोगा—सज्ञा पु० [देश०] १ एक प्रकार का रेशम। २. इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।

मोघ—वि० [सं०] निष्फल। चूकनेवाला।

मोच—सज्ञा स्त्री० [सं०√मुच्] शरीर के किसी अग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर उधर खिसक जाना।

मोचन—सज्ञा पुं० [सं०] १ बधन आदि से छुड़ाना। मुक्त करना। २ दूर करना। हटाना। ३ रहित करना। ले लेना।

मोचना—क्रि० स० [स० मोचन] १ छोड़ना। २ गिराना। बहाना। ३ छुड़ाना। उ०—अब तिनके बधन मोचहिंगे। —सूर०।

सज्ञा पुं० [सं० मोचन] हज्जामों का वह औजार जिससे वे बाल उखाड़ते हैं।

मोचरस—संज्ञा पुं० [सं०] सेमल का गोंद।

मोची—संज्ञा पुं० [स० मोचन] वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो।

वि० [सं० मोचिन्] [स्त्री० मोचिनी] १ छुड़ानेवाला। २ दूर करनेवाला।

मोच्छ(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

मोछ—सज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ"।

(पु)†—सज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

मोजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा। पायताबा। जुर्राब। २ पैर में पिंडली के नीचे का भाग। ३ कुश्ती का एक दाँव।

मोट—सज्ञा स्त्री० [हिं० मोटरी] गठरी मोटरी। उ०—नटि न, सीस साबित भई लुटी सुखनु की मोट। चुप करि ए चारी करति सारी-परी सलोट। —बिहारी०।

सज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कूएँ से पानी निकालते हैं। चरसा। पुर।

(पु)†वि० [हिं० मोटा] १. दे० "मोटा"। २ कम मोल का। साधारण।

मोटनक—सज्ञा पुं० [स०] ११ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, दो जगण और अत में लघु गुरु हो। उ०—तू जो जल गोप लली भरि कै। दीनो हरि को बिनती करि कै॥

मोटमरदी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+मर्द] अभिमान। अहकार।

मोटर—सज्ञा पु० [अँ०] एक प्रकार का यत्र जो दूसरे यत्रों का सचालन करता है।

सज्ञा स्त्री० वह प्रसिद्ध गाड़ी जो इस यत्र से चलती है।

मोटरकार—सज्ञा पुं० हवागाड़ी।

मोटरी—सज्ञा स्त्री० [तैलग० मूटा=गठरी] गठरी।

मोटा—वि० [सं० पुष्ट] [स्त्री० मोटी] १. जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो। दुबला का उलटा। स्थूल शरीरवाला। २ पतला का उलटा। दबीज। दलदार। गाढ़ा। ३ जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो।

मुहा०—मोटा असामी=अमीर। मोटा भाग्य=सौभाग्य। खुशकिस्मती।

४ जिसके कण खूब महीन न हो गए हों। दरदरा। ५. घटिया। खराब।

मुहा०—मोटी बात=साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से=अंदाज से। अटकल से।

६ भारी या कठिन।

मुहा०—मोटा दिखाई देना=आँख की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना।

७ घमंडी। अहंकारी। ८ जो देखने में भला न जान पड़े। भद्दा। बेडौल।

मोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १ मोटा होने का भाव। स्थूलता। पीवरता। २ शरारत। पाजीपन।

मुहा०—मोटाई चढ़ना=बदमाश या घमंडी होना।

मोटाना—क्रि० अ० [हिं० मोटा से ना० धा०] १ मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। २ अभिमानी होना। ३ धनवान् होना।

क्रि० स० दूसरे को मोटा कराना।

मोटापा—संज्ञा पुं० दे० "मोटाई"।

मोटा मोटी—क्रि० वि० [हिं० मोटा] मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

मोटिया—संज्ञा पुं० [हिं० मोटा+इया (प्रत्य०)] मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। खद्दड़। खादी।

संज्ञा पुं० [हिं० मोट=बोझ ढोनेवाला।

मोट्टायित—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अपने आंतरिक प्रेम को कटु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोठ—संज्ञा स्त्री० [सं० मकुष्ठ] मूँग की तरह का एक मोटा अन्न। मोट। मोथी। वनमूँग।

मोठस—वि० [?] मौन। चुप।

मोड़—संज्ञा पुं० [हिं० मुड़ना] १ रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान। २ घुमाव या मुड़ने की क्रिया या भाव।

मोड़ना—क्रि० स० [हिं० मुड़ना का प्रे० रूप] १ फेरना। लौटाना।

मुहा०—मुँह मोड़ना=विमुख होना।

२ किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३ धार भुथरी करना। कुंठित करना, जैसे—धार मोड़ना।

मोड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] महाराष्ट्र देश की लिपि।

मोतियदाम—संज्ञा पुं० [सं० मौक्तिकदाम] चार जगण का एक वर्णवृत्त। उ०—सदा जिनके सुठि आठहुँ याम। विराजत कंठ सुमोतियदाम।

मोतिया—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+इया (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का बेला। २. एक प्रकार का सलमा।

वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का (रंग)। २ छोटे गोल दानों का।

मोतियाबिंद—संज्ञा पुं० [हिं० मोतिया+सं० बिंदु] आँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती है।

मोती—संज्ञा पुं० [सं० मौक्तिक, प्रा० मोत्तिअ] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है।

मुहा०—मोती गरजना=मोती चटकना या कड़क जाना। मोती रोलना=बिना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत अधिक धन संपत्ति देना।

संज्ञा स्त्री० बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं।

मोतीचूर—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+चूर] छोटी बूँदियों का लड्डू।

मोतीझरा—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+झिरा ?] एक ज्वर। (अँ०) टाइफाइड।

मोतीबेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोतिया+बेल] मोतिया बेला (फूल)।

मोतीभात—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+भात] एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीसिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती+सं० श्री] मोतियों की कंठी। मोतियों की माला।

मोथा—संज्ञा पुं० [सं० मुस्तक] नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़।

मोद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मोदी] १ आनंद। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २ २२ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से ५ भगण, मगण, सगण और अंत्य गुरु हो। उ०—जाय कह्यो निज मातहिं तें फल एक मिलो एतोहि बखाने। बाँटहु आपस में तब बोलत मोद गहे कुंती अनजाने। ३ सुगंध। महक। खुशबू।

मोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. लड्डू। मिठाई। २ औषध आदि का बना हुआ लड्डू। ३. गुड़। ४ चार भगण का एक वर्णवृत्त। उ०—आय धरे प्रभु लै चरणोदक। भूख भगै न भखे मन मोदक।

मोदकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदा।

मोदना(पु)—क्रि० अ० [सं० मोदन] १ प्रसन्न होना। खुश होना। २. सुगंध फैलना।

क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

मोदित—वि० दे० "मुदित"।

मोदी—संज्ञा पुं० [सं० मोदक=लड्डू] आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया। परचूनिया।

मोदीखाना—संज्ञा पुं० [हिं० मोदी+फ़ा० खाना] अन्नादि रखने का घर। भंडारा।

मोधुक—संज्ञा पुं० [सं० मोदक=एक जाति] मछली पकड़नेवाला। धीवर। मछुआ। उ०—एक मीन ने मच्छ कियो तब हरि रखवारी कीन्ही। सोई मत्स्य पकरि मोधुक ने जाय असुर को दीन्ही।—सूर०।

मोधू—वि० [सं० मुग्ध] बेवकूफ़। मूर्ख।

मोन—संज्ञा पुं० दे० "मोना"।

मोना(पु)—क्रि० स० [हिं० मोयन] भिगोना।

संज्ञा पुं० [सं० मोण] [स्त्री० अल्पा० मोनी] झाबा। पिटारा।

मोम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

मोमजामा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह कपड़ा जिसपर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो। तिरपाल।

मोमति(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ममत्व"।

संज्ञा स्त्री० [मो+मति] मेरी मति। मेरी सम्मति।

मोमबत्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मोम+हिं० बत्ती] मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमिन—संज्ञा पुं० [अ०] १ धर्मनिष्ठ मुसलमान। २ मुसलमान जुलाहों की एक जाति।

मोमियाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नकली शिलाजीत।

मोमी—वि० [फ़ा०] मोम का बना हुआ।

मोयन—संज्ञा पुं० [हिं० मैन=मोम] माँड़े हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें उनसे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

मोरंग—संज्ञा पुं० [देश०] नेपाल का पूर्वी भाग।

मोर—संज्ञा पुं० [सं० मयूर] [स्त्री० मोरनी] १ एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध बड़ा पक्षी। २. नीलम की आभा।

Ⓟ†—सर्व० [स्त्री० मोरी] दे० "मेरा"।

मोरचंदा—संज्ञा पुं० दे० "मोरचंद्रिका"।

मोरचंद्रिका—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर+सं० चंद्रिका] मोरपंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ लोहे की सतह पर चढ़नेवाली वह लाल या पीले रंग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने पर उत्पन्न होती है। जंग। २. दर्पण पर जमी मैल। उ०—पहिरि न भूपन कनक के, कहि आवत इहि हेत। दरपन के से मोरचे, देह दिखाई देत। —बिहारी०।

संज्ञा पुं० [फ़ा० मोरचाल] १ वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। २ वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मुहा०—मोरचाबंदी करना=गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना=शत्रु के मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना= दे० "मोरचाबंदी करना"। मोरचा लेना=युद्ध करना।

मोरछड़Ⓟ—संज्ञा पुं० दे० "मोरछल"।

मोरछल—संज्ञा पुं० [हिं० मोर+छड़] मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है।

मोरछली—संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"।

संज्ञा पुं० [हिं० मोरछल+ई (प्रत्य०)] मोरछल हिलानेवाला।

मोरछाँह—संज्ञा स्त्री० दे० "मोरछल"।

मोरजुटना—संज्ञा पुं० [हिं० मोर+जुटना] एक प्रकार का आभूषण।

मोरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोड़ना] मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना।

संज्ञा स्त्री० [सं० मोरट] बिलोया हुआ दही जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों। शिखरन।

मोरनाⓅ—क्रि० स० दे० "मोड़ना"।

क्रि० स० [हिं० मोरना] दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर का स्त्री० रूप] १. मोर पक्षी की मादा। २ मोर के आकार का टिकड़ा जो नथ में पिरोया जाता है।

मोरपंख—संज्ञा पुं० [हिं० मोर+पंख] मोर का पर।

मोरपंखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोरपंख+ई (प्रत्य०)] वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रँगा हुआ हो।

संज्ञा पुं० मोर के पर से मिलता जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।

वि० मोर के पंख के रंग का।

मोरपंखाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० मोरपंख] १ मोर का पर। २ मोरपंख की कलगी।

मोरपखौआⓅ—संज्ञा पुं० दे० "मोरपंख"।

मोरमुकुट—संज्ञा पुं० [हिं० मोर+मुकुट] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।

मोरवाⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

मोरशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं० मयूर+शिखा] एक प्रकार की जड़ी।

मोराⓅ†—वि० दे० "मेरा"।

मोरानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० मोड़ना का प्रे० रूप] चारों ओर घुमाना। फिराना।

मोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरी] वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली।

Ⓟ†संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर] मोर की मादा।

मोल—संज्ञा पुं० [सं० मूल्य] कीमत। दाम। मूल्य।

यौ०—मोल चाल=(१) अधिक मूल्य। (२) किसी चीज का दाम घटा बढ़ाकर तै करना।

मोलना†—संज्ञा पुं० [अ० मौलाना] मौलवी।

मोलानाⓅ—क्रि० स० [हिं० मोल से ना० धा०] मोल पूछना या तै करना।

मोवनाⓅ†—क्रि० स० दे० "मोना"।

मोष—संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

मोषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. लूटना। २. चोरी करना। ३. वध करना।

मोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। २ शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की बुद्धि। ३. प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४ साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक। भय, दुःख, चिंता, प्रेम आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ५ दुःख। कष्ट। ६. मूर्च्छा। बेहोशी। गश।

मोहक—वि० [सं०] [भाव० मोहकता] १ मोह उत्पन्न करनेवाला। २ लुभानेवाला। मनोहर।

मोहठा—संज्ञा पुं० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३ रगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—श्याम की मात बोली रिसाई। गोपि कोई करी है ढिठाई॥

मोहड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+ड़ा (प्रत्य०)] १. किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मोहतमिम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रबंधकर्ता। व्यवस्थापक।

मोहताज—वि० [अ० मुहताज] १ दरिद्र। कंगाल। २ विशेष कामना रखनेवाला। इच्छुक।

मोहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसे देखकर जी लुभा जाय। २ श्रीकृष्ण। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक सगण और एक जगण होता है। उ०—जन राजवंत। जग जोगवंत। तिनको उदोत। केहि भाँति होत॥ ४ एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्च्छित करते हैं। ५ एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था। ६. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

वि० [सं०] [स्त्री० मोहनी] मोह उत्पन्न करनेवाला। उ०—मोहन मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जोइ। बसतु सु चित अंतर तऊ प्रतिबिंबितु जग होइ। —बिहारी०।

मोहनभोग—संज्ञा पुं० [सं० मोहन+ १ एक प्रकार का हलुआ। २ एक प्रकार का आम।

मोहनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

मोहना—क्रि० अ० [सं० मोहन] १ मोहित होना। रीझना। २ मूर्च्छित होना।

क्रि० स० [स० मोहन] १. अपने ऊपर अनुरक्त करना। मोहित करना। लुभा लेना। २ भ्रम में डालना। धोखा देना।

मोहनास्त्र—सज्ञा पुं० दे० "मोहन" (५)।

मोहनिशा—सज्ञा स्त्री० दे० "मोहरात्रि"।

मोहनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं। उ०—सुभ तो ये सखी री! आदिहुँ जो चित्त धरी। नर औ नारि पढ़ै, भारत के एक घरी। इसे मोहिनी छद या मोहिनि भी कहते हैं। इसका एक मात्रिक भेद भी है जिसके विषम पदों में १२ और सम में ७ मात्राएँ होती हैं। अत में सगण रहता है उ०—शभु भक्त-जन-त्राता। भव दुख हरैं। मनवांछित फलदाता। मुनि हिय धरैं। २ भगवान् क वह स्त्रीरूप जो उन्होंने समुद्र-मथन के उपरात अमृत बाँटते समय धारण किया था। ३ वशीकरण का मत्र।

मुहा०—मोहनी डालना या लाना = माया के वश करना। जादू करना। मोहनी लगना = मोहित होना। लुभाना।

४ माया।

वि० स्त्री० [सं०] मोहित करनेवाली। अत्यत सुन्दरी।

मोहर—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अकित करने का ठप्पा। २ उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपड़े आदि पर ली गई हो। ३ अशरफी।

मोहरा—सज्ञा पु० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] १ किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३ सेना की अगली पक्ति। ४ फौज की चढ़ाई का रुख।

मुहा०—मोहरा लेना = (१) सेना का मुकाबला करना। (२) भिड़ जाना। प्रतिद्वंद्विता करना।

५ कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६ चोली आदि की तनी।

सज्ञा पुं० [फा० मोहर] १ शतरंज की कोई गोटी। २ मिट्टी का साँचा जिसमें चीजें ढालते हैं। ३ रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। ४ यशव या अकीक पत्थर की वह छोटी गुल्ली जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं। ओपनी। ५ सिंगिया विष। ६ जहरमोहरा।

मोहरात्रि—संज्ञा स्त्री० [स०] १. वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। २ कृष्ण जन्माष्टमी।

मोहरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरा] १ बरतन आदि का छोटा मुँह। २ पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं। ३ दे० "मोरी"।

मोहर्रिर—सज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुशी।

मोहलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ फुरसत। अवकाश। छुट्टी। २ अवधि।

मोहार†—सज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आर (प्रत्य०)] १ द्वार। दरवाजा। मुँहड़ा।

मोहिंⓅ—सर्व० [स० मह्यम्] १ मुझको। मुझे। २ मेरे लिये। उ०—चैत बसता होइ धमारी। मोहिं लेखे ससार उजारी।—पदमावत।

मोहित—वि० [सं०] [स्त्री० मोहिता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. मोहा हुआ। आसक्त।

मोहिनी—वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली।

सज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु के एक अवतार का नाम। २ माया। जादू। टोना। ३ दे० "मोहनी"।

मोही—वि० [सं० मोहिन्] मोहित करनेवाला।

वि० [सं० मोह+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मोह करनेवाला। प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची। अज्ञानी।

मोहोपमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य जिसे "भ्रांति" अलकार कहते हैं।

मौंⓅ—अव्य० [व्रजभाषा में अधिकरण कारक का चिह्न] में।

मौंगाⓅ—सज्ञा पु० [स० मौन] मौन। चुप।

मौंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मौन] चुप्पी। मौन।

मौंजिबंधन—सज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार।

मौंड़ाⓅ†—सज्ञा पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंड़ी] लड़का। बालक। उ०—मैया बहुत बुरो बलदाऊ। कहन लगे बन बड़ो तमासो सब मौंड़ा मिलि आऊ।—सूर०।

मौका—सज्ञा पुं० [अ०] १. घटनास्थल। वारदात की जगह। २ देश। स्थान। जगह। ३. अवसर। समय।

मौकूफ—वि० [अ०] [सज्ञा मौकूफी] १. रोका हुआ। बंद किया हुआ। २ नौकरी से अलग किया गया। बरखास्त। ३. रद किया गया। ४ अवलबित। निर्भर।

मौक्तिक—सज्ञा पुं० [स०] मुक्ता। मोती।

वि० मोतियों का। मुक्ता संबंधी।

मौक्तिकदाम—सज्ञा पुं० [स०] दे० "मोतियदाम"।

मौक्तिकमाल—सज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, तगण, नगण और दो अत्य गुरु होते हैं। उ०—भौतिन गगा, जग तुअ दाया। सेवत तोहीं, मन वच काया॥

मौख—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मसाला।

मौखरी—सज्ञा पुं० [स०] भारत का एक प्राचीन राजवश।

मौखर्य—सज्ञा पुं० [स०] मुखर होने का भाव। मुखरता।

मौखिक—वि० [सं०] १ मुख का। २ जबानी।

मौज—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ लहर। तरंग। २. मन की उमग। उद्वेग। जोश। उ०—कहा कमी जाके रामधनी। मनसा नाथ मनोरथ पूरण सुख निधान जाकी मौज घनी।—सूर०।

मुहा०—किसी की मौज पाना = मरजी जानना। इच्छा से अवगत होना।

३. धुन। ४ सुख। आनद। मजा। ५. प्रभूति। विभव। विभूति। उ०—रहति न रन, जयसाहि मुख लखि, लाखनु की फौज। जाँचि निराखरऊ चलै लै लाखनु की मौज।—बिहारी०।

मौजा—सज्ञा पुं० [अ०] गाँव। ग्राम।

मौजी—वि० [हिं० मौज+ई (प्रत्य०)] १ जो जी में आए वही करनेवाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनदी।

मौजूँ—वि० [अ०] [भाव० मौजूनियत] उपयुक्त। ठीक। उचित।

मौजूद—वि० [अ०] १ उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २ प्रस्तुत। तैयार।

मौजूदगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] उपस्थिति। हाजिरी।

मौजूदा—वि० [अ०] वर्तमान काल का।

मौड़ा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "मौंड़ा"।

मौत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मरण। मृत्यु।

मुहा०—मौत का सिर पर खेलना = (१) मरने को होना। (२) आपत्तिकाल समीप होना।

२ मरने का समय। काल। ३ अत्यंत कष्ट। आपत्ति।

मौताद—संज्ञा स्त्री० [अ०] मात्रा।

मौन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।

मुहा०—मौन ग्रहण या धारण करना = चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना = चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना = चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना = चुप हो जाना। मौन लेना या साधना = चुप होना। न बोलना। मौन सँभारना(पु) = मौन साधना। चुप होना।

२ मुनियों का व्रत। मुनिव्रत।

वि० [सं० मौनी] जो न बोले। चुप।

(पु)†संज्ञा पुं० [सं० मौण] १ बरतन। पात्र। २ डब्बा।

मौनव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।

मौना†—संज्ञा पुं० दे० "मोना"।

मौनी—वि० [सं० मौनिन्] १ चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २. मुनि।

मौर—संज्ञा पुं० [सं० मुकुट] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १. विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताड़पत्र या खुखड़ी आदि का बनाया जाता है। २ शिरोमणि। प्रधान।

संज्ञा पुं० [सं० मुकुल] मंजरी। बौर।

संज्ञा पुं० [सं० मौलि = सिर] गरदन।

मौरना—क्रि० स० [हिं० मौर से ना० धा०] वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।

मौरसिरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।

मौरूसी—वि० [अ०] बाप दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक।

मौर्ख्य—संज्ञा पुं० [सं०] मूर्खता।

मौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।

मौर्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी।

मौलवी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान धर्म का आचार्य जो अरबी, फारसी, आदि का पंडित होता है।

मौलसिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० मौलि+श्री] एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। वकुल।

मौलि—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोटी। सिरा। जूड़ा। २ मस्तक। सिर। ३ किरीट। ४ जटाजूट। ५ प्रधान। सरदार।

मौलिक—वि० [सं०] १ मूल से संबंध रखनेवाला। २ असली। ३ (ग्रंथ या विचार आदि) जो किसी का अनुवाद, नकल या अन्य किसी प्रकार से किसी दूसरी रचना के आधार पर न हो बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो।

मौलिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मौलिक होने का भाव। २ अपनी उद्भावना से कुछ कहने या लिखने की शक्ति।

मौली—वि० [सं० मौलिन्] मौलि धारण करनेवाला।

मौलूद—संज्ञा पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव (मुसल०)।

मौसर(पु)†—वि० दे० "मयस्सर"।

मौसा—संज्ञा पुं० [हिं० मौसी का पुं०] [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।

मौसिम—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मौसिमी] १. उपयुक्त समय। २ ऋतु।

मौसिया—वि० दे० "मौसेरा"।

मौसी—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] [वि० मौसेरा] माता की बहिन। मासी।

मौसेरा—वि० [हिं० मौसी+एरा (प्रत्य०)] मौसी से संबद्ध। मौसी के संबंध का।

म्यंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० मित्र] मित्र। दोस्त। उ०—काल सिहाणे यौं खड़ा जागि पियारे म्यंत। राम सनेही बाहिरा, तूँ क्यूँ सोवै नच्यंत।—कबीर०।

म्याँव—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

मुहा०—म्याँव म्याँव करना = भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना।

म्यान—संज्ञा पुं० [फा० मियान] १ तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २ अन्नमय कोश। शरीर।

म्याना(पु)—क्रि० स० [हिं० म्यान से ना० धा०] म्यान में रखना।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "मियाना"।

म्युनिसपैल्टी—संज्ञा पुं० [अं० म्यूनिसिपैलिटी] दे० "नगरपालिका"।

म्यूजियम—संज्ञा पुं० [अं०] स्थान या घर जिसमें पुरातत्व, पुराने जीवजंतु और प्राचीन कलाओं आदि से संबद्ध वस्तुएँ अवलोकनार्थ सुरक्षित रखी जाती हैं। संग्रहालय। अजायबघर।

म्यौं—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

म्योंढी—संज्ञा स्त्री० [सं० निर्गुण्डी] एक सदाबहार झाड़ जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

म्रजाद(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "मर्यादा"। उ०—पुष्टि म्रजाद, भजन सुख सीमा, निज जन पोषन भरन भजौं।—नंददास०।

म्रियमाण—वि० [सं०] १ मरने के तुल्य। २ मृत्यु के समीप। जो मर रहा हो।

म्लान—वि० [सं०] [भाव० संज्ञा म्लानता] १ मलिन। कुम्हलाया हुआ। २ दुर्बल। ३ मैला। मलिन।

म्लानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ म्लान होने का भाव। मलिनता। २ दुर्बलता।

म्लानि—संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानता"।

म्लेच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें धर्म न हो।

वि० १ नीच। २ पापरत। पापी।

म्हा(पु)†—सर्व० दे० "मुझ"।

म्हारा(पु)†—सर्व० दे० "हमारा"।

य

य—हिंदी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर। इसका उच्चारणस्थान तालू है।
यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशेष प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि। जंतर। २. वह उपकरण, जो किसी विशेष कार्य के लिये प्रस्तुत किया जाय। औजार। ३ किसी खास काम के लिये बनाई हुई कल या औजार। ४ बदूक। ५ बाजा। वाद्य। ६ ताला।
यंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षा करना। २ बाँधना। ३. नियम में रखना। नियंत्रण।
यंत्रणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्लेश। तकलीफ। २ दर्द। वेदना। पीड़ा।
यंत्र मंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] जादू टोना।
यंत्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलों के चलाने और बनाने की विद्या।
यंत्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेधशाला। २ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र हों।
यंत्रसज्ज—वि० [सं०] मशीनगनों और टैंकों आदि से युक्त और सजी हुई (सेना)।
यंत्रालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ कलें हों। २ छापाखाना।
यंत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताला।
यंत्रित—वि० [सं०] १ यंत्र आदि की सहायता से रोका या बंद किया हुआ। २ ताले में बंद।
यंत्री—संज्ञा पुं० [सं० यन्त्रिन्] १ यंत्र मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २ बाजा बजानेवाला। ३ यंत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला।
यंत्रीकरण—संज्ञा पुं० यंत्रों आदि से सज्जित करना।
यंद—संज्ञा पुं० [सं० इंद्र] राजा। स्वामी।
य—संज्ञा पुं० [सं०] १ यश। २ योग। ३ सवारी। ४ संयम। ५ छंद शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप।
यकअंगी—वि० दे० "एकांगी"।
यकबयक, यकबारगी—क्रि० वि० [फा०] अचानक। एकाएक। सहसा।
यकसाँ—वि० [फा०] एक समान। बराबर।
यकायक—क्रि० वि० दे० "यकबयक"।
यकीन—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। एतबार।
यकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से पित्त नामक रस बनता है, जिससे भोजन पचता है। जिगर। कालखंड। २ वह रोग जिसमें यह अंग दूषित होकर बढ़ जाता है। बर्म जिगर।
यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवयोनि में गिनाए हुए एक प्रकार के प्राणी जो कुबेर के सेवक और उनकी निधियों के रक्षक माने जाते हैं।
यक्षकर्दम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अंगलेप।
यक्षपति—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
यक्षपुर—संज्ञा पुं० [सं०] अलकापुरी।
यक्षिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यक्ष की कन्या या स्त्री। २. यक्ष की पत्नी।
यक्षी—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
संज्ञा पुं० [सं० यक्ष+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो यक्ष की साधना करता हो।
यक्षेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
यक्ष्मा—संज्ञा पुं० [सं० यक्ष्मन्] क्षयी रोग। तपेदिक।
यखनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] उबले हुए मांस का रसा। शोरबा।
यगण—संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में वर्णिक छंदों का एक गण जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राओं के तीन वर्ण होते हैं। (।SS)। संक्षिप्त रूप 'य'।
यच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।
यजन—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करना। उ०—सजग हुई फिर से सुर संस्कृति, देव यजन की वर माया।—कामायनी।
यजना(पु)—क्रि० स० [सं० यजन] १ पूजा करना। २ यज्ञ करना।
यजमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो यज्ञ करता हो। यष्टा। २ वह जो ब्राह्मणों को दान देता हो।
यजमानी—संज्ञा स्त्री० [सं० यजमान+हिं० ई (प्रत्य०)] १ यजमान का भाव या धर्म। २ यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।
यजु—संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।
यजुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] चार वेदों में से एक वेद जिसमें विशेषतः यज्ञकर्मों का विस्तृत विवरण है।
यजुर्वेदी—संज्ञा पुं० [सं० यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार कृत्य करनेवाला।
यज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। मख। याग।
यज्ञकुंड—संज्ञा पुं० [सं०] हवन करने की वेदी या कुंड।
यज्ञपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २. वह जो यज्ञ करता हो।
यज्ञपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।
यज्ञपशु—संज्ञा पुं० [सं०] वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय।
यज्ञपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।
यज्ञपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
यज्ञभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।
यज्ञमंडप—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करने के लिये बनाया हुआ मंडप।
यज्ञशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञमंडप।
यज्ञसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत।
यज्ञेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
यज्ञोपवीत—संज्ञा पुं० [सं०] १ जनेऊ। यज्ञसूत्र। २ हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार। व्रतबंध। उपनयन। जनेऊ।
यतनी—वि० [सं० इयत् ?] इतनी। उ०—बहु विभूति हरि द्विज कों दीनी। दया भकति यतनी सुभ कीनी।—नंददास०।
यति—संज्ञा पुं० [सं०] १ संन्यासी। त्यागी। योगी। २ ब्रह्मचारी। ३ छप्पय के ६६वें भेद का नाम।
संज्ञा स्त्री० [सं० यती] छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय लय ठीक रखने के लिये थोड़ा विश्राम हो।
यतिधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।
यतिभंग—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।
यतिभ्रष्ट—वि० [सं०] (काव्य) जिसमें यतिभंग दोष हो।

योगाभ्यास—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।

योगाभ्यासी—संज्ञा पुं० [सं० योगाभ्यासिन्] योगी।

योगासन—संज्ञा पुं० [सं०] योगसाधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।

योगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रण पिशाचिनी। २ योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३. शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्यायनी और महागौरी ये आठ विशिष्ट देवियाँ। ४ देवी। योगमाया।

योगिराज, योगींद्र—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।

योगी—संज्ञा पुं० [सं० योगिन्] १ वह जिसने योगाभ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। २ आत्मज्ञानी। ३ महादेव। शिव।

योगीश, योगीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी। २ याज्ञवल्क्य।

योगीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

योगेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ बहुत बड़ा योगी। सिद्ध। ३ शिव।

योगेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

योग्य—वि० [सं०] १ ठीक (पात्र)। काबिल। लायक। अधिकारी। २ श्रेष्ठ। अच्छा। ३. युक्ति भिड़ानेवाला। उपायी। ४. उचित। मुनासिब। ठीक। ५ आदरणीय। माननीय।

योग्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षमता। लायकी। २ बड़ाई। ३. बुद्धिमानी। लियाकत। ४. सामर्थ्य। ५. अनुकूलता। मुनासिबत। ६ औकात। ७. गुण। ८ इज्जत। ९ उपयुक्तता।

योजक—वि० [सं०] मिलाने या जोड़नेवाला।

योजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ योग। २ संयोग। मिलान। योग। ३ दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस को, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है। ४. परमात्मा।

योजनगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।

योजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० योजनीय, योज्य, योजित] १. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। २ प्रयोग। व्यवहार। ३. जोड़। मिलान। मेल। ४ बनावट। रचना। ५ भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन।

योजनीय, योज्य—वि० [सं०] योजना करने के योग्य।

योद्धा—संज्ञा पुं० [सं० योद्धृ] वह जो युद्ध करता हो। सिपाही।

योनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकर। खानि। २ उत्पत्तिस्थान। उद्गम। ३ स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ४ प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या पुराणों में ८४ लाख कही गई है। ५ देह। शरीर।

योनिज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

योषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री।

योषित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री। औरत।

योषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

यौं†—अव्य० दे० "यों"। उ०—पहिरत हीं गोरे गरे यौं दौरी दुति लाल। मनो परसि पुलकित भई बौलसिरी की माल। —बिहारी०।

यौ†—सर्व० [हिं० यह] यह।

यौक्तिक—वि० [सं०] १ युक्ति संबंधी। २ युक्तियुक्त।

यौगंधर—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों को निष्फल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगंधरायण—संज्ञा पुं० [सं०] उदयन का एक प्रसिद्ध महामंत्री।

यौगिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिला हुआ। २ प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। ३ दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द। ४ अट्ठाईस मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

यौतक, यौतुक—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो। दायजा। जहेज। दहेज।

यौद्धिक—वि० [सं०] युद्ध संबंधी।

यौधेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. योधा। २ एक प्राचीन देश का नाम। ३. प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरांत और वृद्धावस्था के पहले होता है। २ युवा होने का भाव। जवानी। ३ दे० "जोबन"।

यौवराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ युवराज होने का भाव। २ युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिषेक तथा उत्सव जो किसी के युवराज बनाए जाने के समय हो।

र

र—हिंदी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है।

रंक—वि० [सं०] १ धनहीन। गरीब। दरिद्र। उ०—रहिगो सुनै नृप पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई।—सूर०। २ कृपण। कंजूस। ३ सुस्त।

रंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ राँगा नामक धातु। २ नृत्य गीत आदि। नाचना गाना। ३ वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। ४ युद्धस्थल। रणक्षेत्र। ५ आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है। वर्ण, जैसे—लाल, काला। ६ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने के लिये होता है। ७ वदन और चेहरे की रंगत। वर्ण।

मुहा०—(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना = भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना। कांतिहीन होना। रंग निखरना = चेहरा साफ और चमकदार होना। रंग बदलना = क्रुद्ध होना। नाराज होना।

८ जवानी। युवावस्था।

मुहा०—रंग चूना या टपकना = युवावस्था का पूर्ण विकास होना। यौवन उमड़ना।

९ शोभा। सौंदर्य। १० प्रभाव। असर।

मुहा०—रग जमना=प्रभाव या असर पड़ना।

११ गुण या महत्व का प्रभाव। धाक।

मुहा०—रंग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना।

१२ क्रीड़ा। कौतुक। आनंद-उत्सव।

यौ०—रंग रलियाँ=आमोद प्रमोद। मौज।

मुहा०—रंग रलना=आमोद प्रमोद करना। रंग में भग पड़ना=आनद में विघ्न पड़ना।

१३ युद्ध। लड़ाई। समर।

मुहा०—रग मचाना=रण में खूब युद्ध करना।

१४ मन की उमंग या तरंग। मौज। उ०—रत्नजटित किंकिणि पग नुपूर अपने रंग बजावहु।—सूर०। १५ आनंद। मजा। उ०—माँको व्याकुल छाँड़िकै आपुन करैं जु रंग।—सूर०।

मुहा०—रग जमना=आनंद का पूर्णता पर आना। खूब मजा होना। रग मचाना=धूम मचाना। रग रचाना=उत्सव करना।

१६ दशा। हालत। उ०—कबहुँ नहिं यहि भाँति देख्यो, आज को सो रग।—सूर०। १७ अद्भुत व्यापारकांड। दृश्य। १८ प्रसन्नता। कृपा। दया। १९ प्रेम। अनुराग। उ०—देखु जरनि जड़ नारि की जरत प्रेत के सग। चिता न चित फीको भयो रची जु पिय के रग।—सूर०। २०. ढंग। चाल। तर्ज।

यौ०—रगढग=(१) दशा। हालत। (२) चालढाल। तौर तरीका। (३) व्यवहार। बरताव। (४) लक्षण।

मुहा०(पु)—रग काछना=ढग अख्तियार करना। उ०—सूर श्याम जितने रंग काछत युवती जन मन के गोऊ हैं।—सूर०।

२१ भाँति। प्रकार। तरह। उ०—दूरि भजत प्रभु पीठि दै गुन विस्तारन काल। प्रगटत निर्गुन निकट रहि चग रंग भूपाल।—विहारी०। २२ चौपड़ की गोटियों के दो कृत्रिम विभागों में से एक।

मुहा०—रग मारना=बाजी जीतना। विजय पाना।

रंगक्षेत्र—सज्ञा पुं० दे० "रंगभूमि"।

रंगत—सज्ञा स्त्री० [सं० रग+हिं० त (प्रत्य०)] १. रंग का भाव। २. मजा। आनद। ३. हालत। दशा। अवस्था।

रंगतरा—सज्ञा पुं० [सं० रंग] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संगतरा।

रँगना—क्रि० स० [सं० रंग से हिं० ना० धा०] १ रग में डुबाकर किसी चीज को रगीन करना। २ कागज आदि पर कुछ लिखना। ३. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ४. अपने अनुकूल करना।

क्रि० अ० किसी पर आसक्त होना।

रगबाती—सज्ञा स्त्री० [सं० रग+बत्ती] शरीर पर मलने के लिये सुगधित द्रव्यों की बत्ती।

रगबिरंगा—वि० [सं० रंग+हिं० बिरंग] १ अनेक रगों का। चित्रित। २. तरह तरह का।

रंगभवन—सज्ञा पुं० दे० "रगमहल"।

रंगभूमि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई जलसा हो। २ खेल या तमाशे का स्थान। उ०—रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढ़ाइ कह्यो दइ कीजो।—सूर०। ३. नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला। रगस्थल। ४. अखाड़ा। रणभूमि। ५ युद्धक्षेत्र।

रंगमंडप—सज्ञा पुं० दे० "रंगभूमि"।

रंगमहल—सज्ञा पुं० [स० रग+अ० महल] भोगविलास करने का स्थान।

रंगमार—सज्ञा पुं० [स० रग+मार] ताश का एक खेल।

रंगरली—सज्ञा स्त्री० [स० रग+रलना] आमोद प्रमोद। आनंद। क्रीड़ा। चैन। उ०—कुढँगु कोपु तजि रँग रली करति जुवति जग, जोइ। पावस, गूढ़ न बात यह, बूदनु हूँ रँगु होइ।—विहारी०।

रगरस—सज्ञा पुं० दे० "रँगरली"।

रंगरसिया—सज्ञा पुं० [सं० रग+हिं० रसिया] भोग विलास करनेवाला। विलासी पुरुष।

रगराता—वि० [सं० रंग+हिं० राता] अनुरागपूर्ण।

रँगरूट—सज्ञा पुं० [अँ० रिक्रूट] १ सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही। २ किसी काम में पहले पहल हाथ डालनेवाला आदमी।

रँगरेज—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० रँगरेजिन] वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।

रँगरेली—सज्ञा स्त्री० दे० "रगरली"।

रगवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "रँगाई"।

रँगवाना—क्रि० स० [हिं० रँगना का प्रे० रूप] रँगने का काम दूसरे से कराना।

रंगशाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला।

रंगसाज—सज्ञा पुं० [फा०] [काय रग साजी] १ वह जो चीजों पर रंग चढ़ाता हो। २ रग बनानेवाला।

रँगाई—सज्ञा स्त्री० [सं० रंग+हिं० आई (प्रत्य०)] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रँगाना—क्रि० स० दे० "रँगवाना"।

रँगावट—सज्ञा स्त्री० [स० रग+हिं० आवट (प्रत्य०)] रँगने का भाव।

रंगी—वि० [सं० रग+हिं० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० रंगिणी, रगिनी] १ आनदी। मौजी। विनोदशील। २ रगोंवाला।

रंगीन—वि० [फा०] [भाव० सज्ञा रगीनी] १ रँगा हुआ। रगदार। २ विलासप्रिय। आमोदप्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मजेदार।

रँगीला—वि० [सं० रग+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रँगीली] १. आनदी। रसिया। रसिक। २ सुदर। खूबसूरत। ३ प्रेमी।

रगोपजीवी—सज्ञा पुं० [स०] अभिनेता। नट।

रंच, रंचक(पु)—वि० [सं० न्यच] थोड़ा। अल्प। उ०—प्रदुमन लरे सप्तदस दो दिन रंच हार नहिं माने।—सूर०।

रज—सज्ञा पुं० [फा०] [वि० रजीदा] १ दुःख। खेद। २ शोक।

रंजक—वि० [स०] १ रँगनेवाला। जो रँगे। २ प्रसन्न करनेवाला।

सज्ञा स्त्री० [हिं० रच=अल्प] १ थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। २ वह बात जो किसी को भड़काने के लिये कही जाय।

रजन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० रंजनीय] १ रँगने की क्रिया। २ चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। ३ लाल चंदन। ४ छप्पय छद का पचासवाँ भेद।

वि० [स्त्री० रंजिनी] मन प्रसन्न करनेवाला (यौ० के अंत में)।

रंजना(पु)—क्रि० स० [सं० रंजन] १. प्रसन्न करना। आनंदित करना। २. भजना। स्मरण करना। उ०—आदि निरंजन नाम ताहि रंजै सब कोऊ। —सूर०। ३. रँगना।

रंजित—वि० [सं०] १ रँगा हुआ। २ आनंदित। प्रसन्न। ३ अनुरक्त।

रंजिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रंज होने का भाव। २ मनमुटाव। ३ शत्रुता।

रंजीदा—वि० [फा०] [भाव० संज्ञा रंजीदगी] १. जिसे रंज हो। दुःखित। २ नाराज।

रंडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राँड़। विधवा।

रँड़ापा—संज्ञा पुं० [हिं० राँड़+आपा (प्रत्य०)] विधवा की दशा। वैधव्य। वेवापन।

रंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० रंडा] वेश्या। कसबी।

रंडीबाज—वि० [हिं० रंडी+फा० बाज] [संज्ञा रंडीबाजी] वेश्यागामी।

रँडुआ, रँडुवा—संज्ञा पुं० [हिं० राँड़+उवा (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।

रंता(पु)†—वि० [सं० रत] अनुरक्त।

रंति—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रीड़ा। केलि।

रंतिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बड़े दानी राजा जिन्होंने एक बार ४८ दिन के निराहार के बाद भी आप हुए अतिथि को अपना भोजन दे दिया था।

रँद—संज्ञा पुं० [सं० रंध्र] १ रोशनदान। २. किले की दीवारों का वह मोखा जिसमें से बंदूक या तोप चलाई जाती है। मार।

रँदना—क्रि० स० [हिं० रंदा से ना० धा०] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।

रंदा—संज्ञा पुं० [सं० रदन=काटना, चीरना] एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है।

रंधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रंधित, रंधक] रसोई बनाना।

रंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] छेद। सूराख।

रंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २ एक प्रकार का बाण। ३. भारी शब्द।

रंभण—संज्ञा पुं० [सं०] गले लगाना। आलिंगन।

रंभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केला। २ गौरी। ३ उत्तर दिशा। ४. वेश्या। ५ पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा।

संज्ञा पुं० [सं० रंभ] लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारों आदि को खोदते हैं।

रँभाना—क्रि० अ० [सं० रंभण] गाय का बोलना। गाय का शब्द करना। उ०—बाजत वेणु विषाण सबै अपने रँग गावत। मुरली धुनि गौ रंभि चलत पग धूलि उड़ावत। —सूर०।

रँहचटा—संज्ञा पुं० [हिं० रहस+चाट] मनोरथसिद्धि की लालसा। लालच। चस्का। उ०—ज्यौं ज्यौं आवति निकट निसि, त्यौं त्यौं खरी उताल। झमकि झमकि टहलैं करै लगी रँहचटैं बाल। —बिहारी०।

र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पावक। अग्नि। २ कामाग्नि। ३ सितार की एक बोल।

रअय्यत—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

रइकौ(पु)†—क्रि० वि० [हिं० रंचो+कौ (प्रत्य०)] जरा भी। तनिक भी। कुछ भी।

रइनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनी] रात।

रई—संज्ञा स्त्री० [सं० रय] मथानी। खैलर। उ०—बासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठ में आपनी धारयो। —सूर०।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रवा] १ दरदरा आटा। २ सूजी। ३ चूर्ण मात्र।

वि० स्त्री० [सं० रंजन] १ डूबी हुई। पगी हुई। २ अनुरक्त। उ०—कहत परस्पर आपुस में सब कहाँ रहीं हम काहि रईं। —सूर०। ३ युक्त। सहित। संयुक्त। ४. मिली हुई।

रईस—संज्ञा पुं० [अ०] [भाव० रईसी] १ जिसके पास रियासत या इलाका हो। तअल्लुकेदार। २ बड़ा आदमी। अमीर। धनी।

रउताई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] मालिक होने का भाव। स्वामित्व।

रउरे†—सर्व० [हिं० राव, रावले] मध्यम पुरुष के लिये आदरसूचक शब्द। आप। जनाब।

रकछौं†—संज्ञा पुं० [हिं० रिकवँच] पत्तों की पकौड़ी। पतोड़।

रकत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रक्त] लहू। खून।

वि० लाल। सुर्ख।

रकतांक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रक्तांग] १. प्रवाल। मूँगा। (डिं०) २. केसर। ३ लालचंदन।

रकबा—संज्ञा पुं० [अ०] क्षेत्रफल।

रकबाहा—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों का एक भेद।

रकम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखने की क्रिया या भाव। २ छाप। मोहर। ३ धन। संपत्ति। दौलत। ४ गहना। जेवर। ५ चालाक। धूर्त। ६ प्रकार। तरह।

रकाब—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़ों की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं।

मुहा०—रकाब पर या में पैर रखना=चलने के लिये बिलकुल तैयार होना।

रकाबदार—संज्ञा पुं० [फा०] १ हलवाई। २ खानसामा। ३ साईस।

रकाबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की छिछली छोटी थाली। तश्तरी।

रकीब—संज्ञा पुं० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। सपत्न।

रक्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाल रंग का वह तरल पदार्थ जो शरीर की नसों आदि में बहा करता है। लहू। रुधिर। खून। २ कुंकुम। केसर। ३ ताँबा। ४. कमल। ५ सिंदूर। ६ शिंगरफ। ईंगुर। ७ लाल चंदन। ८ लाल रंग। ९ कुसुंभ।

वि० [सं०] १ रँगा हुआ। २ लाल। सुर्ख।

रक्तकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोयल। २ भाँटा। बैगन।

रक्तकमल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

रक्तचंदन—संज्ञा पुं० [सं०] लाल चंदन।

रक्तचाप—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का वेग या चाप साधारण से अधिक घट या बढ़ जाता है (अं० ब्लैड प्रेशर)।

रक्तज—वि० [सं०] रक्त के विकार के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।

रक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

रक्तपात—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग जख्मी हों। खून खराबी।

रक्तपायी—वि० [सं० रक्तपायिन्] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। खून पीनेवाला।

रक्तपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २ नाक से लहू बहना। नकसीर।

रक्तप्रदर—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का एक रोग।

रक्तबीज—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनार। बीदाना। २ एक राक्षस जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था। कहते हैं युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

रक्तवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना।

रक्तस्राव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना।

रक्तातिसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अतिसार जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्ताभ—वि० [सं०] लाल रंग की आभा से युक्त।

रक्तार्श—संज्ञा पुं० [सं० रक्तार्शस] वह बवासीर जिसमें मस्सों में से खून भी निकलता है। खूनी बवासीर।

रक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची। रत्ती।

रक्तिम—वि० [सं०] लाल रंग का।

रक्तिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

रक्तोत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

रक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षक। रखवाला। २ रक्षा। हिफाजत। ३ छप्पय के साठवें भेद का नाम।

संज्ञा पुं० [सं० रक्षस्] राक्षस।

रक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। २ पहरेदार।

रक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षा करना। हिफाजत करना। पालन पोषण।

रक्षणीय—वि० [सं०] [स्त्री० रक्षणीया] जिसकी रक्षा करना उचित हो। रखने लायक।

रक्षन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रक्षण"।

रक्षना(पु)—क्रि० स० [सं० रक्षण] रक्षा करना।

रक्षस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

रक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाव। रक्षण। हिफाजत। २ वह सूत्र आदि जो बालकों को भूत, प्रेत, नजर आदि से बचाने के लिये बाँधा जाता है।

रक्षाइद(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्ष+हिं० आइद (प्रत्य०)] राक्षसपन।

रक्षागृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे। सूतिकागृह। जच्चाखाना। २ हवाई-हमलों आदि से बचने के लिये बना हुआ स्थान।

रक्षाबंधन—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोनो।

रक्षामंगल—संज्ञा पुं० [सं०] वह धार्मिक क्रिया जो भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिये की जाय।

रक्षित—वि० [सं०] [स्त्री० रक्षिता] १. जिसकी रक्षा की गई हो। हिफाजत किया हुआ। २. पाला पोसा। ३ रखा हुआ।

रक्षित राज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य की रक्षा में हो और जिसे स्वराज्य के बहुत ही परिमित अधिकार प्राप्त हों।

रक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षित] रखी हुई स्त्री। रखेली।

रक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षस+ई (प्रत्य०)] राक्षसों के उपासक। राक्षस पूजनेवाले।

संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।

रक्ष्य—वि० [सं०] रक्षा करने के योग्य।

रक्ष्यमाण—वि० [सं०] १ जिसकी रक्षा हो सके। २ जिसकी रक्षा होती है।

रखना—क्रि० स० [सं० रक्षण] १ किसी वस्तु पर या किसी वस्तु में स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २ रक्षा करना। हिफाजत करना। बचाना।

यौ०—रख रखाव=रक्षा। हिफाजत।

३. वृथा या नष्ट न होने देना। ४ संग्रह करना। जोड़ना। ५ सुपुर्द करना। सौंपना। ६ रेहन करना। बंधक में देना। ७ अपने अधिकार में लेना। ८ मनोविनोद या व्यवहार आदि के लिये अपने अधिकार में करना। ९ नियत करना। १० व्यवहार करना। धारण करना। ११ जिम्मे लगाना। मढ़ना। १२ ऋणी होना। कर्जदार होना। १३ मन में अनुभव या धारण करना। १४ स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना। उपपत्नी (या उपपति) बनाना।

रखनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना+ई (प्रत्य०)] रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरैतिन।

रखया—वि० स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा करनेवाली।

रखला(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रहँकला"।

रखवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √रख+वाई (प्रत्य०)] १ खेतों की रखवाली। चौकीदारी। २ रखवाली की मजदूरी। ३ रखने या रखवाने की क्रिया या ढंग।

रखवाना—क्रि० स० [हिं० रखना का प्रे० रूप] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।

रखवार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "रखवाला"।

रखवाला—संज्ञा पुं० [हिं० √रख+वाला (प्रत्य०)] १. रक्षक। २ पहरेदार।

रखवाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखवाला] रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखा—संज्ञा स्त्री० [हिं० √रख + आ (प्रत्य०)] गौओं के लिये रक्षित भूमि। गोचर भूमि।

रखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √रख+आई (प्रत्य०)] १ हिफाजत। रखवाली। २. रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

रखाना—क्रि० स० [हिं० रखना का प्रे० रूप] रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।

रखिया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० √रख+इया (प्रत्य०)] १ रक्षक। २ रखनेवाला।

रखीसर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ऋषीश्वर] बहुत बड़ा ऋषि।

रखेली—संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

रखैया†—संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।

रखैल—संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

रग—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीर में की नस या नाड़ी।

मुहा०—रग दबना=दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग रग फड़कना=शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेग के लक्षण प्रकट होना। रग रग में=सारे शरीर में।

२ पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।

संज्ञा स्त्री० [?] हठ। जिद।

रगड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० रगड़ना] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २.

यती—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "यति"।
यतीम—संज्ञा पुं० [अ०] जिसके माता पिता न हों। अनाथ।
यतीमखाना—संज्ञा पुं० [अ० यतीम+फा० खाना] अनाथालय।
यत्किंचित्—क्रि० वि० [सं०] थोड़ा। कुछ।
यत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ न्याय में रूप आदि २४ गुणों के अंतर्गत एक गुण। २ उद्योग। कोशिश। ३ उपाय। तदबीर। ४ रक्षा का आयोजन। हिफाजत।
यत्नवान्—वि० [सं० यत्नवत्] यत्न करनेवाला।
यत्र—क्रि० वि० [सं०] जिस जगह। जहाँ।
यत्रतत्र—क्रि० वि० [सं०] १ जहाँ तहाँ। इधर उधर। २ जगह जगह।
यथा—अव्य० [सं०] जिस प्रकार। जैसे।
यथाक्रम—क्रि० वि० [सं०] तरतीबवार। क्रमश। क्रमानुसार।
यथातथ्य—अव्य० [सं०] [भाव० यथातथ्यता] ज्यों का त्यों। हूबहू। जैसा हो, वैसा ही।
यथानुक्रम—क्रि० वि० दे० "यथाक्रम"।
यथापूर्व—अव्य० [सं०] १ जैसा पहले था, वैसा ही। २ ज्यों का त्यों।
यथामति—अव्य० [सं०] बुद्धि के अनुसार। समझ के मुताबिक।
यथायथ—क्रि० वि० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा।
वि० पूर्ववर्तियों का अनुयायी।
यथायोग्य—अव्य० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त। मुनासिब।
यथारथ(पु)—अव्य० दे० "यथार्थ"।
यथार्थ—अव्य० [सं०] १ ठीक। वाजिब। उचित। २ जैसा होना चाहिए, वैसा।
यथार्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सचाई। सत्यता।
यथार्थतः—अव्य० [सं०] यथार्थ में। सचमुच।
यथार्थवादी—संज्ञा पुं० [सं०] यथार्थ या सत्य कहनेवाला। सत्यवादी।
यथालाभ—वि० [सं०] जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर।
यथावत्—अव्य० [सं०] १ ज्यों का त्यों। जैसा था, वैसा ही। २ जैसा चाहिए, वैसा। ३. अच्छी तरह।
यथाविधि—अव्य० [सं०] विधि के अनुसार ठीक।
यथाशक्ति—अव्य० [सं०] सामर्थ्य के अनुसार। जितना हो सके। भरसक।
यथाशक्य—अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथासंभव—अव्य० [सं०] जहाँ तक हो सके।
यथासाध्य—अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथेच्छ—अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। मनमाना।
यथेच्छाचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० यथेच्छाचारी] जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।
यथेच्छित—वि० दे० "यथेच्छ"।
यथेष्ट—वि० [सं०] जितना इष्ट हो, जितना चाहिए, उतना। काफी। पूरा।
यथोक्त—अव्य० [सं०] जैसा कहा गया हो।
यथोचित—वि० [सं०] मुनासिब। ठीक।
यदपि(पु)—अव्य० दे० "यद्यपि"।
यदा—अव्य० [सं०] १ जिस समय। जिस वक्त। जब। २ जहाँ।
यदाकदा—अव्य० [सं०] कभी कभी।
यदि—अव्य० [सं०] अगर। जो।
यदिच्चेत्—अव्य० [सं०] यद्यपि। अगरचे।
यदु—संज्ञा पुं० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा के बड़े पुत्र जिनके वंश में श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था।
यदुनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
यदुपति—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुराई—संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"।
यदुराज—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुवंश—संज्ञा पुं० [सं०] राजा यदु का कुल। यदु का खानदान।
यदुवंशमणि—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
यदुवंशी—संज्ञा पुं० [सं० यदुवंशिन्] यदुकुल में उत्पन्न। यदुकुल के लोग। यादव।
यद्यपि—अव्य० [सं०] अगरचे। हरचंद।
यदृच्छया—क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। २ दैवसंयोग से। ३ मनमाने तौर पर।
यदृच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वेच्छाचार। २ आकस्मिक संयोग।
यद्वातद्वा—क्रि० वि० [सं०] कभी कभी।
यम—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "यमज"। २ भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। ३ मन, इंद्रिय आदि को वश या रोक में रखना। निग्रह। ४ चित्त को धर्म में स्थित रखनेवाले कर्मों का साधन। ५ दो की संख्या।
यमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का शब्दालंकार या अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं; जैसे—कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और अंत में दो लघु हों, जैसे—न ललचहु। भ्रम तजहु। हरि भजहु। यम करहु। इसे यम छंद भी कहते हैं।
यमकातर—संज्ञा पुं० [सं० यम+हिं० कातर] १ यम का छुरा या खाँड़ा। २. एक प्रकार की तलवार।
यमघंट—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक दुष्ट योग जो कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। २ दीपावली का दूसरा दिन।
यमज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही गर्भ से एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। जौआँ। जुड़वाँ। २. अश्विनीकुमार।
यमदग्नि—संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि"।
यमद्वितीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई दूज।
यमधार—संज्ञा पुं० [सं०] वह तलवार जिसमें दोनों ओर धार हो।
यमन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "यवन"।
यमनाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० यमनाथ] धर्मराज।
यमनिका—संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।
यमपुर—संज्ञा पुं० दे० "यमलोक"।
यमपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमलोक।
यमयातना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नरक की पीड़ा। २ मृत्यु के समय की पीड़ा।
यमराज—संज्ञा पुं० [सं०] यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।
यमल—संज्ञा पुं० [सं०] १ युग्म। जोड़ा। २ यमज।
यमलार्जुन—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।
यमलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं। यमपुरी।
यमानुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
यमालय—संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर।

यमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही।

यमुना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। २ यम की बहन। ३ दुर्गा। ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, जगण और रगण हों। उ०—अधर अमी चख, कंज राजतीं। कहि कहि लागत, छंद मालती। इसे मालती छंद भी कहते हैं।

ययाति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।

यव—संज्ञा पुं० [सं०] १ जौ नामक अन्न। २ १२ सरसों या एक जौ की तौल। ३ एक नाप जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४ सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा जो उँगली में होती है (शुभ)।

यवद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] जावा द्वीप।

यवन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यवनी] १ यूनान देश का निवासी। यूनानी। २ मुसलमान। ३. कालयवन नामक राजा।

यवनानी—वि० [सं०] यवन देश संबंधी।

यवनाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] जुआर।

यवनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक का परदा।

यवमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके सम चरणों में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण और अंत्य गुरु तथा विषम में रगण, जगण, रगण और जगण हों। उ०—गाइए जु राम राम राम राम। तनै मनै धनै लगा जपौ सुनाम।

यश—संज्ञा पुं० [सं०] यशस्] १ नेकनामी। कीर्ति। सुख्याति। २ बड़ाई। प्रशंसा।

मुहा०—यश गाना=(१) प्रशंसा करना। (२) एहसान मानना। यश मानना= कृतज्ञ होना।

यशब, यशम—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है। यह चीन, लंका आदि में पाया जाता है। कलेजे, मेदे और दिमाग के रोगों में यह लाभप्रद माना जाता है। कहते हैं कि जिसके पास यह पत्थर रहता है उसपर बिजली का प्रभाव नहीं होता। इसे "संगे यशब" भी कहते हैं।

यशस्वी—वि० [सं० यशस्विन्] [स्त्री० यशस्विनी] जिसका खूब यश हो। कीर्तिमान।

यशी—वि० [सं० यश+हिं० ई (प्रत्य०)] यशस्वी।

यशील†(पु)—वि० दे० "यशस्वी"।

यशुमति—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यशोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और दो गुरु होते हैं। उ०—जगौ गुवाला। सुभोर काला। कहै यशोदा। लहै प्रमोदा॥

यशोधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।

यशोमति—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लाठी। छड़ी। लकड़ी। २. टहनी। शाखा। डाल। ३ जेठी मधु। मुलेठी।

यष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छड़ी। लकड़ी।

यह—सर्व० [सं० इदं] एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता को छोड़कर निकट के और सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये होता है।

यहाँ—क्रि० वि० [सं० इह] इस स्थान में। इस जगह पर।

यहि(पु)—सर्व० वि० [हिं० यह] १ 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिंदी में उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २ 'ए' का विभक्तियुक्त रूप। इसको।

यही—अव्य० [हिं० यह+ही (प्रत्य०)] निश्चित रूप से यह। यह हो। उ०—यही गोप यह ग्वाल इहै सुख, यह लीला कहुँ तजत न साथ। —सूर०।

यहूद—संज्ञा पुं० [इब्रानी] वह देश जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी—संज्ञा पुं० [हिं० यहूद] [स्त्री० यहूदिन] यहूद देश का निवासी।

याँ†—क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

याँचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] माँगने की क्रिया। प्रार्थनापूर्वक किसी वस्तु को माँगना।

यांत्रिक—वि० [सं०] यंत्र संबंधी।

यांत्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] यंत्रों आदि से युक्त या सज्जित करना।

या—अव्य० [फा०] अथवा। वा।

सर्व०, वि० 'यह' का वह रूप जो उसे ब्रजभाषा में कारकचिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

याका†—वि० दे० "एक"।

याक—संज्ञा पुं० दक्षिण अमरीका का पहाड़ों पर का बैल के समान पशु।

याकूत—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। लाल।

याग—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

याचक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो माँगता हो। माँगनेवाला। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

याचना—क्रि० स० [सं० याचन] [वि० याच्य, याचक, याचित] पाने के लिये विनती करना। माँगना।

संज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया।

याचित—वि० [सं०] माँगा हुआ।

याजक—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला।

याजन—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ की क्रिया।

याजी—वि० दे० "याजक"।

याज्ञवल्क्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशंपायन के शिष्य थे। कहा जाता है कि गुरु के रुष्ट होने पर इन्होंने उनसे पढ़ा सारा ज्ञान वमन कर दिया था जिसे वैशंपायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बनकर चुग लिया था। इसीसे उनकी शाखाओं को तैत्तिरीय कहा गया। २. शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता के आचार्य। वाजसनेय। एक ऋषि। ३ योगीश्वर याज्ञवल्क्य जो राजा जनक के दरबार में थे। ४ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशधर एक स्मृतिकार।

याज्ञिक—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करने या करानेवाला।

यातना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तकलीफ। पीड़ा। २. वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।

याता—संज्ञा स्त्री० [सं० यातृ] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।

यातायात—संज्ञा पुं० [सं०] गमनागमन। आना जाना। आमदरफ्त।

यातुधान—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

यात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २ प्रयाण। प्रस्थान। ३ दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना। तीर्थाटन।

यात्रावाल—संज्ञा पुं० [सं० यात्रा+हिं० वाल (प्रत्य०)] वह पंडा जो यात्रियों को देवदर्शन कराता हो।

यात्री—संज्ञा पुं० [सं० यात्रिन्] १ यात्रा करनेवाला। मुसाफिर। २. तीर्थाटन के लिये जानेवाला।

याथातथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] यथातथ्य होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।
याद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मरणशक्ति। स्मृति। २ स्मरण करने की क्रिया।
यादगार, यादगारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्मृतिचिह्न।
याददाश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्मरण-शक्ति। स्मृति। २ स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।
यादव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २ श्रीकृष्ण।
यादृश—वि० [सं०] जिस तरह का। जैसा।
यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाड़ी, रथ आदि सवारी। वाहन। २ विमान। आकाशयान ३. शत्रु पर चढ़ाई करना।
यानी, याने—अव्य० [अ०] अर्थात्।
यापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० यापित, याप्य] १ चलाना। वर्तन। २ व्यतीत करना। बिताना। ३ निबटाना।
यापना—संज्ञा स्त्री० दे० "यापन"।
याबू—संज्ञा पुं० [फा०] छोटा घोड़ा। टट्टू।
याम—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन घंटे का समय। पहर। २ एक प्रकार के देवगण। ३ काल। समय।
संज्ञा स्त्री० [सं० यामि] रात। उ०—धनि वृषभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिन को काम। इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरद की याम।—सूर०।
यामल—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमज संतान। जोड़ा। २ एक प्रकार का तंत्र ग्रंथ।
यामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।
याम्य—वि० [सं०] १ यम संबंधी। यम का। २ दक्षिण का।
याम्योत्तर दिगंश—संज्ञा पुं० [सं०] लंबांश। दिगंश (भूगोल, खगोल)।
याम्योत्तर रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।
यायावर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो एक जगह टिककर न रहता हो। २ संन्यासी। ३ ब्राह्मण। ४ अश्वमेध का घोड़ा।
यार—संज्ञा पुं० [फा०] १ मित्र। दोस्त। २ उपपति। जार।
यारबाश—वि० [फा०] [भाव० यारबाशी] यार दोस्तों में प्रसन्नता से समय बिताने वाला।
याराना—संज्ञा पुं० [फा०] मित्रता। मैत्री।
वि० मित्र का सा। मित्रता का।
यारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मित्रता। २ स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।
यावज्जीवन—क्रि० वि० [सं०] जब तक जीवन रहे। जीवन भर।
यावत्—अव्य० [सं०] १ जब तक। जिस समय तक। २ सब। कुल।
यावनी—वि० [सं०] यवन संबंधी।
यासु(पु)—सर्व० दे० "जासु"।
यास्क—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
याहि(पु)†—सर्व० [हिं० या+हि] इसको। इसे। उ०—जो यह मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढ़ायो। देहु गिराय याहि पर्वत तें छण गतजीव करायो।—सूर०।
युजन—क्रि० अ० [सं०] कर्मों से जुड़ना।
युजान—संज्ञा पुं० [सं०] वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो पर मुक्त न हुआ हो।
युक्त—वि० [सं०] १ जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २ मिलित। सम्मिलित। ३ नियुक्त। मुकर्रर। ४ संयुक्त। साथ। ५ उचित। ठीक। वाजिब।
युक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक मगण का एक वृत्त। उ०—न नमहुं भुज मैं, तोकों। किमि कर लिखना, मोकों।
युक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपाय। ढंग। तरकीब। २. कौशल। चातुरी। ३ चाल। रीति। प्रथा। ४. न्याय। नीति। ५ तर्क। ऊहा। ६ उचित विचार। ठीक तर्क। ७ योग। मिलन। ८ एक अलंकार जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिये दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वंचित करने का वर्णन होता है। ९ केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।
युक्तियुक्त—वि० [सं०] उपयुक्त तर्क के अनुकूल। युक्तिसंगत। ठीक। वाजिब।
युगंधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कूबर। हरस। २ गाड़ी का बम। ३ एक पर्वत।
युग—संज्ञा पुं० [सं०] १ जोड़ा। युग्म। २ जुआ। जुआठा। ३ पाँसे के खेल की गोल गोटियाँ। ४ पाँसे के खेल की वे दो गोटियाँ जो एक घर में साथ आ बैठती हैं। ५ बारह वर्ष का काल। ६. समय। काल। ७ पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने गए हैं—सतयुग, त्रेता द्वापर और कलियुग।
मुहा०—युग युग = बहुत दिनों तक। युगधर्म = समय के अनुसार चाल या व्यवहार।
युगति(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"।
युगपत्—अव्य० [सं०] साथ साथ।
युगपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] अपने समय का बहुत बड़ा आदमी।
युगम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "युग्म"।
युगल—संज्ञा पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।
युगांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ युग का अंत। २ प्रलय। ३ किसी चलती हुई परंपरा का विच्छिन्न हो जाना।
युगांतर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूसरा युग। २ दूसरा समय। और जमाना।
मुहा०—युगांतर उपस्थित करना = किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना।
युगाद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसमें किसी युग का आरंभ हुआ हो।
युग्म, युग्मक—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० युग्मता] १ जोड़ा। युग। २ द्वंद्व। ३ मिथुन राशि।
युग्मज—संज्ञा पुं० दे० "यमज"।
युत—वि० [सं०] १ युक्त। सहित। २ मिला हुआ। मिलित।
युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग। मिलाप।
युद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई। संग्राम। रण।
मुहा०—युद्ध माँडना = लड़ाई ठानना। उ०—निरखि यदुवंश को रहस मन में भयो देखि अनिरुद्ध युद्ध माँड्यो। सूर प्रभु ठटी ज्यों भयी चाहै सो त्यों फाँसि करि कुँअर अनिरुद्ध बाँध्यो।—सूर०।
युद्धपोत—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का जहाज।
युद्धमंत्री—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध विभाग हो।
युद्ध्यमान्—वि० [सं०] युद्ध करनेवाला।
युधाजित—संज्ञा पुं० [सं०] भरत के मामा और कैकेयी के भाई का नाम।
युधिष्ठिर—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच पांडवों में सबमें बड़े जो बहुत धर्मपरायण थे।
युयुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध करने की इच्छा। २ शत्रुता। विरोध।

युयुत्सु—वि० [सं०] लड़ने की इच्छा रखनेवाला। जो लड़ना चाहता हो।
युयुधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ क्षत्रिय। ३. योद्धा।
युरोप—संज्ञा पुं० [अं०] पूर्वी गोलार्द्ध का एक महाद्वीप जो एशिया के पश्चिम में है।
युरोपियन—वि० [अं०] १ युरोप का। २ युरोप का रहनेवाला।
युरोपीय—वि० [अं० युरोप] १ युरोप का। २ युरोप का रहनेवाला।
युवक—संज्ञा पुं० [सं०] सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। जवान। युवा।
युवति, युवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।
युवनाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था।
युवराईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद।
युवराज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० युवराजी] राजा का सबसे बड़ा लड़का जिसे आगे चलकर राज्य मिलनेवाला हो।
युवराजी—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज+हिं० ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। यौवराज्य।
युवरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराजी] युवराज की पत्नी।
युवा—वि० [सं० युवन्] [स्त्री० युवती] जवान। युवक।
यूँ†—अव्य० इस प्रकार।
यूत—संज्ञा पुं० [सं० यूति] मिलावट। मेल।
यूथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। गरोह। २ दल। ३ सेना। फौज।
यूथप, यूथपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
यूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूही का फूल और उसका पौधा। सित अरु पीत यूथिका वेनी गूँथी विविध बनाय। रच्यो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सुहाय। —सूर०।
यूनान—संज्ञा पुं० [ग्रीक आयोनिया] यूरोप का एक देश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था।
यूनानी—वि० [यूनान+ई (प्रत्य०)] यूनान देश संबंधी। यूनान का।
संज्ञा स्त्री० १ यूनान की भाषा। २ यूनान देश का निवासी। ३ यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली। हकीमी।
यूप—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
यूपा†—संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] जूआ। द्यूत-कर्म।
यूहⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० यूथ] समूह। झुंड।
ये—सर्व० [हिं० यह का बहु०] यह सब।
येईⓅ†—सर्व० [हिं० यह+ई (प्रत्य०)] यह।
येऊ†—सर्व० [हिं० ये+ऊ (प्रत्य०)] यह भी।
येतोⓅ†—वि० दे० "एतो"।
येन केन प्रकारेण—क्रि० वि० [सं०] जैसे तैसे। किसी तरह से।
येहूⓅ†—अव्य० [हिं० यह+हू] यह भी।
यों—अव्य० [सं० एवमेव] इस तरह पर। इस भाँति। ऐसे।
मुहा०—यों वों करना=आनाकानी करना। उ०—बारे आज दोपहर को जाकर सीधा हुआ। पहले बहुत यों वों करता रहा, लेकिन मैंने पिंड न छोड़ा। —कायाकल्प।
योंही—अव्य० [हिं० यों ही] १ इसी प्रकार से। ऐसे ही। २ बिना काम। व्यर्थ ही। ३ बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।
योग—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। संयोग। मेल। २ ध्यान। ३ प्रेम। ४ संगति। ५ उपाय। तरकीब। ६ छल। धोखा। दगाबाजी। ७ प्रयोग। ८ औषध। दवा। ९ धन। दौलत। १० लाभ। फायदा। ११ कोई शुभ काल। १२ नियम। कायदा। १३ साम, दाम, दंड और भेद ये चारों उपाय। १४ संबंध। १५ धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १६ तप और ध्यान। वैराग्य। १७ गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़। १८ २० मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में यगण हो। उ०—जप तप तब और कहा शेष रहो रे। क्योंकि एकल साधन, हरिनाम कहो रे। १९ सुभीता। जुगाड़। तार घात। २० फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर। २१ मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २२ दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। २३ छः दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का विधान है।
योगक्षेम—संज्ञा पुं० [सं०] १ नया पदार्थ प्राप्त करना और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। २. जीवननिर्वाह। गुजारा। ३ कुशल मंगल। खैरियत। ४. राष्ट्र की सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इंतजाम।
योगतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।
योगत्व—संज्ञा पुं० [सं०] योग का भाव।
योगदर्शन—पतंजलि प्रणीत योगसूत्र।
योगदान—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में साथ देना।
योगनिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है।
योगफल—संज्ञा पुं० [सं०] दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल—संज्ञा पुं० [सं०] वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो। तपोबल।
योगमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भगवती। २. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था।
योगरूढ़—वि० [सं०] (यौगिक शब्द) जो अपना मूल और व्याकरणसिद्ध सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ दे; जैसे—शूलपाणि। त्रिलोचन। पंचशर।
योगरूढ़ि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे; जैसे—पंचानन, चंद्रमाल।
योगवाशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो वशिष्ठ मुनि का बनाया कहा जाता है। इसमें वशिष्ठ जी ने रामचंद्र को वेदांत समझाया है।
योगशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] पतंजलि ऋषि-कृत योगसाधन पर एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए हैं। इसकी गणना छः दर्शनों में है।
योगसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग संबंधी सूत्रों का संग्रह।
योगांजन—संज्ञा पुं० दे० "सिद्धांजन"।
योगात्मा—संज्ञा पुं० [सं० योगात्मन्] योगी।

वह चिह्न जो रगड़ने से उत्पन्न हो। ३ हुज्जत। झगड़ा। ४ भारी श्रम।

रगड़ना—क्रि० स० [सं० घर्षण या अनु०] १ घर्षण करना। घिसना, जैसे—चंदन रगड़ना। २. पीसना। ३ किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। ४ तंग करना।

क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना—क्रि० स० [हिं० रगड़ना का प्रे० रूप] रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

रगड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० रगड़] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २ अत्यंत परिश्रम। ३ वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।

रगण—संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है (SIS)।

रगत—संज्ञा पुं० [सं० रक्त] रक्त। रुधिर।

रगदना(पु)—क्रि० स० दे० "रगेदना"।

रगपट्ठा—संज्ञा पुं० [फा० रग+हिं० पट्ठा] शरीर के भीतरी भिन्न भिन्न अंग।

रगबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। ख्वाहिश।

रगमगा(पु)—संज्ञा पुं० [?] लीन।

रगर(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।

रगरेशा—संज्ञा पुं० [फा० रग+रेशा] १ पत्तियों की नसें। २ शरीर के अंदर का प्रत्येक भाग।

रगवाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० रगाना का प्रे० रूप] चुप कराना। शांत कराना।

रगाना†—क्रि० अ० [देश०] चुप होना।

क्रि० स० चुप कराना। शांत करना।

रगीला—वि० [हिं० रग+ईला (प्रत्य०)] १ हठी। जिद्दी। २ दुष्ट। पाजी।

वि० [फा० रग] जिसमें रगें हों।

रगेद—संज्ञा स्त्री० [हिं० रगेदना] रगेदने की क्रिया या भाव।

रगेदना—क्रि० स० [सं० खेट, हिं० खेदना] भगाना। खदेड़ना। दौड़ाना।

रघु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्रीरामचंद्र के परदादा थे।

रघुकुल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा रघु का वंश।

रघुनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुनायक—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुपति—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुराई(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रघुराज] श्रीरामचंद्र।

रघुराज—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाराज रघु का वंश या खानदान। २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।

रघुवंशी—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो। २ क्षत्रियों के अंतर्गत एक जाति।

रघुवर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रघुवीर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

रचक—संज्ञा पुं० [सं०] रचना करनेवाला। रचयिता।

वि० दे० "रचक"।

रचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। बनावट। निर्माण। उ०—रदरचना, बरुनी, अलक, चितवनि, भौंह कमान। आघु बँकाईही चढ़ै, तरुनि, तुरगम, तान। —बिहारी०। २ बनाने का ढंग या कौशल। ३. बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ४ गद्य या पद्य की कोई कृति।

क्रि० स० [सं० रचन] १ हाथों से बनाकर तैयार करना। बनाना। सिरजना। २ विधान करना। निश्चित करना। ३ ग्रंथ आदि लिखना। ४ उत्पन्न करना। पैदा करना। ५ अनुष्ठान करना। ठानना। ६ काल्पनिक सृष्टि करना। कल्पना करना। ७ शृंगार करना। सँवारना। सजाना। ८ तरतीब या क्रम से रखना। उ०—भूषण बसन आदि सब रचि रचि माता लाड़ लड़ावे। —सूर०।

मुहा०(पु)—रचि रचि=बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ (कोई काम करना)।

क्रि० स० [सं० रंजन] रँगना। रंजित करना।

क्रि० अ० [सं० रंजन] १ अनुरक्त होना। २ रंग चढ़ना। रँगा जाना।

रचयिता—संज्ञा पुं० [सं० रचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।

रचयित्री—रचयिता का स्त्री०।

रचवाना—क्रि० स० [हिं० रचना का प्रे० रूप] १ रचना कराना। बनवाना। २ मेहँदी या महावर लगवाना।

रचाना†(पु)—क्रि० स० [सं० रचन] १ अनुष्ठान करना या कराना। बनाना। २. दे० "रचवाना"।

क्रि० अ० [सं० रंजन] मेहँदी, महावर आदि से हाथ पैर रँगाना।

रचित—वि० [सं०] बनाया हुआ। रचा हुआ।

रचौहाँ(पु)—वि० [हिं० √रच + औहाँ (प्रत्य०)] १ रचा या रँगा हुआ। २ अनुरक्त।

रच्छस(पु)—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

रच्छा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रक्षा"। उ०—तुमहिं प्रसन्न भए हम सबै। रच्छा करहु हमारी अबै। —नंददास०।

रज—संज्ञा पुं० [सं० रजस्] १ वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों के योनिमार्ग से प्रतिमास तीन चार दिन तक निकलता है। आर्तव। कुसुम। ऋतु। २. दे० "रजोगुण"। ३ पाप। ४ जल। पानी। ५ फूलों का पराग। ६ आठ परमाणुओं का एक मान।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूल। गर्द। २ रात। ३ ज्योति। प्रकाश।

संज्ञा पुं० [सं० रजत] चाँदी।

संज्ञा पुं० [सं० रजक] रजक। धोबी। उ०—मारग में एक रज संहारयो सबहि बसन हरि लीन्हे। —सूर०।

रजई—संज्ञा पुं० [हिं० राजा+ई (प्रत्य०)] राजत्व। राजापन। उ०—राजा है रजई दिखरावत। ग्वाल बाल दुदुभी बजावत। —नंददास०।

रजक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रजकी] धोबी।

रजगुण—संज्ञा पुं० दे० "रजोगुण"।

रजतस—संज्ञा स्त्री० [सं० राजतस्व] वीरता।

रजत—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाँदी। रूपा। २ सोना। ३. रक्त। लहू।

वि० १. सफेद। शुक्ल। २ लाल। सुर्ख।

रजत जयंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी संस्था आदि के २५ वर्ष का जीवनकाल समाप्त होने पर मनाई जानेवाली जयंती।

रजत पट—संज्ञा पुं० [सं० रजत+पट] चलचित्रों के दृश्य दिखाने के लिये प्रयुक्त सफेद पर्दा।

रजताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रजत+हिं० आई (प्रत्य०)] सफेदी।

रजधानी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "राजधानी"।

रजन—संज्ञा स्त्री० दे० "राल"।

रजन, रजना(पु)—क्रि० अ० [सं० रजन] रँगा जाना। उ०—मानत नहीं लोक मर्यादा हरि के संग मजी। सूर श्याम को मिलि चूनो हरदी ज्यों रंग रजी।—सूर०।

क्रि० स० रंग में डुबाना। रँगना।

रजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात। २ हल्दी।

रजनीकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

रजनीगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को खूब महकता है। गुलशब्बो।

रजनीचर—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

रजनीपति—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

रजनीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या।

रजनीश—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा। उ०—कुटिल हरि नख हिए हरि के हरष निरखति नारि। ईश जनु रजनीश राख्यो भालहू तें उतारि। —सूर०।

रजपूत(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १ दे० "राजपूत"। २ वीर पुरुष। योद्धा।

रजपूती†—संज्ञा स्त्री० [हिं० राजपूत+ई (प्रत्य०)] १ क्षत्रियता। क्षत्रियत्व। २ वीरता।

वि० राजपूत संबंधी।

रजबहा—संज्ञा पुं० [सं० राज=बड़ा+हिं० बहना] वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।

रजभर—संज्ञा पुं० एक हिंदू जाति।

रजवती—वि० दे० "रजस्वला"।

रजवाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० राज्य+वाड़ा] १ राज्य। देशी रियासत। २ राजा।

रजवार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० राजद्वार] दरबार।

रजस्वला—वि० स्त्री० [सं०] १ जिसका रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमती। २ धूलभरी।

रजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरजी। इच्छा। २ रुखसत। छुट्टी। ३ अनुमति। आज्ञा। ४. स्वीकृति।

रजाइ, रजाइय(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० रजा] १ आज्ञा। हुक्म। २. दे० "रजा"।

रजाई—संज्ञा स्त्री० [सं० रजक=कपड़ा ?] एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना। लिहाफ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० राजा+आई (प्रत्य०)] राजा होने का भाव। राजापन।

संज्ञा स्त्री० दे० "रजाइ"।

रजाना—क्रि० स० [हिं० राज या राजा से ना० धा०] राज्यसुख का भोग कराना।

रजामंद—वि० [फा०] [संज्ञा रजामंदी] जो किसी बात पर राजी हो गया हो। सहमत।

रजाय, रजायसु(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० राज+आयसु] आज्ञा। हुक्म। उ०—अब तो सूर शरण तकि आया। सोइ रजायसु दीजै। जेहिते रहै शत्रु प्रण मेरो वहै मतो कछु कीजै।—सूर०।

रजील—वि० [अ०] छोटी जाति का। नीच।

रजोकुल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] राजवंश।

रजोगुण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति के तीन गुणों में से एक। प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोगविलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।

रजोदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म। रजस्वला होना।

रजोधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म।

रज्ज§—संज्ञा पुं० दे० "राज्य"।

रज्जु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रस्सी। जेवरी। २ लगाम की डोरी। बागडोर।

रटंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ रट + अंत (प्रत्य०)] रटने की क्रिया या भाव।

रट, रटन—संज्ञा स्त्री० [हिं० रटना] किसी शब्द को बारबार उच्चारण करने की क्रिया।

रटना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी शब्द को बार बार कहना। २ जबानी याद करने के लिये बार बार उच्चारण करना। ३ बार बार शब्द करना। बजना।

संज्ञा स्त्री० दे० "रट"।

रटा†—वि० [?] रूखा। शुष्क।

रढ़ना(पु)—क्रि० स० दे० "रटना"।

रण—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई। युद्ध। जंग।

रणक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान।

रणछोड़—संज्ञा पुं० [सं० रण+हिं० छोड़ना] श्रीकृष्ण का एक नाम।

रणखेत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रणक्षेत्र"।

रणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रणित] १ शब्द या गुंजार करना। २ बजना।

रणभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रणक्षेत्र।

रणरंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. लड़ाई का उत्साह। २ युद्ध। लड़ाई। ३ युद्धक्षेत्र।

रणरोभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अरण्य रोदन] वन में रोना। व्यर्थ का रोदन। निरर्थक पुकार।

रणलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० दे० "विजयलक्ष्मी"।

रणसिंघा—संज्ञा पुं० [सं० रण+हिं० सिंघा] तुरही। नरसिंघा।

रणस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] विजय के स्मारक में बनवाया हुआ स्तंभ।

रणस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] रणभूमि।

रणहंस—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, भगण और रगण होते हैं। इसको मनहंस, मानहंस और मानसहंस भी कहते हैं।

रणांगण—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध क्षेत्र।

रणित—वि० [सं०] १ शब्द या गुंजार करता हुआ। २ बजता हुआ।

रत—संज्ञा पुं० [सं०] १ मैथुन। २ प्रीति।

वि० [स्त्री० रता] १ अनुरक्त। आसक्त। २ (कार्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० रक्त] रक्त। खून।

रतजगा—संज्ञा पुं० [हिं० रात+जागना] उत्सव या विहार आदि के लिये सारी रात जागना।

रतताली—संज्ञा स्त्री० [?] कुटनी।

रतन—संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

रतनजोत—संज्ञा स्त्री० [सं० रत्न+ज्योति] १ एक प्रकार की मणि। २. एक प्रकार का बहुत छोटा क्षुप। इसकी जड़ से लाल रंग निकाला जाता है।

रतनागर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रत्नाकर] समुद्र।

रतनार, रतनारा—वि० [सं० रक्त] कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए। उ०—दुलरी कंठ नयन रतनारे मो मन चितै हरौरी।—सूर०।

रतनारी—संज्ञा पुं० [हिं० रतनार+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान।
संज्ञा स्त्री० लाली। लालिमा। सुर्खी।

रतनालिया(पु)†—वि० दे० "रतनारा"।

रतमुहाँ—वि० [हिं० रत=लाल+मुहँ] १ लाल मुहँवाला। २. सुर्ख-रू।

रतमुहीं—वि० स्त्री० [हिं० रतमुहाँ] १ लाल मुहँवाला। २ सुर्ख-रू। उ०- जो ओहि सँवरे 'एकै तुही'। सोई पंखि जगत रतमुहीं। —पदमावत।

रतल—संज्ञा स्त्री० दे० "रत्तल"।

रताना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रत से हिं० ना० धा०] रत होना।
क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना।

रतालू—संज्ञा पुं० [सं० रक्तालु] १ पिंडालू नामक कंद। २. वाराहीकंद। गेंठी।

रति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामदेव की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती है। २ कामक्रीड़ा। संभोग। मैथुन। ३. प्रीति। प्रेम। अनुराग। मुहब्बत। उ०—स्यों धुनि अर्थनि वाक्यनि लै गुन शब्द अलंकृत सों रति पाकी। —काव्यनिर्णय। ४ शोभा। छवि। ५ साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव। ६. नायक और नायिका की परस्पर प्रीति या प्रेम।
क्रि० वि० दे० "रती"। उ०—कत सकुचत, निधड़क फिरौ, रतियौ खोरि तुम्हें न। कहा करौं, जो जाइ ए लगैं लगौंहैं नैन। —बिहारी०।
(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० रात्रि] रात। रात्रि। रैन। उ०—सही रँगीलैं रति जगैं जगी पगी सुख चैन। अलसौंहैं सौंहैं किएँ कहैं हँसौंहैं नैन। —बिहारी०।

रतिक(पु)†—क्रि० वि० [हिं० रत्ती] बहुत थोड़ा। जरा सा।

रतिज—वि० [सं० रति+ज (प्रत्य०)] रति या मैथुन के कारण उत्पन्न।

रतिदान—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।

रतिनायक—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

रतिनाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रतिनाथ] कामदेव।

रतिपति—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

रतिपद—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और एक सगण होता है। उ०—न निसि घर तजि घरी। कबहुँ जग कुल नरी। धरति पद पर धरा। सुमतियुत सतिवरा।

रतिप्रीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका रति में प्रेम हो। कामिनी।

रतिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं।

रतिभवन—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हों।

रतिभौन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रतिभवन"।

रतिमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] रतिभवन।

रतियाना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रति से हिं० ना० धा०] प्रेम करना।

रतिरमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। २. मैथुन।

रतिराई(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रतिराज"।

रतिराज—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

रतिवंत—वि० [सं० रति] सुंदर। खूबसूरत।

रतिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] कामशास्त्र।

रती(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० रति] १ कामदेव की पत्नी रति। २ सौंदर्य। शोभा। ३. मैथुन। ४ कांति। ५ दे० "रति"।
†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रत्ती"।
क्रि० वि० जरा सा। रत्ती भर। किंचित्।

रतीक(पु)—क्रि० वि० दे० "रतिक"।

रतोपल(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० रक्तोत्पल] लाल कमल।

रतौंधी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रात+अंधा] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।

रत्त(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रक्त"।

रत्तल—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पौंड या आध सेर के लगभग एक तौल।

रत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्तिका] आठ चावल का मान या बाट। २ घुँघुची का दाना। गुंजा।
मुहा०—रत्ती भर=बहुत थोड़ा सा। जरा सा।
वि० बहुत थोड़ा। किंचित्।
(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० रति] शोभा। छवि।

रत्थी—संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिये ले जाते हैं। टिकठी। अरथी।

रत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे छोटे, चमकीले, बहुमूल्य खनिज पदार्थ, जिनका व्यवहार आभूषणों आदि में जड़ने के लिये होता है। मणि। जवाहिर। नगीना। २ मानिक। लाल। ३ सर्वश्रेष्ठ।

रत्नगर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। भूमि।

रत्ननिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

रत्नपारखी—संज्ञा पुं० [सं० रत्न+हिं० पारखी] जौहरी।

रत्नमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रत्नों या जवाहिरात की माला।

रत्नसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

रत्नाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ खान। ३ रत्नों का समूह।

रत्नावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मणियों की श्रेणी या माला। २ एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तुसमूह के नाम भी निकलते हैं।

रथंग—संज्ञा पुं० [सं० रथांग] चकवा पक्षी उ०—लसै बालउरोज यों, हरित कंचुकी संग। दलतल दबे पुरैनि के, मनो रथंग विहंग।—काव्यनिर्णय।

रथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे। गाड़ी। बहल। २ शरीर। ३ चरण। पैर। ४. शतरंज में, ऊँट।

रथयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है।

रथवान—संज्ञा पुं० [सं० रथ+हिं० वान] रथ चलानेवाला। सारथी।

रथवाह—संज्ञा पुं० [सं० रथवाह] १ रथ चलानेवाला। सारथी। २. घोड़ा।

रथांग—संज्ञा पुं० [सं०] १. रथ का पहिया। २ चक्र नामक अस्त्र। ३ चकवा।

रथांगपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

रथिक—संज्ञा पुं० [सं०] रथी।

रथी—संज्ञा पुं० [सं० रथिन्] १ रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २ एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा।
वि० रथ पर चढ़ा हुआ।

संज्ञा स्त्री० दे० "रथी"।

रथोद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसका पहला, तीसरा, सातवाँ, नवाँ और ग्यारहवाँ वर्ण गुरु और बाकी वर्ण लघु होते हैं अर्थात् इसके प्रत्येक चरण में र, न, ल, ग होता है। उ०—रानि। री लगत राम को पता। हाय ना कहहिं नारि आरता। धन्य जो लहत भाग-उद्धता। धूरि हू अति शुची रथोद्धता।

रथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रास्ता। सड़क। २ नाली। नाबदान।

रद—संज्ञा पुं० [सं०] दंत। दाँत। उ०—नासा लखे सुकतुंड नाभी पै सुरस कुंड, रद है दुरद मुंड देखत दुजान को। —शृंगार०।

वि० दे० "रद्द"। उ०—सोहति धोती सेत मैं कनक-बरन तन बाल। सारद बारद-बीजुरी-भा रद कीजति लाल। —बिहारी०।

रदच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] ओंठ। ओष्ठ।

रदछद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रदच्छद] ओंठ। उ०—उर नखछद रदछदनि में रदछद, पेखि पेखि प्यारे की भृकुटि भ्रभकारती। —रससारांश।

संज्ञा पुं० [सं० रदक्षत] रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न। उ०—पट को ढिग कत ढाँपियति, सोभित सुभग सुवेष। हद रदछद छवि देति यह सद रद-छद की रेख। —बिहारी०।

रददान—संज्ञा पुं० [सं० रद+दान] (रति के समय) दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।

रदन—संज्ञा पुं० [सं०] दशन। दाँत।

रदनी—वि० [सं० रदनिन्] दाँतवाला। उ०—चिबुक मध्य मेचक रुचि राजत विंदु कुंद रदनी। —सूर०

रदपट—संज्ञा पुं० [सं०] ओष्ठ ओंठ।

रद्द—वि० [अ०] १ जो काट, छाँट, तोड़ या बादल दिया गया हो।

यौ०—रद्द बदल=परिवर्तन। फेरफार।

२ जो खराब या निकम्मा हो गया हो।

संज्ञा स्त्री० कै। वमन।

रद्दा—संज्ञा पुं० [देश०] १. दीवार में एक बार चुनकर उठाई जानेवाली ईंटों की पंक्ति। २ मिट्टी की दीवार उठाने में उतना अंश, जितना चारों ओर एक बार में उठाया जाता है। ३ थाली में चुनकर लगाई हुई मिठाइयों की तह। ४ नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।

मुहा०—रद्दा कसना, जमाना, देना या लगाना=(१) रोब जमाना। (२) चपेटना।

रद्दी—वि० [फा० रद] निकम्मा। निष्प्रयोजन। बेकार।

रन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रण] युद्ध। लड़ाई।

संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगल। बन।

संज्ञा पुं० [?] १. झील। ताल। २. समुद्र का छोटा खंड।

संज्ञा पुं० [अं०] 'क्रिकेट' खेल संबंधी दौड़। दौड़।

रनकना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रणन=शब्द करना] घुँघरू आदि का मंद शब्द होना।

रनना(पु)—क्रि० अ० [सं० रणन] बजना। शब्द करना। झनकार होना।

रनबंका, रनबाँकुरा—संज्ञा पुं० [सं० रण+हिं० बाँका] शूरवीर। योद्धा।

रणवादी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रण+वादी] योद्धा।

रनवास—संज्ञा पुं० [हिं० रानी+सं० वास] १ रानियों के रहने का महल। अंतःपुर। २ जनानखाना।

रनसाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रन+फा० साजी] लड़ाई छेड़ना।

रनित(पु)—वि० [हिं० रनना] बजता हुआ। झनकार करता हुआ।

रनिवास—संज्ञा पुं० दे० "रनवास"।

रनी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०+ई (प्रत्य०)] योद्धा।

रपट†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रपटना] १ रपटने की क्रिया या भाव। फिसलाहट। २ दौड़। ३ जमीन की ढाल।

संज्ञा स्त्री० [अं० रिपोर्ट] सूचना। इत्तला।

रपटना†—क्रि० अ० [सं० रफन] १. नीचे या आगे की ओर फिसलना। जम न सकने के कारण किसी ओर सरकना। उ०—कुंडल झलमलात झलकत विविगात चकाचौंध सी लागति मेरे इन नैननि आली रपटत पग नहिं ठहरात। —सूर०। २ बहुत जल्दी जल्दी चलना। झपटना।

क्रि० स० किसी काम को शीघ्रता से करना। कोई काम चटपट पूरा करना।

रपटाना—क्रि० स० [हिं० रपटना का प्रे० रूप] रपटने का काम दूसरे से कराना।

रपट्टा†—संज्ञा पुं० [हिं० रपटना] १ फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २ दौड़ धूप।

मुहा०—रपट्टा लगाना या मारना=दौड़ना। झपटना। लपकना।

३ झपट्टा। चपेट।

रफल—संज्ञा स्त्री० [अं० राइफल] विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक।

संज्ञा पुं० [अं० रैपर] ऊनी चादर।

रफा—वि० [अ०] १. दूर किया हुआ। २ निवृत्त। शांत। निवारित। दबाया हुआ।

रफा दफा—वि० दे० "रफा"।

रफीक—संज्ञा पुं० [अ०] १ साथी। २ मित्र।

रफू—संज्ञा पुं० [अ०] फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।

रफूगर—संज्ञा पुं० [फा०] रफू करने का व्यवसाय करनेवाला। रफू बनानेवाला।

रफूचक्कर—वि० [अ० रफू+हिं० चक्कर] चंपत। गायब।

रफ्तनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जाने की क्रिया या भाव। २. माल का बाहर जाना।

रफ्ता रफ्ता—क्रि० वि० [फा०] धीरे धीरे। क्रम क्रम से।

रफ्तार—संज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति।

रब—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर। परमेश्वर।

रबड़—संज्ञा पुं० [अं० रबर] १ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से से बनता है। २ एक वृक्ष जो वट वर्ग के अंतर्गत है। इसी के दूध से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।

रबड़ना—क्रि० स० [हिं० रपटना] १ घुमाना। चलाना। २ फेंटना।

रबड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√रबड़+ई (प्रत्य०)] औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध। बसौंधी।

रबदा—संज्ञा पुं० [हिं० रबड़ना] १. चलने में होनेवाला श्रम। २ कीचड़।

मुहा०—रबदा पड़ना=खूब पानी बरसना।

रबर—संज्ञा पुं० दे० "रबड़"।

रबाना—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डफ।

रबाब—संज्ञा पुं० [अ०] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा। उ०—बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृत कुंडली यंत्र। —सूर०।

रबाबिया, रबाबी—वि० [हिं० रबाब+इया, ई (प्रत्य०)] रबाब बजानेवाला।

रबी—संज्ञा स्त्री० [अ० रबीअ] १ वसंत ऋतु। २. वह फसल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

रब्त—संज्ञा पुं० [अ०] १ अभ्यास। मश्क। मुहावरा। २ संबंध। मेल।
यौ०—रब्त जब्त = मेलजोल। घनिष्ठता।

रब्ब—संज्ञा पुं० दे० "रब"।

रभस—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेग। तेजी। २ हर्ष। आनंद। ३ प्रेम का उत्साह। ४ पश्चाताप। रंज।

रम—वि० [सं०] १. प्रिय। २ सुंदर।
संज्ञा पुं० पति।
संज्ञा स्त्री० [अँ०] जौ की शराब।

रमक—संज्ञा स्त्री० [हिं० रमना ?] १ झूले की पेंग। २ तरंग। झकोरा। उ०—चमक झमकवारी ठमक जमकवारी, रमक तमकवारी, जाहिर जगति है। —काव्यनिर्णय।

रमकना—क्रि० अ० [हिं० रमना] १ हिंडोले पर झूलना। उ०—कबहुँक निकट देखि वर्षा ऋतु झूलत सुरंग हिंडोरे। रमकत झमकत जनक सुता सँग हाव भाव चित चोर। —सूर०। २ झूमते या इतराते हुए चलना।

रमजान—संज्ञा पुं० [अ०] एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. विलास। क्रीड़ा। केलि। २ मैथुन। ३ गमन। घूमना। ४ पति। ५. कामदेव। ६ एक वर्णिक छंद।
वि० १ मनोहर। सुंदर। २ प्रिय। ३ रमनेवाला।

रमणगमना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो यह समझकर दुखी होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा और मैं वहाँ उपस्थित न थी, जैसे—ह्वै सपल्लव लाल कर लखि तमाल की डाल। कुँभिलानी उर साल धरि फूल माल ज्यों बाल।

रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री।

रमणीक—वि० [सं० रमणीय] सुंदर। रमणीय। उ०—अति रमणीक कदंब छाँह रुचि परम सुहाई। राजत मोहन मध्य अवलि बालक की पाई। —सूर०।

रमणीय—वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

रमणीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरता। २ साहित्यदर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे।

रमता—वि० [हिं० रमना] एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता, जैसे—रमता जोगी।

रमन(पु)—संज्ञा पुं०, वि० दे० "रमण"।

रमना—क्रि० अ० [सं० रमण] १ भोग विलास के लिये कहीं रहना या ठहरना। २ आनंद करना। मजा उड़ाना। ३ व्याप्त होना। भीनना। ४. अनुरक्त होना। लग जाना। ५ किसी के आसपास फिरना। ६ आनंदपूर्वक इधर उधर फिरना। विहार करना। घूमना। विचरना। उ०—जे पद पद्म रमत वृंदावन अहि सिर धारे अगनित रिपु मारे। —सूर०। ७ चलता होना। चल देना।
संज्ञा पुं० [सं० आराम या रमण] १ चरागाह। २ वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिये या पालने के लिये छोड़ दिए जाते हैं। ३ बाग। ४ कोई सुंदर और रमणीक स्थान।

रमनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रमनीक(पु)—वि० दे० "रमणीक"।

रमल—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।

रमली—संज्ञा पुं० [अ० रमल+ई (प्रत्य०)] वह जो रमल की सहायता से भविष्य की बातें बतलाता हो।

रमसरा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रामसर"।

रमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

रमाकांत—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

रमानरेश(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रमाकांत"।

रमाना—क्रि० स० [हिं० रमना का स० रूप] १ मोहित करना। लुभाना। उ०—नूपुर, रुनझुन नाद शब्द उपजत किंकिनि धुनि सुनि श्रवण रमावति। सूर स्याम अँचरा धरि ढाँके काम कमौटी करि देखरावति। —सूर०। २ अपने अनुकूल बनाना। ३ ठहराना। रोक रखना। ४ लगाना। जोड़ना।
मुहा०—रास रमाना = रास रचना। उ०—जाकी महिमा कहत न आवै। सो गोपिन सँग रास रमावै। —सूर०।

रमानिवास—संज्ञा पुं० [सं० रमा+निवास] विष्णु।

रमापति, रमारमण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

रमित(पु)—वि० [हिं० रमना] लुभाया हुआ। मुग्ध।

रमेश—संज्ञा पुं० [सं०] रमा के पति। विष्णु।

रमूज—संज्ञा स्त्री० [अ० रम्ज का बहु०] १ कटाक्ष। २ सैन। इशारा। ३ पहेली। गूढ़ार्थ वाक्य। ४ श्लेष। ५ गुप्त बात। भेद। रहस्य। उ०—यों कहि मौन भए अजनंदन कैकयराज रमूज सी पाई। —हनुमन्नाटक।

रमैनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रामायण] कबीरदास के बीजक का एक भाग।

रमैया‡(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० ऐया (प्रत्य०)] १ राम। २ ईश्वर।

रम्माल—संज्ञा पुं० [अ०] रमल फेंकनेवाला।

रम्य—वि० [सं०] [स्त्री० रम्या] १. मनोहर। सुंदर। २ मनोरम। रमणीय।

रम्हाना—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

रय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रज] रज। धूल। गर्द।
संज्ञा पुं० [सं०] १ वेग। तेजी। २ प्रवाह। ३ ऐल के छः पुत्रों में से चौथा।

रयन(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात। रात्रि।

रयना(पु)†—क्रि० स० [सं० रंजन] रंग से भिगोना। तरबोर करना।
क्रि० अ० १ अनुरक्त होना। २ संयुक्त होना। मिलना।

रयवारा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० रजवाड़ा] राजा।

रयासत—संज्ञा स्त्री० दे० "रियासत"।

रय्यत†—संज्ञा स्त्री० [अ० रअय्यत] प्रजा।

ररकार—संज्ञा पुं० [सं० रकार] रकार की ध्वनि।

ररं(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ररना] रटन। रट।

ररकना†—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा ररक] कसकना। सालना। पीड़ा देना।

ररना†—क्रि० अ० [सं० रटन] लगातार एक ही बात कहना। रटना।

ररिहा, ररुआⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० ररना] १ ररनेवाला। २ रहुआ या रुरुआ नामक पक्षी। ३ भारी मगन।

ररा—संज्ञा पुं० [हिं० ररना] १. बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २ अधम। नीच।

रलनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० ललन] एक में मिलना। संमिलित होना। उ०—चन्नी पीठ दै दृष्टि फिरावति अँग आनद रली। —सूर०।

रलमल—संज्ञा स्त्री० [हिं० √रल+√मिल] १ रलने मिलने की क्रिया या भाव। २ संमिश्रण।

रलानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० रलना का स० रूप] एक में मिलाना। संमिलित करना।

रलिकाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "रली"।

रली—संज्ञा स्त्री० [सं० ललन=केलि, क्रीड़ा] १ विहार। क्रीड़ा। उ०—खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बानि। आक कली न रली करै अली, अली, जिय जानि। —बिहारी०। २ आनद। प्रसन्नता। उ०—विविध कियो ब्याह विधि वसुदेव मन उपजी रली। —सूर०।

विं० रसी हुई। मिली हुई। उ०—तब लीनी करकमल जोगमाया सी मुरली। अघटित घटना चतुर बहुरि अधरासव जु रली। —नंददास०।

रल्लⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० रेला] रेला। हल्ला।

रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुंजार। नाद। २ आवाज। शब्द। ३ शोरगुल।

संज्ञा पुं० Ⓟ† [सं० रवि] सूर्य।

रवकना—क्रि० अ० [सं०√रु=चलना] १. दौड़ना। उ०—नैन मीन मरवर आनन मैं चंचल करत विहार। मानो कर्णफूल चारा को रवकत बारंबार। —सूर०। २ उमगना। उछलना। उ०—यह भनि प्रबल स्याम प्रति कोमल रवकि रवकि उर परते। —सूर०।

रवताईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] १ राजा या रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० रमण] पति। स्वामी।

वि० रमण करनेवाला। क्रीड़ा करनेवाला।

रवनाⓅ—क्रि० अ० [सं० रमण] क्रीड़ा करना।

क्रि० अ० [हिं० रव=शब्द] शब्द करना।

†संज्ञा पुं० दे० "रावण"।

रवनि, रवनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० रमणी] १ स्त्री। भार्या। पत्नी। २ रमणी। सुंदरी।

रवन्ना—संज्ञा पुं० [फा० रवाना] १ वह कागज जिसपर रवाना किए हुए माल का ब्योरा होता है २. राहदारी का परवाना।

रवाँ—वि० [फा०] १ चलता हुआ। २. बहता हुआ। ३ जिसका अभ्यास हो।

रवा—संज्ञा पुं० [सं० रज] १ बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। २ सूजी। ३. बारूद का दाना।

वि० [फा०] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ प्रचलित। चलनसार।

रवाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] परिपाटी। चाल। प्रथा। रस्म। चलन। रीति।

रवादार—वि० [फा० रवा+दार (प्रत्य०)] संबंध या लगाव रखनेवाला।

वि० [हिं० रवा+फा० दार] जिसमें कण या दाने हों। रवेवाला।

रवानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान।

रवाना—वि० [फा०] १ जो कहीं से चल पड़ा हो। प्रस्थित। २ भेजा हुआ।

रवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ प्रवाह २. तेजी।

रवारवी—संज्ञा स्त्री० [फा० रवा+अनु० रवी] जल्दी। शीघ्रता।

रवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ मदार का पेड़। आक। ३ अग्नि। ४ नायक। सरदार।

रविकुल—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश।

रविचंचल—संज्ञा पुं० [सं०] लोलार्क नामक तीर्थस्थल जो काशी में है।

रविजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

रवितनय—संज्ञा पुं० [सं०] १ यमराज २ शनैश्चर। ३ सुग्रीव। ४. कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।

रवितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना। उ०—गए श्याम रवितनया के तट अंग लसति चदन की खोरी। —सूर०।

रविनंदन—संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।

रविनंदनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

रविपूतⓅ—संज्ञा पुं० दे० "रविनंदन"।

रविमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला। रविबिंब।

रविवाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह वाण जिसके चलने से सूर्य का सा प्रकाश हो।

रविवार—संज्ञा पुं० [सं०] एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़ता है। आदित्यवार। एतवार। उ०—फागुन बदि चौदस शुभ दिन औ रविवार सुहायो। —सूर०।

रविश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गति। चाल। २ तौर। तरीका। ढग। ३ क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रविसुअन—संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।

रवीला—वि० [हिं० रवा+ईला (प्रत्य०)] जिसमें कण या रवे हों। रवेवाला।

रवैया†—संज्ञा पुं० [फा० रविश या रवाँ] १. चलन। चालचलन। २. तौर। ढग।

रशना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमर में पहनने की करधनी। २ दे० "रसना"।

रश्क—संज्ञा पुं० [फा०] ईर्ष्या। डाह।

रश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। २ घोड़े की लगाम। बाग।

रस—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खाने की चीज का स्वाद। रसनेंद्रिय का संवेदन या ज्ञान जो वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छ माने गए हैं। छ की संख्या। ३ वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४ किसी पदार्थ का सार। तत्व। ५ मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने से उत्पन्न होता है (साहित्य)। ६ नौ की संख्या। ७ आनंद। मजा।

मुहा०—रस भीजना या भीनना=यौवन का आरंभ या संचार होना।

८ प्रेम। रीति। मुहब्बत।

यौ०—रसरंग = प्रेमक्रीड़ा। केलि। रसरीति=प्रेम का व्यवहार। उ०—और को जाने रस की रीति। कहाँ हौं दीन कहाँ त्रिभुवन पति मिले पुरातन प्रीति। चतुरानन तन निमिष न चितवत इती राज की नीति। —सूर०।

९ कामक्रीड़ा। केलि। विहार। १० उमंग। जोश। वेग। ११ गुण। सिफत। १२ तरल या द्रव पदार्थ। १३ जल। पानी। १४ किसी चीज को दबा या निचोड़कर निकाला हुआ द्रव पदार्थ।

१५ वह पानी जिसमें चीनी घुली हुई हो। शरबत। १६ पारा। १७ धातुओं को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। १८. केशव के अनुसार रगण और सगण। १९. भाँति। तरह। प्रकार। २०. मन की तरंग। मौज। इच्छा।

रसऐन—संज्ञा पुं० [सं० रस+अयन] रसिक। रस लेनेवाला व्यक्ति। उ०—आजु दह्यो वृषभानजू तन मम दूनों है न। अब नारी तुव लखन कों आवत है रसऐन। —रससागर।

रसकपूर—संज्ञा पुं० [सं० रस+कर्पूर] सफेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु।

रसकेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विहार। क्रीड़ा। २. हँसीठट्ठा। दिल्लगी।

रसकोरा—संज्ञा पुं० दे० "रसगुल्ला"।

रसखीर—संज्ञा स्त्री० [सं० रस+हिं० खीर] ऊख के रस में पकाया चावल।

रसगुनी—संज्ञा पुं० [सं० रस+गुणी] काव्य या संगीतशास्त्र का ज्ञाता।

रसगुल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० रस+हिं० गोला] एक प्रकार की छेने की मिठाई।

रसज्ञ—वि० [सं०] [भाव० रसज्ञता] १ वह जो रस का ज्ञाता हो। २ काव्यमर्मज्ञ। ३ निपुण। कुशल।

रसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] रस का भाव या धर्म। रसत्व।

रसद—वि० [सं०] १ आनंददायक। सुखद। २. स्वादिष्ट। मजेदार।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बाँट। बखरा।

मुहा०—हिस्सा रसद= बँटने पर अपने हिस्से के अनुसार लाभ।

२ आटा, दाल, चावल आदि भोजन की बिना पकी सामग्री।

रसदार—वि० [सं० रस+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसमें किसी प्रकार का रस हो। २ स्वादिष्ट। मजेदार।

रसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वाद लेना। चखना। २ ध्वनि। ३ जीभ। जबान।

रसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जिह्वा। जीभ।

मुहा०—रसना खोलना = बोलना आरंभ करना। रसना तालू मे लगाना = बोलना बंद होना।

२ वह स्वाद, जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है। ३ रस्सी। ४ लगाम।

क्रि० अ० [सं० रस से हिं० ना] १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २ किसी वस्तु का गीला होकर जल या और कोई द्रव पदार्थ छोड़ना या टपकाना।

मुहा०—रसे रसे या रसे रसे=धीरे धीरे।

३ रस में मग्न होना। प्रफुल्लित होना। उ०—सूर प्रभु नागरी हँसति मन मन रसति बसत मन श्याम बड़े भागे। —सूर०। ४ तन्मय होना। ५ रस लेना स्वाद लेना। ६ प्रेम में अनुरक्त होना।

रसनेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसना। जीभ।

रसनोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान होता जाता है। उ०—बस सम बखत, बखत सम ऊँचो मन, मन सम कर, कर सम करी दान के।

रसपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ राजा। ३. पारा। ४ शृंगार रस।

रसप्रबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक। २ वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसभरी—संज्ञा स्त्री० [अं० रैस्पबेरी] एक प्रकार का स्वादिष्ट फल। मकोय।

रसभीना—वि० [हिं० रस+√भीन+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० रसभीनी] १ आनंद में मग्न। २ आर्द्र। तर। गीला।

रसम—संज्ञा स्त्री० [अ० रस्म] १ प्रथा। परिपाटी। चाल। प्रणाली। २ मेलजोल।

रसमसा—वि० [सं० रस+हिं० मस (अनु०)] [स्त्री० रसमसी] १ आनंद-मग्न। अनुरक्त। उ०—खेलत अति रसमसे लाल रंगभीने हो। अतिरस केलि विशाल लाल रंगभीने हो। —सूर०। २ तर। गीला। ३ पसीने से भरा।

रसमि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रश्मि] १ किरण। उ०—तो जू मान तजहुगी भामिनि रवि की रसमि काम फल फीको। —सूर०। २ आभा। प्रकाश। चमक।

रसमोए—वि० [सं० रस+मग्न] रससिक्त। उ०—जात जगाए हैं न अलि आँगन आए भानु। रसमोए मोए दोऊ प्रेम समोए प्रानु। —रससागर।

रसरा—संज्ञा पुं० दे० "रस्सा"।

रसराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारद। पारा। २. शृंगार रस।

रसराय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रसराज"।

रसरी—संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी"।

रसल—वि० दे० "रसीला"।

रसवत—संज्ञा पुं० [सं० रसवत्] रसिक। प्रेमी।

वि० जिसमें रस हो। रसीला।

रसवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० रसवती] रसौत।

रसवत्—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आवे, जैसे, युद्ध में पड़े हुए वीर पति के लिये इस विलाप में—"हाँ, यह वही हाथ है जो प्रेम से आलिंगन करता था" शृंगार केवल करुण रस का अंग है।

रसवत—संज्ञा स्त्री० दे० "रसौत"।

रसवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेम या आनंद की बातचीत। रसिकता की बातचीत। उ०—करति हौ परिहास हमसों तजौ यह रसवाद। —सूर०। २ मनोरंजन के लिये कहासुनी। छेड़छाड़। उ०—तुमहीं मिलि रसवाद बढ़ायो। बिरहन दै दै मूँड़ पिरायो। —सूर०। ३ बकवाद।

रसवान्—वि० [सं०] [स्त्री० रसवती] १ सरस। रसीला। २ मधुर।

रसविरोध—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति, जैसे—शृंगार और रौद्र की।

रसाँ—वि० [फा०] पहुँचानेवाला, जैसे—चिट्ठीरसाँ।

रसांजन—संज्ञा पुं० [सं०] रसौत।

रसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। जमीन। २ जीभ। रसना। जबान।

संज्ञा पुं० [हिं० रस] तरकारी आदि का झोल, शोरबा।

वि० [फा०] १ पहुँचनेवाला। २. ऊँचा होने या दूर जानेवाला।

रसाइनी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० रसायन] रसायन विद्या जाननेवाला।

रसाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

रसातल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।

मुहा०—रसातल में पहुँचाना = मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।

रसाना(पु)—क्रि० स० [सं० रस से हिं० ना० धा०] १ रसपूर्ण करना। २ प्रसन्न करना।

क्रि० अ० १ रसयुक्त होना। २. आनंद लूटना।

रसाभास—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन, जैसे—गुरु पर किए हुए क्रोध या गुरुपत्नी से किए हुए प्रेम को लेकर यदि रौद्र या शृंगार रस का वर्णन हो, तो वह विभाव अनुभव, आदि सामग्रियों से पूर्ण होने पर भी अनौचित्य के कारण रसाभास होगा। २ एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।

रसायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। २ पदार्थों के तत्वों का ज्ञान। विशेष दे० "रसायन शास्त्र"। ३. वह कल्पित योग जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है।

रसायनशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्व होते हैं और उनके अणुओं में परिवर्तन न होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है।

रसायनिक—वि० दे० "रासायनिक"।

रसाल—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० रसालता] १ ऊख। गन्ना। २. आम। ३ कटहल। ४ गोधूम। गेहूँ।

वि० [स्त्री० रसाला] १. मधुर। मीठा। २ रसीला। ३ सुंदर। मनोहर।

संज्ञा पुं० [अ० इरसाल] कर। राजस्व।

रसालस—संज्ञा पुं० [हिं० रसाल] कौतुक।

रसालिका—वि० स्त्री० [सं० रसालक] मधुर।

रसाव—संज्ञा पुं० [हिं० √ रस+आव (प्रत्य०)] रसने की क्रिया या भाव।

रसावर, रसावल—संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसासव—संज्ञा पुं० [सं०] शराब।

रसिआउर†—संज्ञा पुं० [सं० रस+हिं० चाउर] १ ऊख के रस या गुड़ के शर्बत में पका हुआ चावल। २ एक प्रकार का गीत जो नई बहू के आने पर विवाह की एक रीति में गाया जाता है।

रसिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो रस या स्वाद लेता हो। २. काव्यमर्मज्ञ। ३. आनंदी। रसिया। उ०—सूरदास रास रसिक बिनु रास रसिकिनी बिरह बिकल करि भई हैं मगन।—सूर०। ४ अच्छा ज्ञाता। मर्मज्ञ। ५ भावुक। सहृदय। ६. एक प्रकार का छंद।

रसिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रसिक होने का भाव या धर्म। २. हँसीठट्ठा।

रसिकबिहारी—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

रसिकाईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।

रसित—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।

रसिया—संज्ञा पुं० [सं० रसिक] १ रसिक। रस लेनेवाला। २ एक प्रकार का गाना जो फागुन में ब्रज, बुंदेलखंड आदि में गाया जाता है।

रसियाव—संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसीⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "रसिक"।

रसीद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया। प्राप्ति। पहुँच। २. किसी चीज के पहुँचने या मिलने के प्रमाणरूप में लिखा हुआ पत्र।

मुहा०—(थप्पड़ मुक्का आदि) रसीद करना=(थप्पड़ मुक्का आदि) लगाना।

रसील—वि० दे० "रसीला"।

रसीला—वि० [सं० रस + हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रसीली] १ रस में भरा हुआ। रसयुक्त। २ स्वादिष्ट। मजेदार। ३ रस या आनंद लेनेवाला। ४ बाँका। सुंदर।

रसूम—संज्ञा पुं० [अ०] १ रस्म का बहुवचन। २ नियम। कानून। ३ वह धन जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो। नेग। लाग।

रसूल—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] पारा।

रसेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। २ एक दर्शन जो छः दर्शनों में नहीं है।

रसेसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० रमेश] श्रीकृष्ण।

रसोइया—संज्ञा पुं० [हिं० रसोई+इया (प्रत्य०)] रसोई बनानेवाला। रसोईदार।

रसोई, रसोईं—संज्ञा स्त्री० [सं० रसवती] १ पका हुआ खाद्य पदार्थ।

मुहा०—रसोई तपना=भोजन पकाना।

२ चौका पाकशाला।

रसोईघर—संज्ञा पुं० [हिं० रसोई+घर] खाना बनाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार—संज्ञा पुं० दे० "रसोइया"।

रसोडा†—संज्ञा पुं० दे० "रसोई"।

रसोत—संज्ञा स्त्री० दे० "रसौत"।

रसोवⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "रसोई"।

रसौत—संज्ञा स्त्री० [सं० रसोद्भूत] एक प्रसिद्ध औषध जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जाती है।

रसौर—संज्ञा पुं० [हिं० रसिआउर] ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है।

रस्ता—संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

रस्म—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेलजोल।

यौ०—राहरस्म=मेलजोल। व्यवहार।

२ रवाज। परिपाटी। चाल।

रस्मिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "रश्मि"।

रस्सा—संज्ञा पुं० [सं० रसना] [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रस्सा] रूई, सन आदि के रेशों या डोरों को बटकर बनाया हुआ लंबा खंड। डोरी। गुण। रज्जु।

रहँकला—संज्ञा पुं० [सं० रथ+कला] १. एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २ तोप लादने की गाड़ी। ३. रहकले पर लदी हुई तोप।

रहँचटा—संज्ञा पुं० [सं० रस+हिं० चाट] प्रीति की चाह। चसका। लिप्सा।

रहँट—संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट, प्रा० अरहट्ट] कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र।

रहँटा—संज्ञा पुं० [हिं० रहँट] सूत कातने का चर्खा।

रहचटⓅ—संज्ञा पुं० [सं० रस+हिं० चाट] दे० "रहँचटा"। उ०—मन दैबौ सौंप्यौ ससुर बहू सुरहथी जानि। रूप रहचटैं लगि लग्यौ माँगन सबु जगु आनि।—बिहारी०।

रहचह—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट।

रहट—संज्ञा पुं० दे० "रहँट"। उ०—नैनाँ नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम। पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम।—कबीर०।

रहठा—संज्ञा पुं० [?] अरहर के पौधों का सूखा डंठल ।

रहठान(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०√रह+सं० स्थान] निवासस्थान । रहने की जगह ।

रहन—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १ रहने की क्रिया या भाव । २ व्यवहार । आचार ।

रहन सहन—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना+सहना] जीवननिर्वाह का ढंग । तौर । चाल ढाल ।

रहना—क्रि० अ० [सं०√राज् ?] १ स्थित होना । अवस्थान करना । ठहरना । २. न जाना । रुकना । थमना ।

मुहा०—रह चलना या जाना = रुक जाना ।

३ बिना किसी परिवर्तन या गति के एक ही स्थिति में अवस्थान करना । ४ निवास करना । बसना या टिकना । ५ कोई काम करना बंद करना । थमना । ६ चलना बंद करना । रुकना । ७ विद्यमान होना । उपस्थित होना । ८ चुपचाप समय बिताना ।

मुहा०—रह जाना = (१) कुछ कार्रवाई न करना । (२) सफल न होना । लाभ न उठा सकना ।

९ नौकरी करना । कामकाज करना । १० स्थित होना । स्थापित होना । ११ समागम करना । मैथुन करना । १२. जीवित रहना । जीना । १३. बचना । छूट जाना ।

यौ०—रहा सहा = बचा बचाया । अवशिष्ट ।

मुहा०—(अंग आदि का) रह जाना = थक जाना । शिथिल हो जाना । रह जाना = (१) पीछे छूट जाना । (२) अवशिष्ट होना । खर्च या व्यवहार से बचना ।

रहनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १ दे० "रहन" । २ प्रेम । प्रीति ।

रहपट—संज्ञा पुं० [?] झापड़ । थप्पड़ । उ०—वाम पच्छ नव कंचनमई । रहपट एक जु ताकी दई । —नंददास० ।

रहम—संज्ञा पुं० [अ०] १ करुणा । दया । २. अनुकंपा । अनुग्रह ।

यौ०—रहमदिल = दयालु । कृपालु ।

संज्ञा पुं० [अ० रह्म] गर्भाशय ।

रहरू—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की छोटी देहाती गाड़ी ।

रहल—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चौकी जिसपर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है ।

रहलू(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "रहरू" ।

रहवैया—वि० [हिं०√रह+वैया (प्रत्य०)] रहनेवाला ।

रहस—संज्ञा पुं० [सं० रहस्] १ गुप्त भेद । छिपी बात । २ आनंदमय लीला । क्रीड़ा । ३ आनंद । सुख । ४ गूढ़ तत्व । मर्म । ५ एकांत स्थान ।

रहसना—क्रि० अ० [हिं० रहस से ना० धा०] आनंदित होना । प्रसन्न होना । उ०—एहि विधि रहसत विलसत दंपति हेतु हिए नहिं थोरे । —सूर० ।

रहसबधावा—संज्ञा पुं० [हिं० रहस+बधावा] विवाह की एक रीति ।

रहसि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रहस्] गुप्त स्थान । एकांत स्थान । उ०—सुनि बल मोहन बैठ रहसि में कीन्हों कछू विचार । —सूर० ।

रहस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुप्त भेद । गोप्य विषय । २ मर्म या भेद की बात । ३ वह जिसका तत्व सहज में समझ में न आ सके । ४. हँसी ठट्ठा । मजाक ।

रहस्यवाद—संज्ञा पुं० [सं० रहस्य+वाद] १ ध्यान चिंतन के द्वारा परोक्ष सत्ता में तल्लीन होने का प्रयत्न । २ ऐसी अंतर्दशा में व्यक्त भावनाएँ ।

रहस्यवादी—वि० [सं० रहस्य+वादिन्] १ रहस्यवाद का अनुयायी । २ रहस्यवाद संबंधी ।

रहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ रह+आई (प्रत्य०)] १. दे० "रहन" । २ कल । चैन । आराम ।

रहाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० रहना] १ होना । २ रहना ।

रहावन†—संज्ञा स्त्री० [हिं०√रह+आवन (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों । रहुनिया ।

रहित—वि० [सं०] बिना । बगैर । हीन ।

रहिला—संज्ञा पुं० [?] चना ।

रहीम—वि० [अ०] कृपालु । दयालु ।

संज्ञा पुं० [अ०] १ रहीम खाँ खानखानाँ का उपनाम । २ ईश्वर ।

रहुवा†—संज्ञा पुं० [हिं०√ रह+उवा (प्रत्य०)] रोटियों पर रहनेवाला मनुष्य । टुकड़हा । रोटीतोड़ ।

राँक†—वि० दे० "रंक" ।

राँग—संज्ञा पुं० दे० "राँगा" ।

राँगा—संज्ञा पुं० [सं० रंग] एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में सफेद होती है । रंग । बंग ।

राँच(पु)†—अव्य० दे० "रंच" ।

राँचना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रंजन] १ अनुरक्त होना । प्रेम करना । चाहना । २ रंग पकड़ना ।

क्रि० स० [सं० रंजन] रंग चढ़ाना । रँगना ।

राँजना†—क्रि० अ० [सं० रंजन] काजल लगाना ।

क्रि० स० रंजित करना । रँगना ।

राँटा†—संज्ञा पुं० [देश०] टिटिहरी चिड़िया ।

राँड़—वि० स्त्री० [सं० रंडा] १. विधवा । बेवा । २ रंडी । वेश्या ।

राँदना†—क्रि० स० [सं० रुदन] रोना । विलाप करना ।

राँध—संज्ञा पुं० [सं० उपरांत] निकट । पास ।

राँधना—क्रि० स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना । पाक करना ।

राँधा—संज्ञा पुं० दे० "राँध" । उ०—ननु रानी हौं रहनेउँ राँधा । कैसे रहौं वचन कर बाँधा ।—पदमावत ।

राँपी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औजार ।

राँभना—क्रि० अ० [सं० रंभण] (गाय का) बोलना या चिल्लाना । बँबाना । उ०—चमचुर खगरोर सुनहु बोलत बनराई । राँभति गो खरिकन में बछरा हित धाई ।—सूर०—

राआ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "राजा" ।

राइ—संज्ञा पुं० [सं० राजा] छोटा राजा । राय । सरदार ।

राइट—संज्ञा पुं० [अं०] अधिकार । हक ।

वि० ठीक । दुरुस्त ।

राई—संज्ञा स्त्री० [सं० राजिका] १ एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों ।

मुहा०—राई नोन उतारना = नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग में डालना । उ०—कबहूँ अँग भूषण बनावति राई लोन उतारि ।—सूर० । राई से पर्वत करना = थोड़ी बात

को बहुत बढ़ा देना। राई काई करना = टुकड़े टुकड़े कर डालना।

२ बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

संज्ञा पुं० १ राजा। २ सर्वश्रेष्ठ।

(पु)† संज्ञा स्त्री० [हिं० राइ] राजापन। राजसी।

राउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राजा (राजन्)] राजा। नरेश।

राउत†—संज्ञा पुं० [सं० राज+पुत्र] १ राजवंश का कोई व्यक्ति। २. क्षत्रिय। ३ वीर पुरुष। बहादुर।

राउर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० राज+पुर] अंतःपुर। रनिवास। जनानखाना।

वि० श्रीमान् का। आपका। उ०—जौ राउर आयसु मैं पावउँ। नगर देखाइ तुरत लै आवउँ। —मानस।

राउल(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] १. राजकुल में उत्पन्न पुरुष। २ राजा।

राकस(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० राक्षस] [स्त्री० राकसिन] राक्षस।

राका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा की रात। २ पूर्णमासी।

राकापति, राकेश—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

राक्षस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी] १ निशिचर। दैत्य। असुर। २. कुबेर के धन कोश के रक्षक। ३ कोई दुष्ट प्राणी।

वि० एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ता है।

राख—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार] भस्म। खाक।

राखना(पु)†—क्रि० स० [सं० रक्षण] १ रक्षा करना। बचाना। २ रखवाली करना। ३ छिपाना। कपट करना। ४ रोक रखना। जाने न देना। ५ आरोप करना। बताना। ६ दे० "रखना"।

राखी—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षाबंधन का डोरा। रक्षा।

संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।

राग—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रिय या अभिमत वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। सांसारिक सुखों की चाह। २ कष्ट। पीड़ा। ३ मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग। प्रेम। प्रीति। ५ अंग में लगाने का सुगंधित लेप। अंगराग। ६ एक वर्णवृत्त। ७ रंग, विशेषतः लाल रंग। ८ पैर में लगाने का आलता। ९ किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता हो। भारतीय आचार्यों ने छः राग माने हैं, परंतु इन रागों के नामों के संबंध में कुछ मतभेद है।

मुहा०—अपना राग अलापना = अपनी ही बात कहना।

संज्ञा पुं० दे० "रागा"। उ०—'नंददास' प्रभु दूती के वचन सुनि, ऐसैं अँग ढरे जैसैं आगि लगैं राग ढरत। —नंददास०।

रागना(पु)†—क्रि० अ० [सं० राग से हिं० ना० धा०] १ अनुराग करना। अनुरक्त होना। २ रँग जाना। रंजित होना। ३ निमग्न होना।

(पु)क्रि० स० गाना। अलापना।

रागिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। (प्रत्येक राग की पाँच या छह रागिनियाँ मानी गई हैं।)

रागी—संज्ञा पुं० [सं० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १ अनुरागी। प्रेमी। २ छह मात्रावाले छंदों का नाम।

वि० १ रँगा हुआ। २ लाल। सुर्ख। ३ विषय वासना में फँसा हुआ। विरागी का उलटा। ४ रँगनेवाला।

‡(पु) संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

राघव—संज्ञा पुं० [सं०] १ रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २ श्रीरामचंद्र।

राचना(पु)—क्रि० स० [हिं० रचना] रचना। बनाना। उ०—सब ते धन्य धन्य वृंदावन जहाँ कृष्ण को बास। धनि धनि सूरदास के स्वामी अद्भुत राच्यो रास। —सूर०।

क्रि० अ० रचा जाना। बनना।

क्रि० अ० [सं० रंजन] १ रँगा जाना। रंजित होना। उ०—दरशन दियो आइ हरि जू को कहत सपन की साँची। प्रेम मानि कछु सुधि न रही अँग रहे श्याम रँग राची। —सूर०। २ अनुरक्त होना। प्रेम करना। उ०—विरंचि मन बहुरि राच्यो आइ। टूटी जुरै बहुत जतननि करि तऊ दोष नहिं जाइ। —सूर०। ३ लीन होना। मग्न होना। डूबना। उ०—कछु कुल धर्म न जानई वाके रूप सकल जग राच्यो। बिनु देखे बिनु ही सुने ठगत न कोऊ बाँच्यो। —सूर०। ४ प्रसन्न होना। ५ शोभा देना। भला जान पड़ना। ६ सोच या चिंता में पड़ना। उ०—शीत उष्ण सुख दुख नहिं मानै/हानि भए कछु सोच न राचै। जाइ समाइ सूर वा निधि में बहुरि न उलटि जगत में नाचै। —सूर०।

राछ—संज्ञा पुं० [सं० रक्ष] १ कारीगरों का औजार। २ जुलाहों के करघे में एक औजार जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठता और गिरता है। ३ बरात। जलूस।

राछस(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

राज—संज्ञा पुं० [सं० राज्य] १ हुकूमत। राज्य। शासन।

मुहा०—राजकाज = राज्य का प्रबंध। राज पर बैठना = राजसिंहासन पर बैठना। राज रजना = (१) राज्य करना। (२) बहुत सुख से रहना।

यौ०—राजपाट = (१) राजसिंहासन। (२) शासन।

२ एक राजा द्वारा शासित देश। जनपद। राज्य। ३ पूरा अधिकार। खूब चलनी। ४ अधिकारकाल। समय। ५ देश।

संज्ञा पुं० [सं० राजन्] १. राजा। २ दे० "राजगीर"।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] रहस्य। भेद।

राजकर—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर जो प्रजा से राजा लेता है। खिराज।

राजकीय—वि० [सं०] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुअँर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "राजकुमार"।

राजकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल—संज्ञा पुं० दे० "राजवंश"।

राजगद्दी—संज्ञा स्त्री० [हिं० राज+गद्दी] १ राजसिंहासन। २ राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ३ राज्याधिकार।

राजगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मगध देश के एक पर्वत का नाम। २ दे० "राजगृह"।

राजगीर—संज्ञा पुं० [सं० राज+गृह] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का महल। २ एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है। प्राचीन गिरिव्रज जहाँ मगध की राजधानी थी।

राजतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबंध एक मात्र राजा के हाथ में रहता है। शासन

व्यवस्था में प्रजा या प्रजा के प्रतिनिधियों का कोई स्थान नहीं होता।

राजतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्हण-कृत कश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।

राजतिलक—संज्ञा पुं० दे० "राज्याभिषेक"।

राजत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का भाव या कर्म। २. राजा का पद।

राजदंड—संज्ञा पुं० [सं०] वह दंड जो राजा या शासन की ओर से दिया जाय।

राजदंत—संज्ञा पुं० [सं०] बीच का वह दाँत जो और दाँतों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदूत—संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो एक राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में भेजा जाता है।

राजद्रोह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बगावत।

राजद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा की ड्योढ़ी। २ न्यायालय।

राजधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कर्तव्य या धर्म।

राजधानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजनाⓟ—क्रि० अ० [सं० राजन्] १ उपस्थित होना। रहना। उ०—कीन्हीं केलि बहुत बल मोहन भुव को भार उतारेउ। प्रगट भए राजत द्वारावति वेद पुरान उचारेउ।—सूर०। २ शोभित होना।

राजनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नीति जिसमें राज्य और शासन का संचालन होता है।

राजनीतिक—वि० [सं०] राजनीति संबंधी।

राजनीतिज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] राजनीति का ज्ञाता।

राजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षत्रिय। २ राजा।

राजपक्षी—संज्ञा पुं० दे० "राजहंस"।

राजपथⓟ—संज्ञा पुं० दे० "राजपथ"।

राजपथ—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी सड़क। राजमार्ग।

राजपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का पुत्र। राजकुमार। २ बड़े आम का एक भेद। ३ बुध ग्रह।

राजपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का कर्मचारी।

राजपूत—संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. दे० "राजपुत्र"। २ राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजप्रासाद—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का महल।

राजबहा—संज्ञा पुं० [हिं० राज+√बह] वह बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं। रजबहा।

राजबाड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "राजप्रासाद"।

राजभक्त—वि० [सं०] [संज्ञा राजभक्ति] जिसमें राजा या राज्य के प्रति भक्ति हो।

राजभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम।

राजभवन—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का महल।

राजभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का महीन धान जो अगहन में होता है। २ राजा का भोजन।

राजमराल—संज्ञा पुं० [सं०] राजहंस।

राजमहल—संज्ञा पुं० [हिं० राज+महल] १ राजा का महल। राजप्रासाद। २ एक पर्वत जो संथाल परगने के पास है।

राजमाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश के राजा या शासक की माता।

राजमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] चौड़ी सड़क। राजपथ।

राजयक्ष्मा—संज्ञा पुं० [सं० राजयक्ष्मन्] यक्ष्मा। क्षय रोग। तपेदिक।

राजयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है। २ ग्रहों का ऐसा योग जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।

राजराजेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजराजेश्वरी] राजाओं का राजा। अधिराज।

राजरोग—संज्ञा पुं० [हिं० राज+रोग] १ वह रोग जो असाध्य हो। २. क्षय रोग।

राजर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।

राजलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजश्री। राजवैभव। २ राजा की शोभा।

राजलोकⓟ—संज्ञा पुं० दे० "राजप्रासाद"।

राजवत—वि० [हिं० राज+वत (प्रत्य०)] राजा के कर्म से युक्त।

राजवंश—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कुल या वंश। राजकुल।

राजवार—संज्ञा पुं० दे० "राजद्वार"।

राजश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजलक्ष्मी। राजा का ऐश्वर्य।

राजस—वि० [सं०] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी।

संज्ञा पुं० १ आवेश। क्रोध। उ०—जो चाहत, चटक न घटै, मैलो होइ न, मित्त। रज राजसु न छुवाइ तौ नेह चीकनौ चित्त।—बिहारी०। २. राज्याभिमान।

राजसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजशक्ति। २. राज्य की सत्ता। ३ वह शासन जिसमें सारी शक्ति राजा के ही हाथ में हो, प्रजा के हाथ में न हो।

राजसत्तात्मक—वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। प्रजासत्तात्मक का उलटा।

राजसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा की सभा। दरबार। २ राजाओं की सभा।

राजसमाज—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।

राजसिंहासन—संज्ञा पुं० [सं०] राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसिक—वि० दे० "राजस"।

राजसिरीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "राजश्री"।

राजसी—वि० [सं०] राजा के योग्य, बहुमूल्य या भड़कीला। राजाओं की सी शानवाला।

वि० स्त्री० जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।

राजसूय—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।

राजस्थान—संज्ञा पुं० दे० "राजपूताना"।

राजस्व—संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।

राजहंस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस। सोना पक्षी।

राजा—संज्ञा पुं० [सं० राजन् का कर्ता० एक व०] [स्त्री० रानी, रानी] १ किसी देश का सर्वाधिकारसंपन्न प्रधान शासक (प्रायः वंशपरंपरा से अधिकारप्राप्त)। बादशाह। २ किसी प्रभु शक्ति के अधीन राज्य या रियासत का शासक। ३ अधिपति। स्वामी। मालिक। ४ एक

उपाधि जो अँगरेजी सरकार भारत के बड़े रईसों को प्रदान करती थी।

राजाज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा या शासन की आज्ञा।

राजाधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का राजा। शाहंशाह। बड़ा बादशाह।

राजावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] लाजवर्द नामक उपरत्न।

राजिंद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राजेंद्र] १ श्रेष्ठ राजा। महाराज। २ अतिप्रिय।

राजि, राजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राई। २ श्रेणी। पंक्ति। ३ रेखा। लकीर।

राजित—वि० [सं०] १ फबता हुआ। शोभित। २ विराजा हुआ।

राजिव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राजीव] कमल।

राजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

वि० [अ०] १ कही हुई बात मानने को तैयार। सहमत। २. नीरोग। चंगा। ३ खुश प्रसन्न। ४ सुखी।

यौ०—राजी खुशी = सही सलामत।

†संज्ञा स्त्री० रजामंदी। अनुकूलता।

राजीनामा—संज्ञा पुं० [फा०] वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।

राजीव—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। पद्म।

राजीवगण—संज्ञा पुं० [सं०] १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं और नौ नौ मात्राओं पर विराम पड़ता है। इसमें तुकांत मे गुरु लघु का विशेष नियम नहीं है।

राजुक—संज्ञा पुं० [सं०] मौर्य काल का एक राजकर्मचारी या सूबेदार।

राजेंद्र, राजेश्वर—संज्ञा पुं० [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।

राज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रानी। राजमहिषी। २ सूर्य की पत्नी, संध्या।

राज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का काम। शासन। २ किसी संगठित राजनीतिक शासनव्यवस्थावाला भूभाग। ३ ऐसे भूभाग का एक मुख्य अंग। प्रांत। प्रदेश।

राज्यतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य की शासनप्रणाली।

राज्यव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजनियम। नीति। कानून।

राज्यश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य की शोभा और वैभव।

राज्याभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक। २ राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।

राट्—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। बादशाह। २ श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार।

राठ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्र] १. राज्य। २. राजा।

राठौर—संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्रकूट] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।

राढ़—वि० [सं० राढ ?] १ नीच। निकम्मा। २ कायर। भगोड़ा

राढ़†—संज्ञा स्त्री० [सं० राटि] १. रार। झगड़ा।

वि०१ निकम्मा। २ कायर।

राढ़ि—संज्ञा पुं० [सं०] बंग के उत्तरी भाग का नाम।

राणा—संज्ञा पुं० [सं० राट्] राजा।

रात—संज्ञा स्त्री० [सं० रात्रि] संध्या से प्रातःकाल तक का समय। रजनी। निशा।

मुहा०—रात दिन = सदा। हमेशा।

वि० [सं० रक्त] लाल। रक्तवर्ण। उ०—तेरी मौं खात हौं लोचन रात हैं सारस पातहू तें सरसात हैं। —छंदार्णव।

रातड़ी, रातरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।

रातना(पु)—क्रि० अ० [हिं० रात से ना० धा०] १ लाल रंग से रँग जाना। २ रँगा जाना। ३ अनुरक्त होना। उ०—जाहि जो भजै सो ताहि रातै। कोउ कछु कहै सब निरस बातैं। —सूर०।

राता(पु)—वि० [सं० रक्त] [स्त्री० राती] १ लाल। सुर्ख। उ०—बन बाटनु पिक बटपरा लखि विरहिनु मत मैन। कुहौ कुहौ कहि कहि उठै, करि करि राते नैन। —बिहारी०। २ रँगा हुआ। ३ अनुरागमय।

रातिचर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

रातिब—संज्ञा पुं० [अ०] पशुओं का भोजन।

राती—संज्ञा स्त्री० दे० "रात्रि"। उ०—आई सरद सुहाई राती। प्रफुलित वलिन मल्लिका जाती। —नंददास०।

रातुल—वि० [सं० रक्तालु] सुर्ख। लाल।

रात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। निशा।

रात्रिचारी—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

वि० रात के समय विचरनेवाला।

राधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधने की क्रिया। साधना। २ मिलना। प्राप्ति। ३ संतोष। तुष्टि। ४ साधन।

(पु)संज्ञा पुं० [आराधन]। पूजन।

राधना(पु)†—क्रि० स० [सं० आराधना] १ आराधना करना। पूजा करना। २. सिद्ध करना। पूरा करना। ३ काम निकालना।

राधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वैशाख की पूर्णिमा। २ प्रीति। ३ वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और एक गुरु सब मिलकर १३ अक्षर होते हैं, जैसे—कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा गा। ५. बिजली।

राधारमण—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

राधावल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

राधावल्लभी—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।

राधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १३ और ९ के विश्राम से २२ मात्राएँ होती हैं। लावनी इसी छंद में होती है, जैसे—सब सुधि बुधि गई क्यों भूल, गई मति मारी। माया को चेरो भयो, भूलि असुरारी। कटि जैहैं भव के फंद, पाप नसि जाई। रे सदा भजौ श्रीकृष्ण, राधिका माई।

रान—संज्ञा स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।

राना—संज्ञा पुं० दे० "राणा"।

(पु)क्रि० अ० [हिं० राचना] अनुरक्त होना।

रानी—संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] १ राजा की स्त्री। २ स्वामिनी। मालकिन। ३ प्रेयसी। प्रियतमा।

रानीकाजर—संज्ञा पुं० [हिं० रानी + काजल] एक प्रकार का धान।

राब—संज्ञा स्त्री० [सं० द्रावक] औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राबड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "रबड़ी"।

राम—संज्ञा पुं० [सं०] १ परशुराम। २ बलराम। बलदेव। ३ सूर्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र जो दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामचंद्र।

मुहा०—राम शरण होना=(१) साधु होना। विरक्त होना। (२) मर जाना। राम राम करना=(१) अभिवादन करना। प्रणाम करना। (२) भगवान् का नाम जपना। राम राम करके=बड़ी कठिनता से। राम राम हो जाना=मर जाना।

४ तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्। ६ एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसमें ६ और ८ के विराम से प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं और अंत में यगण होता है, जैसे—मुनिए हमारी, विनय मुरारी। दीजै हमारी, विपत्ति टारी।

रामकेड़ा—संज्ञा पुं० दे० "रामकेला"।

रामकेला—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० केला] १ एक प्रकार का बढ़िया केला। २ एक प्रकार का बढ़िया आम।

रामगिरि—संज्ञा पुं० दे० "रामटेक"।

रामगीती—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३६ मात्राएँ होती हैं, जैसे—यहि भाँति बरणे सुभट गण कहँ जीति लव रणधीर।

रामचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।

रामजश्री—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तोप।

रामजना—संज्ञा पुं० [हिं० राम+जना=उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] १ एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं। २ वर्णसंकर।

रामटेक—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० टेक=पहाड़ी] नागपुर जिले की एक पहाड़ी।

रामतरोई—संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।

रामता—संज्ञा स्त्री० [सं०] राम का गुण। रामपन।

रामतारक—संज्ञा पुं० [सं०] राम जी का मंत्र जो इस प्रकार है—रां रामाय नमः।

रामति(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० रमना] भिक्षा के लिये इधर उधर घूमना।

रामदल—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामचंद्र जी की बंदरोंवाली सेना। २ कोई बड़ी और प्रबल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।

रामदाना—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० दाना] मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।

रामदास—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।

रामदूत—संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान् जी।

रामधनुष—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

रामधाम—संज्ञा पुं० [सं०] साकेत लोक।

रामनवमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी नवमी जिस दिन राम जी का जन्म हुआ था।

रामना(पु)—क्रि० प्र० दे० "रमना"।

रामनामी—संज्ञा पुं० [सं० राम+नाम+ई (प्रत्य०)] [illegible] "राम राम" [illegible] प्रकार का [illegible]।

रामबाँस—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० बाँस] १ एक प्रकार का मोटा बाँस। २ केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा जिसके पत्तों के रेशे से रस्से बनते हैं।

रामबाण—वि० [सं०] १ जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो। तुरंत प्रभाव दिखानेवाला (औषध)। २ अव्यर्थ। अचूक।

रामभोग—संज्ञा पुं० [सं० राम+भोग] १ एक प्रकार का आम। २ एक प्रकार का चावल।

राममंत्र—संज्ञा पुं० दे० "रामतारक"।

रामरज—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।

रामरस—संज्ञा पुं० [सं० राम+रस] नमक।

रामराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत सुखदायक शासन।

रामरौला—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० रौला] व्यर्थ का हल्ला। शोरगुल।

रामलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राम के चरित्रों का अभिनय। २ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं और अंत में 'जगण' का होना आवश्यक होता है। उ०—अजर अमर अनंत जय जय चरित श्रीरघुनाथ। करत सुर नर सिद्ध अचरज श्रवण सुनि सुनि गाथ। काय मन वच नेम जानत शिला सम पर नारि। शिला ते पुनि परम सुंदरि करत नेक निहारि।

रामशर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

रामसनेही—संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० सनेही] वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वि० राम से स्नेह रखनेवाला। रामभक्त।

रामसुंदर—संज्ञा स्त्री० [सं० राम+सुंदर] एक प्रकार की नाव।

रामसेतु—संज्ञा पुं० [सं०] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर स्त्री। रमणी। उ०—बिहँसी धनि सुनि कै सति भाऊ। हौं रामा तू रावन राऊ।—पद्मावत। २ नदी। ३ लक्ष्मी। ४ [illegible]। ५ रुक्मिणी। [illegible]। ७ इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक उपजाति वृत्त। जिसके प्रथम दो चरण इंद्रवज्रा के और अंतिम दो चरण उपेंद्रवज्रा के होते हैं। उ०—रामै भजो मित्त सप्रेमधारो। दैहैं [illegible] तेरे सब दुःख टारी। सुनेम याही जब मत्य धारो। सुधाम अंते हरि के सिधारो। ८ आर्या छंद का १७ वाँ भेद। ९ आठ अक्षरों का एक वृत्त।

रामानंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी—वि० [हिं० रामानंद+ई (प्रत्य०)] रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामानुज—संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्र के छोटे भाई, लक्ष्मण आदि। २ श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य। वेदांत में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामचंद्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि कृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। यह आदिकाव्य है। २ तुलसी कृत "रामचरितमानस" नामक ग्रंथ।

रामायणी—वि० [सं० रामायणीय] रामायण का।

संज्ञा पुं० [सं० रामायण+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो रामायण की कथा कहता हो।

रामावत—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के समुद्रतट का शिवलिंग।

राय—संज्ञा पुं० [सं० राजा] १ राजा। २ सरदार। सामंत। ३ भाट। बंदीजन।
संज्ञा स्त्री० [फा०] संमति। मत। सलाह।
वि० १ वश। २ बढ़िया।

रायकरौंदा—संज्ञा पुं० [हिं० राय+करौंदा] एक प्रकार का बड़ा करौंदा।

रायज—वि० [अ०] जिसका रवाज हो। प्रचलित। चलनसार।

रायता—संज्ञा पुं० [सं० राजिकाक्त] नमकीन साग या बुँदिया आदि पड़ा हुआ दही। उ०—पानौरा रायता पकौरी। डुभकौरी मुँगछी सुठि सौरी।—सूर०।

रायबहादुर—संज्ञा पुं० [हिं० राय+फा० बहादुर] एक सम्मान की उपाधि जो भारत में अँग्रेजी सरकार की ओर से राजभक्त रईसों आदि को दी जाती थी।

रायभोग—संज्ञा पुं० दे० "राजभोग"।

रायमुनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० राय+मुनिया] लाल नामक पक्षी की मादा। सदिया।

रायरासि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० राजराशि] राजा का कोष। शाही खजाना।

रायल्टी—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह धन जो किसी आविष्कारक या ग्रंथकर्ता आदि को उसके आविष्कार या कृति से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में बराबर मिलता रहता है।

रायसा—संज्ञा पुं० दे० "रासो"।

रायसाहब—संज्ञा पुं० [हिं० राय+अ० साहब] एक सम्मान की उपाधि जो भारत में अँग्रेजी सरकार की ओर से राजभक्त रईसों आदि को दी जाती थी।

रार—संज्ञा पुं० [सं० राटि प्रा० राडि] झगड़ा। टंटा। हुज्जत। तकरार।

राल—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का बड़ा पेड़। २ इनका निर्यास जो "राल" नाम से प्रसिद्ध है। धूना। धूप।
संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १ पतला लसदार थूक। २ लार।
मुहा०—राल गिरना, चूना या टपकना = किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना।

राव—संज्ञा पुं० दे० "राय"।

रावचाव—संज्ञा पुं० [हिं० राव+चाव] लाड़ प्यार। दुलार।

रावट(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० रावल] राजमहल। उ०—रावट कनक सो तेकहँ भएऊ। रावट लंक मोहिं कै गएऊ।—पदमावत।

रावटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावट] १. कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर या डेरा। छोलदारी। २ कोई छोटा घर। उ०—जिहिं निदाघ दुपहर रहै भई माघ की राति। तिहिं उसीर की रावटी खरी आवटी जाति।—बिहारी०। ३. बारहदरी।

रावण—संज्ञा पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था। दशकंधर। दशानन।

रावत—संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. छोटा राजा। २ शूर। वीर। बहादुर। ३ सामंत। सरदार। ४. एक जाति।

रावन(पु)—वि० [सं० रमण] रमण करनेवाला। उ०—बिहँसी धनि सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तू रावन राऊ।—पदमावत।

रावनगढ़(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लंका"।

रावना(पु)—क्रि० स० [सं० रावण] रुलाना।

रावर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] रनिवास। राजमहल। अंतःपुर।
वि० [हिं० राउर] [स्त्री० रावरी] आपका।

रावराना—संज्ञा पुं० [हिं० राव+राना] राव और राणा के उपाधिधारी। छोटे बड़े राजा। उ०—देवल डिगाने राव राने मुरझाने अरु धरम ढहाना पन मेट्यो है पुराना को।—भूषण०।

रावल—संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] अंतःपुर। राजमहल। रनिवास। उ०—पुर मंदिर कंदरा सुंदर बनराई। रावल रस बास ढूँढ़ो सीता कहूँ न पाई।—पदमावत।
संज्ञा पुं० [सं० राजकुल, प्रा० राउल] स्त्री० रावलि, रावली] १ राजा। २ राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। ३ प्रधान। सरदार।

राशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढेर। पुंज। २ किसी का उत्तराधिकार। ३ क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारासमूह जो बारह हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन।

राशिचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल। भचक्र।

राशिनाम—संज्ञा पुं० [सं० राशिनामन्] किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है।

राष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. राज्य। २. देश। मुल्क। ३ प्रजा। ४. एक देश या राज्य में बसनेवाला जनसमुदाय।

राष्ट्रकूट—संज्ञा पुं० दे० "राठौर"।

राष्ट्रतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक प्रजातांत्रिक शासनप्रणाली में वह सर्वप्रधान शासक जो शासन करने के लिये चुना जाता है। २. भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का सभापति।

राष्ट्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० राष्ट्रवादी] वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रीय—वि० [सं०] राष्ट्र संबंधी। राष्ट्र का। विशेषतः अपने राष्ट्र या देश का।

राष्ट्रीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २ अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

रास—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे। २ एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस क्रीड़ा का अभिनय होता है।
संज्ञा स्त्री० [अ०] लगाम। बागडोर।
संज्ञा स्त्री० [सं० राशि] १ दे० "राशि" (१), (३)। २ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८+८+६ के विराम से २२ मात्राएँ और अंत में सगण होता है। ३ जोड़। ४. चौपायों का झुंड। ५ गोद। दत्तक। ६ सूद। ब्याज। ७ एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।
वि० [फा० रास्त] अनुकूल। ठीक। उ०—काँचे बारह परा जो पाँसा। पाके पैंत परी तनु रासा।—पदमावत।

रासक—संज्ञा पुं० [सं०] हास्य रस के नाटक का एक भेद जो केवल एक अंक का होता है।

रासधारी—संज्ञा पुं० [सं० रासधारिन्] वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।

रासनशीन—संज्ञा पुं० [सं० राशि+फा० नशीन] गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक। मुतबन्ना।

रासना—संज्ञा पुं० दे० "रास्ना"।

रासभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रासभी] १ गर्दभ। गधा। २ अश्वतर। खच्चर।

रासमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १ रासक्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली। २ रासधारियों का अभिनय।

रासमंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या टोली।

रासलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्णलीला संबंधी अभिनय।

रासविलास—संज्ञा पुं० [सं०] १. रासक्रीडा। २. आनंद मंगल।

रासायनिक—वि० [सं०] १ रसायन शास्त्र संबंधी। २ रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

रासि—संज्ञा स्त्री० दे० "राशि"।

रासु(पु)†—वि० [फा० रास्त] १ सीधा। सरल। २ ठीक।

रासो—संज्ञा पुं० [सं० रहस्य] १ पुरानी हिंदी का काव्य जिसमें किसी राजा के चरित्र, प्रेम और युद्ध आदि का वर्णन हो।

रास्त—वि० [फा०] १ सीधा। सरल। २ दुरुस्त। ठीक। ३ उचित। वाजिब।

रास्ता—संज्ञा पुं० [फा०] १ मार्ग। राह।

मुहा०—रास्ता देखना = प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। रास्ता पकड़ना = चल देना। चला जाना। रास्ता बताना = (१) चलता करना। टालना। (२) सिखाना। तरकीब बताना।

२ प्रथा। चाल। ३. उपाय। तरकीब।

रास्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंधनाकुली नामक कंद। घोड़रासन।

राह—संज्ञा पुं० दे० "राहु"।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मार्ग। रास्ता।

मुहा०—राह देखना या ताकना = प्रतीक्षा करना। राह पड़ना = डाका पड़ना। लूट पड़ना। राह लगना = (१) रास्ते से जाना। (२) अपना काम देखना। अपने काम से काम रखना।

२ प्रथा। चाल। ३ नियम। कायदा। संज्ञा स्त्री० दे० "रोहू"।

राहखर्च—संज्ञा पुं० [फा० राह+खर्च] रास्ते में होनेवाला खर्च। मार्गव्यय।

राहगीर—संज्ञा पुं० [फा०] मुसाफिर। पथिक।

राहचलता—संज्ञा पुं० [फा० राह+हिं० चलता] १ पथिक। राहगीर। बटोही। २. अजनबी। गैर।

राहचौरंगी†—संज्ञा स्त्री० दे० "नौगुहानी"।

राहजन—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा० राहजनी] डाकू। लुटेरा।

राहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आराम। सुख।

राहदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. राह पर चलने का महसूल। सड़क का कर।

यौ०—परवाना राहदारी = वह आज्ञा-पत्र जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने या माल ले जाने का अधिकार प्राप्त होता है।

२ चुंगी। महसूल।

राहना†(पु)—क्रि० अ० दे० "रहना"।

राहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] 'रहित' का भाव। खालीपन। अभाव।

राहिन—वि० [अ०] रेहन या बंधक रखनेवाला।

राही—संज्ञा पुं० [फा०] मुसाफिर। यात्री। पथिक।

राहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र जो चंद्रमा और सूर्य को ग्रसता है। २ पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक।

संज्ञा पुं० [सं० राघव] रोहू मछली।

राहुल—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

रिंगन—संज्ञा स्त्री० [सं० रिंगण] घुटनों के बल चलने की क्रिया। रेंगना। उ०—पुनि हरि आय यशोदा के गृह रिंगन लीला करिहै। —सूर०।

रिंगना(पु)—क्रि० अ० दे० "रेंगना"।

रिंगाना(पु)†—क्रि० स० [सं० रिंगण] १ रेंगने की क्रिया कराना। रेंगाना। २ घुमाना फिराना। चलाना (बच्चों के लिये)। उ०—मैं पठवति अपने लरिका को आवइ मन बहराइ। सूर श्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ। —सूर०।

रिंद—संज्ञा पुं० [फा०] १ धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। २ मनमौजी आदमी। स्वच्छंद पुरुष।

वि० [फा०] १ मतवाला। २. मस्त।

रिंदा†—वि० [फा० रिंद] निरंकुश। उद्दंड।

रिआयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। २ न्यूनता। कमी। ३ छूट। ४ खयाल। ध्यान। विचार।

रिआयती—वि० [अ० रिआयत+हिं० ई (प्रत्य०)] १ बिना मूल्य अथवा कम मूल्य में प्राप्त। २ विशेष छूट अथवा सुविधा संबंधी।

रिआया—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा।

रिकवँच, रिकवँछ—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बनता है।

रिकाब—संज्ञा स्त्री० दे० "रकाब"।

रिक्त—वि० [सं०] [संज्ञा रिक्तता] १. खाली। शून्य। २ निर्धन। गरीब।

रिक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रिक्त होने का भाव। खालीपन। २. खाली जगह।

रिक्शा—संज्ञा पुं० [जापानी जिन्‌रिक्शा या रिकिशा] एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी चलाते हैं।

रिच—संज्ञा पुं० दे० "ऋच"।

रिखभ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "ऋषभ"।

रिग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ऋक्"।

रिचा—संज्ञा स्त्री० दे० "ऋचा"।

रिच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० ऋक्ष] भालू।

रिज§—वि० [सं० ऋजु] दे० "ऋजु" (१)। उ०—सूधवउँ केरा रिज नमन तरुणी हेरहि वंक।

रिजु—वि० दे० "ऋजु"।

रिझकवार, रिझवार†—संज्ञा पुं० [हिं० रीझ+वार (प्रत्य०)] १ किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। २ रूप पर मोहित होनेवाला। उ०—मोहिं भरोसौ, रीझिहै उझकि झाँकि इक बार। रूप रिझावनहारु वह, ए नैना रिझवार।—बिहारी०। ३. अनुराग करनेवाला। प्रेमी। ४ कदरदान। गुणग्राहक।

रिझवारि—वि० स्त्री० [हिं० रिझवार] रिझानेवाली। उ०—ज्यों ज्यों तनु धारा किए जल प्यावति रिझवारि। पिए जात त्यों त्यों पथिक, बिरली बोख सँवारि।—काव्यनिर्णय।

रिझाना—क्रि० स० [सं० रंजन] १. किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना। २ अपना प्रेमी बनाना। अनुरक्त करना।
रिझायलⓊ†—वि० [हिं० √रीझ+आयल (प्रत्य०)] रीझनेवाला।
रिझाव—संज्ञा पुं० [हिं० √रीझ+आव (प्रत्य०)] प्रसन्न होने या रीझने का भाव।
रिझावनाⓊ†—क्रि० स० दे० "रिझाना"।
रिझौना—वि० [हिं० रिझावना] रिझानेवाला। उ०—लायो अरगजा गाल, श्रीमुख लगत रिझौनों।—नंददास०।
रिढ़ना†—क्रि० अ० [?] घसीटते हुए चलना।
रित, रितु—संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
रितवनाⓊ—क्रि० स० [हिं० रीता से ना० धा०] खाली करना।
रिताना—क्रि० स० [हिं० रीता से ना० धा०] खाली करना। रिक्त करना।
क्रि० अ० खाली होना। रिक्त होना।
रिद्धि—संज्ञा स्त्री० दे० "ऋद्धि"।
रिनⓊ—संज्ञा पुं० दे० "ऋण"।
रिनिआँ, रिनी†—वि० [सं० ऋण] जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार।
रिपु—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। दुश्मन। वैरी।
रिपुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैर। दुश्मनी।
रिपोर्ट—संज्ञा पुं० [अँ०] १ किसी घटना की सूचना। २ कार्यविवरण।
रिपोर्टर—संज्ञा पुं० [अँ०] समाचारपत्र का संवाददाता।
रिमझिम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
क्रि० वि० वर्षा की छोटी छोटी बूँदों से।
रियायत—संज्ञा पुं० दे० "रिआयत"।
रियासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० रियासती] १ राज्य। अमलदारी। २ अमीरी। रईसी। ३ वैभव। ऐश्वर्य।
रिरⓊ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रार] हठ। जिद।
रिरना†—क्रि० अ० [अनु०] गिड़गिड़ाना।
रिरिहा†—वि० [हिं० रिरना] बहुत गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक भीख माँगनेवाला।
रिलनाⓊ†—क्रि० अ० [हिं० रेलना] १ पैठना। घुसना। २. मिल जाना।
यौ०—रिलना मिलना=(१) अच्छी तरह मिलना। (२) मेल मिलाप रखना।
रिलमिल—संज्ञा स्त्री० [हिं० √रिल+√मिल] मेल जोल। मेल मिलाप।
रिवाज—संज्ञा पुं० [अ०] प्रथा। रस्म।
रिश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] नाता। संबंध।
रिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फा०] संबंधी। नातेदार।
रिश्वत—संज्ञा स्त्री० [अ०] घूस। उत्कोच।
रिश्वतखोर—वि० [अ०+फा०] रिश्वत खानेवाला। घूस लेनेवाला।
रिश्वती—वि० दे० "रिश्वतखोर"।
रिष्टⓊ†—वि० [सं० हृष्ट] १ प्रसन्न। २ मोटा ताजा।
रिष्यमूक—संज्ञा पुं० [सं० ऋष्यमूक] दक्षिण भारत का एक पर्वत।
रिस—संज्ञा स्त्री० [सं० √रिष्] क्रोध। गुस्सा।
मुहा०—रिस मारना=क्रोध को रोकना।
रिसना†—क्रि० स० [हिं० रसना] छन छनकर बाहर निकल जाना। रसना।
रिसवंतⓊ—वि० [हिं० रिस+वंत (प्रत्य०)] क्रोधी। उ०—धीरोदात्त सु वीर में, धीरोद्धत रिसवंत।—काव्यनिर्णय।
रिसवाना†—क्रि० स० दे० "रिसाना"।
रिसहा†—वि० [हिं० रिस] क्रोधी।
रिसहाया†—वि० [हिं० रिस] [स्त्री० रिसहाई] क्रुद्ध। कुपित। नाराज।
रिसाना†—क्रि० अ० [हिं० रिस से ना० धा०] क्रुद्ध होना।
क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।
रिसानीⓊ—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।
रिसाल†—संज्ञा पुं० [अ० इरसाल] राज्यकर।
रिसालदार—संज्ञा पुं० [फा०] घुड़सवार सेना का एक अफसर।
रिसाला—संज्ञा पुं० [फा०] घुड़सवारों की सेना। अश्वारोही सेना।
रिसिⓊ†—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"। उ०—रोम रोम प्रति मौतितन लखि लखि पति रति माइ। तिय हिय रिसिदावा बढ़ै दावा ज्यों तृन पाइ।—रससारांश।
रिसिआना, रिसियाना†—क्रि० अ० [हिं० रिसि से ना० धा०] क्रुद्ध या कुपित होना।
क्रि० अ० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।
रिसिकⓊ—संज्ञा स्त्री० [सं० रिषीक] तलवार।
रिसौहाँ—वि० [हिं० रिस+औहाँ (प्रत्य०)] १ क्रुद्ध सा। थोड़ा नाराज। २ क्रोध से भरा। कोपसूचक।
रिहल—संज्ञा स्त्री० [अ०] काठ की चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।
रिहा—वि० [फा०] [संज्ञा रिहाई] (बंधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ।
रिहाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] छुटकारा। मुक्ति।
रिहानाⓊ—क्रि० स० [फा० रिहा] मुक्त कराना। छुड़ाना।
रींधना—क्रि० स० दे० "राँधना"।
री—अव्य० [सं०] सखियों के लिये संबोधन। अरी। एरी।
रीछ—संज्ञा पुं० [सं० ऋक्ष] भालू।
रीछराजⓊ—संज्ञा पुं० [सं० ऋक्षराज] जामवंत।
रीझ—संज्ञा स्त्री० [सं० रंजन] १ किसी की किसी बात पर प्रसन्नता। २ मुग्ध होने का भाव।
रीझना—क्रि० अ० [सं० रंजन] १ किसी बात पर प्रसन्न होना। २. मोहित होना। मुग्ध होना। उ०—कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात। भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात।—बिहारी०।
रीठⓊ—संज्ञा स्त्री० [सं० रिष्ट] १ तलवार। २ युद्ध (हिं०)।
वि० अशुभ। खराब।
रीठा—संज्ञा पुं० [सं० रिष्ट] १ एक बड़ा जंगली वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
रीडर—संज्ञा स्त्री० [अँ०] किसी भाषा की शिक्षा देनेवाली आरंभिक पुस्तक।
संज्ञा पुं० [अँ०] १ किसी अधिकारी न्यायालय का पेशकार। २ विश्वविद्यालय के शिक्षकों की एक कोटि।
रीढ़—संज्ञा स्त्री० [सं० ?] पीठ के बीचोबीच की लंबी खड़ी हड्डी जिससे पसलियाँ मिली रहती हैं। मेरुदंड।

रीत—संज्ञा स्त्री० दे० "रीति"।

रीतना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रिक्त] खाली होना। रिक्त होना।

क्रि० स० खाली करना। रिक्त करना।

रीता—वि० [सं० रिक्त] खाली।

रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढंग। प्रकार। तरह। ढब। उ०—जाति मरी बिछुरी घरी जल सफरी की रीति। खिन खिन होति खरी खरी, अरी जरी यह प्रीति।—बिहारी०। २ रस्म। रिवाज। परिपाटी ३ कायदा। नियम। ४ साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है।

रीतिकाल—संज्ञा पुं० [सं० रीति+काल] हिंदी साहित्य के इतिहास का एक विशेष कालखंड जो लगभग संवत् १७०० वि० से १६०० तक माना जाता है।

रीषमूक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "ऋष्यमूक"।

रीस—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।

संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १ डाह। २ स्पर्द्धा। बराबरी।

रीसना—क्रि० अ० [हिं० रीस से ना० धा०] क्रुद्ध होना।

रुंज—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा। उ०—सखि ताल, मृदंग, उपंग, रुंज, मुरज, डफ गाजही।—नंददास०।

रुंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिना सिर का धड़। कबंध। उ०—मारु पच्छारु पुकारु दुहूँ दल रुंड झपट्टि दपट्टि लपट्टत।—काव्यनिर्णय। २ वह शरीर जिसके हाथ पैर कटे हों।

रुँदवाना—क्रि० स० [हिं० रौंदना का प्रे० रूप] पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना। उ०—अब नहिं राखौं उठाइ बैरी नहिं नान्हो। मारौं गज तें रुँदाइ मनहिं यह अनुमान्हो।—सूर०।

रुंधती(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।

रुँधना—क्रि० अ० [सं० रुद्ध] १ मार्ग न मिलने के कारण अटकना। रुकना। २ उलझना। फँस जाना। उ०—रुँधे रति संग्राम खेत नीके। एक ते एक रणवीर जोधा प्रबल मुरत नहिं नेक अति सबल जी के।—सूर०। ३ किसी काम में लगना। ४ घेरा जाना।

रु(पु)—अव्य० [हिं० अरु] और।

रुआँ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोम। रोआँ।

रुआना(पु)†—क्रि० स० दे० "रुलाना"।

रुआब—संज्ञा पुं० दे० "रोब"।

रुई—संज्ञा स्त्री० दे० "रूई"।

रुकना—क्रि० अ० [हिं० रोक] १ ठहर जाना। अवरुद्ध होना। अटकना। २ किसी कार्य का बीच में ही बंद हो जाना। ३ किसी चलते क्रम का बंद होना।

रुकमंगद—संज्ञा पुं० दे० "रुक्मांगद"।

रुकमिनि—संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"

रुकवाना—क्रि० स० [हिं० रुकना का प्रे० रूप] रोकने का काम दूसरे से कराना।

रुकाव—संज्ञा पुं० दे० "रुकावट"।

रुकावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √ रुक+आवट प्रत्य०)] १ रुकने की क्रिया या भाव। रोक। २ बाधा। विघ्न।

रुकुम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रुक्म"।

रुकुमा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रुक्मी"।

रुक्का—संज्ञा पुं० [अ० रुक्अ] १ छोटा पत्र या चिट्ठी। २ पुरजा। परचा। ३ वह कागज जो ऋण देनेवाला ऋण लेनेवालों से ऋण के प्रमाणस्वरूप लिखवाता है

रुख(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० रुक्ष] पेड़। वृक्ष।

रुक्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ण। सोना। २ धतूर। धतूरा। ३ रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्मवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण मगण, सगण और अंत्य गुरु, सब मिलाकर १० वर्ण हों। उ०—ताहि रिझैए, ज्यों ब्रज-बाला। डारि गले में चंपकमाला। रूपवती। चंपकमाला।

रुक्मसेन—संज्ञा पुं० [सं०] रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा।

रुक्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।

रुक्मी—संज्ञा पुं० [सं० रुक्मिन्] राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष—वि० [सं० रूक्ष] १ जिसमें चिकनाहट न हो। रूखा। २ ऊबड़खाबड़। खुरदरा। ३ नीरस। ४ सूखा। शुष्क।

रुक्षता—संज्ञा स्त्री० [सं० रूक्षता] रुखाई। रूखापन।

रुख—संज्ञा पुं० [फा०] १ कपोल। गाल। २ मुख। मुँह। ३ आकृति। चेष्टा। ४. मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। ५ कृपादृष्टि। ६ सामने या आगे का भाग। ७ शतरंज का एक मोहरा।

क्रि० वि० १ तरफ। ओर। २ सामने।

रुखसत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आज्ञा। परवानगी। २ रवानगी। कूच। प्रस्थान। ३ काम से छुट्टी। अवकाश।

वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।

रुखसताना—संज्ञा पुं० [फा०] वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय। बिदाई।

रुखसती—संज्ञा स्त्री० [अ० रुखसत] बिदाई, विशेषत दुलहिन की बिदाई।

रुखसार—संज्ञा पुं० [फा०] कपोल। गाल।

रुखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूखा+आई (प्रत्य०)] १ रूखा होने की क्रिया या भाव। रूखापन। रुखावट। २ शुष्कता। खुश्की। ३ शील का त्याग। बेमुरौवती।

रुखाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० रूखा से ना० धा०] १ रूखा होना। २ नीरस होना। सूखना।

रुखानी—संज्ञा स्त्री० [सं० रोक+खनित्र] बढ़इयों का लोहे का एक औजार।

रुखावट—संज्ञा स्त्री० दे० "रुखाई"

रुखिता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रुषिता] मानवती नायिका।

रुखौहाँ—वि० [हिं० रूखा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रुखौहीं] रुखाई लिए हुए। रूखा सा।

रुग्न—वि० [सं० रुग्ण] रोगी। बीमार।

रुच(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "रुचि"।

रुचना—क्रि० अ० [हिं० रुच से ना० धा०] रुचि के अनुकूल होना। भला होना। अच्छा लगना।

मुहा०—रुच रुच=बहुत रुचि से। चुन चुनकर।

रुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० रुचित, संज्ञा० रुचिता] १. प्रवृत्ति। तबीयत। २ अनुराग। प्रेम। चाह। इच्छा। ३. किरण। ४ शोभा। सुंदरता। ५ खाने की इच्छा। भूख। ६ स्वाद। ७ एक अप्सरा का नाम।

वि० फबता हुआ। योग्य। मुनासिब।

रुचिकर—वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला। दिलपसंद।

रुचिकारक—वि० दे० "रुचिकर"।

रुचिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंदर्य। २ रोचकता। ३ अनुराग।
रुचिमान—वि० [सं० रुचि+हिं० मान (प्रत्य०)] मनोहर। सुंदर। रुचिर।
रुचिर—वि० [सं०] [संज्ञा रुचिरता] १ सुंदर। २ मीठा।
रुचिरवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्न का एक प्रकार का सहार।
रुचिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ १६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके चौकलों में जगण का निषेध है। उ०—मत्त धरौ मनु और कला, जन गत सुधारि रचौ रुचिरा। संत करै उपकार सदा, जासों उत्कीर्ति रहै सुचिरा। २. वह छंद जिसके विषम चरणों में १६ और सम में १४ मात्राएँ हों। इसके अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—मेरे मन की कीजै पूरी, इतनी हरि मेरी मानो। ३. १३ वर्णों का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, भगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु हो। उ०—सुधन्य जो, छवि रुचिरा हिए धरैं। न वे कभीं, यहि भवजाल में परैं।
रुचिराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० रुचिर+हिं० आई (प्रत्य०)] सुंदरता। मनोहरता।
रुचिवर्द्धक—वि० [सं०] १ रुचि उत्पन्न करनेवाला। २. भूख बढ़ानेवाला।
रुच्छ(पु)—वि० दे० "रूखा"।
संज्ञा पुं० दे० रूख"।
रुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ भंग। भौंग। २ वेदना। कष्ट। ३ क्षत। घाव।
रुजाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कष्टों का समूह।
रुजी—वि० [सं० रुज] अस्वस्थ। बीमार।
रुजू—वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो। प्रवृत्त।
रुझना(पु)†—क्रि० अ० [सं० रुद्ध] घाव आदि का भरना या पूजना।
क्रि० अ० दे० 'उलझना"।
रुझान—संज्ञा पुं० [अ०] किसी ओर आकृष्ट अथवा प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। प्रवृत्ति। झुकाव।
रुठ—संज्ञा पुं० [सं० रुष्ट] क्रोध। गुस्सा।
रुठाना—क्रि० स० [सं० रुष्ट] नाराज करना।
रुणित—वि० [सं०] झनकारता या बजता हुआ। उ०—चरण रुणित नूपुर ध्वनि मानो सर विहरत हैं बाल मराल।—सू०।

रुत—संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षियों का शब्द। कलरव। २. शब्द। ध्वनि। ३ कांति। चमक। आव। पानी।
रुतबा—संज्ञा पुं० [अ०] १ ओहदा। पद। २. इज्जत। प्रतिष्ठा।
रुदन—संज्ञा पुं० [सं० रोदन] रोना। क्रंदन। उ०—सकल सुरभी यूथ दिन प्रति रुदति पुर दिश धाइ।
रुदराछ(पु)†—संज्ञा पुं० दे "रुद्राक्ष"।
रुदित—वि० [सं०] जो रो रहा हो।
रुद्ध—वि० [सं०] १. घेरा हुआ। वेष्टित। आवृत। २. मुँदा हुआ। बंद। ३ जिसकी गति रोक ली गई हो।
यौ०—रुद्धकंठ=जो प्रेम आदि के कारण बोलने में असमर्थ हो गया हो।
रुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार के गणदेवता जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं। २ ग्यारह की संख्या। उ०—तेहि मधि कुश करि विटप सुहावा। रुद्र सहस योजन कर गावा। —विश्रामसागर। ३ शिव का एक रूप। ४ रौद्र रस।
वि० भयंकर। डरावना। भयानक।
रुद्रक†—संज्ञा पुं० [सं० रुद्राक्ष] रुद्राक्ष।
रुद्रगण—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार शिव के पारिषद।
रुद्रजटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप।
रुद्रट—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काव्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है।
रुद्रतेज—संज्ञा पुं० [सं० रुद्रतेजस] कार्तिकेय।
रुद्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
रुद्रपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
रुद्रयामल—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें भैरव और भैरवी का संवाद है।
रुद्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है।
रुद्रवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्रवती] एक प्रसिद्ध वनौषधि जो दिव्यौषधि वर्ग में है।
रुद्रविंशति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रभव आदि साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम बीस वर्षों का समूह। रुद्रबीसी।

रुद्राक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इस वृक्ष का गोल बीज। प्राय शैव लोग इनकी मालाएँ पहनते हैं।
रुद्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। भवानी। २ रुद्रजटा नाम की लता।
रुद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्र+हिं० ई (प्रत्य०)] वेद के रुद्रानुवाक् या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ।
रुधिर—संज्ञा पुं० [सं०] रक्त। शोणित। लहू।
रुधिराशी—वि० [सं०] लहू पीनेवाला।
रुनझुन—संज्ञा स्त्री० [सं०] नूपुर, किंकणी आदि का शब्द। कलरव। झनकार। उ०—कटि किंकिणी रुनझुन सुनि तन की हम करत किलकारी। —सूर०।
रुनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण+हिं० आई (प्रत्य०)] अरुणता। लाली।
रुनित(पु)—वि० [सं० रुणित] बजता हुआ।
रुनुकझुनुक—संज्ञा स्त्री० दे० [अनु०] "रुनझुन"। उ०—रुनुक झुनुक नूपुर बाजत पग यह अति है मनहरनी। —सूर०।
रुपना—क्रि० अ० [हिं० रोपना का अ० रूप] १ रोपा जाना। जमीन में गाड़ा या लगाया जाना। २ डटना। अड़ना। ३ ठनना।
रुपमनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूपवती] सुंदरी स्त्री।
रुपया—संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १ एक भारतीय सिक्का जो पुराने ६४ और नए १०० पैसे का अथवा पौंड (स्टर्लिंग) का करीब साढ़े तेरहवाँ हिस्सा माना जाता है। २ धन। संपत्ति।
रुपहला—वि० [हिं० रूपा] [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का। चाँदी का सा।
रुबाई—संज्ञा स्त्री० [अ०] चार चरणों का पद्य जिसके पहले, दूसरे और चौथे चरणांत के तुक समान हों। चौबोला।
रुमंच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रोमांच"।
रुमन्वान्—संज्ञा पुं० [सं० रुमन्वत] १ एक प्राचीन ऋषि। २ एक पर्वत का नाम।
रुमांचित(पु)—वि० दे० "रोमांचित"।
रुमाली—संज्ञा स्त्री० [फा० रूमाल] छोटा रूमाल। रूमाल।
रुमावली(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।
रुराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूरा+ई (प्रत्य०)] सुंदरता।

रुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. कस्तूरी मृग। २ एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. एक भैरव का नाम।

रुरुआ—संज्ञा पुं० [हिं० ररना] बड़ी जाति का उल्लू।

रुरुक्ष—वि० [सं०] रूखा। रुक्ष।

रुलना†—क्रि० अ० [सं० लुलन=इधर उधर डोलना] इधर उधर मारा मारा फिरना।

रुलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना] १ रोने की क्रिया या भाव। २ रोने की प्रवृत्ति।

रुलाना—क्रि० स० [हिं० रोना का प्रे०रूप] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

क्रि० स० [हिं० रुलना का स० रूप] १ इधर उधर फिराना। २. खराब करना।

रुवाँ†—संज्ञा पुं० [हिं० रोयाँ] सेमल के फूल का घूआ। भूआ।

रुष—संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध। गुस्सा।

संज्ञा पु० "रूख"।

रुष्ट—वि० [सं०] क्रुद्ध। नाराज। कुपित।

रुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रसन्नता।

रुसना(पु)—क्रि० अ० दे० "रूसना"।

रुसवा—वि० [फा०] [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो। निंदित।

रुसित(पु)—वि० [सं० रुषित] रुष्ट। नाराज।

रुसूम—संज्ञा पुं० दे० "रसूम"।

रुस्तम—संज्ञा पुं० [अ०] १ फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २ भारी वीर।

मुहा०—छिपा रुस्तम=वह जो देखने में सीधा साधा पर वास्तव में बहुत वीर हो।

रुहठि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोहट=रोना] रूठने की क्रिया या भाव।

रुहिर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रुधिर"।

रुहेलखंड—संज्ञा पुं० [हिं० रुहेला+सं० खंड] अवध के उत्तरपश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश।

रुहेला—संज्ञा पुं० [?] पठानों की एक जाति जो प्राय रुहेलखंड में बसी है।

रूँध—वि० [सं० रुद्ध] रुका हुआ। अवरुद्ध।

रूँधना—क्रि० स० [सं० रुधन] १ कँटीले झाड़ आदि से घेरना। बाड़ लगाना। २ चारों ओर से घेरना। रोकना। छेकना।

रू—संज्ञा पुं० [फा०] १ मुँह। चेहरा। २ द्वार। कारण। ३ आगा। सामना।

रूई—संज्ञा स्त्री० [सं० रोम] १ कपास के कोष के अंदर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा गद्दे, रजाई या जाड़े के पहनने के कपड़ों में भरते हैं। २ बीजों के ऊपर का रोआँ।

रूईदार—वि० [हिं० रूई+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें रूई भरी गई हो।

रूख—संज्ञा पुं० [वै० रुक्ष] पेड़। वृक्ष। उ०—बन डोंगर ढूँढत फिरी घर मारग तजि गाउँ। बूझौं द्रुम प्रति रूख ए, कोउ कहै न पिय को नाउँ। —सूर०।

वि० दे० "रूखा"।

रूखड़ा†—संज्ञा पुं० [हिं० रूख+ड़ा (प्रत्य०)] पेड़। वृक्ष।

रूखना(पु)—क्रि० अ० [सं० रुष] रूठना।

रूखा—वि० [सं० रुक्ष] १ जो चिकना न हो। अस्निग्ध। २ जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े हों। ३. जो खाने में स्वादिष्ट न हो। सीठा।

मुहा०—रूखा सूखा=जिसमें चिकना और चरपरा पदार्थ न हो। बहुत साधारण भोजन।

४ सूखा। शुष्क। नीरस। ५. खुरदरा। ६ नीरस। उदासीन। ७ परुष। कठोर।

मुहा०—रूखा पड़ना या होना=(१) बेमुरौवती करना। (२) क्रुद्ध होना। नाराज होना। उ०—भोजन देहु भए वे भूखे। यह सुनिकै ह्वैगे वे रूखे। —सूर०।

८ उदासीन। विरक्त।

रूखापन—संज्ञा पुं० [हिं० रूखा+पन (प्रत्य०)] रूखा होने का भाव। रुखाई।

रूचना(पु)—क्रि० स० दे० "रुचना"।

रूझना(पु)—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

रूठ, रूठन—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव। नाराजगी।

रूठना—क्रि० अ० [सं० रुष्ट] नाराज होना। कोप करना। मान करना।

रूड़, रूड़ा—वि० [हिं० रूरा] श्रेष्ठ। उत्तम।

रूढ़—वि० [सं०] [स्त्री० रूढ़ा] १ चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. उत्पन्न। जात। ३ प्रसिद्ध। ख्यात। ४ गँवार। उजड्ड। ५ कठोर। कड़ा। ६ अकेला। ७ अविभाज्य। ८ परंपरागत। प्रचलित।

संज्ञा पुं० वह शब्द या अर्थ जो व्युत्पत्ति से भिन्न हो। यौगिक का उलटा। रूढ़ि।

रूढ़यौवना—संज्ञा स्त्री० दे० "आरूढ़-यौवना"।

रूढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जो किसी रूढ़ अर्थ के कारण हो, व्युत्पत्तिगत अर्थ के आधार पर नहीं।

रूढ़ि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चढ़ाई। चढ़ाव। २ उभार। उठान। ३ उत्पत्ति। जन्म। ४ ख्याति। प्रसिद्धि। ५ प्रथा। चाल। ६. विचार। निश्चय। ७ रूढ़ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।

रूनी—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

रूप—संज्ञा पु० [सं०] १ शकल। सूरत।

यौ०—रूपरेखा=आकार। शकल। ढाँचा।

२ स्वभाव। प्रकृति। ३ सौंदर्य।

मुहा०—रूप हरना=लज्जित करना।

यौ०—रूपरेखा=(१) चिह्न। (२) पता।

४ शरीर। देह।

मुहा०—रूप लेना=रूप धारण करना।

५ वेष। भेस।

मुहा०—रूप भरना=भेस बनाना।

६ दशा। अवस्था। ७ समान। तुल्य। सदृश। ८ चिह्न। लक्षण। आकार। ९ रूपक। (पु) १० चाँदी। रूपा।

वि० रूपवान्। खूबसूरत।

रूपक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूर्ति। प्रतिकृति। २ वह काव्य जिसका अभिनय किया जाता है। दृश्यकाव्य। इसके प्रधान दस भेद हैं— नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। ३ एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप करके उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेद-रूप मे किया जाता है। ४ रुपया।

रूपकरण—संज्ञा पुं० [सं० रूप+करण] एक प्रकार का घोड़ा।

रूपकातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाते हैं।

रूपकार—संज्ञा पुं० [सं०] मूर्ति बनानेवाला।

रूपक्राता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रूपगर्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो।

रूपघनाक्षरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ३२ वर्णों का एक प्रकार का दण्डक छंद जिसके अंत में गुरु लघु हों।

रूपजीविनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

रूपजीवी—संज्ञा पुं० [सं०] बहुरूपिया।

रूपधर—संज्ञा पुं० [सं०] रूप धारण करने वाला। रूपधारी।

रूपधारी—संज्ञा पुं० दे० "रूपधर"।

रूपमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का फूल। २ एक प्रकार का धान।

रूपमनी(पु)—वि० [हिं रूपमान] रूपवती।

रूपमय—वि० [हिं०रूप+मय] [स्त्री० रूपमयी] अति सुंदर। बहुत खूबसूरत। उ०—नीलनिचोल छाल भइ फनिमनि भूषन रोम रोम पट उदित रूपमय। —सूर०।

रूपमान(पु)—वि० दे० "रूपवान्"।

रूपमाला—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूप+माला] २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें ४ वीं मात्रा पर यति हो और अंत में दीर्घ ह्रस्व का क्रम रहे। उ०—रत्न रिमि कल रूपमाला, सजिए मानंद राम ही के शरण में रहि पाइए आनंद। इसे मदन छंद भी कहते हैं।

रूपमाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ दीर्घ वर्णों का एक छंद।

रूपरूपक—संज्ञा पुं० [सं० रूप+रूपक] रूपकालंकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम।

रूपवत—वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] खूबसूरत। रूपवान्। सुंदर। उ०—तापसी को वेष किए राम रूपवत किधौं मुक्ति फल दोऊ टूटे पुण्य फल डारि ते। —हनुमन्नाटक।

रूपवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गौरी नामक छंद। २ चंपकमाला वृत्त का एक नाम।

वि० स्त्री० सुंदरी। खूबसूरत।

रूपवान्, रूपवान—वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] सुंदर। रूपवाला। खूबसूरत।

रूपसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

वि० सुंदरी। उ०—बोलति क्यों न सुधा सी धारा। डोलति क्यों न रूपसी दारा। —नंददास०।

रूपा—संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १ चाँदी। २ घटिया चाँदी। ३ स्वच्छ सफेद रंग का घोड़ा। नुकरा।

रूपित—संज्ञा पुं० [सं०] वह उपन्यास, जिसमें ज्ञान, वैराग्यादि पात्र हों।

रूपी—वि० [सं० रूपिन्] [स्त्री० रूपिणी] १ रूपविशिष्ट। रूपवाला। रूपधारी। २ तुल्य। सदृश।

रूप्यक—संज्ञा पुं० [सं०] रुपया।

रूबकार—संज्ञा पुं० [फा०] १ सामने उपस्थित करने का भाव। पेशी। २ अदालत का हुक्म। ३. आज्ञापत्र।

रूबरू—क्रि० वि० [फा०] समुख। सामने।

रूम—संज्ञा पुं० [फा०] टर्की या तुर्की देश का एक नाम।

संज्ञा पुं० [अँ०] बड़ी कोठरी। कमरा।

रूमना(पु)—क्रि० स० [हिं० झूमना का अनु०] झूमना। झूलना।

यौ०—रूम झूमकर = उमड़ घुमड़कर। मस्ती से।

रूमाल—संज्ञा पुं० [फा०] १ कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ मुँह पोंछते हैं। २ चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमाली—संज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली"।

रूमी—वि० [फा०] १ रूम देश संबंधी। रूम का। २ रूम देश का निवासी।

रूरना(पु)—क्रि० अ० [सं० रोरवण] चिल्लाना। उ०—कौन कहाँ कौन सुनि आई केहि रूप रथ की धूरि। सबहि सबै चलो माधव के ना तौ मरिहौ रूरि।—सूर०।

रूरा—वि० [सं० रूढ़=प्रसिद्ध] [स्त्री० रूरी] १ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २ सुंदर। उ०—नूपुर ऊपर चूरा रूरा, जनु शृंखल झनकाइ —नंददास०। ३ बहुत बड़ा।

रूल—संज्ञा पुं० [अँ०] १ नियम। कायदा। २ वह लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी लकीरें खींची जाती हैं। ३ सीधी खींची हुई लकीर।

रूलना—क्रि० स० [?] दबाना।

रूलर—संज्ञा पुं० [अँ०] १ शासक। राजा। २ सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा।

रूष—संज्ञा पुं० दे० "रूख"।

रूषीकेश(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृषीकेश] इंद्रियों का स्वामी। संयमी।

रूस—संज्ञा पुं० [अँ० रशा] योरोप और एशिया के उत्तर में स्थित एक बड़ा देश।

रूसना—क्रि० अ० दे० "रूठना"। उ०—यह उपकार तुम्हारो सजनी रूसे कान्ह मिलाए री।—सूर०।

रूसा—संज्ञा पुं० [सं० रूपक] अड़ूसा। अरूसा।

संज्ञा पुं० [सं० रोहिण] एक सुगंधित घास जिससे तेल निकाला जाता है।

रूसी—वि० [हिं० रूस] १ रूस देश का निवासी। २ रूस देश का।

संज्ञा स्त्री० रूस देश की भाषा।

संज्ञा स्त्री० [देश०] सिर के चमड़े पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।

रूह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आत्मा। जीवात्मा। २ सत्त। सार। ३ इत्र का एक भेद।

रूहना(पु)—क्रि० अ० [सं० रोहण] चढ़ना। उमड़ना।

क्रि० स० [हिं० रूँधना] आवेष्टित करना। घेरना।

रूहानी—वि० [अ०] १ रूह या आत्मा संबंधी। २ आध्यात्मिक।

रेंकना—क्रि० अ० [अनु०] १ गदहे का बोलना। २ बुरे ढंग से बोलना।

रेंगना—क्रि० अ० [सं० रिंगण] [स० क्रि० रेंगाना] १ च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना। २ धीरे धीरे चलना। उ०—कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मग में कोउ घर में ते निकसे नाहिं।—सूर०।

रेंट—संज्ञा पुं० [देश०] नाक का मल।

रेंड़—संज्ञा पुं० [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

रेंड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेंड़] रेंड़ के बीज।

रे—अव्य० [सं०] एक तुच्छतासूचक संबोधन।

संज्ञा पुं० [सं० ऋषभ] ऋषभ स्वर।

रेख—संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा] १ लकीर।

मुहा०—रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना=(१) लकीर बनाना। (२) (कहने में) जोर देना। प्रतिज्ञा करना।

२ चिह्न। निशान। ३ गिनती। गणना। शुमार। ४ नई निकलती हुई मूँछें।

मुहा०—रेख भीजना या भीनना=निकलती हुई मूँछों का दिखाई पड़ना।

रेखता—संज्ञा पुं० [फा०] अरबी, फारसी, तुरकी आदि के शब्दों से मिश्रित प्रारंभिक उर्दू के पद्य।

रेखनाⓅ—क्रि० स० [सं० रेखन या लेखन] १ रेखा खींचना। लकीर खींचना। २ खरोंचना। खरोंच डालना।

रेखांकण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्र का खाका बनाने के लिये रेखाएँ अंकित करना। २ दे० "रेखाचित्र"।

रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूत के आकार का लंबा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २ किसी वस्तु का सूचक चिह्न।

यौ०—कर्मरेखा = भाग्य का लेख। रूप-रेखा = दे० "रूप"।

३ गणना। शुमार। गिनती। ४ आकृति। आकार। सूरत। ५ हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का निर्णय होता है।

रेखाकर्म—संज्ञा पुं० दे० "रेखांकन"।

रेखागणित—संज्ञा पुं० [सं०] गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं। ज्यामिती।

रेखाचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र। खाका।

रेखित—वि० [सं० रेखा] १ जिसपर रेखा या लकीर पड़ी हो। २ फटा हुआ।

रेग—संज्ञा स्त्री० [फा०] बालू।

रेगमाल—संज्ञा पुं० [फा० रेग+हिं० मलना] एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर लकड़ी, धातु आदि साफ की जाती है।

रेगिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] बालू का मैदान। मरु देश।

रेचक—वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे। दस्तावर।

संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींची हुई साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है। उ०—पूरक कुंभक रेचक करई। उलटि ध्यान त्रिकुटी को धरई। —विश्रामसागर।

रेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस्त लाना। कोष्ठ शुद्ध करना। २ जुलाब।

रेचनाⓅ—क्रि० स० [सं० रेचन] वायु या मल को बाहर निकालना। उ०—प्रथमै सूरज मेदिनी पूरै पिंगल बात। रेचै बाँवे रोकि कछु हरै वायु रुज गात। —विश्रामसागर।

रेजगारी—संज्ञा स्त्री० दे० "रेजगी"।

रेजगी—संज्ञा स्त्री० [फा० रेजा] १ दुअन्नी चवन्नी आदि छोटे सिक्के। २ छोटे खंड या कतरन आदि।

रेजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २. नग। थान। अदद।

रेडियम—संज्ञा पुं० [अँ०] एक उज्वल मूल द्रव्य (धातु) जिसमें बहुत शक्ति संचित रहती है।

रेडियो—संज्ञा पुं० [अँ०] ध्वनियों को सुनने और भेजने का बेतार का यंत्र।

रेड़ना†—क्रि० स० [?] १ लुढ़कना। २ घसीटते हुए चलने में प्रवृत्त करना। ३ रुक रुककर बोलना। धीरे धीरे गिड़गिड़ाना।

रेड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रिड़ना] बैलगाड़ी। लढ़िया।

रेणु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूल। २ बालू। ३ अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

रेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालू। रेत। २ रज। धूल। ३ पृथ्वी। ४ परशुराम की माता का नाम।

रेत—संज्ञा पुं० [सं० रेतस्] १ वीर्य। शुक्र। २ पारा। ३ जल।

संज्ञा स्त्री० [सं० ?] १ बालू। २ बलुआ मैदान। मरुभूमि।

रेतना—क्रि० स० [हिं० रेत से ना० धा०] १ रेती से रगड़कर किसी वस्तु में से छोटे छोटे कण गिराना। २ औजार से रगड़कर काटना।

मुहा०—गला रेतना = हानि पहुँचाना।

रेता—संज्ञा पुं० [हिं० रेत] १. बालू। २. मिट्टी। ३ बालू का मैदान।

रेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेतना] एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण कटकर गिरते हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई जमीन। बलुआ किनारा।

रेतीला—वि० [हिं० रेत+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] बलूवाला। बलुआ।

रेनुⓅ—संज्ञा पुं० दे० "रेणु"।

रेफ—संज्ञा पुं० [सं०] १ हलंत रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहता है, जैसे—सर्प, दर्प, हर्ष में। २. रकार (र्)। ३ अधम। उ०—रेफ समीरध जाहिर वास सवारहि जा धरमी सफरे। —काव्यनिर्णय।

रेल—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ लोहे की पटरियों पर चलनेवाली गाड़ी जिसमें कई डब्बे होते हैं। रेलगाड़ी। २ लोहे की पटरी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना] १ बहाव। धारा। २ आधिक्य। भरमार।

रेलठेल—संज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल"।

रेलना—क्रि० स० [देश०] १. आगे की ओर ढकेलना। धक्का देना। २. अधिक भोजन करना।

क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।

रेलपेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेल+√पेल] १ भारी भीड़। २ भरमार। अधिकता।

रेलमेल—संज्ञा पुं० [हिं० रेल+मेल] मेलजोल। हेलमेल।

रेलवे—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ रेलगाड़ी की पटरी। २ रेल का महकमा।

रेला—संज्ञा पुं० [देश०] १ रेल का प्रवाह। बहाव। तोड़। २ समूह में चढ़ाई। धावा। दौड़। ३ धक्कमधक्का। ४ अधिकता। बहुतायत।

रेवंद—संज्ञा पुं० [फा०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवंद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है।

रेवड़—संज्ञा पुं० [देश०] भेड़ बकरी का झुंड। लेहड़ा। गल्ला।

रेवड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई। सुथिया।

रेवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्ताईसवाँ नक्षत्र जो ३२ तारों से मिलकर बना है। २ गाय। ३ दुर्गा। ४ बलराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थी।

रेवतीरमण—संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।

रेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नर्मदा नदी। २ काम की पत्नी रति। ३ दुर्गा। ४ रीवाँ राज्य। बघेलखंड।

रेशम—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं। यह तंतु कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं। कौशेय।

रेशमी—वि० [फा०] रेशम का बना हुआ।
रेशा—संज्ञा पुं० [फा०] तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों ... से निकलता है।
रेष(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रेख"।
रेस—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ घोड़ों की दौड़ जिसमें प्रतियोगिता होती है। २ दौड़।
रेह—संज्ञा स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।
रेहन—संज्ञा पुं० [फा०] महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब कर्ज का रुपया अदा हो जाय, तब वह माल या जायदाद वापस कर दे। बंधक। गिरवी।
रेहनदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।
रेहननामा—संज्ञा पुं० [फा०] वह कागज जिसपर रेहन की शर्तें लिखी हों।
रेहल—संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल"।
रेहू—संज्ञा स्त्री० दे० "रोहू"।
रैअति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रैयत"।
रैकेट—संज्ञा पुं० [अं०] टेनिस या बैडमिंटन के खेल में गेंद मारने का डंडा जिसका छिद्रमय अगला भाग वर्तुलाकार और ताँत से बुना हुआ होता है।
रैतुआ—संज्ञा पुं० दे० "रायता"।
रैदास—संज्ञा पुं० १ चमार जाति के एक प्रसिद्ध भक्त जो रामानंद के शिष्य और कबीर के समकालीन थे। २ चमार।
रैन, रैनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात्रि।
रैनिचर—संज्ञा पुं० [सं० रजनिचर] राक्षस।
रैयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।
रैयाराव—संज्ञा पुं० [हिं० राजा+राव] छोटा राजा।
रैल—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेला] १ प्रवाह। रेला। २ समूह। झुंड। उ०—सकरसैल सी चंद्रिकाफैल सी मारसरैल सी हंसकुमार सी।—काव्यनिर्णय।
रैवतक—संज्ञा पुं० [सं०] गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।
रोंगटा—संज्ञा पुं० [सं० रोमक] सारे शरीर पर के बाल।
मुहा०—रोंगटे खड़े होना=किसी भयानक कांड को देख या सोचकर शरीर में बहुत क्षोभ उत्पन्न होना।
रोंगटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना] खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।
रोंव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोआँ। लोम।
रोआं†—संज्ञा पुं० दे० "रोयाँ"।
रोआब†—संज्ञा पुं० [अ० रोअब] रोब। आतंक।
रोउँ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "रोव"।
रोऊ(पु)—वि० दे० "रोना"।
रोक—संज्ञा स्त्री० [सं० रोधक] १ गति में बाधा। अटकाव। छेंक। अवरोध। २ मनाही। निषेध। ३ काम में बाधा। ४ रोकनेवाली वस्तु।
संज्ञा पुं० दे० "रोकड़"।
रोकटोक, रोकथाम—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोक+√टोक, रोक+√थाम] १ बाधा। प्रतिबंध। २ मनाही। निषेध।
रोकड़—संज्ञा स्त्री० [सं० रोक=नकद] १ नकद रुपया पैसा आदि। २ जमा। धन। पूँजी।
रोकड़बही—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोकड़+बही] वह बही जिसमें नगद रुपए पैसे का हिसाब रखा जाता है।
रोकड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० रोकड़+इया (प्रत्य०)] खजांची।
रोकना—क्रि० स० [हिं० रोक] १ चलने या बढ़ने न देना। २. कहीं जाने से मना करना। ३ किसी चली आती हुई बात को बंद करना। ४. छेंकना। ५ अड़चन डालना। बाधा डालना। ६ ऊपर लेना। ओढ़ना। ७ वश में रखना। काबू में रखना।
रोख(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "रोष"।
रोग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोगी, रुग्न] व्याधि। मर्ज। बीमारी।
रोगदई, रोगदैय—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना ?] १ बेईमानी। २ अन्याय।
रोगन—संज्ञा पुं० [फा० रौगन] १ तेल। चिकनाई। उ०—काम को रंग मनो रँगि अंग दई दयो लाज को रोगन रूरो।—शृंगार०। २ वह पतला लेप जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे। पालिश। वार्निश। ३ वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनों आदि पर चढ़ाते हैं।
रोगनी—वि० [फा०] रोगन किया हुआ।
रोगिया—संज्ञा पुं० दे० "रोगी"।
रोगी—वि० [सं० रोगिन्] [स्त्री० रोगिनी] जो स्वस्थ न हो। व्याधिग्रस्त। बीमार।
रोचक—वि० [सं०] [संज्ञा रोचकता] १. रुचिकारक। अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २ मनोरंजक। दिलचस्प।
रोचन—वि० [सं०] १ अच्छा लगनेवाला। रोचक। २ शोभा देनेवाला। ३ लाल।
संज्ञा पुं० १ काला सेमर। २ प्याज। ३ स्वारोचिष मन्वंतर के इंद्र। ४ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। मोहन। ५ रोली।
संज्ञा पुं० [सं० लोचन] लोचन। नयन। उ०—ध्यान तरिवर तोरिवे कों करिवर जिय, रोचन तिहारे प्रिय रोचन सलोने हैं।—काव्यनिर्णय।
रोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्तकमल। २ गोरोचन। ३. वसुदेव की स्त्री। ४ रोली।
रोचि—संज्ञा स्त्री० [सं० रोचिस्] १ प्रभा। दीप्ति। २ प्रकट होती हुई शोभा। ३ किरण। रश्मि।
रोचित—वि० [सं० रोचना] शोभित।
रोज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० रोदन] रोना। रुदन।
संज्ञा पुं० [फा०] दिन। दिवस।
अव्य० प्रतिदिन। नित्य।
रोजगार—संज्ञा पुं० [फा०] १ जीविका या धनसंचय के लिये हाथ में लिया हुआ काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। २ व्यापार। तिजारत।
रोजगारी—संज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी।
रोजनामचा—संज्ञा पुं० [फा०] वह किताब जिसपर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है। (अं०) डायरी।
रोजमर्रा—अव्य० [फा०] प्रतिदिन। नित्य।
रोजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ व्रत। उपवास। २ वह महीने भर का उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने में करते हैं।
रोजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ नित्य का भोजन। २ जीवननिर्वाह का अवलंब। जीविका।
रोजीना—संज्ञा पुं० [फा०] दैनिक वृत्ति या मजदूरी।
रोजू—संज्ञा पुं० [सं०√रुद्, प्रा० रुज] रोदन। रोना। उ०—बरजा पितै हँसी औ रोजू। लागे दूत, होइ निति खोजू।—पदमावत।

रोक—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. नीलगाय। २ मृगों की एक जाति।

रोट—संज्ञा पुं० [हिं० रोटी] १ मोटी रोटी। लिट्ट। २ मीठी मोटी रोटी।

रोटिहा†—संज्ञा पुं० [हिं० रोटी+हा (प्रत्य०)] केवल भोजन पर रहनेवाला चाकर।

रोटी—संज्ञा स्त्री० [?] १. आँच पर सेंकी हुई गुँधे हुए आटे की लोई या टिकिया। चपाती। फुलका। २. भोजन। रसोई।

मुहा०—रोटी कपड़ा=भोजन वस्त्र। जीवन निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी खाना=किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना=किसी के घर पड़ा रहकर पेट पालना। रोटी दाल चलना=जीवननिर्वाह होना। रोटियों के लाले पड़ना=भोजन दुर्लभ होना। रोटी बेटी का संबंध=विवाह और खानपान का संबंध।

रोटीफल—संज्ञा पुं० [हिं० रोटी+सं० फल] एक वृक्ष का फल जो खाने में अच्छा होता है।

रोठाⓟ—संज्ञा पुं० दे० "रोड़ा"।

रोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० लोष्ठ] ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कंकड़।

मुहा०—रोड़ा अटकाना या डालना=विघ्न या बाधा डालना।

रोदन—संज्ञा पुं० [सं०] क्रंदन। रोना। उ०—माता ताको रोदन देखि। दुख पायो मन माँहि विसेखि।—सूर०।

रोदसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग। २ भूमि। ३. वायुमंडल सहित पृथ्वी।

रोदा—संज्ञा पुं० [सं० रोध] कमान की डोरी। चिल्ला।

रोध, रोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोधित] १. रोक। रुकावट। अवरोध। २ दमन।

संज्ञा पुं० [सं० रुदन] रोना। विलाप।

रोधनाⓟ—क्रि० स० [सं० रोधन] रोकना।

रोना—क्रि० अ० [सं० रोदन] चिल्लाना और आँसू बहाना। रुदन करना।

संज्ञा पुं० रुलाई। विलाप।

मुहा०—रोना पीटना=बहुत विलाप करना। रो बैठना=(किसी व्यक्ति या वस्तु के लिये) शोक कर चुकना। निराश होकर रह जाना। रो रोकर=(१) ज्यों त्यों करके। कठिनता से। (२) बहुत धीरे धीरे। रोना गाना=विनती करना। गिड़गिड़ाना।

यौ०—रोनी धोनी=रोने कलपने की वृत्ति।

२ बुरा मानना। चिढ़ना। ३ दुःख करना।

संज्ञा पुं० दुःख। रंज। खेद।

वि० [स्त्री० रोनी] १ थोड़ी सी बात पर भी रोनेवाला। २ चिड़चिड़ा। ३ रोनेवाले का सा। मुहर्रमी। रोवाँसा।

रोप—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोपना] रोपने की क्रिया या भाव।

रोपक—वि० [सं०] रोपनेवाला।

रोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोपित, रोप्य] १. ऊपर रखना या स्थापित करना। २. लगाना। जमाना। बैठाना (बीज या पौधा)। ३ मोहित करना। मोहन।

रोपना—क्रि० स० [सं० रोपण] १ जमाना। लगाना। बैठाना। २ पौधे का एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३ अड़ाना। ठहराना। ४ बीज डालना। बोना। ५ लेने के लिये हथेली या कोई बरतन सामने करना। ६ रोकना।

रोपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोपना] धान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

रोपित—वि० [सं०] १ लगाया हुआ। जमाया हुआ। २ स्थापित। रखा हुआ। ३ मोहित। भ्रांत।

रोब—संज्ञा पुं० [अ० रुअब] [वि० रोबीला] बड़प्पन की धाक। आतंक। दबदबा।

मुहा०—रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना=(१) आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो साधारणतः न की जाती हो। (२) भय मानना।

रोबकार—संज्ञा पुं० दे० "रूबकार"।

रोबदार—वि० [अ०] रोबदाबवाला। प्रभावशाली। तेजस्वी।

रोम—संज्ञा पुं० [सं० रोमन्] १ देह के बाल। रोयाँ। लोम।

मुहा०—रोम रोम में=शरीर भर में। रोम रोम से=तन मन से। पूर्ण हृदय से।

२ छेद। सूराख। ३ जल। ४ ऊन।

संज्ञा पुं० [अँ०] योरप के इटली नामक एक देश की प्राचीन काल से अब तक की राजधानी।

रोमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोम नगर का वासी। रोमन। २ रोम नगर या देश।

रोमकूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के वे छिद्र जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

रोमन—वि० [अँ०] रोम नगर या राष्ट्र-संबंधी।

संज्ञा स्त्री० वह लिपि जिसमें अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमपट, रोमपाट—संज्ञा पुं० [सं०] ऊनी कपड़ा।

रोमपाद—संज्ञा पुं० [सं०] अंग देश के एक प्राचीन राजा जिन्हें महाराज दशरथ ने अपनी शांता नाम की कन्या भेंट की थी।

रोमराजी—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"।

रोमलता—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

रोमहर्ष—संज्ञा पुं० दे० "रोमहर्षण"।

रोमहर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] रोयों का खड़ा होना जो अत्यंत आनंद और भय आदि के आवेग से होता है। रोमांच। सिहरन।

वि० भयंकर। भीषण।

रोमांच—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोमांचित] १ आनंद से रोयों का खड़ा होना। पुलक। २ भय से रोंगटे खड़े होना।

रोमाली—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"।

रोमावलि, रोमावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] रोयों की पंक्ति। रोमाली। रोमराजी। उ०—नाभिछिद्र रोमावली अलि चारु सहज सुभाव।—सूर०।

रोमिल—वि० [सं० रोम] रोएँदार।

रोयाँ—संज्ञा पुं० [सं० रोमन्] वे बाल जो प्राणियों के शरीर पर थोड़े या बहुत उगते हैं। लोम। रोम।

मुहा०—रोयाँ खड़ा होना=हर्ष या भय से रोमकूपों का उभरना। रोयाँ पसीजना=हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।

रोर—संज्ञा स्त्री० [सं० रवण] १ हल्ला। कोलाहल। शोरगुल। २ बहुत से लोगों के रोने चिल्लाने का शब्द। ३ उपद्रव। हलचल।

वि० १ प्रचंड। तेज। दुर्दमनीय। २ उपद्रवी। उद्धत। दुष्ट।

रोरी†—संज्ञा स्त्री० "रोली"। उ०—मुख मंडित रोरी रंग सेंदुर माँग छुही।—सूर०।

ⓟसंज्ञा स्त्री० [हिं० रोर] चहलपहल। धूम।

वि० स्त्री० [हिं० रूरा] सुंदर । रुचिर । उ०—स्याम तनु राजत पीत पिछौरी । उर वनमाल, काछनी काछे, कटि किंकिनि छवि रोरी ।—सूर० ।

रोल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० रवण] १ रोर । हल्ला । कोलाहल । २ शब्द । ध्वनि । उ०—श्राजु भोर तमचुर की रोल । गोकुल में आनंद होत है, मंगल धुनि महराने ढोल ।—सूर० ।

संज्ञा पुं० पानी का तोड़ । रेला । वहाव ।

रोला—संज्ञा पुं० [सं० रवण] १. रोर । शोरगुल । कोलाहल । २ घमासान युद्ध ।

संज्ञा पुं० [सं०] २४ मात्राओं का एक छंद जिसमें ११वीं मात्रा पर यति और अंत में विराम होता है । उ०—रामकृष्ण गोविंद भजे पूजत सब आसा । इहाँ प्रमोद लहत, अंत वैकुंठ निवासा । रोला की ११वीं मात्रा लघु होने से काव्य छंद होता है । उ०—मोहन मदन गोपाल, राम प्रभु शोक निवारन । सोहन परम कृपाल, दीन जन पाप उधारन ।

रोली—संज्ञा स्त्री० [सं० रोचनी] चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी जिसका तिलक लगाते हैं । श्री ।

रोवनहार—वि० [हिं० रोवना+हारा (प्रत्य०)] १. रोनेवाला । २ किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला ।

रोवना—क्रि० अ०, वि० दे० "रोना" ।

रोवनिहारा(पु)—वि० दे० "रोवनहार" ।

रोवनी धोवनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोवना+धावना] रोने धोने की वृत्ति । मनहूसी ।

रोवासा—वि० [हिं० रोना] [स्त्री० रोवासी] जो रोने ही वाला हो ।

रोशन—वि० [फा०] १ जलता हुआ । प्रदीप्त । प्रकाशित । २ प्रकाशमान । चमकदार । ३ प्रसिद्ध । मशहूर । ४ प्रकट । जाहिर ।

रोशन चौकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] शहनाई का बाजा । नफीरी ।

रोशनदान—संज्ञा पुं० [फा०] प्रकाश आने का छिद्र । गवाक्ष । मोखा ।

रोशनाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ लिखने की स्याही । मसि । २. प्रकाश । रोशनी ।

रोशनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उजाला । प्रकाश । २, दीपक । चिराग । ३ दीपमाला का प्रकाश । ४ ज्ञान का प्रकाश ।

रोष—संज्ञा पुं० [सं० रुष] १ क्रोध । कोप । गुस्सा । २ चिढ़ । कुढ़न । ३ वैर । विरोध । ४ लड़ाई की उमंग । जोश ।

रोषी—वि० [सं० रोषिन्] क्रोधी । गुस्सैल ।

रोस—संज्ञा पुं० दे० "रोष" ।

रोह—संज्ञा पुं० [देश०] नीलगाय ।

रोहज(पु)—संज्ञा पुं० [?] नेत्र ।

रोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चढ़ना । चढ़ाई । २ ऊपर को बढ़ना । ३ पौधे का उगना ।

रोहना(पु)—क्रि० अ० [सं० रोहण] १ चढ़ना । २ ऊपर की ओर जाना । ३ सवार होना ।

क्रि० स० १ चढ़ाना । ऊपर करना । २ सवार कराना । ३ धारण करना ।

रोहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय । २. बिजली । ३ वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं । ४ नौ वर्ष की कन्या (मनुस्मृति) । ५ सत्ताईस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र ।

रोहित—वि० [सं०] लाल रंग का । लोहित ।

संज्ञा पुं० १ लाल रंग । २ रोहू मछली । ३ एक प्रकार का मृग । ४ इंद्र-धनुष । ५ केसर । कुंकुम । ६ रक्त । लहू । खून ।

रोहिताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि । २ राजा हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम ।

रोही—वि० [सं० रोहिन्] [स्त्री० रोहिणी] चढ़नेवाला ।

संज्ञा पुं० [देश०] एक हथियार ।

रोहू—संज्ञा स्त्री० [सं० रोहिष] एक प्रकार की बड़ी मछली ।

रौंद—संज्ञा स्त्री० [हिं० रौंदना] रौंदने का भाव या क्रिया ।

संज्ञा स्त्री० [अं० राउंड] चक्कर । गश्त ।

रौंदन—संज्ञा स्त्री० दे० "रौंद" ।

रौंदना—क्रि० स० [सं० मर्दन] पैरों से कुचलना । मर्दित करना ।

रौ—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गति । चाल २ वेग । झोंक । ३ पानी का बहाव । तोड़ । ४ किसी बात की धुन । झोंक । ५ चाल । ढंग ।

(पु)† संज्ञा पुं० दे० "रव" ।

रौगन—संज्ञा पुं० दे० "रोगन" ।

रौजा—संज्ञा पुं० [अ०] कब्र । समाधि ।

रौताइन—संज्ञा स्त्री० [हिं० राव, रावत] राव या रावत की स्त्री । ठकुराइन ।

रौताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] १ राव या रावत होने का भाव । २. ठकुराई । प्रभुत्व । सरदारी । उ०—दानि कहाउब अरु कृपनाई । होइ कि खेम कुसल रौताई ।—मानस ।

रौद्र—वि० [सं०] [भाव० रौद्रता] १. रुद्र संबंधी । २ प्रचंड । भयंकर । डरावना । ३ क्रोधपूर्ण ।

संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक जिसमें क्रोध की अनुभूति करानेवाले शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है । २ ग्यारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा । ३ एक प्रकार का अस्त्र ।

रौद्रार्क—संज्ञा पुं० [सं०] २३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा ।

रौन(पु)—संज्ञा पुं० १ दे० "रमण" । २ पति । प्रियतम । उ०—केलि के भौन में सोवत रौन बिलोकि जगाइबे को भुज काढ़ी । सैन में पेखि चुरीन को चूरन तूरन तेह गई गहि गाढ़ी । —शृंगार० ।

रौनक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वर्ण और आकृति । रूप । २ चमक दमक । दीप्ति । कांति । ३ प्रफुल्लता । विकास । ४ शोभा । छटा । सुहावनापन ।

रौना†—संज्ञा पुं० दे० "रोना" ।

रौनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी" ।

रौप्य—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी । रूपा ।

वि० चाँदी का बना हुआ । रूपे का ।

रौर—संज्ञा स्त्री० [सं० रवण] हल्ला । शोर । उ०—बालक धुनि सुनि परी जु रौर । उठे पहरुवा ठौरहि ठौर ।—नंद-दास० ।

रौरई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "रौरा" ।

रौरव—वि० [सं०] भयंकर । डरावना ।

संज्ञा पुं० एक भीषण नरक ।

रौरा†—संज्ञा पुं० दे० "रौला" ।

†सर्व० [हिं० रावरा] [स्त्री० रौरी] आपका ।

रौराना†—क्रि० अ० [हिं० रौरा से ना० धा०] प्रलाप करना । बकना । उ०—अब यह और सृष्टि बिरहिन की बकत बड़ रौरानी ।—सूर०

रौरे†—सर्व० [हिं० राव, रावल] आप (संबोधन) ।

रौल—संज्ञा पुं० दे० "रौला" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "रौलि" ।

रौला—संज्ञा पुं० [म० रवण] १. हल्ला। गुल। शोर। २. हुल्लड़। धम। शोर। उ०—ऊँचा मदर धौलहर, माटी चित्री पौलि। एक रॉम के नावँ विन, जम पाडैगा रौलि।—कवीर०।

रौलि—संज्ञा स्त्री० [देश०] धौल। चपत।

संज्ञा स्त्री० [म० रवण] चिल्लाहट। **रौशन**—वि० दे० "रोशन"।

रौस—संज्ञा स्त्री० [फा० रविश] १ गति। चाल। २ रग ढग। तौर तरीका। ३ वाग की क्यारियों के वीच का मार्ग।

रौहाल—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. घोड़े की एक चाल। २ घोड़े की एक जाति।

ल

ल—व्यजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ वर्ण जिसका उच्चारणस्थान दत है। यह अल्पप्राण है।

लक—संज्ञा स्त्री० [?] कमर। कटि। उ०—सौंधे को अधार किमिमिस जिनको अहार चारि को सो अक लक चद सरमाती हैं।—भूषण०।

संज्ञा स्त्री० [सं० लका] लका नामक द्वीप।

लकनाथ, लकनायक—संज्ञा पुं० [हिं० लक+स० नाथ या नायक] १ रावण। २. विभीषण।

लकलाट—संज्ञा पुं० [अँ० लाग क्लाथ] एक प्रकार का मोटा वढ़िया कपड़ा।

लका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण का राज्य था।

लकापति—संज्ञा पुं० [स०] १ रावण। २ विभीषण।

लकेश, लकेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] १ रावण। २ विभीषण।

लग—संज्ञा स्त्री० दे० "लाँग"।

संज्ञा पु० [फा०] लँगड़ापन।

लगड़—वि० दे० "लँगड़ा"।

संज्ञा पुं० दे० "लगर"।

लँगड़ा—वि० [फा० लग] [स्त्री० लँगड़ी] जिसका एक पैर वेकाम या टूटा हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का वढ़िया आम।

लँगड़ाना—क्रि० अ० [हिं० लँगड़ा से ना० धा०] लंग करते हुए चलना। लँगड़े होकर चलना।

लँगड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगड़ा] एक प्रकार का छंद।

लगर—संज्ञा पुं० [फा०] १ लोहे का एक प्रकार का वहुत वड़ा काँटा जिसका व्यवहार वड़ी वड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान मर ठहराए रखने के लिये होता है। २ लकड़ी का वह कुदा जो किसी हरहाई गाय के गले में वाँधा जाता है। टॅगुर। ३ लटकती हुई कोई भारी चीज। ४ लोहे की मोटी और भारी जजीर। ५. चाँदी का तोड़ा जो पैर में पहना जाता है। ६. पहलवानों का लँगोटा। ७ कपड़े के वे टाँके जो दूर दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८ वह भोजन जो प्राय नित्य दरिद्रों को वाँटा जाता है। ९ वह स्थान जहाँ दरिद्रों आदि को भोजन वाँटा जाता हो।

वि० १ भारी। वजनी। २ नटखट। ढीठ। उ०—नँद ढोटा लगर महा, दधि माखन को चोर, रहति, सुनति, लज्जा, नहीं, करति और ही और।—नददास०।

मुहा०—लगर करना = शरारत करना। उ०—वोलि लियो वलरामहि यशुमति। आवहु लाल सुनो हरि के गुण कालिहि ते लगरयो करत अति।—सूर०।

लँगरई, लँगराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगर+ई, आई (प्रत्य०)] ढिठाई। शरारत। उ०—(क) वाँधौं आजु कौन तोहि छोरै। वहुत लँगरई कीन्ही मोसों भुज गहि रजु ऊखल सौं जोरै। —सूर०। (ख) अनहूँ छोड़ोगे लँगराई दोउ कर जोरि जननि पै आए।—सूर०।

लगरखाना—संज्ञा पुं० दे० "लगर"।

लगरगाह—संज्ञा पुं० दे० "वदरगाह"।

लगी(पु)—वि० [हिं० लँगड़ा] लँगड़ी।

लगूर—संज्ञा पुं० [सं० लागूली] १ वदर। २ पूँछ। दुम (वदर की)। ३ काले मुँह का वड़ा वदर।

लगूरफल—संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।

लँगूल—संज्ञा पुं० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लँगोट, लगोटा—संज्ञा पुं० [सं० लिंग+पट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर वाँधने का एक प्रकार का वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।

यौ०—लँगोटवद = ब्रह्मचारी। स्त्री-त्यागी।

लगोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगोट] कोपीन। कछनी। भगई। धज्जी।

मुहा०—लँगोटिया यार = वचपन का मित्र। लँगोटी पर फाग खेलना = कम सामर्थ्य होने पर भी वहुत अधिक व्यय करना। लँगोटी वँधवाना = वहुत दरिद्र कर देना।

लंघन—संज्ञा पुं० [स०] १ उपवास। अनाहार। फाका। २ लाँघने की क्रिया। ड्राँकना। ३ अतिक्रमण।

लँघना(पु)—क्रि० स० दे० "लाँघना"। उ०—जाकी कृपा पंगु गिरि लघै अँधरे को सव कछु दरसाई।—सूर०।

लच—संज्ञा पुं० [अँ०] दोपहर का भोजन या जलपान।

लठ—वि० [हिं० लट्ठ] मूर्ख। उजड्ड।

लँडूरा—वि० [देश० या सं० लागूल] जिसकी सारी पूँछ कट गई हो। वाँड़ा।

लतरानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] व्यर्थ की वड़ी वड़ी वातें। शेखी।

लप—संज्ञा पुं० [अँ० लैंप] दीपक। लालटेन।

लपट—वि० [सं०] व्यभिचारी। विषयी। कामी। कामुक।

लंपटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुराचार। कुकर्म।

लव—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण वनावे। २ एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३ अग। ४ पति।

संज्ञा स्त्री० दे० "विलव"।

वि० [सं०] लवा।

लंवकर्ण—वि० [सं०] जिसके कान लवे हों।

लवतड़ग—वि० [स० लव+ताड़+अग] ताड़ के समान लवा। वहुत लवा।

लंवमान—वि० दे० "लवायमान"।

लंबा—वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी] १ जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो। "चौड़ा" का उलटा।

मुहा०—लंबा करना=(१) रवाना करना। चलता करना। (२) जमीन पर पटक या लेटा देना।

२ जिसकी ऊँचाई अधिक हो। ३. (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। ४. विशाल। दीर्घ। बड़ा।

लंबाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा+ई (प्रत्य०)] लंबा होने का भाव। लंबापन।

लंबान—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा] लंबाई।

लंबायमान—वि० [सं० लंब] १ बहुत लंबा। २ लेटा हुआ।

लंबित—वि० [सं०] लंबा।

लंबी—वि० स्त्री० [हिं० लंबा] लंबा का स्त्रीलिंग रूप।

मुहा०—लंबी तानना=लेटकर सो जाना।

लंबोतरा—वि० [हिं० लंबा] लंबे आकार वाला। जो कुछ लंबा हो।

लंबोदर—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २. पृथ्वी।

लउटी—संज्ञा स्त्री० दे० "लकुटी"।

लकड़बग्घा—संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी+बाघ] एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है। लग्घड़।

लकड़हारा—संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी+हारा] जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला।

लकड़ा—संज्ञा [पुं० [हिं० लकड़ी] लकड़ी का मोटा कुंदा। लक्कड़।

लकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० लकुट] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे अलग हो गया हो। काष्ठ। काठ। २ ईंधन। जलावन। ३ गतका। ४ छड़ी। लाठी।

मुहा०—लकड़ी फेरना या सुँघाना=किसी को अपने अनुकूल या वश में करना। लकड़ी सा=बहुत दुबला पतला। लकड़ी होना=(१) बहुत दुबला पतला होना। (२) सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

लकदक—वि० [अ०] वनस्पति आदि से रहित और खुला (मैदान)।

लकब—संज्ञा पुं० [अ०] उपाधि। खिताब।

लकलक—संज्ञा पुं० [अ०] सारस।

वि० बहुत दुबला पतला।

लकवा—संज्ञा पुं० [अ०] एक वात रोग जिसमें शरीर का कोई भाग शक्तिहीन हो जाता है। पक्षाघात।

लकी—संज्ञा स्त्री० [फा० लका, अ० लका] कस्तूरी। उ०—चकी चमकनी छवि छाती छहरानी, चकचकी चटकीनी चिनि लकी लहरानी है। —शृंगार०।

लकीर—संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा, हिं० लीक] १. वह आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो। रेखा।

मुहा०—लकीर का फकीर=आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=बिना समझे बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।

२. धारी। ३ पंक्ति। सतर।

लकुच—संज्ञा पुं० [सं०] बड़हर।

संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

लकुट—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाठी। छड़ी।

संज्ञा पुं० [सं० लकुच] १. एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २ लुकाट। लकोट।

लकुटिया—संज्ञा स्त्री० [सं० लकुट] १ छोटी छड़ी या लाठी। २ लाठी। उ०—पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक, मुट्ठी भर दाने को। —अपरा।

लकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० लकुट] लाठी। छड़ी।

लक्कड़—संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का—संज्ञा पुं० [अ० लका, फा० लका] एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है और गला तनकर उससे सटा रहता है।

लक्खी—वि० [हिं० लाख] लाख के रंग का। लाखी।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

संज्ञा पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लखपती।

वि० लाखों से संबंध रखनेवाला, जैसे—लक्खी मेला।

लक्ष—वि० [सं०] एक लाख। सौ हजार।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अंक जिससे एक लाख की संख्या का ज्ञान हो। २ अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३ दे० "लक्ष्य"।

लक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। आसार। २ नाम। ३ परिभाषा। ४ शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हों। ५ सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ विशेष चिह्न जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। ६. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लांछन। ७ चालढाल। तौर तरीका। ८ दे० "लक्ष्मण"।

लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिससे मुख्यार्थ से काम न चलने पर उससे संबद्ध कोई अर्थ सूचित होता है।

लक्षना[प]—क्रि० स० दे० "लखना"।

लक्षि—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"। [प] उ०—कृतयो उघन दृष्टि यत्र अवगदी ब्राह्मन सिद्धि।

[प] संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्य"।

लक्षित—वि० [सं०] १ बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २ देखा हुआ। ३ अनुमान से समझा या जाना हुआ।

संज्ञा पुं० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

लक्षित लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्षणा का एक भेद।

लक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसका पर-पुरुष प्रेम दूसरों को ज्ञात हो।

लक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। उ०—जन्म बीता सदैव नेम मीता भये कौशिकै का नहीं काल से छान के। मुद्दमाला गरे सीस गंगाधरै आठ यामै हरे ध्याय लै मान कै। गंगाधर। खंजन। गंगोदक।

वि० [सं० लक्षिन] लक्ष रखनेवाला।

लक्ष्म—संज्ञा पुं० [सं०] चिह्न। लक्षण।

लक्ष्मण—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो रामचंद्र के साथ वन में गए थे। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं।

लक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंदुओं की एक देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। कमला। रमा। २ धनसंपत्ति। दौलत। ३ शोभा। सौंदर्य। छवि। ४ दुर्गा का एक नाम। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो गुरु, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। उ०—गार ग्वाल-वधू ठान। कृष्ण जू सों करै मान॥ जाहि पावै नहीं मत। सोन सो लक्ष्मी कंत॥ ६ एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम और द्वितीय चरणों में १०

तथा तृतीय और चतुर्थ में २७ मात्राएँ होती हैं। उ०—गौरी बाएँ भागे सोहत, आछे सुरापगा माथे। काटौ माया जालै मोरे, शंभो करिय दाया॥ इसे बुद्धि छंद भी कहते हैं। ७ आर्या छंद का पहला भेद। ८ घर की मालकिन। गृहस्वामिनी।

वि० अत्यंत सद्गुणी (स्त्री)। श्रीवृद्धि करनेवाली।

लक्ष्मीधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण हों। उ०—रार री राधिका श्याम सों क्यों करै, सीख मो मान ले मान काहे धरै। चित्त में सुंदरी क्रोध ना आनिए, स्रग्विणी मूर्ति को कृष्ण की धारिए। इसे लक्ष्मीधरा, शृंगारिणी और कामिनी-मोहन भी कहते हैं। २ विष्णु।

लक्ष्मीपति—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

लक्ष्मीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] धनवान्। अमीर।

लक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वस्तु जिस-पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना। २ वह जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३ अभि-लषित पदार्थ। उद्देश्य। ४ अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। ५ वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निक-लता हो।

लक्ष्यभेद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का निशाना जिसमें चलने या उड़ने हुए लक्ष्य को भेदते हैं।

लक्ष्यार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो लक्षणा से निकले।

लखघर—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह।

लखनⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

लखनाⓅ†—क्रि० स० [सं० लक्ष] १ लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना। २ देखना।

लखपती—संज्ञा पुं० [सं० लक्ष+पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लखरॉव—संज्ञा पुं० [सं० लक्ष+राजि] १ वह बाग जिसमें लाख पेड़ हों। २ बहुत बड़ा बाग।

लखलखा—संज्ञा पुं० [फा०] मूर्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

लखलुट—वि० [हिं० लाख+लुटाना] बहुत बड़ा अपव्ययी।

लखाउⓅ—संज्ञा पुं० [हिं०√लख+आउ (प्रत्य०)] १. लक्षण। पहचान। चिह्न। २ चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

लखानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० लखना] दिखाई पड़ना। उ०—मिलि चंदन बेंदी रही गोरें मुँह न लखाइ।—बिहारी०।

क्रि० स० [हिं० लखना का स० रूप] १ दिखलाना। २ अनुमान करा देना। समझा देना।

लखावⓅ—संज्ञा पुं० दे० "लखाउ"।

लखीमीⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मी"।

लखियाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं०√लख+इया (प्रत्य०)] लखनेवाला। जो लखता हो।

लखी—संज्ञा पुं० [हिं० लाखी] लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।

लखेदना†—क्रि० स० दे० "खदेड़ना"।

लखेरा—संज्ञा पुं० [हिं० लाख+एरा (प्रत्य०)] वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।

लखौट†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख+औट (प्रत्य०)] लाख की चूड़ी जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।

लखौटा—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख+औटा (प्रत्य०)] १. चंदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग। २ एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिंदूर आदि रखती हैं।

लखौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा, हिं० लाखा+औरी (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी का घर। २ एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ तेरही ईंट। ककैया ईंट।

संज्ञा स्त्री० [सं० लक्ष] किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ आदि चढ़ाना।

लगत—संज्ञा स्त्री० [हिं०√लग+अत (प्रत्य०)] लगने या लगन होने की क्रिया या भाव।

लग—क्रि० वि० [सं० लग्न] १ तक। पर्यंत। ताईं। २ निकट। समीप। पास।

संज्ञा स्त्री० लगन। लाग। प्रेम।

अव्य० १ वास्ते। लिये। २ साथ। संग।

लगढग—क्रि० वि० दे० "लगभग"।

लगन—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। लौ। २. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। प्यार। ३. लगाव। संबंध।

संज्ञा पुं० [सं० लग्न] १. शुभ मुहूर्त। ब्याह का मुहूर्त या साइत। २ वे दिन जिनमें विवाह आदि होते हों। सहालग। ३ दे० "लग्न"।

संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की थाली।

लगनपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० लग्नपत्रिका] विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

लगनवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगन+वट (प्रत्य०)] प्रेम। मुहब्बत।

लगना—क्रि० अ० [सं० लग्न] १ दो पदार्थों के तल आपस में मिलना। सटना। २ मिलना। जुड़ना। ३ एक चीज का दूसरी चीज पर सीया, जड़ा, टाँका या चिपकाया जाना। ४ सम्मिलित होना। शामिल होना। मिलना। ५. छोर या प्रांत आदि पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ६ क्रम से रखा या सजाया जाना। ७ व्यय होना। खर्च होना। ८ जान पड़ना। मालूम होना। ९ स्थापित होना। कायम होना। १० संबंध या रिश्ते में कुछ होना। ११ आघात पड़ना। चोट पहुँचना। १२ किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। १३ खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। १४ आरंभ होना। शुरू होना। १५ जारी होना। चलना। १६ सड़ना। गलना। १७ प्रभाव पड़ना। असर होना।

मुहा०—लगती बात कहना=मर्मभेदी बात कहना। चुटकी लेना।

१८ आरोप होना। १९ हिसाब होना। गणित होना। २० पीछे पीछे चलना। साथ होना। २१ गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दुहा जाना। २२. गड़ना। चुभना। धँसना। २३ छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। उ०—औरन सों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई।—सूर०। २४ बंद होना। मुँदना। २५ दाँव पर रखा जाना। बदना। २६ घात में रहना। ताक में रहना। २७ होना।

विशेष—यह क्रिया बहुत से शब्दों के साथ लगकर भिन्न भिन्न अर्थ देती है।

संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का जंगली मृग।

लगनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"। उ०—नैन लगे तिहिं लगनि जु, न छुटैं छुटैं हूँ प्रान। काम न आवत एक हूँ तेरे सैक सयान।—बिह री०।

लगनी—संज्ञा स्त्री० [फा० लगन=थाली] १ छोटी थाली। रिकाबी। २ परात।

लगभग—क्रि० वि० [हिं० लग=पास+भग (अनु०)] प्रायः। करीब करीब।

लगमात—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना+सं० मात्रा] स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।

लगर(पु)†—संज्ञा पुं० [देश०] लगड़ पक्षी।

लगलग—वि० [अ० लकलक] बहुत दुबला पतला। अति सुकुमार।

लगव(पु)†—वि० [अ० लगो] १ झूठ। मिथ्या। असत्य। २ व्यर्थ। बेकार।

लगवाना—क्रि० स० [हिं० लगाना का प्रे० रूप] लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगवार†—संज्ञा पुं० [हिं०√लग+वार (प्रत्य०)] उपपति। यार। आशना।

लगातार—क्रि० वि० [हिं० लगना+तार=सिलसिला] एक के बाद एक। बराबर। निरंतर।

लगान—संज्ञा पुं० [हिं० लगना या लगाना] १ लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २ भूमि पर लगनेवाला कर।

मुहा०—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना=बीच में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना।

१४. प्रज्वलित करना। जलाना। १५ ठीक स्थान पर बैठाना। जड़ना। संबद्ध करना। १६ गणित करना। हिसाब करना। १७ कान भरना। चुगली खाना।

यौ०—लगाना बुझाना=लड़ाई झगड़ा कराना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना।

१८ नियुक्त करना। १९ गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं को दुहना। २० गाड़ना। धँसाना। ठोंकना। २१ स्पर्श कराना। छुआना। २२ जूए की बाजी पर रखना। दाँव पर रखना। २३ किसी बात का अभिमान करना। २४ अंग पर पहनना, ओढ़ाना या रखना। २५ करना।

लगाम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह ढाँचा जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सा या चमड़े का तसमा बँधा रहता है। २ इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़े का तसमा जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है। रास। बाग।

लगाय(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लगावट"।

लगार(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं०√लग+आर (प्रत्य०)] १ नियमित रूप से कोई काम करना या कोई चीज देना। बँधी। बंधेज। २ लगाव। संबंध। ३. तार। क्रम। सिलसिला। उ०—स्नान विवस नहिं मिटी लगार। बरष्यौ सलिल अखंडित धार।—सूर०। ४ लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५ वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिये भेजा गया हो। उ०—और सखी एक श्याम पठाई। बैठी आइ चतुरई काढ़ि ... नई लगार। देखति हौ कछु औरै ढंग तुम बूझति बारंबार।—सूर०। ६ मेल। सखी।

लगालगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १ [illegible] प्रेम। स्नेह। प्रीति। उ०—[illegible] नीति [illegible] मन [illegible] संबंध। [illegible] २ [illegible]

लगाव†—संज्ञा पुं० [हिं०√लग+आव (प्रत्य०)] लगा होने का भाव। संबंध। वास्ता।

लगावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√लग+आवट (प्रत्य०)] १ संबंध। वास्ता। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

लगावन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लगाव"।

लगावना—क्रि० स० दे० "लगाना"।

लगि(पु)†—अव्य० दे० "लग"।

संज्ञा दे० "लग्न"।

लगी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

लगु(पु)†—अव्य० दे० "लग"।

लगुड़—संज्ञा पुं० [सं०] डंडा। लाठी।

लगूर(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगूल(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगे†—अव्य० दे० "लग"।

लगौहाँ(पु)—वि० [हिं० √लग+औहाँ (प्रत्य०)] जिसे लगन लगाने की कामना हो। रिझवार। उ०—कत सकुचत, निधरक फिरौ, रतियौ खोरि तुम्हैं न। कहा करौ, जौ जाइ ए लगैं लगौहैं नैन।—बिहारी०।

लग्गा—संज्ञा पुं० [सं० लगुड़] १ लंबा बाँस। २ वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लंबा बाँस। लकसी। लग्घा।

संज्ञा पुं० [हिं० लगना] कार्य आरंभ करना। काम में हाथ लगाना।

लग्गी—संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गा"।

लग्घड़—संज्ञा पुं० [देश०] १ बाज। शचान। २ एक प्रकार का चीता। लकड़बग्घा।

लग्घा, लग्घी—संज्ञा पुं० दे० "लग्गा"।

लग्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। २ कोई शुभ कार्य करने का मुहूर्त। ३ विवाह का समय। उ०—प्रकटि लग्न सबहि कर पठाइ, एक सुदिन बियाहै।—सूर०। ४ विवाह। शादी। ५ विवाह के दिन। सहालग।

वि० [स्त्री० लग्ना] १ लगा हुआ। मिला हुआ। २ लज्जित। ३ आसक्त।

संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "लगन"।

लग्नपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्रिका जिसमें विवाह के कृत्यों का लग्न ब्योरेवार लिखा रहता है।

लग्नेश—संज्ञा पुं० [स०] जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी ग्रह।

लघिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० लघिमन्] १. एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है। २ लघु या ह्रस्व होने का भाव। लघुत्व।

लघु—वि० [स०] १. छोटा। कनिष्ठ। २ थोड़ा। कम। ३ हलका। ४ निस्सार। ५ शीघ्र। जल्दी। ६. सुंदर। बढ़िया।

संज्ञा पुं० १ व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है, जैसे—अ, इ। २ वह जिसमें एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न "।" है (छंद शास्त्र)।

लघुचेता—संज्ञा पुं० [सं० लघुचेतस्] वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हों। नीच।

लघुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लघु होने का भाव। छोटापन। २ हलकापन। तुच्छता।

लघुत्व—संज्ञा पुं० [स०] १ छोटाई। छोटापन। लघुता। २ तुच्छता। हलकापन।

लघुपाक—संज्ञा पुं० [स०] वह खाद्य पदार्थ जो सहज में पच जाय।

लघुमति—वि० [सं०] कमसमझ। मूर्ख।

लघुमान—संज्ञा पुं० [स०] नायिका का वह मान जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुशंका—संज्ञा स्त्री० [स०] पेशाब करना।

लच, लचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० लचकाना] १ लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। २ वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती हो।

लचकना—क्रि० अ० [हिं० लच (अनु०)] [स० क्रि० लचकाना] १ लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच में झुकना। लचना। २ स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना।

लचकनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० लचकना] १ लचीलापन। २ लचक।

लचकाना—क्रि० स० [हिं० लचकना का स० रूप] लचकने में प्रवृत्त करना।

लचकीला—वि० दे० "लचीला"।

लचकौहाँ—वि० दे० "लचीला"।

लचन—संज्ञा स्त्री० दे० "लचक"।

लचना—क्रि० अ० दे० "लचकना"।

लचलचा—वि० दे० "लचीला"।

लचर(पु)†—वि० दे० "लाचार"।

लचारी—संज्ञा स्त्री० दे० "लाचारी"।

संज्ञा स्त्री० [देश०] १ भेंट। नजर। उ०—विमल मुक्तमाल लसत उच्च कुचन पर, मदन महादेव मनो दई है लचारी। —सूर०। २ एक प्रकार का गीत।

लचीला—वि० [लच+ईला (प्रत्य०)] १ जो सहज में लच या झुक सकता हो। लचकदार। २ जिसमें सहज में परिवर्तन या उतार चढ़ाव हो सकता हो।

लचीलापन—संज्ञा पुं० [हिं० लचीला+पन (प्रत्य०)] वस्तुओं का वह गुण जिससे वे लचकती, दबती या झुकती है।

लच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [स० लक्ष्य] १ ब्याज। बहाना। मिस। २. निशाना। ताक।

संज्ञा पुं० [स० लक्ष] सौ हजार की संख्या। लाख।

संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।

लच्छना(पु)—क्रि० स० दे० "लखना"।

लच्छमी—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छा—संज्ञा पुं० [अनु०] १ गुच्छे या झुब्बे आदि के रूप में लगाए हुए तार। २ किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े। ३ हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।

(पु)संज्ञा स्त्री० [स० लाक्षा] लाख। लाह।

लच्छागृह(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लच्छि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी।

संज्ञा पुं० [सं० लक्ष] लाख की संख्या।

लच्छित(पु)—वि० [सं० लक्षित] १ आलोचित। देखा हुआ। २ निशान किया हुआ। अंकित। ३ लक्षणवाला।

लच्छिन—संज्ञा पुं० [प्रा० लच्छन] दे० "लक्षण (१)"। उ०—तबहीं भोर के लच्छिन भए। तारे हार सीतल ह्वै गए। —नंददास०।

लच्छिनिवास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० लक्ष्मी निवास] विष्णु। नारायण।

लच्छी—वि० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लच्छा] छोटा लच्छा। अटी।

लच्छेदार—वि० [हिं० लच्छा+फा० दार (प्रत्य०)] १. (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे पड़े हों। २ (बातचीत) मजेदार या श्रुतिमधुर।

लछ—संज्ञा पुं० [स० लक्ष्य] दे० "लक्ष्य (१)"। उ०—लछ लाघव सधान धरें आयुध के सूरे। —नंददास०।

लछन—संज्ञा पुं० [स० लक्ष्मण] लक्ष्मण। उ०—दसरथ सों ऋषि आनि कह्यो असुरन सों यज्ञ होन न पावत राम लछन तब संग दयो। —सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।

लछना†—क्रि० अ० दे० "लखना"।

लछमन—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

लछमनझूला—संज्ञा पुं० [हिं० लछमन+झूला] रस्सों या तारों आदि से बना पुल।

लछमना—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"। उ०—बहुरि लछमना सुमिरन कीन्हो। ताहि स्वयंबर में हरि लीन्हो। —सूर०।

लछमी—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लछारा(पु)—वि० दे० "लंबा"।

लज(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लाज"।

लजना—क्रि० अ० दे० "लजाना"।

लजवाना—क्रि० स० [हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना।

लजाधुर—वि० [स० लज्जाधर] जो बहुत लज्जा करे। लज्जावान्। शर्मीला।

संज्ञा पुं० लजालू नाम का पौधा।

लजाना—क्रि० अ० [स० लज्जा से हिं० ना० धा०] लज्जित होना। शर्म में पड़ना।

क्रि० स० लज्जित करना।

लजारू†—संज्ञा पुं० [स० लज्जालु] लजालू पौधा।

लजालू—संज्ञा पुं० [स० लज्जालु] एक कँटदार पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती हैं।

लजावन(पु)†—क्रि० स० दे० "लजाना"।

लजियाना(पु)†—क्रि० अ० स० दे० "लजाना"।

लजीज—वि० [अ०] अच्छे स्वादवाला। स्वादिष्ट।

लजीला—वि० दे० "लज्जाशील"।

लजुरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] कूएँ से पानी भरने की डोरी। रस्सी।

लजोर(पु)†—वि० दे० "लज्जाशील"।

लजोहा, लजौना, लजौहाँ—वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री लजौहीं] जिसमें लज्जा हो। लज्जाशील। उ०—कुंजभवन राधा मनमोहन। रतिविलास करि मगन भए अति निरखत नैन लजोहन।—सूर०।

लज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० लज्जित] १. लाज। शर्म। हया। २ मानमर्यादा। पत। इज्जत।

लज्जाप्राया—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक (केशव)।

लज्जालु—वि० [सं०] लज्जाशील।
संज्ञा पुं० दे० "लजालू"।

लज्जावती—वि० स्त्री० [सं०] शर्मीली।

लज्जावान्—वि० [सं०] [स्त्री० लज्जावती] दे० "लज्जाशील"।

लज्जाशील—वि० [सं०] जिसमें लज्जा हो। लजीला।

लज्जित—वि० [सं०] शर्म में पड़ा हुआ। शर्मिंदा हुआ।

लज्या(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"। उ०—तीनों विधि जामैं। लज्या अरु कामैं। दोऊ यह मोहै। मध्याकुच सोहै।—छंद सोव।

लट—संज्ञा स्त्री० [सं० लट्वा] १ बालों का गुच्छा। केशपाश। अलक। केशजाल।
मुहा०—लट छिटकाना=सिर के बालों को खोलकर इधर उधर बिखराना।
२. एक में उलझे हुए बालों का गुच्छा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।

लटक—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटकना] १ लटकने की क्रिया या भाव। २ झुकाव। लचक। ३ अंगों की मनोहर चेष्टा। अंगभंगी। उ०—पीतांबर मुकुट लकुट कुटल बनमाल वैसोई दरसावै। मुकुट नि विर्ग कनि मटकनटक दि मुकुट छबि तें छबि पावै।—ब्रजराज।

लटकन—संज्ञा पुं० [हिं० लटकना] १ दे० "लटक"। २ लटकनेवाली चीज। लटक। ३ नाक में पहनने का एक गहना। ४ कलँगी या सिरपेंच में लगे हुए रत्नों का गुच्छा। उ०—लटकन सीस, वह मनि भाजत मन्मथ कोटि वारने गए री।—सूर०।
संज्ञा पुं० [?] एक पेड़ जिसके बीजों से बढ़िया गेरुआ रंग निकलता है।

लटकना—क्रि० अ० [सं० लडन=झूलना] १. ऊँचे स्थान में लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना। झूलना। २. किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर अधर में हों। टँगना। ३ किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ४ लचकना। बल खाना।
मुहा०—लटकती चाल=बल खाती हुई मनोहर चाल। उ०—भ्रुकुटी मटकनि पीत पट चटक, लटकती चाल। चलचख-चितवनि चोरि चितु लियौ बिहारीलाल।—बिहारी०।
५ किसी काम का बिना पूरा हुए पड़ा रहना। देर होना।

लटकवाना—क्रि० स० [हिं० लटकाना का प्रे० रूप] लटकाने का काम दूसरे से कराना।

लटका—संज्ञा पुं० [हिं० लटक] १ गति। चाल। ढब। २ बनावटी चेष्टा। हावभाव। ३ बातचीत का बनावटी ढंग। ४ मंत्रतंत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति। टोटका। संक्षिप्त उपचार।

लटकाना—क्रि० स० [हिं० लटकना का स० रूप] किसी को लटकने में प्रवृत्त करना।

लटकीला—वि० [हिं० लटक + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लटकीली] लटकता या झूमता हुआ।

लटकौवाँ—वि० [हिं० लटक + औवाँ (प्रत्य०)] लटकनेवाला। जो लटकता हो।

लटजीरा—संज्ञा पुं० [हिं० जीरा] १ अपामार्ग। चिचड़ा। २ एक प्रकार का जड़हन।

लटना—क्रि० अ० [सं०√लट्] १ थककर गिर जाना। लड़खड़ाना। २ अशक्त होना। दुबला और कमजोर होना। ३ शक्ति और उत्साह से रहित या निकम्मा होना। ४ व्याकुल या विकल होना।
क्रि० अ० [सं०√लल्] १ ललचाना। चाह करना। लुभाना। २ प्रेमपूर्वक तत्पर होना। लीन होना। उ०—उलटि तहाँ पाँव दिए जहाँ मन न धाए। छपद कंज तजि बेलि सों लटि प्रेम न जान्यो।—सूर०।

लटपट, लटपटा—वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १ गिरता पड़ता। लड़खड़ाता हुआ। उ०—धूरि धौत तनु, नैननि अंजन, चलत लटपटी चाल।—सूर०। २ ढीलाढाला। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। अस्तव्यस्त। उ०—लटपटी पाग उनींदे नैना डग डोलत डगमगात।—सूर०। ३. (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले। टूटाफूटा। ४ अव्यवस्थित। अडबड। ५ थककर गिरा हुआ। अशक्त।
वि० १. जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा। लुटपुटा। २. मिंजा हुआ। मला दला हुआ (कपड़ा आदि)। जिसमें सिकन या सिलवट पड़ी हो। उ०—सिथिली पलोटन मलोट लटपटी सारी चोट चटपटी अटपटी चाल अटक्यो।—सूर०।

लटपटान—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लड़खड़ाहट। २ लटक। लचक।

लटपटाना—क्रि० अ० [सं०√लड्+√पत] १. गिरना पड़ना। लड़खड़ाना। उ०—करत विचार चल्यो सम्मुख मग। लटपटात पग धरनि धरत गज।—सूर०। २ डिगना। चूक जाना। ठीक तरह से न चलना।
क्रि० अ० [सं०√लल] १ लुभाना। मोहित होना। २ लीन होना। अनुरक्त होना।

लटा†—वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १ लोलुप। २ लंपट। लुच्चा। नीच। ३. तुच्छ। हीन। ४ बुरा। खराब।

लटापटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लटपटाने की क्रिया या भाव। २ लड़ाई झगड़ा।

लटापोट(पु)†—वि० [हिं० लोट पोट] मोहित। मुग्ध।

लटी—स्त्री० [हिं० लटा=बुरा] १ बुरी बात। २ झूठी बात। गप। ३ साधुनी। भक्तिन। ४ वेश्या। रंडी।

लटुआ—संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

लटुक—संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

लटुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "लटूरी"। उ०—लटकन ललित लटुरियाँ मसि बिंदु गोरोचन।—सूर०।

लटू—संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।
वि० दे० "लट्टू"। उ०—कल न परै पलकौं भट्ट लटू कियौ तुव नेह। गोरे मुँह मन गड़ि रह्यो रहै अगोरे गेह।—रस-साराग।

लटूरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लट] सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा। केश। अलक।

लटोरा—संज्ञा पुं० [हिं० लस = चिपचिपाहट] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है।

लट्टपट्टा—वि० दे० "लथपथ"।

लट्टू—संज्ञा पुं० [सं० लुठन = लुढ़कना] एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते हैं।

वि० मोहित। मुग्ध।

लट्ठ—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि] बड़ी लाठी।

लट्ठबाज—वि० [हिं० लट्ठ + फा० बाज] लाठी से लड़नेवाला। लठैत।

लट्ठमार—वि० [हिं० लट्ठ + मारना] १ लट्ठ मारनेवाला। २ अप्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।

लट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० लट्ठ] १ लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। बल्ला। शहतीर। २. लकड़ी का बल्ला। धरन। कड़ी। ३ एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।

लठिया—संज्ञा स्त्री० दे० "लाठी"।

लठैत—संज्ञा पुं० दे० "लट्ठबाज"।

लड़ंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लड़ + अंत (प्रत्य०)] १. लड़ाई। २ भिड़ंत। ३. सामना। मुकाबला।

लड़—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] १ एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। २ पंक्ति। श्रेणी। ३. रस्सी का एक तार। पान।

लड़कई—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लड़कखेल—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + खेल] १ बालकों का खेल। २ सहज काम।

लड़कना—क्रि० अ० दे० "लड़कपन"।

लड़कपन—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + पन (प्रत्य०)] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य बालक हो। बाल्यावस्था। २ चपलता। चंचलता। ३ नादानी। नासमझी।

लड़कबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़का + बुद्धि] बालकों की सी समझ। नासमझी।

लड़का—संज्ञा पुं० [सं० √लड् + क] [स्त्री० लड़की] १ थोड़ी अवस्था का मनुष्य। बालक। २ पुत्र। बेटा।

मुहा०—लड़कों का खेल = (१) बिना महत्व की बात। (२) सहज बात या काम।

लड़काईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लड़कानिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कई"।

लड़का बाला—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + सं० बाल] १. संतान। औलाद। २. परिवार।

लड़किनी—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की"।

लड़की—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़का] १ छोटी अवस्था की कन्या। २. बेटी।

लड़कौरी—वि० स्त्री० [हिं० लड़का + औरी (प्रत्य०)] (स्त्री०) जिसकी गोद में लड़का हो।

लड़खड़ाना—क्रि० अ० [सं० √लड् + हिं० खड़ा] १ खड़े रहने में असमर्थ होने के कारण इधर उधर झुक पड़ना। झोंका खाना। डगमगाना। २ डगमगाकर गिरना। विचलित होना। चूकना।

लड़ना—क्रि० अ० [सं० रणन] १ एक दूसरे को चोट पहुँचाना। युद्ध करना। भिड़ना। २ मल्लयुद्ध करना। ३ झगड़ा करना। हुज्जत करना। तकरार करना। ४ बहस करना। ५ टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। ६ व्यवहार आदि में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ७. पूर्ण रूप से घटित होना। सटीक बैठना। ८ बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। ९ लक्ष्य पर पहुँचना। भिड़ना।

लड़बड़ाना—क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

लड़बावला—वि० [सं० लड़ = लड़कों का सा + बावला] [स्त्री० लड़बावरी] १ अल्हड़। मूर्ख। नासमझ। अहमक। २ गँवार। अनाड़ी। ३ जिसमें मूर्खता प्रकट हो।

लड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लड़ + आई (प्रत्य०)] १ एक दूसरे पर वार। भिड़ंत। द्वंद्व। २ संग्राम। जंग। लड़ाई। ३ महायुद्ध। कुश्ती। ४ झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ५ वादविवाद। बहस। ६ टक्कर। ७ व्यवहार या मामले में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ८ अनबन। विरोध। वैर।

लड़ाका, लड़ाकू—वि० [हिं० √लड़ + आका, आकू (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १ योद्धा। सिपाही। २ झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

लड़ाना—क्रि० स० [हिं० लड़ना का प्रे० रूप] १ दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २ झगड़े में प्रवृत्त करना। ३ टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ४ लक्ष्य पर पहुँचाना। ५. परस्पर उलझाना। ६. सफलता के लिये व्यवहार में लाना।

क्रि० स० [हिं० लाड़ = प्यार] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।

लड़ायता†—वि० दे० "लड़ैता"।

लड़ावलीⓅ—वि० स्त्री० [हिं० लाड़ + वाली] लाड़प्यारवाली। उ०—चोवा चंदन चंद्रक चाहै कहा लड़ावली। तेरे गात कहत कोसक लौं फैलै सु गंधावली। —छंदार्णव।

लड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

लड़ीला—वि० दे० "लाडला"।

लड़ूआ—संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।

लड़ैता—वि० [हिं० लाड़ = प्यार + ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १. लाडला। दुलारा। २ जो लाड़प्यार के कारण बहुत इतराया हो। धृष्ट। शोख। ३. प्यारा। प्रिय।

वि० [हिं० √लड़ + ऐता (प्रत्य०)] लड़नेवाला। योद्धा।

लड़ैती—वि० स्त्री० [हिं० लाड़ + ऐती] (प्रत्य०) दुलारी। प्यारी। उ०—सुनति बचन तत्काल, लड़ैती नैनि उघारे, निरखति ही घनस्याम, बदन तैं केस सँवारे। —नंददास०।

लड्डू—संज्ञा पुं० [सं० लड्डुक] गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।

मुहा०—ठग के लड्डू खाना = पागल होना। नासमझी करना। होशहवास में न रहना। मन के लड्डू खाना या फोड़ना = व्यर्थ किसी असंभव लाभ की कल्पना करना।

लड्यानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० लाड़ से ना० धा०] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।

लढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "लढ़िया"।

लढ़िया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लुढ़कना] बैलगाड़ी।

लत—संज्ञा स्त्री० [सं० रति] बुरी आदत। दुर्व्यसन। बुरी टेव।

लतखोर, लतखोरा—वि० [हिं० लात + फा० खोर = खानेवाला] [स्त्री० लतखोरिन] १ सदा लात खानेवाला। २ नीच। कमीना। ३ दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा। पायंदाज। गुलमगर्दा।

लतमर्दन—संज्ञा स्त्री० [हिं० लात + सं० मर्दन] पैरों से रौंदने की क्रिया।

लतर—संज्ञा स्त्री० [सं० लता] बेल। वल्ली।

लतरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है। २ कपड़े, टाट आदि की एक प्रकार की बहुत साधारण चप्पल।

लता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली। बेल। बौर। २ कोमल काड या शाखा। ३ सुंदरी स्त्री।

लताकुंज, लतागृह—संज्ञा पुं० [सं०] लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० लताड़ना] १. लताड़ने की क्रिया या भाव। २ दे० "लथाड़"।

लताड़ना—क्रि० स० [हिं० लात] १ पैरों से कुचलना। रौंदना। २ हैरान करना।

लता पत्ता—संज्ञा पुं० [सं० लतापत्र] १. पेड़पत्ते। २. जड़ीबूटी।

लताभवन—संज्ञा पुं० [सं०] लतागृह।

लतामंडप—संज्ञा पुं० [सं०] लतागृह।

लतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी लता। बेल।

लतियर, लतियल—वि० दे० "लतखोर"।

लतियाना†—क्रि० स० [हिं० लात से ना० धा०] १ पैरों से दबाना या रौंदना। २ खूब लातें मारना।

लतीफा—संज्ञा पुं० [अ०] १. चोज की बात। चुटकुला। २ हँसी की छोटी कहानी।

लत्ता—संज्ञा पुं० [सं० लत्तक] १ फटा पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २ कपड़े का टुकड़ा।

यौ०—कपड़ालत्ता = पहनने के वस्त्र।

लत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० लात] पशुओं का पादप्रहार। लात।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लत्ता] कपड़े की लंबी धज्जी।

लथपथ—वि० [अनु०] १ भींगा हुआ। तराबोर। २. (कीचड़ आदि में) सना हुआ।

लथाड़—संज्ञा स्त्री० [अनु० लथपथ] १ जमीन पर पटककर लोटाने या घसीटने की क्रिया। चपेट। २ पराजय। हार। ३ झिड़की।

लथाड़ना—क्रि० स० दे० "लथेड़ना"।

लथेड़ना—क्रि० स० [अनु० लथपथ] १. कीचड़ आदि में लपेटकर गंदा करना। २ पटककर इधर उधर लोटाना या घसीटना। ३ हैरान करना। थकाना। ४ डाँटना। डपटना।

लदना—क्रि० अ० [सं० लदन] १. भारयुक्त होना। बोझ ऊपर लेना। २ आच्छादित होना। पूर्ण होना। ३ सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। ४ बोझ का डाला या रखा जाना। ५ जेलखाने जाना। कैद होना। ६ बीत जाना। सदा के लिये समाप्त होना।

लदवाना—क्रि० स० [हिं० लादना का प्रे० रूप] लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाऊⓅ†—वि० दे० "लदाव"।

लदाव—संज्ञा पुं० [हिं० √लद+आव (प्रत्य०)] १ लादने की क्रिया या भाव। २ भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ४. ईंटों की जुड़ाई जो बिना धरन या कड़ी के अधर में ठहरी हो।

लदुआ, लद्दू—वि० [हिं० √लद+उआ, ऊ (प्रत्य०)] बोझ ढोनेवाला। जिसपर बोझ लादा जाय।

लद्धⓅ—वि० [सं० लब्ध] प्राप्त। लब्ध। उ०—कित्ति लद्ध सुर सद्दाम।

लद्दड़—वि० [हिं० लदना ?] सुस्त। आलसी।

लद्धनाⓅ—क्रि० स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना।

लप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. लचीली चीज को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २ लपने या लचकने का गुण। ३ छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।

संज्ञा पुं० [देश०] अंजली।

लपक—संज्ञा स्त्री० [अनु० लप] १. ज्वाला। लपट। लौ। २ चमक। लपलपाहट। ३ तेजी। वेग।

लपकना—क्रि० अ० [हिं० लपक] १ झपट पड़ना। तुरत दौड़ पड़ना।

मुहा०—लपककर = (१) तुरत तेजी से जाकर। (२) तुरंत। झट से।

२ आक्रमण करने या लेने के लिये झपटना।

लपका—संज्ञा पुं० [हिं० लपक] लत। आदत। चस्का।

क्रि० अ० लगन लगाना।

लपझप—वि० [अनु०] १. चंचल। चपल। २ तेज। फुरतीला।

लपट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौ+पट] १. अग्निशिखा। ज्वाला। आग की लौ। २ तपी हुई वायु। आँच। ३. गंध से भरा वायु का झोंका। ४. गंध। महक। ५.। उ०—सूरदास प्रभु की बानक देखे, गोपी टारे न टरत निपट आवै सोंधे की लपट।—सूर०।

लपटना†—क्रि० अ० दे० "लिपटना"।

लपटा—संज्ञा पुं० [हिं० √लपट] १. गाढ़ी गीली वस्तु। २ लपसी। ३. कढ़ी।

लपटाना—क्रि० स० दे० १. "लिपटाना"। २ दे० "लपेटना"।

† क्रि० अ० १ संलग्न होना। सटना। २. उलझना। फँसना।

लपना†—क्रि० अ० [अनु० लप लप] १ झोंके के साथ इधर उधर लचना। २. झुकना। लचना। ३ लपकना। ललचना। ४. हैरान होना।

संज्ञा पुं० [सं० लपन] कहना। कथन। उ०—फेरि तौ चालपनो करनो री इन्हैं लपनो सपनो सम ह्वैहै।—शृंगार०।

लपलपाना—क्रि० अ० [अनु० लपलप] [संज्ञा लपलपाहट] १. लपना। २ लचीली कोमल वस्तु का इधर उधर हिलना डुलना। ३ छुरी, तलवार आदि का चमकना। झलकना।

क्रि० स० १ दे० "लपाना"। २ छुरी, तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।

लपसी—संज्ञा स्त्री० [सं० लप्सिका] १ थोड़े घी का हलुआ। २. गीली गाढ़ी वस्तु। ३ पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है। लपटा।

लपाना—क्रि० स० [अनु० लपलप] १ लचीली छड़ी आदि को इधर उधर लचाना। फटकारना। २ आगे बढ़ाना।

लपेट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लपटना] १. लपेटने की क्रिया या भाव। २ बंधन का चक्कर। घुमाव। फेरा। ३ ऐंठन। बल। मरोड़। ४ घेरा। परिधि। ५ उलझन। जाल या चक्कर।

लपेटन—सं० स्त्री० दे० "लपेट"।

संज्ञा पुं० [हिं० लपेटना] १ लपेटनेवाली वस्तु। २ बाँधने का कपड़ा। बेठन। वेठन। ३ पैरों में उलझनेवाली वस्तु।

लपेटना—क्रि० स० [हिं० लिपटना] १. घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना। चक्कर देकर चारों ओर ले जाना। २ फैली हुई वस्तु को लच्छे या गट्ठर के रूप में करना। समेटना। ३ कपड़े आदि के अंदर बाँधना। ४ पकड़ लेना। ५ गतिविधि बंद करना। ६. उलझन में डालना। झंझट में फँसाना।

लपेटवाँ—वि० [हिं०√लपेट+वाँ (प्रत्य०)] १ जो लपेटा हो। २ जिसमें सोने चाँदी के तार लपेटे गए हों। ३. जिसका अर्थ छिपा हो। गूढ़। व्यंग्य।

लपेटा—संज्ञा पुं० दे० "लपेट"।

लफंगा—वि० [फा० लफंग] १ लपट। दुश्चरित्र। २ शोहदा। आवारा।

लफना(पु)†—क्रि० अ० दे० "लपना"।

लफलफानि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लपलपाना] लपलपाने की क्रिया या भाव।

लफाना(पु)†—क्रि० स० दे० "लपाना"।

लफ्ज—संज्ञा पुं० [अ०] शब्द।

लबझना(पु)†—क्रि० अ० [देश०] उलझना।

लबड़धोंधों—संज्ञा स्त्री० [हिं० लबाड़+धूम] १ झूठमूठ का हल्ला। २ गड़बड़ी। अंधेर। कुव्यवस्था। ३ बेईमानी की चाल।

लबड़ना(पु)†—क्रि० अ० [सं०√लप्=बकना] १ झूठ बोलना। २ गप हाँकना।

लबरा†—वि० दे० "लबार"।

लबादा—संज्ञा पुं० [फा०] १ रूईदार चोगा। दगला। २ अबा। चोगा।

लबार†—वि० [सं० लपन=बकना] १ झूठा। मिथ्यावादी। २ गप्पी। प्रपंची। उ०—आज गए औरहि काहू के रिस पावति कहि बड़े लबार। —सूर०।

लबारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लबार] झूठ बोलने का काम।

वि० १ झूठा। २ चुगुलखोर।

लबालब—क्रि० वि० [फा०] मुँह या किनारे तक। छलकता हुआ।

लबासी(पु)†—संज्ञा, वि० दे० "लबासी"।

लबेद—संज्ञा पुं० [सं० वेद का अनु०] लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात।

लबेदा—संज्ञा पुं० [सं० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा बड़ा डंडा।

लब्ध—वि० [सं०] १ मिला हुआ। प्राप्त। २ भाग करने से आया हुआ फल (गणित)।

लब्धकाम—वि० [सं०] जिसकी कामना पूरी हो गई हो।

लब्धप्रतिष्ठ—वि० [सं०] प्रतिष्ठित। सम्मानित।

लब्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।

लभ्य—वि० [सं०] १ पाने योग्य। जो मिल सके। २. उचित। मुनासिब।

लमकना†—क्रि० अ० [हिं० लपकना] १ लपकना। २. उत्कंठित होना। लटकना।

लमछड़—वि० [हिं० लंबा+छड़] बिलकुल लंबा।

संज्ञा पुं० भाला। बरछा।

लमटंगा—वि० [हिं० लंबा+टाँग] लंबी टाँगोंवाला।

लमतड़ंग—वि० [हिं० लंबा+ताड़+सं० अंग] [स्त्री० लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।

लमधी†—संज्ञा पुं० [देश०] समधी का बाप।

लमाना(पु)†—क्रि० स० [सं० लंबन] १ लंबा करना। २ दूर तक आगे बढ़ाना।

क्रि० अ० दूर निकल जाना।

लय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पदार्थ का दूसरे में मिलना। प्रवेश। २ विलीन होना। मग्नता। ३. ध्यान में डूबना। एकाग्रता। ४ अनुराग। प्रेम। ५ कार्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना। ६ जगत् का नाश। प्रलय। ७ विनाश। लोप। ८ मिल जाना। संश्लेष। ९ संगीत में नृत्य, गीत, और वाद्य की समता।

संज्ञा स्त्री० १ गीत गाने का ढंग या तर्ज। धुन। २ संगीत में सम।

लयन—संज्ञा पुं० [सं०] लय होने की क्रिया या भाव।

लयमान—वि० [सं० लय+हिं० मान (प्रत्य०)] जो लय हो गया हो। लय हो जानेवाला।

लर(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

लरकई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरकना(पु)†—क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लरकिनी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की"।

लरखरना(पु)†—क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

लरखरनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़खड़ाना] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।

लरजना—क्रि० अ० [फा० लरजा=कंप] १ काँपना। हिलना। २ दहल जाना। डरना। उ०—शरण राखि ले हो नंददाता। घटा आई गरजि युवति गई मन लरजि, बीजु चमकति तरजि, डरत गाता। —सूर०।

लरझर(पु)†—वि० [हिं० लड़+झड़ना] बहुत अधिक। प्रचुर।

लरना(पु)—क्रि० अ० दे० "लड़ना"।

लरनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना] लड़ाई।

लरबरी—वि० [हिं० लरना] लड़खड़ाने वाली। लटपटानेवाली। उ०—जानि जानि धरी तिय बानी लरबरी सब, आली तिहि धरी हँसि हँसि लोटि लोटि। —शृंगार०।

लराई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ाई"।

लरिकई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरिकसलोरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लरिका+लोल=चंचल] लड़कों का खेल। खेलवाड़।

लरिका(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।

लरिकाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरिया†—संज्ञा पुं० [?] दुपट्टा।

लरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।

लल(पु)—संज्ञा पुं० [?] सार तत्व।

ललक—संज्ञा स्त्री० [सं० ललन] प्रबल अभिलाषा। गहरी चाह।

ललकना—क्रि० अ० [हिं० ललक से ना० धा०] १ पाने की गहरी इच्छा करना। लालसा करना। ललचना। २ चाह की उमंग से भरना।

ललकार—संज्ञा स्त्री० [?] ललकारने की क्रिया या भाव। चुनौती।

ललकारना—क्रि० स० [हिं० ललकार] १. युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिये उच्च स्वर से आह्वान करना। प्रचारण। २ लड़ने के लिये उसकाना या बढ़ावा देना। चुनौती देना।

ललकित—वि० [हिं० ललक+इत (प्रत्य०)] गहरी चाह से भरा हुआ।

ललचना—क्रि० अ० [हिं० लालच से ना० धा०] १ लालच करना। २ मोहित होना। लुब्ध होना। ३ अभिलाषा से अधीर होना।

ललचाना—क्रि० स० [हिं० ललचना का स० रूप] १. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २. मोहित करना। लुभाना। ३ कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना।

मुहा०—जी या मन ललचाना=मन मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।
(पु)†क्रि० अ० दे० "ललचना"।

ललचौहाँ—वि० [हिं० लालच+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललचौहीं] लालच से भरा। ललचाया हुआ।

ललन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्यारा बालक। २. प्रिय नायक या पति। ३. क्रीडा।

ललना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण और दो सगण हों। उ०—वारत सोंप, रेसम के पलना। चारित भैया, फूलन से ललना।

संज्ञा पुं० [सं० ललन] प्यारा बेटा।

लला—संज्ञा पुं० [हिं० लाल] [स्त्री० लली] १ प्यारा या दुलारा लड़का। २. प्रिय नायक या पति।

ललाई—संज्ञा स्त्री० दे० "लाली"।

ललाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाल। मस्तक। माथा। २ किस्मत का लिखा।

ललाटपटल—संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक का तल। माथे की सतह।

ललाटरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपाल का लेख। भाग्यलेख।

ललाना(पु)†—क्रि० अ० [सं० ललन] लोभ करना। ललचना। लालायित होना।

ललाम—वि० [सं०] [भाव० ललामता] १ रमणीय। सुंदर। २ लाल। सुर्ख। ३ श्रेष्ठ। प्रधान।

संज्ञा पुं० १ अलंकार। गहना। २ रत्न। ३ चिह्न। निशान। ४ घोड़ा।

ललामी—संज्ञा स्त्री० [सं० ललाम] १ सुंदरता। २ लालिमा। लाली।

ललित—वि० [सं०] [स्त्री० ललिता] १ सुंदर। मनोहर। २ मनचाहा। प्यारा। ३ हिलता डोलता हुआ।

संज्ञा पुं० १ शृंगार रस में एक कायिक हाव या अंगचेष्टा जिसमें सुकुमारता (नज़ाकत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २ एक विषम वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और अंत्य लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु, तीसरे में दो नगण और दो सगण तथा चौथे में तीन नगण, जगण, और यगण होते हैं। उ०—गोविंदा पद ते जु मित्त [illegible]। निहिचै यहि भवसिंधु पार जैहौं। भ्रम अरु मद तज रे। तन मन धन सन भजिए हरि को रे। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, मगण और रगण हों। उ०—ललित जिन सिया की शोभा लखी। अमरनिय कहँ सो धन्या सखी। इसे तत छंद भी कहते हैं। ४ एक अलंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है। ५. एक रागिनी।

ललितई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "ललिताई"।

ललितकला—संज्ञा स्त्री० [सं० ललित+कला] वे कलाएँ जिनमें कल्पना और बुद्धि का सुंदरतम उपयोग हो, जैसे—संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि।

ललितपद—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ और अंत में दो दीर्घ हों। उ०—धनि वृंदावन धनि बंसीवट, धनि सब गोपी ग्वाला। धनि जमुना तट जहाँ मुदित मन, रास कियो नंदलाला। नरेंद्र। दोवे। सार।

ललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, जगण और रगण हों। उ०—बोली सुशील ललिता सुजानती। खेलौं लुकौवल जुहौं पदारती। २ राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।

ललिताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ललित+हिं० आई (प्रत्य०)] सुंदरता।

ललितोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये सम, तुल्य आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाए जाते हैं, जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि भाव प्रकट होते हैं।

लली—संज्ञा स्त्री० [हिं० लला] १ लड़की के लिये प्यार का शब्द। २ नायिका। प्रेयसी। प्रेमिका।

ललौहाँ—वि० [हिं० लाल+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललौहीं] सुर्खी मायल। ललाई लिए हुए।

लल्ला—संज्ञा पुं० दे० "लला"।

संज्ञा स्त्री० [सं० ललना] जीभ। जबान।

लल्लोचप्पो—संज्ञा स्त्री० [सं० √लल्+(अनु०) चप] चिकनीचुपड़ी बात। ठकुरसोहाती।

लल्लोपत्तो—संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लोचप्पो"।

लवंग—संज्ञा पुं० [सं०] लौंग (मसाला)।

लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत थोड़ी मात्रा। २ दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का समय। ३ लवा नाम की चिड़िया। ४ लवंग। ५ श्री रामचंद्र के दो यमज पुत्रों में से एक।

लवकना†—क्रि० स० दे० "लौकना"।

लवका†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौकना] बिजली। विद्युत्।

लवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ नमक। नोन। २ दे० "लवणासुर"। ३ दे० "लवणसमुद्र"।

लवणसमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणोक्त सात समुद्रों में से एक। खारे पानी का समुद्र।

लवणासुर—संज्ञा पुं० [सं०] मधु नामक असुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।

लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ काटना। छेदना। २ खेत की कटाई। लुनाई। लौनी।

लवना—क्रि० स० दे० "लुनना"।

लवनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लवनि, लवनी—संज्ञा स्त्री० [सं० लवन] खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई।

संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन।

लवन्या—संज्ञा स्त्री० [सं० लावण्य] लावण्य। लुनाई। उ०—राधा भूले न जानौ यो है लवन्या न मेरी। —छंदार्णव।

लवर†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] अग्नि की लपट। ज्वाला।

लवला—संज्ञा स्त्री० [हिं० लवर] ज्योति। छटा। उ०—चंपकमाल सी हेमलता सी कि होइ जवाहिर की लवला सी। —शृंगार०।

लवलासी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० लय+हिं० लसी] प्रेम की लगावट।

लवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २ एक विषम वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण में १६, दूसरे में १०, तीसरे में ८ और चौथे में २० वर्ण हों। उ०—दनुज कुल अरि जगदित धाम धर्ता। सच्ची अहहि प्रभु जगत भर्ता॥ [illegible] हर्ता। सरदम तज मन गज निज प्रभु भवदुःखहर्ता।

लवलीन—वि० [सं० लय+हिं० लीन] तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लवलेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अत्यंत अल्प संसर्ग ।

लवा†—संज्ञा पुं० [सं० लाला] भुने हुए धान या ज्वार की खील । लावा ।

संज्ञा पुं० [सं० वल] तीतर की जाति का एक पक्षी ।

लवाई—वि० [देश०] वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० √लव + आई (प्रत्य०)] खेत की फसल को कटाई । लुनाई ।

लवाजमा—संज्ञा पुं० [अ० लवाजिम] १ किसी के साथ रहनेवाला दलबल और साज सामान । २ आवश्यक सामग्री ।

लवारा—संज्ञा पुं० [हिं० लवाई] गौ का बच्चा ।

†वि० दे० "आवारा" ।

लवासी(पु)†—वि० [सं० √लप् = बकना + हिं० आसी (प्रत्य०)] १. गप्पी । बकवादी । २ लपट ।

लशकर—संज्ञा पुं० [फा०] १. सेना । फौज । २ भीड़भाड़ । दल । ३. सेना का पड़ाव । छावनी । ४. जहाज में काम करनेवालों का दल ।

लशकरी—वि० [फा० लशकर] १. फौज का । सेना संबंधी । २. जहाज पर काम करनेवाला । खलासी । जहाजी ।

संज्ञा स्त्री० जहाजियों या खलासियों की भाषा ।

लषन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लखन" ।

लस—संज्ञा पुं० [सं० √लस्] १ चिपकने या चिपकाने का गुण । चिपचिपाहट । २. वह जिसके लगाव से एक वस्तु दूसरी से चिपक जाय । लासा । ३ चित्त लगने की बात । आकर्षण ।

लसदार—वि० [हिं० लस + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें लस हो । लसीला ।

लसना—क्रि० स० [सं० लसन] एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना । चिपकाना ।

(पु)क्रि० अ० १ शोभित होना । छजना । फबना । २ विराजना ।

लसनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० लसना] १ स्थिति । विद्यमानता । २ शोभा । छटा ।

लसम—वि० [देश०] दूषित । खोटा । उ०—और भूप परखि सुलखि तौलि ताइ लेत, लसम के खसम तुही पै दसरत्थ के । —कविता० ।

लसलसा—वि० दे० "लसदार" ।

लसलसाना—क्रि० अ० [हिं० लस से ना० धा०] चिपचिपा होना ।

लसित—वि० [सं०] सजा हुआ । सुशोभित ।

लसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लस + ई (प्रत्य०)] १ लस । चिपचिपाहट । २ दिल लगने की वस्तु । आकर्षण । ३ लाभ का योग । फायदे का डौल । ४ संबंध । लगाव । ५. दूध या दही और पानी मिला शरबत ।

लसीला—वि० [हिं० लस + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लसीली] १. लसदार । २ सुंदर । शोभायुक्त ।

लसोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० लस = चिपचिपाहट] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल औषध के काम में आते हैं ।

लस्टम पस्टम†—क्रि० वि० [देश०] १ किसी न किसी तरह से । ज्यों त्यों । २ भद्दे ढंग से ।

लस्त—वि० [हिं० लटना] १ थका हुआ । शिथिल । २ अशक्त ।

लस्सी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लस] १ चिपचिपाहट । लसी । २ छाछ । मठा । तक्र । ३ मथा हुआ दही मिश्रित शरबत ।

लहँगा—संज्ञा पुं० [हिं० लक = कमर + अँगा ?] कमर के नीचे का अंग ढकने के लिये स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा ।

लहक—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहकना] १. लहकने की क्रिया या भाव । २ आग की लपट । ३ शोभा । छवि । ४ चमक । द्युति ।

लहकना—क्रि० अ० [अनु०] १ झोंके खाना । लहराना । २ हवा का बहना । ३ आग का इधर उधर लपट छोड़ना । दहकना । ४ लपकना । ५ उत्कंठित होना ।

लहकाना, लहकारना—क्रि० स० [हिं० लहकना] लहकने में किसी को प्रवृत्त करना ।

लहकौर, लहकौरि—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लह + कौर (ग्रास)] विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर (ग्रास) डालते हैं ।

लहजा—संज्ञा पुं० [अ० लहज] गाने या बोलने का ढंग । स्वर । लय । तर्ज ।

लहनदार—संज्ञा पुं० [हिं० लहना + फा० दार] ऋण देनेवाला । महाजन ।

लहना—क्रि० स० [सं० लभन] प्राप्त करना ।

संज्ञा पुं० [सं० लभन] उधार दिया हुआ रुपया पैसा । २. रुपया पैसा जो किसी कारण किसी से मिलनेवाला हो ।

लहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना] १ प्राप्ति । २ फलभोग ।

लहबर—संज्ञा पुं० [हिं० लहर ?] १. एक प्रकार का लंबा पहनावा । लबादा । चोगा । २. झंडा । निशान ।

लहर—संज्ञा स्त्री० [सं० लहरी] १ ऊँची उठती हुई जल की राशि । बड़ा हिलोरा । मौज । २ उमंग । जोश । ३ मन की मौज । ४ बेहोशी, पीड़ा, आदि का वेग जो रुक रुककर उत्पन्न हो । झोंका ।

मुहा०—लहर आना = साँप के काटने से बेहोश व्यक्ति को रह रहकर होश आना ।

५ आनंद की उमंग । मजा । मौज ।

यौ०—लहर बहर = आनंद और सुख ।

६ इधर उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल । ७ चलते हुए सर्प की सी कुटिल रेखा । ८ हवा का झोंका । महक । लपट ।

लहरदार—वि० [हिं० लहर + फा० दार (प्रत्य०)] जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो ।

लहरना—क्रि० अ० दे० "लहराना" ।

लहरपटोर—संज्ञा पुं० [हिं० लहर + सं० पट] पुरानी चाल का एक धारीदार रेशमी कपड़ा ।

लहरपटोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहरपटोर] दे० "लहरपटोर" । उ०—पुनि बहु चीर आन सब छोरी । सारी कंचुकि लहरपटोरी । —पदमावत ।

लहरा—संज्ञा पुं० [हिं० लहर] १ लहर । तरंग । २ मौज । आनंद । मजा ।

लहरान—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहर + आन (प्रत्य०)] लहराने की क्रिया या भाव ।

लहराना—क्रि० अ० [हिं० लहर से ना० धा०] १ हवा के झोंके से इधर उधर हिलना डोलना । लहरें खाना । २ पानी का हवा के झोंके से उठना और गिरना । बहना या हिलोरा मारना । ३ इधर उधर मुड़ते या झोंका खाते हुए चलना । ४ मन का उमंग में होना । ५ उत्कंठित होना । लपकना । ६ आग की लपट का हिलना । दहकना । भड़कना । ७ शोभित होना । लसना । विराजना ।

क्रि० स० १. हवा के झोंके में इधर उधर हिलाना। २. वक्र गति से ले जाना।

लहरिया—संज्ञा पुं० [हिं० लहर+इया (प्रत्य०)] १. लहरदार चिह्न। टेढ़ी मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग बिरंगी टेढ़ी मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं। उ०—लाल सिर पाग लहरिया सोहै।—नंददास०। ३. उपर्युक्त प्रकार के कपड़े की साड़ी या धोती।

संज्ञा स्त्री० दे० "लहर"।

लहरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग।

†वि० [हिं० लहर+ई (प्रत्य०)] मन की तरंग के अनुसार चलनेवाला। मनमौजी।

लहलहा—वि० [हिं० लहलहाना] [स्त्री० लहलही] १. लहलहाता हुआ। हराभरा। २. आनंद से पूर्ण प्रफुल्ल। ३. हृष्टपुष्ट।

लहलहाना—क्रि० अ० [हिं० लहरना (पत्तियों का)] १. हरी पत्तियों से भरना। हरा भरा होना। २. प्रफुल्लित होना। खुशी से भरना। ३. सूखे पेड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ निकलना। पनपना।

लहसुन—संज्ञा पुं० [सं० लशुन] एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम आती है।

लहसुनिया—संज्ञा पुं० [हिं० लहसुन+इया (प्रत्य०)] धूमिल रंग का एक रत्न। रुद्राक्षक।

लहा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लाह"।

लहाछेह—संज्ञा पुं० [?] १. नाच की एक गति। २. नाचने में तेजी और झपट। ३. तीव्रता। तेजी।

लहालहा(पु)—वि० दे० "लहलहा"।

लहालोट—वि० [सं० लाभ, हिं० लाह, लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ। २. खुशी से भरा हुआ। ३. प्रेममग्न। मोहित। लट्टू।

लहास†—संज्ञा स्त्री० दे० "लाश"।

लहासी—संज्ञा स्त्री० [सं० लभस] मोटी रस्सी।

लहि†—अव्य० [हिं० लहना] पर्यंत। तक।

लहु(पु)†—अव्य० दे० "लौं"।

लहुरा†—वि० [सं० लघु] [स्त्री० लहुरी] छोटा।

लहू(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० लोह] रक्त। खून।

मुहा०—लहू लुहान होना = खून से भर जाना। अत्यंत लहू बहना।

लहेरा—संज्ञा पुं० [हिं० लाह=लाख+एरा (प्रत्य०)] लाह का पक्का रंग चढ़ानेवाला।

लाँक†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंक] कमर। कटि।

लाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल=पूँछ] धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर में खोंस लिया जाता है। कांछ।

लाँगल—संज्ञा पुं० [सं०] खेत जोतने का हल।

लांगली—संज्ञा पुं० [सं० लांगलिन्] १. बलराम। २. नारियल। ३. साँप।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम। २. करियारी। ३. मजीठ।

लांगूली—वि० पुं० [सं० लांगूलिन्] बंदर।

लाँघना—क्रि० स० [सं० लंघन] इस पार से उस पार जाना। डाँकना। नाँघना।

लाँच—संज्ञा स्त्री० [देश०] रिश्वत। घूस।

लांछन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। २. दाग। ३. दोष। कलंक।

लाछना—संज्ञा स्त्री० दे० "लांछन"।

लांछनित—वि० दे० "लांछित"।

लांछित—वि० [सं०] जिसे लांछन लगा हो। कलंकित।

लांझ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लंघन] बाधा। रुकावट।

लांपट्य—संज्ञा पुं० [सं०] 'लंपट' का भाव। लपटता।

लांबा†(पु)—वि० दे० "लंबा"।

लाइ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० अलात=लुक] अग्नि।

लाइक—वि० दे० "लायक"। उ०—अहो विप्र धन लोभ न कीजै। या ... लाइक कौं दीजै।—नंददास०।

लाइट—संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रकाश। रोशनी।

लाइट हाउस—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पहुँचनेवाला प्रकाश जलता है। प्रकाशगृह। २. समुद्र में चलनेवाले जहाजों के ध्यान के लिये जलाए जानेवाले प्रकाशपुंज का स्थान या घर।

लाइन—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. पंक्ति। कतार। २. सतर। ३. रेखा। लकीर। ४. रेल की सड़क। ५. घरों की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं। बारिक। लैन।

लाई†—संज्ञा स्त्री० [सं० लाजा] धान का लावा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लगाना] चुगली। निंदा।

यौ०—लाई लुतरी = (१) चुगली। शिकायत। (२) वह (स्त्री) जो दूसरों की चुगलीखाती फिरती हो।

लाकड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "लकड़ी"।

लाक्षणिक—वि० [सं०] १. जिससे लक्षण प्रकट हो। २. लक्षण संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] १. वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हों। २. लक्षण जाननेवाला।

लाक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाख। लाह।

लाक्षागृह—संज्ञा पुं० [सं०] लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।

लाक्षारस—संज्ञा पुं० [सं०] महावर।

लाक्षिक—वि० [सं०] १. लाख का बना हुआ। २. लाख संबंधी।

लाख—वि० [सं० लक्ष] १. सौ हजार। २. बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००।

क्रि० वि० बहुत। अधिक।

मुहा०—लाख से लीख होना = सब कुछ से कुछ न रह जाना। उ०—पदु तप सुनत सोर अँतरीखा। रहे जो लाख भए ते लीखा।—पद्मावत।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। लाह। २. वे छोटे लाल कीड़े जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।

लाखना—क्रि० अ० [हिं० लाख से ना० धा०] लाख लगाकर कोई छेद बंद करना।

(पु)†क्रि० स० [सं० लक्षण] जानना।

लाखागृह—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लाखिराज—वि० [अ०] (जमीन) जिसका खिराज या लगान न देना पड़ता हो। माफी।

लाखी—वि० [हिं० लाख+ई (प्रत्य०)] लाख के रंग का। मटमैला लाल।

संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा।

लाग—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १ संपर्क। संबंध। लगाव। २ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३ लगन। मन की तत्परता। ४ युक्ति। तरकीब। उपाय। ५. वह स्वाँग आदि जिस की निर्माणकला प्रकट न हो। जिसमें कोई विशेष कौशल हो और जो जल्दी समझ में न आवे। ६ प्रतियोगिता। चढ़ाऊपरी। ७ वैर। शत्रुता। दुश्मनी। ८ जादू। मंत्र। टोना। ६ वह नियत धन जो शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है। १० भूमिकर। लगान। ११ एक प्रकार का नृत्य।

क्रि० वि० [हिं० लौं] पर्यंत। तक।

लागडाँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग = वैर + डाँट] १ शत्रुता। दुश्मनी। २ प्रतियोगिता। चढ़ाऊपरी।

संज्ञा स्त्री० [सं० लग्नदंड] नृत्य की एक क्रिया।

लागत—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग + त (प्रत्य०)] वह खर्च जो किसी चीज की तैयारी या बनाने में लगे।

लागना(पु)—क्रि० अ० दे० "लगना"।

लागि(पु)†—अव्य० [सं० √लग्] १ कारण। हेतु। २ निमित्त। लिये। ३ द्वारा।

क्रि० वि० [हिं० लौं] तक। पर्यंत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लग्गी] लग्गी।

संज्ञा स्त्री० [सं० √लग्] लगन। प्रेम। उ०—प्रेम मिटै नहिं जनम भरि, उत्तम मन की लागि। जौं जुग भरि जल में रहै, बुझै न चकमक आगि।—नंददास।

लागू†—वि० [हिं० लाग + ऊ (प्रत्य०)] जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला।

†संज्ञा पुं० [सं० √ लग्] लाग। लगन। उ०—बाउर अंध पेमकर लागू। सौंहँ धँसा, किछु सूझ न आगू।—पदमावत।

लागे†—अव्य० [सं० √लग्] वास्ते। लिये।

लाघव—संज्ञा पुं० [सं०] १ लघु होने का भाव। लघुता। २ कमी। अल्पता। ३ हाथ की सफाई। फुर्ती। तेजी। उ०—गुरहिं प्रनाम मनहिं मन कीन्हा। अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा॥—मानस। ४ आरोग्य। तंदुरुस्ती।

अव्य० [सं०] फुर्ती से। सहज में।

लाघवी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लाघव + हिं० ई (प्रत्य०)] फुर्ती। शीघ्रता।

लाचार—वि० [फा०] जिसका कुछ वश न चलता हो। विवश। मजबूर।

क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर।

लाचारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मजबूरी। विवशता।

लाछन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लांछन"।

लाज—संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।

मुहा०—लाज रखना = प्रतिष्ठा बचाना। आबरू खराब न होने देना। लाज सँभालना = दे० "लाज रखना"।

लाजक—संज्ञा पुं० [सं० लाजा] धान का लावा।

लाजना†(पु)—क्रि० अ० [हिं० लाज से ना० धा०] लज्जित होना। शरमाना।

क्रि० स० लज्जित करना।

लाजवंत—वि० [हिं० लाज + वंत (प्रत्य०)] [स्त्री० लाजवंती] जिसे लज्जा हो। शर्मदार।

लाजवंती—संज्ञा स्त्री० [हिं० लजालू] लजालू नाम का पौधा। छुईमुई। लज्जाधुर।

लाजवर्द—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

लाजवाब—वि० [फा०] १ अनुपम। बेजोड़। २ निरुत्तर। चुप। खामोश।

लाजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चावल। २ भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।

लाजिम—वि० [अ०] अवश्य करने योग्य। २ उचित। मुनासिब। वाजिब।

लाजिमी—वि० [अ० लाजिम] जरूरी। आवश्यक।

लाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लट्ठा ?] मोटा और ऊँचा खंभा।

संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। ३ दे० "लाटानुप्रास"।

संज्ञा पुं० [अँ० लार्ड] १ अँगरेजी जमाने में प्रांतों और केंद्र के शासकों की उपाधि। २ अंगरेजों में सामंतों की परंपरागत उपाधि।

लाटरी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] टिकट खरीदने वालों में पुरस्कारवितरण का संयोग पर अवलंबित तरीका।

लाटानुप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परंतु अन्वय के हेरफेर से तात्पर्य भिन्न हो जाता है, जैसे—पीय निकट जाके नहीं, घाम चाँदनी ताहि। पीय निकट जाके, नहीं घाम चाँदनी ताहि।

लाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें पद और समास दोनों छोटे छोटे होते हैं।

लाटी†—संज्ञा स्त्री० [अनु० लट लट = गाढ़ा या चिपचिपा होना] वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होंठ सूख जाता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] लाटिका रीति।

लाठ—संज्ञा स्त्री० दे० "लष्ट"।

लाठी—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] डंडा। लकड़ी।

मुहा०—लाठी चलना = लाठियों की मारपीट होना।

लाठीचार्ज—संज्ञा पुं० [हिं० लाठी + अँ० चार्ज] भीड़ आदि हटाने के लिये पुलिस का लोगों पर लाठियाँ चलाना।

लाड़—संज्ञा पुं० [सं० √लड्] बच्चों का लालन। प्यार। दुलार।

लाड़लड़ैता—वि० दे० "लाड़ला"। उ०—तुम रानी वसुदेवगेहिनी हौं गँवारि ब्रजवासी। पठै देहु मेरो लाड़लड़ैतो वारौं ऐसी हाँसी।—सूर०।

लाड़ला—वि० [हिं० लाड़ + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० लाड़ली] जिसका लाड़ किया जाय। प्यारा। दुलारा।

लाडू—संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।

†संज्ञा पुं० [हिं० लाड़ + ऊ (प्रत्य०)] प्यार। उ०—मान न करसि, पोढ़ करु लाडू। मान करत रिस मानै चाँडू।—पदमावत।

लात—संज्ञा स्त्री० [?] १. पैर। पाँव। पद। २ पैर से किया हुआ आघात या पादप्रहार।

मुहा०—लात खाना = पैरों की ठोकर या मार सहना। लात मारना = तुच्छ समझकर छोड़ देना। त्याग देना।

लाद—संज्ञा स्त्री० [हिं० लादना] १ लादने की क्रिया या भाव। लदाई। २ पेट। उदर। ३ आँत। अँतड़ी।

लादना—क्रि० स० [सं० √लद्] १. किसी पर बहुत सी वस्तुएँ रखना। २. ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं को भरना। किसी बात का भार रखना। ३ बोझ रखना।

लादिया—संज्ञा पुं० [हिं० √लाद+इया (प्रत्य०)] वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता है।

लादी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लाद + ई (प्रत्य०)] वह गठरी जो किसी पशु पर लादी जाती है।

लाधनाⓅ†—क्रि० स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना। पाना। उ०—छिन छिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगट है लाधो।—सूर०।

लानत—संज्ञा स्त्री० [अ० लअनत] धिक्कार। फिटकार। भर्त्सना।

लाना—क्रि० अ० [हिं० √ले+आना] १ कोई चीज उठाकर या अपने साथ लेकर आना। २ उपस्थित करना। सामने रखना।

†क्रि० स० [हिं० लाय=आग] आग लगाना। जलाना।

Ⓟ† क्रि० स० [हिं० लगाना] लगाना।

लानेⓅ†—अव्य० [हिं० लाना] वास्ते। लिये।

लाप—संज्ञा पुं० [सं० लाप] बातचीत। संवाद।

लापता—वि० [अ० ला=विना+हिं० पता] १ जिसका पता न लगे। २ गुप्त। गायब।

लापरवा, लापरवाह—वि० [अ० ला+फा० परवाह] १ जिसे किसी बात की परवा न हो। बेफिक्र। २ असावधान।

लापरवाही—संज्ञा पुं० [अ० ला+फा० परवाह] १ बेफिक्री। २ असावधानी।

लापसी†—संज्ञा स्त्री० दे० "लपसी"। उ०—लचुई ललित लापसी सोहै। स्वादु सुवास सहज मन मोहै।—सूर०।

लाबरⓅ†—वि० दे० "लबार"।

लाबी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ संसद और विधान सभाओं आदि का वह बड़ा कमरा जिसमें उनके सदस्यों से बाहरी लोग मिल जुल सकते हैं। २ ऐसी सभाओं के वे दो अलग अलग गलियारे जिनमें किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में मत देने के लिये सदस्य एकत्र होते हैं।

लाभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। प्राप्ति। लब्धि। २ मुनाफा। नफा। ३. उपकार। भलाई।

लाभकारी—वि० [सं० लाभकारिन्] फायदा करनेवाला। गुणकारक।

लाभदायक—वि० [सं०] दे० "लाभकारी"।

लाभप्रद—वि० [सं०] दे० "लाभकारी"।

लाभांश—संज्ञा पुं० [सं०] किसी व्यापार से हुए लाभ का हिस्सेदारों में बाँटा हुआ अंश (अँ० डिविडेंड)।

लाम—संज्ञा पुं० [फा० लाम] १ सेना। फौज। २ बहुत से लोगों का समूह।

लामज—संज्ञा पुं० [सं० लामज्जक] एक प्रकार का तृण। पीआवाला।

लामन—संज्ञा पुं० [देश०] लहँगा।

लामा—संज्ञा पुं० [ति०] तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।

वि० दे० "लंबा"। उ०—ऊधो हरि काहे के अंतर्यामी। अजहुँ न आइ मिले इहि औसर अवधि बतावत लामी।—सूर०।

लामें†—क्रि० वि० [हिं० लाम=लंबा] दूर। अंतर पर।

लायⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० अलात] १ लपट। ज्वाला। २ आग। अग्नि।

लायक—वि० [अ०] १. उचित। ठीक। वाजिब। २ उपयुक्त। मुनासिब। ३ सुयोग्य। गुणवान्। ४ समर्थ। सामर्थ्यवान्।

संज्ञा पुं० [सं० लाजा] धान का लावा।

लायकियत, लायकी—संज्ञा स्त्री० [अ० लायक] लायक होने का भाव या धर्म। योग्यता।

लायची—संज्ञा स्त्री० दे० "इलायची"।

लार—संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १ वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है।

मुहा०—लार टपकना=किसी चीज को देखकर उसके पाने की तीव्र लालसा होना। मुँह में लार आना=दे० "लार टपकना"।

२ कतार। पंक्ति। ३ लासा। लुआब। उ०—सो मुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटानी हो।—सूर०।

क्रि० वि० [राज० लैर=पीछे] साथ। पीछे। उ०—जन्म जन्म के दूत तिरोवन को नहिं लार लगाए।—सूर०।

मुहा०—लार लगाना=फँसाना। बझाना।

लारी—संज्ञा स्त्री० [अँ०] वह लंबी मोटर गाड़ी जिसपर बहुत से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

लाल—संज्ञा पुं० [सं० लालक] १ छोटा और प्रिय बालक। २. बेटा। पुत्र। लड़का। उ०—जसुमति माय लाल अपने को शुभ दिन डोल झुलायो।—सूर०। ३. प्यारा आदमी। ४ श्रीकृष्णचंद्र।

संज्ञा पुं० [सं० लालन] दुलार। लाड़। प्यार।

संज्ञा पुं० दे० "लार"।

Ⓟ† संज्ञा स्त्री० [सं० लालसा] इच्छा। चाह।

संज्ञा पुं० दे० "मानिक"।

मुहा०—लाल उगलना=बहुत अच्छी और प्यारी बातें कहना। मीठी और सुंदर बातें कहना।

वि० १. रक्तवर्ण। सुर्ख। २ बहुत अधिक क्रुद्ध।

मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना। लाल पीले होना=गुस्सा होना। क्रोध करना।

३ (खेलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो।

मुहा०—लाल होना=बहुत अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना।

संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जिसकी मादा को "मुनियाँ" कहते हैं। उ०—ते अपने अपने मिलि निकसी भाँति भली। मनु लाल मुनिन की पाँति पिंजर दूरि चली।—सूर०।

लालचंदन—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+सं० चंदन] एक प्रकार का चंदन जिसे घिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध निकलती है। रक्तचंदन। देवीचंदन।

लालच—संज्ञा पुं० [सं० लालसा] [वि० लालची] १. किसी चीज को पाने की उत्कट इच्छा। २ लोभ। लोलुपता।

लालचहा†—वि० दे० "लालची"।

लालची—वि० [हिं० लालच+ई (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक लालच हो। लोभी।

लालटेन—संज्ञा स्त्री० [अँ० लैंटर्न] मिट्टी के तेल से जलनेवाला तथा शीशे से घिरा एक प्रकार का टीन या पीतल का दीपक। कंदील।

लालड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० लाल (रत्न)+ ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार का लाल नगीना।

लालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लालनीय] प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना। लाड़। प्यार।

संज्ञा पुं० [हिं० लाला] १ प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा। उ०—भूख लगी है लालन को लावो वेगि बुलाई। —सूर०। २ कुमार। बालक।

क्रि० अ० लाड़ करना। प्यार करना।

लालना(पु)—क्रि० [सं० लालन] दुलार करना। लाड़ करना। प्यार करना।

लालबुझक्कड़—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+बूझना] बातों का अटकल पच्चू मतलब लगानेवाला।

लालमन—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+सं० मणि] १ श्रीकृष्ण। २. एक प्रकार का तोता।

लालमिर्च—संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"।

लालरी—संज्ञा स्त्री० दे० "लालड़ी"।

लालस—वि० [सं०] ललचाया हुआ। लोलुप।

लालसमुद्र—संज्ञा पुं० दे० "लाल सागर"।

लालसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा। २ उत्सुकता।

लाल सागर—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+सं० सागर] अरब सागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है।

लालसिखी—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+शिखा] मुर्गा।

लालसी(पु)—वि० [सं० लालसा] अभिलाषा या इच्छा करनेवाला। उत्सुक।

लाला—संज्ञा पुं० [सं० लालक] १ एक प्रकार का संबोधन। महाशय। साहब। २ छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन। उ०—आनँद की निधि मुख लाला को, ताहि निरखि निसिबासर सो तो छबि क्यों हूँ न जाति बखानी। —सूर०।

संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।

संज्ञा पुं० [फा०] पोस्त का लाल रंग का फूल।

वि० [हिं० लाल] लाल रंग का।

लालायित—वि० [सं०] [स्त्री० लालायिता] ललचाया हुआ।

लालित—वि० [सं०] [स्त्री० लालिता] १ दुलारा। प्यारा। २. जो पाला पोसा गया हो।

लालित्य—संज्ञा पुं० [सं०] ललित का भाव। सौंदर्य। सुंदरता। सरसता।

लालिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

लाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १ लाल होने का भाव। ललाई। लालपन। सुर्खी। २. इज्जत। पत। आबरू।

संज्ञा पु० दे० "लाल"।

लाले—संज्ञा पुं० [सं० लाला] लालसा। अभिलाषा।

मुहा०—(किसी चीज के) लाले पड़ना=(किसी चीज के लिये) बहुत तरसना।

लाल्हा—संज्ञा पुं० [हिं० लाल साग=मरसा] मरसा नामक साग।

लाव(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाय] आग।

संज्ञा स्त्री० [देश०] मोटा रस्सा।

लावक—संज्ञा पुं० [सं०] लवा पक्षी।

लावण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ लवण का भाव या धर्म। नमकपन। २ अत्यंत सुंदरता।

लावदार—वि० [हिं० लाव=आग+फा० दार (प्रत्य०)] (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो।

संज्ञा पुं० तोप छोड़नेवाला। तोपची।

लावनता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लावना(पु)†—क्रि० स० दे० "लाना"।

क्रि० स० [हिं० लगाना] १. लगाना। स्पर्श कराना। २ जलाना। आग लगाना।

लावनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लावण्य] सौंदर्य। लावण्य। उ०—सुंदर मुख की बलि बलि जाउँ। लावनि निधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाउँ। —सूर०।

लावनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का छंद। २ इस छंद का एक प्रकार जो प्राय चंग बजाकर गाया जाता है। ख्याल।

लावन्य†—संज्ञा पुं० [सं० लावण्य] सौंदर्य।

लाव लश्कर—संज्ञा पुं० [फा०] सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

लावल्द—वि० [फा०] [संज्ञा लावल्दी] निःसंतान।

लावा—संज्ञा पुं० [सं०] लवा नामक पक्षी।

संज्ञा पुं० [सं० लाजा] १ भूना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर खिल जाता है। खील। लाई। फुल्ला। २ ज्वालामुखी पर्वत से निकला पदार्थ।

लावा परछन—संज्ञा पुं० [हिं० लावा+परछना] हिंदुओं में विवाह के समय की एक रीति।

लावारिस—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० लावारिसी] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।

लाश—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी प्राणी का मृतक देह। लोथ। मुरदा। शव।

लाष(पु)—संज्ञा पुं०, वि० दे० "लाख"।

लाषना(पु)†—क्रि० स० दे० "लखना"।

लास—संज्ञा पुं० [सं० लास्य] १. एक प्रकार का नाच। २ मटक।

लासा—संज्ञा पुं० [हिं० लस] १. कोई लसदार चीज। चेप। लुआब। २ एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ जो बहेलिए चिड़ियों को फँसाने के लिये बनाते हैं। उ०—चितवन ललित लकुट लासा लटकनि पिय कापै अलक तरंग। —सूर०।

लासानी—वि० [अ०] अद्वितीय। बेजोड़।

लासि—संज्ञा पुं० दे० "लास्य"।

लास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नृत्य। नाच। २ भाव और ताल आदि सहित वह नृत्य जो कोमल अंगों द्वारा शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करे।

लाह(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख। चपड़ा।

संज्ञा पुं० [सं० लाभ] लाभ। नफा।

संज्ञा स्त्री० [?] चमक। आभा। कांति।

लाहक(पु)—संज्ञा पु० [हिं० लाह (लाभ)+क (प्रत्य०)] इच्छुक। चाहनेवाला।

लाही(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] १. दे० "लाख"। २ लाख से मिलता जुलता एक कीड़ा जो फसल को प्राय हानि पहुँचाता है।

वि० मटमैलापन लिए लाल।

लाहु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० लाभ] नफा। लाभ।

लिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्न। लक्षण। निशान। पहचान। २. पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ३ व्याकरण में भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है, जैसे, पुंलिंग, स्त्रीलिंग। ४ शिव का एक विशेष

प्रकृर का प्रतीक । ५ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति । ६ वह जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो ।

लिंगदेह—संज्ञा पुं० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है (अध्यात्म)। उ०—लिंगदेह नृप को निज गेह। दस इंद्रिय दासी सों नेह।—सूर०।

लिंगपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।

लिंगशरीर—संज्ञा पुं० दे० "लिंगदेह"।

लिंगायत—संज्ञा पुं० [सं०] एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण भारत में बहुत है।

लिंगी—संज्ञा पुं० [सं० लिंगिन्] १. चिह्नवाला। निशानवाला। २ आडंबरी। धर्मध्वजी।

लिंगेंद्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिए—दे० "लिये"।

लिक्खाड़—संज्ञा पुं० [हिं० लिखना] बहुत लिखनेवाला। भारी लेखक (व्यंग्य)।

लिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जूँ का अंडा। लीख। २ एक परिमाण जो कई प्रकार का कहा गया है।

लिखक—संज्ञा पुं० [हिं० √लिख] लिखनेवाला। लिपिकार। लेखक।

लिखत—संज्ञा स्त्री० [सं० लिखित] १. लिखी हुई बात। लेख। २ दस्तावेज।

लिखधार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लिखहार"।

लिखना—क्रि० स० [सं० लिखन] १ शब्दबोध के लिये किसी चीज पर (विशेषत कलम, पेंसिल आदि से तालपत्र, कागज आदि पर), अक्षर उपटाना। लिपिबद्ध करना। २ चिह्न करना। अंकित करना। ३ चित्रित करना। चित्र बनाना। ४ पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना। काव्य।

लिखनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लेखनी"।

लिखवार—संज्ञा पुं० दे० "लिखहार"।

लिखहार(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० √लिख + हार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। मुहर्रिर या मुंशी।

लिखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लिख + आई (प्रत्य०)] १ लेख। लिपि। २ लिखने का कार्य। ३. लिखने का ढंग। लिखावट। ४ लिखने की मजदूरी। ५ चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव।

लिखाना—क्रि० स० [हिं० लिखना का प्रे० रूप] दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

लिखापढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखा (√लिख) + पढ़ी (√पढ़)] १ पत्र-व्यवहार। चिट्ठियों का आना जाना। २ किसी विषय को कागज पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

लिखावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लिख + आवट (प्रत्य०)] १. लेख। लिपि। २. लिखने का ढंग।

लिखित—वि० [सं०] लिखा हुआ। अंकित।

लिखितक—संज्ञा पुं० [सं० लिखित] एक प्रकार के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

लिख्या—संज्ञा स्त्री० दे० "लिक्षा"।

लिच्छवि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य नैपाल, मगध और कोशल तक था। इसकी वैशालीवाली शाखा में जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी का और कोशल की शाक्य शाखा में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।

लिटाना—क्रि० स० [हिं० लेटना का प्रे० रूप] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लिट्ट—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लिट्टी] मोटी रोटी। अंगाकड़ी। बाटी।

लिडारी—संज्ञा पुं० [देश०] शृगाल। गीदड़।

वि० डरपोक। कायर। बुजदिल।

लिपटना—क्रि० अ० [सं० लिप्त] १ एक वस्तु का दूसरी से सट जाना। चिमटना। २ गले लगाना। आलिंगन करना। ३ किसी काम में जी जान से लग जाना।

लिपटाना—क्रि० स० [हिं० लिपटना का स० रूप] १ संलग्न करना। चिमटाना। २ आलिंगन करना। गले लगाना।

लिपड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] कपड़ा।

वि० [हिं० लेप] गीला और चिपचिपा।

संज्ञा स्त्री० दे० "लिबड़ी"।

लिपना—क्रि० अ० [सं० √लिप्] १ लीपा या पोता जाना। २ रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।

लिपवाना—क्रि० स० [हिं० लीपना का प्रे० रूप] लीपने का काम दूसरे से कराना।

लिपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लीप + आई (प्रत्य०)] लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना—क्रि० स० [हिं० लीपना का प्रे० रूप] १ रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुतवाना। २ चूने, मिट्टी, गोबर से आदि, लेप कराना। उ०—[illegible] महरि पुत्र मुख देखो आनंद तूर बजाओ हो। कंचन कलस होम द्विज पूजा [illegible] भवन लिपाओ हो।—सूर०।

लिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अक्षर [illegible] वर्णों के अंकित चिह्न। लिखावट। २ [illegible] लिखने की प्रणाली, जैसे—ब्राह्मी [illegible], अरबी लिपि। ३ लिखे हुए अक्षर या बात लेख।

लिपिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखनेवाला। लेखक। २ प्रतिलिपि करनेवाला।

लिपिबद्ध—वि० [सं०] लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त—वि० [सं०] १ लिपा हुआ। पुता हुआ। २ खूब तत्पर। लीन। अनुरक्त। ३ जिसकी परतें तह चढ़ी हों।

लिप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लालच। लोभ।

लिफाफा—संज्ञा पुं० [अ०] १ कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर कागज पत्र रखकर भेजे जाते हैं। २ दिखावटी कपड़े लत्ते। ३ ऊपरी आडंबर। मुलम्मा। कलई। ४ जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।

लिबड़ना—क्रि० अ० [अनु०] कीचड़ आदि में लथपथ होना।

क्रि० स० कीचड़ आदि में लथपथ करना।

लिबड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लुगड़ी ?] कपड़ा लत्ता।

यौ०—लिबड़ी बरतना या बारदाना = निर्वाह का मामूली सामान। असबाब।

लिबरल—संज्ञा पुं० [अं०] १ लोकतंत्रात्मक सुधार का पक्षपाती और विशेषाधिकारों का विरोधी राजनीतिज्ञ। २ भारतीय राजनीति में कांग्रेस के सक्रिय आंदोलन से अलग हुए नेताओं का दल जो क्रमिक स्वराज के पक्ष में था। नरम दल। ३ इस दल का सदस्य।

वि० उदार।

लिबास—संज्ञा पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा। आच्छादन। पहनावा। पोशाक।

लियाकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। काबिलीयत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य। ४. शील। शिष्टता।

लिये—हिंदी का एक कारकचिह्न जो संप्रदान में आता है, और जिस शब्द के आगे लगता है, उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है, जैसे—उसके लिये।

लिलाट, लिलारⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "ललाट"।

लिलोही†—वि० [सं० √लल् = चाह करना] लालची।

लिवⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौ] लगन।

लिवर—संज्ञा पुं० [अं०] १. जिगर। यकृत। २ ताले का खटका।

लिवाना—क्रि० स० [हिं० लेना या लाना का प्रे० रूप] १ लेने या लाने का काम दूसरे से कराना। थमाना। पकड़ाना। उ०—सूरदास भीषम परतिज्ञा शस्त्र लिवाऊँ पैज करी। —सूर०। २ अपने साथ ले जाना।

लिवाल—संज्ञा पुं० [हिं० √ले+वाल (प्रत्य०)] खरीदने या लेनेवाला।

लिवैया—वि० [हिं० √ले+वैया (प्रत्य०)] लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिसोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० लस = चिपचिपाहट] एक मँझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।

लिह—वि० [सं० √लिह] लेह्य। उ०—चारि प्रकार विचित्र सुव्यंजन। भच्छ, भोज्य, चुस, लिह, मनरंजन।—नंददास०।

लिहाज—संज्ञा पुं० [अ०] १ व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान या ख्याल। २. मेहरबानी का ख्याल। कृपादृष्टि। ३ मुरव्वत। मुलाहज़ा। शीलसंकोच। ४ पक्षपात। तरफदारी। ५ सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ६ लज्जा। शर्म। हया।

लिहाड़ा—वि० [देश०] १. नीच। वाहियात। गिरा हुआ। २ खराब। निकम्मा।

लिहाड़ी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ उपहास। हँसी। विडंबना।

मुहा०—लिहाड़ी लेना = बनाना। उपहास करना। ठट्ठा करना।

२. निंदा।

लिहाफ—संज्ञा पुं० [अ०] जाड़ों में रात को सोते समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा। भारी रजाई।

लिहित—वि० [सं० लिह] चाटता हुआ।

लीक—संज्ञा स्त्री० [सं० लिख्] १. लकीर। रेखा।

मुहा०—लीक करके = दे० "लीक खींचकर"। लीक खिंचना = (१) किसी बात का अटल और दृढ़ होना। (२) मर्यादा बँधना। (३) साख बँधना। प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींचकर = निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

२. गहरी पड़ी हुई लकीर।

मुहा०—लीक पीटना = चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना।

३. मर्यादा। नाम। यश। ४ बँधी हुई मर्यादा। लोकनियम। ५. रीति। प्रथा। चाल। दस्तूर। ६. हद। प्रतिबंध। ७ धब्बा। बदनामी। लांछन। उ०—तिहि देखत मेरो पट काढ़त लीक लगी तुम काज। —सूर०। ८ गिनती। गणना।

लीख—संज्ञा स्त्री० [सं० लिक्षा] १ जूँ का अंडा। २. लिक्षा नामक परिमाण।

लीग—संज्ञा स्त्री० [अं०] २. पारस्परिक रक्षा, सहयोग या सामान्य लक्ष्य की सिद्धि के लिये संगठित व्यक्तियों या राष्ट्रों का संघ। २ बहुत बड़ी सभा या संस्था। ३ मुसलमानों का वह संघटन जिसने पाकिस्तान का निर्माण कराया। मुस्लिम लीग। ४ लंबाई की एक नाप जो स्थल के लिये तीन मील की और समुद्र के लिये साढ़े तीन मील की होती है।

लीगी—वि० [अं० लीग+हिं० ई (प्रत्य०)] मुस्लिम लीग का या उससे संबद्ध (व्यक्ति या) कार्य।

लीचड़—वि० [देश०] १ सुस्त। काहिल। निकम्मा। २ जल्दी न छोड़नेवाला। ३ जिसका लेन देन ठीक न हो।

लीची—संज्ञा स्त्री० [चीनी लीचू] एक सदाबहार पेड़ जिसका फल मीठा होता है। इसके फल गुच्छों में लगते हैं और छिलके पर कटावदार दाने से उभरे रहते हैं। गूदा सफेद खोली की तरह बीज से चिपका रहता है। यह फल चीन से भारत में आया है और बंगाल तथा बिहार में अधिक होता है।

लीझी—वि० [देश०] १ नीरस। निस्सार। २ निकम्मा।

संज्ञा स्त्री० १ देह में मले हुए उबटन के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती। २ वह गूदा या रेशा जिसका रस चूस या निचोड़ लिया गया हो। सीठी।

लीडर—संज्ञा पुं० [अं०] अगुआ। नेता। मुखिया।

लीथो—संज्ञा पुं० [अं०] पत्थर का छापा जिसपर हाथ से लिखकर अक्षर या चित्र छापे जाते हैं।

लीद—संज्ञा स्त्री० [देश०] घोड़े, गधे, हाथी आदि कुछ पशुओं का मल।

लीन—वि० [सं०] [भाव० लीनता] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो। २. तन्मय। मग्न। उ०—अति ही चतुर सुजान जानमनि वा छवि पै भइ मैं लीना। —सूर०। ३. बिल्कुल लगा हुआ। तत्पर।

लीपना—क्रि० स० [सं० √लिप् या लेपन] किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना। पोतना।

मुहा०—लीप पोतकर बराबर करना = चौपट करना। चौका लगाना। लीपापोती करना = (१) गंदा लिखना। काट छाँटकर लिखना। (२) गलती को ढकने का प्रयास करना।

लीबरⓅ—वि० [हिं० लिबड़ना] कीचड़ आदि से भरा हुआ।

लीर†—संज्ञा स्त्री० [सं० चीर ?] कपड़े की धज्जी। चिथड़ा।

लील†—संज्ञा पुं० [सं० नील] नील।

वि० नीला। नीले रंग का। उ०—लीलभुज तनु लीलवसन मणि चितयो न जात धूम के भोरे।—सूर०।

लीलना—क्रि० स० [सं० √निगल्] गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

लीलया—क्रि० वि० [सं०] १ खेल में। २ सहज में ही। बिना प्रयास।

लीलांबर—संज्ञा पुं० दे० "नीलांबर"।

लीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह व्यापार जो केवल मनोरंजन के लिये किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। २ प्रेम का खेलवाड़। प्रेमविनोद। ३ नायिकाओं का एक हाव जिसमें वे प्राय वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती हैं। ४ विचित्र काम। ५ मनुष्यों के मनोरंजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय। चरित्र। ६ बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में ।ऽ। (ह्रस्व, दीर्घ और ह्रस्व) हो। उ०—रविकल लीला मुरारि। जाहि जपत

है पुरारि। जसुमति के लाल सोइ। ध्यावत बहु मोद होइ। ७ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण और एक गुरु होता है। उ०—भूतगर्यं नेम सों। पाल प्रभु प्रेम सों। रूपहु नाना धरैं। अद्भुत लीला करैं। ८. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ५ भगण और अंत्य गुरु हो। उ०—भा शिव आनन गौरि जबै मन लाय लखी। लै गइ ज्यों लुठि भूषण साजि वितान सखी। इसे नील, विशेषक और अश्वगति भी कहते हैं। ६ एक छंद जिसमें २४ मात्राएँ और अंत में सगण होता है। उ०—वेदहु जाहि, वखानि थके, नेतिहि नेति भनै। ऐसे प्रभुहिं, विचारि मनों, जो सब पाप हनै।

संज्ञा पुं० [सं० नील] स्याह रंग का घोड़ा।

वि० नीला। उ०—कटि लहँगा नीलो बन्यो धौं को जो देखि न मोहे।—सूर०।

लीलापुरुषोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

लीलावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। २ ३२ मात्राओं के पद्मावती या कमलावती नामक छंद (जिसके अंत में दो दीर्घ हों और किसी चौकल में जगण हो), के सब पदों के अंत में यगण (।SS) पड़ने से बननेवाला वृत्त (बाबा रामदास जी)। उ०—दस वसु मनु मत्तन, धर विरती जन, दै पदमावति इक कर्णा। अतुलित छवि भारी, श्रीहरि प्यारी वेद पुराणन महँ वर्णा। बाबा भिखारीदास इस नियम के विरुद्ध लीलावती छंद की यह परिभाषा देते हैं—द्वैकल दै फिरि तीस कल, लीलावती अनेम। दुगुन पद्धरिय के किए, जानो वहै सप्रेम। उनका उदाहरण है—पीतंबर मुकुट लकुट कुंडल बनमाल बैमोर्हं दरसावै। मुसुकानि विलोकनि मटक लटक वहि मुकुर छाँह ने छवि पावै।

लुगाड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] शोहदा। लुच्चा।

लुंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगोट या लाँग] धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमद।

लुंचन—संज्ञा पुं० [सं०] चुटकी से पकड़कर उखाड़ना। नोचना। उत्पाटन।

लुंज—वि० [सं० लुंचन] १. बिना हाथ पैर का। लँगड़ा लूला। २. बिना पत्ते का। ठूँठ (पेड़)।

लुंठन—क्रि० स० [सं०] [वि० लुंठित] लूटना। चुराना।

क्रि० अ० लुढ़कना।

लुंठित—वि० [सं०] १ जो गिरा या लुढ़का हुआ हो। २. जो लूटा-खसोटा गया हो।

लुंड—संज्ञा पुं० [सं० रुंड] बिना सिर का धड़। कबंध। रुंड।

लुंडमुंड—वि० [सं० रुंड+मुंड] १ जिसके सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों, केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २ बिना पत्ते का। ठूँठ।

लुंडा—वि० [सं० रुंड] [स्त्री० लुंडी] जिसकी पूँछ और पर झड़ गए हों (पक्षी)।

लुंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध पैदा हुए थे।

लुआठा—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] सुलगती हुई लकड़ी। लुआती।

लुआब—संज्ञा पुं० [अ०] लसदार गूदा। चिपचिपा गूदा। लासा।

लुआर—संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

लुकंजन ⓟ †—संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लुक—संज्ञा पुं० [?] १. चमकदार रोगन। वार्निश। २ आग की लपट, लौ। ज्वाला।

लुकठी—संज्ञा स्त्री० [?] लुआठा।

लुकना—क्रि० अ० [सं० लुक्=लोप] ओट में होना। छिपना।

लुकाट—संज्ञा पुं० [सं० लकुच] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो खाया जाता है। लकुट।

ⓟसंज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

लुकाना—क्रि० स० [हिं० लुकना का स० रूप०] आड़ में करना। छिपाना। उ०—पाँयी पुँग्र लुकावन अपनी जुवतिन को नहिं सकत दिखाय।—सूर०।

†क्रि० अ० लुकना। छिपना।

लुकार—संज्ञा स्त्री० दे० "लुक"।

लुकेठा†—संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

लुगड़ा—संज्ञा पुं० दे० "लूगड़ा"।

लुगदी—संज्ञा स्त्री० [देश०] गीली वस्तु का पिंड या गोला, छोटा लोंदा।

लुगरा†—संज्ञा पुं० [हिं० लूगा+ड़ा (प्रत्य०)] १ कपड़ा। वस्त्र। २ ओढ़नी। छोटी चादर। ३. फटा पुराना कपड़ा। लत्ता।

लुगरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लुगरा] १. फटी पुरानी धोती। २ † चुगली। शिकायत।

लुगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री। औरत। उ०—लोग कलंक लगाइहैं लौं लुगाई कियो करैं कोटि कुचाली।—शृंगार०।

लुगी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लूगा] १ पुराना कपड़ा। २. लहँगे का नजाफ या फटा चौड़ा किनारा।

लुग्गा†—संज्ञा पुं० दे० "लूगा"।

लुचकना ⓟ—क्रि० स० [सं० लुंचन] छीनना। झपटना।

लुचरी—संज्ञा स्त्री० दे० "लुचुई"। उ०—लुचरी लपसी आप सँवारैं, द्वारैं ठाढा राम पुकारैं।—कबीर०।

लुचुई†—संज्ञा स्त्री० [सं० रुचि] मैदे की पतली पूरी। लूची।

लुच्चा—वि० १ शोहदा। बदमाश। कुचाली। २ दुराचारी। कुमार्गी। ३ बेईमान। झूठा।

संज्ञा स्त्री० दे० "लुचुई"।

लुटत ⓟ †—संज्ञा स्त्री० [हिं० लूट] लूट।

लुटकना—क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लुटना—क्रि० अ० [सं० √लुट्=लुटना] १ दूसरे के द्वारा लूटा जाना। २ तबाह होना। बरबाद होना।

ⓟक्रि० अ० दे० "लुठना"।

लुटरना—क्रि० अ० [सं० लुंठन] इधर उधर लुढ़कना या लोटना।

लुटाना—क्रि० स० [हिं० लूटना का प्रे० रूप] १. दूसरे को लूटने देना। २ मुफ्त में या बिना पूरा मूल्य लिए देना। ३ व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। ४ बहुतायत से बाँटना। अंधाधुंध दान करना।

लुटावना ⓟ †—क्रि० स० दे० "लुटाना"।

लुटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा।

लुटेरा—संज्ञा पुं० [हिं० √लूट+एरा (प्रत्य०)] लूटनेवाला। डाकू। दस्यु।

लुठना ⓟ—क्रि० अ० [सं० लुठन] १ भूमि पर पड़ना। लोटना। २ ढुलकना।

लुठाना ⓟ—क्रि० स० [हिं० लुठना का स० रूप] १ भूमि पर डालना। लोटाना। २ लुढ़काना।

लुड़कना—क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।
लुढ़कना—क्रि० अ० [सं० लोटन या लुंठन] गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना। ढुलकना।
लुढ़काना(पु)†—क्रि० स० [हिं० लुढ़कना का स० रूप] इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। ढुलकाना।
लुढ़ना(पु)†—क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"। उ०—बरही मुकुट लुढ़त अवनी पर नाहिन निज भुज भरतु।—सूर०।
लुढ़ाना(पु)—क्रि० स० दे० "लुढ़काना"। उ०—माखन खाय खवावत ग्वाल जो उबर्यो सो दियो लुढ़ाइ।—सूर०।
लुतरा—वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १ चुगुलखोर। २ नटखट। शरारती।
लुत्थ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।
लुनना—क्रि० स० [सं० लवन] १. खेत की तैयार फसल काटना। २ नष्ट करना।
लुनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लुनेरा—संज्ञा पुं० [हिं०√लुन+एरा (प्रत्य०)] खेत की फसल काटनेवाला। लुननेवाला।
लुपना(पु)—क्रि० अ० [सं०√लुप्] छिपना।
लुप्त—वि० [सं०] १ छिपा हुआ। गुप्त। अन्तर्हित। २ गायब। अदृश्य।
लुप्तोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमान, उपमेय, वाचक और सामान्य धर्म नामक चार अंगों में से एक या अधिक अंग लुप्त हों, अर्थात् न कहे गए हों।
लुबुध(पु)†—वि० दे० "लुब्ध"।
लुबुधना†—क्रि० अ० [हिं० लुबुध] लुब्ध होना। लुभाना।
सज्ञा पुं० [सं० लुब्धक] अहेरी। बहेलिया।
लुबुधा(पु)—वि० [सं० लुब्ध] १ लोभी। लालची। २ चाहनेवाला। इच्छुक। ३ प्रेमी।
लुब्ध—वि० [सं०] १. लुभाया हुआ। ललचाया हुआ। २ तन मन की सुध भूला हुआ। मोहित।
लुब्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याध। बहेलिया। शिकारी। २ उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान् तारा (आधुनिक)।
लुब्धना(पु)—क्रि० अ० दे० "लुबुधना"।
लुब्धापति—संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार वह प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के सब लोगों की लज्जा करे। यथा—सो लुब्धापति जानिए, केशव प्रगट प्रमान। कानि करै कुलपति सबै प्रभुता प्रभुहि समान।
लुभाना—क्रि० अ० [हिं० लोभ से ना० धा०] १. लुब्ध होना। मोहित होना। रीझना। उ०—कूबरी के कौन गुन पै रहे कान्ह लुभाइ।—सूर०। २ लालच में पड़ना। ३ तन मन की सुध भूलना।
क्रि० स० १ लुब्ध करना। मोहित करना। रिझाना। २. प्राप्त करने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ललचाना। ३ सुधबुध भुलाना। मोह में डालना। उ०—सूर हरि की प्रबल माया देति मोहि लुभाय।—सूर०।
लुरकना†—क्रि० अ० [सं०√लुल्] लटकना। भूलना।
लुरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०√लुरक+ई (प्रत्य०)] कान में पहनने की बाली। मुरकी।
लुरना(पु)†—क्रि० अ० [सं०√लुल्] १. भूलना। लहराना। २ ढल पड़ना। भुक पड़ना। ३ कहीं से एकबारगी आ जाना। ४ आकर्षित होना। प्रवृत्त होना।
लुरियाना†—क्रि० अ० दे० "लुरना"।
लुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लेरुवा=बछड़ा ?] वह गाय जिसे बच्चा दिए थोड़े ही दिन हुए हों।
लुलना(पु)—क्रि० अ० दे० "लुरना"।
लुनार†—वि० दे० "लू"।
लुहना(पु)—क्रि० अ० दे० "लुभाना"।
लुहार—संज्ञा पुं० [सं० लौहकार] [स्त्री० लुहारिन, लुहारी] १. लोहे की चीजें बनानेवाला। २ वह जाति जो लोहे की चीज बनाती है।
लुहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लुहार] १. लुहार जाति की स्त्री। २ लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लूँगरा†—संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।
लू—संज्ञा स्त्री० [सं० उल्का ? या हिं० लौ=लपट] गरमी के दिनों की तपी हुई हवा।
मुहा०—लू मारना या लगना=शरीर में तपी हवा लगने से ज्वर आदि उत्पन्न होना।
लूक—संज्ञा स्त्री० [सं० उल्का ?] १ आग की लपट। २ जलती हुई लकड़ी। लुत्ती।
मुहा०—लूक लगाना=जलती लकड़ी या बत्ती छुलाना। आग लगाना।
३ गरमी के दिनों की तपी हवा। ४ टूटकर गिरता हुआ तारा। उल्का।
लूकट(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।
लूकना(पु)—क्रि० स० [हिं० लूक से ना० धा०] आग लगाना। जलाना।
(पु)†क्रि० अ० दे० "लुकना"।
लूका†—संज्ञा पुं० [सं० उल्का ?] [स्त्री० अल्पा० लूकी] १. आग की लौ या लपट। २. लुआठा।
लूकी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लूका] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. लूका।
लूखा(पु)—वि० [सं० रूक्ष] रूखा।
लूगा†—संज्ञा पुं० [देश०] १. वस्त्र। कपड़ा। २ धोती।
लूट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लूटना] १. किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना। डकैती।
यौ०—लूटमार, लूटपाट=लोगों को मारना पीटना और उनका धन छीनना।
२ लूटने से मिला हुआ माल।
लूटक—संज्ञा पुं० [हिं० लूट] १. लूटनेवाला। लुटेरा। २ कांति हरनेवाला।
लूटना—क्रि० स० [सं०√लुण्ट्=लूटना] १ मार पीटकर या छीन झपटकर लेना। २ अनुचित रीति से किसी का माल लेना। ३. वाजिब से बहुत ज्यादा दाम लेना। ठगना। ४ मोहित करना। मुग्ध करना।
लूटा(पु)—वि० [हिं०√लूट+आ (प्रत्य०)] लूटनेवाला। लुटेरा।
लूटि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लूट"।
लूत—संज्ञा स्त्री० [सं० लूता] मकड़ी।
लूता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मकड़ी।
संज्ञा पुं० [हिं० लूका] लूका। लुआठा। उ०—सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सदेस स्याम के दूने। बिरहसमुद्र सुखाय कौन बिधि किरचक योग अग्नि के लूत।—सूर०।
लूनना(पु)†—क्रि० अ० दे० "लुनना"।
लूम—संज्ञा पुं० [सं०] पूँछ। दुम।
संज्ञा स्त्री० [अ० हैंडलूम] कपड़ा बुनने का करघा।
लूमटी—संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।
लूमना(पु)—क्रि० अ० [सं० लम्बन] लटकना।

लूरना(पु)—क्रि० अ० दे० "लुरना"।

लूला—वि० [सं० लून=कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १. जिसका हाथ कट गया हो। लुंजा। टुंडा। २ बेकाम। असमर्थ।

लूलू—वि० [अनु०] मूर्ख। बेवकूफ।

लूह, लूहर—संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

लेंड—संज्ञा पुं० दे० "लेंडी"।

लेंडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ मल का बत्ती। बँधा मल। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़, लेंहड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] झुंड। दल। समूह। गल्ला (चौपायों के लिये)।

ले—अव्य० [हिं० लेकर] आरंभ होकर।

‡ [सं० लग्न, हिं० लग, लगि] तक। पर्यंत।

लेई—संज्ञा स्त्री० [सं० लेही, लेह्य] १ किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। अवलेह। २ लपसी।

यौ०—लेईपूँजी=सारी जमा। सर्वस्व।

३ घुला हुआ आटा जिसे आग पर पकाकर कागज आदि चिपकाने के काम में लाते हैं। ४. सुरखी मिला हुआ बरी का गीला चूना जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।

लेकचर—संज्ञा पुं० [अँ०] व्याख्यान। भाषण।

लेख—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखे हुए अक्षर। लिपि। २ लिखावट। लिखाई। ३. किसी विषय पर गद्य में लिखी हुई पूरी बात। ४ लेखा। हिसाब किताब। ५ देव। देवता।

(पु)वि० लेख्य। लिखने योग्य।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लीक] पक्की बात। लकीर।

लेखक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० लेखिका] १ लिखनेवाला। लिपिकार। २ ग्रंथकार।

लेखन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लेखनीय, लेख्य] १ लिखने का कार्य। अक्षर बनाना। २ लिखने की कला या विद्या। ३. चित्र बनाना। उ०—जल बिनु तरँग, भीति बिनु लेखन बिनु चेतहि चतुराई। —सूर०। ४ हिसाब करना। लेखा लगाना।

लेखनहार(पु)—वि० दे० "लेखक"।

लेखना(पु)—क्रि० स० [सं० लेखन] १ अक्षर या चित्र बनाना। लिखना। २ गिनना।

यौ०—लेखना जोखना=(१) ठीक ठीक अंदाज करना। हिसाब करना। (२) परीक्षा करना।

३. समझना। सोचना। विचारना। ४ मानना। उ०—जे जे तव सूर सुभट कीट सम लेखौं। —सूर०।

लेखनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलम।

लेखा—संज्ञा पुं० [सं० लेख] १. गणना। गिनती। हिसाब किताब। २ ठीक ठीक अंदाज। कूत। ३ आयव्यय का विवरण।

मुहा०—लेखा डेवढ़ करना=(१) हिसाब चुकता करना। २ चौपट करना। नाश करना।

४. अनुमान। विचार। समझ।

मुहा०—किसी के लेखे=किसी की समझ में। किसी के विचार के अनुसार।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथ की लिखावट। २ रचना। ३ चित्र। ४ रेखा। ५ श्रेणी। पंक्ति। ६ किरण। रश्मि।

लेखिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लिखनेवाली। २ ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेख्य—वि० [सं०] १ लिखने योग्य। २ जो लिखा जाने को हो।

संज्ञा पुं० १. लेख। २ दस्तावेज।

लेजम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिसमें धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। २. वह कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं।

लेजुर, लेजुरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] १ डोरी। २. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेट—संज्ञा पुं० [देश०] चूने सुरखी की वह परत जो छत या फरश बनाने के लिये डाली जाती है। गच।

लेटना—क्रि० अ० [सं० लुठन, हिं० लोटना] १. पीठ या बगल को जमीन या बिस्तरे आदि से लगाकर बदन की सारी लंबाई उसपर ठहराना। पौढ़ना। पड़ना। २ किसी चीज का बगल की ओर झुककर जमीन पर गिर जाना।

लेटाना—क्रि० स० [हिं० लेटना का प्रे० रूप] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लेदी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

लेन—संज्ञा पुं० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव। २. लहना। पावना।

लेनदार—संज्ञा पुं० [हिं० लेन+फा० दार (प्रत्य०)] जिसका कुछ बाकी हो। महाजन। लहनेदार।

लेनदेन—संज्ञा पुं० [हिं० लेना+देना] १. लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। २. ऋण देने और लेने का व्यवहार।

मुहा०—लेनदेन=सरोकार। संबंध।

लेनहार—वि० [हिं० लेना+हार (प्रत्य०)] लेनेवाला।

लेना—क्रि० स० [हिं० लहना] १. दूसरे के हाथ से अपने हाथ में करना। ग्रहण करना। प्राप्त करना। २ थामना। पकड़ना। ३ मोल लेना। खरीदना। ४ अपने अधिकार में करना। ५ जीतना। ६ धरना। ७ अगवानी करना। अभ्यर्थना करना। ८ भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ९ सेवन करना। पीना। १०. धारण करना। स्वीकार करना। ११ किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना।

मुहा०—आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ना। (किसी मामले में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना=(१) खराब करना। चौपट करना। (२) पराजित करना। हराना। (३) पूरा करना। समाप्त करना। ले देकर=लेना देना सब जोड़कर। सब मिलाकर। जोड़ जाटकर। ले दे करना=(१) हुज्जत करना। तकरार करना। (२) बड़ा यत्न करना। लेना एक न देना दो=कुछ मतलब नहीं। कुछ सरोकार नहीं। ले डूबना या मरना=अपने साथ दूसरों को भी नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

लेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेई के समान गाढ़ी गीली वस्तु। २ गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

लेपन—संज्ञा पुं० [सं०] लेपने की क्रिया या भाव।

लेपना—क्रि० स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। छोपना।

लेपालक—संज्ञा पुं० [हिं० √ले+सं० पालक] गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक। ५ रुद्र।

लेरुवा—संज्ञा पुं० [सं० लेढ़] बछड़ा।

लेलिहान—वि० [सं०] १ बारबार चखने या चाटनेवाला। २ ललचाया हुआ।

संज्ञा पुं० सर्प। साँप।

लेप—संज्ञा पुं० [सं० लेप्य] १. मिट्टी का लेव जो बर्तनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले किया जाता है। २ लेप। ३ दे० "लेवा"।

लेवा—संज्ञा पुं० [सं० लेप्य] १. गिलावा। २ मिट्टी का गिलावा। कहगिल। ३ लेप।

वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

यौ०—लेवा देई = लेन देन। उ०—स्वारथ के साथी, मेरे हाथ सों न लेवा देई, काहू तो न पीर रघुबीर दीन जन की॥—विनय०।

लेवाल—संज्ञा पुं० [हिं० √ले + वाल (प्रत्य०)] लेने या खरीदनेवाला।

लेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अणु। २ छोटाई। सूक्ष्मता। ३ चिह्न। निशान। ४ संसर्ग। लगाव। संबंध। ५ एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है।

वि० अल्प। थोड़ा।

लेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २ जीव।

लेषना(पु)—क्रि० स० १. दे० "लिखना"। २ दे० "लिखना"।

क्रि० स० [सं० √लिश् के प्रे० रूप लेशयति से] जलाना।

क्रि० स० [हिं० लस] १ किसी चीज पर लेस लगाना। पोतना। २ दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ३ चिपकाना। सटाना। ४ चुगली खाना।

लेहन—संज्ञा पुं० [सं० लेहक] १. चखना। २ चाटना।

लेहना—संज्ञा पुं० दे० "लहना"।

लेह्य—वि० [सं०] चाटने के योग्य।

लैंगिक—संज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो। अनुमान।

लैं(पु)—अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

लैन†—संज्ञा स्त्री० दे० "लाइन"।

लैया—संज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।

लैरु†—संज्ञा पुं० [?] १ बछड़ा। २ बच्चा।

लैस—वि० [अं० लेस] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार।

संज्ञा पुं० कपड़े पर चढ़ाने का फीता।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाण।

लों—अव्य० दे० "लौं"।

लोंदा—संज्ञा पुं० [सं० √लुड्] किसी गीले पदार्थ का ढले की तरह बँधा अंश।

लोइ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० लोक] लोग। उ०—जारमिलन सों वंचि रहै ताहि कहत कवि लोइ। कोऊ असाध्या परकिया अधम सुकीया कोइ।—रसधाराश।

संज्ञा स्त्री० [सं० रोचि] १ प्रभा। दीप्ति। २ लव। शिखा।

लोइन(पु)—संज्ञा पुं० १. दे० "लावण्य"। २ दे० "लोयन"।

लोई—संज्ञा स्त्री० [सं० लोप्त्री] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार का कंबल।

लोकजन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लोकदा†—संज्ञा पुं० [हिं० लोकना ?] [स्त्री० लोकंदी] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोकना ?] वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है।

लोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थानविशेष जिसका बोध प्राणी को हो।

विशेष—उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है—पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में इन सात लोकों की कल्पना हुई—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक या ब्रह्मलोक। फिर पीछे इनके सात सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल, और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।

२ संसार। जगत्। ३ स्थान। निवासस्थान। ४ प्रदेश। दिशा। ५ लोग। जन। ६ समाज। ७ प्राणी। ८ यश। कीर्ति।

लोकटी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।

लोकध्वनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० लोकध्वनि] अफवाह।

लोकना—क्रि० स० [सं० लोपन] १ ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। २. बीच में से ही उड़ा लेना।

लोकनी—संज्ञा स्त्री० दे० "लोकंदी"।

लोकप, लोकपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३ राजा।

लोकपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २. राजा।

लोकमत—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय में लोक या जनता की राय। समाज के बहुत से लोगों का मत।

लोकरूढ़—संज्ञा पुं० [सं० लोक + रूढ] परंपरा। प्रथा। उ०—कैधौं लोकरूढ़ है नात। मोसों वहो कहा यह बात।—नंददास०।

लोकल—वि० [अं०] अपने नगर या स्थान का। स्थानीय।

लोकलीक(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोक + लीक] लोक की मर्यादा।

लोकसंग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लोकसंग्रही] १ व्यावहारिक अनुभव। २ लोकरंजन।

लोकसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार लोक या जनता के हाथ में हों।

लोकसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारत की विधान बनानेवाली सभा का जनता द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव से चुने हुए प्रतिनिधियोंवाला अंग।

लोकहार—वि० [सं० लोकहरण] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।

लोकांतर—संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ जीव मरने पर जाता है।

लोकांतरित—वि० [सं०] मरा हुआ। मृत।

लोकाचार—संज्ञा पुं० [सं०] संसार में बरता जानेवाला व्यवहार। लोकव्यवहार।

लोकाट—संज्ञा पुं० [चीनी लु + क्यू] एक पौधा जिसमें बड़े बेर के बराबर मीठे, गूदेदार फल लगते हैं।

लोकाना†—क्रि० स० [हिं० लोकना] अधर में फेंकना। उछालना।

लोकापवाद—संज्ञा पुं० [सं०] लोगों में होनेवाली बदनामी। लोकनिंदा।

लोकायत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २ चार्वाक दर्शन। ३.

दुर्मिल नामक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं और किसी चौकल में जगण नहीं रहता। उ०—शरणागत आयो, ताहि बचायो, राज विभीषण को दीनो। दशकंठ विदारो, धर्म सुधारो, काज सुरन जन को कीनो। ४ एक सवैया जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण होते हैं। उ०—अरविंद सो आनन रूपमरंद अनंदित लोचन भृंग पिए। मन मों न बस्यो अस बालक जौं तुलसी जग में फल कौन जिए।'

लोकेश—संज्ञा पुं० [स०] सब संसार का स्वामी। ईश्वर।

लोकेश्वर—संज्ञा पुं० दे० "लोकेश"।

लोकोक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. कहावत। मसल। २. काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।

लोकोत्तर—वि० [सं०][भाव० लोकोत्तरता] बहुत ही अद्भुत और विलक्षण। अलौकिक।

लोखर—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौह+खड] १ नाई के औजार। २ लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार।

लोग—संज्ञा पुं० [स० लोक] [स्त्री० लुगाई] जन। मनुष्य। आदमी।

लोगाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग+आई (प्रत्य०)] स्त्री।

लोच—संज्ञा स्त्री० [हिं० लचक] १ लचलचाहट। २ कोमलता। लचक।
 संज्ञा पुं० [सं० रुचि] अभिलाषा।

लोचन—संज्ञा पुं० [सं०] आँख। नेत्र।

लोचना†—क्रि० स० [हिं० लोचन] १. प्रकाशित करना। २. रुचि उत्पन्न करना। ३ अभिलाषा करना।
 क्रि० अ० १. शोभित होना। क्रि० अ० २. अभिलाषा करना। कामना करना। ३. ललचना। तरसना। ४ विचार करना।

लोट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटना] लोटने का भाव। लुढ़कना।
 संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. उतार। घट। (पु)२. त्रिवली।

लोटकपोट(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० √लोट+पोट (अनु०)] उलटने पुलटने या मिलाने जुलाने की क्रिया।

लोटन—संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. एक प्रकार का कबूतर। २ राह की छोटी कंकड़ियाँ।

लोटना—क्रि० अ० [सं०√लुट् के लोटति रूप से] १ सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २. लुढ़कना। ३ कष्ट से करवटें बदलना। तड़पना।
 मुहा०—लोट जाना = (१) बेसुध होना। बेहोश हो जाना। (२) मर जाना।
 ४. विश्राम करना। लेटना। ५ मुग्ध होना। चकित होना।

लोटपटा†—संज्ञा पुं० [हिं० √लोट+पाटा] १. विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २. दाँव का उलटा फेर।

लोट पोट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√लोट+पोट (अनु०)] लेटना। आराम करना।
 वि० १ हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट लेट जानेवाला। २. बहुत अधिक प्रसन्न।

लोटा—संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] [स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम में आता है।

लोटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा+इया (प्रत्य०)] छोटा लोटा।
 मुहा०—लोटिया डूबना =(१) असफल होना। (२) अप्रतिष्ठा या हानि होना।

लोड़ना(पु)†—क्रि० स० [स० लोड़= आवश्यकता] आवश्यकता होना। दरकार होना।

लोढ़ना—क्रि० स० [सं० लुठन] १ चुनना। तोड़ना। २. ओटना।

लोढ़ा—संज्ञा पुं० [स० लोष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज को रखकर पीसते हैं। बट्टा।
 मुहा०—लोढ़ा डालना = बराबर करना। लोढ़ाढाल = चौपट। सत्यानाश।

लोढ़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोढ़ा+इया (प्रत्य०)] छोटा लोढ़ा।

लोथ, लोथि—संज्ञा स्त्री० [सं० लोष्ठ] मृत शरीर। लाश। शव।
 मुहा०—लोथ गिरना = मारा जाना। लोथ डालना = मार गिराना। हत्या करना।

लोथड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० लोथ+ड़ा (प्रत्य०)] मांसपिंड।

लोध—संज्ञा स्त्री० [सं० लोध्र] एक प्रकार का वृक्ष। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

लोध्र—संज्ञा पुं० दे० "लोध"।

लोध्रतिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद होता है।

लोन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० लवण, प्रा० लोण] १. लवण। नमक।
 मुहा०—किसी का लोन खाना = अन्न खाना। पाला जाना। किसी का लोन निकलना = नमकहरामी का फल मिलना। लोन न मानना = उपकार न मानना। जले पर लोन लगाना या देना = दुःख पर दुःख देना। उ०—अति कटु वचन कहति कैकेई। मानहु लोन जरे पर देई॥ —मानस। किसी बात का लोन सा लगना = अरुचिकर होना। अप्रिय होना।
 २ सौंदर्य। लावण्य।
 वि० दे० "नमक"।
 संज्ञा पुं० [अँ०] १ ऋण। २ उधार।

लोनहरामी†—वि० दे० "नमकहराम" उ०—मन भयो ढीठ इनहिं के कीन्हें ऐसे लोनहरामी। सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बड़े निकामी॥ —सूर०।

लोना—वि० [हिं० लोन] [भाव० लोनाई] १. नमकीन। सलोना। २ सुंदर।
 संज्ञा पुं० [हिं० लोन] १ पत्थरों और दीवारों का एक प्रकार का रोग जिसमें वह झड़ने लगती और कमजोर हो जाती है। २ वह धूल जो लोना लगने पर दीवार या पत्थर से झड़कर गिरती है। ३. नमकीन मिट्टी जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी।
 संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कल्पित चमारी जो जादूटोने में प्रवीण मानी जाती है।
 क्रि० स० [सं० लवण] फसल काटना।

लोनाई—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"। उ०—दाम तुव नैननि में विधिना लोनाई भरी। —काव्यनिर्णय।

लोनार†—संज्ञा पुं० [हिं० लोन] वह स्थान जहाँ नमक होता है।

लोनिका—संज्ञा स्त्री० दे० "लोनी"।

लोनिया—संज्ञा पुं० [हिं० लोन] एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनियाँ।
 वि० [सं० लावण्य] सुंदर।

लोनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लवण, लोन] कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग।

लोप—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा लोपन, वि० लुप्त, लोपक, लोपी, लोप्य] १. नाश। क्षय। २. विच्छेद। ३. अदर्शन। अभाव। ४ व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द के साधन में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं। ५. छिपना। अंतर्धान होना।

लोपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लुप्त करना। तिरोहित करना। २. नष्ट करना।

लोपना(पु)†—क्रि० स० [सं० लोपन] १ लुप्त करना। २. मिटाना। छिपाना।

क्रि० अ० लुप्त होना। मिटाना।

लोपांजन—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपामुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा जो अगस्त्यमंडल के पास उदय होता है।

लोबा—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोमड़ी] लोमड़ी।

लोबान—संज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

लोबिया—संज्ञा पुं० [सं० लोभ्य] एक प्रकार का बड़ा बोड़ा (फली)।

लोभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लुब्ध, लोभी] दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना। लालच। लिप्सा।

लोभना(पु)†—क्रि० स० [सं० लोभन] मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।

क्रि० अ० लुब्ध होना। मोहित होना। उ०—कंचन फूल नासिक अति सोभा। हँसि सुख आइ सुक जनु लोभा॥ —पद्मावत।

क्रि० अ० मोहित होना। मुग्ध होना।

लोभनीय—वि० [सं० लोभ] जिसके लिये लोभ हो सके। सुंदर। मनोहर।

लोभाना—क्रि० स० दे० "लोभना"।

लोभार(पु)†—वि० [सं० लोभ+हिं० आर (प्रत्य०)] लुभानेवाला।

लोभित—वि० [सं० लोभ] लुब्ध। मुग्ध।

लोभी—वि० [सं० लोभिन्] १ जिसे किसी बात का लोभ हो। लालची। २ लुब्ध। भाया हुआ।

लोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर पर के छोटे छोटे बाल। रोयाँ। रोम। २ बाल।

संज्ञा पुं० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोमड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश या लोमालिका] गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।

लोमपाद—संज्ञा पुं० [सं०] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे।

लोमश—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जिनको पुराणों में अमर माना गया है।

वि० अधिक और बड़े बड़े रोएँवाला।

लोमहर्षण—वि० [सं०] ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। बहुत भयानक।

लोय(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० लोक] लोग।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लव या लाव] लौ। लपट।

संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख। नेत्र।

अव्य० दे० "लौं"।

लोयन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख।

लोल—वि० [सं० लोल] १. लोल। चंचल। २. उत्सुक। इच्छुक।

लोलना(पु)—क्रि० अ० [सं० लोल] १ चंचल होना। २ लपकना। ललकना। ३ लिपटना। ४ झुकना। ५ लोटना।

लोरी—संज्ञा स्त्री० [सं० लोल] एक प्रकार के गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिये गाती हैं।

लोल—वि० [सं०] १ हिलता डोलता। कंपायमान। चंचल। २ परिवर्तनशील। ३ क्षणिक। क्षणभंगुर। ४, उत्सुक।

लोलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लटकन जो बालियों में पहना जाता है। २ कान की लव। लोलकी।

लोलदिनेश—संज्ञा पुं० दे० "लोलार्क"।

लोलना(पु)—क्रि० अ० [सं० लोल] हिलना।

लोला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जिह्वा। जीभ। २ लक्ष्मी। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, मगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—लोला सी मधु पैना, पूछै बाल नवीना। कोदी मातु फरैना, क्यों नीति विहीना।

लोलार्क—संज्ञा पुं० [सं०] काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम।

लोलिनी—वि० स्त्री० [सं० लोल] चंचल प्रकृतिवाली।

लोलुप—वि० [सं०] १ लोभी। लालची। २ चटोरा। चट्टू। ३. परम उत्सुक।

लोवा—संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थर। २. ढेला। ३. लोथड़ा।

लोहँडा—संज्ञा पुं० [सं० लोहभांड] [स्त्री० लोहँड़ी] १. लोहे का एक प्रकार का पात्र। २ तसला।

लोह—संज्ञा पुं० [सं०] लोहा (धातु)।

लोहचून—संज्ञा पुं० [सं० लोह+चूर्ण] लोहे का चूरा या बुरादा।

लोहबान—संज्ञा पुं० दे० "लोबान"।

लोहसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. फौलाद। २ फौलाद की बनी हुई जंजीर।

लोहा—संज्ञा पुं० [सं० लोह] १. काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके बरतन, शस्त्र और मशीनें आदि बनती हैं।

मुहा०—लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम।

२ शस्त्र। हथियार।

मुहा०—लोहा गहना = हथियार उठाना। युद्ध करना। लोहा बजना= युद्ध होना। किसी का लोहा मानना= (१) किसी विषय में किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना। (२) पराजित होना। हार जाना। लोहा लेना=लड़ना। युद्ध करना।

३. लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उपकरण। ४ लाल रंग का बैल।

लोहाना—क्रि० अ० [हिं० लोहा से ना० धा०] किसी पदार्थ में लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार—संज्ञा पुं० [सं० लोहकार] [स्त्री० लोहारिन, लोहाइन] एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।

लोहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोहार+ई (प्रत्य०)] लोहारी का काम।

लोहित—वि० [सं०] रक्त। लाल।

संज्ञा पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह।

लोहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २ एक समुद्र का नाम।

लोहिया—संज्ञा पुं० [हिं० लोहा+इया (प्रत्य०)] १ लोहे की चीजों का व्यापार करनेवाला। २ वनियों और मारवाड़ियों की एक जाति। ३ लाल रंग का बैल। ४. भोजन पकाने का लोहे का एक प्रकार का वर्तन।

लोही—संज्ञा स्त्री० [सं० लौहित्य] उष काल की लाली।

संज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।

वि० स्त्री० दे० "लोहू"। उ०—इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव। लोही सींचौं तेल ज्यूँ, कव मुख देखौं पीव। —कवीर०।

लोहू—संज्ञा पुं० दे० "लहू"।

लौं(पु)†—अव्य० [हिं० लग] १ तक। पर्यंत। उ०—मौन तें कढ़न भामी भौंहा भांडी बातें कहै, लौंडी कै कनौड़ी छोड़ै छोडी ही के जान लौं।—शृंगार०। २ समान। तुल्य। बराबर।

लौंकना(पु)†—क्रि० अ० [सं० लोकन] १ दृष्टिगोचर होना। दिखाई देना। २ चमकना।

लौंग—संज्ञा पुं० [सं० लवंग] १ एक झाड़ की कली जो खिलने के पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है। यह मसाले और दवा के काम में आती है। २ लौंग के आकार का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।

लौंगलता—संज्ञा स्त्री० [सं० लवंग+लता] एक प्रकार की मिठाई।

लौंडा—संज्ञा पुं० [सं० √लौड् ?] [स्त्री० लौंडी, लौंडिया] छोकरा। वालक। लड़का।

लौंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी।

लौंद—संज्ञा पुं० [?] अधिमास। मलमास।

लौंदा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "लौंदा"।

लौ—संज्ञा स्त्री० [सं० ?] १ आग की लपट। ज्वाला। २ दीपक की टेम।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग] १ लाग। चाह। २ चित्त की वृत्ति।

यौ०—लौलीन=किसी के ध्यान में डूबा हुआ।

३ आशा। कामना।

लौकना—क्रि० अ० [सं० लोकन] दूर से दिखाई पड़ना।

लौका—संज्ञा पुं० [सं० अलाबुक] [स्त्री० अल्पा० लौकी] कद्दू।

लौकिक—वि० [सं०] १ लोक संबंधी। सांसारिक। २ व्यावहारिक।

संज्ञा पुं० सात मात्राओं के छंदों का नाम।

लौकी†—संज्ञा स्त्री० दे० "कद्दू"।

लौजोरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० लौ+जोड़ना] धातु गलानेवाला कारीगर।

लौट—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौटना] लौटने की क्रिया, भाव या ढंग।

लौटना—क्रि० अ० [सं० लोटन] १ वापस आना। पलटना। २ पीछे की ओर मुड़ना।

क्रि० स० पलटना। उलटना।

लौट फेर—संज्ञा पुं० [हिं० लौट+फेर] उलट फेर। हेर फेर। भारी परिवर्तन।

लौटाना—क्रि० स० [हिं० लौटना का स० रूप] १ फेरना। पलटाना। २. वापस करना। ३ ऊपर नीचे करना।

लौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक।

लौना†—संज्ञा पुं० दे० "लौनी"।

(पु)वि० [लावण्य=लौन] [स्त्री० लौनी] लावण्ययुक्त। सुंदर।

लौनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौना] फसल की कटनी। कटाई।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन। नैनू।

लौनौ—संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] मक्खन। उ०—लौनौ लेन गयौ तहँ जाइ। मनि खंभ में निरखि निज झाँइ। —नंददास०।

वि० [सं० लावण्य] लोना। उ०—मोर चंद सिर अस कछु लौनी। मानहुँ अली टटावक टौनौ। —नंददास०।

लौन्यौ—संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] मक्खन। उ०—नेरा जु तजहु तुरत मथि लेउँ। अपने ललन को लौन्यौ देउँ। —नंददास०।

लौरी—संज्ञा स्त्री० [?] बछिया।

लौवा—संज्ञा पुं० [सं० अलाबुक] कद्दू।

लौह—संज्ञा पुं० [सं०] लोहा।

वि० लोहे का।

लौहयुग—संज्ञा पुं० [सं०] सभ्यता के इतिहास में वह समय जब मुख्य रूप से लोहे के अस्त्रशस्त्र और औजार का प्रयोग होने लगा।

लौहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २ लाल सागर।

वि० लाल रंग का।

ल्याना(पु)—क्रि० स० दे० "लाना"।

ल्यारी†—संज्ञा पुं० [देश०] भेड़िया।

ल्यावना(पु)—क्रि० स० दे० "लाना"।

ल्वारि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "लूह"।

ल्हसण—संज्ञा पुं० दे० "लहसुन"। उ०—पर नारी को राचणौं, जिसी ल्हसण की खानि। —कवीर०।

व

व—हिंदी वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अंतस्थ अर्द्धव्यंजन माना जाता है।

वंक—वि० [सं०] [भाव० वंकता] टेढ़ा। वक्र।

वंकट—वि० [सं० वक] १ टेढा। बाँका। कुटिल। २ विकट। दुर्गम।

वंकनाल—संज्ञा पुं० [सं० वंक+नाल] शरीर की एक नाड़ी का नाम। सुपुम्ना।

वंकनाली—संज्ञा स्त्री० [सं० वंक+नाली] सुपुम्ना नामक नाड़ी।

वंकिम—वि० [सं०] टेढ़ा। झुका हुआ। बाँका।

वंक्षु—संज्ञा स्त्री० [सं०] आक्सस नदी जो हिंदुकुश पर्वत से निकलकर अरल समुद्र में गिरती है।

वंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंगाल प्रदेश। २. राँगा नाम की धातु। ३ राँगे का भस्म।

वंगज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंदूर। २ पीतल।

वि० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला।

वंचक—वि० [सं०] १ धूर्त। धोखेबाज। ठग। २ खल।

वंचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ धोखा। छल। २ धोखा देना। ठगना।

वंचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा। छल।

(पु)क्रि० स० [सं० वंचन] धोखा देना। ठगना।

†क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना। बाँचना।
वंचित—वि० [सं०] १. जो ठगा गया हो। २ अलग किया हुआ। ३ अलग। हीन। रहित।
वंदन—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम। पूजन।
वंदनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंदनवार।
वंदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति। २ प्रणाम। वंदन।
वंदनीय—वि० [सं०] वंदना करने योग्य। आदर करने योग्य।
वंदित—वि० [सं०] [स्त्री० वंदिता] १. जिसकी वंदना की जाय। २ पूज्य। आदरणीय। ३ पूजित।
वंदी—संज्ञा पुं० [स्त्री० वंदिनी] दे० "बंदी"।
वंदीजन—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।
वंद्य—वि० [सं०] [संज्ञा वंद्यता] वंदनीय। पूजनीय।
वंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुटुंब। खानदान। संतति। परंपरा। २ बाँस। ३ पीठ की हड्डी। ४ नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ५ बाँसुरी। ६ बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ।
वंशज—संज्ञा पुं० [सं०] १ संतान। संतति। औलाद।
वंशतिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।
वंशधर—संज्ञा पुं० [सं०] कुल में उत्पन्न। वंशज। संतति। संतान।
वंशलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "वंसलोचन"।
वंशस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त।
वंशावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची।
वंशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली।
वंशीधर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
वंशीय—वि० [सं०] कुल में उत्पन्न।
वंशीवट—संज्ञा पुं० [सं०] वृंदावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

व—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. वाण। ३ वरुण। ४. बाहु। ५. कल्याण। ६. समुद्र। ७ वस्त्र। ८ वंदन।
अव्य० [फा०] और, जैसे—राजा व रईस।
वक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बगला पक्षी। २ अगस्त का पेड़ या फूल। ३. एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ४ एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।
वकवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।
वकालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दूतकर्म। २ दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। ३. मुकदमे में किसी फरीक की तरफ से कानूनी बहस करने का पेशा।
वकालतनामा—संज्ञा पुं० [अ० वकालत+फा० नामा] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे में कानूनी बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।
वकासुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।
वकील—संज्ञा पुं० [अ०] १. दूत। २. राजदूत। एलची। ३ प्रतिनिधि। ४. दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। ५ वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से कानूनी बहस करे।
वकुल—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त का पेड़ या फूल।
वक्त—संज्ञा पुं० [अ०] १ समय। काल। २ अवसर। मौका। ३ अवकाश। फुरसत।
वक्तव्य—वि० [सं०] कहने योग्य। वाच्य।
संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। वचन। २ वह बात जो किसी विषय में कहनी हो।
वक्ता—वि० [सं० वक्तृ] १ वाग्मी। बोलनेवाला। २ भाषणपटु।
संज्ञा पुं० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।
वक्तृ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। २. एक प्रकार का छंद।
वक्तृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाक्यपटुता। २ व्याख्यान। ३ कथन। भाषण।
वक्तृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक्तृता। वाग्मिता। २ व्याख्यान। ३ कथन।
वक्फ—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २ धर्म के काम में धन आदि देना।

वक्र—वि० [सं०] १. टेढ़ा। बाँका। २. झुका हुआ। तिरछा। ३ कुटिल।
वक्रगामी—वि० [सं० वक्रगामिन्] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला। २ शठ। कुटिल।
वक्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़े या तिरछे होने का भाव। टेढ़ापन। २. कुटिलता।
वक्रतुंड—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
वक्रदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ी दृष्टि। २ क्रोध की दृष्टि।
वक्री—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २. बुद्धदेव।
वक्रोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २. काकूक्ति। ३. बढ़िया उक्ति।
वक्ष—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती। उरस्थल।
वक्षस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] उर। छाती।
वक्षु—संज्ञा पुं० दे० "वक्ष"।
वक्षोज, वक्षोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। कुच।
वगलामुखी—संज्ञा पुं० [सं०] एक महाविद्या।
वगैरह—अव्य० [अ०] इत्यादि। आदि।
वच—संज्ञा पुं० [सं० वचन] वाक्य।
वचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २ कथन। उक्ति। ३ व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।
वचनलक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो।
वचनविदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक को प्रीति का साधन करती हो।
वचनीय—वि० [सं०] कहने योग्य। कथनीय।
संज्ञा पुं० निंदा। शिकायत।
वचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वच नाम की ओषधि।

वच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] उर। छाती।

वजन—संज्ञा पुं० [अ०] १. भार। बोझ। २ तौल। ३. मान। मर्यादा। गौरव। ४ वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय।

वजनी—वि० [अ० वजन+ई (प्रत्य०)] जिसका बहुत बोझ हो। भारी।

वजह—संज्ञा स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।

वजीफा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों, सन्यासियों आदि को दी जाती है। २. जप या पाठ (मुसलमान)।

वजीर—संज्ञा पुं० [अ०] १ मंत्री। अमात्य। दीवान। २ शतरंज की एक गोटी।

वज्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २ विद्युत। बिजली। ३ हीरा। ४. फौलाद। ५ भाला। बरछा।

वि० १ बहुत कड़ा या मजबूत। २ घोर। दारुण। भीषण।

वज्रपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वज्रलेप—संज्ञा पुं० [सं०] एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्त्ति आदि मजबूत हो जाती है।

वज्रसार—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।

वज्रावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक मेघ का नाम।

वज्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के चौरासी आसनों में से एक।

वज्री—संज्ञा पुं० [सं० वज्रिन्] इंद्र।

वज्रोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग की एक मुद्रा।

वट—संज्ञा पुं० [सं०] बरगद का पेड़।

वटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २ बड़ा। पकौड़ी।

वटसावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।

वटिका, वटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोली या टिकिया। बटी।

वटु—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। माणवक।

वटुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। ३ एक भैरव।

वड्डिपन(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० वड्डप्पण] बड़प्पन। बड़ाई। महत्ता। उ०—ता कुल केरा वड्डिपन कहवा कवन उपाए।

वणिक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोजगार करनेवाला। २ वैश्य। बनिया।

वतंस—संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।

वतन—संज्ञा पुं० [अ०] जन्मभूमि।

वत्—प्रत्य० [सं०] समान। तुल्य।

वत्स—संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २ बालक। ३. वत्सासुर।

वत्सनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक विष जिसे 'बछनाग' या बच्छनाग भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।

वत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।

वत्सल—वि० [सं०] [स्त्री० वत्सला] १ बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। २ अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु।

संज्ञा पुं० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

वदतोव्याघात—संज्ञा पुं० [सं०] कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

वदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुहँ। २ अगला भाग। ३ कथन। बात कहना।

वदान्य—वि० [सं०] [संज्ञा वदान्यता] १ अतिशय दाता। उदार। २ मधुरभाषी।

वदि—संज्ञा पुं० [सं० अवदिन] कृष्ण पक्ष, जैसे—जेठ वदि ४।

वदुसाना(पु)—क्रि० स० [सं० विदूषण] दोष देना। भलाबुरा कहना। इलजाम लगाना।

वध—संज्ञा पुं० [सं०] जान से मार डालना। घात। हत्या।

वधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ घातक। हिंसक। २ व्याध। ३ मृत्यु।

वधभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ वध किया जाता हो।

वधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नवविवाहिता स्त्री। दुलहन। २ पत्नी। भार्या। ३ पुत्र की बहू। पतोहू।

वधूटी—संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।

वधूत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "अवधूत"।

वध्य—वि० [सं०] मार डालने योग्य।

वन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बन। जंगल। २. वाटिका। ३ जल। ४ घर। आलय। ५ शंकराचार्य के अनुयायी सन्यासियों की एक उपाधि।

वनचर—वि० [सं०] वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।

संज्ञा पुं० १. वन में रहनेवाला पशु। २ जंगली आदमी।

वनचारी—संज्ञा पुं० [स्त्री० वनचारिणी] दे० "वनचर"।

वि० वन में घूमनेवाला।

वनज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।

वनदेव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वनदेवी] वन के अधिष्ठाता देवता।

वनप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] कोयल।

वनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन के फूलों की माला। २ एक विशेष प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण धारण करते थे।

वनमाली—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वनराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह। २ अश्मतक वृक्ष।

वनराजि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की श्रेणी। २ वन के बीच की पगडंडी।

वनरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

वनलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की शोभा। वनश्री।

वनवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. जंगल में रहना। २ बस्ती छोड़कर जंगल में रहने की व्यवस्था या विधान।

वनवासी—वि० [सं० वनवासिन्] [स्त्री० वनवासिनी] जंगल में निवास करनेवाला।

वनस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनभूमि।

वनस्पति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृक्ष मात्र। पेड़पौधे। २ घास सागपात, पत्रपुष्प इत्यादि।

संज्ञा पुं० मूँगफली या बिनौले आदि से जमाकर तैयार किया हुआ तेल।

वनस्पति शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न भिन्न रूपों का विवेचन होता है। वनस्पति विज्ञान।

वनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रिया। प्रियतमा। २ स्त्री। औरत। ३ छह वर्णों की एक वृत्ति। तिलका। तिल्ला।

वनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा वन।

वनेचर—वि० दे० "वनचर"।
वनौषध—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की ओषधियाँ। जंगली जड़ीबूटी।
वन्य—वि० [सं०] १ वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २ जंगली।
वन्यचर—वि० दे० "वनचर"।
वपन—संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोना।
वपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चरबी। मेद।
वपित—वि० [सं०] बोया हुआ।
वपु—संज्ञा पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।
वपुमान—संज्ञा पुं० [सं० वपुष्मान्] सुंदर और हृष्टपुष्ट शरीरवाला।
वपुष्टमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशिराज की एक कन्या जो जनमेजय से ब्याही थी।
वप्पा‡—संज्ञा पुं० [सं० वप्तृ] दे० "बाप"।
वफा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वादा पूरा करना। बात निबाहना। २. निबाह। पूर्णता। ३ मुरौवत। सुशीलता।
वफादार—वि० [अ० वफा+फा० दार] [संज्ञा वफादारी] वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला।
वबाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. बोझ। भार। २. आपत्ति। कठिनाई। आफत। ३ झमेला। झंझट।
वभ्रु—संज्ञा पुं० दे० "बभ्रु"।
वमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वमित] १. कै करना। उलटी करना। २. वमन किया हुआ पदार्थ।
वमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वमन का रोग।
वयⓅ—सर्व० [सं० 'अस्मद्' का कर्ता बहु०] हम।
वयःक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] अवस्था। उम्र।
वयःसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।
वय—संज्ञा स्त्री० [सं० वयस्] अवस्था। उम्र।
वयन—संज्ञा पुं० [सं०] बुनने का काम। बुनाई।
वयस—संज्ञा पुं० [सं० वयस्] बीता हुआ जीवनकाल। उम्र। अवस्था।
वयस्क—वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १ उमर का। अवस्थावाला (यौ० में)। २ पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। सयाना। बालिग।
वयस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान अवस्था या उम्रवाला। २. मित्र। दोस्त।
वयोवृद्ध—वि० [सं०] १ बड़ाबूढ़ा। २. बूढ़ा।
वरंच—अव्य० [सं०] १ ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २. परंतु। लेकिन।
वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। २. किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ३ पति या दूल्हा।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम, जैसे—प्रियवर।
वरक—संज्ञा पुं० [अ०] १ पत्र। २. पुस्तकों का पन्ना। पत्रा। ३ सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।
वरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना। २ मंगल कार्य के विधान में होता आदि कार्यकर्ताओं को नियत करके उनका सत्कार करना। ३ मंगल कार्य में नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान। ४ कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ५. पूजा। अर्चना। सत्कार।
वरणी—संज्ञा स्त्री० दे० "वरण" ३।
वरणीय—वि० [सं०] १ वरण करने योग्य। २. पूजनीय।
वरद—वि० [सं०] [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।
वरदाता—वि० [सं०] वर देनेवाला।
वरदात्री—वि० स्त्री० [सं० वरदाता का स्त्री०] उ०—जीवन-समीर शुचि-निःश्वसना, वरदात्री।—तुलसीदास।
वरदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। २. किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता से हो।
वरदानी—संज्ञा पुं० [सं०] वर देनेवाला।
वरदी—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो।
वरन्—अव्य० [सं० वरम्] ऐसा नहीं। बल्कि।
वरनाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वरण] ऊँट। उ०—वरना-मख कर में अवलोकन देश पास कृत वंद। अधर समुद्र सदल जो सदना ध्वनि उपजत सुखकंद।—सूर०।
क्रि० स० [सं० वरण] १. किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना। २ विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना। ३. ग्रहण या धारण करना।
अव्य० [अ० वर्ना] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो। अन्यथा।
वरम्—संज्ञा पुं० दे० "वर्म"।
वरयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूल्हे का बाजे गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। बरात।
वररुचि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।
वरहीⓅ—संज्ञा पुं० दे० "बर्हा"।
वरांग—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर रूप या शरीर। २ मुख्य भाग। ३ मस्तक।
वराक—वि० [सं०] बेचारा। बापुरा।
वराटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी। कपर्दिका।
वरानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।
वरान्न—संज्ञा पुं० [सं०] दला हुआ उत्तम अन्न।
वरासत—संज्ञा स्त्री० [अ० विरासत] १. वारिस होने का भाव। उत्तराधिकार। २ उत्तराधिकार से मिला हुआ धन। तरका। बपौती।
वराह—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूकर। सूअर। २ विष्णु। ३ अठारह द्वीपों में से एक।
वराहक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाराही। २ लज्जालु। लजालू।
वराहमिहिर—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रंथ प्रचलित हैं।
वरिष्ठ—वि० [सं०] श्रेष्ठ। पूजनीय।
वरुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक देवता जो जल के अधिपति, दस्युओं के नाशक और देवताओं के रक्षक कहे गए हैं। इनका अस्त्र पाश है। २ वरुना का पेड़। ३ जल। पानी। ४ सूर्य। ५ एक ग्रह जिसे अँगरेजी में "नेपचून" कहते हैं।
वरुणपाश—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण का अस्त्रपाश या फंदा।
वरुणानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री।
वरुणालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वरूथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कवच। २ ढाल। ३ सेना। फौज।

वरूथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना। फौज।

वरेण्य—वि० [सं०] १ प्रधान। मुख्य। २. पूज्य। श्रेष्ठ।

वर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। श्रेणी। २. एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। ३ समान आर्थिक और सामाजिक स्थिति का लोकसमूह। ४ शब्द शास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह, जैसे—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि। ५ परिच्छेद। प्रकरण। अध्याय। ६. दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणनफल। ७ वह चौखूँटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों (रेखागणित)।

वर्गफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्गमूल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गांक हो, जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा।

वर्गलाना—क्रि० स० [फा० 'वरगलानीदन्' से] १ कोई काम करने के लिये उभारना। उकसाना। २ बहकाना। फुसलाना।

वर्गीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्गीकृत] बहुत सी वस्तुओं को उनके अलग-अलग वर्ग के अनुसार छाँटना और लगाना।

वर्चस्—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्चस्वान, वर्चस्वी] १. तेज। कांति। २ रूप। ३. अन्न।

वर्चस्वी—वि० [सं० वर्चस्विन्] तेजस्वी।

वर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोड़ना। २ मनाही। मुमानियत।

वर्जना—संज्ञा स्त्री० दे० "वर्जन"।

क्रि० स० [सं० वर्जन] मना करना। रोकना।

वर्जित—वि० [सं०] १ त्यागा हुआ। त्यक्त। २ जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो। निषिद्ध।

वर्ज्य—वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. जो मना हो।

वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम। रंग। २ जन-समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्यों ने किए थे। जाति। प्रकार। किस्म। ४. अकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ५ रूप।

वर्णखंड मेरु—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं।

वर्णतूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रंग पोतने की कूँची या बुरुश।

वर्णन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १ चित्रण। रँगना। २ सविस्तर कहना। कथन। बयान। ३ गुण-कथन। तारीफ।

वर्णनष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा।

वर्णनातीत—वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। वर्णन के बाहर।

वर्णनीय—वि० दे० "वर्ण्य"।

वर्णपताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा ऐसा है जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

वर्णप्रस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

वर्णमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षरों के रूपों की यथाश्रेणी लिखित सूची।

वर्णविकार—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों में एक वर्ण का बिगड़कर दूसरा वर्ण हो जाना।

वर्णविचार—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था।

वर्णविपर्यय—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द में वर्णों या ध्वनियों का परस्पर परिवर्तन, जैसे 'हिंस' से बना 'सिंह' शब्द।

वर्णवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णसंकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो। २ व्यभिचारी से उत्पन्न मनुष्य। दोगला।

वर्णसूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र या पिंगल में एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अंत लघु और आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

वर्णिकवृत्त—संज्ञा पुं० दे० "वर्णवृत्त"।

वर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय।

वर्णिका भंग—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र के विषय और भाव के अनुसार उपयुक्त रंगों का व्यवहार।

वर्णित—वि० [सं०] १. कथित। कहा हुआ। २ जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्ण्य—वि० [सं०] १ वर्णन के योग्य। २ जो वर्णन का विषय हो।

वर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्तित] १ बरताव। व्यवहार। २ व्यवसाय। वृत्ति। रोजी। ३ फेरना। घुमाना। ४ परिवर्तन। फेरफार। ५ स्थापन। रखना। ६ सिल बट्टे से पीसना।

वर्तमान—वि० [सं०] १ चलता हुआ। जो जारी हो। २ उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। ३ आधुनिक। हाल का।

संज्ञा पुं० १ व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है। २ वृत्तांत। समाचार। ३ चलता व्यवहार।

वर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बत्ती। २ अंजन। ३ गोली। वटी।

वर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बत्ती। २ शलाका। सलाई।

वर्तित—वि० [सं०] १ संपादित किया हुआ। २ चलाया हुआ। जारी किया हुआ।

वर्ती—वि० [सं० वर्तिन्] [स्त्री० वर्तिनी] १. वर्तनशील। बरतनेवाला। २ स्थित रहनेवाला।

वर्तुल—वि० [सं०] गोल। वृत्ताकार।

वर्त्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्ग। पथ। २ किनारा। औंठ। बारी। ३ आँख की पलक। ४ आधार। आश्रय।

वर्दी—संज्ञा स्त्री० दे० "वरदी"।

वर्द्धक—वि० [सं०] बढ़ानेवाला। पूरक।

वर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] १ बढ़ाना। २ वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ३ काटना। तराशना।

वर्द्धमान—वि० [सं०] १. जो बढ़ता जा रहा हो। २. बढ़नेवाला। वर्द्धनशील।

संज्ञा पुं० १ एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न अर्थात् १४, १३, १८ और १५ होती है। २. जैनियों के २४वें जिन महावीर।

वर्द्धित—वि० [सं०] १ बढ़ा हुआ। २ पूर्ण। ३. छिन्न। कटा हुआ।

वर्म—संज्ञा पुं० [सं० वर्म्मन्] १ कवच। बकतर। २ घर।

वर्मा—संज्ञा पुं० [सं० वर्म्मन्] क्षत्रियों, खत्रियों तथा कायस्थों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है।

वर्य—वि० [सं०] श्रेष्ठ, जैसे—विद्वद्वर्य।

वर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कन्या। २ पतिंवरा वधू। ३ अरहर।

वर्बर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का नाम। २ इस देश के असभ्य निवासी जिनके बाल घुँघराले कहे गए हैं। ३. पामर। नीच।

वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृष्टि। जलवर्षण। २ काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं। संवत्सर। साल। वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र। ३ पुराणों में माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग। ४ किसी द्वीप का प्रधान भाग। ५ मेघ। बादल।

वर्षक—वि० [सं०] १ वर्षा करनेवाला। २ बरसानेवाला।

वर्षकाम—वि० [सं०] वृष्टि की कामना रखनेवाला। वृष्टि चाहनेवाला।

वर्षगाँठ—संज्ञा स्त्री० दे० "बरसगाँठ"।

वर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्षित] वृष्टि। बरसना।

वर्षफल—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।

वर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। २ पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = (१) बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से गिरना। (२) बहुत अधिक संख्या में मिलना।

वर्षाकाल—संज्ञा पुं० [सं०] बरसात।

वर्ह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोर का पर। मोरपंख। २ पत्ता।

वर्ही—संज्ञा पुं० [सं० वर्हिन्] मयूर। मोर।

वल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। २ एक असुर जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया।

वलन—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हटकर चलना। विचलन।

वलभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ में थी। २. सदर फाटक। तोरण। ३ छत। ४ छत के ऊपर का कमरा। अटारी।

वलय—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंडल। २. कंकण। ३ चूड़ी। ४ वेष्ठन।

वलयित—वि० [सं०] वेष्ठित। परिवृत्त। घेरा हुआ।

वलवला—संज्ञा पुं० [अ०] उमंग। आवेश।

वलाक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वलाका] बगला।

वलाहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ पर्वत। ३ एक दैत्य का नाम।

वलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेखा। लकीर। २ पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। बल। ३ देवता को चढ़ाने की वस्तु। ४ एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ५ श्रेणी। पंक्ति।

वलित—वि० [सं०] १ बल खाया हुआ। २ झुकाया या मोड़ा हुआ। ३ घेरा हुआ। ४ जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। ५ लिपटा हुआ। लगा हुआ। ६ ढका हुआ। ७ युक्त। सहित।

वली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झुर्री। शिकन। २ अवली। श्रेणी। ३ रेखा। लकीर।

संज्ञा पुं० [अ०] १ मालिक। स्वामी। २ शासक। हाकिम। ३ साधु। फकीर।

वल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष की छाल। त्वक्। २ वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे।

वल्द—संज्ञा पुं० [अ०] औरस बेटा। पुत्र, जैसे "गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल बेटा बलदेव का'।

वल्दियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय।

वल्मीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २ वाल्मीकि मुनि।

वल्लकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीणा। २ सलई का पेड़।

वल्लभ—वि० [सं०] [भाव० वल्लभता] प्रियतम। प्यारा।

संज्ञा पुं० १ प्रिय मित्र। नायक। २ पति। स्वामी। ३ अध्यक्ष। मालिक। ४ वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्यारी स्त्री। प्रेयसी।

वल्लभाचार्य—संज्ञा पुं० दे० "वल्लभ" ४।

वल्लभी—संज्ञा पुं० दे० "वलभी"।

वल्लरि, वल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वल्ली। लता। २ मंजरी।

वल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] लता। बेल।

वल्लीश—संज्ञा पुं० [सं० वल्ली] वल्ली। लता। बेल।

वल्वल—संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल। उ०—राम दिन कछक ता ठौर औरहु रहे, आइ बल्वल तहाँ दियो दिखाई। —सूर०।

वशंवद—वि० [सं०] वशीभूत। वश में होकर। उ०—बहती नदियाँ, नद, जन जन हार वशंवद। —तुलसीदास।

वश—संज्ञा पुं० [सं०] १. काबू। इख्तियार। अधिकार। उ०—हरि कछु ऐसो टोना जानत। सब के मन अपने वश आनत। —सूर०। २ इच्छा। चाह।

मुहा०—वश का = जिसपर अधिकार हो।

३ शक्ति की पहुँच। सामर्थ्य।

मुहा०—वश चलना = शक्ति काम करना।

वशवर्ती—वि० [सं० वशवर्त्तिन्] जो दूसरे के वश में रहे। अधीन। ताबे।

वशिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधीनता। ताबेदारी। २ मोहने की क्रिया या भाव।

वशित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ वशता। २ योग के अणिमादि आठ ऐश्वर्यों में से एक।

वशिष्ट—संज्ञा पुं० दे० "वशिष्ठ"।

वशी—वि० [सं० वशिन्] [स्त्री० वशिनी] १ अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।

वशीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वशीकृत] १. वश में लाने की क्रिया। २ मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।
वशीभूत—वि० [सं०] १ अधीन। तावे। २ दूसरे की इच्छा के अधीन।
वश्य—वि० [सं०] वश में आनेवाला।
वश्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।
वसंत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती] १. वर्ष की छह ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और वैशाख के महीने माने गए हैं। बहार का मौसिम। २ शीतला रोग। चेचक। ३ छह रागों में से दूसरा राग।
वसंततिलक—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, दो जगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—ढूँढ़े सुदानि जग पै लहि विप्र माँगे। हों सर्वसंत तिलका लखि मोद पागे॥ इसके उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता, आदि कई नाम हैं।
वसंततिलका—संज्ञा स्त्री० दे० "वसंततिलक"।
वसंतदूत—संज्ञा पुं० [सं०] १ आम का वृक्ष। २ कोयल। ३. चैत्र मास।
वसंतदूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोकिला। कोयल। २. माधवी लता।
वसंत पंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने की शुक्ल पंचमी। प्राचीन काल में इस दिन वसंत और रति सहित कामदेव की पूजा करके वसंत राग सुनने का बड़ा माहात्म्य था। इस दिन एकाहार व्रत भी किया जाता है। श्रीपंचमी।
वसंती—संज्ञा पुं० दे० "बसंती"।
वसंतोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १. वसंत पंचमी के दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक प्राचीन उत्सव। इसमें लोग उद्यानों में वसंत और कामदेव की पूजा करते और उत्सव मनाते थे। होली इसी की परंपरा है। मदनोत्सव। २ होली का उत्सव।
वसति, वसती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निवास। २ घर। ३. बस्ती।
वसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। २ ढकने की वस्तु। आवरण। ३ निवास।
वसवास—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० वसवासी] १ भ्रम। संदेह। २ प्रलोभन या मोह।
वसह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वृषभ] बैल।
वसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेद। २. चरबी।
वसिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है। २. सप्तर्षिमंडल का एक तारा।
वसिष्ठपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण। कुछ लोग कहते हैं कि लिंगपुराण ही वसिष्ठपुराण है।
वसीका—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे। २ ऐसे धन से आया हुआ सूद। वृत्ति। ३. वक्फ का इकरारनामा। अहदनामा।
वसीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अपने बाद अपनी संपत्ति और संतति के भावी विभाजन और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई कानूनी व्यवस्था।
वसीयतनामा—संज्ञा पुं० [अ० वसीयत+फा० नामा] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य वसीयत करता है।
वसुंधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
वसु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। २ आठ की संख्या। ३ रत्न। ४ धन। ५ अग्नि। ६ रश्मि। किरण। ७ जल। ८ सुवर्ण। सोना। ९. कुबेर। १० शिव। ११ सूर्य। १२ विष्णु। १३ साधु पुरुष। सज्जन। १४ सरोवर। तालाब। १५. छप्पय का ६९वाँ भेद।
वसुदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २ माली राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और संपाति नामक चार पुत्र थे।
वसुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण के पिता।
वसुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
वसुधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जैनों की एक देवी। २ कुबेर की पुरी। अलका।
वसुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २ छह वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण के बाद सगण होता है। उ०—तोसों वसुमती। धारैं जु कुमती। ते सर्व नसिहैं। धर्मिष्ठ वसिहैं।
वसुहंस—संज्ञा पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।
वसूल—वि० [अ०] १. मिला हुआ। प्राप्त। २ जो चुका लिया गया हो।
संज्ञा पुं० दे० "वसूल"।
वसूली—संज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] दूसरे से रुपया पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति।
वस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेड़। २ मूत्राशय। ३ पिचकारी।
वस्तिकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।
वस्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १ वह जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २ सत्य। ३ गोचर पदार्थ। चीज। ४. नाटक का कथन या आख्यान। कथावस्तु।
वस्तुतः—अव्य० [सं०] यथार्थतः। सचमुच।
वस्तुनिर्देश—संज्ञा पुं० [सं०] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास भी दे दिया जाता है।
वस्तुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है, जैसे—न्याय और वैशेषिक।
वस्तुस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिस्थिति। २ असलियत।
वस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा।
वस्त्रभवन—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े का बना घर, जैसे—खेमा, रावटी आदि।
वह—सर्व० [सं० सः] १ एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २ एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं।
वि० वाहक (समास में)।
वहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १ बेड़ा। तरेंदा। २ खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ३. ऊपर लेना। उठाना।
वहम—संज्ञा पुं० [अ०] १ मिथ्या धारणा। झूठा खयाल। २. भ्रम। ३. व्यर्थ की शंका। मिथ्या संदेह। संशय।
वहमी—वि० [अ० वहम] वहम करनेवाला। जो व्यर्थ संदेह में पड़े। संशयात्मा।
वहशी—वि० [अ०] १ जंगल में रहनेवाला। २ जो पालतू न हो। ३ असभ्य।
वहाँ—क्रि० वि० [?] उस जगह।

वहावी—संज्ञा पुं० [अ०] १. अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय । २ इस संप्रदाय का अनुयायी ।

वहि—अव्य० [सं०] जो अंदर न हो । बाहर ।

वहित्र—संज्ञा पुं० [सं०] जहाज़ ।

वहिरंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का बाहरी भाग । २. बाहरी भाग । अंतरंग का उलटा । ३. कहीं बाहर से आया हुआ आदमी । बाहरी आदमी ।

विं० ऊपर ऊपर का । बाहरी ।

वहिर्गत—वि० [सं०] जो बाहर गया हो । निकला हुआ । बाहर का ।

वहिर्द्वार—संज्ञा पुं० [सं०] बाहरी फाटक । सदर फाटक । तोरण ।

वहिर्भूत—वि० [सं०] वहिर्गत ।

वहिर्मुख—वि० [सं०] १ विमुख । २ अंतर्मुख का उलटा । बाह्य वस्तुओं की ओर प्रवृत्त ।

वहिर्लापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली ।

वहिष्कार—संज्ञा पुं० दे० "बहिष्कार" ।

वहीं—अव्य० [हिं० वहाँ+ही] उसी जगह ।

वही—सर्व० [हिं० वह+ही] उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो । पूर्वोक्त व्यक्ति । २ निर्दिष्ट व्यक्ति, अन्य नहीं ।

वहै(पु)—वि० [हिं० वह+ई (प्रत्य०)] वही ।

वह्नि—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि । २ कृष्ण के एक पुत्र का नाम । ३ तीन की संख्या ।

वांछनीय—वि० [सं०] १ चाहने योग्य । २ जिसकी इच्छा हो ।

वांछा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वांछित, वांछनीय] इच्छा अभिलाषा । चाह ।

वांछित—वि० [सं०] इच्छित । चाहा हुआ ।

वा—अव्य० [सं०] विकल्प या संदेहवाचक शब्द । या । अथवा ।

(पु)†सर्व० [हिं० वह] व्रजभाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है, जैसे—वाको, वासों ।

वाइ(पु)†—सर्व० दे० "वाहि" ।

वाक्—संज्ञा पुं० [सं०] वाणी । २ सरस्वती । ३. बोलने की इंद्रिय ।

वाकई—वि० [अ०] सच । वास्तव ।

अव्य० सचमुच । यथार्थ में । वास्तव में है ।

वाकफियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जानकारी । ज्ञान । २. परिचय । जान पहचान ।

वाकया—संज्ञा पुं० [अ०] १. घटना । २. वृत्तांत । समाचार ।

वकिफ—वि० [अ०] १ जानकार । २ जानकारी रखनेवाला । अनुभवी ।

वाक्छल—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक ।

वाक्पटु—वि० [सं०] बात करने में चतुर ।

वाक्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहस्पति । २. विष्णु ।

वाक्फियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] जानकारी ।

वाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] पद या पदसमूह की अभिप्रायसूचक पूर्ण इकाई । जुमला ।

वाक्सिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे ।

वागीश—संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहस्पति । २ ब्रह्मा । ३ वाग्मी । कवि ।

वि० अच्छा बोलनेवाला । वक्ता ।

वागीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती ।

वाग्जाल—संज्ञा पुं० [सं०] बातों की लपेट । बातों का आडंबर या भरमार ।

वाग्दंड—संज्ञा पुं० [सं०] भलाबुरा कहने का दंड । डाँटडपट । लिथाड़ ।

वाग्दत्त—वि० [सं०] जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों ।

वाग्दत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो ।

वाग्दान—संज्ञा पुं० [सं०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा ।

वाग्देवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती । वाणी ।

वाग्भट—संज्ञा पुं० [सं०] १ अष्टांगहृदय संहिता नामक वैद्यक ग्रंथ के रचयिता । २ भावप्रकाश, शार्ङ्गधर आदि के रचयिता । ३ वैद्यक निघंटु के रचयिता ।

वाग्मी—संज्ञा पुं० [सं०] वाचाल । अच्छा वक्ता । २. पंडित । ३. बृहस्पति ।

वाग्विलास—संज्ञा पुं० [सं०] आनंदपूर्वक परस्पर बातचीत करना ।

वाङ्मय—वि० [सं०] १ वचनसंबंधी । २. वचन द्वारा किया हुआ ।

संज्ञा पुं० गद्यपद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो । साहित्य ।

वाङ्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गद्यकाव्य । उपन्यास ।

वाच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाचा । वाणी ।

वाच—संज्ञा स्त्री० दे० "वाच्" ।

वाचक—वि० [सं०] बतानेवाला । सूचक ।

संज्ञा पुं० नाम । संज्ञा । संकेत ।

वाचकधर्मलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो ।

वाचकलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो ।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय हो ।

वाचकोपमेयलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है ।

वाचक्नवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गार्गी । वाचकुटी ।

वाचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पढ़ना । पठन । बाँचना । २. कहना । ३. प्रतिपादन ।

वाचनालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचारपत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों ।

वाचसांपति—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति ।

वाचस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति ।

वाचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी । २ वाक्य । वचन । शब्द ।

वाचाबंध(पु)—वि० [सं० वाचाबंधन] प्रतिज्ञाबद्ध ।

वाचाल—वि० [सं०] [संज्ञा वाचालता] १ बोलने में तेज । वाक्पटु । २. बकवादी ।

वाचिक—वि० [सं०] १. वक्तासंबंधी । २ वाणी से किया हुआ ।

संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्यविन्यास द्वारा अभिनय का कार्य संपन्न होता है ।

वाची—वि० [सं० वाचिन्] प्रकट करनेवाला। सूचक।
वाच्य—वि० [सं०] १ कहने योग्य। २ शब्दसंकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।
संज्ञा पुं० १ अभिधेयार्थ। २ दे० "वाच्यार्थ"।
वाच्यार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दों के संकेतित या साधारण अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल शब्दार्थ।
वाच्यावाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] भली बुरी या कहने न कहने योग्य बात।
वाजपेई(पु)—संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी"।
वाजपेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।
वाजपेयी—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. अत्यन्त कुलीन पुरुष।
वाजसनेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ यजुर्वेद की एक शाखा। २ याज्ञवल्क्य ऋषि।
वाजिब—वि० [अ०] उचित। ठीक।
वाजिबी—वि० [अ०] उचित। ठीक।
वाजी—संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १ घोड़ा। २ फटे हुए दूध का पानी।
वाजीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो। बल और वीर्य बढ़ानेवाली ओषधि।
वाट—संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग। रास्ता।
वाटधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक जनपद जो काश्मीर के नैऋर्त्य कोण में कहा गया है। २ एक वर्णसंकर जाति।
वाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा।
वाड़वाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समुद्र के अंदर की आग। २ समुद्री आग।
बाण—संज्ञा पुं० [सं०] धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष द्वारा छोड़ा जाता है। तीर।
वाणावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाणों की अवली। २ तीरों की लगातार वर्षा। ३ एकसाथ बने हुए पाँच श्लोक।
वाणिज्य—संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य"।
वाणिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। २. सरस्वती।
मुहा०—वाणी फुरना=मुँह से शब्द निकलना।
३ वाक्शक्ति। उ०—इतनी कहत गरुड पर चढ़िकै तुरतहिं मधुबन आए। कछु कपोल परसि बालक के वाणी प्रगट कराए। सूर०। ४ वागिंद्रिय। जीभ। रसना।
वात—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातज—वि० [सं०] वायु द्वारा उत्पन्न।
वातजात—संज्ञा पुं० [सं० वात+जात] हनुमान्।
वातप्रकोप—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के भीतर की वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातापि—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।
वातायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ झरोखा। छोटी खिड़की। २. रामायण के अनुसार एक जनपद।
वातावरण—संज्ञा पुं० [सं० वात+आवरण] १ आसपास की परिस्थिति। २ पृथ्वी को चारों ओर से घेरे रहनेवाला हवा का लिफाफा। वायुमंडल।
वातुल—संज्ञा पुं० [सं०] बावला। उन्मत्त।
वातोर्मी—संज्ञा पुं० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
वात्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बवंडर।
वात्सरिक—वि० [सं०] सालाना। वार्षिक।
वात्सल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेम। स्नेह। २. माता पिता का संतति के प्रति प्रेम।
वात्स्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २ कामसूत्रप्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।
वाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह बातचीत जो किसी तत्व के निर्णय के लिये हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। २ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धांत। उसूल, जैसे—अद्वैतवाद। ३. बहस। झगड़ा। ४. मुकद्दमा।
वादक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाजा बजानेवाला। २ वक्ता। ३ तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।
वादग्रस्त—वि० [सं०] जिसके संबंध में विवाद या मतभेद हो।
वादन—संज्ञा पुं० [सं०] बाजा बजाना।
वाद प्रतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला तर्कवितर्क। बहस।
वादरायण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास।
वादविवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बहस।
वादा—संज्ञा पुं० [अ० वाअदा] वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।
मुहा०—वादाखिलाफी करना=कथन के विरुद्ध कार्य करना। वादा लेना=वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।
वादानुवाद—संज्ञा पुं० दे० "वादविवाद"।
वादित्र—संज्ञा पुं० [सं०] वाद्य। बाजा।
वादी—संज्ञा पुं० [सं० वादिन्] १ वक्ता। बोलनेवाला। २ मुकदमा चलानेवाला। फरियादी। मुद्दई। ३ पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।
वाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] बाजा।
वानप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों में प्रचलित वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार मनुष्यजीवन के २५-२५ वर्षों के चार आश्रमों में से तीसरा।
वानर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंदर। २. दोहे का एक भेद।
वानवासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद। जिसमें ६वीं और १२वीं मात्रा लघु हो। उ०—बुध बरनहिं हरिजस अस जानी। करहिं पुनीत सफल निज बानी।
वानिनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "बनियाइन"।
वानीर—संज्ञा पुं० [सं०] बेंत।
वापन—संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोना।
वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ। फिरता।
वापसी—वि० [फा० वापस] लौटा हुआ या फेरा हुआ। वापस होने के संबंध का।
संज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्तन।
वापिका, वापी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।
वाम—वि० [सं०] १ बायाँ। दक्षिण या दाहिने का उलटा। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। ३ टेढ़ा। कुटिल। ४ दुष्ट।
संज्ञा पुं० १ कामदेव। २ एक रुद्र का नाम। वामदेव। ३ वरुण। ४ धन। ५ २४ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ७ जगणों के बाद एक यगण हो। उ०—चढ़े गजबाजि छुपीनस आदि सु वाहन राजन केर बखाने। लहैं भलि वाम अरु धन धाम तु कह भयो बिनु रामहिं जाने। मंजरी। मकरंद। माधवी।

वामकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।

वामदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ एक वैदिक ऋषि।

वामन—वि० [सं०] १. बौना। छोटे डील का। २ ह्रस्व। खर्व।
 संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो वलि को छलने के लिये हुआ था। ५. अठारह पुराणों में से एक।

वाममार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।

वामांगिनी, वामांगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।

वामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २ दुर्गा। ३ दस अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, यगण, भगण और अंत्य गुरु हों। उ०—ये हैं दुख नाना की जननी। ऐसी हम गाथा तें अकनी। इसे सुषमा छंद भी कहते हैं।

वामावर्त—वि० [सं०] १ दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाईं ओर से आरंभ की जाय। २ जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो।

वायⓅ—सर्व० दे० "वाहि"।

वायव्य—वि० [सं०] वायुसंबंधी।
 संज्ञा पुं० १ उत्तर पच्छिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २ एक अस्त्र का नाम।

वायस—संज्ञा पुं० [सं०] कौआ। काक।

वायु—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवा। वात।

वायुकोण—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा।

वायुमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त वायु का आवरण। २ वातावरण।

वायुयान—संज्ञा पुं० [सं०] हवा में उड़नेवाला यान। हवाई जहाज।

वायुलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम। २ आकाश।

वारंवार—अव्य० दे० "वारंवार"।

वार—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वार। दरवाजा। २ रोक। रुकावट। ३ आवरण। ४ अवसर। दफा। मरतव। ५ क्षण। ६ सप्ताह का दिन, जैसे—आज कौन वार है? ७ दाँव। बारी।
 संज्ञा पुं० [सं० वार] चोट। आघात आक्रमण। हमला।

वारक—वि० [सं०] १. वारण या निषेध करनेवाला। २. दूर करनेवाला।

वारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वारक] १ किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही। २. रुकावट। बाधा। ३ कवच। बकतर। ४. छप्पय छंद का एक भेद। ५. हाथी।

वारणावत—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के समय का एक नगर जो हस्तिनापुर से आठ दिन के मार्ग पर गंगा के किनारे बसा था। २. इस नगर के चारों ओर फैला हुआ जनपद।

वारतियⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० वारस्त्री] वेश्या।

वारदⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वारिद] बादल।

वारदात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कोई भीषण कांड। दुर्घटना। २. मारपीट। दगाफसाद।

वारनⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। वलि।
 संज्ञा पुं० [सं० वदन] वंदनवार। वंदनमाला।

वारना—क्रि० स० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना। उ०—चितै रही मुख इंदु मनोहर या छवि पर वारति तन को। —सूर०।
 संज्ञा पु० निछावर। उत्सर्ग।
 मुहा०—वारने जाना = निछावर होना।

वारनारी—संज्ञा स्त्री० दे० 'वारवधू'।

वारपार—संज्ञा पुं० [सं० अवार+पार] १. (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। दोनों किनारे। २ अंत। ३ सीमा। आदि अंत।
 अव्य० १ इस किनारे से उस किनारे तक। २ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक।

वारफेर—संज्ञा पुं० [हिं० √वार+फेर] निछावर। वलि।

वारवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारमुख्या] वेश्या।

वारांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वारांनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वारा—संज्ञा पुं० [सं० वारण] १ खर्च की बचत। किफायत। २ लाभ। फायदा।
 वि० किफायत। सस्ता।

वाराणसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगातट पर बसी हुई उत्तरप्रदेश की एक प्राचीन नगरी। काशी नगरी।

वारा न्यारा—संज्ञा पुं० [हिं० वार+न्यारा] १. किसी ओर निश्चय। फैसला। २. झंझट या झगड़े का निबटेरा।

वारापार—संज्ञा पुं० [हिं० वारपार] वारपार। सीमा। आदि अंत। उ०—वह खुद सब कुछ सह सकती थी, उसकी सहन शक्ति का वारापार न था। —कायाकल्प।

वाराह—वि० [सं०] १. वराह से संबंधित। २. वराह अवतार से संबंधित।
 संज्ञा पुं० दे० "वाराह"।

वाराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आठ मातृकाओं में से एक। २ एक योगिनी।

वाराहीकंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महाकंद जो गेंठी कहलाता है।

वारि—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

वारिज—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २ शंख। ३. घोंघा। ४. कौड़ी। ५ खरा सोना।

वारित—वि० [सं०] जो मना किया गया हो। निवारित।

वारिद—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ बादल।

वारिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वारियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर। वलि।

वारिवर्तⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वारि+आवर्त] एक मेघ का नाम।

वारिवाह—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वारिस—संज्ञा पुं० [अ०] वह पुरुष जो किसी के मरने के बाद उसकी संपत्ति का स्वामी और उसके दातव्यों का देनदार हो। उत्तराधिकारी।

वारींद्र—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वारीफेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "वारफेर"।

वारीश—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २ वरुण की स्त्री या लड़की। वरुणानी। ३ वरुणोपदिष्ट उपनिषद् विद्या। ४ पश्चिम दिशा। ५ चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र होने पर लगनेवाला एक पर्व जिसमें गंगास्नान और दान आदि करते हैं। ६ शतभिषा नक्षत्र।

वारेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] गौड़ देश का एक प्राचीन जनपद जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।

वार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बातचीत। २ समाचार। वृत्तांत। हाल। ३ जनश्रुति। अफवाह। ४ विषय। मामला। ५ वैश्य वृत्ति जिसके अंतर्गत कृषि, वाणिज्य गोरक्षा और कुसीद हैं।

वार्तालाप—संज्ञा पुं० [सं० वार्तालाप] बातचीत।

वार्तावह—संज्ञा पुं० [सं० वार्तावह] संदेशा ले जानेवाला दूत।

वार्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ के अनुक्त और अस्पष्ट अर्थों को स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ।

वार्द्धक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २. वृद्धि। बढ़ती।

वार्य—वि० [सं०] १ वारण करने योग्य। २. निवारण करने योग्य। ३. जिसे वारण करना हो। जिसे रोकना हो।

वार्षिक—वि० [सं०] १. वर्षसंबंधी। २. जो प्रतिवर्ष होता हो। सालाना।

वार्ष्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] वृष्णि का वंशज। कृष्णचंद।

वालंटियर—संज्ञा पुं० [अँ०] १ लोक की नि:स्वार्थ सेवा करनेवाला व्यक्ति। स्वयंसेवक। २ फौज का अवैतनिक सिपाही या अफसर।

वाला—प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संबंधसूचक प्रत्यय।

वालिद—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० वालिदा] पिता। बाप।

वाल्मीकि—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के रचयिता और आदिकवि एक भृगुवंशी मुनि।

वाल्मीकीय—वि० [सं०] १. वाल्मीकि संबंधी। २ वाल्मीकि का बनाया हुआ।

वावैला—संज्ञा पुं० [अ०] २ विलाप। रोना पीटना। १ शोरगुल। हल्ला।

वाशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण।
वि० [सं०] वशिष्ठ संबंधी। वशिष्ठ का।

वाष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँसू। २. भाप।

वासंत—वि० [सं०] वसंत का। वासंती।

वासंतक—वि० [सं०] वसंत संबंधी। वसंत ऋतु में बोया हुआ।

वासंतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाँड़। विदूषक। २ नाचनेवाला। नर्तक।
वि० [संज्ञा वासंतिकता] वसंत संबंधी।

वासंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माधवी लता। २ जूही। ३. मदनोत्सव। ४. दुर्गा। ५. चौदह वर्णों का एक वृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, तगण, नगण, मगण और अंत में दो गुरु हों। उ०—माता ! नी मैं गग, चरण तोरे त्रैकाला। नासौ वेगी दु:ख, विपुल औरौ जंजाला॥
वि० [संज्ञा वासंतिक] १ वसंत संबंधी। २ वसंती।

वास—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहना। निवास। २. गृह। घर। मकान। ३. सुगंध। बू।

वासक—संज्ञा पुं० [सं०] अडूसा।

वासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने घर और शरीर को सुसज्जित करके नायक की प्रतीक्षा करे (साहित्यदर्पण)।

वासकट—संज्ञा पुं० स्त्री० [अँ० वेस्टकोट] दे० "वास्कट"।

वासन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वासित] १ सुगंधित करने का कार्य। २ वस्त्र। ३. वास।

वासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रत्याशा। २ ज्ञान। ३ भावना। संस्कार। स्मृतिहेतु। ४ इच्छा। कामना।
क्रि० स० दे० "बासना"।

वासर—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। दिवस। २ वह घर जिसमें नवदंपती पहली रात को सोते हैं।

वासव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वासित—वि० [सं०] १ सुगंधित किया हुआ। २. कपड़े से ढका हुआ। ३ बासी।

वासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। २. आर्या छंद का एक भेद।

वासिष्ठ—वि० [सं०] वसिष्ठ संबंधी।

वासी—संज्ञा पुं० [सं० वासिन्] रहनेवाला।

वासुकी—संज्ञा पुं० [सं० वासुकि] आठ नागों में से दूसरे नागराज।

वासुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वसुदेव के पुत्र। श्रीकृष्णचंद्र। २ पीपल का पेड़।

वास्कट—संज्ञा स्त्री० [अँ० वेस्टकोट] एक प्रकार की विलायती बंडी।

वास्तव—वि० [सं०] [भाव० वास्तवता] प्रकृत। यथार्थ।

वास्तविक—वि० [सं०] यथार्थ। ठीक।

वास्तव्य—वि० [सं०] रहने या बसने योग्य।
संज्ञा पुं० बस्ती। आबादी।

वास्ता—संज्ञा पुं० [अ०] संबंध। लगाव।

वास्तु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जिसपर घर उठाया जाय। डीह। २. घर। मकान। ३. इमारत।

वास्तुकला—संज्ञा स्त्री० दे० 'वास्तुविद्या'।

वास्तुपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृहप्रवेश के आरंभ में की जाती है।

वास्तुविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिसमें इमारत के संबंध की सारी बातों का परिज्ञान होता है। भवननिर्माण की कला।

वास्तुशास्त्र—संज्ञा पुं० दे० "वास्तुविद्या"।

वास्ते—अव्य० [अ०] १ लिये। निमित्त। २ हेतु। सबब।

वाह—अव्य० [फा०] १. प्रशंसा सूचक शब्द। धन्य। २ आश्चर्यसूचक शब्द। ३ घृणाद्योतक शब्द।

वाहक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वाहिका] १. बोझ ढोने या खींचनेवाला। २ सारथी।

वाहन—संज्ञा पुं० [सं०] सवारी।

वाहना—क्रि० स० दे० "बाहना"।

वाहवाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] लोगों की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद।

वाहित—वि० [सं०] १. वहन किया हुआ। ढोया हुआ। २ बिताया हुआ।

वाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। २ सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे।

वाहिनीपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

वाहियात—वि० [अ० वाही+फा० यात] १ व्यर्थ। फजूल। २ बुरा। खराब।

वाही—वि० [सं० वाहिन्] [स्त्री वाहिनी] वहन करनेवाला।
वि० [अ०] १ सुस्त। ढीला। २ निकम्मा। ३ मूर्ख। ४ आवारा।
सर्व० [अ० वाही] उसी। उ०—उपरना वाही कै जु रह्यो। जाही के उर बसे स्यामघन, निसि वाँ जँह दुख गह्यो।—नंददास०।

वाही तवाही—वि० [अ० वाही+तवाही] १ बेहूदा। २. आवारा। ३. अडबंड। बेसिर पैर का
संज्ञा स्त्री० अंडबंड। गालीगलौज।
वाह्य—क्रि० वि० [सं०] बाहर। अलग।
वाह्यांतर—वि० [सं०] भीतर और बाहर का।
वाह्येंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम विषयों का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।
वाह्लीक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गांधार के पास का एक प्रदेश। २ वाह्लीक देश का घोड़ा।
विंजन—संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।
विंद—संज्ञा पुं० दे० "वृंद" और "विंदु"।
विंदक(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राप्त करनेवाला। २ जाननेवाला। ज्ञाता।
विंदु—संज्ञा पुं० [सं० विंदु] १ जलकण। बूँद। २ बुँदकी। बिंदी। ३. अनुस्वार। ४ शून्य। ५ एक बूँद परिमाण। ६. रेखागणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। ७ बहुत छोटा टुकड़ा।
विंदुमाधव—संज्ञा पुं० [सं०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।
विंदुर—संज्ञा पुं० [सं० विंदु] बुँदकी।
विंदुसार—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।
विंध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विंध्य] विंध्य पर्वत।
विंध्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।
विंध्यकूट—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।
विंध्यवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर जिले में है।
विंध्याचल—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।
विंश—वि० [सं०] बीसवाँ।
विंशोत्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।
वि—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर अनेक अर्थ देता है। उ०—१ विशेष, जैसे—विकराल। २ निषेध, जैसे—विमल। ३ अलगाव, जैसे—वियोग। ४. परिवर्तन, जैसे—विकार। ५ कार्य-विपर्यय, जैसे—विक्रय। ६ अंतर, जैसे—विशेष। ७ वैरूप्य, जैसे—विविध। ८ खंड, जैसे—विभाग।
विककत—संज्ञा पुं० [सं०] एक जंगली वृक्ष जिसे कटाई, किंकिणी और वज्र कहते हैं।
विकंपन—संज्ञा पुं० दे० "कँपना"।
विकंपित—वि० दे० "कंपित"।
विकच—वि० [सं०] १ खिला हुआ। विकसित। उ०—विकच स्वप्न नयनों से मिली, फिर मिली, वह धृत की कली। —गीतिका। २. जिसके बाल न हों। केशहीन।
विकट—वि० [सं०] १. विशाल। २. भयंकर। भीषण। ३ वक्र। टेढ़ा। ४ कठिन। मुश्किल। उ०—नित प्रति सबै उरहने के मिस आवति है उठि प्रात। अब समुझै अपराध लगावति विकट बनावति बात। —सूर०। ५ दुर्गम। ६. दुस्साध्य।
विकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोग। व्याधि। २ तलवार के ३२ हाथों में से एक।
विकरार(पु)—वि० दे० "विकराल"। उ०—कियो युद्ध अतिही विकरार। लागी चलन रुधिर की धार। —सूर०।
वि० [अ०, फा० बेकरार] विकल। बेचैन।
विकराल—वि० [सं०] भीषण। डरावना।
विकर्म—वि० [सं०] बुरा काम करनेवाला।
संज्ञा पुं० बुरा काम। दुष्कर्म।
विकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूर फेंकना। झटक कर अलग करना। नष्ट करना। २. विभाजन। टुकड़े करना।
विकल—वि० [सं०] १. विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २ कलाहीन। ३. खंडित। अपूर्ण।
विकलांग—वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। न्यूनांग। अंगहीन।
विकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कला का साठवाँ अंश। २. समय का एक बहुत छोटा भाग।
विकलाना(पु)—क्रि० अ० [सं० विकल] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। उ०—निठुर वचन सुनि स्याम के युवती विकलानी। मनों महानिधि पाइकै खोए पछितानी। —सूर०।
विकलित—वि० दे० "विकल"।
विकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रांति। भ्रम। धोखा। २. एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार। ३. किसी विषय में कई प्रकार की विधियों का मिलना। ४. योगशास्त्रानुसार पंचविध चित्तवृत्तियों में एक। ५. अवांतर कल्प। ६. एक काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या वही। ७. समाधि का एक भेद। सविकल्प। ८. व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण।
विकसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विकसित] प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।
विकसना—क्रि० अ० दे० "विकसना"।
विकसाना—क्रि० स० दे० "विकसाना"।
विकसित—वि० [सं०] १ खिला हुआ। प्रस्फुटित। २. प्रसन्न। प्रफुल्ल।
विकस्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है।
वि० [सं०] विकासशील। खिलनेवाला।
विकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। २. बिगड़ना। खराबी। ३ दोष। बुराई। अवगुण। ४ मनोवेग या प्रवृत्ति। वासना। ५ किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम, जैसे—कंकण सोने का विकार है। ६ व्याकरण में एक वर्ण की जगह दूसरा वर्ण हो जाना।
विकारी—वि० [सं० विकारिन्] १ जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो। युक्त। २ क्रोधादि मनोविकारों से युक्त। उ०—रे रे अंध बीसहूँ लोचन परतिय हरन विकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी। —सूर०। ३. अक्षर के साथ लगनेवाली मात्रा।
वि० कारकचिह्नों के लगाने के पूर्व रूप बदलनेवाली (संज्ञाएँ), जैसे—'बालकों ने' में 'बालकों' विकारी संज्ञा है।
विकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। २. प्रसार। फैलाव। ३. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है। ४. दे० "विकास"।

विकास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विकासक] १. प्रसार। फैलाव। २. खिलना। प्रस्फुटित होना। ३. किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर भिन्न भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। ४ एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और जीवजंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते और विकसित होते गए हैं। विकासवाद।

विकासना(पु)—क्रि० स० [सं० विकास से ना० धा०] १. प्रकट करना। निकालना। २ विकसित करना। खिलने में प्रवृत्त करना।

क्रि० अ० १. खिलना। २ प्रकट होना।

विकासवाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि वर्तमान सृष्टि और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव, जतु, आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते और विकसित होते गए हैं।

विकिर—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

विकिरण—संज्ञा पु० [सं०] बहुत सी किरणों का एक केंद्र में इकट्ठा किया जाना, जैसे आतशी शीशे से।

विकीर्ण—वि० [सं०] १ फैला या छितराया हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

विकुंठ(पु)—संज्ञा पु० [सं० वैकुंठ] वैकुंठ।

वि० [सं०] जो कुंठित न हो। तेज धारवाला। कुंद या भुथरा का उलटा।

विकृत—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। ३ असाधारण। अस्वाभाविक।

विकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। बिगाड़। २. बिगड़ा हुआ रूप। ३ रोग। बीमारी। ४ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५. परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ। ७ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ८ २३ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

विकृष्ट—वि० [सं०] खींचा हुआ। आकृष्ट।

विकेंद्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी केंद्रीभूत व्यवसाय, कार्य, वस्तु शासन की या व्यवस्था का भिन्न भिन्न भागों में विभाजित होना। केंद्रीकरण का उलटा।

विक्कण—संज्ञा पुं० [सं० विक्रयण] विक्रय। बिक्री। उ०—वणिक विक्कण कीनि आनहि बव्वरा।

विक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। २. बहादुरी। पराक्रम। ३ ताकत। बल। ४ गति। ५. दे० विक्रमादित्य"।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

विक्रमाजीत—संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"

विक्रमादित्य—संज्ञा पुं० [सं०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द—संज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्। विक्रम सवत्।

विक्रमी—संज्ञा पुं० [सं० विक्रमिन्] १. विक्रमवाला। पराक्रमी। २ विष्णु।

वि० विक्रम का। विक्रमसंबंधी।

विक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] बेचना। बिक्री।

विक्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

विक्रयी—वि० [सं० विक्रयिन्] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ शूर। वीर। बहादुर। २ विक्रम। बल। ३ वैक्रांत मणि। ४ व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है।

विक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीरता। बहादुरी। २. बल। शक्ति।

विक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। २ किसी क्रिया के विरुद्ध होनेवाली क्रिया।

विक्रीत—वि० [सं०] जो बेच दिया गया हो। बेचा हुआ।

विक्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला।

विक्रेय—वि० [सं०] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

विक्षत—वि० [सं०] चोट खाया हुआ। घायल।

विक्षिप्त—वि० [सं०] १ जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। २ विकल। व्याकुल। ३ फेंका या छितराया हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] योग में चित्त की एक अवस्था जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

विक्षिप्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पागलपन।

विक्षुब्ध—वि० [सं०] जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।

विक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फेंकना। डालना। २ इधर उधर हिलाना। झटका देना। ३. (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४. मन को इधर उधर भटकाना। संयम का उलटा। ५ एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। ६. बाधा। विघ्न।

विक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ।

विक्षोभी—वि० [सं० विक्षोभिन्] [स्त्री० विक्षोभिणी] जो क्षोभ उत्पन्न करे। क्षोभकारी।

विखान(पु)—संज्ञा पु० [सं० विषाण] सींग।

विखानस—संज्ञा पुं० दे० "वैखानस"।

विख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। उ०—तिनके काज अंश हरि प्रगटे भूव जगत विख्यात। —सूर०।

विख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

विगंध—वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार।

विगत—वि० [सं०] १ जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो। २. अंतिम या बीते हुए से पहले का। ३ रहित। विहीन। उ०—प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख विगत नयन मन पीर। —सूर०।

विगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विगत का भाव। २ दुर्दशा। दुर्गति।

विगर्हणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाँट। फटकार।

विगर्हित—वि० [सं०] १ जिसे डाँटा या फटकार बतलाई गई हो। २ बुरा। खराब।

विगलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विगलित] १ गलना। २ गिराना। ३ शिथिल होना। ४. बिगड़ना।

विगाथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद। विग्गाहा। उद्गीति।

विगुण—वि० [सं०] गुणरहित। निर्गुण।

विग्गाहा—संज्ञा स्त्री० दे० "विगाथा"।

विग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूर या अलग करना। २. कलह। झगड़ा। ३ युद्ध। ४ विभाग। ५ यौगिक शब्दों अथवा

समस्त पदों के किसी एक अथवा अनेक शब्द को अलग करना (व्याकरण)। ६ विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना। ७ आकृति। (पु)८ शरीर। उ०—अतुल बल विपुल विस्तार, विग्रह गौर, अमल अति धवल धरणीधराभं। —विनय०। ९ मूर्ति।

विग्रही—संज्ञा पुं० [सं० विग्रहिन्] १. लड़ाई झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला।

विघटन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विघटित] १ तोड़ना फोड़ना। २ नष्ट करना। ३. बुरी घटना घटित होना।

विघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान। घड़ी का २३वाँ भाग।

विघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोट। आघात। २ नाश। ३ हत्या। ४ विकलता। ५ बाधा।

विघूर्णन—संज्ञा पुं० [सं०] चारों ओर घुमाना। चक्कर देना।

विघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] अड़चन। बाधा।

विघ्नविनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नविनाशक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विचकित—वि० दे० "चकित"।

विचक्षण—वि० [सं०] १ चमकता हुआ। २ निपुण। पारदर्शी। ३ पंडित। विद्वान्। ४ बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

विचच्छन—संज्ञा पुं० दे० "विचक्षण"।

विचय—संज्ञा पुं० [सं०] १ इकट्ठा करने की क्रिया। २ जाँचपड़ताल। परीक्षा।

विचरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चलना। २ घूमना फिरना। पर्यटन करना।

विचरन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विचरण"।

विचरना—क्रि० अ० [सं० विचरण] चलना फिरना।

विचल—वि० [सं०] १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २ स्थान से हटा हुआ।

विचलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंचलता। अस्थिरता। २ घबराहट।

विचलना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विचलन] १ अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। उ०—जो सीता सत तें विचलै तौ श्रीपति काहि सँभारै। मोसे मुग्ध महापापी को कौन क्रोध करि तारै।—सूर०। २ अधीर होना। घबराना। ३ प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।

विचलाना(पु)†—क्रि० स० [हिं० विचलना का० स० रूप] विचलित करना।

विचलित—वि० [सं०] १ अस्थिर। चंचल। २ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो कुछ मन में सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। २. मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। ३ मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विचारिका] १. विचार करनेवाला। २ फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता।

विचारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय—वि० [सं०] [स्त्री० विचारणीया] १. जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। २. जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिंत्य। संदिग्ध।

विचारना—क्रि० अ० [सं० विचार से हिं० ना० धा०] १ विचार करना। सोचना। समझना। २ पूछना। ३ ढूँढ़ना। पता लगाना।

विचारपति—संज्ञा पुं० [सं० विचार+पति] विचारक। न्यायाधीश।

विचारवान्—संज्ञा पुं० दे० "विचारशील"।

विचारशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोचने या भलाबुरा पहचानने की शक्ति।

विचारशील—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।

विचारशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।

विचारालय—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायालय।

विचारित—वि० [सं०] जिसपर विचार हुआ हो। विचार किया हुआ।

विचारी—संज्ञा पुं० [सं० विचारिन्] वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला।

विचार्य—वि० दे० "विचारणीय"।

विचालन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हटाना या चलाना। २ नष्ट करना।

विचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। शक।

विचित्र—वि० [सं०] १. कई तरह के रंग या वर्णोंवाला। २. अद्भुत। विलक्षण। ३ विस्मित या चकित करनेवाला। ४. सुंदर।

संज्ञा पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।

विचित्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रंग विरंगा होने का भाव। २ विलक्षण होने का भाव।

विचित्रवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन हस्तिनापुर के चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र जिनकी रानियों से धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ था।

विचुंबन—वि० दे० "चुंबन"।

विचुंबित—वि० दे० "चुंबित"।

विचेतन—वि० [सं०] १. चेतनाहीन। संज्ञाहीन। बेहोश। २ जिसे भले बुरे का ज्ञान न हो। विवेकहीन।

विचेष्ट—वि० [सं०] चेष्टारहित।

विच्छित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विच्छेद। अलगाव। २ कमी। त्रुटि। ३ रंगों आदि से शरीर को चित्रित करना। ४ कविता में यति। ५. साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न—वि० [सं०] १ जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। विभक्त। २ जुदा। अलग। ३ समाप्त।

संज्ञा पुं० योग में चारों क्लेशों की वह अवस्था जिसमें बीच में उनका विच्छेद हो जाता है।

विच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विच्छेदक] १ काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २ क्रम का बीच से टूट जाना। ३ टुकड़े टुकड़े करना। ४ नाश। ५. विरह। ६. कविता में यति।

विच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. काट या छेदकर अलग करना। २ नष्ट करना।

विच्युत—वि० [सं०] [संज्ञा विच्युति] अपने स्थान आदि से गिरा हुआ। च्युत।

विछलना(पु)†—क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

विछेद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"। उ०—सूर श्याम के परम भावती पलक न होत विछेद।—सूर०।

विछोई(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "वियोगी"।

विछोह(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग।

विजडित—वि० दे० "जड़ित"।

विजन—वि० [सं०] १ जिसमें जन या मनुष्य न हों। २. एकांत। निराला।
संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] पंखा। बीजन।

विजना(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] पंखा।

विजय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत। जय। २ एक प्रकार का छंद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद है]

विजयपताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है।

विजययात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यात्रा जो किसी पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजयलक्ष्मी, विजयश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिनकी कृपा पर वह निर्भर मानी जाती है।

विजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. भाँग। सिद्धि। भंग। ३ श्रीकृष्ण की माला का नाम। ४ दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद ,जिसके चारों पदों की वर्ण-संख्या समान नहीं रहती और अंत में रगण रखना अच्छा समझा जाता है। उ०—सित कमलवंश सी, शीतकर अंश सी, विमल विधि हंस सी, हीर वर हार सी। सत्य-गुण सत्त्व सी, शांतरस तत्त्व सी, ज्ञान गौरत्व सी, सिद्धि विस्तार सी॥ ५. आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त जिसके अंत में लघु गुरु या नगन होता है। इसमें सम सम के अतिरिक्त दो विषमों के बीच भी सम होता है। उ०—कोऊ खान में मगन, कोऊ पान में मगन, कोऊ तान में मगन, कोऊ दान में मगन॥ ६ दे० "विजया दशमी"।

विजया दशमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है।

विजयी—संज्ञा पुं० [सं० विजयिन्] [स्त्री० विजयिनी] वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजेता।

विजयोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १. विजया दशमी का उत्सव। २ वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने पर होता है।

विजल—वि० [सं०] जलरहित।
संज्ञा पुं० वर्षा का अभाव। अवर्षण।

विजात—संज्ञा पुं० [सं०] मध्ये छंद का एक भेद जिसके आदि में लघु हो। उ०—लहौ विद्या विजाती की। कि जैसे लहु स्वजाती की॥

विजाति, विजातीय—वि० [सं०] दूसरी जाति का।

विजानना(पु)—क्रि० स० [हिं० जानना] अच्छी तरह जानना।

विजानु—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ या प्रकार।

विजिगीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की इच्छा।

विजित—वि० [सं०] जो जीत लिया गया हो। जीता हुआ।

विजेता—संज्ञा पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो। जीतनेवाला।

विजै(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "विजय"।

विजैसार—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

विजोग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वियोग] वियोग।

विजोर—वि० [हिं० वि+जोर] कमजोर।

विजोहा—संज्ञा पुं० [सं० विमोह ?] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। उ०—रार काहे करौ। धीर राधे धरौ॥ देवि मोहा तजौ। कंद देहा सजौ। जोहा। विमोहा। विज्जोहा। द्वियोधा।

विज्जु, विज्जुलता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "विद्युत"।

विज्जोहा—संज्ञा पुं० दे० "विजोहा"।

विज्ञ—वि० [सं०] [भाव० विज्ञता] १ जानकार। २. बुद्धिमान्। ३ विद्वान्। पंडित।

विज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० विज्ञप्त। १. बताने या सूचित करने की क्रिया। २ सूचना। ३. विज्ञापन।

विज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २ किसी विषय की जानी हुई बातों का संग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप में हो। शास्त्र; जैसे—पदार्थ विज्ञान। ३ माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ४. ब्रह्म। ५ आत्मा। ६ निश्चयात्मिका बुद्धि।

विज्ञानमय कोष—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह (वेदांत)।

विज्ञानवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। २ वह सिद्धांत जिसमें आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य हों।

विज्ञानी—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञानिन्] १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। २. वैज्ञानिक।

विज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय, विज्ञापित] १ जानकारी कराना। सूचना देना। २ समाचारपत्र, पत्रिका, परचे और इश्तहार आदि द्वारा सब लोगों को दी जानेवाली सूचना या किसी प्रकार का प्रचार।

विज्ञापित—वि० [सं०] जिसका विज्ञापन हुआ हो।

विट—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामुक। लंपट। २. वेश्यागामी। ३ धूर्त। चालाक। ४. साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो विषयभोग में सारी संपत्ति नष्ट कर चुका हो। ५. विष्ठा। मल।

विटप—संज्ञा पुं० [सं०] १. नई शाखा। कोंपल। २. वृक्ष। पेड़।

विटपी—संज्ञा पुं० दे० "विटप"।

विट लवण—संज्ञा पुं० [सं०] साँचर नमक।

विट्ठल—संज्ञा पुं० [?] दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम।

विडंबना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० विडंबनीय, विडंबित] १ किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसकी नकल उतारना। २. हँसी उड़ाना। मजाक करना। ३ छलना। ४. उपहास का विषय। ५. लज्जा की बात।

विडरना(पु)†—क्रि० अ० [?] १ तितर बितर होना। उ०—जानत नहीं कौन गुण यहि तन जाते सब विडरे।—सूर०। २. भागना। दौड़ना।

विडराना(पु)†—क्रि० स० दे० "विडारना"।

विडारना—क्रि० स० [हिं० विडरना का स० रूप] १ तितर बितर करना। छितराना। २ नष्ट करना। उ०—असुर मारि सब तुरत विडारे दीन्हें रुद्र निकेत।—सूर०। ३ भगाना। दौड़ाना।

विडाल—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली।

विडौजा—संज्ञा पुं० [सं० विडौजस्] इंद्र।

वितंडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २ व्यर्थ का झगड़ा या कहा सुनी। ३. निरर्थक दलील।

वितंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वि०+तंत्र] वह बाजा जिसमें तार न लगे हों।
वित(पु)—वि० [सं० विद्] १ जाननेवाला। ज्ञाता। २. चतुर। निपुण।
वितत—वि० [सं०] विस्तृत। फैला हुआ।
वितताना(पु)†—क्रि० अ० [सं० व्यथा] व्याकुल होना। बेचैन होना। उ०—देखे आइ तहाँ हरि नाहीं, चितवति जहाँ तहाँ वितताना।—सूर०।
वितति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तार।
वितथ—वि० [सं०] १. जिसमें कुछ तथ्य न हो। २ मिथ्या। झूठ।
वितद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] झेलम नदी।
वितपन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्युत्पन्न] वह वह जो किसी काम में कुशल हो। दक्ष। प्रवीण। उ०—कोककला वितपन्न भई हौ कान्हरूप तनु आधा।—सूर०।
वि० घबराया हुआ। व्याकुल। उ०—उनहिं मिले ,वितपन्न भई अब वे दिन गए भुलाइ।—सूर०।
वितरक—संज्ञा पुं० [सं० वितरण] बाँटने वाला।
वितरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँटना। २ दान या अर्पण करना। देना।
वितरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वितरण] १. बाँटनेवाला। २ दे० "वितरण"।
वितरना(पु)—क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटना।
वितरिक्त(पु)—अव्य० [सं० व्यतिरिक्त] अतिरिक्त। सिवा।
वितरित—वि० [सं०] बाँटा हुआ।
वितरेक(पु)—क्रि० वि० [सं० व्यतिरिक्त] छोड़कर। सिवा।
वितर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक तर्क के उपरांत होनेवाला दूसरा तर्क। २. सदेह। शक। ३ एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।
वितर्क्य—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या संदेह का स्थान हो। २ जो देखने में बहुत विलक्षण हो।
वितल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।
वितस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] झेलम नदी।
वितस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतना परिमाण जितना हाथ के अँगूठे और उँगली को पूरा पूरा फैलाने से होता है। बालिश्त, बित्ता। २ बारह अंगुल का परिमाण।
विताड़न—संज्ञा पुं० दे० "ताड़ना"।
वितान—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा चँदोआ या खेमा। २ विस्तार। फैलाव। ३ यज्ञ। ४ समूह। सघ। जमाव। ५. शून्य। खाली स्थान। ६. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो गुरु होते हैं। उ०—सुभ गंगा जल तेरो। सुखदाता जन केरो॥
वितानना(पु)†—क्रि० स० [सं० वितान से हिं० ना० धा०] शामियाना आदि तानना।
वितिक्रम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "व्यतिक्रम"।
वितीत(पु)†—वि० दे० "व्यतीत"।
वितुंड—संज्ञा पुं० [सं० वि+तुंड] हाथी।
वितु(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] धन। संपत्ति।
वित्त—संज्ञा पुं० [सं०] धन। संपत्ति।
वित्तपति—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
वित्तहीन—संज्ञा पुं० [सं०] दरिद्र। गरीब।
विथकना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० थकना] १ थकना। शिथिल होना। २ मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित(पु)—वि० [हिं० विथकना] १ थका हुआ। शिथिल। २. जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप हो। उ०—गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढ़ी।—सूर०।
विथराना(पु)—क्रि० स० [सं० वितरण] १ फैलाना। २, इधर उधर करना।
विथा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
विथारना(पु)—क्रि० स० [सं० वितरण] फैलाना।
विथित(पु)—वि० [सं० व्यथित] दुखी।
विदग्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ रसिक पुरुष। २ पंडित। विद्वान्। ३. चतुर। चालाक।
विदग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्वत्ता। २ चातुर्य।
विदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदमान(पु)—अव्य० दे० "विद्यमान"। उ०—फोर्यो नयन काग नहिं छाँड्यो सुरपति के विदमान।—सूर०।
विदरना(पु)—क्रि० अ० [सं० विदरण] फटना। उ०—विदरत नाहिं वज्र की छाती हरिवियोग क्यों सहिए।—सूर०।
क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
विदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम।
विदर्भराज—संज्ञा पुं० [सं०] दमयंती के पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।
विदल—वि० [सं०] १ जिसमें दल न हो। २. खिला हुआ।
विदलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विदलित] १ मलने दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. फाड़ना।
विदलना(पु)—क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।
विदा—संज्ञा स्त्री० [सं० विदाय, मि० अ० वदाअ] १ प्रस्थान। रवाना होना। २. कहीं से चलने की अनुमति।
विदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. रुखसती। प्रस्थान। २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. वह वस्तु जो विदा होने के समय दी जाय।
विदारक—वि० [सं०] फाड़ डालनेवाला।
विदारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।
विदारना(पु)—क्रि० स० [हिं० विदरना] फाड़ना।
विदारी—वि० [सं० विदारिन्] फाड़ने-वाला।
विदारीकंद—संज्ञा पुं० [सं०] भुइँ कुम्हड़ा।
विदाही—संज्ञा पुं० [सं० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो।
वि०—जलानेवाला। जलन या दाह उत्पन्न करनेवाला।
विदित—वि० [सं०] जाना हुआ। ज्ञात।
विदिश्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का कोना। कोण।
विदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्तमान भेलसा नामक कसबा जो पहले एक नगर था। २ दे० "विदिश्"।
विदीर्ण—वि० [सं०] १ फाड़ा हुआ। २. मार डाला हुआ। निहत।
विदुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। ज्ञाता। २. पंडित। ज्ञानी। ३ कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री जो राजनीति और धर्मनीति में बहुत निपुण थे (महाभारत)।
विदुष—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित। उ०—विदुष जनन विराट् प्रभु दीखे अति मन में सुख पायो।—सूर०।

विदुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री।
विदूर—वि० [सं०] जो बहुत दूर हो।
संज्ञा पुं० दे० "वैदूर्य" (मणि)।
विदूषक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विदूषिका] १ विषयी। कामुक। २. वह जो तरह तरह की नकलें अथवा बातचीत करके दूसरों को हँसाता हो। मसखरा। ३. अपनी वेषभूषा, देह, कार्य आदि से हँसानेवाला नायक का सहायक जो अपने खाने पीने की धुन में मस्त रहता और दूसरों को लड़ाने में आनंद लिया करता है (साहित्य-दर्पण)। ४. भाँड़।
विदूषण—संज्ञा पुं० [सं०] दोष लगाना।
विदूषना—क्रि० स० [सं० विदूषण] १ सताना। दुःख देना। २. दोष लगाना।
क्रि० अ० दुःखी होना।
विदेश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विदेशी, विदेशीय] अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश।
विदेशी—वि० [सं० विदेश हिं० ई (प्रत्य०)] १ दूसरे देश का। २ परदेसी।
विदेह—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शरीर से रहित हो। २ वह जिसकी उत्पत्ति मातापिता से न हो। ३ शरीर की परवा न करनेवाले राजा जनक। ४. प्राचीन मिथिला।
वि० [सं०] १ शरीररहित। २ संज्ञारहित। वेसुध। अचेत। ३ देहाध्यास-रहित।
विदेहकुमारी, विदेहजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।
विदेहपुर—संज्ञा पुं० [सं०] जनकपुर।
विदेही—संज्ञा पुं० [सं० विदेहिन्] ब्रह्म।
वि० [स्त्री० विदेहिनी] दे० "विदेह"।
विद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ जानकार। २ पंडित। विद्वान्। ३ बुध ग्रह।
विद्ध—वि० [सं०] १. बीच में से छेद किया हुआ। २. फटा हुआ। ३. जिसको चोट लगी हो। ४. टेढ़ा। ५ सटा हुआ।
विद्यमान—वि० [सं०] उपस्थित। मौजूद।
विद्यमानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।
विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया जाता है। इल्म। २ वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, यथा—चारों वेद, छहों अंग, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र। ३ दुर्गा। ४. आर्या छंद का पाँचवाँ भेद।
विद्यागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षक।
विद्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ाना।
विद्याधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देवयोनि जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २ एक प्रकार का अस्त्र। ३ विद्वान्। पंडित।
विद्याधरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।
विद्याधारी—संज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं। उ०—जानै भेदा याको सत्संगा को धारी। वोही साँचो भक्ता साँचो विद्याधारी॥
विद्यापीठ—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा का बड़ा केंद्र। महाविद्यालय।
विद्यारंभ—संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।
विद्यार्थी—संज्ञा पुं० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढ़ता हो। छात्र। शिष्य।
विद्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।
विद्यावान्—संज्ञा पुं० दे० "विद्वान्"।
विद्युत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।
विद्युत्चालक—वि० [सं०] [भाव० विद्युत्चालकता] (वह पदार्थ) जिसमें बिजली का प्रवाह हो सके। विद्युत्प्रवाही, जैसे—धातुएँ आदि।
विद्युत्प्रवाही—वि० [सं०] [भाव० विद्युत्प्रवाहकता] दे० "विद्युत्चालक"।
विद्युत्मापक—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत+मापक] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।
विद्युत्माला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली का समूह या सिलसिला। २. आठ गुरु वर्णों का एक छंद। उ०—मों में गंगा। धारी भक्ती। बाढ़ै ऐसी दीजे शक्ती॥
विद्युत्माली—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्मालिन्] १ पुराणानुसार एक राक्षस। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और दो गुरु होते हैं।
विद्युल्लेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दो मगण का एक वृत्त। उ०—मैं माटी ना खाई। झूठे ग्वाला माई॥ शेषराज। २ विद्युत्।
विद्रधि—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोड़ा।
विद्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] १. भागना। २ पिघलना। ३ उड़ना। ४. फाड़ना। ५. वह जो नष्ट करता हो।
विद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] प्रवाल। मूँगा।
विद्रोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वेष। २ वह उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। बलवा। बगावत।
विद्रोही—संज्ञा पुं० [सं० विद्रोहिन्] १. विद्रोह या द्वेष करनेवाला। २. राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।
विद्वत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।
विद्वान्—संज्ञा पुं० [सं० विद्वस्] वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित।
विद्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुता। वैर।
विद्वेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रुता। वैर। २ एक क्रिया जिसमें दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है (तंत्र)। ३ शत्रु। वैरी। ४ दुष्टता।
विधंस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विध्वंस] नाश।
वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।
विधंसना(पु)†—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना।
विध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा। विधि।
संज्ञा स्त्री० विधि। प्रकार। तरीका। ढंग।
विधन—वि० [सं०] निर्धन। कंगाल।
विधना—क्रि० स० [सं० विधि] प्राप्त करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना।
संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] वह जो कुछ होने को हो। भवितव्यता। होनी।
संज्ञा पुं० विधि। ब्रह्मा।
विधर†—क्रि० वि० दे० "उधर"।
विधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे का धर्म। पराया धर्म।
विधर्मी—संज्ञा पुं० [सं० विधर्मिन्] १. वह जो धर्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्मभ्रष्ट। २ किसी दूसरे धर्म का अनुयायी।
विधवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। राँड़। बेवा। उ०—

ब्राह्मण विधवा नारि सुरगुरु श्रग चुरावहीं। कहँ न मचन विचारि, परे सोई निरखास महँ। —विश्रामसागर।

विधवापन—संज्ञा पुं० [स० विधवा+हिं० पन] विधवा होने की अवस्था या भाव। रँडापा। वैधव्य।

विधवाश्रम—संज्ञा पुं० [स० विधवा+आश्रम] वह स्थान जहाँ विधवाओं के निर्वाह आदि का प्रबंध किया जाता है।

विधँसनाⓅ†—क्रि० स० दे० "विध्वंसना"।

विधाता—संज्ञा पुं० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १ विधान करनेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला। ३ प्रबंध करनेवाला। ४ सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।

विधान—संज्ञा पुं० [स०] १. किसी कार्य का आयोजन। अनुष्ठान। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३ विधि। प्रणाली। पद्धति। ४ रचना। निर्माण। ५ ढंग। उपाय। युक्ति। ६ वे नियम आदि जिनके अनुसार किसी देश या राष्ट्र का राजनीतिक संघटन और शासन होता है। ७ नियम। नियमावली। ८ आज्ञा करना। ९ नाटक में वह स्थान जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट किए जाते हैं।

विधानवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें विधान या शासन के नियम ही सर्वप्रधान हों और, उसके विरुद्ध कुछ करना मना हो।

विधानवादी—संज्ञा पुं० [सं० विधान+वादिन्] विधानवाद को मानने और उसका अनुकरण करनेवाला।

विधायक—वि० [स०] [स्त्री० विधायिका, विधायिनी] १ विधान करनेवाला। २. बनानेवाला। ३. प्रबंध करनेवाला।

संज्ञा पुं० १ वह जो विधान करता हो। २ वह जो बनाता हो। ३ विधान सभा का सदस्य।

विधायी—वि० दे० "विधायक"।

विधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य करने की रीति। प्रणाली। ढंग। २ व्यवस्था। योजना। करीना।

मुहा०—विधि बैठना=(१) परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। (२) इच्छानुकूल व्यवस्था होना। विधि मिलना=आय और व्यय के अनुसार हिसाब ठीक ठीक मिल जाना।

३. किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान। ४. शास्त्र में इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे। ५ राज्य द्वारा निर्धारित वे नियम या विधान जिनका पालन न करना अपराध है। ६. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का परामर्श या आदेश किया जाता है। ७ साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ८ आचार-व्यवहार। चालढाल।

यौ०—गतिविधि=चेष्टा और कार्रवाई।

९ भाँति। प्रकार।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विधिपुर—संज्ञा पुं० [सं० विधि+पुर] ब्रह्मलोक।

विधिरानीⓅ—संज्ञा स्त्री० [स० विधि+हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी। सरस्वती।

विधिवत्—क्रि० वि० [सं०] १ विधिपूर्वक। विधि या पद्धति के अनुसार। २ जैसा चाहिए। उचित रूप से।

विधुंतुद—संज्ञा पुं० [सं० विधु+तुद] राहु।

विधु—संज्ञा पुं० [स०] १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु।

विधुदार—संज्ञा पुं० [सं० विधु+दारा] चंद्रमा की स्त्री। रोहिणी।

विधुबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] कुमुद का फूल।

विधुबैनीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "विधुवदनी"।

विधुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विधुरा] १ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो। २. दुःखी। ३. घबराया हुआ। व्याकुल। ४ असमर्थ। अशक्त। ५. वृद्ध।

विधुवदनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमुखी। सुंदरी स्त्री।

विधूत—वि० [सं०] १ काँपता या हिलता हुआ। २ छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. दूर किया हुआ।

विधूनन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विधूनित] काँपना।

विधेय—वि० [स०] १ जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। कर्तव्य। २ जिसका विधान होनेवाला हो। ३. जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। ४ वशीभूत। अधीन। ५ वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय (व्या०)।

विधेयक—संज्ञा पुं० [स०] विधान सभा, विधान परिषद्, लोकसभा या राज्य परिषद् में पारित होने के लिये उपस्थित किया हुआ विधान का प्रस्तावित रूप (अं० बिल)।

विधेयाविमर्ष—संज्ञा पुं० [स०] साहित्य में एक वाक्यदोष जो जो बात प्रधानत कहनी है उसके वाक्यरचना में अप्रधान या दबी रह जाने से होता है; जैसे, "इन वृथा फूली हुई बाहों से क्या ?" इस वाक्य में विधेय या कहने का अभिप्राय है—"मेरी बाहें व्यर्थ फूली हैं।" यह अर्थ "फूली हुई" को विशेषण बना देने से दब जाता है। इसी तरह "मुझ रामानुज के सामने राक्षस क्या है ?" में राम और अनुज को समास बना देने से "मैं राम का अनुज हूँ" से व्यक्त होनेवाली लक्ष्मण की राम के संबंध की विशेषता दब जाती है। किसी जरूरी बात को न कहने से भी वाक्यरचना में यह दोष माना जाता है।

विध्याभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की आशंका दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है, जैसे,—विदेश जाते समय नायक से नायिका का यह कहना—"जाते हो तो जाओ ! मैं भी वहाँ जन्म लेकर पहुँचूँगी"।

विध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। बरबादी।

विध्वंसक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लड़ाई का जहाज।

वि० दे० "विध्वंसी"।

विध्वंसी—संज्ञा पुं० [सं० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करनेवाला।

विध्वस्त—वि० [स०] नष्ट किया हुआ।

विन†—सर्व० [हिं० उस] "उस" का बहुवचन। उन।

विनअⓈ—संज्ञा पुं० [सं० विनय] विनय। नम्रता। उ०—तासु तनअ नअ विनअ गुन।

विनत—वि० [सं०] १ झुका हुआ। २. विनीत। नम्र। ३. शिष्ट।

विनतड़ीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

विनता—संज्ञा स्त्री० [स०] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की स्त्री और गरुड़ की माता थी।

विनति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २. नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता। ३ प्रार्थना। विनती।

विनती—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

विनम्र—वि० [सं०] [भाव० विनम्रता] १ झुका हुआ। २ विनीत। सुशील।

विनय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नम्रता। आजिजी। २ शिक्षा। ३. प्रार्थना। विनती। ४ शासन। तंबीह। ५. नीति।

विनयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनय। नम्रता। २ शिक्षा। ३ निर्णय। निराकरण। ४. दूर करना। मोचन।

विनयपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] आदि बौद्ध शास्त्रों में से एक।

विनयशील—वि० [सं०] नम्र। सुशील।

विनयी—वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त। नम्र।

विनाशन—संज्ञा पुं० [वि० विनष्ट, विनश्वर] नष्ट होने की क्रिया। नाश। बरबादी।

विनश्य—वि० [सं०] विनष्ट होने के योग्य।

विनश्वर—वि० [सं०] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। अनित्य। उ०—उतर बैठी हो शिखर पर, भूल अपनापन विनश्वर, गा रहे गुण अमर-मर-नर पा रहे संदेश।—गीतिका।

विनष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा विनष्टि] जो बरबाद हो गया हो। ध्वस्त। २ मृत। मरा हुआ। ३ विगड़ा हुआ। ४ भ्रष्ट। पतित।

विनिष्ट—संज्ञा स्त्री० दे० "विनाश"।

विनसनाⓅ—क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना।

विनसानाⓅ—क्रि० स० [हिं० विनसना का स० रूप] १ नष्ट करना। २ विगाड़ना।

क्रि० अ० दे० "विनसना"।

विना—अव्य० [सं०] १ अभाव में। न रहने की अवस्था में। बगैर। २ छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा।

विनातीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] विनय।

विनाथ—वि० दे० "अनाथ"।

विनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विनाश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनाशक] १ नाश। ध्वंस। बरबादी। २ लोप। ३ विगड़ जाने का भाव। खराबी।

विनाशक—वि० [सं०] [स्त्री० विनाशिनी] विनाश करनेवाला।

विनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १ नष्ट करना। बरबाद करना। २ संहार करना। वध करना। ३ खराब करना।

विनाशी—वि० स्त्री० [सं०] विनाश करनेवाला।

विनासⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "विनाश"।

विनासनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "विनाशन"।

विनासनाⓅ—क्रि० स० [सं० विनाशन] १ नष्ट करना। बरबाद करना। २ संहार करना। ३ विगाड़ना।

क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

विनिमय—संज्ञा पुं० [सं०] एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन।

विनियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २ वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग। ३ प्रेषण। भेजना।

विनीत—वि० [सं०] [स्त्री० विनीता] १ विनययुक्त। सुशील। २ शिष्ट। नम्र। ३ नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला। धार्मिक।

विनुⓅ†—अव्य० दे० "विना"।

विनूठा†—वि० [हिं० अनूठा] अनूठा। सुंदर।

विनोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है।

विनोद—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुतूहल। तमाशा। २ क्रीड़ा। खेलकूद। ३ हँसी दिल्लगी। परिहास। ४ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

विनोदी—वि० [सं० विनोदिन्] [स्त्री० विनोदिनी] १ आमोद प्रमोद करनेवाला। २. चुहलबाज। ३. आनंदी। ४ खेल कूद या हँसीठट्ठे में रहनेवाला।

विन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विन्यस्त] १. स्थापन। रखना। धरना। २ यथास्थान स्थापन। सजाना। ३. जड़ना। ४ सजावट। शृंगार।

विपंची—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की वीणा। २ बाँसुरी। ३ क्रीड़ा। खेल।

विपक्ख—संज्ञा पुं० [सं० विपक्ष] दे० "विपक्ष।" उ०—दरमरि दमसि विपक्ख मास ढिल्ली महँ हुल्ला।—हम्मीररासो।

विपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. विरुद्ध पक्ष। २ विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। ३. प्रतिवादी या शत्रु। ४ विरोध। खंडन। ५ व्याकरण में बाधक नियम। अपवाद।

विपक्षी—वि० [सं० विपक्षिन्] १. विरुद्ध पक्ष का। दूसरी तरफ का। २ शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी। ३ विना पंख का।

विपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कष्ट, दुःख या शोक की प्राप्ति। आफत। २ संकट की अवस्था। बुरे दिन।

मुहा०—(किसी पर) विपत्ति ढहना = सहसा कोई दुःख या शोक उपस्थित होना।

३ कठिनाई। झंझट। बखेड़ा।

विपथ—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा या खराब रास्ता। कुपथ।

विपथगामी—संज्ञा पुं० [सं० विपथगामिन्] [स्त्री० विपथगामिनी] १ बुरे या खराब रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। २ चरित्रहीन। बदचलन।

विपद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति।

विपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत।

विपन्न—वि० [सं०] [स्त्री० विपन्ना, संज्ञा विपन्नता] १ जिसपर विपत्ति पड़ी हो। २ दुःखी। आर्त्त।

विपरीत—वि० [सं०] १ उलटा। विरुद्ध। खिलाफ। २ प्रतिकूल। ३ अनिष्ट-साधन में तत्पर। रुष्ट। ४ हितसाधन के अनुपयुक्त।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें कार्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है (केशव)।

विपरीतोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशा में दिखाया जाय (केशव)।

विपर्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ उलट पलट। इधर का उधर। २. और का और। व्यतिक्रम। ३ और का और समझना। ४ भूल। गलती। ५ गड़बड़ी। अव्यवस्था।

विपर्यस्त—वि० [सं०] १ जिसका विपर्यय हुआ हो। २ अस्तव्यस्त। गड़बड़।

विपर्यास—सज्ञा पुं० दे० "विपर्यय"।

विपल—सज्ञा पुं० [स०] एक पल का साठवाँ भाग।

विपाक—सज्ञा पुं० [स०] १ परिपक्व होना। पकना। २. पूर्ण दशा को पहुँचना। ३ फल। परिणाम। ४ कर्म का फल। ५ पचना। ६ दुर्गति। दुर्दशा।

विपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बिवाई नामक रोग। २ प्रहेलिका। पहेली।

विपादित—वि० [सं०] विनष्ट। नष्ट किया हुआ।

विपासा—सज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की पाँच नदियों में से व्यास नाम की नदी।

विपिन—सज्ञा पुं० [सं०] १ वन। जगल। २ उपवन। वाटिका।

विपिनतिलका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण होते हैं। उ०—निसि नर रघूत्तम जु कैकई मदिरा। गवन किया क्रुद्ध लखि भाषि मीठी गिरा॥

विपिनपति—सज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

विपिनविहारी—सज्ञा पुं० [सं०] १ वन में विहार करनेवाला। २ श्रीकृष्ण। उ०—दरसन पाइ थकित भई सारी। कहत भए तब विपिनविहारी। —विश्रामसागर।

विपुत्र—वि० [सं०] [स्त्री० विपुत्रा] पुत्र-रहित। पुत्रहीन।

विपुल—वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, सख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २ बृहत्। बड़ा। अगाध।

विपुलता—सज्ञा स्त्री० [सं०] विपुल होने का भाव या गुण।

विपुला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पृथ्वी। वसुधरा। २ एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं। उ०—भोर लला, जगे जब। आय गए, सखा सब॥ ३ आर्या छद के तीन भेदों में से एक।

विपुलाई(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "विपुलता"।

विपोहना(पु)—क्रि० स० [सं० वि+प्रोत] १. पोतना। लीपना। २ नाश करना। ३ दे० "पोहना"।

विप्र—सज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण। २ पुरोहित।

विप्रकर्षण—सज्ञा पुं० [सं०] [स० विप्रकृष्ट] १ दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २ किसी कृत्य का अत।

विप्रचरण—सज्ञा पुं० [स० विप्र+चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रचित्ति—सज्ञा पु० [सं०] एक दानव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु उत्पन्न हुआ था।

विप्रपद—सज्ञा पुं० दे० "विप्रचरण"।

विप्रराम—सज्ञा पुं० [स०] परशुराम।

विप्रलभ—सज्ञा पुं० [सं०] १ चाही हुई वस्तु का न मिलना। २ प्रिय का न मिलना। वियोग। विरह। ३. अलग होना। विच्छेद। ४. धोखा। छल। धूर्तता।

विप्रलब्ध—वि० [सं०] १ जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वचित। २. वियोगदशा को प्राप्त।

विप्रलब्धा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो सकेतस्थान में प्रिय को न पाकर दुखी हो।

विप्लव—सज्ञा पुं० [सं०] १ उपद्रव। अशांति और हलचल। २ विद्रोह। बलवा। ३ उथल पुथल। अव्यवस्था। ४. आफत। विपत्ति। ५ जल की बाढ़।

विप्लवी—वि० [सं० विप्लविन्] विप्लव करनेवाला।

विप्लावक—वि० दे० "विप्लवी"।

विप्सा—सज्ञा स्त्री० दे० "वीप्सा"।

विफल—वि० [स०] [सज्ञा विफलता] १ जिसमें फल न लगा हो। उ०—मुरली सुनत अचल चले। द्रवित ह्वै जल झरत पाहन विफल वृक्ष फले। —सूर०। २ निष्फल। व्यर्थ। बेफायदा। ३. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। नाकामयाब।

विबाध—वि० [स०] बाधारहित।

विबुध—सज्ञा पुं० [सं०] १. पंडित। बुद्धिमान्। २ देवता। ३ चद्रमा।

विबुधविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. देवागना। देवता की स्त्री। २ अप्सरा।

विबुधवेलि—सज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पलता।

विबोध—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विबोधक] १ जागरण। जागना। २ सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। ३ सचेत होना। सावधान होना।

विभग—सज्ञा पुं० [सं०] १ गठन या रचना। २ टूटना। ३ विभाग। ४ क्रम या परंपरा का टूटना। ५ भ्रूभग।

विभक्त—वि० [सं०] १ बँटा हुआ। विभाजित। २ अलग किया हुआ।

विभक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २ अलगाव। पार्थक्य। ३. कारक सूचित करने के लिये सज्ञा या सर्वनाम के अत में लगाए जानेवाले प्रत्यय।

विभव—सज्ञा पुं० [सं०] १. धन। सपत्ति। २. ऐश्वर्य। ३ बहुतायत। ४ मोक्ष।

विभवशाली—वि० [सं०] १. विभववाला। २ प्रतापवाला। ऐश्वर्यवाला।

विभांडक—सज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो ऋष्यश्रृग के पिता थे।

विभाँति—सज्ञा स्त्री० [सं० वि+हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म।

वि० अनेक प्रकार का।

अव्य० अनेक प्रकार से।

विभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दीप्ति चमक। २ प्रकाश। रोशनी। ३ किरण।

विभाकर—सज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २ अग्नि। ३ राजा।

विभाग—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। तकसीम। २ भाग। अश। हिस्सा। बखरा। ३. प्रकरण। अध्याय। ४. कार्यक्षेत्र। मुहकमा।

विभाजक—वि० [सं०] विभाग या टुकड़े करनेवाला।

विभाजन—सज्ञा पुं० [सं०] विभाग करने की क्रिया या भाव। बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा।

विभाजित—वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो। विभक्त।

विभाज्य—वि० [सं०] १. विभाग करने योग्य। २ जिसका विभाग करना हो।

विभाति—सज्ञा स्त्री० [सं० विभा] शोभा।

विभाना(पु)—क्रि० अ० [सं० विभा का हिं० ना० धा०] १ चमकना। झलकना। २ शोभित होना।

विभारना(पु)—क्रि० अ० दे० "विभाना"।

विभाव—सज्ञा पुं० [स०] लोक में रति, क्रोध, हास आदि भावों को उत्पन्न करनेवाली वस्तुओं की काव्य, नाटक और साहित्य में प्रचलित सज्ञा।

विभावन—सज्ञा पुं० [सं०] १ विशेष रूप से चिंतन। २ साहित्य के रसविधान में वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र

द्वारा प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण के द्वारा अनुभव करता है।

विभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के विना कार्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।

विभावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। रात। २ वह रात जिसमें तारे चमकते हों। ३ कुट्टनी। कुटनी। दूती।

विभावसु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वसुओं के एक पुत्र। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४. चंद्रमा।

विभास—संज्ञा पुं० [सं०] चमक। दीप्ति।

विभासना—क्रि० अ० [सं० विभास से हिं० ना० धा०] चमकना। झलकना।

विभिन्न—वि० [सं०] १ विलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २ अनेक प्रकार का।

विभीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। २ शंका। संदेह।

विभीषण—संज्ञा पुं० [सं०] रावण का तीसरा भाई जिसे रामचंद्र ने रावण को मारकर लंका का राजा बनाया था।

विभीषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर दिखाना। २ भयानक कांड या दृश्य।

विभु—वि० [सं०] [भाव० विभुता, विभूति] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। २ जो सब जगह जा सकता हो, जैसे, मन। ३ बहुत बड़ा। महान। ४ सर्वकाल-व्यापी। नित्य। ५ दृढ। अचल। ७ शक्तिमान्।

संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ जीवात्मा। ३ प्रभु। ४ ईश्वर। ५ शिव। ६ विष्णु।

विभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुतायत। वृद्धि। बढ़ती। २ विभव। ऐश्वर्य। ३ संपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। ५ शिव के अंग में पोतने की राख या भस्म। ६ लक्ष्मी। ७ एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ८ सृष्टि।

विभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूषण। गहना। २ गहनों आदि से सजाना। अलंकरण।

विभूषनाⓅ—क्रि० स० [सं० विभूषण] १ गहने आदि से सजाना। २ सुशोभित करना। ३ आगमन से सुशोभित करना।

विभूषित—वि० [सं०] १. गहनों आदि से सजाया हुआ। अलंकृत। २. (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त। सहित। ३ शोभित।

विभेंटनⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] गले मिलना।

विभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ विभिन्नता। फरक। अंतर। २. अनेक भेद। कई प्रकार। ३ छेदकर घुसना। धँसना। ४. फूट। ५ मतैक्य न होना।

विभेदनाⓅ—क्रि० स० [सं० विभेदन] १. भेदन करना। छेदना। २ घुसना। ३ भेद या फर्क डालना।

विभोर—वि० [सं० विह्वल] १. विह्वल। विकल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

विभौⓅ—संज्ञा पुं० दे० "विभव"।

विभ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भ्रांति। धोखा। ३ संदेह। संशय। ४ घबराहट। ५ स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे पलटे भूषणवस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं। ६ सौंदर्य। शोभा।

विभ्राट्—संज्ञा पुं० [सं०] १ आपत्ति। विपत्ति। संकट। २ उपद्रव। बखेड़ा।

विमंडन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमंडित] सजाना। शृंगार करना। सँवारना।

विमंडित—वि० [सं०] १. अलंकृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३. सहित। युक्त (अच्छी वस्तु से)।

विमत—संज्ञा पुं० [सं०] १ विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। २. प्रतिकूल सम्मति।

विमत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] अधिक अहंकार। उ०—तजि काम क्रोध विमत्सरालस लोभ मोह निवारि कै। छलमल कुसंगति त्यागि मद दुरवासना सनमानि कै।—विश्रामसागर।

विमन—वि० [सं० विमनस्] अनमना। उदास।

विमनस्क—वि० [सं०] अन्यमनस्क। उदास। अनमना।

विमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्द-नीय, विमर्दित] १ अच्छी तरह मलना दलना। २ नष्ट करना। ३. मार डालना।

विमर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी बात का विवेचन या विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३. परीक्षा। ४ परामर्श।

विमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "विमर्श"। २. नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अपवाद, व्यवसाय, शक्ति, प्रसंग, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

विमल—वि० [सं०] [संज्ञा विमलता] [स्त्री० विमला] १ निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. सुंदर। मनोहर।

विमलध्वनि—संज्ञा पुं० [सं०] छह चरणों का एक छंद जो मगणांत ३२ मात्राओं के सवाई या समान सवैया छंद के पहले एक दोहा जोड़ने से बनता है। उ०—थरथर थहरत सकल व्रन, कोप्यो इंद्र प्रचंड। घग्गग्घग्घहराय घन, रहे गगन बिच मंड॥ मड्डज्जदिरण, घोरग्घनगण, भम्मभ्भरि रिस तत्तत्तडकृत।

विमला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

विमलापति—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] सौतेली माँ।

विमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश मार्ग से गमन करनेवाला रथ। उड़न-खटोला। २ हवाई जहाज। वायुयान। ३ मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो सजधज के साथ निकाली जाती है। ४ रथ। गाड़ी। वाहन। ५ घोड़ा।

यौ०—विमानवेधी = हवाई जहाज को मार गिरानेवाला (यंत्रास्त्र)।

विमार्ग—वि० [सं०] बुरा रास्ता। कुमार्ग।

विमुक्त—वि० [सं०] १ अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २ स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३ (हानि, दंड आदि से) बचा हुआ। ४ अलग किया हुआ। बरी। ५ फेंका हुआ। छोड़ा हुआ।

विमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

विमुख—वि० [सं०] [भाव० विमुखता] १ मुखरहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। विरत। निवृत्त। ३ जिसे परवाह न हो। उदासीन। ४. विरुद्ध। खिलाफ। अप्रसन्न। ५ अप्राप्तमनोरथ। निराश।

विमुग्ध—वि० [सं०] १ बहुत मुग्ध। आसक्त। २ भूला हुआ। भ्रांत। ३. घबराया या डरा हुआ। ४ उन्मत्त। मतवाला। ५. पागल। ६. बेसुध।

विमुद—वि० [सं०] उदास । खिन्न ।

विमूढ़—वि० [सं०] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध । अत्यंत विमोहित । २. भ्रम में पड़ा हुआ । ३. बेसुध । अचेत । ४. ज्ञानरहित । मूर्ख । नासमझ ।

विमूढ़गर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनता हो ।

विमोचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना । २. बंधन से छुड़ाना । मुक्त करना । ३. निकालना । ४. छोड़ना । फेंकना ।

विमोचनाⓅ—क्रि० स० [सं० विमोचन] १. बंधन आदि खोलना । मुक्त करना । छोड़ना । २ निकालना । बाहर करना ।

विमोह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहक] १ मोह । अज्ञान । भ्रम । २ बेसुध होना । बेहोशी । ३. मोहित होना । आसक्ति ।

विमोहक—वि० [सं०] [स्त्री० विमोहिनी] मोहित करनेवाला ।

विमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १. मोहित करना । मन लुभाना । २. सुधबुध भुलाना । ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

विमोहनाⓅ—क्रि० अ० [सं० विमोहन] १ मोहित होना । लुभा जाना । २ बेसुध होना । ३. धोखा खाना ।

क्रि० स० १ मोहित करना । लुभाना । २. बेसुध करना । ३ धोखे में डालना ।

विमोहा—संज्ञा स्त्री० दे० "विजोहा" ।

विमोहित—वि० [सं०] १ लुभाया हुआ । मुग्ध । २ तन मन की सुध भूला हुआ । ३ मूर्च्छित ।

विमोही—वि० [सं० विमोहिन्] [स्त्री० विमोहनी] १ मोहित करनेवाला । जी लुभानेवाला । २ सुधबुध भुलानेवाला । ३ मूर्च्छित या बेहोश करनेवाला । ४ भ्रम में डालनेवाला । ५. निष्ठुर । कठोर-हृदय ।

विमौट—संज्ञा पुं० [सं० वल्मीकि] दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह । बाँबी ।

वियंगⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० विय+अंग] (दो अंगोंवाले) महादेव ।

वियⓅ—वि० [सं० द्वय] १ दो । जोड़ा । २ दूसरा ।

वियुक्त—वि० [सं०] १. बिछुड़ा हुआ । वियोगप्राप्त । २. जुदा । अलग । ३. रहित । हीन ।

वियोⓅ—वि० [हिं० विय] दूसरा । अन्य ।

वियोगⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलन का अभाव । विच्छेद । २ अलगाव । ३. विरह । जुदाई ।

वियोगांत—वि० [सं०] दुःखांत (नाटक या उपन्यास आदि) जिसके अंत में दुःख या वियोग हो ।

वियोगिनी—वि० स्त्री० [सं०] जो अपने पति या प्रिय से अलग हो ।

वियोगी—वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो ।

वियोजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला । २ गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो ।

विरंग—वि० [सं०] १ बुरे रंग का । बदरंग । फीका । २ अनेक रंगों का ।

विरंचि—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा । विधाता ।

विरंचिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] नारद ।

विरक्त—वि० [सं०] १ जिसका जी हटा हो । विमुख । २ उदासीन । ३ विषय-वासना से दूर रहनेवाला । ४ अप्रसन्न ।

विरक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव । २ उदासीनता । ३ अप्रसन्नता ।

विरचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ निर्माण । बनाना । २ विशेष प्रेम ।

विरचनाⓅ—क्रि० स० [सं० विरचन] १. रचना । बनाना । निर्माण करना । २ सजाना ।

क्रि० अ० [सं० वि+ जन] विरक्त होना । उ०—विरचि मन फेरि राच्यो जाइ । —सूर० ।

विरचित—वि० [सं०] १. बनाया हुआ । निर्मित । २ रचा हुआ । लिखित ।

विरज—वि० [सं०] १ रजोगुण से रहित । २ साफ । निर्दोष । ३ धूलरहित ।

विरत—वि० [सं०] १ जो अनुरक्त न हो । विमुख । २ जो लीन या तत्पर न हो । निवृत्त । ३. विरक्त । वैरागी । ४. विशेष रूप से रत । बहुत लीन ।

विरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चाह का न होना । २. उदासीनता । ३ वैराग्य ।

विरथ—वि० [सं०] १. जिसके पास रथ या सवारी न हो । उ०—रावन रथी विरथ रघुवीरा । —मानस । २ पैदल ।

विरद—संज्ञा पुं० [सं० विरुद] १ ख्याति । प्रसिद्धि । २. यश । कीर्ति । दे० "विरुद" ।

विरदावली—संज्ञा स्त्री० [सं० विरुदावली] यश की कथा । कीर्ति की गाथा ।

विरदैतⓅ—वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] बड़े विरदवाला । कीर्ति या यशवाला ।

विरमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. रमण करना । रमना । २ निवृत्त होना । ३. रुकना । ठहरना ।

विरमनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० विरमण] १. रम जाना । मन लगाना । २. विराम करना । ठहरना । ३ मोहित होकर रुक जाना । ४ वेग आदि का थमना या कम होना ।

क्रि० अ० दे० "बिलबना" ।

विरमानाⓅ†—क्रि० स० [हिं० विरमना का स० रूप] दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना ।

विरल—वि० [सं०] १. जो घना न हो । 'सघन' का उलटा । २ जो दूर दूर पर हो । ३ दुर्लभ । ४ पतला । ५ शून्य । निर्जन । ६ अल्प । थोड़ा ।

विरस—वि० [सं०] [संज्ञा विरसता] १ रसहीन । फीका । नीरस । २ जो अच्छा न लगे । अप्रिय । अरुचिकर । ३ (काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो ।

विरह—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु से रहित होने का भाव । २ किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना । विच्छेद । वियोग । जुदाई । ३ वियोग का दुःख ।

विरहिणी—वि० स्त्री० दे० "वियोगिनी" ।

विरहित—वि० [सं०] [स्त्री० विरहिता] रहित । शून्य । बिना ।

विरही—वि० [सं० विरहिन्] [स्त्री० विरहिणी] जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो । वियोगी ।

विरहोत्कंठिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दुःखी नायिका जिसके मन में पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी वह किसी कारणवश न आवे ।

विराग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरागी] १ अनुराग का अभाव । चाह का न होना । २ विषयभोग आदि से निवृत्ति । वैराग्य ।

विराजना—क्रि० अ० [सं० विराजन] १. शोभित होना। सोहना। फबना। २ मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३ बैठना।

विराजमान—वि० [सं०] १ चमकता हुआ। २ उपस्थित। मौजूद। ३ बैठा हुआ।

विराजित—वि० दे० "विराजमान"।

विराट्—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का वह स्थूल रूप जो अनंत है। उ०—हे विराट्! हे विश्वदेव! तुम कुछ हो ऐसा होता भान।—कामायनी। २. क्षत्रिय। ३. कांति। दीप्ति।

वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी। उ०—ज्यों विराट् बाडव ज्वालाएँ, खड खड हो रोती थीं।—कामायनी।

विराट—संज्ञा पुं० [सं०] १ मत्स्य देश। २ मत्स्य देश के राजा जिनके यहाँ पांडवों ने अज्ञातवास किया था।

विराध—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा। तकलीफ। २ सतानेवाला। ३ एक राक्षस जिसे दडकारण्य में राम लक्ष्मण ने मारा था।

विराम—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकना या थमना। ठहरना। ठहराव। २ सुस्ताना। विश्राम करना। ३ वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पड़ता हो। ४ वाक्यसमाप्ति और उसका चिह्न। ५. छंद के चरण में यति। ६ संधिवार्ता आदि के लिये युद्ध का रुकना।

विरामसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़नेवालों में संधि के लिये किया जानेवाला समझौता।

विराव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। बोली। कलरव। २ हल्लागुल्ला। शोरगुल।

विरासी(पु)—वि० दे० "विलासी"।

विरुज—वि० [सं०] नीरोग। रोगरहित।

विरुझना(पु)†—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

विरुद—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो। २ यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे। ३ यश।

विरुदावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तार कथन। यशवर्णन। प्रशंसा।

विरुद्ध—वि० [सं०] १. जो हित के अनुकूल न हो। प्रतिकूल। खिलाफ। २ अप्रसन्न। ३. विपरीत। ४. अनुचित।

क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ।

विरुद्धकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० विरुद्धकर्मन्] १. बुरे चलन का आदमी। २ श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं।

विरुद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध होने का भाव। २. प्रतिकूलता। विपरीतता।

विरुद्धरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद जो "रूपकातिशयोक्ति" ही है।

विरुद्धार्थ दीपक—संज्ञा पुं० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरूप—वि० [सं०] [स्त्री० विरूपा] १. कुरूप। बदसूरत। भद्दा। २ बदला हुआ। परिवर्तित। ३ शोभाहीन। ४ कई रंग रूप का। ५. विरुद्ध। उलटा।

विरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] 'विरूप' का भाव। शकल का भद्दापन। बदसूरती।

विरूपाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। शंकर। २ शिव के एक गण का नाम। ३. रावण का एक सेनानायक। ४ एक दिग्गज।

विरेचक—वि० [सं०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २ दस्त लाना।

विरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चमकना। प्रकाशित होना। २ प्रकाशमान। ३ सूर्य की किरण। ४ सूर्य। ५ चंद्रमा। ६ अग्नि। ७ विष्णु। ८ प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता।

विरोध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधक] १ मेल में न होना। विपरीत भाव। अनैक्य। २ वैर। शत्रुता। बिगाड़। अनबन। ३. दो बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। ४ उलटी स्थिति। ५ नाश। ६ नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७ एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है।

विरोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १. विरोध करना। वैर करना। २ नाश। बरबादी। ३ नाटक में विमर्ष का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्यध्वंस का उपक्रम (सामान) होता है।

विरोधना(पु)—क्रि० स० [सं० विरोधन] विरोध करना। शत्रुता या झगड़ा करना।

विरोधाभास—संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध का आभास। २ एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का अवास्तविक विरोध या बदलना दिखाई पड़ता है।

विरोधी—वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करनेवाला। बाधा डालनेवाला। २ विपक्षी। शत्रु। वैरी।

विरोधी श्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है (केशव)।

विरोधोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है।

विरोध्य—वि० [सं०] १. विरोध के योग्य। २ जिसका विरोध करना हो।

विलंब—वि० [सं० विलंब] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात में लगे)। अतिकाल। देर।

विलंबना—क्रि० अ० [सं० विलंबन] १ देर करना। विलंब करना। २ मन लगने के कारण बस जाना। ३. लटकना। ४. सहारा लेना।

विलंबित—वि० [सं०] १. लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ लदा किया हुआ। ३. जिसमें देर हुई हो।

विलक्षण—वि० [सं०] [संज्ञा विलक्षणता] असाधारण। अनोखा। अनूठा। विचित्र।

विलखना—क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

(पु)क्रि० अ० [सं० लक्ष] ताड़ना। पता पाना।

विलग—वि० [हिं० वि (उप०)+√लग] अलग।

विलगाना—क्रि० अ० [हिं० विलग से ना० धा०] १. अलग होना। पृथक् होना। २ विभक्त या अलग दिखाई देना।

क्रि० स० पृथक् करना। अलग करना।

विलच्छन—वि० दे० "विलक्षण"।

विलपना(पु)—क्रि० अ० [सं० विलपन] रोना।

विलपाना(पु)—क्रि० स० [हिं० विलपना का स० रूप] दूसरे को विलाप में प्रवृत्त करना। रुलाना।

विलम(पु)—सज्ञा पुं० [स० विलंब] देर। अबेर।

विलमना(पु)—क्रि० अ० दे० "विलंबना"।

विलय—सज्ञा पुं० [सं०] १ अदर्शन। लोप। २. अभाव। नाश। ३ मृत्यु। ४ प्रलय।

विलयन—सज्ञा पुं० [स०] १. विलय को प्राप्त होना। विलीन होना। किसी में मिलकर अपने अस्तित्व को खो देना। २ विघटित हो जाना। ३ किसी छोटे राज्य या रियासत का बड़े राज्य में मिलकर स्वतंत्र अधिकारसत्ता न रखना।

विलसन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विलसित] १ चमकने की क्रिया। २ क्रीड़ा। मोद।

विलसना(पु)—क्रि० अ० [स० विलसन] १ शोभा पाना। २ विलास करना। ३. आनंद मनाना।

विलाप—सज्ञा पुं० [स०] रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रंदन। रुदन।

विलापना(पु)—क्रि० अ० [स० विलापन] शोक करना। विलाप करना।

विलायत—सज्ञा पुं० [अं०] १ अमरीका, युरोप या उसका कोई देश। २. अंग्रेजों का देश। ब्रिटेन। इंग्लैंड। ३. पराया देश। ४ दूर का देश।

विलायती—वि० [अं०] १ युरोप या अमरीका का। २ दूसरे के देश का। ३ अन्य देश का रहनेवाला। विदेशी।

विलास—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाली क्रिया। २ मनोरंजन। मनोविनोद। ३ आनंद। हर्ष। ४ वे प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हावभाव। नाजनखरा। ५ किसी अंग की मनोहर चेष्टा, जैसे—भ्रविलास, करविलास आदि। ६ किसी चीज का हिलना डोलना। ७ अतिशय सुखभोग।

विलासिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है।

विलासिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरी स्त्री। कामिनी। २ वेश्या। गणिका। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण और अंत में दो गुरु होते हैं। उ०—लगाइ पच गोहि को हरी पै। न चित्त दै कबौं विलासिनी पै॥

विलासी—सज्ञा पुं० [सं० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुखभोग में अनुरक्त पुरुष। कामी। २ क्रीड़ाशील। हँसोड़। कौतुकशील। ३ आरामतलब। ४ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, तगण, दो मगण और अंत्य गुरु हो। उ०—भूलौ ना प्यारे, तिहारो, लागै ना रामा। पैहौ विश्रामा भजौ जो, श्री सीतारामा॥

विलिखित—वि० [सं०] १. लिखा हुआ। २ खरोचा हुआ। ३ खुदा हुआ।

विलीक(पु)—वि० पुं० [सं० व्यलीक] अनुचित।

विलीन—वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २ जो किसी दूसरे में मिल गया हो। ३ छिपा हुआ।

विलेप—सज्ञा पु० [स०] १. शरीर आदि पर चुपड़कर लगाने की चीज। २. पलस्तर। गारा।

विलेशय—सज्ञा पुं० [सं०] १ विल या दरार में रहनेवाले जीव। २ सर्प। साँप।

विलोकना—क्रि० स० [स० विलोकन] देखना।

विलोचन—सज्ञा पु० [स०] १ नेत्र। नयन। आँख। २ आँख फोड़ने की क्रिया।

विलोड़न—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विलोड़ित] १ आलोड़न। मथना। २. आंदोलन। उथल पुथल।

विलोड़ना—क्रि० स० [स० विलोड़न] १ मथना। २ उथल पुथल करना।

विलोप—सज्ञा पुं० [सं०] लुप्त या गायब होना।

विलोपना(पु)—क्रि० स० [सं० विलोप से हिं० ना० धा०] लुप्त या नष्ट करना।

विलोम—वि० [सं०] विपरीत। उलटा।
 सज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आना।

विलोल—वि० [सं०] १. चचल। २ सुंदर।

विल्व—सज्ञा पुं० [सं०] बेल का पेड़ या फल।

विल्वपत्र—सज्ञा पु० [सं०] बेल का पत्ता, जो शिव जी पर चढ़ाया जाता है। बेलपत्र।

विल्वमंगल—सज्ञा पुं० [सं०] हिंदी के महाकवि सूरदास का अंधे होने से पूर्व का नाम।

विव(पु)—वि० दे० "विवि"।

विवक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई बात कहने की इच्छा। २. अर्थ। तात्पर्य। ३ अनिश्चय। शक।

विवक्षित—वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। अपेक्षित।

विवदना(पु)—क्रि० अ० [सं० विवाद से हिं० ना० धा०] शास्त्रार्थ करना। विवाद करना।

विवर—सज्ञा पुं० [सं०] १ छिद्र। बिल। २ गड्ढा। दरार। गर्त। ३ गुफा। कंदरा।

विवरण—सज्ञा पुं० [सं०] १ विवेचन। व्याख्या। २ वृत्तांत। बयान। हाल। ३ भाष्य। टीका।

विवर्जन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विवर्जित] मना करना।

विवर्ण—सज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है।
 वि० [सं०] १ नीच। कमीना। २ कुजाति। ३ बदरंग। बुरे रंग का। ४ जिसके चेहरे का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन। उ०—वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का, आज लगा हँसने फिर से।—कामायनी।

विवर्त—सज्ञा पुं० [स०] १ समुदाय। समूह। २ आकाश। ३ भ्रांति। भ्रम। ४ परिवर्तन। उलटफेर। ५ परिणाम। फल।

विवर्तन—सज्ञा पुं० [स०] १ घूमना। फिरना। २ परिवर्तन। फेरबदल।

विवर्तवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत में एक सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का मुख्य उत्पत्तिस्थान और ससार को माया मानते हैं। परिणामवाद।

विवर्द्धन—सज्ञा पु० [सं०] [वि० विवर्द्धित] विशेष रूप से बढ़ाना।

विवश—वि० [स०] [सज्ञा विवशता] १ जिसका कुछ वश न चले। लाचार। बेबस। २ पराधीन।

विवसन—वि० [स०] [स्त्री० विवसना] जो कोई वस्त्र न पहने हो। नग्न। नंगा।

विवस्त्र—वि० [सं०] [स्त्री० विवस्त्रा] नग्न। नंगा।

विवस्वत्—सज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २ सूर्य का सारथी, अरुण।

विवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी बात पर जबानी झगड़ा। वाग्युद्ध। बहस। २ झगड़ा। कलह। ३ मुकदमेबाजी।

विवादास्पद—वि० [सं०] जिसपर विवाद या झगड़ा हो। विवाद योग्य। विवादयुक्त।

विवादी—संज्ञा पुं० [सं० विवादिन्] १. कहासुनी या झगड़ा करनेवाला। २ मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष।

विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दांपत्य सूत्र में बँधते हैं। शादी। ब्याह। परिणय। पाणिग्रहण।

विवाहना—क्रि० स० दे० "ब्याहना"।

विवाहविच्छेद—संज्ञा पुं० [सं० विवाह+विच्छेद] पति और पत्नी का वैवाहिक संबंध विधानतः तोड़ना या न रखना। तलाक।

विवाहित—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।

विवाही—वि० स्त्री० [सं० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो।

विवाह्य—वि० [सं०] विवाह के योग्य। ब्याहने लायक।

विवि(पु)—वि० [सं० द्वि] १ दो। २. दूसरा।

विविक्त—वि० [सं०] १. अलग। २. बिखरा हुआ। ३. निर्जन। ४ त्यक्त। ५. पवित्र।

संज्ञा पुं० [स्त्री० विविक्ता] त्यागी। संन्यासी।

विविचार—वि० [सं०] १ विचाररहित। विवेकरहित। २ आचाररहित।

विविध—वि० [सं०] [संज्ञा विविधता] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विविर—संज्ञा पुं० [सं०] १ खोह। गुफा। २. बिल। ३. दरार।

विवृत—वि० [सं०] [भाव० विवृति] १. विस्तृत। फैला हुआ। २. खुला हुआ। ३. वर्णन किया हुआ।

संज्ञा पुं० ऊष्म स्वरों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न (व्या०)।

विवृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चक्र के समान घूमने की क्रिया। परिभ्रमण। २. भाष्य। टीका।

विवृतोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि अपने शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है।

विवृत्त—वि० [सं०] [संज्ञा विवृत्ति] १. घूमता हुआ। २. लौटा हुआ। परावृत।

विवेक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली बुरी वस्तु का ज्ञान। २. सत् असत् की पहचान। ३ मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान होता है। ४. बुद्धि। समझ। विचार। ५. प्रकृति और पुरुष का भेदज्ञान। सत्यज्ञान।

विवेकी—संज्ञा पुं० [सं० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो। भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला। २ बुद्धिमान्। समझदार। ३. ज्ञानी। ४ न्यायशील। ५. न्यायाधीश।

विवेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नहीं। निर्णय। तर्क वितर्क। ३. मीमांसा।

विवेचनीय—वि० [सं०] विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विव्वोक—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्रियाँ संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशद—वि० [सं०] १ स्वच्छ। विमल। २. साफ। स्पष्ट। ३ जो दिखाई पड़ता हो। व्यक्त। ४. सफेद। ५. सुंदर। खूबसूरत।

विशांपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

विशाख—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय। २. एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ३ शिव।

विशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते हैं। २. एक प्राचीन जनपद जो कौशांबी के पास था।

विशारद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २ कुशल। दक्ष।

विशाल—वि० [सं०] [संज्ञा विशालता] १ बहुत बड़ा और विस्तृत। लंबाचौड़ा। २ सुंदर और भव्य। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।

विशालाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २ विष्णु। ३. गरुड़।

विशालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों। २. पार्वती। ३ देवी की एक मूर्ति।

विशिख—संज्ञा पुं० [सं०] बाण।

विशिष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा विशिष्टता] १ मिला हुआ। युक्त। २ जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो। ३. विलक्षण।

विशिष्टाद्वैत—संज्ञा पुं० [सं०] द्वैत और अद्वैत के बीच का रामानुजाचार्य का दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं है। ब्रह्म, जीवात्मा और जगत् तीनों मूलतः एक होते हुए भी कार्यरूप में भिन्न हैं। जीव और ब्रह्म में वही संबंध है जो किरण और सूर्य में है।

विशुद्ध—वि० [सं०] [भाव० विशुद्धता, विशुद्धि] १ जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २ सत्य। सच्चा। ठीक।

विशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुद्धता।

विशूचिका—संज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।

विशृंखल—वि० [सं०] [संज्ञा विशृंखलता] जिसमें क्रम या शृंखला न हो। अस्तव्यस्त। गड़बड़।

विशेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेद। अंतर। २ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। ३ वस्तु। पदार्थ। ४ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें (क) बिना आधार के आधेय या (ख) थोड़ा काम करने पर बहुत सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। ५ द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव इन सात प्रकार के पदार्थों में से एक (वैशेषिक)। ६ दो वस्तुओं में रूप, रस, गंध, स्पर्श, स्नेह, द्रवत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार और शब्द आदि का अंतर (वैशेषिक)।

वि० [सं०] साधारण या सामान्य के अतिरिक्त। अधिक।

विशेषज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० विशेषज्ञता] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो।

विशेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। २ व्याकरण में वह शब्द

जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्या वाचक।
विशेषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विशेष का भाव या धर्म।
विशेषना—क्रि० अ० [सं० विशेष से हिं० ना० धा०] १. निश्चय या निर्णय करना। २ विशेष रूप देना।
विशेषोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है।
विशेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।
विश्—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रजा।
विश्पति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
विश्रंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास। एतबार। २ प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगड़ा। ३. प्रेम।
विश्रब्ध—वि० [सं०] १. शांत। २. विश्वसनीय। ३. निर्भय। निडर।
विश्रब्धनवोढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नवोढ़ा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो।
विश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० विश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि जो कुबेर के पिता थे।
विश्रांत—वि० [सं०] १ जो विश्राम करता हो। २. ठहरा या रुका हुआ। ३ थका हुआ।
विश्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विश्राम। आराम।
विश्राम—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। २ ठहरने का स्थान। ३ आराम। चैन। सुख।
विश्रामालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हों।
विश्री—वि० [सं०] १ श्री या कांति से रहित। २. भद्दा। कुरूप।
विश्रुत—वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।
विश्लिष्ट—वि० [सं०] १ जो अलग हो गया हो। जिसका विश्लेषण हो चुका है। २ विकसित। खिला हुआ। ३ प्रकट। प्रकाशित। ४. खुला हुआ। मुक्त। ५. थका हुआ। शिथिल।
विश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अलगाव। पार्थक्य। २ वियोग। बिछोह। ३. थकावट। शिथिलता। ४ विराग। ५ विकास।
विश्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग अलग करना। २. खोलकर समझाना।
विश्वंभर—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. विष्णु।
विश्वंभरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
विश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौदह भुवनों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २. संसार। जगत। दुनिया। ३ विष्णुपुराण के अनुसार दक्ष की कन्या विश्वा से उत्पन्न देवताओं का एक गण जिसमें ये दस देवता हैं—वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, धृति, कुरू, काम, पुरूरवा और माद्रवा। ४. विष्णु। ५ शरीर।
वि० १. समस्त। सब। २. बहुत।
विश्वकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्मन्] १ ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४. एक देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं। कारु। तक्षक। देववर्द्धन। ५ शिव। ६. बढ़ई। ७ मेमार। राज। ८ लोहार।
विश्वकोश—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।
विश्वनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
विश्वरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ शिव। ३ श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।
विश्वलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य और चंद्रमा।
विश्वविद्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो। यूनिवर्सिटी।
विश्वव्यापी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।
वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।
विश्वश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।
विश्वसनीय—वि० [सं०] विश्वास करने के योग्य। जिसका एतबार किया जा सके।
विश्वसृज—वि० [सं० विश्वसृज्] विश्व का सृजन करनेवाला। उ०—बरस गई जलधार विश्वसृज, शैवलिनी पा गई उदधि निज। —गीतिका।
विश्वस्त—वि० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वात्मन्] १. विष्णु। २. शिव। ३ ब्रह्मा।
विश्वाधार—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
विश्वामित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक महर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि ये बहुत बड़े क्रोधी थे।
विश्वास—संज्ञा पुं० [पुं०] एतबार। यकीन।
विश्वासघात—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विश्वासघातक] अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना जो उसके विश्वास के बिलकुल विपरीत हो। धोखा।
विश्वासपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वासी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वासिन्] [स्त्री० विश्वासिनी] १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वास करने योग्य।
विश्वेदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ देवताओं का एक गण जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।
विश्वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ शिव की एक मूर्ति।
विष—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पदार्थ जिसे खाने से प्राण नष्ट हो जाता है। गरल। जहर। २. वह जो किसी की सुख शांति आदि में बाधक हो।
मुहा०—विष की गाँठ = वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो।
३ बछनाग। ४ कलिहारी।
विषकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
विषकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से आहार आदि द्वारा धीरे धीरे कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।
विषण्ण—वि० [सं०] दुःखी। विषादयुक्त।
विषधर—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।
विषमंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २. सँपेरा।

विषम—वि० [सं०] १ जो सम या समान न हों । असमान । २ (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे । ताक । ३ बहुत कठिन । ४. बहुत तीव्र । बहुत तेज । ५ भीषण । विकट ।

संज्ञा पुं० १. वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों । २ एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है।

विषमज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह नित्य होनेवाला ज्वर जिसके चढ़ने का समय निश्चित न हो । २ जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर ।

विषमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विषम होने का भाव । २ वैर । विरोध ।

विषमबाण, विषमायुध—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव ।

विषमवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों ।

विषय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसपर कुछ विचार किया जाय । २. अधिकार-क्षेत्र । राज्य, प्रदेश, भूभाग आदि । ३ पहुँच या दौड़ का क्षेत्र (आँख, कान, मन आदि का) । ४. विशेष विभाग । ५ स्थान या पात्र । ६. ज्ञानेंद्रियग्राह्य वस्तु; जैसे, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध । ७ पाँच की संख्या का सूचक संकेत । ८ कामोपभोग । ९ अभीष्ट वस्तु । १० मजमून । ११ दर्शन शास्त्र में तर्क का पक्ष । १२. अलंकार शास्त्र में तुलना की वस्तु; जैसे, 'कमलनयन' में नयन विषय और कमल विषयी है । उपमेय । १३ संबंध ।

विषयक—अव्य० [सं०] विषय का । संबंधी ।

विषयानुक्रमणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका । विषयसूची ।

विषयी—संज्ञा पुं० [सं० विषयिन्] १. वह जो भोगविलास में बहुत आसक्त हो । विलासी । कामी । २. कामदेव । ३. धनवान् । अमीर ।

विषविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] मंत्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या ।

विषवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मंत्र तंत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो ।

विषांगना—संज्ञा स्त्री० दे० "विषकन्या" ।

विषाक्त—वि० [सं०] जिसमें विष मिला हो । विषयुक्त । विषपूर्ण । जहरीला ।

विषाण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु का सींग । २. शृंग नामक एक बाजा । ३ सूअर का दाँत ।

विषाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विषादी] १. खेद । दु:ख । रंज । २ जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव ।

विषानन—संज्ञा पुं० [सं०] साँप ।

विषुव—संज्ञा पुं० [सं०] वह समय जब कि सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात बराबर होते हैं । सौर चैत्र नवमी या २१ मार्च और सौर आश्विन नवमी या २२ सितंबर का दिन ।

विषुवत् रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वीतल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है ।

विषूचिका—संज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका" ।

विष्कंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में एक प्रकार का योग । २ विस्तार । ३ बाधा । विघ्न । ४. नाटक का एक प्रकार का अंक । जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है ।

विष्कंभक—संज्ञा पुं० दे० "विष्कंभ" ।

विष्कार—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी । चिड़िया ।

विष्टंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाधा । रुकावट । २ पेट फूलने का रोग । अनाह ।

विष्टंभन—संज्ञा पुं० [सं०] रोकने या संकुचित करने की क्रिया ।

विष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेगार । २ मजदूरी । ३ दे० "विष्टिभद्रा" ।

विष्टिभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो यात्रा और शुभ कर्मों के लिये निषिद्ध माना जाता है । भद्रा ।

विष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल । मैला । गुह । पाखाना ।

विष्णु—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरणपोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्म का एक विशेष रूप माने जाते हैं । २ बारह आदित्यों में से एक ।

विष्णुक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली अपराजिता या कोयल नाम की लता ।

विष्णुगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि और वैयाकरण जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे । २ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का नाम ।

विष्णुपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी ।

विष्णुलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ ।

विष्वक्सेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २ एक मनु का नाम । ३ शिव ।

विसदृश—वि० [सं०] १. विपरीत । विरुद्ध । उलटा । २ विलक्षण । अद्भुत ।

विसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान । २ त्याग । ३. व्याकरण में एक वर्ण जिसमें ऊपर नीचे दो बिंदु होते हैं और जिसका उच्चारण प्राय: अर्ध ह के समान होता है । ४ मोक्ष । ५. मृत्यु । ६ प्रलय । ७ वियोग । विछोह ।

विसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १. परित्याग । छोड़ना । २. बिदा होना । चला जाना । ३ षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार । आवाहन किए हुए देवता से पुन: स्वस्थान-गमन की प्रार्थना करना । ४ समाप्ति ।

विसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें ज्वर के साथ फुंसियाँ हो जाती हैं ।

विसर्पी—वि० [सं० विसर्पिन्] फैलनेवाला ।

विसूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग "हैजा" मानते हैं ।

विस्तर—वि० [सं०] बहुत । अधिक ।

संज्ञा पुं० दे० "विस्तार" ।

विस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] लंबे या चौड़े होने का भाव । फैलाव ।

विस्तारना—क्रि० स० [सं० विस्तार से हिं० ना० धा०] विस्तार करना । फैलाना ।

विस्तीर्ण—वि० [सं०] १. विस्तृत । २ विशाल । बहुत बड़ा । ३ बहुत अधिक ।

विस्तीर्णता—संज्ञा स्त्री० दे० "विस्तार" ।

विस्तृत—वि० [सं०] [संज्ञा विस्तार, विस्तृति] १ लंबाचौड़ा । विस्तारवाला । २. यथेष्ट विवरणवाला । ३. बहुत बड़ा या लंबाचौड़ा । विशाल ।

विस्फारण—संज्ञा पुं० [सं०] । [वि० विस्फारित] १ खोलना । फैलाना । २ फाड़ना ।

विस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ वा गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। २ जहरीला और खराब फोड़ा।
विस्फोटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जहरीला फोड़ा। २ वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भड़क उठे या फट जाय। ३. शीतला का रोग। चेचक।
वि० भड़कने या फटनेवाला।
विस्मय—संज्ञा पुं० [सं०] १ आश्चर्य। ताज्जुब। २ साहित्य में अद्‌भुत रस का एक स्थायी भाव।
विस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] भूल जाना।
विस्मित—वि० [सं०] जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित।
विस्मृत—वि० [सं०] जो स्मरण न हो। जो याद न हो। भूला हुआ।
विस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्मरण।
विहंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २ बाण। तीर। ३ मेघ। बादल। ४ चंद्रमा। ५ सूर्य।
विहँसना⑤—क्रि० अ० दे० 'हँसना'।
विहग—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।
विहरना—क्रि० अ० [सं० विहरण] १ विहार करना। २ घूमना फिरना।
विहसित—संज्ञा पुं० [सं०] वह हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।
विहान—संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल। सवेरा।
विहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ टहलना। घूमना फिरना। २ रति क्रीड़ा। संभोग। ३ बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ। संघाराम।
विहारक—वि० [सं०] [स्त्री० विहारिका] दे० "विहारी"।
विहारना—क्रि० अ० दे० "बिहारना"।
विहारी—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
वि० [स्त्री० विहारिणी] विहार करनेवाला।
विहित—वि० [सं०] जिसका विधान किया गया हो।
विहीन—वि० [सं०] [संज्ञा विहीनता] १ बगैर। बिना। २ त्यागा हुआ।
विहून—वि० दे० "विहीन"।
विह्वल—वि० [सं०] [संज्ञा विह्वलता] घबराया हुआ। व्याकुल।
वीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] देखना।
वीचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग।
वीचिमाली—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] तरंग। लहर।
वीज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूल कारण। २. शुक्र। वीर्य। ३. तेज। ४ अन्न आदि का बीज। बीआ। ५ अंकुर। ६ तत्त्व। ७ तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार के मंत्र। ८ बीजगणित।
वीजगणित—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गणित जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है।
वीटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पान का बीड़ा।
वीणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।
वीणापाणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
वीत—वि० [सं०] १ जो बीत गया हो। २ जो छोड़ दिया गया हो। ३ जो छूट गया हो। मुक्त। ४ जो निवृत्त हो चुका हो।
वीतराग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। २ बुद्ध का एक नाम।
वीतिहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम।
वीथिका—संज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।
वीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। सड़क। २ वह आकाशमार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है। रविमार्ग। ३ आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं। ४ दृश्य काव्य या रूपक का एक भेद जो एक ही अंक का होता है और जिसमें एक ही नायक होता है।
वीथ्यंग—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक में वीथी के अंग जो १३ माने गए हैं।
वीप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की इच्छा। २ द्विरुक्ति। ३ एक प्रकार का शब्दालंकार।
वीभत्स—वि० दे० "बीभत्स"।
वीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहसी और बलवान्। शूर। बहादुर। २ योद्धा। सैनिक। सिपाही। ३ वह जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो। ४ पुत्र। लड़का। ५ पति। खसम। ६ भाई (स्त्रियों में प्रयुक्त)। ७ साहित्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। ८ तांत्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव।
वीरकर्मा—वि० [सं० वीरकर्मन्] वीरतापूर्ण कार्य करनेवाला।
वीरकेशरी—संज्ञा पुं० [सं० वीरकेशरिन्] वह जो वीरों में सिंह के समान श्रेष्ठ हो।
वीरकेसरी—संज्ञा पुं० दे० "वीरकेशरी"।
वीरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है। २ वीरतापूर्ण मृत्यु।
वीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूरता। बहादुरी।
वीरप्रसू—वि० दे० "वीरमाता"।
वीरभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २. उशीर। खस। ३. शिव के एक प्रसिद्ध गण जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं।
वीरमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करे। वीरजननी।
वीरललित—संज्ञा पुं० [सं०] वीरों का सा, पर साथ ही कोमलस्वभाव।
वीरव्रती—संज्ञा पुं० [सं० वीरव्रतिन्] वह जिसने वीरता का व्रत लिया हो। परम वीर।
वीरशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] रणभूमि।
वीरशैव—संज्ञा पुं० [सं०] शैवों का एक भेद।
वीरसू—वि० स्त्री० [सं०] वीरों को उत्पन्न करनेवाली।
वीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २ वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।
वीराचारी—संज्ञा पुं० [सं० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी जो देवताओं की उपासना वीर भाव से करते हैं।
वीरान—वि० [फा०] १ उजड़ा हुआ। जिसमें आबादी न रह गई हो। २. श्रीहीन। शोभाहीन।
वीराना—संज्ञा पुं० [फा० वीरान] उजाड़ जगह।
वीरासन—संज्ञा पुं० [सं०] बैठने का एक आसन या ढंग।

वीरुध—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पौधा। उ०—तृण वीरुध लहलहे हो रहे, किसके रस से सिंचे हुए ? —कामायनी। २. जड़ी बूटी। ३ झाड़ी।

वीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के सात धातुओं में से एक धातु जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है। शुक्र। रेत। बीज। २. दे० "रज"। ३. पराक्रम। बल। शक्ति। ४. बीज। बीआ।

वृंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तन का अगला भाग। कुचमुख। २ बौंड़ी। ढेंपी।

वृंद—संज्ञा पुं० [सं०] समूह। झुंड।

वृंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुलसी। २ राधिका का एक नाम।

वृंदारक—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

वृंदावन—संज्ञा पुं० [सं०] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है।

वृक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़िया। २ शृगाल। गीदड़। ३. कौवा। ४ क्षत्रिय।

वृकोदर—संज्ञा पुं० [सं०] भीमसेन।

वृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेड़। द्रुम। विटप। २. वृक्ष से मिलती जुलती वह आकृति जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हों, जैसे—वंशवृक्ष।

वृक्षायुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

वृज—संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।

वृजिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। गुनाह। २ दुःख। कष्ट। तकलीफ। ३ खाल।

वृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ चरित्र। २ आचार। चालचलन। ३ समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। वृत्ति। ५ वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। गंडका। दंडिका। ७. वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। ८ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्यबिंदु से समान अंतर पर हो (ज्यामिति)।

वृत्तखंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वृत्त या गोलार्द्ध का कोई अंश। २ मेहराव।

वृत्तगंधि—संज्ञा पुं० [सं०] वह गद्य जिसमें अनुप्रास और समास अधिक हों।

वृत्तचूड़—वि० [सं०] मेहराबदार।

संज्ञा पुं० मेहराब।

वृत्तबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्त या छंद के रूप में बना हुआ वाक्य।

वृत्तांत—संज्ञा पुं० [सं०] घटना का विवरण। समाचार। हाल।

वृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कार्य जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। रोजी। २ वह धन जो किसी दीन या छात्र आदि को बराबर उसके सहायतार्थ दिया जाय। ३ सूत्रों आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये की जाती है। कारिका। ४ नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली जो चार प्रकार की कही गई है। ५ योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ६ व्यापार। कार्य। ७ स्वभाव। चेष्टा। प्रकृति। ८ संहार करने का एक प्रकार का शस्त्र।

वृत्त्यनुप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुप्रास या शब्दालंकार। इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपों में बार बार आते हैं।

वृत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अँधेरा। २ मेघ। बादल। ३ शत्रु। दुश्मन। ४ पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था इसी को मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बना था।

वृत्रहा—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वृत्रारि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वृत्रासुर—संज्ञा पुं० दे० "वृत्र" (४)।

वृथा—वि० [सं०] [भाव० वृथात्व] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।

क्रि० वि० बिना मतलब के। बेफायदा।

वृथात्व—संज्ञा पुं० [सं०] वृथा होने का भाव या धर्म।

वृद्ध—वि० [सं०] १ अधिक अवस्था में पहुँचा हुआ। बुड्ढा। २ पंडित। विद्वान्।

संज्ञा पुं० उक्त अवस्था या स्थिति को प्राप्त मनुष्य।

वृद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृद्ध होने का भाव या धर्म। बुढ़ापा। २ पांडित्य।

वृद्धश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धश्रवस्] इंद्र।

वृद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।

वृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। २ अभ्युदय। समृद्धि। ३. ब्याज। सूद। ४. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ५ अष्टवर्ग के अंतर्गत एक प्रसिद्ध लता।

वृश्चिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिच्छू नामक जंतु। २. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ३ मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसके सब तारों से बिच्छू का आकार बनता है।

वृश्चिकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू नाम की लता जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है।

वृष—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ का नर। साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३. श्रीकृष्ण। ४ बारह राशियों में से दूसरी राशि।

वृषकेतन, वृषकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २ कर्ण। ३ विष्णु। ४ साँड़। ५. फोता। ६ अंडकोश। पोता।

वृषध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २ गणेश। ३. पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल या साँड़। २. साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष।

वृषभधुज(५)—संज्ञा पुं० दे० "वृषभध्वज"।

वृषभध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषभानु—संज्ञा पुं० [सं०] श्री राधिका जी के पिता जो नारायण के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं।

वृषल—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूद्र। २. पापी और दुष्कर्मी। ३ घोड़ा। ४ सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मृतियों के अनुसार वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गई हो। २ कुलटा। दुराचारिणी।

२ नीच जाति की स्त्री । ४. रजस्वला स्त्री ।
वृषवासी—संज्ञा पुं० [सं०] शिव ।
वृषवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव ।
वृषासुर—संज्ञा पु० दे० "भस्मासुर" ।
वृषादित्य—संज्ञा पुं० [सं०] वृषराशि का सूर्य ।
वृषी—संज्ञा पुं० [सं० वृषिन्] मयूर । मोर ।
वृषोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के • । पर साँड पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं ।
वृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्षा । बारिश । मेह । २. ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना । ३ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना ।
वृष्टिमान—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई ।
वृष्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २. यादव वंश । ३ श्रीकृष्ण । ४ इंद्र । ५ अग्नि । ६. वायु ।
वृष्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज जिससे वीर्य, बल और आनंद बढ़ता हो ।
वृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटकारी । २. बनभटा । बड़ी कटाई । ३ बैंगन ।
वृहत्—वि० [सं०] बड़ा । भारी । महान् ।
वृहद्रथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र । २ यज्ञपात्र । ३ सामवेद के एक अंश का नाम ।
वृहन्नला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहते थे ।
वृहस्पति—संज्ञा पुं० दे० "बृहस्पति" ।
वेंकटगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम ।
वे—सर्व० [हिं० वह] 'वह' का बहु० रूप ।
वेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह देखना या ढूँढ़ना ।
वेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर । तेजी । २ प्रवाह । बहाव । ३ शीघ्रता । जल्दी । ४ आनंद । प्रसन्नता । खुशी । ५ शरीर में से मल, मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति ।
वेगधारण—संज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र आदि का वेग रोकना ।
वेगवान्—वि० [सं०] तेज चलनेवाला ।
वेगारी—संज्ञा पु० दे० "वेगार" ।
वेगी—संज्ञा पुं० [सं० वेगिन्] वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो । वेगवान् ।
वेण—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति । २ राजा पृथु के पिता का नाम ।
वेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी ।
वेणु—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस । २ बाँस की बनी हुई वंशी । ३. दे० "वेणु" ।
वेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी । वंशी । २ एक वृक्ष जिसका फल बहुत जहरीला होता है । ३ हाथी को चलाने के लिये प्राचीन काल में प्रयुक्त एक प्रकार का दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था ।
वेतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय । पारिश्रमिक । उजरत । २ तनखाह । दरमाहा । महीना ।
वेतनभोगी—संज्ञा पुं० [सं० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो । वैतनिक ।
वेतस—संज्ञा पुं० दे० "वेत्र" ।
वेतसी—संज्ञा स्त्री० दे० "वेत्र" ।
वेताल—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वारपाल । संतरी । २ शिव के एक गणाधिप । ३ पुराणों के अनुसार भूतों की एक योनि । ४ वह शव जिसपर भूतों ने अधिकार कर लिया हो । ५ छप्पय का छठा भेद ।
वेत्ता—वि० [सं०] जाननेवाला । ज्ञाता ।
वेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बेत ।
वेत्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] द्वारपाल । संतरी ।
वेत्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेतवा नदी ।
वेत्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] वह आसन जिसमें बैठने की जगह बेत से बुनी हो, जैसे—कुर्सी, कोच आदि ।
वेत्रासुर—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिष का राजा था ।
वेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारतीय आर्यों के प्राचीनतम धार्मिक तथा आध्यात्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है । आम्नाय । श्रुति । आरंभ में वेद केवल तीन ही थे—ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद । चौथा अथर्ववेद पीछे से वेदों में सम्मिलित हुआ । २ किसी विषय का, विशेषत धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का, सच्चा और वास्तविक ज्ञान । ३. वृत्त । ४ वित्त । ५. यज्ञांग ।
वेदज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदों का ज्ञाता हो । २. ब्रह्मज्ञानी ।
वेदन—संज्ञा पुं० दे० "वेदना" ।
वेदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीड़ा । व्यथा ।
वेदनिंदक—वि० [सं०] १ वेदों की बुराई करनेवाला । २ नास्तिक ।
वेदमंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के मंत्र ।
वेदमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० वेदमातृ] १ गायत्री । सावित्री । २ दुर्गा । ३ सरस्वती ।
वेदवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात जिसका खंडन न हो सकता हो । अकाट्य बात ।
वेदव्यास—संज्ञा पुं० दे० "व्यास (१) ।"
वेदांग—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद ।
वेदांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है । ब्रह्मविद्या । अध्यात्म । ज्ञानकांड । २ छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है । उत्तरमीमांसा । अद्वैतवाद ।
वेदांतसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि बादरायणकृत सूत्र जो वेदांतशास्त्र के मूल माने जाते हैं ।
वेदांती—संज्ञा पुं० [सं० वेदांतिन्] वह जो वेदांत का अच्छा ज्ञाता हो । ब्रह्मवादी ।
वेदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है । कुरसी । २ दे० "वेदी" ।
वेदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी शुभ कार्य, विशेषत धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि ।

वि० [सं० वेद+ई (प्रत्य०) १ पंडित । विद्वान् । २ ज्ञाता । जानकार । पढ़ा हुआ, जैसे—सामवेदी, चतुर्वेदी आदि ।

वेद्य—वि० [सं०] जानने या समझने के योग्य ।
वेद्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकारी । २ समझदारी ।
वेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ छेदना । वेधना । विद्ध करना । २. यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना ।
वेधक—वि० [सं०] वेध करनेवाला । २ छेदनेवाला ।
वेधशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि रखे हों ।
वेधा—संज्ञा पुं० [सं० वेधस्] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव । ४ सूर्य ।
वेधालय—संज्ञा पुं० दे० "वेधशाला" ।
वेधी—संज्ञा पुं० [सं० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनी] वह जो वेध करता हो । वेध करनेवाला ।
वेपथु—संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी । कंप ।
वेपन—संज्ञा पुं० [सं०] काँपना । कंप ।
वेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काल । समय । वक्त । २ दिन और रात का चौबीसवाँ भाग । ३. समुद्र की लहर ।
वेल्लि, वेल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्ली] बेल । लता ।
वेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपड़े, लत्ते आदि से अपने आप को सजाना । २. किसी के कपड़े लत्ते आदि पहनने का ढंग ।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना = किसी के रूपरंग और पहनावे की नकल करना ।

३ पहनने के वस्त्र । पोशाक ।

यौ०—वेशभूषा = पहनने के कपड़े आदि ।

४ खेमा । तंबू । ५ घर । मकान ।
वेशधारी—संज्ञा पुं० [सं० वेशधारिन्] वेश धारण करनेवाला ।
वेशवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या ।
वेशवनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी ।
वेश्म—संज्ञा पुं० [सं०] घर । मकान ।
वेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाने और कसब कमानेवाली औरत । रंडी । गणिका ।
वेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "वेश" । २ रंगमंच में नेपथ्य ।
वेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वेष्टित] १ वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय । वेठन । २ घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव । ३. उष्णीष । पगड़ी ।
वेष्टित—वि० [सं०] किसी चीज से घेरा या लपेटा हुआ ।
वेसाई—संज्ञा स्त्री० दे० "वेश्या" ।
वै—वि० १ दे० "वे" । २ दे० "दो" ।

सर्व० दे० "वे"। उ०—दृष्टि परे अर्जुन द्रुम दुवै । सापे हुते मुनि नारद जु वै । —नंददास० ।
वैकट्य—संज्ञा पुं० [सं०] विकटता ।
वैकल्पिक—वि० [सं०] १. जो किसी एक पक्ष में हो । एकांगी । २ संदिग्ध । ३. जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके ।
वैकाल—संज्ञा पुं० [सं०] तीसरा पहर । अपराह्न ।
वैकाली—वि० [सं०] तीसरे पहर का ।

संज्ञा स्त्री० तीसरे पहर का जलपान ।
वैकुंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार वह स्थान जहाँ भगवान् विष्णु रहते हैं । २ विष्णु । ३ स्वर्ग ।
वैकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकार । खराबी । २ बीभत्स रस । बीभत्स रस का आलंबन, जैसे—रक्त, मांस, मज्जा, आदि ।

वि० १ जो विकार से उत्पन्न हुआ हो । २ जो जल्दी ठीक न हो सके । दुःसाध्य ।
वैक्रम, वैक्रमीय—वि० [सं०] विक्रम का । विक्रम संबंधी ।
वैक्रांत—संज्ञा पुं० [सं०] चुन्नी नामक मणि ।
वैक्लव्य—संज्ञा पुं० [सं०] विकलता । व्याकुलता ।
वैखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्वर जो उच्च और गंभीर हो और बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े । २ वाक्शक्ति । ३ वाग्देवी ।
वैखानस—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो । २ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे ।
वैचक्षण्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचक्षणता ।
वैचित्र्य—संज्ञा पुं० दे० "विचित्रता" ।
वैजयंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र की पुरी का नाम । २ इंद्र ।
वैजयंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पताका । झंडी । २ पाँच रंगों की एक प्रकार की माला ।
वैज्ञानिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो । २. निपुण । दक्ष ।

वि० विज्ञान संबंधी । विज्ञान का ।
वैतनिक—संज्ञा पुं० [सं०] तनखाह लेकर काम करनेवाला । नौकर । भृत्य ।
वैतरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है ।
वैताल, वैतालिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तुतिपाठक जो राजाओं को स्तुति करके जगाता था ।
वैतालीय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणों में १४ तथा दूसरे और चौथे में १६ मात्राएँ हों । उ०—हरहर भज जाम आठहूँ । जजालहिं तजि कै करौ यही ॥ तन मन धन दे लगा सबै ॥ हरधामहिं जैहौ हिए धरौ नू ॥

वि० वेताल संबंधी । वेताल का ।
वैदग्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] विदग्धता । चातुरी ।
वैदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक । २ दमयंती के पिता भीमसेन । ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक ।

वि० विदर्भ देश का ।
वैदर्भी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की वह रीति या शैली जिसमें रचना के लिये मधुर वर्णों का प्रयोग होता है । २ दमयंती । ३ रुक्मिणी ।
वैदिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला । २ वेदों का पंडित ।

वि० वेद संबंधी । वेद का ।
वैदूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न जिसे "लहसुनिया" कहते हैं ।
वैदेशिक—वि० [सं०] विदेश संबंधी ।
वैदेही—संज्ञा स्त्री० [सं०] विदेह (राजा जनक) की कन्या, सीता ।
वैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित । विद्वान् । २ वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की चिकित्सा करता हो । भिषक् । चिकित्सक ।
वैद्यक—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो । चिकित्साशास्त्र । आयुर्वेद ।
वैद्युत—वि० [सं०] विद्युत संबंधी ।

वैधा—वि० [सं०] जो विधि के अनुसार हो। कायदे या कानून के मुताबिक। ठीक।

वैधर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधर्मी होने का भाव। २ नास्तिकता।

वैधव्य—संज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँड़ापा।

वैधानिक—वि० [सं०] १ विधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला। २ विधान या नियमों के अनुकूल।

वैधेय—वि० [सं०] विधि संबंधी। विधि का।

वैनतेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनता की संतान। २ गरुड़। ३ अरुण।

वैपरीत्य—संज्ञा पुं० [सं०] विपरीतता।

वैभव—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनसंपत्ति। दौलत। विभव। २ महत्व। बड़प्पन।

वैभवशाली—संज्ञा पुं० [सं०] जिसके पास बहुत धनसंपत्ति हो। मालदार।

वैमनस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनमुटाव। २ वैर। दुश्मनी।

वैमात्र, वैमात्रेय—वि० [सं०] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैमानिक—वि० [सं०] विमान संबंधी।

संज्ञा पुं० १ वह जो विमान पर सवार हो। २ हवाई जहाज चलानेवाला।

वैयक्तिक—वि० [सं०] किसी एक व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। व्यक्तिगत। "सामूहिक" का उलटा।

वैयाकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैर—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० वैरता] शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी से वैर का बदला चुकाना।

वैरागी—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २ उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ संसार के झंझटों से हटाकर ईश्वर की ओर लगाई जानेवाली मन की वृत्ति। २ विषय वासनाओं में अनुराग का अभाव। विरक्ति।

वैराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा। २ ब्रह्मा। ३ दे० "वैराज्य"।

वैराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही देश में दो राजाओं का शासन। २. वह देश जहाँ इस प्रकार की शासनप्रणाली हो।

वैरी—संज्ञा पुं० [सं०] दुश्मन। शत्रु।

वैरूप्य—संज्ञा पुं० [सं०] विरूपता। शकल का भद्दापन।

वैलक्षण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विलक्षणता। २ विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवस्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २ एक रुद्र। ३. एक मनु। ४ वर्तमान मन्वतर का नाम।

वैवाहिक—संज्ञा पुं० [सं०] कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी।

वि० विवाह संबंधी। विवाह का।

वैशंपायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख—संज्ञा पुं० [सं०] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी जिसे राजा तृणविंदु के पुत्र विशाल ने बसाया था। जैनधर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का जन्म यहीं हुआ था। २ विशाल नगरी। विशालपुरी। ३ मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक गाँव।

वैशिक—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।

वैशेषिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह दर्शनों में से एक जो महर्षि कणादकृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ विद्या। औलूक्य दर्शन। २. वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।

वि० किसी विशेष विषय आदि से संबंध रखनेवाला, जैसे—वैशेषिक विद्यालय।

वैश्य—संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। इस वर्ण का धर्म यजन, अध्ययन, पशुपालन, कृषि और वाणिज्य है।

वैश्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्य होने का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्वजनीन—वि० [सं०] विश्व भर के लोगों से संबंध रखनेवाला। सब लोगों का।

वैश्वदेव—संज्ञा पुं० [सं०] वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।

वैश्वानर—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ परमात्मा। ३. चेतन।

वैषम्य—संज्ञा पुं० [सं०] विषमता।

वैषयिक—वि० [सं०] विषय संबंधी। विषय का।

संज्ञा पुं० विषयी। लंपट।

वैष्णव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु की उपासना करनेवाला। २. हिंदुओं का एक धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग विष्णु की उपासना करते हैं।

वि० विष्णु संबंधी। विष्णु का।

वैष्णवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु की शक्ति। २ दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी।

वैसा—वि० [हिं० वह+सा] उस तरह का।

वैसे—क्रि० वि० [हिं० वैसा] उस तरह।

वोक(पु)—संज्ञा पुं० [?] ओर। तरफ।

वोख—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओक] अंजलि। उ०—ज्यों ज्यों तनु धारा किए, जल प्यावति रिझवारि। पिए जात त्यों त्यों पथिक, विरली वोख सँवारि। —काव्य-निर्णय।

वोट—संज्ञा पुं० [अँ०] किसी चुनाव में दी जानेवाली राय। मत।

वोटर—संज्ञा पुं० [अँ०] वह जो किसी चुनाव में राय देता हो। मतदाता।

वोटिंग—संज्ञा स्त्री० [अँ०] किसी चुनाव के लिये वोट या मत लिया जाना।

वोदर—संज्ञा पुं० [सं० उदर] उदर। पेट। उ —अधिक जानि घटि बढ़ि जहाँ है अधार आधेय। जग जाके वोदर बसै, तिहि तूँ ऊपर लेय। —काव्यनिर्णय।

वोर—संज्ञा पुं० [सं० अवार] ओर। तरफ। उ०—मिलिहि किमि भोर। तकत ससि वोर। थकित सो विसेषि। बदनछवि देखि। —छंदार्णव।

वोल्लाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

वोस—संज्ञा स्त्री० [सं० अवश्याय] ओस। उ०—'दास' ईस वोस तप्त तेल सी लगै, सरीर सर्प स्वास सी लगै बयारि यौं घरी घरी। —छंदार्णव।

वोहि—सर्व० [हिं० वह+ही] वह। उ०—साँवरो पीतम जहाँ बसै सो कित है वोहि गाँव री। —नंददास०।

वोहित्थ—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी नाव।

व्यंग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द का वह गूढ़ अर्थ जो उसकी व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। २ ताना। बोली। चुटकी।

व्यंजक—वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।

व्यंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २ वर्णमाला में का वह वर्ण जो विना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो। हिंदी वर्णमाला में "क" से "ह" तक के सब वर्ण। ३ तरकारी और साग आदि जो चावल, रोटी आदि के साथ खाए जाते हैं। ४. पका हुआ भोजन। ५ अवयव। अंग।

व्यंजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकट करने की क्रिया। २. शब्द की वह तीसरी शक्ति जिसके द्वारा अभिधा और लक्षणा के असफल रहने पर असल अर्थ होता हो।

व्यक्त—वि० [सं०] [भाव० व्यक्तता] १. प्रकट। जाहिर। २. साफ। स्पष्ट।

व्यक्तगणित—संज्ञा पुं० दे० "अंकगणित"।

व्यक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकट होना।

संज्ञा पुं० १. मनुष्य। आदमी। २. समष्टि का उलटा। व्यष्टि।

व्यक्तिगत—वि० [सं०] किसी व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। निजी।

व्यक्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यक्ति का गुण या भाव। २ वे विशिष्ट गुण जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।

व्यग्र—वि० [सं०] [भाव० व्यग्रता] १ घबराया हुआ। व्याकुल। परेशान। २ डरा हुआ। भयभीत। ३ काम में फँसा हुआ।

व्यजन—संज्ञा पुं० [सं०] पंखा।

व्यतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रम में होनेवाला उलटफेर। २. बाधा। विघ्न।

व्यतिरिक्त—क्रि० वि० [सं०] अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेद। अंतर। २. अभाव। ३ अतिक्रम। ४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है, जैसे— निज परिताप द्रवै नवनीता। पर दुख द्रवै सुसंत पुनीता।

व्यतिरेकी—संज्ञा पुं० [सं० व्यतिरेकिन्] वह जो किसी का अतिक्रमण करके जाता हो।

व्यतिषंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलान। २. विनिमय। बदला।

व्यतीत—वि० [सं०] बीता हुआ। गत।

व्यतीतना(पु)—क्रि० अ० दे० "बीतना"।

व्यतीपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा उत्पात। २ ज्योतिष में एक योग जिसमें यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है।

व्यत्यय—संज्ञा पुं० दे० "व्यतिक्रम"।

व्यथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीड़ा। वेदना। तकलीफ। २ दुःख। क्लेश।

व्यथित—वि० [सं०] [स्त्री० व्यथिता] १. जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो। २ दुःखित। रंजीदा।

व्यभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा या दूषित आचार। बदचलनी। २ स्त्री का परपुरुष से अथवा पुरुष का परस्त्री से यौनसंबंध। छिनाला।

व्यभिचारी—संज्ञा पुं० [सं० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. मार्गभ्रष्ट। २ बदचलन। ३. परस्त्रीगामी। ४ दे० "संचारी" (भाव)।

व्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ खर्च। आय का उलटा। २. खपत। ३. नाश। बरबादी।

व्ययी—वि० [सं० व्ययिन्] व्यय करनेवाला। खर्चीला।

व्यर्थ—वि० [सं०] [भाव० व्यर्थता] १ उपयोगरहित। बेकार। २ बिना माने का। अर्थरहित। ३. जिसमें कोई लाभ न हो। निरर्थक।

क्रि० वि० फजूल। योंही।

व्यलीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुःख। २ अपराध। कसूर। ३. विट। ४ डाँट-डपट।

वि० एकदम झूठ। सरासर असत्य।

व्यवकलन—संज्ञा पुं० [सं०] एक रकम में से दूसरी रकम घटाना। बाकी निकालना।

व्यवच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० व्यवच्छिन्न] १. पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २ विभाग। हिस्सा। ३ विराम। ठहरना।

व्यवधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकावट। बाधा। २ हस्तक्षेप। ३ आवरण। परदा। ४ भेद। विभाजन।

व्यवसाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोजगार। व्यापार। २ जीविका। ३. कामधंधा। ४. प्रयास। उद्योग।

व्यवसायी—संज्ञा पुं० [सं० व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करनेवाला। २ रोजगारी।

व्यवसित—वि० [सं०] १ किया हुआ। समाप्त। २ काम करने के लिये तैयार। उद्यत। ३ जो निश्चय किया जा चुका हो। निश्चित।

व्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रबंध। इंतजाम। २ चीजों को सजाकर या ठिकाने से रखना। ३. रखने या स्थिर करने की क्रिया। किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।

मुहा०—व्यवस्था देना = पंडितों आदि का किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना।

व्यवस्थाता—संज्ञा पुं० दे० "व्यवस्थापक"।

व्यवस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रबंधकर्ता। इंतजाम करनेवाला। २ वह जो किसी कार्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। ३. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला।

व्यवस्थापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो।

व्यवस्थापिका सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (भारतीय स्वतंत्रता के पूर्व) देश या प्रांत के प्रतिनिधियों की वह सभा जो कानून बनाती थी।

व्यवस्थित—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। कायदे का।

व्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रिया। कार्य। काम। २ आपस में एक दूसरे के साथ बरतना। बरताव। ३. व्यापार। रोजगार। ४ बोलचाल का प्रयोग। ५ रीतिरिवाज, ६ लेनदेन का काम। महाजनी। ७ झगड़ा। विवाद। मुकदमा।

व्यवहारत—क्रि० वि० [सं०] व्यवहार की दृष्टि से। उपयोग के विचार से।

व्यवहार शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार + शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिये कितना दंड देना चाहिए आदि।

व्यवहार्य—वि० [सं०] व्यवहार या काम में लाने के योग्य।

व्यवहित—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का व्यवधान या बाधा पड़ी हो। २. आड़ या ओट में गया हुआ। छिपा हुआ।

व्यवहृत—वि० [सं०] [संज्ञा व्यवहृति] १ जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो। आचरित। २ जो काम में लाया गया हो।

व्यष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] समष्टि का एक विशिष्ट और पृथक् अंश। समष्टि का उलटा।

व्यसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी प्रकार का शौक। २ बुरी आदत। लत। ३ विषयों के प्रति आसक्ति। ४ कोई बुरी या अमंगल बात। ५ विपत्ति। आफत।

व्यसनी—संज्ञा पुं० [सं० व्यसनिन्] वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो।

व्यस्त—वि० [सं०] १ काम में लगा या फँसा हुआ। २ घबराया हुआ। व्याकुल। ३ व्याप्त।

व्याकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल—वि० [सं०] [भाव० व्याकुलता] १. घबराया हुआ। विकल। २. बहुत अधिक उत्कंठित।

व्याक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] १ तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २. चिल्लाना।

व्याख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० व्याख्यात] १ वह वाक्य आदि जो किसी जटिल वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। टीका। व्याख्यान। २. कहना। वर्णन।

व्याख्याता—संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यातृ] १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।

व्याख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक्तृता। भाषण। २. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम।

व्याख्येय—वि० [सं०] जो व्याख्या करने योग्य हो। समझाने लायक।

व्याघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ विघ्न। खलल। बाधा। २. आघात। प्रहार। मार। ३. एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है। ४ ज्योतिष में एक अशुभ योग।

व्याघ्र—संज्ञा पुं० [सं०] बाघ। शेर।

व्याघ्रचर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बाघ या शेर की खाल जिसपर प्राय लोग बैठते हैं।

व्याघ्रनख—संज्ञा पुं० [सं०] १ शेर का नाखून जो प्राय बच्चों के गले में, उन्हें नजर से बचाने के लिये, पहनाया जाता है। २ नख नामक गंधद्रव्य।

व्याज—संज्ञा पुं० [सं०] कपट। छल। फरेब। २. बाधा। विघ्न। खलल। ३. विलंब। देर।

संज्ञा पुं० दे० "ब्याज"।

व्याजनिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े। २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है।

व्याजस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है।

व्याजोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कपट भरी बात। २ एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याडि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था।

व्याध—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो। शिकारी। २ एक प्राचीन जाति जो जंगली पशुओं को मारकर अपना निर्वाह करती थी।

व्याधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोग। बीमारी। २. आफत। झंझट। ३. विरह या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग होना (साहित्य)।

व्याधित—वि० [सं०] जिसे किसी प्रकार की व्याधि हुई हो। रोगी। बीमार।

व्याधिहर—वि० [सं०] व्याधि को दूर करनेवाला। रोग नष्ट करनेवाला।

व्यान—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है।

व्यापक—वि० [सं०] [संज्ञा व्यापकता] १ चारों ओर फैला हुआ। सर्वत्र फैला हुआ। दूर तक व्याप्त। २. घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक।

व्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याप्त होना। फैलना।

व्यापना—क्रि० अ० [सं० व्यापन] किसी चीज के अंदर फैलना। व्याप्त होना।

व्यापन्न—वि० [सं०] १. विपत्ति में पड़ा हुआ। २. जिसे चोट लगी हो। जख्मी। ३ नष्ट। मरा हुआ।

व्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रय विक्रय का कार्य। रोजगार। व्यवसाय। २. कर्म। कार्य। काम।

व्यापारिक—वि० [सं०] व्यापार संबंधी। रोजगार का।

व्यापारी—संज्ञा पुं० [सं० व्यापारिन्] व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी।

वि० [सं० व्यापार] व्यापार संबंधी।

व्यापित—वि० [स्त्री० व्यापिता] दे० "व्याप्त"।

व्याप्त—वि० [सं०] १. चारों ओर फैला या भरा हुआ। २ पूरित।

व्याप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव। २ न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ३ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

व्यामोह—संज्ञा पुं० [सं०] मोह। अज्ञान।

व्यायाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शारीरिक श्रम जो बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। जोर। २ परिश्रम।

व्यायोग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

व्याल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० व्याली] १. साँप। २ बाघ। शेर। ३ राजा। ४ विष्णु। ५. दंडक छंद का एक भेद।

व्यालि—संज्ञा पुं० दे० "व्याडि"।

व्यालू—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं० वेला] रात के समय का भोजन। रात का खाना।

व्यावहारिक—वि० [सं०] १. व्यवहार संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २ व्यवहारशास्त्र संबंधी।

व्यासंग—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारहों पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्हीं ने की थी। २. वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथाएँ लोगों को सुनाता हो। कथावाचक। ३. वह रेखा जो किसी गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिलकुल सीधी चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ४ विस्तार। फैलाव।

यौ०—व्यास समास = घटाना बढ़ाना। काट छाँट।

व्याहत—वि० [सं०] १. मना किया हुआ। निषिद्ध। २ व्यर्थ।

व्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्य। जुमला।

व्याहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथन। उक्ति। २. भू, भुव, स्व, इन तीनों का मंत्र।

व्युत्पत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी चीज का मूल, उद्गम या उत्पत्ति स्थान। २ शब्द का वह मूल रूप, जिससे वह शब्द निकला हो। ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न—वि० [सं०] [संज्ञा व्युत्पन्नता] जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास। २. समूह। जमघट। ३. सेना। फौज। ४. निर्माण। रचना। ५. शरीर। बदन।

व्योम—संज्ञा पुं० [सं० व्योमन्] १. आकाश। आसमान। २. जल। ३. बादल।

व्योमकेश—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

व्योमचारी—संज्ञा पुं० [सं० व्योमचारिन्] १ देवता। २. पक्षी। चिड़िया। ३. वह जो आकाश में विचरण करता हो।

व्योमयान—संज्ञा पुं० [सं०] वह यान या सवारी जिसपर चढ़कर मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो। विमान। हवाई जहाज।

व्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १. मथुरा और वृंदावन के आसपास का प्रांत जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र है। २ जाना या चलना। गमन। ३ समूह। झुंड।

व्रजन—संज्ञा पुं० [सं०] चलना। जाना।

व्रजभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा, आगरा और इनके आसपास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक भाषा। इधर चार-पाँच सौ वर्षों के उत्तर भारत के अधिकांश कवियों ने प्राय इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमें से सूर, तुलसी, बिहारी, आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं।

व्रजमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।

व्रजराज—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजलाल—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रज की स्त्री।

व्रजेश—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घूमना फिरना। पर्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई।

व्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. फोड़ा। २. घत। घाव।

व्रणी—वि० [सं० व्रणिन्] १. जिसे फोड़ा हुआ हो। २ घायल।

व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पुण्यतिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के विचार से नियमपूर्वक उपवास करना। २. पवित्र संकल्प। ३. पवित्र या धार्मिक कार्य। ४. (शुभ कार्य के लिये) दृढ़ निश्चय।

व्रतिक, व्रती—संज्ञा पुं० [सं० व्रतिन्] १. वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २. यजमान। ३. ब्रह्मचारी।

व्राचड़—संज्ञा स्त्री० [अप०] १. अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २. पैशाचिक भाषा का एक भेद।

व्रात्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य समझा जाता है। ३ दोगला। वर्णसंकर।

व्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जा। शरम।

व्रीहि—संज्ञा पुं० [सं०] धान। चावल।

श

श—हिंदी वर्णमाला का तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण प्रधानतया तालू की सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते हैं।

शं—संज्ञा पुं० [सं०] १ कल्याण। मंगल। २ सुख। ३ शांति। ४. वैराग्य।

वि० शुभ।

शंक—संज्ञा पुं० [सं०] भय। डर। आशंका।

शंकना⑤—क्रि० अ० [सं० शंक से हिं० ना० धा०] १ शंका करना। संदेह करना।

शंकर—वि० [सं०] १ मंगल करनेवाला। २ शुभ। ३. लाभदायक।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। शंभु। २. दे० "शंकराचार्य"। ३. छब्बीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दीर्घ ह्रस्व का क्रम हो। उ०—शंभु के पद में नहिं दीनो चित्त तेरी भूल। सुखसंपति धन देहधाम को, देखकर मत भूल।

संज्ञा पुं० दे० "संकर"।

शंकरशैल—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शंकरस्वामी—संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य"।

शंकराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में हुआ था और जो ३२ वर्ष की अल्प आयु में स्वर्गवासी हुए थे।

शंकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शंका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनिष्ट का भय। डर। खौफ। खटक। २ संदेह। आशंका। संशय। शक। ३ अपने किसी अनुचित व्यवहार आदि से होनेवाली इष्टहानि की चिंता। ४. साहित्य का एक संचारी भाव।

शंकालु—वि० [सं०] जिसे शीघ्र शंका हो। संदेहशील। शक्की।

शंकित—वि० [सं०] [स्त्री० शंकिता] १ डरा हुआ। २ जिसे संदेह हुआ हो। ३ अनिश्चित संदेहयुक्त।

शंकु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोई नुकीली वस्तु। २. मेख। कील। ३. खूँटी। ४.

माला। बरछा ५. गाँसी। फल। ६. लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक सख्या। शंख। ७ कामदेव। ८. शिव। ९. वह खूँटी जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सूर्य या दीप की छाया आदि नापने में होता था।

शंख—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है। इसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे की भाँति बजाया जाता है। कंबु। २. दस खर्व की एक सख्या। ३. हाथी का गंडस्थल। ४. एक दैत्य। शंखासुर। ५ एक निधि। ६. छप्पय का एक भेद। ७ दडक वृत्त के अतर्गत प्रचित्त का एक भेद।

वि० (व्यंग्यात्मक) मूर्ख। ढपोरशख।

शंखचूड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक राक्षस जो कृष्ण द्वारा मारा गया था। २. कुबेर के दूत और सखा का नाम। ३. एक प्रकार का जहरीला साँप।

शंखद्राव—सज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का अर्क जिसमें शख भी गल जाता है।

शंखधर—सज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शंखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण होते हैं। उ०—ययू बाल देखो। सुर गी सुभेखो। धरैं याहि आजी। कहैं सोमराजी। सोमराजी।

शंखपाणि—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

शखविष—सज्ञा पुं० दे० "सखिया"।

शंखासुर—सज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। उ०—बहुरो किलाल बैठ मान्यो जिन शखासुर ताते वेद अनेक विधाता को दिखाए हैं।—हनुमन्नाटक।

शखाहुली—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शख-पुष्पी। दे० "कौड़ियाल"। २. सफेद अपराजिता।

शंखिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद। २ एक प्रकार की वनौषधि। मुँह की नाड़ी। उ०—मुख स्थान शखिनी केरा। ये नाडिन के नाम निबेरा।—विश्रामसागर।

शंखिनी डंकिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उन्माद।

शंजरफ—संज्ञा पुं० दे० "इंगुर"।

शंठ—सज्ञा पुं० [सं०] १. नपुंसक। हीजड़ा। २ मूर्ख। बेवकूफ।

शंड—सज्ञा पुं० [सं०] १. नपुसक। हीजड़ा। २. वह जिसे सतान न होती हो। ३. साँड़।

शंडामर्क—सज्ञा पुं० [सं०] शड और मर्क नाम के दो दैत्य।

शंतनु—सज्ञा पुं० दे० "शांतनु"।

शंतनुसुत—सज्ञा पुं० दे० "भीष्म-पितामह"।

शंपा—सज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत। बिजली। २. कमर। कटि।

शंबर—सज्ञा पुं० [सं०] १. एक दैत्य जो इंद्र के वाण से मारा गया था। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३. युद्ध। लड़ाई।

शंबरारि—सज्ञा पुं० [स०] १. शबर का शत्रु कामदेव। मदन। २ प्रद्युम्न।

शंबु—सज्ञा पुं० [स०] १. घोंघा। २ छोटा शंख।

शबुक—सज्ञा पुं० [स०] घोंघा।

शबूक—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह तपस्वी शूद्र जिसके विषय में अनुश्रुति है कि इसकी (तत्कालीन सामाजिक नियम के विरुद्ध) तपस्या के कारण रामराज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकालमृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मणपुत्र को जिलाया था। २. घोंघा। ३ शख।

शंभु—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। महादेव। २ ग्यारह रुद्रों में से एक। ३ एक दैत्य का नाम। ४ उन्नीस वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, तगण, यगण, भगण, दो मगण और अंत्य गुरु हो। उ०—तजिए कामा, भजिए नामा अस बेरा नहीं पावौ जू। शिव बंभोला, शिव बंभोला बम, भोला शभू गावौ जू।

सज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

शंभुगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शभुबीज—सज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

शभुभूषण—सज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।

शभुलोक—सज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

श—सज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कल्याण। मंगल। ३. शस्त्र। हथियार।

शऊर—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ काम करने की योग्यता। ढग। २. बुद्धि। अक्ल।

शऊरदार—सज्ञा पुं० [अ० शऊर+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें शऊर हो। हुनरमंद।

शक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। पुराणों में इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यंत से कही गई है, पर पीछे यह म्लेच्छों में गिनी जाने लगी थी। २ वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत चले। ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ सवत जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात आरंभ हुआ था।

सज्ञा पुं० [अ०] शंका। सदेह।

शकट—सज्ञा पुं० [सं०] १ छकड़ा। बैलगाड़ी। २ भार। बोझ। ३ शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। ४. शरीर। देह।

शकटासुर—सज्ञा पुं० [सं०] शकट नामक एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था।

शकटी—सज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी गाड़ी।

शकठ—सज्ञा पुं० [सं० शकट] मचान।

शकर—सज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर"।

शकरकद—सज्ञा पुं० [हिं० शकर+सं० कद] एक प्रकार का कद। कंदा।

शकरपारा—सज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। २. बरफी के समान चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का मीठा या नमकीन पकवान। ३ रूईदार कपड़े पर शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

शकल—सज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] १. मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३ बनावट। गढ़न। ढाँचा। ४ आकृति। स्वरूप। ५ उपाय। तरकीब। ढब।

सज्ञा पुं० [स०] १ चमड़ा। २. छाल। ३. अंश। खड। टुकड़ा।

शकाब्द—सज्ञा पुं० [सं०] राजा शालि-वाहन का चलाया हुआ शक संवत। (ईसवी सवत में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।)

शकार—सज्ञा पुं० [सं०] शकवंशीय व्यक्ति।

शकारि—सज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य।

शकुंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. विश्वामित्र के लड़के का नाम।

शकुंतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और विश्वामित्र ऋषि की पालीपोसी कन्या थी।

शकुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं।

मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं।

२. शुभ मुहूर्त या उसमें होनेवाला कार्य। ३. पक्षी। चिड़िया।

शकुनशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौरवों का मामा जो दुर्योधन का मंत्री और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था। २ पक्षी। चिड़िया। ३. एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था।

शक्कर—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा, मि० फा० शकर] १ चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्करी—संज्ञा संज्ञा [सं०] वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा।

शक्की—वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] जिसे हर बात में संदेह हो। शक करनेवाला।

शक्त—संज्ञा पुं० [सं०] शक्तिसंपन्न। समर्थ।

शक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बल। पराक्रम। ताकत। जोर। २. दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। ३. वश। अधिकार। ४ राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है। ५. वह बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। ६ न्याय के अनुसार वह संबंध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करनेवाले शब्द में होता है। ७ प्रकृति। माया। ८ तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ९ दुर्गा। भगवती। १०. गौरी। ११ लक्ष्मी। १२ एक प्रकार का शस्त्र। साँग। १३. तलवार।

शक्तिधर—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

शक्तिपूजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शाक्त। २ तांत्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शाक्तों द्वारा किया जानेवाला शक्ति का पूजन।

शक्तिमत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्तिमान् होने का भाव। ताकत।

शक्तिमान्—वि० [सं० शक्तिमत्] [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

शक्तिशाली—वि० [सं०] [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतवर।

शक्तिशील—वि० [स्त्री० शक्तिशीला] दे० "शक्तिशाली"।

शक्तिहीन—वि० [सं०] १ बलहीन। निर्बल। असमर्थ। २ नामर्द। नपुंसक।

शक्ती—संज्ञा पुं० [सं० शक्ति] अठारह मात्राओं के एक मात्रिक छंद का नाम। जिसके आदि में लघु और अंत में सगण, रगण या नगण होना है। इसकी पहिली, छठी, ग्यारहवीं और सोलहवीं मात्राएँ सदा लघु होती हैं। उ०—मनौराम आनंद के कंद को, दिया जिन हुकुम पौन के नंद को।

शक्तु—संज्ञा पुं० [सं०] सत्तू।

शक्य—वि० [सं०] १. किया जाने योग्य। संभव। क्रियात्मक। २ जिसमें शक्ति हो।

संज्ञा पुं० शब्दशक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ (व्याकरण)।

शक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्य होने का भाव या धर्म। क्रियात्मकता।

शक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ रगण का चौथा भेद जिसमें छः मात्राएँ होती हैं।

शक्रचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रप्रस्थ।

शक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।

शख्स—संज्ञा पुं० [अ०] [भाव० शख्सियत] व्यक्ति। जन।

शगल—संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यापार। कामधंधा। २. मनोविनोद।

शगुन—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] १ दे० "शकुन"। २ एक प्रकार की रस्म जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है। तिलक। टीका।

शगुनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० शगुन+इयाँ (प्रत्य०)] साधारण कोटि का ज्योतिषी।

शगूफा—संज्ञा पुं० [फा०] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३. कोई नई और विलक्षण घटना।

शचि, शची—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी।

शचीपति, शचीश—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

शजरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. वंशवृक्ष। कुर्सीनामा। वंशावली। २ पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।

शठ—वि० [सं०] १ धूर्त। चालाक। धोखेबाज। २ पाजी। लुच्चा। बदमाश। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

संज्ञा पुं० साहित्य में वह पति या नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

शठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शठ का भाव या धर्म। २ धूर्तता। ३ बदमाशी।

शत—वि० [सं०] दस का दस गुना। सौ।

संज्ञा पुं० सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००।

शतक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह। २ एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। ३ शताब्दी।

शतघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

शतदल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म।

शतद्रु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतलज नदी।

शतधा—अव्य० [सं०] १. सैकड़ों बार। २ सैकड़ों प्रकार से। ३ सैकड़ों टुकड़ों में।

शतपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ सेवती। शतपत्री। ३ मोर नामक पक्षी।

शतपथ ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण। इसके कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। इसकी माध्यंदिनी और काण्व दो शाखाएँ मिलती हैं। इसमें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तक कर्मकांड का विशद वर्णन है।

शतपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कनखजूरा। गोजर। २ च्यूँटी।

शतपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान्य।

शतभिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीसवाँ नक्षत्र जो सौ तारों का समूह है और जिसकी आकृति मंडलाकार है।

शतमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ी सतावर। २. वच। ३ नीली दूब।

शतरंज—संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० चतुरंग] दो राजाओं के युद्ध की नकल पर एक प्रकार का खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है और प्रत्येक पक्ष में सोलह मोहरे होते हैं।

शतरंजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह दरी जो कई प्रकार के रंगबिरंगे सूतों से बनी हो। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शतरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी जिसके गर्भ से स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी। पर विष्णुपुराण के अनुसार शतरूपा स्वायंभुव मनु की स्त्री थीं।

शतश.—वि० [सं०] १ सैकड़ों। २ सौ गुना।

शतांश—संज्ञा पुं० [सं०] सौ हिस्सों में से एक। १००वाँ भाग।

शतानंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कृष्ण। ४ गौतम मुनि। ५. राजा जनक के एक पुरोहित।

शतानीक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्ध पुरुष। २ पुराणानुसार चंद्रवंश के द्वितीय राजा। इनके पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक थे। ३. सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्द—वि० [सं०] सौ वर्षवाला।
 संज्ञा पुं० सौ वर्ष। शताब्दी। सदी।

शताब्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौ वर्षों का समय। २. किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।

शतायु—संज्ञा पुं० [सं० शतायुस्] वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो।

शतायुध—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोंवाला।

शतावधान—संज्ञा पुं० [सं०] वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

शतावर—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] सतावर नाम की ओषधि। सफेद मुसली।

शती—संज्ञा स्त्री० [सं० शतिन्] १. सौ का समूह। सैकड़ा, जैसे—दुर्गा सप्तशती। २ किसी संवत् या सन् का सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्षों तक का समय। शताब्दी। सदी।

शत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] रिपु। अरि। दुश्मन।

शत्रुघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] राम के सबसे छोटे भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

शत्रुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रु का भाव या धर्म। दुश्मनी। वैर भाव।

शत्रुताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शत्रुता"।

शत्रुदमन—संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

शत्रुमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुघ्न।

शत्रुसाल—वि० [सं० शत्रु+हिं० सालना] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला।

शदीद—वि० [अ०] बहुत ज्यादा। भारी। सख्त, जैसे—शदीद चोट।

शनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पहचानने की क्रिया। पहचान। २ जान पहचान। परिचय।

शनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। सूर्य से इसका अंतर ८८६०००००० मील है और सूर्य की परिक्रमा में इसको प्राय २९ वर्ष ६ महीने लगते हैं। यह पृथ्वी से लगभग नौगुना बड़ा है। इसकी परिक्रमा में ९ चंद्रमा घूम रहे हैं। २ दुर्भाग्य। अभाग्य।

शनिवार—संज्ञा पुं० [सं०] रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।

शनिश्चर—संज्ञा पुं० दे० "शनि"।

शनैः—अव्य० [सं०] धीरे आहिस्ता।

शनैश्चर—संज्ञा पुं० दे० "शनि"।

शपथ—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कसम। सौगंध। २ प्रतिज्ञा या दृढ़तापूर्वक कोई काम करने या न करने के संबंध में कथन। कौल। वचन।

शफतालू—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार बड़ा आलू। सतालू।

शबल—वि० [सं०] १. चितकबरा। २. रंगबिरंगा। बहुरंगा।

शबलित—वि० दे० "शबल"।

शब्द—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। आवाज। २ वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। ३. किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद।

शब्दग्रह—वि० [सं०] शब्द को ग्रहण करनेवाला।
 संज्ञा पुं० १. कान, जिससे शब्द का ग्रहण होता है। २. एक प्रकार का काल्पनिक बाण।

शब्दचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुप्रास नामक अलंकार। २. किसी विषय का विशिष्ट और सजीव वर्णन।

शब्दप्रमाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो।

शब्दभेद—संज्ञा पुं० [सं० शब्द+भेद] १. व्याकरण के शब्द की कोटि। २. दे० "शब्दवेध"।

शब्दभेदी—संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेधी"।

शब्दवेध—संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्य के बिना, केवल शब्द से, दिशा का ज्ञान करके उसपर निशाना लगाना।

शब्दवेधी—संज्ञा पुं० [सं० शब्दवेधिन्] १. वह जो बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारता हो। २ अर्जुन। ३. दशरथ।

शब्दशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा वह विभिन्न अर्थ व्यक्त करता है। यह तीन प्रकार की है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

शब्दशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण।

शब्दसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है।

शब्दाडंबर—संज्ञा पुं० [सं०] बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो। शब्दजाल।

शब्दातीत—वि० [सं०] जो शब्द से परे हो (ईश्वर)।

शब्दानुशासन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण।

शब्दालंकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से से लालित्य उत्पन्न किया जाय, इसी अर्थ के दूसरे शब्द को रखने से यह बात जाती रहे, जैसे—अनुप्रास आदि।

शब्दित—वि० [सं०] १. जिसमें शब्द होता हो। २ बोलता हुआ।

शम—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० शमता] १ शांति। २ अंत करण तथा बाह्य इंद्रियों का निग्रह। ३ मोक्ष। ४ उपचार। ५ साहित्य में शांत रस का स्थायी भाव। ६ क्षमा।

शमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. दमन। २. शांति। ३. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। ४. यम। ५. हिंसा।

शमलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

शमशेर—संज्ञा स्त्री० [फा०] तलवार।

शमा—संज्ञा स्त्री० [अ० शमअ] मोमबत्ती।

शमादान—संज्ञा पुं० [फा०] वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमित—वि० [सं०] १. जिसका शमन किया गया हो। २ शांत। ठहरा हुआ।

शमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात और दक्षिण भारत में पाया जाता है। यह ३० से ६० फुट तक ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है। इसकी छाल और फलियाँ ओषधि के काम आती हैं। विजयादशमी पर इसका पूजन भी करते हैं। सफेद कीकार। छिकुर। छोंकर।

शमीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षमाशील ऋषि। परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परंतु ये कुछ न बोले। इनके पुत्र शृंगी ऋषि ने इसपर क्रुद्ध होकर उन्हें सातवें दिन तक्षक के काटने से मरने का शाप दिया था।

शयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. निद्रा लेना। सोना। २ शय्या। बिछौना।

शयन आरती—संज्ञा स्त्री० [सं० शयन+आरती] देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।

शयनगृह—संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।

शयनयोधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयनागार—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान। शयनमंदिर। शयनगृह।

शयनालय—संज्ञा पुं० दे० "शयनागर"।

शयित—वि० [सं०] १ सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।

शय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिस्तर। बिछौना। बिछावन। २. पलग। खाट। खटिया।

शय्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक के उद्देश्य से संबंधियों का महापात्र और ब्राह्मण को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जादान।

शर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। नाराच। २ शरकंडा। सरई। ३ सरपत। रामशर। ४. दूध या दही की मलाई। ५. भाले का फल। ६. चिता। ७. पाँच की संख्या। ८. एक असुर का नाम।

शरण—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आश्रय। २. बचाव की जगह। ३. रक्षा। आड़। ४. घर। मकान। ५. अधीन। मातहत।

शरणगृह—संज्ञा पुं० [सं०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिये छिपकर रहते हैं।

शरणद—वि० [सं०] शरण देनेवाला। रक्षा करनेवाला।

शरणागत—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरण में आया हुआ व्यक्ति। २ शिष्य। चेला।

शरणार्थी—संज्ञा पुं० [सं० शरणार्थिन्] १. शरण माँगनेवाला। अपनी रक्षा की प्रार्थना करनेवाला। २ विपत्ति आदि के कारण किसी दूसरे स्थान से भागकर आया हुआ।

शरणालय—संज्ञा पुं० दे० "शरणगृह"।

शरणी—वि० स्त्री० [सं० शरण] शरण देनेवाली।

शरण्य—वि० [सं०] शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला।

शरत—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्त" और "शरत्"।

शरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शर का भाव। २. तीरंदाजी।

शरतिया—क्रि० वि० दे० "शर्तिया"।

शरत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है। २ वर्ष। साल।

शरत्काल—संज्ञा पुं० दे० "शरत् १"।

शरद—संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

शरदपूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शरद+पूर्णिमा] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद पूनो।

शरदचंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शरच्चंद्र] शरद् ऋतु का चद्रमा।

शरद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

शरपट्टा—संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुंख—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरफोंका। २. तीर में लगा हुआ पंख।

शरबत—संज्ञा पुं० [अ०] १. पीने की वस्तु। रस। २. पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़। ३. चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क।

शरबती—संज्ञा पुं० [अ० शरबत+ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का हल्का पीला रंग। २. एक प्रकार का नीबू। ३. एक प्रकार का नगीना। ४. एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

शरभंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन महर्षि। वनवास के समय रामचद्र इनके दर्शन करने गए थे।

शरभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ टिड्डी। २. हाथी का बच्चा। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ ऊँट। ५. एक प्रकार का हिरण। ६. एक प्रकार का पक्षी। ७. विष्णु। ८ शेर। ९. एक वृक्ष का नाम। शशिकला। १०. दोहे का एक भेद।

शरम—संज्ञा स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया।

मुहा०—शरम से गड़ना या पानी पानी होना = बहुत लज्जित होना।

२ लिहाज। संकोच। ३. प्रतिष्ठा। इज्जत।

शरमाऊ—वि० दे० "शरमीला"।

शरमाना—क्रि० अ० [फा० शर्म से हिं० ना० धा०] शर्मिंदा होना। लज्जित होना।

क्रि० स० शर्मिंदा करना। लज्जित करना।

शरमिंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] शरमिंदा होने का भाव। लाज।

शरमिंदा—वि० [फा०] लज्जित।

शरमीला—वि० [फा० शर्म+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। लज्जालु।

शराकत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीक या संमिलित होने का भाव। २ साझा। हिस्सेदारी।

शराफत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता।

शराब—संज्ञा स्त्री० [अ०] मदिरा। मद्य।

शराबखाना—संज्ञा पुं० [अ० शराब+फा० खाना] वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोर—संज्ञा पुं० दे० "शराबी"।

शराबखोरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मदिरापान।

शराबी—संज्ञा पुं० [अ० शराब+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो। मद्यप।

शराबोर—वि० [फा०] जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ। लथपथ। तर-बतर।

शरारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पाजीपन। दुष्टता।

शराश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तरकश।

शरासन—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष। कमान।

शरिष्ठ㊟—वि० दे० "श्रेष्ठ"।

शरीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरीक—वि० [अ०] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. साथी। २ साझी। हिस्सेदार। ३. सहायक। मददगार।

शरीफ—संज्ञा पुं० [अ०] १ कुलीन मनुष्य। २. सभ्य पुरुष। भला मानुष।

वि० पाक। पवित्र।

शरीफा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल या सीताफल] १. मझोले आकार का एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २. इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोल होता है। श्रीफल। सीताफल।

शरीर—संज्ञा पुं० [सं०] देह। तन। बदन। जिस्म। काया।

वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] दुष्ट। नटखट।

शरीरत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरपात—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीररक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजा आदि के साथ उसकी रक्षा के लिये रहता हो। अंगरक्षक।

शरीरशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है। शरीरविज्ञान।

शरीरांत—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरार्पण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य के निमित्त अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।

शरीरी—संज्ञा पुं० [सं० शरीरिन्] १. शरीरवाला। शरीरवान्। २. आत्मा। जीव। ३. प्राणी। जीवधारी।

शर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्कर। चीनी। खाँड। २. बालू का कण।

शर्करी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वृत्ति।

शर्ट—संज्ञा स्त्री० [अँ०] कमीज।

शर्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह बाजी जिसमें हारजीत के अनुसार कुछ लेनदेन भी हो। दाँव। बदान। २. किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित नियम या कार्य।

शर्तिया—क्रि० वि० [अ०] शर्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।

वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।

शर्म—संज्ञा स्त्री० दे० "शरम"।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख। आनंद। २ गृह। घर।

शर्मद—वि० [सं०] [स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।

शर्मा—संज्ञा पुं० [सं० शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि।

शर्मिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की सखी थी।

शर्यणावत—संज्ञा पुं० [सं०] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर।

शर्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात। रात्रि। निशा। २ संध्या। शाम। ३. स्त्री।

शल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंस के एक मल्ल का नाम। उ०—और मल्ल मोर शल तो शल बहुत गए सब भाज।—सूर०। २. भाला। ३ भाला।

शलगम—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

शलजम—संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक कंद।

शलभ—संज्ञा सज्ञा पुं० [सं०] १. पतंग। फतिंगा। २. टीड़ी। टिड्डी। शरभ। ३ छप्पय के ३१वें भेद का नाम।

शलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे आदि की लंबी सलाई। सलाख। सीख। २. बाण। तीर। ३ जुआ खेलने का पासा।

शलाख—संज्ञा स्त्री० दे० "सलाख"।

शलातुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवासस्थान था।

शलूका—संज्ञा पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर में चुभनेवाला पदार्थ। २. भाला। ३. बाण। ४. शलाका। ५. साँग। ६. दुर्वाक्य। ७. मद्र देश के राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्लयुद्ध में भीमसेन से हार गए थे। ८. छप्पय के ५६वें भेद का नाम।

शल्यकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] साही (जंतु)।

शल्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीरफाड़ का इलाज। शस्त्रचिकित्सा।

शल्ल—वि० [अ०] शिथिल। सुन्न (हाथ पैर)।

शल्लकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साही नामक जंतु। २. सलई का वृक्ष।

शल्व—संज्ञा पुं० दे० "शाल्व"।

शव—संज्ञा पुं० [सं०] मृत शरीर। लाश।

शवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शव का भाव। लाशपन। २. मुरदापन।

शवदाह—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया।

शवभस्म—संज्ञा पुं० [सं०] चिता की भस्म।

शवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी। २. शवर जाति की स्त्री।

शवल—वि० दे० "शबल"।

शश—संज्ञा पुं० [सं०] १ खरहा। खरगोश। २. चंद्रमा का लांछन या कलंक। ३. कामशास्त्र में मनुष्य के चार भेदों में से एक।

शशक—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश।

शशधर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा। उ०—झरते हैं शशधर से क्षण क्षण पृथ्वी के अधरों पर निःस्वन। ज्योतिर्मय प्राणों के चुंबन, संजीवन।—तुलसीदास।

शशशृंग—संज्ञा पुं० [सं०] वैसा ही असंभव कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है।

शशांक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शशा—संज्ञा पुं० दे० "शश"।

शशि—संज्ञा पुं० [सं० शशिन्] १. चंद्रमा। इंदु। २ छप्पय के ५४ वें भेद का नाम। रगण के दूसरे भेद (ऽ।ऽ) की संज्ञा। ३. एक की संख्या।

शशिकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा की कला । २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण के बाद एक सगण होता है। उ०—वदत चरण, रति सुहरि अनुपला। जिमि सित पक्ष, नित बढ़त शशिकला।

शशिकांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रकांत-मणि। २ कोई। कुमुद।

शशिकुल—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंश।

शशिज—संज्ञा पुं० [सं०] बुध ग्रह।

शशिधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

शशिप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

शशिमाल—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शशिभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

शशिमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का घेरा या मडल। चंद्रमंडल।

शशिमुख—वि० [सं०] [स्त्री० शशिमुखी] (वह) जिसका मुख चद्रमा के सदृश सुंदर हो।

शशिवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नगण और एक ही सगण कुल ६ वर्णों का एक वृत्त। उ०—नय धरु एका। न भजु अनेका॥ गहु पन ख सो। शशिवदना सो॥ चौवसा। चहरसा।

वि० स्त्री० शशिमुखी।

शशिशाला—संज्ञा स्त्री० [सं० शशि+शाला ?] वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हुए हों। शीशमहल।

शशिशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शशिहीरा—संज्ञा पुं० [सं० शशि+हिं० हीरा] चद्रकांत मणि।

शशी—संज्ञा पुं० दे० "शशि"।

शसा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा।

शसि, शसी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शशि"।

शस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वे हाथ से पकड़कर प्रयोग किए जानेवाले उपकरण जिनसे किसी को काटा या मारा जाय। हथियार। २. कार्यसिद्धि का अच्छा उपाय।

शस्त्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] फोड़ों आदि की चीरफाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।

शस्त्रगृह—संज्ञा पुं० दे० "शस्त्रागार"।

शस्त्रजीवी—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रधारी—वि० [सं० शस्त्रधारिन् [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

शस्त्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हथियार चलाने की विद्या। २ यजुर्वेद, जिसमें युद्ध करने की और शस्त्र चलाने की विधियाँ हैं।

शस्त्रशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त्रागार"।

शस्त्रागार—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला।

शस्त्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. नई घास। २. खेती। फसल। ३. वृक्षों का फल। ४. अन्न।

शहंशाह—संज्ञा पुं० दे० "शाहंशाह"।

शह—संज्ञा पुं० [फा० शाह का सक्षिप्त रूप] १ बादशाह। २ वर। दूल्हा।

वि० बढ़ाचढ़ा। श्रेष्ठतर।

संज्ञा स्त्री० १ शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किश्त। २ गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव।

शहजादा—संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

शहजोर—वि० [फा०] बली। बलवान्।

शहत—संज्ञा पुं० दे० "शहद"।

शहतीर—संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा।

शहतूत—संज्ञा पुं० दे० "तूत"।

शहद—संज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ जो मधुमक्खियाँ फूलों के मकरद से सग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं।

मुहा०—शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिए रहना (व्यंग्य)।

शहना—संज्ञा पुं० [अ० शिहन] १ शासक। २ कोतवाल। ३. कर सग्रह करनेवाला।

शहनाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नफीरी नामक बाजा। २ दे० "रौशनचौकी"।

शहबाला—संज्ञा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ जाता है।

शहमात—संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

शहर—संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्यों की बड़ी बस्ती। नगर। पुर।

शहरपनाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगरकोट।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर का। २. नगरनिवासी। नागरिक।

शहसवार—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो घोड़े पर अच्छी तरह सवारी कर सकता हो। अच्छा सवार। सवारी में चतुर।

शहादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। साक्षी। २. सबूत। प्रमाण। ३. शहीद होना।

शहाना—संज्ञा पुं० [देश० या फा० शाह ?] सपूर्ण जाति का एक राग।

वि० [फा०] [स्त्री० शहानी] १. शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहिजादा(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

शहीद—संज्ञा पुं० [अ०] धर्म या किसी शुभ कार्य के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति।

शांकर—वि० [सं०] १. शकर संबंधी। २ शंकराचार्य का; जैसे, शांकर भाष्य, शांकर मत।

संज्ञा पुं० एक छंद का नाम।

शांडिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्मृतिकार मुनि जो भक्तिसूत्र के कर्ता माने जाते हैं।

शांत—वि० [सं०] १. जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। रुका हुआ। बंद। २. मौन। चुप। ३ जिसमें क्रोध आदि न रह गया हो। स्थिर। ४. धीर। सौम्य। गंभीर। ५ उत्साह या तत्परतारहित। ६ स्वस्थ चित्त। ७ रागादिशून्य। जितेंद्रिय। ८. विघ्नबाधारहित। ९. नष्ट। मिटा हुआ। १० मृत। मरा हुआ।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थायी भाव निर्वेद है। इस रस में ससार की दुःखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलंबन होता है।

शांतता—संज्ञा स्त्री० दे० "शांति"।

शांतनु—संज्ञा पुं० [सं०] द्वापर युग के इक्कीसवें चक्रवर्ती राजा।

शांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यशृंग की पत्नी। २ रेणुका।

शांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेग, क्षोभ, क्रिया का अभाव। २ स्तब्धता। सन्नाटा। ३ चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। ४ रोग आदि का दूर होना। ५. धीरता।

६. अमंगल दूर करने का उपचार। ७. वासनाओं से छुटकारा। विराग। ८. दुर्गा। ९ मृत्यु। मरण।

शांतिकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह आदि से होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार।

शांतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि सब लोगों को यथासाध्य शांतिपूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई झगड़े और युद्ध आदि का अंत हो जाना चाहिए।

शांतिवादी—संज्ञा पुं० [सं० शांतिवादिन्] वह जो शांतिवाद का समर्थक और पक्षपाती हो।

शांभव—वि० [सं०] शंभु संबंधी। शिव का।

शांभवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २. नीली दूब।

शाइस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ शिष्टता। सभ्यता। २ भलमनसी। आदमियत।

शाइस्ता—वि० [फ़ा० शाइस्त] १ शिष्ट। सभ्य। तहज़ीबवाला। २ विनीत। नम्र।

शाकंभरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिवा। दुर्गा।

शाक—संज्ञा पुं० [सं०] भाजी। तरकारी। साग।

वि० [सं०] शक जाति संबंधी।

शाकटायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि ने किया है। २. एक अर्वाचीन वैयाकरण।

शाकद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभागों या द्वीपों में से एक। २ ईरान और तुर्किस्तान के बीच में पड़नेवाला वह प्रदेश जिसमें आर्य और शक बसते थे।

शाकद्वीपीय—वि० [सं०] शाकद्वीप का।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद। मग ब्राह्मण।

शाकल—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंड। टुकड़ा। २ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३ मद्र देश का एक नगर।

शाकाहार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] १ शाक आदि का भोजन। २ निरामिष भोजन। ३ मांसाहार का उलटा।

शाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाइन। चुड़ैल।

शाकुंतिक—संज्ञा पुं० [सं०] चिड़ीमार। बहेलिया।

शाकुन—वि० [सं०] १. पक्षी संबंधी। चिड़ियों का। २. शुभाशुभ लक्षण संबंधी। सगुनवाला।

संज्ञा पुं० १. चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया। २ शकुन। सगुन।

शाक्त—वि० [सं०] शक्ति संबंधी।

संज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तंत्र-पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

शाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नेपाल की तराई में बसती थी।

शाक्यमुनि, शाक्यसिंह—संज्ञा पुं० [सं०] गौतमबुद्ध।

शाख—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ टहनी। डाल।

मुहा०—शाख निकालना = दोष निकालना।

२ लगा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक। ३ दे० "शाखा"।

शाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेड़ की टहनी। डाल। २ विभाग। हिस्सा। ३ किसी मूल वस्तु से निकले हुए विकार या अंग। प्रकार। ४. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद ५ अंग। अवयव। ६ हाथ और पैर।

शाखामृग—संज्ञा पुं० [सं०] वानर। बंदर।

शाखी—वि० [सं० शाखिन्] शाखाओं-वाला।

संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

शाखोच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वंशावली का कथन।

शागिर्द—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० शागिर्दगी] किसी से विद्या प्राप्त करनेवाला। शिष्य।

शाठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] शठता।

शाण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाणित] १ सान रखने का पत्थर। कुरंड। २ पत्थर। ३ कसौटी।

शातवाहन—संज्ञा पुं० दे० "शालिवाहन"।

शातिर—संज्ञा पुं० [अ०] १ शतरंज का खेलाड़ी। २ धूर्त। चालाक।

शादियाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ खुशी का बाजा। आनंद और मंगलसूचक वाद्य। २ बधावा। बधाई।

शादी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खुशी। आनंद। २ आनंदोत्सव। ३ विवाह। ब्याह।

शाद्वल—वि० [सं०] हरी हरी घास से ढका हुआ। हराभरा।

संज्ञा पुं० १ हरी घास। दूब। २. बैल। ३ रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

शान—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १ तड़क भड़क। ठाटबाट। सजावट। २ गर्वीली चेष्टा। ठसक। ३ भव्यता। विशालता। ४ शक्ति। करामात। विभूति। ५. प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—किसी की शान में = किसी बड़े के संबंध में।

शान शौकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] तड़क भड़क। ठाटबाट। तैयारी। सजावट।

शाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. अहित कामनासूचक शब्द। कोसना। २ धिक्कार। फटकार। भर्त्सना।

शापग्रस्त—वि० दे० "शापित"।

शापनाⓅ—क्रि० स० [सं० शाप से हिं० ना० धा०] शाप देना।

शापित—वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो। शापग्रस्त।

शाबर भाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्यवस्था।

शाबरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शबरों की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश—अव्य० [फ़ा०] [संज्ञा शाबाशी] एक प्रशंसासूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो।

शाब्द—वि० [सं०] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्दसंबंधी। शब्द का। २ शब्द विशेष पर निर्भर।

शाब्दिक—वि० [सं०] १ शब्द संबंधी। २ भाव पर निर्भर न रहकर केवल शब्द पर निर्भर रहनेवाला।

शाब्दी—वि० स्त्री० [सं०] १. शब्द संबंधिनी। २ केवल शब्दविशेष पर निर्भर रहनेवाली।

शाब्दी व्यंजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंजना जो शब्दविशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो, अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यंजना का उलटा।

शाम—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] साँझ। संध्या।

Ⓟवि० संज्ञा पुं० दे० "श्याम"।

संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।

संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है। सीरिया।

शामकर्ण—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] वह घोड़ा जिसके कान श्याम रंग के हों।

शामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विपत्ति। आफत। २. दुर्दशा। दुरवस्था। ३. दुर्भाग्य।

मुहा०—शामत का घेरा या मारा = जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। शामत सवार होना या सिर पर खेलना = दुर्दशा का समय आना।

शामियाना—संज्ञा पुं० [फा० शाम ?] एक प्रकार का बड़ा तंबू।

शामिल—वि० [फा०] जो साथ में हो। मिला हुआ। संमिलित।

शामी—संज्ञा स्त्री० [देश०] धातु का वह छल्ला जो लकड़ियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है। शाम।

वि० [फा० शाम (देश)] शाम देश का।

शायक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। तलवार।

शायद—अव्य० [फा०] कदाचित्। संभव है।

शायर—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा] कवि।

शायरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कविताएँ रचना। २ काव्य।

शायित—वि० [सं०] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ। २. गिरा हुआ। पतित।

शायी—वि० [सं० शायिन्] सोनेवाला।

शारंग—संज्ञा पुं० दे० "सारंग"।

शारंगपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ कृष्ण। ३. राम।

शारद—वि० [सं०] शरत्काल का। शरत्काल संबंधी।

शारदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. प्राचीन काल की एक लिपि।

शारदीय—वि० [सं०] शरत्काल का। शरत्काल संबंधी।

शारदीय महापूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत्काल में होनेवाली नवरात्र की दुर्गा-पूजा।

शारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना (चिड़िया)।

शारिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनंतमूल। सालसा। २. जवासा। धमासा।

शारीर—वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शारीरक भाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य का किया हुआ वेदांतसूत्र का भाष्य।

शारीरकसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास का बनाया वेदांतसूत्र।

शारीर विज्ञान (शास्त्र)—संज्ञा पुं० [सं० शारीर+विज्ञान] १. वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. दे० "शरीर-शास्त्र"।

शारीरिक—वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शार्ङ्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष।

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शार्दूल—संज्ञा पुं० [सं०] १. चीता। बाघ। २. सिंह। ३. राक्षस। ४. शरभ नामक जंतु। ५. एक प्रकार का पक्षी। ६. दोहे का एक भेद। ७. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, रगण, और मगण होते हैं। उ०—मौसों जो सर में प्रवीण लखिए, वीर सो शार्दूलै। युद्धै पीठ दिखाय गर्व कर जो, मूढ़ सोई भूलै॥

वि० सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

शार्दूलललित—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण और सगण होते हैं। उ०—काहे गे वन राम सानुज वधू, वैदेहि सहिता। राजा की सुनि वाणि हे सुत विभू, शार्दूल-ललिता॥

शार्दूलविक्रीडित—संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और अंत्य गुरु रहता है। उ०—शक्री आदि अकथ्य जासु महिमा, राखे बचा पीड़िते। संहार्यो जनलागि दुष्ट असुरै-शार्दूलविक्रीडिते॥

शालंकि—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि ऋषि।

शाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा और विशाल वृक्ष। साखू।

संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।

शालग्राम—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की काले पत्थर की मूर्ति।

शालपर्णी—संज्ञा स्त्री० दे० "सरिवन"।

शाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर। गृह। मकान। २. जगह। स्थान, जैसे—पाठ-शाला। ३. इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बननेवाला एक वृत्त।

शालातुरीय—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि ऋषि।

शालि—संज्ञा पुं० [सं०] १. धान। उ०—स्वर्ण शालियों की कलमें थीं दूर दूर तक फैल रही।—कामायनी। २. जड़हन धान। ३. बासमती चावल। ४. गन्ना। पौंढ़ा।

शालिधान—संज्ञा पुं० [सं० शालिधान्य] बासमती चावल।

शालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक मगण, दो तगण और दो अंत्य गुरु कुल ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त। उ०—आठों जामा, तोहि मैं नित्य गाऊँ। जातें शांती शालिनी मुक्ति पाऊँ॥

शालिवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] एक शक राजा जिसने "शक" संवत् चलाया था।

शालिहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २ शालिहोत्री की विद्या। अश्वविद्या।

शालिहोत्री—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो पशुओं आदि की चिकित्सा करता हो। अश्ववैद्य।

शालीन—वि० [सं०] [भाव० शालीनता] १ विनीत। नम्र। २. जिसे लज्जा आती हो। ३. सदृश। समान। तुल्य। ४. अच्छे आचार विचारवाला। ५. धनवान्। अमीर ६. दक्ष। चतुर।

शाल्मलि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेमल का पेड़। २ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ३ एक नरक का नाम।

शाल्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभराज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे। २ एक प्राचीन देश का नाम।

शावक—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा, विशेषत. पशु या पक्षी का बच्चा।

शाश्वत—वि० [सं०] जो सदा स्थायी रहे। कभी नष्ट न हो। नित्य।

शाश्वतिक—वि० [सं०] शाश्वत। नित्य।

शासक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो। २ हाकिम।

शासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ आज्ञा। आदेश। हुक्म। २. अधिकार या वश में

रखना । ३. हुकूमत । सरकार । ४. लिखित प्रतिज्ञा । पट्टा । ठीका । ५. राजा की दान की हुई भूमि । मुआफी । ६. वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय । ७. शास्त्र । ८. इंद्रियनिग्रह । ९. दंड । सजा ।

शासनिक—वि० [सं०] १. शासन संबंधी । शासन का । २ शासन विभाग का ।

शासित—वि० [सं०] [स्त्री० शासिता] १. जिसका शासन किया जाय । जिस-पर शासन हो । २. जिसे दंड दिया जाय ।

शास्ता—संज्ञा पुं० [सं० शास्तृ] १. शासक । २. राजा । ३. पिता । ४. उपाध्याय । गुरु ।

शास्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शासन । २. दंड । सजा ।

शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं । इनकी संख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और अर्थशास्त्र । २. किसी विशिष्ट विषय के संबंध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो ।

शास्त्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने शास्त्र की रचना की हो । शास्त्र बनानेवाला ।

शास्त्रज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्री—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रिन्] १. शास्त्रज्ञ । २. वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो ।

शास्त्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी विषय को शास्त्र का रूप देना ।

शास्त्रीय—वि० [सं०] १. शास्त्रसंबंधी । २ शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार ।

शास्त्रोक्त—वि० [सं०] शास्त्रों में कहा हुआ ।

शाहंशाह—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह । महाराजाधिराज ।

शाहंशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शाहंशाह का कार्य या भाव । २. व्यवहार का खरापन (बोलचाल) ।

शाह—संज्ञा पुं० [फा०] १. महाराज । बादशाह । २. मुसलमान फकीरों की उपाधि ।

वि० बड़ा । भारी । महान् ।

शाहखर्च—वि० [फा०] [संज्ञा शाहखर्ची] बहुत खर्च करनेवाला ।

शाहजादा—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लड़का । महाराज-कुमार ।

शाहाना—वि० [फा०] राजसी ।

संज्ञा पुं० १. विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है । जामा । २. दे० "शहाना" (राग) ।

शाही—वि० [फा०] शाहों या बादशाहों का ।

शिंगरफ—संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर" ।

शिंजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शिंजित] १. मधुर ध्वनि । २. आभूषणों की झनकार ।

वि० मधुर ध्वनि करनेवाला ।

शिंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नूपुर । पैंजनी । २ धनुष की डोरी । उ०—थी किस अनंग के धनु की वह शिथिल शिंजिनी दुहरी—आँसू । ३. अँगूठी ।

शिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छीमी । फली । बौड़ी । २. सेम । ३ बौंच । केवाँच ।

शिंबी धान्य—संज्ञा पुं० [सं०] द्विदल अन्न । दाल ।

शिंशपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शीशम का पेड़ । २. अशोक वृक्ष ।

शिंशुपा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शिंशपा" ।

शिंशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] सूँस (जलजंतु) ।

शिकंजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र । २ एक यंत्र जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं । ३ अपराधियों को कठोर दंड देने के लिये एक प्राचीन यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं ।

मुहा०—शिकंजे में खिंचवाना=घोर यंत्रणा दिलाना । साँसत कराना । ४. पकड़ । कब्जा ।

मुहा०—शिकंजे में आना=पकड़ में आना । कब्जे में आना ।

शिकन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी । सिलवट । बल । सिकुड़न ।

शिकम—संज्ञा पुं० [फा०] पेट । उदर ।

शिकमी काश्तकार—संज्ञा पुं० [फा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो ।

शिकरम—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की गाड़ी ।

शिकवा—संज्ञा पुं० [फा०] शिकायत । गिला ।

शिकस्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] पराजय । हार ।

शिकायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई करना । गिला । चुगली । २. उपालंभ । उलाहना । ३. रोग । बीमारी ।

शिकार—संज्ञा पुं० [फा०] १. जंगली पशुओं को मारना । आखेट । मृगया । अहेर । २. वह जानवर जो मारा गया हो । ३. गोश्त । मांस । ४. आहार । भक्ष्य । ५. कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने से बहुत लाभ हो । असामी ।

मुहा०—शिकार खेलना = शिकार करना । किसी का शिकार होना=(१) किसी के द्वारा मारा जाना । (२) वश में आना । फँसना ।

शिकारगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान ।

शिकारी—वि० [फा०] १ शिकार करनेवाला । २. शिकार में काम आने वाला ।

शिक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा देनेवाला । सिखानेवाला । गुरु । उस्ताद । अध्यापक ।

शिक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] तालीम । शिक्षा ।

शिक्षणालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाय । विद्यालय ।

शिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया । सीख । तालीम । २ गुरु के निकट विद्या का अभ्यास । ३ उपदेश । मंत्र । सलाह । ४ छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है । ५. शासन । दबाव । ६. सबक । दंड ।

शिक्षाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमनस्वरूप कार्य रोका जाता है (केशव) ।

शिक्षागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ाने-वाला । गुरु ।

शिक्षार्थी—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षार्थिन्] विद्यार्थी ।

शिक्षालय—संज्ञा पुं० [सं०] विद्यालय ।

शिक्षाविभाग—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+

विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।

शिक्षित—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षिता] १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. सिखाया हुआ (पशु)। ३ विद्वान्।

शिखंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। उ०—कुटिल कच भुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड।—सूर०। २. चोटी। शिखा। चुटिया। उ०—शोभित केश विचित्र भाँति दुति शिखि शिखंड हरनी।—सूर०। ३ काकपक्ष। काकुल।

शिखंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोटी। शिखा।

शिखंडिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मोरनी। मयूरी। २ द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।

शिखंडी—संज्ञा पुं० [सं० शिखंडिन्] १ मोर। मयूर पक्षी। २ मुर्गा। ३. वाण। ४ विष्णु। ५. कृष्ण। ६ शिव। ७ शिखा। बालों की चोटी। उ०—शिखंडी शीश मुख मुरली बजावत बन्यो तिलक उर चंदन।—सूर०। ८ दे० "शिखंडिनी२"।

शिखⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"। उ०—फूली फिरत रोहिणी मैया नख शिख कर सिंगार।—सूर०।

शिखर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरा। चोटी। २ पहाड़ की चोटी। ३ मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा। कगूरा। कलश। ४ मंडप। गुंबद। ५ जैनियों का एक तीर्थ। ६. एक अस्त्र का नाम। ७ एक रत्न जो अनार के दाने के समान सफेद और लाल होता है। उ०—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन शिखर हियो विहरान।—सूर०।

शिखरन—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

शिखरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रसाल। २ नारी रत्न। स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३ रोमावली। ४ दही और चीनी का रस। शिखरन। ५ सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और अंत में लघु गुरु होता है। उ०—यमी को शंभू सों निज मदन जीत्यो भट महा। जबै कीन्हें ध्याना, गिरि शिखरिनी के तट जहाँ॥

शिखरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी।

शिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चोटी। चुटैया।

यौ०—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के चिह्न हैं।

२ पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलँगी। ३. आग की लपट। ज्वाला। ४. दीपक की लौ। टेम। ५ प्रकाश की किरण। ६. नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७. चोटी। शिखर। ८. शाखा। डाली। ९. एक विषम वृत्त जिसके विषम चरणों में २८ और सम में ३० लघुगुरु होते हैं। उ०—नरधन जग महँ नित उठ नगपति कर जस बरनत अति हित सों। तन मन धन सन जपत रहत तिहिं कर भजन करत मल अति चित सों।

शिखि—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिखिनी] १. मोर। मयूर। २ कामदेव। ३ अग्नि। ४ तीन की संख्या।

शिखिध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ धूम्र। धूआँ। २ कार्तिकेय। ३ मयूरध्वज।

शिखी—वि० [सं० शिखिन्] [स्त्री० शिखिनी] शिखावाला। चोटीवाला।

संज्ञा पुं० १ मोर। मयूर। उ०—कुटिल कच भू तिलक रेखा सीस शिखी शिखंड।—सूर०। २ मुर्गा। ३ बैल। साँड़। ४. घोड़ा। ५ अग्नि। ६ तीन की संख्या। ७ पुच्छल तारा। केतु। ८ वाण। तीर।

शिगूफा—संज्ञा पुं० दे० "शगूफा"।

शिगोफा—संज्ञा पुं० दे० "शगूफा"। उ०—बस वह एक न एक शिगोफा छोड़ा करते हैं।—कायाकल्प।

शितⓅ—वि० दे० "सित"।

शिताब—क्रि० वि० [फा०] जल्द। शीघ्र।

शिताबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शीघ्रता। जल्दी। २ तेजी। हड़बड़ी।

शिति—वि० [सं०] १ सफेद। शुक्ल। श्वेत। २ काला। कृष्ण।

शितिकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुर्गाबी। जलकाक। २ पपीहा। चातक। ३ मोर। मयूर। ४ शिव। महादेव।

शिथिल—वि० [सं०] १ जो कसा या जकड़ा न हो। ढीला। २ सुस्त। मंद। धीमा। ३ थका हुआ। श्रांत। ४ जो पूरा मुस्तैद न हो। आलस्ययुक्त। ५ जिसकी पूरी पाबंदी न हो।

शिथिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढीलापन। ढिलाई। २ थकावट। थकान। ३ मुस्तैदी का न होना। आलस्य। ४ नियमपालन की कड़ाई का न होना। ५. वाक्यों में शब्दों का परस्पर गठा हुआ अर्थसंबंध न होना।

शिथिलाईⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "शिथिलता"।

शिथिलानाⓅ—क्रि० अ० [सं० शिथिल से हिं० ना० धा०] १. शिथिल होना। ढीला पड़ना २. थकना। उ०—करत सिंगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने।—सूर०।

शिथिलित—वि० [सं०] १. जो शिथिल हो गया हो। २ थका माँदा। सुस्त।

शिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी। जोर। उग्रता। २ अधिकता। ज्यादती।

शिनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। पहचान। २ परख। तमीज।

शिया—संज्ञा पुं० [अ० शीया] मुहम्मद साहब के दामाद हजरत अली को पैगंबर का उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।

शिर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. सिर। कपाल। खोपड़ी। २ मस्तक। माथा। ३ सिरा। चोटी। ४ शिखर।

शिरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संमिलित अधिकार। साझा। २ किसी काम या व्यवसाय में शामिल होना।

शिरत्रान—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"। उ०—टूटत भुजा पताका छत्र रथ चाप चक्र शिरत्रान।—सूर०।

शिरधर—संज्ञा पुं० दे० "सिरधरू"।

शिरनेत—संज्ञा पुं० [देश०] १ गढ़वाल या श्रीनगर के आसपास का प्रदेश। २ क्षत्रियों की एक शाखा।

शिरफूल—संज्ञा पुं० दे० "सीसफूल"।

शिरमौर—संज्ञा पुं० [सं०] शिरस्+मुकुट] १ शिरोभूषण। मुकुट। २ प्रधान। श्रेष्ठ व्यक्ति। मुख्य व्यक्ति।

शिरस्त्राण—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूँड़। खोद।

शिरहनⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+सं० आधान] १ उसीसा। तकिया। सिरहाना।

शिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्त की छोटी नाड़ी । २. पानी का सोता या धारा ।

शिरीष—संज्ञा पुं० [सं०] सिरस (पेड़) । उ०—उस मृदुल शिरीष सुमन सा, मैं प्रात धूल में मिलता ।—आँसू ।

शिरोधार्य—वि० [सं०] सिर पर धरने या आदरपूर्वक मानने के योग्य ।

शिरोभूषण(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना । २ मुकुट । ३. श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर पर का रत्न । चूड़ामणि । २ श्रेष्ठ व्यक्ति । शिरमौर ।

शिरोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] सिर के बाल ।

शिल—संज्ञा पुं० दे० "उंछ" ।
संज्ञा स्त्री० दे० "शिला" ।

शिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाषाण । पत्थर । २. पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा । चट्टान । ३ शिलाजीत । ४ पत्थर की ककड़ी अथवा बटिया । ५ उंछ वृत्ति ।

शिलाजतु—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत ।

शिलाजीत—संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रंग की एक पौष्टिक ओषधि जो शिलाओं का रस है । मोमियाई ।

शिलादित्य—संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्द्धन" ।

शिलान्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन आदि की नींव का पत्थर रखना । २ सिर के बाल ।

शिलापट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर की चट्टान ।

शिलारस—संज्ञा पुं० [सं०] लोहबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद ।

शिलारोपण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "शिलान्यास" ।

शिलालेख—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख ।

शिलावृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ओले की वर्षा ।

शिलाहरि—संज्ञा पुं० [सं०] शालग्राम की मूर्ति । उ०—भृगु मुनि कहा शिलाहरि धोई । करहु पान कछु दोष न होई ।—विश्रामसागर ।

शिलीपद—संज्ञा पुं० दे० "श्लीपद" ।

शिलीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ भ्रमर । भौंरा । उ०—कुंचित अलक सिलीमुख मानो लै मकरंद निदीन ।—सूर० । २ बाण ।

शिल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम । दस्तकारी । कारीगरी । २. कलासंबंधी व्यवसाय ।

शिल्पकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से चीजें बनाने की कला । कारीगरी । दस्तकारी ।

शिल्पकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिल्पी । कारीगर । २ राज । मेमार ।

शिल्पविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "शिल्पकला" ।

शिल्पशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्प संबंधी शास्त्र । २ गृहनिर्माण का शास्त्र ।

शिल्पी—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पिन्] १ शिल्पकार । कारीगर । २ राज । थवई ।

शिव—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव । उमापति । २ परमेश्वर । भगवान् । ३. देव । ४ रुद्र । काल । ५ लिंग । ६. मंगल । कल्याण । क्षेम । ७ वसु । ८ मोक्ष । ९. वेद । १० ग्यारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में सगण, रगण या नगण रहता है तथा तीसरी, छठी और नवीं मात्राएँ सदा लघु रहती हैं । उ०—हैं सुभक्त रंजना । सर्वताप भंजना । ११. जल । १२. पारा ।

शिवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिव का भाव या धर्म । उ०—शिव शिवता इनहीं सों लही ।—सूर० । २ मोक्ष ।

शिवनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश ।

शिवनिर्माल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पदार्थ जो शिवजी को अर्पित किया गया हो । (ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है ।) २. परम त्याज्य वस्तु ।

शिवपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक । यह शिवप्रोक्त माना जाता है और इसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है ।

शिवपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी ।

शिवरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन बदी चतुर्दशी । शिव चतुर्दशी ।

शिवरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिव+हिं० रानी] पार्वती ।

शिवलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है ।

शिवलिंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० लिंगिनी] एक लता जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है ।

शिवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास ।

शिववृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी की सवारी का बैल । नंदी ।

शिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. पार्वती । गिरिजा । ३ मुक्ति । मोक्ष । ४. शृगाली । सियारिन ।

शिवालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिवजी का मंदिर । २ कोई देवमंदिर ।

शिवाला—संज्ञा पुं० [सं० शिवालय] १. शिवजी का मंदिर । शिवालय । २. देवमंदिर ।

शिवि—संज्ञा पुं० [सं०] राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा जो अपनी दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं ।

शिविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पालकी । डोली ।

शिविर—संज्ञा पुं० [सं०] १ डेरा । खेमा । निवेश । २ फौज के ठहरने का पड़ाव । छावनी । ३ किला । कोट ।

शिशिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है । २. जाड़ा । शीतकाल । ३ हिम ।

शिशिरांत—संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु ।

शिशु—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा बच्चा, विशेषत आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा ।

शिशुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बचपन । शिशुत्व ।

शिशुताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शिशुता" ।

शिशुत्व—संज्ञा पुं० दे० "शिशुता" ।

शिशुनाग—संज्ञा पुं० दे० "शैशुनाग" ।

शिशुपन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिशुता" ।

शिशुपाल—संज्ञा पुं० [सं०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

शिशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूँस नामक जलजंतु । २ नक्षत्रमंडल । ३ कृष्ण ।

शिशुमारचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] सब ग्रहों सहित सूर्य । सौर जगत् ।

शिश्न—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष का लिंग ।

शिष(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिष्य" ।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख । शिक्षा ।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा । चोटी ।

शिखरी(पु)—वि० [सं० शिखर] शिखरवाला।
शिखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।
शिषि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।
शिपी—संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।
शिष्ट—वि० [सं०] १. अच्छे स्वभाव और आचरणवाला २. सभ्य। सज्जन। ३ शांत। धीर। ४. भला। उत्तम। ५. धर्मशील। ६ बुद्धिमान।
शिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिष्ट होने का भाव या धर्म। २. सभ्यता। सज्जनता। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता।
शिष्टाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। साधुव्यवहार। २. आदर। सम्मान। खातिरदारी। ३ विनय। नम्रता। ४. दिखावटी सभ्य व्यवहार। ५ आवभगत।
शिष्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिष्या] [भाव० शिष्यता] १ वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २ विद्यार्थी। अंतेवासी। ३. शागिर्द। चेला। ४. मुरीद। चेला।
शिष्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेली। २. सात गुरु अक्षरों का एक वृत्त। उ०—मानौ ना तेरी पूरे। ग्वाला हैं शिष्यै तेरे। शीर्षरूपक।
शीघ्र—क्रि० वि० [सं०] बिना विलंब। बिना देर के। चटपट। तुरत। जल्द।
शीघ्रगामी—वि० [सं० शीघ्रगामिन्] जल्दी या तेज चलनेवाला।
शीघ्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल्दी। फुरती।
शीत—वि० [सं०] ठंढा। सर्द। शीतल।
  संज्ञा पुं० १. जाड़ा। सर्दी। ठंढ। २ ओस। तुषार। ३ जाड़े का मौसिम। ४ जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय।
शीतकटिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३॥ अंश उत्तर के बाद और २३॥ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं।
शीतकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
  वि० शीतल करनेवाला। ठंढा करनेवाला।
शीतकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन और पूस के महीने। २. जाड़े का मौसिम।
शीतज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।
शीतपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] जुड़पित्ती।
शीतल—वि० [सं०] १. ठंढा। सर्द। गरम का उलटा। २ क्षोभ या उद्वेगरहित। शांत।
शीतल चीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल+चीन (देश) +ई (प्रत्य०)] कबाब चीनी।
शीतलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठंढापन।
शीतलताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शीतलता"।
शीतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्फोटक रोग। चेचक। २. एक देवी जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती है।
शीतलाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी।
शीया—संज्ञा पुं० [अ०] दे० "शिया"।
शीरा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।
शीरीं—वि० [फ़ा०] १. मीठा। मधुर। २ प्रिय। प्यारा।
शीर्ण—वि० [सं०] १. टूटा फूटा। २. जीर्ण। फटा पुराना। ३. मुरझाया हुआ। ४ कृश। दुबला। पतला।
शीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर। कपाल। २ माथा। ३ सिरा। चोटी। ४. सामना। अग्र भाग।
शीर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "शीर्ष"। २. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो।
शीर्षबिंदु—संज्ञा पुं० [सं०] सिर के ऊपर और ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।
शील—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० शीलता] १ चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २ स्वभाव। प्रवृत्ति। मिजाज। ३ उत्तम आचरण। सद्वृत्ति। ४. उत्तम स्वभाव। अच्छा मिजाज। ५ संकोच का स्वभाव। मुरौवत।
  वि० [स्त्री० शीला] प्रवृत्त। तत्पर। (यौ० में)।
शीलवान्—वि० [सं० शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १. अच्छे आचरण का। २ सुशील।
शीश(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।
शीशम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है। शिंशपा।
शीशमहल—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीश+अ० महल] वह भवन जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक पारदर्शी मिश्रधातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है। काँच। २. दर्पण। आइना। ३. झाड़, फानूस आदि काँच के बने सामान।
शीशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीशा] शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।
  मुहा०—शीशी सुँघाना=दवा सुँघाकर बेहोश करना (शस्त्रचिकित्सा आदि में)।
शुंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक ब्राह्मण वंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।
शुंठि, शुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ।
शुंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी की सूँड़। २ हाथी का मद जो उसकी कनपटी से बहता है।
शुंडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूँड़। २. एक तरह की शराब।
शुंडिक—संज्ञा पुं० [सं०] शराब बनानेवाला। कलवार।
शुंडी—संज्ञा पुं० [सं० शुंडिन्] १. हाथी। २. मद्य बनानेवाला। कलवार।
शुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।
शुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. तोता। सुग्गा। २ शुकदेव। ३ वस्त्र। कपड़ा। ४. शिरीष वृक्ष।
शुकदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णद्वैपायन के पुत्र जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।
शुक्त—वि० [सं०] १ सड़ाकर खट्टा किया हुआ। २. खट्टा। अम्ल। ३ कड़ा। कठोर। ४ अप्रिय। नापसंद। ५. सुनसान। उजाड़।
शुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप। सीपी।
शुक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीपी।
शुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ चमकीला ग्रह जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है। शुक्रतारा। २ वीर्य। मनी। ३ बल। सामर्थ्य। शक्ति। ४ सप्ताह का छठा दिन। बृहस्पति और शनिवार के बीच का दिन। ५ अग्नि।
  संज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद।
शुक्राचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे।
शुक्रिया—संज्ञा पुं० [फ़ा०] धन्यवाद। कृतज्ञताप्रकाश।

शुक्ल—वि० [सं०] सफेद । उजला । धवल ।
संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों की एक पदवी । २. चाँदी । ३. शुक्लपक्ष ।

शुक्ल पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष ।

शुक्ला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती । २. शर्करा । चीनी । ३. काकोली । ४. विदारी । ५. शकरकद । ६. निर्गुंडी । शेफालिका ।
वि० स्त्री० १. उजली । २. शुक्लपक्ष की (तिथि) ।

शुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० शुचिता] पवित्रता । स्वच्छता । शुद्धता ।
वि० १. शुद्ध । पवित्र । २. स्वच्छ । साफ । ३. निर्दोष । ४. स्वच्छ हृदयवाला ।

शुचिकर्मा—वि० [सं० शुचिकर्मन्] पवित्र कार्य करनेवाला । सदाचारी । कर्मनिष्ठ ।

शुतुर—संज्ञा पुं० [फा०] ऊँट ।

शुतुरनाल—संज्ञा स्त्री० [फा० शुतुर+हिं० नाल] ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप ।

शुतुरमुर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लंबी होती है ।

शुदनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] भावी । होनी । होनहार । नियति ।

शुद्ध—वि० [सं०] [भाव० शुद्धता] १. पवित्र । साफ । स्वच्छ । २. सफेद । उज्वल । ३ जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो । ठीक । सही । ४ निर्दोष । बेऐब । ५. जिसमें मिलावट न हो । खालिस ।

शुद्ध पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्ल पक्ष ।

शुद्धांत—संज्ञा पुं० [सं०] अत पुर । जनानखाना ।

शुद्धापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है । उ०—नैन नहीं ये मीन युग, छबिसागर के आहिं ।

शुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध होने का कार्य । २ सफाई । स्वच्छता । ३ वह कृत्य या संस्कार जो किसी धर्मच्युत, विधर्मी, अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है ।

शुद्धिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पुस्तक पुस्तिका आदि में लगा हुआ वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है ।

शुद्धोदन—संज्ञा पुं० [सं०] कपिलवस्तु के शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे ।

शुनःशेफ—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे ।

शुनासीर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र ।

शुनि—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता ।

शुबहा—संज्ञा पुं० [अ०] १. संदेह । शक । २. धोखा । वहम । भ्रम ।

शुभंकर—वि० [सं०] मंगलकारक ।

शुभकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती ।

शुभ—वि० [सं०] १. अच्छा । भला । उत्तम । २. कल्याणकारी । मगलप्रद ।
संज्ञा पुं० मगल । कल्याण । भलाई ।

शुभचिंतक—वि० [सं०] शुभ या भला चाहनेवाला । हितैषी ।

शुभदर्शन—वि० [सं०] सुंदर । खूबसूरत ।
संज्ञा पुं० विवाह संस्कार का एक कृत्य जिसमें वर वधू एक दूसरे को देखते हैं ।

शुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शोभा । २. कांति । ३ देवसभा ।
संज्ञा पुं० दे० "शुबहा" ।

शुभाकांक्षी—वि० [स्त्री० शुभाकांक्षिणी] दे० "शुभचिंतक" ।

शुभाशय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका आशय या विचार शुभ हो ।

शुभ्र—वि० [सं०] सफेद । श्वेत । उजला ।

शुभ्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी ।

शुमार—संज्ञा पुं० [फा०] १. गिनती । संख्या । २. हिसाब । लेखा ।

शुरू—संज्ञा पुं० [अ० शुरूअ] १. आरंभ । प्रारंभ । २ वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो । उत्थान ।

शुल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह महसूल जो घाटों आदि पर वसूल किया जाता है । २ दहेज । दायजा । ३ बाजी । शर्त । ४. किराया । भाड़ा । ५ मूल्य । दाम । ६ वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया या दिया जाय । फीस । चंदा ।

शुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १ सेवा । टहल । परिचर्या । २. खुशामद ।

शुष्क—वि० [सं०] [भाव० शुष्कता] १. आर्द्रतारहित । सूखा । २. नीरस । रसहीन । ३. जिसमें मन न लगता हो । ४. निरर्थक । व्यर्थ । ५. स्नेह आदि से रहित । निर्मोही ।

शूक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्न की बाल या सींका । २. यव । जौ । ३. एक प्रकार का कीड़ा ।

शूकर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १. सूअर । वराह । २. विष्णु का तीसरा अवतार । वाराह अवतार ।

शूकरक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है (आजकल का सोरों) ।

शूची—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सुई ।

शूद्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री] १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण । इनका कार्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना माना गया है । २. शूद्र जाति का पुरुष । ३. खराब । निकृष्ट । अछूत ।

शूद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. विदिशा नगरी का एक राजा और संस्कृत के 'मृच्छकटिक' नाटक का रचयिता महाकवि । २. शूद्र जाति का एक राजा । शबूक ।

शूद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का भाव या धर्म । शूद्रत्व । शूद्रपन ।

शूद्रद्युति—संज्ञा पुं० [सं०] नीला रंग ।

शूद्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री ।

शूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है, जैसे—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि ।

शून्य—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० शून्यता] १ खाली स्थान । २ आकाश । ३ एकांत स्थान । ४. बिंदु । बिंदी । सिफर । ५. अभाव । कुछ न होना । ६. स्वर्ग । ७. विष्णु । ८. ईश्वर ।
वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो । खाली । २ जिसमें क्रियाशीलता न हो । ३ निराकार । उ०—रूप रेख कछु जाके नाहीं । तौ का करब शून्य के माहीं । —विश्रामसागर । ४ विहीन । रहित ।

शून्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शून्य होने का भाव । खालीपन ।

शून्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत ।

शून्यवादी—संज्ञा पुं० [सं० शून्यवादिन्] १. वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो । २ बौद्ध । ३. नास्तिक ।

शूप—संज्ञा पुं० [सं० शूर्प] अन्न आदि पछोरने का पात्र। सूप। फटकनी।

शूर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। सिपाही। ३ सूर्य। ४ सिंह। ५ कृष्ण के पितामह का नाम। ६ विष्णु।

शूरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहादुरी। वीरता।

शूरताईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।

शूरवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।

शूरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे। २. मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।

शूराⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शूर] सामंत। वीर।

संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] सूर्य।

शूर्प—संज्ञा पुं० दे० "सूप"।

शूर्पणखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी। वनवास में राम को देखकर यह मोहित हो गई थी। लक्ष्मण ने इसके नाक और कान काटे थे।

शूर्पनखा—संज्ञा पुं० दे० "शूर्पणखा"।

शूर्पारक—संज्ञा पुं० [सं०] बंबई प्रांत के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का बरछे के आकार का एक अस्त्र। २. सूली, जिसमे प्राचीन काल में प्राणदंड दिया जाता था। ३ दे० "त्रिशूल"। ४ बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ५ वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द। ६ कोंच। टीस। ७ पीड़ा। दुःख। दर्द। उ०—तुम लछिमन निज पुरहि सिधारो। बिछुरन भेंट देहु लघु बधू जियत न जैहै शूल तुम्हारो। —सूर०। ८ ज्योतिष में एक अशुभ योग। ९ छड़। सलाख। सींक। १० मृत्यु। मौत। ११ झंडा। पताका।

वि० १ काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला। २ दुःखदाई।

शूलधारी—संज्ञा पुं० [सं० शूलधारिन्] महादेव।

शूलनाⓅ—क्रि० अ० [हिं० शूल से हिं० ना० धा०] १ शूल के समान गड़ना। २ दुःख देना।

शूलपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

शूलहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

शूलि—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।

शूलिक—संज्ञा पुं० [सं०] सूली देनेवाला।

शूली—संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] १ शिव। महादेव। २ वह जिसे शूल रोग हुआ हो। ३. एक नरक का नाम। उ०—तेरहों शूली नरक कहावै। शूली सम दुख तामें पावै। —विश्रामसागर।

संज्ञा स्त्री० दे० "शूली"। उ०—कौन पाप मैं देखो कियो। जाते मोकूँ शूली दियो। —सूर०।

संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] पीड़ा। शूल।

शृंखल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेखला। २ हाथी आदि बाँधने की लोहे की जंजीर। साँकल। सिकड़। ३. हथकड़ी बेड़ी।

शृंखलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।

शृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २ जंजीर। साँकल। कटिबंध। मेखला। ४ करधनी। तागड़ी। ५ श्रेणी। कतार। ६ एक प्रकार का अलंकार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार किया जाता है।

शृंखलाबद्ध, शृंखलित—वि० [सं०] १ सिलसिलेवार। २ जो शृंखला से बाँधा हुआ हो।

शृंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २ गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग। ३ कँगूरा। ४ सिंगी बाजा। उ०—कंस ताल करताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग। मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग।—सूर०। ५ कमल। पद्म। ६ दे० "ऋष्य-शृंग"।

शृंगपुर—संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।

शृंगवेरपुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।

शृंगार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थायी भाव रति है। २ वस्त्राभूषण आदि से शरीर, देवमूर्ति आदि को सुशोभित करना। ३ सजावट। बनाव चुनाव। ४ भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं। ५ वह जिससे किसी चीज की शोभा हो। उ०—यशुमति कोखि सराहि बलैया लेन लगी ब्रजनार। देखो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रज को शृंगार।—सूर०।

शृंगारना—क्रि० स० [सं० शृंगार से हिं० ना० धा०] शृंगार करना। सजाना। सँवारना।

शृंगारहाट—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंगार+हिं० हाट] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हों।

शृंगारिक—वि० [सं०] शृंगार संबंधी।

शृंगारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रग्विणी छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४ रगण होते हैं। उ०—रार री राधिका श्याम सों क्यों करै। सीख मो मान ले मान काहे धरै। इसे लक्ष्मीधर, लक्ष्मीधरा और कामिनी-मोहन छंद भी कहते हैं।

शृंगारित—वि० [सं०] जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।

शृंगारिया—संज्ञा पुं० [सं० शृंगार+हिं० इया (प्रत्य०)] १ वह जो देवताओं आदि का शृंगार करता हो। २ बहुरूपिया।

शृंगि—संज्ञा पुं० [सं०] सिंगी मछली।

संज्ञा पुं० [सं० शृंगिन्] सींगवाला जानवर।

शृंगी—संज्ञा पुं० [सं० शृंगिन्] १. एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। उ०—शृंगी ऋषि तब कियो विचार। प्रजा दुःख कर नृपत गुहार।—सूर०। २ सींगवाला पशु। ३ सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। ४ महादेव। शिव। ५ हाथी। हस्ती। ६ वृक्ष। पेड़। ७ पर्वत। पहाड़। ८ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय औषधि। ९ महर्षि विभांडक के पुत्र एक ऋषि जिन्होंने दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। उ०—शृंगी ऋषिहि वसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम शुभ जग्य करावा।

शृंगीगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत जिसपर शृंगी ऋषि तप करते थे।

शृगⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"। उ०—बहुतन कंक काक शृग श्वाना। भक्षन करत कटकटी नाना।—विश्रामसागर।

शृगाल—संज्ञा पुं० [सं०] गीदड़। सियार।

शृष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] कंस के एक भाई।

शेख—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १ पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि।

२ मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला वर्ग। ३ इसलाम धर्म का आचार्य।

(पु) संज्ञा पुं० दे० "शेष"।

शेखचिल्ली—संज्ञा पुं० [अ० शेख+हिं० चिल्ली] १. एक कल्पित वज्रमूर्ख जिसके बारे में अनेक विलक्षण हास्यमयी कथाएँ प्रसिद्ध हैं। २. बैठे बैठे बड़े बड़े मसूबे बाँधनेवाला व्यक्ति।

वि० चचल और शरारती। चिलबिला।

शेखर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शीर्ष। सिर। माथा। २ मुकुट। किरीट। ३ सिरा। चोटी। शिखर (पर्वत आदि का)। ४. सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ५ टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा (।।ऽ।)। ६ संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद।

शेखावत—संज्ञा पुं० [अ० शेख] कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी—संज्ञा स्त्री० [अ० शेख] १ गर्व। अहंकार। घमड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३. डींग।

मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेखीबाज—वि० [अ० शेखी+फा० बाज] १. अभिमानी। २ डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेफालिका, शेफाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नील सिंधुवार का पौधा। निर्गुंडी।

शेर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १ बिल्ली की जाति का एक भयकर हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर।

मुहा०—शेर होना=निर्भय या धृष्ट होना। २ अत्यत वीर और साहसी पुरुष।

संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू कविता के दो चरण।

शेरपजा—संज्ञा पुं० [फा० शेर+हिं० पजा] शेर के पजे के आकार का एक शस्त्र। बघनखा।

शेरबच्चा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की तोप।

शेरबबर—संज्ञा पुं० [फा०] सिंह। केशरी।

शेरमर्द—संज्ञा पुं० [फा०] वीर। बहादुर।

शेरवानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का अंगा। अचकन।

शेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ बची हुई वस्तु। बाकी। २. घटाने से बची हुई संख्या। बाकी। ३ समाप्ति। अंत। खातमा। ४. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। ५ वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ६ लक्ष्मण। ७ बलराम। ८. दिग्गजों में से एक। ९ परमेश्वर। १० पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। ११. छप्पय छद के पचीसवें भेद का नाम।

वि० १ बचा हुआ। बाकी। २. अत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम। उ०—बातें करत शेष निशि आई ऊधो गए असनान।—सूर०।

शेषधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी।

शेषनाग—संज्ञा पुं० दे० "शेष"।

शेषर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

शेषराज—संज्ञा पुं० [सं०] दो मगण का एक वर्णवृत्त। उ०—मू मायो माँ देखा। जोती विद्युल्लेखा। विद्युल्लेखा।

शेषवत—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में कार्य को देखकर कारण का निश्चय, जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशायी—संज्ञा पुं० [सं० शेषशायिन्] विष्णु।

शेषांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. बचा हुआ अश। अवशिष्ट भाग। २. अंतिम अश।

शेषाचल—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पर्वत।

शेषोक्त—वि० [सं०] अत में कहा हुआ।

शैतान—संज्ञा पुं० [अ०] १. तमोगुणमयी शक्ति जो मनुष्यों को बहकाकर धर्ममार्ग से भ्रष्ट करती है।

मुहा०—शैतान की आँत=बहुत लबी वस्तु।

२ दुष्ट देवयोनि। भूत। प्रेत। ३ दुष्ट।

शैतानी—संज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।

वि० १ शैतान संबंधी। शैतान का। २ नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।

शैत्य—संज्ञा पुं० [सं०] "शीत" का भाव। शीतता।

शैथिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] शिथिलता।

शैल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। उ०—दीन्हों डारि शैल तें भू पर पुनि जल भीतर डारयो।—सूर०। २. चट्टान। ३. शिला।

शैलकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी।

शैलजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती। दुर्गा।

शैलतटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ की तराई।

शैलनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गगा नदी।

शैलसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढग। २ प्रणाली। तर्ज। तरीका। ३. रीति। प्रथा। रस्म। रवाज। ४. वाक्य-रचना का प्रकार। ५ हाथ से बनाई जानेवाली ऐसी चीजों का वर्ग जिनकी विशेषताओं में उनके कर्ताओं की मनोवृत्ति की एकता के कारण साम्य हो। कलम, जैसे—मुगल या पहाड़ी शैली के चित्र।

शैलूष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक खेलनेवाला। नट। २ धूर्त।

शैलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

शैलेय—वि० [सं०] १ पत्थर का। पथरीला। २. पहाड़ी।

संज्ञा पुं० १ छरीला। २ शिलाजीत।

शैव—वि० [सं०] शिव संबंधी। शिव का।

संज्ञा पुं० १ शिव का अनन्य उपासक २ पाशुपत अस्त्र। ३ धतूरा।

शैवल—संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।

शैवलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। उ०—बरस गई जलधार विश्वसृज, शैवलिनी पा गई उदधि निज।—गीतिका।

शैवाल—संज्ञा पुं० [सं०] सिवार। सेवार।

शैव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चद्र की रानी का नाम।

शैशव—वि० [सं०] १. शिशु सबधी। बच्चों का। २. बाल्यावस्था सबधी।

संज्ञा पुं० १ बचपन। २ बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।

शैशुनाग—संज्ञा पुं० [सं०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वशज।

शोक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ। रंज। गम।

शोकहर—संज्ञा पुं० [सं०] तीस मात्राओं के एक छंद का नाम। इसके अंत में एक या अधिक गुरु होता है तथा प्रत्येक चरण के दूसरे, चौथे और छठे चौकल में जगण वर्जित है। उ०—शोक नसैये, सुहि अपनैये, अब न घिनैये भयहरणा। नमामि शंकर, नमामि शंकर, नमामि शंकर, तव शरणा॥ शुभंगी।

शोख—वि० [फा०] [संज्ञा शोखी] १ ढीठ। धृष्ट। २ शरीर। नटखट। ३ चंचल। चपल। ४ गहरा और चमकदार (रंग)।

शोच—संज्ञा पुं० [सं० शोचन] १. दुःख। रंज। अफसोस। २ चिंता। फिक्र।

शोचनीय—वि० [सं०] १. जिसकी दशा देखकर दुःख हो। २ बहुत हीन या बुरा।

शोच्य—वि० [सं०] १. सोचने या विचार करने के योग्य। २ दे० "शोचनीय"।

शोण—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३ अग्नि। आग। ४. रक्त। ५ एक नद का नाम। सोन।

वि० लाल रंग का। सुर्ख।

शोणित—वि० [सं०] लाल। रक्त वर्ण का।

संज्ञा पुं० रक्त। रुधिर। खून।

शोथ—संज्ञा पुं० [सं०] किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम।

शोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुद्धिसंस्कार। सफाई। २ ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३ चुकता होना। अदा होना। ४ जाँच। परीक्षा। ५ खोज। ढूँढ़। तलाश।

शोधक—वि० [सं०] [स्त्री० शोधिका] १. शोधनेवाला। २ सुधार करनेवाला। सुधारक। ३ ढूँढ़नेवाला। खोजनेवाला।

शोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ धातुओं का औषधरूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। ४ छानबीन। जाँच। ५ ढूँढ़ना। तलाश करना। ६ ऋण चुकाना। ७ प्रायश्चित्त। ८ साफ करना। ९. दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन।

शोधना—क्रि० स० [सं० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ औषध के लिये धातु का संस्कार करना। ४ ढूँढ़ना। उ०—ग्रहबल, लग्न, नक्षत्र शोधि कीनी वेदध्वनि।—सूर०।

शोधवाना—क्रि० स० [हिं० शोधना का प्रे० रूप] १. शुद्ध कराना। २. तलाश कराना।

शोधित—वि० [सं०] १ शुद्ध या साफ किया हुआ। २ जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो।

शोफर—संज्ञा पुं० [अं०] मोटर ड्राइवर। मोटर चालक।

शोभन—वि० [सं०] [स्त्री० शोभिनी] १. शोभायुक्त। सुंदर। २ सुहावना। ३ उत्तम। ४. शुभ।

संज्ञा पुं० १. अग्नि। २ शिव। ३ इष्टियोग। ४ २४ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में जगण हो। उ०—तिनसों न कोऊ जगत में, जानिए सुखकंद। हरि भक्ति को उपदेश करि, काटहीं भवफंद। सिंहिका। ५ आभूषण। गहना। ६. मंगल। कल्याण। ७ दीप्ति। सौंदर्य।

शोभनतम—वि० [सं०] अत्यंत सुंदर। अति शोभायुक्त। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम लताकलित शुचि सानु शरीर।—कामायनी।

शोभना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदरी स्त्री। २ हलदी। हरिद्रा।

क्रि० स० [सं० शोभन] शोभित होना।

शोभनीय—वि० दे० "शोभन"।

शोभांजन—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन।

शोभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीप्ति। कांति। चमक। २ छवि। सुंदरता। छटा। ३ सजावट। ४ वर्ण। रंग। ५ बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, दो नगण, दो तगण और अंत में दो गुरु हों। उ०—लखै वाकी शोभा, विपुल गुणयुता, जो सुवाला नवीनी। न जानौं सो कैसे, सपदि सुतवधू! प्रीति में जाय भीनी।

शोभायमान—वि० [सं०] सोहता हुआ। सुंदर।

शोभित—वि० [सं०] १ सुंदर। सजीला। २ अच्छा लगता हुआ।

शोर—संज्ञा पुं० [फा०] १ जोर की आवाज। गुल गपाड़ा। कोलाहल। २. धूम। प्रसिद्धि।

शोरबा—संज्ञा पुं० [फा०] किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।

शोरा—संज्ञा पुं० [फा० शोर] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में निकलता है।

शोला—संज्ञा पुं० [अ०] आग की लपट।

शोशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. निकली हुई नोक। २. अद्भुत या अनोखी बात।

शोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २ शरीर का घुलना या क्षीण होना। ३ राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी। ४ बच्चों का सुखंडी रोग।

शोषक—वि० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १ जल, रस या अन्य द्रव पदार्थ खींचनेवाला। सोखनेवाला। २. सुखानेवाला। ३ क्षीण करनेवाला।

शोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोषी, शोषित, शोषनीय] १ जल या रस खींचना। सोखना। २ सुखाना। खुश्क करना। ३ घुलाना। क्षीण करना। ४ नाश करना। ५ कामदेव के एक बाण का नाम।

शोषणीय—वि० [सं०] शोषण करने के योग्य। जो शोषित हो सके।

शोषित—वि० [सं०] जिसका शोषण किया गया हो।

शोषी—वि० दे० "शोषक"।

शोहदा—संज्ञा पुं० [अ०] १ व्यभिचारी। लंपट। २ गुंडा। बदमाश।

शोहरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ नामवरी। ख्याति। प्रसिद्धि। २ धूम। जनरव।

शोहरा—संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।

शौंडिक—संज्ञा पुं० [सं०] कलवार।

शौक—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा। प्रबल लालसा।

मुहा०—शौक करना=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शौक से=प्रसन्नतापूर्वक।

२ आकांक्षा। लालसा। हौसला। ३ व्यसन। चस्का। ४ प्रवृत्ति। झुकाव।

शौकत—संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।

शौकिया—वि० शौकवाला।

क्रि० वि० शौक से।

शौकीन—संज्ञा पुं० [अ० शौक+ईन (प्रत्य०)] १ वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। २ सदा बना ठना रहनेवाला।

शौकीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शौकीन+ई (प्रत्य०)] शौकीन होने का भाव या काम।

शौक्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

शौच—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २. शास्त्रीय परिभाषा में, सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना। ५. दे० "अशौच"।

शौत—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

शौध(पु)—वि० [सं० शुद्ध] निर्मल। पवित्र।

शौनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

शौरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक ब्रजमंडल का प्राचीन नाम।

शौरसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती थी। २ एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो नागर भी कहलाती थी।

शौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव। शूरता। वीरता। बहादुरी। २ नाटक में आरभटी नाम की वृत्ति।

शौहर—संज्ञा पुं० [फा०] स्त्री का पति। स्वामी। मालिक।

श्मशान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मसान। मरघट।

श्मशानपति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

श्मशानयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शव या मृत शरीर का श्मशान जाना।

श्मश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] मुहँ पर के बाल। दाढ़ी। मूँछ।

श्याम—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २. मेघ।। बादल। ३. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। ४. श्याम नामक देश।

वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। साँवला।

श्यामकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला हो।

श्यामजीरा—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+जीरक] १. एक प्रकार का धान। २. काला जीरा।

श्यामटीका—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+हिं० टीका] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है।

श्यामता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्याम का भाव या धर्म। २. कालापन। साँवलापन। ३. मलिनता। उदासी।

श्यामल—वि० [सं०] [स्त्री० श्यामलता, भाव० श्यामलता] जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला। साँवला। उ०—श्यामल अंचल धरणी का भर मुक्ता आँसू कन से। छूछा बादल बन आया मैं प्रेम प्रभात गगन से। —आँसू।

श्याममुंदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. एक प्रकार का वृक्ष।

श्यामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राधा। राधिका। २. एक गोपी का नाम। उ०—श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि।—सूर०। ३. एक प्रसिद्ध काला पक्षी। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। ४. सोलह वर्ष की तरुणी। ५. काले रंग की गाय। ६ तुलसी। सुरसा क्षुप। ७ कोयल नामक पक्षी। ८. यमुना। ९. रात। रात्रि। १०. स्त्री। औरत।

वि० श्याम रंगवाली। काली।

श्याल, श्यालक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला।

संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़। सियार। उ०—रोव वृषभ तुरँग अरु नाग। श्याल दिवस निशि बोलें काग।—सूर०।

श्येन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकरा या बाज पक्षी। २. दोहे के चौथे भेद का नाम।

श्येनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण और अंत में एक लघु और एक गुरु हो। उ०—आयके गही जवै करी कहा। काल श्येनिका प्रचंड जो महा। श्येनी।

श्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० "श्येनिका"। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी।

श्योनाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोनापाढ़ा वृक्ष। २ लोध्र। लोध।

श्रंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।

श्रद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और स्नेह भाव। २ वेदादि शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ३ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी। ४ वैवस्वत मनु की पत्नी।

श्रद्धादेव—संज्ञा पुं० [सं०] वैवस्वत मनु जो श्रद्धा के पति थे।

श्रद्धालु—वि० [सं०] जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्।

श्रद्धावान्—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धावद्] १. श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु पुरुष। २. धर्मनिष्ठ।

श्रद्धास्पद—वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धेय—वि० [सं०] श्रद्धास्पद।

श्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. परिश्रम। मेहनत। मशक्कत। २. थकावट। क्लांति। ३ साहित्य में संचारी भावों में से एक। कोई कार्य करते करते शिथिल हो जाना। ४ क्लेश। दुःख। तकलीफ। ५. दौड़धूप। परेशानी। ६. पसीना। स्वेद। ७. व्यायाम। कसरत। ८ प्रयास। ९. अभ्यास।

श्रमकण—संज्ञा पुं० [सं०] पसीने की बूँदें।

श्रमजन—संज्ञा पुं० दे० "श्रमजीवी"।

श्रमजल—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। स्वेद। उ०—श्रमजल बिंदु इंदु आनन पर राजत अति सकुमार। मानो विविध भाव मिल विलसत मगन सिंधु रस सार।—सूर०।

श्रमजित—वि० [सं० श्रम+जित्] जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके।

श्रमजीवी—वि० [सं० श्रमजीविन्] मेहनत करके पेट पालनेवाला।

श्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्ध मतावलंबी संन्यासी। २ यति। मुनि। ३. मजदूर।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

श्रमवारि—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

श्रमविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य के भिन्न भिन्न अंगों के संपादन के लिये अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति।

श्रमसीकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पसीने की बूँद। २. पसीना। उ०—कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रमसीकर के दाग।—सूर०।

श्रमिक—संज्ञा पुं० १. श्रम या काम करनेवाला। कमकर। २. मजदूर। ३ दे० "श्रमजीवी"।

श्रमित—वि० [सं० श्रम] जो श्रम से शिथिल हो गया हो। थका हुआ। श्रांत।

उ०—चारों आतन श्रमित जानि कै जननी तव पौंढ़ाए।—सूर०।
श्रमी—संज्ञा पुं० [सं० श्रमिन्] १. मेहनती। परिश्रमी। २. श्रमजीवी। मजदूर।
श्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्रवणीय] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। २ शास्त्रों में लिखी हुई बातें सुनना और उसके अनुसार कार्य करना अथवा देवताओं आदि के चरित्र सुनना। ३. नौ प्रकार की भक्तियों में से एक। उ०—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पदरत, अरचन, बंदन, दास। सख्य और आत्मा-निवेदन प्रेम लक्षण जास।—सूर०। ४ वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र का नाम। ५. बाईसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार तीर का सा है।
श्रवणीय—वि० [सं०] सुनने योग्य।
श्रवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] श्रवण। कान।
श्रवना(पु)—क्रि० स० [सं० स्राव] बहना। चूना। रसना।
क्रि० स० गिराना। बहाना।
श्रवित(पु)—वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।
श्रव्य—वि० [सं०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य, जैसे—संगीत।
यौ०—श्रव्य काव्य=वह काव्य जो केवल सुना जा सके, अभिनय आदि के रूप में न खेला जा सके।
श्रांत—वि० [सं०] १. जितेंद्रिय। २ शांत। उ०—जैसे कोलाहल सोया हो, हिम शीतल जड़ता सा श्रांत। —कामायनी। ३ परिश्रम से थका हुआ। उ०—धीर समीर परस से पुलकित विकल हो चला श्रांत शरीर। —कामायनी। ४. दुःखी।
श्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिश्रम। मेहनत। २. थकावट। ३ विश्राम।
श्राद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है, जैसे—तर्पण, पिंडदान तथा ब्राह्मणभोजन। ३. पितृ-पक्ष।
श्राद्धदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्मराज। २ यमराज। ३ वैवस्वत मनु। ४ श्राद्ध में निमंत्रित ब्राह्मण।
श्राप—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
श्रावक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध साधु या सन्यासी। २ जैन धर्म का अनुयायी। जैनी। ३ नास्तिक।
वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।
श्रावग—संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।
श्रावगी—संज्ञा पुं० [श्रावक] जैनी।
श्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन।
श्रावणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सावन मास की पूर्णमासी। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षाबंधन' तथा पूजन आदि होते हैं।
श्रावन(पु)—क्रि० सं० [हिं० स्रवना] गिराना।
श्रावस्ती—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत महेत कहलाती है।
श्राव्य—वि० [सं०] सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य।
श्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रिया] मंगल। कल्याण।
संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] शोभा। प्रभा।
श्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। २ सरस्वती। ३ कमल। पद्म। ४ सफेद चंदन। सदल। ५ धर्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ६. संपत्ति। धन। दौलत। ७. विभूति। ऐश्वर्य। ८. कीर्ति। यश। ९ प्रभा। शोभा। १०. कांति। चमक। ११. एक प्रकार का पद-चिह्न। १२ स्त्रियों का वेंदी नामक आभूषण। १३ आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है।
संज्ञा पुं० १ वैष्णवों का एक संप्रदाय। २. एक अक्षर का छंद या वृत्त। उ०—गो। श्री॥ ही। धी॥ ३. संपूर्ण जाति का एक राग।
श्रीकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
श्रीकांत—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रीकृष्ण—संज्ञा पुं० दे० दे० "कृष्ण" १
श्रीक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] जगन्नाथपुरी।
श्रीखंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरिचंदन। मलयागिरि चंदन। २ दे० "शिखरन"।
श्रीखंडशैल—संज्ञा पुं० [सं०] मलय पर्वत।
श्रीगदित—संज्ञा पुं० [सं०] उपरूपक के अठारह भेदों में से एक। श्रीरसिका।
श्रीदामा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीदामन्] श्रीकृष्ण के एक बालसखा का नाम। राधा के बड़े भाई।
श्रीधर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। उ०—धनि धनि नंद धन्य निशिवासर धनि जसुमति जिन श्रीधर जाए। —सूर०।
श्रीधाम—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
श्रीनिकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैकुंठ। २ लाल कमल। ३ स्वर्ण। सोना।
श्रीनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ वैकुंठ।
श्रीपंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसंत पंचमी।
श्रीपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। नारायण। हरि। उ०—जाके सखा श्याम-सुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता। —सूर०। २ रामचंद्र। ३ कृष्ण। ४ कुबेर। ५ नृप। राजा।
श्रीपद—संज्ञा पुं० १ १२ अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, तगण, जगण और यगण होते हैं। उ०—न तजिए, श्रीपदपद्म प्रभू के। सु भजिए, पावन नाम अचूके॥ २ दे० "श्रीपाद"।
श्रीपाद—संज्ञा पुं० [सं०] पूज्य। श्रेष्ठ।
श्रीफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेल। २ नारियल। उ०—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नय वानी। —सूर०। ३ खिरनी। ४. आँवला। ५. धन। संपत्ति।
श्रीमंत—संज्ञा पुं० [सं० सीमंत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण। उ०—शीश सचिक्कन केश हो दिन श्रीमंत सँवारि। —सूर०। २ स्त्रियों के सिर के बीच की माँग।
वि० श्रीमान्। धनवान्। धनी।
श्रीमत्—वि० [सं०] १ धनवान्। अमीर। २ जिसमें श्री या शोभा हो। ३ सुंदर।
श्रीमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग। २ लक्ष्मी। ३ राधा।
श्रीमान्—संज्ञा पुं० [सं० श्रीमत्] १ आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। २ धनवान्। अमीर।
श्रीमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री+माला] गले में पहनने का एक आभूषण। कंठश्री। उ०—चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छबि कुच उचानि हेम गिरि अतिहि लाजै। —सूर०।

श्रीमाली—संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोभित या सुंदर मुख। २. वेद। ३. सूर्य।
श्रीयुक्त—वि० [सं०] १. जिसमें श्री या शोभा हो। २. आदमियों के नाम के पूर्व प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक विशेषण। श्रीमान्।
श्रीयुत—वि० दे० "श्रीयुक्त"।
श्रीरंग—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। उ०—काके होहिं जो नहिं गोकुल के सूरज प्रभु श्रीरंग। —सूर०।
श्रीरमण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रीवत्स—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ विष्णु के वक्षस्थल पर का एक चिह्न, जो भृगु के चरणप्रहार का चिह्न माना जाता है।
श्रीवास, श्रीवासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधाबिरोजा। २. देवदारु। ३ चंदन। ४. कमल। ५ विष्णु। ६. शिव।
श्रीश—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रीहत—वि० [सं०] १ शोभारहित। २ निस्तेज। निष्प्रभ। प्रभाहीन।
श्रीहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि। २ रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवत कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।
श्रुत—वि० [सं०] १ सुना हुआ। २ जिसे परंपरा से सुनते आते हों। ३ प्रसिद्ध।
श्रुतकीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।
श्रुतपूर्व—वि० [सं०] जो पहले सुना हो।
श्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुनने की इंद्रिय। कान। २. वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए। वेद। निगम। ३ खबर। शोहरत। किंवदंती। ४ सुनी हुई बात। ५. शब्द। ध्वनि। आवाज। ६ श्रवण करना। सुनना। ७ चार की संख्या (वेद चार होने से)। ८ अनुप्रास का एक भेद। ९ त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १० नाम। ११ विद्या।
श्रुतिकटु—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार (दोष)।
श्रुतिगोचर—वि० [सं०] जो सुना जा सके
श्रुतिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रवणमार्ग। श्रवणेंद्रिय। २ वेदविहित मार्ग। सन्मार्ग।
श्रुत्य—वि० [सं०] १. सुनने योग्य। २. प्रसिद्ध। ३ प्रशस्त।
श्रुत्यनुप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन दो या अधिक बार आवें।
श्रुवा—संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा"।
श्रेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। पाँती। कतार। २ क्रम। शृंखला। परंपरा। सिलसिला। ३ दल। समूह। ४ सेना। फौज। ५ एक ही कारबार करनेवालों की मंडली। कंपनी। ६ सिकड़ी। जंजीर। ७ सीढ़ी। जीना।
श्रेणीबद्ध—वि० [सं०] पंक्ति के रूप में स्थित। कतार बाँधे हुए।
श्रेय—वि० [सं० श्रेयस्] [स्त्री० श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। ३ मंगलदायक। शुभ।
संज्ञा पुं० १ अच्छापन। २. कल्याण। मंगल। ३ धर्म। पुण्य। सदाचार।
श्रेयस्कर—वि० [सं०] शुभदायक।
श्रेष्ठ—वि० [सं०] [स्त्री० श्रेष्ठा] १. उत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २ मुख्य। प्रधान। ३ पूज्य। बड़ा। ४. वृद्ध।
श्रेष्ठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तमता। २ गुरुता। बड़ाई। बड़प्पन।
श्रेष्ठी—संज्ञा पुं० [सं०] व्यापारियों या वणिकों का मुखिया। महाजन। सेठ।
श्रोत—संज्ञा पुं० [सं० श्रोतस्] श्रवणेंद्रिय। कान।
श्रोता—संज्ञा पुं० [सं० श्रोतृ] सुननेवाला।
श्रोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रवणेंद्रिय। कान। २ वेदज्ञान।
श्रोत्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदवेदांग में पारंगत ब्राह्मण। २ ब्राह्मणों का एक भेद।
श्रोत्री—संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।
श्रोन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शोण"।
श्रोनित(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
श्रौत—वि० [सं०] १ श्रवण संबंधी। २, श्रुति संबंधी। ३ जो वेद के अनुसार हो। ४ यज्ञ संबंधी।
श्रौतसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें यज्ञों का विधान है।
श्रौन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
श्लथ—वि० [सं०] १ शिथिल। ढीला। २. मंद। धीमा। ३ दुर्बल। अशक्त।
श्लाघनीय—वि० [सं०] १ प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २ उत्तम। श्रेष्ठ।
श्लाघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। बड़ाई। ३ खुशामद। चापलूसी। ४. इच्छा। चाह।
श्लाघ्य—वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. श्रेष्ठ। अच्छा।
श्लिष्ट—वि० [सं०] १ मिला हुआ। एक में जड़ा हुआ। २ (साहित्य में) श्लेषयुक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों।
श्लीपद—संज्ञा पुं० [सं०] टाँग फूलने का रोग। फीलपावँ।
श्लील—वि० [सं०] [भाव० श्लीलता] १ उत्तम। भद्र। जो भद्दा न हो। २. शुभ।
श्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। २ संयोग। जोड़। मिलान। ३ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं।
श्लेषक—वि० [सं०] जोड़नेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।
श्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। २ आलिंगन।
श्लेषोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।
श्लेष्मा—संज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मन्] १ शरीर की तीन धातुओं में से एक। कफ। बलगम। २ लिसोड़े का फल। लभेरा।
श्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. संस्कृत का कोई पद्य। २ अनुष्टुप छंद। ३ स्तुति। प्रशंसा। ४ कीर्ति। यश। ५ पुकार। आह्वान। ६ शब्द। आवाज।
श्वन्—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।
श्वपच—संज्ञा पुं० [सं०] चांडाल। डोम।
श्वफल्क—संज्ञा पुं० [सं०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।
श्वशुर—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी अथवा पति का पिता। ससुर।
श्वश्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी अथवा पति की माता। सास।

श्वसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वास। साँस। २ जीवन।

श्वसित—वि० [सं०] जो श्वास लेता हो। जीवित।

सज्ञा पुं० निश्वास।

श्वान—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता। कुक्कुर। २ दोहे का इक्कीसवाँ भेद। ३ छप्पय का पंद्रहवाँ भेद।

श्वापद—संज्ञा पुं० [सं०] हिंसक पशु।

श्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। २. जल्दी जल्दी साँस लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।

श्वासा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १. साँस। दम। उ०—श्वासा तासु भए श्रुति-चार। करि सो स्तुति या परकार। —सूर०। २ प्राण। प्राणवायु।

श्वासोच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] वेग से साँस खींचना और निकालना।

श्वेत—वि० [सं०] १ सफेद। धौला। चिट्टा। २. उज्वल। साफ। ३. निर्दोष। निष्कलंक। ४. गोरा।

संज्ञा पुं० १ सफेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. पुराणानुसार एक द्वीप। ४. शिव का एक अवतार। ५. श्वेत वराह।

श्वेतकृष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद और काला। २ यह और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात।

श्वेतकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २ एक केतु ग्रह।

श्वेतगज—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी।

श्वेतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। उज्वलता।

श्वेतद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार क्षीर सागर के पास एक उज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।

श्वेतपत्र—संज्ञा पुं० [सं० श्वेत+पत्र] सफेद रंग के कागज पर छपा हुआ कोई राजकीय पत्र जिसमें किसी प्रकार की घोषणा या निश्चय होता है (अं० ह्वाइट पेपर)।

श्वेतप्रदर—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफेद रंग की धातु गिरती है।

श्वेतवाराह—संज्ञा पुं० [सं०] १. वराह भगवान् की एक मूर्ति। २ एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।

श्वेतसार—संज्ञा पुं० [सं०] अनाजों और तरकारियों आदि का सफेद तत्त्व जो प्रायः कपड़ों में कलफ देने या दवाओं आदि में काम आता है। माड़ी। कलफ।

श्वेतांग—वि० [सं०] जिसके अंग का रंग सफेद हो।

संज्ञा पुं० गोरी जाति का व्यक्ति। गोरा।

श्वेतांबर—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक।

श्वेतांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

श्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २ कौड़ी। ३ श्वेत या शंख नामक हस्ती की माता। शंखिनी। ४ चीनी। शक्कर।

श्वेताश्वर—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २ कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

ष

ष—हिंदी वर्णमाला का ३१ वाँ व्यंजन। इसका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य वर्णों में कहा गया है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है—'श' के समान और 'ख' के समान।

षंड, षंढ—संज्ञा पुं० [सं०] १. हीजड़ा। नपुंसक। नामर्द। २. शिव का एक नाम। ३. साँड।

षंढत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नामर्दी। हीजड़ापन।

षंडामक—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

षग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० खग] खग। पक्षी। उ०—उरप तिरप मान अति ही अद्भुत गान, मोहे नग षग मृग उच्च चढ़ा जामिनी। —नंददास०।

षट्—वि० [सं०] गिनती में ६। छः।

संज्ञा पुं० छः की संख्या।

षटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ६ की संख्या। २ ६ वस्तुओं का समूह।

षट्कर्म—संज्ञा पुं० [सं० षट्कर्म्मन्] १ ब्राह्मणों के छः कर्म—पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना। २. बखेड़ा। झंझट। खटराग।

षट्कोण—वि० [सं०] छः कोनोंवाला। छः कोना। छः पहला।

षट्चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. हठयोग में माने हुए कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छः चक्र। २. भीतरी चाल। षड्यंत्र।

षट्तिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

षट्पद—वि० [सं०] [स्त्री० षट्पदी] छः पैरोंवाला।

संज्ञा पुं० भ्रमर। भौंरा।

षट्पदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भ्रमरी। २ छप्पय।

षट्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

षट्रस—संज्ञा पुं० दे० "षड्रस"।

षट्राग—संज्ञा पुं० [सं० षट्+राग] १. संगीत के छः राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २ बखेड़ा। झंझट। खटराग।

षट्रिपु—संज्ञा पुं० दे० "षड्रिपु"।

षट्वांग—संज्ञा पुं० [सं०] खट्वांग नामक राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षट्शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के छः दर्शन।

षडंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २. शरीर के छः अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़।

वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।

षडविंसत, षडविंसति—वि० [सं० षट्+विंशति] छब्बीस। उ०—अब सुनि

पडविंसति अध्याइ। नद गरग के बचन सुनाइ।—नददास०।

षडानन—वि० [सं०] जिसे छ: मुँह हों। संज्ञा पुं० कार्तिकेय।

षड्गुण—सज्ञा पुं० [सं०] छ गुणों का समूह।

षड्ज—सज्ञा पुं० [सं०] सगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर।

षड्दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय, मीमासा आदि हिंदुओं के छ दर्शन।

षड्दर्शनी—सज्ञा पुं० [सं० षड्दर्शन+हिं० ई (प्रत्य०)] दर्शनों को जाननेवाला। ज्ञानी।

षड्यंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भीतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

षड्रस—सज्ञा पुं० [सं०] छ प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षड्रिपु—सज्ञा पुं० [सं०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छ: मनोविकार।

षण्मुख—सज्ञा पुं० दे० "षडानन"।

षपरा(पु)—सज्ञा पुं० [सं० खर्पर] खप्पर। उ०—मन में षपरा मन में सींगी, अनहद वेन वजावै रंगी।—कबीर०।

षरतर(पु)—वि० [सं० खरतर] प्रचंड। उग्र। उ०—जब षरतर खेल मचावा, तब गगन मंडल मठ छावा।—कबीर०।

षष्ठ—वि० [सं०] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षोडश मातृकाओं में से एक। ३. कात्यायनी। दुर्गा। ४ सबधकारक (व्याकरण)। ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

षाड्व—सज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें केवल छ स्वर लगते हों।

षाण्मातुर—सज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

षाण्मासिक—वि० [सं०] छ महीने का। छठे महीने में पड़नेवाला। छमाही।

षोडश—वि० [सं०] सोलहवाँ।

वि० [सं० षोडशन्] जो गिनती में दस से छ अधिक हो। सोलह।

सज्ञा पुं० सोलह की सख्या।

षोडश कला—सज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।

षोडश पूजन—सज्ञा पुं० दे० "षोडशोपचार"।

षोडश मातृका—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह मानी गई हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातर और आत्मदेवता।

षोडश शृंगार—सज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।

षोडश संस्कार—सज्ञा पुं० [सं०] गर्भाधान पुंसवन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सोलह वैदिक सस्कार।

षोडशी—वि० स्त्री० [सं०] १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की (लड़की या स्त्री)।

सज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. मृतक संबधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

षोडशोपचार—सज्ञा पुं० [सं०] पूजन के पूर्ण अग जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वदना।

षोषरी—वि० स्त्री० [हिं० खोखली (स्त्री०)] खोखली। खाली। उ०—माया ऊपरि माया माँड़ी, साथ न चलै षोषरी हाँडी।—कबीर०।

ष्ठीवन—सज्ञा पुं० [सं०] थूकना। थूक।

स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यजन। इसका उच्चारणस्थान दत है, इसलिये यह दंती या दंत्य स कहा जाता है।

सं—अव्य० [सं० सम्] १ एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, सगति, उत्कृष्टता, निरतरता आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में होता है, जैसे—सयोग, सताप, सतुष्ट आदि। २. से।

सइतना†—क्रि० स० [सं० सचय] १ लीपना। पोतना। २. सचय करना। ३ सहेजना।

सँउपना(पु)†—क्रि० सं० दे० "सौंपना"।

संक(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "शंका"। उ०—वही बात सिगरी कहैं, उलयो होत यकंक। सब निज उक्ति बनायहूँ, रहै स्वकल्पित सक।—काव्यनिर्णय।

संकट—वि० [सं० सम+कृत] सँकरा। तग।

सज्ञा पुं० १. विपत्ति। आफत। मुसीबत। २ दु ख। कष्ट। तकलीफ। ३ दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता।

संकटा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक देवी। २ ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

सकत(पु)—सज्ञा पुं० दे० "सकेत"।

सकना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० संक से ना० धा०] १ शंका करना। सदेह करना। २ डरना।

संकर—सज्ञा पुं० [सं०] १. दो चीजों का आपस में मिलना। २ वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ३. अलकारों का एक भेद। इसमें दो या अधिक अलंकार अगांगिभाव से मिले रहते हैं या एक ही आश्रय पर स्थित रहते हैं या अनेक अलकारों का सदेह होता है।

सज्ञा पुं० दे० "शंकर"।

संकरघरनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शकर+गृहिणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।

सकरता—सज्ञा स्त्री० [स०] संकर होने का भाव या धर्म। मिलावट। घालमेल।

संकरषन—सज्ञा पुं० [सं० सकर्षण] दे० "संकर्षण ३"। उ०—श्री अनत महिमा अनंत को बरनि सकै कवि। सकरषन सो कछुक कही श्रीमुख जाकी छवि॥—नददास०।

सँकरा†—वि० [सं० सकीर्ण] [स्त्री० सँकरी] पतला और तग।

संज्ञा पुं० कष्ट। दु ख। विपत्ति।

(पु)†संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] साँकल। जजीर।

सँकराना(पु)—क्रि० स० [हिं० सँकरा से ना० धा०] सँकरा या सकुचित करना।

क्रि० अ० सँकरा या सकुचित होना।

संकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. खींचने की क्रिया। २ हल से जोतने की क्रिया। ३ कृष्ण के भाई बलराम। ४ वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

संकला†—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १. सिकड़ी। जजीर। २ पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।

संकलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संकलित] १ संग्रह करना। जमा करना। २. संग्रह। ढेर। ३. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़। ४ अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया ५ इस प्रकार संकलित ग्रंथ।

संकलप—संज्ञा पुं० दे० "संकल्प"।

संकलपना(पु)†—क्रि० स० [हिं० संकलप से ना० धा०] १ किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। २ किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना। संकल्प करना।

क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना।

संकलयिता—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संकलयित्री] संकलन करनेवाला।

संकलित—वि० [सं०] १ चुना हुआ। संगृहीत। २ इकट्ठा किया हुआ।

संकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य करने की इच्छा। विचार। इरादा। २ कोई देवकार्य करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३ ऐसे समय पढ़ा जानेवाला मंत्र। ४ दृढ़ निश्चय। पक्का विचार।

संकल्पित—वि० [सं०] जिसका संकल्प या निश्चय किया गया हो।

संकष्ट—संज्ञा पुं० दे० "संकट"।

सकाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० सक से ना० धा०] डरना।

संकार†—संज्ञा स्त्री० [सं० संकेत] इशारा।

संकारना†—क्रि० स० [हिं० संकार से ना० धा०] संकेत करना।

संकाश—अव्य [सं०] १ समान। सदृश। २ समीप। निकट। पास।

संज्ञा पुं० [?] प्रकाश। चमक।

संकीर्ण—वि० [सं०] [भाव० संकीर्णता] १ संकुचित। तंग। सँकरा। २ मिश्रित। मिला हुआ। क्षुद्र। छोटा।

संज्ञा पुं० १ वह राग जो दो अन्य रागों को मिलाकर बने। २ संकट। विपत्ति।

संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गद्य जिसमें कुछ वृत्तगंधि और कुछ अवृत्तगंधि का मेल होता है।

संकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी की कीर्ति का वर्णन करना। २ देवता की वंदना, भजन आदि।

संकु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शंकु"।

संकुचन—संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।

सँकुचना—क्रि० अ० दे० "सकुचना"।

संकुचित—वि० [सं०] १ संकोचयुक्त। लज्जित। २. सिकुड़ा हुआ। तंग। सँकरा। ३ क्षुद्र। उदार का उलटा।

संकुल—वि० [सं०] [संज्ञा संकुलता] १ संकीर्ण। घना। २ भरा हुआ। परिपूर्ण।

संज्ञा पुं० १ युद्ध। लड़ाई। २ समूह। झुंड। ३ भीड़। जनता। ४ परस्पर विरोधी वाक्य।

संकुलित—वि० [सं० संकुल] भरा हुआ। व्याप्त।

संकेत—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संकेतित] १ भाव प्रकट करने के लिये कायिक चेष्टा। इशारा। इंगित। २ वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करें। सहेट। ३. चिह्न। निशान। ४ पते की बातें। ५ संकट। उ०—खिनहिं उठै, खिन बूड़ै अस हिय कँवल सँकेत। हीरामनहिं बुलावहि, सखी! गहन जिउ लेत।—पदमावत।

†—वि० दे० "सँकरा"।

संकेतना(पु)—क्रि० स० [हिं० संकेत से ना० धा०] संकट में डालना। कष्ट में डालना।

संकेतलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "संक्षिप्त लिपि"।

सँकेलना(पु)—क्रि० स० दे० "सकेलना"।

संकोच—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिकुड़ने की क्रिया। खिंचाव। तनाव। २ कमी। ३ बहुत सी बातों को थोड़े में कहना। विस्तार का उलटा। ४ लिहाज। ख्याल। मुरव्वत। उ०—सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू। —मानस। ५ लज्जा। शर्म। ६. भय। ७. आगा-पीछा। हिचकिचाहट। ८. एक अलंकार जिसमें 'विकास अलंकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय संकोच वर्णन किया जाता है।

सँकोचना—क्रि० स० [सं० संकोच से हिं० ना० धा०] १. संकुचित करना। २ संकोच करना।

संकोचित—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार।

संकोची—वि० [सं० संकोचिन्] १. सिकुड़नेवाला। २ संकोच करनेवाला।

संकोपना(पु)—क्रि० अ० [सं० संकोप से हिं० ना० धा०] क्रोध करना।

संक्या(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शंका] शक। शंका। उ०—अजहूँ न संक्या गई तुम्हारी, नाहि निसंक मिले बनवारी।—कबीर०।

संक्रंदन—संज्ञा पुं० [सं०] शक्र। इंद्र।

संक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ गमन। चलना। २. सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना।

संक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय।

संक्रामक—वि० [सं०] जो संसर्ग या छूत आदि के कारण फैलता हो।

संक्रामी—वि० दे० "संक्रामक"।

संक्रोन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "संक्रांति"।

संक्षिप्त—वि० [सं०] १ जो संक्षेप में हो। २ थोड़ा। अल्प।

संक्षिप्त लिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लेखनप्रणाली जिसमें अक्षरों के स्थान पर संकेतों का प्रयोग होता है और थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं।

संक्षिप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में एक आरभटी जिसमें क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है।

संक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ थोड़े में कोई बात कहना। २ घटाना। कम करना।

संक्षेपण—संज्ञा पुं० [सं०] संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।

संक्षेपतः—अव्य० [सं०] संक्षेप में। थोड़े में।

संख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शंख"।

संखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शंखनारी] दो यगण का एक छंद। सोमराजी। उ०—धरै याहि आजी। कहै सोमराजी॥

संखिया—संज्ञा पुं० [सं० श्रृंगिका] १ एक बहुत जहरीली सफेद उपधातु या पत्थर। २. उक्त धातु का तैयार किया हुआ भस्म जो दवा के काम में आता है।

संख्यक—वि० [सं०] संख्यावाला।

संख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक, दो, तीन, चार आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २. गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का गिनती में परिमाण बतलावे। अदद।

संग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलना। मिलन। २. सहवास। सोहबत।

मुहा०—(किसी के) संग लगना = साथ हो लेना। पीछे लगना।

३ विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। ४ वासना। आसक्ति।

क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित।

संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर, जैसे संगमरमर।

वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कड़ा।

संग जराहत—संज्ञा पुं० [फा० संग+अ० जराहत] एक सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है।

संगठन—संज्ञा पुं० [सं० सं+हिं० गठना] १ बिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन बल आ जाय। २ वह संस्था जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

संगठित—वि० [हिं० संगठन] जो भली भाँति व्यवस्था करके एक में मिलाया हुआ हो।

संगत—संज्ञा स्त्री० [सं० संगति] १ संग रहना। सोहबत। संगति। २ संग रहनेवाला। साथी। ३ वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। ४ संबंध। संसर्ग। ५ गाने बजाने के काम में योग देना।

वि०—मेल या जोड़ का। उपयुक्त। ठीक। मुताबिक। अनुकूल।

संगतरा—संज्ञा पुं० दे० "संतरा"।

संग तराश—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० संगतराशी] पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। पत्थरकट।

संगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २. संग। साथ। संगत। ३. प्रसंग। मैथुन। ४. संबंध। ताल्लुक। ५ ज्ञान। ६ आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

संगतिया, संगती—वि० [हिं० संगत] १ साथी। २ गवैए के साथ बाजा बजानेवाला।

संगदिल—वि० [फा०] [संज्ञा संगदिली] कठोरहृदय। निर्दय। दयाहीन।

संगम—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलाप। संमेलन। संयोग। मेल। २ दो नदियों के मिलने का स्थान। ३. प्रयाग में गंगा और यमुना के मिलने का विस्तृत मैदान। ४ साथ। संग।

संगमर्मर—संज्ञा पुं० [फा० संग+अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना मुलायम और सफेद कीमती पत्थर।

संगमूसा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का काला, चिकना, कीमती पत्थर।

संगयशब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का हरा कीमती पत्थर जिसे घिसकर या धोकर पीने से दिल का धड़कना कम हो जाता है। हौलदिली।

संगर—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध। संग्राम। उ०—संगर में सूरो सब गुन पूरो सरल सुभाएँ सक्ति कहैं। निरदंभ भगति वर विघनि आगर चौदह नर जग दुर्मिल है।—उदार्णव। २ विपत्ति। ३ नियम।

संज्ञा पुं० [फा०] १ सेना की रक्षा के लिये बनी हुई चारों ओर की खाई या धुस आदि। २ मोरचा।

संगसार—संज्ञा पुं० [फा०] अपराधी को पत्थर मारकर उसके प्राण लेना।

संगाती—संज्ञा पुं० [सं० संघात+हिं० ई (प्रत्य०)] १ साथी। संगी। २ दोस्त। मित्र।

संगामⓅ—संज्ञा पुं० दे० "संग्राम"।

संगारीⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० संगाती] संगी। साथी। उ०—आवहि न जाहि न कबहूँ मरते पारब्रह्म संगारी रे।—कबीर०।

संगिनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथी स्त्री। उ०—मातु विपति संगिनि तइँ मोरी।—मानस।

संगिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप] साथ रहनेवाली स्त्री। सखी। सहेली।

वि० स्त्री० साथ देनेवाली। उ०—आ पड़ी दृष्टि में, जीवन पर, सुंदरतम प्रेयसी, प्राण संगिनी, नाम शुभ रत्नावली-सरोज-दाम।—तुलसीदास।

संगी—संज्ञा पुं० [सं० संग+हिं० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० संगिनि, संगिनी] १ संग रहनेवाला। साथी। २ मित्र। बंधु।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

वि० [फा० संग = पत्थर] पत्थर का। संगीन।

संगीत—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।

संगीतशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें संगीत का विवेचन हो।

संगीन—संज्ञा पुं० [फा०] लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है।

वि० १ पत्थर का बना हुआ। २. मोटा। ३ टिकाऊ। मजबूत। ४ विकट। असाधारण, जैसे—संगीन जुर्म। संगीन अपराध।

संगृहीत—वि० [सं०] संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। संकलित।

संगोपन—संज्ञा पुं० [सं०] छिपाना।

संग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ एकत्र करना। जमा करना। संचय। २ वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ३ रक्षा। हिफाजत। ४ पाणिग्रहण। विवाह। ५ ग्रहण करने की क्रिया।

संग्रहणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें खाद्य पदार्थ बिना पचे बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है।

संग्रहणीय—वि० दे० "संग्राह्य"।

संग्रहनाⓅ—क्रि० स० [सं० संग्रहण] संग्रह करना। संचय करना। जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी संग्रह या संग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो।

संग्रहालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। (अं०) म्यूजियम।

संग्रही—वि० दे० "संग्राहक"।

संग्राम—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संग्राहक—वि० [सं०] संग्रह करनेवाला। संग्रहकर्ता।

संग्राह्य—वि० [सं०] संग्रह करने योग्य।

संघ—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। समुदाय। दल। २. समिति। सभा। समाज। ३ प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ४ महात्मा बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्धों (श्रमणों आदि) का धार्मिक समाज। ५. साधुओं आदि के रहने का मठ। संगत।

संघट—संज्ञा पुं० [सं०] १ संघटन। २ युद्ध। ३ समूह। ढेर। राशि।

संघटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेल। संयोग। २ नायक नायिका का संयोग। मिलाप। ३ रचना। ४. बनावट। ५ दे० "संगठन"।

संघटित—वि० [सं०] १ जिसका संघटन हुआ हो। २ दे० "संगठित"।

संघट्ट, संघट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बनावट। रचना। २ मिलन। संयोग। ३ दे० "संघटन"।

संघती—संज्ञा पुं० दे० "संघाती"।

संघपति—संज्ञा पुं० [सं०] संघ या दल का नायक।

संघरना—क्रि० स० [सं० संहार] १ संहार या नाश करना। २ मार डालना।

संघर्ष, संघर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. रगड़ खाना। रगड़। घिस्सा। २ प्रतियोगिता। स्पर्धा। ३ रगड़ना। घिसना।

संघस्थविर—संज्ञा पुं० [सं०] संघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु।

संघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। समष्टि। उ०—बढ़ने लगा विलास वेग सा वह अति भैरव जल संघात। —कामायनी। २ घनिष्ट मेल या मिश्रण। ३ ठोसपन। कठोरता। ४ सहयात्रा। काफिले का साथ। ५. आघात। चोट। ६ हत्या। वध। ७ नाटक में एक प्रकार की गति। ८ शरीर। ९ निवासस्थान।

संघाती—संज्ञा पुं० [सं० संघात+हिं० ई (प्रत्य०)] १ साथी। सहचर। २ मित्र।

(पु) संज्ञा स्त्री० सहेली। सहचरी। उ०—सखि प्रान की संघाती प्यारी नहीं लगै री। सुखदानि बानि तेरी अति दूरि को भगै री। —छंदार्णव।

संघार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "संहार"।

संघारना(पु)—क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार करना। नाश करना। २. मार डालना।

संघाराम—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।

संघोष—संज्ञा पुं० [सं०] जोर का शब्द।

संच(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० संचय] १. संग्रह करना। संचय। २. रक्षा। देखभाल।

संचक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "संचकर"।

संचकर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संचय+कर] १ संचय करनेवाला। २ कंजूस।

संचना(पु)†—क्रि० स० [सं० संचयन] १. संग्रह करना। संचय करना। २. रक्षा करना।

संचय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संचयी] १. समूह। ढेर। २ एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।

संचरण—संज्ञा पुं० [सं०] संचार करने की क्रिया। चलना। गमन।

संचरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० संचरण] १. घूमना। फिरना। चलना। २ फैलना। प्रसारित होना। ३ प्रचलित होना।

संचरित—वि० [सं०] जिसमें संचार हुआ हो।

संचान—संज्ञा पुं० [सं०] बाज पक्षी।

संचार—संज्ञा पुं० [सं०] [कर्ता संचारक, वि० संचारित] १ गमन। चलना। २ फैलना। ३ चलना।

संचारक—वि० [सं०] [स्त्री० संचारिणी। संचार करनेवाला।

संचारना(पु)†—क्रि० स० [सं० संचारण] १ किसी वस्तु का संचार करना। उ०—विरह बान पर बान पसारा। विरह रोग पर रोग संचारा। —पदमावत। २ प्रचार करना। फैलाना। ३ जन्म देना।

संचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूती। कुटनी।

संचारी—संज्ञा पुं० [सं० संचारिन्] १ वायु। हवा। २ साहित्य में वे क्षणिक भाव जो किसी प्रधान या स्थायी भाव के बीच में उठ उठकर उसकी पुष्टि करते हैं। व्यभिचारी भाव।

वि० [स्त्री० संचारिणी] संचरण करनेवाला। गतिशील।

संचालक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संचालिनी] चलाने या गति देनेवाला। परिचायक।

संचालन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना।

संचालित—वि० [सं०] जिसका संचालन किया गया हो। चलाया या जारी किया हुआ।

संचित—वि० [सं०] संचय या जमा किया हुआ।

संचौनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० संचयनी] संग्रह। एकत्रीकरण। उ०—राम नाम धन करि सँचौनी सोधन कतहीं न जावै। —कबीर०।

संजम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

संजय—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का क्षण क्षण का विवरण अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर सुनाते थे।

संजात—वि० [सं०] १ उत्पन्न। २ प्राप्त।

संजाफ—संज्ञा स्त्री० [फा० संजफ या संजाफ] १. झालर। किनारा। २ चौड़ी और आड़ी गोट जो रजाइयों आदि में लगाई जाती है। गोट। मगजी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा हरा होता है।

संजाफी—संज्ञा पुं० [हिं० संजाफ+ई (प्रत्य०)] आधा लाल और आधा हरा घोड़ा।

संजाब—संज्ञा पुं० दे० "संजाफ"।

संजीदा—वि० [फा०] [संज्ञा संजीदगी] १ गंभीर। शांत। २ समझदार। बुद्धिमान्।

संजीवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २ जीवन देनेवाला।

संजीवनी—वि० स्त्री० [सं०] जीवन देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मुर्दा जी उठता है।

संजीवनी विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते हैं कि इस विद्या के द्वारा मरे हुए को जिलाया जा सकता।

संजुक्त(पु)—वि० दे० "संयुक्त"।

संजुग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संयुग] संग्राम । युद्ध ।
सजुत(पु)—वि० दे० "संयुत" ।
सजुता—संज्ञा स्त्री० दे० "संयुत" (छंद) ।
सजूत—वि० [सं० संयुक्त] सावधान । तैयार । उ०—तेहि रे पंथ हम चाहहि गवना । होहु सँजूत बहुरि नहि अवना ।—पदमावत ।
सँजोइ(पु)—क्रि० [सं० संयोग] साथ में ।
सँजोइल(पु)—वि० [सं० सज्जित, हिं० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ । सुसज्जित । २. जमा किया हुआ । एकत्र ।
सँजोऊ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सँजोना] १. तैयारी । उपक्रम । २ सामान । सामग्री ।
सजोग—संज्ञा पुं० दे० "संयोग" ।
सँजोगी—संज्ञा पुं० दे० "सयोगी" ।
सँजोना†—क्रि० स० [सं० सज्जा] सजाना ।
सँजोवल(पु)†—वि० [हिं० सँजोना] १ सुसज्जित । २ सेनासहित । ३ सावधान ।
सँजोवना(पु)—क्रि० स० [हिं० सँजोना]
सँजोवल—वि० [हिं० सँजोइल] सावधान । सचेत । सजग । उ०—होहिं सँजोवल कुँवर जो भोगी । सब दर छेंकि धरहिं अब जोगी ।—पदमावत ।
संज्ञक—वि० [सं०] संज्ञावाला । जिसकी संज्ञा हो (यौगिक में) ।
संज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेतना । होश । २ बुद्धि । अक्ल । ३ ज्ञान । ४ नाम । आख्या । ५ व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी पदार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है, जैसे—मकान, नदी । ६ सूर्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी । ७ संकेत । इशारा । उ०—संज्ञा ही बातें किएँ, सूक्ष्म भूषन नाम । निज निज उर छ्वै छ्वै करी, सोहैं स्यामा स्याम । —काव्यनिर्णय ।
संज्ञाहीन—वि० [सं०] बेहोश । बेसुध ।
सँझला†—वि० [सं० संध्या] संध्या का ।
सँझवाती—संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या+वर्ती] १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक । २ वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है ।
संझा†—संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या] संध्या । शाम ।
सँझोखे(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या] संध्या का समय । शाम का वक्त ।
संड—संज्ञा पुं० [सं० शंड] साँड़ ।
संड मुसंड—वि० [हिं० संड + मुसंड (अनु०)] हट्टा कट्टा । मोटा ताजा । बहुत मोटा ।
संड़सा—संज्ञा पुं० [सं० संदंश] [स्त्री० अल्पा० सँड़सी] कैंची के आकार का एक औजार जिससे कोई वस्तु कसकर पकड़ी जाती है । गहुआ । जँबूरा ।
संडा—वि० [सं० शंड] मोटा ताजा । हृष्ट पुष्ट ।
संडास—संज्ञा पुं० [?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का भूमि के नीचे खोदा हुआ गहरा पाखाना । शौचकूप ।
संत—संज्ञा पुं० [सं० सत्] १. साधु, संन्यासी या त्यागी पुरुष । महात्मा । २ ईश्वरभक्त । धार्मिक पुरुष । ३ २१ मात्राओं का एक छंद । उ०—भला अब तो मन देय प्रभू भक्ति गहो । सिया राम सिया राम सिया राम कहो ॥
संतत—अव्य० [सं०] सदा । निरंतर । बराबर । लगातार ।
संतति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाल बच्चे । संतान । औलाद । २ प्रजा । रिआया ।
संतपन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह तपना । २ बहुत दुःख देना ।
संतप्त—वि० [सं०] १ बहुत तपा हुआ । जला हुआ । दग्ध । २ दुःखी । पीड़ित ।
संतरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह से तरना या पार होना । २. जल आदि द्रव पदार्थ के ऊपरी तल पर चलना, जैसे नाव । ३ तैरना । पौड़ना । ४. उतराना । ५ तारनेवाला ।
संतरा—संज्ञा पुं० [पुर्त० सगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू ।
संतरी—संज्ञा पुं० [अँ० सेंट्री] १. पहरा देनेवाला । पहरेदार । २ द्वारपाल ।
संतान—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालबच्चे । संतति । औलाद ।
संज्ञा पुं० १. विस्तार । फैलाव । २. वह प्रवाह जो अविच्छिन्न रूप से चलता हो । ३ प्रबंध । इंतजाम । ४. कल्पवृक्ष । देवतरु ।
संताप—संज्ञा पुं० [सं०] १ ताप । जलन । आँच । २ दुःख । कष्ट । ३ मानसिक कष्ट ।
संतापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ संताप देना । जलाना । २ बहुत दुःख या कष्ट देना । ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।
संतापना(पु)†—क्रि० स० [सं० संतापन] संताप देना । दुःख देना । कष्ट पहुँचाना । उ०—जाको काम क्रोध नित व्यापै । अरु पुनि लोभ सदा संतापै । ताहि असाधु कहत कवि सोई । साधु भेष धरि साधु न होई । —सूर० ।
संतापित—वि० दे० "संतप्त" ।
संतापी—संज्ञा पुं० [सं० संतापिन्] संताप देनेवाला ।
संती†—अव्य० [सं० संति ?] १. बदले में । एवज में । स्थान में । २. द्वारा । से ।
संतुलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ तौल या भार बराबर और ठीक करना । २. दो पक्षों का बल बराबर रखना ।
संतुष्ट—वि० [सं०] १. जिसका संतोष हो गया हो । तृप्त । २ जो मान गया हो ।
संतोख—संज्ञा पुं० दे० "संतोष" ।
संतोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ हर हालत में प्रसन्न रहना । संतुष्टि । सब्र । २. तृप्ति । शांति । इतमीनान । ३ प्रसन्नता । सुख । आनंद ।
संतोषना(पु)†—क्रि० स० [सं० संतोष से हिं० ना० धा०] संतोष दिलाना । संतुष्ट करना ।
क्रि० अ० संतुष्ट होना । प्रसन्न होना ।
संतोषित—वि० दे० "संतुष्ट" । उ०—परम अकिंचन कछु नहिं चहैं । जथा लाभ संतोषित रहैं ।—नंददास० ।
संतोषी—संज्ञा पुं० [सं० संतोषिन्] वह जो सदा संतोष रखता हो । सब्र करनेवाला ।
संत्रस्त—वि० [सं०] १ डरा हुआ । भयभीत । २ घबराया हुआ । व्याकुल । ३ जिसे कष्ट पहुँचा हो । पीड़ित ।
संत्री—संज्ञा पुं० दे० "संतरी" ।
संथा—संज्ञा पुं० [सं० संहिता ?] एक बार में पढ़ाया हुआ अंश । पाठ । सबक ।
संदा†—संज्ञा पुं० [?] दबाव ।
संदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १. रचना । बनावट । २ निबंध । लेख । ३ कोई छोटी पुस्तक ।
संदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह देखना । उ०—हैं माया चपल संदर्शन को, आतुरपद चलकर पहुँचे ।—तुलसीदास ।

संदल—संज्ञा पुं० [फा०] श्रीखंड। चंदन।

संदली—वि० [फा० संदल] १. संदल के रंग का। हलका पीला (रंग)। २ चंदन का।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २ एक प्रकार का हाथी। ३ घोड़े की एक जाति।

संदि—संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] मेल। संधि।

संदिग्ध—वि० [सं०] १ जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। २. जिसपर संदेह हो।

संदिग्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २. किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना। अलंकारशास्त्रानुसार एक दोष।

संदीपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संदीपक] १ उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। २ कृष्ण के गुरु का नाम। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।

संदूक—संज्ञा पुं० [अ० संदूक] [अल्पा० संदूकचा] लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा। पेटी। बक्स।

संदूकचा—संज्ञा पुं० दे० "संदूकड़ी"।

संदूकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक] छोटा संदूक।

संदूर—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

संदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाचार। हाल। खबर। २ एक प्रकार की बँगला मिठाई।

संदेस—संज्ञा पुं० दे० "सँदेसा"।

सँदेसड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० संदेस+ड़ा (प्रत्य०)] संदेसा। संदेश। उ०—पिउ सौं कहेहु सँदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग!—पदमावत।

सँदेसा—संज्ञा पुं० [सं० संदेश] जबानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल।

सँदेसी—संज्ञा पुं० [हिं० सँदेसा+ई (प्रत्य०)] सँदेसा लाने और ले जानेवाला। दूत। बसीठ। उ०—राजै कहा, रे सरग सँदेसी। उतरि आउ, मोहिं मिलु, रे विदेसी।—पदमावत।

संदेह—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी विषय में निश्चित न होनेवाला विश्वास। संशय। शंका। शक। २ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।

सँदेहिल—वि० [सं० संदेह+हिं० इल (प्रत्य०)] संदेह युक्त। संदेहवाला। उ०—नाम धरयो मदिग्ध पद, मध्द सँदेहिल आहु।—काव्यनिर्णय।

संदोह—संज्ञा पुं० [सं०] समूह। झुंड।

संध(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "संधि"।

संधना†—क्रि० अ० [हिं० संध से ना० धा०] संयुक्त होना।

संधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २. योजन। मिलाना। ३ अन्वेषण। खोज। उ०—ग्रह, नक्षत्र और विद्युत्कण किसका करते से संधान।—कामायनी। ४ काठियावाड़ का एक नाम। ५ संधि। ६ काँजी।

संधानना†—क्रि० स० [सं० संधान से हिं० ना० धा०] १ निशाना लगाना। २ बाण छोड़ना।

संधाना—संज्ञा पुं० [सं० संधानिका] अचार।

संधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेल। संयोग। २ मिलने की जगह। जोड़। ३ राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापारसंबंध स्थापित किया जाता है। ४ सुलह। मित्रता। मैत्री। ५ शरीर में का कोई जोड़। गाँठ। ६ व्याकरण में दो अक्षरों का मेल और उसके कारण होनेवाला रूपांतर। ७ नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ८ चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९ एक अवस्था या काल के अंत और दूसरी अवस्था या काल के आरंभ के बीच का समय, जैसे—युगसंधि, कालसंधि, वयःसंधि आदि। १० बीच की खाली जगह। अवकाश। दरार।

संधितट—संज्ञा पुं० [सं०] संधिस्थल। जोड़ का स्थान।

संध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल। २ शाम। सायंकाल। ३ आर्यों की एक विशिष्ट उपासना जो प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।

संनिवेश—संज्ञा पुं० दे० "सन्निवेश"।

सन्यस्त—वि० [सं० सन्यास] १ जिसने सन्यास लिया हो। २ पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ। कटिबद्ध।

सन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में अंतिम जो वानप्रस्थ के बाद प्रारंभ होता है। इसमें सदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहना, दंड और कमंडलु साथ रखना, शिखा और सूत्र का परित्याग कर सिर मुँडाए रहना, भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करना, एकांतवास करना, तृष्णा त्याग कर समता धारण करना, नित्य, नैमित्तिक आदि कर्म निष्काम भाव से करते रहना और सदुपदेश देकर लोककल्याण साधना आवश्यक माना गया है।

सन्यासी—संज्ञा पुं० [सं० सन्यासिन्] सन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

संपजना(पु)—क्रि० अ० [सं० सम+√पद्] १ उपजना। पैदा होना। उगना। २ प्रकाशित होना।

संपति—संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

संपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऐश्वर्य। वैभव। २ धन। दौलत। जायदाद।

संपद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिद्धि। पूर्णता। २ ऐश्वर्य। वैभव। गौरव। ३ सौभाग्य।

संपदा—संज्ञा स्त्री० [सं० संपद्] १. धन। दौलत। २ ऐश्वर्य। वैभव।

संपन—वि० [सं० संपन्न] संपन्न। उ०—नंददास प्रभु पद्गुन संपन श्री विठ्ठलेश वरौ।—नंददास०।

संपन्न—वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० संपन्नता] १ पूरा किया हुआ। परिपूर्ण। सिद्ध। २ सहित। युक्त। ३ धनी। दौलतमंद।

संपर्क—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संपृक्त] १. मिश्रण। मिलावट। २ लगाव। संसर्ग। वास्ता। ३ स्पर्श। सटना।

संपर्कित—वि० दे० "संपृक्त"।

संपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली। उ०—संपा को प्रकाश दक अवली को अवकास, बूदनि विकास दास देखिये कों या समें।—काव्यनिर्णय।

संपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ गिरना या पड़ना। २ संसर्ग। मेल। ३ संगम। समागम। ४ वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।

संपाति—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गीध जो अरुण का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २ माली नामक राक्षस का एक पुत्र।

संपाती—संज्ञा पुं० दे० "सपाति"।

संपादक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २ तैयार करनेवाला। ३ किसी की कृति को प्रकाशन के योग्य बनानेवाला व्यक्ति। ४. किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला।

संपादकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] संपादन करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय—वि० [सं०] संपादक का।

संपादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ काम को पूरा करना। २ प्रदान करना। ३ ठीक करना। दुरुस्त करना। ४ किसी की कृति को प्रकाशन के योग्य बनाना। ५ किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना।

संपादित—वि० [सं०] १ पूरा किया हुआ। २ प्रकाशन योग्य बनाया हुआ। ३ क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ (पत्र, पुस्तक आदि)।

संपुट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० संपुटी] १ पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३ दोना। ४. डिब्बा। ५ अंजली। ६ फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। ७ कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं।

संपुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० संपुट] कटोरी। प्याली।

संपूर्ण—वि० [सं०] १ खूब भरा हुआ। २ सब। बिलकुल। ३ समाप्त। खतम।

संज्ञा पुं० १ वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २ आकाश भूत।

संपूर्णतः—क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।

संपूर्णतया—क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।

संपूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. समाप्ति।

संपृक्त—वि० [सं०] १ जिससे संपर्क हो। २ मिला हुआ।

सँपेरा—संज्ञा पुं० [हिं० साँप + एरा (हिं० प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला। मदारी।

संपै(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

सँपोला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप] साँप का बच्चा।

संपोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संपोषित] अच्छी तरह पालन पोषण करना।

संप्रज्ञात—संज्ञा पुं० [सं०] योग में वह समाधि जिसमें साधक को अपने पार्थक्य का ज्ञान बना रहता है जिससे वह एकाकार वृत्ति में नहीं हो पाता।

संप्रति—अव्य० [सं०] १. इस समय। अभी। आजकल। २ मुकाबले में।

संप्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] १. दान देने की क्रिया या भाव। २ दीक्षा। मंत्रोपदेश। ३ व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न "को" और "के लिये" है।

संप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] १ गुरुमंत्र। २ कोई विशेष धर्मसंबंधी मत। ३ किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फिरका। ४. परिपाटी। रीति। चाल।

संप्राप्त—वि० [सं०] [संज्ञा संप्राप्ति] १ पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ पाया हुआ। ३. घटित। जो हुआ हो।

संबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २ लगाव। संपर्क। वास्ता। ३ नाता। रिश्ता। ४ संयोग। मेल। ५ विवाह। सगाई। ६ व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है, जैसे राम का घोड़ा।

संबंधातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखाया जाता है।

संबंधित—वि० दे० "संबद्ध"।

संबंधी—वि० [सं० संबंधिन्] [स्त्री० संबंधिनी] १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २ विषयक।

संज्ञा पुं० १ रिश्तेदार। २ समधी।

संबत्—संज्ञा पुं० दे० "संवत्"।

संबद्ध—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। जुड़ा हुआ। २ संबंधयुक्त। ३ बंद।

संबल—संज्ञा पुं० [सं०] १ रास्ते का भोजन। सफरखर्च। पाथेय। २ सहारा। सहायता।

संबुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा संबुद्धि] १ ज्ञानी। ज्ञानवान्। २. जाना हुआ। ज्ञात। ३ बुद्ध। ४ जिन।

संबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संबोधित संबोध्य] १. जगाना। नींद से उठाना। २. पुकारना। ३ व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है, जैसे—हे राम! ४ जताना। विदित कराना। ५ नाटक में आकाशभाषित। ६ समझाना बुझाना।

(पु)—क्रि० स० [सं०] समझाना बुझाना।

सँभरना(पु)†—क्रि० अ० दे० "सँभलना"।

सँभलना—क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १ किसी बोझ आदि का थामा जा सकना। २ किसी सहारे पर रुका रह सकना। ३ होशियार होना। सावधान होना। ४. चोट या हानि से बचाव करना। ५. कार्य का भार उठाया जाना। ६ स्वस्थता प्राप्त करना। चंगा होना।

संभव—संज्ञा पुं० [सं० सम्भव] १. उत्पत्ति। जन्म। २ मेल। संयोग। ३. होना। ४ हो सकने के योग्य होना।

वि० उत्पन्न (यौ० के अंत में)।

संभवत—अव्य० [सं०] हो सकता है। मुमकिन है। शायद।

संभवना(पु)—क्रि० स० [सं० संभव से हिं० ना० धा०] उत्पन्न करना।

क्रि० अ० १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ संभव होना। हो सकना।

संभवनीय—वि० [सं०] संभव। मुमकिन।

संभार—संज्ञा पुं० [सं०] १ संचय। एकत्र करना। २ तैयारी। साज सामान। ३ धन। संपत्ति। ४ पालन। पोषण।

(पु)संज्ञा पुं० [हिं० सँभालना] १. देखरेख। खबरदारी। २. पालन पोषण।

यौ०—सार सँभार = पालन पोषण और निरीक्षण का भार।

३. वश में रखने का भाव। रोक। निरोध। ४ तन बदन की सुध। उ०—ठाढ़े भए बिबस बसि सबही काहु न रही सँभार।—नंददास०।

सँभारना(पु)†—क्रि० स० [सं० संभार] १ दे० "सँभालना"। २ याद करना।

सँभाल—संज्ञा स्त्री० [सं० संभार] १ रक्षा। हिफाजत। २ पोषण का भार। ३. देखरेख। निगरानी। ४. तन बदन की सुध।

सँभालना—क्रि० स० [सं० संभार] १. भार ऊपर ले सकना। २. रोके रहना। काबू में रखना। ३. गिरने न देना। थामना। ४. रक्षा करना। हिफाजत करना। ५ बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। उद्धार करना। ६. पालन पोषण करना। ७ देखरेख करना। निगरानी करना। ८ निर्वाह करना। चलाना। ९ कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। १०. किसी मनोवेग को रोकना।

सँभाला—संज्ञा पुं० [हिं० सँभाल] मरने के पहले कुछ चेतनता सी आना।

सँभालु—संज्ञा पुं० [हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेवड़ी।

संभावना—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भावना] १ कल्पना। अनुमान। २ हो सकना। मुमकिन होना। ३ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। ४. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है।

संभावित—वि० [सं० सम्भावित] १ कल्पित। मन में माना हुआ। २. जुटाया हुआ। ३. संभव। मुमकिन। ४ सम्मानित। प्रतिष्ठित। उ०—संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥ —मानस।

संभाव्य—वि० [सं० संभाव्य] संभव। मुमकिन।

संभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य] कथोपकथन। बातचीत।

संभाषी—वि० [सं०] [स्त्री० संभाषिणी] कहनेवाला। बोलनेवाला।

संभाष्य—वि० [सं० संभाष्य] जिससे बातचीत करना उचित हो। बातें करने योग्य।

संभूत—वि० [सं० सम्भूत] [संज्ञा संभूति] १ एक साथ उत्पन्न। २ उत्पन्न। उद्भूत। पैदा। ३. युक्त। सहित।

संभूय—अव्य० [सं०] १ साझे में। २ मिलजुलकर। एक साथ। एक में।

संभूय समुत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] साझे का कारबार।

संभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुखपूर्वक व्यवहार। उपभोग। २. रति क्रीड़ा। मैथुन। ३. संयोग शृंगार। मिलाप की दशा।

संभ्रम—संज्ञा पुं० [सं० सम्भ्रम] १.घबराहट। व्याकुलता। २ सहम। सिटपिटाना। अभिभव। ३ आदर। मान। गौरव। ४ चक्कर। फेरा। ५ उत्कंठा। उमंग। जोश। ताव। तपाक। ६. आतुरता। जल्दी।

क्रि० वि० झपटकर। तेजी से। उ०—सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आई सब रानी॥ —मानस।

संभ्रांत—वि० [सम्भ्रान्त] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २ संमानित। प्रतिष्ठित।

संभ्राजना (पु)—क्रि० अ० [सं० सम्√भ्राज] पूर्णतः सुशोभित होना।

संमत—वि० दे० "सम्मत"।

संयत—वि० [सं०] १ बद्ध। बँधा हुआ। २ दबाव में रखा हुआ। ३ दमन किया हुआ। वशीभूत। ४ बंद किया हुआ। कैद। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ६. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। निग्रही। ७ उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।

संयम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १ रोक। दाब। २ इंद्रियनिग्रह। चित्तवृत्ति का निरोध। आत्मनिग्रह। ३ हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। ४. बाँधना। बंधन। ५ बंद करना। मूँदना। ६ योग में ध्यान, धारणा और समाधि तीनों का वाचक शब्द। मनोनिग्रह।

संयमन—संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

संयमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमपुरी।

संयमित—वि० [सं०] १. जो संयम के अधीन हो। २ रोका या बाँधा हुआ।

संयमी—वि० [सं० संयमिन्] १ रोक या दबाव में रखनेवाला। २ मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्मनिग्रही। योगी। ३. परहेजगार।

संयुक्त—वि० [सं०] [भाव० संयुक्तता] १ जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २ मिला हुआ। ३. संबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४. सहित। साथ।

संयुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सगण, दो जगण और अंत्य गुरु कुल १० वर्ण होते हैं। उ०—सजि जोग शंकर कारनै। तप गौरि कीन्हेउ काननै। इसे संयुत भी कहते हैं।

संयुग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। संयोग। २. युद्ध। लड़ाई।

संयुत—वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। उ०—मंद गंभीर धीर स्वर संयुत यही कर रहा सागर गान।—कामायनी। २ सहित। साथ।

संज्ञा पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। उ०—सति भक्ति संयुत पाइकै। किय ब्याह शंकर आइकै।

संयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २ समागम। मिलाप। ३ लगाव। संबंध। ४ सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसंग। ५ विवाहसंबंध। ६ जोड़। योग। ७ दो या कई बातों का इकट्ठा होना। इत्तफाक। यदृच्छा।

मुहा०—संयोग से=बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्।

संयोगी—संज्ञा पुं० [सं० संयोगिन्] [स्त्री० संयोगिनी] १ संयोग करनेवाला। २. वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो।

संयोजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलानेवाला। २ व्याकरण में वह शब्द जो शब्दों वाक्यांशों, उपवाक्यों या वाक्यों को जोड़ता है। ३. वह व्यक्ति जो किसी सभा या समिति के द्वारा किसी समिति या उपसमिति के अधिवेशन या कार्य संपादन कराने और उसका कार्य संचालित करने के लिये नियुक्त होता है और उस समिति या उपसमिति के मंत्री या अध्यक्ष के रूप में काम करता है।

संयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] १ जोड़ने या मिलाने की क्रिया। २ चित्र अंकित करने में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिये आकृतियों को ठीक जगह पर बैठाना। जुड़ाना। जुटाना।

सँयोना (पु)—क्रि० स० दे० "सँजोना"।

संरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संरक्षिका] १. रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देखरेख और पालन पोषण करनेवाला। ३ आश्रय देनेवाला।

संरक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. हानि

या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २. देखरेख। निगरानी। ३. अधिकार कब्जा। ४. दूसरों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा।

संरक्षित—वि० [सं०] १. हिफाजत से रखा हुआ। २ अच्छी तरह से बचाया हुआ। ३. अपनी देखरेख में लिया हुआ।

संलक्ष्य—वि० [सं०] जो लखा जाय।

संलक्ष्य-क्रम-व्यंग्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो (साहित्य)।

संलग्न—वि० [सं०] [स्त्री० संलग्ना] १ सटा हुआ। २. साथ में लगा हुआ। संबद्ध। ३. लड़ाई में गुथा हुआ।

संलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वार्तालाप। बातचीत। २. नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें धीरता होती है।

संलापक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का उपरूपक। २. "संलाप"।

संवत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. वर्षविशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है। सन्। ३ महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्षगणना।

संवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।

सँवर—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] १. स्मरण। याद। २. खबर। ३. हाल। ४. पुल। ४ चुनना।

संवरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवरणीय, संवृत] १ हटाना। दूर रखना। २ बंद करना। ३ आच्छादित करना। छोपना। ४. छिपाना। गोपन करना। समेटना। ५ किसी चित्तवृत्ति को दबाना या रोकना। निग्रह। ६. पसंद करना। चुनना। ७ कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना।

सँवरना—क्रि० अ० [सं० संवर्णन] १. दुरुस्त होना। २ सजना। अलंकृत होना।

क्रि० स० [हिं० सुमिरना] स्मरण करना। उ०—मोहिं ओहि सँवरि मुए तस लाहा। नैन जो देखसि पूछसि काहा। —पद्मावत।

सँवरिया—वि० दे० "साँवला"।

संवर्द्धक—संज्ञा पुं० [सं०] बढ़ानेवाला।

संवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध] १. बढ़ना। २. पालना। पोसना। ३ बढ़ाना।

संवलित—वि० [सं०] १ मिला हुआ। जुटा हुआ। २. मिला हुआ। ३. युक्त। सहित। ४ घिरा हुआ।

सँवा—वि० [सं० समान] समान। तुल्य। उ०—हँसी आटा लूण ज्यूं, सोना सँवा सरीर। —कबीर०।

संवाद—संज्ञा पुं० [सं०, कर्ता० संवादक] १ बातचीत। कथोपकथन। २. खबर। हाल। समाचार। ३. प्रसंग। चर्चा। ४ मामला। मुकदमा।

संवाददाता—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समाचारपत्रों में स्थानीय समाचार भेजता हो।

संवादी—वि० [सं० संवादिन्] [संज्ञा स्त्री० संवादिता, संवादिनी] १ संवाद या बातचीत करनेवाला। २. सहमत या अनुकूल होनेवाला।

संज्ञा पुं० संगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता और सहायक होता है।

संवार—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढाँकना। छिपाना। २ शब्दों के उच्चारण में बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कंठ का आकुंचन होता है।

सँवार—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] हाल। खबर।

संज्ञा स्त्री० सँवारने की क्रिया या भाव।

सँवारना—क्रि० स० [सं० संवर्णन] १ सजाना। अलंकृत करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। ३ क्रम से रखना। ४. काम ठीक करना।

संवास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवासित] १ सुगंध। खुशबू। २ श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध। ३ सार्वजनिक निवासस्थान। ४. मकान। घर।

संवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवाहनीय, संवाहित, संवाही, संवाह्य] १. उठाकर ले चलना। ढोना। २ ले जाना। पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन।

संविद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेतना। ज्ञानशक्ति। २ बोध। समझ। ३ बुद्धि। महत्तत्व। ४ संवेदन। अनुभूति। ५ मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया हो। ६ वृत्तांत। हाल। संवाद। ७ नाम। ८ युद्ध। लड़ाई। ९. संपत्ति। जायदाद।

संविद्—वि० [सं०] चेतन। चेतनायुक्त।

संविधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. मौलिक नियमों का वह समूह जिसके अनुसार किसी राष्ट्र या राज्य का संघटन हो। राज्य या राष्ट्र के संघटन की रीति। राज्य नियम। २. प्रबंध। व्यवस्था। ३. रीति। दस्तूर। ४. रचना।

संवृत—वि० [सं०] १. ढका या घिरा हुआ। २ रक्षित।

संवेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुभव। वेदना। २. ज्ञान। बोध।

संवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेदनीय संवेदित, संवेद्य] १. अनुभव करना। सुख दुःख आदि की प्रतीति करना। उ०—मनु का मन था विकल हो उठा संवेदन से खाकर चोट। —कामायनी। २. ज्ञान। ३ जताना। प्रकट करना।

संवेदना—संज्ञा स्त्री० १. दे० "संवेदन"। २ दे० "समवेदना"।

संवेद्य—वि० [सं०] १. अनुभव करने योग्य। २ जताने योग्य। बताने लायक।

संशय—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनिश्चयात्मक ज्ञान। संदेह। शक। शुबहा। २. आशंका। डर। ३ संदेह नामक काव्यालंकार।

संशयात्मक—वि० [सं०] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का।

संशयात्मा—संज्ञा पुं० [सं० संशयात्मन्] जो किसी बात पर विश्वास न करे। जो हर बात के लिये संदेह से भरा हो।

संशयित—वि० [सं०] १ संशययुक्त। दुबधा में पड़ा हुआ। २. संदिग्ध। अनिश्चित।

संशयी—वि० [सं० संशयिन्] १. संशय या संदेह करनेवाला। २ शक्की।

संशयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपमा अलंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप में कही जाती है।

संशुद्ध—वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो।

संशोधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। २ बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला।

संशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. चुकता करना। अदा करना (ऋण आदि)।

संशोधित—वि० [सं०] १ शुद्ध किया हुआ। २ सुधारा हुआ।

संश्रय—सज्ञा पुं० [सं०] १. सयोग। मेल। २ सबध। लगाव। ३ आश्रय। शरण। ४. सहारा। अवलंब। ५. मकान। घर।

संश्रयण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सश्रयणीय, सश्रयी, सश्रित] १ सहारा लेना। २. शरण लेना।

संश्रित—वि० [सं०] १ लगा हुआ। २ शास्त्र में आया हुआ। ३ दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित।

सश्लिष्ट—वि० [सं०] १ मिला हुआ। समिलित। २ सटा हुआ। जुड़ा हुआ। ३ आलिंगित। परिरभित।

सश्लेष—सज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। २ मिलान। सटाव। ३ आलिंगन। परिरंभण।

संश्लेषण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सश्लेषणीय, सश्लेषित, सश्लिष्ट] १ एक में मिलाना। सटाना। २. अँटकाना। टाँगना।

संस(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सशय] आशका। उ०—सस परी जहँ कस जिय, चड चडिका बैन। —नददास०।

ससइ(पु)—स्त्री० पुं० [स० सशय] सशय। आशका।

संसक्ति—स्त्री० स्त्री० [सं०] [वि० ससक्त] १. लगाव। सबध। २ आसक्ति। लगन। ३ लीनता। ४ प्रवृत्ति।

संसद्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बहुत से आदमियों का जमाव। सभा। परिषद्। समिति। राजसभा। २. भारत की विधान बनानेवाली सभा जिसके तीन अग राष्ट्रपति राज्यसभा और लोकसभा हैं।

संसरण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० ससरणीय, संसरित, ससृत] १ चलना। गमन करना। २ ससार। जगत्। ३ सड़क। रास्ता।

ससर्ग—सज्ञा पुं० [सं०] १. सबध। लगाव। २ मेल। मिलाप। ३ सग। साथ। ४. स्त्रीपुरुष का सहवास।

संसर्गदोष—सज्ञा पुं० [सं०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे।

संसर्गी—वि० [स० ससर्गिन्] [स्त्री० ससर्गिणी] ससर्ग या लगाव रखनेवाला।

संसा(पु)—सज्ञा पुं० दे० "सशय"।

संसाध्य—वि० [सं०] १. करने योग्य। जिसे करना हो। २ पूरा करने योग्य। ३. जीतने योग्य।

संसार—सज्ञा पुं० [स०] १ जगत्। दुनिया। सृष्टि। २ इहलोक। मर्त्यलोक। ३. गृहस्थी। ४ बार बार जन्म लेने की परपरा। ५ लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता रहना।

ससारतिलक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उत्तम चावल।

ससारी—वि० [सं० ससारिन्] [स्त्री० ससारिणी] १ ससारसबधित। लौकिक। २ ससार की माया में फँसा हुआ। लोकव्यवहार में कुशल। ३. बार बार जन्म लेनेवाला।

ससिक्त—वि० [स०] बहुत गीला या आर्द्र।

ससृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ जन्म पर जन्म लेने की परपरा। आवागमन। २ ससार। उ०—गरल जलद की खड़ी झड़ी में बूँदें निज ससृति रचतीं।—कामायनी।

ससृष्ट—वि० [सं०] १ एक में मिलाजुला। मिश्रित। २ सबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ३ अतर्गत। शामिल।

ससृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २ मिलावट। मिश्रण। ३. सबध। लगाव। ४ हेलमेल। घनिष्ठता। ५ इकट्ठा करना। सग्रह। ६ दो या अधिक काव्यालकारों का ऐसा मेल जिसमें सब चावल और तिल के समान अलग अलग मालूम पड़े।

ससेवन—संज्ञा पुं० [वि० संसेवित] दे० "सेवन"।

संस्करण—सज्ञा पुं० [सं०] १ ठीक करना। दुरुस्त करना। २ शुद्ध करना। सुधारना। ३ द्विजातियों के लिये विहित सस्कार करना। ४ पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति (आधुनिक)।

संस्कर्ता—सज्ञा पुं० [सं०] सस्कार करनेवाला।

संस्कार—सज्ञा पुं० [सं०] १ ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २ सजाना। ३ साफ करना। परिष्कार। ४ शिक्षा, उपदेश, सगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। ५ पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है। ६ धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। ७ जन्म से लेकर मृत्यु तक किए जानेवाले वे १६ कृत्य जो धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के लिये जरूरी हैं। ८ मृतक की क्रिया। ९. इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से मन में उत्पन्न प्रभाव। बौद्धिक विकास।

संस्कारक—वि० [सं०] १ सस्कार करनेवाला। २ शुद्ध करनेवाला।

सस्कारहीन—वि० [स०] जिसका सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

सस्कृत—वि० [सं०] १ सस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. साफ किया हुआ। ४ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। ५. सँवारा हुआ। सजाया हुआ। ६. जिसका उपनयन आदि सस्कार हुआ हो।

सज्ञा स्त्री० भारत की प्राचीन और पवित्र भाषा जो आर्यों की ज्ञात भाषाओं में सबसे पुरानी है। देववाणी।

सस्कृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुद्धि। सफाई। २ सस्कार। सुधार। मानसिक विकास। ३. सजावट। ४ सभ्यता। शाइस्तगी। ५. २४ वर्ण के वृत्तों की सज्ञा।

सस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २ व्यवस्था। विधि। मर्यादा। ३ जत्था। गरोह। ४ सघटन। समुदाय। समाज। मंडल। सभा।

सस्थान—सज्ञा पुं० [स०] १ ठहराव। स्थिति। २. खड़ा रहना। डटा रहना। ३. बैठाना। स्थापन। ४ अस्तित्व। जीवन। ५ डेरा। घर। ६ बस्ती। जनपद। सार्वजनिक स्थान। ७ सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ८ राज्य। ९ समष्टि। योग। जोड़। १० प्रबध। व्यवस्था। ११ नाश। मृत्यु।

सस्थापक—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सस्थापिका] सस्थापन करनेवाला।

सस्थापन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सस्थापनीय, सस्थापित, सस्थाप्य] १ खड़ा करना। उठाना (भवन आदि)। २ जमाना। बैठाना। ३ कोई नई बात चलाना।

संस्मरण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सस्मरणीय, सस्मृत] १ पूर्ण स्मरण। खूब याद। २ किसी व्यक्ति के सबध की स्मरणीय घटना। ३ अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संहत—वि० [सं०] १ खूब मिला हुआ। जुड़ा या सटा हुआ। २ सयुक्त। सहित। ३ कड़ा। सख्त। ४. गठा हुआ। घना। ५. मजबूत। ६ एकत्र। इकट्ठा।

संहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिलाप। मेल। २ जुटाव। बटोर। ३. राशि। ढेर। ४. समूह। झुंड। ५. ठोसपन। घनत्व। ६ संधि। जोड़।

संहरना—क्रि० अ० [सं० संहार] नष्ट होना। सहार होना।

क्रि० स० सहार करना।

संहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश। ध्वंस। २. समाप्ति। अंत। ३. परिहार। ४. इकट्ठा करना। बटोरना। समेटना। ५. समेटकर बाँधना। गूँथना (केशों को)। ६ छोड़े हुए बाण को वापस लेना।

संहारक—[सं०] [स्त्री० संहारिका] सहार करनेवाला। नाशक।

संहारकाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलयकाल।

संहारनाⓅ—क्रि० स० [सं० सहरण] १. मार डालना। २. नाश करना। ध्वस करना।

संहित—वि० [सं०] १. एकत्र किया हुआ। २ मिलाया हुआ। ३ जुड़ा हुआ।

संहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेल। मिलावट। २. व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर एक होना। सधि। ३. किसी ग्रंथ का स्वरभेद पर निर्धारित पाठक्रम (विशेषत शब्दों या पदों के उच्चारण के समुचित परिवर्तन के ध्यान से सकलित वैदिक मंत्रों का सग्रह)। ४ मूल पाठ या पद्यों का क्रमिक सग्रह।

स—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ शिव। महादेव। ३ साँप। ४ पक्षी। चिड़िया। ५ वायु। हवा। ६ जीवात्मा। ७ चंद्रमा। ८. ज्ञान। ९ संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। १० छंद शास्त्र में "सगण" शब्द का सक्षिप्त रूप।

उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दों के आरंभ में, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये, होता है, जैसे—(क) सजीव = सह+जीव। (ख) सगोत्र। (ग) सपूत।

सअदS—संज्ञा पुं० दे० "सैयद"।

सआनाS—वि० दे० "सयाना"।

सआनीS—वि० दे० "सयानी"।

सइⓅ—अव्य० [सं० सह] से। साथ।

Ⓟअव्य० [प्रा० सुंतो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइयोⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी]

सई—संज्ञा स्त्री० [?] वृद्धि। बढ़ती।

सउⓅ—अव्य० दे० "सों"।

सक†—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति" या "सकत"।

सज्ञा पुं० [हिं० साका] साका। धाक।

सज्ञा पुं० दे० "शक"।

सकट—सज्ञा पुं० [सं० शकट] गाड़ी। छकड़ा। उ०—सकट के अध धरि कचन पलना। सुतहिं सुवाई नंद की ललना। —नंददास०।

सकत†—सज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १ बल। शक्ति। सामर्थ्य। २. वैभव। संपत्ति।

क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।

सकता—सज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शक्ति ताकत। बल। २. सामर्थ्य।

सज्ञा पुं० [अ० सकत] १. बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति।

मुहा०—सकता पड़ना = छंद में यति भंग दोष होना।

सकती—सज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सकना—क्रि० अ० [सं० √शक्] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना।

सकपकाना—क्रि० अ० [अनु० सक पक] १. आश्चर्ययुक्त होना। २. हिचकना। ३ लज्जित होना। ४. प्रेम, लज्जा या शका से उत्पन्न एक प्रकार की चेष्टा। ५. हिलना डोलना।

सकरना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. सकारा जाना। मंजूर होना। २. कबूला जाना।

सकरपाला—सज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।

सकर्मक—वि० [सं०] १ कर्म से युक्त। २ काम में लगा हुआ। क्रियाशील।

सकर्मक क्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो, जैसे—खाना, देना, लेना।

सकल—वि० [सं०] सब। समस्त। कुल।

सज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।

सकलात—सज्ञा पुं० [?] १ ओढ़ने की रजाई। दुलाई। २ सौगात। उपहार। ३. मखमल।

सकलाती—वि० [हिं० सकलात] १. उपहार में देने के योग्य। बहुत बढ़िया। २ मखमल का।

सकसकाना, सकसनाⓅ†—क्रि० अ० [अनु०] डर के मारे काँपना।

सकानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० सक से ना० धा०] १. शका करना। संदेह करना। २. भय के कारण सकोच करना। हिचकना। ३ दुखी होना।

क्रि० स० "सकना" का प्रेरणार्थक (क्व०)।

सकाम—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। ३. कामवासनायुक्त व्यक्ति। कामी। ४. वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे।

वि० फल मिलने की इच्छा से किया जानेवाला।

सकारना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. स्वीकार करना। मजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उसपर हस्ताक्षर करना।

सकारे†—क्रि० वि० [सं० सकाल] सवेरे। उ०—अवधेस के द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति लै निकसे।—कवितावली।

सकाश—अव्य० दे० "संकाश"।

सकिलना†—क्रि० अ० [हिं० फिसलना का अनु०] १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना।

सकुचⓅ†—सज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लाज। शर्म।

सकुचना—क्रि० अ० [सं० संकुचन] १. लज्जा करना। शरमाना। २. (फूलों का) सपुटित होना। बंद होना।

सकुचाईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सकुच+ आई (प्रत्य०)] लज्जा।

सकुचाना—क्रि० अ० [सं० संकुचन] सकोच करना।

क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. किसी को संकुचित या लज्जित करना।

सकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुल मत्स्य] कच्छप के आकार की एक प्रकार की मछली।

सकुचीला, सकुचौहाँ—वि० [हिं० सकुच+ ईला, औहाँ (प्रत्य०)] संकोच करनेवाला। लजीला।

सकुन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] पक्षी। चिड़िया।

संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।

सकुनी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुनि] चिड़िया।

सकुपना(पु)—क्रि० अ० दे० "सकोपना"।

सकूनत—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवासस्थान।

सकृत—अव्य० [सं०] १. एक बार। एक मरतबा। २ सदा। ३. साथ। सह। ४. फौरन। तुरंत।

संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] पुण्य कर्म। उ०—जनु सब सकृत की फल रस पग्यौ। इहि कदम एकै यह लग्यौ।—नंददास०।

सकेत(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० संकेत] १ संकेत। इशारा। २ प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।

वि० [सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित।

संज्ञा पुं० विपत्ति। दुःख। कष्ट।

सकेतना(पु)†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सकेरना†—क्रि० स० [संकरण ?] बुहारना। झाड़ देना।

क्रि० स० दे० "सकेलना"।

सकेलना†—क्रि० स० [सं० सकलन ?] एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। बटोरना।

सकेला—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार।

सकोच—संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।

सकोचना—क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।

सकोपना(पु)†—क्रि० अ० [सं० कोप] कोप करना। क्रोध करना। गुस्सा करना।

सकोरा—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।

सक्कय†—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्कृत] संस्कृत। उ०—सक्कय वाणी बहुअ [न] भावइ।

सक्कस(पु)—संज्ञा पुं० [फा० सख्त] कठिन। उ०—जानि पन सक्कस तरक्कि उठ्यो तकम, करक्कि उठ्यो कोदंड फरक्कि उठ्यो भुजदंड।—काव्यनिर्णय।

सक्का—संज्ञा पुं० [अ०] भिश्ती। माशकी।

सक्ति—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सक्तु, सक्तुक—संज्ञा पुं० [सं० सक्तु] भुने हुए जौ और चने या दूसरे अन्न का आटा। सत्तू।

सक्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शक्र] इंद्र।

सक्रारि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शक्रारि] मेघनाद।

सक्रिय—वि० [सं०] [भाव० सक्रियता] १. क्रियाशील। क्रियात्मक। २. जिसमें क्रिया हो। ३. जिसमें कुछ करके दिखाया जाय।

सक्षम—वि० [सं०] [भाव० सक्षमता] १ जिसमें क्षमता हो। क्षमताशाली। २. समर्थ।

सखर—संज्ञा पुं० [सं० सखिन्] सखा। मित्र।

सखरच(पु)—वि० दे० "शाहखर्च"।

सखरस—संज्ञा पुं० [?] मक्खन।

सखरा—संज्ञा पुं० दे० "सखरी"।

सखरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० निखरा या निखरी] कच्ची रसोई; जैसे—दाल भात।

सखा—संज्ञा पुं० [सं० सखिन् का प्रथमा रूप] १. साथी। संगी। २ मित्र। दोस्त। ३ सहयोगी। सहचर। ४. साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दानशीलता। २ उदारता। फैयाजी।

सखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। २. संगिनी। ३. साहित्य में वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे ४ १४ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में मगण या यगण हो। उ०—प्रभु सत अति प्रीति प्रकासी। रचि राम कियो सुखरासी॥

वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील।

सखीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।

सखुआ—संज्ञा पुं० दे० "साल" (वृक्ष)।

सखुन—संज्ञा पुं० [फा० सखुन] १ बातचीत। वार्तालाप। २ कविता। काव्य। ३ कौल। वचन। ४ कथन। उक्ति।

सखुन तकिया—संज्ञा पुं० [फा०] वह शब्द या वाक्यांश जो बातचीत के बीच कुछ लोगों के मुहँ से प्राय निकला करता है। तकिया कलाम।

सख्त—वि० [फा०] १ कठोर। कड़ा। २. मुश्किल। कठिन।

क्रि० वि० बहुत अधिक।

सख्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कड़ापन। कड़ाई। २ व्यवहार की कठोरता।

सख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सखा का भाव। सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। ३ वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतार को भक्त अपना सखा मानता है।

सख्यता—संज्ञा स्त्री० दे० "सख्य"।

सग—संज्ञा पुं० [फा०] कुत्ता।

सगण—संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का एक गण जिसमें आदि के दो लघु और अंत का एक गुरु होता है। इसका रूप ।।ऽ है।

सगदन—संज्ञा पुं० दे० "सुगादन"।

सगपहती, सगपहिता—संज्ञा स्त्री० [हिं० साग+पहिती=दाल] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

सगबगा—वि० [अनु०] १ सराबोर। लथपथ। २ द्रवित। ३ परिपूर्ण।

क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट।

सगबगाना—क्रि० अ० [अनु० सगबग] १. लथपथ होना। भीगना या सराबोर होना। २. सकपकाना। शंकित होना। ३. हिलना डोलना।

सगर—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा तथा प्रजारंजक थे। इन्हें ६० हजार पुत्र हुए थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंशज थे।

सगरा†—वि० [सं० सकल] [स्त्री० सगरी] सब। तमाम। सकल। कुल।

संज्ञा पुं० [सं० सागर] तालाब। पोखरा।

सगल(पु)†—वि० दे० "सकल"।

सगा—वि० [सं० स्वक] [स्त्री० सगी] १. एक माता से उत्पन्न। सहोदर। २. जो संबंध में अपने ही कुल का हो।

सगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा+आई (प्रत्य०)] १. विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी। २ छोटी जातियों में होनेवाला वह दांपत्य संबंध जो पूर्वविवाहिता स्त्री से किया जाता है। ३ संबंध। नाता। रिश्ता।

सगापन—संज्ञा पुं० [हिं० सगा+पन] सगा होने का भाव। संबंध की आत्मीयता।

सगारत†—संज्ञा स्त्री० दे० "सगापन"।

सगुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है। साकार ब्रह्म। २. वह संप्रदाय जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।

सगुन—संज्ञा पुं० १ दे० "शकुन"। २. दे० "सगुण"।

सगुनाना—क्रि० स० [हिं० सगुन से ना० धा०] १. शकुन बतलाना। २. शकुन निकालना या देखना।

सगुनिया—संज्ञा पुं० [हिं० सगुन+इया (प्रत्य०)] शकुन विचारने और बतलानेवाला। उ०—आगे सगुन सगुनियै ताका। दहिने माछ रूप के टाँका। —पदमावत।

सगुनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगुन+औती (प्रत्य०)] १ शकुन विचारने की क्रिया। २ मंगलपाठ।

सगोती—संज्ञा पुं० [सं० सगोत्र] १ एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २. भाईबंधु।

सगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गोत्र के लोग। सजातीय। २. कुल। जाति।

सगड़—संज्ञा पुं० [सं० शकट] [अल्पा० सगड़ी] दो पहिए की हाथ से खींची जानेवाली मजबूत गाड़ी जो भारी बोझ लादने के काम में आती है।

सघन—वि० [सं०] [भाव० सघनता] १. घना। गझिन। अविरल। गुंजान। २ ठोस। ठस।

सच—वि० [सं० सत्य] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० "सत्य"।

सचना(पु)†—क्रि० स० [सं० संचयन] १. संचय करना। एकत्र करना। २ पूरा करना।

क्रि० अ० स० दे० "सजना"।

सचमुच—अव्य० [हिं० सच+मुच (अनु०)] १. यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। २ अवश्य। निश्चय।

सचरना(पु)—क्रि० अ० [सं० संचरण] १. संचरित होना। फैलना। २. बहुत प्रचलित होना। ३ संचार करना। प्रवेश करना।

सचराचर—संज्ञा पुं० [सं०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ।

सचल—वि० [सं०] [संज्ञा सचलता] १ जो अचल न हो। चलता हुआ। २. चंचल। ३ जंगम।

सचसच—अव्य० [हिं० सच+सच] ठीक ठीक। यथार्थ रूप से। उ०—जलचर ज्यों जलभीर मैं, जानत नाहिन पीर। बिछुरि परै जब नीर तैं सचसचु जानै नीर।—नंददास०।

सचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच+आई (प्रत्य०)] १ सत्यता। सच्चापन। २. वास्तविकता। यथार्थता।

सचान—संज्ञा पुं० [सं० संचान=श्येन] श्येन पक्षी। बाज। उ०—हुत्यो नीरचर हनन कौं, किए तीर बक ध्यान। लीन्हौं झपटि सचान तिहि गयो ऊपरहि प्रान। —काव्यनिर्णय।

सचारना(पु)†—क्रि० स० [सं० संचारण] संचरना का सकर्मक रूप। फैलाना।

सचिंत—वि० [सं०] जिसे चिंता हो। चिंतायुक्त।

सचिक्कण—वि० [सं०] अत्यंत चिकना।

सचिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्र। दोस्त। २. मंत्री। वजीर। ३ सहायक।

सची—संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।

सचु(पु)†—संज्ञा पुं० [?] १. सुख। आनंद। उ०—अँखियन ऐसी धरनि धरी। नंदनँदन देखे सचु पावै या सों रहति डरी। —सूर०। २. प्रसन्नता। खुशी।

सचेत—वि० दे० "सचेतन"।

सचेतन—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सचेतनता] १. वह जिसमें चेतना हो। २ वह जो जड़ न हो। चेतन।

वि० १ चेतनायुक्त। २. सावधान। होशियार। ३ समझदार। चतुर।

सचेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सचेत+ई (प्रत्य०)] १ सचेत होने का भाव। २. सावधानी। होशियारी।

सचेष्ट—वि० [सं०] १ जिसमें चेष्टा हो। २ जो चेष्टा करे।

सचैयता†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच+ऐयत (प्रत्य०)] सचाई। सत्यता।

सच्चरित—वि० [सं०] अच्छे चरित्र या चालचलनवाला। सदाचारी।

सच्चरित्र—वि० दे० "सच्चरित"।

सच्चा—वि० [सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची] १ सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २ यथार्थ। ठीक। वास्तविक। ३ असली। विशुद्ध। ४ बिलकुल ठीक और पूरा।

सच्चाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चापन—संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई"।

सच्चाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+हट (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन।

सच्चिकन(पु)—वि० दे० "सचिक्कण"।

सच्चिदानंद—संज्ञा पुं० [सं०] (सत्, चित और आनंद से युक्त) परमात्मा। ईश्वर।

सच्छंद(पु)—वि० दे० "स्वच्छंद"।

सच्छत—वि० [सं० सक्षत] घायल। जख्मी।

सच्छी(पु)—संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "साक्षी"।

सज—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] १. सजने की क्रिया या भाव। २. डौल। शकल। ३ शोभा। सौंदर्य। सजावट।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

सजग—वि० [सं० जागरण] [भाव० सजगता] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार।

सजदार—वि० [हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुंदर।

सजधज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज (अनु०)] बनाव सिंगार। सजावट।

सजन—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी] १. भला आदमी। सज्जन। शरीफ। २ पति। भर्ता। ३ प्रियतम। यार।

सजना—क्रि० स० [सं०√सज्ज्] १ सज्जित करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। २ शोभा देना। भला जान पड़ना।

क्रि० अ० सुसज्जित होना।

सजल—वि० [सं०] [स्त्री० सजला] १ जल से युक्त या पूर्ण। २ आँसुओं से पूर्ण। (आँख)।

सजवल—संज्ञा पुं० [हिं०√सज+वल (प्रत्य०)] तैयारी।

सजवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√सज+वाई (प्रत्य०)] सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजवाना—क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा सुसज्जित कराना।

सजा—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दंड। २. जेल में रखने का दंड। कारावास।

सजाइ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० सजा] दंड।

सजाई—संज्ञा स्त्री० [फा० सजाना] सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजागर—वि० [सं०] १. जागता हुआ। २ सजग। होशियार।

सजाति, सजातीय—वि० [सं०] एक जाति या गोत्र का।

सजान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १

जानकार । जाननेवाला । २. चतुर । होशियार ।

सजाना—क्रि० स० [सं०√सज्] १. वस्तुओं को यथास्थान रखना । तरतीब लगाना । २. अलंकृत करना । शृंगार करना ।

सजायⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "सजा" ।

सजायाफ्ता, सजायाब—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो कैद की सजा भोग चुका हो ।

सजाव—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना ?] एक प्रकार का बढ़िया दही ।

सजावट—संज्ञा स्त्री० [हिं०√सज+आवट (प्रत्य०)] सज्जित होने का भाव या धर्म ।

सजावनⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं०√सज्+आवन (प्रत्य०)] सजाने या तैयार करने की क्रिया ।

सजावल—संज्ञा पुं० [तु० सजावुल] १. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी । तहसीलदार । २. सिपाही । जमादार ।

सजावार—वि० [फा०] उचित । वाजिब । वि० [फा० सजा] दंड पाने के योग्य । दंडनीय ।

सजींउⓅ†—वि० दे० "सजीव" ।

सजीला—वि० [हिं० √ सज + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १. सजधज के साथ रहनेवाला । छैला । २ सुंदर । मनोहर ।

सजीव—वि० [सं०] १. जिसमें प्राण हों । २ फुर्तीला । तेज । ३ ओजयुक्त ।

सजीवन—संज्ञा पुं० दे० "सजीवनी" ।

सजीवन मूलⓅ—संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी" ।

सजीवनी मंत्र—संज्ञा पुं० [सं० संजीवनी+मंत्र] वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है ।

सजुगⓅ†—वि० [हिं० सजग] सचेत ।

सजुता—संज्ञा स्त्री० दे० "संयुक्ता" । (छंद)

सजूरी—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई । उ०—माधुरि अति सरस सजूरी । सद परसि धरी घृत पूरी ।—सूर० ।

सजोना†—क्रि० स० दे०"सजाना" ।

सजोयलⓅ—वि० दे० "सँजोइल" ।

सज्जⓅ—संज्ञा पुं० दे० "साज" ।

सज्जन—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन] १. भला आदमी । शरीफ । २ प्रिय मनुष्य । प्रियतम । ३. सजाने की क्रिया या भाव ।

सज्जनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जन होने का भाव । भलमनसाहत । सौजन्य ।

सज्जनताईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता" ।

सज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सजाने की क्रिया या भाव । सजावट । २ वेशभूषा । संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] १. सोने की चारपाई । शय्या । २ दे० "शय्यादान" ।

सज्जित—वि० [सं०] [स्त्री० सज्जिता] १ सजा हुआ । अलंकृत । २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त ।

सज्जी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्जिका] भूरे रंग का एक क्षार ।

सज्जीखार—संज्ञा पुं० दे० "सज्जी" ।

सज्जुता—संज्ञा स्त्री० दे० "संयुता" (छंद) ।

सज्ञान—वि० [सं०] १. ज्ञानयुक्त । २. चतुर । बुद्धिमान् । ३ सावधान ।

सज्याⓅ—संज्ञा स्त्री० १. दे० "सज्जा" । २ दे० "शय्या" ।

सटक—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १ सटकने की क्रिया । धीरे से चंपत होना । २. तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा । ३. पतली लचनेवाली छड़ी ।

सटकना—क्रि० अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना । चंपत होना । उ०—असुर यह घात तकि गयो रथ ते सटकि विपति ज्वर दियो तब शिव पठाई ।—सूर० ।

सटकाना—क्रि० स० [अनु० सट से] १ छड़ी, कोड़े आदि से मारना । २. सड़ सड़ या सट सट शब्द करते हुए हुक्का पीना ।

सटकार—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट] १ सटकाने की क्रिया या भाव । २ गौ आदि को हाँकने की क्रिया । हटकार । उ०—सारथी पाय रुख दयो सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई—सूर० ।

सटकारना—क्रि० स० [अनु० सट से] छड़ी या कोड़े से मारना । सट सट मारना ।

सटकारा—वि० [अनु०] चिकना और लंबा (बाल) ।

सटकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटकार+ई (प्रत्य०)] पतली छड़ी ।

सटना—क्रि० अ० [सं० स+√स्था] १ दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ । २ चिपकना । †३. मारपीट होना ।

सटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया । चकपकाहट । २ शील । संकोच । ३ दुविधा । असमंजस ।

सटपटाना—क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना" ।

सटरपटर—वि० [अनु०] छोटा मोटा । तुच्छ । मामूली । संज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम ।

सटासट—क्रि० वि० [अनु०] १. सट शब्द के साथ । सटासट । २ शीघ्र । जल्दी ।

सटाना—क्रि० स० [हिं० सटना का स० रूप] १ दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना । मिलाना । †२. लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना ।

सटियल—वि० [?] घटिया ।

सटियाⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँठ (गाँठ)] षड्यंत्र ।

सटीक—वि० [सं०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो । व्याख्यासहित । वि० [हिं० ठीक या सं० सटीक] बिलकुल ठीक । जैसा चाहिए, ठीक वैसा ही ।

सटोरिया—संज्ञा पुं० दे० "सट्टेबाज" ।

सट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक । २. एक छंद का नाम ।

सट्टा—संज्ञा पुं० [देश०] १ इकरारनामा । २ साधारण व्यापार से भिन्न खरीद बिक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी और मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिये होता है । लेखा ।

सट्टा बट्टा—संज्ञा पुं० [हिं०√सट+आ (प्रत्य०)+अनु० बट्टा] १ मेलमिलाप । हेलमेल । २ धूर्ततापूर्ण युक्ति । चालबाजी ।

सट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की चीजें लोग लाकर बेचते हों । हाट ।

सट्टेबाज—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा+फा० बाज] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो केवल तेजी मंदी के विचार से खरीद बिक्री करता हो । सटोरिया ।

सठ—संज्ञा पुं० दे० "शठ" ।

सठता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सठ+ता (प्रत्य०)] १ शठ होने का भाव । शठता । २ मूर्खता । बेवकूफी ।

सठियाना—क्रि० अ० [हिं० साठ से ना० धा०] १ साठ बरस का होना । २ बुड्ढा

होना। वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना।

सठोरा—संज्ञा पुं० दे० "सोंठौरा"।

सड़क—संज्ञा स्त्री० [अ० शरक] आने जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ।

सड़ना—क्रि० अ० [सं० सरण] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग अलग हो जायँ और उसमें दुर्गंध आने लगे। २. किसी पदार्थ में खमीर उठना या आना। ३ दुर्दशा में पड़ा रहना।

सड़ान—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया।

सड़ाना—क्रि० स० [हिं० सड़ना का स० रूप] किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।

सड़ाप—अव्य० [अनु०] सड़सड़ आवाज के साथ। उ०—ठाकुर साहब ने झपटकर उसे चार पाँच हंटर सड़ाप सड़ाप लगा दिए। —कायाकल्प।

सड़ायध, सड़ाँध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ान+सं० गंध] सड़ी हुई चीजों की गंध।

सड़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० √सड़ + आव (प्रत्य०)] सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़—अव्य० [अनु० सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो।

सड़ियल—वि० [हिं० √सड़+इयल (प्रत्य०)] १ सड़ा हुआ। गला हुआ। २ रद्दी। खराब। ३ नीच। तुच्छ।

सत्—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।

वि० १ सत्य। २. साधु। सज्जन। ३ धीर। ४. नित्य। स्थायी। ५ विद्वान्। पंडित। ६ शुद्ध। पवित्र। ७ श्रेष्ठ।

सतंत(पु)—अव्य० दे० "सतत"।

सत—वि० दे० "सत्"।

संज्ञा पुं० [सं० सत्] सत्यतापूर्ण धर्म।

मुहा०—सत पर चढ़ना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना = पतिव्रता रहना।

वि० दे० "शत"।

संज्ञा पुं० [सं० सत्व] १ मूल तत्व। सार भाग। २ जीवनी शक्ति। ताकत।

वि० "सात" (संख्या) का संक्षिप्त रूप (यौगिक)।

सतकार—संज्ञा पुं० दे० "सत्कार"।

सतकारना(पु)—क्रि० स० [हिं० सतकार से ना० धा०] सत्कार करना। सम्मान करना।

सतकोन—वि० [हिं० सात+कोना] जिसमें सात कोने हों।

सतगुरु—संज्ञा पुं० [सं० सत्+गुरु] १ अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।

सतजुग—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतत—अव्य० [सं०] सदा। हमेशा। उ०—तब भी तुम सतत अकेली जलती हो मेरी ज्वाला। —आँसू।

सतनजा—संज्ञा पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

सततु—वि० [सं०] तनयुक्त। शरीरवाला।

सतपदी—संज्ञा स्त्री० दे० "सप्तपदी"।

सतपात†—संज्ञा पुं० [सं० शतपत्र] शतपत्र। कमल।

सतपुतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई।

सतफेरा—संज्ञा पुं० दे० "सप्तपदी"।

सतभाय(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सद्भाव"।

सतमासा—संज्ञा पुं० [हिं० सात+सं० मास] १ वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो। २ गर्भाधान के सातवें महीने होनेवाला कृत्य।

सतयुग—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतरंगा—वि० [हिं० सात+सं० रंग] सात रंगोंवाला।

संज्ञा पुं० इंद्रधनुष।

सतर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा। पंक्ति। अवली। कतार।

वि० १ टेढ़ा। वक्र। उ०—सतर भौंह गुरजन की सहै। जो पूछै तासों इमि कहै। —नंददास०। २. कुपित। क्रुद्ध।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २. ओट। आड़। परदा।

सतराना—क्रि० अ० [हिं० सतर या सं० सतर्जन] १ क्रोध करना। २. चिढ़ना।

सतराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतर+आहट (प्रत्य०)] कोप। नाराजगी।

सतरौंहाँ†—वि० [हिं० सतर + औंहाँ (प्रत्य०)] १. कुपित। क्रोधयुक्त। २ कोपसूचक।

सतर्क—वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। २ सावधान।

सतर्पना—क्रि० स० [सं० संतर्पण] अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।

सतलज—संज्ञा स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सतलड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+लड़] सात लड़ों की माला।

सतवंती—वि० स्त्री० [हिं० सत+वंती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतवाँसा—दे० "सतमासा"।

सतसंग—संज्ञा पुं० दे० "सत्संग"।

सतसई—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।

सतह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २ वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।

सतांग—संज्ञा पुं० [सं० शतांग] रथ। यान।

सतानंद—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना—क्रि० स० [सं० संतापन] १. संताप देना। दुःख देना। २ हैरान करना। तंग करना।

सतालू—संज्ञा पुं० [सं० सप्तालुक] शफतालू। आड़ू।

सतावना(पु)†—क्रि० स० दे० "सताना"।

सतावर—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।

सति(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सत्य"। उ०—यह तौ सति ही अजगर महा। बरजे नाहिंन कियौ हम कहा। —नंददास०।

सतिवन—संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण] छतिवन।

सती—वि० स्त्री० [सं०] साध्वी। पतिव्रता।

संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। २. पतिव्रता स्त्री। ३ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। ४ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।

वि० [हिं० सति] सच्चा। पक्का। उ०—सो न डोल देखा गजपती। राजा सत्त दत्त दुहुँ सती। —पद्मावत।

सतीत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

सतीत्व हरण—संज्ञा पुं० [सं०] परस्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

सतीपन—संज्ञा पुं० दे० "सतीत्व"।

सतुआ†—संज्ञा पुं० दे० "सत्त"।

सतुआनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "सतुआ संक्रांति"।

सतुआ संक्रांति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ+सं० संक्रांति] मेष की संक्रांति।

सतृष्ण—वि० [सं०] तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण।

सतोखना(पु)†—क्रि० स० [सं० संतोषण] १ संतुष्ट करना। २. ढारस देना।

सतोगुण—संज्ञा पुं० दे० "सत्वगुण"।

सतोगुणी—संज्ञा पुं० [हिं० सतोगुण+ई (प्रत्य०)] सत्वगुणवाला। सात्विक।

सत्कर्म—संज्ञा पुं० [सं० सत्कर्मन्] १ अच्छा काम। २ धर्म का काम। पुण्य।

सत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ आदर सम्मान। खातिरदारी। २. आतिथ्य।

सत्कार्य—वि० [सं०] सत्कार करने योग्य।
संज्ञा पुं० उत्तम कार्य। अच्छा काम।

सत्कीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] यश। नेकनामी।

सत्कुल—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

सत्कृत—वि० [सं०] जिसका सत्कार किया जाय। आदृत।

सत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी कृति। उत्तम कार्य।

सत्त—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्व] १. सार। असली जुज। २. तत्व। काम की वस्तु।
(पु)†संज्ञा पुं० [सं० सत्य] १. सत्य। सच बात। २. सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्तम—वि० [सं०] १ सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ। २ परमपूज्य। ३. परमसाधु।

सत्तर—वि० [सं० सप्तति] साठ और दस।
संज्ञा पुं० साठ और दस की संख्या। ७०।

सत्तरह—वि० [सं० सप्तदश] दस और सात।
संज्ञा पुं० दस और सात की संख्या। १७।

सत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २. शक्ति। दम। ३. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत।
संज्ञा पुं० [हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताधारी—संज्ञा पुं० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफसर। हाकिम।

सत्ताशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शत्रु"। उ०—उथि सत्तु उथि मित्त उथि सिर नवइ सव्व कइ।

सत्तू—संज्ञा पुं० [सं० सक्तुक या सक्तु] भूने हुए अन्न का चूर्ण। सतुआ।

सत्थ—संज्ञा पुं० [सं० सहित] संग। साथ। उ०—अर्जुन केकी, पांडुसुत, हरि खेलत जेहि सत्थ।—नंददास०।

सत्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २ सदाचार। अच्छी चाल।

सत्पात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी।

सत्पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] भला आदमी।

सत्य—वि० [सं०] १. यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। २ असल।
संज्ञा पुं० १. ठीक बात। यथार्थ तत्व। २ उचित पक्ष। धर्म की बात। ३ वह वस्तु जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो (वेदांत)। ४ ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। ५ विष्णु। ६ चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

सत्यकाम—वि० [सं०] सत्य का प्रेमी।

सत्यतः—अव्य० [सं०] वास्तव में। सचमुच।

सत्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सच्चाई।

सत्यनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सत्यनिष्ठ—वि० [सं०] [संज्ञा सत्यनिष्ठा] सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्यव्रत।

सत्यप्रतिज्ञ—वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

सत्यभामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।

सत्ययुग—संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है।

सत्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्मा रहते हैं।

सत्यवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मत्स्यगंधा नामक धीवर कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २ गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी।

सत्यवादी—वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २ वचन को पूरा करनेवाला।

सत्यवान—संज्ञा पुं० [सं० सत्यवत्] शाल्व-देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।

सत्यव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।

सत्यसंध—वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० १ रामचंद्र। २. जनमेजय।

सत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा।
संज्ञा स्त्री० १. दे० "सत्ता"। २ दे० "सत्यता"।

सत्याग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शांतिपूर्वक संघर्ष। २. धरना।

सत्याग्रही—संज्ञा पुं० [सं० सत्याग्रहिन्] वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश—संज्ञा पुं० [सं० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।

सत्यानाशी—वि० [हिं० सत्यानाश+ई (प्रत्य०)] सत्यानाश करनेवाला। चौपट करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा। भड़भाँड़।

सत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ। २. एक सोमयाग। ३. घर। मकान। ४. धन। ५ वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। क्षेत्र। सदावर्त। ६ विधान सभा, संसद् या किसी संस्था के अधिवेशन का कोई कार्यकाल (अं० सेशन)। ७ शिक्षा संस्थाओं में शिक्षण का एक कार्यकाल (अं० टर्म)।

सत्रह—वि० संज्ञा पुं० दे० "सत्तरह"।

सत्राई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शत्रुता] शत्रुता। दुश्मनी।

सत्रु—संज्ञा पुं० दे० "शत्रु"।

सत्रुहन(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

सत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्ता। अस्तित्व। हस्ती। २ सार। तत्व। ३ चित्त की प्रवृत्ति। ४ आत्मतत्व। चैतन्य। चित्तत्व। ५ प्राण। जीव। तत्व।

सत्वगुण—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।

सत्वर—अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्द। उ०—माँ, बापूजी, भाभियाँ सकल पड़ोस की, है विकल देखने को सत्वर।—तुलसीदास।

सत्संग—संज्ञा पुं० [सं०] साधुओं या सज्जनों के साथ उठना बैठना। भली संगत।

सत्संगति—संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।

सत्संगी—वि० [सं० सत्संगिन्] [स्त्री० सत्संगिनी] १. अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. मेल जोल रखनेवाला।

सथरⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] भूमि। पृथ्वी।

सथिया—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] १. प्रकार का मंगलसूचक या सिद्धिदायक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न 卐। उ०—द्वार बुहारत अष्ट सिद्धि, कौरेन सथिया चीतत नवनिधि। —सूर०। २. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह।

सद—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] आदत। टेव। बान। उ०—सदन सदन के फिरन की सद न छुटै, हरिराइ। रुचै, तितै विहरत फिरौ, कत विहरत उरु आइ। —विहारी०।

सदईⓅ—अव्य० [सं० सदैव] सदा।

सदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २ विराम। स्थिरता। ३. एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई। ४. वह स्थान जहाँ विधान आदि बनानेवाली सभा का अधिवेशन हो। ५. ऐसी सभा के लिये एकत्र जनसमुदाय।

सदबर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] हजारा गेंदा।

सदमा—संज्ञा पुं० [अ० सद्म] १ आघात। धक्का। चोट। २ रंज। दुःख।

सदय—वि० [सं०] [भाव० सदयता] दयायुक्त। दयालु।

सदर—वि० [अ० सद्र] प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० १ वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो। केंद्रस्थल। २. सभापति।

सदरआला—संज्ञा पुं० [अ०] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।

सदर बाजार—संज्ञा पुं० [अ० सदर+फा० बाजार] १. बड़ा बाजार। खास बाजार। २ छावनी का बाजार।

सदरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती। जवाहर बंडी।

सदर्थनाⓅ—क्रि० स० [सं० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना।

सदसद्विवेक—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।

सदस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करनेवाला। २ सभा या समाज में संमिलित व्यक्ति। सभासद। अँ मेंबर।

सदस्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सदस्य का भाव या पद। सभासदी।

सदा—अव्य० [सं०] १. नित्य। हमेशा। सर्वदा। २. निरंतर। लगातार।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गूँज। प्रतिध्वनि। २. आवाज। शब्द। ३. पुकार।

सदागति—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २ सूर्य।

सदाचरण, सदाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा आचरण। २ भलमनसाहत।

सदाचारिता—संज्ञा स्त्री० दे० "सदाचरण"।

सदाचारी—संज्ञा पुं० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे आचरण वाला पुरुष। २. धर्मात्मा।

सदाफल—वि० [सं०] सदा फलनेवाला।

संज्ञा पुं० १. गूलर। ऊमर। २. श्रीफल। बेल। ३. नारियल। ४. एक प्रकार का नीबू।

सदाबरत—संज्ञा पुं० दे० "सदावर्त"।

सदाबहार—वि० [हिं० सदा+फा० बहार] १. जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे (वृक्ष)।

सदारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सद्र या प्रधान का धर्म, भाव या कार्य। २. सभापतित्व।

सदावर्त—संज्ञा पुं० [सं० सदाव्रत] १ नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना। २ वह भोजन जो नित्य गरीबों को बाँटा जाय। खैरात।

सदावर्ती—वि० [हिं० सदावर्त+ई (प्रत्य०)] १ सदावर्त बाँटनेवाला। भूखों को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २. बड़ा दानी। बहुत उदार।

सदाशय—वि० [सं०] [भाव० सदाशयता] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। सज्जन। भलामानस।

सदाशिव—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

सदासुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सदा+सुहागिन] वेश्या। रंडी (विनोद)।

वि० स्त्री जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

सदिया—संज्ञा स्त्री० [फा० साद] वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। लाल पक्षी की मादा।

सदी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २ सैकड़ा।

सदुपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २. अच्छी सलाह।

सदूरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सदूरूⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] सिंह। उ०—लंक देखि कै छपा सदूरू। —पदमावत।

सदृश—वि० [सं०] १. समान। अनुरूप। २ तुल्य। बराबर।

सदेह—क्रि० वि० [सं०] १. इसी शरीर से। बिना शरीरत्याग किए। २. मूर्तिमान्। सशरीर।

सदैव—अव्य० [सं०] सदा। हमेशा।

सद्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।

सद्गुण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा गुण। २. भलमनसाहत।

सद्गुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक। २. परमात्मा।

सद्ग्रंथ, सदग्रंथⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सत्+ग्रंथ] अच्छा ग्रंथ। सन्मार्ग बतानेवाली पुस्तक। उ०—हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहि नहिं पंथ। जिमि पाखंड विवाद तें लुप्त होहिं सद्ग्रंथ। —मानस।

सदⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शब्द] शब्द। ध्वनि।

अव्य० [सं० सद्य] तुरंत। तत्काल।

सद्धर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा या उत्तम धर्म। २. बौद्ध धर्म।

सद्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेम और हित का भाव। २ मेलजोल। मैत्री। ३. सच्चा भाव। अच्छी नीयत।

सद्म—संज्ञा पुं० [सं० सद्मन्] [स्त्री० अल्पा० सद्मिनी] १. घर। मकान। २. संग्राम। युद्ध। ३ पृथ्वी और आकाश।

सद्य—अव्य० [सं०] १ आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तुरंत। शीघ्र।

सद्य—अव्य० दे० "सद्य"।

सद्र—संज्ञा पुं० दे० "सदर"।

सद्व्रत—वि० [सं०] [स्त्री० सद्व्रता] १. जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो। २. सदाचारी।

सधना—क्रि० अ० [हिं० साधना] १. सिद्ध होना। पूरा होना। काम होना। २. काम चलना। मतलब निकलना। ३ अभ्यस्त होना। मँजना। ४ प्रयोजनसिद्धि के अनुकूल होना। गौं पर चढ़ना। ५. निशाना ठीक होना।

सधर—संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर का होंठ।

सधवा—संज्ञा स्त्री० [हिं० विधवा का

अनु०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।

सधाना—क्रि० स० [हिं० सधना का प्रे० रूप] साधने का काम दूसरे से कराना।

सनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सन्—संज्ञा पुं० [अ०] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. कोई विशेष वर्ष। संवत्। ३. ईसवी वर्ष।

सन—संज्ञा पुं० [सं० शण] एक पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ आदि बनती हैं।

(पु)†प्रत्य० [सं० सग] अवधी में करण कारक का चिह्न। से। साथ।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकलने का शब्द।

वि० [अनु० सुन] १. सन्नाटे में आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २. मौन। चुप।

सनई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक—संज्ञा स्त्री० [सं० शंक=खटका] १ किसी बात की धुन। मन की झोंक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।

मुहा०—सनक सवार होना=धुन होना। २. खब्त। जुनून।

संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनकना—क्रि० अ० [हिं० सनक से ना० धा०] १ पागल हो जाना। पगलाना। २. बहकी बहकी बातें करना। ३ डींग मारना।

सनकारना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सैन+करना] संकेत करना। इशारा करना।

सनकियाना—क्रि० स० [हिं० सनकना का स० रूप] पागल बनाना।

क्रि० स० [हिं० सैन] संकेत या इशारा करना।

सनकी—वि० [हिं० सनक+ई (प्रत्य०)] १. जो सनक गया हो। पागल। सिड़ी। २. जो किसी धुन में विशेष रूप से रहे।

संज्ञा [सं० संकेत] इशारा, विशेषत आँख से किया गया इशारा।

सनत्—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।

सनद—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० सनदी] १ प्रमाण। सबूत। दलील। २ प्रमाण-पत्र। (अँ०) सर्टिफिकेट।

सनदयाफ्ता—वि० [अ० सनद+फा० याफ्तः] जिसे किसी बात की सनद मिली हो।

सनना—क्रि० अ० [सं० संधन्] १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना, जैसे—आटा सनना। २ लीन होना। पगना। ओत-प्रोत होना। उ०—बोलत बैन सनेह सने। —सूर०। ३ मैले, गंदे या घृणाजनक तरल पदार्थों से भीगना; जैसे—कीचड़ में सनना। खून में सनना।

सनम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रिय। प्यारा।

सनमान—संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सनमानना(पु)—क्रि० स० [हिं० सनमान से ना० धा०] खातिर करना। सत्कार करना।

सनमुख(पु)—अव्य० दे० "सम्मुख"।

सनसनाना—क्रि० अ० [अनु०] (हवा का) सन सन शब्द करते हुए बहना।

सनसनाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सन सन शब्द होने का भाव या क्रिया।

सनसनी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सनसन] १. संवेदनसूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन। झनझनाहट। झुनझुनी। २ भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ३. उद्वेग। घबराहट।

सनहकी—संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन (मुसलमान)।

सनहना—संज्ञा पुं० [अ० सनहक] वह गड्ढा या पात्र जिसमें माँजने के पूर्व जले हुए बरतन कालिख फूलने के लिये रखे जाते हैं।

सनाढ्य—संज्ञा पुं० [सं० सन] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है।

सनातन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। २ प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु।

वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। ३ नित्य। शाश्वत।

सनातनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीनता। पुरानापन। २. परंपरागत होने का भाव।

सनातन धर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन या परंपरागत धर्म। २ वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थमाहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं।

सनातन पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु भगवान्।

सनातनी—संज्ञा पुं० [सं० सनातन+हिं० ई (प्रत्य०)] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो। २. सनातन धर्म का अनुयायी।

सनाथ—वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। स्वामियुक्त।

सनाय—संज्ञा स्त्री० [अ० सनाऽ] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।

सनाह—संज्ञा पुं० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर।

सनित—वि० [हिं० सनना] सना या एक में मिलाया हुआ। मिश्रित।

सनीचर—संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर"।

सनीचरी—संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर] शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है।

वि० १. अशुभ। अमंगल कारक। २. सनीचर से संबंधित। सनीचर का।

सनेस, सनेसा†—संज्ञा पुं० दे० "संदेश"।

सनेह(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "स्नेह"।

सनेहरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सनेह"।

सनेहिया(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सनेही"।

सनेही—वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम रखनेवाला। प्रेमी।

सनोवर—संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ (पेड़)।

सन्न—वि० [सं० शून्य] १. संज्ञाशून्य। स्तब्ध। जड़। २ भौचक। ठक। ३. डर से चुप।

सन्नद्ध—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. तैयार। उद्यत। ३. लगा हुआ। जुड़ा हुआ।

सन्नाटा—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] १. निःशब्दता। नीरवता। निःस्तब्धता। २. निर्जनता। निरालापन। एकांतता। ३. ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।

मुहा०—सन्नाटे में आना=ठक रह जाना। कुछ कहते सुनते न बनना।

४. एकदम खामोशी। चुप्पी।

मुहा०—सन्नाटा खींचना या मारना=एकबारगी चुप हो जाना।

५ चहलपहल का अभाव। उदासी। ६. काम धंधे से गुलजार न रहना।

वि० १. नीरव। स्तब्ध। २ निर्जन।

संज्ञा पुं० [अनु० सन सन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। २ हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द।

सन्नाह—संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बकतर।

सन्निकट—वि० [सं०] [भाव० सन्निकटता] समीप। पास।

सन्निकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निकृष्ट] १ संबंध। लगाव। २ नाता। रिश्ता। ३ सामीप्य। समीपता।

सन्निध—संज्ञा पुं० [सं०] सामीप्य। आमने सामने की स्थिति।

सन्निधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकटता। समीपता। २. स्थापित करना।

सन्निधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समीपता। निकटता। २ आमने सामने की स्थिति।

सन्निपात—संज्ञा पुं० [सं०] कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना या कुपित होना। त्रिदोष। सरसाम। २ संयोग। मेल। ३ इकट्ठा होना। ४ एक साथ गिरना या पड़ना।

सन्निविष्ट—वि० [सं०] १ प्रविष्ट। २. स्थापित। प्रतिष्ठित। ३ एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ। ४ रखा हुआ। धरा हुआ। ५ पास का। समीप का।

सन्निवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अँटना। समाना। २ जमना। स्थित होना। ३ रखना। धरना। ४ लगाना। जड़ना। ५. एकत्र होना। जुटना। ६ प्रवेश। ७ एक साथ बैठना। ८ गढ़न। गठन। बनावट। ९ निवास। घर। १० समूह। समाज।

सन्निहित—वि० [सं०] १ प्रविष्ट। सम्मिलित। २ समीपस्थ। निकटस्थ। ३. एक साथ रखा हुआ। ४ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ।

सन्मान—संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सन्मुख—अव्य० दे० "सम्मुख"।

सन्यास—संज्ञा पुं० [सं० सन्यास] १ छोड़ना। त्याग। २ दुनिया के जंजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३ भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। यति धर्म।

सन्यासी—संज्ञा पुं० [सं० सन्यासिन्] [स्त्री० सन्यासिनी, संन्यासिन्] १ वह पुरुष जिसने सन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २ विरागी। त्यागी।

सपक्ष—वि० [सं०] १ जो अपने पक्ष में हो। तरफदार। २. समर्थक। पोषक। ३ पख सहित।

संज्ञा पुं० १. तरफदार। मित्र। सहायक। २ न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो।

सपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [सं०] पत्नी के सहित।

सपदि—अव्य० [सं०] उसी समय। तुरत।

सपन—संज्ञा पुं० दे० "सपना"।

सपना—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। स्वप्न।

सपरदाई—संज्ञा पुं० [सं० सप्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। भड़ुआ। समाजी।

सपरना—क्रि० अ० [सं० सपादन] १ काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना।

सपरिकर—वि० [सं०] अनुचर वर्ग के साथ। ठाट बाट के साथ।

सपाट—वि० [सं० स+पट्ट] १. बराबर। समतल। २. जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। चिकना।

सपाटा—संज्ञा पुं० [सं० सर्पण] १ चलने या दौड़ने का वेग। झोंक। तेजी। २. तीव्र गति। दौड़। झपट।

यौ०—सैर सपाटा = घूमना फिरना।

सपाद—वि० [सं०] १ चरण सहित। २ जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। सवाया।

सपिंड—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो।

सपिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक के निमित्त वह श्राद्ध कर्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।

सपुर्द—संज्ञा स्त्री० [फा० सिपुर्द] अमानत। धरोहर।

वि० किसी के जिम्मे किया हुआ। सौंपा हुआ।

सपुर्दगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सपुर्द करने या होने की क्रिया।

सपूत—संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र] वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र।

सपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १ सपूत होने का भाव। लायकी। २ योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेद‡(पु)—वि० दे० "सफेद"।

सपोला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।

सप्त—वि० [सं०] गिनती में सात।

सप्तऋषि—संज्ञा पुं० दे० "सप्तक"। दे० "सप्तर्षि" २।

सप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सात वस्तुओं का समूह। २ सातों स्वरों का समूह।

सप्तद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग—जंबू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं। भाँवर। भँवरी।

सप्तपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन (पेड़)।

सप्तपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जावती लता।

सप्तपाताल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्तम—वि० [सं०] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी—वि० स्त्री० [सं०] सातवीं।

संज्ञा स्त्री० १ किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २. अधिकरण कारक की विभक्ति (व्याकरण)।

सप्तर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सात ऋषियों का समूह या मंडल। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। २ उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव की परिक्रमा करते हैं।

सप्तशती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सात सौ का समूह। २. सात सौ पद्यों का समूह। सतसई। ३. दुर्गापाठ।

सप्ताह—संज्ञा पुं० [सं०] १. सात दिनों का काल। हफ्ता। २ भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय।

सफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पंक्ति। कतार। २ लंबी चटाई। सीतलपाटी।

सफर—संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रस्थान। यात्रा। २ रास्ते में चलने का समय या दशा।

सफरमैना—संज्ञा स्त्री० [अँ० सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो खाई आदि खोदने के लिये आगे चलते हैं।

सफरी—वि० [अ० सफर] १. सफर। में का। सफर में काम आनेवाला। २. छोटा और हलका।

संज्ञा पुं० राहखर्च। २ अमरूद। उ०—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नव वानी।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सौरी मछली।

सफल—वि० [सं०] [स्त्री० सफला] १. जिसमें फल लगा हो। २. जिसका कुछ परिणाम हो। सार्थक। ३ कृतकार्य। कामयाब।

सफलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ पूर्णता।

सफलित—वि० दे० "सफलीभूत"।

सफलीभूत—वि० [सं०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफा—वि० [अ०] १ साफ। स्वच्छ। २ पाक। पवित्र। ३ चिकना। बराबर। ४ पृष्ठ। पन्ना।

सफाई—संज्ञा स्त्री० [अ० सफा+ई (प्रत्य०)] १ स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल या कूड़ा करकट आदि हटाने की क्रिया। ३ स्पष्टता। मन में मैल न रहना। ४. कपट या कुटिलता का अभाव। ५. दोषारोप का हटना। निर्दोषता। ६ मामले का निपटारा। निर्णय।

सफाचट—वि० [हिं० सफा] एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ या चिकना।

सफीर—संज्ञा पुं० [अ०] एलची। राजदूत।

सफूफ—संज्ञा पुं० [अ०] बुकनी। चूर्ण।

सफेद—वि० [फा० सुफ़ेद] १. चूने के रंग का। धौला। श्वेत। चिट्टा। २. जिसपर कुछ लिखा न हो। कोरा। सादा।

मुहा०—स्याह सफेद=भला बुरा। इष्ट अनिष्ट।

सफेदपोश—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० सफेदपोशी] १ साफ कपड़े पहननेवाला। २ भलामानस। शिष्ट।

सफेदा—संज्ञा पुं० [फा० सुफ़ेदा] १ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है। २. आम का एक भेद। ३ खरबूजे का एक भेद।

सफेदी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुफ़ेदी] १ सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना=बुढ़ापा आना। २ दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

सब—वि० [सं० सर्व] १ जितने हों, वे कुल। समस्त। २ पूरा। सारा।

वि० [अँ०] किसी बड़े कर्मचारी का सहायक। नायब, जैसे—सब एडिटर, सब जज।

सबक—संज्ञा पुं० [फा०] १ पाठ। २ शिक्षा। सीख।

सबज—वि० दे० "सब्ज"।

सबद—संज्ञा पुं० [सं० शब्द] १ दे० "शब्द"। २ किसी महात्मा के वचन। ३. भजन। गीत। ४. शास्त्रवचन। व्यवस्था। उ०—जोगी गढ़ जो सँधि दै आवहिं। बोलहु सबद सिद्धि जस पावहिं।—पदमावत।

सबब—संज्ञा पुं० [अ०] १ कारण। वजह। हेतु। २ द्वार। साधन।

सबमरीन—संज्ञा स्त्री० [अँ०] पानी के नीचे डूबकर चलनेवाला एक प्रकार का जहाज। पनडुब्बी।

सबर—संज्ञा पुं० दे० "सब्र"।

सबल—वि० [सं०] [भाव० सबलता] १ बलवान्। ताकतवर। २ जिसके साथ सेना हो।

सबार—क्रि० वि० [हिं० सवेरा] शीघ्र।

सबील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मार्ग। सड़क। २ उपाय। तरकीब। ३ प्याऊ। पौंसाला।

सबूत—संज्ञा पुं० [अ०] वह जिससे कोई बात प्रमाणित की जाय। प्रमाण।

वि० जो खंडित न हो। पूरा।

सबेरा—संज्ञा पुं० दे० "सवेरा"।

सब्ज—वि० [फा०] १. कच्चा और ताजा (फल फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना=काम निकालने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना। २ हरा। हरित (रंग)। ३ शुभ। उत्तम।

सब्जकदम—संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसका आना अशुभ माना जाय। मनहूस।

सब्जा—संज्ञा पुं० [फा० सब्ज] १. हरियाली। २ भंग। भाँग। विजया। ३ पन्ना नामक रत्न। ४ घोड़े का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन होता है।

सब्जी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वनस्पति आदि हरियाली। २. हरी तरकारी। ३ भाँग।

सब्र—संज्ञा पुं० [अ०] संतोष। धैर्य।

मुहा०—किसी का सब्र पड़ना=किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना।

सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। २ वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये संघटित हो।

सभागा—वि० [सं० सौभाग्य] १ भाग्यवान। २ सुंदर। खूबसूरत।

सभागृह—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत से लोगों के एकसाथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

सभापति—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सभानेत्री] वह जो सभा का प्रधान नेता हो। सभा का मुखिया।

सभासद—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो। सदस्य। सामाजिक।

सभीत—वि० दे० "भीत"।

सभ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सभासद। सदस्य। २ वह जिसका आचार व्यवहार उत्तम हो। भला आदमी।

सभ्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सभ्य होने का भाव। २ सदस्यता। ३ सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४. भलमनसाहत। शराफत। ५ सामाजिक उन्नति।

समंजस—वि० [सं०] उचित। ठीक।

समंत—संज्ञा पुं० [सं०] सीमा। सिरा।

समंद—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ा।

संज्ञा पुं० [सं० समुद्र] १. सागर। समुद्र। २ बड़ा तालाब या झील।

सम—वि० [सं०] [स्त्री० समा] १. समान। तुल्य। बराबर। २ सब। कुल। तमाम। ३. जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो। चौरस। ४ (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस।

संज्ञा पुं० १ संगीत में वह स्थान जहाँ गाने बजानेवालों का सिर या हाथ आप से आप हिल जाता है। २ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंधों का वर्णन होता है।

संज्ञा पुं० [अ०] विष। जहर।

समकंध—संज्ञा पुं० [सं० सम+हिं० कंध] सुडौल कंधा। उ०—इकहि बैस, समकंध सुदेस। ऊपर बनै जु बदन बिसेस। —नंददास०।

समकक्ष—वि० [सं०] समान। तुल्य।

समकालीन—वि० [सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों। सामयिक।

समकोण—वि० [सं०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।

समक्ष—अव्य० [सं०] सामने।

समग्र—वि० [सं०] कुल। पूरा। सब।

समग्रीⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "सामग्री"। उ०—पिय आगमन जानि बर बाला। सुरत समग्री रचै रसाला।—नंददास०।

सम चतुर्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।

समचर—वि० [सं०] समान आचरण करनेवाला।

समचार—संज्ञा पुं० [सं० समाचार] समाचार। संदेसा। उ०—सखी कहै मैं पठए चारा। आजि कालिह ऐसे समचारा। —नंददास०।

समझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बुद्धि] बुद्धि। अक्ल।

समझदार—वि० [हिं० समझ+फा० दार] बुद्धिमान्।

समझना—क्रि० अ० [हिं० समझ] किसी बात को अच्छी तरह मन में बैठाना।

समझवार—वि० [हिं० समझ+वार=वाला] समझनेवाला। समझदार। उ०—सीसफूल सीमत किसोरी, आपुन दीनो। समझवार समझाइ सु नैननि अंजन कीनो।—नंददास०।

समझाना—क्रि० स० [हिं० समझना] दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।

समझाव, समझावा—संज्ञा पुं० [हिं० समझ+आव, आवा (प्रत्य०)] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता—संज्ञा पुं० [हिं० समझ+औता (प्रत्य०)] आपस का निपटारा।

समतल—वि० [सं०] जिसकी सतह बराबर हो। हमवार।

समता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता।

समतूलⓟ—वि० दे० "समतोल"।

समतोल—वि० [सं० सम+तौल] महत्व आदि के विचार से समान। बराबर।

समतोलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. महत्व आदि के विचार से सबको समान रखना। २ दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना।

समत्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।

समत्व—संज्ञा पुं० दे० "समता"।

समदन—संज्ञा स्त्री० [?] भेंट। नजर।

समदना—क्रि० अ० [?] प्रेमपूर्वक मिलना।

समदर्शी—वि० [सं० समदर्शिन्] सबको समान दृष्टि से देखनेवाला। किसी से भेदभाव न रखनेवाला।

समधिक—वि० [सं०] बहुत। अधिक।

समधियाना—संज्ञा पुं० [हिं० समधी] समधी का घर।

समधी—संज्ञा पुं० [सं० संबंधी] पुत्र या पुत्री का ससुर।

समधीत—वि० [सम्+अधीत] जिसने अच्छी तरह से पढ़ा हो। उ०—युवकों में प्रमुख रत्नचेतन समधीत-शास्त्र-काव्यालोचन। —तुलसीदास।

समनाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान नामवाला। नामरासी। २ समानार्थ। पर्याय।

समन्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। मिलन। मिलाप। २ विरोध का न होना। कार्यकारण का प्रवाह या निर्वाह।

समन्वित—वि० [सं०] मिला हुआ। संयुक्त।

समपाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद या कविता जिसके चारों चरण समान हों।

समय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक्त। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फुरसत। ४. अंतिम काल।

समर—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

समरथ—वि० दे० "समर्थ"।

समरभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

समरस—वि० [सं० सम+रस] [भाव० समरसता] १. एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ)। २. एक ही तरह के।

समरांगण—संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।

समरानाⓟ—क्रि० स० [हिं० सँवारना] सजाना या सजवाना।

समर्चना—संज्ञा स्त्री० [सं०] भली भाँति की हुई अर्चना।

समर्थ—वि० [सं०] जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।

समर्थक—वि० [सं०] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।

समर्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामर्थ्य। शक्ति।

समर्थन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य] १. यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। २ यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना। पुष्टि या ताईद करना। ३ विवेचन।

समर्थित—वि० [सं०] जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्पक—वि० [सं०] समर्पण करनेवाला।

समर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आदरपूर्वक भेंट करना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। २ दान देना।

समर्पनाⓟ—क्रि० स० [सं० समर्पण] समर्पण करना। सौंपना।

समर्पित—वि० [सं०] जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ।

समर्प्य—वि० [सं०] जो समर्पण किया जा सके। समर्पण करने के योग्य।

समल—वि० [सं०] मलीन। मैला। गंदा। मलयुक्त।

समवकार—वि० पु० [सं०] एक प्रकार का वीररसप्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।

समवयस्क—वि० [सं०] समान वयस या उम्रवाला। हमउम्र।

समवर्ती—वि० [सं० समवर्त्तिन्] १ जो समान रूप से स्थित हो। २ जो पास में स्थित हो।

समवाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। २. न्यायशास्त्र के अनुसार वह संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है।

समवायी—वि० [सं० समवायिन्] जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।

समवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समवेत—वि० [सं०] १ इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित।

समवेदना—संज्ञा स्त्री० [हिं० सम+वेदना] किसी के शोक, दुःख, कष्ट या हानि के प्रति सहानुभूति।

समशीतोष्ण कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक हैं।

समष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सब का समूह। कुल। व्यष्टि का उलटा।

समस्त—वि० [सं०] १ सब। कुल। समग्र। २ एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। ३ जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त।

समस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।

समस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई। २ किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है। ३ मिलाने की क्रिया। ४ संघटन।

समस्यापूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।

समाँ—संज्ञा पुं० [सं० समय] समय। वक्त।

मुहा०—समाँ बँधना=(संगीत आदि का) इतनी उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ।

समा—संज्ञा पुं० दे० "समाँ"।

वि० 'सम' का स्त्री०।

समाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० समाना] १. समाने की क्रिया या भाव। २ सामर्थ्य। शक्ति।

समाकुल—वि० [सं०] १ ठसाठस भरा हुआ। २ बहुत घबराया हुआ। जिसकी अक्ल ठिकाने न हो।

समागत—वि० [सं०] [स्त्री० समागता] जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।

समागम—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलना। भेंट। २. मैथुन। ३. आगमन। आना।

समाचार—संज्ञा पुं० [सं०] संवाद। खबर। हाल।

समाचारपत्र—संज्ञा पुं० [सं० समाचार+पत्र] वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। अखबार।

समाज—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। गरोह। दल। उ०—हँसता सा छायापथ में नक्षत्रसमाज दिखाता।—आँसू। २ सभा। ३ एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। समुदाय। ४. वह संस्था जो बहुत से लोगों ने मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हो। सभा।

समाजवाद—संज्ञा पुं० [सं०] उत्पादन के साधनों और वितरण पर सामूहिक हित के लिये व्यक्तिगत अधिकार का विरोधी सिद्धांत।

समाजवादी—वि० [सं०] वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो।

समाजशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] मानव समाज का विकास, प्रकृति और नियम बतलानेवाला शास्त्र।

समाजशास्त्री—संज्ञा पुं० [सं० समाजशास्त्रिन्] समाजशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

समादर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समादृत, समादरणीय] आदर। सम्मान। खातिर।

समादृत—वि० [सं०] जिसका खूब आदर हुआ हो। सम्मानित।

समाधान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाधानीय] १ निष्पत्ति। निराकरण। २ किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। ३ किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ४ बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो (नाटक)। ५ चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। समाधि।

समाधानना(पु)—क्रि० स० [सं० समाधान से हिं० ना० धा०] १ समाधान या संतोष करना। २ सांत्वना देना।

समाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. योग का चरम फल। इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। २ योग। ३ ध्यान। ४ निद्रा। ५ किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना। ६ वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। ७ काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैवसंयोग से एक ही समय में होना प्रगट होता है। ८ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य बहुत ही सुगमतापूर्वक होना बतलाया जाता है। ९ समर्थन। १० प्रतिज्ञा। ११ ग्रहण करना। अंगीकार।

संज्ञा स्त्री० दे० "समाधान"।

समाधि क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हों। २ कब्रिस्तान।

समाधित—वि० [सं०] जिसने समाधि लगाई या ली हो।

समाधिस्थ—वि० [सं०] जो समाधि लगाए हुए हो।

समान—वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्व आदि में एक से हों। बराबर। तुल्य।

संज्ञा स्त्री० दे० "समानता"।

समानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी।

समाना—क्रि० अ० [सं० समावेश] अंदर आना। भरना। अँटना।

क्रि० स० अंदर करना। भरना।

समानाधिकरण—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।

समानार्थ, समानार्थक—संज्ञा पुं० [सं०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय।

समानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है। उ०—ग्वाल की गँवारिका। धन्य ते समानिका॥

समानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ८ वर्णों का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में रगण के बाद जगण और अंत में गुरु लघु हो। उ०—रोज गौ लिए प्रभात। काननै गुपाल जात ॥

समापक—संज्ञा पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला। पूरा करनेवाला।

समापन—वि० [सं० समाप्त] पूर्ण उ०—आवै ऋतू बसंत जब तब मधुकर तब बासु। जोगी जोग जो इमि करै सिद्धि समापन तासु। —पदमावत।

समापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाप्य, समापनीय] १ समाप्त करना। पूरा करना। २ मार डालना। वध।

समापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।

समापित—वि० [सं०] समाप्त, खतम या पूरा किया हुआ।

समाप्त—वि० [सं०] जो खतम या पूरा हो गया हो।

समाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य या बात आदि का खतम या पूरा होना।

समाप्य—वि० [सं०] जो समाप्त होनेवाला या समाप्त होने योग्य हो।

समायोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। २ लोगों का एकत्र होना।

समारंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह आरंभ होना। २ समारोह। आयोजन।

समारनाⓅ—क्रि० स० दे० "सँवारना"।

समारोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ तड़क भड़क। धूमधाम। २ कोई ऐसा कार्य या उत्सव जिसमें बहुत धूमधाम हो। आयोजन।

समालोचक—संज्ञा पुं० [सं०] समालोचना करनेवाला।

समालोचन—संज्ञा पुं० दे० "समालोचना"।

समालोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खूब देखना भालना। २ किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। ३ वह कथन या लेख आदि जिसमें इस प्रकार के गुण और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समावर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समावर्तनीय] १ वापस आना। लौटना। २. वैदिक काल का एक संस्कार जो उस समय होता था, जब ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और विद्याओं का अध्ययन करके स्नातक बनकर घर लौटता था।

समाविष्ट—वि० [सं०] जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ। सम्मिलित।

समावेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ या एक जगह रहना। २ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। ३ मनोनिवेश।

समाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। शरण।

समाश्रित—वि० [सं०] आश्रय या शरण में रहनेवाला।

समास—संज्ञा पुं० [सं०] १. संक्षेप। २ समर्थन। ३. संग्रह। ४. सम्मिलन। ५ व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना। मुख्य समास ये हैं—अव्ययीभाव, द्विगु, द्वंद्व, कर्मधारय, तत्पुरुष और बहुव्रीहि।

समासीन—वि० [सं०] भली भाँति आसीन या बैठा हुआ। आसीन।

समासोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें समान कार्य और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

समाहरण—संज्ञा पुं० दे० "समाहार"।

समाहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० समाहर्तृ] १ समाहार करनेवाला। मिलानेवाला। २ प्राचीन काल का राज्यकर एकत्र करनेवाला एक कर्मचारी।

समाहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २ समूह। राशि। ढेर। ३ मिलना।

समाहार द्वंद्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो, जैसे—सेठ-साहूकार।

समाहित—वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २. शांत। ३ समाप्त। ४ स्वीकृत।

समिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २ प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३ किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त की हुई सभा।

समिद्ध—वि० [सं०] १ प्रज्वलित। उ०—शुष्क डालियों से वृक्षों की अग्नि अर्चियाँ हुई समिद्ध। —कामायनी। २. उत्तेजित। भड़का या भड़काया हुआ।

समिध—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २. लकड़ी। उ०—केलिथल कुंड साजि समिध सुमनसेज, बिरह की ज्वाल बाल बरै प्रति रोमु है। —काव्यनिर्णय।

समिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान या बराबर करना। २ गणित में एक क्रिया जिसमें किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं।

समीक्षक—वि० [सं०] १ अच्छी तरह देखने भालनेवाला। २ आलोचना करनेवाला। समालोचक।

समीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १ अच्छी तरह देखना। २ आलोचना। समालोचना ३ बुद्धि। ४ यत्न। कोशिश। ५ मीमांसा शास्त्र।

समीचीन—वि० [सं०] [भाव० समीचीनता] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब।

समीतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "समिति"।

समीप—वि० [सं०] [भाव० समीपता] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

समीपवर्ती—वि० [सं० समीपवर्तिन्] समीप का। पास का।

समीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ प्राणवायु।

समीरण—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

समुद, समुदर—संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"।

समुंदरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० समुदर+फूल] एक प्रकार का विधारा।

समुचित—वि० [सं०] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। राशि। ढेर। २ मिलान। समाहार। मिलन। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसके दो भेद हैं। एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष विषाद आदि बहुत से भावों का एक साथ उदित होने का वर्णन हो। दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य के लिये बहुत से कारणों का वर्णन हो।

समुज्वल—वि० [सं० समुज्ज्वल] [भाव० समुज्ज्वलता] विशेष रूप से उज्वल। प्रकाशमान। चमकीला।

समुभ्र(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

समुत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठने की क्रिया। २. उत्पत्ति। ३ आरंभ।

समुत्सुक—वि० [सं०] [भाव० समुत्सुकता] विशेष रूप से; उत्सुक।

समुद—संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"। उ०—कमल नैन पिय की हिय सु दर प्रेम समुद लस।—नंददास०।

समुदय—संज्ञा पुं०, वि० दे० "समुदाय"।

समुदाउ—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] समुदाय। समूह। उ०—सो भूषन व्याजोक्ति है, सुनौ सुमति समुदाय।—काव्यनिर्णय।

समुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २ भुंड। गरोह। ३ समुत्थान। उदय।

वि० सब। समस्त। कुल।

समुदाव—संज्ञा पुं० दे० "समुदाय"।

समुद्यत—वि० [सं०] जो भली भाँति उद्यत या तैयार हो।

समुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जलराशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वीतल के प्राय. तीन चतुर्थांश में व्याप्त है। सागर। अम्बुधि। उदधि। २ किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।

समुद्रफेन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुदरफेन।

समुद्रयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयान—संज्ञा पुं० [सं०] जहाज।

समुद्रलवण—संज्ञा पुं० [सं०] करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है।

समुद्रीय—वि० [सं०] समुद्र संबंधी।

समुन्नत—वि० [सं०] भली भाँति उन्नत।

समुन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समुन्नत] १ यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २ महत्त्व। बड़ाई। ३ उच्चता।

समुपस्थित—वि० दे० "उपस्थित"।

समुल्लास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समुल्लसित] १. उल्लास। आनंद। खुशी। २ ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुहा—वि० [सं० सम्मुख] सामने का।

क्रि० वि० सामने। आगे।

समुहाना—क्रि० अ० [हिं० समुहा से ना० धा०] सामने आना। उ०—इत यह बली ग्वाल भिहरानौ। मधुरिपुआसन प्रति समुहानौ।—नंददास०।

समूर—संज्ञा पुं० [सं०] शबर या साबर नामक हिरन।

समूल—वि० [सं०] १ जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।

क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित।

समूह—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीजों का ढेर। राशि। २ समुदाय। भुंड। गरोह।

समृद्ध—वि० [सं०] संपन्न। धनवान्।

समृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक संपन्नता। अमीरी। ऐश्वर्य।

समें, समैं—संज्ञा पुं० [सं० समय] समय। उ०—प्रात समैं श्रीवल्लभसुत के, वदनकमल कौं दरसन कीजै।—नंददास०।

समेटना—क्रि० स० [हिं० सिमटना] १ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। किसी फैली हुई वस्तु को सिकोड़ना। २ अपने ऊपर लेना।

समेत—वि० [सं०] संयुक्त। मिला हुआ।

अव्य० सहित। साथ।

समै, समैया(पु)—संज्ञा पुं० दे० "समय"।

समोखना—क्रि० स० [सं० सम्मुख?] बहुत ताकीद से कहना।

समोधना—क्रि० स० [सं० संबोध] प्रबोध करना। ढाढ़स बँधाना, उ०—नंद समोधत ताकौ चित्त। सब अदिष्ट बस होतु है मित्त।—नंददास०।

समोना—क्रि० स० [?] मिलाना।

समोसा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन पकवान। तिकोना।

समौ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "समय"।

समौरिया—वि० [सं० सम+हिं० उमरिया] बराबर की उमरवाला। समवयस्क।

सम्मत—वि० [सं०] जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत।

सम्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सलाह। राय। २ अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३ मत। अभिप्राय।

सम्मन—संज्ञा पुं० [अं० समन्स] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने का हुक्म दिया जाता है।

सम्मान—संज्ञा पुं० [सं०] समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा।

सम्मानना—संज्ञा स्त्री० दे० "सम्मान"।

(पु)क्रि० स० सम्मान या आदर करना।

सम्मानित—वि० [सं०] [स्त्री० सम्मानिता] जिसका सम्मान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

सम्मार्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू।

सम्मिलन—संज्ञा पुं० [सं०] मिलाप। मेल।

सम्मिलित—वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

सम्मिश्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्मिश्र] १ मिलने की क्रिया। २ मेल। मिलावट। ३ एक साथ मिली हुई एकाधिक वस्तुएँ।

सम्मुख—अव्य० [सं०] सामने। समक्ष।

सम्मेलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। सभा। समाज। २ जमावड़ा। जमवट। ३. मिलाप। संगम।

सम्मोहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्मोहक] १ मोहित या मुग्ध करना। २ मोह उत्पन्न करनेवाला। ३ एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

सम्यक्—वि० [सं०] पूरा। सब।

क्रि० वि० १. सब प्रकार से। २ अच्छी तरह। भली भाँति।

सम्याना(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शामियाना"।

सम्राज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम्राट् की पत्नी। २ साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—संज्ञा पुं० [सं० सम्राज्] बहुत बड़ा राजा। महाराजाधिराज। शाहंशाह।

सम्हलना—क्रि० अ० दे० "सँभलना"।

सयन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शयन] दे० शयन।

सयान(पु)—संज्ञा पुं० १ "सयाना"। २. दे० "सयानापन"।

सयानपत—संज्ञा स्त्री० दे० "सयानपन"।

सयानप, सयानपन—संज्ञा पुं० [हिं० सयाना+पन] चालाकी।

सयाना—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १. अधिक अवस्थावाला। वयस्क। २ बुद्धिमान्। होशियार। ३ चालाक। धूर्त।

सरंजाम—संज्ञा पुं० [फा० सर+अंजाम] १. कार्य की समाप्ति। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३ सामग्री। सामान।

सर—संज्ञा पुं० [सं० सरस्] ताल। तालाब।

ⓟ†संज्ञा पुं० दे० "शर"।

संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। उ०—सजि सिंगार सर पै चढ़ी, सुदरि निपट सुबेस। मनो जीति भुवलोक सब, चलि जीतन दिविदेस।—काव्यनिर्णय।

संज्ञा पुं० [फा०] १. सिर २ सिरा। चोटी।

संज्ञा पुं० [अवसर का अनुकरण] अवसर के अनुकरण पर बना हुआ एक निरर्थक शब्द जिसका प्रयोग 'अवसर' से पहले होता है।

[अं०] एक अंग्रेजी उपाधि या खिताब।

वि० १ दमन किया हुआ। २ जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।

संज्ञा पुं० [सं० अवसर] समय। अवसर। उ०—जांण भगत का नित मरण, अणजांणों का राज। सर अपसर समझै नहीं, पेट भरण सूँ काज।—कबीर०।

सरअंजाम—संज्ञा पुं० [फा०] सामग्री।

सर आगी—संज्ञा पुं० [सं० शर+अग्नि] अग्निबाण। उ०—जनु सर आगि होइ हिय लागे। सब तन दागि सिंघ बन दागे। —पदमावत।

सरकंडा—संज्ञा पुं० [सं० शरकांड] सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकना] १ सरकने की क्रिया या भाव। २ शराब की खुमार।

सरकना—क्रि० अ० [स० सरक, सरण] १ जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। खिसकना। २ नियत काल से और आगे जाना। टलना। ३ काम चलना। निर्वाह होना।

सरकश—वि० [फा०] [संज्ञा सरकशी] १ उद्धत। उद्दंड। २ विरोध में सिर उठानेवाला।

सरकस—संज्ञा पुं० [अं०] पशुओं और कलाबाजी आदि का कौशल या उसे दिखलानेवालों का दल।

सरकार—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १ मालिक। प्रभु। २ राज्य-संस्था। शासनसत्ता। ३ रियासत।

सरकारी—वि० [फा०] १. सरकार या मालिक का। २ राज्य का। राजकीय।

यौ०—सरकारी कागज=(१) राज्य के दफ्तर का कागज। (२) प्रामिसरी नोट।

सरखत—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह दस्तावेज जिसपर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २. दिए और चुकाए हुए ऋण आदि का ब्योरा। ३. आज्ञापत्र। परवाना।

सरगⓟ—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"। उ०—सात सरग चढ़ि धावौं पदमावति जेहि पथ। —पदमावत।

सरगतियⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+तिय] अप्सरा।

सरगना—संज्ञा पुं० [फा०] सरदार। अगुआ।

सरगम—संज्ञा पुं० [हिं० सा, रे, ग, म,] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम। स्वरग्राम।

सरगर्म—वि० [फा०] [संज्ञा सरगर्मी] १ जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उमंग से भरा हुआ। उत्साही।

सरघर—संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० घर] तीर रखने का खाना। तरकश।

सरघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुमक्खी।

सरज—संज्ञा पुं० दे० 'सर्ज' ४।

सरजना—क्रि० स० [सं० सृजन] १. सृष्टि करना। २ रचना। बनाना।

सरजा—संज्ञा पुं० [फा० सरजाह] १. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २ सिंह।

सरजीवन†—वि० [स० सजीवन] १. जिलानेवाला। २ हरा भरा। उपजाऊ।

सरजोर—वि० [फा०] [संज्ञा सरजोरी] १. बलवान। ताकतवर। २ प्रबल। जबरदस्त। ३ उद्दंड। ४ विद्रोही।

सरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्ग। रास्ता। २ दर्रा। ३ लकीर।

सरताज—संज्ञा पुं० दे० "सिरताज"।

सरतारा—वि० [हिं० सिर+तरना ?] जो अपना काम करके निश्चिंत हो गया हो।

सरद—वि० दे० "सर्द"।

सरदई—वि० [फा० सरद] सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।

सरदर—क्रि० वि० [फा० सर+दर=भाव] १ एक सिरे से। २ सब एक साथ मिलाकर। औसत में।

सरदा—संज्ञा पुं० [फा० सर्द.] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।

सरदार—संज्ञा पुं० [फा०] १. नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २. शासक। ३. अमीर। रईस। ४ श्रेष्ठतासूचक उपाधि।

सरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का पद या भाव।

सरधनⓟ—वि० [सं० स+धन] धनवान। अमीर।

सरधाⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।

संज्ञा पुं० दे० "सरदा"।

सरनⓟ†—संज्ञा स्त्री० दे० शरण"।

सरनदीप—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल द्वीप"।

सरना—क्रि० अ० [सं० सरण] १ सरकना। खिसकना। २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना। पूरा पड़ना। ४. किया जाना। निबटना।

सरनाम—वि० [फा०] प्रसिद्ध।

सरनामा—संज्ञा पुं० [फा०] १ शीर्षक। २. पत्र का आरंभ या संबोधन। ३ पत्र पर लिखा जानेवाला पता।

सरनीⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० सरणी] मार्ग। रास्ता।

सरपंच—संज्ञा पुं० [फा० सर+हिं० पंच] पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सरपंजरⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सर+हिं० पिंजरा] बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।

सरपट—क्रि० वि० [सं० सर्पण] घोड़े की बहुत तेज दौड़ जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

सरपत—संज्ञा पुं० [सं० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

सरपरस्त—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० सरपरस्ती] अभिभावक। सरक्षक।

सरपेच—संज्ञा पुं० [फा०] पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश—संज्ञा पुं० [फा०] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

सरफराज—वि० [फा०] [संज्ञा सरफराजी] उच्च पद पर पहुँचा हुआ। सम्मानित।

सरफरानाⓟ—क्रि० अ० [अनु०] व्याकुल होना। घबराना।

सरफोका—संज्ञा पुं० दे० "सरकडा।"

सरबंग—संज्ञा पुं० [स० सर्व+अंग] समस्त देह। सर्वांग। उ०—चाहै न

विभूति पै विभूनि सरवंग पर, वाह विन गगपरवाह सिर पेखिए।—रससारांश।

सरबंधी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शरबंध] तीरंदाज। धनुर्धर।

सरब(पु)†—वि० दे० "सर्व"।

सरबर—संज्ञा स्त्री० [अनु० सर+बर्राना] बहुत सवाल जवाब करना। मुँह लगना। कहासुनी। झगड़ा।

सरबराह—संज्ञा पुं० [फा०] १ प्रबंधकर्ता। कारिंदा। २ मजदूरों आदि का सरदार। ३ रास्ते के खानपान और ठहरने आदि का प्रबंध।

सरबराहकार—संज्ञा पुं० [फा० सरबराह+कार] किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।

सरबस(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।

सरमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया (वैदिक)। २ कुतिया।

सरयू—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक नदी।

सरराना†—क्रि० अ० [अनु० सर सर] हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

सरल—वि० [सं०] [स्त्री० सरला] १ जो टेढ़ा न हो। सीधा। २ निष्कपट। सीधासाधा। सहज। आसान।

संज्ञा पुं० १ चीड़ का पेड़। २ सरल का गोंद। गंधाबिरोजा।

सरलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। २ निष्कपटता। सिधाई। ३ सुगमता। आसानी। ४ सादगी। भोलापन।

सरलनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधा बिरोजा। २ तारपीन का तेल।

सरलपन—संज्ञा पुं० दे० "सरलता"।

सरवग्य—वि० [सं० सर्वज्ञ] सर्वज्ञ। उ०—हे सरवग्य अग्य जन मेरे। जाने नहिन धर्म प्रभु केरे।—नंददास०।

सरवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] संपन्नता। वैभव। धनसंपत्ति। उ०—जिसे अपने दिन याद रहते हैं। सरवत पाते ही लोगों की निगाहें बदल जाती हैं।—कायाकल्प।

सरवन—संज्ञा पुं० [सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।

(पु)† संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।

सरवर—संज्ञा पुं० दे० "सरोवर"।

सरवरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी। तुलना। समता।

सरवरिया—वि० [हिं० सरवार+इया (प्रत्य०)] सरवार या सरयू पार का।

संज्ञा पुं० सरयूपारी।

सरवाक—संज्ञा पुं० [सं० शरावक] १ संपुट। प्याला। २ दीया। कसोरा।

सरवान—संज्ञा पुं० [?] तंबू। खेमा।

सरवार—संज्ञा पुं० [सं० सरयू या सरयू+पार] सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर, बस्ती और देवरिया जिले हैं।

सरविस—संज्ञा स्त्री० [अँ०] १ नौकरी। २ सेवा। खिदमत।

सरवे—संज्ञा पुं० [अँ०] १ जमीन की पैमाइश। २ यह पैमाइश करनेवाला सरकारी विभाग।

सरस—वि० [सं०] [स्त्री० सरसा, भाव० सरसता] १ रसयुक्त। रसीला। २ गीला। भीगा। सजल। ३. हरा। ताजा। ४ सुंदर। मनोहर। ५ मधुर। मीठा। ६ जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ७ बढ़कर। उत्तम। ८ रसिक। सहृदय।

संज्ञा पुं० छप्पय छंद के ३५वें भेद का नाम।

सरसई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती नदी या देवी।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० सरस] १ सरसता। रसपूर्णता। २ हरापन। ताजापन।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं।

सरसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ 'सरस' होने का भाव। २ रसीलापन। ३ गीलापन। आर्द्रता। ४ सुंदरता। ५ मधुरता। ६ भावपूर्णता। रसिकता।

सरसना—क्रि० अ० [सं० सरस से हिं० ना० धा० (प्रत्य०)] १ हरा होना। पनपना। २ वृद्धि को प्राप्त होना। बढ़ना। ३ शोभित होना। ४ सोहाना। ५ रसपूर्ण होना। ६ भाव से भरना। उमंग से भरना।

सरसनि—संज्ञा स्त्री० [?] सरसना। उमंग से भरना। प्रसन्न होना। उ०—कुचन की परसनि, नीवी करषनि। सुखन की बरसनि मन की सरसनि।—नंददास०।

सरसब्ज—वि० [फा०] १ हरा भरा। लहलहाता हुआ। २ जहाँ हरियाली हो।

सरसर—संज्ञा पुं० [अनु०] १ जमीन पर रेंगने का शब्द। २ वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

सरसराना—क्रि० अ० [अनु० सर सर] १ वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। सनसनाना। २. साँप आदि का रेंगना।

सरसराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर+आहट (प्रत्य०)] १ साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २ खुजली। सुरसुराहट। ३ वायु बहने का शब्द।

सरसरी—वि० [फा० सरासरी] १ जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।

सरसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरस+आई (प्रत्य०)] १ सरसता। २ शोभा। सुंदरता। ३ अधिकता।

सरसाना—क्रि० स० [हिं० सरसना का स० रूप] १ रसपूर्ण करना। २. हरा भरा करना।

(पु)क्रि० अ० दे० "सरसना"।

(पु)क्रि० अ० शोभा देना। सजना।

सरसाम(पु)—संज्ञा पुं० [फा०] सन्निपात।

सरसार—वि० [फा० सरशार] १. डूबा हुआ। मग्न। २ चूर। मदमस्त (नशे में)।

सरसिज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो ताल में होता हो। २ कमल। उ०—अभिलाषा के मानस में सरसिज सी आँखें खोलो।—आँसू।

सरसिरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सरसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा सरोवर। तलैया। २ पुष्करिणी। बावली। ३ २७ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में गुरु लघु का क्रम रहता है। उ०—झूठो है धन धाम बावरे। राम सिया भजु राम। साँचो प्रभु को नाम बावरे। राम सिया भजु राम॥ इसे कबीर और सुमंदर भी कहते हैं। ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, भगण, तीन जगण और रगण होता है। उ०—अधम लहै कतौ सुख न ते, नरदेह धरे निकाम यों। सुन्हु सुधी। अजा गल जु सो, पुनि जानहु स्वान पूछ ज्यों।

सरसीरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल ।

सरसेटना—क्रि० स० [अनु०] १. खरी-खोटी सुनाना । फटकारना । २. दुराग्रह करना ।

सरसों—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्षप] एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है ।

सरसौहाँ—वि० [हिं० सरस+औहाँ (प्रत्य०)] सरस बनाया हुआ ।

सरस्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणों के अनुसार प्रयाग में त्रिवेणी संगम में मिलनेवाली एक प्राचीन नदी जो अब लुप्त हो गई है । २ पंजाब की एक प्राचीन नदी । ३. विद्या या वाणी की देवी । वाग्देवी । भारती । शारदा । ४ विद्या । इल्म । ५ ब्राह्मी बूटी । ६. सोमलता । ७ एक छंद का नाम ।

सरस्वतीपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंत पंचमी को और कहीं आश्विन में होता है ।

सरहंग—संज्ञा पुं० [फा०] १ सेनापति । २. पहलवान । ३ कोतवाल । ४ सिपाही ।

सरह—संज्ञा पुं० [सं० शलभ] १. पतंग । फतिंगा । २ टिड्डी ।

सरहज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री । पत्नी के भाई की स्त्री ।

सरहटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाची] सर्पाची नाम का पौधा । नकुलकंद ।

सरहद—संज्ञा स्त्री० [फा० सर+अ० हद] १. सीमा । २ किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न ।

सरहदी—वि० [फा० सरहद+ई (प्रत्य०)] सरहद संबंधी । सीमा संबंधी ।

सरहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा ।

सरा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सराय" ।

सराई†—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १ शलाका । सलाई । २. सरकंडे की पतली छड़ी ।

संज्ञा स्त्री० [सं० शराव] दीया । सकोरा ।

सराग†—संज्ञा पुं० [सं० शलाका] लोहे की सीख । सीखचा । छड़ ।

सराजाम†—संज्ञा पुं० दे० "सरजाम" ।

सराध(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध" ।

सराना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सारना का प्रे० रूप] १ पूर्ण करना । संपादित कराना (काम) । २. कराना ।

सराप—संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।

सरापना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सराप से ना० धा०] शाप देना । बद दुआ देना ।

सराफ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १. सोने चाँदी का व्यापारी । २. बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार ।

सराफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १. सराफी का काम । रुपए पैसे या सोने चाँदी के लेनदेन का काम । २ सराफों का बाजार । ३ कोठी । बैंक ।

सराफी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)] १ चाँदी सोने या रुपए पैसे के लेनदेन का रोजगार । २. महाजनी लिपि । मुड़िया ।

सराबोर—वि० [सं० स्राव+हिं० बोर] बिल्कुल भीगा हुआ । तरबतर । आप्लावित ।

सराय—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ घर । मकान । २ यात्रियों के ठहरने का स्थान । मुसाफिरखाना ।

सरारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर+अलि] बाणों की पंक्ति । उ०—केका किलकारी, दास दुंदन सरारी, पौन दुदुंभि धुकारी, तोप गरज डरारी है । —काव्यनिर्णय ।

सराव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शराव] १ मद्यपात्र । प्याला (शराब पीने का) । २. कसोरा । कटोरा । ३ दीया ।

सरावग, सरावगी—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैन धर्म माननेवाला । जैन ।

सरासन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शरासन" ।

सरासर—अव्य० [फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक । २ बिल्कुल । पूर्णतया । ३ साक्षात् । प्रत्यक्ष ।

सरासरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी । फुरती । २ शीघ्रता । जल्दी । ३ मोटा अंदाज ।

क्रि० वि० १ जल्दी में । हड़बड़ी में । २ मोटे तौर पर ।

सराह(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्लाघा] प्रशंसा ।

सराहना—क्रि० स० [सं० श्लाघन] तारीफ करना । बड़ाई करना । प्रशंसा करना ।

संज्ञा स्त्री० प्रशंसा । तारीफ ।

सराहनीय(पु)—वि० [हिं० सराहना+ईय (प्रत्य०)] १. प्रशंसा के योग्य । २ अच्छा । बढ़िया ।

सरि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी ।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी । समता ।

वि० सदृश । समान । बराबर ।

सरित—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी ।

सरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा । २ नदी ।

सरियाना†—क्रि० स० [?] १. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना । २. मारना । लगाना (बाजारू) ।

सरिवन—संज्ञा पुं० [सं० शालपर्णी] शालपर्णी नाम का पौधा । त्रिपर्णी ।

सरिवरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि+सं० प्रति] बराबरी । समता ।

सरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा० सरिश्तः] १. अदालत । कचहरी । २ कार्यालय का विभाग । महकमा । दफ्तर ।

सरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फा० सरिश्त दार] १ किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी । २ भारत की अँग्रेजी अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी ।

सरिष्यु—वि० [सं० सदृश] सदृश । समान । उ०—सुभरदनि विधुबदनि गुनसदनि जगदहनि नहिं तोहि सरिष्यु । कुँअरि मम विनय श्रवन सुनि समुझि पुनि मनहिं गुनि ··· । —छंदार्णव ।

सरिस(पु)—वि० [सं० सदृश] सदृश । समान ।

सरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा सर या तालाब । २ झरना । चश्मा । सोता ।

संज्ञा स्त्री० [सं० शर] पतला सरकंडा । उ०—साँसरी सी छरी सी है सर सी सरी सी भई, साँक सी है लीक सी है बाँध सी सी बाँधी सी । —काव्यनिर्णय ।

सरीक—वि० दे० "शरीक" ।

सरीकता(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० शरीक+हिं० ता (प्रत्य०)] साझा । हिस्सा । उ०—टूट्यो सो न जुरैगो सरासन महेस जू कौ, रावरी पिनाक में सरीकता कहाँ रही ॥ —कविता० ।

सरीखा—वि० [सं० सदृश] समान । तुल्य ।

सरीफा—संज्ञा पुं० [अ० शरफ] एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं ।

सरीर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "शरीर" ।

सरीसृप—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंगनेवाला जंतु । २ सर्प । साँप ।

सरुज—वि० [सं०] रोगी । रोगयुक्त ।

सरुष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त । कुपित ।

सरूप—वि० [सं०] १. रूपयुक्त। आकार-वाला। २ सदृश। समान। ३. रूपवान्। सुंदर।
‡संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।
सरूपी—वि० [सं० स्वरूपिन्] स्वरूप का। स्वरूप से संबंधित। उ०—सुद्ध सरूपी ग्यान की प्रापति तिनको होति। —नंददास०।
सरूर—संज्ञा पुं० [फा० सुरूर] १ खुशी। प्रसन्नता। २. हलका नशा।
सरूहाना—क्रि० स० [?] रोमयुक्त करना।
सरेख, सरेखाⓅ†—वि० [सं० श्रेष्ठ] [स्त्री० सरेखी] बड़ा और समझदार। चालाक। सयाना।
सरेखना—क्रि० स० दे० "सहेजना"।
सरेबाजार—क्रि० वि० [फा०] १ बाजार में। जनता के सामने। खुल्लमखुल्ला। आम लोगों के बीच में।
सरेस—संज्ञा पुं० [फा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेस। सरेश।
सरोटⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन। बल।
सरो—संज्ञा पुं० [फा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।
सरोकार—संज्ञा पुं० [फा०] १ परस्पर व्यवहार का संबंध। २ लगाव। वास्ता।
सरोज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। उ०—है स्नेह सरोज हमारा विकसा, मानस में सूखा। —आँसू।
सरोजना—क्रि० स० [?] पाना।
सरोजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलों का समूह। २ कमल का फूल। ३ कमलों से भरा हुआ ताल।
सरोद—संज्ञा पुं० [फा०] बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सरोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
सरोवर—संज्ञा पुं० [सं०] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।
सरोवरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सरोवर+हिं० ई (प्रत्य०)] छोटा तालाब। तलैया। उ०—नाभि सरोवरी औ त्रिवली की तरंगनि पैरत ही दिनराति है। —काव्यनिर्णय।
सरोष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित।
सरोसामान—संज्ञा पुं० [फा० सर+व+सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।
सरौता—संज्ञा पुं० [सं० सार=लोहा+पत्र] [स्त्री०, अल्पा० सरौती] सुपारी, कच्चा आम आदि काटने का एक प्रसिद्ध औजार।
सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी ग्रंथ (विशेषत काव्य) का अध्याय। प्रकरण। २ संसार। सृष्टि। उ०—आह सर्ग के अग्रदूत! तुम असफल हुए विलीन हुए। —कामायनी। ३. उद्गम। उत्पत्तिस्थान। ४. प्राणी। जीव। ५ संतान। औलाद। ६ स्वभाव। प्रकृति। ७. बहाव। प्रवाह। ८ छोड़ना। चलना। फेंकना। ९. गमन। गति। चलना या बढ़ना।
संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] स्वर्ग। उ०—तिहारी कीर्ति सर्गहूँ दिर्गतहूँ पहुँचो, सीतल उज्जल है यह वस्तु व्यंगि। —काव्यनिर्णय।
सर्गबंध—वि० [सं०] जो कई अध्यायों में विभक्त हो, जैसे—सर्गबंध काव्य।
सर्गुना†—वि० दे० "सगुण"।
सर्ज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ी जाति का शालवृक्ष। २. राल। धूना। ३ सलई का पेड़।
संज्ञा स्त्री० [अँ०] एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा जो प्राय कोट आदि बनाने के काम आता है।
सर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १ छोड़ना। फेंकना। २ निकालना। ३ सृष्टि।
सर्जू—संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।
सर्द—वि० [फा०] १ ठंढा। शीतल। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३ मंद। धीमा। ४ नपुंसक। नामर्द।
सर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढ। शीतलता। २ जाड़ा। शीत। ३ जुकाम। नजला।
सर्प—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १ साँप। २. रेंगना। ३ एक म्लेच्छ जाति।
सर्पकाल—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।
सर्पयज्ञ, सर्पयाग—संज्ञा पुं० [सं०] नागों के संहार के लिये जनमेजय द्वारा संपादित वह यज्ञ जिसमें नागों की आहुति दी गई थी (भागवत)।
सर्पराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्पों के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।
सर्पविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।
सर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँपिन। मादा साँप। २. भुजंगी लता।
सर्पिल—वि० [सं०] साँप के आकार का। साँप की तरह कुंडली मारे हुए।
सर्पिष—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिस के कर्ता बहु० से] घृत। घी। उ०—जो सींचै सर्पिष सिता। अरु जो हनै कुठालि। कटु लागै तिन दुहुन कों, इहै नींब की चाल। —काव्यनिर्णय।
सर्फ—संज्ञा पुं० [अ०] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ।
सर्फा—संज्ञा पुं० [अ० सर्फ] खर्च। व्यय।
सर्बस—संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।
सर्रक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।
सर्राटा—संज्ञा पुं० [हिं० सर्र से अनु०] १ हवा के जोर से चलने से होनेवाला सर्र सर्र शब्द। २. इस प्रकार तेजी से भागना कि सर्र सर्र शब्द हो।
मुहा०—सर्राटा भरना=तेजी के साथ सर्र सर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना।
सर्राफ—संज्ञा पुं० दे० "सराफ"।
सर्व—वि० [सं०] सब। तमाम। कुल।
संज्ञा पुं० १ शिव। २ विष्णु। ३. पारा।
सर्वकाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब इच्छाएँ रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३ शिव।
सर्वक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ जला देना या नष्ट कर देना, विशेषत युद्धस्थल से पीछे हटनेवाली सेना का अपनी वह समस्त रणसामग्री नष्ट कर देना जो साथ न आ सके।
सर्वगत—वि० [सं०] सर्वव्यापक।
सर्वग्रास—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्र या सूर्य का पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।
सर्वजनीन—वि० दे० "सार्वजनिक"।
सर्वजित्—वि० [सं०] सबको जीतनेवाला।
सर्वज्ञ—वि० [सं०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २ देवता। ३. बुद्ध या अर्हंत। ४. शिव।

सर्वज्ञता—संज्ञा स्त्री० [सं०] 'सर्वज्ञ' का भाव।

सर्वतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सब प्रकार के शास्त्रसिद्धांत।
वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।

सर्वतः—अव्य० [सं०] १ सब ओर। चारों तरफ। २ सब प्रकार से।

सर्वतोभद्र—वि० [सं०] १ सब ओर से मंगल। २ जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुड़े हों।
संज्ञा पुं० १ वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २ एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३ एक प्रकार का चित्र-काव्य। ४ एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५ विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव—अव्य० [सं०] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोमुख—वि० [सं०] १ जिसका मुँह चारों ओर हो। २ पूर्ण। व्यापक।

सर्वत्र—अव्य० [सं०] सब कहीं। सब जगह।

सर्वथा—अव्य० [सं०] १ सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब।

सर्वदर्शी—वि० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिनी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदा—अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वदैव—अव्य० [सं०] सदा ही।

सर्वनाम—संज्ञा पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है, जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय—वि० [सं०] सबको प्यारा। जो सबको अच्छा लगे।

सर्वभक्षी—वि० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभोगी—वि० [सं० सर्वभोगिन्] [स्त्री० सर्वभोगिनी] १ सब का आनंद लेनेवाला। २ सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।

सर्वव्यापक—संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी—वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सबमें रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वशक्तिमान्—वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वश्रेष्ठ—वि० [सं०] सबसे उत्तम।

सर्वसाधारण—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम।

सर्वसामान्य—वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वस्व—संज्ञा पुं० [सं०] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल मालमता।

सर्वहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सब कुछ हर लेनेवाला। २ महादेव। शंकर। ३. यम-राज। ४ काल।

सर्वहारा—वि० [सं० सर्व+हारित] जिसका सब कुछ नष्ट हो गया हो। जो अपनी समस्त संपत्ति और अधिकारों से वंचित हो।
संज्ञा पुं० १ श्रमिक। मजदूर। २ श्रमिक वर्ग। मजदूर वर्ग।

सर्वांग—संज्ञा पुं० [सं०] १ संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २ सब अवयव या अंश।

सर्वांगीण—वि० [सं०] १. सब अंगों से संबंध रखनेवाला। २ सब अंगों से युक्त। संपूर्ण।

सर्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १. सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २ शिव।

सर्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।

सर्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २ हाकिम।

सर्वाशी—वि० [सं० सर्वाशिन्] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्व-भक्षी।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

सर्विस—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ सेवा का भाव या काम। २ नौकरी। सेवा।

सर्वेश, सर्वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का स्वामी। २ ईश्वर। ३ चक्रवर्ती राजा।

सर्वोत्तम—वि० [सं०] सबसे उत्तम। सबसे बढ़कर।

सर्वोपरि—वि० [सं०] सबसे ऊपर या बढ़कर।

सर्वोषधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी बूटियाँ हैं।

सर्षप—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरसों। २ सरसों भर का मान या तौल।

सलई—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २ चीड़ का गोंद। कुंदुर।

सलगम—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

सलज्ज—वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलतनत—संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १ राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३ इंतजाम। प्रबंध। ४ सुभीता। आराम।

सलना—क्रि० अ० [सं० शल्य] १ साला जाना। छिदना। भिदना। २ छेद में डाला या पहनाया जाना।

सलब—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।

सलमा—संज्ञा पुं० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट—संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

सलवात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ शुभ कामना। २ सलाम। ३ दुर्वचन। गाली गलौज।

सलहज—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] साले की पत्नी। सरहज।

सलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १ धातु या अन्य पदार्थ का पतला छोटा टुकड़ा। तीली। २ दे० "दियासलाई"।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सलाक—संज्ञा पुं० [सं० शलाका] १ तीर। २ सलाई।

सलाख—संज्ञा स्त्री० [फ० मि० सं० शलाका] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।

सलाद—संज्ञा पुं० [अँ० सैलाड] १ मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेजी ढग से डाला हुआ अचार । २ एक प्रकार के कंद के पत्ते जो प्राय. कच्चे खाए जाते हैं ।

सलाम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया । प्रणाम । वदगी । आदाब ।

मुहा०—(१) दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना । (२) सलाम लेना=सलाम का जवाब देना । (३) सलाम देना=सलाम करना ।

सलामत—वि० [अ०] १ सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ । रक्षित । २ जीवित और स्वस्थ । तदुरुस्त और जिंदा । ३ कायम । बरकरार ।

क्रि० वि० कुशलपूर्वक । खैरियत से ।

सलामती—संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत+ई (प्रत्य०)] १ तदुरुस्ती । स्वस्थता । २. कुशल । क्षेम ।

सलामी—संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत+ई (प्रत्य०)] १ प्रणाम करने की क्रिया । सलाम करना । २. सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली । ३ तोपों या वंदूकों की वाढ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है । ४ वह द्रव्य जो जमींदार, महाजन आदि वास्तविक किराए या मूल्य इत्यादि के अतिरिक्त लेते हैं । पगड़ी । नजराना ।

मुहा०—सलामी उतारना=किसी के स्वागतार्थ वंदूकों या तोपों की वाढ दागना ।

सलार—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी ।

सलाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] सम्मति । परामर्श । राय । मशवरा ।

सलाहकार—संज्ञा पुं० [अ० सलाह+फा० कार । (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो । राय देनेवाला ।

सलाही—संज्ञा पुं० दे० "सलाहकार" ।

सलिल—संज्ञा पुं० [सं०] जल । पानी ।

सलिलपति, सलिलेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण । २ समुद्र ।

सलीका—संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करने का अच्छा ढग । शऊर । २. हुनर । लियाकत । ३. चालचलन । वरताव । ४. तहजीब । सभ्यता ।

सलीकामद—वि० [अ० सलीका+फा०मद (प्रत्य०)] १. शऊरदार । तमीजदार । २ हुनरमद । ३. सभ्य ।

सलीता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वहुत मोटा कपड़ा ।

सलील—वि० [स०] १. लीलायुक्त । २ क्रीडाशील । खेलवाड़ी । ३ कुतूहलप्रिय । कौतुकी । ४ किसी प्रकार की भावभगी से युक्त । ५ लीला या क्रीड़ा से युक्त ।

सलीस—वि० [अ०] १ सहज । सुगम । २ मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा) ।

सलूक—संज्ञा पुं० [अ०] १ वरताव । व्यवहार । आचरण । २ मिलाप । मेल । ३ भलाई । नेकी । उपकार ।

सलूका—संज्ञा पुं० [?] स्त्रियों का एक पहनावा । उ०—ऊनी कुरते की कोई जरूरत नहीं, हाँ तुम एक सलूका बनवा लो ।—कायाकल्प ।

सलेमशाही—संज्ञा पु० [सलीमशाह (नाम)] एक प्रकार का देशी जूता ।

सलोतर—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र] पशुओं, विशेषत. घोड़ों की चिकित्सा का विज्ञान ।

सलोतरी—संज्ञा पुं०, [सं० शालिहोत्री] पशुओं, विशेषत घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला । शालिहोत्र ।

सलोना—वि० [हिं० स+लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी] १ जिसमें नमक पड़ा हो । नमकीन । २ रसीला । सुंदर ।

सलोनापन—संज्ञा पुं० [हि० सलोना+पन (प्रत्य०)] सलोना होने का भाव ।

सलोनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सलोना] सुंदरी । उ०—डीठि बचाइ सलोनी की आरसी में चपकाइ गयो वहराइकै ।—काव्यनिर्णय ।

सलोनो—संज्ञा पुं० [सं० श्रावणी ?] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण मास में पूर्णिमा को पड़ता है । रक्षावधन । राखी पूनो ।

सल्लम—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा । गजी । गाढ़ा ।

सल्लाह—संज्ञा स्त्री० दे० "सलाह" ।

सवत—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत" ।

सवत्स—वि० [स०] वच्चे के सहित । जिसके साथ वच्चा हो ।

सवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसव । वच्चा जनना । २ यज्ञस्नान । ३ यज्ञ । ४ चद्रमा । अग्नि ।

सवर्ण—वि० [स०] १ समान । सदृश । २ समान वर्ण या जाति का । ३ वर्ण व्यवस्था को माननेवाला या उसके अनुसार निर्धारित वर्णवाला । ४. द्विजाति हिंदू ।

सवाँग—संज्ञा पुं० दे० 'स्वाँग" ।

सवा—संज्ञा स्त्री० [सं० स+पाद] चौथाई सहित । सपूर्ण और एक का चतुर्थांश ।

सवाई—संज्ञा स्त्री० [हि० सवा+ई (प्रत्य०)] १ ऋण का एक प्रकार जिसमें मूलधन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है । २ जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि ।

वि० एक और चौथाई । सवा ।

सवाद—संज्ञा पुं० दे० "स्वाद" ।

सवादिकⓅ†—वि० [हि० सवाद+इक (प्रत्य०)] स्वाद देनेवाला । स्वादिष्ट ।

सवाव—संज्ञा पुं० [अ०] १ शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा । पुण्य । २. भलाई । नेकी ।

सवाया—वि० [हिं० सवा] पूरे से एक चौथाई अधिक । सवागुना ।

सवार—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जो घोड़े पर चढ़ा हो । अश्वारोही । २ अश्वारोही सैनिक । ३ वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो ।

वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ ।

सवाराⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सवेरा" ।

सवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज पर विशेषत चलने के लिये चढ़ने की क्रिया । २ सवार होने की वस्तु या पशु । ३ वह व्यक्ति जो सवार हो । ४ जलूस ।

सवाल—संज्ञा पुं० [अ०] १ पूछने की क्रिया । २. वह जो कुछ पूछा जाय । प्रश्न । ३ दरखास्त । माँग । ४ निवेदन । प्रार्थना । ५ गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है ।

सवालजवाब—संज्ञा पु० [अ०] १ बहस । वादविवाद । २. तकरार । हुज्जत । झगड़ा ।

सविकल्प—वि० [स०] १ विकल्पसहित । सदेहयुक्त । सदिग्ध । २ जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो ।

संज्ञा पुं० वह समाधि जो किसी आलवन की सहायता से होती है ।

सविता—संज्ञा पुं० [सं० सवितृ] १ सूर्य । २. बारह की सख्या । ३. आक । मदार ।

सवितापुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि ।

सवितासुत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृसुत] शनैश्चर।

सविनय अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं० सविनय + अवज्ञा] राज्य की किसी आज्ञा या कानून को विनय के साथ न मानना।

सवेरा—संज्ञा पुं० [हिं० स + सं० वेला] १ प्रातःकाल। सुबह। २ निश्चित समय के पूर्व का समय (क्व०)।

सवैया—संज्ञा पुं० [हिं० सवा + ऐया (प्रत्य०)] १. तौलने का सवा सेर का बाट। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। उ०—रावण की उतरी मदिरा चुपचाप पयान जु लंक कियो। राम वरी सिय मोद भरी नभ में सुर जै जयकार कियो॥ उमा। मालिनी। दिवा। ३ ३१ मात्राओं का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में दीर्घ ह्रस्व का क्रम रहता है। उ०—बसु बसु तिथि सानंद सवैया यारो वीर पँवारो गाव। यहै कहावत आल्ह छंद है, सुनतै मन माँ बाढ़ै चाव। सुमिरि भवानी जगदंबा का श्री शारद के चरण मनाय। आदि सरस्वति तुमका ध्यावौं, माता कंठ विराजौ आय॥ इसी को मात्रिक सवैया या वीर छंद कहते हैं। ४ वह पहाड़ा जिसमें एक दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है।

सव्य—वि० [सं०] १ वाम। बायाँ। २ प्रतिकूल। विरुद्ध।
 संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। २ विष्णु।

सव्यसाची—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।

सव्रण—वि० [सं०] १ जिसे व्रण हो। २. जिसे घाव लगे हों। घायल।

सशंक—वि० [सं०] १ जिसे शंका हो। शंकित। भयभीत। २ भयानक।

सशंकना(पु)—क्रि० अ० [सं० सशंक से हिं० ना० धा०] १ शंका करना। २. भयभीत होना।

सस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।
 संज्ञा पुं० [सं० शस्य] खेतीबारी।

ससक, ससा†—संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरगोश। उ०—सिंघी सुत की मानि भय, ससा गयो ससि पास। ससि समेत तहँ है गयो, सिंघीसुत को ग्रास।—काव्यनिर्णय।

ससधर—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] शशांक। चंद्रमा। उ०—सहस सरद-ससधरन-हरनमद लसत वदनवर।—काव्यनिर्णय।

ससाना(पु)—क्रि० अ० [?] १ घबराना। २ काँपना।

ससि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।

ससिधर—संज्ञा पुं० [सं० शशि + धर] महादेव।
 संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।

ससिहर—संज्ञा पुं० दे० "ससिधर"।

ससी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शशि"।

ससुर—संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] पति या पत्नी का पिता। श्वसुर।

ससुरा—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] १. श्वसुर। ससुर। २ एक प्रकार की गाली। ३ दे० "ससुराल"।

ससुराल—संज्ञा स्त्री० [श्वशुरालय] श्वशुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर।

सस्ता—वि० [?] [स्त्री० सस्ती] १ जो महँगा न हो। थोड़े मूल्य का। २ जिसका भाव बहुत उतर गया हो।
 मुहा०—सस्ते छूटना = थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट में कोई काम हो जाना।
 ३ घटिया। साधारण। मामूली (क्व०)।

सस्ताना†—क्रि० अ० [हिं० सस्ता से हिं० ना० धा०] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना।
 क्रि० स० सस्ते दामों पर बेचना।

सस्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता] १ सस्ता होने का भाव। सस्तापन। २ वह समय जब कि सब चीजें सस्ती मिलें।

सस्त्रीक—वि० [सं०] जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के सहित।

सस्मित—वि० [सं० स + स्मित] मुस्कराता या हँसता हुआ।
 क्रि० वि० मुस्कराकर। हँसकर।

सहँगा—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता।

सह—अव्य० [सं०] सहित। समेत।
 वि० [सं०] १ उपस्थित। मौजूद। २ सहनशील। ३ समर्थ। योग्य।

सहकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगंधित पदार्थ। २ आम का पेड़। ३. सहायक। ४ सहयोग।

सहकारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहायता।

सहकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहकारी या सहायक होने का भाव। २. सहायता।

सहकारी—संज्ञा पुं० [सं० सहकारिन्] [स्त्री० सहकारिणी] १. एक साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २. सहायक। मददगार।

सहगमन—संज्ञा पुं० [सं०] पति के शव के साथ पत्नी का सती होना।

सहगान—संज्ञा पुं० [सं०] कई मनुष्यों का एक साथ गाना।

सहगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो। २ स्त्री। पत्नी। ३ सहचरी। साथिन।

सहगामी—संज्ञा पुं० [सं० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] साथ चलनेवाला। साथी।

सहगौन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सहगमन"।

सहचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १. साथ चलनेवाला। साथी। २ सेवक। नौकर। ३. दोस्त। मित्र।

सहचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहचर का स्त्री० रूप। २ पत्नी। जोरू। ३. सखी।

सहचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. संगी। साथी। २ साथ। संग। सोहबत।

सहचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साथ में रहनेवाली। सखी। २ पत्नी। स्त्री।

सहचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहचारी होने का भाव।

सहचारी—संज्ञा पुं० [सं० सहचारिन्] [स्त्री० सहचारिणी] १ संगी। साथी। २ सेवक।

सहज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहजा, भाव० सहजता] १ सहोदर भाई। सगा भाई। २ स्वभाव।
 वि० १ स्वाभाविक। प्राकृतिक। २ साधारण। ३ सरल। सुगम। आसान। ४ साथ उत्पन्न होनेवाला।

सहजपंथ—संज्ञा पुं० [सं० सहज + पथ] गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग।

सहजात—वि० [सं०] १ सहोदर। २. यमज।

सहजिया—संज्ञा पुं० [हिं० सहज (पथ) + इया (प्रत्य०)] वह जो सहज पथ का अनुयायी हो।

सहतमहत—संज्ञा पुं० दे० "श्रावस्ति"।

सहतरा—संज्ञा पुं० [फा० शाहतरह] पित्त-पापड़ा। पर्पटक।

सहताना(पु)†—क्रि० अ० दे० "सुस्ताना"।

सहत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. "सह" का भाव। २. एकता। ३ मेलजोल।

सहदानी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्ज्ञान] निशानी। पहचान। चिह्न। उ०—सारँग-पानि मूँदि मृगनैनी मणि मुख माँहि समानी। चरण चापि नहि प्रगट करी पिय शेष शीश सहदानी।—सूर०।

सहदूल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सहदेई—संज्ञा स्त्री० [सं० सहदेवा] क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनौषधि।

सहदेव—संज्ञा पुं० [सं०] राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र जो अश्विनीकुमारों के आवाहन से माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। सबसे छोटे पांडव।

सहधर्मचारिणी, सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।

सहधर्मी—वि० [सं०] समान धर्मवाला।
संज्ञा पुं० [स्त्री० सहधर्मिणी] पति।

सहन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २ क्षमा। क्षांति। तितिक्षा।
संज्ञा पुं० [अ०] १ मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग। आँगन। चौक। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

सहनभँडार—संज्ञा पुं० [हिं० सहन+सं० भंडार] १ राज्यकोश के अतिरिक्त राजमहल में निहित खजाना। २. कोष। खजाना। उ०—रानिन दिए बसन मनि भूषन, राजा सहनभँडार। मागध सूत भाट नट जाचक जहँ तहँ करहिं कबार।—गीता०। ३. धनराशि। दौलत। उ०—सब असबाब डाढ़ो मैं न काढ़ो तैं न काढ़ो, जिय की परी सँभार, सहनभंडार को?—कविता०।

सहनशील—वि० [सं०] [भाव० सहनशीलता] १ बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २ संतोषी।

सहना—क्रि० स० [सं० सहन] १ बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। २ परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। ३. बोझ बर्दाश्त करना।

सहनायन†—संज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई] शहनाई बजानेवाली स्त्री।

सहनीय—वि० [सं०] सहन करने योग्य।

सहपाठी—संज्ञा पुं० [सं० सहपाठिन्] वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।

सहबाला—संज्ञा पुं० दे० "शहबाला"।

सहभोज, सहभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। साथ खाना।

सहभोजी—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हों।

सहम—संज्ञा पुं० [फा०] १ डर। भय। खौफ। २ संकोच। लिहाज। मुलाहजा।

सहमत—वि० [सं०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का।

सहमना—क्रि० अ० [फा० सहम से हिं० ना० धा०] भयभीत होना। डरना।

सहमरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का पति के शव के साथ सती होना।

सहमाना—क्रि० स० [हिं० सहमना का स० रूप] भयभीत करना। डराना।

सहमृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ मिलकर काम करने का भाव। २ साथ। संग। ३. मदद। सहायता।

सहयोगी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहायक। मददगार। २ सहयोग करनेवाला। साथ मिलकर कोई काम करनेवाला। ३ वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्तमान हो। समकालीन।

सहरगही—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर+फा० गह] वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

सहरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ जंगल। वन। २ मैदान। ३ वनबिलाव।

सहराना(पु)†—क्रि० स० दे० "सहलाना"।
(पु)†क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना।

सहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सफरी मछली।
संज्ञा स्त्री० दे० "सहरगही"।

सहल—वि० [अ० मि० सं० सरल] १ जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान। २ साधारण। उ०—जगत जनक बरनो कहा, जनकदेस को ठाट। महल महल हीरन दने, हाट बाट कुरहाट।—काव्यनिर्णय।

सहलाना—क्रि० स० [अनु०] १ धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। २. मलना। ३ गुदगुदाना।
क्रि० अ० गुदगुदी होना। खुजलाना।

सहवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. संग। साथ। २ मैथुन। रति। संभोग।

सहवासी—संज्ञा पुं० [सं० सहवासिन्] साथ रहनेवाला। संगी। साथी। मित्र।

सहव्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मपत्नी। स्त्री।

सहस—वि० दे० "सहस्र"।

सहसकिरन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रकिरण] सूर्य।

सहसगो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रगु] सूर्य।

सहसा—अव्य० [सं०] एकदम से। एकाएक। अचानक। अकस्मात्।

सहसाखि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र।

सहसाखी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] हजार आँखोंवाला। उ०—जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिनके मन माखी।—मानस। इंद्र।

सहसानन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] शेषनाग। उ०—कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन। जौ सत सहस होहिं सहसानन॥—मानस।

सहस्र—संज्ञा पुं० [सं०] दस सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।
वि० जो गिनती में दस सौ हो।

सहस्रकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रचक्षुस्] इंद्र।

सहस्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल।

सहस्रधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं को स्नान कराने का एक प्रकार का छेददार पात्र।

सहस्रनाम—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

सहस्रनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सहस्रपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सहस्रपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ विष्णु। ३ सारस पक्षी।

सहस्रबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कार्तवीर्यार्जुन, जो हैहय जाति के क्षत्रियों के राजा कृतवीर्य का पुत्र था।

सहस्रभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी का एक रूप।

सहस्त्ररश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्त्रलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सहस्त्रशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सहस्त्राक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

सहस्त्राब्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी संवत् या सन् के हजार हजार वर्षों का समूह। साहस्री।

सहाइ, सहाईⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सहाय] सहायक। मददगार।

संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाउ—संज्ञा पुं० दे० "सहाय"।

सहाध्यायी—संज्ञा पुं० दे० "सहपाठी"।

सहानाⓅ—वि० [स्त्री० सहानी] दे० "शहाना"।

सहानुगमन—संज्ञा पुं० दे० "सहगमन"।

सहानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। हमदर्दी।

सहाब—संज्ञा पुं० [फा० शहाब] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। उ०—साहित्र सहाब के गुलाब गुड़हर गुर, ईंगुर प्रकास दास लाली के लरन हैं।—काव्यनिर्णय।

सहाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायता। मदद। सहारा। २ आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार।

सहायक—वि० [सं०] [स्त्री० सहायिका] १ सहायता करनेवाला। मददगार। २. (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। ३ किसी की अधीनता में रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला।

सहायता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के कार्य में शारीरिक या और किसी प्रकार का योग देना। मदद। साहाय्य। २ वह धन जो किसी का कार्य आगे बढ़ाने के लिये दिया जाय। मदद।

सहायी—संज्ञा पुं० [सं० सहाय+हिं० ई (प्रत्य०)] १. सहायक। मददगार। २ सहायता। मदद।

सहार—संज्ञा पुं० [हिं० √सह+आर (प्रत्य०)] १ बर्दाश्त। सहनशीलता। २ सहना।

सहारना†—क्रि० स० [हिं० सहार से ना० धा०] १. सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। उ०—कठिन बचन सुनि श्रवन जानकी सकी न बचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जलधार।—सूर०। २. अपने ऊपर भार लेना।

सहारा—संज्ञा पुं० [सं० सहाय] १. मदद। सहायता। २ आश्रय। आसरा। ३. भरोसा। ४ इतमीनान। ५ टेक। आड़। ६. एक प्रसिद्ध मरुस्थल जो अफ्रीका में है।

सहालग—संज्ञा पुं० [?] वे मास या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों। ब्याह शादी के दिन। लगन।

सहावल—संज्ञा पुं० दे० "साहुल"।

सहिजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभांजन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। शोभांजन। मुनगा।

सहिजानीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान।

सहित—अव्य० [सं०] समेत। संग।

सहिदानⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सहिदानी"।

सहिदानी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान। उ०—सुनो अनुज इह वन इतनन मिलि जानकि प्रिया हरी। कछु इक अगनि की सहिदानी मेरी दृष्टि परी।—सूर०।

सहिष्णु—वि० [सं०] सहनशील।

सहिष्णुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहनशीलता।

सही—वि० [फा० सहीह] १. सत्य। सच। २ प्रामाणिक। यथार्थ। ३ शुद्ध। ठीक।

मुहा०—सही भरना = मान लेना।

४ हस्ताक्षर। दस्तखत।

सहीसलामत—वि० [फा०+अ०] १. आरोग्य। भलाचंगा। तंदुरुस्त। २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सहूँ—अव्य० [सं० सम्मुख] १. संमुख। सामने। २ ओर। तरफ।

सहूलियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सुविधा। सुगमता। २. अदब। कायदा। शऊर।

सहृदय—वि० [सं०] [स्त्री० सहृदया, भाव० सहृदयता] १ जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझता हो। २. दयालु। दयावान्। ३ रसिक। ४. सज्जन। भला आदमी।

सहेजना—क्रि० स० [अ० सही ?] १ भली भाँति जाँचना। सँभालना। २. अच्छी तरह कह सुनकर सुपुर्द करना।

सहेजवाना—क्रि० स० [हिं० सहेजना का प्रे० रूप] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेट—संज्ञा पुं० दे० "सहेत"।

सहेतⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० संकेत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं।

सहेतुक—वि० [सं०] जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य या मतलब हो।

सहेली—संज्ञा स्त्री० [सं० सह+हिं० एली (प्रत्य०)] १ साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २. परिचारिका। दासी।

सहैयाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सहाय] सहायक।

वि० [सं० सहन] सहन करनेवाला।

सहोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं।

सहोदर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान।

वि० सगा। अपना खास (क्व०)।

सह्य—संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

वि० [सं०] सहने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

सह्याद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।

साँई—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। परमेश्वर। ३. पति। शौहर। भर्ता। ४. मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँकⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "शंका"।

साँकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शृंखला] पैरों में पहनने का एक आभूषण।

साँकरⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखल] शृंखला। जंजीर। सीकड़। उ०—कौड़ा आँसू बूँद, कसि साँकर बरुनी सजल। कीने वदन निमूँद, दृग मलिंग डारे रहत।—बिहारी०।

संज्ञा पुं० [सं० संकीर्ण] संकट। कष्ट।

वि० १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. दुःखमय। कष्टमय।

साँकरा†—वि० दे० "सँकरा"।

सांकेतिक—वि० [सं०] जो संकेत रूप में हो। इशारे का।

सांख्य—संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि कपिल कृत एक प्रसिद्ध दर्शन। इस दर्शन में सृष्टि के मूल में प्रकृति और पुरुष माने गए हैं। प्रकृति से उत्पन्न बुद्धि, अहंकार, पाँच तन्मात्राएँ, पाँच महाभूत और मन सहित ग्यारह इंद्रियाँ तथा अव्यक्त और पुरुष या आत्मा, सांख्य शास्त्र में ये २५ तत्व माने

गए हैं। सांख्य में पुरुष अनेक माने जाते हैं जो प्रकृतिस्थ होकर नाना सृष्टि रचते रहते हैं। यह हिंदुओं के छः दर्शनों में से एक है। इसमें ईश्वर की सत्ता नहीं मानी गई है। त्रिगुणात्मिका प्रकृति ही सृष्टिविधान करती है। इसे परिणामवाद भी कहते हैं।

साँग—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] एक प्रकार की बरछी जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति।

संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।

वि० [सं० साङ्ग] संपूर्ण। पूरा।

साँगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कु] बरछी। साँग।

सांगोपांग—अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। शाखा प्रशाखाओं के साथ। सारे भेदों और उपभेदों से युक्त। समस्त अवयवों सहित।

सांघातिक—वि० [सं० संघात] इकट्ठा करनेवाला।

वि० [सं० संघात] संघात संबंधी। २ प्राणों को संकट में डालने या मार डालनेवाला।

साँच(पु)†—वि० पुं० [सं० सत्य] [स्त्री० साँची] सत्य। यथार्थ। ठीक।

साँचला†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] सच्चा। सत्यवादी।

साँचा—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १. वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा।

मुहा०—साँचे में ढला होना=अंग प्रत्यंग से बहुत ही सुंदर होना।

२ वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है। ३ कपड़े पर बेल बूटा छापने का ठप्पा। छापा।

साँची—संज्ञा पुं० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है।

संज्ञा पुं० [?] पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।

साँचु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सत्य] सच। सत्य। उ०—सीलतन सिरताज सखन सदाप ज्यों, सकल भाखै साँचु में जगत जस देखिए।—काव्यनिर्णय।

साँझ†—संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या] संध्या।

साँझा—संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

साँझी—संज्ञा स्त्री० [?] देवमंदिरों में जमीन पर की हुई फूलपत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

साँट—संज्ञा स्त्री० [सट से अनु०] १ छड़ी। पतली कमची। २ कोड़ा। ३ शरीर पर का वह दाग जो कोड़े आदि का आघात पड़ने से होता है।

साँटा—संज्ञा पुं० [हिं० साँट=छड़ी] १ कोड़ा। २ ईख। गन्ना।

साँटि—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँटी] मेल-मिलाप। उ०—निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो। नैननि साँटि करी मिली नैननि उनही सों रुचि मानो।—सूर०।

साँटिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँटी+इया (प्रत्य०)] डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका या सट से अनु०] पतली छोटी छड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. मेल-मिलाप। २ बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ—संज्ञा पुं० [देश०] १ दे० "साँकड़ा"। २ ईख। गन्ना। ३ सरकंडा।

यौ०—साँठ गाँठ=(१) मेलमिलाप। (२) गुप्त और अनुचित संबंध।

साँठना—क्रि० स० [हिं० साँठ से ना० धा०] पकड़े रहना।

साँठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ?] पूँजी। धन।

साँड़—संज्ञा पुं० [सं० षण्ड] १ वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। २ वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

साँड़नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़िया] ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलती है।

साँडा—संज्ञा पुं० [हिं० साँड़] एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

साँड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० साँड़ ?] १. बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। २ साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

सांत—वि० [सं०] जिसका अंत होता हो। अंतयुक्त।

सांत्वन—संज्ञा पुं० दे० "सांत्वना"।

सांत्वना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुःखी व्यक्ति को उसका दुःख हलका करने के लिये शांति देना। ढारस। आश्वासन।

सांदीपनि—संज्ञा पुं० [सं०] संदीपन के गोत्र के एक मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

साँध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संधान] वह जिस-पर संधान किया जाय। लक्ष्य।

साँधना—क्रि० स० [सं० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना।

क्रि० स० [सं० साधन] पूरा करना। साधना।

क्रि० स० [सं० संधि] मिलाना। मिश्रण।

सांध्य—वि० [सं०] संध्या संबंधी। संध्या का।

साँप—संज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं। कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना=अत्यंत दुःख होना (ईर्ष्या आदि के कारण)। (२) साँप सूँघ जाना=भय या आशंका से अभिभूत हो जाना। काठ मारना। (३) साँप छछूँदर की गति या दशा=भारी असमंजस की दशा। उ०—उभय भाँति विधि त्रास घनेरी। भइ गति साँप छछूँदरि केरी॥—मानस।

सांपत्तिक—वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक।

साँपधरन(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+धारण] शिव। महादेव।

साँपिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] साँप की मादा।

साँपिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+इया (प्रत्य०)] साँप के रंग से मिलता जुलता एक प्रकार का रंग।

वि० साँप के रंग का।

सांप्रत—अव्य० [सं० साम्प्रत] इसी समय। सद्यः। अभी। तत्काल।

सांप्रतिक—वि० [सं०] इस समय का। तात्कालिक।

सांप्रदायिक—वि० [सं० साम्प्रदायिक] १ किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का। २ जो अपने ही संप्रदाय या

उसके अनुयायियों के हित का ध्यान रखता हो।

सांप्रदायिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सांप्रदायिक होने का भाव। २ केवल अपने सप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना, दूसरे सप्रदायों या उनके अनुयायियों को कुछ न समझना।

सांब—संज्ञा पुं० [स० साम्ब] जाववती के गर्भ मे उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुदर थे, पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।

सांबशिव, सांबसदाशिव—संज्ञा पुं० [सं०] अव (पार्वती) के सहित शिव। हरगौरी।

साँभर—संज्ञा पुं० [स० सम्भल या साम्भल] १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३ भारतीय मृगों की एक जाति।

संज्ञा पुं० [स० सबल] रास्ते का जलपान। सबल। पाथेय।

साँमुहे†—अव्य० [स० सम्मुख] सामने।

संज्ञा पुं० [स० श्याम] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत†—संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

सांवत्सरिक—वि० [सं०] १ सवत्सर सबधी या सवत्सर का। वार्षिक। २ जो प्रति वर्ष हो।

साँवर†—वि० दे० "साँवला"।

साँवलताई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवला] साँवला होने का भाव। श्यामता।

साँवला—वि० [सं० श्यामला] [स्त्री० साँवली] जिसका रग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पुं० १ श्रीकृष्ण। २ पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम (गीतों में)।

साँवलापन—संज्ञा पुं० [हिं० साँवला+पन (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवाँ—संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

साँस—संज्ञा स्त्री० [स० श्वास] १ नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

मुहा०—साँस उखड़ना = मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना। साँस टूटना। साँस ऊपर नीचे होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस चढ़ना = बहुत परिश्रम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना। साँस टूटना = दे० "साँस उखड़ना"। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ न बोलना। साँस फूलना = बार बार साँस आना और जाना। साँस चढ़ना। साँस रहते = जीते जी। उलटी साँस लेना = (१) दे० 'गहरी साँस लेना"। (२) मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। गहरी, ठढी या लबी साँस लेना = बहुत अधिक दु ख आदि के कारण बहुत देर तक अदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना।

२ अवकाश। फुरसत।

मुहा०—साँस लेना = विश्राम लेना। ठहरना।

३ गुंजाइश। दम। ४ सधि या दराज जिसमें से हवा आ जा सकती हो। ५ किसी अवकाश के अदर भरी हुई हवा।

मुहा०—साँस भरना = किसी चीज के अंदर हवा भरना।

६ दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

साँसत—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास+अत या हिं० साँस+त (प्रत्य०)] १ दम घुटने का सा कष्ट। २ बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३ झझट। बखेड़ा। ४ फजीहत।

साँसतघर—संज्ञा पुं० [हिं० साँसत+घर] वह तग और अँधेरी कोठरी जिसमें अपराधियों को विशेष दड देने के लिये रखा जाता है। कालकोठरी।

साँसनाⓅ†—क्रि० स० [सं० शासन] १ शासन करना। दड देना। २ डाँटना। डपटना। ३ कष्ट देना। दु ख देना।

सांसर्गिक—वि० [स०] १ ससर्ग सबधी। २ संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला।

साँसा†—संज्ञा पुं० [स० श्वास] १ साँस। श्वास। २ जीवन। जिंदगी। ३ प्राण।

संज्ञा पुं० [स० सशय] १ सशय। सदेह। शक। २ डर। भय। दहशत।

सांसारिक—वि० [सं०] [भाव० सासारिकता] इस ससार का। लौकिक। ऐहिक।

सांस्कृतिक—वि० [सं०] संस्कृति से सबध रखनेवाला। सस्कृति सबधी।

सा—अव्य० [सं० सदृश] १. समान। तुल्य। सदृश। बराबर। २ एक मानसूचक शब्द, जैसे—थोड़ा सा।

साइ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। ३ पति। खाविंद।

साइकⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शायक"।

साइकिल—संज्ञा स्त्री० [अं०] दो या अधिक पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसे पैर से चलाते हैं। बाइसिकिल। पैरगाड़ी।

साइकिल रिक्शा—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की रिक्शागाड़ी जिसमें चलाने के लिये साइकिल जैसी यांत्रिक व्यवस्था होती है।

साइत—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घटे या ढाई घड़ी का समय। २. पल। लहमा। ३ मुहूर्त। शुभ लग्न।

साइनबोर्ड—संज्ञा पुं० [अं०] नाम और व्यवसाय आदि का सूचक तख्त। नामपट्ट।

साइंस—संज्ञा स्त्री० [अं०] विज्ञान।

साइयाँ—संज्ञा पुं० दे० "साईं"।

साइर†—संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

साईं—संज्ञा पुं० [स० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। प्रभु। २ ईश्वर। परमात्मा।

साई—संज्ञा स्त्री० [हिं० साइत ?] वह धन जो पेशेकारों को, किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

साईस—संज्ञा पुं० [हिं० रईस का अनु० ?] वह नौकर जो घोड़ों की खबरदारी और सेवा करता है।

साईसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साईस+ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउजⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

साकभरी—संज्ञा पुं० [सं० शाकभरी] साँभर झील या उसके आसपास का प्रांत।

साकचेरी†—संज्ञा स्त्री० [?] मेहँदी।

साकट, साकत—संज्ञा पुं० [स० शाक्त] १ शाक्त मत का अनुयायी। उ०—किहि द स हलायुध हाथ धरि मारयो महा प्रलब खल। क्यों रहत सुचित साकत सदा, गनपति जननी नाम बल। —काव्यनिर्णय। २ वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३ दुष्ट। पाजी।

साकर†—वि० दे० "सँकरा"।

साकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सकल का भाव। २ समुदाय। समूह। ३ हवन की सामग्री।

साँका, साका—संज्ञा पुं० [सं० शाका] १ संवत। शाका। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३ यश। कीर्ति। ४ कीर्ति का स्मारक। ५ धाक। रोब। ६ अवसर। मौका।

मुहा०—साँका चलाना = रोब जमाना। साँका बाँधना = दे० "साँका चलाना"।

७ कोई ऐसा बड़ा काम जिसमें कर्ता की कीर्ति हो।

साकार—वि० [सं०] [भाव० साकारता] १ जिसका कोई आकार या स्वरूप हो। २ मूर्तिमान्। साक्षात। ३ स्थूल।

संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला।

साकी—संज्ञा पुं० [अ०] १ शराब पिलानेवाला। २. माशूक।

साकेत—संज्ञा पुं० [सं०] १. अयोध्या नगरी। २ रामोपासकों की धारणा में वह सर्वोच्च लोक जहाँ वे मरने के बाद भगवान् राम के साथ निवास करते हैं।

साकेतवास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० साकेतवासी] १ पुण्यलाभ के लिये अयोध्या नगरी में निवास करना। २ स्वर्गवास। मृत्यु (रामोपासकों के लिये)।

साक्षर—वि० [सं०] [भाव० साक्षरता] जो पढ़ना लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षात्—अव्य० [सं०] सामने। संमुख। प्रत्यक्ष।

वि० मूर्तिमान्। साकार।

संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखादेखी।

साक्षात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंट। मुलाकात। २ पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षी—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] [स्त्री० साक्षिणी] १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २ देखनेवाला। दर्शक।

संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।

साक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] गवाही। शहादत।

साख—संज्ञा पुं० [हिं० साखी] साक्षी। गवाह।

संज्ञा स्त्री० गवाही। प्रमाण। शहादत।

संज्ञा पुं० [सं० शाका] १. धाक। रोब। २. मर्यादा। ३ लेनदेन की प्रामाणिकता।

साखना(पु)—क्रि० स० [हिं० साख से ना० धा०] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना। उ०—जन की और कौन पत राखै। जाति पाँति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै।—सूर०।

साखर(पु)†—वि० दे० "साक्षर"।

साखा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।

साखी—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] गवाह।

संज्ञा स्त्री० १. साक्षी। गवाही। उ०—को इत आवत? कान्ह हौं, काम कहा? हित मानि। किन बोल्यो? तेरे दृगनि, साखी? मृदु मुसुकानि।—काव्यनिर्णय।

मुहा०—साखी पुकारना = गवाही देना। उ०—याते योग न आवै मन में तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारत साखि।—सूर०।

२. ज्ञान संबंधी पद या कविता।

संज्ञा पुं० [सं० शाखिन्] वृक्ष। पेड़।

साखू—संज्ञा पुं० [सं० शाख] शाल वृक्ष।

साखोचारन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंशगोत्रादि का परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।

साग—संज्ञा पुं० [सं० शाक] १. पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २ पकाई हुई भाजी। तरकारी।

यौ०—साग पात = रूखा सूखा भोजन।

सागर—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। उदधि। २. बड़ा तालाब। झील। ३ सन्यासियों का एक भेद।

सागू—संज्ञा पुं० [अं० सैगो] १ ताड़ की जाति का एक पेड़। २ दे० "सागूदाना"।

सागूदाना—संज्ञा पुं० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है। साबूदाना।

सागौन—संज्ञा पुं० दे० "शाल" (१)।

साग्निक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो।

साग्र—वि० [सं०] समस्त। कुल। सब।

साग्रह—क्रि० वि० [सं०] आग्रहपूर्वक। जोर देकर।

साज—संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० सज्जा] १ सजावट का काम। ठाटबाट। २. सजावट का सामान। उपकरण। सामग्री, जैसे—घोड़े का साज। नाव का साज। ३ वाद्य। बाजा। ४ लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ५ मेलजोल।

वि० मरम्मत या तैयार करनेवाला। बनानेवाला (यौगिक में, अंत में)।

साजन—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] १ पति। स्वामी। २. प्रेमी। वल्लभ। ३ ईश्वर। ४ सज्जन। भला आदमी।

साजना(पु)†—क्रि० स० दे० "सजाना"।

संज्ञा पुं० दे० "साजन"।

साजबाज—संज्ञा पुं० [सं० साज+बाज (अनु०)] १ तैयारी। २ मेलजोल।

साजसामान—संज्ञा पुं० [फा०] १. सामग्री। उपकरण। असबाब। २ ठाटबाट।

साजिंदा—संज्ञा पुं० [फा० साजिंद.] १. साज या बाजा बजानेवाला। २ सपरदाई। समाजी।

साजिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मेल। मिलाप। २. किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।

साजुज्य(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सायुज्य"।

साझा—संज्ञा पुं० [सं० सहार्घ्य] १. शराकत। हिस्सेदारी। २ हिस्सा। भाग। बाँट।

साझी—संज्ञा पुं० दे० "साझेदार"।

साझेदार—संज्ञा पुं० [हिं० साझा+दार (प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।

साटक—संज्ञा पुं० [?] १ भूसी। छिलका। २ तुच्छ और निकम्मी चीज। ३ एक प्रकार का छंद।

साटन—संज्ञा स्त्री० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

साटना(पु)†—क्रि० स० दे० "सटाना"।

साटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साड़ी।

साठ—वि० [सं० षष्टि] पचास और दस।

संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

साठनाठ—वि० [हिं० साँठि+नाट (नष्ट)] १. निर्धन। दरिद्र। २ नीरस। रूखा। ३ इधर उधर। तितर बितर।

साठसाती—संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।

साठा—संज्ञा पुं० [देश०] १ ईख। गन्ना। ऊख। २ साठी धान।

वि० [हिं० साठ] साठ वर्ष की उम्रवाला।

साठी—संज्ञा पुं० [सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान।

साड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका] स्त्रियों के पहनने की धोती। सारी।

संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ी"।

साढ़साती—संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।

साढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० असाढ़] वह फसल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी।

संज्ञा स्त्री० [सं० सार ?] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। उ०—सब हेरि धरी है साढ़ी लै उपर उपरते काढ़ी।—सूर०।

संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी"।

साढ़ू—संज्ञा पुं० [सं० श्यालिवोढ़ी] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

साढ़े—अव्य० [सं० सार्द्ध] एक अव्यय जो पूरे के साथ और आधे का सूचक होता है। आधे के साथ या आधा अधिक, जैसे—साढ़े चार।

मुहा०—साढ़े बाईस = व्यर्थ। तुच्छ।

साढ़ेसाती—संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ़े+सात+ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा (अशुभ)।

सात—वि० [सं० सप्त] पाँच और दो।

संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

मुहा०—सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार = बहुत दूर। सात राजाओं की साक्षी देना = किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। उ०—मनसि बचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिन राखि। सूर प्रभु यह बोल हिरदय सात राजा साखि।—सूर०। सात सींकें बनाना = शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं। उ०—साथिये बनाइ कै देहिं द्वारे सात सींक बनाय। नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदा जी के पाँय।—सूर०।

सातकुंभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शातकुंभ] स्वर्ण। सोना। उ०—स्याम प्रभा इक थाप, जुग तरजनि तिय के कियो। चारु पंचसर छाप, सातकुंभ के कुंभ पर।—काव्यनिर्णय।

सातफेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+फेरी] विवाह की भाँवर नामक रीति।

सातला—संज्ञा पुं० [सं० सप्तला] एक प्रकार का थूहर। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।

सातिक(पु)†—वि० दे० "सात्विक"।

सात्मक—वि० [सं०] आत्मा के सहित।

सात्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] सारूप्य। सरूपता।

सात्यकि—संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।

सात्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १. बलराम। २ श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४ यदुवंशी।

सात्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिशुपाल की माता का नाम। २ सुभद्रा।

सात्वती वृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।

सात्विक—वि० [सं०] १ सत्वगुणवाला। सतोगुणी। २ सत्वगुण से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १ सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंगविकार, यथा—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, और प्रलय। २ सात्वती वृत्ति (साहित्य)।

साथ—संज्ञा पुं० [सं० सहित] १ मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार। २ बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३ मेलमिलाप। घनिष्ठता।

अव्य० १. संबंधसूचक अव्यय जिससे सहचार का बोध होता है। सहित। से।

मुहा०—(१) साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। (२) साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। (३) एक साथ = एक सिलसिले में।

२ विरुद्ध। ३ प्रति। से। ४ द्वारा। उ०—नखन साथ तव उदर बिदारयो।—सूर०।

साथरा†—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० साथरी] १. बिछौना। बिस्तर। २. कुश की बनी चटाई। ३. चटाई। उ०—रघुपति चंद्र विचार करयो। नातो मानि सगर सागर सों कुश साथरे परयो।—सूर०।

साथी—संज्ञा पुं० [हिं० साथ+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० साथिन] १. साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २. दोस्त। मित्र।

सादगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सादापन। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।

सादा—वि० [फा० साद:] [स्त्री० सादी] १ जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३ बिना मिलावट का। खालिस। ४ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५ जो कुछ छल कपट न जानता हो। सरल-हृदय। सीधा। ६. मूर्ख।

सादापन—संज्ञा पुं० [फा० सादा+पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादिर—वि० [अ०] निकलने या जारी होनेवाला।

सादी—संज्ञा स्त्री० [फा० साद] १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिया। २. वह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।

संज्ञा पुं० १. शिकारी। २ घोड़ा। ३ सवार।

सादुल, सादूर—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] १. शार्दूल। सिंह। २. कोई हिंसक पशु।

सादृश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. समानता। एकरूपता। २ बराबरी। तुलना।

साध—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। महात्मा। २ योगी। ३. सज्जन।

संज्ञा स्त्री० [सं० श्रद्धा या उत्साह] १ इच्छा। ख्वाहिश। कामना। उ०—सोभा नंदकुमार की पारावार अगाध। दास मीन ह्वै दृगनि में क्यों भरिये भरि साध।—काव्यनिर्णय। २ गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।

संज्ञा पुं० फर्रुखाबाद और कन्नौज के आसपास पाई जानेवाली एक जाति।

वि० [सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० साधिका] १ साधना करनेवाला। साधनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. करण। वसीला।

जरिया। ४ वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ साधन में सहायक हो।

साधन—संज्ञा पुं० [स०] १ काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। सामान। उपकरण। ३ उपाय। युक्ति। हिकमत। ४ उपासना। साधना। ५ धातुओं को शोधने की क्रिया। शोधन। ६ कारण। हेतु।

साधनता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ साधन का भाव या धर्म। २ साधना।

साधनहार(पु)—संज्ञा पुं० [स० साधन+हिं० हार (प्रत्य०)] १. साधनेवाला। २ जो साधा जा सके।

साधना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २ देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। ३ दे० "साधन"।

क्रि० स० [स० साधन] १. कोई कार्य सिद्ध करना। पूरा करना। २ निशाना लगाना। संधान करना। ३ नापना। पैमाइश करना। ४ अभ्यास करना। आदत डालना। ५ शोधना। शुद्ध करना। ६ पक्का करना। ठहराना। ७. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ८ वश में करना। ९ बनावट को असल के रूप में दिखाना।

साधर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म होने का भाव। एकधर्मता।

साधार—वि० [सं० स+आधार] जिसका आधार हो। आधार सहित।

साधारण—वि० [स०] १ मामूली। सामान्य। २ सरल। सहज। ३ सार्वजनिक। आम। ४ समान। सदृश।

साधारणत—अव्य० [स०] १ मामूली तौर पर। सामान्यत। २ बहुधा। प्राय।

साधारणीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट तत्वों के आधार पर कोई ऐसा सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब तत्वों पर प्रयुक्त हो सके। २ गुणों के आधार पर समानता स्थिर करना (अं० जेनरलाइजेशन)। ३ साहित्य शास्त्र में निर्विकल्प ज्ञान का होना, जहाँ रस की सिद्धि होती है। वह व्यंजना जिसमें नायक द्वारा व्यक्त भाव श्रोता या पाठक (सर्वसाधारण) के भाव हो जायँ।

साधिकार—क्रि० वि० [सं०] अधिकारपूर्वक। अधिकार सहित।

वि० जिसे अधिकार प्राप्त हो।

साधित—वि० [स०] जो सिद्ध किया या साधा गया हो।

साधु—संज्ञा पुं० [स०] १ कुलीन। आर्य। २ धार्मिक पुरुष। महात्मा। संत। ३. भला आदमी। सज्जन।

मुहा०—साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।

वि० १ अच्छा। उत्तम। भला। २ सच्चा। ३ प्रशंसनीय। ४ उचित।

साधुता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ साधु होने का भाव या धर्म। २. सज्जनता। भलमनसाहत। ३. सीधापन। सिधाई।

साधुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना।

साधु साधु—अव्य० [स०] धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब। उ०—स्तुति सुन मन हर्ष बढ़ायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो। —सूर०।

साधू—संज्ञा पुं० दे० "साधु"।

साधो—संज्ञा पुं० [सं० साधु] संत। साधु।

साध्य—वि० [स०] १ सिद्ध करने योग्य। २ जो सिद्ध हो सके। ३ सहज। सरल। आसान। ४ जो प्रमाणित करना हो।

संज्ञा पुं० १ देवता। २. न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। ३. शक्ति। सामर्थ्य।

साध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साध्य का भाव या धर्म। साध्यत्व।

साध्यवसाना—संज्ञा स्त्री० [स०] वह लक्षणा जिसमें उपमेय को गायब करके केवल उपमान कहा जाता है, जैसे—"यह देखो, दक्षिण का शेर आ गया।" यहाँ शेर के समान बहादुर न कहकर केवल 'शेर' से ही किसी वीर का अर्थ लिया गया है।

साध्यवसानिका—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० "साध्यवसाना।"

साध्यसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पड़े।

साध्वी—वि० स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता (स्त्री)। २ शुद्ध चरित्रवाली (स्त्री)।

सानंद—वि० [स०] आनंद के साथ। आनंदपूर्वक।

सान—संज्ञा पुं० [स० शाण] वह पत्थर जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। कुरंड।

मुहा०—सान देना या धरना=धार तेज करना।

सानना†—क्रि० स० [हिं० सनना का स० रूप] १ चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। २ उत्तरदायी बनाना। ३. मिलाना। मिश्रित करना। उ०—यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा खगी पथ में पाई। नैन नीर रघुनाथ सानि कै शिव सो गात चढ़ाई। —सूर०।

सानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं।

वि० [अ०] दूसरा। द्वितीय। २ बराबरी का। मुकाबले का।

यौ०—लासानी=अद्वितीय।

सानु—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। २ अंत। सिरा। ३ चौरस जमीन। ४ वन। जंगल। ५ सूर्य। ६ विद्वान्। पंडित। ७ अगला भाग।

वि० १ लंबा चौड़ा। २. चौरस।

सानुज—क्रि० वि० [स० स+अनुज] अनुज या छोटे भाई के साथ।

सान्निध्य—संज्ञा पुं० [स०] १ समीपता। सामीप्य। संनिकटता। २ एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।

सान्निपातिक—वि० [स०] सन्निपात-संबंधी।

साप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

सापत्न्य—संज्ञा पुं० [स०] १ सपत्नी का भाव या धर्म। सौतपन। २ सौत का लड़का।

सापना(पु)†—क्रि० स० [हिं० साप से ना० धा०] १ शाप देना। बद्दुआ देना। २ गाली देना। कोसना।

सापेक्ष—वि० [स०] [संज्ञा सापेक्षता] १ एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले। २ जिसे किसी की अपेक्षा हो।

साप्तपदीन—वि० [स०] सप्तपदी संबंधी। सप्तपदी का।

संज्ञा पुं० मित्रता। दोस्ती।

साप्ताहिक—वि० [स०] १ सप्ताह संबंधी। २ प्रति सप्ताह होनेवाला।

साफ—वि० [अ०] १ जिसमें किसी प्रकार की मैल आदि न हो। स्वच्छ। निर्मल। २ शुद्ध। खालिस। ३ निर्दोष। बेऐब। ४ स्पष्ट। ५ उज्वल। ६ जिसमें कोई बखेड़ा

या झंझट न हो। ७ स्वच्छ। चमकीला। ८ जिसमें छलकपट न हो। निष्कपट। ९ समतल। हमवार। १० सादा। कोरा। ११ जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १२ जिसमें कुछ तत्व न रह गया हो।

मुहा०—साफ करना=(१) मार डालना। हत्या करना। (२) नष्ट करना। बरबाद करना।

१३. लेनदेन आदि का निपटना। चुकती।

क्रि० वि० १ बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। ३ इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। ४ बिलकुल। नितांत।

साफल्य—संज्ञा पुं० दे० "सफलता"।

साफा—संज्ञा पुं० [अ० साफ] १ पगड़ी। २ मुरेठा। मुँड़ासा। ३ नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना। कपड़े धोना।

साफी—संज्ञा स्त्री० [अ० साफ] १. रूमाल। दस्ती। २ वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३ भाँग छानने का कपड़ा। ४ छनना।

साबन—संज्ञा पुं० दे० "साबुन"।

साबर—संज्ञा पुं० [सं० शबर] १ दे० "साँभर"। २. साँभर मृग का चमड़ा। ३. मिट्टी खोदने का एक औजार। सबरी। ४. शिवकृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र। उ०—साबर मंत्र जाल जेहि सिरजा।—मानस।

साबस—संज्ञा पुं० दे० "शाबाश"।

साबिक—वि० [अ०] पूर्व का। पहले का उ०—प्रभु जू मैं ऐसो अमल कमायो। साबिक जमा हुती जो जोरी मीजाँकुल तल लायो।—सूर०।

यौ०—साबिक दस्तूर=जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह।

साबिका—संज्ञा पुं० [अ०] १ मुलाकात। भेंट। २ संबंध। सरोकार।

साबित—वि० [फा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध।

वि० [अ० सबूत] १ साबूत। पूरा। २ दुरुस्त। ठीक। उ०—द्वै लोचन साबित नहिं तेऊ।—सूर०।

साबुत—वि० [फा० सबूत] १ साबूत। संपूर्ण। २ दुरुस्त।

साबुन—संज्ञा पुं० [अ०] तेल, चर्बी, सोडा, पोटाश आदि से रासायनिक क्रिया द्वारा प्रस्तुत एक मिश्रित द्रव्य जो पानी में घुलने पर फेन देता है और जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते हैं।

साबूदाना—संज्ञा पुं० दे० "सागूदाना"।

साभार—वि० [सं० स+आभार] भार से युक्त।

क्रि० वि० १ भारसहित। भारपूर्वक। २ आभार या कृतज्ञतापूर्वक।

सामंजस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ औचित्य। २ उपयुक्तता। ३ अनुकूलता। ४ एकरसता।

सामंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वीर। योद्धा। २ बड़ा जमींदार या सरदार। ३ किसी चक्रवर्ती राजा के अधीन राजा।

साम—संज्ञा पुं० [सं० सामन्] १ वेद-मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २ दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४ राजनीति में अपने बैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना। ५ सामान।

संज्ञा पुं० दे० "श्याम" और "शाम"।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाम" और "शामी"।

सामग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सामगी] १ वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो। २ सामवेद गानेवाला।

सामग्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य में उपयोग होता हो। २ असबाब। सामान। ३ आवश्यक द्रव्य। जरूरी चीज। ४ साधन।

सामत—संज्ञा स्त्री० दे० "शामत"।

संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

सामना—संज्ञा पुं० [हिं० सामने] १. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव।

मुहा०—सामने होना=(स्त्रियों का) परदा न करके समक्ष आना।

२ भेंट। मुलाकात। ३ किसी पदार्थ का अगला भाग। ४. विरोध। मुकाबला।

मुहा०—सामना करना=धृष्टता करना। सामने होकर जवाब देना। मुकाबला करना।

सामने—क्रि० वि० [सं० सम्मुख] १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २ उपस्थिति में। मौजूदगी में। ३ सीधे। आगे। ४. मुकाबले में। विरुद्ध।

सामयिक—वि० [सं०] [संज्ञा सामयिकता] १ समय संबंधी। २. वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला। ३ समय के अनुसार। समय की दृष्टि से उपयुक्त। ४ किसी विशेष समय से संबंध रखनेवाला।

यौ०—सामयिक पत्र=समाचारपत्र।

सामरथ—संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामरिक—वि० [सं०] समर संबंधी। युद्ध का।

सामर्थ—संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामर्थी—संज्ञा पुं० [सं० सामर्थ्य] १ सामर्थ्य रखनेवाला। २. पराक्रमी बलवान्।

सामर्थ्य—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० सामर्थ्य] १ समर्थ होने का भाव। २ शक्ति ताकत। ३. योग्यता। ४. शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है।

सामवायिक—वि० [सं०] १. समवाय संबंधी। २ समूह या झुंड संबंधी।

सामवेद—संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा। यज्ञों के समय स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्हीं स्तोत्रों का इस वेद में संग्रह है। भारतीय संगीत शास्त्र का आरंभ इन्हीं स्तोत्रों से माना जाता है।

सामवेदीय—वि० [सं०] सामवेद संबंधी।

संज्ञा पुं० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

सामसाली—संज्ञा पुं० [सं० साम+शाली] राजनीतिज्ञ।

सामहि—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सामाजिक—वि० [सं०] १ समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। २ सभा से संबंध रखनेवाला। ३ सभा में उपस्थित या सम्मिलित।

सामाजिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामाजिक का भाव। लौकिकता। "समाजवाद"।

सामान—संज्ञा पुं० [फा०] १ किसी कार्य के साधन की आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २ माल। असबाब। ३. बंदोबस्त। इंतजाम।

सामान्य—वि० [सं०] जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली।

संज्ञा पुं० [सं०] १ समानता। बराबरी। २ वह गुण जो किसी

सब चीजों में समान रूप से पाया जाय, जैसे—मनुष्यों में मनुष्यत्व। २. साहित्य में एक अलंकार। एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता।

सामान्यतः, सामान्यतया—अव्य० [सं०] सामान्य या साधारण रीति से। साधारणतः।

सामान्यतोदृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्क में अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल। किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करना जो न कार्य हो और न कारण। २ दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्य कारण संबंध से भिन्न हो।

सामान्य भविष्यत्—संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है (व्या०)।

सामान्य भूत—संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती, जैसे—खाया।

सामान्य लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति।

सामान्य वर्तमान—संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है, जैसे—खाता है।

सामान्य विधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म, जैसे—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो।

सामान्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

सामासिक—वि० [सं०] समास से संबंध रखनेवाला। समास का।

सामिग्री—संज्ञा स्त्री० दे० "सामग्री"।

सामियाना—संज्ञा पुं० दे० "शामियाना"।

सामिष—वि० [सं०] मांस, मत्स्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा।

सामी⑤†—संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।

सामीप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकटता। २ वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है।

सामुझि⑤†—संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"। उ०—प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी॥—मानस।

सामुदायिक—वि० [सं०] समुदाय का।

सामुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र से निकला हुआ नमक। २ समुद्रफेन। ३ दे० "सामुद्रिक"।
वि० १ समुद्र से उत्पन्न। २. समुद्र-संबंधी। समुद्र का।

सामुद्रिक—वि० [सं०] सागरसंबंधी।
संज्ञा पुं० १ फलित ज्योतिष का एक अंग जिसमें हथेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। २. वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो।

सामुहाँ⑤†—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सामुहें, सामुहे⑤†—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। उ०—आरज आरसी आली कागो भजि सामुहे तें गई ओट में प्यारी।—काव्यनिर्णय।

सामूहिक—वि० [सं०] समूह से संबंध रखनेवाला। वैयक्तिक का उलटा।

सामूहिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ 'सामूहिक' का भाव। २ साम्यवाद का यह सिद्धांत कि शिल्पों आदि पर व्यक्ति का नहीं बल्कि समूह या समाज का अधिकार हो।

साम्य—संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। समानता।

साम्यता—संज्ञा स्त्री० दे० "साम्य"।

साम्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धांत इसके प्रचारक समाज में बहुत अधिक साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्तमान वैषम्य दूर करना चाहते हैं।

साम्यवादी—संज्ञा पुं० [सं० साम्यवादिन्] वह जो साम्यवाद के सिद्धांत मानता हो।

साम्यावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों। प्रकृति।

साम्राज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २ आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।

साम्राज्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य को बराबर बढ़ाते रहने का सिद्धांत।

सायं—वि० [सं०] संध्या संबंधी।
संज्ञा पुं० संध्या। शाम।

सायंकाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम।

सायसंध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संध्या (उपासना) जो सायकाल में की जाती है।

सायक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाण। तीर। शर। २ खड्ग। ३ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। उ०—शुभ तौलों गुन तें रावन। रे। जब लौं सायक रामा न धरे। ४ पाँच की संख्या।

सायकिल—संज्ञा स्त्री० दे० "साइकिल"।

सायण—संज्ञा पुं० [सं०] एक आचार्य जिन्होंने वेदों के भाष्य लिखे हैं।

सायत—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. दंड। पल। ३ शुभ मुहूर्त। अच्छा समय।

सायन—संज्ञा पुं० दे० "सायण"।
वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमें अयन हो (ग्रह आदि)।
संज्ञा पुं० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायबान—संज्ञा पुं० [फा० सायबान] मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायर†—संज्ञा पुं० [सं० सागर] १ सागर। समुद्र। २ ऊपरी भाग। शीर्ष।
संज्ञा पुं० [अ०] १ वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २ मुतफर्रकात। फुटकर। ३ दे० "शायर"।

सायल—संज्ञा पुं० [अ०] १. सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. माँगनेवाला। ३ भिखारी। फकीर। ४ प्रार्थना करनेवाला। ५ उम्मीदवार। आकांक्षी।

साया—संज्ञा पुं० [फा० साय.] १ छाया।
मुहा०—साये में रहना=शरण में रहना।
२ परछाईं। ३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४ असर। प्रभाव।
संज्ञा पुं० [अँ० शेमीज] घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायास—क्रि० वि० [सं० स+आयास] परिश्रमपूर्वक। मेहनत से।

सायाह्न—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या। शाम।

सायुज्य—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सायुज्यता] १ ऐसा मिलना कि कोई भेद

न रह जाय। २. वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।

सारंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मृग। २ कोकिल। कोयल। उ०—बयन वर सारग सम।—सूर०। ३. श्येन। बाज। ४. सूर्य। ५. उ०—जलसुत दुखी दुखी है मधुकर द्वै पखी दुख पावत। सूरदास सारग केहि कारण सारग कुलहि लजावत।—सूर०। ५. सिंह। ६ हस पक्षी। ७ मयूर। मोर। ८. चातक। ९ हाथी। १०. घोड़ा। अश्व। ११ छाता। छत्र। १२. शख। १३ कमल। कज। १४. स्वर्ण। सोना। १५ आभूषण। गहना। १६ सर। तालाब। उ०—मानहुँ उमँगि चल्यो चाहत है सारंग सुधा भरे।—सूर०। १७. भ्रमर। भौंरा। उ०—नाचत हैं सारंग सुदर करत शब्द अनेक।—सूर०। १८ एक प्रकार की मधुमक्खी। १९. विष्णु का धनुष। २० कर्पूर। कपूर। २१. श्रीकृष्ण। २२. चंद्रमा। शशि। २३ समुद्र। सागर। २४. जल। पानी। २५ बाण। तीर। २६ दीपक। दीया। २७ पपीहा। २८. शभु। शिव। उ०—जनु पिनाक की आश लागि शशि सारग शरन बचे।—सूर०। २९ सर्प। साँप। ३० चदन। ३१ भूमि। जमीन। ३२ केश। बाल। अलक। ३३ शोभा। सुदरता। ३४ स्त्री। नारी। ३५ रात्रि। रात। ३६ दिन। ३७ तलवार। खड्ग (डिं०)। ३८ एक प्रकार का छद जिसमें चार तगण होते हैं। उ०—सारग नीके हरे लाल जो भाव। नीलेरु पीले लखौ शुभ्र मो शाव। इसे मैनावली भी कहते हैं। ३९ छप्पय के २६वें भेद का नाम। ४० मृग। हिरन। उ०—श्रवण सुयश सारंग नाद विधि चातक विधि मुख नाम।—सूर०। ४१ मेघ। बादल। उ०—सारग ज्यों तनु श्याम वदन।—विश्रामसागर। ४२ हाथ। कर। ४३ ग्रह। नक्षत्र। ४४. खजन पक्षी। सोनचिड़ी। ४५. मेढक। ४६ गगन। आकाश। ४७ पक्षी। चिड़िया। ४८ सारगी नामक वाद्य यत्र। ४९ ईश्वर। भगवान्। ५० कामदेव। मन्मथ। ५१ विद्युत। बिजली। ५२. पुष्प। फूल। ५३ संपूर्ण जाति का एक राग।

वि० १ रँगा हुआ। रगीन। २ सुंदर। सुहावना। ३. सरस।

सारंगपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सारंगलोचन—वि० [सं०] [स्त्री० सारंगलोचना] जिसके नेत्र मृग के समान हों।

सारंगिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पद में क्रम से नगण, यगण और सगण हों। उ०—नय सुखदाता भजु रे। मद अरु मोहा तजु रे।

सारंगिया—संज्ञा पुं० [हिं० सारंगी+इया (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला। साजिंदा।

सारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सारग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा।

सार—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ का मूल या असली भाग। तत्व। सत्त। २ मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। ३ निर्यास या अर्क आदि। रस। ४ जल। पानी। ५ गूदा। मग्ज। ६. दूध पर की साढ़ी। मलाई। ७ लकड़ी का हीर। ८. परिणाम। फल। नतीजा। ९ धन। दौलत। १०. नवनीत। मक्खन। ११. अमृत। १२. बल। शक्ति। ताकत। १३. मज्जा। १४ जूआ खेलने का पासा। १५. तलवार (डिं०)। १६. २८ मात्राओं का एक छद जिसके अत में दो दीर्घ हों। उ०—धनि वृंदावन धनि बसीबट, धनि सब गोपी ग्वाला। धनि जमुनातट जहाँ मुदित मन, रास कियो नँदलाला॥ इसके अत में एक गुरु या दो लघु भी होते हैं पर वैसी दशा में लय ठीक नहीं बैठती। उ०—(१) सादर सुनिए सादर गुनिए, मधुर कथा रघुवर की। (२) सार यही नर जन्म लहे को, हरिपद प्रीति निरतर। इस छद में सब मात्राएँ गुरु हो सकती हैं। उ०—राधा राधा राधा राधा, राधा राधा राधा। १७ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसमें एक गुरु और एक लघु हो। उ०—ग्वाल। धार॥ कृष्ण। सार॥

वि० दे० "ग्वाल"। १८ एक प्रकार का अर्थालकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। उदार।

वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ दृढ़। मजबूत।

ⓟसंज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा पुं० [हिं० सारना] १. पालन पोषण। २ देखरेख। ३ शय्या। पलग।

†संज्ञा पुं० [सं० श्याल] पत्नी का भाई। साला।

सारखा—वि० दे० "सरीखा"।

सारगर्भित—वि० [सं०] जिसमें तत्व भरा हो। सारयुक्त। तत्वपूर्ण।

सारता†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

सारथी—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारथ्य] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। २. समुद्र। सागर।

सारथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सारथी का कार्य, पद या भाव।

सारदⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती।

वि० [सं० शारद] शारद। शरद संबंधी। उ०—सोहति धोती सेत में कनक बरन तन बाल। सारद बारद बीजुरीभा रद कीजति, लाल।—बिहारी०।

संज्ञा पुं० [सं० शरद्] शरद ऋतु।

सारदा—संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

सारदी—वि० दे० "शारदीय"।

सारदूल—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सारना—क्रि० स० [हिं० सरना का स० रूप] १. पूर्ण करना। समाप्त करना। उ०—धनि हनुमन सुग्रीव कहत हैं रावण को दल मारयो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो।—सूर०। २ साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३ सुशोभित करना। सुदर बनाना। ४ रक्षा करना। सँभालना। ५ आँखों में अजन आदि लगाना। ६ अस्त्र चलाना।

सारभाटा—संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार का अनु०+भाटा] ज्वारभाटे का वापस समुद्र में जानेवाला रूप।

सारभूत—वि० [सं०] १ साररूप। २. सर्वोत्तम।

सारमेय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १ सरमा की सतान। २. कुत्ता।

सारल्य—संज्ञा पुं० [सं०] सरलता।

सारवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन भगण और एक गुरु का एक छद। उ०—धाइ धरी वह गोप लली। सारवती फगुवाइ भली।

सारवत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता।

सारस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १ एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन और पैर बहुत लंबे होते हैं। २ हस। ३ चंद्रमा। ४ कमल। जलज। उ०—

लाल विलोचन अधखुले, आरनसजुन पात। निंदत अरुन प्रभात कौं, विकसत सारस-पात। —काव्यनिर्णय। ५. छप्पय का ३७वाँ भेद।

सारसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आर्या छंद का २३वाँ भेद। २. मादा सारस।

सारसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० सूरसुता] यमुना।

सारसुती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सारस्य—संज्ञा पु० [सं०] सरसता।

सारस्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिल्ली के उत्तर पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमें पंजाब का कुछ भाग संमिलित है। २ इस देश के ब्राह्मण। ३ एक संस्कृत व्याकरण।

वि० १ सरस्वती संबंधी। विद्या संबंधी। बौद्धिक। २ सारस्वत देश का।

सारांश—संज्ञा पु० [सं०] १ खुलासा। संक्षेप। सार। २ तात्पर्य। मतलब। ३ नतीजा। परिणाम।

सारा—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है, जैसे—ऊखहु ते मधुर पियूषहु ते मधुर प्यारी तेरे ओठ मधुरता को सागर हैं।

†संज्ञा पु० दे० "साला"।

वि० [स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण। पूरा।

सारावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारावली छंद।

सारि—संज्ञा पु० [सं०] १ पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २ जूआ खेलने का पासा। उ०—ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि। दाँव अब के परयो पूरो कुमति पिछली हारि। —सूर०।

सारिक—संज्ञा पुं० दे० "सारिका"।

सारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना पक्षी। उ०—बन उपबन फल फूल सुभग सर सुक सारिका हंस पारावन। —सूर०।

सारिखा(पु)†—वि० दे० "सरीखा"।

सारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहदेई। गानदेला। २ कषाय। ३ गंधप्रसारिणी। ४. रक्त पुनर्नवा।

सारिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनंतमूल।

सारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सारिका पक्षी। मैना। २ पासा। गोटी। ३ थूहर।

संज्ञा स्त्री० १ दे० "साड़ी"। २ दे० "साली"।

संज्ञा पुं० [सं० सारिन] अनुकरण करनेवाला।

सारु(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सार"।

सारूप्य—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारूप्यता] १. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २ समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता।

सारूप्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।

सारो(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

संज्ञा पु० दे० "साला"।

सारोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक लक्षणा जिसमें उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाता है, जैसे—पुरुषसिंह दोउ वीर हरषि चले मुनि भय हरन।

सारौं(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

सार्थ—वि० [सं०] अर्थसहित।

सार्थक—वि० [सं०] [भाव० सार्थकता] १ अर्थ सहित। २ सफल। पूर्ण मनोरथ। ३ उपकारी। गुणकारी।

सार्थपति—संज्ञा पु० [सं०] काफिले का सरदार। व्यापारियों का प्रधान।

सार्दूल—संज्ञा पु० दे० "शार्दूल"।

सार्द्ध—वि० [सं०] जिसमें पूरे के साथ आधा भी मिला हो। अर्धयुक्त।

सार्द्र—वि० [सं०] आर्द्र। गीला।

सार्व—वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला।

सार्वकालिक—वि० [सं०] जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—वि० [सं०] सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्वसाधारण संबंधी।

सार्वत्रिक—वि० [सं०] सर्वत्रव्यापी।

सार्वदेशिक—वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश संबंधी।

सार्वभौतिक—वि० [सं०] सब भूतों या तत्वों से संबंध रखनेवाला।

सार्वभौम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सार्वभौमिक] १ चक्रवर्ती राजा। २ हाथी।

वि० समस्त भूमि संबंधी। समस्त पृथ्वी का। संपूर्ण जगत् का।

सार्वराष्ट्रीय—वि० [सं०] [भाव० सार्वराष्ट्रीयता] जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों से हो।

सालंक—संज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

साल—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २ छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावों में किया हुआ चौकोर छेद। ४ घाव। जख्म। ५ दुःख। पीड़ा। वेदना। ६ एक प्रकार की मोच या चटक जो बहुधा गर्दन से लेकर कमर तक के बीच आती है।

संज्ञा पुं० [सं०] १ जड़। २. राल। ३ वृक्ष।

संज्ञा पुं० [फा०] वर्ष। बरस।

संज्ञा पु० दे० "शालि" और "शाल"।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

संज्ञा पु० [सं० शल्य] काँटा। उ०—सूल सों फूल सों माल प्रबाल सों दास हिये सम सुख्ख सने हैं। राम के नाम सों केवल काम तेई जग जीवनमुक्त बने हैं। —काव्यनिर्णय।

सालक—वि० [हिं० सालना] सालनेवाला। दुःख देनेवाला।

सालगिरह—संज्ञा स्त्री० [फा०] बरस-गाँठ। जन्मदिन।

सालग्रामी—संज्ञा स्त्री० [सं० सालग्राम] गंडक नदी।

सालन—संज्ञा पुं० [सं० सलवण] मांस, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालना—क्रि० अ० [हिं० साल से ना० धा०] १ दुःख देना। खटकना। कसकना। २ चुभना।

क्रि० स० १ दुःख पहुँचाना। २ चुभाना।

सालनिर्यास—संज्ञा पु० [सं०] राल। धूना।

सालम मिश्री—संज्ञा स्त्री० [अ० सलब+मिस्री] एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद पौष्टिक होता है। सुधामूली। वीरकंदा।

सालरस—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालसा—संज्ञा पुं० [अँ० सैरसप् पैरिल्ला (स्पे० जर्जअ+पैरिल्ला)] खून साफ करने का एक प्रकार का अँगरेजी ढंग का काढ़ा जो अमरीका की एक प्रकार की जड़ी

से बनाया जाता है। २. इस प्रकार की जड़ी की बुकनी जो पौष्टिक मानी जाती है।

साला—संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाली।

संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

सालाना—वि० [फा०] साल का। वार्षिक।

सालिग्राम—संज्ञा पुं० दे० "शालग्राम"।

सालिब मिश्री—संज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिश्री"।

सालिम—वि० [अ०] जो कहीं से खंडित न हो। पूर्ण। पूरा।

सालियाना—वि० दे० "सालाना"।

सालु(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० साल] १. ईर्ष्या। २ कष्ट।

सालू—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का लाल कपड़ा (मांगलिक)। २ सारी।

सालोक्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

सावंत—संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साव—संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

सावक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शावक"।

सावकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।

सावचेत(पु)†—वि० दे० "सावधान"।

सावज—संज्ञा पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।

सावत—संज्ञा पुं० [हिं० सौत] १ सौतों का पारस्परिक द्वेष। २ ईर्ष्या। डाह।

सावधान—वि० [सं०] सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग।

सावधानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी।

सावधानी—संज्ञा स्त्री० दे० "सावधानता"।

सावन—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] १ आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २. एक प्रकार का गीत जो श्रावण महीने में गाया जाता है (पूरब)।

संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड।

सावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सावन+ई (प्रत्य०)] १ वह बायन जो सावन महीने में वरपक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है। २ दे० "श्रावणी"।

वि० सावन संबंधी। सावन का।

सावर—संज्ञा पुं० [सं० शाबर] १ शिवकृत एक प्रसिद्ध तंत्र। २. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार।

संज्ञा पुं० [सं० शंबर] एक प्रकार का हिरन।

सावर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १ आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे। २. एक मन्वंतर का नाम।

सावित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ शिव। ३ वसु। ४ ब्राह्मण। ५ यज्ञोपवीत। ६ एक प्रकार का अस्त्र।

वि० १. सविता संबंधी। सविता का। २ सूर्यवंशी।

सावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेदमाता गायत्री। २ सरस्वती। ३ ब्रह्मा की पत्नी। ४ वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है। ५ धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६ मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। ७ यमुना नदी। ८ सरस्वती नदी। ९. सधवा स्त्री।

साशंक—वि० दे० "सशंक"।

साश्रु—क्रि० वि० [सं० स+अश्रु] आँखों में आँसू भरकर। आँसू सहित।

वि० जिसमें आँसू भरे हों।

साष्टांग—वि० [सं०] आठों अंग सहित।

यौ०—साष्टांग प्रणाम=मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।

मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना=बहुत बचना। दूर रहना (व्यंग)।

सास—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू] पति या पत्नी की माँ।

सासन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शासन"।

सासनलेट—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

सासना(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० १. "शासन"। २ दंड। सजा। ३ कष्ट।

सासरा†—संज्ञा पुं० दे० "ससुराल"।

सासा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० संशय] संदेह।

संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "श्वास" या "साँस"।

सासुर†—संज्ञा पुं० [हिं० ससुर] १ ससुर। २ ससुराल।

साहु—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। सज्जन। भला आदमी। २. व्यापारी। साहूकार। ३. धनी। महाजन। सेठ। ४ दे० "शाह"।

साहचर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहचर होने का भाव। सहचरता। २. संग। साथ।

साहजिक—वि० [सं०] १. सहज में होनेवाला। स्वाभाविक।

साहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी या अ० शहना ?] सेना।

संज्ञा पुं० १. साथी। संगी। २. पारिषद।

साहब—संज्ञा पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] [बहु० साहबान] १. मालिक। स्वामी। २. अफसर। ३ परमेश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५ गोरी जाति का कोई व्यक्ति। ६ मित्र। दोस्त।

साहबजादा—संज्ञा पुं० [अ० साहिब+फा० जादा] [स्त्री० साहबजादी] १ भले आदमी का लड़का। २ पुत्र। बेटा।

साहब सलामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर अभिवादन। बंदगी। सलाम।

साहबी—वि० [अ० साहिब] साहब का।

संज्ञा स्त्री० १ साहब होने का भाव। २ प्रभुता। मालिकपन। ३. बड़ाई। बड़प्पन। ४. मिथ्या अभिमान।

साहस—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। २ जबरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३ कोई बुरा काम। ४ दंड। सजा। ५. जुर्माना।

साहसिक—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० साहसिकता] १ वह जिसमें साहस हो। साहसवाला। हिम्मतवर। पराक्रमी। २ डाकू। चोर। ३ निर्भीक। निर्भय। निडर।

साहसी—वि० [सं० साहसिन्] वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर।

साहस्र, साहस्रिक—वि० [सं०] सहस्र-संबंधी। हजार का।

साहस्री—संज्ञा स्त्री० [सं० साहस्रिक] किसी सन् या संवत् के हजार हजार वर्षों का समूह। सहस्राब्दी।

साहा—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहाय—संज्ञा पुं० [सं०] सहायता ।

साहि(पु)†—संज्ञा पुं० [फा० शाह] १. राजा । उ०—नेम प्रेम साहि मति विमति सचिव चाहि, दुकुल की सीवैं हाव भाव पील सरि जू।—काव्यनिर्णय । २ दे० "साहु" ।

साहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहित का भाव । एकत्र होना । मिलना । २ वाक्य में पदों का एक प्रकार का संबंध जिसमें उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है । ३ गद्य और पद्य सब प्रकार की रचनाएँ । ऐसी रचनाओं के ग्रंथ । वाङ्मय । ४. किसी देश या काल की उन समस्त लिखी बातों का समूह जो मार्मिक प्रभावों या रसात्मक व्यंजना के लिये महत्वपूर्ण हों । ५ लिखित बातें । ६. काव्यशास्त्र । ७. किसी विक्रेय या अन्य उपयोगी वस्तु का विवरणात्मक परिचय । इस प्रकार की परिचयपुस्तिका ।

साहित्यकार—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० साहित्यकारिता] वह जो साहित्य की रचना करता हो ।

साहित्यसेवी—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साहित्य की सेवा और रचना करता हो । साहित्यकार ।

साहित्यिक—वि० [सं०] साहित्य संबंधी । संज्ञा पुं० दे० "साहित्यसेवी" ।

साहिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "साहनी" ।

साहिब—संज्ञा पुं० दे० "साहब" । उ०—साहिब सहाब के गुलाब-गुब्बर-गुर, ईंगुर प्रकास दास लाली के लरत हैं ।—काव्यनिर्णय ।

साहियाँ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "साँई" ।

साही—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं ।

साहु—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १ सज्जन । २ महाजन । साहूकार । चोर का उलटा ।

साहुल—संज्ञा पुं० [फा० शाकूल] राजगीरों का एक यंत्र जिसमें पतली रस्सी के सहारे एक दोलन (भार) लटकता है और जिससे यह ज्ञात होता है कि दीवार पृथ्वी पर ठीक ठीक लंब है । दोलायंत्र ।

साहू—संज्ञा पुं० दे० "साहु" ।

साहूकार—संज्ञा पुं० [हिं० साहु+कार (प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी । कोठीवाल ।

साहूकारा—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. रुपयों का लेनदेन । महाजनी । २ वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार कारबार करते हों ।

वि० साहूकारों का ।

साहूकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार+ई (प्रत्य०)] साहूकार होने का भाव । साहूकारपन ।

साहेब—संज्ञा पुं० दे० "साहब" ।

साहैं(पु)†—संज्ञा स्त्री० [?] भुजदंड । बाजू ।

अव्य० [हिं० सामुहैं] सामने । समुख ।

सिउँ(पु)‡—प्रत्य० दे० "त्यों" ।

सिकना—क्रि० अ० [हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना । सेंका जाना ।

सिंगा—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] १ फूँककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा । तुरही । रणसिंगा । २ ठेंगा (अपशब्द) ।

सिंगार—संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १. सजावट । सज्जा । बनाव । २. शोभा । ३. शृंगार रस । ४. सौभाग्य ।

संज्ञा पुं० दे० "हरसिंगार" ।

सिंगारदान—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगार+फा० दान] वह छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है ।

सिंगारना—क्रि० स० [हिं० सिंगार से ना० धा०] सुसज्जित करना । सजाना । सँवारना ।

सिंगारहाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार+हाट] वेश्याओं के रहने का स्थान । चकला ।

सिंगारहार—संज्ञा पुं० [सं० हारशृंगार] हरसिंगार नामक फूल । परजाता ।

सिंगारिया—वि० [हिं० सिंगार + इया (प्रत्य०)] देवमूर्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी ।

सिंगारी—वि० पुं० [हिं० सिंगार+ई (प्रत्य०)] शृंगार करनेवाला । सजानेवाला ।

सिंगिया—संज्ञा पुं० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष ।

सिंगी—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा ।

संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मछली । २ सींग की नली जिसमें देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं ।

सिंगौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी ।

सिंघ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सिंह" ।

सिंघल—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल" ।

सिंघाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शृंगाटक] १ पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं । पानीफल । २ इस आकार की सिलाई या बेलबूटा । ३ समोसा नाम का नमकीन पकवान । तिकोना ।

सिंघासन—संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन" ।

सिंघी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ एक प्रकार की छोटी मछली । २ सोंठ । सुंठी ।

सिंघेला—संज्ञा पुं० [सं० सिंह] शेर का बच्चा ।

सिंचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सिंचित] १. जल छिड़कना । २. सींचना । पानी से तर करना ।

सिंचना—क्रि० अ० [हिं० सींचना] सींचा जाना । पानी से तर होना ।

सिंचाई—संज्ञा स्त्री० [√सींच + आई (प्रत्य०)] १. पानी छिड़कने का काम । २ सींचने का काम । ३ सींचने का कर या मजदूरी ।

सिंचाना—क्रि० स० [हिं० सींचना का प्रे० रूप] सींचने का काम दूसरे से कराना ।

सिंचित—वि० [सं०] सींचा हुआ ।

सिंजा—संज्ञा स्त्री० दे० "शिंजा" ।

सिंजित—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंजा] १ शब्द । ध्वनि । झनक । झंकार । २ नूपुर । उ०—पथ असोकनि कंप लगावती है जस गावती सिंजित के मरु । भावती भादौं की चाँदनी में जगी भाव ते संग चली अपने घरु । —काव्यनिर्णय ।

सिंदन(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "स्यंदन" ।

सिंदुवार—संज्ञा पुं० [सं०] संभालू वृक्ष । निर्गुंडी ।

सिंदूर—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं । २ सौभाग्य ।

मुहा०—सिंदूर पुछना, मिटना आदि =विधवा होना।

सिंदूरदान—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।

सिंदूरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीरपुष्पी।

सिंदूरबंदन—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूरदान"।

सिंदूरिया—वि० [सं० सिंदूर+हिं० इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सिंदूरी—वि० [सं० सिंदूर+हिं० ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का।

सिंदोरा—संज्ञा पुं० दे० "सिंधोरा"।

सिंध—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] भारत के पश्चिम का एक प्रदेश।

संज्ञा स्त्री० १ पंजाब की एक प्रधान नदी। २. भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—संज्ञा पुं० दे० "सैंधव"।

सिंधी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध+ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली।

वि० सिंध देश का।

संज्ञा पुं० १. सिंध देश का निवासी। २ सिंध देश का घोड़ा।

सिंधु—संज्ञा पुं० [सं०] १ नद। नदी। २ एक नद जो मानसरोवर से निकलकर कश्मीर से बहता हुआ पाकिस्तान के पंजाब और सिंध नामक सूबों को पारकर अरब सागर में गिरता है। ३ समुद्र। सागर। ४ चार की संख्या। ५ सात की संख्या। ६ पाकिस्तान का सिंध प्रदेश। ७ एक राग।

सिंधुज—संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सिंधुमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंधुमातृ] सरस्वती।

सिंधुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंधुरा] १ हस्ती। हाथी। उ०—सिंधु तरंग सदैव खराई नई न है सिंधुर अंग कराई। —काव्यनिर्णय। २. आठ की संख्या।

सिंधुरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] गजमुक्ता।

सिंधुरवदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० [सं०] गजगामिनी। हाथी की सी चालवाली।

सिंधुविष—संज्ञा पुं० [सं०] हलाहल विष।

सिंधुसुत—संज्ञा पुं० [सं०] जलधर राक्षस।

सिंधुसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सिंधुसुतासुत—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

सिंधूरा—संज्ञा पुं० [सं० सिंधुर] संपूर्ण जाति का एक राग।

सिंधोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिंधुर] सिंदूर रखने का पात्र।

सिंह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १ बिल्ली की जाति का बहुत बलवान्, पराक्रमी और भयानक जंगली जंतु जिसके नरवर्ग की गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। शेरबबर। मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। २. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ३ वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द, जैसे—पुरुषसिंह। ४. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद।

सिंहद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] सदर फाटक। उ०—सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकंद। —सूर०।

सिंहनाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह की गरज। २ युद्ध में वीरों की ललकार। ३. जोर देकर कहना। ललकारकर कहना। ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, दो सगण और अंत्य गुरु हो। उ०—जयमाल हर्षि जब ही मँह डारी। सुर लोग हर्ष खल भूप दुखारी। कलहंस। नंदिनी। सिंहनी। कुटजा।

सिंहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंह की मादा। शेरनी। २. एक मात्रिक छंद जिसके चारों पदों में क्रम से १२, २०, १२, और १८, मात्राएँ होती हैं। इसका उलटा गाहिनी है। उ०—आदौ बारा मत्ता, कल धरि वीस जु सगन्त दूजे चरना। तीजे प्रथमै जैसे, सिंहनि दस वसु चतुर्थ पद धरना। इसमें २० मात्राओं पर एक जगण रहता है और अंत में गुरु होता है। ३. सिंहनाद छंद।

सिंहपौर—संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"। उ०—भीर जानि सिंहपौर त्रियन की यशुमति भवन दुराई। —सूर०।

सिंहल—संज्ञा पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है, और जिसे लोग रावण की लंका अनुमान करते हैं।

सिंहलद्वीप—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंहलद्वीपी—वि० दे० "सिंहली"।

सिंहली—वि० [सं० सिंहल+हिं० ई (प्रत्य०)] १ सिंहल द्वीप का। २ सिंहल द्वीप का निवासी।

संज्ञा स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

सिंहस्थ—वि० [सं०] सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)।

सिंहारहारⓅ—संज्ञा पुं० दे० "हरसिंगार"।

सिंहावलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २ आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३. पद्यरचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।

सिंहासन—संज्ञा पुं० [सं०] राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

सिंहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान् ने मारा था। २ शोभन छंद का एक नाम। इसमें कुल २४ मात्राएँ होती हैं। अंत में जगण रहता है। उ०—तिनसों न कोऊ जगत में, जानिए सुखकंद। हरिभक्ति को उपदेश करि, काटहीं भवफंद।

सिंहिकासूनु—संज्ञा पुं० [सं०] राहु।

सिंहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शेरनी।

सिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की मादा। शेरनी। २ आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिअन—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

सिअराⓅ—वि० [सं० शीतल] ठंढा।

संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।

सिआना—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिआर—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़।

सिकंजबीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकंदरा—संज्ञा पुं० [फा० सिकंदर] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। सिगनल।

सिकटा†—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री०, अल्पा० सिकटी] १. मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। २ कंकड़।

सिकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १ किवाड़ की कुंडी। साँकल। जंजीर। २ जंजीर के आकार का गले में पहनने का गहना। ३. करधनी।

सिकत⑨—संज्ञा स्त्री० दे० "सिकता"।
सिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालू। रेत। उ०—सूखे सिकता सागर में यह नैया मेरे मन की। —आँसू। २. बलुई जमीन। ३. चीनी। शर्करा।
सिकतिल—वि० [सं०] रेतीला।
सिकत्तर—संज्ञा पुं० [अं० सेक्रेटरी] किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।
सिकरवार—संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों की एक शाखा।
सिकली—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] धारदार हथियारों को माँजने और उनपर सान चढ़ाने की क्रिया।
सिकलीगर—संज्ञा पुं० [अ० सैकल+फा० गर] तलवार आदि पर सान धरनेवाला।
सिकहर—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य+घर] छींका।
सिकुड़न—संज्ञा स्त्री० [सं० संकुचन] १. संकोच। आकुंचन। २ बल। शिकन।
सिकुड़ना—क्रि० अ० [सं० संकुचन] १. सिमटकर थोड़े स्थान में होना। सिकुड़ना। आकुंचित होना। बहुरना। २. संकीर्ण होना। ३. बल पड़ना। शिकन पड़ना।
सिकुरना⑨†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सिकोड़ना—क्रि० स० [हिं० सिकुड़ना का स० रूप] १. समेटकर थोड़े स्थान में करना। संकुचित करना। २. समेटना। बटोरना।
सिकोरना⑨†—क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।
सिकोरा—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।
सिकोली—संज्ञा स्त्री० [देश०] कास, मूँज, बेंत आदि की बनी डलिया।
सिक्कड़—संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।
सिक्का—संज्ञा पुं० [अ० सिक्क.] १. मुहर। छाप। ठप्पा। २. रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित चिह्न। ३ टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा आदि। मुद्रा।
मुहा०—सिक्का बैठना या जमना = (१) अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। (२) आतंक जमना। रोब जमना।
४. पदक। तमगा। ५ मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।
सिक्ख—संज्ञा पुं० दे० "सिख"।
सिक्त—वि० [सं०] [स्त्री० सिक्ता] १. सींचा हुआ। २. भीगा हुआ। तर। गीला।
सिखंड—संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।
सिख—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख।
⑨संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।
संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] १. शिष्य। चेला। २ गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। नानकपंथी।
सिखना⑨—क्रि० स० दे० "सीखना"।
सिखर—संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखरन—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीखंड] दही मिला हुआ शरबत।
सिखलाना—क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखा—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।
सिखाना—क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. शिक्षा देना। उपदेश देना। २ पढ़ाना।
यौ०—सिखाना पढ़ाना = चालाकी सिखाना।
सिखापन, सिखावन—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+हिं० पन या वन] १. शिक्षा। उपदेश। २. सिखाने का काम।
सिखावना⑨†—क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखिर⑨—संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखी—संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।
सिगरा, सिगरो†—वि० [सं० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। सारा।
सिचान⑨—संज्ञा पुं० [सं० संचान] बाज पक्षी।
सिच्छा—संज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षा"।
सिजदा—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम। दंडवत।
सिझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध] आँच पर पकना। सिझाया जाना।
सिझाना—क्रि० स० [हिं० सिझना का स० रूप] १. आँच पर पकाकर गलाना। २ तपस्या करना।
सिटकिनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ों के बंद करने के लिये लोहे या पीतल का छड़। अगरी। चटकनी। चटखनी।
सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] १. दब जाना। मंद पड़ जाना। २. भय या घबराहट से किंकर्तव्यविमूढ़ होना। सहमना। ३ सकुचना।
सिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़ बढ़कर बोलना। वाक्पटुता।
मुहा०—सिट्टी भूलना = सिटपिटा जाना।
सिट्ठी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीठी"।
सिठनी—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।
सिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १ फीकापन। नीरसता। २. मंदता।
सिड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद। २ सनक। धुन।
सिड़ी—वि० [सं० श्रणीक] [स्त्री० सिड़िन] १. पागल। बावला। उन्मत्त। २ सनकी। धुनवाला। ३. मनमाना काम करनेवाला।
सित—वि० [सं०] [स्त्री० सिता, भाव० सितता] १. श्वेत। सफेद। २. उज्वल। चमकीला। ३. साफ।
संज्ञा पुं० १. शुक्ल पक्ष। उजाला पाख। २. चीनी। शक्कर। ३. चाँदी।
सितकंठ—वि० [सं०] सफेद गर्दनवाला।
संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।
सितकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सितता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।
सितपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] हंस।
सितभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सितम—संज्ञा पुं० [फा०] १. गजब। अनर्थ। २. जुल्म। अत्याचार।
सितमगर—वि० [फा०] जालिम। अन्यायी। दुःखदायी।
सितवराह—संज्ञा सं० [सं०] श्वेत वराह।
सितवराहपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
सितसागर—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीरसागर।
सिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीनी। शक्कर। उ०—जो सींचै सपिंष सिता, अरु जो हनै कुठाल। कटु लागैं तिन दुहुन कों, इहै नींब की चाल।—काव्यनिर्णय। २ शुक्ल पक्ष। ३. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ४ मल्लिका। मोतिया। ५ मद्य। शराब।
सिताखंड—संज्ञा पुं० [सं०] १ शहद से बनाई हुई शक्कर। २ मिस्री।
सिताब†⑨—क्रि० वि० [फा० शिताब] जल्दी। तुरंत। झटपट।
सितार—संज्ञा पुं० [सं० सप्त+तार, फा० सेहतार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।

सितारा—संज्ञा पुं० [फा० सितार:] १. तारा। नक्षत्र। २ भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुहा०—सितारा चमकना या बुलद होना=भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना।

३ चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये चीजों पर लगाई जाती है। चमकी।

संज्ञा पुं० दे० "सितार"।

सितारिया—संज्ञा पुं० [हिं० सितार+हिं० इया (प्रत्य०)] सितार बजानेवाला।

सितारेहिंद—संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार की ओर से दी जाती थी।

सितासित—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत और श्याम। सफेद और काला। २ बलदेव।

सिति—वि० दे० "शिति"।

सितिकंठ—संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।

सिथिलⓅ—वि० दे० "शिथिल"।

सिदौसी‡—क्रि० वि० [?] जल्दी। शीघ्र।

सिद्ध—वि० [सं०] १ जिसका साधन हो चुका हो। संपन्न। संपादित। २ प्राप्त। हासिल। उपलब्ध। ३. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य। ४. जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक सिद्धि प्राप्त की हो। ५. योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६. मोक्ष का अधिकारी। ७. जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। ८ जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमाणित। साबित। निरूपित। ९. जो अनुकूल किया गया हो। कार्यसाधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १० आँच पर पका हुआ। उबला हुआ।

संज्ञा पुं० १ वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। २ ज्ञानी या भक्त महात्मा। ३ एक प्रकार के देवता। ४. ज्योतिष में एक योग।

सिद्धकाम—वि० [सं०] १ जिसकी कामना पूरी हुई हो। २ सफल। कृतार्थ।

सिद्धगुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मंत्र सिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है।

सिद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिद्ध होने की अवस्था। २ प्रामाणिकता। सिद्धि। ३ पूर्णता।

सिद्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धता।

सिद्धपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धरस—संज्ञा पुं० [सं०] पारा।

सिद्ध रसायन—संज्ञा पुं० [सं०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

सिद्धहस्त—वि० [सं०] १ जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. निपुण।

सिद्धांजन—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी वस्तुएँ दिखाई देती हैं।

सिद्धांत—संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति सोच विचारकर स्थिर किया हुआ मत। उसूल। २ मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। ३ वह बात जो विद्वान्, उनके किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। ४ निर्णीत अर्थ या विषय। तत्व की बात। ५ पूर्व पक्ष के खंडन के उपरांत स्थिर मत। ६. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक।

सिद्धांती—वि० [सं० सिद्धांतिन्] १. शास्त्रों आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २. अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

सिद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २ आर्या छंद का १५वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध+हिं० आई] सिद्धपन। सिद्ध होने की अवस्था।

सिद्धार्थ—वि० [सं०] जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों। पूर्णकाम।

संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २ जैनों के २४वें अर्हंत महावीर के पिता का नाम।

सिद्धासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग का एक आसन। २ सिद्धपीठ।

सिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काम का पूरा होना। प्रयोजन निकलना। २ सफलता। कामयाबी। ३ प्रमाणित होना। साबित होना। ४ किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। ५ निर्णय। फैसला। ६ पकना। सीझना। ७ तप या योग के पूरे होने का अलौकिक फल। विभूति। योग की अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। ८. मुक्ति। मोक्ष। ९. कौशल। निपुणता। दक्षता। १०. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ११ गणेश की दो स्त्रियों में से एक। १२ भाँग। विजया। १३ छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण होते हैं।

सिद्धिगुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसायन आदि बनाने की गुटिका।

सिद्धिदाता—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धिदातृ] गणेश।

सिद्धेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १ बड़ा सिद्ध। महायोगी। २ महादेव।

सिधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा+ई (प्रत्य०)] सीधापन।

सिधानाⓅ—क्रि० अ० दे० "सिधारना"। उ०—उग्रसेन सब कुटुम लै ता ठौरे सिधायो।—सूर०।

सिधारना—क्रि० अ० [हिं० सिधाना] १ जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। उ०—हरि बैकुंठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने धाम। कीन्हो राज तीस षट वर्षन कीन्हे भक्तन काम।—सूर०। २ मरना। स्वर्गवास होना।

‡Ⓟक्रि० स० दे० "सुधारना"।

सिधि‡Ⓟ—संज्ञा स्त्री० दे० "सिद्धि"।

सिन—संज्ञा पुं० [अ०] उम्र। अवस्था।

सिनक—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंघाणक] नाक से निकला हुआ कफ या मल।

सिनकना—क्रि० अ० [सं० हिं० सिनक से ना० धा०] जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना। छिनकना।

सिनि—संज्ञा पुं० [सं० शिनि] १ एक यादव जो सात्यकि का पिता था। २. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।

सिनी—संज्ञा पुं० दे० "शिनि।

सिनीवाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वैदिक देवी। २ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

सिनेमा—संज्ञा पुं० [अं०] परदे पर दिखलाया जानेवाला नाटकों आदि का चलता फिरता छायाचित्र।

सिन्नी‡—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] १ मिठाई। २ वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

सिपर—संज्ञा स्त्री० [फा०] ढाल।

सिपहगरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम। युद्धव्यवसाय।

सिपहसालार—संज्ञा पुं० [फा०] सेनापति।

सिपारस†—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] १. सिफारिश। २ खुशामद।

सिपास—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कृतज्ञता। २ प्रशंसा।

सिपाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

संज्ञा पुं० सिपाही। उ०—प्रेम सिपाह अस्व दृग चपल जु अति है। तदु निर्तंदु जानि गज विलसित गति है। —छदार्णव।

सिपाहगिरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "सिपहगरी"।

सिपाहियाना—वि० [फा०] सिपाहियों या सैनिकों का सा।

सिपाही—संज्ञा पुं० [फा०] १. सैनिक। शूर। योद्धा। २ कांस्टेबिल। तिलंगा।

सिपुर्द†—संज्ञा पुं० दे० "सुपुर्द"।

सिप्पर—संज्ञा स्त्री० दे० "सिपर"।

सिप्पा—संज्ञा पुं० [देश०] १ निशाने पर किया हुआ वार। २ कार्यसाधन का उपाय। तदवीर। ३ सूत्रपात।

मुहा०—सि[illegible] [illegible]माना=किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४ रंग। प्रभाव। धाक। ५ एक प्रकार की तोप।

सिप्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ पसीना।

सिप्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महिषी। भैंस। २ मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिफत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [बहु० सिफात] १ विशेषता। गुण। २ लक्षण। ३ स्वभाव।

सिफर—संज्ञा पुं० [अं० साइफर] शून्य। सुन्ना।

सिफात—संज्ञा स्त्री० [अ० 'सिफत' का बहु०] १ विशेषताएँ। २ लक्षण। समुदाय। ३ स्वभावों का समूह।

सिफारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। संस्तुति।

सिफारिशी—वि० [फा०] १ जिसमें सिफारिश हो। २. जिसकी सिफारिश की गई हो।

सिफारिशी टट्टू—संज्ञा पुं० [फा० सिफारिशी+हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफारिश से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिवालⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सिवार"। उ०—पोंछे डारति रोम की धारा। मानति बाल सिवाल की डारा। —नंददास०।

सिबिकाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "शिविका"।

सिमंत—संज्ञा पुं० दे० "सीमंत"।

सिमटना—क्रि० अ० [सं० समित ?] १ सिकुड़ना। संकुचित होना। २. शिकन पड़ना। सलवट पड़ना। ३. बटुरना। इकट्ठा होना। उ०—गोपी ग्वाल सिमिटि सब सुंदर सज्यो सिंगार मनो। —सूर०। ४ व्यवस्थित होना। तरतीब से लगना। ५ पूरा होना। निबटना। ६ लज्जित होना। ७. सहमना।

सिमरना†—क्रि० स० दे० "सुमिरना"।

सिमाना†—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] सिवाना। हद।

Ⓟ†क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिमिटना†Ⓟ—क्रि० अ० दे० "सिमटना" उ०—यह सुनि जहाँ तहाँ ते सिमिटे आइ होइ इक ठौर। —सूर०।

सिमृतिⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।

सिमेटनाⓅ†—क्रि० स० दे० "समेटना"।

सियⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी। उ०—सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा॥ —मानस।

सियनाⓅ—क्रि० अ० [सं० सृजन] उत्पन्न करना। रचना।

सियराⓅ—वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सियरी] १ ठंढा। शीतल। २ कच्चा।

सियराईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] शीतलता। उ०—मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई। —सूर०।

सियरानाⓅ—क्रि० अ० [हिं० सियरा से ना० धा०] ठंढा होना। जुड़ाना। शीतल होना।

सिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी। उ०—तब अंगद इक बचन कह्यो। तो करि सिंधु सिया सुधि लावै किहि बल इतो लह्यो। —सूर०।

सियापा—संज्ञा पुं० [फा० सियाहपोश] १. मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति। २ निस्तब्धता। सन्नाटा।

सियार†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़। जंबुक।

सियाल—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़। उ०—चहुँ दिसि सूर सोर करि धावै ज्यों केहरिहि सियाल। —सूर०।

सियाला—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

सियासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० सियासती, सियासी] १. देश की रक्षा और शासन। २ प्रबंध। व्यवस्था। ३. राजनीति।

सियासी—वि० [अ०] राजनीतिक।

सियाह—वि० दे० "स्याह"।

सियाहा—संज्ञा पुं० [फा०] १ आयव्यय की बही। २ रोजनामचा। ३. सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है।

सियाहानवीस—संज्ञा पुं० [फा०] सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला।

सियाही—संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।

सिर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १ शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल। कपाल। खोपड़ी। २ शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लंबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक आदि होते हैं।

मुहा०—सिर आँखों पर होना=सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। सिर आँखों पर बैठाना=बहुत आदर सत्कार करना। (भूत प्रेत या देवी देवता का) सिर पर आना=(१) आवेश होना। (२) प्रभाव होना। (३) खेलना। सिर उठाना=(१) विरोध में खड़ा होना। (२) ऊधम मचाना। (३) सामने मुँह करना। लज्जित न होना। (४) प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। (अपना) सिर ऊँचा करना=प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना। सिर करना=(स्त्रियों के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। सिर के बल जाना=बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। सिर खाली करना=(१) बकवाद करना। (२) माथापच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। सिर खाना या चाटना=बकवाद करके जी उबाना। सिर खपाना=(१) सोचने विचारने में हैरान होना। (२) कार्य में व्यग्र होना।

सिर चकराना=दे० "सिर घूमना"। सिर चढ़ाना=(१) माथे से लगाना। पूज्य भाव दिखाना। (२) बहुत बढ़ा देना। मुँह लगाना। सिर घूमना=(१) सिर में दर्द होना। (२) घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर झुकाना=(१) सिर नवाना। नमस्कार करना (२) लज्जा से गर्दन नीची करना। सिर देना=प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना=सादर स्वीकार करना। अंगीकार करना। सिर धुनना=शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। सिर नीचा करना=लज्जा से सिर झुकाना। शर्माना। सिर पटकना=(१) सिर फोड़ना। सिर धुनना। (२) बहुत परिश्रम करना। (३) अफसोस करना। हाथ मलना। सिर पर पाँव रखना=बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। सिर पर पड़ना=(१) जिम्मे पड़ना। (२) अपने ऊपर घटित होना। गुजरना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना=(१) जान लेने पर उतारू होना। (२) हत्या के कारण आपे में न रहना। सिर पर होना=थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। सिर पड़ना=(१) जिम्मे पड़ना। भार ऊपर दिया जाना। (२) हिस्से में आना। सिर फिरना=(१) सिर घूमना। सिर चकराना। (२) पागल हो जाना। उन्माद होना। सिर मारना=(१) समझाते समझाते हैरान होना। (२) सोचने विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना=प्रारंभ में ही कार्य बिगड़ना। कार्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। सिर पर सेहरा होना=किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर से पैर तक=आरंभ से अंत तक। सर्वांग में। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना। सिर से कफन बाँधना=मरने के लिये उद्यत होना। सिर से खेल जाना=प्राण दे देना। सिर पर सींग होना=कोई विशेषता होना। खुसूसियत होना। सिर होना=(१) पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। (२) बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। (३) उलझ पड़ना। झगड़ा करना। (किसी बात के) सिर होना=ताड़ लेना। समझ लेना।

३ ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।

वि० बड़ा। श्रेष्ठ।

सिरकटा—वि० [हिं० सिर+√कटा+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० सिरकटी] १ जिसका सिर कट गया हो। २. दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।

सिरका—संज्ञा पुं० [फा०] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।

सिरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकंडा] १ सरकंडा। सरई। २ सरकंडे की बनी हुई टट्टी जो प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते हैं। ३. चार छः अंगुल की सरकंडे की पतली नली।

सिरगना—क्रि० अ० दे० "सिलगना"।

सिरगा—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

सिरचंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+सं० चंद्र] हाथी का एक प्रकार का अर्द्ध चंद्राकार गहना।

सिरजक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० √सरज+क (प्रत्य०)] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्ता।

सिरजनहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सृजन+हिं० हार] १ रचनेवाला। २ परमेश्वर।

सिरजना(पु)—क्रि० स० [सं० सृजन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना।

क्रि० स० [सं० संचय] संचय करना।

सिरजित(पु)—वि० [सं० सर्जित] रचा हुआ।

सिरताज—संज्ञा पुं० [सं० सिर+फा० ताज] १. मुकुट। २ शिरोमणि। उ०—कुंजन में क्रीड़ा करै मनु वाही को राज। कंस सकुच नहिं मानई रहन भयो सिरताज। —सूर०। ३. सरदार।

सिरत्राण—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

सिरदार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सरदार"। उ०—ब्रज पर गन सिरदार महरि तू ताकी करत नन्हाई। —सूर०।

सिरधरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिरधरी] दे० "सिरधरू"।

सिरधरू—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+√धर+ऊ (प्रत्य०)] सिर पर रहनेवाला। रक्षक। पृष्ठपोषक।

सिरनामा—संज्ञा पुं० [फा० सर+नामा=पत्र] १ लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख के विषय का निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य। शीर्षक। सुर्खी।

सिरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई आदि जो देवताओं या गुरु आदि के आगे रखी जाय।

सिरनेत—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+सं० नेत्री] १. पगड़ी। पटा। चीरा। २ क्षत्रियों की एक शाखा।

सिरपच्ची—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] सिर खपाना। माथापच्ची।

सिरपाव—संज्ञा पुं० दे० "सिरोपाव"।

सिरपेच—संज्ञा पुं० [फा० सर+पेच] १ पगड़ी। २ पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

सिरपोश—संज्ञा पुं० [फा० सरपोश] १. सिर पर का आवरण। २ टोप। कुलाह।

सिरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+फूल] सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण। शीशफूल।

सिरफेंटा—संज्ञा पुं० दे० "सिरबंद"।

सिरबंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+फा० बंद] साफा।

सिरबंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+फा० बंदी] माथे पर पहनने का एक आभूषण।

सिरमगजन—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+अ० मगज] माथापच्ची। उ०—दोपहर तक सिर मगजन करने के बाद लोग निराश होकर लौटे।—कायाकल्प।

सिरमग्जन—संज्ञा पुं० दे० "सिरपच्ची"।

सिरमनि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरमौर—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+मौर] १ सिर का मुकुट। २ सिरताज। शिरोमणि।

सिररुह—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसके फूल सफेद, सुगंधित, अत्यंत कोमल और मनोहर होते हैं। उ०—वाम विधि मेरो सुख सिरस सुमन ताको छल छुरी कोह कुलिस लै टेई है।—कविता०।

सिरहाना—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्+आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] १ लंबाई का अंत। छोर। टोंक। २ ऊपर का भाग। ३ अंतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४ आरंभ का भाग। ५ नोक। अनी।

मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिरा] १ रक्तनाड़ी। २ सिंचाई की नाली।

सिराजी—संज्ञा पुं० [फा० शीराज (नगर)] १ शीराज का घोड़ा। २. शीराज का कबूतर। ३ शीराज की शराब।

सिराना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० सीरा से ना० धा०] १ ठंढा होना। शीतल होना। २ मद पड़ना। हतोत्साह होना। उ०—वज्रायुध जल वरषि सिराने। परयो चरन तब प्रभु करि जाने।—सूर०। ३ समाप्त होना। खतम होना। ४ मिटना। दूर होना। उ०—अब रघुनाथ मिलाऊँ तुमको सुंदरि सोग सिराइ।—सूर०। ५ बीत जाना। गुजर जाना। उ०—वेऊ चिरजीवी, अमर निधरक फिरौ कहाइ। छिनु बिछुरैं जिनकी नहीं पावस आइ सिराइ।—बिहारी०। †६ काम से फुरसत मिलना।
क्रि० स० १ ठंढा करना। शीतल करना। २ समाप्त करना। ३ बिताना।

सिरावना(पु)†—क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा० सरिश्त] विभाग।

सिरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फा० सरिश्त+दार] दे० सरिश्तेदार"।

सिरिस—संज्ञा पुं० दे० "सिरस"।

सिरी(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] १ लक्ष्मी। २ शोभा। कांति। ३ रोली। रोचना। ४ माथे पर का एक गहना।

सिरोपाव—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा जो राजदरबार से समान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरोरुह—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरोही—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की काली चिड़िया।
संज्ञा पुं० १ राजपूताने में एक स्थान जहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २ तलवार।

सिर्फ—क्रि० वि० [अ०] केवल। मात्र।
वि० १ एकमात्र। अकेला। २ शुद्ध।

सिल—स्त्री० स्त्री० [सं० शिला] १ पत्थर। चट्टान। शिला। २. पत्थर की चौकोर पटिया जिसपर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३ पत्थर की चौकोर पटिया। ४ धातु, उपधातु आदि का चौकोर खंड।
संज्ञा पुं० दे० "शिल", "उंछ"।

संज्ञा पुं० [अ०] राजयक्ष्मा। क्षयरोग।

सिलकी—संज्ञा पुं० [देश०] बेल। लता।

सिलखड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खड़िया] १ एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २ खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलगना—क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

सिलप(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

सिलपट—वि० [सं० शिलापट्ट] १ साफ। बराबर। चौरस। २. घिसा हुआ। ३. चौपट। सत्यानाश।

सिलपोहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति।

सिलबची—संज्ञा स्त्री० [फा० सैलाबची] चिलमची।

सिलवट—संज्ञा स्त्री० [देश०] सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर। शिकन। सिकुड़न।

सिलवाना—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिलसिला—संज्ञा पुं० [अ०] १. बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा। २. श्रेणी। पंक्ति। ३ शृंखला। जंजीर। लड़ी। ४ व्यवस्था। तरतीब।
वि० [सं० सिक्त] १. भीगा हुआ। गीला। २ जिसपर पैर फिसले। ३ चिकना।

सिलसिलेवार—वि० [अ० सिलसिला+फा० वार] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] हथियार।

सिलहखाना—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह+फा० खाना] अस्त्रागार। हथियार रखने का घर।

सिलहारा—संज्ञा पुं० [सं० शिलकार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला—वि० [हिं० सीड़+हीला = कीचड़] [स्त्री० सिलहिली] जिसपर पैर फिसले। कीचड से चिकना।

सिला—संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।
संज्ञा पुं० [सं० शिल] १ कटे खेत में से चुना हुआ दाना। २ कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दाने चुनना। शिलवृत्ति।
संज्ञा पुं० [अ० सिलह] बदला। एवज।

सिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना+आई (प्रत्य०)] १. सीने का काम या ढंग। २ सीने की मजदूरी। ३ टाँका। सीवन।

सिलाजीत—संज्ञा पुं० दे० "शिलाजतु"।

सिलाना—क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।
(पु)क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिलारस—संज्ञा पुं० [सं० शिलारस] १ सिल्हक वृक्ष। २ सिल्हक वृक्ष का गोंद।

सिलावट—संज्ञा पुं० [सं० शिला+पट्ट] पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।

सिलाह—संज्ञा पुं० [अ०] १ जिरह बकतर। कवच। २ अस्त्र शस्त्र। हथियार।

सिलाहबंद—वि० [अ०+फा०] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

सिलाहर—संज्ञा पुं० "सिलहारा"।

सिलाही—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] सैनिक।

सिलिक†—संज्ञा पुं० दे० "सिल्क"।

सिलिप‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

सिलीमुख—संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।

सिलोच्च—संज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक प्राचीन पर्वत।

सिलौट, सिलौटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल+बट्टा] [स्त्री० अल्पा० सिलौटी] १ सिल। २ सिल तथा बट्टा।

सिल्क—संज्ञा पुं० [अँ०] १ रेशम। २ रेशमी कपड़ा।

सिल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शिल] अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं।

सिल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १ हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। २ पत्थर की छोटी पतली पटिया। ३ धातु उपधातु आदि का चौकोर खंड।

सिल्हक—संज्ञा पुं० [सं०] सिलारस।

सिव‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिव"।

सिवई—संज्ञा स्त्री० [सं० समिता] गुँधे हुए आटे के सूत से सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवा—संज्ञा स्त्री० दे० "शिवा"।
अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा।
वि० अधिक। ज्यादा। फालतू।

सिवाइ—अ० दे० "सिवाय", "सिव"।

सिवाई—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।

सिवान—संज्ञा पुं० [सं० सीमांत] हद। सीमा।

सिवाय—क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर।

वि० १ अधिक। ज्यादा। २ ऊपरी।

सिवार, सिवाल—संज्ञा स्त्री० [स० शैवाल] पानी में लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण।

सिवाला—संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"।

सिविर—संज्ञा पुं० दे० "शिविर"।

सिष्ट—संज्ञा स्त्री० [फा० शिस्त] बसी की डोरी।

(पु)‡वि० दे० "शिष्ट"।

सिसकना—क्रि० अ० [अनु०] १ रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। २ भीतर ही भीतर रोना। खुलकर न रोना। ३ जी धड़कना। ४ उलटी साँस लेना। मरने के निकट होना। ५ तरसना।

सिसकारना—क्रि० अ० [अनु० सी सी + करना] १ सीटी का सा शब्द मुहँ से निकालना। सुसकारना। २ अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुहँ से साँस खींचना। सीत्कार करना।

सिसकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सिसकार + ई (प्रत्य०)] १ सिसकारने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २ पीड़ा या आनंद के कारण मुहँ से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। सीत्कार।

सिसकी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ खुलकर न रोने का शब्द। २ सिसकारी। सीत्कार।

सिसिर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिशिर"।

सिसु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिशु"।

सिसुमार(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शिशुमार"।

सिसोदिया—संज्ञा पुं० [सिसोद (स्थान) इया (प्रत्य०)] गुहलौत राजपूतों की एक शाखा।

सिहदा—संज्ञा पुं० [फा० सेह + हद] वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हों।

सिहरन—संज्ञा स्त्री० [स० शीत + धरण ?] सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरी।

सिहरना†—क्रि० अ० [स० शीत + धरण ?] १ ठढ से काँपना। २ काँपना। ३ डरना।

सिहरा—संज्ञा पुं० दे० "सेहरा"।

सिहराना†—क्रि० स० [हिं० सिहरना का स० रूप] १ सरदी से कँपाना। २ डराना।

सिहरावना—संज्ञा पुं० दे० "सिहरन"।

सिहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सिहर + ई (प्रत्य०)] १. कँपकँपी। कंप। २ भय से दहलना। ३ जूड़ी का बुखार। ४ रोंगटे खड़े होना। लोमहर्ष।

सिहाना†—क्रि० अ० [स० ईर्ष्या] १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २ स्पर्द्धा करना। ३ पाने के लिये ललचना। लुभाना। ४ मुग्ध होना। मोहित होना।

क्रि० स० १ ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २ अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना।

सिहारना(पु)†—क्रि० स० [देश०] १ तलाश करना। ढूँढ़ना। २ जुटाना।

सिहोड़, सिहोर†—संज्ञा पुं० दे० "सेहुँड़"।

सींक—संज्ञा स्त्री० [स० इषीका] १ मूँज आदि की पतली तीली। २. किसी घास का महीन डठल। ३ तिनका। उ०—माँसरी सी छुरी सी है सर सी सरी सी भई साँक सी है लीक सी है बाँध सी है वाँधी सी।—काव्यनिर्णय। ४ शकु। ५ नाक का एक गहना। लौंग। कील।

सींका—संज्ञा पुं० [हिं० सींक] पेड़ पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँड़ी।

सींकिया—संज्ञा पुं० [हिं० सींक + इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का रंगीन धारीदार कपड़ा।

वि० सींक सा पतला।

सींग—संज्ञा पुं० [स० शृग] १ खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अवयव। विषाण।

मुहा०—(किसी के सिर पर) सींग होना = कोई विशेषता होना (व्यग्य)। सींग कटाकर बछड़ों में मिलना = बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। कहीं सींग समाना = कहीं ठिकाना मिलना।

२ सींग का बना फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा। सिंगी।

सींगदाना—संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

सींगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लोबिया या फली। मोगरे की फली।

सींगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ हिरन के सींग का बना बाजा। सिंगी। उ०—श्री अस्थान अंतर मृगछाला, गगन मंडल सींगी बाजै। —कबीर०। २ वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर से दूषित रक्त खींचते हैं। ३. एक प्रकार की मछली।

सींच—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींचना] सिंचाई।

सींचना—क्रि० स० [स० सिंचन] १ पानी देना। आबपाशी करना। २ पानी छिड़ककर तर करना। भिगोना। ३ छिड़कना।

सींढ़—संज्ञा पुं० [स० सिंहाणक] नाक से निकला हुआ मल या कफ।

सींव(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० सीमा] सीमा। हद। उ०—जौ कोऊ उन पछ कर यारे। तोरयो चहैं सुख सींव अपारै। —नंददास०।

सींवँ(पु)—संज्ञा पुं० [स० सीमा] सीमा। हद।

मुहा०—सींवँ चरना या काढ़ना = अधिकार जमाना। जबरदस्ती करना।

सी—वि० स्त्री० [स० सम] समान। तुल्य। सदृश, जैसे—वह स्त्री बावली सी है।

मुहा०—अपनी सी = अपने इच्छानुसार। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] सीत्कार। सिसकारी।

सीअरी(पु)—वि० स्त्री० [हिं० सीतल] ठढी। शीतल। उ०—अरी सीअरी होन को ऊगी कोठरी नाहिं। जरी गूजरी जाति है, घरी दूबरी माहिं। —काव्यनिर्णय।

सीउ(पु)—संज्ञा पुं० [स० शीत] शीत। ठढ।

सीकर—संज्ञा पुं० [स०] १ जलकण। पानी की बूँद। छींट। २ पसीना।

(पु)‡संज्ञा स्त्री० [स० शृंखला] जंजीर।

सीकल—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।

सीकस—संज्ञा पुं० [देश०] ऊसर।

सीकुर—संज्ञा पुं० [स० शूक] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत। शूक।

सीख—संज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा] १ शिक्षा। तालीम। २ वह बात जो सिखाई जाय। ३ परामर्श। सलाह। मंत्रणा।

संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की लंबी पतली छड़। शलाका। तीली।

सीखचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ लोहे की नोक जिसपर मांस लपेटकर भूनते हैं। २. लोहे का छड़।

सीखन(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीखना] शिक्षा ।

सीखना—क्रि० स० [सं० शिक्षण] १ ज्ञान प्राप्त करना । किसी से कोई बात जानना । २ काम करने का ढंग आदि जानना ।

सीगा—संज्ञा पुं० [अ०] १ विभाग । महकमा । २ प्रयोजन । कार्य । हीला ।

सीझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि] सीझने की क्रिया या भाव । गरमी से गलाव ।

सीझना—क्रि० अ० [सं० सिद्धि] १ आँच या गरमी पाकर गलना । पकना । चुरना । २ आँच या गरमी से मुलायम पड़ना । ३ सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीगकर मुलायम होना । ४. कष्ट सहना । क्लेश झेलना । ५. तपस्या करना । ६ मिलने के योग्य होना ।

सीटना—क्रि० स० [अनु०] डींग मारना । शेखी मारना । बढ़ बढ़कर बातें करना ।

सीटपटाँग—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सीट+ (अनु) पटाँग] घमंड भरी बातें ।

सीटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीत्कृ ?] १ वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है । २. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि से होता है । ३. वह यंत्र, बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले ।

सीठना—संज्ञा पुं० [सं० अशिष्ट] वह अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं । सीठनी ।

सीठनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीठना" ।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट] नीरस । फीका ।

सीठी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट] १ किसी फल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश । खूद । २ सारहीन पदार्थ । ३ फीकी चीज ।

सीद—संज्ञा स्त्री० [सं० शीत] तरी । नमी ।

सीढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १ ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान । निसेनी । जीना । पैड़ी । २. धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा ।

सीत(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "शीत" ।

सीतकर—संज्ञा पुं० [सं० शीतकर] चद्रमा । उ०—सितकमलवंस सी सीतकर अंस सी, विमल विधिहंस सी हीरवरहार सी । —छंदार्णव ।

सीतल(पु)†—वि० दे० "शीतल" ।

सीतलपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल+ हिं० पाटी] एक प्रकार की बढ़िया चटाई ।

सीतला—संज्ञा स्त्री० दे० "शीतला" ।

सीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल से पड़ती जाती है । कूँड़ । २ मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं । वैदेही । जानकी । ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं । उ०—जन्म बीता जात मीता अत रीता बावरे । रामसीता रामसीता रामसीता गाव रे ॥

सीताध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेती बारी आदि का प्रबंध करता हो ।

सीतापति—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र ।

सीताफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीफा । २. कुम्हड़ा ।

सीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] वह सी सी शब्द जो पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकलता है । सिसकारी ।

सीथ—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] पके हुए अन्न का दाना । भात का दाना । उ०—भंवर झारि सेज पर सोवैं । भोजन करत सीथ टकटोवैं । —नंददास० ।

सीद—संज्ञा पुं० [सं०] सूदखोरी । कुसीद ।

सीदना—क्रि० अ० [सं० सीदति] दुःख पाना ।

सीध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १ वह लंबाई जो बिना इधर उधर मुड़े एक तार चली गई हो । २ लक्ष्य । निशाना ।

सीधा—वि० [सं० शुद्ध] [स्त्री० सीधी] १. जो टेढ़ा न हो । अवक्र । सरल । ऋजु । २. जो ठीक लक्ष्य की ओर हो । ३ सरल प्रकृति का । भोला भाला । ४ शांत और सुशील ।

मुहा०—सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से ।

यौ०—सीधा साधा = भोला भाला ।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना ।

५ सुकर । आसान । सहज । ६ दाहिना ।

क्रि० वि० ठीक सामने की ओर । संमुख ।

संज्ञा पुं० [सं० असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न ।

सीधापन—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा+पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव । सिधाई ।

सीधे—क्रि० वि० [हिं० सीधा] १. बराबर सामने की ओर । संमुख । २ बिना कहीं मुड़े या रुके । ३ नरमी से । शिष्ट व्यवहार से ।

सीना—क्रि० स० [सं० सीवन] १ कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तागों से जोड़ना । २ टाँका मारना ।

संज्ञा पुं० [फा० सीना] छाती । वक्षःस्थल ।

सीनाबंद—संज्ञा पुं० [फा०] अँगिया चोली ।

सीनियर—वि० [अं०] १ बड़ा । वयस्क २ पद या मर्यादा में ऊँचा । श्रेष्ठ ।

सीप—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १ कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु । सीपी । सितुही । २. इस समुद्री जलजंतु का सफेद, कड़ा, चमकीला आवरण जो बटन आदि बनाने के काम में आता है । ३. ताल के सीप का संपुट जो चम्मच आदि के समान काम में लाया जाता है ।

सीपति—संज्ञा पुं० [सं० श्रीपति] विष्णु ।

सीपर(पु)†—संज्ञा पुं० [फा० सिपर] ढाल ।

सीपसुत—संज्ञा पुं० [हिं० सीप+सुत] मोती ।

सीपा—संज्ञा पुं० [देश०] कड़ा जाड़ा ।

सीपिज—संज्ञा पुं० [हिं० सीपी] मोती ।

सीपी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीप" ।

सीबी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] सी सी शब्द । सिसकारी । सीत्कार ।

सीमंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्रियों की माँग । २ हड्डियों का संधिस्थान । ३ दे० "सीमंतोन्नयन" ।

सीमंतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री । नारी ।

सीमंतोन्नयन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रथम गर्भ के चौथे, छठे या आठवें महीने में द्विजातियों की स्त्रियों का एक प्राचीन शास्त्रीय संस्कार ।

सीम—संज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा । हद ।

मुहा०—सीमा चरना या काँदना = अधिकार जताना। दबाना। जबरदस्ती करना।

सीमांत—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो। सरहद।

सीमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माँग। २. किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। मर्यादा।

मुहा०—सीमा से बाहर जाना = उचित से अधिक बढ़ जाना।

सीमाब—संज्ञा पुं० [फा०] पारा।

सीमाबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमोल्लंघन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सीमा का उल्लंघन करना। २ विजययात्रा। सीमातिक्रमणोत्सव। ३ मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीय—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी। उ०—समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ। जाइ सासु पद कमल जुग, बंदि बैठि सिरु नाइ।—मानस।

सीयन†—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

सीयरा(पु)—वि० दे० "सियरा"।

सीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ हल। २ हल जोतनेवाले बैल। ३ सूर्य।

संज्ञा स्त्री० [सं० सीर=हल] १ वह जमीन जिसे भूस्वामी स्वयं जोतता आ रहा हो। २ वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारी में बँटती हो।

संज्ञा पुं० [सं० शिरा] रक्त की नाड़ी।

(पु)†वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल। उ०—ज्वाल के जाल उसासनि तें बढ़ै देख्यो न ऐसो बिहाल बिथा तें। सीर समीर उसीर गुलाब के नीर पटीरहु तें सरसातो।—काव्यनिर्णय।

सीरक(पु)—वि० [हिं० सीरा] १ ठंढा करनेवाला। २ ठंढा। उ०—भूख प्यास भागी बिदा माँगी लोक लाज सुख तेरी जक लागी अंग सीरक छुए जरै।—शृंगार०।

सीरख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

सीरध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक।

सीरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई।

सीरप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

सीरा—संज्ञा पुं० [फा० शीर] १ पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २ हलवा।

(पु)†वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीरी] १. ठंढा। शीतल। २. शांत। मौन। चुपचाप।

सीरीज—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक ही तरह की बहुत सी चीजों का क्रम या सिलसिला। माला।

सीरो—वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीरी] ठंढा। शीतल। उ०—सने सीरो सोतो, सुरसरि सहिऔं, स्वच्छ साँचो सुधा को।—छंदार्णव।

सील—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] आर्द्रता। सीड़। नमी। तरी।

(पु)†संज्ञा पुं० दे० "शील"।

संज्ञा स्त्री० [अं०] मोहर। छाप। मुद्रा।

संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की समुद्री मछली।

सीला—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १ अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या गरीब चुनते हैं। सिल्ला। २ खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।

वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीली] गीला।

सीव(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सीमा"।

सीवन—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १. सीने का काम। सिलाई। २ सीने में पड़ी हुई लकीर। ३ दरार। संधि। दराज।

सीवना—संज्ञा पुं० दे० "सिवाना"।

क्रि० स० दे० "सीना"।

सीवा(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीमा] सीमा। पराकाष्ठा। उ०—लसे सुभ्र ग्रीवा। महाशोभसीवा। परेवा कहा री। कहा सब नारी।—छंदार्णव।

सीस—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] सिर। माथा।

सीसक—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा (धातु)।

सीसताज—संज्ञा पुं० [हिं० सीस+फा० ताज] वह टोपी जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहती और शिकार के समय खोली जाती है। कुलाह।

सीसत्रान—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

सीसफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल (गहना)।

सीसमहल—संज्ञा पुं० [फा० शीशा+अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

सीसा—संज्ञा पुं० [सं० सीसक] नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु।

(पु)†संज्ञा पुं० दे० "शीशा"।

सीसी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] शीत, पीड़ा या आनंद के समय मुहँ से निकला हुआ शब्द। सीत्कार। सिसकारी।

(पु)†संज्ञा स्त्री० "शीशी"।

सीसोदिया—संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।

सीह—संज्ञा स्त्री० [सं० सीधु] महक। गंध।

(पु)संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।

सीहगोस—संज्ञा पुं० [फा० सियाहगोश] एक प्रकार का जंतु जिसके कान काले होते हैं।

सुँ(पु)†—प्रत्य० दे० "सो"।

सुँघनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँघना] तंबाकू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य।

सुँघाना—क्रि० स० [हिं० सूँघना का प्रे० रूप] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।

सुंड भुसुंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड भुशुण्डि] हाथी, जिसका अस्त्र सूँड़ है।

सुंडा—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँड़] सूँड़। शुंड।

सुंडादंड—संज्ञा पुं० [हिं० सुंडा+सं० दंड] सूँड़। उ०—सुंडादंड कैतव हथ्यार है उदंड यह, राखत न लेख अघ विघन असेष को।—काव्यनिर्णय।

सुंडाल—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। उ०—वृक तकि छाग ज्यों, भजत वृद्ध औ, बालको। मृगपति देखि ज्यों, भजत झुंड सुंडाल को।—छंदार्णव।

सुंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुंद का भाई था।

सुंदर—वि० [सं०] [स्त्री० सुंदरी] १ जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। खूबसूरत। मनोहर। २ अच्छा। बढ़िया।

सुंदरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती।

सुंदरताई, सुंदराई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता"।

सुंदरापा—संज्ञा पुं० दे० "सुंदरता"।

सुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर स्त्री। २ त्रिपुरसुंदरी देवी। ३ एक योगिनी का नाम। ४ सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। उ०—लखि के विधु पूरण आनन मातु लह्यो मुद ज्यों मृत सोवत जागो। यहि अवसर को हरि सुंदर मूरति धारि जपै

हिय में अनुरागी ॥ इसे मतली और सुखदानी भी कहते हैं। ५ बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, दो भगण और रगण हों। उ०—नभ भरी विधु भासन आगरी। सुख प्रभा बहु भूषित नागरी ॥ द्रुतविलंबित। ६ तेईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो सगण, भगण, सगण, तगण, दो जगण और अंत में एक लघु और एक गुरु हो। उ०—कहुँ कोउ कहै, ना हम लखि पाए, माधव पाणि गहे बँसुरी। नहिं जानति हौं, सुंदरि इक बारी, आजुहि दैव फिरो कसुरी। ७ १० वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, रगण, जगण और अंत्य गुरु होता है। उ०—जात होय सो, नरोत्तमा। लहत भक्ति जो मनोरमा। इसे मनोरमा छंद भी कहते हैं।

सुँघावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँघा+वट (प्रत्य०)] सौंधापन।

सुंवा—संज्ञा पुं० [देश०] १ इस्पज। २ तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये गीला कपड़ा। पुचारा।

सु—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है, जैसे—सुनाम, सुशील आदि।

वि० १ सुंदर। अच्छा। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ शुभ। भला।

(पु)प्रत्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।

सर्व० [सं० स] सो। वह। उ०—पानि पकरि नद आँगन आनें। जिनते टर टरपै सु टरानें।—नंददास०।

सुअ—संज्ञा पुं० [सं० सुत] बेटा। पुत्र। उ०—तनु विक्रम मथ्थ स्वथ्थ जस मथ्थ समथ दसरथ्थ सुअ।—काव्यनिर्णय।

सुअटा—संज्ञा पुं० [सं० शुक] सुग्गा। तोता।

सुअन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।

संज्ञा पुं० [सं० सुमन] पुष्प। फूल।

सुअनजर्द—संज्ञा पुं० दे० "सोनजर्द"।

सुअनना(पु)—क्रि० अ० [हिं० सुअन] उत्पन्न होना। जनना। उत्पन्न होना।

संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।

सुअभा—संज्ञा पुं० दे० "सुभा"।

सुआउ(पु)—वि० [सं० सु+आयु] बड़ी उम्रवाला। दीर्घजीवी। उ०—करम सुभाव काल ठाकुर न ठावँ सो। सुधन न, सुतन न, सुमन सुआउ सो।—विनय०।

सुआन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।

सुआना—क्रि० स० [हिं० सूना का प्रे० रूप] उत्पन्न कराना। पैदा कराना।

सुआमी(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।

सुआर—संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया। उ०—सूपोदन सुरभी सरपि, सुंदर स्वादु पुनीत। छन महुँ सबके परुसिगे, चतुर सुआर विनीत।—मानस।

सुआरव—वि० [सं०] गाढ़े स्वर से बोलने या बजानेवाला।

सुआसिनी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी ?] १ स्त्री, विशेषत पास रहनेवाली स्त्री। २ सौभाग्यवती स्त्री। सधवा। उ०—बैठी सहचरिनी सुआसिनी खवासिनी हुकुम जाहे बैठी खड़ी अपने हदन में।—शृंगार०।

सुआहित—संज्ञा पुं० [सं० सु+आहत ?] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

सुकंठ—वि० [सं०] १ जिसका कंठ सुंदर हो। २ सुरीला।

संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव।

सुक—संज्ञा पुं० दे० "शुक"।

सुकचाना(पु)—क्रि० अ० दे० "सकुचाना"।

सुकड़ना—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सुकनासा(पु)—वि० [सं० शुक+नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो।

सुकर—वि० [सं०] सुसाध्य। सहज। उ०—आगे चलि पुनि अवलोकी न उल्लव सैनी। जहँ दिय सुखद कुसुम ले सुकर गुही है देनी।—नंददास०।

सुकरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहज में होने का भाव। २ सुंदरता।

सुकराना—संज्ञा पुं० दे० "शुकराना"।

सुकरित(पु)—वि० [सं० सुकृत] शुभ। अच्छा।

सुकर्मी—वि० [सं० सुकर्मिन्] १ अच्छा काम करनेवाला। २ धार्मिक। ३ सदाचारी।

सुकल—संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

सुकवाना(पु)—क्रि० अ० [?] १. अचंभे में आना।

सुकाना(पु)—क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम समय। २ वह समय जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो। अकाल का उलटा।

सुकावना(पु)—क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकिज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] शुभ कर्म।

सुकिया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"। उ०—सुकिया परकीया अपर गनिका धर्मनि जानि। पतिव्रता लज्जा सुकृत सील सुकीया जानि।—रससारांश।

सुकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक] तोते की मादा। सुग्गी। सारिका। तोती।

सुकीउ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया" (नायिका)।

सुकुआर—वि० दे० "सुकुमार"।

सुकुति(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप।

सुकुमार—वि० [सं०] [स्त्री० सुकुमारी] जिसके अंग बहुत कोमल हों। नाजुक।

संज्ञा पुं० १. कोमलांग बालक। २ काव्य का कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होना।

सुकुमारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुमार का भाव या धर्म। कोमलता। नजाकत।

सुकुमारी—वि० स्त्री० [सं०] कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।

सुकुरना(पु)†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सुकुल—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम कुल। २ वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो। कुलीन। ३ ब्राह्मणों की एक उपजाति।

संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

सुकुवाँर, सुकुवार—वि० दे० "सुकुमार"।

सुकृत्—वि० [सं०] १. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २. धार्मिक।

सुकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुण्य। २ दान। ३ उत्तम कार्य।

वि० १ भाग्यवान्। २ धर्मशील।

सुकृतात्मा—वि० [सं० सुकृतात्मन्] धर्मात्मा।

सुकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० सुकृतित्व] शुभ कार्य। अच्छा काम। पुण्य। सत्कर्म।

सुकृती—वि० [सं० सुकृतिन्] १ धार्मिक। पुण्यवान्। २ भाग्यवान्। ३ बुद्धिमान्।

सुकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुण्य। धर्म कार्य। अच्छा काम।

सुकेशि—संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।

सुकेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम केशोंवाली स्त्री।

संज्ञा पुं० [सं० सुकेशिन्] [स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हों।

सुक्ख—संज्ञा पुं० दे० "सुख"। उ०—बैकुंठ मधि सुक्ख हैं जिते। सब वृंदावन ठौं ठौं तिते।—नंददास०।

सुक्ति—संज्ञा स्त्री० दे० "शुक्ति"।

सुक्रित—संज्ञा पुं० दे० "सुकृत"।

सुक्षम(पु)†—वि० दे० "सूक्ष्म"।

सुखंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूखना] बच्चों का एक रोग जिसमें शरीर सूख जाता है।

वि० बहुत दुबला पतला।

सुखद्—वि० [सं० सुखद] सुखदायी।

सुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा रहती है। दुःख का उलटा। आराम।

मुहा०—सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था में रहना। सुख की नींद सोना = निश्चिंत होकर रहना।

२ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और २ लघु होते हैं। उ०—धरि मातु रजायसु सीस हरी नित यामुन कच्छ फिरैं सह गोपन। यहि भाँति हरी जसुदा उपदेसहिं भाषन नेह लहैं सुख सोधन। इसे सुख सवैया, किशोर और कुंदलता भी कहते हैं। ३ आरोग्य। तंदुरुस्ती। ४ स्वर्ग। ५ जल। पानी।

क्रि० वि० १ स्वभावतः। २ सुख पूर्वक।

सुखआसन—संज्ञा पुं० [सं० सुख+आसन] पालकी।

सुखकद—वि० [सं० सुख+कंद] सुखद।

सुखकंदन—वि० दे० "सुखकंद"।

सुखकंदर—वि० [सं० सुख+कंदरा] सुख का घर। सुख का आकर।

सुखक(पु)†—वि० [सं० शुष्क] सूखा। शुष्क।

सुखकर—वि० [सं०] १ सुख देनेवाला। २ जो सहज में किया जाय। सुकर।

सुखकरण†—वि० [सं० सुख+करण] सुखद।

सुखकरनी(पु)—वि० स्त्री० [सं० सुखकरण] सुखकर। आनंदप्रद। उ०—भृंग गन सहित भृंग गन की घरनी। बीन सी बजति महा सुखकरनी।—नंददास०।

सुखकारक—वि० [सं०] सुखदायक।

सुखकारी—वि० दे० "सुखकारक"।

सुखजननी—वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली।

सुखज्ञ—वि० [सं० सुख+ज्ञ] सुख का ज्ञाता।

सुखढरन—वि० दे० "सुखद"।

सुखथर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सुख+स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान।

सुखद—वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखदायी।

सुखदगीत—वि० [सं० सुखद+गीत] प्रशंसनीय।

सुखदनियाँ(पु)—वि० दे० "सुखदानी"।

सुखदा—वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद। इसमें कुल २२ मात्राएँ होती हैं। अंत में दीर्घ रहता है। उ०—नर देही सोने की परमारथ कर ले। चाहसि जो भल आपनो, भानु सीख धर ले।

सुखदाइक—वि० [सं० सुखदायक] सुखदायक। उ०—तिन मधि मोहै अति सुखदाइक। नग जराइ मधि ज्यों मधि नाइक।—नंददास०।

सुखदाइन(पु)—वि० दे० "सुखदायिनी"।

सुखदाई—वि० दे० "सुखदायी"।

सुखदाता—वि० [सं० सुखदातृ] सुखद।

सुखदान—वि० दे० "सुखदाता"।

सुखदानी—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान+ई (प्रत्य०)] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० ८ सगण और १ गुरु का एक वृत्त। सुंदरी। मल्ली।

सुखदायक—वि० [सं०] सुख देनेवाला।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद।

सुखदायी—वि० [सं० सुखदायिन्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।

सुखदायो(पु)—वि० दे० "सुखदायी"। उ०—तैसिय कनक बरन सब सुंदरि यह सोभा पर मन ललचायो। तैसी हंससुता पवित्र तट तैसोई कलावृक्ष सुखदायो।—सूर०।

सुखदाव—वि० दे० "सुखदायी"। उ०—जल दल चंदन चक्र दर घटशिला हरि ताव। अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणामृत सुखदाव।—विश्रामसागर।

सुखदास—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी बढ़िया धान।

सुखदेनी—वि० दे० "सुखदायिनी"।

सुखदेन—वि० दे० 'सुखदायी"।

सुखदैनी—वि० स्त्री० [सं० सुखदायिनी] सुख देनेवाली।

सुखधाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख का घर। आनंदसदन। २ बैकुंठ। स्वर्ग।

सुखना(पु)—क्रि० अ० दे० "सूखना"।

सुखपाल—संज्ञा पुं० [सं० सुख+पाल (की)] एक प्रकार की पालकी।

सुखमन(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

सुखमा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] १ शोभा। छवि। २ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, यगण, भगण और अंत्य गुरु हो। उ०—ये हैं, दुख नाना की जननी। ऐसी, हम गाथा तें अकनी॥ इसे सुसमा भी कहते हैं। वामा।

सुखरास, सुखरासी(पु)—वि० [सं० सुख+राशि] जो सर्वथा सुखमय हो।

सुखलाना—क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुखवत—वि० [सं० सुखवत्] १ सुखी। प्रसन्न। खुश। २ सुखदायक।

सुखवन†—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह कमी जो किसी चीज के सूखने के कारण होती है।

संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] १. वह बालू जिससे लिखे हुए अक्षरों आदि पर की स्याही सुखाते हैं। २ अन्नादि की वह राशि जो सूखने के लिये धूप में पड़ी हो।

सुखवार—वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश।

सुखसाध्य—वि० [सं०] सुकर। सहज।

सुखसार—संज्ञा पुं० [सं० सुख+सार] मोक्ष।

सुखांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसका अंत सुखमय हो। २ वह नाटक, कहानी आदि जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग) हो।

सुखाना—क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] १ गीली या नम चीज को धूप आदि में इस प्रकार रखना जिससे उसकी

नमी दूर हो। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो।

†क्रि० अ० दे० "सूखना"।

सुखारा, सुखारीⓅ†—वि० [हिं० सुख+आरा, आरी (प्रत्य०)] १ सुखी। प्रसन्न। उ०—तो मातु भारी। ठानै पियारी। सीतै सुखारी। होती महारी।—छंदार्णव। २ सुखद।

सुखाला—वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखाली] १ सुखदायक। आनंददायक। २ सहज।

सुखावह—वि० [सं०] सुख देनेवाला।

सुखासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुखद आसन। २ पालकी। डोली।

सुखिआ—वि० दे० "सुखिया"।

सुखित—वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ।

वि० [हिं० सुखी] [स्त्री० सुखिता] सुखी। प्रसन्न। खुश।

सुखिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख। आनंद।

सुखिया—वि० दे० "सुखी"।

सुखिर—संज्ञा पुं० [सं० सुषिर] साँप का बिल।

सुखी—वि० [सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार का सुख हो। आनंदित। खुश।

सुखेन—संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।

सुखेलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, भगण, जगण और रगण आता है। उ०—वचन हनू सुने लखन राम मुद्रिका। मुदित सिया दियो असिष जो प्रभद्रिका। प्रभद्रक।

सुखैनाⓅ†—वि० [सं० सुखदायिन्] सुख देनेवाला।

सुख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बड़ाई।

सुगंध—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अच्छी और प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २ वह जिससे अच्छी महक निकलती हो। ३ श्रीखंड। चंदन।

वि० सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधवाला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध+वाला] एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि।

सुगंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] १ अच्छी महक। सौरभ। सुगंध। सुवास। खुशबू। २ परमात्मा। ३ आम।

सुगंधित—वि० [सं० सुगंधि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगत—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धदेव। २. बौद्ध।

सुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। उ०—अश्व सुगती। गहत सुमती॥ राम भजिए। मोद लहिए॥

सुगना†—संज्ञा पुं० [सं० शुक] तोता।

सुगम—वि० [सं०] १ जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २ सरल। सहज। ३ जो आसानी से समझा जा सके।

सुगमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी।

सुगम्य—वि० [सं०] जिसमें सहज में प्रवेश हो सके।

सुगरⓅ†—वि० १. दे० "सुघड़"। २ दे० "सुकठ"। ३ दे० "सुगम"।

सुगल—संज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० गल=गला] बालि का भाई सुग्रीव।

सुगानाⓅ—क्रि० अ० [सं० शोक] १. दुःखित होना। २. बिगड़ना। नाराज होना।

क्रि० अ० [?] संदेह करना। शक करना।

सुगीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं। उ०—सुगीतिका तिथि और दिशा शुभ, गाइए आनंद। जपौ सदा शुभ नाम पावन, कृष्ण आनँदकंद॥

सुगुरा—संज्ञा पुं० [सं० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।

सुगैया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा ?] चोली।

सुग्गा†—संज्ञा पुं० [सं०] तोता। सूआ।

सुग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालि का भाई, वानरों का राजा और श्रीरामचंद्र का सखा। २ इंद्र। ३ शंख।

वि० जिसकी ग्रीवा सुंदर हो।

सुघट—वि० [सं०] १ सुंदर। सुडौल। २ जो सहज में बन सकता हो।

सुघटित—वि० [सं० सुघट] अच्छी तरह से बना या गढ़ा हुआ।

सुघड़—वि० [सं० सुघट] १ सुंदर। सुडौल। २ निपुण। कुशल। प्रवीण।

सुघड़ई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+ई (प्रत्य०)] १ सुंदरता। सुडौलपन। २ चतुरता। निपुणता।

सुघड़ता—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़पन"।

सुघड़पन—संज्ञा पुं० [हिं० सुघड़+पन (प्रत्य०)] १. सुंदरता। २. निपुणता। कुशलता।

सुघड़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।

सुघड़ापा—संज्ञा पुं० दे० "सुघड़पन"।

सुघर—वि० दे० "सुघड़"। उ०—जो सुघर, पढ़ा कोविद लाख गनिकानि, सो पढ़ैया खग, जोई कहै मृग, वहै सबी बस।—काव्यनिर्णय।

सुघराई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"। उ०—सुम सुघराई बस किधौं लाल पनेरी बाम। सुई नर्मोकरि सेरियै नखिन गूजरी स्याम।—रससारांश।

सुघरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ समय।

वि० स्त्री० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल।

सुचⓅ—वि० दे० "शुचि"।

सुचना—क्रि० स० [सं० संचय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।

सुचरित, सुचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुचरिता] उत्तम आचरणवाला। नेकचलन।

सुचा—वि० दे० "शुचि"।

संज्ञा स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना।

सुचान—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुचाना] १ सुचाने की क्रिया या भाव। २ सुझाव। सूचना।

सुचाना—क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रे० रूप] १ किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। २ दिखलाना। ३ किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना।

सुचारⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुचाल"।

वि० [सं० सुचारु] सुंदर। मनोहर।

सुचारु—वि० [सं०] [भाव० सुचारुता] अत्यंत सुंदर।

सुचाल—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।

सुचाली—वि० [हिं० सु + चाल + ई (प्रत्य०)] अच्छे चालचलनवाला। सदाचारी।

सुचाव—संज्ञा पुं० [हिं० सोच+आव (प्रत्य०)] सुचाने की क्रिया या भाव। २ सुझाव। सूचना।

सुचि—वि० दे० "शुचि"।

सुचित—वि० [सं० सु+चित्त] १. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। २ निश्चिंत। बेफिक्र। ३. एकाग्र। स्थिर। सावधान।

सुचितई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित+ई (प्रत्य०)] १. निश्चिंतता। बेफिक्री। २ एकाग्रता। शांति। ३. छुट्टी। फुर्सत।

सुचिती†—वि० दे० "सुचित"।

सुचित्त—वि० [सं०] १ जिसका चित्त स्थिर हो। शांत। २ जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।

सुचिबर—वि० [सं० शुचि+वर] अत्यंत पवित्र। उ०—सिद्धि श्री श्रीनिवास, पास श्रुतवास सहायक। सुदर सुचिबर श्रीगोबिंद तुम सब बरदायक। —नंददास०।

सुचिमंत—वि० [सं० शुचि+मत] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी।

सुचिर—वि० [सं०] १ चिरस्थायी। पुराना।

सुची—सज्ञा स्त्री० दे० "शुची"।

सुचेत—वि० [सं० सुचेतस्] चौकन्ना। सावधान। सतर्क। होशियार।

सुच्छंदⓅ†—वि० दे० "स्वच्छद"।

सुच्छⓅ†—वि० दे० "स्वच्छ"।

सुच्छमⓅ—वि० दे० "सूक्ष्म"।

सुछंदⓅ—वि० [सं० स्वच्छद] स्वच्छद। निर्बाध। उ०—धौरे धौरहर पर अमल प्रजक धरि दूरि लौं बगारि दीन्ही चाँदनी सुछंद कौं।—रमसारांश।

सुछ—वि० [सं० स्वच्छ] स्वच्छ। उज्वल। उ०—जहँ गिरि गोधन सुछ छवि छये। नित बरसत, सरसत सुख नये।—नंददास०।

सुजन—सज्ञा पुं० [सं०] सज्जन। सत्पुरुष। भला आदमी। शरीफ।

संज्ञा पुं० [सं० स्वजन] परिवार के लोग।

सुजनता—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसत।

सुजनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सोजनी] एक प्रकार की बिछाने की बड़ी चादर।

सुजन्मा—वि० [सं० सुजन्मन्] उत्तम कुल का।

सुजल—सज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सुजस—सज्ञा पुं० दे० "सुयश"।

सुजागर—वि० [सं० सु+हिं० जागर] देखने में बहुत सुदर। प्रकाशमान। सुशोभित।

सुजात—वि० [सं०] [स्त्री० सुजाता] १. विवाहित स्त्रीपुरुष से उत्पन्न। २. अच्छे कुल में उत्पन्न। ३ सुदर।

सुजाति—सज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति। वि० उत्तम जाति या कुल का।

सुजातिया—वि० [हिं० सुजाति+इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

वि० [सं० स्व+जाति] अपनी जाति का।

सुजान—वि० [सं० सज्ञान] १. समझदार। चतुर। सयाना। २. निपुण। कुशल। प्रवीण। उ०—एरी प्रानप्यारी तेरी जानु कै सुजान विधि, ओप दीन्हो आपनी तमाम सुघराई कौं।—शृंगार०। ३. विज्ञ। पडित। ४ सज्जन।

सज्ञा पुं० १. पति या प्रेमी। २ ईश्वर।

सुजानता—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म।

सुजानी—वि० [हिं० सुजान+ई (प्रत्य०)] पडित। ज्ञानी।

सुजोगⓅ†—सज्ञा पुं० [सं० सु+योग] १ अच्छा अवसर। सुयोग। २ अच्छा सयोग।

सुजोधनⓅ—सज्ञा पुं० दे० "सुयोधन"।

सुजोर—वि० [सं० सु+फा० जोर] दृढ़।

सुज्ञ—वि० [सं०] सुविज्ञ। विद्वान्।

सुझना—क्रि० अ० [हिं० सूझना] दिखाई पड़ना। उ०—घन इव, तड़िदिव उपमा ऐसैं। साखा बिन ससि सुझै न जैसैं। —नददास०।

सुझाना—क्रि० स० [हिं० सूझना का प्रे० रूप] दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना।

सुझाव—सज्ञा पुं० [हिं० √सूझ+आव (प्रत्य०)] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो सुझाई जाय। सूचना।

सुटुकना—क्रि० अ० १. दे० "सुड़कना"। २ दे० "सिकुड़ना"।

क्रि० स० [अनु०] चाबुक लगाना।

सुठ—वि० दे० "सुठि"।

सुठहर†—सज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० ठहर= जगह] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह।

सुठारⓅ†—वि० [सं० सुष्ठु] सुडौल। सुदर। उ०—बहुत प्रकार किये सब व्यजन अनेक बरन मिष्ठान। अति उज्वल कोमल सुठि सुंदर महरि देखि मन भान। —सूर०।

सुठिⓅ†—वि० [सं० सुष्ठु] १ सुंदर। बढ़िया। अच्छा। २. अत्यंत। बहुत।

अव्य० [सं० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल।

सुठोनाⓅ†—वि० दे० "सुठि"।

सुठौनिⓅ—वि० [सं० सु+हिं० ठवनी] सुदर मुद्रा (अदा) वाली। उ०—सुदरि सुभ्र सुवेषि सुकेसि सुश्रोनि सुठौनि सुदति सुसैनी।—छदार्णव।

सुड़सुड़ाना—क्रि० स० [अनु०] सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना।

सुड़कना—क्रि० अ० [अनु०] सुड़ सुड़ शब्द के साथ पीना या निगलना।

सुडौल—वि० [सं० सु+हिं० डौल] सुदर डौल या आकार का। सुदर।

सुढंग—सज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० ढग] १. अच्छा ढग। अच्छी रीति। २ सुघड़।

सुढर—वि० [सं० सु+हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकपा हो।

वि० [हिं० सुघड़] सुदर। सुडौल। उ०—मानो तुग तरग विश्व की हिमगिरि की वह सुढर उठान।—कामायनी।

सुढार, सुढारुⓅ†—वि० [सं० सु+हिं० ढार] [स्त्री० सुढारी] सुदर। सुडौल। उ०—पकज से पग लाल नवेली के केदली खम सी जानु सुढार हैं।—काव्यनिर्णय।

सुतंत, सुतंतरⓅ—वि० दे० "स्वतंत्र"। उ०—सखि सौं कह सखि उहि गृह अतर। अब ते हौं सोऊँ न सुततर।—नददास०।

सुतंत्रⓅ—वि० दे० "स्वतत्र"। उ०—बालरूप जोवनवती, भव्य तरुन को संग। दीन्हो दई सुतत्र कै, सती होइ केहि ढग। —काव्यनिर्णय।

क्रि० वि० स्वतत्रतापूर्वक।

सुत—सज्ञा पुं० [सं०] पुत्र। बेटा। लड़का।

वि० १ पार्थिव। २ उत्पन्न। जात।

सुतधारⓅ—सज्ञा पुं० दे० "सूत्रधार"।

सुतनु—वि० [सं०] सुदर शरीरवाला।

सज्ञा स्त्री० सुदर शरीरवाली स्त्री। कृशागी।

सुतरⓅ†—सज्ञा पुं० दे० "शुतुर"।

सुतरनाल—सज्ञा स्त्री० दे० "शुतुरनाल"।

सुतरां—अव्य० [सं० सुतराम्] १ अत इसलिये। २ और भी। किं बहुना।

सुतरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरही ?] तुरही।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुतली"।

सुतल—संज्ञा पुं० [सं०] सात पाताल लोकों में से एक।

सुतली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रस्सी। डोरी। सुतरी।

सुतवाना†—क्रि० स० दे० "सुलवाना"।

सुतहर, सुतहार†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी।

सुतार—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार] १. बढ़ई। २ शिल्पकार। कारीगर।

वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम। उ०—कनक रतन मणि पालनो अति गढ़नो काम सुतार। विविध खेलौना भाँति भाँति के गजमुक्ता बहुधार।—सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।

सुतारी—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १ मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २ सुनार या बढ़ई का काम।

संज्ञा पुं० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर। उ०—हरिजन मणि की कोठरी आप सुतारी आहिं। सुएहु न त्यागत टेक निज तेहि ते छाँड्यो नाहिं।—विश्रामसागर।

सुतिन(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुतनु] रूपवती स्त्री।

सुतिहार†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुती—वि० [सं० सुतिन्] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

सुतीक्ष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।

सुतीच्छन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सुतीक्ष्ण"।

सुतुही†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १ सीपी जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २ वह सीप जिससे अचार के लिये कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

सुतून—संज्ञा पुं० [फा०] खंभा। स्तंभ।

सुत्रामा—संज्ञा पुं० [सं० सुत्रामन्] इंद्र।

सुथना—संज्ञा पुं० दे० "सूथन"।

सुथनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २ पिंडालू। रतालू।

सुथरा—वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।

सुथराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा+ई (प्रत्य०)] सुथरापन।

सुथरापन—संज्ञा पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] स्वच्छता। निर्मलता। सफाई।

सुथरेशाही—संज्ञा पुं० [? सुथराशाह (महात्मा)] १ गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २ इस संप्रदाय के अनुयायी।

सुदंती—वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।

सुदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३ सुमेरु। ४ एक पौधा जो ओषधि के काम आता है।

वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।

सुदामा—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण के सखा थे और जिन्हें पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था।

सुदावन—संज्ञा पुं० दे० "सुदामा"।

सुदास—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिवोदास का पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद।

सुदि—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।

सुदिन—संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन।

सुदी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।

सुदीपति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।

सुदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

सुदूर—वि० [सं०] बहुत दूर। अति दूर।

सुदृढ़—वि० [सं०] बहुत दृढ़। खूब मजबूत।

सुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

सुदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर देश। उत्तम देश। २ उपयुक्त स्थान।

वि० सुंदर। खूबसूरत।

सुदेस(पु)—वि० [सं० सुदेश] सुंदर। खूबसूरत। उ०—बाल के सुदेस बेस कालिंदी प्रभा दली। पन्नगीकुमार की सेवार की कहा चली।—छंदार्णव।

सुदेह—वि० [सं०] सुंदर। कमनीय।

सुदौसी†—क्रि० वि० [?] शीघ्र। जल्दी।

सुद्ध(पु)—वि० दे० "शुद्ध"।

सुद्धाँ†—अव्य० [सं० सह] सहित। समेत।

सुद्धि—संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"। दे० "शुद्धि"।

सुधंग—संज्ञा पुं० [हिं० सु+ढंग या अंग ?] अच्छा ढंग। उ०—कबहुँ चलत सुधंग गति सों कबहुँ उघटत बैन। लोल कुंडल गंडमंडल चपल नैननि सैन।—सूर०।

वि० सब प्रकार से ठीक और अच्छा।

सुध—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] १. स्मृति। स्मरण। याद। चेत।

मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। सुध न रहना=भूल जाना। याद न रहना। सुध बिसरना=भूल जाना। सुध बिसराना, बिसारना=किसी को भूल जाना। सुध भूलना=दे० "सुध बिसरना"।

२ चेतना। होश।

यौ०—सुध बुध=होश हवास।

मुहा०—सुध बिसरना=होश में न रहना। सुध बिसारना=अचेत करना।

३ खबर। पता।

वि० दे० "शुद्ध"।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुधा"।

सुधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० सुधन्वन्] १. अच्छा धनुर्धर। २ विष्णु। ३ विश्वकर्मा। ४ आंगिरस।

सुधमना(पु)†—वि० [हिं० सुध=होश+मन] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

सुधरना—क्रि० अ० [सं० शोधन] बिगड़े हुए का बनना। संशोधन होना।

सुधराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सुधर+आई (प्रत्य०)] १ सुधरने की क्रिया। सुधार। २ सुधारने की मजदूरी।

सुधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य।

सुधर्मा, सुधर्मी—वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मनिष्ठ।

सुधवाना—क्रि० स० [हिं० सोधना का प्रे० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ—अव्य० दे० "सुद्धाँ"।

सुधांग—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमृत। पीयूष। २ मकरंद। ३ गंगा। ४ जल। ५ दूध। ६ रस। अर्क। ७ पृथ्वी।

अर्क। ७ पृथ्वी। धरती। ८ विष। जहर। ६ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, तगण और सगण होते हैं। उ०—स्वधर्में राँचे जो, सत गहि रहैं, त्यागैं नहिं कदा। जपैं सीतारामा, पद रति सुता, गावैं गुण सदा। १० चूना।

सुधाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुधा = सीधा + ई (प्रत्य०)] सीधापन। मिधाई। सरलता।

सुधाकर—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधागेह—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + हिं० गेह] चंद्रमा।

सुधाघट—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + घट] चंद्रमा।

सुधाधर—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर] चंद्रमा। उ०—श्री रघुवीर कह्यो सुन वीर बूझ शशी किधौं राहु डरायो। नाउँ सुधाधर है विष को घर ल्याई विरंचि कलंक लगायो। —हनुमन्नाटक।

वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरों में अमृत हो।

सुधाधाम—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधाधार—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधाधी—वि० [सं०] सुधा के समान।

सुधाना(पु)—क्रि० स० [हिं० सुध से ना० धा०] सुध कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।

क्रि० स० १ शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। २ (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि—सज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। उ०—मनहुँ सुधानिधि वर्षत घन पर अमृत धार चहुँ ओर।—सूर०। २ समुद्र। ३ दंडक वृत्त का एक भेद। इसमें १६ बार क्रम से गुरु, लघु आते हैं।

सुधापाणि—सज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।

सुधार—सज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। सशोधन। सस्कार।

सुधारक—सज्ञा पुं० [हिं० सुधर + क (प्रत्य०)] १ वह जो दोषों या त्रुटियों का सुधार करता हो। सशोधक। २ वह जो धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिये प्रयत्न करता हो।

सुधारना—क्रि० स० [हिं० सुधरना का स० रूप] दोष या बुराई दूर करना। सशोधन करना।

वि० [स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला।

सुधारा—वि० [हिं० सूधा] सीधा। निष्कपट।

सुधास्रवा—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + स्रवण] अमृत बरसानेवाला।

सुधासदन—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधि—सज्ञा स्त्री० दे० "सुध"। उ०—रामचंद्र विख्यात नाम यह सुर मुनि की सुधि लीनी।—सूर०।

सुधी—सज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।

वि० १ बुद्धिमान्। चतुर। २ धार्मिक।

सुनंदिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और अंत में एक गुरु रहता है। उ०—वर देहु राम जन तोषकारिणी। सुनि एवमस्तु वद मंजुभाषिणी॥ प्रबोधिता। मंजुभाषिणी। कनकप्रभा। कोमलालापिनी।

सुनकिरवा—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा = कीड़ा] १ एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पत्ते के रंग के होते हैं। २ जुगनू।

सुनगुन—सज्ञा स्त्री० [हिं० √सुन + अनु० गुन] १ भेद। टोह। सुराग। २. कानाफूसी।

सुनत, सुनति(पु)†—सज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।

सुनना—क्रि० स० [सं० श्रवण] १ कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।

मुहा०—सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। २. किसी के कथन पर ध्यान न देना। ३ भली बुरी बातें श्रवण करना।

सुनबहरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुन्न + भारी ?] फीलपाँव (रोग)।

सुनय—सज्ञा पुं० [सं०] सुनीति। उत्तम नीति।

सुनरि(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी] सुंदर स्त्री।

सुनवाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० √सुन + वाई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना। ३ स्वीकृति। मंजूरी।

सुनवैया—वि० [हिं० √सुन + वैया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। २ सुनानेवाला।

सुनसान—वि० [सं० शून्य + स्थान] १. जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। २ उजाड़। वीरान।

सज्ञा पुं० सन्नाटा।

सुनहरा—वि० दे० "सुनहला"।

सुनहला—वि० [हिं० सोना + हला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] १ सोने के रंग का। स्वर्णिम। २ सोने का।

सुनाई—सज्ञा स्त्री० दे० "सुनवाई"।

सुनाना—क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रे० रूप] १ दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २ खरी खोटी कहना।

सुनाम—सज्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्ति।

सुनार—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।

सुनारी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुनार + ई (प्रत्य०)] १ सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।

सुनावनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० √सुन + आवनी (प्रत्य०)] १. कहीं विदेश से किसी सबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २ वह स्नान आदि कृत्य जो ऐसा समाचार आने पर होता है।

सुनाहक(पु)—क्रि० वि० दे० "नाहक"।

सुनीति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम नीति। २ राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।

सुनैया—वि० [हिं० √सुन + ऐया (प्रत्य०)] सुननेवाला।

सुनोर्चा—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न—वि० [सं० शून्य] निर्जीव। स्पंदनहीन। निःस्तब्ध। निश्चेष्ट।

सज्ञा पुं० शून्य। सिफर।

सुन्नत—सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।

सुन्ना—सज्ञा पुं० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर।

सुन्नी—सज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक भेद जो मोहम्मद साहब के बाद हुए चारों खलीफाओं को मानता है और हजरत अली को पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी नहीं मानता। चारयारी।

सुपक—वि० [सं० सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ। सुपक्व। उ०—गोपाल राइ दधि माँगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समगल मोटी।—सूर०।

सुपक्व—वि० [सं०] १. अच्छी तरह पका हुआ। २ आँच पर अच्छी तरह पकाया हुआ।

सुपच—संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] चांडाल। डोम।

सुपत—वि० [सं० सु+हिं० पत = प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठायुक्त।

सुपत्थ—संज्ञा पुं० दे० "सुपथ"।

सुपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। सदाचरण। २ एक वृत्त जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।

वि० [सं० सु+पथ] समतल। हमवार।

सुपन, सुपना—संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।

सुपनाना(पु)—क्रि० स० [हिं० सुपना से ना० धा०] स्वप्न दिखाना। उ०—विह्वल तन मन चकित भई सुनि साप्रतच्छ सुपनाये। गदगद कंठ सूर कोशलपुर सोर सुनत दुख पाये।—सूर०।

सुपरस(पु)—संज्ञा दे० "स्पर्श"।

सुपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड़। २. पक्षी। चिड़िया। ३. किरण। ४. विष्णु। ५ घोड़ा। अश्व।

सुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरुड़ की माता। सुपर्णा। २. कमलिनी। पद्मिनी।

सुपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी कार्य के लिये योग्य या उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।

सुपारी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुप्रिय] नारियल की जाति का एक पेड़। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं। पूग। गुवाक।

मुहा०—सुपारी लगना = खाते समय सुपारी का गले या उसके नीचे अटकना जो कष्टप्रद होता है।

सुपार्श्व—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के २४ तीर्थंकारों में से सातवें तीर्थंकर।

सुपास—संज्ञा पुं० [देश०] १ सुख। आराम। उ०—छाया जाकी सघन ...री। बैठा सिमिटि सुपास विचारी।—विश्रामसागर। २ सहूलियत। सुविधा।

सुपासी—वि० [हिं० सुपास] सुख देनेवाला।

सुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा और योग्य पुत्र।

सुपुर्द—संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।

सुपूत—संज्ञा पुं० सं० "सपूत"।

सुपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत+ई (प्रत्य०)] सुपूत होने का भाव। सुपूतपन।

सुपेती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सफेदी"।

सुपेद†—वि० दे० "सफेद"।

सुपेदी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० सफेदी] १ सफेदी। उज्ज्वलता। २ ओढ़ने की रजाई। ३ बिछाने की तोशक। ४ बिछौना। बिस्तर।

सुपेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूप] छोटा सूप।

सुप्त—वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २ ठिठुरा हुआ। ३ बंद। मुँदा हुआ।

सुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निद्रा। नींद। २ निश्वास। ऊँघाई।

सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रतिष्ठ—वि० [सं०] १. उत्तम प्रतिष्ठा-वाला। २ बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। २. प्रसिद्धि। शोहरत।

सुप्रतिष्ठित—वि० [सं०] उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। विशेष माननीय।

सुप्रसिद्ध—वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

सुप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चौपाई जिसमें अंतिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।

सुफल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुफला] १ सुंदर फल। २ अच्छा परिणाम।

वि० १ सुंदर फलवाला (अस्त्र)। २ सफल। कृतकार्य। कृतार्थ। कामयाब।

सुबल—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव जी। २. गंधार का एक राजा जो दुर्योधन का नाना और शकुनि का पिता था।

वि० अत्यंत बलवान्। बहुत मजबूत।

सुबह—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रात:काल। सवेरा।

सुबहान—संज्ञा पुं० [अ०] पवित्र। शुद्ध।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य व्यक्त करने के लिये होता है।

सुबास—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+वास] अच्छी महक। सुगंध।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

सुबासना—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+वास] सुगंध। खुशबू।

क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।

सुबासिक—वि० [सं० सु+वास] सुगंधित।

सुबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। २. सेना। फौज।

वि० दृढ़ या सुंदर बाँहोंवाला।

सुबिस्ता, सुबीता—संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।

सुबुक—वि० [फा०] १ हलका। भारी का उलटा। २ सुंदर। खूबसूरती।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि—वि० [सं०] बुद्धिमान्।

संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक्ल।

सुबू—संज्ञा पुं० दे० "सुबह"। उ०—जो निसि दिवस न हरि भजि पैये। तदपि न साँझ सुबू बिसरैये।—विश्रामसागर।

संज्ञा पुं० दे० "सबू"।

सुबूत—संज्ञा पुं० दे० "सबूत"।

संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसमें कोई बात साबित हो। प्रमाण।

सुबोध—वि० [सं०] १ अच्छी बुद्धिवाला। २ जो कोई बात सहज में समझ सके। ३ जो आसानी से समझ में आ जाय। सरल।

सुब्रह्मण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. विष्णु। ३. दक्षिण का एक प्राचीन प्रांत।

सुभ(पु)—वि० दे० "शुभ"।

सुभग—वि० [सं०] [भाव० संज्ञा सुभगता] १ सुंदर। मनोहर। २. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। ३ प्रिय। प्रियतम। ४. सुखद।

सुभगा—वि० स्त्री० [सं०] १ सुंदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २ सौभाग्यवती (स्त्री)। सुहागिन।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २ पाँच वर्ष की कुमारी।

सुभग्ग—वि० दे० "सुभग"।

सुभट—संज्ञा पुं० [सं०] भारी योद्धा। उ०—रुक्म और कलिंग को राउ मारयो, प्रथम बहुरि तिनके बहुत सुभट सारे। —सूर०।

सुभटवंत—वि० [सं० सुभट] अच्छा योद्धा। उ०—लख्यो बलराम यह सुभटवत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारयो।—सूर०।

सुभडौल—वि० [हिं० सुभ+डौल] सुडौल। सुंदर। उ०—तासों यह अमल अमोल सुभडौल गोल लालनैनी कोमल कपोल तेरो कीन्हो है।—शृंगार०।

सुभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ सनत्कुमार। ३ श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४. सौभाग्य। ५ कल्याण। मंगल।

वि० १ भाग्यवान्। २ सज्जन।

सुभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी। २ दुर्गा।

सुभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, रगण और अंत में लघु गुरु हो। उ०—सुन मम बतियाँ सुभद्रिका। भज हरि वलि औ सुभद्रिका।

सुभरⓅ—वि० दे० "शुभ्र"।

सुभा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभा] १ सुधा। २ शोभा। ३ हरीतकी। हड़।

सुभाइ, सुभाउⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावत। उ०—हास ही में 'दास' उजराई को प्रकास होत, अधर ललाई धरे रहत सुभाइ है। —शृंगार०।

सुभागⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सौभाग्य"।

सुभागी—वि० [सं० सुभाग] भाग्यवान्।

सुभागीन—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान् (व्यक्ति)। सुभग।

सुभान—अव्य० दे० "सुबहान"।

सुभानाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना।

सुभायⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

सुभायकⓅ—वि० दे० "स्वाभाविक"। उ०—अये गवरि ईस्वरि सब लायक। महामाइ वरदाइ सुभायक। —नंददास०।

सुभावⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"। उ०—कहा सुभाव परयो सखि तेरो यह विनवत हौं तोहिं। —सूर०।

सुभाषित—वि० [सं०] सुंदर ढंग से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ।

सुभाषी—वि० [सं० सुभाषिन्] [स्त्री० सुभाषिणी] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्टभाषी।

सुभिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें अन्न खूब हो। सुकाल।

सुभी—वि० स्त्री० [सं० शुभ] शुभकारक।

सुभीता—संज्ञा पुं० [सं० सुविध] १ सुगमता। सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग।

सुभौटीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] शोभा।

सुभ्र—वि० दे० "शुभ्र"।

सुमंगली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमंगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

सुमंत—संज्ञा पुं० दे० "सुमंत्र"।

सुमंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] राजा दशरथ का मंत्री और साथी।

सुमंथन—संज्ञा पुं० दे० "मंदर" (पर्वत)।

सुमंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] २७ मात्राओं का एक वृत्त जिसमें अंत में गुरु लघु होते हैं। उ०—झूठो है धन धाम बावरे, राम सिया भजु राम। साँचो प्रभु को नाम बावरे, राम सिया भजु राम॥ इसे सरसी, सुमंदर और कबीर भी कहते हैं।

सुम—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।

सुमत—संज्ञा स्त्री० दे० "सुमति"।

सुमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सगर की पत्नी। २ सुंदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ३ मेलजोल। ४ भक्ति। प्रार्थना।

वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

सुमन—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १ पुष्प। फूल। देवता। ३ पंडित। विद्वान्।

वि० १ सहृदय। दयालु। २ सुंदर।

सुमनचाप—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

सुमनस—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १ देवता। २ विद्वान्। पंडित। ३ पुष्प। फूल। ४ फूलों की माला।

वि० १ प्रसन्नचित्त। २ महात्मा।

सुमनित—वि० [सं० सुमणि+त (प्रत्य०)] उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।

सुमरनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

सुमरनाⓅ†—क्रि० स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। ध्यान करना। २. जपना।

सुमरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरना] नाम जपने की सत्ताईस दानों की छोटी माला।

सुमानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त। उ०—ग्वाल की गँवारिका। धन्य ते समानिका।

सुमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

सुमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं। वर्ण होते हैं।

सुमाली—संज्ञा पुं० [सं० सुमालिन्] एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण हुए थे।

सुमित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।

सुमित्रानंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लक्ष्मण। २ शत्रुघ्न।

सुमिरणⓅ—संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

सुमिरनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] स्मरण। उ०—आगे के सुकवि रीझिहैं तो कविताई, न तो राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।—काव्यनिर्णय।

सुमिरनाⓅ†—क्रि० स० दे० "सुमरना"।

सुमिरनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुमरनी"।

सुमिल—वि० [सं० सु+हिं० √मिल] सरलता से मिलने योग्य। सुलभ।

सुमिष्ट—वि० [सं०] बहुत मीठा।

सुमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ गणेश। ३ पंडित। आचार्य।

वि० १ सुंदर मुखवाला। २ सुंदर। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४ कृपालु।

सुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर मुखवाली स्त्री। २ दर्पण। आइना। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, दो जगण, एक लघु और अंत्य गुरु कुल ११ अक्षर होते हैं। उ०—निज जल गोपि बचाय गली। इत उत देखत जात चली।

सुमृत, सुमृतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"। उ०—जहँ इकाग्रचित करि धरै मनभावन को ध्यान। सुमृति दसा तेहि कहत हैं लखि लखि बुद्धिनिधान।—शृंगार०।

सुमेध—वि० दे० "सुमेधा"।
सुमेधा—वि० [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।
सुमेर—संज्ञा पुं० [सं० सुमेरु] सुमेरु पर्वत।
सुमेरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २ शिव जी। ३ जपमाला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। ४ उत्तर ध्रुव। ५ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं। उ०—सदा जमफंद सों, रहिहौ अभीता। भजी जो मीत हिय सों, राम सीता।
वि० १ बहुत ऊँचा। २. सुंदर।
सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।
सुयश—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। सुनाम।
वि० [सं० सुयशस्] यशस्वी। कीर्तिमान्।
सुयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर योग। सयोग। सुअवसर। अच्छा मौका।
सुयोग्य—वि० [सं०] बहुत योग्य। लायक।
सुयोधन—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।
सुरंग—वि० [सं०] १ सुंदर रंग का। २ सुंदर। सुडौल। उ०—सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग।—सूर०। ३ रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ।
संज्ञा पुं० १ शिंगरफ। २ नारंगी। ३ रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० सुरंगा] १ जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २ किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे शत्रुओं के जहाज नष्ट किए जाते हैं। ४ सेंध।
सुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ सूर्य। ३ पंडित। विद्वान्। ४ मुनि। ऋषि।
संज्ञा पुं० [सं० स्वर] स्वर। ध्वनि।
मुहा०—सुर में सुर मिलाना = हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना।
सुरकंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर+कान्त] [illegible]।
सुरक—संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है।
सुरकना—क्रि० स० [अनु०] १ हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना। २. सुड़सुड़ शब्द के साथ पान करना। सुड़कना।
सुरकरी—संज्ञा पुं० [सं० सुरकरिन्] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरगज।
सुरकी—संज्ञा स्त्री० [?] बाण के फल के आकार का तिलक। उ०—ईंगुर की सुरकी ढुरकी नथ माल में लाल की बेंदी छबीली।—काव्यनिर्णय।
सुरकुदाव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर+सं० कु+हिं० दाँव = धोखा] धोखा देने के लिये स्वर बदलकर बोलना।
सुरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र।
सुरक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करना। रखवाली। हिफाजत।
सुरक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी प्रकार रक्षा। रखवाली। हिफाजत।
सुरक्षित—वि० [सं०] १. जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित। २ किसी विशेष प्रयोजन के लिये निर्धारित।
सुरख, सुरखा—वि० दे० "सुर्ख"।
सुरखाब—संज्ञा पुं० [फा०] चकवा।
मुहा०—सुरखाब का पर लगना = विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना।
सुरखी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुर्ख] १ ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २ दे० "सुर्खी"।
सुरखुरू—वि० दे० "सुर्खरू"।
सुरग(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।
सुरगज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का हाथी। ऐरावत।
सुरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।
सुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।
सुरगैया—संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।
सुरचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।
सुरज(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।
सुरजन—संज्ञा पुं० [सं०] देवसमूह।
वि० १ सज्जन। सुजन। २ चतुर।
सुरझना—क्रि० अ० दे० "सुलझना"।
सुरझाना—क्रि० स० दे० "सुलझाना"। उ०—क्यों सुरझाऊँ री नँदलाल सों अरुझि रह्यो मन मेरो।—सूर०।
सुरत—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन। उ०—सुरत ही सब रैन बीती कोक पूरण रंग। जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग।—सूर०।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध।
मुहा०—सुरत बिसारना = भूल जाना।
सुरतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
सुरतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।
सुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुर या देवता का भाव या कार्य। देवत्व। २ देवसमूह।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरत] १ चिंता। ध्यान। २ चेत। सुध।
वि० सयाना। होशियार। चतुर।
सुरतान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।
सुरति—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+रति] १ भोगविलास। कामकेलि। संभोग। २ अनुराग। स्नेह। उ०—छबिन्ह बरनि जिन सुरति बढाई नई, लगनि उपाई घात घातनि मिलाई है।—शृंगार०।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण। सुधि।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुरत"।
सुरतिगोपना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके अपनी सखियों आदि से छिपाती हो।
सुरतिवंत—वि० [सं० सुरत+वत] कामातुर।
सुरतिविचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो।
सुरती—संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)] तंबाकू। खैनी।
सुरत्राण—संज्ञा पुं० दे० "सुरत्राता"।
सुरत्राता—संज्ञा पुं० [सं० सुर+त्रातृ] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ इंद्र।
सुरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुर या देवता होने का भाव। देवत्व। देवतापन।
सुरथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चंद्रवंशी राजा। पुराणों के अनुसार, इन्होंने पहले पहल दुर्गा की आराधना की थी। २ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ३ एक पर्वत।

सुरदार—वि० [हिं० सुर+फा० दार] जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर। सुरीला।

सुरदीर्घिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।

सुरद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरधनु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरधाम—संज्ञा पुं० [सं० सुरधामन्] स्वर्ग।

सुरधुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुरनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा। २. आकाश गंगा।

सुरनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देववधू।

सुरनाह—संज्ञा पुं० [सं० सुरनाथ] इंद्र।

सुरनिलय—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

सुरपⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरपति] इंद्र।

सुरपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ विष्णु।

सुरपथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

सुरपादप—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरपाल—संज्ञा पुं० [सं० सुर+पालक] इंद्र।

सुरपुर—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरबहार—संज्ञा पुं० [हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक बाजा।

सुरबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना। उ०—सुरबालाओं की सखी रही उनकी हृत्तंत्री की लय थी, रति, उनके मन को सुलझाती वह राग भरी थी, मधुमय थी।—कामायनी।

सुरबृच्छⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सुरवृक्ष"।

सुरबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+वल्ली] कल्पलता।

सुरभंग—संज्ञा पुं० [सं० स्वरभंग] प्रेम, भय आदि में होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावों के अंतर्गत है।

सुरभवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंदिर। २ सुरपुरी। अमरावती।

सुरभान—संज्ञा पुं० [सं० सुर+भानु] १. इंद्र। उ०—राधे सों रस बरनि न जाइ। जा रस को रसभान शीश दियो, सो तैं पियो अकुलाइ।—सूर०। २ सूर्य।

सुरभि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुगंध। खुशबू। २ गौ। ३ गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गोवंश की आदि जननी। ४ पृथ्वी। ५ सुरा। शराब। ६ तुलसी।

संज्ञा पुं० १ वसंतकाल। २. चैत्रमास। ३ सोना। स्वर्ण।

वि० १ सुगंधित। सुवासित। २ मनोरम। सुंदर। ३ उत्तम। श्रेष्ठ।

सुरभित—वि० [सं०] सुगंधित। सौरभित।

सुरभिषक—संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनीकुमार।

सुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुगंधित। खुशबू। २ गाय। ३ चंदन।

सुरभीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक।

सुरभूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ विष्णु।

सुरभोग—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।

सुरभौनⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सुरभवन"।

सुरमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का मंडल। २ एक प्रकार का बाजा।

सुरमई—वि० [फा०] सुरमे के रंग का हलका नीला।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका नीला रंग। २ इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा।

सुरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।

सुरमा—संज्ञा पुं० [फा० सुर्मः] नीले रंग का एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में लगाया जाता है।

सुरमादानी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुरम + दानी (प्रत्य०)] वह शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं।

सुरमैⓅ—वि० दे० "सुरमई"।

सुरमौर—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० मौर] विष्णु।

सुरम्य—वि० [सं०] अत्यंत मनोरम। सुंदर।

सुरराईⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुरराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २ विष्णु।

सुररायⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुररिपु—संज्ञा पुं० [सं०] असुर। राक्षस।

सुररूख—संज्ञा पुं० दे० "सुरतरु"।

सुरली—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० रली] सुंदर क्रीड़ा।

सुरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरवा—संज्ञा पुं० दे० "सुवा"।

सुरवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु।

सुरवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार।

सुरश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३ शिव। ४. इंद्र।

सुरस—वि० [सं०] १ सरस। रसीला। २ स्वादिष्ट। मधुर। ३ सुंदर। ४. प्रेम।

सुरसतीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सुरसदन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरसर—संज्ञा पुं० [सं०] मानसरोवर।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।

सुरसरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी।

सुरसरि, सुरसरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित] १ गंगा। उ०—सुर सरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै।—सूर०। २ गोदावरी।

सुरसरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।

सुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नागमाता जिसने हनुमान जी को सीता की खोज में लंका जाते समय समुद्र पार करने में रोका था। २ एक अप्सरा। ३ तुलसी। ४ ब्राह्मी। ५ दुर्गा। ६ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, नगण और अंत्य गुरु रहता है। उ०—स्वामी काजैं सिधावौं, जलनिधि तरिहौं, एक छन में। सीता को खोज पाऊँ, तब लगि मुहि ना, धीर मन में।

सुरसाईं—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० साईं] १ इंद्र। २. शिव।

सुरसारीⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरी"।

सुरसालुⓅ—वि० [सं० सुर+शल्य] देवताओं को सतानेवाला।

सुरसाहब—संज्ञा पुं० [सं० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी। इंद्र।

सुरसिंधु—संज्ञा पुं० [सं०] गंगा।

सुरसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्सरा। २ दुर्गा। ३ देवकन्या। ४. एक योगिनी।

सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुरसुराना—क्रि० अ० [अनु०] [भाव० सुरसुराहट, सुरसुरी] १ कीड़ों आदि का रेंगना। २ खुजली होना।

सुरसैयाँⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० सैयाँ] इंद्र।

सुरस्वामी—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सुरहरा—वि० [अनु०] जिसमें सुर सुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त।

सुरही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १. एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होने वाला जूआ।

सुरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।

सुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

सुराईⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूर+आई (प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी। उ०—सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्हपर न सुराई॥

सुराख—संज्ञा पुं० [फा० सूराख] छेद।
संज्ञा पुं० दे० "सुराग"।

सुराग—संज्ञा पुं० [सं० सु+राग] १ अत्यंत प्रेम। अत्यंत अनुराग। २ सुंदर राग।
संज्ञा पुं० [अ० सुराग] टोह। पता।

सुरागाय—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+गाय] एक प्रकार की दोगली गाय जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।

सुराज—संज्ञा पुं० १ दे० "सुराज्य"। २ दे० "स्वराज्य"।

सुराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो।

सुराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सुरानीक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की सेना।

सुरापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरापान—संज्ञा पुं० [सं०] शराब पीना।

सुरापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

सुरापी—वि० [सं० सुरापिन्] शराबी। मद्यप। उ०—दास न पापी सुरापी तपी अरु जापी हितू अहितू बिलगाई। गंग बिहारी तरंगनि सों सब पावैं पुरंदर की प्रभुताई। —काव्यनिर्णय।

सुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस। असुर।

सुरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ सुमेरु। ३ देवमंदिर। ४ शराबखाना।

सुरावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर+आवट (प्रत्य०)] १. स्वरों का विन्यास या उतार चढ़ाव। २ सुरीलापन।

सुरावती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरावति] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति। उ०—विनता सुत खगनाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे। —विश्रामसागर।

सुराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश। किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है।

सुरासुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुर और असुर। देवता और दानव।

सुरासुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कश्यप।

सुराही—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र। २ बाजू, जोशन आदि में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा।

सुराहीदार—वि० [अ० सुराही+फा० दार] सुराही की तरह का गोल और लबोतरा।

सुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरीला—वि० [हिं० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली] मीठे सुरवाला। सुस्वर। सुकंठ।

सुरुख—वि० [सं० सु+फा० रुख] अनुकूल। सदय। प्रसन्न।
वि० दे० "सुर्ख"।

सुरुखुरू—वि० [फा० सुर्खरू] जिसे किसी काम में यश मिला हो। यशस्वी।

सुरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा उत्तानपाद की एक पत्नी जो उत्तम की माता और ध्रुव की विमाता थी। २ उत्तम रुचि।
वि० जिसकी रुचि उत्तम हो।

सुरुजⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

सुरुजमुखी†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यमुखी"।

सुरुवा†—संज्ञा पुं० दे० "शोरवा"।

सुरूप—वि० [सं०] [स्त्री० सुरूपा] सुंदर रूपवाला। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति, यथा कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और साब।
Ⓟसंज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।

सुरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

सुरूपा—वि० स्त्री० [सं०] सुंदरी।

सुरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ राजा।

सुरेंद्रचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरेंद्रवज्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्रवज्रा। उ०—साँची प्रभू काटहिं जन्म बेरी। है इंद्रवज्रा यह सीख मेरी।

सुरेथ—संज्ञा पुं० [?] सूँस। शिशुमार। उ०—रथ सुरेथ भुज मीन समाना। शिर कच्छप गजग्र ह प्रमाना।—विश्रामसागर।

सुरेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. शिव। ३ विष्णु। ४. कृष्ण। ५. लोकपाल।

सुरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ ब्रह्मा। ३ शिव। ४ रुद्र।

सुरेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३ स्वर्ग गंगा।

सुरैत, सुरैतिन—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] उपपत्नी। रखनी। रखेली।

सुरोचि—वि० [सं० सुरुचि] सुंदर।

सुर्ख—वि० [फा०] रक्त वर्ण का। लाल।
संज्ञा पुं० गहरा लाल।

सुर्खरू—वि० [फा०] [भाव० सुर्खरूई] १ तेजस्वी। कांतिवान्। २. प्रतिष्ठित। ३ सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुहँ की लाली रह गई हो।

सुर्खी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लाली। अरुणता। २ लेख आदि का शीर्षक। ३ रक्त। लहू। खून। ४. दे० "सुरखी"।

सुर्ती—वि० [हिं० सुरति=स्मृति] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्।

सुलंक—संज्ञा पुं० दे० "सोलंक"।

सुलकी—संज्ञा पुं० दे० "सोलंकी"।

सुलक्षण—वि० [सं०] १ अच्छे लक्षणवाला। २ भाग्यवान्। किस्मतवर।
संज्ञा पुं० १ शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २ १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है। उ०—सब तजि धार हरि पद प्रीत। सीख हमारि मानौ मीत।

सुलक्षणा—वि० स्त्री० [सं०] अच्छे लक्षणोंवाली।

सुलक्षणी—वि० स्त्री० दे० "सुलक्षणा"।

सुलग—अव्य० [सं० सु+हिं०√लग] पास। निकट।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुलगन"।

सुलगन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया या भाव।

सुलगना—क्रि० अ० [सं० सु+हिं० लगना] १ (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २ बहुत संताप होना।

सुलगाना—क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १. जलाना। प्रज्वलित करना। २ दुखी करना।
सुलच्छन—वि० दे० "सुलक्षण"।
सुलच्छनी—वि० दे० "सुलक्षणा"।
सुलछ—वि० [स० सुलक्ष] सुंदर।
सुलझन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।
सुलझना—क्रि० अ० [हिं० सुलझना] १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २ जटिलताओं का दूर होना।
सुलझाना—क्रि० स० [हिं० सुलझना का स० रूप] उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।
सुलझाव—संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।
सुलटा—वि० [हिं० उलटा] [स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।
सुलतान—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।
सुलताना चंपा—संज्ञा पुं० [फा० सुलतान + हिं० चंपा] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।
सुलतानी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुलतान] १ बादशाही। बादशाहत। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
वि० लाल रंग का।
सुलप(पु)—वि० १ दे० "स्वल्प"। उ०—नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति। सूरश्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति। —सूर०। २ मंद। उ०—चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन। —सूर०।
संज्ञा पुं० [स० सु + आलाप] सुंदर। आलाप।
सुलफ—वि० [स० सु + हिं० लपना] १. लचीला। लचनेवाला। २ नाजुक। कोमल।
सुलफा—संज्ञा पुं० [फा० सुल्फ] १ वह तंबाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २ चरस।
सुलफेबाज—वि० [हिं० सुल्फा + फा० बाज] गाँजा या चरस पीनेवाला।
सुलभ—वि० [स०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १ सहज में मिलनेवाला। २ सहज। सुगम। आसान। ३ साधारण। मामूली।
सुलह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो। समझौता। संधि।
सुलहनामा—संज्ञा पुं० [अ० सुलह + फा० नाम] १ वह कागज जिसपर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। २ वह कागज जिसपर लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं।
सुलागना(पु)†—क्रि० अ० दे० "सुलगना"। उ०—अगिनि सुलागत मोरयो न अग मन, विकट बनावत वेहु। बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु।—सूर०।
सुलाना—क्रि० स० [हिं० सोना का प्रे० रूप] १ सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। २ लिटाना। डाल देना।
सुलाह(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सुलह"।
सुलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + लिपि] १ उत्तम लिपि। २ स्पष्ट लिपि।
सुलूक—संज्ञा पुं० दे० "सलूक"।
सुलेखक—संज्ञा पुं० [स०] अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। लेखक।
सुलेमान—संज्ञा पुं० [फा०] १ यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगंबर माना जाता है। २ एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है। ३. अपनी भारत और चीन की यात्रा के लिये प्रसिद्ध फारस का मुसलमान व्यापारी जो नवीं शताब्दी में यहाँ आया था।
सुलेमानी—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। २ एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।
वि० सुलेमान का। सुलेमान संबंधी।
सुलोचन—वि० [सं०] [स्त्री० सुलोचना] सुंदर आँखोंवाला। सुनेत्र। सुनयन।
सुलोचना—संज्ञा स्त्री० [स०] १. एक अप्सरा। २ राजा माधव की पत्नी। ३ मेघनाद की पत्नी।
सुलोचनी—वि० स्त्री० [स० सुलोचना] सुंदर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुंदर हों।
सुल्तान—संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।
सुव—संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।
सुवक्ता—वि० [स० सु + वक्तृ] उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।
सुवचन—वि० [स०] [स्त्री० सुवचनी] १ सुंदर बोलनेवाला। २ मिष्टभाषी।
सुवटा—संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।
सुवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. अग्नि। ३ चंद्रमा।
संज्ञा पुं० १ दे० "सुअन"। उ०—सुरसरि सुवन रणभूमि आये। —सूर०। २ दे० "सुमन"।
सुवनारा—संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।
सुवर्ण—संज्ञा पुं० [स०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। संपत्ति। ३ एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४. सोलह माशे का एक मान। ५ धतूरा। ६. एक वृत्त का नाम।
वि० १ सुंदर वर्ण या रंग का। उज्वल। २. सोने के रंग का। पीला।
सुवर्णकरणी—संज्ञा स्त्री० [स० सुवर्ण + करण] १ शरीर के वर्ण को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की जड़ी। २ घाव भरकर शरीर को स्वस्थ बनानेवाली ओषधि।
सुवर्णरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो बिहार के राँची जिले से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
सुवस(पु)—वि० [सं० स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। उ०—वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुवस कियो क्षण मायँ। —सूर०।
सुवाँग†—संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।
सुवा—संज्ञा पुं० दे० "सुआ"। उ०—सुवा चलि ता बन को रस पीजै। जा बन राम नाम अमृतरस श्रवण पात्र भरि लीजै। —सूर०।
सुवाना(पु)†—क्रि० स० दे० "सुलाना"।
सुवार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया।
संज्ञा पुं० [सं० सु + वार] अच्छा दिन।
सुवाल(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।
सुवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगंध। अच्छी महक। खुशबू। २ सुंदर घर। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, ल (।।।,।ऽ।,।) होता है। उ०—न जु लख रामहिं। तजि सब कामहिं॥
सुवासिका—वि० स्त्री० [स० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।
सुवासित—वि० [सं०] खुशबूदार।
सुवासिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरंटी। २ सधवा स्त्री।

सुविचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सुविचारी] १ सूक्ष्म या उत्तम विचार। २. अच्छा फैसला। सुंदर न्याय।

सुविज्ञ—वि० [सं०] बहुत चतुर।

सुविधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुविध] दे० "सुभीता"।

सुवृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ १६ अक्षरों का एक वृत्त।

सुवेल—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिकूट पर्वत जो रामायण के अनुसार लंका में था।

सुवेश—वि० [सं०] १ वस्त्रादि से सुसज्जित सुंदर वेशयुक्त। २ सुंदर। रूपवान्।

सुवेश—वि० दे० "सुवेश"।

सुवेषित—वि० दे० "सुवेश"।

सुवेसल—वि० [सं०] सुवेश। सुंदर। मनोहर।

सुव्रत—वि० [सं०] दृढ़ता से व्रत पालन करनेवाला।

सुशिक्षित—वि० [सं०] उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ।

सुशील—वि० [सं०] [स्त्री० सुशीला] [भाव० सुशीलता] १ उत्तम शील या स्वभाववाला। २ सच्चरित्र। साधु। ३. विनीत। नम्र।

सुश्रृंग—संज्ञा पुं० [सं०] शृंगी ऋषि।

सुशोभन—वि० [सं०] १ अत्यंत शोभा-युक्त। दिव्य। २ बहुत सुंदर।

सुशोभित—वि० [सं०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।

सुश्राव्य—वि० [सं०] जो सुनने में अच्छा लगे।

सुश्री—वि० [सं०] १ बहुत सुंदर। शोभायुक्त। २ बहुत धनी।

वि० स्त्री० आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है।

सुश्रुत—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका छः खंडों में रचा हुआ "सुश्रुत संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है।

सुश्रूखाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "शुश्रूषा"।

सुश्रोनि—वि० [सं० सुश्रोणि] सुंदर कमरवाली। उ०—सुंदरि सुभ्र सुवेषि सुकेसि सुश्रोनि सुठौनि सुदति सुसैनी। —छंदार्णव।

सुषⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सुख"।

सुषमनाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"। उ०—इंगला पिंगला सुषमना नारी। शून्य सहज में बसहिं मुरारी। —सूर०।

सुषमनि—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

सुषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। उ०—उस कमनीयता कला की सुषमा थी प्यारी प्यारी। —आँसू। २. दस अक्षरों का एक वृत्त।

सुषानाⓅ—क्रि० अ० दे० "सुखाना"।

सुषाराⓅ—वि० दे० "सुखारा"।

सुषिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २ बेंत। ३ अग्नि। आग। ४ संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो।

वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। पोला।

सुषुप्त—वि० [सं०] गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

सुषुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घोर निद्रा। गहरी नींद। २ अज्ञान (वेदांत)। ३ पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है परंतु उसे उसका ज्ञान नहीं होता।

सुषुम्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है। २ वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में है।

सुषेण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ३ एक वानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।

सुषोपतिⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

सुष्ट—वि० [सं० दुष्ट का अनु०] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा।

सुष्ठु—क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह।

वि० सुंदर। उत्तम।

सुष्ठुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौभाग्य। २ सुंदरता।

सुष्मनाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

सुसग—संज्ञा पुं० दे० "सुसंगति"।

सुसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० संगत] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत। सत्संग।

सुसा—संज्ञा स्त्री० दे० "सुसा"।

सुसकना—क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

सुसज्जित—वि० [सं०] [स्त्री० सुसज्जिता] भली भाँति सजाया हुआ। शोभायमान।

सुसताना—क्रि० अ० [सं० सुस्थ] थकावट दूर करना। विश्राम करना।

सुसमⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] सुषमा। सौंदर्य। उ०—नरनकमल दल नयन सिर ललित पाँखें सोभित। लहि भोगी भो बीर सुसम दुति तन मन लोभित। —काव्यनिर्णय।

सुसमय—संज्ञा पुं० [सं०] वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष।

सुसमा—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"।

सुसमुझिⓅ—वि० दे० "समझदार"।

सुसर, सुसरा—संज्ञा पुं० दे० "ससुर"।

सुसराल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर। ससुराल।

सुसरित—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+सरित] गंगा।

सुसरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "ससुरी"। २ दे० "सुरसुरी"।

सुसाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सुसाध्य—वि० [सं०] [संज्ञा सुसाधन] जो सहज में किया जा सके। सुखसाध्य।

सुसाना—क्रि० अ० [हिं० साँस] सिसकना।

सुसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा भोगता है, वहाँ यह अलंकार माना जाता है।

सुसीतलाईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सुशी-तलता"।

सुसुकना—क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

सुसुपि, सुसुप्ति—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

सुसेन—संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।

सुसैनीⓅ—वि० स्त्री० [सं० सु+हिं० सैन+ई (प्रत्य०)] अच्छे संकेतोंवाली। उ०—सुंदरि सुभ्र सुवेषि सुकेसि सुश्रोनि सुठौनि सुदति सुसैनी। —छंदार्णव।

सुस्त—वि० [फा०] १ दुर्बल। कमजोर। २ चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। ३ जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। ४ जिसमें तत्परता न हो। आलसी। ५ धीमी चालवाला।

सुस्तना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री।

सुस्ताई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुस्ती"।

सुस्ताना—क्रि० अ० दे० "सुसताना"।

सुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० सुस्त] १ सुस्त होने का भाव। २ आलस्य। शिथिलता।

सुस्तैन—संज्ञा पुं० दे० "स्वस्त्ययन"।

सुस्थ—वि० [सं०] [भाव० सुस्थता, सुस्थत्व] १. भला चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. प्रसन्न। खुश। ३ भली भाँति स्थित।

सुस्थिर—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्थिरा] १ अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल। २ कार्य की अधिकता से मुक्त। निश्चिंत।

सुस्वर—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] जिसका सुर मधुर हो। सुकंठ। सुरीला।

सुस्वादु—वि० [सं०] अत्यंत स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट।

सुहंग(पु)—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता।

सुहंगम(पु)—वि० [सं० सुगम] सहज।

सुहटा(पु)—वि० [हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर।

सुहनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सोहनी"।

सुहराना†—क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सुहल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सुलेह"।

सुहव—संज्ञा पुं० दे० "सूहा" (राग)।

सुहवी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सूहा"। (राग)। उ०—राग रागी सँचि मिलाई गावैं सुघर मलार। सुहवी सारंग टोडी भैरवी केदार।—सूर०।

सुहाग—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १ स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य। २ वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३. मांगलिक गीत जो वर पक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। ४ पति। ५ सिंदूर।

सुहागा—संज्ञा पुं० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।

सुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग+इन (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।

सुहागिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सुहागिल(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सुहाता—वि० [हिं० सहना] सहने योग्य। सह्य।

सुहाना—क्रि० अ० [सं० शोभन] १ शोभायमान होना। शोभा देना। २ अच्छा लगना। भला मालूम होना। उ०—भयो उदास सुहात न कछु ये छन सोवत छन जागे।—सूर०।

वि० दे० "सुहावना"।

सुहाया(पु)—वि० दे० "सुहावना"।

सुहारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+आहार] सादी पूरी। उ०—कान्ह कुँवर को कनछेदनो है हाथ सुहारी भेली गुर की।—सूर०।

सुहाल—संज्ञा पुं० [सं० सु+आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान।

सुहाव(पु)—वि० दे० "सुहावना"।

संज्ञा पुं० [सं० सु+हाव] सुंदर हाव।

सुहावता(पु)—वि० दे० "सुहावना"।

सुहावन(पु)—वि० दे० "सुहावना"।

सुहावना—वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] देखने में भला। सुंदर। प्रियदर्शन।

क्रि० अ० दे० "सुहाना"।

सुहावला(पु)—वि० दे० "सुहाना"।

सुहास—वि० [सं०] [स्त्री० सुहासा] सुंदर या मधुर मुसकानवाला।

सुहासी—वि० [सं० सुहासिन] [स्त्री० सुहासिनी] मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।

सुही—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] लाल। उ०—भागभरी भामिनी सोहाग भरी सारी सुही, माँग भरी मोती अनुराग भरी अँखियाँ।—शृंगार०।

सुहृद—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सुहृत्ता] १ अच्छे हृदयवाला। २ मित्र। सखा। दोस्त।

सुहृद्—संज्ञा पुं० दे० "सुहृत"।

सुहेल—संज्ञा पुं० [अ०] एक चमकीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।

सुहेलरा(पु)†—वि० दे० "सुहेला"।

सुहेला—वि० [सं० शुभ ?] १ सुहावना। सुंदर। २ सुखदायक। सुखद।

संज्ञा पुं० १ मंगल गीत। २. स्तुति।

सूँ(पु)†—अव्य० [सं० सह] करण और अपादान का चिह्न। सों। से।

सूँघना—क्रि० स० [सं० स+घ्राण] १ नाक द्वारा गंध का अनुभव करना। वास लेना।

मुहा०—सिर सूँघना = बड़ों का मंगल कामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना। (२) बहुत कम भोजन करना (व्यंग्य)। (३) (साँप का) काटना।

सूँघा—संज्ञा पुं० [हिं० सूँघना] १ वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २. भेदिया। जासूस।

सूँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डी] १. हाथी की लंबी नाक जो प्रायः जमीन तक लटकती है। शुंड। शुंडादंड। २ कीट पतंग आदि छोटे जानवरों का आगे निकला हुआ वह नुकीला अवयव जिससे वे आहार करते और काटते हैं।

सूँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुंडी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँस—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु। सूस। सूसमार।

सूँह(पु)†—अव्यय [सं० सम्मुख] सामने।

सूअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर] [स्त्री० सूअरी] १ एक स्तन्यपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। २ एक प्रकार की गाली।

सूआ†—संज्ञा पुं० [सं० शुक] सुग्गा। तोता। उ०—सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिंधुवीर रस मान्यो। जानि प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो।—सूर०।

संज्ञा पुं० [हिं० सूई] बड़ी सूई। सूजा।

सूई—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १. एक छोटा पतला कड़ा तार जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सिया जाता है। सूची। २. वह तार या काँटा जिससे कोई बात सूचित हो। ३ इंजेक्शन। ४. अनाज, कपास आदि का अँखुआ।

सूक†—संज्ञा पुं० दे० "शुक"।

संज्ञा पुं० दे० "शुक्र" (नक्षत्र)।

सूकना†—क्रि० अ० दे० "सूखना"।

सूकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर। शूकर।

सूकरक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा जिले में है। सोरों।

सूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा सूअर।

सूका†—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति ?] चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

सूक्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २ उत्तम कथन।

वि० भली भाँति कहा हुआ है।

सूक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि। सुभाषित।

सूक्षम—वि०, संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्म"।

सूक्ष्म—वि० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्मा] १. बहुत छोटा। २ बारीक या महीन।
संज्ञा पुं० १. परमाणु। २ परब्रह्म। ३. लिंग शरीर। ४. एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।

सूक्ष्मता—संज्ञा पुं० [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र—संज्ञा पुं० [सं० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] बारीक बात को सोचने समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।

सूक्ष्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बात भी समझ में आ जाय।
संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।

सूक्ष्म शरीर—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।

सूख(पु)†—वि० दे० "सूखा"।

सूखना—क्रि० अ० [सं० शुष्क] १ नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २ जल का न रहना या कम हो जाना। ३ उदास होना। तेज नष्ट होना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६ दुबला होना।

सूखा—वि० [सं० शुष्क] [स्त्री० सूखी] १ जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. जिसकी आर्द्रता निकल गई हो। ३ उदास। तेज रहित। ४ हृदयहीन। कठोर। ५. कोरा। ६ केवल। निरा।
मुहा०—सूखा जवाब देना=साफ इनकार करना।
संज्ञा पुं० १. पानी न बरसना। अना-वृष्टि। २ नदी का किनारा जहाँ पानी न हो। ३ ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। ४ सूखी हुई तंबाकू। ५ एक प्रकार की खाँसी। हब्बा डब्बा। ६. दे० "सुखंडी"।

सूघर(पु)—वि० दे० "सुघड़"।

सूचक—वि० [सं०] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक। उ०—प्रहर दिवस कितने बीते, कब इसको कौन बता सकता। इनके सूचक उपकरणों का चिह्न न कोई पा सकता। —कामायनी।
संज्ञा पुं० १. सूई। सूची। २ सीने-वाला। दरजी। ३ नाटककार। सूत्रधार। ४. कुत्ता।

सूचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। विज्ञप्ति। २ वह पत्र आदि जिसपर किसी को सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३ वेधना। छेदना।
(पु)क्रि० अ० [सं० सूचन] बतलाना।

सूचनापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

सूचा—संज्ञा स्त्री० दे० "सूचना"।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० सूचित] जो होश में हो। सावधान।

सूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूई। २. हाथी की सूँड़। हस्तिशुंड।

सूचिकाभरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राण-नाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

सूचित—वि० [सं०] जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित।

सूची—संज्ञा पुं० [सं० सूचिन्] १ चर। भेदिया। २ चुगुलखोर। ३ खल। दुष्ट।
संज्ञा स्त्री० १ कपड़ा सीने की सूई। २ दृष्टि। नजर। ३ सेना का एक प्रकार का व्यूह। ४ नामावली। तालिका। ५. दे० "सूचीपत्र"। ६ पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छंदों के भेदों में आदि अंत लघु या आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

सूचीकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम।

सूचीपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों अथवा उनके अंगों की नामावली हो। तालिका। फेहरिस्त। सूची।

सूच्छम(पु)—वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूच्छिम(पु)†—वि० दे० सूक्ष्म"।

सूच्य—वि० [सं०] सूचित करने योग्य।

सूच्यग्र—संज्ञा पुं० [सं० सूची+अग्र] सूई की नोक।
वि० अत्यल्प। बिंदु मात्र।

सूच्यार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता हो।

सूछम(पु)†—वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूज†—संज्ञा स्त्री० १ दे० "सूजन"। २. दे० "सूई"।

सूजन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजने की क्रिया या भाव। २. फुलाव। शोथ।

सूजना—क्रि० अ० [फा० सोजिश] रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

सूजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सूजा—संज्ञा पुं० [सं० सूची] बड़ी मोटी सूई। सूआ।

सूजाक—संज्ञा पुं० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग। औपसर्गिक प्रमेह।

सूजी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुचि] गेहूँ का दरदरा आटा जिसमे पकवान बनाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई।
संज्ञा पुं० [सं० सूची] दरजी। सूचिक।

सूझ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १ समझने का भाव। २ दृष्टि। नजर।
यौ०—सूझ बूझ=समझ। अक्ल।
३ अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज।

सूझना—क्रि० अ० [सं० संज्ञान] १. दिखाई देना। नजर आना। २ ध्यान में आना। खयाल में आना। ३ छुट्टी पाना।

सूट—संज्ञा पुं० [अं०] पहनने के कपड़े, विशेषत कोट पतलून आदि।

सूटकेस—संज्ञा पुं० [अं०] पहनने के कपड़े रखने का चिपटा बक्स।

सूटा†—संज्ञा पुं० [अनु०] मुँह से तंबाकू या गाँजे का धूँआँ जोर से खींचना।

सूत—संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] १ रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूता। २ तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३ नापने का एक मान। ४ संगतराशों और बढ़इयों की पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी। ५. पेंच, बाल्टू आदि का वह कटाव जिसके सहारे वे कसे या खोले जाते हैं। चूड़ी।
मुहा०—सूत धरना=निशान लगाना।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १. एक वर्णसंकर जाति। २. रथ हाँकनेवाला। सारथि। ३. बंदी। भाट। चारण। उ०—मागध सूत और बंदीजन ठौर ठौर यश गायो।—सूर०। ४ पुराणवक्ता। पौराणिक। ५ बढ़ई। ६ सूत्रधार। सूत्रकार। ७ सूर्य।

वि० [सं०] प्रसूत। उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] थोड़े शब्दों में ऐसा पद या वचन जिसमें बहुत अर्थ हों।

वि० [सं० सूत्र=सूत] भला। अच्छा।

संज्ञा पुं० दे० "सुत"।

सूतक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २ वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।

सूतकगेह—संज्ञा पुं० दे० "सूतकागार"।

सूतकी—वि० [सं० सूतकिन्] परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूत का भाव। २ सूत या सारथी का काम।

सूतधार—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधार] बढ़ई। उ०—अमर चंदन को पालनो गढ़ई गुर ढार सुढार। लै आयो गढ़ि ढोलनी विश्वकर्मा सो सुतधार।—सूर०।

सूतना†—क्रि० अ० दे० "सोना"।

सूतपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सारथि। २ कर्ण।

सूता—संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] तंतु। सूत।

संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसूता।

सूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। २ प्रसव। जनन। ३ उत्पत्ति का स्थान। उद्गम।

सूतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। जच्चा।

सूतिकागार, सूतिकागृह—संज्ञा पुं० [सं०] सौरी। प्रसवगृह।

सूतिग†—संज्ञा पुं० दे० "सूतक"।

सूती—वि० [हिं० सूत] सूत का बना हुआ।

संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी। उ०—सूती में नहिं सिंधु समाई।—विश्रामसागर।

सूतीघर—संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

सूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत। तागा। डोरा। २ यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३ रेखा। लकीर। ४. करधनी। कटिभूषण। ५. नियम। व्यवस्था। ६ थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ७ पता। सुराग।

सूत्रकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ बढ़ई या मेमार का काम। २ जुलाहे का काम।

सूत्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्ररचयिता। २ बढ़ई। ३ जुलाहा।

सूत्रग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो, जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रधर, सूत्राधार—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २ बढ़ई। काष्ठशिल्पी। ३ पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति।

सूत्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] प्रारंभ। शुरू।

सूत्रपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक संग्रह।

सूत्रात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] जीवात्मा।

सूथन—संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना।

सूथनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पायजामा। सुथना। २ एक प्रकार का कंद।

सूद—संज्ञा पुं० [फा०] १ लाभ। फायदा। २ ब्याज। वृद्धि। उधार लिए हुए धन के उपयोग के लिये दिया जानेवाला धन।

मुहा०—सूद दर सूद=ब्याज पर ब्याज। चक्रवृद्धि ब्याज।

सूदखोर—वि० [फा०] [संज्ञा सूदखोरी] बहुत सूद या ब्याज लेनेवाला।

सूदन—वि० [सं०] विनाश करनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वध करने की क्रिया। हनन। २ अंगीकरण। ३ फेंकने की क्रिया।

सूदना—क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना।

सूदी—वि० [फा० सूद] (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू।

सूधⓅ—वि० १ दे० "सूधा"। २ दे० "शुद्ध"।

सूधना—क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना।

सूधरा†—वि० दे० "सूधा"।

सूधा—वि० दे० "सीधा"।

सूधे—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से। उ०—हौ बड़ हौं वह बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भए अकुलात।—सूर०।

सून—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसव। जनन। २ कली। कलिका। ३ फूल। पुष्प। ४ फल। ५ पुत्र।

Ⓟ†संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य"। उ०—इहाँ देखि घर सून चोर मूसन मन लायो। हीरा हेम निकारि भवन बाहर धरि आयो।—विश्रामसागर।

सूना—वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जिसपर कोई न हो। निर्जन। सुनसान। खाली।

संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुत्री। बेटी। २ कसाईखाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि जिनमे जीवहिंसा की संभावना रहती है। ४. हत्या। घात।

सूनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] १. सूना होने का भाव। २ सन्नाटा।

सूनु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुत्र। संतान। २ छोटा भाई। ३. नाती। दौहित्र। ४ सूर्य।

सूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पकी हुई दाल या उसका रसा। २ रसे की तरकारी आदि व्यंजन। ३ रसोइया। पाचक। ४ बाण।

संज्ञा पुं० [सं० सूर्प] अनाज फटकने का सरई या सींक का छाज। उ०—देखो अद्भुत अविगति की गति कैसो रूप धरयो है हो। तीन लोक जाके उदर भवन सो सूप के कोन परयो है हो।—सूर०।

सूपक—संज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया।

सूपकार—संज्ञा पुं० [सं०] रसोइया। पाचक।

सूपचⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"। उ०—सूपच रस स्वादै का जानै।—विश्रामसागर।

सूपनखा—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूपशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] पाकशास्त्र।

सूफ—संज्ञा पुं० [अ०] १ पशम। ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात में डाला जाता है।

सूफी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय जो एकेश्वरवाद मानता है। इस संप्रदाय के लोग धार्मिक मामलों में अपेक्षाकृत अधिक उदार विचार के होते हैं।

सूबा—संज्ञा पुं० [फा०] १ शासन की सुविधा के लिये बनाया हुआ किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २ दे० "सूबेदार"।

सूबेदार—संज्ञा पुं० [फा० सूबा+दार (प्रत्य०)] १. किसी सूबे या प्रांत का शासक। २ एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सूबेदार का ओहदा या पद।

सूभर(पु)—वि० [सं० शुभ्र] १ सुंदर दिव्य। २ श्वेत। सफेद।

सूम—वि० [अ० सूम] कृपण। कंजूस।

सूर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूरा] १. सूर्य। २ आक। मदार। ३. पंडित। आचार्य। ४ दे० "सूरदास"। ५ अंधा। ६. छप्पय छंद के ५५वें भेद का नाम जिसमें १६ गुरु और १२० लघु होते हैं।

(पु)संज्ञा पुं० [सं० शूर] वीर। बहादुर।

(पु)†संज्ञा पुं० [सं० शूकर] १ सुअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।

संज्ञा पुं० दे० "शूल"।

संज्ञा पुं० [देश०] पठानों की एक जाति।

सूरकांत—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांत"।

सूरकुमार—संज्ञा पुं० [सं० शूरसेन+कुमार] वसुदेव।

सूरज—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य्य] १ सूर्य।

मुहा०—सूरज पर थूकना या धूल फेंकना=किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लांछन लगाना। सूरज को दीप दिखाना=(१) जो स्वयं अत्यंत गुणवान् हो उसे कुछ बतलाना। (२) जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना।

२ दे० "सूरदास"।

संज्ञा पुं० [सं० सूर+ज] १ शनि। २ सुग्रीव।

संज्ञा पुं० [सं० शूर+ज] शूर का पुत्र।

सूरजतनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्यतनया"।

सूरजमुखी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य्यमुखी] १ एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है। २. एक प्रकार की आतिशबाजी। ३ एक प्रकार का छत्र या पंखा।

सूरजसुत—संज्ञा पुं० [हिं० सूरज+सं० सुत] सुग्रीव।

सूरजसुता—संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्यसुता"।

सूरत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूप। आकृति। शक्ल।

मुहा०—सूरत बिगड़ना=चेहरे की रंगत फीकी पड़ना। सूरत बनाना=(१) रूप बनाना। (२) भेष बदलना। (३) मुँह बनाना। नाक भौं सिकोड़ना। सूरत दिखाना=सामने आना।

२. छवि। शोभा। सौंदर्य। ३ उपाय। युक्ति। ढंग। ४ अवस्था। दशा। हालत।

संज्ञा स्त्री० [अ० सूर.] कुरान का प्रकरण।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण।

वि० [सं० सुरत] अनुकूल। मेहरबान।

सूरता, सूरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।

सूरति—संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत"।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण।

सूरदास—संज्ञा पुं० [सं०] सूरसागर के रचयिता, व्रजभाषा के महाकवि और कृष्ण के अनन्य उपासक।

सूरन—संज्ञा पुं० [सं० सूरण] एक प्रकार का कंद। जमीकंद। ओल।

सूरपनखा(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पनखा"।

सूरपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव।

सूरमा—संज्ञा पुं० [सं० शूरमानी] योद्धा। वीर।

सूरमापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा+पन (प्रत्य०)] वीरत्व। शूरता। बहादुरी।

सूरमुखी—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमुखी शीशा।

सूरमुखीमनि†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांत"।

सूरवाँ†—संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।

सूरसावंत—संज्ञा पुं० [सं० शूर+सामंत] १. युद्धमंत्री। २ नायक। सरदार।

सूरसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि ग्रह। २. सुग्रीव।

सूरसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

सूरसेन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शूरसेन"।

सूरसेनपुर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "मथुरा"।

सूराख—संज्ञा पुं० [फा०] छेद। छिद्र।

सूरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २ पंडित। विद्वान्। आचार्य। ३. कृष्ण का एक नाम। ४ सूर्य। ५ जैन साधुओं की एक उपाधि।

सूरी—संज्ञा पुं० [सं० सूरिन्] विद्वान्। पंडित।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विदुषी। पंडिता। २ सूर्य की पत्नी। ३ कुंती।

(पु)†संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।

(पु)†संज्ञा पुं० [सं० शूल] भाला।

सूरुज(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

सूरवाँ‡(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।

सूर्पनखा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूर्या, सूर्याणी] १ आकाश का वह ज्वलंत पिंड जिसकी ३६५ दिन ६ घंटों में पृथ्वी एक परिक्रमा करती है और जो अपनी किरणों से प्रकाश और ताप देता है। सूरज। आफताब। भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। २ बारह की संख्या। ३ मदार। आक।

सूर्यकांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २ सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।

सूर्यग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का ग्रहण या चंद्रमा की ओट में आना।

सूर्यतनय—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यपुत्र"।

सूर्यतनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर्यतापिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्यपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि। २. यम। ३ वरुण। ४. अश्विनीकुमार। ५. सुग्रीव। ६ कर्ण।

सूर्यपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यमुना। २ विद्युत्। बिजली (क्व०)।

सूर्यप्रभ—वि० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यमणि—संज्ञा पुं० [सं०] "सूर्यकांतमणि"।

सूर्यमुखी—संज्ञा पुं० दे० "सूरजमुखी"।

सूर्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का लोक। कहते हैं कि युद्ध में मरनेवाले इसी लोक को प्राप्त होते हैं।

सूर्यवंश—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

सूर्यवंशी—वि० [सं० सूर्यवंशिन्] सूर्यवंश का। जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।

सूर्यसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

सूर्यसुत—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यपुत्र"।

सूर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी। संज्ञा।

सूर्यावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आधासीसी।

सूर्यास्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का छिपना या डूबना। २ सायंकाल।

सूर्योदय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का उदय या निकलना। २ प्रात काल।

सूर्योपासक—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक।

सूर्योपासना—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की आराधना या पूजा।

सूल—संज्ञा पुं० [सं० शूल] १. बरछा। भाला। साँग। २ कोई चुभनेवाली नुकीली चीज। काँटा। ३ भाला चुभने की सी पीड़ा। ४. दर्द। पीड़ा। ५ भाले का ऊपरी भाग।

सूलना—क्रि० स० [हिं० सूल से ना० धा०] १. भाले से छेदना। २ पीड़ित करना।

क्रि० अ० १. भाले से छिदना। २. पीड़ित होना। व्यथित होना। दुखना।

सूलपानिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शूलपाणि"।

सूली—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। २ फाँसी।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] महादेव। शिव।

सूवनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० स्रवण] बहना। उ०—कहा करौं अति सूवै नयना उमगि चलत पग पानी। —सूर०।

संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।

सूस—संज्ञा पुं० [सं० शिंशुमार] दे० "सूँस"।

सूसिⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सूस"।

सूहा—संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १ एक प्रकार का लाल रंग। २ एक संकर राग।

वि० [स्त्री० सूही] लाल रंग का। लाल।

सूही—वि० स्त्री० दे० "सूहा"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सूहा] लालिमा। लाली।

सृंखलाⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला"।

सृंगⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।

सृंगवेरपुरⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।

सृंगी—संज्ञा पुं० दे० "शृंगी"।

सृंजय—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।

सृक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूल। भाला। २ वाण। तीर। ३ वायु। हवा।

Ⓟसंज्ञा पुं० [सं० स्रज्, स्रक्] माला। उ०—दरसन हू नासै जम सैनिक जिमि नह बालक सैनी। सूर परस्पर करत कुलाहल, गर सृक यह रावैनी। —सूर०।

सृकाल—संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।

सृगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सृक्] १. बरछा। भाला। २ वाण। तीर।

संज्ञा पुं० [सं० स्रज्, स्रक्] माला। गजरा।

सृग्विनीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "स्रग्विणी"।

सृजकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सर्जक] सृष्टि करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।

सृजनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सर्जन] १ सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। २ सृष्टि।

सृजनहारⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सर्जन+हिं० हार] सृष्टिकर्ता।

सृजनाⓅ—क्रि० स० [सं० सर्जन] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। बनाना।

सृत—वि० [सं०] चला या खिसका हुआ।

सृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पथ। रास्ता। २ गमन। चलना। उ०—सकल गुणों की खान, प्राण तुम। सुख की सृति, दुख की आकुल कृति, जग तम को धृति, ज्ञान, ध्यान तुम। —गीतिका। ३. सरकना।

सृष्ट—वि० [सं०] १ उत्पन्न। पैदा। २. निर्मित। रचित। ३. मुक्त। ४ छोड़ा हुआ।

सृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. निर्माण। रचना। बनावट। ३ संसार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४ संसार। दुनिया। ५ प्रकृति। निसर्ग।

सृष्टिकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सृष्टिकर्तृ] १ संसार की रचना करनेवाला। ब्रह्मा। २ ईश्वर।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो।

सेंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।

सेंकना—क्रि० स० [सं० श्रेषण] १ आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना।

मुहा०—आँख सेंकना=सुंदर रूप देखना। धूप सेंकना=धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचाना।

सेंगर—संज्ञा पुं० [सं० शृंगार ?] १ एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २. एक प्रकार का अगहनी धान।

संज्ञा पुं० [सं० शृंगीवर] क्षत्रियों की एक जाति।

सेंट—संज्ञा स्त्री० [?] दूध की धार।

संज्ञा पुं० [अं०] १ खुशबू। सुगंध। २ पाश्चात्य ढंग से तैयार किया हुआ सुगंधित द्रव्य।

सेंटर—संज्ञा पुं० [अं०] केंद्र।

सेंट्रल—वि० [अं०] केंद्रीय।

सेंत—संज्ञा स्त्री० [सं० सहित] पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना।

मुहा०—सेंत का=(१) जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुफ्त का। Ⓟ†(२) बहुत। ढेर का ढेर। सेंत में=(१) बिना कुछ दाम दिए। मुफ्त में। (२) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।

सेंतनाⓅ†—क्रि० स० दे० "सैंतना"।

सेंत मेत—क्रि० वि० [हिं० सेंत+मेत (अनु०)] १. बिना दाम दिए। मुफ्त में। २ व्यर्थ।

सेंति, सेंतीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंत"।

प्रत्य० [प्रा० सुंतो] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति। उ०—सजीवनि तव कचहि पढ़ाई। ता सेंती यों कह्यो समुझाई। —सूर०।

सेंथी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी। भाला।

सेंदुरⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना=विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना।

सेंदुरिया—संज्ञा पुं० [हिं० सेंदुर+इया (प्रत्य०)] एक सदाबहार पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं।

वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सेंदुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर+ई (प्रत्य०)] लाल गाय। उ०—कजरी धुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया। दुहि ल्याऊँ मैं तुरत ही तू करि दै छैया। —सूर०।

सेंद्रिय—वि० [सं०] जिसमें इंद्रियाँ हों।

सेंध—संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद।

संधि। सुरंग। सेन।

सेंधना—क्रि० स० [हिं० सेंध से ना० धा०] सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा—संज्ञा पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का खनिज नमक। सैंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० [हिं० सेंध+इया (प्रत्य०)] दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।

संज्ञा पुं० [मराठी शिंदे] ग्वालियर के मराठा राजवंश की उपाधि।

सेंधुआर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मांसाहारी जंतु।

सेंधुर†—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

सेंवई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेंवर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"। उ०—बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाये। ज्यों शुक सेंवर फूल विलोकत जात नहीं बिन खाये।—सूर०।

सेंहुड़—संज्ञा पुं० दे० "थूहर"।

से—प्रत्य० [प्रा० सुंतो] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति।

वि० [हिं० 'सा' का बहुवचन] समान। सदृश।

(पु) सर्व० [हिं० 'सो' का बहुवचन] वे।

सेउ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सेव"।

सेकंड—संज्ञा पुं० [अं०] एक मिनट का साठवाँ भाग।

वि० दूसरा। द्वितीय।

सेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलसिंचन। सिंचाई। २ जलप्रक्षेप। छिड़काव। ३ आँच से सेंकने की क्रिया या भाव।

सेकेंड—संज्ञा पुं०, वि० दे० "सेकंड"।

सेक्रेटरी—संज्ञा पुं० [अं०] मंत्री।

सेख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शेष" और "शेख"।

सेखर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

सेगा—संज्ञा पुं० [अ०] १. विभाग। महकमा। २ विषय। क्षेत्र।

सेचक—वि० [सं०] सींचनेवाला।

सेचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १ जलसिंचन। सिंचाई। २ मार्जन। छिड़काव। ३ अभिषेक।

सेज—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] शय्या। पलंग।

सेजपाल—संज्ञा पुं० [हिं० सेज+पाल] राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागाररक्षक।

सेजरिया(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेज"।

सेज्या(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"। उ०—सूरश्याम सुख जानि मुदित मन सेज्या पर सँग लै पौढावति।—सूर०।

सेझदादि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

सेझना—क्रि० अ० [सं० सेधन] दूर होना।

सेटना(पु)†—क्रि० अ० [सं० श्रत] १ समझना। मानना। २ कुछ समझना। महत्व स्वीकार करना।

सेठ—संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठिन्] [स्त्री० सेठानी] १ बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २ बड़ा या थोक व्यापारी। ३. मालदार आदमी। ४ सुनार।

सेढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "सीढ़"।

सेत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सेतु" और "श्वेत"।

सेतकुली—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतकुलीय] सफेद जाति के नाग।

सेतदुति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतद्युति] चंद्रमा।

सेतवाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतवाहन] १. अर्जुन। २ चंद्रमा (डिं०)।

सेतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० साकेत ?] अयोध्या।

सेती†—अव्य० दे० "से"।

सेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। बँधाव। २ बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४ नदी आदि के आरपार जाने का रास्ता जो लकड़ी आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बना हो। पुल। ५ सीमा। हदबंदी। ६ मर्यादा। नियम या व्यवस्था। ७. प्रणव। ओंकार। ८ व्याख्या।

सेतुक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सौतुख"।

संज्ञा पुं० [सं०] १ पुल। २ बाँध।

सेतुबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल की बँधाई। २ वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्र जी ने भारत और लंका के बीच के समुद्र पर बँधवाया था।

सेतुवा†—संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

सेथिया—संज्ञा पुं० [तेलगू० चेट्टि ?] आँखों का इलाज करनेवाला।

सेद(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वेद"।

सेदज(पु)—वि० दे० "स्वेदज"।

सेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। २. जीवन। ३. एक भक्त नाई।

संज्ञा पुं० [सं० श्येन] बाज पक्षी।

(पु) संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सेनजित्—वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला।

संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सेनप, सेनपति(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सेन वंश—संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था।

सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह। फौज। पलटन। २ भाला। बरछी। ३ इंद्र का वज्र। ४ इंद्राणी।

क्रि० स० [सं० सेवन] १. सेवा करना। खिदमत करना। टहल करना।

मुहा०—चरण सेना=तुच्छ चाकरी बजाना।

२ आराधना करना। पूजना। ३. नियमपूर्वक व्यवहार करना। ४ पड़ा रहना। निरंतर वास करना। ५ लिए बैठे रहना। दूर न करना। ६ मादा चिड़ियों का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठना।

सेनाजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] सैनिक। सिपाही। योद्धा।

सेनादार—संज्ञा पुं० दे० "सेनानायक"।

सेनाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सेनानायक—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। २ कार्तिकेय। ३ एक रुद्र का नाम।

सेनापति—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का नायक। फौज का अफसर। २ कार्तिकेय। ३ शिव।

सेनापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।

सेनापाल—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सेनामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का अग्रभाग। २ सेना का एक खंड जिसमें ३ या ६ हाथी, ३ या ६ रथ, ६ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।

सेनावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २ खेमा।

सेनाव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य विन्यास।

सेनि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।

सेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] १. मादा बाज पक्षी। २. एक छंद। दे० "श्येनिका"।

सेनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सीनी] तश्तरी।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज पक्षी।

(पु)संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १ पंक्ति। कतार। २ सीढ़ी। जीना।

संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का नाम।

सेब—संज्ञा पुं० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।

सेम—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] एक प्रकार की लता तथा उसकी फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

सेमई(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंवई"।

सेमल—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों में केवल रूई होती है।

सेमा—संज्ञा पुं० [हिं० सेम] एक प्रकार की बड़ी सेम।

सेमेटिक—संज्ञा पुं० [अं०] मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग विभाग जिसमें यहूदी, अरब, सीरियन और मिस्री आदि जातियाँ हैं। शामी। सामी।

सेर—संज्ञा पुं० [सं० सेठ ?] सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।

संज्ञा पुं० दे० "शेर"।

वि० [फा०] तृप्त।

सेरसाहि—संज्ञा पुं० [फा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह।

सेरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

संज्ञा पुं० [फा० सेराब] सींची हुई जमीन।

सेराना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शीतल] १ ठंढा होना। शीतल होना। २ तृप्त होना। तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना। ४ समाप्त होना। ५ चुकना। ते होना।

क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २ मूर्ति आदि का जल में प्रवाह करना।

सेराब—वि० [फा०] १. पानी से भरा हुआ। २ सिंचा हुआ। तराबोर।

सेरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तृप्ति। तुष्टि।

सेल—संज्ञा पुं० [सं० शल] बरछा। भाला।

संज्ञा स्त्री० [देश०] बद्धी। माला।

सेलखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

सेलना—क्रि० अ० [सं०√शेल्] मर जाना।

सेला—संज्ञा पुं० [सं० शल्लक] रेशमी चादर।

सेलिया—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

सेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १ छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३ सूत, ऊन, रेशम या बालों की वह बद्धी या माला जिसे योगी यती लोग गले में डालते या सिर में लपेटते हैं। उ०—सीस सेली केस, मुद्रा कनक-बीरी, बीर। बिरह भस्म चढ़ाइ बैठी, सहज कथा चीर।—सूर०। ४. स्त्रियों का एक गहना।

सेलून—संज्ञा पुं० [अं०] १ जहाज का प्रधान कमरा। २ रेल का बढ़िया सजा सजाया बड़ा डब्बा। ३ होटल आदि में आमोद प्रमोद का स्थान। ४ बाल काटने की दूकान। ५ वह स्थान जहाँ अँग्रेजी शराब बिकती है। ६ जहाज में कप्तान के खाने की जगह।

सेल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शल] भाला। सेल।

सेल्ह—संज्ञा पुं० दे० "सेल"।

सेल्हा†—संज्ञा पुं० दे० "सेला"।

सेवँर(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

सेवईं—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेव—संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान।

(पु)संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।

संज्ञा पुं० दे० "सेब"।

सेवक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन सेवकिनी] १ सेवा करनेवाला। नौकर। चाकर। २. भक्त। आराधक। उपासक। ३ काम में लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। ४. छोड़कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला। ५ सीनेवाला। दरजी।

सेवकाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक+हिं० आई (प्रत्य०)] सेवा। टहल। खिदमत।

सेवग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सेवक"।

सेवड़ा—संज्ञा पुं० [?] जैन साधुओं का एक भेद।

संज्ञा पुं० [हिं० सेव] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।

सेवनि(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब।

सेवदाना—संज्ञा पुं० [अं० सोयाबीन] एक प्रकार की फलियों के दाने जो मटर की तरह होते हैं।

सेवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १ परिचर्या। खिदमत। २ उपासना। आराधना। ३ प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। ४. छोड़कर न जाना। वास करना। ५ उपभोग। ६ सीना। ७. गूँथना।

सेवना(पु)†—क्रि० स० दे० "सेना"।

सेवनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेवकिनी] दासी।

सेवनीय—वि० [सं०] १ सेवा योग्य। २ पूजा के योग्य। ३ व्यवहार के योग्य। ४ सीने के योग्य।

सेवर—संज्ञा पुं० दे० "शबर"।

सेवरा(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।

सेवरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "शबरी"।

सेवल—संज्ञा पुं० [देश०] ब्याह की एक रस्म।

सेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत टहल। परिचर्या। २ नौकरी। चाकरी ३ आराधना। उपासना। पूजा।

मुहा०—सेवा में=समीप। सामने।

४ आश्रय। शरण। ५ रक्षा। हिफाजत। ६ संभोग। मैथुन।

सेवाटहल—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा+हिं० टहल] परिचर्या। खिदमत। सेवा शुश्रूषा।

सेवाती—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवाधारी—संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।

सेवापन—संज्ञा पुं० [सं० सेवा+हिं० पन दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी।

सेवाबंदगी—संज्ञा स्त्री० [सेवा+फा बंदगी] आराधना। पूजा।

सेवार, सेवाल—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में फैलनेवाली एक घास ।

सेवावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौकरी । दासत्व । चाकरी की जीविका ।

सेवि—संज्ञा पुं० [सं०] 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है ।

Ⓟवि० दे० "सेव्य", "सेवित" ।

सेविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली । दासी । नौकरानी ।

सेवित—वि० [सं०] [स्त्री० सेविता] १. जिसकी सेवा की गई हो । २. जिसकी पूजा की गई हो । पूजित । ३ जिसका प्रयोग किया गया हो । व्यवहृत । ४. उपभोग किया हुआ ।

सेवी—वि० [सं० सेविन्] १ सेवा करनेवाला । २ पूजा करनेवाला । ३ संभोग करनेवाला ।

सेव्य—वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १ जिसकी सेवा करना उचित हो । २ जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय । ३. पूजा या आराधना के योग्य । ४ काम में लाने लायक । ५ रक्षण के योग्य । ६ संभोग के योग्य ।

संज्ञा पुं० १. स्वामी । मालिक । २ अश्वत्थ । पीपल का पेड़ । ३ जल । पानी ।

सेव्यसेवक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी और सेवक ।

यौ०-सेव्य-सेवक-भाव = उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना । (भक्तिमार्ग में उपासना का वह भाव जिससे हनूमान् जी ने राम की उपासना की थी) ।

सेश्वर—वि० [सं०] १ ईश्वरयुक्त । २ जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो ।

सेषⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शेष", "शेख" ।

सेषनागⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "शेषनाग" ।

सेसⓅ—संज्ञा पुं०, वि० दे० "शेष" ।

सेस रंगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शेष+रंग] सफेद रंग ।

सेसर—संज्ञा पुं० [फा० सेह = तीन+सर = बाजी] १ ताश का एक खेल । २ जालसाजी । ३ जाल । ४ मुँह लगना । बहुत अधिक सवाल जवाब ।

सेसरिया—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छलकपट कर दूसरों का माल मारनेवाला । जालिया ।

सेहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुख । चैन । २ रोग से छुटकारा । रोगमुक्ति ।

सेहतखाना—संज्ञा पुं० [अ० सेहत+फा० खाना] पाखाने, पेशाब आदि की कोठरी ।

सेहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+हार] १. फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है । २ विवाह का मुकुट । मौर ।

मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना = किसी का कृतकार्य होना ।

३ वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं ।

सेहीं—संज्ञा स्त्री० [सं० सेधा] साही (जंतु) ।

सेहुँडⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सेहुंड] थूहर ।

सेहुआँ—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का चर्मरोग ।

सैंतना—क्रि० स० [सं० संचय, सिंचन ?] १ संचित करना । बटोरना । इकट्ठा करना । २ हाथों से समेटना । बटोरना । ३. सहेजना । सँभालकर रखना । ४ भूमि को पानी, गोबर, मिट्टी आदि से लीपना ।

सैंथी†—संज्ञा स्त्री० [?] १ भाला । २ बरछी ।

सैंधव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेंधा नमक । २ सिंध का घोड़ा । ३. सिंध देश का निवासी ।

वि० १ सिंध देश का । २ समुद्र-संबंधी ।

सैंधवपति—संज्ञा पुं० [सं० सैंधव+पति = राजा] सिंधवासियों के राजा जयद्रथ ।

सैंधवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संपूर्ण जाति की एक रागिनी ।

सैंधू—संज्ञा स्त्री० दे० "सैंधवी" ।

सैंवर†—संज्ञा पुं० दे० "साँभर" ।

सैंहⓅ†—क्रि० वि० दे० "सौंह" ।

सैंहथी—संज्ञा स्त्री० दे० "सैंथी" ।

सै†—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शत] सौ ।

संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] १ तत्व । सार । २ वीर्य । शक्ति । ३ बढ़ती । बरकत ।

सैकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शतकांड] सौ का समूह । शतसमष्टि ।

सैकड़े—क्रि० वि० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से । प्रतिशत । फी सदी ।

सैकड़ों—वि० [हिं० सैकड़ा] १ कई सौ । २ बहुसंख्यक । गिनती में बहुत ।

सैकत, सैकतिक—वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १ रेतीला । बलुआ । २ बालू का बना ।

सैकल—संज्ञा पुं० [अ०] हथियारों को साफ करने और उनपर सान चढ़ाने का काम ।

सैकलगर—संज्ञा पुं० [अ० सैकल+फा० गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखने वाला ।

सैथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी ।

सैदⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सैयद" ।

सैद्धांतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिद्धांत को जाननेवाला । विद्वान् । २ तांत्रिक ।

वि० सिद्धांत संबंधी । तत्व संबंधी ।

सैन—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञपन] १ संकेत । इंगित । इशारा । उ०—जदपि चवाइनु चीकनी चलति चहूँ दिसि सैन । तऊ न छाँड़त दुहुन के हँसी रसीले नैन । —बिहारी० । २. चिह्न । निशान ।

Ⓟ†संज्ञा पुं० १. दे० "शयन" । २. दे० "श्येन" ।

Ⓟ†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" । उ०—सप्त दीप के कपि दल आए जुरी सैन अति भारी । सीता की सुधि लेन चले कपि ढूँढत विपिन मँझारी —सूर० ।

Ⓟ†संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला ।

सैनपतिⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति" ।

सैनभोग—संज्ञा पुं० [सं० शयन+भोग] रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है ।

सैनाⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सैनापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य । सेनापतित्व ।

वि० सेनापति संबंधी ।

सैनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना या फौज का आदमी । सिपाही । २. संतरी ।

वि० सेना संबंधी । सेना का ।

सैनिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना या सैनिक का कार्य । २ युद्ध । लड़ाई ।

सैनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] एक छंद ।

सैनी—संज्ञा पुं० [सेना भगत नाम का नाई] हजाम । उ०—दरशन हूँ नाशे यम सैनिक जिमि नह बालक सैनी । एक नाम लेत सब भाजे पीर सुभूमि रसैनी । —सूर० ।

Ⓟ†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सैनू—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा । नैनू ।

सैनेयⓅ—वि० [सं० सेना] लड़ने के योग्य ।

सैनेश—संज्ञा पुं० [सं० सैन्येश] सेनापति ।

सैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३. शिविर। छावनी।
वि० सेना संबंधी। फौज का।
सैन्य सज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना को आवश्यक अस्त्रशस्त्रों से सज्जित करना।
सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
सैमंतिक—संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर। सेंदुर।
सैयद—संज्ञा पुं० [अ०] १ मुहम्मद साहब के नाती। हुसैन के वंश का आदमी। २ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।
सैयाँ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] पति।
सैया(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।
सैरंध्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १ घर का नौकर। २ एक संकर जाति।
सैरंध्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २ अंतपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३. द्रौपदी का अज्ञातवास का नाम।
सैर—संज्ञा पुं० [फा०] १ मन बहलाने के लिये घूमना फिरना। २. बहार। मौज। आनंद। ३ मित्रमंडली का कहीं बगीचे आदि में खानपान और नाचरंग। ४. मनोरंजक दृश्य। कौतुक। तमाशा।
सैरगाह—संज्ञा पुं० [फा०] सैर करने की अच्छी जगह।
सैल‡—संज्ञा स्त्री० दे० "सैर"।
संज्ञा पुं० दे० "शैल"।
संज्ञा स्त्री० [फा० सैलाब] १ बाढ़। जलप्लावन। २ स्रोत। बहाव।
सैलजा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा"।
सैलसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शैलसुता"।
सैलात्मजा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।
सैलानी—वि० [फा० सैर] १ सैर करानेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २ आनंदी। मनमौजी।
सैलाब—संज्ञा पुं० [फा०] बाढ़। जलप्लावन।
सैलाबी—वि० [फा०] जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो। बाढ़वाला।
संज्ञा स्त्री० तरी। सील। सीड़।
सैलूख(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शैलूष"।
सैव(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "शैव"।
सैवल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।
सैवलिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शैवलिनी"।
सैव्य(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शैव्य"।
सैसव(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शैशव"।
सैसवता—संज्ञा स्त्री० दे० "शैशव"। उ०—सैसवता में हौं सखी जोवन कियो प्रवेस। कहा कहौं छबि रूप की नखशिख अंग सुदेस।—सूर०।
सैहथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी।
सों(पु)†—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
वि० दे० "सा"।
अव्य० दे० "सौंह"।
क्रि० वि० संग। साथ। उ०—मन हरि सों तनु घरहि चलावति। ज्यों गजमत्त जाल अंकुश कर गुरुजन सुधि आवति।—सूर०।
सर्व० दे० "सो"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
सोंच—संज्ञा पुं० दे० "सोच"।
सोंचर नमक—संज्ञा पुं० दे० "काला नमक"।
सोंटा—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड या हिं० सटना] १ मोटी छड़ी। डंडा। लाठी। २. भंग घोंटने का मोटा डंडा।
सोंटाबरदार—संज्ञा पुं० [हिं० सोंटा+फा० बरदार] आसाबरदार। बल्लमदार।
सोंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुंठि। मँगघोटना।
वि० शुष्क। नीरस।
सोंठारा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ+औरा (प्रत्य०)] एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के साथ सोंठ भी पड़ती है (प्रसूता स्त्री के लिये)।
सोंध(पु)—अव्य० दे० "सौंह"।
सोंधा—वि० [सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] [भाव० सोंधाहट] १ सुगंधित। खुशबूदार। महकनेवाला। २ मिट्टी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान। ३ गर्मी से तपी हुई भूमि से पहली वर्षा होने पर उठनेवाली सुगंध से युक्त।
संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। २ एक सुगंधित मसाला जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिये मिलाते हैं।
संज्ञा पुं० सुगंध।
सोंधु(पु)—वि० दे० "सोंधा"।
सोंपना—क्रि० स० दे० "सौंपना"।
सोंवनिया—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण+हिं० इया (प्रत्य०)] एक आभूषण जो नाक में पहना जाता है। उ०—अधर नासिका अति सुंदर राजत सोंवनिया।—सूर०।
सोंह(पु)†—संज्ञा स्त्री०, अव्य० दे० "सौंह"।
सोंही(पु)—अव्य० दे० "सौंह"।
सो—सर्व० [सं० स] वह।
(पु)वि० दे० "सा"।
अव्य० अत। इसलिये। निदान।
सोऽहम्—सं० [स.+अहम्] उपनिषदों का एक महावाक्य जिसका अर्थ है "वही मैं हूँ"-अर्थात् "मैं ब्रह्म हूँ।" (वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं। इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिये वेदांती लोग कहा करते हैं "सोऽहम्", अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदों में यह बात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में भी कही गई है)।
सोऽहमस्मि—दे० "सोऽहम्"।
सोअना(पु)—क्रि० अ० दे० "सोना"।
सोआ—संज्ञा पुं० [सं० मिश्रेया ?] एक प्रकार का साग।
सोई—सर्व० दे० "वही"।
अव्य० दे० "सो"।
सोक(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शोक"।
सोकन—संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।
सोकना(पु)—क्रि० स० [हिं० सोक से ना० धा०] शोक करना। रंज करना।
सोकित(पु)—वि० [हिं० सोक+इत (प्रत्य०)] शोकयुक्त।
सोक्कन—संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।
सोखक(पु)—वि० [सं० शोषक] १ शोषण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।
सोखता—वि०, संज्ञा पुं० दे० 'सोख्ता'।
सोखन्—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंगली धान।
सोखना—क्रि० स० [सं० शोषण] १ शोषण करना। चूस लेना। २ सुखा डालना।
सोख्ता—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है।
वि० जला हुआ।
सोग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोक] दुःख। रंज।
सोगिनी(पु)—वि० स्त्री० [हिं० सोग+इनी (प्रत्य०)] शोक करनेवाली। शोकार्ता। शोकाकुला।

सोगी—वि० [हिं० सोग+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० सोगिनी] शोक मनानेवाला। शोकाकुल। दुखित।

सोच—संज्ञा पुं० [सं० शोच] १. सोचने की क्रिया या भाव। २ चिंता। फिक्र। ३ शोक। दुख। रंज। ४ पछतावा। उ०—चतुर्भुज रूप हरि भाई दरसन दियो कह्यो शिव सोच दीजै बिहाई। —सूर०।

सोचना—क्रि० अ० [सं० शोचन] १. मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। २ चिंता करना। फिक्र करना। ३. खेद करना। दुःख करना।

सोचविचार—संज्ञा पुं० [हिं० सोच+सं० विचार] १. समझबूझ। गौर। २ आगा पीछा। अनिश्चय।

सोचना—क्रि० स० दे० "सुचाना"।

सोचु(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सोच"।

सोज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजन। शोथ। २ दे० "सोज"।

सोजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सोझ, सोझा—वि० [सं० सम्मुख ?] [स्त्री० सोझी] १ सीधा। सरल। २. सामने की ओर गया हुआ। सीधा।

सोटा—संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।

सोढर—वि० [देश०] भोंदू। वेवकूफ।

सोत—संज्ञा पुं० दे० "स्रोत" या "सोता"।

सोता—संज्ञा पुं० [सं० स्रोत] [स्त्री० अल्पा० सोतिया] १. जल की बराबर बहनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। २ नदी की शाखा। नहर।

सोति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा।

संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।

सोदर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।

वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोध(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शोध] १ खोज। खबर। पता। टोह। २ संशोधन। सुधारना। ३ चुकता होना। अदा होना।

संज्ञा पुं० [सं० सौध] महल। प्रासाद।

सोधन—संज्ञा पुं० [सं० शोधन] ढूँढ़। खोज।

सोधना†—क्रि० स० [सं० शोधन] १. शुद्ध करना। साफ करना। २ गलती या दोष दूर करना। ३. निश्चित करना। निर्णय करना। ४. खोजना। ढूँढ़ना। ५ धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। ६ ठीक करना। दुरुस्त करना। ७. ऋण चुकाना। अदा करना।

सोधाना†—क्रि० स० [हिं० सोधना+का प्रे० रूप] सोधने का काम दूसरे से कराना।

सोन—संज्ञा पुं० [सं० शोण] एक नद जो विंध्य पर्वत के अमरकटक नामक शिखर से निकलकर पटना के पास गंगा में मिला है।

संज्ञा पुं० दे० "सोना"।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी।

वि० [सं० शोण] लाल। अरुण।

सोनकीकर—संज्ञा पुं० [हिं० सोना+कीकर] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला—संज्ञा पुं० [हिं० सोना+केला] चंपाकेला। सुवर्णकदली। पीला केला।

सोनचिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+चिड़िया] नटी।

सोनजर्द—संज्ञा स्त्री० दे० "सोनजूही"।

सोनजुही, सोनजूही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले होते हैं। पीली जूही। स्वर्ण यूथिका। उ०—सपनों की सोनजुही सब बिखरें, ये बनकर तारा। —आँसू।

सोनभद्र—संज्ञा पुं० दे० "सोन"।

सोनवाना—वि० दे० "सुनहला"।

सोनहला—वि० दे० "सुनहला"।

सोनहा—संज्ञा पुं० [सं० शुन=कुत्ता] कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।

सोनहार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

सोना—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] १ सुंदर उज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम।

मुहा०—सोना छूते मिट्टी होना=अच्छे या बने बनाए कार्य में योग देते ही उसका नष्ट होना (घोर विपत्ति का सूचक)। सोने का मिट्टी होना=सब कुछ नष्ट होना। सोने में घुन लगना=असंभव या अनहोनी बात होना। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना।

२. बहुत सुंदर वस्तु। ३ राजहंस।

संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।

क्रि० अ० [सं० शयन] १. नींद लेना। शयन करना। आँख लगना।

मुहा०—सोते जागते=हर समय।

२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।

सोनागेरू—संज्ञा पुं० [हिं० सोना+गेरू] गेरू का एक भेद।

सोनापाठा—संज्ञा पुं० [सं० शोण+हिं० पाठा] १. एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं। २. इसी वृक्ष का एक और भेद।

सोनामक्खी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] एक खनिज पदार्थ जिसकी गणना उपधातुओं में है।

सोनार—संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।

सोनित(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।

सोनी†—संज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार।

सोपत—संज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबंध।

सोपान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सोपानित] सीढ़ी। जीना।

सोपि—वि० [सं० सः+अपि] १ वही। २ वह भी।

सोफता—संज्ञा पुं० [हिं० सुभीता] १. एकांत स्थान। निराली जगह। २ रोग आदि में कुछ कमी होना।

सोफा—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन। कोच।

सोफियाना—वि० [अ० सूफी+इयाना (फा० प्रत्य०)] १ सूफियों का। सूफी संबंधी। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।

सोफी—संज्ञा पुं० दे० "सूफी"।

सोभ(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।

सोभना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शोभन] सोहना। शोभित होना।

सोभाकारी—वि० [सं० शोभाकर] सुंदर।

सोभार—वि० [सं० स+हिं० उभार] जिसमें उभार हो। उभारदार।

क्रि० वि० उभार के साथ।

सोभित—वि० दे० "शोभित"।

सोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। उ०—पी प्रचुर रचनामृत शुचि सोम,

सुरति की मूर्ति, प्राय मख होम। —गीतिका। २ एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है। ३. वैदिक काल के एक प्राचीन देवता। ४ चद्रमा। ५. सोमवार। ६. कुबेर। ७. यम। ८. वायु। ९ अमृत। १० जल। ११. सोमयज्ञ। १२ स्वर्ग। आकाश।

सोमकर—सज्ञा पुं० [स० सोम+कर] चद्रमा की किरण।

सोमजाजी—सज्ञा पुं० दे० "सोमयाजी"।

सोमन—सज्ञा पुं० [स० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

सोमनस—सज्ञा पुं० दे० "सौमनस्य"।

सोमनाथ—सज्ञा पुं० [स०] १ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २ काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।

सोमपान—सज्ञा पुं० [स०] सोम पीना।

सोमपायी—वि० [स० सोमपायिन्] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।

सोमप्रदोष—सज्ञा पुं० [सं०] सोमवार को किया जानेवाला प्रदोष व्रत।

सोमयाग—सज्ञा पुं० [स०] एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था।

सोमयाजी—सज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो।

सोमरस—सज्ञा पुं० [स०] सोमलता का रस।

सोमराज—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सोमराजी—संज्ञा पुं० [स० सोमराजिन्] १ बकुची। २ दो यगण का एक वृत्त। उ०—यदू बाल देखो। सुरंगी सुभेखो। धरैं याहि आजी। कहैं सोमराजी ॥ इसे शखनारी छद भी कहते हैं।

सोमवश—सज्ञा पुं० [स०] चद्रवश।

सोमवशीय—वि० [स०] १ चद्रवश में उत्पन्न। २ चद्रवश सवधी।

सोमवती अमावस्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है।

सोमवल्लरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्राह्मी। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। उ०—रोज रोज राधिका सखीन सग आइकै। खेल रास कान्ह सग चित्त हर्ष लाइकै ॥ चामर। तूण।

सोमवल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० "सोम"।

सोमवार—सज्ञा पुं० [सं०] सप्ताह के सात दिनों में से एक जो सोम अर्थात् चद्रमा का माना जाता और रविवार के बाद पड़ता है। चंद्रवार।

सोमवारी—सज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।

वि० सोमवार सवंधी।

सोमसुत—सज्ञा पुं० [सं०] बुध।

सोमावती—संज्ञा स्त्री० [स०] चंद्रमा की माता। उ०—विनता सुत खगनाथ चद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे। —विश्रामसागर।

सोमास्त्र—सज्ञा पु० [स०] एक अस्त्र जो चद्रमा का अस्त्र माना जाता है।

सोमेश्वर—सज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "सोमनाथ"। २ सगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।

सोयⓅ—सर्व० [हिं० सो+ही, ई] वही। सर्व० दे० "सो"।

सोया—वि० [हिं० √सो] निद्रित। सुप्त। सज्ञा पु० दे० "सोआ"।

सोरⓅ—सज्ञा पुं० [फा० शोर] १ शोर। हल्ला। कोलाहल। २ प्रसिद्धि। नाम। सज्ञा स्त्री० [सं० शटा ?] जड़। मूल।

सोरठ—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] १ गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २ सोरठ देश की राजधानी, सूरत। उ०—नृप इक वीरभद्र अस नामा। सोरठ नगर माहिँ तेहि धामा। —विश्रामसागर। सज्ञा पु० एक ओड़व राग।

सोरठा—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] अड़तालीस मात्राओं का एक छद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। उ०—जिहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवर वदन। करहु अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभ गुण सदन ॥

सोरनी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँवारना+ई (प्रत्य०)] १. झाड़ू। बुहारी। कूचा। २ मृतक का त्रिरात्रि नामक सस्कार।

सोरह‡Ⓟ—वि० सज्ञा पुं० दे० "सोलह"।

सोरही†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १ जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २ वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेलते हैं।

सोराⓅ‡—सज्ञा पुं० दे० "शोरा"। उ०—सीतलताऽरु सुबास की घटै न महिमा मूरु। पीनस वारै जौ तज्यौ सोरा जानि कपूरु। —विहारी०।

सोलंकी—सज्ञा पु० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।

सोलह—वि० [सं० षोडश] जो गिनती में दस से छ अधिक हो। षोडश।

सज्ञा पुं० दस और छ की सख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलह परियों का नाच=दे० "सोरही" २। सोलहो आने=सपूर्ण। पूरा पूरा।

सोला—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलके से अँगरेजी ढग की टोपी बनती है।

सोवज—सज्ञा पुं० दे० "सावज"।

सोवनⓅ†—सज्ञा पुं० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव।

सोवनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "सोना"।

सोवरी†—सज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।

सोवा—सज्ञा पुं० दे० "सोआ"। उ०—साग चना सँग सब चौंराई। सोवा अरु सरसों सरसाई। —सूर०।

सोवाना—क्रि० स० दे० "सुलाना"।

सोवियट, सोवियत—सज्ञा पुं० [रूसी] १ रूस में सैनिकों और मजदूरों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की सभा। २ आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओं के प्रतिनिधियों में चलता है।

सोवयाⓅ†—सज्ञा पुं० [हिं० √सोव+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

सोषणⓅ—सज्ञा पुं० दे० "शोषण"।

सोषनाⓅ—क्रि० अ० दे० "सोखना"।

सोषु, सोसुⓅ—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला।

सोसन—सज्ञा पु० [फा० सौसन] फूल का एक पौधा जो भारतवर्ष में हिमालय के पश्चिमोत्तर भाग में पाया जाता है।

सोसनी—वि० [हिं० सोसन+ई (प्रत्य०)] सोसन के फूल के रग का। लाली लिए नीला।

सोसाइटी, सोसायटी—सज्ञा स्त्री० [अं०] १ समाज। २ सभा। मंडली।

सोस्मिⓅ—दे० "सोऽहम्"। उ०—अजपा कि जो सोस्मि उसासा। सुमिरि नाम सहित निश्वासा। —विश्रामसागर।

सोहँ‡Ⓟ—क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सोहं, सोहंग—दे० "सोऽहम्"।

सोहगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

सोहन—वि० [सं० शोभन] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।

संज्ञा पुं० सुंदर पुरुष। नायक।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

सोहनपपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन+पपड़ी] एक प्रकार की मिठाई।

सोहन हलवा—संज्ञा पुं० [हिं० सोहन+अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना—क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २ अच्छा लगना।

†वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर। मनोहर।

सोहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू।

वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुंदर। सुहावनी।

सोहबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संगसाथ। संगत। २. संभोग। स्त्रीप्रसंग।

सोहमस्मि—दे० "सोऽहम्"।

सोहर—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।

संज्ञा स्त्री० [सं० सूतका] सूतिकागृह। सौरी।

सोहरदⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "सौहार्द"।

सोहराना—क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सोहला—संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १ वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।

सोहाइनⓅ†—वि० दे० "सुहावना"।

सोहाग†—संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।

सोहागिन—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहागिल—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहाता—वि० [हिं० सोहना] [स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुंदर। अच्छा।

सोहाना—क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २. रुचिकर होना। अच्छा लगना। रुचना।

सोहाया—वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहाई] शोभित। शोभायमान। सुंदर।

सोहारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शष्कुलि, प्रा० सक्कुलि ?] पूरी। उ०—मोतीचूर मूर के मोदक ओदक की उजियारी जी। सेमई सेव सँजना सूरन सोवा सरस सोहारी जी। —विश्रामसागर।

सोहावना—वि० दे० "सुहावना"।

क्रि० अ० दे० "सोहाना"।

सोहासितⓅ†—वि० [सं० सुभाषित] १ प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २. ठकुरसोहाती।

सोहिं†—क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सोहिआⓅ—वि० [सं० शोभित] सुशोभित। उ०—पल्लविभ कुसुमिभ्र फलिभ्र उपवन चूभ्र चंपक सोहिआ।

सोहिनी—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी।

संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

सोहिल—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] अगस्त्य तारा।

सोहिला—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।

सोहींⓅ†—क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।

सोहैंⓅ—क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। आगे।

सौंⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"। उ०—सुंदर स्याम हँसत सजनी सौं नंद बबा की सौं री। —सूर०।

अव्य०, प्रत्य० दे० "सों" या "सा"।

सौंकारा, सौंकेरा—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] सवेरा। तड़का।

सौंकेरे—क्रि० वि० [हिं० सौंकारा] १ सवेरे। तड़के। २ जल्दी।

सौंधा—वि० [हिं० महँगा का उलटा] १. अच्छा। उत्तम। २ उचित। ठीक।

सौंघाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंघा+ई (प्रत्य०)] अधिकता।

सौंचना†—क्रि० स० [सं० शौच] १ मल त्याग करना या उसके बाद हाथ पैर धोना। २. पानी छूना। आबदस्त लेना।

सौंचर—संज्ञा पुं० दे० "सोंचर नमक"।

सौंचाना—क्रि० स० [हिं० सौंचना का स० रूप] १. शौच कराना। मलत्याग कराना। हगाना। २ मलत्याग के अनंतर किसी की गुदा को पानी से साफ करना। पानी छुलाना। आबदस्त कराना।

सौंजⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"। उ०—ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय। —सूर०।

सौंजाईⓅ—संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।

सौंड, सौंड़ाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० √सो+√ओढ़] ओढ़ने का भारी कपड़ा।

सौंतुखⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सम्मुख] सामने।

क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

सौंदन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।

सौंदना—क्रि० स० [सं० संधूम ?] आपस में मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना।

सौंदर्ज—संज्ञा पुं० दे० "सौंदर्य"।

सौंदर्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर होने का भाव या धर्म। सुंदरता। खूबसूरती।

सौंधⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सौध"।

संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] सुगंध। खुशबू।

सौंधना—क्रि० स० [हिं० सौंध से ना० धा०] सुगंधित करना। सुवासित करना। वासना।

सौंधा—वि० [हिं० सोंधा] १ दे० "सोंधा"। २. रुचिकर। अच्छा।

सौंनमक्खी—संज्ञा स्त्री० दे० "सोनामक्खी"।

सौंपना—क्रि० स० [सं० समर्पण] १ सुपुर्द करना। हवाले करना। २ सहेजना।

सौंफ—संज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।

सौंफिया, सौंफी—वि० [हिं० सौंफ+इया (प्रत्य०)] १ सौंफ का बना हुआ। २ जिसमें सौंफ का योग हो।

संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।

सौंभरि—संज्ञा पुं० दे० "सौभरि"।

सौंर—संज्ञा स्त्री० दे० 'सौरी"।

सौंरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवर+ई (प्रत्य०)] साँवलापन।

सौंरनाⓅ—क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना।

क्रि० अ० दे० 'सँवारना"।

सौंहⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] शपथ। कसम। उ०—जो कहिए घर दूरि तुम्हारे बोलत सुनिए टेर। तुमहि सौंह वृषभानु बबा की प्रात साँझ एक फेर। —सूर०।

संज्ञा पुं०, क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।

सौंहन—संज्ञा पुं० दे० "सोहन"।

सौंही—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।

सौ—वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।

संज्ञा पुं० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

मुहा०—सौ बात की एक बात=सारांश। तात्पर्य। निचोड़।

वि० दे० "सा"।

सौक—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] सौत। सपत्न।

वि० [हिं० सौ+एक] एक सौ।

सौकन†—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

सौकर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकरता। सुसाध्यता। २. सुविधा। सुभीता। ३ सुकरता। सुकरपन।

सौकुमार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

सौखⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "शौक"।

सौख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २ सुख। आराम।

सौगंद—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगंध] शपथ। कसम।

सौगंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगंधित तेल। इत्र आदि का व्यापार करनेवाला। गंधी। २ सुगंध। खुशबू।

संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।

सौगत, सौगतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २ अनीश्वरवादी। नास्तिक।

सौगरिया—संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति।

सौगात—संज्ञा स्त्री० [तु०] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रों को देने के लिये लाई जाय। भेंट। उपहार। तोहफा।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात] १. सौगात संबंधी। २ सौगात में देने योग्य। बढ़िया।

सौघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। कम दाम का। महँगा का उलटा।

सौचⓅ—संज्ञा पुं० दे० "शौच"।

सौज—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] उपकरण। सामग्री। साज सामान।

सौजना—क्रि० अ० दे० "सजना"।

सौजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत।

सौजा—संज्ञा पुं० [हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।

सौत—संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सपत्नी। सवत। उ०—काल ब्याही नई हौं तो धाम हू न गई पुनि आजहूते मेरे सीस सौत को बसाई है।—हनुमन्नाटक।

मुहा०—सौतिया डाह=(१) दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। (२) द्वेष। जलन।

सौतन, सौतिन—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

सौतुक, सौतुखⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सौतुख"।

सौतेला—वि० [हिं० सौत+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। २ जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।

सौत्रामणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सौदा—संज्ञा पुं० [अ०] १ क्रयविक्रय की वस्तु। चीज। माल। २ लेनदेन। व्यवहार। ३ क्रयविक्रय। व्यापार।

यौ०—सौदा सुलुफ = खरीदने की चीजवस्तु। सौदा सूत=व्यवहार।

संज्ञा स्त्री० [फा०] पागलपन। उन्माद।

सौदाई—संज्ञा पुं० [अ० सौदा] पागल। बावला।

सौदागर—संज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला।

सौदागरी—संज्ञा पुं० [फा०] व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।

सौदामनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। विद्युत।

सौदामिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सौदामनी"।

सौध—संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन। प्रासाद। उ०—रत्नसौध के वातायन, जिनमें आता मधुमदिर समीर।—कामायनी। २ चाँदी। रजत। ३ दूधिया पत्थर।

सौधना—क्रि० स० दे० "सौंधना"।

सौनⓅ—क्रि० वि० [सं० संमुख] सामने।

सौनक—संज्ञा पुं० दे० "शौनक"।

सौनन†—संज्ञा स्त्री० दे० "सौंदन"।

सौनाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "सौना"।

सौपनाⓅ—क्रि० स० दे० "सौंपना"।

सौबल—संज्ञा पुं० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र सकुनि।

सौभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। २. एक प्राचीन जनपद। ३ उक्त जनपद के राजा।

सौभग—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभाग्य। खुशकिस्मती। २ सुख। आनंद। ३. ऐश्वर्य। धन दौलत। सुंदरता। सौंदर्य।

सौभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु। २. वह युद्ध जो सुभद्रा के कारण हुआ था।

वि० सुभद्रा संबंधी।

सौभरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मांधाता की पचास कन्याओं से विवाह करके ५००० पुत्र उत्पन्न किए थे।

सौभागिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन। उ०—सौभागिनी करै क्रम खोटा। तऊ ताहि बड़ि पति की ओटा।—विश्रामसागर।

सौभाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा भाग्य। खुशकिस्मती। २ सुख। आनंद। ३ कल्याण। कुशल। क्षेम। ४. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५ ऐश्वर्य। वैभव। ६ सुंदरता। सौंदर्य।

सौभाग्यवती—वि० स्त्री० [सं०] १ (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग (पति) बना हो। सधवा। सुहागिन। २. एक आदरसूचक उपाधि जो सधवा स्त्रियों के नाम के पूर्व लगती है।

सौभाग्यवान्—वि० [सं० सौभाग्यवत्] [स्त्री० सौभाग्यवती] १ अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। २ सुखी और संपन्न।

सौभिक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] 'सुभिक्ष' का भाववाचक रूप।

वि० दे० "सुभिक्ष"।

सौमⓅ—वि० दे० "सौम्य"।

सौमन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।

सौमनस—वि० [सं०] १ फूलों का। २ मनोहर। रुचिकर। प्रिय।

संज्ञा पुं० १ प्रफुल्लता। आनंद। २ पश्चिम दिशा का हाथी (पुराण)। ३ अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र।

सौमनस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसन्नता। २. प्रेम। प्रीति। ३ संतोष। ४ अनुकूलता।

सौमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण। २ मित्रता। दोस्ती।

सौमित्रा (पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।

सौम्य—वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] १. सोमलता संबंधी। २. चंद्रमा संबंधी। ३ शीतल और स्निग्ध। ४. सुशील। शांत। ५ मांगलिक। शुभ। ६. मनोहर। सुंदर।

संज्ञा पुं० १. सोम यज्ञ। २ चंद्रमा का पुत्र बुध। ३ ब्राह्मण। ४. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ५ साठ संवत्सरों में से एक। ६. सज्जनता। ७. एक दिव्यास्त्र।

सौम्यकृच्छ्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत।

सौम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौम्य होने का भाव या धर्म। २. सुशीलता। शांतता। ३ सुंदरता। सौंदर्य।

सौम्यदर्शन—वि० [सं०] सुंदर। प्रियदर्शन।

सौम्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

सौम्याशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिस मुक्तक विषमवृत्त के पहले दो चरणों में १६ गुरु वर्ण और दूसरे दोनों में ३२ लघु वर्ण हों। उ०—आठों यामा शंभू गावै। मद्भगती तें मुक्ती पावै। सिख मम धरि हिय भ्रम सब तजि कर। भज नर हर हर हर हर हर हर॥ इसके उलटे को (अर्थात् पहले दो में ३२ लघु और दूसरे दोनों में १६ गुरु को) ज्योति शिखा कहते हैं।

सौर—[सं०] १. सूर्यसंबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. शनि। २. सूर्य का उपासक। ३ सूर्यवंशी।

(पु)संज्ञा स्त्री० [हिं० सौड़] १. चादर। ओढ़ना। २. दे० "सौरी" १.।

सौरज (पु)—संज्ञा पुं० दे० "शौर्य"। उ०—सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।—मानस।

सौर दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

सौरभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध। सुगंध। महक। उ०—व्याकुल उस मधु सौरभ से मलयानिल धीरे धीरे।—आँसू। २. केसर। ३. आम। आम्र। ४. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण और दो सगण होते हैं। उ०—श्रीगुरु सुमंत्र धरिए चित ही। केशव सुनाम जपिए नित ही।

सौरभक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। जिसके प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और अंत्य लघु, द्वितीय में नगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु, तृतीय में रगण, नगण, भगण और अंत्य गुरु तथा चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु हों। उ०—सब त्यागिए असंत काम। शरण गहिए सदा हरी। सर्व सूल भव जायँ टरी। भजिए अहो निशि हरी हरी हरी।

सौरभित—वि० [सं० सौरभ] सौरभयुक्त। सुगंधित। खुशबूदार।

सौर मास—संज्ञा पुं० [सं०] एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।

सौर वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।

सौरसेन—संज्ञा पुं० दे० "शौरसेन"।

सौरस्य—संज्ञा पुं० [सं०] 'सुरस' का भाव। सुरसता।

सौराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ३ एक वर्णवृत्त।

सौराष्ट्रमृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन।

सौराष्ट्रिक—वि० [सं०] सौराष्ट्र देश संबंधी।

सौरास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरि—संज्ञा पुं० दे० "शौरि"।

सौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने। सूतिकागार।

संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली।

सौर्य—वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सूर्य का।

सौवर्चल—संज्ञा पुं० [सं०] सोंचर नमक।

सौवर्ण—वि० [सं०] सोने का।

संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।

सौवीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु नद के आसपास का प्राचीन प्रदेश। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन—संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा।

सौष्ठव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुडौलपन। उपयुक्तता। २ सुंदरता। सौंदर्य। ३ नाटक का एक अंग।

सौसन—संज्ञा पुं० दे० "सोसन"।

सौसनी—वि० संज्ञा पुं० दे० "सोसनी"।

सौहँ—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ]। कसम।

क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। आगे।

सौहार्द, सौहार्द्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुहृद् का भाव। मित्रता। मैत्री।

सौंहीं—क्रि० वि० [हिं० सौंह] सामने। आगे।

सौहृद—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सौहृद्य] १ मित्रता। दोस्ती। २ मित्र। दोस्त।

स्कंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। बहना। गिरना। २. विनाश। ध्वंस। ३. कार्तिकेय जो शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४ शिव। ५. शरीर। देह। ६ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।

स्कंदगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट्। (ई० ४५० से ४६७ तक)।

स्कंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोठा साफ होना। रेचन। २. निकलना। बहना। गिरना।

स्कंदपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंदित—वि० [सं०] निकला हुआ। गिरा हुआ। स्खलित। पतित।

स्कंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंधा। मोढ़ा। २ वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती हैं। कांड। दंड। ३ डाल। शाखा। ४ समूह। गरोह। झुंड। ५ सेना का अंग। व्यूह। ६ ग्रंथ का विभाग जिसमें कोई पूरा प्रसंग हो। खंड। ७ शरीर। देह। ८ मुनि। आचार्य। ९. युद्ध। संग्राम। १० आर्या छंद का एक भेद। ११ बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पाँचों पदार्थ। १२ दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

स्कंधावार—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का डेरा या शिविर। कंप। २ छावनी। सेनानिवास। ३. सेना। फौज।

स्कंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। स्तंभ। २ परमेश्वर। ईश्वर।

स्काउट—संज्ञा पुं० [अँ०] दे० "बालचर"।

स्कूल—संज्ञा पुं० [अँ०] [वि० स्कूली] १. विद्यालय। २. संप्रदाय या शाखा।

स्खलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चीरना। फाड़ना। २. हत्या। ३. पतन। गिरना।

स्खलित—वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। २. फिसला हुआ। लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३ चूका हुआ।

स्टांप—संज्ञा पुं० [अँ०] १ वह सरकारी कागज जिसपर कानूनी लिखा पढ़ी होती है। २ डाक या अदालत का टिकट। ३ मोहर। छाप।

स्टाक—संज्ञा पुं० [अँ०] १. बिक्री या बेचने का माल। २ गोदाम। ३. भांडार।

स्टीम—संज्ञा पुं० [अँ०] भाप। वाष्प।

स्टीमर—संज्ञा पुं० [अँ०] भाप से चलने वाला जहाज।

स्टूल—संज्ञा पुं० [अँ०] तिपाई।

स्टेज—संज्ञा पुं० [अँ०] १ रंगमंच। २ रंगभूमि। ३ मंच।

स्टेट—संज्ञा पुं० [अँ०] १. राज्य। २. देशी राज्य। ३ भारतीय गणतंत्र। ४ भारतीय गणतंत्र के अंतर्गत शासन के लिये विभाजित भूभाग। प्रदेश। सूबा।

संज्ञा पुं० [अँ० एस्टेट] १ बड़ी जमींदारी। २ स्थावर और जंगम संपत्ति।

स्टेशन—संज्ञा पुं० [अँ०] १ रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान। २ किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत स्थान।

यौ०—स्टेशन मास्टर=किसी स्टेशन का प्रधान कर्मचारी।

स्तंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। थंभा। थूनी। २ पेड़ का तना। तरुस्कंध। ३. साहित्य में एक प्रकार का सात्विक भाव। किसी कारण से संपूर्ण अंगों की गति का अवरोध। जड़ता। अचलता। ४. प्रतिबंध। रुकावट। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी शक्ति को रोकते हैं।

स्तंभक—वि० [सं०] १ रोकनेवाला। रोधक। २ कब्जा करनेवाला। ३ वीर्य रोकनेवाला।

स्तंभन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकावट। अवरोध। निवारण। २ वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब। ३ वीर्यपात रोकने की दवा। ४ जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५ एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ६ कब्ज। मलावरोध। ७ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तंभित—वि० [सं०] १ जो जड़ या अचल हो गया हो। निश्चल। निःस्तब्ध। सुन्न। २. रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध।

स्तन—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है।

मुहा०—स्तन पीना=स्तन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना।

स्तनन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल का गरजना। २ ध्वनि या शब्द करना। ३ आर्तनाद।

स्तनपान—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन का दूध पीना। स्तन्यपान।

स्तनपायी—वि० [सं० स्तनपायिन्] स्तन से दूध पीनेवाला (जीवधारी)।

स्तनहार—संज्ञा पुं० [सं०] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

स्तनित—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल की गरज। २ बिजली की कड़क। ३. ताली बजाने का शब्द।

वि० गरजता या शब्द करता हुआ।

स्तन्य—वि० [सं०] स्तन संबंधी।

संज्ञा पुं० दे० "दूध"।

स्तब्ध—वि० [सं०] १ जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। स्तंभित। निश्चेष्ट। २ दृढ़। स्थिर। ३ मंद। धीमा।

स्तब्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्तब्ध का भाव। जड़ता। २ स्थिरता। दृढ़ता।

स्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १ तह। परत। तबक। थर। २. सेज। शय्या। तल्प। ३ भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है।

स्तरण—संज्ञा पुं० [सं०] फैलाने या बिखेरने की क्रिया।

स्तव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूपकथन, वंदना या गुणगान। स्तुति। स्तोत्र।

स्तवक—संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। २ समूह। ढेर। ३ पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद। ४ वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो।

स्तवन—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति करने की क्रिया। गुणकीर्तन। स्तव। स्तुति।

स्तिमित—वि० [सं०] १ ठहरा हुआ। निश्चल। २. भीगा हुआ। गीला।

स्तीर्ण—वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा या छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

स्तुत—वि० [सं०] जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। प्रशंसित।

स्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुणकीर्तन। स्तव। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई। २ दुर्गा।

स्तुतिपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुतिपाठ करनेवाला। २. चारण। भाट। मागध। सूत।

स्तुतिवाचक—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

स्तुत्य—वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊँचा ढूह या टीला। २ वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृतिचिह्न सुरक्षित हों।

स्तेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। २. चोरी।

स्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] चोरी। चौर्य।

स्तैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] चोर का काम। चोरी।

स्तोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बूँद। बिंदु। २ पपीहा। चातक।

वि० १ कम। थोड़ा। अल्प। २ लघु। छोटा।

स्तोता—वि० [सं० स्तोतृ] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूपकथन, वंदना या गुणकीर्तन। स्तव। स्तुति।

स्तोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तुति। प्रार्थना। २ यज्ञ। ३ एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४ समूह। राशि।

स्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारी। औरत। २ पत्नी। जोरू। ३ मादा। ४. एक वृत्त जिसके प्रति चरण में दो गुरु होते हैं। उ०—गंगा। ध्यावौ॥ कामा। पावौ।

संज्ञा स्त्री० दे० "इस्तिरी"।

स्त्रीत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री का भाव या धर्म। स्त्रीपन। जनानपन। २. व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्रीलिंग का सूचक होता है।

स्त्रीधन—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जिसपर स्त्रियों का ही अधिकार हो।

स्त्रीधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।
स्त्रीप्रसंग—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।
स्त्रीलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. भग। योनि। २. हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्रीवाचक होता है, जैसे—घोड़ा शब्द पुल्लिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है।
स्त्रीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। पत्नीव्रत।
स्त्रीसमागम—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। प्रसंग।
स्त्रैण—वि० [सं०] १ स्त्री संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला। औरत'। मेहरा।
स्थ—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित। कायम। (ख) उपस्थित। वर्तमान। (ग) रहनेवाला। निवासी। (घ) लीन। रत।
स्थकित—वि० [हिं० थकित] थका हुआ।
स्थगन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुछ समय के लिये रोकना या टालना। २. अवरोध। ३ आच्छादन।
स्थगित—वि० [सं०] १ जो कुछ समय के लिये रोक या टाल दिया गया हो। मुलतवी। २ रोका हुआ। अवरुद्ध। ३ ढका हुआ। आच्छादित।
स्थल—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूमि। भूभाग। जमीन। २ जलशून्य भूभाग। खुश्की। ३ स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका। ५ निर्जल और मरु भूमि। कर।
स्थलकमल—संज्ञा पुं० [सं०] कमल को आकृति का एक पुष्प जो स्थल में होता है।
स्थलचर, स्थलचारी—वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।
स्थलज—वि० [सं०] स्थल या भूमि में उत्पन्न। स्थल में उत्पन्न होनेवाला।
स्थलपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] स्थलकमल।
स्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खुश्क जमीन। भूमि। २ स्थान। जगह।
स्थलीय—वि० [सं०] १. स्थल या भूमि संबंधी। स्थल का। २ किसी स्थान का। स्थानीय।
स्थविर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. ब्रह्मा। ३. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

स्थाई—वि० दे० "स्थायी"।
स्थाणु—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभ। थूनी। स्तंभ। २ पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूँठ। ३ शिव।
वि० स्थिर। अचल।
स्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. जगह। ठाम। स्थल। २. भूभाग। जमीन। मैदान। ३. काम करने की जगह। पद। ओहदा। ४ डेरा। घर। आवास। ५. ठहराव। टिकाव। स्थिति। ६. मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौका।
स्थानच्युत—वि० [सं०] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।
स्थानभ्रष्ट—वि० दे० "स्थानच्युत"।
स्थानांतर—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरा स्थान। प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान।
स्थानांतरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की क्रिया। २ बदली।
स्थानांतरित—वि० [सं०] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो।
स्थानापन्न—वि० [सं०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। कायम मुकाम। एवजी।
स्थानिक—वि० [सं०] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।
स्थानीय—वि० [सं०] उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। स्थानिक।
स्थापक—वि० [सं०] १ रखने या कायम करनेवाला। स्थापनकर्ता। २ मूर्ति बनानेवाला। ३ सूत्रधार का सहकारी (नाटक)। ४ कोई संस्था खोलने या खड़ी करनेवाला। संस्थापक।
स्थापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन-निर्माण। राजगीरी। मेमारी। २. वह विद्या जिसमें भवननिर्माण संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है।
स्थापत्य वेद—संज्ञा पुं० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तु शिल्प या भवननिर्माण का विषय वर्णित है।
स्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्थापनीय] १. खड़ा करना। उठाना। २ रखना। जमाना। ३ नया काम जारी करना। ४ (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ५ निरूपण।

स्थापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठाना। थापना। २ जमा कर रखना। ३. सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन करना। ४ युक्ति, तर्क अथवा प्रमाणपूर्वक निश्चित मत।
स्थापित—वि० [सं०] १ जिसकी स्थापना की गई हो। प्रतिष्ठित। २. व्यवस्थित। निर्दिष्ट। ३. निश्चित।
स्थायित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता। दृढ़ता। मजबूती।
स्थायी—वि० [सं० स्थायिन्] १. ठहरनेवाला। जो स्थिर रहे। २ बहुत दिन चलनेवाला। टिकाऊ।
स्थायी भाव—संज्ञा पुं० [सं०] सहृदयों के मन में वासना रूप में स्थित रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद प्रभृति नौ प्रधान भाव जो विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में प्रतिबिंबित होते हैं और काव्य और नाटक में रस कहलाते हैं।
स्थायी समिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा या संमेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।
स्थाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हंडा। हँडिया। २ मिट्टी की रिकाबी।
स्थालीपुलाक न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक बात को देखकर उस संबंध की और सब बातों का मालूम होना।
स्थावर—वि० [सं०] [भाव० संज्ञा स्थावरता] १ अचल। स्थिर। २ जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके। जंगम का उलटा। अचल।
संज्ञा पुं० १ पहाड़। पर्वत। २ अचल संपत्ति।
स्थावर विष—संज्ञा पुं० [सं०] स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर।
स्थित—वि० [सं०] १ अपने स्थान पर ठहरा हुआ। अवलंबित। २ बैठा हुआ। आसीन। ३. अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। ४ विद्यमान। मौजूद। ५ रहनेवाला। निवासी। अवस्थित। ६. खड़ा हुआ। ७ ऊर्ध्व।
स्थितता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठहराव। स्थिति।

स्थितप्रज्ञ—वि० [सं०] १ जिसकी विवेक बुद्धि स्थिर हो। २ समस्त मनोविकारों से रहित। आत्मसंतोषी।

स्थिति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक स्थान या अवस्था में रहना। अवस्थान। २ दशा। हालत। अवस्था। ३ रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। ४ अस्तित्व। ५. निवास। ६ पद। दर्जा। ७ पालन। ८ स्थिरता।

स्थितिस्थापक—सज्ञा पुं० [सं०] वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय।

वि० १ किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था में प्राप्त करानेवाला। २ लचीला।

स्थितिस्थापकता—सज्ञा स्त्री० [सं०] लचीलापन।

स्थिर—वि० [सं०] १ निश्चल। ठहरा हुआ। २ निश्चित। ३ शांत। ४ दृढ़। अटल। ५ स्थायी। सदा बना रहनेवाला। ६. नियत। मुकर्रर।

सज्ञा पुं० १ शिव। २ ज्योतिष में एक योग। ३ देवता। ४. पहाड़। पर्वत। ५. एक प्रकार का छंद।

स्थिरचित्त—वि० [सं०] जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। दृढ़चित्त।

स्थिरता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। २ दृढ़ता। मजबूती। ३. स्थायित्व। ४. धैर्य।

स्थिरबुद्धि—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़चित्त।

स्थिरीकरण—सज्ञा पुं० [सं०] स्थिर या दृढ़ करना।

स्थूल—वि० [सं०] १ मोटा। पीन। २. सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य। सूक्ष्म का उलटा।

सज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसका इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। गोचर पिंड।

स्थूलता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थूल होने का भाव। २ मोटापन। मोटाई। ३ भारीपन।

स्थैर्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिरता। २ दृढ़ता।

स्नात—वि० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ।

स्नातक—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो। २ वह जो किसी गुरुकुल, विद्यालय आदि की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ हो।

स्नान—सज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल से धोना। अवगाहन। नहाना। २ शरीर के अंगों को धूप या वायु के सामने इस प्रकार करना कि उनके ऊपर उसका पूरा प्रभाव पड़े, जैसे—वायुस्नान।

स्नानागार—सज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नायविक—वि० [सं०] स्नायु संबंधी।

स्नायु—सज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर की वे नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध—वि० [सं०] जिसमें स्नेह या तेल हो।

स्निग्धता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्निग्ध या चिकना होने का भाव। चिकनापन। २ प्रिय होने का भाव।

स्नेह—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २ चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज, विशेषत तेल। ३. कोमलता।

स्नेहन—सज्ञा पुं० [सं०] १. चिकनाहट उत्पन्न करना। चिकनाई देना। २. शरीर में तेल या सुगंधित लेप लगाना।

स्नेहपात्र—सज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपात्र। प्यारा।

स्नेहपान—सज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक की एक क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।

स्नेही—सज्ञा पुं० [सं० स्नेहिन्] वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी। मित्र।

स्पंद, स्पंदन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्पंदित] १ धीरे धीरे हिलना। काँपना। २ (अंगों आदि का) फड़कना।

स्पंदित—वि० [सं०] हिलता, काँपता या फड़फड़ाता हुआ।

स्पर्द्धा—सज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० स्पर्द्धित] १. किसी के मुकाबले में आगे बढ़ने की इच्छा। होड़। २ साहस। हौसला। ३ संघर्ष। रगड़। ४ साम्य। बराबरी।

स्पर्द्धी—वि० [सं० स्पर्द्धिन्] स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्धा—सज्ञा स्त्री० दे० "स्पर्द्धा"।

स्पर्श—सज्ञा पुं० [सं०] १ दो वस्तुओं का आपस में इतना पास पहुँचना कि उनके तलों का कुछ अंश आपस में सट जाय। छूना। २ त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पड़नेवाले दबाव का ज्ञान होता है। ३ त्वगिंद्रिय का विषय। ४ (व्याकरण में) "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन। ५. ग्रहण या उपराग में सूर्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ।

स्पर्शजन्य—वि० [सं०] १ जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो। २. संक्रामक। छुतहा।

स्पर्शनेंद्रिय—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "स्पर्शेंद्रिय"।

स्पर्शमणि—सज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर।

स्पर्शास्पर्श—सज्ञा पुं० [सं० स्पर्श+अस्पर्श] छूने या न छूने का भाव या विचार।

स्पर्शी—वि० [सं० स्पर्शिन्] [स्त्री० स्पर्शिनी] छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है। त्वगिंद्रिय। त्वचा।

स्पष्ट—वि० [सं०] साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला।

सज्ञा पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं।

स्पष्ट कथन—सज्ञा पुं० [सं०] वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है।

स्पष्टतया, स्पष्टत—क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से। साफ साफ।

स्पष्टता—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्पष्ट होने का भाव। सफाई।

स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी—वि० [सं०] जो कहने में किसी का मुलाहजा न करता हो।

स्पष्टीकरण—सज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट करने की क्रिया। किसी बात को स्पष्ट या साफ करना।

स्पिरिट—सज्ञा स्त्री० [अं०] १ एक तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम आता है। २ आत्मा। ३ मुख्य सिद्धांत या अभिप्राय।

स्पीकर—सज्ञा पुं० [अं०] १. वक्ता। व्याख्यानदाता। २ विधान सभा या लोकसभा आदि का सभापति।

स्पीच—सज्ञा स्त्री० [अं०] व्याख्यान। भाषण।

स्पीड—सज्ञा स्त्री० [अं०] गति। चाल।

स्पृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. असवरग। २ लजालू। लाजवती। ३ ब्राह्मी बूटी।
स्पृश—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला।
स्पृश्य—वि० [सं०] जो स्पर्श करने के योग्य हो। छूने लायक।
स्पृष्ट—वि० [सं०] छूआ हुआ।
स्पृहणीय—वि० [सं०] १. जिसके लिये अभिलाषा या कामना की जा सके। वाञ्छनीय। उ०—यह कितनी स्पृहणीय बन गई, मधुर जागरण सी छविमान। —कामायनी। २ गौरवशाली।
स्पृहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना।
स्पृही—वि० [सं० स्पृहिन्] [वि० स्पृह्य] इच्छा करनेवाला।
स्पेशल—वि० [अं०] विशेष। खास।
स्प्रिंग—संज्ञा स्त्री० [अं०] कमानी।
स्फटिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है। २. सूर्यकांत मणि। ३. शीशा। काँच। ४ फिटकिरी।
स्फार—वि० [सं०] १ प्रचुर। विपुल। बहुत। २. विकट।
स्फाल—संज्ञा पुं० दे० "स्फूर्ति"।
स्फीत—वि० [सं०] [भाव० स्फीति] १. बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २ फूला हुआ। ३. समृद्ध।
स्फीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बढ़ती। वृद्धि।
स्फुट—वि० [सं०] १ खिला हुआ। विकसित। २. फुटकर। अलग अलग। ३ स्पष्ट। साफ। ४ जो सामने दिखाई देता हो। प्रकाशित। व्यक्त।
स्फुटन—संज्ञा पुं० [सं०] १. खिलना। फूलना। २. फूटना। ३ सामने आना।
स्फुटित—वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. जो स्पष्ट किया गया हो। ३ हँसता हुआ।
स्फुरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ का जरा जरा हिलना। कंपन। २ अंग का फरकना। ३ दे० "स्फूर्ति"।
स्फुरति(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "स्फूर्ति"।
स्फुरित—वि० [सं०] जिसमें स्फुरण हो।
स्फुलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] चिनगारी। उ०—ये सब स्फुलिंग हैं मेरी इस ज्वालामयी जलन के।—आँसू।
स्फूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धीरे धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २ कोई काम करने के लिये मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३. फुरती। तेजी।
स्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फूलना। २. शरीर में होनेवाला फोड़ा, फुंसी आदि।
स्फोटक—संज्ञा पुं० [सं०] फोड़ा। फुंसी।
वि० जोर से भमकने या फूटनेवाला।
स्फोटन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंदर से फोड़ना। २. विदारण। फाड़ना।
स्मर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। मदन। २. स्मरण। स्मृति। याद।
स्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी अनुभूति अथवा देखी सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में आना। याद आना। २. भक्ति के ९ भेदों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देव को बराबर याद किया करता है। ३. एक अलंकार जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर उससे मिलते जुलते किसी विशिष्ट पदार्थ या बात का स्मरण हो आने का वर्णन होता है।
स्मरणपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिये लिखा जाय।
स्मरणशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मानसिक शक्ति जो पुरानी अनुभूतियों, घटनाओं और सुनी या देखी हुई बातों को सुरक्षित करके आवश्यकता के अनुसार हमारे मन में फिर से ले आती है। याद रखने की शक्ति। धारणा शक्ति।
स्मरणीय—वि० [सं०] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक।
स्मरना(पु)—क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।
स्मरारि—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
स्मर्ण(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।
स्मशान—संज्ञा पुं० दे० "श्मशान"।
स्मारक—वि० [सं०] स्मरण करानेवाला।
संज्ञा पुं० १. वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिये प्रस्तुत की जाय। यादगार। २ वह चीज जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिये दी जाय। यादगार।
स्मार्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हुए हैं। २. वह जो स्मृतियों में लिखे अनुसार सद कृत्य करता हो। ३ स्मृतिशास्त्र का पंडित।
वि० स्मृति संबंधी। स्मृति का।
स्मित—संज्ञा पुं० [सं०] धीमी हँसी।
वि० १ खिला हुआ। विकसित। प्रस्फुटित। २ मुस्कराता हुआ।
स्मिति—संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।
स्मृत—वि० [सं०] याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।
स्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मरण शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। स्मरण। याद। २. हिंदुओं के धर्मशास्त्र जिनमें धर्म, दर्शन, आचारव्यवहार, शासननीति आदि के विवेचन हैं। ३. १८ की संख्या। ४. एक प्रकार का छंद।
स्मृतिकार—संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला।
स्यंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चूना। टपकना। रसना। २ गलना। ३ जाना। चलना। ४. रथ। ५ युद्ध का रथ। ६. वायु। हवा।
स्यमंतक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणोक्त एक मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्णचंद्र पर लगा था।
स्यात्—अव्य० [सं०] कदाचित। शायद।
स्याद्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] जैन दर्शन जिसमें किसी वस्तु के संबंध में कहा जाता है कि स्यात यह भी है, स्यात वह भी है आदि। अनेकांतवाद।
स्यान(पु)—वि० दे० "स्याना"।
स्यानप—संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन"।
स्यानपन—संज्ञा पुं० [हिं० स्याना+पन (प्रत्य०)] १. चतुरता। बुद्धिमानी। २. चालाकी।
स्याना—वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० स्यानी] १. चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। २ चालाक। धूर्त। ३. वयस्क। बालिग।
संज्ञा पुं० १. बड़ाबूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम।
स्यानापन—संज्ञा पुं० [हिं० स्याना+पन (प्रत्य०)] १ स्याना होने की अवस्था। युवावस्था। २ चतुराई। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्तता।
स्यापा—संज्ञा पुं० [फा० स्याहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।
मुहा०—स्यापा पड़ना=१ रोना चिल्लाना मचना। २ बिल्कुल उजाड़ या सुनसान होना।
स्यावास(पु)—अव्य० दे० "शाबास"।

स्याम(पु)—संज्ञा पुं०, वि० दे० "श्याम"।
    संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश।
स्यामक—संज्ञा पुं० दे० "श्यामक"।
स्यामकरन—संज्ञा पुं० दे० "श्यामकर्ण"।
स्यामता(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामता"।
स्यामल—वि० दे० "श्यामल"।
स्यामलिया—संज्ञा पुं० दे० "साँवला"।
स्यामा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा"।
स्यार†—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] [स्त्री० स्यारनी] सियार। गीदड़। श्रृगाल।
स्यारपन—संज्ञा पुं० [हिं० सियार+पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का स्वभाव।
स्यारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सियारी] सियार की मादा। गीदड़ी।
स्याल—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। श्याल। श्यालक।
    संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"।
स्यालिया†—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] गीदड़।
स्यावाज(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सावज"।
स्याह—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण का।
    संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहगोश—संज्ञा पुं० दे० "सियाहगोश"।
स्याहा—संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।
स्याही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक रंगीन तरल पदार्थ जो लिखने के काम में आता है। रोशनाई। मसि। २ कालापन। कालिमा।
    यौ०—स्याहीसोख=१ सोख्ता। २ बालूदानी।
    मुहा०—स्याही जाना=बालों का कालापन जाना। जवानी का बीत जाना।
    ३. कालिख। कालिमा।
    संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] साही (जंतु)।
स्यों, स्योह(पु)—अव्य० [सं० सह] १ सह। सहित। २ पास। समीप।
स्रग—संज्ञा पुं० दे० "श्रृंग"।
स्रक्—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं०] १ फूलों की माला। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है। उ०—बढ़त चरण, रति सुहरि अनुपला। जिमि सित पच्छ, नित्त बढ़त शशिकला॥ इसे शशिकला, शरभ और चंद्रावती भी कहते हैं।
स्रक—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "स्रक्"। उ०—स्रक चंदन वनिता विनोद सुख यह जर जरन वितायो।—सूर०।
स्रग—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "स्रक्"।
स्रग्धरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण और ३ यगण होते हैं। उ०—बोले माता! बिलोक्यो, फिरत सह चमू, बाग में स्रग्धरे ज्यों। काढ़ी मालारु मारे, विपुल रिपु बली, अश्वलो जीति के त्यों॥
स्रग्विणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं। उ०—रार री राधिका श्याम सों क्यों करै। सीख मो मान ले मान काहे धरै॥ इसे लक्ष्मीधर, श्रृंगारिणी, लक्ष्मीधरा और कामिनीमोहन भी कहते हैं।
स्रज—संज्ञा स्त्री० [सं०] माला।
स्रजना(पु)—क्रि० स० दे० "सृजना"।
स्रद्धा(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।
स्रम(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रम"।
स्रमित(पु)—वि० दे० "श्रमित"।
स्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहना। प्रवाह। २ टपकना। चूना। ३. कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। ४. मूत्र। पेशाब। ५ पसीना।
स्रवन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्रवना(पु)—क्रि० अ० [सं० स्रवण] १. बहना। चूना। टपकना। २ गिरना।
    क्रि० स० १ बहाना। टपकाना। २ गिराना।
स्रष्टा—संज्ञा पुं० [सं० स्रष्टृ] १. सृष्टि या विश्व को रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव।
    वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।
स्रस्त—वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २ शिथिल।
स्राध†—संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।
स्राप(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
स्रापित(पु)—वि० दे० "सापित"।
स्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। झरना। क्षरण। २ गर्भपात। गर्भस्राव। निर्यास। रस।
स्रावक—वि० [सं०] बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्राव करानेवाला।
स्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] बहाने, चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।
स्रावी—वि० [सं० स्राविन्] बहानेवाला।
स्रिंग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रृंग"।
स्रिजन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सृजन"।
स्रिय(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रिय"।
स्रुत(पु)—वि० दे० "श्रुत"।
स्रुति—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रुति"।
स्रुतिमाथ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रुति+मस्तक] विष्णु।
स्रुवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं। सुरवा।
स्रेनी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
स्रोत—संज्ञा पुं० [सं० स्रोतस्] १ पानी का बहाव या झरना। धारा। २. नदी। ३ वह कार्य या मार्ग जिसके द्वारा किसी वस्तु की उपलब्धि हो। जरिया।
स्रोतस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
स्रोता(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रोता"।
स्रोन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्रोनकन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रमकण] स्वेद कण। पसीने की बूँद।
स्रोनित(पु)—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
स्वः—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
स्व—वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वकीय—वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वकीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनय, आर्जव आदि गुणों से युक्त, गृहकर्मपरायण, पतिव्रता स्त्री (साहित्यदर्पण)। शील, सकोच, स्नेह, सौजन्य और सौंदर्य आदि गुणों से युक्त सती, पार्वती और सीता के समान मन, वचन और कर्म से पति से प्रेम करनेवाली स्त्री (रससाराश)।
स्वच्छ(पु)—वि० दे० "स्वच्छ"।
स्वगत—संज्ञा पुं० दे० "स्वगतकथन"।
    क्रि० वि० [सं०] आप ही आप। अपने आप से (कहना या बोलना)।
    वि० १ अपने में आया या लाया हुआ। आत्मगत। २ मन में आया हुआ। मनोगत।
स्वगतकथन—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में पात्र का इस प्रकार अपने आप से बोलना मानो कोई उसकी बात सुनता नहीं है। आत्मगत। अश्राव्य।
स्वच्छंद—वि० [सं०] १ [भाव० स्वच्छंदता] जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य करे। स्वाधीन। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

क्रि० वि० मनमाना। बेधड़क। निर्द्वंद्व।

स्वच्छ—वि० [सं०] [भाव० स्वच्छता] १. जिसमें किसी प्रकार की गंदगी न हो। निर्मल। साफ। २. उज्वल। शुभ्र। ३. स्पष्ट। साफ। ४. शुद्ध। पवित्र।

स्वच्छना(पु)—क्रि० स० [सं० स्वच्छ से हिं० ना० धा०] निर्मल करना। शुद्ध करना। साफ करना।

स्वच्छी—वि० दे० "स्वच्छ"।

स्वजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. रिश्तेदार।

स्वजनि, स्वजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। आत्मीया। २. सखी। सहेली।

स्वजन्मा—वि० [सं० स्वजन्मन्] अपने आप से उत्पन्न (ईश्वर आदि)।

स्वजात—वि० [सं०] अपने से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।

स्वजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी जाति।

वि० अपनी जाति या काम का।

स्वजातीय—वि० [सं०] अपनी जाति का। अपने वर्ग का।

स्वतंत्र—वि० [सं०] १. जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। मुक्त। आजाद। २. मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरंकुश। ३ अलग। जुदा। पृथक्। ४ किसी प्रकार के बंधन या नियम आदि से रहित।

स्वतंत्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वतंत्र होने का भाव। स्वाधीनता। आजादी।

स्वतः—अव्य० [सं० स्वतस्] अपने आप। आप ही।

स्वतोविरोधी—वि० [सं० स्वतः + विरोधी] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

स्वत्व—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने, या लेने का अधिकार। अधिकार। हक।

संज्ञा पुं० "स्व" या अपना होने का भाव।

स्वत्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० स्वत्वाधिकारिन्] १ वह जिसके हाथ में किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। २. स्वामी। मालिक।

स्वदेश—संज्ञा पुं० [सं०] अपना और अपने पूर्वजों का देश। मातृभूमि। वतन।

स्वदेशी—वि० [सं० स्वदेशीय] अपने देश का। अपने देश संबंधी।

संज्ञा पुं० भारत में बंगभंग के समय (सन् १९०५) विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिये चला हुआ स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार का आंदोलन।

स्वधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] अपना धर्म।

स्वधा—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि आदि देने के समय किया जाता है।

संज्ञा स्त्री० १. पितरों को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृअन्न। २. दक्ष की एक कन्या।

स्वन—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द। आवाज।

स्वनामधन्य—वि० [सं०] जो अपने नाम के कारण धन्य हो।

स्वपच(पु)—संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।

स्वपन, स्वपना(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।

स्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। २ वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था में दिखाई दे अथवा मन में आवे। ३ सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। ४. मन में उठनेवाली ऊँची या असंभव कल्पना या विचार।

स्वप्नगृह—संज्ञा पुं० [सं०] शयनागार।

स्वप्नदोष—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रावस्था में वीर्यपात होना जो एक प्रकार का रोग है।

स्वप्नाना—क्रि० स० [सं० स्वप्न से हिं० ना० धा०] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

स्वप्निल—वि० [सं०] १. सोया हुआ। २ स्वप्न देखता हुआ। उ०—मधु स्वप्निल ताराओं की जब चलती अभिनय माया। —आँसू। ३ स्वप्न संबंधी। स्वप्न का।

स्वबरन(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।

स्वभाउ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

स्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। २ मन की प्रवृत्ति। मिजाज। प्रकृति। ३ आदत। बान। टेव।

स्वभावज—वि० [सं०] प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभावतः—अव्य० [सं० स्वभावतस्] स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से। सहज ही।

स्वभावसिद्ध—वि० [सं०] सहज। प्राकृतिक। स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी के रूप, गुण, स्वभाव आदि का यथावत् चित्रण होता है। उ०—सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल। यहि बानिक मो उर बसौ सदा बिहारीलाल॥

स्वभू—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २. विष्णु।

वि० आप से आप होनेवाला।

स्वयं—अव्य० [सं० स्वयम्] खुद। आप। २ आप से आप। खुद व खुद।

स्वयंदूत—संज्ञा पुं० [सं०] नायिका पर अपनी कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक।

स्वयंदूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] नायक पर स्वयं ही अपनी कामवासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयंदेव—संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यक्ष देवता।

स्वयंपाक—संज्ञा पुं० [सं०] [कर्ता] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से बनाकर खाना।

स्वयंपाकी—संज्ञा पुं० [सं० स्वयंपाकिन्] अपना भोजन स्वयं पकाकर खानेवाला मनुष्य।

स्वयंप्रकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। २ परमात्मा। परमेश्वर।

स्वयंभू—संज्ञा पुं० [सं० स्वयंभू] १ ब्रह्मा। २ काल। ३ कामदेव। ४ विष्णु। ५. ६. दे० "स्वायंभुव"। उ०—बहुरि स्वयंभू मनु तप कीनो। ताहू को हरि नू वर दीनो। —सूर०।

वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंभूत—वि० दे० "स्वयंभू"।

स्वयंवर—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन भारत का एक विधान जिसमें कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं पति या वर चुनती थी। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार कन्या अपने लिये वर चुने।

स्वयंवरण—संज्ञा पुं० दे० "स्वयंवर"।

स्वयंवरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने इच्छानुसार अपना पति चुननेवाली स्त्री। पतिंवरा। वर्या।

स्वयंसिद्ध—वि० [सं०] (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।

स्वयंसेवक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार

के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वेच्छासेवक।

स्वयमागत—वि० [सं०] १ अपने आप आया हुआ। बिना बुलाए आया हुआ।

सज्ञा पुं० अभ्यागत। अतिथि।

स्वयमेव—क्रि० वि० [सं०] खुद ही। स्वय ही।

स्वर्—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ परलोक। ३. आकाश।

स्वर—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्राणी के कठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमें कोमलता, तीव्रता, उदात्तता, अनुदात्तता आदि गुण हों। २. सगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसके उतार चढ़ाव आदि का, सुनते ही, सहज में अनुमान हो सके। सुर। सुभीते के लिये सात स्वर नियुक्त किए गए हैं। इन सातों स्वरों के नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गाधर, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद रखे गए है जिनके सक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं।

मुहा०—स्वर उतारना=स्वर नीचा या धीमा करना। स्वर चढ़ाना=स्वर ऊँचा करना।

३ व्याकरण में वह वर्णात्मक ध्वनि जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो व्यजन के उच्चारण में सहायक होता है। ४ वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार चढ़ाव।

सज्ञा पुं० [सं० स्वर्] आकाश।

स्वरग(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वरपात—सज्ञा पुं० [सं०] किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना।

स्वरभंग—सज्ञा पुं० [सं०] आवाज का बैठना जो एक रोग माना गया है।

स्वरमडल—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगनेवाले स्वरों का लेख।

स्वरवेधी—सज्ञा पुं० दे० "शब्दवेधी"।

स्वरशास्त्र—सज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें स्वर संबधी बातों का विवेचन हो। स्वरविज्ञान।

स्वररस—सज्ञा पुं० [सं०] पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।

स्वरसाधना—सज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत के सातो स्वरों का साधन या अभ्यास करना।

स्वरांत—वि० [सं०] (शब्द) जिसके अत में कोई स्वर हो, जैसे—राम, सीता, कवि, नदी आदि।

स्वराज्य—सज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने देश के शासन, सुरक्षा आदि का सब प्रबध करते हों। अपना राज्य।

स्वराट—सज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर। ३ वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमें स्वराज्य शासनप्रणाली प्रचलित हो।

वि० जो स्वय प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरित—सज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से और न बहुत धीरे हो।

वि० १. स्वर से युक्त। २ गूँजता हुआ।

स्वरूप—सज्ञा पुं० [सं०] १ आकार। आकृति। शक्ल। २ मूर्ति या चित्र आदि। ३ देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४ वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो।

वि० [स्त्री० स्वरूपा] १ खूबसूरत। २ तुल्य। समान।

अव्य० रूप में। तौर पर।

सज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"। उ०—इम सालोक्य स्वरूप सरोज्यो रहत समीप सहाई। सो तजि कहत और की औरै तुम अलि बड़े अदाई।—सूर०।

स्वरूपज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्त्वज्ञ।

स्वरूपमान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वरूपवान्"।

स्वरूपवान्—वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। खूबसूरत।

स्वरूपी—वि० [सं० स्वरूपिन्] १ स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २ जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो।

(पु)सज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरोचिस्—सज्ञा पुं० [सं०] स्वरोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गधर्व के पुत्र थे।

स्वरोद—सज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते है।

स्वरोदय—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्गंगा—सज्ञा स्त्री० [सं०] मदाकिनी। आकाशगगा। उ०—नक्षत्र डूब जाते हैं, स्वर्गंगा की धारा में।—आँसू।

स्वर्ग—सज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं के सात लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। नाक। देवलोक।

मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर देना=(१) मरना। (२) जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना=मरना। देहांत होना।

यौ०—स्वर्ग सुख=बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार=आकाशगगा।

२ ईश्वर। ३ सुख। ४. वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। ५ आकाश।

स्वर्गत, स्वर्गगत—वि० [सं०] मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गगमन—सज्ञा पुं० [सं०] मरना।

स्वर्गगामी—वि० [सं० स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग जानेवाला। २ मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गतरु—सज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

स्वर्गद—वि० [सं०] स्वर्ग देनेवाला। उ०—सतगुण, रजगुण, तमोगुण त्रयविधि के मुनिवाच। मोक्षद स्वर्गद सुखद हैं धरिहौ सुखप्रद साँच।—विश्रामसागर।

स्वर्गनदी—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+नदी] आकाशगगा।

स्वर्गपुरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।

स्वर्गलोक—सज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू—सज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गवाणी—सज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

स्वर्गवास—सज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना।

स्वर्गवासी—वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १ स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गस्थ—वि० दे० "स्वर्गवासी"।
स्वर्गारोहण—संज्ञा पुं० [स०] १ स्वर्ग की ओर जाना। २ स्वर्ग सिधारना। मरना।
स्वर्गिक—वि० दे० "स्वर्गीय"।
स्वर्गीय—वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १ स्वर्ग सबधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।
स्वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। कनक। २ धतूरा।
स्वर्णकमल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।
स्वर्णकार—संज्ञा पुं० [स०] सुनार।
स्वर्णगिरि—संज्ञा पुं० [स०] सुमेरु पर्वत।
स्वर्णजयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ण+जयंती] किसी व्यक्ति या सस्था के जन्म, शासक के राज्यारोहण अथवा शासन के प्रारभ का पचासवाँ वार्षिक महोत्सव।
स्वर्णपर्पटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है।
स्वर्णपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] लका।
स्वर्णमय—वि० [स०] जो बिलकुल सोने का हो। स्वर्णयुक्त।
स्वर्णमाक्षिक—संज्ञा पुं० दे० "सोनामक्खी"।
स्वर्णमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अशरफी।
स्वर्णयुग—संज्ञा पुं० [स०] सुख, समृद्धि, उन्नति आदि की दृष्टि से कुछ श्रेष्ठ वर्षों का समय या युग।
स्वर्णयूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही।
स्वर्णिमा—वि० [स० स्वर्ण] सोने के रग का। सुनहला।
स्वर्धुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
स्वर्नगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।
स्वर्नदी—संज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्गंगा।
स्वर्लोक—संज्ञा पुं० [स०] स्वर्ग।
स्वर्वेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।
स्वर्वैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनीकुमार।
स्वल्प—वि० [स०] बहुत थोड़ा। उ०—अतिथि ऋषीश्वर शाप न- आप शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाक ते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी। —सूर०।
स्ववरन(पु)—सं० पुं० दे० "सुवर्ण"।
स्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहिन।
स्वस्ति—अव्य० [स०] कल्याण हो। मगल हो (आशीर्वाद)।
संज्ञा स्त्री० १. कल्याण। मंगल। २ ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। उ०—ब्रह्मा कहँ जानत ससारा। जिन सिरज्यो जग कर विस्तारा। तिनके भवन तीनि रहँ इस्त्री। संध्या, स्वस्ति और सावित्री। —विश्रामसागर। ३. सुख।
स्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हठयोग में एक प्रकार का आसन। २ चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मगल द्रव्य जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ३ प्राचीन काल का एक मगल चिह्न जो शुभ अवसरों पर मागलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था। आजकल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐। ४ शरीर के विशिष्ट अगों में होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न (शुभ)।
स्वस्तिवाचन—संज्ञा पुं० [स०] [वि० स्वस्तिवाचक] कर्मकांड के अनुसार मगल कार्यों के आरभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें पूजन और मगलसूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है। उ०—एक दिना हरि लई करोटी सुनि हरषी नँदरानी। विप्र बुलाय स्वस्तिवाचन करि रोहिणी नैन सिरानी। —सूर०।
स्वस्ती—अव्य० [स० स्वस्ति] दे० "स्वस्ति"। उ०—नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो। विप्र बुलाय वेद ध्वनि कीन्ही स्वस्ती वचन पढ़ायो। —सूर०।
स्वस्त्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य में कल्याण की भावना से किया जाता है।
स्वस्थ—वि० [स०] [संज्ञा स्वस्थता] १ नीरोग। तंदुरुस्त। भला। चंगा। २ जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।
स्वस्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वस्थ या तदुरुस्त होने का भाव। तदुरुस्ती। २ निर्दोष और ठीक अवस्था में होने का भाव। ३ दे० "स्वास्थ्य"।
स्वहाना(पु)—क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
स्वाँग—संज्ञा पुं० [सं० सु+अंग] १ बनावटी वेष जो दूसरे का रूप बनने के लिये धारण किया जाय। भेष। रूप। २ मजाक का खेल या तमाशा। नकल। ३. धोखा देने के उद्देश्य से बनाया हुआ कोई रूप या क्रिया।
स्वाँगना(पु)—क्रि० स० [हिं० स्वाँग से हिं० ना० धा०] स्वाँग बनाना। बनावटी वेष धारण करना।
स्वाँगी—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] १ वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो। उ०—जिन प्रथमै करि पाछे छाँड़ा। तिन्हैं जानिए स्वाँगी भाँड़ा। —विश्रामसागर। २ अनेक रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया। उ०—स्वाँगी से ये भए रहत हैं छिन ही छिन ए और। —सूर०।
वि० रूप धारण करनेवाला।
स्वांत—संज्ञा पुं० [स०] अंत करण। मन।
स्वाँस—संज्ञा स्त्री० दे० "साँस"।
स्वाँसा—संज्ञा पुं० दे० "साँस"।
स्वाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] हस्ताक्षर। दस्तखत।
स्वाक्षरित—वि० [सं०] अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तखत किया हुआ।
स्वागत—संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना। पेशवाई।
स्वागतकारिणी सभा—संज्ञा स्त्री० [स०] वह सभा जो किसी विराट् सभा या समेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये सघटित हो।
स्वागतपतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो। आगतपतिका।
स्वागतप्रिया—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो।
स्वागता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, भगण, और दो अत्य गुरु हों। उ०—भूलना धरी, धरणि की सुता। होव तू जसी, सुगति हो द्रुता।
स्वातंत्र्य—संज्ञा पुं० दे० "स्वतंत्रता"।
स्वात—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"। उ०—स्वात बूँद चातक मुख परी। सीप समुद्र मोती बहु भरी। —पद्मावत।
स्वाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित ज्योतिष में शुभ माना गया है। प्रसिद्ध है कि इस नक्षत्र में वर्षा होने से सीप में मोती, बाँस में वंशलोचन और साँप में विष उत्पन्न होता है और चातक केवल इसी नक्षत्र में बरसनेवाला पानी पीता है।

उ०—जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति। जिमि चातक चातकि तृषित, वृष्टि सरद रितु स्वाति।—मानस।

स्वातिपंथ—संज्ञा पुं० [सं० स्वाति+पथ] आकाशगंगा।

स्वातिसुत, स्वातिसुवन—संज्ञा पुं० [सं०] मोती। मुक्ता। उ०—स्वातिसुत माला विराजत श्याम तन यों भाइ। मनौ गंगा गौरि डर हर लिए कंठ लगाइ।—सूर०।

स्वाती—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"। उ०—हृदय सिंधु मति सीपि समाना। स्वाती सारद कहहिं सुजाना।—मानस।

स्वात्म—वि० [सं० स्व+आत्म] अपना।

स्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव। जायका। २. रसानुभूति। आनंद।

मुहा०—स्वाद चखाना=किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना।

३. चाह। इच्छा। कामना।

स्वादक—संज्ञा पुं० [सं० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। स्वादुविवेकी।

स्वादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वादित] १. चखना। स्वाद लेना। २ मजा लेना। आनंद लेना।

स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ—वि० [सं० स्वादिष्ट] जिसका स्वाद अच्छा हो। जायकेदार। सुस्वादु।

स्वादी—वि० [सं० स्वादिन्] १. स्वाद चखनेवाला। २. मजा लेनेवाला। रसिक।

स्वादीला†—वि० दे० "स्वादिष्ट"।

स्वादु—संज्ञा पुं० [सं०] १ मीठा रस। मधुरता। २ गुड़। ३ दूध। दुग्ध।

वि० १ मीठा। मधुर। मिष्ट। २ जायकेदार। स्वादिष्ठ। ३ सुंदर।

स्वाद्य—वि० [सं०] स्वाद लेने योग्य।

स्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

स्वाधीन—वि० [सं०] १ जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद। २ मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

संज्ञा पुं० समर्पण। हवाला। सपुर्द।

स्वाधीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वाधीन होने का भाव। स्वतंत्रता। आजादी।

स्वाधीनपतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

स्वाधीनभर्तृका—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनपतिका"।

स्वाधीनी—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनता"।

स्वाध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुशीलन। अध्ययन। २. वेद। ३ वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना। वेदाध्ययन।

स्वान—संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।

स्वाना(पु)†—क्रि० स० दे० "सुलाना"।

स्वाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रा। नींद। उ०—स्वप्न, स्वाप, जागरण भस्म हो इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे।—कामायनी। २ अज्ञान।

स्वापन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे।

वि० नींद लानेवाला। निद्राकारक।

स्वाभाविक—वि० [सं०] [संज्ञा स्वाभाविकता] १ जो आप ही आप हो। २ स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती।

स्वाभाविकी—वि० दे० "स्वाभाविक"।

स्वाभिमान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वामि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।

स्वामिकार्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के पुत्र कार्तिकेय। स्कंद।

स्वामिता—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामित्व"।

स्वामित्व—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी होने का भाव। प्रभुत्व। मालिकपन।

स्वामिन—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामिनी"।

स्वामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मालकिन। स्वत्वाधिकारिणी। २ घर की मालकिन। गृहिणी। ३ श्री राधिका।

स्वामी—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी] १. मालिक। प्रभु। अन्नदाता। २ घर का प्रधान पुरुष। ३. स्वत्वाधिकारी। मालिक। ४. पति। ५. भगवान्। ६. राजा। नरपति। ७ कार्तिकेय। ८. साधु, सन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि।

स्वाम्य—संज्ञा पुं० दे० "स्वामित्व"।

स्वायंभुव—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

स्वायंभू—संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

स्वायत्त—वि० [सं०] जो अपने अधीन हो। जिसपर अपना ही अधिकार हो।

स्वायत्त शासन—संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन जो अपने अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य।

स्वारथ(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"।

वि० [सं० स्वार्थ] सफल। सिद्ध। सार्थक।

स्वारथी—वि० दे० "स्वार्थी"।

स्वारस्य—वि० [सं०] १ सरसता। रसीलापन। २ स्वाभाविकता।

स्वाराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वाधीन राज्य। २ स्वर्ग का राज्य। स्वर्गलोक।

स्वारी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "सवारी"।

स्वारोचिष—संज्ञा पुं० [सं०] (स्वरोचिष के पुत्र) दूसरे मनु का नाम।

स्वार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना उद्देश्य या मतलब। २ अपना लाभ। अपनी भलाई। अपना हित।

मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना=दिलचस्पी लेना। अनुराग रखना (आधुनिक)।

वि० [सं० सार्थक] सार्थक। सफल।

स्वार्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थ का भाव या धर्म। खुदगर्जी।

स्वार्थत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

स्वार्थत्यागी—वि० [सं० स्वार्थत्यागिन्] दूसरे के भले के लिये अपने लाभ का विचार न रखनेवाला। नि स्वार्थ।

स्वार्थपर—वि० [सं०] स्वार्थी। खुदगरज। मतलबी।

स्वार्थपरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थपर होने का भाव। खुदगरजी।

स्वार्थपरायण—वि० [सं०] [संज्ञा स्वार्थपरायणता] स्वार्थपर। स्वार्थी। खुदगरज। मतलबी।

स्वार्थसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वार्थसाधक] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना।

स्वार्थांध—वि० [सं०] अपने स्वार्थ के वश होकर उचित अनुचित का ध्यान न रखनेवाला।

स्वार्थी—वि० [सं० स्वार्थिन्] [स्त्री० स्वार्थिनी] अपना ही मतलब देखनेवाला। मतलबी। खुदगरज।

स्वाल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।

स्वावलंब—संज्ञा पुं० दे० "स्वावलंबन"।

स्वावलंबन—संज्ञा पुं० [सं०] अपने ही भरोसे पर रहना। अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी—वि० [सं० स्वावलम्बिन्] अपने ही अवलंब या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो, दूसरों का सहारा न हो।

स्वाश्रित—वि० [सं०] केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।

स्वास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] साँस। श्वास।

स्वासा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] साँस। श्वास।

स्वास्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था। आरोग्य। तंदुरुस्ती।

स्वास्थ्यकर—वि० [सं०] तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्यवर्धक।

स्वाहा—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को अग्नि में हवि देने के समय किया जाता है।

मुहा०—स्वाहा करना = नष्ट करना।
संज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम।

स्वीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनाना। अंगीकार करना। २ मानना। राजी होना।

स्वीकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनाने की क्रिया। अंगीकार। कबूल। २ लेना।

स्वीकारोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वयं ही स्वीकृत कर ले।

स्वीकार्य—वि० [सं०] स्वीकार करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत—वि० [सं०] स्वीकार किया हुआ। माना हुआ। मंजूर।

स्वीकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वीकार का भाव। मंजूरी। संमति। रजामंदी।

स्वीय—वि० [सं०] अपना। निज का।
संज्ञा पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।

स्वीयत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनापन। निजत्व। २ आपसदारी आत्मीयता।

स्वीया—वि० स्त्री० दे० "स्वकीया"।

स्वै(पु)—वि० दे० "स्व"।

स्वेच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा।

स्वेच्छाचार—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० स्वेच्छाचारिता] जो जी में आवे, वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारी—वि० [सं० स्वेच्छाचारिन्] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

स्वेच्छासेवक—संज्ञा पुं० दे० "स्वयंसेवक"।

स्वेत(पु)—वि० दे० "श्वेत"।

स्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पसीना। प्रस्वेद। २. भाप। वाष्प। ३ ताप। गरमी।

स्वेदक—वि० [सं०] पसीना लानेवाला।

स्वेदज—वि० [सं०] पसीने से उत्पन्न होनेवाला (जूँ, खटमल, मच्छर आदि)।

स्वेदन—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना निकलना।

स्वेदित—वि० [सं०] १ पसीने से युक्त। २. बफारा दिया हुआ। सेंका हुआ।

स्वै(पु)—वि० [सं० स्वीय] अपना। निज का।
सर्व० दे० "सो"।

स्वैर—वि० [सं०] १. मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छंद। स्वतंत्र। २. धीमा। मंद। ३. यथेच्छ। मनमाना।

स्वैरचारी—वि० [सं० स्वैरचारिन्] [स्त्री० स्वैरचारिणी] १ मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। २ व्यभिचारी।

स्वैरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता।

स्वैराचर—संज्ञा पुं० दे० "स्वेच्छाचार"।

स्वैरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वैरता"।

स्वोपार्जित—वि० [सं०] अपना उपार्जन किया या कमाया हुआ।

ह

ह—हिंदी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है।

हँक—संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।

हँकड़ना—क्रि० अ० [हिं० हाँक] १ दर्प के साथ बोलना। ललकारना। २ चिल्लाना।

हँकरना—क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।

हकरावा—संज्ञा पुं० [हिं० हँकारना] १ बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। २ बुलावा। निमंत्रण। ३. शिकार खेलते समय कुछ लोगों का हल्ला करना जिसे सुनकर जानवर निकल आते हैं।

हँकवा—संज्ञा पुं० [हिं० हाँक] शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।

हँकवाना—क्रि० स० [हिं० हाँकना का प्रे० रूप] १ हाँक लगवाना। बुलवाना। २ हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हँकवैया(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हाँक + वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।

हँका—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँक] ललकार।

हँकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँक + आई] हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हँकाना—क्रि० स० [हिं० हाँक] १ दे० "हाँकना"। २ पुकारना। बुलाना। ३ हँकवाना।

हँकार—संज्ञा स्त्री० [सं० हुंकार] १ आवाज लगाकर बुलाना। पुकार। २ वह ऊँचा शब्द जो किसी को बुलाने या संबोधन करने के लिये किया जाय। पुकार।

मुहा०—हँकार पड़ना = बुलाने के लिये आवाज लगना।

हंकार(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "अहंकार"।
संज्ञा पुं० [सं० हुंकार] ललकार। डपट।

हँकारना†(पु)—क्रि० स० [हिं० हाँक] १ हाँक देकर बुलाना। २ बुलाना। पुकारना। उ०—मोहन ग्वाल सखा हँकराए।—सूर०। ३ पुकारने का काम दूसरे से कराना। बुलवाना। उ०—राजा सब सेवक हँकराई। भाँति भाँति की वस्तु मँगाई।—विश्रामसागर।

क्रि० स० [हिं० हँकार] १ जोर से पुकारना। टेरना। उ०—ऊँचे तरु चढ़ि श्याम सखन को बारबार हँकारत।—सूर०। २ बुलाना। पुकारना। ३ युद्ध के लिये आह्वान करना। ललकारना।

हँकारना—क्रि० अ० [हिं० हुंकारना] हुंकार शब्द करना। दपटना।

हँकारा—संज्ञा पुं० [हिं० हँकारना] १ पुकार। बुलाहट। २ निमन्त्रण। बुलौवा। न्योता।

हकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँकार+ई] (प्रत्य०)] १. वह जो लोगों को बुलाकर लाता हो। २ दूत।

हंगामा—संज्ञा पुं० [फा० हंगाम] १ उपद्रव। दंगा। लड़ाई झगड़ा। २ शोरगुल। कलकल। हल्ला।

हंडना—क्रि० अ० [सं० हिंडन] १. घूमना। फिरना। २ व्यर्थ इधर उधर फिरना। ३ इधर उधर ढूँढ़ना। ४ वस्त्र आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

हंडा—संज्ञा पुं० [सं० भांडक] पीतल या ताँबे का बड़ा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।

हँडाना—क्रि० स० [हिं० हँडना का स० रूप] १. घुमाना फिराना। २ काम में लाना।

हँडिया—संज्ञा स्त्री० [सं० भाण्डिका] १ बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँड़ी। इस आकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिये लटकाया जाता है।

हंडी—संज्ञा स्त्री० दे० "हँडिया"। "हाँड़ी"।

हंत—अव्य० [सं०] खेद या शोकसूचक शब्द।

हंता—संज्ञा पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] मारनेवाला। वध करनेवाला।

हँफनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।

मुहा०—हँफनि मिटाना=सुस्ताना।

हंबाना†—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

हंस—संज्ञा पुं० [सं०] १ बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलों में रहता है। २ दोहे के नवें भेद का नाम जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं (पिंगल)। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। उ०—नाहिं लखती। अक्षर पक्ती॥ इसे पक्ती या पक्ति भी कहते हैं। ४ माया से निर्लिप्त आत्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६. सूर्य। उ०—हंस बंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ। जननी तूँ जननी भई विधि सन कछु न बसाइ॥ —मानस। ७ ब्रह्म। परमात्मा। ८ विष्णु। ९ शिव। १० प्राणवायु। ११ सन्यासियों का एक भेद। १२ घोड़ा।

हंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस पक्षी। २ पैर की उँगलियों में पहनने का बिछुआ।

हंसगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस के समान सुंदर धीमी चाल। २ सायुज्य मुक्ति। ३ बीस मात्राओं का एक छंद। उ०—जगत ईस नर भूप, सिया ढिग सोहत। गल वैजंती माल, सुजन मन मोहत॥

हंसगामिनी—वि० स्त्री० [सं०] हंस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।

हँसतामुखी—संज्ञा पुं० दे० "हँसमुख"।

हँसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।

हँसना—क्रि० अ० [सं० हसन] १ खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज करना। खिलखिलाना। हास करना। कहकहा लगाना।

यौ०—हँसना बोलना=आनंद की बातचीत करना। हँसना खेलना=आनंद करना।

मुहा०—किसी पर हँसना=विनोद की बात कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना। हँसते हँसते=प्रसन्नता से। खुशी से। ठठाकर हँसना=जोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना=तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाल देना।

२ रमणीय लगना। गुलजार या रौनक होना। ३ दिल्लगी करना। हँसी करना। ४ प्रसन्न या सुखी होना। खुशी मनाना।

क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना।

हँसनिⓟ†—संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हंसिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हंसपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता।

हँसमुख—वि० [हिं०√हँस+मुख] १ प्रसन्नवदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। २ विनोदशील। हास्यप्रिय।

हंसराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। समलपत्ती। २ एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली—संज्ञा स्त्री० [सं० असली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २ गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश।

हंसवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

हंसवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हंससुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

हँसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं०√हँस+आई (प्रत्य०)] १ हँसने की क्रिया या भाव। २ निंदा। बदनामी।

हँसाना—क्रि० स० [हिं० हँसना का प्रे० रूप] दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसायⓟ†—संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

हंसालि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में यगण होता है। उ०—आप ही आप अज्ञान नलिनी बँधो, बिना प्रभु भजे कइ बार मूआ। दाससुंदर कहै परमपद ते लहै, राम हरि राम हरि बोल सूआ॥ इसे हंसाल भी कहते हैं।

हंसिनि—संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हँसिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हंसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हंस की मादा। २ बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। उ०—बपँ अग्नी चाहे चंदा, अकरम करम करहिं अवतंसी। बाढ़ै कंजा माथे शैला, लवणि जलधि पय पिय बरु हंसी॥ ३ दस अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण और एक गुरु रहता है। उ०—माधो! मोसों बहु विधि खरी। बोली हंसी दुख दुख भरी॥

हँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० हसित] १ हँसने की क्रिया या भाव। हास।

यौ०—हँसी खुशी=प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा=आनंद क्रीड़ा। मजाक।

मुहा०—हँसी छूटना=हँसी आना।

२ मजाक। दिल्लगी। विनोद।

यौ०—हँसी खेल=(१) विनोद और क्रीड़ा। (२) साधारण या सहज बात।

मुहा०—हँसी समझना या हँसी खेल समझना=साधारण बात समझना। आसान बात समझना। हँसी में उड़ाना=परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी में ले जाना=किसी बात को मजाक समझना।

३ अनादरसूचक हास। उपहास।

मुहा०—हँसी उड़ाना = व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।

४. लोकनिंदा। बदनामी। अनादर।

हँसुआ, हँसुवा†—संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।

हँसोड़—वि० [हिं०√हँस+ओड़ (प्रत्य०)] हँसी ठट्ठा करनेवाला। दिल्लगीबाज। मसखरा।

हँसोरⓅ—वि० दे० "हँसोड़"।

हँसौहाँⓅ—वि० [हिं०√हँस+औहाँ] [स्त्री० हँसौहीं] १ ईषद् हास्ययुक्त। कुछ हँसी लिए। २ हँसने का स्वभाव रखनेवाला। ३. दिल्लगी का। मजाक से भरा।

ह—संज्ञा पुं० [सं०] १. हास। हँसी। २. शिव। महादेव। ३. जल। पानी। ४ शून्य। सिफर। ५ शुभ। मगल। ६. आकाश। ७ ज्ञान। ८. घोड़ा। अश्व।

हई—संज्ञा पुं० [सं० हयिन्] घुड़सवार।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ह !] आश्चर्य।

हउँⓅ—क्रि० अ०, सर्व० दे० "हौं"।

हक—वि० [अ०] १ सच। सत्य। २ वाजिब। ठीक। उचित। न्याय।

संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में लाने या लेने का अधिकार। स्वत्व। २ कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार। इख्तियार।

मुहा०—हक में = विषय में। पक्ष में। ३ फर्ज। कर्तव्य।

मुहा०—हक अदा करना = कर्तव्य पालन करना।

४ वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। ५. किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक मिलनेवाली कुछ रकम। दस्तूरी। ६ ठीक या वाजिब बात। ७. उचित पक्ष। न्याय पक्ष।

मुहा०—हक पर होना = उचित बात का आग्रह करना।

८ खुदा। ईश्वर (मुसलमान)।

हकतलफी—संज्ञा स्त्री० [अ० हक+तलफी] किसी का हक मारना। अन्याय।

हकदक—वि० [अनु०] चकित। भौचक्का।

हकदार—संज्ञा पुं० [अ० हक+फा० दार] स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।

हकनाहक—अव्य० [अ० फा०] १ जबरदस्ती। धींगाधींगी से। २ बिना कारण या प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।

हकबक—वि० दे० "हक्काबक्का"।

हकबकाना—क्रि० अ० [अनु० हक्का बक्का] हक्का बक्का हो जाना। घबड़ा जाना।

हकला—वि० [हिं० हकलाना] रुक रुककर बोलनेवाला। हकलानेवाला।

हकलाना—क्रि० अ० [अनु० हक] बोलने में अटकना। रुक रुककर बोलना।

हकशफा—संज्ञा पुं० [अ० हकेशफअ] किसी जमीन को खरीदने का वह विशेष हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है।

हकीकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तत्व। सचाई। असलियत। २. तथ्य। ठीक बात। ३. असल हाल। सत्य वृत्त।

मुहा०—हकीकत में = वास्तव में। सचमुच। हकीकत खुलना = असल बात का पता लगना।

हकीकी—वि० [अ०] १ असली। २. सगा।

हकीम—संज्ञा पुं० [अ०] १ विद्वान्। आचार्य। २ यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।

हकीमी—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीम+ई (प्रत्य०)] १. यूनानी चिकित्सा शास्त्र। २ हकीम का पेशा या काम।

हकूमत†—संज्ञा स्त्री० दे० "हुकूमत"।

हक्काक—संज्ञा पुं० [?] नग को काटने, सान पर चढ़ाने, जड़ने आदि का काम करनेवाला।

हक्का बक्का—वि० [अनु० हक, बक] भौचक। घबराया हुआ। ठक।

हगना—क्रि० अ० [सं० हदन] १. मलत्याग करना। झाड़ा फिरना। पाखाना फिरना। २ झख मारकर अदा कर देना।

हगाना—क्रि० स० [हिं० हगना का प्रे० रूप] हगने की क्रिया कराना।

हगास—संज्ञा स्त्री० [हिं० √हग+आस (प्रत्य०)] मलत्याग का वेग या इच्छा।

हचकोला—संज्ञा पुं० [हिं० हचकना] वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि पर हिलने-डोलने से लगे। धचका।

हचना†Ⓟ—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हज—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना।

हजम—संज्ञा पुं० [अ०] पेट में पचने की क्रिया या भाव। पाचन।

वि० १ पेट में पचा हुआ। २ बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ।

हजरत—संज्ञा पुं० [अ०] १. महात्मा। महापुरुष। २ महाशय। ३ नटखट या खोटा आदमी (व्यंग्य)।

हजामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हज्जाम का काम। बाल बनाने का काम। क्षौर। २. बाल बनाने की मजदूरी। ३ सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।

मुहा०—हजामत बनाना = (१) दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना। (२) लूटना। धन हरण करना। (३) मारना पीटना।

हजार—वि० [फा०] १ जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २ बहुत से। अनेक।

संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।

क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।

हजारहा—वि० [फा०] १ कई हजार। हजारों। २ बहुत से। अनेक।

हजारा—वि० [फा०] (फूल) जिसमें हजार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हों। सहस्रदल।

संज्ञा पुं० १ फुहारा। फौवारा। २ सिंचाई या छिड़काव के लिये प्रयुक्त डोल जिसकी चौड़ी टोंटी में छोटे छोटे बहुत से छिद्र होते हैं। उ०—वह बगीचे में दौड़ दौड़कर हजारे से पौदों को सींच रही थी।—कायाकल्प। ३ एक प्रकार की छोटी नारंगी।

हजारी—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक हजार सिपाहियों का सरदार। २. दोगला। वर्णसंकर (व्यंग्य)।

हजूम—संज्ञा पुं० [अ० हुजूम] जनसमूह। भीड़।

हजूर—संज्ञा पुं० दे० "हुजूर"।

हजूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० हजूर] [स्त्री० हजूरी] सदा बादशाह या राजा के पास रहनेवाला सेवक।

हजो—संज्ञा स्त्री० [अ० हज्व] निंदा। बुराई।

हज्ज—संज्ञा पुं० दे० "हज"।

हज्जाम—संज्ञा पुं० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

हटकⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १ वारण । वर्जन ।

मुहा०—हटक मानना = मना करने पर किसी काम से रुकना ।

२ गायों को हाँकने की क्रिया या भाव ।

हटकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १ दे० "हटक" । २. चौपायों को हाँकने की छड़ी या लाठी ।

हटकना—क्रि० स० [हिं०√हट+करना] १ मना करना । निषेध करना । रोकना । २. चौपायों को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना ।

मुहा०—हटकि = (१) जबरदस्ती । (२) बिना कारण ।

हटतार†—संज्ञा पुं० दे० "हरताल" ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हठतार] माला का सूत ।

हटताल—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ताल" ।

हटना—क्रि० अ० [सं० घट्टन] १ एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना । खिसकना । सरकना । टलना । २. पीछे सरकना । ३ जी चुराना । भागना । ४ सामने से दूर होना । सामने से चला जाना । ५ टलना । ६ न रह जाना । दूर होना । ७ बात पर दृढ़ न रहना ।

Ⓟ†[हिं० हटकना] मना या निषेध करना ।

हटवा—संज्ञा पुं० [हिं० हटवार] दूकानदार ।

हटवाईⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट+वाई (प्रत्य०)] सौदा लेना या बेचना । क्रय-विक्रय ।

हटवाना—क्रि० स० [हिं० हटाना का प्रे० रूप] हटाने का काम दूसरे से कराना ।

हटवारⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० हाट+वारा (वाला)] हाट में सौदा बेचनेवाला । दूकानदार ।

हटाना—क्रि० स० [हिं० हटना का स० रूप] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना । सरकाना । खिसकाना । २ किसी स्थान पर न रहने देना । दूर करना । ३ आक्रमण द्वारा भगाना । ४. जाने देना ।

हट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाजार । २ दूकान ।

यौ०—चौहट्ट = बाजार का चौक ।

हट्टा कट्टा—वि० [सं० हृष्ट+काष्ठ] [स्त्री० हट्टी कट्टी] हृष्ट पुष्ट । मोटा ताजा ।

हट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट] दूकान ।

हठ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हठी, हठीला] १. किसी बात के लिये अड़ना । टेक । जिद । आग्रह ।

मुहा०—हठ पकड़ना = जिद करना । हठ रखना = जिस बात के लिये कोई अड़े, उसे पूरा करना । हठ में पड़ना = हठ करना । हठ माँड़ना = हठ ठानना ।

२ दृढ़ प्रतिज्ञा । अटल संकल्प । ३ बलात्कार । जबरदस्ती ।

हठधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मत पर, सत्य असत्य का विचार छोड़कर, जमा रहना । दुराग्रह । कट्टरपन ।

हठधर्मी—संज्ञा स्त्री० [सं० हठ+धर्म] १ उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना । दुराग्रह । २ अपने मत या संप्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति । कट्टरपन ।

हठना—क्रि० अ० [हिं० हठ] १ हठ करना । जिद पकड़ना । दुराग्रह करना ।

मुहा०—हठ कर = बलात् । जबरदस्ती ।

२ प्रतिज्ञा करना । दृढ़ संकल्प करना ।

हठयोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है । नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी में हैं ।

हठात्—प्रत्य० [सं०] १ हठपूर्वक । दुराग्रह के साथ । जबरदस्ती से । ३ अवश्य ।

हठाहठⓅ—क्रि० वि० दे० "हठात्" ।

हठीⓅ—वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला । जिद्दी । टेकी ।

हठीला—वि० [सं० हठ+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १ हठ करनेवाला । हठी । जिद्दी । २ दृढ़प्रतिज्ञ । बात का पक्का । ३ लड़ाई में जमा रहनेवाला । धीर ।

हड़—संज्ञा स्त्री० [सं० हरीतकी] १ एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के काम में लाया जाता है । २ हड़ के आकार का एक प्रकार का गहना । लटकन ।

हड़कंप—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+काँपना] भारी हलचल । तहलका ।

हड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता । २ किसी वस्तु को पाने की गहरी भक । उत्कट इच्छा । रट । धुन ।

हड़कना—क्रि० अ० [हिं० हड़क] किसी वस्तु के अभाव से दुखी होना । तरसना ।

हड़काना—क्रि० स० [हड़कना का स० रूप] १ आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिये पीछे लगा देना । लहकारना २. किसी वस्तु के अभाव का दुख देना । तरसाना । ३. कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना ।

हड़काया—वि० [हिं० हड़क] पागल (कुत्ता) ।

हड़गीला—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+गिलना ?] बगले की जाति का एक पक्षी ।

हड़जोड़—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+√जोड़] एक प्रकार की लता । कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है ।

हड़ताल—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट = दूकान+ताला] किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकानें बंद कर देना ।

संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल" ।

हड़ताली—वि० [हिं० हड़ताल+ई (प्रत्य०)] १ हड़ताल करनेवाला । २. हड़ताल संबंधी ।

२ झंझट । बखेड़ा ।

हत्यारा—संज्ञा पुं० [सं० हत्या+कार] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला । जान लेनेवाला । कसाई ।

हत्यारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हत्यारा] १. हत्या करनेवाली । २ हत्या का पाप । जीववध का दोष ।

हथ—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] 'हाथ' का संक्षिप्त रूप (समस्त पदों में), जैसे—हथफेर, हथकडा आदि ।

हथउधार—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+उधार] दे० "हथफेर" ।

हथकडा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+सं० कांड] १ हाथ की सफाई । हस्तलाघव । हस्त-कौशल । २ गुप्त चाल । चालाकी का ढंग ।

हथकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+कड़ी] लोहे का वह कड़ा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है ।

हथगोला—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+गोला] हाथ से फेंककर मारा जानेवाला गोला ।

हथछुट—वि० [हिं० हाथ+√छुट] जरा सी बात पर मार बैठनेवाला ।

हथनाल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+नाल] वह तोप जो हाथी पर चलती थी । गजनाल ।

हथनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी+नी (प्रत्य०)] हाथी की मादा।

हथफूल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना। हथसाँकर। हथसंकर।

हथफेर—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+√फेर] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २ दूसरे के माल को सफाई से उड़ा लेना। ३ थोड़े दिनों के लिये लिया या दिया हुआ कर्ज। हाथ उधार।

हथलेवा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+लेना] विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति। पाणिग्रहण।

हथवाँस—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+बाँस] नाव चलाने के सामान, जैसे—पतवार, डाँड़ा।

हथवाँसना‡—क्रि० स० [हिं० हाथ+अँवासना] १ हाथ में लेना। पकड़ना। २ काम में लाना। प्रयोग करना।

हथसाँकर—संज्ञा पुं० दे० "हथफूल"।

हथसार—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी+सं० शाला] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फीलखाना।

हथा†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] हाथ का छापा जो शुभ अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

हथाहथी(पु)†—अव्य० [हिं० हाथ] १. हाथोंहाथ। २ शीघ्र। तुरत।

हथिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हथिया—संज्ञा पुं० [सं० हस्त] हस्त नक्षत्र।

हथियाना—क्रि० स० [हिं० हाथ से ना० धा०] १ हाथ में करना। ले लेना। २ धोखा देकर ले लेना। उड़ा लेना। ३ हाथ में पकड़ना।

हथियार—संज्ञा पुं० [हिं० हथियाना] १ हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधन वस्तु। औजार। २ तलवार, भाला आदि आक्रमण करने का साधन। अस्त्रशस्त्र।

मुहा०—(१) मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना। (२) लड़ाई के लिये तैयार होना।

हथियारबंद—वि० [हिं० हथियार+फा० बंद] जो हथियार बाँधे हो। सशस्त्र।

हथेरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथना—क्रि० अ० [हिं० धड़ा] तौल में जाँचा जाना।

हड़प—वि० [सं० हरक ?] १ पेट में डाला हुआ। निगला हुआ। २. गायब किया हुआ।

हड़पना—क्रि० स० [अनु० हड़प] १. मुँह में डाल लेना। खा जाना। २ अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गतिविधि।

हड़बड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] जल्दी करना। उतावलापन करना। आतुर होना। क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना।

हड़बड़िया—वि० [हिं० हड़बड़ी+इया (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज। उतावला।

हड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। उतावली। २ जल्दी के कारण घबराहट।

हड़बड़ाना—क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाड़+सं० अवलि] १ हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २ हड्डियों की माला।

हड़ीला—वि० [हिं० हाड़+ईला (प्रत्य०)] जिसमें हड्डियाँ हों। २ दुबला पतला।

हड्डा—संज्ञा पुं० [सं० हडाविका] मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा। भिड़। बर्रे।

हड्डी—संज्ञा स्त्री० [सं० अस्थि] १ शरीर के अंदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना= खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना या रह जाना=शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी=पुराने आदमी का दृढ़ शरीर।

२ कुल। वंश। खानदान।

यौ०—हड्डीतोड़ = घोर, कठोर (परिश्रम)।

हत—वि० [सं०] १ वध किया हुआ। मारा हुआ। २ पीटा हुआ। ताड़ित। ३ खोया हुआ। गँवाया हुआ। ४ जिसमें या जिसपर ठोकर लगी हो। ५ नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ। ६ पीड़ित। ग्रस्त। ७ गुणा किया हुआ। गुणित (गणित)।

हतक—संज्ञा स्त्री० [अ० हतक=फाड़ना] हेठी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा।

हतक इज्जती—संज्ञा स्त्री० [अ० हतक+इज्जत] अप्रतिष्ठा। मानहानि। बेइज्जती।

हतचेत—वि० दे० "हतज्ञान"।

हतज्ञान—वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।

हतदैव—वि० [सं०] अभागा।

हतना—क्रि० स० [सं० हन] १. वध करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३ पालन न करना। न मानना। ४ नष्ट भ्रष्ट करना। तोड़फोड़ देना।

हतप्रभ—वि० [सं०] जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो।

हतबुद्धि—वि० [सं०] बुद्धिशून्य। मूर्ख।

हतबोध—वि० दे० "हतबुद्धि"।

हतभागा, हतभागी—वि० [सं० हत+हिं० भाग्य] [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्यहीन। बदकिस्मत।

हतभाग्य—वि० [सं०] भाग्यहीन। बदकिस्मत।

हतवाना—क्रि० स० [हिं० हतना का प्रे० रूप] वध कराना। मरवाना।

हतश्री—वि० [सं०] १ जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो। २ मुरझाया हुआ। उदास।

हता(पु)†—क्रि० अ० ['होना' का भूतकाल] था।

हताना—क्रि० स० दे० "हतवाना"।

हताश—वि० [सं०] जिसे आशा न रह गई हो। निराश। नाउम्मीद।

हताहत—वि० [सं०] मारे गए और घायल।

हते(पु)†—क्रि० अ० ['होना' का भूतकाल बहु०] थे।

हतोत्साह—वि० [सं०] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हत्थ(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हाथ"।

हत्था—संज्ञा पुं० [हिं० हत्थ, हाथ] १. औजार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूठ। २. लकड़ी का वह बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ३. केले के फलों का घौद।

हत्थी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हत्था, हाथ] औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूँठ।

हत्थे—क्रि० वि० [हिं० हाथ, हत्थ] हाथ में।

मुहा०—हत्थे चढ़ना=(१) हाथ में आना। प्राप्त होना। (२) वश में होना।

हत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार डालने की क्रिया। वध। खून।

मुहा०—हत्या लगना = हत्या का पाप लगना। किसी के वध का दोष ऊपर आना।

हथेली—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ततल] हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। करतल। गदोरी।

मुहा०—हथेली में आना = (१) मिलना। प्राप्त होना। (२) वश में होना। हथेली पर जान होना = ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो।

हथेव—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] हथौड़ी।

हथोरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+औटी (प्रत्य०)] १ किसी काम में हाथ लगाने का ढंग। हस्तकौशल। २ किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।

हथौड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+औड़ा] (प्रत्य०) [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] १ वह औजार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गढ़ते हैं। मारतौल। २ कील ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औजार।

हथौड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हथौड़ा] छोटा हथौड़ा।

हथ्यानाⓅ—क्रि० स० दे० "हथियाना"।

हथ्यारⓅ†—संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।

हद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी चीज की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई की सबसे अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा।

मुहा०—हद बाँधना = सीमा निर्धारित करना।

२ किसी वस्तु या बात का सब से अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो।

मुहा०—हद से ज्यादा = बहुत अधिक। अत्यंत। हद व हिसाब नहीं = बहुत ही ज्यादा। अत्यंत।

३ किसी बात की उचित सीमा। मर्यादा।

हदका—संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। आघात।

हदस—संज्ञा स्त्री० [अ० हादसः = दुर्घटना] डर। भय। आशंका।

हदीस—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप में होता है।

हनन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हननीय, हनित] १ मार डालना। वध करना। २ गुरु या न्यून करना। ३ आघात करना। पीटना। गुणा करना (गणित)।

हननाⓅ†—क्रि० स० [सं० हनन] १ मार डालना। वध करना। २ आघात करना। प्रहार करना। ३. पीटना। ठोंकना। ४ लकड़ी से पीट या ठोंककर बजाना।

हनवाना—क्रि० स० [हिं० हनना का प्रे० रूप] हनने का कार्य दूसरे से कराना।

हनिवंतⓅ‡—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुँव—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। Ⓟ २ ठुड्डी। चिबुक।

हनुमत—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुमान्—संज्ञा पुं० [सं० हनुमत् का कर्ता एक व०] पंपा के एक वीर बंदर जिन्होंने सीताहरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। वानर सरदार केसरी और अंजना (अंजनी) के पुत्र। महावीर।

वि० [सं० हनुमत] १ दाढ़ या जबड़ेवाला। २ भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। ३ बहुत बड़ा वीर या बहादुर।

हनूफाल—संज्ञा पुं० [सं० हनु+हिं० फाल] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं।

हनूमान्—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनोज—अव्य० [फा०] अभी। अभी तक।

हप—संज्ञा पुं० [अनु०] मुँह में चट से लेकर ओंठ बंद करने का शब्द।

मुहा०—हप कर जाना = झट से मुँह में डालकर खा जाना।

हफ्ता—संज्ञा पुं० [फा०] सप्ताह।

हबकना†—क्रि० अ० [अनु० हप] खाने या दाँत काटने के लिये झट से मुँह खोलना।

क्रि० स० दाँत काटना।

हबर हबर—क्रि० वि० [अनु० हड़बड़] १. जल्दी जल्दी। उतावली से। २ जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं। हड़बड़ी से।

हबरानाⓅ†—क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हबशी—संज्ञा पुं० [फा०] हब्स देश का निवासी जो बहुत काला होता है।

हब्बा डब्बा—संज्ञा पुं० [हिं० हाँफ+अनु० डब्बा] जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है।

हम—सर्व० [सं० अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचनसूचक सर्वनाम शब्द। "मैं" का बहुवचन। एकवचन में "मैं" के लिये भी इसका प्रयोग होता है पर क्रिया सदा बहुवचन में ही रहती है।

संज्ञा पुं० अहंकार। 'हम' का भाव।

अव्य० [फा०] १ साथ। संग। २ समान। तुल्य।

हमजोली—संज्ञा पुं० [फा० हम+हिं० जोड़ी?] साथी। संगी। सहयोगी। सखा।

हमताⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० हम+ता (प्रत्य०)] अहंभाव। अहंकार।

हमदर्द—संज्ञा पुं० [फा०] दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सहानुभूति।

हमरा†—सर्व० दे० "हमारा"।

हमराह—अव्य० [फा०] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में।

हमल—संज्ञा पुं० [अ०] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ।

वि० दे० "गर्भ"।

हमला—संज्ञा पुं० [अ०] १ लड़ाई करने के लिये चढ़ दौड़ना। युद्धयात्रा। चढ़ाई। धावा। २ मारने के लिये झपटना। आक्रमण। ३ प्रहार। वार। ४ विरोध में कही हुई बात।

हमहमी—संज्ञा स्त्री० दे० "हमाहमी"।

हमाम—संज्ञा पुं० दे० "हम्माम"।

हमारा—सर्व० [हिं० हम+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप।

हमाहमी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हम] १ अपने अपने लाभ के लिये आतुर प्रयत्न। स्वार्थपरता। २ अहंकार।

हमीर—संज्ञा पुं० दे० "हम्मीर"।

हमें—सर्व० [हिं० हम] 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल—संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] सिक्कों आदि की माला जो गले में पहनी जाती है।

हमेवⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० अहम्] अहंकार।

हमेशा—अव्य० [फा०] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा। सदैव।

हमेसⓅ—अव्य० दे० "हमेशा"।

हमैंⓅ—अव्य० दे० "हमें"।

हम्माम—संज्ञा पुं० [अ०] नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है। स्नानागार।

हम्मीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रणथंभौर गढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी से लड़ने हुए मारा गया था। २ एक संकर राग।

हयंद—संज्ञा पुं० [सं० हयेंद्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १ घोड़ा। अश्व। २ कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। ३ चार मात्राओं का एक छंद। ४. इंद्र।

हयग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक अवतार। २ एक राक्षस जो कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था।

हयना—क्रि० स० [सं० हत] १. वध करना। मार डालना। २. मारना पीटना। ३ ठोंककर बजाना। ४. नष्ट करना। न रहने देना।

हयनाल—संज्ञा स्त्री० [सं० हय+हिं० नाल] वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयमेध—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

हयशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्तबल। घुड़साल।

हया—संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। शर्म।

हयादार—संज्ञा पुं० [अ० हया+फा० दार] [भाव० हयादारी] वह जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हर—वि० [सं०] [स्त्री० हरी] १ हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। २ दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक।

संज्ञा पुं० १ शिव। महादेव। २ एक राक्षस जो विभीषण का मंत्री था। ३ वह संख्या जिससे भाग दें। भाजक (गणित)। ४ अग्नि। आग। ५ छप्पय के दसवें भेद का नाम। ६ ठगण के पहले भेद का नाम।

†संज्ञा पुं० [सं० हल] हल।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक एक।

मुहा०—हर एक=प्रत्येक। एक एक। हर रोज=प्रतिदिन। हर दम=सदा।

हरउर्दा†—संज्ञा पुं० [?] शिशुओं को सुलाने के गीत। लोरी।

हरए—अव्यय० [हिं० हरुआ] धीरे धीरे।

हरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गति। चाल। हिलना डोलना। २. चेष्टा। क्रिया। ३ दुष्ट व्यवहार। नटखटी।

हरकना†—क्रि० स० दे० "हटकना"।

हरकारा—संज्ञा पुं० [फा०] १. चिट्ठीपत्री ले जानेवाला। २. चिट्ठीरसाँ। डाकिया।

हरख†—संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरखना—क्रि० अ० [सं० हर्ष, हिं० हरख से ना० धा०] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

हरखा—क्रि० अ० दे० "हरखना"।

क्रि० स० [हिं० हरखना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

हरगिज—अव्य० [फा०] किसी दशा में भी। कदापि। कभी।

हरचंद—अव्य० [फा०] १ कितना ही। बहुत या बहुत बार। २ यद्यपि। अगरचे।

हरज—संज्ञा पुं० दे० "हर्ज"।

हरजा—संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" और "हरजाना"।

हरजाई—संज्ञा पुं० [फा०] १ हर जगह घूमनेवाला। २. बहल्ला। आवारा।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरजाना—संज्ञा पुं० [फा०] हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

हरट्ट—वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट पुष्ट। मजबूत।

हरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ छीनना, लूटना या चुराना। २ दूर करना। हटाना। मिटाना। ३ नाश। संहार। ४ ले जाना। वहन। ५ भाग देना। तकसीम करना (गणित)।

हरता—संज्ञा पुं० दे० "हर्ता"।

हरता धरता—संज्ञा पुं० [सं० हर्ता+धर्ता] [(वैदिक)] सब बातों का अधिकार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी।

हरतार—संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

हरताल—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो खानों में मिलता है और बनाया भी जा सकता है। (प्राचीन काल में इसका प्रयोग अशुद्ध लेख को काटने के लिये किया जाता था।)

मुहा०—(किसी बात पर) हरताल फेरना या लगाना=नष्ट करना। रद करना।

हरतालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत जो भाद्रपद शुक्ल ३ को स्त्रियाँ रखती हैं।

हरताली—संज्ञा पुं० [हिं० हरताल] एक तरह का पीला रंग।

वि० हरताल के रंग का।

हरद, हरदी—संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरद्वान—संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वार—संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार"।

हरना—क्रि० स० [सं० हरण] १. छीनना, लूटना या चुराना। २ उठाकर ले जाना। ३ दूर करना। हटाना। ४ मिटाना। नाश करना।

मुहा०—मन हरना=मन आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=(१) मार डालना। (२) बहुत संताप या दुःख देना।

क्रि० अ० दे० "हारना"।

† संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हरनाकस†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हरनाच्छ†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।

हरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरना] हिरन की मादा। मृगी।

हरनौटा—संज्ञा पुं० [हिं० हरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा।

हरपा—संज्ञा पुं० [देश०] १ सिंघोरा। २ डिब्बा।

हरफ—संज्ञा पुं० [अ०] अक्षर। वर्ण।

मुहा०—किसी पर हरफ आना=दोष लगना। कसूर लगना। हरफ उठाना=अक्षर पहचानकर पढ़ लेना।

हरफा रेवड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिपर्वरी] १ कमरख की जाति का एक पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

हरबराना†—क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हरबा—संज्ञा पुं० [अ० हरब] हथियार।

हरबोंग—वि० [हिं० हल+बोंग] १ गँवार। लट्ठमार। अक्खड़। २ मूर्ख। जड़।

संज्ञा पुं० १ अंधेर। कुशासन। २ उपद्रव। उ०—किसी ने मोहनभोग का थाल उठाया, किसी ने फलों का, कोई पंचामृत बाँटने लगा। हरबोंग सा मच गया।—कायाकल्प।

हरम—संज्ञा पुं० [अ०] अंतःपुर। जनानखाना।

संज्ञा स्त्री० १. मुताही। रखेली स्त्री। २ दासी। ३ पत्नी।

हरमजदगी—संज्ञा स्त्री० [फा० हरामजाद] शरारत। नटखटी। बदमाशी।

हरयाल(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

हरये(पु)—अव्य० दे० "हरए"।

हरवल(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरवली—संज्ञा स्त्री० [तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा‡—संज्ञा पुं० दे० "हार"।
वि० दे० "हरुवा"।

हरवाना—क्रि० अ० [हिं० हड़बड़] जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना।
क्रि० स० [हिं० हराना का प्रे० रूप] हराने के लिये प्रेरित करना।

हरवाहा—संज्ञा पुं० दे० "हलवाहा"।

हरष(पु)‡—संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरषना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हरष से ना० धा०] १ हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ पुलकित होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।
क्रि० स० हर्षित करना। उ०—नंद जु कहत मेघगन जिते। मघवा के बसवर्ती तिते। अपनौ जीवन जग में बरषै। दुख करषै, सब जंतुन हरषै। —नंददास०।

हरषाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हरषना] हर्षित होना। खुश होना।
क्रि० स० हर्षित करना। खुश करना।

हरषित(पु)—वि० दे० "हर्षित"।

हरसना(पु)—क्रि० अ० दे० "हरषना"।

हरसा—संज्ञा पुं० दे० "हरिस"।

हरसिंगार—संज्ञा पुं० [सं० हार+सिंगार] एक पेड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँडी होती है। परजाता।

हरहाई—वि० स्त्री० [?] नटखट (गाय)।

हरहाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हरषाना] १ हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ रोमांच से प्रफुल्ल होना।
क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरहार, हरहास—संज्ञा पुं० [सं०] १. (शिव का हार) सर्प। साँप। उ०—हठि, हितु करि प्रीतम लियौ, कियौ जु सौति सिंगारु। अपनैं कर मोतिनु गुह्यौ, भयौ हरा हरहारु। —बिहारी०। २ शेषनाग।

हराँस—संज्ञा स्त्री० [अ० हिरास] भय। डर। २. दुख। चिंता। ३ थकावट। ४ हरारत।

हरा—वि० [सं० हरित] [स्त्री० हरी] १ घास या पत्ती के रंग का। हरित। सब्ज। २ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ताजा। ३ जो मुरझाया न हो। ताजा। ४ (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५ दाना या फल जो पका न हो।
मुहा०—हरा बाग = व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात। हराभरा=(१) जो सूखा या मुरझाया न हो। (२) जो हरे पेड़ पौधों से भरा हो।
संज्ञा पुं० घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।
(पु)‡संज्ञा पुं० [हिं० हार] हार। माला। उ०—कंचन पट पदिकनि के छरा। सुंदर गजमोतिन के हरा। —नंददास०।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हर की स्त्री।

हराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० हार+आई (प्रत्य०)] हारने की क्रिया या भाव। हार।

हराना—क्रि० स० [हिं० हारना का स० रूप] १. युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना। परास्त करना। पराजित करना। २ शत्रु को विफल मनोरथ करना। ३ प्रयत्न में शिथिल करना। थकाना।

हरापन—संज्ञा पुं० [हिं० हरा+पन (प्रत्य०)] हरा होने का भाव। हरितता। सब्जी।

हराम—वि० [अ०] निषिद्ध। विधिविरुद्ध। बुरा। अनुचित दूषित।
संज्ञा पुं० १ वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो। २ सूअर (मुसल०)।
मुहा०—(कोई बात) हराम करना=किसी बात का करना मुश्किल कर देना। (कोई बात) हराम होना=किसी बात का मुश्किल हो जाना।
३ बेईमानी। अधर्म। पाप।
मुहा०—हराम का=(१) जो बेईमानी से प्राप्त हो। (२) मुफ्त का।
४ स्त्री पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार।

हरामखोर—संज्ञा पुं० [अ० हराम+फा० खोर] [भाव० हरामखोरी] १. पाप की कमाई खानेवाला। २ मुफ्तखोर। ३ आलसी। निकम्मा।

हरामजादा—संज्ञा पुं० [अ० हराम+फा० जादा] [स्त्री० हरामजादी] १ दोगला। वर्णसंकर। २ दुष्ट। पाजी। बदमाश।

हरामी—वि० [अ० हराम+ई (प्रत्य०)] १ व्यभिचार से उत्पन्न। २. दुष्ट। पाजी।

हरारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गर्मी। ताप। २. हलका ज्वर। ज्वरांश।

हरावरि(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि"।
संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरावल—संज्ञा पुं० [तु०] सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।

हरास—संज्ञा पुं० [फा० हिरास] १ भय। डर। २ आशंका। खटका। ३ दुख। रंज। ४ नैराश्य। नाउम्मेदी।
संज्ञा स्त्री० दे० "हराँस"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव।

हराहर(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हरि—वि० [सं०] संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। ३ श्रीराम। ४ शिव। ५. इंद्र। ६ सूर्य। ७ चंद्रमा। ८ अग्नि। ९ वायु। १० बंदर। ११ सिंह। १२. मोर। मयूर। १३ सर्प। साँप। १४ घोड़ा। १५ पृथ्वी के एक भाग का नाम। १६ अठारह वर्णों का एक छंद। १७ एक पर्वत का नाम।
वि० १ भूरा या बादामी। २ पीला। हरा। हरित्।
अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते।
वि० [फा० हर] प्रत्येक। उ०—कहेसि ओहि सँवरौं हरि फेरा। मुए जियत आहौं जेहि केरा। —पदमावत।

हरिअर(पु)‡—वि० [सं० हरित] हरा। सब्ज।

हरिअरी(पु)‡—संज्ञा स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरिआना—क्रि० अ० [हिं० हरा से ना० धा०] हरा होना। डहडहाना। पल्लवित हो उठना।

हरिआली—संज्ञा स्त्री० [सं० हरित्+आलि] १ हरेपन का विस्तार। २. घास और पेड़ पौधों का फैला हुआ समूह। ३ ताजगी। प्रसन्नता।

हरिकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान् का गुणगान या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन।

हरिकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् का यशगान या उनके अवतारों की स्तुति का गान।

हरिगीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद जिसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु और अंत में लघु गुरु होता है। उ०—संसार भवनिधि तरण को नहिं, और भव-

सर पाइए। शुभ पाय मानुष जन्म दुर्लभ, राम सीता गाइए ॥
हरिचंद—संज्ञा पुं० दे० "हरिश्चंद्र"।
हरिचंदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।
हरिजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर का भक्त। २. उस जाति का व्यक्ति जो पहले नीच या अस्पृश्य समझी जाती थी (आधु०)।
हरिजान(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हरियान"।
हरिण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हिरन की एक जाति। ३ हंस। ४ सूर्य।
हरिणप्लुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध सम वृत्त जिसके विषम चरणों में तीन सगण लघु गुरु और सम में नगण, दो भगण तथा अंत में रगण हों। उ०—हरि को भजिए दिन रात जू। टरहिं तोर सबै भ्रम-जाल जू॥ यह सीख जुपै मन में धरौ॥ सहज में भवसागर हीं तरौ॥
हरिणाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली। सुंदरी।
हरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिरन की मादा। २ स्त्रियों के चार भेदों में से एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं (कामशास्त्र)। ३ एक वर्णवृत्त जि[सके] प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, और अंत में लघु गुरु हों। उ०—बन बसि करीं, नाना लीला, किये बन के यती। बहु विधि सुखी, औ सोने को, हन्यो हरिणी पती॥ ४ दस वर्णों का एक वृत्त। उ०—फूलन की सुभ गेंद नई। सूँघि सची ननु डारि गई।
हरित्—वि० [सं०] १ भूरे या बादामी रंग का। कपिश। २ हरा। सब्ज।
संज्ञा पुं० १ सूर्य के घोड़े का नाम। २ मरकत। पन्ना। ३ सिंह। ४ सूर्य।
हरित—वि० [सं०] १ भूरे या बादामी रंग का। २ पीला जर्द। ३ हरा। सब्ज।
हरितमणि—संज्ञा पुं० [सं०] मरकत। पन्ना।
हरिताभ—वि० [सं०] जिसमें हरे रंग की आभा हो। हरापन लिए हुए।
हरितालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हरतालिका'।
हरिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हल्दी। २ वन। जंगल। ३ मंगल। ४ सोना धातु (अनेकार्थ०)।
हरिद्राराग—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह पूर्वराग जो स्थायी या पक्का न हो।
हरिद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती हैं।
हरिधाम—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिन—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्राय सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है। मृग।
हरिनग(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प का मणि।
हरिनाकुश(पु)†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हरिनाच्छ—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।
हरिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान्।
हरिनाम—संज्ञा पुं० [सं० हरिनामन्] भगवान् का नाम।
हरिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन] मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग।
हरिपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का लोक। वैकुंठ। २ एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होता है। उ०—रघुपति प्रभु तुम हो जग में नित, पालो करके दास। परम धरम दाता परमानंदु, येही मन को आस॥
हरिपुर—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है। उ०—लक्ष्मीपति लक्ष्मीयुत, देवीयुत ईश किधौं, छायायुत परमईश, चारुवेश राखैं। बन्दौं जग मात तात, चरण युगल नीर जात, जाको सुर सिद्धविद्या, मुनि जन अभिलाखैं। चर्चरी। ३ तुलसी। ४ लाल चंदन।
हरिप्रीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शुभ मुहूर्त (ज्योतिष)।
हरिभक्त—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।
हरिभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वरप्रेम।
हरियर†—वि० दे० "हरा"।
हरियाई†(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरियाना—संज्ञा पुं० [?] हिसार और रोहतक तक के आसपास का प्रांत।
हरियाली—संज्ञा स्त्री० [सं० हरित+आलि] १ हरे रंग का फैलाव। २. हरे हरे पेड़ पौधों का समूह या विस्तार। ३. दूब। ४. आनंद। प्रसन्नता। ताजगी।
मुहा०—हरियाली सूझना = चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।
हरियाली तीज—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरियाली + तीज] सावन वदी तीज।
हरिलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और अंत में गुरु लघु हों॥ उ०—माया प्रपंच तजि कै, उर शांति धार। काया मनुष्य अपनी, अब तू सुधार॥ इसे सुकुंद भी कहते हैं।
हरिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण का कुल। २ वह ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।
हरिवासर—संज्ञा पुं० [सं०] १. रविवार। २ विष्णु का दिन, एकादशी।
हरिशयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी।
हरिश्चन्द्र—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे। यह बड़े दानी और सत्यव्रती प्रसिद्ध हैं।
हरिस—संज्ञा स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूवा रहता है। ईषा।
हरिसौरभ—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी। मृगमद।
हरिहर क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।
हरिहाई(पु)—वि० स्त्री० दे० "हरहाई"।
हरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १४ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण, और अंत में लघु गुरु हो। उ०—सनै लगा सतै गुणानुवाद गाइए। सदा लहौ अनंद राम धाम पाइए॥ अनंद।
वि० "हरा" का स्त्री०।
संज्ञा पुं० दे० "हरि"।
हरीकेन—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक प्रकार की लालटेन।
हरीतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हड़। हर्रें।

हरीतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरेभरे पेड़ों का विस्तार। हरियाली।

हरीरा—संज्ञा पुं० [अ० हरीर] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध में मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।

(पु)† वि० [हिं० हरिअर] [स्त्री० हरीरी] १ हरा। सब्ज। २ हर्षित। प्रसन्न। प्रफुल्ल।

हरीस—संज्ञा स्त्री० दे० "हरिस"।

हरुआ(पु)—वि० [सं० लघुक] हलका।

हरुआ†(पु)—वि० दे० हलका। कोई जानहुं हरुआ रथ हाँका। कोई गरु भभार बहु थाका। —नंददास।

हरुआई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरुआ+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २ फुरती।

हरुआना†—क्रि० अ० [हिं० हरुआ से ना० धा०] १. हलका होना। लघु होना। २. फुरती करना। उ०—कर धनु लै किन चदहि मारि। तू हरुआयं जाय मंदिर चढ़ि ससि संमुख दर्पन विस्तारि। —सूर०।

हरुए†(पु)—क्रि वि० [हिं० हरुआ] १. धीरे धीरे। आहिस्ता से। २. इस प्रकार जिसमें आहट न मिले। चुपचाप। उ०—ना जानौं कित तें हरुए हरि आय मूँदि दिए नैन। —सूर०।

हरू(पु)—वि० दे० "हलका"।

हरूफ(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हरफ का बहु०] अक्षर।

हरे(पु)—क्रि० वि० [हिं० हरुए] १. धीरे से। आहिस्ते से। मंद। उ०—सूखा हिया, हार भा भारी। हरे हरे प्रान तजहिं सब नारी। —पदमावत। २ (शब्द) जो ऊँचा या जोर का न हो। ३ हलका। कोमल (आघात, स्पर्श आदि)।

हरेक—वि० दे० "हर एक"।

हरेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

हरेव—संज्ञा पुं० [देश०] १ मंगोलों का देश। २ मगोल जाति।

हरेवा—संज्ञा पुं० [हिं० हरा] हरे रंग की एक चिड़िया। हरी बुलबुल।

हरै(पु)—क्रि० वि० दे० "हरे"।

हरैया†(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०√हर+ऐया (प्रत्य०)] हरनेवाला। दूर करनेवाला।

हरौल—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"। उ०—तौ लौं वाके हरौल भटाघन सौं री कटाघन की तरवारि परी। —काव्यनिर्णय।

हरौहर(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] लूट। बलपूर्वक छीनना।—

हर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १ काम में रुकावट। बाधा। अड़चन। २ हानि। नुकसान।

यौ०—हर्ज मर्ज=बाधा। अड़चन।

हर्ता—संज्ञा पुं० [सं० हर्तृ] [स्त्री० हर्त्री] १ हरण करनेवाला। २ नाश करनेवाला।

हर्तार—संज्ञा पुं० [सं०] हर्ता।

हर्फ—संज्ञा पुं० दे० "हरफ"।

हर्म—संज्ञा पुं० [अ०] अंतःपुर। जनानखाना।

हर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर प्रासाद। महल।

हर्र—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर्रा—संज्ञा पुं० [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़।

हर्रे—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लता। आनंद। खुशी।

हर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रफुल्लता या भय से रोंगटों का खड़ा होना। २ प्रफुल्लित करना या होना। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

हर्षना—क्रि० अ० [सं० हर्षण] प्रसन्न होना।

हर्षवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] भारत का वैस क्षत्रिय वंशी एक बौद्ध सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे।

हर्षाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हरषाना] आनंदित होना। प्रसन्न होना। प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हर्षित करना। आनंदित करना।

हर्षित—वि० [सं०] आनंदित। प्रसन्न।

हलंत—संज्ञा पुं० दे० "हल्"।

हल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह औजार जिससे जमीन जोती जाती है। सीर। लांगल।

मुहा०—हल जोतना=(१) खेत में हल चलाना। खेती करना।

२ एक अस्त्र का नाम।

संज्ञा पुं० [अ०] १ हिसाब लगाना। गणित करना। २ किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना।

हलकप—संज्ञा पुं० [हिं०√हल+सं० कंप] दे० "हड़कंप"।

हलक—संज्ञा पुं० [अ०] गले की नली। कंठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=(१) पेट में जाना। (२) (किसी बात का) मन में बैठना।

हलकई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १ हलकापन। २ ओछापन। तुच्छता। ३ हेठी। अप्रतिष्ठा।

हलकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलकना] हलकने की क्रिया या भाव। हिलना।

हलकना†(पु)—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १. किसी वस्तु में भरे हुए जल का हिलाने से हिलना डोलना या शब्द करना। २ हिलोरें लेना। लहराना। ३ बत्ती की लौ का झिलमिलाना। ४ हिलना। डोलना।

हलका—वि० [सं० लघुक] [स्त्री० हलकी] १ जो तौल में भारी न हो। २ जो गाढ़ा न हो। पतला। ३ जो गहरा या चटकीला न हो। ४ जो गहरा न हो। उथला। ५ जो उपजाऊ न हो। ६ कम। थोड़ा। ७ जो जोर का न हो। मंद। ८ ओछा। तुच्छ। टुच्चा। ९ आसान। सुखसाध्य। १० जिसे किसी बात के करने की फिक्र न रह गई हो। निश्चिंत। ११. प्रफुल्ल। ताजा। १२ पतला। महीन। १३ कम अच्छा। घटिया। १४ खाली। छूँछा।

मुहा०—हलका करना=अपमानित करना। तुच्छ ठहराना। हलके हलके=धीरे धीरे।

†संज्ञा पुं० [अनु० हलहल] तरंग। लहर।

संज्ञा पुं० [अ० हल्क] १. वृत्त। मंडल। गोलाई। २ घेरा। परिधि। ३ मंडली। झुंड। दल। ४ हाथियों का झुंड। ५ कई मुहल्लों, गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।

हलकाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "हलकापन"।

हलकान†—वि० दे० "हलाकान"।

हलकाना†‡—क्रि० अ० [हिं० हलका+ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना।

क्रि० स० हलका करना। बोझ कम करना।

क्रि० स० [हिं० हलकना] हिलोरा देना।

क्रि० स० दे० "हिलगाना"।

हलकापन—संज्ञा पुं० [हिं० हलका+पन (प्रत्य०)] १ हलका होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। तुच्छ बुद्धि। ३ अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकारा—संज्ञा पुं० दे० "हरकारा"।

हलकोरा—संज्ञा पुं० [अनु०] तरग। लहर।

हलचल—संज्ञा स्त्री० [हिं०√हल+√चल] १. लोगों के बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़धूप, शोरगुल आदि। खलबली। धूम। २. उपद्रव। दंगा। कंप। विचलन।

वि० डगमगाता हुआ। कपायमान।

हलजुता, हलजोता—संज्ञा पुं० [हिं० हल+जोतना] हल जोतनेवाला। किसान (उपेक्षा)।

हलदहात—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह में हलदी चढ़ाने की रस्म।

हलदी—संज्ञा स्त्री० [स० हरिद्रा] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले और रँगाई के काम में आती है। २. उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढ़ना=विवाह के पहले दूल्हे और दुलहिन के शरीर में हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना। हलदी लगना=विवाह होना। हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च किए। मुफ्त में।

हलदू—संज्ञा पुं० [देश०] एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करन।

हलधर—संज्ञा पुं० [सं०] बलराम जी।

हलना (पु)—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १ हिलना डोलना। २ घुसाना। पैठना।

हलफ—संज्ञा पुं० [अ०] किसी पवित्र वस्तु की शपथ। कसम। सौगंध।

मुहा०—हलफ उठाना=कसम खाना।

हलफनामा—संज्ञा पुं० [अ० हलफ+फा० नाम.] वह कागज जिसपर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलफा—संज्ञा पुं० [अनु० हलहल] १ बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का श्वास रोग। २ लहर। तरग।

हलबल (पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हल+बल] खलबली। हलचल। धूम।

हलबलाना—क्रि० अ०, स० दे० "हड़बड़ाना"।

हलबी, हलब्बी—वि० [हलब देश] हलब देश का (शीशा)। बढ़िया (शीशा)।

हलमुखी—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं। उ०—होहिंगी, हम सब सुखी। जो तनै, वह हलमुखी॥

हलराना—क्रि० स० [हिं० हिलोरा] (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना। उ०—जसुदा हरि पालने झुलावै। हलरावै मल्हरावै जोइ सोई कछु गावै। —सूर०।

हलवा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।

मुहा०—हलवे माँडे से काम=केवल स्वार्थसाधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब।

हलवाई—संज्ञा पुं० [अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा—संज्ञा पुं० [स० हल-वाह] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

हलहल—संज्ञा पुं० [अनु० हल] १ जल के हिलने डुलने की ध्वनि। २ किसी द्रव्य में जलादि द्रव पदार्थ का अत्यधिक मिश्रण।

हलहलाना—क्रि० स० [अनु० हलहल] खूब जोर से हिलाना डुलाना। झकझोरना।

क्रि० अ० काँपना। थरथराना।

हलाक—वि० [अ० हलाकत] मारा हुआ।

हलाकान—वि० [अ० हलाक] [संज्ञा हलाकानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकी—वि० [अ० हलाक] मार डालनेवाला। मारू। घातक।

हलाकू—वि० [हलाक] हलाक करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक तुर्क सरदार जो चगेज खाँ का पोता और उसी के समान हत्याकारी था।

हलाभला—संज्ञा पुं० [हिं० हला (अनु०)+भला] १ निबटारा। निर्णय। २ परिणाम।

हलायुध—संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।

हलाल—वि० [अ०] जो शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो। जायज।

संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्मपुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०—हलाल करना=खाने के लिये पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक (धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। जबह करना। हलाल का=ईमानदारी से पाया हुआ।

संज्ञा पुं० दे० "हिलाल"।

हलालखोर—संज्ञा पुं० [अ० हलाल+फा० खोर] [स्त्री० हलालखोरी, हलालखोरिन] १. मिहनत करके जीविका करनेवाला। २ मेहतर। भगी।

हलाहल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्रचंड विष जो समुद्रमथन के समय निकला था। २. भारी जहर। ३ एक जहरीला पौधा। दे० "हलाहल"।

हली—संज्ञा पुं० [सं० हलिन्] १. बलराम। २. किसान।

हलीम—वि० [अ०] सीधा। शात।

हलुवा—संज्ञा पुं० "हलवा"।

हलुका (पु)—वि० दे० "हलका"।

हलूक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।

हलोर (पु)—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हलोरना—क्रि० स० [हिं० हिलोर से ना० धा०] १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना डुलाना। २. मथना। खूब हिलाना डुलाना। ३. अनाज फटकना। ४. बहुत अधिक मान में किसी पदार्थ का सग्रह करना।

हलोरा (पु)—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हल्—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।

हल्दी—संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला—संज्ञा पुं० [अनु०] १ चिल्लाहट। शोरगुल। कोलाहल। २ लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३ आक्रमण। धावा। हमला।

हल्लीश—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का उपरूपक जिसमें एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।

हवन—संज्ञा पुं० [स०] १ किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर घी, जौ तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम। २. अग्नि। आग। ३ हवन करने का चमचा। स्रुवा।

हवनीय—संज्ञा पुं० [सं०] हवन के योग्य।

संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि में डाला जाता है।

हवलदार—संज्ञा पुं० [अ० हवाल+फा० दार] १ बादशाही जमाने का वह अफसर

जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिये तैनात रहता था। २. फौज में एक सबसे छोटा अफसर।

हवस—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लालसा। कामना। चाह। २. तृष्णा।

हवा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पृथ्वी पर रहनेवाले जीवों के श्वास लेने का वह प्राणवायु और "नाइट्रोजन" द्रव्यों का मिला जुला पदार्थ जो पृथ्वी को चारों ओर से लिफाफे की तरह घेरे हुए है। वायु। पवन।

मुहा०—हवा उड़ना=(१) खबर फैलना। (२) अफवाह फैलना। हवा करना=पंखे से हवा का झोंका लाना। पखा हाँकना। हवा के घोड़े पर सवार=बहुत उतावली में। बहुत जल्दी में। हवा खाना=(१) शुद्ध वायु के सेवन के लिये बाहर निकलना। टहलना। (२) प्रयोजनसिद्धि तक न पहुँचना। अकृतकार्य होना। हवा पीकर रहना=बिना आहार के रहना (व्यंग्य)। हवा बताना=किसी वस्तु से वंचित रखना। टाल देना। हवा बाँधना=(१) लबी चौड़ी बातें कहना। शेखी हाँकना। (२) गप हाँकना। हवा पलटना, फिरना या बदलना=(१) दूसरी ओर की हवा चलने लगना। (२) दूसरी स्थिति या अवस्था होना। हालत बदलना। हवा बिगड़ना=(१) संक्रामक रोग फैलना। (२) रीति या चाल बिगड़ना। बुरे विचार फैलना। हवा सा=बिलकुल महीन या हलका। हवा से लड़ना=किसी से अकारण लड़ना। हवा से बातें करना=(१) बहुत तेज दौड़ना या चलना। (२) आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। किसी की हवा लगना=किसी की संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना=(१) झटपट चल देना। भाग जाना। (२) न रह जाना। एकबारगी गायब हो जाना।

२ भूत। प्रेत। ३ अच्छा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। ४ बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख।

मुहा०—हवा बँधना=(१) अच्छा नाम हो जाना। (२) बाजार में साख होना।

५. किसी बात की सनक। धुन।

हवाई—वि० [अ० हवा] १. हवा का। वायु संबंधी। २. आकाश में होनेवाला। ३ आकाश में से होकर आनेवाला। ४. आकाश में स्थित। ५ कल्पित या झूठ। निर्मूल। ६ हवा की भाँति झीना या हलका।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी। बान। आसमानी।

मुहा०—(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ जाना। विवर्णता होना। हवाई किला बनाना=ऐसे मनसूबे गाँठना जो कभी संभव न हों। ख्याली पुलाव पकाना।

हवाई जहाज—संज्ञा पुं० [अ०] हवा में उड़नेवाली सवारी। वायुयान।

हवागाड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "मोटर"।

हवाचक्की—संज्ञा स्त्री० [अ० हवा+हिं० चक्की] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो। २. हवा की गति से चलानेवाला कोई यंत्र।

हवादार—वि० [अ० हवा फा० दार] जिसमें हवा आने जाने के लिये खिड़कियाँ या दरवाजे हों।

संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका तख्त।

हवाबाज—संज्ञा पुं० [अ० हवा+फा० बाज] वह जो हवाई जहाज चलाता या उड़ाता हो। उड़ाका।

हवाबाजी—संज्ञा स्त्री० [अ० हवा+फा० बाजी] हवाई जहाज चलाने का काम।

हवाल—संज्ञा पुं० [अ० अहवाल] १. हाल। दशा। अवस्था। २ गति। परिणाम। ३ समाचार। वृत्तांत।

हवालदार—संज्ञा पुं० दे० "हवलदार"।

हवाला—संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रमाण का उल्लेख। २ उदाहरण। दृष्टांत। मिसाल। ३ सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।

मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना। सौंपना।

हवालात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव। नजरबंदी। २ अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमे के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिये दी जाती है। हाजत। २ वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

हवास—संज्ञा पुं० [अ०] १ इंद्रियाँ। २ संवेदन। ३ चेतना। संज्ञा। होश।

मुहा०—हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तंभित होना।

हवि—संज्ञा पुं० [सं० हविस्] वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु।

हविष्य—वि० [सं०] हवन करने योग्य।

संज्ञा पुं० वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।

हविष्यान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।

हविस—संज्ञा स्त्री० दे० "हवस"।

हवेल(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] हुमेल। गले में पहनने का गहना। उ०—मोती को हार हवेल बनीन पै सारी सोहावनी कंचुकी नीली।—काव्यनिर्णय।

हवेली—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पक्का बड़ा मकान। प्रासाद। २ पत्नी। स्त्री।

हव्य—संज्ञा पुं० [सं०] हवन की सामग्री।

हसद—संज्ञा पुं० [अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी। ३ विनोद।

हसब—अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक।

हसरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रंज। अफसोस। २ हार्दिक कामना।

हसित—वि० [सं०] १ जिसपर लोग हँसते हों। २. जो हँसा हो। ३. खिला हुआ।

संज्ञा पुं० १ हँसना। २. हँसी ठट्ठा। ३ हास्य का एक भेद। ४. कामदेव का धनुष।

हसीन—वि० [अ०] सुंदर। खूबसूरत।

हसील—वि० [अ० असील] सीधा सादा।

हस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३ एक नाप जो २४ अंगुल की होती है। हाथ। ४ हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५ एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है।

हस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २ हाथ से बजाई जानेवाली ताली। ३ करताल। ४ नृत्य की मुद्रा।

हस्तकौशल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता।

हस्तक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथ का

काम। दस्तकारी। २ हाथ से इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।
हस्तक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी होते हुए काम में कुछ कार्रवाई कर बैठना। दखल देना।
हस्तगत—वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल।
हस्तत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।
हस्तमैथुन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ के द्वारा इंद्रियसंचालन। सरका कूटना।
हस्तरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।
हस्तलाघव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ की फुरती। हाथ की सफाई।
हस्तलिखित—वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ (ग्रंथ आदि)।
हस्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। लेख।
हस्ताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तखत।
हस्तामलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो।
हस्तायुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।
हस्ति—संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।
हस्तिकंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।
हस्तिदंत—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "हाथीदाँत"।
हस्तिनापुर—संज्ञा पुं० [सं०] कौरवों की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।
हस्तिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा हाथी। हथिनी। २ कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से निकृष्ट भेद।
हस्ती—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हस्तिनी] हाथी।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अस्तित्व। होने का भाव। सत्ता।
हस्ते—अव्य० [सं०] हाथ से। मारफत।
हहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० हहरना] १ थर्राहट। कँपकँपी। २ भय। डर।
हहरना—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३. दंग रह जाना। चकित रह जाना। ४. डाह करना। सिहाना। ५ अधिकता देखकर चकपकाना।
हहराना—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २ डरना। भयभीत होना। ३ दे० "हरहराना"।
क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।
हहा—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हँसने का शब्द। ठट्ठा। २ दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द।
मुहा०—हहा खाना = बहुत गिड़गिड़ाना।
३ हाहाकार।
हाँ—अव्य० [सं० आम्] १ स्वीकृतिसूचक शब्द। सम्मतिसूचक शब्द। २ एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि जो बात पूछी जा रही है, वह ठीक है।
मुहा०—हाँ करना = सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना = खुशामद करना। हाँ में हाँ मिलाना = (खुशामद के लिये) बुरी भली सभी बातों का अनुमोदन करना।
३ वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में या अंशतः माना जाना प्रकट किया जाता है। ⓟ४ दे० "यहाँ"।
हाँक—संज्ञा स्त्री० [प्रा० √हक्क] १ किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द।
मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना = जोर से पुकारना। हाँक मारना = दे० "हाँक लगाना"। हाँक पुकारकर कहना = सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।
२ ललकार। हुंकार। गर्जन। ३ उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिये की हुई पुकार। दुहाई।
हाँकना—क्रि० स० [प्रा० √हक्क, हिं० हाँक] १ जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २ लड़ाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुंकार करना। ३ बढ़ बढ़कर बोलना। सीटना। ४ मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। ५ खींचनेवाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ६. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ७. पंखे से हवा पहुँचाना।
हाँका—संज्ञा पुं० [हिं० हाँक] १. पुकार। टेर। हाँक। २ ललकार। ३ गरज। ४ दे० "हँकवा"।
हाँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।
मुहा०—हाँगी भरना = स्वीकार करना।
हाँडना—क्रि० स० [सं० हिंडन] व्यर्थ इधर उधर फिरना। आवारागर्दी। घूमना।
वि० [स्त्री० हाँडनी] आवारा फिरनेवाला।
हाँडी—संज्ञा स्त्री० [सं० भांड] १ मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँडिया।
मुहा०—हाँडी पकना = (१) हाँडी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। (२) भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। कोई षट्चक्र रचा जाना। हाँडी चढ़ना = कोई चीज पकाने के लिये हाँडी का आग पर रखा जाना।
२ इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे में टाँगा जाता है।
हाँताⓟ—वि० [सं० हात] [स्त्री० हाँती] १ अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २ दूर किया हुआ। हटाया हुआ।
हाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० हति] समाप्ति। नाश। उ०—आजु बड़े सुकृती हमहीं, भयो पातकु हाँति हमारी घरा तें। —काव्य-निर्णय।
हाँती—संज्ञा स्त्री० [सं० हति] पार्थक्य। विमुखता। उ०—बैरें मानु किये हियें लगी हितुन के लाइ। हरि सौं हँमि हाँती करें तौ होती ह्वै जाइ। —रससारांश।
हाँपना, हाँफना—क्रि० अ० [अनु० हँफ हँफ] कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।
हाँफा—संज्ञा पुं० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।
हाँसनाⓟ—क्रि० अ० दे० "हँसना"।
हाँसल—संज्ञा पुं० [हिं० हाँस] वह घोड़ा जिसका रंग मेंहदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।
हाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० हास] १ हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २. परिहास।

हँसी ठट्ठा। दिल्लगी। मजाक। उ०—निर्गुन कौन देस को बासी। ऊधो! नेकु हमहिं समुझावहु, बूझति साँच न हाँसी।—सूर०। ३ उपहास। निंदा। उ०—ऊधो कही सो बहुरि न कहियो। हाँसी होन लगी या ब्रज में, अनबोले ही रहियो।—सूर०।

हाँ हाँ—अव्य० [हिं० अहाँ=नहीं] निषेध या वारण करने का शब्द।

हा—अव्य० [सं०] १ शोक या दुःखसूचक शब्द। २ आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। भयसूचक शब्द।

संज्ञा पुं० हनन करनेवाला। मारनेवाला।

हाइ(पु)—अव्य० दे० "हाय"।

हाई—संज्ञा स्त्री० [सं० घात] १ दशा। हालत। अवस्था। २ ढंग। घात। तर। ढब। उ०—ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई। बातनि सुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई।—सूर०।

हाऊ—संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा। भकाऊँ।

हाकलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। उ०—परतिय मातु समान भजै, परधन विष के तुल्य तजै॥

हाकलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकिम—संज्ञा पुं० [अ०] १ हुकूमत करनेवाला। शासक। २ बड़ा अफसर।

हाकिमी—संज्ञा स्त्री० [अ० हाकिम] हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व। शासन।

वि० हाकिम का। हाकिम संबंधी।

हाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जरूरत। आवश्यकता। २ चाह। ३ पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।

मुहा०—हाजत में देना या रखना=पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।

हाजमा—संज्ञा पुं० [अ०] पाचन क्रिया। पाचन शक्ति। भोजन पचने की क्रिया।

हाजिर—वि० [अ०] १ सम्मुख। उपस्थित। २ मौजूद। विद्यमान।

हाजिरजवाब—वि० [अ०] [संज्ञा हाजिरजवाबी] बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न मति।

हाजिरबाश—वि० [अ० हाजिर+फा० बाश] [संज्ञा हाजिरबाशी] सदा हाजिर रहनेवाला।

हाजी—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो हज कर आया हो (मुसल०)।

हाट—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट] १ दूकान। २ बाजार।

मुहा०—हाट करना=(१) कान रखकर बैठना। (२) सौदा लेने के लिये बाजार जाना। हाट लगना=दूकान या बाजार में बिक्री की चीजें रखी जाना। हाट चढ़ना=बाजार में बिकने के लिये आना।

३ बाजार लगने का दिन।

हाटक—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

हाटकपुर—संज्ञा पुं० [सं०] लंका।

हाटकलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] हिरण्याक्ष।

हाड़(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हड्ड] १ हड्डी। अस्थि। २ वंश या जाति की मर्यादा। कुलीनता।

हाता—संज्ञा पुं० [अ० इहात] १ घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २ देशविभाग। हलका या सूबा। प्रांत। ३ सीमा। हद।

वि० [सं० हात] [स्त्री० हाती] १ अलग। दूर किया हुआ। उ०—मधुकर! रह्यो जोग लौं नातो। कतहिं बकत बेकाम काज बिनु, होय न ह्याँ ते हातो।—सूर०। २ नष्ट। बरबाद।

संज्ञा पुं० [सं० हातु=मृत्यु] मारनेवाला।

हातिम—संज्ञा पुं० [अ०] १ निपुण। चतुर। कुशल। २ किसी काम में पक्का आदमी। उस्ताद। ३ एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है।

मुहा०—हातिम की कब्र पर लात मारना=बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना (व्यंग्य)।

४ बड़ा दानी मनुष्य।

हाथ—संज्ञा पुं० [सं० हस्त] १ बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। हस्त।

मुहा०—हाथ में आना या पड़ना=अधिकार या वश में आना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना=सलाम करना। प्रणाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना=किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना। मारना। हाथ ऊँचा होना=(१) दान देने में प्रवृत्त होना। (२) संपन्न होना। हाथ कट जाना=(१) कुछ करने लायक न रह जाना। (२) प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। हाथ की मैल=तुच्छ वस्तु। हाथ के हाथ=तुरत। उसी समय। हाथ खाली होना=पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खुजलाना=(१) मारने को जी करना। (२) प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना। हाथ खींचना=(१) किसी काम से अलग हो जाना। योग न देना। (२) देना बंद कर देना। हाथ चलाना=मारने के लिये थप्पड़ तानना। मारना। हाथ चूमना=किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना। हाथ छोड़ना=मारना। प्रहार करना। हाथ जोड़ना=(१) प्रणाम करना। नमस्कार करना। (२) अनुनय विनय करना। (दूर से) हाथ जोड़ना=संसर्ग या संबंध न रखना। किनारे रहना। हाथ डालना=किसी काम में हाथ लगाना। योग देना। हाथ तंग होना=खर्च करने के लिये रुपया पैसा न रहना। (किसी वस्तु या बात से) हाथ धोना=खो देना। प्राप्ति की संभावना न रखना। नष्ट करना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=किसी काम में जी जान से लग जाना। हाथ पकड़ना=(१) किसी काम से रोकना। (२) आश्रय देना। शरण में लेना। (३) पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पत्थर तले दबना=(१) संकट या कठिनता की स्थिति में पड़ना। (२) लाचार होना। विवश होना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना=खाली बैठे रहना। कुछ काम धंधा न करना। हाथ पसारना या फैलाना=कुछ माँगना। याचना करना। हाथ पाँव चलना=काम धंधे के लिये सामर्थ्य होना। कार्य करने की योग्यता होना। हाथ पाँव ठंढे होना=(१) मरणासन्न होना। (२) भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना। हाथ पाँव निकालना=(१) मोटा ताजा होना। (२) सीमा का अतिक्रमण करना। (३) शरारत करना। हाथ पाँव फूलना=डर या शोक से घबरा जाना। हाथ पाँव पटकना=छटपटाना। हाथ पाँव मारना या हिलाना=(१) प्रयत्न करना। कोशिश करना। (२) बहुत परिश्रम करना। हाथ पैर जोड़ना=विनती करना। अनुनय विनय

काम। दस्तकारी। २ हाथ से इंद्रिय-सचालन। सरका कूटना।

हस्तक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी होते हुए काम में कुछ कार्रवाई कर बैठना। दखल देना।

हस्तगत—वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल।

हस्तत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।

हस्तमैथुन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ के द्वारा इंद्रियसंचालन। सरका कूटना।

हस्तरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।

हस्तलाघव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ की फुरती। हाथ की सफाई।

हस्तलिखित—वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ (ग्रंथ आदि)।

हस्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। लेख।

हस्ताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तखत।

हस्तामलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो।

हस्तायुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

हस्ति—संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।

हस्तिकंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिदंत—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "हाथीदाँत"।

हस्तिनापुर—संज्ञा पुं० [सं०] कौरवों की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।

हस्तिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा हाथी। हथिनी। २ कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से निकृष्ट भेद।

हस्ती—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हस्तिनी] हाथी।

संज्ञा स्त्री० [फा०] अस्तित्व। होने का भाव। सत्ता।

हस्ते—अव्य० [सं०] हाथ से। मारफत।

हहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० हहरना] १ थर्राहट। कँपकँपी। २ भय। डर।

हहरना—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३. दंग रह जाना। चकित रह जाना। ४. डाह करना। सिहाना। ५ अधिकता देखकर चकपकाना।

हहराना—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २ डरना। भयभीत होना। ३ दे० "हरहराना"।

क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।

हहा—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हँसने का शब्द। ठट्ठा। २ दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द।

मुहा०—हहा खाना = बहुत गिड़गिड़ाना।

३ हाहाकार।

हाँ—अव्य० [सं० आम्] १ स्वीकृतिसूचक शब्द। सम्मतिसूचक शब्द। २ एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि जो बात पूछी जा रही है, वह ठीक है।

मुहा०—हाँ करना = सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना = खुशामद करना। हाँ में हाँ मिलाना = (खुशामद के लिये) बुरी भली सभी बातों का अनुमोदन करना।

३ वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में या अंशतः माना जाना प्रकट किया जाता है। (पु)४ दे० "यहाँ"।

हाँक—संज्ञा स्त्री० [प्रा० √हक्क] १. किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द।

मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना = जोर से पुकारना। हाँक मारना = दे० "हाँक लगाना"। हाँक पुकारकर कहना = सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।

२ ललकार। हुंकार। गर्जन। ३ उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिये की हुई पुकार। दुहाई।

हाँकना—क्रि० स० [प्रा० √हक्क, हिं० हाँक] १ जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २ लड़ाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुंकार करना। ३ बढ़ बढ़कर बोलना। सीटना। ४ मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। ५. खींचनेवाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ६ मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ७. पंखे से हवा पहुँचाना।

हाँका—संज्ञा पुं० [हिं० हाँक] १ पुकार। टेर। हाँक। २. ललकार। ३ गरज। ४ दे० "हँकवा"।

हाँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना = स्वीकार करना।

हाँडना—क्रि० स० [सं० हिंडन] व्यर्थ इधर उधर फिरना। आवारागर्दी। घूमना।

वि० [स्त्री० हाँडनी] आवारा फिरनेवाला।

हाँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० भांड] १. मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँड़िया।

मुहा०—हाँड़ी पकना = (१) हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। (२) भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। कोई षड्चक्र रचा जाना हाँड़ी चढ़ना = कोई चीज पकाने के लिये हाँड़ी का आग पर रखा जाना।

२ इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे में टाँगा जाता है।

हाँता(पु)—वि० [सं० हात] [स्त्री० हाँती] १ अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २ दूर किया हुआ। हटाया हुआ।

हाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० हति] समाप्ति। नाश। उ०—प्रभु बड़े सुकृती हमहीं, भयो पातकु हाँति हमारी धरा तें।—काव्य-निर्णय।

हाँती—संज्ञा स्त्री० [सं० हति] पार्थक्य। विमुखता। उ०—तेरे मातु किये हियें लगी हितुन के लाइ। हरि सौं हँसि हाँती करैं तौ होती है जाइ।—रससारांश।

हाँपना, हाँफना—क्रि० अ० [अनु० हँफ हँफ] कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।

हाँफा—संज्ञा पुं० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।

हाँसना(पु)—क्रि० अ० दे० "हँसना"।

हाँसल—संज्ञा पुं० [हिं० हाँस] वह घोड़ा जिसका रंग मेहँदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।

हाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० हास] १. हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २ परिहास।

हँसी ठट्ठा । दिल्लगी । मजाक । उ०—निर्गुन कौन देस को बासी । ऊधो ! नेकु हमहिं समुझावहु, बूझति साँच न हाँसी । —सूर० । ३ उपहास । निंदा । उ०—ऊधो कही सो बहुरि न कहियो । हाँसी होन लगी या ब्रज में, अनबोले ही रहियो । —सूर० ।

हाँ हाँ—अव्य० [हिं० अहाँ = नहीं] निषेध या वारण करने का शब्द ।

हा—अव्य० [सं०] १ शोक या दुःखसूचक शब्द । २ आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द । भयसूचक शब्द ।

संज्ञा पुं० हनन करनेवाला । मारनेवाला ।

हाइ(पु)—अव्य० दे० "हाय" ।

हाई—संज्ञा स्त्री० [सं० घात] १ दशा । हालत । अवस्था । २ ढंग । घात । तर । ढब । उ०—ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई । बातनि सुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई । —सूर० ।

हाऊ—संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा । भकाऊँ ।

हाकलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है । उ०—परतिय मातु समान भजै, परधन विष के तुल्य तजै ॥

हाकलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

हाकली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

हाकिम—संज्ञा पुं० [अ०] १. हुकूमत करनेवाला । शासक । २ बड़ा अफसर ।

हाकिमी—संज्ञा स्त्री० [अ० हाकिम] हाकिम का काम । हुकूमत । प्रभुत्व । शासन ।

वि० हाकिम का । हाकिम संबंधी ।

हाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जरूरत । आवश्यकता । २ चाह । पहरे के भीतर रखा जाना । हिरासत ।

मुहा०—हाजत में देना या रखना = पहरे के भीतर देना । हवालात में डालना ।

हाजमा—संज्ञा पुं० [अ०] पाचन क्रिया । पाचन शक्ति । भोजन पचने की क्रिया ।

हाजिर—वि० [अ०] १ समुख । उपस्थित । २ मौजूद । विद्यमान ।

हाजिरजवाब—वि० [अ०] [संज्ञा हाजिरजवाबी] बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार । प्रत्युत्पन्न मति ।

हाजिरबाश—वि० [अ० हाजिर+फा० बाश] [संज्ञा हाजिरबाशी] सदा हाजिर रहनेवाला ।

हाजी—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो हज कर आया हो (मुसल०) ।

हाट—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट] १ दूकान । २ बाजार ।

मुहा०—हाट करना = (१) कान रखकर बैठना । (२) सौदा लेने के लिये बाजार जाना । हाट लगना = दूकान या बाजार में बिक्री की चीजें रखी जाना । हाट चढ़ना = बाजार में बिकने के लिये आना ।

३ बाजार लगने का दिन ।

हाटक—संज्ञा पुं० [सं०] सोना । स्वर्ण ।

हाटकपुर—संज्ञा पुं० [सं०] लंका ।

हाटकलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] हिरण्याक्ष ।

हाड़(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हड्ड] १ हड्डी । अस्थि । २ वंश या जाति की मर्यादा । कुलीनता ।

हाता—संज्ञा पुं० [अ० इहात] १ घेरा हुआ स्थान । बाड़ा । २ देशविभाग । हलका या सूबा । प्रांत । ३ सीमा । हद ।

वि० [सं० हात] [स्त्री० हाती] १ अलग । दूर किया हुआ । उ०—मधुकर ! रह्यो जोग लौं नातो । कतहिं बकत बेकाम काज बिनु, होय न ह्याँ ते हातो । —सूर० । २ नष्ट । बरबाद ।

संज्ञा पुं० [सं० हातु = मृत्यु] मारनेवाला ।

हातिम—संज्ञा पुं० [अ०] १ निपुण । चतुर । कुशल । २ किसी काम में पक्का आदमी । उस्ताद । ३ एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है ।

मुहा०—हातिम की कब्र पर लात मारना = बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना (व्यंग्य) ।

४ बड़ा दानी मनुष्य ।

हाथ—संज्ञा पुं० [सं० हस्त] १ बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा । कर । हस्त ।

मुहा०—हाथ में आना या पड़ना = अधिकार या वश में आना । मिलना । (किसी को) हाथ उठाना = सलाम करना । प्रणाम करना । (किसी पर) हाथ उठाना = किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना । मारना । हाथ ऊँचा होना = (१) दान देने में प्रवृत्त होना । (२) संपन्न होना । हाथ कट जाना = (१) कुछ करने लायक न रह जाना । (२) प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना । हाथ की मैल = तुच्छ वस्तु । हाथ के हाथ = तुरत । उसी समय । हाथ खाली होना = पास में कुछ द्रव्य न रह जाना । हाथ खुजलाना = (१) मारने को जी करना । (२) प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना । हाथ खींचना = (१) किसी काम से अलग हो जाना । योग न देना । (२) देना बंद कर देना । हाथ चलाना = मारने के लिये थप्पड़ तानना । मारना । हाथ चूमना = किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना । हाथ छोड़ना = मारना । प्रहार करना । हाथ जोड़ना = (१) प्रणाम करना । नमस्कार करना । (२) अनुनय विनय करना । (दूर से) हाथ जोड़ना = संसर्ग या संबंध न रखना । किनारे रहना । हाथ डालना = किसी काम में हाथ लगाना । योग देना । हाथ तंग होना = खर्च करने के लिये रुपया पैसा न रहना । (किसी वस्तु या बात से) हाथ धोना = खो देना । प्राप्ति की संभावना न रखना । नष्ट करना । हाथ धोकर पीछे पड़ना = किसी काम में जी जान से लग जाना । हाथ पकड़ना = (१) किसी काम से रोकना । (२) आश्रय देना । शरण में लेना । (३) पाणिग्रहण करना । विवाह करना । हाथ पत्थर तले दबना = (१) संकट या कठिनता की स्थिति में पड़ना । (२) लाचार होना । विवश होना । हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = खाली बैठे रहना । कुछ काम धंधा न करना । हाथ पसारना या फैलाना = कुछ माँगना । याचना करना । हाथ पाँव चलना = काम धंधे के लिये सामर्थ्य होना । कार्य करने की योग्यता होना । हाथ पाँव ठंढे होना = (१) मरणासन्न होना । (२) भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना । हाथ पाँव निकालना = (१) मोटा ताजा होना । (२) सीमा का अतिक्रमण करना । (३) शरारत करना । हाथ पाँव फूलना = डर या शोक से घबरा जाना । हाथ पाँव पटकना = छटपटाना । हाथ पाँव मारना या हिलाना = (१) प्रयत्न करना । कोशिश करना । (२) बहुत परिश्रम करना । हाथ पैर जोड़ना = विनती करना । अनुनय विनय

करना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना = किसी वस्तु को उड़ा लेना। ले लेना। (किसी काम में) हाथ बँटाना = शामिल होना। शरीक होना। हाथ बाँधे खड़ा रहना = सेवा में बराबर उपस्थित रहना। हाथ मलना = (१) बहुत पछताना। (२) निराश और दुःखी होना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना = उड़ा लेना। गायब कर लेना। हाथ में करना = वश में करना। ले लेना। (मन) हाथ में करना = मोहित करना। लुभाना। हाथ में होना = (१) अधिकार में होना। (२) वश में होना। हाथ रँगना = घूस लेना। हाथ रोपना या ओड़ना = हाथ फैलाना। माँगना। (कोई वस्तु) हाथ लगना = हाथ में आना। मिलना। प्राप्त होना। (किसी काम में) हाथ लगना = (१) आरंभ होना। शुरू किया जाना। (२) किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में) हाथ लगना = छू जाना। स्पर्श होना। किसी काम में हाथ लगाना = (१) आरंभ करना। शुरू करना। (२) योग देना। हाथ लगाना = छूना। स्पर्श करना। हाथ लगे मैला होना = इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मैला होना। हाथों हाथ = एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। हाथों हाथ लेना = बड़े आदर और संमान से स्वागत करना। लगे हाथ = (जो काम हो रहा हो) उसी सिलसिले में। साथ ही।

२. लंबाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की मानी जाती है। ३ ताश, जुए आदि के खेल में एक एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथपान—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+पान] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथफूल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] १ मुठिया। दस्ता। २ पंजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोतकर दीवार पर छापने से बनता है। छापा। †३. हाथी। †४ थाल्हे से पानी उलीचकर खेत सींचने का काठ का एक औजार।

हाथाजोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+√जोड़+ई (प्रत्य०)] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

हाथापाई, हाथाबाँही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+पाँव या बाँह] वह लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाए जायँ। भिड़ंत। धौल-धप्पड़।

हाथी—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] एक विशालकाय मोटे चमड़ेवाला स्तनपायी चौपाया जिसके कान बहुत चौड़े होते हैं। नाक के स्थान पर लटकनेवाली इसकी सूँड़ मोटी और लंबी तथा दुम छोटी होती है। नर में सूँड़ के दोनों ओर एक एक सफेद दाँत निकला रहता है। भारत में इसको लोग सवारी के लिये पालते हैं।

मुहा०—हाथी की राह = आकाशगंगा। डहर। हाथी पर चढ़ना = बहुत अमीर होना। हाथी बाँधना = बहुत अमीर होना। हाथी के संग गाँड़े खाना = बहुत बड़े बलवान् की बराबरी करना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] हाथ का सहारा। करावलंब। उ०—आइ मिले चितउर के साथी। सबै बिहँसि कै दीन्ही हाथी। —पदमावत।

हाथीखाना—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+फा० खान.] वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीदाँत—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+दाँत] हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

हाथीनाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी+नाल] हाथी पर चलनेवाली तोप। हथनाल। गजनाल।

हाथीपाँव—संज्ञा पुं० दे० "फीलपा"।

हाथीवान—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+वान (प्रत्य०)] हाथी को चलाने के लिये नियुक्त पुरुष। फीलवान। महावत।

हानⓅ†—संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

संज्ञा पुं० त्याग। छोड़ना।

हाननाⓅ—क्रि० स० [सं० हनन] मारना। उ०—नंद सुवन तबहीं पहिचान्यो। दुष्ट न दुरै दुई कौं हान्यौ। —नंददास०।

हानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाश। अभाव। क्षय। २ नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। टोटा। ३ स्वास्थ्य में बाधा। ४ अनिष्ट। अपकार। बुराई। †५ दुःख। पश्चात्ताप।

हानिकर—वि० [सं०] १ हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २ बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३. तंदुरुस्ती बिगाड़ने-वाला।

हानिकारक—वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी—वि० दे० "हानिकर"।

हाफिज—संज्ञा पुं० [अ०] वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो।

हामी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।

मुहा०—हामी भरना = मंजूर करना।

संज्ञा पुं० १. वह जो हिमायत करता हो। २ सहायता करनेवाला। सहायक।

हाय—अव्य० [सं० हा] शोक, दुःख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।

संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। पीड़ा। दुःख। २ ईर्ष्या। डाह।

मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना = पहुँचाए हुए दुःख या कष्ट का बुरा फल मिलना।

हायन—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।

हायलⓅ—वि० [हिं० घायल] १ घायल। २ शिथिल। मूर्छित। बेकाम।

वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। रोकनेवाला। अंतरवर्ती।

हायलताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० हायल+ताई (प्रत्य०)] शिथिलता। उ०—तो मुख के तौ हरायल भानु दई उनकों अति हायल-ताई। —काव्यनिर्णय।

हाय हाय—अव्य० [सं० हा हा] शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० "हाय"।

संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। दुःख। शोक। २ घबराहट। परेशानी। झंझट।

हायाⓅ—प्रत्य० [हिं० हाहो] (किसी वस्तु के लिये) आतुर। व्याकुल।

हार—संज्ञा स्त्री० [सं० हारि] १. लड़ाई, खेल, बाजी या चढ़ाऊपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय।

मुहा०—हार खाना = हारना।

२. शिथिलता। थकावट। ३ हानि। क्षति। ४ जब्ती। राज्य द्वारा हरण। ५. विरह। वियोग।

संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने, चाँदी या मोतियों आदि की माला जो गले में पहनी जाय। २ ले जानेवाला। वहन करनेवाला। ३ मनोहर। सुंदर। ४ अंकगणित में भाजक। ५ पिंगल या छंद शास्त्र में गुरु मात्रा। ६ नाश करनेवाला। नाशक।

प्रत्य० दे० "हारा"।

हारक—वि० [सं०] [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। २ मनोहर। सुंदर।

संज्ञा पुं० १. चोर। लुटेरा। २. गणित में भाजक। ३ हार। माला।

हारद(पु)—वि० दे० "हार्दिक"।

हारना—क्रि० अ० [सं० हार] १ प्रतिद्वंद्विता आदि में शत्रु के सामने विफल होना। पराजित होना। शिकस्त खाना। २ शिथिल होना। थक जाना। ३ प्रयत्न में निराश होना। असमर्थ होना।

मुहा०—हारे दर्जे=लाचार होकर। विवश होकर। हारकर=(१) असमर्थ होकर। (२) लाचार होकर।

क्रि० स० १ लड़ाई, बाजी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना। २ गँवाना। खोना। ३ छोड़ देना। न रख सकना। ४. दे देना।

हारबंध—संज्ञा पुं० [सं०] एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारवार(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़बड़ी"।

हारसिंगार—संज्ञा पुं० दे० 'परजाता'।

हारा†—प्रत्य० [सं० धार=रखनेवाला] [स्त्री० हारी] एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्यधारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला।

हारित—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का वर्णवृत्त।

(पु)वि० हारा हुआ। २. खोया हुआ। ३ दे० "हारा"।

हारिल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो प्राय. अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

हारी—वि० [सं० हारिन्] [स्त्री० हारिणी] १ हरण करनेवाला। २ ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। ३. चुरानेवाला। ४ दूर करनेवाला। ५ नाश करनेवाला। ६. मोहित करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं। उ०—तूँ गंग मैया। कै पार नैया॥ मो शक्ति हारी। लागी गुहारी॥ इसे हारीत छंद भी कहते हैं।

हारीत—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। लुटेरा। २ चोरी। लुटेरापन। ३ कण्व ऋषि के एक शिष्य। ४ हारी छंद।

हारौल—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हार्दिक—वि० [सं०] १ हृदय संबंधी। २. हृदय से निकला हुआ। सच्चा।

हाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३ माजरा। संवाद। समाचार। वृत्तांत। ४. ब्योरा। विवरण। कैफियत। ५ कथा। आख्यान। चरित्र। ६ ईश्वर में तन्मयता। लीनता (मुसल०)।

वि० वर्तमान। चलता। उपस्थित।

मुहा०—हाल में=थोड़े ही दिन हुए। हाल का=नया। ताजा।

अव्य० १. इस समय। अभी। २ तुरत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हालना] १. हिलने की क्रिया या भाव। २. लोहे का वह बंद जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।

यौ०—हाल चाल=समाचार।

हालगोला—संज्ञा पुं० [हिं० हाल ?+गोला] गेंद।

हालडोल—संज्ञा पुं० [हिं०√हाल+√डोल] १. हिलने की क्रिया या भाव। गति। २ हलकंप। हलचल। ३ भूकंप।

हालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २ आर्थिक दशा। सांपत्तिक स्थिति। ३ संयोग। परिस्थिति।

हालना†(पु)—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १. हिलना। डोलना। हरकत करना। २. काँपना। झूमना।

हालरा—संज्ञा पुं० [हिं० हालना] १. बच्चों को लेकर हिलाना डुलाना। २. झोंका। ३ लहर। हिलोर।

हालाँकि—अव्य० [फा०] यद्यपि। गोकि। ऐसी बात है, फिर भी।

हाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] मद्य। शराब।

हालाहल—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हालिम—संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीज औषध के काम में आते हैं। चंसुर।

हाली—अव्य० [अ० हाल] जल्दी। शीघ्र।

हाली रुपया—संज्ञा पुं० [हिं० हाली ?+ रुपया] दक्षिण हैदराबाद का रुपया।

हालों—संज्ञा पुं० दे० "हालिम"।

हाव—संज्ञा पुं० [सं०] संयोग के समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। इनकी संख्या ११ है।

हावभाव—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है। नाज नखरा।

हाशिया—संज्ञा पुं० [अ० हाशिय] १. किनारा। कोर। पाड़। २. गोट। मगजी। ३. हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट।

मुहा०—हाशिए का गवाह=वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढ़ाना=किसी बात में मनोरंजन आदि के लिये कुछ और बात जोड़ना।

हास—संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ३. उपहास।

हासक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हासिका] हँसने हँसानेवाला। हँसोड़।

हासिल—वि० [अ०] प्राप्त। लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २. उपज। पैदावार। ३. लाभ। नफा। ४ गणित की क्रिया का फल। ५ जमा। लगान।

हासी—वि० [सं० हासिन्] [स्त्री० हासिनी] हँसनेवाला।

हास्य—वि० [सं०] १. जिसपर लोग हँसें। २ उपहास के योग्य।

संज्ञा पुं० १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. साहित्य में नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३. उपहास। निंदापूर्ण हँसी। ४ दिल्लगी। मजाक।

हास्यक—संज्ञा पुं० [सं० हास्य+क (प्रत्य०)] हँसी की बात या किस्सा। चुटकुला।

हास्यास्पद—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० हास्यास्पदता] वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ावें।

हा हंत—अव्यय० [सं०] अत्यंत शोकसूचक शब्द।

हाहा—संज्ञा पुं० [अनु०] १. हँसने का शब्द।

यौ०—हाहा हीही, हाहा ठीठी=हँसी ठट्ठा।

२ बहुत विनती की पुकार। दुहाई।

मुहा०—हाहा करना या खाना=गिड़गिड़ाना। बहुत विनती करना।

हाहाकार—संज्ञा पुं० [सं०] घबराहट की चिल्लाहट। कुहराम। उ०—क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती ? —आँसू।

हाहाहूत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हाहाकार"।
हाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाय] कुछ पाने के लिये 'हाय हाय' करते रहना।
हाहू †(पु)—संज्ञा पुं० [अनु०] १ हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २ हलचल। धूम।
हाहूबेर—संज्ञा पुं० [हाहू ? + हिं० बेर] जंगली बेर। झड़बेरी।
हिंकरना—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।
हिंकार—संज्ञा पुं० [सं०] गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगलाज—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगुलाजा] दुर्गा या देवी की एक मूर्ति जो सिंध में है।
हिंगु—संज्ञा पुं० [सं०] हींग।
हिंगुल—संज्ञा पुं० [सं०] ईंगुर। शिंगरफ।
हिंगोट—संज्ञा पुं० [सं० हिंगुपत्र] एक कँटीला जंगली पेड़। इसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा †(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।
हिंडन—संज्ञा पुं० [सं०] घूमना। फिरना।
हिंडोरनौं—संज्ञा पुं० [हिं० हिंडोलना] हिंडोला। झूला। उ०—माई झूलत नवल लाल, झुलावत ब्रज की बाल, कालिंदी के तीर माई रच्यो है हिंडोरनौं।—नंददास०।
हिंडोरा—संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।
हिंडोरो—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोल] हिंडोला। झूला। उ०—आई झूलन मई ब्रजबधु सबै एक बनाय को। बलि 'नंद' सुन्यो बन्यो हिंडोरो पौरि गोकुल राय की।—नंददास०।
हिंडोल—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोल] १ हिंडोला। २ एक प्रकार का राग।
हिंडोलना†—संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।
हिंडोला—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोल] १. नीचे ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिये छोटे छोटे मंच बने रहते हैं। २ पालना। ३ झूला।
हिंताल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का खजूर।
हिंद—संज्ञा पुं० [फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।
हिंदवाना†—संज्ञा पुं० [फा० हिंद+वान] तरबूज। कलिंदा।
हिंदवी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हिंदी भाषा।
हिंदी—वि० [फा०] हिंदुस्तान का। भारतीय।
संज्ञा पुं० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी।
संज्ञा स्त्री० १ हिंदुस्तान की भाषा। २ हिंदुस्तान में दिल्ली और मेरठ के आसपास घरेलू बोलचाल में प्रयुक्त वह भाषा जिसके अंतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो प्राय सारे देश में समझी जाती है।
हिंदुस्तान—संज्ञा पुं० [फा० हिंदोस्तान] १. भारतवर्ष। २. भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग जो दिल्ली से पटने तक है (प्राचीन)।
हिंदुस्तानी—वि० [फा०] हिंदुस्तान का।
संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी।
संज्ञा स्त्री० १ हिंदुस्तान की भाषा। २ बोलचाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के। ३ उर्दू भाषा (प्रचलित अँगरेजी अर्थ)।
हिंदुस्थान—संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हिंदू—संज्ञा पुं० [फा०] हिंदू धर्म को माननेवाला। वेद, स्मृति, पुराण अथवा किसी भारतीय ऋषि या महापुरुष के उपदेशों के अनुसार चलनेवाला।
हिंदूपन—संज्ञा पुं० [फा० हिंदू+पन (प्रत्य०)] हिंदू होने का भाव या गुण।
हिंदोस्तान—संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हियाँ†(पु)—अव्य० दे० "यहाँ"।
हिंव—संज्ञा पुं० दे० "हिम"।
हिंवार—संज्ञा पुं० [सं० हिमालि] हिम। बर्फ। पाला।
हिंस—संज्ञा स्त्री० [अनु० हिं हिं] घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।
हिंसक—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० हिंसकता] १ हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २ बुराई या हानि करनेवाला। ३ जीवों को मारनेवाला पशु। ४. शत्रु। दुश्मन।
हिंसन—संज्ञा पुं० [सं०] [हिंसनीय, हिंसित, हिंस्र] १ जीवों का वध करना। जान मारना। २ पीड़ा पहुँचाना। सताना। ३ अनिष्ट करना या चाहना।
हिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राण मारना या कष्ट देना। २ हानि पहुँचाना।
हिंसात्मक—वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो।
हिंसालु—वि० [सं०] हिंसा करनेवाला।
हिंस्र, हिंस्रक—वि० [सं०] हिंसा करनेवाला। खूँखार।
हि—एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया। उ०—हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल विमल बतकही॥—मानस।
†(पु)अव्य० दे० "ही"।
हिअ, हिआ—संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिअरा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० "हृदय"।
हिआव—संज्ञा पुं० दे० "हियाव"।
हिकमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विद्या। तत्वज्ञान। २ कलाकौशल। निर्माण की बुद्धि। ३ युक्ति। तदबीर। उपाय। ४. चतुराई का ढंग। चाल। ५ हकीम का काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक।
हिकमती—वि० [अ० हिकमत] १. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। तदबीर सोचनेवाला। कार्यपटु। २ चतुर। चालाक। ३. किफायती।
हिक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिचकी। २ बहुत हिचकी आने का रोग।
हिचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिचकना] कोई काम करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो। आगा पीछा।
हिचकना—क्रि० अ० [सं० हिक्का] १ हिचकी लेना। २ किसी काम के करने में कुछ अनिच्छा, भय या संकोच के कारण प्रवृत्त न होना। आगा पीछा करना।
हिचकिचाना—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।
हिचकिचाहट—संज्ञा स्त्री० दे० "हिचक"।
हिचकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० हिच या सं० हिक्का] १ पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना।
मुहा०—हिचकियाँ लगना = मरने के निकट होना।
२ रह रहकर सिसकने का शब्द।
हिचर मिचर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सोचविचार। २ आनाकानी। टाल-मटोल।
हिजड़ा—संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।
हिजरी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०) से आरंभ होता है।
हिज्जे—संज्ञा पुं० [अ० हिज्ज.] किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना। वर्तनी।
हिज्र—संज्ञा पुं० [अ०] जुदाई। वियोग।
हिडिंब—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जिसे

भीम ने पांडवों के बनवास के समय मारा था।

हिडिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके गर्भ से भीम के पुत्र घटोत्कच का जन्म हुआ था।

हित—वि० [सं०] भलाई करने या चाहनेवाला। खैरखाह।

संज्ञा पुं० १ लाभ। फायदा। २ कल्याण। मंगल। भलाई। उपकार। बेहतरी। ३ स्वास्थ्य के लिये लाभ। ४ प्रेम। स्नेह। अनुराग। उ०—हित करि श्याम सों कहा पायो? —सूर०। ५ मित्रता। खैरखाही। ६ भला चाहनेवाला आदमी। मित्र। ७ संबंधी। नातेदार।

अव्य० १ (किसी के) लाभ के हेतु। खातिर या प्रसन्नता के लिये। २. हेतु। लिये। वास्ते।

हितकर, हितकारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हितकरी] १ भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३. स्वास्थ्यकर।

हितकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हितकारक होने का भाव।

हितकारी—वि० दे० "हितकर"।

हितचिंतक—संज्ञा पुं० [सं०] भला चाहनेवाला। खैरखाह।

हितचिंतन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी की भलाई की कामना या इच्छा। खैरखाही।

हितता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हित+ता] भलाई।

हितवना(पु)†—क्रि० अ० दे० 'हिताना'।

हितवादी—वि० [सं० हितवादिन्] [स्त्री० हितवादिनी] हित की बात कहनेवाला।

हिताई—संज्ञा स्त्री० [सं० हित+हिं० आई (प्रत्य०)] नाता। रिश्ता। संबंध।

हिताना(पु)—क्रि० अ० [सं० हित] १ हितकारी होना। अनुकूल होना। २ प्रेमयुक्त होना। उ०—बाँध्यो देखि श्याम को परबस गोपी परम हितानी। —सूर०। ३. प्यारा या अच्छा लगना। उ०—ऐसे करम नाहिं प्रभु मेरे जाते तुमहिं हितैहौं। —सूर०।

हितावह—वि० दे० "हितकारी"।

हिताहित—संज्ञा पुं० [सं०] भलाई बुराई। लाभ हानि। नफा नुकसान।

हिती, हितू—संज्ञा पुं० [सं० हित] १. भलाई करने या चाहनेवाला। खैरखाह। २ संबंधी। नातेदार। ३ सुहृद। स्नेही।

हितेच्छु—वि० दे० "हितैषी"।

हितैषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई चाहने की वृत्ति। खैरखाही।

हितैषी—वि० [सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरखाह।

हितौना†(पु)—क्रि० अ० दे० "हिताना"।

हिदायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अधिकारी की शिक्षा। निर्देश। २ आज्ञा। आदेश।

हिनती(पु)†—संज्ञा स्त्री० दे० "हीनता"।

हिनहिनाना—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा हिनहिनाहट] घोड़े का बोलना। हींसना।

हिना—संज्ञा स्त्री० [अ०] मेंहदी।

हिफाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा। २ देखरेख। खबरदारी।

हिब्बा—संज्ञा पुं० [अ० हिब्ब] १. दाना। २ दान।

मुहा०—हिब्बा भर = जरा सा। थोड़ा सा।

हिब्बानामा—संज्ञा पुं० [अ० हिब्बा+फा० नामः] दानपत्र।

हिमंचल†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल"।

हिमंत†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।

हिम—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाला। बर्फ। तुषार। २ जाड़ा। ठंढ। ३ जाड़े की ऋतु। ४ चंद्रमा। ५ चंदन। ६ कपूर। ७ मोती। ८. कमल।

वि० ठंढा। सर्द।

हिमउपल—संज्ञा पुं० [सं०] ओला। पत्थर।

हिमकण—संज्ञा पुं० [सं०] बर्फ या पाले के महीन टुकड़े।

हिमकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा। उ०—जब नील निशा अंचल में हिमकर थक सो जाते हैं। अस्ताचल की घाटी में दिनकर भी खो जाते हैं। —आँसू।

हिमकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमयानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।

हिमवत्—संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्"।

हिमवान्—वि० [सं० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

संज्ञा पुं० १ हिमालय पहाड़। २ कैलाश पर्वत। ३ चंद्रमा।

हिमांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमाकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बेवकूफी। मूर्खता। २. अनधिकार चेष्टा।

हिमाचल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

हिमाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़।

हिमानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुषार। पाला। २. बरफ। ३ बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं। ग्लेशियर।

हिमामदस्ता—संज्ञा पुं० [फा० हावनदस्त] खरल और बट्टा।

हिमायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पक्षपात। २ मंडन। समर्थन।

हिमायती—वि० [फा०] १ समर्थन या मंडन करनेवाला। २ सहायता करनेवाला। मददगार।

हिमालय—संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है।

हिमि(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हिम"।

हिम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता। साहस। जिगरा। २ बहादुरी। पराक्रम।

मुहा०—हिम्मत हारना = साहस छोड़ना।

हिम्मती—वि० [फा०] १ साहसी। दृढ़। २ पराक्रमी। बहादुर।

हिय—संज्ञा पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन। २ छाती। वक्षःस्थल।

मुहा०—हिय हारना = हिम्मत छोड़ना।

हियरा—संज्ञा पुं० [हिं० हिय] १. हृदय। मन। २ छाती। वक्षःस्थल।

हियाँ†—अव्य० दे० "यहाँ"।

हिया—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] १ हृदय। मन। २ छाती। वक्षःस्थल।

मुहा०—हिये का अंधा = अज्ञानी। मूर्ख। हिये की फूटना = बुद्धि न होना। हिय जलना = अत्यंत क्रोध में होना। हिये लगना = गले से लगना। हिये में लोन सा लगना = बहुत बुरा लगना।

विशेष—दे० "जी" और "कलेजा" के मुहावरे।

हियाव—संज्ञा पुं० [हिं० हिय+आव (प्रत्य०)] साहस। हिम्मत। जीवट।

मुहा०—हियाव खुलना = (१) साहस हो जाना। हिम्मत बँधना। (२) संकोच

या भय न रहना। हियाव पड़ना=साहस होना।

हिरकना|(पु)—क्रि अ० [सं० हिरुक्=समीप] १. पास होना। निकट जाना। २ सटना।

हिरकाना|(पु)—क्रि० स० [हिं० हिरकना का स० रूप] १. पास करना। नजदीक ले जाना। २ सटाना। भिड़ाना।

हिरणा|(पु)—सज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हिरण्मय—वि० [स०] सोने का। सुनहला।

हिरण्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २ वीर्य। शुक्र। ३. कौड़ी। ४ धतूरा। ५. अमृत।

हिरण्यकशिपु—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध विष्णुविरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके इसे मारा था।

हिरण्यकश्यप—सज्ञा पुं० दे० "हिरण्य कशिपु"।

हिरण्यगर्भ—सज्ञा पुं० [स०] १ वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २ ब्रह्मा। ३. सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा। ४ विष्णु।

हिरण्यनाभ—सज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु। २ मैनाक पर्वत।

हिरण्यरेता—सज्ञा पुं० [स० हिरण्यरेतस्] १. अग्नि। आग। २. सूर्य। ३ शिव।

हिरण्याक्ष—संज्ञा पुं० [स०] एक दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।

हिरदय, हिरदै—सज्ञा पुं० दे० "हृदय"। उ०—अरी बीर! कछु जतनि करि, हिरदै धरति न धीर। —नददास०।

हिरन—सज्ञा पुं० [सं० हरिण] हरिन। मृग।

मुहा०—हिरन हो जाना=भाग जाना

हिरनाकुस—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हिरनौटा—सज्ञा पुं० [हिं० हिरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा।

हिरफतबाज—वि० [अ० हिरफत+फा० बाज] चालबाज।

हिरमजी—सज्ञा स्त्री० [अ०] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

हिरस|—सज्ञा स्त्री० दे० "हिर्स"।

हिराती—सज्ञा पुं० [हिरात देश] एक जाति का घोड़ा जो अफगानिस्तान के उत्तर हिरात देश में होता है। यह गरमी में नहीं थकता।

हिराना|—क्रि० अ० [स० हरण] १ खो जाना। गायब होना। २ न रह जाना। ३. मिटना। दूर होना। उ०—लखि गोपिन को प्रेम भुलायो। ऊधो को सब ज्ञान हिरायो। —सूर०। ४ हक्का बक्का होना। अत्यंत चकित होना। ५ अपने को भूल जाना।

क्रि० स० भूल जाना। ध्यान में न रहना। उ०—विकल भई तन दसा हिरानी। —सूर०।

हिरावल—सज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हिरास—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। दुःख। २ भय।

वि० निराशा।

हिरासत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहरा। चौकी। २ कैद। नजरबदी।

हिरौंजी|—सज्ञा स्त्री० दे० "हिरमजी"।

हिरौल(पु)—सज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हिर्स—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ लालच। तृष्णा। लोभ। २ इच्छा का वेग।

मुहा०—हिर्स छूटना=लालच होना।

३ किसी की देखादेखी कुछ काम करने की इच्छा। स्पर्द्धा।

हिलकना—क्रि० अ० [स० हिक्का] १ हिचकी लेना। २ सिसकना। ३. दे० "हिलगना"।

हिलकी|(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० हिक्का] १ हिचकी। २. सिसकने का शब्द। सिसकी। उ०—कमलनयन हरि हिलकिन रोवै बधन छोरि जसोवै। —सूर०।

हिलकोर, हिलकोरा—संज्ञा पुं० [स० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरंग।

हिलग—सज्ञा स्त्री० [हिं० हिलगना] १ लगाव। सबंध। २. लगन। प्रेम। ३. परिचय।

हिलगना—क्रि० अ० [स० अधिलग्न] १ अटकना। टँगना। २ फँसना। बझना। ३ हिलमिल जाना। परचना।

क्रि० अ० [स० हिरुक्=पास] पास होना। सटना। भिड़ना। हिरकना।

हिलगाना—क्रि० स० [हिं० हिलगना का स० रूप] १ अटकाना। टाँगना। २. फँसाना। बझाना। ३ मेल जोल करना। ४ परचाना। परिचित और अनुरक्त करना।

क्रि० स० [स० हिरुक्=पास] सटाना।

हिलना—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १. चलायमान होना। स्थिर न रहना। हरकत करना।

मुहा०—हिलना डोलना=(१) चलायमान होना। (२) चलना। फिरना। घूमना। (३) प्रयत्न करना। उद्योग करना।

२. हलना। सरकना। चलना। ३ काँपना। थरथराना। ४ खूब जमकर बैठा न रहना। ढीला होना। ५. झूमना। लहराना। ६ पैठना। प्रवेश करना (विशेषत. पानी में)।

क्रि० अ० [हिं० हिलगना] परिचित और अनुरक्त होना। परचना।

यौ०—हिलना मिलना=घनिष्ट संबंध रखना।

क्रि० अ० [देश०] प्रवेश करना। घुसना (विशेषत पानी में)।

हिलसा—सज्ञा स्त्री० [सं० इल्लीश] एक प्रकार की मछली।

हिलाना—क्रि० स० [हिं० हिलना का स० रूप] १ डुलना। चलायमान करना। हरकत देना। २ स्थान से उठाना। टालना। ३ कँपाना। कपित करना। ४ नीचे ऊपर या इधर उधर डुलाना। झुलाना।

क्रि० स० [हिं० हिलगना] परिचित और अनुरक्त करना। परचाना।

क्रि० स० [देश०] घुसाना। पैठाना।

हिलोर, हिलोरा—सज्ञा पुं० [स० हिल्लोल] तरग। लहर। मौज।

मुहा०—हिलोरें लेना=लहराना।

हिलोरना—क्रि० स० [हिं० हिलोर से ना० धा०] १ पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। २ लहराना। ३. किसी वस्तु की ढेरी इस प्रकार हिलाना डुलाना जिसमें बड़ी बड़ी या स्वच्छ वस्तुएँ ऊपर हो जायँ।

हिलोल—सज्ञा पुं० दे० "हिलोर"।

हिल्लोल—सज्ञा पुं० [सं०] १ हिलोरा। तरग। लहर। २ आनंद की तरग। मौज।

हिवँ—सज्ञा पुं० [स० हिम] पाला। बर्फ।

हिवाँर—सज्ञा पुं० [स० हिम] बर्फ। पाला।

हिसका—संज्ञा पुं० [सं० ईर्ष्या] १ ईर्ष्या। डाह। २ स्पर्द्धा। देखादेखी किसी बात की इच्छा।

हिसाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ गिनती। गणित। लेखा। २. लेनदेन या आमदनी खर्च आदि का लिखा हुआ ब्योरा। लेखा। उचापत।

मुहा०—हिसाब चुकाना या चुकता करना=जो कुछ जिम्मे निकलता हो, उसे दे देना। हिसाब करना=जो जिम्मे आता हो उसे दे देना। हिसाब देना=जमा खर्च का ब्योरा बताना। हिसाब लेना या समझना=यह पूछना या जानना कि कितनी रकम कहाँ खर्च हुई। बेहिसाब=बहुत अधिक। अत्यंत। हिसाब रखना=आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा लिखकर रखना। हिसाब बैठना=(१) ठीक ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबंध होना। (२) सुभीता होना। सुपास होना। हिसाब से=(१) संयम से। परिमित। (२) लिखे हुए ब्योरे के मुताबिक। बेढ़ा या टेढ़ा हिसाब=(१) कठिन कार्य। मुश्किल काम। (२) अव्यवस्था। गड़बड़।

३. वह विद्या जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हो। गणित विद्या। ४ गणित विद्या का प्रश्न। ५ भाव। दर।

मुहा०—हिसाब से=(१) परिणाम, क्रम या गति के अनुसार। मुताबिक। (२) विचार से। ध्यान से।

६ नियम। कायदा। व्यवस्था। ७ धारणा। समझ। मत। विचार। ८ हाल। दशा। अवस्था। ९ चाल। व्यवहार। रहन। १०. ढंग। रीति। तरीका। ११. किफायत। मितव्यय।

हिसाब किताब—संज्ञा पुं० [अ०] १ आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा जो लिखा हो। २. ढंग। चाल। रीति। कायदा।

हिसिपाⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १ स्पर्द्धा। बराबरी करने का भाव। होड़। २ समता। तुल्य भावना।

हिस्सा—संज्ञा पुं० [अ० हिस्स] १. भाग। अंश। २ टुकड़ा। खंड। ३ उतना अंश। जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले। बखरा। ४ विभाग। तकसीम। ५ विभाग। खंड। ६ अंग। अवयव। अंतर्भूत वस्तु। ७ साझा।

हिस्सेदार—संज्ञा पुं० [अ० हिस्स+फा० दार (प्रत्य०)] १ वह जिसे कुछ हिस्सा मिला या मिलनेवाला हो। २. रोजगार में शरीक। साझेदार।

हिहिनाना—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

हींग—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगु] १. एक छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस में आप से आप और बहुत होता है। २. इस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और जिसका व्यवहार दवा और मसाले में होता है।

हींछना†—क्रि० अ० [हिं० हींछा से ना० धा०] उत्साह करना। चाहना।

हींछा†—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] चाह। ख्वाहिश।

हींस—संज्ञा स्त्री० [सं० √हेष् या √हेष्] घोड़े या गधे के बोलने का शब्द। रेंक या हिनहिनाहट।

हींसना—क्रि० अ० [सं० हेषन या हेषण] दे० "हिनहिनाना"। २. गदहे का बोलना। रेंकना।

हीहीं—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हँसने का शब्द।

ही—अव्य० [सं० हि० (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिये या निश्चय, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है।

संज्ञा पुं० दे० "हिय", "हृदय"। उ०—भावते भाल को जावक, ओठ को अंजन, ही को नखच्छत गोयो।—काव्य-निर्णय।

क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'होनो' (=होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' (=था) का स्त्री० रूप। थी। उ०—नहिं जानिये को ही कहाँ की ही दास नू धन्य हिरन्यलता सी नई।—काव्यनिर्णय। एक विभक्ति जिसका प्रयोग कर्म के लिये 'हि' के समान होता है। उ०—हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही॥—मानस।

हीअ—संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

हीक—संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १ हिचकी। २ हलकी अरुचिकर गंध।

हीचनाⓅ†—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हीठना—क्रि० अ० [सं० अधिष्ठा] १. पास जाना। समीप होना। फटकना। २ जाना। पहुँचना।

हीन—वि० [सं०] [स्त्री० हीना] १. परित्यक्त। छोड़ा हुआ। २ रहित। शून्य। वंचित। ३ निम्न कोटि का। निकृष्ट। घटिया। ४ ओछा। नीच। बुरा। ५ तुच्छ। नाचीज। ६ सुख-समृद्धि रहित। दीन। ७ अल्प। कम। थोड़ा। ८ दीन। नम्र।

संज्ञा पुं० १ प्रमाण के अयोग्य साक्षी। बुरा गवाह। २. अधम नायक (साहित्य)।

हीनकला—वि० [सं०] जिसमें कला न हो। कलारहित।

हीनकुल—वि० [सं०] नीच कुल का।

हीनक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जायँ।

हीनचरित—वि० [सं०] बुरे आचरणवाला।

हीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमी। त्रुटि। २ क्षुद्रता। तुच्छता। ३. ओछापन। ४ बुराई। निकृष्टता।

हीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] हीनता।

हीनबल—वि० [सं०] कमजोर।

हीनबुद्धि—वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।

हीनयान—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सिद्धांत की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा में हैं। इसके सिद्धांत उसी रूप में हैं जिसमें गौतम बुद्ध ने उन्हें समझाया था और बाद की महायान शाखा के योग, तंत्र, न्याय आदि विषयों की जटिलता से हीन है। इसमें उपासना का पुट नहीं है और बुद्ध भगवान् नहीं कहे गए हैं। इसका प्रचार दक्षिण एशिया के लंका, बर्मा और श्याम आदि देशों में है।

हीनयोनि—वि० [सं०] नीच कुल या जाति का।

हीनरस—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है। यह वास्तव में रसविरोध ही है।

हीनवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] कमजोर।

हीनांग—वि० [सं०] १ जिसका कोई अंग न हो। खंडित अंगवाला। २. अधूरा।

हीनोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान लाया जाय।

हीय, हीयाⓅ—संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

उ०—मोहन मूरति हीय तें कहत निकसि जिनि जाय। —नंददास०।

हीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा नामक रत्न। २ वज्र। बिजली। ३ छप्पय के ६२वें भेद का नाम। ४ २३ मात्राओं का वह छंद जिसके आदि में गुरु और अंत में रगण हो। उ०—काम तजौ, धाम तजौ, वाम तजौ साथ ही। मित्त गहो, नित्त अहो, मंजु धर्म पाथ ही॥ ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते हैं। उ०—भा विपुल उछाह अवध, मंगल ध्वनि है रही। दीन्ह बहुत हेम सहित, हीरक सब विप्रही॥ ६ सर्प। साँप।

संज्ञा पुं० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। सार। २ लकड़ी के भीतर का सार भाग। ३. शरीर की सारवस्तु। धातु। वीर्य। ४. शक्ति। बल।

हीरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ हीर छंद।

हीरा—संज्ञा पुं० [सं० हीरक] एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कड़ाई के लिये प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

मुहा०—हीरे की कनी चाटना = हीरे का चूर खाकर आत्महत्या करना।

हीराकसीस—संज्ञा पुं० [हिं० हीर+सं० कसीस] लोहे का वह विकार जो देखने में कुछ हरापन लिए मटमैले रंग का होता है।

हीरामन—संज्ञा पुं० [हिं० हीरा+मणि] तोते की एक कल्पित जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

हीरोⓅ—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] हृदय। हियरा। उ०—बास वगारिकै ढारि रसै लगि मीरो कै हीरो कियो मनभायो। —काव्यनिर्णय।

हीलनाⓅ—क्रि० अ० दे० "हिलना"।

हीला—संज्ञा पुं० [अ० हील] १. बहाना। मिस।

यौ०—हीला हवाला = बहाना।

२ निमित्त। द्वारा। वसीला। ब्याज।

हीसका, हीसा—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंसा] १ ईर्ष्या। डाह। २ प्रतियोगिता। होड़।

ही ही—संज्ञा स्त्री० [अनु०] ही ही शब्द के साथ हँसने की क्रिया।

हुँ—अव्य० दे० "हूँ"।

हुँकरना—क्रि० अ० दे० "हुकारना"।

हुँकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. ललकार। डाँटने का शब्द। २ गर्जन। गरज। ३ चीत्कार। चिल्लाहट।

हुँकारना—क्रि० अ० [सं० हुंकार से हिं० ना० धा०] १ डपटना। डाँटना। २ गरजना। ३. चिग्घाड़ना। चिल्लाना।

हुँकारी—संज्ञा स्त्री० [अनु० हुँ हुँ+कार] १ 'हुँ' करने की क्रिया। २ स्वीकृतिसूचक शब्द। हामी।

संज्ञा स्त्री० दे० "विकारी"।

हुँकृति—संज्ञा स्त्री० दे० "हुंकार"।

हुँडार—संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया"।

हुँडावन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुंडी+आवन (प्रत्य०)] १ हुंडी की दर। २ हुंडी की दस्तूरी। ३ हुंडी लिखने की क्रिया या भाव।

हुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० हुण्डिका, फा० हुंडी] १ वह कागज जिसपर एक महाजन दूसरे महाजन को, कुछ रुपया देने के लिये लिखकर किसी को रुपए के बदले में देता है। निधिपत्र। लोटपत्र। चेक।

मुहा०—हुंडी सकारना = हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। दर्शनी हुंडी = वह हुंडी जिसके दिखाते ही रुपए चुकता कर देने का नियम हो।

२ उधार रुपए देने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को साल भर में २०) का या १५) का २०) देना पड़ता है।

हुँत—प्रत्य० [प्रा० विभक्ति हिंतो] १. पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २ लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। ३. द्वारा। जरिए से।

हुँते—अव्य० [प्रा० हिंतो] १. से। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।

हुⓅ†—अव्य० [सं० उप] अतिरेकसूचक शब्द। कथित के अतिरिक्त और भी।

हुआना—क्रि० अ० [अनु० हुआँ] 'हुआँ हुआँ' करना। गीदड़ों का बोलना।

हुक—संज्ञा पुं० [अँ०] १ टेढ़ी कील। २ अँकुसी।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का दर्द जो प्राय पीठ या किसी नस में होता है।

हुकरना—क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

हुकारना—क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

हुकुम†—संज्ञा पुं० दे० "हुक्म"।

हुकूमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रभुत्व। शासन। आधिपत्य। अधिकार।

मुहा०—हुकूमत चलाना = प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना = अधिकार या बड़प्पन प्रकट करना। रोब दिखाना।

२. राज्य। शासन। राजनीतिक आधिपत्य।

हुक्का—संज्ञा पुं० [अ०] तबाकू का धुआँ खींचने या तंबाकू पीने के लिये विशेष रूप से बना एक नलयंत्र। गड़गड़ा। फरशी।

हुक्कापानी—संज्ञा पुं० [अ० हुक्का+हिं० पानी] एक दूसरे के हाथ से हुक्का तंबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार। बिरादरी की राहरस्म।

मुहा०—हुक्का पानी बंद करना = बिरादरी से अलग करना।

हुक्काम—संज्ञा पुं० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप। हाकिम लोग। अधिकारी-वर्ग।

हुक्म—संज्ञा पुं० [अ०] १ बड़े का वचन जिसका पालन कर्तव्य हो। आज्ञा। आदेश।

मुहा०—हुक्म उठाना = (१) हुक्म रद्द करना। (२) आज्ञापालन करना। हुक्म की तामील = आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना = आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना = आज्ञा भंग करना। हुक्म देना = आज्ञा करना। हुक्म बजाना या बजा लाना = आज्ञापालन करना। हुक्म मानना = आज्ञापालन करना।

२ स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। ३ अधिकार। प्रभुत्व। शासन। ४ विधि। नियम। शिक्षा। ५ ताश के पत्तों का एक रंग।

हुक्मनामा—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म+फा० नाम] वह कागज जिसपर हुक्म लिखा हो। आज्ञापत्र।

हुक्मबरदार—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म+फा० बरदार] आज्ञाकारी। सेवक। अधीन।

हुक्मी—वि० [अ० हुक्म] १ दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। २ जरूर असर करनेवाला। अचूक। अव्यर्थ। ३. अवश्य कर्तव्य। लाजिमी। जरूरी।

हुचकी†—संज्ञा स्त्री० दे० "हिचकी"।

हुजूम—संज्ञा पुं० [अ०] भीड़।

हुजूर—संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २ बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुजूरी—संज्ञा पुं० [अ० हुजूर] १. खास सेवा में रहनेवाला नौकर। २ दरबारी। मुसाहब। ३ खुशामदी।

वि० हुजूर का। सरकारी।

हुज्जत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्यर्थ का तर्क। २ विवाद। झगड़ा। तकरार।

हुज्जती—वि० [हिं० हुज्जत] हुज्जत करनेवाला।

हुड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुड़कने की क्रिया या भाव।

हुड़कन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुड़कने की क्रिया या भाव।

हुड़कना—क्रि० अ० [अनु०] [स० हुड़काना] १ वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। २ भयभीत और चिंतित होना। ३. तरसना।

हुड़दंग—संज्ञा पुं० [अनु० हुड़+हिं० दंगा] धमाचौकड़ी। उपद्रव। उत्पात।

हुडुक—संज्ञा पुं० [सं० हुडुक] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।

हुड्ड—वि० [देश०] १ जगली। गँवार। २ उद्दंड। ३ बहुत ऊँचा। लंबा तड़ंगा।

हुडक्काⓅ—संज्ञा पुं० दे० "हुडुक"।

हुत—वि० [सं०] हवन किया हुआ। आहुति दिया हुआ।

Ⓟक्रि० अ० 'होना' क्रिया का प्राचीन भूतकालिक रूप। था।

हुता†Ⓟ—क्रि० अ० [हिं० हुत] 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकालिक रूप। था।

हुताशन—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि। आग।

हुतिⓅ—अव्य० [प्रा० हितो] १ अपादान और करण कारक का चिह्न। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।

हुतेⓅ—क्रि० अ० ['होना' का ब्रज० भूतकालिक बहुवचनांत रूप] थे।

हुतोⓅ—क्रि० अ० ['होना' क्रि० का ब्रज० का भूतकालिक रूप] था। उ०—बरो जरो, घोरो अरो, पान सरो क्यों दार। छितू फिरो क्यौं दार तें, हुतो न फेरनिहार। —काव्यनिर्णय।

हुदकाना†Ⓟ—क्रि० स० [देश०] उसकाना। उभारना।

हुदनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० हुडन] स्तब्ध होना। रुकना।

हुदहुद—संज्ञा पुं० [अ०] एक चिड़िया।

हुन—संज्ञा पुं० [सं० हूण] १. मोहर। अशरफी। २ सोना। सुवर्ण।

मुहा०—हुन बरसना = धन की बहुत अधिकता होना।

हुनना†—क्रि० स० [सं० हवन] १ आहुति देना। २ हवन करना।

हुनर—संज्ञा पुं० [फा०] १. कला। कारीगरी। २. गुण। करतब। ३ कौशल। युक्ति। चतुराई।

हुनरमंद—वि० [फा०] कलाकुशल। निपुण।

हुन्नⓅ—संज्ञा पुं० दे० "हुन"।

हुब्ब—संज्ञा स्त्री० [अ० हुब] १. प्रेम। मुहब्बत। २ मित्रता। ३. इच्छा।

हुमकना—क्रि० अ० [अनु० हुँ] १. उछलना कूदना। २ पैरों से जोर लगाना। ३. पैरों को आघात के लिये जोर से उठाना। ४. चलने का प्रयत्न करना। ठुमकना (बच्चों का)। ५. दबाने के लिये जोर लगाना।

हुमगना—क्रि० अ० दे० "हुमकना"। उ०—हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुहँ भर महि करत पुकारा॥ —मानस।

हुमसना—क्रि० अ० [?] [स० क्रि० हुमसाना] १. उछलना। २. दे० "उमसना"।

हुमेल—संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] सिक्कों को गूँथकर बनी हुई एक प्रकार की माला। उ०—फूलन की दुलरी, हुमेल हार फूलन के, फूलन की चंपमाल, फूलन गजरा री। —नंददास०।

हुरदंगा—संज्ञा पुं० दे० "हुड़दंगा"।

हुरमयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

हुलसना—क्रि० अ० [हिं० हुलास] १ आनंद से फूलना। खुशी से भरना। २ उभरना। उठना। ३ उमड़ना।

Ⓟक्रि० स० आनंदित करना

हुलसाना—क्रि० स० [हिं० हुलसना का स० रूप] आनंदित करना।

क्रि० अ० दे० "हुलसना"।

हुलसितⓅ—वि० [हिं० √हुलस + इत (प्रत्य०)] आनंद की उमंग से भरा हुआ। खुशी से भरा हुआ।

हुलसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलास] १. हुलास। उल्लास। आनंद की उमंग। २ किसी किसी के मत से तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलहुल—संज्ञा पुं० [?] एक छोटा पौधा।

हुलाना†—क्रि० स० दे० "हूलना"।

हुलास—संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] १. आनंद की उमंग। उल्लास। आह्लाद। २. उत्साह। हौसला। ३ उमंगना। बढ़ना।

संज्ञा स्त्री० सुँघनी। नस्यरोशन।

हुलिया—संज्ञा पुं० [अ० हुलिय] १. शकल। आकृति। २ किसी मनुष्य के रूप रंग आदि का विवरण।

मुहा०—हुलिया कराना या लिखाना = किसी आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शकल सूरत आदि पुलिस में दर्ज कराना। हुलिया बिगड़ना = (१) चेहरे का रंग उतर जाना। आकृति खराब होना। (२) बहुत घबड़ा जाना।

हुल्लड़—संज्ञा पुं० [अनु०] १ शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २ उपद्रव। ऊधम। धूम। ३ हलचल। आंदोलन।

हुल्लास—संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] १. पादाकुलक के अंत में त्रिभंगी के मेल से बना एक छंद। उ०—सोरह सोरह कल चरण कै, ऐसे पादाकुलक बरन कै। आदि सु पादाकुलक बखानौ, तापर छंद त्रिभंगी ठानौ॥ ठानो तिरभंगी, छंद सुअंगी, है बहुरंगी, मनहिं हरै। चवसठि कला करि, सो आगे धरि, बसु चरननि कवि, तासु धरै॥ हुल्लास सुछंदा, आनँदकंदा, जस बर चंदा, रूप रजै। यों छंद बखानै, सब मन मानै, जाके बरणत, सुकवि सजै॥ २ उल्लास। उमंग। उ०—औरै के गुन और को गुन पहिलें उल्लास। दास सँपूरन चंद लखि, सिंधु हियें हुल्लास। —काव्यनिर्णय।

हुश—अव्य० [अनु०] अनुचित बात मुँह से निकालनेवाले को रोकने का शब्द। निषेधवाचक शब्द।

हुसियारⓅ†—वि० दे० "होशियार"।

हुसैन—संज्ञा पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गए थे। मुहर्रम इन्हीं के शोक में मनाया जाता है।

हुस्न—संज्ञा पुं० [अ०] १. सौंदर्य। सुंदरता। लावण्य। २ तारीफ की बात। खूबी।

हुस्नपरस्त—वि० [अ० हुस्न+फा० परस्त] [संज्ञा हुस्नपरस्ती] सौंदर्य का उपासक या प्रेमी।

हुस्यार(पु)—वि० दे० "होशियार"।

हुस्यारपन(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हुस्यार+पन (प्रत्य०)] चतुरता। चातुर्य। उ०—आयो सुनि कान्ह भलयो सकल हुस्यारपन, स्यारपन कस को न कहतु सिरातु है।—काव्यनिर्णय।

हूँ—अव्य० [अनु०] स्वीकारसूचक शब्द।

अव्य० दे० "हू"।

सर्व० वर्तमानकालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।

हूँकना—क्रि० अ० [अनु०] १ गाय का दुःख सूचित करने के लिये धीरे धीरे बोलना। हुँकना। उ०—हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि। इत तै इनि बछरनि की धावनि।—नंददास०। २. हुंकार शब्द करना। वीरों का ललकारना या डपटना।

हूँठ—वि० [सं० अध्युष्ठ] साढ़े तीन।

हूँठा—संज्ञा पुं० [सं० अध्युष्ठ] साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँस—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंसा] १ ईर्ष्या। डाह। २ बुरी नजर। टोक। ३ कोसना। फटकार।

हूँसना—क्रि० स० [हिं० हूँस से ना० धा०] नजर लगाना।

क्रि० अ० १ ईर्ष्या से जलना। २ ललचना। ३. कोसना।

हू—अव्य० [सं० उप=आगे] एक अतिरेकबोधक शब्द। भी।

हूक—संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १ छाती या कलेजे का दर्द। साल। २ दर्द। पीड़ा। कसक। उ०—करहि दौर वहि ओर तूँ और जतन सब चूक। मनमोहन-पद-परस बिनु मिटै न हिय की हूक।—रसधाराश। ३ संताप। दुख। ४ आशंका। खटका।

हूकना—क्रि० अ० [हिं० हूक से ना० धा०] १ सालना। दुखना। दर्द करना। २ पीड़ा से चौंक उठना।

हूटना(पु)—क्रि० अ० [सं० √हुड्=चलना] १. हटना। टलना। २. मुड़ना। पीठ फेरना।

हूठा—संज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १ अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २ भद्दी या गँवारू चेष्टा।

मुहा०—हूठा देना=ठेंगा दिखाना। अशिष्टता से हाथ मटकाना। उ०—नागरि, विविध विलास तजि, वसी गवेलनि माँहि। मूढ़नि मैं गनवी कि तूँ, हूठ्यौ दै इठलाँहि।—विहारी०।

हूड़—वि० दे० "हुड्ड"।

हूण—संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और यूरप के मुख्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी। ईसा की पाँचवीं सदी में तुरमान और मिहिरकुल की अधीनता में हूणों ने भारत के पश्चिमी हिस्सों पर अधिकार कर लिया था।

हूत—वि० [सं०] बुलाया हुआ।

हूनना—क्रि० स० [सं० हवन] १. आग में डालना। २ विपत्ति में डालना।

हूबहू—वि० [अ०] ज्यों का त्यों। ठीक वैसा ही। बिलकुल समान।

हूर—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा।

संज्ञा पुं० पाकिस्तान के सिंध प्रदेश के मुसलमानों की एक शाखा।

हूरना—क्रि० स० [अनु०] १. बहुत अधिक भोजन करना। २ मारना। ३ हूलना।

हूल—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. भाले, डंडे आदि की नोक को जोर से ठेलना अथवा भोंकना। २ हूक। शूल। पीड़ा।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ कोलाहल। हल्ला। धूम। २ हर्षध्वनि। ३ ललकार। ४ खुशी। आनंद। ५ उबकाई। मिचली।

हूलना—क्रि० स० [हिं० हूल] १ लाठी भाले आदि की नोक को जोर से ठेलना या घुसाना। गड़ाना। २. शूल उत्पन्न करना।

हूला—संज्ञा पुं० [हिं० √हूल] हूलने की क्रिया या भाव।

हूश—वि० [हिं० हूड़] १ असभ्य। उजड्ड। २ अशिष्ट। बेहूदा।

हूह—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुंकार। कोलाहल। युद्धनाद।

हूहू—संज्ञा पुं० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। धायँ धायँ।

हृत—वि० [सं०] १ पहुँचाया हुआ। २ हरण किया हुआ। छीनकर लिया हुआ।

हृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ले जाना। हरण। २ नाश। ३ लूट।

हृत्कंप—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय की कँपकँपी। २ अत्यंत भय। दहशत।

हृत्तंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृदयरूपी तंत्री या वीणा।

हृत्तल—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय। कलेजा। दिल।

हृत्पिंड—संज्ञा पुं० [सं०] कलेजा।

हृद्—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय। दिल।

हृदयंगम—वि० [सं०] मन में बैठा हुआ। समझ में आया हुआ।

हृदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाती के भीतर बाईं ओर मांसपेशियों से बना हुआ एक सिकुड़ने और फैलनेवाला खोखला अवयव जो शरीर में रक्तसंचार का केंद्र है। इसका [illegible] वजन पुरुषों में ३०० ग्राम तथा स्त्रियों में २५० ग्राम होता है। यह दो बड़े और अलग खंडों में बँटा रहता है। दिल। कलेजा। २ छाती। वक्षस्थल।

मुहा०—हृदय विदीर्ण होना=अत्यंत शोक होना।

३ प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकारों का स्थान। ४ अंतःकरण। मन। ५ अंतरात्मा। विवेक बुद्धि।

हृदयग्राही—संज्ञा पुं० [सं० हृदयग्राहिन्] [स्त्री० हृदयग्राहिणी] मन को मोहित करनेवाला।

हृदयनिकेत—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

हृदयविदारक—वि० [सं०] अत्यंत शोक, करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी—वि० [सं० हृदयवेधिन्] [स्त्री० हृदयवेधिनी] १ मन को अत्यंत मोहित या दुखी करनेवाला। अत्यंत कटु। २ अत्यंत शोक करनेवाला।

हृदयस्पर्शी—वि० [सं० हृदयस्पर्शिन्] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।

हृदयहारी—वि० [सं० हृदयहारिन्] [स्त्री० हृदयहारिणी] मन को लुभानेवाला।

हृदयाला—वि० [सं० हृदयालु] [स्त्री० हृदयाली] दे० "हृदयालु"।

हृदयालु—वि० [सं०] १ दृढ़ हृदयवाला। साहसी। २ उदार हृदयवाला। ३ सहृदय।

हृदयेश, हृदयेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हृदयेश्वरी] १ हृदय का स्वामी। बहुत प्यारा। प्रियतम। २ पति।

हृदि—क्रि० वि० [सं०] हृदय में।

हृद्गत—वि० [सं०] १ हृदय का। आतरिक। भीतरी। २ मन में बैठा या जमा हुआ। ३ प्रिय। रुचिकर।

हृद्य—वि० [सं०] १ हृदय का। भीतरी। २ अच्छा लगनेवाला। ३. सुदर। लुभावना। ४. स्वादिष्ट। जायकेदार।

हृद्रोग—सज्ञा पुं० [सं०] हृदय में होनेवाला रोग, जैसे धड़कन आदि।

हृद्रोध—सज्ञा पु० [स०] हृदय की गति का रुक जाना।

हृपि—संज्ञा स्त्री० [स०] हर्ष। आनद।

हृषीक—सज्ञा पुं० [स०] ज्ञानेंद्रिय। आँख, कान, नाक मुहँ और त्वचा।

हृषीकेश—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ पूस का महीना।

हृष्ट—वि० [सं०] [सज्ञा हृष्टि] हर्षित। अत्यत प्रसन्न।

हृष्ट पुष्ट—वि० [सं०] मोटा ताजा। तगड़ा।

हृष्टरोम—वि० [स० हृष्टरोमन्] जिसे रोमाञ्च हो आया हो। पुलकित। रोमांचित।

हैं—क्रि० अ० [सं० अस्ति] दे० "है"। उ०—ग्रले जु चपल नयन छवि बढ़े। चदनि मनहुँ मीन हैं चढ़े। —नददास०।

हँहँ—सज्ञा पुं० [अनु०] १ धीरे से हँसने का शब्द। २ गिड़गिड़ाने का शब्द।

हँगा†—सज्ञा पुं० [?] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। पट्टा।

हे—अव्य० [सं०] सबोधन का शब्द।
‡क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'हो' (=था) का बहुवचन। थे।

हेकड़—वि० [हिं० हिया+कड़ा] १. हृष्ट पुष्ट। मोटा ताजा। २ जबरदस्त। प्रबल। प्रचंड। बली। ३ अक्खड़। उजड्ड।

हेकड़ी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेकड़ी] १ अक्खड़पन। उग्रता। ऐंठ। २ जबरदस्ती। बलात्कार।

हेच—वि० [फा०] १ तुच्छ। नाचीज। २. निःसार। पोच।

हेठ—क्रि० वि० [स० अधस्थ] नीचे।

हेठा—वि० [हिं० हेठ=नीचे] १ नीचा। २ घटकर। कम। ३ तुच्छ। नीच।

हेठापन—सज्ञा पुं० [हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] तुच्छता। नीचता। क्षुद्रता।

हेठी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेठा] प्रतिष्ठा में कमी। मानहानि। तौहीन।

हेत(पु)—सज्ञा पुं० दे० "हेतु"।

हेति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग की लपट। लौ। २ वज्र। ३ सूर्य की किरण। ४ माला। ५ चोट। आघात।

हेती(पु)—सज्ञा स्त्री० दे० "हेति"।

हेतु—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह बात जिसे ध्यान में रखकर कोई दूसरी बात की जाय। अभिप्राय। उद्देश्य। २. कारक या उत्पादक विषय। कारण। वजह। सबब। ३ उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु। ४ वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो। ५. तर्क। दलील। ६ एक अर्थालंकार जिसमें कारण ही कार्य कह दिया जाता है, जैसे—"यह नायिका उसके लिये पूर्ण वशीकरण है।" यहाँ नायिका वशीकरण का कारण है लेकिन उसी को वशीकरण कह दिया गया है।
सज्ञा पुं० [सं० हित] १ लगाव। प्रेमसबध। २ प्रेम। प्रीति। अनुराग।

हेतुवाद—सज्ञा पु० [स०] १ तर्क विद्या। २ कुतर्क। नास्तिकता।

हेतुशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] तर्कशास्त्र।

हेतुहेतुमद्भाव—सज्ञा पु० [स०] कार्यकारण भाव। कारण और कार्य का संबंध।

हेतुहेतुमद्भूत काल—सज्ञा पुं० [स०] क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो क्रियाएँ सूचित होती हैं जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है (व्याकरण)।

हेतूपमा—सज्ञा स्त्री० दे० "उत्प्रेक्षा"।

हेत्वपह्नुति—सज्ञा स्त्री० [स०] वह अपह्नुति अलकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय।

हेत्वाभास—सज्ञा पुं० [स०] किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो। असत हेतु।

हेमंत—सज्ञा पु० [सं०] छ ऋतुओं में से एक। अगहन और पूस। शीतकाल।

हेम—सज्ञा पु० [सं० हेमन्] १ हिम। पाला। बर्फ। उ०—ऊधो! अब यह समुझ भई! नँदनंदन के अग अग प्रत उपमा न्याय दई। आनन इदु बरन समुख तजि करषे तें न नई। निरमोही नहिं नेह, कुमुदिनी अतहि हेम हई। —सूर०। २ सोना। स्वर्ण।

हेमकूट—सज्ञा पु० [सं०] हिमालय के उत्तर का एक पर्वत (पुराण)।

हेमगिरि—सज्ञा पु० [स०] सुमेरु पर्वत।

हेमचद्र—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो ईसवी सन् १०८९ और ११७३ के बीच हुए थे और गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे। इन्होंने प्राकृत और सस्कृत व्याकरण और कोश के कई ग्रंथ लिखे हैं।

हेमपर्वत—सज्ञा पुं० [स०] सुमेरु पर्वत।

हेममुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

हेमाद्रि—सज्ञा पु० [सं०] १ सुमेरु पर्वत। २ ईसा की १३वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध ग्रंथकार।

हेमाभ—वि० [स०] हेम या सोने की सी आभावाला। सुनहला।

हेय—वि० [स०] १ छोड़ने योग्य। त्याज्य। २ बुरा। खराब। निकृष्ट।

हेरंब—सज्ञा पुं० [स०] गणेश।

हेर†(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेरना] ढूँढ़।
सज्ञा पुं० दे० "अहेर"।

हेरना†(पु)—क्रि० स० [स० आखेट ?] १ ढूँढ़ना। खोजना। पता लगाना। २ देखना। ताकना। ३. जाँचना। परखना।

हेरना फेरना—क्रि० स० [हिं० हेरना (अनु०) + हिं० फेरना] १. इधर का उधर करना। २ बदलना। परिवर्तन करना।

हेरनि—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेरना] देखने का कार्य। उ०—आनँदघन सम सुदर टेरनि। इत उत वह हेरनि, पट फेरनि। —नददास०।

हेरफेर—सज्ञा पुं० [हिं० √हेर+√फेर] १ घुमाव। चक्कर। २ बात का आडबर। ३ कुटिल युक्ति। दावँ पेच। चाल। ४. अदलबदल। उलटपलट। ५. अतर। फर्क। ६ अदलाबदला। विनिमय।

हेरवाना†—क्रि० स० [हिं० हेरना का प्रे० रूप] ढुँढ़वाना।

हेराना†—क्रि० अ० [स० हरण] १ खो जाना। पास से निकल जाना। २ न रह जाना। अभाव हो जाना। ३ लुप्त हो जाना। नष्ट हो जाना। ४ फीका पड़ जाना। मद पड़ जाना। ५ सुधबुध भूलना। तन्मय होना।
क्रि० स० [हिं० हेरना का प्रे० रूप] खोजवाना। ढुँढ़वाना। तलाश करवाना।

हेराफेरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेरफेर] १ हेरफेर। अदलबदल। २ इधर का उधर होना या करना।

हेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [संबोधन हे+री] पुकार।

मुहा०—हेरी देना=पुकारना। आवाज देना। उ०—हेरी देत सखा सब आप चले चरावन गैयाँ।—सूर०।

हेल—संज्ञा पुं० [हिं० हील] १ कीचड़, गोबर इत्यादि। २ गोबर का खेप।

हेलना(पु)—क्रि० अ० [सं० हेलन] १ क्रीड़ा करना। केलि करना। २ हँसी ठट्ठा करना।

क्रि० स० तुच्छ समझना।

†क्रि० अ० [हिं० हिलना] १ प्रवेश करना। घुसना। २ तैरना।

हेलमेल—संज्ञा पुं० [हिं०√ हिल+] १ मिलने जुलने आदि का संबंध। घनिष्ठता। मित्रता। रब्तजब्त। २ संग। साथ। सुहबत। ३ परिचय।

हेलया—क्रि० वि० [सं०] खेलवाड़ में।

हेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रेम की क्रीड़ा। केलि। २ नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास या विनोदसूचक मुद्रा (साहित्य)। ३ खेलवाड़। ४ तुच्छ समझना। तिरस्कार।

संज्ञा पुं० [हिं० हल्ला] १ पुकार। हाँक। २ धावा। आक्रमण। चढ़ाई।

संज्ञा पुं० [हिं० रेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।

संज्ञा पुं० [हिं० हेल] [स्त्री० हेलिन, हेलिनी] गलीज उठानेवाला। हलालखोर। मेहतर।

हेली(पु)—अव्य० [संबो० हे+अली] हे सखी।

संज्ञा स्त्री० सहेली। सखी।

हेवंत(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"। उ०—नहिं पावस ओहि देसरा, नहिं हेवंत बसंत। —पदमावत।

हैं—अव्य० [?] १ एक आश्चर्यसूचक शब्द।

क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन रूप।

है—क्रि० अ० [सं० अस्ति] हिं० क्रि० 'होना' का वर्तमानकालिक एकवचन रूप।

†(पु)संज्ञा पुं० दे० "हय"।

हैकड़—वि० दे० "हेकड़"।

हैकल—संज्ञा स्त्री० [सं० हय+गल] १ एक गहना जो घोड़ों के गले में पहनाया जाता है। २. ताबीज। हुमेल।

हैजा—संज्ञा पुं० [अ० हैज] दस्त और कै की बीमारी। विशूचिका।

हैना—क्रि० स० [सं० हनन] मार डालना।

हैवर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।

हैम—वि० [सं०] [स्त्री० हैमी] १. सोने का। स्वर्णमय। २ सुनहरे रंग का।

वि० [सं०] १. हिम संबंधी। २. जाड़े या बर्फ में होनेवाला।

हैमवत—वि० [सं०] [स्त्री० हैमवती] हिमालय का। हिमालय संबंधी।

संज्ञा पुं० १ हिमालय का निवासी। २. एक राक्षस। ३ एक संप्रदाय का नाम।

हैमवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. गंगा।

हैरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आश्चर्य। अचंभा।

हैरान—वि० [अ०] [संज्ञा हैरानी] १ आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का। २ परेशान। व्यग्र। तंग।

हैवान—संज्ञा पुं० [अ०] [भाव० हैवानियत, हैवानी] १ पशु। जानवर। २ २. बेवकूफ, गँवार या अत्यंत निर्दयी आदमी।

हैवानी—वि० [अ० हैवान] १. पशु का। २ पशु के करने के योग्य।

हैसियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। २. वित्त। बिसात। आर्थिक दशा। ३ श्रेणी। दरजा। ४ धन। दौलत।

हैहय—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है। २ हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

हैहयराज, हैहयाधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

है है—अव्य० [हा हा !] शोक या दुःख सूचक शब्द। हाय हाय। अफसोस।

हों—क्रि० अ० सत्तार्थक 'होना' का बहुवचन संभाव्य काल का रूप।

होंठ—संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ] मुखविवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।

मुहा०—होंठ काटना या चबाना= भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना।

हो—अव्य० [सं०] पुकारने का शब्द या संबोधन।

क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष संभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।

(पु)†ब्रज की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप। था।

होई—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना ?] एक पूजन जो दीवाली के आठ दिन पहले होता है।

होड़—संज्ञा स्त्री० [सं० हार=विवाद] १ शर्त। बाजी। २ एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। स्पर्द्धा। ३ समान होने का प्रयास। बराबरी। ४ हठ। जिद्द।

संज्ञा पुं० १ एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर के आसपास रहती है। २ इस जाति का कोई व्यक्ति। ३ इस जाति की भाषा।

होड़ाबादी—संज्ञा स्त्री० दे० "होड़ाहोड़ी"।

होड़ाहोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० होड़] १. लागडाँट। चढ़ाऊपरी। २ शर्त। बाजी।

होत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १. पास में धन होने की दशा। संपन्नता। २ वित्त। सामर्थ्य। समाई।

होतव, होतव्य—संज्ञा पुं० दे० "होनहार"।

होतव्यता—संज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।

होता—संज्ञा पुं० [सं० होतृ] [स्त्री० होत्री] यज्ञ में आहुति देनेवाला।

होनहार—वि० [हिं० होना+हारा (प्रत्य०)] १ जो अवश्य होगा। जो होने को है। भावी। २ जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला।

संज्ञा पुं० वह बात जो होने को हो। वह बात जो अवश्य हो। होनी। भवितव्यता।

होना—क्रि० अ० [सं० भवन] १ प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना।

मुहा०—किसी का होना=(१) किसी के अधिकार में, अधीन या आज्ञावर्ती होना। (२) किसी का प्रेमी या प्रेमपात्र होना। (३) किसी का आत्मीय, कुटुंबी या संबंधी होना। सगा होना। कहाँ का हो रहना= (कहाँ से) न लौटना। बहुत रुक या ठहर जाना। (कहीं से) होकर या होते हुए= (१) गुजरते हुए। बीच से। मध्य से। (२) बीच में ठहरते हुए। (३) पहुँचना। जाना।

मिलना। हो आना=भेंट करने के लिये जाना। मिल आना। होते पर=पास में धन होने की दशा में। सपन्नता में।

२. एक रूप से दूसरे रूप में आना। अन्य दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना।

मुहा०—हो बैठना=(१) बन जाना। अपने को समझने लगना या प्रकट करने लगना। (२) मासिक धर्म से होना।

३ साबित किया जाना। कार्य का सपन्न किया जाना। भुगतना। सरना।

मुहा०—हो जाना या चुकना=समाप्ति पर पहुँचना। पूरा होना।

४ बनना। निर्माण किया जाना। ५ किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना। घटित किया जाना।

मुहा०—होकर रहना=अवश्य घटित होना। न टलना। जरूर होना।

६. किसी रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा आदि का आना। ७ बीतना। गुजरना। ८ परिणाम निकलना। फल देखने में आना। ९ प्रभाव या गुण दिखाई पड़ना। जन्म लेना। १० काम निकलना। प्रयोजन या कार्य सधना। ११. काम बिगड़ना। हानि पहुँचना।

होनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २ हाल। वृत्तांत। पूर्व कथा। उ०—बालमीकि नारद घट जोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी॥ —मानस। ३ होनेवाली बात या घटना। वह बात जिसका होना ध्रुव हो। भावी। भवितव्यता। उ०—ऐसी ललना सलोनी न भई, न है, न होनी। —गीता०। ४ वह बात जिसका होना सभव हो। उ०—दामिनि बरन गोरी, लखि सखि तृन तोरी, बीती है बय किसोरी, जोबन होनी। —गीता०।

होम—सज्ञा पु० [स०] देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत, जौ आदि डालना। हवन। यज्ञ।

मुहा०—होम कर देना=(१) जला डालना। भस्म कर देना। (२) नष्ट करना। बरबाद करना। (३) उत्सर्ग करना। छोड़ देना। होम करते हाथ जलना=अच्छा कार्य करने का बुरा परिणाम होना या अपयश मिलना।

होमकुंड—सज्ञा पु० [स०] होम की अग्नि रखने का गड्ढा।

होमना—क्रि० स० [स० होम से हिं० ना० धा०] १ देवता के उद्देश्य से अग्नि में डालना। हवन करना। २ उत्सर्ग करना। छोड़ देना। ३ नष्ट करना। बरबाद करना।

होमीय—वि० [स०] होम सबंधी। होम का।

होरसा—सज्ञा पुं० [स० घर्ष] पत्थर की गोल छोटी चौकी जिसपर चदन घिसते है। चौका।

होरहा—सज्ञा पुं० [स० होलक] १. चने का पौधा। २ हरा चना।

होरा—सज्ञा पुं० दे० "होला"।

सज्ञा स्त्री० [सं० (यूनानी भाषा से गृहीत)] १ एक अहोरात्र का २४वाँ भाग। घटा। ढाई घड़ी का समय। २ एक राशि या लग्न का आधा भाग। ३. जन्मकुडली।

होरिल—सज्ञा पुं० [देश०] नवजात बालक।

होरिहारⓅ†—सज्ञा पुं० [हिं० होरी+हार (प्रत्य०)] होली खेलनेवाला।

होरी—सज्ञा स्त्री० दे० "होली"।

होला—सज्ञा स्त्री० [स०] होली का त्यौहार।

सज्ञा पुं० सिखों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है।

सज्ञा पुं० [सं० होलक] १ आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २ चने का हरा दाना। होरहा।

होलाष्टक—सज्ञा पुं० [सं०] होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाहकृत्य नहीं किया जाता। जरता बरता।

होलिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ होली का त्योहार। २ लकड़ी, घासफूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३ एक राक्षसी का नाम।

होली—सज्ञा स्त्री० [स० होलिका] १ हिंदुओं का एक बड़ा त्यौहार जो फाल्गुन के अत में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रग, अबीर आदि डालते हैं।

मुहा०—होली खेलना=(१) एक दूसरे पर रग, अबीर आदि डालना। (२) नष्ट करना। अपव्यय करना।

२ लकड़ी, घासफूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३ एक प्रकार का गीत जो होली के उत्सव में गाया जाता है।

होश—सज्ञा पुं० [फा०] १ बोध या ज्ञान की वृत्ति। सज्ञा। चेतना। चेत।

यौ०—होश व हवास=चेतना और बुद्धि।

मुहा०—होश उड़ना, गुम होना या जाता रहना=भय या आशका से चित्त व्याकुल होना। सुध बुध भूल जाना। होश करना=सचेत होना। बुद्धि ठीक करना। होश दग होना=चित्त चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना=अवस्था बढ़ने पर सब बातें समझने बूझने लगना। सयाना होना। होश में आना=चेतना प्राप्त करना। बोध या ज्ञान की वृत्ति फिर लाभ करना। होश की दवा करो=बुद्धि ठीक करो। समझ बूझ से काम लो। होश ठिकाने होना=(१) बुद्धि ठीक होना। भ्रांति या मोह दूर होना। (२) चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। (३) दड पाकर भूल का पछतावा होना।

२ स्मरण। सुध। याद।

मुहा०—होश दिलाना=याद दिलाना।

३. बुद्धि। समझ। अक्ल।

होशमंद—वि० दे० "होशियार"।

होशियार—वि० [फा०] १ चतुर। समझदार। बुद्धिमान्। २ दक्ष। निपुण। कुशल। ३ सचेत। सावधान। खबरदार। ४ जिसने होश सँभाला हो। सयाना। ५ चालाक। धूर्त।

होशियारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. समझदारी। बुद्धिमानी। चतुराई। २. निपुणता। कौशल। सावधानी।

होसⓅ†—सज्ञा पुं० दे० "होश" व "हौस"।

हौंⓅ†—सर्व० [स० अहम्] व्रजभाषा का उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं।

क्रि० अ० "होना" क्रिया का वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप। हूँ।

हौंकनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० हुँकार] १ गरजना। हुँकार करना। २ हाँफना। ३ पंखा झलना। ४ हवा पहुँचाकर आग को तेज करना।

हौंनी—सज्ञा स्त्री० [सं० भवन] होनी। भावी। भवितव्यता। उ०—जु कछु भई सुभई गति भली। हौंनी आदि सु ह्वै है अली। —नंददास०।

हौंस(पु)—संज्ञा स्त्री० दे० "हौस"।
हौ(पु)—अव्य० [हिं० हाँ] स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ (मध्य प्रदेश)।
क्रि० अ० १ होना क्रिया का मध्यम पुरुष एकवचन का वर्तमानकालिक रूप। हो। २ होना का भूतकाल। था।
हौआ—संज्ञा पुं० [अनु० हौ] लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। मकाऊँ।
संज्ञा स्त्री० दे० "हौवा"।
हौका—संज्ञा पुं० [अनु०] १ किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा। २. दीर्घ विश्वास।
हौज—संज्ञा पुं० [अ० पानी जमा रहने का चहबच्चा। कुंड।
हौड़ा†—संज्ञा स्त्री० दे० "होड़"।
हौद—संज्ञा पुं० दे० "हौज"।
हौदा—संज्ञा पुं० [फा० हौदज] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है।
हौदी—संज्ञा स्त्री० [फा० हौज] १ छोटा हौदा। २ छोटा हौज, विशेषत नल का। †३. जानवरों को सानी खिलाने का मिट्टी का पात्र।
हौम(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० अहन्] अपनापन। निजत्व।
हौरा†—संज्ञा पुं० [अनु० हाव, हाव] शोर गुल। हल्ला। कोलाहल।
हौरे(पु)—क्रि० वि० दे० "हौले"।
हौल—संज्ञा पुं० [अ०] डर। भय।
मुहा०—हौल पैठना या बैठना=जी में डर समाना।
हौलखौल (जौल)—[अ० हौल + (अनु०) खौल] भय या शीघ्रता के कारण होनेवाली घबराहट।
हौलदिल—संज्ञा पुं० [फा०] १ कलेजा धड़कना। दिल की धड़कन। २ दिल धड़कने का रोग।
वि० १ जिसका दिल धड़कता हो। २ दहशत में पड़ा हुआ। डरा हुआ।
हौलदिला—वि० [फा० हौलदिल] डरपोक।
हौलदिली—संज्ञा स्त्री० [फा०] संग यशव (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय संबंधी रोग दूर करने के लिये पहना जाता है।
हौलनाक—वि० [अ०, फा०] भयानक।
हौली—संज्ञा स्त्री० [सं० हाला=मद्य] वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। कलवरिया।
हौलू—वि० [हिं० हौल] जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।
हौले—क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १ धीरे। आहिस्ता। मंद गति से। क्षिप्रता के साथ नहीं। २ हलके हाथ से। जोर से नहीं।
हौवा—संज्ञा स्त्री० [अ०] पैगंबरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है।
संज्ञा पुं० दे० "हौआ"।
हौस—संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] १. चाह। प्रबल इच्छा। लालसा। कामना। २ उमंग। हर्षोत्कंठा। ३ हौसला। उत्साह। साहसपूर्ण इच्छा।
हौसला—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा। उत्कंठा। लालसा।
मुहा०—हौसला निकालना = इच्छा पूरी करना। अरमान पूरा करना।
२ उत्साह। जोश और हिम्मत।
मुहा०—हौसला पस्त होना=उत्साह न रह जाना। जोश ठंढा पड़ना।
३. प्रफुल्लता। उमंग। बढ़ी हुई तबीयत।
हौसलामंद—वि० [फा०] १ लालसा रखनेवाला। २ बढ़ी हुई तबीयत का। ३ उत्साही। साहसी।
ह्याँ†(पु)—अव्य० दे० "यहाँ"।
ह्यो†(पु)—संज्ञा पुं० दे० "हियो", "हिया"।
ह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा ताल। झील। २ सरोवर। तालाब। ३ ध्वनि। आवाज। ४ किरण।
ह्रदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
ह्रस्व—वि० [सं०] १ छोटा। जो बड़ा न हो। २ नाटा। छोटे आकार का। ३. कम। थोड़ा। ४ नीचा। ५. तुच्छ। नाचीज।
संज्ञा पुं० १ वामन। बौना। २. दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर, जैसे—अ, इ, उ।
ह्रस्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटाई। लघुता।
ह्रास—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमी। घटती। घटाव। क्षीणता। अवनति। २ शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी। ३. ध्वनि। आवाज।
ह्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लज्जा। शर्म। हया। २. दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।
ह्वाँ(पु)†—अव्य० दे० "वहाँ"।

परिशिष्ट

भारतीय संविधान परिषद् द्वारा स्वीकृत संविधान शब्दावली

अ

अक्षम—Incompetent
अक्षमता—Incompetency
अग्रिम धन—Advance
अतिक्रमण—Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra
अतिरिक्त लाभ—Excess profit
अधिकरण—Tribunal
अधिकार—Right
अधिकार अभिलेख—Record of rights
अधिकार पृच्छा—Quo warranto
अधिग्रहण—Requisition
अधिनियम (n)—Act
अधिनियम (v)—Enact
अधिपत्र—Warrant
अधिभार—Sur charge
अधिमान—Preference
अधिवक्ता—Advocate
अधिवास—Domicile
अधिवासी—Domiciled
अधिष्ठाता—Presiding officer
अधिसूचना—Notification
अधीक्षक—Superintendent
अधीक्षण—Superintendence
अधीन—Subject
अधीन अधिकारी—Subordinate Officer
अधीन न्यायालय—Subordinate Court
अध्यक्ष—Speaker
अध्यादेश—Ordinance
अध्यासीन होना—Preside
अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive Jurisdiction
अनर्हता—Disqualification
अनर्हीकरण—Disqualify
अनियमितता—Irregularity
अनुकूलन—Adaptation
अनुच्छेद—Article
अनुज्ञप्ति—Licence
अनुज्ञा (v)—Permit,
अनुज्ञा (n)—Permission
अनुदान—Grant
अनुदेश—Instruction
अनुन्मुक्त—Undischarged
अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation
अनुपूरक—Supplementary
अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant
अनुमति—Assent
अनुमोदन (v)—Approve
अनुमोदन (n)—Approval
अनुशासन—Discipline
अनुशासन संबंधी—Disciplinary
अनुशक्ति—Adherence
अनुष्ठान—Exercise
अनुसमर्थन (n)—Ratification
अनुसमर्थन (v)—Ratify
अनुसंधान (v)—Investigate
अनुसंधान (n)—Investigation
अनुस्मारक—Reminder
अनुसूचित क्षेत्र—Scheduled area
अनुसूचित जनजाति—Scheduled Tribe
अनुसूचित जाति—Scheduled Caste
अनुसूची—Schedule
अन्तर्ग्रसन—Involve
अन्तर्ग्रस्त—Involved
अन्तर्देशीय जलपथ—Inland water-way
अन्तर्राष्ट्रीय—International
अन्तःकरण—Conscience
अन्यदेशीय—Aliens
अन्यसंक्रामण (v)—Alienate
अन्य संक्रामण (n)—Alienation
अपमान लेख—Libel
अपमानवचन—Slander
अपमिश्रण—Adulteration
अपरन्यायाधीश—Additional judge
अपराध—Crime
अपराध—Offence
अपराधी—Criminal
अपवर्जन (v)—Exclude
अपवर्जन (n)—Exclusion
अपात्र—Ineligible
अपात्रता—Ineligibility

अपील—Appeal
अपील न्यायालय—Court of Appeal
अप्रवृत्त—Inoperative
अभिकथन—Allegation
अभिकरण—Agency
अभिकर्ता—Agent
अभिप्राय—Opinion
अभियाचना—Demand
अभियुक्त—Accused
अभियुक्ति—Charge
अभियुक्ति—Prosecution
अभियोग—Accusation
अभियोजन—Prosecution
अभियोज्य दोष—Actionable wrong
अभिरक्षा—Custody
अभिलेख—Record
अभिलेख न्यायालय—Court of record
अभिशस्त—Convicted
अभिशस्ति—Conviction
अभिसमय—Convention
अभ्यर्थी—Candidate
अमान्य—Invalid
अयुक्त प्रभाव—Undue influence
अर्जन—Acquisition
अर्जी—Petition
अर्थ करना—Construe
अर्थदण्ड—Fine
अर्हता—Qualification
अल्पसंख्यक वर्ग—Minority
अल्पीकरण—Derogation
अवधिदान—Adjourn
अवमान—Contempt
अवयस्क—Minor
अविभक्त कुटुम्ब—Joint family
अविभक्त परिवार—Joint family
अविश्वास-प्रस्ताव—Motion of no confidence
अवैध—Illegal
अवैधाचरण—Illegal practice
असमर्थता—Incapacity
असमर्थतानिवृत्ति वेतन—Invalidity pension
असैनिक—Civil
असैनिक शक्ति—Civil power
अहितकारी—Detrimental
अङ्कन—Endorse
अङ्कित—Endorsed
अंग—Unit
अंश—Share
अंशदान—Contribution

आ

आकलन (v)—Credit
आकस्मिकता निधि—Contingency Fund
आचार—Custom
आजादी—Freedom
आजीविका—Callings
आजीविका कर—Callings tax
आज्ञप्ति—Decree
आदेश—Order
आदेशिका—Process
आनुषंगिक—Consequential
आपराधिक—Criminal
आपात—Emergency
आपाती—Emergent
आपात की उद्घोषणा Proclamation of emergency
आभार—Obligation
आय कर—Income tax
आयात शुल्क—Import duty
आयुक्त—Commissioner
आयोग—Commission
आरक्षक—Police
आरक्षक बल—Police Force
आरोप—Allegation
आरोपण करना—Impose
आरोपण—Levy
आर्थिक—Economic
आर्थिक क्षेत्राधिकार—Pecuniary jurisdiction
आवर्तक—Recurring
आवारागर्दी—Vagrancy
आवेदनपत्र—Application
आस्ति—Property
आहिंडन—Vagrancy
आह्वान—Summons
आँक—Estimate

इ

इच्छापत्र—Will
इच्छापत्रहीन—Intestate
इच्छापत्रहीनत्व—Intestacy

उ

उगाहना—Levy (v)
उच्चतम न्यायालय—Supreme Court
उच्च न्यायालय—High Court
उत्तराधिकार—Succession
उत्तराधिकार शुल्क—Succession duty
उत्तराधिकारी—Successor
उत्तरवादिता—Liability
उत्पादन—Production
उत्पादन शुल्क—Excise duty
उत्प्रवास—Emigration
उत्प्रेषण लेख—Certiorari
उद्ग्रहण—Levy (n)
उद्घोषणा—Proclamation
उद्भव—Descent
उद्यम—Enterprise
उद्योग—Industry
उधार—Loan
उधारग्रहण—Borrowing
उन्मत्त—Lunatic
उन्माद—Lunacy
उन्मुक्ति—Immunity
उपकर—Cess
उपक्रमण—Initiate
उपचार—Remedy
उपजीविका—Occupation
उपदान—Gratuity
उपदेश—Advisory
उपनिर्वाचन—Bye-election
उपनिवेशन—Colonization
उपबन्ध—Provision
उपभोग—Consumption
उपराज्यपाल—Lieutenant Governor
उपराष्ट्रपति—Deputy President
उपराष्ट्रपति—Vice President
उपलब्धि—Emolument
उपविभाग—Subdivision
उपवेशन—Sitting
उपविधि—Bye-law
उपसभापति—Deputy Chairman
उपस्थित होना—Appear
उपाध्यक्ष—Deputy Speaker
उपायुक्त—Deputy Commissioner
उपायोजन—Employment
उपार्जित—Accrued
उम्मेद्वार—Candidate

उल्लघन—Contravention

ऋ

ऋण—Debt
ऋणग्रस्तता—Indebtedness
ऋणपत्र—Debenture

ए

एकक—Unit
एकल निगम—Corporation, Sole
एकल सक्रमणीय मत—Single transferable vote
एकस्व—Patent

क

कटक—Cantonment
कणकु—Account
कदाचार—Misbehaviour
कब्जा—Possession
कम्पनी—Company
कर—Tax
करार—Agreement
कर्तव्य—Duty
कर्तुमभिप्रेत—Purporting to be done
कर्मचारीवृन्द—Staff
कानून सम्बन्धी—Legal
कारखाना—Factory
कारबार—Business
कारागार—Prison
कारावन्दी—Prisoner
कारावास—Imprisonment
कर्मिक सघ—Trade Union
कार्य—Business
कार्यकारी—Acting
कार्यपालिका शक्ति—Executive power
कार्यपालिका—Executive
कालदान—Adjourn
कावल—Custody
कॉंजी हौस—Cattle pound
किराया—Fare
किसान—Tenant
कुर्की—Attach
कृतिस्वाम्य—Copyright
कृत्य—Function
केन्द्रीय गुप्तवार्ता विभाग—Central Intelligence Bureau
कैद—Imprisonment
कैदी—Prisoner

क्ष

क्षति—Injury
क्षतिपूर्ति बिल—Bill of indemnity
क्षमताशाली—Competent
क्षमा—Pardon
क्षेत्र—Area
क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

ख

खनिज—Mineral
खनिवसति—Mining settlement
खनिजसम्पत्—Mineral resources
खर्च—Cost
खड—Clause

ग

गजट—Gazette
गणना—Account
गणनानुदान—Vote on account
गणनापरीक्षा—Audit
गणपूर्ति—Quorum
गवेपणा—Research
गूढ़पत्र—Ballot
ग्रामपरिषद्—Village Council
ग्राह्य—Admissible

घ

घोपणा—Declaration

च

चट्टम—Act (n)
चर्चा—Discussion
चल अर्थ—Currency
चलावर्णी—Currency
चित्तविकृति—Unsoundness of mind
चिह्न—Mark
चुकती—Agreement
चुने हुए—Elected
चुंगी—Octroi
चेक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post
जनगणना—Census
जनजाति—Tribe
जनजाति क्षेत्र—Tribal Area
जनजाति परिषद्—Tribal Council
जलदस्युता—Piracy
जलप्रांगण—Territorial waters
जामिन—Bail
जाँच करना—Inquire
जिला—District
जिलागण—District Board
जिलानिधि—Distict Fund
जिला न्यायालय—District Court
जिला परिषद्—District Council
जिलामंडली—District board
जीविका—Livelihood
जुआ—Gambling
जुर्माना किया—Fined
जेल—Prison
ज्वारजल—Tidal Waters

ज्ञ

ज्ञाप—Memo
ज्ञापन—Memorandum

ट

टकण—Coinage
टांच—Attach
ट्राम—Tramway
ट्रामगाड़ी—Tramcar

ड

डिक्री—Decree

त

तत्समय—For the time being
तत्स्थानी—Corresponding
तदर्थ—Ad hoc
तीर्ण—Passed
तीर्व—Assessment
तृतीय पठन—Third reading
त्रैवार्षिक—Triennial

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक ग्रहण—Adoption
दत्तक स्वीकरण—Adoption
दस्तकारी—Handicraft
दस्तावेज—Document
दंड देना—Punish
दंड न्यायालय—Criminal Court
दंडविधि—Criminal law
दंड संबंधी—Criminal
दंडादेश—Sentence
दंडाधिकारी न्यायालय—Magistrate's Court
दाखला—Entry
दातव्य—Charities
दाय—Inheritance
दायित्व—Liability
दावा—Claim
दिवाला—Bankruptcy
दिवाला—Insolvency
दीवानी—Civil
दीवानी अदालत—Civil Court
दृष्टांक—Visas
देय—Fee
देशीयकरण—Naturalisation
दोघरा—Bi cameral
दोष प्रमाणित—Convicted
दोषसिद्धि—Conviction
दोषारोप—Charge (Cr)
द्यूत—Gambling
द्विगृही—Bi cameral
द्वितीय पठन—Second reading

ध

धन—Money
धनविधेयक—Money bill
धर्म—Faith
धर्मस्व—Endowments
धंधा—Occupation

न

नक्श—Design
नगरक्षेत्र—Municipal area
नगर ट्रामवे—Municipal Tramway
नगरनिगम—Municipal Corporation
नगरपालिका—Municipality
नगररथ्यायान—Municipal Tramway
नगरसमिति—Municipal Committee
नागरिकता—Citizenship
नामनिर्देशन—Nominate
नावधिकरण—Admiralty
निकाय—Body
निक्षेप निधि—Sinking Fund
निखात निधि—Treasure trove
निगम—Corporation
निगमकर—Corporation tax
निगमन—Incorporation
निगमनिकाय—Body, Corporate
निदेश—Direction
निधि—Fund
निबद्ध—Registered
निबन्धन—Registration
निबंधन—Term
नियंत्रक-महालेखापरीक्षक—Comptroller and Auditor General
नियंत्रण—Control
नियम—Rule
नियुक्ति—Appointment
नियोजक उत्तरवादिता—Employer's liability
नियोजक-दातव्य—Employers's liabiuty
निरसन—Repeal
निराकरण करना—Abrogate
निरोध—Custody
निरोधा—Quarantine
निर्णय—Judgment
निर्णायक मत—Casting vote
निर्देश—Referecne
निर्धारण—Assessment
निर्बन्धन—Restriction
निर्माण—Manufacture
निर्यात—Export
निर्यात कर—Export tax
निर्यात शुल्क—Export duty
निर्योग्यता—Disability
निर्वचन—Interpretation
निर्वसीयत—Intestate
निर्वसीयता—Intestacy
निर्वहन—Discharge
निर्वाचकगण—Electoral college
निर्वाचक नामावली—Electoral rolls
निर्वाचन (v)—Elect
निर्वाचन (n)—Election
निर्वाचन अधिकरण—Election Tribunal
निर्वाचन आयुक्त—Election Commissioner
निर्वाचन क्षेत्र—Constituency
निर्वाचित—Elected
निर्वासन—Transportation
निर्वाह मजूरी—Living wage
निलंबन (v)—Suspend
निलंबन (n)—Suspension
निवारक निरोध—Preventive detention
निवृत्त होना—Retire
निवृत्ति—Retirement
निवृत्ति वेतन—Pension
निषेध—Forbid
निषिद्ध—Forbidden
निष्ठा—Allegiance
नोंदना—Register (v)
नौकरी—Employment
नौकरी कर—Employment tax
नौकाधिकरण—Admiralty
नौ परिवहन—Navigation
नौ सेना संबंधी—Naval
न्यस्त करना—Entrust
न्यायपालिका—Judiciary
न्यायाधिकरण—Tribunal
न्यायाधिपति—Justice
न्यायाधीश—Judge
न्यायालय—Court

न्यायालय अवमान—Contempt of court
न्यायिक कार्यरीति—Judicial proceeding
न्यायिक कार्यवाही—Judicial proceeding
न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps
न्यायिक शक्ति—Judicial power
न्यास—Trust
न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party
पण लगाना—Bet
पण क्रिया—Betting
पण्यचिह्न—Merchandise Mark
पत—Credit (n)
पत्तननिरोधा—Port quarantine
पथकर—Toll
पथनियम—Rule of the road
पद—Post
पद—Office
पदच्युत करना—Dismiss
पदत्याग—Resignation
पदधारी—Incumbent of an office
पदाधिकारी—Officer
पदावधि—Tenure
पदावास—Official residence
पदेन—Ex-officio
परकीकरण—Alienation
परमादेश—Mandamus
परन्तु—Provided
परमिट—Permit (n)
परामर्श—Consultation
परित्यजन—Abandonment
परित्याग—Abandonment
परित्राण—Safeguard
परिपालन—Implement
परिप्रश्न—Inquiry
परिलब्धि—Perquisite
परिवहन—Transport
परिवहन—Carriage
परिव्यय—Cost
परिषद्—Council
परिषद्आदेश—Order in Council
परिसीमन—Delimitation
परिसीमा—Limitation
परिहार—Remission
परिहार विधेयक—Bill of indemnity
परोक्षनिर्वाचन—Indirect election
पर्यवेक्षण—Inspection
पर्यालोचन—Deliberate
पशुअवरोध—Cattle Pounds
पंचाट—Award
पंजी—Register
पंजी—Registered
पंजीबधन—Registration
पंजीयन—Registration
पात्रता—Eligibility
पात्र—Eligible
पारपत्र—Passport
पारण—Pass
पारित—Passed
पारितोषिक—Reward
पारिश्रमिक—Remuneration
पार्वती—Receipt (paper)
पीठासीन होना—Preside
पीठासीन पदाधिकारी—Presiding officer
पुनरीक्षण—Revision
पुनर्विचार न्यायालय—Court of Appeal
पुनर्विलोकन—Review
पुरःस्थापन—Introduce
पुरःस्थापना—Introduce
पूर्त—Charity
पूर्त धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment
पूर्त संस्था—Charitable institution
पूर्व मजूरी—Previous sanction
पूर्व समति—Previous consent
पूँजी—Capital
पृष्ठांकन—Endorse
पृष्ठांकित—Endorsed
पेशगी—Advance
पेशा—Profession
पोषण—Maintenance
पोषण करना—maintain
पौरत्व—Citizenship
प्रकट करना—Discovery
प्रकाशन—Publication
प्रक्रिया—Procedure
प्रख्यापन—Promulgate
प्रग्रहण—Arrest
प्रचलित—Current
प्रचार करना—Propagate
प्रतिकर—Compensation
प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially
प्रतिकूलता—Contravention
प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice
प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect prejudicially
प्रतिकृति—Copy
प्रतिज्ञान—Affirmation
प्रतिनिधि—Representative
प्रतिनिधित्व—Representation
प्रतिपत्री—Proxy
प्रतिपालक अधिकरण—Court of wards
प्रतिभूति—Security
प्रतिरक्षा—Defence
प्रतिलिपि—Copy
प्रतिलिप्यधिकार—Copyright
प्रतिवेदन—Report
प्रतिव्यक्ति कर—Capitation tax
प्रतिषिद्ध—Prohibited
प्रतिषेध—Prohibition
प्रतिशुल्क—Countervailing duties
प्रतिषेधलेख—Writ of prohibition
प्रतिसहरण—Revoke
प्रत्यक्ष निर्वाचन—Direct election
प्रत्यय—Credit
प्रत्ययपत्र—Letters of credit
प्रत्ययानुदान—Votes of credit
प्रत्यर्पण—Extradition
प्रत्याभूति—Guarantee
प्रथम पठन—First reading
प्रथम सदन—Lower House
प्रधान मत्री—Prime Minister
प्रपत्र—Form
प्रभाव—Influence
प्रभु—Sovereign
प्रभुता—Sovereignty
प्रमाणपत्र—Certificate
प्रमाणीकरण—Authentication
प्रमोदकर—Entertainment tax
प्रयुक्ति—Application
प्रयोग—Application
प्रयोग—Exercise
प्रविलम्बन—Reprieve
प्रवरसमिति—Select Committee
प्रविष्टि—Entry

प्रवेश—Access
प्रवेशन—Accession
प्रव्रजन—Migration
प्रशान्ति—Tranquility
प्रशासन—Administration
प्रशासन—Administer
प्रशासन कार्यक्षमता—Efficiency of administration
प्रशासन कार्यपटुता—Efficiency of administration
प्रशासनीय—Administrative
प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions
प्रशासित—Administered
प्रशिक्षण—Training
प्रसग—Context
प्रसारण—Broadcasting
प्रसूति साहाय्य—Maternity relief
प्रसूति सहायता—Maternity relief
प्रस्ताव—Motion
प्रस्तावना—Preamble
प्रस्थापना—Proposal
प्राक्कलन—Estimate
प्रादेशिक आयुक्त—Regional Commissioner
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial jurisdiction
प्रादेशिक निधि—Regional Fund
प्रादेशिक निर्वाचनक्षेत्र—Territorial constituency
प्रादेशिक परिषद्—Regional Council
प्रादेशिक भार—Territorial charges
प्राधिकार—Authority (ab)
प्राधिकारी—Authority (con)
प्राधिकृत—Authorised
प्रान्त—Province
प्रापण—Accrue
प्राप्त होना—Accrue
प्राप्ति—Receipt
प्रामिसरी नोट—Promissory note
प्रासंगिक—Incidental
प्रोद्भवन—Accrue
प्रोद्भूत—Accrued

फ

फरियाद—Complaint
फारम—Form
फीस—Fees
फेडरल न्यायालय—Federal Court

ब

बटवारा—Allocation
बनाये रखना—Maintain (v)
बनाये रखना—Maintenance (v.)
बन्दी करना—Arrest
बन्दी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus
बन्धक—Mortgage
बल—Forces
बहि शुल्क—Custom duty
बहुमत—Majority
बाँट—Allotment
बिल—Bill
बीमा—Insurance
बीमापत्र—Policy of insurance
बेकारी—Unemployment
बैठक—Sitting
बैंक—Bank
बोर्ड—Board

भ

भत्ता—Allowance
भविष्य निधि—Provident Fund
भर्ती—Recruitment
भागिता—Partnership
भाटक—Rent
भाड़ा—Fare
भार—Charge
भारग्रस्त सपदा—Encumbered estates
भारत सरकार—Government of India
भारित करना—Charge
भू अभिलेख—Land Records
भूधृति—Land tenures
भूराजस्व—Land Revenue
भ्रष्ट—Corrupt

म

मजूरी—Wage
मण्डल—District
मण्डल न्यायालय—Court, District
मण्डलाधीश—Deputy Commissioner
मण्डलायुक्त—Deputy Commissioner
मण्डली—Board
मत—Vote
मतदाता—Voter
मतदान—Voting
मताधिकार—Suffrage
मतिमान्द्य—Dullness
मध्यस्त न्यायाधिकरण—Arbitral tribunal
मध्यस्थ—Arbitrator
मध्यस्थ निर्णय—Arbitration
मनोदौर्बल्य—Mental weakness
मनोनयन—Nominate
मनोवकल्य—Mental defficiency
मंत्रणा—Advice
मंत्रणा देना—Advise
मंत्रणा परिषद्—Advisory Council
मंत्रिपरिषद्—Council of Ministers
मंत्री—Minister
मरण शुल्क—Death duty
महाजनी—Banking
महाधिवक्ता—Advocate-General
महान्यायवादी—Attorney General
महाप्रशासक—Administrator General
महालेखापरीक्षक—Auditor General
महाभियोग—Impeachment
मंजूरी—Sanction
मानदेय—Honorarium
मानवपण्य—Traffic in human beings
मानहानि—Defamation
मान्यता—Validity
मार्गप्रदर्शन—Guidance
माँग—Demand
मीन क्षेत्र—Fishery
मीनपण्यौ—Fishery
मुक्त—Exempt
मुखिया—Headman
मुख्य—Chief
मुख्य आयुक्त—Chief Commissioner
मुख्य निर्वाचन आयुक्त—Chief Election Commissioner
मुख्य न्यायाधिपति—Chief Justice
मुख्यन्यायाधीश—Chief Judge
मुख्यमंत्री—Chief Minister

मुद्रा—Seal
मुद्रांक शुल्क—Stamp duty
मूलधन—Capital
मूलधन मूल्य—Capital value

य

यथास्थिति—As the case may be
यंत्रशास्त्र—Engineering
याचिका—Petition
यातायात—Traffic
योगकाल—Joining time

र

रक्षण—Reservation
रक्षाकवच—Safeguard
रक्षित वन—Reserved forest
रथ्यायान—Tramcar
रद्द करना—Annulment
रसीद—Receipt
राजगामी—Escheat
राजनय—Diplomacy
राजस्व—Revenue
राजस्व न्यायालय—Revenue Court
राज्य—State
राज्य की सरकार—Government of a State
राज्यक्षेत्र—Territory
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन—Extra territorial operation
राज्यनिधि—State Fund
राज्य परिषद्—Council of States
राज्यपाल—Governor
राज्यसूची—S ate List
राय—Opinion
राशि—Amount
राष्ट्र—Nation
राष्ट्रऋण—Public debt
राष्ट्रपति—President
राष्ट्रपतिप्रसाद पर्यन्त—During the pleasure of the President
राष्ट्रीय राजपथ—National highways
राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations
रिक्तता—Vacancy
रिक्त स्थान—Vacancy
रिक्ति—Vacancy

रिक्थ—Property
रुकावट—Bar
रूढ़ि—Custom
रूप—Form
रूपभेद—Modification
रूपांकन—Design
रेल—Railway

ल

लगान—Rent
लगाना—Impose
लघूकरण—Commute
लम्बमान—Pending
लम्बित—Pending
लाइसेंस—Licence
लागत—Cost
लागू होना—Application (n)
लाभ—Profit
लाभांश—Dividend
लिखत—Instrument
लिखित सूचना—Notice in writing
लेख—Writ
लेखा—Account
लेखापरीक्षा—Audit
लेखानुदान—Votes on accounts
लेख्य—Document
लेना देना—Dealings
लोक—People
लोक अधिसूचना—Public notification
लोकसभा—House of the People
लोकसमाज—Community
लोकसेवायें—Public Services
लोकसेवायोग—Public Service Commission
लोक स्वास्थ्य—Public health

व

वकालत करना—Plead
वकील—Pleader
वचनपत्र—Promissory note
वचनबन्ध—Engagement
वणिक् पोत—Merchant marine
वयस्क—Major
वयस्क मताधिकार—Adult suffrage
वरी—Duty

वसीयत—Will
वस्तुभाड़ा—Freight
वहनपत्र—Bill of lading
वंटन—Allot
वाक् स्वातंत्र्य—Freedom of Speech
वाणिज्य—Commerce
वाणिज्यदूत—Consul
वाणिज्य सबंधी—Commercial
वाद—Cause
वादपद—Issue
वादप्रतिवाद—Controversy
वादमूल—Cause of action
वादविवाद—Debate
वादविषय—Subject matter
वायदा बाजार—Future market
वायुपथ—Airways
वार्षिक—Annual
वार्षिक वित्तविवरण—Annual financial statement
वार्षिकी—Annuities
विकलन—Debit (v)
विकृतचित्त—Unsound mind
विक्रय—Sale
विक्रयकर—Sales tax
विघटन—Dissolution
विचार—Consideration
विचारार्थ प्रस्ताव—Motion for consideration
वितरण—Distribution
वित्त—Finance
वित्तविधेयक—Finance bill
वित्तायोग—Finance-Commission
वित्तीय—Financial
वित्तीय भार—Financial obligation
वित्तीय विवरण—Financial statement
विदेशीय कार्य—Foreign Affairs
विदेशीय विनिमय—Foreign exchange
विधान—Legislation
विधानपरिषद्—Legislative Council
विधानमंडल—Legislature
विधानसभा—Legialative Assembly
विधायिनी शक्ति—Legislative power

विधि—Law
विधिप्रश्न—Question of law
विधिमान्य—Legal tender
विधियों का समान संरक्षण—Equal protection of law
विधि संबंधी—Legal
विधेयक—Bill
विनियम—Regulation
विनियमन—Regulate
विनियमपत्र—Bill of exchange
विनियोग—Appropriation
विनियोगविधेयक—Appropriation bill
विनिश्चय—Decision
विभाग—Section
विभाजन—Distribution
विभेद—Discrimination
विमति—Dissent
विमान-परिवहन—Air navigation
विमानयातायात—Air traffic
विमानबल—Air Forces
विमोचन—Redemption
विमोचनभार—Redemption charges
वियुक्त—Deprive
विराम—Respite
विरुद्ध—Repugnant
विरोध—Repugnance
विरोध—Repugnancy
विल—Will
विलेख—Deed
विवरणी—Return
विवाद—Dispute
विवाहविच्छेद—Divorce
विशेषाधिकार—Privilege
विश्वासप्रस्ताव—Motion of confidence
विश्वास का अभाव—Want of confidence
विषय—Subject
विसर्जन—Disperse
विसगत—Irrelevant
विस्तार—Extend
विस्फोटक—Explosive
वीसा—Visas
वृत्ति—Profession
वृत्तिकर—Profession tax
वृद्धि—Interest.

वेतन—Pay
वेतन—Salary
वेलई—Employment
वेलाजल—Tidal waters
वैदेशिक कार्य—External Affairs
वोटदाता—Voter
वंचित करना—Deprive
व्यक्ति—Person
व्यपगत होना—Lapse
व्यय—Expenditure
व्यवसाय—Vocation
व्यवस्था—Order
व्यवहार—Civil
व्यवहार—Dealings
व्यवहार अदालत—Civil Court
व्यवहारालय—Civil Court
व्यवहार न्यायालय—Civil Court
व्यवहार प्रक्रिया—Civil Procedure
व्यवहार प्रक्रिया संहिता—Civil Procedure Code
व्यवहार लाना—Sue
व्यवहारवाद—Civil Suit
व्यवहारविषयक अपकृत्य—Civil wrong
व्यवहारविषयक दोष—Civil wrongs
व्यवहारशक्ति—Civil power
व्याख्या—Explanation
व्यापार—Trade
व्यापारकर—Trades Tax
व्यापारचिह्न—Trademark
व्यापारसंघ—Trade Union
व्यावृत्ति—Savings

श

शक्ति—Power
शर्त—Condition
शलाका—Ballot
शलाकापद्धति—Ballot
शान्ति—Peace
शाश्वत उत्तराधिकार—Perpetual succession
शासक—Ruler
शासन—Governance
शासन—Govern
शासन—Government
शासी निकाय—Governing body
शास्ति—Penalty
शिक्षा—Education
शिक्षा—Instruction
शिल्पी प्रशिक्षण—Technical training
शिविर—Camp
शिशु—Infant
शिस्त—Disciplinary
शुल्क—Duty
शुल्कसीमान्त—Custom Frontiers
शून्य—Void
शेरिफ—Sheriff
शोधना—Research

श्र

श्रद्धा—Faith
श्रम—Labour
श्रमिक संघ—Labour Union
श्रेष्ठि चत्वर—Stock-Exchange

स

सक्षम—Competent
सत्र—Session
सत्रन्यायालय—Session Court
सत्रावसान—Prorogue
सदन—House
सदस्य—Member
सदाचरण पर्यन्त—During good behaviour
सदाचार—Morality
संस्था—Association
सन्धि—Treaty
सभा—Assembly
सभापति—Chairman
समता—Equality
समर्पण—Dedicate
समवर्ती सूची—Concurrent List
समवाय—Company
समवाय संस्था—Co-operative Society
समवेत होना—Assemble
समागम—Intercourse
समाचारपत्र—Newspaper
समापन—Winding up
समिति—Committee
समुदाय—Community

समुद्र-नौवहन—Maritime shipping
सम्पदा—Estate
सम्पदाशुल्क—Estate duty
सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य—Sovereign Democratic Republic
सम्मेलन—Conference
सरकार—Government
सरकारी अभियाचना—Public demand
सर्वक्षमा—Amnesty
सर्वोच्च समादेश—Supreme Command
सलाह—Advice
सशस्त्र बल—Armd forces
सहकारी संस्था—Co operative society
सहमति—Concurrence
सहायक—Ancilary
सहायक अनुदान—Grants in-aid
सकटमय—Hazardous
संकल्प—Resolution
संक्रमण—Transition
संगणना—Compute
संघ—Union
सघटन—Organization
सघसूची—Union List
सचार—Communication
सचार करना—Communicate
सचारसाधन—Means of Communications
संचित निधि—Consolidated fund
संदर्भ—Context
सदेश—Message
सबोधित—Addressed
संपत्ति—Property
संपत्ति-हस्तान्तरण-पत्र—Assurances of property
संपर्क—Contact
समति—Consent
संभावना—Honorarium
संरक्षक—Guardian
सलग्न—Append
सविदा—Contract
सविधान—Constitution
सविधानसभा—Constituent Assembly
सशोधन—Amendment

ससद्—Parliament
संस्था—Institution
संस्थापन—Establishment
संहिता—Code
साक्ष्य—Evidence
साख—Credit
साधारण निर्वाचन—General Election
सामर्थ्य—Capacity
सामाजिक बीमा—Social insurance
सामाजिक रूढ़ि—Social custom
सामाजिक सेवा—Social service
सामान्य मुद्रा—Common seal
सामान्य मुहर—Common seal
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification
सार्वजनिक अभियाचना—Public demand
सार्वजनिक कल्याण—Common good
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order
साहूकार—Moneylender
साहूकारी—Moneylending
सासर्गिक—Contagious
साक्रामिक—Infectious
सिद्धदोष—Convicted
सिफारिश—Recommendation
सिफारिश करना—Recommend
सीमा—Boundary
सीमाकर—Terminal tax
सीमान्त—Frontiers
सीमाशुल्क—Custom duty
सीमांकन—Demarcation
सुधार प्रन्यास—Improvement Trust
सुधारालय—Reformatory
सुसगत—Relevant
सुसगति—Relevancy
सूचना—Notice
सूचनापत्र—Gazette
सूचनापत्र—Notice
सूची—List
सूद—Interest
सूत्र—Formula
सूत्रित—Formulated
सेना—Military
सेना-न्यायालय—Court Martial
सेवा—Service

सेवा की शर्तें—Condition of service
सेवानियोजन—Employment
सेवाभार—Service charges
सैनिक—Military
सैन्य वियोजन—Demobilization
सौंपना—Assign
सौंपना—Entrust
स्थगन—Adjourn
स्थगित करना—Adjourn
स्थान—Post
स्थान—Seat
स्थानांतरण—Transfer (n)
स्थानीय क्षेत्र—Local area
स्थानीय गण—Local Board
स्थानीय निकाय—Local body
स्थानीय प्राधिकारी—Local authority
स्थानीय मडली—Local Board
स्थानीय शासन—Local Government
स्थानीय स्वशासन—Local Self Government
स्थापना—Establishment
स्थापित करना—Establish
स्थायी आदेश—Standing Orders
स्थायी समिति—Standing Committee
स्पष्टीकरण—Clarification
स्पष्टीकरण—Explanation
स्मारक—Memorial
स्वतन्त्रता—Freedom
स्ववश—Possession
स्वविवेक—Discretion
स्वातन्त्र्य—Freedom
स्वाधीनता—Liberty
स्वामित्व—Ownership
स्वामिलभ्य—Royalties
स्वामिस्व—Royalties
स्वामी—Owner
स्वामिहीनत्व—Bona vacancia
स्वामी होना—Own
स्वायत्तता—Autonomy
स्वीय विधि—Personal law

हक—Title

हक होना—Entitled
हटाना—Removal
हस्तशिल्प—Handicraft
हस्तांतर पत्र—Conveyance
हस्तांतरण—Transfer (n.)
हिदायतें—Instructions

——✿——
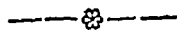
A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग,
Abridge—न्यूनन
Abrogate—निराकरण
Access—प्रवेश
Account—लेखा, गणना, कणक
Accrue—प्रापण, प्रोद्भवन,
Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपार्जित,
Accusation—अभियोग
Accused—अभियुक्त
Acquisition—अर्जन
Act (n)—अधिनियम, चट्टम
Acting (e g Chairman)—कार्यकारी
Actionable wrong—अभियोज्य दोष
Adaptation—अनुकलन
Addressed—सम्बोधित
Adherence—अनुषक्ति
Ad hoc—तदर्थ
Adjourn—१ स्थगन, अधिदान, २ स्थगित करना, कालदान
Administer—प्रशासन
Administered—प्रशासित
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनीय,
Administrative functions—प्रशासनीय कृत्य
Administrator-General—महाप्रशासक
Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण,
Admissible—ग्राह्य
Adoption—दत्तक-ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण
Adulteration—अपमिश्रण
Adult suffrage—वयस्क मताधिकारी
Advance—अग्रिम, पेशगी
Advice—मंत्रणा, उपदेश, सलाह
Advise—मंत्रणा देना
Advisory Council—मंत्रणा परिषद्
Advocate—अधिवक्ता
Advocate-General—महाधिवक्ता
Affect prejudicially—प्रतिकूल प्रभाव डालना, प्रतिकूल असर डालना
Affirmation—प्रतिज्ञान
Agency—अभिकरण
Agent—अभिकर्त्ता
Agreement—करार, चुकती,
Air force—विमान बल
Air navigation—विमान परिवहन
Air traffic—विमान यातायात
Airways—वायुपथ
Alien—अन्यदेशीय
Alienate—अन्य-संक्रामण
Alienation—अन्य-संक्रामण, परकीकरण,
Allegation—अभिकथन, आरोप
Allegiance—निष्ठा
Allocation—बँटवारा
Allot—बटन
Allotment—बांट
Allowances—भत्ता
Amendment—संशोधन
Amnesty—सर्वक्षमा
Amount—राशि
Ancillary—सहायक
Annual—वार्षिक
Annual Financial Statement—वार्षिक वित्तविवरण
Annuities—वार्षिकी
Annulment—रद्द करना
Appeal—अपील
Appear—उपस्थित करना
Appended—संलग्न
Application—१ प्रयुक्ति, २ लागू होना, ३ आवेदनपत्र
Appointment—नियुक्ति
Appropriation—विनियोग
Appropriation bill—विनियोग विधेयक
Aprove—अनुमोदन करना
Approval—अनुमोदन
Arbitral tribunal—मध्यस्थ-न्यायाधिकरण
Arbitration—मध्यस्थ निर्णय
Arbitrator—मध्यस्थ
Area—क्षेत्र
Armed Forces—सशस्त्र बल
Arrest—बंदी करना, प्रग्रहण
Article—अनुच्छेद
Assemble—समवेत होना, सम्मिलित होना
Assembly—सभा
Assent—अनुमति
Assessment—निर्धारण, तौर्वं
Assignment—सौंपना
Association—संस्था
Assurance of property—संपत्ति-हस्तांतरण-पत्र
As the case may be—यथास्थिति, यथाप्रसंग
Attach—कुर्की, टांच
Attorney-General—महान्यायवादी
Audit—लेखापरीक्षा, गणनापरीक्षा
Auditor General—महालेखापरीक्षक
Authentication—प्रमाणीकरण
Authorise—प्राधिकृत
Authority—प्राधिकारी
Autonomous—स्वायत्त

Autonomy—स्वायत्तता
Award—पंचाट

B

Bail—जामिन
Ballot—१ शलाका,
२ शलाकापद्धति, गूढ़पत्र,
Bank—बैंक
Banking—महाजनी
Bankruptcy—दिवाला
Bar—रुकावट
Benefilt—हित
Betting—पण लगाना, पणक्रिया
Bicameral—दोघरा, द्विगृही,
Bill—विधेयक, बिल,
Bill of exchange—विनिमयपत्र
Bill of indemnity—परिहार विधेयक, क्षति पूर्ति बिल,
Bill of lading—वहनपत्र
Board—मंडली
Body—निकाय
Body, corporate—निगम निकाय
Body, governing—शासी निकाय
Bona vacancia—स्वामिहीनत्व
Borrowing—उधारग्रहण
Boundary—सीमा
Broadcasting—प्रसारण
Business—कारबार
Bye-election—उपनिर्वाचन
Byelaw—उपविधि

C

Calling—आजीविका
Camp—शिविर
Candidates—अभ्यर्थी, उम्मेदवार
Cantonment—कटक, छावनी
Capacity—सामर्थ्य
Capital—मूलधन, पूँजी
Capital value—मूलधन मूल्य
Capitation tax—प्रतिव्यक्तिकर
Carriage—परिवहन
Casting vote—निर्णायक मत
Cattle pound—पशुअवरोध, कांजी हौस,
Cause—वाद
Cause of Action—वादमूल
Census—जनगणना

Central Intelligence Bureau—केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग
Certificate—प्रमाणपत्र
Certiorari—उत्प्रेषणलेख
Cess—उपकर
Chairman—सभापति
Charge—भार, भारित करना
Charge (Cr)—दोषारोप, अभियुक्ति
Charity—पूर्त, दातव्य
Charitable and religious endowments—पूर्त, धार्मिक धर्मस्व
Charitable institutions—पूर्त संस्था
Cheque—चेक
Chief—मुख्य
Chief Commissioner—मुख्य आयुक्त
Chief Election Commissioner—मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief Judge—मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice—मुख्य न्यायाधिपति
Chief Minister—मुख्य मंत्री
Citizenship—नागरिकता
Civil—१ व्यवहार,
२ असैनिक
Civil Court—१ व्यवहार न्यायालय, दीवानी,
२ व्यवहारालय,
व्यवहार अदालत,
Civil power—१ व्यवहार शक्ति
२ असैनिक शक्ति
Civil wrong—व्यवहार विषयक अपकृत्य व्यवहारविषयक दोष,
Claim—दावा
Clarification—स्पष्टीकरण
Clause—खण्ड
Code—संहिता
Coinage—टंकण
Colonization—उपनिवेशन
Commerce—वाणिज्य
Commercial—वाणिज्य संबंधी
Commission—आयोग
Commissioner—आयुक्त
Committee—समिति
Committee, Select—प्रवर समिति
Committee, Standing—स्थायी समिति
Common good—सार्वजनिक कल्याण
Common Seal—सामान्य मुद्रा, सामान्य मुहर

Communicate—संचार करना
Communication, means of—संचार साधन
Community—१ लोकसमाज
२ समुदाय
Commute—लघूकरण
Company—समवाय, कम्पनी
Compensation—प्रतिकर
Competent—सक्षम, क्षमताशील
Complaint—फरियाद
Comptroller and Auditor General—नियन्त्रक महालेखा-परीक्षक
Compute—संगणना
Concurrence—सहमति
Concurrent List—समवर्ती सूची
Condition—शर्त
Conditions of service—सेवा की शर्तें
Conferenee—सम्मेलन
Confidence, want of—विश्वास का अभाव
Conscience—अन्त करण
Consent—समति
Consent, previous—पूर्व संमति
Consequential—आनुषंगिक
Consideration—विचार
Consolidated Fund—संचित निधि
Constituency—निर्वाचनक्षेत्र
Constituency, territorial—प्रादेशिक निर्वाचनक्षेत्र
Constituent Assembly—संविधान-सभा
Constitution—संविधान
Consul—वाणिज्यदूत
Consultation—परामर्श
Construe—अर्थ करना
Consumption—उपभोग
Contact—संपर्क
Contagious—सांसर्गिक
Contempt—अवमान
Contempt of court—न्यायालय अवमान
Context—संदर्भ, प्रसंग
Contingency Fund—आकस्मिकता-निधि
Contract—संविदा
Contravention—प्रतिकूलता, उल्लंघन
Contribution—अंशदान

Control—नियंत्रण
Controversy—प्रतिवाद
Convention—अभिसमय
Conveyance—हस्तांतरपत्र
Convicted—सिद्धदोष, दोषप्रमाणित, अभिरास्त,
Conviction—दोषसिद्धि, अभिरास्ति
Cooperative society—सहकारी संस्था, समवाय संस्था,
Copy—प्रतिलिपि, प्रतिकृति,
Copyright—प्रतिलिप्यधिकार, कृतिस्वाम्य,
Corporation—निगम
Corporation, Sole—एकल निगम
Corporation tax—निगमकर
Corresponding—तत्स्थानी
Corrupt—भ्रष्ट
Cost—परिव्यय, खर्च, लागत
Council—परिषद्
Council of Ministers—मंत्रिपरिषद्
Council of States—राज्यपरिषद्
Council, Regional—प्रादेशिक परिषद्
Council, Tribal—जनजाति परिषद्
Countervailing duty—प्रतिशुल्क
Court—न्यायालय
Court of Appeal—पुनर्विचार न्यायालय, अपील न्यायालय,
Court, Civil—व्यवहार न्यायालय
Court, Criminal—दंड न्यायालय
Court, District—जिला न्यायालय, मंडल न्यायालय,
Court, Federal—फेडरल न्यायालय
Court, High—उच्च न्यायालय
Court, Magistrate—दंडाधिकारी-न्यायालय
Court Martial—सेना न्यायालय
Court of wards—प्रतिपालक अधिकरण
Court, Revenue—राजस्व न्यायालय
Court, Session—सत्र न्यायालय
Court, subordinate—अधीन न्यायालय
Court, Supreme—उच्चतम न्यायालय
Credit—प्रत्यय, साख, पत
Credit—आकलन
Crime—अपराध
Criminal—१ अपराधी, दंड सम्बन्धी २ आपराधिक
Criminal law—दंडविधि
Currency—चल अर्थ, चलार्थ,
Custody—अभिरक्षा, निरोध, कारागार
Custom duty—रूढ़ि शुल्क, सीमाशुल्क
Custom frontier—शुल्कसीमान्त
Custom—रूढ़ि, आचार

D

Dealings—व्यवहार, लेना देना
Debate—वादविवाद
Debentures—ऋणपत्र
Debit—विकलन
Debt—ऋण
Decision—विनिश्चय
Declaration—घोषणा
Decree—आज्ञप्ति, डिक्री
Dedicate—समर्पण
Deed—विलेख
Defamation—मानहानि
Defence—प्रतिरक्षा
Deliberate—पर्यालोचन
Delimitation—परिसीमन
Demand—मांग, अभियाचना
Demarcation—सीमांकन
Demobilisation—सैन्य वियोजन
Deprived—वंचित करना, वियुक्त करना
Deputy Chairman—उपसभापति
Deputy Commissioner—उपायुक्त, मण्डलायुक्त
Deputy President—उपराष्ट्रपति
Deputy Speaker—उपाध्यक्ष
Descent—उद्भव
Derogation—अल्पीकरण
Design—रूपांकण, नक्श
Detrimental—अहितकारी
Diplomacy—राजनय
Direction—निदेश
Disability—निर्योग्यता
Discharge—निर्वहन
Discipline—अनुशासन
Disciplinary—अनुशासन संबंधी, शिस्त
Discovery—प्रकट करना
Discretion—स्वविवेक
Discrimination—विभेद
Discussion—चर्चा
Dismiss—पदच्युत करना
Disperse—विसर्जन
Dispute—विवाद
Disqualification—अनर्हता
Disqualify—अनर्ह करना
Dissent—विमति
Dissolution—विघटन
Distribution—वितरण, विभाजन
District—जिला, मंडल
District Board—जिला मंडली
District Council—जिला परिषद्
District Fund—जिला निधि
Dividend—लाभांश
Divorce—विवाह विच्छेद
Documents—लेख्य, दस्तावेज
Domicile—अधिवास
Domiciled—अधिवासी
Dulness—मतिमान्द्य
During good behaviour—सदाचार पर्यंत
During the pleasure of the president—राष्ट्रपति प्रसाद-पर्यंत
Duty—१ शुल्क, कर, २ कर्तव्य
Duty, custom—सीमा शुल्क
Duty, death—मरण शुल्क
Duty, estate—संपत्ति शुल्क
Duty, export—निर्यात शुल्क
Duty, import—आयात शुल्क
Duty, stamp—मुद्रांक शुल्क
Duty, succession—उत्तराधिकार शुल्क

E

Economic—आर्थिक
Education—शिक्षा
Efficiency of administration—प्रशासन कार्यक्षमता, प्रशासन का सिद्धता
Elect—निर्वाचन (?)
Elected—निर्वाचित, चुने हुए
Election—निर्वाचन
Election Commissioner—निर्वाचन आयुक्त
Election, direct—प्रत्यक्ष निर्वाचन
Election, general—साधारण निर्वाचन
Election, indirect—परोक्ष निर्वाचन
Election tribunal—निर्वाचन अधिकरण

Electoral roll—निर्वाचक नामावली
Electoral rolls—निर्वाचक गण
Eligibility—पात्रता
Eligible—पात्र होना
Emergency—आपात
Emergent—आपाती
Emigration—उत्प्रवास
Emoluments—उपलब्धियाँ
Employer's liability—नियोजक दातव्य, नियोजक उत्तरवादिता
Enact—अधिनियम
Encumbered estate—भारग्रस्त सपदा
Endorse—१ पृष्ठांकन, २ अकन
Endorsed—१ पृष्ठांकित, २ अकित
Endowment—धर्मस्व
Engagements—वचनबध
Engineering—यन्त्र शास्त्र
Enterprise—उद्यम
Entitled—हक होना
Entrust—न्यस्त, सौंपना
Entry—प्रविष्टि, दाखला
Equality—समता
Equal Protection of Laws—विधियों का समान संरक्षण
Escheat—राजगामी
Establishment—१ स्थापना, सस्थापन २ स्थापन करना
Estates—सपदा
Estimates—आंक, प्राक्कलन
Evidence—साक्ष्य
Excess profit—अतिरिक्त लाभ
Exclude—अपवर्जन करना
Exclusion—अपवर्जन
Exclusive jurisdiction—अनन्य क्षेत्राधिकार
Executive—कार्यपालिका
Executive power—कार्यपालिका शक्ति
Exempt—मुक्त
Exercise—प्रयोग, अनुष्ठान
Ex officio—पदेन
Expenditure—व्यय
Explanation—व्याख्या, स्पष्टीकरण
Explosives—विस्फोटक
Export—निर्यात
Extend—विस्तार
External Affairs—वैदेशिककार्य
Extradition—प्रत्यर्पण
Extra territorial operations—राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन, राज्यक्षेत्रातीत वर्तन

F

Factory—कारखाना
Faith—धर्म, श्रद्धा
Fare—भाड़ा, किराया
Federal Court—फेडरल न्यायालय
Fees—देय, फीस
Finance—वित्त
Finance bill—वित्त विधेयक
Finance Commission—वित्तायोग
Financial—वित्तीय
Financial obligation—वित्तीय भार
Financial statement—वित्तीय विवरण
Fine—अर्थदड, जुर्माना किया
Fishery—मीन क्षेत्र, मीन पण्य
Forbid—निषेध
Forbidden—निषिद्ध
Forces—बल
Foreign Affairs—विदेशीय कार्य
Foreign exchange—विदेशीय विनिमय
Form—१ रूप २ प्रपत्र, फारम
Formula—सूत्र
Formulated—सूत्रित
For the time being—तत्समय
Freedom—१ स्वतन्त्रता २ स्वातन्त्र्य, आजादी
Freights—वस्तु भाड़ा
Frontiers—सीमान्त
Function—कृत्य
Function—कृत्य
Function, administrative—प्रशासनीय कृत्य
Fund—निधि
Fund, sinking—विक्षेप निधि
Future market—वायदा बाजार

G

Gambling—द्यूत, जुआ
Gazette—सूचनापत्र, गजट,
General Election—साधारण निर्वाचन
Govern—शासन करना
Governance—शासन
Government—१ सरकार २ शासन
Government of a State—राज्य की सरकार
Government of India—भारत सरकार
Governor—राज्यपाल
Grant—अनुदान
Grant in aid—सहायक अनुदान
Gratuity—उपदान
Guarantee—प्रत्याभूति
Guardian—सरक्षक
Guidance—मार्ग प्रदर्शन

H

Habeas Corpus—बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts—हस्तशिल्प, दस्तकारी
Hazardous—संकटमय
Headman—मुखिया
High Court—उच्च न्यायालय
Honorarium—मानदेय, सभावना
House—सदन
House of People—लोकसभा

I

Illegal—अवैध
Illegal Practice—अवैधाचरण
Immunity—उन्मुक्ति
Impeachment—महाभियोग
Implementing—परिपालन
Impose—आरोपण, लगाना
Imprisonment—कारावास, कैद
Improvement trust—सुधार न्यास
Incapacity—असमर्थता
Incidental—प्रासगिक
Incompetency—अक्षमता
Incorporation—निगमन
Incompetent—अक्षम
Incumbent of an office—पदधारी
Indebtedness—ऋणग्रस्तता
Industry—उद्योग
Ineligible—अपात्र

Ineligibility—अपात्रता
Infants—शिशु
Infectious—सांक्रामिक
Influence—प्रभाव
Influence, undue—अयुक्त प्रभाव
Inheritance—दाय
Initiate—उपक्रमण
Injury—क्षति
Inland waterways—अन्तर्देशीय जलपथ
Inoperative—अप्रवृत्त
Inquiry—परिप्रश्न, जांच
Insolvency—दिवाला
Inspection—पर्यवेक्षण
Institution—संस्था
Instruction—१ शिक्षा
२ अनुदेश, हिदायतें
Instrument—लिखत
Insurance—बीमा
Intercourse—समागम
Interest—ब्याज, वृद्धि, सूद
International—अन्तर्राष्ट्रीय
Interpretation—निर्वचन
Intestacy—इच्छापत्रहीनत्व, निर्वसीयता
Intestate—इच्छापत्रहीन, निर्वसीयता
Introduce—पुरःस्थापन
Introduction—पुर.स्थापना
Invalid—अमान्य
Invalidity pensions—असमर्थता-निवृत्ति वेतन
Investigation—अनुसंधान
Involved—अन्तर्ग्रसन
Involve—अन्तर्ग्रस्त
Irregularity—अनियमितता
Issue—वादपद

J

Joining Time—योगकाल
Joint family—अविभक्त कुटुम्ब, अविभक्त परिवार
Judge—न्यायाधीश
Judge, Additional—अपर न्यायाधीश
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायाधीश
Judgment—निर्णय
Judicial power—न्यायिक शक्ति
Judicial proceeding—न्यायिक कार्यवाही
Judicial stamp—न्यायिक मुद्रांक
Judiciary—न्यायपालिका
Jurisdiction—क्षेत्राधिकार
Justice, Chief—मुख्य न्यायाधिपति

L

Labour—श्रम
Labour Union—श्रमिक संघ
Land records—भू-अभिलेख
Land revenue—भू-राजस्व
Land tenures—भूधृति
Law—विधि
Law of nations—राष्ट्रों की विधि
Legal—विधि संबंधी, कानून संबंधी,
Legislation—विधान
Legislative power—विधायिनी शक्ति
Legislative Assembly—विधान सभा
Legislative Council—विधान परिषद्
Legislature—विधान मंडल
Letters of credit—प्रत्ययपत्र
Levy—१ आरोपण
२ उद्ग्रहण, उगाहना
Liability—दायित्व
Libel—अपमान लेख
Liberty—स्वाधीनता
Licences—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस
Lieutenant Governor—उप राज्यपाल
Limitation—परिसीमा
List—सूची
List, Concurrent—समवर्ती सूची
List, State—राज्यसूची
List, Union—संघसूची
Livelihood—जीविका
Loans—उधार
Local area—स्थानीय क्षेत्र
Local authorities—स्थानीय प्राधिकारी
Local board—स्थानीय मंडली स्थानीय गण,
Local body—स्थानीय निकाय
Local Government—स्थानीय शासन
Local Self Government—स्थानीय स्वशासन
Lock up—बंदीखाना
Lower House—प्रथम सदन
Lunacy—उन्माद
Lunatic—उन्मत्त

M

Maintain—१ पोषण
२ बनाये रखना
Maintenance—पोषण
Major—वयस्क
Majority—बहुमत
Mandamus—परमादेश
Manufacture—निर्माण
Maritime shipping—समुद्रनौवहन
Maternity Relief—प्रसूतिसहायता, प्रसूतिसाहाय्य
Member—सदस्य
Memo—ज्ञाप
Memorandum—ज्ञापन
Memorial—स्मारक
Mental deficiency—मनोवैकल्य
Mental Weakness—मनोदौर्बल्य
Merchandise marks—पण्य चिह्न
Merchandise marine—वणिकपोत
Message—संदेश
Migration—प्रव्रजन
Military—१ सेना
२ सैनिक
Mind, unsound—विकृत चित्त
Mineral—खनिज
Mineral resources—खनिज संपद्
Mining settlement—खनिवसति
Minister—मंत्री
Minor—अवयस्क
Minority—अल्पसंख्यक वर्ग
Misbehaviour—कदाचार
Modification—रूपभेद
Money—धन
Money bill—धन विधेयक
Moneylender—साहूकार
Moneylending—साहूकारी:
Morality—सदाचार
Mortgage—बंधक
Motion—प्रस्ताव
Motion for Consideration—विचारार्थ प्रस्ताव
Motion of Confidence—विश्वास प्रस्ताव
Motion of No confidence—अविश्वास प्रस्ताव

Municipal area—नगरक्षेत्र
Municipal Committee—नगरसमिति
Municipal Corporation—नगर-निगम
Municipality—नगरपालिका
Municipal tramways—नगर रथ्या-यान, नगर ट्रामें

N

Nation—राष्ट्र
National highways—राष्ट्रीय राजपथ
Naturalisation—देशीयकरण
Naval—नौसेना संबंधी
Navigation—नौपरिवहन
Newspaper—समाचारपत्र
Nominate—नामनिर्देशन, मनोनयन
Notice—१ सूचना
२ सूचनापत्र
Notice in writing—लिखित सूचना
Notification—अधिसूचना

O

Obligation—आभार
Occupation—उपजीविका, धधा
Octroi—चुंगी
Offence—अपराध
Office—पद
Officer—पदाधिकारी
Official residence—पदावास
Opinion—अभिप्राय, राय
Order—१ आदेश
२ व्यवस्था
Order in Council—परिषद् आदेश
Order, standing—स्थायी आदेश
Ordinance—अध्यादेश
Organization—सघटन
Own—स्वामी होना
Owner—स्वामी
Ownership—स्वामित्व

P

Pardon—क्षमा
Parliament—ससद
Party—पक्ष
Partnership—भागिता
Pass—पारण
Passed—पारित, तीर्ण
Passport—पारपत्र
Patents—एकस्व
Pay—वेतन
Peace—शाति
Pecuniary jurisdiction—आर्थिक क्षेत्राधिकार
Penalty—शास्ति
Pending—१ लबित
२ लंबमान
Pension—निवृत्ति वेतन
People—लोक, जनता
Permission—अनुज्ञा
Permit—अनुज्ञा, परमट
Perpetual succession—शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite—परिलब्धि
Person—व्यक्ति
Personal law—स्वीय विधि
Petition—याचिका, अर्जी
Piracy—जलदस्युता
Plead—वकालत करना
Pleader—वकील
Police—आरक्षक
Police Force—आरक्षक बल
Police Station—थाना
Policy of insurance—बीमा पत्र
Port quarantine—पत्तन निरोधा
Possession—स्ववश, कब्जा
Posts—१ पद
२ स्थान, जगह
Power—शक्ति
Preamble—प्रस्तावना
Preference—अधिमान
Prejudice—प्रतिकूल प्रभाव
Preside—पीठासीन, अध्यासीन
President—राष्ट्रपति
Presiding officer—अधिष्ठाता
Preventive detention—निवारक निरोध
Prime Minister—प्रधान मन्त्री
Prison—कारावास, जेल
Prisoner—काराबंदी, कैदी
Privileges—विशेषाधिकार
Procedure—प्रक्रिया
Process—आदेशिका
Proclamation—उद्घोषणा
Proclamation of Emergency—आपात की उद्घोषणा
Production—उत्पादन
Profession—वृत्ति, पेशा
Profit—लाभ
Prohibited—प्रतिषिद्ध
Prohibition—प्रतिषेध
Prohibition, writ of—प्रतिषेध लेख
Promissory note—प्रामिसरी नोट, वचन पत्र
Promulgate—प्रख्यापन
Propagate—प्रचार करना
Property—१ सपत्ति,
२ रिक्थ, आस्ति
Proportional representation—अनुपाती प्रतिनिधित्व
Proposal—प्रस्थापना
Prorogue—सत्रावसान
Prosecution—१ अभियोजन
२ अभियुक्ति
Provided—परंतु
Provident fund—भविष्य निधि
Province—प्रात
Provision—उपबंध
Proxy—प्रतिपत्री
Publication—प्रकाशन
Public debt—राष्ट्र ऋण
Public demands—सार्वजनिक अभियाचना, सरकारी अभियाचना
Public health—लोक स्वास्थ्य
Public notification—सार्वजनिक अधिसूचना, लोक अधिसूचना
Public Order—सार्वजनिक व्यवस्था
Public Service Commission—लोक सेवायोग
Public Services—लोक सेवाएँ
Punish—दड देना
Purporting to be done—कर्तुमभिप्रेत

Q

Qualification—अर्हता
Quarantine—निरोधा
Question of law—विधि प्रश्न
Quorum—गणपूर्ति
Quo warranto—अधिकार पृच्छा

R

Railway—रेल

Ratification—अनुसमर्थन
Ratify—अनुसमर्थन
Reading, first—प्रथम पठन
Reading, second—द्वितीय पठन
Reading, third—तृतीय पठन
Receipt—प्राप्ति
Receipt (paper)—पावती, रसीद
Recommend—सिफारिश करना
Recommendation—सिफारिश
Record—अभिलेख
Record, court of—अभिलेख न्यायालय
Record of rights—अधिकार अभिलेख
Recruitment—भर्ती
Recurring—आवर्तक
Redemption—विमोचन
Redemption charges—विमोचनभार
Reference—निर्देश
Reformatory—सुधारालय
Refundable to—लौटाया जानेवाला
Regional Commissioners—प्रादेशिक आयुक्त
Regional Councils—प्रादेशिक परिषद्
Regional Fund—प्रादेशिक निधि
Register—पञ्जी
Registered—१ पञ्जीवद्ध
२ निबद्ध, नोंदना
Registration—१ पञ्जीयन
२ पञ्जीबंधन
३ निबंधन
Regulate—विनियमन
Regulation—विनियम
Relevancy—सुसंगति
Relevant—सुसगत
Remedy—उपचार
Reminder—अनुस्मारक
Remission—परिहार
Removal—हटाना
Remuneration—पारिश्रमिक
Rent—भाटक, लगान
Repeal—निरसन
Report—प्रतिवेदन
Representation—प्रतिनिधित्व
Representative—प्रतिनिधि
Reprieve—प्रविलबन
Repugnance—विरोध
Repugnancy—विरोध
Repugnant—विरुद्ध
Requisition—अधिग्रहण
Research—गवेषणा, शोधन
Reservation—रक्षण
Reserved forest—रक्षित वन
Resignation—पदत्याग
Resolution—सकल्प
Respite—विराम
Restriction—निर्बंधन
Retire—निवृत्त होना
Retirement—निवृत्ति
Revenue—राजस्व, आगम
Review—पुनर्विलोकन
Revision—पुनरीक्षण
Revoke—प्रतिसंहरण
Reward—पारितोषिक
Rights—अधिकार
Rule—नियम
Rule of the road—पथ नियम
Ruler—शासक

S

Safeguard—रक्षाकवच, परित्राण
Salary—वेतन
Sale—विक्रय
Sanction—मजूरी
Sanction, previous—पूर्व मजूरी
Savings—व्यावृति
Schedule—अनुसूची
Scheduled area—अनुसूचित क्षेत्र
Scheduled Caste—अनुसूचित जाति
Scheduled Tribes—अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित आदिम जाति
Seal—मुद्रा
Seat—स्थान
Section—विभाग
Security—प्रतिभूति
Sentence—दण्डादेश
Service—सेवा
Service charges—सेवा भार
Session—सत्र
Share—अंश
Sheriff—शेरीफ
Single transferable vote—एकल सक्रमणीय मत
Sinking Fund—निक्षेपनिधि
Sitting—उपवेशन, बैठक
Slander—अपमान वचन
Social-custom—सामाजिक रूढि
Social Insurance—सामाजिक बीमा
Social Service—सामाजिक सेवा
Sovereign—प्रभु
Sovereign Democratic Republic—सपूर्ण प्रभुत्व सपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य
Sovereignty—प्रभुता
Speaker—अध्यक्ष
Speech, freedom of—वाक्स्वातन्त्र्य
Staff—कर्मचारी वृद
Stamp duties—मुद्रांक शुल्क
Standing orders—स्थायी आदेश
State—राज्य
State fund—राज्य निधि
Stock exchange—श्रेष्ठि चत्वर
Sub division—उपविभाग
Subject—१ अधीन,
२ विषय
Subject matter—वाद विषय
Subordinate officer—अधीन अधिकारी
Succession—उत्तराधिकार
Successor—उत्तराधिकारी
Sue—व्यवहार लाना
Suffrage—मताधिकार
Suit, Civil—व्यवहार वाद
Summons—आह्वान
Superintendence—अधीक्षण
Superintendent—अधीक्षक
Supplementary—अनुपूरक
Supplementary grant—अनुपूरक अनुदान
Supreme Command—सर्वोच्च समादेश
Supreme Court—उच्चतम न्यायालय
Suspend—निलवन
Suspension—निलवन

T

Tax—कर
Tax, Callings—आजीविका कर
Tax, Capitation—प्रतिव्यक्ति कर
Tax, Corporation—निगम कर
Tax, Employment—नौकरी कर
Tax, Entertainment—प्रमोद कर
Tax, Export—निर्यात कर

Tax, Profession—वृत्तिकर
Tax, Income—आयकर
Tax, Sales—विक्रयकर
Tax, Terminal—सीमाकर
Tax, Trades—व्यापारकर
Technical training—शिल्पी प्रशिक्षण
Tenant—किसान
Tender, legal—विधिमान्य
Tenure—पदावधि
Term—निबंधन
Territorial charges—प्रादेशिक भार
Territorial Jurisdiction—प्रादेशिक क्षेत्राधिकार
Territorial Waters—जलप्रांगण
Territory—राज्यक्षेत्र
Tidal waters—वेलाजल, ज्वारजल
Title—हक़
Toll—पथ कर
Trade—व्यापार
Trade Mark—व्यापार चिह्न
Trade Union—कार्मिक संघ, व्यापार संघ
Traffic—यातायात
Traffic in human beings—मानवपणन
Training—प्रशिक्षण
Tramcar—रथ्यायान, ट्रामगाड़ी
Tramway—ट्राम
Tranquillity—प्रशांति
Transfer—१ स्थानांतरण, २ हस्तांतरण
Transition—संक्रमण
Transport—परिवहन
Transportation—निर्वासन
Treasure trove—निखात निधि
Treaty—संधि
Tribal Area—जनजाति क्षेत्र
Tribe—जन जाति
Tribunal—न्यायाधिकरण
Triennial—त्रैवार्षिक
Trust—न्यास

U

Undischarge—अनुन्मुक्त
Unemployment—बेकारी
Union—संघ
Unit—एकक
Unsoundness of mind—चित्त-विकृति

V

Vacancy—रिक्त स्थान
Vacancy—१ रिक्ति, २ रिक्तता
Vagrancy—आहिंडन, आवारागर्दी
Validity—मान्यता
Vice President—उप राष्ट्रपति
Village Councils—ग्राम परिषद्
Violation—अतिक्रमण
Visas—द्रष्टांक, वीसा
Vocation—व्यवसाय
Void—शून्य
Vote—मत
Vote, casting—निर्णायक मत
Voter—मतदाता, वोट दाता,
Votes on account—लेखानुदान, गणनानुदान
Votes of credit—प्रत्ययानुदान

W

Wage—मजूरी
Wage, living—निर्वाह मजूरी
Warrant—अधिपत्र
Will—इच्छापत्र, विल, वसीयत
Winding up—समापन
Writ—लेख